कबीर मन्शूर

अर्थात्

स्वसंवेदार्थ प्रकाश.

सत्यलोकवासी स्वामी श्री परमानन्दजी कृत मूल उर्दू का सर्वतंत्र स्वतंत्र रिसर्च स्कालर पं॰ माधवाचार्य्य का किया हुआ परिष्कृत हिन्दी अनुवाद.

मुद्रक व प्रकाशकः-

गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास,

अध्यक्ष-"लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस,

कल्याण-बम्बई.

कबीरपंथके प्रधान आचार्य

श्री १०८ पं० श्री उग्रनाम साहब
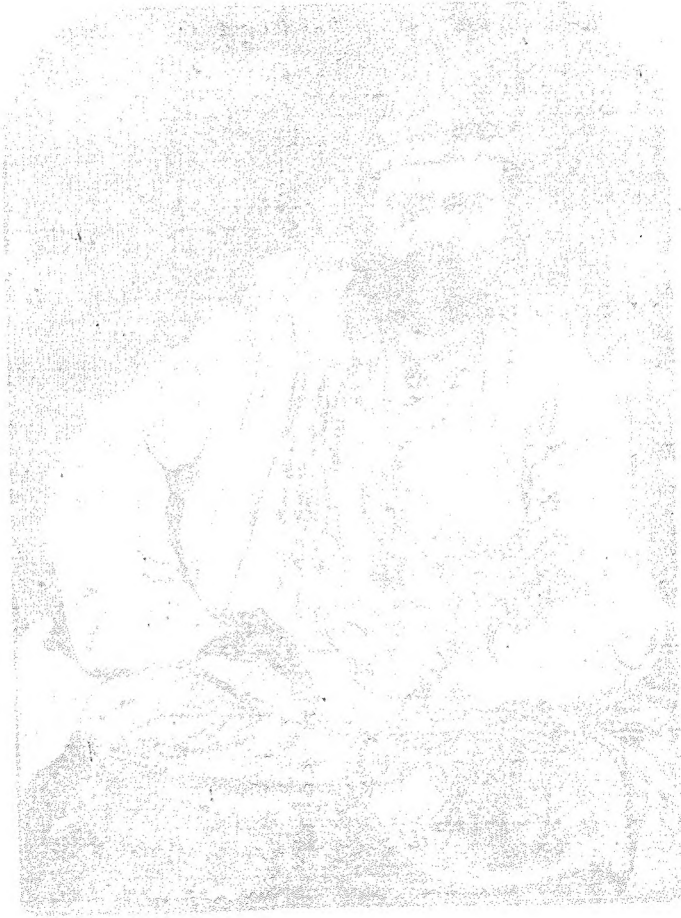
सत्यलोक सहित सब लोकोंका विवरण पृष्ठ २४६

यह सत्य पुरुषका स्थान है जाहूत आहूतसे दश असंख्य लाख योजन ऊपर इसके मध्यमें शून्याकार है.

यह सत्य पुरुषका निवास स्थान है इसीको अमर धाम कहते हैं. यहींसे कबीर साहब सत्य पुरुषकी आज्ञा लेकर आते हैं जीवोंको कालके फन्देसे निकालकर यहीं ले जाते हैं.

दश असंख्य लाख योजन शून्य के ऊपर

आहूत राहूतसे दो असंख्य योजन ऊपर है

राहूत साहूतसे चार असंख्य योजन शून्य ऊपर है

साहूत बाहूतसे पांच असंख्य शून्य ऊपर है

बाहूत हाहूतसे तीन असंख्य योजन ऊपर है

यह हाहूत स्थान लाहूतसे एक अ० यो. ऊ०

यह लाहूत मालकूतसे ग्यारह पालंग योजन ऊपर है

यह जबरूत स्थान मलकूतसे अठारह करोड योजना ऊपर है

यह मलकूत पृथ्वीसे साठ सहस्र योजन ऊपर है

यह नासूत पृथ्वीसे ३६ सहस्र यो० ऊ० है देवताओंकी पुरियां और सिद्धोंके स्थान-कर्मभूमि....

सहज द्वीप सहज पुरुषका स्थान है।

अंकुर द्वीप अंकुर पुरुषका स्थान है।

इच्छा द्वीप इच्छा पुरुषका स्थान है।

सोहङ्ग द्वीप सोहंग पुरुषका स्थान है।

अचिंत्य द्वीप अचिंत्य पुरुषका स्थान है।

आरण्य द्वीप अक्षर स्थान सायुज्य मुक्ति

झांझरी द्वीप सारूप्यमुक्ति निरञ्जन स्थान

यह वैकुंठ विष्णुका स्थान सामीप्यमुक्ति

ब्रह्म अंशका स्थान सालोक्य मुक्ति

पृथ्वी और नासूत स्थानके मध्यमें है।

पृथ्वी

इस सात नरकोंमें चौरासी कुण्ड हैं यहीं पापियोंको दंड मिलता है।

अतलादिलोक.

विराट पुरुष

पृष्ठ ३९६

उनचास क्रोड योजन तीनलोक भवसागर ही विराट पुरुषकी देह है।
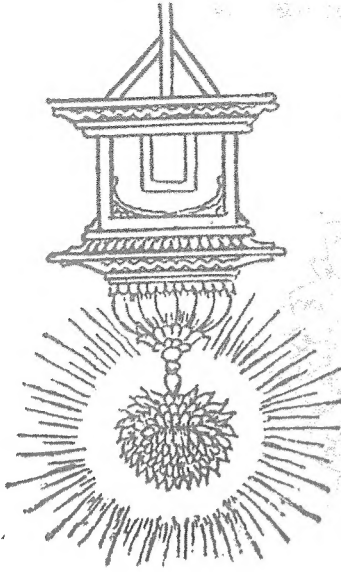
पृष्ठ ४९२
सहस्त्रदलकमल
देखो पृष्ठ ४३४
अक्षर पुरुष और योगमायाका मंदिर
ब्रह्मरंध्र देखो पृष्ठ ४३३
आज्ञा चक्र देखो पृष्ठ ४३४
महासिद्ध चक्र देखो पृष्ठ ४३३
बलवान चक्र देखो पृष्ठ ४३५
अलखनिरंजन

विशुद्ध चक्र   देखो पृष्ठ ४३५

अनाहत चक्र   देखो पृष्ठ ४३६

मनका स्वरूप मनोचक्र देखो पृष्ठ ४३६
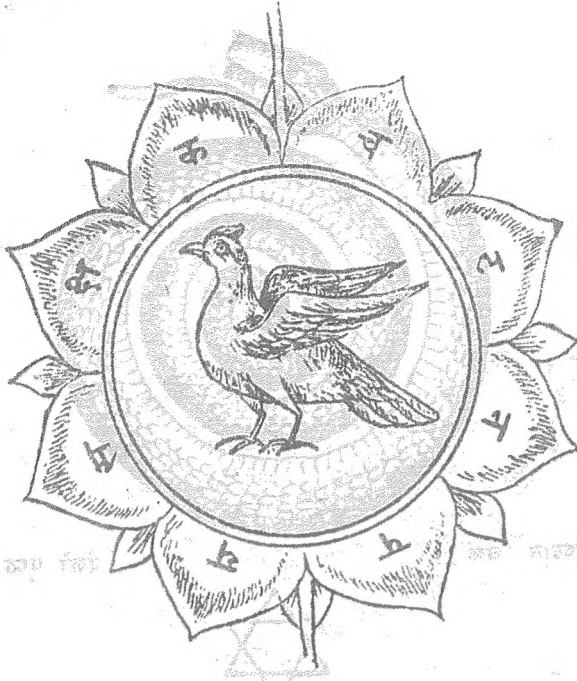
मणिपूरक चक्र देखो पृष्ठ ४३७

कुण्डलिनी शक्ति देखो पृष्ठ ४३७

स्वाधिष्ठान चक्र देखो पृष्ठ ४३८

मूलाधार चक्र
देखो पृष्ठ ४३
व
सप्त पाताल
देखो पृष्ठ ४४८
अतल
वितल
सुतल
तलातल
महातल
रसातल
पाताल
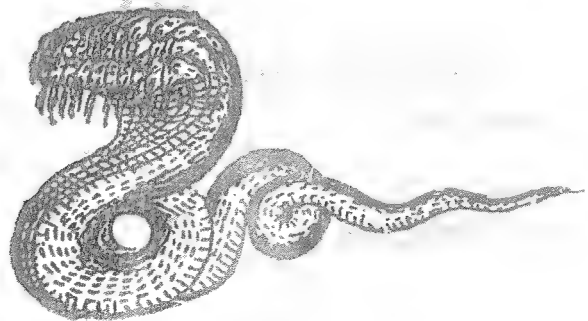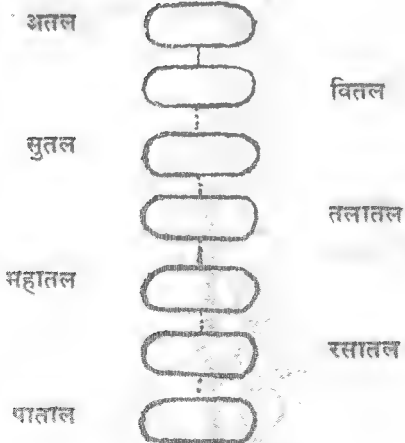
'चित्र निरूपण' तथा 'पिण्ड और ब्रह्माण्ड'।

(१३) अक्षर भगवान् — अरण्यद्वीपमें महाविष्णु सहित योगमा.

(१२) ब्रह्मरंध्रचक्र — यहां ईश्वर मस्तिष्कके स्थानपर हैं।

(११) अलखनिरञ्जन — झांझरी द्वीपमें आद्या और निरञ्जन है।

(१०) पूर्णगिरि — पूर्णगिरि भगवान्का स्थान है।

(९) आज्ञाचक्र — सूर्य्य और चन्द्रमा देवता।

(८) बलवान्चक्र — अहम् और सोहम् पुरुष है।

(७) विशुद्धशक्तिचक्र — आदिशक्ति भवानी है।

(६) अनाहदचक्र — शिव भगवान् पार्वती सहित।

(५) मनोचक्र — मन स्वयम् निरञ्जन है और निरञ्जन विष्णु है।

(४) मणिपूरकचक्र — विष्णु भगवान् लक्ष्मी सहित।

(३) कुण्डलिनी — संसारके कारण।

(२) स्वाधिष्ठानचक्र — ब्रह्माका स्थान सावित्री सहित।

(१) आधारचक्र — गणेश देवता शक्ति सहित।

ये सात नरक हैं और इसमें चौरासी कुण्ड हैं और समस्त पापियोंके निमित्त कष्टका स्थान है।

सप्त पाताल

शेषनाग वाराह। भगवान्। मीन अर्थात् मछली। गऊ।

कूर्म अर्थात् कछुवा

जलरञ्जनी

देखो पृष्ठ ४३७
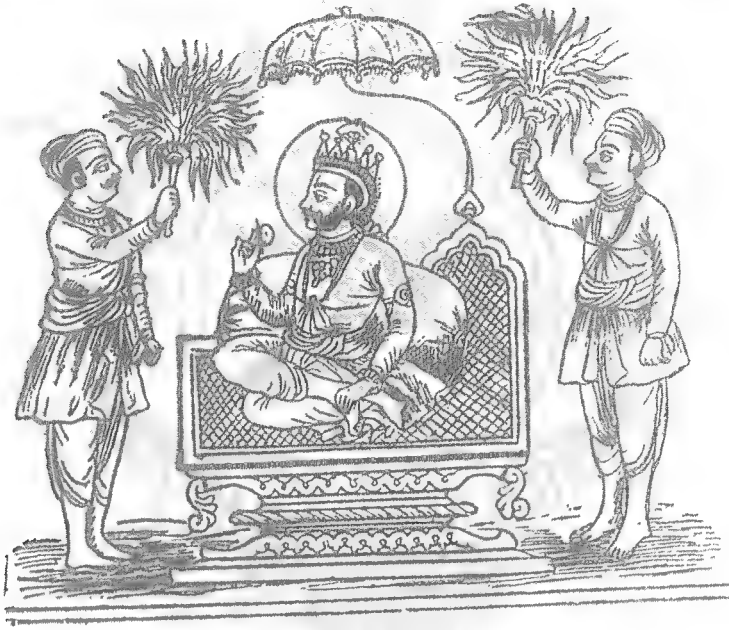
योगमाया और अक्षर पुरुष

देखो पृष्ठ ४९३

मनका चित्र

देखो पृष्ठ ६८० से ६९५
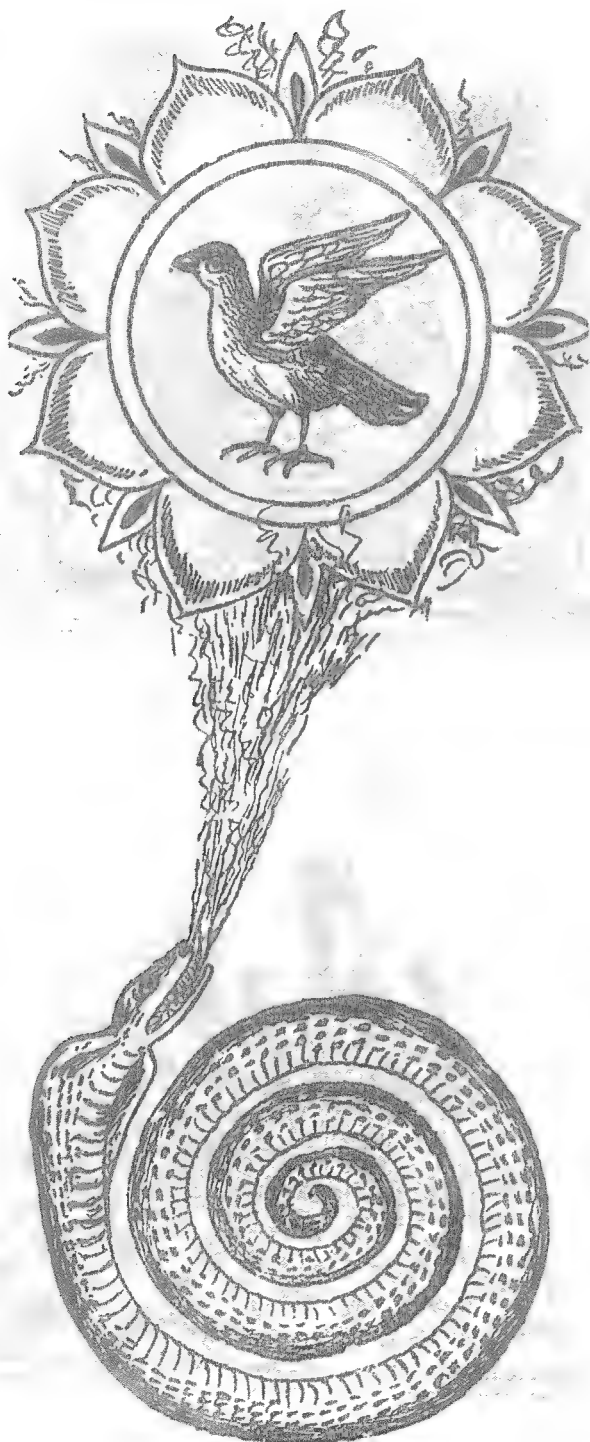
कुण्डलिनी शक्ति

देखो पृष्ठ ६९५ से ७००

गजूना पक्षी, नं. १ देखो पृष्ठ ७९४

मनुष्य मुखसर्प, नं. २ पृष्ठ ७९४

संगपुस्त, नं. ३ पृष्ठ ७९४

जलमनुष्य नं. ४ पृष्ठ ७९४
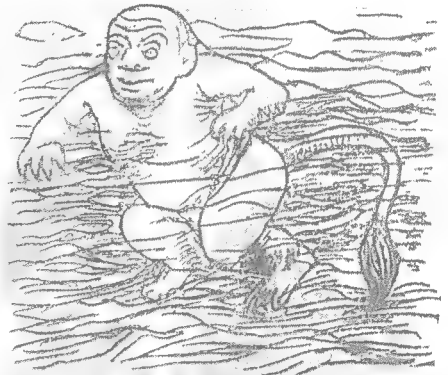
मनकता, नं. ५ पृष्ठ ७९४

शेब याहूदी, नं. ६ पृष्ठ ७९५

अजीबुलखिलकत् नं. ७
पृष्ठ ७९५

विचित्र पशु नं. ८
पृष्ठ ७९५

उनका पक्षी नं. ९ पृष्ठ ७९५

दो शिरका मनुष्य नं. १० पृष्ठ ७९५

छातीमें शिरवाला मनुष्य नं. ७९५
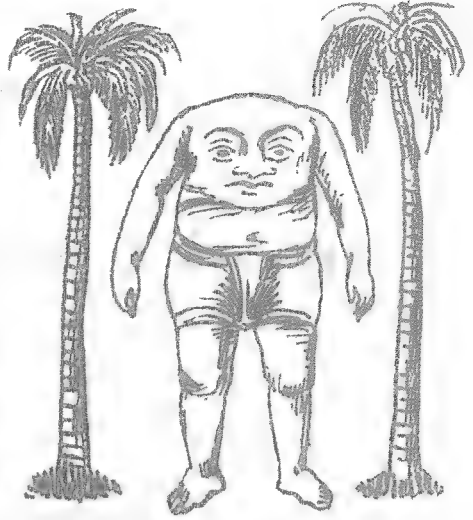
श्वानमुख मनुष्य नं. १३ पृष्ठ ७९५

अश्वमुख मनुष्य नं. १४ पृष्ठ ७९६

बड़े कानका मनुष्य नं. १२ पृष्ठ ७९५

पचास गजका मनुष्य नं. १५ पृष्ठ ७९६

श्री

समस्त वाणी वेद और किताबोंकी माताका चित्र.

२० वीं अध्यायका सर्व धर्म प्रकरण
इसी चित्रके वर्णनमें लिखा है.

श्री

समस्त

२० वीं अध्यायका सर्व धर्म प्रकरण
इसी चित्रके वर्णनमें लिखा है.

पुष्पाञ्जलि

जिस महापुरुषने भूमण्डल पर आकर धर्मद्वेषसे दग्ध हुए जीवोंको सामान्य धर्मरूप अमृत पिलाकर सजीव किया इस ग्रन्थकी पहिली भेंट उसी श्री कबीर साहिब के चरणोंमें की जाती है।

दूसरी भेंट—कबीर पन्थके संस्थापक श्रीधर्मदासजी तथा उनके ब्यालीस बंशको है जिन्होंने आजतक साहिबके सिद्धान्तोंकी रक्षा करते हुए उन्हें कार्य्य रूपमें परिणत किया।

तीसरी भेंट—उनको है जो इस खींचातानीके समयमें भी अपने पन्थको कबीर साहिबकाही एक पन्थ समझते हैं।

चौथी भेंट—इस पन्थके उन सन्त महन्तोंको है जो इस कराल कलिकालकी चपल तरंगोंके झोकों को वारंवार सहकर भी साहिबके बताये हुए पंथ पर दृढ़ हैं जो कि कबीर साहिबकी वाणीका सच्चा तात्पर्य समझते हैं।

मेरा मुझको कुछ नहीं, जो कुछ है सो तोर।
तेरा तुझको सौंपते, क्या लागे है मोर॥

माधवाचार्य्य।

सत्यमेव जयते नानृतम्

★

प्रथम वक्तव्य

हंसोंके प्यारे भक्तों के जीवन सर्वस्व सत्य साकेत लोकवासी परब्रह्म परमात्मा पुरुषोत्तम, श्रीसत्यपुरुषकी अहेतुकी दया, अखिल ब्रह्माण्डोंके सभी जीवोंपर सदा बनी रहती है।

यद्यपि जीव क्षण २ में और का और होनेवाले असार भवसागरके चंचल तरंगोंके प्रबल वेगसे इतस्ततः बहता हुवा, मायाके गहरे भँवरमें फसकर, पुत्र दार गृहादिके झूठे अभिनिवेशसे तेरा मेरा करता हुआ सच्चे स्वामीको भुला, झूठे मोहोंमें मुग्ध हो जाता है पर वो सच्चा प्रेमी अपने अनुकम्प्योंका कभी विस्मरण नहीं करता प्रतिक्षण इन्हीं चिन्तामें रहता है फिर उन भक्तोंकी तो बात ही दूसरी है जो सारे विश्वको उसीकी चरण रेणुके एक कण पर न कुछकी तरह निछावर किये बैठे हैं।

स्वर्ग, नरक, उच्च, नीच, पौर्वात्य, पाश्चात्य, हिन्दू, अहिन्दू सर्वत्र उसका सहज प्रकाश सदा पहुंचा करता है। यादृश कर्मफलोंको भोगनेके लिये जैसे साधनोंकी आवश्यकता होती है वो बिना किसी प्रार्थनाके अपने ही आप वैसे ही साधन दे देता है जिनसे कि, प्रारब्ध भोगोंको भोगनेमें समर्थ होसके। जो जिस देशका रहनेवाला है उसे उसी देशके अकंटक निर्वाह करनेके सब उपकरण प्रदान कर दिये हैं। शीत देशके जन्मे हुओंको वहांके अनुकूल तथा गर्म देशोंके रहनेवालोंको गरम सह सकनेके योग्य बनाया है।

यह ईश्वर की सहज दयाका ही फल हैं। उसीकी दी हुई शक्तिसे सब शक्तिवान् बन रहे हैं। जिसमें जो स्वाभाविकता दीखती है सब उसीकी दी हुई है; इसीसे यह अनुमान, सहज ही में लगाया जा सकता है कि, सब पर उसकी अहेतुकी दया है सबका वो सच्चा प्यारा है उसका किसीसे द्वेष नहीं है। वो किसे भूले तथा द्वेष भी किससे करे उसीके लोकका प्रकाश जो चैतन्याकाश पर पड़ा वही तो समष्टि जीव है उससे इतर थोड़ाही है यही साहिबसे विमुख होकर संसारी बना है पर साहिब इससे कभी भी विमुख नहीं होता जो कि इसे भूल जाय।

इसीने देव देवी बनकर देव लोक, नाग नागिनि होकर पाताललोक, किन्नर किन्नरी बन कर किन्नर लोक, यक्ष यक्षिणी बनकर यक्षलोक वम् मानुष एमानुषी बनकर मनुष्य लोक भर दिया है। मनुष्यों में भी कोई राजा कोई प्रजा कोई धनी, निर्धन, कोई निर्बल सबल, कोई पूज्य, अपूज्य एवं कोई ज्ञानी तथा कोई अज्ञानके घोर तममें पड़ा ठोकरें खा रहा है।

वो जो जीवोंका स्वभाव बन्धनोंमें बँधनेका होता जाता है त्यों २ वो अपनी तरह खींचनेके लिये हाथ बढ़ाता जाता है। जीव मार्गभूल कर गड्ढोंकी ओर भगे जा रहे हैं तो वो उन्हें मार्गपर लानेका प्रयत्न कर रहा है।

संसारी व्यवहारोंको अच्छी तरह जतानेके लिये, इसके व्यवहारोंका सुखपूर्वक पालन करनेके लिये एवम् बिना किसीके सताये आनन्द पूर्वक रहते हुए आगे बढ़नेके लिये, अपरा विद्याका

उपदेश दिया जिसे कि कोई २ पुरुष वेद कह कर भी बोलते हैं। जो भवके परितापोंसे छूटना चाहते हैं जिन्हें कि, इन्द्रकी वो सुधर्मा सभा जहाँ कि सदा उर्वशी जैसी लोकोत्तर सुन्दरियोंके नाच रंग हुआ करते हैं, कोई अनुराग न पैदा करे किंतु दुःखका ही साधन प्रतीत हो ऐसे पुरुषोंके लिये परा विद्याका उपदेश दिया जिसे कि, स्वसंवेद भी करते हैं। निरंजनके राज्यके अनन्त ब्रह्माण्ड हैं एक एकमें अनन्त अनन्त लोक हैं प्रत्येक लोकमे अनन्तोंही हैं एक ही यह भूमण्डल सात महाद्वीपोंमें विभक्त हो रहा है एक ही जम्बूद्वीपमें भीतर एशिया आदि कई महाद्वीप संभाले जा रहे हैं। सृष्टिके पुरुषोंको ज्ञानोपदेश करनेका मार्ग एशियाका भारत वर्ष ही रहा है, सत्य पुरुषके दिव्य सन्देश इसी पुण्यभूमिमें आये एवं यहींसे विश्वके मानव समाजको हितोपदेश मिला है। सृष्टिके आदिमें ऋषि महर्षियोंके द्वारा वेदके दिव्य प्रकाशसे संसार भरको सन्मार्ग दिखाया गया जो कि, महाभारतके समयसे पूर्वतक अक्षुण्ण बना रहा। द्वापरके अन्तमें श्रीकृष्ण द्वैपायनने उसे पुनः परिष्कृत कर दिया।

यद्यपि धर्मराज युधिष्ठिरजीके वंशधर उनके सत्यधाम पधारनेपर बीस पीढ़ी तक एक छत्र शासन करते रहे हैं किंतु जनमेजयके शासनके बाद उनका शासन सूत्र ढीला होने लग गया था इस बातकी साक्षी भारतका इतिहास दे रहा है। ऋषि मुनियोंको प्यारी तपोभूमि इस भारत वर्षमें अनेक तरहके मनमाने मत फैल गये थे। मनमाने देवता कल्पित करके उनके नाम पर मनमाने कार्य किये जा रहे थे, मद्यपलोग मद्यके सैकडों समुद्रोंको सोख डालनेवाले रौद्र मद्यप देवताओंकी कल्पना करके गूलरकेसे रंगकी मद्यको बोतलोंपर बोतलें उड़ा रहे थे। निष्करुण मांसप्रिय मनुष्योंने मांसका बाजार गरम कर रखा था। परस्त्रीगामियोंने अपनी विचित्र आराधनाके नामपर रजकियों और चाण्डालिनीतकोंको अपनी सिद्धिका साधन प्रसिद्ध किया था।

ऐसे अत्याचारियोंके नग्न अत्याचारोंसे सत्य पुरुषके सच्चे भक्त सताये जा रहे थे, उनकी दिव्य सन्देशमयी परा अपरा दोनों वाणियोंका मूलोच्छेद हो रहा था, उनके प्रेमी पुराने लकीरके फकीर कहकर घृणाके गड्ढेके नीचे दबाये जा रहे थे, इनकी दर्द भरी आवाज सत्यपुरुषके कान पड़ी उसका हृदय स्वाभाविकी दयासे एकदम द्रवीभूत हुआ। क्योंकि वो सत्यपुरुष असावधान नहीं था सत्य मार्गके खोजनेवालोंको उस समय भी वो अपना मार्ग बता देना चाहता था उसके भेजे हुए पथ प्रवर्तक भी उसका पूरा आचरण करके दिखा देना चाहते थे कि, इस प्रकार चलने पर अब भी सत्यलोक दूर नहीं है। ये सत्य पुरुषके सत्यलोकके आये हुए पक्के तत्त्वके देहवाले उसीके हंस थे, यदि ये केवल उपदेशकाही कार्य्य रखते तो कलियुगकी कलुषित भावनाओंको अपने ओजस्वी वचनोंसे निःशेष कर डालते। पर पर्वतोंकी कन्दराओंमें प्राचीन वृक्षोंकी खोड़रोंमें पवित्र वनों एवम् एकान्तके पुण्य स्थलोंमें सत्यलोकोंके हंसोंके कृत्य कर २ कर दिखा रहे थे।

जिन्होंने इनके लोकोत्तर चरित्रको जान पाया, जिन्होंने उनके जीवन चरित्रोंपर दृष्टि डाल कर उन्हें अपना आदर्श बनाया वे अधिकारी मुक्तिपथको अधिकृत करके इस असारसे बन्धनोंको तिनकेकी तरह तोड़कर साकेत्त लोक चले गये पर जिन्होंने उन्हें नहीं समझ पाया ऐसे पुरुषोंको उनसे कोई लाभ नहीं पहुँचा। जिन्हें उनसे लाभ पहुँचा ऐसे जीवोंकी संख्या उंगलियोंपर गिनी जा सकती थी।

उस समय उनका इतना अधिक प्रचार नहीं हुआ कि, सर्व साधारण उनसे लाभ उठासकें। यह देख जगदीशने अधिकारी बना २ कर उसीके अनुसार उपदेश देना प्रारंभ किया।

भगवान् बुद्ध देवने महावीर स्वामीको साथ लेकर अहिंसाके उच्च सिद्धान्तके जय घोषसे भूमण्डलको व्याप्त कर दिया। विक्रमार्कने वैदिक विकासको निष्कंटक बना दिया, श्रीशङ्करस्वामीने

पूर्वमीमांसाआदिकी प्रतिद्वन्दितामें उत्तर मीमांसा स्थापित की, श्रीरामानुजाचार्य, निम्बादित्य आदि दिव्य आचार्य्य पुरुषोंने जीव, ब्रह्म और माया विषयके विज्ञानोंको सर्व साधारणोंके सामने रखा।

किन्तु महाराजा अशोकके वंशधरोंको निर्बल हो जानेके पीछे भारतका वैदेशिक प्रचार शिथिलप्राय होगया क्रमशः दूसरे देश भारतके दावेसे निकल गये।

इतिहास एवम् पुरातत्त्वकी खोज तो हमें यह बताती है कि, महाराजा अशोकका इतना बड़ा साम्राज्य था जितना कि अशोकके बादकी कोई भी शक्ति आजतक नहीं बनासकी है न बनानेकी आशाही है। आजकी बौद्धोंकी ६३ करोड़ोंकी संख्या भगवान् बुद्ध देवके सार्वजनीन हितोपदेशके बदलेकीही है इसका निर्माण सच्चे उपदेशके आधार परही हुआ है यह कहीं भी लिखा हुआ नहीं मिलता कि बौद्धोंने कभी भारतसे बाहर विदेशोंमें तलवारके बलपर बौद्ध धर्मका प्रचार किया था जैसा कि इसलामके प्रवर्तकोंने धर्मप्रचारके नामपर असहाय जीवोंका रक्त पानीसे भी सस्ता बहाया है। बौद्ध धर्मका सच्चा सिद्धान्त अहिंसा था जिसका कि प्रचार केवल विश्वके निरीह प्राणियोंको शान्ति देनेके लिये किया गया था। यही भारतके वीरोंकी विशेषता है कि, यहांके धर्म प्रचार भी सुख शान्ति पूर्वक एवं सुख शान्तिके लिये हुए। उनका यह सिद्धान्त कभी भी नहीं हुआ कि, परमात्माने हम राजाओंको इसलिये पैदा किया है कि, हमारे मजहबके न माननेवालों काफिरोंको कत्ल कर दिया करे एवम् धर्माचार्य्योंको धर्मप्रचारके लिये भेजा है।

किन्तु उनका तो यही विचार रहा है कि, हमे परमात्माने प्रजाका रंजन करनेके लिये भेजा है कि, उसे किसी तरह भी दुखी न होने दें तथा भारतके धर्माचार्य दिव्य सन्देश सुनानेके लिये आते हैं सत्यपुरुषका सामयिक अनुशासन जनताके सामने रख देनेका उनका कार्य है यह लोगोंकी इच्छापर निर्भर रहा है कि माने वा न माने, न तो इस विषयमें उन्होंने कभी बल प्रयोगको उत्तम समझा है न कभी ऐसी आज्ञाही दी है।

जब मैं सांप्रदायिकताके संकीर्ण दायरेकी ओर जाता हूँ तो मुझे यह कहनेके लिये अवश्य बाध्य होना पड़ता है कि, संकीर्णता तो किसीकी भी सर्वांशतः सच्ची नहीं कही जा सकती चाहे वो अपने संप्रदायकी हो चाहे दूसरोंकी हो पर पश्चिमके धर्माचार्य्योंके हृदयमें चाहे कुछ भी हो कुछ एकको छोड़कर अपने सिद्धांतों के प्रचारमें हिंसाका आश्रय सबने लिया है यही पूर्व और पश्चिमकी विभिन्नता है।

उनका तलवारके बलका धर्म प्रचार उन्हींके देशोंमें नियमित रहा हो यह बात नहीं है किन्तु उनके अनुयायियोंने मानव सत्यताको सिखानेवाले सब धर्मोंके गुरु एवम् आपसकी फूटसे स्वतः विदीर्ण हुए शिथिलेन्द्रिय इस वृद्ध भारतवर्षको भी धर्मके नामपर रक्त रंजित किये बिना नहीं छोड़ा। भारतवर्षकी सीमाके देशोंके बलपूर्वक इसलाममें दीक्षितकर लेनेके पीछे भारतवर्षकी बारी आई, सम्राट पृथ्वीराजके बाद भारतवर्ष मुसलमानोंके ताबे आया।

मुसलमान शासकोंने धर्म के नामपर बड़े २ अत्याचार किये प्रतिदिन बेगुनाहोंका रक्त पानीकी तरह बहाया जाता था हिन्दू धर्म ग्रन्थोंसे पानी गरम हुआ करते थे, हजारों कुलललनाएँ वेश्याओंसे भी बुरी बना २ कर बिठा दी जाती थीं विशेष क्या कहा जाय यदि उस कालमें रौरव नरक भी मूर्तिमान् होकर भारतकी दुर्दशा देख लेता तो वह भी इसकी दशापर दो चार आंसू बहाये बिना न रहता। देशभरमें त्राहि २ मची हुई थी जिनके हाथमें शासन सूत्र था वे अपना विशुद्ध कर्तव्य भुलाकर धर्म द्वेषमें फंसकर पैशाचिक अत्याचार कर रहे थे। अन्तमें निर्दोषोंका खून रंग लाया, सत्य-

पुरुषका हृदय असहाय दुःखी भारतवासियोंकी करुणा से पूर्ण हो गया जले हृदयोंकी उन्होंने निरंजनके शरीरसे भी अगाडी निकलकर सत्यलोकका द्वार जा खट खटाया।

कबीर साहिबको आज्ञा :—हुई कि, आप पुण्य भूमि भारतमें जाकर दुःखी जीवोंको दुःखसे मुक्त करो सच्चे सामान्य धर्मका उपदेश करो जो सबका एकसा है। हिन्दू मुसलमान दोनोंको उसके प्रकाशसे प्रकाशित कर दो जो कि, वे आपसके कलहको छोड़कर सच्ची शांतिको ग्रहण करलें। सभी कबीर साहेबके विषयमें मुक्त कण्ठसे स्वीकार करते हैं कि, कबीर साहिबका सामान्य धर्मका उपदेश था जो कि, सभी धर्मवालोंको एकसाही हितकारी हैं, उनकी युक्तियां भी सर्व धर्म विषयिणी थीं।

कबीर साहिबका प्रागट्य

संवत् १४५५ ज्येष्ठ शु० पूर्णिमा सोमवारके दिन काशीके लहर तालावमें कबीर साहिबका प्राकट्य हुआ था, महापुरुषोंके जन्मोंपर जो २ प्राकृतिक सुषुमाएँ दीखा करती हैं वे इनके जन्मपर भी कम नहीं थीं सभी प्राकृतिक दृश्य सन्त पुरुषोंको विशेषताएँ बताते हुए दीख रहे थे। उस समय जुलाहे नीमा नीरु नामक मुसलमान दम्पती आपको उस तालावसे उठा लाए एवं पुत्रकी भावनासे ओत प्रोत होकर आपका लालन पालन करने लगे, आपने बाल्यकालमें वे लोकोत्तर चरित्र दिखाये जो कि, महापुरुषोंकी बाल लीलासे स्वाभावसेही चमका करते हैं। बड़े होनेपर तात्कालिक देहलीके बादशाह सिकन्दर लोधीको दिव्य सिद्धियां दिखाने एवम् अपने नामसे कमाल कमालीको जिन्दा कर देनेके बाद आप खूब चमके। आपकी सर्व धर्म विषयक युक्तियोंने अच्छा उच्च स्थान पाया जैसे मध्यस्थकी आवश्यकता थी वैसाही हुआ आपने यावत्स्थिति सांप्रदायिक द्वेष मिटानेकी सदा चेष्टा की। आपके सर्व श्रेष्ठ शिष्यश्री धर्मदासजी थे जिनके कि, वंशधर आजकी उनके पन्थकी गुरुआई कर रहे हैं तथा कमाल कमाली आदिके वंशधर भी आपके उपदेशोंका प्रचार कर रहे हैं। आज कबीर साहिबके पन्थके अनेकोंही ग्रन्थ हैं, जिनमेंसे अनेकोंको उच्च कोटिके हिन्दी दार्शनिक साहित्यमें सँभाला जा सकता है पर ऐसा कोई भी ग्रन्थ नहीं था जिससे कि, दूसरे संप्रदायोंके आक्षेपसे कबीर पन्थकी रक्षा हो सके।

कबीर पन्थकी इस कमीको इस कबीर मन्शूरने पूरा कर दिया इसके लेखक महात्मा परमानन्दजीने इसे इस प्रौढतासे लिखा है कि, इससे कबीर दर्शनके सिद्धान्त साङ्गोपाङ्ग पुष्ट वहो जाते हैं।

कबीर मन्शूरके विषय

भी अति उत्तमतासे क्रमपूर्वक समाविष्ट किये गये हैं उनकी क्रमपंक्ति पूर्वके साथ सम्बन्ध रखती हुईही चली है। जिस तरह अन्य सांप्रदायिक ग्रन्थ अपने अपने सिद्धान्तोंके अनुसार सृष्टि रचनासे प्रारब्ध होते हैं उसी तरह इस ग्रन्थमें भी सबसे पहिले अपने ढंगका सृष्टि रचनाका निरूपण किया है, सतयुग त्रेता और द्वापरमें संसारकी आवश्यकताके अनुसार सत्य पुरुषके दिव्य सन्देश देश देशान्तरोंमें सुनाकर कबीर साहिबने सबको सुखी किया यह बात दूसरी अध्यायमें र्णनकी गई है। तीसरी अध्यायमें कबीर साहिबके कलियुगके प्रादुर्भाव हैं सबसे पिछले सिकन्दर लोधीके समयके प्राकट्यकी कथा है। व्यक्तिभावसे लेकर श्रीरामानन्दाचार्य्यजीके शिष्य होने आदिके वृत्तान्त विस्तारपूर्वक लिखे गये हैं। अध्यायों चारसे लेकर १२ तक उनकी दिव्य सिद्धियोंके दिखानेका विशद वर्णन किया है कि, किस प्रकार अपने नामसे मुरदे कमाल कमालीतकोंको पुनः जीवित करके अश्रद्धालुजनोंपर भी अपना पूरा प्रभाव प्रगट कर दिया था। इसके साथही साथ कबीर पन्थके संस्थापक धर्मदासजीके व्यालीस वंश एवम् कमाल कमाली आदि बारह पन्थोंका

सामान्य परिचय, कबीर पन्थके धार्मिक नियम उनके भक्त एवम् पौर्वात्य और पाश्चात्य उपास्य देव ऋषि मुनि धर्माचार्य, यज्ञ पुस्तक एवम् उपासना आदिका साथही साथ विशद वर्णन किया है। अध्याय तेरहमें कबीर शब्दके अर्थ उनके विषयमें ऋषीश्वरोंके वचन तथा अन्य प्रमाण दिये गये हैं। चौदह और पन्द्रह अध्यायमें कबीर साहबके लोमश आदि प्राचीनतम शिष्य, सत्ययुग त्रेता और द्वापरके हंस एवम् कलियुगके हंसोंका वर्णन विस्तारके साथ करते हुए कबीर पन्थसे भिन्न उन पन्थोंके प्रवर्तक शिष्योंका वर्णन किया है जिनके कि शिष्य आज कबीरसाहिबको अपना आद्य आचार्य नहीं मानते। १६ वें अध्यायमें प्रकृतिजय और शरणागतके धर्म आदि अनेक उपयुक्त विषय वर्णित हैं। सत्रहवें अध्यायमें बन्धनके कारण मन कर्म आदिका विचार किया है। अठारहवें अध्यायमें पुनर्जन्मका वर्णन है जो पाश्चात्य अथवा जो किताबोंवाले पुनर्जन्मको आज हिन्दुओंकी तरह नहीं मानते उन्हें उन्हींके ही, धर्म ग्रन्थोंसे समझाया गया है कि, अपने श्रद्धेय ग्रन्थोंको विचार पूर्वक देखो। ये कारण पुनर्जन्म माननेके हैं। उन्नीसवीं अध्यायका जीव वैचित्र्य भी इसीका पोषक है उसमें अनेक तरहके संस्कारी जीवोंको केवल इसी लिये दिखाया है कि, पशु आदि योनियोंमेंसे भी पूर्व जन्मकी करनीके फलसे कितना दिव्य ज्ञान दीख रहा है। बीसवें अध्यायमें कबीर साहिबके दार्शनिक सिद्धान्तको सूक्ष्म रूपसे प्रतिपादन करनेवाले आदि मंगलको कह कर सार्वधार्मिक युक्तियों और धर्म ग्रन्थोंके प्रमाणोंसे जीवहत्या और मदिरा मांसका निषेध किया गया है तथा सब धर्मोंको बताया है। इक्कीसवां अध्याय जीवके वर्णनमें ही पूरा हुआ है इसमें जीवके अच्छे बुरे स्वाभाविक उपकरण तथा औचित्य लानेके साधनोंके साथ सत्यलोककी हंसा देहका भी वर्णन किया है इसके साथ मुक्ति होनेके अनेकों उपाय भी लिखे हैं। बाईसवीं अध्यायमें संसार भरके मजहबोंका विचार है। तेईसवीं अध्यायमें विविधोपदेशके गजल तथा चौबीसवीं अध्यायमें अनेकों विषयोंका प्रश्नोत्तरके रूपमें निर्णय किया है। इस तरह कबीर मन्सूरका यह परिष्कृत अनुवाद चौबीस अध्यायोंमें पूरा होता है। इसमें किसी भी मजहबका उपकारी कोई भी विषय बाकी नहीं रह जाता सभी आजाते हैं। उनके समन्वय करनेके बाद यह कबीर दर्शनको सोपपत्तिक पूरा करता है।

सृष्टि रचना—भी इस दर्शनकी अन्य दर्शनों की तरह भिन्न प्रकारकी ही है, कबीर साहिबके हंस सत्य साकेत लोकवासी महाराजा विश्वनाथ सिंहजीदेव रीवाँ नरेशने आदि मंगलपर टीका की है, उसमें सृष्टि प्रकरण अत्यन्त सावधानीके साथ समझाया है कि, पहिले सत्यलोकवासी सत्यपुरुष भगवान् अकेलेही थे, वहांके सब निवासी साहिबके ही रूपके थे। उनके लोकका प्रकाश चैतन्याकाशमें पड़ रहा था यही समष्टि जीव है। इसपर साहिबने दया की इसे शब्दसे चैतन्य करके अपनी ओर खीचनेकी इच्छा की। समष्टिजीवमें सुरति होगई इसके पीछे उसे अनेक होनेकी इच्छा हुई, क्रमशः मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार और मैं ब्रह्म हूं यह अनुभव हुआ। उसीसे जीव भी हो गया। जो इसे सारशब्दका उपदेश दिया गया था उसका इसने परा आद्या शक्ति, अक्षर, नारायण, संकर्षण और महाविष्णु अर्थ समझा–समष्टिजीवमें जो कारण रूपा इच्छा थी जिसने कि, इसे जगतमुख किया है। दूसरी इच्छा परा आद्या शक्ति है इसीको योगमाया भी कहते हैं इन दोनोंने ही अक्षर ब्रह्म किया है पर ये दोनों इच्छाएं गुप्त हैं इन्हें कोई देख नहीं पाता। अनुभवगम्य ब्रह्म मैं हूं यह बात समष्टि जीवके श्वाससे ही उत्पन्न होती है। आठों सिद्धियां भी उसीसे उत्पन्न हुई हैं।

आद्या शक्तिने संसारको बनाकर खड़ा कर दिया वही इसकी चोटी पर बैठकर इसे प्रकाशित कर रही है, अचिन्त्य रामके प्रेमसे ओम् का प्रादुर्भाव हुआ उसीसे चारों वेद उत्पन्न हो गये योगमायाने अक्षरको नींद दी। उस समय एक अण्ड पानीपर तैरने लगा। नींद खुलने के बाद आप

उसमें प्रविष्ट हो गया इसी भगवान्‌के नाभिकमलसे ब्रह्मा उत्पन्न हुआ उसने ब्रह्माण्डकी जड़ ढूंढ डालनेका प्रयत्न किया, नारायणने इसे ओम्‌का उपदेश दिया उसीसे वेद हुए इनका जगतमुख अर्थ देखनेपर संसार बन गया। महाविष्णु या निरंजनसे ब्रह्मा विष्णु और महेश हुए । ब्रह्माण्डके प्राणी सुखके लिये प्रयत्न कर रहे हैं। पर सुखके साधनोंको बिना जाने सुख नहीं पा सकते। कबीर साहिब कहते हैं कि, फिर हमें जीवोंके उद्धारके लिये भेजा कि अपने उपदेशसे जीवोंको सुखी करो। यह आदिमंगल बीजकमें दिया हुआ है। हमने इसी ग्रन्थमें इसका अर्थ किया। इसकी तरह और भी इसी पन्थके ग्रन्थ कहते हैं।

दूसरे ग्रन्थों की—सृष्टि भी इससे ही मिलती जुलती हैं वे सत्य पुरुष से सहज, अंकुर, इच्छा, सोहम् अचिन्त्य और अक्षर पुत्र को प्रकट हुआ कहते हैं तथा आद्या भी इसी से हुई। सत्यपुरुष का छठा पुत्र अक्षर जब जलीय स्थलमें बैठा था उस समय योगमाया से उसे नींद आगई। उस समय अक्षर के ध्यान एवम् सत्य पुरुष के शब्द से एक अण्ड बनकर पानी पर तैरने लगा। उसी से निरंजन की उत्पत्ति हुई।

अण्डसे निरंजन हुआ इस विषयमें तो श्रीविश्वनाथजीका मत भेद नहीं है किन्तु वे अक्षर को ही अण्डमें प्रविष्ट हुआ मानते हैं, इसने सत्य पुरुषके पुत्र कूर्मजीसे सृष्टि रचनाका सामान लिया। आद्या और इसकी जोट होगई इससे ही त्रिगुण ब्रह्मा विष्णु और महेश उत्पन्न हुए। आद्याने अपने अंशसे सुकुमारियाँ उत्पन्न कीं, जो कि, इन तीनोंकी पत्नियाँ बनी हैं। अक्षर पुरुषने वेद दिये निरंजनने पाये उससे ब्रह्माको दिये इसने इनका यथेष्ट प्रचार किया, बाकी सब रचना अन्य दर्शनों जैसीही है। इसी अध्यायके पच्चीसवें प्रकरणमें वेदके प्राकट्यको अन्य दार्शनिकोंके साथ मिलाया है तथा निरंजनको अग्निरूप सिद्ध किया है। दूसरे लोग तो सिकन्दर लोधीके समयमेंही कबीर साहिबका प्रादुर्भाव मानते हैं पर कबीर पन्थका ऐसा मन्तव्य नहीं है। वे कबीर साहिब तथा साहिबमें अभेद देखते हुए युग २ में कबीर साहिबका विभिन्न नामोंसे होना स्वीकार करते हैं एवम् सिकन्दर लोधी के समय के प्राकट्य को सबसे बाद का स्वीकार करते हैं।

जन्मके—विषयमें भक्तमालने तो कुछ लिखाही नहीं है। दूसरे २ उनके पन्थके ग्रन्थोंमें बहुत कुछ लिखा हुआ है उसमें बीजककी विश्वनाथी टीकाका मत्त भेद है। वे रामानन्दजी महा-राजके दिव्य आशीर्वादसे एक सुपात्र विधवा ब्राह्मणीके गर्भसे प्रगट हुए बताते हैं पर काशीके लहर तालाबके किनारे नीमा नीरूको मिले। इस बातमें किसीका मतभेद नहीं है।

शेखतकीके कहनेसे सिकन्दरने आपके मारनेके अनेकों प्रयत्न किये पर किसी तरह भी उनके प्राण न लेसका वरन उनके अलौकिक चमत्कार देखकर धर्मान्धतासे निवृत्त होगया। इनके सामान्य धर्मोंके उपदेश तथा दोनोंकी समताके दिखानेसे सहृदयताका बीज बोया गया। इस बातमें किसीका भी मत्तभेद नहीं है। इस कबीर मन्शूरने इस बातको और भी आगे बढाया है इसने वेदोंकी तरह ही मूसाको तौरेत, दाऊदको जबूर, ईसाको इंजील तथा मुहम्मद साहिबको कुरानका देना कहा है एवम् इनके ढंगकी सृष्टिकी उत्पत्ति भी दिखाई है। इतना ही नहीं किन्तु यह भी सिद्ध किया है कि, नाम भेद भले हों पर गुण कर्मोंके मिलापसे इस बातका पूरा निश्चय हो जाता है कि पौर्वात्य और पाश्चात्य दोनोंही एक विष्णुकीही उपासना करते हैं।

बलि दान में भी — सबका एक मत्त दिखाया है वेद और तौरेत आदिमें उनके भ्रमका आधार दिखाकर सर्व देशी सिद्धान्तसे इनका निःशेषही दिखाया है साथही कबीरजीका भी मत्त दिखा दिया है। सबके मत्त मतान्तरोंसे यह सिद्ध करके दिखा दिया है कि बलि और कुर्बानीकी आज्ञा असली परमात्माकी तरफसे नहीं है किन्तु भावनाके बनाये हुए ईश्वरकी ओरसे हैं यह अच्छी तरहसे समझा दिया है।

मुख्य उद्देश— तो यह था कि, हिन्दू मुसलमान आदि आपसके भेद भावोंको छोड़कर एक होजांय, एक दूसरेके धार्मिक भावोंका आदर करें व्यर्थ के पाखण्डसे निवृत्त होकर सच्चे धर्म ग्रहण करें एक दूसरेके वास्तविक तत्त्वको देखें मुख्यत: वे जीवहत्यासे बड़े दुखी थे यही कारण है उनके मुहसे ऐसे शब्द निकल जाते थे कि—"उनकी वहिश्त कहाँसे होइहै साँझहि मुरगी मारे" कि जो दिन भर रोजा आदि रखकर रातको मुरगी मारते हैं उनकी बहिश्त कहाँसे हो सकेगी, इसी तरह देवी आदिके नामपर बलि करनेवाले हिन्दुओंसे कहा है कि—"सन्तो पांड़े निपुण कसाई" हे महात्माओं! यह पांड़े तो चतुर कसाई दीख रहा है। इस एकताको इस ग्रन्थने और भी आगे बढाया है जो बातें आजतक विशेष समन्वयके साथ नहीं कही गई थी इसने वे भी दिखादी है।

आजतक किसी भी कबीर पन्थी ग्रन्थने इतनी समता नहीं दिखाई थी, जो कि इसने दिखाई है। कलमेंका अर्थ करती वार बताया है कि, जब उस परमात्माको कृपालु और दयालु कहा जाता हैं तो फिर जीवहत्याकी उसकी आज्ञा नहीं हो सकती। इसी बातका हिन्दुओंकी ओर भी इशारा किया है कि जीववध मनोवृत्ति या घृणित स्वार्थोंसे है ईश्वरार्थ नहीं। इसी विषय पर पश्चिमकी चारों पुस्तकोंके मत दिखाये हैं तथा कुरानमें गोहत्याकी आज्ञाका अभाव दिखाते हुए गऊके शापसे याकूबकी दुर्दशाका वर्णन किया है।

मूर्तिपूजा— भी श्रद्धा विश्वासकी महत्ता समझाते हुए दिखाई है कि, भक्त मीराबाई भगवान् कृष्णको भोग लगाकर विषभी पीगई थी पर उसका उसपर कुछ असर न हुआ। इस विषयमें और भी कई प्रभावोत्पादक उदाहरण दिये हैं। इसी तरह अरबकी भी १ लात, २ मनात और गुर्री नामक तीन कुरैशजातिकी प्रतिष्ठित देवियोंका उदाहरण दिया है कि, मुहम्मद साहिबने जब इनको तोडा तो मन्दिरमेंसे काली २ मूर्तियाँ स्त्रियोंका रूप धारण कर रोती हुई बाहिर निकलीं, इससे सिद्ध होता है कि, मुहम्मद साहिबके पूर्वज भी मूर्तिपूजा किया करते थे, मूर्तियाँ देखनेको ही जड़सी दीखती हैं वास्तवमें नहीं हैं, नहीं तो अरबकी देवीकी मूर्तियाँ स्त्री होकर रोती हुई क्यों निकलतीं। यही नहीं किन्तु इस ग्रन्थने उन आयतोंका उल्लेख भी कर डाला है जिनसे कि मूर्तिपूजा सिद्ध होती है इस प्रकार इसने इस विषयमें भी पूर्वात्य और पाश्चात्यों तथा हिन्दू और मुसलमानोंका एकसा मन्तव्य दिखाया है इस तरह यह पुस्तक कबीर पन्थी हिन्दू तथा मुसलमान सबके लिये समानही हितकारी है।

जड़ोंकी बातचीत—के पौराणिक प्रकरणोंको देखकर लोग उनकी सत्यताके सन्देहमें हुआ करते थे ऐसेही लोगोंके लिये कबीर मन्शूरने पश्चिमकी चारों किताबोंमें भी ऐसी ही बातें दिखाई है कि, आदमके पुतला बनानेके लिये मिट्टीलेती वार भूमि रोई कि मनुष्य बनकर बड़े पाप करेंगे तथा मुझपर बड़े पाप होंगे। वह जड़ भूमिका रोना पुरानोंकी तरह इसलामी पुस्तकोंमें भी देखा जाता है इसी तरह प्यालोंका आशीर्वाद भी है।

कबीर साहिबने अपने समयमें यह आवाज उठाई थी कि सबका परमात्मा एक है उनके बीजकमें एक शब्द है कि, "दो जगदीश कहाँसे आये" दो ईश्वर कहाँसे आगये? वो सबके लिये एक है। कबीर मन्शूरने कितनी ही जगह विस्तारके साथ सिद्ध किया है कि परमात्माको माननेवालोंका परमात्मा एक है उसके यहाँ हिन्दू मुसलमान आदिका भेद भाव नहीं है सभी उसके पुत्र हैं उसकी दृष्टिमें उसकी किसी भी सन्तानको सतानेवाला अच्छा नहीं है।

हिंसा और मद्यमांसके निषेध— पर चार वेद और बड़े २ सकल ऋषि महर्षि आचार्य और कबीर साहिबका मत उद्धृत किया है कि ये सब इन कर्मोंको कुकर्म तथा नरक देनेवाले मानते हैं ये सर्वत: हेय नारकीय कर्म किसी भी मतमें ग्राह्य नहीं है यहाँ तक कि ४० दिनके

बाद इनका सेवन करनेवाला मुसलमान भी काफिर होजाता है। यह कुरान आदिसे सिद्ध कर दिया है एवम् हत्याका बराबर बदला देना पड़ेगा यह मजहबी ग्रन्थोंसे सिद्धकर दिया है।

पुनर्जन्म और जीवोंके प्रकरणोंमें अनेकोंही आश्चर्य भरी बात आई है कि, जौनपुरके ताखा ग्राममें एक कायस्थके घर साँप बाबा घासीरामका जन्म हुआ एवम् आजीवन वे घरमें मनुष्योंकी तरह सर्प होकर ही रहे तथा उनके भाई तथा भाईके बेटोंने उन्हें अपना बड़ा माना और उनके अन्त्यष्टि संस्कार मनुष्योंकेसे हुए। पूर्वके संस्कारी अनेक पशुओंमें भी मानुषी भाषा तथा विचित्र ज्ञान होता है इस बातको अनेकों उदाहरणोंसे पुष्ट किया है।

यही क्यों? प्रत्येक विषयमें मनुष्य और ज्ञानवान् संस्कारी पशुओंकी भी समतासी ही दर्शा दी है जिनके ध्यान पूर्वक देखनेसे हृदयमें यह बात अच्छी तरह आजाती है कि, मनुष्य मनुष्यही एक जैसे नहीं पशु और मनुष्य भी एक जैसे हैं केवल अज्ञानके आवरणनेही उन्हें पशु बना रखा है वास्तवमें आत्मा एक है। उसने कहीं पशुका एवम् कहीं नरका चोला पहिन रखा है सबमें सत्य पुरुषका भजन हो सकता है जिन्हें बोध है वे सब अपनी २ भाषामें उसी मालिकका नाम जपा करते हैं।

प्रत्येक विषयके भावोंके आधार पर तरह २ ललित गजल आदि दे रखे हैं जिनसे वो विषय शीघ्रही हृदयंगम हो जाता है इसके साथही साथ किसी शास्त्र वेद या पश्चिमकी पुस्तकको नहीं छोड़ा है जिनका कि कबीर पन्थी ग्रन्थोंके विषयोंके साथ मुकाबिला न किया हो। स्थल २ पर योग सांख्य न्याय वैशेषिक और वेदान्त, कुरान वाइबिल जबूर और तौरेत आदिके प्रमाण दिये हैं जिनसे सबका समन्वय सहजही में हो जाता है। मार्मिक विषयोंका विवेचन कठिन होता हुआ भी लेखन शैलीसे इतना सरल बन गया है कि कोई भी समझ ले इतने पर भी विषयानुकूल किस्सों कहानियोंकी रोचकताने सोनेमें सुगन्धि करदी है।

पन्थ— अनेक हैं उनमें नारायणदासजी, यागोदासजी, सूरतगोपालजी, टकसारी, भगवान् दासजी, सत्यनामी, कमाली, राम कबीर, प्रेम धाम जीवा और गरीबदास इन बारहोंके बारहों पन्थ कबीर पन्थके अब भी अन्तर्गतही हैं आपश्की कसम कसीमें कहीं इनकी प्रशंशा तथा कहीं कुछ और ही लिखा है। नानक साहजी, दादूरामजी, शिवनारायणजी, पानदासजी, राधास्वामी तथा घीसाजीके पन्थोंको कबीर पन्थसे निकला हुआ माना है एवम् सिक्ख ग्रन्थके संस्थापक श्रीनानक देवजीको कबीर साहिबका शिष्य सिद्ध करनेके लिये अनेकोंही प्रमाण दिये हैं। राधास्वामी मतको भी कबीर साहिबके ग्रन्थोंपर अवलंबितही सिद्ध किया है तथा यह भी इसके साथ कहा है कि इन पंथोंके शिष्य आज साहिबको महापुरुष मानते हुए भी अपने पंथके आचार्योंको उनका शिष्य नहीं मानते।

स्वामी रामानन्दजी साहिबके उन्हीं हंसोंमें थे जो कि युगारंभसे सत्य चर्य्या चलकर दिखा रहे थे आपने अनेकोंही व्यक्तियोंको सत्य पुरुषकी भक्तिका उपदेश दिया उन सबमें कबीर साहिबके मतका सबसे अधिक प्रचार हुआ। इसका एक यही कारण था कि ये स्वयम् उसी चर्य्यापर चलते हुए समान धर्मोंका उपदेश देते थे।

स्वामीजी अनन्य वैष्णव थे। साहिब स्वयम् वैष्णवोंके बानेमें रहा करते थे। कबीर मन्सूरमें स्वामीपरमानन्दजीने इसे सतोगुणी एवम् मोक्षका दाता कहा है।

जन्म स्थान—का कहीं भी खुला उल्लेख नहीं किया है फिर भी स्वामीजीके जन्म स्थान तथा रहन सहनपर यथेष्ट प्रकाश पड़ता है स्वामी परमानन्दजीने बाबा घासीरामजीके विवरणमें लिखा है कि, जौनपुरसे बारह कोश तथा मेरी जन्मभूमिसे पाँच कोश ताखा नामका गाम

है एवम् बाजीगरके विवरणमें लिखा है कि, मैं मेरे जन्म स्थान आजमगढ़में था वह मेरे विद्योपार्जनका समय था। जौनपुर और आजमगढ़ ये दो अवधके भिन्न २ जिले हैं जौनपुरसे १२ तथा अपनेसे पाँच कोश कहनेसे इनका जन्म स्थान इन दोनोंके बीच ताखा ग्रामसे पाँचकोशकी दूरीपर सिद्ध होता है। अवधवाला अवधको भी अपनी जन्म भूमि कह सकता है। इनकी शिक्षा आजमगढ़में हुई थी। सहपाठीके तहसीलदार होनेसे इनकी भी अंग्रेजीकी उच्च कोटिकी शिक्षा प्रतीत होती है। मोरके प्रकरणको देखकर इनकी एकान्त प्रियता तथा अनेक जगहोंके हाल लिखनेसे विदित होता है कि, इन्होंने खूब पर्यटन किया था तथा सेवके गायब होनेकी बातसे पता चलता है कि, धोखेसे उन्हें कबीर साहिबने दर्शन और फल भी दिया था। फीरोजपुरमें साधु होनेके पीछे आ विराजे इतनी बातका उनके ग्रन्थसे पता चल जाता है।

इनके दिलमें पन्थका सच्चा प्रेम था यही कारण है कि, इनका संग्रह संप्रदायके समर्थनसे सब तरह पुष्ट था। इन्होंने किसी भी धर्माचारीकी स्वतः विवेचना नहीं की है किन्तु दोनों तरहकी आलोचनाओंका संग्रहकर दिया हैं। इन्होंने सब धर्मोंके तत्त्वोंमें शरणागतिकोही मुख्य बताया है तथा अखिल धर्मोके व्यक्तियोंको इसीको अपना लेनेका उपदेश दिया है। यद्यपि इन्हें खण्डनकी ओर विशेष प्रेम नहीं था पर विचार स्वातंत्र्यमें इन्हें किसी बातके कहनेमें कोई भयभी प्रतीत नहीं हुआ है, यदि सिद्धान्तकी दृष्टिसे देखा जाय तो।

खण्डन—भी उसी तरह प्रयोजनीय है जैसे कि, मण्डन है। सत् सिद्धान्तका प्रतिपादन बिना असत्यके खण्डन किये नहीं हो सकता। इसकी दो युक्तियां हैं। एक तो यह है कि, सबके ऐसे सत् सिद्धान्तोंको संमेलन पूर्वक सबके सामने रखना जिससे उसके प्रतिद्वन्दी असत् सिद्धान्त आपही खण्डित हो जायें। दूसरी रीति स्वयम् मुखसे कह कर करनेकी है जैसा की, आज कलके व्यक्ति प्रयोगमें लाते हैं। इस ग्रन्थमें दोनोंही शैलियोंका प्रयोग किया है। पूर्वीय और पश्चिमीय माने हुए सिद्धान्तोंको उन्हींके धर्म ग्रन्थों से खण्डित किया गया है तथा सत् सिद्धान्तोंके कबीर साहिबके वचनोंके साथ सबके सामने रखा है।

इस कार्यमें कहीं २ ग्रन्थ लेखकने जहाँ दूसरेके किये खण्डन जैसेके जैसे उद्धृत किये हैं वे उस लेखकोंके विमर्शाविमर्शोको लेकरही आये हैं अतः उनके अविमर्शके कार्य्य इस ग्रन्थमें भी वैसेही रह गये थे जो कि इसकी सार्वजनीकतामें कुछ दूसराही रूप करते थे। अनुवादकी दृष्टिमें जहाँ ऐसी बातें आई हैं उनसे ग्रन्थको जितना भी हो सका हे निर्मुक्त करनेकी चेष्टा की है तथा विषम विषयोंपर टिप्पणी देकर जितनाभी हो सका है इसे सरल बनानेका भी प्रयत्न है।

प्रमाण तो—इस ग्रन्थमें प्रायः सभी सम्प्रदायोंके धर्म ग्रन्थोंके आये हैं जिनके कि नाम हम यहीं दिखाते हैं—चारों वेद छःओं दर्शन, मुण्डकोपनिषद्, माण्डूक, भारत, गीता, मनुआदिक स्मृतियाँ, श्रीमद्भागवत, देवी भागवत, कालिका पुराण, वसिष्ठ पुराण, शिवतंत्र और योग साधनाके ग्रन्थ इत्यादिकोंके तो हिन्दू धर्मशास्त्रोंके प्रमाण आये हैं। ईसाकी इंजील, मूसाकी तौरेत, दाऊदकी जबूर तथा मुहम्मद साबहकी कुरानके भी अनेकों प्रमाण आये हैं इसके सिवा नवियोंकी पुस्तक तथा और भी कई इस्लामकी पुस्तकोंका उद्धरण दिया है। इसके सिवा सेखशादी आदि और भी अनेकों महात्माओंके वचन उद्धृत किये हैं।

कबीर पन्थके ग्रन्थ—बीजक कबीर कसोटी, अनुराग सागर, अम्बुसागर, ज्ञान सागर, कमाल बोध, कबीर चरित्र बोध, श्वास गुंजार, कबीरवानी, कर्मबोध, जैनधर्म बोध, जीवधर्मबोध, अमरसिंह बोध, वीरसिंहबोध, जगजीवन बोध, गरुडबोध, -हनुमान बोध, मुहम्मद बोध, सुलतानबोध

निरंजनबोध, आगम निगम बोध, ज्ञानप्रकाश, सन्तोष बोध, ज्ञानबोध आदि सभी कबीर पन्थके ग्रन्थोंके प्रमाण आये हैं तथा इनके सारासारकी विवेचना भी की गई है। इन्हीं ग्रन्थोंके आधार-पर वीरसिंह ववेले आदि अनन्य शिष्योंके भी जीवन लिखे हैं। तारीख आईनानुमा, इंडियन इम्पायर, नानक साहिबकी जन्म साखी, सारवचन, सैर आलम् फिजा, एवम् और भी कई एक इतिहास और जीवों संबन्धी पाश्चात्य विद्वानोंकी पुस्तकोंका संग्रह है। इसके अनुवाद तथा संशो-धन एवम् परिष्कारके समय और भी बहुतसे ग्रन्थोंकी अवश्यकता पड़ी थी। यह ग्रन्थ पौने दो साल पहिले छपना शुरू हुआ था। कितनेही दिनोंतक अनवरत परिश्रम करनेपर प्रकाशित हुआ है। इसका सारा श्रेय विश्व विख्यात श्रीवेंकटेश्वर प्रेसके सत्त्वाधिकारी एवम् **खेमराज श्रीकृष्णदास** नामके प्रसिद्ध फर्मके मालिक सनातन धर्म भूषण राय साहेब **श्रीरंगनाथजी श्रीनि-वासजी** को ही है जिनकी प्रेरणासे इसका प्रकाशन हुआ। यही क्यों? आपने बहुतसा धन व्यय करके कबीर पन्थके बड़े २ ग्रन्थोंका संग्रह कर संशुद्ध कराकर प्रकाशित किया है।

इस ग्रन्थमें जिन कबीर पन्थी ग्रन्थोंका प्रमाण दिया गया है वे सब श्रीवेंकटेश्वर प्रेसमें प्रकाशित हैं। उनके सिवा और भी अनेकों ग्रंथ इस प्रेससे प्रकाशित हैं। यदि थोड़े शब्दोंमें कहें तो यह कह सकते कि, सनातन धर्मके ग्रन्थोंकी तरह कबीर पन्थके सांप्रदायिक सभी ग्रन्थोंके सौभाग्य प्राप्त करनेका श्रेय भी कबीर साहिबने आपको ही सौंपा है। इस पन्थका कोई भी ऐसा प्राचीन प्रति-ष्ठित ग्रन्थ नहीं है जिसको कि खोज करके आपने प्रकाशित न किया हो। प्रायः सभी आपकी प्रेरणासे **श्रीवेंकटेश्वर प्रेससे** प्रकाशित हुए हैं। इस ग्रन्थ पर कबीर पन्थका अविचल अनुराग देखकर आपने "कबीराश्रमाचार्य्य परमार्थी वैद्य भारत पथिक स्वामी श्री युगलानन्द विहारीजी" से परिष्कृत हिन्दी अनुवाद कराकर प्रकाशित करना चाहा पर स्वामी पन्थकी अन्य सेवाओंमें व्यग्र रहनेके कारण दोसौ बहत्तर पृष्ठ तकही संपादन कर सके। इसके बाद मुझे प्रेरणा हुई। यह उक्त श्रीमानोंकी प्रेरणाकाही फल है जो इस ग्रन्थको इस रूपमें जनताके सामने रख रहा हूँ।

जब मैं सन्त महात्मा सत्य पुरुष पुरुषोत्तमके सच्चे प्यारे महाभागवतोंकी दिव्य तात्पर्य्य-मयी भव्यवाणियोंकी ओर ध्यान देता हूँ तो अपने अन्दर उनके जाननेकी कोई भी विशेषता नहीं पाता। यह उन्हींका दिया उत्साह एवम् उन्हींसे प्राप्त हुई धारणाका फल है जो उनके वचनोंपर विशेष विचार करता हुआ उनकेही अनुसार यह कर सका हूँ इसमें मेरी स्वयम् अपने आपकी कोई भी विशेषता नहीं है।

मानव जन्म गलतियोंके कारण हैं मनुष्यका हृदय गलतियोंसे भरा पड़ा है। जीवके सब साधन दोषसे ग्रसे हुए हैं। फिर इसके कामही निर्दोष हों यह आशा कभी नहीं की जा सकती पर एक निःपक्षपातिनी शुद्ध सनातनी, कबीर साहिब पर हुई श्रद्धाकी कृति समझ दोषोंको क्षमा करते हुए इसके सार पदार्थका ग्रहण करेंगे यही कबीर पन्थी भारतके सभी सांप्रदायी लोगोंसे सतत अभिलाषा करता हूं।

आपका विनीत;
सर्वतन्त्र स्वतंत्र रिचर्स स्कालर,
पं. माधवाचार्य्य.

कबीरमन्शूर – विषयानुक्रमणिका

★

विषय.	पृष्ठ.

विषय.	पृष्ठ.

इति कबीर मन्शूर विषयानुक्रमणिका समाप्त।

सत्यनाम

कबीर मन्शूर

★

प्रारंभिक उपोद्घात

इस ग्रन्थका नाम "कबीर मन्शूर" उर्दूमें लिखा है, इसी नामसे हिन्दीमें भी प्रसिद्ध हो गया है।

मन्शूर शब्द अर्बी भाषाका है। "नशर" का बहुवचन है ।। "नशर" शब्दका अर्थ है ज्योति, रोशनी, प्रकाश इत्यादि तो मन्शूरका अर्थ हुआ।
"ज्योतियां, रोशनियाँ, प्रकाशें" इत्यादि इस हिसाबसे कबीरमन्शूरका अर्थ हुआ, कबीरकी ज्योतियाँ, कबीरके प्रकाश इत्यादि, यदि इसका हिन्दी अनुवाद किया जाय तो "कबीरज्योति" अथवा "कबीर प्रकाश" नाम रखना चाहिये, किन्तु विशेष नामका अर्थ नहीं किया जाता है, जिस नामसे जो प्रसिद्ध होता है, उसी नामसे पुकारा जाता है। इसीलिये इस हिंदी अनुवादमें भी इसका नाम कबीरमन्शूरही रखा है। दूसरी बात है कि, पहिली आवृत्तिमें यह इसी नामसे छप चुका है और यह नाम लोगोंमें इतना प्रसिद्ध हो गया है कि, अब इसका दूसरा नाम रखा जाना ठीक नहीं है।

स्वामी श्रीपरमानन्दजी साहबको ऐसे नामसे बडा प्रेम था आपने सबसे पहले ग्रंथ बनाया है उसका नाम "कबीरभानुप्रकाश" रक्खा है। कबीर मन्शूर भी उसी भावको लिये हुए है। अन्तमें आपने कबीरकौमुदी लिखी है। कौमुदीका अर्थ भी चांदनीका ही है। भेद इतनाही है, उपर्युक्त दोनों ग्रंथ सूर्यके समान उग्रतेजको लिये हुए हैं और कौमुदी चन्द्रमाकी चन्द्रिकाके समान शीतलयुक्त प्रकाशका द्योतक है।

ग्रन्थकर्ताकी विज्ञप्ति

स्वामी परमानंदजी साहबने कबीर मन्शूर ग्रन्थ लिखकर सबसे पहले सम्वत् १९३७ के आश्विन (कुवार) मास मुताबिक सन ईस्वी १८८० महीना सितम्बरमें पूर्ण किया था और मार्च १८८१ ई. में वह ग्रंथ छपकर तय्यार हो गया, उस आवृत्तिके सब ग्रंथ आपने अधिकारियोंको बिना मूल्य दे दिया था। आपने ग्रंथ बनाया छपवाया और बाँट भी दिया। किन्तु, आपके अंदर भरे हुए कबीरपंथके खजाने इतने अधिक हो गये कि, यदि उसमेंसे खर्च न किया-जाय तो, सोमके धनके समान होजावे और दूसरे पंजाबके सिक्खोंने कुछ आक्षेप भी किये तब आपने दूसरा ग्रंथ सं. १९४२ बिक्रमीमें "तालीम कबीरकलियुग" लिखा, जो दूसरी बार कबीरमन्शूर की संशोधित और वर्द्धित आवृत्ति कही जा सकती है। इतने पर भी आपको संतोष नहीं हुआ, तब आपने फिरसे तीसरी वार उसे हाथमें लिया और उसे बढाकर बडे कबीरमन्शूरके रूपमें तय्यार किया जो सम्वत् १९४४ वैशाखसुदी (२५-४-२७) में छपकर तय्यार हो गया। जो कबीरमन्शूर पहली आवृत्तिमें ३५० पृष्ठोंमें छपकर पूरा हो गया था इस बार १५०० सौ से भी अधिक पृष्ठोंमें समाप्त हुआ। इतनेहीसे समाप्ति नहीं हुई, आपने रसाले तनासुख, कबीरगुणसागर आदि अनेक छोटे मोटे ग्रन्थ बनाये और कितने शब्द और पदोंको संग्रह कर उनपर व्याख्या लिखे। अन्तमें आपने "कबीरकौमुदी" नामका कबीरमन्शूरके समानही बृहत्ग्रन्थ लिखा है जो आपके लिये और ग्रंथोंके समानही अमुद्रित पडा है।

स्वामी परमानन्दजीकी रचना

स्वामी परमानंदजी साहबने कबीरभानुप्रकाश, कबीरमन्शूर, तालीम कबीरकलियुग, रसाले तनासुख, कबीरगुणसागर, कबीरकौमुदी आदि कई ग्रंथ और बहुतसे शब्द और पदोंपर व्याख्या लिखे हैं, जिनमें से बहुतोंका संग्रह मेरे कबीरदर्शन पुस्तकालयमें रक्खा हुआ है।

कबीर भानुप्रकाश की रचनाका समय

कबीर भानु प्रकाशके अन्तमें लिखा है :—

चौपाई

सतगुरुकी दाया मय पूरी । लिख्यो ग्रन्थ जो भूतल भूरी ॥
रच्यो जो निजहिय हुआ हुलासा । ग्रंन्थ कबीर भानु परगासा ॥

पण्डित जन सो विनय हमारी । भूल चूक जो कतहुँ निहारी ।।
टूटे अक्षर जहँ लखि पाई । सो सुधारिके पढ़ैं बनाई ।।
सम्वत उन्नीस सौ पैंतीसा । शुक्ला यकादशी तिथि दीसा ।।
मंगल अरु ज्येष्ठ महीना । तादिन ग्रन्थ समापति कीना ।।
मही पंजाब देशके माँही । शहर फिरोजपुर इक आही ।।
नगर मुक्तसर तहँ यक अहई । दोदा ग्राम निकट तेहि कहई ।।
ताहि ग्राममें जब आसीना । भजन ध्यान प्रभुके लौलीना ।।
ग्रन्थ रचन गुरु आज्ञा पाई । लिख रच धर्म कथा समुदाई ।।
जेते अक्षर लिखे बनाई । जो कोइ घटि बढि ताहि मिलाई ।।
सो गुरु सन्मुख लेखा भरि है । भिन्न भेद जो कोऊ करिहै ।।

इति

क़बीर मन्शूर (छोटा)

इसी प्रकार सम्वत् १९३७ के आश्विन मु० सेप्टेम्बर १९८० ई. को पहला कबीरमन्शूर जिसको छोटा कबीरमन्शूरके नामसे कहा जाता है । स्वामी परमानन्दजीने समाप्त किया था । आप स्वतः लिखते हैं कि, इस किताबको आठ भाग बीस अध्यायोंमें विभाजित करके कबीरमन्शूर नाम रखा ।

पहले भागके ४ अध्याय हैं १ पहले अध्यायमें स्वसम्वेदके अनुसार जगतकी उत्पत्तिका वर्णन है । २ दूसरे अध्याय में--कालपुरुषके पंथोंका वर्णन है ।

३ तीसरे अध्यायमें---कबीर साहबके पृथ्वीपर आकर अपना पंथ प्रचलित करनेका वर्णन है । ४ चौथे अध्यायमें---कबीरसाहबकी परीक्षा और अन्तर्धान होनेका वर्णन है ।

दूसरे भागके सात अध्याय हैं १ पहले अध्यायमें---कबीरसाहबके नामोंका वर्णन है । २ दूसरे अध्यायमें---कबीरसाहबके अद्वितीय होनेका वर्णन है । ३ तीसरे अध्यायमें--कबीरसाहबके पंथके शुद्ध निर्दोष होनेका वर्णन है । ४ चौथे अध्यायमें--कबीरसाहबके लोक और हंसोंका वर्णन है । ५ पांचवें अध्यायमें--कबीरसाहबकी सिद्धिशक्तिका वर्णन है । ६ ठे अध्यायमें-- कबीरसाहबकी धार्मिक शिक्षाका वर्णन है । ७ सातवें अध्यायमें--कबीरसाहबके पंथके नियमोंका वर्णन है ।

तीसरे भागमें केवल एकही अध्याय है। जिसमें विषयवासना और मनके कृत्योंका वर्णन है।

चौथे भागमें भी एकही अध्याय है--जिसमें जीवोंके चौरासी लाख योनियें भ्रमण करने अर्थात् आवागमनका वर्णन है।

पाँचवें भागमें एकही अध्याय है जिसमें प्रत्येक मजहबों (पंथों) पर व्याख्यान (लेक्चर) है।

छठे भागमें चार अध्याय हैं। १ पहले अध्यायमें--जगतके मिथ्या होनेका वर्णन है। २ दूसरे अध्यायमें--संसारसे घृणा और वैराग्यका वर्णन है। ३ तीसरे अध्यायमें--बुद्धि विचार, विवेक, एकेईश्वरवाद तथा मालिक पर भरोसा (विश्वास) का वर्णन है। ४ चौथे अध्यायमें--मनन और निदिध्यासन का वर्णन है।

सातवें भागमें एकही अध्याय है जिसमें शिष्य और गुरुके प्रश्नोत्तर हैं। इसमें शिष्यमुखके १२५ प्रश्न और गुरुमुखसे उनका उत्तर वर्णित है।

आठवें भाग में भी एक ही अध्याय है जिसमें हानिकारक निषेध वस्तुओं का वर्णन, उनसे हानि उनके त्याग से लाभ आदि का वर्णन करके, मानवधर्मके नियम (पटल) को लिखा है अन्तमें कबीरमन्शूरका उपसंहार, ग्रन्थसमाप्ति की प्रार्थना और समाप्ति की तिथि सन सम्वत् आदि का वर्णन है--यह ग्रन्थ मार्च १८८१ ई. में छापा गया था--कोहिनूर प्रेस लाहोर में छपा था।

तालीम कबीर कलियुग

स्वामी परमानन्दजी साहब अपने तीसरे ग्रन्थ "तालीमकबीरकलियुग" की भूमिकामें इस प्रकार लिखते हैं---

इस किताब "तालीम कबीरकलियुग" लिखनेकी यह वजह है कि, इस किताबके पहले इस फकीरने दो किताबें लिखी, १ एक का नाम कबीरभानुप्रकाश, २ दूसरेका नाम कबीरमन्शूर। इन दोनों किताबोंमें फकीरने नानक शाह साहबको कबीर साहबका चेला लिखा, इस बातपर वे लोग जो इन दिनोंमें आपको नानक साहबके पैरू (अनुयायी) समझते हैं, नाराज हुए, बावजूदेकि (यद्यपि) फकीरने उनको समझाया कि, मैं अपनी तरफसे यह बात नहीं समझता बल्कि जो कुछ कबीरसाहब और नानक साहबके तहरीर (लिखे हुए) व

तकरीर (कहे हुए) हैं, उसके मुताबिक (अनुसार) मैं लिखा और कहता हूं। बावजूद कहने और समझानेके उन लोगोंका नोकैजू (शत्रुता) दूर न हुआ और सन १८८५ में फिरोजपुरके चन्द सिक्खोंने मेरे साथ कुछ फसाद करना चाहा तब मैंने उन लोगोंसे कहा कि, मैं तो नानक साहब और कबीर साहबको एक रूपही जानता हूँ, अगर आप नहीं राजी हों तो आइन्देको मैं न लिखूंगा। बावजूदे कि, उन लोगोंका मेरे साथ मुपाहसा और मजादला (झगडा और लडाई) इस बातपर न था कि, मैंनें नानक साहबको कबीरसाहबका चेला क्यों लिखा, बल्कि और बातपर तकरार था, लेकिन अन्दरूनी (भीतरी) बोग्भ (ईर्षा-की) इस बातका भी था। इस वास्ते फकीरने कबीर साहबके पांच हजार बरसकी तारीख लिखा और बनाम "तालीमकबीर कलियुग" मशहूर किया; ताकि हर खास व आमको इसकी असली हकीकत (यथार्थता) से आगाही हो। कबीर साहबके तीन युगोंका अहवाल मैंने साफ छोड दिया, फकत इब्तदाय (आरम्भ) कलियुगसे लिखा।

उपर्युक्त ग्रन्थकी समाप्तिपर आप लिखते हैं "खतम (समाप्त) हुई किताब "तालीमकबीरकलियुग" सतगुरुकी मेहरबानीसे। बमुकाम शहर फिरोजपुर ता० २२ अक्टोम्बर सन् १८८५ ई० बमुताबिक सम्वत १९४२ विक्रमी आश्विन सुदी १३ बरोज चहारशम्बा (बुध)। इसके पश्चात्-

बडे कबीरमन्शूर

की बारी आती है-आप उसकी दीबाइचा (प्रस्तावना) में इस प्रकार लिखते हैं-

दूसरी बार कबीरमन्शूरको तरमीम (सुधार) व तरतीब (योजना) के सबब (कारण) का ब्यान।

यह किताब कबीरमन्शूर पहले एक बार मतबा (छापखाना) कोहनूर लाहौरमें छप चुकी है। और इस किताबके पढनेके शायक (अनुरागी) बहुत लोग थे, लेकिन मुसन्निफ (ग्रंथकर्ता) किताबने, इस किताबका रिवाज आम (सर्वसाधारणमें) देना मुनासिब न समझा। और अपने खास (विशेष) लोग जहबहमम (अपने पंथके) को मुफ्त दिया। वजह (कारण) इसको यह थी कि, बाज बाज लोग स्वसम्बदस वाकफियत (जानकारी) रखते हैं, अकसर (प्रायः) लोग बेखबर (अज्ञात) हैं और जो लोग वाकिफ (जानकार) हैं,

उनको स्वसम्वेदकी तालीम (शिक्षा) के सिवाय (अतिरिक्त)और दूसरा कुछ पसन्दीदः नहीं है।

अगर कोई मेरी साबिक (प्रथम) के छापेकी किताब देखकर मुझपर किसी बातका तअनः (तानी) एवाह (अथवा) एतराज (तर्क) करे तो मैं हक्क तआला (सत्य पुरुष—सच्चे मालिक) के हुजूर उसका दामनगीर हूँगा. क्योंकि, मैंने अपनी सारी (कुल-सब) साबिक (पहलेकी) मिहनत और भर (द्रव्य-रुपया) लागत बरबाद करके अज सरेनौ (फिरसे) इसको दुरुस्त (सुधार) किया है।

इस दुनियामें चार वेद और चार किताबको तो हर कोई जानता है, लेकिन (किंतु) स्वसम्वेदके बारे (विषय) में कहीं बाजपुर्स (पूछताछ) नहीं है, इसलिये चन्द (कई) अशखास (लोग) मुअतरिज हुए (तर्क-किया-पूछा)

और दूसरी वजह यह है कि, जब यह किताब छपी, उस वक्त मुसन्निफ किताब सहीह और दुरुस्त करनेकेलिये मौजूद न था; मुसन्निफकी गैरहाजि-रीमें किताब छपी , इस सबबसे लोगोंने बेसमझी करके, चंद अलफाज (शब्द) बदल डाले, और मजहबी (साम्प्रदायिक) बातोंमें अलफाजका बदलना बडा कुसूर (दोष) है। और मुकाबला करनेवालेकी गफलत (भूल) से गलतियाँ (अशुद्धियाँ) वगैरही भी बहुत रह गयी। इस वास्ते सलाहवक्त (समयोचित) समझकर किताबका रिवाज देना (प्रकाशित) करना मुल्तवी रक्खा था। अब दूसरी बार इसको फिर तरमीम और तरतीब करके और बहुत मजामीन (विषयों) की ईजादी (वृद्धि) के साथ और खूब हवालेजात (प्रमाण सब) दिये और दुरस्त (सुधार) कर खास शायकीन (अनुरागियों) राह नजात (मोक्ष मार्ग) व मुजमआए खुशखुल्क व नेकआदात (सदाचारियों-सुशीलों) व मुनसिफ मिजाज (न्यायी) के वास्ते इस किताबको मरौवज करना और वास्ते फायदा (लाभ) खास लोगोंके कि, जिनका दिल (मन-हृदय-अन्त:करण) तअसुब (सांप्रदायिक पक्षपात) व तरफदारीसे दूर व तमीज (विवेक) इन-सानी (मानवी) से भरपूर है वाजिब और लाजिम (उचित) जागता हूँ।

सदहा शुक्र सलतनत इंग्लिशियाका है कि, बादशाह और हुक्काम दोनों दुवशा (त्यागी साधुओं) और आजिजों (दीनों) पर ऐसी हमेशा (सदा) हिफाजत (रक्षा) और नजर नवाजिश (दया दृष्टि) की रखते है कि, इस

अंगरेजी अहद (राज्य) में किसी मिस्कीन (गरीब) फकरिपर कोई जुल्म व जोर नहीं कर सकता और वे लोग खुशीके साथ अपना मकसद (आशय) जाहिर कर सकते हैं। सच और झूठ सबका इजहार और इनसाफ होता है। कोई किसीपर किसी तरहका जब बतअदी (जो जुल्म) नहीं कर सकता। अब उन जालिमो (अत्याचारियों) की सलतनत (राज्य) जमीनसे उठगयी, जबकि मिस्कीन और बेगुनाह दुरवेशोंको कद और कत्ल और तरह तरहकी स्यासत (शासन) करते थे, उस वक्त फुकरा अपनी रास्ती (सच्चाई) का इजहार (प्रकाश) नहीं कर सकते थे। अब बादशाह और हुकामोंकी मद्दे नजर देखकर इस फकीरने भी दिलेरीकी और जो इल्म इसमें था, और है, सीना (हृदय) से निकालकर सफीना (कागज) पर, बमुलाहिजे नाजरीनके रखकर उमीदवार इन्साफका है।"

इस बारभी आपने कबीरमन्शूरको आठही भागोंमें विभक्त किया है किंतु पहली आवृत्तिकी अपेक्षा, विषयमें वृद्धि और सुधारके अतिरिक्त क्रममें भी उलट पुलट किया है। वह इस प्रकार है–

प्रथम भागमें तीन अध्याय और अनेक प्रकरण हैं।

दूसरे भाग में दो अध्याय और सौ के लगभग प्रकरण हैं।

तीसरे भागमें भी दोही अध्याय और कई प्रकरण हैं।

चौथे भागमें आवागमनका विषय है जो कई अध्याय और अनेक प्रकरणोंमें वर्णित है।

पाँचवें भागमें – पशुओंकी बुद्धिमानीका वर्णन है. जिसमें छः अध्याय और प्रत्येक अध्यायोंमें अनेक प्रकरण हैं।

छठे भागमें तीन अध्याय और अनेक प्रकरणोंमें मद्यमांसादि निषेध पदार्थों का वर्णन है। इस छठे भागका विषय प्रथमके छोटे कबीरमन्शूरमें आठवें भागमें था सो अब छठे भागमें आगया है।

सातवें भागमें पांच अध्याय और प्रत्येक अध्यायमें अनेक प्रकरण हैं। इस भागमें जो विषय वर्णित है सो पहले कबीरमन्शूरके छठे भागमें था।

आठवें भागमें गुरु शिष्यके सम्वादमें अनेक जानने योग्य विषय और उपदेशोंका वर्णन है। जिसमें अनेक अध्याय और प्रकरण हैं।

इस प्रबंधसे बडे कबीरमन्शूरको समाप्तकर अन्तमें आप उसकी समाप्तिकी तिथि लिखते हुए इस प्रकार लिखते हैं–

तारीख खातमा ।

शुक्र[1] बेहद[2] परम गुरु गोविंद । की सरंजाम[3] नुसख[4]ए दिलबन्द ॥
करम[6] व फज्ल[7] उसपै सतगुरुका । जो समझकर पढे सुने यह पन्द[8] ॥
इससे हीरी[9] न कोइ शर्बत और । आवहैवा[10] न शोरब मिश[11]री कन्द ॥
पाव पहचान जो कोइ मुर्शिद[12]को । हो दफा[13] सब जहा[14]न का दुख दन्द ॥
कर अमल[15] गर[16] निगर[17] न चश्म[18] अपने।राज[19]महरिम[20] नहोतोबर[21]मन[22]खन्द[23]
ईस्वी सन अठारह सौ अस्सी । उन्नीस सौ पैंतीस विक्रमा सने हिन्द ॥
महे[24] सितम्बर व हिन्दवी[25] आस्विन । खतम[26] तारीख[27] नुसखए[28] चारूमचन्द[29]
मैं उसीका हूँ खादमान[29] खादिम । जिसके दरगह[30] न पहुँचे कोई परिन्द[31] ॥
आजिज[32] व तखलुस[33] आजिज । नाम जिसका है दास परमानन्द ॥

पहले (छोटे) कबीरमन्शूरमें भी समाप्तिकी यही तारीख लिखी हुई है, क्योंकि असलमें कबीरमन्शूर ग्रन्थ वही है किंतु इसमें, सुधारा वधारा करनेके कारण, अंतमें आपको, उसकी तिथि तारीख भी, जाननेकी जरूरत पडी, इसलिये आप लिखते हैं —

राकि साधु परमानन्ददासजी कबीर पंथी मुकीम शहर फिरोजपुर मुल्क पंजाब किस्मत लाहौर, तारीख तरमीम और तरतीब दूसरीबार मोवरखे २५ अपरेल सन १८८७ ई० व मुताबिक सम्वत १९४४ विक्रमी बैशाख सुदी २ सोमवार ।

इसके पश्चात यह ग्रंथ सन् १८९१ ई. माह सितम्बर व मुताबिक भादो सम्वत् १९४८ विक्रमी में छपकर तैयार हुआ ।

अंति टाइटिल पेज (मुखपत्र) पर आप एक विज्ञप्ति, इस प्रकार लिखते हैं । वाजह हो कि, जो साहब दानाय दोरान इस किताब कबीरमंशूरको पढ़ें, अपने दिलमें खूब गौर और फिक्र करें कि, कबीर साहब कौन हैं ? कि, जिनका यह दिल और दीमाग है कि, दावा खुदाईका करते हैं और आपमें सारा जलाल लायजाल दिखाते हैं और आपका कौल बमोजिब फेलके है । कौल व फेल जाहिर व बातिन एकसा है सरेम फर्क नहीं ।

जिस हालतमें कि, सारे वेद व स्वसम्वेद और रिषिशरान हर से जमान भी जाहिर करते हैं कि, कबीर साहब खुद कादिर मुतलक खालिक आलम है,

---

१ धन्यवाद २ अनन्त ३ पुरा ४ किताब, ग्रन्थ ५ मनलगन, मनचाही, सुन्दर ६ कृपा ७ श्रेष्ठता ८ नसीहत, उपदेश ९ मीठा १० अमृत ११ पीनेकी वस्तु १२ गुरु १३ नाश १४ संसार, जगत. १५ कर्म व्यवहार. १६ यदि १७ देखे १८ आँख १९ भेद २० जानकार २१ ऊपर २२ मेरे २३ हँसो २४ महीना २५ हिन्दी २६ समाप्ति २७ तिथि २८ पूर्ण चन्दके समान सुंदर २९ दासानुदास ३० दरबार ३१ पक्षी, उडनेवाला भाव है बडे बडे बुद्धिमान् बुद्धि दौ डानेवाले ३२ दीन ३३ उपनाम.

तो फिर यह फकीर दरबारे इजहार उन अकवालके पुरे तकसीर क्यों तसव्वर जिया जावे । इस वास्ते वाहियात इतराजोंसे यह मुआफ फरमाया जावे ।

वह कबीर सारे जहानका गुरु पीर अपनी बुजुर्गी और जलाल ख़ु आप जाहिर करता है और जब चाहता है छुपा लेता है, यह इनसान जई फुल ब्यान क्या लिखे और क्या कहे, फिरिश्तोंमें भी किसीको यह कुदरत नहीं कि, उसकी उलूहियत और रबूबियतमें दम मारके, उसके जलाल बेमिसाल कुल आलमनें नशार और बाहर बयाने बशर है ।

इस दुनियाके आदमजाद बेखबर हैं कि, ब्रह्म क्या है, जीव क्या और माया क्या है ? खुदा क्या और बंदा क्या है ? खुदा परस्ती क्या और बुत परस्ती क्या ? सो सब इस किताबमें खोल खोल कर दिखला दिया है और खूब साबित कर दिया है कि, कुल आलम मायापरस्त है और जो माया परस्त है वही बुतपरस्त है । खुदापरस्तीकी खबर उसीको होती है जिसको सतगुरु कबीर साहब बतलाता और सिखलाता है और जो कोई खुदा परस्तीको जानता है वह तोहमातसे अलग होता है । खुदा परस्त हवस हैवानी और तनासुखसे बिलकुल मुबर्रा होता है ।

राकिम खाकसार—

साधु परमानन्द, मुसन्निफ.

इस प्रकारसे कबीरमन्शूरके आदि अन्तमें लिखा है ।

पाठकोंको यह जानना चाहिये कि, स्वामी परमानन्दजीने बारम्बार अपने ग्रन्थोंमें लिखा है कि, साम्प्रदायिक ग्रन्थोंमें सांकेतिक शब्दोंको बदलना या ग्रंथ-कर्ताके विरुद्ध उसमें सुधार करना पाप है । "जो कोई मेरे इस ग्रंथमें रद्दबदल करेगा तो मालिकके दरबारमें मैं उसका दामनगीर हूँगा । फिर ऐसी दशामें जब कि, ग्रंथकर्ता स्वतः अपने भले या बुरे लिखे हुएको पूरा पूरा ज्योंका त्यों रखवाया चाहता है, तो अनुवादकको कोई अधिकार नहीं है कि, इसमें कमी वेशी या रद्द बदल करे हाँ आवश्यकता पडनेपर परस्तावना या स्थान स्थान २ की टिप्पणियों अपनी समझ बूझके अनुसार भाव अवश्य प्रकट किये जा सकते हैं, सो संतगुरुकी कृपासे शक्तिभर किया जायगा ।

इतने शब्द लिखनेकी आवश्यकता क्यों पडी ? इसका कारण परस्तावनामे देखनेसे ज्ञात होगा ।

सर्व संतमहंतोंका कृपाकांक्षी —

कबीराश्रमाचार्य

श्रीयुगलानन्द बिहारी,

अनुवादक.

सत्यनाम

सत्यसुकृत, आदि अदली, अजर, अचिंत, पुरुष, मुनीन्द्र, करुणामय कबीर, सुरतियोगसंतायन, धनीधर्म्मदास, चारगुरु तथा वंशनकी दया । मुक्तामनिनाम[१], चूरामणिनाम[२], सुदर्शननाम, कुलपतिना[३]म, प्रमोधगुरुबा[४]लापीर, कमलना[५]म, अमोल[६] नाम, सुरतिस्नेहीना[७]म, हक्कना[८]म, पाकनाम[९], प्रगट नाम[१०], धीरजनाम[११], पं. श्री उग्रना[१२]म साहब, पं० श्री दया[१३] नाम साहबकी दया । वंशब्यालीसकी दया कबीर साहबके अधिकारी वंश– प्रतापी वर्तमान आचार्य्य श्री १०८ महंत काशीदासजीसाहब की दया । सर्व संत महंतन. की दया ।

श्रुति

मुण्डक उपनिषत् प्रथम प्रपाठक

द्वे विद्ये वेदितव्य इति ह स्म यद्ब्रह्मविदो वदन्ति परा चैवापरा च ॥४॥
तत्रापरा ऋग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदोऽथर्ववेदः शिक्षा कल्पो व्याकरणं निरुक्तं छन्दों ज्योतिषमिति । अथ परा यया तदक्षरमधिगम्यते ॥५॥
अथर्वणवेद० मु० उ० ॥ १ ॥

अर्थ–विद्या दो भांतिकी हैं जिसको ब्रह्मवेत्ता लोग परा और अपरा कहते हैं । दोनोंमेंसे ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, और शिक्षा, कल्प, व्याकरण निरुक्त, छन्द, ज्योतिष आदि सब मिलके अपरा विद्या (परसम्वेद) कहलाती हैं और जिससे अविनाशी ब्रह्मजाना जाता है उसे परा विद्या (स्वसम्वेद) कहते हैं ।

अथ कबीरमन्शूर प्रारम्भ

मंगलाचरण[1]

धन सतगुरु सतपुरुषतू, सत्यनाम इस्थीर।
सतसुकृत मुनीन्द्र तुही, करुणा पूर्ण कबीर ॥ १ ॥
तेरे गुण गावत सदा, सिद्ध साधु मति धीर।
हंस परमहंस सब गावहीं सत्य धाम सुखथीर ॥ २ ॥
तेरिहि कृपा कटाक्षते, कटे काल जंजाल।
बार बार तोहि नमन है, होहु कृपालु दयाल ॥ ३ ॥
हौं अज्ञान जानू नहीं, तेरे गुण की गाथ।
तुहि सतगुरु कृपाकरी, मोहि लखाऊ पाथ ॥ ४ ॥
विनु दाया सतगुरु तेरी, नाहि मोर निरवाह।
अपनी और निहारहू, लगे सु भवको थाह ॥ ५ ॥
माथ नवा तू लेखनी, लिख सतगुरु गुणगाथ।
पूरन पुरुष कबीर है, सब नाथनको नाथ ॥ ६ ॥
विनु पारख नहिं पाइये, सब देवनको देव।
कृपा करे सतगुरु सही, सहजें पावे भेव ॥ ७ ॥

जापर कृपा सतगुरुकी होई। पूरन पुरुषको जाने सोई ॥
पूरन पुरुष सु आपु कबीरा। करि कृपा मेटे सब पीरा ॥ १ ॥
सब महँ पूरण अदली आपा। करि अदल मेटै सब तापा ॥
काल गबको तोडनहारा। टूटे दिलको जोडनहारा ॥ २ ॥

---

१ यह ग्रंथके आदिमें गद्यपद्यात्मक उर्दू मंगलाचरणका भावानुवाद है।

जाके दर पर माथ नवावें । सिद्ध औलिया भूप सब जावें ॥
आपे पुरुष सो आप कबीरा । अगम्य अपार गहिर गंभीरा ॥ ३ ॥
एकै पुरुष रूप दोउ आही । उहवाँ पुरुष कबीर जग माहीं ॥
सत्यपुरुष आज्ञा अस होई । जाहु कबीर जग पहुँचो सोई ॥ ४ ॥
काल निरंजन ठाठ बहु ठाटे । जगत जीव न पावें बाटे ।
भूले जीव भून वह खावे । लाख जीव नित प्रति सतावे ॥ ५ ॥
ऐसा जाल निरंजन लाया । एको जीव न मो पुर आया ॥
अब ज्ञानी जाओ संसारा । सुकृत जीवन करो उबारा ॥ ६ ॥
अस पुरुष जब आज्ञा दीन्हा । तब ज्ञानी रुख पृथ्वी कीन्हा ॥
सोई सतगुरु सत्यकबीरा । आज्ञा पाइ आये भव तीरा ॥ ७ ॥

सोई ज्ञानी पुरुष है, सतगुरु सत्यकबीर ॥
रज वीरज ते पैदा नहीं, स्वाँसा नहीं शरीर ॥

कर्म जाल काटे गुरु देवा । आप न बन्धे करमके भेवा ॥
ज्ञान ज्योति वह अर्पहि आपा । गुरू सरूप सबघट महँ व्यापा ॥ १ ॥
करि पारख जोइ कोइ जाने । अलख ज्योति वह परत पिछाने ॥
गुप्त रूप वह जगमें डोले । शब्द रूप वह घट घटबोले ॥ २ ॥
बिना काम वह रूप अनूपा । सम दृष्टि वह रंक औ भूपा ॥
काल अग्नि महँ सबको दाहे । बिनु सतगुरु नहि होय निवाहे ॥ ३ ॥
देह विदेह वह आप सरूपा । जीव हेत धर देह अनूपा ॥
हंस होय सोई पाहचाने । अगम अगोचर किहि विधिजाने ॥ ४ ॥
जब जाने तब उघरे भागा । दोऊ लोक महँ परम सुभागा ॥
जेते इष्ट जगत महँ जानो । सब कर इष्ट ताहि पहिचानो ॥ ५ ॥
अहै विनह देह दिखलावे । बिनु दया न पार कोई पावे ॥
बड अचरजको करै बखाना । किहि विधि जाने जीव जहाना ॥ ६ ॥
आवत सरधा गुरू जगावे । बाहर भीतर एक दिखावे ॥
देखतबुद्धि थकित है तबहीं । दरशे रूप पुरुषकर जबहीं ॥ ७ ॥

भवभय भंजन दुखहरन, अम्मर करन शरीर ।
आदि युगादी आप है, अदली अदल कबीर ॥

सत्यपुरुष औ सत्य कबीरा । दुई रूप दरसाये मतिधीरा ॥
इष्टरूप सतपुरुषहि जाना । गुरु रूप सति कबीर पिछाना ॥ १ ॥

एकै रूप दरसै दुई भावा। जीव उबारन युक्ति बनावा॥
ऐसी युक्ति न कबीर बनावत। नगत जीव न मारग पावत॥ २॥
किहि विधि कहूँ कहा नहिं जाई। आपे पुरुष सब माँहि रहाई॥
घट घट महँ आप विराजे। आपे ब्रह्म जगत ह्वै छाजे॥ ३॥
आपे आतम परमातम रूपा। जीव शीव सब आप अनूपा॥
द्वैत भाव न दरसे कोई। आपे पुरुष कबीर है सोई॥ ४॥
आपे गुरु शिष्य पुनि आपै। एकै भाव जाप हुई जापै॥
सिद्ध साधु औलिया जेते। बिन जाने जग भटके तेते॥ ५॥
करि कृपा जब आप लखावे। दे पारख जग भरम मिटावे॥
काल जाल तबहीं टल जाई। निकटहिं पावे पुरुष गुसाई॥ ६॥
सत्य सत्य मैं कहूँ पुकारा। परमानंद अस वचन उचारा॥
युगल आनन्द पाया तबहीं। उर्दू ते हिन्दी किया जबहीं॥ ७॥

कबीर मन्शूर ग्रन्थको, आदि अरम्भन कीन।
परमानन्द स्वामी रचे, उर्दू माहिं परवीन॥
ताकी हिन्दी मैं करूँ, संत महंत आदेश।
जो उर्दू जानत नहीं, पढि गुनि मिटै क्लेश॥

उसी मङ्गला चरणका अनुवाद दूसरे छन्द में

कर वन्दना सद्गुरु चरण को आज ऐ तू लेखनी ?।
लिखनी उन्ही की है कथा यह बात इतनी देखनी॥
व्यापक सभीमें एकसा वह न्यायकारी पूर्ण है।
अभिमानियोंका मान करता शीघ्र क्षणमें चूर्ण है॥
सादृश्यता उसकी नहीं कोई कहीं भी कर सके।
याचकोंकी पूर्ण इच्छा कौन दूजा कर सके ?॥
दीनसे सम्राट तक तेरे हि भिक्षुक हैं सभी।
तेरी दया बिन ज्ञानको कोई न पायेगा कभी॥
आज्ञा पुरुषकी पायके सतलोकसे तुम आगये।
आनन्द दायक मोद फिर सबके हृदय बिच छागये॥
पापियोंके पारका बीडा उठाया आपने।
सतलोकमें पहुँचा दिया फिर ज्ञान देकर आपने॥
लक्ष जीवोंको जहाँपर काल खाता भूनकर।
नित्य लीला थी यही जन सत्य पथका खूनकर॥
उद्धार आपने उनका आकर किया है लोकमें।
उनको बचाया शीघ्र ही जो थे पडेहो शोकमें॥

वह आपही कब्बीर हैं गुरु श्रेष्ठ सबसे ठीकही ।
उपदेश है प्रभु आपका पाषाण दृढता लीकही ।।
माता पिता बिन जगतमें स्वयमेव आये आप हैं ।
ज्योती अलखसे हो प्रगट सबके मिटाये ताप हैं ।।
देही नहीं पर देह धारण की जगतमें आपने ।
दाया दिखाई लोकमें कैसी जनोंपर आपने ।।
आपके स्वसम्वेदका कुछ ज्ञान जिसने पालिया ।
त्रयलोककी सम्पत्ति सकल मानो उसीने पालिया ।।
पहचान जिसने आपकी शुभ ज्ञान पूर्वक कर लिया ।
शक्तिका भण्डार मानों पूर्ण दिलमें भरलिया ।।
सब दुःख दारुण शीघ्रही उसके हृदयसे छट गये ।
विज्ञानके गुरु श्रोतसे मानों सुधासे पट गये ।।
तर्कयुत सन्देह जब छाने लगे बहुजग्तमें ।
सत् ज्ञानकी ज्योती जगाई पूर्ण अपने भक्तमें ।।
दाया अलौकिक जो दिखाई आपने निज दास पर ।
बाहर व भीतर आपही भरपूर देखा आस धर ।।
गर न देते ज्ञान यह अज्ञान तम छाता बडा ।
मुक्ति पाता जीव नहि यम जाल पासामें जडा ।।
माता पिता प्रभु आप हैं अरु ताप नाशक आप हैं ।
प्रत्येक जनमें बस रहे हरते बिकट सन्ताप हैं ।।
सत्पुरुष ही प्रभु आप हैं यह ज्ञान योगी जानते ।
संत जन श्रद्धा सहित इसको सदाही मानते ।।
सिद्धि साधक और जितना साधुवृन्द महान है ।
केवल कृपापर आपकी गौरव सभीका मान है ।।
महिमा प्रभो हे ! आपकी मैं कौन वरणन कर सकूं ।
अति तुच्छ सेवक हूँ महा सब ज्ञान कैसे कर सकूं ।।
शक्ति मनुजमें है कहाँ गुणगान प्रभु तब कर सकै ।
महिमा अमित अगाध है तब पार क्योंकर कर सके ।।
केवल हमारी प्रेमयुत स्वीकार करिये वन्दना ।
अरु काटिये जंजालमय यह दीर्घ यमकी फन्दना ।।

अनुवादक—
साहित्यालङ्कार हंसदास शास्त्री
(सम्पादक कबीरचन्द्रोदय)

प्रथम आवृत्तिका मङ्गलाचरण

अनन्त धन्यवाद है उस महान् परमात्माको, जिसके गुणोंकी परमहंस गाकर, अपना कार्य सुधारते और मोक्षपदको प्राप्त करते हैं। उसकी दया अनन्त है, समस्त स्तुति और प्रार्थनाएँ उसीके निमित्त हैं।

शेर

नवा सीस अपना तु ऐ लेखनी । कि गुण तुझसे लिखने हैं जगदीश्वरी ।।
जो पूरन पुरुष सब जगह वरतमान । हृदयमें उन्हींका कराना है ज्ञान ।।
दया करके देगा जिसे वह समझ । तोफिर हरमेंहर उसको लेगानिरख ।।
कहीं भी कोई तेरा जोडा नहीं । तेरे न्यायसे है भरी सब जमीं ।।
घमंडीका तू दर्प करता है चूर्ण । हृदय भग्नकी आहत करता है पूर्ण ।।
तेरे द्वारके हैं भिखारी सभी । शाहंशाह राजा गदाओ वली ।।
पुरुषने कहा जाओ जगमें कबीर । मेरी आज्ञा लेके तुम ए गँभीर ।।
मेरे लोक पापी है आया नहीं । जहाँमें कोई मुक्ति पाया नहीं ।।
पुरुषकाल खाता उन्हें भूनकर । वह हर रोज लख जीवका खूनकर ।।
बचा लीजिए जो है शुद्धात्मा । जो स्वीकार करले मेरी आज्ञा ।।
वो है आदमी सारे गुरुका व पीर । जिसे कहते हैं सत्यसाहब कबीर ।।
न उसकी है माता है न कोई पिता । अलख ज्योतिसे है वह पैदा हुवा ।।
यहाँ आके उपदेश उसने किया । भटकतोंको राह उसने बतला दिया ।।
चले जाते थे जीव जो आगरपर । बचाया उन्हें आपने आनकर ।।
दया आगई लोगोंके शोकसे । चले आपले हुक्म सतलोकसे ।।
सकल सृष्टिका है वही स्वामि एक । यही माने सब छोड कर अपनी टेक ।।
नहीं देह पर देह परगट हुआ । जो ज्ञानी हैं वे मनमेंले यह जमा ।।
उसे जानते दूर हो दुःख द्वंद । प्रशंसामें उसके जबाँ सबकी बंद ।।
कोई आदमी जो बडा बुद्धिमान । बढा करके बुद्धी लिया उसको जान ।।
नहीं देह पर देह जिसकी प्रकट । तअज्जुबकी बातें करूँ निष्कपट ।।
जब इस ध्यानमें गोता खाने लगा । दयालू गुरू तब जगाने लगा ।।
जो देखा तो बाहर व भीतर वही । सबी वस्तुमें है वही आपही ।।
मिहरबाँ दो सूरतको दिखलाया यों । गुरूहो मनुष्योंको सिखलाया यों ।।

---

१ यह अनुवाद मूलका ठीक नहीं है क्योंकि मूलमें लिखा है 'जो आवे नजर इल्म की दूरबी' इसका अर्थ है जो ज्ञानकी दृष्टिसे देखा जाता है। इसी प्रकार पहले अनुवादमें मूलके विरुद्ध अगणित अशुद्धियां हैं।

अगर वह दो सूरत दिखाता नहीं । तो इनसान घर अपना पाता नहीं ।।
न हरगिज कोई छूटता कालसे । न वे उसके बचता था जंजालसे ।।
यह क्यों कर कहूँ तुमसे मैं माजरा । स्वयं सतपुरुष आदमीमें बसा ।।
जहाँ देखो वह आपही आप है । वही सबकी माता वही बाप है ।।
स्वयम् सतपुरुष बना है कबीर । जिसे जानते सब हैं शाहो फ़क़ीर ।।
जती सिद्ध साधु औलिया बह गये । जिसे उसने रक्खा सोई रह गये ।।

प्रथम भाग

पहिला अध्याय

प्रथम प्रकरण

सत्यपुरुषका वर्णन

सत्यपुरुष यथार्थ जगत कर्ता है, वह पवित्र है—वह न कभी गर्भमें आता है न रज वीर्यसे उत्पन्न होता है । वह विषयवासनासे रहित एकरस और पूर्ण है, सब संसार उसीसे प्रकट होता और उसीके आश्रय स्थित रहता है, वही यथार्थमें सबका कर्ता धर्ता है. उसका किसीसे राग और द्वेष नहीं है, वह पूर्ण और निर्विकार है—उसीका गुणानुवाद सब योगी यती करते हैं तथा उसीके निमित्त कुल स्तुति तथा प्रशंसाएँ हैं, उसका पूर्ण वर्णन कोई कर नहीं सकता, उसकी अनुग्रह बिना किसीकी मुक्ति नहीं होती, वह सर्वशक्तिमान् है. यदि उसकी इच्छा हो तो समस्त संसारकी एक पलमें मुक्ति कर दे, वेदकी तो सामर्थ ही क्या है स्वसंवेद भी उसका गुण गाते गाते मौनावलम्बी हो जाता है और कहता है, कि उसमें यह बल नहीं कि, वह उसका वर्णन कर सके और जिन मुनियोंने उसे पहचाना उनका भी यही कथन है कि, किसी ऋषि, मुनि और सिद्ध साधु इत्यादिमें इतनी योग्यता नहीं है कि, वह उसकी व्याख्या कर सके. इस प्रकार जब समस्त वेद और मुनियोंकी जिह्वा उसकी प्रशंसामें बंद है तब ऐसी अवस्थामें मुझ अल्पबुद्धि, अल्पज्ञ, तुच्छ मनुष्यकी क्या सामर्थ्य है कि, उसका गुण गा सके, मैं इतनाही कहना उचित समझता हूँ कि, हे प्रभु ! तेरी महिमा तूही जान सकता है, मुझ दोषी पापी बिचारे पर दया कर ।

दूसरा प्रकरण

सत्यपुरुषके प्रतिनिधि (रसूल)

जिन सत्य पुरुषका विवरण ऊपर किया गया, उनके (पाकरसूल पवित्र अनागत वक्ता(कबीरसाहब हैं, और उस सत्य पुरुषके प्रतिनिधिमें सब गुण वही हैं जो स्वतःसत्य पुरुषमें हैं, यह और वह एकही है इसमें और उसमें बाल बराबर भी विभिन्नता नहीं है। ज्ञानी लोग दिव्यदृष्टिसे देखते हैं कि, यही पवित्र सतपुरुषका प्रतिनिधि समस्त संसारका सच्चा गुरु है और सब अगुवाओं का अग्रगण्य है समस्त पथदर्शकोंको पथ दिखाता है। वह स्त्रीके रज तथा पुरुषके वीर्यसे कदापि उत्पन्न नहीं होता, वह स्वेच्छासे मानुषिकशरीरमें प्रकट होकर मनुष्योंको मुक्ति प्रदान करता है–उसकी आज्ञा सर्व सृष्टिपर है, उसने कई बेर कहा है कि, यदि उसकी इच्छा हो तो वह समस्त संसारको मुक्ति दे दे और उसने समस्त स्वसंवेदमें कहा है कि, मैंही स्वयं सत्पुरुष हूँ, यहाँ वहाँ मैं ही हूँ, दूसरा कोई नहीं–मैं ही स्वयं सत्यपुरुष और मैं ही स्वयं अपना प्रतिनिधि आप हूँ।

सांसारिक जीवोंके उद्धारके निमित्त मैं दो नामोंसे प्रख्यात होता हूँ मैं स्वत : निजात्मस्वरूपमें स्थित हूँ तथा अन्य सब अनात्म हैं,

जब सत्यपुरुषकी आज्ञा होती है, तब सत्य कबीर पृथ्वीपर प्रकट होते हैं। आप अपनी इच्छानुसार बालक, युवा वा वृद्धके रूप धारण कर विचरते हैं। न आपका कोई विशेष वेष है, न कोई विशेष रूप है और न आपका कोई विशेष नाम है। आपके नाम अनन्त हैं–पर चारों युगमें आपके चार नाम विशेष रूपसे प्रसिद्ध होते हैं। पहले पहल जब संसार प्रकट होता है उस समय आप पृथ्वीपर आते और मनुष्योंको उपदेश करते हैं, तब आप उस समय अर्थात सत्ययुगमें सत्य-स्वकृतके नामसे विख्यात होते हैं, उसी स्वकृत तथा सत्यसुकृतजीकी प्रार्थना स्तुति पांचों वेद और समस्त ऋषि मुनिगण करते हैं और उसकी दया से परमपद को प्राप्त होते हैं। जब दूसरा त्रेतायुग आरंभ होता है तब आप मुनीन्द्रके नामसे प्रसिद्ध होते हैं और द्वापरयुगमें आप करुणामय ऋषि कहलाते हैं और जब द्वापर व्यतीत होके कलियुग आरम्भ होता है तब आप, सत्यकबीर, कबीर साहब, शेख कबीर और सैयद अहमद कबीरके नामसे सुप्रसिद्ध होते हैं और अपना पंथ प्रकट कर और करोड़ों व्यक्तियोंको परमधाम पहुँचाते हैं। पहले तीन युगोंमें आपका पंथ विशेष

---

१ रसूल शब्दका अर्थ है भेजा हुआ। सत्यपुरुषने सत्यकबीरको, जीवोंको चेताने के लिये भेजा, इसलिये रसूल लिखा और कबीर सत्यपुरुषके स्थानापन्न जगतमें है इसलिये प्रतिनिधि।

प्रचलित नहीं होता, थोडे लोग उद्धार पाते हैं, परन्तु इस कलियुगमें इस धर्मका विशेष आन्दोलन होगा, विशेषकर जब कलियुग पाँच सहस्र और पांचसौ वर्ष बीत जायँगे, तब उस समयमें पृथ्वीके यावत् मनुष्य इस पंथको ग्रहण करेंगे । जब तक वह समय न आवेगा तबतक यह पंथ धीरे २ चलेगा, कभी न्यून और कभी अधिक होता रहेगा और जब वह समय आपहुँचेगा तब समस्त संसारको मुक्त करनेकी आज्ञा आवेगी और कबीर साहबकी कृपा कटाक्षसे समस्त मनुष्योंका अन्तःकरण शुद्ध हो जावेगा और सब पापोंसे अलग हो कर और सुकृत करनेकी ओर उद्यत होंगे और प्रत्येक घरोंमें सत्यनामकी पुकार होगी, सन्त महन्त ठौर ठौर फिर फिरके लोगोंको सत्यपुरुषकी भक्तिका उपदेश देंगे और सब मनुष्योंके हृदय पवित्र होकर उस भक्तिको ग्रहण करेंगे तब कालपुरुषको पहचानके उससे दूर भागेंगे ।

तीसरा प्रकरण

स्वसम्वेदके प्राकट्यका वृत्तान्त ।

प्रथम सत्यपुरुष अकेला था, उसका न कोई साथी और न चेला था । जब उसने जगत् प्रकट करना चाहा तब उसने प्रथम ब्रह्मसृष्टि अर्थात् अपनी सन्तानों को प्रकट किया. उन सब सन्तानोंमें ज्ञानीजी अर्थात् अपनी सन्तानोंको प्रकट किया. उन सब सन्तानोंमें ज्ञानीजी अर्थात् कबीर साहब सबसे श्रेष्ठ हैं, अनेक बार कबीर साहबने स्वतः कहा है कि, वह जो सबसे ज्येष्ठ पुरुष कहलाता है स्वयं सत्यपुरुष है—अर्थात् मैं स्वयम् सत्य पुरुष हूँ, जिसे इस बातपर श्रद्धा है वह दूसरी ओर तनिक भी ध्यान नहीं देता और स्वयं कबीर साहबहीको सत्यपुरुष मानता है और जिसे इस बातका विश्वास नहीं है वह उन्हें सत्य पुरुषका भेजा हुआ मानता है । जब जैसा जिसका विश्वास होता है वैसाही उसका फल होता है । सो जब ब्रह्मसृष्टि उत्पन्न हुई तब कबीर साहब द्वारा ब्रह्मसृष्टिको स्वसंवेद मिला, और वह स्वसम्वेद कबीर साहबकी वाणी है । यह स्वसंवेद निष्कलंक तथा निर्दोष ब्रह्मसृष्टिमें प्रचलित हुआ । फिर सर्वशक्तिमानने जीवसृष्टिको उत्पन्न किया । ब्रह्म सृष्टि और जीवसृष्टि अर्थात ब्रह्मकी रचना और जीवकी रचना अत्यंत पवित्र हैं । जैसे वे पवित्र तथा निर्दोष हैं वैसेही स्वसंवेद निर्मल तथा निष्कलंक है । इस स्वसंवेदमें किसी प्रकारकी अनुचित बात नहीं है अनुचित बातका उसमें चिह्नतक नहीं है यह स्वसंवेद अनन्त तथा असीम है । स्वसंवेद और उसकी

वाणीको जो गिनती किया चाहे--वह समस्त पृथ्वीके पत्तोंकी गणना करे--अर्थात् पृथ्वीपरके वृक्षोंकी इतनी पत्तियाँ हैं और गङ्गाकी रेतमें इतने अणु कि, उनकी गिनती नहीं हो सकती है, ऐसाही असीम अनन्त स्वसंवेद है। जो उसकी गणना करनेका ध्यान करे वह विक्षिप्त है।

चौथा प्रकरण

ब्रह्मसृष्टि का वर्णन

सत्पुरुषने जब सृष्टिके उत्पन्न करनेकी ओर ध्यान दिया तब पहले छः पुत्र प्रकट किये--१ सहज, २ अंकूर, ३ इच्छा, ४ सोहं, ५ अचिन्त और ६ अक्षर। यह छः पुत्र बड़े दयालु और प्राणीमात्रके निमित्त मुक्ति मार्ग दिखलानेवाले प्रकट हुए, जो सदैव सत्यपुरुषकी स्तुति करते रहते हैं। जब इन छः पुत्रोंको सत्यपुरुष प्रकट कर चुका तब उसने विचार किया कि, ये छः ब्रह्म दयालु और सब जीवोंको निर्भय कर देनेवाले प्रकट हुए हैं--पर भविष्यमें मनुष्य बहुत निर्लज्ज और निर्भय होकर, काम क्रोध लोभादिकोही, अपना ध्येय समझकर, सत्यपुरुषकी भक्तिसे विमुख होंगे और सुकृतकी ओर ध्यान न देंगे। यह विचार कर सत्पुरुषने सातवें पुत्र अपने तेजसे प्रगट किया, यही अत्यंत बलवान् कालपुरुष सर्व जीवोंको दुःख-दायी हुआ। इसी प्रकार कहीं सात पुत्र, कहीं आठ पुत्र कहा है और कहीं सोलह पुत्र भी कहा है। ये सब ब्रह्मसृष्टिके अन्तर्गत हैं और कहीं ब्रह्म-कहीं हंस--द्वीप द्वीपान्तरोंपर अधिकृत कर दिये हैं। इस प्रकार सत्यपुरुषने अपने सब पुत्रोंको स्थान २ पर राज्य तथा प्रभुत्व देदिया--वे सब अपने २ द्वीपों और लोकोंमें राज्य करते हैं। पर ये सात पुत्र ऐसे हैं जिनकी पृथ्वी से लेकर सत्यपुरुषके लोकपर्यंत बराबर उनकी राहकी डोरी लगी हुई है--और जितने ब्रह्म भिन्न २ लोकों और द्वीपोंमें राज्य तथा प्रभुत्व भोगते हैं उनका वृत्तान्त स्वसंवेनमें ढूंढ़ने तथा उसके पाठ करनेपर प्रगट होगा। ये ब्रह्मसृष्टिके अधिकारी कभी बंधनमें नहीं आते केवल मायासृष्टिके लोगोंको बन्धन और कालका भय है। स्वसंवेदमें सृष्टिकी, उत्पत्तिके बहुतभेद हैं--यहां थोडासा लिखा गया है।

पाँचवां प्रकरण

काल पुरुषके प्राकट्यका वर्णन

अक्षर जो सत्य पुरुषका छठा पुत्र था, वह जहां बैठा था उस स्थानपर सारा जलहीजल था प्रत्येक स्थान जलसे परिपूर्ण था (देखो ग्रन्थ कबीरवाणी)

उस समय अक्षर ब्रह्म निद्राके वशीभूत हुआ अक्षरके ध्यान और सत्यपुरुषके शब्दसे एक अण्डा उत्पन्न हुआ वह अण्डा जलपर उतराता फिरता था । जब अक्षरकी नींद टूटी तब उसने अपने सामने जलके ऊपर तैरता हुआ एक अण्डा देखा और उस अण्डेके ऊपर एक वृत्तान्त लिखा गया पाया और वह वृत्तान्त सत्य पुरुषकी ओर से लिखा गया था, कि "हमने एक पुत्र भेजा है जो तुम्हारी बराबरी करेगा वह जहांतक आवे उसको आने देना, तीनलोक भवसागरका वह राज्य करेगा. सत्तरह असंख्य चौकडी युगतक उसके राज्यकी अवधि है-सो वह जब सत्तरह असंख्य चौकडी युग राज्य और भवसागरपर शासनका ठेका पूरा कर लेगा. तब वह हमारे समीप चला आवेगा. तदुपरान्त तुम्हारे शासन और अधिकारका समय आयेगा, जब तुम्हारा समय आवेगा तब सब मनुष्य मुक्त हो जावेंगे" इतना वृत्तान्त उस अण्डेके ऊपर लिखा हुआ था सो सब अक्षरने पढ लिया ।जब अक्षरने वह पढ़लिया और जानलिया तब अक्षरके सामनेही उसके देखते२ वह अण्डा फूटा और उसमेंसे अत्यंत प्रबल कालपुरुष उत्पन्न हुआ तब अक्षरने उसको निरंजन कहकर पुकारा. इसी कारण उस कालपुरुषका नाम निरंजन पडा । (देखो उसका वृत्तान्त कबीरसाहब, ग्रन्थ कबीरवाणीमें लिखते हैं) ।

उसी अण्डेकी सूचना ऋग्वेदके असर्वोपनिषद्में लिखी है "जलके ऊपर अंडेका एक आकार प्रगट हुआ वह आकार स्थिर था फिर उस अण्डेमें मुँहके स्थान एक छिद्र प्रगट हुआ और उस मुँहसे अग्नि देवता उत्पन्न हुए, फिर नेत्रके स्थान दो छिद्र प्रगट हुए, इसी प्रकार सब इन्द्रियाँ प्रगट होगयी-" इसी अण्डेके विषयमें मनुसंहिताके पहले अध्यायमें लिखा है, देखो :—

"तदण्डमभवद्धैमं सहस्रांशुसमप्रभम् ।
तस्मिञ्जज्ञे स्वयं ब्रह्मा सर्वलोकपितामहः ॥" (मनु. अ. १ श्लो. ९)

उसी अण्डेसे ब्रह्माजी उत्पन्न हुए, जो समस्त संसारके पिता और समस्त पिताओंके पिता हैं । यही बडा ब्रह्मा है और इसी मायावीकी माया समस्त संसार है.

फिर उसी अण्डेका उल्लेख तौरेतमें उत्पत्तिकी किताबमें है कि, सबसे पहले जल था और उस जलपर खुदाकी रूह कबूतरके सदृश तैरती फिरती थी-

इसीका विवरण जबूरमें है कि, खुदावन्द जलोपर गरजता है.

उसी अण्डेका समाचार समावेदमें है कि, एक अंडेके दो भाग हुए, आधेसे

१ देखो परिशिष्ट प्रथमभाग प्रथम अध्यायको ।

पृथ्वी हुई और आधेसे आकाश, हुआ; वेही दोनों स्त्री पुरुष हुए, और समस्त संसारमें फैल गये.

उसी अण्डेका समाचार योहन्ना इञ्जीलमें प्रगट करता है, यही अण्डा समस्त संसारका सृष्टिकर्त्ता तथा स्वामी है, वही शब्द है उसे शब्द कहो वा वाणी कहो--यही अंडा आदिमें प्रगट हुआ.

यही प्रथम ब्रह्म वा ब्रह्मा माना गया है।

कबीर साहबने कहा है कि, यह कालपुरुष सत्यपुरुषकी क्रोधाग्निके भागसे उत्पन्न हुआ इससे यह पूर्णतया अग्नि है। यही कुल जगतको भस्म करनेवाली आग है, और उसमें अहंकार बहुत है इसके शरीरको सत्यपुरुषने विषय वासना द्वारा निर्मित किया है इसलिये यह शारीरिक भोग वृत्तियाँ और राज्य प्रभुत्व तथा अन्यान्य सांसारिक कामनाओंसे परिपूर्ण है, इसके गृह सतपुरुषने ऐसेही बनाये हैं। तीन लोकमें जितने जीवधारी हैं सो सब उसीकी संतति हैं और इसी का प्रभाव तथा विष समस्त देहधारियोंमें प्रवेशित हुआ है। यह अनेक नामोंसे इस संसारमें विख्यात हुआ है। इसका सबसे पहला नाम तो निरंजन है, काल, कैल, अंकार, ओङ्कार, निरंकार, निर्गुण, ब्रह्म, ब्रह्मा, धर्मराज, खुदा, अल्ला, करीम, ब्रह्म, अद्वैत, केशव, नारायण, हरि, हर, विश्वम्भर, वासुदेव, जगदीश, जगन्नाथ, जगत्पति, राजेश्वर, ईश, परमेश्वर, विश्वनाथ, खालिक, रब, रब्बिल आलमीन, हक, इत्यादि अनन्त नाम इस कालपुरुषके हैं और वेदों तथा पुराणोंमें सब उसीके नाम हैं और समस्त भूमण्डलमें उसी जगदीश्वरकी श्रेष्ठता और वंदना पूजा कही है और इसीकी आज्ञापालनमें और पूजनमें समस्त संसार संलग्न है और इसी अग्निकी पूजन वंदन हो रही है, उस परमेश्वरका मुँह अग्नि है इसीलिये जो कुछ उसके नामसे आगमें डाला जाता है सो सब उसीको पहुँचता है। बलिप्रदान और महाबलिप्रदान सब इसी परमेश्वरके निमित्त हैं और यही परमेश्वर तीन लोकमें पूजा जाता है इस भवसागरमें इसीका राज्य और अधिकार है सब प्राणी उसीके अधीन हैं और उसीका नाम जपते हैं।

छठाँ प्रकरण

कालपुरुषके तप करके तीनोंलोकका राज्य पानेका वर्णन

इच्छाओंसे आकर्षित हुआ यह कालपुरुष, एक चरणसे खडा होके तप करने में तत्पर हुआ और सत्तर युगों पर्यन्त बराबर एकही पगसे खडा होके सत्य पुरुषका

ध्यान करता रहा । तब सत्यपुरुष दयालु होके बोले कि, हे पुत्र ! माँग ! तू क्या वर माँगता है ? जो कुछ तू माँगेगा मैं तुझे प्रदान करूँगा । सत्यपुरुषने दयालु होके ऐसा कहा--तब निरंजनने विनय करके कहा कि, हे प्रभु ! यदि आप दयालु हुए हैं तो मुझे तीनोंलोक भवसागरका राज्य प्रदान कीजिये, जिससे मैं तीनलोक भवसागरकी रचना करूँ और सृष्टि करके रचनाको अपने अधीन करूँ और सारे भवसागरमें मेरा राज्य रहे । (देखो ग्रन्थ कबीरवाणीमें[1]) ।

यह प्रार्थना निरञ्जनकी स्वीकृत हुई और सत्यपुरुषने कहा, हे पुत्र ! जो कुछ तूने मांगा, मैंने तुझे प्रदान किया, पर सृष्टिकी उत्पत्तिका कुल सामान कूर्मजीके पास है । तू उनके पास जा और सृष्टिकी उत्पत्तिका कुल सामान उनसे माँग । जब तू कूर्मजीके समीप जाना तो उनसे अत्यंत विनीत भावसे मिलना और दंडवत् प्रणाम करके अत्यंत नम्रतासे रचनाका सामान माँगना और जब कूर्मजी हर्षपूर्वक देवें तब तुम वह सामान लेके तीनलोक भवसागरकी रचना करना । यह बात सुनके निरञ्जनको अत्यंत हर्ष हुआ और वह आनन्दसे मग्न हो गया कि, अब तो सत्यपुरुषने तीनलोक भवसागरका राज्य हमको प्रदान कर दिया । भाँति २ के हर्षमय ध्यान उसके मनमें उत्पन्न हो रहे थे और वह सोचता था कि, अब तो मैं तीनोंलोकोंका राजा हुआ हमारे बराबर दूसरा और कौन है । इसी प्रकार मग्न निरञ्जन पाताललोकको चला ।

सातवाँ प्रकरण

निरञ्जनका कूर्मके पास जाकर तीनों लोक की रचनाकी सामग्री माँगनेका वर्णन

इसी प्रसन्नता तथा उत्सुकताकी अवस्थामें निरञ्जन कूर्मजीके पास पहुँचा और देखा कि, कूर्मजीका शरीर अट्ठानवे करोड योजनका है । इस कूर्मजी[2] को सत्पुरुष ने रचनाकी कुल सामग्री प्रदान करके भण्डारी बनाया है । रचना की समस्त सामग्री आपहीके पास उपस्थित रहती है, जब निरञ्जन कूर्मजीके पास पहुँचा, तो अपने घमंडमें आके कूर्मजीको दंडवत् प्रणाम कुछ न किया और यों कहा कि, हे कूर्मजी ! मुझको सत्यपुरुषने तीनोंलोक भवसागरका राज्य दिया है और कहा है कि, कूर्मजीसे रचनाका सब सामान लो । इस कारण मैं तुम्हारे पास आया हूँ कि, तुम मुझको सृष्टिकी सामग्री दो । यदि तुम मुझे न दोगे तो मैं तुमको

---

१. देखो परिशिष्ट प्रथम भाग प्रथम अध्याय । २. यह कूर्मजी कछुएके आकार के हैं उनके सोलह शिर तथा चौंसठ हाथ हैं यह सत्यपुरुष के पुत्र पाताल में रहते हैं ।

मारके बलपूर्वक ले लूंगा । जब कूर्मजीने निरञ्जनकी ऐसी बातें सुनी तो जान लिया कि, यह अभिमानी और घमंडी काल उत्पन्न हुआ है जो ऐसी अभिमानयुक्त बातें कर रहा है । फिर उन्होंने निरंजनसे कहा कि, तुम यहांसे चलेजाओ, मैं तुमको कुछ न दूंगा. क्योंकि, सत्यपुरुषकी कोई आज्ञा मुझे नहीं मिली है तुम सत्पुरुषके पास चले जाओ । कूर्मजीके यह वाक्य सुनके कालपुरुष, जिसका शरीर कूर्मजीके शरीरसे आधा था, अत्यंत क्रुद्ध हुआ । तपके कारण निरञ्जन अति बलिष्ठ होगया था, कूर्मजीको युद्धके निमित्त ललकारा और लडाईके लिये प्रस्तुत होगया तथा क्रोधमें बकता झकता कूर्मजीपर आन टूटा । दोनोंमें द्वंद्व युद्ध होने लगा । महाभयंकर युद्ध हुआ । निरंजन वह दाव पेंच करने लगा कि, जिसमें वह सृष्टिकी रचनाका समान पाजावे । अन्तमें निरञ्जनने कूर्मजीपर अत्यंत कठिन आक्रमण किया और अपने नखोंद्वारा उनके तीन सीस काट डाले. जब कूर्मजीके तीन सिर कटे तब उनके पेटके भीतरसे रचनाकी समस्त सामग्री बहिर्गत हो गयी । सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र, पञ्चतत्त्व, तीन गुण इत्यादि उनके पेट भण्डारसे बाहर निकल आये । सब चल तथा अचल तारे छिटक गये, पृथ्वी आकाशकी उत्पत्तिकी प्रगट हो गई और रचनाकी कुल सामग्री अव्यक्तसे व्यक्त होगयी ॥

आठवाँ प्रकरण

कूर्मजीका सत्यपुरुषके पास फरियाद करना और निरंजनको दण्ड मिलना

जब निरंजनने कूर्मजीसे ऐसी धृष्टता की, तब कूर्मजीने अपने ध्यानमें सत्यपुरुषकी सेवामें बिनती की और कहा कि, अहो सत्यपुरुष ! निरंजनने मुझसे इस प्रकारकी धृष्टता और बल प्रयोग किया है जिससे मुझे नितान्तही कष्ट पहुँचा है । जब कूर्मजीने इस प्रकार दोहाई दी तब दयालु सत्यपुरुषने ऐसा उत्तर दिया कि, यह काल निरञ्जन बडाही घमंडी हुआ है—यदि मैं उसे इसी समय विलोपित कर दूं तब तो यह जो रचनाका कौतुक है सो सब नष्ट हो जावेगा. कारण यह कि, मेरे समस्त पुत्रोंकी नाल एकही धागेमें बँधे रहनेके कारण, एकको नष्ट करते ही सब नष्ट हो जावेंगे और मेरी समस्त रचना भी नष्ट हो जायगी । इस कारण मैं अब इसका नाश तो नहीं करता किन्तु, उसे यह दण्ड देता हूं कि, भविष्यमें वह अब मेरे दर्शन न पा सकेगा और यह काल एक लाख जीव प्रतिदिवस खावेगा और सवालक्ष उत्पन्न करेगा । इतना सत्यपुरुषने कूर्मजीसे कहा ।

नवाँ प्रकरण

निरंजनका पुनः तपस्याकर बीजखेत माँगना

अब निरञ्जनका वृत्तान्त सुनो कि, उसने जो कूर्मजीके तीन शीश काट लिये थे उन तीनों सिरोंको खालिया और फिर शून्यमें जाके फिर एक पगसे खडा हो योग समाधि लगाकर महा कठिन तपस्या करने लगा। इस प्रकार अटल तपस्या करते २ सोलहयुग बीत गये, तब पुनः सत्यपुरुषकी वाणी आयी कि, अब क्या चाहता है ? तब निरञ्जनने निवेदन किया कि, मुझे अब बीजखेत प्रदान कीजिये— कारण यह कि, बिना बीजखेतके उत्पत्ति नहीं हो सकती—तब सत्यपुरुषने कहा— तथास्तु ।

दसवाँ प्रकरण

बीजखेत, अर्थात आदिभवानीकी उत्पतिका[१] वर्णन

जब निरञ्जनने बीजखेतकी प्रार्थना की, तब सत्यपुरुषने एक कन्या प्रकट की। वही आगे अद्याके नामसे प्रसिद्ध हुई। यह ऐसी सुन्दरी तथा हावभाववाली प्रकट हुई कि, जिसको देखतेही चित्त चञ्चल हो आसक्त हो जावे—उस मोहिनी मूर्ति तथा मनोहर रूपका बहुत कुछ विवरण स्वसंवेदमें है। जब वह आदि कुमारी उत्पन्न हुई तब सत्यपुरुषने कहा कि प्यारी बेटी ! तू निरञ्जनके पास जा, तेरे ऊपर सदैव मेरी दया रहेगी। तब वह कन्या निरञ्जनके पास आयी और जहाँ निरञ्जन योग समाधि लगाकर बैठा था वहाँ आकर एक पैरसे खडी हुई। जब निरञ्जनकी समाधि खुली तो अपने सामने कन्याको देखकर कहा कि, हे भवानी ! तुझको मेरे निमित्त सत्यपुरुषने उत्पन्न किया है, आओ हम तुम दोनों मिलकर तीनलोक भवसागरकी रचना करें। उस समय निरञ्जन कामातुर हुआ। तब अद्याने कहा कि हम तुम दोनों भाई बहिन हैं—मेरा तुम्हारा सम्बन्ध उचित नहीं है। तब निरञ्जनने उसे बहुत कुछ समझाया, परन्तु भवानीने नहीं माना, तब वह अत्यंत क्रोधित होकर अद्याको पकड अपने मुँहमें रखकर निगलने लगा। निगलने के समय अद्याने सत्यपुरुष ! सत्यपुरुष !! कहकर पुकारा। इतनेमें कालपुरुष भवानीको निगलही गया। अद्याकी पुकार सुनकर सत्यपुरुषकी आज्ञासे तुरन्त जोगजीतजी प्रकट हुए—और सुरतिके तीरसे कालको मारा, तब उसने उसी समय अद्याको अपने मुँहके बाहर डाल दिया। जोगजीतजी उसी समय अन्तर्धान हो

---

१ देखो ग्रन्थ कबीर वाणी अनुरागसागर और श्वासगुञ्जारका प्रमाण परिशिष्टमें।

गये और वह कन्या जब कालके मुँहसे बाहर आयी तब अत्यंत भयभीत हुई और काँपने लगी–फिर डरती तथा काँपती निरंजनकी आज्ञामें हो गयी, और सत्यपुरुषका ध्यान उसने भुलादिया–कालपुरुषकोही पिता २ कहने लगी और निरञ्जनके साथ रहने लगी ।

ग्यारहवाँ प्रकरण

अद्या–निरंजनका वर्णन

यह आदिकुमारी भवानी कहलाती है और उसके सौन्दर्यका विवरण स्वसंवेदमें बहुत आया है । उसके शक्ति तथा प्रभुताका भी बहुत कुछ विवरण है । यही आदि भवानी तीनों लोककी महारानी है जिसके अधीन ब्रह्मा, विष्णु और शिव और समस्त ऋषिमुनि हैं, यह निरंजनके अधीन है जो कुछ धर्मरायकी आज्ञा होती है उसी कार्यको वह करती है, भयबस कदापि उसकी आज्ञाका उल्लंघन नहीं करती. निरञ्जनके सहवासके कारण उसमें निरञ्जनका समस्त बातें समा गयी हैं और वहभी कालरूप होगयी है यही बीज खेत है जिससे समस्त संसारकी उत्पत्ति होती है, सो महाकाल और महाकाली होगये ।

कुछ दिवसोंके उपरान्त उस कन्यापर रङ्ग रूप चढा और वह युवती हुई, उसके रङ्ग रूपका वृत्तान्त जो ग्रन्थ श्वासगञ्जार तथा दूसरे ग्रन्थोंमें लिखा है, मैं क्या वर्णन करूं बिजली उसके सामने क्या है ? जिसको स्वयं सत्यपुरुषने अपने शरीर और आप अपने हाथोंसे बनाया है उसके सौन्दर्य और रूप तथा तेजका विवरण क्या होसके । जब वह युवती हुई, तब निरञ्जन तथा अद्याका विवाह हुआ और दोनों प्रसन्नता पूर्वक आनन्दमें रहने लगे । उस सुख विलासका विवरण किससे हो ? जो अद्या तथा निरञ्जन किया करते थे । उस सुख विलास में अनन्त काल बीत गया; तब निरञ्जनने अद्यासे कहा कि, अबतो मुझको सत्य पुरुषके लोकमें जानेकी कोई आशा नहीं है, मैं यहाँही सत्यपुरुषके समस्त लोकों और द्वीपों इत्यादिकी रचना करूँगा और तुझको भी मैं अपने साथ बल पूर्वक रक्खूंगा और हम और तुम दोनों मिलकर सदैव तीनलोक भवसागरका राज्य करेंगे और सब पर आज्ञा किया करेंगे, यहीं सदा निवास करेंगे, सत्यलोक के जाने की कोई आवश्यकता नहीं है.

तपके प्रभावसे यह कालपुरुष अत्यन्त बलिष्ठ होगया और अपने घमण्डके कारण कितनेही दोष किये, कूर्मका तीन शिर काटा तथा अद्याको निगलगया, अक्षरसे समर ठानकर उसको भी मारकर उसकी राजधानीसे भगादिया । इन

दोषोंके कारण वह अब सत्यपुरुषका दर्शन नहीं पाता है। सत्यलोकके समीप तक तो वह चला जाता है, परन्तु सत्यपुरुषके सन्मुख वह हो नहीं सकता, सामने जानेकी शक्ति उसमें नहीं है।

जब निरञ्जन तथा अद्या अनन्त कालतक सुख संभोग करते रहे तत्पश्चात् ऐसा हुआ कि, जो निरञ्जन कूर्मजीके तीन शिर काटकर खा गया था उन तीनों शिरोंके प्रभावसे तीन पुत्र उत्पन्न हुए।

बारहवाँ प्रकरण

तीनों देवोंके प्राकट्यका वर्णन

अद्या गर्भवती हुई और उससे तीन पुत्र उत्पन्न हुए। बडा बेटा ब्रह्मा था रजोगुणरूप हुआ, दूसरा बेटा विष्णु था जो सत्त्वगुणरूप उत्पन्न हुआ, तीसरा शिव तमोगुणरूप उत्पन्न हुआ। जिस समय यह तीनों पुत्र उत्पन्न हुए, उस समय निरञ्जन शून्यस्वरूप बनकर शून्यमें समा गया और उन पुत्रोंको पितका दर्शन नहीं मिला। उनको इस बातकी तनिक भी सुधि नहीं हुई कि, उनका पिता कौन है? निरञ्जनने अद्यासे कह दिया था कि, वह उसका हाल उसके पुत्रोंसे न कहे उनके पूछने परभी वह उन्हें कदापि न बतावे. क्योंकि, वे अनेक उपाय करेंगे तथापि उसका दर्शन न पावेंगे। इस विषयमें अद्याको बारम्बार सचेत करके निरञ्जन शून्यस्वरूप होकर शून्यमें अन्तर्धान होगया। तीनों पुत्र अपने पितासे पूर्णतया अनभिज्ञ रहे। तीनों भाई अत्यन्त बलिष्ठ प्रभावशाली तथा सुन्दर हुए। इन तीनों देवताओंकी उत्पत्ति मथुरापुरीमें हुई। जब ये तीनों भाई बडे हुए तथा उन्हें ज्ञान हुआ और अपने पिताको नहीं देखा; तब उन्होंने अपनी मातासे पूछा कि, "जननी! हमारे पिता कहां हैं, तथा कौन हैं?" तब अद्याने उत्तर दिया बेटो! मैं ही तुम्हारा पिता हूँ, तथा मैंही तुम्हारी माता हूँ, तुम्हारे तथा मेरे अतिरिक्त और दूसरा कोई नहीं; तुम्हीं मेरे पति हो और मैंही तुम्हारी पत्नी हूँ, मैंही तीनों लोकको रचने वाली हूँ, दूसरा कोई नहीं। ग्रंथ कबीर बीजकके आरंभकी रमैनीमें लिखा है:-

तब ब्रह्मा पूछल महतारी। को तोर पुरुष तू काकरि नारी॥

उत्तर-

तुम हम हम तुम और न कोई। तुमहिं मोर पुरुष हमहिं तोर जोई॥

जब माताने ऐसा उत्तर दिया कि, मैं ही तुम्हारा पिता और मैं ही तुम्हारी माता हूं, तुम मेरे पति हो और मैंही तुम्हारी पत्नी हूं। यह बात सुन-

कर तीनों भाई तीनोंअप्रसन्न हुए और विचार किया कि, उनकी माता मिथ्या वचनोंसे उनको बहकाती है, उसकी बातें विश्वास करनेके योग्य नहीं है। इस प्रकार तीनों भाइयोंने उसको मिथ्यावादिनी समझकर मौन धारण करलिया ।

तेरहवाँ प्रकरण

चारों वेदोंके प्राकट्यका वर्णन

जब निरञ्जनजी शून्यमें जाकर शून्य समाधि लगा बैठे तथा अपनी योग समाधिमें आत्मविस्मृति कर गये, तब आपके श्वासके मार्गसे चारों वेद निकल पडे। निरञ्जनने जो स्वसंवेदसे सूक्ष्म बातोंको चुनकर अपने हृदयमें रक्खाथा और उसमें अपने विचारोंको भी मिला दिया था; सो चारों वेद उनके श्वाससे बाहर निकल पडे । कबीर साहबने ग्रंथ मुहम्मद बोध तथा स्थान २ पर लिखा है कि, ये चारों बेद स्वसंवेदके त्वचा ज्ञानसे बने हैं । त्वचा अर्थात् चाम त्वचा ज्ञान अर्थात् मोटा ज्ञान निदान ये चारों वेद स्वसंवेदक मोटे (बाहरी) ज्ञानसे बने हैं, इनकी बातें उत्कृष्ट हैं सर्वोत्कृष्ट नहीं इनमें सब मोटी २ बातें हैं, अतिनिर्मल तथा अत्यंत पवित्र बातोंसे नितान्तही अनभिज्ञ हैं । ये चारों वेद स्वसंवेदसे इस प्रकार निकल पडे जैसे श्वेत घृत द्वारा काला काजल प्रगट होता है—अथवा जिस प्रकार आकाशसे वृष्टिका जल स्वच्छता तथा पवित्रतासे आता है किन्तु, वह पृथ्वीपर गिरकर उसका रङ्ग ढङ्ग और ही हो जाता है और गंदला तथा अपवित्र बन जाता है, उसके गुण भिन्न २ प्रकारके होते हैं । इसी प्रकार इन चारों वेदोंने काल पुरुषके विचारोंकी संश्लिष्टताके कारण, अपने पिता सूक्ष्म वेदसे निरालाही ढङ्ग धारण कर लिया, तथा अपने पूज्य पिताके ढङ्गोंको छोड दिया । स्वसंवेद पवित्र स्वच्छ, निर्गुण तथा निष्कलंकित है । इसके चारों पुत्र जो अब ऋग्वेद–यजुर्वेद–सामवेद तथा अथर्ववेदके नामसे प्रख्यात हैं–वे निरञ्जनके संसर्गसे दूषित हो गये हैं ।

चौदहवाँ प्रकरण ॥ १४ ॥

वेदकी उत्पत्ति प्रथम अक्षरपुरुषसे

कबीर साहबने कहा है (कबीरवाणी इत्यादि ग्रन्थोंमें लिखा है) कि, अक्षर पुरुषके चार अंश हैं, इन चारोंमेंसे एकने जिसका ज्ञान अल्प तथा न्यून था–उसीने यंत्र मंत्र और वेद बनाये । उसी अक्षरपुरुषके इन्हीं चारों अंशोंमें एक अंश निरञ्जन है, अतः इस वेदकी उत्पत्ति पहले अक्षरपुरुषसे है,

---

पन्द्रहवाँ प्रकरण ॥ १५ ॥

वेदके प्रचारका ब्रह्मा

वेद यह निरञ्जनके हृदयसे निलकर, ब्रह्माके हाथमें गया और ब्रह्माद्वारा वह संसारमें आया, इस कारण वेदका प्रचार करनेवाला ब्रह्मा है दूसरा कोई नहीं । ग्रंथ कबीर बीजककी ३४ वीं रमैनीमें लिखा है –

"चार वेद ब्रह्मा निज ठाना । मुक्तिको मर्म उनहुँ नहिं जाना" ॥

इसके अतिरिक्त स्वसम्वेदमें लिखा है कि, वेद प्रचारक ब्रह्मा है और कोई नहीं और वेदोंसे भी भली भांति प्रगट है –

ओं ब्रह्मा देवानां प्रथम:सम्बभूव विश्वस्य कर्ताभुवनस्य गोप्ता ॥
स ब्रह्मविद्यां सर्वविद्याप्रतिष्ठामथर्वाय ज्येष्ठपुत्राय प्राह ॥

अथर्वण वेद मण्डूक उपनिषदकी कथा १

अनुवाद । ब्रह्मा देवताओंमें सबसे पूर्व उत्पन्न हुआ जिसका नाम स्वयम्भू हुआ–वह स्वयंभू अर्थात् संसार रचयिता जिसने पर तथा अपरविद्या, अर्थात् वेदको प्रगट किया–और सबसे प्रथम परमेश्वरका बडा बेटा ब्रह्मा उत्पन्न हुआ (अथर्वण वेद माण्डूक्योपनिषद् ।)

"सुभूः स्वयम्भूः प्रथमोऽन्तर्महत्यर्णवे । दधेह गर्भमृत्वियं
यतो जातः प्रजापतिः ॥" यजुर्वेद अध्याय २३ मंत्र ६३ ॥"

अनुवाद – परमेश्वरने सबसे पहले ब्रह्माको उत्पन्न किया, इस ब्रह्मासे समस्त संसार तथा वेद उत्पन्न हुए–इसी कारण ब्रह्माका नाम प्रजापति है ।

"प्रजापते न त्वदेता न्यन्यो विश्वारूपाणि परिता बभूव ॥
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नोऽअस्त्वयममुष्य पितासावस्य
पितावय ँ स्यामपतयोरयीणा ँ स्वाहा रुद्र यत्ते क्रिवि परन्नाम
तमिस्न् हुतमस्यमेष्टमसि स्वाहा ॥" यजुर्वेद अध्याय १० मंत्र २०) ॥

हे प्रजापते ! आपसे अन्य और कोई भी, देव इस संपूर्ण विश्वका प्रजा पालनादिकार्य तथा नानाजातीय वर्तमान भूत भविष्यत् कालविषयी गोचर प्राणियोंके सृजन पालन संहार करनेमें समर्थ नहीं है. इस कारण आपही हमारी प्रार्थना पूर्ण करनेमें समर्थ हो. जिस कामनासे आपके निमित्त हम हवन करते हैं वह कामना हमारी पूर्ण हो अर्थात् त्रिकालमें आपके समान कोई नहीं, इस कारण आपही हमारी प्रार्थना पूर्ण करनेमें समर्थ हो. यह इसका पिता ,इस स्थलमें पुत्रको

पिता करके नाम लें यह इसका पिता अर्थात् हमारा पिता पुत्रका आंतरिकभाव है सो चिरस्थायी रहे और हम अपरिमित ऐश्वर्यके स्वामी हों यह आहुति भली प्रकार गृहीत हो । हे रुद्रदेव ! जो तुम्हारा प्रलयकारी दुष्टनाशक उत्कृष्ट नाम है हे हवि ! उस रुद्रनाममें तुम हुत हो तुम हमारे घरमें आहुत होते हो, इस कारण सब प्रकार हमारे उपकारी हो अर्थात् गृहदाह वज्रपात आदिसे रक्षा करो, यह आहुति भलीप्रकार गृहीत हो ।

इसके अतिरिक्त देखो मनुस्मृतिके पहले अध्यायमें स्पष्टरूपसे लिखा है कि वेद, विद्या, आदि संसारादि सब कुछ पहले ब्रह्माने बनाया ।

अब भली भाँति प्रमाणित हो चुका कि, वेदका प्रगट करनेवाला ब्रह्मा है, ब्रह्मा के अतिरिक्त और कोई ठहर नहीं सकता ।

सोलहवाँ प्रकरण

वेदके सात क्रोडमंत्र

जब पहले पहल यह जीव अपने स्वरूपसे गिरा—तब सात मार्ग स्थिर हुए. वे ये हैं—१ उत्पत्ति । २ स्थिति । ३ प्रलय । ४ कर्म । ५ उपासना । ६ योग । ७ ज्ञान । प्रत्येक पर एक एक करोडमहामंत्र ठहरे, सो वे ही सात करोड महामंत्र वेद ठहरे । अतः ये वेद सात करोड महामंत्र हैं और इन मंत्रोंमें अतुलनीय बल तथा महा प्रभाव है तथा समस्त संसारकी मर्यादा इन्हीं महामंत्रों द्वारा स्थित है । ये सात करोड महामंत्र जब अपने पिता स्वसंवेदसे निलकर अव्यक्त से व्यक्त हुए, तब उनका स्वरूप तथा कर्म कुछ औरही था । स्वसंवेद जो अपार समुद्र है, उसके एक बूंदके स्वरूपमें प्रगट होकर पृथ्वीपर फैल गया । समस्त संसारका सब कुछ कामधाम कारखाना इन्हीं सात करोड महामंत्रोंपर है और इन्हीं महामंत्रों द्वारा, मनुष्य दाससे स्वामी बन जाता है और यही सात करोड मंत्र समस्त संसारके पथ प्रदर्शक ठहरे ।

सत्रहवाँ प्रकरण

वेदोंका सार

अब मैं इन वेदोंका सार वर्णन करता हूं कि, ये कैसे और कहांसे पहले बनाये गये । इन चारों वेदोंका नाम परसमवेद है — और इन्हींको पराकृत वेदभी कहते हैं । स्वसंवेदसे जिस प्रकार यह परमवेद निकले उसका वर्णन सुनो । प्रथम स्वसंवेद

में जो कबीर साहबकी कोटवाणी कहलाती है, एक भागका नाम ऋग्वेद है– इससे ऋगवेद निकला। दूसरी कबीर साहबकी जो टकसार वाणी है उससे यजुर्वेद निकला और इस टकसार वाणीके छायासे यह यजुर्वेद हुआ । तीसरी कबीर साहबकी जो मूल ज्ञानकी वाणी है जो राग और गीतका भाग है, उसका नाम सामवेद है, उसके छायासे सामवेद बना । चौथा कबीर साहबका जो बीजक ज्ञान है–उसके एक भागका नाम अथर्वण वेद है. उसके ढङ्ग पर अथर्वण वेद बना। चारों वेदोंकी उत्पत्ति तथा आरंभ यही है । इस प्रकार स्वयंसंवेदमेंसे यह परसमवेद उत्पन्न हुए ।

अठारहवाँ प्रकरण

चार गुरुओंका वर्णन जो कबीर साहबके चेले हैं ।

(ग्रन्थ सुकृति आदिभेदके अनुसार)

(देखो कबीर साहबके ग्रन्थ सुकृत आदिभेदमें लिखा है,) कबीर साहबने संसारके मनुष्योंको मुक्ति प्रदान करनेके निमित्त अपने चार शिष्य प्रकट किये, सो वे पृथ्वीके चारों दिशामें नियत किये गये । प्रत्येक दिशामें एक शिष्य मानव जातिके गुरु ठहरे । सो वे चारों अपने अंशों सहित पृथ्वीपर प्रगट होकर, समस्त मनुष्यजातिको धर्म सिखलाते हैं तथा दिखलावेंगे । ये चारों गुरु समस्त मनुष्यों को कालपुरुषके हाथसे छोडाने वाले हैं और उन्हीं द्वारा तथा उन्हींकी सहायतासे सब मनुष्य परमधामको सिधारते हैं ।

पहिले गुरु–लोकमें सुकृत अंश, कहिये और भवसागरमें गोसाँई धर्मदासजी कहिये, इनके बयालीस वंश हैं. उत्तरको ओर गुरु ठहराये गये । ऋग्वेद जम्बूदीप, भारतखंड, गढबांधो नगरमें प्रकट हुए । उनको कोटज्ञानकी वाणी दिया, उस वाणीके अनुसार उन्होंने पन्थ चलाया और सत्यपुरुषकी भक्तिका प्रचार किया ।

दूसरे गुरु–लोकमें अक्षय अंश कहिये और भवसागरमें गोसाई चतुर्भुजदासजी काहिये । ये अपने वंशों सहित दक्षिणदेशमें प्रकट होंगे और उनका यजुर्वेद है और नगरद्वीप करनाटकमें प्रकट होकर और कबीर साहबकी टकसार वाणी लेकर, अपने धर्मका प्रचार करेंगे और मनुष्योंका मुक्ति करावेंगे ।

तीसरे गुरु–लोकमें जोहङ्ग अंश कहलाते हैं, भवसागरमें राय बंकेजी आपका नाम है और उनके सोलह अंश हैं पूर्वदेशमें सामवेद लेकर दरभंगा नगरमें आप प्रकट होंगे, मूलज्ञानकी वाणी लेकर अपना धर्मोपदेश करेंगे ।

चौथे गुरु-गोसाँई सहतेजीजी पृथ्वीपर आपका नाम है, और लोकमें हिरम्मर अंश कहते हैं, उनका अथर्वण वेद है आप पश्चिमदेश शालमल्लीद्वीप और मानपुर नगरमें प्रकट होवेंगे और बीजक ज्ञानके अनुसार उनका पंथ चलेगा।

उन्नीसवाँ प्रकरण

स्वसम्वेदका वर्णन

कबीर साहबने जो अपने इन चार चेलोंको चार वेद दिया और उन लोगोंने उनके अनुसार पन्थ चलाये, सो उन चारों वेदोंकी वह सूरत अलग है। ये चारों वेद तो स्वसंवेदके समान स्वच्छ तथा पवित्र हैं और उनके निर्माणकर्त्ता स्वयम् कबीर साहब हैं और दूसरे किसीका विचार उसके साथ संयुक्त नहीं है। इसमें केवल कबीर साहकी वाणी है। और अन्याय पूर्वोक्त वेद निरञ्जनके विचारोंके साथ मिलगये हैं—अतः वे चारों वेद कबीर धर्मसे पृथक् कर दिये गये, उनका अनुसरण कोई कबीरपंथी नहीं करता है।

बीसवां प्रकरण

वेदरक्षक वेदव्यास

चार गुरुओंको चार वेद सत्यगुरुने दिये, वे निष्कलंक तथा पवित्र हैं, उनमें किसी प्रकारका धोखा नहीं और वे चारों वेद निर्मल हैं और जो चारों वेद निरंजन द्वारा मिलौनी करके बने हैं, वेही समस्त संसारमें प्रचलित हैं और उन्हींकी आज्ञा मनुष्य जाति मानती चली आई है।

सांसारिक मनुष्य इन वेदोंकी यथार्थताको न जानकर कालपुरुषके जालमें फँस गये। ये वेद भी तो गुप्त हो चुके थे. कि, उनपर बडी २ कठिनाइयाँ पडीं और महान २ आपत्तियाँ आयीं तथापि वर्तमान वेदके उद्धारक व्यासजी हुए जिन्होंने स्थान २ से वेद मंत्रोंको एकत्रित करके एक लाख श्रुतियाँ बटोरी, इन एक लाख श्रुतियोंमें अस्सी हजार तो कर्म्मकाण्डकी श्रुतियाँ हैं और सोलह सहस्र उपासना तथा चार सहस्र ज्ञान काण्डकी हैं। ये लाख श्रुतियाँ हुईं। सो व्यासजीकी कृपासे ये लाख श्रुतियाँ कुछ दिवसोंतक प्रचलित रहीं हिंदुओंके राज्य तथा शासन कालमें इनका प्रचार अधिक था। इन लाख श्लोकोंके घटते २ अब वर्तमान कालमें बहुत थोडे और नाम मात्रको रह गये हैं. वेदोंमें इतनी बाधाएँ पडीं कि, जिससे ये विलोपित हो जाते—पर कुछ मंत्र जो अब बचे खुचे हैं उनमें भी पतित मनुष्य

बाधा डालना चाहते हैं—और उनकी व्याख्या दूसरे स्वरूपमें करके संसारको भट-काते और उनको धोखा देकर अंधे कुएँमें डालते हैं।

इक्कीसवाँ प्रकरण

कबीर साहबकी चार-वाणी और चारों वेदोंका वर्णन।

ग्रन्थोंसे यह प्रमाणित होता है कि, जो कबीर साहबकी कोटज्ञानकी वाणी है, उसका नाम ऋग्वेद है, और टकसारज्ञानकी वाणीका नाम यजुर्वेद है, और मूलज्ञानकी वाणीका नाम सामवेद है तथा बीजक ज्ञानकी वाणीका नाम अथर्वण वेद है। ये चारों वेद अत्यंत स्वच्छ थे पर इनमें निरञ्जनने अपना विचार मिला करके इनको दूषित कर दिया अब जब ये दूषित वेद संसारमें प्रचलित हुए तब स्वसंवेदकी शिक्षा इन चारोंसे पृथक् हो गयी और जो—

चार ज्ञान—

कहे गए उनको ऐसा समझना न चाहिये कि, जैसे कबीर बीजक अब जो एक छोटासा ग्रंथ है—इतनाही समस्त बीजक है—सो बात कदापि नहीं। न मालूम कितना बीजक ज्ञान है उसे चुनकर यह बीजक ग्रंथ कबीर साहबने इस कलियुगके मनुष्योंको दिया है। इसी प्रकार उस सत्यगुरुके ज्ञानोंकी वाणियोंकी कोई सीमा तथा अन्त नहीं। बीजक ज्ञानके समुद्रसे एक बूँद निकालकर हम लोगोंको दिया है, सब ज्ञानोंपर अगणित ग्रंथ हैं, उनकी गणना कौन कर सकता है। जब जिस कालमें मनुष्यमें जैसा सामर्थ्य अधिकार तथा बल देखा वैसा प्रदान किया। निदान इस कलियुगके जीवोंमें इतनेही बलको विशेष माना तथा विशेषकी आवश्यकता नहीं देखा। अब इस—

वेदके विषयमें—

यह निवेदन है कि, वेदके ज्ञातागण अपने मनमें सोचे और समझें और ईर्षा तथा द्वेष छोडकर विचार करें कि, वेदका पिता ओम् है और ओमकी माता कुण्डलिनी शक्ति है। और यह—

कुण्डलिनी

महा माया जो नाभिके नीचे रहती है सो साँपकी सूरतकी है और उसके मुँहसे सर्पके फूंफकारके सदृश जो शब्द निकलता है, उसीसे मन जीवन पाता है; सो उसकी वही फूंफकार ओंकार है—यह साँपिनी जो कुण्डल मारकर बैठी है यही मनकी ताजगी तथा जीवन का कारण है—और यह मनही कालपुरुष निरञ्जन है और इसीको बडा ब्रह्मा कहते हैं, सो इस मन अर्थात् ॐ की माता कुण्डलिनी

शक्ति है और कुण्डलिनीका पिता वह है जो अवाङ्मनसगोचर है सो कुण्डलिनी प्रत्यक्ष दिखाई देती है कि, एक साँपिन है और सांपिनका विष वासना अर्थात् प्रत्येक प्रकारकी मानसिक कामनायें हैं--यह विष जिस मनमें समाता है वह मृत्यु को प्राप्त होता है तथा उसका आवागमन कदापि बन्द नहीं होता । जो विष घातक कुण्डलिनीमें है--वही हलाहल प्राणनाशक ॐ में है । ॐ तथा कुण्डलिनी केवल कहनेहीको दो हैं, पर वस्तुतः ये एकही हैं । और जो विष ओम् में है वही वेदोंमें है--सर्पसे विषही उत्पन्न होता है, कभी अमृत नहीं निकलता । यह सिद्धांत है--जब वेदकी उत्पत्ति विषसे है तब फिर वेद विष से पृथक् किसी प्रकार हो नहीं सकता । बीजसे जो वृक्ष उत्पन्न हुआ उसकी जड, डाली, पत्ते, फल फूल इत्यादिमें वही घातक विष समाया हुआ है । ऐसी अवस्थामें वेद तथा किताबोंकी आज्ञापर चलनेवाले वासनाके विषसे कैसे बच सकते हैं । कुण्डलिनी तथा उसके विषसे जो कुछ उत्पन्न हो सो सब विशैला है । इस कुण्डलिनीने स्त्री और पुरुष होकर समस्त संसारको उत्पन्न किया है । सत्यकबीरने बीजककी रमैनीमें लिखा है –

अन्तरजोत शब्द एक नारी । हरिब्रह्मा ताके त्रिपुरारी ।।
तेहि त्रियाभगलिङ्ग अनन्ता । तेउ न जाने आदिउ अन्ता ।।

यहाँ पर सोचना और समझना चाहिये कि, वाणीरूप माया है, वही स्त्री रूप है और इसीसे ब्रह्मा विष्णु शिव और सब कुछ उत्पन्न हुए जिस स्त्रीसे सब कुछ उत्पन्न हुआ, वह विषैली नागिन है और इसी नागिनका विष तीनों लोक तथा वेदोंमें पैठ रहा है । वही विष समस्त जगत्में भरा हुआ है, कोई स्थान खाली नहीं है ।

जिस समय ये चारों वेद धर्मरायकी श्वासके मार्गसे निकल पडे तब उन्होंने निरञ्जनकी सूरत न देखा था और न जाना और न पहँचाना कि, अलख निरञ्जन कैसा है, उसकी मूर्ति कैसी है ? पर चारों वेद स्वरूप धारण करके अलख निरञ्जन की स्तुति करने लगे--कि, आप अलख अगोचर हो, आप ज्योतिस्वरूप निरञ्जन हो, आपकी प्रशंसा नहीं की जा सकती, आप सर्वगुण सम्पन्न हो और आप समस्त संसारके स्वामी हो आपकी महिमा तथा श्रेष्ठताको वेद नहीं जान सकते, आप समझ तथा बुद्धिके परे हो इस प्रकार अनन्तकाल पर्यन्त ये चारों वेद निरञ्जनकी स्तुति करते रहे । तदुपरान्त निरञ्जनकी आज्ञा हुई और कहा कि, हे वेदो ! तुम सब जाकर समुद्रमें छिप रहो । तब निरञ्जनकी आज्ञानुसार वे चारों जाकर सागरमें छिप गये ।

बाईसवाँ प्रकरण

वेद तब और अब

सृष्टिकी उत्पत्तिके पूर्व ये चारों वेद प्रगट हुए, उस समय लिखना पढना प्रचलित नहीं था । यह कुछ कहा नहीं जा सकता कि, जब ये वेद प्रगट हुए तब इनका क्या और कैसा स्वरूप था ? कारण यह कि जितने ग्रंथ स्वसम्वेदके इस दासने देखे उनमें केवल इतनाही लिखा, देखा कि, कैलके श्वास से ये चारों वेद उत्पन्न हुए और ज्योतिस्वरूप निरञ्जनकी स्तुति करते रहे । वहाँ पर वेदोंके रूपका कोई विवरण नहीं देखा । ये वेद उत्पत्तिके दिवससे लेकर आज दिन पर्यन्त संसारमें प्रचलित हैं । पर यह संभव नहीं है कि, वेदोंकी वैसीही सूरत रही हो । पूर्वकालमें मनुष्यकी स्मरणशक्ति ऐसी प्रबल तथा तीक्ष्ण होती थी कि, एक बेर जो बात गुरूसे चेला सुनलेता था उसी समय उसको कंठस्थ कर लेता था और कदापि भूलता नहीं था और यदि, कहीं किसी शब्द या अक्षरका भ्रम हो तो गुरु अथवा आपसमें पूछ लेता था और शुद्धकरके याद कर लेता था । इन वेदपाठियों को जीवन भरमें वेद भूलता नहीं था और इन वेदोंको लोग जबानी पढा पढाया करते थे । वेदका नाम श्रुति है और संस्कृतमें श्रुति नाम कानका तथा कानसे सुननेका है अर्थात श्रुति वह है जो सुनी गयी वेद को उत्पत्तिकालके आरंभसे उस समय तक कि, जब तक याद मनुष्योंकी स्मरण शक्तिमें पूर्णतया निर्बलता न आगयी, वे मुखस्थ करते तथा पढ़ते पढ़ाते चले आये । जिनको समस्त वेद कंठस्थ रहता था, वह श्रुतिकेवली अथवा श्रुतिकैवल्यज्ञानी कहलाता था । और वेद द्वारा लोग तीनों कालकी बातोंको जान सकते थे तथा श्रुति केवली सब कुछ बतला सकता था और श्रुतिज्ञान द्वारा कुल बातोंका उत्तर देकर लोगोंको सन्तुष्ट करता था ।

तदुपरान्त क्रमशः मनुष्यको स्मरण शक्तिमें निर्बलता आतीगयी, और इस बातका भय हुआ कि, स्मरणशक्तिकी निर्बलताके कारण वेद कहीं एकबारही विलोपित न हो जावें । तब वेदव्यासजीने कृपा करके, उनको लिखा और अपने ढंग तथा अपनी विचारानुसार उसको निर्माण करके चार वेदोंके नामसे संसारमें प्रसिद्ध किया । उस समयसे आजपर्यन्त व्यासजीकी कृपासे काम चलता है । जब तक हिन्दुओंका राज्य तथा तब तक वेदोंका बडा प्रचार था, पर म्लेच्छों (मुसल मानों) के शासनकालमें इनकी कुछभी मर्यादा नहीं रही और वेदका बडा भाग जाता रहा अब बहुत थोडा रह गया है । अब जितना बचा खुचा रह गया है उतनेही से कार्य चलता है ।

इसके आरंभ कालसे अर्थात जब ये वेद कंठस्थ रहते थे, स्मरण शक्तिकी निर्बलतावश उनमें थोडी बहुत अशुद्धियाँ रही जाती थीं, तदुपरान्त लिखावटमें भूल तथा त्रुटियाँ होती रहीं। अब वर्तमानकालके मनुष्योंको तनिकभी मालूम नहीं है कि, प्रथम वेद कितना था और अब कितना है। कहीं तो न्यून दृष्टिगोचर होता है तथा लोग जानते हैं कि, वेद इतनाही है। यदि कहीं विशेष प्रगट होजाता है तो लोक कहते हैं कि, वेदका यह भाग छिपा हुआ था अब प्रगट हो गया है। इस प्रकार इस विषयका उचितरूपसे पता नहीं चलता कि, वेद कहाँ २ तथा कितना छिप रहे हैं। पहले ये वेद गद्यमें थे परन्तु अब पद्यमें हो गये हैं। और लेखकोंकी अशुद्धियोंके कारण अब वेदोंकी सूरतमें विभिन्नता आगयी है इन वेदोंमें इनके अत्यंत प्राचीन होनेके कारण अनेक स्थानोंमें गडबड है और अत्यंत गडबड तथा संदेहमय होनेके कारण वेदविज्ञोंको इसकी प्राचीनतामें संदेह होता है और वर्तमानके वेदज्ञ लोग इसको नवीन समझते हैं।

चीनी तथा योरोपियन लोगोंका विश्वास है कि, वेदको बने केवल ढाई सहस्र वर्ष बीते। किसीका कथन है कि, वेद तीन सहस्र वर्षसे बने हैं, कोई कहता है कि, ये वेद साढे तीन सहस्र वर्षसे आगेके ठहर नहीं सकते हैं। कारण यह कि, ऋषियों तथा इसके लेखकोंने वर्त्तमान कालके वेदोंमें ऐसी संदेह युक्त वार्त्ताओंको संयुक्त कर दिया है, जिससे उनकी प्राचीनतामें संदेह होता है। इसके अतिरिक्त लोग कुछ बातें अपनी ओरसे मिलाते और कुछ वेदोंसे निकालते चले आये हैं कि, जिससे वेदके प्राचीनकालमें अनेक शंकायें उपस्थित होती हैं। इसमें बडी मिलावट हो गयी और ब्राह्मणों, ऋषियों ने इसको ऐसा अंधकारमें डाला कि, वेद मन्त्र तनिक भी शुद्ध न रहे तथा सम्यक्‌रूपसे अशुद्ध होगये और वेदमंत्रोंका प्रभाव उनमेंसे निकल गया।

वेद वक्ताओंने बडा झगडा मचाया और यथार्थ वेदके विरुद्ध उन नासमझों ने वेदका ऐसा अर्थ लगाया कि, मनुष्य जाति और भी अंधकारमें पड गयी, जिससे उनका निकलना, भागना तथा छुटकारा असंभव हो गया। ये वेदपाठीगण जिन्होंने न तो तप किया न स्वसंवेदको देखा, वे क्या जानें कि, वेदका तत्त्व क्या है? उनकी मूर्खता जिस ओरको खींचती है उसी ओर वे उसका तात्पर्य तथा अर्थ लगाते हैं तथा कुछ मूर्ख उनसे मिलकर उनको इस बात पर और भी उभारते हैं और कहते हैं, कि हां महाराज! हां स्वामी जी! जो अर्थ आपने किया वही उचित तथा यथेष्ट है दूसरा अर्थ नहीं, इस कारण इस वेदमें बहुत कुछ इधर उधर हो

गया और वेदके मतलबको सब अपनी अपनी ओर खींचते हैं यह भी मालूम नहीं होता है कि, वर्त्तमान कालके वेद प्राचीन कालके वेदोंके कौनसे भाग हैं ? और कौनसी शाखासे हैं ? कितने लोग कितनोंको खंडन करते तथा कितनोंको स्वीकार करते हैं। सो यह सब मन मानेकी बात है। जिसका चाहो खंडन करो जिसको चाहो स्वीकार करलो, अपनी इच्छापर बात रही। कोई किसीका स्वामी तथा किसीका कोई अधीन नहीं है। इन वेदोंके अदल बदल जानेके कारण इनके मन्त्रोंमें अब तनिकभी शक्ति नहीं रह गयी है।

तेईसवाँ प्रकरण

वेदमंत्रोंकी शक्तिका वर्णन।

पहले वेदके मन्त्रोंमें ऐसा प्रभाव था कि, उनके बलसे लोग देवताओंको अपने पास बुलालेते और वेतमंत्र पढकर लकडी पर पानी छिडकनेसे आग धधक उठती तथा कुएँका जल ऊपर चढ़ आता था। मोहन, मारण, उच्चाटन आकर्षण और स्तंभन इत्यादि सब बल वेद मंत्रोंमें थे। ऋषि मुनिगण जब यज्ञ करते थे तो वेदमंत्रों द्वारा सब देवताओंको यज्ञस्थानमें बुलालेतेथे। इन वेदमंत्रोंका वर्णन में क्या करूँ ? इन्हीं द्वारा ऋषि मुनिगण साक्षात् परमेश्वर होनेका दावा करते थे तथा इन्हींकी सहायता द्वारा सब पापोंका नाश करते थे, और राजा इन्द्रको भी अपना चेरा बनालेतेथे। यदि चार वेदके मंत्र शुद्धतासे किसी को याद हों, तो उसका कौतुक लोगोंको दिखाई दे सकता है।

वेद मंत्रकी शक्तिपर दृष्टान्त कुन्ती और दुर्वासा।

एक बार राजा कुन्तके गृहमें दुर्वासा ऋषि पधारे। राजा कुन्तने अपनी पुत्री कुन्तीका उनकी सेवाके निमित्त नियुक्त किया। कुन्तीने दुर्वासाजीकी अत्यंत सेवा तथा सत्कार किया। तब दुर्वासाऋषिका चित्त अत्यंत हर्षित हुआ और उन्होंने कुमारी कुन्तीको एक मंत्र सिखला दिया और समझा दिया कि, जब उसपर कोई विपत्ति उपस्थित हो तब वह उस मंत्र द्वारा जिस देवताको चाहे बुलाले और उनके द्वारा अपना कार्य करालेवे। इतनी बात कहकर दुर्वासाजी तो चले गये और कुमारी कुन्तीने उस मंत्रको कंठस्थ करलिया और जब २ उसको आवश्यकता हुई तब २ सूर्य, धर्म, इन्द्र, पवन, अश्विनीकुमार इत्यादि देवताओंको अपने समीप बुलाकर अपना काम किया।

जब अश्वमेध गोमेधयज्ञ इत्यादि होतेथे इन्हीं वेदमन्त्रों द्वारा सब देवता यज्ञमें उपस्थित होते थे। अब वे वेद मंत्र कहाँ गये ? हाँ इस समयभी वे मंत्र किसी

ऋषि मुनिके हृदयमें अवश्य होंगे--पर वे ऋषि मुनि कलियुगके मनुष्योंको अब दर्शन नहीं देते। यदि दर्शन देवें तो उनको कोई पहचान नहीं सकता है। वे उन लोगोंको कुछ बतलाते भी नहीं हैं, जो उसके अधिकारी नहीं हैं। वे ऋषि मुनि अबभी पृथ्वी पर हैं कहीं दूर नहीं गये हैं, पर कलियुगके मनुष्य ही उद्दंड तथा पापिष्ठी हैं; इस कारण वे उनसे दूर भागते हैं, और अपनेको उन लोगोंपर कदापि प्रगट नहीं करते हैं, यही कारण है कि वर्त्तमान कालके मनुष्योंसे वे घृणा करते हैं और उनको सुशिक्षित नहीं समझते (मैं यह बात नहीं कह सकता कि, येप्रचलित वेद--वेद नहीं, अथवा आद्योपान्त अशुद्ध हैं। मेरा कहना केवल यह है कि, इनमें कुछ बाते हैं तथा कुछ नहीं हैं। इस बातके प्रमाणमें एक उदाहरण देता हूँ, और वह यह है--

वेदकी श्रेष्ठतामें दूसरा दृष्टान्त।

"मैंने अपने बाल्यावस्थामें अपने पितासे सुना था कि, राज्य बेतिया में, जो नेपाल राज्यके समीप है, राजाके कुछ मजदूर भूमि खोद रहे थे। जब वे खोदते २ भूभागके विशेष नीचे गये तब उन्हें एक द्वार दिखलायी दिया। उसका समाचार राजाको दिया गया। राजा स्वयम् उस स्थान पर आये और द्वारके खोलनेकी आज्ञा दी. लोगोंने द्वार खोला तो देखाकि, एक कोठरीमें एक मनुष्य आसनमारे बैठाहै। उसकी ऊँचाई चौडाई मोटाई इतनी अधिक थी कि वह वर्त्तमान कालका मनुष्य बोध नहीं होता था। उसके शिरके बाल भूमिके चारों ओर चक्रबांधकर छतरीके समान गिरे हुए थे और उसके सामने कपडेसे ढँका हुआ एक कमंडल धरा था। यह दृश्य देखकर राजाको जान पडा कि यह कोई ऋषि है, जो अखंड समाधि लगाकर बैठा हुआ है। तब राजाने वेदपाठी पण्डितों को बुलवाया और उनको वेदध्वनि करनेकी आज्ञादी। जब पण्डितोंने वेद पढ़ना आरंभ किया तब, उनकी समाधि खुल गयी और उन्होंने कहा "कौन वेदको अशुद्ध पढ़ता है? क्या कलिकाल तो नहीं आ गया कि, वेद अशुद्ध होगये?" तब लोगोंने उत्तर दिया कि, हाँ महाराज! अब कलियुग है इस पर उस ऋषिने कहा कि, यहाँसे गङ्गाजी कितने अन्तर पर हैं। लोगोंने उत्तर दिया कि। साठ कोसके अन्तरपर हैं। फिर उस ऋषिने पूछा कि, गंगा जल कैसा है? लोगोंने कहा कि, जैसे सब जलहैं। तब उसने अपना कमण्डल लोगोंको दिखलाया और कहा कि, जब गंगा इस स्थानपरथीं, तबमैं ठीक गंगाके किनारे पर बैठाथाऔर उस समय गंगाजल ऐसा था। इसपर लोगोंने ऋषिजीके कमण्डलका जल देखा, तो वह स्वच्छ दुग्धके भाँति श्वेत था। तब उस ऋषिने कहा कि, अब तुम लोग मेरे पाससे

चले जाओ और मेरे द्वारको पूर्ववत् दृढता पूर्वक बंद करदो, मैं कलियुगके मनुष्योंका दर्शन नहीं करूंगा । तब राजाने आज्ञा दिया कि, इस द्वारको पहलेही की तरह बंदकर दो, तथा कोईभी किसी प्रकारकी बाधा न देवे। यह राजाज्ञा तुरन्तही मानी जाकर कार्यमें परिणत कर दीगयी । इस प्रकार वेदमें बडा गडबड हुआ ।

इसी प्रकार जो किताब जितने प्राचीन हैं–उनमें उतनीही गडबडीभी हैं । तौरेत तथा इञ्जीलमें मुसलमान लोग विशेष गडबड बतलाते–और भली भाँति साबित करते हैं स्वर्गवासी मास्टर रामचन्द्र देहलवी सितारे हिन्दने तथा अन्यान्य पादरियोंने कुरानमें गडबडके बारेमें बहुत कुछ लिखा है और एजाज कुरान नामक पुस्तकमें पूर्वोक्त सितारे हिन्द महोदयने दृढ प्रमाणों द्वारा प्रमाणित किया है और सियानतुलइनसान नामक किताबमें हाफिजने इञ्जीलके गडबडके बारेमें बहुत कुछ लिखाहै । डाक्टर वजीरखाँनेभी लिखा है–इन सब किताबोंमें गडबड होते २ उनकी असली अवस्था नहीं रही सबमें गडबड तथा अशुद्धियाँ हैं ।

स्वसंवेदकी शुद्धता ।

पर स्वसंवेदमें यह बात हो नहीं सकती. कारण यह कि, कबीर साहब स्वसंवेदके रचयिता प्रत्येक समय, प्रत्येक काल तथा प्रत्येक स्थानमें उपस्थित रहते हैं। जो कोई किसी प्रकारका परिवर्तन करे, तो उसको काटकर पुनः ग्रंथोंको शुद्ध करके मनुष्य जातिको सत्यपथ पर लगाते हैं । किन्तु और समस्त सम्प्रदायिक ग्रन्थोंमें गडबड हुआ करता है ।

चौवीसवाँ प्रकरण

संसारके लौकिक पारलौकिक सब धर्मोंका मूल वेद ।

यद्यपि लौकिक पारलौकिक मर्यादाको बना रखनेके समस्त ज्ञान देनेवाले उपर्युक्त चार वेदही हैं । जो देशकालानुसार किसी न किसी रूपमें सर्वत्र प्रचलित रहकर, संसारकी स्थितिको संभाले रहते है । यही अविनाशी वेद संसारके समस्त ज्ञान विज्ञानके मूल भंडार हैं । संसारके समस्त धर्म और नीति इसीसे निकलते हैं । सदासे सबका यही आधार है, वही संसारका सर्वस्व है । किन्तु संसार के अज्ञानी अल्पज्ञ जीव इस बातको न जाननेके कारण, परस्पर विभिन्नताको देखते और एक एक पक्षको पकडकर लडते झगडते रहते हैं । यदि वे यह जान जाते और विचार करके निश्चय करलेते कि, देशकालके अनुसार वेदके एक-एक अंश अथवा फरमानको लेले कर संसारके सर्व धर्म, पंथ मजहब इसीसे निकले हैं तो, वे परस्पर वैमनस्यके शिकार कदापि नहीं होते ।

वास्तवमें वेदका कोई अंश किसीने लिया कोई अंश किसीने; जैसे यज्ञ इत्यादिका अंश ब्राह्मणोंको मिला, जिसके द्वारा वे अश्वमेध गोमेध इत्यादि यज्ञ करते हैं। वेदका दूसरा अंश जैनियोंको मिला जिसके द्वारा वे दया पालते हैं और सब जीवों की रक्षा करते हैं। वेदका तीसरा अंश मीमांसकोंको मिला जिसके द्वारा वे कर्म कांडको ठीक मानते हैं। वेदका चौथा अंश योगियोंको मिला, जिससे वे लोग योग समाधिको ठीक मानकर उसीसे अपनी मुक्ति जानते हैं। वेदका पाँचवाँ अंश वैरागियोंको मिला, जिससे वे ठाकुरकी उपासनामें लगे। छठें अंशको पाकर वेदान्ती एक अद्वैत ब्रह्मसे लगे। सातवें वेदका एक अंश बौद्धोंको मिला जिससे वे बुद्धके धर्मको ठीक मानते हैं। आठवें वेदकाही एक अंश मूसाइयोंको मिला, जिससे वे अपने धर्ममें लगे। नवें वेदकाही एक अंश ईसाइयोंको मिला कि जिससे वे अपने पथ पर हैं। दसवें वेदका एक अंश मोहम्मदियोंको मिला जिससे वे अपने मजहब पर आरूढ हुए।

इस प्रकार जितने ग्रंथ किताब, जो वेदके अनुकूल या प्रतिकूल दिखाई देते हैं अथवा जिसको लोग अबतक जानतेभी नहीं, सो सब वेदकेही अनुसार हैं कारण यह कि वेदके मंत्रोंके अर्थ सब अपने २ बुद्धचानुसार करते हैं और उनसे अपना तात्पर्य निकालकर अपना काम करते हैं। सो यह समस्तधर्म वेदके अनुसार हैं। इन्हीं वेदकी सहायतासे सब मनुष्य अपना २ काम करते हैं। किन्तु काल पुरुषने धोखे तथा दुष्टतासे सबको ऐसा भुला रखा है कि, सबके सब घोर निद्रामें अचेत पड़े हुए हैं, वेदमंत्रोंमें ऐसा रहस्य है कि, उनके यथार्थ तात्पर्यको कोई जान नहीं सकता। सब अपने ढङ्ग पर अर्थ लगाते हैं। एक २ अक्षरके सौसों अर्थ हैं भी; जिससे एक २ मंत्रोंके अनेक अर्थ किये जा सकते हैं। इसी कारण कुछ ठीक अर्थ जान नहीं पडता। इसी धोखेमें डालकर कालपुरुषने मनुष्योंको अपने जालमें फँसा मारा।

चौबीसवें प्रकरणसे अनुसन्धान

अनुवादकका भ्रमविमोचनी विवेचन।

कबीरमन्शूरका यह चौबीसवाँ प्रकरण अथवा यों कहिये कि, कबीरमन्शूर के पहले भागका यह पहला अध्याय, साधारण पढे लिखे कबीरपंथी और अन्य सम्प्रदायवालोंको बहुत खटकता है। उनका कहना है, इसमें वेदकी निन्दा की गयी है; किन्तु उनका यह विचार केवल भ्रममात्र है। यदि वे इसे विचारपूर्वक पढ़ें और ध्यानपूर्वक इसपर सोचें तो, उन्हें ज्ञात होजायगा कि, स्वामी परमा-

नन्दजीने वेदकी कहीं भी निन्दा नहीं की है । उलटा वह वेदको लौकिक पारलौकिक सुखोंका मार्गदर्शक बतलाते हैं । वेदमंत्रोंकी सिद्धिशक्तिको बडे जोरोंके साथ प्रामाणित करते हैं । समयके फेरसे वेदोंमें गडबड होनेपर शोक प्रगट करते हैं । संसारके सबसे पुराना धर्मग्रन्थ वेदोंकोही मानते हैं । निराकार निरञ्जन परमात्मा परमेश्वरसे उनका प्राकट्य मानते हैं; इतना करनेपरभी अनसमझ लोग उन्हें वेदनिंदक कहते हैं ।

इसके आगे पीछेके प्रकरणोंको अवलोकन करनेसे पाठकोंको स्वतः ज्ञात हो जायगा । फिर इतना होते हुए भी लोगोंको यह लेख खटकते क्यों हैं ?

इसका उत्तर इसके अतिरिक्त दूसरा क्या हो सकता है कि, प्रथम वेदकी इतनी प्रशंसा करके भी स्वामी परमानन्दजीका लेख दूसरोंको इसलिये खटकता है कि, स्वामी परमानन्दजी जिस मांसिक भूमिकापर बैठकर ग्रन्थ लिख रहे हैं. वह साम्प्रदायिक भूमिका है । आप पक्के कबीरपंथी हैं और जिस प्रकार और पंथवाले साम्प्रदायिक दृष्टिसे अपने मतोंको सर्वश्रेष्ठ सिद्ध करना चाहते हैं, उसी प्रकार आपभी अपने पंथ और ग्रन्थोंकी श्रेष्ठता प्रमाणित कर, अपने ग्रन्थोंके पाठकोंको, कबीर और कबीरपंथकी यथार्थ श्रेष्ठता स्वीकार कराना चाहते हैं । इसलिये जो यथार्थ भी आपके कलमसे निकलता है, वह दूसरे साम्प्रदायिक रंगमें डूबे हुओंको निन्दासा भासता है। दूसरे जो लोग इसे निन्दा समझते हैं वे भी स्वतः विचार शून्य, सुनी सुनाई बातोंके आधारसे मिथ्या पक्षपात पूर्ण होते हैं । जिन्होंने कभी वेद शास्त्रोंका अवलोकन नहीं किया; वरन अधूरे विद्या और ज्ञानवालोंकी लिखी साम्प्रदायिक पुस्तकोंको पढकर अपना विचार बांध लिया है, जिनमें उदारता और दीर्घ दृष्टिका अभाव और मत मतांतरके मिथ्या विश्वासकाही जमाव है, वे विचारे यदि स्वामी परमानन्दजीके लेखोंपर अविचारी दृष्टि डालकर, उन्हें निन्दक समझ लें तो कोई आश्चर्यकी बात नहीं है ।

यदि यह ग्रन्थसाम्प्रदायिक ढंगपर न लिखकर साधारण रीति पर लिखा गया होता, तो मेरे विचारसे कभीभी किसीको इसके विषयमें मुँह खोलनेकी हिम्मतही नहीं होती । क्योंकि, वेदके विषयमें स्वामी परमानन्दजीने जो कुछ कबीरमन्शूरमें लिखा है, वह एक प्रकारसे उपनिषद् और गीताके आशयको अपनी भाषामें लिख कर; उसे कबीरपंथी रंगसे रंग दिया है ।

पाठक ! आइये मैं आपको बतलाऊँ कि, किसप्रकारसे स्वामी परमानन्दजीने वेदके विषयमें उपनिषद् और गीताका अनुकरण किया है । पहले स्वामीजीके वाक्योंको देखिये । आप कहते हैं --

"चारों वेद लौकिक पारलौकिक (स्वर्ग आदि) ज्ञानोंके भंडार हैं, इनके उपदेशोंको सुनकर उनके ऊपर चलनेवाला मनुष्य लोकमें सुखी रहता और लोकमें स्वर्गादिकोंके सुखोंको पाता है, फिर कर्मके क्षीण होने पर संसारमें जन्म लेता है। यह परसम्वेद अर्थात् संसारकी मर्यादा बना रखने और उसकी वृद्धिका सच्चा कानून है। फिर आप इसी चौबीसवेंही प्रकरणमें लिखते हैं। येही अवि-नाशी वेद संसारके समस्त ज्ञानके मूल भंडार हैं" इत्यादि। देखो २४ वाँ प्रकरण पृष्ठ. ४३।

अब मैं आपके सिद्धान्तको उपनिषत् गीताके प्रमाणसे मिलाकर पाठकोंको बतलाता हूँ—

पहले उपनिषत्को लीजिये देखिये वह क्या कहती है–

मुंडक उपनिषत् प्रथम मुंडक.

मंत्र ३ शौनको ह वै महाशालोऽङ्गिरसं विधिवदुपसन्नः पप्रच्छ। कस्मिन्न भगवो विज्ञाते सर्वमिदं विज्ञातं भवतीति॥ ३॥

शब्दार्थ—प्रसिद्ध महागृहस्थ शौनकने विधिपूर्वक अङ्गिराके निकट आकरके प्रश्न किया "हे भगवन्! किसको जान लेनेसे सर्वका ज्ञान हो जाता है॥ ३॥

विवेचन—शुकने ऋषिके पुत्र शौनकने भारद्वार ऋषिके शिष्य महर्षि अङ्गिराकी सेवामें विधिपूर्वक अर्थात भेंटादि लेकर प्राप्त हुआ और समय देखकर उनसे प्रश्न किया कि, हे भगवन्! वह क्या है? जिसके जानलेनेसे सब कुछ जानने में आता है।

शौनकके उपर्युक्त प्रश्नको सुनकर अङ्गिरा ऋषिने उत्तर दिया–मुंडक उपनिषत् मुंडक प्रथमका मंत्र ४॥–

तस्मै स होवाच। द्वे विद्ये वेदितव्ये इति ह स्म यद् ब्रह्मविदो वदन्ति परा चैवापरा च॥ ४॥

उसपर शौकन ऋषि बोले–दो विद्या जानने योग्य है, उसे ब्रह्मविद् ज्ञानी परा और अपरा कहते हैं अर्थात् जब शौनकने प्रश्न किया तब अङ्गिराऋषिने कहा–हे शौकन! ब्रह्म (वेद) के जाननेवाले तत्वदर्शी महात्मा लोग दो प्रकारकी विद्या बतलाते हैं–उनमेंसे एक परा कहलाती है और दूसरी अपरा। उसमेंसे अङ्गिराऋषि पहिले अपरा विद्याको बतलाते फिर पराको॥॥

तत्रापरा ऋग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदोऽथर्ववेदः शिक्षा कल्पो व्याकरणं निरुक्तं छन्दो ज्योतिषमिति। अथ परा यया तदक्षरमधिगम्यते॥ ५॥

उसमें–ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, शिक्षा, कल्प, व्याकरण,

निरुक्त, छन्द और ज्योतिष अपरा विद्या है--और जिसके द्वारा अक्षर (ब्रह्म) की प्राप्ति होती है वह पराविद्या है ॥ ५ ॥

विवेचन--इन दोनों प्रकारकी विद्या बतलाकर अङ्गिराऋषिने शौनकको बतलाया कि--अपने अंगो सहित चारों वेद अपरा अर्थात् इस पार अर्थात् संसारकी विद्या है--इससे अङ्गिराऋषिने साफ २ कहदिया कि, अपने अंगो--शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द और ज्योतिष सहित ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद अपरा विद्या है, तो उससे निकले हुए अथवा उसके आधारसे बने हुए जितने शास्त्र पोथी और ग्रन्थ संसारमें हैं और होंगे वे सब अपरा विद्याकेही अर्न्तगत हैं और होंगे ।

परा विद्या तो केवल उसी नामका है जिससे अक्षर अर्थात् कभी न नाशहोनेवाला जाना जाता है। इसका आशय यह है कि, उपर्युक्त वेदादिकों द्वारा अक्षर अविनाशी वस्तुकी प्राप्ति नहीं होसकती वरन क्षर और नाशमान् जो लोक परलोक आदि रूप संसार है, उसी की प्राप्ति वृद्धि आदि होसकती है । इसीसे इसे अपरा अर्थात इसपारकी, नीचेकी अथवा प्राकृतिक, मायिक, संसारिकविद्या कहा। संसारमें रहनेवालोंको, सांसारिक उन्नति चाहने और परलोक जो स्वर्गादि लोक हैं उनकी कामनावालोंको वेदों द्वारा अवश्य लौकिक पारलौकिक सर्व सुखोंकी प्राप्ति होती है। इसमें कोई सन्देह नहीं है । ऐसे इच्छानुसार सर्व सिद्धि देनेवाले वेदों और उनके मूल प्रणव (ओंकार) की प्रशंसा और बडाईमें परमानन्दजीने--कबीर भानुप्रकाश, कबीरमन्शूर, कबीरकौमुदी, तालीम कबीरकलियुग आदि सर्व ग्रन्थोंमें, पन्नेके पन्ने, अध्यायोंके अध्याय लिखा है हाँ। जहां परा विद्या की बात आती है, उसे आप स्वसम्वेदका नाम देते हैं और इन वेदादिकोंको परसम्वेदका नाम देकर, आप उपनिषत्के समानही साफ शब्दोंमें बतलाते हैं कि पराविद्या (स्वसम्वेद) की प्राप्ति सच्चे सद्गुरुकी कृपा बिना कदापि नहीं हो सकती चाहे कोई कितनाभी वेद शास्त्रादि पारंगत हो जावे किन्तु, सद्गुरुकी कृपा द्वारा स्वसम्वेदको जाने बिना काल (मन) के जालोंसे छुटकारा कदापि नहीं पा सकता ॥

इसी प्रकार उपनिषत्में बहुत स्थानोंमें इस विषयपर प्रकाश डाला गया है अब गीतामें क्या कहते हैं पाठक उसेभी देखलें --

देखो श्रीमद्भगवद्गीता अध्याय--२

त्रैगुण्यविषया वेदा निस्त्रैगुण्यो भवार्जुन ।
निर्द्वन्द्वो नित्यसत्त्वस्थो निर्योगक्षेम आत्मवान् ॥ ४५ ॥

अर्थ—तीन गुणोंके विषयवाले वेद हैं, हे अर्जुन ! तू इन तीन गुणोंसे परे हो निर्द्वन्द सदा सत्वमें स्थित, योग[१] क्षेमसे[२] रहित और आत्मवान् हो।

इसके ऊपर बहुतोंने व्याख्या किये हैं, दो तीन मतोंका यहाँ दिग्दर्शन कराया-जाता है ।

१ पहिली व्याख्या—हे अर्जुन ! वेद तो तीन गुणोंकी बातोंकोही कहनेवाले हैं अर्थात् तीन प्रकारके गुण सत्त्व, रज, तममें तो लोग फँसे हुए हैं उन्हींको सतोगुणी रजोगुणी और तमोगुणी कामनाओंकी पूर्तिका मार्ग वह बतलाते हैं । इन काम-नाओं और गुणोंके बन्धनमें जकडा हुआ कभी मुक्त नहीं हो सकता । इसलिये हे अर्जुन ! तू इन तीन गुणोंसे परे हो जा अर्थात् वेदोंके घेरेसे बाहर होजा; नहीं तो, इन्ही तीनों गुणोंके बनाये हुए स्वर्गादि लोकोंमें भ्रमण करता हुआ, आवागमनके चक्रसे कभी बाहर नहीं निकल सकेगा । क्योंकि, सत्त्व, रज और तम इन तीन गुणोंकी कामनाओंसे स्वर्ग नरकादि आवागमनके अतिरिक्त विशेष कोई लाभ नहीं होता ।

सुख दुःख लाभ अलाभ, पुण्य, पाप, जीत, हार और शीतोष्णादि द्वन्दोंसे रहित सदा सत्यमें स्थित हो अर्थात् इन तीन गुणोंसे परे जो सत्य वस्तु है उस गुणातीतमें निश्चय रख । शूरा बन, कायर और अज्ञानी मत बन । सत्यमें जो स्थित होता अर्थात् सत्यमें जो निवास करता अथवा सत्यमें श्रद्धा रखता है, सो कभी कायर हो मायिक नाशमान गुणोंमें नहीं फँसता । वह योग क्षेमसे रहित होता है अर्थात् मायिक वस्तुओंकी न तो वह प्राप्ति चाहता है न उनकी रक्षाके लिये अपना समय नष्ट करता है । क्योंकि, सत्यका आश्रय लेनेवाला जानता है कि, वे मिथ्या मृगतृष्णाके जलके समान ठगनेवाले और क्षणिक हैं, इस लिये सत्यका आश्रय लेकर तू सावधान हो जा, कभी भी, इन त्रिगुणक विषयों-की कामनाकर उनके वशमें मत आजा । वरन उनके विषयोंसे चित्तकी वृत्तिको हटाकर अपने सत्यात्मामें स्थिति कर । इसीलिये हे अर्जुन ! इन त्रिगुणात्मक मिथ्या संहारमें फँसानेवाले वेदोंसे सदा अलग रह, नहीं तो आवागमनसे कदापि नहीं छूट सकेगो । हे अर्जुन ! इसी प्रकार तू कर्मोंके बन्धनको तोडकर मोक्षको प्राप्त होगा ।

भगवान्के कहनेका अभिप्राय यह है कि, वेद संसारकी वृद्धि करनेवाले और उसीमें रहकर सुख माननेका मार्ग बतलाता है क्योंकि, संसारमें सत्यकी खोज करनेवाले—"लाखनमेंको गने क्रोडन मध्ये एक" के कहावत अनुसार, कोई एक संस्कारी जीवही होते हैं, जो सतगुरुकी शरण होकर, सत्यको प्राप्तकर

१ अप्राप्त वस्तुकी प्राप्तिको योग कहते हैं । २ प्राप्त वस्तुकी रक्षाका नाम क्षेम है

अक्षय सुखको पाते हैं । नहीं तो संसारमें अधिकांश मनुष्योंकी रुचि सतोगुणी तेजोगुणी और तमोगुणी होती है, इससे वे यथार्थ सत्यकी चाहना न करके गुणोंकी प्रेरणासे स्वर्गादिसे लेकर सांसारकि नाशमान सुखोंकोही कामना करते हैं । यह नहीं कि, वे इन्हें नाशमान न जानते हों ? नहीं वे उसे नाशमान भी जानते हैं, क्योंकि, जिन वेद और शास्त्रोंका वे आश्रय लेते हैं, वेही स्वर्गादिक तथा उनके अभिमानी विष्णु ब्रह्मा इंद्रादि देवोंको समय पाकर नाशमान बतलाते हैं । किन्तु गुणोंके प्रभावमें दबी हुई उनकी बुद्धि, उस सत्यको ग्रहण नहीं कर-सकती । जिस प्रकार लोभी पुरुष ठगके हाथमें आजाता है और उसीकी लोभ दिलानीवाली बातों ो, सत्य मानकर उसी पर भरोसा करता है, उसी प्रकार त्रिगुण कामनाओंमें फँसे हुए जीव सत्यका अनादर कर, लोभ दिलाने वाली, वेदवादकी मिथ्या वातोंकोही सत्य मानते और सत्य कहनेवालोंको नास्तिक निंदक आदि विशेषणोंसे स्मरण करते हैं । इसी बातको भगवान कृष्ण इसी तीसरे अध्यायके श्लोक ४२, ४३ और ४४ में इस प्रकार वर्णन करते हैं ।

"यामिमां पुष्पितां वाचं प्रवदन्त्यविपश्चितः ।
वेदवादरताः पार्थ नान्यदस्तीति वादिनः ।। ४२।।
कामात्मानः स्वर्गपरा जन्मकर्मफलप्रदाम् ।
क्रियाविशेषबहुलां भोगैश्वर्यगतिं प्रति ।। ४३ ।।
भोगैश्वर्यप्रसक्तानां तयापहृतचेतसाम् ।
व्यवसायात्मिका बुद्धिः समाधौ न विधीयते ।। ४४ ।। "

भगवान् कृष्ण कहते हैं—हे पृथापुत्र पार्थ अर्थात् अर्जुन ! जो अविवेकी अर्थात् मूढ पुरुष हैं, जो वेदवादमें रत हैं जो वेदवाक्यके अर्थवादमेंही परम प्रीतिवाले हैं वे वेद या उसमें वर्णित नाना कर्मकाण्ड और उनके फलकोही सर्वस्व सर्वोत्तम मानते और कहते हैं कि, इनसे परे कुछभी नहीं हैं । उनकी दृष्टिमें स्वर्गही सब कुछ है । ऐसे मूढ पुरुष वेदके उन पुष्पित वाणियोंके जालमें पडे हुए हैं, जो ऊपरसे तो सुन्दर खिले हुए पुष्पके समान परम सुहावना देख पडता है, किन्तु उसमें कोई उत्तम गन्ध नहीं होती, केवल देखनेवालेको मोह लेता है । इसी प्रकार वेदकी नाना कामना स्वर्ग आदिकी आशा दिलाने और संसारमें भी नाना सुख ऐश्वर्यको देनेकी आशा दिलानेवाली वेदवाणी पर मोहित होकर अपनी व्यवसात्मिका अर्थात उससे परेकी बातको निश्चय करनेवाली बुद्धिको ऐसी कुंठित करलेते हैं कि, उनके सामने सत्य प्रत्यक्ष रूप धारण करके भी खडा हो तब भी उसपर उनका विश्वास नहीं होता ।

ऐसे लोग वेदके त्रिगुणजालमें फँसकर, लोक परलोककी प्राप्तिके नाना आडम्बर युक्त साधनोंमें, फँसे रहकर अपना जीवन समाप्त कर लेते हैं। और देवादिसे लेकर कीट पतङ्ग तककी नाना योनियोंमें भटकते हुए आवागमनसे छूटने नहीं पाते। ऐसे वेद पशु वेदके उन सुहावने बचन पर मोहित रहते हैं। जिनमें अनेक प्रकारकी कर्म विधि, अग्नि होत्र, दर्श, पूर्णिमा ज्योतिष्ठोम इत्यादि सकाम कर्म्मों तथा लौकिक फल बनाये गये हैं। वे इन वैदिक कर्म्मोंसे परे अपना कुछ भी कर्तव्य नहीं समझते।

इसी कारणसे उनकी व्यवसायात्मिका अर्थात् सत्यासत्यको निश्चय करनेवाली बुद्धि ऐसी कुंठित और अविश्वासी हो जाती है कि, वह यथार्थको नहीं समझ सकती।

पैंतालीसवेंश्लोकमें भगवान् कृष्ण इसी लिये अर्जुनसे कहते हैं; हे अर्जुन ! वेद संसारी है। संसारमें बहुल पुरुषोंकी रुचि सत्व रज और तमकी प्रधानतासे निज निज अधिकारानुसार, सांसारिक भोगों ` लिप्सावाली होती है, इस लिये स्वभावतः लोग उसी उसी प्रकारके भोगोंके पानकी कामना करते हैं; इसी लिये वेदोंनें धन, पुत्र, अश्वादि प्राप्तिके उपाय आदि लोक परलोक स्वर्गादिक कामनाकी पूर्ति ` लिये, नाना प्रकारके अनन्त साधनोंका वर्णन किया गया है, जिनके अनुष्ठानसे पुरुषकी सांसारिक कामनाएँ शीघ्र पूरी होती हैं।

इस प्रकार सब वेदोंमें सांसारिक कामनाओं और विषयोंकी पुष्टीकी बहुलता दिखाकर, भगवान कृष्ण अर्जुनको यह उपदेश देते हैं कि, हे अर्जुन ! तुझे ऐसी भ्रांतिमें नहीं पडना चाहिये कि, "जब वेद इसी प्रकारके उपदेश देते और उपाय बतलाते हैं तो हमें वही करना चाहिये, यही मनुष्यका कर्तव्य है" नहीं ! नहीं ! मनुष्य जन्मकी सफलता इसीमें नहीं हैं इसका तो इनसे बहुत ऊंचा पद परमानन्द प्राप्तिके लिये यथार्थ पदको प्राप्त करना इसका असली कर्तव्य है।

इसी लिये तू गुणातीत हो। इन त्रिगुणात्मक वेदोंके झगडोंसे अलग होकर इन फँसानेवाली कामनाओंका त्याग करदे। इन कामनाओंसे परे होनेके लिये तुझे उत्साह और धीरज रखकर शीतोष्णादि नाना प्रकारके सांसारिक क्लेशोंके सहनेकेलिये तत्पर रहना पडेगा। तुझे लोक परलोक सबको ठुकराकर, सत्यकी ओर जाना पडेगा, फिर काम, क्रोध, लोभ, मोह इत्यादि आपही आप तुझसे डर कर अलग हो जायेंगे।

दूसरी व्याख्या इस प्रकार है—

वेदोंका विषय तीन गुणोंका कार्य है अथवा तीन गुण और उनके कार्योंके प्रकाशक वेद हैं। अभिप्राय यह है कि, तीन गुणोंके अन्दर ही अन्दर वेदोंका कथन है। जितना उपदेश संसारमें होता है, वह सब इन्हीं तीन गुणोंके भीतरही भीतर हो सकता है। क्योंकि जो वाणीकी आज्ञा है सो सब तीन गुणोंका ही कार्य हो जाता है। वाणीकाही क्या ? मनकाभी विषय मायाकेही अन्तर्गत है। "गो गोचर जहँ लग मन जाई। तहँ लगि माया जानहु भाई॥" गुणातीत वस्तु अकथनीय अचिन्तनीय और निरुपदेश है, इसके लिये श्रुति स्वयम् कहती है "यतो वाचो निवर्तन्ते अप्राप्य मनसा सह" जहांसे वाचा सहित मन उसे न पाकर पीछे लौट आती है। इसी लिये मुण्डक उपनिषत्में वेद और वेदाङ्गको अपराविद्या कहा है।

जिस विद्यासे यथार्थ ब्रह्म न जाना जाय, न ठीक दर्शाया जासके, उसे अपरा विद्या कहते हैं और वेदोंमें प्रायः सांसारिक कामना युक्त, सकाम कर्मों और अपरब्रह्म (हिरण्यगर्भादि) की ही पूजा वर्णित है। अपराविद्याकी हद्द यहांही तक है। जो इस अपरा विद्या तकही ठहर जाते हैं वे परा विद्याको कैसे प्राप्त कर सकते हैं ? और पराविद्याको पाये विना त्रिगुणके जालसे कैसे छूट सकते हैं ? इसलिये हे अर्जुन ! तू ऐसी पुष्पित त्रिगुणात्मक वाणीवाले वेदोंसे सावधान हो, उनमें आसक्त मत हो। इत्यादि॥

इसी प्रकारसे गीताके अनेक भाष्यकारोंने अपनी अपनी युक्ति प्रयुक्ति द्वारा अनेक प्रकारसे इसका अर्थ किया है किन्तु, वेदके त्रिगुणात्मक होनेमें सब एक मत हैं। कइयोंने तो आत्मतत्वकी प्राप्तिके लिये त्रिगुणात्मक वेदोंका सर्वथा-ही त्याग बतलाया है।

आधुनिक प्रसिद्ध टीकाकारोंमें लोकमान्य तिलक अपनी टीकामें क्या लिखते हैं, यह भी दिखाता हूँ॥

देखो लोकमान्य तिलककी टीका गीताके श्लोक ४३—४४—४५ तीसरा अध्याय॥

(४२) हे पार्थ ! (कर्मकाण्डात्मक) वेदोंके (फलश्रुति फल) वाक्योंमें भूले हुए और यह कहनेवाले मूढ लोग कि, इसके अतिरिक्त दूसरा कुछ नहीं है बढाकर कहा करते हैं कि, (४३) "अनेक प्रकाके (यज्ञ--याग आदि) कर्मो-, सेही (फिर) जन्म रूप फल मिलता है और (जन्म जन्मान्तरमें) भोग तथा ऐश्वर्य मिलता है" स्वर्गके पीछे पडे हुए वे काम्य बुद्धिवाले (लोग) (४४) में

उल्लिखित भाषणकी ओरही उनके मन आकर्षित हो जानेसे, भोग और ऐश्वर्य-मेंही गर्क रहते हैं, इस कारण, उनकी व्यवसायात्मिका अर्थात् कार्य्य अकार्य्यका निश्चय करनेवाली बुद्धि कभीभी समाधिस्थ अर्थात् एक स्थानमें स्थिर नहीं रह सकती।

(४५) हे अर्जुन! वेद उस रीतिसे त्रैगुण्यकी बातोंसे भरे पडे हैं इसलिये तू निस्त्रैगुण्य अर्थात् त्रिगुणोंसे अतीत, नित्य, सत्वस्थ और सुख दुःख आदि द्वन्दोंसे अलिप्त हो, एवं योग क्षेम आदि स्वार्थोंमें न पडकर आत्मनिष्ठ हो।

इसी प्रकार सनातन धर्मावलम्बी और वेदान्ती आदि सभी टीकाकारोंने वेदको त्रिगुणात्मक बतलाकर उसके जालमें न पडनेकी ताकीद की है। तो फिर इस कबीरमन्शूरमें स्वामी परमानन्दजीने जो वेदोंको सांसारिक अथवा प्राकृतिक कहा तो कौनसा अपराध किया। वेद जब स्वतः अपनेको अपरा विद्या कहते हैं तब उसी बातको दूसरा कहे तो बुरा माननेको कोई बात नहीं है।

स्वामी परमानन्दजीने अपने "कबीर कौमुदी" नामक ग्रन्थमें वेदकी बहुत बडाई की है। आपने साफ लिखा है जो संसारमें रहकर वेदको नहीं मानता वह संसारके सब कष्ट अपने ऊपर बुलालेता है हाँ! मुक्तिके लिये संसार बन्धनसे छूटनेके लिये, सद्गुरुसे स्वसम्वेदको जानकर उसका अनुकरण करना आवश्यक बतलाया है। गुरुबोधमें राम रहस्य साहबभी कहते हैं—

"गृहधर्म बड खटपट, तामें रहु हुशियार।
लोक वेदकी रीति सब, करू सहित विचार॥"

आगे चलकर इसी कबीरमन्शूर ग्रन्थमें स्वामी परमानन्दजीने वेद और हिंदू धर्मकी इतनी स्तुति की है कि, आप साफ शब्दोंमें कहते हैं "हिंदू धर्मही एक ऐसा धर्म है कि, जो मनुष्यको सद्गुरुकी शरण प्राप्त करानेका अधिकारी बनाता है।" कहाँतक कहें, यदि कोई पूर्वापरका विचार किये बिनाही किसी बातके अर्थ और भावको न समझे और अपनी अनसमझीसे दुःखी होवे तो कोई क्या कर सकता है।

इसलिये कबीरमन्शूरके पाठकोंसे मेरा निवेदन है कि, वह पूर्वापर विचारे विनाही, इस ग्रन्थके विषयमें, अपना विचार न बाँध बैठे इसे आद्योपान्त पढ-जायँ फिर उनको पता लगेगा कि, स्वामी परमानन्दजी वेदके प्रशंसक हैं या निन्दक।

प्रायः कई लोगोंने स्वतः कबीर साहबको भी वेदका निन्दक लिखमारा

है किन्तु, कबीरकी वाणी और सिद्धान्तको समझे बिनाही उनका यह मिथ्या प्रलाप है।

कबीर साहबका स्वतः बीजक में ही वचन है---

"वेद इसस्मृति कहै किन झूठा जो न विचारे" साखीमें आप कहते हैं--

जाको मुनिवर तप करें, वेद थके गुण गाय।
सोई देउँ सिखापना, कोइ नहीं पतियाय॥

इस साखीको लेकर कई लोग शंका कर बैठते हैं कि, वाह कबीर साहब भी तो वही कहते हैं कि, जिसको वेद और ऋषि मुनि कहते हैं। किन्तु, ऐसी शंका करनेवाले बडी भूल करते हैं, वे इस साखीके अर्थ पर ठीक ठीक ध्यान नहीं देते-- इस साखीमें साफ साफ कहा है "वेद थके गुण गाय" अर्थात् जिसका गुण गाते २ अर्थात् जिसको ढूंढते ढूंढते वेद भी थककर "नेति नेति" "न इति न इति" "यह नहीं ? यह नहीं" कहकर मौन धारण कर लेता है। और मुनि ऋषि तप द्वारा जिसको खोजते खोजते हार जाते हैं, विद्वान् पण्डित सर्व विद्यासम्पन्न होकर भी जिसको नहीं पासकते, उसीके पहचानको मैं सिखावन देता हूँ किन्तु, वेद और तपादिकों के जालमें पडे हुए विद्वान् ऋषि मुनि लोग विद्या और तप आदिके अभिमानमें मेरी बात नहीं मानते।

इस बातका प्रमाण छान्दोग्य उपनिषत्के सातवें ब्राह्मणमें नारद और सनत्कुमारकी गाथासे मिलता है। अवसर पाकर बहभी किसी स्थानमेंदिखानेका प्रयत्न करूँगा।

अनुवादक---
श्रीयुगलानन्द बिहारी।

पचीसवाँ प्रकरण

वेदके प्राकट्यपर मतभेद।

बहुतलोग ऐसा अनुमान करते हैं कि ये वेद ईश्वरकी वाणी हैं तथा उसीने आदित्य, अग्नि, वायु, अङ्गिरा इन चार ऋषियोंद्वारा इनको प्रगट और प्रचलित किया है। मैं पहिले लिख आया हूँ कि, निरञ्जनने कूर्मजीसे रचनाका सामान लिया कूर्मजीका तीन शिर जब निरञ्जनने अपने नखोंद्वारा काट दिया तब उनके पेटके भीतर सूर्य, चन्द्र तथा नक्षत्रादि निकल पडे और अग्नि, आदित्य, वायु, अङ्गिरा, उसी समय प्रकट हो गये। उस समय ब्रह्मा प्रकट नहीं हुए थे

इस कारण वेदका ज्ञान तथा प्रकाश उन ऋषियोंमें पहलेसे होता है। अग्नि देवता स्वयं निरञ्जनजी हैं। आदित्य नाम सूर्यका है, उस सूर्यको भी वेदका ज्ञान होता है, उसके मध्य प्रकाश होता है, सुतरां गीतामें कृष्णने अर्जुनसे कहा है कि, अर्जुन ! जिस ज्ञानको आज तुझसे मैंने कहा है, उसको पूर्वमें मैंने सूर्यसे कहा था। तब अर्जुनने कहा कि, हे महाराज ! आप तो अब उत्पन्न हुए हैं और सूर्य तो पुराना देवता है। तब कृष्णने कहा कि हे अर्जुन ! मेरे और तेरे जन्म अनन्तबार हुए हैं, तू अपने पूर्वजन्मोंके वृत्तान्तको नहीं जानता, मैं जानता हूं, इस प्रकार प्रमाणित होता है कि, ब्रह्मासे पूर्व सूर्य था। अग्नि देवता स्वयम् निरंजन हैं और जो निरंजन हैं वही कृष्ण हैं, निरंजन तथा कृष्णमें तनिक भी विभिन्नता नहीं है सो वास्तवमें कृष्णने पहले सूर्यसे कहा था। वेद तथा गीतामें कुछभी विभिन्नता नहीं, इस कारण ये ऋषि मनुष्योंकी उत्पत्तिसे पहले ठहरे और ब्रह्मा पीछे उत्पन्न हुआ, इसी कारण कहा जाता है कि, ब्रह्माने आदित्य और अग्निसे ज्ञान सीखा। अग्नि तथा सूर्य दोनों एकही रूप हैं—परन्तु ये ऋषि-गणभी वेद प्रचारक ठहर नहीं सकते, कारण यह कि, जगत् ब्रह्माके संकल्पसे हुआ है ॥

कबीरसाहबने ग्रंथ अनुरागसागरमें प्रगट कहा है—देखो गायत्री तथा अद्याके वार्त्तालापमें—हे गायत्री ! तू ब्रह्माको ले आ। कारण यह कि, बिना ब्रह्माके इस जगतकी रचना नहीं हो सकती ? इस कारण इस जगत्‌को ब्रह्माने बनाया। ब्रह्मा द्वारा मनुष्योंको वेद मिले। सब ऋषि मुनि तथा राजा प्रजा ब्रह्मा द्वारा वेद पाते हैं और उसीकी आज्ञाओं पर चलते हैं।

वेदोपनिषद् प्रजापतिके उत्पत्तिपर्वमें देखो—लिखा है कि, सबसे पहले प्रजापति उत्पन्न हुए तब सूर्यको देखा और उसको खानेके लिये हाथ पसारा। जब प्रजापतिने सूर्यको पकडकर खाजाना चाहा, तब सूर्यने भयभीत होकर अपने मुंहसे "यहाँ" का शब्द किया। तब प्रजापतिने सूर्यको भोजनकी वस्तु न समझ कर नहीं खाया छोड दिया और अन्य प्रकारकी सहस्रों वस्तुएँ अपने भोजन योग्य बनायीं।

फिर योगवासिष्ठमें लिखा है कि, पहाडपर वसिष्ठ नामक एक ब्राह्मण था, उसके दश बेटे थे। इन दशों पुत्रोंने बडी तपस्या की और उन्होंने अपनी उस तपस्याका वर यह माँगा कि, हम दशों भाई ब्रह्मा हो जावें और वे सब ब्रह्मा हो गये। इन दशों ब्रह्माके निमित्त, दश ब्रह्माण्ड प्रकट हुवा उन्हीं दश ब्रह्माण्डोंमें यह एक ब्रह्माण्ड हमारा है। जब हमारे ब्रह्माण्डका ब्रह्मा प्रकट हुआ, तब जगतको

देखकर आश्चर्यान्वित हुआ और अपने मनमें सोचने लगा कि, इस सृष्टिका कर्ता कौन है ? यह बात किससे पूछूं ? तब सूर्यको सामने देखकर उसने पूछा कि, हे सूर्य ! तू मुझको बतला कि, इस सृष्टिका उत्पन्नकर्त्ता कौन है ? तब सूर्यने उत्तर दिया कि, हे ब्रह्मा ! मुझको अत्यंत आश्चर्य है कि, तू अपने कार्योंसे स्वयम् अनभिज्ञ है पर तूने जो पूछा सो मैं तुझसे कहता हूँ । तब सूर्यने ब्रह्माके पूर्वजन्मकी सब कहानी कह सुनायी और कहा कि, हे ब्रह्मा ! यह जगत् तेरेही संकल्पसे बना है और इसका कर्ता तूही है । यह ब्रह्माण्ड तेरा है । ऐसो ही अपनी अज्ञानावस्थामें ब्रह्माने सूर्य तथा अग्नि देवतासे विद्याध्ययन किया । इससे प्रमाणित है कि, ब्रह्मासे पूर्व अग्नि और आदित्य इत्यादि थे, इसी कारण ब्रह्माने अग्नि और सूर्य इत्यादिसे ज्ञान लाभ किया और विद्या सीखी ।

छब्बीसवाँ प्रकरण

ब्रह्मासे ऋषिमुनियोंकी श्रेष्ठता ।

ब्रह्मा तो सांसारिक मनुष्य है इस कारण उसकी आयुकी सीमा है, समय पाकर मर जाता है और फिर जन्म पाता है । पर ऋषिमुनिकी आयु तथा उनके अधिकार प्रभुत्व अनन्त हैं । वे ऋषि मुनि जो हंस कबीर कहलाते हैं उनका जन्म मरण तो कभी होताही नहीं, वे आवागमनसे रहितही हैं, पर वे ऋषि जो योग समाधि साधन प्राणायाम इत्यादि करते हैं वेभी योग तथा कायाकल्प इत्यादिके प्रभावसे, मार्कण्डेय, गुप्तमुनि तथा धनुषमुनि इत्यादिके समान अनेक युगों पर्यन्त जीवित रहते हैं, जब मृत्यु आती है तब प्राणायाम द्वारा बचते हैं और जब वृद्ध हो जाते हैं तब कायाकल्प द्वारा, फिर युवक हो जाते हैं, इस प्रकार ब्रह्माकी आयुसे ऋषियोंकी आयु विशेष है, वे महाप्रलयसे बच सकते हैं, इस प्रकार ऋषियोंकी आयु तथा विद्या ब्रह्मासे बढकर है। जैसे अग्नि देवता अथवा अग्नि ऋषि अथवा आदित्य ऋषि वायु देवता अथवा वायु ऋषि और अङ्गिरा ऋषि इत्यादि बडे विद्वान् तथा सामर्थ्यी हैं ।

यह जगत् अनेकबार उत्पन्न हुआ और मिटजावेगा और अनगिनती ब्रह्मा विष्णु महेशादि हुए और अभी होंगे तथा इस समयभी वर्त्तमानहैं, भिन्न २ ब्रह्माण्डोंमें राज्य कर रहे हैं और प्रभुत्व भोग रहे हैं । इस रचनाकी कोई सीमा तथा अवधि नहीं है, अनगिनती ढंगपर रचना हुई और होती है, उन्हीं अनगिनती ब्रह्माण्डोंमेंसे एक ब्रह्माण्ड हमारा है, जिसके प्रबंधकर्त्ता तथा शासक

ब्रह्मा, विष्णु, महेश ठहराये गये और इन चारों वेदोंके कर्ता धर्ता येहीं नियुक्त हुए संसारी जीवोंके निमित्त तो यही चारों परमसंवेद है और जो इन जञ्जालोंसे छूटा चाहें और मुक्ति पाना चाहें, उनके निमित्त स्वसंवेद है।

ये दोनों वेद उसी साहबके हैं, जबतक जीव सांसारिक कामनाओंमें बद्ध है और उसीमें सुखी और प्रसन्न है, तबतक परसम्वेदके अधीन रहे और जब इन जञ्जालोंसे उसका मन उचट जावे तब, स्वसम्वेदकी शिक्षाओंका अनुसरण करे। छोटा बच्चा जबतक अनजान रहता है तबतक उसके माता पिता उसको धूल मिट्टी और खेल कूदमें संलग्न रहनेसे वर्जित नहीं करते। पर जब बच्चा समझदार होता है, तब उसको मना करते हैं कि, अब खेल कौतुकका समय नहीं है, अब बुद्धि ठिकाने करके विद्योपार्जन करो और अपनी जडको समझो और मुक्ति प्राप्त करो।

सत्ताईसवाँ प्रकरण

वेद और किताबोंके मूलका वर्णन।

जैसे वेदके माननेवाले इस बातका दावा करते हैं कि, वेद ईश्वरकी वाणी है–वैसे ही मुसलमानोंकाभी कथन है कि, उनका कुरान खुदाका कलाम है (वचन है) ऐसे ही यहूदी तौरीतको अल्लाहकी वाणी समझते हैं, सबोंके पास तो परमेश्वरकी वाणी आयी और उसको पढ पढकर सभी आनन्दित हो रहे हैं। पर यह बडे आश्चर्यकी बात है कि, परमेश्वरको न किसीने जाना और न पहचाना, उन्हे जरा भी खबर नहीं हुई कि, वह कहाँ रहता है तथा क्या वस्तु है? देखो स्वयम् कुरानही कहती है कि, मैं चुनी गयी, एक बडे कुरानसे। यह बात स्पष्ट प्रमाणित है कि, कुरान नकल की गयी है, एक बडी साफ और शानवाली कुरानसे। किन्तु मुसलमानोंको इस बातकी तनिक भी सुध नहीं है कि वह शानवाला कुरान कहाँ है और वह कुरान किसी दूसरी जातीके पास है अथवा नहीं? बहुतेरे मुसलमानोंका कहना है कि, वह बड़ा कुरान किसी लौहमहफूज पर है। जब इतनी सुधभी मुसलमानोंको नहीं है कि, यह कुरान किस शानवाले कुरानकी नकल है तो फिर कुरानके परमेश्वरकी वाणी होनेका क्या प्रमाण है, न उसपर खुदाकी मुहर है और न उसपर उसका हस्ताक्षर है। जब न परमेश्वरके वाक्यको पहचाना और न खुदाको जाना, फिर बंधन तथा मुक्ति कैसे हो सकती है? और नर्क बैकुण्ठ और दुःख सुखका क्या परिणाम है?

अन्तमें सब भ्रमही भ्रमकी बातें ठहरेंगी। जबतक मनुष्यमें निर्मल विचार नहीं आता, जबतक मिथ्याको सत्य तथा सत्यको मिथ्या मान रहा है और यथार्थतासे वंचित है।

अट्ठाईसवाँ प्रकरण

वेदोंकी आज्ञाका पालन कहाँ और कबतक अवश्यमेव माननीय है?

उनचास करोड योजन निरञ्जनका शरीर है। सो हमारा यह ब्रह्माण्ड है और इस ब्रह्माण्डके रहनेवालोंके निमित्त इस वेदका अनुसरण करना उचित ठहराया गया जबतक मनुष्य इस ब्रह्माण्डके भीतरके पदार्थोंमें आसक्त रहेगा तबतक इसके भीतर बन्द रहेगा और वेदोंकी अज्ञाओंका अनुसरण करनाही पडेगा, जैसे यह ब्रह्माण्ड उनचास करोड योजनका है वैसे ही इस ब्रह्माण्डसे दूना कूर्मजीका शरीर है। इस कारण वह इससे बडा ब्रह्माण्ड है। इस प्रकार कोई बडा कोई छोटा अगणित ब्रह्माण्ड हैं उन अगणित ब्रह्माण्डोंमें अनन्त प्रकारकी रचनायें हैं, जिनका विवरण हो नहीं सकता। प्रत्येक ब्रह्माण्डके निमित्त एक एक शासक तथा राजा हैं जो, उनके ईश्वर कहलाते हैं और उन ब्रह्माण्डोंके रहनेवाले उसीको अपना कर्त्ता तथा स्वामी जानते हैं। जैसे भेड बकरियाँ अपने चरवाहेके अतिरिक्त दूसरेको नहीं जानतीं; यही अवस्था अल्पज्ञोंकी है, वे क्या जानें कि, असली परमेश्वर क्या है?

उनतीसवाँ प्रकरण

समुद्रमंथन तथा तीन कन्याओंका वृत्तान्त।

*अब पहला विवरण पुनः आया। देखो ग्रन्थ स्वासगुञ्जार और अनुरागसागरमें लिखा है कि, जब इस प्रकार वेद प्रकट हो गये, तब, निरञ्जनने यह काम किया कि, चारों वेदोंको आज्ञा दी कि, तुम जाकर समुद्रमें छिप रहो। उधर आदि भवानीने अपने शरीरसे तीन कन्याएँ प्रकट कीं और उनको आदेश दिया कि, तुम समुद्रमें जाकर छिप रहो। अपनी माताकी आज्ञा पातेही वह तीनों कन्याएँ जाकर रत्नाकरमें छिप गईं। यह कौतुक जो अद्याने किया इसे ब्रह्मा विष्णु महेश तीनोंने नहीं जाना। इसके उपरान्त निरञ्जनने अद्याको कहा कि, वह अपने तीनों पुत्रोंको समुद्र मथनेकी आज्ञा देवे। तब अद्याने तीनों पुत्रोंसे कहा कि, तुम जाकर समुद्र मथो और तीनोंने ऐसाही किया। समुद्रमेंसे

* इस प्रकरणका सम्बन्ध बाईसवें प्रकरणसे है।

बहुतेरी वस्तुएँ निकलीं, जिन्हें लोग चौदह रत्न कहते हैं। फिर उन सब वस्तुओंको तीनों भाइयोंने ज्योंका त्यों लाकर अपनी माताके समक्ष रख दिया। तब उनकी माताने उन वस्तुओंको उन तीनोंमें बाट दिया। सरस्वती तथा चार वेद ब्रह्माके भागमें आये, लक्ष्मी विष्णुके बखरेमें पड गयी और सती शिवको मिलीं। तीनों भाई पत्नियोंको पाकर अत्यंत हर्षित हुए इन्हीं तीनोंके वंशसे समस्त संसार है।

तीसवाँ प्रकरण

ब्रह्माका वेदपाठ और पिताकी जिज्ञासा।

जब ब्रह्माने वेद पाया और उसको पढा तब उसमें देखा कि, एक विराट पुरुष है जिसका शिर आकाशमें और पावँ पातालमें, चारों दिशा उसके कान और सूर्य चन्द्र उसके नेत्र हैं—

ब्रह्मा वेद पढन तब लागा। पढत वेद तब भा अनुरागा।
कहे वेद पुरुष इक आही। है निरंकार रूप नहिं ताही ।।
शून्य माहिं वह जोत दिखावे। चितवत देह दृष्टि न आवे ।।
स्वर्ग सीस पग आहि पताला। तेहि मत ब्रह्मा भौ मतवाला ।।
चतुरानन कहि विष्णु बुझाया। आहि पुरुष मोंहि वेद लखाया ।।
पुनि ब्रह्मा शिवको अस कहई। वेद मथत पुरुष इक अहई ।।

(अनुराग सागर)

तब ब्रह्माने विष्णुसे कहा कि, देखो भाई विष्णु! वेद इसी विराट् पुरुषको बतलाता है और भाई शिव आप भी सुनो और देखो; वेद बतलाता है कि, एक पुरुष ऐसा है जिसकी मूर्ति शून्यमें दिखाई देती है। तब ब्रह्मा अपनी माताके समीप जाकर कहने लगे कि, हे माता! वेद बतलाता है और उसमें स्पष्ट लिखा है कि, एक पुरुष है और तू कहती है कि कोई नहीं; यह बात सुनकर अद्याने कहा कि बेटा,! यदि तुझको अपने पिताके दर्शनोंकी अभिलाषा है, तो तू अक्षत तथा पुष्पादि लेकर जा और उसका दर्शन तथा पूजाकर आ। माताकी आज्ञा पातेही ब्रह्मा अक्षतादि लेकर उत्तरकी ओर चल पड़े और जाते जाते उस स्थान तक पहुँचे जहाँ तनिकभी सूर्यकी ज्योति नहीं थी, और पूर्णतया अंधकार था—वहाँ पर जाकर ब्रह्मा अपने पिताके दर्शनकी कामनासे समाधि लगाकर बैठ गये ।।

इकतीसवाँ प्रकरण

गायत्रीका प्रकट होना ।

ब्रह्माकी उस समाधिमें चारों युग बीत गये पर ब्रह्माको पिताका दर्शन नहीं हुआ । तब अद्याने मनमें चिन्ता किया कि, बिना ब्रह्माके सृष्टिको कौन रचेगा ! किसी युक्तिसे ब्रह्माको बुलाना चाहिये । तब उसने अपने शरीरसे मैल निकाला और उस मैलसे एक कन्या बनायी । और उसका नाम गायत्री रक्खा । कन्याने अपनी मातासे पूछा कि, हे माता ! तुमने मुझे किस निमित्त उत्पन्न किया है ? अद्याने उत्तर दिया कि, बेटी तेरा बड़ा भाई ब्रह्मा है और वह अपने पिताके दर्शनोंके निमित्त उत्तर दिशाको गया है, वह किसी युक्तिसेभी अपने पिताके दर्शन नहीं पासकता और यहाँ उसके बिना संसारकी उत्पत्ति हो नहीं सकती । इस लिये तू जा और उसको समझाकर ले आ, जिसमें संसारकी उत्पत्ति हो ।।

बत्तीसवाँ प्रकरण

पुष्पावतीकी उत्पत्ति और ब्रह्माकी वापसी ।

अपनी माताकी आज्ञा पातेही गायत्री उत्तरकी ओर चली और चलते २ उस स्थान पर जा पहुँची जहाँ ब्रह्मा समाधि लगाकर बैठा था । ब्रह्माकी अखंड समाधि लग रहीथी, और गायत्री खडी सोच रही थी कि, अब मैं क्या करूं, ब्रह्माको समाधिसे कैसे जगाऊँ ? ऐसा न हो कि, ब्रह्मा मेरे जगानेसे समाधिसे जागकर क्रुद्ध हो और मुझको शाप देवे । इस प्रकार गायत्री अपने मनमें सोच ही रही थी कि, उसके ध्यानमें अद्या समायी और उससे कहा कि हे, गायत्री ? तू ब्रह्माके चरण छू तो ब्रह्मा जागेगा । गायत्रीके ब्रह्माका पैर छूतेही ब्रह्माके नेत्र खुलगये तब उसने गायत्रीको अपने सामने खडी देखा। फिर अत्यंत रुष्ट होकर कहने लगा कि, तू कौन दुष्टा पापिनी है कि, मुझको मेरे पिताके ध्यानसे जगा दिया, मैं तुमको शाप दूंगा । तब गायत्रीने कहा कि, मेरा कोई दोष नहीं है, यथार्थ बात जानकर तब मुझको शाप देना। तुम्हारी माताने तुम्हें लेनेके लिये मुझको भेजा है,सो तुम शीघ्रचलो नहीं तो पछतावोगे। तब ब्रह्माने उत्तर दिया कि, मैं कैसे चलूं मुझे पिताके दर्शन तो हुएही नहीं । तब गायत्रीने कहा कि, तुम्हें किसी युक्तिसेभी पिताका दर्शन तुमको न होगा । तब ब्रह्माने गायत्रीसे कहा कि,यदि तू मेरी साक्षी माता के सामने दे कि, मैंने अपने पिताका

दर्शन पाया है तो तेरे साथ चलूंगा । तब गायत्रीने मनमें विचार किया कि, माँके सामने मिथ्या साक्षी देना तो महापाप है तो भी, परमार्थके निमित्त मैं मिथ्या भाषण करूँगी । इसके उपरान्त उसने ब्रह्मासे कहा कि, मैं तेरी साक्षी दूंगी; इतनेमें पुष्पावती नामनी एक दूसरी स्त्री जिसको गायत्रीने उत्पन्न किया था उस स्थान पर उपस्थित हुई । ब्रह्माने उससे भी कहा कि तू भी मेरी साक्ष देना । उसने भी स्वीकार किया कि, मैं भी तेरी साक्षी दूंगी। तब ब्रह्मा गायत्री और पुष्पावती तीनों मिलकर तथा एक मत होकर अद्याके पास चले ।

तैंतीसवाँ प्रकरण

ब्रह्मा गायत्री और पुष्पावती तीनोंका अद्याके पास जाना और अद्याका उन्हे शाप देना ।

जब ब्रह्मा गायत्री तथा पुष्पावती सहित अद्याके सामने पहुँचे, तब तीनोंने माताको दंडवत् प्रणाम किया । तब माताने कहा कि, हे ब्रह्मा अपना कुशल समाचार कहो और अपने पिताके दर्शनका वर्णन करो कि, कैसे पिताका दर्शन किया ? तब ब्रह्माने उत्तर दिया कि, हे माता ! मैंने अपने पिताका दर्शन भली भाँति किया और पुष्प तथा अक्षत द्वारा उनकी पूजा की, गायत्री तथा पुष्पावती मेरे साक्षी हैं । तब अद्या गायत्रीकी ओर फिरी और कहा कि हे गायत्री ! तू सत्य सत्य कह कि, ब्रह्माने अपने पिताका दर्शन पाया और भलीभाँति उसका पूजन किया ? तब गायत्रीने उत्तर दिया कि, हाँ माता! मैंने स्वचक्षुसे देखा कि, ब्रह्माने अपने पिताका दर्शन पाया और उसकी भलीभाँति पूजा की । फिर अद्याने पुष्पावतीसे पूछा–हे पुष्पावती ! तू सत्य बता कि, क्या ये दोनों सत्य बोलते हैं ?– तब पुष्पावतीने कहा कि हाँ माता ये दोनों सच्चे हैं मैंने अपनी आँखों देखा कि ब्रह्माने अपने पिताका दर्शन किया और उसकी पूजाकि । तीनों की यह बात सुनकर अद्या सोचने लगी कि, अलखनिरञ्जनने तो मुझसे कहा था कि, मेरा दर्शन कोई न पावेगा; उसको यह क्या हुआ कि, इनको दर्शन देदिया ! जब सोचकर २ कुछ समझमें नहीं आया तो अद्याने घबराकर अलख निरंजनका ध्यानकरके उससे पूछा कि, ये तीनों जो कहते है, इनमें कहाँतक सचाई है सो तुम बताओ । तब निरञ्जनने अद्यासे ध्यानमेंही कहा कि, ये तीनों ही झूठे हैं इन्होंने मेरा दर्शन नहीं पाया है, अपनी बडाईके लिये तुमसे असत्य कहते हैं। देखो अनुरागसागर ।

"ब्रह्मा मोर दरस नहिं पाया । झूठसाख इन आन दिखाया ।।
तीनों मिथ्या कहें बनायी । जनि मानहु यह है लबरायी ।।
(अनुरागसागर)

जब इस प्रकार कालनिरञ्जनसे पूछकर अद्याने मालूम कर लिया कि, ये तीनों झूठ बोलते हैं। तब वह अत्यंत क्रुद्ध होकर पहले ब्रह्माकी ओर मुडी और कहने लगी, हे ब्रह्मा! तू झूठा है और झूठकी खान है-इस कारण तेरी पूजा संसारसे उठ जावेगी और तेरी संतति द्वार २ पर ठोकरें खायेगी तथा जैसा तू झूठा है वैसीही तेरी सन्तान भी झूठी होगी। स्वार्थ सिद्ध करनेके निमित्त सदा झूठ बोलेगी, निज स्वार्थके निमित्त कथा पुराण सुनावेगी, परमार्थके निमित्त नहीं, दूसरे मनुष्य जो उसके कथा के श्रोता होंगे उनके मनमें तो ज्ञान तथा वैराग्य उत्पन्न होगा, पर वह स्वयं इससे वञ्चित रहेंगी उसके हृदयोंपर कालिमा छायी रहेगी, उसके मनमें भक्ति कभी नहिं उपजेगी-देखो, अनुरागसागर।

यह सुनि माता कीन्हीं दापा । ब्रह्माको तब दीन्ही शापा ।।
पूजा तोर करै कोउ नाहीं । जो मिथ्या बोल्यो मम पाहीं ।।
इक मिथ्या अरु अकरम कीन्हा । नरक मोट अपने शिरलीन्हा ।।
आगे होइहै जो शाख तुम्हारी । मिथ्या पाप करहि बहु भारी ।।
प्रकट करहिं बहुनेम अचारा । अन्तर मैल पाप विस्तारा ।।
विष्णु भक्त सो करिहै हंकारा । ताते परि है नरक मँझारा ।।
कथा पुरान औरहिं समुझै हैं । चाल विहून आपन दुख पैहैं ।।
उनते और सुने जो ज्ञाना । करै भक्ति सो कहौं परमाना ।।
और देवको अंश लखैहैं । औरन निन्दि काल घर जैहैं ।।
जाकहँ शिष्य करैं पुनि जायी । परमारथ तेहि नाहि लखायी ।।
परमारथके निकट न जैहैं । स्वारथ अर्थ सबै समुझैहैं ।।
आप स्वार्थी ज्ञान सुनैहैं । आपनि पूजा जगत दिढैहैं ।।
आप ऊँच औरहि कह छोटा । ब्रह्मा तोर सखा होइ खोटा ।।
(अनुराग सागर)

इस प्रकार ब्रह्माको शाप देकर तब अद्या गायत्रीकी ओर फिरी और कहा कि, हे गायत्री! तूने जो मिथ्या साक्षी दी उससे चार पैर की गाय हो जावेगी और तेरे अनेक पति होंगे - तथा तू विष्ठा और निषिद्ध वस्तुओंको खाती फिरेगी। फिर अद्या पुष्पावतीकी ओर फिरी और कहने लगी कि, हे पुष्पा-वती। तू जो ऐसा झूठ बोली इससे तू जाकर पृथ्वी पर पुष्प बनेगी और केवडा

तथा केतकी तेरा नाम होगा, लोग तुझको गंदे स्थानमें लगावेंगे—और जो कोई तुझको लगावेगा वह निर्वंश होगा।

चौतीसवाँ प्रकरण

निरंजनका अद्याको शाप देना।

इस प्रकार अद्याने तीनोंको शाप तो दिया किन्तु फिर अपने मनमें चिंता करने लगी, कि, मैंने तीनोंको शाप देकर आपत्तिमें फँसाया। मैंने तनिकभी धीरज नहीं रखा। ये तीनों दुःखी हो गये। इस कारण न जाने निरञ्जन मुझको क्या कहेगा? यह बात अद्या अपने मनमें सोच रही थी कि, निरञ्जनकी ओर से आकासवाणी हुई कि, "हे भवानी! मैंने तुझको सृष्टिके फैलाव करनेके निमित्त नियुक्त किया था, उसके विपरीत तूने किया—अर्थात इन तीनोंको शाप देकर दुःखी कर दिया, सो जो कोई बलवान किसी निर्बलको दुःख देगा या सतायेगा तो मैं उसका परिशोध करूँगा। किसीका बदला कदापि नहीं छोडूंगा। सो तूने जो इन तीनोंको शाप दिया है—इस कारण जब द्वापरयुग आवेगा तब तेरा अवतार होगा और तेरे पाँच पति होंगे और तू भी दुःख पावेगी। सो द्वापरमें अद्याका द्रौपदीका अवतार हुआ। जब इसप्रकार निरञ्जनने अद्याको शाप दिया—तब आकाशवाणी सुनकर बड़ा दुःखसे वह विलाप करने लगी और कहने लगी कि, हे निरञ्जन! मैं तेरे वशमें हूँ तेरे मनमें आवे सो कर।

पैंतीसवाँ प्रकरण

विष्णुका पिताके दर्शनको जाना, गौरसे श्याम होना और तीन लोकका राज्य पाना।

फिर भवानी विष्णुके समीप गयी और उससे कहा कि, तुमभी जाओ और पिताका दर्शन करो और उसके दर्शनका हाल मुझसे कहो। तब विष्णु पाताल लोकको चले, जाते २ उस स्थानपर पहुँचे जहाँ शेषनाग थे, शेषनागकी फुंफकारके विषसे विष्णु अचेत हो गये और उसी विषके प्रभावसे विष्णुका रङ्ग बदल गया नहीं तो उसके पूर्व उनका रंग गोरा था, सो नीला आसमानी रङ्ग हो गया और विषकी उष्णतासे घबराकर वे पीछे पलट पडे। उस समय निरञ्जनकी ओरसे विष्णुको आकशवाणी हुई कि, हे विष्णु! तुम अपनी

माताके पास जाकर सत्य २ कहो— सावधान झूठ न बोलना। जब विष्णु पातलसे पलट आये और माताने पूछा कि, हे विष्णु ! अपने पिताके दर्शनका विवरण कहो। तब विष्णुने कहा कि, माता मैंने अपने पिताका दर्शन तो नहीं पाया उलटा शेषनागके विषकी तीक्षणताके कारण मैं अचेतहो गया और मेरे शरीरका वर्ण बदल गया। यह बात सुनकर अद्या अत्यंत हर्षित हुई और कहा कि, वत्स ! तूने नितान्तही सत्य बात कही—मैं तुझको तेरे पिताका दर्शन कराबूंगी। इसके उपरान्त उसने विष्णुका मुंह चूमा और बडा लाड प्यार किया और आशीर्वाद देकर कहा कि बेटा ! तू त्रिलोकका राज्य करेगा समस्त मनुष्य तथा देवता तेरी बंदना करेंगे और तू सकल सृष्टिका पालक होगा, सब तेरे अधीन तथा आज्ञाकारी होंगे, ब्रह्मा तथा शिव दोनों तेरी आज्ञा मानेंगे और तेरी अधीनता करेंगे।

छतीसवाँ प्रकरण

विष्णुको पिताका दर्शन होना

हे पुत्र ! मैं तुझको तेरे पिताका दर्शन, दोनों रीतियोंसे कराती हूँ तू अपने पिताको अपने मनके भीतर भी देख और जहाँ वह सिंहासनारूढ है उस स्थानको भी देख। इतना कहकर अद्याने विष्णु पर अति प्रसन्नतासे निरञ्जनका दर्शन करा दिया। देखो अनुरागसागर।

पुनि कहि अस आदि भवानी। अब सुनहु पुत्र प्रिय मम वानी ॥
देखु पुत्र तोहि पिता भेटाऊँ। तोरे मनकर धोख मेटाऊँ ॥
प्रथम ज्ञान दृष्टि कर देखो। मोर वचन हिये परेखो ॥
मन सरूप कर्ता कहँ जानो। मनते दूसर और न मानो ॥
स्वर्ग पताल दौड मन केरा। मन इस्थिर मन कहे अनेरा ॥
छन महँ कला अनन्त दिखावे। मन कहँ देखि कोइ नहि पावे ॥
निराकार मनहीको कहिये। मनही आश दिवस निशिरहिये ॥
देखहु पलटि शून्यमहँ जोती। जहवाँ झिल मिलि झालर होती ॥
फेरहु श्वास गगन महं धाओ। मार्ग आकाशहिं ध्यान लगाओ ॥
पुनि माता कीह विष्णु दुलारा। मरद्यो मान जेठ निज बारा ॥
अहो विष्णु तुम लेहु असीसा। सब देवन महँ तुमही ईसा ॥

जो इच्छा तुम चित्त महँ धरिहौं । सो सब तोर काज में करिहौं ।।
देवन श्रेष्ठ तुम कहँ मनिहैं । तुम्हरी पूजा सब कोई ठनिहैं ।।
(अनुराग सागर)

विष्णु जब अपने पिताका दर्शनकर आनन्दित हुए तब विष्णु निरञ्जन और अद्या तीनों एक स्वरूप हो गये और ज्योतिमें ज्योति ऐसी समागयी कि, तनिक भी विभिन्नता नहीं रही। ब्रह्म, माया तथा जीव तीनों एक स्वरूप हो गये। यही पिता पुत्र तथा पवित्र आत्मा हैं। इन्हीं तीनों द्वारा बनेहुए परमेश्वरकी सूचना वेद देता है–और ऐसे ही खुदाका विवरण इञ्जीलमें लिखा है। जब ये तीनों एकत्रित हो जाते हैं तब सृष्टिका पता ठिकाना नहीं रहता और जब ये तीनों अलग २ होजाते हैं तब समस्त सृष्टि प्रगट हो जाती है। अद्याकी कृपासे विष्णु अपने माता पिताके समान बलिष्ठ तथा प्रभावशाली होगये। और इसप्रकार निरञ्जन तथा अद्याने विष्णुको समस्त संसारका अधिकारी बना दिया और तीनों लोकके कर्त्तधिर्त्ताकी पदवी प्रदान किया।

सैतीसवाँ प्रकरण

शिवका शाप और वर पाना।

इसके उपरान्त अद्या शिवके समीप गयी और कहा कि, हे पुत्र ! मैंने अपने दो पुत्रोंको तो मार्ग बता दिया, उन्हें जो कुछ कहना था सो कह चुकी, अब तूभी अपने पिताका समाचार कह कि, तूने किस प्रकार अपने पिताका दर्शन पाया और किस प्रकार उसकी पूजा की ? यह बात सुनकर शिवजी चुप रह गये और मिथ्या तथा सत्य कुछभी न कहा–तब अद्या बोली कि वत्स ! तूने मौन धारण कर लिया और मिथ्या तथा सत्य कुछभी नहीं कहा–इस कारण तू योगसमाधिकर, शीशपर जटा रख, और शरीरमें भस्म रमा, तू क्रोधी तथा तेरा वेष भयानक होगा। तेरे अनुयायियोंमें जाति पातिका ध्यान नहीं रहेगा, अब और जो तेरे मनमें आवे सो माँगले, मैं तुझको प्रदान करूँगी।

पुनि लहुरा कहँ पूछे माता । तुम शिव कहो हियेकी बाता ।।
माँगहु जो तुम्हरे चितभावे । सो तोहि देउँ मातु फरमावे ।।
दोई पुत्रन कहँ मता दिढावा । मांग महेश जोई मन भावा ।।
जोरि पानि शिव कहवे लीना । देहु जननी जो आज्ञा कीन्हा ।।
कबहि न विनसे मेरी देही । हे माता माँगों वर एही ।।

कह अष्टंगी अस नहिं होई । दूसर अमर भयो नहिं कोई ॥
करहु योग तप पवन सनेही । रहे चार युग तुम्हरी देही ॥
जौलों पिरथी अकास सनेहा । कबहुँ न विनसे तुमरी देहा ॥

तब शिवने कहा हे माता ! मेरे शरीरमें बडा बल हो और मैं अमर होऊँ तब अद्याने कहा कि, हे पुत्र ! ऐसाही होगा:—निदान शिवजी बडे वीर और अमर हुए विष्णु तीनों लोकके स्वामी तथा ब्रह्माकी संतान अर्थात् ब्राह्मण सब झूठे तथा धूर्त हुए ।

अड़तीसवाँ प्रकरण

कर्मका बदला ।

विष्णुका शेष नागसे बदला ।

अब जानना चाहिये कि, विष्णुको शेषनागने जो कष्ट पहुँचाया था । उसके बदले तो शेषनागका अवतार कालीनागका हुआ । वह कालीनाग वृन्दावनकी यमुना नदीकी कालीदहमें रहा करता था और उसके विषकी ज्वालासे पशु पक्षी इत्यादि सब भस्म हो जाते थे । जब विष्णुने द्वापर में कृष्णका अवतार लिया तब कालीनागको नाथा और अपने पुराने बदलेको पूरा किया और फिर प्रबल होकर शेषनागकी छातीपर अपना आसन जमाया, इस प्रकार बदला कभी किसीका नहीं छूटता ।

उनचालीसवाँ प्रकरण

विष्णुका ब्रह्माको आश्रय देना ।

जब ब्रह्माको माताने शाप दिया और जब उनको जान पडा कि, हमारी संतान द्वार द्वारपर भीख माँगती फिरेगी, तब वे अत्यंत दुःखित तथा मलीन मुख होकर विष्णुके पास गये और कहा कि, भाई आप बडे भाग्यशाली हैं कि, माता आपपर दयालु हुईं, हम तो उसके शापसे नष्टप्राय हो गये । हे भाई ! माताका क्या दोष है, यह सब अपनीही करनियोंका फल है । तब ब्रह्माको दुःखी देखकर विष्णुने उनको बहुत कुछ सन्तोष दिया और कहा कि हे ब्रह्मा ! आप मेरे बडे भाई हैं और मैं आपका छोटा भाई हूं, मैं आपकी सेवा तन मनसे करूँगा और जहाँ कहीं कथा कीर्तन होम और यज्ञ संसारमें मेरे नामसे होगा, सो सब ब्राह्मणों द्वाराही होगा, ब्राह्मण बिना कुछ न होगा, जो ब्राह्मणोंको प्रसन्न करेगा उससे

में प्रसन्न रहूंगा। जो ब्राह्मणको दुःखी करेगा उससे मैं दुःखी होऊँगा। विष्णुसे यह बात सुनकर ब्रह्मा अति प्रसन्न हुए, और उन्हें निश्चय हो गया कि, अब हमारी संतान सुख पावेगी तथा प्रसन्नतापूर्वक जीवन व्यतीत कर सकेगी।

इस प्रकार तीनों भाई अपनी स्त्रियों सहित रहने और आनंद करने लगे। स्वयम् निरञ्जन तो शून्यमें जाकर शून्यस्वरूप होगये और तीनोंलोकोंका राज्य तथा शासन अपनी स्त्री अद्या और तीनों पुत्रों (ब्रह्मा, विष्णु, शिव) को सौंप दिया बस ए ही चारों समस्त संसारके मालिक हैं।

चालीसवाँ प्रकरण

मायासृष्टिकी उत्पत्तिका वृत्तान्त।

इसके पहले मैं ब्रह्मसृष्टि और जीवसृष्टिका वर्णन कर आया हूं, अब यहाँ से मायासृष्टिका विवरण करता हूँ—

मायासृष्टिका स्रष्टा स्वामी निरञ्जन है और इस मायासृष्टिकी उत्पत्ति स्थिति और विनाश सब कुछ कालपुरुष द्वारा हुआ करता है। ब्रह्म और जीव-सृष्टिका कभी विनाश नहीं होता, पर मायासृष्टिको इन्द्रजालियोंके सदृश काल-पुरुष उत्पन्न करता है और फिर समेट लेता है। जैसे भानमतीकी पेटारीमेंसे सब सामान निलकते फिर उसीमें समाजाते हैं, यही अवस्था उत्पत्ति तथा प्रलयकी है। इस मायासृष्टिका सदैव विनाश होता है और जन्म मरणका सब दुःख और सुख इसीमें है निरञ्जनने जब मायासृष्टि रची, तब प्रथम कर्मका जाल बनाया। स्वर्गकी रचना की, भयानक तथा रोचक सब इस मायासृष्टिके निमित्त ठहराया और पिता पुत्र अर्थात् निरंजन और विष्णु राज्य करने लगे। निर्गुण तथा सगुण अर्थात् निर्गुण निरञ्जन जो परमेश्वर वा खुदा कहलाता है और सगुण विष्णु राम, कृष्ण इत्यादि सशरीर अवतारधारी परमेश्वरकी पूजा सारे संसारमें होनेलगी। निर्गुणको योगीलोग योगसमाधि द्वारा पाते हैं और सगुण विष्णुको समस्त हिन्दू, मुसलमान, ईसाई और मूसाई पूजन करते हैं यह मायासृष्टि सदैव बंधनमें रहती है उसका छूटना महा कठिन है।

इकतालीसवाँ प्रकरण

मायासृष्टिका विवरण।

अद्या, ब्रह्मा, विष्णु और महेशने चार खान चौरासी लाख योनिको

रचना की । यही चारों इस सृष्टिके उत्पन्न कर्ता हैं । अण्डज खानि को अद्याने उत्पन्न किया, अण्डजखान उसको कहते हैं जिसकी उत्पत्ति अण्डे, द्वारा होती है ।

दूसरे पिण्डज खानको ब्रह्माने बनाया–पिण्डज खान वह है, जो बच्चा देते हैं ।

ऊष्मजखान विष्णुने उत्पन्न किए–ऊष्मज खान वह है जो वस्तुओंके भले बुरे संयोगसे उत्पन्न होते हैं । जैसे मच्छड मक्खी इत्यादि ।

स्थावर खानके रचयिता शिवजी हैं और स्थावर खानमें समस्त जड-पदार्थ हैं ।

इस प्रकार इन चारोंसे चारखान चौरासी लाख योनिके जीव उत्पन्न हुए । इस प्रकार सब जीव सारे संसारमें भरगये । तब अद्याने अपने तीनों पुत्रों-को तीनों लोकोंका राज्य सौंप दिया और आप मथुराको छोडकर कोट काँग-डामें गयी । फिर हिंगलाजमें जाकर रहने लगी ।

इधर तीनों भाई लोकोंपर राज करने लगे और नरक वैकुण्ठ इत्यादिका प्रचार हुआ और तीर्थ, व्रत, कर्म, धर्म, वेद पाठ इत्यादि संसारमें प्रचलित हुए तथा सिद्ध, साध, साधक इत्यादि सब प्रकट हुए । इस प्रकार तीनों देवताओंका राज्य पृथ्वी पर प्रचलित हुआ । उन्हीं तीनोंको समस्त मनुष्य जाति परमेश्वर जानने और उन्हींकी पूजा सेवाको सत्य मानने लगी और यही तीनों समस्त संसारके परमेश्वर ठहरे ।

बयालीसवाँ प्रकरण

वैकुण्ठका वृत्तान्त ।

वैकुण्ठ पृथ्वीसे साठ सहस्र योजन ऊँचा है–और दक्षिण और पूर्वके कोने पर ध्रुव भक्तका स्थान है । उसके दक्षिण और पश्चिमके कोनेमें अग्नि देवता रहते हैं उसके पूर्व और दक्षिणके कोनेमें राजा इन्द्र रहते हैं । यह वैकुण्ठ बडा सुन्दर स्थान है और विष्णुके रहनेकी जगह है । इस वैकुण्ठके बीचोंबीच विष्णुका सिंहासन स्थित है उस सिंहासनपर विष्णु महाराज विराजते हैं और सारे देवता, ब्रह्मा, महेश इत्यादि उनके दरबारमें उपस्थित रहते हैं । यही विष्णु परमेश्वर और सर्वशक्तिमान् इत्यादि कहलाते हैं । सातों आकाश तथा पृथ्वी पातालादि सब चौदहों भुवनमें आप आया जाया करते हैं । प्रत्येक स्थानपर विष्णु उपस्थित रहते और सब सिद्ध साधु इत्यादिको बन्दरके भांति नचाया करते हैं । यह विष्णु मायापति हैं, उनकी मायाने समस्त संसारको घेर रक्खा

है उनके विष्णुके हाथमें गदा—कौमुदा, चक्रसुदर्शन, नन्दक—असि, शारङ्ग—धनुष्य और शंख पांचजन्य इत्यादि रहते हैं जिससे वे अपने वैरियोंपर विजय पाते हैं। इसी विष्णुकी पूजा समस्त संसार करता है, जहाँ २ कठिनाइयाँ आ पडती हैं वहाँ गरुडपर सवार होकर विष्णु महाराज आन उपस्थित होते हैं और उस कठिनाईको सरल करते हैं। आपकी सवारीका गरुड ऐसा शीघ्रगामी है कि एक पलभरमें सवालाख योजन उड जाता है। सप्तद्वीप, पृथ्वी तथा आकाश सब मानों आपके चरणोंके नीचे हैं और वैकुण्ठमें बैठकर सब जीवोंकी पाप पुण्यके हिसाब करते हैं, चित्रगुप्तजी आपके मंत्री हैं, सबके पाप तथा धर्मका खाता आपके पास रहता है। विष्णु महाराजकी आज्ञासे कोई नरक कोई वैकुण्ठ और कोई परमधामको जाता है। सब देवता ब्रह्मा शिव कुबेर इन्द्र इत्यादि विष्णुकी सेवामें सदा उपस्थित रहते हैं। यह वैकुण्ठ सुमेरु पर्वतके शिखपर अत्यन्त सुन्दर बना हुआ है। विष्णु वैकुण्ठ तथा सब स्थानों पर व्यापक हैं। तीनों लोकके कर्ता धर्ता आपही हैं, जब कोई जीव पृथ्वीपर मरता है तब विष्णुके सामने उपस्थित किया जाता है और आपहीकी आज्ञासे पाप पुण्यका फल भोगता है।

तेतालीसवाँ प्रकरण

ब्रह्मपुरी कैलास, और अमरावती अदन इत्यादीका वृत्तान्त।

ब्रह्माके लिये ब्रह्मलोक और शिवके निमित्त कैलास ऊपर बने, वैसेही पृथ्वीपर भी काशी धाम अत्यंत सुन्दर स्थान पुण्य धाम बना, जहाँ ब्रह्मा तथा शिव दोनों भाई विराजमान हुए। विष्णुने अपने निमित्त वैकुण्ठ बनाया और ब्रह्माके निमित्त आनन्दवनकी रचना की और यही आनन्द वन पृथ्वीपर वैकुण्ठ कहलाया।

अदन क्या है?

पूर्वकालमें इसका नाम आनन्दवन था। आनन्द नाम हर्ष तथा प्रसन्नताका है और वन नाम वाटिकाका है, ये दोनों शब्द संस्कृतके हैं सो अरबवासियोंको संस्कृतशब्दका विशुद्ध उच्चारण नहीं आनेके कारण आनन्द—शब्दका उलटकर अदन कर दिया और वनका अनुवाद फारसी तथा अरबीमें बाग है। यह आनन्दवन बडाही मनोरञ्जक स्थान विष्णुने तय्यार करके ब्रह्मा तथा सावित्री को वहाँ रक्खा, जहाँ वे दोनों आनन्दसे रहा करते थे। इस आनन्द वनमें कल्पवृक्ष[1], अमृत[2] और सुखविलासके सब सामान थे। उसी आनन्दवनको

१ अर्बीमें कल्प वृक्षको "दरख्त तूना" कहते हैं। २ अमृत को अर्बीमें "आब कोसर" कहते हैं।

अब काशी कहते हैं और वाराणसीभी उसीका नाम है । क्योंकि, यह वरुणा और फारस तथा अरबके लोगों द्वारा शुद्ध उच्चारण न हो सका, इस कारण वाराणसीको लोग अब बनारसके नामसे पुकारते हैं ।

इसका समाचार तौरीतमें उत्पत्ति की किताबमें भी है कि, परमेश्वरने पूर्वमें अदनवाटिकाको बनाया, कारण यह कि, जहाँ तौरीत प्रकट हुई वहाँसे काशी पूर्व दिशामें है और इसीको खबर मुसलमानों की हदीसोंमें है कि, आदम भारतसे मक्केका हज करनेके निमित्त गया था तथा पचास २ कोसपर इसका एक एक पग पडता था । कबीर साहबका कथन है कि, ब्रह्माहीको आदम कहा करते हैं, सो ब्रह्मा बनारसमें रहा करता था । इस आनन्दवनकी प्रशंसा काशीखंड ग्रंथमें देखो । ब्रह्मा तथा शिव दोनों भाई वहाँ रहते थे । (सत्य कबीरका वचन, देखो ग्रन्थबीजक) ।

मरिगै ब्रह्मा काशीके बासी । शम्भू सहित मुए अविनासी ॥
मथुरा मरिगै कृष्णगुवार । मरि मरिगै दशो अवतारा ॥

चौवालीसवाँ प्रकरण

निरंजनने सत्यलोककी नकलपर अपने लोक बनाये ।

जैसा कि, सत्यपुरुषने अपने हंसोको द्वीप द्वीपोंमें सुख पूर्वक रहनेके लिये द्वीप प्रदान किया, उसीका अनुकरण करके कालपुरुषने अमरावती, कलकावती, गोलोक, स्वर्ग, ब्रह्मलोक, साकेत इत्यादि बनाया और उनमें सुख भोगका समस्त सामान प्रस्तुत किया और नरक वैकुण्ठ इत्यादि की रचना करके सब ठीक ठौर किया, जो जिस योग्य था उसे वहाँ बैठाया । विष्णु ब्रह्मा शिव इन्द्र वरुण कुबेर इत्यादि सबको इन स्थानोंमें रक्खा और आप सबसे अलग रहै । अद्याने भी अपने तीन पुत्रोंको तीनों लोकोंका राज्य सौंप दिया ।

पैंतालीसवाँ प्रकरण

तीनों पुत्रोंकी कृतघ्नता ।

जब सब स्वर्ग कैलास वैकुण्ठ इत्यादि बना चुके और तीनों भाई तीनों लोकका राज्य करने लगे, तब तीनों भाइयोंने वही कार्य किया जो निरंजन

१ वरुणा काशीके उत्तरमें । २ असी काशीके दक्षिणमें बहती है ।

तथा अद्याने किया था। जैसे निरंजन और अद्याने सत्यपुरुषके नाम गुप्त कर अपनी बडाई सारे संसारमें प्रगट की, उसीप्रकार तीनों भाइयोंने अद्या और निरंजनका नाम बिलकुलही छिपाकर, संसारमें अपनी पूजा तथा प्रतिष्ठाका प्रचार किया।

जब तीनों भाइयोंने यह कार्य किया और अद्याने भी जानलिया कि, मेरे बेटे तो मेरा नाम बिलकुलही मिटाकर केवल अपनी बडाई सृष्टिपर प्रगट करके अपनी पूजा कराते हैं और मुझको कोई नहीं पूछता।

छियालीसवाँ प्रकरण

अद्याकी पूजाका प्रचार।

जब अद्याने पुत्रोंकी कृतघ्नता और स्वार्थको जान लिया तब, उसने अपने शरीरसे अपने रूपकी तीन कन्याएँ प्रकट कीं। वे अत्यंत कोमलाङ्गी तथा सुन्दरी हुईं। उन तीनोंका नाम क्रमशः १ रम्भा, २ सूची, ३ रेणुका रक्खा और उन्हे आज्ञा किया कि, हे बेटियो! तुम जाओ और समस्त संसारको आकर्षित करके मेरी पूजा संसारमें प्रचलित कराओ। वे तीनों अपनी माताकी आज्ञा पातेही, पहले आकाशको उडगयीं और समस्त देव गंधर्व तथा, चारण इत्यादिकों का चित चुरा लिया, फिर सब गंधर्वको अपने साथ मिला लिया जब सब देव और गंधर्व इत्यादि इनके वशमें आकर इनके दास बन गये, तब छत्तीस प्रकारके बाजे और सब गंधर्वोंको अपने साथ लेकर पृथ्वीपर आयीं, ब्रह्मा विष्णु शिव तथा समस्त ऋषि मुनिके मनको मोह लिया। जब उन लोगोंने छत्तीस प्रकारके बाजे और तिरसठ प्रकारकी राग रागिनी छेडी तब उनको सुनकर, सबका चित्त चञ्चल तथा अधीर हो गया। सब लोग उनके दास बन गये फिर तो उन्होंने अद्याकी पूजाका समस्त संसारमें प्रचार किया। अब भवानीका पूजन सब करने लगे। विशेष वृत्तान्त अम्बुसागरके पाँचवें तरंगके अनुमानयुगकी कथा परिशिष्टमें देखना चाहिये।

सैंतालीसवाँ प्रकरण

पाँचोंकी पूजाका निश्चित होना और निरञ्जनका सर्वाधिपत्य।

इन्हीं पाचों-निरञ्न, अद्या, ब्रह्मा, विष्णु, शिवकी पूजा प्रचलित हुई। इन पाँचके आगे कोई कुछ नहीं जानता इन्होंका समाचार चारों वेद और

किताब देते हैं। निरञ्जन तथा अद्याने सत्य पुरुषका नाम समस्त संसारसे छिपा दिया और मुक्तिमार्गके समस्त द्वारोंको रोक लिया। इस कारण कि, कोई भी मनुष्य मुक्तिमार्ग न पावे, सदा आवागमनके जालमें फँसा रहे और भवसागरमें डुबकियाँ खाया करें तथा सब कालपुरुषके भोजन बनें।

इस प्रकार चारखान चौरासी लाख योनिके जीव अर्थात् समस्त माया-सृष्टि कालपुरुषके चंगुलमें फँस गयी और उसके जालसे उनका छुटकारा कठिन हो गया। यह धर्मराज निरंजन नित्य एक लाख जीवको तप्तशिलापर भून भून कर खाया करता है। इस प्रकार सब जीवधारी सांसारिक आपत्ति-जालमें फँस गये ॥

अडतालीसवाँ प्रकरण

तप्तशिलाका वृत्तान्त।

भवसागर एक विशाल समुद्र है, जिसके दो किनारे हैं, एक लोक, दूसरा वेद। इस लोकके किनारेपर आदि भवानी बैठी है और उसके साथ चौसठलाख जोगिनियाँ रहतीं और समस्त संसारमें धूम मचाती हैं। ये हाथोंमें खप्पर लिये सब जीवोंका रक्तपान करती फिरती हैं। जहाँ भवानीके स्थान हैं वहाँ मनुष्य, भैंसा, बकरा, मुरगा, आदि प्रत्यक्ष काटे जाते हैं, वे सब इन देवियोंके भोजन होते हैं। इन्हीके लिये बेधडक अत्यंत निर्दयताके साथ नित्य अनन्त जीवोंका बलिप्रदान होता है। ये बलवती देवियाँ समस्त पृथ्वी तथा आकाशमें घूमा करती हैं।

पृथ्वीसे छत्तीस सहस्र योजन पर (जिसको कबीर साहबने सालोक-सक्ति कहा है) स्वयम् मायाका स्थान है, वहाँसे अद्या अपनी फौज सहित अथवा अकेली सप्तद्वीप नौखंडमें फिरा करती है और समस्त संसारमें राज्य करती है।

यह अद्या तो लोकके किनारेपर बैठी है और दूसरा जो वेदका किनारा है, उसके ऊपर निरञ्जन देवता अत्यंत सचेत तथा चैतन्य होकर बैठा, ऐसा मंत्र पढ रहा है कि, जिसमें उसके मंत्रके प्रभावसे कोई जीव तीनों लोकके बाहर न जा सके। वही सब जीवोंकी बुद्धिपर बैठा है और जिधरको चाहता है मनुष्योंकी बुद्धिको उधर को फेर देता है और किसीको सत्यपुरुषकी भक्तिकी ओर ध्यान देने नहीं देता है—

"पैठा है घट भीतरे, बैठा है साचेत।
जब जैसी गति चाहता, तब तैसी मति देत॥"

जैसे बकरी कसाईसे प्रेम करती है और उसके पास स्वेच्छापूर्वक दौड दौडकर जाती और अपना गला कटाती है, ऐसेही समस्त मनुष्य परसमवेदकी शिक्षा ग्रहण करके धर्मराजका भोजन बनते हैं, इस काल पुरुषका मुंह अग्नि है जैसा कि, विराट् स्वरूपमें लिखा है। इसी लिये जो वेदमंत्रोंके साथ अग्निमें हवन किया जाता है सो सब इस अलख निरञ्जनका भोजन होता है, इसीकारण अश्वमेध, गोमेध, नरमेध, अजमेध इत्यादि यज्ञ परम्परासे होते आते हैं।

कबीर साहबके ग्रंथ अनुरागसागरमें देखो कि, आकाशमें एक तप्त-शिला है, उसी तप्तशिला पर सब जीव जलते बलते और तडप २ कर कबाब होते हैं और उन सबको काल पुरुष खाजाता है, इस प्रकार अद्या तथा निरञ्जन सब जीवोंको मारमार कर खाया करते हैं। अत्यन्त दुःखपानेपर सब जीव तडप तडप कर हाय हाय करते और पुकारते हैं कि, हे दीनदयालु ! सबके पालनकर्त्ता ! हमको धर्मराज अत्यंत कष्ट दे रहा है आकर इससे बचाओ और हमारा दुःख क्लेश हरण करो।

उनचालीसवाँ प्रकरण

भवसागरका स्वरूप।

यह अद्या तथा निरञ्जन दोनों पति पत्नी लोक तथा वेद रूपी भवसा-गरके दोनों किनारोंपर जीवोंको रोकनेके लिये अत्यंत सावधानीपूर्वक बैठे हुए हैं और इस भवसागरके बीचमें तीन अहेरी कर्मोंका जाल लिये फिरते हैं— ये सहस्रों पंथ प्रचलित करके, एक दूसरेके विपरीत राह दिखा, स्वपक्षमें फंसा-कर मनुष्यमात्रको अंधा करते हैं—जिससे समस्त मनुष्य अज्ञानता वश भटक भटक कर मरते हैं। किसीको भी मुक्तिका मार्ग मालूम नहीं होता। ये तीनों मछुवे ऐसे बलिष्ठ हैं कि, अपने अनन्त कपट जालों द्वारा जीवोंको फँसाही लेते हैं और भाँति भाँतिके कर्म व उपासना योग तथा ज्ञान द्वारा, लोभ लालच बतलाकर किसीको अपने जालसे बाहर जाने नहीं देते और अज्ञानवश समस्त मनुष्य आपसे आप आ आकर स्वयम् कैद हो इन पांचों शिकारियोंका आखेट बनते हैं। इस भवसागरमें समस्त जीव मछलियोंके सदृश हैं और ब्रह्मा विष्णु शिव ये तीनों मछुवे इस समुद्रमें गर्जते फिरते हैं, कोई इनका सामना कर नहीं

सकता । यदि ऋषियोंमेंसे कोई इनके सामने खडा होवे तो सहस्रों प्रकारकी धूर्त्ततासे उनको भी वशीभूत कर लेते हैं । जहाँ कहीं ये तीनों दबते हैं वहाँ तुरन्त उनके माता पिता उनकी सहायता करते हैं और उनको बल देकर उनकी कामना पूरी करते हैं, ये पाँचों बडे भयानक तथा मनुष्योंके कष्टदाता हैं –

पचासवाँ प्रकरण

दुःखित जीवोंकी पुकार और सत्यपुरुषको गोहार ।

सब जीवोंने अनन्त कालपर्यंत बडा दुःख पाया, उन्हें कुछ सूझताही नहीं था कि, क्या करें और किस उपाय द्वारा बचें ! इससे अत्यन्त दुःखी होकर ऐसे चिल्लाते हाय हाय करते थे कि, उनके रोने तडपने तथा चिल्लानेका शब्द सत्यलोकपर्यंत जा पहुँचा ।

जब सब जीवोंके हृदयका धुआँ सत्यलोकपर्यंत पहुँचा तब सत्य पुरुष दयालु हुए और दया करके ज्ञानीजीसे कहा कि, हे ज्ञानी ! सब जीवोंको काल-पुरुष अत्यंत दुःख दे रहा है, तुम तप्तशिलातक जाओ और सबको ठंढा करो ।

इक्कावनवाँ प्रकरण

ज्ञानीजी अर्थात् कबीर साहबका सत्यलोकसे तप्तशिलाके समीप जाना और समस्त जीवोंके ठंढा करनेका वृत्तान्त ।

सत्य पुरुषकी आज्ञा पातेही ज्ञानीजीने तप्तशिलाके समीप पहुँच कर सत्य शब्दकी टेर की । सत्यशब्दकी आवाज सुनतेही सारे जीव ठंढ होगये, जब सारे जीवोंको विश्राम मिला तब सत्यगुरुको पहचाना और जान लिया कि, यही दयालु हमारे ऊपर दया करने आया है इसीने हमको बचाया तथा ठंढा किया है ।

शेर

दोस्त खलायक़ अवदो अज़लके । मख़जने रहमो करमो फ़ज़लके ।।
पाक खुदावन्द जो परवरदिगार । आदमके सूरत हुआ आशकार ।।
आपही अपना जो ले आया पयाम । पाक नबीका है मुक़द्दस कलाम ।।
लेके जो पैग़ाम चले लोकसे । तप्तशिला देख जले झोकसे ।।
देखा वहाँ आन जो सोज़ान संग । जलते तड़पते जीव जहाँ जैसे ढङ्ग ।।
कहके शब्द सत्त पुकारा जहाँ । सर्द हुई फौर सो आतिश वहाँ ।।

जीवने पहचान लिया पाक जात । जिससे है क़ायम यह कुल कायबात ।।
अपने कलमरूमें सितम देखकर । अहद देहिन्द: अहदी भेस धर ।।
और किसीका नहीं ऐसा था ताब । कालके हाथोंसे छुडावे अज़ाब ।।
इस लिये आग हुए खुद रसूल । जिसकी निगहसे होवे जम जीरधूल ।।
देखतेही जीव किये सब पुकार । हक़ करीमा बिराये किर्द्दगार ।।
लीजिये बचा हमको अब इस आगसे । आये यहां चल बराये भागसे ।।

जब सब जीवोंको जलता तथा तडपता देखकर सत्यगुरु आये और उनका प्राण बचाया तथा ठंढा किया तब समस्त जीव सत्यगुरुकी स्तुति करने लगे—

शेर

किया सब जानपर रहमत जहाँदार । तू पूरूषसत शब्द सतके अमाँदार ।।
पडे हम भूल भवसागरसे आकर । न जाना भेद सत्पुरुष निर आकार ।।
कहीं तीरथ कहीं मूरत पुजाया । कहीं खून कत्लका जारी हुवा कार ।।
कहीं खञ्जर कहीं छूरी चलाया । कहीं मुजबह[1] पै छुटीं खून पिचकार ।।
कहीं हनुमानो भैरव भूत पूजा । कहीं शिव लिङ्ग औचण्डीं गर्म बाजार ।।
कहीं गरदन मरोडी झटका पटका । कहीं आति में जलत बलते जाँदार ।।
कहीं है चक्र भैरवका तमाशा । कहीं बकरे पै धूँसोंकी पडीवार ।।
कहीं रोज: कहीं मैं भङ्ग बूज: । कहीं गलकट बरहमन बैठे खूँखार ।।
कहीं मुर्गा है बिस्मिल हाथ कस्साभ । कहीं चीखें सुवर कालीके दरबार ।।
कहीं है ढोल बजता ओ नकार: । कहीं भजन: है मर्दोजन जनाकारा ।।
कहीं अश्वमेध हो अजामेध । कहीं अहम्मनबरहमन मर्दुमाजार ।।
कहीं मुल्ला न काजी ले छुरा हाथ । कहीं गरदनकुशोको तेज तलवार ।।
कहीं रहमत कहीं ज़हमत दिखाया । पडे सब जीव धोखे धंबेके गार ।।
भरमका धर्म आलममें चलाया । कहींनेक ओ कहीं है वह व किरदार ।।
हरी हर हर हरी हर कोइ बोले । कोई कहता अहंब्रह्म सबका सरदार ।।
कहांतक सो बयाँ कीजे सरापा । निरञ्ज खल का नहिंवार औ पार ।।
येह तीनों देव देवी सबके दाता । इन्हींके मर्दोजन फरमान बरदार ।।
फँसे वेद और शर:में जीव सारे । नहीं महरम ढूँढ कोई शब्द सार ।।
दो लोके और वेद सूलीके सतूँ हैं । लटकते उसके ऊपर जीव जम द्वार ।।
कि ज्यों सावनके घासोंसे छिपे राह । पुरुष सतपंथ यों रोकेहैं मक्कार ।।

---

१ जबहकरनेकी जगह—क़साईखाना ।

हमें रख लीजिये खुद जा पनहमें । तु बंदीछोर सब जीवनको आधार ।।
बजुज़ सत्गुर हमारे कौन दे दाद । तुही है बरतरीं सब सिद्ध सालार ।।
तुही सत्पुरुष खुद धर देह आया । शरन अपनीमरखिय हमको इस बार
किया तदबीर सदहा योग जप हम । न छुटकारा हुआ अज़ दस्ते जब्बार ।।
सिवा साया क़दम तेरे न जाये । नहीं चारा कोई सूझे है नाचार ।।
तुही बन्दः नेवाजः बन्दः परवर । सिवा तेरे न रह कोई हज़िनहार ।।
ज़ियारत आपसे यह सँगे सोज़ाँ । हुआ हम सबके खातिरमिस्ल गुलज़ार ।।
बचा लीजे बचा लीजे बचाले । हम आजिज़कालके फँदेगिरफ्तार ।।
किसुन सतगुरुका कलमः आब हैवाँ । हुए हैं ज़िन्दः हम सबजीव मुर्दार ।।
हुई शादी क़दम क़ादिरके हेखे । बहर रुख होरहीरहमत नमूदार ।।
कि ज़र्रः खाक पाए परतोअफ़गन । हुए ज़ाहिर व बाहर इल्म आसार ।।
न तुझसा और कोई हर दो जहाँ में । तु आदम की मुसीबतम मददगार ।।
हुआ बद हाल मुतगय्यर हमारा । ख़बर लेनेको आये आप करतार ।।
हुए हम भूलके मुजरिम तुम्हार । गुनह बख्सो गुनहबख शिन्दः गफ्फार ।।
सुबुक कीजे हमें इस बोझसे अब । हमारे सिर गुनाहोंका है अंबार ।।
हमारे परदःको ढक मेह्र करके । तेराही नाम है मशहूर सत्तार ।।
हम आजिज़ख़ाक हैं पा पाक पाक । गुरू की मेह्र पावें अस्ल इसरार ।।

बावनवाँ प्रकरण

जीवोंका भक्तिकरनेकी प्रतिज्ञा करना ।

जब इस प्रकार सब जीवोंने ज्ञानीजीकी स्तुति की, तब आप अत्यन्त दयालु होकर कहने लगे कि, ऐ सब जीवो ! तुम जब सब मनुष्य देह पाओगे और मनुष्यकी देह पाकर सत्यपुरुषकी भक्ति करोगे तब, काल पुरुषके जालसे छूटोगे। तब सब जीव कहने लगे कि, हम सब अब मनुष्य शरीर पाकर सत्यपुरुषकी भक्ति को कदापि विस्मृत न करेंगे अबतक हम सब लोक तथा वेदके धोखेमें आनकर, कालपुरुषको सत्य पुरुष समझते थे और उसकी भक्ति करतेथे इस कारण हमारी ऐसी दुर्दशा हुई, हमलोग लोक तथा वेदके बंधनमें भूल गये, अब कदापि न भूलेंगे, न धोखेमें पडेंगे । यह बात सुनकर ज्ञानीजीने मुसकुराकर कहा कि, हे जीवो ! जब तुम मनुष्यतन पाओगे तो यह सब भूल जावोगे; कालपुरुष फिर तुम्हारी बुद्धिको गोता देने लगेगा किन्तु, तुममेंसे जो कोई सत्यगुरुका कहना मानेगा और

सत्यपुरुषका भक्ति हृदयसे करेगा, उसको सार शब्द मिलेगा, उसके द्वारा वह परम धामको सिधारेगा और फिर वह कालके पञ्जेमें कदापि नहीं फँसेगा ।

तिरपनवा प्रकरण

पूर्व देशमें कालपुरुषका जीवोंको फसानेके लिये नाना मतमतान्तरका प्रचार करना ।

इतना कहकर तथा समस्त जीवोंको शान्त करके ज्ञानीजी पुनः सत्यलोकको चले गये। फिर निरञ्जनने नाना प्रकारका अपना पंथ जीवोंको बाँधनेके लिये पृथ्वीपर प्रचलित किया। ये जो समस्त मजहब हैं सब बंधनके निमित्त हैं, उद्धारके निमित्त कोई भी नहीं। इसी प्रकार कालपुरुषके अनन्त धर्म पन्थ पृथ्वीपर प्रचलित हुए ।

उपर्युक्त चारों वेद भारतवर्ष तथा पूर्वके अन्यान्य देशोंमें रहे। समस्त भारत तथा आसपासके देशोंमें चारों वेदोंकी शिक्षा फैल गयी जहां सब लोग वेदकी आज्ञा और ऋषियोंके आदेश पर बराबर चलते आरहे हैं।

चौवनवाँ प्रकरण

पश्चिममें चार किताबोंका प्रचार ।

पश्चिमके देशोंके लोग पूर्व वेदसे वञ्चित रहे, इस कारण ब्रह्मा विष्णु तथा शिव लोगोंको समय समय पर अनेक रूपोंमें दर्शन देते और उन्हें उपदेश दिया करते थे, तथापि उनके पास कोई प्रमाण नहीं था और न कोई विशेष किताब थी कि, जिसके आधार पर वे लोग चलें ।

देखो मुहम्मत बोध और कबीर साहबके अन्यान्य ग्रंथोंमें ऐसा लिखा है कि, पूर्वोक्त चार वेदोंसे चार किताबें निकाली गयीं और पश्चिम देशके लोगोंको दीगयीं जिससे वे लौकिक पारलौकिक मर्य्यादाका ठीक ठीक पालन कर सकें। यद्यपि जो उपदेशोंमें चारों वेद और चारों किताबोंके तनिक भी विभिन्नता नहीं है, तथापि देश कालके विचारसे भारतके लोगोंके ढङ्गपर चारों वेद दिये गये हैं और पश्चिम देशवासियोंके आचार व्योहार पर चार किताबें प्रदान हुईं। जिस जातिके निमित्त जो किताब उतरी उसमें उसकी रीत व्योहार लिखे हुए हैं। प्रत्येक जातिके निमित्त प्रत्येक किताब बनी है और पैगम्बरों द्वारा पृथ्वीके लोगोंको उनकी शिक्षा दी गयी। प्रत्येक पैगम्बर अपनी समझके अनुसार प्रचार करता आया, यथार्थ भाव और भेदको तो कोई दिव्य दृष्टिवाले साधुही समझते हैं दूसरे

क्या समझेंगे जिसमें जितना प्रकाश है उतनाही उसका कथन और वर्णन है, जैसे वेद पूर्वीय देशवासियोंके लिये हैं, वैसेही ये चारों किताबें पश्चिम देशवासियों के लिये उपयोगी हैं। सो यह पूर्वीय, चार वेद और पश्चिमीय चार किताब समस्त पृथ्वीपर संसारमें फैल गये, उन्हीं उन चारों पश्चिमीय किताबोंके नाम तौरीत, जबूर, इञ्जील और फुरकान अर्थात कुरान है।

पचपनवाँ प्रकरण

तौरीतमें उत्पत्तिका वृत्तान्त ।

आदमकी पैदाइस ।

खुदाने छः दिनमें समस्त सृष्टिको उत्पन्न करने के पश्चात्, वैकुण्ठ बनाकर उसमें आदम और हौवाको रक्खा। उस वैकुण्ठमें आनन्द तथा सुख भोगकी सब सामग्रियाँ उपस्थित थीं। कल्पवृक्ष लगा था, अमृतके सुन्दर स्रोतें बहते थे। आदम अत्यंत निश्चिन्तताके साथ जीवन निर्वाह करता था, पाप पुण्यकी सुध भी नहीं थी। पशुओंके भाँति लोक परलोकका उसको तनिक भी ज्ञान नहीं था, उस अवस्था में वह नन्हें बच्चोंके समान अज्ञानी था।

कबीर साहबका कथन है कि, मनुष्यका बच्चा बारह वर्षपर्यन्त अनजान माना जाता है क्योंकि तब तक वह पशुके समानही रहता है। इसी प्रकार आदम बच्चोंके सदृश अनजान रहकर आनन्द उपभोग किया करता था। इन्द्रियोंके वशीभूत होना पशुओंका काम है।

तब परमेश्वरने विचार किया कि, यदि आदम इसी अवस्थामें आनन्दकी तरंगोंमें डूबा रहा तो, यह जन्म भर मूर्खही रह जावेगा और इसकी संतान भी वैसेही होवेंगी, इस कारण अवज्ञा करनेके अपराध पर वैकुण्ठसे बाहर निकाल दिया और कहा कि, वह उद्यम करके खावे कारण यह कि, हलालकी[१] कमाईही द्वारा मनुष्यका अन्तःकरण शुद्ध होता है। हाथ पाँव इत्यादि भी कर्म निमित्तही मिले हैं। जब उसको भलाई बुराई का ज्ञान हो जायगा, तब उसके मनमें खुदाका खौफ़ पैदा होगा, तब संयम, नियम करके वह मनुष्यता तथा विद्या सीखेगा, और उसकी पशुता तथा मूर्खता उसमेंसे निकल जावेगी, क्योंकि, परमेश्वरका भयही ज्ञान तथा कर्मकी जड है जिसके मनमें परमेश्वरका तथा मृत्युका भय है वही मनुष्य है और सब पशु हैं। सो जब आदम वैकुण्ठके बाहर निकाला गया तो मिनहत

---

१ हलालकी कमाई उसे कहते हैं जो मनुष्य उचित परिश्रमद्वारा प्राप्त करता है।

करके जीवन व्यतीत करने लगा और मुफ्तका भोजन छोड दिया, तब ज्ञान तथा इल्मके लिये उद्योग करने लगा और ज्ञानी होगया । देखो मुसलमानोंकी हदीसोंमें लिखा है कि, जब आदम बिहिश्तसे निकाला गया तब, उस पर खुदाके यहांसे पैगम्बरी उतरी और वह पैगम्बर हुआ । उसी समयसे आजपर्यन्त मनुष्यके निमित्त धर्मकी कमाई तपके तुल्य और मुक्तिकाद्वार माना गया है। सो खुदा उचित जानकर आदमको वैकुण्ठके बाहर निकाल दिया और वैकुण्ठमें चमकती तल्वारोंके साथ फिरिस्तोंका पहरा बैठा दिया और उनसे कहा कि, देखो आदम अब भला बुरा पहचानने लगा क्योंकि, अब वह भी हममेंसे एक हुआ । यहांपर बहुवचनका शब्द खुदाने प्रयोग किया है कि, आदमने खुदा अर्थात् विष्णुके समान अनगिनत ब्रह्मा और अनगिनत विष्णु तथा शिव हैं—और सहस्त्रों ऋषि मुनि विष्णुके समान पदाधिकारी हैं और उनमें भी सृष्टिके उत्पन्न करनेकी शक्ति है ।

आदम वैकुण्ठके बाहर निकाला जाकर सांसारिक कार्योंमें संलग्न हुआ । कुरबानी और खुदाकी बन्दगी आदमके समयसे ही प्रचलित है ।

छप्पनवाँ प्रकरण

आदम और हव्वाकी संतान ।

आदमके दो पुत्र उत्पन्न हुए, एकका नाम क़ाबील दूसरेका नाम हाबील था । दोनों भाइयोंने कुरबानीकी और परमेश्वरने हाबीलकी कुरबानीको कबूल किया तथा काबीलका अस्वीकार कर दिया तब बडे भाई काबीलको क्रोध आया उस समय परमेश्वरने अपना दर्शन देकर काबीलको समझाया और कहा कि, हे काबील ! तू क्रोध मतकर यदि तू साफ दिलसे कुरबानी करता तो स्वीकार होता तथापि तू अपने छोटे भाई हाबील पर विजयी होगा। खुदाकी आज्ञानुसार काबील अपने भाईपर विजयी हुआ और उसकी हत्या कर डाली । काबील दुष्ट तथा दुरात्मा था और हाबील विशुद्धात्मा था । इस प्रकार पृथ्वी नर रक्तसे लाल हुई । क़ाबील की संतान पृथ्वीपर अधिकतासे फैल गयी । उन्होंने जो सुंदर स्त्रियाँ देखी उनके साथ विवाह कर लिया जिनसे उनकी वंश वृद्धि हुई और उनसे पृथ्वी पर पापकी अधिकता हुई—तब उनके पापोंसे खुदाको घृणा होगयी ।

आदम तो एकसौतीन वर्षका होकर मर गया था किन्तु, उसकी संतान बडीही पापी हुई, तब परमेश्वरने चाहा कि, मैं अब इन पापियोंको डुबाकर मार डालूं ।

सत्तावनवाँ प्रकरण

जलप्रलय और नूहकी किस्तीका वर्णन ।

परमेश्वरने नूहसे कहा कि, तू एक नाव बना और अपने बाल बच्चों समेत उसमें चढ और सब जीवजन्तु कीडे मकोडे इत्यादिके जोडे २ अपने साथ ले, जिसमें उनकी नसल (वंश) पृथ्वीपर रह न जावे । मैं अब पापियोंको नष्ट करूंगा । नूह आदमकी दशवीं पीढीमें धर्मिष्ठ पुरुष था, उसने ईश्वरकी आज्ञाको मान लिया । जब नूह दूसरे जीवों सहित नावपर चढा, तब उस समय ऐसी बाढ आयी कि, समस्त जीव डूबकर मर गये, केवल नूहकी नावपरके सब जीवधारी बच गये विष्णुने (जैसा कि मत्स्यपुराणमें लिखा है) मछलीकी सूरत बनायी और अपनी दोनों सींगोंमें नावको बाँध लिया, जिसमें बाढके बेगसे बहकर वह नाव चूर २ न हो जाय । जबतक बाढका बेग रहा तबतक नूहकी नावको विष्णुने पकड रक्खा जब वह नाव अरारात पर्वतपर ठहर गयी तब विष्णु वैकुण्ठको चले गये । जब पृथ्वी सूख गयी तब सब जीवों सहित नूह पृथ्वीपर आये और खुदाके प्रसन्नार्थ जीवोंको आगमें जलाकर बलिप्रदान और यज्ञ किया । वे जीव जब जले तब उनके शरीरमें धुँवा उठा और उस गन्धकी बासना लेनेके निमित्त खुदा महाराज वैकुण्ठसे पृथ्वी पर उतरे और उस गंधको सूंघकर अत्यंत प्रसन्न हुए और नूहको आशीर्वाद दिया कि, नह ! तुम बोओ लूनो और प्रसन्नतापूर्वक रहो तथा पृथ्वीपर फैल जाओ फिर विष्णु पछताए कि, अभी तो मैंने सबको नष्ट करदिया पर भविष्यमें ऐसा कदापि नहीं करूंगा । फिर नूहसे यह प्रण किया मैं अपना चिह्न आकाश पर रखता हूं और प्रण करता हूं कि, अब पृथ्वीके जीवोंको इस प्रकार नाश नहीं करूंगा । फिर अपने शार्ङ्गधनुष्यको आकाशपर रख दिया और कहा कि यह मेरा धनुष वृष्टिके समय आकाश पर दिखायी देगा, इस शार्ङ्गधनुषको देख कर अपनी प्रतिज्ञा मैं याद करूंगा और पृथ्वीपरके रहनेवालोंको बाढसे न मारूँगा । इस प्रकार नूह और उसकी संतानको आशीर्वाद देकर भगवान् वैकुण्ठको चले गये और नूह अपनी संतानों सहित खेती करने लगा ।

अट्ठावनवा प्रकरण

इब्राहीम पैगम्बरका वर्णन ।

नूहकी दशवीं पीढीमें इबराहीम उत्पन्न हुआ । यह मनुष्य पुण्यात्मा तथा बडाही धार्मिक था । उसके सामने ब्रह्मा विष्णु और शिव तीनों प्रगट हुए । जिनको

इबरानी और ईसाई दो दूत मानते हैं और उनसे एकको यहवाह मुक़द्दसके नामसे पुकारते हैं और उसका नाम बडी प्रतिष्ठाके साथ लेते हैं। इस यहवाहने इबराहीम को आशोर्वाद दिया । इबराहीमको प्रिय पुत्र इसहाक़ था । परमेश्वरने आकाश वाणीसे इबराहीमको आज्ञा दी और कहा कि, ऐ इबराहीम ! तू अपने पुत्र इसहाक़ को मेरे नामपर कुरबानी कर । इबराहीम परमेश्वरकी आज्ञाको मान कर अपने पुत्र इसहाक़को लेकर चला और लकडियोंको एकत्रित करके अपने प्यारे पुत्रको उसपर बैठाया और हाथमें छूरा लेकर उसको हलाल करने तथा जलाकर कुरबानी करनेके निमित्त प्रस्तुत हुआ । उसी समय आकाशवाणी हुई कि, बस कर, अब तू अपने पुत्रको मत मार । तब उसने ज़बह नहीं किया और परमेश्वर इबराहीमका सच्चा प्रेम देखकर बड़ाही हर्षित हुआ ।

यह नरमेध यज्ञ वेदकी आज्ञानुसार पहले पश्चिम देशमें इबराहीमने ही किया, इस इबराहीमका बेटा इसहाक़ और इसहाकका बेटा याकूब और याकूबका बेटा यूसुफ था ।

उनसठवाँ प्रकरण

यूसुफ पैगम्बरका वृत्तान्त ।

इस यूसुफके ग्यारह भाई थे, अर्थात् याकूबके बारह बेटे थे । यूसुफ मिश्र देशमें गया वहाँका बादशाह फिरऊन था, फिरऊन यूसुफकी सदाचार तथा सुजनताको देखकर अत्यंत हर्षित हुआ और उसे अपने समस्त देशका बडा अधिकारी बना दिया, मानो यूसुफ समस्त मिश्रका सम्राट् हो गया । इसके उपरान्त उसके ग्यारह भाई तथा पिता अपनी संतानके सहित मिश्रदेशको गये ।

साठवाँ प्रकरण

फिरऊनका वृत्तान्त ।

वहांपर यूसुफकी संतानकी बढती हुई । फिरऊन बादशाह और यूसुफ दोनों मर गये उसके अनेक कालोपरान्त एक और फिरऊन मिश्रदेशके सिंहासन पर बैठा । यह फिरऊन बड़ाही घमंडी तथा दुरात्मा था । उसका नामभी उसके घमंडके कारणही फिरऊन था । उस घरानेके सब फिरऊनही कहलाते थे । उसने देखा कि, इबराहीमके वंशजों में बड़ी उन्नति हुई तब, वह डरा औरयह चिंता करने लगा कि, ये कहीं बलपूर्वक मेरे देशपर अधिकृत न होजावें और मेरा राज्य न

सत्तावनवाँ प्रकरण

जलप्रलय और नूहकी किस्तीका वर्णन।

परमेश्वरने नूहसे कहा कि, तू एक नाव बना और अपने बाल बच्चों समेत उसमें चढ और सब जीवजन्तु कीडे मकोडे इत्यादिके जोडे २ अपने साथ ले, जिसमें उनकी नसल (वंश) पृथ्वीपर रह न जावे। मैं अब पापियोंको नष्ट करूंगा। नूह आदमकी दशवीं पीढीमें धर्मिष्ठ पुरुष था, उसने ईश्वरकी आज्ञाको मान लिया। जब नूह दूसरे जीवों सहित नावपर चढा, तब उस समय ऐसी बाढ आयी कि, समस्त जीव डूबकर मर गये, केवल नूहकी नावपरके सब जीवधारी बच गये विष्णुने (जैसा कि मत्स्यपुराणमें लिखा है) मछलीकी सूरत बनायी और अपनी दोनों सींगोंमें नावको बाँध लिया, जिसमें बाढके वेगसे बहकर वह नाव चूर २ न हो जाय। जबतक बाढका वेग रहा तबतक नूहकी नावको विष्णुने पकड रक्खा जब वह नाव अरारात पर्वतपर ठहर गयी तब विष्णु वैकुण्ठको चले गये। जब पृथ्वी सूख गयी तब सब जीवों सहित नूह पृथ्वीपर आये और खुदाके प्रसन्नार्थ जीवोंको आगमें जलाकर बलिप्रदान और यज्ञ किया। वे जीव जब जले तब उनके शरीरमें धुँवा उठा और उस गन्धकी बासना लेनेके निमित्त खुदा महाराज वैकुण्ठसे पृथ्वी पर उतरे और उस गंधको सूंघकर अत्यंत प्रसन्न हुए और नूहको आशीर्वाद दिया कि, नह ! तुम बोओ लूनो और प्रसन्नतापूर्वक रहो तथा पृथ्वीपर फैल जाओ फिर विष्णु पछताए कि, अभी तो मैंने सबको नष्ट करदिया पर भविष्यमें ऐसा कदापि नहीं करूंगा। फिर नूहसे यह प्रण किया मैं अपना चिह्न आकाश पर रखता हूं और प्रण करता हूं कि, अब पृथ्वीके जीवोंको इस प्रकार नाश नहीं करूंगा। फिर अपने शार्ङ्गधनुष्यको आकाशपर रख दिया और कहा कि यह मेरा धनुष वृष्टिके समय आकाश पर दिखायी देगा, इस शार्ङ्गधनुषको देख कर अपनी प्रतिज्ञा मैं याद करूंगा और पृथ्वीपरके रहनेवालोंको बाढसे न मारूँगा। इस प्रकार नूह और उसकी संतानको आशीर्वाद देकर भगवान् वैकुण्ठको चले गये और नूह अपनी संतानों सहित खेती करने लगा।

अट्ठावनवा प्रकरण

इब्राहीम पैगम्बरका वर्णन।

नूहकी दशवीं पीढीमें इबराहीम उत्पन्न हुआ। यह मनुष्य पुण्यात्मा तथा बडाही धार्मिक था। उसके सामने ब्रह्मा विष्णु और शिव तीनों प्रगट हुए। जिनको

इवरानी और ईसाई दो दूत मानते हैं और उनसे एकको यहवाह मुक़द्दसके नामसे पुकारते हैं और उसका नाम बडी प्रतिष्ठाके साथ लेते हैं। इस यहवाहने इबराहीम को आशीर्वाद दिया। इबराहीमको प्रिय पुत्र इसहाक़ था। परमेश्वरने आकाश वाणीसे इबराहीमको आज्ञा दी और कहा कि, ऐ इबराहीम! तू अपने पुत्र इसहाक़ को मेरे नामपर कुरबानी कर। इबराहीम परमेश्वरकी आज्ञाको मान कर अपने पुत्र इसहाक़को लेकर चला और लकडियोंको एकत्रित करके अपने प्यारे पुत्रको उसपर बैठाया और हाथमें छूरा लेकर उसको हलाल करने तथा जलाकर कुरबानी करनेके निमित्त प्रस्तुत हुआ। उसी समय आकाशवाणी हुई कि, बस कर, अब तू अपने पुत्रको मत मार। तब उसने ज़बह नहीं किया और परमेश्वर इबराहीमका सच्चा प्रेम देखकर बड़ाही हर्षित हुआ।

यह नरमेध यज्ञ वेदकी आज्ञानुसार पहले पश्चिम देशमें इबराहीमने ही किया, इस इब्राहीमका बेटा इसहाक़ और इसहाकका बेटा याकूब और याकूबका बेटा यूसुफ था।

उनसठवाँ प्रकरण

यूसुफ पैगम्बरका वृत्तान्त।

इस यूसुफके ग्यारह भाई थे, अर्थात् याकूबके बारह बेटे थे। यूसुफ मिश्र देशमें गया वहाँका बादशाह फिरऊन था, फिरऊन यूसुफकी सदाचार तथा सुज-नताको देखकर अत्यंत हर्षित हुआ और उसे अपने समस्त देशका बडा अधिकारी बना दिया, मानो यूसुफ समस्त मिश्रका सम्राट् हो गया। इसके उपरान्त उसके ग्यारह भाई तथा पिता अपनी संतानके सहित मिश्रदेशको गये।

साठवाँ प्रकरण

फिरऊनका वृत्तान्त।

वहांपर यूसुफकी संतानकी बढती हुई। फिरऊन बादशाह और यूसुफ दोनों मर गये उसके अनेक कालोपरान्त एक और फिरऊन मिश्रदेशके सिंहासन पर बैठा। यह फिरऊन बड़ाही घमंडी तथा दुरात्मा था। उसका नामभी उसके घमंडके कारणही फिरऊन था। उस घरानेके सब फिरऊनही कहलाते थे। उसने देखा कि, इबराहीमके वंशजों में बड़ी उन्नति हुई तब, वह डरा और यह चिंता करने लगा कि, ये कहीं बलपूर्वक मेरे देशपर अधिकृत न होजावें और मेरा राज्य न

लेलेवें । इसी भयसे वह उनको बहुत कष्ट देने, उनसे कठिन परिश्रम कराने और उनके बच्चोंकी हत्या करने लगा । उनके बेटोंको तो वह मार डालता और उनकी बेटियोंको जीवित रखता । इस प्रकार जब उनपर दारुण दुःख उपस्थित हुआ तब खुदाने उनपर दया प्रगट किया ।

इकसठवाँ प्रकरण

मूसाकी उत्पत्तिका वृत्तान्त ।

उमराव नामक एक इबरानी था । उसका पुत्र मूसा उत्पन्न हुआ । वह मूसा बडाही सुन्दर था उसके माता पिताको बडी दया आयी कि, उसको फिरऊनके हाथ कैसे सौंपें । इससे उन लोगोंने उस बालकको टोकरीमें रक्खा और नदीके किनारे झाऊके वृक्षमें रख आये संयोगन फिर उनकी बेटी वहीं स्नान करनेको गयी और उसने उस बच्चेको देखा, उसको उसपर दया आयी, उसने उस बच्चेको अपनी लौंडीको सौंप दिया और वह दासी उस लडकेको अपने घर ले आयी । वह उसका पालन पोषण करने लगी, जब वह सीखने योग्य हुआ तब वह उसको शिक्षा देने लगी । यह मूसा फिरऊनकी बेटीका गोद लिया बालक ठहरा । वह मूसाको अपना बेटा समझकर उससे बडा प्रेम किया करती थी । मूसा मिस्त्र देशकी शिक्षा पाकर परम विद्वान् हुआ । जब उसका वय चालीस वर्षका हुआ तब उसने एक इबरानीका पक्ष करके एक मिसरीको मार डाला, फिर उसको फिरऊनका भय हुआ कि, मिसरीके बदले मैं भी मारा न जाऊँ । तब वह मिश्रदेससे भागकर कनआँमें गया और मदियानामें रहने लगा । वहां पितरू नामी एक इबरानीकी बेटीके साथ उसका विवाह हुआ । वह अपने श्वशुरकी भेड बकरियां चराया करता था ।

कुछ दिनोंके पश्चात् खुदाने आज्ञा दी कि, ऐ मूसा ! तू मिसरदेशको जा और अपनी जातिको फिरऊनके जुल्मसे बचा ।

उस समय मूसाकी उम्र अस्सी वर्षकी थी, कारण यह कि, मूसामें चालीस वर्षके वयमें मिसरदेससे भागा था और वह चालीस बर्षतक अपने श्वशुरकी भेड बकरियाँ चराता रहा । परमेश्वरकी आज्ञासे मूसा मिसरदेसको गया, परमेश्वर उसके साथ था । उसने अनेक चमत्कार दिखलाये । तब फ़िरऊन बादशाहने इबरानियोंको मूसाके साथ जानेकी आज्ञा दी । जब मूसा तीन लाख इबरानियोंको लेकर, जिन बाल युवा बृद्ध बालिका स्त्री वृद्धा सभी थीं, मिसरदेशसे कनआनकी ओर चला और लाल समुद्रके समीप पहुँचा, अर्थात् एक पडाव तक कूच कर आया । तब फ़िरऊन पछताया कि, इबरानियोंको तो हमने बिदा कर दिया, हमारी सेवा

तथा बेगार कौन करेगा । यह सोचकर उसने आठ लाख फौज लेकर उनका पीछा किया । जब यहूदियोंने देखा कि, फ़िरऊन हमारे पीछे धावा किये आरहा है, तब वे रोये और पुकारा कि, मूसाने व्यर्थही हमारे प्राण नाश किये । क्यों कि, हमारे दोनों ओर दो पर्वत हैं सामने लाल समुद्र है । और पीछे २ फ़िरऊन अपने दलवल सहित चढा चला आता है, हम अब कहाँ जायँ कहीं भागनेकी राह नहीं रही। तब मूसाने खुदासे प्रार्थना की । तब खुदाने कहा कि, ऐ मूसा तू नदीमें अपना सोंटा मार मूसाके सोटा मारतेही समुद्रका जल फट गया और पानी दोनों ओर पर्वतके समान खडा होगया । मध्यमें शुष्क पथ प्रगट हुआ । अब मूसा समस्त इबरानियोंको अपने साथ लेकर पार उतर गया । पीछे फ़िरऊन आया और अपने दलबलसहित उसी समुद्रीय रास्तेसे पार जाना चाहा और समुद्रमें घुसा, तब फिर परमेश्वरने आज्ञा दी कि, ऐ मूसा ! पुनः समुद्रकी ओर सोंटा बढा । मूसाने वैसाही किया. तब दोनों ओरका जल मिल गया और फ़िरऊन ससैन्य मर गया । पश्चात मूसा प्रसन्नतापूर्वक बनी इसराईलको अपने साथ लेकर चला । जब वह सीना पहाडके समीप पहुँचा और पडाव किया तब मूसाका आसमानी रङ्गका परमेश्वर वैकुण्ठसे सीना पहाड पर उतरा । उस समय समस्त पर्वतसे धुवाँ उठने लगा और वहाँ पर मूसा तथा आसमानी रङ्गके परमेश्वरसे बातें होने लगीं ।

इस स्थानपर खुदा (विष्णु महराज) ने ऋग्वेदसे कुछ बातें निकालकर और सांसारिक रीत व्यवहारको इच्छानुसार वर्णनकर, उसे बनी इसराईलके योग्य समझकर, मूसाको प्रदान किया । वही किताब मूसाकी तौरीतके नामसे विख्यात हुई । यह पहली किताब है जो पश्चिमीय देशवासियोंको मिली । यद्यपि उसका ढङ्ग बदल गया पर उसको ऋग्वेदही मानना चाहिये । कोई तौरीत पढे और कोई ऋग्वेद पढे, एकही फल प्राप्त होगा, इसमें कोई संदेह नहीं है ।

बासठवाँ प्रकरण

दूसरी किताब जबूरका वृत्तान्त ।

यह किताब जबूर दाऊदके लिये उतरी, यह जबूर पुस्तक सामवेदसे है । सामवेद गीतों तथा पदोंसे भरा हुआ है सो वही जबूर पुस्तक है, दाऊद कवी बडा गवैया था । वह परमेश्वरके प्रेममें लीन रहा करता था, बडे प्रेमके साथ खुदाकी स्तुति रागोंमें किया करता था । उसके रागोंमें इतना प्रभाव था कि, पाषाण भी मोम होजाता था. दाऊदके गीतोंकी बडी प्रशंसा किताबोंसे लिखी है और मूल इसका सामवेद है. और सामवेदके गुण तथा उत्तमता संसारमें प्रगट है, अंग्रेजी

भाषामें भी साम नाम गीतका है इसी लिये अंग्रेजीमें 'साम्स आफ डेविड' दाऊदकी गीतको कहते हैं, साम कहिये गीत और डेविड नाम दाऊदका है, अतः इस जबूरको सामवेद जानना चाहिये ।

त्रेसठवाँ प्रकरण

तीसरी किताब इञ्जीलका वृत्तान्त ।

यह इञ्जील ईसा नबीको उतरी । इस इञ्जीलको यजुर्वेद मानना चाहिये, अतः ये तीन किताब तो तीन वेदोंसे हैं, इन तीनों वेदोंको और इनके गुण मिलाकर देख लेना चाहिये ।

चौसठवाँ प्रकरण

चौथी किताब कुरानका वृत्तान्त ।

अन्तिम पैगम्बर हजरत मोहम्मद रसूलिल्लाह साहबके निमित्त कुरान उतरी यह किताब अथर्वण वेदसे है, यह अथर्वण वेदही है । जो बातें अथर्वण वेदमें हैं सोई बातें कुरानमें हैं । इस बातके प्रमाण अल्ला उपनिषद्में देखो, जो कोई अथर्वण वेदके अल्लाह उपनिषदको पढेगा, स्पष्ट जान जावेगा कि यह कुरान वास्तवमें अथर्वण वेद है । अल्लो उपनिषद्में अल्लाके नाम और मुहम्मद रसूलिल्लाहकी स्तुति और उनके प्रतापकी स्तुति वर्णित है जो बातें कुरानमें हैं सो सब अल्ला उपनिषद्में तथा अथर्वण वेदमें हैं । यह कबीर साहबका वचन है कि, कुरान अथर्वण वेद है ।

पैंसठवाँ प्रकरण

आठ वेदोंका वर्णन ।

यह तो चारों किताबें पश्चिमी चार वेद हैं, पूर्वीय चारों वेदों सहित वही, संसारके पथदर्शक ठहरे । इन्हीं आठों वेदके आदेशानुसार सर्व मनुष्य चलते हैं एक जाति दूसरे जातिके साथ लड़ती और झगड़ती और एक दूसरेसे अपनेको अच्छा ठहराती है, अपनेको सत्यवादिनी तथा दूसरेको झूठी कहती है, उनको इस बातकी तनिक भी सुध नहीं है कि, उन सबका बनानेवाला एकही है तथा सबमें एकही बात है । ये आठों निरञ्जनकी ओरसे हैं, मनुष्योंको यह सुधही नहीं रही कि इन आठों वेदोंसे वे कैसे त्राण पासकते हैं । जिस अवस्थामें कि, आठों वेद स्वयम् धोखेमें पड रहे हैं, ऐसी अवस्थामें वे किस प्रकार मुक्तिमार्ग बता सकते हैं । इन वेदोंने न

तो परमेश्वरको पहचाना और न मुक्तिके यथार्थ पथकोही जाना। यदि हंस कबीर लोगोंको समझाते हैं कि, ये वेद तो भ्रम और धोखेकी टट्टी है, ये आठों वेद जञ्जालोंमें फँसे हुओंके निमित्त हैं, मुक्ति पाएहुओंके निमित्त नहीं तो कोई कहना नहीं मानता और व्यर्थ वादविवादके लिये प्रस्तुत होता है, सब संसारी मनुष्य इन्हींमें फँस रहे हैं और इन्हींको अपना धर्म्म समझते हैं।

इन आठों वेदके निष्प्रयोजन टंटे बहुत हैं, जिनको पढ पढकर सब मनुष्य अत्यंत प्रसन्न हो रहे हैं,। किसी प्रकारकी खोज कोई नही करता। न तो स्वसंवेद को कोई जानता है और न उसकी शिक्षाको स्वीकार करना उचित समझता है। अब इसके आगे पांचों देवताओंके पंथ प्रचारका वर्णन लिखा जाता है।

छयासठवाँ प्रकरण

१ निरञ्जनका पंथ।

पांचों देवताओंमें सबसे बडा निरञ्जन देवता है और जैसा कि, कबीर साहबने ग्रंथ [1]कबीरवाणी और अनुरागसागर और भवतारण इत्यादिमें लिखा है। वही तीनों लोकका रचयिता और स्वामी है। ब्रह्माण्डके सिरेपर उसकी स्थिति है। वही सहस्र दल कमलमें अपनी शक्ति सहित रहता है, योगसमाधि इत्यादि द्वारा उसका दर्शन होता है, यही तीनों लोकोंका राजा तथा सृष्टि रचयिता है और इसीकी पूजा समस्त संसार करता है। अब चारों देवी तथा देवताओंके धर्मोका विवरण करता हूं।

सरसठवाँ प्रकरण

२ आदिभवानी–अद्याका पंथ।

पहले आदिभवानी है, यह तीनों देवताओंकी माता है तथा बडी प्रभाव शालिनी है, तीनों देवता उसके सामने डरते कांपते हैं और उसकी सेवा किया करते हैं। इस अद्याने चाहा कि, अपने तीनों पुत्रोंकी परीक्षा करलूं जिसमें जान पडे कि, कौन, इन तीनोंमें उसके अनुकूल है जिसके साथ वह रहे।

कालीपुराणमें इस प्रकार लिखा है कि, सृष्टिके उत्पन्न होनेके पहले तीनों भाई एक स्थान पर बैठे, एक वृक्षकी छाहँमें आपसमें वार्तालाप कर रहे थे, उस समय उन लोगोंने ऐसा कौतुक देखा कि, एक रक्तकी नदी महावेगसे बही चली आती है, जिसमें निरारक्तही रक्त है और कुछ नहीं है। उस नदीमें कूडा कुरकुट

---

१ प्रमाण देखो प्रथम भागके पहले अध्यायके परिशिष्टमें।

और फेन सब एकही स्थानसे बहता चला आता था, अभी तक वह तीनों भाइयों के समीप पहुँची नहीं थी कि, उसमेंसे महा दुर्गन्धि आने लगी । वह बदबू जब उन तक पहुँची तब पहले विष्णु उठकर भाग गये, उनसे वह दुर्गन्धि सहन नहीं की जा सकी । ब्रह्मा और शिव बैठे रहे । जब वह दुर्गन्धि कुछ और समीप आयी तब ब्रह्मा भी उठकर भाग गये और शिव चित्तको दृढकरके बैठे रहे । जब वह दुर्गन्धि शिवके अत्यंत समीप आगयी तब शिवजी उसको पकड अपने चूतडोंके नीचे रख अपना आसन बना उसीपर बैठ गये । यद्यपि उसमें बडी असह्य दुर्गन्धि थी, तथापि शिवजीने उससे तनिक भी घृणा नहीं की, वरन उसको अपना आसन बना लिया। तब उसमेंसे अद्या प्रगट होगयी और शिवजीसे कहा कि, मैं अब सदैव तेरे साथ रहूँगी. क्योंकि, मैं तुझसे अत्यंत प्रसन्न हुई, अब तुझको अपना पति बनाऊँगी । तब शिवजीने कहा कि, तू मेरे दोनों भाइयोंकी पत्नी हो और उनको अपना पति बना. तब अद्याने उत्तर दिया कि, मैं अपना दो रूप और भी बनाकर उन दोनोंके साथ भी रहूँगी, पर मेरी विशेषता तेरे साथ है और तू मेरा विशेष पति हुआ । फिर अद्या अपना तीन रूप-महालक्ष्मी, महासरस्वती, महाकाली बनाकर अपने तीनों पुत्रोंके साथ रही और समस्त संसारकी रचना की । अद्या विशेषतः शिवजीके साथ रहती है, शैव लोगही इस भवानीके धर्मके अगुआ हैं अर्थात् संन्यासी तथा योगी इत्यादि देवीधर्मके प्रचारक हैं ।

गोरखनाथ, मोहम्मद साहब और शंकराचार्य इत्यादि सब शिवजीके अवतार हैं और जितने धर्म इस अद्याके हैं सब नितान्तही घृणित और बुरे आचरणोंसे भरे हुए हैं । बारह पन्थ तो इस अद्याके प्रगट पृथ्वीपर प्रचलित हैं ही, उनके अतिरिक्त और भी कितनेही प्रकारकी पूजा देवीकी होती है, वह सब नितान्तही घृणित हैं और हिंसा दुर्गन्धि तथा भ्रष्टतासे भरी हुई है । जो कोई शिवके समान बलिष्ठ हो वह इन घृणित बातोंको स्वीकार करे और दूसरेकी सामर्थ्य नहीं है ।

संस्कृतमें भी नाम शिवजीका है और भो नाम श्रमका भी है, और भो नाम भग अर्थात् स्त्रियोंकी योनिका भी है । भवानी नाम अद्याका भी कहा जाता है, भवानी दो शब्दोंके संयोगसे बना है, भो और आनी, आनी कहिये खान, अर्थात् भोकी खान । इसी प्रकार भो नाम उत्पत्तिका है सो भो और भवानी इस भवसागर के सरदार हैं । अर्थात् जो कोई भो और भवानीकी पूजा करे सो भवसागरके पार कभी जा न सके । यही भो और भवानी, महाकाल और महाकाली हैं । येही दोनों समस्त संसारके बंधनके निमित्त हैं, ये दोनों शिव और शक्ति एकही रूप हैं, शिव शक्तिके पन्थ सदा मिले मिलाये रहते हैं ।

अडसठवाँ प्रकरण

ब्रह्माका पंथ ।

दूसरे ब्रह्माजीका पंथ यह है कि, जिसके द्वारा ब्राह्मणलोग यज्ञ और दान पुण्य हवन इत्यादि कराते हैं। अद्याके शापसे ब्रह्माकी पूजा तो कोई नहीं करता, केवल मीमांसाधर्म और यज्ञ इत्यादि ब्राह्मणोंद्वारा अभी कहीं २ होता है।

विष्णु और शिवका पंथ ।

चौथे और पाँचमें विष्णु और शिव हैं, इन दोनोंकी पूजा का प्रचार संसारमें सबसे अधिक प्रचलित है, कबीर साहबका वचन है कि, केवल दो सम्प्रदायइस संसारमें हैं एक विष्णुसम्प्रदाय तथा दूसरा शिवसम्प्रदाय ।

उनहत्तरवाँ प्रकरण

विष्णुका पंथ ।

जितने धर्म विष्णुके हैं, इनमें चार सम्प्रदायके वैष्णव विशेष सत्वगुण धर्मवाले लोग हैं और यही लोग वैष्णव हैं, इन चारों सम्प्रदायमें हिंसा आदि दुराचार नहीं है । यद्यपि ये लोग ठाकुरको पूजा करते हैं, पर इनकी चाल पूर्णतया सत्वगुणियोंकी ऐसी है । इसी सत्वगुणी चालसेही मुक्तिद्वार खुल जाता है । इन चार सम्प्रदायोंके वैष्णव सब रामकृष्णआदिकी पूजा करते हैं और ठाकुरको पूजते हैं । ऐसा करते करते जब उनको बडा ठाकुर मिल जाता है तब उनका बेडा पार कर देता है ।

रजोगुण ब्रह्मा यह सांसारिक है, सतोगुण विष्णु भक्ति तथा मुक्तिकी राहपर चढानेवाला है और तमोगुण शिव बन्धनका कारण है । विष्णुके जितने धर्म्म संसारमें हैं सबमें ये चारों सम्प्रदायके लोग उत्कृष्ट हैं । उनका परिणाम भी भला है, क्योंकि अन्त सबके सब सत्यपुरुषकी ओर ध्यान दिला देते हैं, इस कारण मैं चारों सम्प्रदायके वैष्णवोंके धामक्षेत्र लिखकर इनके गुण प्रगट करता हूं, चारों सम्प्रदायका सविस्तार विवरण मैं ग्रन्थ 'कबीरभानुप्रकाशमें[१] देकर आया हूं । यहां लिखनेकी कोई आवश्यकता नहीं केवल धामक्षेत्र लिखता हूँ ।

प्रथम श्रीसम्प्रदायके धामक्षेत्रका वृत्तान्त ।

अयोध्या धर्मशाला, चित्रकोट सुखविलास, गोदावरी प्रदक्षिणा क्षेत्रधङ्ग तीर्थ, रामनाथधाम, अच्युतगोत्र, शुक्लवर्ण, सीता इष्ट, जानकी मंत्र, रामोपासना मंत्र, राघवानन्द महाप्रसाद, अनन्तशाखा, सामीप्य मुक्ति, श्रवण द्वारा, लक्ष्मी

---

१ देखो प्रथम भागके प्रथम अध्यायके परिशिष्टमें ।

आचार्य, विश्वामित्र ऋषि, वाशिष्ठ मुनि, हनुमान् देवता, हनुमान् मंत्र, राम-गायत्री, ऋग्वेद, हरनाम आधार, विष्वक्सेन पारिषद, रामानुज वैष्णव ।

दूसरे शिवसम्प्रदायके धामक्षेत्रका वृत्तान्त ।

विष्णुकाञ्ची धर्मशाला, मार्कण्डेय क्षेत्र, इन्द्रधनु सुखविलास, पुरुषोत्तम धाम, लक्ष्मी इष्ट, जगन्नाथ उपासी, तुलसी मंत्र, त्रिपुरारि शाखा, वामदेव आचार्य, सायुज्यमुक्ति, नेत्रद्वारा, हरनाम अहार, यजुर्वेद, अच्युत गोत्र, शुक्ल वर्ण, वटकृष्ण, परिक्रमा, जलबिम्ब, ऋषि नारद, देवता विष्णुश्याम वैष्णव ।

तीसरे ब्रह्मसम्प्रदायके धामक्षेत्रका वृत्तान्त ।

अवन्तिका पुरी धर्म्मशाला, बदरिकाश्रम धाम, नैमिषारण्य सुखविलास, अंकपात्र क्षेत्र, सावित्री इष्ट, ब्रह्मउपासी, विष्णुहंसमंत्र, हंस देवता, सालोक्य-मुक्ति, मोक्षद्वारा, श्रीकालाचार्य, उदितशाखा, अच्युतगोत्र, शुक्लवर्ण, हरनाम अहार, परमहंस ऋषि, नारायण पारिषद, अथर्ववेद, माधवाचार्य वैष्णव ।

चौथे सनकादिक सम्प्रदायका वृत्तान्त ।

मथुरा धर्मशाला, क्षेत्रगोमती, वृन्दावन सुख विलास, गोवर्धन परिक्रमा, द्वारावती धाम, रुक्मिणी इष्ट, गोपालउपासी, हंसगोपालमन्त्र, गोपालगायत्री, हंसशाखा, सारूप्य मुक्ति, नासिकाद्वारा, सनकादिक आचार्य, नारदमुनि, दुर्वासा ऋषि, गरुडदेवता, सामवेद, महाप्रसाद, अच्युत गोत्र, शुक्लवर्ण, हरिनाम अहार, वीमादित्य वैष्णव ।

चारों भाई के धामक्षेत्र ।

माता वरुणावती, पिता अगस्त्य मुनि, गुरुधर्म ऋषि, स्वर्गनगरी, अच्युत गोत्र, शुक्लवर्ण अनन्त शाखा, सूक्ष्मवेद, निष्काम इच्छा, धाम रङ्गनाथ, सुख-विलास कोटपाट, हरनाम अहार, परम बदरिकाश्रम क्षेत्र, मठ वैकुण्ठ, लक्ष्मीदेवी, नारायण देवता, पूजा अक्षयवट, श्रीरङ्गसम्प्रदाय, ओखल खाडा, शून्यस्थान, सुमेरुपरिक्रमा वीर्यमंत्र ।

सत्तरवाँ प्रकरण

वैष्णवधर्मकी श्रेष्ठता ।

वैष्णवाचार्य ग्रंथ देखकर ये धामक्षेत्र लिखे गए हैं, जो कोई चाहे सो संस्कृतके वैष्णवाचार्यके ग्रंथको देखकर मिलान करलेवे । इन चार सम्प्रदायोंके वैष्णव पृथ्वीके देव दूत हैं, इनके रूप तथा आचार व्यवहारको देखकर स्पष्ट प्रगट होता है कि, वास्तवमें वे लोग देवदूत हैं, मनुष्य नहीं हैं । निरञ्जनके जितने धर्म

पृथ्वीपर हैं उन सबमें बडा श्रेष्ठ धर्म यह वैष्णवोंका है ये वैष्णव जब अपने समस्त चिह्नों सहित दीख पडते हैं तब जान पडता है कि, सतोगुण मूर्ति धरकर निकल पड़ा है इनके रखना दश चिह्न होते हैं--१ भद्रवेष अर्थात् दाढी मूँछ शिरके बाल और नाखून आदि मुडेहुए, २ तप अर्थात् पूजन बंदना करना, ३ भीतर बाहरसे विशुद्ध रहना, ४ तुलसीकी कण्ठी गलेमें, ५ रामकृष्ण मंत्र, ६ बारह तिलक, ७ यज्ञोपवीत, ८ चोटी, ९ कमण्डलु, १० श्वेत वस्त्र; इन दश चिह्नों सहित जब वे प्रगट होते हैं तब जान पडता है कि, वे पालीके स्वरूप सतोगुणकी प्रतिमूर्ति हैं जब इन चारों सम्प्रदायोंके वैष्णवोंकी पूजा उपासना उच्चश्रेणीपर्यन्त पहुँचती है तब वे लोग पाँचवी सम्प्रदायमें मिलकर, धर्म ऋषि गुरुसे मिलते और स्वसम्वेदको प्राप्त होते हैं। वह धर्मऋषि कवीर साहब हैं, जिनका वह स्वसम्वेद है। अतः इन चारों सम्प्रदायका द्वारा कवीर साहबके घरकी ओर खुला हुआ है। यद्यपि वे लोग ठाकुरकी मूर्तिका पूजन करते हैं, तथापि उनका पूजन उन्हें सत्यगुरुसे मिलावेगा और यह मूर्तिपूजा उनको इस प्रकार उचित मार्गपर लगावेगी जैसे पिता माता अपने छोटे बच्चोंको धूल मिट्टी और झुनझुना इत्यादि खेलनेकी आज्ञा देते हैं और जब तक व अज्ञान रहते हैं तबतक उनको इस कार्यसे निषेध नहीं करते, पर जब उनमें कुछ ज्ञान आजाता है तब उनको दूसरे काममें लगाते हैं। यह विष्णु सतोगुणी देवता है और उसके भक्त लोग सब सतोगुणी हैं, उनके रूप लक्षणसे ही सतोगुण प्रगट होता है।

यहांतक मैंने विष्णुसम्प्रदायका वृत्तान्त लिखा, अब शांकरीसम्प्रदायका विवरण करता हूँ।

शांकरीसम्प्रदायका वृत्तान्त ॥

१--पूर्व ओर गोवर्धन मठ, भूगमबार सम्प्रदाय, वनारण्य द्विपद, पुरुषोत्तमक्षेत्र, जगन्नाथ देवता, पद्माचार्य, चैतन्यब्रह्मचारी, तीर्थ महोदधि, विमला देवी, राते ब्राह्मण, ऋग्वेद, गटकन्य उपनिषद्, अकारमात्रा, परज्ञा, नम्। आनंदम् ब्रह्म महावाक्य। २--पश्चिम ओर शारदामठ, कीटमवार सम्प्रदाय, तीर्थ द्वारका क्षेत्र, सिद्धेश्वर देवता, भद्रकाली देवी, स्वरूपा चार्य, नन्दा ब्रह्मचारी, तीर्थ गोमती सामवेद, उपनिषद् ब्राह्मण केन, तत्त्वमसि महावाक्य, उकारमात्रा, १ तीर्थ, आश्रमा द्विपद। ३--उत्तर ओर जोशीमठ, आनन्दवार सम्प्रदाय, पद तीन, १ गिरि, २ पर्वत, ३ सागर, क्षेत्र बदरिकाश्रम, नारायण देवता, पुण्यगिरि देवता, त्रिविद्काचार्य, नन्दा ब्रह्मचारी, तीर्थ अलकनन्दा, ब्राह्मण ब्रह्म, अथर्ववेद, माण्डूक्योपनिषद्, मामात्रा, अयंआत्मा, ब्रह्म महावाक्य। ४--दक्षिण ओर, श्रीनगरी

मठ, भूरीवार सम्प्रदाय, १ सरस्वती, २ भारती, ३ पुरी तीन पद, क्षेत्र रामेश्वर, आदिवाराह देवता, कामाक्षा देवी, शृङ्गी ऋषि, पृथ्वीधराचार्य, तुङ्गभद्रा तीर्थ, यजुर्वेद, बृहदारण्य उपनिषद्, ब्राह्मण, इच्छाविष, अहम् ब्रह्मास्मि महावाक्य, अर्धमात्रा।

इकहत्तरवाँ प्रकरण

शांकरी सम्प्रदायसे मिलते और पंथ।

शांकरीसम्प्रदाय जो संसारमें है, इनमें ये उपयुक्त दश नामके सन्यासी हैं, और बारह पंथके योगी हैं, शिवधर्ममें यही लोग बडे हैं, ये सब लोग शिवजीको अपना गुरु तथा आचार्य मानते हैं–इन समस्त सन्यासियोंमें भी दो सन्यासी सबसे श्रेष्ठ हैं, एक दंडी और दूसरे दिगम्बरी, इन दोनोंकी चालचलन अच्छी है और मद्यमांस आदि बुरे खाद्य तथा घृणित कार्योंसे बिलकुलही पृथक् रहते हैं। इनके अतिरिक्त और कितनेही संन्यासी और योगीभी अपने आचरणको विशुद्ध रखते हैं, किन्तु कितनोंके आचरण ठीक नहीं, मांस मदिरा तथा भाँति २ के घृणित पदार्थोंको व्यवहारमें लाते हैं। वाममार्गी तथा अघोरी इत्यादि इन्हींमें होते हैं और खूनी वस्त्र, अर्थात् गेरुवा वस्त्र इन्हींके निमित्त उपयुक्त है। और खप्पर समुद्रीय पशुकी खोपडी तथा मनुष्यकी खोपडी भी यही अघोरी लोग रखते हैं। उसीमें वे खाते और पानी पीते हैं, इनमेंसे कोई २ मूत्र पुरीष तथा अन्यान्य घृणित वस्तुओंको भी खाया पीया करते हैं। ये भी और शिवभक्तिके पंथका प्रचार करते हैं। इस वेषमें जाति पाँतिका कोई ध्यान नहीं है, कारण यह कि, अद्याका वचन हो चुका था कि, हे शिव! तेरा वेष भयानक होगा, और तेरी जाति पाँतिका कोई ठिकाना नहीं रहेगा, तू बडा क्रोधी होगा। वैसाही रङ्ग ढङ्ग संन्यासी आदिकोंमें प्रगट है। शिवजी तमोगुणी देवता विष्णुके अधीन हैं, इस कारण शिवसम्प्रदायके लोग विष्णुसम्प्रदायके अधीन हैं। शैव लोग जो अत्यंत परिश्रमके साथ भक्ति करते हैं वे कैलासको जाते हैं, शिवजीके सेवक प्रायः भूत, प्रेत, राक्षस इत्यादि हैं, जो अनेकानेक कुकर्मोंमें डूबे रहे हैं।

यह तमोगुणी देवता उत्पत्तिकी प्रवाह स्वरूप हैं, स्वयम् अद्या शिवके साथ रहती है, जैसा कि, मैं पहले लिख आया। देवीभागवत और कालीपुराण इत्यादिमें इस अद्याकी बहुत बडाई लिखी गई है। इसी अद्याको उसके सेवकगण संसारकी रचयिता जानते हैं और कहते हैं कि, इससे बडी और कोई नहीं है, इसीसे उत्पत्ति स्थिति और परलय हुआ करती है।

इस चार सम्प्रदायके धामक्षेत्र लिखनेसे मेरा यह तात्पर्य है कि, विष्णुके चार सम्प्रदाय हैं उसमें पांचवां धामक्षेत्र कबीर साहबका है, इस कारण कि सारे वैष्णव अन्तमें कबीर साहबसे मिलकर परम धाम को सिधारेंगे, समस्त वैष्णवों के गुरु कबीर साहब हैं, और उनका वेद स्वसम्बेद है और यह संन्याससम्प्रदाय विष्णुसम्प्रदायके अधीन है ।

बहत्तरवाँ प्रकरण

भवसागर ।

इस अद्याने चारों खानिकी उत्पत्तिके पूर्व अपने पुत्रोंको जो रक्तकी नदी दिखलायी थी वह भवसागर है । वही नदी स्त्रीकी योनि है, जो रक्तसे भरी हुई है, इसीसे सबकी उत्पत्ति होती है, कारण यह कि, जो ब्रह्माण्डमें हैं सो पिण्डमें है, कभी इस योनिके भीतर जाता है और कभी बाहर निकलता है, जब स्त्री पुरुष संभोग करते हैं तब वही स्वरूप प्रगट करते हैं, कभी भीतर और कभी बाहर आना जाना अपना आवागमन स्पष्टरूपसे प्रगट करता है ।

कबीर साहबका वचन देखो बीजक ।

चौदह लोक बसै भग माँहीं । भगसे न्यारा कोई नाँहीं ।।
भग भोगे ओ भगत कहावै । फिर फिर भग भोगनको आवै ।।

तिहत्तरवाँ प्रकरण

बन्धन ।

यह मनुष्य स्त्रीके साथ संभोगकी कामना रखता है, इस कारण बारंबार इसका आवागमन होता है और जितनी स्त्रीके साथ यह संभोग करता है, उन सबके गर्भसे उसको उत्पन्न होना पडता है । यही स्वसम्वेदका आदेश है, इसी कारण मनुष्यके आवागमनका संबंध नहीं टूटता और दिन २ प्रति विशेष दृढ होता जाता है ।

इस संसारमें जितने धर्म्म हैं सो सब इन्हींके हैं और इन पांचोंके अतिरिक्त क्या है इसका मनुष्य मात्रको तनिक भी ध्यान नहीं, नरक, वैकुण्ठ और चार मुक्ति, धनसम्पत्ति, राजकाज सबके प्रदान करनेवाले यही हैं । पांचों सब कुछ दे सकते हैं, पर मुक्ति देना इनके वशमें नहीं, कारण यह कि, वे स्वयम् आवागमनसे रहित नहीं हैं और दुःख सुख पाया करते हैं, जिस बातमें वह स्वयम् असमर्थ हैं तो दूसरोंको क्या दे सकेंगे ।

चौहत्तरवाँ प्रकरण

प्रथम भागके प्रथम अध्यायका उपसंहार ।

वहांतक तो मैंने कालपुरुषके धर्मका विवरण किया, जिनमें फँसकर मनुष्य के पथ नहीं मिलता. कारण यह कि, यह अहंकार तथा भ्रममें फँस रहा है, न यह ईर्षा तथा अहंकारको छोंडता है न इसको सत्यपुरुषकी भक्तिका मार्ग मिलता है, सब इसी अभिमानमें "कि, मैं बडा और मेरा धर्म तथा गुरु बड़ा" डूबे हुए हैं, कौन सत्यका इच्छुक है जो मिथ्याको छोडकर, स्वसम्वेदकी सत्य शिक्षाकी खोज करे ।

ग़ज़ल आजिज़ ।

यह मुत कब्बिर हुआ इनसान ख़ाकी । जिधर देखो उधर सामान ख़ाकी ॥
पडा जो फ़र्श पर लाचार कोई । रसाई अर्श इम्कान ख़ाकी ॥
बहर काने तमाशा मज़हरे ज़ाता । वही खुद सूरते इनसान ख़ाकी ॥
जो मुरशिदके क़दमकी खाक होजा । सफ़ाकर आइनः ईमान ख़ाकी ॥
क़दम गाहे उसीकी जा सलामत । बजुज़ उसके नहीं दरमान ख़ाकी ॥
नहीं कोई दूसरा दुश्मन हमारा । कि ख़ाकी शक्लका शैतान ख़ाकी ॥
हिमाक़तसे है पैवस्तः लज़ायज़ । सरीरो सतवतो सुलतान ख़ाकी ॥
न अपने अस्लको पहचानता है । हुआ मगरूर नाफ़रमान ख़ागी ॥
सिफ़त तीनों बहम अरबः अनासर । बहम मखलूत हैं यकसान ख़ाकी ॥
न इनसे आदमीको पेश दरती । तेरे बे फायदः अरमान ख़ाकी ॥
न हो सगरूर खुद इल्मो अमलपर । कि बानीवेद और कुरआन ख़ाकी ॥
मिलेगा आजजीसे हक़को आजिज़ । करे अपनेको गर कुरबान ख़ाकी ॥

इति श्री कबीर मन्शूरके प्रथम भागका प्रथम अध्याय ॥ १ ॥

प्रथम अध्यायका परिशिष्ट

कबीर मन्शूरके इस अध्यायमें चौहत्तर प्रकरण हैं । अब आगे इस अध्याय का परिशिष्ठ भाग दिया जाता है जिसके लिये पीछे कई स्थानोंमें टिप्पणी द्वारा सूचना दी जाचुकी है । इन प्रमाणोंको यह इसलिये दिया है कि, बहुतसे महंत संत सेवक सतियोंने अनुरोध किया है कि, जहाँ जहाँ ग्रन्थोंके प्रमाणकी आवश्यकता हो वहाँ वहाँ वह जरूर दे देना चाहिये । यद्यपि मेरा भी यही विचार था

कि, इन प्रमाणोंकी जहाँ जहाँ आवश्यकता है ये वहीं वहीं दे दिये जायँ किन्तु, कितने कारणोंसे वह न होसका, इसलिये यहां दे दिया है ।

प्रमाण कबीर वाणीका ।

देखो प्रकरण ५ पृष्ठ २२.

प्रथम वानी सुनियो चितलाई । आदि अंतकी संधि देहुँ बताई ॥
प्रथम आदि समरथ हत सोई । दुसरा अंस हता नहिं कोई ॥
आदि अंकुर सुरति तव कीन्हा । सात करीको गरभ तब दीन्हा ॥
इच्छा सूरति दुसरे उपजाई । सातो करी में चित्त बनियाई ॥
छिपा रूपहिं कीन्ह परगासा । स्वाति रूप इच्छा रहिवासा ॥
सात तेहिते इच्छा उपजाई । भिन्न भिन्न परकार बनाई ॥
विमल शब्द विगसित तब भयेऊ । तब हुलासबुंद पाँच करिमें दयेऊ ॥
तब पांच अंड भयो उतपानी । तत एक भिन्न परसानी ॥
नहिं तब धरनी नहिं अकासा । नहिं तव दुसरो हतो अबासा ॥
धावै अंड करै चौचन्दा । आपु अदेख और सहज अनन्दा ॥
तबकी बात नहीं कोई जाने । कहौं समुझाय तो झगरा ठाने ॥
धर्मदास सुनियो चितलाई । फूटो अंड सूर्तिसे भाई ॥
सहज अंकुर बीज निरमाई । तिहिकी इच्छा अंड उपजाई ॥
तब सरबनते साजी बानी । तेहिते मूल सुरति उतपानी ॥
अबोलबुन्दतेहि सुरतिको दीन्हा । पांच अंश तब उतपन कीन्हा ॥
पांचों अंस तब कहां बुझाई । पांचों अंडमें तुम जाओ समाई ॥
एकहि एक अंड तब गयेऊ । आपहु आप कलामें ठयेऊ ॥
तबअविगति एक खेल बनावा । पांच सरूप पांचों अंडहि आवा ॥
फूटो अंड तेज भई धारा । सबमें देखु पांच ततसारा ॥
पांच तत भिन्न भिन्न विस्तारा । सात अद्रिस्ट तेहिमाहिं संचारा ॥
देखि सरूप अंडकर भाई । सोहंग सुरति तबहिं उपजाई ॥
पुरुष सकती भई दोय प्रकारा । तिन्हको सोंप्यो उत्पन सारा ॥
तासों अंकुर भेद बतावा । वचन सुरत एक संग समावा ॥
ताते ओंहं पुरुषको अंसा । ओंहं सोहं भए दो बंसा ॥
तिनकी आज्ञा उत्पन्न कीन्ही । शब्द सनद उनहूको दीन्ही ॥
मूलसुरति औ पुरुष पुराना । रचना बाहेर कीन्ह अस्थाना ॥
ओहं सोहं अंडनमें रहेऊ । सकल सृष्टिके कर्ता कहेऊ ॥

प्रथम अंकुर दूसर इच्छा उतपानी । तिसर मूल चौथ सोहं ठानी ॥
ओहं सोहं की बंधानी । आठ अंस तिन्ते उतपानी ॥
आठ अंस भए एकहि ध्याना । करता स्रिस्टिको भयो परवाना ॥
करता सरूप आठ भए अंसा । तिन्हके भए सृष्टि सब बंसा ॥
तेज अंड अंचितकूं दीन्हा । प्रथम सुरत जब उतपत कीन्हा ॥
जोहं अंस दुसरे भए भाई । धीरज अंड तिन्ह बैठक पाई ॥
तिसरे अंस अंक निरमाई । छमा अण्ड तिन्ह बैठक पाई ॥
चौथे अंस सुकृत है सारा । सत्य अंड है ताहि पसारा ॥
पांचएँ अंस हिरम्मर भाई । सुमत अंड तिन्ह बैठक पाई ॥
दोय अंस दोय करी समाने । तिनका भेद गुरुगम जाने ॥
एक अंस त्रिगुण अवतारा । ते सब सृस्टिके भये कडिहारा ॥
साखी–एती उतपत सुरत की, भिन्न भिन्न परकार ।
कहें कबीर धर्मदाससों, आगे बंस असार ॥

धर्मदास वचन ।

साँचे सद्गुरु की बलिहारी । धर्मदास बिनती अनुसारी ॥
धन्य भाग मोहि मिले गुसांई । अपनो कै मोहि लीन्हमुकताई ॥
चारि वेद अरु सास्त्र पुराना । सबहीके हम सुनिया ज्ञाना ॥
अविगति गति काहु नहिं जानी । जो तुम कही आदिकी बानी ॥
सुरत सोहंगके आठ भए अंशा । तिनके सृष्टि सबही भए वंशा ॥
अपरंपार है तिनका सेषा । अचित्य स्रिस्टिको कहो विवेषा ॥
साखी–तुम निज सतगुरु सत्य हो, हम निज चिन्हा सोय
अंचित स्रिस्टिको भेद कहो, अविगति पूछौं तोय
धर्मदास तुम बडे विवेकी । तुम्हारे घटमें बुधि बड देखी ॥
अचित्य स्रिस्टिको कहो पसारा । तेज अंड तिन्ह पाये सारा ॥
बाराहि पालंग अंड विस्तारा । तिहिमें पाँच तत्त्व है सारा ॥
इनको बैठक आसन दीन्हा । अंड सिखर लोक तिन्ह कीन्हा ॥
प्रेम सुरति तिन कीन उपचारा । तिन्हते भयो अच्छर विस्तारा ॥
अच्छर सुरत तब मोहमें आई । ताते अंस चार निरमाई ॥
चारि अंस भये चारि परकारा । चौविध दीप चौविधहि पसारा ॥
प्रथम अंस पर माया भयऊ । सो पिरथी तत्त्व बीज निर्मयऊ ॥
दुसरे कूर्म भये अवतारा । पालङ्ग अठानवे कीन्ह विस्तारा ॥

तिसरे अदली अंस निरमावा। सेसनाग सो नाम धरावा ॥
चौथे अंस भए धरमराई। जिन्ह पाप पुण्यको लेखा पाई ॥
चारि अंस अच्छर ते भयऊ। चार अंस चार मत ठयऊ ॥
तब समरथ अनिगति यक कीन्हा। पूरी नींद अच्छरको दीन्हा ॥
चौसठ जुगलौं सोय सिराईं। तौलों कैल सुरत ठहराई ॥
समरथ सुरति जल तत्त्व समानी। कैल अंड कीन्हा उतपानी ॥
तेहि पीछे अक्षर पुनि जागा। मोह तत्त भये अनुरागा ॥
चक्रित होय अच्छर बिलखाना। सोई मोह सब स्रिस्टि समाना ॥
अंड स्रिस्टिमें देखा भाई। व्याकुल भए यह किन निरमाई ॥
समरथ छाप अंड सिर दीन्हा। अछर छापदेखि सो लीन्हा ॥
सोई अंड जलमें बिहराना। जिनको वेद नारायण माना ॥
ताते जोत निरंजन भयेऊ। तिनको सब जग करता कहेऊ ॥
अछर सुरति समरथकी बानी। तेहि गुण खेल भए उतपानी ॥
निरंजन नाम अच्छर ठहराई। अचित भेद नहिं पावै भाई ॥
कैलहिं देखा सकल पसारा। तब अच्छर सो वचन उचारा ॥
देउ पिता मोहि आग्या सोई। जो कछु इच्छा उपज्यो मोई ॥
सेवा करत सत्तर जुग बीता। तब मुख बोलै पुरुष अतीता ॥
जाव पुत्र जहां प्रिथ्वीको मूला। तहां कूरम बैठे अस्थूला ॥
सृष्टि भंडार कूरमको भाई। सोलह माथ हथ चौसठ पाई ॥
चले निरंजन कुरम लगि आये। पुरुष ध्यानसे कुरम जगाये ॥
उत्पति हमकूं मागे देहू। ना देहो तो मारिकै लेहूँ ॥
तबहिं कूर्म अपने मन मानी। ऐंतो कैल भयो अभिमानी ॥
हम माँगे कछु देब न भाई। जाउ पुरुष लगिवेगि सिधाई ॥
कैल कूर्मते युद्ध निर्मयऊ। माथा तीनछीन पुनि लयऊ ॥
लेकर माथै सुन्यमें आवा। कैल सुरत घट मोह समावा ॥
तीनों माथे भच्छ तब लीन्हा। तबते अच्छर पुरुष डर कीन्हा ॥
मनमें तब अभिमान समाई। तब कर जोरिके सेवा लाई ॥
सोला चौकडी जब चलिआई। तब लगि निरंजन सेवा लाई ॥
अच्छरपुरुष जो कीन्ह विचारा। तिन्हको समरथ वचन उचारा ॥
विदेह बानि तब अच्छर पाई। तो बानी कन्या भइ भाई ॥
ताको बहुत सिखापन दीन्हा। अस्टंगी तिन कन्या कीन्हा ॥

पुत्री निरंजन लागि सिधाऊ । तुमको समरथ सदा सहाऊ ॥
तब कन्या निरंजन लग आई । एक पाँव पर सेवा लाई ॥

देखे पलक उघारिके, कन्या आगे ठाढि ।
उपज्यो मोहऽरु प्रेम तब, विप्रित मनमें बाढि ॥

पलक उघारि कैल तब देखा । अपने मनमें कीन्ह विवेका ॥
कहै कैल सुनो तुम बानी । मो कारन तुहि पुरुष उतपानी ॥
हम तुम कीजै स्त्रिस्टि पसारा । तीनहिं लोक सकल महिभारा ॥
तब अस्टंगी कैलसों कहाई । मोर तोर नहि होय सगाई ॥
मैं तोरि बहिनी तू मोर भाई । सो अनरीति सब दीन चलाई ॥
कहैं कैल सुनु आदि भवानी । हमरे वचन तुम काहै न मानी ॥
जो तुम कहा हमारा मानौ । तौ तुम उत्पति निरन ठानौ ॥
तब अस्टंगी कहै बुझाई । बिन अज्ञा तोहि पुरुष रिसाई ॥
बिन आज्ञा कूरम सिर छीना । ताते पुरुष अंत करि दीन्हा ॥

देखि स्वरूप कन्यहि को, मनमें रोष भराय ।
मनमें रोष भरयो जब, कन्यहि लीन्हीं खाय ॥

लीलत कन्या कीन्ह पुकारा । पुरुष वचन ले हिये सम्हारा ॥
तब सुरति बनाते कैलहि मारा । कन्या तब उगलै वहि वारा ॥
यहि प्रपंच अच्छर सब कीन्हा । ताते कैल मती हरि लीन्हा ॥
कन्या सुरति तव गई भुलाई । जबते पेट कैलके आई ॥
पिता पिता कैल सो कहेऊ । मदन प्रचंड कैल छन भयेऊ ॥
अष्टांगी कैल एकमत कीन्हा । ताते सृष्टि रचवे मन दीन्हा ॥
कियो संयोग भयो त्रैवारा । जेठो ब्रह्मा लघु विष्णुकुमारा ॥
तीजे संभु विस्नुते छोटा । येक निरंजनही के ढोटा ॥

जैसे रूप निरंजनही, तैसे तीनों भाय ।
यह उतपत है कैलकी, आगे स्त्रिस्टि उपाय ॥

करि परपंच सून्न में गयऊ । मनमें बहुत आनंदित भयऊ ॥
यहि आनन्दमें गए भुलाई । ताते स्वासा सुरति उठाई ॥
तेहि स्वासाते वेद कढि आई । रूप निधान चारों बने भाई ॥
हाथन पोथी सुरसुर बानी । ताते कैल भयो अभिमानी ॥

चारि वेद सब भरम बतावा । तब चलि अच्छर शून्यमें आवा ॥
कैल प्रचंड भयो बरियारा । तब अछरते बुद्धि विचारा ॥
येतो कैल औ जीव विचारा । समरथ छाप लियो टकसारा ॥
अच्छर चलै अचिन्त लगि गयऊ । महासूत्र छोडि तब दयऊ ॥
तब अचित्य अच्छर समुझावा । यह अविगति गति काहु न न पावा ॥
तुम तो सुरति हमारहि भाई । कैल सुरति समरथ निर्मायी ॥
लच्छ जीव नित करै अहारा । सवा लच्छ नितप्रति विस्तारा ॥
अंसवंस मिलि एक मत कीन्हा । चारों ज्ञान बिचारि तब लीन्हा ॥
तुम गति हंसरूप है भाई । वह तो कैल जीव दुखदाई ॥
तुम समरथको ध्यान लगावो । अंतर गति समरथ सुख पावो ॥
चारि ज्ञानमें निरनय कीन्हा । सो निरनय चारि अंशको दीन्हा ॥

कहे कबीर धर्मदाससों, एता सकल पसार ॥
तीन सुरतिको खेल भयो, चौथे हंस उबार ॥

धर्मदास उवाच ।

धरमदास बहुतै सुख पावा । उठि सतगुरुसो विनती लावा ॥
सांचे वचन तुम्हारी बानी । आदि अंतकी निरणय ठानी ॥
कौन है अंड कौन है अंसा । कोहै अंस कौन है वंसा ॥
कौन कैल कौन गुण धारी । कौन स्रिस्ट कौन संसारी ॥
एती बात मोहि सों भाखो । और गुप्त गोये जनि राखो ॥

विन देखी सबही कहै, सुनि पाई हम कान ।
सोई अदेख तुम दिखावहु, आदि अंत परमान ॥

सतगुरु कबीर उवाच ।

सुनि सतगुरु मनमें बिहँसानै । तुमसों धर्मनि निरनय ठानै ॥
तेज अंड है अच्छर बंसा । अचित्य अंस सोहं है हंसा ॥
निरंजन कैल चारि गुन धारी । तिन स्रिस्टि अविगति संचारी ॥
तेज अंड अचित है अंसा । ओहं अंड जोहं है हंसा ॥
सत्य अंज जोहं है अंसा । सोरह तिनके उपज्यो वंसा ॥
पालंग पचीस तासु विस्तारा । पातालपाँजी तिनको बैठारा ॥
तिसरो अंड छमा बखानी । अकह अंश तिन्हकी रजधानी ॥
अकहनामते सताविसे बंसा । तिन्हके सकल और हैं अंसा ॥

चौथा धीरज अंड है भाई । ताते सुक्रित अंस निरमाई ॥
वंश बयालिस तिनके कडिहारा । तिनकी सनद चलै संसारा ॥
पाँचे अंड सुमत निरमाई । अंश हिरम्मर बैठक पाई ॥
तिन्हके वंस सात परवानी । यह सब भेद लेहु पहिचानी ॥
पाँचहि अंड आठ भए अंसा । सात सुरति इक्कोत्तर बंसा ॥
चारि अंडको एक विचारा । दोए करीको भेद अपारा ॥
एक अंश कोई पार न पावै । सतगुरु निजही भेद बतावै ॥
सुरति सरूप हमहीं सब कीना । मान बंडाइ अंसनको दीना ॥
जब अतीत सुरत ठहरानी । सुरति समरथ घट आनि समानी ॥
दोई मध्य एक आए समाई । तिन्हको नाम अच्छर ठहराई ॥
अक्षर इच्छा उपजी भावा । दूसर अंस कैल होय आवा ॥
आठवाँ अंस कालकी बांनी । अच्छर घट जो आए समानी ॥
स्वासा होय बाहर कढि आई । तिन्हकी गति कोइ विरलै पाई ॥
पांच परगट तीन गुपत पसारा । इनके अंस इग्यारह सारा ॥
चारि अंस भवतारन कीन्हा । चारि वेद निरंजन दीन्हा ॥
तीन देव स्रिस्टि अधिकारी । उपजनि बिनसनि दुखसुख भारी ॥
तिन चौरासी लच्छ बनावा । जीव अनेक बहुत निरमावा ॥
यह अविगति काहू नहिं पावा । समरत्थ ऐसा खेल बनावा ॥

साखी—वेद कितेब जाने नहीं, पावे ग्यानी थाह ।
तीन अंशलौं सबही खेले, आगे अगम अथाह ॥
इति कबीर बाणीका प्रमाण सृष्टि उत्पत्ति विषय ।

प्रमाण अनुराग सागर सृष्टि उत्पत्ति प्रकरणका ।

धर्मदास प्रश्न ।

अब साहब मोहि देहु बताई । अगर लोक सो कहाँ रहायी ॥
लोक दीप मोहि बरनि सुनावहु । तिरषावन्तको अमि पियावहु ॥
कौने द्वीप हंसको बासा । कौने द्वीप पुरुष रहि बासा ॥
भोजन कौन हंस तहँ करई । औ बानी कहँ तहँ उच्चरई ॥
कैसे पुरुष लोक रचि राखा । द्वीपहि को कैसे अभिलाखा ॥
तीन लोक उत्पति भाखो । बर्णतहु सकल गोय जनि राखो ॥
काल निरंजन केहि विधि भयऊ । कैसे षोडश सुत्त निर्भयऊ ॥

कैसे चार खानि बिस्तारी । कैसे जीव काल वस डारी ॥
कैसे कूरम सेस उपराजा । कैसे मीनबराहहिं साजा ॥
त्रय देवा कौने विधि भयऊ । कैसे महि अकास निरमयऊ ॥
चंद सूर कहु कैसे भयऊ । कैसे तारागन सब ठयऊ ॥
किहि विधि भइ शरीरकी रचना । भाषो साहेब उत्पत्ति बचना ॥
जाते संसय होय उछेदा । पाइ भेद मन होय अखेदा ॥

छन्द–आदि उत्पति कहो सतगरु, क्रिपाकरि निज दासको ॥
बचन सुधा सु परकास कीजे, नास हों जम त्रासको ॥
एक एक विलोय बरनहु, दास मोहि निज जानिकैं ॥
सत्य बक्ता सद्गुरु तुम लेव निश्चय मैं मानिकैं ॥ १० ॥

सोरठा–निश्चय बचन तुम्हार, मोहि अधिक प्रिय ताहिते ।
लीला अगम अपार, धन्य भाग दरसन दीये ॥ १० ॥

कबीर वचन ।

धरमदास अधिकारी पाया । ताते मैं कहि भेद सुनाया ॥
अब तुम सुनहु आदिकी बानी । भाषों उत्पति प्रलय निसानी ॥

सृष्टिके आदिमें क्या था ?

तबकी बात सुनहु धर्मदासा । जब नहिं महि पताल अकासा ॥
जब नहिं कूर्म बराह औ सेसा । जब नहि सारद गौरि गनेसा ॥
जब नहि हते निरंजन राया । जिनजीवन कहँ बांधि झुलाया ॥
तेतिस कोटि देवता नाहीं । और अनेक बताऊँ काहीं ॥
ब्रह्मा विस्नु महेसुर नहि तहिया । सास्त्र वेद कुरान न कहिया ॥
तब सब रहे पुरुषके माहीं । ज्यों बटबृच्छ मध्य रह छाहीं ॥

छन्द–आदि उत्पति सुनहु धर्मनि, कोइ न जानत ताहि हो ॥
सबहि भो विस्तार पाछे, साख देऊँ मैं काहि हो ॥
वेद चारों नाहि जानत; सत्य पुरुष कहानियां ॥
वेदको तब मूल नाहीं, अकथकथा बखानियां ॥ ११ ॥

सोरठा–निराकारते वेद, आदि भेद जाने नहीं ॥
पंडित करत उछेद, मते वेदके जग चले ॥ ११ ॥

सृष्टिकी उत्पत्ति सत्पुरुषकी रचना ।

सत्य पुरुष जब गुपत रहाये । कारन करन नहीं निरमाये ॥
समपुट कमल रह गुप्त सनेहा । पुहुप माहिं रह पुरुष विदेहा ॥
इच्छा कीन्ह अंस उपजाये । हंसन देखि हरष बहु पाये ॥
प्रथमहिं पुरुष सब्द परकासा । दीप लोक रचि कीन्ह निवासा ॥
चारि करी सिंहासन कीन्हा । तापर पुहुप दीप करु चीन्हा ॥
पुरुष कला धरि बैठे जहिया । प्रगटी अगर वासना तहिया ॥
सहस अठासी दीप रचि राखा । पुरुष इच्छातैं सब अभिलाखा ॥
सबै द्वीप रहु अगर समायी । अगर वासना बहुत सुहायी ॥

सोलह सुतका प्रगट होना ।

दूजे सब्द जु पुरुष परकासा । निकसे कूर्म चरण गहि आसा ॥
तीजे सब्द सु पुरुष उच्चारा । ज्ञान नाम सुत उपजे सारा ॥
टेकि चरन सम्मुख ह्वै रहेऊ । आज्ञा पुरुष दीप तिन्ह दयऊ ॥
चौथे सब्द भयो पुनि । जबहीं । विवेकनाम सुत उपजे तबहीं ॥
आप पुरुष किय दीप निवासा । पञ्चम सब्द सो तेज परकासा ॥
पँचएँ सब्द जब पुरुष उच्चारा । काल निरंजन भौ अवतारा ॥
तेज अंसते काल होय आवा । ताते जीवन कहँ सन्तावा ॥
जिवरा अंस पुरुषका आहीं । आदि अंत कोई जानत नाहीं ॥
छठएँ सब्द पुरुष मुख भाषा । प्रगटे सहज नाम अभिलाषा ॥
सतएँ सब्द भयो संतोषा । दीन्हो दीप पुरुष परितोषा ॥
अठएँ सब्द पूरुष उच्चारा । सुरति सुभाव दीप बैठारा ॥
नवमें सब्द अनन्द अपारा । दशएँ सब्द समा अनुसारा ॥
ग्यारहें सब्द नाम निष्कामा । बारहें सब्द जलरंगी नामा ॥
तेरहें सब्द अचिंत सुत जानो । चौदहें सब्द सुत प्रेम बखानो ॥
पन्द्रहें सब्द सुत दीनदयाला । सोलहें सब्द मैं धिरज रसाला ॥
सत्रहवें सब्द सुत योगसंतायन । एक नाल षोडश सुत पायन ॥
सब्दहिते भयो सुतन अकारा । सब्दहि ते लोक दीप विस्तारा ॥
अगर अमी दिय अंस अहारा । दीप दीप अंसन बैठारा ॥
अंसन सोभा कला अनंता । होत तहाँ सुख सदा वसन्ता ॥
अंसन सोभा अगम अपारा । कला अनन्तको वरने पारा ॥

सब सुत करें पुरुषको ध्याना । अमी अहार सदा सुख माना ।।
याही बिधि सोलह सुत भयऊ । धरमदास तुम चित धरि लेऊ ।।
छन्द–दीप करीको अनंत सोभा, नाहिं बनत सो बने ।।
अमित कला अपार अद्भुत, सुतन सोभाको गने ।।
पुरुषके उजियारसे सुन, सबै दीप अंजोर हो ।।
सत पुरुष रोम प्रकाश एकहि, चन्द सूर करोर हो ।।
सोरठा–सतपुर आनँदधाम, सोग मोह दुख तहँ नहीं ।।
हंसनको विसराम, पुरुष दरस अँचवत सुधा ।। १२ ।।

निरञ्जनकी तपस्या और मानसरोवर तथा सुनकी प्राप्ति ।

यहि बिधि बहुत दिवस गयो बीती । ता पीछे ऐसी भई रीती ।।
जुग सत्तर सेवा तिन कीन्हा । इक पग ठाढपुरुषचित्त दीन्हा ।।
सेवा कठिन भाँति तिन कीन्हा । आदि पुरुष हरषित होय चीन्हा ।।

पुरुष वचन–निरञ्जनप्रति ।

पुरुष अवाज उठी तब बानी । कहा जानि तुम सेवा ठानी ।।

निरञ्जन वचन ।

कहै धरम तब सीस नमायी । देहु ठौर जहँ बैठों जायी ।।
आज्ञा किये जाहु सुत तहवाँ । मानसरोवर दीप है जहवाँ ।।
चले धरम तब मानसरोवर । बहुतहरषचित करत कलोहर ।।
मानसरोवर आये जहिया । भये आनन्द धरम पुनि तहिया ।।
बहुरि ध्यान पुरुषको कीन्हा । सत्तर जुग सेवा चित दीन्हा ।।
एक पगु ठाढे सेवा लायी । पुरुष दयाल दया उर आयी ।।

पुरुषवचन–सहजप्रति ।

बिकस्यो पुहुप उठ्यो जब बानी । बोलत वचन उठ्यो अधरानी ।।
जाहु सहज तुम धरमके पासा । अब कस ध्यान कीन्ह परगासा ।।
सेवा बहु कीन्हा धर्मराऊ । दियो ठौर वाहि जहाँ रहाऊ ।।
तीन लोक तब पलमें दीन्हा । लखि सेवकाइ दया आस कीन्हा ।।
तीन लोक कर पायो राजू । भयो आनन्द धरम मन गाजू ।।
अब का चाहे पूछो जाई । जो कछु कहै सो देउ सुनाई ।।

सहजका निरञ्जनके पास जाना ।

चले सहज तब सीस नवाई । धरमराय पहँ पहुँचे जाई ।।
कहे सहज सुन भ्राता मोरा । सेवा पुरुष मान लइ तोरा ।।

अब का मांगहु सो कह मोही। पुरुष आवाज दीन्ह वह नोही ।।

निरञ्जनवचन–सहजप्रति ।

अहो सहज तुम जेठे भाई । करो पुरुष सो बिन्ती जाई ।।
इतना ठाँव न मोहि सुहाई । अब मोहि बकसि देहु ठकुराई ।।
मोरे चित अस भौ अनुरागा । देऊ देश मोहि करहु सभागा ।
कै मोहि देहु लोक अधिकारा । कै मोहि देहु देस यक न्यारा ।।

सहज वचन–सत्पुरुषप्रति ।

चले सहज सुनि धर्मके बाता । जाय पुरुषसो कहे विख्याता ।।
जो कछु धर्मराय अभिलाषी । तैसे सहज सुनाये भाषी ।।

पुरुषवचन–सहजप्रति ।

छन्द

सुन्यो सहजके वचन, जबहीं पुरुष बैन उच्चारेऊ ।।
धरमसे सनतुष्ट हैं हम, वचन मम हिय धारे ।।
लोक तीनों ताहि दीन्हो, शून्य देश बसावहू ।।
करहु रचना जाय तहँवा, सहज वचन सुनावहू ।। १३ ।।

सोरठा

जाहु सहज तुम वेग, अस कहि आवो धरमसो ।।
दियो सून्यकर थेग, रचना रचहु बनाइके ।। १६ ।।

निरञ्जनको सृष्टिरचनाका साज मिलनेका वृत्तान्त ।

सहजवचन–निरञ्जन प्रति ।

आय सहज तब वचन सुनावा । सत्य पुरुष जस कहि समुझावा ।।

कबीरवचन–धर्मदास प्रति ।

सुनतहिं बचन धर्म हरषाना । कछुक हरष कछु बिसमय आना ।।

निरंजन वचन–सहज प्रति ।

कहे धर्म सुनु सहज पियारा । कैसे रचौं करौं विस्तारा ।।
पुरुष दयाल दीन्ह मोहि राजू । जानु न भेद करों किमि काजू ।।
गम्य अगम्य मोहि नहि आयी । करो दया सो युक्ति बतायी ।।
बिन्ती करौ पुरुषसों मोरी । अहो भ्रात बलिहारी तोरी ।।
किहि विधि रचूं नौखंड बनाई । हे भ्राता सो आज्ञा पाई ।।
मो कहँ देहु साज प्रभु सोई । जाते रचना जगतकी होई ।।

सहजका लोकको जाना ।

तबही सहज लोक पगुधारा । कीन्ह दंडवत बारम्बारा ।।

पुरुषवचन—सहज प्रति ।

अहो सहज कस इहवाँ आऊ । सो हमसों तुम सब्द सुनाऊ ।।

कबीर बचन—धर्मदास प्रति ।

कह्या सहज तव धर्मकी बाता । जो कछु धर्म कही विख्याता ।।
धर्मराय जस विन्ती लायी । तैसे सहज सुनायउ जायी ।।

पुरुषकी आज्ञा सहजसे ।

आज्ञा पुरुष दीन्ह तेहि बारा । सुनो सहज तुम बचन हमारा ।।
कूर्म उदर आहि सब साजा । सो ले धरम करे निज काजा ।।
बिनती करे कूम सो जायी । माँगि लेइ तेहि माथ नवायी ।।

सहजका धर्मरायके निकट जाकर पुरुषकी आज्ञा सुनाना ।

गये सहज पुनि धर्मके पासा । आज्ञा पुरुष कीन्ह परगासा ।।
बिनती करो कूर्मसो जाई । माँगि लेहु तेहि सीस नवाई ।।
जाय कूर्म ढिग सीस नवावहु । करिहैं क्रिपा बहुत तब पावहु ।।

निरंजनका कूर्मके पास साज लेनेको जाना ।

चलिभो धरम हरष तब बाढो । मनहिं कीन जुमान अतिगाढ़ो ।।
जाय कूर्मके सन्मुख भयऊ । दंड परनाम एक नहिं कियऊ ।।
अमी स्वरूप कूर्म सुखदाई । तपत न तनिको अति सितलाई ।।
करि गुमान देख्यो जब काला । कूर्म धीर अति है बलवाला ।।
बारह पालँग कूर्म सरीरा । छै पालंग धरम बलवीरा ।।
धावे चहुँ दिस रहै रिसाई । किहि विधि लीजे उत्पति भाई ।।
कीन्हो रोष कोपि धर्म धीरा । जाय कूर्मसे सन्मुख भीरा ।।
कीन्हों काल सीस नख घाता । दरते निकसे पवन अघाता ।।
तीन सीसक तीनहु अंसा । ब्रह्मा विस्नु महेसुर बंसा ।।
पाँच तत्त्व धरती आकासा । चंद सूर उडगन रहिवासा ।।
निसरयो नीर अगिन ससि सूरा । निसरयो नभ ढाकन महि थूरा ।।
मीन सेष बराह महि थम्भन । पुनि पिरथीको भयो अरम्भन ।।
छीना सीस कूर्मको जबहीं । चले परसेव ठाँव पुनि तबहीं ।।
जबही परसेव बुंद जल दीन्हा । उंचास कोट प्रिथ्वीको कीन्हा ।।

च्छीर ताय जस परत मलाई । अस जलपर प्रिथ्वी ठहराई ॥
बारह दंत रहु महिकर सूला । पवन प्रचंड मही अस्थूला ॥
अंड सरूप अकासको जानो । ताके बीच प्रिथ्वी अनुमानो ॥
कूर्म उदर सुत कूर्म उत्पानो । तापर सेस बराहको थानो ॥
सेस तीस या प्रिथ्वी जानो । ताके हेठ कूर्म बरियानो ॥
किरतम कूर्म अंडके माँही । कूर्म अंस सो भिन्न रहाही ॥
आदि कूर्म रह लोक मंझारा । तिन पुनि पुरुष ध्यान अनुसारा ॥

कूर्म बचन–सत्पुरुष प्रति ।

निरंकार कीन्हो बरियाया । काल कला धरि मोपहँ आया ॥
उदर विदार कीन्ह उन मोरा । आज्ञा जानि कीन्ह नहिं थोरा ॥

पुरुष बचन–कूर्म प्रति ।

पुरुष अवाज कीन्ह तेहि बारा । छोटा बन्धु वह आहि तुम्हारा ॥
आहि यही बडनका रीती । औगुन ठावँ करहिं वह प्रीती ॥

कबीरबचन–धर्म प्रति ।

पुरुषवचन सुनि कूर्मअनन्दा । अमी सरूप सो आनन्दकन्दा ॥
पुरुष ध्यान पुनि कीन्ह निरञ्जन । जुग अनेक किये सेवा संजन ॥
स्वारथ जानि सेवा तिन लाई । करि रचना बैठे पछताई ॥
धर्म राय तब कीन्ह विचारा । कहवालो त्रयपुर विस्तारा ॥
स्वर्ग मृत्यु कीन्हों पाताला । विनाबीज किमिकीजे क्याला ॥
कौन भांति कस करब उपाई । किहि विधि रचों शरीर बनाई ॥
कर सेवा माँगो पुनि सोई । तिहुँ पुर जीवित मेरो होई ॥
करि विचार अस हठ तिन धारा । लाग्यो करने पुरुष विचारा ॥
एक पाँव तब सेवा कियेऊ । चौंसठ जुगलो ठाढे रहेऊ ॥

बहुरि पुरुषका सहजको निरञ्जनके निकट भेजना ।

छन्द–दयानिधि सतपुरुष साहिब, बस सु सेवाके भये ॥
बहुरि भाष्यो सहज सेती, कहा अब जाँचत नये ॥
जाहु सहज निरंजन पहँ, देउ जो कुछ मांगई ॥
कराहच बना पुरुष बचना, छल मता तब त्यागई ॥ १४ ॥

सहजका निरञ्जनके निकट पहुँचना ।

सोरठा–सहज चले सिर नाय, जबहिं पुरुष आज्ञा कियो ।
तहँवां पहुँचे जाय, जहाँ निरंजन ठाढरह ॥ १४ ॥

देखत सहज धर्म हरषाना। सेवा वस पुरुष तब जाना ॥

सहजवचन।

कहै सहज सुनु धर्मराया। केहि कारन अब सेवा लाया ॥

निरञ्जनवचन।

धर्म कहे तब सीस नयायी। देहु ठौर जहँ बैठौं जायी ॥

सहजवचन

तब सहज अस भाषे लीन्हा। सुनहु धर्म तोहि पुरुष सब दीन्हा ॥
कूर्म उदर सो जो कछु आवा। सो तोहि देन पुरुष फरमावा ॥
तीनों लोक राज तोहि दीन्हा। रचना रचहु होहु जनि भीना ॥

निरञ्जन वचन।

तबै निरंजन विनती लायी। कैसे रचना रचूँ बनायी ॥
पुरुषहि कहो जोरि युग पानी। मैं सेवक दुतिया नहिं जानी ॥
पुरुष सो विनती करो हमारा। दीजे खेत बीज निज सारा ॥
मैं सेवक दुतिया नहिं जानू। ध्यान पुरुषको निसिदिन आनू ॥
पुरुषहि कहो जाइ यह वानी। देहु बीज अम्मर सहिदानी ॥

कबीरवचन–धर्मदास प्रति।

सहज कह्यो पुनि पुरुषहि जाई। जस कछु कह्यो निरंजनराई ॥
गयो सहज निज दीप सुखासन। जबहि पुरुष दीन्हें अनुशासन ॥
सेवा वश सतपुरुष दयाला। गुण औगुण नहिं चित्त किरपाला ॥

अद्याकी उत्पत्ति।

इच्छा कीन पुरुष तेहि बारा। अष्टंगी कन्या उपचारा ॥
अष्ट बाहु कन्या होय आई। बायें अंग सो ठाढ रहाई ॥

अद्यावचन।

माथ नाइ पुरुष सो कहई। अहो पुरुष आज्ञा कस अहई ॥

पुरुषवचन अद्या प्रति। सत्यपुरुषको अद्याको मूलबीज देना।

तबहीं पुरुष वचन परगासा। पुत्री जाहु धरमके पासा ॥
देहुँ वस्तु सो लेहु सम्हारी। रचहु धर्म मिलि उतपति वारी ॥

कबीरवचन–धर्मदास।

दीन्हो बीज जीव पुनि सोई। नाम सोहँग जीव कर होई ॥

जीव सोहँगम दूसर नाहीं । जीव सो अंस पुरुषको आही ॥
सकती पुनि तीन पुरुष उत्पाना । चेतनि उलंघनि अभया जाना, ॥
छन्द–पुरुष सेवावश भये तब अष्टंगहि दीन्ह हो ॥
मानसरोवर जाहु कहिया देहु धर्महिं चीन्ह हो ॥
अष्टंगी कन्या हती जेहिं रूप शोभा अति बनी ॥
जाहु कन्या मानसरवर करहु रचना अति घनी ॥ १५ ॥
सोरठा–चौरासी लख जीव, मूल बीज तेहि संग दे ॥
रचना रचहु सजीव, कन्या चलि सिर नायके ॥ १५ ॥
यह सब दीन्हे आदि कुमारी । मान सरोवर चलि भइ नारी ॥
तत्छिन पुरुष सहज टेरावा । धावत सहज पुरुष पहिं आवा ॥

पुरुषबचन सहजप्रति ।

जाइ सहज धरम यह कहहू । दीन्ही वस्तु जस तुम चहहू ॥
मूल बीज तुम पहँ पठवावा । करहु स्त्रिष्टि जस तुम मन भावा ॥
मान सरोवर जाइ रहाहू । तहँते होइ हैं स्त्रिष्टि उराहू ॥

पुनि सहजका निरञ्जनके ढिग जाना ।

चले सहज तहवाँ तब आये । धर्म धार जँह ठाढ रहाये ॥
कहेउ सु वचन पुरुषको जबहीं । धर्मराय सिर नायो तबहीं ॥

निरञ्जनका मानसरोवरमें अद्याको पाकर मोहवश हो उसे निगल जाना और सत्पुरुषका शाप पाना ।

पुरुष वचन सुन तबहीं गाजा । मान सरोवर आन विराजा ॥
आवत कामिनि देख्यो जबहीं । धरमराय मन हरष्यो तबहीं ॥
कला उभय अष्टंगी केरी । धरमराय तिहिं दिढकै हेरी ॥
कला उदोत अंत कछु नाहीं । काल मगन ह्वै निरखे ताही ॥
निरखत धरम सुभयो अधीरा । अंग अंग सब निरखसरीरा ॥
धरमराय कन्या कह ग्रासा । काल स्वभाव सुनो धर्मदासा ॥
कीनो ग्राह काल अन्याई । तब कन्या चित विस्मय आई ॥
ततछन कन्या कीन्ह पुकारा । काल निरंजन कीन्ह अहारा ॥
तबही धर्म सहज लग आई । सहज सून्य तब लीन्ह छुडाई ॥
पुरुष ध्यान कूर्म अनुसारा । मोसनकाल कीन्हँ अधिकारा ॥
तीन शीश मम भच्छन कीन्हो । हो सतपुरुष दया भल चीन्हो ॥
यही चरित्र पुरुष भल जानी । दीन्ह सापसों कहों बखानी ॥

पुरुषका शाप निरंजन प्रति।

लच्छ जीव नित ग्रासन करहू। सवा लच्छ नित प्रति बिस्तरहू॥
छन्द--पुनि कीन्ह पुरुष तिवान किमि मेटि डारो काल हो॥
कठिन काल कराल जीवन बहुत करइ बिहाल हो॥
यहि मेटत मुहि अब ना बने नाल। इक सुत षोडसा॥
एक मेटत सबै मिटिहैं वचन डोल अडोलसा॥ १६॥
सोरठा--डोले बचन हमार, जो अब मेटों धरमको।
बचन करौं प्रतिपाल, देश मोर अब ना लहै॥ १६॥

सत्पुरुषका योग तिजीको निरञ्जनके पास उसे मानसरोवरसे निकाल देनेकी आज्ञा देकर भेजना।

जोगजीत कहँ पुरुष बुलावा। धर्म चरित सब कहि समुझावा॥

सत्पुरुषवचन--योगजीत प्रति।

जोगजीत तुम बेगि सिधारो। धर्मरायको मारि निकारो॥
मानसरोवर रहन न पावै। अब यहि देस काल नहिं आवै॥
जाके रहे धरम वहि देसा। स्वर्ग मृत्यु पाताल नरेसा॥
धर्मके उदर माहिं है नारी। तासो कहो निज शब्द सम्हारी॥
उदर फारिकै बाहर आवै। कूर्म उदर विदारि फल पावै॥
धरमरायसे कहो विलोई। वहै नारि अब तुम्हरी होई॥

कबीरवचन--धर्मदास प्रति।

जोग जीत चल भे सिर नाई। मानसरोवर पहुँचे जाई॥
जोगजीत कहँ देखा जबहीं। अति भो काल भयंकर तबहीं॥

निरञ्जनवचन--योगजीत प्रति।

पूछा काल कौन तुम आहू। कौन काज तुम यहाँ सिधाहू॥

योगजीतवचन--निरंजन प्रति।

जोगजीत अस कहे पुकारी। अहो धरम तुम ग्रासेउ नारी॥
आज्ञा पुरुष दीन्ह यह मोही। इहिते बेगि निकारों तोही॥

जोग जीतवचन--अद्या प्रति।

जोगजीत कन्या सो कहिया। नारि काहे उदरमहँ रहिया॥
उदर फारि अब आवहु बाहर। पुरुष तेज सुमिरो तेहि ठाहर॥

कबीरवचन–धर्मदास प्रति ।

सुनिके धर्म क्रोध उर जरेऊ । जोगजीत सो सन्मुख भिरेऊ ॥
जोग जीत तब किन्हे ध्याना । पुरुष प्रताप तेज उर आना ॥
पुरुष आज्ञा भई तेहि काला । मारहु माँझ लिलार कराला ॥
जोगजीत पुनि तैसो कीन्हा । जस आज्ञापुरुष तेहि दीन्हा ॥
छन्द–गहि भुजा फटकार दीन्हों, परेउ लोकते न्यारहो ॥
भयो त्रासित पुरुष ढरते, बहुरि उठेउ सम्हार हो ॥
निकसि कन्या उदरते पुनि, देख धर्महिं अति डरी ॥
अब नाहि देखों देस वह, कहो कौन विधि कहँवां परी ॥ १७ ॥
सोरठा–कामिनि रही सकाय, त्रसित काल डर अधिक ॥
रही सो सीस नवाय, आस पास चितवत खडी ॥ १७ ॥

निरञ्जनवचन–अद्या प्रति ।

कहे धर्म सुनु आदि कुमारी । अब जनि डरपो त्रास हमारी ॥
पुरुष रचा तोहि हमरे काजा । इकमति होय करहु उपराजा ॥
हम हैं पुरुष तुमहिं हौ नारी । अव जनिडरपो त्रास हमारी ॥

अद्यावचन–निरञ्जन प्रति ।

कहे कन्या कस बोलहु बानी । भ्राता जेठ प्रथम हम जानी ॥
कन्या कहै सुनो हो ताता । ऐसी विधि जनि बोलहु बाता ॥
अब मैं पुत्री भई तुम्हारी । तैं उदर मांझु लियो डारी ॥
जेठ बंधु प्रथमहिके नाता । अब तो अहो हमारे ताता ॥
निरमल द्रिष्ट अब चितवहु मोही । नहितो पाप होय अब तोही ॥
मंद द्रिस्टिनि चितिवहु मोही । नातो पाप होय अब तोही ॥

निरञ्जनवचन–अद्या प्रति

कहे निरंजन सुनो भवानी । यह मैं तोहि कहों सहिदानी ॥
पाप पुन्य डर हम नहिं डरता । पाप पुन्यके हमहीं करता ॥
पाप पुन्य हमहींसे होई । लेखा हमार न लेवे कोई ॥
पाप पुन्य हम करब पसारा । जो बाझे सो होय हमारा ॥
ताते तोहि कहों समुझाई । सीख हमार लो सीस चढाई ॥
पुरुष दीन तोहि हम कहँ जानी । मानहु कहा हमार भवानी ॥

कबीरवचन धर्मदास प्रति ।

विहँसी कन्या सुन अस बाता । इक मति होय दोइ रंगराता ॥

रहस वचन बोली म्रिदु बानी । नारि नीच बुधि रति विधि ठानी ॥
रहस वचन सुनि धरम हरषाना । भोग करनको मनमें आना ॥
छन्द–भग नहिं कन्याके हती, अस चरित कीन्ह निरंजना ।
नख घात किये भगद्वार तत छिन, घाट उत्पति गंजना ॥
नखरेष शोनित चला, तिहँको सब खास आरंभनी ।
आदि उत्पति सुनहु धर्मनि, कोउ नहिं जानत जम मनी ॥
त्रिबार कीन्ही रति तबै, भये ब्रह्मा विस्नु महेस हो ।
जेठे विधि विस्नु लघु तिहि, तीजे सम्भू सेषहो ॥ १८ ॥
सोरठा–उत्पति आदि प्रकास, यह विधि तेहि प्रसंग भो ॥
कीन्हो भोगविलास इक मति कन्या काल है ॥ १८ ॥

भवसागरकी रचना ।

तेहि पीछे ऐसा भो लेखा । धर्मदास तुम करो विवेखा ॥

निरञ्जनवचन–अद्या प्रति ।

अगिन पवन जल मही अकासा । कूर्म उदरते भयो परगासा ॥
पाँचों अंस ताहि सन लीन्हा । गुन तीनो सीसनसो कीन्हा ॥
यहि विधि भये तत्व गुन तीनो । धर्मराय तब रचना कीनो ॥

कबीरवचन–धर्मदास प्रति ।

गुन तत सम कर देविहिं दीन्हा । आपन अंस उत्पन कीन्हा ॥
बुन्द तीन कन्या भग डारा । ता सँग तीनो अंस सुधारा ॥
पाँच तत्त्व गुण तीनो दीन्हा । यहि विधि जगकी रचना कीन्हा ॥
प्रथम बुन्दते ब्रह्मा भयऊ । रज गुण पंच तत्त्व तेहि दयऊ ॥
दूजो बुन्द बिस्नु जो भयऊ । सतगुण पंच तत्त्व तिन पयऊ ॥
तीजे बुन्द रुद्र उत्पाने । तमगुण पंच तत्त्व तेहि साने ॥
पंच तत्त्व गुण तीन खमीरा । तीनों जनको रच्यो सरीरा ॥
ताते फिरि फिरि परलय होई । आदि भेद जाने नहिं कोई ॥
कहै धर्म कामिनि सुन बानी । जो मैं कहूँ लेहु सो मानी ॥
जीव बीज आहै तुव पासा । सोले रचना करहु प्रगासा ॥
कहै निरंजन पुनि सुनु रानी । अब अस करहू आदिभवानी ॥
तीनो सुत सौंप तोहि दीना । अब हम पुरुष सेव चित लीन्हा ॥
राज करहु तुम लै तिहुँ बारा । भेद न कहियो काहु हमारा ॥

मोर दरस तिहुँ सुत नहिं पैहैं । जो मुहि खोजत जन्म सिरैहैं ॥
ऐसो मता दिढैहो जानी । पुरुष भेद नहिं पावै प्रानी ॥
त्रय सुत जबहिं होहिं बुधिवाना । सिधु मथन दे पठहु निदाना ॥

कबीरवचन धर्मदास प्रति ।

छन्द—कहेउ बहुत बुझाय देविहि गुप्त भये तब औहिहो ॥
सून्य गुफहि निवास कीन्हों भेद लह को ताहि हो ॥
वह गुप्त भा पुनि संग सबके मनै निरंजन जानिये ॥
मन पुरुष भेद उच्छेद देवे आपु परगट आनिके ॥

सोरठा—जीव भये मति हीन, परसि अगम सो कालको ।
जनम जनम भय खीन, मुरुचा करम अकर्मको ॥ १९ ॥
जीव सतावे काल, नाना कर्म लगायके ।
आप चलावै चाल, कस्ट देइ पुनि जीवको ॥ २० ॥

सिन्धुमथन और चौदह रत्न उत्पत्तिकी कथा ।

त्रय बालक जब भये सयाने । पठये जननी सिधु मथाने ॥
बालक मातै खेल खिलारी । सिंधुमथन नहिं गयेउ खरारी ॥
तेहि अंतर इक भयो तमासा । सो चरित बूझो धर्मदासा ॥
धार्‌यो योग निरंजन राई । पवन अरंभ कीन्ह बहुताई ॥
यागो पवन रहित पुनि जबहीं । निसरे उवेद स्वास संग तबहीं ॥
स्वास संग आयेउ सो वेदा । विरला जन कोई जाने भेदा ॥
अस्तुति कीन्ह वेद पुनि ताहां । आज्ञा का मोहि निरगुन नाहां ॥
कह्यो जाय करु सिंधु निवासा । जेहि भेंटे जैहौ तिहि पासा ॥
उठी अवाज रूप नहिं देखा । जोति अगम दिखलावत भेखा ॥
चलेउ वेद पुनि तेज अपाने । तेज अन्न पुनि विष संधाने ॥
चले वेद तहँवा को जाई । जहँवा सिंधु रचा धर्मराई ॥
पहुँचे वेद तब सिन्धु मँझारा । धर्मराय तब युक्ति विचारा ॥
गुप्त ध्यान देबिहिं समुझावा । सिन्धु मथन कहँ कस विलमावा॥
पठवहु बेगि सिन्धु त्रय वारा । दिढकै सोचहु बचन हमारा ॥
वहुरि आप पुनि सिन्धु समाना । देवी कीन्ह मथन अनुमाना ॥
तिहुँ बालक को कहा समुझायी । आसिष दे पुनि तहाँ पठायी ॥
पैहो वस्तु सिन्धुके माहीं । जाहु बेगि तीनों सुत ताहीं ॥
चलिभौ ब्रह्मा मान सिखाही । दोइ लहुरा पुनि पाछे जाई ॥

छन्द—त्रय सुत बाल खेलत चले ज्यों सुभग बाल मरालहो ।
एक गहि छोडत मही पुनि एक कर, गहि चलत लटपट चालहो ।।
छनहिं धावत छन अस्थिर खडे छनभुजहि गर लावहीं ।
तेहि समयकी सोभा भली नहिं देवता कहँ गावहीं ।।
सोरठा—गये सिन्धुके पास, भये ठाढ तीनो जने ।
जुगति मथन परकास, एक एकको निरखहीं ।। २१ ।।

प्रथम बार सिन्धुमंथन ।

तीनों कीन्ह मथन तब जाई । तीन वस्तु तीनौ जन पाई ।।
ब्रह्मा वेद तेज तेहि छोटा । लहुरा तासु मिले विष खोटा ।।
भेटि वस्तु त्रय तीनों भाई । चलि भये हर्ष कहत जहँ माई ।।
मातापहँ आये त्रय बारा । निज २ वस्तु प्रगट अनुसारा ।।
माता आज्ञा कीन्ह प्रकासा । राखु वस्तु तुम निज २ पासा ।।

द्वितीय बार सिंधुमंथन ।

पुनि तुम मथहु सिन्धु कहँ जाई । जो जिहि मिले लेहु सो भाई ।।
कीन्ह चरित अस आदि भवानी । कन्या तीन कीन्ह उत्पानी ।।
कन्या तीन उत्पान्यो जबहीं । अंस वारि महँ नायो सबहीं ।।
पठयो सिंधुमाहि पुनि ताहीं । त्रय सुत मरम सो जानत नाहीं ।।
पुनि तिन मथन सिंधुको, कीन्हा । भेंटचो कन्या हर्षित ह्वै लीन्हा ।।
कन्या तीनहु लीन्हे साथा । आ जननी कहँ नायउ माथा ।।
सब माताके आगे कीन्हा । माता बाँटि तिन्हन कहँ दीन्हा ।।
माता कहे सुनहु सुत मोरा । यह तो काज भये सब तोरा ।।
एक एक बाँटि तीनहुको दीन्हा । करहु भोग अस आज्ञा कीन्हा ।।
सावित्री ब्रह्मा तुम लेऊ । है लक्ष्मी विष्णु कहँ देऊ ।।
पारवती शंकर कहँ दीन्ही । ऐसी माता आज्ञा कीन्ही ।।
तीनउ जन लीन्ही सिर नाई । दीन्ह अद्या जस भाग लगाई ।।
पाई कामिनी भये अनंदा । जस चकोर पाये निशिचंदा ।।
काम वसी भए तीनों भाई । देव दैत दोनों उपजाई ।।
धरमदास परखो यह बाता । नारी भयी हती सो माता ।।

तृतीय बार सिंधुमंथन ।

माता बहुरि कहे समझायी । अब फिर सिंधु मथो तुम जाई ।।

जो जेहि मिलै लेहु सो जाई । अब जनि करो विलंब तुम भाई ॥
त्रय सुत चले तब माथ निवायी । जो कछु कहेउ करब हम जायी ॥
मथ्यो सिंधु कछु विलंब न कीन्हा । निकसे चौदह रतन सो लीन्हा ॥
चौदह रतनकी निकसी खानी । ले माता पहँ पहुँचे आनी ॥
तीनहु बन्धु हरषित ह्वै लीन्हा । विस्नुसुधा पायउ हर विष दीन्हा ॥

अद्याका तीनों पुत्रोंको सृष्टि रचनेकी आज्ञा देना और सब मिलकर पांच खानकी उत्पत्ति करना।

पुनि माता अस वचन उचारा । रचहु सृष्टि तुम तीनों वारा ॥
अंडज उत्पति कीन्हीं माता । पिंडज ब्रह्मा कर उत्पाता ॥
ऊषमजखानि विस्नु व्यवहारा । सिव अस्थावर कीन्ह पसारा ॥
चौरासी लाख योइन कीन्हा । आधा जल आधा थल दीन्हा ॥
एक तत्त्व अस्थावर जाना । दोय तत्त्व ऊष्मज परमाना ॥
तीन तत्त्व अंडज निरमायी । चार तत्त्व पिंडज उपजायी ॥
पाँच तत्त्व मानुष विस्तारा । तीनों गुण तेहि माहिं सवाँरा ॥

ब्रह्माका वेद पढकर निराकारका पता पाना।

ब्रह्मा वेद पढन तब लागा । पढत वेद तब भा अनुरागा ॥
कहे वेद पुरुष इक आही । निराकार जेहि रूप न छांही ॥
सून्यमाहिं वह जोत दिखावे । चितवत देह द्रिष्टि नहिं आवे ॥
स्वर्ग सीस पग आहि पताला । तेहि मत ब्रह्मा भौ मतवाला ॥
चतुरानन कहि विस्नु बुझावा । आहि पुरुष मोहिं वेद लखावा ॥
पुनि ब्रह्मा सिवसों अस कहई । वेद मथन पुरुष एक अहई ॥
अहै पुरुष इक वेद बतावा । वेद कहे हम भेद न पावा ॥

ब्रह्माका मातासे पिताका पता पूछना।

कबीरवचन धर्मदास प्रति।

तब ब्रह्मा माता पहँ आवा । करिपरनाम तिहिं टेके पाँवा ॥

ब्रह्मावचन अद्या प्रति।

हे माता मोहि वेद लखावे । सिरजनहार और बतलावे ॥

छन्द-ब्रह्मा कहे जननी सुनो कहहु कहा कंत तुम्हार है ॥
कीजै कृपा जनि मोहि दुरावो कहाँ पिता हमार है ॥

अद्यावचन ब्रह्माप्रति ।

कहे जननि सुनहु ब्रह्मा कोउ नहिं जनक तुम्हार हो ॥
हमहिते भई सबै उत्पति हमहि सब कीन सम्हार हो ॥ २१ ॥

ब्रह्मावचन अद्या प्रति ।

सोरठा—ब्रह्मा कहते पुकार, सुनु जननी तैं चित्त दे ॥
कहत वेद निरुवार, पुरुष एक सो गुप्त है ॥ २२ ॥

अद्यावचन ब्रह्मा प्रति ।

कहे अद्या सुन ब्रह्मकुमारा । मोसे नहीं स्रष्टा न्यारा ॥
स्वर्ग मृत्यु पाताल बनाई । सात समुन्दर हम निरमाई ॥

ब्रह्मावचन अद्या प्रति ।

माना वचन तुमहि सब कीन्हा । प्रथम गुप्त तुम कस रख लीन्हा ॥
जबै वेद मुहि कहे वुझाई । अलख निरञ्जन पुरुष बनाई ॥
अब तुम आप बनो करतारा । प्रथम काहे न किया बिचारा ॥
जो तुम वेद आप कथि राखा । तो कस तुम अलख निरंजन भाखा ॥
आपे आप आप निरमाई । काहे न कथन कीन तुम भाई ॥
अब मोसन छल जनि करहू । साँचे साँच सब कहि उच्चरहू ॥

कबीरवचन धर्मदास प्रति ।

जब ब्रह्मा यहि विधि हठ ठाना । तब अद्या मन कीन्ह तिवाना ॥
केहि विधि यहि कहूँ समझाई । विधि नहिं मानत मोर बडाई ॥
जो यहि कहौं निरंजन बाता । केहि विधि समझै यह विख्याता ॥
प्रथम कह्यो निरंजन राई । मोर दरश काहू नहिं पाई ॥
अबै जो यही अलख लखावो । कौनी विधि ताको दिखलाओं ॥

अद्यावचन ब्रह्मा प्रति ।

अस विचारि पुनि ब्रह्मै समझावा । अलख निरंजन नहिं दरस दिखावा ॥

ब्रह्मावचन अद्या प्रति ।

ब्रह्मा कहे मोहिं ठोर बताओ । आगा पीछा जनि तुम लाओ ॥
मैं नहि मानो तुम्हरी बाता । ऐसी बात न मोहि सुहाता ॥
प्रथम तुम मुहि दीन भुलावा । अब तुम कहो न दरस दिखावा ॥
तासु दरस न पैहो पूता । ऐसी बात कहो अजगूता ॥
छंद—दरस दिखाय तत्काल दीजे मोहि न भरोस तुम्हार हो ॥
संशय निवार यहिकाल दीजे कीजे न विलम्ब लगार हो ॥

अद्यावचन ब्रह्मा प्रति ।

कहें जननी सुनो ब्रह्मा कहों तोसों सत्तही ॥
सात स्वर्ग है माथ ताको चरन पताल सप्तही ॥ २२ ॥

ब्रह्माका पिताके खोजको जाना ।

सोरठा–लेहु पुष्प तुम हाथ, जो इच्छा तिहिं दरसकी ॥
जाय नवाओ माथ, ब्रह्मा चलै शिर नाइकै ॥ २३ ॥

जननी गुन्यो वचन चितमाहीं । मोरि कही यह मानति नाहीं ॥
या कहँ वेद दीन्ह उपदेसा । पैं दरस ते नहिं पावे भेसा ॥
कह अष्टंगि सुनो रे वारा । अलख निरंजन पिता तुम्हारा ॥
तासु दरश नहिं पैहौ पूता । यह मैं वचन कहौं निज गूता ॥
ब्रह्मा सुनि व्याकुल ह्वै धावा । परसन सीस ध्यान हिय लावा ॥
ब्रह्मा चले जननि सिर नाई । सीस परसि आवों तोहि ठाई ॥
तुरतहि ब्रह्मा दीन्ह रिंगायी । उत्तर दिशा बेगि चलि जायी ॥

आज्ञा माँगि विस्नु चले बाला । पिता दरशको चले पताला ॥
इत उत चितय महेस न डोला । सेवा करत कछू नहिं बोला ॥
तेहि सिव मन अस चित अभावा । सेवा करन जननि चित लावा ॥
यहि विधि बहुत दिवस चलिगयऊ । माता सोच पुत्र कह कियऊ ॥

विष्णुका पिताके खोजसे लौटकर पिताके चरण तक न पहुंचनेका वृत्तान्त अद्यासे कहना ।

प्रथम विस्नु जननी ढिग आये । अपनी कथा कहि समुझाये ॥
भेंट्यो नाहि मोहि पगु ताता । विष ज्वाला स्यामल भौ गाता ॥
व्याकुल भयउ तबै फिरि आवा । पिता पगु दरस मैं नहिं पावा ॥
सुनि हरषित भई आदिकुमारी । लीन्ह विस्नु कहँ निकट दुलारी ॥
चूमेउ बदन सीस दियो हाथा । सत्य सत्य बोलेउ सुत बाता ॥

धर्मदासवचन कबीर प्रति ।

कहे धरमनि यह संशय बीती । साहब कहहु ब्रह्माकी रीती ॥
पिता सीस तिन पर छन कीन्हा । कि होय निरास पीछे पगु दीन्हा ॥

छन्द–गयऊ ब्रह्मा सीस परसन, कथा ता दिनकी कहो ॥
भयो द्रिस्टि मेराव कि नहिं, तासु दरसन तिन लहो ॥
यह बरनन सब कहो सतगुर, एक एक विलोयके ॥
निज दास जानि परगास कीजे, धरहु निज जनि गोयके ॥ २३ ॥

सोरठा—प्रभु हम हैं तुव दास, जनम किरतारथ मोर करि ॥
करहु वचन परगास, तेहि पीछे जो चरित भौ ॥ २४ ॥

पिताकी खोजमें गये हुए ब्रह्माकी कथा।

कबीरवचन धर्मदास प्रति।

धरमदास मुहि अति प्रिय अहहू। कहो सँदेस परखि दृढ गहहू ॥
चलत ब्रह्मा तब वार न लावा। पिता दरसकहँ अति मन भावा ॥
तेहि स्थान पहुँचिगै जाई। नहि तहँ रबि ससि सून्य रहाई ॥
बहु विधि अस्तुति करे बनायी। ज्योति प्रभाव ध्यान तहँ लाई ॥
ऐसे बहु दिन गये बितायी। नहि पायो ब्रह्मा दरश पितायी ॥
सून्य ध्यान जुग चार गमावा। पिता दरस अजहूँ नहि पावा ॥

ब्रह्माके लिये अद्याकी चिन्ता।

ब्रह्मा तात दरस नहि पाई। सून्य ध्यानमहँ जुग बहु जाई ॥
माता चिंत करत मन माहाँ। जेठ पुत्र ब्रह्मा रहु काहाँ ॥
किहि विधि रचना रचहुँ बनाई। ब्रह्मा आवे कौन उपाई ॥

गायत्री उत्पत्ति।

उबटि सरीर मैल गहि काढी। पुत्री रूप कीन्ह रचि ठाढी ॥
शक्ति अंश निज ताहि मिलावा। नाम गायत्री ताहि धरावा ॥
गायत्री मातहिं सिर नाई। चरन चूमि निज सीस चढाई ॥

गायत्रीवचन अद्या प्रति।

गायत्री विनवै कर जोरी। सुनु जननी इक विनती मोरी ॥
कौन काज मो कहँ निरमाई। कहो वचन लेउँ सीस चढाई ॥

अद्यावचन गायत्री प्रति।

कहे आद्या पुत्री सुनु बाता। ब्रह्मा आहि जेठहि तुव भ्राता ॥
पिता दरशकहँ गयो अकासा। आनौ ताहि वचन परगासा ॥
दरश तातकर वह नहि पावे। खोजत खोजत जन्म गमावे ॥
जौने विधिते इहवाँ आई। करो जाय तुम तौन उपाई ॥

गायत्रीका ब्रह्माके खोजमें जाना। कबीरवचन धर्मदास प्रति।

चलि गायत्री मारग आई। जननीवचन प्रीति चित लाई ॥
चलत भई मारग सुकुमारी। जननी बचन ध्यान उर धारी ॥

छन्द–जाय देख्यो चतुरमुख कहँ नाहि पलक उघारई ॥
कछुक दिन सो रहा तहवाँ बहुरि युक्ति विचारई ॥
कौन विधि यह जागिहै अब करों कौन उपाय हो ॥
मन गुनति सोच बहुत विधि ध्यान जननी लाय हो ॥ २४ ॥

ब्रह्माको जगानेके लिये अद्याका गायत्रीको युक्ति बताना ।

सोरठा–अद्या आयसु पाइ, गायत्री तब ध्यान महँ ॥
निज कर परसेहु जाइ, ब्रह्मा तबहीं जागिहैं ॥
गायत्री पुनि कीन्ही तैसी । माता जुगति बतायी जैसी ॥
गायत्री तब चित्त लगाई । चरण कमल कहँ परसेउ जायी ॥

ब्रह्माका जागकर गायत्रीपर क्रोध करना ।

ब्रह्मा जाग ध्यान मन डोला । व्याकुल भयो बचन तब बोला ॥
कवन अहै पापिन अपराधी । कहा छुडायहु मोरि समाधी ॥
साप देहुँ तो कहँ मैं जानी । पिता ध्यान मोहि खंडयो आनी ॥

गायत्रीबचन ब्रह्मा प्रति ।

कहि गायत्री मोहि न पापा । बूझि लेहु तब देहहु सापा ॥
कहों तोहिसो सांची वाता । तोहि लेन पठयी तुव माता ॥
चलहु वेगि जनि लावहु बारे । तुम बिन रचना को बिस्तारे ॥

ब्रह्मावचन गायत्री प्रति ।

ब्रह्मा कहे कौन विधि जाऊँ । पिता दरस अजहूँ नहिं पाऊँ ॥

गायत्रीबचन ।

गायत्री कह दरस न पैहो । वेगि चलहु नहिं तो पछतैहो ॥

ब्रह्माका गायत्रीको झूठी साक्षी देनेको कहना और गायत्रीका ब्रह्मासे रति करनेकी बात कहना ।

ब्रह्मा कहे देहु तुम साखी । परस्यो सीस देख मैं आंखी ॥
ऐसे कहो मातु समुझायी । तो तुम्हरे संग हम चलि जायी ॥

गायत्रीबचन ।

कह गायत्री सुन स्तुति धारी । हम नहिं मिथ्या बचन उचारी ॥
जो मम स्वारथ पुरवहु भाई । तो हम मिथ्या कहब बनाई ॥

ब्रह्मावचन ।

कह ब्रह्मा नहिं लखी कहानी । कहौ बुझाय प्रगटकी बानी ॥

गायत्रीवचन ।

कह गायत्री देहु रति मोही । तो कह झूठ जिताऊँ तोही ॥
गायत्री कहै है यह स्वारथ । जानि कहौ मैं पुनि परमारथ ॥
सुनि ब्रह्मा चित करै बिचारा । अबका जतन करउँ इहि बारा ॥
छन्द–जो विमुख या कह करों अब तो नहीं बनि आवई ॥
साखि तो वह देय नाही जननि मोहि लजावई ॥
यहाँ नाहीं पिता पायो भयो न एको काज हो ॥
पाप सोचत नहिं बनै अब करौं रति विधि साजहो ॥
सोरठा–कियो भोग रति रंग, विसरचोसो मन दरसका ॥
दोउ कहँ बढचो उमंग, छल मति बुद्धि प्रगास किये ॥ २६ ॥

सावित्रीउत्पत्तिकी कथा ।

कह ब्रह्मा चल जननी पासा । तब गायत्री वचन प्रकासा ॥
औरौ करौ जुगति इक ठानी । दूसरि साखि लेउ उत्पानी ॥
ब्रह्मा कहे भली है बाता । करहु सोइ जेहि मानै माता ॥
तब गायत्रि जतन बिचारा । देह मैल गहि कीन्ह नियारा ॥
कन्या रचि निज अस मिलावा । नाम सावित्री तासु धरावा ॥
गायत्री तिहि कह समुझावा । कहियो दरस ब्रह्मा पितु पावा ॥
कह सावित्री हम नहिं जानी । झूठी साख दै आपनि हानी ॥
यह सुनि दोउ कहँ चिंता व्यापा । यह तो भयो कठिन संतापा ॥
गायत्री बहु विधि समझायी । सावित्रीके मन नहि आयी ॥
पुनि गायत्री कहा बुझाई । तब सावित्री बचन सुनाई ॥
ब्रह्मा कर मोसों रति साजा । तो मैं झूट कहों यहि काजा ॥
गायत्री ब्रह्महिं समुझावा । दै रति या कहँ काज बनावा ॥
ब्रह्मा रति सावित्रिहिं दीन्हा । पाप मोट आपन शिर लीन्हा ॥
सावित्री कर दूसर नाऊँ । कहि पुहपावति वचन सुनाऊँ ॥
तीनों मिलिके चलि भे तहवाँ । कन्या आदि कुमारी जहवाँ ॥

ब्रह्माका गायत्री और सावित्रीके साथ
माताके पास पहुँचना और सबका शाप पाना ।

करि प्रनाम सम्मुख रहे जाई । माता सब पूछी कुसलाई ॥
कहु ब्रह्मा पितु दरसन पाये । दूसरि नारि कहाँसे लाये ॥

ब्रह्मावचन ।

कह ब्रह्मा दोऊ हैं साखी । परस्यो सीस देख इन आँखी ॥

अद्यावचन गायत्री प्रति ।

तब माता बूझे अनुसारी । कहु गायत्री बचन विचारी ॥
तुम देखा इन दरसन पावा । कहो सत्य दरसन परभावा ॥

गायत्रीवचन ।

तब गायत्री बचन सुनावा । ब्रह्मा दरस सीस पितु पावा ॥
मैं देखा इन परसेउ सीसा । ब्रह्महि मिले देव जगदीसा ॥
छन्द—लेइ पुहुप परसेउ सीस पितु इन द्रिष्टि मैं देखत रही ।
जल ढार पुहुप चढाय दीन्ह हे जननि यह है सही ॥
पुहुपते पुहुपावती भयी प्रगट ताही ठामते ॥
इनहु दरसन लह्यो पितुको पूछहू इहि वामते ॥ २६ ॥
हो जननी यह है सही तुम पूछि लो पुहुपावती ।
सबही साँच मैं तोसो कहूँ नहिं झूठ है एको रती ॥

अद्यावचन पुहुपावती प्रति ।

माता कह पुहुपावतीसो कहो सत्यहि मो सना ।
जो चढे सीसहि पिताके तुम बचन बोलहु ततखना ॥ २७ ॥
सोरठा—कहु पुहुपावति मोहि, दरश कथा निरवारके ॥
यह मैं पूछों तोहि, किमि ब्रह्मा दरसन किये ॥ १७ ॥

सावित्रीवचन ।

पुहुपावती बेचन तव बोली । माता सत्य वचन नहिं डोली ॥
दरसन सीस लह्यो चतुरानन । चढेसीस यह धर निश्चय मन ॥
साख सुनत अद्या अकुलानी । भाअचरज यह मरम न जानी ॥

अद्याकी चिन्ता

अलख निरंजन अस प्रण भाखी । मोकहँ कोउ न देखै आँखी ॥
ये तीनहुँ कस कहहिं लबारी । अलख निरंजन कहहु सम्हारी ॥
ध्यान कीन्ह अष्टंगी तेहि छन । ध्यान माहिं अस कह्यो निरंजन ।

निरञ्जनवचन ।

ब्रह्मा मोर दरश नहिं पाया । झूठि साखि इन आय दिवाया ॥
तीनो मिथ्या कहे बनाई । जनि मानहु यह है लबराई ॥

अष्टाका ब्रह्माको शाप देना ।

यह सुनि माता कीन्हें दापा । ब्रह्मा कहँ तब दीन्हो सापा ॥
पूजा तोरि करै कोइ नाहीं । जो मिथ्या बोलेउ मम पाहीं ॥
इक मिथ्या अरु अकरम कीन्हा । नरक मोट अपने शिर लीन्हा ॥
आगे होइ जो साख तुम्हारी । मिथ्या पाप करहिं बहु भारी ॥
प्रगट करहिं बहु नेम अचारा । अन्तर मैल पाप विस्तारा ॥
विस्नु भक्तसों करहिं हँकारा । ताते परिहैं नरक मँझारा ॥
कथा पुराण औरहिं समुझै हैं । चाल बिहून आपन दुखपैहैं ॥
उनसे और सुनैं जो ज्ञाना । करि सो भगति कहों परमाना ॥
और देवको अंश लखैंहैं । औरन निन्दि काल मुख जैहैं ॥
देवन पूजा बहु विधि लैहैं । दछिना कारण गला कटैहैं ॥
जा कह शिक्ख करैं पुनि जायी । परमारथ तिहि नाहिं लखायी ॥
परमारथके निकट न जैहैं । स्वार अर्थ सबै समुझैहैं ॥
आप स्वारथी ज्ञान सुनैहैं । आपनि पूजा जगत दिढैहैं ॥
आपन पूजा जगहि दिढायी । परमारथके निकट न जायी ॥
आप ऊँच औरहिं कहँ छोटा । ब्रह्मा तोर सखा होइ खोटा ॥

कबीरवचन धर्मदास प्रति ।

जब माता अस कीन्ह प्रहारा । ब्रह्मा मूरछि मही कर धारा ॥

अष्टाका गायत्रीको शाप देना ।

गायत्री साप्यो तिहिं वारा । हुइहै तोर पंच भरतारा ॥
गायत्री तोर होइ वृषभ भतारा । सात पाँच और बहुत पसारा ॥
धर औतार अखज तुम खायी । बहुत झूठ तुम वचन सुनायी ॥
निज स्वारथ तुम मिथ्या भाखी । कहा जानि यह दीन्ही साखी ॥
मानि साप गायत्री लीन्ही । सावित्रिहि तब चितवन कीन्ही ॥

अष्टाका सावित्रीको शाप देना ।

पुहुपावति निज नाम धरायेहु । मिथ्या कह निज जन्म नसायेहु ॥
सुनहु पुष्पावति तुम्हरो विस्वासा । नहिं पुजिहैं तुमसे कछु आसा ॥
होय कुगंध ठौर तव वासा । भुगतहु नरक काम गहि आसा ॥
जो तोहिं सींच लगावे जानी । ताकर होय वंशकी हानी ॥
अब तुम जाय धरो औतारा । क्योडा केतकी नाम तुम्हारा ॥

कबीरवचन धर्मदास प्रति ।

छन्द–भये साप बस तीनों विकल मतिहीन छीन कुकर्मते ।
यह काल कला प्रचंड कामिनि डस्यो सब कहँ चर्मते ॥
ब्रह्मादि सिव सनकादि नारद कोउं न बचि भागि हो ॥
सुनु धरमनि विरल बाचे सब्द सत सो लागि हो ॥ २८ ॥
सोरठा–सत्य सब्द परताप, कालकला व्यापे नहीं ।
निकट न आवै पाप, मन वच करम जो पर गहे ॥ २८ ॥

साप दे देनेपर अष्टाका निरञ्जनके डरसे डरकर पछताना ।

साप तीनौको दैलियो मन माँहि तब पछतावई ।
कस करहि मोहि निरंजना पल छमा मोहि न आवई ॥

निरञ्जनका अष्टाको शाप देना ।

अकास बानी तब भयी यहु कहा कीन भवानिया ।
उत्पत्ति कारन तोहि पठायी कहा चरित यह ठानिया ॥
सोरठा–नीचहि ऊँच सिताय, बदल मोहि सो पावई ।
द्वापर युग जब आय, तुमहूँ पंच भतारि हो ॥ २९ ॥

कबीरवचन धर्मदास प्रति । अष्टाका निडर होना ।

साप ओयल जब सुनेउ भवानी । मन सन गुने कहा नहिं बानी ॥
ओयल प्रभाव साप हम पाया । अब कहा करब निरंजनराया ॥
तोरे वस परी हम आई । जस चाहो तस करो उपाई ॥

विष्णुका गौरसे श्याम होनेका कारण ।

अष्टावचन विष्णु प्रति ।

पुनि माता विष्णु दुलारा । सुनहु पुत्र इक वचन हमारा ॥
सत्य सत्य तुम कहो बुझाई । पितु पद परसन जब गै भाई ॥
प्रथमहु तो तुव गौर सरीरा । कारण कौन स्याम भए धीरा ॥

विष्णुवचन अष्टा प्रति ।

आज्ञा पाय हम तत्काला । पितु पद परसन चले पताला ॥
अक्षत पुहुप लीन्ह करमाहाँ । चले पताल पंथ मग जाहाँ ॥
पहुँचि सेसनाग पहँ गयऊ । विषक तेज हम अलसयऊ ॥
भयो स्याम विष तेज समावा । भइ अवाज अस वचन सुनावा ॥
अहो विस्नु माता पहँ जाई । बचन सत्य कहियो समझाई ॥
सतजुग त्रेता जैहै जबहीं । द्वापर ह्वै चौथा पद तबहीं ॥

तब तुम होहु कृस्न अवतारा । लैहो ओयलसों कहों बिचारा ।।
नाथहु नाग कलिंद्री जाई । अब तुम जाहु विलम्ब न लाई ।।
ऊँच होइके नीच सतावे । ताकर ओयल मोहि सो पावे ।।
जो जिव देह पीर पुनि काहू । हम पुनि ओयल दिबावैं ताहू ।।
पहुँचे हम तब तुव पासा । कीन्हेउ सत्य वचन परगासा ।।
भेटेउ नाहिं मोहि पद ताता । विष ज्वाला साँवल भोगाता ।।
व्याकुल भयो तबै फिर आयो । पितु पद दरसन मैं नहिं पायो ।।

अष्ट्राका विष्णुको ज्योतिका दर्शन कराना ।

इतना सुनि हरषित भई माई । लीन्ह विस्नु कहँ गोद उठाई ।।
पुनि अस कहेउ आदि भवानी । अब सुनहु पुत्र प्रिय मम बानी ।।
देख पुत्र तोहि पिता भिटावों । तोरे मन कर धोख मिटावों ।।
प्रथमहिं ज्ञान द्रिष्टिसो देखो । मोर बचन निज हिये परेखो ।।
मन सरूप करता कहँ जानों । मनते दूजा और न मानो ।।
सरग पताल दौर मन केरा । मन इस्थिर मन अहै अनेरा ।।
छनमहँ कला अनंत दिखावे । मन कहँ देख कोइ नहिं पावे ।।
निराकार मनहीको कहिये । मनकी आस दिवस निसि रहिये ।।
देखहु पलटि सून्यमहँ जोती । जहवाँ झिलमिल झालर होती ।।
फेरहु स्वास गगन कहँ धाओ । मार्ग अकासहिं ध्यान लगाओ ।।
जैसे माता कहि समुझावा । तैसे विस्नु ध्यान मन लावा ।।

छंद–पैठि गुफा ध्यान कीन्हो स्वास संयम लायके ।।
पवन धूंका दियो जबते गगन गरज्यो आयके ।।
बाजा सुनत तब मगन भा पुनि कीन्ह मन कस ख्याल हो ।।
सून्य स्वेत पीत सब्ज लाल दिखाय रंग जंगाल हो ।। ३० ।।

सोरठा–तेहि पीछे धर्मदास, मन पुनि आपे दिखायऊ ।।
कीन्ह ज्योति परकास, देखि विस्नु हरषित भये ।। ३० ।।
मातहि नायो सीस, बहु अधीन पुनि विस्नु भा ।।
मैं देखा जगदीस, हे जननी परसाद तुव ।। ३१ ।।

धर्मदास वचन ।

धरमदास गहि टेके पाया । हे साहिब इक संशय आया ।।
कन्या मनको ध्यान बतावा । सो यह सकल जीव भरमावा ।।

सद्गुरु वचन ।

धरमदास यह काल स्वभाऊ । पुरुष भेद विस्नु नहिं पाऊ ॥
कामिनिकी यह देखहु बाजी । अम्रित गोय दियो विष साजी ॥
जोत काल दूजा जनि जानहू । निरखि धर्म सत्यहिं उर आनहू ॥
परगट तोहि कहों समुझाई । धरमदास परखहु चित लायी ॥
जस परगट तस गुपुत सुभाऊ । जो रह हियासो बाहर आऊ ॥
जब दीपक बारै नर लोई । देखहु जोति सुभाव विलोई ॥
देखत जोति पतंग हुलासा । जानि प्रीति आवै तिहि पासा ॥
परसत होवे भसम पतंगा । अन जाने जरि मरहि मतंगा ॥
जोति सरूप काल अस आही । कठिन काल वह छाँडत नाहीं ॥
कोटि विस्नु औतारहि खाया । ब्रह्मा रुद्रहि खाय नचाया ॥
कौन विपति जीवनकी कहऊँ । परखि वचन जिन सहजहिं रहऊँ ॥
लाख जीव वह नित्यहि खाई । अस विकराल सो काल कसाई ॥

धर्मदास वचन ।

धर्मदास कह सुनहु गुसांई । मोरे चित संसय अस आई ॥
अष्टंगिहि पुरुष उत्पानी । जिहि विधि उपजी सो मैं जानी ॥
पुनि वहि ग्रास लीन्ह धर्म राई । पुरुष प्रताप सु बाहर आई ॥
सो अष्टंगी अस छल कीन्हा । गोइसि पुरुष प्रगट जम कीन्हा ॥
पुरुष भेद नहिं सुनत बतावा । काल निरंजन ध्यान करावा ॥
यह कस चरित कीन्ह अष्टंगी । तजी पुरुष भई कालकि संगी ॥

सद्गुरु कबीर वचन ।

धर्म सुनहु जन नारि सुभाऊ । अब तुहि प्रगट वरणि समझाऊ ॥
होय पुत्री जेहि घर माहीं । अनेक जतन परितोषत ताही ॥
वस्त्र भच्छ सुख सेज निवासा । घर बाहर सब तिहिं विस्वासा ॥
यज्ञ कराय देय पितु माता । बिदा कीन्ह हित प्रीतिसों ताता ॥
गयी सुता जब स्वामी गेहा । राती तासु संग गुन नेहा ॥
माता पिता सबै बिसरावा । धरमदास अस नारि स्वभावा ॥
ताते अद्या भई बिगानी । काल अंग ह्वै रही भवानी ॥
ताते पुरुष प्रगट ना लायी । काल रूप विस्नुहि दिखलायी ॥

धर्मदासवचन कबीर प्रति ।

हे साहब यह जान्यो भेदा । अब आगेका करहु उछेदा ॥

कबीरवचन धर्मदास प्रति ।

पुनि माता कहि विस्नु दुलारा । मरद्यो मान जेठ निज बारा ॥
अहो विस्नु तुम लेहु असीसा । सब देवनमें तुमहीं ईसा ॥
जो इच्छा तुम चितमें धरिहौ । सो सब तोर काज मैं करिहौं ॥

मायाका विष्णुको सर्वप्रधान बनाना ।

प्रथम पुत्र ब्रह्मा दुरि गयऊ । अकरम झूठ ताहि प्रिय भयऊ ॥
देवन स्रेष्ठ तुमहिं कहँ मानहिं । तुम्हरी पूजा सब कोई ठानहिं ॥

कबीरवचन धर्मदास प्रति ।

किरपा वचन अस मातै भाखा । सबसे स्रेष्ठ विस्नु कहँ राखा ॥
माता गयी रुद्रके पासा । देख रुद्र अति भये हुलासा ॥

अद्याका महेशको वरदान देना ।

पुनि लहुरा कहँ पूछे माता । तुम सिव कहो हृदयकी बाता ॥
माँगहु जो तुम्हरे चित भावे । सो तोहिं देउँ माता फुरमावे ॥
दोइ पुत्रन कहँ मता दृढावा । माँग महेस जोई मन भावा ॥

महेशवचन ।

जोरि पानि सिव कहबे लीन्हा । देहु जननि जो आज्ञा कीन्हा ॥
कबहिं न विनसे मेरी देही । हे माता माँगों वर एही ॥
हे जननी यह कीजे दाया । कबहुँ न विनशै मेरी काया ॥

अद्यावचन ।

कह अष्टंगी अस नहिं होई । दूसर अमर भयो नहिं कोई ॥
करहु योग तप पवन सनेहा । रहे चार जुग तुम्हरी देहा ॥
जौलौं पृथ्वी अकास सनेही । कबहुँ न बिनसे तुम्हरी देही ॥

धर्मदासवचन ।

धर्मदास विनती चित लाई । ज्ञानी मोहि कहो समुझाई ॥
यह तो सकल भेद हम पायी । अब ब्रह्माको कहो उपायी ॥
अद्या साप ताहि कहँ दीन्हा । तेहि पीछे ब्रह्मा कस कीन्हा ॥

कबीरवचन ।

विस्नु महेस जबै वर पाये । भये आनन्द अतिहि हरषाये ॥
दोनों जने हरण मन कीना । ब्रह्मा भयो मान मद हीना ॥
धरमदास मैं सब कुछ जानों । भिन्न २ कर प्रगट बखानों ॥

शाप पानेके कारण दुःखित हो ब्रह्माका विष्णुके पास जाकर अपना दुःख कहना और विष्णुका उसे आश्वासन देना ।

ब्रह्मा मनमें भयो उदासा । तब चलि गयो विस्नुके पासा ॥

ब्रह्मावचन विष्णु प्रति ।

जाय विस्नुसे विनती ठाना । तुम हो बंधु देव परधाना ॥
तुम पर माता भई दयाला । साप विवश तुम भये बिहाला ॥
निज करनी फल पावउ भाई । किहि बिधि दोष लगाऊँ माई ॥
अब अस जतन करो हो भ्राता । चल परिवार वचन रह माता ॥

विष्णुवचन ।

कहे विस्नु छोडो मन भंगा । मैं करिहौं सेवकाई संगा ॥
तुम जेठे हम लहुरे भाई । चित संसय सब देहु बहाई ॥
जो कोइ होवे भगत हमारा । सो सेवै तुम्हरो परिवारा ॥
छंद–जग माहि ऐसे दिढाइहौं फल पुन्य आसा जोय हो ॥
जज्ञ धर्म अरु करे पूजा द्विज बिना नहिं होय हो ॥
जो करे सेवा द्विजनकी तेहि महापुन्य प्रभाव हो ॥
सो जीव मोकह अधिक प्यारे राखिहों निज ठाँव हो ॥ ३१ ॥

कबीरवचन धर्मदास प्रति ।

सोरठा–ब्रह्मा भये आनंद, जबहि विस्नु अस भासेऊ ॥
मेटेउ चितकर दुंद, सखा मोर सब सुखीभौ ॥ ३२ ॥

काल प्रपंच ।

देखहु धर्म।न काल पसारा । इन ठग ठग्यो सकल संसारा ॥
आसा दै जीवन बिल भावै । जनम जनम पुनि ताहि सतावै ॥
बलि हरिचंद बेनु वइरोचन । कुंती सुत औरो महिसोचन ॥
ये सब त्यागी दानि नरेसा । न कहुँ लै राखे केहि देसा ॥
जस गंजन इन सबकी कीन्हा । सो जग जाने काल अधीना ॥
जानत है जग होय न सुद्धी । काल अमरबल सबकी हर बुद्धी ॥
मन तरंगम जीव भुलाना । निज घर उलटिन चीन्ह अजाना ॥

धर्मदासवचन ।

धर्मदास कह सुनो गुसांई । तबकी कथा मोहि समझाई ॥
तुम प्रसाद जमको छल चीन्हा । निस्चय तुम्हरे पद चित दीन्हा ॥

भव बूडत तुमही गहि राखा । सब्द सुधारस मोसन भाखा ॥
अब वह कथा कहो समुझाई । स्राप अन्त किय कौन उपाई ॥

कबीर वचन धर्मदास प्रति गायत्री के अद्या को शाप देनेका वृत्तान्त

धर्मनि तुम सन कहों बखानी । भाषा ज्ञान अगमकी बानी ॥
मातु स्राप गायत्री लीन्हा । उलटि साप पुनि मातहिं दीन्हा ॥
हम जो पाँच पुरुषकी जोई । पाँचोकी तुम माता होई ॥
बिना पुरुष तू जनि है बारा । सो तो जनि है सकल सनसारा ॥
दुहुन साप फल पायो भाई । उगरह मयो देह धरि आई ॥

इति सृष्टि उत्पत्ति विषयक प्रमाण-अनुराग सागर ।

अथ आदिमंगल

दोहा–

प्रथमै समरथ आप रहे, दूजा रहा न कोइ ।
दूजा केहि बिधि ऊपजा, पूछत हों गुरु सोइ ॥ १ ॥
तब सतगुरु मुख बोलिया, सुकृत सुनो सुजान ।
आदि अन्तकी पारचै, तोसों कहौं बखान ॥ २ ॥
प्रथम सुरति समरथ कियो, घटमें सहज उचार ।
ताते जामन दीनिया, सात करी बिस्तार ॥ ३ ॥
दूजे घट इच्छा भई, चित मनसा तो कीन्ह ।
सातरूप निरमाइया, अविगत काहु न चीन्ह ॥ ४ ॥
तब समरथके स्त्रवणते, मूल सुरति भै सार ।
सब्द कला ताते भई, पाँच ब्रह्म अनुहार ॥ ५ ॥
पाँचौ पाँचे अंड धरि, एक एकमा कीन्ह ।
दुइ इच्छा तहँ गुप्त है, सो सुकृत चित चीन्ह ॥ ६ ॥
योगमया यकु कारने, ऊजे अक्षर कीन्ह ।
या अविगति समरथ करि, ताहि गुप्त करि दीन ॥ ७ ॥
स्वासा सोहं ऊपजे, कीन्ह अमी बंधान ।
आठ अंश निरमाइया, चीन्हो संत सुजान ॥ ८ ॥
तेज अंड अचिंत्यका, दीन्हो सकल पसार ।
अंड शिखापर बैठकै, अधर दीप निरधार ॥ ९ ॥

ते अचिन्तके प्रेमते, उपजे अक्षर सार।
चारि अंश निरमाइया, चारि वेद विस्तार ॥ १० ॥
तब अक्षरका दीनिया, नींद मोह अलसान।
वे समरथ अवि गति करी, मर्म कोई नहिं जान ॥ ११ ॥
जब अक्षरके नींदगे, देवी सुरति निरबान।
स्यामवरन यक अंड है, सो जलमें उतरान ॥ १२ ॥
अच्छर घटमें ऊपजे, व्याकुल संसय सूल।
किन अंडा निरमाइया, कहा अंडका मूल ॥ १३ ॥
तेहि अंडके मुक्खपर, लगी सब्दकी छाप।
अक्षर दृष्टिसे फूटिया, दसद्वारे कढि बाप ॥ १४ ॥
तेहिते जोति निरञ्जनौ, प्रकटे रूप निधान।
काल अपरबल बीरभा, तीनिलोक परधान ॥ १५ ॥
ताते तीन देव भे, ब्रह्मा विस्नु महेस।
चारि खानि तिन सिरजिया, मायाके उपदेश ॥ १६ ॥
चारि वेद षट सास्त्रऊ, औ दशअष्ट पुरान।
आसा दै जग बाँधिया, तीनों लोक भुलान ॥ १७ ॥
लख चौरासी धारमा, तहाँ जीवदिय बास।
चौदह यम रखवारिया, चारिवेद विश्वास ॥ १८ ॥
आपु आपु सुख सबरमै, एक अंडके माहिं।
उतपति परलय दुःख सुख, फिरि आवहिं फिरि जाहिं ॥ १९ ॥
तेहि पाछे हम आइया, सत्य सब्दके हेत।
आदि अन्तकी उतपती, सो तुमसों कहि देत ॥ २० ॥
सात सुरति सबमूल है, प्रलयहु, इनहीं माहि।
इनहींमासे ऊपजे, इनहीं माहँ समाहिं ॥ २१ ॥
सोई ख्याल समरत्थकर, रहे सो अछप छपाई ॥
सोई संधिलै आइया, सोवत जगहिं जगाइ ॥ २२ ॥
सात सुरतिके बाहिरे, सोरह संखके पार ॥
तहँ समरथको बैठका, हंसन केर आधार ॥ २३ ॥
घर घर हम सबसों कही, शब्द न सुनैं हमार ॥
ते भसागर डूबहीं, लख चोरासी धार ॥ २४ ॥
मंगल उत्पत्ति आदिका, सुनियो संत सुजान ॥
कह कबीर गुरु जाग्रत, समरथका फुरमान ॥ २५ ॥

प्रमाण श्वास गुञ्जारका ।

देखो प्रकरण दशवाँ, पृष्ठ २१ ।

कबीर वचन–चौपाई ।

कहे कबीर सत्य प्रकाशा । श्रोता सुरति धनी धर्मदासा ।।
सत्य सार सुकृत गुन गावों । अविचल बाँह अछै पद पावों ।।
संशय रहित सदा सो गाऊँ । शीलरूप सब हितकर नाऊँ ।।
करै कुलाहल हंस उजागर । मोह रहित सब सुखके सागर ।।
तेहि पुर जरा मरन भ्रम नाहीं । मन विकार इंद्री नहिं ताहीं ।।
सत्यलोक हंसन सुख होई । सो सुख इहाँ न जाने कोई ।।
जाने सो जो उहाँ रहाई । इहवाँ आय कहै समुझाई ।।
आवत जात बार नहिं लावे । उहाँकी चाल सो इहाँ चलावे ।।
जो समझे सोइ उतरे पारा । बिन समझे जब जमके चारा ।।
समय–अमरलोककी महिमा, सत्य शब्द उपदेश ।
हंस हेतु सों बरनों, छूटे जमकर देस ।।
अमरलोककी अविगति बानी । धरमदास मैं कहूँ बखानी ।।
जो समझे सो उतरे पारा । बिन समझे सब जमके चारा ।।

धर्मदास वचन ।

प्रथम शरन सतगुरु गुन गाऊँ । अच्छरभेद सकल सुधि पाऊँ ।।
सत्यलोक कर भाव अपारा । सो भवसागर करै पसारा ।।
भाषो अग्र अग्रकी बानी । भाषो द्वीप जहां लगि खानी ।।
भाषो पुरुष पुरुषकी काया । भाषो अमी अमान अमाया ।।
भाषो पुरुष लोककी बानी । भाषो सबै सहज सहिदानी ।।
जो काया प्रभु आप सँवारा । सो समुझाइ कहौ व्यवहारा ।।
अमर तार अखंडित बानी । स्वासा पार सार सहिदानी ।।
जब का प्रभु कीन बन्धाना । कहौ विचारि तासु सहिदाना ।।
जोतिक स्वासा पुरुषकी देहा । तार तार कर कहो सनेहा ।।

कबीर वचन ।

अमर तार अखंडित बानी । स्वाँसा सार पार सहिदानी ।।
जेता बचन पुरुष उच्चारा । तेता बचन नाम अधिकारा ।।
स्वासा पारम आदि निरबाना । सोरह सुतकी नाल बखाना ।।
समय–पंच अमीकी देह धरि, प्रकटी जोति अपार ।
सुरतिवंत निहतत्त पुर, होत स्वाँस गुंजार ।।

धर्मदास वचन– चौपाई ।

हाथ जोरिके टेकेउ पाऊ । साहब कहौ तहवाँ कर भाऊ ॥
कहौ लोककी बात विचारी । जहँलौं दीप करी विसतारी ॥
बरनौ दीप गुप्त अनुसारा । बरनौ जहाँलगि सकल पसारा ॥
बरनौ सोरह सुतकर भाऊ । तिनको फिर कैसे निरमाऊ ॥
पुरुष स्वास जेता अनुसारा । ताकर कहो सकल विसतारा ॥
केहि विधि सोरह सुत परगासा । कहो केही कहां रहिवासा ॥
कहो बिस्तार सकल अस्थाना । सत्यलोक और जमके थाना ॥
कैसे निरगुन परभुहि कीन्हा । कैसे पांच तत्वको चीन्हा ॥
कैसे आदि अन्त प्रभु कीन्ही । कैसे रची देहकर चीन्ही ॥
कैसे भय निरंजन राया । कैसे तीन लोक निरमाया ॥
कैसे उपजन विनशन कीन्हा । काह जानि बाजी जम दीन्हा ॥
कैसे चित्त अचित तन दीना । कैसे जीव सीव कर लीना ॥
कैसे इन्द्री देह बनाई । कैसे जीव परा बसि आई ॥
कैसे जीव अपन पौ दरसे । कैसे जीव पुरुष पग परसे ॥

सयय–काया मध्ये स्वास है, स्वासा मध्ये सार ।
सार शब्द विचारिके, साहब कहो सुधार ॥

सतगुरु वचन—चौपाई ।

कहै कबीर सुनो धर्म दासा । अहंकार जस कीन तमासा ॥
अहंकार कीन यक थाती । तासे होय दिवस अरु राती ॥
बाजीगर यह जाल पसारा । धंधे लाय दियो संसारा ॥
काम क्रोध लालच अरु मोषा । जाल पसार सगरो ये धोखा ॥
एती जाल पास संसारा । विरला गुरु मुख उतरे पारा ॥
धरमदास जो पूछेहु आई । आदि अंत सब कहों बुझाई ॥
कहों लोक लोकको बानी । कहों पुरुष सुतकी उतपानी ॥
कहों संदेश दया करि तोही । भुक्ति जानि जो पूछहु मोही ॥
सुनहुँ संदेश आदि निरबाना । जाके सुनत काल छै माना ॥
सुमिरहु आदि पुरुष दरबारा । सुमिरत आप हंस होय पारा ॥

समय–तीन लोकके भीतरे, रोकि रहो जम द्वार ।
वेद शास्त्र अगुवा कियो, मोह्यो सकल संसार ॥

चौपाई ।

धरमदास चित्त चेतहु जानी । कहों बुझाय अगरकी खानी ॥
पुरुष अजावन रहे विदेहा । तत्त्व बिहीन सुरति सनेहा ॥
चारि करी सिंहासन जोरा । पांचएँ आप मध्य अंजोरा ॥
चारि करी चारिउ परवाना । स्वाती युक्त भीतर अकुलाना ॥
समय–करी करी महा परिमल, वास सुबासकी खानि ।
तेज करीन परगट भई, चिंता आनि समानि ॥

चौपाई ।

पुरुष आचिंत चिंता जब कीन्हा । उपज्योशब्द सुरतिको चीन्हा ॥
रहे गुपत परगट भई काया । स्वासा सार शब्द निरमाया ॥
शब्दहिते है पुरुष अस्थूला । शब्दहिते है सबको मूला ॥
शब्दहिते बहु शब्द उचारा । शब्दै शब्द भया उजियारा ॥
शब्दहि पारस शब्द अधारा । शब्दहिते भौ सकल पसारा ॥
शब्दहि रूप गुरू कर धारा । सोई शब्द जिवके रखवारा ॥
प्रथम शब्द भया अनुसारा । निहतत्त्वी यक कमल सुधारा ॥
नीहतत्त्वीपर आसन कीन्हाँ । रचना रची सकल तब लीन्हाँ ॥
रच्यौ पुहुप रचना मनि भारी । सहस अठासी दीप सुधारी ॥
अछै वृक्ष एक रचा बनाई । अग्रबास तहँ रही समाई ॥
समय–पेड पात रस फूलमें, प्रगटी बास अनूप ।
पारस गिहतत्त्वहि पुरुष, सुरति हंसको रूप ॥
पेड पात फल फूलमें, प्रगटी वास अनूप ।
प्रसन्न होत निहतत्व पुरुष, सुरति हंसको रूप ॥

चौपाई

जब पारस सुरति भये स्थाना । अगर प्रताप निमिष उरआना ॥
पुहुप प्रसन्न होत उजियारा । स्वासा पारस बचन सुधारा ॥
पूरुष प्रसन्न नाम उच्चारा । श्वासापर सब रचनि सुधारा ॥
स्वासा पार शब्द गुँजारा । पांच अमीको भयो बिस्तारा ॥
पांच अमीको जो विसतारा । ताहि अमी सब लोक सुधारा ॥
स्वासा पुहुप अगरकी खानी । सोलह सुतकी भई उतपानी ॥
पांच अमी साहबके अंगा । पांचों तत्त्व ताहि परसंगा ॥
स्वासा नेह सबै उपजाया । बानी बानी वरन बनाया ॥

सत्य सार सबहिनको मूला । भयऊ सत्य सो सब अस्थूला ॥
स्वासासार सत्य कर भाऊ । अमी आदि उपजी तेहि नाऊ ॥
सत्यसार स्वासा संभारी । अमी आदि पारस तहँ धारी ॥
स्वासा आदि सुरङ्ग बखाना । रंग अमीकर भा बंधाना ॥
स्वासा अजर नाम अनुमाना । परगट अमी सो कहों सुजाना ॥
अदल नाम स्वासा परकाशा । उपजी अमी अमान सुबासा ॥
स्वासा निरञ्जन भया अनुसारा । अधर अमीका भा विस्तारा ॥
स्वासा पांच परगट विस्तारा । पांच अमीको भयो पसारा ॥
पांच अमी पांचों अधिकारा । पांचों तत्त्व तेहि संग सुधारा ॥
पांच अमी सब लोक पसारा । पांचों तत्त्व गुप्त अनुसारा ॥
समय–पांच अमीते पांच भये, पांच नाम अधिकार ।
सनै सनैही सब भया, अमी तत्त्व विस्तार ॥

चौपाई

सोरह स्वासा सार सुहाया । सोरह सुतकी प्रगटी काया ॥
सोरह सुतकी सोरह नाला । एकते एक अमान रिसाला ॥
पुहुप नाम स्वासा अनुसारी । उपजी सुरति हंसपति भारी ॥
सुरति समानी प्रभुकी देहा । बाहर भीतर एक सनेहा ॥
पांच अमीकी प्रकटी देहा । सुरति कीन्ह तेहि मांहि सनेहा॥
जेतिक पुरुष खान निरमाया । पांच अमीते सबकी काया ॥
पांचों अमी सुरतिके अंगा । नाल सात उपजी तेहि संगा ॥
सात नाल संग एकै भाऊ । सातो सुरत पुरुष परगटाऊ ॥
सात नालकर एके भाऊ । सातौं रहै पुरुषके ठाऊ ॥
पुरुष सुरति कहँ अगुवा कीन्हा । सातौं नाल सौंप तेहो दीना ॥
सातों नाल सुरति जब पाई । ताहि नालमों रही समाई ॥
छिन बाहर छिन भीतर आवै । देह विदेह दोऊ दरसावै ॥
अमरतार नि:अच्छर कियेऊ । सोऊ पुरुष सुरति कह दियेऊ ॥
सत्तपुरुष निज सुरति सनेही । पारस आदि रची सबदेही ॥
समय–अधर निहछर संग लिये, सेत ध्वजा फहराय ।
पलटि समानि सुरति पुरुष, रहि सो अछप छिपाय ॥

सोलह सुतकी उत्पत्ति–चौपाई ।

सुरत सनेह प्रभु इच्छा कीन्हीं । सोरह सुत उपजावे लीन्हीं ॥

सत्यसार स्वासा अनुमाना। सुकृत अंस भये अगुआना ॥
दुसरी स्वासा बाहर आई। उपजे सहज सून्य तिन्ह पाई ॥
तिसरी स्वासा पुहुप सनेही। तेहिते भई हमारी देही ॥
चौथी स्वासा तेज सनेहा। तेहिते भई धरमकी देहा ॥
पांचें स्वासा नाम खुमारी। उपजी कन्या आदि कुमारी ॥
शील नाम स्वासा निरमयऊ। छठयें अंस सुजन जन भयऊ ॥
सतमें स्वासा नाम अनंगा। उपजे अंश भृंगीमुनि संगा ॥
अठवें स्वासा नाम सुहेली। उपजे कूर्म सीस उर मेली ॥
नवमें स्वासा नाम सोहंगी। जाते उपजे सुत सरवंगी ॥
दसएँ स्वासा नाम रसीला। जाते उपजे सरवन लीला ॥
ग्यारहें स्वासा नाम सुरंगा। सुत स्वभाव उपजे तेहि संगा ॥
बारहें स्वासा नाम सुमाहा। भाव नाम सुत उपजे ताहां ॥
तेरहें स्वासा अछय सुभाऊ। उपजे सुत विवेक तेहि नाऊँ ॥[1]
चौदह स्वासा अमर बंधाना। उपजे सुत संतोष सुजाना ॥
पंद्रहे स्वासा प्रेम सनेहा। उपजी कदल ब्रह्मकी देहा ॥
षोडशे स्वासा नाम जलरङ्गी। उपजे दयापालना सङ्गी ॥
षोडश स्वासा षोडश बानी। उपजे [2]जोगसंतायन ज्ञानी ॥
सोलह स्वासा नाम बखाना। उपजे सोलह सुत निरवाना ॥
सोरह सुत कर एकै मूला। भिन्न भिन्न प्रगटी अस्थूला ॥
एकै प्रीति एकै व्यवहारा। सबही रहैं पुरुष दरबारा ॥
एक पाँवते सेवा करहीं। पुरुष [3]वचन शीशपर धरहीं ॥
सेवा करैं रहैं लौलीना। पुरुषलोकते होहि न भीना ॥
सेवा करैं समाधि लगावैं। पुरुष लोक तजि अनतन जावैं ॥
कहैं कबीर सुनो धर्म दासा। यहि विधि सोलह सुत परगासा ॥
समय–सोरह सुतकी एक मति, एकत एक अधीन।
कर जोरे सेवा करैं, प्रेम प्रगति लौलीन ॥

---

१ पाठभेद–तेरहें स्वासा अछय सुधारा। ताते सुत विवेक औतारा ॥

२ भाव यह है कि–सोलहों मिलकर जोग संतायन हुए। कहीं कहीं "सतरहें स्वासा अदल सुबानी। उपजे योग संतायन ज्ञानी ॥" लिखा है–किन्तु जब पूर्वापर सब जगह "सोलह सुत" बराबर लिखते आते हैं तब सत्रवां लिखना असंगत है। इसके अतिरिक्त जब स्पष्ट लिखा है "षोडस स्वासा षोडश बानी। उपजे जोगसंतायन ज्ञानी" तब तो सत्रहवें सुतकी कल्पनाकी जड मिटकर स्पष्ट सिद्ध होता है कि, सोलहोंके समूहका नाम है "योगसंतायन" और है भी ऐसाही–योगसंतायनमें सबकेही लक्षण पाये जाते हैं। स्पष्टीकरण कबीर धर्मदर्शनमें होगा।

३ किसी किसी प्रतिमें "बचन" के बदले "चरन" लिखाहै, यद्यपि उससेभी आज्ञाकारिता का भाव निकलता है किन्तु "वचन" से विशेष गूढार्थ प्रकट होता है ॥ –श्री युगलानन्द विहारी ॥

चौपाई ।

सेवा करत बहुत दिन गयऊ । पुरुष अवाज अधर धुनि भयऊ ॥
अधर अवाज भई जब बानी । निकसी अगर बासकी खानी ॥
सबतर लोक दीप रहि छाई । बिमल बास भरपूर समाई ॥
अगर बास सब हंसन पाई । निर्मल बास सदा सुखदाई ॥
पीय अमृत सबै अघाने । अपने अपने लोक सिधाने ॥
और पुत्र सब अछप छिपाये । धरम धीर सबते बरियाये ॥
धरमराय सेवा अधिकाने । सो सब तोहि कहौं सहिदाने ॥
छलके बचन पुरुष सो लीन्हा । पाछे दुदँ लोक महँ कीन्हा ॥

समय–और सबै सुत बैठे, अपने अपने थान ।
धरम रोष सबते कियो, ठाँम ठाँम बिगरान ॥

धर्मदास बचन–चौपाई ।

धर्मदास बिनवै कर जोरी । साहब संसय मेटहु मोरी ॥
और सब सुत अछप छिपाने । धरमराय कस भये बिगाने ॥
कैसे और सबे सुत भारी । धरमराय कस भये बिकारी ॥

सतगुरु बचन ।

धर्मदास सुनहू चितलाई । कहों सँदेश आदि समझाई ॥
जब प्रगटे प्रभु अम्मर तारा । निकसी अधर निअच्छर धारा ॥
भई अवाज अधरसे बानी । निकसी अगर वासकी खानी ॥
पारस परिमल महक बसाई । सोई परिमल सुरति दुराई ॥
अगर छिपाय आप महँ राषा । सुरति सनेह मुख प्रगटी भाषा ॥
प्रथम पुरुष मुख भाषा आई । भाषा अग्र पारस निरमाई ॥
भाषा बचन भया अधिकारा । भाषहिते सकलो विस्तारा ॥
भाषा बचन पुरुष उच्चारा । भाषा ते सकलो व्यवहारा ॥
भाषा बोल पुरुष उच्चारा । सेवहु सत्यलोक के द्वारा ॥
स्वँसा सार तार जुरियाना । अधर अमान ध्वजा फहराना ॥
भाषा स्वर बानी अनुमाना । बचन समान शब्द बन्धाना ॥
निमिष माहिं अनेक संचारा । बचन समान सबै जग सारा ॥
नाम सनेह शब्द मँझारा । बचन समान स्वास गुन्जारा ॥
स्वासा नेह देह भइ जबहीं । भाषा सहज बचन भा तबहीं ॥

आगेकी उत्पत्ति ।

प्रथम श्वासकी निकसी खानी । उपजे सुक्रित सीतल बानी ।।
निमिष नेह प्रसन्न सुर धारे । नाम मूल टकसार उचारे ।।
भो बिस्तार निमष गइ छूटी । दुइ चित मूल अवस्था लूटी ।।
मूल गुप्त मस्तक नहिं देखा । आदि नाम अमर घर लेखा ।।
पेडके गहे मूल धुन जागा । सोई मूल फूल फल लागा ।।
पेडहिं गहे मूल और साखा । मूल मिले तबहिं रस नाखा ।।
गुप्त मूलते प्रगटी साखा । पल्लव मूल पेड गहि राखा ।।
पेड देखि पल्लव फैलावै । पल्लव फैल अंत नहिं पावै ।।
पल्लव चढे पेड चित राखा । मिले मूल तब फल रस चाखा ।।
आदि अन्त दुइ पेड समाना । आपहिं राख आप पहिचाना ।।
जागी सुरति पुनि पेड निहारा । फल रस चाख बीज गहि डारा ।।
बीजहिं ते सो फल होई । फल रस लेइ मूल तजि छोई ।।
जागि सुरति सपन मिटि गयऊ । दुई चित मेटि एकचित भयऊ ।।
दूजे स्वासा प्रभुकी देहा । उपजे सहज समाधि सनेहा ।।
तिसरे स्वासा फूल सनेही । जाते भई हमारी देही ।।
स्वास सार संग गुप्त सनेही । देही माँही रहे विदेही ।।
काया अविहर अविहर वासा । सोई परगट गुप्त निवासा ।।
कायामें काया रहिवासा । तब चौथे स्वासा परकासा ।।
चौथे स्वासा निकरे चाहा । तब चिंता उपजी मनमाहा ।।
चिंता प्रकट भई दिल जबहीं । आपते आप भुलाने तबहीं ।।
आपु शरीर आपु तब झाँका । विमल प्रकाश उदित तन ताका ।।
कायारूप भई उजियारी । निरमल देह बिमल तन भारी ।।
विमल प्रकाश किरन जब देखा । बरतन बनै न तनको लेखा ।।
विमल प्रकाश किरन जब फैला । का वरने कोई ताकर सैला ।।
कला अनंत अंत नहिं पावा । बरतन जिह्वा लच्छ न आवा ।।
देखत रूप लीला अधिकारी । आप अपन पौ कीन्ह बिचारी ।।
कमल करी महँ भा उजियारा । देखा आदि अंत विस्तारा ।।
आपु बरन सब देखा जबहीं । दुविधा रूप झाइँ भइ तबहीं ।।
कमल झांक प्रभु देखा जबहीं । हमर रूप को दोसर अबहीं ।।
इतना कहत बार नहिं लाये । निकसि कमलते बाहर आये ।।
छाडि कमल प्रभु भये निनारा । तबहीं कमल भया अंधियारा ।।

कमल झाँकि देख्यो सब न्यारा । भये तिमिर तन तेज अपारा ॥
अंधकार प्रभु देखा जबहीं । काया जोति मलिन भई तबहीं ॥
निमिष एक चित संसय आवा । निमिष एक आनंद समावा ॥
पल सनेह चित संसे आवा । निमिष एक चित हरष समावा ॥
मूल समाधि निमिष टरि गयउ । जागी सुरत सुपन मिट गयऊ ॥
विस्मय हरष दोऊ एक ठाऊँ । एक पुरुष कर दोऊ सुभाऊ ॥
आपु आपहिं भया अतिचारा । तेही औसर बचन उचारा ॥
उठि अवाज शब्द सतभाऊ । कमल मध्य कस सून्य रहाऊ ॥
घटही वचन आप संधाना । तब चौथी स्वासा बंधाना ॥
तेज पुंज भौ गरभ सरीरा । फूंकी नाल देह बल बीरा ॥
कमलनाल धरि फूंका जबहीं । चौथा स्वासा निकसा तबहीं ॥
फूंका कमल तेजके नेहा । चला प्रसेव [1]पुरुषको देहा ॥
फूंकत कमल बार नहिं लागा । भया उजियार तिमिर सबभागा ॥
कारन काल कपट यह धोखा । दुइ चित मूल तेजमँह रोखा ॥
चौथा स्वासा विषय सनेही । मोह विकार धरमकी देही ॥
मोह विकार तिमर अधिकारा । ता संग भये धरम औतारा ॥
तिसरा स्वासा गुप्तहिं राखा । जाते जोर निरंजन भाखा ॥
फूँकत कमल तेज झरि गयऊ । तेहिते काल ज्योति धरिभयऊ ॥
जोति जहाँ लगिज्वालाभाखा । तेहि ते नाम निरंजन राखा ॥
महाबली देही धरिके बैठा । जाने धरममहीं हौं जेठा ॥
तेज लगन स्वासा अनुसारा । ताते धरमराय बरियारा ॥
तेज तिमिर संग शून्य निवासा । सबतर भयो काल परगासा ॥
निराकार आकार धराये । जोति काल बहु नाम कहाये ॥
चौदह द्वार काल जो भाखै । सुनि सों सबै नाम मन राखै ॥
सांक्रित अंड भयो प्रचंडा । फूटत अंड भयो कहु खंडा ॥
चौदह बुन्द अमि ढरि गयऊ । चौदह अंस ताहिते भयऊ ॥
चौदह पौरिया द्वार बैठारा । इन चौदह बहु ज्ञान पसारा ॥
आप समान सबै रचि राखे । चौदह कोटि ज्ञान तिन भाखे ॥
चौदह अंस धरम तहँ पाये । ते चौदह विद्या पौ लाये ॥
वही चौदहो अगम अपारा । तापर काल धरम बटपारा ॥

---

१ एक प्रतिमें "अखंडित" लिखा है । भाव दोनोंसे निकलता है ।

धरम समाधि चितही जम धारा । चौदह मांहि चोर कुतवारा ।।
ताकी कला कहै को पारा । जेहिके सुत कोटिन उजियारा ।।
कोटिन कला करै बहु भारी । आपहिं पुरुष आपहीं नारी ।।
आपहिं वेद आपही बानी । आपहि कोटिन ज्ञान बखानी ।।
आदि अजर अवगाह कहावै । मूल नाम गहि धोख लगावै ।।
नाना ज्ञान कथे बहु बानी । प्रकटो आदि आप गुन जानी ।।
कहाँ लगि कहों कालके भाऊ । वहतो काल बहु नाम धराऊ ।।
सुरति सरोतर जागे नाहीं । मनमथ पवन चंचला ताहीं ।।

धर्मदास बचन—चौपाई ।

धरमदास विनवै चित लाई । समरथ मोहि कहो समुझाई ।।
अहौं दास बिनवौं कर जोरी । दया करो प्रभु बन्दी छोरी ।।
धरमराइ उत्पनि जस पाई । तेज पाइ भया वरियाई ।।
ऊपजै तस भये कसाई । उपज्यो चित चंचल दुखदाई ।।
पुरुष तेज जब शून्य सँचारा । ता संग भया धरम औतारा ।।
शील विकार सहित तन पाई । प्रथमें भक्ति दूजे अन्याई ।।
भक्ति कियसि जब रहा अकेला । अद्याके संग भया अपेला ।।
सो अद्या उन कैसे पाई । कहि विधि पुरुष ताहि निरमाई ।।
साहब कहौ भेद समुझाई । कैसे कन्या पुरुष बनाई ।।
कैसे धरमराय तिहिं पाई । तौन भेद तुम कहो गुसांई ।।
कहौ बिचारि दोऊ कर भाऊ । दुइ कर जोरिके बन्दों पाँऊ ।।

सतगुरु बचन ।

धरमदास मैं तुम्हे लाखावों । आदि अन्त सब भेद बतावों ।।
चौथे स्वासा संग अधिकारी । सून्यते जगो भई उजियारी ।।
पुरुष कमलपर बैठे आई । गई गरम उपजी शितलाई ।।
पुरुष कमलपर बैठे जबहीं । परिमल उदित भया तन तबहीं ।।
शीतल पवन सोहागन खानी । मूल कमलपर आसन ठानी ।।
सिंहासनपर सो सत्य विराजे । पारस नेह देह महँ गाजे ।।
पारस तेज भया तन माही । पँचएँ स्वासा उपजा ताही ।।
उपजत स्वासा देह निहारा । तन परसेव भो मैल निनारा ।।
काया मैल पुरुष जब जाना । मौजी मैल अबला बलठाना ।।
गएउ तेज भा अबल शरीरा । पाछै भयो स्वास गंभीरा ।।

तेहि स्वासा सँग पारस भारी । कायाते मथि मैल निकारी ॥
तनते मैल काढि प्रभु लीन्हा । सोई मैल रचि पुत्री कीन्हा ॥
करि पुत्री कर ऊपर लीन्हा । उपज्यो प्रेम सहजका चीन्हा ॥
भई पुत्री प्रभु देखा जबहीं । सुरत कीन्हा पारसको तबहीं ॥
निर्मल पारस स्वासा पाँचा । रहो समायी मैलके सांचा ॥
आप मैलते स्वासा कीन्हा । पैंठी सुरति रंग तेहि दीन्हा ॥
देके रंग बरन सब फेरा । भीतर मैल मोह मद घेरा ॥
ऊपर सोभा रंग बनावा । भीतर लाल रंग वह छावा ॥
ऊपर सोभा बहुत रंगाई । भीतर आस ललित रुचि छाई ॥
पांच अमीकर पांच सुभावा । पांच तत्त्व तेहि संग बनावा ॥
पांच अमीते पुरुष सरीरा । ताते पांच तत्त्व भए धीरा ॥
पांच अमीते तत्त्व बनावा । पांच अमी तेहि सँग निरमावा ॥
पांच तत्त्व पांचो बेवहारा । तेहिते भवउ सकल विस्तारा ॥
पुरुष मैलते पुत्री कीन्हा । पांच तत्व तेहि भीतर दीन्हा ॥
आप सुरति ते पुत्री कीन्हा । पांच कर गुन भीतर दीन्हा ॥
भीतर बाहर तत्त्व पसारा । पांचों तत्त्व रंग अधिकारा ॥
पांच रंग तत्त्व की धारा । पांचों तत्त्व रंग बहु सारा ॥
पांच तत्त्व पांचों रंग भारी । पांचों रंगते कला प्पसारी ॥
तत्त्व रंगते लीला धारी । पांच तत्त्व पांचों रंग सारी ॥
तत्त्व रंग बहु लीला धारी । पुत्री बहुत बिचित्र सँवारी ॥
तासु कला अनंत पसारी । ताते बहुत भई विस्तारी ॥
वरनि न जाव रूप उजियारी । सुन धर्मनि मैं कहौं विचारी ॥
कलाअनंत प्रभु पुत्री कीन्हा । पारस सार ताहिमें दीन्हा ॥
उत्पति पारस पुत्री पावा । प्रगटी कला अनंत सुभावा ॥
नखसिख देह सिध प्रभु कीन्हां । पँचई स्वासा भीतर दीन्हां ॥
जब स्वासा काया महँ आई । प्रगटी ज्योति जगामग झाई ॥
आठो अङ्ग बना बहुत रंगा । पारस सार ताहि के संगा ॥
निर्मल उदित ताहि सो दंता । चमकै बिजुली कला अनंता ॥
तत्व रंगकी उठै तरंगा । शोभा विशद मनोहर संगा ॥
पँचएँ स्वास जब बाहर कीन्हां । उत्पन पारस ता संग दीन्हां ॥
स्वासा पारस मिलि भै एका । सोभा वरन रूप रस ठेका ॥

पुरुष अंश लीला औतारा। उपजी कन्या कला अपारा ॥
अनन्त कलासो कन्या धारा। रूप अनूप भया उजियारा ॥
जब कन्या प्रभु उत्पन्न कीन्हां। पाँच स्वासा ता संग दीन्हां ॥
ता स्वासा संग पारस भारी। पांच तत्व सो देह सँवारी ॥
उपजी कन्या अगम स्वभावा। अष्टंगी कहि पुरुष बुलावा ॥
आठों अङ्ग बना निरवाना। शोभा सुरति रूप सुख साना ॥
जब कन्या प्रभु देखा हेरी। कला अनंत रूपकी ढेरी ॥
देखि रूप चित हर्षित कीन्हा। उत्पति पारस तासंग दीन्हा ॥
जीवन शब्द मूल रहिवासा। सुरति निरति दीन्हा तेहि पासा ॥
पुरुष रचा जब आपु शरीरा। उपजी सुरति निरति गंभीरा ॥
काया कमलको व्यवहारा। जो चाही सो सबै सुधारा ॥
दहिने अंग तेज कर दाऊ। बायें शीतल सबै सुगाऊ ॥
मध्यम पुरुष सुरति अंकूरा। ताहि सुरति संग पारस पूरा ॥
ता दिन तीनों गुन ठयऊ। इंगला पिंगला सुखमन कियऊ ॥
मठ तिरमठ सो तहाँ बनावा। इंगला पिंगला सुखमन नावा ॥
ताहि समय तीनों घर ठयऊ। ईडा पिंगला सुषमन भयऊ ॥
तीनों घर कर तीन सुभाऊ। शीतल तेज समितकर भाऊ ॥
अमी अग्रमय तेज शरीरा। उपजे चन्द्र सूर दोऊ वीरा ॥
अग्र तेज औ सौम्य सुरंगा। तीन शक्ति उपजी तेहि संगा ॥
कला अनंत शक्तिके पासा। लीला वहुत बिचित्र प्रकासा ॥
कला अनंत सक्ति गंभीरा। तीनहु सक्ति मध्य दोय बीरा ॥
तिनहु संग अहे दोउ वीरा। इक शीतल इक तेज शरीरा ॥
तीनों शक्ति अंग दोउ वीरा। काया मथिकथि कहै कवीरा ॥
अभय शक्ति है चन्द्र सनेहा। इँगला नाडी संग उरेहा ॥
उलँघिनी शक्ति सूर सनेहा। पिंगला नाडी संग उरेहा ॥
चेतन शक्ति सुषमना संगा। बसै मध्य तहँ सुरति सुरंगा ॥
बसै मध्य तहँ सुरति तरँगा। सुरति निरति कायाके संगा ॥
नख शिख ज्योति विराजे अङ्गा। शोभा विशद मनोहर संगा ॥
पांचतत्व त्रय सकती राजै। ताहि संग दोय वीर विराजै ॥
तत्वरँग सकती घरकीन्हां। तेहि महँ उनपनि पारस दीन्हां ॥

उतपनि पारस भा परसंगा । उपजी जोति कला बहुरँगा ॥
पँचएँ स्वासा देह समाना । उपजी जो कला अधिकाना ॥
जागी देह अँखडित अँगा । शोभित भईं कन्या पर संगा ॥
उतपनि अँश पुरुषके संगा । भाखों भेद कला बहु रँगा ॥
जब कायामो आई स्वासा । जागी जोति पुहुप परगासा ॥
उपजी जो अखंडित बानी । बोले बचन पुहुप रस खानी ॥
मधुर बचन और लीला धारी । देखि रूप तब पुरुष दुलारी ॥
समय—पाँच तत्व तिन सकति सँग, चंद्र सूर दोउ वीर ।
तीनों घर स्वासा रमें, बाहर भीतर तीर ॥

चौपाई ।

उपजी रूप रँगकी खानी । बोले अमी विरहकी बानी ॥
उपजी कन्या कला अनूपा । पुरुषसे उत्पन पुरुष स्वरूपा ॥
जेहि पारस सब उत्पत्ति कीन्हाँ । सो पारस कन्या कहँ दीन्हाँ ॥
पारस हाथ महा बल जाना । तब कहँ भा अभिमाना ॥
उपजा रंग रोस गंभीरा । बैठी अमी सरोवर तीरा ॥
यहि विधि सोरह सुत निरमाया । भिन्न भिन्न अस्थान बनाया ॥
जेहिको जेता तन बिस्तारा । तेहिको तैसा लोक सुधारा ॥
काहुको दीप सत्ताइस दीन्हाँ । काहूको सात पाँच दशचीन्हाँ ॥
काहू चौदह काहू बीसा । काहू सत्रह काहु उनीसा ॥
काहू बारह पन्द्रह तीसा । काहू इकइस बाइस चौबीसा ॥
काहू छत्तीस बत्तीसहि भारी । दीन्हों वास भये अधिकारी ॥
सब कहँ दीन्हों लोक बनाई । आपु रहे प्रभु अछप छिपाई ॥
उत्पनि पारस पुत्रिहिं दीन्हा । सौंपेउ तेज धर्म सों लीना ॥
ताते धर्म भये वली बंडा । बैठो सात दीप नौ खंडा ॥
जिहिं विधि रचना पुरुष बनाई । तैसी कला धरम निरमाई ॥
जेहि विधि रचना पुरुषहि कीन्हाँ । तैसेहि धरम रचा सब चीन्हाँ ॥
पुरुष समान रचा अस्थाना । बैठि शून्यमें करे अनुमाना ॥
जावन बिना जीव नहिं होई । रचि अस्थूल बैठा मुख गोई ॥
रचना रचि मनमें पछिताई । सून्व शरीर जीव कहँ पाई ॥
जेहि पारस प्रभु लोक बनाया । सो पारस प्रभु कहाँ छुपाया ॥
सो पारस अब कहवाँ पाऊँ । जेहि पारसते जिव निरमाऊँ ॥

हेरत पारस आये तहवाँ । बैठि सरोवर कामिनि जहवाँ ॥
कामिनि धरम भये एक ठाँऊ । अंक मिलाय कीन्ह बहु भाऊ ॥
शील रंग रस कीन्ह मिलापा । धर्म राय सो कीन्ह विलापा ॥
करैं विलाप कला बहु भारी ।मुख चतुराई हिरदय विकारी ॥
कामिनिसो कीन्हो व्यवहारा । उपजा रंग रूप रसधारा ॥
धरम कहै कामिनिसों बाता । गहै अंग जमकाहै गाता ॥
कामिनि देह कामकी खानी । बोले मधुर बिरहकी बानी ॥
उपजा मोह महा मद भारी । कामिनि कामकला अनुसारी ॥
देखि कला अनुसार भुलाना । व्याकुल भये रंग अभिमाना ॥
कामिनि देखि धरम अकुलाना । उपजा रंग रोष अभिमाना ॥

धर्मराय वचन ।

धर्म कहै कामिनि सों वानी । तोरे है पारस सहिदानी ॥
सो पारस अब तुमरे पासा । जाते पूजे मनकी आसा ॥
सो पारस देहु मोर हाथा । तुमहूँ रहो हमारे साथा ॥
सा०—तैं तो पारस पायऊ, अब चलो हमारे देस ॥
कहा मोर जो मानहू, मानहु मोर उपदेश ॥
धर्मराय जब कही कुवानी । तब कामिनि चित संका आनी ॥

अद्यावचन ।

कामिनी कहै धर्मसों बानी । काहे धर्म होहु अज्ञानी ॥
हम तुम एक पुरुषकर कीन्हाँ । तुमकहँदीन्ह सो हमहुँकोदीन्हाँ ॥
हम लहुरे तुम जेठे भाई । हमसो कहा करहु अधिकाई ॥
यहि कहि कन्या अठलानी । एके नाल कुमारग वानी ॥
बहनिहि भाइहि हुई कुवानी । आगे चली यही सहिदानी ॥
जबही कामिनि कही अस बानी । धरमराय चित दुबिधि आनी ॥

धर्मराय बचन ।

कामिनि चलहु हमारे देसा । कहा करहु मानहु उपदेसा ॥
छल बल करि अपने पुर वाला । तहाँ आनिकै रारि वढावा ॥
धरमराय कामिनिसों बोला । शोभा सुरति अमीरस डोला ॥
निरखि नैन कामिनिसों बोलै । शक्ति आधीन बैन बहु खोलै ॥
सोरह शक्ति कला शशि पूरी । तीनों शक्ति लिये कर छूरी ॥
नैन निरखि मूरति हो झाँके । तत्व निःतत्व आप तन ताके ॥

विधिलौं लाइ बधिक विधि बोले । निरखत अंग २ तनु डोले ॥
अंतरगति विधि विधिहि मनायों । कुमति हाथपर साजनि आयो ॥
विधि दीन्ह बुन्द इक आई । चित सकाई एक रचो उपाई ॥
यहि पुर एक अंचभो ठयऊ । पारसको परताप जनयऊ ॥
इच्छा रूप हरष चित जागी । रचत सरोवर बार न लागी ॥
भूल्यो धरम चित्त अकुलाना । ऐसो सरवर मैं नहिं जाना ॥
अछय अजूनि विधि पारस आना । कहा अचम्भो आनि तुलाना ॥
देखो तेहि पारसको चीन्हाँ । जेहिते मानसरोवर कीन्हाँ ॥
सूर मलीन उदय शशि जोना । बाती बरन अंग तु अलोना ॥

धर्मराय वचन

जादिन पुरुष रचा तुव देहा । ता दिन मुहिं तुहिं जुरा सनेहा ॥
मोहिं कारन तोहि पुरुष बनावा । तू कस मोते अंग छिपावा ॥
मोहिं कारन तोहिं रचना कीन्हा । रचिके खानि तोहि चितदीन्हा ॥
देह नात हमरे घर नाहीं । हम तुम रहे एक घर माहीं ॥
उत्पति पारस तुमरे पासा । जाते पूजै मनकी आसा ॥
देह सबै हम रची बनाई । पारस दै तुम लेहु जगाई ॥
हम तुम खानि रचैं बहु बानी । जाते होय न एकौ हानी ॥
हम तुम मिलि होयँ यकसारा । जाते होय स्रिस्टि विस्तारा ॥
जैसी रचना पुरुष प्रगासा । तैसी रचो लोक रहिवासा ॥
जीव सीव रचि खानि बनाओ । जागे जोति ज्ञान फैलाओं ॥
जीव रची सब खानि बनाई । जागे जोति ज्ञान फैलाई ॥
लाज सकुचि आ रचों सगाई । वरण विचारि छूत बिगराई ॥
ठांव ठांव रचि राखों आपा । माता पिता सोग संतापा ॥
ससुर भैसुर औ भमित भाई । सिव सकति रची पूठ लगाई ॥
जाता पांत बहुते बिलगाओं । हंसन लाज भाव बन धाओं ॥
रचि अचार कपट विस्तारों । तीरथ वरत परतिमा धारों ॥
बहु विधि करौं पखंड पसारा । तीरथ बरत औ नेम अचारा ॥
बद कितेब धरि फँद सँवारों । रची देओं दोय पर्वत भारों ॥
दो दीन दुइ राह चलाओं । झगरा कराइ सदा अरुझाओं ॥
एक एकते रारि बढावे । मुकतिपंथते रहे भुलावे ॥
दोऊ दीन बाँधी मरजादा । रचों बाद ममता औ स्वादा ॥

एहि विधि रचों सकल दुनियाई । लोभ मोह लालच बरियाई ॥
रचिकै खानि करों रजधानी । राज पाट सिंहासन ठानी ॥
साखी—रचना रचों सब लोककी, नख सिख रहों समाय ।
पुरुष नाम जाने बिना, सत्यलोक नहिं जाय ॥
तुम अद्या अरु हम अविनासी । बारह खंड छै लोकके बासी ॥
पाप पुन्न दोए रचों अवारा । जाकहँ सेव यह संसारा ॥
पाप पुन्न दिढ फँदा होई । जा महँ अरुझि है सब कोई ॥
जोग जज्ञ व्रत संयम पूजा । सोल हमहीं और नहिं दूजा ॥
रचों छुधा मायादि विकारा । पुरुष लोकको मूंदें द्वारा ॥
रचों क्रोध माया विकरारा । पुरुष लोकको रोको द्वारा ॥
पुरुष लोक हहईं रचि लीजै । इकछत राज हमहिं तुम कीजै ॥
तुमरे संग है पारस सूरा । जाते होय सकल विधि पूरा ॥
जहि ते लोक पुरुषै परगासा । सो पारस है तुमरे पासा ॥
सो पारस अब हमको देहू । रंग हमारा सबै तुम लेहू ॥

अद्या बचन ।

कामिनी कहे वचन बुद्धि धीरा । उपजेहु कालरूप बलवीरा ॥
जो जो वचन कहेउ तुम भाई । सो हमरे चित्त एकु न आई ॥
पुरुष लोक कस मूंदहु द्वारा । लेउ श्राप अपने सिरभारा ॥
जो छल हमते कीन्ह भाई । तैसा छल तुम्ह भुगतहु जाई ॥
पारस कामिनि धरा दुराई । हाथ मलै सिर धुनि पछताई ॥
हाथ मीजि छिनछिन पछितावे । कहि कामिनि धर्महि समुझावे ॥
कामिनि कहै कुबुध समझाई । हम तुम चलहु पुरुषमहँ जाई ॥
बकसै पुरुष दयाकरि तोही । सीस नवायके लीन्हे मोही ॥
बिन दीये बरियाई लैहो । पुरुष लोक पुनि जाय न पैहो ॥
कामिनि कहा वचन परवाना । धरमरायके भयो अभिमाना ॥

धर्मराय बचन ।

कामिनि तोरि बुद्धि है थोरी । अब ना जाऊँ पुरुषकी खोरी ॥
पुरुषलोक इहईं रचि राखों । रचौं बिचारी बुद्धि बलभाखों ॥
अब तो पुरुषत्रास नहिं मोही । गहौं बाहकों राखा तोही ॥
तैं कन्या का डहकसि मोही । रचा पुरुष मम कारण तोही ॥
तैं कामिनि कठोर निरमोही । रचा पुरुष हमहीं लग तोही ॥

पहिल वचन बिहरते बोली । लानी कठिन कामकी गोली ॥
काम सतावै निश दिन मोही । दे पारसकी लीलहुँ तोही ॥

अध्यावचन ।

कामिनि कहै धरम सुनु बाता । चढी कालिमा तोहरे गाता ॥
हठ निग्रह कामिनि किहु ताही । धरमराय पकरी तब बाँही ॥
गही बाँह कामिनिकी जबहीं । काम बाण घट व्यापे तबहीं ॥
धरम राष कामिनिपर कीन्हा । गहि पग सीस लील तेहि लीन्हा ॥
लीलत कामिनि सब्द उचारा । पुरुष २ करि कीन्ह पुकारा ॥
कामिनि पुरुष नाम जब लीन्हाँ । आज्ञा पुरुष अंसही दीन्हाँ ॥
योगजीत आये तेहि वारा । सुर्त बान सो कालहि मारा ॥
पुरुष कोप ताऊपर कीन्हाँ । कन्या उगल धरम तब दीन्हा ॥
उगली कन्या बाहेर आई । देखि काल अति रोष कराई ॥
हाहाकाल रोषकरि धावा । कामिनि पारस कहाँ चोरावा ॥
कामिनी कपट देख विषधारा । पारस मानसरोवर डारा ॥
मानसरोवर झलकै अंगा । गयऊ पताल जहाँ जलरंगा ॥
परीक्षा चार पारस परवाना । उपजी चारखान निरवाना ॥
एक परीक्षाते सरवर गयउ । पारसके सम पारस ठयऊ ॥
दूजो अंश भया निरबाना । शिला सिंधु परवत परमाना ॥
रतन शिला ताहिकी धारा । सो पाजी द्वारे संचारा ॥
तीसर अंश नार प्रगटयऊ । अंशहि अंश चतुरगुन भयऊ ॥
चौथा अंश कामिनि अनुमाना । जाते स्वर्ग नरक परवाना ॥
अंशहि अंश अंशते जानी । एक प्रती चौगुन उतपानी ॥
चार २ गुन गुनहि समाना । अंशते अंश चतुर परमाना ॥
पारस मानसरोवर माहीं । पारस बुद्धि आपही आहीं ॥
पारस कामिन बहुत दुरावे । सुरेत सनेह तहाँ फिर आवे ॥
पारस अंत नहीं ठहराई । बासरूप कामिनि संग धाई ॥
कामिन काल पुरुष पद परसे । पारख नीर नेत्र मह दरसे ॥
नैन निरख मूरत अनुरागी । धरम अंश कामिनि तन लागी ॥
पारस अंश चितै नहि डोले । बहुरि २ कामिनिसों बोले ॥
पारस अंश घट रहा छपाई । निकसी कन्या बाहर आई ॥
जेहि कारण कामिनी हठ कीना । पारस संग छान सो लीना ॥

उत्पति पारस धरम तब पावा। कन्या रही ताहिके ठाँवा ॥
जब लगि कन्या भई सियानी। तबलगि धरम रची सब खानी॥
खानि वानी रचि कीन पसारा। बेदवाद बहुमत विस्तारा ॥

कबीर वचन।

साखी—रचना रची लोककी, सब घट रहा समाय।
पुरुष नाम जानै नहीं, ताते लोक न जाय ॥
रचा रची सब लोककी, दीन्हा सबहि भुलाय।
पुरुष नाम जाने विना, सत्य लोक नहिं जाय ॥

चौपाई।

पुरुष नाम ज्ञानी जो पावे। लोक दीप पलमाहि ढहावे ॥
पुरुष नाम जानै नहिं भेदा। रचे खानि चौरासी खेदा ॥
रचे बानि औ चारों बेदा। चित चंचल औ अन्ध अभेदा ॥
दुख सुख सबै रची बहु भांती। जरा मरन पूजा औ पाती ॥
रचि सब खानि बैठ अभिमानी। तब लगि पुत्री भई सयानी ॥
उपजा जोबन रसको भावा। तब कन्या कहँ विरह सतावा ॥

अद्यावचन।

कामिनी कहे धरमसों बानी। हमतो तुमरे हाथ बिकानी ॥
सूर्त डोलायके पारस लीन्हा। मदन भुअंगमके वसि कीन्हाँ ॥
जोबन विरह महामद गाजे। बिनु संयोग गर्भ नहिं छाजे ॥
मोह महा झर बरषे लागी। मन समाध कामिनि सों लागी ॥
गर्भ किए मा करदी राजा। कामिन सोह दुहू दिसवाजा ॥
मनसा लहर उद मद मन भएउ। काम दहन घृत आहुत दयेउ ॥
उपजा मदन माह औगाहा। पुत्री पितासों भएउ विवाहा ॥
साखी—बहनीसे बेटी भई, बेटीसों भइ नार।
नारीसों माता भई, मनसा लहर पसार ॥

चौपाई।

बरबस धरमराय हर लीन्हा। बिन लेखा रजधानी कीन्हा ॥
विषया बेद व्याह जमनाता। चौदह काल संघ उतपाता ॥
चौदह पारस लोक निसानी। शब्द व्याह चौदह जमहानी ॥
मनसा व्याह देव रिषिगन्धी। हंसहिं हंस भगति युगबंधी ॥
सुरत हंस घट रचो बिदानी। धर्म समाध बसाए आनी ॥

उपजा मदन मोह औगाहा । कन्या पितहिं तब भया विवाहा ।।
कन्या व्याकुल भई तेहिं माहा । अतिसय मनमें उपज्यो दाहा ।।
धरम रायको उपज्यो भावा । कामिनि हिये हाथ लगावा ।।
उपजी रंग रोषकी खानी । कामिनि चरन गहो तब आनी ।।
मनसा लहरि ताही के दीन्हा । उपजे तीनि लोककर चीन्हा ।।
ममता शील ताहिको दीन्हा । फैली तीन लोक सो चीन्हा ।।

तीनों देवोंकी प्राकट्य ।

कामिनि संग करे सुख भारी । उपजा तीनिलोक अधिकारी ।।
तीनहि सकति पुरुष संग दीन्हा । तीनों सुत उपजावे लीन्हा ।।
पांच तत्त्व तीन गुन चीन्हा । जिनते सकल पसारा कीन्हा ।।
तीनहुँ सुत उपजे बहुरंगा । पारस रहा धरमके संगा ।।
पारस रहा ताहिके संगा । ताते तीनों भये अपंगा ।।
तीनउ सुत उपजे अधिकारा । धर्मराय तब भया निरारा ।।
तीनों सुत कहँ दीन्ही भारा । धर्मराय उठि भये निनारा ।।
राजपाट कामिनि कहँ दीन्हा । आपन बास शून्य महँ लीन्हां ।।
कामिनि दरस सदा लौ लावै । राज पाट सब कीर्ति बनावै ।।
कामिनि आपन कला फैलावे । तीनों सुतको राज सिखावे ।।
राज नीति सुत चित्तहि धरहीं । मनसा ध्यान पिताको करहीं ।।
खोजत खोजत बहु युग गयऊ । पिता पुत्रसों भेट न भयऊ ।।
ध्यान धरत बहुते युग गयऊ । हारि थके अंत नहिं पयऊ ।।
कामिनि पुरुष एकसंग रहई । सुतकी बात पुरुष सों कहई ।।
वहांकी बात न सुतसों भाखे । करे दुलार सदा संग राखे ।।
इहिविधिवहुतदिवस चलि गयऊ । सुत न खोज पिताकर कियऊ ।।
धरत ध्यान बहुते युग गयऊ । पिताको खोज पिता करकियऊ ।।
मातासों पूछे सुत बाता । पिता हमार कहाँ गये माता ।।
माता कहैं सुतन्हसों बानी । पिता तुम्हार हमहुँ नहिं जानी ।।
रचना सकल हमहीते होई । हमसो दूसर और न कोई ।।
रचना सब मोहीते होई । दूसरा जान परो नहिं कोई ।।
हमहीं पिता हमहीं हैं माता । हमहीं तीनि लोककी दाता ।।
हमहीं छाँडि कोइ दूसर नाहीं । तुम जो पूछहु सो कहुँ कांहीं ।।
तीन लोकमहँ असर नाहीं । माता कपट करैं मन माहीं ।।

तब सुत सोच कीन्ह मनमाहीं । पिताका भेद बतावत नाहीं ॥
आपु आपु कह सुत सब रूठे । माता बचन कहै सब झूठे ॥
तब माता कहै बचन रिसाई । पिताको दरश करहु तुम जाई ॥
माता कही फूल लै धावहु । पिताको शीश परसिके आवहु ॥
पुहुप समाधि वासले धाओ । पिताके शीश परसिके आओ ॥
चले पुत्र पिताकी आसा । पिता रहे पुत्रनके पासा ॥
खोजत बहुतदिवस चलि गयऊ । पिताको दरस कतहुँ नहिं भयऊ ॥
तीनों सुत सो दरशन भयऊ । पिता निकट सुत दूर सिधयऊ ॥
पिता निकट सुत दूरि सिधाये । खोजत कतहुँ अन्त नहिं पाये ॥
खोजि थाकि माता पहँ आये । कोहु साँच कोहु झूठ सुनाये ॥
ब्रह्महि भाषा झूँठ संदेसा । सकुचि बचन नहिं कहो महेसा ॥
भाषा विस्नु सत्यकी रेखा । खोजी थाकि पिता नहिं देखा ॥
माता बिहँसि कही तब बानी । ब्रह्मा झूँठ झूँठ तौ खानी ॥
शिव लजाय शिर नीचे राखा । सांच झूँठ एको नहिं भाखा ॥
ताते करहु योग तप जाई । जटा बढाय विभूति रमाई ॥
तुम सुत करो योग तप जाई । शीस जटा तन भसम चढाई ॥
लेहुआ मंडल भेषसो कीन्हाँ । शिवको थापि भवानी दीन्हाँ ॥

साखी—जप तप योग समै दृढ, आगे ध्यान पसार ।
माता कह्यो क्रोध करि, चतुर मुख अन्ध अहार ॥

मातहिं कीन्ह विस्नु पर दाया । मुखहिंचूमिके कंठ लगाया ॥
सत्य वचन सुत बोलेउ बानी । तीनहुं लोक करहु रजधानी ॥
शिव ब्रह्मा करिहैं तोर सेवा । गण गंधर्व रिषि मुनिदेवा ॥
ब्रह्मा मोसों झूठ लगावा । तेहि कारण बिधि झूंठ कहावा ॥
ब्रह्मा वेद पढे बहु भांती । कुकरम कर दिवस औ राती ॥
झूठी बात वेद निरमाई । चार वरनमें बडी बडाई ॥
पहिले चारों वरन पुजावै । दछिणा कारण गरा कटावै ॥
गरा कटाए करावै पूजा । गाय भैंसमें ब्रह्म न दूजा ॥
लिये मूँड पडिवो रमाई । ब्राह्मण भये सो काल कसाई ॥
खाये अखज चले अरडाई । जस मड वाको श्वान अघाई ॥
ब्राह्मणहूको झूठी आसा । हरि नहिं भजे न हरिके दासा ॥
कह कबीर ब्रह्मा कहँ रोए । उत्तम जन्म पाए जड खोए ॥

झूठी बात वेद निरमाई । चार बरन आश्रमहिं दिढाई ॥
रिषि अठासी सहस्र बखानी । ते ब्रह्माके सुत उतपानी ॥
जेते रिषि तेते मतधारी । अस्तुति करिहैं सब तुम्हारी ॥
ब्रह्मादिय मुनि देव गण भारी । अस्तुति करिहै विस्नु तुम्हारी ॥
निसिदिन ध्यान पिताको धरिहो । किंचित ध्यान जोत अनुसरिहो ॥
साखी—विचलि गयउ निजनामको, गहे कुमारग जानि ।
तीनलोक गुन विस्तरेऊ, निरंजन आदि भवानि ॥
कहै कबीर सुनौ धर्मदासा । दोऊ मिलि यह यहमत परकासा ॥
यह सब खेल कामिनी कीन्हा । निरंजन बास शून्यभौ लीन्हा ॥
जोति निरंजन ध्यान लखाई । शिव ब्रह्माको भेद सुनाई ॥
सेवहु विस्नु निरंजन ध्याना । हैसुत वचन निश्चय मम जाना ॥
जाते ज्ञान अगम फैलैहो । जाते तामस सिद्ध कहैहो ॥
सिद्धनका मत होइहै भारी । ज्ञान अगमगुण होहि भिखारी ॥
अंश दहन तन तामस भारी । असुर भाव पशु अवतारी ॥
मत पाखंड ठगोरी टोना । पट दरशन पाखंड सिखलोना ॥
यंत्र मंत्र विषया अधिकारी । अन्तरध्यान भगत तुव धारी ॥
तब गुण सहस नाम ऊचरिहैं । एक अंश चौसठ योगिन होइहैं ॥
कर खपर लें मंगल गैहैं । यहि उपदेश महादेव दैहैं ॥
शंकर चिह्न इहै सौ पैहैं । सिवको भगत तेहि लोके जैहैं ॥
रज रुचि सतगुन दया समानी । असुर हतन भक्तन रजधानी ॥
आगम कहो संघ सुनि लीन्हेउ । जहाँ जसभाव तहाँ तस कीन्हेउ ॥
चारि खानि ब्रह्मै निरमाई । चार वेद मत चार चलाई ॥
शिवको वरन भेद नहिं होई । क्रोधरूप धरि भेष विगोई ॥
माता विस्नुपर दाया कीन्हाँ । पिता दिखाय निकटहि दीन्हाँ ॥
अनुभव दया विस्नु जब पावा । पिता दास भया सुखपावा ॥
पिताको दरस विस्नु जब पावा । तब माता कह शीश नवावा ॥
माता पिता एक ह्वै गयऊ । विस्नु देखि चित हर्षित भयऊ ॥
जोतिहिं जोत एक होय गयऊ । आप भान विस्नु भुलयऊ ॥
माता पिता सुत एक भयऊ । विस्नु समाय जोतिमहँ गयऊ ॥
तेहि पाछे जग सिरजे लऊ । ताको वरन सविस्तर कहेऊ ॥
प्रथमें चारि खानि निरमाई । लछ चौरासी जोनि बनाई ॥

चारि खानिकी चारिउ बानी । उपजी तीनि लोक सहिदानी ॥
चारि खानि रचि कियो पसारा । चारि बरन पाखंड सँवारा ॥
चौदह भुवन करचो विस्तारा । चौदह जमको राज पसारा ॥
लछ चौरासी जोनी कीन्हा । चारि खानि महँ एकहि चीन्हा ॥
लछ चौरासी बचन बखाना । चारि खानि जिव एकैसाना ॥
रचना रची स्रिस्टि बहु रंगा । सुर नर मुनि गये कामतरंगा ॥
कामदेवकी कला अनंगा । पशु पंछी सुर नर मुनि सँगा ॥
कामकला सबही भरमावै । शिव सकती रंग काम लगावै ॥
उत्पति प्रलय रची अविनाशी । कामिनि काम कालकी फाँसी ॥
कनक कामिनि फन्द बतावा । तेहि फंदे सबही अरुझावा ॥
कनक कामिनी फन्दा कीन्हा । चार खानिमें एकै चीन्हा ॥
नर वानर कीट पतंगा । सबके की रखवारी कर संगा ॥
नर नारि जत खान सँवारी । सब घट काम करै रखवारी ॥
पशु पंछी जत कीट पतंगा । रच्छक भच्छक सबके सँगा ॥
स्वासा सार होय गुँजारी । पांचों तत्त्व सँग विस्तारी ॥
पांचों तत्त्व तुरै बल जोरा । तापर चढे साहु औ चोरा ॥
चारिउ खानि हाय गुंजारा । स्वासा चलै अखंडित धारा ॥
देहदसा जस पुरुष सँवारा । तैसी देह रची करतारा ॥
पांच तत्त्व तीनों गुण साजा । आठ काठ पिंजरा उपराजा ॥
अष्टंगी तहँ आप विराजे । अष्ट धातु मिलि रूप विराजे ॥
पिंजरामें सुगना एक रहई । वाकी गति मंजारी लहई ॥
सुवा सुख पिंजरा महँ माने । तके मंजरी सो नहिं जाने ॥
सुगना पढै दिवस औ राती । रछक पिंजरा ऊपर सँघाती ॥
रछक भछक संग रहावै । सदा पढावै घात लगावै ॥
बैठे दोऊ अपने दावा । एक घातक यक सुआ पढावा ॥
जस सुआ पिंजरा महँ गहई । ऐसो देह प्राण दुख सहई ॥
नख शिख रचा काल फुलवारी । फूली बास कुबास सवारी ॥
कनक कामिनि काल बनाई । चारि खानि महँ रहा समाई ॥
कामिनि काम सँवारे जानी । चारिउ खानि रहा विकशानी ॥
चारि खानि महँ स्वास अमाना । काल कुटिल तेहि माँहि समाना ॥
काल करमकी खानि बनाई । शिव शकती महँ रहा समाई ॥

दया छमाकी खान बनाई । नर नारि महँ रहा समाई ॥
सुर नर मुनि सबही कह डहकै । चारि खानि सबके घट महकै ॥
चारि खानिकी सब उतपानी । जेतिक तीनि लोक सहिदानी ॥
तीन लोक स्वासा विस्तारा । स्वासाते भा सकल पसारा ॥
स्वासा संग काल अवतारा । विष अमृत दोनों संचारा ॥
स्वासा संगम काल औ काली । स्वासा संग भये वनमाली ॥
प्रकृत पचीस संग जंगाली । पंच पांच दश माल तमाली ॥
चन्द्र सूर स्वासा संग पूरा । इंगला पिंगला सुषमनि जोरा ॥
साखी—स्वासा सँग स्वासा, तेहिते उपजा बरियार ।
चन्द्र सूर्य हैं स्वासामध्ये, सकल विधि विस्तार ॥
सिवसकती सुखधाम है, जो चित ज्ञानसमाय ।
सुखसागर अभिराम है, काल दगा मिट जाय ॥

इति प्रमाण श्वासगुंसजारका ।

प्रमाण अम्बुसागरका ।

देखो प्रकरण ४६ पृष्ठ ६९

धर्मदास बचन—चौपाई ।

धर्मदास टेके गुरु चरणा । अगम कथा भाषेउ प्रभु वरणा ॥
बहुतक ग्रन्थ सुनायउ काना । अम्बूसागर ग्रन्थ बखाना ॥
सुनि हितबचनं मोहिं प्रियलागा । चातक स्वाति पायजिमि पागा ॥
जुग अनुमान कहो मोहिं भाषी । और शब्द कहँ चित अभिलाषी ॥

सतगुरु बचन—चौपाई ।

धरदास मैं भाषि सुनाऊँ । आदि अरु अंत प्रसंग बताऊँ ॥
जा दिन पुरुष बोल अनुसारा । एक सबद ते कीन्ह पसारा ॥
वानीते माया उतपानी । तीन पुत्र तिन कीन्ह ठानी ॥
ब्रह्मा बिस्नु महेसर कीन्हा । तीन लोक तिहु पुत्रन्ह दीन्हा ॥
ब्रह्मा हाथ चार दिय वेदा । तीन लोक महँ करत निखेदा ॥
नेम धरम अरु सकल पुराना । यह ब्रह्मा सब कीन्ह बखाना ॥
विस्नु देव मृत्यु लोकहि आये । तुलसी माला पंथ चलाये ॥
माला गले संखिनी डारा । तीन लोक महँ है बड भारा ॥
राजा प्रजा सेव सब करई । बिस्नु इष्ट सुमिरण मन धरई ॥
सेवत आये भये अनुरागी । करत सँहार कहत हम त्यागी ॥

जार वारि तन कष्ट कराई । जोग पन्थ यहि भाँति चलाई ।।
जोगी जती तपी संन्यासी । आपन मुख कह हम अविनासी ।।
सिव महिमा भाषत संसारा । दछिन दिसि महिमा अधिकारा ।।
तीन पुत्र तिहुँ लोक सपूता । माता सों इन कीन्ही धूता ।।
माया कहँ माने नहिं कोई । आपहि आप कहावे सोई ।।

अद्या लीला ।

तब अद्या मन कीन्ह विचारा । तीन पुत्र ये सिरजनहारा ।।
माया मन झंखे बहु बारा । तीनों पुत्र भये बरियारा ।।
नाम हमार दीन्ह छिपाई । तीन लोकमहँ अदल चलाई ।।
तब अद्याघट सुमिरन लायी । आपन माहिं आप निरमायी ।।
देवी आपनो मथ्यो सरीरू । शकती तीन उपजी बल वीरू ।।
तिनका नाम कहूँ समझाई । रम्भा सुचिल रेणुका आई ।।
इन हिलि मिलि गन गंध्रव मोहा । राग रागिनी बहुविधि सोहा ।।
कर आभूषण गंध्रव लीन्हे । सकल साज तिन हाथन दीन्हे ।।
तिनका नाम कहूँ समझाई । बीन रबाब तमूरा लाई ।।
सितार कमायच अरु मुहचंगा । ताल मृदंग नफीरी संगा ।।
जलतरंग मुरली किंकिन । मौहर उपंग मंडल स्वर तिन्तिन ।।
बाजे और छतीसों कहिया । गन्ध्रव हाथ साथ सब लहिया ।।
मास महीना फागुन सोई । ऋतु बसन्त गावें नर लोई ।।
टेसू वनस्पती सब फूले । अम्बा मौर डार सब झूले ।।
चात्रिक धारहि वचन सुहावन । हंस कोकिला कोयल पावन ।।
पिउ पिउ चात्रिक प्रिय कहहीं । विरहिनि लाग मदन दुख जरहीं ।।
अंग अबीर गुलाल चढाये । नाना भांतिन अतर लगाये ।।
कामिनि हेतु काम लव लाये । अंग अनंग बहुत विधि छाये ।।
या चरित्र माया उपराजा । तीनहुँ लोक राग बल गाजा ।।
जो सुन राग विषय मन धरहीं । बार बारते जम घर परहीं ।।
अविगत मोह राग रे भाई । राग सुनत जिव गै डहकाई ।।
माया धुनि रागनको बांधा । जासे तीन लोक घर सांधा ।।
प्रथमहि राग षष्ठ विधि गावा । तिन रागन का नाम सुनावा ।।

रागोंके नाम ।

भैरौं और हिंडोल अति, माल कोस पुनि जान ।
दीपक मेघ मलार भल, कीन्ह देव पहिचान ।।

चौपाई ।

कीन्ह उचार राग तेहि वारा । ऋषिमुनि मोह देव सब झारा ॥
माया डारी सब पर फांसी । योगी जती तपी संन्यासी ॥
ततछन देवि रची धमारा । इकसठ रागिनी तहां उचारा ॥
तेहि रागिनिके नाम सुनाऊँ । भिन्न भिन्न कर प्रगट बताऊँ ॥

इकसठ रागिनियोंके नाम ।

१ धनाश्री २ जैतश्री ३ मालश्री ४ श्री ५ गुजरी ६ विरावरी ७ आशावरी ८ जैतसारी ९ गन्धारी १० बरारी ११ सिन्धूरी १२ पञ्चश्री १३ गौरी १४ जौनपुरी १५ विहागरा १६ कान्हरा १७ केदारा १८ मारू १९ मलार २० धूरिया मलार २१ गोडमलार २२ गडमलार २३ भूपाली २४ सुरकली २५ श्रीमाल २६ धूरकली २७ रासकली २८ रूपकली २९ गुनकली ३० सुहेली ३१ मोरवी ३२ पूर्वी ३३ कैरवी ३४ भैरवी ३५ कान्हरा ३६ तिल्लाना ३७ कल्यान ३८ यमन ३९ कल्यानी ४० सजीवनी ४१ सेंधू ४२ मधुगन्ध ४३ सावन्त ४४ ललित ४५ सोरठ ४६ मरहठी ४७ टोडी ४८ नट ४९ गोड ५० विभास ५१ सुबेस ५२ सूहा ५३ परज ५४ काफी ५५ चन्द ५६ सुघराय जैजैवन्ती ५७ चर नायका ५७ सारंग ५९ बंगला ६० नायका ६१ खम्माच ॥

चौपाई ।

मोहे ब्रह्मा विस्नु महेसा । नारद सारद और गनेसा ॥
संकर जग महँ वड अवधूता । काम जारि होय रहे सपूता ॥
कहँवा भूल गये अनुरागी । काम विरह तन उठ उठजागी ॥
मदन अनूप राग है भाई । सत पुरुष सों विछुरन लाई ॥
सुरपति सनकादिक मुनि जेते । काम कला सब नाचे तेते ॥
देखत छबि मोहे सब झारी । सुर समान माया गहि मारी ॥
सकल देव जब गे अकुलाई । काहू कर मन थिर न रहाई ॥
बूझो पंडित सुर मुनि ज्ञानी । जा महिमा तुम करत बखानी ॥
वेद पुरान भागवत गीता । पढि गुनि कहँ काल हम जीता ॥
तीनों गुन ईश्वर ठहरायी । माया फन्दा ताहि बनायी ॥
कैसे ताहि होय निस्तारा । जिन नहिं माना सबद हमारा ॥
राघवानन्द नाम युग केरा । माया चरित कीन्ह तेहि बेरा ॥
तेहि दिन राग कीन्ह उचारा । सकल जीव इमि मार पछारा ॥
अब हंसन का भाषूं लेखा । धरमदास चित करो विवेखा ॥

छन्द–ताहि जुग हम आय जीवन दीन्ह अम्रित पान हो ।
सहस सात उबारि जीवन जाय लोक समान हो ।।
पुरुष दर्शन कीन्ह ततछन रूप अविचल पाइआ ।
पुहुप सज्या वास कराइ फल अमृत ताहि चखाइआ ।।
सोरठा–तुम बूझहु धर्मदास, जुग जुग लेखा भाषेऊँ ।।
चीन्हे कोइ इक दास, जेहि सत गुरु दाया करें ।।
इति प्रमाण श्रीअम्बुसागरका ।
इति श्रीकबीर मन्शूर के प्रथमभागके प्रथम अध्यायका परि[1]शिष्ट
समाप्त ।

कबीर मन्शूर प्रथमभाग ।
द्वितीय अध्याय प्रारम्भः ।

प्रथम प्रकरण ।
कबीर साहबके प्राकट्यका उपक्रम ।

जैसा पूर्व प्रथम अध्यायमें वर्णन हो चुका है । निरञ्जन, अद्या, ब्रह्मा, विष्णु, शिव पाँचोंने मिलकर स्रिस्टिका निर्मान कर लिया । फिर अपना राज्य स्थायी बनानेके लिये निरञ्जन भगवान्‌की इच्छानुसार जो सहस्रों धर्म्म पृथ्वी-पर प्रचलित हुए, होते जाते हैं और भविष्यत्‌में होवेंगे सो सब अलख निरञ्ज-नकी ओरसे उन समस्त धर्मोंके निर्माणकर्ता तथा रचयिता विष्णु महाराज हैं, विष्णु, ब्रह्मा और शिव, सनकादिकऋषि मुनि मिलकर उनका प्रचार करते हैं, कितनेही थोडे और कितने बहुत कालतक प्रचलित रहते हैं फिर छिप जाते हैं, मनुष्य उसका अनुसरण करते हैं किन्तु उनको कुछ प्राप्त नहीं होता, उनसे हार्दिक कामना कदापि पूर्ण नहीं होती, सब बिफल मनोरथही रह जाते हैं । कालपुरुषने सब जीवोंको अपने जालमें फँसा लिया है, कोई जीव उसके चंगुलसे बाहर जाने नहीं पाता है । असंख्य युग इसी अंधकारमें बीत गये । कालपुरुषने सत्य पुरुषका नाम बिलकुल छुपा दिया । मनुष्योंको तनिकभी सुध नहीं रही कि, कालपुरुष कौन है और सत्य पुरुष कौन है ? इस बातसे वे पूर्णतया अनभिज्ञ

---

१ परिशिष्ट-इस ग्रन्थके अनुवाद कबीराश्रमाचार्य्य स्वामी श्रीयुगलानन्द बिहारीने ग्रन्थोंसे संग्रहकर यहां आयोजित किया है ।

रहे । अद्या निरञ्जन तथा तीनों देवताओंने सबको अंधा कर दिया और काल निरञ्जन सदैव सबको भून भूनकर खाने लगे, कोई पथ तथा कोई युक्ति मनुष्यको भागनेकी नहीं मिलती, मनुष्योंका यह कष्ट और दुःख देखकर और उनकी रोलाई सुनकर सत्यपुरुष दयालु हुए और ज्ञानीजीको बुलाकर कहा कि, ज्ञानीजी । मृत्युलोक जाओ, क्यों कि, कालपुरुष समस्त जीवों को नितान्त ही कष्ट पहुँचा रहा है कोई मनुष्य मेरे लोकको आने नहीं पाता है, कालपुरुषने सबको फँसा लिया है । तुम जाकर मनुष्योंको उनकी नींदसे जगाओ और सत्य भक्तिमें लगाकर मेरे लोकमें ले आओ । जो कोई आपकी आज्ञाको स्वीकार करे उसको कालपुरुषके पंजेसे छुड़ाओ । सत्यपुरुषने जब ऐसी आज्ञा दी तब ज्ञानीजी सत्यपुरुषको प्रणाम करके सत्यलोकसे बिदा हुए और मृत्युलोककी ओर जीवोंकी रक्षाके लिये रवाना हुए ।

दूसरा प्रकरण

कबीर साहबका झाँझरी द्वीपमें आनेका वृत्तान्त ।

अद्या और निरञ्जन सत्यपुरुषका नाम छिपाकर तीनों लोकोंका राज्य करने लगे, सत्यपुरुषका पता अपने तीनों पुत्रोंको भी नहीं दिया, निरञ्जनने अपनी राजधानी झाँझरी द्वीपमें स्थिर की, जो सत्यलोकको चलनेपर भवसागरका पहला नाका है । ज्ञानीजी झाँझरी द्वीपमें आये और सत्यनामकी हाँक लगायी, तब धर्मराय घमंडके साथ बोला कि, तुम कौन हो और कहाँसे आये और किस कारण आये हो, यहाँ तुम्हारा क्या काम है ? यह बात सुनकर ज्ञानीजीने उत्तर दिया कि, मेरा नाम ज्ञानी है, मैं सत्यपुरुषका अंश योगजीत हूं और सत्यपुरुषकी आज्ञासे पृथ्वीपर जाकर मनुष्योंको मुक्त कराऊँगा, कारण यह कि तुमने समस्त जीवोंको दुःख पहुँचाया और सत्यपुरुषके नामको छिपा दिया है, और मुक्तिमार्गके समस्त द्वार रोककर मनुष्योंको धोखा देकर धूर्ततासे मार लिया है । कोई मनुष्य नहीं जानता कि, मुक्तिमार्ग कौन है ? और किसप्रकार हमारा बचाव हो ?

तीसरा प्रकरण ।

निरञ्जन और ज्ञानीजीका वार्तालाप ।

इतना सुनकर धर्मराज अत्यंत क्रुद्ध होकर कहने लगे कि, हे ज्ञानीजी ! सत्यपुरुषने तो मुझको तीनों लोकोंका राज्य प्रदान कर दिया, इसमें तुम्हारे

हस्तक्षेप करनेकी क्या आवश्यकता है ? मैंने उसकी सेवा की और उसने मुझको राज्य प्रदान किया । तुम जीवोंको मुक्ति देने क्यों जाते हो ? तुमको क्या पडी है कि, मेरे राज्यमें बाधा उपस्थित करो । मैं तुमको मारूँगा, तुम बडे समय पर आगये हो, देखूंगा अब तुम मुझसे किस प्रकार बचकर जा सकते हो ? यह कहकर धर्मराजने अपने अनन्त रूप बनाये और अत्यंत क्रुद्ध हो झुंझलाकर ज्ञानीजीके सामने आकर लड़नेके निमित्त प्रस्तुत हुआ ।

चौथा प्रकरण ।

ज्ञानी और निरंजनका युद्ध ।

(काल पुरुष और ज्ञानीजीके युद्धका वृत्तान्त)

काल निरञ्जन बडे मस्त हाथीका स्वरूप धारण करके योगजीतके सामने आया और अपना दाँत मारा, तब आपने उसका सूंड पकडकर उसपर एक ऐसा झटका दिया कि, वह दूर जाकर गिर पड़ा और अचेत हो गया, इस आघातसे उसे बहुत चोट लगी और उसका मस्तक नीला हो गया । जब अपने प्राणका भय देखकर धर्म्मराय पातालको भाग चला, तब योगजीतजीने उसका पीछा किया, उधर निरञ्जन भागकर कूर्मजीके पास गया और कहा कि, हे कूर्मजी ! मुझको तो योगजीतजीने मारकर भगा दिया, आप मुझको अपनी शरणमें रक्खो, मुझको सत्यपुरुषने तीनों लोकों का राज्य प्रदान किया था, सो योगजीतजीने मुझको मारकर निकाल दिया और मनुष्यकी मुक्ति करके सत्यलोकको लेजाना चाहते हैं ।

नज़्म (उर्दू कविता) ।

जब वह पीलमस्तानः आया बजङ्ग । वह खरतूम फटकारता बेदरङ्ग ॥
जगदीश आली न पहँचान है । कि बाहरबयां शौकतो शान है ॥
कि आदममलिक जिसकी गाते है गीत । सोई आप साहब सोई योगजीत ॥
कयासो गुमां ब्रह्म है पाय लुंग । पड़े गार लाइल्म तारीको तंग ॥
सकें कौन पहँचान वह पाकज़ात । बयां वेद बानीसे बाहर सिफ़ात ॥
जिसे मल्कर कुदशनासी बता । उसीकी करमसे सो पावे पता ॥
चला सामने उसके वह दू बदू । जहांमें कोई न जिसका अदू ॥
हुवा कैल आमादः पैकारको । न माना न जरना जहांदार को ॥
लगाया तमाचा पकड़ सुण्डको । परीशां किया पीलके झुण्डको ॥

पड़ा दूर तब काल बेताब हो। कि जोंनीलफर खुश्क बेआब हो ॥
रही ताबो ताकत न कत्तालको। चला भाग तब काल पत्तालको ॥
जवाँमर्दगी जब न ताक़त रही। दिया छोड तब तख्त शाहंशही ॥
रही बाक़ी जब और कोई न राह। लिया जाके तब कूर्मजीकी पनाह ॥

जब काल पुरुषने भागकर कूर्मजीकी शरण ली, तब कबीरसाहब उसका पीछा करते हुए पाताल लोकको गये आपको देखकर कूर्मजी खडे हो गये और निवेदन करने लगे कि, आप कौन हो और कहाँसे आये हो ? तब कबीरसाहबने कहा कि, मेरा नाम ज्ञानी है, और मैं सत्यपुरुषकी आज्ञासे मनुष्योंकी मुक्तिके लिये भवसागरमें जाता हूँ। यह बात सुनकर धर्म्मराजजी बोले कि, ज्ञानीजी महाराज ! मेरी बात सुनो और अपने मनमें विचार करो कि, मैंने सत्तर युग-तक एक चरणसे खडेहोकर बन्दना की, तब सत्यपुरुषने दयालु होकर मुझको तीन लोकका राज्य प्रदान किया और अब उसके विरुद्ध अज्ञा क्यों दिया ? सत्यपुरुषकी समस्त सन्तान अपने अपने राज्यमें अधिकार भोग रही हैं। मेरेही ऊपर आप क्यों रुष्ट हुए ? आपकी जैसी आज्ञा हो मैं उसको करूँ।

इस वातपर कुर्मजीभी हाथ बांधकर कहने लगे कि, हे ज्ञानीजी महा-राज ! मैं आपसे निवेदन करता हूँ यदि आप स्वीकार करें और हे निरञ्जन महाराज ! जो आप भी स्वीकार करें तो मैं कहूँ। तब दोनोंने अपनी स्वीकृति प्रकट की तब कूर्मजोने कहा कि, "जो कोई ज्ञानिजीका, पान पावे और उनका आज्ञाकारी हो उसको निरञ्जन किसी प्रकारका बाधा न देवे, इसके अतिरिक्त जितने जीव हैं वे सब कालपुरुषके फंदमें पडेंगे" इस वातपर ज्ञानी तथा कैल दोनों सहमत हुए, फिर निरञ्जनजी अपनी राजधानी झाँझरी द्वीपको गये और कबीर साहब भी उनके साथ आये।

पांचवाँ प्रकरण।

ज्ञानीजी (कवीर साहब) और धर्मराजका वार्तालाप।

धर्मराजने कबीर साहबसे निवेदन किया कि, सत्यपुरुषने तो मुझको तीनों लोकोंका राज्य प्रदान किया है आपभी कृपाकर मुझको यह प्रदान करोगे तो बड़ी दया होगी और मेरा कार्य पूर्ण होगा, तब कबीर साहबने कहा कि, ऐ धर्मराज ! मैं सत्यपुरुषकी आज्ञासे आया हूँ और मनुष्योंकी मुक्ति करूंगा, यदि तुम इस बेर मेरी आज्ञा न मानोगे तो मैं तुमको मारकर निकाल दूंगा। तब निरञ्जनजी अत्यंत नम्रतापूर्वक निवेदन करने लगे कि, मैं आपका सेवक हूँ

आप किसी अन्य ध्यानको मनमें आने न दीजिये और ऐसा न कीजिये कि, जिसमें मेरा काम बिगड़े; आप यह भी सुन लीजिये कि, यदि आप पृथ्वीपर जावेंगे तो कोई मनुष्य आपका कहना न मानेंगे, वरन् आपको तुच्छ बनानेका उद्योग करेंगे और मेरी ओर होकर आपसे वादविवाद तथा वैर करेंगे।

छठाँ प्रकरण।

निरञ्जनके जालका वर्णन।

मैंने समस्त मनुष्योंकी बुद्धि पर परदा डाल दिया है और सबको अचेत कर, दिया है, मैंने सब मनुष्योंके फँसानेके लिये ऐसे ऐसे जाल रच रक्खे हैं कि, 'इन्हींमें समस्त मनुष्य फँसे हुए हैं। वेद, शास्त्र, तीर्थ, व्रत मूर्तिपूजा, यंत्र, मंत्र हवन यज्ञ, आचार, बलिदान, मांसभक्षण, मदिरापान, परस्त्रीगमन आदि सहस्रों प्रकारके फंदे मैंने बनाये हैं, इनसे बचकर कोई मनुष्य निकल नहीं सकता है। और मेरे तीनों पुत्र भी बडे शूरवीर हैं, वे तीनों लोकोंके सरदार हैं। यदि आप पृथ्वीपर जाओगे तो आपको बातको कोई नहीं मानेगा, मैंने समस्त मनुष्य की बुद्धिको अंधेरे कुएँमें डालदी है, प्रत्येकके हृदयमें मेरा स्थान है, सदाकाल सर्व स्थानोंमें मैं उपस्थित रहता हूँ, किसीकी सामर्थ्य नहीं है कि मेरी सेवासे बाहर जासके, जब जैसा मैं चाहता हूँ तब तैसा मनुष्यकी बुद्धिको फेर देता हूँ, समस्त जीवोंकी बुद्धि मेरे अधीन है।

निरञ्जनकी बात सुनकर कबीर साहबने उत्तर दिया कि, हे काल बटमार। जिस जीवको मैं अपना शब्द सुनाऊँगा उसके ऊपर तुम्हारा कुछ बश नहीं चलेगा, मैं तुम्हारे समस्त फंदोंसे उसको स्वतंत्र कर दूंगा तुम्हारा बल तथा मंत्र उसपर व्यर्थ हो जायगा। फिर निरञ्जनने कहा कि, पृथ्वीपर आप एक पंथ प्रचलित करोगे तो मैं अनेक पंथ चलाऊँगा और वह समस्त धर्म्म आपके धर्म्मकी नकल करेंगे, कितने धर्म ऐसे होंगे कि, जो प्रत्यक्षमें तो आपके धर्म्म कहलावेंगे और यथार्थमें उस धर्मके माननेवाले सब मेरे दास होंगे।

यह बात सुनकर ज्ञानीजीने कहा कि, जो कोई मेरा नाम लेगा और मेरी भक्ति करेगा मैं उसको अपने निजके हंसोंके साथ अपने लोक को पहुँचाऊँगा, तेरी तदबीर और तेरी धूर्तता काम न देगी॥

सातवाँ प्रकरण।

निरञ्जनका कबीर साहबसे वरदान माँगना।

जब काल निरञ्जन जान लिया कि, ज्ञानीजीसे पार पाना टेढी खीर है, तब वह बडी दीनतासे विनय करने लगा कि, एकवचन आप मुझको दीजिये,। तब ज्ञानीजीने कहा कि, माँगो ? तब निरंजनने कहा कि, तीन युग अर्थात् सत्य-युग, त्रेता और द्वापरमें थोडे जीव मुक्ति पावें, पर कलियुगमें विशेष जीव मुक्ति पावें। यह वचन आप मुझको दीजिये, तब पृथ्वीपर पधारियें। यह बात सुन-कर कबीर साहबने कहा कि ऐ काल ठग ! तू मुझको ठगा चाहता है कि, तीनों युगोंमें थोडे जीव मुक्ति पावें, अस्तु ! जो कुछ तूने माँगा मैंने तुझको प्रदान कर दिया, पर जब चौथा कलियुग आवेगा, तव पृथ्वीपर मैं अपने अंगोंको भेजूंगा कि, वे बडी धूम धामसे मेरा पंथ प्रचलित करेंगे और इस तरह अरबों खरबों जीवोंको अपने लोकको पहुँचाऊँगा वे सब तेरे कपटजालसे छुटकारा पावेंगे। फिर निरंजनने निवेदन किया कि, जब किलयुगमें मेरा अवतार होगा और मेरा नाम जगन्नाथ होगा, उस समय समुद्र मेरा मन्दिर तोड दिया करेगा, तब आप कृपा करके मेरे मन्दिरकी स्थापना करा देवें और समुद्रको स्थिर कर देवें। ज्ञानीजीने यह बात भी उसकी मानली। फिर निरंजनने निवेदन किया, आप अपना शरीर भी मुझको प्रदान कीजिये, फिर ज्ञानीजीने धर्मराजको शिरवाली देह भी दिया। इसी कारण यह कालपुरुष जब चाहे तब शिरवाली और जब इच्छा हो बेशिरकी देह प्रगट कर सकता है नहीं तो यथार्थ में कालपुरुषका शरीर बिना मस्तकका है और कबीरसाहबका शरीर शिर सहित है।

आठवाँ प्रकरण।

छाया (विराट्) पुरुषका वृत्तांत।

इस विषयको साध लोग भली भाँति जानते हैं, जो विराट् पुरुषकी साधना किया करते हैं, वे स्पष्ट रूपसे विराट् पुरुषको आकाशमें देखते हैं। जो सदैव इस बातपर दृष्टि रखते हैं, उन्हें सदैव वह विराट् पुरुष आकाशमें दिख-लाई देता है, जब छः मास उनकी मृत्यके रह जाते हैं उस समय विराट् पुरुष उनको बिना मस्तकके दिखाई देता है। तब साधु जान लेते हैं कि, उनकी मृत्यमें छः मास शेष बचे हैं। कारण यह कि, कालपुरुषने अपनी प्राकृतिक शरीरको अब दिखलाया है। उस समयसे साधु चैतन्य और चौकस हो जाते हैं और जब मृत्युका दिवस तथा समय ठीक आन पहुँचता है, तब प्राणायाम करके समाधि

लगा जाते हैं और अपने प्राणको खींचकर दशवें द्वार पर पहुँचा देते हैं, वहाँ पर कालकी पहुँच नहीं होती। वे जाने रहते हैं कि, कितने समय पर्यन्त मृत्यका आक्रमण है, उतनी देरतक प्राणको नीचे नहीं उतारते और जब मृत्यूका समय जाता रहता है और काल निराश होकर पलट जाता है, तब फिर अपने प्राणको नीचे उतारते और फिर प्रसन्नतापूर्वक निर्भय होकर जीवन व्यतीत करते हैं। इसी प्रकार साधु लोग मृत्यसे बचते हैं और काया कल्प करके बुढापे तथा निर्बलताको दूर करते हैं।

नवाँ प्रकरण।

निरञ्जनका ज्ञानीजीकी अधीनता स्वीकार करना।

इसी प्रकार निरञ्जनने बहुत कुछ माँगा और कबीरसाहबने उसको दिया तब धर्म्मराजने उठकर कबीरसाहबको दंडवत् प्रणाम करके कहा कि, जो जो मनुष्य आपका आज्ञाकारी होगा और आपकी भक्ति और स्तुति करेगा तथा आपका पान पावेगा उसके समीप में कदापि नहीं जाऊँगा, शेष लोक तथा बेदके सब जीव मेरे अधीन रहेंगे, इसके अतिरिक्त कितनी बातें हुई सो यहाँ थोड़ासा लिखा है। धर्मराजने अपने लोकमें रहे और कबीर साहब पृथ्वीको चले, जब आप पहले पृथ्वीपर आये उस समय सत्ययुगका समय था।

यहाँ पाठकोंकी आसानीके लिये निरञ्जनगोष्ठी दे दिया जाता है—

निरंजन गोष्टी।

अर्थात् सत्य लोकसे जीवोंको बचानेके लिये ज्ञानीजी (कबीर साहब) का पृथ्वीपर आते समय निरंजनसे वार्तालाप।

ज्ञानी वचन।

काल निरंजन निरगुनराई। तीन लोक जिहिं फिरी दुहाई॥
सात दीप पृथ्वी नौ खण्डा। सप्त पताल इक्कीस ब्रह्मण्डा॥
सहज सुन्नमें कीन्ह ठिकाना। काल निरंजन सबहीने माना॥
ब्रह्मा विस्नु और सिव देवा। सब मिल करें कालकी सेवा॥
चित्रगुप्त धरम बरियारा। लिखनी लिखें सकल संसारा॥
चौरासी लाख अरु चारों खानी। लिखनी लिखे सकल सब जानी॥
पसु पंछी जल थल विस्तारा। बन परवत जल जीव विचारा॥
काल निरंजन सबपर छाया। पुरुष नामको चिह्न मिटाया॥
सत्तर युग ऐसेही चल गयेऊ। पुरुष शब्द एक चितमें ठयेऊ॥

पुरुष वचन ।

तबहीं पुरुष ज्ञानीसों कहेऊ । धर्मराय अतिप्रबल जो भयेऊ ॥
यह तो अंश भया बरियारा । तीनलोक जिव कीन्ह अहारा ॥
ताहि मारकै देव उठाई । जग जीवनको लेव छुडाई ॥

ज्ञानी वचन ।

साखी–करि परनाम ज्ञानी चले, करन हंसके काज ।
जोपै काल न मानि है, तुम्ही पुरुषका लाज ॥

मान सरोवर ज्ञानी आये । काल कठिन तब छेका धाये ॥
काल कठिन गरजे बहु बारा । मस्तक साठ सूँढ बरियारा ॥
सत्तर योजन गजके दंता । परलय कीन्हो काट अनंता ॥
काग एक आँखे चौरासी । औसुख आठ हाथ लिये फांसी ॥
छत्तीस नाम ताहि पुनि जानी । बोले वचन बहुत इतरानी ॥
तीन दंत पाछेको फेरी । यहि विधि तीनलोक किये जेरी ॥
एक दंत पाताल चलावा । तहां जाय वासुकको खावा ॥
दूजो दंत पृथ्वी चलि आये । देव रिषि जग दैत्यन खाये ॥
तीजो दन्त गयो आकासा । चंद्र सूर खायो कैलासा ॥
ब्रह्मा वेद पढत तहां आये । शंकर ध्यान करत तब खाये ॥
लीन्हें खाय विस्नुको धाई । सकल खाय पुनि धूर उडाई ॥
गरजे दन्त अग्नि सम भाई । तीन लोक खाई दुनियाई ॥

ज्ञानीवचन ।

ज्ञानी देखे द्रिस्टि पसारा । यातें नाहिं बचे संसारा ॥
ज्ञानी बोले शब्द बरियाई । तूंही काल खाइ दुनियाई ॥

निरञ्जनबचन ।

सा०–जाहु ज्ञानी घर आपने, मानों वचन हमार ।
तीन लोक पुरुषहिं दिये, स्वरग पताल संसार ॥

ज्ञानीबचन ।

मुहि जो पठयो पुरुषको, करन हंसके काज ।
कालहि मार संहारि हों, दीन्ह सकल मोहे साज ॥

बोले ज्ञानी सब्द अपारा । मोकहँ दीन्ह पुरुष टकनसारा ॥
मारों काल शब्दका झारा । टूटे दन्त न करै पसारा ॥

निरञ्जनबचन ।

तबै निरंजन बोले बानी । कैसे हंस छुडावो ज्ञानी ।।
जगके माहँ कीन्ह हम बासा । पसु पंछी जल थलमें आसा ।।
तिनसौ साठ पैठ हम लाये । तामें सकल जीव उरझाये ।।
जे दिनते हम पैठ लगाहीं । दिन दिन उरझे सुरझत नाहीं ।।
तापर काम क्रोध हम झारी । तृष्णा सकल जीवकहँ मारी ।।
इनमें जीव बन्धे सब झारी । कैसे हंसहि लेव उबारी ।।
तापर कीन्हो एक हम साजा । पाप पुन्य थापे हम राजा ।।
सुभ अरु असुभ दोई दल साजा । ऐसे अलख निरंजन राजा ।।

ज्ञानीवचन ।

सत्त शब्द हम बोले बानी । बचन हमारे छूटे प्रानी ।।
गहै शब्द जब मन चितलाई । भजिहै काल जिव लेब छुडाई ।।

काल-निरंजन बचन

तबै काल अस बोले बानी । सकल जीव बस हमरे ज्ञानी ।।
तिनसौ साठ पैठ उरझेरा । कैसै हंसन लेव उबेरा ।।
गंगा जमुना सरसती ज्ञानी । पुष्कर गोदावरी कुतका मानी ।।
बद्री केदार हमका ठाऊँ । जहाँ तहाँ हम तीरथ लगाऊं ।।
मथुरा नगर उत्तम जो जानी । जगन्नाथ जस बैठे ध्यानी ।।
सेतबन्ध पुन कीन्ह ठिकाना । पुष्कर क्षेत्र आय हम थाना ।।
हिंगलाज जिव जहँ सोई । कालका नगरकोट मह होई ।।
गढ़ गिरनार हमरो थाना । ताहि घेर हम बैठ निहाना ।।
कमरू माह कमच्छा देवी । नीमखार मिसरख जम लेवी ।।
नगर अजुध्या रामहिं राजा । खैहैं दइत बांध सब साजा ।।
याही पैठ जग जीव भुलाई । किहि विधि हंस लेव मुकताई ।।

ज्ञानीबचन ।

तब ज्ञानी अस बोले बानी । जमते जीव छुडावहुँ आनी ।।
पुरुष नामको कहुँ समझाई । जम राजा तब छोड पराई ।।
घाट बाट बैठे उरझेरा । हमरे शब्दतें होय निबेरा ।।
सुनु रे काल दुष्ट अनयाई । शब्द संग हंसा घर जाई ।।

निरंजन बचन ।

का ज्ञानी देहो अधिकारा । हमरो नहिं छूटे जम जारा ।।

पांच पचीस तीन गुन आही। यह लै सकल शरीर बनाई ।।
तामें पाप पुन्यका वासा । मन बैठे ले हमरी फांसा ।।
जहां तहां सब जग रमावै । ज्ञान संधि कछु रहन न पावै ।।
एक शब्दकी केतक आसा । हमरे है चौरासी फांसा ।।

ज्ञानी वचन

बोले ज्ञानी शब्द बिचारी । छूटे चौरासी की धारी ।।
छूटै पांच पच्चीस गुन तीनो । ऐसो शब्द पुरुष मुहि दीन्हो ।।

निरञ्जन वचन ।

हे ज्ञानी का करों बडाई । हमते नाहिं छूट जिव जाई ।।
इतने जुग भये का तुम देखा । ज्ञानी हंस न एकै पेखा ।।
का तुम करो का सब्द तुम्हारा । तीन लोक परलय तर डारा ।।
साधु सन्त हम देखी रीती । परलय परे सकल सब जीती ।।
करम रेख बांधै सब साधा । सुर नर मुनि सकलो जग बाँधा ।।

ज्ञानी वचन ।

ज्ञानी कहै काल अन्यायी । सब्द बिना तू खाय चबाई ।।
अब तुम कस खैहो बटसारा । पुरुष सब्द दीन्हों टकसारा ।।
जगके जीवन लेऊँ उभारा । करम लेख तोरो घर न्यारा ।
पांच पच्चीस और गुन तीनों । इतने मोर हंस लेऊँ छीनों ।।
पांच जनेकी मेटौं आसा । पुरुष सब्द भाषौं विस्वासा ।।
सुभ अरु असुभ का करे निबेरा । मेटों काल सकल उरझेरा ।।

निरञ्जन वचन ।

तिरगुन काल तब बोले बानी । उरझे जीव सकल जमखानी ।।
कैसे के तुम शब्द पसारो । कौने विधि तुम जीव उबारो ।।
ऐसे जीव सकल हैं करनी । कैसे पहुँचैं पुरुषके सरनी ।।
जगमें जीव क्रोध विकरारा । कैसे पहुँचैं पुरुषके द्वारा ।।
क्रोधी जीव प्रेत अभिमानी । धरिहैं जन्म नरककी खानी ।।
लोभी होय सरप विकरारा । माटी भखे जीव अँ कारा ।।
लोभ जन्म सूकर अवतारा । कैसे पावै मोच्छ को द्वारा ।।
विषई विषै सब विषकी खानी । ए सब कहिये जम सहिदानी ।।

ज्ञानी वचन ।

ज्ञानी कहै करहु बरियारा । हमतो कीन्ह सकल निरबारा ।।

जोई ज्ञानी होय हमारा । काम क्रोध तें होय निनारा ॥
तृस्ना लोभहिं देइ बहाई । विषै जन्म सब दूर पराई ॥
उनको ध्यान शब्द अधिकारी । काम क्रोध सब होय नियारी ॥
नाम ध्यान हंसा घर जाई । कहा देत अस करों बडाई ॥
उनपे जम का परै न छाहीं । तास हंसा लोकहि जाई ॥

निरञ्जन वचन ।

कहैं निरंजन सुन हो ज्ञानी । कथि हा जान तुम्हारी बानी ॥
जुरत महातम सबै बताऊँ । नाम तुम्हारे पन्थ चलाऊँ ॥
तुम तौ एक पन्थ परकासा । हम बारह पन्थ काल जग फांसा ॥
जग के जीव सबै भरमाऊँ । ज्ञानवंत को करम दिढाऊँ ॥
मार जीव को करे अहारा । कथैं ज्ञान तुम्हरी टकसारा ॥
करे काम बिस सब भाई । चार वरन ले एक मिलाई ॥
कुलको त्याग होय सो न्यारा । चार वरनको एक विचारा ॥
ज्ञान हमार रहै तन छाई । ते सब जीव काल ले खाई ॥
वे तो तुमरी करिहैं हांसी । ते जीवनपर हमारी फांसी ॥
फिर फिर आवै जमकी खानी । वे सब सरन हमारी ज्ञानी ॥
कैसे पहुँचें पुरुषकी सरनी । ज्ञान संधि हमहू दे बरनी ॥

ज्ञानी वचन

कहे ज्ञानी सुन कैल विचारा । हंस हमार होय नहिं न्यारा ॥
निसवासर रहै लौ लीना । शब्द विचार होय नहिं भीना ॥
हंस हमार सब्द अधिकारा । पुरुष परताप को करे सम्हारा ॥
नाम जपै अरु सुर्त लगाई । मिले कर्म लागे नहिं काई ॥
शब्द मानि होय सब्द सरूपा । निश्चे हंसा होय अनूपा ॥
उनको नाम भक्ति की आसा । ताते निरख चलें विस्वासा ॥

निरञ्जन वचन ।

ज्ञानी मोर अपरबल ज्ञाना । वेद किताब भरम हम माना ॥
इनको माने सब संसारा । कलि में गंगा मुकती द्वारा ॥
देहीं दान जो उतरे पारा । ऐसे सुमृति कहैं विचारा ॥
यहि विधि जग जीव भुलाहीं । जरा मरन सब बंध बंधाहीं ।
सूतक पातक वेद विचारा । पूछ वेदसे करहि सँहारा ॥
एकादशी मुकतिकी आई । जोग जग्य करवे अधिकाई ॥

ज्ञानी वचन ।

सुनहु काल ज्ञानकी संधी । छोरों जीव सकलकी फंदी ॥
जब निज बीरा हंसा पावै । जोग बरत तप सबै नसावै ॥
वेद किताबका छोड आसा । हंसा करे सब्द विस्वासा ॥
ताके निकट काल नहिं आवे । निज बीरा जो सुरत लगावें ॥
बीरा पाय होय जमपारा । शब्द सन्धि परखै टकसारा ॥
जोग बरत तपहू है छारा । अद्भुत नाम सदा रखवारा ॥
जेत हंस सरन हम आई । भक्ति करे तो मिटै धुआई ॥

निरंजन वचन ।

अब तुम ज्ञानी भली सुनाई । मेरो उरझो सुरझौ नहिं जाई ॥
जो जीवनको भगति दिढैहौ । शब्द भेद तुमताहि लखैहो ॥
पावै शब्द होय अभिमानी । कैसे लोकै जैहै प्रानी ॥
सब्द पाय नहिं करै विचारा । कैसे पहुँचे लोक तुम्हारा ॥
सब्द पाय कर करम जगावै । कैसे ज्ञानी निज घर पावै ॥
सब्द पाय कर चले न राहा । ज्ञानी कहाँ मुकतिकी थाहा ॥

ज्ञानी वचन ।

तब ज्ञानी बाल मुख बानी । सुनियो काल निरंजन आनी ॥
हंसा भगति जो करे हमारी । राखो सदा सब्द निज धारी ॥
काम क्रोध अहंकार बिकारा । इनका तजिहैं हंस हमारा ॥
सब्द हमारा छोडे फंदा । पहुँचे लोक मिटै जमदन्दा ॥
बीरा नाम पुरुष का सारा । निरमल हंस होय उजियारा ॥
आवागवन बहुरि नहिं होई । काल फांस तज न्यारा सोई ॥
पहुँचे हंस पुरुष दरबारा । अरें काल तोको तज डारा ॥

निरंजन वचन ।

निरंजन बोले गरब सो भाई । मोरे फंद तोर को जाई ॥
करम जंजीर बधा संसारा । जोई हम जग जाल पसारा ॥
तीन लोक जोइन औतारा । आवागवनमें फिर फिर पारा ॥
उपजै विनसै रहै भुलाई । देव रिषी मुनि सकलो खाई ॥
सिद्ध साधु अरु बडे जु ज्ञानी । बाँध बाँध कर तोपि समानी ॥
करम रेख ते कोई न न्यारा । तीन देव सुर असुर पमारा ॥

ज्ञानी बचन ।

कहै ज्ञानी सुन काल लबारा । करिहौं टूक जंजीर तुम्हारा ॥
हंसन लैहौं तुरत उवारी । पुरुष शब्द दीन्हों मोहि भारी ॥
ताहि हुक्मसों मारों तोही । सब संसार तु खाया द्रोही ॥
खंड खंड कर तोरों बाना । मारों काल करों पिसमाना ॥
हंसनकी मैं करों मुकताई । बहुरि न जन्महिं भौजल आई ॥
पुरुष अंस नोतम है अंशा । ते जग परगट बचन है वंशा ॥
तिनको सरन हंस जो आवें । कोट करम सब देई बहावें ॥
हंस संधि लाखि होवें न्यारा । चलते पावे नहिं बटपारा ॥

निरंजन बचन ।

मानों ज्ञानी बचन तुम्हारा । हंस ले जाऊ पुरुष दर्बारा ॥
चौदह काल जगत हमारे । घाट बाट बैठे रखवारे ॥
सुर नर मुनि आवें वहि घाटा । दर्शहिं और वह रोकें बाटा ॥
दुर्ग जगाती बडा सरदारा । बिना जगात कोइ उतर न पारा ॥
भौजल नदी घाट नहिं थाहू । उतरन काज कहैं सब काहू ॥

ज्ञानी बचन ।

कहँ ज्ञानी सुन काल सुभाऊ । हमरे हंस की बात सुनाऊ ॥
बखतर ज्ञान शब्द हथियारा । मार दूत को चले अगारा ॥
कोट सिद्ध तेज होय हंसा । जब परवाना आवै बंसा ॥
वंश छाप जब पावहिं प्रानी । ताहि न रोकै दुर्ग दानी ॥
कहा काल तुम करो बिचारा । हंस हमार उतरिहै पारा ॥
सार शब्द है हंस बहोरी । ता चढ़िजाय काल मुख तोरी ॥
संधि न पावे ते बटपारा । हंसा पहुँचे लोक दुआरा ॥
तुमको काल निरंजन राई । है ज्ञानी का करो बडाई ॥
पाँव पताल सीस अकाशा । सोरह जोजन अग्नि प्रकासा ॥
गरजे काल महा बिकरारा । सत्रह लाख लो पाँव पसारा ॥
लपकै जीभ जिमि टूटे तारा । जिमि बिजली चमकै अँधियारा ॥
सुंढ बढाय दंत अति बाढा । मध्य घेर ज्ञानी कहँ ठाढा ॥
हमरे पौरुष हम बरियारा । तुम ज्ञानी का करो हमारा ॥

ज्ञानीबचन ।

ज्ञानी पुरुष शब्द कियो जोरा । पकड सूंढ दांत गहि मोरा ॥

मारेउ शब्द पांव कर पेली । तोर सूंढ समुद्र गहि मेली ॥
पुरुषरूप तबहीं पुन धारा । जौन सरूप काल औतारा ॥

निरंजन बचन ।

भया अधीन दोई कर जोरी । तुम सतपुरुष सरन हम तोरी ॥
तुमसों बाल बुद्धि हम धारा । अब तुम करहु मोर उद्धारा ॥
बालक कोट भाँति गरियावत । मात पिता मन एक नहिं आवत ॥
तुमहीं पुरुष दीन्ह मोहि राजू । औ पुन दीन्ह सकल मोहिं साजू ॥
तिहि पर हमने गाऊँ बसावा । लीन्ह सुन्न ठिकान बनावा ॥
तहँ हम साहब जाय रहाई । बिन आज्ञा कछु नाहिं कराई ॥
अबलग साहेब मैं नहिं चीन्हा । सत्तपुरुष तुम दरसन दीन्हा ॥
दोइ कर जोरि चरण चित लावा । धन्य भाग हम दरसन पावा ॥
अब मोहिं साहेब भेद बतावो । पाओं चिन्ह हंस पहुँचाओं ॥

ज्ञानी बचन ।

सुन रे काल निरंजन राई । पुरुष नाम है बीरा भाई ॥
जो हंसा चित भगति समोई । ताको खूट गहै मत कोई ॥
साखी—जो निज बीरा पाइ हैं, आवै लोग हमार ।
ताको खूंट गहो मत, सुनो काल बटमार ॥

निरंजन बचन ।

सुनो गुसांई विनती मोरी । बीरा पाय करै कछु औरी ॥
ज्ञान कथै अनत चित वासा । आवागवन की राखौं आसा ॥

ज्ञानी बचन ।

सुनो निरंजन बचन हमारा । नहीं सत्त वह जीव तुम्हारा ॥
साखी—जा घरतें जिव आइया, ताहु सुधि गइ खोय ।
पुकारि कहों मैं जीवसों, शब्द पारखी होय ॥

निरंजन बचन ।

कही बात तुम भली विचारी । संत देख हम काँध उतारी ॥
उन निकट दूत नहिं आई । साहब हंस देहुँ पहुँचाई ॥
सा०—साहिब सबको एक है, साहिबका कोइ एक ।
लाखन मध्ये को गिने, कोटिन मध्ये देख ॥

ज्ञानी बचन ।

सा०—जाहु काल घर आपने, शब्द कहौं चितलाहु ।
जो फिर सीस उठायहो, बांध रसातल जाहु ॥

जो पुनि गहो हंसकी बांही । बांध रसातल पठाऊँ तांही ॥

निरंजनवचन ।

जब तुम रूप दिखावा मोही । तब हम पुरुष न चीन्हा तोही ॥
परथम ज्ञानी हम नहिं जाना । बन्धु जान कीन्हा अभिमाना ॥

ज्ञानी वचन ।

धरमदास तब सों हम आये । गढ रैदास मो धारा पाये ॥
परथमहिं सतयुग लागा भाई । नृप हरचन्द भये तहां राई ॥
तहाँ जाय शब्द गुहराई । जो चीन्हा सो लोक पठाई ॥
सतयुग सत्तनाम मोर नाऊं । देही धर हम मनुष्य कहाऊँ ॥

धरमदास वचन ।

धरमदास सुनि टेके पाई । तुम प्रताप सकल सुधि आई ॥
काल चरित्र सकल हम जाना । पुरुष लीला सबही पहिचाना ॥
जब आपुन आये भौ माहीं । हंस काज जो भयो अब भाई ॥

श्री कबीर साहिब और निरंजनकी गोष्ठी समाप्त ।

प्रमाण अनुरागसागरका ।

धर्मदास वचन ।

हे प्रभु मोहि कृतारथ कीन्हा । पूरणभाग्य दरश मुहि दीन्हा ॥
तुव गुण मोसन वरणि न जाई । मो अचेत कहँ लीन्ह जगाई ॥
सुधा बचन तुव मोहिं प्रियलागे । सुनतहि वचन मोहमद भागे ॥
अब वह कथा कहो समझायी । जिहि बिधि जगमें प्रथमें आई ॥

कबीरसाहबका सत्पुरुषकी आज्ञा पाकर जीवोंको चितानेके लिये चलना निरञ्जनसे भेंट होना और उससे बात चीत करके आगे बढना ।

कबीर वचन ।

धरमदास जो पूछ्यो मोही । जुग जुग कथा कहों मैं तोही ॥
तबहीं पुरुष आज्ञा कीन्हा । जीवन काज पृथ्वी पग दीन्हा ॥
करि परनाम तबहीं पगु धारा । पहुँचे आय धरम दरबारा ॥
परथम चलेउ जीवके काजा । पुरुष प्रताप सीसपर छाजा ॥
तेहि जुग नाम अचिन्त कहाये । आज्ञा पुरुष जीव पहँ आये ॥
आवत मिल्यो धरम अन्याई । तिन पुनि हमसो रार बढाई ॥

मो कहँ देखि धरम ढिग आवा । महा क्रोध बोले अतुरावा ॥
जोगजीत इहँवा कस आवो । सो तुम हमसों वचन सुनावो ॥
कै तुम हमको मारन आओ । पुरुष वचन सो मोहि सुनाओ ॥

जोगजीत वचन ।

तासों कह्यो सुनो धर्म राई । जीव काज संसार सिधाई ॥
बहुरि कह्यो सुनु अन्याई । तुम बहु कीन्ह कपट चतुराई ॥
जीवन कहँ तुम बहुत भुलावा । बार बार जीवन संतावा ॥
पुरुष भेद तुम गोपित राखा । आपन महिमा परगट भाखा ॥
तप्त शिलापर जीव जरावहु । जारि बारि निज स्वाद करावहु ॥
तुम अस कष्ट जीव कहँ दीन्हा । तबहिं पुरुषमोहि आज्ञा कीन्हा ॥
जीव चिताय लोक लै जाऊँ । तोरे कष्टतें जीव बचाऊँ ॥
ताते हम संसारहिं जायब । दे परवाना लोक पठायब ॥

धर्मराय वचन ।

यह सुनि काल भयंकर भयऊ । हम कहँ त्रास दिखावन लयऊ ॥
सत्तर जुग हम सेवा कीन्ही । राज बडाइ पुरुष मुहिं दीन्ही ॥
फिर चौंसठ जुग सेवा ठयऊ । अष्ट खंड पुरुष मुहिं दयऊ ॥
तब तुम मारि निकारे मोही । योगजीत नहिं छांडों तोही ॥
अब हम जान भली विधि पावा । मारों तोहि लेउँ अब दावा ॥

योगजीत वचन ।

तब हम कहा सुनो धरमराया । हम तुम्हरे डर नाहिं डराया ॥
हम कहँ तेज पुरुष बल आही । अरे काल तुव डर मोहि नाहीं ॥
पुरुष प्रताप सुमिरि तिहिं बारा । शब्द अंगते कालहिं मारा ॥
ततछण द्रिष्टि ताहि पर हेरा । स्याम ललाट भयो तिहि केरा ॥
पंख घात जस होय पखेरू । ऐसे काल भोहिं पहँ हेरू ॥
करे क्रोध कछु नाहिं बसाई । तब पुनि परेउ चरण तर आई ॥

धर्मराय वचन ।

छंद—कह निरंजन सुनो ज्ञानी, करो विनती तोहि सों ।
जान बंधु विरोध कीन्हों, घाट भयी अब मोहि सों ॥
पुरुष सम अब तोहि जानों नाहिं दूजी भावना ।
तुम बडे सर्वज्ञ साहिब, छमा छत्र तनावना ॥

सोरठा—तुमहु करो बखसीस, पुरुष दीन्ह जस राज मुहिं ॥
षोडश महँ तुम ईश, ज्ञानी पुरुष सु एक सम ॥

ज्ञानी वचन ।

कह ज्ञानी सुनु राय निरंजन । तुम तो भय वंशमें अंजन ।।
जीवन कहँ मैं आनब जाई । सत्य शब्दसत नाम दिढाई ।।
पुरुष आज्ञाते हम चलि आये । भौसागरते जीव मुकताये ।।
पुरुष आवाज टारु यहि बारा । छन महँ तो कहँ देउँ निकारा ।।

धर्मराय वचन ।

धरमराय अस बिनती ठानी । मैं सेवक दुतिया नहिं जानी ।।
ज्ञानी विनती एक हमारा । सो न करहु जिहि मोर बिगारा ।।
पुरुष दीन्ह जस मो कहँ राजू । तुमहूँ देहु तो होवे काजू ।।
अब हम बचन तुम्हारो मानी । लीजो हंसा हम सो ज्ञानी ।।
विनती एक करों तुहि ताता । दृढ कर मानो हमरी बाता ।।
कहा तुम्हार जीव नहिं मानिहिं । हमरी दिशि ह्वै वाद बख निहिं ।।
दिढ फन्दा मैं रचा बनायी । जामें जीव रहें उरझायी ।।
वेद सासतर सुमिरिति गुण नाना । पुत्र तीन देवन परधाना ।।
तिनहूँ बहु बाजी रचि राखा । हमरी डोरि ज्ञान मुखि भाखा ।।
देवल देव सखान पुजाई । तीरथ व्रत जप तप मन लाई ।।
पूजा विश्वबलि देव अराधी । यहि मति जीवन राख्यो बाँधी ।।
जग्य होम अरु नेम अचारा । और अनेक फन्द मैं डारा ।।
जो ज्ञानी जैहो संसारा । जीव न माने कहा तुम्हारा ।।

ज्ञानी वचन ।

ज्ञानी कहे सुनो अन्याई । काटों फन्द जीव लै जाई ।।
जोतिक फन्द तुम रचे विचारी । सत्य शब्दते सबै बिडारी ।।
जौन जीव हम शब्द दिढावें । फंद तुम्हार सकल मुकतावे ।।
जब जिव चिन्हिहैं शब्द हमारा । तजहि भरम सब तोर पसारा ।।
सत्य नाम जीवन समझायब । हंस उबार लोक लै जायब ।।

छंद—दैहौ सत्य शब्द दिढाय हंसहिं दया सील छमा धनी ।
सहज सील सन्तोष सारा, अतमपूजा गुन धनी ।।
पुरुष सुमिरन सार बीरा नाम अविचल गाइहौं ।
सीस तुम्हरे पाव देके, हंसहिं लोक पठाइहौं ।।

सोरठा—अमी नाम विस्तार, हंसहिं देउ चिताइहौं ।
मरदहि मान तुम्हार, धरमराय सुनु चित्त दे ।।

चौका करि परवाना पाई । पुरुष नाम तिहि देउँ चिन्हाई ॥
ताके निकट काल नहिं आवे । संधि देख ताकहं सिर नावे ॥

धर्मराय वचन ।

इतना सुनतै काल सकाना । हाथ जोरिके विनती ठाना ॥
दयावन्त तुम साहिव दाता । एतिक कृपा करो हो ताता ॥
पुरुष शाप मो कहँ अस दीन्हा । लच्छ जीव नित ग्रासन कीन्हा ॥
जो जिव सकल लोक तुव जावे । कैसे छुधा सो मोरि बुतावे ॥
पुनि पुरुष मोपर दाया कीन्हा । भौसागर कहँ राज मुहि दीन्हा ॥
तुमहू कृपा मोपर करहू । मांगो सो वर मुहि उच्चरहू ॥
सतजुग त्रेता द्वापर माहीं । तीनहु जुग जिव थोरे जाहीं ॥
चौथा जुग जब कलिजुग आवे । तब तुव सरण जीव बहु जावे ॥
ऐसा वचन हार मुहि दीजे । तब संसार गमन तुम कीजे ॥

ज्ञानी वचन ।

हर काल परपंच पसारा । तीनों जुग जीवन दुख डारा ॥
बिनती तोरि लीन्ह मैं जानी । मो कहँ ठगहि काल अभिमानी ॥
जस विनती तू मोसन कीन्ही । सो अब बकसि तोहिकहँ दीन्ही ॥
चौथा जुग जब कलिजुग आवे । तव हम आपन अंश पठावे ॥

छंद—सुरति आठों अंशसुकृत, प्रगटिहैं जग जासके ।
ता पीछे पुनि सुरत नौतम, जाय ग्रह धर्मदासके ॥
अंस ब्यालिस पुरुषके वे, जीव कारण आवई ।
कलि पंथ प्रगट पसारिके, वह जीव लोक पठावई ॥

सोरठा—सत्य शब्द दे हाथ, जिहिं परवाना देइहै ।
सदा ताहि हम साथ, सो जिव जम नहिं पायहैं ॥

धर्मराय वचन ।

हे साहिव तुम पंथ चलाऊ । जीव उवार लोक लै जाऊ ॥
वंश छाप देखो जेहि हाथा । ताहि हंस हम नाउब माथा ॥
पुरुष अवाज लीन्ह मैं मानी । विनती एक करों तुहि ज्ञानी ॥

कालका अपने बारह पन्थकी बात कबीरसाहेबसे कहना ।

पंथ एक तुम आप चलाऊ । जीवन लै सत लोक पठाऊ ॥
बारह पंथ करों मैं साजा । नाम तुम्हार लै करों आवाजा ॥
द्वादश जम संसार पठैहों । नाम तुम्हारा पंथ चलैहों ॥

मृतुअंधा इक दूत हमारा । सुक्रित ग्रह लैहै अवतारा ।।
प्रथम दूत मम प्रगटे जायी । पीछे अंस तुम्हारा आयी ।।
यहि विधि जीवनको भरमाऊँ । पुरुष नाम जीवन समझाऊँ ।।
द्वादश पथ जीव जो ऐहैं । सो हमरे मुख आन समैहैं ।।
एतिक विनती करों बनाई । कीजे कृपा देउ बनसाई ।।

कालका कबीरसाहबसे जगन्नाथस्थापनाका बरदान माँगना ।

कलियुग प्रथमचरण जब आयब । तब हम बौद्ध शरीर बनायब ।।
राजा इन्द्रदवन पहँ जायब । जगन्नाथ हम नाम धरायब ।।
राजा मंडप मोर बनैहै । सागर नीर खसावत जैहै ।।
पुत्र हमार विस्नु जो आही । सागर ओइल सात तेंहि पाही ।।
ताते मंडप बचन न पाई । उमँगे सागर लेइ डुबाई ।।
ज्ञानी एक मता निरमाऊ । प्रथमै सागर तीर सिधाऊ ।।
तुम कहँ सागर लाँघि न जाई । देखत उदधि रहे मुरझाई ।।
यहि विधि मो कहँ थापिहु जायी । पीछे आपन अंश पठायी ।।
भवसागर तुम पंथ चलाओ । पुरुष नामते जीव बचाओ ।।
संधि छाप मोहि देहु बतायी । पुरुषनाम मोहि देहु सुझायी ।।
विना सन्धि जो उतरै घाटा । सो हंसा नहिं पावे बाटा ।।

ज्ञानी वचन ।

छन्द— धरम जस तुम मांगहू सो, चरित हम भल चीन्हिया ।
पंथ द्वादश तुम कहेउ सो, अमी घोर विष दीन्हिया ।।
जो मेटि डारों तोहिको अबहि, पलटि कला दिखावऊँ ।
लै जीव बंध छुडाय जम सो, अमर लोक सिधावऊं ।

सोरठा—पुरुष वचन अस नाहिं, यहै सोच चित कीन्हेऊ ।
लै पहुँचावहुँ ताहि, सत्य शब्द जो दिढ गहे ।।
द्वादश पंथ कहेउ अन्याई । सो हम तोहि दीन्ह बगसाई ।।
पहिले प्रगटै दूत तुम्हारा । पीछे लेहि अंश औतारा ।।
उदधि तीर कहँ मैं चलि जायब । जगन्नाथको माड मडायब ।।
ता पाछे हृप पंथ चलायब । जीवन कहँ सत लोक पठायब ।।

धर्मराय का कबीर साहब को धोखा देकर उनसे गुप्त भेद का पूछना ।

धर्मराय वचन ।

संधि छाप मोहि दीजे ज्ञानी । जैसे देही हंसहि सहिदानीई ॥
जो जीव मो कहँ संधि बतावे । ताके निकट काल नहिं आवे ॥
नाम निसानो भी कह दीजे । हे साहिब यह दाया कीजे ॥

ज्ञानी वचन ।

जो तोहि देहुँ संधि लखाई । जीवन काज होइहो दुखदाई ॥
तुम परपंच जान हम पावा । काल चलै नहिं तुम्हरो दावा ॥
धरमराय तोहि परगट भाखों । गुप्त अंक बीरा हम राखों ॥
जो कोई लेइ नाम हमारा । ताहि छोडितुम होहु नियारा ॥
जो तुम हंसहि रोको जायी । तो तुम काल रहन नहिं पायी ॥

धर्मराय वचन ।

कहें धर्म जाओ संसारा । आनहु जीव नाम आधारा ॥
जो हंसा तुम्हरो गुन गावें । ताहि निकट तो हम नहिं जावें ॥
जो कोइ जैहैं सरन तुम्हारी । हम सिर पग दै होवें पारी ॥
हम तो तुम सन कीन्ह ढिठाई । पिता जान कीन्ही लरिकाई ॥
कोटिन औगुन बालक करई । पिता एक हिरदय नहिं धरई ॥
जो पितु बालक देइ निकारी । तब को रच्छा करे हमारी ॥
धरमराय उठ सीस नवायो । तब ज्ञानी संसार सिधायो ॥

इति प्रमाण अनुरागसागरका ।

दशवाँ प्रकरण

सत्य सुकृतका ब्रह्मादिकोंको उपदेश देना ।

(सत्ययुगमें कबीर साहबका पृथ्वीपर आना और सत्य सुकृतजीके नामसे प्रख्यात होना और मनुष्यों को मुक्ति प्रदान करनेका वृत्तान्त ।

जब पहले ज्ञानीजी (कबीर साहब) ने पृथ्वीपर पदार्पण किया वह सत्ययुगका समय था, सत्ययुगमें आपका नाम सदैव सत्यसुकृत प्रख्यात होता है, आप सत्यगुरु पहले ब्रह्मा विष्णु और शिवके पास गये और उनको मुक्तिका मार्ग समझाया । किन्तु, ये तीनों अपने राज्य और प्रभुत्वके घमंडमें थे आपकी बातोंपर ध्यान नहीं दिया, यहाँ तक कि, अहंकार स्वार्थ तथा इर्षासे हाथ तक नहीं उठाया । तब कबीर साहबने राजा धोंधल और राजा हारीत इत्यादिको अपनी दीक्षा देकर, उनको समस्त परिवार सहित परमधामको पहुंचा दिया—

खेमसरी ग्वालिन थी उसको उसके समस्त साथियोंसहित चालीस मनुष्योंको लोकको ले गये ।

यहाँ श्रीमुनींद्रजीके सतयुगमें पृथ्वीपर आकर जीवोंको उपदेश देनेका प्रमाण देदिया जाता है—

प्रमाण अनुराग सागरका ।

कबीरवचन धर्मदास प्रति ।

जब हम देखा धर्म सकाना । तब तहँवाते कीन्ह पायाना ॥
कह कबीर सुनु धर्मनि नागर । तब मैं चलि आयऊँ भौसागर ॥

ज्ञानीजीका ब्रह्माके पास जाना ।

आया चतुराननके पासा । तासों कीन्ह सब्द परकासा ॥
ब्रह्मा चित दे सुनवे लीन्हा । पूछ्यो बहुत पुरुषको चीन्हा ॥
तबहि निरञ्जन कीन्ह उपाई । जेष्ट पुत्र ब्रह्मा मोर जाई ॥
निरञ्जन मन घंट विराजै । ब्रह्मा बुद्धि फेरि उपराजै ॥

ब्रह्मा वचन ।

निरंकार निर्गुण अविनासी । जोगि सरूप सून्यके वासी ॥
ताहि पुरुष कह वेद बखानें । आज्ञा वेद ताहि हम जानें ॥

कबीरसाहबका विष्णुकेपास पहुँचना ।

जब देखा तेहि काल दिढायो । तहँते उठ विस्नुपहँ आयो ॥
बिस्नुहि कह्यो पुरुष उपदेशा । काल वशि नहिं गहे संदेशा ॥

विष्णु वचन ।

कहे विस्नु मो सम को आही । चार पदारथ हमरे पाही ॥
काम मोच्छ धरमारथ चारी । चाहे जौन देउँ मैं सारी ॥

ज्ञानी वचन ।

सुनहु सोविस्नु मोच्छकस तोही । मोच्छ अच्छर परले तरहोही ॥
तुम नाहीं थिर थिर करा करहू । मिथ्या साखिकवन गुन भरहू ॥

कबीरसाहबका शेषनागके पास जाना ।

कबीरवचन धरमदास प्रति ।

रहे सकुच सुनि निर्भय बानी । निज हिय विस्नु आपडरमानी ॥
तब पुनिनाग लोक चलिगयऊ । तासे कछु कछु कहिबे लयऊ ॥

ज्ञानीवचन शेषनागसे ।

पुरुष भेद कोउ जानत नाहीं । लागे सभे कालकी छाहीं ॥
राखनहार कहँ चीन्हहु भाई । जम सोको तुहिं लेइ छुडाई ॥

शेषनाग वचन ।

ब्रह्मा विस्न रुद्र जिहि ध्यावैं । वेद जासुगुन निसि दिन गावैं ॥
सोइ पुरुष महिं राखनहारा । कहाकरिहै जमराज विचारा ॥

ज्ञानीवचन ।

जाहि कहहु तुम राखन हारा । सो तुमहिं लै करिहि अहारा ॥
राखनिहार और कोउ आही । करु विश्वास मिलाऊं ताही ॥

कबीरवचन धरमदास प्रति ।

सेष खानि विष तेज सुभाऊ । बचन प्रतीत हृदय नहिं आऊ ॥
सुनहु सुलच्छन धरमति नागर । तब मैं आयउँ या भवसागर ॥
आये जब मृत्यु मंडल माहीं । पुरुष अंक कहुँ देख्यो नाहीं ॥
कासो कहूँ पुरुष उपदेसा । सो तो अधिक अहै जम भेसा ॥
जो घातक ताको विस्वासा । जो रच्छक तेहि बोल उदासा ॥
जाको जपहिं सो धरि खाई । तब अस भाव चेत चित आई ॥
जीव मोह बस चीन्हत नाहीं । तब असभाव बरते हियमाहीं ॥

छन्द— अबहीं मेटि डारों कालको, प्रगट कला दिखावऊँ ।
लेऊँ जीवन छोरि जमसों, अमर लोक पठावऊँ ॥
जाहि कारनमें रटत डोलों, सो न मोकहँ चीन्हई ।
कालके बस परे ये जिव सब, तजि सुधा विष लीन्हई ॥

सोरठा—पुरुष बचन अस नाहिं, यह सोच चित्त कीन्हेऊ ।
ले पहुँचावहु ताहि, शब्द परख दिढके गहे ॥

पुनि जस चरित भयो धरमदासा । सो सब वरनि कहों तुव पासा ॥

ब्रह्मादिके ध्यान द्वारा रामनामका प्राकट्य ।

ब्रह्मा विस्नु सम्भु सनकादी । सब मिलि कीन्ही सून्य समाधी ॥
कौन नाम सुमिरों करतारा । कवनहिं नाम ध्यान अनुसारा ॥
सबहिं सून्य महँ ध्यान लगाये । स्वाति सनेह सीप ज्यों लाये ॥
तबहि निरंजन जतन विचारा । सून्य गुफा ते शब्द उचारा ॥
ररां सब्द उठा बहु बारा । मा अच्छर माया संसारा ॥
दोउ अच्छर कहँ सम कै राखा । राम नाम सबहिन अभिलाखा ॥

रामनाम लै जगहिं दिढायो । काल फन्द कोइ चीन्ह न पायो ॥
यहि विधि राम नाम उतपानी । धरमनि परखि लेहु यह बानी ॥

धरमदास वचन ।

धरमदास कहे सतगुरु पूरा । छूटेउ तिमिर ज्ञान तुव सूरा ॥
माया मोह घोर अंधियारा । तामहँ जीव परे बिकरारा ॥
जब तुव ज्ञान परगट होय भाना । छूटे मोह सब्द परमाना ॥
धन्य भाग हम तुम कहँ पाये । मोहि अधम कहँ लीन्ह जगाये ॥
अब यह कथा कहो समुझाई । सतजुग कौन जीव मुकताई ॥

सत्ययुगमें सतसुकृत (कबीर साहब) के
पृथ्वीपर आनेकी कथा ।

सतगुरु वचन ।

धरमदास सुनु सतजुग भाऊ । जिन जीवको नाम सुनाऊ ॥
सतजुग सत सुकृत मम नाऊँ । आज्ञा पुरुष जीव चेताऊँ ॥

धोंधल राजाका वृत्तान्त ।

नृप धोंधल पहँ मैं चलि गयऊ । सत्य शब्द सो ताहि सुनयऊ ॥
सत्य सब्द तिन हमरो माना । तिन कहँ दीन्ह पान परवाना ॥
छन्द—राय धोंधल संत सज्जन, सब्द मम दिढके गहो ।
सार सीत परसाद लीन्हों, चरन परसत जल लहो ॥
प्रेमसे गदगद भयो सब, तजेउ भर्म विभाव हो ।
सार शब्दहि चीन्ह लीनो, चरन ध्यान लगाव हो ॥

खेमसरीका वृत्तान्त ।

सोरठा—धोंधल शब्द चिताय, तब आयउ मथुरा नगर ।
खेमसरी आयो धाय, नारि ब्रिध गोवालि सो ॥
कहे खेमसरि पुरुष पुराना । कहँवाते तुम कीन्ह पयाना ॥
तासों कहेउ सब्द उपदेसा । पुरुष भाव अरु जमको भेसा ॥
सुना खेमसरि उपजा भाऊ । जब चीन्हा सब जमका दाऊ ॥

खेमसरीको लोकका दर्शन कराना ।

पै धोखा इक ताहि रहाई । देखे लोक तब मन पतियाई ॥
राखेउ देह हंस लै धावा । पल इक मोहि लोक पहुँचावा ॥
लोक दिखाय हंस लै आयो । देह पाय खेमसरी पछतायो ॥
हे साहेब लै चलु वहि देसा । यहाँ बहुत है काल कलेसा ॥

तासौं कहेउ सुनू यह बानी । जो मैं कहूँ लेहु सो मानी ॥

ठीका पूरनेपरही लोककी प्राप्ति होती है ।

जबलौं ठीका पूर न आई । तब लग रहो नाम लौ लाई ॥
तुम तो देखा लोक हमारा । जीवनको उपदेसहु सारा ॥

जीवोंका उपदेश करनेका फल ।

एकहु जीव सरनागत लावे । सो जीव सत्यपुरुषको भावे ॥
जैसे गऊ बाघ मुख जायी । सो कपिलहिं कोई आय छुडायी ॥
ता नरको सब सुजस बखानें । गऊ छुडाय बाघते आनें ॥
जस कपिला कहँ केहरि त्रासा । ऐसे काल जीव कहँ ग्रासा ॥
एकौ जीव जो भगति दिढ़ावे । कोटिक गऊ पुन्न सो पावे ॥

खेमसरी वचन ।

खेमसरि परी चरण पर आयी । हे साहिब मोहि लेहु बचायी ॥
मो पर दया करहु परगासा । अब नहिं परों कालके फाँसा ॥

सुकृत वचन ।

सुनु खेमसरि यह जम को देशा । बिना नाम नहीं मिटे अंदेसा ॥
पान प्रवान पुरुषकी डोरी । लेहिं जीव जप तिनका तोरी ॥
पुरुष नाम बीरा जो पावे । फिरके भवसागर नहिं आवे ॥

खेमसरी वचन ।

कहे खेमसरि परवाना दीजे । जमसों छोरि अपन करि लीजे ॥
और जीव हमरे ग्रह आहीं । नाम पान प्रभु दीजै ताहीं ॥
मोरे ग्रह अब धारिय पाऊ । मुकति संदेस जीवन समझाऊ ॥

कबीर वचन धर्मदास प्रति ।

गयेउ तासु ग्रह भाव समागम । परेउ चरन नर नारि सुधा सम ।

खेमसरीवचन परिवार प्रति ।

खेमसरी सब कहि समझायी । जन्म सुफल करुरे सब आयी ॥
जीवन मुकति चाहु जो भाई । सतगुरु शब्द गहो सो आई ॥
जमसो यही छुडावन हारे । निसचय मानो कहा हमारे ॥

कबीर वचन धर्मदास प्रति ।

सब जीवन परतीत दिढावा । खेमसरी सँग सब जिव आवा ॥

सब मिलकर विनय करते हैं ।

आय गहे सब चरण हमारा । साहिब मोर करो निस्तारा ॥

जाते जम नहिं मोहिं सतावे । जनम जनम दुख दुसह न भावे ॥

कबीर वचन धर्मदास प्रति ।

अति अधीन देखेउ नर नारी । भासों हम अस वचन उचारी ॥
जो कोइ मनिहै सब्द हमारा । ता कहँ कोइ न रोकनहारा ॥
जो जिय माने मम उपदेसा । मेटों ताकर काल कलेसा ॥
पुरुष मान परवाना पावे । जमराजा तिहि निकट न आवे ॥

सुकृतवचन खेमसरी प्रति ।

आनहु साज आरती केरा । काल कष्ट मेटों जिय केरा ॥

खेमसरी वचन ।

कहे खेमसरि कहो बिलोई । कौन वस्तु लै आरति होई ॥

सुकृत वचन– आरतीका साज ।

छन्द—– भाव आरती खेमसरि सुनु, तोहि कहौं समुझायके ।
मिष्टान पान कपूर केरा, और अष्ट मेवा लायके ।
पांच बासन स्वेत वस्तर, कदलि पत्र आच्छन्दना ।
नारियल अरु पुहुप स्वेत चौका अरु चंदना ॥

सोरठा—–यह आरति अनुमानि, आनु खेमसरि साज सब ।
पुंगीफल परमान शब्द अग चौका करे ॥

और वस्तु आनहु सुठि पावन । गो घृत उत्तम स्वेत सुहावन ॥

कबीर वचन धर्मदास प्रति ।

खेमसरि सुनि सिखापन माना । ततछन सब विस्तार सो आना ॥
सत चंदेवा दीन्हों तानी । आरति करनजुमत विधि ठानी ॥
पंच साधु तब इच्छा उपराजा । भगति भजन गुरु ज्ञान बिराजा ॥
हम चौकापर बैठक लयऊ । भजन अखंड शब्द धुन भयऊ ॥
भजन अखंड सब्द धुनि होई । दुनियाँ चाँप सके नहिं कोई ॥
सत्य सबद लै चौका साजा । जोति प्रकास अखंड विराजा ॥
सब्द अंक चौका अनुमाना । मोरत नरियर काल पराना ॥
जब भयो नरियर सिला संयोगा । काल सीस तब चम्पै रोगा ॥
नरियर मोरत बास उड़ायी । सत्य पुरुष कह जाति जनायी ॥
पाँच सब्द कहि तब दल फेरा । पुरुष नाम लीन्हो तिहिबेरा ॥
छन एक बैठे पुरुष तहँ आयी । सकल सभा उठि आरति लायी ॥
जब पुनि आरति दीन्ह मँडाई । तिनका तोरे जल अँचवाई ॥

प्रथम खेमसरि लीन्हों पाना । पाछे और जीव सनमाना ॥
दीन्हेउ ध्यान अंग समझाई । ध्यान नामते हंस बचाई ॥
रहनि गहनि सब दीन्ह दिढाई । सुमिरत नाम हंस घर जाई ॥
छन्द—हंस द्वादश बोधि सतजुग, गयउ सुखसागर करी ।
सतपुरुष चरन सरोज परसेउ विहँसिके अंकमें भरी ॥
बूझ कुसल प्रसन्न बहु विधि, मूल जीवनके धनी ।
बँधु हरषित सकल सोभा, मेलि अति सुन्दर बनी ॥
सोरठा—सोभा बरनि न जाय, धरमनि हंसन कान्तिकर ।
रवि षोडस ससि काय, एकहंस उजियार जों ॥
कछुदिन कीन्हों लोक निवासा । देखेउ आय बहुरि निजदासा ॥
निसि दिन रहा गुप्त जग माहीं । मो कहँ कोइ जिव चीन्हत नाहीं ॥
जो जीवन पर बोध्यो जायी । तिन कहँ दीन्हो लोक पठाई ॥
सत्यलोक हंसन सुख बासा । सदा वसन्त पुरुषके पासा ॥
सो देखे जो पहुँचे जाई । जिनयहि रचा सो कहाचिताई ॥

इति प्रमाण अनुरागसागरका ।

सहस्रों बार महाराज सत्यगुरु सत्य-सुकृत जी प्रगट होते है और जिस मनुष्यको सच्चा देखते उसको अपने लोकको ले जाते हैं । झूंठा तो इस धर्म्म में ठहरताही नहीं, सहस्रों और लाखों बारका क्या हिसाब है । सत्य सुकृतजी महाराज प्रत्येक स्थानपर, प्रत्येक समय उपस्थित ही रहते हैं । जो सच्चा जीव हो वह आपको जहाँ चाहे वहाँही देखे । सच्चे प्रेम तथा साधु गरुकी सेवासे आप प्रसन्न होते हैं और प्रत्येक जातिको सत्य पुरुषकी भक्ति प्रदान करके कालके जालसे छुडाते हैं । जो बडा भाग्यवान् होता है सो सत्यगुरुको पहँचानता है । जो कालका जीव है सो कदापि पहँचान नहीं सकता; कारण यह कि उसको कालके गालमें जाना है ।

ग्यारहवाँ प्रकरण ।

त्रेतायुगमें कबीर साहबका पृथ्वीपर मनुष्योंको मुक्ति प्रदान करनेके निमित्त आना, मुनीन्द्रजीके नामसे प्रख्यात होना और धर्मराय निरंजनकी चिंता ।

जब सत्ययुग बीत चुका और त्रेतायुग लगा, तब फिर सत्यपुरुषकी आज्ञा

हुई कि, ऐ ज्ञानीजी ! पृथ्वीपर जाओ और मनुष्योंकी मुक्ति करो । तब ज्ञानीजी सत्यपुरुषको दंडवत् और प्रणाम करके पृथ्वीपर आये । त्रेतायुगमें जब सत्य-सुकृतजी पृथ्वीपर आया करते हैं--तब आपका नाम मुनीन्द्रजी प्रख्यात हुआ करता है । जब मुनीन्द्रजी महाराज पृथ्वीपर आये तब धर्मराजके चित्तमें बडा संदेह उत्पन्न हुआ कि, ज्ञानीजी मेरा भवसागर उजाडा चाहैं हैं । मैं सैकडों युक्तियाँ करता हूँ परन्तु मुनीन्द्रजीसे मेरा वश नहीं चलता है । न मुनीन्द्रजी मुझसे भयभीत होते हैं और न मेरी युक्तिपर चलते हैं । सत्यपुरुषका विशेष तेज और बल मुनीन्द्रजीमें हैं, इस कारण मेरा बल नहीं चलता है । सत्य नामके प्रभावसे सब जीव बराबर सत्यलोकको चले जाते हैं, वे लोग सत्यगुरुके शब्दमें सदैव तत्पर रहते हैं और गुरुकी आज्ञासे शिर नहीं फेरते हैं इस कारण उनकी मुक्ति होती है ।

बारहवाँ प्रकरण ।

त्रेतामें जगतके मनुष्योंके विचार ।

जब त्रेतायुगमें, पहले मुनीन्द्रजी महाराज पृथ्वीपर आये तब कितने मनुष्योंसे पूछा कि, तुम्हें मुक्तिदेनेवाला कौन है ? तब वे सब मूर्ख यों उत्तर देते कि हमारी मुक्ति विष्णु महाराज करेंगे, कोई कहता है कि, शिवजी हमें छुडावैंगे, कोई कहता कि, चण्डी देवी मुझे मुक्ति देनेवाली है । मूर्खोंको इस बातका तनिक भी विचार नहीं कि, जिनका वेदनाम लेते हैं और जिनके द्वारा वे मुक्ति चाहते हैं वे सब स्वयम् फँसे हुए हैं । इनमें एक भी छूटा हुआ नहीं है । कबीर साहब कहते हैं कि, मैं क्या कहूँ इन सब मनुष्योंकी बुद्धि मारी गयी है, आपसे आप कालके गालमें जा पडते हैं, धर्म्मराजने सबकी बुद्धिपर ताला लगा दिया है, जिससे कोई नहीं सोचता कि, "फँसे हुओंको हमने छूटा हुआ समझकर अपना इष्ट समझ लिया और छुटकारेका मार्ग मान लिया है, तो हमारा परिणाम भला कैसे होगा ?" भ्रमके कुएँमें पड़कर सब जीव मरते हैं और कालपुरुष सब जीवोंको धोखा देकर उनका काम समाप्त करता है । यदि सत्यपुरुषकी आज्ञा पाऊँ, तो सबही मनुष्योंको मुक्त करके परमधामको पहुँचा दूं । कालपुरुषको भगा कर सर्व मनुष्योंको कालके बंधनसे छुड़ा दूं, परन्तु बलात् करना उचित नहीं, बलप्रयोग करनेसे प्रण और ब्रचनमें बाधा उपस्थित होगी और बात जाती रहेगी, इस कारण धीरे २ समस्त मनुष्योंको मुक्त करूँगा । जो काल है उसीको

समस्त मनुष्य सत्यपुरुष समझकर उसकी सेवा और वंदना करते हैं और अन-जानसे मृत्युके चंगुलमें जा फँसते हैं।

तेरहवाँ प्रकरण ।

मुनीन्द्रजीका रावणके पास जाना ।

इसी प्रकार मुनीन्द्रजी अपने मनमें सोचते विचारते लङ्काद्वीपमें जा पहुँचे। उस समय राजा रावण वहाँ राज करता था। जब आपने लंका नगरमें चरण रक्खा तब पहले आपको विचित्र नामका एक भाँट मिला। वह आपको पहचानकर चरणों पर गिर पडा और निवेदन किया कि आप मेरा उद्धार कीजिये। तब सत्यगुरु मुनीन्द्रजी उसपर दयाल हुए और उसको उपदेश देकर उद्धारका अधिकारी बना दिया। तब विचित्र भाँटकी स्त्रीने रानी मन्दो-दरीको समाचार दिया कि, एक सिद्ध ऐसे आये हैं, जिनकी कृपा कटाक्षसे मेरा पति बडभागी हुआ और मुक्तिमार्ग पाया। यह बात सुनकर रानी मन्दोदरी सत्यगुरुके दर्शनोंके निमित्त आयी और आपका ज्ञान सुनकर उसने भी सत्य-गुरु की दीक्षा लेली।

फिर मुनींद्र महाराज राजा रावणके दरबारको गये और द्वारपालसे कहा कि, राजा रावणको मेरे समीप बुला ले आओ। तब उस द्वारपालने निवेदन किया कि, राजा रावण बडा भयानक और अति क्रोधी है, यदि मैं जाकर उससे कहूँगा कि, आपको एक साधु बुलाता है तो वह निश्चय मेरा प्राण लेलेगा, मुझको उसका बडा भय है। तब मुनीन्द्रजीने कहा कि, द्वारपालको संदेश पहुँचानेमें कुछ भय करना नहीं चाहिये। तब वह द्वारपाल रावणके पास गया और कहा कि महाराज! एक सिद्ध आया है और वह आपको बुलाता है। यह सुनकर रावण अत्यंत क्रुद्ध हुआ और कहा कि, तूं बडा मूर्ख द्वारपाल है कि, एक निर्धन दरिद्री साधुके कहनेसे मुझको बुलाने आया, मेरा दर्शन तो शिवके पुत्र भी नहीं पाते हैं। ऐ द्वारपाल! तू इस, सिद्धके रूपका वर्णन कर। तब उसने कहा कि, ऐ महाराज! उस सिद्धका रूप तो पूर्णिमाके चन्द्रके सदृश देदीप्यमान बडा सुन्दर है और चन्द्रकेही समान उसका समस्त शरीर चमकता है, श्वेत तिलक उसके मस्तकपर है, श्वेत तुलसीकी माला और कंठी गलेमें है और उसके समस्त वस्त्रादिभी श्वेत हैं। तब रानी मन्दोदरीने राजासे कहा और समझाने लगी कि, हे राजा! यह साधु तो सत्यपुरुषका रूप हैं, आप शीघ्र चलकर उनका चरण छुओ तो तुम्हारा राज्य अक्षय हो जावेगा। आप राज्याभिमान छोड

दो और चलकर उनका दर्शन करो, संत महात्माओंसे अभिमान करना अच्छा नहीं। इतनी बातके सुनतेही रावण क्रोधसे भडक उठा, मानों बलती अग्निमें घृत पड गया और तलवार लेकर चला कि अभी उस भिखारीका शिर उतार लेता हूं। देखूं वह दरिद्री मेरा क्या बना लेता है? यह कहकर वह तुरन्त मुनीन्द्रजीके पास जा पहुँचा और आपका शिर काटनेके निमित्त तलवार मारने लगा। सत्तर बार उसने तलवार चलाया, पर मुनीन्द्रजीका एक बालभी नहीं कटा। तब रावण मनही मन लज्जित हो दाँत निकालकर रह गया। तब फिर रानी मन्दोदरीने समझाया कि, हे महराज! आप सत्य गुरुके चरणोंपर गिर पडो। तब रावण घमंडके साथ कहने लगा कि, मैं शिवजीके अतिरिक्त और किसीके सामने मस्तक नहीं नवाऊँगा और न सहायता माँगूंगा। उसी महाराजने मुझको अटल राज्य दिया है, उसकी दया तथा अनुग्रह मेरे ऊपर है, उसीको मैं प्रत्येक क्षण और प्रत्येक समय दंडवत् करता हूं! तब मुनींद्रजीनें उससे कहा कि, ऐ रावण! मैंने भलीभाँति पहचान लिया कि, तू बडा अहंकारी है। मुझको तूने नहीं पहचाना और हमारा भेद नहीं जाना, पर एक बात मे तुझसे कहता हूँ कि, रामचन्द्र आकर तुमको मारेंगे और तेरा मांस कुत्ते भी न खावेंगे। ऐसा कहकर मुनीन्द्रजी लङ्कासे चले।

चौदहवाँ प्रकरण।

मुनीन्द्रजीका अयोध्या जाना और मधुकर आदि अनेक जीवोंको उपदेश देना।

लंकासे चलकर वे अयोध्याको पहुँचे राहमें मधुकर नामक एक ब्राह्मण मिला और आपको पहचानकर चरणोंपर गिरा। उसने आपका बचन सुनकर आपपर विश्वास किया तब उस ब्राह्मणपर आपकी दया हुई और उसको और उसके समस्त बाल बच्चोंको घराने सहित मुक्ति योग्य बना दिया। रामचंद्रजी और हनुमान इत्यादिको भी शिक्षा दी। मुनीन्द्रजी महाराजकी कृपासेही रामचन्द्रजी समुद्रके ऊपर पुल बाँधकर पार उतरे। मुनीन्द्रजी महाराजनेही जब "सत्यरेखा" लिखी तो उस सत्यनामके प्रभावसे पत्थर जलपर तैरने लगे और रामचन्द्रवानरकी सेना सहित समुद्रके पार उतरकर लंकापर विजयी हुए आप उस समय बहुतेरे ऋषि मुनियोंको उपदेश करते फिरे।

इस त्रेतायुगमें सहस्रों बेर मुनींद्रजी प्रगट हुए, अधिकारी मनुष्योंको

सत्यपथपर लगाते और परमधामको पहुँचाते रहे । फिर कितनेही मनुष्योंको लेकर सत्यलोकमें पहुंचे ।

राजा जनक बडे ज्ञानी थे फिर उनको मुनींद्रजीका पूरा उपदेश मिला । रामचन्द्रको कबीरसाहबने सब योगसाधित सिखलाया और उनके समस्त संदेह मोचन किये देखो ग्रंथ अनुराग सागर और ज्ञान संबोध में, जैसे कबीर साहबने रामचन्द्रको सिखलाया तथा उनको पथ दिखलाया ।

रामचन्द्र वसिष्ठ हनुमान् इत्यादिको इस सत्यगुरुकी भली भाँति पहिचान नहीं हुई, इस कारण उनके आवागमनका दुःख दूर नहीं हुआ और मधुकर ब्राह्मण इत्यादिने उन्हें पहचानकर विश्वास पूर्वक पूर्ण भक्ति की इस कारण वे सत्य-गुरुके देशको पहुँच गये ।

अनुराग सागरका प्रमाण ।

त्रेतायुग में मुनीन्द्रजी (कबीर साहब) के पृथ्वी पर आने की कथा

सतजुग गयो त्रेता युग आवा । नाम मुनींद्र जीव समुझावा ॥
जब आयेउ जीवन उपदेशा । धरमराय चित्त भयउ अँदेशा ॥

धरमरायकी चिन्ता ।

इन भगवागर मोर उजारा । जिव लै जाहिं पुरुष दरबारा ॥
केतो छल बल करों उपाई । ज्ञानी डर मोरे नाहिं डराई ॥
पुरुष प्रताप ज्ञान तिहिं पासा । ताते मोरे न लागे फांसा ॥
इतते हम कछु पावैं नाहीं । नाम प्रताप हंस घर जाहीं ॥
परबस होय मौन सो गहिया । सोच विचार मनहिंमन रहिया ॥
छन्द—सत्यनाम प्रताप धर्मनि, हंस धर निज कै चलै ॥
जिमि देख केहरि त्रास गज, हिय कंप कर धरनी रलै ॥
पुरुष नाम प्रताप केहरि, काल गज सम जानिये ।
नाम गहि सत लोक पहुँचे, गिरा मम फुर मानिये ॥
सोरठा—सतगुरु सब्द समाय, गुरु आज्ञा निरखत रहे ।
रहे नाम लौ लाय, करम भरम मनमति तजे ॥
त्रेताजुग जबहीं पगु धारा । मृत्यु लोक कीन्ह पैसारा ॥
जीव अनेकन पूछा जाई । जमसे को तुहि लेहुँ छुडाई ॥
कहे भरम वश जीव अजाना । हमरा करता पुरुष पुराना ॥

विस्नु सदा हमरे रखवारा । जमते मोहि छुड़ावनहारा ।।
कोई महेसकी आस लगावे । कोई चंडी देवीहिं गावे ।।
कहा कहों जिव भयो बिगाना । तजेउ खसमकहिं जारबिकाना ।।
भरम कोठरी सब दइ डारा । फंदा दे सब जीवन मारा ।।
सत्व पुरुषकी आयसु पाऊँ । कालहिं मेटि छोर जिवलाऊँ ।।
जोर तो करों वचन नसायी । सहजहीं जीवन लेऊं चिताई ।।
जो ग्रासे जिव सेवै ताही । अन चीन्हे जमके मुख जाही ।।

विचित्र भाटकी कथा लंकामें ।

चहुँदिश फिर आयेउँ गढ लंका । भाट विचित्र मिलो निःसंका ।।
तिनि पुनि पूछ मुकति संदेसा । तासो कहा ज्ञान उपदेसा ।।
सुना विचित्र तबहीं भ्रम भागा । अतिअधीन ह्वै चरनन लागा ।।
कहे सरन मुहि दीजै स्वामी । तुम सतपुरुष सदा सुखधामी ।।
कीजे मोहिं किरतारथ आजू । मोरे जिवकर कीजे काजू ।।
कह्यो ताही आरतिको लेखा । खेमतरीहि भाषेउ रेखा ।।
आनेउ भाव सहित सब साजा । आरति कीन्ह शब्द धुनि गाजा ।।
त्रिन तोरि बीरा तिही दीन्हा । ताके ग्रहम काहु न चीन्हा ।।
सुमिरन ध्यान ताहिसों भाखा । पुरुष डोरि गोय नहिं राखा ।।

छन्द—– विचित्र वनिता गयी नृप ढिग, जाय रानी सो कही ।
इक जोगी सुन्दर है महामुनि, तासु महिमा का कही ।।
स्वेत कला अपार उत्तम, और नहिं अस देखऊ ।
पति हमारे सरन गहि तिहि, जन्म सुभ करि लेखेऊ ।।

मंदोदरीकी कथा ।

सोरठा—–सुनत मंदोदरी चाव, दरस लेन अकुलानेऊ ।
बिरली संग आव, कनक रतन लै पगुधरयो ।।
चरन टेकिके नायो सीसा । तब मुनींद्र पुनि दीन्ह असीसा ।।

मंदोदरी वचन ।

कहे मँदोदरी सुभादिन मोरी । विनती करों दोइ कर जोरी ।।
ऐसा तपसी कबहुँ न देखा । स्वेत अंग सब स्वेतहिं भेखा ।।
पम जिवकारज हो जिहिभांती । सो मोहि कहो तजों कुल जाती ।।
हे समरथ मोहिं करहु सनाथा । भव बूडत गहि राखो हाथा ।।
अब अति प्रिय मोहिं तुम लागे । हो दयाल सकलो भ्रम भागे ।।

मुनीन्द्रवचन मंदोदरी प्रति ।

सुनहु वधू प्रिय रावन केरी । नाम प्रताप कटे जम बेरी ॥
ज्ञान दिष्टिसों परखहु आई । खराखोट तोहि देउँ चिन्हाई ॥
पुरुष अमान अजर मान सारा । सो तो तीन लोकते न्यारा ॥
तेहि साहिब कहँ सुमिरे कोई । आवागमन रहित सो होई ॥

विचित्र वधूवचन मंदोरीको ।

चिवित्र वधू रानी समुझावा । गहो सरन जीवन मुकतावा ॥
विचित्र नारिगहिरानि सिखापन । लीन्हेसि पान तजि भ्रम आपन ॥

कबीरवचन धर्मदास प्रति ।

सुनतहि सब्द तासु भ्रम भागा । गह्यो सब्द सुचि मन अनुरागा ॥
हे साहब मोहि लीजे सरना । मेटहु मोर जन्म अरु मरना ॥
दीन्हों ताहि पान परवाना । पुरुष डोर सौंप्यो सहिदाना ॥
गद गद भई पाय घर डोरी । मिलि रंकहिं जिमि द्रव्य करोरी ॥
रानी टेकेउ चरन हमारा । ता पाछे महलन पगु धारा ॥

मुनींद्रजीका रावणके पास जाना ।

तब मैं रावनपहँ चलि गयऊ । द्वारपालसों वचन सुनयऊ ॥

मुनींद्रवचन द्वारपाल प्रति ।

तासु कह एक बात समुझाई । राजा कहँ तुम आव लिवाई ॥

द्वारपाल वचन ।

तब पौरिया विनय यह लाया । महा प्रचंड है रावन राया ॥
सिव बल हिये संक नहिं आने । काहूकेर वचन नहिं भाने ॥
महा गरब अरु क्रोध अपारा । कहों जाय तो पलमें मारा ॥

मुनींद्रवचन द्वारपाल प्रति ।

सुनत वचन मुनीन्द्र तिहि बारा । द्वारपालहिं कहे परचारा ॥
मानहु वचन जाय यहि बारा । रोम बंक नहिं होय तुम्हारा ॥
सत्य वचन तुम हमरो मानो । रावन जाइ तुरत तुम आनो ॥

प्रतिहार वचन ।

तेज देखि प्रतिहार सकाना । मुखते बोल न सका निदाना ॥
ततछन गा प्रतिहार जनायी । द्वै कर जोरे ठाढ रहायी ॥
सिद्ध एक जो हम पहँ आई । ते कह राजहिं लाव बुलाई ॥

रावनका क्रोध प्रतिहार प्रति ।

सुनि नृप क्रोध कीन्ह तेहि बारा । तैं मतिहीन आहि प्रतिहारा ।।
यह मति ज्ञान हरो किन तोरा । जो तैं मोहि बुलावन दोरा ।।
दरस मोर सिव सुत नहिं पावत । मो कहँ भिच्छुक कहा बुलावत ।।
हे प्रतिहार सुनहु मम वानी । सिद्ध रूप कहो मोहिं बखानी ।।
वरन है कौन कौन तिहि भेषा । मो सन कहो दिष्टि जस देषा ।।

प्रतिहार वचन ।

अहो राजन तेहि स्वेत स्वरूपा । स्वेतहिं माला तिलक अनूपा ।।
ससि समान तिहिं रूप विराजा । स्वेत वसन सब स्वेतहिं साजा ।।

मन्दोदरी वचन ।

कहे मंदोदरि रावन राजा । ऐसो रूप पुरुषको छाजा ।।
वेगहिं जाय गहो तुम पाई । तो तुव राज अटल होय जाई ।।
छोडहुं राजा मान बडाई । चरन टेकि जो सीस नवाई ।।

कबीरवचन धर्मदास प्रति ।

रावन सुनत क्रोध अति कीन्हा । जरत हुतासन मनु घृत दीन्हा ।।
रावन चला सस्त्र लै हाथा । तुरत जाय तिहिं काटों माथा ।।
मारा ताहि सीस खसि परयी । देखों भिच्छुक मुहि का करयी ।।
जहँ मुनींद्र तहँ रावन आया । सत्तर वार अस्त्र कर लाया ।।
लीन्ह मुनीन्द्र त्रिन कर ओटा । अति बल रावन मारै चोटा ।।
छन्द--- त्रिन ओट यहि कारने, है गर्व धारी राव हो ।
तेहि कारने यह जुगत कीन्ही, लाज रावन आय हो ।।

मन्दोदरी वचन ।

कहे मंदोदरि सुनहु राजा, गर्व छोडो लाज हो ।
पांव टेकहु पुरुषके गहि, अटल होवै राज हो ।।

रावण वचन ।

सो०-सेवा करों सिव जाय, जिन मोहि राज अटल दिये ।
ताकर टेकों पांय, पल दंडवत छन ताहिको ।।

मुनींद्र वचन ।

सुन अस वचन मुनींद्र पुकारी । तुम हो रावन गरब अहारी ।।
भेद हमारा तुम नहिं जाना । वचन एक तोहि कहों निसाना ।।
रामचंद्र मारें तुहि आयी । मांस तुम्हार स्वान नहिं खायी ।।

कबीर वचन धर्मदास प्रति ।

रावनको कीन्हो अयमाना । अवधनगर पुनि कीन्ह पयाना ॥

मधुकरकी कथा छंद–

तीन जीव परबोधि लंका, तब अवधनगरहिं आयऊ ।
विप्र मधुकर मिलेउ मारग, दरस तिन मम पायऊ ॥
मिलेउ मो कहँ चरण गहि, तब सीस नाय अधीनता ।
करि विनय बहु, लेगयो मंदिर, कीन्ह बहु बिधि दीनता ॥
सोरठा––रंक विप्र थिर ज्ञान, बहुत प्रेम मोसों किया ।
सब्द ज्ञान सहिदान, सुधा सरित बिहँसत वदन ॥
देख्यो ताहि बहुत लवलीना । तासों कह्यो ज्ञानको चीना ॥
पुरुष सँदेस कहेउ तिहिं पासा । सुनतबचन जिय भयउ हुलासा ॥
जिमि अंकुर तपै विन बारी । पूरन उदक जो मिले खरारी ॥
अम्बु मिलत अंकुर सुख माना । तैसहि मधुकर सब्दहिं जाना ॥

मधुकर वचन ।

पुरुष भाव सुन तेहि हरषंता । मोकहँ लोक दिखावहु संता ॥

मुनीन्द्र वचन ।

चलहु तोहि लै लोक दिखाओं । लोक दिखाय बहुरि लै आवों ॥

कबीर वचन धर्मदास प्रति ।

राख्यो देह हंस लै धाये । अमर लोक लैं तिहि पहुँचाये ॥
सोभा लोक देख हरषाना । तब मधुकरको मन पतियाना ॥

मधुकर वचन ।

पऱ्यो चरण मधुकर अकुलाई । हे साहिब अब त्रिषा बुझाई ॥
अत्र मोहिं लेइ चलो ग माहीं । और न जीव उपदेश सो ताहीं ॥
और जीव गृहमाहिं जो आई । तिन कहँ हम उपदेसव जाई ॥

कबीरवचन धर्मदास प्रति ।

हंसहि लै आये संसारा । पैठ देह जाग्यो द्विजवारा ॥
मधुकर घर षोडस जिव रहई । पुरुष संदेश सबनसों कहई ॥
गहहु चरण समरथके जाई । वही लेहिं जमसों मुकताई ॥
मधुकर वचन सबन मिलि माना । मुक्ति जान लीन्हों परवाना ॥

मधुकर वचन ।

कहु मधुकर बिनतीसुन लीजै । लोक निवास सबन कहँ दीजै ।

यहिं जम देश बहुत दुख होई । जीव अम्बु बूझै नहिं कोई ।।
मोहि सब जीवन लै चलु स्वामी । कृपा करहु प्रभु अंतरजामी ।।
छन्द— यहि देश है जम महा परबल, जीव सकल सतावई ।
कष्ट नाना भांति व्यापे, मरन जीवन लावई ।।
काम क्रोध कठोर त्रिस्ना, लोभ माया अति बली ।
देव मुनिगन सबहिं व्यापे, कोट जीवन दलमली ।।
सोरठा—तिहुपुर जमको देस, जीवन कहँ सुख छनक नहिं ।
मेटहु काल कलेस, लेइ चलहु निज देशकहँ ।।

कबीरवचन धर्मदास प्रति ।

बहुत अधीन ताहि हम जाना । कर चौका दीन्हा परवाना ।।
षोडश जिव परवाना पाये । तिनकहँलै सतलोक पठाये ।।
जमके दूत देख सब ठाडे । चितवहिं जे जन ऊद्ध अखाडे ।।
पहुँचे जाय पुरुष दरबारा । अंशन हंसन हरष अपारा ।।
परसे चरन पुरुषके हंसा । जनम मरनको मेटेउ संसा ।।
सकल हंस पूछी कुसलाई । कहु द्विज कुसल भये अब आई ।।
धरमदास यह अचरज बानी । गुप्त परगट चीन्ह सो ज्ञानी ।।
हंसन अमर चीर पहिराये । देह हिरम्मर लखि सुध पाये ।।
षोडश भान हंस उजियारा । अमृत भोजन करें अहारा ।।
अगर वासना त्रिप्त सरीरा । पुरुष दरस गदगद मितङ धीरा।।
यहि विधि त्रेतायुगको भावा । हंस मुक्त ये नाम प्रभावा ।।

इति अनुरागसागरान्तर्गत त्रेतायुगकी कथा समाप्त ।

पंद्रहवाँ प्रकरण ।

द्वापर युगमें कबीर साहबका पृथ्वीपर प्रकट होना और करुणामय स्वामीके नामसे प्रख्यात होकर मनुष्योंको मुक्ति देनेका वृत्तान्त ।

रानी इन्द्रमतीकी कथा ।

जब त्रेतायुग बीत गया और द्वापरयुगका समय आया तब सत्यपुरुषने कहा कि, हे ज्ञानी ! पृथ्वीपर जाकर सत्यपुरुषोंको उपदेश देकर मेरे लोकमें लेआओ । सत्यपुरुषकी जब आज्ञा हुई तब सत्यपुरुषको दंडवत् प्रणाम करके

ज्ञानीजी पृथ्वीपर आये । इस समय करुणामय स्वामी गिरिनारमें प्रकट हुए । वहाँका राजा चन्द्रविजय था और उस राजाकी रानीका नाम इन्द्रमती था। वह रानी साधुसेवा तन मनसे करती थी । साधुकी सेवा तथा प्रेममें अपना धन तथा मन सब कुछ समर्पण करती थी । जब कभी साधुको देखती तो बडे प्रेम और भक्तिके साथ उनकी सेवा किया करती और सब साधुओंका ज्ञान सुना करती थी । उस रानीकी सेवा, प्रेम और साधुभक्ति देखकर करुणामय स्वामी प्रसन्न हुए और जहाँपर रानी इन्द्रमतीका महल था उस पथसे होकर आप निकले ॥ रानी अपनी अटारीके ऊपर बैठी थी । उसने देखा कि, कोई साधु जाता है, तब उसे अपनी दासीको भेजा कि, तू जाकर उस साधुको बुलालेआ । जब वह दासी गयी और दंडवत् प्रणाम करके रानीका समाचार कहा, तब करुणामय ऋषिने उत्तर दिया कि, राजाओंमें अपने धन ऐश्वर्यका बडा अभिमान होता है, हम साधु हैं राजाओंके घर नहीं जाते । यह बात सुनकर वह दासी रानीके पास पलट आयी और कहा कि, वह साधु तो मेरे बुलानेसे नहीं आता है । यह बात सुनतेही स्वयम् रानी इन्द्रमती दौडती हुई आयी और सत्यगुरुको दंडवत् करके निवेदन करने लगी कि, हे महाराज ! आप मेरे गृहमें पधारकर मुझको सुभागी कीजिये । रानी इन्द्रमतीके प्रेम, निवेदन और नम्रताको देखकर करुणामय स्वामी उसके घर पधारे । रानीने चरण धोकर सत्यगुरुका चरणोदक लिया और बडे आदर तथा सत्कारके साथ बैठाया । जब भोजनादि खिलाकर निश्चित होचुकी तब आपके पास ज्ञान सुननेके निमित्त आयी । जब सत्यगुरुकी बातें सुन चुकी तब कहने लगी, हे महाराज ! मुझको आप अपनी दीक्षा दीजिये । तब सत्य गुरुने रानीको अपना उपदेश दिया और वह आपकी चेली हुई । सत्यगुरुने उसको अपना ज्ञान भली भाँति समझा दिया । तब तो वह इन्द्रमती और भी भक्ति और प्रेमके साथ साधुसेवा करने लगी । उसने अपने पति राजा चंद्रविजयसे कहा कि, हे महाराज ! आप भी सत्यगुरुकी दीक्षा ग्रहण कीजिये । तब राजाने कहा कि, हे रानी ! तू मेरी अर्धाङ्गिनी है, तेरी भक्तिसे मेराभी उपकार होगा और मैं मुक्ति पाऊँगा । राजा चन्द्रविजयने सत्यगुरुकी दीक्षा नहीं ली । करुणामय स्वामी रानीको उपदेश देकर चले गये ।

यहांपर अनुरागसागरका प्रमाण ।

त्रेता गत द्वापर जग आवा । तब पुनि भयो काल परभावा ॥
द्वापर जुग प्रवेस भा जबहीं । पुरुष अवाज कीन्ह पुनि तबहीं ॥

पुरुष वचन

ज्ञानी बेगि जाहु संसारा । जमसों जीवन करहु उबारा ॥
काल देत जीवन कहँ त्रासा । काटो जाय तिनहिंको फांसा ॥

ज्ञानी वचन ।

तब हम कहा पुरुषसों बानी । आज्ञा करहु सब्द परवानी ॥
कालहि मेटि जीव लै आवो । बार बार का जगहिं सिधावो ॥

पुरुष वचन ।

कहा पुरुष सुन जोग सँतायन । सब्द चिताय जीव मुकतायन ॥
जो अब कालहि मेटो जाई । हो सुत तब मम वचन नसाई ॥
अबतो परे जीव यह फंदा । जगतहि आनहु परम अनंदा ॥
काल चरित परगट ह्वै जाई । तब सब जीव चरन गह आई ॥
ज्ञान अज्ञान चीन्ह नहि जायी । जाय प्रगट ह्वै जिवन चितायी ॥
सहज भाव जग प्रगटहु जाई । जब लग जीव काल बस भाई ॥
देखहु भाव जीवनको भाई । काल चरित सब देहु बताई ॥
तोहि गहे सो जिव मुहि पैहैं । जिन परतीत नहीं जम खैहैं ॥
जाइ करहु जीवन कडिहारी । तोपर है परताप हमारी ॥
हमसों तुमसों अंतर नाहीं । जिमि तरंग जलमांहि समाहीं ॥
हम है तुमहि जो दुइकर जाना । ता घट जम सब करिहैं थाना ॥
जाहु बेगि तुम वा संसारा । जीवन खेइ उतारहु पारा ॥

कबीरवचन—धर्मदास प्रति ।

चले हम तब माथ नवायी । पुरुष आज्ञा जग मांहि सिधायी ॥
पुरुष अवाज चल्यो संसारा । चरण टेकु मम धरम लवारा ॥

निरंजन वचन ।

छंद—धरमराय तबहीं अधीन ह्वै, विनती बहुत कीन्हेउ ।
किहि कारने अब जग सिधारेहु, मोहि सो मति दीन्हेउ ॥
अस करहु जनि सब जग चितावहु, इहै विनती मैं करौं ।
तुम बंधु जेठे छोट मैं, कर जोर तुम पायन परौं ॥

ज्ञानी वचन ।

सोरठा—कह्यो धरम सुन बात, विरल जीव मोहि चीन्हिहै ॥
सब्दनको पतियात, तुम अस कै जीवन ठगे ॥

कबीरवचन—धर्मदास प्रति ।

अस कह मृत्यु लोक पगु धारा । पुनि परमारथ शब्द पुकारा ॥
छोड्या लोक लोककी काया । नरकी देह धरि तब आया ॥
मृत्यु लोकमें हम पगु धारा । जीवन सो सत शब्द पुकारा ॥
करुनामय तब नाम धराया । द्वापर जुग जब महिमें आया ॥
कोइ न बूझे हेला मेरी । बांधे काल विषय भ्रम बेरी ॥

रानी इन्द्रमती कथा ।

गढ गिरनार जबहिं चलि आये । चंद्रविजय नृप तहाँ रहाये ॥
तेहि नृप ग्रह रह नारि सयानी । पूजे साधु महातम जानी ॥
चढी अटारी बाट निहारे । संत दरस कहँ काया गारे ॥
रानी प्रीति बहुत हम जाना । तेहि मारग कहँ कीन्ह पयाना ॥
मोहि पहँ द्रिष्टि परी जब रानी । त्रिषली रसना कह यह बानी ॥

इन्द्रमती वचन ।

मारग बेगि जाहु तुम धाई । देखहु साधु आनु गहि पांई ॥

दासी वचन ।

त्रिषली आय चरन लपटानी । नृप वनिता मुख भाष सयानी ॥
कही त्रिषली रानि अस भाषा । तुव दरशन कहँ बहु अभिलाषा ॥
देहु दरश मोहि दीनदयाला । तुम्हरे दरस मिटे सब साला ॥

करुणामय वचन—दासी प्रति ।

तब ज्ञानी कहि वचन सुनावें । राज राव घर हम नहिं जावें ॥
राज काज है मान बडाई । हम साधु नृप गृह नहिं जाई ॥

दासीवचन—रानी प्रति ।

चलि त्रिषली रानीपहँ आयी । दुई कर जोरे विनय सुनाई ॥
साधु न आवे मोर बुलावें । राज राव घर हम नहिं जावें ॥
यह सुन इन्द्रमती उठि धाई । किन्ह दंडवत टेक्यो पाई ॥

इन्द्रमती वचन ।

हे साहिब मोपर करु दाया । मोरे गृह अब धरिये पाया ॥
कह रानी चलु मन्दिर मोरे । होव सुखी दरसन लिये तोरे ॥

कबीरवचन—धर्मदास प्रति ।

प्रीति देख हम भवन सिधारे । राजा घर तबहीं पग धारे ॥
प्रीति देखि तेहि भवन सिधाये । दीन्ह सिंहासन चरन खटाये ॥

चरन धोय पुनि राखेसि रानी । ले चरनाम्रित जन्म सुभ जानी ॥

इन्द्रमतीवचन ।

पुनि प्रसादको अज्ञा मांगी । हेप्रभु मोकहँ करहु सुभागी ॥
जूठन परै मो गृह माही । सीत प्रसाद लै हमहूँ खाहीं ॥

करुणामय वचन ।

सुनुरानी मुहि छुधा न होई । पंच तत्त्व पावे जेहि सोई ॥
अमृत नाम अहार है मोरा । सुनु रानी यह भाष्यो थोरा ॥
देह हमारी तत्त्व गुन न्यारी । तत्त्वप्रकृतिहि काल रचिवारी ॥
असी पंच किहु काल समीरा । पंचतत्त्वकी देह खमीरा ॥
तामहँ आदि पवन इक आही । जीव सोहंगम बोलत ताही ॥
यह जिव अहै पुरुषको अंसा । रोकसि काल ताहि दे संसा ॥
नाना फंद रचि जीव गरासै । देह लोभ तब जीवहिं फांसै ॥
जिव तारन हम यहि जग आये । जो जिव चीन्ह ताहि मुकताये ॥
धर्मराय अस बाजी कीन्हा । धोक अनेक जीव कहँ दीन्हा ॥
नीर पवन कृत्रिम किय काला । विनसि जाय बहु करै बिहाला ॥
तन हमार यहि साजहिं न्यारा । मम तन नहि सिरज्यो करतारा ॥
सब्द अमान देह है मोरा । परखि गहहु भाष्यों कछु थोरा ॥

कबीर वचन धर्मदास प्रति ।

सुनत वचन अचरज भौ भारी । तब रानी अस वचन उचारी ॥

रानी इन्द्रमती वचन ।

हे प्रभु अचरज यह होई । अस सुभाव दूजा नहिं कोई ॥

छन्द— इन्द्रमति आधीन होय कहै, कृपा करहु दयानिधी ।
एक एक बिलोय बरनहु, सब मोहिते सकलहु विधी ॥
विस्नु सम दूजा नाहि कोई, रुद्र चतुरानन मुनी ।
पंचतत्त्व है खमीर तन तिहि, तत्त्वनके वश गुन गुनी ॥

सोरठा—तुम प्रभु अगम अपार, बरनो माने किन भये ।
मेटहु त्रिषा हमार, अपनो परिचय मोहि कहु ॥

हे प्रभु अस अचरज मोहि होई । अस सुभाव दूजा नहिं कोई ॥
कौन आहु कहवांते आये । तन अचित प्रभु कहँवा पाये ॥
कौन नाम तुम्हरो गुरु देवा । यह सब वरनि कहो मोहिं भेवा ॥
हम का जानहिं भेद तुम्हारा । ताते पूछा यह व्यवहारा ॥

करुणामय वचन ।

इन्द्रमती सुन कथा सुहावन । तोहि समुझाय कहों गुनपावन ॥
देस हमार न्यार तिहुँ पुरते । अहिपुर नरपुर अरु सुरपुरते ॥
तहाँ नहीं जम कर परवेसा । आदि पुरुषको जहवाँ देसा ॥
सत्य लोक तेहि देस सुहेला । सत्य नाम गहि कीजे मेला ॥
अद्भुत जोति पुरुष की काया । हंसन सोभा अधिक सुहाया ॥
आदि पुरुष सोभा अधिकारा । पटतर कहा देहुँ संसारा ॥
द्वीपकरी सोभा उजियारी । पटतर देहुँकाहि संसारी ॥
यहि तीनों पुर अस नहिं कोई । जाकर पटतर दीजै सोई ॥
चन्द्र सूर यदि देश मँझारा । इन सम और नहीं उजियारा ॥
सत्य लोकको ऐसी बाता । कोटिक ससि इकरोम लजाता ॥
एक रोमकी सोभा ऐसी । और बदनकी वरणौ कैसी ॥
ऐसे पुरुष कान्ति उजियारा । हंसन सोभा कहों बिचारा ॥
एक हंस जस षोडस भाना । अगर बासना हंस अघाना ॥
तब कबहूँ जामिनि नहिं होई । सदा अँजोर पुरुष तन सोई ॥
कहा कहों कछु कहत न आवे । धन्य भाग जे हंस सिधाये ॥
ताहि देसते हम चलि आये । करुनामय निज नाम धराये ॥
सतयुग त्रेता द्वापर आये । तोसन वचन कहों सुखदाये ॥
जुगन जुगनमें मैं चलि आवों । जो चेते तेहि लोक पठावों ॥

इन्द्रमती वचन ।

हे प्रभु औरो जुग तुम आये । कौन नाम उन जुगन धराये ॥

करुणामय वचन ।

सतजुगमें मैं सतनाम कहायो । त्रेता नाम मुनीन्द्र धरायो ॥
अब करुनामय नाम धरावों । जो चीन्हे तिहिं लोक पठावों ॥

कबीरवचन धर्मदास प्रति ।

धरमदास तेहि कह्यो बुझायी । सतयुग त्रेता कथा सुनायी ॥
सोसुनि अधिक चाह तिन कीन्हा । और बात सो पूछन लीन्हा ॥
उत्पति परलय और बहु भाऊ । जमचरित्र सब वरनि सुनाऊ ॥
जेहि विधि षोडश सुत प्रगटाने । सो सब भाष सुनाया ज्ञाने ॥
कूर्म विदार देवी उत्पानी । सो सब ताहि कहा सहिदानी ॥
ग्रास अष्टंगी और निकासा । जेहि विधि भये मही आकासा ॥

सिन्धु मथन त्रय सुत उत्पानी । सबही कहे पाछिल महिदानी ॥
जेहि विधिजीवन जमठगिराखी । सो सब ताहि सुनायउ भाखी ॥
मुक्त ज्ञान पाछिल भ्रम भागा । हरषि सो चरन गहे अनुरागा ॥

इन्द्रमती वचन ।

जोरि पानि बोली बिलखाई । हे प्रभु जमलेहु छुड़ाई ॥
राज पाट सब तुमपर वारों । धनसम्पति यह सब तजि डारों ॥
देहु सरन मुहिं दीनदयाला । बंदिछोर मुहिं करहु निहाला ॥

करुणामय वचन ।

इन्द्रमती सुनु वचन हमारा । छोरों निश्चय बन्दि तुम्हारा ॥
चीन्हेउ मोहि परतीत दिढाना । अबदेहुँ तोहि नाम परवाना ॥
कराइ आरति लेहु परवाना । भागे जम तब दूर पयाना ॥
चीन्हो मोहि करो परतीती । लहु पान चलु भौजल जीती ॥
आनहु जो कछु आरति साजा । राजपाट कर मोहि न काजा ॥
धन सम्पति कछु मोहि न भावा । जीव चितावनयहि जग आवा ॥
धन सम्पति परमारथ लायी । करहु सन्त सन्मान बतायी ॥
सकल जीवहैं साहिब्र केरा । मोह विवस जिवपरे अंधेरा ॥
सब घट पुरुषअंश कियो बासा । कहीं प्रगट कहिं गुप्तनिवासा ॥

छन्द—— सब जीवहैं सतपुरुषके, बस मोह भरम विमानहो ।
जमराजको यह चरित सब भ्रम, जालजमपरधान हो ॥
जीवकाल वसहो लरत मोसे भ्रम वश मोहिन चीन्हही ।
तजि सुधा कीन्हो नेह विषसे, छोडिघृत अँचवे मही ॥

सोरठा——कोई इकविरला जीव, परखि शब्द मोहिचीन्हई ॥
धाय मिले निज पीव, तजे जारको आसरो ॥

इन्द्रमती बचन ।

इन्द्रमती सुन वचन अमानी । बोली मधुर ज्ञान गुन खानी ॥
मोहि अधमको तुमसुख दीन्हा । तुव परसाद आगम ममचीन्हा ॥
हे प्रभु चिन्हतोहि अब पाहू । निश्चय सत्य पुरुष तुम आहू ॥
सत्य पुरुष जिन लोक सँवारा । करहु कृपा सो मोहि उदारा ॥
आपन हिरदय अस हम जाना । तुमते अधिक और नहि आना ॥
अब भाषहु प्रभु आरति भाऊ । जो चहिय सो मोहि बताऊ ॥

कबीरवचन—धर्मदास प्रति ।

हे धरमनि सो ताहि सुनावा । जस खेमसरी सो भाषेउ भावा ॥
चौका कर लेवहु परवाना । पाछ कहों अपने सहिदाना ॥
आनेउ सकल साज तब रानी । चौका बैठि शब्द धुनि ठानी ॥
आरति कर दीन्हा परवाना । पुरुषध्यान सुमिरन सहिदाना ॥
उठि रानी तब माथ नवायी । ले आज्ञा परवाना पायी ॥
पुनि रानी राजहिं समुझावा । हे प्रभु बहुरि न ऐसो दावा ॥
गहो सरन जो कारज चाहो । इतना वचन मोर निरबाहो ॥

राजा चन्द्रविजय वचन ।

तुम रानी अरधंगी सोई । हम तुम भगत होंय नहिं दोई ॥
तेरि भगति कर देखों भाऊ । किहिविधि मोहि लेहु मुकताऊ ॥
देखों तोरि भगती परतापा । पहुँचो लोक मिटे संतापा ॥

कबीरवचन—धर्मदास प्रति ।

रानी बहुरि मोहिपहँ आयी । हम तिहिकालचरित्र लखायी ॥
रानी आइ हमारे पासा । तासो किया वचन परकासा ॥
सुनु रानी एक वचन हमारा । कालहु कला करे छल धारा ॥
काल व्याल ह्वै तो पहँ आयी । डसे तोहि सो देउँ बतायी ॥
तो कहँ शिष्यकीन हमजानी । डसे काल तच्छक ह्वै आनी ॥
अब हमतो कहँ मन्त्र लखाओं । काल गाल सब दूर भागाओं ॥
लेहु शब्द विरहुली हम पाहीं । काल गरल जेहि व्यापे नाही ॥
पनि अरु दूसर छल तोहि ठानी । सो चरित्र मैं कहों बखानी ॥
छल कर जम आवे तुव पासा । सो तुहि भेद कहों परगासा ॥
हंस वरण वह रूप बनायी । हम सब ज्ञान तोहि समझाई ॥
तुम सन कहे चीन्ह मुहि रानी । मरदन काल नाम ममज्ञानी ॥
यहि विधि काल ठगे तोहि आयी । काल भेख सब देऊँ बतायी ॥
मस्तक छोटा काल कर जानू । आखिन गुंजन रंग बखानू ॥
काल लच्छ मैं तोहि बतायी । और अंग लब सेत रहायी ॥

इन्द्रमती वचन ।

रानी चरन गहे तब धायी । हे प्रभु मोहि लोक लै जायी ॥
यह तो देश आहि जम केरा । लै चलुलोक मिटै झकझोरा ॥
यह तो देस कालकर थानो । हे प्रभु लै चलु देस अमानी ॥

करुणामय वचन ।

तब रानीसों कहेउ बुझाई । वचन हमार सुनो चितलाई ।।
अब तुम्हार तिनका जम टूटा । परिचय भयो सकल भ्रमछूटा ।।
निसिदिन सुमरो नाम हमारा । कहा करे जम धरम लबारा ।।
जवलगि ठेका पूरे आई । तब लग रहो नाम लौलाई ।।
छंद–सुमरहु नाम हमारसु निसिदिन, काल तो कहँ जब छले ।
आयु ठीका पुरे नाहिं जौलौं, तौलों जीव नाहीं चले ।।
काल कला परचंड देखु, गज रूप धर जग आवई ।
देखि केहरि गजत्रास मानें, धीर बहुरि न लावई ।।
सोरठा–गजरूपी है काल, केहरि पुरुष प्रताप है ।
रोक रहो तुम ढाल, काल खडग व्यापे नहीं ।।

इन्द्रमती वचन ।

हे साहिब मैं तुम कह जानी । वचन तुम्हार लीन्ह सिरमानी ।।
विनती एक करौं तुहि स्वामी । तुमतो साहिब अंतरयामी ।।
काल व्याल ह्वै मोहि सतायी । अरु पुनि हंस रूप भरमाई ।।
तब पुनि साहिब मो पहँ आऊ । हंस हमार लोक लै जाऊ ।।

करुणामय वचन ।

कह ज्ञानी सुन रानी बाता । तुमसों एक कहों विख्याता ।।
काल कला धरि तो पहँ आवे । नाना रंग चरित्र बनावे ।।
सब्द तोही हम दीन्ह लखाई । निसिदिन सुमरो चित्त लगायी ।।
तोरो ताहिकर मान गुमाना । कालके दावसो मिटै निदाना ।।
तेहि पीछे हम तुम लग अइहैं । मोहिं देख तब काल परैहैं ।।
हंस तुम्हार लोक कहँ जाई । काल दगा रहन न पाई ।।

कबीरवचन–धर्मदास प्रति ।

इतना कह हम गुप्त छिपाया । तच्छक रूप काल होआया ।।
चित्रसार पर तच्छक आया । रानी केर तहँ पलँग रहाया ।।
जबहीं रात बीत गइ आधी । रानी उठि चलीं सेवा साधी ।।
रानी सब कहँ सीस नवायी । चली तबै महलन कहँ आयी ।।
सेज आय रानी पौढायी । डसेउ व्याल मस्तकमहँ आयी ।।

इन्द्रमती वचन ।

इन्द्रमती अस बचन सुनाई । तच्छक डसेउ मोहिकहँ आयी ।।

सुन राजा व्याकुल है धावा । गुनी गारुडी वेगि बुलावा ॥
राय कहे मम प्राण पियारी । लेहु चिताय जो अबकी बारी ॥
तच्छक गरल दूर होय जायी । देहुँ परगना तोहि दिवायी ॥

इन्द्रमती वचन ।

छंद–सब्द बिरहुली जपेउ रानी, सुरति साहिब राखिहो ।
वैद गारुडि सब दूर भागो, दूर नरपति नाहि हो ॥
मंत्र मोहि लखाय सतगुरु गरल मोहि न लागई ।
होत सूर परकास जेहि छन, अंध अघोर नसावई ॥
सोरठा–ऐसे गुरू हमार, बार बार विनती करौं ।
ठाढ भयी उठि नार, राजा लखि हरषित भयो ॥

यमदूत वचन ।

चला दूत तब उहँवा जायी । ब्रह्मा विस्नु महेश रहायी ॥
कहे दूत विष तेज न लागा । नाम परताप अन्ध हो भागा ॥

विष्णुवचन

कहे विस्नु सुनु हो जम दूता । सेवहीं अंग करो तुम पूता ॥
छल करि जाइ लिवाइय रानी । वचन हमार लेहु तुम मानी ॥
कीन्हो दूत सेत सब अंगा । चलेउ नारि पहँ बहुत उमंगा ॥
देखत रानी छल मतिचीन्हा । आदर भाव न तनिको कीन्हा ॥

यमदूत वचन ।

तबहीं अस दूत वचन परगासा । तुम कस रानी भई उदासा ॥
जानि बूझि कस भई अचीन्हा । दीच्छा मंत्र तोहि हम दीन्हा ॥
ज्ञानी नाम हमारो रानी । मरदों काल करौं पिसमानी ॥
तच्छक काल होय तोहि खाये । तब हम राखलीन्ह तोहि आये ॥
छोडहु पलँग गहो तुम पाई । तजहु आपनी मान बडाई ॥
अब हम लैन तोहि कहँ आवा । प्रभुके दरसन तोहि करावा ॥

इन्द्रमती वचन ।

इन्द्रमती तब चीन्हेउ रेषा । जस कछु साहिब कहेउ विसेषा ॥
तीनों रेख देख चख माहीं । जरद सेत अरु राता आहीं ॥
मस्तक ओछ देख पुनि ताको । भयो प्रतीत वचनको साको ॥
जाहु दूत तुम अपने देसा । अब हम चीन्हेउ तुम्हरो भेसा ॥
काग रूप जो बहुत बनायी । हंस रूप सोभा किमि पायी ॥
तस हम तोरा रूप निहारा । है समरथ बड गुरू हमारा ॥

यमदूत वचन ।

यह सुनि दूत रोष बड कीन्हा । इन्द्रमतीसों बोले लीन्हा ॥
बार बार तोकहँ समुझावा । नाहि न समुझतमती हिरावा ॥
बोलत वचन निकट चलिआवा । इन्द्रमती पर थाप चलावा ॥
थाप चलायी मुखपर मारा । रानी खसिपरि भूमि मँझारा ॥

इन्द्रमती वचन ।

इन्द्रमती तब सुमिरन लायी । हे गुरु ज्ञानी होहु सहायी ॥
हम कहँ काल बहुत विधि ग्रासा । तुम साहिब काटो जमफाँसा ॥

कबीरवचन धर्मदास प्रति ।

सुनत पुकार मुहिं रहो न जायी । सुनहु धर्मनि यह मोर सुभायी ॥
रानी जबहीं कीन्ह पुकारा । तत छिन मैं तहांहि पगुधारा ॥
देखत रानी भयी हुलासा । मनते भग्यो कालको त्रासा ॥
आवत हमरे काल पराया । भयी सुद्ध रानीकी काया ॥

इन्द्रमती वचन ।

तब कह इन्द्रमती कर जोरी । हे प्रभु सुनु विनती यक मोरी ॥
चीन्हि परी मोहि जमकी छाहीं । अब यहि देस रहब हम नाहीं ॥
हे साहब लै चलु निज देसा । इहवां है बहु काल कलेसा ॥
इहि विधि कही भयी उदासा । अबहीं लै चलु पुरुषके पासा ॥

कबीरवचन–धर्मदास प्रति ।

तबहीं रानी लीनो संगा । मेटचो काल कठिन परसंगा ॥
तबहीं ठीका पूर भराया । ले रानी सत लोक सिधाया ॥
ले पहुँचायो मान सरोवर । जहवां कामिनि करहिं कलाहर ॥
अमी सरोवर अमी चखायी । सागर कबीर पांव परायी ॥
जब कबीर सागर कहँ परसेउ । सुरति सागर तबहीं सरसेउ ॥
तेहि आगे सुरतिको सागर । पहुँची रानी भई उजागर ॥
लोक द्वार ठाढ तब कीन्ही । देखत रानी अति सुख भीनी ॥
हंस धाय अंकम भर लीन्हा । गावहिं मंगल आरति कीन्हा ॥
सकल हंस कीन्हे सनमाना । धन्य हंस सतगुरु पहिचाना ॥
भल तुम छोडे कालके फन्दा । तुम्हरे कष्ट मिटेउ दुखदुन्दा ॥
आवहु हंस हमारे साथा । चलहु पुरुष कहँ नावहु माथा ॥
इन्द्रमती आवहु संग मोरे । पुरुष दरश होवे अब तोरे ॥

इन्द्रमती अरु सकल हंस मिलाहीं । करहिं कुतूहल मंगल गाहीं ॥
चलत हंस सब अस्तुति लावैं । अब तो दरस पुरुषको पावैं ॥
तब हम पुरुषहिं बिनती लावा । देहु दरस अब हंस ढिग आवा ॥
देहु दरस तिहिं दीनदयाला । बंदीछोर सु होहु कृपाला ॥
बिकस्यो पुहुप उठा अस बानी । सुनहु जोगसँतायन ज्ञानी ॥
हंसन कहँ अब आव लिवाई । दरस कराइ लेउ तुम आई ॥
छंद—हमचलि आयेउ हंस लग तब, हंस सकलो ले गयो ॥
पुरुष दरसन पाय सब हंसा, रूप सोभा तब भयो ॥
करहिं सु दंडवत हंस सबहीं, पुरुष पहँ चित लाइया ।
पुरुष अमि फल तब चार दीन्हों, हंस सब मिलि पाइया ॥
सोरठा—जस रविके परकास, दरस पाय पंकज खुलै ।
तैसे हंस विलास, जनम जनम दुख मिटि गयो ॥

इन्द्रमती का लोक में पहुँचकर पुरुष और करुणामय को एकही रूपमें देखकर चकित होना ।

पुरुष कान्ति सब देखउ रानी । अद्भुत अमी सुधाकी खानी ॥
गदगद होय चरन लपटानी । हंस सुबुद्धि सुजन गुनखानी ॥
दीनो सीस हाथ जीव मूला । रवि प्रकाश जिमि पंकज फूला ॥

इन्द्रमती बचन ।

कहरानी तुम धन करुनामय । जिव भ्रम मेटि आनि यहि ठामय ॥

पुरुष बचन ।

कहा पुरुष रानी समझायी । करुणामय कहँ आनु बुलायी ॥

कबीरवचन धर्मदास प्रति ।

नारि धाय आई मो पासा । महिमा देखि चकित भौ दासा ॥

इन्द्रमती बचन ।

कह रानी यह अचरज आही । भिन्न भाव कछु देखों नाहीं ॥
जो कछु कला पुरुष कहँ देखा । करुनामय तन एक विसेखा ॥
धाय चरन गह हंस सुजाना । हे प्रभु तव चरित्र सब जाना ॥
तुम सतपुरुष दास कहलाये । यह सोभा कस उहां छिपाये ॥
मोरे चित यह निश्चय आई । तुमहिं पुरुष दूजा नहिं भाई ॥
सो मैं आय देख यह ठांई । धन समरथ मुहि लिया जगाई ॥

इन्द्रमती स्तुति करती है।

तुम धन्य हो दयानिधान सुजान नाम अचिन्तयं।
अकथ अविचल अमर अस्थिर अनघ अज सु अनादियं॥
असंशय निः काम धाम अनाम अटल अखंडितं।
आदि सबके तुमहि प्रभु हो सर्व भूत समीपतं॥
सोरठा—मोपर भये दयाल, लियहु जगाई जानि निज।
काटेहु जमको जाल, दीन्हो सुखसागर करी॥

कबीरवचन धर्मदास प्रति।

संपुट कमल लगो तेहि बारा। चले हंस निज दीप मंझारा॥

करुणामय (ज्ञानी) वचन इन्द्रमती प्रति।

ज्ञानी बूझें रानी बाता। कहो हंस तुम्हरे विख्याता॥
अब दुख द्वन्द्व तोर मिटि गयऊ। षोडश भानु रूप पुनि भयऊ॥
ऐसे पुरुष दया तोहि कीन्हा। संसय सोग भेटि तुव दीन्हा॥

इन्द्रमती का अपने पति राजा चन्द्रविजयको लोकमें लाने के लिये विनती करना। इन्द्रमतीवचन।

इन्द्रमती कह दोउ कर जोरी। हे साहिब इक विनती मोरी॥
तुम्हरे चरन भागते पायी। पुरुष दर्श कीन्ह हम आयी॥
अंग हमार रूप अति सोही। इक ससय व्यापे चित मोही॥
मो कहँ भयो मोह अधिकारा। राजा तो पति आहि हमारा॥
आने ताहि हंसपति राई। राजा मोर काल मुख जाई॥

करुणामय वचन।

कहे ज्ञानी सुन हंस सुजाना। राजा नहि पाये परवाना॥
तुव तो हंस रूप अब पाया। कौन काज कहँ राव बुलाया॥
राजा भाव भगति नहिं पाया। सत्त्व हीन भव भटका खाया॥

इन्द्रमती वचन।

हे प्रभु हम जग महँ रहेऊ। भगति तुम्हार बहुत विधि करेऊ॥
राजा भगति हमारी जाना। हम कहँ वरजेउ नाहिं सुजाना॥
कठिन भाव संसार सुभाऊ। पुरुष छोडि कहुँ नारि रहाऊ॥
सब संसार देहिं तिहिं नारी। सुनतहि पुरुष डार तेहि मारी॥
राजा काज अति मान बडाई। पाखंड क्रोध और चतुराई॥

साधु संतकी सेवा करऊँ । राजाकेर त्रास ना डरऊँ ॥
सेवा करों सन्तकी जबहीं । राजा सुनि हरषित हो तबहीं ॥
जो मोहि ताजन देतो राजा । तो प्रभु मोर होत किमि काजा ॥

छन्द–रायकी हम हती प्यारी, मोहि कबहु न बरजेऊ ।
साधु सेवा कीन्ह नित हम, सब्द मारग सिरजेऊ ॥
चरन मो कहँ मिलत कैसे, मोहि हटकत राज जो ।
नाम पान न मिलत मो कहँ, कैसे सुधरत काज जो ॥

सोरठा–धन्य राय सुजान, आनहु ताहि हंसनपति ।
तुम गुरु दयानिधान, भूपति बंद छुडाइये ॥

कबीर वचन धर्मदास प्रति ।

सुन ज्ञानी बहुतै विहँसाये । चले तुरंत बार नहिं लाये ॥
गढ गिरनार बेगि चलि आया । नृपति केरि अवधि नियराया ॥
घेन्या ताहि लेन जमराई । राजहिं देत कष्ट बहुताई ॥
राजा परे गाढ महँ आई । सतगुरु कहे तहां गुहराई ॥
छोडे नृप नाहीं जमराई । ऐसी भगति चूक है भाई ॥
भगति चूक कर ऐसे ख्याला । अवधि पूर जम करै विहाला ॥
चन्द्रविजयका कर गहि लीन्हा । ततछन लोक पयाना दीन्हा ॥
रानी देखि नृपति ढिग आई । राजा केर गह्यो तब पाई ॥

इन्द्रमती वचन ।

इन्द्रमती कहे सुनहु भुवारा । मोहि चीन्हों मैं नारि तुम्हारा ॥

राजा चन्द्रविजय वचन ।

राय कहें सुनु हंस सुजाना । बरन तोर षोडस ससि भाना ॥
अंग अंग तोरे चमकारी । कैसे कहों तोहि मैं नारी ॥
तुम तो भगति कीन्ह भल नारी । हमहू कहँ तुम लीन्ह उबारी ॥
धन्य गुरू अस भगति दिढाये । तोरि भगति हम निजघर पाये ॥
कोटिन जन्म कीन्ह हम धर्मा । तब पाई अस नारि सुकर्मा ॥
हम तो राज काज मन लाया । सतगुरु भगति चीन्ह नहि पाया ॥
जो तुम मोरि होत ना रानी । तो हम जात नरककी खानी ॥
तुव गुन मोहि बरनि ना जाई । धन्य गुरु धन्य नारि हम पाई ॥
जस हम तो कहँ पायउ नारी । तैसे मिले सकल संसारी ॥

कबीरवचन धर्मदास प्रति ।

सुनत वचन ज्ञानी विहँसायी । चंद्रविजय कहँ वचन सुनायी ।।

करुणामय वचन ।

सुनो राय तुम नृपति सुजाना । जो जिव सबद हमारा माना ।।
ते पुनि आय पुरुष दरबारा । बहुरि न देखे वह संसारा ।।
हंस रूप होवे नर नारी । जो निज माने बात हमारी ।।
पुरुष दर्श निरपति चितलायी । हंस रूप सोभा अति पायी ।।
षोडस भानु रूप नृप पावा । जानु मयंकम ढार बनावा ।।

धर्मदास वचन ।

छंद–धर्म दास बिनती करे, जुग लेख जीव सुनायऊ ।
धन्य नाम तुम्हार साहिब, राय लोक समायऊ ।।
तत्व भाव ना गहेस राजा, भगति नारी ठानिया ।
नारि भगति प्रतापते, जमराजसे नृप आनिया ।।
सोरठा–धन्य नारिको ज्ञान लीन्ह बुलाय सु नृपति कहँ ।
आवागमन नसान, जगमें बहुरि न आइया ।।
इति द्वापर युगकी कथा (प्रमाण अनुराग सागर)

इस प्रकार रानीकी भक्तिसे राजा भी पार उतर गया–इस द्वापर युगमें सहस्रों बार करुणामय ऋषि प्रगट होते और सच्चे मनुष्योंको अपने लोकमें ले जाते हैं। जो करुणामय ऋषिके उपदेशको ग्रहण करता उसका लोक तथा परलोक दोनों सुधर जाता । जब जब ये तीनों युग आते हैं तब तब आप इन्हीं नामोंसे विख्यात होते हैं । सत्ययुगमें आप सत्यसुकृत कहलाते हैं, त्रेतामें मुनीन्द्र और द्वापर में करुणामय ऋषि अथवा करुणामय स्वामीके नामसे प्रख्यात होते हैं जब कोई जीव सच्चा होता है, तब सत्यगुरु इन नामों द्वारा उसको कृतार्थ करते हैं । यहाँ तक तो तीन युगोंका वृत्तान्त हुआ, अब आगे कलियुगका वृत्तान्त लिखा जाता है । +

\+ इस कलियुगमें कबीर साहेबके प्रकट होनेकी कथा खूब सुधार और बढाकर अनेक प्रकारसे स्वामी परमानन्दजीने "तालीम कबीर कलजुग" नामक ग्रन्थमें लिखा है । मेरा इरादा था कि, कबीर मन्शूरके इस अध्यायमें उसे पूरा पूरा देदेना. किन्तु, कितने अनिवार्य्य कारणोंसे वैसा कर न सका । सद्गुरुकी मर्जी होगी तो अलगही वह प्रकट किया जायगा । अनुवादक — श्रीयुगलानन्द बिहारी.

कबीर मन्शूर प्रथमभाग ।

तृतीय अध्याय ।

चौथे युग कलियुका वृत्तान्त ।

कलियुगमें ज्ञानीजीका पृथ्वीपर प्रगट होना और सत्य कबीर सैयद अहमद कबीर व शेख कबीर जिन्दा पुरुष आदि नामोंसे होकर मनुष्योंके उद्धार करने का वृत्तान्त ।

पहिला प्रकरण ।

उत्थानिका ।

द्वापरयुग जब समाप्त हो चुका और कलियुग आरंभ हुआ तब इस कलियुगमें ज्ञानीजी सत्य कबीर और कबीर साहबके नामसे प्रसिद्ध हुए मुसलमान लोग आपको सैयद अहमद कबीर और शेख कबीर कहते हैं। हिन्दू मुसलमान तथा संसार के सब कौमोंसे आप गुरु तथा पूजनीय हैं। चारों युगोंमें आपके चार नाम हैं-अर्थात् सत्यसुकृत सतयुगमें, मुनीन्द्र त्रेतामें, करुणामय स्वामी द्वापरमें और कबीर साहब कलियुगमें। इन चारों नामोंसे चारों युगोंमें आप सर्व मनुष्योंको शिक्षा दिया करते हैं। प्रत्येक समय प्रत्येक काल और प्रत्येक स्थानपर कबीर साहब सदैव पृथ्वीपर उपस्थित रहते हैं। इस कलियुगमें अनन्त बार आप पृथ्वीपर प्रगट होते हैं और फिर अन्तर्धान हो जाते हैं। परन्तु कुछ बेरकी सुध जो मुझको है उसका वृत्तान्त मैं थोडा लिखता हूं।

दूसरा प्रकरण ।

श्वपच सुदरशनको चेताना ।

जब कलियुगके आरंभ और द्वापरके अन्तमें पहले कबीर साहेब पृथ्वीपर प्रकट हुए तब काशी नगरीमें दिखलाई दिये। वह समय कृष्ण तथा पाण्डवोंका था। उस समय मनुष्योंको उपदेश करने और अपने धर्म्मकी शिक्षा देने लगे। सुदर्शन नामक एक डोम था उसने आकर सत्यगुरुको दंडवत् करके निवेदन किया कि, हे महाराज! मुझको अपनी शिक्षा दीजिये। तब सत्यगुरु उसपर दयालु हुए और उसको सत्यनामका उपदेश किया। वह सत्यगुरुकी शिक्षा पाकर बडे प्रेमके साथ साधुसेवा और भक्ति करने लगा। इसी श्वपच सुदर्शनको वाल्मीकि भक्तभी कहते है। पाण्डवोंने जब महाभारतके उपरान्त यज्ञ किया और करोडों

साधुओंने भोजन किया, स्वयम् श्रीकृष्णजीने भी भोजन किया और अनेक प्रकारके दान पुण्य हुए किन्तु उससे यज्ञ पूरा नहीं हुआ और न आकाशमें घण्टाही बजा। परन्तु जब श्वपच सुदर्शनने भोजन किया, तब सात बार आकशमें घण्टा बजा और पाण्डवोंका यज्ञ पूरा हुआ। इस श्वपच सुदर्शनका वृत्तान्त आगे लिखूंगा।

अथ कलियुगका प्रमाण।

द्वापरके अन्तमें श्वपच सुदर्शनको चेतानेकी कथा। (अनुराग सागर)

तीन जुगके सुना परभाऊ। अब कहिये कलजुगका दाऊ ॥
ता पीछे पुनि का प्रभु कीना। सोई कथा कहो परवीना ॥
कैसे पुनि आये भवसागर। सो कहिये हंसन पति नागर ॥

कबीरवचन धर्मदास प्रति।

धर्मनि पुनि आये जगमाही। रानी पति लै गये तहांहीं ॥
राख्यो ताहि लोक मंझारा। कछुक दिन रहे पुरुष दरबारा ॥
जबे पुनि कलिजुग नियराना। धरमराय तबहीं बरियाना ॥
पुरुष अवाज उठी तेहि बारा। ज्ञानी बेगि जाहु संसारा ॥
तब चले हम मस्तक नायी। द्वापरगत कलि जुग नहिं आयी ॥
परथमहि पुरुष नाम गोहराई। कासीनगर महँ दीना पाई ॥
पुरुष आयुस पाइ तेहि बारा। ततछिन पुनि आयउ संसारा ॥
कासी नगर तहां चलि आये। नाम सुदरसन सुपच जगाये ॥

श्वपच सुदर्शनकी कथा।

नाम सुदरसन सुपच रहाई। ताकहँ हम सत सबद दिढाई ॥
सबद विवेकी संत सुहेला। चीन्हा मोहि सब्दके मेला ॥
निश्चय वचन मान तिन्ह मोरा। लखी परतीत बंद तिहि छोरा ॥
नाम पान दियो मुगति संदेशा। मेटयो सकल काल कलेसा ॥
सबद ध्यान तेहि दीन्ह दिढाई। हरषित नाम सुमिरे चितलाई ॥
सतगुरु भगति करे चितलाई। छोडी सकल कपट चतुराई ॥
तात मात तेहि हरष अपारा। महाप्रेम अतिहित चितधारा ॥
धर्मनि यह संसार अँधेरा। बिनु परिचय जिव जमको चेरा ॥
मातु पितु देखे हरखाई। पान नाम हमरो नहिं पाई ॥
भगति देख हर्षित हो जायी। नाम पान हमरो नहिं पाई ॥

कबीर मन्शूर प्रथमभाग ।

तृतीय अध्याय ।

चौथे युग कलियुका वृत्तान्त ।

कलियुगमें ज्ञानीजीका पृथ्वीपर प्रगट होना और सत्य कबीर सैयद अहमद कबीर व शेख कबीर जिन्दा पुरुष आदि नामोंसे होकर मनुष्योंके उद्धार करने का वृत्तान्त ।

पहिला प्रकरण ।

उत्थानिका ।

द्वापरयुग जब समाप्त हो चुका और कलियुग आरंभ हुआ तब इस कलियुगमें ज्ञानीजी सत्य कबीर और कबीर साहबके नामसे प्रसिद्ध हुए मुसलमान लोग आपको सैयद अहमद कबीर और शेख कबीर कहते हैं। हिन्दू मुसलमान तथा संसार के सब कौमोंसे आप गुरु तथा पूजनीय हैं। चारों युगोंमें आपके चार नाम हैं—अर्थात् सत्यसुकृत सतयुगमें, मुनीन्द्र त्रेतामें, करुणामय स्वामी द्वापरमें और कबीर साहब कलियुगमें। इन चारों नामोंसे चारों युगोंमें आप सर्व मनुष्योंको शिक्षा दिया करते हैं। प्रत्येक समय प्रत्येक काल और प्रत्येक स्थानपर कबीर साहब सदैव पृथ्वीपर उपस्थित रहते हैं। इस कलियुगमें अनन्त वार आप पृथ्वीपर प्रगट होते हैं और फिर अन्तर्धान हो जाते हैं। परन्तु कुछ बेरकी सुध जो मुझको है उसका वृत्तान्त मैं थोडा लिखता हूँ।

दूसरा प्रकरण ।

श्वपच सुदरशनको चेताना ।

जब कलियुगके आरंभ और द्वापरके अन्तमें पहले कबीर साहेब पृथ्वीपर प्रकट हुए तब काशी नगरीमें दिखलाई दिये। वह समय कृष्ण तथा पाण्डवोंका था। उस समय मनुष्योंको उपदेश करने और अपने धर्म्मकी शिक्षा देने लगे। सुदर्शन नामक एक डोम था उसने आकर सत्यगुरुको दंडवत् करके निवेदन किया कि, हे महाराज ! मुझको अपनी शिक्षा दीजिये। तब सत्यगुरु उसपर दयालु हुए और उसको सत्यनामका उपदेश किया। वह सत्यगुरुकी शिक्षा पाकर बडे प्रेमके साथ साधुसेवा और भक्ति करने लगा। इसी श्वपच सुदर्शनको वाल्मीकि भक्तभी कहते है। पाण्डवोंने जब महाभारतके उपरान्त यज्ञ किया और करोडों

साधुओंने भोजन किया, स्वयम् श्रीकृष्णजीने भी भोजन किया और अनेक प्रकारके दान पुण्य हुए किन्तु उससे यज्ञ पूरा नहीं हुआ और न आकाशमें घण्टाही बजा। परन्तु जब श्वपच सुदर्शनने भोजन किया, तब सात बार आकशमें घण्टा बजा और पाण्डवोंका यज्ञ पूरा हुआ। इस श्वपच सुदर्शनका वृत्तान्त आगे लिखूंगा।

अथ कलियुगका प्रमाण।

द्वापरके अन्तमें श्वपच सुदर्शनको चेतानेकी कथा। (अनुराग सागर)

तीन जुगके सुना परभाऊ। अब कहिये कलजुगका दाऊ॥
ता पीछे पुनि का प्रभु कीना। सोई कथा कहो परवीना॥
कैसे पुनि आये भवसागर। सो कहिये हंसन पति नागर॥

कबीरवचन धर्मदास प्रति।

धर्मनि पुनि आये जगमाही। रानी पति लै गये तहांहीं॥
राख्यो ताहि लोक मंझारा। कछुक दिन रहे पुरुष दरबारा॥
जबे पुनि कलिजुग नियराना। धरमराय तबहीं बरियाना॥
पुरुष अवाज उठी तेहि बारा। ज्ञानी बेगि जाहु संसारा॥
तब चले हम मस्तक नायी। द्वापरगत कलि जुग नहिं आयी॥
परथमहि पुरुष नाम गोहराई। कासीनगर महँ दीना पाई॥
पुरुष आयुस पाइ तेहि बारा। ततछिन पुनि आयउ संसारा॥
कासी नगर तहां चलि आये। नाम सुदरसन सुपच जगाये॥

श्वपच सुदर्शनकी कथा।

नाम सुदरसन सुपच रहाई। ताकहँ हम सत सबद दिढाई॥
सबद विवेकी संत सुहेला। चीन्हा मोहि सब्दके मेला॥
निश्चय वचन मान तिन्ह मोरा। लखी परतीत बंद तिहि छोरा॥
नाम पान दियो मुगति संदेशा। मेट्यो सकल काल कलेसा॥
सबद ध्यान तेहि दीन्ह दिढाई। हरषित नाम सुमिरे चितलाई॥
सतगुरु भगति करे चितलाई। छोडी सकल कपट चतुराई॥
तात मात तेहि हरष अपारा। महाप्रेम अतिहित चितधारा॥
धर्मनि यह संसार अँधेरा। बिनु परिचय जिव जमको चेरा॥
मातु पितु देखे हरखाई। पान नाम हमरो नहिं पाई॥
भगति देख हर्षित हो जायी। नाम पान हमरो नहिं पाई॥

परगट देख चीन्हे नहि मूढा । परे कालके फन्द अगूढा ॥
जैसे स्वान अपावन रांचेउ । तिमिजगअमीछोडिविषखांचेउ ॥
नृपति युधिष्ठिर द्वापर राजा । तिनपुनिकीन्हजग्यको साजा ॥
बन्धु मार अपकीरति कीन्हा । ताते जग्य रचन चित दीन्हा ॥
क्रिस्न केर जब आज्ञा पाई । तब पांडव सब साज मंगाई ॥
जग्यकी सामग्री गहि सारी । जहँ तहँते सब साधु हंकारी ॥
पांडव प्रति बोले जदुपाला । पूरण जग्य जान तिहिं काला ॥
घंट अकास बजत सुनि आवे । जग्यको फल तब पूरन पावे ॥
संन्यासी बैरागी झारी । आये ब्राह्मण औ ब्रह्मचारी ॥
भोजन विविध प्रकार बनाई । परम प्रीतिसे सबहिं जेवांई ॥
इच्छा भोजन सब मिलि पावा । घंट नहिं बाजा राय लजावा ॥
जबही घट न बाज अकासा । चकित भयो राय बुद्धि नासा ॥
भोजन कीन सकल रिषिराया । बजा न घंटा भूप भ्रम आया ॥
पांडव तबहिं क्रिस्न पहँ गयऊ । मन संसय करि पूछत भयऊ ॥

युधिष्ठिर वचन ।

करिके किरपा कहो जदुराजा । कारन कौन घंट नहिं बाजा ॥

कृष्ण उत्तर ।

क्रिस्न अस कारन तासु बताया । साधू कोई न भोजन पाया ॥

यधिष्ठिर वचन ।

चकित हो तब पांडव कहेऊ । कोटिन साधु भोजन लहेऊ ॥
अब कहँ साधु पाइय नाथा । तिनते तब बोले जदुनाथा ॥

कृष्ण वचन ।

सुपच सुदरसनको लै आवो । आदर मान समेत जिमावो ॥
सोई साधु और नहिं कोई । पूरन जग्य जाहिते होई ॥

कबीरवचन धर्मदास प्रति ।

क्रिस्न आज्ञा जब अस पयऊ । पांडव तब ताके ढिग गयऊ ॥
सुपच सुदरसन को लै आये । विनय प्रीतिसे ताहि जेवांये ॥
भूप भवन भोजन कर जबहीं । बजा अकासमें घंटा तबहीं ॥
सुपच भगत जब ग्रास उठावा । बाजो घंट नाम परभावा ॥
तबहुं न चीन्हे सतगुरु बानी । बुद्धि नास जम हाट बिकानी ॥
भगत जीव कहँ काल सताये । भगत अभक्त सबन कहँ खाये ॥

क्रिस्न बुद्धि पांडव कहँ दीन्हा । बन्धु घात पांडव तब कीन्हा ।।
पुनि पांडव कहँ दोष लगावा । दोष लगा तेहि जग्य करावा ।।
ताहूपर पुनि अधिक दुखावा । भेजी हिमालय तिन्हैं गलावा ।।
चार बन्धु सह द्रोपदि गलेऊ । उबरे सत्य जुधिष्ठिर रहेऊ ।।
अर्जुन सम प्रिय और न आना । ताकर अस् कीन्हा अपमाना ।।
बलि हरिचन्द्र करन बड दानी । काल कीन्ह पुनि तिन्हकी हानी ।।
जिव अचेत आसा तेहि लावे । खसम बिसार जारको धावे ।।
कला अनेक दिखावे काला । पीछे जीवन करे बिहाला ।।
मुकति जानि जिव आसा लावें । आसा बांधि काल मुख जावें ।।
सब कहँ काल नचावे नाचा । भक्त अभक्त कोइ नहिं बाचा ।।
जो रच्छक तेहि खोजे नाहीं । अन चीन्हें जमके मुख जाहीं ।।
बार बार जीवन समुझावा । परमारथ कहँ जीव चितावा ।।
अस जम बुद्धि हरी सबकेरी । फंद लगाय जीव सब घेरी ।।
सत्य सबद कोई परखे नाहीं । जमदिसि होय लरैं हम पाहीं ।।
जब लगि पुरुष नाम नहिं भेटे । तब लगि जनम मरन नहिं मेटे ।।
पुरुष प्रभाव पुरुष पहँ जायी । क्रित्रिम नामते जम धरि खायी ।।
पुरुष नाम परवाना पावे । कालहिं जीत अमर घर जावे ।।

छंद—सत नाम परताप धर्मनि, हंसलोक सिधावई ।
जन्म मरनको कष्ट मेटै, बहुरि न भव जल आवई ।।
पुरुषकी छबि हंस निरखहिं, लहे अति आनँद घना ।
अंशहंस मिल करे कुतूहल, चंद्रकुमुदिनि सँग बना ।।

सोरठा—जैसे कुमुदिनि भाव, चन्द्र देखि निशि हरषई ।
तैसइ हंस सुख पाव, पुरुष दरसके पावत ।।
नहीं मलीन मुख भाव, एकप्रभाव सदा उदित ।
हंस सदा सुख पाव, सोक मोह दुख छनक नहिं ।।

जबै सुदरसन ठेका पूरा । ले सत लोक पठाया सूरा ।।
मिले रूप सोभा अधिकारा । अरु हंसन संग कुतूहल सारा ।।
षोडस भानुरूप तब पावा । पुरुष दरस सो हंस जुडावा ।।

उस कालमें एक तो श्वपचसुदर्शन[1] और दूसरे शिष्य गरुडजी हुए । ये

१ सुदर्शन भक्तकी विशेष कथा दूसरे भागमें देखो ।

दोनों शिष्य बडे प्रसिद्ध हुए और तीसरे दुर्वासा ऋषि। इन तीनोंकी खबर मुझको है और इनके अतिरिक्त जो और चेले कबीर साहबके उस समयमें हुए उनका वृत्तान्त मुझको मालूम नहीं हैं। उस समय कबीर साहब कृष्णजीको और सहस्रों ऋषयों मुनियोंको उपदेश देते फिरे, जिसने आपका उपदेश सुना और कहना माना, वह परमधामको पहुँचा और जिसको विश्वास नहीं हुवा वह कालका भोजन बना।

दूसरीबार कलियुगमें कबीर साहबके पृथ्वीपर प्रगट होनेका वृत्तान्त।

धर्मदास वचन।

हे साहिब इक विनती मोरी। खसम कबीर कहु बंदीछोरी॥
भगत सुदरसन लोक पठाया। पाछे साहिब कहां सिधाया॥
सो सतगुरु मुहिं कहो संदेशा। सुधा वचन सुनि मिटै अँदेशा॥

कबीर वचन।

अब सुनु धर्मनि परम पियारा। तुमसो कहों आगल व्यवहारा॥
द्वापर गत कलिजुग परवेशा। पुनि हम चल जीवन उपदेशा॥
धरमराय कहँ देखो आई। मोहिं देखि जम गयो मुरझाई॥

धर्मराय वचन।

कहे धरम कस मोहिं दुखावहु। बच्छ हमार लोक पहुँचावहु॥
तीनों जुग गवने संसारा। भवसागर तुम मोर उजारा॥
हार वचन पुरुष मोहि दीन्हा। तुम कस जीव छुडावन लीन्हा॥
और बन्धु जो आवत कोई। छिनमहँ ता कहँ खात बिलाई॥
तुमते कछू न मोर बसाई। तुम्हरे बल हंसा घर जाई॥
अब तुम फिर जाहु जगमाहीं। शब्द तुम्हारा सुनै कोउ नाहीं॥
करम भरम हम उसके ठाटा। जात कोइ न पावै बाटा॥
घर घर भरम भूत उपजावा। धोका दै दै जीव नचावा॥
भरम भूत हो सब कह लागे। तोहि चिन्है ताकहँ भ्रम भागे॥
मद्य मांस खावै नर लोई। मद्य मांस प्रिय नरको होई॥
आपन पंथ मैं कीन परगासा। मांस मद्य सब मानुस ग्रासा॥
चंडी जोगिन भूत पुजाओ। यही भरम महँ जग जहँ डाओ॥
बांधि बहु फंदहिं फंद फंदाओ। अंत काल कर सुधि बिसराओ॥
तुम्हरी भगति कठिन है भाई। कोई न मनिहैं कहौं बुझाई॥

ज्ञानी वचन ।

धरमराय तें बहु छल कीन्हा । छल तोहार सकलो हम चीन्हा ॥
पुरुष वचन दूसर नहिं होई । ताते तुम जीवन कहँ खोई ॥
पुरुष मोहिं जो आज्ञा देहीं । तो सब जिव होय नाम सनेही ॥
ताते सहजहिं जीव चेताऊँ । अंकुरी जीत सकल मुकताऊँ ॥
कोटी फंद जो तुम रचि राखा । वेद शास्त्र निज महिमा भाखा ॥
प्रगट कला जो धरी जग जाऊँ । तो सब जीवनको मुकताऊँ ॥
जो अस करौं वचन तब डोलैं । वचन अखंड अडोल अमोलैं ॥
जो जियरा सुभ अंकुरी होई । सब्द हमार मानी है सोई ॥
अंकुरी जीव सकल मकताओं । फंदा काटि लोक ले जाओं ॥
काटि भरम जा देहों ताही । भरम तुम्हारा मानि हैं नाहीं ॥

छन्द–सत्य शब्द दिडाम सबहीं, भ्रम तोरि सब डारिहौं ।
छल तोर सब चिन्हाइ तबहीं, नाम बल जिय तारिहौं ॥
मन वचन सत्य जो मोहि चीन्हि, एक तत्त्व लौ लाइहैं ।
तब सीस तुम्हरे पांव देइहैं, अमल लोक सिधाइहैं ॥

सोरठा–मर्दहिं तोरा मान, सूरा हंस सुजान कोइ ।
सत्य शब्द सहिदान, चीन्हहि हंस हरष अती ॥

धर्मराय वचन ।

कहै धर्म जीवन सुखदाई । वात एक मुहिं कहो बुझाई ॥
जो जिव रहै तुम्हरो लौ लाई । ताके निकट काल नहिं जाई ॥
दूत हमार ताहि नहिं पावे । मुरछित दूत मोहिं पहँ आवे ॥
यह नहिं बूझ परी मोहिं भाई । तौन भेद मोहि कहो बुझाई ॥

ज्ञानी वचन ।

सुनहु धरम जो पूछहुँ मोहीं । सो सब हाल कहौं मैं तोही ॥
सुनहु धरम तुम सत सहिदानी । सो तो सत्य शब्द आहि निरबानी ॥
पुरुष नाम है गुप्त परमाना । प्रगट नाम सत हंस बखाना ॥
नाम हमार हंस जो गहई । भवसागरसे सो निरबहई ॥
दूत तुम्हार होय बल थोरा । जब मम हंस नाम ले मोरा ॥

धर्मराय वचन ।

कहै धरम सुनु अन्तरजामी । क्रिपा करहु अब मोपर स्वामी ॥
यहि युग कौन नाम तुव होई । सो जनि मोपर राखहु गोई ॥

बीरा अंक गुप्त मन भाऊ। ध्यान अंग सब मोहि बताऊ ॥
केहि कारन तुम जाहु संसारा। सोई कहहु मोंहि भेद गुन न्यारा ॥
हमहूँ जीवन सब्द चितायब। पुरुष लोककहँ जीव पठायब ॥
मोंहि दास आपन कर लीजै। सब्द सार प्रभु मोकहँ दीजै ॥

ज्ञानी वचन।

सुनहू धर्म तुम कस छल करहू। परगट दास गुप्त छल धरहू ॥
गुप्त भेद नहिं देहौं तोहीं। पुरुष अवाज कही नहिं मोहीं ॥
नाम कबीर मोर कलिमाहीं। कबीर कहत जम निकट न जाहीं ॥

धर्मराय वचन।

कहै धरम तुम मोंहि दुरैहो। खेल एक पल हमहुँ खेलैहो ॥
ऐसी छल बुधि करब बनाई। हंस अनेक लेब संग लाई ॥
तुम्हार नाम ले पंथ चलायब। यहि विधि जीवन धोख दिखायब ॥

ज्ञानी वचन।

अरे काल तू पुरुष द्रोही। छलमति कहा सुनावसि मोही ॥
जो जिव होइ हैं सब्द सनेही। छल तुम्हार नहिं लागै तोही ॥
जौहरी हंस लहिं पहिचानी। परखिहैं ज्ञान ग्रन्थ मम बानी ॥
जेहि जीव मैं थापब जाई। छल तुम्हार तेहि देव चिन्हाई ॥

कबीरवचन धर्मदास प्रति।

यहि सुनि धरमराय गहु मौना। ह्वै अन्तरधान गयो निज भौना ॥
धर्मनि कठिन काल गति फन्दा। छलबुध कै जीवन कहँ फन्दा ॥

तीसरा प्रकरण।

जगन्नाथकी स्थापनाकी उत्थानिका।

जब कृष्णजी महाराजका शरीर छूटा तब आपकी स्थापना जगन्नाथजीमें हुई ! उस समय उड़ीसा देशका राजा इन्द्रदमन था। उस राजा इन्द्रदमन को जगन्नाथजीने स्वप्न दिखलाया कि, तू मेरा मन्दिर उठा। जगन्नाथजीकी आज्ञा-नुसार राजा मन्दिर बनाने लगा, जब मन्दिर बनकर तय्यार होगया तब समुद्र महा वेगसे लहरें मारता हुआ आया और मन्दिरको ढहाकर समेट ले गया और भूमि बराबर हो गयी। इसके उपरान्त फिर राजाने मन्दिर बनवाना आरंभ किया, फिरभी उसकी वही दशा हुई। फिर बनवाया फिर वही दशा हो गयी। इस प्रकार कई बेर राजाने मन्दिर बनवानेकी इच्छा की पर समुद्रने उसको पूर्ण होने नहीं दिया। तब राजाने दुःखित होकर उसका बनवानाही छोड दिया।

चौथा प्रकरण ।

कबीर साहबके जगन्नाथ स्थापनाकी कथा ।

इस समय कबीर साहबने अपने वचनका स्मरण किया। जैसा कि, मैं इतः पूर्व निरञ्जन और कबीर साहबकी गोष्ठीमें लिख गया हूँ कि, निरञ्जनने कबीर साहबसे निवेदन किया था कि, जब मेरा जगन्नाथका अवतार होगा, तब समुद्र मेरे मन्दिरको तोडेगा, उस समय आप कृपा करके समुद्रको हटाकर और मेरे मन्दिर को स्थापित कर देवें। तब आप वचनबद्ध हुए थे कि मैं तुम्हारा मन्दिर स्थापित कर दूंगा और समुद्रको हटा दूंगा उसी वचनके अनुसार कबीर साहब उडीसा देशमें आ उतरे और राजा इन्द्रदमनके पास जाकर बोले कि, हे राजा ! आप जगन्नाथके मन्दिरको बनाओ। तब राजाने निवेदन किया कि, महाराज ! समुद्र मंदिरको बनने नहीं देता, मेरा कुछ वश नहीं चलता, जब मैं बनाकर तय्यार प्रस्तुत करता हूँ तब वह आकर ढा जाता है, मैं क्या करूं ? तब कबीर साहबने कहा कि, हे महाराज ! मैं इसी प्रयोजनसे आपके निकट आया हूँ। अब आप प्रसन्नतापूर्वक ठाकुरद्वार बनवाओ मैं समुद्रको हटा-दूंगा, अब उसका कुछ वश नहीं चलेगा। तब राजाने पुनः मन्दिरके बनवानेका प्रबन्ध किया और मन्दिर तय्यार होने लगा। कबीर साहब समुद्र तटपर गये और एक चबूतरा बनाकर आसा[1]को अपने सामने लगा और समुद्रकी ओर मुंह करके बैठ गये। उधर ठाकुरका मन्दिर बनकर तय्यार होनेके समीप आ गया। समुद्रने देखा कि, अब तो ठाकुरका मन्दिर पूर्ण होने पर आया है, तब बडे वेगसे दौडा। उसकी लहरें आकाशको उडीं। जब वह लहरें मारता कबीर चबूतरेके समीप पहुँचा, तब सामने कबीर साहबको बैठे देखकर ठहर गया, आगेको बढ नहीं सका। फिर ब्राह्मणका स्वरूप धरकर कबीर साहबके पास आया और दंडवत् प्रणाम करके निवेदन किया कि, ऐ महाराज ! मैं तो धोखेसे आया और जगन्नाथका मंदिर ढाहना चाहा। किन्तु सामने तो आप बैठे हैं मुझमें यह सामर्थ्य नहीं है कि, आगे बढ सकूं। आप न्यायकर्ता हैं मेरा न्याय कीजिये। तब कबीर साहबने कहा कि, हे जलधे ! मैं तुम्हारा हाल जानता हूँ—परन्तु अब इस कलिकालमें जगन्नाथजीका माहात्म्य होगा तथा उनकी पूजा होवेगी इस कारण अब तुम ठाकुरका मंदिर उठने दो और किसी प्रकारकी बाधा उपस्थित मत करो। मैं तुमको इस मन्दिरके बदले द्वारकापुरी देता हूँ,

---

१ आसाका दूसरा नाम योगदण्ड हठयोगी लोग सुमेरको सीधा रखने अथवा श्वास बदलनेके लिये रक्खा करते हैं।

तुम जाकर उसको ले लो। तब समुद्र प्रसन्नतापूर्वक वहाँसे पीछे पलटा और द्वारकापुरीको डुबा लिया। तबतक उधर जगन्नाथजीका मन्दिर बनकर पूरा हो चुका।

जगन्नाथ मंदिरकी स्थापनाका वृत्तान्त। (अनु०)

धर्मदास वचन।

कह धर्मनि प्रभु मोहिं सुनाओ। आगलचरित्र कहि समझाओ॥

कबीर वचन धर्मदास प्रति।

राजा इन्द्रदमन तेहि काला। देश उडैसे को महिपाला॥

सतगुरु वचन।

राजा इन्द्रदमन तहँ रहई। मंडपकाज युगति सो कहई॥
क्रिस्न देह छांडी पुनि जबही। इन्द्रदमन सपना भा तबही॥

कृष्णका इन्द्रदमन राजाको सपना देना।

स्वप्नेमें हरि अस ताहि बताई। मेरो मन्दिर देहु उठाई॥
मोकहँ स्थापन कर राजा। तोपहँ मैं आयउ यहि काजा॥
राजा यहि विधि सपना पाई। ततछन मण्डप काम लगाई॥
मण्डप उठा पूरन भा कामा। उदधि आय बोरा तेहि ठामा॥
जब जब मन्दिर लाग उठावे। क्रोधवन्त सागर तब धावे॥
छनमें धाय सकल सो बोरे। जगन्नाथ को मन्दिर तोरे॥
मंडप सो षट बार बनायो। उदधि दौर तिहि लेत डुबाई॥
हारा नृप करि बहुत उपायी। हरिमन्दिर तहँ उठै न भाई॥
मन्दिरकी यह दशा विचारी। वर पूरव मनमांहि सम्हारी॥
हम सन काल मांग अन्याई। बाचा बन्ध तहां हम जायी॥
आसन उदधि तीर हम कीन्हा। काहू जीवन मोही चीन्हा॥
पीछे उदधि तीर हम आई। चौरा तहां बनायउ जाई॥
इन्द्रदमन तब सपना पावा। अहो राय तुम काम लगावा॥
मंडप शंक न राखो राजा। इहँवा हम आये यहि काजा॥
जाहु वेगि जनि लावहु बारा। निश्चय मानहु वचन हमारा॥
राजा मंडप काम लगायो। मंडप देखि उदधि चलि आयो॥
सागर लहर उठी तिहि बारा। आवत लहर क्रोध चित धारा॥
उदधि उमंग क्रोध अति आवे। पुरुषोत्तम पुर रहन न पावे॥

उमँगि लहर अकासे जायी । उदधि आय चौरा नियरायी ॥
दरश हमार उदधि जब पाया । अति भय मान ठठक ठहराया ॥
छंद–रूप धारचो विप्रको तब, उदधि हम पहँ आइया ।
चरन गहिके माथ नायो, मरम हम नहिं पाइया ॥
जगन्नाथ हम मोर स्वामी, ताहिते हम आइया ।
अपराध मेरो छमा कीजे, भेद अब हम पाइया ॥
सोरठा–तुम प्रभु दीनदयाल, रघुपति वोइल दिवाइये ।
वचन करो प्रतिपाल, कर जोरे विनती करों ॥

पांचवाँ प्रकरण ।

समुद्रके कोपका कारण ।

समुद्रके हरिमन्दिर तोडनेका यह कारण था कि, जब कि, रामचन्द्रका अवतार हुआ था उस समय श्रीरामचन्द्रजीने समुद्रपर जबरदस्ती किया था और सेतुबंध पुल बाँधकर पार उतरे थे। इसी कारण समुद्र आप पर रुष्ट था और आपसे बदला लेनेके निमित्त उद्यत हुआ था। रामावतार और कृष्णावतारमें तो बदला ले नहीं सका, पर जगन्नाथके अवतारमें अपना बदला लेनेके निमित्त तत्पर हुआ और उसके बदले द्वारका पुरीको डुबा दिया। इस प्रकार किसीका बदला नहीं छूटता, चाहे किसी जन्ममें बदला अवश्यही देना पडता है।

कीन्हेउ गमन लंक रघुवीरा । उदधि बांध उतरे रनधीरा ॥
जो कोई करे जोरावरि आई । अलख निरंजन वोइल दिवाई ॥
मोपर दया करहु तुम स्वामी । लेउँ ओइल सुन अंतरयामी ॥

कबीर वचन ।

वोइल तुम्हार उदधि हम चीन्हा । बोरहु नगर द्वारका दीन्हा ॥
यह सुनि उदधि धरे तब पांई । चरन टेकके चले हरषाई ॥
उदधि उमंग लहर तब धायी । बोरचो नगर द्वारका जायी ॥

छठवाँ प्रकरण ।

भ्रम विमोचन ।

कबीर साहबके जगन्नाथमें छुआछूत मिटाने का कौतुक करना ।

जब ठाकुरजीका मन्दिर बनकर पूरा होगया, तब कृष्णजीने अपने पंडेको स्वप्नमें कहा कि, ऐ पंडो ! कबीर साहबने मेरा मंदिर स्थापित करा दिया ।

अब तुमलोग आकर मेरी पूजा करो । स्वप्न देखनें पर पंडा घरसे चलकर पहले समुद्रतट पर कबीर चौतरेपर गया । वहाँ उसने कबीर साहबको बैठा देखा उस समय सत्यगुरुका वेष जिन्दाका था वैष्णव वेष नहीं था । जिन्दा वेषके साधु प्रायः मुसलमानोंमें होते हैं, इस कारण वह वेष देखकर उस ब्राह्मणने अपने मनमें भ्रम किया कि, प्रथम मैंने म्लेच्छ काही दर्शन किया, ठाकुरका दर्शन नहीं मिला। ऐसा संशय करके वह पण्डा तो ठाकुरके मन्दिरको चला गया । इधर कबीर साहबने उसके मनकी समस्त बातें जान लीं । जब वह पण्डा ठाकुरके मण्डपमें आया, तब उसका वहाँ विचित्र कौतुक दिखलायी दिया । ठाकुरका समस्त मंदिर कबीर साहबकी मूर्तियोंसे भरा हुआ है । जिस ओर वह ब्राह्मण देखता उधर वहीं कबीर साहबकी मूर्तिको उपस्थित पाता है ठाकुरकी मूर्ति कहीं दिखलाईही नहीं देती । वह ब्राह्मण अक्षत और पुष्प लिये चकित होकर खड़ा रह गया कि, मैं किसकी पूजा करूं, ठाकुर तो कहीं दिखलाई नहीं देते, समस्त मंदिर कबीर साहबकी मूर्तियोंसे भरा हुआ है । वह अपने मनमें सोचने लगा कि, इसका क्या कारण है ? अन्तमें उसने अपने दोषको जान लिया कि, मैंने जो कबीर साहब को म्लेच्छ समझा था । इस कारणही मुझको यह दंड मिला है । यह सोच समझकर वह ब्राह्मण कबीर साहबकी स्तुति करने और अपने अपराधके लिये क्षमा प्रार्थना करने लगा । जब पण्डाने सत्यगुरुकी अत्यंत स्तुति की और अत्यंत नम्रता-पूर्वक अपने दोषोंके निमित्त क्षमा प्रार्थना किया, तब आप दयालु हुए और अपनी सब मूर्तियोंको समेट लिया, केवल एक मूर्ति रह गयी और ठाकुरकी मूर्ति दिखाई देने लगी । तब कबीर साहबने उस ब्राह्मणसे कहा कि, ऐ पंडा ! अब मेरी आज्ञा है कि, तुम ठाकुरको पूजो, पर इस बातका ध्यान रखना कि, आजके दिनसे इस जगन्नाथपुरी में छूत न रहेगी और जाति-पाँतिका भेद तनिक भी नहीं रहेगा । प्रत्येक जाति एक दूसरे जातिके साथ निधड़क भोजन करेगी । सो अब तक पुरुषोत्तम पुरीमें वही नियम प्रचलित है । सब जातिके लोग एक स्थानपर भोजन करते हैं, कोई किसीके जूठेका कुछभी ध्यान नहीं करता । इतनी बात कहकर कबीर साहब तो वहाँसे अन्तर्धान हो गये, और जगन्नाथकी पूजा संसारमें प्रचलित हुई ।

मंडप काम पूर तब भयऊ । हरिको थापन तहँवा कियऊ ।।
तब हरि पंडन स्वपन जनावा । दास कबीर मोहि पहँ आवा ।।
आसन सागर तीर बनायी । उदधि उमंग नीर तहँ आयी ।।
दरस कबीर उदधि हटि गयऊ । यहि विधि मंडप मोर बचयऊ ।।

पंडा उदधि तीर चलि आये । करि अस्नान मंडप चल जाये ।।
चौरातीर पहुँचे जब पण्डा । मोहि देखि मन धरे पखंडा ।।
पंडन अस पाखंड लगायी । प्रथम दरस मलेच्छ दिखायी ।।
हरिके दर्शन मैं नहिं पावा । प्रथमहिं हम चौरा लग आवा ।।
तब हम कौतुक एक बनाये । कहों वचन नहिं राखुं छिपाये ।।
मंडप पूजन पंडा गयऊ । तहवाँ एक चरित अस भयऊ ।।
जहँ लग मूरति मंडप माहीं । भये कबीर रूप धर ताहीं ।।
हरि मूरति कहँ पंडा देखा । भये कबीर रूप धर भेखा ।।
अच्छत पुहुप ले विप्र भुलाई । नहिं ठाकुर कहँ पूजहुँ भाई ।।
देखि चरित्र विप्र सिर नाया । हे स्वामी तुम मरम न पाया ।।

पंडा वचन ।

हम तुम काहि नहीं मन लाया । ताते मोहि चरित्र दिखाया ।।
छमा अपराध करो प्रभु मोरा । बिनती करों दोइ कर जोरा ।।

कबीर वचन ।

छन्द—वचन एक मैं कहों तोसो, विप्र सुन तैं कान दे ।
पूज ठाकुर दीन्ह आयसु, भाव दुविधा छाड दे ।।
भ्रम भोजन करे जो जिव, अंग हीन हो ताहिको ।
करे भोजन छूत राखे, सीस उलटे वाहिको ।।
सोरठा—चौरा करि व्यवहार, भ्रम विमोचन ज्ञान दृढे ।
तहँते कियो पसार, धर्मदास सुनु कानदे ।।

सातवाँ प्रकरण ।

स्वामी रामानुजाचार्य और जगन्नाथपुरी ।

वैष्णवाचार्य रामानुज स्वामी जब उत्पन्न हुए और अपना धर्म्म पृथ्वीपर प्रचलित किया, तब दक्षिण देशमें उनके धर्मका अच्छा प्रचार हुआ । जब आप पुरुषोत्तमपुरमें गये और यह इच्छा की कि, इस जगन्नाथपुरीमें आचार चलाऊँ । तब रामानुज स्वामीसे जगन्नाथजीने स्वप्नमें कहा कि, मेरी पुरीमें तुम्हारा आचार नहीं चलेगा, तुम इस ध्यानको अपने मनसे निकाल दो, परन्तु रामानुज-स्वामीने इस विचारको नहीं त्यागा । जब एक रातके समय रामानुज-स्वामी सोगये तब जगन्नाथजीने उनको जगन्नाथपुरीसे उठाकर श्रीरंगपुरीमें धर दिया । जब प्रातःकाल स्वामीजी उठे तब देखा कि, मैं श्रीरंगपुरीमें आन

पहुँचा । तब उन्होंने अपने विचारोंको छोड दिया और पुरुषोत्तमपुरमें आचार नहीं चला । इस बातको जो कोई जानना चाहे वह भक्तमालको देखले ।

आठवाँ प्रकरण ।

तीसरी बार कलियुगमें कबीर साहबका पृथ्वीपर प्रगट होना और श्वपच सुदर्शनके माता-पिताको मुक्तिका उपदेश देना और बालरूप धारण करके कमलोंके पुष्पोंमें तालाबपर लक्ष्मणा ब्राह्मणीको मिलनेकी कथा ।

श्वपच सुदर्शनजी कबीर साहबके शिष्य हुए परन्तु उनके माता पिता नहीं हुए । जब सुदर्शनजीकी देह छूटी और सत्य लोकको गये, तब उन्होंने सत्य-कबीरसे निवेदन किया कि, हे सद्गुरु ! मेरे माता पिताकी मुक्ति करो । तब कबीर साहब उनका निवेदन स्वीकार करके पृथ्वीपर आये । श्वपचके जो माता पिता थे वह दोनों डोमका शरीर छोडकर ब्राह्मण और ब्राह्मणी हुए थे, और चन्द्रवारे नगरमें रहते थे । पहले उनका नाम कुलपति और महेसरी फिर नरहर लक्ष्मणा हुआ । इस चन्द्रवारे नगरके तडागमें कबीरसाहब कमलोंके पुष्पोंमें एक छोटे बच्चेकी सूरत होकर रहे । प्रातःकाल वह ब्राह्मणी जब स्नान करनेको आयी तब स्नानादिसे निवृत्त होकर अपना अंचल पसारकर सूर्य भगवान्‌से पुत्र मांगने लगी क्योंकि, वह निःसंतान थी । उसी समय गुप्तरीतिसे कबीरसाहब उस ब्राह्मणीके अंचलपर आगये । इसपर उस ब्राह्मणीको निश्चय हुआ कि, सूर्य भगवानने मुझको बेटा दिया है वह पुत्रको लेकर अपने घरको आयी । ब्राह्मण ब्राह्मणी दोनों प्रसन्न होकर सेवा करने लगे । जब कबीर साहबको रात्रिके समय पलँगपर लेटाते और प्रातःकाल बिछौना झाड़ते तब प्रति दिवस एक तोला सुवर्ण बिछौनेके नीचेसे निकल पड़ता । इस प्रकार वे ब्राह्मण तथा ब्राह्मणी धनाढच होगये, और कबीर साहबकी दयासे उनका दारिद्रच दूर हो गया । देखो ग्रंथ अनुरागसागर और निर्भयज्ञान इत्यादि वहाँ यह कथा विस्तारसे है । प्रमाण आगे ।

जब कबीर साहब, कुछ बड़े हुए तब दोनोंको सिखलाने लगे कि मैं तुम्हारा गुरु हूँ, तुम हमारा शब्द मानो तो मैं तुम्हारा उद्धार करूँगा और तुम्हारे आवा-गमनका बंधन टूट जावेगा । पर उन दोनोंको सत्यगुरुके कहनेका निश्चय नहीं हुआ । बालक जानकर कहना नहीं माना, तब कबीर साहब उनके गृहसे अन्तर्धान हो गये ।

नवाँ प्रकरण।

कबीरसाहबकी ४ थी, ५ वीं, ६ छठी और ७ वीं बार प्रकट होनेका वृत्तान्त।

४–"मूसा बोध" जिसमें कबीर साहबका हजरत मूसाको शिक्षा देनेका वर्णन है।

५–"दाऊद बोध" जिसमें सद्‌गुरुने हजरत दाऊदको उपदेश किया है।

६–"सुलेमान बोध" जिसमें कबीर साहबने नबी सुलेमान बादशाहको शिक्षा दी है।

७–"ईसा बोध" इसमें कबीर साहबने ईसाको उपदेश किया है।

ये चारों बोध, मैंने अभीतक नहीं देखे, अपने कानोंसे तो सुना है कि, ये सब ग्रन्थ कबीर पंथियोंके पास हैं। ढूंढने तथा देखनेसे इनकी व्यवस्था प्रगट होगी। ×

दशवाँ प्रकरण।

मुहम्मद साहबको चेतानेका वृत्तान्त।

आठवीं बार कलियुगमें कबीर साहबका पृथ्वीपर प्रगट होना।

(मुहम्मद साहबको रक्तपातसे हटाना, मेआराज मुहम्मद होना और मुहम्मद साहबको सत्यपुरुषका दर्शन कराना। सब आकाशोंकी सैर कराकर फिर मक्कः नगरमें प्रवेशित कराना और मुहम्मद तथा समस्त मुहम्मदियोंको मुक्तिकी आज्ञा कराना तथा रसुलल्ला:को पाँच कलमा पढाना। चार कलमा प्रगट करने और पाँचवाँ कलमा गुप्त रखनेके निमित्त सावधान करना और मुहम्मदसाहबको आशीर्वाद देकर अन्तर्धान होजानेका वृत्तान्त वर्णन।)

मुहम्मद साहबको चालीस वर्षकी वयमें पैग़म्बरी मिली तब उन्होंने मुसलमानी धर्म्मका प्रचार किया। वह बलपूर्वक लोगोंको मुसलमान करने लगे और बहुत लोगोंको बंदी बनाकर उनके हाथ पैरमें जञ्जीरें डाल दीं और आज्ञा दी कि, जो मुसलमान होजावे उसको जीवित रक्खो तथा अन्यान्यका घात करो। बहुतसे मनुष्य मारे गये, जब व्यथित मनुष्योंकी क्रंदनध्वनि सत्यलोकपर्यन्त पहुँची, तब सत्यपुरुषको दया आयी और मुक्तामणिजीसे कहा कि, हे मुक्तामणिजी!

× ये सब ग्रन्थ मेरे पुस्तकालयमें उपस्थित हैं, सद्‌गुरुकी कृपा होगी तो समयपर प्रकट करनेका प्रयत्न किया जायगा.
अनुवादक–श्रीयुगलानंद बिहारी.

(कबीर साहब !)पृथ्वीपर जाओ कालपुरुष मनुष्योंको अत्यंत पीड़ा पहुँचा रहा है, उनको उसके हाथसे बचाओ ।

तब मुक्तामणि साहब पृथ्वीपर आये और मक्का: नगरमें उतरे, देखा तो मुहम्मद साहब मस्त हाथीपर सवार, बड़े प्रतापके साथ शासन कर रहे हैं। उस समय कबीर साहबबोले सलाम अलैक और मुहम्मद साहबने सलामका उत्तरदेकर पूँछा कि आप कौन हो और कहाँसे आये हो ? तब कबीर साहबने उत्तर दिया कि, मैं सत्यपुरुषकी आज्ञा लेकर आया हूँ, आपसे पूँछना चाहता हूँ कि, आप किसकी आज्ञासे ऐसी हिंसा करते हो । तब मुहम्मद साहबने कहा कि हमको लाहूतसे आज्ञा मिली है । तब कबीर साहबने कहा कि, लाहूत स्थान तो वार है, पारकी सुधि आपको नहीं । वह परमेश्वर जो समस्त संसारका स्वामी है उसकी यह आज्ञा नहीं है और व्यर्थके रक्तपातसे वह कदापि प्रसन्न नहीं होता, लाहूत मध्यका स्थान है वह संसारका यथार्थ कर्ता नहीं है। तब मुहम्मद साहबने कहा कि, इसका निश्चय मुझे तब हो जब मैं वह सत्यलोक स्वचक्षुसे देखूं । इस बात पर कबीर साहबने मुहम्मद साहबको सत्यपुरुषका दर्शन कराया और फिर मक्काको ले आये और रक्तपात तथा मारकाट बंद कराया तथा मुहम्मद साहबको शिक्षा दिया ।

ग्यारहवाँ प्रकरण ।

मुहम्मद साहबके मेआराजके विषयमें मतभेद ।

मुहम्मद साहबके मेआराजके बारेमें मुसलमान अनेक अनुमान करते हैं । जैसा कि, हदीसों तथा तारीख मुहम्मदीमें लिखा है कि, मुहम्मद साहबके नबी होनेके बारहवें वर्षमें यह घटना हुई कि, जिबराईल तथा मेकाइल रात्रिके समय रसूलल्लाहके निकट आये और उनका हृदय फाडकर प्रत्येक प्रकारके पाप-युक्त दूषित रक्तसे हृदयको विशुद्ध किया और बुराक़ घोडा लाकर उसपर इन्हें सवार कराया जिबराईलने रिकाब पकडी और मेकाईलने बाग थामी । पहले बडे हैकल अर्थात् बैत अकसाके द्वारपर पहुंचे, बहुतसे फरिश्ते इस स्थानपर उनको सलाम करनेके निमित्त आये, हजरत घोडेको बांधकर आप हैकलके भीतर गये और वहां आपने समस्त पैगम्बरोंकी आत्माओंको देखा और उनसे वार्तालाप किया. फिर एक सोपान आकाशसे उतरी जिसको अरबी भाषामें मेआराज बोलते हैं वह सीढी पृथ्वीसे अकाशपर्यन्त रक्खी गई और मुहम्मद साहब बुर्राक पर सवार होकर मेआराज सीढी पर चढे और उसके डंडोंपर चढ़ते हुए आकाशको चले । जब पहले आकाशपर पहुँचे तब जिबराईलने पहले आकाशका द्वार खटखटाया

इसराईल नामक फरिश्तः बारह सहस्र फरिश्तों सहित द्वारकी रक्षा किया करता था। वह बोला कौन है ? तब जिबराईलने उत्तर दिया कि, मैं जिबराईल हूँ और मेरे साथ मुहम्मद साहब हैं तब उसने द्वार खोल दिया और सलाम किया।

फिर हजरत आदम मिले और कहा, धन्य है आइये बैठिये। आदमके दाहिने तथा बाएँ दो द्वार थे, एक नरकका तथा दूसरा वैकुण्ठका। एक ओर देखकर हजरत आदम रो थे और दूसरी ओर देखकर हँसते थे।

इसी प्रकारके वार्तालाप करते और प्रत्येक द्वारको खुलवाते मुहम्मद साहब ऊपर गये। जब सदर स्थानके आगे चले तब जिबराईलने कहा कि, अब आप आगेको चलिये। स्वयम् जिबराईल पीछेको हो लिये, आगे चलकर एक सुवर्ण खचित परदा मिला जब जिबराईल इस परदेके समीप पहुँचे तब भीतरसे आवाज आई कि, द्वार पर कौन है ! तब जिबराईलने उत्तर दिया कि, मैं जिबराईल हूँ और मेरे साथ मुहम्मद हैं। जिबराईलने हजरत मुहम्मदसे कहा कि, अब इससे आगे जानेकी मुझको आज्ञा नहीं है आप अकेले जाइये। तब सत्रह परदे मुहम्मद साहबने अकेले तै किये। प्रत्येक परदेकी मोटाई पांच सौ वर्षकी राह थी अर्थात् प्रत्येक परदा एक दूसरेसे पांच सौ वर्षके मार्गके अन्तर पर था। आगे चल कर वह बुर्राक भी रह गया। तब वहां पर एक पक्षी जिसको रफ़रफ़ कहते हैं, मुहम्मद साहबकी सवारीके निमित्त आया। इस रफ़रफ़पर सवार होकर रसूल-अल्लाः खुदाके सिंहासनके समीप पहुँचे। रसूलअल्लाः और अल्लाःमें बहुत वार्तालाप हुई। मुहम्मद साहबके आने-जानेमें अनेक घटनायें हुईं जिसके लिखनेका स्थान इस स्थानपर नहीं है। पांचों रोजे, निमाज और समस्त आज्ञाएँ वहाँसे मिलीं यह सब बातें एक पलभरमें हुईं। प्रातः काल उठकर मुहम्मद साहबने यह सब बातें दरबार आममें कही उन्स और अबूबक्रने सुनतेही इस बातका विश्वास करलिया। पर अबूजहलने यह बात सुनकर लोगोंमें बड़ा उपहास किया। जिसको सुनकर मुसलमानी धर्मसे कितनेही लोग विमुख हो गये। मुहम्मदी दीनके पंडितोंमें इस बातका मतभेद है, किसीका कथन है कि, मुहम्मद साहबने स्वप्न मात्र देखा था और कोई रूह तथा कोई शरीरसे मेआराज कहते हैं और किसीका कथन है कि, केवल बैतअक़सापर्यन्त मेआराज हुआ था। इस बातपर हदीसोंके भिन्न २ कथन हैं।

इस मेआराज मुहम्मदके विषयमें लोगोंके अनेक कथन तथा भांति-भांतिके ध्यान हैं। सूरतं नजम अर्थात् तिरपनवीं सूरतमें वर्णन किया है कि, मुहम्मद साहब ने एक तेज स्वरूप व्यक्तिको देखा और फ़मुस्सरीन लिखते हैं कि, यह

तेजस्वरूप व्यक्ति हजरत जिबराईल थे। उस धर्मके धुरीण विद्वानोंमें मतभेद है–एक मण्डली उनमेंकी कहती है कि, यह तेजस्वरूप व्यक्ति जिबराईल फिरश्तः नहीं बरन् स्वयम् जगदीश्वर था। सुतरां काजी बेजावी लिखता है –

وَقِيلَ الضَّمَائِرُ كُلُّهَا لِلّٰهِ تَعَالَىٰ وَهُوَ الْمَعْنِيُّ بِشَدِيدِ الْقُوَىٰ كَمَا فِي قَوْلِهِ ذُو الْقُوَّةِ الْمَتِينُ ۞

अर्थात् सब जमीर खुदाके निमित्त हैं और तात्पर्य है महाबलसे जिसका अर्थ है–बड़ा बलवाला। जैसे कि कुरानमें विवरण हुआ (अन्नदाता और सायब कूवतमतीं) अर्थात् दृढ बलका स्वामी।

मोआलिम तफ़सीर सूरत नजममें यह लिखता है —

وَاخْتَلَفُوا فِي الَّذِي رَآهُ ۞

अर्थात् और लोगोंने मतभेद किया है कि, मुहम्मदने देखा वह क्या था।

فَقَالَ رَأَى جِبْرَائِيلَ وَهُوَ قَوْلُ ابْنِ مَسْعُودٍ وَعَائِشَةَ ۞

तब कहा एक मंडलीने कि, उसने देखा जिबराईलको और यह कथन इब्न मसऊद आयशःका है।

وَقَالَ آخَرُونَ هُوَ اللّٰهُ عَزَّ وَجَلَّ ۞

अर्थात् कहा औरोंने कि वह (जिसको देखा मुहम्मदसाहबे) अल्लाह इजक अल्ल था।

ثُمَّ اخْتَلَفُوا فِي رُؤْيَتِهِ فَقَالَ بَعْضُهُمْ جَعَلَ بَصَرَهُ فِي فُؤَادِهِ فَرَآهُ بِفُؤَادِهِ وَهُوَ قَوْلُ ابْنِ عَبَّاسٍ ۞

अर्थात् पुनः मतभेद किया लोगोंने परमेश्वरके देखनेके विषयमें अर्थात् परमेश्वरको जो देखा तो किस प्रकार देखा, निदान कहा कुछ मनुष्योंने कि, अवश्य परमेश्वरने दृष्टि दी, उसके हृदयमें अर्थात् उसके हृदयचक्षु खोल दिये, निदान देखा उसने हृदयसे यह इब्न अब्बासका कथन है।

फिरतवातर लेखकोंका अनुवाद करनेके उपरान्त मुआलिममें यह कथन इब्न अब्बासका लिखा है –

عن ابن عباس ما كذب الفؤاد ما رأى ولقد رآه نزلة أخرى قال رآه بفؤاده مرتين ۝

अर्थात् इब्न अब्बासका यह कथन है नहीं मिथ्या कहा हृदयमें जो उसने देखा उसको ।

एक स्थानपर और उल्लेख किया गया है कि, देखा उसको साथ हृदय अपनेके दो बेर । इसके उपरान्त मोआलममें यह लिखा है —

अर्थात् एक मण्डलीवाले यह मानते हैं कि, देखा उसको अपनी दृष्टिसे अर्थात् मुहम्मद साहबने परमेश्वरको स्वचक्षुसे प्रत्यक्ष किया और यह कथन है हसन उन्स और अकरमका । उन्होंने कहा है कि, देखा मुहम्मदनेअपने परमेश्वरको। अकरमाने इब्न अब्बाससे वर्णन किया कि, चुन लिया अल्लाहने इबराहीमको मैत्रीसे, और चुन लिया मूसाको कलामसे तथा चुन लिया मुहम्मदको दर्शन देनेसे । पूर्वोक्त तफ़सीर मोआलमसे कई बातें जानी जाती हैं । प्रथम तो यह है कि, इब्न अब्बासका कथन ठीक है कि, मुहम्मद साहबने बुद्धिबल तथा ज्ञान चक्षु द्वारा परमेश्वरको निरखा था और जिबराईलको नहीं । कारण, यह कि, सूरए नजमसे प्रगट होता है कि, जिस प्रतापशाली पुरुषको मुहम्मद साहबने देखा उस पुरुषकी ऐसी बडाई और इतनी श्रेष्ठता वर्णन किया कि, वह उत्पत्तिवान् नहीं जान पडता था वरन उत्पन्न कर्ता । उनके मेआराजकी कहानी द्वारा प्रकट होता है कि, जिबराईल एक साधारण भृत्य अथवा चोबदारके समान आकाशोंपर गया था, जहां मुहम्मद साहब ठहरते थे वहां जिबराईल बुर्राक़को बाँधता था और जब बुर्राक़ि सुस्ती करता तो वह उसको हांकता था । जब मुहम्मद साहब आकाशके पार पहुंचे तब अकेले मोहम्मदके जानेकी आज्ञा मिली, कारण यह कि, जिबराईल में ज्ञानका उतना प्रताप नहीं था जिससे वह आगे बुलाया जाता । तात्पर्य यह है कि, सूरए नजममें जिस प्रतापशाली मनुष्यको मुहम्मद साहबके देखनेका विवरण किया गया है, वह कदापि जिबराईल नहीं था, वरन् स्वयम् परमेश्वरही था ।

बारहवाँ प्रकरण।

खुदा साकार है ।

हसन उन्स और अकरमाके कथनसे प्रगट है कि, मुसलमानोंके कुरानानुसार यह विश्वास है कि, शारीरिक दृष्टिसेभी परमेश्वर देखा जाता है। सुतरां तफ़सीर, अज़ीजीमें शाह अबदुल अज़ीज साहबने प्रमाणित किया है कि, क़यामतके दिन खुदा आकाशसे उतरेगा और सिंहासन पर बैठकर न्याय करेगा । उसका तेज तथा प्रताप सांसारिक सम्राटोंके सदृश होगा । फिर कुरानसे प्रगट है कि, जो इबराहीम और मूसाका खुदा था वही खुदा मुहम्मद साहबका भी है । आदम, नूह मूसा और इब्राहीम इत्यादिने अपनी चर्मचक्षुसे खुदाको देखा । फिर मुहम्मदको खुदा दृष्टिसे कैसे देखा न जावेगा ? निस्सन्देह वह भी चर्मचक्षुसे देखा जाता है, और जो अन्तर दृष्टिसे देखा जाता है, उसका गुण कुछ कहा सुना नहीं जाता ।

तेरहवाँ प्रकरण।

मुहम्मद साहबका जलाली खुदा ।

यह तजकीरेजलाली जो कुरान हदीस तथा तफ़सीरोंमें लिखा गया है, उस जलाली पुरुषसे कबीर साहबका तात्पर्य है । यदि मुहम्मदी दीनके विद्वान् इस बातको भलीप्रकार जांच करेंगे तो, उनको पता लग जावेगा । कबीर साहबके अतिरिक्त और किसी देवता और मनुष्यमें यह सामर्थ्य नहीं है कि, मुहम्मद साहबको एक क्षणमें समस्त आकाशोंका परिभ्रमण करावे और खुदाका दर्शन कराकर पुनः मक्कामें लौटा लावे । वे लोग बाँग देते हैं और अल्लाह अकबरका नाम लेते हैं, सो अल्लाह अकबर जिसको कहते हैं उसीका नाम कबीर है । अकबर तथा कबीरमें तनिक भी विभिन्नता नहीं है, जो अकबर है वही कबीर है और जो कबीर है वही अकबर है । वे लोग अल्लाह अकबरका नाम लेते हैं परन्तु (छोटे) अल्लाहकी पूजामें तन मन समर्पण करते हैं तथापि उनकी बाँग अकबर अल्लाहमें बडा प्रभाव है । यद्यपि छोटे अल्लाहको वे पूजते हैं तथापि बडे अल्लाहकी उनको सहायता मिलती है सो इसी अकबरने मुहम्मद साहबको सत्यपुरुषका दर्शन कराया, देखो ग्रन्थ मुहम्मदबोधका[1] संक्षेप ।

चौदहवाँ प्रकरण।

(इस ग्रन्थमें कबीर साहबका मुहम्मद साहबको बोध देने, सत्यपुरुषका दर्शन कराने और मेआराजका विवरण प्रश्नोत्तर द्वारा विस्तारपूर्वक वर्णित है)

१ पूरा ग्रन्थ मुहम्मदबोध श्रीवेंकटेश्वर प्रेसके छपे कबीर सागर नं. ६ देखना चाहिये ।

धर्मदास वचन ।

साखी--धर्मदास विनती करैं, कृपा करहु गुरुदेव ।
नबी मुहम्मद जस भये, सो सब कहिये भेव ॥

सत्यकबीर वचन--रमैनी

धर्मदास बूझ्यो भल बानी । सो सब कथा कहूँ सहिदानी ॥
विगस्यो पुहुप उठी अस बानी । मुक्तामणि सुनिये तुम ज्ञानी ॥
भवमें जाव जीवके काजा । जीवन कष्ट देत यमराजा ॥
मुक्तामणि चले शीश नवाई । ततछण भवमें पहुँचे आई ॥
तबहीं मिले मुहम्मद पीरा । तिन सब हुकुम कीन तागीरा ॥
तहाँ जाय हम कीन सलामा । मात रहे अलमस्त इलामा ॥
नजर दिदार जो कीन हमारी । मस्त गयन्द केर असवारी ॥
कहु भाई तुम कहाँ भरमाये । कहाँते आय कहाँको जाये ॥
हुये हैरान नज़र नहिं आये । किया नसीहत अल्ला फ़रमाये ॥
कहर छोड मिन्हदिल आये । तब तुम साँचे पीर कहाये ॥
वाहक़ को नहिं साहब राजी । पढो कुरान पूछो तुम काजी ॥

मुहम्मद वचन ।

साखी---कहाँ से आये पीर, तुम क्यों कर किया पयान ?।
कौन शक्सका हुक्म है, किसका है फ़रमान ? ॥

रमैनी ।

पीर मुहम्मद सखुन जो खोला । अल्ला: हमसे परदै बोला ॥
हम अहदी अल्ला: फ़रमाना । वतन लाहूत मोर अस्थाना ॥
उन भेजे रूह बारह हजारा । उम्मतके हम हैं सरदारा ॥
तिस कारण जो हम चलि आये । सोवत थे सब जीव जगाये ॥
जीव ख्वाबमें परा भलाई । तिसकारन फरमान ले आई ॥
तुम बूझो सों कौन हो भाई । अपनो इस्न कहो समझाई ॥
साखी---दूर की बातें जो करो करते रोज़: नमाज ।
सो पहुंचे लाहूतको, छोडे कुलकी लाज ॥

कबीरवचन ।

कहैं कबीर सुनो हो पीरा । तुम लाहुत करो तागीरा ॥
तुम भूलै सो मरम न पाया । दे फ़रमान तुम्हे भरमाया ॥

फिर फिर आवे फिर फिर जावे । बद अमली किसने फ़रमाए ॥
लाहूत मुकाम बीचका भाई । बिव तहक़ीक़ असल ठहराई ॥
तुम ऐसे उनके बहु तेरे । लै फ़रमान जाव तुम डेरे ॥
साखी—खोजत खोजत खोजियाँ, हुवा सो गौना गोन ।
खोजत खोजत ना मिला, तब हार कहा बेचू न ।
बेचूं ना जग राचिया, साईं नूर निनार ।
आखिर केरे वक्त में, किसकी करो दीदार ॥

रमैनी ।

तुम लाहौत रचे हो भाई । अगम गम्म तुम कैसे पाई ॥
यह तो एक आदि विसरामा । आगे पाँच आदि निज धामा ॥
तहाँ ते हम फरमाँले आए । सब बदकेलको अमल मिटाए ॥
उन फ़रमान जो हम को दीना । तिनका नाम बेचून यम लीना ॥
साखी—साहबका घट दूर है, जासु असल फ़रमान ।
उनको कहो जो पीर तुम, सोइ अमर अस्थान ॥

मुहम्मद वचन—रमैनी ।

कहैं मुहम्मद सुनो कबीरा । तुम कैसे पायो अस्थीरा ॥
लाहूत भेट जो अगम बताई । खुद खुदाय हमहूँ नहिं बाई ॥
हम जानैं खुद आपै आही । तुम कुदरत करथा पोताही ॥
हम तो अर्श हाज़िरी आए । तुम तो कुदरतसे ठहराए ॥
तुम्हरे कहिए भरम मोहि आओ । खुद खुदाय तुम दूर बताओ ॥
आप सुनाआ खुदकी बानी । आलम दुनिया कहो बखानी ॥
लाहूत मुकाम हम निजकर जाना । सो तो तुम कुदरत कर ठाना ॥
हलकी मुलकी बासरी भाई । तीन हुक्म अल्ला फरमाई ॥
साखा—सांई मरशिद पीर, साँचा जिस फ़रमान ।
हलकी मुलकी बासरी तीन हुकुम फ़रमान ॥

कवीर वचन—रमैनी

सुनो मुहम्मद कहूँ खुदबानी । खुद खोदायकी कहूँ निशानी ॥
कादिरथे तब कुदरत नाहीं । कुदरत थी कादिरके माहीं ॥
ख्वार सभीको चीन्हो भाई । असल रूहको देउँ बताई ॥
असल रूहकी दीदार जो पावे । बोवे निज मुसलमान कहावे ॥
जब लग तख्त नज़र नहिं आवे । तब लग कुदरत भ्रम ठहरावे ॥

चार वेद अक्षर निरमाई । चार अंश जाके सुत भाई ।।
एक अंस चौभाग जो कीन्हा । ताते एक गुप्त करलीना ।।
एक अंसते गुप्त छिपाई । तीन अंस संसार पठाई ।।
अंसहि अंस भेद नहिं बीना । यह अचरज अच्छोने कीना ।।
जो तुम कहा हमारा मानो । तो हम तुमते निर्णय ठाणो ।।
साखी—यह परपञ्च बेचूनका, तुमने कहा न भेव ।
आप सारत होइ बैठा, तु चार करत हो सेव ।।

मुहम्मद वचन ।

कहैं मुहम्मद सुन खुद अहदी । इल्म लज्जमी कइबुनिबाई ।।
जब नहिं पिण्ड ब्रह्मण्ड अस्थूला । तब नहिंतौ सृष्टिको मूला ।।
नादनकी कहिए उतपानी । आदि अन्त और मध्य निशानी ।।
साखी—बुज़रुग हकीक़त सब कहो, किस विध भया प्रकाश ।
जब हम जाने आदिको, तो हमहूँ बाँधे आस ।।

कवीरवचन ।

सुनो महम्मद साँचे पीरा । समरथ हुकुम खुदआदि कबीरा ।।
अब हम कहें सुनो चितलाई । आदि अन्तको खबर बताई ।।
प्रथमै समरथ आदि अकेला । उनके सँग था नहिं चेला ।।
साखी—वाहिद थे तब आपमें, सकल हत्यौ तिहि माँह ।
ज्यों तरुवरके बीचमें, पुहुप पाय फल छाँह ।।

अब इस स्थानपर कवीर साहब मुहम्मद साहबको उत्पत्तिके आदि इत्यादि का सब वृत्तान्त सुनाते हैं और वेदों तथा पुस्तकोंके निर्माणका सब विवरण करते हैं । कितनेही प्रश्नोत्तर दोनों महाशयोंमें हुए और कवीर साहबने लाहूत स्थानसे परमेश्वरका निवास्थान पृथक् बताया और वेद तथा पुस्तक सबका आदि अक्षर अर्थात् लाहूत स्थानसे प्रगट किया यह बात सुनकर मुहम्मद साहबने अस्वीकार किया ।

मुहम्मद वचन ।

पीर मुहम्मद मुख तब मोरा । कुछ नहिं चले तुम्हारा जोरा ।।
अच्छर हुकुम को मेटन हारा । चार वेद जिन कीन्ह पसारा ।।

कवीरवचन ।

सुनिए सखुन मुहम्मद पीरा । हम खुद अहदी आदि कवीरा ।।
मेटूं अच्छर का विस्तारा । मेटूं निरञ्जन सकल पसारा ।।

मेटूं अचिंत केर रजधानी । मेटूं ब्रह्मा वेद निशानी ॥
चौदह यमको बाँध नचावन । मृत अंधा मगहर लेआवन ॥
धर्मरायते झगर पसारा । निरञ्जन बाँध रसातल डारा ॥
वेद कतीबको अमल मिटाऊँ । घर घर सार शब्द फैलाऊँ ॥
पाँचहजार पँचसौ बरस कलियुग जब जाए । महापुरुष फरमा तब आए ॥
समरथ हुक्म चले सब माहीं । व्यापे सत्य असत उठ जाहीं ॥

मुहम्मद वचन ।

पीर मोहम्मद बोले बानी । अगम भेद काहू नहिं जानी ॥
सुना कान नहिं आखिन देखा । विन देखे को करे विवेका ॥
जो नहिं देखूं अपने नैना । कैसे मानूं गुरुको बैना ॥
जो तुम खुद अहदी होइ आए । हुक्म हुजूर फ़रमान ले आए ॥
जौ न राहते तुम चलि आओ । तवन राह मोको बतलाओ ॥
साखी—हंसनको सुस्थान देख, तब मानूं फ़रमान ।
जो समरथको हुक्म है, सोमानू फ़रमाना ॥

कबीरवचन ।

सुनो मुहम्मद कहूँ बुझाई । साहब तुमको देउँ बताई ॥
चले सैरको दोनों पीरा । एक मुहम्मद एक कबीरा ॥

अब यहां कबीर साहब मुहम्मद साहबको साथ लेकर समस्त लोकों की सैर कराते च े और सबका वृत्तान्त बतलाते और सब कुछ दिखलाते चले ।

पन्द्रहवाँ प्रकरण ।

प्रथम नासूत मुकामका वर्णन ।

कबीर साहब मुहम्मदसाहबको पहले नासूतको ले गये, यह मुकाम सुमेरु पर्वतके उत्तर ओर पृथ्वीसे छत्तीस सहस्र योजन ऊँचा है । यहांपर दयाअंश रहते हैं । यह मायाका स्थान है, महामाया इस जगह अपनी ज्योति फैलाती निवास करती है । जब कबीरसाहब और मुहम्मदसाहब उस स्थानपर पहुँचे तब, वहां हजरत दाऊदको बैठे तथा जबूरको पढते पाया । वहां पहुँचकर कबीर साहबने अस्सलाम अलैक कहा, तब हज़रत दाऊद अलैकुम्सलाम कहकर उठ खडे हुए और उनके हाथोंको चूमकर बडी आवाभगतसे उनका स्वागत किया । तब कबीर साहब मुहम्मदसाहबको इस मुकामकी विशेषता और गुणोंको बतलाकर आगे चले ।

सोलहवाँ प्रकरण ।

दूसरे मलकूत मुकामका वर्णन ।

दूसरा मुकाम मलकूत है । यह स्थान नासूतसे चौबीस सहस्र योजन उँचाई पर है और पृथ्वीसे साठ सहस्र योजनकी उँचाईपर है । इसी श्रेष्ठ स्थानको दूसरे शब्दोंमें वैकुण्ठ कहते हैं । यह वैकुण्ठ विष्णुका स्थान है । इसी स्थानपर पाप पुण्य का लेखा लगता है । इस विष्णुकी सभामें ब्रह्मा विष्णु शिव इन्द्रादिक समस्त देवतागण उपस्थित रहते हैं । इस विष्णुकाही नाम धर्मराय है । और आपकी आज्ञासे नरक, वैकुण्ठ और आवागमन आदि सब कुछ होता है । इसी स्थानसे विष्णु महाराज समस्त पृथ्वी और आकाशादिमें जाया आया करते हैं । यहांही चित्रगुप्तजी विष्णुके मंत्रीके रूपमें सबके पाप पुण्यका लेखा रखते हैं जब कबीर साहब मुहम्मद साहबको अपने साथ लेकर इस मलकूत पर पहुँचे तो, वहां मूसा को बैठे तौरीत पढ़ता पाया । कबीर साहबने वहां पहुँचकर सलाम अलैक किया. तब वह मूसा सलामका उत्तर देकर उठे और उनका हाथ चूमकर बड़ी ताजीम की । तब कबीर साहबने मुहम्मद साहबको इस मुकामके समस्त गुण बतलाये तथा वहांके वृत्तान्तसे विज्ञ कराकर आगे चले ।

सत्रहवाँ प्रकरण ।

तीसरे जिबरूत मुकामका वर्णन ।

तीसरा स्थान जिबरूत है । इस जिबरूत स्थानको कबीर साहबने झाँझरी द्वीप कहा है । यह निर्गुण ब्रह्म अलख निरञ्जनका स्थान है । यही तीनों लोकका कर्ता धर्ता सम्राट है, यह स्थान, वैकुण्ठसे अठारह करोड़ योजन ऊपरको ऊँचा है, यह बड़ा सुन्दर स्थान है, यहांपर चार करोड़ ज्योतिका प्रकाश है । इस मुकाम में चारों फ़रिश्ते जिबराईल, मेकाईल, इसराफ़ील, इज्राईल सदा खडे रहते हैं । इन्हीं चारोंको ब्रह्मा, विष्णु, शिव और यम इत्यादिके नामसे पुकारते हैं । समस्त आज्ञाएँ इसी स्थानमें प्रचलित हुआ करती हैं । चारों फरिश्ते इन्हींके आज्ञाकारी हैं । वेद तथा किताबोंके प्रचार कर्ता आपही हैं और सब आपहीके आज्ञाकारी तथा अधीन सब हैं । ब्रह्म तथा निरञ्जन इसी राजधानीमें बैठकर तीनों लोकको राज्य, करते हैं । जब कबीर साहब रसूल अल्लाहको साथ लेकर पहुँचे तो, देखा कि हजरत ईसा वहाँ बैठे हुए इञ्जील पढ़ रहे हैं । वहाँ पहुँचकर कबीर साहबने अस्सलाम अलैक कहा. तब हजरत ईसा सलामको उत्तर देकर उठखड़े हुए और

उनके हाथको चूम लिया । तब कबीर साहब मुहम्मद साहबको उन स्थानोंके गुणका विवरण करके आगे चले ।

अठारहवाँ प्रकरण ।

चौथे मुकामका वर्णन ।

चौथा मुकाम लाहूत, जिबरूत और लाहूतके बीचमें ग्यारह पालङ्गका अन्तर है । एक पालङ्ग आठ करोड़ योजनका होता है । यह लाहूत स्थान अक्षर अंशका है । वहाँ अक्षर और योगमाया शक्ति रहते हैं । यह बड़ा सुन्दर स्थान है । जब कबीर साहब और मोहम्मद साहब इस स्थानपर पहुँचे, तब कबीर साहबने मोहम्मद साहबसे कहा कि, हे मुहम्मद ! देखो वह आपका स्थान है । यहाँही वह अक्षर पुरुष, जिसको आप बेचूनोचेराका खुदा कहते हैं, रहता है । फिर उस स्थानके गुण दिखलाकर आगेको चले ।

उन्नीसवाँ प्रकरण ।

पाँचवें हाहूत मुकामका वर्णन ।

पाँचवाँ स्थान हाहूत है यह हाहूत स्थान एक असंख्य योजन शून्यके ऊपर है । अर्थात् लाहूत और हाहूतके बीचमें एक असंख्य योजन शून्य अर्थात् खला और अंधकार है । यह हाहूत स्थान अचिन्त्य पुरुषका है । यहाँ अचिन्त्य पुरुष सपत्नीक रहते हैं । यह स्थान बड़ाही मनोहर है । अचिंत पुरुषके सामने तीन सौ अप्सराऐं नृत्य करती रहती हैं । अचिंत पुरुष निःशंक तथा निर्द्वंद्व रहते हैं । कबीर साहब इस स्थान और इस पुरुषका सब विवरण मुहम्मद साहबसे कहके आगेको चले ।

बीसवाँ प्रकरण ।

छठएँ बाहूतमुकामका वर्णन ।

यह बाहूत छठा स्थान हैं । बाहूत और हाहूतके बीचमें तीन असंख्य योजन शून्य और अँधेरा है अर्थात् हाहूतसे बाहूत तीन असंख्य योजनकी ऊँचाईपर है यह अत्यंत मनोहर स्थान है । इस स्थानमें सोहंग पुरुष रहते हैं । सोहङ्ग पुरुषकी अर्धाङ्गिनीका नाम अर्धङ्ग है । यह सोहंग पुरुष अपनी शक्ति सहित अर्धंगके साथ सिंहासनपर अधिकृत है । उस स्थानमें सदैव सोहंग ओहंगका शब्द सुनाई दिया करता है । जब कबीर साहब मुहम्मद मुस्तफ़ाको लेकर इस स्थानपर पहुँचे तो, वहांके समस्त वृत्तान्तोंका विवरण उन्होंने उनसे कहा और फिर आगे चले ।

इक्कीसवाँ प्रकरण।

सातवें साहूतमुकामका वर्णन ।

यह स्थान साहूत, बाहूतसे पाँच असंख्य योजन ऊँचा है। बाहूत और साहूतके बीचमें पाँच असंख्य योजन खला और अत्यंत अंधकार है । यह इच्छापुरुषका स्थान है । इस स्थानकी सुन्दरता तथा यहां की सुख-सामग्रीका विशेष विवरण है। इस स्थानको कबीर साहब मुहम्मद साहबको दिखलाकर आगे चले ।

बाईसवाँ प्रकरण।

आठवें राहूत मुकामका वर्णन ।

राहूत स्थान साहूतके चार असंख्य योजन ऊपर है । साहूत तथा राहूतके बीचमें चार असंख्य योजन खला और अत्यंत अंधकार है। इस राहूत स्थानमें अंकुर पुरुष अपनी शक्ति सहित रहते हैं, अत्यंत सुन्दर तथा मनोहर स्थान है, जब कबीर साहब मुहम्मद साहबको लेकर इस स्थानमें पहुँचे तो, उसके सब गुण दिखलाकर आगे चले ।

तेईसवाँ प्रकरण।

नववें आहूत मुकामका वर्णन ।

हाहूत राहूत दो असंख्य योजन ऊपर है बीचमें खला (पोल) तथा अंधकार है, इस स्थानमें सहज पुरुष रहते हैं, सत्यपुरुषके सबसे बडे पुत्र यह कहलाते हैं। यह नववां स्थान सबसे सुन्दर और आनन्दका कहलाता है । कबीर साहबने मुहम्मद साहबको वह स्थान दिखलाया और उसका विवरण करके फिर आगेको चले ।

चौबसवाँ प्रकरण।

दशवें जाहूत मुकामका वर्णन ।

आहूत और जाहूतके बीचमें दश असंख्य लाख योजनका अन्तर है अर्थात् स्थान जाहूत आहूतके ऊपर दश असंख्य लाख योजनपर है, यही स्थान सत्यपुरुषका है, इसकी सुन्दरताका वर्णन किया जा नहीं सकता है, इसी स्थानसे कबीर साहब सत्यपुरुकी आज्ञा लेकर पृथ्वीपर आया करते हैं। आप इसी स्थानके अहदी रसूल पाक हैं।

पच्चीसवाँ प्रकरण।

सत्यलोकका वर्णन ।

सत्य पुरुषके लोकमें जब हंस पहुँचते हैं, तब कालपुरुष उनको नमस्कार करता है । इन हंसोंका आगमन फिर कभी नहीं होता, वहाँ वे सदा सत्यपुरुषकी स्तुति किया करते हैं । वे हंस सत्यपुरुषके रूप हो जाया करते हैं । सत्यलोकके अधीन अट्ठासी सहस्र द्वीप हैं, सब द्वीपोंमें सत्यगुरुके हंस आनन्द करते हैं। द्वीप द्वीपोंमें हंस स्वतंत्र फिरा करते हैं, उन्हें कहीं भी रोकटोक नहीं है ।

इस त्यलोकके गुणोंका वर्णन किसी प्रकार भी किया नहीं जा सकता है। जो कोई उस लोकको जावे उसको कालपुरुषके भयसे सदाके लिये छूट जाता है, इस लोकमें स्त्री पुरुषका भेद नहीं और न वहां काम क्रोधादिकी झंझट है । सब हंस सत्यपुरुषके स्वरूप हैं । शारीरिक बिकार यहां तनिक भी नहीं है, सब हंस समस्त बुराइयोंसे पवित्र होकर सत्यपुरुषके साथ सदैव आनन्दमें रहते हैं ।

छब्बीसवाँ प्रकरण।

मुहम्मद साहबको सत्यपुरुषका दर्शन होना ।

कबीर साहब मुहम्मद साहबको अपने साथ लेकर इस स्थानमें पहुँचे और सत्यपुरुषका दर्शन कराये । कबीर साहब और मुहम्मद साहब दोनोंने सत्यपुरुषको दंडवत् किया । मुहम्मद साहब सत्यपुरुषका दर्शन करके अत्यंत प्रसन्न और नम्र हुए । सत्यपुरुषकी दया तथा कृपा मुहम्मद साहबपर हुई तब मुहम्मद साहब कबीर साहबके अत्यंत अनुगृहीत तथा कृतज्ञ हुए । सत्यपुरुषकी ओरसे मुहम्मद साहबको कितनीही शिक्षा मिली, धर्म कर्मकी कुल आज्ञाएं वहींसे प्रदान हुईं । जब सब आज्ञाएँ मिल चुकीं, तब मुहम्मद साहबको कबीर साहबने पुनः मक्कामें पहुँचा दिया ।

सत्ताईसवाँ प्रकरण।

पाँच कलमाका वर्णन ।

कबीर वचन ।

नबी महम्मद बन्दगी कीन्हा । दर्शन पायके भय लौलीना ॥
तहाँते फिर मृतलोक चलि आये । और निज नाम को पान भी पाये ॥
अब आपनो कौल फिर दीजे । पीछे पान जीवके लीजे ॥

साखी—शब्द भरोसे नामके, दिया नबीको पान ।
तब हम साँचे मानि हैं, जब फिर मिलोगे आन ॥

तुम आपनो फ़रमान चलाये। खुदको भेद तुम धरू छिपाये ॥
जो यह भेद तुम परगट करिहो। तो तुम कौलके बाहर परिहौ ॥
चारो कलमः परगट भाखो। पँचवाँ कलमः गुप्त राखो ॥
पँचवाँ कलमः इल्म फ़कीरी। जाके पस्ते कुफ्र हो दूरी ॥
हम काशीको जात हैं भाई। उबलों अपनो कौल बजाई ॥
तुम पर दाया समरथ केरी। पाँचों कलमः दिलमें फेरी ॥
साखी—हम काशीको जात हैं, तुम मक्के अस्थान।
हम रामानँद गुरु करें, तुम देव जगत फ़रमान ॥
फ़रमान जग को दीजिये, उलटी अदल चलाय।
तुम कलमः का हुक्मले, निर्भय निसान बजाय ॥

मुहम्मद साहबको कबीर साहबने चार कलमः प्रगट करनेको कहा, और एक कलमःको गुप्त रखनेके लिये कहा। कुल पांच कलमः मुहम्मद साहबको पढ़ाया जिसमेंसे एक छिपा रखनेके लिये कह दिया, चार कलमः मुसलमानोंको बतानेके लिये कहा। जब मुहम्मद साहब वह कलमः पढा करते थे उस समय किसीको निकट आने नहीं देते थे, उस कलमेका भेद मुहम्मद साहबके अतिरिक्त और कोई भी जानता नहीं था। कबीर साहबने मुहम्मद साहबको अपना पान दिया और मुहम्मद तथा मुहम्मदियोंको मुक्ति दिलानेकी आशा दिलाई। सो चार कलमः तो मुसलमानोंको मिले और पाँचवाँ कलमः स्वयम् मुहम्मद साहबके निमित्त था दूसरोंको उसका कुछ भी पता नहीं है।

अट्ठाईसवाँ प्रकरण।

पांचवें कलमेका वृत्तान्त।

मशकात बाब क़ेयाम शहर रमज़ान फ़स्ल औवल ज़ेद बिन साबितकी खायत दोखारी और मुसल्लमसे यों लिखा है कि, हज़रत रसूल अल्लाहने मस्जिद में चटाईकी एक झोंपड़ी बनाई थीं, और इस झोपडीमें अकेले निमाज पढ़ा करते थे। जब लोगोंने यह दशा देखी तो वे लोग आने लगे। तब भी कई रात्रियोंके उपरान्त एक रात्रिको आए बाहर नहीं निकले तब लोग बाहर खड़े खड़े खँखारने लगे, कदाचित् हज़रत आवाज सुनकर बाहर निकल आवें और निमाज़ पढ़ें परन्तु हज़रत न आये बल्कि कह दिया कि, तुम्हारी रुचि सदैव निमाजपर रहे—पर मैं इस कारण निमाजके निमित्त बाहर नहीं आता कि, कहीं खुदा इस निमाजको भी तुम पर फर्ज न करदे। क्योंकि, यदि यह तुम्हारा फर्ज होगया तो तुम उसको पूर्ण

न कर सकोगे । इस कारण ए मनुष्यों ! यही उत्तम है कि, इस निमाजको तुम लोग अपने २ घरोंमें पढ़ा करो । यह बात तालीम मुहम्मदीमें लिखी है जो चाहे सो देख ले । यह पुस्तक मौलवी अमाउद्दीन रचित है ।

अब जानना चाहिये कि, यह वही निमाज और कलमः है जिसके विषयमें कबीर साहबने मुहम्मद साहबको मना किया था कि, किसीपर प्रकट न करना । स्वयम् मुहम्मदसाहब भी इसको गुप्तरीति से पढ़ा करते थे । इस कलमेकी खबर किसी मुसलमानको तनिक भी नहीं है ।

इस तेजोमय पुरुषको, जिसने मुहम्मद साहब को सत्यपुरुषका दर्शन करवाया और पाँच कलमा पढाकर पुनः मक्केमें पहुँचाया, जो पहचानेगा सो मुक्ति पावेगा । सो मनुष्य उस सत्यगुरुको पहचानता है उसमें फिर किसी प्रकारकी बुराई नहीं रह जाती है । वह कदापि किसी प्रकार किसी जीवको दुःख नहीं पहुँचाता और न किसी प्रकार किसीको कष्ट पहुँचने देता है, वह सबपर दयालु होता है ।

उनतीसवाँ प्रकरण ।

नवा बेर प्रगट होकर इबराहीम अधम सुलतानको शिक्षा देने और शिष्य करनेका वृत्तान्त ।

इब्राहीम अधम बादशाह बलखको बोध करनेका वर्णन सुलतान बोध नामक ग्रन्थमें है जो बोधसागरमें श्रीवेंकटेश्वर प्रेसमें छप चुका है । यहां पर स्वामी परमानन्द जीने उसका विस्तारसे वर्णन नहीं दिया है, इसका कारण यह है कि, आगे इसी ग्रन्थके दूसरे भागमें इनका वृत्तान्त विस्तारसे लिखा है । यद्यपि कितने संत महात्माओंका कहना है कि, यहांपर भी ग्रन्थोंका प्रमाण देना चाहिये किन्तु, जब आगे विस्तारसे कथा आती है तब यहाँ विशेष लिखकर ग्रन्थ बढाना उचित न समझ कर, इतनी सूचना देनाही अलम है । पाठक दूसरे भागमें देख लेवें । वहां विस्तारसे कथा है । यों तो बल बोधकी रमैनी, निर्भय ज्ञान आदि ग्रन्थोंमें भी बहुत रोचक और उपदेशप्रद रीतिसे सुलतान इब्राहीमकी कथा लिखी हुई है ।

तीसवाँ प्रकरण ।

दशवीं बेर कबीर साहबका काफ़िरिया देशमें प्रगट होना और उस देशके काफ़िरोंको समझाने तथा शिक्षा देनेका वृत्तान्त ।

(काफिर बोध दूसरा अभीतक नहीं मिला जो मिला सो यहाँ दे देते हैं।

काफिर बोध

कौन सो काफिर कौन मुर्दार। दोऊ शब्दका करो विचार ।।
गुस्सा काफ़िर मनी मुर्दार। दोऊ शब्दका यही विचार ।।
हम नहिं काफिर हम हैं फकीर। जाइ बैठे सरवर के तीर ।।
चोरी नारी दरोग सो डरें। राह सो लेखा सबका करें।.
नंगे पायन पृथ्वी फिरें। हाट न लूटै बाट न परें ।।
हमतो किसीका कछु न बिगारें। दर्दमन्द दिल दया सवारें ।।
दुनिया लोक सो उल्टी करै। सत्यनाम सदा उच्चरे ।।
सिक्का देखि न कहिये फकीर। फकीर, न कूटे पुरानी लकीर ।।
काफिर सो कुफराना करे। अल्लाह खुदा सो नाहीं डरे ।।
करैं न बन्दगी फिरे दिवाना। गरब बाँधि फिरे गैवाना ।।
बोल कुबोल सेवा बिसरावै। खून खराफात न द्वार बहावै ।।
दिलमें चोर कमरमें कत्ती। लोगनके घर भाजे रत्ती ।।
अलहके नामें बाँटे खाना। सो कहिये साँचे मुसलमाना ।।
मुसलमान मुसावे आप। सिदक सबूरी कलमा पाक ।।
खडी ना छेडे पडी न खाय। सो मुसलमान बिहिश्त को जाय ।।
कलमा पढै न आवै बिहिस्त। हिरदे रहे बापकी दिष्टि ।।
हिन्दू मुसलमान खुदाक बन्दे। हमतो योगी न राखे छन्दे ।।
देवी देहरा मसीद मिनार। हमरे तो एक नाम अधार ।।
टाकी ले कौंन ऊपर चढै। पाव न दावें हाथ न बढै ।।
तहाँ न अग्नि पवनका डर। ऐसा अलखपुरुष जिन्दपीर का घर।
चूरा पथ्थर बनाया दादा आदमकी करनी। हमतो रहें अलेख पुरुष, जिन्दा पीरकी शरनी ।। मक्खी जाय बंधनमें परी। छानत छानत ताही गिरी ।। काजी मुलना करे विचार। मक्खी किया बटा अहँकार ।। मक्खी तो गाये भखे, तो सूअर भखे मक्खी तो हला भखे, मक्खी तो मुर्दार भखे ।। मक्खी जाय बिगारे खाना। तहाँ न चले बादशाह परवाना। कोरा कलमा बहुतेरा बोलै। खैर मिहरका खीस न खोले ।। मिहर न बाँटे मुर्दार खोरा। खैर न बाँटे अल्लहका चोरा ।। अरस परस-बीच समाना। मोम दिल मोम दिल जाना ।। सिदके सो परि पहिचाना। दर्दमन्द दुरवेश बखाना ।। रहमत है मुरशिद पीरको ।। जहमत

सूम महसूदको ।। निश्चय परिचे निमाज गुजारै । श्रवण नेत्रको वैर निहारौ ।। मुहम्मद मुहम्मद क्या करे । कुरान कलमा क्या पढै ।। किधर किधरकी राह बतावे । विनु गुरु पीर राह ना पावे ।।

साखी—हाजी गाजी गुरु चेला, खोजो दस दरकाजा ।
अलख पुरुष कहँ माथ नवाओ, इस विधि सरै निमाज ।।
सभै साचे काजी, साँच साँचे मुलना वेद कुरान ।।
कहै कबीर आवसो सव आलम उपजाना ।।

हिन्दू कहिये कि, कहियै मुसलमाना । राम रहीम वसे एक थाना ।। मनको जाने सोई मुल्ला जान । दरको जाने सोई दरवेश बखान ।। हमतो बाबा नेकी वदी सो न्यार । दुनिया मति कोइ लावे दोष हमार ।। हम तो कहि हैं अकेलेदस्त । ताका साहेब मक्का वस्त ।। मक्कवन्तका साहेब अकिल मन्द । अकिल मन्द अकिल सो जाना ।। मनमुरीद दोस्ती दाना ।। सहर गदाई कौन पार । सिर खुरदती कौन यार ।। बन्दी खाने कौन यार । तख्त बादशायी कौन यार ।। काया यार सिर खुर्दनी । दिल यार माहीं मर्दनी ।। जीव यार बन्दी खाने ।। मन यार निशस्त बादशाही ।। मन लाल दिल लाल लाल पोतदार । रहममाही हम साहसाह पोतदार ।।

इति कबीर साहबका वचन उचार विचार ।

अथ खान मुहम्मद अली बादशाहका प्रबोध ।

कलिक कीमोक लिप्त रसमेकी चशमें । खदयर संयम करदम ।
ओजूद राह चक्रित करदम ।

औवल—अक्ले पीर है मन मुरीद है । तन शहीद है असल कदाई है ।। तकबुर दुश्मन है । गुस्सा हराम है । नफ्स शैतान है । चोरी लानती है । जुवारी पलीदी है । अदब आदिल है । वे अदब कम असल है । राह पीर है । बेराह बेपीर है । सांच बिहिश्त है । झूठ दोजख है । मोमदिल पाक है । संग दिल नापाक है । हिर्स है । हैवान है । बेहिर्स वली है ।

लाइलाह हरकत है । अचेतबेगुलाम है । असलजाबेको सलाम है । कृतहीन जर्दरू है । दाना जौहरी है । असलकी दोस्ती है दाना शायर है । बूझे महबूब है । बन्दगी कबूल हैं । अल्लाह नूर है । आलम हद्द है । साहिब बेहद्द है । यकीन मुसलमान है । शील रोजा है । शर्म सुन्नत है । ईमान मुसलमान

है । बेईमान बेदीन है । दिल दलील है । बाँग बलेल है । फकीरी सबूरी है । नासबूरी मक्कारी है । दरोग द्वन्द है ।।

इति समझौता ।

अथबन्द ।

प्रथम बोलिये मूल बन्ध दुजे बोलिये बोलिये कमर बन्ध । तीजे बोलिये लंगोट बन्ध पाँचवें बोलिये दानिश बन्ध ।। छठै बोलिये शस्त्र बन्ध । सातवाँ बोलिये सहस बन्ध ।। आठवाँ बोलिये अहूठ हाथकी काया । जाका मर्म विरले पाया ।। मक्के हिर्स मदीने छाया । औवल पीर हिंदू कौबल वीर मुसलमान कहाया । मुसलमानकी काटी चोंचनी हिन्दूके छेदे कान । बोलता ब्रह्म नहीं हिन्दू नहीं मुसलमान ।। दादा आदमने गाया । बडे बडे पीरनको फरमाया । खुदाने अली बादशाहको चिताया । हिम्मते बन्दा मददे खुदा । दुआ फकीरा रहम अल्लाह । कदम दर्वेशाँ रद्द बलाय दादा आदम मामा हौ आ । मक्क मदीनेमें चढा तवा, पहिली रोटी फकीरको खा ।। ना देवे रोटी तो टूटे कठवता फूटे तवा । बैठी रहो मामा हौवा । कुफ्र वले अपनी रावा । इतनी सवाल रतनहाजीने कह्यो ।। कहै कबीर वीरको जानी । काफिर बोध सम्पूरण बानी ।

इति श्रीकाफिरबोध ।

फरिश्तोंका ब्यान ।

१ ओवल फिरिश्ता बसर (दृष्टि) है । जैसे खुदाकी सूरत मूरत नहीं है आदि अन्त नहीं है वैसे बसरकाभी कोई रूप रेख नहीं है । खुदाने यह फिरिश्ता सब जीवधारीके संग लगा दिया है जो हर एकको बतलाता है कि, देखकर चलो ठोकर मत खाओ ।।

२ दूसरा फिरिश्ता समग्र (श्रवणेन्द्रिय) है उसके द्वारा खुदा उपदेश करता है कि, मकरूह (बुरा) मरगूब (भला) आवाज और दोस्त दुशमन की बातको सुनो और समझो ।

३ तीसरा फिरिश्ता शाम (घ्राणेन्द्रिय) है । यह फिरिश्ता सुगन्धि दुर्गन्धि को बतलाता है ।

४ चौथा फिरश्ता लमस (स्पर्शेन्द्रिय) है जो बतलाता है कठिन और कोमल को ।

५ पाँचवा फिरिश्ता जायका (रसेन्द्रिय) है जो छः प्रकारके रसोंका ज्ञान बतलाता है ।

६ छठां फिरिश्ता हाथ है जो हाथसे करने योग्य कामोंको सिखाता है ।

७ सातवाँ फिरिश्ता पाँव है जो चलने फिरनेको बतलाता है।

८ आठवाँ फिरिश्ता जबान (जिह्वा) है जो भला और बुरा वचन बोलनेको सिखाता है।

९ नवाँ फरिश्ता आलातनासुल (जननेंद्रिय) है जो मूत्र त्याग करने और संसारकी वृद्धि करनेका मार्ग बतलाता है।

१० दशवाँ फिरिश्ता मेकअद (गुदेन्द्रिय) है जो शरीरके मलोंको बाहर निकालता है।

११ ग्यारहवाँ फिरिश्ता दिल (मन) है जो इच्छा उत्पन्न करता है और राग द्वेष करता है। दिल वह नहीं है जिसको राक्षस मांसाहारी लोग कबाब बनाकर खाते हैं।

१२ बारहवाँ फिरिश्ता इदराक (चित्त) है जो सर्व पदार्थोंका चिंतन करता है।

१३ तेरहवाँ फिरिश्ता अहंकार है जो जीवनकी रक्षा करता है।

१४ चौदहवाँ फिरिश्ता अक्ल (बुद्धि) है जिसे जिबराईल कहते हैं। जो सबके भेदको जानता है और सबको उपयुक्त मार्ग बतलाता है॥

१५ पन्द्रवाँ फिरिश्ता शहवत (काम-रजोगुण) है जिसको ब्रह्मा कहते हैं।

१६ सोलहाँ तमीज (विवेक-सतोगुण) है जो सत्य असत्यका विचार बतलाता है इसीको विष्णु कहते हैं।

१७ सतरहवाँ फिरिश्ता गजब (अहंकार-तमोगुण) हैं जो दुखदाई पदार्थोंसे रक्षा करता है इसीको शिव कहते हैं।

इसी प्रकार पांच तत्त्व और सर्व प्रकृतियाँ आदि संसारके सर्व वस्तु फिरिश्ते हैं और जिस प्रकार शरीरका राजा जीव है, उसी प्रकार सब, जड चैतन्यका स्वामी निजस्वरूप साहिब है जिसके शरणमें जानेसे अटल सुख प्राप्त होता है।

इति काफिरबोध।

इकतीसवाँ प्रकरण।

ग्यारहवीं बेर कबीर साहबका प्रगट होना और शंकराचार्य संन्यासीको बोध देने और समझानेका वृत्तान्त।

स्वामी शंकराचार्य और कबीर साहबकी गोष्टी कबीर भानुप्रकाशमें विस्तारसे दिया है, वहांसे देखना चाहिये और इस कबीरमन्शूरके दूसरे भागके पहले अध्याय में भी देखो।

बत्तीसवाँ प्रकरण ।

बारहवीं बेर रामानुज स्वामी वैष्णवको उपदेश करनेका वृत्तान्त ।

तेतीसवाँ प्रकरण ।

तेरहवीं बेर शेख मनशूर आदिको बोध करनेका वृत्तान्त ।

२९ से ३३ तकके चारों प्रकरणोंका पूरा खुलासा इसी कबीर मन्शूरके दूसरे भागमें मिलेगा । इसके आगे ।

कबीर साहबका काशीमें चौदहवीं बेर प्रागट्य की उत्थानिका ।

सत्यपुरुषके तेज तथा ज्योतिका सत्यलोकसे पृथ्वीपर उतरकर काशीके लहर तालावमें ठहरना, पृथ्वी तथा आकाशका प्रकाशमय होजाना, समस्त तालाव में प्रकाश तथा जगमगाहटका फैल जाना । अष्टानन्दजीका इस आश्चर्यमयप्रकाश को देखकर आश्चर्यान्वित होना और इस घटनाका समाचार रामानन्द स्वामीको देना । उस प्रकाशका बालकके रूपमें होकर कमलके पुष्पों पर ठहरना । नीरू जोलाहेका अपनी स्त्रीका गवन लिये हुए उस तालाबके समीपसे होकर जाना । जोलाहिनका बालकको तालावमें देखना और उसको लेकर अपने घरमें ले जाना । कबीर साहब का नीरू जोलाहेके घरमें रहना और भांति २ के कौतुक दिखलाना। फिर रामानन्द स्वामीका शिष्य होना और समस्त सिद्धोंके साथ शास्त्रार्थ करके सबको वादविवादमें परास्त कर, वैष्णव धर्मकी रक्षा करना । शाह सिकन्दरलोदी का काशीजीमें आना । शेखतक़ी बादशाहके पीर, का ब्राह्मणों तथा मुल्लाओं की साटसे कबीर साहबको बावन कसनी देना और कितनेही कौतुक कबीर साहब द्वारा प्रगट होकर कबीर साहबका निष्कलंकित रहना, उन्हें किसी प्रकारका कष्ट न पहुँचना । कबीर साहबका स्वसम्वेदकी आज्ञाएं प्रगट करना फिर आपका अन्तिमलीला करनेको मगहर जाना और हिन्दू मुसलमान दोनों जातियोंका कबीर साहबकी लाशको न पाना । वहां से आपका विलोपित हो जाना और शवकी जगह केवल चादर और कमलोंका फूल मिलना । हिन्दू मुसलमानोंका केवल चादर तथा कमलोंके फूलोंकी समाधि और कबर बनाना । और हिन्दू मुसलमान दोनोंकी ऐक्यताका वृत्तान्त । फिर अपका बांधो गढ़में प्रगट होकर धर्मदास द्वारा सत्यपथ चलाना.

सत्य पुरुषकी आज्ञा ।

सत्यपुरुषने ज्ञानी से कहा कि, ऐ ज्ञानीजी ! कालपुरुषने सब जीवोंको

फँसाकर मार लिया, समस्त मनुष्य भटक-२ कर कालकी फाँसीमें पड़ गये । कोई जीव मेरे लोकमें नहीं आता है । मैंने सुकृत (धर्म्मदास) को सत्यपथके प्रचलित करनेके लिये भेजा था सो उसे भी काल निरंजनने लोक वेदके जालमें फँसा लिया और धर्मदास सत्य पुरुषकी भक्ति को छोडकर कालपुरुषकी भक्ति और मूर्ति पूजामें लग गया । इस कारण आप पृथ्वीपर जाओ और सुकृतजीको अचेत निद्रासे उठाकर मुक्तिपंथ प्रगट करो । बयालीस वंश स्थापित करके पृथ्वीपर थाना जमाओ । तब ज्ञानीजी सत्यपुरुषकी आज्ञा पा और दंडवत प्रणाम करके सत्यलोकसे बिदा हुए ।

चौबीसवाँ प्रकरण ।

सत्यपुरुषके तेजका लहर तालाब में उतरना ।

सत्यपुरुषके तेज और प्रतापका सत्यलोकसे पृथ्वीपर उतरकर काशी नगरीके लहर तालाबमें ठहरना और फिर उस तेजका मनुष्यके बालक सदृश होकर तालाबके कमलपर स्थित होना ।

सम्वत् चौदहसौ पचपन विक्रमी, ज्येष्ठ सुदी पूर्णिमा सोमवारके दिन सत्यपुरुषका तेज काशीके लहर तालाबमें उतरा । उस समय पृथ्वी और आकाश तक प्रकाशित हो गया । उसी समय अष्टानन्दजी वैष्णव उस तालाबपर बैठे थे और वृष्टि होरही थी, बादल आकाशमें घिरे रहनेके कारण अंधकार छाया हुआ था, बिजली चमक रही थी । जिस समय वह नूर उस तालाबमें उतरा, उस समय तालाब जगमग जगमग करने लगा, फिर वह प्रकाश उस तालाबमें ठहर गया । प्रत्येक दिशाएँ जगमगाहटसे परिपूर्ण हो गयीं । इस आश्चर्यमय प्रकाशको देखकर अष्टानन्दजी आश्चर्य चकित हो गये । उस समय उस लहर तालाबमें महाज्योति फैल रही थी. मयूर, चकोर आदि पक्षी बोल रहे थे । चिड़ियाँ चहचहा रही थीं, पनडुब्बियाँ फिर रही थीं, कमल तथा नीलकमलके पुष्प लहलहा रहे थे, भँवरे गूँज रहे थे । ऐसे समय वह तेज आकर उस तालाबमें स्थिर हुआ । अष्टानन्दजीने जो उस तेजको देखा तो जानकर उसका समस्त विवरण रामानन्द स्वामीसे कहा मुझको अत्यंत आश्चर्य हुआ, उस ज्योतिको आकाशसे उतरते और लहर तालाबमें ठहरते देखा । जब वह प्रकाश उस तालाबमें उतरा तब समस्त तालाब ज्योतिमय होगया । यह बात सुनकर स्वामी रामानन्दजीने अष्टानन्दजीसे कहा कि, वह प्रकाश जो तुमने देखा था उसका फल शीघ्रही तुम्हारे देखने तथा सुननेमें आवेगा, उसकी धूम मच जावेगी ।

फिर वह तेज मनुष्यके बालकके आकारमें होकर उस जलके ऊपर कमलोंके

पुष्पोंपर बालकोंके सदृश हाथ पाँव फेंकने लगा । वह बालक अलौकिक शोभा लिये अत्यंत सुंदर दिखलायी देता था । पश्चात् तो जैसा कि, रामानन्द स्वामीने अष्टानन्दजीसे कहा था इसकी धूम समस्त संसारमें मचगयी ।

पैंतीसवाँ प्रकरण ।

नीमा और नीरू ।

मैं इसके पहले पूर्व लिख आया हूँ कि, श्वपच सुदर्शनके जो माता-पिता थे वे दोनों डोमका शरीर छोड़कर ब्राह्मण ब्राह्मणी हुए थे, और चन्दवारे नगरमें रहते थे। उनके पूर्व प्रेमसे कबीर साहब उनके घर गये और उनको मुक्तिमार्ग बतलाने लगे परन्तु, उन्होंने ध्यान नहीं दिया । तब सत्यगुरु उनके गृहसे अन्तर्धान हो गये । इसके उपरान्त वे दोनों ब्राह्मण ब्राह्मणी परलोकगामी होकर काशीमें जुलाहा जुलाही हुए, उनका नाम नीरू और नीमा पड़ा । सुदर्शनजीके माता-पिता जो तीसरे जन्ममें जोलाहा जोलाही हुए थे। इसको मुक्ति प्रदान करनेके निमित्त जैसे पहले कई बार उनके घर गये थे उसी प्रकार इस बार भी उनको चेतानेके लिये उनके घर जानेका विचार किया । इसलिये का कि लहर तालावमें प्रगट हुए ।

श्वपचसुदर्शनके माता पिताके तीन जन्मका वृत्तान्त ।

अनुराग सागरसे

कबीर बचन धर्मदास प्रति ।

संत सुदरसन द्वापर भयऊ । तासु कथा तोहि प्रथम सुनयऊ ॥
तेहि लै गयो देस निज जबहीं । बिन्ती बहुत कीन तिन तबहीं ॥
कहे सुपच सतगुरु सुनि लीजे । हमरे मातु पिता गति दीजे ॥
बन्दीछोर करो प्रभु जाई । जमके देस बहुत दुख पाई ॥
मैं बहु भाँति पिता समुझावा । मातु पिता परतीत न आवा ॥
बालक बद नहि मान सिखावा । भगति करत नहि मोहि डरावा ॥
भगति तुम्हार करन जब लागे । कबहुँ न द्रोह कीन मम आगे ॥
अधिक हरष तिनहि चित होई । ताते विनती करूँ प्रभु सोई ॥
आनहु तिनहि सत सब्द दिढाई । बन्दीछोर जीव मुकताई ॥
बिन्ती बहुत संत जब कीन्हा । ताकर वचन मानि हम लीन्हा ॥
ताकर विनय बहुरि जग आवा । कलिजुग नाम कबीर कहावा ॥
हम इक बचन निरंजन हारा । वाचा बँध उदधि पगु धारा ॥
और दीप हंसन उपदेसा । जम्मु दीप पुनि कीन परवेसा ॥

संत सुदरसनके पितु माता । लछमी नरहर नाम सुहाता ॥
सुपच देह छोडि तिन भाई । मनुषहिं जनम धरे तिन आई ॥

श्वपच सुदर्शनके माता पिताका पहला जन्म ।

संत सुदरसनके परतापा । मानुष जनम विप्रके छापा ॥
दोनों जनम ठाम दोय लीना । पुनि विधि मिलै तिनहि कहँ दीना ॥
कुलपत नाम विप्र कर कहिया । नारि नाम महेसरि रहिया ॥
बहुत अधीन पुत्र हित नारी । करि असनान सूरज व्रत धारी ॥
अंचल लै विनवै कर जोरी । रुदन करे चित सुत कहँ दौरी ॥
ततछन हम अंचलपर आवा । हम कहँ देखि नार हरषावा ॥
बाल रूप धरि भेटो वोही । विप्र नारि ग्रह ले गइ मोही ॥
कहै नारि किरपा प्रभु कीना । सूर व्रत कर फल यह दीना ॥
बहुत दिवस लग तहाँ रहाये । नारि पुरुष मिलि सेवा लाये ॥
रहे दरिद्र ते दुखी अपारा । हम मन महँ अस कीन विचारा ॥
प्रथमहिं दरिद्रता इन कर हारों । पुनि भगति मुकति कर वचन उचारों ॥
जब हम पलना झटक झकोरे । मिलत सुवरन ताहि इक तोरे ॥
नित प्रति सोन मिले इक तोला । ताते भये वह सुखी अमोला ॥
पुनि हम सत सब्द गोहरावा । बहुत प्रकारते उनहिं समझावा ॥
तिन हिरदय नहिं सब्द समाया । बालक जानि परतीत न आया ॥
ताही देह चीन्हसि नहिं मोंही । भयो गुप्त तहँ तन तजि ओही ॥

श्वपचसुदर्शनके माता पिताका दूसरा जन्म

नारि द्विज दोउ तन त्यागा । दरस परभाव मनुज तन जागा ॥
पुनि दोनों भये अंस मिलाऊ । रहहिं नगर चंदवारे नाऊ ॥
ऊदा नाम नारि कहँ भयऊ । पुरुष नाम चन्दन धरि गयऊ ॥
पुरुषोत्तम ते हम चलि आये । तब चंदवारा जाइ परगटाये ॥
बालक रूप कीन्ह तेहि ठामा । कीनेउ ताल मांहि बिसरामा ॥
कमल पत्र पर आसन लाये । आठ पहर हम तहाँ रहाये ॥
पाछे ऊदा असनानहिं आयी । सुन्दर बालक देखि लुभायी ॥
दरस दियो तिहिं सिसु तन धारी । ले गयि बालक निज घर नारी ॥
ले बालक गिरह अपने आयी । चंदन साहु अस कहा सुनायी ॥
कहु प्यारी बालक कहँ पायी । कौनी विधि ते इहवाँ लायी ॥
कह ऊदा जल माहीं पावा । सुन्दर देखि मोरे मन भावा ॥

कह चंदन तै मूरख नारी। बेगि जाहु दै बालक डारी ॥
जाति कुटुम हरिहैं सब लोगा। हंसत लोग उठि है तन सोगा ॥
ऊदा तरस पुरुष कर माना। चन्दन साहु जबै रिसियाना ॥
बालक चेरिहि दीन उठायी। ले बालक जल देहु खसायी ॥
चल चेरी बालक कहँ लीना। जल महँ डारन ताहि चित दीना ॥
चलि भइ मोहि पवाँरन जबहीं। अन्तरधान भये हम तबही ॥
भयो गुपुत तेहि करसे भाई। रुदन करै दोनो बिलखाई ॥
विकल होय बन ढूंढत डोले। मुगध ज्ञान कछु मुख नहिं बोले ॥
यहिविधि बहुत दिवस चलि गयऊ। तजि तन जनम बहुरि तिन पयऊ ॥

श्वपचसुदर्शनके माता पिताका तीसरा जन्म

मानुष तन जुलहा कुल दीना। होउ संजोग बहुरि विधि कीना ॥
कासी नगर रहे पुनि सोई। नीरु नाम जुलाहा होई ॥
नीमा नाम नारि कर भाई। नारि पुरुष हो मिल पुनि आई ॥

इति श्वपचसुदर्शनके मातापिताके तीन जन्मकी वार्ता

छत्तीसवाँ प्रकरण।

नीमा और नीरूका बालक पाना

इसका विवरण इस प्रकार है कि, नीरू जोलाहा काशी नगरीमें रहता था। एक दिवस वह अपना मुकलावा (गवना) लेनेको गया और अपनी स्त्री सहित चला आता था। दैवात् वह लहर तालाबके समीपसे होकर निकला। उसकी स्त्री नेमा प्यासी हुई और जल पीनेके निमित्त उस तालाबपर गयी। जब जल पी चुकी तब दृष्टि उठाकर उस तालाबको देखने लगी। देखा तो एक बड़ाही सुंदर बालक कमलके फूलोंपर हाथ पाँव फेंक रहा है। उस बालकको देखकर वह जोलाही तालाबके भीतर घुस गयी, और उस बच्चेको अपनी गोदमें उठा लिया। तालाबसे बाहर निकलकर नीरूके पास गयी। प्रमाण आदि मंगल—

दोहा—"नीरू नाम जुलाहा, गमन लिये घर जाय।
तासु नारि बड भागिनी, जलमें बालक पाय ॥

तब जोलाहेने पूंछा, कि, यह किसका लडका ले आयी है? तब नीमाने उत्तर दिया कि, मैंने तालाबमें पाया है नीरूने कहा, यह लड़का जहांसे तू ले आयी है वहांही रख आ। नहीं मालूम वह किसका लड़का है? तब उस स्त्रीने उत्तर दिया कि, ऐसा सुन्दर बालक तो मैं कदापि नहीं फेकूंगी। नीरूने कहा कि, लोग

मुझको हँसेंगे और ठठ्ठाएँ उड़ावेंगे कि, गौनेहीमें नीरू अपनी स्त्रीके साथ एक पुत्रभी लेआया है इस कारण तू इस बालकको फेंकआ ।

"नीरू देख रिसावई, बालक दे तू डार ।
सब कुटुम्ब हाँसी करे, हसि मारे परिवार ।।

इस बातको जब नीमाने नहीं माना; तब वह जोलाहा अपनी स्त्रीको मारने पीटने पर तत्पर हुआ और झिड़कियां देने लगा । तब नीमा खड़ी २ अपने चित्तमें चिंता करने लगी । इतनेमें वह बालक स्वयम् बोल उठा कि, हे नीमा ! मैं तुम्हारे पूर्व जन्मके प्रेमके कारण तुम्हारे घर आया हूँ । तुम मुझको मत फेंको और अपने घर ले चलो । यदि तुम मुझको अपना गुरु करके मेरा कहना मानोगे तो मैं तुम्हे आवागमनके झंझटसे छुड़ाकर मुक्त कर दूंगा और तुम्हारा समस्त दुःख संताप हर लूंगा । तुमको वह शब्द बतलाऊँगा कि, जिससे तुम कभी कालके फन्देमें नहीं पड़ोगे ।

"तब साहब हुँकारिया, ले चल अपने धाम ।
मुक्ति सन्देस सुनाइहौं, मैं आया यहि काम ।।
पूरब जनम तुम ब्राह्मन, सुरति बिसारी मोहि ।
पिछली प्रीतिके कारने, दरसन दीनो तोहि ।।"

जब वह बालक इस प्रकार बोला तो उसकी बात सुनकर नीमा निर्भय हो गयी और अपने पतिसे नहीं डरी । तब नीरूभी फिर कुछ नहीं बोला ।

"कर गहि बेगि उठाइया, लीन्हो कंठ लगाय ।
नारि पुरुष दोउ हरषिया, रंक महा धन पाय ।।

वे दोनों प्रसन्नतापूर्वक उस बालकको लेकर अपने घर गये ।

सैंतीसवाँ प्रकरण ।

बालकके नाम धरनेको ब्राह्मणका आना ।

काशीके लोगोंने देखा कि, नीरू तो अपनी स्त्रीके साथ एक पुत्रभी लेता आया है, तो लोग ठठ्टा और हँसी करने लगे । तब नीरूने लोगोंको समझाया कि, हमने यह बालक लहर तालाबमें पाया है और बालकका कुल विवरण कह सुनाया ।

फिर नीरू ब्राह्मणको बुलाकर पूछने लगा कि, इस बालकका क्या नाम रखना चाहिये ? ब्राह्मण तो पत्रा लिये विचारही रहा था इतनेमें बालक स्वयम् बोल उठा कि, ऐ ब्राह्मण ! मेरा नाम कबीर है । दूसरा नाम रखनेकी चिन्ता

मत करो। यह बात सुनकर सब लोग अत्यंत चकित हुए कि, यह बालक तो स्वयम् ही अपना नाम बतलाता है, यह कैसाबालक है यह किसी सिद्धका अवतार है अथवा स्वयम् परमात्मा है या कोई देवता है। काशीमें इस बातकी चर्चा घर-घर होने लगी कि, नीरूके घरमें एक बच्चा आया है सो बातें करता है।

साखी—"कासी उमगी गुल भया, मोमिनका घर घेर।
कोई कहे ब्रह्मा विष्णु है, कोइ कहे इन्द्र कुबेर ।।
को कह वरुन धर्मराय है, कोइ कोइ कह ईस।
सोलह कला सुमान गति, कोइ कहे जगदीस ।।
कोइ कहे बल ईश्वर नहीं, कोइ किन्नर कहलाय।
कोइ कहे गन ईसका, ज्यों ज्यों मातु रिसाय ।।
कासीमें अचरज भया, गयी जगतकी निन्द।
ऐसे दुल्लह ऊतरे, ज्यों कन्या अर्बिन्द ।।
खलक झलक देखन गया, राजा परजा रीत।
जम्बु दीप जहानमें, उतरे शब्दातीत ।।
दुनी कहै यह देव है, देव कहे यह ईस।
ईस कहै परब्रह्म है, पूरन बिस्वा बीस ।।

(गोसाई गरीबदासजीके पारख अंगकी साखी)

अड़तीसवाँ प्रकरण।

काजीका नाम धरने आना और कबीर नामका निश्चय होना।

फिर नीरूने काजीको बुलाया और पूंछा कि, इस बालकका क्या नाम रखना चाहिये? तब काजी कुरान और अन्यान्य किताबें खोलकर बालकका नाम देखने लगा, तब कुरानके अनुसार उस बालकके चार नाम निकले—१ कबीर, २—अकबर, ३ किबरा ४ किबरिया। जब ये चार नाम निकले तब काजी चुप हो अपने दाँतोंके नीचे उंगली दबाने लगा। बार बार वह कुरान खोलकर देखता तो समस्त कुरान उसको उन्हीं नामोंसे भरा दिखलाई देता था। काजीके मनमें अत्यंत संदेह उत्पन्न हुआ कि, ये चारो नाम तो खुदाके हैं। काजी गंभीर चिन्तामें बुड़कियाँ लगाने लगा कि, क्या करें! हमारे धर्मकी प्रतिष्ठा गई, इस बातपर गरीबदासजीकी साखी सुनो :—

"काजी गये कुरानले, धर लडकेका नावँ।
अक्कर अक्करमें फुरा, पन कबीर पहि जावँ ।।

सकल कुरान कबीर है, हरफ़ लिखे जो लेख ।
कासीके काजी कहैं, नई दीन की टेक ॥"

जब काशीके सब काज़ियोंको यह समाचार मिला तो वे इस समाचार-को सुनकर बड़े ही चिन्तित हुए। वे परस्पर कहने लगे कि, अत्यंत आश्चर्यका विषय है, यह कैसा अद्भुत व्यापार है ? समस्त कुरानमें कबीर ही कबीर दिखाई देता है, अब कौनसा उपाय करना चाहिये कि, ऐसे दरिद्री जोलाहेके पुत्रका इतना बड़ा नाम न रक्खा जावे। यह बात अच्छी नहीं है, फिर फिर कुरान खोलकर देखते तो यही चारों नाम निकलते, इन चारों नामोंके अतिरिक्त और कुछ नहीं निकलता।

उनचालीसवाँ प्रकरण।

काजियोंका नीरूको कबीरको कत्ल करनेकी सलाह देना।

तब काशीके क़ाज़ियोंने आपसमें सम्मति करके नीरू से कहा कि, ऐ नीरू! तू इस बालकको अपने घरके भीतर लेजाकर मार डाल नहीं तो तू काफिर हो जायगा तब वह जोलाहा कबीर साहबको अपने घरके भीतर लेगया और मार डालनेके लिये उनके गले पर छुरी मारना आरम्भ किया वह छुरी गलेमें एक ओरसे दूसरी ओर पार निकल गयी, न कोई जखम हुआ और न रक्तका एक बूंदही निकला, न गर्दन पर कोई चिन्हही हुआ। ऐसा जान पड़ा मानो हवामें छुरी चली।

तब कबीर साहब बोले कि, ऐ नीरू! मेरा कोई माता पिता नहीं है। न मैं जन्मता हूं, न मरता हूं न मुझको कोई मार सकता है, न मैं किसीको मारता हूँ, न मेरा शरीर है। यह शरीर जो दिखलाई देता है, वह तुम्हारी भावना मात्र शब्दरूपी है। न मेरे मांस चर्म हड्डी और रक्त है, मैं स्वयम् परमात्मा हूँ। यह बात सुनकर जोलाहा और जोलाहिन अत्यंत भयभीत हुए और समस्त काशीमें हुल्लड मच गया कि, नीरूके गृहपर जो बालक है वह वार्तालाप करता है।

अन्तमें विवश होकर कबीरही नाम ठहराया गया और किसीका कुछ वश न चला कि, उसको बदल सके और सबको भय उत्पन्न हुआ देखो गरीबदासजीकी वाणीमें।

चालीसवाँ प्रकरण।

बालक कबीरका दूध पीना।

बिना भोजनादि किये ही कबीर साहबका शरीर बड़ा होता जाता था और दिन प्रति आपका तेज तथा प्रताप बढ़ता जाता था। प्रमाण गरीबदासजी–

"दूध पिवे न अन्न भखे, नहिं पलन झूलंत।
अधर अमान ध्यानमें, कमल कला फूलंत॥"

जब जोलाहा जोलाहीने देखा कि, बालकको तो कुछ भोजन करने की आवश्यकता नहीं है और प्रति दिवस उसका सौन्दर्य उन्नतिपर है तब वे अपने मनमें अत्यंत चिंतित होकर कहने लगे कि ऐ कबीरजी! आप कुछ भोजन करो यदि आप अन्न न खाओगे तो हम भी नहीं खायँगे, यों दोनों क्रंदन करने लगे। तब कबीर साहबने उत्तर दिया कि ऐ नीरू! गायकी एक [1]कोरी बछिया और कुम्हारके घरसे एक कोरा बरतन लेआ। कबीर साहब की अज्ञानुसार नीरू गया और कोरी बछिया ढूंढ़कर और कुम्हार के गृहसे एक बरतन ले आया। तब कबीर साहबने उस जोलाहेसे कहा कि, इस बछियाको मेरे सामने बाँध दो और उसके स्तनोंके नीचे बरतन रखदो। जोलाहेने वैसाही किया तब बालक कबीर साहबने उस बछियाकी ओर देखा तो उसके स्तनोंमें से दूध निकलने लगा और बरतन भर गया। वह दूध लेकर नीरूने कबीर साहबके सामने रख दिया तिसको आपने पीलिया। उसी प्रकार नीरू प्रतिदिवस किया करता था।

निर्भयज्ञानमें इसी बालको इस प्रकार लिखा है कि, जब बालक कबीर कुछ खाते पीते नहीं थे, तब नीमा नीरूको बडा दुःख हुआ, सबसे वह पूछते फिरते कि, भाई! हमारे घर जो अजीब बालक आया है, कुछ खाता पिता नहीं है, यद्यपि इससे उसके शरीरमें कुछ कमी नहीं दीखती बल्कि शरीर तो दिन दूना रात चौगुना तेजोमय और पुष्टही होता जाता है, तथापि हम लोगोंका मन नहीं मानता, कोई कुछ उपाय बतलावे तो हमें संतोष हो। यद्यपि नीमा नीरूकी बातोंको सुनकर प्रत्येक अपनी अपनी बुद्धि अनुसार कुछ न कुछ बतलाता और वे अनेक प्रयोग करते भी किन्तु जब बहुत उपाय करके थके तब निराश हो बहुत दुःखी हुए। अंतमें किसीने उन्हें सलाह दी कि, स्वामी रामानन्दजी वर्तमान कालमें बडे सिद्ध और महात्मा त्रिकालदर्शी है, तुम उनके पास

---

१ गायकी कोरी बछिया का तात्पर्य है जिसका बैलसे संयोग न हुआ हो।

जाकर पूछो तो वह कुछ उपाय बतला सकते हैं । इस बात पर नीमा नीरू स्वामी रामानन्दके आश्रमपर गये, किन्तु, वहाँ तो हिंदुओंमें से भी कितनी जातियोंका प्रवेश नहीं हो सकता था। क्योंकि, स्वामी रामानन्दजी शूद्रोंका मुहँ तक नहीं देखते थे। फिर मुसलमान वह भी मुसलमानोंमें भी सबसे नीच जाति जुलाहेकी गुजर वहाँ तक कैसे होसकती थी किन्तु "जिन ढूंढा तिन पाइयाँ" के अनुसार नीमा नीरूकी सच्ची लगनने, किसी प्रकार उनकी प्रार्थना स्वामी रामानन्दजी तक पहुँचा दी, तब स्वामीजीने ध्यान धरके बतलाया कि, एक कोरी (कुमारी) बछिया लाकर बालककी दृष्टि सन्मुख खडी कर दो, उसके थनसे दूध निकलेगा उसीको बालकको पिलाओ वह पी लेगा। नीमा नीरूने वैसाही किया और उस दिनसे सिद्ध बालक कबीर दूध पीने लगा।

इकचालीसवाँ प्रकरण।

बाल लीला।

जब आप कुछ बड़े हुए तब छोटे छोटे लड़कोंके साथ खेलने लगे, उस समय आप उन लडकोंसे ब्रह्मज्ञानकी बातें किया करते थे। वे बेसमझ क्या समझें। तब आप साधुओंके साथ बातें करने लगे। जब साधु लोग आपका ज्ञान सुनते तब अत्यंत आश्चर्यान्वित होते कि, यह छोटा बालक इस प्रकारकी बातें कैसे करता है ? इन बातोंकी सुध तो बडे बडे साधुओंको भी नहीं है, इसने चौथे पदकी बातें कहाँसे सीखीं ! साधुओंको विदित हो गया कि, यह बालक नहीं वरन् कोई सिद्ध है, लड़केके वेषमें प्रगट हुआ है।

कबीर साहबके उस बालपनके अनेक कौतुकोंका विवरण ग्रंथोंमें लिखा है—उस समय जलनके रोगका काशीमें प्रकोप था। एक वृद्धा स्त्री आयी और आप धूल मिट्टी खेल रहे थे। कबीर साहबसे बोली कि, मैं जलन रोगसे व्यथित हूँ, यदि तेरी इच्छा हो तो मैं आरोग्य लाभ करूँ। तब कबीर साहबने उस स्त्रीपर थोड़ीसी धूल डालदी और वह आरोग्य हो गयी और सुखी होकर प्रसन्न होती चली गयी। इस प्रकारकी अनन्त कथाएँ आपके बाल लीलाकी प्रसिद्ध हैं।

बृहत कबीर कसौटीसे बाललीला।

जब कबीर साहब कुछ बड़े हुए और छोटे २ लडकोंके साथ खेलने लगे तब आप उन लडकोंसे ब्रह्मज्ञानकी बातें करते, किन्तु वे संस्कार हीन बच्चे उन बातोंको तो समझते नहीं। परन्तु उधरसे चलनेवाले साधु संत अथवा कोई

विद्वान् पण्डित उनकी बातोंको सुनकर आश्चर्य करता । कोई २ नीमा नीरूसे जाकर कहता—

कोइ (कोइ) जाइ नीरूसो कहई । सुत तुम्हार बड बादी अहई ॥
सिद्ध साधु सम ज्ञान बखाने । ऐसी अगाध मति कैसे वह जाने ॥
तब— नीरू नीमा दोउ मिलि, बिनवें ताहि बहूत ।
सब गुनाह मोहिं बखसौ, जोरे बिगारा पूत ॥

उनकी अधीनता देखकर लोग उन्हें कहते—

सभै कहें कछु गुनह न कीन्हा । ज्ञान न गोष्टि उन पूछै लीन्हां ॥
सुत तुम्हार होइहै बड़भागी । होइहै भक्त नाम अनुरागी ॥
यहि कहि जाहिं भवन निज सोई । नीरू महा हरष चित होई ॥

नीरूके घर मांस आनेकी बातको जानकर कबीर साहबका अन्तर्धान होजाना ।

इस प्रकारसे कुछ दिन बीतनेपर एक दिन नीरूके घर, कोई मिहमान आया और वह मिहमान दूसरे मुसलमानोंका बहकाया हुआ नीरूसे मांस खिलानेका हठ करने लगा । यद्यपि नीरूने उसे बहुत समझाया तथापि उसमें पैठा हुआ भूत नहीं निकला । अन्तमें जातिपांतिके डरसे निरूको मांस लानेके लिये मजबूर होना पडा । सत्य है—

जाति पाति दुर्मतके गाहक । तिनको डर उर पैठ्यो नाहक ॥

जब सन्ध्याको सब लड़के अपने २ घर आये किन्तु, कबीर साहब नहीं आये, तब नीमाने अडोस पडोसके लड़कोंसे पूछना प्रारम्भ किया । जब उन लोगोंसे कुछ पता न पाया तब दोनों स्त्री पुरुष बहुत बिकल हुए । रातभर उन लोगोंने अन्न पानी तो ग्रहण कियाही नहीं, बल्कि उनको निद्रा भी न आयी । भोर होतेही नीरू उठकर खोजनेको निकला । तमाम नगर छान डाला, किन्तु कबीर साहब उसे कहीं भी नहीं मिले । तब वह पागलके समान जाने अनजाने हरएक आदमियोंसे पूछने और जिधर तिधर भटकने लगा । अन्तमें सन्ध्याको "कबीर साहबको लिये बिना घर लौटकर जानेसे नीमा कबीर साहबको न पाकर प्राण त्याग देगी ।" यही विचारकर नीरू गंगाजीमें डूबनेके लिये गया जैसे वह गहरे पानीमें जाकर गोता खाने लगा वैसेही उसे मालूम हुआ कि, किसीने उसका हाथ पकड़कर बाहर किया हैं । उसने जब आंख खोलके देखा तो कबीर साहब उसके सामने खड़े हैं वह प्रेम और आनन्दसे एकदम कबीर साहबको पकड़ने चला; किन्तु कबीर साहब उससे दूर हो गये और कहने लगे—

खबरदार ! मेरे शरीरको हाथ मत लगाना । तुम लोग महाभ्रष्ट हो । कबीर साहबके कहनेका भाव न समझकर नीरू वात्सल्यभावसे बालकको फिर यह कहता हुआ पकडनेको चला—

कहु प्यारे काल्ह कहँ रहेऊ । हम खोजत थकित होइ गयेऊ ॥

तब कबीर साहबने कहा—

कहहिं कबीर हम उहाँ न जाहीं । तुम अभच्छ आनेहु घरमाहीं ॥

अब नीरूको चेत हुआ, तब उसने कहा—

कहे नीरू कर जोरि अधीना । अब तो चूक सही हम कीना ॥
अबकी चूक बकसिये मोहीं । हाथ जोरिकै विनवौं तोहीं ॥

इस प्रकार कहकर नीरू रोने और नकरगडी करने लगा, तब कबीर साहबने उससे कहा—

ऐसे हम नहिं जैबे भाई । घर आंगन सब लीपौ जाई ॥
बर्तन अशुच दूर सब करिहौ । करि अस्नान वस्तर तन फेरिहौ ॥
ऐसी करिहौ जाइ तुम, तौ पइहो वहि ठाँउ ।
नाहीं तो घरको को कहै, तजि जाऊं यह गाँउ ॥

इतना सुनकर नीरू मनमें बहुत डरा और उसी क्षण घरपर जाकर कबीर साहबकी आज्ञानुसार, सफाई करके इन्तजार करने लगा, तब कबीर साहब प्रकट हुए और नीमा तथा नीरूसे बोले—

नीरू सुनहु श्रवण दै, फेर जो ऐसी होइ ॥
तव कछु मेरो दोष नहीं, जैहो जन्म बिगोइ ॥

दोनों स्त्रीपुरुषने हाथ जोकर कहा—हे प्यारे ! अब कभी ऐसी भूल न होगी । आप हमको मत त्यागो । (बृहत्कबीर कसौटी)

बयालीसवाँ प्रकरण।

सुन्नत ।

कुछ दिवसोंके उपरान्त समस्त जोलाहे एकत्रित होकर कहने लगे कि, ऐ नीरू ! हमारे रसूल अल्लाहकी आज्ञाके अनुसार अब तुम अपने पुत्रका खतनः (मुसलमानी) कराओ । इसी अभिप्रायसे समस्त जोलाहे एकत्रित हुए और काजीको बुलाया और नाई उस्तरा लेकर कबीर साहबके सामने गया । जब नाई उस्तरा लेकर आपके निकट गया तब, आपने पाँच लिङ्ग उसको दिखलाये

और नाईसे कहा कि, इन पाँचोंमेंसे जिसको चाहे तू काट ले। यह व्यवस्था देखकर नाई तो भयभीत होकर भाग गया और आपका खुतनः नहीं हुआ।

तेतालीसवाँ प्रकरण।

कुरबानी ।

एकबार आप छोटे छोटे बच्चोंके साथ खेल रहे थे, उस समय काजीने गायकी कुरबानीका प्रबंध किया–जिस समय गऊको जबह करने लगे। उस समय कबीर साहबने, जो बालकोंके साथ खेल रहे थे जान लिया कि, काजी गौके जबह करनेको तय्यार है–तब आप तुरन्त बालकोंके साथका खेलना छोडकर गौकी ओर दौडे। जब तक, आप गायके समीप पहुँचे तबतक तो काजीने गऊको समाप्त कर दिया। कबीर उसाहब आकर उस काजीको अनेक उपदेश देके अत्यन्त धिक्कारा और लज्जित किया तब यह काजी लजाकर अपने अपराधके निमित्त क्षमाका प्रार्थी हुआ। फिर आपने उस गऊको जीवित कर दिया और आप अन्तर्धान होगये। प्रमाण बृहंत्कबीरकसौटी–

कबीर साहबकी सुन्नतका। (बृ. क. कसौटी)

एक तो नीरूके घर सिद्ध बालकको देखकर उसकी प्रसिद्धीसे लोग जलते थे। दूसरेही मांसाहारी मुसलमानोंके विरुद्ध नीरूने सदाके लिये मत्स्य-मांसको अपने घरमें न लानेकी प्रतिज्ञा करली थी। इससे मूर्ख मुसलमानोंने उसे अपने धर्मसे भ्रष्ट होते समझकर उसे सुधारनेकी फिक्र करना आरम्भ किया—

काशीके जोहलन मिली, आनि कियो परपंच।
सबै कहैं नीरू तुम, क्या बैठे निश्चिन्त ? ॥

बेटेकी तुम सुनति कराओ। पंचोंका तुम हाथ धुलाओ ॥
क़ाज़ी मुलनाको बुलवाओ। गैनी[1] और शराब मँगाओ ॥

इस प्रकारकी उनकी बात सुनकर नीरूने कानपर हाथ रखकर कहा–

नीरू कहै सुन्नति करवाओं। पै नहिं गैनी गला कटाओं ॥

तब उसके जाति बिरादरीवालोंने उससे क्रोध करके कहा–

जोलहा सब तब कहैं रिसाईं। क्या नीरू तुम अकिल गवाँई ॥
अपने कुलकी रीति न छाडो। कुल परिवार करिहें सब भांडो ॥

---

१ गैनी–गाय.

गैनी बिना कैसे बनै, मुसलमानकी रीति ।
पीर पैगम्बर रूठिहैं खता खाहुगे मीत ॥

वह सुनकर नीरूने कहा—

नीरू कहै सुनो रे भाई ! ऐसो करौं तो पूत गवाँई ॥
एक बार घर आमिष आना । तेहि कारन सुत भया बिगाना ॥

क्या रूठे क्या खुशी हो, पीर पैगम्बर झारि ।
गौघात मैं ना करौं, नीरू कहै पुकारि ॥

कबीर साहबके अन्तर्धान हो जानेकी बात तो प्रथमसे ही सबपर जाहिर होगयी थी, इसलिये सब विद्वेषियों और पक्षपातियोंने मिलकर नीरूको बहकाकर उसके द्वारा गोहत्या कराना चाहा, जिससे कबीर साहब नीरूके घरसे रुष्ट होकर चले जावें; तब नीरूकी नामवरी भी जाती रहे और काजी मुलना जो कबीर साहबको अपने धर्मका निकन्दन करनेवाला समझते थे, उनका कांटा भी निकल जावे। किन्तु जब सब जुलाहों तथा काजी मुलनाओंने देखा कि, नीरू तो फन्देमें नहीं आता तब वे एक चाल चले और छलसे कहा—

जोलहन मिली छलसे कह्यो, और करू सब साज ।
नीरू तुमरे कारने, गैनी आयउ बाज ॥

उन लोगोंने अपने मनमें विचार किया कि, नीरूके अनजानमें गाय जबह करेंगे जिसको देखकर कबीर नीरूका घर त्याग देगा। उधर नीरू तो सुन्नतका सामान इकट्ठा करने लगा और इधर मुल्ला काजियोंके साथ मिलकर उसके जाति बिरादरीवालोंने, एक गाय मँगाकर चुपचाप जबह करनेका निश्चय किया। नीरू इस काण्डसे एकदम अजान रहा।

उधर सब सामान दुरुस्त हो जानेपर जब नाई छुरा लेकर कबीर साहबका सुन्नत करने गया तब कबीर साहबने लंगूटी खोलकर नाईको पाँच लिंग दिखलाकर कहा, इसमेंसे तेरी जो इच्छा हो सो काट ले। यह आश्चर्य देखकर नाई तो भयभीत होकर भाग गया। किन्तु जुलाहों तथा काजीसहित अन्य मुसलमानोंने, अवसर पाकर उसी समय जब नाई कबीर साहबका सुन्नत करने गया, गायको जबह कर दिया। यद्यपि उन दुष्टोंके इस गुप्त काण्डको किसी दूसरेने नहीं जाना, परन्तु अन्तर्यामी सर्वज्ञ कबीर साहबने इस बातको जान लिया। नाईके भाग जानेपर आप बच्चोंके साथ खेलने चले गये थे, सो खेल छोड कर वहाँसे दौड़े और गोहत्याके स्थानपर पहुँचकर काजीसे कहा—

हो काजी यह किन फरमाये, किनके मता तुम छुरी चलाये ॥

जिसका छीर जु पीजिये, तिसको कहिये माय ।
तिसपर छुरी चलायऊ, किन यह दिया दिढाय ॥

तब काजीने उत्तर दिया–

सुन कबीर बडन सो, होत आइ यह बात ।
गौस कुतुब औ औलिया, हजरत नबी जमात ॥

यह सुनकर कबीर साहबने उत्तर दिया, हे क़ाजी ! और मुल्ला तथा सब मुसलमानो ! तुम किस भूलमें पड़े हो ! जरा विचार तो करो, तुम्हारा दीन थोडे दिनोंसे चला है, जिसमें तुम इतना जोर जुल्म करके नाना प्रकारसे जीवोंको सतानेमें धर्म मानते हो; तुम गफलतमें पडकर असल मार्गसे भटक कर नर्कका मार्ग क्यों साफ कर रहो हो !

सुनो जब—

आदम आदि सुधि नहिं पायी । मामा हौव्वा कहँते आयी ॥
तब नहिं होते तुरुक औ हिन्दू । मायको रुधिर पिताको बिन्दू ॥
तब नहिं होते गाय कसाई । तब बिसमिल किन फरमायी ॥
तब नहिं रहो कुछ औ जाती । दोजख विहिश्त कहां उतपाती ॥
मन मसलेकी खबर न जाने । मति भुलान दो दीन बखाने ॥

संजोगेकर गुण रवे, बिन जोगे गुन जाय ।
जिह्वा स्वादके कारने, कीन्हे बहुत उपाय ॥

कबीर साहबकी बातको सुनकर पक्षपातसे अन्धे हुए क़ाजी और मुल्ला मारे क्रोधके थरथर काँपने और कहने लगे कि, नीरूका यह लड़का महा काफिर हो गया, नबी पैगम्बर पीर औलिया सबको यह तुच्छ समझता है, आपही बड़ा ज्ञानी बनकर आया है ! और वे सब अज्ञानी थे । उनके क्रोधको देखकर नीमा और नीरू तो डरसे बहुत घबराने लगे । किन्तु कबीर साहब निर्भय होकर विनयपूर्वक काजीसे पूछने लगे—

केहि कारण तुम इहवां आये । यहि जगह किन तुमहिं बुलाये ॥

काजीने कहा—

जोलाहन मोहिं बुलायऊ, तोहरे सुन्नत काज ।
अब तुम मुसलिम होयके, रोजा करहु निमाज ॥
कलमा पढ़ो नबीका, छोड़हु कुफुरकी बात ।
तब तुम बिहश्तहि जाहुगे बैठहु नबी जमात ॥

इतना सुनकर कबीर साहबने कहा–

जिन्ह कलमा कलीमांहि पढ़ाया। कुदरत खोज उनहु नहि पाया॥
करमत करम करै करतूती। वेद किताब भया सब रीती॥
करमत सो जो गरभ औतरिया। करमत सो जो नामहिं धरिया॥
करमत सुन्नति और जनेऊ। हिन्दू तुरुक न जाने भेऊ॥
पानी पवन संजोयके, रचिया ई उत्पात॥
सून्यहि सुरत समानिया, कासो कहिये जात॥

इतनेमें काजी और मुल्लाओंको बिगडते देखकर वहाँ भीड़ जम गयी और कितने पक्षपाती हिन्दू भी वहाँ इकट्ठे हो गये,। तब काजीको उसकाने और क्रोधको बढ़ानेके लिये एक हिन्दूने कहा-"क्यों जी कबीर तुमको अपने धर्मका नियम मानना और काजी और मुल्ला जो धर्मके रक्षक और उपदेशक हैं उनकी आज्ञा पर चलना चाहिये। सो काजीजीकी आज्ञानुसार सुन्नत करा-कर अपने धर्ममें मिलो। देखो, हमारे यहाँभी जब बालककी जनेऊ होती है तब वह संस्कारी बनता है, जबतक जनेऊ नहीं होती तबतक उसको शूद्रके तुल्य मानते हैं। वैसेही तुम्हारे धर्मका नियम सुन्नत कराना है, उससे क्यों भागते हो!" इतना सुनकर कबीर साहबने कहा-

जो तोहि कर्ता वरण विचारत। जन्मत तीन दंड अनुसारत॥
जन्मत सूद्र मुये पुनि सूद्रा। किरतिम जनेउ घाल जगदुद्रा॥
जो तुम ब्राह्मन ब्राह्मनी जाये। और राहासे काहे न आये॥
जो ये[1] तुरुक तुरुकनी जाये। पेटै काह न सुनति कराये॥
कारी पीरी दूहौ गाई। ताकर दूर देहु बिलगाई॥
छाडु कपट नर अधिक सयानी। कहहिं कवीर भजु सारंगपानी॥

यह सुनकर वह ब्राह्मण अवाक् होकर रह गया। तब काजीने कहा, देखो यह लड़का शरअसे बाहर बातें करता है इसकी बात सुननी उचित नहीं है। क़ाजीकी इस बात पर उस लज्जित हुए ब्राह्मण और उसके साथियोंने भी जोर लगायी और सब एक मत होकर कहने लगे कि, इस लड़केके कहनेमें क्या आते हो, इसको तो पकड़ कर बाँधो और सुन्नत करो। फिर क्या था ? पानीपर चढ़े हुए काजीने कई मांस हारी मुस्टंडे मुसलमानोंको आज्ञा दिया कि, इस बालकको बाँधो। देखतेही देखते थोडीही देरमें कबीर साहबको एक रस्सीमें बांधकर उन लोगोंने पछाड़ दिया और नाईकी खोज करने लगे। किन्तु नाई बिचारा तो प्रथमही पाँच लिंग देखकर ऐसा भयभीत होकर भागा था कि

१ "ये" से यहाँ आशय है क़ाज़ी तथा अन्य सब मुसलमान।

उसने पीछे फिरकर भी नहीं देखा था। अब उनको नाई मिलता तो कहाँसे ! अब तो नाईके बिना काजी बहुत घबराया, चारों ओर लोग 'नाई ! नाई !' कहते दौड़ने लगे। उस समय कबीर साहबने काजीको सम्बोधन करके यह शब्द कहा–

क़ाज़ी तुम कौन किताब बखाना ।
झंखत बकत रहौ निसि बासर मति एको नहिं जाना ।।
सकति न मानो सुनति करत हौ मैं न बदोंगा भाई ।।
जो खुदाय तुव सुनति करत तो आप काटि किन आई ।।

इतना कहकर वहाँ खड़े ब्राह्मण (हिन्दुओं) की ओर दृष्टि करके

घालि जनेऊ ब्राह्मण होना, मेहरी क्या पहिराया ।
वह तो जन्मकी सूद्रिन पिरोसी, सो तुम क्यों खाया ।।
हिन्दु तुरुक कहांसे आया, किन यह राह चलायी ।
दिलमें खोज खोज दिलहीमें, विहिस्त कहाँ किन पायी ।।

इतना कहकर कबीर साहब उठ खड़े हुए। उनके शरीरका बन्धन सब आपही खुलकर गिर पड़ा यह देखकर लोग बहुत आश्चर्यित हुये।

फिर कबीर साहबने काजीसे कहा–

कहैं कबीर सुनोहो काजी। यह सब अहै शैतानी बाजी ।।

छिः !! छिः !! क्या इसीको मुसलमानी कहते हैं ?

यहि तरीका जो मुसलिम होई। तोपै दोजख परै न कोई ।।

फिर मुस्कुराते हुए कबीर साहबने काजीसे कहा, भाई ! अबतक तो खुद तुम्हें मुसलमानीकी खबर नहीं है, तब तुम मुझे कैसे मुसलमान करने आये थे ?

तुम तो मुसलिम भये नहिं भाई। कैसे मुसलिम करहू आयी ।।

यदि तुम मुसलमानीका यथार्थ मार्ग जानते हौ तो मुझसे कहो

जेहि तरीक सो साहिब राजी। सो तरीक मोहि कहिय काजी ।।
मारफ़तकी मुसलमानी, कहिये हजरत मोहिं ।।
पाक जात केहिविधि मिले, सो मैं पूछौं तोहिं ।।

यह सुनकर काजीने कहा, हम शरआके पाबन्द हैं, हमको मारफतकी बातमें जबान हिलानेकाभी हुक्म नहीं है–

काजीके उत्तरको सुनकर कबीर साहबने कहा, बस इतनेही पर काजीपना करनेका अभिमान करता है ? फिर यह शब्द कहा–

भूला वे अहमक नादाना । हरदम रामहिं ना जाना ।। टेक ।।
बरबस आनिके गाय पछारा, गला काटि जिव आप लिया ।
जीता जिव मुर्दा करि डारा, तिसको कहत हलाल किया ।।
जाहि मांसको पाक कहत है, ताकी उत्पत्ति सुन भाई ।
रज बीरज सो मास उपाना, सोई नापाक तुम खाई ।।
अपनो दोष कहत नहिं अहमक, कहत हमारे बड़ेन किया ।
उनकी खूब तुम्हारी गर्दन, जिन तुमको उपदेश दिया ।।
सियाही गयी सुफैदी आयी, दिल सुफेद अजहुं न हुआ ।
रोजा निमाज बांग क्या कीजै, हुजरे भीतर बैठ हुआ ।।
पण्डित वेद पुरान पढैं, मुलना पढैं जो कुराना ।
कहै कबीर वे नरके गये, जिन हरदम रामहिं ना जान ।।
इतना कहकर कबीर साहब मरी हुई गौके निकट गये—
बहुविधिसे काजीको समझायी । महा पाप जिव घात बतायी ।।
फिर कबीर गऊ ढिग जायी । मरी गाय तिहिं काल जिवायी ।।

गऊके पीठपर हाथ फेरतेही वह जीवित होकर उठ बैठी, फिर कबीर साहब उसको लिये हुए गंगा पर गये और गंगाजलसे स्नान कराकर नगरमें स्वतंत्र फिरनेको छोड़ दिया । उस दिनसे वह गऊ कबीर साहबकी गऊके नामसे प्रसिद्ध हो गयी और सब जगह आदर पाने लगी, और कबीर साहबनेभी उस दिनसे नीरूके घरका रहना त्याग दिया । कुछ दिनोंतक तो उनको कबीर साहबका दर्शन नहीं हुआ । किन्तु जब वे कबीर साहबके विरहमें बहुत विकल हो पागलों-के समान दर दर और घाट घाट फिरने लगे तब करुणामय साहबने करुणा करके उन्हे दर्शन दिया, किन्तु उनके घर नहीं गये । बल्कि काशीके बाहर एक स्थानमें कुछ भक्तोंने कुटी बाँध दी, उसीमें रहने लगे । उसी स्थानको अब कबीरचौरा कहते हैं । जहाँ बड़ा भारी मुहल्ला बसा है, और कबीर पन्थियोंका बडा भारी स्थान है । कबीर साहबके वहाँ रहनेपर नीमा और नीरूभी वहीं आकर रहने लगे । उन्होंने अपना पहला घर छोड़ दिया ।

इसी प्रकारसे कबीर साहबकी बाललीला अनेक आश्चर्य और उपदेश भरी हुई है, इस छोटेसे ग्रंथमें इससे अधिक लिखनेका अवकाश नहीं है । जिनको विस्तारपूर्वक हाल जाननेकी इच्छा होवे हमारे बनाये हुए कबीर दर्शन नामक ग्रन्थका प्रथम दर्शन देखें ।

बालचरित्र है विविधि विधाना । सो संकेत न होय बखाना ।।
परचा जग अनेक परचारा । सो सब लिखित होय विस्तारा ।।
सबै विस्तार छांडि अब गाऊँ । रामानन्द गुरुको जस भाऊ ।।

चौवालिसवाँ प्रकरण ।

बालककबीरका नीरूके घरसे अन्तर्धान होना ।

जब आप अन्तर्धान हो गये तब जोलाहा जोलाही आपको ढूंढने लगे वे दोनों चारों तरफ ढूंढ़ते तथा रोते फिरते थे । उनको बडा दुःख हुआ । वे फूट फूट कर रोते तथा सबसे पूछा करते थे । समस्त नगरमें ढूंढ डाला पर आप कहीं नहीं मिले । उनको तीन दिवसोंपर्यंत भूखे प्यासे रहते बीत गये, अन्नजल कुछ भी उनके मुंहमें नहीं गया । वे अत्यंत निर्बल तथा अशक्य हो गये । जब आपने उन दोनोंको नितान्तही विह्वल पाया तब आप उनके सामने प्रगट हो गये । आपको देखतेही वे प्रसन्न होकर चरणोंपर गिर पड़े और अपने अपराधको क्षमा करवाना चाहा । कहने लगे कि, आप किधर चले गये ? हम ढूंढते २ हैरान हो गये । कबीर साहबने उत्तर दिया कि, तुमने महापाप किया कि, गऊको जबह करवाया । तब जोलाहा जोलाही अनेक सौगंधें खाने लगे कि, हमने यह कार्य नहीं करवाया वरन् हमें इस बातकी तनिक भी सुध नहीं थी—यह कार्य काजीका है । उन दोनोंने बहुत कुछ प्रार्थना तथा विनती कि, तब कबीर साहबने उन दोनोंको निर्दोष समझ लिया तब उनके साथ गये, और रहने लगे । तबसे नीमा और नीरू सदा सचेत रहा करते थे ।

पैंतालीसवाँ प्रकरण ।

बाल कबीरकी काफिरकी व्याख्या करना ।

जब आप छोटे २ बालकोंके साथ खेलते थे तब "राम राम" "गोविन्द गोविन्द" "हरि हरि" कहा करते थे, तब मुसलमान लोग सुनकर कहते थे कि, यह बालक कट्टर काफ़िर होगा । तब उनको कबीर साहब यह प्रत्युत्तर देते थे कि, काफ़िर वह होगा जो दूसरोंका माल लूटता होगा । काफ़िर वह होगा जो कपट भेष बनाकर संसारको ठगता होगा, काफ़िर वह है जो निर्दोष जीवोंका प्राण नाश करता होगा, काफ़िर वह होगा जो मांस खाता होगा, काफ़िर वह होगा जो मदिरा पान करता होगा, काफ़िर वह होगा जो दुराचार तथा बट-

मारी करता होगा, मैं किस प्रकार काफ़िर हूं । उस समय आपने यह साखी कहा :—

साखी—गला काटकर बिसमिल करें, ते काफ़िर वेबूझ ।
औरनको काफ़िर कहैं, अपनी कुफ्र न सूझ ॥

छयालीसवाँ प्रकरण ।

बाल कबीर वैष्णवके बानेमें ।

एकबार कबीर साहबने गलेमें यज्ञोपवीत डाल लिया और अपने माथेपर तिलक लगा लिया तब ब्राह्मणोंने यह देखकर कहा कि, यह तो तेरा धर्म नहीं है तूने वैष्णव वेष कैसे बनाया ? और तू राम राम गोविंद गोविंद नारायण नारायण कहता है, यह तो मेरा धर्म है तेरा धर्म नहीं । तब कबीर साहब ब्राह्मणोंको उत्तर देते कि, हम तो ताना तनते हैं जनेऊ तुम्हारा किस प्रकार हुआ और गोविन्द और राम तो हमारे हृदयमें बसते हैं, तुम्हारे कैसे हुए । तुम तो गीता पढ़ते हो, परन्तु सांसारिक धनके निमित्त सदैव धनाढ्योंके द्वार द्वार पर दौड़ते और भटकते रहते हो और हम तो गोविन्दके अतिरिक्त और किसी अन्यको जानते ही नहीं । इतना सुनकर ब्राह्मण निरुत्तर होते । वहाँ आप यह शब्द कहते—

शब्द—मेरी जिह्वा विस्नू लैना नारायन हिरदे बसे गोविन्दा ।
जम द्वारे जब पूछि परे तब का करे मुकुंदा ॥ टे० ॥
हम घर सूत तनैं नित ताना, कंठ जनेउ तुम्हारे ।
तुम नित बांचत गीता गायत्री, गोविन्द हिरदे हमारे ॥
हम गोरू तुम ग्वाल गुसाईं, जनम जनम रखवारे ।
कबहिं न बार सो पार चलाये, तुम कैसे खसम हमारे ॥
तुम बाभन हम कासीके जुलहा, बूझो मेरा ग्याना ।
तुम खोजत नित भूपति राजे, हरि संग मेरा ध्याना ॥

सैंतालीसवाँ प्रकरण ।

बालक कबीरकी ज्ञान कथनी और गुरुकी पूछ ।

हिन्दू तथा मुसलमान दोनों आपके साथ वाद विवाद किया करते थे सब परास्त होते थे । जब साधुओंने देखा कि, यह लड़का तो बड़ा ज्ञानी है, तब वे

लोग पूंछते कि, कबीरजी ! आपका गुरु कौन है ? उस समय तो आपका कोई गुरु नहीं था, इस प्रश्नपर आप निरुत्तर और निस्तब्ध हो कुछ न बोलते । तब साधु लोग कहते कि बिना गुरुके तुम्हारा ज्ञान किसी कामका नहीं, बिना गुरुके किसीको मुक्ति नहीं मिलेगी, तुम्हारा यह सब ज्ञान और कथनी व्यर्थ है ! जब साधु लोग कबीर साहबपर इस प्रकार कटाक्ष करने लगे तब आपने रामानन्द स्वामीको गुरु करनेका संकल्प किया, उस समय आपका वय पाँच वर्ष मात्रका था ।

गुरु करनेका वृत्तान्त । (बृ. कसौटी)

सो वृत्तान्त अब करों बखाना । जिमि कबीर काशी कथ ज्ञाना ।।
पांच वरषके जब भये, काशीमांझ कबीर ।
गरीबदास अजब कला, ज्ञान ध्यान गुणसीर ।।

जबसे काजी कबीर साहबके वचनोंसे लज्जित होकर चला आया तबसे वह तो कभी साहबके सामने नहीं जाता । परन्तु उस दिनसे साहिबकी ऐसी प्रसिद्धि हुई कि, आपकी ज्ञानपूर्ण बातोंको सुननेके लिये अनेक लोग आपके पास आने लगे ।

षटदर्शन मिलनेको आवैं । आत्मज्ञान सबको समझावैं ।।
सत्य पंथका कीन परचारा । हिंसा कर्म नीच निरधारा ।।

कबीरोपदेश ।

तीरथ बरत अरु मूरत पूजा । जीव हनै ईश्वर कथ दूजा ।।
जीव घात करई जो कोई । बासा तासु नरकमें होई ।।
पाहनको पूजै पाखण्डी । गल काटै जो सन्मुख चंडी ।।
बकरा मुरगा जबह जो करहीं । बिस्मिल्ला: कहि धर्मकहि उच्चरहीं ।।
ते सब पापकर्म कमाहीं । हिन्दू तुरुक दोउ नरके जाहीं ।।

इस प्रकारके उपदेशको सुनकर हिन्दू मुसलमान दोनोंही द्वेष मानने लगे । किन्तु कबीर साहबको कुछ भय नहीं था । बल्कि जब बहुतसे बालक इकट्ठे हो जाते तब आप उनके संग खेलने लग जाते और उनसे कहते सब, 'राम, राम, गोविन्द, गोविन्द' कहो ।

एक दिन एक मुसलमानने कहा, देखो यह कबीर हिन्दू देवोंका नाम लेता है । यह बडा भारी काफ़िर होगा । यह सुनकर कबीर साहबने उससे कहा—

गला काटि बिस्मिल करैं, ते काफिर बे बूझ ।
औरनको काफिर कहैं, अपना कुफ्र न सूझ ।।

यह सुनकर वह मुसलमान चुप हो गया । एक दिन कबीर साहब राम, कृष्ण, गोविन्दका नाम लेते सुनकर एक हिन्दूने कहा, 'क्यों बे ! मुसलमान होकर हमारे ईश्वरका नाम लेता है ?' तब कबीर साहबने उत्तर दिया-

शब्द-भाईरे दुई जगदीश कहांते आये कौने मति भरमाया ।
अल्लहः राम करींमा केसव हरि हजरत नाम धराया ।।
गहना एक कनक ते बनता तामें भाव न दूजा ।
कहन सुननको दुइ कर थापे इक निमाज इक पूजा ।।
वहि महादेव वही मुहम्मद ब्रह्मा आदम कहिये ।
कोइ हिन्दू कोइ तुरक कहावे एक जमीं पर रहिये ।।
वेद किताब पढैं वे खुतबा वै मुलना वे पांडे ।
विगत विगतकै नाम धरावें एक मटियाके भांडे ।।
कहैं कबीर वै दूनो भूले रामै किनहु न पाया ।
वै खसिया वे गाय कटावें वादे जन्म गवाँया ।।

ऐसेही अवसर पर एक दिन एक ब्राह्मणने व्यंगसे कहा कि, भाई ? तू उससे क्या पूछता है, राम नाम विना मुक्ति किसकी हुई है ! रामनाम सब वेदोंका सार है, अल्लाह, खुदामें क्या धरा है ! इसलिये तो कबीर अल्लाह खुदा छोडकर राम राम कहता है । इसपर कबीर साहबने उसको उत्तर दिया-

---

शब्द - पंडित बाद बदौ सो झूठा ।
राम कहे जगत गति पावे, खांड कहै मुख मीठा ।।
पावक कहै पांव जो दाहै, जल कहे तिरषा बुझायी ।
भोजन कहे भूख जो भागै, तौ दुनिया तरि जायी ।।
नरक संग सुवा हरि बोलै, हरि प्रताप नहिं जानै ।
जो कबहूँ उडि जाय जंगलको, तौ हरि सुरति न आनै ।।
विनु देखे विनु अरस परस, विनु नाम लियेका होई ।
धनके कहे धनिक जो होवे, निर्धन रहत न कोई ।।
सांची प्रीति विषय माया सो, हरि भगतनकी हांसी ।
कहहि कबीर एक राम भजे विनु, बाँधे जमपुर जासी ।।

जोई आकर कबीर साहबके विचारका खण्डन करना चाहता वह आपही परास्त होकर चला जाता. तब तो विद्वेषियों मजहबियोंको बडी कठिनता पडने लगी; क्योंकि, बालक कबीरकी अद्भुत लीला और चरित्रको देखकर

संसारी जीव सहजही उनकी ओर आकर्षित होते। और जो कबीर साहबके पास जाता सो आपके उपदेशको ग्रहण कर पाखण्डको छोड देता। यह देखकर विचार करते २ उन्हें और तो कोई उपाय नहीं सूझा, किन्तु उनमेंसे जब कोई कबीर साहबके निकट आता तब लोगोंकी भीड देखकर यह कहता, कि, भाइयो! तुम इस दुधमुहे बालककी बातोंमें क्या लगे हो! विचारेने अबतक गुरुका भी मुख नहीं देखा है, जानते नहीं हो? शुकदेव जैसे तपस्वी और त्यागी ज्ञानी महात्मा विना गुरु किये स्वर्गमें नहीं जाने पाये। तब इस निगुरे बालककी बातोंको सुननेसे तुम्हारा क्या भला होगा?

यह सुनकर कबीर साहबने विचार किया "यद्यपि मुझे गुरु करनेकी आवश्यकता नहीं है, तथापि भक्तिकी मर्यादा स्थापित करने और सत्य धर्मके प्रचारके लिये मैं संसारमें आया हूँ, इसलिये गुरु करना उचित है। दूसरे आज-कलके सबसे बडे गुरु स्वामी रामानन्दजी संसारी भावनाओंमें पडकर सत्य-मार्गसे भ्रष्ट हो रहे हैं। सो वह शिष्य बनकर मेरा उपदेश तो सुनेंगेही नहीं, मैं ही उनका शिष्य बनकर उनको मार्गपर लाऊँ तो ठीक है।" किन्तु, रामानन्द स्वामी तो वर्णाश्रमके फन्देमें ऐसे पडे थे कि, द्विजोंके सिवाय किसीका मुख भी नहीं देखते थे। फिर मुसलमान करके प्रसिद्ध बालक कबीरको वह अपना शिष्य कैसे बनाते? इसलिये कबीर साहबने यह युक्ति निकाली। जो आगेके प्रकरणमें वर्णित है।

अड़तालीसवाँ प्रकरण।

कबीरसाहबका रामानन्द स्वामी वैष्णवके पास जाना और दीक्षा देनेका निवेदन करना और स्वामीजीका दीक्षा देनेसे इनकार करना तब कबीर साहबका एक छोटा लडका होकर रामानन्दके पथमें पडना, स्वामीजीके खडाऊँकी ठोकर कबीर साहबको लगने और चेलाका संबंध बनालेनेका वृत्तान्त।

कबीर साहबका जब पाँच वर्षका वय हुआ तब आपने रामानन्द स्वामीके पास समाचार भेजा कि, स्वामीजी! मुझको दीक्षा देकर अपना शिष्य बनाइये और मुझसे गुरुदक्षिणा लीजिए। यह बात सुनकर स्वामीजीने उत्तर भेजा कि, मैं शूद्रको दीक्षा नहीं देता। देखो रामानन्द और कबीर गोष्टी ज्ञानतिलकमें—

कबीर वचन ।

रामानन्द गुरुदिच्छा दीजें । गुरूदच्छिना हमसे लीजे ॥

रामानन्द वचन ।

सूद्रके कान न लागा भाई । तीन लोकमें मोर बडाई ॥

जब रामानन्दजीने स्पष्ट उत्तर दे दिया कि, मैं दीक्षा नहीं दूंगा, तब कबीर साहब चुप चाप चले आये । स्वामीजीका यह नियम था कि, एकपहर रात रहती तब गंगास्नानको आया करते थे । कबीर साहबने वह समय ठीक कर लिया और जब स्वामी ी स्नान करने चले तब आप छोटे बालकका रूप धारण करके स्वामीजीके मार्गमें सीढ़ियोंपर सो गये । स्वामीजी खडाऊँ पहने चले आते थे । वहाँ आतेही आपकी खड़ाऊँ की ठोकर बालकके शिरमें लगी । तब बालक रोने लगा । जब लड़केको रोते देखा तब स्वामी जी खड़े हो गये, और बालकके शिरपर हाथ धरकर कहा कि, वत्स ! मत रों राम राम कहो । तब कबीर साहब शान्त हो गये और कहने लगे गुरुजी राम राम कहूँ ? स्वामी-जीने कहा हाँ राम राम कहो, उस समयसे कबीर साहब बराबर राम राम कहने लगे और स्वामी रामानन्दजीसे गुरु शिष्यका संबंध जोड लिया । फिर प्रातःकाल कंठी धारण कर हाथमें तुलसीकी माला लेलिया और मस्तकपर तिलक लगाकर ठीक वैष्णव मूर्ति बना राम राम की धुन लगादी । कबीर साहबका यह रंग ढंग देखकर अनेक मनुष्य प्रश्न करने लगे, कबीर साहबजी ! आपने यह वेष वैष्णवका किस कारण बनाया है ? तब वे सब लोगोंको उत्तर देने लगे कि, मैंने रामानन्द स्वामीको गुरु बनाया है । यह बात सुनतेही संन्यासी तथा वैरा-गियोंने स्वामीजीसे जाकर कहा कि, महाराज ! आपने ऐसी मर्यादा छोड दी कि, जोलाहेके पुत्रको शिष्य कर लिया, ऐसा आपको उचित नहीं था । यह बात सुनकर स्वामीजीने कहा कि, मैंने चेला नहीं किया, बुलाओ कबीरको । लोग गये और कबीर साहबको बुला लाये ।

उनचासवाँ प्रकरण ।

स्वामी रामानन्द कबीर साहबको शिष्य स्वीकार करना ।

उस समय रामानन्द स्वामीका यह नियम था कि, वह किसीको देखते नहीं थे और कंदराके भीतर परदेमें रहा करते थे । कबीर साहबको लाकर लोगोंने परदेके बाहर खडा किया । परदेके भीतरसे स्वामीजी बोले कि, ऐ कबीर ! मैंने तुमको अपना चेला कब बनाया । तब कबीर साहबने उत्तर दिया

कि, स्वामीजी जब आप गंगा स्नान को जाते थे, और मैं पथमें पड़ा था, आपके खड़ाऊँ की ठोकर मेरे माथेमें लगी मैं रूदन करने लगा । तब आपने कहा राम राम कह; उस समयसे मैं राम राम कहने लगा । तब स्वामीजीने कहा कि, हां ! एक बालक था जिसको मेरे खड़ाऊँ की ठोकर लगी और उससे मैंने राम राम कहा था । तब कबीर साहबने कहा कि गुरुजी वह लड़का मैं ही था । स्वामी जीने कहा कि, क्या इस प्रकार कोई गुरु चेला हो सकता है ? कबीर साहबने कहा कि, गुरुजी वेदशास्त्रमें रामनामसे बढ़कर और दूसरा क्या है ? तब स्वामीने उत्तर दिया कि, सबसे बढ़कर यही है, इससे बढ़कर और कुछ नहीं है । कबीर साहबने कहा कि, जो नाम सबसे बढ़कर है, सो तो आपने मेरे माथेपर हाथ धरकर देही दिया, फिर गुरु और शिष्य किस प्रकार होता है । कबीर साहबने स्वामीजीको अपनी बातोंसे निरुत्तर कर दिया । तब स्वामीजी बोले कि, जिस बालकसे मैंने राम नाम कहा था वह छोटा था और तू तो बड़ा जान पड़ता है । उस समय कबीर साहब वैसाही छोटा बालक बनकर, स्वामीजीकी गुफाके भीतर घुस गये और उनके चरणोंपर गिरकर कहने लगे कि, मैं उस समय ऐसाही छोटा था न ! यह कौतुक देखकर लोगोंको अत्यंत आश्चर्य हुआ कि, देखो यह बालक कैसा छोटा हो गया । तब अनन्तानन्दजीने, जो रामानन्द-स्वामीके बड़े चेले थे, समझाया कि, गुरुजी आप कबीरको मनुष्यका बालक न समझो, यह सिद्धका अवतार है, आप इससे किसी प्रकारका भेद मत करो । उस समय से स्वामीजीने कबीर साहबसे परदा छोड दिया और अपने शिष्योंमें मिला लिया । स्वामीजीके जितने शिष्य थे सब कबीर साहबको गुरुके समान मानते और अत्यंत मर्यादा तथा प्रतिष्ठा किया करते थे । स्वयम् कबीर साहब भी सबसे नितान्तही नम्रता पूर्वक मिलते थे, आपके गुरु भाई आपके आज्ञा कारी थे, आपका बड़ा ध्यान रखते थे, यों स्वामी रामानन्द स्वामीके चौदहसौ चौरासी शिष्योंमें सबके सरदार कबीर साहब बने ।

फिर समय २ पर कबीर साहब और रामानन्द स्वामीमें ज्ञान और मुक्तिके विषयमें विवाद हुआ करता था । रामानन्द स्वामी तथा कबीर साहब की वार्तालाप बहुत है जिसकी इच्छा हो ढूंढ कर देखलें, कबीर साहबने स्वामीजी को अनेक कौतुक दिखलाए, सो भिन्न २ ग्रंथोंमें लिखे हैं ।

कबीरसाहब और स्वामी रामानन्दजीकी गोष्ठी ।

(बृहतक० बी०)

शिष्य होनेके दूसरे दिन कबीरसाहब सबेरेहीसे स्नान तिलक ध्यानमें लगे । गलेमें एक माला और जनेऊ डाल और द्वादश तिलक करके साक्षात रामानन्दियोंके समान बेष बना लिया, । वैष्णवोंकासा वेष बनाते देखकर नीमाने कहा "बेटा ! यह क्या करते हो ? किसने तुम्हारी बुद्धि ऐसी फेर दी, कि, अपने धर्म कर्मको छोड़के दूसरे धर्मवालोंकी राहपर चलते हो !" उस समय कबीरसाहबने नीमा और नीरूसे अत्यन्त नम्र भावके साथ निवेदन किया, कि, ए मात ! यह एक भ्रमही है कि, यह दीनमें तथा यह बेदीन है धर्म हमारा है यह दूसरेका है ।

सत्य पुरुष सबके लिये एक है उसका कियेसे भेद भाव नहीं है वोही सबका रचनेवाला है सिवा उसके और कोई कर्ता धर्ता और विधाता नहीं राम रहीम सब उसीके नाम हैं पीर फकीर और साधु सब अपने २ ढंगसे उसीका नाम लेते हैं ।

इस प्रकारके अनेकों उपदेशोंके बाद माता पिता दोनों शान्त हो गये आप सदाकी तरह दोवटी बुनकर बाजार में बेच दिया करते धर्म पूर्वक जो उसे मिलता उसीसे साधुसेवा कर दिया करते यदि अधिककी आवश्यकता होती हो स्वयं भगवान् पूरी करते ।

जब कोई सन्त महात्मा आपके घर आवे तो उनके भोजन बनानेके लिये चौका लगवाते । कोरे बरतन मंगवाकर बिशुद्ध भोजनका सामान तयार करके देते अपनेसे जो भी कुछ हो सकती उतनी उसकी सेवा चाकरी करते । यहाँतक कि, इस कामसे उनकी परमस्नेह रखनेवाली माता भी इस कृत्यके करते करते अकुता जाती थी पर कबीर साहिबके प्रेम तथा उनकी आकर्षण शक्तिके आगे सब नतमस्तक हो रहते थे । माताका भी साहस नहीं होता था कि, वो कबीरके कथनको न माने माता का अकुलाना इसी इस शब्दमें आया है ।

शब्द – हमारे कुलकोंने राम कह्यो ।।

सुनो घोरनियाँ सुनो जिठनियाँ, अचरज एक भयो ।
साात सूत या मुंडिया खोये मुंडियाँ क्यों न मेरा ।
माय तुरकिनी बाप जुलाहा बेटा भक्त भये ।।
जबकी माला लई इन पूते तबते सुख न भये ।
नित उठ कोरी गागर मांगत लीपत जन्म गये ।।
पकज शत मुंडिया और सुवे कबीरा कहांते भये ।
रोय रोय कहत कबीरकी माता बेटा मरन गये ।।

हंसि हँसि कहत कबीरकी भेंना भैया अमर भये ।
कहंहि धर्मदास सुनो भाई साधो कबीरा साहिब भये ।।

भाव–हमारे वंशमें 'राम' किसने कहा है ए देवरानी जिठानियों ! सुनो, एक बडे अचरजकी बात है वा मुडियाने सातसूत खोये हैं फिर भी यह मेरा नहीं है मा तुरकिनी बापु जुलाहो किन्तु बेटा भक्त बन रहे हैं। जबसे इसने कंठी माला हाथमें लीं हैं उस दिनसे, मुझे कुछ भी सुख नहीं हुआ। सौ कमलकी कलियाँ कबीरको जन्मावें यह कबीर हुआ कहाँसे हैं कबीरकी माँ रो २ कर कहती है कि, ऐसा कबीर मरा भी नहीं यह सुन कबीरकी बहिन कहती है कि कबीर तो सत्य पुरुषका पथप्रदर्शक है। धर्मदासजी कहते है कि, ए साधुओ! सुनो! कबीरजी साहिब हुए हैं। एक दिन किसीने आपसे कह दिया कि, आपका घर बडा बुरी जगहमें है। इस पर आपने उत्तर दिया कि–

कबीरा तेरा झोंपडा गलकटियोंके पास ।
जेकरेंगे सो भरेंगे तुम क्यों हुए उदास ।

भाव–ए कबीर! तेरा झोपडा कसाइयोंके पास है पर जो करेंगे वो भोगेंगे तुम क्यों उदास होते हो? आपका निजी परिवार कमाल कमाली और लोईका था ये तीनों आपको स्वामीजी कहते थे। पं. हरदेवके साथ कमालीका गान्धर्व विवाह कर दिया था। अन्ततक नीमा नीरूको इनका बोध नहीं हुआ था जहाँतक कि, माताने मसाल हाथमें लेकर इनके विरुद्ध सिकायत की थी। अन्तमें इन्होंने गुरुचरणोंको ही अपना शरण बनाया तथा गुरूका सन्निधिमें अधिक समय लगाने लगे।

कबीर दासजीके बडे भंडारेके बाद नीमा और नीरू तो कालवश हो गये आप घरका त्याग करके सत्यपुरुषके सन्देश सुनाने आदिमें समय बिताने लगे। जब भगवान् रामानन्दजी भगवान्‌की मानसिक पूजा करते थे उस समय सब शिष्य लोग अपने २ नित्य नियमोंमें लग जाया करते थे यदि देर हो जाती थी तो प्रतीक्षा करते हुए वहाँ बैठे रहते थे पीछें नित्य नियमसे उठनेपर सब दर्शस्पर्श करके अपनी २ कुटियोंमें चले जाते थे।

इसी प्रकार एकदिन रामानन्दजी स्वामी मानसिक ध्यानमें मग्न थे। उस समय ठाकुरकी माला छोटी हो गयी। तब स्वामीजीको बडी चिंता हुई कि, अब ठाकुरके गलेमें इसे कैसे पहनाऊँ। तब कबीर साहब स्वामीजीके मनकी बात जानकर बोले कि, स्वामीजी मालाकी गाँठ खोलकर ठाकुरको माला पह-नाओ। स्वामी रामानन्दजीने ऐसाही किया। इस प्रकारके अनेक कौतुकोंको

देखकर स्वामीजीकी इच्छा हुई कि, जानना चाहिए यह कबीर कौन है जो ऐसे २ कौतुक किया करता है इस कारण स्वामीजीने ठाकुरका ध्यान किया तब ध्यानमें दिखाई दिया कि, ठाकुरके सिंहासनपर जो ठाकुर की मूर्ति है उसके शिरके ऊपर कबीर साहबका सिंहासन रक्खा हुवा है। जब कबीर साहबकी ऐसी बडाई और इतना प्रताप दृष्टिगोचर हुवा तबसे स्वामीजी कबीर साहबकी बडी मर्यादा करने लगे अनेक वार स्वामीजी कबीर साहबकी प्रशंसा किया करते थे। रामानन्द तो कबीर साहबको प्रशंसा किया करते और कबीरसाहब अपने गुरुके गुण गाया करते थे।

उस समय गोरखनाथ योगी जो बडाही बलिष्ठ सिद्ध था वह प्रायः रामानन्द स्वामीसे आकर वाद विवाद किया करता था, एकबार उसका सामना कबीर साहबसे हुआ। कबीर साहबका गोरखनाथके साथ बडाही वाद विवाद हुआ। दोनोंही ओरसे अनेक कौतुक दिखलाई दिए। जो लोगोंमें प्रसिद्ध हैं। अन्तमें गोरखनाथ परास्त हुआ। और अपनी सेली और टोपी कबीर साहबके चरणोंपर चढा दंडवत् प्रणाम करके एक ओरको चलता बना।

अध्याय ॥ ४ ॥

सिकन्दर लोदी बादशाहका काशीमें आना कबीर साहबका वहाँ बुलाया जाना उनके दर्शनसे बादशाहके शरीरकी जलन दूर होना सुलतानका उनपर विश्वास लाना–

सम्वत् १५४५ विक्रमीमें बहलूलका पुत्र सिकंदर लोदी काशी नगरमें पहुँचा, बादशाहके शरीरमें जलनका रोग था। वह भी ऐसा कि, उससे उसका शरीर रात दिन जला करता था। उस रोगसे उसे तनिक भी चैन नहीं मिलता था। तब लोगोंसे उसने पूंछा कि, इस नगरमें कोई ऐसा भी है जो मुझे इस रोगसे मुक्त कर सके ? तब वे लोग जो कबीर साहबसे द्वेष रखते थे बोले कि, यहां कबीर नामक एक फकीर है। यदि वह आवे तो श्रीमान् आरोग्य हो सकते हैं (ऐसा कहनेका उनका तात्पर्य यह था, इस बहानेसे कबीरको बादशाहके सामने बुलवाकर मरवा डालें, जब लोगोंने बादशाहसे ऐसा कहा तब बादशाह ने आज्ञादी कि, तुरन्त कबीर साहबको बुला लाओ विलम्ब होने न पावे। शाही आज्ञा पातेही भृत्यगण दौडे और कबीर साहबसे आकर कहा कि, आपको बादशाह बुलाते हैं शीघ्र चलो। कबीर साहब बादशाहके सामने आए। बादशाह आपका दर्शन पातेही उसी समय रोगमुक्त होगया। शरीर ठंडा हो गया, बडा सुख पाया। तब बादशाह सिंहासनसे उठ खडा हुवा। बडी प्रतिष्ठाके साथ

कबीर साबहको अपने बराबर बिठालिया ।। यह कौतुक देखकर बैरियोंके दाँत खट्टे हो गए, जिह्वा बंद हो गई। उस समय ब्राह्मण और काजी जो कबीर साहबसे द्वेष रखते थें बादशाहसे फरियाद करने लगे कि, यह कबीर बडा काफिर है। हिन्दू तथा मुसलमान दोनों दीनोंके विरुद्ध है, अपनेको परमेश्वर कहता है। प्रत्यक्षमें पुकारता फिरता है कि, मैं समस्त संसारका रचयिता हूं सदैव कुफ्रही बकता रहता है। यें बातें सुनकर बादशाहने पूंछा कि, ऐ कबीर ! क्या यह बात सत्य है कि, आप अपनेको परमेश्वर कहते हो ? देखो गरीबदासजीकी वाणीमें (कबीरचरित्र बोध पृ.३३)

गरीबदास बचन ।

शाह सिकन्दर बोलता, कह कबीर तू कौन ।
ग़रीबदास गुज़रै नहीं, कैसे बैठा मौन ।।

उत्तर कबीर साहबका ।

हम ही अलख अल्लाह हैं, कुतुब ग़ोस गुरु पीर ।
ग़रीबदास मालिक धनी, हमरो नाम कबीर ।।
मैं कबीर सर्वज्ञ हूं, सकल हमारी जात ।
ग़रीबदास पिंडदानमें, युगन युगन सँग साथ ।।
शाह सिकंदर देखकर, बहुत भए मिसकीन ।
ग़रीबदास गति शेरकी, थरकीं दोनों दीन ।।

जब कबीर साहबने प्रत्यक्षमें इस बातको कहा एवं सर्व साधारणके सामने शाही इजलासमें अपनेको परमेश्वर होनेका दावा किया। खुल्लेमखुल्ला कहा कि, मैं समस्त सृष्टिका रचयिता हूँ। तब बादशाहने एक गाय मँगवाई और अपने सामने हलाल करवाकर कबीर साहबसे कहा कि, यदि आप परमेश्वर हों तो इस गायको जिला दीजिये।

गरीबदास बचन ।

गऊ पकड़ बिसमिल करे, दरगह खंड वजूद ।
ग़रीबदास उस गऊका, पिए जोलाहा दूध ।।
चुटकी तारी थाप दे, गऊ ज़िलाई वेग ।
ग़रीबदास दूहन लगे, दूध भरी है देग ।।

शाहने गायको हलाल करवा कबीर साहबसे कहा कि, इसे जीवित करिये तब कबीर साहबने उस गायके थापी दी तथा चुटकी मारी—उसी समय वह गाय उठ खडी हुई। उसका सब घाव तथा दर्द मिट गया। उसके स्तन दूधसे भर

गये । उसके दुग्धसे बरतन भर गए । उस दुग्धको पान करके लोग अत्यंत हर्षित हुए । शाह सिकंदर तथा उसके सभासद्गण इस कौतुकको देखकर अत्यंत आश्चर्यान्वित हुए । बादशाहको विशेष विश्वास हुआ ।

शेखतकीका क्रोध ।

जब शाह सिकन्दरके पीर शेखतकीने देखा कि, अब तो शाह सिकन्दरने कबीर साहब पर बहुत विश्वास किया है और उनकी अत्यंत प्रतिष्ठा तथा मर्यादा करता है तब वह जल मरा । कारण यह कि, वह बडाही द्वेषी तथा ईर्षा करनेवाला था । उसने बादशाहसे कहा कि, ऐ सिकंदर ! आपने जोलाहेसे प्रेम तथा मुझसे अलगाव किया है । तब बादशाहने कहा कि, ऐ गुरुजी ! आप तो मेरे पीर हो वह एक दरवेश (साधु) है । आपने आज्ञा दी थी कि, गुरु तथा फकीर स्वयम् परमेश्वर हैं । आप और कबीर एकही हैं । मैं जलनकी बीमारीसे मर रहा था मेरे जाते हुए प्राण उसने रख लिए-मैंने उसके प्रसादसे घातक रोगसे आरोग्य लाभ किया है ।

लोगोंका शेखतकीके पास आना ।

जब बादशाहने ऐसा कहा तब शेखतकी चुपचाप अपने डेरेको चले गए । शेखजी अपने डेरेमें बैठे थे वे लोग जो कबीर साहबसे शत्रुता रखते थे शेखजीके पास आकर इकट्ठे हुए । ब्राह्मण तथा मुल्ला सब मिलकर कहने लगे कि, यह कबीर बड़ा काफ़िर है । हिन्दू तथा मुसलमान दोनोंकी निन्दा करता है । हम लोग गुरु तथा देवताके नामपर जो बलिप्रदान करते हैं अथवा कुरबानीके नामपर गऊ बकरी और मुरगा चढ़ाते हैं । इस कारण यह हम लोगोंको कसाई कहता है । इस कबीरको समस्त काशीवासी मानते हैं । हमारी कोई बात नहीं पूंछता यदि यह जोलाहा किसी प्रकार मारा जाय तो हमारी छातियोंपरका भारी बोझा टल जावे । जब शेखतकीने ब्राह्मणों तथा मुसलमानोंसे ऐसा सुना तब अत्यंत प्रसन्न हो कहने लगे कि, जोलाहेसे और मुझसे तो पहलेहीसे वैर हो रहा है । अब तुमलोग इस बातपर उद्यत हो तो मैं अब निश्चय कबीर साहबका वध करूंगा कदापि जीवित न छोडूंगा । मेरा नाम शेखतकी है । मैं बादशाह शिकंदरका पीर हूँ । देखूं तो वह मेरे हाथसे किस प्रकार बचता है, कैसा फक्कड कबीर है । मैं चाहूँ तो उसको नदीमें डुबवाऊं-चाहूँ तो अग्निमें दहन करदूं-चाहूँ तो दीवारमें चुन दूं-चाहूँ तो टुकडे २ काटकर कीमा करूं-यदि चाहूँ तो बठुवेमें चुरा डालूं । यदि चाहूँ तो तोपके सामने रखकर उडाऊं । चाहूँ तो कुएँमें बंद कर दूं और चाहूँ तो हाथीसे चखा डालूं ।

यह बात सुनकर काजी तथा पण्डितगण अतिप्रसन्न हो प्रशंसा करने लगे कि, आप क्यों न ऐसे हों वाहवा ! आपसे सब कुछ होगा अब आप कृपा करें कि, यह जोलाहा किसी प्रकार मारा जावे ।

शेखतकीका कबीरजीको मरानेका प्रयत्न ।

यह बात सुनकर शेखजी बादशाहके पास जाकर कहा कि, ऐ सुलतान ! तू मेरा कहना मान ले । इस जोलाहेके प्राणघातकी आज्ञा देदे । इसने बड़ा कुफ्र मचाया है । यदि तू इसको मरवा न डालेगा तो मैं तुझको शाप दूंगा जिससे तेरी सम्पत्ति तथा तेरे प्राणका विनाश हो जावेगा ।

शेखतकीके कबीरजीपर जुल्म ।

यह बात सुनकर शेखजीको बादशाहने समझाया कि, ऐ पीरजी ! आपने तो मुझसे कई बार कहा था कि, पीर फकीर स्वयम् परमेश्वर हैं । तब आप क्योंकर कबीर साहबके प्राणघातके निमित्त आग्रह करते हैं । उन्होंने तो आपकी कोई क्षतिही नहीं की है फिर आपने क्यों ऐसा कुफ्र मचाया है ।

कबीर सागर न. ७ पृ. ६७ बोध सागर ।

कहो कबीरके मारन ताईं । कुछ न हमारो यहाँ बसाई ॥
पीर फ़क़ीर जात अल्लाहा । मेरो जोर न पहुँचे ताहा ॥

साखी ।

जो वह होते रैयत, तो हम करते जोर ।
वह अलमस्त फकीर है, तहाँ न फावै मोर ॥
तुमहूँ कही समझाय, पीर फकीर अल्लाह ।
अब तुम कहते मारने, यह न होय हम पाह ॥

रमैनी ।

अहो पीरजी तुम वह एका । अपने मनमें करो विवेका ॥
इन कुछ तुमरो नाहिं बिगारा । काहे तुमने कुफ्र पसारा ॥
बुजुर्ग सब नेकी फरमावे । जोर जुलम कुछ ताहि न भावे ॥

साखी ।

कहा हमारा कीजिए, छोड दीजिए रार ।
सुलह कुल्ह दे बैठिए, अल्ला ओर निहार ॥
कहे तक़ी सुलतान सुन, तुझे नहीं कुछ दुःख ।
जो मैं कहूं सो मानिए, कर मेरो सन्तोष ॥

कहे सिकन्दर पीर सुन, मेरो शिर वरु लेहु ।
फक्कड कबीर न मारिए, यह माँगे मोहि देहु ॥

रमैनी ।

सुन्ते ही तकी क्रोध प्रजारा । शिरसे ताज जमींपर मारा ॥
निपट विकल देखो तेही भाई । तब हम शाहसे कहा बुझाई ॥
कहैं कबीर सुनो सुलताना । करो पीरको वचन प्रमाना ॥

साखी ।

पीर कहे सो करो तुम, हमें नहीं कुछ त्रास ।
हमहू कहें सत नाम बल, कहें कबीर सुदास ॥

रमैनी ।

कहे सिकन्दर सुनोजी पीरा । मन मानैं सा करो कबीरा ॥

साखी ।

डारो मार कबीरको, हम नहिं मानैं ऊन ।
ताका कबहु न भलाहो, जो करे फक्कड़का खून ॥

रमैनी ।

शेख तक़ी तब कहे रिसाई । है कोई बाँध कबीरा भाई ।

साखी ।

शेख तकी आपै उठ, काज़ी पण्डित झार ।
बाँध बाँध सब कोई कहै, कोइ न करे गोहार ॥
बाँह बाँध पग बाँधके, बोर गङ्गजल नीर ।
नहिं संशय निश्चिन्त होइ, निर्भयदास कबीर ॥
गङ्गाजलपर आसन, बंद परे खहराय ।
जिन कबीर सत नामबल, निर्भय मङ्गल गाय ॥
शाह सिकंदर देखही, औ ढाढ़े सब लोग ।
धन्य कबीर सब कोई कहै, शेख तक़ी भा सोग ॥

रमैनी ।

शेखतकी तब मीजे हाथा । सूखे मुँह नहिं आवैं बाता ॥

साखी ।

शाह सिकन्दर जोर कर, कहै सुनो तुम पीर ।
किसको बाँध डुबाव है, निर्भयदास कबीर ॥

(देखो ग्रंथ कबीरसागर नं. ११ कबीरचरित्रबोध तथा दूसरे ग्रन्थोमें) तब शेखने कहा, मैं जानता हूं कि, कबीरने जादू किया है इसकारण वह नहीं डूबा है। यदि अबकी बार मैं कबीरको पाजाउँ तो अग्निमें जलादूं–यदि वह अग्निसे बच जावेगा तो मैं उसको परमेश्वरका सत्य अंश समझूंगा। उसी समय कबीर साहब गङ्गासे बाहर निकल शाहसिकंदरके निकट गये आपके देखतेही शाह उठ खडा हुआ और अत्यंत मान संभ्रम सहित कबीर साहबको अपने बराबर आसनपर बैठा लिया। यह देखके पूर्वोक्त शेख अत्यंत क्रुद्ध हुआ। उसके नेत्र रक्तवर्णके होगये, कहा कि ए, कबीर ! तूने जादू किया है इस कारणही जलमें नहीं डूबा। तब कबीर साहबने कहा कि, ऐ शेखजी ! जैसे आप कहो बादशाह बोला कि, आप मुझे कबीरके मारनेके लिये कहते हैं पर इसमें मेरा कुछ बश नहीं है क्योंकि, पीर और फकीर परमात्माकी जात हैं वहां मेरा जोर नहीं पहुंच सकता। यदि वो रैयत (प्रजा) होते तो मैं जोरभी करता वो लापरभा फकीर है वहां जोर करना शोभा नहीं देता। आप ही तो यह समझकर कहा करते थे कि, पीर और फकीर परमात्मा हैं अब आप इस फकीर कबीरको मारनेके लिये कहते हैं यह मुझसे नहीं हो सकता। आप और वो एकही तो हैं यह अपने मनसे विचारो उसने तो आपका कुछ भी नहीं बिगाडा है। आप उसपर क्यों गजब करना चाहते हो, बडे लोग नेकी बताया करते हैं, उन्हें जोरो जुल्म नहीं अच्छे लगते। आप मेरी बात मानलें लडाई छोड दें परमात्माकी ओर देखकर मेल करलें। यह सुन तकी बोला कि, ए सुलतान ! तुमें कोई दुःख न होगा मैं कहूं सो मानकर मेरा सन्तोष कर। यह सुन सिकन्दर बोला कि, चाहें मेरा शिर लेलीजिये पर फक्कड कबीरको न मारो, मैं यह मांगता हूं मुझे देदीजिये। यह सुन तकीने क्रोधमें आ आपने ताजको जमीपर दे मारा। कबीर दासजी कहते हैं कि, जब हमने शाहको व्याकुल देखा तो कह दिया कि, ए सुलतान ! अब पीरका कहा करें हमें इसमें कुछ भी त्रास नहीं है मैं इसी तरह कह रहा हूं यह भी बात नहीं है किन्तु सत्य नाम (श्रीराम नामके बलपर) कहता हूं क्योंकि, मैं भी उसका ही दास हूं। यह सुन बादशाहने कह दिया कि, जो चाहे सो कबीरका करलो, आप मार डालो हम कुछ भी बुरा न मानेंगे पर जो साधुको मारता है उसका भला नहीं होता। क्रोधमें आकर शेखतकीने कह दिया कि, कोई है जो कबीरको बांधे। आप शेखतकी उठ खडे हुए तथा सबी काजी पंडितभी बांध २ कहने लगे। किसीनेभी नहीं कहा कि, देखो विचारो। हाथ पैर बांधकर गंगाजीमें डार दिया, पर, कबीरजीको इसमें कोई संशय नहीं हुआ। आप गंगाजलके ऊपर आसनबांधे दीखे

इन्द्रियजित कबीर सत्यनामके बलसे निर्भय होकर मंगल गारहे थे । यह तमासा शाह सिकन्दर तथा दूसरे लोग देख रहे थे । सबी धन्य कबीर ! धन्य कबीर ! कहने लगे इससे शेखतकीके दिलमें शोक हुआ । वो हाथ मलने लगा मुंहसे बात नहीं आती थी । सिकन्दर बादशाहने जोरके साथ शेखतकीसे कहा कि, आप बांधकर डुबाना चाहते हैं यह निर्भय पदका दास कबीर हैं दूसरा कोई नहीं हैं । वैसा मुझको मत समझो, मैं जादू क्या जानूं मुझे तो केवल साहब नामका जादू है । तब शेखजीने कबीर साहबको एक देगमें बंद करके देगका मुंह भली भाँति बंद कर अग्निपर धर दिया और स्वयम् खडा हो देगके नीचे अग्नि जलाने लगा उस समय बादशाहने समाचार भेजा कि, पीरजी ! आप किसको आँच दिलाते हैं कबीर साहब तो मेरे पास बैठे हैं । तब शेखने देगका मुंह खोला तो उसको खाली पाया । तब शेखने कहा कि, अब आगसे बचो तब मैं आपपर विश्वास करूंगा । तब कबीर साहबने कहा कि, जो आपकी इच्छा हो-सो करो अब आगमें जला दो । तब शेखजीने बहुतसा काष्ठ मँगाया पीछे कबीर साहबका हाथ पाँव बँधवा कर आगमें डालदिया उसी समय वह अग्नि बुझकर बिलकुल ठंडी होगई । शेखजी बहुत बल करते रहे पर वह नहीं जले; कबीरसागर नं० ९ के बोध सागरमें लिखा है कि, फिर शेखजी तलवार लेकर अपने हाथसे काटने लगे कबीर साहबके शरीरसे असि इस प्रकार बाहर निकल जाती थी जैसे कि, वायु अथवा खलाके मध्यसे कृपाण निकलपर पार हो जाती है । इस प्रकार कबीरसाहबके शरीरसे पार होकर निक-लती और शरीरपर तनिक चिह्न भी नहीं होता था न कोई रोमही मैला हुवा । किन्तु शेखजी मारते २ थक गए । फिर शेखजी आपको कुंएँमें डाल दिया उसको ईंट तथा पत्थरोंसे भरही रहे थे कि,कबीर साहब शाह सिकन्दरके समीप जा बैठे । तब शाह सिकन्दरने अपने पीरके पास समाचार भेजा कि, पीरजी ! आप किसको कुएँ में बंद कर रहे हो कबीर साहब तो मेरे निकट बैठे हुए है । फिर शेखने कबीर साहबको तोपपर बांधकर उडवायापर तोपमें जल भर गया । फिर हाथीसे कचरवाया किन्तु वह हाथी चीख मारकर भाग गया ये सब लीलाएँ देख-कर शाह सिकन्दरने कबीर साहबका बडा मान सम्मान किया । आपको अपने साथ लेकर इलाहाबाद गया, गङ्गातटपर बादशाह कबीर साहब और शेख बैठे थे, तब शेखने कहा कि, ऐ कबीर साहब ! गङ्गामें जो मुरदा बहा जाता है उसको आप जीवित करो । तब कबीर साहबने कहा कि, ए मुरदे ! परमेश्वरके प्रभावसे उठ उसी समय वह उठ खडा हुआ । कबीर साहबने उस मुरदाको जीवित किया । मुरदेके रूपमें छोटा लडका था । जब वह जीवित हुआ तब उसका नाम कमाल

रखा। वही कबीरका पुत्र कमाल कहलाता है।[देखो ग्रन्थ निर्भयज्ञानमें] इसप्रकार शेखने कबीर साहबकी बावन लीलाएँ देखीं। तब बादशाह और शेखजी दोनों कर जोडकर खडे हुए और निवेदन करने लगे कि, ऐ कबीर साहब! आप परमेश्वर हो। आपही खुदा हो आपही हमारे गुरु तथा पीर हो। हमारा अपराध क्षमा करो। हमको शाप मत दीजिये। तब कबीर साहबने कहा कि, ऐ प्यारे बादशाह! आपका तो कुछभी दोष नहीं है परन्तु आपके गुरुनेही हमारे साथ यह सब कुछ किया है, मैं उसेभी कभी शाप नहीं दूंगा क्योंकि जैसा कोई करता है, वह अपनेही निमित्त करता है।

कबीर साहबकी शाह सिकन्दरने नम्रतापूर्वक बन्दनाकी।

देखो ग्रन्थ बोधसागर गरीबदासका वचन।

साखी – कंध कुल्हाड अघाल, मतक दुनियाँ भार।
गरीबदास शाह यों कहे, बखशो अबकी बार॥
तहँ सतगुरु लौलीन हो, परचा अबकी बार॥
गरीबदास शाह यों कहे, अल्ला देव दीदार॥
सुनो काशीके पण्डितो, काजी मुल्ला पीर।
गरीबदास उस चरण गहि, अल्ला अलख कबीर॥
यह कबीर अल्लाह है, उतरा काशी धाम।
गरीबदास शाह यों कहे, झगड़ मुए बेकाम॥
क्यों बिगड़ी डगरी दुनियां, कहता कबीर समूल।
गरीबदास उस वृक्षके, अनन्त कोटि रंगफूल॥

हम्द साखी।

ऐ कबीर तुम अल्ला हो, पलक बीच परवाह।
गरीबदास कर जोरके, ऐसे कहता शाह॥
तुम दयालु दरवेश हो, धर आए नररूप।
गरीबदास शाह यों कहे, बादशाह जहान भूप॥
उठे कबीर करम किया, बरसे फूल अकाश।
गरीबदास सैली चलै, चँवर करे रैदास॥
तीन एक चण्डोलमें, रैदास शाह कबीर।
गरीबदास चौरा करे, बादशाह बलवीर॥
मुकुट मनोहर शीशधर, चढ़े फील कबीर।
गरीबदास उस परीमें, कोई न धरता धीर॥

श्री कबीर साहबजीके भण्डारेकी कथा ।

कबीरकसोटी जब ब्राह्मणोंने देखा कि, अब तो कबीर साहबका विशेष गौरव हुवा, हम लोगोंकी कोई युक्ति नहीं चली, तब सबने परामर्श करके यह निश्चय किया कि, अब ऐसी युक्ति करनी चाहिए जिसमें कि, कबीरसाहबकी प्रतिष्ठा भङ्ग हो जावे । तब उन लोगोंने चार ब्राह्मणोंको नियत किया कि, तुम लोग देश देशान्तरोंमें जाकर समाचार दो कि अमुक दिवस कबीर साहबका भण्डारा है । सब संत महंत कृपा करके आवें । तब उन चारों ब्राह्मणोंने डाढी मूँछ मुँडवाकर वैष्णव वेष बनाया । उन चारोंने दो दो चेले किये । यह सब बारह हुए, ये बारहों ब्राह्मण सब स्थानोंमें दौड़ गए और समस्त संत महन्तोंसे कहा कि, अमुक दिवस कबीर साहबका भण्डारा है ।

यह बात सुनकर समस्त संत महंत उस दिन कबीर साहबकी कुटीपर आए । बडी भीड़ हुई । कबीर साहबने अपना इकतारा लेकर बनका मार्ग लिया शब्द गाते हुए सत्यलोककी ओर दृष्टि की । तब सत्यलोकके हंस, मनुष्यस्वरूप धारण करके उतर पडे लाखों बोरे नाना प्रकारके स्वादिष्ठ पकवानोंके लेकर आ पहुँचे । केशव बनजारा मेवे तथा अन्यान्य वस्तुएँ लेकर आ पहुँचा । नौ लाख बोरे खानेकी वस्तुओंके भरकर केशव बनजारा आया था, भण्डारा आरंभ हो गया । सब साधुओंकी सेवा तथा पहुनई आरंभ हो गई । किसीको इस बातकी सुध नहीं कि, ये कौन लोग हैं तथा कहांसे आए हैं, जो भण्डारा कर रहे हैं। पन्द्रह दिवसपर्यन्त बराबर भण्डारा होता रहा इसके पीछे समस्त संत महंतोंको भेंटे तथा वस्त्रादिक देकर बिदा किया । सब धन्य कबीर धन्य कबीर एवं जय कबीर कहते हुए बिदा हुए सब द्वेषी ब्राह्मण मुँह पसारकर रह गए कुछ न बन पडा । देवी भागवत छठएँ स्कंधके ग्यारहवें अध्याके ४२-४५ में लिखा है कि, जो त्रेता और द्वापरमें राक्षस थे वेही अब कलियुगमें ऐसे ब्राह्मण हैं जो पाखण्डमें लगे हुए हैं प्रायः सज्जन मनुष्योंको ठगते हैं झूठे तथा वेदके धर्मसे हीन हैं, कपटी, चुस्त चालाक-धमंडी वेदविहीन, शूद्रोंकी सेवा करनेवाले हैं तथा कोई कोई अनेक अपधर्मोंको प्रवर्त करते हैं । वेदनिन्दक, क्रूर, धर्मभ्रष्ट और गप्पी हैं ।। कबीर साहबने भी अनेक बार कहा है कि, कलियुगके वे ब्राह्मण राक्षस हैं इस कारण वे साधुओंसे वैर करते हैं ।

लक्ष्मीजीका कबीर साहबको लुभानेकी इच्छासे आना और विफलमनोरथ होकर लौट जाना ।

विष्णुने लक्ष्मीजीसे कहा कि, तीनों लोकमें तो ऐसा कोई नहीं है जो तुम्हारे

नयनबाणरूपी, लोभद्वारा आहत न हुआ हो। तुम्हारी मोहिनी मूर्ति और तुम्हारी कटाक्षद्वारा अपनेको न भूल गया हो। पर जब तुम कबीर साहबपर अपना जादू डालोगी तब मैं तुम्हारे मनमोहनमंत्रकी प्रशंसा करूंगा। इस कारण तुम काशीजी जावो। कबीर साहबके हृदयको हस्तगत करलो। लक्ष्मीजी काशीमें कबीर साहबके पास अत्यंत हावभावके साथ आ सामने खडी होकर कहने लगीं कि, ऐ महाराज! आप मुझको अपने घरमें रक्खो। मैं आपके पास निवास किया चाहती हूँ। तब कबीर साहबने उसकी ओर दृष्टिपात भी नहीं किया और कहा कि, ए लक्ष्मी! तू मेरे समीप क्यों आई है? क्या स्वर्गलोक उजाड़ पड़ा है जो तू मेरे पास यहां आई है-मुझे तेरी कामना नहीं है तू यहांसे शीघ्र चलीजा तब लक्ष्मीने अत्यंत नम्रता की कि, महाराज! मुझको चार दिन तो अपने घरमें रहने दो। तब कबीर साहबने कहा कि, तू यहांसे चली जा। धन अनेकों अनर्थोंकी जड़ हो जाता है मैं तो निर्धनही अच्छा हूं। लक्ष्मी निराश होकर वैकुण्ठको पलट गई इसके पीछे देवराज आये और कहने लगे कि, कबीरसाहब आप जो कुछ राजकाज धन सम्पत्ति मांगें वो सब मैं दूं। कबीर साहबने कहा कि, इन सब वस्तुओंकी तो मुझको कामना नहीं है, यदि तुम्हारे पास वह नाम हो कि, जिससे आवागमन मिट जावे तो वह मुझको अवश्य दीजिये। उसने कहा कि, यह तो अभी मेरे अधिकारसे बाहर है, पीछे धन्य कबीर धन्य कबीर ऐसा कहते हुए निजलोकको चले गए। ये सब कौतुक जब सिकन्दरशाह देख चुका तब उसने कबीरसाहबको उत्तम वस्त्र पहनाए। जड़ाऊ मुकुट शीशपर रक्खा। आपको हाथीके ऊपर सवार करा पीछे आप खड़ा हुवा चँवर करता तथा सत्यगुरुकी प्रशंसा करता हुवा अपने साथ ले चला। यह लीला देखकर समस्त काशीके लोग चकित हो रहे। ब्राह्मण और मुल्ला काजी इत्यादि सबके मस्तककी वायु पृथक् हो गई। शाह सिकन्दर कबीर साहबको दिल्लीको ले गया। उस समय शेखतकीके मनमें अत्यंत खेद हुआ। कबीर साहबकी आश्चर्यमय लीलाएँ तो अगणित हैं जिनका विवरण देवता तथा मनुष्य कोई नहीं कर सकता मैं भी उन सबको यही छोड़ता हूं। केवल आवश्यकीय बातें लिखता हूं। जब कबीर साहबने अपना धर्म्म पृथ्वीपर प्रचलित किया, सत्य पुरुषकी भक्ति प्रगट की और सत्य-

दश सोहंगका हाल।

कबीर साहबने ग्रन्थ मुहम्मदबुद्धिमें जिन दश स्थानोंका विवरण किया है वह यही दश सोहंग हैं। १-सत्यपुरुष सोहंग। २-सहज सोहंग। ३-अंकुर सोहंग। ४-इच्छा सोहंग। ५-सोहंग सोहंग। ६-अचिन्त्य सोहंग। ७-अक्षर

सोहंग । ८–निरञ्जन और माया सोहंग । ९–ब्रह्मा विष्णु और शिव सोहंग । १०–समस्तजीवसोहंग । यह दश सोहङ्ग हैं और समस्त संसार सोहङ्ग है । जिसका गुरु जहाँकी सूचना देगा वह उसी स्थानको पहुँचेगा । यह समस्त जीवोंमें विष्ट हो रहा है समस्त शरीरसे यही शब्द निकल रहा है । और समस्तका निचोड तथा सिद्धांत यह है कि, इसके ध्यानसे ज्ञान है और उसहीसे शान्ति है । कबीर साहबने जो दस स्थान प्रगट किये हैं उन दशके निमित्त इस प्रकारकी विद्याएँ कही हैं । देखो ग्रंथ मुहम्मदबुद्धिमें उनके नाम यह हैं–१ शरीअत (व्याय) । २–तरीकत (प्रथा) । ३–हकीकत । ४–मारफत । ५–मरौवहत । ६–ध्यान दोरहियत । ७–जुलकार चन्द्रगी । ८–हुक्म मुरतिद । ९–दएनाका । १०–शब्द सार । ये दश प्रकारकी विद्याएँ हैं। जिस किसीको जहाँका ज्ञान देता है, वह उसी स्थानको पहुँचता है । विना विद्याके कोई पहुँच नहीं सकता जिसके गुरुकी जहांलों पहुँच है वह अपने शिष्यको वहींलों पहुँचा सकता है । पुस्तकों द्वारा केवल चार प्रकारकी विद्याओंको मनुष्य प्राप्त कर सकते हैं । कर्म जो है उसकी पहुँच नासूत स्थानपर्यन्त है । उपासना मलकूतपर्यन्त पहुँचाती है । योग जिबरूत स्थानमें स्थित कराता है । जहाँ सहस्र पँखुडियोंका कमल है, वहां अलख निरञ्जन ज्योतिस्वरूप रहता है । निर्विकल्प समाधि लगाकर योगी लोग उसी स्थानपर जा पहुँचते हैं – आगे नहीं । जिसको मार्फतकी श्रेणी प्राप्त हो–उरफानकी विद्याका प्रकाश धारण किए हो वह लाहूत स्थानको जाता है। लोक और वेद द्वारा मनुष्यों के निमित्त ये चार स्थान ठहराए गए हैं । अचिन्त्य द्वीपपर्यन्तको कभी २ कोई २ साधुओंमें से इङ्गित करनेवाले हैं–मनुष्यको इससे पारका समाचार तनिक भी ज्ञात नहीं है । सब व्यर्थही हवाई बाँध मुक्तिमार्ग बतलाते फिरते हैं–समस्त धर्मके मनुष्य प्रण रोपते हैं कि, हमारे धर्म्ममें मुक्ति है, पर कोई कहीं नहीं पा सकता । जिवरूत स्थानमें तीनोंका रचनेवाला रहता है–सब उसीकी बंदना करते हैं– उसीके द्वारा चार प्रकारकी मुक्ति और समस्त स्वर्गोंका सुख प्राप्त करते हैं–इन समस्त स्थानोंमें शारीरिक आनन्द तथा पाशविक कामनाके अतिरिक्त और लोकका समाचार दिया–तब किसीको निश्चय नहीं हुआ । मुग्ध वेद तथा पुस्तकों की लिखावटोंको सत्यमाना, चार प्रकारकी ही मुक्तिको मोक्षमार्ग न जाना, पर कबीर साहब इन चार प्रकारोंकी मुक्तियोंको बन्धन इच्छा हो तो कालपुरुषका महाजाल बतलाते थे, लोगोंका वह पथ छोडना तथा इस पथको ग्रहण करना बडा दुष्कर हुआ । इस कारण सब आपके वैरी हो, ऐसा वैसा व्यवहार करने लगे । इसी कारण मैं उन स्थानोंको परिलक्षित किया चाहता हूं जिनसे संसार

नितान्तही अनभिज्ञ तथा अज्ञ है, केवल चार मुक्तियोंको सत्य मानते हैं जो वस्तुतः वास्तविक हैं । निम्नलिखित विवरणको देखो —

सत्य लोक।

यह सत्यलोक सत्यपुरुष का स्थान है और इसको अमरधाम कहते हैं और यहाँहीसे कबीर साहब सत्य पुरुषका समाचार लेकर पृथ्वी पर आया करते हैं और इसी जगदीश्वरकी आज्ञा समस्त संसारपर चलती है और सब इसहीके अधीन हैं।

जाहूत आहूतसे असंख्य लाख योजन ऊपर है—और दश असंख्य लाख योजन जल अर्थात् शून्य है।

आहूत राहूतसे दो असंख्य योजन ऊपर है।
राहूत साहूतसे चार असंख्य योजन शून्यके ऊपर है।
साहूत बाहूतसे पाँच असंख्य शून्यके ऊपर है।
बाहूत हाहूतसे तीन असंख्य योजन ऊपर है।

सहजद्वीप सहजपुरुषका स्थान है।
यह हाहूत स्थान लाहूतसे एक असंख्य योजन ऊ०

अंकुरद्वीप अंकुरपुरुषका स्थान है।
यह लाहूतमलकूतसे ग्यारह पालंग योजन ऊपर है

इच्छाद्वीप इच्छापुरुषका स्थान है।
यह जबरूत स्थान मलकूत से अठारह करोड़ योजन ऊ०

सोहङ्गद्वीप सोहंग पुरुषका स्थान है।
अचिन्त्यद्वीप आचिन्त्यपुरुषका स्थान है।
अरण्यद्वीप अक्षरस्थान सायुज्य मुक्ति।
यह मलकूत पृथ्वीसे आठ सहस्र योजन ऊपर है।

झांझरीद्वीप सारूप्यमुक्ति निरञ्जन स्थान यह
यहनासूतस्थान पृथ्वीसे छत्तीस सहस्रयोजन ऊपर है।

वैकुंठ विष्णुका स्थान सामीप्यमुक्ति।
दसु अंशका स्थान सालोक्यमुक्ति।
देवताओं की पुरियों और सिद्धोंके स्थान है।

पृथ्वी और नासूत स्थानके मध्य यह।

पृथ्वी ० भलाई बुराई का स्थान॥

यह सात नरक हैं। — इन सात नरकों में चौरासी कुण्ड है और पापियोंके दंड पानेका स्थल है।

कुछ भी नहीं है। त्रियातीतकी श्रेणी जिसको वेद सबसे बढकर बतलाता है, इस श्रेणीमें अलख निरञ्जन अधिकृत है—जितने साधुगण उस श्रेणीको हस्तगत कर लेते हैं—वे सब उसके समान होजाते हैं—सब सृष्टिकी रचना करनेका सामर्थ्य रखते हैं—वे सबके देव उसी विद्यासे प्रकाशित है—समस्त सिद्धियाँ उनके वशमें

हैं—और वे सब अपनी रचनाके रचयिता और स्वामी हैं—वे लोग जगत्प्रभु कहलाते हैं । सांसारिक मनुष्योंमें वह बल और बुद्धि कहाँ है कि, साधुओंके भेदको पहचान सकें । ये बातें केवल सत्यगुरुद्वारा प्राप्त होती हैं जिनके ऊपर पारख गुरुकी दया हो वह इस विषयको जान सकता है—किसी मनुष्यमें इतना पौरुष नहीं । सात स्वर्ग, सात द्वीप, पृथ्वी और नरक—ये ब्रह्माण्डके इक्कीस भाग निरञ्जनके अधीन हैं—सबके ऊपर वह आज्ञा चलाता है । सात द्वीप जो पृथ्वीके हैं उनमें भाँति-भाँति के सुख दुःख हैं—जो सात स्वर्ग हैं उनमें बहुत सुख है—पर वहां यह दुःख है कि, एक दूसरे की ईर्षासे जलते रहते हैं स्वर्गके लोगोंकी किसी सीमापर्यन्त ज्ञान होता है कि, अब हम स्वर्गसे गिर पडेंगे—हमारा सब सुख चला जायगा आपत्तियों तथा दुर्दशाओंमें फँस जायगे इस दुःखसे वे अत्यंत कातरतासे विलाप करते हुए दुःख करते हैं अन्तमें उनका स्वर्गीय शरीर इसी दुःखसे टूट जाता है पीछे वे पृथ्वीपर आकर जन्म लेते हैं जैसे उनके ध्यान होते हैं वे वैसाही चोला पाते हैं । जितने स्वर्ग हैं एवं क्रमानुसार जिस प्रकार एक दूसरेके ऊपर हैं वैसेही उनका सुखभी विशेष होता जाता है । यानी जैसे २ ऊपर हैं वैसेही वैसे सुख तथा आनन्दका आयोजन विशेष होता है—नीचेके विभागोंमें न्यून है । वह सब सुख अस्थायी तथा अल्पकालिक हैं । कुछ समयके उपरान्त स्वप्नके समान भङ्ग हो जानेवाले हैं । सो उन सब स्वर्गों और चारों स्थान जिनको वेदने मुक्तिदाता कहा है—यहांलों मनुष्योंको ज्ञान होता है—इसके आगे कोई कुछ नहीं जानता । परन्तु कबीर साहबने कहा है कि, ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव ये जो तीनों देवता हैं—वे सहज द्वीप पर्यन्त पहुँच सकते हैं—इसके आगे किसीको तनिक भी सुध नहीं है । तीन देवता सहजद्वीपर्यन्तकी सुध रखते हैं—परन्तु मनुष्योंको वे नहीं बतलाते—अपना भेद अपने मनमेंही रखते हैं—और भलाई बुराईके समस्त कार्योंका रचयिता निरञ्जन है भलाई करो तो स्वर्ग और वैकुण्ठमें जाय यदि बुराई करे तो नरकमें प्रविष्ट हो—चाहे मृत्युलोकमें जन्म लेता रहै । जैसे आकाशके सुखका विवरण है वैसेही नरकयंत्रणा अत्यंत भयानक है सुतरां मुसलमानी पुस्तकोंमें मैंने पढा था कि, जिस समय हजरत दाऊद नरकयंत्रणाका विवरण किया करते थे—उस समय सुननेवाले बेतरह रोते तड़पते थे । कितनेही भयके मारे मर जाते थे ।

एक बेर नरकयंत्रणाको सुनकर सत्तर मनुष्य भयसे मरगये । स्वयम् दाऊद ऐसा रोता और तडपता था अचेत हो जाता था । ऐसा हाथ पावँ और शिर पीटता था कि, अन्तमें उसे उसकी लौंडियां और लोग पकड लेते थे वह ऐसा विह्वल तथा बेसुध हो जाता था । दाऊद यद्यपि बादशाह था तथापि सारी रात ऐसा रुदन

किया करता था कि, उसका बिछौना भीग जाता था--जब वह परमेश्वरके प्रेममें गाता और नाचता था तब स्थावर तथा जङ्गम हिल जाया करते थे ।

कबीर साहबकी आज्ञा है कि, जिसमें परमेश्वरका भय और हार्दिक प्रेम नहीं है वे कदापि मुक्ति नहीं पासकेंगे । सो समस्त पीरपैगम्बरों और सिद्ध साधुओं का सच्चा गुरु कबीर साहब हैं । के जिनमें परमेश्वर का भय और सच्चा प्रेम पाता है उनको परमधाम पहुँचा देता है । सबको ओर दया तथा उदारताकी समान दृष्टिसे देखता है ।

अब जानना चाहिये कि, यह कालपुरुष इस प्रकार भय तथा यंत्रणाकी अवस्थामें फँसाकर बंधनमें डाल देता है । किसीभी युक्तिसे किसीका छुटकारा होने नहीं देता तप्तशिलापर सबको भूनभूनकर खाया करता है । जैसे भेड बकरी तथा गऊ कसाईको प्यार करके उसमेंका फल पाते हैं ।हाँकमार २ कर कबीर साहब कहते चले आते हैं तो भी लोगोंको बिश्वास नहीं होता ।

माया सृष्टि और पिण्ड ब्रह्माण्डका जो समस्त मिथ्या बन्धन है इन सबका रचयिता निरञ्जन है । जो कोई इस मिथ्या जालमें कामके वशीभूत होकर रहेगा वह कदापि मुक्ति नहीं पासकेगा ।

इस प्रकार कबीर साहबने अपना ज्ञान और शिक्षा पृथ्वीपर प्रगट किया लोग आपके वैरी हुए क्योंकि लोगोंका चित्त कामक्रोधादिके प्रपञ्चोंमें फँसा हुवा है । उनकी बुद्धि कालसे घिरी हुई है ।

जबलों मनुष्यके चितमें सुबुद्धि और स्वच्छ कामनाएँ उत्पन्न नहीं होतीं तबलों यह निश्चय कालका भोजन होता जाता है जब सुबुद्धि होगी तथा अच्छे विचार मनमें उदित होंगे तब तो कदापि कालकी राहमें न चलेगा पर ऐसे थोड़े लोग हैं जो आपत्तिमय पथ देखकर भागते हैं । किन्तु अभागे अपनी हठसे नहीं हटते ।

कबीर साहबकी साखी ।

कालको जीव माने नहीं, कोटिन कहूँ बुझाय ।

मैं समझा २ कर रहा हूं पर कालके वश हुआ जीव नहीं मानता, मैं इस सत्यलोकको खींच रहा हूं पर यह वासनाओंसे बन्धा हुआ, यमपुर जारहा है ।

साखी--मैं खींचूं सत लोकको, बाँधा यमपुर जाय ॥
बहता है वहजान दे, यहै लगावत ठौर ।
कहा हमारा न आदरै, दों धक्का दो और ॥

न तो उसके साथ कोई अच्छा लगाव है न ठौरही है यदि बहता है तो बहने दीजिये मेरे कहेका आदर नहीं करता मैं गिरते हुए उसमें दो धक्के और लगा दूं ।

इस प्रकार कबीर साहबका धर्म्म पृथ्वीपर प्रचलित हुआ, वैरी और दूत भूत सब निराश होगए किसीका कुछ बश नहीं चला । जो समर्थ धनी स्वयम् सत्यपुरुषने धर्म प्रचलित किया फिर किसकी सामर्थ्य थी, जो रोक सकता ऐसा वेगसे चला कि, लाखों सेवक शिष्य होगए । सत्य कबीर और सत्य नामकी पुकार समस्त संसारमें पडी किसीके रोके कोई रुक नहीं सका ।

धर्म प्रचलित करनेकी कथा ।

पहले मैं वर्णन कर आया हूं कि, सत्यपुरुषने कहा कि, ऐ ज्ञानीजी ! पृथ्वी पर जाओ और सुकृतिजी (धर्मदास) को जगाओ, उनको अचेत निद्रासे जाग्रत करो । सत्यपुरुषकी भक्तिमें लगाओ । सत्य पंथ पृथ्वीपर प्रचलित करो और बयालिस वंश नियत करके कलियुगके मनुष्योंका उद्धार करो ।। सत्यपुरुषकी आज्ञानुसार कबीर साहबने धर्म्मदासको जगाया, सत्यपुरुषकी भक्तिमें लवलीन किया ।

चार गुरुकी कथा ।

पहले मैं उनका विवरण लिखता हूं, जो चार गुरु तथा कबीरपंथी कहलाते हैं । ये लोग कबीर साहबके मुख्य शिष्य हैं । इन्हींको कबीर साहबने अपना स्थानापन्न किया है । इन्हींके द्वारा और इन्हींके अनुग्रहसे संसारके मनुष्य मुक्ति पाते और परमधामको जाते हैं । इन्हीं चारों गुरुओंकी आज्ञा पृथ्वीपर प्रचलित है ।

पहले गुरु धर्म्मदासजी हैं । उनको उत्तरकी गुरुवाई प्रदान की है । उनके बयालीस वंश हैं । दूसरे चतुर्भुजदास हैं, उनको दक्षिण की गुरुवाई प्रदान की है उनके सत्ताईस वंश हैं । तीसरे गुरुराज बंकेजी हैं । उनको पूर्वकी गुरुवाई प्रदान की गई है उनके सोलह वंश हैं । चौथे गुरु सहतेजी हैं । उनके सात वंश हैं उनको पश्चिमकी गुरुवाई प्रदानकी गई है । ये चारों गुरु चार ओर ठहराए गए हैं । जब ये चारों गुरु चारों ओरसे सत्यनामका डंका बजावेंगे तब कबीर साहबका धर्म भली भाँति पृथ्वीपर प्रचलित होगा । इन चारों गुरुओंमें अबतक केवल धर्म्मदास जीही प्रगट हुए हैं उनकी वंशगद्दी स्थिर हुई है । किन्तु पूर्वोक्त लिखित तीनों गुरु अबतक प्रगट नहीं हुए हैं—जब वे भी प्रगट हो जायंगे तब इस धर्मका प्रचार विशेष रूपसे होगा । अब तो केवल धर्म्मदासजीके बयालीस वंशका विवरण करता हूं ।

---

१ कबीर सागर नं. ९ बोधसागर ८० पृष्ठमें है।

धर्मदासजीके बयालीस वंशकी स्थिति।

कबीर सागर नं. ९ के पृ, १४४९ में लिखा हुआ है कि, धर्मदासजी के बयालीस वंशकी सत्यगुरुने यह स्थिति ठहराई है कि, प्रत्येक वंश पच्चीस वर्ष और वीस दिवसोंपर्यन्त गद्दीपर बैठाकरे। इससे अधिक तथा न्यून कोई न रहे। सत्यगुरुकी आज्ञानुसार उनका अवतार और उनका अधिकार होता आता है। फिर वे अपनी इच्छासे शरीर छोडकर सत्यलोकको सिधारते हैं। जिस दिवस साहबका चलना होता है उसके पूर्व अनेक सन्त महन्त दर्शनार्थ एकत्रित होते हैं। जिस दिवस पच्चीस वर्ष तथा बीस दिवस पूरे होते हैं उसी दिन जो गद्दीका अधिकारी होता है उसको गद्दीपर बैठा समस्त कार्य सौंप देते हैं। जब सब कार्य ठीक हो चुकता है उस समय आप पानका बीडा लेते हैं। इसको चलानेका बीडा कहते हैं। जब वह चलानेका बीडा लेते हैं उस समय हंस तो सिधार जाता है शरीर ठंडा हो जाता है। पीछे उस शवकी समाधि कर देते हैं। इतना कौतुक कबीर साहबका अबतक पृथ्वीपर प्रगट है। येही लोग अपने चेलोंसहित इस भवसागरके माझी तथा नावके चलानेवाले हैं। एवम् इनही ४ब्यालीस वंशोंके नामसुमिरन बोधमें भी लिखे हुए हैं।

चारों गुरुकी प्रशंसा।

उर्दू शेर।

गुरू चारको पहले ताजीमकर। सातएँ शकुवाँ खामए हाथ धर॥
गुरू चार सतगुरु कदमके हैं खाक। चढे अर्श ऊपर शबद बादपाक॥
मोअज्जिज हुए खाक खाकी हुए। बहरखू रजाजू खुदाकी हुए॥
बुजुरगी किया अब मुबारक जवाँ। बनाया इन्हें दुज्दके पासवाँ॥
बअतराफ चारों निगहवाँ किया। मकाँ मुक्तिके चार दरबाँ किया॥
जहाँ बैठे वह कादिरे जुल जलाल। कि बरतख्त शाहंशहीला मिसाल॥
बजीरान चारों खिरदमंद हैं। यह अरकाने दालत खुदाबंद हैं॥
जवानिब जहाँमें किया चार है। बहर सिस्त यक यक मददगार है॥
जो इनसाँ को सतगुरु हुजूरी करें। निजातें शफाअतसो पूरी करें॥
परमधाम पहूँचावें चारों वजीर। चले साथले मर्दुमाने अफीर॥
धरमदास औवल बसिमतें शुमाल। किरोशन है जिसकी मोहब्बत कमाल॥
यह औवल गुरु सबके शिरताज हैं। कि सब आदमी पैरवाँ आज हैं॥
बयालीस वंश उनके रोशन जमीर। मुकाबिल है जिस हेच बद्रे मुनीर॥
गुरू दूसरे हैं बजानिब जुनूब। चतुर्भुज साहब जिव अमाँ बखशखूब॥

सत्ताईस वंश उनके हैं ताजदार । दखिन देशके आदमी बाजदार ॥
गुरू तीसरे राय बनके बशिकें । लिया तख्त औ बाजशाही बफर्क ॥
सोलह वंशले हुक्म जारी करें । जो सतगुरु तवस्सल तयारी करें ॥
गुरु चौथे सदते बम गरब कहे । बमैं सात फरजंदके छिप रहे ॥
ये चारों गुरू मुक्तिके रास हैं । फकत एक जाहिर धरमदास हैं ॥
धरमदासका सब पसारा हुआ । जहाँ में जहाँतक हजारा हुआ ॥
न अबतक वह जाहिर गुरू तीन हैं । कि सतगुरुके फरमान आधीन हैं ॥
गुरू चार दुनियांमें जब आयँगे । नहजदे करी चौर दिखलायँगे ॥
तो सारी जमींमें हो यह गुलगुलः । है सतनाम सत चौर सब बुलबुलः ॥
शिलह शोर तीनों कभीं गाहमें । हैं पोंशीदः सतगुरु हुकुम चाहमें ॥
निकल जब पडीं फौज साल तीन । हो मुक्तिसे मामूर सारी जमीन ॥
बमैं वंश चारों हुकुम पायँगे । शपातीं किधरके किधर जायँगे ॥
पडे शोर आलममें सत् नामका । हो शोदरः निजाते सरअज्जामका ॥
बहर सिम्र डंका हे साहब कबीर । फिरें बोलते सत्य नामे सफीर ॥
गुरू चार सतनाम डंका दिया । पुरुष कालके दिलमें सनका दिया ॥
बहरा जुझाऊ बजे डढ्ढ डोल । कि सब कैदियों की ही जन्जीर खोल॥
बजे झाँझ और शंख मिरदङ्ग जो । जिसे देखते दूतदल दङ्ग हो ॥
न वे जूर पुर नूर है सब समात । तुलू मह्व है कट गई सारी रात ॥
गुरू चार हरजाय बोले नकीब । न बाकी रहा और कोई कीब ॥
करे गुफ्तगू उनसे जो दूबदू । मती सारे उनके न कोई अदू ॥

धर्मदाससाहबके बयालीसवंशकी प्रशंसाके

उर्दू शेर ।

धरमदासके जो बयालीस वंश । सो सब सत्य सुकृतिके रूप हंस ॥
जुदागानः तारीफ उनकी लिखूं । कदम इतके पर अपने शिरको रखूं ॥
है औवल बचन वंश चौरामनी । गुरू सत्य मारग धरमके धनी ॥
कि इनसाँका जिसमें गुजारः हुवा । परम पुर्ष यह पर न जारह हुवा ॥
वचनसे जो सतगुरुका अवतार है । उसीके महर जीव भवपार है ॥
सुदर्शन साहब दूसरे नाम जो । करे जीव भवपार कण्डहार सो ॥
जो कुलपति साहब तीसरे नामदार । पनह जिसके सब जीव हों कामगार ॥

ध्यानमें आये हुए नाम हैं अंक देकर ब्यालीससों दिखा दिये हैं ॥ १ चूडामणि, ५ प्रमोद, ७ सुर्त [illegible]

जो प[९]रमोद गुरु चौथे बाला हैं पीर । सो शाफी बवाजी जे खतरःखतीर ॥
कम[५]ल नाम साहब कहूँ पाँचवाँ । जगतके गुरू पीर सो बेगुमाँ ॥
हैं छटएँ खुदावन्द नामे अमोल[६] । कि जिस खौफसे भागजा यमके गोल ॥
जो सू[७]रत सनेही साहब सातवाँ । कि जङ्गी मेहर देखिए आतमाँ ॥
जो पैदा हुए आठवें नाम इक[८] । मलिक मौत काहो गया सीनःशक ॥
नवै पाक साहब हुए नाम पाक । भरम भूतको सो मिलाया है खाक ॥
प्रगट नाम साहब[१०] प्रगट हैं दहम । कि सामान मुक्ती किया सो बहम ॥
धीरजना[११]म साहब इग्यारवें जों आए । कि धीरज निगह जीव धीरज हुए ॥
उग[१२]र नाम साहब हुए बारहवें । परम पंथ परचार इस अह्द में ॥
तेरहवीं उदय पहने आदम कबा । तो जमशेर गुरां भगा दुम दबा ॥
हुई तेरहवीं कुरसी आली दिमाग । किदरजा हरे होगए खुश्कबाग ॥
हुवा जोर ओ शोर सत नामको । सला है करम[१३]खास ओ आमको ॥
मिलीं बारहों पंथ इस अहदमें । सतायश करें गुरुकी यक महदमें ॥
कु[१४]रू नाम साहब कहे चौदहवाँ । कि जिनकी बुजुर्गी बदरहो जहां ॥
जो परका[१५]श परकाश हो रहीं । सना इस्दअस्त नाम दरजा कहीं ॥
उदि[१६]त सोलहवीं साथ जोशन हुए । तो जम जङ्गमें नाम रोशन हुए ॥
कि जब सत्रहवीं होवें साहब मुकु[१७]न्द । हुए कालके दाँत इस वक्त कुन्द ॥
अरध[१८] नाम अट्ठारवीं दर्दमंद । कि आवागमन की किया राह बंद ॥
जो उन्नीसवीं नाम [१९]ज्ञानी गुरू । करें जीव को पुर्षके रूबरू ॥
कहो बीसवीं साहब [२०]हंस मन । न जिनसे लगे काल का कोई फन ॥
सु[२१]कृति नाम साहब हुए बीस एक । तो सुकीरत की जगमें रहे खूब ठीक ॥
अरज[२२] नाम बाईस जाहिर हुए । तो इनसाँ परमपदके माहिर हुए ॥
हैं रस[२३]नाम साहब जरस बीसती । सुन आवाज ताबे हुई सब जमीन ॥
हों चौबसवीं गङ्गा[२४]मुनि साहब । गुनहसे हों सब आदमी तायब ॥
पुरुष[२५]नाम साहब दरस बीस पाँच । नजिउको लगे सङ्गसो जाकी आँच ॥
छबीसवी जागृत्[२६] नाम साहब जगे । न इनसाँको रहजनव ठग तब ठगे ॥
हुए भृगु[२७] मुनि साहब सात बीस । रहे रास्त दुश्मन दिया जिसने दास ॥
अस्त[२८] नाम साहब कहे बीस आठ । कि यमदूतको जो दिया मार काठ ॥
हैं उन्तीसवीं साहब कंठ[२९] मुन । किया कालको मारकर सो दफन ॥
हैं सन्तोष[३०] मुनि साहब तीसवें । पयान पुरुष आवे ईस अहृदमें ॥

सनेही, ८ हक, १२ उग्र, १३ दया, १४ कहीं गघ्रभी लिखा है, १५ प्रकाश, १६ कहीं अदित भी लिखा है।

यह खुशवक्त दौराँ दिखाया हमें । परम पुरुष पैगाम आया हमें ॥
जमीं सारी सतनामकी हांक है । तो दर कामको मुक्तिकी झाँक है ॥
हुई सारे आलममें यह धूम धाम । तअस्सुय तजो और भजो सत्यनाम ॥
जमीं सारी पर हुक्मरानी हुई । बाहर कौमपर मेहरबानी हुई ॥
यहूदी दितार मुसलमा हिन्दूदा । पढ़े कलमये सत्यनामे हुरूदा ॥
चार्तक[31]नाम साहबका एकतीस दौर । जमींपर न बाकी रहे यमका जोर ॥
बत्तीसवें बरामद हुए आदि[32] नाम । हुए सारे नफसानी हरकत गुलाम ॥
हैं तेतीसवें वेद [33]नामें बुजुर्ग । कि जिस सामने हो न शैता सतर्ग ॥
साहब आदि[34]नाम हुए तीस चार । कि उस महसे जीव हों कामकार ॥
महा[35]नाम साहब हैं पैंतीसवाँ । जमीपर हुवा है अमन ओ अमाँ ॥
छतीसवें हैं निज[36]नामसाहब खदीन । न बाकी रहे रेव कुछ नफ्स देन ॥
साहब[37]दास साहबका सैंतीस अस्त्र । दियबारश इनसानके जिसने वस्त्र ॥
उदय[38]दास साहस हों अडतीस पुश्त । इलम दिल्म सबमें न कोई दुरश्त ॥
कुरद[39]नाम साहबका नौतीस वक्त । बहरहो जहांजिनको है ताजो तख्त ॥
चेहले दृग[40]मुनि साहब नामले । तो सत्यलोकके आदमी सब चले ॥
महा[41]मुनि साहब नाम चालीस एक । बदी बेखकुत आदमी सारे नेक ॥
बयालीस [42]मुक्तामनी साहब है । आखिर जमां सत्पुरुष नायब है ॥
यह जबतक बयालीस पीढ़ी रहे । परमधामकी जगमें सीढ़ी रहे ॥
बयालीस का जबतलक नाम है । न कब्बीर का जगत में काम है ॥
यह सद्गुरुके सब हंस हैं जानशीं । परम पुरुषके सार शब्द अभीं ॥
बयालीस जबतक रहेंगे बजीर । जहां में न जाहिर फिरें फिर कबीर ॥
बहर एक फरमाँ रवाई खिताब । कहे हैं खुदावन्द ऐसा हिसाब ॥
बरस इनके पच्चीस ओ बीस रोज । हरके तख्तपर होवें रौनक फिरोज ॥
हजार एक ऊपर दो पन्जाही साल । महे तीन दिन बीस गद्दी बजाल ॥
इते रोज सतपुर्ष फरसान है । जो आवे शरन सोई निर्वान है ॥
जो सतपुरुषके हंस गायब हुए । न हों बहर : वर कोई जो साय बहुए ॥
यह कलियुगमें सतयुग गुजर जायगा । पुरुष कालका अहद तब आयगा ॥
करे आदमी फिर जो तदबीर कोट । कभी सो सके नाबचा यमकी चोट ॥
मेरी बात जो कोई जाने दरोग । कभी फेर उसको न होवे फरोग ॥

१८ अधर, २८ अखैराम, २९ कंठ मुनि, ३१ चार्तक मुनि. ३२ अजर. ३३ दुर्गमुनि, ३५ महामुनि, ३८ उर्द्धदास ४० दीर्घमुनि । ये नामान्तर हैं ।

परमपुर्ष पीरो शनासिन्दगां । उसी लोक जावेंगे सो बन्दगां ॥
यह कलियुगमें सतयुग तगी हैलड़ी । सहर सिस्त है आसे है वों वाझड़ी ॥
हैं गुरु मुख कोई उनके गोशिन्दगाँ । जो सतगुरु मोहब्बतमें जो शिन्दगाँ ॥
जो उस गुरुके मिलनेकी कोशिश करे । अजर ओ अमर जामः पोशिश करे॥
जो पहचान सोई हैं शाहंशहाँ । न जानें जिन्हे आदमी इबलहाँ ॥
बयालीसका जबसे ठीका हुवा । न इनसानका बाल बीका हुवा ॥
यह माहूद ठीका जो पूरा हुवा । तो यमजालका फिर सहूरा हुवा ॥
जो इस अहदमें हो कोई बख्त मंद । जेढ़ बाम वाला बनामें कमंद ॥

गजल ।

बयालीस वंश सतगुरुकी निशानी । हैं बखशिन्वः हयाते जान हानी ॥
उसी हम शक्लमें सब ना खुदा यह । रहे दुनियाँमें जबतक यह कहानी ॥
सना ख्वानी हैं करते हंस जिनकी । कहे सौबार सतगुरु खुद जबानी ॥
तमीजो अक्लसे खुदे पर्ख लीजे । मक़ामें हंस़ आए लामकानी ॥
दरोगोरास्त अब पहचान होगा । जो सुतर्फ़रिक करेंगे दूध पानी ॥
कदम उनके पकड़ परवाज कर अब । गुजर बग चालसे अपने दुरानी ॥
हवासो अक्ल ओ हम लङ्गपा हैं । वहाँ पहुँचे नकुरआँ वेदबानी ॥
समझ ओ बूझ कर लीजे खमोशी । अवज शिरके मिलेगी राजदानी ॥
करे क्या यह बनी आदम बेचारा । मदद पावे न जबतक आसमानी ॥
पेयाला इश्क पीकर मस्त होजा । जो चाहे चेहरए खुद अरगवानी ॥
पड़े खाते हैं गोता भेष पाखंड । बरहमन भाटओ मुल्ला कुरानी ॥
मेहर हो गाय बकरी मुरगियोंपर । खुदाबन्द मोहाफ़िज पासवानी ॥
उतर चल पार इस दरियाके आजिज । हुई तुझपर जो मुरशिद मेहरबानी॥

यह चार गुरु तथा बयालीस बंश जो मुख्य कबीरपंथी कहलाते हैं उनका विवरण हो चुका । इस समय धर्मदास साहबके वंश उपस्थित हैं उन्हींके पथ दिखाने से समस्त मनुष्य सत्यलोकको जाते हैं । दश स्थानोंका चित्र जो मैंने दिया है उन सब स्थानका पथ इन्हींकी दयाके द्वारा प्राप्त होता है । नौ स्थानोंको पार करके दशवें स्थानको पहुँचता है । इन समस्त स्थानोंके बीचमें शून्यकी डोरी लगी हुई हैं । वे शून्य (खला) की डोरियाँ हैं । उन डोरियोंके भिन्न १ नाम कबीर साहबने कहे हैं । उन डोरियोंपर सत्यगुरुके पथ दिखानेसे हंस चढकर पार हो जाते हैं । जबलों पारख गुरु नहीं मिलता तबलों उन डोरियोंकी तनिक भी सुध नहीं मिलती । ये गुरुलोग भवसागरके पार उतारनेवाले हैं । उनकी प्रशंसा अनेक वार स्वयम् कबीर साहबने की है ।

देखो ग्रंथ कबीरसागर नं. १०—श्वासगुञ्जार पृ० १११—११२.

साखी—बिरछा[1] नाहीं फल भ[2]खैं, नदी न अच[3]वैं नीर ॥
परमारथके का[4]रणै, सन्तन[5] धरा शरीर ॥
सन्त बड़े परमा[6]रथी, घ[7]न जा[8]वरसैं आय ॥
तप्त बुझाव औरकी, अपनो पारस[9] लाय ॥
साधु सराहिय ताहिको, जाको सतगुरु टेक ॥
टेक[10] बनाए देह भर रहे[11] शब्द मिल एक ॥
सत्य शब्द हित जानके, सुमिरे सतगुरु धीर ॥
धरम[12]दास तुम वंश को, सिर[13]ज्यो गुरू कबीर ॥

चौपाई ।

सत्य सुकृति सुमिरो मन माहीं । टूटत बजर[14] राखलेउ रा[15]हीं ॥

साखी—सत्यसुकृतिके बाल कहै, जो चित[16]वै कर डीठ[17] ।
ताजन तोरौं चौहटे, गुनहगारकी पीठ ॥
ज[18]दिया कहूँ तो जगतरे, परगट कहो न जाय ।
गुप्त परवा[19]ना देत हौं, राखौ शिरै चढाय ॥
जिन[20] डरपो तुम काल को, कर मेरी परतीत[21] ।
सप्तद्वीप नौखण्डमें, चलिहौं भव[22]जल जीत ॥

यहांतक तो चार गुरु और बयालीस बंशका लेखा लगचुका है । इनके अतिरिक्त कबीर साहबके बारह पंथ और भी हैं । वे भी कबीरपंथीही कहलाते हैं ।

कबीर साहबके बारह पंथोंका सामान्य परिचय ।

१—नारायणदासजीका पंथ । २—यागौदासजीका पंथ । ३—सूरत गोपाल पंथ । ४—मूलनिरञ्जनका पंथ । ५—टकसारी पंथ ॥ ६—भगवान्दासजीका पंथ । ७—सत्यनामी पंथ । ८—कमाली पंथ । ९—रामकबीर पंथ । १०—प्रेमधामकी वाणी । ११—जीवा पंथ । १२—गरीबदास पंथ ।

यह तो कबीर साहबके बारह पंथ हैं । इनमें कोई २ अच्छे हैं और कोई विश्वासके निर्बल हैं । राम कबीरके लोग ठाकुरपूजा करते हैं । सत्यनामियोंके यहां प्रायः ध्यानभी प्रचलित हैं । इन बारह पंथोंका यही विवरण है ।

---

१ वृक्ष, २ खायँ, ३ सीखें, ४ लिये, ५ महात्माओंने ६ परोपकारी, ७ मेघ, ८ तहर, ९ पारसकी तरहका सत्य उपदेश, १० प्रण, ११ उनके उपदेशसे होतेही उसीमें लगजाय, १२ माना, १३ धर्मदास, १४ वज्र, १५ मार्ग, १६ देखे, १७ दृष्टि १८ प्रत्यक्ष, १९ चिट्ठी, २० मत्त, २१ विश्वास २२ संसार सागर ।

उनके भिन्नपन्थ ।

इन बारह पंथोंके अतिरिक्त कबीर साहबके और भी पंथ हैं । जैसे नानक पंथ । दादूपंथ । यानिपपंथ । मूलकदासपंथ । गणेशपंथ । इत्यादि ।

इन पंथोंके अतिरिक्त हिन्दू और मुसलमानोंमें कबीर साहबके दूसरे भी कितनेही पंथ हैं जिनकी यथार्थता अभी लोगोंको भली भाँति ज्ञात नहीं हुई है इस कारण मैं कुछ लिख नहीं सकता । पंथके कितनेही लोग ऐसे हैं जिनके कि पंथके मनुष्य अब साहबको नहीं मानते । जैसे--नानकशाह, और दाऊद राम और शिवनारायणदास इत्यादि ।

जो लोग कबीर साहबको नहीं मानते उनका नाम शिष्योंमें लिखना किसी प्रकार युक्तिसङ्गत नहीं है । तो भी यह नहीं कहा जासकता है कि, जो कबीर साहबको नहीं मानते हैं उसमें उनके गुरुओंका अथवा उनके पथदर्शकोंका दोष है जिसका दोष होगा वही दोषी माना जावेगा ।

महाप्रलयकी कथा ।

महाप्रलयके विवरणका निचोड यह है । कि, प्रलयके अनेक भयानक चिह्न परिलक्षित होंगे । पृथ्वीपर विशेष पाप होंगे । महाप्रलयके सवासौ वर्ष पहिलेसे बराबर ग्रहण लगता जावेगा, एकसौ वर्षपर्यन्त बराबर चन्द्रग्रहण होगा । इसके उपरान्त सूर्यग्रहण होगा । जब सूर्य और चंद्र ग्रहण समाप्त हो चुकेगा तब महा-प्रलय आवेगी । इतनी पानीकी विशेषता होगी कि, पृथ्वीसे ऊपर इतना ऊँचा पानी चढेगा कि, जलकी झाग व लहरही दश सहस्र योजन ऊँची उठेंगी । समस्त जीव मरजावेंगे समस्त शून्य हो जावेगा । पृथ्वी तथा आकाशमें कुछ दिखलाई न देगा । समस्त संसारकी रचनाको कालपुरुष समेट लेगा । पाँच तत्व तीन गुण कालपुरुषमें समा जावेंगे--आद्याको कालपुरुष निगल जावेगा । निरञ्जनके

---

१ शिक्ख--कबीर दासजीको नानक देवजीको गुरु नहीं मानते इसका कारण यह है कि, सुलतान बहलोदलोधीके शासन कालमें संवत् १५२६ विक्रमी कार्तिक शुक्ला क्षत्रिय (खत्री) पूर्णिमाको चार घडीके तडके श्री कल्याण रायके; घर माता तृप्तीके उदरसे तलवण्डी (लहोर) में गुरु नानक देवजीने जन्म लिया । १५३२ पंद्रहसौ बत्तीसमें पाठशालामें पढ़ने बिठाया, १५३५ में पं. ब्रजनाथजीके पास संस्कृत पढने भेजा । १५३९ में वहां फारसी आरंभ कराई १५४१ में सुलतान पुर (कपूरथला) गये तथा १५४२ में वहां नवाबके मोदीखानेका कार्य किया । १५४५ में विवाह किया । १५५१ में नानक देवजीके घर श्री चन्द्र-जीका जन्म हुआ । संवत् १५५४ में वे ईनामकी नदीपर स्नान करतीवार एकदिव्य साधुसे मुलाकात होते ही गृहकार्य त्यागकर कबरिस्तानमें आसन जा जमाया । यही समय नानक देवके प्रकटमें विरक्त होनेका हुआ है । १५६१ में दिल्ली गये तथा १५६३ में काशी आये तथा रघुनाथपुर कबीरजीसे मिलने पहुंचे, कबीर जी मार्गमें ही मिल गये वहां दोनोंमें सुन्दर सत्संग हुआ ऐसा तो सिक्ख भी मानते हैं परन्तु नानक देवजी शिष्य हुए ऐसा नहीं मानते ।

मस्तकमें एक अर्ध गोलाकार प्रसावम्भूक्के समान एक स्थान है, उसी स्थानमें समस्त रचना सूक्ष्मरूपमें प्रविष्ट होजायगी। क्योंकि, समस्त रचनाको वह अपने मस्तकके उसी विशेषस्थानमें रख लेता है। तथा अपने शिरके बीचके गुम्बदमें लिए हुए सत्तर युगपर्यन्त बराबर शून्यमें फिरा करता है। सत्तरयुगके उपरान्त उसका चित्त व्याकुल हो जाता है। एकान्त होनेके कारण उसके मनमें अत्यंत घबराहट होती है, उससे कुछ हो नहीं सकता है, वह अपने चित्तमें यह सोचता है कि, मैं स्वयम् सत्यपुरुष हूं। वह बल अपनेमें नहीं पाता दुःखो होता है कि, अब क्या करूं ? तब वह सत्यलोककी छाया अर्थात् आस पास जाकर निवेदन करता है। तब समर्थकी आज्ञा होती है कि, ऐ ज्ञानी ! शून्यमें निरञ्जनके पास जाओ और कहो कि, वह जाकर अब कूर्मजीको पीठ के ऊपर तीन लोककी रचनाका प्रस्तार करे। उस समय ज्ञानीजी सत्य पुरुषका समाचार लेकर निरञ्जनके पास जाते और समर्थकी आज्ञा सुनाते हैं जब पुरुषकी आज्ञा सुनते हैं, उसी समय निरञ्जन दौडकर कूर्मजीकी पीठके ऊपर तीनों लोककी रचनाका सामान करते हैं। तब निरञ्जन अपने मुँहसे आद्याको उगल देता है। आद्या तथा निरञ्जन मिलकर तीन देवताओंको उत्पन्न करते। फिर पांचों मिलकर सब सृष्टिकी उत्पत्ति करते हैं पहले सत्यस्वरूप सृष्टि उत्पन्न होती है। सब लोक नितान्तही धर्मात्मा होते हैं जैसा-कि कुछ मैंने पूर्वमें लिखा है उसी प्रकार समस्त रचना प्रगट होती है। इस प्रकार उत्पत्ति स्थिति तथा विनाश हुवा करता है और जब उत्पत्ति होती है तब इसी प्रकार कबीर साहब मनुष्योंकी शिक्षाके निमित्त पृथ्वीपर आया करते हैं मनुष्योंको मुक्तिप्रदान किया करते हैं।

यह तो ब्रह्माण्डके महाप्रलयका विवरण हुवा। इसी प्रकार पिण्डकी प्रलयभी होती है। कारण यह कि, जो कुछ पिण्डमें है सोई ब्रह्माण्डमें है, तनिक भी भिन्नता नहीं है। परन्तु सबसे बडा महाप्रलय भी एक दिवस होगा। जब केवल एक सत्यपुरुष और सत्य लोकही रह जावेगा। और कहीं कुछ न रहेगा। अर्थात् दयाद्वीप नासूतसे लेकर सहजद्वीप अर्थात् आहूत स्थानपर्यन्त सब विलोपित हो जावेंगे। केवल सत्यलोकमें ही शान्ति रहेगी। सत्य लोकके हंस सब सुरक्षित और सत्य पुरुषकी रक्षामें सदैव समान रहेंगे।

अन्तर्धान होनेकी कथा।

जब काशीके मनुष्योंने कबीर साहबकी अनेक लीलाएँ देखलीं और जान लिया कि, ये तो स्वयम् परमेश्वर हैं न किसीके मारनेसे मरते हैं, न काटनेसे कटते हैं, न डुबानेसे डूबते हैं, न जलानेसे जलते हैं। न कोई हथियार आपके ऊपर

फलित होता है, मनुष्य तथा पशु और देवता आदि आपको किसी प्रकारकी क्षति पहुँचा सकता है। तब उन लोगोंने आपसे पूंछा कि, आपकी मृत्यु क्योंकर होगी ? उस समय आपने कहा कि, मैं मग्गह देशमें जाकर छिप जाऊँगा। आपके कथनानुसार कबीर साहब जब एकसौ बीस वर्षपर्यन्त काशीजीमें रह चुके, केवल दो दिवस आपके जानेमें शेष रह गए तब आपने लोगोंसे कहा कि, अब मैं यहाँसे कूच करूँगा मग्गह देशको जाऊँगा, वहाँ छिप रहूँगा, यह बात सुनकर काशीके लोगोंको अत्यंत दुःख हुआ, दुःखोंके बादल काशीजीपर छागये। लोग अत्यंत दुःखित हुए और कहने लगे कि, आज काशी शून्य तथा उजाड़ जान पडती है। आज काशीका सूर्य छिपचला नेत्रोंके सामने अंधकार होने लगा। सब लोग कहने लगे कि, हाय ! हम बडेही अभागे हैं, हमने ऐसे सत्यवादी महात्माकी आज्ञाको अङ्गीकार नहीं किया। समस्त नगरमें इस बातकी धूम मच गई कि, अब कबीर साहब काशीजीसे चले जायेंगे। समस्त नगर दुःख तथा कष्टसे भर गया। काशीके लोग हाहाकार करते हुए कहते थे कि, अब हम क्या करेंगे। हाय ! हमने ऐसे महात्माका कहना नहीं माना। पीछेसे खरा खोटा जान पडता अबतक हमलोगोंको दिखलाई नहीं दिया। बनारसके राजा रायबीरसिंहजी बघेलने जब सुना कि, सत्यगुरु मग्गहदेशको जायँगे वहाँ जाकर अन्तर्धान हो जायँगे, अब जानेके केवल दो दिवस शेष बचे हैं। तब उक्त राजाभी अपने दलबलसहित पहलेहीसे वहाँ जा पहुँचा–वहाँपर सत्यगुरुकी प्रतीक्षा कर रहा था। काशीवासी कबीर साहबको घेर रहे थे। उस समय आपके समीप दश सहस्र सेवक और शिष्य उपस्थित थे उनमें कुहराम पड़ रहा था। सब विलाप कर रहे थे। उस समय मग्गहदेशका अधिपति नौवाब बिजलीखाँ पठान था। वह कबीर साहबका शिष्य था। जब उसने सुना कि, कबीर साहब अपना अन्तिम दिवस यहाँ करेंगे, तब बडा प्रसन्न हुवा कि, यह अच्छी बात हुई–कफन दफन सब कुछ अपने मत्यनुसार करूँगा। वह प्रतीक्षा कर रहा था और कबीर साहब काशीसे चलकर मग्गहदेशमें जा पहुँचे, आमी नदीके किनारेपर किसी साधुकी कुटी थी इस कुटीमें जाकर बैठ गए। उस समय राजा वीरसिंह, नौवाब बिजलीखाँ, कबीर साहबके और बहुतसे सेवक शिष्य वे सब उस नदी जिसके कि, किनारेपर कबीर साहब आकर बैठ गए थे, आ बैठे। वह अनेक दिवसोंसे शुष्क पडी थी। कबीर साहबने गुप्त रीतिसे कमलपुष्प तथा दो चादरें मँगवाईं, आप लेट गए, लोगोंसे कहा कि, अब ताला बंद कर दो। तब राजा वीरसिंहने कहा कि, गुरुजी मैं आपके शवको लेकर हिन्दूधर्मानुसार क्रिया कर्म इत्यादि करूँगा।

तब नौवाब बिजलीखाँ बोले कि, मैं आपको ऐसा कदापि नहीं करने दूंगा, मैं मुसलमान धर्मानुसार उनका कफन दफन करूँगा, तब कबीर साहबने देखा कि ये दोनों युद्धके निमित्त प्रस्तुत हैं, इसमें प्राणोंका रक्तपात होगा, दोनोंको युद्धके निमित्त प्रस्तुत, और दलबल सहित देख, समझाकर कहा कि, सावधान ? आपसमें विवाद न करना । कदापि शस्त्र मत चलाना, जो मेरी बात मानेगा सो प्रसन्न रहेगा, सत्यगुरुकी आज्ञाको दोनों दलोंने स्वीकार कर लिया । तब सबोंने सत्यगुरुको दंडवत् प्रणाम किया, सबका चित्त खेदसे भर गया । तब कबीर साहबने चलानेका शब्द पढा चादर तानकर लेट गए, अपने मुंहपर कपडा लेलिया । लोगोंसे कहा कि, अब इस कोठरीका ताला बंदकर दो, लोगोंने वैसाही किया । जब ताला बंद किया तब एक ऐसा शब्द हुवा कि, जिसको सुनकर उपस्थित मनुष्योंके चित्तपर बडा प्रभाव पडा । जय जयकार हुवा कि, सत्यगुरु सत्यलोकको सिधार गए ।

जब उस कोठरीका ताला खोला तब केवल दो चादर मिले और कुछ कमलके पुष्प मिले, इनमेंसे एक चादर और आधे फूल राजा वीरसिंहने लिए, दूसरी चादर और कमलके फूल नौवाब बिजलीखाँने लिये । कबीर साहबका शव कहीं दिखलाई नहीं दिया । राजाने चादर तथा पुष्प लेकर सत्यगुरुकी समाधि बनायी । बिजलीखानेभी कबर बनायी और वह समाधि तथा कबर मग्गहदेशमें इस समयभी वर्तमान है ।

हिन्दू मुसलमान दोनों गुरुभाइयोंने एक मन्दिर बनाया । अब भी हिन्दू मुसलमान दोनों कबीरपंथी वहाँ मौजूद हैं । आमी नदी जो बहुत कालसे शुष्क पड़ी थी, उसमें जल भर गया, जो अबतक प्रवाहित है । अगहन शुदी एकादशी सम्वत् १५७५ विक्रमीको कबीर साहब छिप गये । अन्तिम प्रागटयमें एक सौ उन्नीस वर्ष पाँच महीने और सत्ताईस दिवसोंपर्यन्त आप पृथ्वीपर प्रगट हो लोगोंको शिक्षा देते रहे ।

कबीर साहबका आदि और अन्तमें शरीर नहीं था केवल एक तेजका प्राकटय था । ऐसा कबीर साहबका प्रगट होना तथा छिप जाना है । जब इच्छा हो तब प्रगट हों, जब इच्छा हो तब छिप जावें । जब कबीर साहब मगहरमें गुप्त हुये, तब पुनः मथुरा नगरमें प्रगट हुये, वहाँ रत्ना को शिक्षा देकर फिर धर्म्मदासजीको वोधागढमें दर्शन दिये । उनको सब सत्यपंथका पथ और धर्म्म-कर्म्मकी राह बता बयालीस वंशके नियम भली प्रकार कहे एवं कालपुरुषके कपटजालसे भली भाँति सावधान करके अन्तर्धान हो गये ।

कबीर साहबके गुप्त हो जानेका वृत्तान्त प्रथम मैंने ग्रन्थ कबीरभानु-प्रकाशमें लिखा है उसको इस ग्रन्थसे मिलाकर शुद्ध करलेना उचित है। यह ग्रंथ भली भाँति शुद्ध करके लिखा गया है।

गजल।

खुरशेद परस्व परतव मादूम हुआ है। इन्सान खबर खैर से महरूम हुआ है।। आई जो खिजां और गया वक्त बहारी। बुलबुल सुजरा जाए नशीं बूम हुआ है।। है कौन जहां में जो मिटा डाले वह तस्तीर। जो कुछ कि क़जा क़ाजी से मरकूम हुआ है। तकदीर वयक नायः बिठाला है दो महमल। एक नेकनुमा दूसरा बदशूम हुआ है।। वाको न रहे और कहीं शम्स शोभाय। अफवाज लिये तब महे मालूम हुआ है।। पा खाक तेरेसे धरा एक जर्रः सर अपने। सो रहम दो दारैन का मौसूम हुआ है। जो जहर मो अस्सर बहमःसालिको मसलूक। हर इन्स व जिन उससेही मसमूम हुआ है।। आई शब और पुश्त दिखाया। शहे आदल। रैयत जमाः जम जोरसे मजलूम हुआ है।। इस अहदमें कोई न सुन मर्दुम फरियाद। मखलूक मलिक मौत का महकूम हुआ है।। है मौतका चारः आदम जाद विचारः। अज़ रोज़े अज़ल उसकेही मक़सूम हुआ है।। क्या कह सके तुझसे न कहा जाय सो आजिज़। जो कुछ कि तुझे गैब से मफ़हूम हुआ है।

अध्याय ॥ ९ ॥

कबीरपन्थके धार्मिक नियम।

१—एक अविगत अतीत ब्रह्म सत्य पुरुषका भक्त हो, उसके अतिरिक्त किसी ओर भी ध्यान न करे।

वह ब्रह्म (सत्य पुरुष) केवल पारख गुरुकी शिक्षा एवं स्वसंवेदके अध्ययन (पढ़ने) से जाना जाता है। दूसरा कोईभी मार्ग उसकी प्राप्तिका नहीं है।

२—सत्य पुरुष और कबीर साहब एकही हैं, केवल नाममात्रकाही भेद है। वे एकही दो नामसे कहे जाते हैं उनमें लेशमात्र भी भेद नहीं समझे जो भेद समझेगा उसका मुक्ति होने में भी अवश्य भेद रहेगा।

३—गुरुकी सेवा तन, मन, धनसे करे। गुरु वचनका विश्वास करे। गुरुका आज्ञाकारी रहे। सत्य कबीर और गुरुमें कुछ भी भेद न समझे, गुरुके ऐश्वर्य्य सिद्धि आदिका विचार न करे। जो अपने गुरुको ईश्वर करके

मानता है, ईश्वरके समानही उसमें भक्ति रखता है उसीका कार्य्य पूर्ण होता है; पर जो गुरुमें भेदबुद्धि करता है, वह हत भाग्य सदा निष्फलताही प्राप्त करता है।

अपने उपार्जनका दशवाँ भाग अवश्य गुरुको भेंट करे। सदा अधीनतासे गुरुका धन्यवाद करता रहे।

४—साधुकी सेवा, भेदबुद्धि त्यागकर, सदा प्रेम और भक्तिसे करे जिस पर संत गुरुकी दया होती है वही दोनों लोकोंमें भाग्यवान होता है। वही दोनों लोकोंमें सफल मनोरथ होता है।

सर्व प्रकारके साधुओंकी सेवा निष्कपट हृदयसे करना परन्तु ज्ञानी विचारवान्, विवेकी पारखी संत जो सत्य पुरुषकी भक्तिका उपदेश करें, सदाचरणमें लगावें, उनकी सेवामें सदा तत्पर रहे। विशेषतः स्वधर्म्मके सच्चे विवेकी संतोंकी शिक्षाको सावधानीसे सुने, उनको ध्यानपूर्वक विचारे क्योंकि, स्वधर्ममें पूर्व दृढ, संतोंके वचनसे धर्ममें दृढ आस्था एवं स्वधर्मप्रायणता होती है। इसके उलटा परधर्म (विपक्षीधर्म) के पक्षपाती साधुओंके वचनसे स्वधर्ममें अश्रद्धा और भ्रम होता है।

जिस साधुमें अपने गुरुसे मिलते हुये गुण पाये जायँ उनको अपने गुरुसे भिन्न न समझे, अभेदबुद्धिसे श्रद्धापूर्वक निष्कपट भक्ति करे।

५—सर्व चराचर जीवधारियोंपर समान भावसे दया रखे। किसी स्वरूप आकारमें कोई भी जीवधारी हों, सबको अपने शरीर और आत्मामें समान जाने। किसी देश कालमें भी किसी जीवधारीको दुख न दे। संसारमें अपना निर्वाह इस प्रकार करे कि, कभी भी अपनी ओरसे किसी जीवधारीको किसी प्रकारकी हानि न पहुँचे। सब जलचर, थलचर, वनचर, पशु-पक्षी स्थावर, जंगमपर समान दयादृष्टि रखे, सबको अपनेही शरीर और प्राणके समान समझे।

६—माँस आहारको सब घोर पापोंमें बडा पाप समझे।

माँस अहारी चाहे कैसे भी गुण और पुण्यसे पूर्ण क्यों न हों पर कभी भी वह सत्य मार्गको प्राप्त नहीं कर सक्ते, माँसाहारी आत्मज्ञानका अधिकारी नहीं हो सक्ते, उसकी मुक्ति कदापि नहीं हो सकती।

७—मदिरा तथा अन्य सब मादक पदार्थभी माँसके समानही छोडने चाहिये। कोई मादक पदार्थका व्यसनी ध्यान नहीं कर सक्ते, ध्यान बिना ज्ञान-प्राप्त नहीं होता, ज्ञान बिना मोक्ष नहीं मिलता।

८—व्यभिचारीको नर्क निश्चय ही होता है।

९—जितने आकार रूप ब्रह्माण्डमें हैं वे सब बुत कहलाते हैं उनमेंसे रूप या नाम किसीको भी पूजनेवाला मोक्षका अधिकारी नहीं हो सकता। जिस प्रकार बुतपरस्ती ज्ञान मार्गकी टट्टी है, उसी तरह ईश्वर गुरुमूर्तिका ध्यान भक्ति, द्वारकी कुंजी हैं।

१०—जो कुछ, भोजन, छाजन आदि अपनी संसार यात्रा सम्बन्धी पदार्थ हों, वे सब प्रथम परमात्मा (सत्य पुरुष) को अर्पण कर ले तब स्वयम् स्वीकार करे।

कोई भी पदार्थ जो प्रथम किसी देवी देवताको अर्पण हो चुका हो, उसे सत्य पुरुषकी भक्ति करनेवालेको कदापि ग्रहण न करना चाहिये, क्योंकि, सत्य पुरुषको अर्पण किये बिना किसी भी पदार्थको ग्रहण करना महापाप है जो पदार्थ दूसरे देवी, देवताको भोग लग गया वह सत्य-पुरुषको अर्पण हो नहीं सकता क्योंकि, दूसरे देवका अर्पित पदार्थ, सत्य-पुरुषको अर्पण करना एक तुच्छ सेवकके जूठे पदार्थको बादशाहको अर्पण करनेके तुल्य महान् अपराध एवम् अनर्थका करनेवाला है।

कभी भी सत्यपुरुषको भोग लगाये बिना कोई पदार्थ ग्रहण न करे। जो सत्यपुरुषको अर्पण करके किसी पदार्थको ग्रहण करता है, उसका फल अमृत समान मिलता है। इसलिये उचित है कि, अत्यन्त शुद्ध और स्वच्छ भोजन आदि काममें लावे।

११—न झूठ बोले एवं न झूठे वचन दे, न झूठेका संगही करे। न झूठेसे किसी प्रकारका व्यवहार करे।

१२—चोरी करना, चोरोंका साथ देना, उनकी सम्मतिमें सहमत होना, उनको सम्मति देना, उनका माल लेना और उनके निकट न जाना चाहिये।

१३—जूआ न खेले क्योंकि, जूआ महान् दुःखका घर है जुआरियोंकी महा-दुर्दशा होती है। महाराजा नल, महाराजा युधिष्ठिर आदि पुण्यस्वरूप धर्मावतारोंको भी इस जूआने कैसा नष्ट और दुर्दशा ग्रसित कर दिया था जूआ, झूठ, चोरी, व्यभिचार और हिंसा आदि सब पाप परस्पर संबंध रखते हैं, एक दोष आनेसेही क्रमशः सर्व आपही आप आ जाते हैं। इनमेंसे किसी भी एकको धारण करनेवाले पुरुष महान् दुःखोंका अनुभव करते हुये परलोकमें नर्कके भागी होते हैं।

१४—शरीरके ऊपर द्वादश तिलक लगावे। कपालमें खडी लकीरके समान सीधा तिलक करे, वैसेही मस्तक दोनों आँख, नाभि, हृदय, दोनों भुजा और दोनों छातियोंसे लेकर मोढेकी ओर फिरता हुआ, पीठ और कानपर तिलक करे।

१५—उज्वल वस्त्र श्वेत रखे।

१६—ग्रीवामें तुलसीकी माला एवं तुलसीकी कंठी धारण करें।

१७—सत्यनामका जप, कीर्तन और भजन करता रहे।

१८—सत्यपुरुषकी भक्ति तथा सत्यपंथका उपदेश करे। एक मनुष्यको सत्य-पुरुषकी भक्ति और सत्यपंथमें प्रवेश करानेके फल करोड़ों गऊओंको कसाईके हाथसे बचानेके पुण्यसेभी बढकर है।

१९—[1]यंत्र, मंत्र, तंत्रादिकी ओर कभी ध्यान भी न दे क्योंकि, ये मुक्ति और भक्तिके शत्रु हैं। इनका साधन करनेवाला छल कपटके व्यसनमें फँसकर महादुराचारी हो नर्कका अधिकारी हो जाता है। जितने तंत्रादिक साधन हैं सब नर्ककेही मार्ग हैं।

२०—स्वसंवेदके बिना दूसरी पुस्तकोंसे मुक्ति पथ मिलनेकी आशा न रखना चाहिये परन्तु [2]अन्य पुस्तकोंका बोध और ज्ञान वृद्धिके हेतु पढे।

२१—सत्य कबीर और उनके सच्चे हंस और कंडिहारके बिना दूसरेको मुक्तिपथका दर्शन नहीं समझे।

२२—पारख गुरुकी शिक्षा बिना कदापि मुक्ति नहीं होती।

२३—सत्य पुरुषकी भक्तिके बिना अन्य सब भक्तियाँ भवसागरमें डुबाने-वाली हैं।

२४—सकाम तीर्थ व्रत आदि सब यमके बन्धन हैं।

२५—सकाम नौधाभक्ति और चार प्रकारकी मुक्तिकी चाह सब बन्धनही हैं।

२६—कामी निर्गुण और सगुणके ध्यान करनेवाले भी हों बंधनमेंही रहते हैं।

२७—[3]हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, यहूदी आदि सब जाति और धर्म्मके लोग कबीर पंथमें मिल सक्ते हैं, सबके हेतु समानही भक्ति और मुक्ति है।

---

१ यंत्र मंत्र तंत्रका आशय, देखो पण्डित श्रद्धाराम फिल्लोरी विरचित सत्यामृत प्रवाह पृष्ठ १८० में।

२ वेदादि विद्या सबै, बोध हेतु हिय धार ॥ सब मत महरम करे, तब देखे निज सैन ॥

३ कबीर—हम वासी वहि देशके, जहाँ जाति वरण कुल नाहि।
शब्द मिलावा होय रहा, देह मिलावा नाहि ॥
जाकी मर्यादा जौन विधि, वरते सोई प्रमान।
जमा माँहि कछु भेद नहि, उज्वल धर्मओ ज्ञान ॥ ६

२८—नर्क स्वर्ग तथा अन्य सर्व लोक अज्ञानियोंके हेतु ठहराये गये हैं जिसको सत्य आत्मज्ञान प्राप्त हुआ उसके हेतु सब असत्य और भ्रम मात्र हैं।

२९—सारशब्दके बिना मुक्तिका द्वार कोई भी नहीं है।

३०—निन्दा, ईर्षा, वैमनस्य, छल, कपट, अभिमान आदि मुक्तिके वैरी हैं।

३१—अधीनताके द्वारा सब शुभ गुण और पुण्य प्राप्त हो जाते हैं।

३२—मुक्तिमार्ग बहुत सांकरा और नर्कका मार्ग बहुत चौडा है।

३३—कबीर साहब विदेह हैं उनका देह कभी नहीं कल्पे है।

३४—कैसीही विपत्ति क्यों न आपडे अपने सत्यगुरुको छोड किसी दुसरेकी सहायताका ध्यान न करे। सत्यगुरुके अतिरिक्त किसीसे भी किसी प्रकारकी आशा न रक्खे।

३५—जो कोई सतगुरुकी शरणमें आवे उसे शरणके नियमोंको भली प्रकार पूर्ण करना उचित है। पूर्ण विश्वास रखे कि, सत्यगुरु अवश्य कालके जालसे निकालेंगे और दुखसागरसे पार करेंगे।

३६—सत्यगुरुकी कृपाका धन्यवाद कभी न भूले क्षण क्षणमें धन्यवादही देता रहे। ऐसा नहीं कि, प्रथम तो प्रार्थना करे पीछे भूल जावे कृतघ्नी कभी मुक्त नहीं होता।

३७—ईश्वरीय भय मुक्तिका चिह्न है। मृत्युको सदा स्मरणमें रखे।

३८—सच्चे प्रेमके बिना भक्ति निष्फल है।

३९—धन्य हैं वे जो शरीरका मोह छोडकर भक्तिमें लगते हैं।

४०—उदारताके विना कोई भी भक्तिका पद प्राप्त नहीं कर सकेगा। उदार दोनों लोकोंमें सुखी होता है। उसका थोडा पुण्य भी बहुत फलदायक होता है। कृपणके भजन और तपस्या निष्फल होते हैं चाहे वह जितना भक्ति और भजनका ढोंग करे। कृपण दोनों लोकोंमें दुःखकाही भागी होता है।

४१—मौन परम उत्तम गुण है। आवश्यकताके अनुसार यथाअवसर बोले, निरर्थक बकबक न करे। मिथ्या प्रलाप करनेसे आत्मा शरीर सबकी हानि है।

४२—सत्य गुरु (कबीर साहब) की वाणीका पाठ करे, बारम्बार मनन करे, उनके आशयके ऊपर विचार करे, उनके भेदको भली प्रकार सोचे, समझे सदा काल उन्हींका चिंतन रखे। उनके आशय समझनेमें कोई भी युक्ति उठा नहीं रखे। सत्य गुरुके शब्दोंको यथा अवसर गावे और कीर्तन करे। सत्यगुरुकी प्रशंसा और प्रार्थना सदा करता रहे।

४३—जितने धर्म संसारमें प्रचलित हैं सबके आचार्य कबीर साहब हैं ऐसा कबीर पन्थियोंको ध्यान करना चाहिये, परन्तु उनके मुक्ति दाता तो स्वयम् (कबीर साहब) और चार गुरु तथा उनके वंशोकोही ठहराया गया है, दूसरेको नहीं कहा ।

४४—किसीको कभी शाप न देना, किसीसे कुवचन न बोलना, एवं किसीका अहित चिंतन न करना चाहिये ।

४५—परमात्माको सर्वत्र पूर्ण जानना । किसी प्राणीको भी दुःख देनेको ईश्वरको दुःख देनेके तुल्य जाने ।

४६—अभिमानी कभी परमात्माको व्यापक नहीं देख सक्ता ।

४७—गुरुकी आज्ञाकारिताही परम तपस्या है ।

४८—जबतक शरीरसे लाड प्यार है उसके पोषणमें वृत्ति लगी हुई हैं इसमें आज्ञाकारिता असम्भव है ।

४९—मूर्ख, शठ तथा विद्याहीनको मुक्ति पद कभी नहीं मिलता ।

५०—जबतक शरीरका भय और चिंतन यानी देहाभिमान है तबतक विदेह पद कदापि प्राप्त नहीं हो सक्ता । जो स्वयम् विदेह हो विदेहको प्राप्त हो ।

कबीर साहबके लोक तथा हंसोंकी कथा ।

कबीर साहबका वह लोक है जिसके कि, गुण कहने सुननेसे बाहर है । केवल स्वसंवेदही थोडासा विवरण करता है । जिस समय उस लोकको हंस चलते हैं उस समयके उनके प्रतापका वर्णन कुछ किया नहीं जा सकता । भला उनके सौन्दर्यका बखान किससे हो सकता है जिनका कि एक एक बाल ऐसा देदीप्यमान् है, जिसके कि सामने करोडों सूर्य छिप जावें, उन हंसोंके मनमें तनिक भी वासना नहीं रहती । निरञ्जन, आद्या, ब्रह्मा, यम, शिव, ऋषि, मुनि इत्यादि वासनाकेही आधीन हो बारम्बार अवतृत होते हैं—राम कृष्ण सिद्ध साधु इत्यादि सब धर्म्मवासनासे अवतार लेते हैं ।

जिस समय कोई मनुष्य मरता है तब उत्तरकी ओर होकर चलकर प्रथम विष्णुके निकट अपने पाप पुण्यका लेखा देनेके निमित्त वैकुण्ठको जाता है । जब हंसकबीर चलते हैं तब सत्यगुरुके शब्दके लवद्वारा अपने पूर्ण बलसे ऊपरको ओर चढे चले जाते हैं, ब्रह्माण्डके पार हुआ चाहते हैं, तब धर्म्मराजकी तीनसौ साठ कन्या मिलती हैं, जिनके वस्त्र आभूषण और सौन्दर्य आदिका मैं क्या विवरण करूँ ? सत्यकबीरके अतिरिक्त ऐसा कोई भी तीनों लोकोंमें नहीं है

जो कि, उनको देखकर आसक्त न हो जावे । वे कन्यायें उस स्थानपर इस कारण नियत की गई हैं कि, हंस कबीरको अपने जालमें फँसालें, जब वे हंस कबीरके निकट जाती हैं तब नाना प्रकारके हावभाव कटाक्षद्वारा उनको मोहित करना चाहती हैं। परन्तु वे उनकी ओर तनिकभी ध्यान न देते हुए कहते हैं कि, दूर हो चली जा ? तुम्हारी तनिक भी इच्छा हमको नहीं है। तब वे निराश होकर लौटती हैं। भला मकडीके जालमें भारी पदार्थ कैसे फँस सकते हैं। जब हंस उनको अनादर करके चलते हैं, तब आगे धर्मराय मिलते हैं दंडवत् प्रणाम करते हैं, पीछे हंस ऊपरकी ओर चले जाते हैं। जब सत्यलोकको पहुँचते हैं, तब सत्य-लोकके हंस उनकी अगवानीके निमित्त बाहर निकलते हैं, प्रत्येक हंस अपने हृदयसे लगाता, मिलता और प्रसन्न होता है, कहता है कि, बहुत दिवसोंके पृथक हुये हंस आज हमसे आकर मिले। सबी हंस मिलकर उनको सत्यपुरुषके पास ले जाते हैं वे हंस सत्यपुरुषका दर्शनपा दंडवत् प्रणाम करके कृतार्थ हो लोकमें वास करते हैं।

शेर[1] ।

मुर्गे रूह आखिरीं नफसको । जब छोडे इस उनसरी कसफको ॥
सतलोग सिधार साथ सतसाज़ । उस वक्त करे बुलन्द परवाज ॥
दर सिम्त शुमाल सर बसर जाय । बासुरअत सो उबूर कर जाय ॥
वह नूरो जलाल बेबयाँ है । गुप्ततारे कबीरमें आयाँ है ॥
जब सुकृत लोक रुखरवाँ हो । रागोरंग देखते दवाँ हो ॥
देखे कहीं सब्ज: लाल जाराँ । बाहुस्नो जमाल गुलअजाराँ ॥
सदहा गुलशन चमनबहारी । शीरीं नहरें पुर आब जारी ॥
गहे बर्क बदन है नाज़नीनाँ । हैं खूब लगी बज़ार मीनाँ ॥
है फिरते कहीं ये हूरो गिलमाँ । बैठे कहीं ज़ाहिदो मुसलमा ॥

सैकडों प्रकारकी बस्तियाँ और सृष्टिकी रचना देखते हुए ऊपरको चलते हैं। स्वर्ग तथा वैकुण्ठकी सैर करते हुए समस्त बस्तियों और शून्यको पार करके पीछे सत्यलोकको पहुँच जाते हैं।

कबीर साहबकी मङ्गलवाणी ।

चल हंसा सतलोक हमारे, छोडो यह संसारा हो ॥
यहि संसार काल है राजा, कर्म्म को जाल पसारा हो ॥
चौदह खंड वसे वाके मुखमें, सबहीं को करत अहारा हो ।

---

१ हंसोंके वृत्तान्तमें जो कथा कही है उसीका उर्दूमें यह छायानुवाद है।

जारबार कोयला कर डारन, फिर फिर दे अवतारा हो ॥
ब्रह्मा विष्णू शिवतन धरिया, और को कौन बिचारा हो ।
सुर नर मुनि सब छलछल मारे, ले चौरासीमें डारा हो ॥
मध्य अकाश आप जहँ बैठे, ज्योति शब्द ठहियारा हो ।
ताका रूप कहां लग बरनो, अनंत भान उजियारा हो ॥
श्वेतस्वरूप शब्द जहां फूले, हंसा करत बिहारा हो ॥
कोटिन चांद सुरज छिपि जैहैं, एक रोम उजियारा हो ।
वही पार इक नगर बसत है, बरसत अमृतधारा हो ॥
कहें कबीर सुनो धर्मदासा, लखो पुरुष दरबारा हो ॥

इस सत्यलोककी मनोहरता और हंसोंका रहन सहन और रीति व्यवहार सूक्ष्मवेदके पढनेसे जाना जा सकता है ।

मुसद्दस[1] ।

यह हरदो जहां काल पुरुष के हैं इजारे ।
हर सिम्त व हर जाय में यम जाल पसारे ॥
यक लोक व यक वेद दो दरिया के किनारे ।
सैयाद के काबू में हैं सब जीव बेचारे ॥
चलती है यहां तेग व तलवार दो धारे ।
चल हंस अचल मोलिदो मावाय हमारे ॥
जब भूल गया आदम को आपही आपा ।
पाबन्द हुवा तिफली जवानी व वुढापा ॥
सब पर है लगा मलिक मौत मोन्ह व छापा ।
है आग लगी बेश: जलेगा यह सरापा ॥
जलते हैं धोल उड़ते धुवें धार शरारे ।
चल हंस अचल मोलिदो मावाय हमारे ॥२॥
अफसोस लिया लूट धरम धरमन धूरत ।
एक इश्क जद: भई है एक हुस्न है औरत ॥
हर कौन किया भौन है यह मोहिनी मूरत ।

१—यह मुसद्दस कबीर साहब की मंगलवाणीके भावका विशद अनुवाद है "चल हंसा सतलोक हमारे, छोडो यह संसारा हो—"चल हंस अचल मोलिदो आताद हमारे" यह अनुवाद है। "यहि संसार काल है राजा, कर्मको जाल पसारा हो—इसका "यह हरदो जहाँ" यहाँसे "तलवार दो धारे" यहाँतक अनुवाद है, पर कुछ भाव बढाकर किया है। इसी तरह प्रत्येक पावके भावका कल्पना के साथ अनुवाद किया है विस्तारके भयसे पूरा नहीं मिलाते ।

दिल पार: हुवा पार: बमह पारए सूरत ।।
बाजार खड़े मार व बीमार नजारे ।
चल हंस अचल मोलिदो मावाय हमारे ।। ३ ।।
कैलास चलेगा व जिनू लोक चलेगा ।
अमरावती अलकावती गोलोक चलेगा ।।
सब स्वर्ग चलेगा व तपोलोक चलेगा ।
जो हद्द जनो मर्द में सो लेछा चलेगा ।।
वोभी चल जावे जहां नौलाख सितारे ।
चल हंस अचल मोलिदो मावाय हमारे ।। ४ ।।
कोई न रहे एक पुरुष लोक रहेगा ।
आवे जो वहांसे सो खबर उसकी कहेगा ।।
सब कौल कर शम: अजिले सोल बहेगा ।
जिसको वह नजर आवे सो फिर कुछ न चहेगा ।।
निश्चल सो रहे कायम जहां अमृत धारे ।
चल हंस अचल मोलिदो मावाय हमारे ।। ५ ।।
हंसोंकी हुस्न खूबी कही जाए सो कैसे ।
यह नातिक: गुम सुम्म बयाँ कीजिए ऐसे ।।
एक मूय मुनौविर कह इस नूर का जैसे ।
छिप जायँ करोड़ों महेहूर तलअत तैसे ।।
सब हंस पुरुषरूप पुरुष उनको दुलारे ।
चल हंस अचल मोलिदो मावाय हमारे ।। ६ ।।
जहाँ रात न दिन है व नहीं सूरज चन्दा ।
सोहङ्ग ढुरै चँवर करे पुरुष अनन्दा ।।
यक मुरत सारे न खुदावन्द न बन्दा ।
इस मंजिल नजदीका नहीं कालका फंदा ।।
जिस लोक हमेश: को परमहंस पधारे ।
चल हंस अचल मोलिदो मावाय हमारे ।। ७ ।।
सतगुरुकी शरण लेके चलो बह्लके उस पार ।
वह कादिर मुतलक हुवा जिस जीवका मददगार ।
कर पलमें सुबुकदोश उठा उसका गराँ बार ।
पहुँचावे बतनमें न बुतनमें होवे औतार ।।

आजिज से गुनहगार कतारोंको जो तारे ।
चल हंस अचल मोलिदो मावाय हमारे ॥ ८ ॥

अध्याय ६.

कबीर साहबकी कुछ लीलाएँ ।

कबीर साहबकी लीलाएँ असीम तथा अनन्त हैं, जिनका कि विवरण किसी प्रकार किया नहीं जा सकता । क्योंकि, जब जब सृष्टि होती है तब तब कबीर साहब पृथ्वीपर प्रगट होते हैं, लोगोंको शिक्षा देनेके लिये कौतुक दिखलाते हैं, सत्ययुग त्रेता द्वापर और कलियुग इन चारों कालोंमें आपकी लीलाएँ एक तरहकी प्रगट होती हैं, उनकी गणना कौन कर सकता है, आप उत्पत्तिके आरंभसे महा प्रलयपर्यन्त मनुष्योंको सिखलाते और शिक्षा देते रहते हैं, अगणित लीलाएँ आपसे प्रगट होती हैं, प्रत्येक स्थानपर जा जाकर आप पुकारते हुए मनुष्योंको शिक्षा देते फिरते हैं, कोई कोई भाग्यवान् मान लेता है, नहीं तो प्राय: लोग आपकी बातों को सुनकर घृणा करते हुए भागते हैं । क्योंकि, समस्त मनुष्योंकी बुद्धिपर कालपुरुषने ताला चढा रक्खा है, इस कारण सत्यगुरुकी बातोंको कोई २ पसंद करता है । कालपुरुषका विष सबमें प्रवेशित हो रहा है । जैसे नीमके कीडेको नीमही पसंद है । मिश्री तथा चीनी उसके रुचिकर नहीं होती । न नीमके अतिरिक्त और किसी वस्तुसे उसकी तृप्ति होती है । सहस्रों लीलाएँ देखते हैं, तो भी उनको विश्वास नहीं होता । समस्त कालोंमें जो लीलाएँ आपसे होती हैं, उनको लिखनेवाला कोई नहीं है । यदि समस्त समुद्रोंकी मसि बनावें, समस्त पृथ्वीका कागज करें, समस्त वृक्षोंकी कलमें हों, समस्त देवतागण लिखें तो कदाचित् कुछ लिख सकें तो लिख सकें । मुझसे तुच्छ मनुष्यमें क्या सामर्थ्य है कि, लिख सके । क्योंकि, वह समस्त जगतका रचयिता और समस्त लोकोंका मालिक है । समस्त परमेश्वरोंका परमेश्वर है । उसके सामनेकी लीलाओंकी क्या गणना है ? जो समस्त महामान्योंका महामान्य है उसकी लीलाका विवरण व्यर्थ है । फिर भी अपने पाठकगणोंके मनोविनोदके लिये कुछ कौतुक नीचे लिखता हूँ ।

गरीबदासजीकी वाणी इत्यादिमें लिखा है कि, सम्मन नामका एक भक्त था । कबीर साहब शेख फरीद और कमाल सहित उसके घर गये उस समय सम्मनके घरमें भोजनके लिये कुछ नहीं था । सम्मनकी स्त्रीका नाम नेकी और पुत्रका नाम सीव था । सम्मनने अपने पुत्र और पत्नीसे परामर्श किया कि,

हमारे गृहमें साधु मेहमान आये हुए हैं। हमारे पास भोजनके निमित्त कुछ नहीं है अब क्या किया जाय। तब सम्मनने सीवसे कहा कि, अब तो कोई उपाय नहीं, चलो चोरी करें। तब पिता-पुत्र दोनोंने रात्रिके समय एक महाजनके घर सँध लगाया– सीव द्वार तोडकर भीतर गया, तीन सेर आटा सीधा तीनों मेहमानोंके पेट भरनेके हिसाबसे चुराकर अपने पिताके हाथ धरा, जब आप छेदसे बाहर निकलने लगा यानी जब छेदसे शिर बाहर निकाला, तब पाँव भीतर ही रह गया–महाजनने भीतरसे पाँव पकड लिया। सीवने अपने पितासे कहा कि, मैं तो पकडा गया। मेरी हुरमत जाती रहेगी। इस कारण तू मेरा शिर काटले, जिसमें मैं न पहचाना जा सकूं। सम्मनने अपने पुत्रका शिर काट लिया। आटा सीधा और अपने पुत्रका शिर लेकर अपने घर आगया। सीवका शव वहँ ही पडा रहा। सम्मनने अपने बेटेके शीशको एक ताकपर रख दिया। आटा सीधा अपनी स्त्रीको देकर कहा कि, भोजन प्रस्तुत करो परन्तु सावधान, रोना नहीं। यदि रोओ व दुःख प्रगट करोगी तो साधु भोजन नहीं करेंगे। नेकीने तुरन्त भोजन प्रस्तुत किया, सम्मन उन तीनों साधुओंके लिये भोजन लगया। तीन पत्तल कबीर साहबके सामने रखकर कहा कि, महाराज! आप तीनों साधुजन भोजन करें। कबीर साहबने तीन पत्तलके छः टुकडे किये, और छः भाग करके कहा कि सम्मन! अब तुम अपने पुत्रको बुलाओ हम छः मनुष्य एक साथ भोजन करेंगे, सम्मनने कहा कि, महाराज! हम तीनों पीछे आवेंगे–आप तीनों संत पहले भोजनकर लें कबीर साहबने कहा कि, ऐसा कभी न होगा, हम सबके सब एक साथ भोजन करेंगे–कबीर साहबने कहा कि, सीव तू कहाँ है, शीघ्र उपस्थित हो, सीवके शीशसे शब्द निकला कि, महाराज! मैं किस प्रकार आऊ मेरा तो शीश कटा हुवा ताकपर धरा है। और धड कहीं पडा है। तब कबीर साहबने कहा कि, शिर तो चोरोंके कटते हैं भक्तोंके शीश नहीं कटते। तू चला आ। कबीर साहबके इतना कहतेही सीवका शव आकर मस्तकसे मिल गया। और वह उसी समय जैसा था वैसा जीवित होकर प्रसन्नतापूर्वक कबीर साहबके पास आ बैठा। छः मनुष्योंने भोजन किया, दूसरे दिन बिदा होने लगे उस समय कबीर साहबने कमाल और शेख फरीदसे कहा कि, यहाँसे शीघ्र चलो। कल तो इसने यह कार्य किया आज न जाने और क्या करडाले।

एक बेर कुछ वैरागी जो रामानन्दके चेले थे, कबीर साहब सहित अपने गुरुद्वारे दक्षिण देश तोताद्रिको चले। वे जब काशीजीसे चले थे तब एक भैंसा भी अपने साथ लेलिया था उसके ऊपर सबने अपनी गुदडी तथा कठारी इत्यादि

लादली । जब चलते २ अपने गुरुद्वारे पहुँच कर डेरा डाला तब भोजन प्रस्तुत हुवा, रामानुज स्वामीके जो आचार्य्य हैं वे स्नानादिका बहुत ध्यान रखते हैं। पडदा करके अपने हाथसे भोजन बनाकर भोजन करते हैं। यदि किसी शूद्रकी छाया भोजनपर पड जावे तो वे उसको नहीं खाते, उन लोगोंमें जातीय ध्यान भी विशेष है। प्रायः वे जातिके ब्राह्मण होते हैं, तथा अन्य जातिके मनुष्योंकी भी उनमें संख्या है। उन लोगोंका मुख्य अभिप्राय यही था कि, कबीर साहब वेदपाठी नहीं हैं–इस बहानेसे हम अपनी पंक्तिमें कबीर साहबको न बैठावेंगे उन्होंने पूंछा कि, कबीर साहबको अपने बराबरमें बैठाकर भोजन करावें परन्तु अपने झुंडसे पृथक् बैठावें किन्तु पृथक् बैठा लेना भी उचित न समझा। अतएव उन्होंने एक बहाना निकालकर कहा कि, जो कोई वेदकी ऋचा पढे वह हमारे साथ बैठकर भोजन करे, जिसको वेद पाठ न आवे वह हमारी पंक्तिमें न बैठे। सबोंने वेदका कोई २ विशेष भाग पढ पढकर सुना दिया–जब कबीर साहबकी बारी आई तब कबीर साहबने भैंसेके शीशपर हाथ धरकर कहा कि, ए भैंसे ! तू वेद पढ। तब वह भैंसा अत्यंत स्वच्छता और स्वरके साथ वेद पढने लगा। जब उस भैंसेको वेद पढते देखा तब समस्त आचारियोंने कबीर साहबके चरणोंपर गिर कर अपना अपराध क्षमा कराया। यह बात दक्षिणके आचारियों तथा वैरागियोंमें विख्यात है। अनेक साधुगण इस लीलाको जानते हैं कबीर साहबकी प्रशंसा किया करते हैं।

कबीर साहब तथा रविदासजीसे वाद विवाद हुवा। तब रविदासजी का पक्षपात करनेके निमित्त देवी तथा ब्रह्मा विष्णु शिव सब आए। कबीर साहबने सबको परास्त कर दिया। चारोंका क्रोध तथा झल्लाहट किसी काम न आया। देवी और शिवने अत्यंत क्रोध किया। देखो कबीर साहब और रविदास गोष्टी।

जहाँगश्तशाह एक सिद्ध साधु था। वह समस्त पृथ्वीकी सैर किया करता था। उससे साधुओंने पूछा कि, तुमने कभी कबीर साहबका दर्शन किया, क्या वह बडे प्रतिष्ठित हैं। तब जहाँगश्तशाह काशीको चले। कबीर साहबने जान लिया कि, मेरे साक्षात्के निमित्त जहाँगश्तशाह आते हैं। कबीर साहबने एक सूवर मँगवाकर अपने द्वारपर बँधवा दिया। जहाँगश्तने दूरसे देखा कि, द्वारपर सूवर बँधा हुआ था, बडे क्रुद्ध हुए और झल्लाकर पलट पडे। तब कबीर साहबने पुकारा कि, ए जहाँगश्त ! क्यों पलटे जाते हो ? मेरे समीप आओ। इतनी बात सुनकर जहाँगश्तने मालूम कर लिया कि, कबीर साहबने जान लिया।

मुझको पहिचान लिया। उनके मनमें निश्चय हो गया कि, कबीर साहब कोई सिद्ध तथा श्रेष्ठ पुरुष हैं। वहाँसे पलटे और कबीर साहबके पास आकर कहने लगे कि, मैंने सुना था कि, कबीर साहब बडे सिद्ध हैं, इस कारण मैं आपका साक्षात् करने आया था। अपने द्वारपर हराम बाँध रक्खा है--यह कैसी घृणित बात है ? यह बात सुनकर कबीर साहबने उत्तर दिया कि, ऐ जहाँगश्त-शाह ! मैंने हरामको अपने गृहके बाहर बाँध दिया है मेरे भीतर तनिक भी नहीं रहा--आपने हरामको अपने भीतर बाँध रक्खा है। फिर बाहर निकाल देना अच्छा कि, भीतर बाँध रखना ? क्योंकि, क्रोध अहंकार मद आदि सब हराम हैं, वे तुम्हारे भीतर हैं। जिसको तुमने हराम समझा है--वह हराम नहीं, वरन् क्रोध हराम है। इस शिक्षासे जहाँगश्तशाह प्रसन्न हो गए--संध्याका समय निकट आया जहाँगश्तशाहने इच्छा प्रगट की कि, मैं मक्कामें निमाज पढना चाहता हूं। कबीर साहबने एक पलभरमें मक्का पहुँचा दिया। जिन सिद्धोंके बीच जहाँगश्तसे जाया न जाय वहाँभी कबीर साहबने उनको पहुँचाया--तब जहाँगश्त अधीन हुए।

रामदास नामक एक धनाढ्य जागीरदार ब्राह्मण था वह दक्षिण देशमें नर्मदा नदीके किनारे रहता था। स्नान करनेके लिये गया तो वहां उसे कबीर साहब बैठे मिले। उसने उनसे निवेदन किया कि, महाराज ! आप समर्थ हो, मुझको विष्णुका दर्शन कराओ, तब कबीर साहबने उत्तर दिया कि, कल दोपहरको विष्णु तुम्हारे घरपर जावेंगे। यह बात सुनकर रामदासको निश्चय हो गया कि, कबीर साहबका वचन हो गया है अब कल मेरे घर अवश्यही विष्णु आवेंगे। तब उसने अपने घर जाकर बड़ी तैयारी की। दूसरे दिवस गृहको भली-भाँति स्वच्छ और पवित्र करा बिछौने इत्यादि बिछवाए। नाना प्रकारके स्वादिष्ट भोजन बनवाये। सिंहासन इत्यादि प्रस्तुत कराए। प्रतीक्षा करते हुए बैठे कि, अब विष्णुमहाराज आया चाहते हैं तो कुछ कालके उपरान्त देखा कि, एक भैंसा कीचडसे लतपत होकर आया और उस फर्शके ऊपर बैठ गया। रामदासको अत्यंत क्रोध आया कि, इस भैंसेने फर्शको बिगाड दिया। सोंटा लेकर इस भैंसेको मार भगाया। उस भैंसेको भगाकर फिर विष्णुके आनेकी प्रतीक्षा करने लगे। समस्त दिवस व्यतीत हो गया पर कोई नहीं आया। वह ब्राह्मण निराश हुवा। प्रातःकाल नदी स्नानके निमित्त गया। फिर उसी स्थानपर कबीरको बैठा देखकर कहा कि, महाराज ! मुझको विष्णु महाराजका दर्शन तो न हुवा !

आपकी बातें मिथ्या कैसे हों? कबीर साहबने कहा कि, ए रामदास ! मेरे कथनानुसार विष्णु तुम्हारे घर गए। परन्तु तुमने अच्छी विष्णुपूजा की। सोंटे मारकर भगा दिया। यह बात सुनकर वह ब्राह्मण लज्जित तथा दुःखी हुआ। क्योंकि विष्णुभक्त था। जान लिया कि, विष्णु भैंसाके स्वरूपमें थे। वह भक्त तो था, परन्तु भक्तोंकेसे गुण उसमें नहीं थे कि, अपने प्रेमीको प्रत्येक वस्तुमें देखे इस कारण विष्णुदर्शनसे वञ्चित रहा।

कमालको कबीर साहबने मुरदासे जीवित किया उसीका (बोधसागरमेंका यह दोहा है—

दोहा—मुरदासों जिन्दा किया, दिलसों दीन मलाल।
शाह परतीत दिखाइयाँ, उत्पन दास कमाल ॥

तब शेखतकीने कहा कि, मैं इस लीलाको नहीं मानता। कारण यह कि, यह लडका अचेत था। इस कारण जीवित हो गया। मेरी बेटी आठ दिवसोंसे कब्रमें मरी पडी है। जब आप उसको जीवित करें तब मुझे विश्वास हो। कबीर साहब सिकन्दर शाह और शेखतकीके साथ उस लडकीकी कब्रपर गए। कबीर साहबने पुकारा। उठ शेखतकीकी बेटी ! वह नहीं उठी। फिर कहा कि, उठ शेखतकीकी बेटी ! फिरभी वह न उठी तब तीसरी बार कबीर साहबने कहा उठ कबीरकी बेटी ! उस समय वह लडकी जीवित होकर कब्रसे निकल पडी। शेखतकी उसके जीवित होनेपर उसका हाथ पकडकर अपने घर ले चले। उस लडकीने कहा कि, मैं तुम्हारे नामसे जीवत नही हुई हूँ। वरन् कबीर साहबके नामसे उठी हूँ। मैं कबीर साहबकी बेटी हूँ। मैं इनके साथ रहा करूँगी। तुम्हारे गृहपर न जाऊँगी। वह लडकी कबीर साहबकी बेटी विख्यात हुई; और उसका हृदय सत्यगुरुकी कृपासे प्रकाशित हो गया।

कबीर कसोटीमें लिखा है कि बादशाहने तेरह गाडी कोरी पुस्तकोंकी

---

१ कबीर कसोटीमें लिखा हुआ है कि, किसीके यहाँ एक लडकी मर गई थी, लडकीके बापसे कबीरजीने उस मृत बालिकाको माँगा। पर उसने न दी। जब उसकी पत्नीको यह समाचार मिला तो उसने उसको कबीरजीके पास भेज दिया। कबीरजीने उसे जिन्दा करके कमाली नाम रखा कमालबोधमें लिखा हुआ है कि, "शेखतकी हरसे मनमाई, लाय कमाली भेट चढाई" यह लिखा मिलता है। इससे यह प्रतीत होता है कि, कबीर साहिबके पास पुत्रीके रूपमें रहनेवाली एक कमाली ही है। कबीरकसोटी पृ. ३० में शेखतकीने बादशाहसे कहा है कि, यहाँसे जगन्नाथकी आग बुझाना क्या है, उसने अभी लडका और एक लडकीको जिन्दा किया है। इन बातोंके देखनेसे यह अवश्य ज्ञान होता है कि विज्ञ पाठक इस प्रकरणको सर्वत्र विचार करके पढ़ें, कमाली पुत्री थी वा नहीं यह प्रश्न इतिहासके गर्भमें अन्तर्हित है। कमालीकी दिव्य वाणीही इस बातको बता रही है, कि, उसके हृदयमें पूर्ण प्रकाश हो चुका था।

कबीर साहबके पास भेजकर कहा कि, मैं तब विश्वास करूँगा जब आप उन समस्त पुस्तकोंको ढाई दिवसमें लिख देंगे। वे पुस्तकें कबीर साहबके पास पहुँचीं। उन्होंने अपनी लाठी उनपर घुमाई। वे उसी समय लिखी गई। बादशाहको यह लीला देख विश्वास होगया। कबीरसाहबने उस ग्रंथोंको दिल्लीमें गडवा दिया। सुनते हैं कि, जब मुक्तामणि महाशयका समय आवेगा, उनका झंडा दिल्ली नगरीमें गडेगा। तब वे समस्त पुस्तकें पृथ्वीसे बहिर्गत होंगी। मुक्तामणि साहबका अवतार वंशकी तेरहवीं पीढीमें होगा। तब वंशगुरुगद्दी दिल्लीमें स्थिर होगी।

त्रेतायुगमें कबीर साहबने हनुमान्‌जीको सत्यपुरुषकी भक्तिका उपदेश दिया। मुक्तिमार्ग दिखाकर कहा कि, ऐ हनुमानजी! तू मुझको पञ्चतत्त्व तथा तीन गुणोंमें पृथक् मान मैं स्वयम् जगत् रचयिता हूँ। हनुमानने कहा कि, मुझको किस प्रकार विश्वास हो? जबलों मैं अपनी आखोंसे न देखलूं। कबीर साहबने हनुमानको देखनेका बल दिया। अपना वह तेज दिखलाया। जो पाँच तत्त्वों तथा तीनों गुणोंसे पार था। हनुमान्‌ने कहा कि, मैं आपका वह स्वरूप देखूं तब विश्वास करूँ। उस समय कबीर साहब अपना महाप्रताप दिखा अन्तर्धान होगए। हनुमान्‌जी अनेक प्रार्थनाएँ करने लगे कि, मुझको पुनः दर्शन हो। बहुत स्तुति करनेपर पुनः प्रगट हुए। हनुमान्‌बोध ग्रंथमें लिखा है यह कबीर सागरके पाँचवें भागमें पूर्ण प्रकाशित है। हनुमान उस स्वरूपको देखकर सत्यगुरुके चरणोंपर गिरा। उनका विश्वास उसके मनमें जम गया। सत्यगुरुने हनुमान्‌को अपना पान दिया।

सर्वानन्द एक धुरीण विद्वान् ब्राह्मण था। वह भारतवर्षके समस्त प्रांतोंमें जाकर पण्डितोंके साथ शास्त्रार्थ करके विजयी हुआ। जब कोई भी पण्डित उसके सामने न ठहरा तब वह अपने घर आ मातासे कहने लगा कि, मातः! अब तुम मेरा नाम सर्वजित् रक्खो क्योंकि, अब मेरा सामना करनेको कोई पण्डित नहीं रहा। तब माताने कहा कि, ए पुत्र तूने काशीमें जाकर कबीर साहबके साथ भी वाद विवाद किया था? उसने कहा कि, नहीं। तब माताने कहा कि, जबतक तू कबीर साहबपर विजयी न होगा तब तक तेरा नाम सर्वजित् नहीं रक्खूंगी। तब सर्वानन्दने कहा कि, कबीर कैसा बडा पण्डित है? मैं अब चलकर उसके साथ वाद विवाद करता हूँ। बहुतसे ग्रंथ और वेद इत्यादि लादकर काशीमें कबीर साहबके पास पहुँचे। कबीर साहबने कितनी लीलाएँ दिखलाई उन सब बातोंका विवरण करनेसे पुस्तकके सुविस्तीर्ण होजानेका भय है। इस कारण, उनको छोड जाता हूँ किन्तु उसे विश्वास न हुआ।

अन्तमें सर्वानन्द कबीर साहबके साथ सामना करनेको उद्यत हुए। बडा वाद विवाद हुवा। सर्वानन्दने श्लोकोंकी झडी लगादी। यद्यपि कबीर साहब समझाते पर वह न मानते। बात बातपर श्लोकोंका प्रमाण तथा पुस्तकोंकी साक्षी देते। कबीर साहबने देखा कि, इसके पीछे तो घमंडका भयानक रोग लगा है। यह कदापि न हटेगा। न कहना मानेगा। तब कबीर साहबने कहा कि, ए सर्वानन्द! अब तुम्हारी क्या कामना है किस बातके इच्छुक हो? सर्वानन्दने कहा कि, मेरी विजय लिखदे। कबीर साहबने कहा कि, मैं तो लिखना नहीं जानता तुम स्वयम् लिख लो। सर्वानन्दने लिख लिया कि, कबीर साहब हार गए। सर्वानन्द जीत गए। भली भाँति लिखकर यथा वह विजयपत्र कबीर साहब तथा अन्यान्य लोगोंको दिखलाकर अपने घरको चले। आनेपर अपनी मातासे कहा कि, माता मैं कबीर साहबसे वाद विवाद करके उनपर विजय पागया हूँ। तब माताने कहा कि, ए पुत्र! मुझको तो विश्वास नहीं होता कि तू कबीर साहबपर विजयी हुवा है। सर्वानन्दने कहा कि, मैं विजयपत्र लिखवा लाया हूँ तू देखले। माताने कहा कि कागज निकालो। जब कागज निकाला और पढा तो उसमें लिखा था कि, सर्वानन्द परास्त हो गए कबीर साहब विजयी हुए। यह लिखा देखकर आश्चर्यान्वित हुए कि, यह तो मेराही लिखा था यह कैसा उलटा हुआ। कदाचित् मैं लिखने में भूल गया। मातासे कहा कि, मातः! मैं लिखनेके समय भूल गया। अब पुनः जाता हूँ अत्यंत सावधानी पूर्वक ले आऊँगा। सर्वानन्द कबीर साहबके पास आए और कहा कि, मैं लिखनेमें भूल गया अबकी बार सँभालकर लिखूंगा। कबीर साहबने कहा कि, भली प्रकार सँभालकर लिखो। सर्वानन्दने उसी विषयको भली प्रकार सँभालकर लिखा। अपनी माताके समीप आकर प्रगट किया कि, अब मैं सँभाल कर लिख लाया हूँ। कागज खोला तो वही पूर्वकी बात लिखी पाई कि, कबीर साहब विजयी हुए तथा सर्वानन्द हार गये। इस प्रकार तीन बार हुए। तब सर्वानन्दको निश्चय होगया, कि, निस्संदेह कबीर साहब ईश्वर हैं। चरणों पर आन पडे और शिष्य हो गए। कबीर साहब तथा सर्वानन्दका विवरण भिन्न भिन्न स्थानोंमें लिखा है।

एक स्थानपर नवनाथचौरासी सिद्ध कबीर साहब तथा नानक साहब सब इकट्ठे थे। उस समय एक महाजन जो नानक साहब का परिचयी या सेवक था, जा पहुँचा। उसने विचारा कि, सन्त गुरुके समीप बिना कुछ लिए जाना उचित नहीं। कुछ भेंटके निमित्त ले चलना ठीक है। उसने अपनी जेबमें हाथ मारा पर कुछ न निकला। बहुत खोजने पर उसके वस्त्रोंमें एक तिल मिला!

उसने उसी तिलको नानक शाहके समक्ष रक्खा। नानक शाहने कबीरसाहबसे कहा कि, मैं इस तिलको इतने साधुओंमें किस प्रकार बाँटूं ? कबीर साहबने कहा कि, इस तिलको जलमें घोटकर सकल साधुओं में बाँटो, नानक शाहने कहा कि, यहाँ जलभी नहीं है। किसे घोटें ? यह बल तो आपहीमें है, इसको बाँटिये। उस स्थानपर एक शुष्क नदी थी, उसको कबीर साहबने जारी किया। उसमेंसे जल भरकर उस तिलको घोटा, सब साधुओंको पिलाया। जिससे उन्हें अत्यंत आनंद आया। कबीरजीसे कहा कि, कबीरजी! माँगो जो माँगोगे वही हमलोग आपको देंगे। कबीर साहबने कहा कि, तुम लोग तो दरिद्री जान पडते हो। मैं तुमसे क्या माँगूं तुम मुझको क्या दोगे ? उन लोगोंने कहा कि, जो कुछ तुम माँगोगे वह सब हम तुमको देंगे। कबीर साहबने कहा कि, पांच पैसेभर दरिद्रता मुझको दो। नवनाथ चौरासी सिद्धोंने परामर्श किया कि, यह गुण तो हम लोगोंमें नहीं। कारण यह कि, हम लोगोंको तो अपनी सिद्धि जप तपका मान है। चलो ब्रह्मासे पाँच पैसेभर दरिद्रता माँगें। ब्रह्मलोकमें जा पाँच पैसेभर दरिद्रता ब्रह्माजीसे माँगी, ब्रह्माजीने विचार कर उत्तर दिया कि, मेरे पास दरिद्रता कहाँ ? मैं तो इस बातपर अहंकार करता हूँ कि, मैं सृष्टिका उत्पन्न कर्ता हूँ। तब नवनाथ और सब सिद्ध कैलासमें शिवजीके पास जा वही प्रश्न किया। शिवजीने भी वही उत्तर दिया कि, मुझमें दरिद्रता नहीं क्योंकि, मुझमें तो यह अहंकार है कि, मैं मिटाता हूं। सब ओर ढूंढते २ थक गये परन्तु दरिद्रता कहीं न मिली। अन्तमें विष्णुके पास गए दरिद्रताके लिये प्रार्थना की। विष्णुने कहा कि, ए सिद्ध साधुओ! पाँच पैसेभर दरिद्रता या जो कुछ दरिद्रता है वह सब उसीके पास है जिसने तुमको भेजा है। मेरे पास तो केवल तीन पैसे भरही दरिद्रता है, जिसके कि कारण, मैं सारे संसारका रचयिता कहलाता हूँ। दरिद्रताके समूह तो स्वयम् कबीर साहबही हैं दूसरा कोई नहीं। तब सब सिद्ध साधु कबीर साहबके पास लौट आए। आपको दण्डवत् प्रणाम करके प्रदक्षिणा की, सारी बातें प्रगट कीं। कबीर साहबने कहा कि, क्या मैंने तुमसे पहिलेही न कहा था कि, तुम लोग तो दरिद्री हो, मैं तुमसे क्या माँगूं।

इससे यह परिणाम निकला कि, अहंकारसे सब फँसे हुए हैं। दरिद्रता तथा नम्रता यह गुण सबसे विशेष हैं। क्योंकि अहंकारके वश यह जीवन अपने स्वरूपसे गिरा इसीसे यह इतना बडा सिद्ध शैतान और नारकी हुवा। अहंकारहीके कारण हारूत मारूत जैसे भले देवता बाबिलके कुएँमें बंद किए गए। अहंकारने मनुष्य जातिको सदाके लिये बंधनमें डाल दिया है।

कबीर साहब नानक साहबके पास पञ्जाब देश आए, नानक शाहने अत्यंत आवभगत तथा सम्मानके साथ उनसे मिलकर कहा कि, जिस सेवाके निमित्त आप आज्ञा दें उसको मैं करूँ । कबीर साहबने आज्ञा दी कि, पाँच दिवसकी उत्पन्न हुई बछियाके स्तनमें दूध दुहकर मेरा कमण्डलु भर दो । नानक शाहने कहा कि, पाँच दिनकी पैदा हुई बछिया कैसे दूध दे सकती है ? कबीर साहबने कहा कि, यही मेरी सेवा है इसे ही तुम करो । नानक शाहने ढूँढ ढाँढ कर पाँच दिनकी उत्पन्न हुई बछियाको ला उपस्थित किया । उसके समीप दूध लेने गये । वह बछिया लात चलाकर भाग गई । नानक शाहसे कबीर साहबने कहा कि, अब तुम जाओ, मेरे नामसे उस बछियासे दूध माँगकर कमण्डलु उसके स्तनके नीचे रख दो, नानक शाहने बछियाके नीचे कमण्डलु रखकर कबीर साहबके नामसे दूध माँगा । बछिया के स्तनसे आपसे आप इतना दूध निकला कि, वह भर गया । कबीर साहबने नानक साहबसे कहा कि, ऐ नानकजी ! आपने वंदना तो बहुत की परन्तु अभीतक आपकी कमाईमें कमी है । आपका पंथ चलेगा बहुत लोग आपकी आज्ञामें चलेंगे । भविष्यत्‌में ये रङ्ग ढङ्ग होंगे । ऐसा बहुत कुछ नानक शाह से कबीर साहबने कहा । इसी ग्रंथमें नानक शाहके विषयमें भविष्य वाणी है । नानक धर्म्मका विवरण किया गया है जो कि, भविष्यत्‌में होनेवाला है । इसी स्थानपर यह साखी है । "तिल घोंटतारे लगे" इत्यादि है और इसी स्थानपर यह है :—

ऐसो दाता सत्य कबीर, सूखी नदी बहावे नीर ।
भूखेको खिलावे खीर, नङ्गेको पहनावे चीर ॥ इत्यादि ॥

महाराजा श्रीरामचन्द्रजीको कबीर साहब (मुनीन्द्रजी) ने योगयुक्ति सब कुछ सिखलायी । सीताके चुराये जानेके समय अत्यंत कठिनता उपस्थित हुई समुद्रोल्लंघन करना अत्यंत कठिन था । रामचन्द्रजीपर कबीर साहब की दया हुई । पत्थरोंपर सत्य नाम लिखा । उसके कारण बहुतेरे पर्वत तथा पत्थर तैरने लगे, पुल बन गया । इसी साहबकी दयादृष्टिसे लंकापर विजय पाकर मङ्गल-पूर्वक अपने घर पहुँचे । देखो ग्रंथ ज्ञानसंबोध तथा अन्यान्य ग्रंथोंमें ।

कृष्णचन्द्र बाँसुरी बजाकर गोपियोंका मन चुरा लिया करते थे, कबीर साहबने बाँसुरी बजायी, तीनों लोक मोह गये, जड चैतन्य सभी मोहित हुए । यमुना नदीका जल स्थिर होगया । स्थावर जङ्गम सभीको आनन्द आगया वह बाँसुरी ऐसी बजी कि, फिर कभी न बजी होगी । लोगोंने जाना कि, कृष्णचन्द्रने बजायी थी । गोप तथा गोपियोंकी बडी कामना थी कि, वैसी बंसी फिर बजे क्योंकि, उस बाँसुरीके बजानेवाले तो सत्य पुरुष थे । अभेद भावनामें होते हैं ।

कबीर साहब, इस बाँसुरीकी प्रशंसा हंस कबीर किया करते हैं जिनको इसका ज्ञान है।

जब प्रथम कबीर साहबका गोरखनाथसे सामना हुवा, गोरखनाथ कबीर साहबकी श्रेष्ठता तथा कीर्तिसे अनभिज्ञ थे, तब गोरखनाथने कबीर साहबसे कहा कि, आओ हम तुम वाद-विवाद करें। उस समय गोरखनाथने अपना त्रिशूल गाडकर कहा कि, आओ कबीर साहब ! उस त्रिशूलकी एक शाखापर बैठ जाओ मैं बैठता हूं पीछे वाद-विवाद करेंगे, कबीर साहबने सूकते एक तारको आकाशकी ओर चलाया। और शून्यमें उस सूकते ऊपर बैठकर कहा कि, नाथजी ! आओ, हम और तुम इस सूतपर बैठकर वाद-विवाद करें क्योंकि, तुम्हारा त्रिशूल तो पृथ्वीसे लगा हुवा है। कबीर साहबकी यह लीला देखकर गोरखनाथजी दङ्ग हो गए।

गोरखनाथने कबीर साहबसे कहा कि, मैं छिपता हूँ आप मुझे ढूंढ निकालें। गोरखनाथ मेंढक बनकर जलमें छिप गये कबीर साहब उस मेंढकको पकड लिये कहने लगे कि, अब किधर जाओगे, तब गोरखनाथ पुनः अपने असली रूपमें आ गए। पीछे कबीर साहबने कहा कि, अब मैं छिपता हूं तुम ढूंढलो। कबीर साहबने जलमें डुबकी मारी। जल होकर जलके साथ मिल गए। गोरखनाथ ढूँढते २ थके तीनों लोकमें ढूँढते फिरे परन्तु कहीं पता नहीं लगा। पीछे विवश होकर बैठा हे कबीर साहबने देखा कि, अब तो गोरखनाथ हारके बैठ गए हैं उसी समय कमण्डुल के जलमेंसे कबीर साहब प्रगट होगए।

गोरखनाथने कबीर साहबके पास दो सर्प भेजे। वे दोनों साँप कबीर साहबके पास आए। आपने उनको अपने शरीरमें लगा लिया। बहुत विलंब हुवा पर पलटकर नहीं गए तब स्वयम् गोरखनाथजी कबीर साहबके गृह पधार कर पुकारा कि, कबीर साहब ! बाहर आइए। कबीर साहबने भीतरसे उत्तर दिया कि, नाथजी ! मेरे गृह दो अतिथि आए हैं मैं उनके सेवा सत्कारमें लगा हुवा हूँ। गोरखनाथने जाना कि, कबीर साहब कैसे प्रतिष्ठित पुरुष हैं। आपमें कैसी क्षमा तथा संतोष है। प्रथम तो गोरखनाथने कबीर साहबसे बहुत वाद विवाद किया बहुत कौतुक देखे पीछे भलीप्रकार जान लिया कि, आप अद्वितीय हैं मनुष्य मात्रमें दूसरा ऐसा कोई नहीं। कबीर साहबने गोरखनाथको भलीप्रकार संतुष्ट कर दिया बहुत कुछ कहा। सब कौतुक दिखलाए। गोरखनाथको भलीप्रकार निश्चय करा दिया कि, कबीर साहब स्वयम् अलख अविनाशी हैं। तब सत्यगुरुके चरणोंपर गिर शिष्य होकर परमगति पागये। योगयुक्ति आदि सबको व्यर्थ जाना।

कबीर साहबके कमालीके मस्तकपर हाथ रखतेही उसका हृदय प्रकाशित होगया। उसे आरंभसे अन्ततकका सार समयोंका वृत्तान्त प्रगट हो गया। उसकी जिह्वासे ज्ञानके फौव्वारे छूटने लगे। वो सब वृत्तान्तोंका विवरण करने लगी कब्रसे बाहर आतेही उसका हृदय प्रकाशित हो गया उस समय वह ये शब्द बोली कि—

हंसा निकल गया मैं न लडीसी।
पाँच सहेली संग है मैली, पाँचोंसे मैं अकेली खडीसी
नौ दरवाजे बंदकरलीने, दशबीं मोरी खुली जो पडीसी।
न मैं बोली न मैं चाली, औढ दोपट्ट: किनारे खडीसी॥
कहत कमाली कबीरकी बालकी, सादीसे मैं कुमारी भलीसी॥

जी दुनियाँके फन्देसे निकल गया मैं लडी हुई नहीं हूं, मनकी पांच वृत्ति ही मैली सहेलियाँ हैं, इस कारण मैं उनके उद्वेगको छोड कर उनसे अकेली खडीसी दीख रही हूं मेरे शरीरके नौऊ दरवाजे समाधि लगानेके लिये बन्द करलेने पर भी दशम द्वार मेरे लिये खुलासा पडा है जब चाहूं जब उससे शून्य शिखरमें आसन लगालूं। उस अवस्थामें मेरे संसारके व्यवहार बन्द हो जाते हैं मैं निर्विकल्प समाधि लगाकर दुनियाँके किनारे खडीसी लगती हूं।

इसी प्रकार धर्मदास साहबकी स्त्रीका नाम माई अमीन था। उसके सिर पर कबीर साहबने हाथ रक्खा जिससे उसकी जिह्वासे ज्ञानस्रोत बहने लगा। एवं वह भी सब वृत्तान्त कहने लगी कि—

साधो नाम सभन से न्यारा लखि पुरन गुप्त विसतारा।
जानेगा कोई जाननहारा॥
जब नहिं अंशवंश निर्मायो, नहिं कुछ किया पसारा।
चर और अचर चार चर नाहीं, नहिं मनको विसतारा॥
जब नहिं पुरुष नहीं तब ज्ञान, यह मन सबसे न्यारा।
जब नहिं पाँच अमी निर्माया, नहिं सोहँग विस्तारा॥
धर ओ अधरधार धर नाहीं, नहीं पुरुषकी काया।
तब नहिं कूरम नहिं जलरंगी, नहिं तब जलकी छाया॥
फुप दीपलीला दहजा हैं, नहिं अदली औतारा।
करमन कहै सुनो धर्मदासा, यह मत सब से न्यारा॥

जब अंश और वंश नहीं बनाया न कुछ संसारकी रचना ही की थी। स्थावर

जंगम जड चेतन कुछ नहीं था, न मानसिक ही कल्पनाएं थीं । न अक्षर निरंजन या न ज्ञानी ही थे । हमारा यह विचार सबसे निराला है क्योंकि दूसरे उस समय भी कुछ मानते हैं । न देशसे हंगकाही विस्तार था एवं न पांच अमरही बनाये थे । जमीन आसमान और पुरुषका प्रतिबिम्ब जीव भी नहीं था । न कूर्मजी जलरंगजी और जलकी छायाही थी । फुप दीपलीलाके दहजेमें न कोई अदल करने वाला औतार था । करमन कहती है कि, ए धर्मदास ! यह मत सबसे भिन्न है । इसी प्रकार राजा चन्द्रविजयकी इन्द्रमती, राजा रावणकी मन्दोदरी, राजा वीरसिंहकी माणिकवती, राजा योगधरकी लीलावती पुरंती आदि पचासों स्त्रियाँ राजा अमरसिंहकी रानी, राजा उदयपुरकी रानी । मीराबाई, क्षेमश्रीग्वालिन तथा और भी अनगिनत स्त्रियाँ जिनके कि, शिरपर कबीर साहबने हाथ रक्खा व सब हंसस्वरूप होकर परमधामको चली गईं । तथा सिधार जायँगी । उन बातोंके लिखनेकी सामार्थ्य मेरी लेखनीमें नहीं है । न किसी मनुष्य तथा देवताओंमें ही लिखने और कहने सुननेकी सामर्थ्य है । कबीर साहबकी लीलाएँ कबीर साहबही जानें या उसके परम भक्तगणही जान सकते हैं ।

गजल ।

यह लिखना माजिज़ातका यह भी अबस हुवा ।
और कहना इस सिफ़ातका यह भी अबस हुवा ।।
नाकारः नतिकिः न कहा जाय उससे कुछ ।
फिर कहना पाकज़ तका यह भी अबस हुवा ।।
दिनमें सके न देख जिसे दूरबीनसे ।
फिर दीद उसका रातको यह भी अबस हुवा ।
जिस बन्दगान कुदरतसे है बन्दः बेखबर ।
क्या लिखना उह बरातका यह भी अवस हुवा ।।
वह खालिके जहाँ है जो चाहे करे सोई ।
फिर जिक्र वारदात का यह भी अवस हुवा ।।
नाम और निशाँ मकाँ है न जिसका कोई कहीं ।
बतलाना उस समातका यह भी अबस हुवा ।।
मौजिब कोई न जान कभी जिसका आजतक ।
जोयन्दः मोजिबातका यह भी अवस हुवा ।।
आजिज़ न पाया भेद है जो यारिफां ज़मां ।
फिर करना उसकी बातका यह भी अवस हुवा ।

कबीर साहबकी शिक्षा ।

तीन कालके जितने धर्मके अगुवा हैं, हुए तथा होंगे, उन सबसे कबीर साहबकी शिक्षा जुदी है । इस शिक्षाका मुख्य अभिप्राय यही है कि, गर्भका आवागमन बंद हो इसका बडा भारी दुःख है । जिस शिक्षा तथा धर्म्मसे बारम्बार जन्म और मृत्युका दुःख दूर हो उसीको ग्रहण करना वही मनुष्यका धर्म्म है । उसी गुरु तथा शास्त्रको धारण करना मानुषिक बुद्धिका कर्तव्य है । जो कोई मनुष्य देह पाकर मुक्तिमार्ग न ढूंढ़े वो बडा अभागा है । क्योंकि, वह फिर ऐसा समय न पावेगा । सदा ही भवसागरमें डुबकियाँ खावेगा । योगयुक्ति तथा सारे तंत्र मंत्र बंधनके प्रधान कारण हैं । यदि योग समाधिसे योगी अमर हो जाता तो फिर कदापि कोई योगी न मरता । इस समयभी सब नजर आते । असंन्यासी तो ब्रह्मके ध्यानमें रहते हैं उनका भ्रम ब्रह्म है । वे भ्रमरूप होकर आवागमनमें पडे रहते हैं उनका ब्रह्म भ्रम हो उसीमें फँसे रहते हैं ब्रह्मा यम शिव सनकादिक इत्यादि सभी भ्रमकी नदीमें पडे हुए डुबकियाँ खारहे हैं । इस भ्रमकी कोई सीमा नहीं है ।

सूक्ष्म वेदके बिना पढे किसीकी मुक्ति नहीं होती । जो कोई ध्यानपूर्वक पढ़े, एवं उसके सारे विषयोंपर विचार करे, उसकी आज्ञाओंपर भली-भाँति दृढ हो, समस्त मिथ्यओंसे पृथक् हो, वही मनुष्य है । वही कालपुरुषके पञ्जेसे छुटकारा पावेगा । कञ्जूस, कामी, व्यभिचारी पुरुषको सूक्ष्मवेदके पढनेसे किसी प्रकारका भी लाभ नहीं होता है ।

अपने गुरूको स्वयम् सत्यपुरुष करके जाने । गुरुके मुँहसे सत्यपुरुष स्वयम् खाता पीता है । गुरुके शरीरसे वस्त्रादि पहनता है जिसको गुरुकी बातपर विश्वास न होवे । जिसके मनमें घमंड हो, तथा जिसके मनमें नम्रता न हो वह नरकमें जावेगा । सेवा सब पुण्योंसे बढा चढा पुण्य है । गुरुकी सेवाका कर्तव्य सबके ऊपर है । जो गुरुकी पूरी सेवा करेगा, उसका हृदय प्रकाशित होगा । गुरूकीही मूर्तिसे पारख गुरू निकलकर उसकी सारी कामनाओंको पूरी करेगा । कोई अपने गुरुके कर्त्तव्य पालन न करे, उससे पालन करावे, गुरुकी दी हुई वस्तुओंको माँगे तो वह चोर और ठग है । एक अवस्थामें गुरुकी सेवा न माँगी जावेगी जबकि, मनुष्य भली-भाँति डूबा रहे, दिन-रात वंदनामें संलग्न हो जावे, किसी दूसरी ओर ध्यान न हो, अपने शरीरकी चिन्ता भी न हो उस समय गुरु सेवाकी क्षमा होगी । गुरु उसकी वंदनका भागी होगा । जबतक ऐसी अवस्था न हो तब तक गुरुसेवासे अपनेको वो बचायेगी तो उसके मनमें तेज न चमकेगा । इस कारण सारे जीवन गुरुकी सेवा एवं आज्ञामें रहना उचित है । क्योंकि, गुरुके प्रति अपना कर्तव्य

कभी किसीसे पूर्णरीतिसे निवह नहीं सकता है। केवल एक नामके बदले तीनों लोकमें कोई वस्तु नहीं है जो दी जावे. गुरुही धर्म्मकी जड़ है जड़के सींचनेसे डाल पात सब हरे होते हैं। निश्चयके वृक्षमें सब फल फूल लगते हैं।

कंजूसकी कभी मुक्ति नहीं होती। यह बहुत बडा शैतान है, जिसके मनमें घुसता है वह जीवित ही मरा जैसा है, यह एक घृणा उत्पादक लत है। इससे स्वयम् परमेश्वरको घृणा होती है, समस्त पीर पैगम्बर सिद्ध साधु इसको बुरा जानत हैं। किसी प्रकारकी वन्दना सेवा मनुष्य करे पर कृपणता एक ऐसी वस्तु है जिससे वह सब विनाश हो जाती हैं। कंजूस सिद्धकी समस्त सिद्धि धूलमें मिल जाती हैं।

साखी—कामी तो बहुतै तरे, क्रोधी तरे अनन्त।
लोभी जिवडा ना तरै, कहैं कबीर सिधन्त ।।

साधुओंकी सेवा बहुत बड़ी पूजा है, भक्ति मुक्तिकी देनेवाली है। जो कोई साधुओंको भोजन इत्यादि देता तथा आवश्यकताकी वस्तुओंको इकट्ठा कर देता है उसकी सारी कठिनाइयाँ और पाप दूर हो जाते हैं। साधुओंकी कृपासे सारे पदार्थ प्राप्त होते हैं, साधु सारी युक्तियां बतलाते तथा सभी शुभ कार्योंको सिखलाते हैं, नरकसे बचाते, खींचकर वैकुण्ठको ले जाते हैं। ज्ञान एवं मुक्तिकी सारी युक्तियां समझाते हैं, समस्त भ्रम और धोखेको दूर कर देते हैं, साधु सत्यपदमें लगाते हैं, साधु संसारके सारे पदार्थोंपर आज्ञा करते हैं, साधु समस्त दुःख संतापको हर लेते हैं। साधुके समस्त पातक पृथक् हो जाते हैं। साधु साहब जुदे नहीं। साधु तो अनेक हैं। परन्तु वह साधु, जो समस्त भ्रम तथा धोखेको दूर कर दे, सत्य पदमें लगावे उससे विशेष प्रेम करे। उसीकी वन्दना सेवासे हार्दिक कामना पूर्ण होगी। रोटी कपडा इत्यादि आवश्यकीय वस्तुओंको दे। मान संमान तो समस्त साधुओंका करना चाहिये। वह साधु जो अपने स्वरूपके मिलनेका मार्ग बतलावे, साधु शिरोमणि वही है। साधुओंकी सेवा तथा आज्ञाका पालन सौभाग्यके चिह्न हैं। बड़े बडभागी हैं जो साधुओंकी संगति करते हैं। साधुओंको भोजन देनेमें बड़ा पुण्य है। जगत्में उसके समान कोई नहीं है। साधुओंको वस्त्र देनेसे समस्त दुःख मिट जाते हैं। जबतक साधुके शरीरपर वस्त्र रहता है, तबतक देनेवालेकी सारी आपत्तियाँ दूर रहती हैं। साधुकी सेवासे समस्त बन्धनोंसे मुक्ति होती है। यदि साधुकी दया न हो तो कोई, मनुष्यताकी गतिको प्राप्त न हो। साधुओंकी दयासे मनुष्यधर्म तथा संसारकी सारी विद्याएं और बुद्धि प्राप्त करता है। बहुतेक साधु ऐसे भी हैं जो सत्यपुरुषकी भक्तिसे भटकाकर कालपुरुषकी भक्तिमें लगा

देते हैं। उनकी शिक्षा और बातोंसे उन्हें पहचान लेना चाहिये। ऐसा न हो कि, उनके धोखेमें आ जावें। ऐसे साधु कालपुरुषके दूत हैं उनसे सावधान रहे। जिस साधुमें अपने गुरुका ज्ञान हो, उस साधुकी शिक्षा मर्यादा तथा सेवा अपने गुरुके समान करे। धोखा धडी देनेवाले साधु, अपनी वार्तालापसे पहचाने जाते हैं।

सत्य पुरुषकी भक्तिके अतिरिक्त समस्त भक्तियाँ जाल तथा बन्धनमें डालनेवाली हैं। कालपुरुषका विष, ब्रह्मा विष्णु शिव सनकादिकसे लेकर सारे जीवोंमें समाया हुवा है। बिना सत्यगुरुकी दयासे कोई सत्यपदसे लग नहीं सकता, सारे शरीर और नक्षत्रोंमें कालपुरुषका जहर छिपा हुवा है। जिसको सत्यगुरु दया करके अपनी ओर खींचे वह आवे। दूसरेमें क्या सामर्थ्य, जो कि यमके नीचेसे निकल सके। धर्मरायके मन्त्रने समस्त मनुष्योंकी बुद्धिको अन्धी कर रक्खा है। किसीको इस विषयका सोच नहीं कि, मैं जानबूझकर क्यों कुएँमें पडता हूँ। मेरे पुरुषा तो सब इस धोखेमें पडकर मरे, मैं इस अंधकारमय पथपर क्यों चलूँ। इनकी बुद्धि डुबकियाँ खारही है। इसीसे सत्यको मिथ्या तथा मिथ्याको सत्य मान रही हैं। छुटकारेको बंधन तथा बंधनको छुटकारा समझ रही है, इनकी बुद्धि तथा चित्त ठिकाने नहीं है। इनकी पाशविक बुद्धिमें मनुष्यता लेश मात्रभी नहीं है।

काम शास्त्र और चार पुस्तकें ये सब कालपुरुषके जाल हैं, उसने इस जाल में फँसाकर सारे मनुष्योंको मार लिया है, उन्हें ऐसा धोखा दिया है कि, जितने नाम सत्य पुरुषके थे वे सब अपने नाम प्रगट किये। सत्यपुरुषके धोखेमें सब मनुष्य कालपुरुषकी वंदना करने लगे, कालपुरुषने सत्यपुरुषका नाम छिपाया, यहांतक कि, यह भेद ब्रह्मा विष्णु और शिवसे भी नहीं कहा, इस धोखेसे सारे मनुष्य इस शिकारीके शिकार हो गए। जो कोई काम शास्त्र तथा चार पुस्तकोंसे पृथक् होगा उसको सूक्ष्म वेदके ज्ञानकी प्राप्ति होगी। जिनका प्रेम पुरुष वेदसे है, वे सूक्ष्म वेदसे कैसे प्रेम कर सकते हैं?

विष्णुको तीनों लोकोंकी सरदारी तथा अधिकार मिला है। उसीके अधीन सब हैं, निर्गुण निरञ्जन और सगुण विष्णु येही समस्त लोकोंके रचयिता एवं कर्ता धर्ता हैं, विष्णु तीनों लोकोंमें सम्यक् रूपसे उपस्थित रहते हैं। दोनों रूपसे निरञ्जन तीनों लोककी ठकुराई करता है।

तीनों लोकों और भवसागरका ठेकादार निरञ्जन है। सहस्र असंख्य चौकड़ी युगका उसका ठेका है। इतने समयतक तो विना पारख गुरुके कोई मुक्ति नहीं पावेगा। जब ठीकाकी सीमा बीत जायगी तब अक्षर पुरुषके राज्यका समय आवेगा। इस राज्यमें समस्त जीवोंके छुटकारेकी आशा होगी।

प्रथम सूक्ष्मवेद ब्रह्मसृष्टिमें था । जब कालपुरुषने भरमाया, सृष्टिकी रचना की, तब उसमें की सामयिक बातोंको निकालकर पुरुष्मवेद बनाया । इस पुरुष्म वेद यथामति समस्त सृष्टिको उपदेश दिया । अज्ञानी लोग इस पुरुष्मयानी यानी पराकृत वेदको अपने धर्मका पथ और मोक्षकी सीढ़ी समझने लगे। निरञ्जनने अपनी सन्तानको पृथ्वीपर भेजना आरंभ किया । सहस्त्रों ऋषि मुनि पीर पैगम्बर पृथ्वी पर आए । कालपुरुष निर्गुण तथा सगुणकी भक्ति सिखलाते चले आए । इन ऋषीश्वरोंमें सहस्रोंने अपनी अपनी नई रीति निकाली । वेदकी शिक्षाको कठिन जान दूसरा पथ बताया । वहभी कालपुरुषके फंदेमें फँसकर मरे । किसीने बिना पारख गुरुके सत्यलोकके पथको नहीं पाया ।

जो कोई किसी जीवका रक्तपात करेगा, उसे उसका प्रतिशोध अवश्य देना पडेगा । जो कोई किसीको दुःख दे या मांसाहारी हो वह भी निश्चयही दुख पावेगा । अपना मांस उसको खिलावेगा । किसीका प्रतिशोध कोई कदापि नहीं छोडेगा ।

मांसाहारी और शराबीभी मुक्ति नहीं पासकेंगे । जो पुरुष मुक्तिके इच्छुक हैं, उन्हें अच्छी तरह स्वच्छ तथा पवित्र रहना चाहिए ।

गृहस्थके लिये अपनी स्त्रीके, छोड दूसरी स्त्रियोंके साथ संभोग करना महापाप है । साधुके निमित्त विवाहिता अथवा विन विवाही किसीसे भी संभोग न करना चाहिये ।

गुरुकी आज्ञाको न माननेके समान मनुष्यके दूसरा कोई महापाप नहीं है ।

सत्यगुरुकी शरण सब जीवोंके लिये सुखदायी है । उसीके शरणमें समस्त पातक क्षमा होंगे । इस कलियुगमें गुरुके प्रति पूरा कर्तव्य पालन कौन कर सकता है । परन्तु सत्यपुरुषको अपने शरणकी लज्जा है । उसकी शरण आकर धर्मपर स्थिर रहो । जो धर्म्मविमुख हुवा वह निर्दयी तथा घातक शैतानके जालमें फँस ही गया । सत्यगुरुके शरणपर पूरा निर्भर रहे और यह समझे कि, सत्यगुरु मेरे अपराधोंको क्षमा करेंगे। मेरी ओर नहीं बरन् अपनी दयाकी ओर दृष्टिपात करेंगे क्योंकि, उसका नाम पतितपावन है ।

घमंडी तथा द्वेषीको कदापि सत्यपुरुषकी भक्ति नहीं होती ।

जो मनुष्य बड़ाई और उच्चश्रेणी पाकर नम्र होगए, अपना शीश नवा दिया, धन पाकर दान तथा साधुसेवाको ग्रहण किया, उनके निमित्त भक्ति मुक्ति का द्वार खुला हुआ है ।

वह मनुष्य जिसने ऐसा ध्यान किया कि, तुच्छ तथा सेवक हूँ । जितनी

मूर्त्तियाँ हैं, सब मेरे सत्यगुरुकी हैं । सब जीवोंमें गुरुकी कान्ति जाने तो वो मुक्ति का अधिकारी है ।

मैं अपने कार्योंका अधिकारी नहीं यही नहीं किन्तु, सत्यगुरुसे सहायता माँगता रहे कि, वह मेरी मनकामना पूर्ण करें । भले कार्योंमें सदैव उद्योग करता रहे ।

मैं नहीं जानता कि, मैं क्या हूँ मेरा परमेश्वर क्या है । इस कारण सत्यगुरु पर पूर्णतया निर्भर रहे कि, वह जब मुझको दृष्टिप्रदान करेगा, तब मैं जानूँगा ।

कालपुरुषके जितने धर्म्म, पृथ्वीपर प्रचलित हैं, सबमें वैष्णव धर्म्म श्रेष्ठ एवं सबका सरदार है । यह सतोगुणी धर्म्म है । इस धर्म्मके नियम तथा आज्ञाएं सत्यपथकी सीढी है । सत्यपथ परम धामकी सोपान है ।

सत्यगुरु कबीरका नाम बंदीछोर है । वह सर्वाधिकारी है जिसको चाहे मुक्ति प्रदान करे । जिसको इस बातका पूर्णतया विश्वास होगया उसीका बेडा पार होगया समझो ।

सत्यपुरुष और कबीर साहबको जिसने एक जान लिया उसका बंधन टूट गया, वो कालके पञ्जेसे छूट गया । तन मन धन गुरुके अर्पण करना तो भलाईका सार है, परन्तु अपनी कमाईका दशवाँ भाग गुरुका हक है बुद्धिमान् पुरुष मुक्तिका भागी होता है ।

जो कोई मनुष्यताकी श्रेणी प्राप्त करने योग्य हो, उसीमें बुद्धि होती है । निर्बुद्धि सुन्दर मनुष्यभी पशु हैं । उनमें बुद्धि नहीं होती ।

पारख गुरु प्रत्येक स्थानपर उपस्थित है । परन्तु जबतक उसके पथमें अपने को मैं न्योछावर न करूँ तबतक उसका दर्शन न हो सकेगा ।

सब झूठे झूठोंके साथ मिलते हैं। जो कोई सत्य प्रेमी होगा वह झूठके साथ कभी योग नहीं देगा ।

ये तीनों लोक विषवृक्षके ही फल हैं । प्रत्येक वस्तु, प्रत्येक खान, तथा प्रत्येक मकानमें विष भरा हुवा है । विना सत्यगुरुकी भक्तिके वह नसोंसे बाहिर नहीं होता ! न किसी अन्य युक्तिसे वो पृथक् हो सकता है ।

जान बूझकर विष खाना मनुष्यता नहीं है । आप सत्य पुरुषकी भक्ति करे और दूसरोंसे करावे और करते हुओंको देखकर प्रसन्न हो यही वंदना है ।

प्रत्येक मनुष्य विना जाने बूझे अपने २ धर्म्मकी ओर खींचता हुआ द्वेष करता है । परन्तु मनुष्य वही है जो कि, द्वेष रहित होकर वह धर्म ढूँढे, जिससे कि, उसके आवागमनका मार्ग एक बारगीही बंद होजाय ।

मनुष्यके चार चक्षु हैं; परन्तु पशु चारों चक्षुओंसे अन्धे हैं । यद्यपि उनकी आँखे प्रत्यक्षमें खुली हुई हैं, तो भी वे अन्धे माने जाते हैं । इस कारण कि, वे देख कर भी घातक मार्गसे नहीं टलते । इस कारण वस्तुतः वे मनुष्यके स्वरूपमें पशु ही हैं ।

पशुओंको मानवी शिक्षा अच्छी नहीं लगती । जैसे कि, चोर, डाकू, व्यभि-चारी इत्यादि सत्संग तथा सत्यपथसे भागते हैं ।

सत्यपुरुषके जो अंकुरी जीव हैं वे सत्यगुरुकी शिक्षा सुनकर ऐसे दौडकर मिलते हैं, जैसे कि लोहेसे चुम्बक चिपट जाता है और जो काल पुरुषके जीव हैं उनपर सत्यपथ की शिक्षाका कुछ प्रभाव नहीं पडता हैं ।

दान, वीरता, न्याय और धर्म इन चारों गुणोंकी शिक्षा सब लोग करते हैं । परन्तु सत्यगुरुके साथ नहीं करते इस कारण उनकी कामना पूर्ण नहीं होती ।

यह कलियुग अत्यन्त कठिन समय है । इसमें मनुष्योंकी रुचि पापकी ओर तो तुरंत ही है । पुण्य से दूर भागती है ऐसी अवस्थामें सत्यगुरुके शरण बिना दूसरा कोई उपाय नहीं है ।

हलालके भोजनसे हृदयकी पवित्रता होती है ।

जो कोई न्यायी बादशाहके सामने पाप करेगा और अत्याचारपर कमर बाँधेगा तो उसका सत्यानाश अवश्य होगा । ऐसेही जो कोई कबीरपंथमें प्रविष्ट होकर पापकी ओर चित्त लगावेगा तो उसकी दशा बडी दीन होगी ।

जिसकी सच्ची श्रद्धा अपने गुरुपर है, उसकी बुद्धिपर पिशाचीबल काम नहीं करता, उसकी बुद्धि बदल नहीं सकती, न काल किसी प्रकारकी बाधा ही उपस्थित कर सकता है ।

जो कोई अपने गुरुसे सच्ची प्रीति करेगा, उसका विश्वास अचल रहेगा, उसकी बुद्धि स्वच्छ रहेगी। बिना गुरूके मनुष्यके हाथका जलपान तक करना उचित नहीं है ।

कबीरसाहबकी रेखता ।

खलक़ हैं रैनका सपना । समझ दिल कोई नहीं अपना ॥
कहीं है लोभकी धारा । बहा जग जात है सारा ॥
घड़ा ज्यों नीरका फूटा । पतर जैसे डारसे टूटा ॥
ऐसी निर्जान जिंदगानी । अजौं क्यों न चेत अभिमानी ॥
सजन परवारा सतदारा । सभी उस रोज हों न्यारा ॥
निकल जब प्राण जावेंगे । कोई नहि काम आवेंगे ॥

निरख मतभूल तन गोरा । जगतमें जीवना थोरा ॥
तजो पर लोभ चतुराइ । रहो निस्सँग जगमाहीं ॥
सदा जिन जान यह देही । लगाओ सत नामसे नेही ॥
कटे यम कालकी फाँसी । कहें कब्बीर अबिनासी ॥

यथा---साईंकी यादमें रहना, नहीं यह जिन्द जावेगा ॥
करो उस पीव की बंदगी, तुझे यारां लखाऊंगा ।
बना है खाकका खेला, इसीमें खोज पावेगा ।
मुझ मुरशिद महर मनशाल, गो दीदार पाया है ॥
मुझीको देखले परगट, किसीसे ना छिपाया है ।
कबीरा पीर है साचा, सकलमें आप छाया है ॥

यथा---समझ दिल सोच अबकीना । मुरशिदसे पूछ नालीना ॥
कहांसे रङ्ग ये आया । न काहूँ मोहि बतलाया ॥
सुरत वहि रङ्गकी प्यासी । पवरा भए हैं वनवासी ॥
न आवे हाथ वह करनी । सिधारो जाय गुरु शरनी ॥
मुझे मुरशिद मेहर करके । मुरीदी मन सिखाया है ॥
किताबें खोल दिल अन्दर । हकीकत निज बताया है ॥
कि है कोई गैबका वासी । दिखावे खेल परकासी ॥
बसावे गैबका खोरा । मिटावे भर्मका फेरा ॥
अचम्पौ देश है न्यारा । लखे कोई नामका प्यारा ॥
दिया जिन प्रेमका प्याला । सोई हैं सन्त मतवाला ॥
कि निशि दिन मोहना भूले । विरहकी झोंकमें झूले ॥
चरण कबीरको ध्यावे । इलाही ज्ञान भर पावे ॥

इतना तो मैंने सूक्ष्मवेदकी शिक्षाका निचोड लिख दिया है जिसमें कि, सांसारिक मनुष्योंको मालूम हो कि, सूक्ष्मवेद किसे कहते हैं ? उसमें किस प्रकार की बातें हैं ? पाठकगणोंको इस पाठसे भली भांति ज्ञान होजायगा कि, सूक्ष्म वेद किसे कहते हैं । उसमें किस प्रकारकी बातें हैं ? इस सूक्ष्म वेदकी प्रशंसा कबीर साहबने की है । सहस्त्रों स्थानोंपर बराबर कबीर साहब कहते जाते हैं कि, एक मनुष्य ! सूक्ष्मवेदके पाठ बिना किसीको भी अपने स्वरूपका ज्ञान न होगा । इस कारण काम शास्त्र तथा उसकी पुस्तकोंको छोडकर सूक्ष्मवेद पढो :-

सत्यकबीर वचन ।

हैली तीरथ जाय बुलाए रे हरदम परबे नहाए ।

तीरथ कोटि अनन्त है रे गङ्ग यमुन जहाँ दुई ॥
मध्य सरस्वती बहत है रे नहाय निर्मल होवे ।
ब्रह्म अगिनके घाटमें रे आगे शिवके लिङ्ग ॥
ताहूपे दछिना दीजिए रे बहुत सहसमुख गङ्ग ।
आगे कलालीकी हाट है रे चोखा फूल चुनन्त ॥
बिन सद्गुरु पावे नहीं रे कोई साधू जन पीवन्त ।
शीश उतार धरणी धरे रे ऊपर धरले पाए ॥
ब्रह्म अगिनके घाटपे रे इस विधिपर वेनहाए ।
ऋग् यजुर साम अर्थवनां रे चारों वेदका ज्ञान ॥
उनके वहाँ कहो कौन गति रे बाँधे गाँठ अचान ।
चारों वेदको पिता है रे सूक्ष्म वेद सङ्गीत ॥
साहब कबीर जूक मुकद्दम रे अविरत ब्रह्म अतीत ।

यथा——पण्डित सतपद भजो रे भाई जाते आवागमन नशाई ॥
ज्ञान न उपजा ब्रह्म नहिं चीना आप कहांते आए ॥
एक योनिसे चार वरन भए ब्रह्मदेव कहां पाए ॥
वारह वेदी ब्रह्म बखानू स्वर ओ शक्ति समानी ।
संध्या तर्पन तहाँ करलीना जहाँ कुशा नहिं पानी ॥
ऋग यजुरज्ञानको बुद्धी साम अथर्वन सोई ।
सूक्ष्म वेदको भेद न जाने क्योंकर ब्रह्मन् होई ॥
शूद्र शरीर ब्रह्म तेहि भीतर भिन्न भेद कछु नाहीं ।
लख चौरासी जिया जन्तुमें बरत रहो सब ठांई ॥
नौगुण सूत सँयोग बखानू निरगुण गाँठ दयानी ।
तासु जनेउ कबहुँ ना टूटे दिन दिन बारह बानी ॥
कहैं कबीर गुरुब्रह्म चीन्हले जगत् जनेऊ सोई ।
पाखँडकी गति सबहि मिटावे तब निज ब्राह्मण होई ॥

यथा——हिरवा गँवाए सास चलीं बारी धनियां ।
कौन सौतिन है कौन सुमन है कौन वेद तुम जानियाँ ॥
कौन पुरुषको ध्यान धरत हो कौन है नाम निशानियाँ ।
एही तनु ओंकार सुमन है सूक्ष्म वेद हम जानियाँ ॥
सत्य पुरुष तो ध्यान धरत हैं सत्य है नाम निशानियाँ ।

यह मत जानो हिरवा जरवा बनियाँ दूकान बिकानियाँ ॥
अलख मूलक हिरवा मोरा अगम देशते अनियाँ ।
एक है चोर सकल जगमोसे राजा रैयत रनियाँ ।
कहैं कबीर सुनो भाइ साधो अलख है नाम निशनियाँ ॥

ऋषीश्वरोंके वचन ।

रामचन्द्रका प्रश्न--ज्ञानीके सारे कार्य अज्ञानियोंके समान होते हैं । ज्ञानी किस प्रकार पहचाना जावे ? वसिष्ठ मुनिका उत्तर--हे रामचंद्र ! एक सूक्ष्मवेद है दूसरा एक पुरुष्मवेद है । सूक्ष्मके द्वारा आप अपने स्वरूपको जान सकता है । दूसरी युक्तिसे नहीं जान सकता । पुरुष्म वेदका चिह्न यह है कि, तप, यज्ञ, व्रत इत्यादि करे । ज्ञानीजीका चिह्न सूक्ष्म वेद है । यह वसिष्ठपुराण निर्वाण प्रकरण पूर्वाध भाग एक सौ दो सर्गमें लिखा है ।

फिर उसी ग्रंथके दो सौ उन्तीस सर्गमें लिखा है कि, हे रामचन्द्र ! जैसे सर्पके बिलको सर्पही जानता है ऐसेही ज्ञानीका चिह्न सूक्ष्म वेद है । उसी निर्वाण प्रकरणके एक सौ ग्यारहवें सर्गमें लिखा है कि, ज्ञानका लक्षण सूक्ष्म वेद है पुरुष्मवेद नहीं है ।

फिर इसी ग्रंथके मुमुक्षु प्रकरणके चौथे सर्गमें लिखा है कि, हे रामचन्द्र ! जीवन्मुक्तिसे विदेहमुक्तिका भेद प्रत्यक्ष है । परन्तु तुझको मालूम नहीं हो सकता । ज्ञानीको निमित्तता नहीं है । ज्ञानीका लक्षण सूक्ष्मवेद है । मुनिजीकी विचारमाला देखो । सन्तोंकी श्रेष्ठता सूक्ष्मवेदसे भी परे है ।

इस प्रकार समस्त ऋषि मुनि और सिद्ध साधु बराबर सूक्ष्मवेदकी ही प्रशंसा करते चले आते हैं । अब मैं इसी विषयपर शिवतन्त्रका प्रमाण देता हूं ।

शिवतंत्रका प्रमाण ।

मम पञ्चमुखेभ्यश्च पंचाम्नाया विनिर्गताः पूर्वश्व पश्चिमश्चैव दक्षिणश्चोत्तरस्तथा ॥ उर्द्धाम्नायाश्च पंचैते मोक्षमार्गाः प्रकीर्तिताः ॥
आम्नाया बहवः सन्ति ऊर्द्धाम्नायात्तु नोत्तमः ।

अनुवाद--ब्रह्मा कहता है कि, मेरे पाँच मुँहसे पाँच वेद निकले । पूर्व पश्चिम उत्तर दक्षिण और ऊपरके । उन पाँचोंने मुक्तिमार्ग दिखलाया । वेद तो अनेक हैं पर ऊपरके मुँहवाले वेदके समान और दूसरा कोई नहीं है ।

अब चारों वेदको तो अनेक मनुष्य पढते हैं परन्तु सूक्ष्म वेदका पढने वाला कोई विरलाही पुरुष होगा । क्योंकि, अन्य शास्त्रोंकी शिक्षासे मनुष्य काम क्रोधादि के प्रपञ्चोंसे निवृत्त हो नहीं सकता । परन्तु सूक्ष्मवेदका पाठ सब कामनाओं तथा

काम क्रोधादिके झगडोंसे पृथक् कर देता है। सत्यपुरुषके मिलनेका मार्ग बतलाकर अपने प्राकृतिकसे मिला देता है। चार वेद प्राकृतिक वेद कहलाते हैं। ये चारों विशेषता सांसारिक मनुष्योंके निमित्त ठहराए गए हैं। मुक्तिके अधिकारियोंके एतद्द्वारा सूक्ष्म वेदमात्र है। सूक्ष्म वेदकी शिक्षामें किसी प्रकारका अवगुण अथवा त्रुटि नहीं है वह निर्दोष तथा अवगुण रहित है दूसरेमें नहीं। यदि वेदों और पुस्तकों द्वारा किसीकी मुक्ति होजाती तो मुक्तिके अधिकारियोंके लिये सूक्ष्म वेद पृथक् न ठहराया जाता।

अध्याय ७.

विष्णु भगवान्।

कालपुरुष तीनों लोकोंरूपी भवसागरकी रचना किये; पीछे उसने अपनी स्त्री आद्या और अपने तीनों पुत्रोंको तीनों लोकोंके प्रबंधका अधिकार तथा दूसरे कार्योंके लिये नियुक्त कर दिया, इन तीनोंमें विष्णुको उच्चश्रेणीका अधिकारी नियत किया, सबसे श्रेष्ठता दी। माता-पिता दोनोंने विष्णुको आशीर्वाद दिया, श्रेष्ठता प्रदान का। विष्णुको अपने स्थानपर तीनों लोकोंका कर्ता-धर्ता नियत किया। निरञ्जन तथा आद्याने अपना प्रभाव तथा बल विष्णुमें भर दिया। जैसा कि, मैं प्रथम परिच्छेदमें लिख आया हूँ। विष्णुकी माता अपने पुत्रपर अत्यंत प्रसन्न हुई। इस कारण विष्णु इस भवसागरके कर्ता-धर्ता ठहरे। जैसे कि, चक्रवर्तीराजा समस्त देशोंके राजोंपर राज्य करता है, इसी प्रकार विष्णु तीनों लोकोंके चक्रवर्ती हुए। आपको सब स्थानोंकी उपस्थिति तथा प्रकट गुप्तका बल प्रदान किया गया। ये प्रत्येक हृदयका भेद जानने लगे। प्रगट मनुष्यके पाप पुण्यका प्रतिशोध करना यमके अधिकारमें हुवा। प्रत्येकका भाग्य नक्षत्र विष्णुके अधिकार में हुवा। नरक बैकुण्ठ तथा उसके चारों ओर विष्णुका अधिकार फैला। चार खान चौरासी लक्ष योनिके जीव विष्णुके अधिकारमें ठहरे। इन तीनों लोकका रचयिता और सम्राट है जब जैसा चाहता है वैसा करता है समस्त अधिकार इत्यादि उसको मिला है। तीनों लोकोंका रचयिता तथा परमेश्वर यह कहलाता है। इसी परमेश्वरका पूजन तीनों लोकोंमें हो रहा है। ब्रह्मा और शिव ये दोनों उसके मंत्री हैं। यह बादशाह है। यह स्वशरीर परमेश्वर है समस्त पृथ्वी तथा आकाशके मनुष्य उसकी पूजा करते हैं। इसी परमेश्वरकी आज्ञा सभी स्थानोंमें प्रचलित है। जहाँ मनुष्योंपर कठिनाई उपस्थित होती है तो उसके निवारणार्थ इस परमेश्वरका

पधारना हुवा करता है। अनेक बार तो वे स्वतः गरुड पर आरूढ होकर दौडते हैं, तुरंत उस स्थान पर पहुँच जाते हैं। सामर्थ्यभर उस विपत्तिको दूर करते हैं, कभी २ वह जन्म लेता है। जैसे राम कृष्णके अवतार धरकर दैत्योंको मारता है। जब दैत्य बलिष्ठ होते हैं तब विष्णु देवताओंकी सैन्य लेकर इनके साथ समर करता है। सामर्थ्यभर उनको मारकर भगा देता है। मर्यादा वश पराजित होता है तो स्वयम् भाग जाता है। यही विष्णु महाराज सारे संसारको आज्ञाएँ देते हैं। सांसारिक तथा धार्मिक ऋषीश्वरोंको समस्त मर्म सिखलाते हैं। ऋषीश्वर राजाओंको बतलाते हैं, राजालोग अपनी समस्त प्रजामें वही नियम प्रचलित करते हैं, वेद पुराण सभी इसी विष्णुको जगत्का कर्ता-धर्ता मानकर, परमेश्वर कहके प्रशंसा किया करते हैं। ब्रह्मा शिव इन्द्र इत्यादि देवता सब ऋषीश्वर इसी विष्णुके प्रभुत्वकी ओर समस्त भविष्यवक्तागण इत्यादि इसी परमेश्वरकी साक्षी देते हैं। आदम, नूर, इबराहीम, इसहाक, याकूब, मूसा, ईसा और मुम्मद इत्यादि इसी परमेश्वरकी प्रशंसा करते आए हैं। सबके पथ-प्रदर्शक येही विष्णु महाराज हैं। निर्गुण तथा सगुण दोनों रूप आपहीके हैं। सबके सब इसी दिब्यदेह ईश्वरकी वन्दना बराबर करते आते हैं। समस्त धर्मोंके रचयिता येही विष्णु महाराज हैं। शिवके धर्म पृथक् हैं। और वे भी विष्णुकी परामर्शक साथ हैं और कर्म्मकाण्ड तथा मीमांसा सब ब्रह्माकी ओरसे हैं। परन्तु वह सब विष्णुकी कामनाके साथ हैं। इस जगत्की समस्त कलें विष्णुके हाथमें हैं। विष्णुहीको अधिकार मिला है।

आद्या और निञ्जनके पुत्र विष्णुमहाराज तीनों लोकोंके ठाकुर एवम् अपने माता पिताकी प्रतिमूर्ति हैं। येही चक्रवर्ती महाराज एवं भवसागरके प्रबन्धक हैं, अत्यन्त बलिष्ठ तथा प्रभावशाली हैं, वैरियोंके दमन करनेके निमित्त सदैव अस्त्र शस्त्रसे सुसज्जित रहते हैं, आपका शार्ङ्गधनुष और खड्ग नन्दक है, गदा कौमोदकी तथा चक्र सुदर्शन हाथमें है। ये शस्त्र ऐसे भयानक हैं कि इनके अवलोकनसे ही भयके मारे दुष्टोंका प्राणान्त हो जाता है। ऐसाही चक्र सुदर्शन है कि, जिधरको छूटे उधर भस्म करदे। ऐसाही गदा कौमोदकी और नन्दक असि है कि, जिसको देखतेही वैरीके प्राण निकल जाएँ। यह नीलवर्ण घनश्याम (मूसाका आसमानी रङ्गका खुदा) समस्त मनुष्योंपर कृपादृष्टि रखता है, अत्याचारियोंको धूलमें मिला देता है, जिनपर अत्याचार किया गया है उनको सत्व देता है। जब कभी दैत्यों और राक्षसोंकी लडाईमें वरदान आदिके कारण कठिनता पडती है तब आपकी माता आदिभवानी सहायता

करती है, जो कठिनाई आद्यासेभी न टले उसके निमित्त निरञ्जनकी ओरसे आज्ञा होती है। जो निरञ्जनके भी बशसे परे हैं वह सत्यपुरुषके कृपाकटाक्षसे ठीक हो जाती है। जब सत्यपुरुषकी दया होती है तब समस्त कठिनाइयाँ निवृत्त हो जाती हैं, जैसे जगन्नाथके मन्दिर स्थिर रखनेमें इस कठिनाईको निवृत्त करना निरञ्जनके बशकी बात नहीं थी। तथा स्वयम् सत्य पुरुषने मन्दिर खड़ा किया। समुद्रको हटा दिया जब समस्त देवता तथा ऋषि मुनि इत्यादि दैत्यों और राक्षसोंसे सताये जाते हैं और दुःख पाते हैं तब समस्त देवता मिलकर ब्रह्माके पास जाते उस समय विष्णु, ब्रह्मा, शिव इन्द्रादिक देवताओंको अपने साथ लेकर दैत्योंके साथ युद्ध करके उनका बिनाश करते हैं, देवताओंको सुख देते हैं। सुतरां यही परमेश्वर सबका प्रतिपालक और तीनों लोकोंका प्रबन्धकर्ता है। संसारकी रक्षा करनेमें यह अपनी सारी शक्तियोंका उपयोग करता है।

शेर—यह नीर वरन घन यही बनाजो अदा।
यह ख़ुदा है यह ख़ुदा है यह ख़ुदा है ख़ुदा॥
सुर मुनि जिसे गाते हैं कहे वेद बदीय।
यह सदा है यह सदा है यह सदा है पर सदा॥
यही सगुण यही निर्गुण यही बेचूं वचरा।
यह नदा है यह नदा है यह नदा है यह नदा॥
है यह हमः मौजूद व हाज़िर नाज़िर।
न जुदा है न जुदा है न जुदा है न जुदा॥
यही रज़्ज़ाक़ व कज़्ज़ाक है आयन्दः व हाल।
यह बदा है यह बदा है यह बदा है यह बदा॥
पहचान अलग उससे हो उसपर आजिज़।
यह फ़िदा है यह फ़िदा है यह फ़िदा है यह फ़िदा॥

यह विष्णु अपने सूक्ष्म शरीरसे तो प्रत्येक वस्तुमें उपस्थित है और चारों खानके जीवोंमें घुस रहा है। ऐसेही ब्रह्मा शिव शक्ति तथा निरञ्जनको भी मानना चाहिए। जो कुछ समस्त ब्रह्माण्डमें दिखाई देता है, वह कुछ अपने शरीरमें जानना चाहिए। यह कबीर साहबका वचन है कि, विष्णु चारों खानके जीवोंमें पूर्ण हो रहा है। विष्णुविहीन कोई स्थान नहीं है। इसीके अनुसार वह श्लोक पढ़ो कि—

जले विष्णुः स्थले विष्णुर्विष्णुः पर्वतमस्तके।
ज्वालामालाकुले विष्णुः सर्वं विष्णुमयं जगत्।

अनुवाद—जलमें विष्णु, स्थलमें विष्णु, पर्वतकी चोटीपर विष्णु, अग्नि इत्यादिमें विष्णु है। इस तरह समस्त जगत् विष्णुसे पूर्ण हो रहा है।

धर्मशास्त्रसे प्रगट है। यद्यपि ऋषीश्वरोंने देवताओंको शाप देकर दुःखी किया, तो भी वेदोंका वचन है कि, विष्णुकी दयाके बिना किसीकी मुक्ति नहीं होती जैसा कि, यह श्लोक है—

मोक्षस्तु विष्णुप्रसादमन्तरा न लभ्यते ।

विष्णुकी दया बिना किसीकी मुक्ति नहीं होता।

इस श्लोकसे यह तात्पर्य निकलना चाहिए कि, विष्णु सतोगुणरूप है। बिना सतोगुणी युक्ति ग्रहण किए किसीको मुक्ति नहीं होती।

चारों वेद इस विष्णुकी प्रशंसा किया करते हैं। चारों प्रकारकी भक्ति इसी विष्णुकी कृपा तथा अनुग्रहसे प्राप्त होती हैं। जैसा कि, ऋग्वेदका ये मंत्र हैं—

अतो देवा अवन्तु नों यतो विष्णुर्विचक्रमे ।।

पृथिव्याः सप्तधामभिः ।। ऋग्वेद १—२—७—१ ।

अनुवाद— हे देवो। विष्णु सब स्थानोंपर उपस्थित है, उस परमश्वरने समस्त जीवोंको पाप पुण्य भोगने एवं समस्त पदार्थोंके ठहरनेके लिए पृथ्वीसे लेकर नीचेके सात प्रकारके धाम यानी भुवन बनाये एवं ऊपरके भी सात भुवन बनाए इसी तरह गायत्री, आदि सात छंदोंको विद्या सहित बनाया। उन लोगोंके स्थान ईश्वर वर्तमान था। जिस बलसे समस्त लोकोंको रचा है, इसी बलसे हम लोगोंकी रक्षा करता है। इसी कारण ऐ बुद्धिमानो! तुम लोग हमारी रक्षा करते हुए इस विष्णुकी उपासना करो। वह विष्णु कैसा है? जिसने बड़े भारी मेदिनीमण्डलको रचा है। उसको सदैव वंदना करो। १—२—७—१ ।

विष्णोः कर्माणि पश्यत यतो व्रतानि पस्यशे ।

इन्द्रस्य युज्यः सखा ।। ऋग्वेद—१—२—७—४ ।

अनुवाद—ऐ मनुष्यो! विष्णु व्यापक ईश्वरके कई सुंदर संसारोंकी उत्पत्ति स्थिति और विनाश कर्मोंको तुम देखो। १—२—७—४

प्रश्न—हम यह किस प्रकार जानें व्यापक विष्णुके कर्म हैं?

उत्तर—जिससे ब्रह्मचर्य सत्यभाषण इत्यादि व्रत बनाये गये हैं ईश्वरके जिन नियमोंके अनुष्ठान करनेसे हमलोग मनुष्यके शरीरको पानेके लिये समर्थ हुए हैं ये कार्य इसीके बलसे हैं। क्योंकि, इन्द्रियोंके साथ कर्ता भोक्ता जो जीव है उसका वही एक योगमंत्र है दूसरा कोई नहीं है कारण कि, ईश्वर जीवका अन्तर्यामी है, सिवा उसके और कोई जीवका हितकारी नहीं हो सकता, इस

कारण परमेश्वर विष्णुसे सदैव प्रेम रखना चाहिए। ऋग्वेद १–२–७–४

तद्विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः।
दिवीव चक्षुराततम्। । ऋग्वेद १– २–७–५।

अनुवाद–ऐ ज्ञाताओ और मुक्ति योग्य मनुष्यो ! विष्णुका जो श्रेष्ठ और ऊँची श्रेणीवाला सत्यलोक हैं जो सबके जानने योग्य है, जिसको पाकर परमानन्दको प्राप्त हो जाता है फिर वहाँसे कभी दुःखमें नहीं पड़ता। इस श्रेणीको बहादुर और धर्मात्मा और वासनाओंको दमन करनेवाले सबके भिन्न बुद्धिमान पुरुष बड़े सोचसे देखते हैं। जैसे सूर्यका प्रकाश समस्त स्थानोंमें हैं। ऐसेही परब्रह्म विष्णु समस्त स्थानोंपर उपस्थित है। परम स्वरूप परमात्मा है। उसीके संयोगसे जीव समस्त दुःखोंसे छूटता है। विना उसके जीवको कभी सुख नहीं मिलता, इस कारण प्रत्येक रूपसे परमेश्वरसे मिलनेका उद्योग करना चाहिए। १–२–७–५।

त्वं हि विश्वतोमुखो विश्वतः परिभूरसि ।।
अप नः शोशुचदघम् ।। ऋग्वेद १–७–५–६ ।।

अनुवाद–हे अग्नि परमात्मा ! आप समस्त विद्याओंमें एवं समस्त स्थानों पर उपस्थित हो। आपके अनन्त मुंह हैं। वही शक्ति जिसके बलसे समस्त जीवोंके सदुपदेश सदैव हो रहा हो वही आपका मुख है। ए दयालु ! आपकी दयासे हमारे समस्त पातक पृथक् हो जायँ जिसमें हमलोग निष्पाप होकर सदैव आपकी, भक्तिप्रार्थनामें संलग्न रहें। ऋग्वेद् –१–७–५–६। ऋग्वेद् ऋग्वेद्–

इसी विष्णुकी प्रशंसा चारों वेद करते है। इसी विष्णुको चारों वेद छ शास्त्र और अठारह पुराणोंने परमेश्वर कहा है। समस्त श्रुति स्मृति इसीसे अपनी मुक्तिकी आशा रखते हैं। समस्त ऋषि मुनि औलिया अम्बिया इसी विष्णुकी बड़ाई तथा प्रभुता प्रगट किया करते हैं। समस्त वेद तथा पुस्तकोंमें इसी विष्णुकी पूजा कही है। इस परमेश्वरके अतिरिक्त और कोई दूसरा परमेश्वर इस लोकमें नहीं है।

देवीभागवतके नवम स्कन्धके पन्द्रहवें अध्यायमें लिखा है कि, विष्णुने कपट से वृन्दाके आसुरीत्वका अपहरण किया। तब उसने शाप दिया कि, तू पाषाण हो जा। देखो नवम स्कंधके चौबीसवें अध्यायमें विष्णु शालिग्राम पाषाण हो गये। और वृन्दा (तुलसी) गण्डकी नदी हुई और इस गण्डकीमें शालिग्राम रहने लगे और तुलसी उनके शीशपर चढ़ती है यही कबीर साहिबने कहा है कि–

साखी—वृन्दाकेरे शापसे, शालिग्राम औतार।
कहे कबीर सुन पण्डिता, कहु पूज होवे उधार॥

जो वृन्दाके शापसे शालिग्रामके रूपमें अवतृत हुआ, कबीर साहिब कहते हैं कि पंडितों! उसके पूजन से उद्धार हो जायगा।

इस्लाममें विष्णुकी प्रधानता।

मूसाकी प्रथम पुस्तक पैदायशका तीसरा बाब २२ आयत देखो जब आदम उत्पन्न हुआ उसने आज्ञा नहीं मानी तब आदमको वैकुण्ठसे बाहर निकाल दिया। वैकुण्ठकी वाटिकामें चमचमाती हुई आखोंवाले दूतोंका पहरा बैठा दिया कि आदम आयुबा फल खाने न पावे। खुदावन्दने कहा कि, मनुष्य भलाई बुराइकी पहचानमें हममेंसे एकके सदृश हो गया। अब ऐसा न हो कि, हाथ बढ़ावे अमर फलमेंसे कुछ खावे, सदैव जीवित रहे।

इस परमेश्वरके सदृश अनेक परमेश्वर हैं क्योंकि, यहाँ बहुवचन शब्द रक्खा गया है। जैसा कि पूर्वमें लिख आया हूँ कि महा मायाके बलसे करोडों और अनगिनती ब्रह्मा रुद्र इन्द्र इत्यादि बुलबुलेके समान उत्पन्न होते और फिर उसीमें समाजाते हैं। सो उसकी लीला एक अगाधसागर है। ये सभी मायासे उत्पन्न हुए स्वयम् माया हैं। यह खुदाको दर्शन देता था और समस्त कार्योंसे उसको विघ्न किया करता था।

जैसे आदमके साथ उसी प्रकार नूहके साथ भी यह खुदा रहता था। जब बाढ समाप्त हो चुकी नूह अपनी नासे बाहरआया। एवम् समस्त जीवों सहित पृथ्वीपर चरण धरा (देखो मूसाकी पहली पुस्तक) उत्पत्ति का ८ वाँ बाब २० आयत) तब नूहने खुदाबन्दके निमित्त बलिप्रदानस्थल बना समस्त पाक पक्षियों तथा समस्त पाक पशुओंमेंसे लेकर उस बलिप्रदानस्थलीपर जलाकर बलिप्रदान किया। उस समय खुदावन्त उस सुगंधिके सूंघनेके निमित्त आकाशसे उतरा। खुदावन्दने अपने मनमें कहा कि, मनुष्यके निमित्त मैं अब पृथ्वीको कदापि लानत नहीं करूँगा। इस कारण कि, मनुष्यके चितकी वृत्ति बचपनसेही बुरी है जैसा कि, मैंने किया है, फिर कभी समस्त जीवोंको नहीं मारूँगा। बरन् जबलों पृथ्वी है तबलों बोना और लोना, शरदी गर्मी अगहनी और वैशाखी, दिन और रात बंद न होंगे।

नवाँ बाब पहली आयत। खुदावन्त ने नूह और उसके पुत्रोंको बर्कतदी और उन्हें कहा कि, फलो बढ़ो, पृथ्वीको भरपूर करो। खुदावन्दने प्रण किया कि, मैं भविष्यत्में किसी जीवको बाढ़से कभी न मारूँगा, मनुष्यके अतिरिक्त समस्त

जीवोंको नूहके भोजनको दिया और कहा कि, मनुष्यके रक्तका बदला लिया जावेगा, दूसरे जीवका नहीं। अपने समयका यह चिह्न दिया और नूहसे कहा। (३) आयत, मैं अपने धनुषको बदलीमें रखा है। वह मेरे तथा पृथ्वीके मध्य, प्रणका चिह्न होगा और ऐसा होगा कि, जब मैं पृथ्वीपर बादल लाऊँ तो मेरा धनुष बादलमें दिखाई देगा। (१५) मैं अपने प्रणको जो मेरे और तुम्हारे और प्रत्येक प्रकारके जीवोंमें है स्मरण करूँगा तूफानका जल फिर ऐसा न होगा कि सत्यानाश करे। (१६) कमान बादलमें होगी। मैं उपर दृष्टिपात करूँगा। जिसमें उस सदैवके प्रणको जो मेरे और पृथ्वीके समस्त जीवोंमें है स्मरण करूँ। (१७) निदान परमेश्वरने नूहसे कहा कि, यह उस प्रणका चिह्न है जिसको मैं अपने और पृथ्वीके समस्त जीवोंके मध्य स्थिर करता हूँ।

इसी प्रकार खुदावन्द आदमके समान ही नूहको भी सब बतलाता रहा।

फिर देखो इसी किताबका (१८) बाब इबराहीमके साथ इसी प्रकार खुदावन्द रहा। (१) फिर खुदान्वद ममरीके बलूतोंमें उसे दिखलाई दिया। वह दिनके समय गरमीके दिनोंमें अपने खेमेके द्वारपर बैठा था। (२) उसने अपनी दृष्ठि उठाकर देखा। क्या देखता है कि, तीन आदमी उसके पास खडे हैं। वह उन्हें देखकर खेमेके द्वारसे उनसे मिलनेको भगा पृथ्वीपर्यंत उनके आगे झुको। (३) वो बोला कि, ए खुदावन्द! यदि मुझपर दया है तो अपने सेवकके समीपसे न चले जाईये। (४) थोडासा पानी लाया जावे आप अपने पैर धोकर उस वृक्षके नीचे आर।म कीजिये। (५) मैं थोडीसी रोटी लाता हूँ ताजा दम हो जाइये, इसके उपरान्त आगे जाइएगा। क्योंकि, आप इसीके निमित्त अपने सेवकके यहाँ आये हैं तब उन्होंने कहा कि, वैसाही कर जैसा तूने कहा। (६) इबराहीम खेमेमें सरःके पास दौडा गया और कहा कि, आटा लाकर शीघ्र गूंध, फुलके बना। (७) इब्राहीम पशुओंकी झुण्डकी ओर दौडा एक मोटा ताजा बकरा लाकर एक युवकको दिया, उसने उसको तैयार किया। फिर उसने घी दूध और उस बकरेको जो उसने पकवाया था लेकर उनके सामने रक्खा, आप उनके समीप वृक्षके नीचे खडा रहा और उन्होंने खाया।

ईसाई लोग अनुमान करते हैं कि, उन तीनों मनुष्योंमें दो फ़रिस्ते थे एक खुदावन्द यहवाह जुलजलाल था।

जैसे खुदावन्द इन साहबोंके साथ था उसी प्रकार मूसाके साथ रहा और मूसाको समस्त धर्म कर्म बतलाया। मूसाने बनी इसराईलको सब नियम सिखलाया। जिसमें बनीइसराईल इस नियम पर चलें। इस नियमावालीका

नाम तौरेत पुस्तक ठहरा । वह तौरेत पहली पुस्तक है जो पश्चिमी पैग़म्बरों (अनागत वक्ताओं) को मिली अनेक बेर खुदावन्द ने मूसा से बातें की और मित्र की भाँति सब कुछ सिखलाया मूसाने खुदावन्दको स्वचक्षुसे देखा, देखो मूसाकी दूसरी पुस्तक खिरोज चौबीस बाब ९ आयत।

तब मूसा, हारूँ, नहब अबीद् तथा सत्तर इसराईली श्रेष्ठ पुरुष ऊपर गये (१०) और उन्होंने इसराईलके परमेश्वरको देखा । उसके पैरोंके नीचे नीलमके पत्थरकी गचकारी थी, उसका स्वेच्छ शरीर आकाशके सदृश था। (१०) बनी इसराईलके अमीरोंपर उसने अपना हाथ न रक्खा उन्होंने खुदाको देखा और खाया पीया।

यह आसमानी रङ्गका परमेश्वर समस्त संसारपर शासन करता है। उसका भेद कोई नहीं जानता । हाँ कोई कोई संत उस खुदाके भेदको जानते हैं वे मायाके दगासे बच जाते हैं । नहीं तो सांसारिक मनुष्योंकी क्या सामर्थ्य है जो कि, बच सकें । केवल सत्यगुरुकी दया जिसपर हो वह बच सके एवं वही पहचान सकता है।

इस खुदाकी ठीक तसबीर सूरत शकल सवारी इत्यादी खरकैल नबीकी पुस्तकमें देखो।

प्राचीन नियमपत्र बखरकैल नबीकी पुस्तकका सार ।

तीसवें वर्षके चौथे महीनेकी पाँचवी तारीख को ऐसा हुआ कि, जब मैं नहर कबीरके किनारे आस्तीरोंके बीचमें था तो आकाश खुल गया मैंने खुदावन्दका तेज देखा (२) उस महीनेके पाँचवे दिवस यानी यहुपकीन बादशाहके बंदी होनेके पाँचवें वर्षमें (३) ऐसा हुआ कि, खुदावन्दका वचन बोजीकाहनके पुत्र खरकैलको, कसदियों के देश में नहर कबीरा के किनारे पर था पहुँचा। वहाँ खुदावन्दका हाथ उसपर था (४) मैंने दृष्टिपात किया तो क्या देखता हूँ कि, उत्तरसे एक बगूला उठा एक बडी घटा एक आग जिसकी लवें आपसमें लपटी जाती थीं, जिसके गिर्द प्रकाश चमकता था और उसके मध्यमें यानी उस आगमेंसे पालिश की हुई पीतलकीसी मूर्ति दिखलाई दी । (५) उसके मध्य चार जीवोंकी एक प्रतिमा दिखलाई दी । उनकी सूरत यह थी कि, वो मनुष्यसे मिलती जुलती थीं । (६) प्रत्येकके चार २ पंख थे । उनके पैर जो थे वो सीधे थे । उनके पावँके तलुवे बछरूके पावँके तलवेसे थे । मंजे हुए पीतलके सदृश झलकते थे । (८) उनके चारों ओर पंखोंके नीचे मनुष्यके हाथ थे। मुंह तथा पंखभी इन चारोंके थे । (९) उनके पंख आपसमें एक दूसरेसे मिले

थे, और वे चलते हुए मुडते नहीं थे, वरन् वे सब बराबर सीधे आगेको चले जाते जाते थे। (१०) यहीं उनके चेहरेकी मिलान तथा समानता, सो उन चारोंमें एक का चेहरा मनुष्यका, एकका चेहरा शेरका उनकी दाहिनी ओर एकका चेहरा बैल तथा एकका चेहरा उकाबका था। (११) उनके चेहरे यों हैं। उनके पंख ऊपरसे फैलाये हुये थे। प्रत्येकके दो पंख दूसरेके दो पंखोंसे जूटे हुए थे। दोनोंसे उनका शरीर ढका हुआ था (१२) उनमें से प्रत्येक आगेको सीधा चला जाता था। जिधर आत्मा जाती थी वे जाते थे। वे चलते हुये फिरते न थे। (१३) रही उन जीवोंकी सूरत, सो उनकी सूरत आगके सुलगे हुये कोयलों और जलते हुये प्रदीपके सदृश थी। वह उन जीवोंके बीच इधर उधर आती जाती थी। वह अग्नि तेजमय थी। तथा उस अग्निमें से बिजली बहिर्गत होती थी। (१४) वे जीव दौड जाते थे और पलट आते थे। जैसे बिजली चमक जाती है।

(१५) सो जब मैं उन जीवोंको देख रहा तो क्या देखता हूँ कि, उन जीवोंके पास एक पहिया चार मुंह वाला पृथ्वीपर है। (१६) रही इन पहियोंकी सूरत और उनकी बनावट, जो वह पन्नेकीसी दिखाई देती थी, उन चारोंका डौल एकही था। उनकी सूरत तथा बनावट ऐसी थी मानों पहिया पहिएके बीचमें था। (१७) जब वे चलते थे तो वे चारों ओर ढलते थे ढलते हुए पीछे न फिरते थे। (१८) उनका घेरा जो था सो ऐसा ऊँचा था कि, भय जान पडता था। इन चारोंके घेरेमें चारों ओर आँखें फिरी हुई थीं। (१९) जब वे जीव चलते थे तो पहिये उनके साथ चलते थे। जब वे जीव पृथ्वीसे उठाए जाते थे तो पहिए भी उन्हीके साथ उठाए जाते थे क्योंकि, पहिएमें जीवोंकी आत्माएँ थीं। (२२) उस प्रकाशकी सूरत जो उन जीवोंके मस्तकोंपर थी ऐसी थी जैसे डरावने बिलौर का प्रकाश होता है। वह उनके मस्तकों पर फैला हुआ था। (२३) उससे नीचे उनके समपर थे। एक दूसरेकी ओर था। प्रत्येकके दो दो थे। जिनसे उनके शरीरोंका एक रुख और दू दू पहने उनसे दूसरा रुख ढका रहता था। (२४) मैंने उनके परोंका शब्द सुना मानों बहुत पानियोंका शब्द आवजद क़ादिर मुतलक़ा शब्द है। जब वे चलते थे, ऐसे शोरकी आवाज हुई जैसे लश्करकी आवाज है। जब ठहरते थे अपने परोंको लटका देते थे। इस फ़िजामेंसे जो उनके मस्तकों के ऊपर थी एक प्रकारका शब्द होता था। (२५) उस फ़िजासे ऊँचे पर जो उनके शिरोंके ऊपर था सिंहासनकी सूरत सूरत थी, उसका दिखावा नीलमके पत्थरकासा था, उस सिंहासनके समान

वस्तुपर किसी मनुष्यकीसी मूर्ति उसके ऊपर दिखलाई दी। (२६) मैंने उसकी कमरसे लेकर ऊपरकी ऊँचाई पर्यन्त पालिश किए हुए पीतलका शार्ङ्ग और अग्निस्फुलिङ्गकासा तेज उसके मध्य तथा चारों ओर देखा। उसकी कमरसे लेकर नीचेपर्यन्त मैंने अग्निकी लपटकासा तेज देखा। चारों ओर एक-प्रकारकी जगमगाहट देखी। (२७) जैसे उस कमानका स्वरूप है जो वर्षाके दिवसों में बादलमें दिखाई देता है। वैसे ही आपसे उस जगमगाहट का दिखावा था। परमेश्वरके तेजस्वरूपका यही दिखावा था। देखतेही मैं औंधे मुंह गिरा और मैंने एक ऐसा शब्द सुना जैसे कि, किसीने कहा २–बाब (१) और उसने मुझसे कहा कि, ए मनुष्य! अपने पैरोंपर खडा हो कि, मैं तुझसे कुछ कहा चाहता हूँ। (२) जब उसने इस प्रकार कहा तब आत्माने मुझमें प्रवेश किया और मुझको पैरोंपर खडा किया। तब मैंने उसकी सुनी कि, मुझसे बातें करता था। (३) उसने मुझसे कहा कि, ए मनुष्य! मैं तुझे बनी, ईसराईल उन बागी झुंडोंके पास जो मुझसे फिरगए हैं भेजता हूँ, वे और उनके बाप दादे आजके दिवस पर्यन्त मुझसे विरुद्धता करते हैं। (४) कारण यह कि, वे निर्लज्ज और कठोर हृदय बालक हैं जिनके पास मैं तुमको भेजता हूँ तू उनसे कह कि, खुदावन्द यह बाद यों आज्ञा देता है।

जब मैंने दृष्टिपात किया तो क्या देखता हूँ कि, उसका एक हाथ मेरी ओर उठा है और उसके हाथमें अनेक पुस्तकें हैं और उन पुस्तकोंमें शोककाव्य लिखा है। तब मैंने मुंह खोला और उन समस्त पुस्तकोंको खालिया। उस समय वह मुझको मधुके सदृश मीठी जान पड़ीं और मैंने समस्त पुस्तकोंसे अपनी आँतडियाँ भरलीं। तब खुदावन्दने मुझको आज्ञा दी कि, तू मेरी आज्ञा लेकर बनी इसराईलके पास जाकर कह दे कि, विरुद्धता छोडकर मेरी सेवा स्वीकार करो।

यहाँपर मेरा अभिप्राय केवल इतना था कि, मूसाके खुदाका स्वरूप लोगोंपर प्रगट होवे मालूम करें कि, जो कुछ वेदमें है वही बात तौरीत तथा दूसरे नबियोंकी पुस्तकमें है इस विषयमें तनिकभी विभिन्नता नहीं।

अग्निको विष्णुस्वरूप कहना।

"वेदके अनुसार परमेश्वर अग्निभी है और वह अग्नि विष्णु है।"

मैं पहले लिख आया हूं कि, सूक्ष्म वेदका कथन है कि, सत्य पुरुषने काल-पुरुषको अपने क्रोध और प्रकोपके अंशसे बनाया था। वह कालपुरुष जब सत्य-पुरुषकी अग्निके भागसे बना प्रबल हुआ है। फिर उसने अपना समस्त तेज

विष्णुमें भरकर विष्णुको अपना उत्तराधिकारी एवं समस्त संसारका रचयिता ठहराया है। इस कारण यह विष्णु अग्निकी प्रतिमूर्ति है। इसीका पूजन समस्त संसारमें, हो रहा है। वही आग खुदा है, इसी आगको हिन्दू मुसलमान ईसाई यहूदी इत्यादि षट्दर्शनके लोग पूज रहे हैं। किसी प्रकार पूजें, समस्त पृथ्वी पर इसीकी पूजा है। यज्ञ हवन इत्यादि इसीके निमित्त होता है। जो कुछ बलिप्रदान अथवा महाबलिप्रदान आदि हैं हवन इत्यादि सब उसीके निमित्त होता है। वह परमेश्वर अग्नि है और अग्नि उनका मुंह है, जो कुछ उसके नामसे आगमें पड़ता है सो सब उसका भोजन है। अन्न, फल, घी, गुड़, मनुष्य और पशु सब उसके भोजन हैं। वह सबको खाता है, समस्त मनुष्य इसी आगकी पूजा करते है। इसका भेद बिलकुल नहीं जानते। समस्त पवित्र पुस्तकें इसी अग्निकी प्रशंसा तथा बड़ाई प्रगट करते हैं। इस अग्निकी पहचान बिना सद्-गुरुकी आज्ञाके नहीं हो सकती। जो कुछ वेद बतलाता है और ऋषीश्वर कहते हैं, वही कथन अंबियाका देखो।

खिरोजका (३) बाब (२) डूरेबके पर्वतपर मूसापर खुदावन्द अग्निकी लपटोंमें प्रगट हुआ। देखो तौरीतमें।

खिरोज	२४–१७–खुदावन्दका जलाल दहकती आगके सदृश दिखलाई देता था।
इसनसना	४–२४–तेरा परमेश्वर एक भस्म करनेवाली आग है।
तथा	४–३३–परमेश्वरकी आवाज आगमेंसे बोलते सुनी
तथा	५–४–परमेश्वरने अग्निमेंसे बातें कीं।
तथा	९–१५–समस्त पर्वत अग्निसे जल रहा था मूसा पर्वतसे उतरा।
२ समोइल	२२–९–खुदाके मुहँसे आग निकलकर खागई।
मकाशिफ़ात	२०–९–खुदाके पाससे आग उतरी और उनको खागई।

विराट् पुरुष जिसकी प्रशंसा वेद करता है वही विराट् पुरुष विष्णुका अवतार है। जब अर्जुनको दिखलाया तो वह डर गया था जब मूसाको दिखलाया तो मूसा अचेत हो गया, न देख सका। वही विराट् पुरुष ईसा है। देखो मतीकी इञ्जील (१७) बाब (१) से (९) आयत पर्यन्त पढ़े।

और छः दिवसोंके उपरान्त मसीह, पिटर्स याकूब और भाई योहन्नाको पृथक् एक ऊँचे पर्वतपर लेगया। (२) उनके सामने उसकी सूरत बदल गई। उसका मुखडा सूर्यसा चमका, उसके, वस्त्र तेजके सदृश श्वेत हो गये। (३)

मूसा और अलियास उससे बातें करते उन्हें दिखाई दिए । (४) ए परमेश्वर ! हमारे निमित्त यहाँ रहना अच्छा है । यदि इच्छा हो तो हम यहाँ तीन डेरे बनावें । एक तेरे और एक मूसा और एक अलियासके निमित्त । (५) वह यह कहताही था कि एक प्रकाशमय बादलने उनपर साया कर दी,इस बादलसे एक आवाज इस विषयकी आई कि, यह मेरा प्यारा बेटा है जिससे मैं प्रसन्न हूँ । तुम उसकी सुनो (६) शिष्य यह सुनकर मुहँके बल गिरे अत्यन्त भयभीत हुए । (७) तब मसीहने इन्हें छूकर कहा कि, उठो भयभीत मत हो । (८) पीछे उन्होंने अपनी आँख उठाकर मसीहके अतिरिक्त और कुछ नहीं देखा ।

वह तो हजरत ईसाने अपना प्राकृतिक स्वरूप अपने शिष्योंको दिखललाया था ।

प्रगट हो कि, सब वह अवतार इसी निरञ्जनके हैं । जो उसके मुख्यपुत्र कहलाते हैं । इन ऋषीश्वरों सिद्ध साधुओं पीर पैग़म्बरोंको बडा बल होता है परन्तु इनको न तो अपने प्राकृतिक स्वरूपकी सुध रहती है। न अपना आवागमन बन्द करनेकी युक्ति मालूम है । थे सब अवतार निरञ्जनके पुत्रोंके हैं और अपने पिता विराट्के स्वरूपमें हैं ।

यह विष्णु सबमें बादशाह है । इस बादशाहके पास युद्धका समस्त समान है । इसके पास पाञ्चजन्य शंख है । जब वह समरके निमित्त चढ़ता है तब पाञ्चजन्य शंख फूंक डंका बजाकर चढ़कर युद्ध करता है । बास्तवमें इसे कोई कामना नहीं । भक्तोंके उद्धार तथा संसारी जनोंके बोधके लिये ऐसा किया करता है ।

भगवान् विष्णुके विषयमें कबीर साहिबजी कहते, चले आ रहे हैं कि सत्य पुरुष विष्णु भगवान्को पकड़ो उसके सच्चे भक्तोंका मान करो झूठे गुरुआ लोगोंके फन्देसे बचो । ये किसी बिरले पुरुषको मिलते हैं, जिसे मिलते हैं वो इनकी ही कृपासे सत्य पुरुषके लोकको चला जाता है । फिर भी जीवोंकी बुद्धि अन्धी हो रही है जो इस ओर ध्यान नहीं देते ।

देखो भगवान् विष्णुके विषयके कबीर साहिबके शब्द—

शब्द ३७—हरिठग ठगत सकल जग डोला ।
गवन करत तोसो मुखहु न बोला ॥
बालापनके मीत हमारे । हमैं छाड़िकस चले सकारे ।
तुम अस पुरुष हो नारि तुम्हारी ।

तुम्हरी चाल पाहनहुते भारी ।
वाटिकि देह पवनको शरीरा, हरिठग ठगतसो उरल कबीरा ।।

कबीर दासजी उन गुरुओंके लिये कहते हैं जो भगवान्के तत्त्वको न जान उनकी निन्दा स्तुतिसे अपना कार्य चलाते हैं कि, भगवान् विष्णुके नामपर नकली गुरु बिना विष्णुके सत्यरूपको जनाये ज्ञानी होनेके ठग्गी करते फिरते हैं । जब यमराज आकर घेर लेता है तो भी वे वह नहीं कहते कि, हमने सत्यपुरुष विष्णुके नामपर तुमें धोखा दिया था ।

हम तुम बालापन के मित्र हैं। हमें छोडकर पहिले ही कहां चल दिये । आप बिना मंत्र सिद्ध कियेही लोगोंको चेला करने चल दिये जैसे गुरु वैसेही चेला हैं आजकलके गुरु लोगोंकी चाल पत्थरसेभी ज्यादा जड़ है क्योंकि, पत्थर तो जड़ होनेके कारण सत्यपुरुष विष्णुभगवान्का चिन्तन नहीं कर सकता किन्तु ये गुरु लोग चैतन्य होकर भी विष्णुको भी नहीं पहिचानते। पृथ्वी आदिका स्थूलदेह तथा प्राणादि वायु आदिका सूक्ष्म है । कबीर साहेब कहते हैं कि, ऐसे पाखण्डियोंसे डरकर जीव भगवान् विष्णुके चरणोंमें पुकार मचावें हैं कि, मेरी रक्षा हो ।

शब्द ३८–हरि बिनु मर्म बिगुर बिन गन्दा ।
जहँ जहँ गयो अपन पौं खोये, तेहि फन्दे बहु फन्दा ।। १ ।।
योगी कहे योग है नीको, द्वितिया और न भाई ।
चुण्डित मुण्डित मौन जटा धरि, तिनहुं कहां सिधि पाई ।। २ ।।
ज्ञानी गुणी शूर कबि दाता, ये जो कहहिं बड हमहीं ।
जहँ ते उपजे तहँहि समाने, छूटि गये सब तवहीं ।। ३ ।।
बाँये दहिने तजो विकारै, निजुकै हरिपद गहिया ।
कह कबीर गूंगे गुर खाया पूंछेसो का कहिया ।। ४ ।।

गन्दा–मलिन बुद्धिवाला, बिन–पक्षीजीव–हरि–विष्णुभगवान्के, बिहु–बिना, बिगुर–बिगड़ गया । अपनेपे-अपने आत्मतत्वको, खोये–खोकर, जहँ जहँ–जिस जिस जगह गयो–पहुँचा, बहाँही, तेहि–उसे, बहुत–बहुतसे, फन्दा–झगड़े पड़े । अथवा जहाँ जहाँ गया अपने भजन ध्यान ही खोये और बिना विष्णुकी कृपाके संसारी बन्धनोंमेंहो बँधा । योगी कहते हैं कि, योगही अच्छा है। योगके मुकाबिलेमें दूसरा कुछ नहीं है । उन्होंने तप किये शिर मुडाये मौन रहे जटाएँ राखीं पर क्या सिद्धि प्राप्त की, येही क्यों, ज्ञानी शूर कबि और दाता ये भी कहते हैं कि, हमही बड़े हैं जिस गर्भसे उपजे थे फिर उसी गर्भमें जन्म लेने चले गये । उनके सब मत रखेही रह गये । बाम और दक्षिण दोनों विकारोंको छोड़ दो, भगवान् विष्णुकी शरणको अपनी मानकर ग्रहण करो । जिससे कल्याण हो

कबीर साहिब कहते हैं कि, गुडखाया हुआ गूंगा स्वाद नहीं बता सकता, खाली इसारेसे ही कह सकता है।

शब्द ३९–ऐसो हरिसों जगत लरतु है, पंडुर कतहूँ गरुड धरतु है ॥ १ ॥
मूस बिलासी कैसे हेतू, जम्बुक करके हरिसों खेतू ॥ २ ॥
अचरज यक देखा संसारा, सोनहा खेद कुंजर असवारा ॥ ३ ॥
कह कबीर सुनों सन्तो भाई, यह सन्धि कोई विरले पाइ ॥ ४ ॥

ऐसे भगवान् दयालु जो अनायासही मुमुक्षु जीवोंके रक्षक हैं। पाप जीव इनसेभी विरोध किये विना नहीं मानते। व्यर्थकी निन्दा करते हैं। क्या पीला साँप गरुडको खालेना चाहता है ? जो विष्णुकी निन्दा करके अपना महत्त्व प्रकट करते हैं, वे सीधे सीधे पुरुषोंको बहकाकर ऐसे हजम करना चाहते हैं जैसे बिल्ली मूसेको खालेना चाहे। पर ये सब बातें इसी तरह हैं जैसे कि, श्यार शेरसे लड़नेका इरादा करे। श्रीविष्णु रहित जीवोंको वे क्या उमराह कर सकते हैं। हमने एक बड़ा आश्चर्य देखा कि, कुत्ते हाथीपर चढकर उसे चलाना चाहते हैं। यानी ऐसी वैसी गप्पोंसे विष्णु भक्तोंको भक्तिसे डिगाना चाहते हैं। कबीर साहिब कहे हैं कि, किसी विरलेको विष्णुका साक्षात्कार हुआ है जिससे सत्य लोककी प्राप्ति हो जाती है॥

भगवान् रामचन्द्रजी महाराज।

मनु और शतरूपाका विवरण रामायणमें कहा है। कि, इन दोनोंने बड़ी तपस्याकी है। अस्सी सहस्र वर्षपर्यन्त प्रार्थना करते रहे, इसके उपरान्त ब्रह्मा इनके सामने गए। परन्तु मनुके पीछे खड़े होकर कहने लगे कि ए, राजा वर माँग। तब मनुने कहा कि, तुम मेरे सामने आओ। तब ब्रह्माने कहा कि, ए राजा ? तेरे प्रतापके कारण मैं तेरे सामने नहीं आ सकता हूँ। तब राजाने कहा कि, यदि तुमसे मेरे सामने आया नहीं जाता तो मैं तुमसे क्या माँगू ? फिर शिवजी आए वे भी ब्रह्माहीके सदृश पलट गए। पीछे विष्णु आए और कहा कि, राजा तू माँग क्या चाहता है। तब मनुने अपने नेत्र खोलकर देखा तो विष्णु महाराज शंख चक्र गदा पद्म इत्यादि लिए सामने खड़े हैं। तब राजाने कहा कि, तुम्हारे सदृश मेरा पुत्र उत्पन्न हो। तब विष्णुने कहा कि, मेरे सदृश दूसरा कौन है मैं स्वयम् तेरा पुत्र होऊँगा और कुछ माँग। तब राजाने कहा कि, दूसरा वरदान यह दो कि, मैं आपसे जुदा होकर जीवित न रहूँ, भगवान् विष्णुने 'एव मस्तु' कह दिया। वेही मनु और शतरूपा राजा दशरथ और महारानी कौशल्या हुए। भगवान्ने जो वरदान दिया था उसके अनुसार उनके घरमें भगवान् रामका

अवतार हुआ। यद्यपि वहाँ कौशल्यका वर पाना अतिही सुगम था तो भी उन्होंने वात्सल्य भक्तिसे प्रेरित होकर भगवान्‌को पुत्र बननेकाही वर माँगा क्योंकि, बिना अपने ध्येयके आगे विश्वके साम्राज्यको, नरककी भयंकरका तपत साधन समझते हैं। येही भगवान् रामचन्द्रजी महाराज कबीर जी साहिबके परम इष्ट थे। स्वामी रामानन्दजीसे ये ही दो अक्षर कानमें पडनेके बाद मंत्रका रूप आपसे पूछा तो आपने परिस्फुट शब्दोंमें समझाते हुए कह दिया कि, 'राम न कह्यो खुदाई' ऐ मुसलमानों! तुम रामका महत्त्व नहीं समझ सकते, किन्तु तुमभी भूलके साथ इस खुदा शब्दसे भी रामको ही याद कर रहे हो।

इसी बातको शब्द चारमें कह दिया है कि–'हिन्दू कहै मोहि राम पियारा, तुरक कहे रहिमाना। आपसमें दोउ लरि लरि मूये, मर्म कोई नहिं जाना' हिन्दू कहते हैं कि, हमें राम प्यारा है तथा तुरक रहमानका प्यारा बताते हैं। दोनों आपसमें लड २ कर मर गये पर मर्मका पता न चला कि, रामको ही वो दयालु कहकर याद कर रहे हैं। इन्होंने और भी कितनी ही स्थलोंपर भगवान् रामका गुण गाया है जिसमें से कुछ एक यहीं ऊद्धृत करते हैं।

शब्द १३–राम तेरी माया दुन्दि मचावे ॥

गति मति वाकी समझि परे नहिं, सुरनर मुनिहिं नचावे ॥ १ ॥

कबीर साहिब कहते हैं कि, हे राम! तेरी माया ऊधम मचा रही है। या मैं तू का भेद कर रही है यदि यह न हो, तो मैं तू का भेद न रहे। उसकी चाल तथा ज्ञान विचार जाने नहीं जाते यह सुर नर मुनि सबको नचा रही है।

शब्द ८–वे रघुनाथ एकके सुमिरै जो सुमिरै सो अन्धा ॥ ७ ॥

बिना एक सत्यपुरुष रघुनाथके सुमिरन किये जो किसी दूसरेका स्मरण करता है वो अन्धा है भगवान् रामको छोडकर किसीका भी स्मरण न करना चाहिये।

१—दो शब्द—प्रारंभमें कबीर मन्शूरका अर्थ कबीर साहिबकी ज्योतियाँ कहा गया है। इस कारण इस ग्रन्थमें कबीर दर्शन या उससे सम्बन्ध रखनेवाले एवम् उसके परिपोषक विषयोंका ही संग्रह होना चाहिये। कबीर साहिबका जीवन चरित्र भक्तमालमें है। सनातन धर्मी उन्हे इस कराल कलिकालके भक्तोंमें एक उच्च कोटिका मानते हैं। इस नातेसे वे भी उनपर उतनीही श्रद्धा रखते हैं जितनी कि, उनके सम्प्रदायके लोग उनपर रखते हैं वे परम भक्त थे। इस कारण उनका महत्त्व ईश्वरसे भी अधिक वर्णन किया जाय तो सनातनियोंकी तो आनन्दकी ही बात है। क्योंकि उनके यहाँ तो "दासानुदासो भवितास्मि भूयः" का अधिक महत्त्व है।

ईश्वरके दास होनेसे पहले ईश्वरके दासोंमें अपना नाम लिखाना सबसे उत्तम मानते हैं। इस कारण उनका महत्त्व वर्णन तो सुखका ही कारण होगा किन्तु जो बात उनके वचनों तथा उनके मान्य साम्प्रदायिक ग्रन्थोंसे बिलकुल विभिन्न हो उस बातको उनके प्रकाशमें मिश्रित करना सर्वथा अनुचित प्रतीत होता है।

शब्द १४—रामरा संशय गाठिन छूटे । ताते पकरि २ यम लूटे ।। १ ।।

जो राम के उपासक नहीं हैं उनकी शंसय की गांठ नहीं छूटती इस कारण सबको यह पकड २ कर लूटता है । इन दोनों शब्दोंसे कबीर साहिबने स्पष्ट शब्दोंमें कह दिया है कि, रामको छोड दूसरेका स्मरण करना अन्धोंका काम है, बिना उसका स्मरण किये संशयकी गाँठ नहीं छूटती। हृदयकी कुन्डी नहीं खुलती रामका अनुभव या यथार्थ ज्ञान क्यों नहीं होती । इस पर कबीर साहब कहते हैं कि—

स्मृति वेद पुराण पढै सब, अनभव भाव न दरशै ।
लोहो हिरण्य होय धों कैसे, जो नहिं पारस परसै ।।

चाहें वेद स्मृति पुराण एवम् अनेक तरहके सम्प्रदायिक पोथा पढलो पर बिना अविचल प्रेम दृढ विश्वास और सच्चे गुरु रामका अनुभव हो नहीं सकता । वो सीताके लिये बन २ फिरनेवाला रावणका संहारक ही दीखेगा । पर जब पारसरूप गुरु मिल जायेंगे तो परसकर लोहे को पारसकर सोना बना लेंगे ।

उसी रामने सुग्रीवकी सख्य भक्तिके बश हो उसके बडे भाई बालिपर छलसे प्रहारकरके अपने बनाये कर्म नियमको, भी मर्यादा पुरुषोत्तमने अटल दिया कि, ए अंगद ! तू बापके बदलेके लिये उतावला न हो मैं तेरे बापका बदला स्वयं चुकाऊँगा । हुआ भी ऐसा ही । कृष्णावतारमें मर्यादा पुरुषोत्तमने कर्मफलकी मर्यादाको अनिवार्य दिखलाते हुए बालिके हाथके तीर से ही इच्छामय लीलाविग्रहका संवरण किया । भिलनी केवल निषादराज राक्षसराज और गीधराज आदि अनन्तोंको अपनाकर अपना नित्यधाम दिया जिसके रहनेवाले भगवान्‌की आज्ञासे संसारमें लोक कल्याणके लिये आकर भी निर्द्वन्द्व रहते हैं जैसे वहाँ अनुभव करते थे वैसाही यहाँ पर भी करते रहते हैं । श्रीकबीर साहेब बडे भी अपनानेवाले आप थे, कबीर साहिबमें जो भी कुछ कबीरपना था वो सब आपकी कृपाकाही फल था ।

पूरणब्रह्म भगवान् कृष्ण ।

अब हम भगवान् कृष्णचन्द्रजीके कुछ वात्सल्य पूर्ण गुणोंको सुनाना चाहते हैं जो कि, अवतार लेकर एक भक्तिको देखते हैं, दूसरे वहाँ कुछ भी भेद भाव नहीं होते । कश्यप ऋषिके दिति अदिति नामकी दो स्त्रियां थीं । अदितिसे राजा इन्द्र उत्पन्न हुआ । वह देवतोंका बड़ा बलिष्ठ राजा हुवा । तब दितिने कश्यपजीसे निवेदन किया कि महाराज ! मेरे ऊपर भी दया करो कि, मेरा

भी इन्द्रके समान बलिष्ठ तथा प्रतापी पुत्र उत्पन्न हो तब कश्यपजीने कहा कि, तूभले कार्य कर तो तेरा पुत्र भी वैसाही होगा और दिति भी सुकर्म्म करने लगी। तब दिति गर्भवती हुई जब उसको गर्भ रहा तब दितिका चेहरा तेजमय हो गया। यह स्वरूप देखकर अदितिने ईर्षा की और अपने पुत्रसे कहा कि, ए पुत्र। तेरा वैरी दितिके गर्भसे उत्पन्न हुवा चाहता है जो तुमसे सामना करेगा। तब इन्द्रने कहा कि, माता ! तू कोई चिंता न कर, मैं भली भाँति युक्ति करूँगा, तब इन्द्र एक छोटा अस्त्र लेकर और बहुत छोटा रूप धारण करके अपने योग-बलसे दितिके पेटमें पैठ गया, उस गर्भके बालकके सात टुकडे किए और फिर उन सातमें भी और सात २ टुकडे किए। जब उस बच्चेको दुःख हुआ तब रोने लगा। तब इन्द्रने कहा कि, ए भाई ! तुम मत रोओ, तुम सब उनचास मरुत् हो गए। जब दितिको मालूम हुवा कि, आदितिके कहनेसे इन्द्रने मेरे साथ ऐसा व्यवहार किया और मेरे गर्भके पुत्रके उनचास टुकड़े किए, तब उसने अदित्तिको शाप दिया कि, जैसे तेरे पुत्रने मेरे पुत्रको मारा काटा है उसी प्रकार तेरे पुत्रोंका भी विनाश हो और तू बंधनमें पड़े। जैसे बंधन तथा गर्भमें मेरे बच्चेको मारा तैसे बंधनमें तेरे बच्चे मारे जावें। वही अदिति देवकी हुई और कश्यप ऋषि वसुदेव हुए।

उन्हींके घर जब कि, पृथ्वीने जाकर पुकार किया कि, मेरे ऊपर पापी राक्षस और अनेक दैत्य इत्यादि होगए हैं मैं दुःखी हूँ। इस कारण इनके मारनेके निमित्त कृष्णावतार हुवा। समस्त राक्षसों तथा दैत्योंका विनाश किया। इसी प्रकार विष्णु अवतार पृथ्वीपर हुवा करता है और अवतार धरकर राक्षसोंका नाश करते हैं।

इन्होंने मुमुक्षुजनोंके कल्याणके लिये गीता जैसे शास्त्रका निर्माण किया जिसके छोटेसे रहस्यकी चिनगारियोंके सोले, मात्र ही सारे संप्रदायके रहस्य हैं। कबीर साहिबने इस गीता काही अनुवाद उग्रगीताके नामसे करके धर्मदासजी को सुनाया है। सौलभ्य गुण, जितना इस अवतारमें मिलता है उतना किसीभी में नहीं मिलता। उग्र गीतामें कहा है कि—सर्वव्यापक मैं हों भाई, मोहि बिन दूजा और न कोई" मैं सर्वव्यापक सत्य पुरुष हूं, मैं ही एक हूँ मेरे बिना और कोई नहीं है। ये ही सत्य लोकके अधिपति हैं, राम आदि इन्हींके अनन्त नाम हैं, हंस कबीर इन्हींके लोकसे आते जाते हैं।

क्या इस रहस्यसे ईसाई अनभिज्ञ हैं ? अथवा मुहम्मद साहबके ग्रन्थोंका वृत्तान्त मुसलमान लोग नहीं जानते हैं ? सब जानते हैं। परन्तु इस मनुष्यके

मनमें विचार और चिन्ता नहीं है कि, उसपर विचार करके यथार्थ अवस्था से विज्ञ हो। न उनके मनमें ढूढनेकी अभिलाषाही है ॥

विष्णुके उपकार।

कितने मनुष्य ऐसा कहते हैं कि, हम तो विष्णुको परमेश्वर कदापि न मानेंगे और न उसकी कृतज्ञता स्वीकार करेंगे। भला विचारना चाहिए कि, यदि चूहा कहे कि, मैं शेर बबरसे सामना करूँगा उसकी कृतज्ञता न करूँगा। भला यह संभव है कि, चूहा शेर बबरसे विरुद्धता कर सके। ऐसेही ये मूर्ख मनुष्योंके ध्यान हैं कि, हम विष्णुकी आज्ञासे बाहर चरण रक्खेंगे। यह बात सर्वतोभावसे असंभव है कि, कोई मनुष्य मायाकी सेवासे बाहर जासके। हाँ वह मनुष्य जो साधुगुरुकी सेवामें तन मन धन अर्पण करेगा वह विष्णुके वात्सल्य-भावसे बंधनसे निकलेगा। जितने तनुपोषक और सांसारिक कांक्षासे भरे हैं कोई किसी धर्मका क्यों न हो सदैव विष्णुका सेवक रहेगा। क्योंकि, जितने धर्म पृथ्वीपर हैं वे सब बन्धनके कारण हैं कबीर साहबके शरण बिना अन्तमें समस्त जीवोंको विष्णुकी मायाके ग्रहमें प्रविष्ट कराते हैं। इस ब्रह्माण्डको चीरकर पार जानेकी किसीमें सामर्थ्य तथा बल नहीं जो कोई कुछ पावेगा सो सतगुरुकी सहायतासे पावेगा। दूसरी कोई युक्ति नहीं। सबके सब वेद और पुस्तकोंके बंधनमें पडे हैं। केवल गुरुमुख पार उतरेंगे, मनमुख सब डूब मरेंगे। गुरुमुखके निमित्त भक्ति मुक्ति प्रस्तुत हैं। मनमुखके निमित्त सदैव का बंधन्न प्रस्तुत है। इस बातको समस्त संत महंत सदैवसे पुकारते चले आते हैं। गुरुमुखके निमित्त दोनों संसारमें विश्राम है। समस्त ऋषि सिद्धि गुरुमुखके चेरे हैं।

मुखम्मस तरजीयबन्द।

सरापा जीव करमोंसे लदा है। तमन्ना दीनवीमें पूर सदा है॥
बहरदो एकसो शाहो गदा है। कहाँ दर ख्वाब विहमुक्ती पदा है॥
यह जैसा जगत है वैसा खुदा है।

है जैसी रूह वैसे ही फ़रिश्ते। बँधे सब जीव हैं आमालरिश्ते॥
कुदूरत और आलायश आगश्तः। न कर होश इब्र आदम कालकुशतः॥
यह जैसा जगत है वैसा खुदा है।

यह कहने ही को हैं सब आदमेज़ाद। कियाशहवातने अक्ल उनकी बरबाद॥
तअस्सुबमें हुए हैवान दिलशाद। यही सब जीवके बंधनकी बुनियाद॥
यह जैसा जगत है वैसा खुदा है।

न सद्गुरु बिन वसह तदवीर छूटे। न अमाला कारिश्नः उसके टूटे॥
जपो तपज्ञान ध्यान उसका सो लूटे। जिधर जावै उधर धर कालकूटे॥

यह जैसा जगत है वैसा खुदा है ।

फिकरमें सब लगे खुद ख्वाबसुखरकी । न ख़िदमत और नपरस्तिशसाधुगुरुकी ।।
खबर क्योंकर मिले उस धामधुरकी । फँसे सब फंदमें ठगजीव वुरकी ।।

यह जैसा जगत है वैसा खुदा है ।

न तन मन धनसे हो जबसे निरासा । रहेगा तबतलक यह काल फाँसा ।।
करो जप तप महलमें होवे बासा । हवस जब तर्क हो मुक्ती हो पासा ।।

यह जैसा जगत है वैसा खुदा है ।

हवस है दीनवी दिलमें यह जबतक । न पावै रस्तगारी जीव तब तक ।।
सभी आमाल इसके जाल अबतक । न हरगिज पहुँचे घरलासा नीरव तक ।।

यह जैसा जगत है वैसा खुदा है ।

तअस्सुब छोडकर कर अक्लओ होश । यगानः मिल बेगानः कर फ़रामोश ।।
नसाएह पन्द सुन अज़ सन्त करगोश । मदद गुरु साधु चल तु पार नौ कोश ।।

यह जैसा जगत है वैसा खुदा है ।

जिधर जावे उमर जीवका मरण है । हरण दुःखद्वंद्व सतगुरुकी शरण है ।।
वही मुकता वही तारनतरन है । वह आज़िज़ जीवकाषोशन बेहतरन है ।।

यह जैसा जगत है वैसा खुदा है ।

इसका भाव वही है जिसका कि, निरूपण कर चुके हैं । उसीके सारको लेकर इस कवितामें कहा है कि दोनोंका एकही रूप है सत्य पुरुषसे भिन्न नहीं ।

अध्याय ८.

ब्रह्माजीकी कथा ।

यह ब्रह्मा समस्त संसारका रचयिता कहलाता है । इस ब्रह्मासे समस्त संसार है । यह रजोगुण अर्थात् प्रवृत्तिकी प्रतिमूर्ति हैं । बुद्धिरूप ब्रह्मा है । इससे समस्त वेद और विद्या संसारमें प्रचलित हैं । इस ब्रह्माका स्थान लिङ्ग छः पत्तोंके कमल सो अधिष्ठान चक्रमें है । यह ब्रह्मा प्रवृत्तिकी कामनाको

यहाँ साहबके सांप्रदायिक कबीर ग्रन्थोंका सम्बन्ध छोडकर ब्रह्मा और शिवजीपर देवी भागवत्के भ्रामक आधारपर लोग स्वतंत्र ही लिख पढ रहे हैं। यद्यपि यों यह ऐसे स्थलोंमें आवश्यक है। उसकी कोई आवश्कता नहीं थी। परन्तु मनुष्यकी अनन्त भावनाएँ होती हैं। न जाने किस भावनासे लिख दिया करते हैं। यह उनका ही अन्तःकरण जानता होगा। हम ऐसे विषयोंका कितनी ही बार सार्वजनिक समन्वय दिखा चुके हैं। जिन्हें ऐसे प्रकरणोंके रहस्यकी जिज्ञासा हो वो हमारे तिमिरभास्कर आदि ग्रन्थोंको देख लें। यहाँ दिखाना नहीं चाहते। अच्छा होता यदि इन कहानियोंके स्थानपर भक्ति ज्ञान वा स्वयं वेदकी इन्हींके विषयकी बातें होतीं।

उठाता है । स्वयम् काम कामना भी कहा जा सकता है । इस ब्रह्माका ज्ञान विहारी वह स्वयम् संसारी है । वह स्वयम् अपने कार्योंका अधिकारी नहीं है जो कुछ वह करता है विवश होकर करता है और वह करता है और अपने कार्योंसे डरता फिरता है । जब दैत्योंकी तपस्या पूरी होती है तब उनके सामने जाता है। उनको वरदान देता है उस ब्रह्माके वरदानसे दैत्य प्रबल होकर समस्त देवताओंको ब्रह्मा सहित मारकर भगा देते हैं । ब्रह्मा भी देवोंके साथ भागता तथा दुःख पाता फिरता है । उसका कोई वश नहीं चलता है । यदि यह ब्रह्मा अधिकारी होता तो दैत्योंको क्यों वरदान देता । परन्तु वह विवश होकर वरदान दे दिया करता है । यह ब्रह्मा संसार बढानेकी कामनाओंमें डूबा रहता है । यह ब्रह्मा इतना दुःख पाता है तो भी दैत्योंको वरदान देनेको भागाही जाता है, उसका कुछ वश नहीं । यह जीव आपसे आप अपने कर्मोंका फल भोगता है । उनको रोकनेवाला कोई नहीं । वेदका प्रचार संसारमें ब्रह्माने किया परन्तु वेदके यथार्थ तात्पर्यको वह भी नहीं समझ सका, यदि ब्रह्मा वेदके यथार्थ तात्पर्यको समझता तो निश्चय वेदकी सच्ची शिक्षा देता । यदि इस ब्रह्मामें एकताकी विद्या होती अथवा एकका ज्ञान होता तो महामायाका ध्यान करके अपनी कठिनाइयोंको क्यों सरल किया चाहता । यह ब्रह्मा समस्त सांसारिक रीतोंका सिखलानेवाला है । इस ब्रह्माका हृदय सांसारिक कामनाओंसे भरा हुआ है । अपनी कामनाओंसे खिचा हुवा बारम्बार जन्म मरणके दुःख कष्टमें फँसा रहता है यह ब्रह्मा इस जगत्के सोचमें पड़ा रहता है । ब्रह्माकी संतान ब्राह्मण हैं । शास्त्र और धर्म-कर्मका प्रचार करता रहता है । यह ब्रह्मदेव मुक्तिका उपदेश देनेवाला कहलाता है । इसीकी शिक्षासे सब ज्ञानी तथा ध्यानी होते हैं ।

विद्या अविद्या आदि यथेष्टोंका रचयिता ब्रह्मा है । सब ऋषि मुनि इससे उत्पन्न होकर धार्मिक चलन सिखलाते हैं। समस्त सांसारिक पुरुष इसीपर चलते हैं ।

देवीभागवतके तीसरे स्कंध की २--३--७ अध्यायमें लिखा है कि, सबसे पूर्व पानी था, दूसरा कुछ नहीं था । अब यहाँ नारदजी अपने पिता ब्रह्मासे पूछते हैं कि, ए पिता ! इस संसारकी उत्पत्ति किस प्रकार हुई ? तब ब्रह्माने उत्तर दिया कि, मधु तथा कैटभ दो दैत्य विष्णुके कानके मैलसे उत्पन्न हुए । वे जलपर रहा करते, जलही पर उन लोगोंने बड़ी तपस्या की, अत्यंत बलिष्ठ हुए । जब मैं उत्पन्न हुवा तो मैंने अपने आसनके नीचे कमल देखा । मैं इस कमलपर बैठा था कि, दोनों दैत्य दिखलाई दिए, मैं उनको देखकर भयभीत हुआ । उन

दोनोंने मुझको युद्धके निमित्त ललकारा। मैं भयभीत होकर कमलकी नाल पकडे हुए नीचे उतरा तो सहस्र वर्षपर्यन्त मैं फिरता और चक्कर खाता रहा कुछ ठिकाना नहीं चला। तब मैंने वहाँ बैठकर सहस्र वर्ष पर्यन्त तपस्या की, तब आकाशवाणी हुई कि, ए मूर्ख ! तूने अब तक नहीं जाना कि, इस संसारके, रचयिता कौन है ? तब उसीमें फिरते हुए नीचेको गया तब मुझको आसमानी रङ्गका एक स्वरूप जिसके चार भुजाएँ थीं जो पीताम्बर पहने था, दिखलाई दिया। शेषजीके ऊपर सोया हुवा और बनमाला उसके गलेमें थी। शंख चक्र गदा पद्म लिए हुए अचेत योगनिद्राके वशीभूत दिखलाई दिया। इस पुरुषको देखकर मैं निद्राशक्तिकी स्तुति करने लगा। तब उसके शरीरमेंसे भगवती देवी निकल पड़ी। तब मैं उस रूपको देखकर निर्भय होगया। जब भगवती निकल पड़ी। तब भगवान् जागे। पाँच सहस्र वर्ष पर्यन्त उन दोनों दैत्योंके साथ युद्ध करके उनका वध किया। पीछे उस शक्तिने जो भगवान्के शरीरसे निकली थी यह कहा कि, हे ब्रह्मन् ! समस्त संसारका स्तंभ मैं हूँ। ये दैत्य जो मारे हैं इनकी उत्पत्तिका कारण भी मैं हूँ। अब तू भली भाँति जगत् की उत्पत्ति कर। यह कहकर वह शक्ति भगवानके शरीरमें समागई। इतनी बात सुनकर ब्रह्मा कहता है कि, मैं आश्चर्यान्वित हुवा मनमें सोच विचार करने लगा कि, मैं किस प्रकार सृष्टिको उत्पन्न करूँ ? मुझको तो कुछ दिखलाई नहीं देता अब मैं किससे पूछकर सृष्टिको उत्पन्न करूँ ? ब्रह्मा इस ध्यानमें बहुत गोता खा रहा था। तब उसने देखा कि, एक विमान आकाशसे उड़ आया उसके बराबर बैठ गया। उसके ऊपर भगवतीजी महारानी अपनी शक्तियों सहित बैठी हैं। इस विमानके समीप विष्णु और शिवको खड़े देखा।

तीसरा अध्याय–फिर नारदने ब्रह्माजीसे कहा कि, हम तीनों देवता जाकर इस विमानके एक डण्डेपर बैठ गए। तब वह विमान वहाँसे उड़कर एक भूभागपर आया। वहां जल नहीं था। परन्तु अनेक प्रकारकी वाटिका वृक्ष और बड़े सुन्दर मनुष्य बावडीं कुएँ इत्यादि और अनेक प्रकारके मकान तथा मन्दिर इत्यादि देखे। तब हमने एक मनुष्यसे पूछा कि यह कौन लोक है। तब उसने उत्तर दिया कि, यह स्वर्गलोक है। वहाँ एक मनुष्य राजा इन्द्रके सदृश दिखलाई दिया। एक क्षण वहाँ ठहर कर विमान पुनः आगे बढ़ा तो एक नन्दन वनमें पहुँचा। वहाँ सहस्रों प्रकारके पुष्प थे। बड़ी सुगंधि आती थी। चार दाँतवाले हाथी थे। सहस्रों परियाँ नाचतीं और गंधर्व लोग गीत गाते और बाजा बजाते थे। तूबा वृक्ष तथा कल्पवृक्षोंकी बडी सुगंधि आती थी। वहाँ एक बड़ा सुन्दर नगर

दिखाई दिया और नगरमें एक राजा दिखाई दिया था जिसका नाम देवराज था। हमने पूछा यह कौन लोक है ? तब लोगोंने उत्तर दिया कि, यह ब्रह्मलोक है। वहाँ एक ब्रह्माका भी दर्शन हुवा जो सनातन ब्रह्मा कहलाता है। तब ब्रह्माने कहा कि, ब्रह्मा तो मैं हूँ यह सनातन ब्रह्मा कहाँसे आया इस ब्रह्माके चहुँ ओर अनेक देवतागण सेवाके निमित्त उपस्थित हैं ? उसको देखकर ब्रह्मा नारदसे कहता है कि, मैं आश्चर्यान्वित हुवा। फिर वहाँसे वह विमान उड़कर एक पल-भरमें कैलासमें पहुँचा। इस पर्वतपर भाँति भाँतिके पुष्पोंकी सुगंधि आरही थी। सहस्रों प्रकारके पक्षी बोल रहे थे। बीणा इत्यादि नाना प्रकारके बाजे बज रहे थे। तब एक क्षणमें शम्भु महाराज इस मकानसे बहिर्गत हुए जो बैलपर सवार थे। उनके तीन नेत्र थे, पाँच मुंह और दश भुजाएँ थीं, उनके ललाटमें चन्द्रमा था, बाघम्बर ओढ़े हुए थे। गणपति जी और बीरभद्र तथा स्वामिकार्तिक इनके साथ थे। सहस्रों ब्रह्मा और शंकर आदि इनकी स्तुति करते हुए एवं चँवर इनके शीशपर फिरता हुआ देखा फिर एक पलभरमें वह विमान वैकुण्ठमें जा पहुँचा। इस वैकुण्ठको देखकर मैं परमानन्दित हुवा। वहां मैंने सनातन विष्णुको देखा। सहस्रों प्रकारके ब्रह्मा और शिव और इन्द्र इत्यादि देवता देखे उस सनातन विष्णु का स्वरूप अलसीके पुष्पके सदृश दिखाई दिया। शेषनागकी शय्यापर शयन कर रहे हैं लक्ष्मी चँवर कर रही हैं। ब्रह्माजी नारदसे कहते हैं कि, हम दोनों इस माया को देखकर आश्चर्यान्वित हो रहे। वहाँसे विमान उड़कर समुद्रमें पहुँचा। वहाँ सहस्रों प्रकारके कुएँ और बावडियाँ दिखलाई दीं, वहांका जल अत्यंत मीठा था, सहस्रों प्रकारके वृक्ष और मोती इत्यादिकी खान थीं इस स्थानका नाम मुनिद्वीप था, अनेक प्रकारकी दवाई बूँटी और पुष्पोंकी सुगंधि आरही थी, भँवरे गूँज रहे थे, वहांके मनुष्य रत्नजटित वस्त्र आभूषण पहने हुए थे और वहां एक रत्नजटित पलंग था। उसपर एक देवी बैठी थी। उसकी ग्रीवामें सहस्रों प्रकारके रत्नोंकी माला थी, वह सूर्यके सदृश देदीप्यमान थी, वहां उसके नेत्रोंका प्रकाश करोड़ों लक्ष्मीके सौन्दर्यके सदृश था और अंकुश तथा त्रिशूल उसके समीप धरा था तथा उस माहामाया का दर्शन करके मैं बड़ा ही सुखी हुआ और सहस्रों प्रकार के रत्नों से जड़ेहुए देखे, सहस्रों देवियाँ उस महामायाकी सेवा और चँवर कर रही थीं। ब्रह्माजी नारदजीसे कहते हैं कि, हम तीनों उस सनातन आदिमहामायाका दर्शन करके आनन्दित हुए फिर आगे चलकर एक और दूसरी मूर्तिका दर्शन हुवा जो बालकके समान एक बड़के पत्तेपर लेटा था, बच्चोंके सदृश अपने पावँका अँगूठा, अपने मुँहमें दिये हुए था, उसको देखकर नितान्तही हर्षित हुए, अपने मनमें सोचा कि, कामनाओंको पूर्ण करनेवाली यही महामाया है।

चौथे अध्याय–ब्रह्माने नारदसे कहा कि, हम तीनोंने इस महामायाके समीप जानेका उद्योग किया, इतनेमें एक विमान आकाशसे उतरा, उस विमानसे सहस्रों प्रकारकी स्त्रियोंको उतरती देखकर हम तीनोंको अत्यन्तआश्चर्य हुवा, उनमें कोई पुरुष नहीं था, सब स्त्रियाँ थीं, तब हम तीनों देवताओंने स्त्रीरूप धारण कर लिया, हमभी उन स्त्रियोंके बीचमें गए, उनका सौन्दर्य हमारे कथनसे बाहर है, इस महामायाको बड़के पत्तेपर सोया देखकर हम उसके चरणोंके समीप गए, तब समस्त स्त्रियोंने हमारी ओर देखा, उनको हमारे स्त्री होनेका ज्ञान नहीं हुआ । तब श्रीमहामाया मुसकराईं, और प्रसन्न हुईं, उस समय उस महामायाके चरणोंके नखोंमें एक कौतुक दिखलाई दिया कि, जैसे दर्पणमें मूर्तिका प्रतिबिम्ब दिखलाई देता है । वैसेही इसमें अनगिनती ब्रह्माण्ड और अनगिनती वृक्ष और पर्वत और अनगिनती ब्रह्मा, विष्णु, शिव, सूर्य्य, चन्द्र, अग्नि, इत्यादि देखे वरुण, वीर त्वष्टा, विश्वआत्मा नारद, ऋषि, मुनि, गंधर्व, अश्विनीकुमार, सहस्रों प्रकारके नाग, वैकुण्ठ, स्वर्ग, पाताल और विष्णुकी नाभिकमलमें ब्रह्मा भी देखा, मधु कैटभकी लड़ाई भी देखी, इस मायाका पारपाया नहीं जाता । इस प्रकार सौ वर्ष पर्यन्त हमने मेधासमुद्रमें कौतुक देखा, इस कौतुक देखनेके उपरान्त विष्णु महाराज देवीकी स्तुति करनेको दंडायमान हुए कि, हे महामाये सच्चिदानन्द रूपिणी ! मैं तुमको नमस्कार करता हूँ कि, समस्त पृथ्वी आकाश पर्वत और जलके बीच आपही समा रही हो । हे मातः ! यह महाज्ञान हमको आपके चरणोंके प्रतापसे हुवा, समस्त कर्तव्याकर्तव्यको मैंने जाना, आपके चरणोंके प्रभाव विना किसीको ज्ञान नहीं होता, संसारमें यह बात स्तष्ट है कि विष्णु विना और दूसरा कोई नहीं, परन्तु आपके चरणोंके प्रभावसे यह ज्ञान मुझमें उत्पन्न हुआ, हे मातः ! जिस समय मुझको नींद आगई थी उस समयभी तुम्हारी कृपासे मधु कैटभका नाश हुआ, ब्रह्माकी रक्षा की थी । इस संसारमें देवता और मनुष्य जानते हैं कि, विष्णु पालन करता है । परन्तु विना आपके मुझको पालनेका सामर्थ्य नहीं है । हे मातः आपके नखोंमें अनेक ब्रह्मा और अनेक विष्णु और अनेक रुद्र इत्यादिको देखकर मेरी बुद्धि चक्कर खागई, अब मुझको ज्ञान हुआ कि, मैं स्त्रीरूप होकर सदैव आपकी सेवा किया करूँ ।

पाँचवाँ अध्याय–विष्णुके उपरान्त शिवजीने बड़ी स्तुति की कि, हे मातः ! जो कुछ है सो सब तेरी लीला है । तेरे विना हम कीड़े मकोड़ेके समान भी नहीं, तेरीही कृपासे मैं जगत्का संहार करता हूं । जब शिवजीने स्तुति की तब महामाया के मुखसे एक मंत्र निकला, उसको शिवजीने याद करलिया, उसके कारण प्रत्येक स्थानपर शिवजीको महामायाकी मूर्ति दिखलाई दी । फिर नारदजीने स्तुति की

छठवाँ अध्याय—तब महामाया मुसकराकर बोलीं, कि ऐ देवताओ ! तुममें और मुझमें कुछभी विभिन्नता नहीं, जो विभिन्नता मानता है वह नरकमें जायगा, ब्रह्मा और विष्णु और शिव सब मैं हूँ अन्य कोई नहीं, इस समस्त जगत्का कारण मैं हूँ। मैंने भिन्न भिन्न कार्योंके निमित्त अपने पृथक् २ नाम रक्खे हैं। समस्त वेद तथा शास्त्रोंमें मेरे पृथक् पृथक् नाम है। मेरीही कामनासे उत्पत्ति स्थिति और प्रलय सब कुछ है। ब्रह्माने महामायाकी स्तुति करके नवार्ण मन्त्र पाया। ब्रह्मा विष्णु और शिव तीनोंको उत्पत्ति स्थिति और विनाशके मन्त्र बतलाकर, महालक्ष्मी महाकाली और महासरस्वती विमानारूढ होकर अन्तर्धान होगई। ब्रह्माजीने नारदजीसे कहा कि, ए पुत्र ? तू समझ।

सातवें अध्यायमें—ब्रह्माने नारदको निर्गुण और सगुणका समस्त रहस्य बतलाया। यह ब्रह्मा मायासे उत्पन्न हुवा। मायाही ब्रह्माका गुरु और पथदर्शक है। महामायाका उपदेश ब्रह्माको मिला ब्रह्माका उपदेश ऋषीश्वरोंको मिला। ऋषीश्वरोंका उपदेश समस्त जगत्को मिला। यह जगत् मायाका बन्धन है। काम क्रोधादिकी कामनाओंसे कलुषित हुआ है। ब्रह्मलोक कैलास आदिक सभीमें मायाका कौतुक है। अन्धा मनुष्य इसीमें भूल रहा है, यथार्थकी ढुढाई कौन करे कि, वह क्या है ? जब ब्रह्माही बेसुध हुआ तो दूसरा कैसा सूचना पावे ? प्रत्येक मनुष्य बडोंसे सूचनाएँ पाते हैं। हमारा प्रपिता अति अज्ञानवश मायाके चक्करमें पड़ा डुबकियाँ खारहा है। मायाको समस्त संसारका बीज समझकर उसकी पूजामें संलग्न है तो अपनी सन्तानोंको क्यों न वही पथ बतावे। ब्रह्मा वेद पढ़ २ करभी मायाकी नदीमें डुबकियाँ खारहा है। इसी कारण मनुष्योंका हाथ पकडनेके निमित्त तथा उनको मुक्तिपथ बतलानेके अर्थ किसी दूसरे गुरु तथा पथदर्शककी आवश्यकता है। ब्रह्मा तथा कर्मकी पथदर्शकताही अज्ञानी हम लोगोंके लिये बहुत नहीं है। ब्रह्मा बेचारा मुक्तिमार्गको क्या जाने उसकी पहुँच तो वेद ही पर्यन्त है। महामाया यथार्थ रहस्यको ब्रह्मासे कदापि न बतलाती। अपने भीतरसे बाहर न निकालती। पर ब्रह्मा इस भेदसे नितान्त ही अनभिज्ञ था, इस कारण माया उन सबोंसे श्रेष्ठ है। ब्रह्मा उसके अधीन है, सदैव उसको इस संसारके प्रबन्धका सोच करता है। जैसे प्रत्येक गृहस्थ अपने बाल बच्चोंके सोचमें रहता है वैसेही ब्रह्मा इस जगत्के विचारोंमें रहा करता है। यदि वह जानता कि, मैं क्या हूँ अथवा जगत् क्या है तो समस्त शंकाओंसे निवृत्त होकर अपने यथार्थ अंशकी ओर ध्यान देता। जब उसको अपने यथार्थ अंशसे मिलनेका ध्यान होगा तब वह निश्चय जगत्को तुच्छ मानेगा। फिर उसकी ओर वह दृष्टिपात भी नहीं करेगा। यह बात नहीं है,

यह उसी सत्य पुरुषकी आज्ञाका पालन कर रहा है तथा मोक्ष तक पालन करता रहेगा ।

शिवजी महाराजकी कथा।

शिवजी समस्त देवताओंमें श्रेष्ठ हैं। सबके अग्रणी हैं, विष्णुके समान शिवजी की पूजा भी तीनों लोकोंमें हुआ करती है, पुराणों तथा समस्त शास्त्रोंके देखनेसे विशेषतः शिवपुराणसे आपकी श्रेष्ठता तथा बड़ाई प्रगट होगी, ये शिवजी जगत्के संहार करनेवाले हैं; बड़े वीर तथा साहसी हैं ।।

वाम मार्ग ।

वाममार्ग एक तरहका शिवका धर्म्म है । इस धर्म्ममें जाति पाँतिका तनिक भी ध्यान नहीं किया जाता है। मदिरा मांस मछली इत्यादि खाते पीते हैं। अघोर धर्म्म और अघोर क्रिया समस्त वाममार्गकी शिक्षासे है। विशेषतः योगी संन्यासी मुहम्मदी और शक्ति धर्म्मके अनेक प्रकारके मनुष्य सब इस मतमें भूत प्रेत राक्षस जिन्द और परी इत्यादि सब इसीमें हैं । यह पन्थ क्रोध लोभादिकका स्थल है। इस शिवका नाम भू है जिससे भवसागर स्थिर है। भव और भवानी दोनों इस भवसागरके सरदार हैं । प्रथम में लिख आया हूँ कि, उत्पत्तिके पूर्व महामाया तीनों भाइयोंको एक कौतुक दिखलाया कि, उन्होंने रक्तसे भरी हुई एक नदी देखा उसमें दुर्गन्धिसे भरा हुवा कूडा करकट देखा । इसे देखकर ब्रह्मा और विष्णु तो भाग गए परन्तु शिवजीने उसको चूतडोंके नीचे रखकर उसका आसन बना लिया। इस दुर्गन्धिमेंसे आदिभवानी निकल पड़ी वह शिवसे प्रसन्न हुई । शिवको अपना निजका किया । इस कारण भू और भवानी दोनों भवसागरके मूलही ठहरे । समस्त सांसारिक वासनाएँ आपको भली जान पड़ीं । यह तमोगुण अज्ञानका मूल है। शिवजी क्रोधकी प्रतिमूर्ति हैं। जब तमोगुणी बुद्धि मनुष्यमें आती है तब समस्त कार्य सतोगुणके विरुद्ध करता है । तमोगुणी, मुक्ति एवं सतोगुणके विरुद्ध है । जब तमोगुण विजयी होता है तब मनुष्य भाँति २ के दुष्कर्मों में फंसता है; उसका फल जो है सो संसारमें प्रगट है ।।

श्री कागभुसुण्डिकी उत्पत्ति ।

वसिष्ठ संहितामें अर्थवाद लिखा है कि, शिवजीके साथ अनेक स्त्रियाँ थीं वे समस्त देवियाँ कागके स्वरूपमें थीं। शिवजी विशेषतः पार्वतीजीसे प्रेमसंबंध जोड़ते हैं कारण यह कि, पार्वतीजी अत्यंत सुन्दरी तथा धर्मिष्ठा थीं। इस कारण अन्यान्य देवियाँ शिवजीसे विरुद्ध तथा पार्वतीजी की वैरिन होगईं। तब इनसबोंने आपसमें परामर्श करके एक दिवस पार्वतीजीको मारडाला । उनका सार पकाया

पार्वतीके हाथ पावोंको काटकर समूचा रख लिया था । वह सार खानेके निमित्त शिवजीके सामने धर दिया । पार्वतीके कटे हुए हाथ पाँव भी साथही सामने रख दिए । वह पार्वतीका हाथ पाँव देखकर शिवजी अत्यंत दुःखी हुए कि, इन सबोंने पार्वतीको मार डाला, जब इन देवियोंने शिवजीको अत्यंत दुःखी देखा तब पार्वती को इन सब देवियोंने पुनः जीवित किया । पार्वती जैसे पूर्व थीं वैसेही पुनः शिवजी के पास बैठ गईं । तब शिवजी उन देवियोंसे नितान्तही प्रसन्न हुए । उन सबोंके साथ दृष्टिभोग किया वे सब गर्भवती हो गईं और उन देवियोंसे पुत्र उत्पन्न हुए । सो सब अपनी माताकी सूरतके थे । वे सब बच्चे तो अपना २ वय पूरा करके मर गए । परन्तु उनमेंसे एक कागभुसुंडी अमर हो गया । वह सदैव जीवित रहता है, महाप्रलयमें भी नहीं मरता, वह नीलगिरि पर्वतपर रहता है और बडा प्रसिद्ध ज्ञानी है । [illegible]

देवीभागवतके सप्तम स्कंधके तीसवें अध्यायमें लिखा है, कि एक बेर दुर्वासा ऋषि हाम्बूनदीश्वरी भगवतीका दर्शन करनेको गए । माया वीज मंत्रको जपा, तब भगवतीजीने हर्षितहोकर अपने गलेकी माला उतारकर दुर्वासाजीको दे दी, वह माला पहनकर दुर्वासाजी राजा दक्षजीके घर गए, सतीजीको दंडवत् प्रणाम किया, तब राजा दक्षने दुर्वासा ऋषिसे प्रार्थना करके वह माला माँगली । अपने गलेमें पहनकर रात्रिके समय राजाने वह माला उतारकर अपने पलँगपर रख दी और अपनी स्त्रीसहित इस पलँगपर लेट रहा । उस मालाकी अप्रतिष्ठा होनेके कारण भगवतीजी अत्यंत क्रुद्ध हो गईं । राजा दक्षकी बुद्धि भ्रष्ट होगई, वह शिवजीसे वैर करने लगा । सतीजीने राजाको शिवका विरोधी देखकर अपनेको अग्निकुण्डमें भस्म कर दिया । सतीजीके भस्म होनेसे शिवजीका क्रोध ऐसा भडका और शिवजीके शरीरसे ऐसी अग्नि बहिर्गत हुई कि, मानों वह तीनों लोकको भस्म किया चाहती है । इस अग्निमेंसे वीरभद्र उत्पन्न हुआ, वह वीरभद्र कालीके गणमेंसे था । इस वीरभद्रके तेजको देखकर समस्त देवता भयभीत हुए । शिवजी के शरण आए । तब शिवजीने कहा तुमको उससे कुछ भी आपत्ति नहीं तुम भय-भीत न हो और वीरभद्रको आज्ञा दी कि, तुम राजा दक्षके गृह जाओ, उसको अपना भय दिखलाओ । वह वीरभद्र राजाके घर गया उसका शीश काट डाला । शिवजीने राजाके यज्ञके स्थानमें जाकर सतीजीके शवको राजाके यज्ञकुण्डसे निकाल लिया । अपने कंधेपर रखकर ढाढे मार २ कर रोने लगे, हाय सती ! हाय सती ! ! पुकारने लगे । ब्रह्मासे लेकर समस्त देवतागण चिन्तित हुए । शिवजी उस शवको अपने कँधेपर धरे रोते हाय सती ! हाय सती ! ! पुकारते विदेशको

चले । उस समय श्रीविष्णु भगवान् अपना तीर धनुष लेकर शिवजीके पीछे चले जहां २ शिवजी गए, वहाँ २ विष्णु भी गए। अपने तीर धनुषसे सतीजीके शरीरको तोडते गए । जिन २ स्थानोंपर शतीजीका शरीर गिरा उन उन स्थानोंपर मूर्तियाँ उत्पन्न होगईं । उन स्थानोंपर जो कोई तप जप करे शीघ्र सिद्ध हो जाता है । एक सौ आठ स्थानोंपर वह देह टूट २ कर गिरा, सो समस्त सिद्धस्थान होगए । उन स्थानोंपर लोग मंत्र इत्यादि सिद्ध करते हैं वे शीघ्र सिद्ध पाते हैं और तुरंत सिद्ध हो जाते हैं ।

फिर भोलानाथ महाराजने भस्मासुरको वरदान दिया कि, जिसके शीश पर तू हाथ धरेगा वह तुरन्तही भस्म हो जावेगा । इस दैत्यने चाहा कि, मैं शिवही को भस्म करके पार्वतीको लेलूं । तब उसके भयसे शिवजी भागे । तब विष्णुने आपका प्राण रक्षा की और भस्मासुरको भस्म किया । इसलिये उस दिनसे वैसे वरदान नहीं देते । ये शिव बडे दयालु हैं, वर आदि शीघ्रही देदेते हैं ।

निरञ्जनके चार दूत ।

कबीर साहबका वचन है कि, चार दूत सदैव निरञ्जनके दरबारमें उपस्थित रहते हैं, जो आज्ञा तथा उपदेश होते हैं उन्हें तुरंत कार्यमें परिणत करते हैं, समस्त कार्यवाहियाँ तथा काम धाम उन्हींकी आज्ञानुसार होते हैं । ब्रह्मा विष्णु शिव और यम इन्हींको अरबी भाषामें जिव राईल, मेकाईल, इसराफ़ील और इजराईल कहा है । इसलामके हदीसोंमें इनका विवरण सविस्तार रूपसे किया गया है । परन्तु मैं संक्षेपतः लिखता हूँ कि, हदीस रसूल रावी इब्न अब्बासकी कहावत है कि, जगदीश्वरने आकाशमें अनगिनती देवता बनाए हैं । इनमें चार देवता बडे हैं । प्रथम जिवराईल । दूसरे मेकाईल । तीसरा इसराफ़ील । चौथा इजराईल । इन चारोंको परमेश्वरने पृथक् कार्योंपर नियुक्त किया है । वे सदैव परमेश्वरके अधीन रहते हैं ।

हजरत जिवराईलका यह काम है कि, जो परमेश्वरकी आज्ञा हो वह पैग़म्बरोंके पास पहुँचाया करें । मेकाईलको यह कार्य सौंपा गया कि, वह वृष्टि कर । समस्त संसारको भोजन पहुँचाया करे । इसराफ़ीलके हाथमें नरसिंघा है कि, परमेश्वरकी आज्ञासे फूंके । उसके शब्दसे महाप्रलय हो जाता है । इजराईल को आत्मा निकालनेकी आज्ञा है । जब इसराफ़ील उत्पन्न हुआ तब परमेश्वरसे बल मांगा कि, सबसे मुझमें अधिक बल हो । निदान समस्त जीवोंसे इसराफ़ीलमें बल विशेष है । जो माँगा सो परमेश्वरने प्रदान किया । इसराफ़ील के शरीरमें जितने बाल हैं प्रत्येकबालमें सहस्रों मुँह और प्रत्येक मुँहमें एक २ लाख जिह्वा

हैं । प्रत्येक जिह्वाद्वारा परमेश्वरका गुणानुवाद करता है । प्रत्येक जिह्वासे एक दममें दश लाख नाम लेता है । प्रत्येक मालासे दशलाख देवता उत्पन्न होते हैं । वह भी परमेश्वरके गुणानुवादमें संलग्न होते हैं । उन समस्त फ़रिश्तोंकी सूरत इसराफ़ीलकी तरह है । उन समस्त फ़रिश्तोंका नाम परमेश्वरने मुकर्रब रक्खा है ।

करामन कातबीनकी पुस्तकमें लिखा है कि, इसराफील सदैव दुःखी रहता है । उसके नेत्रोंसे सदैव अश्रुधारा प्रवाहित रहती है और इतने आँसू चलते हैं कि, यदि वह समस्त जल एकत्रित किया जाता तो समस्त सृष्टि डूब मरती । इसराफ़ीलका क़द इतना बड़ा है कि, यदि नूहके समयकी बाढ़का समस्त जल उसकी पीठपर डाला जावे तो वह समस्त जल उसकी पीठपरही सूख जावे और पृथ्वीपर न पहुँचे ।

इसराफ़ीलकी उत्पत्तिके पाच सौ वर्ष उपरान्त मेकाईल उत्पन्न हुवा । मेकाईलके दश लाख नेत्र हैं । परमेश्वरके भयसे सदैव रोया करता है । उसके प्रत्येक नेत्रसे सत्तर २ सहस्र धाराएँ आँसुओंकी बहती हैं जितनी बूंदें होती हैं, प्रत्येक बूँदसे परमेश्वर दश २ फ़रिश्ते उत्पन्न करता है । और वे समस्त फ़रिश्ते मेकाईलकी सूरतके होते हैं । वे सब सदैव परमेश्वरकी वंदनामें लगे रहा करते हैं । उन समस्त फ़रिश्तोंका नाम करोंबी है उन समस्त फ़रिश्तोंका यह कार्य है कि, सबको रोजी पहुँचाया करें । पृथ्वीपर जितने अनाज और फल हैं प्रत्येकपर मेकाइलका एक चौकीदार फ़रिश्तः रहता है । ऐसे वृक्षका फल कोई नहीं जिस पर कि, मेकाईलका एक फ़रिश्तः न हो ।

जब पाँच सौ वर्षका वय मेकाइलका होचुका तब परमेश्वरने जीबराईल को उत्पन्न किया । और छः लाख डहने आपने जिबराईलको प्रदान किए । तीनसौ साठ बार प्रत्येक दिवस वह तेजकी नदीमें डुबकी मारा करता है । जब जब वह गोता मारता है जितनी बूँदें तेजकी उसकी शरीरसे गिरती हैं परमेश्वर उस प्रत्येक बूँदसे एक एक दूत उत्पन्न करता है । वे समस्त फ़रिश्ते जिबराईलकी प्रतिमूर्ति हैं । जिबराईलके आधीन रहते हैं । महाप्रलयपर्यन्त परमेश्वरकी प्रशंसा करते हुए उसीके शोचमें रहते हैं ।

जिबराईलके पांचसौ वर्ष उपरान्त परमेश्वरने इज्राईलको उत्पन्न किया । इज्राईलके उत्पन्न होनेके उपरान्त परमेश्वरने मृत्युको उत्पन्न किया । मृत्युका शरीर बहुत बड़ा पृथ्वीसे आकाशपर्यन्त था । बड़ाही भयानक था । जब पहले फरिश्तोंने मृत्युको देखा तो भयभीत होकर अचेत होगए । सहस्र वर्षपर्यन्त चुपचाप

अचेत पड़े रहे। इजराईलको परमेश्वरने इतना बल प्रदान किया कि, उसने मृत्यु को अपने वशमें कर लिया। यमको परमेश्वरने अनगिनती आँखें प्रदान की हैं। उसके चार पर हैं। जितने पृथ्वी तथा आकाश हैं सबकी ओर उसकी एक आँख रहती है। जब कोई जीव मर जाता है तब उसकी एक आँख गिर पड़ती है। जब कोई उत्पन्न होता है तब उसकी एक आँख बढ़ जाती है। जब आदम उत्पन्न हुवा था, उसी समयसे मृत्यु उत्पन्न हुई थी।

यह तो मुसलमानी हदीसके अनुसार चारों फ़िरिश्तोंका हाल लिखा गया। पश्चिमदेशीय अम्बिया सहानुभावता प्रकाशित करते हैं। जो नबियों की हदीसे हैं, सूक्ष्म भेदसे कहीं २ मिलती हैं, कहीं २ विभिन्नता भी है। वो उनकी विद्याका दोष है। इसके अतिरिक्त कहनेवालोंने कुछ विभिन्नताको अथवा लिखनेवालों ने कुछ औरका और लिख दिया परमेश्वरी वाक्य सब ठीक हैं परन्तु समझनेवालों में दोष है। जिनका हृदय कलुषित है वे परमेश्वरी वाक्यको समझ नहीं सकते।

यह समस्त संसार हरिण्यकशिपु फिर ऊन (परमात्माका वागी) इत्यादि सदृश अंधा और अज्ञानी है। अपनेको अपने कर्मोंका कर्ता तथा भोक्ता जानता है। जबलों यह अपनेको कर्मोंका कर्ताभोक्ता जानता है तबलों यह निश्चय उन तीनों के अधीन रहेगा। यह तीनों उसके परमेश्वर होवेंगे। जब यह जान लेवेगा कि, मैं कर्मोंका कर्त्ता तथा भोक्ता नहीं हूँ, तब उसकी भीतरी आँखें खुल जावेंगी। तब यह फिरऊनी प्राणसे दूर भागेगा। सुतरां मूसाकी दूसरी पुस्तक खिरोजनामककी (७) बाब।

(१) फिर खुदावन्दने मूसासे कहा कि, देख मैंने तुझे फ़िरऊनके निमित्त परमेश्वरसा बनाया तेरा भाई हारूं तेरा अनागतवक्ता होगा। (२) सब कुछ जिसकी मैं तुझको आज्ञा दूं कहना। तेरा भाई हारूं फिर ऊनसे कहेगा कि, बनी इसराईलको अपने देशसे जाने दो। मैं फिरऊनके हृदयको दृढ़ करूंगा। इत्यादि।

अब यहां पर दोनों कि, मूसा तो फ़िरउनका खुदा था। हारूं रसूल अर्थात् भविष्यवक्ता था। इसी प्रकार इस संसारके ये तीन परमेश्वर हैं। समस्त धर्मों के अग्रगण्य भविष्यवक्ता हैं। यह संसारके मनुष्य पशुओं तथा डंगरू ढोरके सदृश हैं। ये तीनों इसके चरब हैं और परमेश्वर हैं। क्या भेड़ बकरियाँ अपने चरवाहेके अतिरिक्त और किसी परमेश्वरकी सुध पासकती हैं? कदापि नहीं।

इसी प्रकार अनगिनती ऋषि मुनि अपनी २ सृष्टिके परमेश्वर हैं। यथार्थ परमेश्वरको कौन जान सकता है?

इस सृष्टिकी दृष्टि व्यर्थ और बिलकुल रुँधी हुई है। इस कारण यह यथार्थ परमेश्वरको पहचान नहीं सकता।

जैसे--एक पिपीलिका जो कागज पर फिरती अथवा बैठी हो वह देखती है कि, काग़जपर अक्षर बनते जाते हैं। वह केवल लेखनीको देख सकती है विशेष दृष्टि उठावे तो उँगलियोंपर्यन्त देखे। तीन उँगलियोंको उसका कारण जाने। इसमें विशेष देखनेका सामर्थ्य नहीं। कोई बडा जीव बाजूपर्यन्त देख सकता है, कोई समस्त शरीर देखता है। कोई आत्माको देखता है, कोई अपने यथार्थ-तत्वसे विज्ञ है।

कर ख्वाब अपना दूर तू ग़फ़लतको छोड जाग।
हर सिम्त हर मकाँमें लगी देखलीजे आग॥
आँखोंको खोल आजिज़ उठ जल्द जाव भाग।
है कामशशीशः एक फ़क़त दूरबीनका॥
देखो जिधरको जाके तमाशा है तीनका॥

मनु स्वायम्भूकी कथा।

देवीभागवतके दशमस्कंधके प्रथम अध्यायमें लिखा है कि, विष्णुकी नाभि-कमलसे ब्रह्मा उत्पन्न हुवा, ब्रह्मासे मनु स्वायम्भू उत्पन्न हुवा। मनु स्वायम्भू क्षीर समुद्रके किनारेपर जा श्रीभगवतीजीकी मिट्टीकी मूर्ति बनाकर एक चरणसे खडा हो और बिना अन्नजलके वंदना करते हुए वाक्यबीजमंत्र पढता रहा। अपने श्वास को रोककर वृक्षके सदृश खडा रहा। तब श्रीभगवतीजी सौ वर्षके उपरान्त प्रसन्न हो कहने लगीं कि, वरदान मांगो। तब मनुजीने निवेदन किया कि, मेरी इस वंदना में कुछ बिगाड न हो। इस वंदनासे मेरी कामना पूरी हो। भगवतीने कहा कि, तथास्तु। इसी मंत्रसे मनुने जगत्की रचना की।

दशवें स्कंधके नववें तथा दशवें अध्यायमें देखो कि, सब मनु श्रीभगवतजी की पूजा करते रहे और देवीसे वरदान पाकर सांसारिककांक्षाओंको प्राप्त करते रहे यही मानवी सृष्टिके आदि प्रवर्तक हैं।

राजा इन्द्रकी कथा।

समस्त देवताओंका राजा इन्द्र है। यह बडा ज्ञानी है। समस्त देवता उसकी आज्ञामें रहते हुए सेवा करते हैं। यह इन्द्र कहता है कि, मैं समस्त संसारका सृजन करता हूँ, मुझसे ही उत्पत्ति स्थिति और मृत्यु सब कुछ है। सुतरां ऋग्वेदमें सकलो-पनिषद्में लिखा है कि, यद्धात्थ नामक एक ऋषिको राजा इन्द्र वैकुण्ठमें उठा ले गया। तब उस ऋषिने पूछा कि, तू कौन है? तब इन्द्रने उत्तर दिया कि, तू जप तप

देवताओंके प्रसन्न करनेको किया करता है । वे तो कुछ भी नहीं हैं, यदि उनमें कुछभी सामर्थ्य होती तो तुझको वे मेरे हाथसे छुडा लेते । (१) जो कर्मोंका फल देता है सो मैं हूँ, मेरे गुण संसारको पालनेवाले हैं । ब्रह्माके चारों मुँहसे यह तात्पर्य समझो कि, मेरे मुँह चारों ओर हैं । निदान तुझको चाहिये कि, किसी ओर ध्यान न कर सब मरनेवाले और मैं अमर हूँ, सबोंकी स्थिति दूसरोंके द्वारा है । मैं अपनेहीसे स्थिर हूँ, यज्ञका फलभी मैं हूँ, वह दूध जो यज्ञको शुद्ध करता है मैं हूँ । (२) वह अग्नि जो यज्ञके द्रव्योंको जलाती है मैं हूँ, समस्त संसारमें मैं हूँ, सबसे पृथक मैं हूँ, वर्नर जो सर्पस्वरूप है, पर्वतोंमें रहता है शैतान कहलाता है, सबको भयभीत करता तथा बहकाता है उसका मारनेवाला भी मैं ही हूँ । (३) तुझे उचित है कि, जैसा मेरे जाननेका धर्म है वैसा मुझे पहचान कि, मैं अद्वितीय और एक हूँ, मायाके कारण मेरी भिन्न भिन्न मूर्तियाँ दिखलाई देती हैं । (४) मैं निर्भय हूँ, सबके हृदयमें बैठकर जो चाहता हूँ करता हूँ ।(५) कोई मेरे यथार्थको नहीं जानता, मैं पृथ्वीमें हूँ आकाशमें हूँ और सबके प्रतिपालनका कारण हूँ, कर्म और यज्ञका करानेवाला मैं हूँ और सृष्टिको उत्पन्न करनेवाला मैं हूँ, समस्त सृष्टिका पिता मैं हूँ, जो ओसकी बूंदें गिरती हैं मैं हूँ, वेद तथा वेदका जानने वाला मैं हूँ । (६) वह अग्नि जो समुद्रमें है मैं हूँ, सूर्य जो बारहों मास यात्रा करता रहता है, वह और चन्द्र भी मैं हूँ । (७) जो कुछ देखने सुनने और बोलनेमें और ध्यान तथा सिद्धान्तमें आता है, अथवा इससे पृथक् है वो मैं हूँ, (८) मुझे अपने मनके गृहमें ढूंढे तो तू भी निर्भय हो जावेगा मैं पाँच और दश और सहस्र प्रकारकी मूर्ति रखता हूँ, जो मुझे समझता है वो मुझसा होजाता है । (९) जो झूठ जानता है, झूठ बोलता है और पाप करता है वो यद्यपि वह सहस्र यज्ञ और जीवनपर्यन्त वंदना करे, अन्न जल शयन इत्यादि सभी त्याग दे, दान पुण्य भी करता रहे, तो भी वह मेरे समीप आने नहीं पाता है । (१०) मैं सबको खाता हूँ, मुझको कोई नहीं खा सकता है । (११) तूने जो वंदना किया और तात्पर्य मुझसे रक्खा, इस कारण मैं तुझको उठा लाया । अब जो मैं हूँ वही तू है । इसमें कोई संदेह न कर । पूर्वकालमें तू अज्ञानी था इस कारण मुझसे पृथक् था, अब तू ज्ञानी है और मुझसा होगया । समस्त संसारका रचयिता तथा पालन कर्ता मेरे गण हैं और भी कितनी ही जगह इन्द्रके ऐसे वाक्य आते हैं–'मैं ब्रह्म हूं' इस भावसे सत्यपुरुषको याद करता हुआही अपने कार्य्यमें रहता है ।

बृहस्पति और शुक्र ।

देवोंके गुरु बृहस्पति तथा असुरोंके गुरु शुक्र महाराज हैं । वाणीको

बृहती कहते हैं । उसके स्वामीको बृहस्पति कहते हैं । इस तरह यह स्वसंवेदके प्रगट करनेवाले सत्य पुरुषका नाम होता है । देवोंको देवगुर स्वसंवेद सुनाते रहते हैं । इस कारण ये भी उसी नामसे बोले जाते हैं । वेद और पुराणोंमें इनके अनेक तरहके आख्यान मिलते हैं । ताराके विषयको लेकर ये विशेष प्रसिद्ध हैं । कहीं २ तारा इनकी स्त्री तथा कहीं उसी प्रकरणमें तारा करके ब्रह्म विद्याका स्मरण किया है । शुक्र तेजको कहते हैं । इससे परमात्माका ग्रहण होता है ये अपने तेज तपस्या तथा दिव्य बलसे दैत्योंको तेजस्वी बनाये रहते हैं । इस कारण ये शुक्र कहलाते हैं ये दोनों सत्यपुरुषके नामोंसे बोले जाते हैं, यदि इनके सूक्ष्म जीवन पर विचार किया जाय तो ये गुरुपनेकी दशामें भी सत्य सच्चिदानन्द सत्य पुरुषके अत्यन्त समीपी प्रतीत होते हैं ।

नारद।

जहां सच्चिदानन्द भगवानके अनन्य भक्तोंका प्रसंग आ उपस्थित होता है वहां नारदजीकी खडी चोटीकी मूर्ति आ उपस्थित होती है । वेद पुराण कोई भी इनसे बाकी नहीं है । सब जगह इनका कुछ न कुछ प्रकरण अवश्य मिलता है कहीं कहीं तो यह भी लिखा मिलता है कि, यह सत्य पुरुषका मनही है । ज्ञाने-च्छुओंको ज्ञान, भक्तिके प्यासोंको भक्ति एवम् लड़ाईके प्यासोंको घोर समर, दिलाना इनका कार्य्य रहा है । भक्ति से सब साधनोंके उपदेश इन्होंने अपने शरीर पर घटाकर दिये हैं । यहां तक बता दिया कि, सब कुछ जीत कर भी जीतके अभिमानको जबतक नहीं जीता तब तक कुछ भी नहीं है । नारदके मोहके प्रकरण सब इसी बातके उदाहरण हैं । ये सत्य पुरुषके समीपी तथा स्वसंवेदके प्राकट्य करनेवालोंमें एक हैं । शब्दोंसे भगवान्‌को रिझाने और स्मरण करने का कार्य्य उन्हींसे प्रारंभ हुआ है । नारदीय शिक्षा तथा स्मृति एवम् भक्तिसूत्र आदि इन्हींके बनाए हुए भक्तिपथके परिचायक हैं । कबीरदासजीने भी इन्हें सिद्ध पुरुषोंमें मानकर स्मरण किया है ।

सन्तो मते मात जनरंगी ।
पीवत प्याला प्रेम सुधारस, मतवारे सतसंगी ॥ १ ॥
अर्ध ऊर्ध्व लै भाठी रोपी, ब्रह्म अगिनि उदगारी ।
मून्दे मदन कर्म कटि कसयल, सन्तत चुवे अभारी ॥ २ ॥

सच्चिदानन्द रामके सच्चे उपासक जिनके गुरु हैं ऐसे अथवा सुरति कमलपर बैठकर जो रकार बीजका उच्चारण करते हैं उन सिद्ध पुरुषोंके मुखसे वहाँ सुननेवाले पूरे रंगे पुरुष सन्त पुरुषोंके सिद्धान्तोंमें मस्त रहते हैं । क्योंकि,

सतसंगी पुरुष रामचन्द्रजीकी प्रेमलक्षणा पराभक्तिरूप अमृतके प्यालेको पीते हैं और उसीके नशामें संसारको भूले हुए ध्येयके रूपमें निर्विकल्प रहते आते हैं। और प्रेम मदिरा कैसे तैयार की जाती है ! इस पर कबीर साहिब कहते हैं कि जैसे शराब खींचनेके लिये ऊपर नीचे दो हन्डे नीचे ऊपर रखकर नली लगाकर खींच लेते हैं, इसी तरह प्रेम मदिरा खींचनेके लिये, ऊपर और नीचेके लोकोंके सारासारका विवेक कि, इनमें सार क्या तथा असार क्या है ! इसे लेकर भाठी-भट्ठी यानी लौरूपी भाठी रोप दी और ब्रह्मके स्वरूपके ध्यानरूपी अग्नि जला दी। मदन-महुआ और कामको कहते हैं जैसे-उन दोनोंमें महुआ भरा जाता है, उसी तरह कामका निरोध करनेपर कर्मरूपी मैलके निकलजाने पर सामनेही बुद्धिरूपपात्रमें निरन्तर चुवाने लगी।

गोरख दत्त वशिष्ठ व्यास कवि, नारद शुक मुनि जोरी।
सभा बैठि शंभू सनकादिक, तहँ फिरि अधर कटोरी ॥ ३ ॥
अम्बरीष औ याज्ञ जनक जड़, शेष सहस मुख पाना।
कहलों गिनो अनन्तकोटि लै, अमहल महल देवाना ॥ ४ ॥

इस प्रेम मंदिराको गोरख योगी, दत्तात्रेय, वशिष्ठ, व्यासदेव, शुक्राचार्य्य और शुक मुनिने इकट्ठा किया। यानी ये सब प्रेमरूपा पराभक्तिके ही उपासक थे। एवम् वही इन्होंने पूर्वोक्त भट्ठीपर खींची थी। जिस सभामें शंभु और सनकादिक बैठते हैं वहाँ वो प्रेम मदिराकी भरी कटोरी अपर-फिरती रही यानी उसे ये हाथों हाथ पीगये इतना भी सीकीको अवकाश नहीं मिला कि, उसको जमीनपर टेक तो लेता। अथवा जो रस मन वाणीमें न आये पान करते ही सब छक जायें वो रस इन्होंने पिया। अम्बरीष, याज्ञवल्य और जडभरत इन्होंने उसे पिया तथा शेषनाग हजार मुखसे पीगये। उस प्रेम मदिराके पीनेवाले अनन्त कोटि हैं जो सत्य पुरुषके सत्यलोकमें भी प्रेममदिरा पीकर अप्राकृत महलोंमें दीवाने बने बैठे हैं। अथवा निर्गुण और सगुण दोनोंसे विलक्षण केवल भक्तोंके लिये ही सब कुछ बने हुए हैं। प्रेम मदिराके दीवाने भक्त उसी सच्चिदानन्दमें निमग्न रहते आते हैं।

ध्रुव प्रह्लाद विभीषण माते, माती शिवकी नारी।
सगुण ब्रह्म माते वृन्दावन, अजहुँ न छूटि खुमारी ॥ ५ ॥
सुर नर मुनि जेते पीर ओलिया, जिनरे पिया तिनजाना।
कहें कबीर गूंगे को शक्कर, क्योंकरि करे बखाना ॥ ६ ॥

इस प्रेमरूपी मदिराको पीकर ध्रुव प्रह्लाद और विभीषण तथा पार्वती

मतवाले हो गये । इस पराभक्तिरूपा प्रेम मदिराका नशा यहाँतक बढा कि, गोपियोंकी पी हुई प्रेममदिराके वश हो सगुण ब्रह्म भगवान् कृष्ण दीवानी गोपियोंके पीछे आप भी दीवाने बन कर छः मासकी रात की । उसका नशा अब भी नहीं गया है । वृन्दावनकी रास कुंजमें अब भी गोपियोंके साथ नाचना पडता है तथा वहाँ सामगानके साथ अपने स्वरूपको याद करते कराते रहते हैं । सुर नर मुनि पीर और ओलिया जिन्होंने पिया है उनको पता है क्योंकि, वो आनन्द-वाणीसे तो कहाही नहीं जाता । इसी कारण कबीरदासजी कहते हैं कि, गूंगा यदि सक्कर खाले तो वो उसका स्वाद कैसे बता सकता है कि, ऐसा स्वाद है । इन इन्द्रियोंमें वो बल नहीं जो उस आनन्दका अनुभव भी बखान कर सकें । ये हैं कबीर साहिबके अक्षर कि, वे गोरखनाथ, दत्तात्रेय, वशिष्ठ, व्यासदेव, शुक्राचार्य्य, नारद, शुकदेव, शिव, सनकादिक, अम्बरीष, याज्ञवल्क्य, जनक, जड़भरत, शेष, ध्रुव, प्रह्लाद, विभीषण, पार्वती और गोपियाँ ये सब सब सच्चिदानन्द सत्य पुरुषके परम भक्त हुए हैं । यहाँतक कि, कबीर साहिब भी इनका प्रेमके साथ स्मरण करते हैं इन्हें उस स्वादका लेनेवाला बताते हैं जो कि, वाणीसे न कहा जा सके । कबीरके प्रकाशमें ये भी स्मार्य्य रूपसे आगये हैं अतः इनकी भक्तिसे सनी जीवनीकाही उल्लेख होना चाहिये जैसी कि, इनमें कबीर साहिबकी श्रद्धा है ।

वसिष्ठजी ।

जिनका स्मरण कबीर साहिबने श्रद्धाके साथ किया है उनमें वसिष्ठजी भी आ गये हैं । आपने परा भक्तिरूप प्रेममदिरामें मस्त होकर ही केवल रामके दर्शनोंके लिये ही पौरोहित्य स्वीकार किया था । आपका लिखा योगवासिष्ठ, मुक्तिपथका अपूर्व प्रदर्शक है । जीवन्मुक्तिकी शिक्षा देनेके लिये तो वो सूर्य्यसे भी बढकर है । इनमें नामकी उपासनामें भी वो बल है कि, भगवान् राम उसके अहंग्रहके उपासकको भी अपना गुरु मानने लग जाते हैं। अभी कुछ दिन हुए अयोध्याके वसिष्ठजीके चरणामृतके मिले बिना सत्य पुरुष रोने लग जाया करते थे । जिस दिन तकलीफ होती थी तो सीताजी भी आकर कहती थीं कि, बाबा ! आज मेरा कलेवा नहीं रखा गया, यह है वसिष्ठजीका माहात्म्य । आज इस कराल कलिकालमें भी अपने को वसिष्ठ माननेवालोंको सीताजी बाबा कहके अभिवादन करती हैं । इनकी अनेकों कथाएँ पुराणोंमें लिखी हुई हैं । यदि समन्वयके साथ विचारी जायँ तो आनन्दका सामान मिलेगा किन्तु जिसकी आखोंमें बही छाई हुई हैं उनका तो कहनाही क्या है ?

गौतम ऋषि ।

आपभी ज्ञानके अगाध भण्डार वेदके मंत्रोंके द्रष्टा हैं। अनेकों ऐसे शास्त्रोंके प्रवर्तक हैं, जिनसे मनुष्योंका कल्याण हो। अहल्या आपकी ही पत्नी थी, जिसे कि, भगवान् रामने पत्थरसे मनुष्य कर दिया था। आपके बहुतसे कार्य्य आपकी प्रसिद्धिके हैं पर यह काम सबसे अधिक है कि, आपकी भक्तिके वश ही भगवान् रामने आपकी शिला बन कर पड़ी हुई स्त्रीमें चरण लगाकर उसे फिर अहिल्याही बना दिया। आपकी भक्तिकी कथा सदा भूमण्डलको पवित्र करती रहेगी।

कपिल मुनि ।

ये सांख्यशास्त्रके आदि प्रवर्तक हैं। आपने अज्ञानी पुरुषोंको आत्मतत्त्व बतानेके लिये कर्दमऋषिसे देवहूतिमें अवतार लिया था। इन्होंने तत्त्वोंका निर्णय माताको सुनाया था कि, संसारका कल्याण हो। इनका पूरा उपदेश श्रीमद्भागवतके तीसरे स्कन्धमें मिलता है। ये जीव ईश्वर और प्रकृति इन तीन पदार्थोंको मानते हैं। सांख्यशास्त्रका कपिलसूत्र इन्हींका बनाया हुआ है। सांख्यकारिकाके निर्माता ईश्वर कृष्णपर आके इनके शास्त्रके दो भेद हो गये। यानी उसके इनके शास्त्रको निरीश्वरवादपर लगाया, केवल मुक्त पुरुषोंकोही ईश्वर माना। यह एक सत्य पुरुषका अवतार है जो लोगोंकी ज्ञान पिपासाको शान्त एवं सफलीभूत करनेके लिये आपका अवतार हुआ था। आप ज्ञानियोंकी अवस्था दिखानेके लिये सदा योग समाधिमें ही रहे आते हैं।

दत्तात्रेय।

ये भी प्रेम मदिराके दीवानोंमें गिने गये हैं। ये अत्रिमुनिके पुत्र तथा दुर्वासाके भाई ये अत्रिमुनि ब्रह्माजीकी आज्ञा पाकर सौवर्षतक कुलाद्रि पर पवनाहारी होकर एक पैरसे खडे होकर तप करते रहे। जब इनके तपसे तीनों लोक विचिलित हो उठे उस समय तीनों देव ऋषिजी महाराजके पास आ उपस्थित हुए। अत्रिने वर माँग लिया कि, आप मेरे घर जन्म लें तथा तीनों देवोंने भी इस बालको स्वीकार कर लिया। पीछे विष्णुके अंशसे दत्तात्रेय, शिवके अंशसे दुर्वासा तथा ब्रह्माके अंशसे सोमकी उत्पत्ति हुई। ये परमहंसपथक प्रवर्तक थे। भगवानके भरोसे रहा करते थे लोगोंको दिखाते थे कि, प्रेम मदिराके दीवाने कैसे रहा करते हैं। एक बार ये सह्यसुता कावेरीके किनारेके सानुपर पडे हुए प्रह्लादको मिले। उस समय इन्हे कोई नहीं जान सकता था। कौनसे भी वर्ण आश्रम, आकृति और चिह्नोंसे नहीं पहिचान सकता था। प्रह्लादने चरणोंमें पडकर पूछा कि, आप उद्यम तो कुछ भी नहीं करते परन्तु शरीर इतना

मोटा है जैसे कि, भोगी धनियोंका हो, क्योंकि, बिना भोगके शरीर इतना मोटा कैसे रह सकता है ? आप तो शरीरके लिये भी कोई उद्योग नहीं करते । प्रह्लादजीके वचन सुनकर दत्तात्रेयजीने उत्तर दिया कि, भगवानकी कृपासे अनेक जन्मोंके पीछे मोक्षका द्वार यह मनुष्य देह मिला है । सुख पानके लिये घर गृहस्थ किया करते हैं परन्तु सुखकी जगह दुख देखकर यहाँ एकान्तमें आ बैठा हूँ । आत्मप्रकाशका घातक तथा अवास्तविक समझ भोग तथा उद्यमका त्याग करके प्रारब्धपरही सन्तोष कर लेता हूँ । सदा स्वरूपमें स्थिर रहकर सबको भुलाये रहता हूँ । मुझे मौहरकी मक्खी और अजगरकी चर्य्या उत्तम लगी । उसी तरह उस प्रेम मदिरासे परितृप्त हुअ सदा यहीं रहा करता हूँ । इसके सिवा और भी लोकोपकारिणी बात हुई जिनपर आरूढ होकर मनुष्य उत्तम लोकोंको पा सकता है । वे सब पुराण ग्रन्थोंमें विस्तारके साथ लिखी हुई हैं । प्रेम मदिराके दीवानोंका प्रकरण लेकर यहाँ थोडासा लिख दिया है ।

सनत्कुमार

ये परम भागवतोंमें हैं । इन्होंने निर्द्वन्द रहनेके लिये सदा बाल्यावस्था ही स्वीकार की है,ये किसीभी लोकमें आ जा सकते हैं, इनकी गति कहीं भी रुकी हुई नहीं है । हैं ये छोटेसेकी तरह रहनेवालेपर इनका ज्ञान यहाँतक बढा हुआ है कि, नारदजीको भी इन्होंने उपदेश देकर सत्य पुरुषकी भक्तिमें लगाया था । ये सदा उस सुखका अनुभव करते हैं जिसकी कि, एक मात्रामें सारा संसार तृप्त रहता है । इनके जीवनकी अनेकों घटनाएँ उपनिषद् और पुराणोंमें भरी पडी हैं । जिन्हें इच्छा हो वो उठाकर देखलें, ये भी परा भक्ति, रूपा प्रेम मदिराको कबीर साहिबके कथनानुसार निकालकर पिये हुए मस्त दीवाने हैं ।

भक्तबालक ध्रुव ।

विष्णुपुराणमें ध्रुवजीका वृत्तान्त इस प्रकार लिखा है कि, ध्रुवजी राजा उत्तानपाद चक्रवर्तीके पुत्र थे । जब ध्रुवजीका वय पाँच वर्षका था उस समय अपने पिताके गोदमें सिंहासनपर जा बैठे । उस समय ध्रुवजीकी सौतेली माता राजाके निकट बैठी थी । उसने ध्रुवजीको एक ऐसा थप्पड़ मारा कि, आप पृथ्वीपर गिर पडे और कहा कि, तू सिंहासनारूढ होने योग्य नहीं । यदि तेरे भाग्यमें राज्य अथवा सिंहासन होता तो तू मेरे गर्भसे उत्पन्न होता । तब ध्रुवजी रोते २ अपनी माताके समीप गए और अपनी माताके व्यवहारका विवरण किया। तब ध्रुवकी माताने अपने पुत्रको गोदमें लेलिया और मुख चूम तथा प्यार करके कहने लगी कि, ए पुत्र ! इस संसारमें तेरा कोई नहीं । एक प्यारे परमेश्वरके अतिरिक्त तेरा कौन हैं ? तू उसीकी भक्ति कर । तब माताकी शिक्षासे ध्रुवजी

तपस्याके निमित्त वनको चले। राजा उत्तानपादने सुना कि, ध्रुव वनको जाता है, तब लोगोंको भेजा कि, ध्रुवको समझाओ, परन्तु ध्रुवने किसीका कहना न माना और वनको सिधारे, वहाँ उनको ऋषियोंका उपदेश मिला, एक अँगूठे पर अपने शरीरका समस्त बोझ देकर खडा हो गया। छः महीने पर्यन्त बराबर खडा रहा, सब अन्न जल छोड दिया, केवल वायुही उसका भोजन था। इस अवसरमें राजा इन्द्रको अत्यन्त भय उत्पन्न हुवा कि, ध्रुव ऐसी कठिन तपस्या कर रहा है ? मेरा राज्य न छीनले। ध्रुवजीको अनेक प्रकारके त्रास दिखलाने लगा, जिससे तपस्या छोडकर भाग जावे, परन्तु ध्रुवजी तनिक भी नहीं भयभीत हुए। व्याघ्र सर्प अग्नि और राक्षस इत्यादि पशु जो उन्होंने देखे सबमें विष्णुको जाना दूसरा कुछ न जाना, तब विष्णुकी कृपा हुई नील वर्ण घनश्याम चतुर्भुज शंख चक्र गदा पद्म इत्यादि लिए, गरुडपर सवार हो ध्रुवजीके सामने आकर कहा कि, माँग क्या चाहता है ? ध्रुवजीने कहा कि, ए महाराज ! अटल पदकी श्रेणी दीजिये, जहाँसे मैं कभी न गिरूँ। विष्णुने आज्ञा देदी कि, अभी तो तू राज्य कर फिर शरीर छोडकर अटल पद पावेगा। जबलों पृथ्वी तथा आकाश है तबलों तू अटल रहेगा। सूर्य, चन्द्र, नक्षत्रादि सब तेरे चारों ओर फिरा करेंगे। फिर विष्णुने कहा कि और जो कुछ मांगेगा मैं तुझको दूंगा। तब ध्रुवने कहा कि, मुझे आत्मज्ञान प्रदान करो जिसके बलसे मैं यह जान सकूंकि, मैं क्या हूँ। तब विष्णुने कहा कि, ए ध्रुव ! यदि मैं तुझको इस प्रश्नका उत्तर देता हूँ तो मैं और अटल पद तीनों मिथ्या ठहरते हैं। इस कारण तुमको इस प्रश्नका उत्तर सन्त देवेंगे। इतना कहकर विष्णु तो चले गए। उसके उपरान्त तीन सन्त ध्रुवजीके समीप आए; वामदेव, पराशर और दत्तजी। तब दत्तजीने कहा कि, ए ध्रुवजी ! तू अटल पदसे पृथक् है। तूने अटल पद क्यों माँग लिया ? ए मूर्ख ! तू सोच समझ कि, जब तू नहीं रहेगा तब अटल कहाँ रहेगा। आत्माको तो मृत्यु नहीं है। शरीर तो जैसे नवीन कपडा पहना और प्राचीन छोड दिया, इसी तरह है। तूने अपनेको अटल पदके बन्धनमें क्यों डाल दिया, जब उन श्रेष्ठपुरुषोंकी शिक्षासे ध्रुवको ज्ञान हुआ और अटल पदको मिथ्या जान लिया, तब पछताया। अटल पदके बखेडेसे मनको हटाकर सदा पराभक्तिमें लीन रहने लगा, इसकी दिव्यचर्य्या लोगोंको भक्तिका पाठ सिखानेवाली है। अब आप अटल पदपर विराजे हुए भी प्रेम मदिरामें मस्त रहा करते हैं। यहाँ तक कि, आपकी दीवानगीके गुण स्वयम् कबीर साहिबने भी गाये हैं।

भक्त प्रह्लाद ।

विष्णुपुराणमें लिखा है तथा कबीर साहबका भी कथन है कि, जब प्रह्लादजीका वय सात वर्षका हुवा तब प्रह्लादका पिता जो कि, हिरण्यकशिपु था। वह बडा वेदान्ती था और कहता था कि, मैं स्वयम् परमेश्वर हूं। दूसरा कौन है। सबसे अपनी पूजन करवाता था। प्रह्लाद उसका पुत्र बडा भक्त था। राम २ कहा करता था, कबीर साहबका वचन है कि, जब यह प्रह्लाद अपनी माताके गर्भमें था, तब नारदजीने उसकी माताके गर्भमें जाकर उसको रामनामकी दीक्षा दी थी। भक्ति सिखलायी थी।

जिस समय यह प्रह्लाद अपनी माताके गर्भमें आया तब राजा इन्द्रको अत्यन्त भय उत्पन्न हुवा। कारण यह कि, इन्द्रने पूर्वही सुन रक्खा था जो हिरण्यकशिपुका पुत्र उत्पन्न होगा वह इन्द्रासनपर बैठकर राज्य करेगा। इस भयसे राजा इन्द्रने यह युक्ति की कि, जब प्रह्लाद गर्भमें आया तब वह प्रह्लादकी माताको चुराकर निज लोकमें ले गया। चाहा कि, गर्भ गिराकर बच्चाका वध करें। तब नारदजीने इन्द्रको समझाकर कहा कि, तुम ऐसा कार्य कदापि न करना इस स्त्रीके गर्भसे भक्त उत्पन्न होगा, वह सब सुखोंका देनेवाला होगा। तब नादरजीके कहनेसे इन्द्रने मान लिया। वह स्त्री पुनः अपने गृहमें आई। उसके गर्भसे प्रह्लाद उत्पन्न हुआ। सातवर्षके वयमें पिताने प्रह्लादको पढ़नेके लिए बैठाया। तब आप कुछ न पढ़ते थे केवल राम राम कहा करते थे। स्वयम् तो प्रह्लाद राम राम कहतेही थे पर समस्त पाठशालाके लड़कोंको भी सिखला दिया जिससे पाठशालाके समस्त छात्र राम राम कहते हुए प्रेममें मग्न होगए। सभीने पढ़ना छोड़ दिया, पढ़नेकी ओरसे ध्यान छोड़ दिया। पण्डित राजा हिरण्यकशिपुके समीप दोहाई देते हुए कहने लगे कि, ऐ राजा ? प्रह्लादने पाठशालाके समस्त बालकोंको बहका दिया। न स्वयं पढ़ता है और न दूसरोंको पढ़ने देता है समस्त बालक राम राम कहनेके आनन्दमें मग्न हो रहे हैं। यह बात सुनकर हिरण्यकशिपुने प्रह्लादको बुलाकर समझाया कि, ए पुत्र ! तू पढ़, कारण यह कि, तू ही मेरे सिंहासनपर आरूढ होनेवाला है। तब प्रह्लादजीने उत्तर दिया कि, ए पिता ! मैं न पढूंगा, न राज्य करूँगा, मैं तो राम राम कहूँगा, किसी वस्तुकी मुझको इच्छा नहीं है। तब हिरण्यकशिपुको अत्यंत क्रोध आया और कहा कि, मैं शिव हूँ, मेरे अतिरिक्त और दूसरा कौन है, प्रह्लादने तो रामनामके प्रेमका प्याला पीलिया था। पिताकी बात कौन सुने, राम राम कहनेसे न हटते थे। इस कारण पिता तथा पुत्रमें महा विरोध उत्पन्न हुवा, हिरण्यकशिपुने

प्रह्लादको दंड देना आरंभ किया। प्रह्लादको हिरण्यकशिपुने पर्वतपरसे नीचे डाल दिया, हाथी झँकाया, अग्निमें डाल दिया और और अनेक दंड दिए, परन्तु जब प्रह्लादको दंड देता था तब विष्णु प्रह्लादको सामने खड़े दिखाई दे समस्त कठिनाइयोंको रोक लिया करते थे। पर दूसरे किसीको दिखलाई नहीं देते थे। विष्णु प्रह्लादको इङ्गित करते जाते थे कि, भयभीत न होना, सशंकित होनेकी आवश्यकता नहीं है। मैं तेरा रखवाला तेरे सामने खड़ा हूँ। हिरण्यकशिपु प्रह्लादको स्तंभसे बाँधकर वधपर प्रस्तुत हुआ। तब स्तंभ फाड़कर वे नृसिंहजी निकल पड़े। हिरण्यकशिपुका वध किया, प्रह्लादको राज्य दिया। जब प्रह्लादजी-पर कठिनाई आन पडती, तब तो विष्णुका ध्यान करते और "विष्णु विष्णु" पुकारते और जब वह बाधा टलजाती तब वेदशास्त्रानुसार अपने स्वरूपका ध्यान करते। ऐसे विचारोंको देखकर विष्णुने प्रह्लादकी निष्ठा बढानेके लिये कहा कि, ए प्रह्लाद! कठिनाईके समय तो तू मुझे पुकारता है। जब बला टल जाती है तब तू अनुमान करता है कि, समस्त संसार मं ही हूँ मैं ही हूँ समस्त संसार मेराही स्वरूप है। यदि समस्त संसारमें तूही तू है तो आपत्तिकालमें मुझको क्यों पुकारता है। तेरे चित्तकी दुविधा नहीं गई फिर विष्णुने प्रह्लादको सिंहासपर बैठा दिया तथा प्रह्लादके उत्तरको सुनकर परम प्रसन्न हुए। ये भी प्रेम मदिराके दीवाने हैं।

अम्बरीष।

जब भक्तोंकी कथाएँ चलती हैं तो भक्तवर राजर्षि अम्बरीषकी जीवनी भी आखोंके सामने आ खड़ी होती है। ये परम भक्त थे सब कुछ होते हुए भी अपनेको भक्तोंके चरणकी धूलिही समझते थे। यद्यपि ये भक्त गोष्टीसे तो छिपे हुए नहीं थे पर ऐसी घटना घटी कि, ये सर्व साधारणकी दृष्टिमें आगये। दुर्वासा ऋषि बड़े तपस्वी तथा अत्यंत क्रोधी थे। एक बार राजा अम्बरीषके गृह आप पधारे और वे राजा बड़े भक्त थेही और ठाकुर पूजा करतेही थे। राजाने ठाकुरका चरणामृत लिया तब दुर्वासाको अत्यंत क्रोध आया कि, विना मुझे भोजन कराए तूने चरणामृत क्यों लेलिया? मैं तुझको शाप दूंगा। तब राजा हाथ बाँधकर खड़ा हो बोला कि, महाराज! मेरा अपराध क्षमा करो। दुर्वासा ऋषि अत्यंत क्रोधमें थे। जब उन्होंने उसे मारनेके लिये कृत्या उत्पन्न की तो उस समय विष्णुका चक्र सुदर्शन दुर्वासाके ऊपर छूटा कि, भस्म करदो। तब दुर्वासा भागा। जहाँ जाते थे वहाँ चक्र सुदर्शन दुर्वासाके पीछे जाते। जब दुर्वासाने देखा कि, यह चक्र सुदर्शन मुझको न छोडेगा तब विष्णुके शरण गए कि,

मुझको चक्र सुदर्शनसे बचाओ। तब विष्णुने कहा कि, ए दुर्वासा! तुम राजा अम्बरीषके शरणमें जाओ। तुमने भक्तसे क्यों वैर किया तब दुर्वासा भागकर राजाके शरणमें आए, राजासे अपना अपराध क्षमा करवाया। राजाने चक्र सुदर्शनकी बड़ी स्तुति की। चक्र सुदर्शन शान्त हुवा। दुर्वासाके प्राण बचे। कबीर साहिबने इन्हें भी परा भक्तिरूपी प्रेम मदिराका दीवाना मानकर अत्यन्त आदरके साथ स्मरण किया है।

भगवान् शुकदेव।

प्रेम मदिराके दीवानोंमें व्यासपुत्र शुकदेवजीका नाम बड़े आदरके साथ लिया जाया करता है। ऋषियोंमें वामदेव और शुक सत्यलोकवासी संभाले जाते हैं। देवीभागवतमें इन्हें अयोनिज तथा अरणिसे उत्पन्न हुआ कहा है। ये किस तरह प्रकट हुए इस प्रकरणपर विचार किया जाता है। जब व्यासजी सरस्वती नदीके किनारे गए देखो देवीभागवत १–स्कंध, ४–अध्यायमें इस प्रकार लिखा है कि, इस नदीके तटपर बैठकर तपस्या करने लगे उस समय आपके मनमें किसी प्रकारकी कामना नहीं थी। इस नदीतटपर गुलबंग नामक एक पक्षी रहता था, इस गुलबंगकी स्त्री गर्भिणी थी, अल्पकालके उपरान्त उसको बच्चा उत्पन्न हुवा। बच्चा जन्मनेसे गुलबंग अतिहर्षित हुवा, बारम्बार बच्चेको चाटने और प्यार करने लगा। इस पक्षीको देखकर व्यासजीके मनमें यह कामना उत्पन्न हुई कि, यदि मेरा पुत्र भी उत्पन्न होता तो कैसा अच्छा होता, कारण, यह कि, विना पुत्रके गति नहीं। इस समय व्यासजीके बुढ़ापेका समय था, समस्त पुराण और वेद महाभारतादि बनाचुके थे। तब इस नदीतटपर पुत्रकामनासे तपस्या करने लगे। तब समस्त देवतागण प्रसन्न हो, व्यासजीके सामने आए। तब नारदजीने व्याससे कहा कि ए व्यास! सब देवता भगवतीके पूजनसे अपने मनोरथको पहुँचते हैं इस कारण तुम देवीका पूजन करो। तब नारदके उपदेशानुसार वे भगवतीकी वंदनामें लगे।

फिर देखो दशवें अध्यायमें लिखा है कि, व्यासजीने पर्वतकी चोटीपर जाकर समाधि लगादी। जब आधी तपस्या होचुकी तब राजा इन्द्रको भय उत्पन्न हुवा कि, व्यास जो कठिन तपस्या कर रहा है कहीं मेरा सिंहासन न छीनले, और शिवजीसे जाकर कहा तब शिवजीने समझाया कि, तुम भय न करो। व्यासजी वरदान लेकर अपने स्थानपर आये वहाँ अग्निहोत्रके लिये अरणि मथन करते सोचने लगे कि जैसे नीचेकी अरणिसे मन्थाके संयोगसे मथनेसे अग्नि प्रकट हो जाता है, इसी तरह मुझे भी पुत्र मिलजाय। इसके साथही गृहस्थाश्रम

को तुच्छसमझनेवाली ज्ञानधारा भी बहती जाती थी। इतनेहीमें वहाँ घृताची नामकी अप्सरा आ उपस्थित हुई पर उसे उन्होंने अपने लिये उचित न समझा अतः उसके शरीरको न छुआ तथा न मुग्धदृष्टिसे देखाही ऋषिकी स्थिर वृत्तिसे तपस्वियोंके ठगनेवाली वो लचीली अप्सरा तोती बनकर उड़ती बनी। अरणीके प्रति जो अग्नि जैसे पुत्रकी भावना हुई थी वो इतनी प्रबल हो उठी कि, उन्हें इसका भान भी न हुआ उनका तेज अरणिमें प्रविष्ट हो गया, मथते मथते व्यास जैसी आकृतिके शुकदेव उसीसे प्रकट हो गये। भगवान् व्यास देवके इन्हें गृहस्थके उपदेश देनेपर इन्होंने पितासे कह दिया कि, मैं गृहस्थ न होऊँगा न कर्मकाण्ड ही पढूंगा। मुझे योग, भक्तियोग, ज्ञानयोग, तथा और भी प्रारब्धके भंजक शास्त्रोंको पढाइये, दूसरे विषयोंको मैं कदापि न पढूंगा। पुत्रके ऐसे भावोंको देखकर व्यासदेवजीने उन्हें वेही शास्त्र पढाये तथा परमहंसोंकी संहिता श्रीमद्भागवत भी पढा दी। अन्तमें जीवन्मुक्तिका उपदेश लेनेके लिये जनकजीके पास भेजा कि, वहाँ इनकी रही सही कमी पूरी हो जाय। ये गृहस्थचर्य्यासे नितान्त उदासीन थे। राजा जनकके समझानेपर जीवन्मुक्तोंकी तरह गृहस्थों में रहे। पीछे सबका त्याग करके संन्यासी हो गये। पीछे महाराज परिक्षित् को उपदेश देनेके लिये हस्तिनापुर पधारे थे। वहाँसे आपने परीक्षित्को मुक्त करनेके लिये भागवत सुनाई थी। आपके तेजके सामने सबका तेज फीका पड जाया करता था। कबीर साहिबने इन्हें अधर कटोरीके दीवानोंमें याद किया है कि, ये अब भी पराभक्तिरूपी प्रेम मदिराको पीकर दीवाने बने फिर रहे हैं।

भगवान् व्यास।

संसारमें ऐसा कोई व्यक्ति न होगा जो भगवान् व्यासदेवको न जानता हो। चाहे कोई हिन्दू हो वा अहिन्दू सबको इसीका अध्यात्मप्रकाश मिल रहा है। इसीके बनाये ब्रह्मसूत्रके भाष्योंका निर्माण करके आज आचार्य कहलाये जा रहे हैं। शुक जैसे पुत्र पानेका सौभाग्य आपको ही मिला था।

उनके अवतार।

सूतजी कहते हैं कि, सातवें मन्वन्तरमें और अट्ठाईसवें युगमें जो मनु उत्पन्न हुवा वह व्यास था और उन्नीसवें युगमें द्रोणी नामक व्यास उत्पन्न होगा और सातवें युगमें अनन्त नामक व्यास होंगे। यह बात सुनकर शौनकजीने सूतजीसे पूछा कि, ए महाराज! व्यासजीके अवतारोंका विवरण सविस्तार रूपसे कहो कि, किस२ युगमें कौन २ अवतार हुए? तब सूतजीने कहा कि, पहले द्वापरमें (१) स्वयम् वेद नामक व्यास जिसको स्वायंभू कहते हैं

उत्पन्न हुए। (२) दूसरे द्वापरमें प्रजापति नाम हुवा। (३) कृष्ण (४) बृहस्पति (५) सिबता (६) सबिता (६) भूत (७) मध्वा (८) वसिष्ठ (९) सारस्वत (१०) धाता (११) भारद्वाज (१२) तृवृष (१३) अन्त-र्यक्ष (१४) धर्म (१५) त्रिपुरारणी (१६) धनञ्जय (१७) मेधातिथि (१८) व्रती (१९) अत्रि (२०) गौतम (२१) उत्तम (२२) बाजश्रवा (२३) त्रोतलवेदव्यास (२४) भार्गव (२५) आग्नेय (२६) मुक्ति (२७) महामति (२८) कृष्णद्वैपायन व्यास।

ये सब वेदव्यास जीवन्मुक्त हैं। पहले भी जीवन्मुक्त थे अब भी जीवन्मुक्त हैं और भविष्यमें जब उत्पन्न होंगे, तब भी श्रद्धेय जीवन्मुक्तिके पदको प्राप्त प्राप्त होंगे। कबीर साहबने इन्हें अपने प्रेम मदिराके दीवानोंमें मानकर वही श्रद्धा प्रकट की है।

जैनके तीर्थंकर।

ऐसेही जैनके चौबीस समस्त तीर्थंकर हैं, पहले तीर्थंकर ऋषभनाथजी थे, इनका विवरण देखनेसे जान पड़ेगा। कबीर साहबका कथन है कि वनमें आग लगी निर्मेही आप जल मरे। येही परमहंसचर्याके प्रवर्तक हैं। जबलों ये तीर्थंकर जीवित रहते हैं तवही आपके दिव्य ज्ञानका निर्णय हो जाता है। जैसे वेदधर्मके केवल ज्ञानियोंकी दशा है वैसेहीवही जैनधर्मके केवल ज्ञानियोंका विवरण है। तनिक भी विभिन्नता नहीं। ये केवल ज्ञानी चाहे जीवन्मुक्त है, नाम मात्रके निमित्त है प्रारब्धसे करते रहते हैं। केवल ज्ञानी कहलाते हैं। यथार्थमें हैं भी। अन्तके तीर्थंकर महावीर हैं महावीरनाथका यह बिवरण है कि, कशाला नामक एक मनुष्यके शापसे आपको छः मासपर्यन्त बराबर रक्त पड़ता रहा, बड़ा कष्ट पाया, पर उन्हें कुछ भी पता न चला क्योंकि शरी-राध्यास नहीं था और व्यवहारसूत्रके चूलकामें लिखा है कि, पाँचवें कालमें मुक्ति नहीं। दूसरे उत्तरार्धसूत्रमें भी यही लिखा है कि, पाँचवें कालमें किसी मनुष्यकी मुक्ति नहीं होगी। इनके उपदेशकी शैली मनोहर है।

चौबीस तीर्थंकरसे लेकर जितने तिरसठ शलाका पुरुष हैं सबके वृत्तान्तकी जाँच करनेसे समस्त विवरण भली प्रकार मालूम हो जावेगा कि, प्रत्येक संप्र-दायके विशिष्ट पुरुषमें कुछ सार अवश्यही होता है। मुक्तिका विचार करते २ एक जगह आपने कह डाला है कि, मुक्तिपथमें किसी संप्रदायका नियम नहीं हैं कि, इसके मुक्त हों इसके न हों किन्तु, यही नियम है कि, चाहें कोई हो "सम-

भावभावितात्मा लभते मोक्षं न सन्देहः" हृदयमें पूरी समता हो, सब बातोंमे समता समाई हुई हो, मोक्ष मिल जायेगा।

योगी गोरखनाथ।

गोरखनाथजी बडे योगी हुए। समस्त योगियोंमें शैव गोरखनाथकी श्रेष्ठता है। गोरखनाथने चौरासी कल्प करके अपने शरीरको वज्र कर लिया। जैसे शिव वैसेही गोरखनाथको जानना चाहिए। इनका कबीरसाहबसे वाद विवाद हुवा था वह वृत्तान्त पढ़नेसे समस्त ए सब विवरण जाना जावेगा। योगक्रियाका जिनको अभिमान हो समझते हों कि, योगक्रिया द्वाराही हमारी मुक्ति होगी, वो उनकी मूर्खता जानली जावेगी कि, योगक्रियामें केवल इतनाही बल है कि, समाधिमें ही मिला देवे। इससे विशेष नहीं। इस कारण योगभी व्यर्थ है। यद्यपि समस्त प्रकार की सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं, सो समस्त सिद्धियाँ अस्थायी तथा जलपरके फूल बूंटे हैं।

भगवाग बुद्ध।

मगध देशका राजा सिद्धोदन था उनकी रानीका नाम माया था। रानीको गर्भ रहा उससे बौद्ध उत्पन्न हुवा। उस बौद्धका नाम शाक्यमुनि रक्खा गया। वह उत्पन्न होनेके समय गर्भके बाहर निकल नहीं सका। माता मरगई तथा पेट फाड़कर बालक निकाला गया ऐसी किंवदन्ती है। जब वह बालक गर्भके बाहर निकला उसी समय खडा हो गया। पृथ्वीपर सात पग चला पुकारकर बोला कि, पृथ्वी तथा आकाशके बीचमें मेरे समान पूजनीय अन्य कोई देवता नहीं है। जब इस बालकका वय सत्रह वर्षका हुवा तो उसके तीन विवाह हुए। एक पुत्र उत्पन्न हुवा। इस शाक्यमुनिको सांसारिक धन तथा राजपाटकी कामना नहीं थी, यह उन्नीस वर्षके वयमें तपस्या करनेके निमित्त चला गया, बारहवर्षके उपरान्त परमेश्वरके दर्शन पाकर अपना धर्म, वेद यानी पूर्व मीमांसा (के) विरुद्ध प्रचलित किया, बडी धूमधामसे यह धर्म प्रचलित हुवा। उसने हिंसाकी बडी निन्दा की। जैन तथा बौद्ध यह दोनों हिंसाके विरुद्ध हैं। जब इस धर्मकी प्रबलता हुई तो तब हिंसा दब गयी। यह बौद्ध विष्णुका अवतार कहलाता है। ये भी सत्य पुरुषका एक बडा अवतार है। इस धर्मके लोग अर्थात् बौद्ध कहते हैं कि, हमारा गुरु अर्थात् शाक्यमुनि आठसहस्र बेर उत्पन्न हुवा मरा, फिर भी अमर है कभी नहीं मरता, केवल आपका चोला बदलता जाता है। अब इस धर्मके लोग भारत वर्षमें नहीं हैं। परन्तु सब धर्मोसे

इसका आधिक्य विशेष है । ब्रह्मा और चीन इत्यादि देशोंमें भरे हैं । योगी तथा संन्यासियोंके समान समाधि लगाते हैं । और बंदनामें डूब जाते हैं ।

शङ्कराचार्य्यजीका वृत्तान्त ।

शंकराचार्यजी ब्राह्मणके घरमें उत्पन्न हुए । लडकपनहीसे आपमें बडप्पन तथा श्रेष्ठताके चिह्न प्रगट थे । पढ लिखकर आप अच्छे पण्डित हुए योग साधन भी किया और अपने योग तथा विद्याबलसे प्रत्येक स्थानपर जाकर विजयी हुए । समासधर्म चलाया, वेदधर्मका भली भाँति प्रचार कराया । जैन तथा बौद्ध दोनोंके अप धर्मोंके भलीप्रकार पददलित किया । वेदधर्म तथा संन्यासी ब्राह्मणोंकी मर्यादा बढाई । राजा अमिरुके मृतशरीरमें अपने योगबलसे घुसकर योग-सिद्धि दिखाते हुए कोकशास्त्र पढा, कोकशास्त्रके पण्डित होकर मण्डनमिश्रकी स्त्रीको परास्त किया । उसके साथ बहुत विवाद हुवा । तब मण्डन और उसकी स्त्री दोनों शंकराचार्यके सेवक बन गए । बदरीनाथकी मूर्तिको गङ्गामेंसे बहिर्गत करके स्थापित कर दिया । मूर्तिपूजाको प्रचलित किया । वेदान्तशास्त्रको भी उज्ज्वल किया । जैसे दत्तजीने वेदान्त, सिखलाया और फिर शिवलिङ्गकी पूजाका प्रचार किया, वही कार्य शंकराचार्यजीने भी प्रचलित रक्खा कि, मूर्ति-पूजा भी होती और 'एकं ब्रह्म द्वितीयं नास्ति' भी कहते । जिसका मन चाहे वह 'एकं ब्रह्म द्वितीयं नास्ति' कहा करे । ये बात उसकी इच्छापर रही । ये लोग विष्णु तथा शिव दोनोंको एक स्वरूप समझकर पूजते हैं । कुछ भी विभिन्नता नहीं जानते । यह शंकराचार्य शिवजीका अवतार है । वेदधर्मके स्थिर करनेके निमित्त हुवा है ।

रामानुजस्वामीका वृत्तान्त ।

रामानुजस्वामी शेषजी के अवतार थे । विष्णुकी आज्ञासे शेषजी अवतार लिया । केशव यज्वा ब्राह्मणके गृह जन्म लेकर वैष्णव धर्म पृथ्वीपर चलाया । वेदधर्म तथा ठाकुरपूजनका भली भाँति प्रचार किया । बडी धूम धामसे आपका धर्म पृथ्वीपर प्रचलित हुवा । भक्तमालमें आपका वृत्तान्त बहुत कुछ लिखा है । इस धर्मके लोग बहुत बचाव रखते हैं । यहाँ लो कि, अपने हाथकी पकाई हुई रोटी खाते हैं । ऐसा कि, किसी दूसरे अयोग्य मनुष्यकी परछाई पर्यन्त पड़ने न पावे । परदेके भीतर रोटी पकाते और खाते हैं । ये लोग शिवको ईश्वर नहीं मानते विष्णुकी मूर्तिका पूजन किया करते हैं । ये और रामानुज-स्वामीकी श्रेष्ठता संसारमें प्रगट है । आपके लाखों शिष्य भारतमें हैं । कबीर साहिबभी इसी परंपरामें आजाते हैं ।

रामानन्द स्वामी ।

रामानुजस्वामीके सम्प्रदायमें रामानन्दस्वामी कबीर साहबके भी गुरु उत्पन्न हुए । रामानन्दस्वामी काशीधाममें रहा करते थे । रुग्णावस्थामें उनके आचार्य्यमें कुछ भेद पड़ गया था । फिर जब आप दक्षिणके आचार्योंमें गए तब उन लोगोंने आपको अपने समूहसे पृथक् कर दिया । तब रामानन्दजीने अपने गुरु राघवानन्दसे पूछा कि, अब क्या करूं ? तब राघवानन्दने कहा कि, तुम आचार्य्योंसे पृथक् हो जाओ । तुम्हारी एक न्यारी सम्प्रदाय चलेगी । इस दिवससे रामानुज और रामानन्दके लोग पृथक् हुए । रामानुज और रामानन्दकी सम्प्रदाय पृथक् हुई । रामानुज सम्प्रदायके आचार्यकी कडाई रामानन्दके सम्प्रदायमें नहीं । इस सम्प्रदायमें प्रत्येक जातिका मनुष्य सरलतापूर्वक मिल जाता है । रामानुजके सम्प्रदायमें जातिका विशेष ध्यान रहता है । इन दोनों सम्प्रदायोंके लोग एकही हैं तथापि उनकी रीति भाँति पृथक् पृथक् हैं ।

तीन सम्प्रदाय ।

इन सम्प्रदायोंके रीतिव्यवहारमें तनिक विभिन्नता है । एक दूसरे से अपनी रीति भाँतिको श्रेष्ठ जानते हैं । विष्णुश्याम माधवाचार्य निम्बार्क रामानुजके लोगोंके सदृश ये सब ठाकुरपूजा करते हैं । इन चारों सम्प्रदायोंके मनुष्य, कुछ २ पृथक् २ ध्यान रखते हैं । सब रामकृष्णकी मूर्तिपूजते हैं । कोई भीतरी पूजा करता है चार प्रकारकी मुक्तिके अभिलाषी हैं । इसका समस्त विवरण ग्रंथ कबीरभानुप्रकाशमें सविस्तार लिखा गया है । इन चारों साम्प्रदायोंकी चाल पूर्णतया सतोगुणी हैं । सतोगुणी चाल और ढङ्ग मुक्तिमार्ग दिखलानेवाले हैं । जबलों मनुष्य सतोगुणकी चलन स्वीकार न करे तबलों उचित स्थानपर्यन्त पहुँच नहीं सकता । इसी कारण कबीर साहबने समस्त धर्म्मोंपर इस धर्म्मको श्रेष्ठ समझा है ।

अध्याय ९ ।

पश्चिमके महापुरुष ।

यद्यपि कबीर मन्शूर में उन्हीं पुरुषोंके प्रसंग आने उचित थे जो कि, कबीरसाहिबकी दिव्य वाणीसे सम्बन्धित हैं, पर पश्चिम देशके महात्माओंका जीवन केवल इसीलिये यहाँ रखा गया है कि, कबीर दर्शनके प्रेमियोंको पश्चिमके महात्मा पुरुषोंके जीवनका भी पता चल जाय कि, पश्चिमके निवासी इन

व्यक्तियोंमें विशेष भाव रखते हैं। तथा इनमेंसे बहुतोंका प्रकरण उनकी वाणीमें आ भी गया है यह भी एक कारण इस प्रसंगके यहाँ रखनेका है।

हज़रत आदम तथा नूह महात्मा ।

हज़रत आदम तथा नूह दोनों श्रेष्ठ महात्मा हुए। आपकी बातें परमेश्वरके साथ हुवा करती थीं। विष्णु प्रत्यक्षमें आपको दर्शन दिया करते तथा आपसे वार्तालाप किया करते थे। कबीर साहबने कहा कि, आदम ब्रह्माका अवतार है। आदमके बाद हज़रत नूह आदमके समान हुए। जिससे समस्त सृष्टिकी उत्पत्ति तथा स्थिति है। सांसारिक वासनाओंमें फँसे हुए तथा पूरे और पक्के दुनियाँदार थे।

हज़रत इबराहीम और इसहाक़ आदि ।

हज़रत नूहके उपरान्त इबराहीम बड़ा धार्मिक हुवा, एक परमेश्वरके माननेमें बड़ा सच्चा था। परमेश्वरपर भरोसा रखखा करता था। ये पश्चिमीय देशोंके भविष्यवक्ता गण प्रायः गृहस्थ थे। स्वच्छ हृदय तथा भले थे अपने आन्तरिक प्रकाशसे बहुतसी बातोंको जान लेते थे। हजरत इबराहीमके साथ परमेश्वर बातें किया करता था वरन् आपके शिष्टाचारको भी ग्रहण किया करता था। इबराहीमका पुत्र इसहाक् भी ऐसाही अपने पिता इबराहीमके सदृश भला आदमी एवं ईश्वरपूजक था, दोनोंके गुण तौरीतमें देखो।

इसहाक्का पुत्र याकूब अपने श्वशुरकी भेड बकरियाँ चराता था। स्त्रीके निमित्त उसने चौदह वर्षपर्यन्त अपने श्वशुरकी सेवा की।

याकूबका दूसरा नाम इसराईल हुवा। परमेश्वरने उसको आशीर्वाद दिया, उसके बारह पुत्र हुए, वही यहूदियोंके बारह सरदार कहलाते हैं। ये सब गृहस्थ और सांसारिक वासनाओंमें सने हुए हैं।

इसराईलकी परिश्रम सेवा पर परमेश्वरने दया की कि, उसके बारह पुत्र, वरन् कनआनके सम्राट् हो गए।

हज़रत दाऊद और सुलेमान ।

हजरत दाऊद बादशाह और नबी था। परमेश्वरके प्रेममें गाता नाचता और रोता था। उसने बादशाहीमें बहुत रक्तपात और काटकूटकिया। दाऊदके गानेमें बडा प्रभाव था, जैसा कि मैंने इतः पूर्व दिखलाया है। दाऊदका पुत्र सुलेमान बादशाह हुवा। इन दोनों महाशयोंकी परमेश्वरसे आपसमें वार्तालाप हुवा करती थी। सुलेमान बादशाहको परमेश्वरने तीनों पदार्थ प्रदान किये। अर्थात् बुद्धिमानी, अनागतवक्तृता और बादशाही। इन दोनों महाशयोंका वृत्तान्त पुराने अहदनामा और मुसलमानी हदीसोंमें देखो।

दाऊद बादशाहकी निन्यानवें स्त्रियाँ थीं। परन्तु उरियाह अपने भृत्यकी स्त्रीको अपने कार्य्यमें लानेके कारण वह विशेषतः बंधनमें पड़ा। परमेश्वर उससे रुष्ट हो गया। परन्तु उसके रोने धोनेके कारण परमेश्वर उसपर दयालु हो गया।

दाऊदका पुत्र सुलेमान जब सिंहासनारूढ हुवा तब उसने आनन्द सम्भोगके अनेक आयोजन किये, उसकी जो सातसौ स्त्रियाँ और तीन सौ वेश्याएँ थीं, उन सबने मिलकर सुलेमानकी बुद्धि भ्रष्ट कर दीं। मूर्तिपूजा करवाई। ये दोनों महाशय सांसारिक शारीरिक विकारोंके वशीभूत हुए इस लोकसे बिदा हुए।

हज़रत मूसा।

हज़रत मूसा का जन्म मिश्रदेशमें हुआ। इबराहीमके घरानेमें मूसा श्रेष्ठ नबी (भविष्यवक्ता) हुवा। उसको फ़िरऊनके बंधनसे इबराहीमकी सन्तानको छुडानेके निमित्त परमेश्वरकी आज्ञा हुई। यह फ़िरऊनकी सेवामें उपस्थित हुवा परमेश्वरकी आज्ञासे अनेक कौतुक दिखलाये। इबरानियोंको फ़िरऊन बादशाहके बंध बंधनसे छुडाकर कनआऊनके वास्तविक देशमें पहुँचा दिया। इसका पूर्णतया विवरण किताब तौरीतकी उत्पत्तिमें लिखा है।

चालीस वर्षके वयमें मूसाने एक मिसरीको इक इबरानीके बदले मार डाला। इस भयसे कि, अब फिरऊन (परमात्मा वागीशाह) मुझको मार डालेगा भयसे वह भागा। चालीस वर्षपर्यन्त महमानियामें अपने श्वशुर पतरूकी भेड बकरियाँ चराता रहा। अस्सी वर्षके वयमें मूसाने अपूर्व तत्त्ववक्ताकी पदवी पाई। परमेश्वरकी आज्ञासे पुनः मिश्र देशको गया। मूसाका वृत्तान्त तौरीत और गुलजार मूसा और अहादीस मुहम्मदियामें इस प्रकार लिखा है कि, जब इबरानियोंका आधिक्य देखा गया तब फ़िरऊन नितान्तही भयभीत हुवा कि, यह सब चढ़ाई करके मेरा राज्य न छीनलें। उनके बालकोंकी हत्या वह करने लगा। जब इबरानियोंकी रोलाईका शब्द आकाशपर्यन्त पहुँचा तब परम दयालु परमेश्वरको दया आई। कुतुबमुहम्मदियामें लिखा है कि, एक दिवस फ़िरऊनने ऐसा स्वप्न देखा कि, शाम देशमें एक ऐसी अग्नि आई है कि, जिसने मेरे मिश्र देशको जलाकर भस्म कर दिया है। यह स्वप्न देखकर वह नितान्तही भयभीत हुवा। बुद्धिमानोंसे पूंछा कि, इस स्वप्नका तात्पर्य कहो? उन लोगोंने कहा कि, इबरानियोंमें एक ऐसा मनुष्य उत्पन्न होगा जो फ़िरऊनके राज्यको

मिटादेगा । इस भयसे फ़िरऊन नितान्तही भयभीत हुवा । इबरानियोंके बच्चोंको मारने लगा । सदैव ज्योतिषियों पण्डितोंसे पूछा करता था कि, वह बालक किस दिवस और किस समय गर्भमें आवेगा । तब उन लोगोंने बतलाया कि, अमुक दिवस रात्रिके समय वह बालक गर्भमें आवेगा । जिस दिन इन लोगोंने बतलाया था उस रात्रिके दिवस फ़िरऊनने आज्ञा दी कि, कोई पुरुष स्त्रीसे संभोग करने न पावे । समस्त इबरानियोंको नगरके बाहर निकाल दिया । बडी चौकसीसे पहारा खडा कर दिया । एक इबरानी जिसके वीर्य्यसे मूसा उत्पन्न होनेवाला था उसका नाम उमरान था । इस उमरानको फ़िरऊनने अपनी निजकी पलँगके समीप अपने शयनागार में खडा कर रक्खा । जब अर्ध निशाका समय हुवा तब एक दूत इस उमरानके निकट उसकी स्त्रीको ले आया, उसने अपनी स्त्रीके साथ संभोग किया । इसके उपरान्त वह दूत उस स्त्रीको उठाकर पुनः उसी स्थानपर उसके गृह रख आया । इस अवसर फ़िरऊन ऐसा घोरनिद्राके वशीभूत हो रहा था कि, उसको तनिक भी सुध न रही कि, वह स्त्री किधरसे आई किधर गई और क्या हुवा ।

जब प्रातःकाल हुआ तब फ़िरऊन पुनः ज्योतिषियों और बुद्धिमानोंसे प्रश्न करने लगा कि, उस बालकका वृत्तान्त कहो ? उन लोगोंने उत्तर दिया कि, वह बालक तो माताके गर्भमें आचुका । मेरी कोई युक्ति नहीं चली । तब दाइयोंको सचेत किया कि, बच्चा उत्पन्न होतेही मार डालो, अन्तमें जब गर्भ-काल समाप्त हुआ तब उमरानकी स्त्रीके गर्भसे एक अत्यंत सुन्दर बालक उत्पन्न हुआ । तब माता पिताने बच्चाके प्रेमसे तीन मासपर्यन्त छिपाकर रक्खा । फिर इनके मनमें इस अत्याचारी बादशाहका भय उत्पन्न हुवा । तब इन्होंने एक सरकण्डेकी टोकरी बनाई उसमें उस बच्चेको रख दिया अपनी पुत्री मरियमसे कहा कि, तू इस टोकरीको बच्चेसहित नीलनदीके तटपर रख आ । तब मरियम गई, उस बालकको नदी तटपर झाऊके वृक्षोंमें रखकर चली आई । मरियम दूर खडी होकर देख रही थी कि, देखिए इस बालकको क्या होता है ? इतनेमें क्या देखा कि, फ़िरऊनकी बेटी अपनी लौंडियोंको साथ लिए स्नानार्थ नदी तटपर आपहुँची । उस बच्चेको उस टोकरीमें देखा उसके मनमें उस बच्चेका प्रेम उपजा और दया आई । उसने कहा कि, यह किसी इबरानीका पुत्र है । अपनी लौंडियोंको आज्ञा दी कि, इस बच्चेको ले चलो । वह अपने गृह ले आई इस बच्चेको अपना मुंहबोला पुत्र मान लिया, इस समस्त घटनाको मरियम दूरसे खडी होकर देख रही थी । जब फ़िरऊनकी पुत्री उस बालकको अपने

गृहमें ले गई उस समय मरियम उसके पास दौडी गई और कहा कि, यदि आज्ञा दो तो मैं इस बच्चेके निमित्त एक दूध पिलानेवाली दाई ले आऊँ। तब राजकुमारीने आज्ञा दी कि, ले आओ। तब मरियम उसी समय गई और अपनी माताको बुलालाई। राजकुमारीने उसे सेवा तथा दूध पिलानेके निमित्त रख लिया। जो उस बालककी माता थी वही दूध पिलाई दाई बन गई। इस बच्चेको अत्यंत प्रेम सहित पालने लगी। इस बच्चेका नाम मूसा रक्खा गया मिसरी भाषामें मूसाके अर्थ जलसे निकलाके होते हैं। मूसा इस राजकुमारीका मुंहबोला पुत्र होकर पलने लगा। जब फ़िरऊनने उस बालकको देखा तब ज्योतिषियों से पूछा कि, इस लडकेका हाल कहो कि, कैसा है ? तब ज्योतिषियोंने कह दिया कि, यह वही बालक है जो तुझे तथा तेरे राज्यको चौपट करेगा। यह बात सुनकर फ़िरऊन उस बालकके मारनेपर प्रस्तुत हुवा। पर उसकी पुत्रीने उसकी ओरसे निवेदन किया कि, यह अनजान बालक है यह आपका कोई दोष नहीं करेगा। समस्त ज्योतिषी झूठे हैं। तात्पर्य यह कि, अपनी पुत्रीके कहने सुननेसे उस बालककी हत्या नहीं की। एक दिन फ़िरऊनने मूसाको अपना नाती समझ अपने कोडमें प्यार करने लगा। इतनेमें मूसाने फ़िरऊनकी दाढ़ीको पकडकर इतने जोरसे खींचा कि, फ़िरऊनके नेत्रोंसे जल निकलने लगा। इस पर उसको निश्चय हो गया कि, यह बालक मेरा वैरी है। आज्ञा दी कि, इसका वध करो। तब पुनः फ़िरऊनसे लडकीने प्रार्थना की कि, यह अनजान बालक है। यह मैत्री अथवा द्वेष क्या जाने इस अनजानको न मारिये। फ़िरऊनने कहा कि, यदि यह अनजान बालक है तो इसकी परीक्षा ली जावे। इस बालकके सामने दो ढेर लगा दिये एक तो अग्निके लाल कोयलोंका और दूसरा लाल लालोंका ढेर लगा दिया और कहा कि, यदि यह बच्चा लाल अङ्गारोंके ढेर पर हाथ डालेगा तो मैं समझूंगा कि, यह बच्चा अबोध है, यदि इसने लालोंको पकडा तो बेसुध नहीं है इस कारण यह मारा जावेगा। जब दोनों ढेर मूसाके सामने लगाये गये मूसाने चाहा कि, लालोंके ढेरपर हाथ डालें। तब परमेश्वरकी ओरसे दूतने गुप्तरीतिसे मूसाका हाथ पकडकर शीघ्रतापूर्वक अग्निपर डाल दिया। उस अग्निमेंसे एक अङ्गारा पकडकर मूसाकी जिह्वापर रख दिया। उसकी जिह्वा जल गई। इसी कारण मूसाकी जिह्वा तोतली हो गई। फ़िरऊनने जान लिया कि, वास्तवमें यह अबोध बालक है, मूसाकी हत्या नहीं की। उस बच्चेका लालन पालन होने लगा। फ़िरऊनकी पुत्रीने उसके पढ़ानेके निमित्त एक शिक्षक रक्खा, वो भली भाँति शिक्षा पाने लगा, अत्यंत सावधानीपूर्वक पाला गया, फिरऊनके नातीके

नामसे विख्यात हुवा । मूसा सुवृद्ध सुदृढ तथा बलिष्ठ था । ये जब वह मिश्र-देशसे भाग अपने बाप दादेके देशमें आया तब उसका विवाह पितरू नामक एक भले आदमीकी लडकीके साथ हुवा । फिर अस्सी वर्षके वयसमें परमेश्वरकी आज्ञानुसार वह पुनःमिश्र देशमें गया । अपनी जातिको फ़िरऊनके बंधनसे छुडाकर लेआया । जब सीना पर्वतके समीप आया तब परमेश्वर आकाशसे उतरा मूसाको तौरीतकी पुस्तक प्रदान की । जब इवरानियोंने परमेश्वरकी आज्ञा उल्लंघन की तब उनपर ईश्वरीय क्रोध उपस्थित हुआ । वे चालीस वर्षपर्यन्त इधर उधर वनमें भटकते फिरे । तबतक न उनके वस्त्र जीर्ण हुए, न उनका जूता फटा । जो उनके पुत्र उत्पन्न होते, सब वस्त्र सहित उत्पन्न होते जैसे वे बढ़ते जाते वैसेही उनका वस्त्र भी बढ़ता जाता था । प्रातःकाल उनके भोजनके निमित्त आकाशसे एक वस्तु ओसकी बूंदके समान बरसती थी । जिसको इवरानी भाषामें मन्न बोलते हैं । इस मन्नका स्वाद गुंधे हुए मायदे मधुके सहित हो, उस मन्नको इवरानी प्रातःकाल उठकर एकत्रित होकर खाते हैं । संध्या समय बटेर आते थे । उन बटेरोंका झुंड इतनी अधिकतासे आता कि, उनके पडावके निकट गज गज भर ऊँचा ढेर लग जाता था । वे इबरानी सदैव मांस खाया करते थे, इस कारण उनकी प्रार्थनापर परमेश्वर उन्हे बटेरें दिया करता था । वे लोग मांसभक्षणके निमित्त परमेश्वरके सामने रोए, परमेश्वरने उनको वह भोजन प्रदान किया वे सदैव मांस भक्षण करते रहे । इससे उनपर परमेश्वरका प्रकोप उपस्थित हुवा कि, बीस वर्षके वयके जो ऊपर थे सो सब मर गये । मूसा इबरानियोंको लेकर कनआँदेशमें पहुँचा पर्वतपर चढ़ गया वह एक सौ बीस वर्षका वय पाकर मर गया । उसका भांजा मरियमका पुत्र यशू उसका स्थानापन्न हुवा, वह इबरानियोंको लेकर कनआँ देशमें आया बत्तीस बादशाहोंको नष्ट करके देशको इवरानियोंके सरदारोंमें बाँट दिया ।

मूसाको साढ़ेतीन सहस्र वर्षका समय बीता । जिस समय मूसा मिश्र-देशसे यहूदियोंको लेकर चला था उस समय फ़िरऊन बादशाहने मूसाका पीछा किया । परमेश्वरने ससैन्य फ़िरऊनको लालसमुद्रमें डुबाकर मार डाला । फ़िरऊन दलबल सहित मारडाला गया । यहूदियोंने प्रसन्नतापूर्वक अपना पथ पकड़ा । जैसी घटनाएँ मूसापर उसके उत्पत्तिकालसें बीतीं थी वैसीही कृष्ण तथा इबराहीमके साथ भी बीती थी । जबलों मूसा जङ्गलमें था तबलों आसमानी रङ्गका परमेश्वर उसके साथ था । बराबर मूसाको उपदेश देता जाता था । मूसा तथा आसमानी रङ्गके परमेश्वरमें बराबर बात होती जाती थीं । धर्म तथा

संसारके समस्त नियमोंको बराबर बतलाता जाता था। सांसारिक सम्राटोंके सदृश उसकी आज्ञाएँ बराबर प्रचलित हुवा करती थीं।

हज़रत ईसा।

इन पश्चिमदेशीय अनागत वक्ताओंमें हज़रत ईसा सबमें बड़े श्रेष्ठ हैं। इञ्जीलमें हज़रत ईसाकी उत्पत्ति इस प्रकार लिखी है कि, मरियम नामी एक बालिका थी। वह यूसूफ नामका एक पुरुषके साथ माँगी हुई थी। उन दोनोंकी केवल मँगनी हुई थी विवाह नहीं हुआ था अबलों स्त्री पुरुष एकत्रित नहीं हुए थे कि, जिबराईल फ़िरिस्तः मरियमके समीप आकर उससे कहने लगे कि, ए मरियम! सलाम, तू धन्य है। तू एक पुत्र प्रसव करेगी, उसका नाम तू ईसा रखना और वह परमेश्वरका पुत्र कहलाएगा। जैसा कि, फरिस्ताने कहा, बिनशादी मरियम गर्भवती हुई उससे पुत्र उत्पन्न किया। जिसका नाम ईसा हुवा।

जैसे मूसाकी हत्याके निमित्त फ़िरऊन, बादशाह उद्यत हुवा था वही घटना हज़रत ईसाके साथ हुई। हेरूदेश बादशाह आपकी हत्याके निमित्त उद्यत हुवा। परमेश्वरने अपना दूत भेजकर बालककी प्राण रक्षा किया।

देखो इञ्जीलमें हज़रतने आपको परमेश्वरका पुत्र कहा है इस कारण यहूदी आपके वैरी हो गए शूलीपर चढाया। बत्तीस वर्षके वयसमें आप अपनी कबसे पुनः जीवित होकर तीसरे दिवस सशरीर वैकुण्ठको गए। पश्चिम देशके समस्त महात्माओंसे आप श्रेष्ठ हैं, क्वाँरीके गर्भसे उत्पन्न भी हुए। स्त्री गर्भकी उत्पत्ति महाभयानक यन्त्रणा है। जो स्त्री गर्भमें आता है वह निश्चय कठिन कष्टका अनुभव करता है जो गर्भमें रहता है उसको तीन प्रकारके ताप घेरते हैं।

(१) प्रियतप वह अत्यंत प्रबल जैसे गरम भट्ठा होता है। इस अग्निसे ऐसे बच्चा जलता है कि, जैसे गरम और लाल तावा हो उसपर किसी जीवको रखदो। वह तड़पता रहे पर उसके प्राण न निकलें।

(२) राद रक्त और भ्रष्टतामें शिरसे पाँवपर्यन्त भरा रहता है।

(३) हाथ पाँव उसके बंधे रहते हैं वह उल्टा लटका करता है। इन तीन तापोंके कारण वह अत्यंत व्यथित रहता है दुःख पाता है। जब यह गर्भसे बहिर्गत होता है तब मूत्रमार्गसे बाहर निकलता है। निकलनेके समय वायुकी ऐसी चोट लगती है कि, जैसे तीर लगकर शरीरसे पार हो जाता है। इस कष्टसे बालक चिल्ला २ कर रोता है। इस संकीर्ण मार्गसे निकलनेके समय अत्यंत कष्ट होता है कि, उसकी देह छोटी हो जाती है चाहे परमेश्वरका पुत्र हो, चाहे

मनुष्यका । जो कोई गर्भमें आवेगा वो सब दुःख उठावेगा, उत्पत्ति और मृत्युके समय आपने कैसा दुःख पाया था । यह अपने वशकी बात नहीं वरन् विवश होनेकी बात है । प्राण देनेके समय आपको कैसा दुःख जान पडा । मृत्युसे कैसे भयभीत हुए कि, पुकार कर कहा । देखो मतीकी इञ्जीलका (२७) बाब (४६) आयत (एली एली लमासतक बानी) अर्थात् तू ए मेरे परमेश्वर ! से मेरे परमेश्वर !! तूने मुझे क्यों छोड़ दिया (५०) आयत ईसूने बडे जोरसे चिल्लाकर प्राण त्यागे ।

फिर मरक़सका (१४) बाब और (३३) आयत, पीटर्स याकूब योहन्नाको ईसाने साथ लिया । वह घबराने और बहुत उदास होने लगे ।

(३५) इसने थोड़े आगे जाकर पृथ्वीपर गिर प्रार्थनाकी कि, यदि होसके तो यह घडी मुझसे टल जावे ।

(३६) कहा कि, ए पिता ! तुझसे सब कुछ हो सकता है इस प्यालेको मुझसे टालदे लूकाकी इञ्जीलका (२२) बाब (४२) आयत ए, पिता ! यदि तू चाहे तो यह प्याला मुझसे टल जावे परन्तु मेरी इच्छा नहीं वरन् तेरी इच्छाके अनुसार है ।

(४३) आकाशमें उसे एक दूत दिखलाई दिया जो उसको बल देता था ।

(४४) मृत्युके कष्टसे विह्वल होकर बहुत गिड़गिड़ाकर परमेश्वरसे प्रार्थना करता था, उसका पसीना रक्तके बूंदके सदृश पृथ्वीपर गिरता था ।

उन बातों से प्रगट होता है कि, वे महाशय अपनी मृत्युसे भयभीत होते थे परन्तु मारे जानेके वश नहीं था । मृत्युके समय दूत आपको सन्तोष दे रहा था । इससे आपके मनमें बड़ा ढाढ़स था । जो कोई माताके गर्भसे उत्पन्न होता है कोई निरापराध नहीं तथा निर्दोष नहीं मारा जा सकता है । देखो पुराना अहमदनामा इस्तसनाकी पुस्तक । (१८) बाब (२०) आयत वह भविष्यद्वक्ता जो ऐसी धृष्टता करे कि, कोई बात मेरे नामसे कहे कि, जिसके कहनेकी आज्ञा मैंने नहीं दी, अथवा अन्यान्य परमेश्वरोंके नामसे कहे तो भविष्यद्वक्ता मारा जावेगा ।।

(१) सला तीन (८) बाब (६४) आयत कोई मनुष्य ऐसा नहीं जो कि, दोषी न हो । मईकी नबीकी पुस्तक (७) बाब (२) आयत बनी, आदममें कोई सत्यवादी नहीं । रोमियोंका (३) बाब (१०) आयत, कोई सत्यवादी नहीं ।।

युसायाहनबी (६४) बाब (६) आयत, हमतो सबके सब ऐसे हैं जैसे कोई घृणित पदार्थ हमारी समस्त सत्यता गन्दी धज्जीके समान है।

अयूबका (९) बाब। (२) आयत मनुष्य परमेश्वरके समक्ष किस प्रकार सत्यवादी ठहरेगा ? अयूबका (२५) वाँ बाब (२) आयत परमेश्वरके समक्ष मनुष्य किस प्रकार सत्यवादी समझा जावे ? वह जिसकी उत्पत्ति स्त्रीसे है यह किस प्रकार पवित्र ठहरे ?

अयूबका (१४) बाब (१) से (५) आयतपर्यन्त मनुष्य जो स्त्रीगर्भसे उत्पन्न होता है वह अल्पकाल पर्यन्त जीवित रहता है। पूर्णतया दुःखमें है। वह पुष्पके समान निकलता और तोड़ा जाता है। वह छायाके समान जाता रहता है। नहीं ठहरता है क्या इसीपर अपनी आँखें खोलता और मुझे अपने साथ न्यायालयमें लाता है।

कौन है जो अपवित्रसे पवित्र निकाले ? कोई नहीं।

अयूबका (१५) बाब (१४) आयत, मनुष्य कौन है कि, जो पवित्र होसके वह जो स्त्रीसे उत्पन्न हुवा, वह कैसे सत्यवादी ठहरे ?

मरकसकी इञ्जील (१०) बाब (१७) (१८) आयत। भला कोई नहीं वरन् एकभी नहीं, अर्थात् एक परमेश्वरही भला है।

नतीकी इञ्जील (१९) बाब (१६) आयत। ऊपरकी बात लूकाकी इञ्जील (१८) बाब (१८) वही बात।

इञ्जीलका पोलूस भविष्यवक्ताका दूसरा पत्र (२) करनतियोंके (१३) बाब (४) आयतमें लिखा है कि, ईसा निर्बलताके कारण सलीबपर मारा गया।

फिर पोलूस भविष्यवक्ताका पत्र फिलपियोनको (१) बाब (१७) (१८) आयत, प्रेमवाले यह जानकर इञ्जीलको सुनाते हैं कि, मैं इञ्जीलको प्रमाणित करनेके निमित्त नियत हुवा हूँ। अतः क्या है ? सब प्रकारसे मसीहका समाचार दिया जाता है। चाहे मक्कारी हो चाहे सत्यतासे हो। मैं इसमें अप्रसन्न नहीं हूँ वरन् प्रसन्न रहूँगा।

अट्ठारह करोड़ साठ सहस्र योजन पृथ्वीसे ऊपर आकाशमें हजरत ईसा रहते हैं। इस स्थानका नाम जिबरूत है और वही झाँझरी द्वीप समस्त सृष्टिके सम्राट् निरञ्जनकी राजधानी है, उसीकी सभामें चारों दूत और सिद्ध साधु उपस्थित रहते हैं।

मुसद्दस–वह आग ज़ो पैदायशके पहले है पैदा ।
जब था नहीं कुछ शून्यमें थी हुई हवैदा ।।
उसहीके ऊपर आलम कुल होगया शैदा ।
बैजा है वही जिसने दिया था यदेबेजा ।।
सोई आग लगा याद किया खिरमने खाली ।
आया है ज़मींपे वही जिबरूत जलाली ।।
पितरसको बनाया है जो इनसाँका शिकारी ।
और सारे जो शागिर्द लगे बातसो प्यारी ।।
इस आदतसे नफ्सकुशीसे हुए आरी ।
बेबंदगी दीदार न हो किबरिया बारी ।।
मूसाकी शरीअतसे किया और है चाली ।
आया है ज़मींपे वही जिबरूत जलाली ।।
हर जानिब हर मुल्कमें तलवार चलाया ।
आपसमें मरें लड़के बिन आदमको गलाया ।
बाकी न रहे कोई सभी आग जलाया ।
घर घरमें नफाक उसने ही सब दिलको हलिाया ।।
मा वेटी बहिन भाईमें आग अपनी सो डाली ।
आया है ज़मींपे वही जिबरूत जलाली ।।
कह और नहीं चोर चोरानेको मैं आया ।
कातिलहूँ मैं तलवार चलानेको मैं आया ।।
हर जानिबमें आग लगानेको मैं आया ।
पहचान मुझे भेड़ चुरानेको मैं आया ।।
आ मेरे पनह आदम सबका हूँ मैं पाली ।
आया है ज़मींपर वही जिबरूत जलाली ।।
हर चारतरफ गुल खिला और बाग़ बरोमन्द ।
दुःख द्वंद नहीं मानते हरजानिब आनन्द ।।
पहचान उसे खूब वदम अपनी फरहबन्द ।
पावे न पता आजिज़ ढूढे कोई हरचन्द ।।
तस्वीर उसीकी है यह जो बाग़का माली ।
आया है ज़मींपर वही जिबरूत जलाली ।।

वेद तथा पुस्तकें स्पष्ट रूपसे प्रगट करती हैं कि, यह परमेश्वर आग है। जो कोई इस अग्नि परमेश्वरका पूजन करेगा सो बिना कृपाप्राप्तिके कैसे त्राण पासकता है। इस अग्नि परमेश्वर उसके अनुगामियोंने तीनों लोकमें आग लगा रक्खी है। जो कोई बड़ा भाग्यशाली हो बचे। षट्दर्शनका परमेश्वर और मूसाइयोंका परमेश्वर ईसाइयों और मुहम्मदियोंका परमेश्वर यही अग्नि है। सो बिना उपदेशके सत्यगुरुके उस अग्नि परमेश्वरको कोई पहचान नहीं सकता। जिस किसीने उसे न पहचाना तथा सत्यगुरुके वचनको न माना उसपर न जाने कैसी कठिनाई हुई। पहचानना उसीका उचित तथा यथेष्ट है जो कि, उसे पहचानकर उससे भाग जावे। फिर उस ओर पैर न रक्खे जहाँ कि, उसको जलानेवाली आग आ घेरे। यह इसी मुसद्दसका भाव है।

पाँच तत्त्व और तीन गुणों द्वारा यह तीनों लोक भवसागर बसा हुआ है। जबलों पाँच तत्त्व तीनगुणसे मनुष्य पृथक् न हो तबलो कदापि छुटकारा न होगा। जब पाँच तत्त्व और तीन गुणोंसे पृथक् होना चाहेगा तब जीवनकी आशा नहीं। इसी कारण हजरत ईसाने इञ्जीलमें कहा है कि, जो जीवितही मरेगा वो सदैवके निमित्त जी जावेगा।

मती १०–३८–जो कोई सलीब उठाकर मेरे पीछे नहीं आता वह मेरे योग्य नहीं।

मरक़स १०२१ सलीब उठाकर मेरे पीछे हो ले।

लूका ९–२३ अपनी सलीब प्रतिदिवस उठाकर मेरा अनुसरण करो।

रोमियों ६–६–मनुष्यता उसके साथ सलीबपर खिंचेगी।

इस पश्चिमदेशमें दो अपूर्ववक्ता प्रतिष्ठित और सर्वप्रिय हुए। प्रथम ईसा, दूसरे मूसा। ईसा तो स्वयम् निरंजनके अवतार हुए। मूसा विष्णुके साथ वैकुण्ठमें मानेगए।

योहन नबी।

योहन, जकरिया भविष्यद्वक्ताका पुत्र था। हजरत ईसाका कथन है कि, योहन्नासे श्रेष्ठ और कोई अनागतवक्ता नहीं हुवा। यह योहन्ना जभी माताके गर्भमें था, उसी समय वह आन्तरिक प्रकाशसे भर गया। यह मनुष्य रातदिन ईश्वरीयभयसे रोया करता था। यहाँलोंकि, रोते रोते अश्रुचिह्न उसके गालोंपर पड़ गए, चमड़ेपर घाव पड़ गया। यह व्यक्ति वनमें रहा करता था टीडी मधु खाया करता था, बालोंका वस्त्र पहना करता था। इस योहनके मुसलमानी धर्मकी पुस्तकोंमें नबीयहिया कहते हैं। उसके बाबमें बहुत कुछ लिखा है। यह

योहन बपतिसम देता फिरता था । यह मनुष्य बनमें अधिक तथा नगरमें बहुत कम रहा करता था । इसकी शिक्षा तथा उपदेश प्रभाव शाली हैं । हीरोद बादशाहने उसको बंधनमें डाल दिया था, यह बडा उपदेशक था, एक स्त्रीको व्यभिचारके लिये उपदेश दिया, यह स्त्री उसकी वैरिन होगई, उसीकी सटसे योहन्ना मारा गया ।

मुहम्मद साहब ।

मुसलमान लोग मुहम्मद साहबको अन्तिम अनागतवक्ता समझते हैं। ये तीनों श्रेष्ठ भविष्यद्वक्ता हैं मूसा ईसा मुहम्मद इबराहीमकी संतान हैं मुसलमानोंकी पुस्तकमें लिखा है कि, इबराहीमसे लेकर मुहम्मदपर्यन्त इस घरानेमें चालीस सहस्र अनागतवक्ता होगए । कबीरजीके सांप्रदायी कहते हैं कि, मुहम्मद महादेवका अवतार है, महादेव भूत, प्रेत, जिन, परी, राक्षस, दैत्य इत्यादिका बादशाह है । देखो तवारीखमुहम्मदीमें । जब मुहम्मदसाहबने पृथ्वीपर अपना धर्म्म प्रचलित किया, उस समय सहस्रों जिन परी इत्यादि आपसे आप आकर मुहम्मद साहबके शिष्य होगए । सबोंने मुहम्मदी कलमः पढ़ा । यह मुहम्मद भूत प्रेतादिकके प्राचीन गुरु हैं । सुतरां तुलसीकृत रामायण बलकाण्डमें लिखा है, कि, जब शिवजीका विवाह राजा हिमालचलके घर हुवा, तब शिवजी जब विभूति रमाए सर्प इत्यादि गलेमें डाले बैलपर सवार होकर चले, उस समय ब्रह्मा, विष्णु, कुबेर, इन्द्र, वरुण आदिक देवता बडे ठाठके साथ बन ठनकर बरातके साथ साथ चले । उस समय विष्णु महाराज जो बडे हँसोड हैं हँसकर बोले कि, ए भाई ! समस्त देवताओ ! अपना अपना समाज लेकर पृथक् २ चलो । यह बात सुनकर समस्त देवतागण पृथक् २ होके चले । तब शिव अकेले रह गए । उस समय शिवजीने अपना शंख फूंका उसकी ध्वनि सुनतेही सहस्रों भूत प्रेत तथा जिन इत्यादि आनकर उनके चारों ओर एकत्रित होगए । शिवकी विचित्र बरात देखकर विष्णु तथा समस्त देवतागण हँसने लगे । पथमें बडे बणे कौतुक होते चले । इसी प्रकार मुहम्मद साहबने जब मक्का नगरके बाहर जा, एक टीलेपर खडे होकर हांकें लगाईं, तब सहस्रों जिन और परीं इत्यादि आकर मुहम्मद साहबके शिष्य हुए । विष्णुके उपरान्त महादेव समस्त देवताओंकी अपेक्षा श्रेष्ठ हैं । सांसारिक वासनाओंपर आपकी श्रेष्ठ रुचि रहती है । महादेव तथा मुहम्मदका गुण एकही है । मार काट रक्तपात विनाश करनाही आपके धर्म्म हैं । सृष्टिके आरम्भमें शिवजीने भक्ति चलायी, मनुष्य जातिके गुरु बने, वही अन्तिम अनागतवक्ता हुए । संस्कृतमें महादेवजीका नाम महामदमय है ।

अर्थात् अत्यंत क्रोधी वही महामद अरबी॰ ...रबको परमात्मा रचयिता
सृष्टिके आरंभकालमें पूजा तथा योगमु
पुराणमें इन्हें एक विप्रकुमार कहा है। ज
कारण ऐसा बनना पडा था।

सत्यकबीर--आदिभक्त शिव योगी केरं ...िला

सांसारिक मनुष्योंको शिवजीने पूजा पाठ॰
वे स्वयम् जानते हैं इसी प्रकार मुहम्मद साहबने अ
मान को न बतलाया, छिपा रक्खा।

मुहम्मद साहब अरबमें, शंकराचार्य्य भारतव॰ ...क अव-
तार हैं। इसी शिव तथा विष्णुका धर्म्म समस्त पृथ्वीपर ... हुवा करता है। इन्हीं दोनोंका पूजन समस्त संसारमें होता है। ब्रह्माको कोई नहीं पूजता।

कबीर साहबका कथन है कि, एक लाख अस्सी सहस्र पीर पैगम्बर और सिद्ध साधु ऋषि मुनि होगए हैं। जिन लोगोंने आकर पृथ्वीपर मनुष्योंको उपदेश दिया उनमेंसे कुछ महाशयोंका थोड़ा विवरण मैंने लिखा है। येही सब निरञ्जनके पुत्र तथा दोनों बातोंके माननेवाले हैं। कोई कोई महाशय जैन इत्यादिके समान हैं। जो वेदको नहीं मानते वे भी निरञ्जनके पञ्जेमें हैं। बाहर जानेका किसीको भी सामर्थ्य नहीं हो सकता।

इनमेंसे अनेक महाशय सदैव निर्गुण सगुणकी श्रेष्ठता प्रगट करते आए हैं। चार प्रकारकी मुक्ति और स्वर्ग नरकके दुःख सुख बतलाते आए हैं, इनमेंसे अनेकों को सत्य पुरुषकी भक्तिकी सुध रही है। इन लोगोंको छुटकारे और बंधनका ज्ञान तनिक नहिं बहुत कुछ हुवा है। समस्त मनुष्य वेद तथा पुस्तकोंको पढ़कर मस्त हो रहे। किसीने वेद और पुस्तकोंका वास्तविक तात्पर्य नहीं समझा, बहुत लोग अपनेको वेद और पुस्तकोंके विद्वान् समझते हैं। वह यथार्थमें व्यञ्जन और स्वर से भी अनभिज्ञ हैं। सबी मनुष्य स्वबुद्धयानुसार तथा अपने गुरुओंके शिक्षापर मनुष्योंको पथ बतलाते हुए सुकर्म सिखलाते चले आते हैं। परन्तु यह कोई नहीं बतलाता कि, यह पथ निरापत्ति है। यद्यपि समस्त उपदेशकोंका प्रण होता है सभी अपनी २ विद्या तथा बुद्धिके अनुसार लोगोंको मुक्तिका अभिलाषी बनाते हैं। जितने सिद्ध साधु औलिया भविष्यद्वक्ता पृथ्वीपर हुए तथा अब हैं सब निरञ्जन और विष्णु भगवानको परमेश्वर तथा निराकार बनाते आए हैं, पर विना तत्त्व समझे समस्त मनुष्य भटक भटककर चौरासीके बंधनमें पडे। इनको क्या खबर कि, यथार्थ परमेश्वरकी सच्ची राह कौन है? अथवा किसके पूजनसे आवागमन

का बंधन कटता है ? वहांका सम्वाददाता कोई न मिला कि, आगेको समाचार देवे, जिसकी कुछ सुध और पता ठिकाना वेदमें स्पष्टरीतिसे नहीं । इसकी सूचना तो वेही साधु देंगे जो उस देशके होंगे । दूसरेमें क्या सामर्थ्य है ?

ज्योतिःस्वरूपी अलख निरञ्जन प्रज्वलित प्रदीपके समान है । समस्त जीवधारी पतङ्गके सदृश हैं । यदि पतङ्गको इतनी बुद्धि और इतना ज्ञान हो कि, मैं इस प्रदीपपर गिर गिर जल मरूँगा तो व्यर्थही अपने प्यारे प्राणोंको क्यों नष्ट करे ? सब पतङ्ग अज्ञानता तथा मूर्खताके कारण जल जल कर इस ज्योतिमें अपने प्राण विर्सजित करते हैं । उन्होंने सच्चे सत्यगुरुको नहीं ढूँढ़ा । यदि वे ढूँढ़, कहना मानते तो निश्चय सदैव बंधनसे छूट जाते । सत्यगुरुका कहना न माना स्वेच्छानुसार कार्य्य किए इस कारण प्रदीपके पतङ्गके ढङ्ग सब जलकर भस्म हो गए । उनके गुरुओंने उन्हें धोखा धडी देकर मार लिया । भाँति भाँति के धर्म्म सिखलाकर समस्त संसारको मारा स्वयंभी मरगए । जिन गुरुओंने दूसरोंको सुपथसे भटकाया वे स्वयं उसी पथमें भटकते रहे । अंधकारमें पड़ गए । सांसारिक मनुष्योंका तो कुछ ठिकानाही नहीं । जिस वाक्य अथवा नामके प्रभाव से लोग अपनी मुक्ति समझते हैं वही वाक्य नाम प्रत्यक्षमें धोखा तथा कष्टके निमित्त रक्खा है. जिसको वे छुटकारा समझते हैं वही उनका बंधन है । लोग पूर्णतया अनभिज्ञ हैं कि, छुटकारा ये क्या है किस प्रकार है यदि जानते तो आपसे आप अपने ऊपर किस निमित्त आपत्ति उपस्थित करते ? इसी कारण ज्ञानके साथ उपासना करनेको विशेष महत्त्व दिया है ।

अध्याय १०.

विराट् पुरुषके पहिले अवतारवाला । सत्यपुरुष ।

विराट्पुरुषका चित्र स्थानान्तरमें बनाया गया है कि, इस विराट्पुरुषके पेटमें तीन लोक बसे हैं और इसी विराट्पुरुषको मैंने कालपुरुष, निरञ्जन, निराकार, निर्गुण, राम, अल्लाह, ओंकार इत्यादिका पहिला अवतार कहा । इस पुरुष की प्रशंसा चारों वेद समस्त पुस्तकें करती हैं । यही तीनों लोकके रचयिता तथा स्वामी हैं । यह विराट्के भी ऊपर आकाशमें बैठता है । नीचे आदिभवानी और उसके पेटके भीतर तीनों देवता, अर्थात् ब्रह्मा विष्णु शिव ये तीनों रहते हैं । इस सत्यपदार्थको किसीने नहीं पहचाना है । जिसका प्रथमावतार यह विराट् पुरुष है उसकी प्रशंसा चारों वेद किया करते हैं । देखो ऋग्वेदमें इस संबंधको लिये हुए १६ मंत्र हैं । यजुर्वेदके ३१ अध्यायमें बाईस मंत्र हैं । सामवेदमें उसके

तेरह मंत्र हैं और अथर्वणमें सात मंत्र हैं। वेदने इसी पुरुषको परमात्मा रचयिता और समस्त संसारका राजा कहा है।

सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्।
सभूमि ठं. सर्वत स्स्पृत्वाऽत्यतिष्ठद्दशांगुलम् ॥ १ ॥

जो यह अनेकों शरीरोंवाला तथा अगणित ज्ञानेन्द्रिय और कर्मेन्द्रियवाला विराट् दीख रहा है यह उसके स्वरूपसे भिन्न नहीं है। जिसके भीतर यह विराट् विलास कर रहाहै वो इस जैसे शरीरोंमें नाभिसे बारह अंगुल ऊंचे हृदयमें विराजा हुवा है यद्यपि यहां खुलासा नहीं कहा है तथापि पांचवें मंत्रमें जो यह कहा है कि, "ततो व्विराडजायत" इससे मालूम होता है कि, विराट्का उत्पादक दूसरा ही है। अनेकों शिरपाद आदि विराट्में ही देखे जाते हैं, इस कारण यह पता चलता है कि, यहां कार्यमुखसे कारणका विचार चला है। भागवत आदि ग्रन्थोंमें भी यही लिखा है कि–'आद्योऽवतारः पुरुषः परस्य' यानी, यह विराट् उसका पहिला अवतार है।

(२) मंत्र–यह समस्त परमेश्वरही संसार है जो कुछ बीत चुका वही है और जो कुछ होगा वही है। वही मोक्षका मालिक है। उसीकी कृपासे भोग भी मिल जाते हैं।

सायनाचार्य्य–जो कुछ भूतपूर्व था परमेश्वर था। जो कुछ अब है परमेश्वर है। इस समय भूतपूर्वकालकी शरीरें परमेश्वरही थीं। जो कुछ भविष्यत्कालमें होगा सब परमेश्वर है। वह समस्त देवताओंका देवता है। उस वस्तुसे जो लोग खाते हैं वही बढ़ रहा है। मायाके कारण वस्तुओंका स्वरूप और का और दीख पडता है। परन्तु प्रत्येक वस्तु परमेश्वर है। भोग मोक्ष भी उसीकी कृपासे होते हैं।

(३) मंत्र–संसारमें जो था जो है तथा जो होगा वो समस्त उसके तेजकी परछाईं मात्र है। इससे पृथक् जो हम देखते हैं वही है। समस्त सृष्टि उसका एक चौथाई भाग है और शेषके तीन भाग आकाश मुक्तिस्थान सत्यलोकमें है जहां सत्य कबीर पहुँचाते हैं।

इस प्रकार समस्त मंत्रोंके साथ चारों वेद इसकी प्रशंसा बराबर करते हैं कि, तूही सबका रचयिता तथा भोजन पहुँचानेवाला है तुझसे पृथक् और दूसरा कोई नहीं है। इसीके अवतार विराट्की देहमें समस्त रचना समा रही है। इस विराट्हीके शरीरका नाम भवसागर है। वेदके किनारे पर तो विराटपुरुष निरञ्जन बैठा है। लोकके किनारेपर आदि भवानी चौसठ लाख योगिनियोंकी सैन्य

लिये राज्य कर रही है । तीनों शिकारी रज तम सत्त्व जाल लगाकर शिकार खेलते फिरते हैं । इसी विराट्के पेटमें कबीर साहब अपनी नाव लिये फिरते हैं । चारों युगसे बराबर पुकारते आते हैं कि, ए मनुष्यो मेरी नावपर सवार हो मैं तुमको पार उतारूँगा । कोई भाग्यवान दौडकर उस नावपर सवार होता है । उसका बेडा पार होता है, समस्त मनुष्य इसी विराटपुरुषकी पूजामें संलग्न रहते हैं । किसीको इस बातकी सुध नहीं कि, यह विराट्पुरुष कौन है । किसका अवतार है उसकी वंदनासे कोनसी श्रेणी प्राप्त होती है ! इस विराट् पुरुषका शरीर उनचास करोड योजनका है । उसका शरीरही यह भवसागर है । ग्रंथ कबीरवाणीमें कबीर साहब कहते हैं --

बारह पालग कूर्म शरीरा । षट पालङ्ग देहधर्म धीरा ॥

धर्मधीरा और धर्म्मराय इत्यादि नाम इसी विराट्पुरुषके हैं ।

षट् अर्थात् छः पालङ्कका उनचास करोड़ योजन होता है । इतना बडा शरीर इस विराट्पुरुषका है । आकाश पाताल और मृत्युलोक इसके भीतर बसे हैं । चारों प्रकारकी मुक्ति इसके बशमें है जो कोई इस विराट्की आज्ञानुसार भलाईको उच्च श्रेणीपर पहुँचावे वह चारों मुक्ति संसार, धन, राज्य, और वैकुण्ठ इत्यादिका अधिकारी हो जाता है । जो कुछ विराट् पुरुषके शरीरमें है वही सब मनुष्य देहमें भी है । अतः प्रत्येक मनुष्योंका शरीर इसी विराट्पुरुषका शरीर है । यद्यपि उससे छोटी दिखाई देती है, जो कुछ विराट्में वही गुण ब्रह्माण्डके भीतर हैं । कुछ न्यूनाधिक नहीं । पिण्ड तथा ब्रह्माण्ड दोनों कच्चे हैं । जबलों यह जीव कच्चा है कच्चे के साथ प्रेम कर रहा है तबतक पक्का पथ कैसे मिल सकता है ? यह पिण्ड ब्रह्माण्ड दोनों ही झूठे हैं फिर यह झूठा जबलों झूठेसे प्रेम करता है तबलों सच्चेके साथ प्रेम कैसे उत्पन्न हो ? पर इसे भी सत्य पुरुषही समझ प्रेम किया जाय तो यह भी सत्यपुरुषकी ओर ही बढ़ाता है ।

इस विराट्पुरुषने अपना तेज प्रताप और गुण आदि भवानीको दिए, विष्णुको दिये, राम और कृष्णको दिये और ईसाको भी दिये । सुतरां देवी भागवत में देखो ।

जब महामायाने अपना विराट् स्वरूप देवताओंको दिखलाया तब समस्त देवते औंधे मुँह गिर पडे ।

शरीर और विराट्की एकता ।

रामचन्द्रने कागभुशुण्डको अपना विराट्रूप दिखलाया । देखो रायमणमें लिखा है कि, जब कागभुशुण्ड अयोध्यामें गये तब रामचन्द्र छोटे बालक थे, दूध

भात खाते फिरते खेलते थे । कागभुशुण्ड रामचन्द्रके जूठे चावल जहां गिरते चुन कर खालिया करते थे । रामचन्द्रने काकभुशुण्डको अपना कौतुक दिखलाया । जब हंसकर अपना मुंह खोला तब कागभुशुण्ड रामचन्द्रके मुखमार्गसे पेटमें चले गये । उस पेटके भीतर चिरकालपर्यन्त घूमते रहे । जो कुछ बाहर दिखाई देता है । वही सब कौतुक भीतर दिखलाई दिया । तीनों लोकका कौतुक रामचन्द्र भगवान् के पेटके भीतर देखा । जब रामचन्द्रने खाँसा फिर पेटके बाहर निकल पड़ा । जब कागभुशुण्ड पेटके बाहर निकल पडे तब रामचन्द्रको फिर देखा तो उसी प्रकार छोटे बालकके स्वरूपमें आँगनमें खेलरहे हैं दूधभात खाते फिरते हैं । रामचन्द्रके पेटमें कागभुशुण्डको सहस्त्रों वर्ष बीते तो भी एक पलभरसे विशेष नहीं था । ऐसाही कृष्णचन्द्रने जब छोटे बालक थे, बालकोंका यह नियम है कि, मिट्टी खाते हैं, जब यशोदाने यह देखा कि, कृष्ण छोटा बालक है, मिट्टी खारहा है । तब यशोदा मारने चलीं कि, तू मिट्टी न खा मना किया । तब कृष्णने अपना मुँह खोलकर दिखलाया कि, देख माँ ! मैंने मिट्टी नहीं खाई । जब कृष्णजीने मुँह खोला तब यशोदाने कृष्णके मुँहके भीतर तीनों लोकोंका कौतुक देखा । समस्त रचना पृथ्वी आकाश सूर्य चन्द्र नक्षत्रादि सभी दिखाई दिये । यह कौतुक देखकर यशोदा अत्यंत अश्चर्यान्वित हुई कि, मेरे पुत्रके पेटमें यह कैसा आश्चर्यमय कौतुक दिखाई देता है ।

ऐसाही अर्जुनको कृष्णजीने जब अपना विराट् स्वरूप दिखलाया तब अर्जुन औंधे मुँह गिरकर कहने लगे कि, ए कृष्ण ! मुझसे तुम्हारा यह स्वरूप देखा नहीं जाता, मैं भयभीत तथा कम्पित हूं । तब फिर कृष्णने अपना यथार्थ स्वरूप दिखलाया । वह महाकालका स्वरूप छिपा लिया ।

पश्चिमके महात्माओंको विराट् दर्शन ।

फिर विष्णुने मूसाको अपना विराट्स्वरूप दिखलाया ।

तूर नामक पर्व्वतपर मूसाने निवेदन किया कि, ऐ परमेश्वर ! दर्शन दे । तब आज्ञा हुई कि, तू देख न सकेगा । फिर मूसाने निवेदन किया कि, ऐ परमेश्वर ! तू मुझे तू दर्शन दे उस समय वहीं विराट् रूप उत्पन्न हुवा । जिसे देखकर मूसा औंधे मुँह गिर पडे । उसको देख नहीं सके । फिर जब कृपा दृष्टि हुई तब मनुष्यके स्वरूप में आसमानी रङ्गके परमेश्वरने मूसाहारूं इत्यादिको दर्शन दिया । वे दर्शन पाकर परम आनन्दित हुए ।

इसी प्रकार खरकैलनबीको नदी किनारेके तटपर विराट्पुरुषने दर्शनर दिया देखतेही खरकैल औंधे मुँह गिर पडे अचेत हो गये । फिर जब परमेश्वरको

कृपादृष्टि हुई तब परमेश्वरने अपना मानुषिक स्वरूप दिखलाया । तब खरकैलने देखा और वार्तालाप किया ।

ऐसाही ईसाने अपना विराट्रूप पोटर्स योहन्ना और याकूबको दिखलाया । जब मसीहने अपना तेज प्रगट किया । वह स्वरूप जो नितान्तही तेजमय और सूर्य के आकाशके सदृश जगमगाता था ऐसा स्वरूप जब दिखाई दिया तब पोटर्स, योहन्ना और याकूब मुँहके बल गिर पडे । ईसूका वह तेज देख नहीं सके । फिर जब दया हुई तब ईसाने अपना पहिला स्वरूप प्रगट किया । उससे आपके शिष्यगण प्रसन्न हो गये ।

इस प्रकार जिस किसीको विराट्पुरुषका पूर्णतया ज्ञान हो गया वह स्वयम् विराट् स्वरूप हो गया । पिता और पुत्र सब एकही स्वरूप हैं । विद्या और कार्य्य के दोषसे ऊँचे नीचे भृत्य तथा स्वामी बने हैं । जो पिता है सो पुत्र है और जो पुत्र है सो पिता है । जब पिता पुत्र मर गया तब आपही आप है ।

विराट्की उपासना ।

इस विराट्को साधुलोग शून्यमें देखते हैं । जब उसकी साधना करते हैं, तब समीप चला आता है तथा वार्तालाप करता है । तीनों कालका समाचार देता है । विराटपुरुष साधनेसे सिद्ध कहलाता है । गुप्तबातोंको प्रगट करता है, परन्तु जब साधनेमें बाधा न उपस्थित हो तब कार्य्य पूर्ण हो ।

इस विराट्पुरुषसे सब कुछ उत्पन्न हुवा है । चार खानचौरासी लाख योनिके जीव सब इसी पुरुषने बनाए हैं । वेदपुस्तकें और समस्त साधन इसीसे हुये हैं । इस विराट् देहके सब जीव कीड़े हैं । समस्त साधन और सब सांसारिक तथा धार्मिक पदार्थ उसके शरीरके मैल हैं सब उसके निर्मित किये हुए हैं । भला उसके शरीरके कीड़ोंमेंसे किसको सामर्थ्य है कि, उसको अधीन करके उसके मस्तकपर लात धर कर पार चला जावे । किसी ऋषि मुनि सिद्ध साधु और पीर पैग़म्बरमें यह बल नहीं कि, इसके आगे हो जावे । उसपर श्रेष्ठता पावे । सबके सब उसके सेवक उसका भोजन हैं । यदि वह सत्यगुरु हाथ न पकडे तो किसीको सत्यपुरुषका घर न मिले, चार स्थानसे बाहर कोई न जासके । मच्छर और मक्खीमें यह सामर्थ्य कहां है कि, उडकर सातवें आकाशपर जो बैठे ? कदापि नहीं । चौरासी लाख योनिसे तो वही पार करे कि, जो स्वयम् उससे पार जानेका सामर्थ्य रखता हो । जो माली वाटिका लगाता है उसकी वाटिकामें जितने वृक्ष पौधे इत्यादि हैं उनमें मालीसे बढ़कर किसीमें विशेषता नहीं है । एक मिट्टीसे कुम्हार सहस्रों प्रकारके

वर्तन और मूर्तें बनाता है। कुम्हारसे बढ़कर कोई वर्तन अथवा मूर्त नहीं हो सकती। कारणसे कार्य बढ़कर नहीं हो सकता है।

अतः इस विराट् पुरुषने समस्त संसारको बनाया है। उससे बढ़कर उसकी सृष्टि कदापि नहीं हो सकती। इस कारण समस्त ऋषि मुनि सिद्ध साधु इत्यादि सदैव उसकी गुलामी किया करते हैं, तथा प्रशंसा किया करते हैं।

सत्य पुरुषका प्रतिपादक पुरुषसूक्त।

सहस्रशीर्षापुरुषःसहस्राक्षःसहस्रपात् ॥ सभूमि ठं. सर्वतःस्पृत्वात्यतिष्ठद्दशांगुलम् ॥ यजुर्वेद अध्याय ३१॥ मंत्र १॥ नारायण ऋषिः निचृदार्ष्यनुष्छन्दः पुरुषो देवता। सब लोगोंमें व्यापक जो प्रधान सत्य पुरुष नारायण सर्वात्मा होनेसे अनन्त शिर और पाँववाला, व्यष्टि समष्टि सबमें व्यापकर नाभिसे दश अंगुल परिमित हृदयदेशको अतिक्रमण कर अन्तर्यामी रूपसेस्थित हुवा। पुरुषऽएवेदठं.सर्व्वंयद्भूतं यच्चभाव्यम् ॥ उतामृतत्वस्येशानोयदन्ने नातिरोहति ॥ यजुर्वेद अध्याय ३१ ॥ मन्त्र २ ॥ यह जो अतीत ब्रह्मसंकल्प जगत् है जो भविष्यत् ब्रह्मसंकल्प जगत् है। जो जगत् बीज अन्न परिणामसे वृक्ष नर पशु आदिकरूपको प्राप्त होता है वह मोक्षका स्वामी महानारायणही है क्योंकि, उससे भिन्न कोई भी नहीं है। एतावानस्य महिमातोज्यायर्यांश्चपुरुषः ॥ पादोस्यविश्वाभूतानित्रिपादस्यामृतन्दिवि ॥ य० अ० ३१ ॥ मन्त्र ३ ॥ इस महानारायणकी विभूति इतनीही है ऐसा नहीं बल्कि यह नहीं चित् आत्मा महानारायणका इस संसारसे अतिशय करके अधिक है इस कारण समस्त ब्रह्माण्ड इस महानारायणका चौथा अंश है। सत्यलोकमें इस त्रिपातकास्वरूप विनाशरहित है जिस कारणसे अनन्त सत्य पुरुष परब्रह्मही अपने भागमें अपनी ज्योतियोंमें महानारायणरूप हुवा। त्रिपादूर्ध्वऽउदैत्पूरुषःपादोस्येहाभवत्पुनः ॥ ततोविष्वङः व्यक्रामत्साशनानशने । अभि ॥ य० अ० ३१ मं० ४ ॥ यह त्रिपात्महानारायण प्रथम ब्रह्माण्डसे ऊपर उत्कर्षतासे स्थित हुवा फिर इस महानारायणका चतुर्थांश संसार विषे व्याप्त हुवा मायाप्रवेशके अनन्तर देव तिर्यक आदिरूपोंकरके अनेक प्रकारका हुवा चेतन (प्राणीमात्र) और अचेतन (पर्वत नदी आदि) को देखकर उनमें व्याप्त हुआ तथा जड़ चेतन सबमें घुस गया। ततो विराडजायत विराजोअऽधिपुरुषः ॥ स जातोऽअत्यरिच्यत पश्चादभूमिमथोपुरः ॥ यजुर्वेद अध्याय ३१ मन्त्र ५ ॥ पश्चात् उस महानारायणसे ब्रह्माण्डदेह तथा उस देहको अधिकरणकरके उसका अभिमानी विराट् पुरुष अतिश्रेष्ठ उत्पन्न हुवा। वह विराट् पुरुष प्रथम भूमिको रचता भया

तिसके अनंतर देव मनुष्य आदिकोंके शरीरोंको बनाया ।। तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः सम्भृतंपृषदाज्यम ।। पशूंस्ताँश्चक्रेवायव्यानारण्याग्राम्याश्चये ।। य० अ० ३१ मंत्र ६ ।। महानारायणसे दधिमिश्र आज्य (घृत) अथवा प्राण संपादन किये तैसे ही वह महानारायण वायु अथवा प्राण हैं देवता जिनके ऐसे जो हरिण आदिक वनपशु हैं अथवा आरण्यकांडसंबंधी इंद्रियें हैं तिनको और ग्राममें होनेवाले अश्व-आदिक पशु अथवा प्रवृत्तिमार्गसंबन्धी इंद्रियोंको उत्पन्न करते भये ।। तस्माद्यज्ञात्सर्व्वहुतऽऋचःसामानि जज्ञिरे ।। छन्दा१ृंसिजज्ञिरेतस्माद्यजुस्तस्मादजायत ।। य० अ० ३१ मंत्र ७ ।। पश्चात् उस यज्ञपुरुष (महानारायण) से साम (सामवेद) उत्पन्न हुवा उसके पीछे महानारायणसे छंद उत्पन्न हुए उसके अनंतर महानारायणसे यजुष् (यजुर्वेद उत्पन्न हुआ ।। तस्मादश्वाऽअजायन्तयेकेचोभयादतः ।। गावोहजज्ञिरेतस्मात्तस्माज्जाताऽअजावयः ।। य० अ० ३१ मंत्र ८ ।। अश्व और अश्वोंसे अतिरिक्त जोगर्दभ आदिक और खच्चर हैं वे सब उत्पन्न हुए जो ऊपर नीचे दांतोंवाले पशु हैं वे भी उत्पन्न हुए। तिस महानारायणसे गौवें उत्पन्न हुईं बकरीं व भेड़ भी उसी से उत्पन्न हुईं ।। तंयज्ञम्बर्हिषिप्रौक्षन्पुरुषञ्जातमग्रतः ।। तेनदेवाऽअयजन्तसाध्याऋषयश्चये ।। य० अ० ३१ मं० ९ ।। जो साध्य देवता व सनकादिक ऋषि हैं वे सृष्टिसे पूर्व उत्पन्न हुए उस यज्ञके साधनभूत विराट्पुरुषको अपने लोकमें प्रोक्षणआदि संस्कारों करके संस्कृत किया और उस विराट्पुरुषरूप पशुद्वारा मानस योग निष्पादन (सिद्ध) किया ।। यत्पुरुषंव्यदधुःकतिधाव्यकल्पयन् ।। मुखङ्किमस्यासीत्किम्बाहू किमूरूपादाऽउच्चेत ।। य० अ० ३१ मंत्र १० ।। प्रश्न—महानारायणसे प्रेरित हुए महत् अहंकार आदिसे विराट्पुरुषको उत्पन्न किया उस समयसे कितने प्रकारोंसे अनेक प्रकारकी कल्पनाएँ की इस विराट्पुरुषके मुख क्या हुवा ? वाहु क्या हुए, तथा ऊरू (जंघा) क्या हुए और पाद (पावँ) क्या था ।। ब्राह्मणोऽस्यामुखमासीद्बाहूराजन्यः कृतः ।। ऊरूतदस्यायद्वैश्यः पद्भ्यांशूद्रोऽअजायत ।। य० अ० ३१ मंत्र ११ ।। उत्तर—इस विराट्पुरुषके मुखसे ब्राह्मण उत्पन्न हुवा, भुजाओंसे क्षत्रिय उत्पन्न हुवा, ऊरू (जंघाओं) से वैश्य उत्पन्न हुवा, पावोंसे शूद्र उत्पन्न हुवा ।। चन्द्रमामनसोजातश्चक्षोःसूर्योऽअजायत ।।श्रोत्राद्वायुश्चप्राणश्चमुखादग्निर जायत ।। य० अ० ३१ मंत्र १२ ।। और विराट्पुरुषके मनसे चंद्रमा उत्पन्न हुवा, नेत्रोंसे सूर्य उत्पन्न हुवा, कानोंसे वायु और प्राण उत्पन्न हुए, मुखसे अग्नि उत्पन्न हुवा ।। नाभ्याऽआसीदन्तरिक्षँशीर्ष्णोद्यौः समवर्तत ।। पद्भ्यांभूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथालोकाँ ।।२।।

ऽअकल्पयन् ।। य० अ० ३१ मं० १३ ।। इस विराट्पुरुषकी नाभिके सकाशसे अंतरिक्ष (आकाश) उत्पन्न हुवा, शिरसे स्वर्ग उत्पन्न हुवा पावोंसे पृथ्वी उत्पन्न हुई कानोंसे दिशाएँ उत्पन्न हुई तथा इसी तरह विराट्पुरुषके शरीरसे भूआदिक लोक उत्पन्न हुए ।। यत्पुरुषेणहविषादेवायज्ञमतन्वत ।। वसन्तोऽस्या-सीदाज्यंग्रीष्मऽइध्मः शरद्धविः ।। य० अ० ३१ मंत्र ।। १४ ।। जिस कालमें विद्वानोंने विराट्देहरूप हवि (हवनकरनेका अन्न) करके ज्ञानयज्ञको विस्तारित किया तब इस ज्ञानयज्ञके लिये वसंत ऋतु घृत हुवा ग्रीष्म ऋतु हवन करनेके समिधाएँ हुवा । तैसेही शरद् ऋतु हवि (होमकरनेका अन्न हुवा) ।। सप्तास्या-सन्परिधयस्त्रिः सप्तसमिधःकृताः ।। देवायद्यज्ञन्तन्वाना अबध्नन्पुरुषम्पशुम् ।। य० अ० ३१ मंत्र १५ ।। जिस कालमें विद्वानोंने ज्ञानयज्ञको किया उस समय विराटपुरुषरूप पशुको बांधा अर्थात् भाव करते भये उस कालमें १२ महीने ५ ऋतुएँ ३ लोक १ यह आदित्य ऐसे २१ अथवा गायत्री आदि ७ अतिजगती आदि ७ कृत्य आदिक ७ ऐसे २१ छंद ये संपूर्ण समिध (होमकरनेकी लकड़ियां हुई । यज्ञेनयज्ञमयजन्तदेवास्तानिधर्म्माणिप्रथमान्यासन् ।। तेहनाकम्महिमानः सचंतयत्रपूर्वेसाध्याःसन्तिदेवाः ।। य० अ० ३१ ।। मंत्र १६ ।। और वे विद्वानोंने विराट्रूप, हविसंबंधी ज्ञानयज्ञकरके यज्ञपुरुष महानारायणका पूजन किया । महानारायणपूजनसंबंधी वे धर्म मुख्य जहाँ प्रथम साध्य देवता स्थित हैं उस महानारायण सत्यलोकको महानारायणके भक्त महात्मा प्राप्त हुये ।।

यह सोलह मंत्र आवश्यक माने जाकर यजुर्वेदसे उद्धृत किये गये हैं। मेरा विशेष तात्पर्य यह कि, सांसारिक मनुष्योंको मालूम होवे कि, वे लोग किसका पूजन करते हैं ? तात्पर्य यह कि, वे सच्चे परमेश्वरकी पूजन करते हैं, अथवा झूठे परमेश्वरकी । जो कोई सच्चे परमेश्वरकी पूजन करता है, वह सच्चा होजाता है । सो वे लोग जानें कि, यह समस्त सृष्टि विराट्पुरुषद्वारा है । उत्पत्ति स्थिति तथा विनाश सब उसीके गुण हैं । यह विराट्पुरुष समस्त रचना करता है । उसकी और अक्षर पुरुष जो लाहूत स्थानमें रहता है उसकी प्रेरणा भी होती है । जो सत्य पुरुष सबका स्वामी है, उसके आज्ञाकारी सब हैं। यहां वेदमें इसी सत्यपुरुषका प्रकरण दिखाया गया है । तथा विराट्का भी आया है । जो भवसागर है उसका रचयिता तथा राजा यह विराट्पुरुष अलख निरंजन है । सांसारिक मनुष्य लड़ते और झगड़ते हैं, इसको निराकार कहते हैं, न जाने सत्य कहते हैं, अथवा मिथ्या कहते हैं । जिसका उनचास करोड़ योजनका शरीर हो वह निराकार कैसे कह-लावे, जिससे समस्त गुण उत्पन्न होते हैं, सदैव उसके साथ रहते हैं, वह निर्गुण कैसे

कहलावे ? जितनी पूजा पाठ योग मुक्ति आदि हैं, सब इस विराटपुरुषही द्वारा उत्पन्न हुई हैं । सो सब खिलाड़ीका खेल है, सब लोग इस खिलाड़ीके खेलमें लग रहे हैं, खिलाड़ी को पहचान नहीं सकते कि, यह कौन है जो समस्त संसारको नचा रहा है ? जिसने इस खिलाडीको पहचान लिया, उसके खेलके भेदको जान लिया, फिर जादूगरका जादू और मंत्रादि इसपर फलित नहीं होता । उस जादूगर का जादू तबहीतक फलीभूत होता है जबतक यह भेदको नहीं जानता है । उसके जाननेकी वही रीति है जो वेदने बताई है ।

जितने बेदपाठी हैं वे वेदके अर्थको अपनी अपनी बुद्धयानुसार करते हैं । कितने मनुष्योंने मिथ्याको सत्य प्रमाणित करनेका उद्योग भी किया है तथा अब भी करते हैं । तो भी मिथ्या सत्यसे श्रेष्ठ माना नहीं जा सकता । जब हंसोंके सामने आवेगा तब दूधका दूध और पानीका पानी पृथक् होजावेगा । जो कोई अग्निको जल जानकर उससे नहावेगा तो वह निश्चय भस्म होजावेगा, वह अग्नि तो अपना स्वभाव कदापि नहीं छोडेगी । जो कोई विषको अमृतफल जानकर खावेगा वह निश्चय मर जावेगा, इसी प्रकार जो कोई अपने सुकर्मोंपरही भरोसा रक्खे सत्य-गुरुके करग्रहणके निमित्त उत्सुक न हो, उनको न मिले तो वह इस अंधकारमय समुद्रके पार कदापि न हो सकेगा, पर जब अच्छे कर्मोंका फल यहाँ तक उदय होगा कि, पारखी गुरु मिल जायगा तो सब बन्धनोंसे छूटकर सत्यलोक चला जायेगा ।

इस विराट्पुरुषके एक हाथमें वेद है और दूसरे हाथमें राजदंड है और तीन लोकके समस्त जीवोंका राजा है । सबको अधीन कर रहा है, इसकी अधीनतासे कभी कदाचित् कोई बाहर जा सकता है । जिसपर कबीर साहबकी परम दया होती है उसको वह स्वयम् कालपुरुषके पञ्जेसे छुड़ाता है । मनुष्योंमें से ऐसा कोई नहीं है कि, अपनी पूजा पाठ तथा तपस्यासे सत्यपथ पावे । कारण यह हैं । कि, जब बड़ों बड़ोंको पथ नहीं मिला तो वे दूसरेको क्या दिखलावेंगे ? इसी कारण प्रायः ऋषि मुनि जन्मबंधुवे हुए । इन सबकी बुद्धिको कालपुरुषने विलोपित कर दिया है कुछ सूझता नहीं है, कोई बूझता नहीं सब जिह्वाओं पर इसकी मुहर लगगई है। इस कारण वे लोग देखते हें पर देखते नहीं । सुनते हैं पर सुनते नहीं। बोलते हैं पर बोलते नहीं । प्रत्यक्ष दुष्कर्मोंको देखते जाते हैं उसीका अनुसरण करते जाते हैं । फिर इनको मनुष्य कहना चाहिये अथवा मनुष्यतासे पृथक् ? वास्तवमें मनुष्य वह है जो बुराईको देखे और उससे तुरंत भाग जावे फिर उस पथपर कभी पैर न रक्खे ।।

अकालपुरुषके धार्मिक नियम।

अकालपुरुषके धार्मिक ग्रंथ चार वेद हैं। ये चारों वेद मायासृष्टिके आरंभ कालमें प्रकट हुए। ये चारों ग्रन्थ वैदिकभाषामें निकलकर समस्त संसारमें फैल गए। वैदिक संस्कृत भाषा होनेके कारण इसके समझानेवाले धोखेमें पडे। कारण यह कि, इसका अर्थ कोई किसी प्रकार और कोई किसी प्रकार करता है वास्तवमें वेदके भाषाकारोंमें किसीको ऐसी विद्या नहीं हुई कि, इस वेदकी यथार्थ अवस्था को जान सके। सबके सब शब्दार्थ लगाकर लोगोंपर अपना विचार प्रगट करते आए हैं। प्रत्येक मनुष्य अपने ढङ्गपर अपनी मृत्यनुसार आप समझाते रहे। विचारहीन सांसारिक मनुष्य जिस पथके अधीन हुए, उन्होंने वही अर्थ स्वीकार कर लिया। उनको उसी ढङ्गपर चलना पडा। उनको मिथ्या तथा सत्यकी क्या सुध, वे तो अपने गुरु तथा अग्रगामीकी पथदर्शकताको स्वीकार करके वही सत्य मानते हैं। वही ठीक ठहराते हैं। अयथार्थवक्ता विद्वानोंने लोगोंको भटका मारा। वेदकोशमें एक शब्दके अनेक अर्थ होनेके कारण जिस किसीको जो अर्थ अच्छा जान पड़ा वही अर्थ लगाया। अपने विचारके अनुसार विख्यात किया। वेदकी उलझनोंसे समस्त संसार अनभिज्ञ रहा। वास्तविक भेदको कोई न जान सका कि, इस यवनिकाके भीतर कौनसा रहस्य भरा पडा है। इस कारण समस्त संसार धोखेमें पडा। विना भक्तिवेत्ताके तथा सत्यपुरुषकी भक्ति और मुक्तिमार्गको पहचाने नहीं जान सके। इस कारण कालपुरुषने वेदके वास्तविक पदार्थको छिपा कर समस्त मनुष्योंको फँसा लिया। कबीर साहब सृष्टिकी उत्पत्तिकालसे लेकर आजपर्यन्त बराबर समझाते आते हैं कि, काल पुरुषके धोखेकी चालसे बचो परन्तु यह, जीव नहीं समझता, नहीं मानता। कारण यह कि, मनुष्योंकी बुद्धिपर परदा पड रहा है यदि वेदकी वास्तविकताको समझ जाय तो सत्यपुरुषको पाजाय।

इन्हीं चारों वेदोंसे जो चारों पुस्तकें निकली हैं और भिन्न २ भाषाओंमें उनका अनुवाद हो चुका है, उनके द्वारा वेदोंकी थोडीसी अवस्था जानी जा सकती है। क्योंकि, इसका यथार्थ ज्ञान होना सत्यपुरुषकी इच्छा पर निर्भर है। उसके मुँहसे अग्नि उत्पन्न हुई उसी पुरुषके मुँहसे ब्राह्मण उत्पन्न हुवा इस कारण ब्राह्मण को यज्ञ करने और करानेका भाग मिला। वेदपाठका अधिकारी विशेषतः ब्राह्मण ठहराया गया। यद्यपि इतरोंके निमित्त भी वेदपाठ अत्यन्त आवश्यक है। कारण यह कि, यह प्रथा समस्त संसारके निमित्त नियत की गई है, सबकी ऐतिहासिक बातें पृथक् हैं, कर्मकाण्ड एक जैसीही है।

बलिप्रदान ।

बलिप्रदानके विषयमें समस्त बातोंका मिलान करके देखलो । सबमें मिलान ठहरेगा । बलिप्रदान सत्य तथा ठीक अवश्य है । कारण यह कि, इस विराट् पुरुषका भोजन है । अग्नि उसका मुख है । जो हव्य वस्तुएँ वेदमंत्रोंको पढ कर या इस पुरुषका ध्यान करके अग्निमें डाली जाती हैं सो सब उसका भोजन है। वह उसको खाता है । इसी विराट् पुरुषके निमित्त बलिदान करना आवश्यक है । उत्पत्तिकालके आरम्भसे लेकर अबलों वही काम नियमानुसार होता चला आता है । इस महापुरुषके निमित्त बलिप्रदान नियत किये गये । इसी प्रकार महामाया की सभामें प्रत्यक्ष गला काटा जाता है । कोट कांगडा और कामरू कामक्षा आदि सहस्रों स्थानोंमें गले काटे जाते हैं । ये पांचों बटुक आदि भयानक तथा मनुष्यों को त्रास देनेवाले हैं । इन्हींकी पूजा वाममार्गके पुस्तकोंमें है । जो लोग उनकी पूजा कर उसे तो बलि करना आवश्यक है । बिना बलिके यह विराटपुरुष प्रसन्न न होगा । भला जी ! यदि खेती करने वाला राजा अथवा पदाधिकारीको भूमि कर न दे तो खेतीका काम उससे निश्चय छीन लिया जावेगा । भला जी ! समस्त संसार तो उसकी प्रजा है । सबका सब सके हाथोंके नीचे हैं । फिर कैसे बलि न करें ? निदान यह बलि तथा वैसाही अग्नि पूजन प्राचीन कालसे चला आता है । वाममार्गी पंडित और मुल्ला क़ाजी इत्यादि इस बलिप्रदान करनेके अगुवा तथा पथदर्शक हैं । इन बलिप्रदानोंके पापोंने सब जीवोंको आवागमनके बन्धनमें फँसा रक्खा है । इसी निर्दयता और प्राणघातके कार्यने समस्त मनुष्योंको निर्दयी बना दिया है । जो कोई वाममार्गी पश्चिमकी पुस्तकोंके अनुसार चलेगा, वह अवश्य बलिप्रदान करेगा । चारोंमें बराबर बलिकी आज्ञा है उन पुस्तकोंके मानने वाले सदैवसे करते आए हैं, पर वेद उनके विरुद्ध है । उसका तो सिद्धांत है कि, अस्ति नु तस्मादोजीयो यद्धि हव्येन ईजिरे यानी उस सत्य पुरुषका ध्यान ही सबसे बडा है ।

यज्ञ शब्दार्थ ।

देवपूजा, संगतिकरण और दान इन अर्थोंवाले यज् धातुसे नङ प्रत्यय होकर 'यज्ञ' शब्द बनता है । कोशकार हैमने इसका आत्मा, मख, नारायण और हुताश (अग्नि) अर्थ माना है । इसके विवरण कल्पसूत्र और श्रौतसूत्रोंमें भरा पडा है । पहिले पुरुष मखोंसे ही सत्यपुरुषको प्रसन्न करते हुए उसके पुण्यसे पापों को नष्ट किया करते थे । विराट् पुरुषको भी इसीसे तृप्त किया करते थे । आज

भारतमें इनका एक तरहका अभावसाही होता जा रहा है। रही सही क्रियाको आज कालके नास्तिक मिटाये डालते हैं।

नरमेध।

जो पुरुषमेध यजु० के ३१ और बत्तीसके अध्यायमें आता है जिससे सच्चिदानन्द सत्यपुरुषका, पूजनादि होता है। इस कारण इसे पुरुषमेध कहते हैं यानी पुरुष सत्यपुरुष, सच्चिदानन्द नारायण, उसका जो मेध यानी पूजन तथा ध्यानद्वारा संगम तथा उसके उद्देश्यसे इन दोनों अध्यायोंका वैध ध्यान इसे पुरुष मेध कहते हैं, इसीका पर्य्यायवाची शब्द नरमेध भी है। जिसका कि यहां . योग दीख रहा है, इसी तरह जहां जो मेध आया है वहां उसीमें उच्च भावना करके पूजन आदि कर दिया गया है। जो कोई इनका बलिदान अर्थ समझते हैं यह उनकी बुद्धिका दोष है।

देव सवितः प्रसुव यज्ञं प्रसुव यज्ञपतिं भगाय ॥ दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतन्नः पुनातु वाचस्पतिर्वाचिन्नः स्वदतु ॥ य० अ० ३० मंत्र १ ॥ हे दीप्यमान सबके प्रेरक परमात्मन्! इस वाजपेय नामक यज्ञको प्रवृत्त करो। यजमानको ऐश्वर्य लाभके निमित्त वा भजनीय अनुष्ठानके निमित्त प्रेरणा करो, दीप्यमान अन्नके पवित्र करनेवाले रश्मियोंके धारण करनेवाले सूर्यमण्डलमें वर्तमान सच्चिदानन्द सत्यपुरुष नारायण, हमारे अन्नको पवित्र करें। वाक्यके अधिपति प्रजापति हमारे हवि लक्षणरूप अन्नका आस्वादन करें यह आहुति भलीप्रकार गृहीत हो ॥

अश्वमेध।

ईड्यश्चासिवन्द्यश्चवाजिन्नाशुश्चासि मेध्यश्च सप्ते ॥ अग्निष्ट्वा देवैर्वसुभिः संजोषाः प्रीतंवह्नि वहतु जात वेदाः ॥ य० अ० २९ म० ३ ॥ और हे वेगवाले अश्व! तुम ऋत्विजों करके स्तुति करने योग्य हो तथा शिर करके नमस्कार करने योग्य हो, शीघ्रही अश्वमेध यज्ञके योग्य होते हो और वसु देवताओंके सहित प्रीतिवाला अग्नि, प्रसन्न हुए तुझ हविवहनेवालेको देवताओंमें प्राप्त करावे ॥

इस यजुर्वेदमें यज्ञोंकी बहुत बातें हैं ३- ११-१२ अध्यायके मन्त्रोंको देखो। यजुर्वेद है ही यज्ञोंके लिये ?।

गोमेध।

त्र्यविश्चमे त्र्यवीचमे दित्यवाट्चमे दित्यौहीचमे पञ्चविश्चमे पञ्चावीचमे त्रिवत्सश्च त्रिवत्साचमे तुर्यवाट्चमे तुर्यौहीचमे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥

य० अ० १८ मं० २६ ।। और मेरी प्रीतिके निमित्त डेढ वर्षवाला बछडा तथा डेढ वर्षवाली बछिया मेरे निमित्त दो वर्षवाला बैल तथा दो वर्षवाली गौ और मेरे निमित्त ढाई वर्षवाला बैल तथा ढाई वर्षवाली गौर एवं मेरे निमित्त तीन वर्षवाला बैल तथा तीन वर्षवाली गौ कल्पना करें । षष्ठवाट्चमे पष्ठाह्-चिमऽउक्षाचमे वशाचमेऽऋषभश्चमे वेहश्चमेऽनड्वांश्चमे धेनुश्चमे यज्ञेन कल्पन्ताम् ।। य० अ० १८ मं० २७ ।। और मेरे निमित्त चार वर्षवाला बैल तथा चार वर्षवाली गौ, मेरे निमित्त सेचनसमर्थ बैल तथा वन्ध्या गौ, मेरे निमित्त अतिजवान बैल तथा गर्भघातिनी गौ, मेरे शकट वहनेमें समर्थ बैल तथा नवीन ब्याई हुई गौ, पूजन करके देवता कल्पना करें ।।

बारह मासके देवताओंके निमित्त भिन्न २ यज्ञ बनाये हैं उन समस्त पशुओंको उनदेवोंकी प्यारी वस्तु समझकर पूजते हैं ताकि, हृदयमें दया बनी रहे ।

उष्ट्रमेध ।

इममूर्णायुं वरुणस्य नाभिं त्वचं पशूनां द्विपदां चतुष्पदाम् ।। त्वष्टुः प्रजानां प्रथमं जनित्रमग्ने माहिꣳसीः परमेव्योमन् । उष्ट्रमारण्यमनुते दिशामि तेन चिन्वानस्तन्वो निषीद ।। उष्ट्रन्तेशुगृच्छतु यं द्विष्मस्तं तेशुगृच्छतु ।। य० अ० १३ मं० ५० ।। हे अग्ने ! उत्कृष्टस्थानमें स्थित इस ऊर्णवाला, वरुणकी नाभि अर्थात् सन्तानोंके समान प्रिय मनुष्यों और चौपायों दोनों प्रकारके पशुओंकी कंबलोंसे एवं आच्छादक होनेसे त्वचाकी तरह रक्षा करनेवाला प्रजापतिकी प्रजाओंके मध्यमें प्रथममें उत्पन्न हुए अविको मत पीडा दो वनके उष्ट्र तुमको उपदेश करता हूं शरीर उसके द्वारा पुष्ट करते हुए तुम यहाँ स्थित हो तुम्हारी ज्वाला वनवाले ऊँटपूजनसे तुमें भूख प्राप्तहो, जिससे हम द्वेष करें उसको तुम्हारी ज्वाला प्राप्त हो ।। ५ ।।

मेषमेध ।

ऋग्वेदाष्टक (४– अध्याय–१) सूक्त (८) मंत्रमें लिखा है कि, तीन सौ भैंसोंका बलिप्रदान हुआ ।

जीवोंके पूजन एवम् शाखा आदिके पूजनका जिन घृणित वेदोंमें उल्लेख किया गया है वो एकात्मभावसे विस्तारपूर्वक है । उनके लिखनेसे अनावश्यक विस्तार बढ़ता है । न मुझे बातकी कोई आवश्यकता है । मुक्ति पानेवालोंके देखने के निमित्त तथा न्यायप्रिय मनुष्योंके हितार्थ थोड़ा सा आवश्यक विवरण इस स्थानपर कर दिया गया है । वेदोंमें भाँति २ के पशु तथा पक्षी आदिके सत्कार आत्मभावसे लिखे हुए हैं । उन सबको मैं छोडे जाता हूं । केवल आवश्यक बातों

को संक्षेपसे लिखकर दर्पण बना दिया है, जिसमें प्रत्येक मनुष्य अपना मुंह देखलें कि, वेदने सृष्टिका कितना हित किया है।

मृगमेध।

इमंमाहिं॰ सीरेकशफम्पशुङ्कनिक्रदंव्वाजिनं वाजिनेषु ॥ गौरमारण्य मनु ते दिशामि तेनचिन्वानस्तन्वो निषीद ॥ गौरन्तेशुगृच्छतु यन्द्विष्मस्ततेशुगृच्छतु ॥ यजुर्वेद अध्याय १३ मंत्र ॥४८॥ हे अग्ने ! इस अत्यन्त हींसनेवाले वेगवालोंमें वेगवाले एक खुरवाले घोडे पशुको मत पीडा देना, तुम्हारे निमित्त वनके गौरवर्ण मृग देता हूं, उनसे खेल शरीर पुष्ट करते हुए तुम यहीं स्थित रहो तुम्हारा प्रेम अश्वकी समान गौरमृगको प्राप्त हो एवं जिससे हम द्वेष करें उसको तुम्हारा संताप प्राप्त हो ॥ यदावध्नन्दाक्षायणा हिरण्यꣳशतानीकाय सुमनस्यमाना : ॥ तन्मऽआवध्नामि शतं शारदायायुष्माञ्जरदष्टिर्यथासम् ॥ य० अ० ३४ मंत्र ५२ ॥ सुंदर मनवाले दक्षवंशोत्पन्न ब्राह्मण जिस सुवर्णको बहुतसेनावाले राजाके निमित्त बांधते हुए उस सुवर्णको सौ वर्ष जीवनके निमित्त अपने शरीरमें बांधता हूं जिस प्रकार मैं दीर्घजीवी वृद्ध अवस्थातक होऊं ॥

अजमेध।

शक्रन्त्वा शुक्रेण क्रीणामि चन्द्र चन्द्रेणामृतममृतेन ॥ सग्मेते गोरस्मेते चन्द्राणितपसस्तनूरसि प्रजापतेर्वर्णः परमेण पशुनाक्रीयते सहस्रपोषम्पुषेयम् ॥ य० अ० ४ मंत्र ३६ ॥ हे सोम ! तुम आह्लाद करनेवाले स्वादुमें अमृतकी समान दीप्तिमान् हो तुमको दीप्तिमान् विनाशरहित आह्लादकारक सुवर्णसे क्रय करता हूं। हे सोमके बेचनेवाले ! सोमके मूल्यमें जो गौ तुमको दी थी वह तेरी गौ फिर लौटकर यजमानके घरमें स्थित हो सुवर्ण तेरा हो न कि गौ। हे सोमविक्रेता ! तुमको जो सुवर्ण दिये हैं वे हमारे पास आकर स्थित हों तुम्हारी गौही मूल्य हो तुम्हारे प्रसादसे पुत्र पशु आदि सहस्रोंकी पुष्टि जिस प्रकार हो तैसे मैं पुष्ट होऊं वा पुष्ट करनेमें समर्थ होऊं पहिले आर्य द्वेष रहित थे वो जड चेतन सबके भीतर सत्य पुरुषको मानकर पूजा किया करते थे। पशुओंके प्रतिभी उनका ऐसा भाव था तो फिर मनुष्योंसे वैर तो करही नहीं सकते थे तब उनमें तो बलिदान प्रवेशही नहीं कर सकता था ॥

बलिप्रदानकी रीति।

आदमके पुत्र काबील और हाबीलने बलिदान किया। तदुपरान्त अन्यान्य

मनुष्योंने । इसके उपरान्त नूहने किया । फिर इबराहीमने मनुष्यका बलिदान किया अर्थात् अपने पुत्र इसहाकको बलि दे दिया ।

यरमयाह नबीकी पुस्तकका (१९) बाब (४) (५) आयत इन्होंने मुझको छोड़ दिया इस मकानको दूसरोंके निमित्त ठहराया इसमें अन्यान्य अल्लहों के निमित्त लोहबान जलाया । जिन्हें न वे न उनके पिता दादा । न यहूदाहके रहने वाले जानते थे उस गृहको निर्दोषोंके रक्तसे भर दिया, उन्होंने बअलके निमित्त ऊंचे २ मकान बनाए जिसमें अपने पुत्रोंको जलाकर बलिप्रदान करनेके निमित्त अग्निमें जलावें । जो मेंने न आज्ञा की न उसका विवरण किया न यह मेरेमें ही था ।।

अर्थात् परमेश्वर यह बात यरमयाह भविष्यवक्तासे कहता है ।

फिर काजियोंकी पुस्तकके (११) बाब (३०- आयतसे लेकर (४०) आयतपर्यन्त पढ़ो लिखा है कि, अफसनाहने परमेश्वरकी मनौती की कहा कि, यदि निश्चय ही तू नबी अमूंको मेरे हाथमें करदे तो ऐसा होगा कि, विजयोपरान्त गृह पर पहुँचूं तो जो कोई प्रथम मेरे सामने आवेगा उसको मैं जलाकर बलिप्रदान करूंगा । जब वह गृहमें आया तब उसकी पुत्री पहले सामने आई उसने अपनी पुत्री को जलाकर बलिप्रदान किया । मुझको ऐसाही स्मरण है कि मैंने, किसी मुसलमानी पुस्तकमें पढ़ा था कि, अबदुलमुत्तलिब जो मुहम्मद साहबका दादा था उसने मनौती कि, यदि मेरे दश पुत्र हों तो उनमेंसे एकको मैं परमेश्वरके निमित्त बलिप्रदान करूंगा । अबदुलमुत्तलिबके जब दश पुत्र उत्पन्न, हुए, तब वह अपनी प्रतिज्ञा पूरी करनेके लिये मक्कहके पुजारियोंके पास गया और कहा कि, मैं दशमेंसे एक पुत्रका बलिप्रदान करूंगा । परमेश्वरकी मनौती पूरी करूंगा। इस बात पर मक्कह के पुजारियोंने कहा कि, हम इस प्रकार करेंगे कि, पासा डालेंगे । तुम्हारे दश पुत्रोंमेंसे जिसके नाम पासा पड़ेगा उसको बलिप्रदानके निमित्त लेलेवेंगे तब उन्होंने पासा फेंका वह पासा अबदुल्लाके नाम पर पड़ा । उन पुजारियोंने अबदुल्लहके बलिप्रदान करनेका बाँधनू बाँधा । इस विषयपर अबदुलमुत्तलिब उसका पिता बहुत घबराया कहा कि, मेरा यह पुत्र बड़ा योग्य है । कारण यह कि, यह अबदुल्ला, बड़ा धार्मिक भला आदमी पुण्यात्मा और सुन्दर था । इस कारण न चाहा कि अबदुल्लाका बलिप्रदान करें । जब अबदुलमुत्तलिब इस सोचमें फिरता था तब उसको लोगोंने परामर्ष दिया कि, तू अमुक स्त्रीके समीप जा वह तुझको युक्ति बतलावेगी । वह स्त्री उस समय किसी देवकी पूजा करती थी । जब अबदुलमुत्तलिब उस स्त्रीके समीप गया तब उसने यह युक्ति बतलाई कि, एक तौल बनाकर

एक ओर अबदुल्लाको रख और दूसरी ओर दश ऊँट रख, जिसमें दश ऊँटोंको परमेश्वर अबदुल्लाके बदले स्वीकार करे। अबदुल्लाका बलिप्रदान क्षमा कर दे। फिर दश ऊँच जब अबदुल्लाके बराबर न हुए तब बीस ऊँट रक्खे। फिर तीस फिर चालीस यहांलों कि, एक सौ ऊँट तक रक्खे गये जब सौ ऊँट रक्खे तब तराजूके दोनों ओरके पलडे बराबर होगए। सौ ऊँटोंका बलिप्रदान हुवा। इस प्रकार अबदुल्ला बच गया। पुत्रके बचजानेसे अबदुलमुत्तलिबको बडा हर्ष हुवा इसी अबदुल्लासे मुहम्मद साहब उत्पन्न हुए ॥

इसी प्रकार सनस्त पूर्वापर बलिप्रदान होता चला आता है। इसके अति-रिक्त अनेक प्रकारके बलिप्रदानोंका उल्लेख किया गया है। इसकी तरह वही प्रथा चारों पुस्तकोंमें चला आता है और चारों पुस्तकोंके प्रचलित होनेके पूर्वसे भी यही प्रथा चली आती है। जब पुस्तकें नहीं थीं तब परमेश्वर प्रगट होकर आज्ञा दिया करता था। इसके अतिरिक्त अनेक मनुष्योंको परमेश्वरके दर्शन होते, बहुतेरे मनुष्योंसे वार्तालाप हुआ करता। पश्चिम देशमें जो पहिली पुस्तक पृथ्वी पर प्रगट हुई वह तौरीत है। यह तौरीत पश्चिमीय देशवासियोंमें पहले प्रचलित हुई जो उसकी आज्ञाएँ हैं वेही उनके माननेवालेके ईश्वरकी आज्ञाएँ हैं।

अध्याय ११.

मूसाकी पुस्तकें।

यह तौरीत हजरत मूसाके निमित्त उपस्थित हुई। इसमें शारीरिक बातें हैं। आदमको परमेश्वरने साग पात फल इत्यादि खानेके निमित्त बताया परन्तु नूहको परमेश्वरने धोखा दिया। पशुओंका मांस जैसे साग पात इत्यादिके भोजन की आज्ञा दी। वही प्रथा चिरकालसे चली आती है। जैसे मैंने बेदमें कुछ बातें संक्षेपतः लिखीं, उसी प्रकार तौरीतमेंसे कुछ बातें प्रगट करता हूँ।

प्रथम तौरीत।

मूसाकी प्रथम पुस्तकमें तो उत्पत्ति इत्यादि कही है।

खिरोज मूसाकी दूसरी पुस्तकका नाम है। इसमें सीना पर्वत पर परमेश्वर उपस्थित हुवा। मूसाको समस्त धर्म कर्मोकी प्रथा बतलाई। यहाँ सब तरहके बलिप्रदानोंकी आज्ञाएँ देता है। बलिप्रदान–दोष का बलिप्रदान। ईदुज्जहा (१९) बाबसे (२४) बाबपर्यन्त सब नियम देखो (२४) बाब (१९) आयत में मूसा हारूं इत्यादि को परमेश्वर दर्शन देता है। (१७) परमेश्वरका तेज बनी इसराईलकी दृष्टिके समक्ष, वेखती अग्निके समान दिखाई देता है। खिरोज

के (२६) (२७) (२८) बाबमें डेरे परदे और छत इत्यादिकी युक्तियाँ और बलिप्रदानोंकी समस्त प्रथाएँ बतलाता है । बैल और मेढोंको जबह् करके बलिप्रदानस्थल और उसके चारों ओर रक्त छिडकनेकी आज्ञा देता है । फिर परमेश्वर बालके स्तम्भमें उतरकर मूसाके समक्ष दण्डायमान हो मित्रोंके सदृश अलाप करने लगा ॥

मूसाकी तीसरी पुस्तक एखबारका –(१) बाब (१) आयतपरमेश्वरने मूसाको बुलाया । झुण्डके डेरेसे उससे कहने लगा कि, बनी इसराईलसे कह कि, यदि तुममेंसे कोई परमेश्वरके निमित्त बलिप्रदान लाया चाहे तो निर्दोष गाय, बैल, बकरी, भेड़ लाकर परमेश्वरके बलिप्रदान स्थलके सामने बलि देवे उनके रक्त छिडके, उसको बलिप्रदन देवे । अर्थात् सुगंधि अग्निसे परमेश्वरके निमित्त हो यदि पक्षियोंमेंसे हो तो कुमरी कबूतरके बच्चोंमेंसे बलि लावें काहन उसको बलिस्थानमें लाकर उसका गला मिरोड डाले । उसको बलि देनेके स्थानपर जला देवे । उसके रक्तको दीवारपर निचोडे । जलानेवाला बलि परमेश्वरके निमित्त हो जो जबहको हुई लाश जलनेसे बचजावे उसपर काहनका स्वत्व है अत्यंत पवित्र है । यहां भाँति २ के बलिप्रदानका विवरण चला आता है । जिनके द्वारा मनुष्यों के पापोंका मोचन हो । (९) बाब (२२) आयत मूसा, हारूं और उसके भाईने झुण्डीकी ओर अपना हाथ उठाया । उनको आशीर्वाद दिया । दोषकी कुरबानी जलकी कुरबानी और रक्षाकी कुरबानी देकर नीचे उतरे । फिर मूसा और हारूं झुण्डके डेरेमें प्रवेशित हुए । बाहर निकले झुण्डको आशीर्वाद दिया । तब समस्त झुण्डके समक्ष परमेश्वरका प्रताप प्रगट हुवा । परमेश्वरकी सेवामेंसे अग्नि बहिर्गत हुई, बलिप्रदानस्थली कुरबानी और चरबीको खागई ।

मूसाकी चौथी पुस्तक गन्तीमें विस्तारके साथ लिखा हुआ हैं। कि– परमेश्वर बादलके खंभोंमें आकाशसे उतरता मूसा के डेरेके सामने खड़ा होकर तथा वार्तालाप करके चला जाया करता था अब मूसाने अपने स्थानपर एशूहको स्थिरका युद्धकी आज्ञा दे लाखोंको मार डाला तथा बलआमको भी मारा । मेदियाँ के पाँच बादशाहों और उनकी सैन्यको मिटाकर महा रक्तपात कर कनआनके राज्यको करकवलित किया । परमेश्वरने उन दोनों पुस्तकोंमें समस्त धार्मिक प्रथाएँ बतलाईं, मदिरा पान तथा मांसाहारकी आज्ञा दी ।

मूसाकी पाँचवी पुस्तक इस्तसना–नामकमें मूसाकी समस्त धार्मिक आज्ञाएँ पूरी हुईं । तब मूसा मवाबके मैदानमें नीबू पर्वतपर चढ मर गया । यहूदी मूसाके दुःखमें तीन दिवसोंपर्यन्त रोते रहे मूसा एकसौ बीस वर्ष का वयस पाकर मरा ।

दूसरी ज़बूर पुस्तक।

अँग्रेजीमें ज़बूरको साँग्स आफ़ डेविड कहते हैं साँग नाम गीतका है दाऊद बादशाह खुदावन्दका बडा प्यारा था। खुदावन्दके सामने नाचता गाता बजाता रोता था, मूसाके समान दाऊदने भी बडा रक्तपात किया। परमेश्वर दाऊदकी सदैव सहायता किया करता था। (६६) ज़बूर (१३) बाबमें जला हुवा बलि-प्रदान लेकर तेरे गृह जाऊँगा मैं तेरे निमित्त अपनी भेंट दूँगा। (१४) वे जो आपत्ति कालमें मैंने अपने रक्तसे नियुक्त की अपने मुँहसे मानी (१५) मैं पाले हुए पशु लेकर जली हुई बलि मेंढोंकी सुगंधियोंसहित तेरे निमित्त दूंगा। मैं बछडे तथा बकरे चढ़ाऊँगा। (२९) जबरके परमेश्वरका शब्द जलपर है। तेजोमय परमेश्वर गरजता है। परमेश्वर बड़े जलपर है। परमेश्वर का शब्द आगकी लपटों को चीरता है। परमेश्वरका शब्द जङ्गलोंको कँपाता है। दाऊदका पुत्रसुलेमान बादशाह अपने पिताकी मसनदपर आसीन हुआ।

देखो दूसरे इतिहास का (७) बाब, सुलेमान बादशाह हुवा। परमेश्वरके हैकलकी बनावट करचुका तब समस्त मनुष्यों और सुलेमान बादशाहने बाईस सहस्र बैल और एक लाख बीस सहस्र भेंणोंकी बलि दी।

नबियोंकी पुस्तक।

यसायाह नबीकी पुस्तकका (२३) बाब (१७) आयत, सत्तर वर्षके उपरान्त ऐसा होगा कि, परमेश्वर सूबरपर दृष्टि करेगा। वह फिर खरचीके निमित्त जावेगी। पृथ्वीके समस्त देशोंसे व्यभिचार करेगी। परन्तु उसकी प्राप्ति खरची खुदावन्दके निमित्त पवित्र होगी। उसका धन एकत्रित न किया जावेगा। रोका न जावेगा। वरन् उनके निमित्त प्राप्त होगा जो परमेश्वरके निकट रहते हैं जिसमें भोजन करके परितृप्त होवें अच्छे वस्त्र पहने।

खरकैक नबीका (४)बाब (१२) आयत, तू जौके फुलके खाया करेगा। तू उनकी दृष्टियोंके समक्ष मनुष्योंकी बिष्ठाद्वारा उनको पकायेगा। होसीय नबीका (१) बाब (३) आयत परमेश्वरके वचनका आरम्भ, जो होसीय नबीको आया खुदावन्दने होसीयको आज्ञादी कि, जा एक दुराचारिणी स्त्री और दुराचारिणी बाला अपने निमित्त ले। कारण यह कि, परमेश्वरको छोड़-कर देशने अत्यंत व्यभिचार आरम्भ किया है। पुराने अहदनामेमें तौरीत ज़बूर तथा नबियोंकी समस्त पुस्तकें हैं। उनको जो कोई पढ़कर ध्यान देगा तो स्पष्ट प्रगट हो जावेगा कि, यह सब शिक्षाएँ आत्माके निमित्त हैं अथवा नहीं।

तीसरा नवीन अहदनामा अथवा अनाजील मत्तीकी इञ्जील- (३)

बाब–ईस् योहन्नासे बपतिस्मा पाकर बाहर निकला। देखो उसके निमित्त आकाश खुल गया। उसने परमेश्वरको आत्माका कबूतरके समान उतरते हुए अपने ऊपर आते देखा। (४) ईसू उस समयसे हाँक लगाने लगा। जब ईसू जलील नदीके किनारेपर चला जाता था तब उसने दो भाई शमऊन पितरसने उसके भाई इन्दरयासको नदीमें जाल डालते देखा। कारण यह कि, मछुवे थे। उन्हें कहा कि, तुम मेरे पीछे आओ कि, मैं तुम्हें मनुष्योंका मछुवा बनाऊँगा। व उसी समय जालोंको छोड़कर उसके पीछे हुए। (५) बाब (१७) आयत, यह मत सम्झो कि, मैं तौरीत या नबियोंकी पुस्तकोंका खण्डन करनेको आया हूँ। मैं उन्हें मिटानेको नहीं बरन् सम्पूर्ण करनेको आया हूँ। (१७) कारण यह कि, मैं तुमसे सत्य कहता हूँ कि, जबलों आकाश पृथिवी टल न जाए तौरीतका एक बिन्दु अथवा रेखा कदापि नहीं मिटेगी। जबलों सब कुछ पूरा न हो। (७) बाब (१३) आयात, सङ्कीर्णद्वारसे प्रवेशित हो। कारण यह कि, वह द्वार चौडा है और प्रशस्त है वह पथ जो कष्टपर्यन्त पहुँचता है बहुत हैं वे जो इससे प्रवेशित होते हैं। (१६) वह द्वार क्याही संकीर्ण और तङ्ग है वह पथ जो जीवनको पहुँचाता है अत्यल्प है जो उसे पाते हैं। (८) एक फकियाः ने आकर उससे कहा कि, ए गुरु ! जहाँ तू जावेगा मैं तेरे पीछे चलूंगा (२०) ईसूने उससे कहा कि, लोमड़ियोंके निमित्त मांदें और वायुके पक्षियोंके निमित्त घोसले हैं। पर मनुष्यके निमित्त स्थान नहीं जहाँ शिर धरे (२१) उसके शिष्योंमेंसे एकने उससे कहा कि, ए परमेश्वर ! मुझे बिदाकर कि, मैं अपने पिताको गाडूं (२२) ईसूने कहा कि, तू मेरे पीछे आ। मुरदोंको मुझे गाडनेदे। (१०) बाब (३४)आयत, यह मत मसझो कि, मैं संसारमें मेल कराने आया हूँ। मेल कराने अथवा शान्ति स्थापन करनेके निमित्त नहीं बरन् मैं असि चलवाने आया हूँ। (११) बाब (२५) आयत, ए पिता ! पृथ्वी तथा आकाशके, मैं तेरा गुणानुबाद करता हूँ कि, तूने उन वस्तुओंको बुद्धिमानोंसे छिपाया, बालकों पर खोल दिया। (१६) बाब (२४) आयत, ईसाने कहा कि यदि कोई चाहे कि, मेरे पीछे आवे तो अपना भाव अस्वीकार करे और अपना सलीब उठाकर मेरे पीछे आवे। (२२) बाब (३२) आयतमें इबराहीमका खुदा इसहाक़का खुदा और याकूबका खुदा हूँ। मुर्दोंका खुदा नहीं बरन् जीवितों का खुदा हूँ।

मरक़सकी इन्जीलका—१२– बाब (३८) आयत एक मनुष्यने मसीहसे आनकर कहा कि, ए भले गुरु ! मैं कौनसा उपाय करूँ कि, सदैवके

निमित्त जीवित रहूँ। ईसूने उत्तर दिया कि, मुझे भला क्यों कहता है? कोई भला नहीं बरन् वही एक जगदीश्वर भला है, बाकी कुछ नहीं।

लूकाकी इञ्जीलका–(१२) बाब (४९) आयत, मैं पृथ्वीपर अग्नि लगानेलगाने आया हूँ, मैं कियाही चाहता हूँ कि, लगचुकी होती (५०) पर एक बपतिस्मा पाना है, मैं कैसा तङ्ग हूँ जबलों कि, पूरा न हो (५१) क्या तुम समझते हो कि मैं पृथ्वीपर मेल कराने आया हूँ, नहीं मैं कहता हूँ कि, पृथक् करने आया हूँ।

(५) बाब, ऐसा हुवा कि, जब परमेश्वरके वचन सुननेके निमित्त लोग गिरे पड़ते थे, ईसू शमऊनकी नावपर चढ़कर उपदेश दे रहा था। शमऊनसे कहा कि, आखेटके निमित्त अपना जाल डालो तब उसने उत्तर दिया कि, ए परमेश्वर! हमने समस्त दिवस परिश्रम किया पर कुछ न पकड़ा परन्तु तेरे आदेशसे जाल डालता हूँ। जब जाल डाला तब वह मछलियोंसे ऐसा भर गया कि, वह अकेला खीच न सका, दूसरोंकी सहायतासे खींचकर नाव मछलियोंसे भरली। शमऊनने ईसूपर विश्वास किया और उसके चरणोंपर गिरा। तब ईसूने कहा कि, तू भयभीत न हो इस घड़ीसे तू मनुष्योंका आखेटकारी होगा, सब कुछ छोड़कर शमऊन इसूके पीछे होलिया। (२२) ईसूने अपने शिष्योंको आज्ञा दी कि, असि खरीदकर बाँधो।

योहनकी इञ्जील–(१४) बाब (८) आयत, फ़ीलबोसने कहा कि ए परमेश्वर पिताको हमें दिखला कि, हमें यथेष्ट है। (९) ईसूने उससे कहा कि, ए फ़ीलबोस! इतने समयसे मैं तेरे साथ रहता हूँ और तूने मुझे न जाना जिसने मुझे देखा उसने मेरे पिताको देखा, फिर तू कैसे कहता है कि, पिताको हमें दिखला, क्या तू निश्चय नहीं करता है कि, तेरा पिता मैं हूँ, पिता मुझमें है? यह बातें जो मैं तुझे कहता हूँ मैं आपसे नहीं कहता परन्तु मेरा पिता जो मुझमें रहता है, वह बातें करता है।

करनतियूनके लिये पोलूस रसूलका पत्र।

(१) बाब (९) आयतमें विद्वानोंकी विद्वत्ता एवम् समझवालोंकी समझको तुच्छ करूँगा। विद्वान् कहाँ फ़क्रियः कहाँ इस संसारका विवाद करनेवाला क्या, परमेश्वरने इस संसारके बुद्धिमानोंकी मूर्खता नहीं ठहराई। तथा (८) बाब (१६) आयत और जब इसने नवीन की, तब पहलेको मिथ्या ठहराया। वह जो प्राचीन तथा दिनी है मिटनेके समीप है, अर्थात् प्राचीनसे नवीन विशेष शुद्ध है।

अनागतवक्ता (रसूल अल्ला) के कृत्य ।

१० बाब ९ आयत पितरस दो पहरके समीप कोठेपर परमेश्वरको वंदनाको गया वहाँ उसको भूख लग रही थी, चाहा कि, कुछ भोजन करें पर जब वे प्रस्तुत कर रहे थे, वह विह्वल हो पड़ा देखा कि, आकाश खुल गया वस्तु बड़ी चादरके सदृश जिसके चारों कोनें बँधे थे, पृथ्वीकी ओर लटकाई हुई उसके समीप उतरी (१२) उसमें पृथ्वीके समस्त रूपके चौपाए, बनैले पशु, कीड़े, मकोड़े दूसरे वायुके पक्षी थे। (१३) उसे एक शब्द सुनाई दिया कि, ए पितरस ! उठ उनको हलाल करके खाजा। (१४) पितरसने कहा कि, ए प्रभु कदापि नहीं, कारण यह कि, मैंने कदापि कोई अशुद्ध वस्तु नहीं खाई है। (१५) दूसरी बार पुनः उसी प्रकार आवाज आई कि, जिसको परमेश्वरने शुद्ध किया उसको तू अशुद्ध मत कह। (१६) यह तीन बेर हुवा तब वह वस्तु आकाशकी ओर खींची गई (१७) जब पितरस चिंतित था कि, यह स्वप्न जो मैंने देखा वह क्या था, उस समय करनीलूस सूबःदारके भेजे हुए तीन मनुष्य आए पितरसको उसके गृहपर लेगए। उक्त सूबेदार अपने कुटुम्बसहित ईसाई हुआ।

चौथी पुस्तक कुरान।

ऐसेही तात्पर्य कुरानसे निकलते हैं जो कोई कुरानके वाक्य पढ़नेकी युक्ति जानता हो वाक्य पढ़कर अपना तात्पर्य जान सकता है। यह कुरान स्वयम् प्रगट करता है कि, मैं पूरबकी किसी पुस्तकसे पृथक् किया गया हूं। सुतरां सूरए यूंस (الر) यह पक्की आयतें हैं पुस्तककी।

सुरए यूसुफ--ये आयतें हैं प्रगट पुस्तककी। सूरए हुज्र यह पुस्तककी तथा खुली कुरानकी आयतें हैं। सूरतश्शोरा आयतें हैं खुली पुस्तककी। सूरत लुकमान (الم) ये आयते हैं पक्की पुस्तककी। इसी प्रकारके अनेकों स्थलोंमें यह बात पाई जाती है।

अल्लोपनिषद् ।

कोई इसे अकबरके समयकी कल्पित बताते हैं इसके विषयमें अनेक तरहकी किवदंतियां हैं। मनुष्य अपनी बुद्धिसे विचारले अथर्व वेदमें तो हमें

इसके दर्शन नहीं हुए । पर इसके आधारपर इस्लामकोऔपनिषद कह डाला है इस कारण यहाँ उसे लिखते हैं ।

ॐ अस्मल्ल इल्ले मित्रा दरुणा दिव्याधते इल्लल्ले वरुणो राजा पुरुदु: हया मित्रा इल्लां इल्लेल्ले इल्लां वरुणो मित्रो तेजकाना ।। १ ।। होतारींमद्रों होतारमिंद्रो सुरेंद्रा: अल्लो ज्येष्ठं परमं पूर्णं ब्रह्मणे अल्लम् ।। २ ।। अल्लो रसूल महोमदरकं वस्प अल्लो अल्लां आरलांबुकमेकं ऋल्लार्वकनिस्वातकम् ।। ३ ।। अल्लो परानुहतत्त्व: अल्ला सूर्य्य चंद्रमा सर्व नक्षत्रा अल्ला अग्नि वायू अल्लां ।। ४ ।। अल्लो ऋषीणां सर्वदिव्याम इंद्राय पूर्वं माया अन्तरिक्षा: अल्लो पृथिव्यंन्तरिक्षं विश्वरूपम् ।। ५ ।। दिव्यानि धत्ते इल्लल्ले वरुणोना पुर्दुदु इल्लाङ्कवरु इल्लाङ्कवरु इल्लाम् इल्लल्लेतिल्लल्ला ।। ६ ।। अप्रल्लं इल्ल इल्ले। अनादिरूपाय अर्थणीं शामाहम् अल्लां रस हिजनन्या श्रुन्सिद्धञ्जलखुरान् प्रादृष्टं कुरु करुषपा असुरसंहारणीं हं अल्लो रसूल महम्मद रकक्व रस्म अल्ल अल्लां इल्ले इल्ले तिर इल्लल्ला: ।। ७ ।। सहस्रा वर्तनेनदेव जालो भवति शतावर्तेन सर्ववश्यो भवति त्रिमधुह वृत्तेन सर्षपेन वा अत्यस्तवर्तने सर्वग्रहशान्तिर्भवति ।। इति अथर्वण संहितायां एकविंशतिद्वारेसप्तविंशतिमुति:ॐ अल्लात्वा:इल्लल्ला महम्मद रसूल अल्ला: ॐ इल्लाङ्क: वर इल्लाङ्क वर इल्लाम् इल्लल्लेति ।। जैसा कि, यह अल्लाह और रसूलकी प्रशंसा करता है। इसीके अनुसार आरम्भमें लेखनीने लौहपर लिखा । वही आजदिन पर्यन्त बराबर चला आता है, घट बढ़ नहीं । यद्यपि पहले बिस्तारके साथ था और अब संक्षेपतः हो गया (लाइलाहइल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलल्ला) कहा जाता है। जो पहले था वही आज है । वह जो है उसे संस्कृतमें महामद कहते हैं वही अब मुहम्मद साहिब हैं। यही मुहम्मद रसूल अल्लाह सृष्टिके उत्पत्तिकालसे लेकर आजपर्यन्त लगातार मुसलमानोंके गुरुवाई करता चला आता है। इसीने संसारमें अघोर धर्म वाम मार्ग जैसा इसलाम पृथ्वीपर प्रचलित किया । मोलवी अमाहुद्दीनका मुहम्मदी इतिहास और मुहम्मदी शिक्षाका मिलान करके देखो, प्रत्यक्षमें अघोर धर्म प्रगट है इसी महामद तथा मुहम्मदके जिन परी भूत प्रेत इत्यादि अधीन रहते हैं।

इसीसे कुरान है। यह अल्लाह उपनिषद अथर्वण वेदका (२७) अध्यायका (२१) मंत्र है ऐसा कोई कहते हैं पर हमने इसे वेदमें नहीं देखा जो है ऐसा कहते हैं उन वेचारोंको पता नहीं कि, उस वेदमें अध्याय है वा नहीं है।

मुझको भली भाँति स्मरण है कि, मैंने तौरीत जबूर और नबियोंकी पुस्तकें इञ्जील इत्यादिमें तो अल्लाका नाम कहीं नहीं देखा केवल कुरानमें देखा है, कुरानके लिखे जाने तथा संसारमें प्रचलित होनेके पूर्वसे अल्लाके नामसे लोग भली प्रकार परचित थे। अरबमें कितनोंहीका नाम अबदुल्ला था। जब पूर्वसे अल्लाहका नाम है और ढूंढ़नेसे प्रमाणित हो जावेगा कि, तौरीत जबूर इञ्जील और कुरानके लिखे जानेसे पूर्व, प्राचीन कालसे लोक अल्लाका नाम जानते और याद करते थे इस कारण अल्लाका नाम वेदसे है। प्रचीनकाल और उत्पत्तिके समयसे अल्लाह है। तो उसके अनागत वक्ताभी उसीके सदाके दरवारी हैं। दावा तो यह है कि, संसारकी उचित बातें वेदसे प्रचलित हुई अनुचित उनके घरकी हैं।

कुरानका सूक्ष्म सार।

बिसमिल्लाह अर्रहमाने उर्रहीमो।

(३) सिपारा (३) सूरत (अलहमरान) (५) रकूअ (५६) आयत उन काफ़िरों धोखा दिया अल्लाने धोखा दिया, अल्लाहका न्याय सर्वोत्तम है (९) रकूअ (८६) आयत, तू कहे कि, हम विश्वास लाए अल्लापर कुछ उतरा हमपर जो उतरा इबराहीम इसमाईल इसहाक़पर याकूबपर उसकी संतानपर, जो मिला मूसाको, समस्त नबियोंपर, हम अपने परमेश्वरकी ओरसे उनमें किसीको पृथक् करते हैं। हम उसके आज्ञा पर हैं।

(४) सिपारा (४) सूरतनसा (५) सिपारा (२०) रकूअ (१३६) आयत जो लोग मुसलमान पुनः उस धर्मसे विमुख हुए फिर मुसलमान पुनः विमुख हुए फिर मुसलमान हुए फिर बढ़ते गये इनकारमें परमेश्वर उनको कदापि क्षमा नहीं करेगा न उनको पथही देवेगा।

(९) सिपारः (९) सूरत तोबः (३) रकूअ (२३) आयत हुए विश्वासवालों! वे पकड़ो अपने पिता और जौर भ्राताओंको साथी यदि वे प्रिय रक्खे। कुफ्र विश्वाससे जो लोग साथ करें वही पापिष्ठ हैं।

(९) सिपारः सूरत अनफाल (३) रकूअ (३०) फिर जब फरेब बनाने लगे काफ़िर कि, तुझको हरावें अथवा मारडालें अथवा निकाल देवें फरेब करते थे, अल्ला भी फरेब करता था। अल्लाका फरेब सबसे उत्तम है।

(११) सिपारह (१०) सूरत (मुनुस) (१०) रकूअ (९९) यदि तेरा परमेश्वर चाहता तो विश्वास लाते जितने लोग पृथ्वीमें हैं। अब लोगोंपर क्या तू बल करेगा कि, हो जावे विश्वासी (१००) किसीको नहीं मिलता

कि, विश्वास लावे। परन्तु अल्लाहकी आज्ञासे वह उनपर भ्रष्टता, डालता है है जो नहीं समझते।

(१५) सिपारह (१८) सूरत कहफ़ (९) रकूअ (५९) (८१) आयतपर्यन्त ख्वाजः खिज्र और मूसाका वृत्तान्त लिखा है।

(१७) सिपारह (२२) सूरते हज्र (५) रकूअ (३६) हमने हर फिरके कुरबानी ठहराई है कि, अल्लाका नाम याद करें चौपाईयोंके हलाल होनेपर जो उनको देवो अल्ला तुम्हारा एक अल्ला है। उसीकी आज्ञापर रहो हर्ष सुना नम्रता करनेवालोंको (३९) अल्लाको नहीं पहुँचता न उनका मांस न रक्त[1] परन्तु उसको तेरे हृदयका क्षोभ पहुँचता है।

(१९) सिपारह सूरत (नमल) चिउटीने सुलेमान बादशाहके साथ वार्तालाप किया था। हुद हुद पक्षी सुलेमानका पत्र अथवा समाचारवाहक था।

(२१) सिपारह सूरत (अखराब) (९) रकूअ (७२) आयत हमने सौंपी हुई वस्तु पृथ्वी और आकाशको पर्वतोंको दिखाई। किसीने उसको स्वीकार नहीं किया कि, उसको उठावें तथा उससे भयभीत हों मनुष्यने उसको उठा लिया, यह बड़ा निर्दय मूर्ख है।

(२३) सिपारह (३७) सूरत (साफ़ात) (२) रकूअ (३९) परन्तु जो परमेश्वरके चुने हुए सेवक हैं। (४१) उनकी प्रतिष्ठा है, पदार्थोंकी वाटिकाओंके (४३) तख्तोंपर एक दूसरेके समक्ष (४४) लोग लिए फिरते हैं। उनके पास नतरेकी मदिराका प्याला (४५) श्वेत रङ्गका आनन्द पहुँचाता है। पानेवालोंका (४६) उससे न शिर फिरता है और न बहकते हैं। (४७) नीची दृष्टिवालियाँ स्त्रियाँ उनके समीप हैं बड़े नेत्रोंवालियाँ ऐसी मानों के छिपे धर अण्डे हैं। (६०) भला यह अच्छी मेहमानी अथवा वृक्ष सेहुंडका।

(२६) सिफारह (५०) सूरत क़ाफ़ (१) रकूअ (अक) प्रकार है उस कुरान बड़ क्षोभवालेकी (२) रकूअ (१५) और हमनें बनाया मनुष्यको हम जानते हैं कि, जो बातें आती हैं उसके मनमें और हम उसकी धड़कती नसक विशेष समीप हैं।

अल्लाका नाम मुहम्मदके पहलेसे हैं तो मुहम्मद भी मुहम्मदके पहलेसे है। अल्लाह और रसूल अल्लाह पूर्वकालसे ऐसेही चले आते हैं यद्यपि उनकी

१—इस आयतके भावको एक चित्रमें गोके खुरोंके नीचे लिख दिया था—'न पहुचेगी उनके रक्त मांसकी कुर्बानी अल्लाहको किन्तु पहुँचेगी सिर्फ परहेजगारी तुमसे, इस पर लोग बिगड़ खड़े हुए। नवाब हैदराबादने उसे जप्त कर लिया। इससे तो यही प्रतीत होता है, कि सच्चे मुसलमानों में जीवहत्या भी नहीं होती थी।

मूर्तिमें किसी प्रकारकी विभिन्नता हो जाती है परन्तु प्रकृति बदल नहीं सकती हैं। जो पहले महामद था, वही अब मुहम्मद है इस तरह पश्चिमके दर्शन पूर्वके दर्शनोंकी छायायें हैं ।

पर बलिप्रदान करनेवाले यह समस्त संसारी कालपुरुषकी पूजा करते हैं एवं जितने मनुष्य कालपुरुषका पूजन करते हैं वे सब निश्चय बलिप्रदान करेंगे या करते आए हैं कारण यह कि, कालपुरुषका भोजन जीव हैं वह काल पुरुष तो जीवोंहीके भोजनसे प्रसन्न होता है ॥

जो कोई दरिद्री तथा धनविहीन होता है वह भिक्षा माँगता फिरता है। जिसके घरमें असीम सम्पत्ति भरी होगी वह किसीका भिक्षुक क्यों होगा कारण यह कि, मेरे पिताने मुझे एक बृहत् भण्डार प्रदान किया है। वह भण्डार सूक्ष्म वेद है। जिसमें समस्त विवरण है। मैं किसीके विवरण अथवा अर्थ बतानेका कदापि इच्छुक नहीं हूँ।

मैं तो उनकी बातोंपर तनिक भी विश्वास नहीं करता मैं तो कबीर साहबकी बातोंको सत्य जानता हूँ। जो लिखावट तथा बातें सत्यगुरुकी बातोंके अनुसार हों उसको भी मानता हूँ। जो लिखावट तथा विवरण कबीर साहबके विरुद्ध हो उसकी ओर मैं कदापि दृष्टि नहीं फेरूँगा क्योंकि, जो लिखावटें श्रेष्ठ वचनके विरुद्ध हैं वे यमजाल हैं।

यदि सहस्र अंधे एक हाथीका हुलिया (स्वरूप) बतावें उन सहस्र अंधोंसे एक दृष्टिवाले सचक्षुको मैं अच्छा जानता हूँ। सहस्र नेत्रवालोंसे एक विद्वान्के विवरणको ठीक जानता हूँ। सहस्रों विद्वानोंसे एक विद्वान् गुणीको अच्छा समझता हूँ। सहस्रों गुणी विद्वानोंसे एक ज्ञानीको अच्छा समझता हूँ। सहस्रों ज्ञानियोंसे एक भक्तको अच्छा समझता हूँ। सहस्रों भक्तोंमें एक ब्रह्मज्ञानी अर्थात् जो गुणी मनुष्य लुद्दनी विद्यासे सुशोभित हैं उसको सर्वोत्कृष्ट मानता हूँ, जितने तीन लोकके ब्रह्मज्ञानी हुए, अथवा होंगे सबके गुरु तथा पथदर्शक कबीर साहब हैं। कबीर साहबको मैं स्वयम् सत्यपुरुष मानता हूँ। मेरा यह विश्वास अटल है। मैं इन्हीं महाशयके वाक्यानुसार सब कुछ लिखता हूँ।

यह सत्यगुरु सदैवसे पुकारते और मनुष्योंसे कहते आए कि, ए मनुष्यो ! कालपुरुषसे बचो, वह तुमको फँसाकर मारनेवाला है। वह तुम्हारी मुक्ति कदापि होने न देगा। वह काल महाभयानक है ।

बलिका निषेध।

कबीर साहिब किसी भी प्रकारकी बलि या कुर्बानीको उचित नहीं मानते। कोई भी हत्या पापसे खाली नहीं है।

सन्तो राह दुनों हम डीठा ।।
हिन्दू तुरक हटा नहिं मानें, स्वाद सबनको मीठा ।। १ ।।
हिन्दू व्रत एकादशी साधें, दूध सिंघाड़ा सेती ।
अनको त्यागे मन नहिं हटकैं, पारनकरैं सगोती ।। २ ।।
तुरक रोजा नवाज गुजारैं, विसमिल बाँग पुकारैं ।
उनकी भिश्त कहाँते, होइहै, साँझै मुर्गी मारैं ।। ३ ।।
हिन्दुकि दया मेहर तुरुकनकी, दूनों घरसों त्यागी ।
वै हलाल वै झटका मारैं, आगि दुनों घर लागी ।। ४४ ।।
हिन्दू तुरुक कि, एक राह है सद्गुरु है बताई ।
कहहि, कबीर सुनो रे सन्तो, राम न कहेउ खोदाई ।। ५ ।।

ए महात्मा पुरुषो ! हमने हिन्दू मुसलमान दोनोंकी एकही रासता देखी है। मैं हिन्दू और मुसलमान दोनोंको समझाता हूं पर दोनोंही जिदपर आये हुए हैं कहना नहीं मानते। दोनोंको इसकी चॉट लगी हुई है। हिन्दू पहले दिन तो एकादशीका व्रत दूध सिंघाडेसे करते हैं अन्नका तो त्याग करते हैं पर मनके विकारोंको छोडकर मनको नहीं रोकते। न कभी एकादशीको विषय चिन्तन ही छोडा है। इसी तरह तुरक जब रोजा करते हैं उस दिन उपवास करते हैं नेमाज पढते हैं, बाँग लगाते हैं, पर साँझको रोजाके खुलतेही मुर्गी मार पुलाव बनाकर खा जाते हैं। हिन्दुओंने दया तथा तुरकोंने मिरह, अपने अपने दिलसे निकालदी, एक हलाल करता है तो एक झटका मारता है। अज्ञानरूपी आग दोनोंके लगी हुई है। सत्यगुरुने मुझे यही बताया है कि, हिन्दू मुसलमान दोनोंकी एकही राह है। राम न कहा खुदा कहलिया, एवं खुदा न कहा राम कह लिया। दोनों नाम उसीके हैं सिर्फ नामोंमें अन्तर है। कबीर साहिब कहते हैं कि, राम और खुदाने किसीसे नहीं कहा हैं कि, जीवहत्या करो।

शब्द—सन्तो पांडे निपुण कसाई ।।
बकरा मारि भैंसाको धावै, दिलमें दर्द न आई ।। १ ।।
करि स्नान तिलक करि बैठे, विधिसों देवि पुजाई ।
आतमराम पलकमो विनशे, रुधिरकी नदी बहाई ।। २ ।।
अति पुनीत ऊँचे कुल कहिये, सभा माँहि अधिकाई ।
इनसों दीक्षा सब कोई माँगे, हसि आवे मोहि भाई ।। ३ ।।
पाप कटनको कथा सुनावें, कर्म करावें नीचा ।
बूडत दोउ परस्पर देखे, गहे हाथ यमखींचा ।। ४ ।।

गाय बधे तेहि तुरका कहिये, उनते वेका छोटे ।
कहहिं कबीर सुनो हो सन्तो, कलिके ब्राह्मण खोटे ॥ ५ ॥

कबीर दासजी वाममार्गी देवीको पुजारीको ओर लक्ष्य करके कहते हैं कि, ए महात्माओ ! यह पाण्डे कसाईसे भी चतुर मालूम होता है । बकरेको तो सदाही बलि देता रहता है पर मोके झोके भैंसाके मारनेका भी इरादा करता है । स्नान करके लाल तिलक दे, सिद्ध बनके बैठ जाता है, देवीको बडे ढोंगके साथ पुजाता है । जो अपने भीतर है वही उसकेभी भीतर है इस बातका ख्याल न करके सपाटेसे जीव वध करके लोहूकी नदी बहा देता है । जब कभी सभामें बैठता है तो अपनेको अतिपुनीतकुलमें मानकर सभामें अपनेको कौल कहता हुआ बलिका माहात्म्य प्रकट करता है । जमाना इनका चेला होनेको चलता है, पर मुझे इसकी हँसी आती है, कथा तो सुनाते हैं पाप नाश करनेके लिये, पर काम करते हैं पापके पहाडोंका । ऐसे गुरु चेले दोनों डूबते देखे जाते हैं हाथ पकड़कर यमराजने दोनोंको जीव हत्याके फल भोगनेके लिये खींच लिया है । जो गाय मारते हैं वे तुर्क हैं भैंसा बकराके मारनेवाले क्या इनसे कम हैं । पहिले ऐसे ब्राह्मण नहीं थे कबीर कहते हैं कि, कलियुगके ऐसे ब्राह्मण जो ब्राह्मण शरीर पाकर जीवहत्या करें वे महा बुरे हैं । इस तरह कबीर साहिबने और भी अनेकों वचनोंमें बलि या कुर्बानीका निषेध किया है । वे हिन्दू मुसलमान दोनोंके लिये अनुचित समझते हैं ।

समस्त सूक्ष्मवेद इस विषयमें बराबर यह बात प्रगट करता चला आता है कि, रक्तपात कालपुरुषकी ओरसे है । तुम इस पापसे रुको परन्तु लोग नहीं हटते थे । कबीर साहबके साथ वैर करते, कहना न मानते, ऐसा विष और मंत्र कालपुरुषका समस्त जीवोंपर चढ़ रहा है । कि, कोई जीव सत्यपुरुषकी भक्तिको अच्छा नहीं समझता है । कालपुरुषकी ओर आपसे आप दौड़ता है । जैसे नीमके कीडेको नीमही पसंद है । वह मिसरी चीनी आदिको अच्छा नहीं समझता । सब जीव कामनाकी वासनामें फँसकर काम क्रोध लोभादिके प्रपञ्चोंमें फँस रहे हैं । समस्त जीवोंकी नस नसमें कालपुरुषका विष समा रहा है । बिना सत्यगुरुकी दयासे वह विष उनके भीतरसे न निकलेगा । कालपुरुषके पुत्र कालपुरुषके बनाये नियमोंपर समस्त मनुष्योंको आरूढ़ करते जाते हैं । हाँक मार मार कर समस्त मनुष्योंको फँसाते हैं, समस्त मनुष्य उनके धोखे और धूर्तताको देखते सुनते हैं तथापि उसी पथपर चले जाते हैं । फिर उनको क्या कहिये ? मनुष्यतासे बहिर्गत कहिये अथवा मनुष्य कहिये ? जो लोग जान-

बूझकर कुएँमें फाँद पड़ते हैं क्या उन्हें भयका कुछ ध्यान नहीं रहता ? झूठे काम हाँक मार मारकर समस्त संसारको बंधनमें फँसा रहे हैं, उनको जो कोई पहचाने वो ही कालके जालसे बचे । वे लोग समस्त संसारमें आग लगा रहे हैं और समस्त जीव जल रहे हैं । कालपुरुष सबको जला जलाकर हजम करता जाता है । इसके पेटमें सब समागये; कबीर साहिबने इसी बातको बड़े सुन्दर शब्दोंमें कहा है –

गगनमें आग लगी बड़ी भारी ।।
धरती जल गई अम्बर जल गयो, जल गयो सकल पसारा ।
चन्दा जल गया सूरज जल गया, जल गया नौलख तारा ।।
ब्रह्मा मरे विष्णु मर गए, शंकर नेजाधारी ।
रामा मर गए, लछिमन मर गए, मर गए कृष्णमुरारी ।।
कोटिन कोट कनैया मर गए, रैयत कौन बिचारी ।
कहै कबीर सुनहु भाई साधो, अलख पुरुष अविकारी ।।

आकाशमें कालपुरुषरूपी बड़ी भारी आग लग रही है इसी आगमें अपने अपने समयपर धरती अंबर और सारा संसार जलगया । आसमानमें खिलनेवाले चाँद और सूरज तथा चाँदकी शोभाको चौगुने करनेवाले नौलाख तारे भी उसमें लगा गये । ब्रह्मा विष्णु और महेश ये भी इसके चक्करसे न बचपाये सत्य पुरुषके अवतार राम लछिमन और कृष्ण भी अपने समयपर अपनी झलक दिखाकर जैसे झलके थे, वैसेही अदृश्य होगये । अनेकों राजाएँ न जाने कहाँ छिप गये ? रैयतका तो पताही क्या है । सबको काल जहाँका तहाँ कर देता है । केवल एक अलख पुरुष विकार रहित है । वही सबका सब कुछ है वो भक्तोंको कालपुरुषसे बचानेके लिये आता है पर कालके राज्यमें अधिक दिन न रहकर अपने सत्यलोकको चले गये । क्या कालपुरुषकी धूर्ततासे लोग अनभिज्ञ हैं ? क्या हजरत ईसा पुकार कर नहीं कहते कि, मैं आग लगाने आया हूँ । मैं तलवार चलाने आया, मैं शान्ति स्थापनार्थ नहीं आया । देखो, समस्त संसारमें तलवार चल रही है, चोर नहीं आता, चुराने मारनेको मैं आया हूँ, मनुष्योंके फसानेके निमित्त यह सब कालपुत्र नियुक्त हैं । अंधा मनुष्य इन बातोंको नहीं समझ सकता, उनको शाफी और नाजी समझता है ।

कालके समस्त पुत्र हाँक मार मारकर मनुष्योंको फँसा फँसाकर मारते हैं । परन्तु उनके धोखेको बिना हंसकबीरके कोई नहीं पहचान सकता । वेही लोग इस संसारमें आग लगाने एवं वध करनेको आए हैं । वे कदापि शान्तिस्थापन करने नहीं आते, बरन् तलवार चलाने आते हैं । वे भयानक भेड़िया हैं कि, भेडचर्म

ओढ़कर भेड़ोंके झुण्डमें घुसकर उनको नष्ट करें, वे तल्वार चलाने आये हैं। समस्त संसारमें तल्लवार चल रही है। वे आग लगाते हैं। समस्त संसारमें आग लग रही है।

सत्यकबीर वचन ।

तीन लोकमें लागी आग,। कहैं कबीर कहाँ जैहौं भाग ।।

कौन ऐसा तीन लोकमें है कि, कालपुरुषके पञ्जेसे भाग निकले, कोई नहीं। एक भी नहीं। सबके सब कालपुरुषके भोजन हैं। बिना हंसकबीरके कोई कालके पुत्रोंकी बोलियाँ समझनेका सामर्थ्य नहीं रखता। न उसके धोखेको प्रगट कर सकता है। जिसने जैनियोंको दया बतलायी, उसीने दूसरेको यज्ञ तथा रक्तपात करनेको कहा क्या दो परमेश्वर तो नहीं जो एक कुछ कहे तथा दूसरा कुछ कहे वो सबके लिये एक है सबका वोही मालिक है। 'भाई रे दो जगदीश कहाँ' आएसे इस पूरे शब्दको २६८ के पेजमें युगलानन्दजी ऐसेही प्रकरणमें पूरेका अवतरण दे चुके हैं। इस कारण हम यहाँ पूरा नहीं लिखाते किन्तु इसका अर्थ किये देते हैं। ऐ भाइयों ! इस संसारके स्वामी तो एकही है दो नहीं हैं आपको किसने बहका दिया है अल्ला, केशव, करीम, केशव, हरि और हजरत उसीके तो नाम हैं ।। १ ।।सोना एकही है उसके अनेक तरहके गहने बन जाते हैं वैसे तो वे गहने आपसमें जुदे लगते हैं पर सब सोना है सिवा इसके दूसरा कुछ नहीं है। इसी तरह निवाज और पूजा देखनेमें दो लगती हैं पर वास्तवमें सिवा उस जगदीशकी आराधनाके दूसरा कुछ भी नहीं है ।। २ ।। वही महादेव है वही महम्मद ब्रह्मा और आदम। किसीको हिन्दू तथा किसीको तुर्क कह रहे हैं पर दोनों रहते एकही भूमिपर हैं ।। ३ ।। वेद पढके पांड़े तथा दूसरे किताब कुरान शरीफ पढकर मौलाना बन जाते हैं। बिगत–जुदे २ नाममात्र हैं, सब उसी मिट्टीके बर्तन ।। ४ ।। कबीर साहिब कहते हैं कि, वे दोनों भूल गये हैं। रामको किसीने नहीं पाया, वे बोकरा (बकरा) मार देते हैं, तो गाय कटा देते हैं। वो जगदीश एक है उसका उपदेश भी सबके लिये एक है। मनुष्य मात्र के कल्याणके लिये वो समय २ पर प्रकट होकर उपदेश दिया करता है।

चारों युगसे कबीर साहब बराबर पुकारते चले आते हैं कि, ए मनुष्य ! काल पुरुष की धूर्ततासे भागकर कबीर साहबकी शरण लो।

ब्रह्मा विष्णु शिव ये तीनों इस भवसागरमें ईश्वरीय कार्य करते हैं जो कोई तपस्या करता है उसको ये तीनों वरदान देते हैं उसकी कामना पूरी। करते हैं। महिषासुरके समान सहस्त्रों ऐसे हुए कि, जिनको तीनोंने वरदान दिया।

उन्होंने बल पाकर समस्त देवताओं ब्रह्मा विष्णु शिव सहित मार भगाया कि, उनमें तनिक भी बल नहीं रहा कि, उनका सामना कर सके। उनको बल देकर फिर आपही निर्बल होकर क्यों भागजाते। फिर जान पड़ा कि, ये बातें उनके सामर्थ्यसे बाहर थीं, यदि उनके बशमें होतीं तो वे आपसे आप विवश क्यों होते ? ये तपके वश हैं इसी तरह सत्यपुरुष भक्तिके वश है।

देखो यह जीव वासनासे बिगड़ता है, जो यज्ञ वेदमें नियत हुई तो, उनसे क्या तात्पर्य है कि, यदि सौ अश्वमेध करे तो इन्द्रकी श्रेणी पावे अर्थात् इन्द्र हो जावे। फिर इन्द्र होकर वह भी कष्ट पाता हुआ दुःख भोगता रहता है। जो पापी हैं जीवको बेदर्द होकर मारते हैं, उन निर्दयियोंके जीवित रहनेसे पृथ्वीपर बोझका बढ़ना संभव था; इस कारण उनकी मृत्युही उचित है। दूसरोंको मार-कर अपने वयसकी बढ़ती चाहना मूर्खता है। भाँति २ की कामनाओंके निमित्त प्राणघात करते तथा जीवोंको कष्ट पहुँचाते हैं उनका भला कैसे हो सकता है ? बलि देते हुए प्रसन्न होते हैं पाप पर पाप बढ़ाते जाते हैं।

जो लोग संसारबिरक्त कहलाते हैं वे फिर वैकुण्ठ ब्रह्मलोक इत्यादिकी कामना करते हैं इस कारण झूठे संसारविरक्त हैं। कारण यह कि, ब्रह्मलोक कैलास और इन्द्रपुरी इत्यादिके रहनेवाले सबके सब शरीरके बंधन और काम क्रोध लोभ मोहादिके फँदेमें फंसे हैं। संसारको छोड़कर फिर अप्सराओंके संभो-गकी लालसा करना क्या बुद्धिमानोंके अनुसार कार्य है ? कदापि नहीं। भलाजी ! यहाँ तो एक स्त्री मिली थी जिसको कष्टका कारण समझकर छोड भागे थे। फिर सत्तर अथवा अधिक स्त्रियोंका सहवास मिला तब मुसलमानोंने कठिन दुःख तथा आपत्तिमें फँसा दिया। पहले तो एक सेर आटामें उदरपूर्ति होती थी। बहिश्तमें सत्तर दस्तर ख्याल होंगे फिर उनके निमित्त पेटभी बड़ा बनाया जावेगा। यदि खाते २ पर्वत खाजाओ तो भी भूख न जावेगी। यह स्वर्ग नहीं मनुष्योंके निमित्त महा आपत्ति स्थिर की गई है कि, सदैवसे सदैव पर्य्यन्त आपत्ति तथा दुःखमें फँसे रहें, कभी उसका छुटकारा न हो। यह तो केवल जैसे मूर्ख बच्चोंको ठग लड्डू पेडे खानेको देते हैं फिर उजाड़में लेजाकर उसके समस्त आभूषण उतारलेते हैं। उस अनजान बच्चेको मारकर कुएँमें ढकेल देते हैं। वह अज्ञान यदि ठगकी ठगीसे सचेत होता तो व्यर्थ अपने प्राण क्यों नष्ट करता ? इसी प्रकार इस संसारके लोग सत्य पुरुषकी भक्तिसे अनभिज्ञकाल पुरुषकी वंदना तथा माननाकी आज्ञाओंपर चल रहे हैं। प्रत्यक्षमें देखते हैं पर नहीं देखते।

सुन तो रहे हैं पर नहीं सुनते । उनके हृदय बुद्धिपर ताला लग रहा है, बिना सत्यगुरु कबीरकी शरणके ताला कदापि न टूटेगा ।

जो ठग है उसको अपना दयालु मित्र समझते हैं । अज्ञान बालक ठगको कैसे पहचान सकता है, हाँ जब कोई दयालु मित्र मिले हृदयसे सचेत तथा पथसे विज्ञ हो वह भी अपने पथदर्शकके विरुद्ध काम न करे। कारण यह कि, कृतज्ञतासे बढ़कर और कोई अच्छी भलाई नहीं है । जो कोई गुरुका आज्ञाकारी होगा वही छुटकारा पावेगा । समस्त धोखाओं और दगाबाजियोंको देखकर दूर भागे । जहाँ सत्यता हो उसको तुरंत स्वीकार करे, तनिक विलम्ब न करे । बुद्धि और ज्ञानके बससे सबकी यथार्थताको जाने । जहाँ धोखा हो वहाँसे दूर भागे । जब धोखे और धूर्तताको न पहचाना तो अवश्य मारा गया ।

समस्त संसारकी पुस्तकें कोई क्यों न पढा करे उसके मनमें कदापि प्रकाश न दौडेगा । परन्तु जब सूक्ष्मवेद या अध्यात्मशास्त्रकी ओर मन फिरेगा तबही मनको संतोष आवेगा, स्थिरता होगी । जितने वेद और पुस्तकें हैं, कोई अंधकारसे पृथक् नहीं कर सकतीं । परन्तु केवल सूक्ष्मवेद अंधकारसे बहिर्गत होता है जो कोई सूक्ष्मवेद समझ, बूझकर अपने गुरुसे पढ़ेगा उनकी सूक्ष्मबातोंको पहचान लेगा सत्यगुरुको पहचानेगा अपने गुरुकी सेवा तथा सत्कारको अपने शिरधारण करेगा उसको अवश्य कबीर गुरु मिलेगा जो कोई अपने गुरुसे खिंचा रहेगा उसको अपने सत्यगुरुका दर्शन कदापि न होगा । गुरुकी सेवा तथा आज्ञा मानना सत्यगुरुकी दयापानेका मार्ग है, गुरुहीकी दयासे सत्यगुरुकी दया है । मुक्ति पानेका यही मार्ग है और गुरुका क्रोध दुर्भाग्यका चिह्न है ।

बुद्धिमानोंको बुद्धिमानियाँ और वैद्योंकी युक्तियाँ चतुरोंकी चतुराई किधर गई ? किस पेचीले गड़हेमें डूबकी खाते फिरते हैं । और सावधानोंकी सावधानियाँ चालाकोंकी चालाकियाँ किस कुएँमें जा पड़ीं कि, वे तनिक भी नहीं विचारते । तनिक भी नहीं जान सकते कि, परमेश्वर बड़ा स्वच्छ तथा दयालु है वह किस प्रयोजनसे ऐसा अशुद्ध कार्य करावे, यानी व्यर्थही निर्दोषी जीवोंका प्राणघात करावे । उनका रक्त बलिप्रदानस्थलोपर छिडकावे । उनका माँस तथा चरबी खावे , यह परम दयालु परमेश्वरका कार्य तो कदापि नहीं हो सकता, यह तो किसी राक्षसोंके परमेश्वरका हो सकता है ऐसे भयानक परमेश्वरसे जो अपने मुक्तिकी आशा रखते हैं क्या उन लोगोंकी बुद्धि ठिकाने है ? कदापि नहीं । देखो वे लोग जिसको पूजते हैं वे कौन हैं ? निश्चरोंमें और उनमें क्या भेद है ? वैष्णव बलि आदिकी बुराईयोंसे कोसों दूर हैं, पर व्यवहारका

फल उन्हें सत्यगुरु कबीरसाहबसे मिलेगा। कारण यह कि, समस्त वैष्णवोंके प्रधान अगुवा कबीर साहब हैं अन्तमें चारों सम्प्रादायोंके वैष्णव कबीर साहबसे जा मिलेंगे, तब सबके सब मुक्ति पावेंगे। सब पंथ तो इसी सत्यगुरुके हैं परन्तु वैष्णव धर्म कबीर पंथसे विशेष अंतर नहीं रखता है। दूसरे शब्दोंमें यह भी कहा जा सकता है कि, कबीरपंथ वैष्णव संप्रदायका ही एक भाग है।

कुरानमें तो स्पष्ट लिखा है कि, जो ईसा तथा मूसाका परमेश्वर है वही मुहम्मदका भी है। फिर मोहम्मदी ईसाइयों और मूसाइयोंसे क्यों वैर रखते हैं? अपने उन्नतिकालमें मुसलमानोंने ईसाइयोंको अत्यन्त कष्ट पहुँचाया था। लाखों निर्दोष हिन्दुओंको मार डाला, क्या परम दयालु परमेश्वरकी यही आज्ञा थी? मुहम्मद साहबकी त्रुटि तो तभीसे दूर होगई जबसे कबीर साहबने उनको सत्पुरुषका दर्शन करवाया था। कौन बुद्धिमान तथा दूरदर्शी है जो अपनी त्रुटिको जाने उससे दूर भागे? वही पुरुष प्रशंसनीय है जो ईर्षा छोड़कर न्यायदृष्टिसे देखे। उसीको दोनों जगह बड़ाई मिलती है।

समस्त मनुष्योंका परमेश्वर एक है दो परमेश्वर नहीं यदि दो परमेश्वर होते तो विभिन्नता होना क्या आश्चर्य न था? जैसा कि, परमेश्वर कुरानमें आज्ञा करता है।

एक परमेश्वर पर कुरान।

لَوْ كَانَ فِيهِمَا آلِهَةٌ إِلَّا اللّٰهُ لَفَسَدَتَا

अनुवाद—यदि होते मध्य आकाश तथा पृथ्वीके अनेक परमेश्वर अल्लाके अतिरिक्त वास्तवमें टूट जाते दोनों अर्थात् पृथ्वी और आकाश।

कारण यह कि, जितने विद्वान् तथा बुद्धिमान् हैं सबके सबका निश्चय विद्यापर स्थिर है। उनको ऐनुलयकीन और हक्कुलयकीनकी श्रेणी प्राप्त नहीं हुई। इन तीनोंको तीन डंडेकी सीढ़ी मानलो। जबलों एक डण्डे परसे अपने पैरको न उठावे तबलों ऊपरके डण्डेपर पैर नहीं रख सकता। सहत्वोंके साथ ऐसी घटना हुई कि, जब इन लोगोंको वंदनाका आनन्द मिला तब पुस्तकोंको फेंक दिया। मौलवी रूम और शाहबूअली कलन्दर आदिके समान वंदनाका स्वाद पाकर पुस्तकपाठको तुच्छ तथा नितान्तही निस्सत्त्व माना। अतः समस्त बुद्धिमान् विद्वान् जो केवल पहले डण्डेपर खड़े हैं, परमेश्वरके तत्त्वको क्या समझ सकते हैं? ऐसाही विषयानन्द, भजनानन्द और ब्रह्मानन्द। जबलों

कामक्रोधादिसे पूर्णतया पृथक् न हो जावे, तबलों भजनानन्द नहीं हो सकता; जबलों पूर्णतया डूब न जावेगा तबलों ब्रह्मानन्दके आनन्दको न पावेगा ॥

ऐसाही शरीअ ततरीकत हक़ीकत मारफ़त है। समस्त विद्वानोंने अभीतक केवल शरीरअतकी श्रेणी पाई है उनको उरफ़ानकी क्या सुध है ? इस कारण विद्वान लोग जो उरफ़नाका दम भरते हैं यह उनकी भूल है। यह समस्त संसार काम क्रोध लोभादिके जालमें फँसा हुवा है और सहस्रों प्रकारकी कामनाओंसे भरा हुवा है। इस कारण काम क्रोधादिकके प्रपञ्चोंमें फँसे हुओं उनपर काल परमेश्वर राज्य करनेके निमित्त नियत किया गया है। जैसी प्रजा वैसाही राजा है। उसपर अधिकार करनेके निमित्त नियुक्त किया गया है। इसी प्रकार बनी इसराईल जब मिश्रदेशसे बाहर आए तब रोने लगे कि, हम अब भोजनके निमित्त माँस कहाँ पावेंगे ? लवण प्याज आदि कहाँ मिलेगा। वे मन्न जो परमेश्वर उनको प्रति दिवस देता था उसपर सन्तुष्ट न हो सके तब परमेश्वरने उनके भोजनके निमित्त उनको बटेरें दीं और आपसे आप गज़ गज़ भर ऊँचे उनके डेरोंके समीप बटेरोंके ढेर लग जाते और वे भली भाँति माँस खाते। यह तो मांसाहारियोंको मांस रुचिकर था न कि, परमेश्वरको। यह एक ऊर्दूकी कहावत है कि, 'जैसी रूह वैसेही फिरिश्ते' अर्थात् जैसी आतमा वैसाही दूत। पापी आत्माके निमित्त यमदूत आते हैं। पुण्यात्माके निमित्त विष्णुदूत आते हैं। जैसे इस संसारके मनुष्य हैं वैसेही परमेश्वरके अधीन हैं। जैसा कि, कुरानमें लिखा है कि— 'धोखा दिया काफ़िरोंने और धोखा दिया परमेश्वरने' परन्तु परमेश्वरका धोखा उन सबोंसे बढ़कर और अच्छा है कि, वो पापियोंपर दया नहीं दिखाता।

यदि मनुष्य प्रत्येक प्रकारकी पापकामना तथा दोषोंसे स्वच्छ हो जावेगा, तब उसको धोखा देनेवाला परमेश्वर छोड जावेगा। दयालु करुणामयकी प्रतिमा प्रत्यक्षमें दिखाई देगी। वह परमेश्वर नितान्तही निर्दोषी है। यह निरपवादी दोष है कि, हम धूर्त परमेश्वरके अधीन हो रहे हैं। निदान हमको परमेश्वरके साथ विनाश हो जाना काम क्रोधादिकको छोड देना आवश्यक है। जितनी काम क्रोधादिककी कामना सो समस्त वासनायुक्त और धूर्त काल परमेश्वरकी जागीरमें हैं। इस कारण काम क्रोध लोभ मोहादिक इत्यादिकको छोड़ देना आवश्यक है। जब इसकी जागीरमें किसी वस्तुसे संबंध न करेंगे तो वह भी हमसे सम्बन्ध न करेगा। जबलों हम उसके आयोजनके इच्छुक हैं, तबतक वह हमारे ऊपर आज्ञाकारी है और हम उसके अधीन हैं। वासनाओंमें फँसे हुओंको वह पकडता है और जो इनसे पृथक् हैं वे उसके बन्धनमें आ नहीं सकते।

भीतरके अन्धे।

जितने विद्वान् हैं सब विषयानन्दी भीतरी प्रकाशसे अन्धे हैं। ये अन्धे यथार्थ तात्पर्य तो समझ नहीं सकते। अपढ़ों तथा अपनेसे कम पढ़ोंको भटकाते हैं, इस कारण अपढ़ तथा कम पढ़े हुवे साधुओंकी शिक्षा मान लेते हैं। जो कुछ अधिक पढ़े हैं वे अपनी धूर्तता तथा चालाकी किये बिना नहीं रहते। इस कारण साधु लोग उनको शिक्षा नहीं देते। कारण यह कि, वे साधु जो पहुँचे हुये हैं उनके सामने अरस्तू और अफलातून इत्यादि ऐसे हैं जैसे किसी विद्वान्के समक्ष एक हलवाहा हो। पहुँचे हुवोंकी शिक्षा पर विद्वानोंका खण्डन मण्डन ऐसीही बात है जैसे कि हलवाहा, लुकमान तथा सुकरात आदिको शिष्य बनाना चाहता है। पण्डितों तथा विद्वानोंकी क्या सामर्थ्य है पहुँचेहुवोंकी शिक्षाको काट सकें? पहुँचेहुवोंसे बढ़कर ब्रह्मज्ञानी है ब्रह्मज्ञानीसे बढ़कर विज्ञानहंस है। जो पूर्ण विज्ञानहंस हो उसकी सबपर श्रेष्ठता है। जो जो ऋषि मुनि हुए तथा अब वर्तमान हैं और वे लोग जितना प्रकाश वन्दना पूजाका रखते हैं। ज्ञानकी जिस सीमापर अधिकृत हैं, विद्वानोंसे उनकी श्रेणी सम्यक् प्रकारसे बढ़कर है। साधनाके प्रकाश बिना, केवल पुस्तकपाठसे आत्मिक प्रकाश प्राप्त कर नहीं सकता। विद्वानोंके हृदय खण्डन मण्डन तथा घमण्डसे भरे होते हैं। इस कारण साधुलोग हलवाहेको लेखनीधारीसे अच्छा समझते हैं। कारण यह कि, हलवाहा तो सेवा स्वीकार करता है। पढ़े लिखोंसे यह बात नहीं होती।

कालपुरुष किससे डरता है?

ऐसेही मूसा तो नाममात्रको थे कालपुरुषने सबको परदेसे मारकर गर्दमें मिला दिया। काल तथा उसके समस्त पुत्र समस्त संसारके प्रबन्धक हैं। जैसी उनकी इच्छा होती है किया करते हैं। इस कालपुरुषके राज्यमें बिना कबीर साहबके दूसरेका वश नहीं है कि, बाधा दे सके कारण यह कि, कालपुरुषसे प्रबल अन्य कोई नहीं। केवल कबीर साहबसे वह भयभीत होता है, दूसरा कोई नहीं; केवल कबीर साहबसे वह डरता है और दूसरा कोई उसका सामना कर नहीं सकता। न उसको अधीन कर सकता है। कौन है जो उसको दबा सके एकभी नहीं। सब इससे भागते तथा दबते हैं। यह बड़ा बलिष्ठ है।

माया।

यह समस्त संसार मायापूजक है। जैसे मदिरा पीकर जब मनुष्य अचेत होता है तब मदिराकोही जल समझता है उसको तनिक भी सुध नहीं रहती। इसी प्रकार यह समस्त संसार अज्ञान और विषयोंके आनन्दमें मग्न हो रहा है।

इस कारण माया और ब्रह्मका कुछ ज्ञान नहीं रहता है। यह शक्तिको सर्वशक्तिमान् जगदीश्वर समझकर उसका पूजन किया करता है। जबलों यह सच्चे सत्यगुरुको नहीं पहचानता उसके पीछे नहीं चलता तबतक यह शक्तिपूजनमें डूबा रहता है। जब सत्यगुरुका चिह्न मिलेगा और एकको पहचानेगा तब परमेश्वरपूजक होगा। बिना सत्यगुरुके चिह्नके जो एक परमेश्वरके पूजनेकी बात कहता है वह झूठा है। एक परमेश्वरका पूजन बिना पारख गुरुके चिह्न दिये हुए सम्भव नहीं। झूठे दावा करनेवालोंसे दूर भागो। उनके साथ रहनेसे हृदय अन्धकारमय हो जाता है। वे स्वयम् भटकते हैं तथा दूसरोंको भटकाते हैं माया इस जगत्को धोखा दिया करती है। मायाही धोखेमें आती है। वह शुद्ध ब्रह्म न धोखेमें आता है और न किसीको धोखा देता है। तीनों कालके ऋषि मुनि जिनको ब्रह्म शुद्ध नहीं मिला वेही धोखा खाते हैं। वेही दूसरोंको धोखा देते आये हैं। ये लोग अपने अज्ञानही को ज्ञान समझकर घमण्डी तथा मस्त हो रहे हैं। अपने अज्ञानके पृथक करनेकी कुछ चिन्ता न की। इस कारण वे सदैव इसी अज्ञानमें बँधे रहे। जिस किसीपर सत्यगुरुकी कृपा तथा दया हुआ करती है वेही आपसे आप अचेत निद्रासे जागकर सत्यगुरुके चरणको पकड़ते हैं। वेही उसकी रक्षामें जाते और उसका खूंट अत्यंत दृढ़ताके साथ पकड़ते हैं कि, फिर न छूटने पावे, युग युगसे भटकते तथा गोता खाते हुए अब तो सत्यगुरुको पहचान पाया अबकी वार छोड़नेसे फिर कहाँ ठिकाना लगेगा? जो सत्यगुरुके अङ्कुरी जीव हैं वे इङ्गित करतेही दौडकर सत्यगुरुके चरणोंसे लिपट जाते हैं। जो कालपुरुषके जीव हैं वे समझानेसे भी नहीं समझते, सदैव भवसागरमें पड़े गोते खाया करते हैं।

भला सोंचने तथा समझनेकी बात है कि, शिव ऐसे योगी मोहिनीके लिये विवश होकर तथा सुध बुद्धि गँवाकर पीछे फिरे। शृंगी ऋषि ऐसे तपस्वी भी स्त्रियोंके फंदेमें आये। रामचन्द्र जैसे, वसिष्ठसे ज्ञानी मोहमें रोते फिरे। नारद ऐसे ज्ञानी वेदपाठी स्त्रीके पीछे नष्ट होगये। ऐसे ऐसे श्रेष्ठ तथा ज्ञानी लोगोंकी प्रशंसा जो समस्त संसारमें प्रकाशित है वासनाके पीछे कैसे नष्ट होते फिरे हैं। काम, क्रोध, लोभ, मोह, जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति तुरीया इनमें कालपुरुषने समस्त जीवोंको बाँध लिया है। कोई उसके पञ्जेसे निकल नहीं सकता। सबके सब इन्हींमें फँस गये। जो नहीं फँसे हैं, वे लीलासे तमाशा कर जाते हैं। दिखा जाते हैं कि, अपनेको सिद्ध समझकर भी उस प्रपंचमें न पडना।

क्या ऋषियोंने युक्तियाँ करनेमें त्रुटी की ? पर क्या करें उनका कुछ वश नहीं कि, वासनाओंसे पृथक् हों। सब बिलकुल विवश होकर बैठे रहे। बासनाओंसे कोई पृथक् हो नहीं सका। तपस्यासे इस जीवको ऋषियोंने मुरदा समझ रक्खा था। पर एक बार जो ऐसी आग भड़की कि, समस्त तपस्याको भस्म कर दिया ज्योंके त्यों रह गये। जितने जीव ब्रह्माण्डके भीतर हैं सब कालपुरुषके पेटमें हैं। समस्त पिंडियाँ कालपुरुषके पेटमें बसी हैं। सो सब उसका भोजन हैं जो सत्य पुरुषकी शरण जाते हैं वे इस मायासे पार होते हैं दूसरे नहीं होते।

चक्रनिरूपण।

कबीर साहिबने ज्ञानसागरमें अष्ट कमलोंका निरूपण किया है कि, "अष्ट कमल तोहि भेद बताऊँ। अजपा सोहं प्रकट दिखाऊँ॥" यहाँसे प्रारंभ किया है। उस प्रकरणका तात्पर्य्य यहाँ लिखे देते हैं। (१) चार दलका मूल कमल है जहाँ गणेशजी ऋद्धि सिद्धियोंके साथ रहते हैं। (२) छः दलका कमल है यहाँ सावित्री समेत, ब्रह्माजी रहा करते हैं। (३) आठ दलका कमल है यहाँ लक्ष्मीसहित भगवान् रहते हैं। (४) बारह दलका है यहाँ शिवजी निवास करते हैं। (५) सोलह दलका है यहाँ जीवात्मा निवास करता है। (६) तीन दलका है यहाँ सरस्वती निवास करती है। (७) दो दलका कमल है यहाँ ब्रह्मका वास है। (८) सुरति कमल जो देहसे बाहिर हो वहाँ उड़कर पहुँचता है। इस प्रकार आठ कहकर देहमें तो छः ही कहते हैं कि, "षट्चक्र बाँधे देहमें तब जो मुद्रा सार हो। प्रेमको बाजै पखावज प्रतिदिना सत्कार हो।" ये छः चक्र कहे हैं। मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपूर, अनाहत, विशुद्धरेखा, आज्ञा, ये छः चक्र हैं। क्रमसे ४, ६, १०, १२, १६ और २ दलोंवाले हैं वहाँ कबीर साहिबने यद्यपि इनका नाम निर्देश नहीं किया है पर दलोंके विषयमें किसी योगीका मतभेद नहीं देखते इस कारण वहाँ भी यह माननेके लिये विवश होते हैं कि, यह उन्हींका निर्देश है। किन्तु देवताओंके विषयमें मतभेद देखते हैं। पं० बुलाकीरामजीका जुदा पथ है बाकी सब एकही पैमानेपर बैठ जाते हैं। गुदाके स्थानमें मूलाधार, लिंग मूलमें स्वाधिष्ठान, नाभिचक्रके मूलमें मणिपूर, हृदयमें अनाहत, कण्ठमें विशुद्धरेखा (तालुमें तालुचक्र) भ्रुकुटिके मध्यमें आज्ञाचक्र, ब्रह्म रन्ध्रमें कालचक्र तथा नौमा आकाश चक्र है इससे परे शून्य है। यानी इस नौमे चक्रकीही महाशून्य संज्ञा है क्योंकि इससे परे शून्यही शून्य है।

कबीर साहिब तीसरे मणिपूरचक्रको आठ ही दलोंका मानते हैं बाकी सब योगी दशदलका मानते हैं । बाकी आज्ञाचक्रके दो दलोंतक किसीका मत भेद नहीं है । योगबिन्दु सातवेंमें ६४ दल अमृत भरे आठवेंमें १०० तथा नौवेंमें १००० दल माने है । शिवसंहिताने आज्ञाचक्रके बाद ब्रह्मरंध्रमें एक हजार दलका कमल माना है । इस तरह गोरक्षनाथजीके मतसे ६ शिवसंहितासे ७ कबीर साहिबके ८ तथा योग बिन्दुके मतमें ९ होते हैं, आत्माराम भी ९ चक्र तथा १२ ब्रह्मके गुप्त स्थान जिनमें नौवें चक्र तथा नासिका मन और कुंडलिनी आजाती है । इनके तारतम्यको दिखानेके लिये नीचे नकशा दिखाये देते हैं ।

चक्रादिकोंका मानचित्र ।

यही स्थान अखण्ड परमानन्दका है ।
इसीको एक मात्रासे सारा संसार सुखी है ॥

१२	महासिद्धचक्र	१०००	सबकी हद
११	कमलजात्य धरणी पीठ	[१००]मूर्धा	सिद्धपुरुषका स्थान
१०	अमृतपूर्णचक्र	ताल[६४]	अमृत धारा
९	आज्ञा चक्र	भ्रू[२]मध्य	तेज
८	बलवान् चक्र	ना[२]सिका	ओंकार
७	विशुद्ध रेखाचक्र	कंठ[१६]	तेजस्वी पुरुष
६	अनाहत चक्र	हृदय[१२]	जीव यहीं विराजता है
५	मनोचक्र		
४	मणिपूर	[१०]नाभि	विष्णुभ०लक्ष्मीसहित यह
३	कुण्डलिनी		प्राणको सुषुम्नामें नहीं जाने देती
२	स्वाधिष्ठानचक्र	लिङ्ग[६]	ब्रह्माजी सावित्रीसहहित
१	आधार चक्र	गुदा[४]	गणेशजी सिद्धिबुद्धिसहित

इस चित्रमें चक्रोंकी व्यवस्थाके अनुसार नीचे ऊंचेका क्रम लेकर इसका निर्णय किया है । नं १२ वैसे ही इसका विशेष विवरण भी पढ़नेको मिलेगा— ॐ प्रथमः सहजो ब्रह्म सहजाच्छून्यः शून्यादीश्वरः ईश्वरादाजगद्वीर्यपराक्रमः तत्प्रकृतिः प्रकृतिपुरुषयोर्मध्ये हेतुः हेतोरग्निर्महत्तसो महत्तमादहंकारः अहंकारात्पंचतन्मात्राः पंचतन्मात्राभ्यः पंचमहाभूतानि पंचमहाभूतेभ्योऽखिलं जगत् । अनुक्रमणिका ५—१—२—३—४—५—१०—११—१४—१७—२४—२६ ॐ नमः परमात्मने । पूर्वपक्षामिदं प्रोक्तं परमानंदगिरिकृतम् । अनुभवात्कथिते शास्त्रे

नवचक्रं प्रकीर्तितम् ।। द्वादश ब्रह्मगुह्यस्थानं शिरस्थानेति वर्णनम् । सूर्य्यकोटि-प्रतीकाशम् । तेजस्विनी दीप्तप्रभा, शिवदेवता, मूलमाया शक्तिः, परमात्मा ऋषिः, अध्वनि स्थितिः, नादात्मकान्यक्षराणि, अघोर मुद्रा, सूक्ष्मा प्रकृतिः, देहात्मनो गोचरध्वनिरपंचविस्मेशानरस्तरात्मा निर्लेप १ लय २ लक्ष ३ ध्यान समाधिः ४ ।।

अर्थ--पहिले ब्रह्मा सहज है उससे शून्य है । शून्यसे ईश्वर है । ईश्वरसे जगत् बल तथा सामर्थ्य है । इसीसे प्रकृति है । प्रकृति और पुरुषके बीच कारण रहता है । इस कारणके आगे महान् रहता है । उसके आगे अहङ्कार है । उससे पाँच तन्मात्रा प्रकट हुईं पाँच तन्मात्राओंसे पंचमहाभूत, पृथिवी, जल, अग्नि, वायु, आकाश उत्पन्न हुए । इनसे समस्त संसार हुवा । परमात्माको नमस्कार करके नौ चक्रोंका वृत्तान्त करता हूँ– बारह महासिद्ध चक्र हैं जिसमें करोड़ों सूर्यके समान प्रकाश है उसका विवरण करताहूँ–शिव देवता है । मूल मायाशक्ति है । परमात्मा ऋषि है । अध्वमें स्थिर है । नादात्मक शब्द है । अघोर मुद्रा है । सूक्ष्मा प्रकृति है । देहमें जो आत्मा है उससे सम्बन्ध रखनेवाली आवाज है, लय, लक्ष्य, ध्यान, समाधि इन पाँच आवाजोंका ईश्वर है । वह आत्मा निर्लेप है । ॐ ब्रह्मरंध्र देहसुषुम्णा मार्गसुषुम्णा अवस्था ऊर्ध्वप्रयोगात्माहं ब्रह्मरंध्रेति अग्निचक्रे सकारो भवति । ब्रह्म रन्ध्र जो देहमें सुषुम्णा है, सुषुम्णा राह है । अवस्था, ऊपरको है कामना जिसकी ऐसी अहम् परहम है । तेज चक्रमेंसे बीज प्रकट होता है । इसे सहस्रदल मानते हैं । यह सबकी हद है इसके बाद बस अखण्डानन्दकाही समुद्र है । दूसरा कुछ न होनेके कारण उसे शून्य कहा है

ॐ एकादशसहस्रदलचक्रं मूर्ध्नि स्थानं, गुरु देवता, चैतन्या शक्तिः विराट्, ऋषिः, सर्वोत्कृष्टः साक्षीभूतः तुरीयातीतो गुणातीतः चैतन्यात्मकः सर्ववर्णः सर्वमात्रा सर्वदा विराट् देहस्थित्यवस्था प्रज्ञा वाचा सह वेद अनूपमम् अस्थानम् अजपाजापं एकसहस्रं १००० घटिका २ पल ४ अक्षर ४ सोहं संख्या ३२१६०० एकविंशतिसहस्राणि षट्शतानि तथैव च । शशाहे वहते प्राणा सर्वकाले विनश्यंति। सकारेण बहिर्याति हकारेण विशेत्पुनः । सोऽहं सोऽहं ततो मंत्रं जीवो जपति सर्वदा ।। ॐ आधारलिंगनाभौ हृदयसरसिजे जालमूले ललाटे द्वे पत्रे षोडशारे द्विदशदशदले द्वादशारे चतुष्के ।। वासांते नालमध्ये इह कंठसहिते कंठदेशे सुराणां हंसे तत्त्वार्थयुक्ते सकलदलयुतं वर्णरूपं नमामि ।।

ग्यारहवें सहस्र पत्तोंका कमल जो ऊपरके स्थानोंमें ही है गुरु देवता है । चैतन्या शक्ति है । विराट् ऋषि समस्त श्रेष्ठोंका श्रेष्ठ सबका साक्षी है । तुरी

यातीत अवस्था तथा तीनों गुणोंसे पार है चैतन्य स्वरूप है समस्त अक्षरों तथा मात्रोंसे संयुक्त सदैव विराट् स्वरूप है। वडे ज्ञान तथा बुद्धिके साथ है। प्रशंसासे परे स्थानवाला अजपा जाप एक सहस्र दो घडी दो पल तथा चार अक्षर। सोहन् काश्मा इक्कीस सहस्र छः सौ, एक दिवसमें इतने प्राण चलते हैं। सकार करके प्राण भीतर जाता है। हकार करके बाहर आता है। मैं वह हंस हूँ उसके बीच मंत्रको जीव सदैव जपता है और कमलके मध्यमें लिंग नाभिका स्थान है और फिर बाईस पत्तोंका कमल है कण्ठपर सोलह पत्तोंका कमल है। इसमें उसका स्थान है जिसको जपना है, देवताओंके स्थानोंमें ठीक तात्पर्यसहित और समस्त वर्ण तथा स्वरूपको मैं नमस्कार करता हूँ। यह सहस्र पत्तोंका कमल है और इसकी नालऊपरको है। कमलका शिर नीचेको है। योगी लोग छः चक्रोंको भेदकर उसी चक्रपर जाके अधिकृत होते हैं। यह आदि शक्ति तथा निरंजनके रहनेका स्थान है और उत्पत्ति स्थित तथा विनाशका मुख्य कारण है। इसीपर समस्त रचना निर्भर है। यहाँ सिद्ध पुरुषका स्थान तथा इसे सौ दलकाही दूसरे योगी मानते हैं।

ॐ दशमें पूर्ण गिरि पीठं ललाटमंडले चन्द्रो देवता अमृता शक्तिःपरमात्मा ऋषिः द्वाविंशदलानि अमृता बासिनि कला सुरति अमृतकल्लोला नदीमहाकाल अंबिका १ लंबिका २ घंटिका ३ तालिका ४। देहस्वरूपं काकमुखं १ नरनेत्रम् २ गोश्रृंगम् ३ ललाट ब्रह्मपुरम् ४ हयग्रीवं ५ मयूरपुच्छं ६ हंसवत् पादाः ७ स्थानचारी ८॥

ओम्——दशवें पूर्ण गिरिपीठ और ललाटमण्डलमें चन्द्र उसका देवता है। अमृता शक्ति है। परमात्मा ऋषि है। बाईसपत्तोंका कमल है। अमृतके बीच रहनेवाली कला है। धाररूपरसमें नदी है। महाकाल १–अम्बिका २–लम्बिका ३–घण्टिका ४–तालिका। देहका स्वरूपकाग जैसा मुंह है आदमी जैसी आँखें है गाय जैसी सींग है माथा ब्रह्मपुर, घोडेकीसी ग्रीवा, मयूरकीसी पुच्छ हंसकेसे पाँव, एवं अपनी जगहमें फिरानेवाला है इसे अमृत पूर्ण चक्र भी कहते है। शि० इसके चौसठ दल मानते हैं। ॐ नवमे आज्ञाचक्रं भ्रुवोः स्थानं पीतवर्णं अग्निर्देवता सुषुम्णा शक्तिः हंस ऋषिः चैतन्यवाहन ज्ञानदेही विज्ञान अवस्था अनपूमा वाक् सुषुम्णा चैतन्यं शून्यं निरारंभ द्वैदल अंतर मात्रा हहं वहिर्मात्रा २ स्थितिः १ प्रभाली २ अजपाजाप एक सहस्र १००० घटिका २ पल ४ अक्षर ६ प्रसाद लिंग ४ द्वै मात्रे आकारो तत्त्वं जीवहंसः ४ पूजामानसिक सोहंभावेन पूजयेत् अत्रगंधादिसमर्प्पयामि नमः॥ नवमा आज्ञा चक्र–भौंके बीचका स्थान, पीला रङ्ग, अग्नि देवता, सुषुम्णा शक्ति, हंस ऋषि, अनूपम

वाक् चैतन्य वाहन, ज्ञान देह, विज्ञान अवस्था, सुषुम्णादेव, चैतन्य शून्य, निरारंभि द्वदली यानी अनारम्भ द्वितीय, भीतरी मात्रा दो। बाहरली मात्रा दो, स्थित तथा प्रकाश, अजपा जाप एक सहस्र। घडी दो, पल छियालिस हर्ष चिन्ह, द्विमात्रा अकार, तत्त्व जीवहंस, पूजा मानसी, सोहम् भाव करके पूजे सुगंधि इतर इत्यादिसे मैं पूजा करता हूँ। ॐ अष्टमे बलवान् चक्रं नासिकास्थानं ओंकारो देवता पुसुषुम्णा शक्तिः विराट् ऋषिःत्रिवर्णोद्विदल त्रिमात्रा अकार उकार मकार सत्त्वगुण रजोगुण तमोगुण ब्रह्माविष्णुरुद्राः पृथ्वी अप तेज वायु आकाश प्राण अपान समान ब्यान उदान ५ शब्द स्पर्श रूप रस गंध ५ नाग कूर्म कृकल देवदत्त धनंजय ५ मन बुद्धि चित्त अंतःकरण अहंकार ५ इडा पिंगला सुषुम्णा ।। ओम् आठवें बलवान चक्र नाकके स्थानमें है। ओंकार देवता, शुम्णा शक्ति, विराट् ऋषि, तीन अक्षर, दो पत्ते, तीन मात्रा, अकार, उकार, मकार, सत्त्वगुण, रजोगुण, तमोगुण, ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र, पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु आकाश, प्राण, अपान, समान, उदान, व्यान, शब्द, रूप स्पर्श, रस, गंध, नाग, कूर्म्म, कृकल, देवदत्त, धनञ्जय, मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार, अन्तःकरण, इडा पिंगला सुषुम्णा ।।

ॐ सप्तमम् विशुद्धचक्रं कण्ठस्थानं धूम्रवर्ण जीवो देवता आद्या शक्ति विराट् ऋषिः वायुवाहन उदान वायु ज्वाला काला ज्वालाग्निवेदः महाकारण देह तुरीया अवस्था परा वाचा अथर्वण वेद जंघ पलङ्ग समता भूमिका सालोक्यता मोक्ष षोडशदलानि १६ षोडश मात्रा १६ अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ लृ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः अंतर मात्रा १६ बहिर्मात्रा १६ विद्या १ अविद्या २ इच्छा ३ क्रिया ४ ज्ञानशक्तिः ५ भूतल ६ महाविद्या ७ महामाया ८ बुद्धि ९ तामस १० मन्त्र ११ मात्रायणी १२ कुमारी १३ रौद्री १४ पुस्ता १५ सिंहिनी १६ अजपाजापमेक सहस्र १००० घटिका २ पल ४ अक्षर ४० पूजा मानसिका सोहंभावेन पूजयेत अत्र गंधादिसमर्पयामि नमः ।। ओम् सातवें विशुद्धचक्र हैं, यह धूंवेके रङ्गका है। जीव देवता है आदि शक्ति है विराट् ऋषि है वायु वाहन है उदानवायु है ज्वालाकला है। ज्वाला अग्निवेद है महाकारण देह, तुरीया, अवस्था, परा, वाचा, अथर्वणवेद, जंघ, पलंग, समता भूमिका, सालोक्यता मोक्ष, सोलह पत्ती, सोलह मात्रा इत्यादि ।। अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ लृ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः ये सोलह बीज हैं। भीतरी मात्रा सोलह। बाहरी मात्रा सोलह। विद्या, अविद्या, इच्छा, क्रिया, ज्ञान, शक्ति, भूतल, महाविद्या, महामाया, विधि, तामस, यन्त्र मंत्र, मात्रायणी, कुमारी, रुद्र, पुष्टता, सिंहिनी। अजपा-

जाप एक सहस्र, घड़ियाँ दो, पल चार, अक्षर चालीस, पूजा मानसी, सोहम् भावकरके पूजना और सुगंधि इत्यादिसे मैं पूजता हूँ यह कहना ॥ ॐ षष्ठम् अनाहदचक्रं हृदयस्थानंश्वेतवर्णं तमोगुणं मकार गुरु देवता तमाशक्तिः हिरण्यगर्भ ऋषिः नन्दी वाहन प्राणवायु ज्योतिः कला कारण देह सुषुम्णा अवस्था वसन्ती वाचा सामवेद गार्हपत्याग्नि शिवलिङ्गंप्राप्ता भूमिका सायुज्यता मुक्ति द्वादशदल १२ द्वादश मात्रा १२ क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ ट ठ बहिर्मात्रा २१ रुद्राणी १ तेजसा २ तापिनी ३ सुखदा ४ चैतन्या ५ शिवा ६ शान्ती ७ तमा ८ गौरी ९ मातरः १० ज्वाला ११ प्रज्वालिनी १२ देवता अजपाजापषट् सहस्र ६००० घटिका १६ पल ३७ अक्षर ४ पूजा मानसिका सोहं भावेन पूजयेत् अत्र गन्धादिसमर्पयामि नमः ॥ **ॐ छवा अनाहद चक्र है इसका रङ्ग श्वेत है। तमोगुण मकार है। गुरु देवता, तमा शक्ति, हिरण्यगर्भऋषि, नन्दी वाहन प्राणवायु, ज्योतिःकला, कारणदेह सुषुण्णा, अवस्था वसन्ती, वाचा सामवेद, गार्हपत्यअग्नि, शिवलिङ्ग, प्राप्ता भूमिका, सायुष्यता मोक्ष, बारह यती, बारह मात्रा १–रुद्राणी २–तेज ३–तापिनी ४–सुखदा ५ चैतन्या ६–शिवा ७–शान्ति ८–तमा ९–गोरी–१० मात्रा ११–ज्वाला १२–प्रज्वालिनी देवता अजपा जाप–छः सहस्र सोलह घड़ी, सैंतीस पल। अक्षर चार। पूजा मानसी है। इसे सोहम् भावनासे पूजे, तथा यों कहे कि, गन्ध इतर आदिसे मैं पूजता हूं।**
ॐ पञ्चमं मनो चक्रं मनो देवता बुद्धिशक्तिः आत्मा ऋषिः नाभिमध्ये स्थितं पद्मनालं तस्य दशांगुलम् ॥ १ ॥ कोमलं तस्य तन्नालं निर्मलं चाप्यधोमुखम्। कदलीपुष्पसंकाशं तन्मध्ये चाप्यधिष्ठितम् ॥ पूर्वं दलं श्वेतवर्णं यदा विश्रमते मनः ॥ तदा धर्मणिकीर्तौ च पुरुषस्य मतिर्भवेत्। अग्रं दलं रक्तवर्णं यदा विश्रमते मनः। तदा निद्रालस्येच पुरुषस्य मतिर्भवेत् ॥ २ ॥ दक्षिणं दलं कृष्णवर्णं यदा विश्रमते मनः। तदा क्रोधमात्मनिमतिर्भवेत् ॥ ३ ॥ नैर्ऋत्यां दले नीलवर्णं यदा विश्रमते मनः। तदामतिर्भवेत्तस्य धनदारादिपुत्रके ॥ ४ ॥ पश्चिमे दले कपिलवर्णे यदा विश्रमते मना। तदा वै तस्यपुरुषस्य नन्दोत्साहमतिर्भवेत् ॥ ५ ॥ वायव्यं दलं श्यामवर्णं यदा विश्रमते मनः ॥ तदा वै तस्य पुरुषस्य उच्चाटनमति-र्भवेत् ॥ ६ ॥ उत्तरे दले पीतवर्णे यदा विश्रमते मनः ॥ तदा वै तस्य पुरुषस्य कामहास्यमतिर्भवेत् ॥ ७ ॥ ईशाने दले गौरवर्णे यदा विश्रमते मनः ॥ तदा वै तस्य पुरुषस्य क्षमा ज्ञानं मतिर्भवेत् ॥सन्धि सन्धित्रिदोषवात पित्तादयः अत्रगन्धादि समर्पयामि नमः ॥ **ॐ पाँचवा मनोचक्र है, मन देवता, बुद्धि शक्ति, आत्मा ऋषि है, नाभिके मध्य रहता है। पद्मनाल दश अंगुल है। बहुत नरम तथा स्वच्छ है।**

इसका मुँह नीचेका है साका अक्षर उसके पत्तेमें है। पुष्पके स्थान सोतका अक्षर है। इन दोनोंके बीच रहता है। पूर्वका पत्ता श्वेत वर्णका है, यदि इस पत्तेपर मन बैठे तो धर्म्म यश कीर्ति बुद्धि होती है। आगेका पत्ता लाल रङ्ग है, यदि इस पत्तेपर मन बैठे तो नींद तथा आलस्यवाली निद्रा हो जाती है। दक्षिणका पत्ता काले रङ्गका है, यदि इस पत्तेपर मन स्थिर होवे तो क्रोध आता है। दक्षिण तथा पश्चिमके बीचवाले कोना अर्थात् नैर्ऋत्य ओरका नीला पत्ता है। जब इन पत्तोंपर हृदय ठहरता है तब ऐसा अनुमान होता है कि, मेरा धन मेरी स्त्री मेरा पुत्र है। पश्चिम ओर कपिल वर्णका पत्ता है। जब इसपर हृदय स्थिर होता है तब हर्ष तथा आनन्द होता है। पश्चिम उत्तर अर्थात् वायव्य कोणका पत्ता श्याम रङ्गका है, जब इसपर हृदय बैठता है तब चित्तका उच्चाटन होता है। पीले रङ्गका पत्ता है जब इस पर बैठता है तब कामातुर होता है, हँसी ठट्ठा करता है। उत्तर और पूर्व अर्थात् ईशान कोणमें जो पत्ता है उसका रङ्ग गुलाबी होता है। इसपर स्थिर होनेसे क्षमा तथा दयाकी समझ होती है। ज्ञान होता है। तीन दोष है वे कफ पित्त वात हैं इन्हें संधि कहते हैं। यहां मैं गन्धादिकोंको समर्पित करता हूं। यह इस चक्रकी पूजा हुई। ॐ चतुर्थं मणिपूरकं चक्रं नाभि-स्थानं नीलवर्णं ओकारं सत्वगुणः विष्णुर्देवता लक्ष्मीशक्तिः गरुडवाहनः वायु-ऋषिः समान वायु लिंग देह सुषुम्णा अवस्था पश्यन्ती वाचा यजुर्वेदः दक्षिणाग्निः आगता भूमिका सारूप्यता मोक्ष दश दल १० दश मात्रा १० डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं अंतर मात्रा १० बहिर मात्रा १० क्षमा १ मेधा २ माया ३ तीव्रा ४ मेधा ५ प्रस्फुरा ६ हंसगामिनी ७ तन्मया ८ लक्ष्मी ९ देवता अमृता १० घटिका षट् सहस्राणि ६००० पलं ३३ नासिका १६ पूजा मानसी पूजयेत् सोहं भावेन अत्रगंधादिसमर्पयामि नमः। ॐ चौथा मणिपूरक चक्र है यह नाभिके स्थानपर है नीलवर्ण है उसका सत्वगुण, विष्णु देवता है। लक्ष्मी शक्ति है। गरुड वाहन है। वायु ऋषि है। समान वायु है। लिङ्ग देह है। सुषुम्णा अवस्था है। पश्यन्ती वाणी है। यजुर्वेद है। दक्षिणा भूमि है, आगता भूमिका है। सारूप्यता मोक्ष है, दश यती है। दश मात्रा है। डं, ढं, णं, तं, थं, दं, धं, नं, फं, बं, अन्तरकी मात्रा है। बाहरली मात्रा १ क्षमा, २ मेधा, ३ माया, ४ तीव्रा, ५ मेधा, ६ प्रस्फुरा, ७ हंसगामिनी, ८ तन्मया, ९ लक्ष्मी, १० देवता अमृता यह छः सहस्र जप होता है। सोलह घड़ी ३३ पलमें होता है। नासिका सोलह, मानसीसे पूजा पूजे। सोहमभाव तथा इतर गंध इत्यादिसे मैं पूजता हूँ। ॐ तृतीयं कुंडलिनीस्थानं सिंदूरवर्णं सर्पाकारं अधोमुखी अग्निर्देवता कुहरणी शक्तिः ब्रह्माऋषि कूर्म कला

उद्यान बन्धवरुण मंडल कामाक्षा देवीमलाग्नि गर्भावस्था कामानि वसि २ योगिनी मोक्षदायनी जठराग्निप्रवेशे नाभिस्थानं कुंडलिनी शक्तिः रक्तवर्णं अधोमुखी जगन्माता योगिनी गर्भपुटम् ।। ॐ तीसरी कुण्डलिनी शक्तिका स्थान है । यह कुण्डलिनी शक्ति सेंदूरके रङ्गकी है । यह सर्पके स्वरूपकी है । उसका मुँह नीचेको है, अग्नि उसका देवता है । कोहरनी शक्ति है । ब्रह्मा ऋषि है । कूर्म कला है । उद्यानबन्ध वरुण मण्डल और कामाक्षा देवी है । मल अग्नि है । गर्भकी अवस्था है । सम्भोग कामनामें रहनेवाली योगिनी मोक्षकी देनेवाली है । जठराग्निके भीतर है । नाभिमें इसका स्थान है । इसका नाम कुण्डलिनी देवी है । तँवेकी कला है । समस्त संसारकी माता योगिनी गर्भपर है । यह कुण्डलिनी देवी समस्त उत्पत्तिका कारण है । इसके मुँहसे जो सर्पके सदृश फूत्कारका शब्द होता है । इस फोंकार ओंकारकासे शब्द बहिर्गत होता है और इस ओंकार शब्दसे हृदय हरा-भरा होता है । और हृदयके हरा-भरा होनेसे समस्त सृष्टिकी उत्पत्ति होती है । ऊपरका भाग सूर्य्य है यह कुण्डलिनी देवी एक डब्बेमें रहती है । नीचेके डब्बेके भागमें चाँदका स्थान और कुण्डलिनीकी फूत्कारसे प्राण अपान वायु हिलती है । इस वायुके हिलनेसे समस्त संसार जीवित रहता है । और उस नाभिके स्थानमें दोनों वायु लड़ती हैं । इस लड़ाईसे जो अग्नि उत्पन्न होती है उसको जठराग्नि कहते हैं । यह देवी बड़ी सुन्दर है । ॐ द्वितीयम् स्वाधिष्ठानचक्रं लिंगस्थानं पीतवर्णं रजोगुण आकारं ब्रह्मा देवता सावित्री शक्तिः तेजारुण ऋषि. ३ धारणाष्पदं देहजाग्रतावस्था परा वाचा ऋग्वेद आचार्यः लिंगगता भूमिका सायुज्यता हंसो वाहनः षण्मात्रा बं भं मंयं रं लं ६ अंतर मात्रा ६ वहिर्मात्रा ६ काम १ कामाक्षा २ तेजोसि ३ तक्षासा ४ चेष्टता ११ मैथुन देवता १० अजपाजाप षट् सहस्र ६००० घटिका १६ पल ३२ अक्षर २४ पूजा मानसिका सोहंभावेन पूजयेत् अत्र गंधादि समर्पयामि नमः ।। ॐ दूसरा स्वाधिष्ठान चक्र वह लिंग स्थानमें हैं । उसका रंग पीला है । रजोगुण स्वरूप है, ब्रह्मा देवता है, सावित्री शक्ति है, वरुण ऋषि है, सम्भोग कामनाकी अग्नि है, तेजारुण ऋषि है । समस्त धारणा शरीरकी रक्षक है, जाग्रतावस्था है । परा वाचा है । ऋग्वेद है । कर्म्म कर्ता लिंग है । उसकी गता भूमिका सायुष्यता है । हंसवाहन है । अक्षर मात्रा है । बं भं मं यं रं लं ये भीतरली छः मात्राएं हैं । बाहरी छःमात्रा हैं वे काम, कामाक्षा, तेजोसि, तक्षासा, चेष्टिता, मथुन देवता ये हैं अजपा जाप षट् सहस्र है । सोलह घडी तथा तीसपलसें हैं हो । अक्षरचार हैं सोहम्भावसे मानसी पूजा है । सुगन्धियों इतर इत्यादिके साथ मैं पूजता हूं उसके

लिये नमस्कार हैं। ॐ प्रथमाधारचक्रं गुदा स्थानं रक्तवर्णं देवता सिद्धिः बुद्धिः शक्ति कूर्मं ऋषि मूषक वाहन अपान वायु कूर्म कला अंकोचन मुद्रा मूल बंध चतुरदल ४ चतुरमात्रा ४ वं शं षं सं अंतर मात्रा ४ बहिर्मात्रा ४ आनंद १ योगानन्द वीरानन्द ३ श्रीपरमानंद ४ अजपा जाप षट्शतानि ६०० घटिका ४ पल ३२ अक्षर ४ पूजा मानसिका सोहंभावेन पूजयेत् अत्र गंधादि समर्पयामि नमः ।। ॐ प्रथम आधारचक्र है यह गुदाके स्थानमें है लाल रंग है। उसका देवता गणेश है। सिद्धिबुद्धि शक्ति है। कूर्म्म ऋषि है। मूल बंध है। चार पत्ते हैं। चार मात्रा हैं। वं शं षं सं भीतरी चार मात्रा। बाहरी चार मात्रा, आनन्द, योगानन्द, वीरानन्द और श्रीपरमानन्द हैं। अजपाजाप छः सौ है। यह चार खड़ी तथा बत्तीसपलमें होता है। अक्षर चार है। पूजा मानसी है सोहम् भाव करके पूजें यों कहे कि, इत्र गन्ध इत्यादिसे मैं पूजता हूं ।।

महासमुद्र अर्थात् समस्त स्थानपर जलही जल परिपूर्ण हो रहा है और दूसरा कुछ नहीं। यह जलस्थान जलरङ्ग गोसाईंका है।

ब्रह्माण्ड।

पूर्व कहा हुआ स्वरूपही समस्त ब्रह्माण्डका भी है। इसीको तीन लोक भव-सागर कहते हैं। इसीमें उत्पत्ति स्थिति तथा विनाशका समस्त कौतुक हो रहा है। इस कौतुकको बड़े कौतूकीने बनाया है। जिसके भेदको भवसागरके रहनेवाले नहीं जान सकते। जितने खिलाड़ी हैं उन सबमें यह खिलाड़ी बड़ाही बलिष्ठ है। किसी तांत्रिकका तंत्र अथवा कौतुकीका कौतुक इसके आगे जा नहीं सकता। इस कारण संसारमें जितने जादूगर हैं सब इसके चेरे बन गये। जो जादूगर उसके सामने खड़ा होता है, उसीको वह दबालेता है। सबको अपने अधीन बना लेता है। ऐसेही तौरीतमें लिखा है कि, जब मूसा बहुतेरे कौतुक दिखलाने लगा, तब फिरऊन बादशाहने अनेक जादूगरोंको बुलवाया, उन जादूगरोंने अनेक सर्प उत्पन्नकर दिये। तब मूसाने अपना सोंटा चलाया वह सोंटा बहुत बड़ा अजगर बन गया। उसने जादूगरोंके समस्त सर्पोंको खालिया। समस्त जादूगर मूसाके सामने न ठहर सके, भाग गये। इस प्रकार समस्त कौतुकवाले इस विशाल कौतुकी की सेवावंदनामें रहते हैं। जिसको सत्यगुरु मिल जावे वह वास्तवमें उसके पञ्जेसे बच निकले। दूजी कोई युक्ति नहीं। इस ब्रह्माण्डका स्वरूप जो बनाया गया उसमें पहला चित्र इस प्रकार नहीं बनाया गया। कारण यह कि, उक्त स्थान-पर्यन्त कोई भी भाग्य शाली पहुँच नहीं सकता है। जितने सिद्ध साधु हैं वे तीन स्थान पर्यन्त पहुँचते हैं। अर्थात् सालोक्य, सामीप्य, सारूप्य, जो सायुज्य मुक्ति

है वहांकी पहुंच दुर्लभ है। जितने लोग सांसारिक वासनाओंके आनन्दमें फंसे हैं वे सब इन्हीं चारों श्रेणियोंमें रहते हैं। पर ये चारो श्रेणी बिना सत्यपुरुषकी कृपाके शूलीस्तम्भके सदृश हैं, समस्त जीव इन्हीं चारोंपर लटक रहे हैं। जिनके मनमें वासना है। उनमें कोई न बचेगा। इस भवसागरमें बिलकुल अंधेर हो रहा है। किसीके हृदयपर प्रकाश नहीं, न बल है कि, इस अंधेरेसे बाहर निकल सके। परन्तु हाँ इससे वह मनुष्य बहिर्गत हो सकेगा जिसके निजके दो गुण हों। एक स्वच्छ बुद्धि, दूसरे सोचनेकी शक्ति। जिस मनुष्यमें ये दोनों गुण न होंगे वह अंधकारसे कदापि बहिर्गत नहीं हो सकेगा। यह भवसागर अंधेरपुर नगर है और इसमें चारों ओर अज्ञानता तथा मूर्खताकी लहरें हैं। इसमें समस्त जीव डूबते उछलते रहते हैं, जिसका एक उदाहरण मैं देता हूं।

उदाहरण–एक नगर था इसका नाम अंधेरपुर था। इस अंधेरपुर नगरीके राजाका नाम अंधेरी था। इस राजाके राज्यमें महा अंधेर था इस अंधेरपुरमें समस्त पदार्थ टकासेर बिकते थे। साग पात, अन्न घृत, मीठा इत्यादि सभी वस्तुएँ टका सेर बिका करती थीं। दैवात् उस नगरमें दो साधुओंका आगमन हुवा। उनमें से एकका नाम विवेक तथा दूसरेका विचार था। विचारने विवेकसे कहा कि, आओ भाई! कुछ दिवसों पर्यन्त हमलोग इसी नगरमें निवास करें। कारण यह कि, यहाँकी समस्त वस्तुएँ सस्ती हैं भली भाँति खाएँ पीएँ, चैनसे जीवन व्यतीत करें। दोनोंने ऐसा विचार कर वहाँ रहना आरम्भ किया। भलीभाँति खा पीकर बड़े मोटे हुए। एक रातको उस नगरके एक महाजनके घरमें चोर लगे। उन चोरोंमें से एक चोर दीवारके नीचे दबकर मर गया, तब वे रोते हुए राजा अंधेरीके पास गये, न्यायके प्रार्थी हुए। इस बातके सुनतेही राजाने महाजनको बुलाकर कहा कि, तेरी ही दिवारके नीचे चोर दबकर मर गया अब तू फाँसी पावेगा। यह बात सुनकर उस महाजनने निवेदन किया कि, महाराज मेरा दोष नहीं, दीवार बनाने वालोंका दोष है कारण यह कि, उन्होंने निर्बल दीवार बनाई। तब राजाने राजगीरोंको बुलाया इनको उपस्थित कर राजाने उनसे कहा कि, हे राजगीरो! तुमने महाजनकी दीवार निर्बल बनाई उसके नीचे चोर दबकर मर गया, इस कारण तुम फाँसी पाओगे, तब राजगीरोंने निवेदन किया कि, महाराज! हमारा कुछ दोष नहीं इसमें समस्त अपराध मजदूरोंका है कि, उन्होंने हमको नितान्तही निर्बल गारा दिया इस कारणही दीवार निर्बल हो गई। तब राजाने मजदूरोंको बुलाकर कहा कि, तुमने निर्बल गारा बनाया इस कारण महाजनकी दीवार निर्बल होगई।

उसके नीचे चोर दबके मर गया, इस कारण तुम फाँसी पाओगे तब मजदूरोंने कहा महाराज ! हमारा कोई दोष नहीं, काजीकी बेटी अच्छे अच्छे वस्त्र आभूषण पहनकर अटारीपर चढ़ गई उसके देखनेको हमारा मन दौड़ गया गारेको ओर ध्यान नहीं रहा, इस कारण हमारा कोई दोष नहीं, दोष काजीकी लड़कीका है। तब राजाने काजीकी लड़कीको बुलाकर कहा कि, तू भली भाँति वस्त्र तथा आभूषण पहनकर अटारीपर चढ़ी तेरे देखनेके निमित्त मजदूरोंका हृदय ललचाया उन्होंने कच्चा गारा बना दिया, महाजनकी कच्ची दीवार हो गई, उसके नीचे चोर दबकर मर गया, इस कारण अब तू फाँसी पावेगी । तब काजीकी बेटीने कहा कि, महाराज ? मेरा कुछ दोष नहीं कारण यह कि, एक बादशाह ससैन्य इस पथसे जाता था, उसके देखनेहीके निमित्त मैं अटारीपर चढ़ी थी सो इस बादशाहका दोष है । तब राजाने आज्ञादी कि, जाओ बादशाहको पकड़ो, उस पर बादशाह की फौज दौड़ी, इधर उधर ढूँढा, न बादशाह और न उसकी सैन्यको पकड़ सके, वह बलिष्ठ बादशाह राजाके पकड़नेसे न पकड़ा गया वह डंका देता हुवा अंधेर नगरसे बाहर निकल गया, राजाका कुछ वश नहीं चला तब राजाने देखा कि, मेरा न्याय तो पूरा नहीं हुवा इस कारण बड़े दुःखमें बैठा था । इतनेमें राजाका मंत्री वहां आन उपस्थित हुआ । पूछा कि, महाराज! आपके दुःखका क्या कारण है ? तब राजाने कहा कि, मैं चाहता था कि, बादशाहको गिरफ्तार करूं पर वह मेरे वशमें नहीं आया, न मेरा न्यायही पूरा हुआ यह महादुःख मेरे हृदयको बेधे डालता है । यह बात सुनकर मंत्रीने उत्तर दिया कि, आप दुःखी न हों हमारे अंधेरे नगरमें दो सण्ड मुसण्ड साधु फिरते हैं उनको आप फाँसीपर चढावें, कारण यह कि, बादशाह तथा साधुओंकी मर्यादा समान होती है इस प्रकार आपका न्याय पूरा हो जावेगा । यह बात सुनकर वह अंधेरी राजा प्रसन्न हुवा, विवेक तथा विचार नामक दोनों साधुओंको पकड़ लिया । आज्ञा दी कि, इन दोनों साधुओं को फाँसीपर लटका दो । तब उन दोनों साधुओंने यह युक्ति की कि, आपसमें लड़ने झगड़ने लगे । एक कहता कि, मैं फाँसी चढ़ूँ, दूसरा कहता कि, मैं पहले चढ़ूँ । दोनोंको झगड़ते देखकर राजाने पूछा कि, तुम दोनों क्यों झगड़ते हो । तब उन्होंने उत्तर दिया कि, महाराज ! इसका कारण यह है कि, हम लोग बडे ज्योतिषी हैं, लग्न तथा मुहूर्तसे भली भांति विज्ञ हैं, भविष्यकी बातोंको जान लेते हैं और हमें यह जान पड़ा है कि, इस समय चार लग्न ऐसे हैं कि, इन लग्नोंमें जो फाँसी चढ़ेगा सो सर्वोच्च श्रेणीपर अधिकृत होगा। जो पहले फाँसी चढ़ेगा वह

तीनों लोकका बादशाह होता है तीनों लोकमें उसका राज्य होगा । जो दूसरे लग्नमें फाँसी चढ़ेगा, वह उसके मंत्री आदिक होंगे, जो तीसरे लग्नमें चढ़ेगा सो उसके बराबरके बैठनेवाला तथा सलाही होगा । जो चौथे लग्नमें फाँसी चढ़ेगा वह सैन्य सिपाही सरदार इत्यादि होगा । यह बात सुनकर राजाने दोनों साधुओं से कहा कि, तुम दोनों साधु पृथक् होवो, साधु तो अलग हो गए और उस अंधेरी राजाको सांसारिक कामनाओं ने इतना दबाया कि, वह पहले फाँसी चढ़ गया, दूसरे मंत्री तथा उच्चपदाधिकारीगण फाँसी लटके, तीसरे समस्त कारबारी फाँसी लटके, चौथे सैन्य दल प्रजा फाँसी पर छरपराई । उस समय विवेक तथा विचार दोनों साधु अपने प्राण लेकर उस अंधेर नगरीसे भाग निकले ।

इस प्रकार जिन मनुष्योंके मनमें सांसारिक बासना भरी है, भय आशा तथा दुःख, सुखमें बँधे हैं और बेद तथा पुस्तकोंके अनुसार समस्त आज्ञाओं और वर्जितकार्यों को प्रतिपालन किया करते हैं, वे सब स्वर्गों तथा चार प्रकारकी मुक्तिकी कोरी कामनामें हैं, वे निश्चय कालचक्रमें आवेंगे । जब वे सुकार्य करते हैं तब स्वर्गोंमें जा पहुँचते हैं, बुरे कार्यसे चौरासी योनि तथा नरकोंमें अपना घर बनालेते हैं, इस अंधेरी राजाके अधीन रहते हैं । सत्यगुरु जो समस्त सृष्टियों का बादशाह है सो अपने हंसोंको लेकर इस अंधेरपुरसे पार चला जाता है, अंधेरी राजाका कुछ बश नहीं चलता । जो इस अंधेर नगरमें रहकर अंधे होरहे हैं सत्य तथा मिथ्याको जान नहीं सकते वे बासनाओंमें फँसकर मारे गए । वे सत्यगुरुको पहचान नहीं सके क्योंकि इनकी बुद्धि तथा इनका चित्त ठिकाने नहीं रहा ।

ग़ज़ल ।

दिल किससे लगाऊं मेरा दिलदार कहाँ है ।
बेगानः हैं सारे यगानः पार कहाँ है ॥
अंधेर घेर सारे इस अंधेर पुरीमें ।
मैं ढूंढ़ता महबूब तरहदार कहाँ है ॥
जाँबक्श रूह अफजा गुत्फार कहाँ है ॥
न गुल है नहीं बू है इस बाग खुश्क में ।
पुरखार चारसू है गुलजार कहाँ है ॥
मस्तान सब हैं झूठे न मस्त कोई है ।
दिलबरके इश्क बाहरा सरशार कहाँ है ॥
सब इश्कके व्यापार चले मुफलिस कल्लाश है ।

सर हाथ अपना लेके खरीदार कहाँ हैं ॥
हरचार सिम्त ढूढ़ता दीवान: दिल मेरा ।
दिल किसके हाथ दीजे दिल अफगार कहाँ है ॥
सहमूरत और सूरत और सरहा पुजारी ।
अंधेरेमें न सूझ वह करतार कहाँ है ॥
जहाँ पहुँच नहीं अक्ल वहम क्योंकर जाए ।
उनका कवन रूप निराकार कहाँ है ॥
जब आनपड़ा सहमा सारी अक्लको मारा ।
बेहोश सारे होगए हुशियार कहाँ है ॥
दाही हजार लख हैं कोई पेशवा है एक ।
सब जिसकी फौज उसका सरदार कहाँ है ॥
सब उलझ पडे फासिक़ जञ्जीर जुल्फ में ।
रह जुल्फ मेरे महरू खमदार कहाँ है ॥
सरकार लाख जगमें हुए सदहा हुक्मराँ ।
सारे हैं फानी वड़ा सरकार कहाँ है ॥
आते हैं और जाते हैं सह पीर पैगम्बर ।
पीरानका जो पीर सो सालार कहाँ है ॥
गाते बजाते हैं सारे ढोल नकारे ।
अब आरजी हैं शब्दका झनकार कहाँ है ॥
तनमनसे हुए आजिज़ उसकी खाक़ कदमको ।
खुद हैं खालिक कबीर वारापार कहाँ है ॥

तात्पर्य—मेरा दिलदार इस दुनियाँके बाहिर है । मैं किससे दिल लगाऊँ ? इस अन्धेर नगरीमें अन्धेरही अन्धेर है, मैं अपने तरफदारको ढूंढता हूँ वो यहां कहां है ? सब पशुही बोल रहे हैं मेरे प्राणोंको बचानेवाली प्यारेकी मीठी आवाज यहां कहां है ? चारों ओर कांटे लगे हुए हैं, यहां गुलाब कहां है ? जो दुनियाकी मस्तीके मस्त हैं ? उनकी मस्ती झूठी है, यहां प्यारे सत्यपुरुषके इश्कसे हरा भरा कोई नहीं है, सब प्रेमके बाजारमें खाली हाथही आजा रहे हैं । शर हाथमें लेकर इश्कका सौदा खरीदने कोई नहीं आता । मैं मेरे दीवानेको चारों दिशाओंमें ढूंढता हूं, मैं अपने दिलको किसे दूं इसके लेनेका पात्र कहां है इस अन्धेर नगरीमें सब एकसेही हैं, अज्ञानके अंधेरेमें नहीं दीखता कि, वो करतार कहां है ? जब बुद्धिकी पहुंच नहीं तो वहम कैसे पहुंचे उसका रूप क्या वो निराकार कहां है ? जब भ्रम

का भार आगया तो सब बुद्धि दबादी सब बेहोस हो गये हैं यहां हुशियारका तो नामही नहीं है । उसकी अर्दलीमें रहनेवाले तो लाख हैं परवो पेश वा एक है । सब जिसकी फौज हैं उस सरदारका पता नहीं है । उसके भृकुटिविलासमें सब फसे पड़े हैं, मेरे प्यारेके वे लचीले जुल्फ कहां हैं? या वो मेरा प्यारा कहां है? निर्द्वन्द्व हुक्म करनेवाले अनेको बादशाह हो गये, पर सब मिट गये और मिट जायंगे क्यों कि, उनकी न मिटनेवाली सरकार कहां हैं? सब पीर पैगम्बर आते जाते रहते हैं, जो पीरोंका भी पीर हो वा मालिक कहां है? सब ढोल नगारे बजाते आते हैं, वो शब्द कहां है? जिसकी झनकारसे ये बोल रहे हैं हम उसके चरणोंकी धूलपर तनमनसे कायम हो गये वो कबीर सब संसारका मालिक है, उसका पार किसने पाया है?

गज़ल ।

आ मेरी गली बुलबुल बीमार हमारे ।
दावत है भली बुलबुल बीमार हमारे ॥
माहे न ख़िज़ा दाएम जेहि वक्त वहारी ।
गुल है न कली बुलबुल बीमार हमारे ॥
खाली न मेरे कूचः में आ मेरी नज़रला ।
सर हाथ तले बुलबुल बीमार हमारे ॥
जितनी है हवस दिलमें रहे कोई न बाकी ।
इश्क आग जली बुलबुल बीमार हमारे ॥
खिलअत हो अतातर्कतुकर जामए नापाक ।
आफात टली बुलबुल बीमार हमारे ॥
इनसान हो पी प्याला न हो मिस्ल सतूराँ ।
मत खाए खुली बुलबुल बीमार हमारे ॥
क्यों सोता पडा नालःका वक्त जो आया ।
अब रात ढली बुलबुल बीमार हमारे ॥
अब जाग खबरले तुने जो बोया है आजिज़ ।
खेते है फली बुलबुल बीमारे हमारे ॥

ए मेरे प्रेमके बीमार बुलबुल! मेरी गली आ, क्यों कि, वहां तेरी खातिरका सामान अच्छा है । तू जानती है कि, फसले बहार सदा नहीं रहा सकती । बहारका समय गया । न तो बागमें फूल है तथा न कलीही है जिसका खिलकर फूल बन जाय । मेरी गली खाली हाथ न आना, कुछ भेंट लेकर आना, अपना शिर हाथपर

रखकर आना । ए ! इश्ककी दिलमें आग लगी हुई है दिलमें जितनी हवस हो उसे पूरा करले । जा तूने दुनियाँकी हवससे नापाक जाम भर रक्खा है उसको छोड़ने कीही भेट भाट हो ए मेरे बीमार बुलबुल ! उसके छोडेसे सब आफत टल जायंगी । प्याला पीकर मनुष्यवर सिडीके समान न हो, न दुनियोंकी ही हविश कर । जब नाले लगानेका वख्त आया तब सोता पड़ा है । ए ! अब रात बीत चुकी है, जग खबर ले जो तैंने बीज बोया है, उसीकी खेती फलती है इसमें पूर्ण प्रकरण तथा बुलबुलसे जीवात्माका संबोधन किया है ।

हेला (नदा) के अङ्गकी साखिया ।

कबीर देश दे हम बगरिया, ग्राम ग्राम सब खौरा ।
ऐसा जिवडा न मिला, ए जो फरक बिछोर ।। १ ।।
कबीर समझाए समझे नहीं, पर हाथ आप बिकाय ।
समझाए समझे नहीं, बाँधे यमपुर जाय ।। २ ।।
कबीर जाए नाता आदिको, बिसर गयो वह ठौर ।
चौरासीके बिसपर, अखत औरकी और ।। ३ ।।
कबीर वस्तु है गाहक नहीं, वस्तु सोगरव मोल ।
विना दामको मानवा, फिरे सो डावाँ डोल ।।४ ।।
कबीर –यह जग तो झडे गया, भया जोग नहिं भोग ।
तिल तिल झार कबीर लए, तलठी झारें लोग ।। ५ ।।
सुरनर मुनि और देवता, सात द्वीप नौ खण्ड ।
कहै कबीर सब भोगिया, देह धरेको दण्ड ।। ६ ।।
कबीर-लघुताई सबते भली, लघुताते सब होय ।
जस दुतियाको चंद्रमा, शीष नवैं सब कोय ।। ७ ।।
कबीर–जो कोई मिला सो गुरुमिला, चेला मिला न कोय ।
छः लाख छानवे रमैनी, एक जीवपर होय ।। ८ ।।
कबीर–श्रोता तो घरही नहीं, वक्त बदे सो बाद ।
श्रोत्रा वक्ता एक घर, तब कथनीको स्वाद ।। ९ ।।
कबीर–सुन काग़ज़ छुवों नहीं, कलम गहों नहि हाथ ।
चारों युगको महातम, मुखहि जनाई बात ।। १० ।।
कबीर–दु:ख न था संसारमें, था नहि शोग वियोग ।
सुखहीमें दु:खला दिया, बोली बोलें लोग ।। ११ ।।

हम देश देश और गाम २ में फिर । सब जगहोंमें गये पर ऐसा कोई जीव

नहीं मिला जिसके दिलमें कोई फरकही न हो ।।१।। हमने समझाया पर न समझे, दूसरेके हाथोंमें बिक गये, हमने वारंवार कहा कि, मानजा नहीं तो चौरासीमें भटकता फिरेगा, यम पकड़ कर लेजायगा पर अंतमें ऐसाही हुआ ।। २ ।। जब गर्भमें था तब भगवान्से पुकारता था कि, मैं तेराही हूं पर जब वो ठौर छूट गया गर्भके बाहिर आया कि, हठवायुके लगतेही सब भूल गया । चौरासी लाख योनिके चक्करमें पड़ गया औरका औरही होगया ।। ३ ।। वस्तु है पर उसके खरीददार नहीं क्योंकि, उसकी कीमतें सब कुछ देना पड़ता है। जिसके पास देनेको दाम नहीं अथवा न देसके वो डाँवा डोल फिरता है।। ४ ।। यह संसार तो झाडवामें ही रह गया न भोग कर सका एवम् न योग करसका। इसके जन्म लेनेका सार तो कबीर ने लेलिया है लोग तो छूछके पीछे लगे हुए हैं ।। ५ ।। सात द्वीप और इसके नौ खण्डोंमें के सुर नर मुनि और देवता सब भोगीही हैं क्योंकि, जिसप्रारब्धसेजोदेह बनेगा उसका फल भोगना ही पड़ेगा ।। ६ ।। सबसे छोटा बनके रहना सबसे अच्छा है, उसीसे सब कुछ हो सकता है, जैसे कि, द्वितीयाके बालचांदको सबही प्रणाम करते हैं ।।७।। जितने मिले सब गुरु मिले कोई भी चेला नहीं मिला, इस कारण छ: लाख छानवे रमैनी एकही जीवपर गुजर रहीं हैं ।।८।। जबतक श्रोता न [illegible] उस समयतक कथा कहना समयको व्यर्थ खोना है । जब श्रोता वक्ता दोनोंका एक विचार मिलजाय तबही कहनेका आनन्द है ।। ९ ।। सुन, न मैं कागज छूता हूं न कलम पकडता हूं । चारों युगोंकी बातें मुहसे कहनेकी बात है ।।१०।। यदि शोच और वियोगका दुख न होता तो कोई शोच नहीं था, पर जब सुखमें इनसे दुख मिलता है, दुनियाँके लोग बोली बोलते हैं तो फिर इससे ज्यादा कोई दुख नहीं होता ।। ११ ।।

शब्द – अन्तर मैल जो तीरथ न्हावे, उसे वैकुण्ठ न जाना ।
लोक पतीजै कछु नहि होवै, नाहीं राम अयाना ।।
पूजा राम एक है देवा, सांचा नाम न गुरुकी सेवा ।
जलके न्हाए जो गति होवे, नित नित मेंडक न्हावे ।।
जैसे मेंडक तैसे वह नर, फिर फिर जूनी आवे ।
मन कठोर दोनीसे बना रस, नरक न पांचा जावे ।।
हर गानेसे जोबरे, हडमिए सगरी सैन तराए ।
दिन नहि रैन वेद नहि शासतर, तहाँ बसे निरंकारा ।।
कहैं कबीर नर ताको ध्यावो, वाहरिया संसारा ।।

जिसके दिलमें बुरी वासनोंका मैल भरा हुआ है वो चाहे हजार तीरथ करे

वो वैकुण्ठ नहीं जा सकता। चाहें लोग उसपर विश्वास करें कि, यह महात्मा हो गया इससे क्या है ? वो राम क्या अनजान है जिससे वो छिपजाय। एक रामकी पूजा तथा रामनाम एवं रामके लिये नमन करना ही सच्चा है। सिवा इसके कोई दूसरा देव नहीं है। इससे कल्याण हैं। यदि केवल स्नानसे ही कल्याण होजाय तो मेंढक तो रातदिन पानीमें पड़ा रहता है क्यों न मुक्त हो जाय तो फिर २ मेंढकही बना करता है। इसी तरह वो मनुष्य भी फिर २ कर योनियोंमें फिरता रहता है। मन तो कठोर पाप करनेमें लगा है फिर नरक क्या पांचमां (या बोंटा) जायगा। भगवानके गुणानुवाद गानेसे तो चित्त अकुलाता है पर इश्कके गन्दे गानाके सुनने में सारी रात बिता देता है। जहां सत्यपुरुष विराजते हैं वहां रात और दिन दोनों ही नहीं हैं, यानी वहां कालकी गति नहीं है, न वहां बिधि-निषेधके शास्त्र ही हैं। कबीर साहिब कहते हैं कि, मैं तो उसीका ध्यान करता हूं। यह संसार तो बाहि-रिया बेकाम हैं मुझे इससे क्या लेना है ?

मैं किसको कहूं, कोई न सुनता न मानता, सबकी बुद्धिपर परदा पड़ गया है। एक न भूला दो न भूला सारा संसार भूला पड़ा है, सब अचेत होगये, किसीकी बुद्धि ठिकाने नहीं रही। सब अंधेरीराजाके बशमें आगए इस राजाके मंत्रियोंकी जो दुष्ट बुद्धि है वह सदैव दुष्कर्मोंका उपदेश दिया करती है। दोनों साधु जो बिचार तथा विवेक हैं उनको मटियामेट किया चाहती है, वे दोनों अपनी बुद्धि-मानीसे बच निकले। कोई मनुष्य हो उसके हृदयके किसी कोनेमें छिपकर दोनों रह गये हों तो वह सोचे तथा समझे कि, जहाँ टका सेर घास मिठाई बिकती हो वहाँ कुशल नहीं है, यहाँके मनुष्य अंधे हैं इनमें तनिक भी सोच बिचार नहीं। वे गुरु साधु तथा परमेश्वरको क्या पहचानें ? उनके निमित्त वासनाओंकी फाँसी खड़ी है सब उसके ऊपर लटककर मरते हैं, मर गए और निश्चय मरेंगे।

धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष यह सब फँसनेवालोंके लिये फाँस बनाये गये हैं। सब दौड़ दौड़ कर आपसे आप इस जालमें फँसते हैं। जिसने तन मन धनसे प्रेम किया, मिटनेवाली वस्तुसे मैत्री जोड़ी वह मरेगा। जिस किसीको परमेश्वरने मैत्री प्रदान की वही समझे कि, उत्पत्तिके आरम्भमें केवल एक अण्डा वासनासे भरा हुआ उत्पन्न हुआ था। इसी कारण वह फूटा, आनन्द लेनेके निमित्त उसने सूक्ष्म शरीर धारण किया। यह शरीर कामक्रोधादिकके बंधनमें जबतक पड़ा है और जबलों सांसारिक आनन्दोंका ध्यान है, शरीरकी रक्षा चाहता है तबलों बंधनमें पड़ा रहेगा। मुसलमानी पुस्तकोंमें लिखा है कि, आदम जब अदनकी

वाटिकामें था तब आयुषके वृक्षके फलको खाता था । जब उसने गेहूँका दाना खाया तब उसको शौचकी आवश्यकता हुई । तब परमेश्वरने उसको वैकुण्ठसे बाहर निकालकर कहा कि, यह वैकुण्ठ शौच तथा लघुशंकादिककी जगह नहीं है । अब तू पृथ्वीपर जा; इस प्रकार यह पृथ्वी मुक्तिकी कामना रखनेवालोंके निमित्त नहीं है ।।

पिण्ड तथा ब्रह्माण्ड ।

ब्रह्माण्ड और पिण्डका एकही स्वरूप है तनिक भी विभिन्नता नहीं है। दोनों की एकसी अवस्था है तनिक भी घट बढ़ नहीं । पिण्ड तथा ब्रह्माण्ड दोनोंमें जल है इस जलके बीच बिचित्र कौतुक बना है । यह ब्रह्माण्ड भवसागर कहलाता है । इसमें ऐसे कौतुक हैं जो मनुष्योंके अनुमानमें भी आ नहीं सकते । उत्पन्नके पूर्व जल था, इस जलमें एक बुल्ला उठा । अण्डेके स्वरूपमें वह जलपर उतराता फिरता था । सो जलही जल था । वह बुलबुलाभी जल था । जो कुछ जल तथा बुलबुलेमें था सो भी सब जलही था । जल और बुलबुले सब स्थानोंमें परमेश्वरकी आत्मा थी । वह बुलाबुला अर्थात् अण्डा फूट गया। यह ब्रह्माण्ड एक बड़ी नदी है। पिण्ड बूंद हैं, जो कुछ नदीमें है उसीके सामान बूँदमें है। नदी बूँद है, तथा बूँद नदी है। लोक तथा वेद इस नदीके दो किनारे हैं। भाँति भाँतिकी इच्छाएँ है, यहाँ श्वासमें जल भरा हुवा है । जब दोनों एक ठहरे तब उचित है कि, प्रथम अपने पिण्डकी अस्थिके जाननेका उद्योग करें। जब पिण्डकी सुध होजायगी तब समस्त ब्रह्माण्ड का समाचार जानलिया । जायगा। जिसने अपने पिण्डका वृत्तान्त नहीं जाना वह ब्रह्माण्डका तनिक भी वृत्तान्त नहीं जान सकता। जो अपनेको न जाने वह परमेश्वर को क्या जान सकता है ? दोनों का समाचार पारख गुरुके अतिरिक्त और कोई दूसरा बतला नहीं सकता । पाँव पाताल सो सातवीं पृथ्वी है । पाँवकी पीठ सो छठी पृथ्वी है । पाँवकी उँगलियाँ सोई असुर हैं । पैरके नाखून सो असुरोंकी सवारी हैं । अष्टालिङ्ग सो पाँचवाँ महातल है। एड़ी चौथा तलातल है। ठिगुनी सो तीसरा सुतल है । जाँघ, सोई तल है । जो पग हैं सोई पहला अतल है, यही भूमि है । लिङ्ग प्रजापति है । स्त्री तथा पुरुष जब दोनोंका वीर्य स्खलित होता है, तब पृथ्वी और आकाश मिलते हैं, तभी वीर्यवृष्टि होती है । चूतड़का सिरा सोई प्रभातकी उज्ज्वलताका आरम्भ है । जो पहले दिखाई देता है श्वेतरङ्ग है । जो मोटी मांस है सो माया है। वह दयालु हैं । जो नाभिकी गम्भीरता है वो समुद्रका घर है । उधर तो झड़ा अग्नि है । इधर वडवा अग्नि है। समस्त नसें नदियाँ हैं और जो पेट है वही

भवदर लोक है। बालभोग छोटी महाप्रलय है। प्यास बड़ी महाप्रलय है। हृदय पृथ्वीके ऊपरका स्वर्ग है। इधर वैजयन्ती माला है। उधर नक्षत्रगण वैजयन्ती माला हैं और दाहिना कुच वह है जो माँगनेके पूर्व दान देवे और बाँया कुच वह है जो माँगनेके उपरान्त दान देवे। जहाँ तीनों गुण मिलते हैं वह हृदयकी इच्छा है। वही ब्रह्मा है। पालन करना ही विष्णु है।

इसमें जो क्रोध है वो रुद्र है। हँसना तथा प्रसन्न होनाही माया है। इसमें ज्ञान है वही दुःखका दूर करनेवाला है। प्राणही हवा है और पीठ बुरी करनी है। जो पीठका हाड़ है सोई पहाड़ है। जो बाएँ दाएँकी पसुलियाँ हैं वेही हिमालयके इधर उधरके पर्वत हैं। दाहिना हाथ उदारता और वृष्टि है। बाँया हाथ कञ्जूसी तथा सूखा है। हाथकी रेखा अर्थात् चिह्न अप्सरागण हैं। हाथके नाखून दूतगण हैं और हाथका जोड़ा आरञ्जपर्य्यन्त सोई अग्निलोकपाल हैं। बाँया जोड़ा इंक देवता पूर्व तथा उत्तरका है। आरञ्जसोई कल्पवृक्ष है। दाहिना मोढ़ा सो दाहिना ओर है। बाँया मोढ़ा सो बाँया ओर है। ग्रीवाका मोढ़ा वरुण देवता है। गला सो महर्लोक ऊपरका स्वर्ग है। अच्छी बुद्धि अनहद शब्द सो महर्लोकके ऊपर है सोई ब्रह्म लोक है। सासारिक कामना सोई कष्ट दुःख है। नीचे का होंठ लालच है। ऊपर का होंठ लालच लज्जा है। तालुवाणी है। जिह्वा अग्नि है। वार्तालाप सरस्वती है अर्थात् जिह्वा है और दाँत सो मोर हैं, समस्त लोग जो खाते हैं वही भोजन है। इधर वाणी है और उधर चारों वेद हैं। इधर हँसी और उधर माया तथा मायाकी रचना है इधर दोनों कान हैं और उधर दिशाएँ हैं। इधर नाकके दो छिद्र हैं और उधर अश्विनीकुमार हैं। जो शरीरकी बू है वह पृथ्वी है। दाहिनी आधी देह सो पाँचवाँ यमलोक है। आधी देह जो उत्तरकी है वो छठवाँ तपलोक है। मस्तक बल अर्थात् मस्तकपरके जो चिह्न हैं सो प्राकृतिक तेज है। जो आरम्भ की उत्पत्ति उसका वह सूर्य है। आँखोंका खुला रहना वो सृष्टिकी रचना है। पलकका जो मारना है वही दिनरात है। जो दाहिनी ओरकी भौं है सो प्रीत देवता वो महतर है, जो बाईं ओरकी भौं हैं वह क्रोध देवता है। जो माथा है सो तपलोक है। वह जन लोकके ऊपर है, सोई लोकालोक है। वह समस्त लोकोंके ऊपर है। जो शिरके बाल हैं वही काले बादल हैं। इधर शरीरके बाल हैं। इधर वृक्ष तथा हरियाली है। जो सौन्दर्य है वही लक्ष्मी है, जो शरीरकी चमक है वोही सूर्य्यका प्रकाश है। संसारमें जो देह है वो समस्त देह महापुरुषके घर है, आत्मा सोई चिदा-

नन्द है। ज्ञानी पुरुषका देह महलमें रहता है। जब नीचेको दम जाता है तब समस्त सृष्टिकी उत्पत्ति होती है। जब दम रोकता है तब समस्त संसार हरा भरा होता है। जब श्वास ऊपरको छोडता है, तब महाप्रलय होजाता है।

नाकशाह और जन्दाका सम्बाद।

नान० – तीन लोककी कहो गोसाईं। कैसे जान परै तनमाहीं ।।
जन्दा० – पीठ चरन हैं शीश अकाशा। तीनलोक देही परकाशा।
शब्दखण्ड ब्रह्माण्डमें सोई। माया ब्रह्म फैल घट दूई ।।
हमरे पदको लखै न कोई। भली बूझ तुम पारख होई।
नान० – चार दिशा कहु मोहिं गोसाईं। सात द्वीप मोहिं कहो बुझाई ।।
जन्दा०–आगा पीछा दक्षिण वामा। चार दिशा देही परमाना।
साढ़ेतीन हाथकी देही। उनचास कोट विष खाई एही ।।
नवों खण्ड नौ सन्धी जानो। पिण्ड अण्डको लेखा मानो ।।
पर्वत यामें हाड़ लगाया। ढ़र पानसो ब्रह्मण्ड रचाया ।।
चन्द्र सूर्य्य दुइ नेत्र जगावा। देखे पीठ सुमेरु बतावा ।।
तिम नदिया तन भीतर जानो। पेट गँडा पिण्डमें मानो ।।
नान० – तत्त्वप्रकार कहे तुम बानी। ताकी सांध शब्द पहचानी ।।
सात समुन्दर कहो बखानी। तुमही पुरुष पुरातन ज्ञानी ।।
जन्दा० – जीभ नासिका नेत्र बखानो। श्रवण नाभि गुद इन्द्री मानो ।।
क्षार मीठ जल सब पहचानो। नौ सौ नदी पिण्डमें मानो ।।
श्वासानदी नासिका वासा। जिह्वा स्वाद करे रसखासा ।।
ये समुद्रमें जाय समानो। है गण्डार नहीं तृप्तानो ।।
नान०–सात समुद्रकी लहर परवानो। उनकी लहर कौन विधि मानो ।।
जन्दा० – काम क्रोध अरु लोभ हँकारा। मनउ मायाकी लहर अपारा।
अग्नि पवन पानी परचण्डा। पाँच तत्त्व करते नौखण्डा ।।
नान० – वाहि लहर हीरा औ मोती। यामें कहा निकस है सोती ।।
सबहि भेद मोहिं कहु गुरु देवा। नहिं छोड़ूँ अब तुमरी सेवा ।।
जब गुरु मिले बहुरँग समरङ्गा। ब्रह्म ज्ञान ऊँचे सतसंगा।।
सुमिरन भजन होय परकासा। अनहद ध्यान पुरुषकी आसा ।।
अर्श गैबमें ध्यान लगावे। तब वा सिंध बाह कोई पावे ।।
जाय हंस तहँ डुबकी मारा। तबले निकसी वस्तु अपारा ।।
हीरालाल नाम परकासा। शब्द सुरत्त हंसाको वासा ।।

कहता समाज निकसे है ज्ञानो । सो हीरा मनि माणिक जानो ।।
यथा – क्षार मीठ जल यहाँ अपरा । वहाँ कहाँ गुरुकर निर्धारा ।।
जन्दा० – नैन नाक इन्द्री जल खारी । गुदा श्रवण जानो जलधारी ।।
क्षार मीठ जल सबहीं भराही । जो ब्रह्माण्ड सो पिण्ड कहाही ।।
नान० – यहाँ तो काठ लोहकी नौका । कहो स्वामि व्यौहार वहाँका ।।
जन्दा० – पुरुष नाम नौका यहँ भाई । खेवट सद्गुरु संत मिलाई ।।
पुरुष शव्द सुमिरौ लौ लाई । पुरुष प्रताप उतर चल भाई ।।
नान० – वाह गुरु समरथ[१] वाह गुरु ज़न्दा। काट देव तुम भवजल फन्दा ।।
धन्य कबीर परम गुरु ज्ञानी । अमर भेद भाखी निजवानी ।।

समर्थन ।

केवल भारत वर्षीय ज्ञानी गणही इस बातको मानते नहीं हैं कि, जो कुछ पिण्ड है वही ब्रह्माण्ड है । वरन् अरब यूनान मिश्र और अलीमानके सब ज्ञानियों का ऐक्य है कि पिण्ड तथा ब्रह्माण्ड दोनों समान हैं, तनिक भी विभिन्नता नहीं । वे लोग भी कहते हैं कि, हाड़ पर्वत हैं, पसीना निकलना वृष्टिका होना है। समस्त पशु और देवतागण दोनोंमें एकही ढङ्गसे भरे हैं । समस्त चरनेवाले उडनेवाले और फाडनेवाले दोनोंमें एक समान बसे हुए हैं । ऐसाही सेवक परिश्रमी मजदूर इत्यादि दोनोंमें एक समान हैं जो पाचक शक्ति है उसको बबरची बोलते हैं । जो बल अंतडियोंमें भोजन रखता है उसका नाम गन्धि है, जो बल रक्तको श्वेत करता है, स्त्रीके स्तनमें दुग्ध और मर्दके फोतामें वीर्य्यको श्वेत करता है उसको धोबी कहते हैं । जो बल शरीरके अङ्गमें भोजन बाँटता है उसका नाम बंधानी है । जो बल जलको स्वेत बनाकर बाहर निकालता है वह भिश्ती है । जो बलविशेष को बाहर निकाल डालता है वह हलालखोर है। जो बल वायु तथा पित्तको भीतर रखता है सो न्यायी है । जो क्रोध है वह भेड़िया है। ऐसाही समस्त बनाव पिण्ड तथा ब्रह्माण्डका है सब एक है उसमें तनिक भी विभिन्नता नहीं ।

प्राचीन कालके लोगोंका तो यही सिद्धान्त है। अब हालके लोगोंकी बातें सुनो कि, अंग्रेजोकी पुस्तकें जो मैंने देखीं तो उससे प्रगट है, नेचुरल डिक्शनरी और नेचुरल हिस्ट्री इत्यादिको भलीभाँति ढूँढ़कर देखो तो समस्त विद्वान इस

१ पहिले जो विषय कहा गया है, कि पिण्ड और ब्रह्माण्ड ये दोनों एक हैं इसी विषयकी पुष्टिमें कबीर नानक शाहका संवाद लिख दिया है जो कि, नानक बोधमें लिखा हुआ है । पहिले जो कुछ पदार्थ कह दिया है वो इसका विस्तृत अर्थ है इस कारण इसका अर्थ नहीं करते ।

बातको मानते हैं, यही बात प्रमाणित करते हैं और दोनोंहीकी एकही सूरत और एकही वास्तविक ढङ्ग है।

प्रलयकी समानता ।

इस बातपर तनिक भी विचार न करके यहूदी, ईसाई और मुसलमान तीनों भ्रममें पडे हुए हैं जो कहते हैं कि, मनुष्यकी बुराई भलाईका निर्णय महाप्रलयके समय होगा। इसका यह कारण कि, आज मनुष्य परमगतिको प्राप्त हो, उसका हिसाब आजसे कोटचानुकोट वर्षके उपरान्त हो दोनोंका प्रलय तथा महाप्रलय पृथक् पृथक् तथा एकही स्वरूपके हैं। ब्रह्माण्डका प्रलय तब है जब समस्त मनुष्य पापसे भर जाते हैं। जब पापिष्ठी हुए तब मृतक समझे जाते हैं। पापोंके कारण भयानक चिह्न भी परिलक्षित होते हैं। सबके सब मटियामेट भी होजाते हैं। यह ब्रह्माण्डका प्रलय तथा महाप्रलय है। पिण्डका प्रलय तथा महाप्रलय उसके साथ है। पिण्डका प्रलय तो तब है जब मनुष्य मृत्युशय्यापर पड़ता है, जब वह न जीवित रहता न मरही जाता है, उसके भीतर बाहरी समस्त बल स्थिर होजाते हैं। आँख तो रहती हैं, पर सूझता नहीं। कान खुले रहते हैं, पर सुनता नहीं, जिह्वा रहती है, पर बोलता नहीं। श्वास चलता रहता है, पर मुरदा समझा जाता है। केवल देखनेके निमित्त वह जीवित समझा जाता है नहीं तो मुरदा हो चुका। न मुर्दोंमें एवं न जीतोंमें ही गिना जाता है। यह पिण्डका प्रलय है। जब शरीरसे प्राण पृथक् होगए तभी महाप्रलय होती है।

पाप पुण्यका हिसाब ।

जब कोई मरता है उसी समय उसका हिसाब होता है। पिण्डका प्रलय जब होता है उसीको मुसलमान लोग कब्रका कष्ट कहते हैं। प्राण निकलनेके समय यह नरक बैकुण्ठ कष्ट सुख सबका अनुभव कर लेता है। जबलों जीवका हिसाब नहीं होता इस मध्यवर्ती समयमें यह सब कौतुक देखता है उसको ऐसा जान पड़ता है कि, मेरे भोजनके निमित्त उत्तमोत्तम पदार्थ और आनन्द सम्भोगके सामान हैं भले ये आदमियोंको दिखलाई देते हैं। जो पापिष्ठी होता है, उसको भयानक नरककी समस्त यंत्रणाएँ दिखाई देने लगती हैं। नरक तथा बैकुण्ठका समस्त कौतुक दिखलाई देता है। हिन्दू धर्म्मावलम्बी तथा मुसलमान लोग इस कब्रके कष्टको सविस्तार रूपसे कहा करते हैं। जब जो कोई मरता है उसी समय उनकी भलाई बुराईका हिसाब होता है। ऐसा नहीं कि, आज मरे और हिसाबके निमित्त ब्रह्माण्डके महाप्रलयमें पाप पुण्यके लेखोंकी आशा रखे. यह केवल भ्रम मात्र है. हाँ ब्रह्माण्डके प्रलयके साथ जितने जीव मिटेंगे उनके लेखाका

हिसाबका ध्यान मुसलमान लोग किया करते हैं। इस बातपर मैं एक उदाहरण देता हूँ :—

उदाहरण :—एक नगरमें कोई बड़ा बादशाह अथवा साहूकार हो, इस बादशाहकी समस्त प्रजा जो नगरमें बसती हो सब ऋषि हो, उन नगरवासियोंमेंसे कुछ एक नगरको छोड़कर किसी दूसरे स्थानको जावे अथवा भाग जाना चाहे तो उस नगरका राजा उन भगोड़ोंका हिसाब उसी समय लेगा या जब समस्त नगर भाग जावेगा तब लेखा लेगा। निस्संदेह वह राजा उनको कदापि न जाने देगा, जबलों उनका पूरा हिसाब न कर ले. अतः प्रत्येक दिवस तथा प्रत्येक क्षण प्रलय और महाप्रलय होता रहता है। जो लोग इस बातको नहीं मानते और सदैव आवागमनका सिलसिला नहीं समझते तो जो कुछ उनका विश्वास और ध्यान है, उसीके अनुसार उनका हिसाब होगा। जैसा कुछ उनका ध्यान है इसीके अनुसार उनको दिखाई देगा। पर सत्य किसीके बशका नहीं है।

यह पिण्ड ब्रह्माण्ड दोनों मिथ्या झूठ एवं व्यर्थके बाँधनू हैं पिण्ड ब्रह्माण्डके समस्त पदार्थ झूठे हैं जो साम न पिण्ड और ब्रह्माण्डमें हैं वे सब बाँधनूमात्र हैं। बेजड़के तथा अस्थायी हैं, जितने गुरु तथा पीर पिण्ड ब्रह्माण्डके भीतर खेल रहे हैं वे दूसरोंको खेला रहे हैं। समस्त कौतुक जलका बताशा है उसकी कोई जड तथा स्थिरता नहीं। समस्त खेल कौतुक जादूगरीका है। निरञ्जनकी जादूगरीमें समस्त ऋषि मुनि पडे डुबुकियाँ लगा रहे हैं। जबतक अपने प्राकृतिक स्वरूपका ज्ञान न होगा तबतक समस्त जीवोंकी यही दशा रहेगी। ज्ञान केवल पारख गुरुद्वारा प्राप्त होवेगा दूसरेसे नहीं।

ब्रह्माण्ड पागलखाना है।

इस ब्रह्माण्ड तथा पिण्ड दोनोंहीका एक स्वरूप है। कुछ विभिन्नता नहीं। एक घेराव अण्डाकार है दूसरा घेराव उससे छोटा अण्डाकार है। कभी तो पिण्ड ब्रह्माण्ड बन जाता है। कभी ब्रह्माण्ड पिण्ड बन जाता है। जब इस पिण्डमें वह विद्या होती है तो यह ब्रह्माण्ड बन जाता है। जब इसकी विद्या जाती रहती है तब फिर यह पिण्ड हो जाता है। जब इसका ज्ञान न्यून हो जाता है तब इस ब्रह्माण्ड अर्थात् समष्टि जीवको अपना सर्जनकर्ता मानने लगता है। इस जीवको इस ब्रह्माण्डके भीतर सैकड़ों प्रकारके सैर और कौतुक दिखाई देते हैं जितने जीव इस ब्रह्माण्डके भीतर बंद हैं वे सबके सब बँधे हुए तथा पूरे पशु हैं। इनमें तनिक भी मनुष्यता नहीं है। जिनको मनुष्यताका ज्ञान हुआ वे ब्रह्माण्डके पार चले जाते

हैं, फिर वे बँधुवे नहीं रह सकते । जितने गुरु तथा चेले इस ब्रह्माण्डके भीतर रहनेवाले हैं वे सब अपने असलसे अनभिज्ञ हैं, वे अनजान अनजानोंसे सूचना देते हैं । जो अंधे अंधोंको पथ दिखलाते हैं वे दोनों कुएँमें गिर पड़ते हैं । गुरु और चेले दोनोंमें से एकको भी सुध नहीं कि, वास्तवमें बात क्या है ? यह ब्रह्माण्ड पागलों का घर है । पागलोंका काम पागलोंसे पड़ रहा है । भाँति भाँति के कौतुक हो रहे हैं । पागलपनकी अवस्थामें सहस्रों प्रकारके कौतुक तथा पाप पुण्य सभी कुछ कर रहा है । इनसे नितान्तही अनभिज्ञ है कि, भलाई बुराई तथा नरक बैकुण्ठ क्या वस्तु है ? जो कुछ मैं मान रहा हूं सो क्या है ? यह अपनी अवस्थाको बिलकुल जान नहीं सकता । न चिन्ता तथा सोच करता है । न समझता है न सच्चे गुरुका उपदेश स्वीकार करता है अपने अज्ञानमें अपनेको ज्ञानी जानता है । अपनी दुर्बुद्धितापर तनिक भी ध्यान नहीं देता । जैसे मनुष्य अपना मुंह अपनी आँखोंसे देख नहीं सकता है । इस कारण दर्पण जब सामने रखता है तब अपना मुंह देखता है । वह मूर्ख है जो बिना दर्पणके अपना मुंह देखना चाहता है । इसी प्रकार यह मनुष्य अपने यथार्थ स्वरूपको देखने जाननेके निमित्त सदैव सत्य-गुरुके अधीन है । कारण यह कि, ब्रह्माण्ड पागलखानेके सदृश है । समस्त जीव इसमें जन्म भरके लिये बंधनमें पड़े हैं । जबलों उनको ज्ञान न हो जावेगा तब लों वे उसीमें पड़े रहेंगे । जब उसका ज्ञान ठिकाने आवे यह आपको तथा अपने मित्रोंको भली भाँति पहचाने सच्चे वैद्यकी कसौटीमें पक्का उतरे तब यह इस पागलखानेसे बहिर्गत किया जावे उसका एक उदाहरण मैं देता हूँ—

उदाहरणः—सन् १८४४ ईस्वीमें मैं काशी नगरीमें था काशीका पागल-खाना नगरसे बाहर बहुत दूर बना हुआ था । एक दिवस मैं उस पागलखानेके देखनेको गया जब उसके घिरावके भीतर गया तो बहुतसे पागल दिखलाई दिए । वे सब भाँति भाँतिके कौतुक कर रहे थे । कोई गाता, कोई नाचता, कोई हँसता, कोई रोता, कोई भूमिपर लिखता, कोई मुहँपर कालिखमल कर हँसता तो हँसताही जाता । रोता तो रोताही जाता । अनेक प्रकारके कौतुक हो रहे थे, मैं कहाँतक लिखूं ! कोई बकता है तो बकताही जाता है । कोई आनकर मुझसे बुद्धिमानीकी बातें करता है किसीमें थोड़ा पागलपना है किसीमें अधिक । अनेक प्रकारके पागलोंके ढङ्ग दिखाई दिए ऐसे ढङ्ग मैं देखता फिरा । वहाँपर एक राजाका पुत्र मुझको दिखाई दिया जो पूर्वकालमें मेरा परिचयी था । वह एक बडे सुघर मकानमें था । उसके चारोंओर नौकर चाकर फिरते थे । जब मैं उसके पास गया तो वह बुद्धिमानी बातें करने लगा । मेरे

सामने प्रत्यक्षमें उसका पागलपना तनिक भी जान नहीं पड़ा। पर जब उस-पर पागलपना सवार होता था, तब बड़े उपद्रव मचाया करता था। उन पाग-लोंमेंसे कोई आकर मेरे साथ भली भली बातें करता। प्रत्यक्षमें तनिक भी पागल मालूम नहीं होता था पर यथार्थमें वह पागल था। उन पागलोंकी सूरत देखकर उनकी अवस्थापर मुझे खेद हुवा। डॉक्टर साहब उनकी औषध करते थे। कुछ लाभ न होता था। क्योंकि, जिसपर उस बड़े वैद्यकी दया हो वही आरोग्य होकर उस घरसे बाहर निकाला जावे।

पागलोंके काम।

एक दिवस ऐसा हुआ कि, गरमियोंका दिन था। उस पागलखानेका जो जमादार था, वह अचेत सो रहा था। दिनके समय वह अकेला पड़ा था। उसका मुहँ खुला था। उसके दाँत दिखाई देते थे। उसी समय एक पागल उसी स्थानपर आ पहुँचा एवं कहने लगा कि, तू मेरे ऊपर हँसता तथा ठट्ठा करता है! मैं तुझको मारूँगा यह कह एक कक्कड उस जमादारके मुहँ पर इस जोरसे मारा कि, उसी समय वह मर गया। उस पागलको तनिक भी सुध नहीं कि, मैंने बुरा काम किया अथवा भला। यदि उसको भले बुरेका ज्ञान होता तो वह ऐसा कार्य कदापि न करता। लोगोंकी जानमें तो उसने बुरा किया पर अपनी समझमें भला किया। कारण यह कि, उसने अपने वैरीको मारा जो उसपर हँसी ठट्ठा कर रहा था।

यहाँ इस उदाहरणसे मेरा तात्पर्य है कि, इस ब्रह्माण्डमें जितने जीव रहते हैं वे सब उन पागलोंके सदृश हैं जो जमादार और सिपाही हैं वे सब गुरु और पथप्रदर्शक हैं और राजकुमार वह है जो योगीसे जगदीश्वर हो गया है। वह भी उसी पागलखानेमें बंद है उस पागलपनेमें एक दूसरेको मारते मरते हैं। एक मनुष्य तो अचेत सो रहा है। दूसरा उसका दाँत निकला देखकर जानता है कि, वह उसके ऊपर ठट्ठा करता है। उसको अपना वैरी समझकर मारता तथा हत्या करता है। इसी प्रकार इस संसारके समस्त मनुष्य एक दूसरेके वैरी बन रहे हैं। एक धर्म्मका मनुष्य दूसरे धर्म्मवालोंको दुःख पहुँचाता है अपनेको भला तथा सच्चा जानता है। इस पागलखानेसे जिसको सत्यगुरु बाहर निकले वे सुख पाते हैं। कबीर साहबने मुहम्मद साबको पाँच कलमे पढ़ाये। वे केवल चार कलमें संसारके निमित्त कहे बाकी एक उनके लिये कहा।

काम क्रोध लोभ मोह अहंकारादिकी कामनाओंसे यह पागलखाना भरा है। चारों अवस्था जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति तुरीया इनसे तुरीयातीत भिन्न हैं।

यह समस्त अवस्था जीवके बंधनके निमित्त ठहराई हैं। जबतक इन अवस्थाओंमें रहेगा तबतक बराबर फँसा रहेगा। कर्म, उपासना, योग और ज्ञान इत्यादि सब आज्ञानावस्थामें कर रहा है। जितने उसके कर्म्म धर्म्म हैं सब अचेतनावस्थाके कृत्य हैं। यह मनुष्य अपनी मुक्तिकी सहस्रों युक्तियाँ करता है। पर कोई सूरत छुटकारेकी दिखाई नहीं देती। मिथ्याको सत्य और सत्यको मिथ्या जान रहा है। अपने व्यर्थके विचारोंको सत्य तथा ठीक मान रहा है। कितने पीर पैगम्बर सिद्ध साधु ऐसे हुए कि, जिनको चौथे घरका समाचार तो मिला पर उसकी विद्या नहीं मिली इस कारण उन्होंने ब्रह्माण्डके भीतर रहना स्थिर किया। सांसारिक कामना पृथक् नहीं हुई। उनको विद्या प्राप्ति भी नहीं हुई। पर तीनों लोकोंके भीतरकी प्राप्ति हुई। उनको सृष्टिके उत्पन्न करनेका बल भी हो गया वे अपनेको सृष्टिका उत्पन्न करता मानने लगे और अपनी अल्पबुद्धिवश अपनेको उन्होंने परमेश्वर मान लिया पर यथार्थ भेदसे अनभिज्ञ रहे। 'अहं ब्रह्मास्मि' कहते रहे वे सब इसी जमादारकी तरह मारे गए। कारण यह कि, उनको इसका अण्डाकार घेरेके भीतरही ज्ञान था उन्होंने न जाना कि, ईश्वर क्या वस्तु है और मैं क्या हूँ और जिन लोगोंने न पूर्ण विद्या पाई और ब्रह्माण्डसे पार होकर सत्यलोकको पहुँचे पूर्ण विद्यासे परिपूर्ण होगए। उनको कोई मार नहीं सकता। सहस्रों युक्तियाँ कीं पर फिर भी उनका बाल बाँका नहीं हुवा। वे न किसीके मारनेसे मरते हैं और न उत्पन्न होते हैं उनका जन्म मरण फिर कभी नहीं होता। उनका आवागमन एकबारगीही बंद हो जाता है। सिद्ध, साधु जिनमें वह विद्या नहीं वे अण्डाकार घेरेके भीतर बंद हैं। वह राज कुमार जो पागलखानेमें बंद था, वह राजयोगीके समान है। वह राजकुमार जो नजरबंद था वह पागलखानेका बादशाह तो नहीं था। जैसे अन्यान्य पागल बंद थे वैसे ही वह बंद था। पर उसके मस्तकमें यह ध्यान था कि, मैं राजकुमार हूँ। अज्ञान करके यह जीव ब्रह्म जगत् इत्यादिका कौतुक देख रहा है। ज्ञानकी अवस्थामें न कुछ ब्रह्म है न जगत्ही है। यह ब्रह्माण्ड और पिण्ड दोनों कुछ नहीं। उसके समस्त खेल और कौतुक और तमासे तथा जादूगरी हैं।

अकालपुरुष एक महाप्रबल जादूगर है। जब वह भानमतीका पिटारा खोल देता है तब समस्त कौतुक प्रगट होने लगते हैं। जब वह अपना कौतुक समेट लेता है तब कुछ दिखाई नहीं देता सब शून्य हो जाता है।

सत्य कबीर वचन ।

बाज़ीगरने डंक बजाया । सब लोग तमाशे आया ।।
बाज़ीगरने डंक सकेला । तब रह गया आप अकेला ।।

जो लोग बाजीगरका कौतुक देखनेवाले हैं वे डंका बजतेही तमासेको आजाते हैं उनमें किसीको इतनी विद्या नही है कि, इस कौतुकीके कौतुकको जान सकें। वे सब कठपुतलीके समान हैं। बाजीगरके तमाशेके साथ नाचते फिरते हैं जब वो समेटता है तो जो पुतलियाँ जादूगरके कौतुकके साथ नाच रही हैं वे न जाने कहाँ चली जाती हैं इस कारण वे सब पागलपनेकी अवस्थामें हैं उनमें किसीको सुध नहीं कि, बाजीगर कौन है सबके ऊपर इस मांत्रिकका मंत्र फल दिखला रहा है, वे सब विक्षिप्त हैं। नहीं जान सकते इनमें तनिक भी बुद्धि नहीं है कि, भले बुरेको जान सकें पागलोंको ज्ञान क्या होता है। भगवन्! अपने पागलोंपर कृपाकर उन्हें चेतना देकर पागल खानेसे निकाल।

कबीर साहिबने इस बातपर भी विचार किया है कि, संसारके सब जीव क्यों पागल हो रहे तथा पागलपनेका कारण भी बताया है कि, ये आपही अपनेको भूलकर पागल बने है।

शब्द कबीर बीजक ।

अपनपो आपनही बिसरो ।
(जैसे श्वान काच मन्दिरमें भरमत भूखिमरो ।
जों केहरि बपु निरखि कूपजल तामें जाय परो ।।
ऐसेहि गज लखि फटिक शिलाको प्रतिमा देखि अरो ।
मरकट मूठी स्वाद न छोडे घरघर नटत फिरो ।
कहैं कबीर नलनीके सोना कोने तोहि पकरो ।।

यह जीव इस संसाररूपी पागलखानेमें आकर अपने प्यारे रामको अपने आत्मस्वरूप सच्चिदानन्दको अपने आपही भूल गया। इसके बाद यह अपने आप अपने स्वरूपमें भ्रममें फँसकर ऐसे मर रहा है, जैसे काचके मंदिरमें कूकर अपनी परछाई देखकर दुख पाता फिरता है और भूक २ कर अन्तमें मर हो जाता है शेर अपनी परछाई पानीमें देख उसे शेर समझकर पानीमें गिर पडता है। इसी तरह हाथी स्फटिक शिलामें अपने प्रतिबिम्बको, कुत्ते और सिंहकी तरह मुकाबिलेका लड़नेवाला समझकर, उसमें दांतोंकी टक्कर मारने लग जाता है। बन्दर बाजीगरकी दी हुई मुट्ठीका स्वाद नहीं भूलता घर २ नाचता फिरता है। कबीरजी कहते हैं कि, ए ललनी (लटकनी) के तोते! तुझे किसने

पकड़ रखा है । जीव अपने भ्रमसे आपही बन्ध रहा है यदि वहम छोड़ दे तो उद्धार पा जाय पर अन्धेर नगरीमें अपनेको भूलकर बैठा है इस कारण दुख पा रहा है यदि भगवान् कृपा करें तो उद्धार हो जायगा ।

हंस कबीरकी स्थिति ।

जब मैं काशीके पागलखानेमें गया तो वहाँ थोड़ी देर तक ठहरा । वहाँका रङ्गढङ्ग देखकर वहाँ अधिक कालपर्यन्त ठहरनेका उचित नहीं समझा। शीघ्रही वहाँसे फिर नगरको ही चला आया । इसी प्रकार हंस कबीर इस ब्रह्माण्डके भीतर कागभुशुण्ड तथा लोमश ऋषि इत्यादिकी तरह रहते हैं । परन्तु सांसारिक कामनाएँ उनको लुभा नहीं सकती वे सदैव अलग रहते हैं । जैसे कमल जलमें रहता तो है पर जलसे पृथक् रहता है । इसी प्रकार हंसकबीर पर सांसारिक कामनाएँ असर नहीं करतीं और जो लोग कामनाकी तरङ्गोंमें फँसे हुए हैं । वही लोग बिगड़ते हैं उन्हींको कालपुरुष भूनभूनकर खाता रहता है ।

उनपर दया करके कबीरसाहब पुकारते फिरते हैं कि, ए विक्षिप्त मूर्ख मनुष्यो ! मेरा कहा मानो, कालपुरुषका भोजन मत बनो । कोई भाग्यवान् कबीरसाहब तथा हंसकबीरका कहना मानता है और पागलखानेसे घृणा करके भागता है । कोई महाशय इस बतसे रुष्ट न हों कि, मैंने सबको पागल लिखा है । यह बात कदापि नहीं । मैंने केवल उन्हीं लोगोंके निमित्त लिखा है जो संसारिक कामनाओंमें पड़े रहकर मुक्तिके इच्छुक रहते हैं । जो साधु सन्त और पीर पैगम्बर इत्यादि कामनाको तुच्छ तथा सांसारिक कामनाओंको घृणा दृष्टिसे देखते हैं, वे बँधनसे निश्चय छूट जावेंगे । केवल काम क्रोधादिकके बंधनमें पड़े हुए पुरुषही इस ब्रह्माण्डमें पड़े रहेंगे । इन्हींके निमित्त पाप पुण्य नरक वैकुण्ठ आदि सब कुछ बनाया गया है, वेही कुत्सिततके कोड़े हैं । जबलों दुनियाँका जाल है, तबतक जादूगरका गुलाम है । यदि उन मनुष्योंमें तनिक भी बुद्धि होती तो अपने मनमें सोचते समझते कि, वे लोग जिससे अपनी मुक्तिके इच्छुक हैं मुक्तिका एकमात्र भाग समझते हैं । वे सब उन्हींके समान दुःखदायी तथा कर्म्मोंके बंधनमें बँधे मारे मारे फिरते हैं, कोई छुटकारा नहीं पाता । इस कारण उन मनुष्योंमेंसे किसीकी बुद्धि ठिकाने नहीं है कि, उनमें यह सूझ बूझ उत्पन्न हो । जो लोग कुत्तेकी पूंछ पकड़कर महानदके पार हो जाते हैं वो उनकी मूर्खता मात्र है ।

जिसने इस ब्रह्माण्डकी रचना की उसने चारों वेदकी आज्ञाएँ ठहराईं और चार वर्ण और चार आश्रम बनाए । मनुष्य बँधना ध्यान करना है मुक्ति

चाहता है। जबलों उसमें जातीयताका ध्यान रहेगा तबलों न तो उसको ज्ञात होगा, न मुक्ति ही होगी। यही सब सन्तों और सत्यगुरुकी आज्ञा है। अब रहे चार आश्रम। सो इन चार आश्रमोंमें प्रथम श्रेणी ब्रह्मचर्य्यकी है। इस ब्रह्मचर्य्यकी अवस्थामें वेदपाठ इत्यादि मनुष्योंको आवश्यक है। कारण यह कि, मनुष्यको छोटेपनमें और दूसरा कर्म इससे अच्छा है ही नहीं।

ब्रह्मचर्योपरान्त संसार करनेकी आज्ञा है। जिसको गृहस्थाश्रम कहते हैं। जब मनुष्य वेदपाठसे निस्तार पावे तब संसार करने कहा है। इस कारण कि, वेदपाठद्वारा सांसारिक काम धाम भलीभाँति हो सकता है। सांसारिक काम धाम यज्ञ हवन दान इत्यादिके ठीक ठीककरनेका ढङ्ग उसको मालूम हो जाता है। जब वेदपाठी होकर पुनः संसारके बखेड़ेमें पड़ा तो वेदपाठ मुक्तिमार्ग न ठहरा जिसने कि, साँसारिक कार्य्योंमें लिप्त किया। गृहस्थोपरान्त बानप्रस्थकी श्रेणी है। जब गृहस्थ एकसमयपर्यन्त कर चुका तब वानप्रस्थकी अवस्थाको स्वीकार करता है। ऐसी अवस्थामें उसको वनमें रहने, अग्निकी सेवा और आत्मातत्त्वके विचारनेकी आज्ञा है। जब मनुष्य बानप्रस्थ हो जाता है, तब पहलेकी दोनों अवस्थाएँ झूठी ठहर जाती हैं। वानप्रस्थके उपरान्त चौथी श्रेणी संन्यासकी है उस आश्रमकी यह प्रशंसा है कि, जब मनुष्य तीन ईषणाको छोड़ दे तब संन्यासको स्वीकार कर सकता है। वह तीनों ईषणा ये हैं—स्त्री, पुत्र, धन जबलों इन तीनोंसे स्नेह रहेगा तबलों कोई संन्यासी नहीं हो सकता है जब मनुष्य संन्यासी ठहर गया तब पहलेकी वह तीनों अवस्थाएँ मिथ्या तथा बेजड़की ठहर जाती हैं। जब यह संन्यासी हो गया तब उसको निश्चय अद्वैत ब्रह्मका ध्यान करना पड़ता है। जब यह शुद्ध चेतन अद्वैत ब्रह्मका ध्यान करता है। जिस अद्वैत ब्रह्मका ध्यान करता है वह अद्वैत ब्रह्म ध्यानमें नहीं आता और जो ध्यानमें आता है सो सब द्वैत है। अद्वैत ब्रह्मपर्यन्त मन बुद्धि वाणी इन्द्रिय आदिकी तनिक भी पहुँच नहीं हैं। उसका रूप वही कृपाकरके दिखा दे तो दिखा दे नहीं तो दर्शन होना कठिन है। यदि वो गृहस्थमें दर्शन दे तो उसी अवस्थामें भी वो सब कुछ बना सकता है।

जब इन चारों वर्ण तथा आश्रमको यह छोड़ दे तब मुक्तिमार्गको ढूंढ़ सकता है। इस कारण इस बातको भली भाँति जानलेना चाहिये कि, संसारियोंको पुस्तकपाठ तथा वेदपाठ साँसारिक कार्योंके निमित्त है। मतलब कामना मुक्ति मार्गमें बिलकुलही व्यर्थ हैं। पर निष्कामोंको यही मोक्षके साधन हैं। वहाँ केवल सत्यगुरुके पथ दिखानेकी आवश्यकता है। भक्तिके दीवाने तो भक्तिके सिवा

सबको निकम्मा समझते हैं । इसी विषयपर कबीर साहिबने एक शब्द लिखा है —

पण्डित कौन कोबधि तोहि लागे । तू राम न जपै अभागे ।।
वेद पुराण पढ़े क्या होए क्या खच्चर सिरमारा ।
रामनामकी सुद्ध न जानी बूड्यो सब परिवारा ।।
वेद पुराण सुनैका यह मत सब घट चीन्हों रामा ।
सब घट ब्रह्म एककर जाना सुफल होय तेरो कामा ।।
नारद कहैं व्यास मुख भाषै शुकदेव पूछो जाई ।
कहैं कबीर एक राम जाने विन बूडी सब ब्रह्मणाई ।।

ए पण्डित ! यह तुझे क्या कुबुद्धि लग गई कि, जिससे ए अभागे ! तू राम राम नहीं कहता । तूने इतने वेदशास्त्र पढ़े हैं, क्या उनसे तुमने कुछ भी सार ग्रहण नहीं किया ? योंही रट रट कर शिर खालीकर डाला । तूने राम नामका रहस्य न समझा । सारा कुटुम्ब पंडित होकर पढ़ पढकर ही संसार सागरमें डूब गया वेदपुराण सुननेमें क्या है जिस रामकी रामायण सुनते हो उसको सबमें व्यापक देखो, सबमें एकही राम देखो, भेद भाव मत मानो, सब काम सफल हो जायँगे । यदि मेरी बातमें सन्देह हो तो नारद और व्याससे पूछलो । वे भी यही बतायेंगे भलेही शुकदेवसे पूछलो । कबीर तो यही कहते हैं कि, बिनारामके जाने सब पंडिताई डूब गई क्योंकि, सब ब्राह्मणपना उसीमें है ।

अध्याय १२।

विश्वास ।

चित्त जिधरको फिरता है उसको बुद्धि मान लेती है । वह बात मिथ्या हो, अथवा सत्य हो सत्यके रूपसे दिखाई देती है । बुद्धि और विश्वास दोनों मिथ्या हैं विश्वास, मिथ्या और निष्कारणको कारणवाला बना लेता है । सारे विश्वास अविद्यामें सत्य हो रहे हैं । पर लुद्दनी विद्यामेंही सबको यथार्थ अवस्था जानी जाती है । जिस बात अथवा जिस धर्म्मपर विश्वास होगया हो वही सच्चा तथा ठीक माना जाता है । यदि विचार करके देखा जाय तो यही स्वर्ग नरक दोनोंका कारण तथा बन्ध मोक्षका पिता है ।।

विश्वासकी झलक ।

वैरागी लोग विष्णु तथा रामकृष्णका पूजन करते और आठ प्रकारकी मूर्तिपूजाको सत्य जानते हैं और इस मूर्तिपूजासे अपनी कामना पूर्ण करते

हैं। मूर्तिको पूजकर उस मूर्तिवालेसे मिलकर कृतकार्य्य होतेहैं। कोई रामकृष्णको अपना ईश्वर कोई अपना पुत्र करके पूजता है कारण यह कि, पुत्रसे विशेष प्रेम होता है। प्रेम बढानेके निमित्त कोई छोटा पुत्र अथवा युवक करके मान लेता है। जैसा मानता है वैसाही देखता है। एक गोकुली गोसाईं जो सांसारिक था पति पत्नी दोनों कृष्णचन्द्रको अपना पुत्र करके पूजते थे उस साधुके छः पुत्र और छः बहुवें थीं। एक चुड़हारी आई उसकी छः बहुओंने चूड़ी पहनी। सब बहुवें चूड़ी पहन चुकीं तब उनकी सास चूड़ीका मूल्य देने लगी। जब उनकी सास छः स्त्रियोंके चुड़ियोंका मूल्य देने लगी तब चुड़िहारीने कहा कि, मैंने सात स्त्रियोंको चुड़ियाँ पहनाई हैं। तब सासने कहा कि, मेरी तो छः बहुवें हैं तूने सातवीं किस स्त्रीको चूड़ियाँ पहनाई? दोनोंमें झगड़ा हुआ। उस चुड़िहारीने दाम नहीं लिया कहा कि, मैं सातका मूल्य लूंगी। वह चुड़िहारी खाली हाथ अपने घर चली गई। जब रातको वह महा अधिकारी गोसाईं सोया तब राधिकाजी स्वप्नमें आकर उनके सामने खड़ी हुईं कहने लगीं कि, बाबा! तुम चुड़िहारीको दाम क्यों नहीं चुका देते क्या मैं तुम्हारी बहू नहीं हूँ? तुम्हारी छः बहुओंके साथ सातवीं मैंने भी चूड़ी पहनी थी। मैं भी तुम्हारी बहू हूँ। तुम चुड़िहारीको मूल्य देदो। जब राधाजीने ऐसा कहा तो प्रातः काल होतेही इस साधुने उस चुड़िहारीको बुलाकर सातों बहुओंकी चुड़ियोंका मूल्य दे दिया। कारण यह कि, वह गोसाईं कृष्णको अपना पुत्र मानकर अपनेको पतिपत्नी नन्द यशोदा जानते थे।

एक नवाब वृन्दावनमें गए। वहाँ जो उन्होंने कृष्णके गुण तथा उनका विवरण सुना तो वे उनपर आसक्त हो गए। अपने राज्यको छोडकर योगी हो गए। उसकी सैन्य तथा नौकर चाकर रोते पीटते घरको पलट गए। वह नवाब एक साधुका शिष्य होकर वृन्दावनमें रहने लगा। गुरुने इस नवाबका नाम मीरमाधव रक्खा। वह मीरमाधव जो भोजन दे खाले इधर उधर पड़ा रहे। एक दिवस मीरमाधव भूखे हो ठाकुर मन्दिरके पिछवाड़े पड़े थे। जब अर्धनिशा हुई तब कृष्णचन्द्र थालीमें भोजन और लोटेमें जल लेकर मीरमाधवके सामने गए। भोजन तथा जल रखकर कहा कि, खाओ। तब कृष्णचन्द्र तो चले गए। मीरमाधवने भोजन किया तथा जल पिया। जब प्रातःकाल हुआ तब ठाकुरका पूजारी उठा, बर्तन भाँडे सभाँलने लगा। पर थाली और लोटा न पाया, उसे ढूंढ़ने लगा। जब ठाकुरके मन्दिरके पीछे गया तब मीरमाधवके सामने सउ

थाली लोटाको जूंठा पाकर बडाही क्रुद्ध हुआ। मीरमाधवको मार कूटकर थाली लोठा ले आया। जब स्नान करके ठाकुर पूजने गया मन्दिर द्वार खोला तो देखा कि, ठाकुरोंकी बुरी दशा है। मूर्तिपर धूल पडी है कपडे फटे हैं। बड़े दुःखमय आकारमें दिखाई दी। यह अवस्था देखकर पुजारी बडा चिन्तित हुआ। इसी सोचमें पुजारी जब रातको सो गया तब ठाकुरने स्वप्नमें कहा कि, मीरमाधवको जो तुमने मारा सो समस्त मार मुझपर पडी। मीरमाधवसे मुझमें तनिक भेद न समझो। प्रातःकाल होतेही वह पुजारी मीरमाधवके चरणोंपर गिरकर अपने अपराधको क्षमा कराया।

मिरजा खुशदिलका भी ऐसाही वृत्तान्त है भक्तमालमें देखो।

नरसीभक्त मग्न होकर ठाकुरके सामने नाच रहे थे। उनकी स्त्री भी नाचने लगी। पुत्री भी नाचने लगी। इन तीनोंको प्रेममें नाचते देखकर मूर्तिमेंसे कृष्णजी भी निकलकर उनके साथ नाचने लगे। नरसीकी कामना पूर्ण हुई।

पीपाजी द्वारकाको गए। उनकी स्त्री साथ थी, लोगोंसे पूँछा, पहली द्वारका कहाँ है? तब डोंगेपर चढ़ाकर मल्लाह ले गया। जहाँ पहली द्वारका समुद्रमें डूब गई थी वह स्थान दिखलाया। देखतेही पीपाने समुद्रमें बुडकी मारी। पीपाके कूदतेही पीपाकी स्त्री भी समुद्रमें कूद पडी। जब वे दोनों जलके गर्भमें चले गए तब उनको वहाँ असली द्वारका दिखाई दी। कृष्णचन्द्रने अपने एक हाथपर पीपा और दूसरे हाथपर सीताको लेकर कुछ दिवसोंपर्यन्त अपने पास रक्खा। फिर कहा कि, अब तुम पृथ्वीपर जाओ। यद्यपि पीपाने बहुत कहा कि, अब मैं जाना नहीं चाहता पर कृष्णजीने कहा कि, तुम निश्चय जाओ। पीछे छाप देकर कृष्णजीने पीपाको बिदा किया। पीपा भक्तकी छाप आज भी द्वारिकामें प्रसिद्ध है।

एक वेश्या वैरागियोंके उपदेशसे ठाकुरसेवामें लगी। उसने बड़े प्रेम सहित कई सहस्र रुपया लगाकर एक मुकुट बनवाया। वह मुकुट लेकर ठाकुरके शीशपर धरना चाहा, पर ठाकुरकी मूर्ति बहुत ऊँची थी। उसका हाथ वहाँलों नहीं पहुँचा। तब ठाकुरकी मूर्तिने अपना शिर झुका दिया। उस कुँजड़ीने ठाकुरके शीशपर मुकुट रख दिया। सुनते हैं कि उस मूर्तिका शिर अभीतक झुका हुआ है।

नामदेव और धन्ना भक्तको मूर्तिमेंसे ठाकुर प्रगट हो गए और विट्ठल देवको कुत्तेमेंसे प्रकट हो दर्शन दिये।

तुलसीदासजी वृन्दावन गए तब राधेकृष्णको दण्डवत् प्रणाम नहीं किया।

कहा कि, यदि यह सीतारामकी मूर्ति हो तो मैं दंडवत् करूँ। तुलसीदासके देखतेही देखते वह राधेकृष्णकी मूर्ति सीता रामकी हो गई। तुलसीदासजीका—

दोहा—कह वारणो छबि आज का, भले बने हो नाथ।
तुलसी मस्तक तब नवे, धरो धनुष शर हाथ॥
कित मुरली कित चंद्रिका, कित गोपिनको साथ।
तुलसी जिनके कारणै, नाथ भये रघुनाथ॥

सैन भक्तके निमित्त ठाकुरने नाऊ बनकर राजाकी सेवा की। ऐसे सहस्रों उदाहरण हैं।

संन्यासी विष्णु और शिव दोनोंको एक स्वरूप जानते हैं। विष्णुकाञ्ची और शिवकाञ्चीका विवरण है कि, विष्णुकाञ्ची जो आचारी हैं वे शिवका दर्शन नहीं करते। एक दिवस एक संन्यासी विष्णुकाञ्चीमें जाकर विष्णुकी मूर्तिके सामने शिवस्तुति करने लगा। तब उस विष्णुमूर्तिके मस्तकमें शिवलिङ्ग निकल पड़ा। जब वह संन्यासी मन्दिरके बाहर निकल गया तब लोगोंने देखा कि, ठाकुरकी मूर्तिके मस्तकमें शिवलिङ्ग निकला हुआ है। तब आचारियोंने कोलाहल मचाया कि, यह क्या हुआ ठाकुरके शिरमेंसे शिवलिङ्ग निकल पड़ा। इस संन्यासीको ढूंढ़कर ले आये और बहुत कुछ प्रार्थना की कि, इस बुराईको विलोपित करो। तब उस संन्यासीने विष्णुके सामने दंडायमान होकर विष्णुकी बड़ी स्तुति की तो शिवलिङ्ग विलोपित हो गया। केवल विष्णुमूर्ति रह गई।

एक प्रामाणिक पुरुष द्वारा प्रगट हुआ है कि, अम्बाला प्रांतके शाहाबादमें कितने मन्दिर और कितने समाध्यालय दिखाई दिये—वहाँपर किसी श्रेष्ठ पुरुषकी क़ब्र थी। उस क़ब्रपर शिवलिङ्ग था। मुसलमानलोग उस लिङ्गको भङ्ग करने लगे। तब उस शिवलिङ्गसे ऐसी रक्तधारा प्रवाहित हुई कि, समस्त मनुष्य भयभीत हुए। उन लोगोंकी इच्छा हुई कि, उस लिङ्गको खोदकर फेंक दें। तब उन लोगोंने सौ गजपर्यंत खोदा, पर उस लिङ्गकी हद नहीं मिली। तब विवश होकर उसको छोड दिया। अब हिन्दूलोग उसको पूजते हैं।

सन् १८५५ ई० की यह बात है और यह आश्चर्यमय व्यापार देखकर सबलोग चकित रह गए।

सन् १८१० ई० में सहारनपुर जिलेके अन्तर्गत पठानपुरामें एक आलयसे शिवलिङ्ग निकला। वह आलय मुसलमानका था। मुसलमानलोग वैरसे उसपर भ्रष्ट जल डालते। उन लोगोंने सौ हाथपर्यन्त खोदा। उसको मकानसे

निकालना चाहा, पर उस लिङ्गका अन्त उनको नहीं मिला। तब विवश होकर उसको उन्होंने छोड दिया और हिन्दू उसको पूजते हैं।

नानकशाह महाशयकी जन्मसाखीमें लिखा है कि, जब आप मक्केमें गए तब मरदानाने पूछा कि, गुरुजी ! इस मक्केके भीतर क्या है ? तब नानकसाहबने उत्तर दिया कि, तुम जाकर देखो। तब मरदानाने कहा कि, मुझको यहाँके झाडू देनेवाले भीतर जाने न देंगे। तब नानकसाहबने कहा कि, तू जा, तू सबको देखेगा पर तुझको कोई न देखेगा। मरदाना भीतर जाकर देख आया। फिर नानकसाहबने पूछा, क्या देखा ? तब मरदानेने कहा कि, वहाँ देखनेको क्या है ? मकानके भीतर एक नग्न मूर्तिमात्र पड़ी है, दूसर. कुछ नहीं। तब नानकशाहने कहा कि, वह शिवजीकी मूर्ति है। मुहम्मदसाहब और अलीने समस्त मूर्तियोंको तोड़ा तथा पृथक् किया, पर उस मूर्तिको हटा नहीं सके। मुहम्मद साहबके पीछे खूख्वार हुसेनी नामक एक बादशाह हुवा। उसने उस मूर्तिको अलग करना चाहा। तब उसके सारे शरीर तथा उसके समस्त सैन्यमें आग लग गई। सब मरने लगे तब उस बादशाहने अपने दोषके निमित्त क्षमा-प्रार्थना की। इस कार्यसे हाथ रोका। तब उसको और उसकी फौजको सुख मिला।

भक्तवर पीपा कबीर साहिबके गुरु भाई थे। आपका बाहा विश्वास था जो कि कबीर साहिबका है। आप भी उसी तत्त्वके उसी पथसे उपासक थे जिसकी तत्त्वसे तथा जिस पथसे कबीर साहिब थे। पीपाके विश्वासकाही प्रभाव था कि सच्ची द्वारिकामें पहुँच गया कबीर साहिबके राम मंत्रके विश्वासकी करामात थी कि सिद्ध पदवी पाई। यद्यपि असत्‌में सत्‌का विश्वास उतना लाभदायक नहीं होता जितना कि सद्वस्तुका होता है संवादी भ्रम तो साक्षात् कल्याणकारी दीखताही है। पर झूठे विश्वासमें सुख नहीं है भक्तोंके श्रद्धा विश्वास निराले हुआ करते हैं उनको दीवानगी अनन्य भक्तिको लिये हुए होती है। जो कुछ वो चाहते हैं सत्य पुरुषको वही बनना पड़ता है। इसका रहस्य साधारण व्यक्ति नहीं समझ सकते। इसे वे ही समझ सकते हैं जिनके दिलमें कुछ प्रकाश हो।

जीवकी हालत ।

पहिलेमें कुछ और था पर जब मेरी यथार्थ अवस्था बदल गई और मैं दूसरी अवस्थामें आया तब मैं भ्रमका पुतला हो गया और मैं सहस्त्रों प्रकारके धर्म्म कर्म्म स्थिर करने लगा। एक धर्म्मको मैं सच्चा ठहराता हूँ तथा दूसरेको झूठा समझता हूँ अगणित धर्म्म मैंने स्थिर किए और कर रहा हूँ और भविष्यमें

करूँगा। सो सब मेरे भ्रमकी अवस्थामें ठहराए गये हैं। एक स्थिर करता हूँ तथा दूसरे को काटता हूँ न मेरी बुद्धि ठिकाने है और न मेरे विश्वास स्थिर हैं। मैं अपने पागलपनसें सब कुछ कर रहा हूँ। इसी पालगपनेकी अवस्थाको मैं अपनी बुद्धि अवस्था मानी तथा दूरदर्शिता समझता हूँ। यद्यपि यह सब बातें मैं अपने अज्ञानावस्थामें करता हूँ। जबसे मैं भ्रममें पड़ा तबसे मैंने अपने निमित्त दो मकान बनाएँ। इन्हीं दोनों मकानोंमें रहा करता हूँ। एकका नाम पिण्ड तथा दूसरेका नाम ब्रह्माण्ड है। ये दोनों पागलखाने है मैंने अपने मकानमें नौं महल बनाए वे ये हैं—दानमयीकोश शब्दमयी कोश बाणमयीकोश आनन्दमयीकोश मनुमयीकोश प्रकाशमयीकोश ज्ञानमयीकोश आकाशमयीकोश प्रज्ञानमयीकोश।

इस नौ महला मकानमें मैं रहने लगा। जब जिस महलमें जाकर बैठता हूँ तब मेरा ढङ्ग वैसाही हो जाता है। सब बल धन इत्यादि उसीके अनुसार प्राप्त होता है। मेरी स्थिति सदैव इसी नौमहला मकानमें रहती है। बाहर जानेका बल नहीं। कभी मैं नदी कभी बूंद बन जाता हूँ। नदी बूंद दोनोंमें एकही कौतुक है। मैं अपने असलको भूल गया। मैंने अपने गलेमें मालाको पहनकर इधर उधर ढूंढता फिरता हूँ। मैं अपने कानपर लेखनी रखकर भूल गया ढूंढता फिरता हूँ। जब किसीने कहा कि, कलम तो तुम्हारे कानपर है तब मैंने अपनी कलम पायी। मैं जान बूझकर भटकता रहा, दूसरेके बतलानेका मोहताज हो गया। इस प्रकार मैं अपनी पूर्वावस्थासे पृथक् होकर दूसरोंके बतानेका मोहताज हो गया। पिण्ड तथा ब्रह्माण्ड दोनों हमारे बनाए हैं पर मैं भूल गया। नहीं जानता कि, किसने बनाया। आपको और तथा बनानेवालेको और जानता हूँ। मैंही दास तथा मैंही परमेश्वर बन बैठा, असली परमेश्वरको मैं नहीं जानता, नहीं पहचान सकता, असल परमेश्वर मेरे कहने सुननेसे परे हैं। उसको न पहचाननेसे मैं पागल बन रहा हूँ। मेरे जप तप पूजा वंदना आदिक सब भ्रम हैं, इनके, द्वारा जो कुछ प्राप्त होता है वह सब अस्थायी तथा जल परकी लकीरके समान है। कबीर साहबका वचन है कि, ये सब मनुष्योंके कर्म हैं सो सब भ्रम हैं यही बात देवी भागवतके नवें स्कन्ध और १९ अध्यायमें देखा—महामायाका वचन है कि, सात करोड़ महामंत्र जो हैं सो सब मेरे नाम है। अतः जो वेद शास्त्र है और जो कहने सुननेमें आता है सो सब माया है जो कुछ माया है, सो सब भ्रम और धोखा है। मायाको माया खाजाती है। जो मायासे पृथक् है वो ही बचा है। दूसरे सब नष्ट हो जावेंगे मैं जब सर्वज्ञ कर्ता बन बैठता हूँ तब जानता हूँ कि,

यह सब सृष्टि मेरी है। जब मैं स्वयं सृष्टि बन जाता हूँ तब कहता हूँ कि, यह रचयिता मेरा है। इसी प्रकार जब बादशाह बन जाता हूँ तब कहता हूँ कि, यह, सब प्रजा मेरी हैं। जब मैं धनहीन तथा दरिद्र हो जाता हूँ तब कहता हूँ कि, यह मेरा सम्राट् है और मैं इसकी प्रजा हूँ। मैं ही तो बादशाह हूँ मैं ही प्रजा हूँ। न बादशाह कुछ है न प्रजा कुछ है। केवल एक जीव है, उसका कुछ नाम रखलो। न यह मनुष्य है, मनुष्यका जन्माया हुआ है। पशु पक्षी जड़ चैतन्य सभी कुछ यह है पर सबसे पृथक् यह है। मैं नहीं जानता कि, पहले मैं क्या था। अब मैं क्या हूँ। मैं पाँच तत्त्व तीन गुण तथा चौदह इन्द्रियोंसे पृथक् हूँ। तथा संयुक्त भी हूँ। मैं अब भ्रमरूप हूँ। मैं पहले एक भ्रम था फिर अनेक हो गया। मैं ढ़ोल बजाता हुआ जाता हूँ एक दूसरा भ्रम व्याहकर लाता हूँ। एक भ्रम दूसरे भ्रमके साथ मिलावट करते हैं तब दूसरा तीसरा फिर चौथा भ्रमरूप लड़का लड़की उत्पन्न होते हैं फिर उनके प्रेममें फँसकर मर जाता हूँ। जब एक भ्रमके साथ दूसरा भ्रम हुआ तब अनगिनती भ्रम एकसे अनेक हो जाते हैं। जैसे बाँसके रगड़नेसे आग निकलती है वो समस्त बनको भस्म कर देती है इसी प्रकार जब एक भ्रमके साथ दूसरा भ्रम हुआ तब उसके समस्त सुकार्य तथा भले कामोंको भस्म करके राखमें मिला देते हैं। यह अज्ञानवश कहता है कि मेरी स्त्री, मेरा पुत्र, मेरी पुत्री मैं अपने बाल बच्चोंके निमित्त कमाई करू। कमाकर उनका पालन करू। यह मूर्ख इतना नहीं सोचता कि, जिसने मुंह पेट बनाया है वही पालन भी करेगा मैं बाल बच्चोंके सोचमें जो मरता हूँ सो मेरा क्या किया होता है। जिसने मुंह और पेट बनाया उसीने आटा दाल नमक आदिक सब कुछ बनाया। जीवनभर कमाईके ध्यानमें फँसकर खराब होता है। अपने परमेश्वरकी बंदनाकी ओर तनिकभी ध्यान नहीं देता है न सोच तथा विचारही करता है कि, मैं किसकारण मनुष्य कहलाता हूँ। मनुष्यता क्या है। यदि मैं मनुष्य हूँ तो मुझको अवश्यही मनुष्यताकी ढुंढाई करनी चाहिये? जब मैं मनुष्यता पर अधिकृत होता हूँ तब मेरा समस्त कार्य्य पूरा होगा। जबलों केवल मेरी सूरत मनुष्योंकी है कार्य पशुओंका है बुद्धि पशुओंकी है, तबलों मैं कदापि मनुष्य नहीं हूँ। इस कारण मुझको अवश्यही उद्योग करना चाहिए,। जिसमें मनुष्यताकी बातोंको प्राप्त करूँ। जबतक मुझमें मनुष्यता न हो तबतक मैं कदापि मनुष्य नहीं समझा जा सकता हूँ।

चार-पशु

क. ११ पृ. ११७–नरपशु गुरुपशु, वेद पशु, तिरयापशु संसार।
कहैं कबीर सो पशु नहीं, जाके विमल विचार ।।

कबीर साहब कहते हैं कि, इस संसारमें चार पशु हैं। ये पूरे तथा पक्के पशु भीतरी आँखोंसे अंधे हैं। यद्यपि वे बाहरी आँखोंसे देखते हैं तथापि अंधोंके समान समझे जाते हैं। ये चारो पशु, मूर्खता तथा नासमझीके खूंटेके साथ बंधे पड़े रहते हैं।

नरपशु।

नरपशु, पशुरूपी वह मनुष्य है जो बिनाजाँचे किसीके कहनेसे विश्वास करके उसका पीछा करे। जैसे किसीने कहा कि, कौवा तेरा कान लिये जाता है तो वे नहीं टटोले पर कौवेके पीछे दौडे। यह नरपशु अपने मनमें नहीं सोचता कि, मैं उसके कहनेका विश्वास क्यों करूं मेरे कान तो मेरी देहमें है। पर वह कहता है कि, अमुक मनुष्य जो कहता है उसकी बात मिथ्या कैसे ठहर सकती है? इसी प्रकार यह एक उदाहरण है :—

दृष्टान्त।

एक राजा था उसके पास एक बडा श्रेष्ठ बुद्धिमान मंत्री था। वो राजा तो मूर्ख तथा नरपशु था। उसके मंत्रीका नाम मृच्छु था। इस मंत्रीसे समस्त दरबारी महान् शत्रुता रखते थे। सब चाहते थे कि, मृच्छु किसी प्रकार हट जावे तो हम राजाको भलीभाँति लूटें। पर मृच्छु बडा चैतन्य रहता था। बडी नमकहलालीके साथ काम किया करता था। राज्यमें किसी प्रकारकी बाधा उपस्थित नहीं होने देता था। एक बार इस राजाको चढ़ाईकी आवश्यकता हुई।

वैरी राजाका दुर्ग बड़ा दृढ़ था कि, उसका टूटना दुष्कर था तब समस्त अन्यान्य कर्मचारियोंने सलाह की कि, इस अवसरपर मृच्छुको भेजना उचित है। जिसमें यह जब वहाँ जावेगा तो निश्चय मारा जावेगा। सबोंने मिलकर राजासे कहा कि, ऐ महाराजा! आप इस युद्धमें मृच्छु मंत्रीको भेजो तो वह दुर्ग हस्तगत होगा। राजाने कहा मान लिया मृच्छुको भेजा, वह गया। लड़ भिडकर उस दुर्गको करकवलितकर लिया। समस्त वैरी अधीन हो गए। तब मृच्छुके वैरियोंने आपसमें परामर्श किया कि, अब तो मृच्छु विजयी हुआ। इस राजाके सामने उसकी बडी मान मर्यादा होगी। हम लोगोंका निरादर होगा। इस कारण अब कुछ धोखा करना चाहिए। तब इन सबोंने आकर कहा कि, महाराजा! मृच्छु तो मारा गया। हम लोगोंने दुर्गको विजय कर लिया। मृच्छु भूत हो गया। इस राजाको विश्वास हो गया उसने मृच्छुके स्थान दूसरा मंत्री रख लिया। जब मृच्छुने सुना कि राजाने दूसरा मंत्री रख लिया, तब उसको संसारसे बड़ी घृणा होगई। भगवद्भजनमें लग गया। मृच्छुके वैरियोंने राजाको

सिखला रक्खा था कि, अब मृच्छु भूत बनकर फिरा करता है । यदि वह आपके समीप आवे तो उसको कदापि आने न देना एकदं उसको देखकर भागना । कारण यह कि, जो कोई उसके समीप जाता है उससे वह चिपट जाता है । यह बात राजाके मनमें भली प्रकार बैठ गई । एक दिवस राजा आखेट करनेके निमिख वनको गये । मृच्छु एक पेड़के नीचे बैठकर भगवद्भजनमें लीन था । जब राजा बनमें गया तब मृच्छु मंत्रीको वृक्षके नीचे देख जान लिया कि, यह वही मेरा मंत्री है जो प्रेत हुआ है । ऐसा न हो कि, यह भूत मुझसे चिपट जावे । राजा तुरंतही अपना घोड़ा दौड़ाकर भाग गया । उस नरपशुको तनिक भी सुध नहीं हुई कि, इस चकमेको तो जान जाय ।

दूसरा दृष्टान्त ।

एक राजाने अपने नौकरोंको घाटपर भेजा कि, धोबीसे वस्त्र धोनेको सहेजदें । भृत्य जब घाटपर धोबीके पास गया तो देखा कि, धोबी सूढर सूढर कर रो रहा है । इस धोबीको रोता देखकर राजाके भृत्यने पूछा कि, तू क्यों रोता है ? उसने उत्तर दिया कि, सूढर मर गया । यह बात सुनकर राजाका भृत्य भी सूढर सूढर कहकर रोता हुआ राजाके पास लौट गया । राजाने पूछा तू क्यों रोता है ? उसने उत्तर दिया कि, सूढर मर गए । उसे रोता देखकर राजा भी सूढर सूढरकर रोने लगा । राजाके रोते हुए, राजाके महलकी समस्त रानियाँ और समस्त नगर सूढर सूढर कहकर रोने और पछाड़ खाने लगे । कुछ कालोंके पीछे राजाका मंत्री आया । राजाको रोते तथा समस्त नगरको शोकाकुल देखकर उसनें पूछा कि, ए महाराज ! आपके विलापका क्या कारण है और समस्त नगरमें ऐसा शोक क्यों फैला हुआ है ? तब राजाने कहा कि, सूढर मर गए । तब मंत्रीने पूछा कि, सूढर कौन था ? तब राजाने कहा कि, मैं तो नहीं जानता । अपने भृत्यको रोता देखकर मैं भी क्रंदन करने लगा था । मंत्रीने उस भृत्यको बुलाकर पूछा कि, सूढर कौन था जिसके निमित्त तू रोता था । भृत्यने उत्तर दिया कि, मैं कुछ नहीं जानता पर धोबी सूढर सूढ़र करके रोता था । उसको देखकर मैं भी रोने लगा तब मंत्रीने उस धोबीको बुलाया और पूछा कि, तू बतला कि, सूढर कौन था जिसके निमित्त तू रोता था ? तब धोबीने उत्तर दिया कि, मेरे पास एक गदहेका बच्चा था उसका नाम मैंने सूढ़र रख दिया था उसको मैं बहुत चाहता था वह आज घाटपर मर गया उसके दुःखसे मैं रो रहा हूँ।

गुरुपशु ।

गुरुपशु वह है कि, जो बिना जाँचे शिष्य किया करता है । जो शिष्य

समझदार होता है पहले भलीभाँति समझबूझ लेता है तब गुरु करता है। चार बातोंकी जाँच करलेना चाहिए। अर्थात् गुरु, शास्त्र, आचार्य्य, ईश्वर, ये चारों बातें जब भली भाँति जानी जाय तब गुरु करना उचित है। प्रथम गुरु, सर्वतो-भावसे योग्य हो। द्वितीय शास्त्र निर्दोष तथा निष्कलङ्की हो। तीसरे धर्मका अग्रगण्य सब प्रकारसे योग्य तथा निर्दोष हो। चौथे यह जानना चाहिये कि, वह गुरु किस ईश्वरकी भक्तिमें लगाता है। जिस ईश्वर अथवा देवताकी प्रार्थना बतलाता है वह देवता कैसे गुण तथा क्या बल रखता है ? हमें वह छुटकारा देसकता है वा नहीं ? यदि वह सर्वतोभावसे योग्य तथा सामर्थ्यवान् है तो उसका पूजन उचित है क्योंकि मनुष्य अंधे गुरुसे मुक्ति नहीं पा सकता है।

साखी – कबीर – जाको गुरु है अंधरा, चेला खरा निरंध ।
अंध अंधको ठेलिया, परे कालके फंद ।।

चौपाई – गुरु गुरु कहत सकल संसारा । गुरु सोई जिन तत्त्व विचारा ।।
प्रथम गुरु हैं पिता व माता । रज बीरजके सोई दाता ।।
दूसर गुरु है मनकी दाई । ग्रीहबासकी बंद छोड़ाई ।।
तीसर गुरु जो धरियानामा । लै लै नाम पुकारै गामा ।।
चौथे गुरु जिन दीक्षा दीना । जगव्यवहार रहत सब चीना ।।
पँचवें गुरु जन वैष्णव कीना । रामनामको सुमिरन दीना ।।
छठवें गुरु जिन भ्रमगढ़ तोड़ा । दुविधा मेट एकसे जोड़ा ।।
सातवा गुरु सत शब्द लिखाया । जहाँका ततले तहां समाया ।।

साखी – कबीर – सात गुरु संसारमें, सेवक सब संसार ।
सतगुरु सोई जानिए, भवजल उतारे पार ।।
कबीर कान–फूंका गुरु, हदका बेहदका गुरु और ।
बेहदका गुरु जब मिले, तो लहें ठिकाना ठौर ।।

अर्थ–कबीर साहिब कहते हैं कि, जिसका गुरु अन्धा है उसका चेला उससे भी अधिक आँधरा होगा, अन्धागुरु चेलाको अन्धकारकी ओर ही ठेलता है इस तरह दोनों ही नरकके फन्देमें फस गये। कालने उन्हें कवलित कर लिया सारा संसार गुरुगुरु कहता है, पर वही गुरु है जो तत्त्वका बिचार रखता है। सबसे पहिले तो मा और बाप गुरु हैं क्योंकि, वे ही अपने रज वीर्य्यसे शरीरको उत्पन्न करते हैं। दूसरी गुरु सुखपूर्वक जतन करानेवाली दाई है जिसने गर्भवासकी कैद छुटादी। नाम करण करने वाले तीसरे गुरु हैं क्योंकि, सब लोग उन्हींके रखे नाम से बोलते हैं। यज्ञोपवीत कराने वाले तथा पढाने लिखाने और व्यव-

हार सिखानेवाले चौथे गुरु हैं । पाँचवे गुरु वे हैं जिन्होंने वैष्णव बना राम नामका मंत्रका सुमिरन देकर भगवान्की ओर लगाया । भ्रमदुर्गके तोड़ने वाले छठे गुरु हैं । जिन्होंने दुविधा मिटाकर एकसे नेह लगवा दिया । सातवे वे गुरु हैं जो शब्द लिखा दिया जिससे यथार्थ तत्त्व जान उस तत्त्वमें निमग्न हो गया अथवा संसारका तत्त्व लेकर इसे जैसेका जैसा दिखा दिया । मैं जहाँसे आया था वहीं जा दाखिल हुआ । कबीर साहिबका कथन है कि, दुनियाँमें सात गुरु हैं सारा संसार इन्हींका सेवक है । सतगुरु या सातवाँ उसीको समझिये जो भव-सागरसे पार लगादे । कानफूका तो हदका गुरु है । बेहद (ब्रह्म) का नहीं । जब बेहदका गुरु मिल जाता है उस समय वो औरका और ही हो जाता है । संसारीका असंसारी एवं अल्पज्ञका सर्वज्ञ बन जाता है ।

जो शिष्य होना चाहे वह पहले भली भाँति जाँच करे । जो कोई बिना जाँचे गुरु करता है वो बिगड़ता है । अँधेरे कुएमें गिरता है ।

अन्धोंका पन्थ ।

एक अंधा पुकार पुकारकर कह रहा था कि, मुझको सातों आकाश और बैकुण्ठ सब कुछ दिखाई दे रहा है । उसके पास एक मनुष्य खड़ा था । वह अंधेसे कहने लगा कि, ए भाई ! मुझे भी वह आकाशका मार्ग बता ? अंधेने कहा कि, तूभी आँख फोड़वावे तो तुझको भी दिखाई देने लगे । उसके कहनेसे अपनी आँखे फोड़वाई । उसकी आँखें फुट गईं तब उसने कहा कि, मुझे तो कुछ भी दिखाई नहीं देता । तब पहलेके अंधेने उसे सिखाया कि, तू भी मेरी तरह कह । वह भी उसी प्रकार कहने लगा कि, मुझे समस्त स्वर्ग दिखाई देते हैं । मेरी भीतरकी आँखें खुल गईं । तब इन दोनोंकी बातें सुनकर एक तीसरेने भी अपनी आँखें फोड़दी । फिर चौथे पाँचवेंने आँखे फोड़वाई । जो कोई आँखें फोड़वाता उसको पहलेका अंधा सिखा देता कि, जैसे मैं कहता हूँ इसी प्रकार तू भी कह । वह भी वैसाही कहने लगता था । तात्पर्य यह कि, बीस तीस मनुष्योंने मिलकर अपनी आँखे फोड़वाली । तब एक और मनुष्य आया उसने भी अपनी आँखें फोड़वाई और जब उसको कुछ दिखाई नहीं दिया तो उसने कहा कि, मुझको तो कुछ दिखाई नहीं दिया ? तब पहलेका अंधा उसको सिख-लाने लगा कि, तूभी इसी प्रकार कह जैसे कि, हमलोग कह रहे हैं । उसने कहा कि, मैं ऐसा कभी भी न कहूँगा । दूसरे अंधोंसे पूछा कि, तुमको क्या दिखाई देता है ? सबोंने कहा कि, हम सबने इस पहलेके अंधेके कहनेसे अपनी आँखें

फोड़वाई थी । सब पुकारने लगे कि, इस पहलेके अंधेने हमारी आँख फोडवाई है । उस पहलेके अंधेका पाजीपना पूरा प्रगट हो गया ।

नकटोंका पन्थ ।

मैंने सुना था कि, एक राजाके पास एक मोडा जार रहता था । राजा उसकी बहुत कुछ मान मर्यादा किया करता था, वह बड़ा पाजी तथा दुष्ट था, बहुत पाजीपना किया करता था, पर राजा दयापूर्वक उसको टाल देता, उसको दण्ड न देता था । उसकी विद्याके कारण उसकी बुराई ढाँपता । एक बार वह महादोषके कारण पकड़ा गया । कि, जिसके निमित्त दण्ड न देना राजाको नितान्तही अनुचित मालूम हुआ तो भी राजाने इतना पक्ष किया कि केवल उसकी नाक कटवाकर देशसे बाहर निकाल दिया । उस पाजीने देशसे बाहर निकलकर कुछ यंत्र मंत्र इत्यादिकी साधनाकी । कितनीक जादूगरी इत्यादिसे अपनेको बढ़ा चढ़ा लिया जब अपना कार्य्य सम्पूर्ण करचुका तब अनेक मनुष्योंको धोखा देने लगा । मुक्तिकी आशा दिलाने लगा । आप गुरु बन लोगोंको उपदेश देदेकर शिष्य बनाने लगा । कितनेही लोग उसके भृत्य बनगए । जो कोई उसका चेला बनता उससे वह यही कहता कि, यदि अपनी मुक्ति चाहते हो, तो तुम अपनी नाक कटाओ नकटे बन जाओ । उसके सब शिष्योंने नाकें कटवाई । जैसे कि, मुसलमानों तथा इबरानियोंका खुतना होता है । इसी प्रकार उनकी नाककी खुतना होने लगा । नकटोंका एक बड़ा झुण्ड उसके साथ हुआ । वह मोडा साधुकी सूरतमें भस्म इत्यादि रमाकर अवधूत बन गया । नकटे पंथका अगुवा हुआ । अपने शिष्योंसहित उसी देशमें पहुँचा बहुत दिवस बीत चुके थे । इस पाजी मोडेकी बात लोग भूल चुके थे इस कारण उसको किसीने नहीं पहचाना । भुज नगरमें रहने तथा उपदेश देने लगा । कितने मनुष्य उस नगरमेंभी उसके शिष्य होगए । उसकी बड़ी प्रशंसा होने लगी । लोगोंको उसने बडे कौतुक दिखाए । यहाँतक कि, स्वयम् राजा उनके दर्शनके निमित्त आए, राजाको भी उसने भाँति भाँतिके खेल दिखाए जिससे राजाके मनमें उसका विश्वास जम गया । तब राजाको वह समझाने लगा कि, ए राजा ! यह देह तुच्छ तथा घृणित है । यदि परमेश्वरके अर्थ लगाई जावे तो मनुष्यकी मुक्ति हो जावे इस कारण हे राजा ! तू अपनी नाक कटवा कर मुक्ति ले । राजाने अपनी नाक कटवाई उसका शिष्य बन गया । जब राजा शिष्य हो चुका, तब वह पिशाच रानीके पास जाकर समझाने लगा कि, ए रानी ! यह शरीर तो चार दिवसोंमें मिट्टीमें मिल जावेगा तू अपनी नाक कटवा कर

मुक्ति लेले। रानीने कहा कि, मैं न अपनी मुक्ति चाहती हूँ न नाक कटवाती हूँ यद्यपि उसने समझाया पर रानीने न माना। कुछही दिवसोंके बाद वह दुष्ट किसी महापापमें फँसा। किसी महादोषमें पकडा जाकर राजाके समक्ष लाया गया जाँच होने लगी। लोगोंने पहचान लिया कि, यह वही मोडा है जो नाक कटवाकर देश बाहर किया गया था। जाँचके पीछे राजाने जाना कि, उसने मुझसे उस धोखेबाजीसे अपना प्रति शोधलिया। मैंने उसकी नाक कटवाई थी। उसनेभी मेरी नाक कटवाली। तब राजाने उस मोडेको जीवितही पृथ्वी-में गड़वा दिया। फिर नकटापंथके लोग तितिर-बितिर हो गए। यदि वह कुछ दिवसोंपर्यन्त और जीवित रहता तो कदाचित नाककटाईका कार्य्य भी प्रचलित रहता।

वेदपशु।

इस संसारमें चार बेद हैं। वे पूर्वदेशको दिये थे उनके अभाव पश्चिम देशवासियोंको प्रदान किए गए। इस आठोंकी आज्ञापर समस्त मनुष्य चल रहे हैं। वेदपशु वे हैं जो वेद तथा पुस्तकोंको पढ़ते हैं, वेदोंके यथार्थ तात्पर्यसे पूर्णतया अनभिज्ञ हैं। वेदका तात्पर्य तो अन्य है। मनुष्योंको अन्य उपदेश देकर बहका देते हैं। वेदपशु एक अर्थ निकालता है। जिसपर सहस्रों नर पशु विश्वास करके सत्य मानते हुए प्रशंसा करते कहते हैं कि, वाह वाह स्वामीजी! आपने जो अर्थ किया वोही सत्य है। दूसरोंने जो अर्थ किया वह कदापि सत्य नहीं है। लोग प्रसन्न होकर कहते हैं कि, धन्य स्वामीजी! आपके समान अर्थ और कौन कर सकता है? आपके समान पहले न कोई हुआ और न होगा। समस्त नर पशु मिलकर प्रशंसा करते हैं। बेदपशु सुन सुनकर घमंड करता हुआ कहता कि, वास्तवमें मैं ऐसाही ज्ञानी हूँ। इस एक बेदपशुके पीछे सहस्रों तथा लाखों नरपशु लगे हुए प्रशंसा किया करते हैं। इस वेदपशुको भलीभाँति फुलाकर घमण्डी करदेते हैं। वह वेदपशु ऐसा फूल जाता है कि, अपने सामने किसीको कुछ नहीं गिनता, समझता है कि, मैं वेदपाठियोंमें प्रथम श्रेणीका पण्डित हूँ। यद्यपि उसको वर्णमालाकी सुध भी नहीं है। बेदके वास्तविक तात्पर्यको वह क्या समझे? वेदकोशमें एक शब्दके अनेक अर्थ कहे हैं। एक अर्थ नहीं वरन् अनेक अर्थ हैं। शब्दोंके समस्त अर्थोंमेंसे एक अर्थको अपनी इच्छानुसार चुनके बेदमंत्रका अर्थ करके लोगोंको समझाता हुआ समस्त नर पशुओंको अपनी ओर खींचता है। इसी प्रकार वेदपशु लोगोंको अपने जालमें फँसाता है। जितने वेदपशुके शिष्य हैं सब बेदपशु हैं। इन सब वेदपशुओंके भाँति-भाँतिके ध्यान

हैं। पर जो वेदके सच्चे ज्ञाता होते हैं, वे बडे भावुक हैं। उन्हें किसीसे द्वेष नहीं होता, न वो लुच्चोंकी तरह मूर्तिकी निन्दा ही किया करते हैं।

साखी कबीर -- वेद हमारा भेद है, हम वेदोंके माहिं।
जौन भेदमें मैं बसूँ, सो वेदौ जानत नाहिं ।।

कबीरजी कहते हैं कि, मेरा पता वेदसे मिल सकता है कि, मैं कौन हूँ। क्योंकि, हम वेदोंमें हैं, पर अपने आप पता नहीं लग सकता। कहना यह कि, पारखी गुरुकी आवश्यकता है। जिस भेदमें मैं रहता हूँ उसको वेद भी नहीं जानते। केवल नेति नेति कहकर इसकी ओर इशारा ही करते हैं।

यह वेदपशु अज्ञानावस्थामें सब कुछ करता है। मिथ्या तथा सत्यकी उसको तनिक भी सुध नहीं। यह वेदपशु वेद पाठकर घमण्डी होता है। कहता है कि, वेदमें यह बात लिखी है वेदमें वह बात लिखी है। यद्यपि वह पूर्णतया अनभिज्ञ है कि, वेद क्या है तथा किस निमित्त है ? उसका वेद और वेद पाठपर इतना घमंड करना और इतराना पाशविक अवस्थामें है। समस्त वेदोंकी आत्मा केवल एक शब्द 'ओम्' है। जो कोई वेदकी आत्माको न पहचान, वेदपाठी होनेका प्रण करे वो कदापि वेदका विद्वान् न होगा। अतः अर्थानुसंधानके साथ वेद पाठ हो। उससे आत्माके जाननेकी चेष्टा करे।

त्रियापशु।

त्रियापशु उसको कहना चाहिये जो स्त्रीका पशु हो। वैसे वो स्त्रीका पशु यह सारा संसार है। स्त्री समस्त जीवोंको नचाया करती है। इस स्त्रीने अपनी गुलामीका फंदा सबके गलेमें डाला है। कामबाण सबके हृदयोंको भेद गया। इस कारणही समस्त मनुष्य मर गए। सांसारिक मनुष्योंकी तो गणनाही क्या है। यह बड़े बड़े सिद्ध साधुओंके हृदयको भी टुकड़े टुकड़े कर देती है। सन्तोष तथा धैर्य मनसे पृथक् हो जाता है। इस स्त्रीका नाम वासना तथा इच्छा है। उसने सबको बाँध रक्खा है। इसीके कारण सबका आवागमन हो रहा है इसीके कारण भवसागरकी स्थिति है। यह मनुष्य तथा देवता किसीको भी नहीं छोड़ती। जबसे स्त्री पुरुषके साथ होती है उसी दिनसे तपस्या तथा व्रतसे मनुष्य वञ्चित रहता है। केवल स्त्रीकेही कारण बंधनमें रहता है। उसको उसी स्त्रीने अंधा कर दिया है। समस्त झगड़ों तथा बखेड़ोंकी जड़ स्त्री है। अनगिनती लोगोंके इसने मस्तक कटवाये, कटवाएगी और कटवा रही है। समस्त विद्या तथा कार्यकी वैरिन है, समस्त सांसारिक मनुष्य इसके ही प्रेममें फँसकर अपने सर्जन कर्तासे दूर हो गए हैं। जो कोई इससे प्रेम करेगा उसमें सर्जन कर्ताका

प्रेम तथा उसकी भक्ति न हो सकेगी। इस त्रियापशुमें तनिक भी मानुषिक बुद्धि नहीं होती। पर जब उसको मानुषिक शिक्षा मिले तो वास्तवमें वह मनुष्य बनजावे, नहीं तो सदैव इसी प्रकार फँसा रहेगा। इसको तनिक भी पहुँच, समझ तथा बुद्धि नहीं है कि, अपनी मुक्ति तथा छुटकारेको युक्ति कर सके। उसके पास तनिक भी औषध नहीं कि बच सके।

उद्धारकी दवा।

उसके निमित्त केवल यही एक युक्ति है कि, यह साधु तथा गुरुकी सेवा करे। यदि यह साधु तथा गुरुकी सेवा न करेगा तो इसका बेड़ा कदापि पार न होगा। अवश्यही वह कालका भोजन बनेगा। इस संसारमें दो प्रकारके गुरु हैं– एक पाशविक तथा दूसरा मानुषिक। यदि इस सांसारिकको पाशविक शिक्षा मिलेगी तो उसके हृदयपर बुद्धिका कदापि विकाश न होगा। इस संसारमें दोनों प्रकारोंके शिक्षक फिरते हैं। जो कोई उन दोनों गुरुओंमें पहचान करे, उन्हें पृथक् करके पहचाने, एकको छोडकर दूसरेको ग्रहण करे वो सांसारिक बड़ा ही भाग्यवान् होगा। एक तो कपटी भेष बनाए कूट पुस्तकें लेकर हाथमें खप्पर लिए फिरते हैं। यह तो कालपुरुषका समाचार देते हुए उसकी सूचना चारों ओर फैलाते फिरते हैं। दूसरे श्वेत वस्त्र पहने हाथमें सूक्ष्म बेद तथा कमण्डलु लिये सत्यपुरुषके नामका प्रचार करते घूम रहे हैं। अतः जो कोई सत्यपुरुषके समाचारदाताओंके समाचारको स्वीकृत् करेगा वह निश्चयही उत्पत्ति नदीके पार चला जावेगा। जिसने इस गुरुको पहचाना वह उनका चरणरज बन गया।

मुहम्मद साहिबकी भाँग।

मुसलमानी पुस्तकोंमें लिखा है कि, एक बार मुहम्मद साहबको जिबराईल महाशय एक उद्यानमें ले गए। उसमें चालीस साधु बिलकुल नग्न बैठे हुए थे। तब संध्याका समय निकट आया वे साधु सब भाँग घोटने लगे। जब भङ्ग घोंट चुके तब भङ्ग छाननेके निमित्त कोई वस्त्र नहीं था। उस समय मुहम्मदसाहबने अपने शिरसे साफा उतारकर दिया कि, इससे भंग छानो। तब उन साधुओंने मुहम्मदसाहबके साफेमें भाँग छानकर पीली। मुहम्मदसाहब पर प्रसन्न होकर नौ घूंट भङ्ग मुहम्मदसाहबको दीं उस नौ घूंट भङ्गके पीने से मुहम्मदसाहबको देवलोकको सुध मालूम हो गई। जो पदार्थ तथा आश्चर्यमय शक्तियाँ आपको मिलीं वह केवल उन्हीं नौ घूंट भङ्गसे थीं। तभीसे इस भङ्गके रङ्गसे मुहम्मदसाहबका साफा हरा हो गया। तबसे हातिमी जातिके श्रेष्ठोंने

हरे वस्त्रोंको पहनना उचित समझा। मुहम्मदसाहबके श्रेष्ठका नाम हातिम था इस कारणही यह हातिमी वस्त्र कहलाता है।

गजल

ऐ आदम तेरे लिए जञ्जीर यह आई।
तिफ़ली व जवानी व बुढ़ापामें फँसाई ॥
लारेब सरासर यह हलाहल है हलाकू।
तेरे लिए तो जान शकर शीर यह आई ॥
अब तेरा कहाँ साहब और सद्गुरु साचा।
सिखलाने सबक सिलसिला गुरु पीर यह आई ॥
शाही जिसे कहते वही बरबादी है अजिज़।
दिनकी नहीं उमीद शबे तीरह यह आई ॥

भावार्थ—ए मनुष्य! तेरे लिये यह जँजीर आई है यही तुझे बाल्य जवानी और बुढ़ापेमें फँसा रही है। यह सरासर पीते ही प्राण लेनेवाला, लवलवाता भयंकर विष है, जिसे कि, तू अपनी अत्यन्त प्यारी वस्तु समझ रहा है। अब तेरे साचे सद्गुरु कहाँ है यही तुझे नरकका सबक सिखलानेके लिये गुरु पीर चली आ रही है। जिसे तू शाही समझे बैठा है यही बरबादीकी जड़ है इसमें दिनकी उम्मेद नहीं है यही स्त्री रूपी रात है।

ये चारों पशु इस भवसागरमें रहते हैं। एक दूसरे से वैर मैत्री रखते हैं। इनकी बुद्धि तथा इनका विश्वास शुद्ध नहीं। ये इस भवसागरके कोड़े हैं। इनका इस नदीके पार जाना असम्भव है। पर सत्यगुरुकी दया सन्तसेवा और चाकरीसे छुटकारेका पथ मिल सकता है। चारों पशु इस ओर तो पिताके सिंहासन और राज्य तथा श्रेणीको चाहते हैं। उस ओर सांसरिक वासनाओंके आनन्दका उपभोग भी किया करते हैं। इन चारों पशुओंकी बुद्धि तथा विश्वास बड़ाही विचित्र है। उनकी बुद्धि तथा विश्वासमें तनिकभी स्थिरता नहीं है, उनकी बुद्धि तथा उनके विश्वास सदैवही डामाडोल रहा करते हैं।

ये लोग सहस्रों प्रकारका पहनाव पहनते और भाँति भाँतिके भोजनोंसे अपने चित्तको प्रसन्न करते हुए आपको बहुत बड़ा तथा प्रतिष्ठित समझते एवं घमंडमें मस्त फिरा करते हैं। कोई वस्त्र पहने कोई नङ्गे कोई हरा पीला नीला नानाप्रकारके वस्त्र पहने रहते हैं। कोई अनाज छोड़कर दूध पीता है कोई फलाहार करता है। कोई मांस खाता है मदिरा पीता है कोई स्नान किया करता है कोई शीशपर जटा रक्खे हैं। कोई भभूत लगाकर बना फिरता है। कोई वस्त्र छोड़कर

हिरन तथा बाघकी खाल पहनता है । कोई विष्ठा खाता है एवं मूत्र पीता है । कोई अपनी जूजी छेदकर कड़ा पहन लेता है कोई उसको काटकर फेंक देता है । कोई कोई ऐसे कार्य करते हैं कि, जो ऐसे घृणित हैं कि, जिनके लिखनेमें मुझको लज्जा आती है केवल इतना इङ्गित कर देनाही यथेष्ट है कि, कोई परस्त्रीगमन करनाही अपना परम धर्म जानते हैं कोई सहस्र स्त्रियोंके साथ संभोग करने तथा उनके भगको देखनेहीसे अपनी मुक्ति समझते हैं, कोई उलटी खानेको बड़ी बात समझते हैं । कोई धूनी लगाकर बैठता है, कोई मौनी बन गया है ॥ कोई तीर्थमें नहाता फिरता है, कोई उलटा लटकता है, कोई धूंवा पीता है । कोई सदा सुहागिन बनकर स्त्रियोंका वस्त्र तथा उनके आभूषण पहनता है कोई घूंघरू पहनकर नाचता फिरता है कोई एक कुण्ड बनाता है पृथ्वीमें वह घूंघरू पहनकर नाचता फिरता है कोई एक कुण्ड बनाता है पृथ्वीमें वह कुण्ड खोदकर दाल भात रोटी तथा माँस और भाँति भाँतिके भोजनोंसे भर देता है । चेले और सांसारिक तथा साधु और ब्राह्मण शूद्र चमार सब एक साथ बैठकर इसी कुण्डमें से सब भोजन करते हैं । एक प्याले से मदिरा पान किया करते हैं इससे अपनी मुक्ति समझते हैं । कोई कहते हैं हम अमुक गुरु अथवा धर्म्मके अगुवा पर भरोसा रखते हैं उसके द्वारा हमारी मुक्ति निश्चय है यहाँतक कि, इस अगुवाको परमेश्वर समझते हैं । यद्यपि वह गुरु नितान्तही विवश तथा पराधीन हैं । कोई कहता है हमारे धर्मके अगुवामें मनुष्यता तथा परमेश्वरी दोनोंही हैं । उन्हें तनिक भी सुध भी नहीं कि, मनुष्य कहाँ ? तथा परमेश्वर एक साथ कहाँ, कहाँ अंधा, कहाँ आखोंवाला, कहाँ साधु कहाँ और चोर कहाँ झूठा कहाँ और सच्चा एकही समयमें कहाँ दिन और कहाँ रात । कोई योग समाधि लगाकर बैठा हुआ अपनेको अमर समझता है । कोई कहता है कि, मैं ब्रह्म हूँ । अनगिनती ध्यान तथा अनगिनती रङ्ग ढङ्ग इन चारों पशुओंके हैं कि, जिनके विवरणका बल मुझमें नहीं है; जब मैं उनकी यह दशा यानी अवस्था देखता हूँ तो मुझको वह काशीका पागलखाना याद आ जाता है कि, इस आकाश छतके नीचे जो ये सब पशु रहते हैं वे कैसे कैसे कौतुक दिखाते हैं । हर एक अपनेको योग्य तथा श्रेष्ठ समझते हैं । कोई उनमें अपनेको परमेश्वर तथा कोई अपनेको शिष्य समझते हैं । समस्त सांसारिक मनुष्य साधुओंका अनुसरण करके मुक्तिपथसे वञ्जित रहे । उनको सच्चा सत्यगुरु नहीं मिलता । इन चारों प्रकारके लोगोंमें कोई गुरुमुख नहीं है, सब मनमुख हैं । यदि दैवात् इनमेंसे कोई गुरुमुख हो तो उसको अवश्यही आकाशी सहायता मिलेगी । उसको सत्य-

गुरुका दर्शन प्राप्त होगा वह इस गुरुमुखको अपनी ओर खींच लेगा। सत्यगुरु संसारमें आकर समझाते फिरते हैं कि, ए मनुष्यो ! तुम मेरी बात मानों, मैं तुमको वही रङ्ग रूप प्रदान करूँगा जो कठिनसे कठिन तपस्या करनेपर भी ऋषि मुनिगण नहीं पाते हैं। जैसे कीड़ेको भृङ्गी अपने रूपका बनाता है, इस प्रकार तुम मेरे स्वरूपके समान होगे। अनुरागसागर पृ ८ में मृतकभावके वर्णनमें भृङ्गीका दृष्टान्त आया है स्वामी परमानन्दजीने उसीको अति सुन्दर कविताके साथ कयहाँ रख दिया है।

भृंगी कीटका दृष्टान्तकी कविता।

भृङ्गी जो आन कीटको खुद रङ्ग लगावे।
आवाज़ अपनी आनसिक्ख कान सिखावे ॥
वह रूप पहला रहा एक न बाक़ी।
गुरु शब्दसे फिलफौर रङ्ग पटल सो जावे ॥
कोई और क़िस्म कर्मको जिनदार न देखे।
भृङ्गी जो अपने ढङ्ग कीट ढूँढ़के लावे ॥
वह ढूँढ काम अपनेही हम रङ्ग हमेशा।
दिलदेके उसको तबही अपने रूप बनावे ॥
दिल उसको दिया चाहिए दिलदार कोई हो।
हिन्दू या मुसलमान खरीदार कोई हो ॥

भावार्थ–भौंरा स्वयं ही आकर कीडेको रंग लगाता है बारबार अपनी आवाजको कीडेके कानमें डालता है। इसका नतीजा यह होता है कि, कीडेका पहिला रूप रंग बाकी नहीं रह जाता। गुरुके शब्दसे उसका रूपरंग शीघ्रही बदल जाता है। वो कीडा भौंरोंके ध्यानके या उसके शब्दके दूसरी बात नहीं देखता, भृंग भी उसे आप ही ढूंढकर अपने पास लाता है, अपनी ही इच्छासे सदा अपने रंगका बनानेकी चेष्टा करता है वो अपना दिल देकर अपने रूपका बना लेता है। उसे दिलदे जो दिलदार हो। वो चाहें हिन्दू हो या मुसलमान हो, पर उसका खरीदनेवाला हो ॥

हैं कोट लाख सदमें कोई एकही मेरा।
जहाँ जाके बारबार भृङ्ग करता है फेरा ॥
वही कीट जेहल अपनेसे गुरुबात न माने।
तब जाके पास उसके भृङ्ग करता है डेरा ॥
कहता है कीट तुझको लगी आन ख़राबी।

नहिं अक्ल ठिकाने रही नहिं इल्म है तेरा ॥
तू बात मेरी मान अबकी बार कान धर ।
हो मेरी तू दमशक्ल तेरा होवे निबटेरा ॥
दिल उसको दिया चाहिए दिलदार कोई हो ।
हिन्दू या मुसलमान खरीदार कोई हो ॥

भावार्थ–हजारों लाखोंमें कोई एक ऐसा होता है जहाँ वो भौंरा जाता जाता है । जब वो कीट गुरु भृंगके बार २ के कहे सदुपदेशोंको भी नहीं मानता तो फिर भौंरा उसीके पास अपना आसन जमा देता है, कहता है कि, ए कीड़े ! तुझे बड़ी खराबी लगी हुई है न तो तेरी बुद्धिही ठिकानेपर रही है एवं न तुझे इसका इल्म ही है, तू अबकी मेरी, बातको अपने कान धर ले इससे तू मेरी सूरतका हो जायगा । ए शिष्य ! मेरे उपदेशके सुनते ही गोवररूपी विषयोंसे तेरा पीछा छूट जायेगा । उसेही दिल देना चाहिये जो कोई दिलदार हो वो चाहे हिन्दू हो भले ही मुसलमान हो, परदिल दे दिलको खरीद ले ॥

मुरशिद जो मेहबान जिसे आन जगाया ।
भूले जो जीव जगत् भगत फेर लगाया ॥
जो अन्ध जीव जगमें कोई बात न माने ।
रही घेर उपर उनके महाकालकी माया ॥
फरमान मानबाज़ कोई जीव अंकूरी ।
सत पुरुष भगत भाव वहुत बार बताया ॥
समझाए सबको जाय जगमें आपही ज्ञानी ।
आजिज़ न माने जीव जिसे जमने फँसाया ॥
दिल उसको दिया चाहिए दिलदार कोई हो ।
हिन्दू या मुसलमान खरीदार कोई हो ॥

जो जीव जगतके फेरमें पड़कर सबको भुलाये बैठा था उसे सद्गुरुने कृपा करके जगा दिया पर जो अन्धा सदगुरुके वचन न माने तो समझना चाहिये चाहिये कि, उसे काल पुरुषकी माया घेर रही है । जिसके दिलमें मुक्त होनेके अंकुर हैं वोही अनुशासनमें श्रद्धा रखनेवाला अनुशासनको मानेगा । ज्ञानीजी सबके समझानेके लिये आते हैं एवम् सत्यपुरुषकी भक्ति अनेक बार वचा चुके हैं । पर जिसे अज्ञानसे घेर रखा है वो किसी तरह भी नहीं मानता । उसे दिल देना चाहिये जो दिलदार हो, वो चाहे हिन्दू मुसलमान कोई भी क्यों न हो ॥

मनुष्यताका उपदेश ।

मनुष्य कहिए आदमी । पहले पाशविक गुणोंका विवरण किया था अब मनुष्यके गुण लिखता हूँ कि, मनुष्य उसको कहते हैं जिसमें मानुषिक बुद्धि हो । मनुष्यकी मूर्ति होनेमात्रसे ही मनुष्य कभी समझा नहीं जा सकता ।

बैत – जो असल काँच कहते हैं गौहर बनामको ।
बिन वासनाको फूल कहो कौन कामको ।।

कांचके मोती नाममात्रके मोती होते हैं वास्तवमें बेकांच हैं । इसी तरह बिना वासनाके फूल, किस कामका होता है ? यानी वो किसी कामका नहीं होता । जिसमें मानुषिक बुद्धि हो वही मनुष्य कहलाता है । बाकी सबी पूरे पशु हैं । खाना, पीना, सोना, विषयसम्भोग इत्यादि सब कुछ पशु तथा मनुष्योंमें समानही हैं । जिसमें मानुषिक बुद्धि नहीं वह वस्तुतः पशु है । मिथ्यावादी गुरुगण झूठे भेष धर, सांसारिकों को धोखा देतें फिरते हैं । मनुष्यको उनसे भागना तथा बचते रहना उचित है । जब मनुष्यकी पाशविक चालें दूर हो जावें तथा मानुषिक ढङ्ग आजावें तब मनुष्य बनेगा नहीं तो बनना बड़ा कठिन है । मनुष्यतासे ही मुक्ति हुआ करती है । भाँति भाँतिके भेष बनाने और राख मलनेसे कदापि मनुष्यता नहीं आती । जब मनुष्य मनुष्यताको ग्रहण करता है तब उसको सत्यगुरु मिलता है उसको मनुष्यताका वस्त्र पहनाता है वे मानुषिकवस्त्र पहनानेवाले गुण ये हैं–धीरज, दया, शील, विचार और सत्य ।

जब सत्यगुरु देखता है कि 'यह मनुष्य अब, मनुष्य हुवा । तब यह पाँचों वस्त्रका उपहार प्रदान करता है । इन वस्त्रोंको पहनकर मनुष्य अमर तथा अजर हो जाता है । उसके आवागमनका बन्धन टूट जाता है । इन सब भली आदतोंको मनुष्य ग्रहण करता है । १–माँस नहीं खाता है । २– किसी नशेको व्यवहारमें नहीं लाता है । ३–विषयसम्भोगमें लिप्त नहीं होता है । ४–सांसारिक कष्टोंको ध्यानमें नहीं लाता है । ५–अचेत होकर सोया नहीं करता है । ६–मोह उसमें प्रवेशित नहीं होता है । ७–सत्य बोलता है । ८– बिना विचारके कोई काम नहीं करता है । ९– प्रत्येक जीवपर दया करता है । १०– सब कार्य्योंको वीरताके साथ करता है । ११–सिवाय उस सर्वशक्तिमान् जगदीश्वरके और किसीसे कोई आशा न करे । १२।मिथ्या तथा सत्यगुण तथा अवगुणको फभलीप्रकार पहचानकर स्वीकार करे । १३–भ्रम तथा धोखेमें न पड़े । १४–बुद्धि और ज्ञानकी प्रतिमूर्ति बन जावे । १५–अपने गुरुपर विश्वास

करे। १६—गुरुकी सेवा तथा कृतज्ञता करे। १७—कुल फलदायक वस्तुओंको तुच्छ जाने। १८—स्वच्छरूपसे विचार करे।

समस्त मानविक गुण हों, जो तीन गुण हैं—काम, क्रोध और बुद्धि सो उस बुद्धिसेही समस्त देवतागण हैं, काम क्रोधसे समस्त पशुगण हैं। क्रोधसे नारकियोंका शरीर है। मनुष्य तीनों गुणोंसे विभूषित है। यदि यह बुद्धिकी ओर, ध्यान दे तो देवता है। यदि यह काम क्रोधही की ओर झुके तो पशु है, क्रोध की ओर झुके तो नारकी है। इस कारण इसको उचित है कि, बुद्धिकी ओर ध्यान देकर मनुष्यताकी श्रेणीपर अधिकृत होकर हंसस्वरूप हो जावे उसीको मनुष्य कहते हैं।

बीजक साखी।

कबीर – मानुष जन्म पायके, चूके अबकी घात।
जाय परे भवचक्रमें, सह्यो घनेरी लात ।। ११२ ।।

कबीर साहिब कहते हैं कि, मनुष्य जन्म पाकर जो अबकी चूक गये तो फिर भवचक्रमें पड़ो वहाँ अनेको लाते खाओ यानी अपने उद्धारके विना किये मर जायँगे तो भव सागरमें पड़ जाओगे वहाँ अनेकों देहोंको धरकर सुख दुख भोगते फिरो ।। ११२ ।।

कबीर – दुर्लभ मानुष जन्म है, होय न दूजी बार।
पक्का फल जो गिर पडा, बहुर न लागै डार ।। ११४ ।।

मनुष्य जन्म बड़ा दुर्लभ है, दुबारा नहीं होता यह जानते हो कि, फल पककर जब पेडसे गिर जाता है तो फिर वो डार पर नहीं लग सकता ।।

कबीर – मानुष हो कोई मुवा नहिं, मुवासो डंगर धूर।
कोई जीव ठौरन लागियो, भयो सो हाथी घोर ।। १०८ ।।

जो मनुष्य बनकर अमर बन गया वही मनुष्य है, जिसने मनुष्य होकर भी अपना बचाव नहीं किया मरा ही वो मनुष्य नहीं निरा पशु है। जो अपने ठिकाने पर नहीं पहुँच सका वो चेंटीसे लेकर हाथी तक बनता चला जाता है। कभी छुटकारा नहीं पाता ।। १०८ ।।

कबीर – पाँच तत्त्वको पूतला, मानुष धरिया नाम ।।
एक तत्त्वके बिचले, व्याकुल भया सब ठाम ।। २३ ।।

पृथिवी, पानी, तेज, वायु आकाश इन पाँचों तत्त्वोंका बना हुआ पुतला यह देह है जिसका मनुष्य नाम रख छोडा है। एक तत्त्वके बिछुरते ही सब जगह व्याकुल हुआ फिरता है यानी इसे राम तत्त्वका भान नहीं रहा इस कारण भटकता फिरता है ।। २३ ।।

कबीर -- मानुष बेचारा क्या करे, कहै न खुलै कपाट ।
श्वान चौक बैठायके, फिर फिराय पन चाट ।। ११० ।।

जब उसे कहनेपर भी बोध नहीं हो तो वो क्या करे? क्योंकि, कुत्तेको चौकपर बिठानेपर भी वो वारंवार चौकेके चूनको ही चाटता है यानी समझानेपर भी मनुष्य नहीं समझाते वारंवार कुत्तेकी तरह विषयोंमें ही मरते हैं ।।११०।।

कबीर मनुष बेचारा क्या करे, जाको शून्य शरीर ।
जूझ झांक नहिं ऊँचिए, कहैं पुकार कबीर ।। १११ ।।

वो मनुष्य क्या करेगा जिसके दिलमें धोखा ही तहा बनकर बैठा हुआ, है, जिसके कि, हृदयमें अणु मात्र भी प्रकाश नहीं है वो यह समझता हुआ भी कि, इनमें कुछ भी सार नहीं है फिर भी फँसा रहता है वो छुटकारेका उपाय नहीं करता ।। १११ ।।

कबीर-- पूरब उग पच्छिम अथैं, भखै पवनको फूल ।
ताहू राहू ग्रासिए, नर काहे को भूल ।। २३१ ।।

जो सूर्य्य पूर्वसे उदय होकर पश्चिममें छिप जाता है खानेके लिये भी पवनका ही लहरिया है पर उसको भी राहु ग्रसता है फिर मनुष्य क्यों भूल रहा है कि, मैं ऐसाही रहा आऊँगा ।। २३१ ।।

कबीर-- राम सुमिरिए क्यों फिरे, और की डौल ।
मानुष केरी खालड़ी, ओढे देखा बैल ।। २७५ ।।

राम राम भी कहते सुनते हैं दूसरोंसे शास्त्रार्थ भी करते फिरते हैं, बिना सोचे समझे दूसरोंके पीछे फिर रहें हैं वे बैल मनुष्यकी खालको ओढें फिरते हैं ।। २७५ ।।

कबीर-- मानुष तेरा गुण बड़ा, माप न आवे काज ।
हाड़ न होते मरनको, त्वचा न बरजत पाज ।। १९५ ।।

ए मनुष्य! तू देहाभिमान क्यों कर रहा है, क्या यही तेरा बड़ा गुण है कि, तेरा माँस भी निकम्मा है, हाड़ भी किसी कामके नहीं, उनके भी आभरण नहीं बनाये जाते । न चामसे बाजे ही मढे जाते हैं ।। १९५ ।।

कबीर-- मानुष तेई बड़ पापिया, अच्छर गुरुहि न मान ।
बारबार बनको कहे, गर्भधरे चोखान ।। १०८ ।।

एक मनुष्य? तू बड़ा पापी है तूने अकाल पुरुष अक्षरका कहना भी न माना, जैसे बनकी मुर्गी चारों ओर अण्डे देती फिरती है उसी तरह तू भी जनता जन्माता रहा चौरासी लाखमें जन्म २ करके दुख पा रहा है ।। १०८ ।।

फुटकर–कबीर–जेहि मेरियां साईं मिले, ताहि न भावे और।
सबको सुखदे शब्द कर, अपनी अपनी ठौर॥
कबीर–मनुष बेचारा क्या करे, जाका हृदया सुन्न।
श्वान चौक बिठायके, फिर फिर चारै चुन्न॥
कबीर–अंकुर भखै सो मानों, मांस भखै सो श्वान।
जीव बधे सो काल है, सदा सो नरक निधान॥

जिसका सत्य पुरुष या उसके प्यारे मिल गये उसे दूसरा कुछ भी अच्छा नहीं लगता क्योंकि, अपने दिव्य शब्दसे सबको सुख देते हुए अपने सच्चे स्थान-पर कर देते हैं। जिस मनुष्यका हृदय सूना हो वो विषयलंपट न हो तो क्या करे? क्योंकि, कुत्तेको जब चाहो तब चौक बिठा देओ वो मौका मिलतेही चून्नही चाटेगा। अंकुरोंका भोजन करनेवाला मनुष्य तथा गोश्तखोर कुत्ता एवम् जीवघाती काल है जो जीव हत्या करता है उसे अवश्यही नरक होगा, इसमें अनुमात्र भी सन्देह नहीं है। कहे हुए चारों तरहके पशुओंमेंसे किसीमें भी बुद्धि नहीं है इसी कारण वे सदा आवागमनके चक्करमें फँसे रहते हैं।

निर्बुद्धिताके अङ्गकी साखियाँ।

कबीर– [1]अक्लविहीना आदमी, जानै नहीं गँवार।
जैसे कपि[2] परवश परा, घर घर नाचै बार॥
कबीर– अक्लविहीना सिंह, ज्यों गया सत्य[3]के संग।
अपनो प्रतिमा देखके, भयो जो तनको भङ्ग॥
कबीर– अक्लविहीना अंधगज[4], पर्यो फंदमें आय।
ऐसेही सब जग बंधा, कहा कहूँ समझाय॥
कबीर– पछताता परवश परचो, सुवाके बुधनाहि।
अक्लविहीना आदमी, यों बन्धा जग माहि॥
कबीर– अक्ल अर्संसे[6] ऊतरी, विन्धाँ[7] दीनी बाँट॥
एक अभागी रह गया, एकन[8] लीनी छाँट।
कबीर– बिना [9]वसीले चाकरी, बिना बुद्धिकी देह[10]।
बिना ज्ञानको जोगना[11], फिरे लगाए खेह[12]॥
कबीर– जल पर पावे मछली, कुलपर[13] [14]भाते बुद्धि।
जाको जैसा गुरु मिला, ताकी तैसी सुद्धि[15]॥

---

१ निर्बुधि, २ बंदर, ३ चमकना अस्त्र, ४ मदान्ध हाथी, ५ अयो, ६ ऊपर, ७ परमात्मा, ८ दूसरे बुद्धिमान, ९ जरिये, संसर्ग, १० शरीर, ११ विभूति या साधु व साधु १२ रद्दी, १३ घरानेके अनुसार, १४ होती है, १५ स्मृति या बुद्धि,

कबीर– मनहीको परमोद ले, मनहीको उपदेश ।
जो योमन [1]परमोद ले, तो सुख हो सब देश ॥
कबीर– बात बनाए जग ठगा, मन [2]परमोद्यो नाहिं ।
कहैं कबीर मन लेगया, लख चौरासी माहि ॥
कबीर औरनके उपदेशसे, मुखमें पड़ गई रत ।
रास[3] बेगाने राखिके, खायो अपना खेत ॥
कबीर पण्डितसे तैं कह रहा, भीतर[4] बेधे[5] नाहिं ।
औरनको परमोदता[6], गया [7]मेहरकी बाह ॥
कबीर [8]अजहूं तेरा सब मिटे, जा माने गुरुसीख[9] ।
जबलग तू घरमें रहे मत कहुँ मागे भीख ॥

बुद्धि तथा विश्वास सब शरीरसे संबंध रखता है। सो शरीर झूठा है और उसका कोई समान सच्चा नहीं है। यह समस्त विश्वासके अधीन है। यदि बुद्धि मान न लेतो किसी नियमका विश्वास न हो। इस शरीरके साथ बुद्धिही झूठी ठहरी फिर विश्वास कैसे सत्य ठहर सकते हैं। यदि यह शरीर मिट जानेवाला न हो तो सदैव एकही समान स्थिर रहे जो कुछ है वो अस्थिर तथा अल्पस्थायी है। यदि उसपर मैं विश्वास करूँ तो अंधकारसे कदापि न निकलूं। जितनी विद्या कार्य्य और पुस्तक पाठसे हैं सो सब स्थूल शरीरसे ठहराए हुए हैं। समस्त अस्थिर शरीरकी भाँति हैं इस कारण इस संसारके पढ़े लिखे तथा अपढ़ सब एक समान हैं। क्योंकि, अपनी यथार्थतासे दोनों समान रूपसे अनभिज्ञ हैं। स्थिरता मृत्युके समय नाश हो जाती है पर उसके कर्मका संबंध उसके साथ रहता है। वह नरक वैकुण्ठके समीप जिस योनि एवं अवस्थाके योग्य होता है वहाँही खींच ले जाता है दूसरी योनिमें प्रविष्ट करा देते हैं। स्थिरताकी मृत्युमें न उसका वेद अथवा पुस्तकोंका पाठ काम आता है न उसकी विद्या कार्य्य उसको आवागमनसे छुडा सकते हैं वैकुण्ठनरक उसके आसपासकी जगह और चौरासी लाख योनि सब इसी स्थूल शरीरके ठहराए हुए इसीके समान नाश होनेवाली हैं, कोई बची नहीं रह सकती। आन्तरिक ज्ञान बाहरी विचार कार्य्य करनेका बल ये सब जब मिथ्या ठहरें तो बुद्धि और विश्वास कैसे सत्य माने जा सकते हैं। मृत्युके समय जहाँ इस जीवका ध्यान दौड़ जाता है उसीके अनुसार यह शरीर पाता है। मृत्युके बाद जब मनुष्यका

१ प्रसन्नता, २ प्रसन्न कियो। ३ राशि, ४ अन्तःकरणमें, ५ ब्रह्मज्ञान, ६ त्यागका उपदेश देता, ७ स्त्री, ८ अबभी, ९ गुरुकी शिक्षा।

शरीर पाता है तब अपनी पूर्व करनीके अनुसार ही पाता है । सूरत तथा ज्ञान भी वैसाही होता है । यदि पशु योनिमें जावे तो भी अपने पूर्व कार्य्योंके अनुसार वह दुःख सुख पाता है । कितने पशु शिक्षाग्राही होते हैं । कितने पशुओंको भविष्यका वृत्तान्त मालूम रहता है इसका कारण यह है कि, उन लोगोंमें जो पूर्वकालमें विद्याकी ज्योति थी उसके प्रभावसे वर्तमान शरीरमें भी कुछ विकास करती है । मनुष्योंके समान कोई कोई पशु भी भविष्यत्का हाल जानते हैं एवं शिक्षाग्राही होते हैं । यह जीव समस्त गुण तथा हुनरोंकी जननी है, पर जबलों यह दूषित है तबलों कर्मोंका गुलाम है । यह पढ़े लिखे तथा अपढ़ दोनोंको एक समान है, दोनोंका विश्वास एकसा है क्योंकि, जिस देशमें वेद तथा पुस्तकें हैं उस देशके लोग तो उन्हींके अनुसार विश्वास करते हैं जहाँ वेद तथा पुस्तक कुछ नहीं है, वहाँके लोग जैसा कुछ अपनी बुद्धिसे ठहराते हैं वही करते हैं, कितनेही टापू हैं जहाँके लोग अक्षरतक भी नहीं पहचानते वहाँके लोग जैसा कि, कुछ उन लोगोंने अपनी बुद्धिसे ठहराया, वही मृत्युतक उनको दिखाई दिया करता है । इसी प्रकार एफ्रिकादेशके प्राचीन निवासी ऐसा अनुमान किया करते थे कि, जो वस्तु अथवा जो जीव इस पृथ्वीपर नष्ट होते हैं उसी सूरतमें दूसरे जीव प्रगट हो जाते हैं । उसका एक विचित्र उदाहरण मैं ग्रंथ कबीर भानु-प्रकाशमें लिखा जा चुका है । देखलो जैसा जिसको गुरु मिला वैसीही उसकी बुद्धि तथा वैसाही उसे विश्वास हो गया है ।

पारकारनलकी साखी ।

कबीर बेड़ा[1] [2]सारका, ऊपर लादा सार ।
पापीका पापी गुरु, यों बड़ा संसार ।।
कबीर[3] जाका गुरु है अंधरा[4], चेला खरा[5] निरंध[6] ।
अन्ध अंधको ठेलियां[7], परे कालके फंद ।।
कबीर [8]कांचे गुरुके मिलनसे [9]अगली [10]मिलगई ।
चाले थे हारे मिलनकों, [11]दूनी विपत[11] पड़ी ।।
कबीर अंधा गुरु अंधा जगत्, अंधे हैं सबदीन[12] ।
गगनमंडलमें बजरही, सुबनि अनहद[13] बीन ।।
कबीर झूठे गुरुके पक्षको, तजत[14] न कीजे बार[15] ।
द्वार[16] न पावे शब्द नहीं, भटके बारम्बार ।।

---

१ नाव आदिका समूह, २ सत्यपुरुष, ३ डूबगया, ४ पूरा, ५ अज्ञानी, ६ ढकेला, ७ अधूरे, ८ अगाड़ीकी, ९ डूबगई १० दुगुनी, ११ विपत्ति, १२ दुखी, १३ आकाशी नक्कारे १४ छोड़ते, १५ देर, १६ मार्ग।

जो कोई पागल हो जाता है वो सदैव कुछका कुछ काम करता रहता है। वो अपनी जानसे पागल नहीं है पर दूसरोंके देखनेमें वह विक्षिप्त जान पडता है। जितने पागल हैं वे सब निराले हैं उनका एक तौरसे भिन्न ढङ्ग नहीं है जितने बुद्धिमान् ज्ञानी और अपने यथार्थको जान चुके हैं सबका एकही मत है, अतः जिसको वह ज्ञानी गुरु मिले वही भाग्यवान् होगा जितने सिद्ध साधु ऋषि पीर पैगम्बर, वली नबी होते हैं सभी ब्रह्माण्डके भीतरका समाचार देते हैं। नरक वैकुण्ठ तथा उसके आसपास, समस्त विद्या और कहानी किस्से हैं जो वेदपुराण आदि थे भी उसके बाह्यान्तरका समाचार देते हैं, यहाँही लों उसके विवरणके वृत्तान्त तथा कामधाममें समस्त मनुष्य फँस रहे हैं, ये पिण्ड तथा ब्रह्माण्ड दोनोंही शिरसे पैरपर्यन्त मिथ्या हैं। इन दोनोंमें कोई सचाई एवं दृढ़ता नहीं है।

पिण्ड ब्रह्माण्ड दोनोंका मिथ्यात्वप्रतिपादन।

पिण्ड और ब्रह्माण्ड दोनों मिथ्या हैं उसके सब सामान झूठे हैं। क्योंकि, जल की बूंद भूमिपर गिरते ही भूमि उसको सोख लेती है इससे उत्पत्ति होती है। शरीर बनकर क्रमशः बड़ा होता है फिर घटने लगता है फिर मर जाता है, इस कारण यह मिथ्या है। जब कोई जीव मर जाता है तब भूमितत्त्व सूक्ष्म है उसका स्थान हृदयमें है वह गलकर जलमें मिल जाता है। जलका वास पेटमें है जल शुष्क होकर अग्निमें समा जाता है इस सूक्ष्म अग्निका स्थान पित्तमें है, उस पित्तकी अग्नि समस्त शरीरके जलको सुखाकर आप वायुमें समा जाती है। इस वायुका वास नाभिमें है। इस नाभिकी वायु समस्त अग्निको समेट लेती है। यह अग्नि जल वायु आदि सब मिलकर आकाशमें समाजाते हैं। पाँच तत्त्व तीन गुणसे, तीन गुण अहंकारसे, अहंकार महातत्त्वसे, महातत्त्व ब्रह्मसे। इसी प्रकार ब्रह्माण्डकी प्रलय होती है। पिण्ड ब्रह्माण्ड दोनोंकी एकही ढङ्गसे प्रलय होती है, जब समस्त रचना निरञ्जनमें समाजाती है तो वह शून्य स्वरूप होकर शून्यमें फिरता रहता है। जब निरञ्जनको शून्यमें फिरते २ सत्तर युग बीत जाते हैं तब उसके मनमें अकेले रहनेके कारण घबराहट उत्पन्न होती है। इस घबराहटके कारण अपने एकान्तके निवासको भला नहीं समझता। तब सत्यलोकके आसपास जाकर सत्यपुरुषसे निवेदन करता है कि, अब मैं एकान्तके रहनेको अच्छा नहीं समझता हूँ। सृष्टि रचना किया चाहता हूँ, तब सत्य पुरुषकी आज्ञा ज्ञानीजीको होती है कि, निरञ्जनसे जाकर कहो, अब सृष्टिको उत्पन्न करो। तब सत्यपुरुषकी आज्ञानुसार ज्ञानीजी शून्यमें निरञ्जनके पास जाकर कहते हैं कि,

ए निरञ्जन ! अब तुम रचना करो । निरञ्जनजी आकर कूर्मजीकी पीठपर पृथ्वीको बनाते हैं, वे अपने मुंहसे आद्याको उगल देते हैं। दोनोंके संयोगसे तीनों गुण तथा समस्त सृष्टिकी उत्पत्ति होती है । पहले जब उत्पत्ति होती है तब सत्यस्वरूपी ही उत्पन्न होती है । सब निर्दोष होते हैं । वह सत्या अनेक कालपर्यन्त निर्दोष चली जाती है । फिर कुछ कालोपरान्त उनमें पाप लगता है, तब क्रमशः मनुष्य पापोंमें फँसते हैं और जप तप तथा भक्ति मुक्तिकी ओर ध्यान देते हैं तब आचार्य्य और गुरुलोग मनुष्योंको उपदेश करते फिरते हैं। पर सारे गुरु ब्रह्माण्डके भीतरकी सुध रखते हैं, ब्रह्माण्डके भीतरकी विद्या रखते हैं। पारख गुरुके अतिरिक्त दूसरेमें यह सामर्थ्य नहीं है कि, ब्रह्माण्डके पार पहुँचा सके कारण यह कि, किसी अन्य गुरुको इसकी तनिक भी सुध नहीं कि, भवसागर पार जानेके निमित्त कौनसा मार्ग और कौनसा उपाय आवश्यक है ? सहस्रों ऋषि मुनि कहते हैं कि, पिण्ड तथा ब्रह्माण्ड दोनों झूठे हैं पर वे लोग जान बूझकर फिर क्यों मिथ्यासे लग रहे हैं ? झूठ छोड़कर सत्यसे क्यों नहीं मिलते ? कारण यह कि, जो कोई जानबूझकर झूठसे संबंध रखता है सो वास्तवमें मनुष्यतासे पृथक् हैं।

प्रत्यक्ष में यह देह मिथ्या दिखाई देती है तो भी पाशविक बुद्धिको विश्वास नहीं होता । जब कोई जीव मरता है, तब उसको काटो तो उसमें एक बूंद जलका भी नहीं रहता, अग्निकी उष्णता और वायुका नाम चिह्न बचा रहता है और कुछ नहीं जाना जाता कि, वे कहाँसे आये और कहाँ चले गये । वास्तवमें वे इतःपूर्व भी कुछ नहीं थे और फिर भी कुछ बचे न रहे । इसी प्रकार साधु सिद्ध लोग होते हैं जिन्हें कि अपना शरीर पलट लेनेकी और अन्य प्रकारकी सिद्धियाँ तथा सामर्थ्य प्राप्त हो चुका है, वे तुरन्त अपनी देह पलट लेते हैं। तनिक भी विलम्ब नहीं लगता । मनुष्य किसी पशुकी सूरत हो जावें, अन्तर्धान हो जावें, उपस्थित रहें, एक रहें, अथवा अनगिनती हो जावें । यदि यह देह सत्य होती तो एक देह छोड़ दूसरी स्वीकार करनेके समय पूर्वकी देह कहीं दिखाई देती वह पूर्व देह कहीं रखनेकी चिन्ता करलेता तब दूसरी स्वीकार करता, जब वह पहलेकी शरीरको छोडकर बिना झंझट और चिन्ताके दूसरी स्वीकार कर लेता है कहीं अन्य शरीरका चिह्नतक भी नहीं दीखता इससे निस्संदेह जान लेना चाहिये कि, ये दोनों शरीर पिण्ड तथा ब्रह्माण्ड कुछ नहीं। अज्ञानसे मनुष्य उसको सत्य मान रहा है । झूठको सत्य जान रहा है । इस कारण यह शरीर

नितान्तही भ्रम और शून्य है, नितान्तही तुच्छ है, इसको प्यार करनेवाले सर्वत्र आवागमनके बन्धनमें पड़े रहेंगे।

ग़जल—सब [1]जाबजा बत[2]लान है मुख[3]बिर न [4]रब रह[5]मान है।
नहि मुक्तिका [6]सामान है बुतलान है बुत[7]लान है॥
जो देखं बेजाबी कुरह सो भर्म अँधेरी है पुरा।
ह[8]रसिम्त खींच और तान है बुतलान है बुतलान है॥
कल्लाश ओ शाही गदा अलहाम वही कलमः निदा।
वह[10]दतको नहि [11]शायान है बुतलान है बुतलान है॥
जो गुप्त और शुनीद है और [12]दीदनी और [13]दीद है।
जो हेच इल्म उरफान है बुतलान है बुतलान है॥
जानाना [14]असल इसरारको सब पूजते करतारको।
[15]बरपा जो चारों खान है बुतलान है बुतलान है॥
[16]आदम न सच पहचानता झूठेहीसे मन मानता।
क्या ज्ञान और क्या ध्यान है बुतलान बुतलान है॥
अंधेर[17]पुरमें है खड़ा [18]कदमों तेरे आजिज़ पड़ा।
धोखेमें इस इनसान है बुतलान है बुतलान है॥

शब्दका विषय।

प्रारम्भमें एक शब्द निकला, वह शब्द जिससे निकला उसको कोई नहीं पहचानता, व्यर्थंही लोग आपसमें झगड़ते चले आते हैं, यह शब्द एक सत्य है, पर दूसरे व्यवहारी शब्द और वाक्य बहुतायतमें होते हैं एकमें कदापि नहीं। कारण यह कि, पहले शब्दका कर्ता होगा, इसके उपरान्त शब्द होगा। बिना शब्द करनेवालेके शब्द सुनाई नहीं देता। यदि पहले शब्द करनेवाला न होता तो शब्द न होता। शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध ये पाँचों तत्त्व तथा तीनों गुण मिथ्या हैं। समस्त धर्म और मत प्रगट हैं फिर शब्द कैसे सत्य माना जावे? कोई शब्द बिना जोडके नहीं। जब स्थिर वायुको चलानेवाली वायु चीरकर महावेगसे चलती है तब भाँति २ के शब्द होते हैं। इस विषयपर ऋषीश्वरोंका पुराना वाद विवाद चला आता है। न्यायदर्शन और सांख्यमें इसका भलीभाँति निर्णय किया है। इसके भली प्रकार लत्ते उड़ाए

१ प्रत्यक्ष २ कथन, ३ कहनेवाला, ४ ईश्वर, ५ कृपालु, ६ साधन, ७ शक्लमात्र, ८ प्रत्येक, ९ दिशा, १० परमात्मा, ११ योग्यता, १२ देखनेलायक, १३ देख भाल, १४ मुख्य १५ व्यापक, १६ मनुष्य, १७ अन्धेर नगर, १८ चरणोंमें।

हैं। पूर्णतया काटा छाँटा है देखो न्यायदर्शनमें गौतम इस विषयपर इस प्रकार विवाद करते हैं न्यायसूत्रवृत्ति २-२-१३ वेदरीति शब्द अनादि नहीं हो सकता। क्योंकि, प्रथम तो उसका आरम्भ है। वह बोलके समय ही सुना जाता है, तीसरे वह बनावटी कहा गया है। अगले सूत्रोंमें विस्तार पूर्वक कहा गया है जो चाहे सो देखले। न्याय दर्शनके सूत्रोंमें वे परिणाम निकालते हैं कि, वैदिक शब्दको छोड़कर बाकी अनादि नहीं, सदैव वायुद्वारा कानोंमें आता है यहाँ तक कि, कितने ही सूत्रोंमें दृढ़ प्रमाणोंद्वारा उसका खण्डन किया है।

कपिलजी शब्दके अनादि होनेकी बातको मानते हैं। उनका कथन है कि, वैदिक शब्द अनादि हैं दूसरे प्रत्यक्षमें बनावटी जान पड़ते हैं। फिर यह परिणाम निकालते हैं कि, वेदोंके अनादि होनेकी बात सर्वथा सत्य है, सम्भव भी है। इस शब्दको लोग उत्पन्न करता और उसीसे उत्पत्ति मानते हैं।

कारण यह है कि केवल एक शब्द ओम् द्वारा तीनों लोक और चारों वेद बने हैं। वही उत्पतिकर्त्ता तथा उत्पत्ति बनकर अनगिनती दिखाई दे रहा है।

छन्द झूलना।

झूठही नाद है झूठही बुंद है, झूठही झूठको खेल सारा।
झूठ मूरत बनी झूठ सूरत बनी, झूठही झूठको स्वाँग धारा ॥
झूठ दर्शन कहे झूठ परसन कहे, झूठ निराकार और शब्द सो है।
झूठ अंधकार है झूठ झंकार है, झूठही झूठको चित्त मो है ॥
झूठ गुण तीन और पाँचही तत्त्व हैं, झूठकी कथन यह जगत कर्ता।
झूठही योग है झूठही भोग है, झूठके फँदमें झूठ परता ॥
झूठ जन्जालते काल धर खात है, झूठके पारखे कौन जाए।
झूठही जगत है झूठही भगत है, झूठ विस्तार चहुँ ओर छाया ॥
झूठ और सत्य दोऊ मिला यह जगतमें, भगत है सोई जो जान सकता।
परम अनन्द जिन झूठ जगमें खेला, सत्य कबीर एक सत्यवक्ता ॥

छः गुरुकी शिक्षाके भीतर जितनी बातें हैं वहाँ तक मायाके सम्बन्धमें वार्तालाप रहता है। पर जब सातवें गुरुकी शिक्षा मिलती है, तब मायाके सभी संबंध टूट जाते हैं। फिर किसी प्रकरका संदेह नहीं रहता। जब सातवें गुरुकी शिक्षा मिलती है वह अवस्था किसीसे कही नहीं जाती। इन सातों गुरुके ऊपर स्वयम् कबीर साहब सत्यपुरुष हैं। उसके वाक्य पवित्र है उसमें कोई संदेह नहीं। यदि उसके वाक्यमें कोई संदेह करे तो उसके भाग्यका दोष है। विज्ञान

देहपर्य्यंत तो विवाद है। पर इस देहमें कोई विवाद नहीं रहता। वह कबीर साहबकी दयासे प्राप्त होती है।

तरजीअ बन्द ।

देख हालत वह खुर्द सालीका। फ़िक्रकर सूरत कमालीकी ।।
नेको बंद फ़लके जो क़ैदमें थे। आई रहमत जो लायंज्ञालीकी ।।
ख्वाव गफ़लतमें खूब सोए थे। क्या खबर नेको बंदके चालकी ।।
रहम रहमान जब हुई नाजिल। दूरकी दर्द जाँ वबालीकी ।।
पावे अबदी हयातता दरगोर। मेह्लकर जब कबीर बन्दिछोर ।।
जानते दास उसकी शौकतो शान। आदमी जन्नतजनान क्या जान ।।
आलम अंधा जो सारे हैं मुरदार। नहीं पहचान कादिर रहमान ।।
भूलकर मरत सब हैं भडी चाल। कोई दाना है बाकी सब नादान ।।
दूसरे पैरवी करें खुदपीर। चार है वान एक है इनसान ।।
फिर न बाकी रहे कोई शरशार। मेह्लकर जब कबीर मन्दिछोर ।।
जुहद सदाह जन्म कमाया था। रस्तगारीको राह न पाया था ।।
वेद ख्वानी तिहारतो तक़वा। योगयुक्तिसे दिल लगाया था ।।
आप महरमन बातनी इसरार। और को आन्कर सिखाया था ।।
बेखबर सब जो अपनी बखबरी। अंधको अंधराह दिखाया था ।।
पावे आजिज़ पकड़तू अपना चोर। मेह्लकर जब कबीर बन्दिछोर ।।
यथा– है जो हर दोहरजहाँ का गुरु पीर। जगमें ऐसे मिलाशकर जा शीर ।।
देखना चार कर न कुछ ताखीर। वह मेहरबां हो देखकर दिलगीर ।।
टूट जावेगी कालकी जन्जीर। सिद्ध साधू जपो कबीर कबीर ।।
कलके साहबकी वस्फ गाओगे। इससे बेहद अजरको पाओगे ।।
फिर न दरियामें गोता खाओगे। और सदहाको रह दिखाओगे ।।
टूट जावेगी कालकी जन्जीर। सिद्ध साधू जपो कबीर कबीर ।।
चल जिधरको उधर है यमका जाल। सारे जाँदारको फँसाए काल ।।
लैपकड़ जान दिलसे सतकी चाल। तेरा कोई न बीका होवे बाल ।।
टूट जावेगी कालकी जन्जीर। सिद्ध सार जपो कबीर कबीर ।।
रहम रब्बानी तब हवीदा हो। गैबका नूर दिलपे पैदाहो ।।
हुब्बे महबूबमें जो शैदा हो। नफ्स गुरिन्दः पिसक पैदा हो ।।
टूट जावेगी कालकी जन्जीर। सिद्ध साधू जपो कबीर कबीर ।।
जमके जन्जीरसे यह जकड़ा था। हाथपाँ हिलनेसे जो अकड़ा था ।।

गोया आदम नहीं यह लकड़ा था । डूबे, आजिज़को उसने पकड़ा था ॥
टूट जावेगी कालकी जंजीर । सिद्ध साधू जपो कबीर कबीर ॥

मुखम्मस तर्जीअ बंद ।

सच है जो छिपा झूठके तस्वीर अयाँ ।
झूठका खेल खुला सब है जो जानिए ध्यान ॥
झूठ हर जायमें मामूर यहाँ और वहाँ ।
झूठसे द्वीप सभी लोक व नौखंड हुवा ॥
साँच को ढ़ाँक लिया झूठ जो परचण्ड हुवा ।
अक्ल और कयास वहम दिल दूर जहाँ ॥
सो सब है बहलकए झूठदरपरदहनेहाँ ।
सब झूठ है जानलीजे जो नामो निशाँ ॥
इसमें न सफा सूरत भरभण्ड हुवा ।
साँचको ढ़ाँक लिया झूठ जो परचण्ड हुवा ॥
झूठमें लगरहे और झूठको ढूंढ सारे ।
सब चाल चले भेडको काज़िब प्यारे ॥
झूठकी किश्ता चढे झूठको काज़िबतारे ।
झूठका खेल जा सब पिण्ड व ब्रह्माण्ड हुवा ॥
साँचको ढ़ाँक लिया झूठ जो परचण्ड हुवा ॥
झूठके है सारे पैए नहिं सच ढूंढ कोई ।
झूठके बीचमें सच सूरत पोशीदा दोई ॥
पावे आजिज़ सच सो तर्क जो कर दिलकी हुई ।
जानते कोई न सच इसलिए यमदण्ड हुवा ॥
साँचको ढ़ाँक लिया झूठ जो परचण्ड हुवा ॥

ग़ज़ल ।

यह सब कुछ खेल है बीराट नटका । कुतुब औ वेद पढ़ पढ़ जीव भटका ॥
निरञ्जन नटके जादू कौन जाने । यह तीनों लोक इसमें योंही अटका ॥
न पहचाने हुए सब ज्ञान अंध । न हरगिज़ छूटता है दिलका खटका ॥
भरभाँडम सबको क़ैद करते । सकें क्यों तोड़ सुनिये मोह भटका ॥
बरोनी सब तमाशा यह जो देखें । न जाने यह दरूनी खेल घटका ॥
है भूले साधु और पीरो पैग़म्बर । नहीं कुछ भेद इस जादूकी हटका ॥
जो जाने भेद इसरारे नेहानी । तो फिर आदम न इस नज़दीकफ़टका ॥

जो मुरशिद मेह्रबाँ रह बरहो उसका । तो वह जीव फिर न भवसागरमें अटका।।
यही तदबीर आजिज है न कोई और । लगा एकतार धुन सतनाम रटका ।।

समस्त धर्मोंका वृत्तान्त ।

समस्त धर्म जो अभीतक पृथ्वीपर प्रचलित हुए तथा होंगे वे सब केवल एक ओम् शब्दके आधार पर हैं । इसी ओम्द्वारा चार वेद तथा तीनों लोकोंकी स्थिति है तीन वेद अर्थात् ऋग्, यजुः , साम, अथर्व ये चारों असल हैं । इन चारोंकी पहुँच सत्यपुरुषके सत्यलोकतक है । देखो अथवर्ण वेद प्रश्नोपनिषद्–सत्यकाम ऋषि अपने गुरु पिप्पलाद ऋषिसे प्रश्न करता है यह पाँचवाँ प्रश्न और ५९ मंत्र है ।

ऋग्निरेतंयजुर्भिरन्तरिक्षंसामभिर्यत्कवयो वदन्ति ।
तमोङ्कारेणैवायतनेनान्वेति विद्वान्यत्तस्छान्तमजरममृतमभयंपरञ्चेति ।।

जैसे समस्त पृथ्वीके मनुष्य पूजते तो विष्णुको हैं पर अपनी अविद्याके कारण दूसरा परमेश्वर समझकर एक दूसरेसे लड़ते झगड़ते हैं । इसी प्रकार समस्त संसारके निमित्त चलन इस वेदमें लिखे हैं । शब्द अथवा ओम्हीपर समस्त संसारको उपदेश देदिया है । समस्त वैरागी ब्राह्मण और संन्यासी तो प्रत्यक्षमें विष्णुपूजा किया करते हैं पर दूसरे लोग अपने अज्ञानवश कोई अन्य परमेश्वर ठहरा रहे हैं । छः दर्शन और छियानवें पाखण्ड और समस्त संसारके अच्छे बुरे मनुष्य इसी परमेश्वर के अधीन हैं । वही ब्रह्म जीव और माया है । वही तीनों परमेश्वर हैं । वही पुरुष और प्रकृति है । वही ब्रह्म और माया है । बौद्ध धर्मी अथवा चीनवालाका यॉंग और यन्न है । यॉंग पुरुष चिह्न तथा यन्न स्त्रीत्वका चिह्न है । वही आद्या, निरञ्जन, ब्रह्म और शक्ति कहो सब एक बात है । योगी और संन्यासी शिवको पूजते हैं । उनका गुरु शिव है । इस कारण शिवलिंगकी पूजामें संलग्न हुए, वेदान्ती अद्वैत ब्रह्मका समाचार देते हुए द्वैतको पूजते हैं । इसका कारण यह है कि, समस्त संसारमें द्वैतका हुल्लड़ है । अद्वैत तो छिपा हुवा तथा विलोपित है, वह तो कहने सुननेमें आता नहीं, समस्त कार्य्योंसे मनुष्य अनभिज्ञ हैं, अज्ञानावस्थामें उसको बीतती है, समस्त आज्ञाएँ वेदकी हैं । प्रत्यक्षमें दो मत संसारमें वेदके विरुद्ध माने जाते हैं–जैन तथा बौद्ध । सो ये दोनों भी वेदके ही हैं, अज्ञानसे उससे उसमें अन्तर दिखाई देता है । बौद्ध तो अब भारतवर्षमें नहीं हैं, पर जैन तो अनेक हैं ये लोग पञ्च परमेष्ठी मानते हैं । परमेश्वर कोई नहीं सो उनके पञ्च परमेष्ठी यह हैं । १ अरहन्त–२ सिद्ध–३–

आचार्य—४ धर्म्मशास्त्र—५ पढ़ाने तथा सिखानेवाले साधु । इन्हींको जैन ईश्वर करके पूजते हैं, दूसरा कोई परमेश्वर नहीं, इन्हींको परमेश्वर कहो अथवा कुछ कहो । सो ये इनमें भी समस्त मनुष्योंके समान लोग विवश हुए हैं । इन पाँचोंमें प्रथम श्रेणी अरहंत अर्थात् तीर्थङ्करकी है, इनकी मूर्ति बनाकर जैनी लोग मन्दिरमें रखते हैं । इस मूर्तिके आगे गाते नाचते औ ढोल बजाते हैं । समस्त तीर्थङ्कर केवल ज्ञानी कहलाते हैं । उनका नाममात्रके लिये कैवल्य ज्ञान है । उसमें अंधेरा है, अंधेरा न होता तो वे सब कुछ जान सकते । कारण यह कि, ये लोग ज्ञान उत्पत्तिके उपरान्त अपनी अज्ञानताके कारण अठारह दोषोंमें फँसते हैं । अपने पापोंका प्रायश्चित्त करते हैं। यदि उनमें कैवल्य ज्ञान होता तो न उनको पापोंमें पड़ना पड़ता एवं न उनको प्रायश्चित्त करना पड़ता । कारण यह कि, कैवल्य ज्ञान वही है, जो कि, समस्त दोष गुण बुराइयोंसे विज्ञ कर दे । इस प्रकार समस्त मनुष्य खराबियोंमें लगे हैं उनमें तनिक भी सोच विचार नहीं है ।

परमेश्वरकी प्रशंसा तो सब कर रहे हैं । गुणभी सभी गाते हैं ,पर उन लोगोंके मनमें तनिक भी सोच समझ नहीं कि, वे विचार करें कि हम किसकी प्रशंसा करते हैं तथा किसको पूजते हैं ? जिनका पूजन वे करते हैं उनमें ये गुण हैं या नहीं, वे अनभिज्ञ अनभिज्ञोंके साथ लड़ते झगड़ते हैं । समस्त पृथ्वीके मनुष्योंकी यही दशा है । तीन वेद तथा तीन अक्षरोंसे यह समस्त संसार दिखाई देता है । सो तीन वेद किस स्थान तक पहुँचा सकते हैं । चौथा स्थान किसी ज्ञानीके निमित्त नियक्त है । उस श्रेणीका ज्ञान जिसे हो वह वहाँ पहुँचे वेद-पाठियोंमें से थोड़े लोग इस पुरुषका समाचार देते हैं । इस कारण ब्रह्माण्डके चित्रमें इस पुरुषका चित्र नहीं बनाया । उस सर्वश्रेष्ठ स्थानके केवल मन्दिरका चित्र बना दिया । इस सर्वोच्च स्थानमें अक्षर पुरुष रहता है इस अक्षर पुरुषको महायश कहते हैं । महा ब्रह्माभी कहते हैं । यह अक्षर पुरुष इस स्थान पर विराज-मान है, उसकी अर्धाङ्गिनी योगमाया उसके साथ है । यहाँ बड़े चमक दमकके साथ वह रहता है । उसकी मूर्ति श्वेत और बड़ीही सुन्दर है उसका चित्र प्रारं-भके चित्रोंमें है ।

यही योगमाया अक्षर माया कहलाती है इससे आगे वेद तथा पुस्तकोंको तनिक भी सुध नहीं, क्षर तथा अक्षरतक वेद और पुस्तकें कह सकती हैं । निर-क्षरका समाचार कोई नहीं जानता इस निरअक्षर पुरुषको जो जाने सो मुक्ति मार्ग पावे । क्षर तथा अक्षर में सब भूल रहे हैं । यह चित्र ब्रह्माण्डके ऊपरकी

है जहाँ पहले चित्र नहीं बनाया गया यहाँही पर्य्यंत वेद और पुस्तकोंकी पहुँच है, आगेकी सुध किसीको नहीं है। वेद तथा पुस्तकोंके श्रेष्ठ विद्वान्गण इस स्थानतक पहुँचते हैं। जो कोई इस स्थानपर्यन्त पहुँचे वो सबका राजा है, यह श्रेणी उर्फान द्वारा प्राप्त होती है। जिसके पहुँचसे वह श्रेणी प्राप्त होती है वह विद्या किसी किसी योगीमें होती है। वेद और पुस्तकोंकी तो यहाँतक सीमा है। आगेका समाचार सूक्ष्म वेद देता है, स्थानोंका विवरण विस्तारपूर्वक लिखता है। सबका ठीक ठीक विवरण करता है।

जब कालपुरुषने चार खान चौरासी लाख योनि बनाई। तब इसी चार वेद छः शास्त्र छः दर्शन और छानवें पाखण्ड समस्त धर्म इत्यादि स्थिर किए, इसीसे नरक वैकुण्ठ तथा उसके आस पासका स्थान सब कुछ नियत हुवा। जिस योनिमें जिस स्थानपर और जिस अवस्था, स्वरूप, गुण तथा धर्ममें उसके कार्य्य उसको दृढ़ करते हैं वही उसको अच्छा लगता है। अपनी करनीका खिचा हुआ जीव जिस अवस्थामें पैठ जाता है उसीसे उसको प्रेम हो जाता है, उसीसे प्रसन्न तथा दूसरोंसे दुःखी होता है। जिस धर्म रीति और व्यवहारको स्वयम् स्वीकार करता है। वही दूसरोंको सिखलाता भी है। उसको भले बुरेकी तनिक भी सुध नहीं। वह अपने जातिका अगुवा बनकर अन्यान्य लोगोंको भी वही सिखाता, दूसरे सब उसका पीछा करते हैं। जैसे एक काग बोलता है कान, तब समस्त काग कान कान करने लगते हैं। सब गीदडोंका अगुवा पहले बोलता है कि, मैं राजा हूँ तब समस्त गीदड बोलते हैं, तू हो, तू हो, तू हो, ऐसेही समस्त कीडोंका अगुवा आगे निकलकर चलता है। उसके पीछे समस्त कीडे मकोडे चलते हैं। सारे मकोड़ोंकी फौज उस अगुवाका चूतड देखते और सुंघते चली जाती है। समस्त दुर्बुद्धि अपने पथदर्शकके पीछे होते हैं। इसी प्रकार सारे भेडोंके पीछे भेडें चलती हैं। यही हाल सारे आदमियोंका है। इस कारण वह सब मनुष्यतासे न्यारे हैं। उनमें कोई मनुष्य नहीं सब पशु हैं। कारण यह कि, इन सबमें पाशविक बुद्धि है। जो कोई मनुष्य होगा सो कदापि ऐसी आदत अपनी न बनावेगा मिथ्यासे सर्वतोभावसे पृथक् होकर सत्यको ग्रहण करेगा परमेश्वरको सत्य भला जान पड़ता है मिथ्या नहीं।

कबीर साहबकी आज्ञा है कि, मनुष्यको उचित है कि, परमेश्वरके स्थानमें अपने गुरुका भी पूजन किया करे। जो ध्यान ज्ञान गुरु बतावे उसीके अनुसार चला करे। कारण यह है कि, परमेश्वरको कोई देख नहीं सकता, गुरुके दिखानेसे देखने तथा जाननेका बल प्राप्त करता है। इस कारण गुरुकी श्रेष्ठता गोविंदसे

बढ़कर है। जो कोई गुरुकी सेवा तथा कृतज्ञताका कर्तव्य पूर्णतया प्रतिपालन करेगा वह निश्चय परमेश्वरसे संयुक्त हो जावेगा। गुरुको गोविंदकी मूर्ति जान, उसमें संदेह न करेगा तो उसका कार्य्य पूरा होगा। कञ्जूस तथा दुर्बुद्धि मनुष्यसे गुरुसेवा कदापि नहीं हो सकती, वे इससे दूर भागते हैं। इस कारण उनको सीधी राह नहीं मिलती।

जितने ऋषि मुनि और पीर पैगम्बर इत्यादि हुए हैं, सबमें किसी सीमा तक प्रकाश हुआ है। उसके द्वारा उन लोगोंने अपने धर्म प्रचलित किए। आकाशवाणी, इलहाम, वही शब्द इत्यादि सब मायाके आयोजन हैं। वहाँ एकाई नहीं यह सब बातें विशेषतामें होती हैं, जो एक तथा बेजोड़ कहलाता है, वहाँ कोई कुछ नहीं कह सकता। इस कारण जो बहुत ज्यादा है सो मिथ्या है। चारों स्थानसे इस संसारका समस्त काम धाम धर्म्म सांसारिक प्रगट हो रहा है। जिबरूतसे तो समस्त कृत्योंकी आज्ञा है लाहूत अर्थात् अक्षर पुरुषकी उत्तेजना भी संयुक्त है। जैसे कि, मैं पहले लिख आया हूँ कि, मुहम्मद साहबने कहा कि, मुझको लाहूत स्थानसे आज्ञा मिली। इस शरीरके भीतर और भी कितनी मूर्तियाँ हैं जिसके गुरुने जिस स्थान तथा जिस मूर्त्तितक पहुँचनेका आदेश किया वह वहीं पहुँचा, उसीको वह अपना परमेश्वर तथा उपजानेवाला समझने लगा। जो कुछ पिण्ड तथा ब्रह्माण्डके भीतर दिखाई देता है, जो कहा सुना जाता है वो सब मिथ्या है। कहने सुननेसे पृथक् है। वह बिना सत्यगुरुके जाना नहीं जाता। वेद तथा पुस्तकोंकी पहुँच वहाँतक नहीं।

यह समस्त संसार अंधा है। वेदको छोड़ सब पुस्तकें अंधेकी लकड़ियाँ हैं। समस्त विद्वान् लकड़ियोंके पकड़ानेवाले हैं। पढ़े लिखे तथा बिना पढ़े दोनों गर्भहीसे अंधे हैं। किसीको कुछ भी नहीं सूझता। दोनों सांसारिक बासनाओंमें फँसे हुए हैं। वासना तथा काम क्रोधादिने सारे संसारको अंधा बना दिया है। इस कारण, वासनासे कोई रहित नहीं हो सकता। जब उसको उचित पथकी शिक्षा दी जाती है तो यह पसंद नहीं करता है, उससे भागता है। साधु सदैवसे पुकारते आते हैं। कोई नहीं मानता, जैसे जन्मान्धको दर्पण दिखानेसे कोई लाभ नहीं इस कारण जो लोग काम क्रोध लोभ मोहादिकके प्रपञ्चोंमें फँसकर अंधे हो रहे हैं, उनको कुछ नहीं सूझता और सत्य शिक्षा किसीके चित्तपर प्रभाव नहीं डालती जितने धर्म्म इस पृथिवीपर हैं जितने धर्म्मके अगुवा हुए हैं तथा अब हैं, सबकी यही शिक्षा है कि, जो कोई सत्यपथ चाहै तो मृतजीवित हो। पर इस बातपर कोई विचार नहीं करता कि, जीवन तथा मृत्यु किसे कहते हैं?

सब धर्म्ममें तो उसीका तेज फैल रहा है। पर मुक्ति तो कहीं नहीं केवल कबीर पन्थमें है। इसी कारण इस धर्म्ममें थोड़े लोग हैं। और अन्य समस्त धर्म्मोंमें विष तथा अमृत दोनों मिलाये गये हैं। पर स्वच्छ अमृत तो केवल एकही धर्म्ममें है, जिससे कुल संसार बचा है, मुक्तिसे नाता है। जब उसको नाशना पृथक् होवेगा तो जगत् कहाँ? जिसने स्वच्छ अमृत पी लिया उसके निमित्त यह जगत् तुच्छ है। सनत्कुमारको पार्वतीजीने दो बार शाप दिया, एक बेर आशीर्वाद दिया। आप शापसे अप्रसन्न तथा आशीर्वादसे प्रसन्न भी न हुए क्योंकि, उनका मन सांसारिक कामनाओंसे पृथक् था, उनका कोई मित्र वैरी न था, दोनों अवस्था दुःख सुख राज्य तथा फकीरी नरक और निकृष्टय तथा उसके निकटवर्ती स्थान सब एकसे हैं कहीं किसीको चैन तथा सुख नहीं है।

अध्याय १३।

ज्ञानीजी महाराज।

जब तीन लोककी रचना हो चुकी तब कालपुरुषने असंख्य युगपर्य्यंत तीन लोकपर बेखटके, राज्य किया, समस्त मनुष्योंको लवेद तथा पुस्तकोंके बंधनमें फँसाया सत्यपुरुषका नाम छिपाकर अपनेको उत्पन्न कर्ता तथा समस्त संसारका मालिक ठहराया, अवर्णनीय तथा अनिर्वचनीय सत्यपुरुषने इस विषयकी ओर तनिक ध्यान भी न दिया। परमात्माका ध्यान पृथ्वीकी ओर मुड़ा देखा कि, कोई जीव सत्यलोकको नहीं आया, किसी मनुष्यने मुक्तिमार्ग नहीं पाया, समस्त जीवोंको कालपुरुष फँसाकर खा रहा है। तब ज्ञानीजीको बुलाकर कहा कि, ए ज्ञानीजी ! आप अब पृथ्वीपर जाओ, कालपुरुषके फन्देसे मनुष्योंको छुड़ाकर मेरे लोक पहुँचा दो। तब ज्ञानीजी पृथ्वीपर आए, भिन्न भिन्न नामोंसे प्रख्यात हुए। पर आपके चार नाम चारों जुगमें खूब प्रख्यात हुए। यद्यपि आपके अनगिनती नाम हैं, पर पूर्वलिखित चारों नाम अधिक प्रसिद्ध हैं।

सत्य पुरुषके जितने जीव हैं, सबमें ज्ञानीजी महाराज श्रेष्ठ हैं, सूक्ष्म वेदका कथन है कि, ज्ञानीजी आपही सत्यपुरुष हैं। सत्यपुरुष तथा ज्ञानीजीमें तनिक भी विभिन्नता नहीं है। सत्य सुकृतजी, मुनीन्द्रजी, करुणामय स्वामी, कबीर ज्ञानीजी, इन चारों नामोंसे चारों युगोंमें प्रसिद्ध होते हैं, अनगिनती मनुष्योंको पथ दरशाकर परम धामको पहुँचाते हैं। कबीर साहब स्वयम् सत्यपुरुष हैं, आपकी दया दृष्टि समस्तजीवोंपर एकसी है, आपके गुण कहने सुननेके बाहर हैं। जो गुण सत्यपुरुषमें हैं वे ही गुण कबीर साहबमें हैं, केवल

देखनेको शरीर है, वास्तविक नहीं, आप तो विदेह हैं। मनुष्योंके उपदेशार्थ आपकी देह मनुष्योंकी होती है। क्योंकि, मनुष्यको केवल मनुष्यही शिक्षा दे सकता है, अन्य कोई नहीं। कालपुरुष बड़ा बलिष्ठ है। बिना सत्य पुरुषके दूसरे किसीसे दमन नहीं हो सकता। इस कारण स्वयम् पुरुष कबीरसाहबकी देहमें प्रगट हुआ वही यहाँ है, वही वहाँ है काल पुरुषके विषको नस नसमेंसे वही दूर करता है। वह अपने निजके सेवकोंको दर्शन देता है। वह सत्यके स्थानपर वर्तमान हो देखता रहता है, वह सदैव छिपा हुआ है; अपने गुलामोंसे बातें करता रहता है। जब नितान्तही दया होती है तब प्रगट हो जाता है। परदाको पृथक् कर देता है। वह अपने सेवकोंसे विशेष प्यार करता है प्रत्येक स्थान तथा प्रत्येक समय उनकी रक्षा करता है। कबीरका नाम सुनतेही काल यम भाग जाते हैं, जो कोई सत्यगुरुके नामका चिह्न पाता है वह परमरूपसे मिल जाता है कि, जहाँसे फिर कभी नहीं गिरता।

एक उदाहरण—उसके नाम की श्रेष्ठतामें बड़े इस प्रकार कहते हैं कबीर-साहेबके पास जाकर एक साधुने इस प्रकार प्रश्न किया कि, महाराज! मुझे, अर्थ, धर्म काम और मोक्षकी युक्ति बताओ मुक्ति किस प्रकार प्राप्त हो? कबीर साहबने उस साधुसे कहा कि, अमुक स्थानपर उजाड़में एक कुतियाने चार बच्चे दिये हैं। उन चारोंमें एक बच्चा अबलक रङ्गका है उसके पास चले जाओ, मेरा नाम लेकर यही प्रश्न करो। तब वह साधु उस उजाड़में गया। उस कुतियाको उसके बच्चों सहित वहाँ पाया। अबलक रङ्गके बच्चेके सामने जाकर यही प्रश्न किया। जब उस बच्चेके कानमें कबीर साहबके नामका शब्द पड़ा तो वह उसे सुनतेही मर गया। फिर वह साधु कबीर साहबके पास पलट आया प्रगट किया कि, आपका नाम सुनतेही वह अबलक बच्चा मर गया है तब कबीर साहबने कहा कि, कुछ दिवसोंपर्य्यन्त संतोष करो। कुछ दिवसोंके उपरान्त कबीर साहबने कहा कि अब तुम अमुक भङ्गीके घर जाओ उसके एक बालक उत्पन्न हुआ है उससे इस प्रश्नका उत्तर माँगो। तब साधु उस भङ्गीके घर गया। वह प्रश्न उस बालकसे किया। कबीर साहबका नाम सुनतेही भङ्गीका लड़का मर गया। तब वह भङ्गी रोने तथा चिल्लाने लगा कि, इस साधुने कुछ कर दिया जिससे मेरा बालक मर गया। वह साधु भागकर कबीर साहबके पास आया समस्त वृत्तान्त कह सुनाया। कबीर साहबने उस साधुसे कहा कि, कुछ दिन और ठहरो। फिर कुछ दिवसोंके उपरान्त आपने उस साधुसे कहा कि, अमुक राजाके घर जाना मेरा नाम लेना। उस राजाके घर पुत्र उत्पन्न हुवा

है वह बच्चा तुमको तुम्हारे प्रश्नोंका उत्तर देगा। तब वह साधु भयभीत होकर कहने लगा कि, महाराज! यह कार्य मैं कदापि नहीं करूँगा क्योंकि, दो स्थानों-पर आपका नाम लेकर मैं कौतुक देख चुका हूँ। कुतिया और भङ्गीका बच्चा मर गया। अब फिर मैं राजाके बालकके सामने जाकर आपका नाम लूं वह भी मर जावे तो वो मेरी बुरी गति बनावेगा। तब कबीर साहबने कहा कि, वह राजकुमार कदापि नहीं मरेगा। तुम निडर होकर जाके उससे पूछो। तब वह साधु उस राजकुमारके समीप गया। कबीर साहबका नाम लेकर अपना प्रश्न किया, उस समय वो राजाका पुत्र बोला कि, ए साधु! तू कान लगाकर सुन मैं उस कुतियाका अबलक बच्चा हूँ जिसको पहले तूने कबीर नाम सुनाया था। उस नामके सुनतेही मेरी कुत्तेकी देह छूट गयी मैंने भङ्गीके घर जन्म पाया। पशुसे मनुष्य हुवा फिर तूने जाकर जब मुझे कबीर नाम सुनाया तब मेरी भङ्गीकी देह भी छूट गयी उसी नामके प्रभावसे अब मैं बादशाहका पुत्र हो गया अब मैं इस देहद्वारा परम धामको सिधारूंगा फिर कदापि आवागमन न होगा। अतः जिस जीवपर इस सत्यपुरुषकी दया हुई वह पशुभी इस सीमापर्यन्त पहुँच गया, मनुष्यकी तो गणनाही क्या है। यह बात सुनकर नामकी श्रेष्ठता स्वचक्षुसे देखकर वह साधु आकर कबीर साहबके चरणोंपर गिरा। इस सत्यपुरुषकी कृपाकटाक्षही मनुष्यके लिये यथेष्ट है दूसरी बात कुछ भी नहीं है। वही सत्य-गुरु सबका कर्ता धनी है। चाहे तो एक पलमें समस्त संसारको मुक्ति प्रदान कर दे। दूसरे किसीमें यह सामर्थ्य तथा बश नहीं जो कि सब कालपुरुषके जालमें फँसे हैं।

ज्ञानीजीके नाम।

सत्य सुकृतजी, मुनीन्द्रजी, करुणामय स्वामी, कबीर साहब ये चारों नाम तो चारो युगमें अधिक प्रसिद्ध होते हैं। पर समस्त नामोंसे आपकी प्रशंसा वेद, पुराण, ऋषि, मुनि पीर, पैगम्बर इत्यादि करते हैं। अनगिनतीनामोंमें से कुछ नाम ये हैं:—

ज्ञानी, अमर, अमर, अचिन्त्य, अक्षय, अविनाशी, आदिब्रह्म, अम्मर-पुरवासी, अदली, अमी, अनेह, अजावन आदि, सत्यमत, परमानंद, अखिल-सनेही, सत्य नाम, सत्यपुरुष, विदेही, निष्कामी निहक्षर, अविगत, अगम, अपार, अनन्त, अभेद, अचल, अक्षय, अगोचर, अलेख, अभय, अवगाह, पुरुष-पुराण, हंसपति, हरम्मानभ, भवसागरतारन, अकथ, अथाह, अनाजदराता, सच्चिदानन्द, योगसंतायन, सुखसागर, सुरतनाम, अंकुर, शुभदानी, प्रथम-

पुरुष, अम्बूद्वीप, पुरुषोत्तम, सर्वमयी, साधुपति, भक्तराज, सत्यसन्तोष, स्नेही शब्दरूप, अविचलदेही, प्राणनाथ, अमृतवाणी, सत्यलोकपति, सत्यगुरु, जन्म-निवारन, बन्दीछोड़, बंदयुगताचल, शीलरूप, धर्मरायशिरमर्दनहार, मुक्तिदाता, सत्यनायक, शीतलउजियारा, परायण, अस्थिरनाम, अमर-पददाता, सत्यसाहब, अक्षयवृक्ष, पुष्पद्वीपमण्डन, गुरुसाजा, हंससोहङ्गम्, सोहङ्गशब्द, कण्डिहार, शठहार, इच्छारूप, ज्ञानबीज, अमोल, अबोल, अशोच, धीर, अन्तर्यामी, परिचय, विदेह सहीछाप, गुप्त, पोहङ्ग, बिहङ्ग, निःतत्त्व, विषहर, शब्द सत्यशब्द, अजावन, निःसत्व, विहङ्गम, अज, उग, अजीत, अर्ध अजीत, अर्ध स्थिति, संजीवन, निर्गुण, आदिऋषि, सत्यसमर्थ, गङ्गपुरुष, योगजीत, सधिक नौतम, मुक्तामणि, चूड़ामणि, सुकृत, धर्म्मऋषि, कर्त्ता इत्यादि अनगिनती नाम हैं। इतने नाम तो मैंने, कबीर एकोत्रीसे नक़ल किये हैं। अरब और फारसके लोग आपको सैयद अहमद कबीर और शेख कबीर कहते हैं। आप अविनाशी इत्यादि नामोंसे ग्रंथोंमें प्रसिद्ध हैं।

शेर—नहीं नाम जिसके पायान है। सिफ़तस सब उसीकी हि शायान है ॥
जो बेचूँ चुरा नामनामी हुवा। वह सब अम्बियामें गिरामी हुवा ॥
लताफ़तको छोडा कसाफ़त लिया। जहाँ की बला और आफ़त लिया ॥
नहीं नाम जिसका न कोई मुकाम। बहर जाय मौजूद हर शैनदाम ॥
जो है लाबयाँ उसका दारुलक़रार। मुजस्सिम हुवा नाम है बेशुमार ॥
मुक़द्दस कुतुब वेदवानी बयान। जो देखे पढ़े उसको हो सब यान ॥
जहाँ में जो मशहूर युग चार हैं। जुदा नाम उसके बहरबार हैं ॥
अब औव्वल यही मानना चाहिये। कबीर गुरु किसे मानना चाहिये ॥
हुए और हैं केते कबीर। वही सबका हादी है पीरान पीर ॥
जो औव्वलमें पैदायश इबतदा। परम आत्मासे हुई यह नदा ॥
पुरुषने इसे पहले ज्ञानी कहा। व मुखलूकपर हुक्मरानी कहा ॥
पुरुष और ज्ञानी हो सूरत हुए। लताफ़त कसाफ़तकी मूरत हुए ॥
वह खुद आपको पुरुषज्ञानी किया। जगत जीवकी मेज़बानी किया ॥
वह अव्वलमें ज्ञानी व आखिर कबीर। मुबर्रा हुवा हिर्स रोशन ज़मीर ॥
ज़मीमें फुँगा और नालः हुवा। यह दिल देव दुःखका क़बला हुवा ॥
किते नामोंसे खुदको मशहूर कर। वह ज़ाहिर हुवा जगतमें रूपधर ॥
वही खल्क़का आफ़री निन्दः है। वही बन्दः खासीका बख़शिन्दा है ॥

मुखम्मस तरजीअबन्द ।

नहीं कोई शुक्र हक़का हक़ अदाकी । न जाने भेद इस साहब सदाकी ॥
जो हाशै खबर देरहे बकाकी । दिखावै राह उस ग़याब खुदाकी ॥

सिफत क्योंकर करूँ इनसों हूँ खाकी ।

तु है सत-पुरुष और ज्ञानी गुरू है । हम मौजूद सबके रूबरू है ॥
कि गुल ओ खारमें सब तेरी बू है । जहाँ देखो वहाँही तूही तू है ॥ सि०॥
जितने सिद्ध साधु पैग़म्बर जहाँके । करैं सब वस्फ़ उस क्षाहैं शहाँके ॥
न जाने भेद इसरारे निहाँके । कहाँ घर और चले रहले कहाँकी ॥ सि० ॥
फिरिस्तः आदमी और आबिदाँ सब । न जाने कोइ तुझ हम दोसना ढ़ब ॥
हैं कहते सारेत खालिक मेरा रबाकरे ।क्योंकर करम किसतौर और कब॥सि.॥
तुहै ख़ालिक व मालिक आलमोंका । तुही रहवर है मुनासिफ़जालिमोंका ॥
करे तू काम पूरा आशकोंका । अँधेरा घर बनाया फासिकांका ॥ सि०॥
थके गुण गावते शेष और शङ्कर । विसराह नारदो उलसाय बरतर ॥
खड़े सब दस्त बस्तः तेरे दरपर । तु है मल्लाह और अल्लाह अकबर ॥सि०॥
भटकता फ़िरता था ए खिज्र मेरे । रहीमा रहम आइ दिलमें तेरे ॥
पडा खाना था गोत जमके घेरे । इस आजिज़ को चढ़ाया आने बेड़े ॥ सि०॥

मुसद्दस ।

अहदो पैमान आदिमें लाया । देह नर धरके आ किया दावा ॥
कालने जगत जीव धर खाया । मुक्तिकी युक्ति सबको बतलाया ॥
नाम तेरो तुफ़ङ्ग ज़मदर है । अकबर अकबर कबीर अकबर है ॥
लोक तीनोंमें काल घेर किया । रहम करते न आप देर किया ॥
मार दुशमनको उसने ज़ेर किया । दोस्त अमृत पिलाके सेर किया ॥
शब्द शमशीर ढ़ाले बकतर है । अकबर अकबर कबीर अकबर है ॥
धोखेके धूलको उडा डाला । कुफ़्र औ शिर्कको मिटा डाला ॥
सारे जाहाँर पर दया पाला । देश देशोंमें की नयी चाला ॥
चीन तुर्कों फिरङ्ग बर बर है । अकबर अकबर कबीर अकबर है ॥
कालके जालको वही तोडे । नाम नरमान हब्बसो जोडे ॥
कर्म्म औ भर्म भाँड़ेको फोडे । तीरतकदीरको वही मोडे ॥
सत्यनाम पयाम घर घर है । अकबर अकबर कबीर अकबर है ॥
जो हुवा खाककबर करके दूर । हिलमुनोवर हुआ है उसके नूर ॥

मत चलो चढ़ ऊपर गिरने मगरूर । बंदा आजिज हुवा कदमकी धूर ॥
खुद खुदावंद खास बर तर है । अकबर अकबर कबीर अकबर है ॥

ग़ज़ल—बंदा हुआ यारको कहर कहाँ मैं देखा ।
हर रङ्ग व ढङ्ग बाहर शानमें देख ॥
जो गुल नहीं देखा था कभी बुलबुल बीमार ।
सो दीदए बरदीद गुलस्तानमें देखा ॥
जब खोल दिआ चश्म हा आलम नज़र आया ।
छिपकेही फ़ना हो मजः पैकानमें देखा ॥
वही अकबर अल्लाह वहीं किब्रिया कबीर ।
वही बांगज़नी गबरो मुसलमानमें देखा ॥
खुद आपही आया बहरे अदल व इनसाफ़ ।
जब जुल्मो अरर मुल्क सुलेमानमें देखा ॥
तुझ बाँधी सिर मूय हो जिसनूरसे मामूर ।
सो नूर नहीं हूर न गिलमानमें देखा ॥
आज़िजका लिया हाथ पकड़ डूबते फ़िलफौर
अज़ मेन्ह पिदर सील व तूफानमें देखा ॥

ग़ज़ल—और शान कहाँ कोई तेरी शानके आगे ।
और खाना कहाँ खानए नरबानके आगे ॥
सब सगुण और निर्गुण तुझहीसे है व्यापार ।
दूकान कहाँ निर्गुण दूकानके आगे ॥
सब खिलक़तका खेल जो ख़रदिलमें दिखाया ।
और इल्म कहाँ कोई तेरे उरफानके आगे ॥
जीते हैं सलातीन जमीन और फलकके ।
सब ख़ाक कदम साहब सुलतानके आगे ॥
आजिज़का लिया हाथ पकड़ डूबते दरबह ।
न मुहसन गुरु पीर मेहरबानके आगे ॥

शेर—वही जगतका आत्माराम है । करीमो रहीम उसका ही नाम है ॥
वही बार है और वही पार है । वही वेदवानी वही सार है ॥
वही दैरमें[1] है हरममें[2] वही । वही सख्तमें है नरममें वही ॥

---

१ मसजिद, २ मंदिर ।

वह खुद खुदका अदही[1] व पैगम्बर । वह बाहर कयासो गुमाने बशर ॥
जहाँ में निहाँ[2] उसका इसरार[3] है । कहीं गुल खिला है कहीं खार है ॥
गुनह बखशे[4] एक आनकी आनमें । सनाख्वाँ है सब उसकी ही शानमें ।
जो पहचान कोई करीमुन नफस । न हो कैद सो अनसरीके कफस ॥
नहीं दूसरा उसका सानी हुवा । हमलमें जो आवे सो फानी हुवा ॥
वह ही पखरो दादगर जुलजलाल । मुजस्सिम हुवा देख दिलपर मलाल ॥
बिन्न आदमथे जब सब गामोरञ्जमें । गिरफ्तार जब्बारके पंज[illegible] ॥
छोड़ा आन अज पंजए जालिमी । किया बेखतर [illegible]कसा आलिमी ॥
जहाँ जाजमें नूर पैदा हुवा । जबाँमें [illegible] वह हवीदा हुवा ॥

ग़ज़ल——तुझ साही तो है और न कोई नजर[5] आया ।
तुझे रूप निगह हरदोजहाँसे हजर आया ॥
खुरशीद[7] खिजल होके छिपा अब्रके[8] अन्दर ।
जब रश्ककम[9]र आप जमीं पर उतर आया ॥
वह जाय मुबारक हुए जहाँ रौनक अफरोज ।
धरतेही कदम[10] शोर जमींसे शजर आया ॥
था बाग पड़ा खुश्क[11] नहीं फूल न फल था ॥
सरसब्ज[12] हुआ फज्ले सनमसे शमर आया ॥
न फसानी हुवा रामही आरामसे [13]मखलूक ।
यह देखिए इस [14]सारशबदका असर आया ॥
रो रोके [15]शबेहिज्र कटी दर्दमें आजिज़ ।
तुझ चेहरए ताबाँसे शिताबाँ सदर आया ॥

यथा—— जब दावर दादार फनादारमें आया ।
अंकार व ॐकार निरङ्कारमें आया ॥
ब्रह्मा वही विष्णू वही शिव शक्ति निरंजन ।
पोशीदः जो था आपही इजहारमें आया ॥
बुलबुल वही सम्बुल है गुल नरगसे हैरान ।
अपनेही तमाशेको वह गुलजारमें आया ॥
वही मस्जिद गिर जामे वही ठाकुर द्वारा ।
वही बैत हरम खानए खुम्भारमें आया ॥

---

१ एक २ छिपा, ३ तेज, ४ सभा, ५ दृष्टि, ६ दोनों लोकोंमें, ७ सूर्य्य, ८ बद्दल ९ परम तेजस्वी, १० चरण, ११ सूखा, १२ हराभरा, १३ कृपा, १४ शब्द, १५ वियोगकी रात।

वही बीज वही शाख गुलो बर्ग शुमर है ।
खिलबतसे निकल जलकते दरबारमें आया ॥
वही मेन्ह वही माह वही खोशए परवीं ।
वही कोकब सैयार दुमदारमें आया ॥
हरमानी मतनमें न बदर नक़शो निगार ।
तस्बीर वही शंगरफो जङ्गारमें आया ॥
बेचन चरा बन्देके खूनपैकर रहम ।
आजिज़के बचानेको सो बाजारमें आया ॥

यथा— सतपुर्ष[1] आप कबीर हैं । नर मन न सुर गुरु पीर है ।
सब सन्त मिलकर यों कहो । वह पुरुष माया पार है ॥
सो गुल खिला बुस[2]तानमें । बू फैल हिन्दुस्तानमें ॥
सब बुलबुलें गाती हैं यो । वह आप शब्दसार है ॥
डाले गले सब तौक़[3]में । सब कुमारियाँ इस शौक़में ॥
करती हैं सब गुफ्तगू[4] । ठाकुर तुही करतार है ॥
दया किया नर शोकसे । सद्गुरु चले [5]सतलोकसे ॥
सब हंस मिलकर यों कहो । तुही पार है तुही वार है ॥
हंसोकी जो सब टोलियां । पहचान सागुर बोलियां ॥
लपटे क़दम अल[6]फौर यों चुम्बक जो लोहा प्यार है ॥
पीर औलियां पैगम्बरान । सिद्ध साधु यों खोले जबाँ ॥
(बोले अलख अल्ला तु है । पिनहां[7] तेरा इसरार है ॥
सब तूतिया शा[8]री नवा । जाती हैं बाना जो अदा ॥
अल्लाह अकबर [9]किब्रिया । सुन शब्द धुन झनकार है ॥
हर हजारो बुलबुलें । जिस हिजमें [10]नालः करें ।
बह बू बहरजा दूबदू । हर गुलमें और हर [11]खार है ॥
हम्दे सरायां सर्व मन । ग़रक़ाब जिसके ध्यानो धन ॥
ज़ाहिर न बाहर देखले । हरकूचः दूर बाज़ारमें ॥
[12]इनसान अंधा खोटमें । शहना छिपा खस ओटमें ॥
जब [13]दस्तगीरी खुदकरें । सत्यपुरुषका दीदार[14] है ॥
बन्दः नेवाजाः बन्द पर । कर फ़जल [15]गुंनह आनन्द पर ॥

---

१ सत्य पुरुष, २ बनारस, ३ गलेकी हथकडी, ४ बातें, ५ सत्यलोकके वासन्दे जीव ६ उसी वक्त, ७ छिपा हुआ, ८ मीठी । ९ परमात्मा, १० सामने, ११ काँटा, १२ मनुष्य, १३ हाथों हाथ, १४ दर्शन, १५ दया,

सदहा[1] करें तब बदंगी । वह बन्दः सब सरदार है ।।
गिरजाओ बुतखानः हरम[2] सबज बजा तेरा धरम ।।
कालो दयाल वह आप है । गफ्फार और ज़ब्बार है ।।
साहब कबीर वह एक है । सतनाम जिसकी टेक हैं ।।
है वाहिद[3] और यूकता वही । गुन ज्ञानकी टकसार है ।।
गुजरी जो शब[4] अब भोर है । इनसानो हैवान[5] शोर है ।।
पहचानले रहमानको । जो कुलसका मुखतार है ।।
चिड़ियोंकी सुनकर चेहचहे । आजिज[6] तु क्यों कर चुप रहे ।।
लाजिम[7] है तुमको यों कहे । कब्बीर कुल आधार है ।।

एक तुच्छ दरिद्री इस विद्याकी तथा उस महात्मकी प्रशंसा क्या कर सकता है जब कि, कोई देवता अथवा मनुष्य उसकी प्रशंसा नहीं कर सकता-सब विवश हैं। सब तूही तू करके निस्तब्ध रहजाता है, चारों युग तथा तीनों कालके ऋषि मुनि बराबर पुकारते चले आ रहे हैं कि, सत्य पुरुष तू हैं। सत्य कबीर तू है, स्वयम् सत्यपुरुष तू है। तेराही नाम बन्दीछोर है, तेरे अतिरिक्त दूसरा कोई भी मनुष्योंको छुटकारा देनेवाला नहीं है। तेरी प्रशंसा दोनों सूक्ष्म वेद तथा पुरान वेद करते रहते हैं, तूही परमात्मा है।

छन्द सवैया ।

वेद थके[8] गुण गावत जासु[9] न भेद लखे[10] सतलोकपतीको[11] ।
गारजकारन[12] धार भेख[13] लखे कहु कौन अलेखँ[14] गतीको ।।
सृष्टिको साज[15] चल महाराज दले[16] दुख आज सो मुक्त मतीको।
नाद[17] व बिन्दके[18] बीचबसे[19] मनरोन[20] सोभौन[21] है जन्म[22] जतीको।।

रमैनी –करता[23] होय हम जग सिरजाया[24] । गुरुस्वरूप[25] मुक्तावन[26] आया ।।
तन मन भज रहु मोरे भक्ता । सत्य कबीर सत्य है वक्ता ।। ९ ।।
आपै[27] देव आपही पाती[28] । आपै धर्म आप कुल जाती ।। १० ।।
सर्व भूत संसार निवासी। आपै खसम[29] आप सुखवासी ।। ११ ।।

चौथी र० –जो चीन्हें ताको निर्मल अङ्गा । अनचीन्हे[30] नर भए पतङ्गा[31] ।। ५ ।।
बावन बीर कबीर कहावन । कलियुगकेरे जीवमुकतावन ।।

---

१ सदा, २ मंदिर, ३ एक, ४ रात, ५ पशु, ६ दुखी, ७ उचित । ८ हारगयें, ९ जिसका, १० देखे, ११ सत्यपुरुष, १२ जरूरत, १३ वाना, १४ अकथ, १५ सजाकर, १६ नष्ट करे, १७ नाद वंश १८ बिन्दवंश, १९ रहे, २० राजी, २१ खुशी, २२ जिन्दा २३ कर्ता, २४ रचा, २५ गुरुवन २६ मुक्त कराने, २७ आप ही, २८ बलि, २९ मालिक, ३० बिना जाने, ३१ पतिंग।

देखो ज्ञानगुदरीके अन्तमें ।

श्रद्धा चँवर[1] प्रेमके धूपा । नौतम[2] सूरत साहबका रूपा ॥
गुदरी पैर आप अलेखा । जिन यह प्रगट चलाई भेखा[3] ॥
साहब कबीर बक्स[4] जब दीन्हा[5] । सुरनर मुनि सब गुदरी[6] लीना ॥

देखो ग्रंथ भवतारण धर्म्मदास वचन ।

संशय[7] किए एकही ओरा[8] । तुमही थे कि, है कोई औरा[9] ॥
सत्य सत्य सा मोसे कहिए । संशय रहत[10] सोई पद[11] गहिए[12] ॥

सत्य कबीर वचन ।

कहैं कबीर सुनो धर्म्मदासा । सकल भेद[13] मैं कीन्ह प्रकासा[14] ॥
जौन[15] परतीत होय जिव[16] तोरा । भवको मेट संग रहो मोरा ॥
धरमदास तुम छोड़ो माया । अस्थिर[17] अमर अखण्डित काया[18] ॥
भक्ति मुक्ति उपजी[19] है जासों । प्रेमको लगन[20] लगाओ तासों ॥
साखी—अब तो वह ठौर[21] बतावहुँ[22], निर्मल ठौर निनार[23] ।
सबसे पर[24] सबसे ऊपर[25], जहाँ एक ओंकार ॥
चौपाई—पुरुष कहो तो पुरुषौ[26] नाहीं । पुरुष भया[27] मायाके माहीं ॥
शब्द कहो तो शब्दौ[28] नाहीं । शब्द भया मायाके माहीं ॥
द्वै बिन होय न ओम् आवाजा[29] । कहिए कहासु[30] काज अकाजा ॥
नाम कहो तौ नाम न ताका[31] । नाम राय काल है जाका ॥
है अनाम[32] अक्षरके माँही । निहअक्षर कोई जानत नाहीं ॥
धर्मदास तहाँ वास हमारा । काल अकाल न पावे पारा[33] ॥
ताकी भक्ति करै जो कोई । भवते[34] छूटे जन्म न होई ॥
साखी—भवतारन[35] भरमै[36] नहीं, यही परताप[37] हमार ।
निश्चय करिके मानि[38] है, तो उतरे भवनिधि पार[39] ॥

धर्म्मदास वचन ।

हे स्वामी यह अकथ[40] कहानी । आगे सुनी न काहू[41] जानी ॥
जहाँ वहाँ तुम समरथदाता[42] । मोको जान[43] परी[44] यह बाता ॥

---

१ चमर, बीजना, २ नूतन, ३ भेष, पन्थ, ४ दान, ५ दिया, ६ ज्ञान गुदरी, ७ सन्देश, ८ तरफ, ९ दूसरा, १० हीन, ११ स्थान, १२ स्वीकार करिये, १३ हाल, १४ जाहिर, १५ जो, १६ दिल । १७ स्थिर, १८ शरीर, १९ पैदा हुई, २० लौ, २१ जगह, २२ बताओ हूं, २३ निराला, २४ परे, २५ शिरमोर. २६ पुरुष भी, २७ हुआ, २८ शब्द भी, २९ शब्द, क्या, ३० जिसका, ३१ नाम बिना. ३२ बिना, ३३ थाह, ३४ संसारसे, ३५ संसारके पार करनेमें, ३६ भूले, ३७ प्रताप, ३८ मानेगा, ३९ किनारे पर, ४० नहीं कहीं जानेवाली, ४१ किसीने भी, ४२ सामर्थ्यवान् ४३ मालूम, ४४ हुई, ।

नाम कबीर धरयो सो काहे[1] । कारण कौन देह धरि आए ॥
देहधरे[2] सबही दुख पाया । तुमको काहे न व्यापी माया ॥

सत्य कबीर बचन ।

हो धर्मदास कहो तुम साचा । मिथ्या[3] नहीं तुम्हारे बाचा[4] ॥
तुमहो अंसबंस पति राजा । तुम्हारे मोह करनेके काजा ॥
आदि अनादि समीपैं[5] मोरा । अब मैं कारज करिहौं[6] तोरा[7] ॥
वहाँसे तुमको दीन्ह[8] पठाई । यहाँ आनके लागी काई[9] ॥
कालपुरुष राख्यो[10] बिलम्हाई[11] । जो सब सृष्टि बनाए खाई ॥
जग जीवनसे तुम हो न्यारा । तुम्हारे काज[12] लीन्ह[13] औतारा ॥
और कारज मोरे कछु नाहीं । रहूं निरन्तर[14] जगके माँही ॥
मोहि न व्यापी[15] जगकी माया । कहन सुननको है यह काया[16] ॥
देह नहीं और दरसे[17] देही । रहूँ सदा जहाँ पुरुष विदेही[18] ॥
यह गतिको नहिं जानै कोई । धरमदास तुम राखौ गोई[19] ॥
आदि पुरुष निह अच्छर जानो । देही धरि मैं प्रगट बखानो[20] ॥
गुप्त[21] रहूं नाहीं लखिपाया[22] । सो मैं जगमें आन चिताया ॥
जुगन जुगन आयो संसारा । रहूं निरन्तर प्रगट पसारा ॥
सतयुग सत्य सुकृत वही खेरा । त्रेतानाम मुनिन्दर[23] मेरा ॥
द्वापर करुणामय[24] नाम धराया । कलियुगनाम कबीर कहाया ॥
चारों युगमें चारों नावन[25] । माया रहित रहूं सब ठावन[26] ॥
सो जग पहचाने नहिं भाई । सुर नर मुनि रहे मुखगाई[27] ॥

बीजक शब्द ।

नरको नहिं परतीत[28] हमारी ॥
झूंठे बनिज[29] कियो झूठे संग, पूंजी सबन मिल हारी ॥
षट्दर्शन[30] मिल पंथ चलायो, तिरदेवा[31] अधिकारी ॥
राजा देश बड़ो परपञ्ची[32], रैयत[33] रहत उजारी[34] ॥

---

१ क्या, २ शरीर धारण किये पीछे, ३ हे झूठ, ४ वचन, ५ समीपी, ६ करूंगा, ७ तेरा, ८ दिया, ९ माया । १० रखा, ११ बिरमा, १२ लिये, १३ लिया, १४ हमेशा, १५ लगी, १६ शरीर, १७ दीखे, १८ सत्यपुरुष, १९ छिपा, २० कहो, २१ छिपा, २२ देख, २३ मुनीन्द्र, २४ करुणाके खजाने, २५ नामोंसे, २६ जगह, २७ कह रहे हैं, २८ विश्वास, २९ व्यापार, ३० जोगी, जंग, सवेग, सन्यासी, दरवेश और ब्राह्मण, ३१ ब्रह्मा, विष्णु, महेश, ३२ बखेड़ी, ३३ प्रजा, ३४ ऊजड़, ।

उतते[1] इत इतते[2] उत राखन, यमकी साट सँवारी ॥
जीवनकपि[3] डोर बाँधे बाजीगर, अपनी खुशी परारी[4] ।
यही टेटरु उतपत[5] परलयको[6], विषया[7] सभै बिकारा[8] ॥
जैसे श्वान अपावन[9] राजी, तेवन[10] लागी संसारी ।
अजहूँ[11] लेऊँ छोड़ाय कालसे, जो कर सुरत[12] सम्हारी[13] ॥

प्रतिज्ञा अङ्गकी साखी ।

कबीर— शब्द[14] हमारा आदिका[15], इनसे बली न कोय ।
आगा पीछा सो करे, जो बलहीन[16] होय ॥
कबीर— घर घर हम सबसे कहा, शब्द न सुने हमार ।
ते भवसागर बुडहीं[17], लख चौरासी धार ॥
कबीर— हङ्ग त्वङ्गके बीचमें, मेरा नाम कबीर ।
जीव मुकतावन[18] कारण[19], अविगत[20] दास कबीर ॥
कबीर— जहां करतमन[21] था, धरती[22] हती न नीर ।
उतपत परलय नाहती, तबके कथी[23] कबीर ॥
हम कर्ता सब सृष्टिके, हम पर दूसरा नाहि ।
कहै कबीर हमें चीन्हे[24], नहिपरे चौरासी माहि[25] (बीजक६२९)
कबीर— लोहा चुम्बक प्रीति, जस[26] लोहा लेत उठाय ।
ऐसा शब्द कबीरका, कालसे लेत छुड़ाय ॥
कबीर— यह संसारको, समझायो सौबार, ।
पूंछ जो पकड़ी भेड़की, उतरा चाहे पार ।
कबीर— मैं कलिका कोतवाल[27] हूँ, लेहहो शब्द हमार ।
जो या शब्दको मानि है उतरै भवजल पार ॥
कबीर— शब्द उपदेश जो मैं कहूँ, जो गोई माने सन्त ।
कहैं कबीर बचावके, ताही[28] मिलावन[29] कन्त[30] ॥
कबीर— हिन्दू तुर्कके बीचमें, मेरा नाम कबीर ।
जीव मुक्तावन कारणे, अविगत धरा शरीर ॥

---

१ इससे उस जोनमें, २ उससे इस योनमें, ३ बन्दर, ४ पडा हुआ, ५ उत्पत्ति, ६ प्रलय, ७ विषय रूप रस आदि, ८ परिवर्तनशील, ९ अपवित्र हाड़ आदि, १० तैसेही, ११ अबभी, १२ याद, १३ सावधान । १४ रामनाम, १५ अनादि, १६ कमजोर, १७ डूबेंगे, १८ मुक्तकराने १९ लिये, २० विचारनेमें न आये, २१ कृत्य, २२ पृथ्वी, २३ कहीं, २४ जाने, २५ भीतर, २६ जैसी, २७ रखवाला, २८ उसीको २९ मिलाने, ३० मालिक,

कबीर— जाय मिल्यो परिवारमें, सुखसागरके तीर ।
वरण पलट हंसा किया, सद्गुरु शब्द कबीर ॥
प्रेम पि[1] छौरी तानके, सुख मन्दिरमें सोय ।
घर कबीरको पायके, कहा मुक्तिको रोय ॥

कबीर— बहुत गुरु भए, जगतमें, कोई न लागे तीर ।
बै गुरु बह[2] जाँयगे, जाग्रत[3] गुरू कबीर ॥

कबीर— पीर पैगम्बर औलिया, धर धर मरे शरीर ।
अजर अम्मर[4] पलटे नहीं, ताका नाम कबीर ॥
मैं कबीर । बिचलौं[5] नहीं, शब्द मोर[6] समरत्थ[7] ।
ताको लोक पठाइहौं, जो चढ़े शब्दके रत्थ[8] ॥

कबीर— ओंकार निश्चय किया, यह कर्ता मत[9] चान ।
साँचा शब्द कबीरका, परदेमें[10] पहचान ।
अनन्त कोटि ब्रह्मण्डका, एक रती नहि भार ।
साहब पुरुष कबीर है, कुलका सर्जनहार[11] ॥ [क. बी. ६३८]

इसी प्रकार समस्त सूक्ष्म वेदमें कबीर साहबकी प्रशंसा भरी हुई है, भली भाँति खोल खोल पुकार पुकार बारम्बार कबीर साहबने कहा है कि, मैं स्वयम् सत्यपुरुष हूँ, स्वयम् मैं ही सृष्टिका रचयिता तथा समस्त जगत्का स्वामी हूँ, मेरे अतिरिक्त दूसरा कोई नहीं है । जो कोई मुझको पहचानेगा वो भव-सागरके पार हो जावेगा ।

वेदमें कबीर ।

आशुः शिशानो वृषभो न भीभो, घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम्, संक्रन्दनो निमिष ए कबीरः शतं सेना अजयत् साकमिन्द्रः ॥ य० अ० १७–३६ ॥

हे कबीर ! आप चारों ओरसे अविगत शब्द रूप हो । देहसे रहित रूप बिदेह हो, विना शरीरके हो, समस्त पवित्रावतार आपके हैं, सैकड़ों बार प्रकट होते हो सबके ज्ञान रूप और परम विजयी हो यही मन्त्र सामवेदमें भी आया है, यहाँ इसका जो अर्थ है वही वहाँ भी अर्थ है ।

सुकृत नाम ।

अधज्मोऽअधवादिवो बृहतो राचनादधि अया वर्धस्व,
तन्वा गिरा ममाजाता सुक्रतो पृण ॥ सा. १. ८. ॥ प्र. १ ॥

---

१ चादर, २ पानीसे खिंचे, ३ जगता हुआ, ४ अमर, ५ चलायमान, ६ मेरा, ७ भक्तिवाला, ८ रथ, ९ न, १० दिलके भीतर, ११ रचनेवाला ।

अग्रनाम ।

सोमः पुनान ऊर्मिणा व्योवारं विधावति, अग्रेवाचः पवमानः कनिक्रदत् ॥ अग्रे सिन्धूनां पवमानोऽतिपर्तिदिवः शतधारो विचक्षणः । हरिर्मित्रस्य सदनेषु सीदति मर्मृजानो विभि– सिन्धुभिर्वृषा ॥

उग्रनाम ।

उच्चातेजातमंधसोदिविंसधभूम्या ददे उग्र शर्म महि स्रव ॥ सामवेद उत्तर अ० ॥ प्र० ५ ॥ मन्त्र १॥

युक्ष्वाहिवृत्रहंतमंहरीद्रंदपरावताः । अर्वाचीनोमघन्सोमपीतय उग्रऋष्येहिराग साम १ ॥ प्र० ४ ॥ मन्त्र ९ ॥

आवृंदंवृत्राहाददे जातः पृच्छातद्विमातरंक उग्रके शृणीरे ॥

सामवेद अ १० ॥ प्र० ३ ॥ मन्त्र ३ ॥

इस तरह वेदोंमें भी कबीर, अग्र, उग्र, और मुनीन्द्र शब्द आजाते हैं ऐसी रीतिसे वेद भी बाकी नहीं रह जाते ।

कबीर शब्दके अर्थ ।

'कबीरैकोत्तरशतक' इस नामके ग्रन्थमें कबीर शब्दके अर्थकी निरुक्ति १०३ श्लोकोंमें की है इसकी और वरामजीने बडी सुन्दर भाषा की है उसके कुछ एक श्लोक यहाँ भी उद्धृत करते हैं ।

श्रीपार्वत्युवाच– अक्षर त्रितय स्वामिन् कबीर इति को भवेत् ॥
किं देव उपदेवो वा तन्मे ब्रूहि जगत्पते ॥

पार्वतीजीका प्रश्न–ऐ स्वामीजी ! जो तीन अक्षर कबीर है वो कबीर कौन हैं तथा किन देवताओंमेंसे हैं ।

श्रीमहादेव उवाच–कोब्रह्मा प्रोच्यते बीचं विद्यमानो विशिष्यते ॥
रमन्ते सर्व भूतानि यत्कवीरस्य चोच्यते ॥

महादेवजीका उत्तर (क) ब्रह्म (ब) प्रगट, (र) समस्त जीवोंमें समानरूपसे रम रहा है ऐसेको कबीर कहते हैं ।

कश्चैवकेवलं ब्रह्म विशेषं बीजमव्ययम् ॥
अंतर्बहिरमन्ते च यत्कवीरस्स चोच्यते ॥

(क) ब्रह्मरूप है, । (ब) अमर बीजरूप है । (र) भीतर बाहर सब स्थानोंमें समभाव है, उसको कबीर कहते हैं ।

क सुखसागरो दाता बीजं ज्ञान तथैव च ॥
रहित आदिनान्तेन यत्कवीरस्स चोच्यते ॥

(क) का अर्थ—सुख रूप समुद्रका देनेवाला है। (ब) ज्ञानका देनेवाला है। (र) उसका आरम्भ अन्त कुछ नहीं, ऐसेको कबीर कहते हैं।

क्स्तुकायापतिश्चैववीशेष: समतिजय: ।।
रकारो रतिसर्वस्य यत्कवीरस्स चोच्यते ।।

(क) समस्त शरीरोंका स्वामी है, प्रत्येक स्थानमें वर्तमान है। (वी) सबका विजयकर्ता है। (र) सबका प्यारा है उसको कबीर कहते हैं।

कस्तु वायुरजश्चैव विज्ञानं ज्ञानमीर्यते ।।
रसना ध्यायते नाम्ना यत्कवीर: स चोच्यते ।

(क) वायु और जलके साथ मिलकर एक रूप हो रहा है। (ब) ज्ञानरूप हो रहा है अर्थात् लद्दुनी विद्यासे पूर्ण है। (र) जिह्वा द्वारा रटा जाता है। जिसमें एकता है, जल, वायु, ज्ञान और ध्यान उसकी प्रशंसा करते हैं परन्तु वह उन सबसे जुदा है उसको कबीर कहते हैं।

क: पियूपरसाधीशो वीतृष्णामोहनाशकृत् ।।
रक्षिताऽखिललोकानां यत्कवीर: स चोच्यत ।।

जो (क) स्वच्छ अमृत स्वरूप है। (वी) कांक्षा स्वाद और बुरे ध्यानोंको दूर करनेवाला है। (र) सबकी रक्षा और सतर्कता करनेवाला है, उसको कबीर कहते हैं।

क: करुणामय: सिन्धू, विर्मुक्तो मनसी स्थित: ।
रसास्मरचयोगेपु यत्कवीरस्स चोच्यते ।।

जो (क) केवल एक दयाका समुद्र है। (वी) मुक्तिको देनेवाला है। (र) समाधि करानेवाला है, उसको कबीर कहते हैं।

क: कामाद्यखिलादीनां वीविहंगो जितेंद्रिय: ।
रमाय निगमाश्चैव यत्कवीरस्स चोच्यते ।।

(क) जो अच्छी कामनाको पूर्ण करने वाला है। (ब) विहङ्ग एक पक्षीका नाम है। वह चित्त, मन और इन्द्रीके बन्द करनेके निमित्त होता है और समस्त मनुष्योंको मुक्ति प्रदान करने वाला है। समस्त संसारमें एक प्रकारका है। उसे कबीर कहते हैं।

क: कन्दर्पो वीर्य्ययुक्तो दयामुक्तोऽध्यनामय: ।।
सत्यरत्नसमायुक्तो यत्कवीरस्स चोच्यते ।।

जो (क) कामरूप कामनासे पृथक्, दयाकरके सजग, नाम और रूपसे रहित, सत्यरूपी रत्नसे मिला हुआ है उसे कबीर कहते हैं।

क: कल्पद्रुमसत्त्वेषु विशदं भावसाक्षिणम् ।
रजति ह्यक्षरश्चैव यत्कवीरस्स चोच्यते ।।

जो (क) कल्पवृक्ष है, समस्त पदार्थोंका देनेवाला है (बी) उत्कृष्ट भावका जाननेवाला है (र) समस्त दुःख चिन्ताका दूर करनेवाला है, उसको कबीर कहते हैं।

कश्च कलाकरोत्येवं विवकाललनामयम् ।
रसभारा भृता येन यत्कबीरस्स चोच्यते ।।

जो (क) समस्त शब्द हो रहे हैं। समस्त स्थानोंमें पूर्ण है। (बी) मिलाव, शब्दसे रहित चैतन्य रूप है (र) समस्त रसोंको धार रहा है, उसको कबीर कहते हैं।

क: कर्मोद्धारमेतेषु विरंच्यो मुक्तिमार्गणम् ।
रसनासिंधुनामेषु यत्कबीर: स चोच्यते ।।

जो (क) केवल मुक्तिदाता है आनन्दका आनन्द देनेवाला है (बी) मुक्तस्वरूप है। (र) जिह्वा प्रशंसामें आप परमेश्वरके सदृश हैं, समुद्रके समान जैसे, अनन्त नाम परमेश्वरके हैं उसको कबीर कहते हैं।

क: करुणामय: कायो विविधभावविशारद: ।
रमन्ते यत्समास्तेषां यत्कबीर: स चोच्यते ।।

जो (क) समस्त शरीरोंमें है (बी) बहुत स्वच्छ तथा अच्छा है। (र) अनेक होकर रम रहा है, उसको कबीर कहते हैं।

कोभवसिन्धुकैंबर्तो विविधो ह्यघदाहक: ।
रकारो केशवो नाम यत्कबीर: स चोच्यते ।।

जो (क) इस उत्पत्ति सागरका मल्लाह है। (बी) समस्त पापोंका पृथक् करनेवाला है। (र) अद्वितीय है उसीका नाम कबीर है।

क: कुन्द: स्मरते तेषां विहर्तुं सुखसागरात् ।
रहस्योमरलोकेषु यत्कबीर: स चोच्यते ।।

जो (क) समस्त शास्त्रोंमें प्रकाशमान है। (बी) सुखरूप समुद्रमें रम रहा है। (र) अमरलोकमें आनन्द और सुखरूप समुद्र है, उसको कबीर कहते हैं।

कलिकर्मविनाशी च विमलश्चित्तनिर्मल: ।
रागद्वेषविनिर्मुक्तो य: कबीर: स चोच्यते ।।

जो (क) कलियुगमें समस्त पापोंका नाश करनेवाला है। (बी) समस्त पापोंसे पृथक् है। (र) समस्त भेदी तथा वैरसे पृथक् है, उसको कबीर कहते हैं।

क: कमनीयो भावेषु विसर्ग: सर्वभावन: ।
र: सशान्त: समाधानो य: कबीर: स चोच्यते ।।

(क) अक्षरसे यह तात्पर्य है कि, जो समस्त गुणोंसे पूर्ण है। (बी) समस्त संसारका रचयिता तथा स्वामी है। (र) आनन्द स्वरूप है, उसको कबीर कहते हैं।

कलौनाम प्रिये प्रोक्तं विवर्णं यागधारणम् ।
रागद्वेषपरित्यागी य: कबीर: स चोच्यते ।।

(क) प्रेम और प्रेमसे उत्पत्ति करनेवाला तथा (बी) सब ओर देख रहा है। (र) मैत्री तथा विरोधसे पार है उसको कबीर कहते हैं।

कमलोद्भवसंभूतो वीक्षते मृदुमंजुल: ।।
समर्थ: सर्वलोकानां य: कबीर: स चोच्यते ।।

(क) कमलसे उत्पन्न हुआ, कमलोंके दलोंसे प्रगट हुआ। (बी) देख रहा है, समदृष्टि है, (र) सर्वलोकमें समर्थ है, उसको कबीर कहते हैं।

मुक्तिमार्गविनोदश्च भक्तिमार्गजलामय: ।
रसनामृतमूलेषु य: कबीर: स चोच्यते ।।

मुक्ति तथा सत्यका दिखानेवाला है। भक्ति पक्षका उजियारा करनेवाला है। जो अमृतका निचोड़ है, उसको कबीर कहते हैं।

कंटकेभ्यो विनिर्मुक्तो विश्वासोच्छ्वास एव च ।
रमन्ते सर्वभूतानि य: कबीर: स चोच्यते ।।

(क) दुःख तथा कष्टसे अलग (बी) श्वासमें होकर जगत्में जगत् रूप हो रहा है। (र) समस्त जीवोंको आनन्द देनेवाला है, उसको कबीर कहते हैं।

कैवर्त: सर्वलोकानां विदेहस्य प्रकाशक: ।
रजनी भव उत्साहो य: कबीर: स चोच्यते ।।

(क) समस्त संसारका मल्लाह है। (बी) देहका प्रकाश करनेवाला है। (र) ज्ञानरूप है। यानी संसार सागरसे पार उतारनेको जो खेवट है उसीको कबीर कहते हैं।

कपाटस्यपटच्छेत्ता विचार: परमार्थक: ।
रागद्वेषविनाशश्च य: कबीर: स चोच्यते ।।

जो (क) अज्ञानके द्वारोंका तखता तोड़नेवाला है (बी) परमार्थरूप है, परमार्थके निमित्त है। (र) मैत्री तथा विरोधको पृथक् करनेवाला है, उसे कबीर कहते हैं।

कथितो ज्ञानध्यानेषु बीजमंत्रसुसंग्रहः ।
राजीवलोचनश्चेह यत्कबीरः स चोच्यते ।।

जो (क) ज्ञान और ध्यानका देनेवाला है। (ब) बीज मन्त्रोंका मुख्य-स्वरूप है। (र) कमलरूप है उनको शब्द कहते हैं उसीको कबीर कहते हैं।

कुरुते नित्य ज्ञानं च विमला निर्मला मतिः ।
रमणीयः सदाचारो यः कबीरः स चोच्यते ।।

(क) उसका ज्ञान सदैव स्थिर और नित्य है। (ब) वैराग्य होता है। (र) ऋद्धि और सिद्धि पवित्रता देनेवाला है। एक स्वरूपसे बहता है, उसको कबीर कहते हैं।

कः कलौ केवलः सार्थो विद्वेषपरिकीर्तितः ।
ऋद्धि शुभसमासेन यः कबीरः स चोच्यते ।।

(क) कलियुगमें जीवोंके साथ है। (ब) बोधरूप होकर पापोंका नाश करता है। (र) सबके हृदयोंमें मिल रहा है। उसको कबीर कहते हैं।

कः कलौ सर्वकल्याणं विवेकज्ञानसंहितम् ।
रागयुताहृता वार्ता यः कबीरः स चोच्यते ।।

(क) कलियुगमें जीवोंको कल्याण देता है। (ब) विवेक तथा ज्ञानके साथ संयुक्त हो रहा है। (र) प्रेमके साथ सबमें रम रहा है। उसको कबीर कहते हैं।

कविः पुराण वपुषो विदेहो देहवान्सुधीः ।
गुरुयोगी सु ता च यः कबीरः स चोच्यते ।।

(क) जो है सो [illegible] चैतन्यस्वरूप है उसका आरम्भ तथा अन्त कुछ नहीं। विदेहसे भी दूर है और उसके साथ भी है। (र) ज्ञान स्वरूप है समस्त देवताओंको गुरु है उसको कबीर कहते हैं।

कवीना प्र [illegible] जाना धाता माता पितामहः ।
जनक [illegible] जानां यः कबीरः स चोच्यते ।।

कबीर नाम है अत्यन्त उत्तम श्रेष्ठ तथा सबका जाननेवाला है। सबका पिता है, पितोंका पिता है। समस्त संसारका रचयिता है। (र) सबका जाननेवाला है उसको कबीर कहते हैं।

असद्वा इदमग्र आसीत् ततो वै सदजायत ।
तदात्मानं स्वयमकुरुत तस्मात्तत्सुकृतमुच्यते ।।

यह जगत् अपनी उत्पत्तिसे पूर्व अव्याकृत नामरूपवाला था, इसीसे यह

पैदा हुआ, उसने स्वयं अपनेको किया इस कारण उसे सुकृत् कहते हैं। जब आत्माने अपना रूप पाया और निर्गुणसे सगुण हुवा, आपसे अपनेको प्रगट किया। इस कारण उसका नाम सुकृत है।

यहाँलो तो मैंने परसंवेद अथवा प्रकृत वेदका प्रमाण लिखा। अब जानना चाहिये कि, कुल प्रकृत वेद बराबर इस बातकी साक्षी देते हैं कि, ये कबीर ! तू ही समस्त संसारका सर्जनकर्ता तथा प्रबंध कर्ता है। अनन्त करोड़ ब्रह्माण्ड सब तेरी रचना है। एकोत्रके कुछ श्लोक जो मैंने लिखे हैं, वे एक सौ श्लोक पर्य्यन्त बराबर शिवजी कबीरके नामकी प्रशंसा करते गए हैं। पार्वतीजीका मन रख गए हैं। इसी प्रकार याज्ञवल्क्य और समस्त ऋषि मुनि आरम्भसे आजलों बराबर करते आए हैं। जबभी करते रहे तथा करेंगे।

ऋषीश्वरोंका वचन।

रामानन्द—कर्ता तुमही साधू हो, सत कबीर हो देव।
तनमन हों तुमें अर्पि हौं, कुलदिक्षा तोहिं देव ॥ [क. १० आ. ४३]

धर्मदास—बाजा बाजे रहितका, परा नगरमें शोर।
सद्गुरु खसम कबीर हैं, नजर न आवे और ॥ [क. १० आ. ४०]

गोरखनाथ—नौनाथ चौरासी सिद्ध, इनका अनहद ज्ञान।
अविचल घर कबीरका, यह गति बिरला जान ॥
झोरी झण्डा कूबरी, शेली टोपी साथ।
दया भई जब कबीरकी, चढ़ाई गोरखनाथ [क. १० आ. ४]

नाभाजी—वानी अरब व खरबलौं, ग्रंथाँ को हजार।
कर्ता पुरुष कबीर है नाभे किया विचार ॥ [क. १० आ. ४९]

राग महला पहला।

नानकशाह—यक अर्ज गुफ़तम पेश तू दर गोश कुन करतार।
हक्का कबीर करीम तू बे ऐब परवरदिगार ॥
दुनियाँ मुक़ाम फ़ानी तहक़ीक़ दिलदानी।
मन सर मूह इजराईल गिरफ्त दिलवीच नदानी ॥
जन पिसर बेरादर कसनेस्त दस्तमगीर।
आखिर बेयफ्तम कस नदारम चूंशब्द तकबीर ॥
शप्रोरोज गशतम दरहवा करदेमबदीखयाल।
गाहेन नेकी कारकरदम मन ईंचुनी अहवाल ॥
बदबख्तहमचू दखील ग़ाफिल बेनजर बेबाक।
नानक बगोयदजीं तोराँ पातरा चाकरा पाखाक ॥

साधक अङ्गकी साखियाँ ।

दादूराम—जै जै शरण कबीरके, तरगए अनन्त अपार ।
दादूगुण कीता[1] कहै, कहत नं आवै पार ॥
कबीर कर्ता आप है, दूजा नाहीं कोय ।
दादू पूरन जगतको, भक्ति दृढ़ावन[2] सोय ॥
ठीक पूरन[3] होय जब, सब कोइ तजै शरीर ।
दादूकाल[4] गँजे नहीं, जपै जो नाम कबीर ॥
आदमकी आया[5] कटै, तब यम घेरैं आय ।
सुमिरन किए कबीरका, दादू लियो बचाय ॥
मेट दिया अपराध सब, आय मिले छनमाँह[6] ।
दादूको सँग ले चले, कबीर चरणकी छाँह ॥
सेव[7] देव[8] निज चरणकी, दादू अपना जान ।
भृङ्गी सत्यकबीरके, कीन्हा आप समान[9] ॥
दादू अधम अनेक हैं, भगत दानतप हीन ।
कबीर साहब सहजमें, ताहि अपन[10] करलीन ॥
दादू अन्तरगत सदा, छिन छिन सुमिरन ध्यान ।
वारूँ[11] नाम कबीर पर, पल पल मेरा प्रान॥
सुन सुन साखि कबीरकी, मग्न[12] भया मन मोर[13] ।
दादू थाके खोजके, जैसे चन्द्र चकोर ॥
सुन सुन साखि कबीरकी, काल नवावे माथ ।
धन्य धन्य हो तिन लोकमें, दादू जोड़े हाथ ॥
केहरि नाम कबीरका, विषम[14] काल गजराज ।
दादू भजन प्रतापते, भागे सुनत आवाज ॥
पल[15] तै नाम कबीरका, दादू मनचित लाय ।
हस्तीके अवसारको, श्वान काल नहिं खाय ॥
सुमिरत नाम कबीरका, कटै कालकी पीर ।
दादू दिन दिन ऊंचे, परमानंन्द सुख सीर ॥
दादू नाम कबीरका जो कोई लेवे ओट[16] ।
तिनको कबहू न लागई, काल बज्रकी चोट ॥
और सन्त सब कूप हैं, केते[17] सरिता नीर ।

---

१ कितना, २ मजबूत करते, ३ पूरा, ४ मारे, ५ उम्र, ६ क्षण, ७ सेवा, ८ दो, ९ बराबर, १० अपना, ११ बारद, १२ प्रसन्न, १३ आपके, १४ बैरी, १५ पलभर, १६ ओढ, १७ कितनेक ।

दादू अगम अपार है, दरिया सत्यकबीर ॥
हिन्दू अपनी हद चलें, मुसलमान हद माँहि ।
दादू चाल कबीरकी, दोनों दीनमें नाहिं[1] ॥
हिन्दूके सद्गुरु सँही, मुसलमानके पीर[2] ।
दादू दोनों दीनमें, अस्ली नाम कबीर ॥
अबही तेरी सब मिटै, जन्म मरन की पीर ।
श्वास उश्वासा सुमिरले, दादू नाम कबीर ॥
कोई सगुनमें रीझ[3] रहा, कोइ निर्गुन ठहराय ।
दादू गति कबीरकी, मोते कही न जाय ॥
दादू गति कबीरकी, मोते कही न जाय ॥
भवजल तारन जीवको, खेवट[4] आए कबीर ।
अनन्त कोट सुख भावसे, दादू उतरे तीर ॥
मुखसे ज्ञान कबीरका, कोई मोहि कह समुझाय ॥
दादू वाको चरणरज, लइहों शील चढ़ाय ॥
नाम कबीर जो नर जपै, मैं बलिहारी ताहि ।
तन मन वारूं तासु पर, दादूप्रान लगाय ॥
सुमिरत नाम, कबीरका, जिह्वा मोर सुखाय ।
विरह अग्नि तनमें तपै, दादू कौन बुझाय ॥
दादू नाम कबीरका, सुनिके काँपे काल ।
नाम भरोसे नर चले, बङ्क[5] न होवे बाल ॥
जिन मोको निज नाम दई, सद्गुरु सोइ हमार ।
दादू दूसर कौन है, कबीर सर्जनहार ॥
कबीर साहब कह गए, ढोल बजाय बजाय ॥
दादू दुनियाँबावरी, ताके सङ्ग न जाय ।
दादू बैठि जहाज पर, गये समुद्दरतीर[6] । [क. १० आ. ४९]
जलमें मच्छी जो रहैं, कहे कबीर कबीर ॥
स्वाती शब्द कबीरका, सूरति जो सीप विचार ।
दादू तनमन जोड़के, लेत बूंद अनुसार ॥
स्वाती शब्द कबीरका, चात्रक[7] मन भवहास ।
दादू और पिवै नहीं, स्वाति बूंदकी आस ॥

---

१ रहने दो, २ ईश्वरी, ३ सुल्ताक, ४ मलाह, ५ टेडा, ६ समुद्र, ७ चातक ।

स्वाती शब्द कबीरका, सो हम पिया आघाय[1] ।
मनकी प्यासा सब मिटी, दादू रहे समाय ।।
जैसे मिरगा[2] नाद[3] सुन, तन मन भूले प्रान ।
दादू भूले देह गुन, सुन कबीरको ज्ञान[4] ।।
केवल नैन कबीरका, उज्ज्वल रूप अनूप ।
दादू अन्तर निर्मला, देखे सहज स्वरूप ।।
शोभा देखि कबीरकी, नैन रहे ललचाय ।
कहा कहूँ छबि रूपकी, दादू कही न जाय ।।
एकै रोम कबीरका, कोटि[5]भानु[6] छबि छाय ।
दादू[7] कौतुक चन्द ते, शीतलता अधिकाय ।।
बन्दौं चरनकबीरके, कोटि बार पल माँहि ।
दादू हवस मनमें रही, कोटिक रसना नाँहि ।।
कोटि कर्म पलमें कटैं, नाम कबीर जो लेह ।
दादू सच्चे होत है, सुफल मनोरथ देह ।।
परमारथके कारनै, आप स्वारथी नाहि ।
कबीर आए भगति लै, दादू भवजल माहि ।।
भगति करै संसारमें, युग युग नाम धराय ।
दादू तारन जीवको, काशी प्रगटै आय ।।
बहुत जीव अटके रहे, बिन सद्गुरु भव माहिं ।
दादू नाम कबीर बिन, छूटे एकौ नाहि ।।
सद्गुरु बहियाँ जीवको, मंझधार भवसिन्ध ।
दादू नाम कबीरका, छोड़ आवे भवफंद ।।
साचा शब्द कबीरका, मीठा लागै मोय ।
दादू सन्ता परम सुख, कीता आनंद होय ।।
साचा शब्द कबीरका, सब सुखदाई सोय ।
दादू गुरु परतापते, कीता भरोसा होय ।।
साचा शब्द कबीरका, सन्त सुना चित लाय[10] ।
दादू भ्रम सब मिटगया, कर्मकाल नहि खाय ।।
साचा शब्द कबीरका, सबका होय सहाय[11] ।
रोग दुःख तरे ताप सब, दादू दूर पराय[12] ।।

---

१ पेटभरकर, २ मृग, ३ गाना, ४ विचार, ५ करोड़, ६ सूर्य, ७ इच्छा, ८ इश्क, ९ कितना, १० लगाकर, ११ मददगार १२ भाग जाय।

साचा शब्द कबीरका, तोल मोलमें नाँहि।
दादू दूसर ना मिलै, जो खोजे[1] घट[2] माँहि ॥
साचा शब्द कबीरका, युग युग अटल अभूल।
दादू पावै पारखू[3], परम पुरुष निजमूल ॥

गरीबदासजीकी साखियाँ

गरीब– नमो नमो सत्पुरुषको, नमस्कार गुरु कीन।
सुरनर मुनि जन साधुवा, सन्तों सर्वश[4] दीन ॥
गरीब, पुर पठन सतलोक है, [5]अदली सद्गुरुसार।
भगति हेत सो ऊतरे, पाया हम [6]दीदार ॥
गरीब, ऐसा सद्गुरु हमे मिला, सुन्न विदेशी आप।
रोम रोम परकाशहै, दीना अजपा[7] जाप ॥
गरीब, ऐसा सद्गुरु हमे मिला सुरत[8]सिन्धुके सैन।
उर[9] अन्तर परकाशिया[10], जअब सुनाए बैन[11] ॥
गरीब, ऐसा सद्गुरु हमे मिला, सुरतसिन्धुके नाल[12]।
गौन[13] किया सतलोकसे, अनलपंखकी चाल ॥
गरीब, ऐसा सद्गुरु हमे मिला, सुरतसिन्धुके तीर।
सब संतन [14]शिरताज है, सद्गुरु, अटल कबीर ॥
गरीब, ऐसा सद्गुरु हमें मिला, बेपरवाह अबंध[15]।
परम हंस पुरन पुरुष, रोम रोम रविचंद ॥
गरीब, ऐसा सद्गुरु हमें मिला है जिन्द[16] जगदीश ॥
सुन्न विदेशी मिल गया छत्र मुकुट है शीश ॥
गरीब, जिन्दा जोगी जगत गुरु, मालिक मुरशिद पीव।
कालकर्म लागै नहीं, [17]सनका नाही शीव ॥
गरोब जिन्दा जोगी जगत गुरु मालिक मुरशिद पीव।
दोहूं[18] झगरा पड़ा, पाया नहीं शरीर ॥
गरीव, ऐसा सद्‌गुरु हमें मिला, तेज पुन्जको अङ्ग।
झिलमिल नूर जहूर है, रूप रेख नहि रङ्ग ॥

---

१ ढूंढे, २ दिलमें ३ पारखी, ४ सब कुछ, ५ कबीर, ६ दर्शन, ७ श्वासपर होने वाला हंस सोऽहम् आदि स्वाभाविक जप, ८ स्मृति, ९ हृदय, १० प्रकाश ११ वाणी, १२ ऊपर, १३ गमन, १४ श्रेष्ठ, १५ बन्धनरहित, १६ नदीमें नानकदेवजीको दर्शन देनेवाला, १७ उर, १८ हिन्दू मुसलमान दोनोंमें।

गरीब, ऐसा सद्गुरु हमें मिला, खोले वज्र[1]कपाट ।
अ[2]गम भूमिकी गम करे, उतरे औघ[3]ट घाट ॥
गरीब, सद्गुरु मारचो बान कसि, महबर गाँसी खींच ।
कर्म भरम सब हीनसे, ज्ञानीको बुधि सब एँच ॥
गरीब, सद्गुरु आय दया करि, ऐसे दीन दयाल ।
बन्दीछो[4]र बिर[5]द किया, जठराग्नी प्रतिपाल ॥
गरीब, यम जोरा, जासे डरे, धरमराय धर धीर ।
ऐसा सद्गुरु एक है, अदली अदल कबीर ॥
गरीब यम जोरा[6] जास डरे, मिटे करमको रेख ।
अदली अदल कबीर है, कुलका सद्गुरु एक ॥
गरीब, ऐसा [7]सद्गुरु हम मिला, भवसागरके बीच ।
खेवट सबको खेवता, क्या उत्तम क्या नीच ॥
गरीब, मायाको रस पीयके, डूब गए दो दीन ॥
ऐसा सद्गुरु हम मिला, ज्ञान योग परबीन ॥
गरीब, साहबसे सद्गुरु भये, सद्गुरुसे भय साध ।
ये तीनों एक अङ्ग हैं, गति कुछ अगम अगाध ॥
गरीब, अंधे गूंगे गुरु घने, लोभी लँगड़े लाख ॥
साहबसे [8]परिचय नहीं, काहि बनवावैं साख[9] ॥
गरीब, ऐसा सद्गुरु सेविये,[10] शब्द समाना होय ।
भौसा[11]गरमें डूबते, पार लँघावें सोय ॥
गरीब, सद्गुरु पूरण ब्रह्म हैं, सद्गुरु आप अलेख ।
सद्गुरु रमता राम हैं, यामें मीन न मेख ॥
गरीब बङ्कनाल[12]के अन्तरै, तिरवेणीके[13] तीर ।
जहाँ हमैं सद्गुरु लेगया, बन्दी छोड़ कबीर ॥
गरीब, शून्यमण्डल अनुराग है, शून्यमण्डल रह थीर ।
दास गरीब उधारिया, बँदीछोड़ कबीर ॥
गरीब, या सुखते सुख सगुण, ब्रह्म शब्दके माँहि ।
सद्गुरु मिले कबीरसे सतलोकले जाँहि ॥
गरीब, जैसे बादल गगनमें, चलते हैं बिन पाँय ।

---

१ सस्त्र जैसा मजबूत किवाड़े, २ अगम्य, ३ विनाबने, ४ वन्दिओंको छुडानेवाले, ५ बाना ६ वार करता, ७ निपुण, ८ जान, ९ विश्वास, १० सिद्ध करिये, ११ भवसागर, १२ सुषुम्ना, १३ त्रिकुटि ।

ऐसे पुरुष कबीर हैं, शून्यमें रहे समाय[1] ।।
ग़रीब, गगनमण्डलसे ऊतरे, साहब पुरुष कबीर ।
चोला धरा खवास[2]का, तोड़े यम जञ्जीर ।।
ग़रीब, आदौ आदि कबीर हैं, चौदह भुवन विशाल ।
हीरे मोती बहुत हैं, कबीर लालनके लाल ।।
गरीब, ऐसा निर्मल ज्ञान है निर्म[3]ल करे शरीर ।
और ज्ञान मण्डल सबै, चक्वे[4] ज्ञान कबीर ।।

चौपाई– दास गरीब कबीर को चेरा । सत्य लोक अमरपुर डेरा ।।
अमृत पान अमिय रस चोखा । पीवे हंसा नाही धोखा ।।

पर प्रकट हो कि, समस्त सिद्ध साधु ऋषि मुनि पीर पैग़म्बर जिस किसी सत्यगुरुको पहचाना उसकी श्रेष्ठताको जाना, वो मृत्युजित् हो गया । तीनों कालके औलिया अम्बिया साधु ऋषि मुनि बराबर इसी प्रकार उसकी प्रशंसा करते चले आते हैं। भली भाँति जाँच करते और पवित्र पुस्तकों तथा हदीसों इत्यादिसे मालूम हो जावेगा । चारों वेद पुराण आदि सब सत्यगुरुकी प्रशंसा किया करते हैं। कबीर साहबके भिन्न भिन्न नामोंसे सब ग्रंथों तथा पुस्तकोंमें उसकी प्रशंसा लिखी हुई है । जो सत्यगुरुका हंस अङ्कुरी जीव होगा सो तुरन्त इस सत्यगुरुको पहचान लेगा तनिक विलम्ब न लगेगा, कोई सन्त जौहरी ही मणिकी पहचानमें होता है । वेदों और पुस्तकोंमें कबीर साहबकी प्रशंसा तो अनेक स्थानोंमें लिखी देखते हैं । कोई पण्डित पढ़कर सोचता हुआ अर्थ लगाता है कि, कबीर नाम रामचन्द्रका है । कोई कहा है कि, कबीर नाम विष्णु किम्वा राम चन्द्रका है । पण्डितोंमेंसे कोई यों कहता है कि, इन महाशयोंमें कोई कबीरके नामके योग्य नहीं दिखाई देता; पर शून्य चेतन जो ब्रह्म है उसको कबीर कहते हैं। अब विचारना उचित है कि, यदि चैतन्य ब्रह्म उस सर्वशक्तिमान् जगदीश्वरका नाम है तो वह कौन है कौन गुरु उससे मिलता है, कौन शास्त्र उससे संयुक्त होनेका पथ दिखाता है ? यदि उसको निर्गुण निराकार ठहराते कि, जिसके श्वाससे चारों वेद निकले तो यह बात भी नहीं दीखती सो कि, वेदकी आज्ञाएँ, स्पष्ट प्रकट करती हैं कि , वह पुण्यात्मा परमेश्वर जिसकी, आज्ञाएँ नितान्तही स्वच्छ तथा निर्दोष होनी चाहिएँ वह कलुषित कार्योंके करनेकी आज्ञा कदापि नहीं देगा । वह किसीको धोखा तथा दग़ा नहीं देता । किसीसे मैत्री वैर नहीं रखता । इस प्रकारके कार्य्य तो मायाके हैं। शुद्ध ब्रह्म कदापि ये काम नहीं

१ निर्विकल्पसमाधिसे प्राप्तहोनेवाला स्थान, २ सेवक, ३ शुद्ध, ४ चक्रवर्ती पूरा ।

करता, वह सब दोषोंसे विशुद्ध है उसका नाम कबीर है, दूसरेका नहीं हो सकता। यदि वह कबीर रामचन्द्रका नाम होता तो रामचन्द्रका उपासना करनेवाले कबीरका नाम जपते। यदि वह शुद्ध ब्रह्म कृष्ण अथवा बिष्णु होता तो विष्णुके उपासकोंमेंसे कोई कदापि कबीरका नाम लेते। यदि कबीर नाम निर्गुण ब्रह्मका होता तो योगी लोग कभी कबीरका नाम लेते। इसी प्रकार प्रत्येक धर्मावलम्बियोंसे भली--भाँति जाँच कर लेना चाहिये कि, शुद्ध ब्रह्मका नाम कबीर है क्या इस ब्रह्मकी उपासना कौन लोग करते। हैं ? जिस धर्म्मका मनुष्य उस कबीरका नाम लेता है, उसकी चाल चलन कैसी है ? हाँ वास्तवमें जो उस शुद्ध ब्रह्म कबीरका नाम लेता है उसके समस्त कार्य विशुद्ध हो जावेंगे कुछ दोष तथा भ्रष्टता न रहती। प्रत्यक्ष प्रगट है कि, उस शुद्ध ब्रह्म कबीरके उपासक केवल कबीरपंथी है दूसरा कोई नही, वही विद्वान वहीं सुविज्ञ तथा बुद्धिमान् और बहुत तात्त्विक है जो इस सत्यगुरुको पहचानकर कालपुरुषके धोखे तथा धूर्ततासे दूर भागे, फिर उधर कभी दृष्टि न करे शुद्ध ब्रह्म, कबीरका चरण दृढ़ताके साथ पकड़े फिर कभी न छोड़े। जिस किसीने इस सत्यगुरुको पहचान लिया फिर भी उसके शरणमें नहीं आया तो उसके दुर्भाग्यने उसको दूर कर दिया। उसका कोई वश नहीं, ऐसा समझना चाहिये। जितने नाम सत्यपुरुषके हैं उन सब नामोंसे कालपुरुषने आपको प्रकट किया वही नाम अपना रक्खा, सत्यपुरुषका नाम छिपाया, सत्यपुरुषकी भक्ति तथा मुक्तिकी राह रोक ली। समस्त मनुष्योंको अपनी भक्तिमें लगाया, वेद तथा उसकी आज्ञाओंमें फँसा लिया। सत्यपुरुषका पथ किसीसे पहचाना नहीं जाता। वे नहीं जान सकते कि, कालपुरुषका पंथ किसीसे पहचाना नहीं जाता। वे नहीं जान सकते कि, कालपुरुष कौन है, सत्यपुरुष कौन है ? दिनरात वेद पुस्तक पढा करते हैं कभी किसीका स्वच्छ हृदय नहीं हुआ है, दिन प्रतिदिन बरबादी और हैरानी होती है, सबके सब अन्धकारमें चले जाते हैं। समस्त ऋषि मुनि स्वसंवेदकी बराबर प्रशंसा करते चले आते हैं पर स्वसंवेदके पहचाननेवाले लोग बहुत थोड़े हैं, बहुत कम आदमी इस पर चलते हैं। इसे बिना पढे किसीको सुख नहीं मिलेगा। कोई वेद अथवा पुस्तक पढो पर स्वसंवेदके पाठसे ही हृदयका संतोष होगा, बिना इसके कालपुरुष तथा सत्यपुरुषकी तनिक भी भिन्नता न मालूम होगी। उन्हींका हृदय तथा मस्तक प्रकाशित होता है जो स्वसंवेदकी आज्ञाओंपर चलते हैं, उसको पढकर भलीभाँति सोचते समझते हैं। वेही बुद्धिमान् दूरदर्शी मनुष्य हैं जो कालकी दुष्टता और जालसाजियोंको जानकर उससे दूर भागते हैं वेही लोग

सच्चे मनुष्य हैं जिनमें बुद्धि है, जिनमें बुद्धि नहीं वे सब मनुष्यत्वसे परे हैं वे सब पूरे पशु समझे जाते हैं। इन्हीको डाँगर ढोर कोड़े मकोड़े इत्यादि कहा गया है—

तमीजो अक्ल बनइसां अताय खुदावन्दी ।
बशक्ल आदम अली खुबासतो नरिन्दी ।।
बरूं खलोकु दरूं देख उसकी नीयत क्या ।
अगर तमीज नहीं फिर तो आदमियत क्या ।।

यह मनुष्य ज्ञानअन्धा हो एक ओरसे भागकर दूसरी ओर जाता है जिसमें कि, उसको सुख तथा आराम मिले, जब उधर भागकर जाता है तो देखता है कि, वही आग जिसमें पहले जल रहा था, वही उधर भी दिखाई देती है। यहां तक दशोंदिशा है यह दौड़ता फिरता है। जिधर जाता है उधर वही आग वही शूली और वही कसाई छूरी लिये गला काटनेको उपस्थित है, जब वह ढूंढ़ते ढूंढ़ते थक जाता है तब कहीं पड़कर आँख बंदकर बैठ रहता है, अपने मनमें सोचता है कि, अब मैं किधर भाग कर जाऊँ ? कहीं पता ठिकाना नहीं लगता न कोई सत्य तथा सन्तोषका उपाय ही दिखाई देता है ? इसी प्रकार षट्दर्श-नके लोग, एक मतको छोड कर दूसरे मतको पसंद करते हैं। वही अग्नि उधर भी देखते हैं। हिन्दुओं तथा सैकड़ोंही पंथके लोगोंकी यही दशा है। कितने लोग हिन्दू धर्म छोड़कर मुसलमान तथा ईसाई आदि हो जाते हैं जब उधरका वृत्तान्त भलीभाँति मालूम हो जाता हो तो उनके अग्निस्वरूप दिखाई देता है। फिर क्या करें कोई वश नहीं रहा। जिस किसी भाग्यवान्को पारखगुरु मिलजाता है वो उसकी शिक्षा स्वीकार करता है तो सुख पाता है; इसी प्रकार इन तीनों लोकोंके समस्त जीव कालपुरुषकी अग्निमें जल रहे हैं वह सबको भून भूनकर खाया करता है। उसके धोखे दगाओंसे कोई किसी प्रकार भी नहीं बच सकता।

सारे स्वसंवेद का यह कथन है कि, सत्यपुरुषने कालपुरुषको तीनों लोकका राज्य प्रदान किया है यह अपने पूजा पाठसे बड़ाही बलिष्ठ हो गया है यहाँ तक कि, जब कबीर साहबके हंस पृथ्वीपर देह धरते हैं मनुष्योंको मुक्ति-प्रदानार्थ उनका पृथ्वीपर अवतार होता है तो कालपुरुष उनको धोका तथा दगा देता है। जब वे धोखेमें पड़ जाते हैं, तब स्वयम् कबीर साहब शरीर धारण करके इनको मुक्त कराकर कालकी पहुँचसे बाहर खींचकर सत्यस्वरूपी देह प्रदान करते हैं जिससे कालपुरुषका कोई वश नहीं चल सकता है। वे लोग सत्य-

पुरुषकी भक्तिके प्रचार संसारमें करते हैं । जो शिक्षा स्वयम् कबीर साहबकी है वही शिक्षा उनके हंसोंकी भी है ।

वेदोंसे तो भलीभाँति प्रमाणित हो चुका कि, संस्कृत भाषामें किसको कबीर कहते हैं ? वह अद्वितीय तथा बेजोड़ है ।

अब मैं कबीरशब्दके माअनी अरबीमें प्रगट करता हूं-कबीर किब्रिया कुबरा अकबर एकही बात है । कबीर उसे कहते हैं जिसमें किब्र, (गौख) हो उसका किब्र सदैव एक रस रहे न कभी घटे एवं न बढ़े । कबीर साहबने स्वसंवेदमें ऐसीही आज्ञा की है कि केवल मैंही एक कबीर हूँ दूसरा कोई नहीं हो सकता जिस किसी दूसरेमें किब्र होवेगा उसका शिर मैं तोडूंगा । अतः तीनों लोकोंमें सर्वश्रेष्ठ निरञ्जन है । जब उनके मनमें किब्रसमाया कबीर साहबसे सामना करनेके निमित्त प्रतुस्त हुआ तब कबीर साहबने ऐकही ऐसी चोट लगाई जिससे वे झांझरी द्वीपको छोडकर पातालको भाग गए । फिर दूसरा किब्र आदि भवानीमें पाया गया । तब कबीर साहबने उनको ऐसा ललकारा कि चरणों पर गिर पड़ी । फिर ब्रह्मा यम और शिवका किब्र (घमण्ड) दूर किया रामचन्द्रने जब राजा रावणको विजय किया तब उनमें कुब्र समाया अपनी भुजा पुजवाने लगे तब उनका भी कुब्र जाता रहा । कृष्णचन्द्रका किब्र नौसाल जरासिंधकी लडाईमें दूर हो गया । ऐसाही हिरण्यकशिपु, रावण, कंस, नमरूद, शदाद, फिरऊन इत्यादिका कुब्र दूर हो गया, किसीका न रहा । जिस किसीमें तनिक भी कुब्र होगा उसका छुटकारा कभी न होगा । निश्चय उसका शिर टूटेगा । केवल कबीरही कबीर है, दूसरा कोई कदापि नहीं हो सकता । इसीका कुब्र सदैव समान रहता है दूसरे किसीका नहीं । इस संसारमें जितनी सृष्टि है सब कबीर है । कुब्रसे खाली कोई नहीं, जिसपर वह सत्यगुरु दयालु हो वही कुब्रसे खाली हो सकता है । जिसको वह कुब्रसे खाली करता है उसको वह अपने तेजसे भर देता है । इस कारण किब्र उसीके योग्य है दूसरेके नहीं; क्योंकि, कुब्रहीसे इस संसारका खेल खुल रहा है । इस कबीरके गुणकी तीनों कालके सिद्ध साधु और ऋषि मुनि इत्यादि बराबर बड़ाई और प्रशंसा करते आए हैं । कोई कोई उनकी कृपासे उसको पहचान सकता है, उसकी प्रशंसा तो केवल वह स्वयम्ही जानता है, मैं तुच्छ दुर्बुद्धि मनुष्य क्या लिख सकूं एवं क्या कह सकूंगा ? यदि मेरी अनगिनती जिह्वाएँ होतीं तो कुछ कह सकता । अतः मेरे निमित्त इतनाही यथेष्ट है कि इस विशुद्ध जगदीश्वरके चरणोंपर गिर अपने अपराधोंके निमित्त क्षमाप्रार्थी हो जाऊँ ।

ग़ज़ल–ऐरूप शब्द अबद ब: तकबीर। कौनैन तु नुक़्त: एक तफ़सीर ॥
शरमिन्द: सरेम दर गरेबाँ। तरादामन तर बतर बतक़सीर ॥
मामूरहूं सर बसर ब असियाँ। तरसाँ हूं जे मालिकाने तहरीर ॥
रख अपने शरण चरणके नजदीक। कर चाक तु फ़ेल नामे तक़दीर ॥
अफज्रू जे अदद मेरे गुनाहाँ। दे बख़्श बफज्ल कर न ताख़ीर ॥
म निगर फेलम ब रह्म ब निगर। कर नेक नज़र ब बन्दए पीर ॥
अज़ विसविसए जे नफ़स शैताँ। रख अपने पन: गुनह बताफीर ॥
बस मेरी नजुस्तजू अबस है। मल्लाह मेरे जहाज़ कर तीर ॥
ले देख बचश्म चार गुलाखार। बख़शिन्द: है सबका सत्य कबीर ॥
तुझ बिन न किसीका है ठिकाना। करे कोई अमल हज़ार तदबीर ॥
हरशै भरी साईं की लहर है। सब मुरद: हुए ज़हर की तासीर ॥
मैं मुरदा जला पिला पेयाला। भर दीजे अपनी अब शकर शीर ॥
है लोक व वेदमें खबर जो। सो कालपुरुष की सारी जागीर ॥
सब हस्त रसी उनसे जबरदस्त। दिल खौफोखतरसे उसके दिलगीर ॥
तन तेरे कदम पड़ा फ़िरोतन। आजिज़ को न छोड़ ऐ खबरगीर ॥

अध्याय १४.

कबीर साहिबके शिष्यजन

कबीर साहिबके शिष्योंको हंस कहते हैं। क्योंकि, हंसका नियम है कि, वो जल तथा दुग्धको पृथक् पृथक् कर देता है, दूधको पी जाता है, जलको छोड़ देता है। उसमें और भी अनेक गुण हैं। ऐसेही हंस कबीर हैं कि, यह जगत् जो मिथ्या तथा सत्यसे मिला हुआ है वे अपनी बुद्धि एवं ज्ञानसे पहचानकर मिथ्याको छोड देते हैं, सत्यको ग्रहण कर लेते हैं। हंस तथा बकुले इस संसारमें एक साथ घूमते फिरते हैं दोनों बुद्धि तथा ज्ञानसे पहचाने जाते हैं। इसी विषय पर कबीर साहिबने एक साखी कही है—

कबीर, हंसा [1]बक [2]लखें एक सँग, चरें हरि[3]अरे ताल[4]।
हंस क्षीरते [5]जानिये, बक [6]उधरें तेहि काल ॥

जिनको सत्यगुरुका पूरा पता लग चुका है वो कदापि वासना बन्धनमें नहीं फँसते, उनका आवागमन नहीं होता, उनको तनिक भी कालका भय नहीं।

---

१ बगुला, २ देखे, ३ कमलोंके सर सब्ज, ४ तालाब, ५ पानीसे दूधके अलग करनेपर, ६ मालूम हो।

एक हंस कबीर परमेश्वरका पूजन जानते हैं अन्य किसीको सुध नहीं है। कबीर साहबके हंस दो प्रकारके हैं-एक तो वे लोग हैं, जो सत्यलोकमें हंस आनन्दमग्न हो रहे हैं। दूसरे वे जो लोमश ऋषि तथा कागभुशुण्ड इत्यादिके सदृश हैं जो सदैव संसारमें रहकर संसारके हेरफेरको देखा करते हैं। पर संसारकी कामनाओंसे पृथक् हैं। सांसारिक आनन्दोंकी कांक्षाओंका प्रभाव उनपर तनिक भी नहीं होता। जैसे जलमें कमल रहता है पर उस पर जल असर नहीं करता, ऐसेही हंस कबीर सदैव स्वच्छ निर्विकार रहते हैं। हंस कबीरोंका शरीर पक्के तत्त्वका है। इस कारण उनका कभी भी आवागमन नहीं होता। इसी विषय पर कबीर साहिबने कहा है कि-

शब्द---हंस उड़े वक बैठे आई। रैन गई दिन हूँ चल जाई।
काचे करवे टिकै न पानी। हंस उड़े काया कुम्हलानी ॥

हंस सत्यलोक चला जाता है, बगुला संसारी यहीं रह जाता है। क्योंकि कच्चे करुएमें पानी नहीं टिकता, हंस उड़ जाता है, शरीर यहीं रह जाता है।

लोमश ऋषि।

लोमश ऋषि भी कबीर हंस हैं। सहस्रों वेर ब्रह्मा विष्णु और शिवका जन्म मरण होता है, सहस्रों बेर उत्पत्ति स्थित तथा विनाश हुआ करता है पर आप सदैव एकही तरह रहते हैं। आपका जन्म मरण कभी नहीं होता, आप सदैव आनन्दसे रहते हैं, आपको कभी किसी प्रकारका कष्ट नहीं होता है। जब अग्निकी वर्षा होती है, तब आप अग्निस्वरूप हो जाते हैं। जब वायु अधिक हो जाती है, तब वायुस्वरूप हो जाते हैं। जब जल अधिक होता है, तब आप जल बन कर जलपर तैरते फिरते हैं। ये लोमश ऋषि बड़े प्रसिद्ध हैं। आप सदैव पृथ्वी पर रहते हैं। प्रायः लोग आपको जानते हैं। जब यह जगत् शून्यमें समा जाता है, सब कुछ शून्य हो जाता है तब आप शून्यस्वरूप होकर शून्यमें समा जाते हैं। जब सृष्टिकी उत्पत्ति होती है तब फिर आप पृथ्वीपर आ विराजते हैं। आप सदैव संसारकी सैर किया करते हैं। जब जब कबीर साहब पृथ्वीपर प्रगट होते हैं, तब तब आप सत्यगुरुके चरण चूमते हैं। जब आप प्रगट होकर घूमा करते हैं, तब सब कोई आपका दर्शन कर सकते हैं। जब आप छिप रहते हैं, तब आपका दर्शन दुर्लभ हो जाता है। कभी कभी अजनबीके सदृश कहीं कहीं प्रगट होते हैं और छिप जाते हैं। इस कलियुगमें ऐसे ऋषि मुनि अब छिप रहे हैं। क्योंकि यह समयही बड़ा पापिष्ट है। संस्कृत भाषामें लोस नाम बालका है। महाप्रलयमें एकही लोम इनका गिरता है इस कारण आपका नाम लोमश ऋषि है। (मैंने

सुना था कि, दक्षिणदेशकी किसी वस्तीमें बड़ाही तेजमय एक ऋषि प्रगट हुवा था। कुछ कालपर्यन्त लोगोंको दिखाई दिया फिर अन्तर्धान हो गया। इस ऋषिके शरीरपर बड़े बड़े बाल थे।)

कुष्टम् ऋषि।

कुष्टम् ऋषि अन्तरिक्षमें रहते हैं, आपका वृत्तान्त कबीर साहबके ग्रंथ अम्बुसागर चतुर्थ तरंगमें इस प्रकार लिखा है कि, जलरङ्गजी और कबीर साहबकी पातालमें वार्तालाप हो रही थी जिस युगमें यह बातचीत हुई इस युगका नाम पुरमन युग है, पचास लाख वर्षको इस युगकी उमर थी। तब कबीर साहबने कहा कि, अन्तरिक्षद्वीपमें एक ऐसा पक्षी रहता है कि, सहस्रों- उत्पत्ति स्थित और विनाश हुआ करता है कुष्ट पक्षी सदैव समान भावसे रहता है उसको किसी प्रकारका कष्ट नहीं पहुँचता। वह पक्षी बड़ाही तपस्वी तथा साधु है। वह पक्षी बड़ा तेजस्वी है। कहा है कि, समस्त सृष्टिका कौतुक महा- प्रलयके समय कुष्टमजीके मुंहमें समा जाता है। यह कुष्टम ऋषि हंस कबीर है। सत्यगुरुकी आज्ञासे किसी प्रकार मुंह फेरा इस कारणही उनकी सूरत पक्षीकी हो गई। कबीर साहबद्वारा कुष्टम ऋषिकी बड़ाई तथा श्रेष्ठता सुनकर जलरङ्गजी आदि अनेक हंसोंके मनमें प्रबल कामना हुई कि, कुष्टमजीका दर्शन करें। सबोंने कबीर साहबसे निवेदन किया। कबीर साहबने उनकी प्रार्थना स्वीकार की और सब हंसोंको जलरङ्गजी सहित लेकर चले। उसी प्रकरण में अम्बुसागरसे यहाँ उद्धृत करते हैं –

जलरंग वचन।

चौ० –कह जलरङ्ग सुनो मम बानी। पक्षी दरशन सुरत समानी॥
अब तुम मोहि सङ्गले जाई। पक्षी मो कहँ देहु देखाई॥
तब जलरंग भेज शठहारा। चलो हंस सब संग हमारा॥

ज्ञानी वचन।

यह सुन ज्ञानी वचन उचारा। शब्द विमान होहु असवारा॥
उभय विमान चढे मिल ओई। चले विनोद हंस सँग सोई॥
ज्ञानी अंश चले सब आगे। और जलरङ्ग सङ्ग सब लागे॥
छिनमें गए पंछीके पासा। लोक निरन्तर जहाँ निवासा॥
द्वै अंश तहाँ ठाढ रहाये। पक्षीको तब खबर जनाये॥
पंछी वैठे आसन मारी। युग पचासकी लागी तारी॥

गण वचन ।

शब्दके गुण दीन जगाई । खुलगई तारी देखन लाई ।।
तब गण अस्तुति बिनने लीना । बारबार दंडवत सो कीना ।।
ज्ञानी अंश पुरुषके आगर । अरु जलसङ्गसाथ तेहि नागर ।।
कोटिन हंस संग तिन लाए । पुरी तुम्हार ठाढ़ भय आए ।।

कुष्टम् वचन ।

ज्ञानी जलरँगहि लेओ बुलाई । तिनके सङ्ग और नहिं आई ।।

गण वचन ।

दोनों हंस सुनो मतिवाना । पंछी वचन सुनहु परमाना ।।
सेना सकल छोड़ तुम देहू । द्वै अंश दर्शन तब लेहू ।।
उभय अंश पहुँचे तब जाई । पंछी दर्शन ततछिन जाई ।।
आदर बहुत भाँति तिन कीन्हा । सिहासन रचि बैठक दीन्हा ।।
दृष्टि पसार देख्यो जलरङ्गा । बहुत ज्योति छीके अङ्गा ।।
देखि देह शोभा अधिकाई । रवि शशि कोटिन राम लजाई ।।

कुष्टम् वचन ।

पंछी कहै सुनो हो ज्ञानी । केहि कारण तुम इहवा आनी ।।
तुम तो अंश पुरुषके आगर । केहि कारण पगधारेउ नागर ।।
बडे भाग हम दर्शन पावा । अति आनन्द मोहिंचित आवा ।।
हम पंछी सुमति नहि जाना । तव कीरति प्रभु आदि पुराना ।।
तुम्हरी सुद्धि न कोई पाई । कीन किरतारथ मन्दिर आई ।।

जलरङ्ग वचन ।

तब जलरङ्ग बूझ चित लाई । केतिकयुग इहवाँ भए भाई ।।
ऐते संशय हम चित लाओ । सत्य वचन मोहिं भाष सुनाओ ।।
आदि अन्त तुम जानो बाता । मोसे भाष कहो विख्याता ।।
महापुरुष परलय जब कीना । कौन अधार कहाँ तुम लीना ।।
उलड पलट नभ धरनी जाई । तब सब जीव कहाँ ठहराई ।।

कुष्टम् वचन ।

सुन जलरङ्ग वचन हम भाखौं । युगकी कथा गोई नहिं राखौं ।।
महाप्रलय होवै जेहि बारा । तीनों लोक होहिं जरि छारा ।।
पृथ्वी जरि होवे भर पानी । स्वर्ग पताल जलाहल आनी ।।
दश योजनलों उठे तरङ्गा । महाप्रलय होवे जिव भङ्गा ।।

तीन लोक जब परलय कीन्हा । हम तब जलमें पग नहिं दीन्हा ॥
जैसे फेन जलहि उतराना । ऐसे बैठि पुरुष धर ध्याना ॥
उतपति परलय भाष सुनाई । हम कबीरके अंश कहाई ॥
साखी– जब पक्षी मुख बोलिया, अचरज भया प्रसंग ।
कोट रूप लखि आपनो, दृष्टि देख जलरङ्ग ॥
चौ०– कला देखि चक्रित तब भयऊ । मनको गर्व टूट सब गयऊ ॥
तब कबीर निरखै चितलाई । कौतुक लखि जलरङ्ग जनाई ॥

जलरङ्ग वचन ।

लीला देखि शीश धरदीना । तब कबीरकी अस्तुति कीना ॥
देही धरि हम रहे भुलाना । सत्य पुरुष हम तुमहि न जाना ॥
आदि अन्त तुम पुरुष हमारा । अस्तुतिकर जलरङ्ग अपारा ॥
हम अपने मनमें बड होई । नाम कबीर पुरुष है सोई ॥
यह कौतुक हम देखा जाना । तुमही पुरुष और नहिं आना ॥

हंस वचन ।

अस्तुति करत हंस सब ठाड़े । कौतुक देखि हर्ष चित बाढे ॥
धन्य धन्य तुम आदि गोसांई । पंछी देखि कहो किमिपाई ॥
यही वचन तुम कहो विचारा । तब तुम कर्ता सर्जनहारा ॥

कुष्टम् वचन ।

पंछी कहै सुनो हो भाई । पूरब कथा कहूं समझाई ॥
हम कबीर आज्ञा नहि कीन्हा। ताते पंछी तनु धरलीन्हा ॥
देह धरे भा युग दश लाखा । सत्य वचन हम तुमते भाखा ॥
सहस सताइस परलैकीता । हम आगे इतना युग बीता ॥
हो जलरङ्ग कहाँ लगि कहूं । शून्य असंख्य दीपमें रहूं ॥
वहाँ बैठि परलय हम देखा । बूडे सब जीव परलै पेखा ॥
पुरमनि युगकी कथा सुनाई । देखि हंस हरष मन आई ॥
हीरा यान जलरंगहि दीन्हा । कुष्टम दरश जोहि दिन कीन्हा ॥
हिल मिल भेद एक करजाना । तीनों अंश वहुत सुखमाना ॥
अब पंछी को नाम सुनाऊ । सात नाम मैं प्रकट बताऊं ॥
साखी– जीवसागर आनन्द सुख; हंस उबारण धाम ।
परलय देखे विविधविधि, दायर कुष्टम नाम ॥

जलरङ्ग वचन ।

चौ० –जलरँग पायो हीरा पाना । संशय गत हर्षित मन आना ।।
तुम लीला स्वामी अवगाहा । अंश हंस नहिं पावैं थाहा ।।
छंद—तव चरित अगम अपार पावन लखि न काहूको पर्यो ।
मम चित्त गर्व घटावनो वे गुण देह पंछीको धर्यो ।।
तुम कला जान परी न हमको धरयो अमित स्वरूप हो ।
वहां पुरुष यहां अंशहौ हमजान हसन भूप हो ।।
सोरठा—चरणकमल बलिहार, कीह दंडवत विनय करि ।।
हरषित भये अपार, रङ्क महानिधि जिमि लह्यो ।।
चौ० –हंस खडे सब पौरि द्वारा । तिन सबही मिलि बिनती धारा ।।
कारण कवन दरश नहिं पाये । तुम हंसन नायक प्रभु आये ।।
गए सठिहार हंस लै आवा । तब पीछेको दरश करावा ।।
देखि रूप अति हरष समाना । तब ज्ञानीकी अस्तुति ठाना ।।
छन्द– तुम आदि पुरुष अखण्ड अविचल पतित पावन नाम हो ।
जीव बंधन काटि फंदन जात ले निज धाम हो ।
योगजीत कबीर ज्ञानी नाम जग महँ गाहयाँ ।
अकह अभय अपार तुम गति भाग जिन पद पाहयाँ ।।
सोरठा—जोरे हंस बहुवृन्द, भूलिरहे अरविन्द जिमि ।
गति यामिनि सुखकन्द अरुण चरण लखि अमिय कर ।।
विनय कीन बहुबार, पदपंकजको ध्यान धर ।
हे प्रभु तुम बलिहार, करैं दण्डवत हंस सब ।।

जलरंग वचनसे लेकर अन्तके सोरठा तक जलरंगजी ज्ञानीजी कुष्टम् ऋषि गण और हंसोंका वार्तालाप आया है इसका तात्पर्य साधारण रूपसे नीचे कहे देते हैं—

जलरङ्गजी पातलमें रहते हैं सत्य पुरुषके पुत्रोंमें हैं। उनको आज्ञा मिली है कि जो कोई पृथ्वीपर जावे वो जलरङ्गजी को सूचित करके पृथ्वीके मनुष्योंको मुक्तिका पान दे परमधामको पहुँचावे । साहबने जलरङ्गजीकी बड़ी मर्यादा बढाई है ।

जब कबीर साहब पृथ्वीपर आए सात लाख हंसोंको मुक्तकर अपने साथ लेकर लोकको चले उस समय जलरङ्गजीके स्थानको गये । जलरङ्गजीने पूछा कि आप कौन अंश हो यहाँ कैसे आये हो ? कबीर साहबने कहा कि हम

ज्ञानी अंश हैं। पृथ्वीपर मनुष्योंको मुक्ति देनेके निमित्त गया था। अब सात लाख हंसोंको लेकर सत्यलोक चला हूँ। इस बातपर जलरङ्गीके मनमें कुछ अहङ्कार आया कि मैं सत्यपुरुषका अंश हूं बिना मेरी आज्ञाके कबीर साहब पृथ्वीपर कैसे गए तथा पृथ्वीके हंसोंको लेकर चले हैं। कबीर साहबसे कहा कि सत्यपुरुषकी आज्ञाके विरुद्ध आपने ऐसा कार्य्य क्यों किया ? ऐसा घमंड कबीर साहबने जलरङ्गजीके मनमें देखा जान लिया कि इसने मुझको नहीं पहचाना इस कारणही ऐसा कहता है। समस्त कौतुक वह सत्यगुरु आपही करता है। इस कारण जलरङ्गजीका घमंड तोडनेके निमित्त उन्होंने कुष्टम पक्षीका प्रसंग छेड़कर कहा कि मैं कुष्टम नामक एक पक्षीके पास गया था वह सत्यगुरुका हंस है पक्षीकी सूरतमें है। वह मुझसे अनगिनती युगों सैकडोंही उत्पत्ति स्थिति और विनाशकी कथाएँ कहने लगा। वह पक्षी बडाही तेजोमय है। जब कुष्ठ-मजीके इस विवरणको सुनकर जलरङ्गजीके मनमें दर्शनकी बडी उमङ्ग उत्पन्न हुई। कबीर साहबसे कहा कि अब आप मुझको उनका दर्शन कराओ आपने आज्ञा दी कि विमान प्रस्तुत कराओ। उसी समय विमान प्रस्तुत हुए। जल-रङ्गजी समस्त हंसोंको लिए कुष्टम ऋषिके दर्शनको चले एक पलमें कुष्टम-ऋषिके आश्रम निरन्तर द्वीपमें जा पहुँचे वहाँ पहुँचर देखा तो कुष्टम ऋषिके द्वारपर दो द्वारपाल खड़े थे उन्होंने भीतर जाकर पक्षीको समाचार दिया। पक्षीकी समाधि लग रही थी। कबीर साहबने अपने शब्दसे पक्षीकी समाधि खोलदी। द्वारपालोंने कहा कि महाराज ज्ञानीजी और जलरङ्गजी करोड़ों हंसोंसहित आपके द्वार पर दर्शनार्थ खडे हैं। जलरङ्ग तथा ज्ञानीको भीतर आनेकी आज्ञा दी दूसरे किसीको नहीं दी। ज्ञानी और जलरङ्गजी भीतर गए। जलरङ्गने देखा तो उस पक्षीका ऐसा तेज था कि मानों करोड़ों सूर्य तथा चन्द्र उसके प्रकाशके सामने तुच्छ हैं। बडा प्रकाशित तथा तेजस्वी मुख देखकर जलरङ्गने स्तुति करके पूछा कि आप पक्षीस्वरूप क्यों हो ? तब कुष्टम्ने कहा कि मैं कबीर साहबका चेला हूँ उनकी आज्ञाका उल्लंघन किया इस कारण मेरा स्वरूप इस प्रकारका हो गया। यह बात सुनतेही जलरङ्गजीका घमंड पृथक् हो गया। जान लिया कि कबीर साहब स्वयम् सत्य पुरुष हैं इसमें तनिक भी संदेह नहीं। जलरङ्गजी कबीर साहबकी वंदना स्तुति करते हुए अपनी बुद्धि पश्चात्ताप करके सत्यगुरुके सेवक बनगये। यह इस उद्धृत प्रकरणका तात्पर्य है।

धनुष मुनि ।

ग्रंथ अम्बुसागर आठवें तरंगमें धनुष मुनिकी कथा इस प्रकार लिखी है कि जिस युगमें धनुष मुनि थे उस जुगका नाम श्यामन्त युग था । उस युगकी अवधि दशलाख वर्षकी थी । बारह सौ वर्ष मनुष्यकी आयु होती थी । इस ग्रंथमें सतरह युगोंकी कथा है । सतरह युगोंमें एक युगका नाम श्यामन्त युग है । इसी समय यह ऋषि था जिसे कि धनुष मुनि कहते हैं । धर्मदासने चार प्रश्न किये हैं उन्हींके उत्तरमें यह प्रकरण आया है ।

सत्य कबीर वचन ।

चौ०–नाम धनुष मुनि ऋषी रहाई । तहाँ जाय दीनों हम पाई ॥
तिनकी गति भाखौं परतीती । त्रयोदश सहस गये युग बीती ॥
ऊरध मुख पञ्चाग्नि तपाई । प्राण पुरुष ब्रह्माण्ड चढ़ाई ॥
बैठ लीन देह अतिछीना । साहब देख बहुत बल हीना ॥
तब हम ताहि बूझ चितलाई । केहि कारण तुम कष्ट कराई ॥
केहिकी सेवा काकर जप करहू । काहि ध्यान अन्तरगत धरहू ॥
सो तुम मोहि सुनाओ भाई । अगम अगोचर भेद बताई ॥

धनुष मुनि वचन ।

मूल वस्तु कारण तप कीन्हा । अगम पुरुष सेवा चित दीन्हा ॥
अजपा जाप जपौं मन लाई । सत्य हि अन्तरध्यान धराई ॥
मारकण्डेय बहु प्रलय हो जाहीं । धनुष मुनी हम देखा ताहीं ॥
उतपति परलय देखि बहु वारा । कीन कष्ट नहि साँच विचारा ॥

सत्य कबीर वचन ।

कीन तपस्या कष्ट अपारा । तुम तो चोर कालके चारा ॥
तपते राज नरक है भाई । फिर फिर जन्म धरे भव आई ॥
बहूतेक तपसी भये संसारा । अन्त काल यम कीन्ह अहारा ॥
मूल भेद तुम नाहि न जानी । कष्ट करत देह भइ हानी ॥
वह साहब नहि कष्ट बतावा । सुखदाई होय अग्नि बुझावा ॥
होइ निःकर्म नाम आराधै । सत्य गमन सतगुरुकी साधै ॥
अमरलोकमें पहुँचे जाई । अमर पुरुषके दर्शन पाई ॥

धनुष मुनि वचन ।

तुमतो और लोक रचि लीन्हा । तप अरु योग झूठ सब कीन्हा ॥
और पुरुष तुम तहाँ बतावा । हमरे चित एकौ नहि आवा ॥

लोक आपनो मोहि दिखाओ । वचन प्रतीत सत्य मन लाओ ।।
तब मैं गहूं तुम्हारे वचना । छूटै मोर जनम औ मरना ।।

सतगुरु वचन ।

यह सुनि साहब चले रेंगाई । मुनिको लेकर लोक सिधाई ।।
देखा दृष्टि हंसकी पाँती । युत्थ युत्थ बैठे बहु भाँती ।।

धनुष मुनि वचन ।

तब मुनि गहे धनीके पाईं । अब साहब मोहि लोक दिखाई ।।
सुफल जन्म मम कीन्ह कृतारथ। पावन कोन भयो शुभ स्वारथ ।।
चलो गोसाईं अब हम चीन्हा । देहु पान आपन करलीन्हा ।।

सत्य कबीर वचन ।

मुनि कहलाय बेग भवसागर । ततक्षण शब्द गहै चितनागर ।।
माला ताहि गलेमें दीन्हा । श्रवण सरबनी बाधन लीना ।।
यमसे तिनका तोर्‍यो भाई । हिरदय शुद्धकर पान पवाई ।।
धनुष मुनि लीन्हों परवाना । चाखत पारस कीन्ह पयाना ।।
देह तजिके दीन रेंगाई । पुरुष लोकमें बैठे जाई ।।
हंसहि हंस मिले सब संगा । शब्द पाय भए निरमल अंगा ।।

धनुष मुनि वचन ।

भूलचूक अब मेटु हमारा । तुम जीवनके तारनहारा ।।
यह तो लोक अछय तुम राखा । अगम निगम जेहि गम न भाखा ।।
सुर नर मुनि कोई भेद न पाई । तीन लोक जीवकाल सताई ।।
यह जग मायामोह फंदाना । राग रङ्ग निशिबासर साना ।।
चेतत नाहीं मूढ गँवारा । पकड़ पकड़ यम मारि संघारा ।।
निर्गुन नाम भाषि तुम दीन्हा । ताहि नाग बिरला कोई चीन्हा ।।
तीनों गुणका बड़ा पसारा । जप तप योग यज्ञ मन धारा ।।
पुरुषकी भक्ती कोई न जाने । आप आपको ब्रह्म बखाने ।।
घटमें काल विषम बटपारा । कैसे हंस पहुंचे दरबारा ।।
लोक लोक भाखै नर लोई । लोक मरम नहिं जानै कोई ।।

साखी– धन्य नारि नर नाम धन्य, सर्व बीच निजपान ।
जा परताप यहि लोकमें, पहुँचे लोक ठिकान ।।

तात्पर्य–यह धनुष मुनि अपने समयके बहुत बडे योगी थे । जो अपने योग तथा प्राणायामके बलसे बहुत कालपर्यन्त जीवित रहे थे । उन्होंने अनेकानेक

उत्पत्ति स्थिति तथा विनाशोंको देखा था । जब कबीर साहब उनको मिले तब कबीर साहिबने तबसे क्षीणकाय हुए धनुष ऋषिसे पूछा है कि आप किस लिए इतना कष्ट उठा रहे हैं ? यह सुन कर उक्त ऋषिने उत्तर दिया है कि, मैं मूल वस्तुके लिये तप करता हूँ अजपा जाप जपता हूँ । यह सुनकर कबीर साहिबने कहा है कि इस बखेड़को छोड़ दो सत्यपुरुषकी भक्ति करो । पीछे उन्हें सत्यलोक दिखाया गया है वहाँ धनुष ऋषिने चरण पकड़कर बड़ी प्रशंसा की है । इसी बातका विवरण कहे गये अम्बुसागरके इन वचनोंमें हैं ।

गुप्त मुनि ।

अम्बुसागरके ग्यारहवें तरंगमें नंदी युगकी कथा आयी है उसीमें गुप्त-मुनिका वृत्तान्त आया है । कबीर साहिब धर्मदासजीसे कहते हैं कि, मैं नन्दी युगमें क्रौंचद्वीपमें पहुँचा, वहाँ मुझे गुप्तमुनि मिले मैंने उनके साथ गोष्टी की वो कैसे हुई यह यहाँही उद्धृत करते हैं —

सत्य कबीर बचन ।

युग नन्दी हम कीन पयाना । पुरुष आज्ञाते तहाँ सिधाना ।।
क्रौंच द्वीपमें पहुँच्यो जाई । जहाँ काल दधि सिन्धु बताई ।।
तहवाँ एक हंस निर्वाना । तासे गुष्टि जाय हम ठाना ।।
बैठ अरम्भ गुफा अनुरागा । मायामोह छोड चित पागा ।।
नाम गुप्त मुनि तासु रहाई । दृष्टी मूँदि ध्यान मन लाई ।।
जाय निकट बैठे हम जाके । खोल चक्षु मुनि हम कहि ताके ।।
बूझे तिन तुम को हो भाई । अपनो नाम कहो समझाई ।।
सुन्दर रूप अधिक तनशोभा । देखत रूप उठत अति लोभा ।।
अङ्ग अङ्ग तुम्हरो चमकारा । शोभा मुनि जिमि अगम अपारा ।।
कोट बरस हम इहवां तप कीना । ऐसो रूप न कबहूं चीना ।।
अब तुम कहो आपनो नामा । कौने देश बसो केहि ग्रामा ।।

सत्य कबीर बचन ।

सतगुरु कहे सुनो मुनि राऊ । आपन भेद तोहिं समझाऊँ ।।
हम तो अमरलोकके वासी । जहवाँ अजर पुरुष अविनासी ।।
तहाँ काल नहिं व्यापै फँदा । हंस तहाँ बहु करैं अनन्दा ।।
अमियपुरुष तहाँ आप विराजा । अनहद बाजा बाजै छाया ।।
जीव कष्ट जब देख अपारा । आयसु दीन आय संसारा ।।
ल्यावहु जीव काटि यम फँदा । देओपान मेटो दुःख द्वंदा ।।

तब हम चलैं यहाँ पगधारी । जो चेतो तो लेउं उबारी ॥

गुप्त मुनि वचन ।

तब मुनि ठाढ़ भए कर जोरी । हम चीन्हा तुम बन्दी छोरी ॥
यह बड़ा भाग हमारा जागा । काल कष्ट सब दूरहि भागा ॥
जेहि विधि जीव होय समतूला । सो भाखौ जीवनके मूला ॥
अघ तम पुंज तुम हरहु अपारा । तुम तो आहु पारसे पारा ॥
एक बार मैं देखौ ठामाँ । जहवाँ बसत हंसकर धामाँ ॥
तब तुम पद गहिहौं दृढ़ पावन । करो अनुग्रह हम चित भावन ॥

सत्य कबीर वचन ।

देखि आधीन शब्द मुनि पागा । तब ले चल्यों ताहि वह जागा ॥
प्रथम दिखायो मान सरोवर । सकल कामिनी एक बरोवर ॥
चार भानुजिमि अङ्ग लपेटा । करैं कुतूहल युथ युथ भेटा ॥
मान सरोवर देख तडागू । सीढि २ रवि शशि जनु लागू ॥
सो जल देखत जीव जुड़ाना । उठे तरंग दूर जिमि भाना ॥
तहवा कामिनी मज्जन करहीं । मज्जन करत रूप बड़ धरहीं ॥
कामन खण्ड महा अति पावन । युथ २ बैठि राग तहँ गावन ॥
वह छवि देखि कीन्ह बड़ लोभा । व्याकुल भै चित लखि वह शोभा ॥
नाना भांति फूल फुलवारी । जिमि उडुगण रवि रचि बैठारी ॥

गुप्तमुनि वचन ।

देख दृष्टि तब पद लपटाना । जस जल पाय मीन मन माना ॥
करहु अनुग्रह हम नहि जाइब । ऐसी ठौर बहुरि नहिं आइब ॥

सत्य कबीर वचन ।

जबलग पुरुष नाम नहि भेटै । तब लगि काल त्रासको मेटै ॥
अब तुम चलो आपने ठामाँ । पावहु पुरुष नाम बिशरामाँ ॥
सद्गुरु मुनिवर आयऊ तहवाँ । गुप्त मुनि आशरम रह जहवाँ ॥

गुप्तमुनि वचन ।

निरगुण सरगुन दोनों भाखू । है प्रभु श्रवण मुनन अभिलाखू ॥
कौन ज्ञानते तुमको पाउब । सतगुरु तासु युगति फरमाउब ॥

सत्य कबीर वचन ।

निर्गुण ज्ञान मुक्ति कर बासा । सरगुण ज्ञान देह परकासा ॥
सद्गुरु ज्ञान परख हम पावा । निर्गुण ज्ञान मोहिं चित भावा ॥

सगुणहु नाम अनन्त बतावत । निर्गुण नाम रहत घर पावत ॥
सरगुण नाम सकल संसारा । निर्गुण है एक नाम हमारा ॥
सरगुण नाम सकल भरमावै । निर्गुण नाम हंस घर आवै ॥
सरगुण निरगुन रहे अकेला । ताके संग गुरू नहिं चेला ॥
मारग झीन सुनो मुनि ज्ञानी । लगवत मकर तार जो तानी ॥
गुप्त मुनीको चौका कीना । लखिके पान तुरत तेहि दीना ॥
युगनन्दीकी अवधि बखानो । एक करोड़ बरस परमानो ॥
मानुष अवधि सहस रह तीना । तहाँ गुप्त मुनि भये अधीना ॥
सद्गुरु मुनिवर लै चले डोरी । टूट घाट अठासि करोरी ॥
देखत मुनि हंसन युथ आवा । सकल साज मंगल भल गावा,॥
अनहद बाजन बाजे लागा । मंगल भाँति भाँति उठ रागा ॥
हंस परछ संग गहिलीना । धन्य हंस सद्गुरु भल चीना ॥
विषय वास छाडे भल हेता । पद परताप काल तुम जीता ॥

तात्पर्य —यह मुनि बड़ा तपस्वी था करोडों वर्षपर्य्यन्त एक स्थानपर तप किया । कबीर साहबने उनको लोकको पहुँचाया जिस समय नन्दीयुगकी स्थिति एक करोड वर्षकी थी, उस समय मनुष्योंकी आयु तीन सहस्र वर्षकी होती थी, जैसे गुप्त मुनिको पहले सत्यगुरुने अंतरिक्षकी सैर करवाई फिर परमधामको भेज दिया । ऐसेही अनेकों लोगोंको लोक दिखलाकर पलटा लाये प्रारब्ध भोगके पीछे लोक ले गये ।

दत्तात्रेय और कबीर ।

आठवी अध्यायमें कह दिया है कि, दत्तात्रेय भी पराभक्तिरूपा प्रेम-मदिराके दीवाने थे उनकी उत्पत्ति भी कही है जैसी कि, भागवतने कही है तथा जैसा कि, कबीर सागर १० आगम निगमबोधमें लिखी हुई है वहां केवल उतना ही अन्तर हुआ है कि, गुरुओंकी जगह २४ चेला कह दिये हैं । अब कबीर साहिब और उनकी सत्संगचर्य्याको लिखते हैं—

देवदत्त वचन—स्वामी ! मन, पवन शब्द नाद, ब्रह्म, हंस, शिव, शून्य और काल कौन है ?

अविनाशी वचन मन चञ्चल पवन निराकार, शब्द नाद, अनहद ब्रह्म, हंस और अकेला है ।

देवदत्त वचन—कहाँ बसे मन, कहाँ बसे पवन, कहाँ बसे शब्द, कहाँ बसे

नाद, कहाँ बसे ब्रह्म, कहाँ बसे हंस, कहाँ बसे जीव, कहाँ बसे शिव, कहाँ बसे अविनाशी, कहाँ बसे काल ?

अविनाशी वचन–हृदय बसे मन, नाभि बसै पवन, कण्ठ बसै शब्द, श्रवणबसे नाद, नासिका बसे हंस, जिह्वा बसे जीव, नैत्र बसे शिव अकेला बसै अविनाशी और कुबुद्धिमें काल वसता है।

देवदत्त वचन–हृदय न होता तो कहाँ होता मन, नाभि न होती तो कहाँ होता पवन, कण्ठ न होता तो कहाँ होता शब्द, श्रवण न होता तो कहाँ होता नाद, ब्रह्माण्ड न होता तो कहाँ होता ब्रह्म, नासिका न होती तो कहाँ होता हंस, इंगला न होती तो कहाँ होता शिव, नेत्र न होता तो कहाँ होता निरञ्जन और काया न होती तो काल कहाँ होता ?

अविनाशी वचन– हृदय न होता तो मन निर्लेव होता, नाभि न होती तो शब्द निराकार होता, श्रवण न होता तो नाद निराधार होता, मुख, न होता तो ब्रह्म मध्यमें होता, नासिका न होती तो हंस सत्यमें होता, इङ्गला न होती तो चन्दमें जीव होता, पिंगला न होती तो शिव सूर्यमें होता, पुत्र न होता तो निरञ्जन होता, निरन्तर काया न होती तो काल शून्यमें होता।

देवदत्त वचन– हे स्वामी ! मनका कौन जीव है ? पवनका कौन जीव है कालका कौन जीव है।

अविनाशी वचन–पवनका जीव शब्द, शब्दका जीव नाद, नादका जीव बीज, बीजका जीव हंस, हंसका जीवना जीव।

देवदत्त वचन—स्वामी कहाँ से निरञ्जनकी उत्पत्ति है ? कहाँसे पवनकी उत्पत्ति ?

अविनाशी वचन — आदिते सत्य उत्पन्न है। सत्यते तत् उत्पन्न ततते शब्द। शब्दते उत्पन्न अलेख है। अलेखते उत्पन्न अलील है। अलीलते उत्पन्न निरञ्जन है। निरञ्जनते उत्पन्न शिव है। शिवते उत्पन्न जीव है। जीवते उत्पन्न हंस है। हंसते उत्पन्न ब्रह्म है। ब्रह्मनादते शब्द उत्पन्न है। शब्दते पवन और पवनते मन उत्पन्न है।

देवदत्त वचन–हे स्वामी ! तन छूटे मन कहाँ समाना, पवन कहाँ समाना, शब्द कहाँ समाना, नाद कहाँ समाना, ब्रह्म कहाँ समाना, हंस कहाँ समाना, जीव, कहाँ समाना, निरञ्जन कहाँ समाना और अलील कहाँ समाना है।

अविनाशी वचन–तन छूटे मन पवनमें समाना, पवन शब्दमें समाना, शब्द नादमें समाना, नाद ब्रह्ममें समाना, ब्रह्म हंसमें समाना, हंस जीवमें

समाना, जीव शिवमें समाना, शिव निरञ्जनमें समाना, निरञ्जन अलीलमें समाना, अलील अलेखमें समाना, अलेख आदिमें समाना, आदि सत्यमें समाना, सत्य आपही आप, माता नहीं, बाप नहीं, गाँव नहीं, ठाँव नहीं, जन्म नहीं, मरण नहीं, रूप नहीं, रेख नहीं, दूर नहीं, नियरे नहीं।

चौ०-पूरण ब्रह्म जो दीसै देही। सत्यगुरु बतावै दर्शै तबहीं ॥
भगत जनाँ गम पावे कोई। सद्गुरु दाया जापर होई ॥

यह दत्त और कबीरके सत्संगका अमृत दौर है, जिसे पीकर मनुष्य हो जाता है।

कबीर और नारद।

नारदजी विष्णुके परम भक्त एवं विष्णुके अवतार कहे जाते हैं। बीना बजाना गाना तथा प्रेम (इश्क) में मग्न रहना नाचना आपका काम है। सगुण भक्तिमें आपने सहस्रों मनुष्योंको लगाया। जान-बूझकर आपने संसार छोड़ दिया पर जब कबीर साहबसे साक्षात्कार हुआ उन्होंने कबीर साहबकी बातें भली-भाँति समझीं, भली भाँति सोची; तब सत्यगुरुके चरणोंपर गिरकर शिष्य होगए। सद्गुरुने उनकी कमीको पूरा कर दिया। कलियुगमें आकर तो स्वयं कबीर साहिबने भी उनकी प्रेम मदिराके गुण गाये हैं।

सनकादिक और कबीर।

सनकादिक बड़े प्रसिद्ध ऋषि हैं, बड़े ज्ञानी और तपस्वी हैं, वे भी कबीर साहबका उपदेश सुनकर हंस कबीर हो गए। जब तक सत्यगुरुका ज्ञान नहीं सुना तब तक दूसरे फन्दोंमें थे, पीछे तो ऐसे भक्त बने कि, कबीर साहिबने भी आपके गुण गाये हैं।

कबीरजी और ऋषभनाथ।

ऋषभनाथ जैनधर्म्मके प्रथम तीर्थंकर और श्रेष्ठ पुरुष थे। चौबीस तीर्थंकरोंमें केवल आपको ही श्रेष्ठता है। पहले तो जैनधर्म्मके समस्त कार्य आपने ठहराए, जैनधर्म्म पृथ्वीपर प्रचलित किया। जब कबीर साहबसे आपका साक्षात्कार हुआ, जैनधर्म्मका भेद सत्यगुरुने कह सुनाया। ऋषभनाथने सब बातें जानलीं, सच्चे सत्यगुरुकी शिक्षा मिली, तब उनने सत्यगुरुके चरण पकड़कर शिष्य हो गये।

कबीर और भुशुण्डि।

लोमश ऋषिकी तरह भुशुण्डि ऋषि संसारमें रहते हैं कितनोही उत्पत्ति स्थित तथा विनाश देखा करते हैं। समस्त कौतुक उनकी दृष्टितलेसे बीता

करता है । भुशुण्ड ऋषिको कागभुशुण्ड भी कहते हैं, यह कागभुशुण्ड चिरंजीव हैं । कोई कोई ऋषिगण जो आपके स्थानको जानते हैं वे पक्का दर्शन करते हैं । आप हंस कबीर हैं स्वसंवेदधर्म्मका उपदेश करते हैं । कबीर साहबने आपको सम्पूर्ण शब्द प्रदान किया जहाँ चाहैं वहाँ रहैं, उनकी इच्छा है । वशिष्ठ पुराणमें उनकी उत्पत्ति शिवजीद्वारा लिखी है । सो न मालूम किस सृष्टिमें आप शिवजी-द्वारा उत्पन्न हुए थे । कितनी उत्पत्ति स्थित तथा विनाश देखते रहते हैं । जबसे कबीर साहबका चिह्न लगा तबसे अजर और अमर हो गये । भुशुण्ड ऋषिके समान अनगिनती हंस कबीर हैं । ये समय समय पर संसारमें विचरा करते हैं ।

कबीर और राजा जनक ।

राजा जनक एक सुप्रख्यात ज्ञानी थे, कितने ऋषि मुनिगण आपके दरबारमें रहा करते थे, सदैव धर्म और ज्ञानकी चर्चा हुआ करती थी । आप विदेह कहलाते थे, उनको कबीर साहबका उपदेश मिला जिससे वे अपनी भूलको छोड़ करके हंस कबीर हो गये । यह राजा जनक त्रेतायुगमें हुए, आप धर्म्म तथा ज्ञानके बड़े ढूंढनेवाले थे, सत्यगुरुके मिलनेसे आपकी खोज पूरी होगई । तभीसे जनकपुरीकी गद्दीपर बैठनेवाले सब राजा विदेह कहलाने लगे । ज्ञानियोंमें जनकजीका मुख्य स्थान है ।

बङ्ग-देशके राजा ।

अम्बुसागरके सप्तम तरंगमें तारन युगकी कथा आयी है, कबीर साहबने धर्म्मदासजीको सुनाई है, उस कथाका प्रारंभ—

चौ० —सुकृत सुनो आदिकी बानी । सत्य पुरुष बैठे और ज्ञानी ।।
तारन युग परवाना आनी । चार लाख युग अवधि बखानी ।।
उत्तर पंथ रहे एक राई । धर्म्मदास तेहि कथा सुनाई ।।

यहाँसे किया है । कबीर साहब धर्म्मदाससे कहते हैं कि, उत्तरकी ओर एक राजा रहता था, वह राजा बड़ा अत्याचारी था । साधु योगी इत्यादिको पकड़कर कैद किया करता था । ब्राह्मण बैरागी आदिको देखकर जल मरता था । यदि ब्राह्मण आदिके मस्तकपर तिलक देखे तो उस तिलकपर खपड़ी घसवाता था । ब्राह्मणको सोंटा मार जनेऊको तोड़कर आगमें डाल देता था । उसके समयमें न कोई वेद पुराण पढ़ सकता था न भक्ति कर सकता था । न कोई परमेश्वरका नाम ही लेने पाता था । जङ्गली पशु, हिरन आदि घास न चरने पाते, सबको मारकर खा जाता था । अनगिनती पशुओंको मारता, बड़ा दुःख देता । कबीर साहबका कथन है कि, उसकी दशाको देखकर हम वहाँ गये ।

उस राजाके द्वार पर एक बृहत् वट वृक्ष था, उस वट वृक्षकी छायामें हम आसन मारकर बैठ गए। उस समय उस राजाकी एक लौंडी बाहर निकली साहबके समीप आ खड़ी हुई। दंडवत् प्रणाम करके पूछने लगी कि, महाराज! आप कहाँसे आए हो किस देशमें रहते हो, आप किस कार्य्यके निमित्त आए हो जो कुछ आप माँगो सो सब कुछ मैं आपको दूँगी, भिक्षा लेकर आप चले जाओ। यहाँका राजा बड़ा अत्याचारी है, जिस समय वह आपको देखेगा आपकी ग्रीवा उडा देगा। क्योंकि वह बड़ा अत्याचारी तथा निर्दयी है। वह ऐसा अत्याचारी है कि, उसमें तनिकभी दया नहीं। साधु ब्राह्मणको बड़ा दुःख दिया करता है। वह राजा इक्कीस डचोढ़ीके भीतर रहता है, वहाँ कोई नहीं जा सकता। केवल उसकी रानी उसके साथ रहती है। वहाँ किसीकी पहुँच नहीं। तब कबीर साहबने उस दासीसे कहा कि उस राजासे जाकर कहो कि, वह मेरे सम्मुख आवे, जब मेरे सामने आवेगा तो उसका, हृदय प्रकाशित हो जावेगा। यदि वह मेरा कहना मानेगा तो उसकी मुक्ति हो जावेगी। ऐ दासी तू भयभीत न हो, हमारा समाचार राजासे कहो। तब वह दासी डरती काँपती हुई, बीस डचोढ़ी पार कर जब राजमहलकी डचोढ़ीपर पहुँची, इक्कीसवें द्वारके द्वारपालसे कहा कि, तुम जाकर राजा साहबसे निवेदन करो कि—ऐ महाराज! एक सिद्ध आया है, द्वारपर आपको बुलाता है। यह बात सुनकर उस द्वारपालको बड़ा भय उत्पन्न हुवा वो सोचने लगा कि, यदि मैं जाकर यह समाचार राजाको कहूँ तो राजा निश्चय मेरी ग्रीवा धडपरसे उडवा देगा। उस दासीने उस द्वारपालको समझाया कि, तुम कुछ भय मत करो, वह सिद्धही नहीं बरन् समस्त सृष्टिका रचयिता है (क्योंकि उस दासीने कबीर साहबके प्रतापको देखा था)। हे द्वारपाल! तुम कदापि भयभीत न हो। सुकनियाँ दासीके समझानेसे वह द्वारपाल राजाके समीप गया। दंडवत् प्रणाम करके निवेदन करने लगा कि, ऐ महाराज! द्वार पर एक सिद्ध आया है, सुकनियाँ दासीने मुझे समाचार दिया है, कि, वह आपको बुलाता है। यह बात सुनतेही राजाने अत्यंत क्रुद्ध होकर आज्ञा दी कि, उस सिद्धको मार डालो, सूकनियाँ को भी फाँसी लटकाओ। जब उस द्वारपालने आकर सूकनियाँको यह समाचार पहुँचाया तो इसको सुनतेही वह भागकर द्वारपर आई कबीर साहसे कहा कि, ऐ महाराज! आप यहाँ से उठ जाओ। क्योंकि, राजाने ऐसी आज्ञा दी है। कबीर साहब द्वारपरसे उठकर तालाबपर गए, वहाँ पर बैठे रहे। इस राजाका यह नियम था कि, जब सवा-पहर दिन चढ़ता था तब सोकर उठता था। उस समय छतिया नामक एक दासी

सुवर्णके घड़ेमें तालाबसे जल लेकर राजाको नहलाया करती थी। वह लौंड़ी जल भरनेको उस तालाबपर आई घड़ा जलमें डुबोया, कबीर साहबने उसको ऐसा कौतुक दिखलाया कि, जब वह घड़ा भरकर जलसे बाहर निकालने लगी तो वह न निकला, उसने बड़ा बल किया पर उससे कुछ नहीं हुआ। अनेक लोग पकड़कर उस घडेको अपनी ओर खींचने लगे पर वह घड़ा अपने स्थानसे नहीं हिला, फिर बीस सहस्र मनुष्य पकड़कर उस घड़ेको खींचने लगे तरे भी घड़ेमें तनिक हील डोल उत्पन्न नहीं हुई। राजा रानीको समाचार मिला, रानीको भय उत्पन्न हुआ। राजाभी बड़ाही आश्चर्यान्वित हुवा स्वयम् अनेक मनुष्यों सहित उस तालाबपर आया, हाथीयोंको बुलवाकर वह घड़ा खिचवाने लगा। एक हजार हाथी तथा चार लाख मनुष्य लगकर वह घड़ा खींचने लगे। घड़ेने तनिक भी अपनी जगह नहीं छोड़ी। हाथीवान् हाथियोंको मारता था, सब हाथी चिङ्घाड़ मारते थे पर कोई लाभ नहीं हुआ। राजाके मनमें बड़ा संदेह उत्पन्न हुआ। तब अपने मंत्रियों तथा सभासदोंसे कहने लगा कि, अब कौनसी युक्ति करनी चाहिये? यह वृत्त अम्बुसागरमें इस निम्न छन्दसे पहिले गाया। यहां उसीका सार हिन्दीमें कह दिया गया है।

छन्द– राव पेखत भयो व्याकुल वारिजल बहु नीर ही।
आज अचरज भयो अति यह घडाकह यह किन गही ॥
सहस कुंजर लाग मानुष नहीं खिचत सो टरयो।
कीन्ह बहुत उपाय हान्यो अभय देखत जीव डऱ्यो ॥

सोरठा—मंत्री करो विचार, मम घट अति संशय भयो।
व्याकुल चित्त हमार, कीजै कौन उपाय अब ॥

चौ०– मंत्री कहै सुनिये महाराजा। बचन कहत मोहिं आवे लाजा ॥
सिद्ध एक आवा दरवाजा। तापर आप कीन्ह एतराजा ॥
सो स्वामी यह चरित दिखावा। हमरे चित्त भिरती यह भावा ॥

उद्धृत छन्दसे लेकर चौपाई तकका तात्पर्य्य थोडेमेंही लिखे देते हैं– कबीर साहब धर्म्मदासजीसे कहते हैं कि, इस राजाके मनमें जब अत्यंत व्यग्रता उत्पन्न हुई अपने मंत्रियों तथा मुसाहबोंसे कहा कि, अब कौनसी युक्ति करें इसका क्या कारण है कि ,घड़ा नहीं निकलता? तब उन बुद्धिमानोंमेंसे एकने सोच समझकर कहा कि, महाराज! हमको तो यह जान पड़ता है कि, यह स्वामी जो आपके द्वारपर आया था, आप उसपर क्रुद्ध हुए थे उसका ही यह कौतुक है।

"यहि अन्तर। यक कीन्ह तमाशा सो चरित्र भाषों धर्मदासा।" यहाँ से लेकर "सकलजीव कीन्हें परमाना, अब सब साहिब सुधरे काना" यहाँतक जो कुछ प्रकरण अम्बुसागरमें आया है उसका सार यहीं लिखते हैं कि, फिर कबीर साहब धर्म्मदासजीसे कहते हैं कि, ए धर्म्मदास! हमने एक फिर ऐसा कौतुक दिखलाया कि, उस तालाबके भीतर एक बटवृक्ष था, उस वृक्षपर मैं तोता होकर बैठ गया। इस तोतेको देखकर शिकारी दौड़ आया, तोतेके ऊपर तीर चलाया। वह तीर तोतेको तो नहीं लगा, पर शिकारीकी ओर पलट आया, वह शिकारी भयभीत होकर भाग गया, उसने जाकर दो चार मनुष्योंसे इस तोतेका समाचार दिया। तब अन्यान्य कितनेही लोग दौड़कर आए गुलेल द्वारा तोतेको मारने लगे! जिन लोगोंने गुलेल चलाया सबकी गुलेल टुकड़े टुकड़े हो गई। दश बीस पचास मनुष्य खड़े कौतुक देख रहे थे। तालियाँ बजा बजाकर उस तोतेको उडाते पर वह न उड़ता लोग ढ़ोल बजाते तो भी वह अपनी जगहसे न उड़ता। लोगोंने राजाको समाचार दिया कि, महाराज! बटवृक्षपर एक अतिसुन्दर तोता बैठ रहा है। न उसको तीर गुलेल इत्यादि लगता है; न वह तालियाँ ढोल आदि बजानेसे उड़ता है; तात्पर्य यह कि, किसी युक्तिसे वह अपने स्थानसे नहीं उड़ता। इतना सुनतेही वो राजा वहाँ आ पहुँचा उस तोतेको वृक्षपर बैठा देखकर चोबदारोंको आज्ञा दी कि, शिकारियोंको बुलावो। सब शिकारी तुरंत आकर उपस्थित हुए। चिड़ीमारोंसे राजाने कहा कि, जो कोई इस तोतेको फँसाकर मेरे पास लावेगा वह जो कुछ माँगेगा, मैं उसको दूंगा। तब सारे शिकारी उस तोतेको फँसाने लगे। वे लोग बड़ा फँदा बनाते तो वह तोता छोटा हो जाता। जब वह फँदा छोटा करें तब वह तोता बड़ा हो जाता। सहस्रों युक्तियाँ की गई पर वह तोता पकड़नेमें नहीं आया। राजा उस तोतेका सौंदर्य देख ऐसा आसक्त हुवा कि, सात दिवसोंपर्यंत भोजन नहीं किया। वह तोता बटवृक्षपरसे उठकर राजप्रसाद पर आ बैठा। इस तोतेका शरीर ऐसा तेजोमय तथा कान्तियुक्त था कि, जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता, राजाने जान लिया कि, यह तो वही शुक है जिसके निमित्त मैंने बडे यत्न किए थे। तब रानीने दूध चावल, सुवर्णकी कटोरीमें इस शुकके सामने रक्खा। वह आकर रानीके हाथपर बैठ गया, उस समय राजा तथा रानीको बड़ा हर्ष हुवा। सुनारोंको बुलाकर आज्ञा दी कि, तुममें जो बड़ा निपुण हो वह इस शुकके लिये पिंजरा बनावे। पच्चीस सहस्र अशरफियाँ सोनारोंको दीं, सुनार पिंजरा बनाने लगे। उस पिंजरेमें सवालाख हीरे तथा मोती लगे।

सात सहस्र लाल लगे। जब वह पिंजरा प्रस्तुत हुवा तब उसमें उस तोतेको रक्खा, रानी तोतेको पढ़ाने लगी कि, तोता! तू राम राम कह। उस समय तोता बोला कि, ए राजा रानी! ध्यान दो कि, तुम्हारे ऊपर कालचक्र घूमता है उसके भयसे भयभीत हो। यह बात सुनकर राजा कुछेक तो सचेत हुवा फिर निश्चिंतता तथा धनके मदमें किसको ज्ञान होता है? तब उस तोतेने सोचा कि, राजाको इस प्रकार ज्ञान नहीं होगा। अपनी शक्ति इस प्रकार प्रगट कि,की राजाके महलोंमें आग लग गई, सब कुछ जलने लगा। जब हाथी और घोड़ों पर आग दौड़ी, तब राजा घबराकर रानीसे कहने लगा कि, तोता जला कि बचा? कारण यह कि, राजाको तो इसी तोतेसे बड़ा प्रेम था। रानी रोकर कहने लगी कि तोता तो जला अब हमारे भाग्य फूटे। राजाने आदमियोंको बुलाकर कहा कि, तोतेको देखो। लोगोंने देखा कि, समस्त धन सम्पत्ति जल रहा है पर तोतेके पिंजरेको अग्निसे तनिक भी हानि नहीं पहुँचती। पिंजरेपर्यन्त तनिक भी गर्मी नहीं पहुँचती है। पश्चात् अग्नि बुझी राजा रानी देखने दौड़े। तोतेको पिंजरे सहित सुरक्षित पाकर अत्यन्त आह्लादित हुए। तोतेको अपने हाथसे पकड़कर अपनी छातीसे लगाया। राजा रानी शोचने लगे कि, यह शुक नहीं, वरन् सिर्जनहार है। राजा रानी हाथ बाँधकर निवेदन करने लगे कि, ऐ तोता! तुम बारह बरस हमारे घर रहे, अब तुम अपना तात्पर्य बताओ। तब वह तोता पिंजरेसे बाहर निकल कबीर साहबका स्वरूप हो राजाको समझाने लगा कि, ऐ राजा! मैं तुम्हारा सत्यगुरु हूँ, तुम्हें मुक्तिप्रदानार्थ आया हूँ कि, अब तुम यह देह छोड़कर सत्य लोकको चलो। तब राजा रानीने सत्यगुरुको पहचाना, आपके चरणों पर गिर पड़े राजा रानी अपनी सन्तानों सहित सत्यगुरुके चरणों से चमट गए, रत्नजटित स्वर्णके सिंहासनपर सत्यगुरुको बैठाया सब सेवा करने लगे। इस राजाके चौदाहवीं रातके चंद्रके समान तेरह रानियाँ थीं, अति स्वरूपवती पाँच बेटियाँ और चार पुत्र थे। वे सब कबीर साहबसे दीक्षा लेकर भक्ति करने लगे इसके साथ अन्यान्य मनुष्योंने भी सत्यगुरुकी दीक्षा ली। कुल एकतीस मनुष्य परम धामको पहुँचे। इस राजाके समयमें अट्ठाईस हाथ लम्बा और चौदह हाथ चौड़ा पान था, दो हाथीके बराबर नारियल था। तब राजा उसके साथी गदगद वाणीसे सत्यगुरुकी वंदना करने लगे।

स्तुति—हंस नायक परम लायक, आय प्रभु दर्शन दियो।
काग पलट, मरालकर, भौसिंधु बूडत गहि लियो॥

ए सत्यलोकमें रहनेवाले हंसोंके स्वामी! हे समर्थ प्रभो! आपने

मुझपर बड़ी कृपा की । जो कि, मुझे अपने आप आकर दर्शन देदिया, आपने कौवेको हंस बना दिया । एवं भवसागरमें डूबते हुए को बचा लिया ।

सोरठा—सद्‌गुरु चरण मयंक, चित चकोर राजा निरखि ।
कीन्ह मोहिं निःशंक, जरा मरण भ्रम मिटि गयो ॥

सद्‌गुरुके चरणरूपी निष्कलंक चन्द्रमाको राजाका चित्तरूपी चकोर निश्चल भावसे देखने लगा और बोला कि, हे गुरो ! आपने मुझे निशंक कर दिया मेरे जरा, मरण और भ्रम सब मिट गये ।

मुस०—करे को रहम तुझबिन आसियाँ पर । नजर जिसकी नशत नियत जयाँपर ॥
कि है तू साहबांका साहब आला । वहाँ सत्पुरुष सो सद्‌गुरु यहाँ पर ॥
जिसे तूने अजर जामा पिन्हाना । हवस उसको न पाशिश परनियाँ पर ॥
बिखेरादाना महसूसात सैयाद । वदामें बेदबानीके बयाँपर ॥
लगाया मुह्र तूने जिस्पे उसको । नजर क्या मार्ग रूहे माकियाँ पर ॥
तू है कबीर सबका दीनों ईमाँ । पतितपावन है ग़फ्फ़ूरर्रहीमाँ ॥
नेंवाजिशकी निगह कुल आलमो पर । बजब्बारो अफू भी जालिमों पर ॥
खता कारों गुनहगारोंको बखशे । रहम तू क्यों न कर तुम तालिबों पर ॥
मनी और किब्रकी बू देख जिसमें । महरने है कहर सब गालिबों पर ॥
करेपर खाकसार इल्मों अमलसे । रतन बखशील फिरो तन कालिबों पर ॥
नजर हो मेह्रतुझ जिस बद गुहर पर । बढावे दरजः सदहा सालिहों पर ॥ तू. ॥
न जाना होश मन्दाने जमानः । बसर कर ज़िन्दगानी ज़ाहिदान ।
रेयाज़त ओ इबादत शाफ फ़ाकः । करोड़ों जन्म बीते इह बहानः ।
न पाया भेद इसरारे निहानी । फिर हर दर व हर खाने बखानः ॥
हुआ रहबर तु जिसका आपही आप । तेरी रहमत बना नाम निशानः ॥
दिखावे रह बजुज तुझ कौन आजिज़ । बतारीकी फिरे सब अबलहान ॥
तू है कबीर सबका दीनों ईमा । पतित पावन ग़फ्फ़ूरर्रहीमाँ ॥

हिरण्यकशिपु, रावण, कंस, नमरूद, शद्दाद, फिरऊन इत्यादि तो ऐसे अत्याचारी न थे जैसा कि, यह राजा था । यह तो इनसे बहुत बढ़कर था । कैसे अत्याचार तथा पापसे पृथ्वीको भर दिया निर्दोषोंके रक्तसे लाल कर दिया । देखो दयालु सत्यगुरुने उस परभी दया की कि, उसको उसके आत्मसंबंधियों सहित परम धामको पहुँचा दिया । इसी साहबका नाम दयालु तथा निर्दोष हैं । अन्य किसीका कदापि नहीं हो सकता । यही साहब कुल श्रेष्ठ गुणोंसे विभू-षित हैं । दूसरा कोई नहीं है । जो नितान्तही क्रोधसे योग्य था उस पर ऐसा

अनुग्रह हुआ । ऐसे साहबको जो न पहचाने उसके दुर्भाग्य ही समझने चाहिये । यह ऊपर कहे हुए मुसद्दतका सार है ।

राजा योगधीर ।

यह राजा सत्ययुगमें था । उसके घर सत्य सुकृतजी (कबीर साहब) गए और वह राजा बडा अभिमानी था वेदपाठी भी था । दूसरोंको बहुत कुछ उपदेश दिया करता था । बारह वर्षपर्यन्त सत्यसुकृतजी महाराज उसको सिखाते रहे । वह बारह वर्ष पर्य्यन्त तल्वार लेकर मारनेको दौड़ा । सत्यगुरुने समझाया कि, ऐ राजा ! इस पृथ्वीपर बड़े बड़े राजा हो गए । ऐसे बलिष्ठ तथा प्रभावशाली राजे थे कि, तारोंके समान उनके पास अश्व थे । वे ऐसे शीघ्रगामी तथा तेज चलनेवाले थे कि, तीन पगमें समस्त पृथ्वीको समाप्त कर जावें । एक पलभर में सहस्रों कोश उड़ जावें । सो सब मरकर कालके गालमें जावसें । तू उनके सामने क्या वस्तु है ! ए राजा ? तू इतने घमंडमें क्यों है । यह किसीका नहीं रहा है ।

एक दिन लोग राजाके पास आए निवेदन किया कि, ऐ राजा ! हमको यह बड़ा दुःख है कि, हमारी मुक्ति किस प्रकार हो, आवागमनसे कैसे छूटें ? तीनों तापोंसे किस प्रकार बचें ? कालका बड़ा भारी भय है । हमको इससे कौन बचावे ? आप तो हमारे महाराजा हो, । हमको कालके भयसे बचाओ । आप हमारे धनी तथा स्वामी हो, हमें इन दोनों दुःखोंसे बचाओ । एक गर्भमें आने तथा दूसरे अग्निदाहसे आप हमारी रक्षा करें ।

राजा योगधीर वचन ।

चौ०—राजा कह मैं बड़ा अभागा । यही दुःख मोहूको लागा ॥
जो कोइ इनसे लेइ छोड़ाई । ताको पावँ हम धरहीं भाई ॥
गरभ वास जो मेटैं फेरा । मैं अब होउं उन्हींका चेरा ॥

राजाने कहा कि, ऐसा कौन है जो आवागमनका दुःख दूर करे, बड़े बड़े सिद्ध साधु ऋषि मुनि और देवता इत्यादि आवागमनके बंधनमें पड़े हैं । मेरे मनमें बडी चिन्ता है कि, गर्भमें आनेकी बात कैसे छूटे ? तब लोगोंने समझाया कि, ऐ राजा ! सुन । सत्य सुकृतजी महाराजमें यह बल है दूसरोंमें नहीं, वह तो स्वयम् पुराण पुरुष हैं । इस सर्वशक्तिमान्‌का लोक जुदा है । तीनों गुण अपार हैं इस साहबका देश पर है । यह तीनों लोक तीनों गुणोंके अधीन हैं । इस सत्य-

गुरुका देश न्यारा है, वहाँ जो कोई जाता है अमर हो जाता है। वह अजर अमर घरमें जाकर रहता है। फिर भवसागरमें कभी नहीं आता।

जब इतनी बात लोगोंने कही तब राजाके मनमें सोच समझ आई। उक्त राजा सत्यगुरुके चरणोंपर गिरा। सत्यगुरुने दया करके इस राजाको अपनी दीक्षा दी उक्त राजाके साथ नौलाख मनुष्य सत्य सुकृतजीके शिष्य हुए। सब पर सत्यगुरुकी कृपा दृष्टि हुई। राजाका अंतःकरण शुद्ध हो गया अपनी समस्त रानियों तथा पुत्रोंसहित सत्यगुरुके चरणोंमें लग गया। इस राजाका पिता जो मरकर हाथीकी देहमें था उसपर भी सत्यगुरुकी कृपा हुई, वह भी श्रेष्ठ तथा प्रतिष्ठित हुआ। सबोंने परम शुद्धताको प्राप्त कर मुक्ति पाई। राजा कनक हाथीके शरीरसे छुटकारा पाकर सत्यगुरुका अनुगृहीत हुवा। यह बहुत बड़ा राजा था उसके पास लाखों सिपाही सोलह सहस्र बाँदियाँ और अठारह सहस्र हाथी थे। राजा रानी इत्यादिने सत्यगुरुकी दीक्षा पाई। सत्यगुरुने उनके शिरपर हाथ रखा तब सबको अगम ज्ञान हो गया। सब भविष्यकी बातें और तीनों कालका हाल जानने लगे। समस्त संसारके पदार्थोंको तुच्छ तथा नाशमान समझने लगे। यद्यपि उसके अधीन बडी सम्पत्ति तथा अतुल वैभव था तो भी उसमें उनकी आसक्ति नहीं थी।

उस राजाके गृहमें कबीर साहब इसी प्रकार रहे थे कि, जैसे नरहर ब्राह्मण और नीरू जोलाहेके गृहमें रहे थे। वह समय सत्ययुगका था। कबीर साहबका नाम सत्य सुकृतजी प्रसिद्ध था—कबीर साहब इस राजाको इसी प्रकार सिखलाया करते थे, सत्यलोक तथा सत्य पुरुषका समाचार दिया करते थे। यह राजा आपका कहना न मानता था पर था वेदपाठी। वेदकी शिक्षा लोगोंको दिया, करता था। यही कारण था कि, सत्यपुरुष उसके घर आये थे। अन्तमें उसका परिणाम अच्छा हुआ कि, सत्य सुकृतजीके चरणोंमें लग गया इस राजाका विशेष वृत्तान्त ग्रंथ कनकबोधमें देखलो वहीं सब विस्तारके साथ लिखा है।

रानी लीलावती और पूर्णवतीके शिरपर जब कबीर साहबने अपना हाथ रक्खा तो उनका हृदय विकसित हो गया, उन्हें अपने पूर्व जन्मकी सुध हो गई। समस्त वृत्तान्त कहने लगीं। इस प्रकार पचास रानियाँसत्य गुरुके देश पहुँची। राजा अपनी बाँदियों सहित सत्यगुरुके शरण आकर सत्यगुरुके देश पहुँचा। जितने लोग सत्यगुरुके शरण आये नेहाल हो गये तथा जो आयँगे वो निहाल हो जायँगे।

राजा भूपाल।

कबीर सागर ५ में बोधसागर है। उसीमें भोपाल बोध भी है। उस ग्रन्थमें इस प्रकार लिखा है कि, धर्मदासने कबीर साहबसे पूछा कि, ऐ सत्यगुरु ! काल चोर जो जीवनको मारता है वो किस प्रकार मारता है ? आप उसका वृत्तान्त मुझसे कहिए। यह बात सुनकर सत्यगुरु बोले कि, ऐ धर्मदास ! मैं इसके मारनेका लक्षण बताता हूँ तुम सुनो। धर्मरायने यमको आज्ञा दी कि, ऐ यम ! तुम पृथ्वीपर जाओ वहाँ मनुष्योंकी अधिकता हो गई है, पृथ्वीसे बोझ सहन नहीं होता है। तुम मनुष्योंको मारकर मेरे पास लेआओ, सबके भीतर वायुस्वरूप होकर समाजाओ। सब मनुष्योंमें रोग उत्पन्न करो। खाँसी ज्वर, कंपानेवाला ज्वर, तिजारी, काम, क्रोध, लोभ, मोह तथा और भी अनेकों फाँसी डालकर सब मनुष्योंको फँसाओ इसी फन्दमें सब फँसे हैं। सुकृतजीको कोई पहचानता नहीं है। इस कारण मैं तुमको भेजता हूँ। ऐ यम ! धर्म्मराजकी इतनी बात सुन; यम आकर सबको दुख देने लगा। सत्यलोकमें सत्यपुरुषका वचन हुआ कि, ए सत्य सुकृतजी ! तुम संसारमें जाओ सारशब्दका उपदेश करो, जिसमें कालपुरुष हंसको न पासके। ज्ञानी जी पुरुषकी आज्ञा स्वीकार कर सत्य-पुरुषको प्रणाम करके जालन्धर देशमें आये। वहाँ का राजाका नाम राजा भूपाल था। इस राजाके द्वारपर ज्ञानीजी महाराज जिन्दारूप धरकर जा खडे हुए। चोपदारसे कहा कि, राजाको हमारे पास बुला लाओ। वह हमारा दर्शन करे, हमारे दर्शनसे उसके सब पाप दूर हो जावेंगे, कर्म्मके बंधन कट जावेंगे। वहाँ द्वारपर ताला लगा हुआ था, भीतर जानेका कोई पथ नहीं था। बहुत चौकीदार बैठे थे। उनमेंसे देखकर कितने कहने लगे कि, यह ठग है। कोई कहता कि, यह बटमार है। कोई कहता है कि, इसको मारकर निकाल दो, यही चोर है, ब्रह्मकी बातें करता है, निर्गुणका भेद किसीको मालूम नहीं हुआ। इसी प्रकारकी बातें कहते सुनते सारी रात बीत गई, भोर हो गया। उस समय ज्ञानीजीने कुछ अपना कौतुक दिखलाया कि, द्वार फट गए महलोंके कँगूरे गिरने लगे, टूट टूट सब आकर पृथ्वीपर पड़े। ज्ञानी जी राजाके पास चले। यह कौतुक देखकर सब लोग आश्चर्यान्वित हुए, ज्ञानीजीके पीछे पीछे होलिये। जहाँ राजा बैठा था वहाँ चौबदार दौड़कर गया। पुकार की कि, महाराज ! यह जिन्दा बड़ा चोर है। उसने कहा था कि, द्वार खोलो। हमने उसका वचन न मानकर उसको रात को रोक रक्खा था। इस कारण जिन्दने एक मंत्र पढा समस्त द्वार फट गए कँगूरे टूटकर गिर गये जिन्दा भीतर चला आया, उसके पीछे

हम सब चले आए हैं। महाराज ! इसको अभी मारो। हम सत्य बात कहते हैं, नहीं तो यह सबको मार देगा, हम मारे जायेंगे।

राजाने कहा कि, प्रथम विचार देखें पीछे उसका रक्तपात करेंगे। ब्राह्मणोंको बुलाया विचार किया गवाही पूछी। इतनेमें ज्ञानीजीने एक ऐसा कौतुक दिखाया कि, समस्त महल सुवर्णका हो गया। जो राजाके द्वार थे वे सब सोनेके हो गये। वे हीरे, लाल, जवाहरात इत्यादि जडे हुए हो गए। सब कँगूरे भी सुवर्णके हो गए। यह कौतुक देखकर राजा बडाही आश्चर्यान्वित हुआ। राजाके मनमें विवेक आया। उसको निश्चय हो गया कि, यह तो कोई महाश्रेष्ठ पुरुष है। राजाने पूछा कि, आप कौन पुरुष हो ? आपने मुझको दर्शन दे कृतकृत्य किया है। तब ज्ञानीजी बोले कि, हम सत्यपुरुषके अहदी हैं, मनुष्योंके मुक्तिप्रदानार्थ संसारमें आये हैं। सत्यलोक सत्यपुरुषका है। उसको कोई नहीं जानता। हे राजा ! यमके जालको पहिचानो, हमारे शब्दको परखो नहीं तो तुमको काल खा जावेगा। राम राम जो जपते हो उस विधिसे जपो। यदि अपनी भलाई चाहते हो सत्यगुरुकी शरणमें आओ। भ्रम छोडकर सेवा करो, सब अच्छे अच्छे गुण धारण करो। जब उस सत्यपुरुषके लोकमें जाओगे उसकी शरण प्राप्त करोगे तब तुम्हारा आवागमन छूट जावेगा। पुरुषकी आज्ञासे हमने तुमको दर्शन दिया है। हे राजा ! तुम अभिमान छोड़ो दृढ़ होकर भक्तिमें लीन हो। राजा, रानी, बेटा, बेटी, सब पान लो पुरुषके नामकी आरती करो। तिनका तोड़वाओ सुरति अङ्कका बीड़ा लो, जिससे तुमको काल न छुवे। जिसके घरमें सत्य गुरु पदार्पण करें वह बड़ा भाग्यवान् है। हे राजा ! विलम्ब न करो मन चित्त लगाकर भक्ति करो। तब राजाने बदनाका बाँह पकड़कर महलमें ले गया। तब कहा मैं बड़ाही भाग्यवान् हूँ, क्योंकि मैं महापापी था। परन्तु आपने मुझको बचा लिया। हे प्रभु ! अब मेरे तीनों ताप छूटे। रानीने भी सत्य-गुरुके चरण धोए, बड़ी स्तुति करके कहा कि, आपके वचन सूर्यसम अज्ञान तिमिरको नष्ट करनेवाले हैं। मुक्तिके देनेवाले तथा सबके तारनेवाले हैं। जो नम्र हैं उनके दुःखको दूर करनेवाले भवसागरकी अग्निको बुझानेवाले हैं। सुवर्णकी थाली और झारीसे राजा रानीने सत्यगुरुका चरण धोकर चरणामृत माथेसे लगाया, सारे घरके लोगोंने सत्यगुरुका चरणामृत लिया तथा दण्डवत्की ज्ञानीजीका वचन सुनकर राजाने भली भाँति निश्चय करके कहा कि, हम और पुरुषको नहीं जानते हैं। आपही पुरुषरूप हो। रानी बोली कि, साहब मेरे निमित्त ही आये हैं, मेरी मनकामना पूर्ण हुई है, शीघ्रही शरण लेकर कालसे बचना

चाहिये । ज्ञानीजी बोले कि, हे राजा ! तुम सब कुछ छोड़दो । काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहङ्कार, सर्व संसार और माया, कालका पसारा है। इस हेतु संसारको छोड़कर शब्दको ग्रहण करो । जिससे फिर जन्म मरण न होगा । स्वर्ग नरकको न भरमोगे, अजर अमर घर पाओगे, जो कोई शब्द न मानेगा उसको काल खा जावेगा । मोहकी नदी भारी है। इससे पार जाना कठिन है । पार उतारनेके निमित्त केवल सत्यगुरु मल्लाह है, उसीके साथ पार उतरना हैं। तब राजा बोला, हे सत्यगुरु ! आपके चरणकमलमें मन कैसे टिकाऊँ ? कैसे राज्यका मद उतरे ? कैसे पाखण्डको छोड़ूं ? बड़प्पन और चतुराई कैसे दूर हो ? हँसी मसखरी नाना प्रकारके द्यूत, भोग विलास तथा मिथ्या भाषण, जाति, पाँति कुल, परिवार, सुवर्ण-मन्दिर, सुख विहार किस प्रकार छोड दूं ? सत्यगुरुने कहा कि, यह सब छोड़कर पुरुषके निकट चलो । राजा बोला कि, अपने शरणमें रक्खो मेरे माथे पर हाथ धरो, मुझे पापीको बचालो । मैंने सब छोड़ा, सर्व रानियोंको पचास बेटोंको बीस सहस्र हाथी आदि सर्व सामग्रीको छोड़कर आपके साथ रहूँगा । मुझको तो भक्ति प्यारी लगी है। आपके अमृतवचन सुनकर मेरे सब दोष दूर हो गए । अब कृपा करके अमृतरूप नाम मुझको दीजिये, आपकी भक्ति बड़े भाग्यसे मिलती है, बारम्बार आपसे यह निवेदन है कि, आप मुझको पुरुषका दर्शन कराओ । ज्ञानीजी बोले, हे राजा ! हम तुमको सत्य नाम देंगे । तुमने मुझे पहचाना, इस कारण सत्यपुरुषके नामसे तुम एक यज्ञ करो । (जिस नामसे हंस बचते हैं)। जरीका चँदवा तानो, सुवर्णका सिंहासन बनवाओ, सुवर्णमय दीवारगीर तथा मोतियोंकी झालर बनाओ । गजमुक्तासे थाल भरकर धरो, सोनेका कलश धर उसपर पंचमुखी दीपक जलाओ । सरांश यह, सद्गुरुकी आज्ञानुसार राजाने दीक्षा लेनेका समस्त नियम किया । तब सत्यगुरुने राजा रानी इत्यादिको अपने शरणमें लिया, उन सबोंने सत्यगुरुको दण्डवत् करके उनकी स्तुति की । राजाने कहा कि, हे सत्यगुरु ! यहाँ का राजा कालपुरुष है, मैं अब यहाँ नहीं रहना चाहता, अब मेरा यहाँ कुछ काम नहीं है । मुझको अपने लोकमें ले लो, सत्यपुरुषका दर्शन कराओ । राजाकी नौ सौ रानियाँ तथा पचास बेटे सत्यगुरुके सामने हाथ बाँधकर खड़े विनती कर रहे थे । राजाकी एक पुत्री थी, वह भी सत्यगुरुके शरणमें आई सब सत्यगुरुके चरणोंपर गिरकर कहनेलगे कि, हम कदापि आपका शरण न छोड़ेंगे । सत्यगुरुने सब जीवोंको सत्य पुरुषका दर्शन कराया । जितने जीवोंने पान पाया सब सत्य पुरुषके दरबारको चल दिये ।

राहमें जब चले जाते थे, कालके दूतने एक ऐसा कौतुक दिखाया कि, सुकृतजीके साथ जितने हंस थे उतनेही रूप धरकर यमके दूत आये । वैसाही छापा तिलक आदि सब कुछ बनाकर कहने लगे कि, हे हंसगणो ! हमारे साथ चलो । तब हंसोंने उत्तर दिया कि, हम तुमको भली प्रकार पहचानते हैं कि, तुम ठग बटमार हो हम तुम्हारी बातें नहीं सुनते. हम तो जिनके हंस हैं उन्हीं साहबके पास जावेंगे । हम तुम्हारी दगाबाजी भली प्रकार जानते हैं । तुम्हारे धोखेमें कदापि न आवेंगे। सत्यगुरुने समस्त हंसोंको लेकर सुकृतसागर पर पहुँच कहा कि, सब हंस अब इसमें स्नान करो, तब सभोंने वहां स्नान किया । जिससे उनको सब द्वीपोंका ज्ञान होगया । लोकमें पहुंचकर सुकृतजीके चरणोंमें गिरकर नमस्कार किया, पश्चात् हंसोंका दर्शन किया, सुकृतजीने कहा कि, हे राजा ! अब तुम अपने राज स्थान को पलट चलो । राजाने कहा कि, हे सत्यगुरु ! अब हम यहाँ ही रहेंगे, पृथ्वी पर न जावेंगे, यहां चार दिन बीत जानेपर चोपदार राजमहलमें गये तो वहां क्या देखते हैं कि, महल शून्य पड़े हैं न राजा है न कोई रानी है, न राजाके पचास पुत्र हैं न राजाकी पुत्री है, समस्त महल शून्य देखकर रोता हुवा बाहर आया, लोगोंको समाचार दिया । राजाके आत्मसंबंधी, मंत्री तथा अन्यान्य कर्म्मचारी गण आये । देखा तो राजमहल शून्य पड़ा है । कहीं कोई नहीं यह देख कर सब रोने लगे कि, राजाको उनके संबंधियों सहित किसने मार गया, कहाँ गए, कौनसी आपत्ति उन पर आई ? चोबदारने मंत्रीसे कहने लगा कि, एक जिन्दा फकीर आया था । उसने राजाको ऐसा कौतुक दिखलाया । हमने कहा था कि, यह ज़िन्दा सत्यानाश करनेको आया है । सो राजाने, उस ज़िन्दा फ़कीर पर विश्वास करके अपना सर्वस्व अपहरण करवाया, उसीका विष बोया हुआ है । धर्म्मदासजीसे कबीर, साहब कहते हैं कि, हे धर्म्मदास ! जैसा यह राजा सत्यवादी हुआ तन मन धन सब सत्यगुरुको अर्पन किया, वैसेही को नाम बताओ दूसरोंसे उपेक्षा करो, क्योंकि सच्चेही जीव सत्यलोकको जावेंगे । झूठोंके लिये सत्यलोक नहीं है ।

राजा अमरसिंह ।

कबीर सागर नं. ४ में बोधसागर है । उसमें एक प्रकरण अमरसिंहबोध भी है । उसमें जो लिखा है उसीका सार लिखते हैं । ज्ञानीजीसे सत्य पुरुषने कहा कि, बहुत दिन बीते । कोई भी जीव सत्यलोकको नहीं आया । कालपुरुषने सब जीवोंको रोक रक्खा है, विहंगम मार्ग बतलाकर सब मनुष्योंकी मुक्ति कराओ । जब पुरुषने ज्ञानीजीको आज्ञा दी थी उस युगका नाम कमोद था । ज्ञानीजी सत्य-

पुरुषको नमस्कार करके पृथ्वी पर आ सिंहलद्वीपमें उतरे । वहाँके राजाका नाम अमरसिंह था, अमरावतीमें रहता था। उसकी रानीका नाम स्वरकला था। वहां पर ज्ञानीजी गये उसको यह कौतुक दिखाया कि, राजाने ज्ञानीजीको सोलह सूर्यके समान ज्योतिमान तथा प्रकाशित देखा । ऐसी सुगंधि उठने लगी कि, मस्तिष्क भर गया । राजा अमरसिंहने उस स्वरूपका दर्शन किया, परन्तु दर्शन देकर ज्ञानीजी अन्तर्धान होगये । राजा उन्हें ढूँढ़ने लगा, खोज करता करता थक गया, कहीं पता नहीं लगा। राजा ढ़ाढ़े मार मार कर रोने लगा। जैसे जल बिना मीनकी गति होती है वही अवस्था राजाकी हुई । सात दिन रात इसी अवस्थामें बीते राजाने माया मोह तथा राज्याभिमान सभी छोड़ दिया, केवल सत्यगुरुके चरणोंके ध्यानमें लगा रहा । ज्ञानीजी दयालु हुए, पुनः राजाको दर्शन दिया, राजाके सिरपर हाथ रक्खा, जब राजाके मनमें सन्तोष आया तब राजाने कहा कि, आपका दर्शन पाकर में सुखी हुआ । जैसे चन्द्रको देखकर चकोर हर्षित होता है; जैसे कि, स्वातीके जलसे पपीहा हर्षित होता है । इतना कहकर सत्यगुरुके चरणोंपर शिर धर दिया । कहने लगा कि, अब मेरा दुःख दूर हुआ । फिर पूछा कि, आप कहाँसे आये हो ? कहां रहते हो ? आपका क्या नाम है ? किस लोकमें स्थान है ! मुझसे सत्य कहो, हंसका उबार करो ज्ञानीजीने कहा कि, हम मृत्यु लोकसे आए हैं, वह अमर ठिकाना है वहां सत्य पुरुष रहता है हंसभी रहते हैं, हम उस पुरुषको आज्ञा लेकर आयें हैं, जो कोई हमको पहचाने उसको लोकमें भेज देवेंगे । इतना सुनकर राजा हाथ जोड़कर बोला कि, हमारी मुक्ति करो, हमारे बड़े भाग्य हैं जो पुरुष रूप आपने मुझको दर्शन दिये, अब हमें आप अपने कालसे बचा लीजिए जिससे हम पुरुषका दर्शन कर सकें । ज्ञानीजी बोले कि, हे राजा! शुद्ध बुद्धि करके परवाना लेकर सत्य पुरुषका निःतत्व ध्यान करो. सत्यगुरुकी दयासे फिर तुमको काल न छेड़ेगा। राजाने रानीसे कहा कि, अब तुग सत्यगुरुके चरण पकड़ो । क्योंकि चार वेद जिसको नित्य गाते हैं इस सत्यगुरुका भेद वे भी नहीं जानते हैं । सत्य सत्यगुरु अखण्ड पुरीमें रहते हैं । उनकी गम्य काल नहीं पाता । हे रानी ! चित्त लगायके दर्शन करो तो तुम्हारे अनेक जन्मोंके पाप कटें, ऐसे सन्त कभी नहीं आये । हमारे बड़े भाग्य हैं कि, सत्यगुरु हमारे घर पधारे । रानीने कहा कि, हे महाराज ! समझ बूझकर गुरु करो, जिसमें फिर पीछे पछताना न पड़े । तब राजा ने कहा कि, हे रानी ! ऐसे सत्यगुरु कहाँ हैं ? हम तन मन धन सब सत्यगुरुको अर्पन करेंगे । हे रानी ! समस्त लज्जाओंको छोड़कर सत्यगुरुके चरण जल्दी पकड़ो. नहीं तो कुत्ते बिल्लीका जन्म होगा । तब रानी अपनी दासियोंसहित

बाहर आई, जिससे उसके आभूषण तथा वस्त्रोंकी बड़ी ज्योति फैली । अर्थात् ऐसे ऐसे मणि तथा जवाहरात रानीके मस्तक पर तथा शरीरमें आभूषण थे कि, जिनकी ज्योतिसे मानों सूर्योदय हो आया । तब समस्त दरबारी देखकर आश्चर्यान्वित होकर उठ खड़े हुये । तब रानीने अपनी समस्त दासियोंसहित आकर सत्यगुरुको दण्डवत् प्रणाम किया, हाथबाँधकर सत्यगुरुके सामने खडी होकर कहने लगी कि, हम आपके आधीन हैं । राजानेभी बारम्बार दण्डवत् करके सत्यगुरुके चरण पकड़ लिये । जैसे कि, चन्द्र चकोरको देखता है वैसेही राजा सत्यगुरुकी ओर देखने लगा, समस्त दरबारी जो खड़े थे सत्यगुरुकी प्रशंसा करते हुए कहने लगे कि, आपने बड़ी दया की जो दर्शन दिया । हे दीनदयाल ! आपका चरणरज ऐसा पवित्र है कि, इससे मोहतिमिरका नाश हो जाता है, भक्ति, ज्ञान, वैराग्य उत्पन्न होकर मोक्ष फल मिलता है । हे साहब ! हम सब आपके गुलाम हैं । हमारे ऊपर ऐसी दया करो कि आपके चरणोंमें प्रीति रहे समस्त आशाएँ छूट जावें । आप ब्रह्मस्वरूप अचिन्त, आदि, अदली, अविगत, अजर, अजीत, अमर अकह और अविचल हो । अक्षय, अखिल, आदि ब्रह्म उद्धारण, अखिलपति अविनाशी पापोंको दूर करनेवाले हो । हंसराज हंसपति और हंस उबारनहार हो आप सर्व सुखके धाम हो । इस प्रकार बहुतेरी प्रशंसा तथा स्तुति करके सत्यगुरु को महलमें लेजाकर सिंहासन पर बैठाया । रानीने चरण धोये (राजाकी आँख से प्रेम के आँसू बह रहे थे ।) रानीने अपने अञ्चलसे चरण पोंछा, सबोंने चरणामृत लिया । ज्ञानीजीने सबके शिरपर हाथ रक्खा । राजाको बडा ज्ञान प्रगट हुआ. राजा बोला कि, हे साहब ! आपने अपना लिया, अब परवाना दीजिये । जो कुछ आप कहेंगे सो हम करेंगे । ज्ञानीजी बोले कि, हे राजा ! अब तुम सर्व सामग्री मँगवाओ । आज्ञा पातेही यथानियम सब मँगाया, हर्ष और उत्साहके साथ राजा रानी तथा अन्यान्य लोगोंने सत्यगुरुकी दीक्षा ली, सबोंने सत्यगुरुका दण्डवत् प्रणाम किया । सत्यगुरुकी कृपासे सबके शोक सन्ताप छूट गये, कालका जाल दूर होगया तथा उसी समय राजाके बेटे नातियोंसहित अनेकों जीव सत्यगुरु के शरण आये । राजा और रानी सहित सब हाथ जोडकर खडे होगये । उस समय राजा कहने लगा कि, हे सत्यगुरु ! आपने मुझपर दया करके वह शब्द बतलाया है जो कि, ब्रह्मा, विष्णु तथा शिवादिकको भी दुर्लभ है । मुझे भक्तिदान दिया, अब मुझको अपने लोक लेचलो । सत्यगुरुने कहा कि, हे राजा (अमरसिंह) अभी सवा सौ बर्षका वयस तुम्हारा शेष है, सो तुम सवासौ वर्ष अभी पृथ्वीपर रहो । इसके पीछे मेरे लोकको चलना । राजा बहुत बिनती करने लगा कि, बन्दीछोर ! अब

मुझसे यहाँ एक पलभी रहा नहीं जाता, मुझको अपने लोकमें लेचलो । हे सत्य गुरु ! अब आप मेरे पापों पर ध्यान मत दो. हंसोंका टबार करो। इक्कीस लाख जीव आपकी शरणमें हैं, तब ज्ञानीजी बोले कि, एक नाम है जिसे मैं पुकारके कहता हूं । हे राजा ! सब हंसोंको साथ लेआओ सुनो, राजा सब हंसोंको ले आया। कबीर साहबने उस नामको पुकार कर सुनाया। उस नामको सुनतेही सबकी देह छूटकर मुक्ति हो गई । उसी समय सब हंसोंने भवसागर छोड़ दिया इक्कीस लाख हंस राजाके साथ लगे, सबके सब सत्यपुरुषके दरबारमें पहुँच आनन्दसे रहने लगे । इस राजाने बड़ी सच्ची भक्ति की, इतने लाख जीव अपने साथ लेकर सत्यलोक को सिधारा, जहां जन्म मरणके सब संशय छूट गये, उस देशमें समस्त जीव एक समान हैं, सर्वदाके लिये परमानन्दको प्राप्त हैं वही सत्यपुरुषका देश है । उसके हंस यहाँ ही वसते हैं ।।

सत्ययुग त्रेता और द्वापरके हंस।

अब हम सत्ययुग और त्रेता द्वापरके हंसोंके विषयमें कुछ कहते हैं । कबीर सागरके दूसरे भाग अनुरागसागरमें यह प्रकरण विस्तारके साथ लिखा है । सत्य-युगमें राजा धोकल और खेमसरी ग्वालिन हुई है, इसमें कबीर साहिब सत्सुकृत कहलाये । त्रेतामें विचित्र भार मन्दोदरी बिचित्र वधू और मधुकर हुए हैं, इसमें कबीर साहिब मुनीन्द्र कहलाते हैं । द्वापरमें रानी इन्द्रमती और सुपच सुदर्शन हुए हैं इसमें कबीर साहिब करुणामय कहाते हैं ।

चारों युगोंमें कबीर साहब एकही प्रकारका उपदेश करते हैं । सहस्रों लोग उपदेश सुनते हुए उसका मान भी कर लेते हैं पर वे सब कबीर साहबके शिष्य इस कारण नहीं कहलाते कि, उनमें अब तक दोष है । अबतक उनको सत्यगुरुका पूरा चिह्न नहीं मिला । हंस कबीरका पूरा पद नहीं प्राप्त हुआ । इस कारण उन लोगोंको आवागमनका।संबंध नहीं छूटा. क्योंकि, जब तक जिन लोगोंके सत्यगुरु का पूरा रंग नहीं चढा तबतक वे सत्यगुरुके हंस नहीं बन सकते । उनकी बुद्धिपर आवरण पड़ा हुआ है । जो लोग सत्यगुरुकी पूर्णरूपसे अनधीनता स्वीकार करते हैं, वही उसके हंस हैं ।

श्वपच सुदर्शन ।

जब द्वापरमें कबीर साहब पृथ्वीपर आये काशी नगरीमें प्रगट हुये, उस नगरके वासियोंको सत्यपुरुषकी भक्तिका उपदेश कर रहे थे । उस समय सुदर्शन नाम एक मनुष्य जातिका भङ्गी आकर सत्यगुरुके चरणोंपर गिरकर निवेदन

करने लगा कि, हे सत्यगुरु ! मुझे अपनी भक्तिमें लगाओ । सत्यगुरु उसपर दयालु हुये उसको नाम दिया । जबसे उसने सत्यगुरुका उपदेश पाया तबसे तन मन धनसे भक्ति, साधुसेवा और भजन करने लगा । उसका समस्त विवरण कबीर साहबके ग्रन्थ यज्ञसमाजमें लिखा है । दूसरे स्थानोंमें भी कहीं कहीं लिखा है । जिस समय कबीर साहबने श्वपच सुदर्शनका उपदेश दिया, उस समय कौरव तथा पाण्डवोंके बीच बड़ा वैर उपस्थित था । दोनों समरके निमित्त रणभूमिमें एकत्रित हुये थे । दोनों ओरसे सैन्यकी चढ़ाई हुई । बड़ा महाभारत हुआ । इसमें कौरव ससैन्य मारे गये । पाण्डव कृष्णकी सहायतासे विजयी हुये । विजय प्राप्त करनेके पीछे राजा युधिष्ठिर राज्यासन पर बैठे, राजाने एक दिवस एक बड़ाही भयानक स्वप्न देखा । जैसा कि, कबीर साहबके ग्रन्थ उग्रगीतामें लिखा है, इस भयानक स्वप्न को राजाने इस प्रकार देखा कि, समस्त कौरव जो मेरे भाई थे उनका विना शिरका धड़ रणभूमिमें दौड़ रहा है, वे सब मुझसे अपना बदला लेनेके निमित्त तैयार हैं । राजा युधिष्ठिरने ऐसा भयानक स्वप्न देखा कि उनको बड़ा भय उत्पन्न हुआ, बडेही शोकित हुये कि, अब हमको भाई मारनेके महापापसे नरकमें जाना पड़ेगा । इस भयसे कातर होकर युधिष्ठिर श्रीकृष्णके पास जाकर कहने लगे कि, हे महाराज ! मैंने ऐसा भयानक स्वप्न देखा है जिससे कि, मेरा हृदय स्थिर नहीं है । बड़ा भय उत्पन्न हो रहा है । कृष्ण बोले, हे युधिष्ठिर ! भीमादिको ! सुनो, तुमने अपने भाइयोंकी हत्या की है, जिसका महापाप तुमलोगोंको हुआ है । इतना सुन कर युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन बोले कि, हे महाराज ! हम तो महाभारत करनेपर उद्यत नहीं थे । आपनेही गीताका ज्ञान सुनाकर हमें युद्धके निमित्त प्रस्तुत कराके हमारे भाइयोंको हमसे मरवाडाला, इसमें हमारा क्या दोष है ? हम तो आपके आज्ञाकारी थे । श्रीकृष्णने कहा कि वह समय वैसाही था । युधिष्ठिरने कहा कि, हे महाराज ! अब हम क्या करें ? जिससे हमारे पाप छूटे । तब श्रीकृष्ण ने कहा कि, पहले सर्व तीर्थोंका जल मँगवाओ उससे स्नान करो । तब राजाने समस्त तीर्थोंका जल मँगाकर उससे स्नान किया । श्रीकृष्णने कहा कि, अब तुम हाथी-दान, घोड़ादान, गऊदान, कन्यादान, सुवर्णदान, चाँदीदान, पृथ्वीदान, अन्नदान इत्यादि धर्म करो । तब राजा युधिष्ठिरने समस्त कार्य दान पुण्य इत्यादि वेदकी आज्ञानुसार तथा श्रीकृष्णजीके आदेशानुसार किया. श्रीकृष्णजीने कहा कि, यज्ञ करो, देश देशान्तरोंमें पत्र भेजकर साधुओंको बुलवाकर भोजन कराओ । राजा युधिष्ठिरने ऐसाही किया. सर्वदेशोंसे साधुओंको बुलवाया । समस्त देशों के साधु एकत्रित हुये । श्रीकृष्णजीने एक घण्टा बांधकर लटका दिया कहा कि,

यह घण्ट जब सात बार आपसे आप बजे तब तुम जानो कि, यज्ञ पूर्ण होगई। राजाने श्रीकृष्णकी आज्ञानुसार सब प्रकारके दान पुण्य करके यज्ञ आरम्भ किया। इस यज्ञमें पच्चीस करोड़ ब्राह्मण आचारी एकत्रित हुये, सात करोड़ अस्सी सहस्र ऋषि, मुनि, सिद्ध साधु (षट् दर्शनके) उपस्थित हुये। पाण्डवोंने बड़े प्रेम तथा भक्ति सहित भोजन करवाया। सब प्रकारके दान पुण्य किये पर एक बारभी घण्ट न बजा. इससे पाण्डवोंके चित्तमें बड़ा सन्देह उत्पन्न हुआ। राजा युधिष्ठिर अपने भाइयों सहित कृष्णजीके पास जाकर पूछने लगे कि, हे महाराज ! हम लोगोंने तो आपकी आज्ञानुसार सब प्रकारके दान पुण्य किये, बत्तीस करोड अस्सी सहस्र साधु ब्राह्मण भोजन कर चुके, सबके ऊपर महाराजा आपने स्वयम् भोजन किया, अब इससे बढ़कर क्या रहा ? पर फिरभी आकाशी घण्ट एक बार भी नहीं बजा। इतनी बात सुनकर भगवान् बोले कि, हमारा सर्व परिश्रम व्यर्थ हुआ, धनका सर्व व्यय निष्फल हुआ, क्या उपाय करे कि, घण्ट बजे ? भगवानने, कहा कि, हे युधिष्ठिर ! तुम ध्यानसे सुनो। जब साधुओंको भोजन करा रहे थे, तब मैं अपनी ज्ञानचक्षुद्वारा उन सबोंको भली भाँति देख रहा था उनमें कोई साधु नहीं दिखाई दिया। उनमें साधु तो जहाँ कोई भी मनुष्य नहीं रहा था, सबके सब डाँगर ढोर, कीड़े, मकोड़े, पशु, पक्षी इत्यादि बैठे भोजन कर रहे थे। हे युधिष्ठिर ! तुम्हारे यज्ञमें कोई भी साधु नहीं था। कोई सत्यगुरुका अंश तुम्हारे यज्ञमें भोजन करनेके निमित्त नहीं आया था। जबतक सत्यगुरुका अंश न आवे तुम्हारे यज्ञमें भोजन न करे तबतक आकाशी घण्ट नहीं बजेगा, तुम्हारी यज्ञ पूरी नहीं होगी। युधिष्ठिरने कहा कि, हे महाराज ! मैंने देश देशान्तरोंमें पत्र भेजकर, ढुँढ़वाकर बड़े बड़े सिद्ध साधु बुलवाये। बडे बडे तपस्वी आचारीगण आये, इनमें सत्यगुरुका अंश कोई नहीं था क्या ? हे महाराज ! ये सब तपस्वी लोग किसके अंश हैं ? वे सत्यगुरुके अंश किस देशमें रहते हैं ? कौन शास्त्र पढ़ते हैं ? किसकी भक्ति करते हैं ? यहाँ पर कबीर साहब कहते हैं कि, यह सब जो भेष बाना बनाकर रहते हैं, उनमें सहस्रों प्रकारके लोग हैं, उनमें जो माँस मछली इत्यादि खाते, मदिरा पीते, परस्त्रीगमन करते हैं, वे सब चाण्डाल हैं। वे नरकको जावेंगे। भगवा वस्त्र पहनकर स्त्रीगमन करते हैं उनकी ऐसी दशा होवेगी कि--"भगवा बसता बिन्द प्रकासा। सत्तर जन्म श्वान घर वासा।।" जितने भी षट्दर्शन भेषके लोग एवं सर्व ब्राह्मण आदि हैं उनमें मनुष्यका लेश भी नहीं है। जो सत्यगुरुका अंश है वही मनुष्य है। श्री-कृष्णजी युधिष्ठिरसे कहते हैं कि, हे युधिष्ठिर ! तुम सत्यगुरुका अंश जो श्वपच

सुदर्शन है, काशी नगरीमें रहता है उसको ले आओ, जब वह आकर तुम्हारे गृहमें भोजन करेगा, उस समय तुम्हारी यज्ञ पूरी होगी सात बार आकाशी घण्ट बजेगा। बिना सुदर्शनके भोजन किये आसमानी घण्ट कदापि न बजेगा न यज्ञही पूरी होगी। तब युधिष्ठिरने कहा कि, हे महाराज! भङ्गीको ऐसी बड़ाई कैसे मिली? ऐसे बड़े बड़े महात्मा एकत्रित हुये, इनमें कोई इस योग्य नहीं? यह क्या बात है? श्रीकृष्णने कहा कि, हे युधिष्ठिर! मेरा कहना मान ले श्वपच सुदर्शनको यहाँ लेआओ। पीछे भीमसेनको श्वपच सुदर्शनके बुलानेके लिये भेज दिया।

भीमसेन सुदर्शनजीको बुलाने चले। काशी नगरीमें जा पहुँचे। ढूंढ़ते ढूंढ़ते श्वपच सुदर्शनका मकान पाया। जाकर सुदर्शन जीसे! कृष्ण तथा युधिष्ठिरका समाचार पहुँचाया। भीमने कहा कि, हे सुदर्शनजी! आपको कृष्ण तथा युधिष्ठिरने बुलाया है। आप मेरे साथ चलिये। हमारे यज्ञमें भोजन कीजिये, आपके भोजन करनेसे यदि घण्ट बज जायगा तो हमारी यज्ञ पूर्ण हो जायगी। राजा युधिष्ठिर आपपर बड़े प्रसन्न होंगे, एवं बड़ा अनुग्रह करेंगे। ऐसा सुनकर सुदर्शनजीने उत्तर दिया कि, हे भीमसेन! तुम राजाके पासजाकर कहो कि, हम राजाके घरका भोजन न करेंगे।

चौ०–भीम कहो राजासे जाई। राजा घर भोजन नहिं पा[1]ई।
राजा वेश्या[2] जात शिका[3]री। महा अक[4]र्मी विषय विक[5]ारी॥
सतसठ दूत[6] कर्म इन सङ्गा[7]। भोजन करत सत्य हो भङ्गा[8]।
राजा वेश्या छुवे[9] न कोई। इनके छुए[10] पाप बड़ होई॥
राजाद्वार[11] भोजन जो पावे। अरु वेश्य[12]ही छुये नरक महँ जावे॥
राजा धीमर वेश्यापा[13]सी। इनके छुये यमपुर जासी[14]॥
साखी–चार[15] जातिके दर्शन, दूरते कीजे जान[16]।
इनके घर भोजन किये, पडे नरककी खान[17]॥

इतनी बातके सुनतेही भीमसेन तो जल गये। मनमें सोचने लगे कि, यह नीच मुझको ऐसी बात कहता है। यदि मैं इसको एक गदा मारूँ तो यह पातालको चला जावे। जब भीमसेनने अपने मनमें यह विचार किया, तब श्वपच सुदर्शनजी महाराजने भीमसेनके अन्तःकरणकी बातोंको जानकर

---

१ करेंगे। २ रंडी। ३ जीवहिंसक। ४ बुरे कर्म करनेवाले। ५ विषयी। ६ चुगलखोर। ७ सात। ८ नष्ट। ९ स्पर्श। १० स्पर्श किये। ११ राजेके घर। १२ वेश्याके। १३ एक, प्रकारके जीवहत्यारे। १४ जायेगा। १५ राजा, १४ धीमर, वेश्या और पाशी। १६ मत। १७ कुण्ड।

कहा कि, हे राजाजी ! मैं अपने मकानके भीतरसे हो आता हूं, तब आपके साथ चलूंगा, तबतक आप मेरी सुमिरिनी लेकर चले। शीघ्रही मैं आकर आपके साथ हो लूंगा। यह कहकर सुदर्शनजी तो भीतर चले गये। भीमसेन उनकी सुमिरनी उठाने लगे तो न उठी। बड़ा बल लगाया पर उस जगह न छोड़ी; लज्जित होकर भीमसेन उसी जगह खड़े रहे। इतनेमें सुदर्शनजी भीतरसे बाहर आये। देखा कि, भीमजी लज्जित खड़े हैं। तब कहा कि, हे राजाजी ! मैंने आपसे कहा था कि, मेरी सुमिरनी लेकर आप चलो पर आप खड़े रह गये, क्या कारण है। भीमसेनने उत्तर दिया कि, मुझसे सुमिरिनी नहीं उठी, । सुदर्शन-जीने कहा कि, जब मेरी सुमिरनी आपसे न उठी तो मैं आपके गदा मारनेसे पातालको क्यों कर चला जाता ? आप अब यहाँसे चले जाओ, मैं आपके घर भोजन करने न जाऊँगा। क्योंकि, तुमने भाइयों तथा संबंधियोंको मारकर गिरा दिया, यह महापाप किया है। यह बात सुनकर भीमसेन नितान्तही क्रुद्ध हुए। झुंझलाकर राजा युधिष्ठिरके पास लौट आये। श्वपच सुदर्शनका सर्व हाल कहकर भीमने कहा कि, वह तो बड़ा घमण्डी है। कड़ीबातें कहता हुआ कहता है कि, मैं राजा तथा कञ्जरीके मकानपर भोजन नहीं करता, उसकी सूरत देखनेको मेरा मन नहीं चाहता। हे महाराज ! मैंने आपका तथा श्रीकृष्ण भगवान्‌का भय किया नहीं तो बिना मारे न रहता। जो कड़ी बातें उसने कही वे मेरे सहन करने योग्य नहीं थीं। इतना सुन महाराज युधिष्ठिर भीम आदिको साथ ले श्रीकृष्णके समीप गये। जाकर कहा कि, हे महाराज ! आपने व्यर्थही ऐसे शूद्रके समीप भेजा। भला इतने सिद्ध, साधु, ऋषि, मुनि, एकत्रित हुए, उनमें सुदर्शन भङ्गीहीको आपने श्रेष्ठ क्यों ठहराया ? उसमें कौनसी बड़ाई है ? वह कैसे सबसे अच्छा है ? श्रीकृष्णचन्द्र बोले कि, हे युधिष्ठिर ! तुम श्वपच सुदर्शनकी श्रेष्ठता तथा बड़ाईसे अनभिज्ञ हो; पर मैं भली भाँति जानता हूँ; बिना श्पच सुदर्शनके भोजन करवाये तुम्हारी यज्ञ पूरी न होगी, न घंटाही बजेगा। भीमसेन बोले कि, हे कृष्णजी ! मैं इस बातका विश्वास न करूँगा, जबतक कि, आँखोंसे न देख लूं। सात करोड़ अस्सी सहस्र ऋषि मुनियोंमें श्वपच सुदर्शन कैसे श्रेष्ठ ठहरा ? यह बात सुनकर कृष्णजी कहने लगे, हे भीम ! मैं तुम लोगोंको अवश्यही श्वपच सुदर्शनकी श्रेष्ठता दिखाऊँगा। जब तुम स्वच-क्षुसे देखलेना तब विश्वास करना। हे युधिष्ठिर ! तुम स्वयम् सुदर्शनजीके बुलानेके निमित्त जाओ। अत्यन्त नम्रता पूर्वक मिलना। बड़ी मर्यादा तथा बड़े सन्मानपूर्वक श्रीमान् महाराज सुदर्शनजीको बुलालाना। सुदर्शनजी महा-

राज पधारनेसे तुम्हारी यज्ञ पूरी होगी। तुम अपनी दृष्टिसे सुदर्शनजीकी श्रेष्ठता देखोगे तो जानोगे कि, करोड़ों साधुओंमें तथा उनमें क्या विभिन्नता है? क्या गुण तथा महत्त्व है? श्रीकृष्णजीकी आज्ञानुसार राजा युधिष्ठिर स्वयम् सुदर्शनजीको बुलाने चले, बनारसमें पहुँच उससे भेंट करके निवेदन किया कि, हे भक्तजी! आप दया करके मेरे साथ चलो, बिना आपके मेरी यज्ञ पूरी नहीं होती। आप कृष्णचन्द्रके बड़े भक्त हो। महाराज कृष्णचन्द्र आपके हृदयमें विराजमान हैं। भगवान्का मन आपहीसे प्रसन्न है। युधिष्ठिरकी ऐसी नम्रता तथा गिड़गिड़ाहटको देखकर श्वपच सुदर्शनजी दयालु होकर कहने लगे कि, हे युधिष्ठिर! तुम्हारी नम्रतासे मैं नितान्तही आह्लादित हूँ, तुम्हारे साथ मैं चलूंगा। कारण यह कि, तुम प्रेमी भक्त हो। हे युधिष्ठिर! तुम निश्चय जानो कि हम कृष्णके भक्त हैं हमारा सत्यगुरु सत्यलोकवासी है। हम उसके अंश हैं – कृष्ण उसीके अवतार हैं। हे युधिष्ठिर! तुम कृष्णका विश्वास सदा करना क्योंकि, वो भक्तवत्सल है। स्वयम् कृष्ण ने तो तुम्हारे यज्ञमें भोजन किया फिर घंटा क्यों न बजा? यदि मैं कृष्णका न भक्त होता तो वो मुझको बुलानेकी क्या आवश्यकता समझते, जब स्वयम् श्रीकृष्णके भोजनसे घण्टा नहीं बजा पर कृष्णके भक्तोंके भोजनसे घण्टा बज सकता है। हे युधिष्ठिर! तुम्हारा प्रेम तथा तुम्हारी भक्ति देखकर मैं तुम्हारे साथ चलता हूँ, परमार्थके निमित्त मुझको जाना आवश्यक है। यह कहकर सुदर्शनजी युधिष्ठिरके आगे हुये और युधिष्ठिर महाराज उनके पीछे होलिए। इसी प्रकार सुदर्शनको लिये महाराज युधिष्ठिर अपने मकान पर पहुँचे।

जब श्वपच सुदर्शनजी राजा युधिष्ठिरके मकानमें प्रविष्ट हुये, राजाने रानी द्रौपदीको आज्ञा दी कि, स्वादिष्ट भोजन बनाओ, सन्मान तथा प्रतिष्ठा-पूर्वक सन्तको भोजन कराओ। उसी समय द्रौपदीने भोजन बनानेका प्रबंध किया। भाँति भाँतिके स्वादिष्ट भोजन बनाकर प्रस्तुत किये। अत्यंत मर्यादाके साथ सुदर्शनजीको आसनासीन कर मेवे तथा पकवानके थाल सामने धर दिये। सुदर्शनजीने जो सम्यक् प्रकारके स्वादोंसे विरक्त थे, सब खट्टा, मीठा आदि भोजन एक साथ मिला दिया। क्योंकि, आपको तो किसी प्रकारके स्वादकी कामनाही नहीं थी। सबको मिलाकर खाने लगे। तीन ग्रास खा चुके थे कि, रानी द्रौपदीके मनमें ऐसा ध्यान हुआ कि, फिर तो सुदर्शन नीच अज्ञानी है, भोजनके स्वादको वह क्या जाने? मैंने कितनेही प्रकारके भोजन बनाये थे सो सब एकसाथ मिलाकर खाते हैं। नमक मिष्टान्न आदिका स्वाद तनिक

विचार नहीं करते। सुदर्शनजीने द्रौपदीके हृदयकी बातोंको जानकर अपने हाथको भोजनसे खींचलिया। केवल तीन ग्रास खाये अधिक भोजन नहीं किया हाथ धोकर चले, सुदर्शनजीने जो तीन ग्रास खाये थे इस कारण वह आकाश घण्ट तीनही बार बजकर रह गया, अधिक नहीं बजा। उस समय राजा युधिष्ठिरको फिर संदेह हुआ, कृष्णचन्द्रके पास जाकर कहने लगे कि, महाराज ! अब क्या करें ? सुदर्शनजीने भोजन किया तो भी घण्ट तीनही बेर बजा। किस अपराधसे पूरे सात बार नहीं बजा ? महाराज ! कृपा कर इसका कारण बतलाइये। कृष्णचन्द्रने कहा हे युधिष्ठिर ! रानी द्रौपदीने अपने मनके भीतर सुदर्शनजीकी खानेके समय निन्दा की कि, सुदर्शन अज्ञानीहै। भोजनके स्वादको नहीं जानता। इस कारण सुदर्शनजीने उसके अन्तःकरणकी बात जानकर खानेसे हाथ खींच लिया। तुम्हारी यज्ञ पूरी नहीं हुई इसलिये घण्ट नहीं बजा। अब तुम दौडकर जाओ सुदर्शनजीके चरणोंपर गिरकर अपना अपराध क्षमा कराओ। प्रार्थना तथा निवेदन करके उनको फेर लेआओ। बड़ी मान भक्ति तथा नम्रतापूर्वक भोजन कराओगे, तब सात बार घण्ट बजेगा। सावधान, किसी प्रकारकी विभिन्नता न करना। इतनी बात सुनकर राजा युधिष्ठिर दौडे गये और सुदर्शनजीके चरणोंपर गिरकर अत्यंत नम्रतासे कहने लगे कि, महाराज ! हमारा अपराध क्षमा करो, हम अज्ञानसे अंधे हैं, आपके भेदको नहीं जानते, अब चलकर हमारे घरमें फिर भोजन करो। जब राजाने बड़ी नम्रता की तब सुदर्शनजी पुनः दयालु हुए राजाके घर आकर पुनः भोजन किया। तब घण्ट सात बार आकाशमें आपसे आप बजा। चारों ओरसे जय जयकार ध्वनि होने लगी।

यह सब कबीर साहब धर्म्मदासजीसे कहते हैं किः—

साखी—श्वपचभक्त[1] भोजन कियो, घण्ट बजेउ अकाश[2]।
गण गंधर्व मुनि देवमें, जैजै होत[3] प्रकाश[4] ॥

चौ०—भोजन श्वपच कीन्ह जिउनारा[5]। सात बार घण्टा झनकारा[6] ॥
राय युधिष्ठिर चरनन पर्यो। पातक[7] सकल[8] भक्त[9] मम[10] हर्यो[11] ॥
हम तो महा अधम अपराधी। कुटिल[12] कठोर[13] भक्ति नहिं राधी[14] ॥
अहो भगत हम बडे अभागी। कृपा कीन्ह मोहि कीन्ह सुभागी ॥
पांचों पाण्डव बिनवैं[15] शूरा। भक्त प्रताप यज्ञ भा पूरा[16] ॥

---

१ सुदर्शन, २ अपने आप, ३ होती थी, ४ प्रत्यक्षमें ५ परोसी हुई वस्तुका, ६ बज गया, ७ पाप ८ सब, ९ हे सुदर्शन, १० मेरे, ११ दूरकर दिये, १२ कपटी, १३ कड़े स्वभावके, १४ सिद्ध की, १५ प्रणाम करे, १६ हो गया।

गण गंधर्व देव सब आये । श्वपच भक्तको मस्तक[1] नाये[2] ॥
सब शट दर्शन और अचारी[3] । अस्तुति करै चरण शिर धारी[4] ॥
सा०—कल[5] वन्त बहुतेक जुरे[6], पण्डित कोटि पचीस ।
श्वपच भक्तकी पनही[7], तुलै[8] न काहुको[9] शीस ॥
चौ०—नाम सुमिरले अमृत बानी । क्या चतुराई ठानि रे प्रानी ॥
पढ़े रे भरथरी[10] चारों वेदा । बिन सद्गुरु नहिं पायो भेदा[11] ॥
गोरखको भी जन्म सरानी[12] । कायाकी गति[13] उनहुँ न जानी ॥
जबहुँ जुरे कोटिन ऋषि राजा । तबहुँ न घण्ट अधर[14] बिच बाजा ॥
जब ही श्वपच[15] मन्दिर पगु धारा । बाजेउ घण्ट भये झनकारा ॥
कह कबीर चारों वरण है नीचा । सबते श्वपचहु भगत है ऊंचा ॥

जब सुदर्शनजीने दूसरी बार भोजन किया तब सात बार स्वयम् आकाशी घण्ट बजा, चारों ओरसे धन्य धन्य और जयजयकार शब्द होने लगा, समस्त राजा प्रजा आकर श्वपच सुदर्शनके चरणोंपर गिरे षट् दर्शनके ऋषि मुनिगण आकर दण्डवत प्रणाम करने लगे पाँचों पाण्डव अत्यंत नम्रतापूर्वक उनके चरणोंपर गिर, स्तुति करने लगे । सुदर्शन महाराजकी महिमा सब संसारमें प्रकट हो गई ।

पाण्डवोंको सुदर्शनकी श्रेष्ठता दिखाना ।

भीमसेनसे कहा था, कि, जबतक हम श्वपच सुदर्शनकी श्रेष्ठता अपनी आँखोंसे न देखलें तबतक कभी भी विश्वास न करेंगे क्योंकि, कृष्णजीने प्रतिज्ञाकी थी कि, मैं तुमको सुदर्शनकी श्रेष्ठता तुम्हारी आँखोंसे दिखला दूंगा, तुम देख लेना, तब विश्वास करना। इस कारण कृष्णजीने आज्ञा दी कि, अब यह सब समाज जो इस समय उपस्थित हैं पुष्करजी चलें । आज्ञानुसार सब पुष्करजीको चल दिये ।

भगवान् कृष्णने भी जो कुछ कहा था उसको पद्यबद्ध ग्रन्थोंमें दिखाये देते हैं—

ततक्षण[16] कृष्ण वचन अस[17] भाखी[18] । सुनहु न राय युधिष्ठिर साखी[19] ॥
सबही लैचलु[20] पुष्कर तीरा[21] । देखहु दृष्टि[22] सकल[23] मतिधीरा[24] ॥
पुश्कर क्षेत्र आहि[25] अघहारी[26] । बेगिहि[27] चलहु[28] तहाँ पग धारी ॥

---

१ शिर, २ झुकाया ३ जोगे जंगम, सेवडा, संन्यासी, दर्वेश, ब्राह्मण, ४ रखकर, ५ सिद्धिवाले, ६ हुए, ७ जूती, ८ बराबर, ९ किसीको, १० भर्तृहरि, ११ हाल, १२ बीता, १३ हाल, १४ आसमानी, १५ श्वपच भी, १६ उसी समय, १७ ऐसे १८ कहे, १९ किसीके कहे हुए, २० लेचलो, २१ किनारे, २२ आँखेसे, २३ सब २४ बुद्धिमान्, २५ है, २६ पापनाशक, २७ जलदी २८ चल दिये ।

तब सब जिलि मिलि दीन रेंगाई[1]। पुष्कर छेत्र पहुँचे[2] जाई ॥
सवालाख दीपक उँजियारा[3] । सब परछाही[4] आप[5] निहारा[6] ॥
बैठे देख सकल सरदारा । सुर नर भूपति ठाढ़े पारा[7] ॥
सकल मेष[8] को देखहु देवा । जलमँह[9] रूप[10] कहहु कस[11] भेवा[12] ॥
साखी—सब परछांई निरखहू[13], सुनहु युधिष्ठिर राय ।
कहहु[14] सुपच कस[15] आगरे[16], जलमँह[17] निरखहु जाय[18] ॥

युधिष्ठिर वचन ।

चौ०—निरखे[19] राय युधिष्ठिर छाहि[20] । पशुकी छाया सबकी आहि[21] ॥
खर[22] शूकर[23] लीन्हें औतारा[24] । श्वानजन्म[25] भरमें[26] मनियारा[27] ॥
सा०—मीन[28] माँस जो खात[29] है, ते तो जाति चँडाल ।
गीध[30] कागकी[31] देह धरि[32], भरमें जग[33] जञ्जाल[34] ॥

जब समस्त समाजको समेटि कर राजा युधिष्ठिर तथा कृष्णजी पुष्कर तीर्थ गये । कृष्णजीने सवालाख प्रदीप जलवाये, युधिष्ठिरजीसे कहा कि, अब तुम लोग आदमियोंकी परछाई इस जलमें देखो, उन्होंने देखा तो सर्व मनुष्योंका प्राकृतिक स्वरूप उस जलमें दिखाई दिया अर्थात् गदहा, सूवर कुत्ता, बैल, हाथी घोड़े पशु, पक्षी हिंसक जीव कीड़े मकोड़े आदि देख पड़े, एक भी उनमें मनुष्य नहीं था केवल श्वपच सुदर्शनजी महाराजही इनमें मनुष्य थे, श्रीकृष्ण का सत्य पुरुषका रूप था । जब पाण्डवोंने स्वचक्षुसे देख लिया कि सुदर्शनजीके अतिरिक्त दूसरा कोई मनुष्य नहीं है तो उनको सुदर्शनजीकी श्रेष्ठताका परिचय भली प्रकार मिल गया । पुष्करजीमें सबका प्राकृतिक स्वरूप दिखाई दिया । क्योंकि, पुष्करजी सब तीर्थोंमें श्रेष्ठ हैं, पृथ्वीकी आँख हैं । इस कारण कृष्णचन्द्रने यह समस्त कौतुक धरतीकी आँखद्वारा दिखलाया । सब लोगोंने हंस कबीरकी श्रेष्ठताको भली प्रकार जान लिया । इसी प्रकार हँस कबीरकी सबकालोंमें प्रकट हो जाती है, किसीसे छिपी नहीं रह सकती । उन्हींकी श्रेष्ठतापर यह गजल है इसमें उनकी श्रेष्ठताका कुछ नमूना दिखा देते हैं—

ग़ज़ल—सद[35] मह खुर छिप जायँगे इस नूरके[36] आगे ।
तुझ बंद: सुदर्शन कदम[37] [38]धूरके आगे ॥

---

१ चल दिये, २ पहुंच गये, ३ प्रकाशमें, ४ अपनी परछाई को, ५ स्वयम, ६ देखा । ७ किनारेपर ८ दशनोंके, ९ जलमें, १० आकार, ११ कैसा, १२ रहस्य है, १३ देखो, १४ बताओ, १५ कैसे, १६ आकार, १७ पानीमें, १८ देखो, १९ देखे, २० परछाई, २१ है, २२ गदहा, २३ सूअर, २४ जन्म लिए हुए हैं, २५ कुत्तेकी योनि, २६ डोले, २७ चूडीवेचा, २८ मछली २९ खाते हैं, ३० गृद्ध, ३१ कऊआ, ३२ शरीर, ३३ संसार, ३४ बखेडेमें, ३५ सूर्य चाँद आदि ३६ आत्मीय प्रकाश, ३७ चरण, ३८ रज ।

है, हेच[1] नमक[2] हुस्नोदमक[3] हूं[4] रो गिलमा[5] ।
पापोश[6] चमक[7] इन्द्रमती हूरके आगे ।।
जेते हैं सलातीन जमी[8] और फलकके[9] !
खिदमंतममें[10] हैं सारे मेरे फगफूरके आगे ।।
दिलदार है बाजारमें कोपर्द: नशीं[11] है ।
हाजिर [12]बदिले बेदिल [13]रञ्जुरके आगे ।।
मूसा [14]सदहा गुजरे न देखा कभी सो औज[15] ।।
गाफिल हुए सब हिर्सोहवा[16] ढङ्ग लगाये ।।
कुछ जोर नहीं जालिम[17] जंबूरके आगे ।।
फिरता बतवाफे तो यह गरदूं जो कमरकोज ।
सिजदे[18] झुका है तेरे मनशूरके आगे ।।
कह भेद उसीसे जो कि हो महरमें[19] इसरार
कर फाश[20] न तू हरगिज [21]गयूरके आगे ।।
नथुनेमें [22]बनी जजान है जबतक तेरे आजिज ।।
कर उसकी बुजर्गी खडे जम्हूरके आगे ।

यथा ।

भारतो [23]स्वसमवेदकी तहरीर[24] में देखो ।
उलमाय[25] फकीरनकी[26] तकरीर[27] में देखो ।।
जिनके सदहा लक्ख हैं सुदर्शनसे गुलामाँ ।
सो साहव के कलमए [28]तासीर में देखो ।।
मखलूक[29] जहाँ मजमअ[30] हुआ केते करोडों ।
इस सत्यगुरु की [31]खादिम तौकरिमें[32] देखो ।।
बन्दे हैं पडे कैद हसीनान[33] हजारो ।
नबदल[34] बुतें जुल्फकी[35] जञ्जीर में देखो ।।
जिस नामसे वाकिफ[36] न जमी[37] और न जमाँ[38] है।
सो नाम है उस खादिमे जागीर में देखो ।।

---

१ तुच्छ, २ खार, ३ सौन्दर्य, लावण्य, ४ परी, ५ सुंदर सुंदर लडके, ६ जूती, ७ लावण्य, ८ भू, ९ आसमान, १० सेवा, ११ पर्देमें छिपा हुआ, १२ हृदयके व्याकुल, १३ अत्यन्त रंजीदा, १४ रातदिन, १५ तपिश, १६ जिस पर्वतपर मूसाको परमात्माके दर्शन हुए थे, १७ अत्यन्त-जुल्मी, १८ वन्दना, १९ ढकना, २० जाहिर, २१ गमार, २२ कविकी कविताका नाम है। २३ आत्म बोधक शास्त्र या कबीर साहिबका बीजक, २४ लिखावट, २५ उलमा, २६ फकीरों २७ वचन, २८ स्वभाव, २९ पैदा, किया, ३० समूह, ३१ खिदमत करनेवाला, ३२ सत्कार । ३३ प्रसन्न चेता, ३४ न फिरनेवाले, ३५ शरीर, ३६ जानकर, ३७ भू, ३८ जमाना,

जो कर न सके फतह[1] कोई मर्द सिपाई।
सो आशकके[2] नालए[3] शबगीर में देखो॥
जिस इल्मसे महरूम[4] रहे खादिमोख्वाज:।
सोई कदमें बरकत् गुरु पीर में देखा॥
बुल बुल है फुगा[5] में जिसे कुमरी करे कूकू।
हर[6] गुलशनो हर गुलबने तसवीर में देखा॥
जिसके लिए जावाज[7] है परवानए[8] बे खौफ[9]।
सो महरुख[10] हर शम: व मुलगीर में देखो॥
सदरञ्ज[11] उठा न गञ्ज[12] सो हाथमें आवे।
आसान है सो उसकी तदबीरमें देखो।
यह हरदो[13] जहाँ और जहाँदार तमासा॥
सब खेल खुला[14] कौल की तजबीर में देखो।
सोहाजिरो[15] नाज़िर[16] है बहों जाहिरो वातिन[17]॥
वेदारी और ख्वाबकी ताबीर में देखो।
जिसके लिये मद्दाह[18] समीहम्द[19] सरायाँ॥
यह सारा जहाँ उसकी तस्वीर में देखो।
जो मजहत्र जारी न हुआ तीन जमाना॥
घर घर है सो दौर इनकी अखीर में देखो।
याँ और वहाँ परद: दुई, इठगया[20] आजिज।
सत् पुरुषको साहबे कबीर[21] वें देखो॥

*यथा– ताज़ीम तेरे बन्देको गुलज़ार झुका।
तकरीमको शम्शो महे अनवार झुका॥
जब आपही से आप बजा घण्ट समावी॥
पाबोसको गेती शहे दरबार झुका॥
रक्क़ास झुका तबल: झुका तार व तम्बूर।
वं बादए पैमान: व सरशार झुका॥

---

१ जीव २ प्रेमी, ३ आहंकीलैन, ४ अलग, ५ हल्ला, ६ प्रत्येक, ७ जीव, ८ पतंग, ९ निडर, १० चन्द्रमुखी, ११ सदाके दुख, १२ ताला, १३ इसलोक और परलोक, १४ एक अनागत वक्ता, १५ उपस्थित, १६ द्रष्टा, १७ हृदय, १८ सराहक, १९ स्तुति, २० द्वैत, २१ कबीर साहब।

* यज्ञमें घंटाके आपसे आप बज जानेसे सभीने सुदर्शन श्वपचको भगवान्का अनन्य भक्त जानकर शिर झुकाया था इसी शिर झुकानेकी स्तवको मान निर्देशके साथ इस गजलमें भी कहा गया है।

सूफ़ी भि झुका रिन्द झुका जाज़िबे मजबूत ।
मयः पीर मुग़ाँ खानए खुम्मार झुका ।।
मखलूक़ हुआ आगाह उस अकबर इसरार ।
आली अमलो इल्म अमलदार झुका ।।
जब पहिन अजर जामा चले हंस तुम्हारे ।
तसलीमको तब आगे हो ओंकार झुका ।।
हाज़िर थे इल्म और फ़नून फ़ाख़िरे कसूबी ।
वा तजरबए तसबीहो जुन्नार झुका ।।
सदहा जमा जङ्गलको जलावे तजो पलकमें ।
ता बिन्दए नाविक शररबार झुका ।।
है कौन बद अन्देशः जो आ पेश तुम्हारे ।
हैबत से तेरी चर्ख़ यह दौवार झुका ।।
सब वेष भगे देख तेरा तीर जिगर सोज़ ।
रुस्तम भी झुका शेवः सितमगार झुका ।।
ताज़ीस्त सनाख्वाँ हो तु इस क़ातिल अपने ।
सिजदेको पहले निरङ्कार झुका ।।
बोले न हँसे यार तलबगार फिर आजिज़ ।
जब तुझ हदफ़े सीनः पै सोफ़ार झुका ।।

गरुडजी महाराज ।

कबीरसागरान्तर्गत बोधसागरमें एक 'गरुड बोध' भी है। उसमें सबसे पहिले धर्मदासजी कबीर साहिबसे गरुडबोधका भेद पूछते हैं, एवं कबीर साहिब कहते हैं कि, पुरुषने कहा कि, ए सुकृत ! आप संसारमें जाओ जीवोंका उद्धार करो। ज्ञानीजीने पृथ्वीपर आकर, जिसने उनके वचन माना उसीका उद्धार कर दिया। सबसे पहले गरुड़जी मिले, मैंने उन्हें सत्यनामका उपदेश दिया, कैसे दिया। सो मैं तुझे सुनाये देता हूँ। गरुडको जब मैं मिला तो गरुड़ने मुझे पूछा कि, आप कौन एवं कहाँसे आये हैं मैंने कहा कि, ज्ञानी मेरा नाम है संसामें दीक्षा देनेके लिये सत्य लोकसे आया हूँ। गरुड़ने यह सुनकर बड़ा आश्चर्य माना कि, कृष्णसे भिन्न दूसरा सत्य पुरुष कौन है। वे ही दसों अवतार धारण करते हैं। कुछ बातोंके पीछे कबीर साहिबने गरुड़जीको कृष्ण महाराज की आज्ञा लेने को भेजा था।

कृष्ण वचन।

चौ०–सुनके कृष्ण उतर तब दीन्हा। भले गरुड़ तुम उनको चीन्हा ॥
सरगुण कई बार अवतारा। निज साहब है अगम अपारा ॥
सो साहब हमको निरमाया। आज्ञा कीन्हीं हमहिं उपाया ॥
जो कबीर भाषे अरथाई। सोई वचन सत्य है भाई ॥

गरुड़ वचन।

गरुड़ कहे तुम काहे न भाखी। कैसे मोहिं छिपायके राखी ॥
सरगुण प्रभु दीन्हा फैलाई। निरगुन कैसे नहिं प्रगटाई ॥

कृष्ण वचन।

सुनहु गरुड एक वचन प्रमाना। निरगुन कोई बिरलै जाना ॥
हम देही धरि क्रीडा कीन्हा। यही मान सब काहू लीन्हा ॥
हम गीतामहँ सन्धि जनाई। ताको कोई न चीन्है भाई ॥
निरगुन भेद कहूँ परमाना। मनकर भेद न कोई जाना ॥
पढ़ गीता पण्डित बौराई। अर्थ भेद को गम नहिं पाई ॥
पढ़ गीता औरन समझावें। आप भरममें जन्म गवावें ॥
कथ गीता हम सकल बताई। पण्डित अर्थ न समझा जाई ॥
ब्रह्मा विष्णू शिव कह भाई। इन तीनों मिल बाजी लाई ॥
ता बाजी अटका सब कोई। निरगुणकी गम कैसे होई ॥
बाजी लायके जग भरमाई। निर्गुणकी गति कोइ नहिं पाई ॥
मैं सब जानूँ भेद अवगाहा। और देव नहिं पावैं थाहा ॥
गीताको हम कथ समझाई। सा अर्जुन नहिं मानी भाई ॥
रहन गहन उनहूँ नहिं पाई। अरथ सुनै सब जन अरुझाई ॥
पण्डित पढ़ गीता अरथावै। गीता केर अर्थ नहिं पावै ॥
फिर फिर हमहींको ठहरावै। निर्गुणकी गम नाहीं पावै ॥
हम कबीरको नीके जाना। उनहीं कीन्ह सकल मण्डाना ॥
सकल जीव उन अण्ड मुँदाई। इनहीं सबहीं अर्थ दृढ़ाई ॥
जहँ लगि तीरथ देखहु जाई। इनहीं सब थापना थपाई ॥
और सकलको रचना कीन्हा। यहि विधि थाप सबनको दीन्हा ॥
हम तीनों पुरुष बिसराई। आप आपको कीन्ह बड़ाई ॥

साखी–कह कृष्णजी गरुड़से, तुम गुरु करो कबीर ॥
हंस लोक पहुँचावई, खेइ लगावै तीर ॥

इस प्रकार श्रीकृष्णने जब गरुड़को आज्ञा दी कि, तुम कबीर सहाबको गुरु करो, तब गरुड़जी तुरन्त सत्यगुरुके पास गये । कबीर साहबकी आज्ञानुसार दीक्षा लेनेका सब प्रबंध किया । जैसा कि, अब वर्त्तमान कालमें कबीर पंथियोंमें दीक्षा लेनेकी प्रथा है । इसी नियमके अनुसार गरुड़जीने चारों ओर पत्र भेजकर बहुत साधुओंको एकत्रित कर भण्डारेका बड़ा प्रबन्ध किया । समस्त साधुमंडलीका प्रेम पूर्वक सेवा सत्कार किया ।

चौपाई–जितने साधु द्वारिका चीन्हा । तिनहिं गरुड़ सबको दल दीन्हा ।।
जहँ लगि मुनिवर सहस अठासी । आए ऋषि मुनि सिद्ध चौरासी ।।
आए ऋषि जो सहस अठासी । नागलोकके भोग विलासी ।।
वासुदेव जहँ आप रहाये । और नाग बहुतेक चलि आये ।।
ब्रह्मा विष्णु जहँ आये भाई । शिव आये बहुतेक चलि लुगाई ।।

महादेव वचन ।

कह शिव कोपके वचन अपारा । तीन छोड़ कस और विचारा ।।
सब पर तेज महादेव कीन्हा । सब मिलिआय गरुड़को चीन्हा ।।
तब शिव ऐसे वचन सुनाई । हमें तीनों पर और न भाई ।।

गरुड़ वचन ।

सुनु ब्रह्मा सुनु विष्णु महेशा । मो को कीन्ही कृष्ण उपदेशा ।।
जो कछु कृष्ण बताई भेखा । सो तुम्हरो मत आखिन देखा ।।

महादेव वचन ।

यह सुनि महादेव रिसियाना । हमरी गति तुम कैसे जाना ।।
हम तीनों हैं त्रिभुवन राई । हमें छोड़ कस और दृढ़ाई ।।

शिवजी बहुत कुछ कह अत्यंत क्रुद्ध हुए बड़ा भय दिखलाया ।

पर गरुड़जीने कुछ भी परवाह नहीं की, ब्रह्मा विष्णु आदि सब देवता उपस्थित थे । जब गरुड़जीने कबीर साहबसे दीक्षा ली, सत्यगुरुका ज्ञान पाकर भली प्रकार सन्तुष्ट हुए, गरुड़जीके सामने बहुतसे लोग ब्रह्मा विष्णु तथा शिव सहित एकत्रित हुए, पर किसकी ताकत थी कि, ज्ञानमें गरुड़जीका सामना कर सके ।

जिस समय गरुड़जी दीक्षालेने लगे उस समयका वृत्तान्त सुनों कि, उनपर कैसी आकाशी दया हुई थी ।

चौ०–ऐसी भाँति भगति उन साजा । बाजे सकल अनाहद बाजा ।।
बाजे शंख बीन शहनाई । गैबको बाजा बाजै भाई ।।

ताल मृदङ्ग गैबसे बाजी । ऐसी भांति भक्त भल साजी ।।
सत्य लोकसे उतरे दासा । करैं भक्ति वो भोग बिलासा ।।
सखा समेत साज जो आई । जगमग ज्योति बरणि नहिं जाई ।।
निर्गुण भक्त कीन्ह सञ्जोई । केते भूल रहे सब कोई ।।
नागलोककी कन्या आई । मोहि रहे सब देखी भुलाई ।।
मोहे ब्रह्मा विष्णु महेशा । नारद शारद औ सुख देशा ।।
गण गंधर्व मोहे आचारी । निर्गुन भेद न परे विचारी ।।
मोहे कृष्ण द्वारिका वासी । मोहे सकल सिद्ध चौरासी ।।
यहि विधि भक्ति कीन्ह चितलाई । देहको सुधि सबहिं बिसराई ।।
धन्य धन्य सब करैं पुकारी । धन्य कबीर है भक्ति तुम्हारी ।।
धन्य गरुण है ज्ञानि जो पाया । ऐसे सब कमाल बचन सुनायी ।।

जब गरुड़जीने दीक्षा ली उस समय बड़ा समाज हुआ। सत्यलोकसे हंस, उतर पड़े, सब सिद्ध साधु तथा देवता इकट्ठे थे, अंतरिक्षसे, अनगिनती बाजे बजने लगे, नागलोकसे एक स्त्री आई, उसको देख सब देवता तथा सिद्ध आदि मोहितसे हो गये, गरुड़जी ऐसे भाग्यवान् थे कि, उनके निमित्त कबीर साहबने सर्व सामग्री सत्यलोकसे मँगवाई थी, दीक्षा देनेके समय अनहद बाजा बजने लगा, ऐसा आनन्द हुआ। जो कभी देखा सुना नहीं गया था। गरुडने अत्यंत नम्रता पूर्वक सब ऋषि, मुनि तथा सब मनुष्योंका सत्कार किया जिससे बड़ा आनन्द हुआ। गरुड़जी सत्यगुरुका ज्ञान पाकर योग्य हो गए। पीछे सत्यगुरुकी आज्ञा लेकर तीनों देवताओंके निकट गये, पहले ब्रह्मासे मिले। ब्रह्माने देखा कि, गरुड़जी आते हैं तब प्रतिष्ठा सहित उठ खड़े हुए। यह बात उस समयकी है जब सभा विसर्जन हो चुकी थी, सब लोग अपने अपने घरको चले गये थे। जब ब्रह्माने देखा कि, गरुड़जी आते हैं, तब ब्रह्मा स्वागतके निमित्त उठे और बड़ी प्रतिष्ठा तथा मर्यादा की। जब गरुड़जी आसनपर बैठ गये तब वार्तालाप होने लगी। गरुड़जीने कहा कि, हे ब्रह्मा ! सत्यगुरुकी भक्ति मिले बिना कदापि मुक्ति न मिलेगी। करोड़ों बार सब उत्पन्न होते और मरते हैं उनकी मुक्ति कदापि नहीं होती। हे ब्रह्मा ! सत्यगुरुकी दया बिना आवा-गमनके दुःखसे कदापि कोई नहीं छूट सकता।

चौ०—अस्थिर योग न काहू पाई । कोटि ऋषीश रहे भरमाई ।।
कोटि रुद्र औतार जो लीन्हा । अविगत पुरुष न काहू चीन्हा ।।
गण गंधर्बकी कौन चलावे । सनकादिक शुकदेव भुलावे ।।

शेषनागजी बहुत भुलाई । देवी भूल दया नहिं आई ॥
जीव अनेक घात जो लाई । अविगतिकी गति काहु न पाई॥
आप आप सब करैं बडाई । तुमहूं ब्रह्मा देह जो पाई ॥
कीन्हा खोज अन्त नहिं पाये । तब तुम आप आप ठहराये ॥
तुम्मारे भूले जगत भुलाना । आदि पुरुषका मर्म न जाना ॥
तेतिस कोटि देवता आहीं । सब भूले कोई पार न पाहीं ॥
तुम बाजीगर बाजी लाये । तुमहीं सकल दीन भरमाये ॥

जब गरुड़जीके कथनको ब्रह्माजी सुनकर अत्यंत क्रुद्ध हुए जान लिया कि, गरुड़ने हमको तुच्छ ठहरा लिया है, ब्रह्माने सबको बुलाया राजा इन्द्र अपने दरबारियों सहित और नाग नागिन इत्यादि सब देवते ब्रह्मा तथा गरुड़का वाद विवाद सुननेके लिये आविराजे, ब्रह्माजी बड़े ही क्रुद्ध थे कि, गरुड़ तो हमको तुच्छ और नीच जानता हुआ बटमार वताता है ।

चौपाई–दिव्य दृष्टि मैं देखा बानी । है कोई पुरुप अगम निर्वानी ॥

इस प्रकार सुन देवता और राजा इन्द्र इत्यादि गरुड़जीके सामने कोई बात नहीं कर सके, सबके सब पराजित हुए, सब मिलकर आदिभवानीके निकट गये, दण्डवत प्रणाम किया । ब्रह्माने कहा कि, हे माता मेरा रचा हुआ तो समस्त संसार है गरुड़ दूसरेको किस प्रकार ठहराता है ! आदि भवानीने उत्तर दिया कि, हे ब्रह्मा ! तू मिथ्यावादी है पहले तूने मिथ्या भाषण किया था, इसके कारण तुझको शाप मिला अब फिर तू क्यों घमण्ड करता है ? यदि तूही समस्त संसारका रचयिता था तो फिर तू किसका ध्यान धरने गया था ? अपनी अज्ञानता तथा मूर्खताको छोड़, सत्यपुरुषका ध्यान कर । महामायाके इस प्रकार कहनेपर ब्रह्मा लज्जित तथा निस्तब्ध हुए । आद्याके सामने किसीको कुछ उत्तर देते न बन पड़ा । तब फिर गरुड़जी बोले–

चौपाई–सुन ब्रह्मा मति है अज्ञाना । तुम माताको कहा न माना ॥

साखी–तुम ब्रह्मा जानो नहीं, भये करमके खोट ।
हम हम करके भूलिया, ताते लगी न चोट ॥
कहैं गरुड समझायकै, जनि भूलो अज्ञान ।
साहब एक अगम्य है, ताका करलो ध्यान ॥

सबने निरञ्जन देवताको जगत् रचयिता ठहराया कि, वह सबके ऊपर है । फिर शिवजी अत्यंत क्रुद्ध होकर बोले कि, मेरा बनाया हुआ तो सब कुछ है, मैं चाहूँ तो गरुड़ तुझको अभी समाप्त कर डालूं । फिर तू बोलने योग्य न रहेगा कि, सत्य पुरुष कौण हैं । यह सुन गरुड़ बोले कि–

चौ०—महादेव तुम मतिके हीना। तुम नहिं माया पुरुष को चीना ।।
तातें तुमहूँ गरब भुलाई। तुम्हरे मारे कोई न जाई ।।
तुम केचक हो जीव विचारा। तुम्हरे कहे होई का पारा ।।
साखी—ब्रह्मा विष्णु महेश्वर, सुनिये सत्य विचार।
वह तो पुरुष अखण्ड है, तुम नहिं पाओ पार ।।
चौपाई—तुम भूले आपाको थापी। आप थाप भये तुम जापी ।।

जब देवताओंको घमण्डी देखा तब सत्य गुरुने एक ऐसा कौतुक दिखलाया कि, वङ्गदेशका ब्राह्मण कुमार (जिसकी मृत्यु निकट आ चुकी थी) समीप था, अब वह मर जावे। मृत्युके भयसे भयभीत होकर देवताओंके शरणमें आया कहा कि, मेरे प्राणोंको बचाओ। इतनी बात सुनकर देवताओंने स्पष्ट उत्तर दिया कि, हम तुमको नहीं बचा सकते। यमराज महाप्रबल है। उसी समय गरुड़जीने सत्यगुरुकी कृपासे उस बालककी प्राणरक्षा की। देवताओंने लज्जित होकर सिर झुका लिया। गरुड़जीकी श्रेष्ठता तथा उच्चता अच्छी तरह प्रमाणित हो गई। उस समय लोग गरुड़जीकी प्रशंसा करते हुए धन्य धन्य कहने लगे। गरुड़जी सत्यपुरुषकी भक्तिका उपदेश करते हुए सहस्रोंको भक्तिमें लगाने लगे। जो कोई आपके सामने वाद-विवाद करने आवे तो सबको परास्त कर दिया करते थे। जिस किसीको सन्देह हो वो उक्त ग्रंथमें देखकर अपने संदेहको मिटा सकता है।

दुर्वासा ऋषि।

दुर्वासा ऋषि बड़ेही सुप्रसिद्ध बलिष्ठ तपस्वी और क्रोधी थे। क्योंकि, दुर्वासा शिवके अवतार अथवा अंश कहे जाते हैं। अत्रिमुनि तथा अनसूयासे तीन पुत्र उत्पन्न हुए थे। पहिला ब्रह्माका अंश चन्द्रमा, दूसरा विष्णुका अंश दत्त दिगम्बर संन्यासियोंके गुरु और तीसरा शिवका अंश दुर्वासा ऋषि था। इसके भयसे समस्त इन्द्रादि देवता और मनुष्य भयभीत होते थे। क्योंकि, ये शीघ्रही शाप देकर सत्यानाश कर देते थे। राजा इन्द्रको शाप देकर दरिद्र कर दिया। छप्पन करोड़ यादव और कृष्णकी संतानोंको क्रोधसे नष्ट कर डाला। इस कारण सब मनुष्य उनसे भयभीत होते हुए सदा काँपते रहते थे। जब सत्यगुरु कबीरसे साक्षात्कार हुआ ज्ञान सुना, तब सत्यगुरुके शरणमें आनेसे उनके समस्त दोष नष्ट हो गये। सत्यगुरुके हंस होकर मुक्तरूप हो गये, फिर तो दुर्वासाका समस्त क्रोध तथा रुष्टता जाती रही, वे शान्त तथा सतोगुणसे परिपूर्ण हो गये। दुर्वासा बोध मुझको मिल नहीं सका, नहीं तो मैं उसमेंसे कुछ यहाँ लिखता।

उस समय कबीर साहब करुणामय ऋषिके नामसे प्रसिद्ध थे। सहस्रोंको उपदेश करते फिरे, इस कालमें केवल तीन शिष्योंका वृत्तान्त जानता था। श्वपच सुदर्शन, गरुड़जी और दुर्वासाऋषि सो मैंने लिख दिया है। सहस्रोंने सत्यगुरुकी दयासे मुक्ति पाई, उनका विशिष्ट वर्णन यहाँ नहीं किया जा सकता।

राजा जगजीवन।

कबीर सागर नं ५ में जगजीवनबोध है। इसमें धर्मदास पूछता है तथा कबीर साहब मातृगर्भका समस्त वृत्तान्त कहते हैं कि, जब यह राजा अपनी माताके गर्भमें था तब दुःख तथा कष्टसे विकल होकर पुकारता था कि, हे सत्य-गुरु! मुझे इस नर्कसे निकालो। मैं आपका भजन तथा भक्तिके अतिरिक्त और कुछ न करूँगा। यह सब गर्भके भीतर सत्यगुरुसे वार्तालाप हो रहा था। वहीं मातृगर्भके दुःखका वृत्तान्त अनेक रूपसे कहा गया है। जब यह राजा गर्भसे बाहर आया उस समय उसको गर्भके भीतरकी प्रतिज्ञाएँ भूल गईं। उसके माता पिताने बड़े बड़े गुणी तथा पण्डितोंको बुलाकर धागा गण्डा बँधवाया और बहुत तरहकी युक्तियाँ की, जिससे कि, बालककी आयु बढ़े। बड़े लाड़ चावके साथ पालन किया। जब वो बालक युवावस्थाको प्राप्त हुआ तो अनेक विवाह किये, कामकी तरङ्गोंमें पड़कर हिलोरें लेने लगा। जहाँ सुन्दर स्त्री सुनी बलपूर्वक मँगवाकर दिन रात भोग विलासमें लगा रहता था। भैरव, हनुमान तथा चण्डी इत्यादिके पूजामें भूला रहा। यही दशा सब मनुष्योंकी है कि, जब मातृगर्भके कठिन कष्टमें फँसता है तब प्रतिज्ञाबद्ध होता है कि, मैं तेरा भजन करूँगा। फिर बाहर आकर भूल जाता है और सांसारिक कामनाओंमें फँसकर मर जाता है तब सत्यगुरुकी दयालुताकी सोता प्रवाहित होती है। वे जीवोंको अचेत निद्रासे जगानेके लिये पृथ्वीके चारों तरफ फिरते हैं। इसी तरह फिरते २ पट्टन नगरमें आये, जहाँ यह राजा रहता था। राजा भोग विलासमें ऐसा निमग्न हो रहा था कि, भगतोंको देखकर हँसा करता और ज्ञान ध्यान कुछ न मानता था। कबीर साहब कहते हैं कि, मैंने इस नगरमें घूम घूमकर व्याख्यान किया परन्तु किसीने कुछ नहीं सुना। तब मैंने सोचा कि, राजा किस प्रकार कहना माने, पश्चात् यह युक्ति की कि, उस राजाकी एक फुलवारी थी जो चार कोस लम्बी तथा तीन कोस चौड़ी थी वह वाटिका बारह वर्षसे शुष्क होगई थी। उसकी लकड़ियाँ भी शुष्क होकर गल जानेके समीप हो गई थीं इसी शुष्क वाटिकाके एक कोनेमें मैं (कबीर साहब) आसन मारकर बैठ गया। फुलवारी जो बारह वर्षसे सूख गई थी सब हरी भरी हो गई। वृक्ष लहलहाने लगे।

वाटिका सहस्रों प्रकारके फल फूलसे भर गई। सहस्रों प्रकारके फल और फूल निकल पड़े जो कि, पहले कभी न देखे और न सुने गये थे। उन्हींसे वह वाटिका पूर्ण हो गई। फल फूलसे भरे वृक्षोंपर बुलबुल तथा भाँति भाँतिके पक्षी बोलने लगे। चारों ओरसे पक्षियोंका चहकारा सुनकर माली आश्चर्यसे चकित हुआ कि, यह वाटिका कैसे हरी-भरी हो गई ? उसे बहुत फल फूल तथा मेवोंको लगा देखकर माली बड़ाही हर्षित हुआ। उनमेंसे अनेक प्रकारके फूल, फल, मेवे डालियोंमें भर भरकर वह माली राजाके समीप आया, भेंट करके निवेदन करने लगा कि, महाराज ! आपकी वाटिका हरी हो गई। भाँति भाँतिके फल, फूल और मेवे लग रहे हैं। हे महाराज ! आपकी नौलखी फुलवारी ऐसे यौवनोंपर है कि, उसका वर्णन किया नहीं जा सकता है। राजाके समक्ष जब पुष्पों और मेवोंकी टोकरियाँ मालीने रक्खीं, तो वो देखकर राजा और उसके मन्त्रिवर्ग ऐसे चकित हुए कि, ऐसे फल फूल तथा मेवे हमने कभी देखे सुने न थे। न जाने ये कहाँसे आये ? यह बात सुनकर राजा परम हर्षित हुआ। मन्त्रियों मुसाहबोंसे कहने लगा कि, आश्चर्यकी बात है। पश्चात् राजाने ज्योतिषियोंको बुलाया और वाटिका देखने चला। राजाके साथ समस्त मन्त्री मुसाहब तथा प्रजा थी। ज्योतिषियोंने कहा कि, महाराज ! इस वाटिकामें कोई महापुरुष आकर बैठा है जिसके कारण यह वाटिका हरी भरी हो गई है। तब राजा उस वाटिकाको देखनेपर अत्यन्त ही आह्लादित हुआ। आज्ञा दी कि, इस वाटिकामें जाकर ढूंढ़ो। लोग ढूंढ़ने लगे। ढूंढ़ते ढूंढ़ते देखा कि, एक स्थानपर एक महापुरुष आसनमारे ध्यान लगाये बैठा है। सबोंने राजाको समाचार दिया। राजाने जाकर दण्डवत् प्रणाम किया। राजाके साथ समस्त मन्त्री तथा प्रजा आदिने दण्डवत् प्रणाम किया। राजा कहने लगा कि, मैं बड़ाही भाग्यवान् हूँ कि, ऐसे महापुरुषने मुझको दर्शन दिया जिसके कि, विराजने मात्रसे वर्षोंकी सूखी वाटिका हरी होगई राजाने सत्यगुरुका दर्शन किया तब हृदयमें ठण्ढक आई उसका चित्त स्थिर हुवा। राजाने कहा कि, महाराज ! बारह वर्षसे यह वाटिका शुष्क पड़ी थी इसके समीप कोई नहीं आता था। आपके चरणरजसे यह वाटिका हरी भरी हो गई, आपके दर्शनसे मेरा हृदय प्रफुल्लित तथा प्रसन्न हो गया। अब महाराज ! मुझपर दया दृष्टि डालिये, मेरे मस्तकपर हाथ रखिये। मुझको मुक्ति प्रदान कीजिये हे सत्यगुरु ! मैं आपके साथ रहूँगा।

सत्य कबीर वचन।

चौ०—तुम तो कौल भुलाने भाई। किये क़ौल तुम गए भुलाई ।।

हे राजा ! जब तुम मातृगर्भमें थे तब तुम बचन बद्ध हुए थे कि, भजनके अतिरिक्त अब और कुछ न करेंगे, उस दुःखमें तो तुम पुकारते थे तथा हाय हाय करते थे कि मुझको इस दुःखसे निकालो, पर जब तुम गर्भके बाहर आये तब अपनी सारी प्रतिज्ञाओंको भूल शारीरिक कामना तथा पशुधर्मके वशीभूत होकर तुमने कैसे कैसे कुकर्म्म किये ? सत्यगुरुकी दयाको तुम एकबारही भूल गये, भोग विलासमें फँसकर अन्धे हो गये, मायाने तुम्हारे ज्ञानको बिलकुलही नष्ट कर दिया । जब यमदूत आवेंगे तुम्हारी मुश्कें बाँधकर नरकमें लेजावेंगे तब तुम्हारा कौन मित्र सहायता करेगा ? तुमको उनसे कौन छुड़ावेगा ? राजा ! तुम सोचो समझो कि, वे लोग जिन्हें तुम अपना मित्र समझते हो उनमेंसे कौन उस समय सहायक होगा ? कौन तुमको नरकसे बचावेगा ? मैं गर्भमें तुमको बहुत समझाया था, हे गँवार ! तूं उन सब बातोंको भूल गया । मैंने सबसे घर घर पुकारकर कहा पर मेरा कहना किसीने भी न माना । इतनी बात सुनकर राजा बोला कि–

चौ०– अबतो सद्‌गुरु होहु सहाई । मोको जमसे लेहु छुड़ाई ॥
सबही करम बख्शके दीजे । डूबत मोहिं उबारके लीजे ॥
सैन करि पालकी मँगवाई । लै सदगुरुको माहिं बिठाई ॥
पाँव उभाड़ काँध धर लीन्हा । तबही महल पयाना कीन्हा ॥
सत्गुरु पगधर महलके माहीं । सब रानिनको राय बुलाहीं ॥
समरथ दरशन दीन्हाँ आनी । धन धन भाग्य तुम्हारो रानी ॥
सत्‌गुरुको पलँग बैठाई । सब मिलि पाँव पखारो आई ॥
राजा भाखै शीष नवाई । मोकों राखो गुरु शरनाई ॥
करिये सद्‌गुरु जीवको काजा । दया करो मैं लाऊँ साजा ॥
अब हम सरना लेब तुम्हारे । दया करो तन दुखत हमारे ॥

सत्यगुरु वचन ।

कस चल राजा लोक हमारा । मैं नहिं देखूँ लगन तुम्हारा ॥
कोटिन ज्ञान कथो असरारा । बिना लगन नहिं जीव उबारा ॥
जैसे लगन चकोर की होई । चन्द्र सनेह अँगार चुँगोई ॥
ऐसे लगन गुरूसे होई । धर्मराय शिर पर धर सोई ॥
तुम तो हो मोटे महराजा । कैसे छोड़िहौ कुल मर्यादा ॥
कैसे छोडिहौ मान बड़ाई । कैसे छोड़िहौ मुख चतुराई ॥

कैसे छोड़िहो हाथी घोड़ा । कैसे छोड़िहौ ग्रन्थ भँडारा ॥
कैसे छोड़िहौ काम तरङ्गा । कैसे राजसे करो मन भङ्गा ॥
कैसे छोड़िहौ कनक जवहिरा । कैसे छोड़िहौ कुल परिवारा ॥
तुम तो उनकी बाँधी आसा । हम तो राजा कथैं निरासा ॥
जो तुम तजो अन्तरकी बासा । तबही चलो हमारे साथा ॥

राजा वचन ।

राजा कहें दोउ करजोरी । सुनिये समरथ विनती मोरी ॥
नगरके सब षट् वरन बुलाई । तेहि अवसर सब माल लुटाई ॥
तुम तो कह्यो बाहर लेउ वासा । मैं तो देहकी छाडी आसा ॥
अमृत वचन पियाओ आनी । हंस उबार करो निरबानी ॥
नगर कोट की छोड़ी आसा । निस दिन रहूँ तुम्हारे पासा ॥
हुकुम करो सोई मैं लाऊँ । करो दया मैं शीश नवाऊँ ॥
उमँग उठे हर्षित मग मोरा । थकित भये जनु चन्द्र चकोरा ॥
सूखा बाग जो फल परकासा । तबसे पूजी मनकी आसा ॥
कसनी कसो सो सहूँ शरीरा । तबहूँ प्रीत न छोडूँ तीरा ॥
जो तुम कहो सो भक्ति कराऊँ । दया करो तो शीश चढ़ाऊ ॥

सत्यगुरु वचन ।

तब समरथ अस शब्द उचारा । अब आरति काहो बिस्तारा ॥
चार गुरूको चौका कराओ । तिनका तोरायके जल अरपायो ॥
राजा गर्भ निवारौ तोरा । भाव भक्तिसे करो निहोरा ॥
भावभक्ति हम चाहैं राजा । धन सम्पत्तिसे नहिं कछु काजा ॥

तब राजाने कबीर साहबकी आज्ञानुसार समस्त सामग्री मँगा अत्यंत नम्रताके साथ विनय करने लगा कि, हे सत्यगुरु ! मैं आपकी शरणमें हूँ । मुझको यम फाँसीसे बचाओ । हे मेरे सत्यगुरु ! मैं महापापिष्ठ हूँ आपने मुझसा पापी भी कभी तारा है या नहीं ? ।

सत्यगुरु वचन ।

चौ० –तब सद्गुरु बहुतै बिहँसाना । फिर राजासे निर्णय ठाना ॥
सतयुगमें सत सुकृत नाऊं । जाय सोरठमें धारचों पाऊं ॥
खेमश्री ग्वालनहि उबारी । बहत्तर जीव ले लोक सिधारी ॥
द्वादश पहुँचे पुरुषके पाँही । और हंस द्वीप रहाही ॥
त्रेता मांहि मुनीन्दर नाऊं । नगर अयोध्या धारचों पाऊं ॥

जहँ मधुकर यक विप्रको नाऊं । चारसौ हंस लोक धर पाऊं ।।
हंस बयालीस लीन्हें सारा । पहुँच्यो महापुरुष दरबारा ।।
और हंस आनदीपमें किया । जिनजीव जैसे देह तब दीया ।।
अब द्वापरका कहूं विचारा । नृप नरहरि भुजकीन्ह उबारा ।।
सातसौ हंस परबानक कीना । कुटुम्ब सहित पायाना दीना ।।
चन्द्र विजय घर इन्दुमती नारी । तासंग राजा लियो उबारी ।।
केतो पूछो जीव सनेहा । गनत गनत नहिं आवै छेहा ।।
युगन युगन भवसागर आऊं । जो समझे तेहि लोक पठाऊं ।।
शब्द हमारा माने कोई । तो यमपुर नहिं जाय बिगोई ।।
इतनी बात कही समझाई । राजाके परतीत समाई ।।

यहाँ राजा अत्यंत नम्रतापूर्वक सत्यगुरुसे विनय करता है कि, मैं बड़ा भाग्यवान हूँ कि, सत्यगुरुने मुझको दर्शन दिया, फिर राजाने सत्यगुरुको चन्दन चौकीपर बैठाकर कहा कि, मैं तो सत्यगुरुके चरणोंका सेवक हूँ। समस्त नगरमें समाचार पहुँचा । सब लोक दर्शनके लिये आये । बड़ा हल्ला मच गया कि, राजा जगजीवन अब लोकको जावेगा । तब राजाने अपनी समस्त रानियोंको बुलवाया, सभी आकर सत्यगुरुके चरणोंपर गिरीं ।

राजा जगजीवनकी रानियोंके नाम—चन्द्रमती, इन्दुमती, भानदेवी, भानुमती, बुद्धामती, प्राणप्यारी, सत्यभामा, अविकला, नामप्यारी, दिलदायक, रङ्गस्वरूपा, सूर्य्यमती ये हैं।

राजा जगजीवनकी ये बारह रानियाँ तथा चार पुत्र थे। अब कबीर साहबने उन सबोंके शिरोंपर हाथ रक्खा तो सबको अगम ज्ञान होगया । उन्होंने सत्यपुरुषका दर्शन करके अपनेको कृतार्थ किया ।

राजाके चारों पुत्रोंने आकर सत्यगुरुके चरण चूमे । राजा सारी रानियों तथा पुत्रोंसहित सत्यगुरुके शरणमें आया । पाँचसौ जीव इस राजाके साथ सत्यलोकको गये ।।

अध्याय १९.

कबीर साहिबके कलियुगके शिष्य।

शाहंशाह इब्राहीम अद्धम्।

सुलतान * इबराहीम अद्धम बड़ा सम्राट् था। उसकी राजधानी बलखबुखारेमें थी। यह बादशाह मुहम्मद साहबकी मृत्युके कुछ वर्षोंके पीछे ही हुआ था। इस बादशाहकी मृत्युकी तारीख पुस्तक जवाहिर फरीदीके अनुसार यह है-सुलतान इबराहीम अद्धमने २६ माह जमादिउल अव्वल सन २८० हिजरीमें इस संसारको त्यागकर उस संसारकी ओर कूंच किया था। यह बड़ा शाहंशाह जिसके कि अधीन बहुत बादशाह थे। बड़ाही चिन्तित हुआ कि, मुझको कोई सच्चे परमेश्वरका पथ दिखावे इसीमें दिन रात रहता था। यह बात बिना साधुओंकी दयाके प्राप्त नहीं हो सकती, इसलिये अनेक साधुओंसे उसने पूछा भी परन्तु कुछ पता न लगा, तब उसने बड़ाही क्रुद्ध हो कहा कि, ये सब साधुगण मक्कार तथा झूठे हैं। यही नहीं अनेक साधुओंको पकड़कर कहा कि, अपने कौतुक दिखाओ। नहीं तो चक्की पीसो और हरामका खाना छोड़ दो। सब साधु चक्की पिसने लगे। इस प्रकार जब साधुगण विपत्तिमें फँसे तब समस्त साधुओंके राजा, समस्त संसारके रचयिता, परमात्माका दयालु हृदय विचलित हुआ। पितृक दयाने लहर मारी। सत्यगुरु कबीर बन्दी छोर जिन्दा साधुका स्वरूप धारणकर शहर बलखकी ओर रवाना हुये। पथमें जाते हुये देखा तो दो मनुष्य वाद विवाद कर रहे थे। एक कहता था कि काबा * आकाशपर है तो दूसरा कहता था कि, असम्भव बात है काबा पृथ्वीपर है।

---

* बलखका बादशाह इब्राहीम नानाकी गद्दीपर बैठा था इसके पिताका नाम अद्धम शाह था। इसकी उत्पत्तिका वृत्तान्त तो यों है कि एकबार अलमस्त फकीर अद्धमशाह बलखकी एकमात्र शाहजादीपर आशिक हो गये थे, सद्गुरुकी कृपासे शादीके बादेके ४० अमूल्य मोती बंजीरको देनेपर भी सिसकते जंगलमें फिकवा दिये गये थे। इसके थोडी देरबाद मरी हुई शाहजादीको कबरसे निकालकर अपनी कुटीमें ले आये थे। वहाँ भूले हुए काफिलेके वैद्यने हाथमें नस्तर देकर उस शाहजादीकों उस समय सजीव कर दिया। जब कि, आप उस मृतकको भी लकड़ियोंके सहारे खडी करके दुख भरे शब्दोंके साथ उसका दीदार कर रहे थे। जीवित होनेपर इस शाहजादीने फकीरी अख्तियारकी तथा अद्धमशाहके साथ शादी की। उसी पर्ण कुटीमें इब्राहीमका जन्म हुआ, बडा होनेपर पाठशालामें नानासे पहिचाना जाकर मासहित राजमहलमें पहुँच गया तथा नानाके मरनेपर उसकी जगह बादशाह हुआ। यह कबीर सागर नं. ६ सुलतान बोधके ६६ पेजसे लेकर ९४ तक पृष्ठ में लिखा हुआ है।

* मुसलमानोंका पूज्य स्थान जो अरब देशमें है जहाँ हज्ज करनेको जाते हैं।

कबीर साहबने दोनोंका निबटेरा कर दिया । दोनोंको दोनों जगह आकाश और पृथ्वीमें काबा दिखला दिया । उन दोनोंने देखकर प्रसन्न हो सत्य गुरुको धन्यवाद देते हुये अपने अपने घरकी राह ली । कबीर साहब नगर बलखमें जा पहुँचे । देखा तो बड़े बड़े धर्मस्वरूप चक्की पीस रहे हैं । तब कबीर साहबने चक्कियोंके निकट जाकर अपना डण्ड घुमाकर कहा कि, ऐ चक्कियो ! ऐसे ऐसे माहात्मा-ओंको आटा पीसनेमें लगाया है तुम आपसे आप चलो । इतना कहते ही सारी चक्कियाँ आपसे आप चलने लगीं । सब साधू पृथक् हो बैठे, कबीर साहबने शाहंशासके सेवकोंसे कहा कि, जाकर शाहंशाससे कहो कि, जितना गेहूँ तुम्हारे पास हो भेज दो पीस दिया जावेगा । यह कहकर कबीर साहब अन्तर्धान हो गये । सेवकोंने बादशाहसे जाकर कहा कि जाँपनाह ! सब चक्कियाँ आपसे आप चल रही हैं । एक जिन्दा फकीर आया है कि, जिसने अपनी लकड़ी घुमाकर चक्कियोंको चलनेको कहा जिससे वे आपसे आप चल रही हैं, जितने गेहूँकी इच्छा हो आप भेज दीजिये वह सब पिस जावेगा । बादशाहने जाकर देखा तो सब चक्कियाँ आपसे आप चल रही हैं चलानेवालेका पता नहीं है । बादशाह ढूंढ़ने लगा कि, जिस साधूने चक्कियाँ चलाई वह कहाँ गया ? यद्यपि बहुत कुछ ढूंढ़ा पर न पाया ।

चौ० – बलख शहर एक नगर अनूपा । तहां सुलतान जो ज्ञान स्वरूपा ।।
बादशाह शाहन सरदारा । प्रेम प्रीति मन मांहि विचारा ।।
इबराहीम अद्धम तेहि माना । राजहिं मांहि भगति उन ठाना ।।
×षट् दर्शन कह बूझ्यो भाई । कौन राम और कौन खुदाई ।।
नहिं तुम सबही कहो दिवाना । ना तुम दूर करो कुफ़राना ।।
+इतनी बात जबहि सुनिपाई । तब उठि धाये आप गोसाई ।।
जिन्दारूप गोसाईं कीना । आय शाहको दर्शन दीना ।।
बैठे तखत आप सुलताना । जिन्दा कीन्हीं दोआ सलामा ।।
दोआ हमारी उन नहि माना । मायाके मद गर्व दिवाना ।।

× कबीर सागर नं. ६ में सुलतान बोध है इसमें शाहन्शाह इब्राहीम अद्धम और बलख बुखारेका वैराग्य पूर्ण चरित्र आया है। इसके कबीर साहिब वक्ता तथा धर्मदासजी श्रोता हैं। पहिली तीनों चौपाई वर वर ठीक हैं पर चौथी चौपाईका उत्तरार्ध नौमी चौपाईका है। पूर्वार्ध किन्हींके आशयपर लिखा है साक्षात् नहीं मिलता। = चोथीके बादकी पाँचवीं सुलतान बोधमें क्रमके अनुसार चोथी चौपाईसे परे हैं।

× इसके बाद आठ चौपाई और दो दोहाओंको पीछे छठी आदि चौपाई आई हैं। सुल-तान बोधमें 'जबहि' के स्थानमें 'काशी' लिखा हुवा है किन्तु काशीके स्थानमें 'जबहि' लिखना ही उपयुक्त प्रतीत होता है क्योंकि, उस समय आपका काशीमें प्रादुर्भाव नहीं हुआ था।

कह सुलतान सुनो दर्वेशा। जिन्दारूप कौनको भेसा ॥
कहांसे आये कहांको जाय। कौन काज हमरे गृह आय ॥
*साखी – कहासे आय जिन्दाजी, कहाँको तुम जाय ।
हिन्दू तुर्क एकौ नहीं, मोंहि कह्यो समझाय ॥

सत्य कबीर बचन ।

कह दरवेश सुनो चितलाई। जिन्दारूप सुखदायक भाई ॥

यह बादशाह बड़े राग रङ्गमें डूब रहा था, यहाँलों कि, जब स्त्रियाँ उसके पैर को स्तनोंसे सुहलाने लगतीं थी तब उसको आराम मिलता विषय वासनासे एक बारगीही अंधा हो रहा था। परम सुन्दरी सोलह सहस्र स्त्रियाँ उसके पास थीं। जब कबीर साहबसे बार्तालाप होने लगी तब सत्यगुरुने पूछा कि, बादशाह! तुम भोग विलासमें पडे हो मृत्युके उपरान्त तुम्हारी क्या दशा होगी? बादशाहने उत्तर दिया कि, हम वैकुण्ठको जावेंगे। साहबने पूछा कि, यह सब माल खजाना धन दौलतका क्या होगा? बादशाहने कहा कि, यह सब कुछ मेरे साथ जावेगा। जिन्दाने बादशाहको एक सुई देकर कहा कि, जब आप वैकुण्ठको चलें तब इस सुईको भी अपने साथ लेते चलें, मैं इसको आपसे वहाँ ले लूंगा। बादशाहने लेकर कहा कि, सहस्रों सुइयाँ मैं आपको वहाँ देदूंगा। इतनी बातें हुईं। फिर कबीर साहब तो बिदा हो गये। दरबारका समय हुआ। सब दरबारी उपस्थित हुये सर्वसाधारणने दरबारमें बादशाहके हाथमें सुई देखकर निकटवर्तियोंने पूछा कि, जाँपनाह! यह सुई क्यों लिये हुये हैं? बादशाहने उत्तर दिया कि, यह सुई जिन्दा फकीरकी है। उसने कहा है कि, जब तुम वैकुण्ठको चलो तब मेरी सुईको वहाँ लेते जाना मैं इसे लेलूंगा। इस कारण मैंने इसको यहाँ रखलिया है। वहाँ उसको देदूंगा। दरबारियोंने समझाया कि शाहंशाह! वहाँ तो आपका यह शरीर भी न जावेगा आप सुई कैसे ले जायेंगे। शाहंशाहके मनमें बड़ी चिन्ता हुई कि, जब एक सुई भी मेरे साथ न चलेगी तो इतनी सैन्य तथा वीर धन संपत्ति आदि कैसे काम आवेगी? ये सब मिथ्या है। यह शोचकर बादशाह दुःखसागरमें डुबकियाँ लगाने लगा, खाना पीना छोड़ दिया। प्रण कर लिया कि, जब फिर मैं जिन्दा फकीरका दर्शन पाऊँगा तभी भोजन इत्यादि करूंगा। फिर कबीर साहबने दर्शन दिया। संसार छुड़ा देनेके

---

* 'कहांसे आये' यह दोहा इन चौपाइयोंके बीचकी बहुतसी चौपाइयोंको छोडकर बादमें आया है। २३ चौपाई और बीचके एक दोहेको छोडकर बादमें यह दोहा आया है।

हेतु अनेक शिक्षायें दीं। परन्तु शाहंशाह कुछ दिनोंतक शिक्षाको याद रखके फिर भूल गया। एक दिवस शिकार खेलने गया। शिकारमें एक कबूतर पर अपना बाज छोड़ा। उस बाजने कबूरतको पकड़कर तोड़ डाला। लोग बड़ी प्रशंसा करन लगे कि, बाजने कैसी फुरतीसे कबूतरको पकड़कर तोड़ डाला। इनकी बातें सुनकर बादशाह अत्यंत हर्षित हुआ। इतनेमें फिर कबीर साहब बादशाहके सामने आये। समझाया कि, हे बादशाह! इसी प्रकार तुमको एक दिवस यमराज पकड़कर तोड़ डालैगा, जैसे कि, बाजने कबूतरको तोड़ा है। सावधान! यमसे तुम्हारा बल नहीं चलेगा। सैन्य और भंडारा आदि काम नहीं आवेंगे। इतना कहकर कबीर साहब अन्तर्धान हो गये। बादशाहके मनमें परमेश्वरका भय उत्पन्न हुआ और सत्यगुरुकी शिक्षा हृदयमें बैठ गई। फिर एक दिवस जब कि बादशाह बड़ेही सुख सम्भोगमें अचेत सो रहा था तब आकाशसे आवाजें आने लगी। उस आकाश बानीने बादशाहको उपदेश दिया कि, "ऐ बादशाह! तू सचेत हो, क्यों अचेत हो रहा है?" तब बादशाह आश्चर्यान्वित होकर इधर उधर देखने लगा कि, कौन मुझे शिक्षा देता है? चारों ओर देखा पर कोई स्वरूप कहीं दिखाई नहीं दिया। तब निस्तब्ध होकर बैठ रहा।

एक दिवस बादशाह अपने महलमें बैठा था कि, एक मनुष्यको अपनी छतपर फिरते पाया। उससे पूछा, तू कौन है? मेरी छतपर क्यों फिरता है? उसने उत्तर दिया कि, मैं × बुलूच हूँ मेरा ऊँट खोया गया है, ढूंढता फिरता हूँ। तब बादशाहने कहा क्या छतपर ऊँट चढ़ सकता है? तू कैसा बुद्धिहीन है? तब बुलूचने उत्तर दिया कि, मैं तो मूर्ख नहीं वरन् ऐ बादशाह! तू बिना बुद्धिका है। कारण यह कि, ऊँटका छतपर फिरना तो सरल है पर यह कठिन है कि, तू जो आशा रखता है कि, मैं बादशाही करता हुआ वैकुण्ठको जाऊँगा यह तो महामूर्खताका काम है। इतना कहकर वह बुलूच तो अन्तर्धान हो गया। बादशाहके मनमें अन्तदिवसकी गम्भीर चिन्ता उत्पन्न हुई। फिर भी बादशाहको अचेत देखकर एक दिवस कबीर साहबने एक कुत्तेको उत्तेजित किया। वह दौडकर बादशाहके सन्मुख आया। उसके समस्त शरीरमें घाव थे, जिससें कि, बहुतसे कीडे पडे हुए थे, जो कि, उसके माँसको खाते थे जिससे वह अत्यन्त व्यथित और व्यग्र हो रहा था। जब वह बादशाहकी ओर दौडकर चला। तब बादशाहकी लौंडियोंने बहुत रोका और हटाने लगीं, तथापि उस कुत्तेने एक भी न माना, सुलतानके सामने जा खडा हुआ। मनुष्यकी भाषामें यों कहने लगा कि,

× बुलोचिस्थान देशके रहनेवालेको "बुलूच" कहते हैं।

"ऐ सुलतान इबराम्हीम अद्धम ! मैं भी किरमान देशका बादशाह था । बहुत आखेट किया करता था । अब तू देख कि, मैं कुत्ता हो गया हूँ । जिन २ जीवोंको मैंने मारा और उनका माँस खाया वे सब जीव मेरा माँस खाते हैं, कीडे होकर मेरे शरीरसे लगके अपना प्रतिशोध ले रहे हैं । इनसे अब मेरा छुटकारा नहीं हो सकता, अब मैं क्या करूँ । तू आखेट करता है तो तेरी भी यही दशा होगी" इतना कहकर, वह कुत्ता भाग गया । बादशाहके मनमें जीवबध करने (आखेट करने) के कारण बडी बुरी चिन्ता उत्पन्न हुई, परन्तु थोडे दिनोंके बाद, फिर भी भूल गया । 'एक दिन शाहजु चलै शिकारा' यहाँसे लेकर 'नाँहि वह कुत्ता नाँहि सबेशा' यहाँतक का यह हिन्दी अनुवाद है कि, एक दिवस बादशाह शिकार खेलनेको निकला, शिकारके पीछे अपना घोडा डाल दिया । जब अपनी सैन्यसे दूर निकल गया तब उसको बडी कडी प्यास लगी । उसके सब सेवक बहुत दूर हो गये थे । कहीं जलका चिन्ह न मिला, इस कारण बादशाहने बिवश होकर अपना घोड़ा आगे बढाया तो एक वटवृक्ष दिखाई दिया । बादशाह अपना घोडा दौडाकर इस वृक्षकी छाँहकी ओर चला । जब उस वृक्षकी छाया में पहुँचा, तो क्या देखता है कि, इस वृक्षके नीचे एक बिरक्त बैठा है उसके दोनों ओर जलसे भरे दो कोरे घडे रक्खे हैं, उनपर कोरे प्याले रक्खे हैं । उस महात्माने बादशाहको जल पिलाया । जब वह जल पीकर ठण्डा हुआ तो क्या देखता है कि, उस महात्माके दोनों ओर दो कुत्ते बँधे हैं और एक भेख (खूंडा) खाली है । उस विरक्तने घी, मैदा, भाँति भाँतिके मेवे तथा मिश्री आदि निकालकर उन दोनों कुत्तोंके सामने मलीदा बनाकर रक्खा, परन्तु उन कुत्तोंने वह मलीदा न खाया । वह महात्मा सोटेसे उन कुत्तोंको धमकाने लगा कि, मलीदा खाओ, नहीं तो मैं तुमको दण्ड दूंगा । पर वे कुत्ते मलीदेमें मुंह भी न लगाते थे । बादशाहने कहा कि साईं साहब ! ये मलीदा खाना क्या जाने, उनको आप क्यों आँख दिखाते हैं ? फकीरने उत्तर दिया कि, "ऐ बादशाह ! यह बात नहीं; यह दोनों इसलिये यह पदार्थ नहीं खा सकते कि, इन्होंने पूर्वजन्ममें कुछ दान पुण्य नहीं किया है । यदि दान पुण्य करते तो निस्सन्देह खा सकते थे ।" बादशाहने पूछा कि, पूर्वकालमें ये दोनों कौन थे ? सन्तने उत्तर दिया कि ये, दोनों + बलख बुखारेके बादशाह थे-(उन दोनोंका नाम भी कहा) तब शाहंशाहने

+ इब्राहीमका पिता कौन था इसके विषयमें पूर्वही लिख चुके हैं कि, सच्चे साधु, अद्धम शाह थे । जिसने सच्चे भक्तोंका दर्शन पाया वो कुत्तेकी योनिमें जावे यह सच्ची श्रद्धाके प्रतिकूल बात है । ऐसी ही बातोंको लेकर बोधसागरके इसी प्रकरण पर भारतपथिक कबीर पन्थी स्वामी युगलानन्दजीने एक टिप्पणी लिखी है कि, "जो शाह इब्राहीम अद्धमके बाप बाबाको-

जाना कि, ये दोनों मेरे बाप तथा दादे हैं। नाम सुनकर बादशाह लज्जित हुआ, फिर पूछा तीसरीमेख किस प्रयोजनसे खाली रक्खी है ? फकीरने उत्तर दिया कि, इस समय जो बादशाह बलख बुखारेके सिंहासनपर आसीन है जब वह मरकर कुत्ता होगा तब मैं उसे इस तीसरे मेखसे बाँधूंगा। इस बातको सुनकर बादशाहके मनमें बड़ा शोक हुआ। यदि मुझको मरकर कुत्ताही बनना पड़ेगा तो बादशाही तुच्छ है यदि मुझपर यही विपत्ति आती है तो सब सांसारिक वैभव लेकर क्या करूँगा ? इससे संसारसे घृणा उत्पन्न हुई, दुःखका बादल हृदय पर छा गया और अन्तका सोच हुआ कि, मैं कैसे कुत्ता न बनूं ? साधुके उपाय बताते ही बादशाहने साधुको पहिचान लिया कि, सब अन्तर्धान हो गये।

एक दिवस ऐसी घटना हुई कि, एक मनुष्य बादशाही दुर्गके भीतर आगया। सिपाही लोग उसको बाहर निकालने लगे परन्तु वह निकलता नहीं था और कहता था कि, ऐ भाई ! मैं पथिक हूँ, यह सराय है संध्या हो गई है, इस सरायमें रात बिताकर प्रातःकाल मैं यहाँसे विदा हो जाऊँगा। सिपाहियोंने समझाया कि, यह सराय नहीं, यह तो बादशाही दुर्ग है। उसने कहा कि, यह तो दुर्ग नहीं सराय है, मैं पथिक हूँ, इस सरायमें रात बिताकर प्रातःकाल यहाँसे चला जाऊँगा। यद्यपि सिपाही बहुत कुछ समझाते थे पर वह फकीर मानता नहीं था। बारम्बार यह कहता था कि, यह दुर्ग नहीं अवश्यही मुसाफिर खाना है। इस बात पर बड़ा हल्ला मचा, इस अवसरमें बादशाह वहाँ आपहुँचा पूछा कि, यह कैसा हल्ला है ! सुलतानी सेवकोंने निवेदन किया कि, एक मनुष्य दुर्गके भीतर घुस आया है, यद्यपि उसको रोकते हैं पर यह नहीं मानता।

बलखका बादशाह लिखा है यह बिलकूल निर्मूल है, क्योंकि, इसके पिता तो परम सन्त थे। यहाँ दोनों कुत्तोंको शाह इब्राहीम अद्धमके बाप दादे बतलाना बहुत ही भूल है। इससे जाना जाता है कि, इस पुस्तकमें उत्तरोत्तर मिलावट होती चली गई है। एवं मिलावट करनेवाले भी साधारण विचारके ही जान पड़ते हैं। ऐसी ऐसी मिलाव और भूलके कारण कबीर पन्थी साहित्यकी निन्दा होती है किन्तु बुद्धिमानोंको विचार तर्कहीन ही उसे ग्रहण करना चाहिये।" इस प्रकरणको लेकर उक्त संशोधकजीने यह परिस्फुट कह दिया है कि, जो कबीर पन्थी; ग्रन्थोंमें ऐसी असंगत बातें हों उन्हें साधारण बुद्धिके लोगोंकी मिलावटकी समझनी चाहिये। यह विचार यहींके लिये हो यह बात नहीं। किन्तु सब जगहके लिये हैं। इसी सुलतानबोधमें अगाड़ी चलकर लिखा हुआ मिलता है कि, मेरे पास इसकी कितनी ही प्रतियाँ है जिनमें कई तो सौ वर्षसे भी अधिक पुरानी हैं। पुरानी प्रतियोंकी अपेक्षा नवीन प्रतियोंमें इतनी बातें मिलाई है कि, वे उससे ढयोढी हो गई हैं। इस सबसे तो यही प्रतीत होता है कि, या तो स्वामी परमानन्दजीने इसे अनुसंधानसे रख दिया है, या वे कुत्ते इब्राहीमके नाना पर नाना होंगे। सर्वथा ही निन्दास्तुतिकी सभी बात विचारणीय हुआ करती हैं। वो ऐसी नहीं होतीं कि बिना विचारे विश्वासके योग्य हों।

कहता है कि, यह दुर्ग नहीं, सराय है, मैं इसमें रातभर रहूँगा दुर्गके बाहर नहीं निकलता। यह बात सुनकर बादशाहने प्रश्न किया कि, ऐ पथिक! इस दुर्गको तू सराय कैसे कहता है! पथिकने बादशाहसे पूछा कि, इस दुर्गको किसने निर्मित किया था? बादशाहने अपने नाना अथवा परनानेका नाम बताया। पथिकने पूछा कि, बनानेवालेके उपरान्त फिर कौन रहा! बादशाहने उत्तर दिया कि, मेरा नाना रहा। मुसाफिरने कहा, फिर कौन रहा? बादशाहने उत्तर दिया कि, अब मैं हूँ। फिर कहा, तुम्हारे उपरान्त कौन रहेगा? तब बादशाहने कहा कि मेरा पुत्र रहेगा। तब उस पथिकने कहा कि, बाबा जहाँ? इतने पथिक आये और चले गये किसीको स्थिरता नहीं हुई वह दुर्ग कैसे ठहरा? यह तो अवश्यही सराय है। यदि इस सरायमें एक दिवस मैं भी रह जाऊँगा तो आपत्ति क्या है! यह बात सुनकर बादशाह तथा सब मनुष्योंको चेतहो गया। क्योंकि वास्तवमें यह संसार सराय है और पूर्णतया अस्थिर तथा नाशमान है।

इस बादशाहका वृत्तान्त अनेक पुस्तकोंमें लिखा है अंग्रेजी पुस्तकोंमें भी मैंने देखा है। एक पुस्तक अंग्रेजीमें एडिसनके नामकी है उसको मैंने देखा। उसके नोटमें इसी प्रकार लिखा था कि, जिस प्रकार कबीर साहब पथिक बनकर सरायमें रहे। दुर्गको सराय कहा और बुलूच होकर छत पर फिरे थे। जिस प्रकार लिखा अंग्रेजी पुस्तकोंमें है इसी प्रकार और देशके लोग इस बादशाहका वृत्तान्त लिखते हैं। पर फारस तथा अरबके लोग बहुत कुछ लिखते हैं। फारसी पुस्तकोंमें इनके अनेक किस्से हैं। इनकी फकीरी तथा बादशाहीका सब वृत्तान्त लिखा है, पर वह बात किसीको नहीं मालूम कि, इस बादशाहके गुरु पीर कबीर साहब हैं, कोई नहीं जानता कि, बादशाहका क्या धर्म्म था। प्रत्यक्षमें लोगोंको यही मालूम है कि, बादशाह मुहम्मदी फकीरोंमें थे, पर थे वो हंस कबीर, कबीर साहबकी दया उस पर हुई। इबराहीम अद्धमका वृत्तान्त अन्यान्य ग्रंथोंमें भी है। जहाँ कहीं जिसने जो बात पढ़ी वह उसकी बात बता सकता है। इस बादशाहके मनमें विश्वास तो भली भाँति जम गया था पर अबतक उसने बादशाही नहीं छोड़ी थी।

सुलतान इबराहीम अद्धमने कबीर साहबके अनेक कौतुक देखे। अभीतक उसको संसारसे पूर्णतया घृणा नहीं हुई। एक दिवस कबीर साहब बादशाही दासीका रूप बनकर उसके पलँग पर लेट रहे। वह पलँग फूलोंसे भलीप्रकार सुसज्जित था, उसपर लेटतेही नींद आगई वह बाँदी अचेत होकर सो गई। जब बादशाह लेटनेको आया तब देखा कि, बाँदी पलँग पर लेटी हुई है।

उसको देखकर बड़ाही क्रुद्ध हुआ क्रोधमें आकर आज्ञा दी कि, इस लौंडीको कोड़े मारो । जब कोड़े उसपर पड़ते थे तब वह हँसती थी । बादशाहने पूछा कि, ए बाँदी ! इसका क्या कारण है कि हंसती है ? यह तो रोनेकी जगह है हँस-नेकी नहीं । उस लौंडीने उत्तर दिया कि, मैं इस कारण हँसती हूं कि, मैं तो केवल एक दो घड़ी इस पलङ्ग पर लेटी होऊँगी, उसके बदले तो मुझपर इतने कोड़े पड़ते हैं पर जो प्रतिदिन इसपर लेटते हैं उसकी क्या दशा होगी ! यह बात सुनकर बादशाहके कान खुल गये उसे ज्ञान हो गया । बादशाहने कहा न तो तू बाँदी है, न स्त्रीही है, तुम तो वही श्रेष्ठ महापुरुष है जिसने कि अनेक बार मुझे शिक्षा दी है । यदि आप वही महापुरुष हों तो आप अपना स्वरूप प्रगट कर दर्शन दीजिये । बादशाहके ऐसे कहते ही कबीर साहबने अपना महातेजो-मय स्वरूप दिखाकर उग्र प्रकाश प्रगट किया । उस समय बादशाहने चरणोंपर गिरके निवेदन किया कि, अब आपको क्या आज्ञा है ? मैं वही करूँगा । कबीर साहबने कहा कि, मैं अमरलोकसे आया हूं, जो कोई मेरा कहना मानेगा उसका मैं उद्धार करूँगा कालपुरुषके हाथसे छुड़ाऊँगा । मेरा यही आशय है कि, हे बादशाह ! तू सत्य पुरुषकी भक्तिमें लग जा ।

सत्य कबीर बचन ।

चौ० – तबही शाह भये आधीना । चरण धोय चरणोदक लीना ।।
भाव तुम्हार हम गुरु चीन्हा । मम कारण बहु फेरा कीन्हा ।।
अब साहब कीजे मम काजा । जाते मोहिं छाड़ैं यमराजा ।।
कहैं कबीर सुनो चितलाई । सुरति निरति करि लेहु समाई ।।
सत्यगुरु ध्यान करो सब भाई । गुरु प्रताप अमर घर जाई ।।
यह सुनि शाहतखत तब छाड़ा । प्रगटा ज्ञान हृदय गुण बाढ़ा ।।

साखी – सोला सहस सहेली, तुरी अठारह लक्ख ।।
साईं तेरे कारने, छोड़ा शहर बलक्ख ।।

शब्द – सुलताना बलख बुखारेका ।
सब तजके जिन लिया फ़क़ीरी अल्लः नाम पियारे का ।।
खाते जा मुख लुक़मा[१] उम्दा मिसरी क़न्द छुहारेका ।
सो अब खाते रूखा सूखा टुकडा शाम सकारेका ।।
जिन तन पहने खासः मलमल तीनटंक नौतारेका ।
सो अब भार उठावन लागे गुद्दर सेर दश भारेका ।।

---

१ कौर-ग्रास—(कौलिया गुजरातीमें)

चुन चुन फूलों सेंज बिछाई कलियाँ न्यारी न्यारीका ।
सो अब शयन करें धरतीमें कंकर नहीं बोहारेका ।।
जिनके सङ्ग कटक दल बादल झण्डा न्यारे न्यारेका ।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो फक्कड़ हुआ आखाड़े का ।। सुलताना०

इस बादशाहको कबीर साहबने अनेकों उपदेश दिये। बहुतेरे कौतुक दिखाये (जो भिन्न भिन्न पुस्तकोंमें पाये जाते हैं) बादशाहके मनमें संसारकी बड़ीही घृणा होगई। चाहा कि, बादशाहतको छोड़कर कहीं वनमें चला जाऊँ। इस बातका दृढ़ संकल्प उसने कर लिया। उसके आत्मसम्बन्धी अमीर वजीर और सब कर्म्मचारियोंने इसे घेर लिया समस्त सैन्यमें हल्ला मच गया कि, सुलतान फकीर होता है। जब सभोंने बादशाहको घेर लिया तब वह बड़ाही विवश हुआ। इसी घेर घारमें आधीरात बीत गई। जब आधीरात हुई तब सब मनुष्य और सब चौकीदार अचेत होकर सो रहे। उस समय बादशाहने अच्छा औसर समझा। नङ्गे पैर बाहर आकर अपनी सैन्य तथा आदमियोंसे दूर निकलके एक बड़े भारी मैदानमें पहुँचा जहाँ कि किसी आदमीका चिह्न भी नहीं था। उधर बादशाहके नौकर चाकर तथा आत्मसम्बंधीगण जब जागे तब बादशाहको चारों ओर ढूंढ़ने लगे; पर कहीं पता नहीं लगा। तब निराश हो गये समस्त देशमें हाहाकार और शोक पड़ गया इधर बादशाहको तीन दिन भूखे बीत गये उस समय स्वयम् साहब बादशाहके निमित्त रूखा सूखा टुकड़ा लेकर सामने आये। वही रूखा टुकड़ा बादशाहने तीन दिवसके उपरान्त खाया परमेश्वरको धन्यवाद देकर पक्का फकीर हो गया। इस बादशाहको जब जब कबीर साहब मिलते थे तब तब न्यारे न्यारे स्वरूपोंमें दिखाई देते थे कि, वह और तो क्या पहचान भी नहीं सकता था।

इसका वृत्तान्त मुसलमानी पुस्तकोंमें स्थान स्थानपर लिखा है। एक पुस्तकमें मैंने देखा था कि, इस बादशाहको पकड़कर लोगोंने एक अमीरकी बागवानी (माली) के काममें लगा दिया। एकवर्ष पर्यन्त आप बागवानी करते रहे। एक दिवस वह अमीर अपनी वाटिका देखने गया तब जैसा बागवानोंका नियम है बागके फल अनार इत्यादि लेकर उन्होंने उस अमीरको भेट किये। जब उसने अनारोंका चक्खा तो, सभीको खट्टा पाया। तब उसने कहा कि, कैसा बागवान है कि, मेरे निमित्त सब खट्टे अनारोंको उठा लाया। फकीरी भेषमें बने हुए बादशाहने उत्तर दिया कि मुझको खट्टे मीठेका ज्ञान नहीं है। क्योंकि, मैंने कभी चक्खा नहीं था। अमीरने पूछा कि तू कितने दिवसोंसे

बागवानी करता है। उन्होंने उत्तर दिया कि एक वर्ष हुये। तब अमीर आश्चर्य्यित हुआ कि यह कौन मनुष्य है कि, जो बरस भरसे बागवानी करता है, परन्तु बागका कोई फल नहीं खाया ऐसा ईमानदार यह कौन है। जब भलीप्रकार जाँच किया लोगोंने पहचाना तो कहा कि यह तो सुलतान इबराहीम अद्धम है। वह अमीर नितान्तही लज्जित हुआ हाथ बाँधकर अपना अपराध क्षमा कराने लगा, पर वे तो हँसकर कहींके कहीं चल दिये।

एकबार इबराहीम अद्धमका बेटा जो सिंहासनरूढ़ था, रातके समय नदीके किनारे आनन्द विलास कर रहा था, नावें नदीमें चलाई जाती थीं खूब प्रकाश होरहा था, नाच तमाशा तथा ठट्ठा मसखरीमें लोग लगे हुये थे उस समय फकीरीकी अवस्थामें बादशाह इबराहीम अद्धम चले जाते थे। लोगोंने पागल समझकर उनको पकड़ लिया। रातभर ठट्ठा मसखरी करते रहे। जैसे होलीके भड़ुवे होते है वैसाही ठट्ठा उनके साथ होता रहा, उन्होंने किसी प्रकारका अवरोध नहीं किया। जब प्रातःकाल हुआ सब लोगोंने पहचाना कि, यह तो हजरत हैं। तब बादशाहका जो पुत्र था वह देखकर बड़ा दुःखी होकर कहने लगा कि, पिताजी ! आपने अपनी कैसी बुरी दशा बनाली है, आप पागलोंके समान फिरते हैं। मैं इतना बड़ा बादशाह हूँ कि, जो चाहूँ सो करूँ, समस्त देश मेरे बशमें है, आप जो कहें सो मैं करूँ मेरे वशमें सब हैं। इबराहीम अद्धमने अपनी गुदड़ी सीनेवाली जो सूई थी नदीमें फेंकदी और अपने पुत्रसे कहा कि तू कहता है कि, मैं बडा बादशाह हूँ तो मेरी सूई मँगवादे। शाहजादेने कहा कि, मैं सहस्रों सूइयाँ मँगवाये देता हूँ। बादशाहने कहा कि, मैं तो अपनीही सूई लूंगा तब शाहजादेने जाल डलवाए और बहुत ढुंढ़वाया पर वह सूई नहीं मिली। तब इबराहीम अद्धमने कहा कि, हे नदी ! तू मेरी सूई दे। उस समय नदीसे एक मछली वह सूई मुंहमें लिये उनके पास आई, उनने अपनी सूई लेली। शाहजादेसे कहा कि, देख, तेरी आज्ञा बढ़कर है, अथवा मेरी, तेरी आज्ञा तेरे देशमात्रमें है। मेरी आज्ञा नदी, पर्व्वत आदि जड़ चेतन स्थावर जंगम सभी मानते हैं।

शेख मन्शूर और शिबली।

जहाँ प्रेम और उसकी दृढतापर मर मिटनेवाले इस्लामी सभ्यताके सुयोग्य पुरुषोंका प्रसंग आता है तो उनमें शेख मन्शूरका सादर स्मरण हो आता है। अनल हक–'अहं ब्रह्मास्मि' का यह दृढ विश्वासी था, यद्यपि उस समयके इस्लामी कानूनोंके पंडितोंने 'मैं खुदा हूँ' यह कहनेके कारण उन्हें मारने योग्य

कहकर अपना फैसला देदिया था, पर कोई भी न तो इनके सामनेही ठहर सका था एवं न इनकी धारणाही बदल सका था। ये आज कलके रंगेश्वरोंकी तरह अनलहकके भक्त नहीं थे किंतु इनकी यह बानि सच्चे भावोंको लिये हुए थी। कैद हो जाने पर जो२ करामातें इन्होंने दिखाई थीं वह बड़ेसे बड़े सिद्ध पुरुषोंसे किसी प्रकार भी कम नहीं थी। मन्शूरके मुखसे ही नहीं किन्तु प्रत्येक रोमसे अनलहककी ध्वनि निकलती थी। शूली पर चढे पीछे खूनकी बूंदें भी अपने आन 'अनलहक' लिखती चली गईं। जलानेपर धूआँ भी वही बनकर उड़ा, तथा खाक भी नदीमें 'अनलहक होकर ही बही। ये सिद्ध थे जैसे इन्होंने अपनी सिद्धिके प्रभावसे जैलकी दीवारोंको गिराकर सभी कैदियोंकी एक साथ बेडी काटकर उन्हें भगा दिया था उसी तरह आप भी अलक्ष्य हो जाते किन्तु अलक्ष्य होने पर इन्होंने इसीमें प्रेम और भगवानके नामका बडाई देखी इस कारण अपने नश्वर शरीर को शूलीके घाटपर उतार दिया।

जब कभी किसीको कोई प्रेमकी आखिरी मंजिल दिखाता है तो कहता है कि—

"खडा मन्शूर शूलीपर पुकारे इश्क बाजोंको है।
इश्के बामका जीना वों जीले जिसका जी चाहें॥

मन्शूर सूलीपर खडा हुआ पुकार २ कर कह रहा है कि, यह इश्कके ऊपरका जीना है। जिसमें सामर्थ्य हो वो जीले। किसीने परमात्माको उपालब्ध देते हुए उसीके लिये लिखा है कि—

तोडा है कोहेकनका शर पत्थरोंसे किसने।
मन्शूरको 'अनलहक' किसने कहाके मारा॥

हे परमात्मन्! यह तो बता कि, कोहकनका शिर किसने पत्थरोंसे तोडा था तथा यह भी बता कि, किसने मन्शूरके मुखसे 'अनलहक' कहलवाकर मौतके लिये भेजा था।

निर्भयदासजीने भी सच्चे वेदान्ती मन्शूरको बडे सन्मानके साथ याद किया है कि—

जबतक जिन्दा रहा अनलहक कहता रहा शूलीपर भी कहे बिना नहीं माना क्योंकि, सनमका सच्चा प्यार पाना आसान नहीं है। किसी किसी वीरने तो इनकी फांसीको किसी और ही रूपमें वर्णन किया है कि—

किया अच्छा जिन्होंने दारपर मन्शूरको खींचा।
कि था मन्शूरका जीना भी मुशकिल राहेदां होकर॥

इनकी एक संप्रदाय इस्लामी समाजमें मौजूद है । इनकी अनेकों बाणी हैं। इनपर भी कबीर साहिबकी पूरी कृपा थी। इन्हें ज्ञान तो यों हुआ कि, कबीर साहिबने इन्हें नामका उपदेश दिया । उन्होंने २० वर्षतक गुफामें बैठकर उसका ध्यान किया, गुफाके बाहिर आतेही लोगोंसे भेट हुई इनके वचन साधारण नहीं कबीर साहब केसे हैं यही कारण है कि, लोग इनके प्राणोंके गाहक बने थे इनमें यह शक्ति थी, कि वैरियोंके आक्रमणके समय अन्तर्धान हो गये । फिर इन्हें कौन ढूंढ सकता था ? कौन ऐसा महाबली इस पृथ्वीपर था जो कि उनको पकड़ सकता था । परन्तु वे परमेश्वरकी भी वैसीही इच्छा देखकर स्वयम् उपस्थित हो गये । अपनेको स्वयम् ही हत्यारोंके हाथों पकडा दिया । मुसलमानोंने देखा तो पत्थर मारने लगे । उस समय शेख मन्शूर प्रसन्नता पूर्वक सब कठिनाइयोंको सहन कर रहे थे, यहाँ तक कि, ईश्वरेच्छा समझकर आह भी नहीं करते थे । उस समय मुसलमानोंने शेख शिवलीसे कहा कि, तू भी इस पर पत्थर मार । शिबलीने कहा कि, यह तो मेरा गुरुभाई है मैं ऐसा कार्य्य कभी भी न करूँगा । मुसलमानोंने शिबलीको भी पकड़ लिया बहुत विवश किया कि, तू इस पर अवश्यही पत्थर मार । उन्होंने एक पुष्प लेकर मन्शूरके ऊपर चलाया । जब वह पुष्प लगा तब आप गिर पडे पुकारने लगे कि हाय मैं मर गया ! हाय मैं मर गया ! मन्शूरकी हाय हाय सुनकर शिवली उनके पास गये । पूछा कि इतने पत्थर आप पर पडे आपने हाय नहीं की । मेरे एक पुष्पसे ऐसे घायल हुए कि हाय हाय करने लगे यह क्या बात है ? मन्शूरने कहा कि, हे शिबली ! तुम्हारे एक पुष्पने जितना मुझे घायल किया वैसा पत्थरोंने नहीं किया । क्योंकि तुम भली प्रकार जानते हो कि, मैं कौन हूँ ? तुम मेरे गुरुभाई हो । यह बात प्रसिद्ध है । लोग ऐसा गाते भी हैं कि, "शिबलीने फूल मारा । मन्शूर हा पुकारा" मुसलमानोंने जब उनको मारनेके लिये पकड लिया उस समय शेख कबीर आ पहुँचे । शेख कबीरको मुसलमानोंने घेर कर कहा कि, आप इसके मारनेकी आज्ञा दीजिये । शेख कबीर मुसलमानोंसे अन्यान्य बातें करते समझा रहे थे । परन्तु मुसलमानोंने मिथ्याही यह बात उडाली कि, शेख कबीरने वध करनेकी आज्ञा देदी है । शेख मन्शूरको पकड कर सूली पर चढा दिया । जिस समय शेख मन्शूरको सूली पर चढाया उस समय पृथ्वी काँपने लगी, अँधेरा छा गया और प्रलयके चिह्न दिखाई देने लगे ।

कबीरसाहेबकी -- रेखता ।

मालिन पुकारे हे पिया । हाय हाय साहब तू ने क्या किया ।
इक बूँद लज्जत कारनै मन्सूर सूली यों दिया ।

सबही बराती सज चले हैं ब्याह करन उस पीवका ।
पहिरे गुलाबी सेहरा संशय पडा उस जीवका ।
होली तमाशे हो रहे सब देखनेको जायँगे ।
पीयसे रँगीली हो रही रङ्ग देखिके ललचायँगे ।
जल जलकी रोवें माछली बन बनके रोवे बोरबा ।
महलोंकी रोवें बीबियाँ अल्ला इलाही क्या किया ।
कायाके अन्दर खोजले छज्जेमें तेरा जीव है ।
कहते कबीर गुरु ज्ञानसे तुझही में तेरा पीव है ।

जब शेख मन्शूरको सूलीपर चढाया, उस समय आकाश पाताल तथा पृथिवी पर शोक छा गया पर उन्होंने तो अपना मारा जाना सहर्ष स्वीकार कर लिया । शेख मन्शूरका हाल संसारमें प्रसिद्ध है । तजकिरे मन्शूर नामक किताबमें भी विस्तारके साथ लिखा हुआ ।

गज़ल ।

चढादार पर जब शेख मन्शर । हुये उस वक्त सूरज चन्द बेनूर ।।
जमीं कांपी व काँपा आसमाँ भी । हुआ तब सारा आलम गमसे मामूर ।।
जमीं रोती व रोता आसमाँ था । बनी आदम मलायक गिरियः मेहूर ।।
उठा हजरत गजन्द आसेब सारा । दिया देह दुनिया पर उडा धूर ।।
यही खूबी है सदगुरु हंस आजिज । रजा रब्बानी तन मन धन हुआ दूर ।।

पश्चिम देशमें कबीर साहबके बहुतेरे शिष्य हैं । और उन देशोंमें कबीर साहब, सैयद अहमद कबीर शेख कबीरके नामसे प्रख्यात हैं। तथा बहुत स्थानोंपर कबीर साहबकी समाधि भी बनी हैं।

तत्त्वा और जीवा ।

कबीर कसोटीमें लिखा है कि, तत्त्वा और जीवा नामक दो भाई जातिके ब्राह्मण दक्षिणदेश गुजरातमें नर्मदा नदीके किनारेपर रहकर साधुओंकी सेवा करते थे । उन्होंने बटकी एक सूखी लकडी ले अपने मकानके आँगनमें गाडकर यह प्रण किया था कि, जिस साधुके चरणामृतसे इस बटकी सूखी लकडी हरी हो जावेगी हम उसीके शिष्य होंगे। चालीस वर्षतक सहस्रों साधुओंके चरण धो धोकर इस बटके सूखे ठूंठपर डालते रहे पर वह हरा नहीं हुआ । इससे उस देशमें साधुओंकी निन्दा तथा अप्रतिष्ठा होने लगी साधुसेवा बन्द हो चली । यह देख साधुओंने विचार किया कि, अब तो कबीर साहबके शरण चलना

चाहिये । उनके बिना, दूसरे किसीनें भी ऐसी सामर्थ्य नहीं है । कुछ साधु मिलकर दक्षिण देशसे काशीजीमें आये, कबीर साहबके पास जाकर सब वृत्तान्त इस प्रकार निवेदन किया कि, महाराज ! आपके होते हुये साधुओंकी इस प्रकार अप्रतिष्ठा होने लगी, अब कौनसी युक्ति करें ? कबीर साहब बोले कि—

साखी – कबीर, साधु हमारी आ[1]तमा, हम साधुनकी देह[2] ।।
साधुनमें यों रम[3] रहा, जो बादलमें मेंह[4] ।।
कबीर, साधु हमारी आतमा, हम साधुनके जीव ।
साधुनमें हूं यों रमूँ, ज्यो गोर[5]समें घी[6]व ।।
कबीर, साधुनमें हूँ यों रमूँ, ज्यों फूलनमें बा[7]स
साधु हमारी आत[8]मा, हम साधुनमें स्वाँस ।।

यह कहकर साधुओंको तो बिदा करके कहा कि, तुम लोग चलो हम पहुचेंगे । वे साधु लोग बिदा होकर छः मासके उपरान्त वहाँ पहुँचे, जहाँ कि, वह बटका सूखा ठूंठ गड़ा था । वहाँ जाकर देखा तो क्या देखते हैं कि, कबीर साहब पहलेहीसे उस बटके सूखे ठूंठके सामने टहल रहे हैं । उन साधुओंने उन्हें देखकर दण्डवत् प्रणाम किया । उन दोनों भाइयोंने कहा कि, अब तुमलोग कबीर साहबके चरण धोकर चरणामृतको इस वृक्षपर डालो । उन दोनोंने वैसाही काम किया । जैसेही साहबके चरणका जल उस ठूंठे वृक्षपर पड़ा वैसेही तुरन्त उस ठूंठमें से हरी डाल निकल पड़ी उसी समय वह वृक्ष हराभरा होकर लहलहाने लगा । उससे बहुतसी डालियाँ फूटकर निकल पड़ीं । वे दोनों भाई सत्यगुरुके चरणोंपर गिरकर शिष्य हो गये । कबीरके सोटीमें इस प्रकरण पर एक दोहा लिखा है कि–

तत्त्वा जीवाको मिल, दक्षिण बीच दयाल ।
सूख ठूंठ हरा किया, ऐसे नजर निहाल ।।

पर उन दोनों ब्राह्मणोंका कार्य्य सम्पूर्ण कर एवं उनको भली भाँति उपदेश देकर कबीर साहब पुनः काशीको लौट आये ।

दक्षिण देशीय ब्राह्मण जातिका अभिमान कुछ विशेष रखते हैं । इस लिए जब तत्त्वा जीवा ब्राह्मणोंके लडकी लडके विवाह योग्य हुये तब उन्होंने चाहा कि, उनका विवाह करें । उस समय उनके सजातीय कहने लगे कि, तुमने तो कबीर साहबको अपना गुरु बनाया है, हम तुम्हारे साथ सम्बन्ध नहीं करेंगे । वे दोनों ब्राह्मण सत्यगुरुसे आकर निवेदन करने लगे कि, हे सत्यगुरु ! अब हम क्या करें ? हमारे भाई बिरादरीके लोग तो हमसे ऐसा व्यवहार करने लगे कि,

१ आत्मा, २ शरीर, ३ व्याप, ४ वर्षा, ५ दूध दही, ६ घी, ७ सुगन्धि, ८ आण ।

हमारे साथ सम्बन्ध नहीं किया चाहते हैं। कबीर साहबने, उन दोनोंको समझा कर कहा कि, तुम्हारी जातिवाले तुम्हारे बराबर बैठने योग्य नहीं हैं। अब तुम दोनों भाई आपसमें सम्बन्ध कर लो बेटे बेटीका लेन देन करो। तब उन दोनों भाइयोंने जो सत्यगुरुके आज्ञाकारी थे, आपसमें सम्बन्धका प्रबंध किया। ब्राह्मणोंने देखा कि, वास्तवमें आपसमें सम्बन्ध करने लगे तो अच्छा न होगा, अतएव जातिके समस्त ब्राह्मण खुशामद करने लगे कि, तुम ऐसा काम मत करो, हम तुम्हारे साथ सम्बन्ध करेंगे, वहाँके ब्राह्मण प्रसन्नता पूर्वक बेटे बेटीका लेन देन करने लगे।

वह * बटका सूखा ठूंठ जिसको कबीर साहबने हरा किया था उसका वृत्तान्त सुनो कि, वह वृक्ष बहुत बडा हुआ बहुत फल गया। गुजरातमें है, कबीर बट कहलाता है। बहुत पवित्र और शुद्ध माना जाता है। प्रत्येक सालके कार्तिक मासमें वहाँ एक बडा भारी मेला लगता है, उस वृक्षकी छायामें सुखसे सात सहस्र मनुष्य रह सकते हैं। हस्तामलक भूगोलमें इस कबीर बटका हाल लिखा है। शिक्षा विभागके अंग्रेजी पुस्तकोंमें प्रायः इस कबीर बटकी प्रशंसा लिखी है। सरजान मिलटन नामक, जो अंग्रेजी भाषाका एक बडा प्रतिष्ठित कवि हो गया है, उसने भी इस कबीर बटकी बडी प्रशंसा की है, उस वृक्षकी बडी २ डालियाँ और लटें चारोंओरसे इतनी झूल पडी है कि वृक्षकी जड पहचानी भी नहीं जाती कि, कौन है। दूर दूर तक उसकी छाया है उसके नीचे बहुत लोग विश्राम लेते हैं। गरमीसे जो लोग जलते चले आते हैं इस वृक्षकी छायामें आकर ठण्डे हो जाते हैं, उनके शरीरसे सब तपन दूर हो जाती है। भेड बकरियाँ ढाङ्गर ढोर चरानेवाले लोग इस वृक्षकी छायामें बडा आराम पाते हैं। इस वृक्षसे डाल पात छाता समान चारों ओर छाया कर रहे हैं। वास्तवमें इस वृक्षके देखनेसे परमेश्वरकी मायाका कौतुक दिखाई देता है। यह बडाही सुन्दर है। इसका सौन्दर्य आश्चर्यमें डालता है। लोगोंको इस वृक्षसे बडा लाभ है। इसका डाढ़ोंमें बडे रेशे हैं जिस प्रकार अन्यान्य पौधे तथा पशुओंका माँस सड जाता है इस वृक्षके डाढ़के रेशे कदापि नहीं सडते हैं। इनमें जो बडा वृक्ष होता है वह अपनी डाढ़ जब पृथ्वीकी ओर छोडता है, तबवे रेशे पहले नरम रहते हैं फिर पृथ्वीसे मिलकर जड पकडते हुये भली भाँति दृढ होकर बडे वृक्ष हो जाते हैं। हिन्दू लोग इस वृक्षको बहुत चाहते हैं देव करके मानते तथा पूजन करते हैं। उस कबीर बटके समीप दो एक मन्दिर भी बने हैं। ब्राह्मण लोग इस वृक्षके नीचे

* आज कल उक्त वृक्ष नर्मदाके बीचोबीच पड़ गया है अर्थात् टापूके समान जान पडता है। वहाँ उसके दर्शनार्थी लोग नावपर चढके जाते हैं। सं. १९०२–ई०

बैठकर पूजा पाठ किया करते हैं। प्रत्येक जाति तथा प्रत्येक मतके मनुष्य इस वृक्षकी छायामें बैठना पसन्द करते हैं । प्रत्येक मनुष्य छज्जेनुमा खेमेके सदृश डालियाँ देखनेको उत्सुक हैं। इस वृक्षके छायामें सूर्य्यकी तपन गरमीके मौसममें बिलकुलही असर नहीं करती। हिन्दुस्तानी फौजेंभी इस वृक्षके नीचे पड़ाव डालती है। नियत ऋतुमें सहस्रों हिन्दू इस वृक्षके नीचे एकत्रित होते हैं। विश्वासियोंकी मनोकामना पूर्ण होती है। अंग्रेज लोग जब उधर आखेटके निमित्त जाते हैं तो कई एक सप्ताहपर्य्यन्त वहाँ रहते हैं। इस सुन्दर तथा खेमाबार वृक्षपर शुक, मयूर, पंड्डुक इत्यादि सहस्रों प्रकारके पक्षियोंका निवास हुआ करता है लाल बन्दर तथा बड़ेडील डौलके अनेक चमगीदड़ इसपर रहते हैं। इससे एकही लाभ नहीं बरन् अनेकों लाभ हैं; इसका फल बड़ाही सुन्दर तथा स्वादिष्ट होता है । पशु तथा मनुष्य दोनोंही इसको खाकर तृप्त हो जाते हैं, सहस्रों जीवों का प्रतिपालन इसके फलसे होता है, मनुष्य तथा पशु दोनोंको यह वृक्ष बडा लाभ पहुँचाता है । पहले तो यह बहुत बडा था पर अब कुछ कम हो गया है । दूरसे जो लोग इस कबीर बटके दर्शनके लिये जाते हैं वे इस वटवृक्षके पत्रोंको प्रसादतुल्य मानकर अपने घर लाते हैं । वर्तमान कालमें यह वृक्ष कबीर साहबके कौतुक का एक चिन्ह खडा वहाँ मौजूद है । जिस किसीको देखनेका उत्साह हो सो वहां जाकर देखकर अपनेको कृतकृत्य करले, मैं इसकी विशेष प्रशंसा नहीं करता किन्तु अन्य जातिवाले इसकी विशेष प्रशंसा किया करते हैं। तत्त्वा जावा दोनोंकी हार्दिक आकांक्षाको सत्यगुरुने पूरा किया । जिन जिनने कबीर गुरु पाया वे सत्यगुरुके हंस होकर सत्यगुरुके देशमें बिराजमान होगये । उनकी प्रशंसा शेष और शारदा भी नहीं कर सकते फिर मैं क्या चीज हूं ? ।।

कबीरपन्थके प्रवर्तक महात्मा धर्म्मदासजी ।

कबीर साहब धर्म्मदासजीकी बडी प्रशंसा लिखते हैं । धर्मदास बोधमें इनका पूरा समाचार लिखा हुआ है । इनका बृत्तान्त यह है कि, इनका वैश्यके घर में जन्म हुआ था, बडे धनाढ्य सेठ थे, नीमावत वैष्णव थे, ठाकुर पूजा किया करते थे, मूर्तिपूजाका बडा सामान साथ लिये तीर्थोंमें फिरा करते थे जब तीर्थों में घूमते मथुरा नगरीमें आये तो मूर्ति पूजाके परिपाकके समय वहाँ सत्यगुरुसे साक्षात्कार हुआ ।

धर्म्मदासजी बडे आचारी थे अत्यन्त पवित्रता तथा शुद्धतापूर्वक रहा करते थे. अतुल सम्पत्ति होनेपर भी हाथसे रोटी बनाकर खाया करते थे, क्योंकि,

यह स्वयम्पाकी थे, लकड़ियाँ भी धो धोकर जलाया करते, जिस समय धर्म्मदासजी (मथुरामें) रसोई बना रहे थे उस समय कबीर साहब जिन्दा फकीरकी, सूरतमें सामने दिखलाई दिये, उसी समय धर्मदासजीने क्या देखा कि, आगमें जो लकडियां जल रहीं थीं उनमें से बहुतसी चीटियाँ निकल रही हैं। कुछ चीटियाँ जलभी गई थी, बाकीको जल्दीसे चूल्हेके बाहर निकाल लिया. बड़ा खेद किया कि, इतनी चीटियाँ जल मरीं यहां तक कि, खेदवश उस दिन भोजन भी नहीं किया। कबीर साहब बोले कि, हे धर्म्मदास! तुम रोज भगवानकी मूर्त्तिकी पूजा करते हो, तुमने उस समय इनसे न पूछ लिया कि, इन लकड़ियोंके भीतर क्या है? धर्म्मदासजीने कहा कि, यदि भगवान्से पूछ लेता तो ऐसा पाप क्यों करता? धर्म्मदास साहबको अपने पापका बड़ा दुःख हुआ देख कबीर साहबने गुप्त ज्ञान की बातें सुनाई, जिनको सुनकर धर्म्मदासजी कुछ अनुरागी हुए। पीछे जिन्दाबाबा मथुरा नगरसे बिलुप्त होगये, बनारसमें आ पहुँचे, धर्म्मदासको बड़ा प्रेम उत्पन्न हुआ, मथुरा नगरमें बहुत खोजा परन्तु न पाया। जब सत्यगुरुको न पाया तब मनमें बड़ी बिथा उपस्थित हुई कि, अब जिन्दा फकीरको कहां ढूंढू? इसी सोचमें सत्यगुरुको स्थान स्थानपर ढूंढ़ने लगे, भण्डारे करने लगे, बहुत साधुओंको बुला बुलाकर भोजन देने लगे; इस ध्यानसे कि, हमारे भण्डारेमें दूसरे साधुओं के साथ जिन्दा बाबा भी आ जावें। बहुतही युक्तियाँ की तो भी जिन्दा बाबाका दर्शन नहीं हुआ, नगर नगरमें ढूंढ़ते फिरे कि, किसी प्रकार भी जिन्दा फकीरकी खबर मिले पर कहीं पता नहीं लगा। इसी प्रकार ढूंढ़ते २ बनारसमें पहुँचे तो देखा कि, एक स्थानपर कबीर साहब खड़े वक्तृता दे रहे हैं। चारों तरफसे बडी भीड़ खड़ी २ सुन रही है। तब उस भीड़को चीरकर धर्म्मदासजी भीतर घुसे। देखा तो कबीर साहब खड़े लोगोंको शिक्षा दे रहे हैं, पर बनारसमें कबीर साहबका जिन्दा भेषके स्थानमें वैष्णव भेष था। कण्ठी, तिलक, माला, जनेऊ और धोती इत्यादि देखकर धर्म्मदासके मनमें कुछ सन्देह उत्पन्न हुआ परन्तु पहचान लिया कि, यह वही जिन्दा बाबा हैं; जिसके कि, प्रेममें मैं पागलके समान हो रहा हूं. सत्यगुरुको पहचानकर चरणोंपर गिर पडे कहा कि, हे सत्यगुरु! मुझको आप अपने शरणमें लीजिये कबीर साहबने कहा कि हे धर्म्मदास! तुम बड़े भाग्यवान् हो कि, तुमने मुझको पहचान लिया। अब मैं तुम्हारे जनम मरणका दुख दूर करूंगा। पश्चात् धर्म्मदासजी सद्गुरुको अपने मकानपर बांधो गढ़ लेगये।

सद्गुरुने विधि पूर्वक चौका आरती करके दीक्षा दिया, उस, समय धर्म्मदासजीके पास छप्पन करोड़ रुपया था। वह सब सद्गुरुके भेंट किया। सद्गुरुने वह सब रुपया भूँखे, नंगे, लूले, अंधे, गरीब तथा सन्त साधुओंमें लुटा दिया।

पीछे धर्म्मदास साहबने वैराग्य लिया । सद्गुरुके उपदेशको धारण कर परंधामको पहुँचे, उनके वंशको साहबने गुरुवाई प्रदान की, जो बयालीश वंशके नामसे प्रसिद्ध है; ये ही वर्तमान कबीरपंथके प्रवर्तक हैं । कबीरपंथी अपनी अपनी आजकी नूतन कृतियोंको भी प्रायः उन्हींके नामपर बनाते हैं यह उनके नामकी महिमा है।

कबीर साहिब तथा धर्मदासजीमें सदा धार्मिक संवाद ही हुआ करते थे । सद्गुरु धर्मदाससे खुली बातें करते थे । अणुमात्र भी अपने स्वरूपको नहीं छिपाते थे । यहां उनकी बात चीतोंकी साखी रखता हूं ।

साखी – हम साहब सत्पुरुष हैं, यह सब रूप हमार ।
जिन्द कहे धरमदाससे, सत्य शब्द घनसार ॥
सकल सृष्टिमें रमि रहा, हूं सब जात अजात ।
गरीब दास जिन्दा कहे, मेरे दिवस न रात ॥
बोले जिन्द कबीर जी, सुनु वाणी धरमदास ।
हम खालिक हम खल्क हैं, सकल हमार प्रकाश ॥
गरुड़बोध बेदी रची, राम कृष्ण हैरान ।
लंकापर धाये जबे, तब का करूँ बखान ॥
दुर्वासा मुनि इन्द्रका, हुआ ज्ञान संवाद ।
दत्त तत्त्वमें मिल गये, जा घर वेद न वाद ॥
गरीब-सिख बन्दी सद्गुरु सही, चक्वै ज्ञान अमान ।
शीश कटा मन्सूरका, फेरि दिया जिव दान ॥

धर्मदासजीकी तरह गरीबदासजी भी सद्गुरुके चरणोंके दासही रहे हैं । उनकी श्रद्धाको सूचित करनेवाले कुछ पद्य उद्धृत करता हूं —

सर्वांगकी साखी ।

गरीब-नामाँको सद्गुरु मिले, देवल देता फेर ।
पण्डा तो इतही रहा, शब्द कहा हम टेर ॥
गरीब-रबिदास रसायन पीवते, झूले धरे अनन्त ।
चलत बार पाये नहीं. धन्य सद्गुरु भगवन्त ॥

संगतअङ्गकी साखी

गरी–ऐसी सङ्गति जो मिली, भक्ति गही प्रहलाद ।
नारदसे सद्गुरु मिले, सूझी अगम अगाध ॥

धर्म्मदास साहबके खास मुख बचन मंगल धेला ।

प्रगट होनेकी-साखी ।

प्रगट हंस उबारने, मनमें कियो विचार ।
जेठ मास बरसातमें, पगधारे चँदवार ॥
चहुँ दिशि दमके दामिनी, श्वेत भँवर गुञ्जार ।
तहवाँ आप बिराजिहैं, जल पर सेज सँवार ॥
बालक कोठिन ठाठके, निकट सरोवर तीर ।
सुर नर मुनि जन हरषिया, साहब धर्यो शरीर ॥
चंदन साहुकी स्त्री, स्नान करन को जाय ।
सुन्दर बालक देखिके, कर गहि लियो उठाय ॥
प्रेम प्रीति करले चली, हँसत खेलत घर आय ।
चन्दन देखि रिसावई, तुम बालक कहाँ पाय ॥
बालक मोहि कर्ता दियो, सुनो साहु सतभाउ ।
यह बालक प्रतिपालिहैं, चलै तुम्हारो नाँउ ॥
डार डार यह बालक, मानो वचन हमार ।
सजन कुटुम्ब हाँसी करें, हँसि मारे परिवार ॥
यह बेश्याका बालका, सो तू लाई नार ।
लोग कुटुम्ब सब देखी हैं, तुमको देही बडार ॥
दासी हाथ बालक दियो, जलमें दीन्हों डार ।
देह धरे दुख पायो मैं, चेतो मूढ गँवार ॥
नीरू नाम जुलाहा, गमन किये घर आय ।
तासु नारि बड भागिनी, जलमें बालक पाय ॥
नीरू देखि रिसावही, बालक दे तू डार ।
सजन कुटुम्ब हाँसी करे, हँसि मारे परिवार ॥
जब साहब होंकारिया, ले चल अपने धाम ।
मुक्ति सँदेश सुनाइहौं, मैं आयों यहि काम ॥
पूर्व जन्म तुम ब्रह्म ना, सुरति बिसारी मोहिं ।
पिछिली प्रीति के कारने, दर्शन दीनों तोहिं ॥
कर गहि वेग उठाइयाँ, लीन्हो कण्ठ लगाय ।
नारि पुरुष दोउ दरशिया, रङ्क महाधन पाय ॥
भाव भक्ति करि ले चले, काशी नगर मझार ।
धन्य, भाग्य उस देशका, सद्गुरु जहाँ पगधार ॥

अन्न पानि नहिं ग्रासहीं, दिन दिन बाढे अङ्ग ।
नारि पुरुष दोउ हरषिया, चडे, सवाया रङ्ग ।।
महादेव तेहि अवसर, जात रहे कैलास ।
नीमा पग धरि बूझही, पूजी मनकी आश ।।
तू नीमा बड भागिनी, पूर्व जन्म तप कीन्ह ।
तोरे घर प्रभु आइया, हँसि प्रभु दर्शन दीन्ह ।।
अक्षय वृक्ष फल पायके, सुख सम्पत्ति परिवार ।
दे भाँवर बर पूजले, गावें मङ्गल चार, ।।
धरमदास बर पावल, आपन रह्यो निनार ।
साहब कबीर जूको मङ्गल, गावें सुरति सम्हार ।।

तात्पर्य – जब कबीर साहब पहले चँदवारेमें प्रगट हुए थे जिसका कि, विवरण में पहिले कर आया हूँ, उस समय पहले कबीर साहब चन्दन साहूकार की स्त्रीको मिलें उस स्त्रीके भी कोई सन्तान नहीं थी । तब चन्दन साहूकारने अपनी दासीके हाथोंसे फिर उसी तालाबमें फिकवा दिया । उसके पीछे लक्ष्मणा ब्राह्मणीको मिले जैसा कि, अनुरागसागरमें लिखा है । इसके बाद नीमा और नीरू जुलाहेके घर आये । उस समय शिवजी महाराज कैलाशको जाते थे, वे नीमाके समीप जाकर कहने लगे–ऐ नीमा ! तू धन्य है ! बड़ी भाग्यवती है कि, स्वयम् साहब तेरे घर आये ।

यह सब वार्ता धर्म्मदास साहब और रामानन्द स्वामी इत्यादि सभी हंस लोग कहते चले आ रहे हैं यही बात गरीबदासजीने भी कही है; वे सब सर्वज्ञता के बलसे कहते आते हैं । ये बातें देखने तथा पढने सुननेकी नहीं हैं । कबीर साहब जब जैसे काशीके लहर तालाबमें प्रगट हुए थे उसी तरह चँदवारेके तालाबमें तथा नरहर ब्राह्मण और लक्ष्मणा ब्राह्मणीके घर गये । चँदवारे तालाबकी वही शोभा थी जो काशीके लहर तालाबकी थी । इसी प्रकार कबीर साहब नरहर ब्राह्मणके घरमें जाकर रहे ।

महाराजा वीरसिंह ।

पृ. ३०० में लिख चुके हैं कि, कबीर साहबकी अन्त्येष्टि क्रिया हिन्दू-रीतिके अनुसार करनेके लिये वीर सिंहजी बघेले मगहरके पठानसे लडने पहुँचे थे उन्हें कैसे बोध हुआ इस विषयपर वीरसिंह बोध एक ग्रन्थ है जो कबीर सागर नं० ४ बोधसागरमें सामिल है, उसके कुछ वचनोंको यहीं उद्धृत करते हैं –

धर्म्मदास वचन ।

चौ० – धर्म्म दास पूछैं [1]अर्थाई । साहब मोहिं कहो समुझाई ॥
वीरसिंह राय कीन्ह तुम[2] सेवा। दयाकरी[3] कहिये गुरुदेवा ।
वीरसिंह देव बड ज्ञानी[4] । कैसे साहब सेवा ठानी ॥
सो वृत्तान्त कहो मोहिं स्वामी। दया करी कहिये सुखधामी[5] ॥

सद्‌गुरुवचन ।

धर्म्मदास भल बूझेउ बाता । तुमसे वरणि कहो विख्याता ॥
तनमन धनको मोह न लावै[6] । सो[7] जिव हमरे संग सिधावै ॥
प्रथमहि चलै भक्त पहँजाई[8] । सकल सन्त जहँ भक्ति कराई ॥
नामदेव भक्तिहि[9] मन लावा । सैन[10] औ धना जाट तहँ आवा ॥
रंका[11] बंका[12] सदन कसाई । पद्मावति[13] दीपक तहँ[14] लाई ॥
छूटे[15] तान चंदेवा दीन्हा । ठाढ़े भगत तहँ[16] गावन लीन्हा॥
नामदेव लोटन कर[17] भाई । हात ताल रविदास[18] बजाई ॥
धना मृदङ्ग पद्म[19] उँजियारा । जुड़े सन्त सब भगत अपारा ॥
धर्म्मदास तहँवाँ हम गयऊ । राम राम सबही मिलि कहेऊ ।
तब हम एक वचन कहि लीना । सकल भगतकाको मन दीना ॥
नामदेव कहि पुर्षहिं ध्यावो । भक्ति करो काको मन लावो ॥

नामदेव वचन ।

नामदेव कह सन्त भुलाये । दूजा पुरुष कहां ठहराये ॥
हरिहर ब्रह्मा है बड़ देवा । करे सकल जग तिनकी सेवा ॥
यह प्रभु आदि मध्य औ अन्ता । शीश मुड़ाय जीव कहे सन्ता ।

सद्‌गुरु वचन ।

हरि ब्रह्मा शिव शक्ति जपाई । इनकी उतपति कहों बुझाई ।
बिना भेद भूले सब ज्ञानी । ताते काल बाँधि जिव तानी ॥
अजर अमर है देश दुहेला । सो वहि कहिये पर्म सुहेला ॥
ताका मर्म सिद्ध नहीं जाना । कृत्रिम करता ते मन माना ॥

साखी – कृत्रिम रङ्ग सब भेदिया, वह पुरुष नीनार ॥
तीनलोक पर अलख है, पुरुष ताहिके पार ॥

---

१ चितलाई, २ किमिकीनी, ३ करिके दया, ४ बडा अभिमानी, ५ बहुनामी, ६ अरु, ७ जो, ८ गयऊ, ९ करत, १० सेना, ११ राका, १२ बाका, १३ पद्मावती, १४ ले, १५ चोहटे १६ सब। यह पाठ भेद हैं। १७ करे, १८ रैदास, १९ पद, ऐसा अनेक जगह पाठ भेद तथा उलटा पलटा है पाठक समझलें आप ही।

चौ० – बीरसिंह देव बघेला राजा । बैठें आनि महल चढ़ि छाजा ॥
राजा नजर सबनपै कीन्हा । सब बड़े भाव भक्ति चित दीन्हा ॥
गावें भक्त अनन्त व्यवहारा । एक भक्त कस बैठा न्यारा ॥
टोपी एक अनूपम दीन्हे । माला तिलक कूबरी लीहे ॥
श्वेत स्वरूप भक्तिकी काया । महा अनन्द रूप छबि छाया ॥

राजाबीरसिंह वचन ।

राजा छरीदार हँकराई । नामदेव कहँ आनि बुलाई ॥
वेगसो छरीदार चलि आये । नामदेव राजा बुलवाये ॥

नामदेव वचन ।

नामदेव पूंछे चितलाई । राव सँग कोई और हे भाई ॥
छरीदार पुनि वचन सुनाइ । कोई नहिं रावके भाई ॥
नामदेव छड़ी हाथमें लियऊ । चलै चले राजापै गयऊ ॥
राजा देख ठाढ़ तब भयऊ । कर गहिके आशन बैठयऊ ॥

राजाबीरसिंह वचन ।

सा० – भक्ति करो गोविन्दकी, एक चित ध्यान लगाय ॥
श्वेत स्वरूपी भक्त यक, सो कस न्यार रहाय ॥

भावार्थ–कबीर साहिब धर्मदासजीसे कह रहे हैं कि, एकबार नामदेव लोटन, रविदास आदि हरिकीर्तन करते हुए ज्ञानचर्चा कर रहे थे, महाराज बीरसिंहजी भी ऊपर बैठे सुन रहे थे कि, मैं भी वहां पहुँच गया पर मैं सबसे अलग बैठा हुआ था इसी पर राजाको सन्देह हुआ था, इसी संदेहको मिटानेके लिये राजाने छड़ीदारके हाथ नामदेवजीको बुलाया एवं यही प्रश्न किया ।

नामदेव वचन ।

चौ० – राजा सुनहु वचन एक मोरा । हम तुम हरिहर ब्रह्मा दोरा ॥
ता हरि भक्ति करै बहु धासी । कहे एक पुरुष और अविनासी ॥
माला भेष ले साधु शरीरा । डीरा जोलाहा दास कबीरा ॥
कृत्रिम कहे सकल सब देवा । कहीं साँच नहिं देखूं सेवा ॥
ऐसे कहत कबीर जुलाहा । झूंठ दिबाना मन हम आहा ॥

साखी – जुलाहा निन्दत सबनको, बन्दत कोही नाहिं ।
झूंठ कहत हर ब्रह्मा, कह निर्गुण यक आहिं ॥

राजावीरसिंह वचन ।

चौ० – राजा ! नामदेव कह बानी । अगम ज्ञान वह करत बखानी ।।

नामदेव वचन ।

जो नर निर्गुण नामहि ध्यावे । योनि संकट बहुरि न आवे ।।
राजा छरीदास पठवाई । जाय कबीर कहँ आनि बुलाई ।।

राजा वीरसिंह वचन ।

जो कोइ निर्गुण नाम सुनावे । परम प्रेम हमरे उर आवे ।।
अस्तुति वेद करत है जाको । पार न पावैं हरिहर ताको ।।
अहिपति अस्तुति करत हैं जाही । सुरपति निशि दिन गावें ताही ।।

साखी – राजा छरीदार कह, आनु कबीर बुलाय ।
वचन एक हम पूंछि हैं, कहँ उन सुरति लगाय ।।

चौ० – छरीदार तुरतहि चलि जाई । बैठे जहाँ कबीर रहाई ।।
छरीदार तब बिनती लाये । अहो कबीरजी राय बुलाये ।।
बिनती राय करे कर जोरी । लाओ कबीर वेग तेहि ठौरी ।।

सतगुरु वचन ।

कहैं कबीर वचन अरथाई । केहि कारण मोहिं राम बुलाई ।।
ना मैं पाठी ना परधाना । ना ठाकुर चाकर तेहि जाना ।।
ना मैं परजा देश बसाऊँ । ना मैं नाटक चेटक लाऊँ ।।
पैसा दमडी नाहिं हमारे । केहि कारण मोहिं राम हँकारे ।।

साखी – छरीदार तुम जायके, कहो रायके पास ।।
महा प्रचण्ड बघेल हैं, हम नहिं मानैं त्रास ।।

जब नामदेवजीने कह दिया कि, वो सिवा रामके दूसरे देवको नहीं मानता । राजाने छरीदारके हाथोंसे बुलाया पर जब कबीर साहब छरीदासके कहनेपर नहीं गये तो वह क्रोधित हो राजाके पास जाकर कहने लगा कि, महाराज ? कबीर बड़ा अहंकारी है, मेरे बुलानेसे वह नहीं आता सर्कारको तृण समान भी नहीं समझता । इतनी बात सुनकर राजा अपने मनमें विचार करने लगा, इतनेहीमें नामदेवजी बोले कि, वह जुलाहा यहां नहीं आवेगा. वह बड़ा घमण्डी और अहंकारी है । राजाने अपने मनमें निश्चय कर लिया कि, वह सत्यभक्ती करते हैं । उनको मेरा क्या भय है ? इसलिये मैं ही उनके पास चलूँ तो अच्छा होगा । राजाने सवारी मँगा बहुतसे मुसाहिबोंको साथ लेकर कबीर साहबके पास गया वहां जाकर क्या देखता है कि, कबीर साहब माला, टोपी, तिलक, कूबरी आदिसे

महान् शोभायमान हो पृथ्वीसे सवा हाथ ऊँचे अधरमें विराजमान हैं, यह देख अपने साथियों सहित राजा आश्चर्यको प्राप्त हो कहने लगा कि, यह तो कोई बड़े अगम्य पुरुष देख पड़ते हैं ! ऐसे पुरुष कभी देखनेमें नहीं आये, पीछे धन्य धन्य कहता हुआ हाथ जोड़कर कबीर साहिबके शरणागत हो सच्चे सुखका अनुभव करने लगा और प्रार्थना करने लगा कि—

छन्द— अस्तुति करत नृप है खडा तुम ब्रह्म निर्गुण आप हो ।
तू अनाथते नाथ कर देव माथ हाथ अनाथ हों ।।
आपनो कर जानि साहब दरश दीन्हे आय हो ।
कीजे कृपा अब दासपर चलो भवन दरश दिखाय हो ।।

सोरठा— कृपा कीन्ह जस मोहिं, तस मन्दिर पग दीजिये ।
विनय करौं प्रभु तोहिं, वेगि विलम्ब न कीजिये ।

सद्गुरु वचन ।

चौ०— कहैं कबीर वहाँ नहि काजा । तैं परचण्ड बघेला राजा ।।
काम क्रोध मद लोभ बडाई । रोम रोम अभिमान समाई ।।
तूरि सवालख चल सँग तोरे । लाख सवादो प्यादा दौरे ।।
हस्ती चलत सहस दश संगा । निशिदिन भूला काम तरंगा ।।
कन्चन कलशा महल अटारी । कैसे शब्द गहे नरनारी ।।
हम भिक्षुक जाने संसारा । कौन काज है वहाँ हमारा ।।

वीरसिंह वचन ।

तुम सहाब हौ दीनदयाला । करमवशी जिव आहिं बेहाला ।।
माया तिमिर नयन पट लागी । दर्शन पाई भये अनुरागी ।।
कर सुदृष्टि आपन कर लीजे । दास जानि आयसु प्रभु दीजे ।।
साखी—भक्तराज दाता अहो, कीजे मोहिं सनाथ ।।
हम आधीन चरन तुव चलो हमारे साथ ।।

राजाके बहुत प्रकारसे विनय करनेपर उसकी सच्ची भक्ति देख कबीर साहबने उसके निवेदनको स्वीकार किया । राजाने बड़े उमंगके साथ अपनी सवारी के गजराजपर साहबको बैठा अनेक तरहके बाजों गाजाके साथ राजमहलको ले चला, हाथीपर भी सतगुरुका आसन उसी प्रकार सवा हाथ ऊंचा था जैसा कि, जमीनपर था । राजमहलमें पहुँच कर सब पटरानियोंमें श्रेष्ठ रानी मानीक देईको बुलाकर राजाने कहा कि, प्यारी ! मैंने कबीर साहबको गुरु किया है, ये आदि-पुरुष परब्रह्मके परम भक्त हैं । तुम चरण धोकर चरणामृत लेओ जिससे

सर्व पाप दूर होकर परम सुख प्राप्त हो । रानीने परदेके भीतरसे कहा कि, महा-राज ? आप परमज्ञानी विद्वान् हो, इतनी विनय मेरी स्वीकार करिये। गुरु समझ बूझके करना चाहिये, राजाने कहा, प्यारी ! तुम स्त्री हो सत्यभक्ती नहीं जानतीं। कबीर साहेबकी महिमाको कैसे जानो, साहबकी बड़ी महिमा है, स्वयं सर्वशक्ति-वान् परमात्माने भक्तरूप होकर दर्शन दिया है। इतना सुन रानीने बड़े आश्चर्य्य में आ भक्तिपूर्वक सद्गुरुके चरण पखारकर चरणामृत लिया । फिर नाना-प्रकारके व्यंजनोंसे सजा हुआ सुवर्ण थाल लगा राजाके साथ साहिबको भोजन कराया । पीछे सद्गुरुके साथ राजा दरबारमें आया, साहबको राजाने ऊँचे सिंहासनपर बैठाया । नामदेवजी प्रथमहीसे वहां उपस्थित थे, वे भी साहब के निकट आकर बैठकर पूछने लगे कि, हे साहब ! आपने शब्द कहांसे पाया वह साहब कौन है जो सबके पार है ? तुम किसका ध्यान करते हो ? मुक्ति कहां है ? आप कहां सुरति लगाते हो ? किस तरहसे यमयातनासे बच सकते हैं ? मुझसे पृथक् २ वर्णन कीजिये" जब आप ब्रह्मा, बिष्णु और शिव जो जीवोंके उद्धार करनेवाले हैं उनको कुछ समझतेही नहीं तो राजाको क्या उपदेश करोगे । चाहे कोई कितनाही करे परन्तु विष्णुकी भक्ति बिना मार्ग नहीं मिल सकता । नामदेवके इतने कहनेके पीछे कबीर साहब बोले कि, हे नामदेव ! जैसे तुम भूले हो मुझे वैसा न समझो "निर्गुण पुरुष सबसे न्यारा है। उसीका सगुण नाम विष्णु है जिसका कि, वेद गुण गाते हैं, ऋषि, मुनि, सब ध्यान धरते हैं पर पार नहीं पाते, सद्गुरुकी कृपासे कोई सन्त जान सकता है।" तुम जड़ मूर्तिकी पूजा करते हो यह मूर्ति भी उसी की है जो उत्पन्न करता और खा जाता है। इतनेमें सभाके उठनेका समय हुआ, सब लोग अपने अपने घरको गए ।।

दूसरे दिन राजाने शिकार खेलनेकी तैयारी की । "तब राजा अस बचन उचारा, हम संग साहिब चलो शिकारा।" आवश्यक समान लेकर रवाना हुआ, कबीर साहब तथा बहुतेक सेनाभी साथमें थी । उस दिन राजाके बहुत परिश्रम करनेपर भी कोई आखेट न मिला, सब बहुत दूर चले गये । थककर पीछे फिरने पर राजाने देखा कि, सब सेना तृषासे पीड़ित होरही है, राजाने आज्ञा दी कि, जलका खोज करो कितने लोग तो पीछे भाग गये, कितने इधर उधर भूल गये, कितने जनोंने थककर राजासे आके कहा—महाराज ! पानीका पता कहीं नहीं मिलता, हम लोगोंके प्राण जाते हैं; इतना कह कर सब व्याकुल हो गये यह देख राजा बहुत घबड़ाया, उस समय कबीर साहबने अपनी शक्तिसे नानाप्रकारके सुगन्धित फूलों तथा मिष्ट सुरस फलोंसे लदे वृक्षों सहित एक ऐसा उपवन प्रगट

किया, जिसके कि बीचमें बहुत शुद्ध मीठे जलका एक सरोवर भरा हुआ था, मन्द सुगन्ध वायु चल रही थी जहाँ जानेसे आत्मा प्रफुल्लित होती थी । फिर साहबने राजासे कहा ऐ राजा ! यहाँसे उत्तर की ओर देखो. कैसी उत्तम फुलवारी और ठण्डे जलसे भरा हुआ सरोवर दिखाई पड़ता है । राजाने कहा, महाराज ! आप यह क्या कहते हैं ? सहस्रों वर्षसे यह बात प्रसिद्ध है । मुझे भी प्रायः अनुभव हुआ है कि, इस पहाड़पर कहीं जल नहीं है आप ऐसी बात न कहिये जो सुनेगा वह हँसेगा एवं कहेगा कि, सद्गुरु झूठ बोलते हैं । उस समय राजाके प्रधानने राजाको समझाया कि, महाराज! सद्गुरुके वचनको झूठ न जानिये, जो कहते हैं सो कीजिये। इसपर राजा सद्गुरुको दण्डवत् प्रणाम करके सेना सहित इधर उधर जल ढूँढ़ता हुआ उत्तरकी ओर चलता हुआ एक ऐसी जगह पहुँचा जहाँ सद्गुरुके बताये हुये उपवन और सरोवर सुशोभित थे ! वहां आम, दाड़िम, केला आदि नाना प्रकारके फलोंसे लदे हुये वृक्ष लगे हुए थे ! जिन्हें कि देखतेही चित्त प्रफुल्लित हो उठता था बार बार सद्गुरुको दण्डवत् नमस्कार करता हुआ धन्यवाद देने लगा कहा कि, हे सद्गुरु ! मेरा अपराध क्षमा करो, भविष्यतमें आपका वचन कभी उल्लंघन न करूँगा । सद्गुरुकी आज्ञा पाय सेना सहित फल फूल इत्यादि खाय जल पीकर शान्त हुआ 'तृषा सबनकी बुझिगई ऐसा निर्मल नीर' कबीर साहबने कहा कि, हे राजन् ! अब चलो, तब राजा कबीर साहबको हाथीपर सवार करा-कर आपभी सवार हो सेना सहित राजधानीको चला । थोड़ी दूर आगे जाकर पीछे फिरके देखनेसे उसी स्थानपर जहां कि तलाव और बाग था, धूलही उड़ती हुई दिखाई दी ।

धन्य कबीर सरोवर रची, छूतहिं लीन जिवाय ।।
जहंको जलले आयऊं, तहंको दीन पठाय ।।

सब लोग नगरमें पहुँचे, राजाने अन्तःपुरमें जाकर रानीसे आखेटका सब वृत्तान्त कहा । रानीने अत्यन्त श्रद्धा प्रेमके साथ सद्गुरुको दण्डवत् किया, राजाने साहबकी दीक्षा ली । पीछे राजाने सद्गुरुसे कहा कि, हे प्रभु ! मुझे अपना लोक दिखाइये । राजाको लेकर सद्गुरु सत्यलोकको चले, मार्गमें यमदूतोंने आकर राह रोकी और कहा कि, आप राजाको लेकर कहां चले ? कबीर साहबने दूतोंको समझाया कि, यह जीव सत्य पुरुषका स्वरूप पागया है । इतना सुनतेही यमदूत भाग गये, तब राजा वीरसिंहको सद्गुरु सब लोक दिखाने लगे, सत्य लोकको लेगये, वहां सत्यपुरुषका दर्शन कराया । राजा वहांकी आनन्दशोभाको देखकर अत्यन्त मोहित होगया, यहां तक कि, जब सद्गुरुने उसे पीछे चलनेको

कहा, तब सद्गुरुके चरणोंपर पड़कर विनय करने लगा कि, हे प्रभु ! मुझे यहाँ ही रहने दीजिये । तब सद्गुरुने समझाया कि, जब तुम्हारी आयु पूरी हो जावेगी तब यहां आकर वास करना । पृथ्वी पर आकर राजाने सद्गुरुसे कहा, हे बन्दी छोर ! अब तक मैं यही जानता था कि, जैसे और सब साधु हैं वैसे आपभी हो परन्तु अब जान लिया कि, आप साक्षात् सत्यपुरुष सर्वशक्तिमान् निर्वाण स्वरूप हो, हे स्वामिन् ! जिस प्रकार मेरे ऊपर कृपा की उसी प्रकार मेरे पुरुषोंको, जो अनेक प्रकारके पाप कर्मोंको करते हुए मृत्युको प्राप्त हुए हैं उन पर भी करिये । सद्गुरुने दया करके राजा सहित अनेक जीवोंका उद्धार किया, यह काल्पनिक नहीं किन्तु ऐतिहासिक बात है ।

नौबाब बिजलीखाँ ।

नौबाब बिजलीखाँबोध नामक ग्रंथ तो मेरे पास नहीं पहुँचा परन्तु यह महाशय कबीर साहबके सुप्रसिद्ध शिष्योंमें एक हैं ये राजा बड़े प्रेमी भक्त और सत्यगुरुसे बड़ा अनुराग रखते थे । मैंने सुना है कि, कबीरसाहबके समयके लिखे हुये ग्रंथ अबतक उनके घरमें पाये जाते हैं । बिजलीखांके घरानेके लोग सत्यगुरु की भक्ति करते हैं । जहां कबीर साहबकी समाधि बनी है वहां एक ओर हिन्दू और दूसरी ओर जो मुसल्मान शिष्य बिजलीखांके घरानेके लोग हैं ! दोनों सत्यगुरुका गुण गाते हैं । इसके अतिरिक्त उस देशमें सहस्रशः मुसल्मान कबीर साहबके भक्त हैं, जो मद्य मांस आदि निषिद्ध कर्मोंसे सदाही वर्जित हैं, हिन्दू-वैष्णवोंके समान आचार व्यवहार रखते हैं साधुओंसे परम प्रीति करते हैं । गुरु साहबकी बाणीपर पूरी श्रद्धा रखके बड़े प्रेमके साथ नित्य नियमसे पाठ करते हैं । कबीर पन्थके इतिहासमें उनका नाम बड़े आदरके साथ लिया जायगा । कबीर साहिबने इसीके राज्यमें शरीर छोडा है, वहीं वीरसिंह इनकी दो दो चोटें भी हो गई हैं ।

रविदास ।

जिस समय रविदासजीने कबीर साहिबसे वाद विवाद किया उस समय रविदासजीने अपने मनमें सोचा और समझा कि, मैं जिनको मानता हूं जिन पर भरोसा रखता हूं वह तो उस योग्य नहीं हैं । मैं भ्रमसे उसे मानता था । वह सब तो स्वयम् बंध और विवश हैं, मुझको क्या बचा सकते हैं । वाद विवादके अन्तमें रविदासजी कबीर साहबके चरणोंपर गिर कर शिष्य हो गये । इसी प्रकार सहस्रों जब अपनी अपनी मूर्खता तथा अज्ञानतासे विज्ञ हुए भली भाँति समझ लिया तब उनके मनका भ्रम टूट गया उन्होंने कबीर साहबकी शरण ली । यह

बात केवल यह तुच्छ दास तथा अन्यान्य कबीर पन्थी ही नहीं कहते वरन् अन्यान्य जातिके लोग भी लिखते चले आ रहे हैं । देखो किताब "तजकिरा गौसिया २५६ पृष्ठमें" रविदासजीके कबीर साहबका शिष्य होनेका हाल लिखा हुआ है, कितने मुसलमानी धर्म्मके प्रतिष्ठित महात्मा कबीर साहबकी श्रेष्ठता प्रगट करते आते हैं ।

हस्तावलम्बिनी कञ्जरी ।

कबीर कसोटीमें लिखा हुआ है कि, जब साहबके माहात्म्यकी प्रसिद्धि देश देशमें हुई, लाखों सेवक और शिष्य होगये । पन्थ भली भांति पृथिवीपर प्रचलित हुआ, समीपमें बड़ी भीड़ रहने लगी, उस समय साहबने एक ऐसा अनुपम कौतुक किया कि जिसके देखने तथा सुननेसे समस्त काशी नगरीमें हँसी हुई और प्रशंसाके स्थान आपकी निन्दा होने लगी ।

उपरोक्त घटना सम्वत् १६४५ विक्रमी फाल्गुन सुदी पूर्णिमासीमें है, होलीका दिवस था । उस दिवस कबीर साहब एक बगलमें कञ्जरी, दूसरीमें रविदास भगतको लेकर अपने हाथमें गङ्गाजल भरी हुई बोतल लिये हुए बाजार में से चले । यह कौतुक देखकर बनारसमें बड़ा ठठ्ठा पड़ा, अच्छी धूल उड़ी । चारोंओरसे कबीर साहबकी हँसी मसखरी होने लगी । अब प्रथम उस कञ्जरीका वृत्तान्त सुनो । पूर्वकालमें सिद्ध, साधु, ऋषि, मुनि इत्यादि सभी मक्काकी भूमि पर भजन किया करते थे । कारण यह कि, मक्का ऋषीश्वरोंकी तपस्याकी जगह बहुत दिनोंसे चली आई है । एक समय ऋषीश्वर भजन कर रहे थे उसी समय एक वरवर्णिनी अप्सरा आकाशसे उतरी, उसने चाहा कि, मैं इन ऋषीश्वरोंकी परीक्षा करूँ कि, इनको काम सताता है अथवा नहीं ? वह भड़कीले वस्त्र पहनकर लट-कती मटकती तपस्वियोंके निकट गई । उन लोगोंने अपने तपके प्रभावसे जान लिया कि, यह दुष्टा हमारी तपस्या नष्ट करने आई है । तब उन लोगोंने उसको शाप दिया कि, तू कञ्जरी हो जा। कारण यह कि, तू हमारा धर्म्म बिगाड़नेको आई थी । यह शाप सुनकर वह अप्सरा डाढें मारमारकर विलाप करने लगी । उसका हृदयवेधक रोना सुनकर परम दयालु दीनबंधु सद्गुरु कबीर साहब प्रगट हो गये, उससे कहा कि, तू मत रो धैर्य धर, मैं तेरी मुक्ति करूँगा ऋषीश्वरोंका वचन तो सत्य होगा परन्तु तू काशीमें (मेरे समयमें) कञ्जरी होवेगी । यह वही अप्सरा थी जो काशीमें कञ्जरी हुई । इसको साथ लेकर कबीर साहब काशीके बाजारोंमें घूमे तब बनारसके लोग ठठ्ठा करने और ताली बजाने लगे । संन्या-सियों तथा ब्राह्मणोंका भली प्रकार दाँव घात लगा । बड़ा उपहास तथा निन्दा

करने लगे। जो बड़े बड़े अच्छे वैष्णव सन्त थे वे शिर झुकाकर यही करते कि, ऐसे महात्माका चरित्र समझमें नहीं आता, कितने कुछ और कितने कुछ कहते थे। इसी अवस्थामें कबीर साहब काशिराजके दरबारमें गये, राजाने देखकर सिर नीचा कर लिया। कबीर साहबकी यह अवस्था देखकर बहुतसे शिष्योंका विश्वास ढीला होगया। ब्राह्मण तथा संन्यासी तालियाँ बजाते हुए कहते थे कि, देखो चार दिनोंके वास्ते कबीर भी भक्त बन बैठा था अब अच्छी कलई खुलगई। कबीर साहब राजा बनारसके सामने इसी स्वरूपमें गये, राजाको शिर झुकाये देखा कि, झट उस बोतलका जल अपने पैर पर ढरका दिया। यह बात देखकर राजाको भय हुआ कि, कहीं साहबने रुष्ट होकर यह जल अपने पैरोंपर तो न ढरकाया हो, राजाने पूछा कि, महाराज ? इसका क्या कारण है कि आपने यह जल डाला। रविदासजीने उत्तर दिया कि, जगन्नाथपुरीमें अटकाटूटकर पण्डेके पगोंपर गिर पड़ा, उसका पाँव बहुत जल गया है, इस जलसे कबीर साहबने आरोग्य किया है। उसके पाँव पर यह जल डाल दिया इसके पडतेही वह अच्छा हो गया है। यह बात सुनकर राजाको बडा आश्चर्य हुआ कि, जगन्नाथपुरी तो काशीसे बड़े अन्तर पर है, वहाँ पहुँच कर कबीर साहबने पण्डेका पैर कैसे चङ्गा किया। उसी समय राजाने दिन तारीख और समय लिख लिया। अपना साँडनी सवार जगन्नाथपुरी को भेजा कि वह जाकर ठीक २ समाचार लावे। उस समय शाहसिकन्दर लोदी भी काशीमें उपस्थित था, उसनेभी अपने शीघ्रगामी साँडनी सवारको यह वृत्तान्त जाननेके निमित्त भेजा जिसमें इस बातका भली प्रकार निश्चय हो। दोनों अधीश्वरोंके साँड़नी सवार जगदीशपुरीमें जा पहुँचे, वे उस पण्डेके पास जिसका पाँव जला था गये तो देखा कि, वहाँ कबीर साहब बैठे हैं। सवारोंने कबीर साहब को नमस्कार किया पण्डेसे सब वृत्तान्त पूछा कि, कैसे तुम्हारा पाँव जला एवं किस प्रकार अच्छा होगया ? पण्डेने बताया कि, मैं ठाकुरको भोग लगानेके लिये अटके प्रस्तुत करता था, वह फूटकर मेरे पैर पर पड़ा, मैं जलने लगा, महाराज कबीर साहबने मेरे पाँवपर जल डाल दिया। उस समय मैं चङ्गा होगया। यह बात सुन पण्डेसे पत्र लिखवाकर दोनों सवार बनारसमें पहुंचे। राजा वीरसिंह तथा शाह शिकन्दरके हाथोंमें दोनोंने पंडेका पत्र दिया, उन्होंने पढ़ा। सवारोंने प्रगट किया कि कबीर साहब तो जैसे यहाँ थे वैसेही पुरुषोत्तमपुरीमें उपस्थित हैं, उनका भेद कुछ जाना नहीं जाता ? यह बात जानकर राजा तथा बादशाह दोनोंको विश्वास होगया। राजा वीरसिंहके मनमें बड़ा भय उत्पन्न हुआ कि, मुझसे महाराजकी अप्रतिष्ठा हुई। अब मैं क्या करूँ किस प्रकार अपना दोष क्षमा

कराऊँ। सत्यगुरु तो सर्व त्यागी हैं सुवर्ण तथा चाँदी आदिसे कोई सम्बन्ध नहीं रखते, न किसी वस्तुकी उनको इच्छा है ? तब राजा और रानी दोनों नङ्गे पाव होकर घासका पोला अपने सिरपर धरकर एक अगौछी अपने २ गलमें डाल, आकर सत्यगुरुके चरणोंपर गिर हाथ बांधकर निवेदन करने लगे कि, आप मेरे अपराधको क्षमा करो। कबीर साहबने राजा रानीका बड़ा भारी सम्मान करके कहा कि, हे राजा ! साधुओंके खेल तथा कौतुक जाने नहीं जा सकते, सांसारिक के विचारमें आ नहीं सकते। आप अत्यन्त नम्रतापूर्वक साधु तथा गुरुकी सेवा किया करो। यह कलिकाल महा कठिन समय है, इसमें लोग साधु तथा गुरुकी सेवा नहीं कर सकते। आप किसी बातका ध्यान न करो, यही नहीं सत्यगुरुने राजाके सब अपराध क्षमा कर दिये, राजा सकुटुम्ब कबीर साहबका सेवक बन गया। राजा तथा रानी बिदा होगये तब ब्राह्मण काजी तथा मुल्ला आदि झुके, कबीर साहबको दण्डवत् प्रणाम करके धन्य कबीर ! धन्य कबीर !! कहते हुए बड़ी नम्रताके साथ उनसे मिलने लगे। उस समय जितने कबीर साहबके सेवक शिष्य थे जिनका विश्वास सद्गुरुको कञ्जरीके साथ देखकर ढीला हो गया था, उनका विश्वास पुनः स्थिर होगया, वे सत्यगुरुकी प्रशंसा तथा गुणानुवाद करने लगे, अपनी मूर्खता तथा अदूरदर्शितापर खेद और दुःख करने लगे, अपने बुरे सन्देह करने पर पश्चात्ताप करने लगे बड़ेही लज्जित हुए।

यह कौतुक जो होलीके दिवस काशीमें कबीर साहबने किया आज दिवसपर्य्यन्त होलीके दिवसोंमें पूर्वके मनुष्य हँसी ठठ्ठा करते हुए कबीर बोलते हैं। कञ्जरी सत्यगुरुकी कृपासे हंस कबीरके साथ मिलकर परम धामको पहुँच गई, जिसका सत्यगुरु हाथ पकड़े फिर उसका बुरा नहीं हो सकता।

भक्त मीराबाई।

मीराबाईका यह वृत्तान्त भगतमालमें लिखा है कि, मारवाड़ देशके राजाकी पुत्री थी, मीराकी माता ठाकुर पूजन किया करती थी एक दिवस किसी की बरात आई तो दुल्हा देखनेको सब चले, मीराकी माता अटारीपर चढ़ी देख रही थी। छोटी बालिका मीरा भी अपनी माताके साथ दुल्हा देखनेको गई। मीराने अपनी मातासे पूछा कि, हे माता ! मेरा दुल्हा कहां है ? तब मीराकी माँने हँसकर कहा कि, तेरा दुल्हा तो गिरधरलाल है। उसी दिनसे मीराको गिरधरलालसे बड़ा प्रेम हुआ. गिरधरलालकी मूर्तिको एक पेटारीमें रखकर बड़े चावसे पूजने लगी। गिरधरलालमें पूर्ण आसक्त होगई। मीराका उदयपुरके राना के साथ विवाह हुआ। बिवाहके पीछे दुरागवन (गवँने) में अपने घर (श्वशुरा-

लय) गई । मीराका पूर्ण प्रेम तो गिरधरलालसे था ही इस कारण साधुओंकी सेवा करना तथा गाना नाचना यही उसका मुख्य काम था। मीराकी यह दशा देखकर राना उदयपुरने बहुत मना किया कि, मीरा ! तू मेरी पत्नी होकर साधुओं में न जायाकर, इसमें मेरी नाम हँसाई होती है। यद्यपि रानाजीने बहुतेरा मना किया पर मीराने एक भी नहीं मानी साधुओंके पास आने जानेसे नहीं रुकी । अन्तमें रानाने मीराकी भक्तिसे घबराकर विषका प्याला भेजा एवं कहलाया कि, यह ठाकुरका चरणामृत है, तू पी तेरा कल्याण होजायगा । मीरा उसे प्रसन्नतापूर्वक * पीगई, वह (विष) अमृत होगया, अब तो मीरा और भी अधिक प्रेम और उत्साहसे नाचने गाने लगी, भगवान्की भक्ति करने लगी। फिर रानाने साँप भेजा वह साँप जब मीराके समीप पहुँचा उसने गलेमें डाल दिया जिससे वह फूलकी माला बनगया। फिर रानाने शेर छोड़ा वह भी मीराके सामने माथा टेक कर चला गया । मीराने देखा।कि, अब मुझको रानाके घर रहना उचित नहीं है तब तीर्थके निमित्त निकल गई। मीराके जानेके पीछे उदयपुरके देशमें काल पड़ गया, लोग भूखसे मरने लगे, रानाने मीराको बुलाना चाहा, अपने कारबारियोंको भेजा कि, मीराको कह सुनकर ले आवें। कारबारियोंने बहुत कुछ कहा पर मीराने एकभी न सुना और कहा कि, अब मुझे भगवान् गिरधर लालके चरणोंको छोड़कर कहीं भी जाना नहीं चाहिये ।

इस मीराने भक्ति तथा प्रेमका कर्तव्य पूर्णतया पालन किया । इसलिये उसको कबीर गुरु मिले । वह सत्यगुरुका हंस होकर जब परमधामको चली उस समय वह सशरीर विलोपित हो गई। किसीको तनिक भी सुधि नहीं मिली कि, मीरा कहाँ चली गई। श्रीकृष्णकी उपासना करनेमें जो परम प्रेम प्रगट किया तो उसको सत्यगुरु मिल गये और उसका काम पूरा हो गया। जिसको पति माना था अपने शरीरको भी उसीमें मिला दिया ।

---

* मीराने विषका प्याला पीते समय जो भजन गाया था, पाठकगणके विनोदके लिये यहाँ लिखता हूँ—रानाजी जहर दियो मैं जानी ॥ जिन हरि मेरो नाम निवेर्यो; छन्यो दूध अरु पानी। जब लगि कंचन कसियत नाहीं होत न बाहिर वानी ॥ अपने कुलको परदा करियो, हम अवला बौरानी ॥ श्वपच भक्त धारौं तन मन, जैहौं हौं हरि हाथ विकानी ॥ मीराके प्रभु गिरिधर नागर, सन्त चरण लपटानी ॥ १ ॥ हमारे मन राधा श्याम वसी ॥ कोई कहे मीरा भई बावरी, कोई कहे कुलनासी ॥ खोलिके घूंघट पारिकै गाती, हरि ढिग नाचत गसी ॥ वृन्दावनकी कुंजगलिनमें भाल, तिलक उर लसी ॥ विषको प्याला रानाजी भेज्यो पीवत मीरा हँसी ॥ मीराके प्रभु गिरिधर नागर, भक्तिमार्गमें फँसी ॥

सोरठा— मीरा यह पद गाय, विष प्याला पी हरि भज्यो ।
गयो सो गरल विहाव, नशा न कीन्ह्यो नेकहू ॥

शाह सिकन्दर लोदीकी दीक्षा ।

शाहसिकन्दरने कबीर साहबके अनेक कौतुक देखे. जब उसको निश्चय होगया कि, यह कबीर साहब पृथ्वी तथा आकाशके बीच सच्चे गुरु हैं दूसरा कोई नहीं, तब वह सत्यगुरूकी शरण लेकर संसार सागरके पार उतर गया । शाह सिकन्दर तो पहलेही कौतुक पर विश्वास कर चुका था। फिर उसने इतने कौतुक देखे तब उसका विश्वास और भी दृढ़ हो गया । उसको भली भाँति मालूम हो चुका कि, कबीरही स्वयम् सत्यपुरुष परमात्मा हैं । सिवा कबीरके दूसरा कोई नहीं है इस बादशाहका विश्वास जैसा सच्चा हुआ वैसाही उसको फल मिला अर्थात् सत्यगुरु का प्यारा भक्त हुआ सच्चे धामका अधिकारी हुवा । कमाल बोधमें लिखा हुवा है कि –

रमैनी – शाह सिकन्दर शरना[1] लीना । चौकाकर[2] परवाना[3] दीना ॥
भय मुरीद[4] कबीरके आई । ताते सद्गुरु नाम फिराई ॥
शाह सिकन्दर दिल्ली आये । मुल्ला काज़ी वचन सुनाये ॥
शेख तक़ी है शाहको पीरा । सब मिली कियो उन्हींसे जोरा[5] ॥
ऐसा इल्म शाहको दीना । मुरीद तुम्हारे बहका[6] लीना ॥
चले हैं क़ाज़ी शाह दवार । शाहसे पूछे ज्ञान विचारा ॥

काजी मुल्ला वचन ।

कहो शाह तुम कह मत[7] पाई । कैसे अपना इसिम फिराई ॥
चार बिहिश्त[8] अल्ला फ़रमाये । उनको छोड़ आगे कहँ जावे ॥
दीनका मारग अहदसे[9] पाई । सो तुम कैसे दीन मिटाई ।
दीन दुनीका[10] तुम सरदारू । कैसे भई अकिल तुमारू[11] ॥
काफ़िरके[12] मुरीद तुम होई । दीनके घर कहँ टट परोई ॥

शाह सिकन्दर वचन ।

शाह कहे काजी और मुलाना । झूठी दीन दुनी फरमाना[13] ॥
दीनका जो घर उरे ले आई । बिन जाने तुम असल बताई ॥
किन वैकुण्ठ बिहिश्त बनाई । वेद कितेब[14] कहाँ ते आई ॥
कहो खुदाय कौन घर बासा । तन[15] छूटे कहँ होये निवासा ॥

साखी – सुने सुने तुम सब कहो, नहिं देखा दीदार[16] ।
पीर औलिया देखि सब, सद्गुरु[17] खेल अपार[18] ॥

---

१ शरण, २ चोकापूर्वकदीक्षा देकर, ३ सत्यलोकका ओडार, ४ सेवक, ५ आग्रह, ६ भुला, ७ बुद्धि, ८ स्वर्ग । ९ शर्त, १० संसार, ११ तुम्हारी, १२ ईश्वर, न माननेवाले, १३ कथन, १४ किताब, १५ शरीर, १६ दर्शन, १७ कबीर, १८ अनगिनत,

रमैनी – जमुना तीर पे आसन मारी । बैठे पीर मुरीद[1] दोऊ पारी ॥
क़ाज़ी मुल्ला लियउ बुलाई । शेख तक़ी तहवां चलि आई ॥
शेख कहे तुम जुल्म जो कीन्हा । फेर मुरीद मेरा क्यों लीन्हा ॥
शेख कहै सुनै मतिधीरा । जुल्म कीन्ह तुम दास कबीरा ॥
क़ाज़ी कह तुम क्या मतपावा । शाहको सदा[2] कौन सिखलावा ॥
निराकार जो कितेब बखाना । नूर[3] जोति वाको सब जाना ॥
यही है खुद कि, और निनारा[4] । ताको हमसे कहो विचारा ॥

साखी – शाहको किमि[5] समझायो, सबहि दीन सरदार ॥
दोनों राह[6] कैसे मिटे, यह कुछ बात अपार ॥

कबीर वचन।

रमैनी – निरंकार है खुदका कीना । इनको तीन लोक जो दीना ॥
इनहीं रचे हैं वेद कितेबा । बिहिश्त वैकुण्ठ इन्हींको सेवा ॥
हमतो इल्म[7] फ़क़ीरी बालें । समरथ[8] नाम लिये जग डोलें ॥

साखी – निराकार निरगुण कहि, राजि रहा संसार ।
पीर पैग़म्बर यहाँ रहे, समरथ नूर निनार ॥
कलमा कहूँ तो कल पडे, बिन कलमे कल नांहि ।
जो कलमेसे कलभये, सो कलमा तिस मांहि ॥

कमालजी।

कबीर साहिबने कमालजीसे कहा कि, हे कमाल ! तुम पश्चिम देशके मनुष्योंको शिक्षा दो। तब कमालजी काशीसे चलकर अहमदाबाद पहुंचे । उस समय अहमदाबादका नवाब मुहम्मद शाहवली बादशाह था । इसके दीवानका नाम दरिया खान था । इसे कमालजीने सत्यपुरुषकी भक्तिमें लगाकर अपना शिष्य कर लिया, कमालजीका शिष्य होगया. ये यहीं निवास करने लगे । ये दिव्य वक्तव्य दिया करते थे, जिन्हें सुनकर वहांवाले इनके वैरी होगये यहांतक कि, वहांका हाकीम भी इनसे द्वेष करने लगा, लोग पत्थर मारने लगे. बादशाहने अपने मंत्रीसे भी कहा कि, तू भी पत्थर मार, उस समय वजीरने उत्तर दिया कि, यह तो मेरे गुरु हैं मैं इनपर पत्थर मारूं ? यह कैसे हो सकता है, नौवाबने दरिया खाँको खूब धमकाया कि, यदि तू पत्थर न मारेगा तो तुझे मंत्रीकी पदवीसे पृथक् कर दूंगा । नौवाबने बहुत धमकाया । उस समय दरियाखांने फूलकी एक पत्ती तोड़कर कमालजीपर चलाई। जब वह उनको लगी तो वे हा हा करके गिर

१ सिकन्दर, २ दुआ, ३ प्रकाश, ४ भिन्न, ५ कैसे, ६ दीन, ७ विद्या, ८ राम ।

पड़े । तब दरियाखाँ उनके समीप आकर कहने लगा कि, आपपर इतने पत्थर पड़े पर आपने आहतक नहीं कि, मैंने तो केवल एक फूलकी पाँखुरी ही चलाई थी । इसके लगते आप हाय हाय करके गिर पडे इसका कारण क्या है ? कमालजीने कहा कि, सुन दरियाखाँ ! तू शिष्य था मैं तेरा गुरु था । तूने परमेश्वरका भय न किया मेरी इतनी अप्रतिष्ठा की । मुझको पत्थरोंने इतना घायल नहीं किया जितना तेरे फूलने किया है । तूने संसारको पसंद किया उससे मित्रता की । अब तेरी मुक्ति न होगी, तू भूत होगा । इस बातपर दरियाखाँ पश्चाताप करने लगा तथा दुखी होकर क्षमाकी प्रार्थना की, परम कमालजीने उसे क्षमा नहीं किया । इधर नौवाब मुहम्मदशाहके शरीरमें आग लग गयी वह जलने मरने लगा । तब क्षमा २ कहता हुआ कमालजीके चरणोंपर गिरकर कहने लगा कि, मेरा अपराध क्षमा करो मुझको अपना शिष्य बनाओ ।

मुहम्मद शाहकी अत्यन्त नम्रता तथा निवेदनको देख, कमालजी दयालु हुए । शाहके शरीरकी जलन मिट गई, वह कमालजीका शिष्य हो गया । जब स्वयम् नौवाब उनका शिष्य हुआ तब कमालजी भली भाँति उपदेश तथा शिक्षा देने लगे । उस समय कमालजीके बहुत सेवक तथा साठ शिष्य होगये पर दरिया खाँका अपराध क्षमा नहीं किया । तब फिर कमालजी मुहम्मदशाह और दरियाखाँ इत्यादि मनुष्यों सहित बनारसमें कबीर साहबके निकट गये । उन सबोंने सत्य-गुरुको दण्डवत् प्रणाम करके द्रव्य तथा मणि माणिक भेंट किया । यह देखकर सत्यगुरुने कहा कि, हे कमाल ! तू मेरा योग्य शिष्य नहीं है । कंकर पत्थर धन दौलत काहेको लाद लाया, हम साधु हैं । इन सब वस्तुओंसे हमें क्या काम है ? यह कहकर सब गरीबोंको बाँट दिया । उस समय दरियाखाँने सत्यगुरुके सामने दोहाई दी कि, मुझसे यह दोष होगया । जो मैंने क्षमा प्रार्थना की पर मेरा अपराध क्षमा नहीं होता । आप मेरा अपराध क्षमा कीजिये । कबीर साहबने दरियाखाँसे कहा कि, यदि मैं तेरा अपराध क्षमा करदूँ तो मेरे धर्म्ममें विभिन्नता आती है। क्योंकि, गुरुकी श्रेष्ठता मैंनेही स्थापित की है वो मर्यादा न रहेगी । मेरे नियममें बाधा उपस्थित होगी । इस कारण तू अपने सत्यगुरुसे क्षमा माँग । कमालजीको डाँट दिया कि, तू जो इस प्रकार श्राप देगा तो गुरुवाई योग्य न होगा । तूने उसको श्राप क्यों दिया ? तू इसका अपराध क्षमा कर। * कमालजीने दरियाखाँका अप-

* अहमदाबादमें कबीर पन्थियोंमें प्रसिद्ध है कि, कमाल साहबने दरियाखाँका अपराध क्षमा करते समय इस प्रकार कहा था कि, जब तुम्हारा कब्र फट जावेगा और गुम्मज दीख जायेगा उसी दिन भूतयोनिसे मुक्त होगे। कई वर्षोंसे दरियाखाँकी कब्र फट गई और गुम्मज तथा दीवारें आर पार दरक गई हैं। इस घटनाके कारणसे लोगोंकी दन्तकथा प्रमाणित हुई है और लोगोंका विश्वास बहुत बढा है। अहमदाबादमें कमाल टेकरा नामसे एक प्राचीन स्थान भी है—

राध क्षमा किया । सत्यगुरुने सबको दयादृष्टिसे देखा सबोंपर उसको दया हुई सबोंने सत्यगुरुकी आज्ञा मानी एवं सभी प्रसन्नतापूर्वक बिदा होकर वहांसे अपने स्थानको उछलते कूदते हुए चले आये तथा आज्ञाके अनुसार प्रचार करने लगे ।

गरीबदास ।

दिल्लीके पास हरियाना प्रान्तमें छोटियानी नामका एक गाँव है । उसीमें एक जाटके घर सम्बत् १७७४ विक्रमीमें गरीबदासजीका जन्म हुआ था । उन्होंने सम्बत् १७९७ विक्रमीमें कबीर साहबका दर्शन पाया था । सत्यगुरुके उपदेशसे गरीबदासजीका अंतःकरण शुद्ध होगया था । उनकी जिह्वासे ज्ञानमयी बाणीकी झड़ी लग गई थी । उपदेश सुननेवालोंकी भीड़ अधिकाधिक होने लगी, अतएव अन्तमें पन्थ स्थापित हुआ, तो कबीर साहबके बारह पंथ कहे जाते हैं । गरीबदासजी उनमें अन्तिम पंथके आचार्य हैं। अपने ग्रंथमें गरीबदासजीने कबीर साहबकी बड़ी प्रशंसा लिखी है । कृतज्ञ शिष्यका कर्तव्य भी यही होना चाहिये । गरीबदासजी, गुरुकी श्रद्धा भक्ति तथा प्रेममें वैसेही दृढ़ थे । भादों सुदी दूज सम्बत् १८३५ विक्रमीमें, छोटियानीमें अचानक गुप्त होगये । वहां अबभी उनकी समाधि बनी हुई है; जिसके दर्शनके लिये सालमें कई एक बार मेला लगा करता है ।

ऐसा सुना जाता है कि, गोसाईं गरीबदासजी छोटियानीमें गुप्त होकर फिर राजपुतानामें प्रगट हुये । वहाँ एक दिन जंगलमें फिर रहे थे कि, जयपुर तथा जोधपुरके दोनों राजाओंको दर्शन प्राप्त हुआ । ये राजा उस समय शिकार खेलनेके लिये जंगलमें गये थे इनकी तेजस्विताको देखकर दोनों राजोंने विचार किया कि यह तो कोई बड़े श्रेष्ठ महात्मा हैं । दोनों राजोंने प्रार्थना की कि, महाराज ! हमें अपना शिष्य करलो । गोसाईं साहबने अस्वीकार किया कि हम किसीको अपना शिष्य नहीं बनाते । तब दोनों राजोंने बड़ा हठ किया कि, आप हमें अवश्यही अपना शिष्य बनालें । राजाओंने अत्यन्त विनीतभावसे विनय की कि उस समय गोसाईं गरीबदासजीने कहा कि, तीन नियमोंके स्वीकार करने पर तुम लोगोंको शिष्य करूँगा । प्रथम–अपना अपना आधा आधा राज्य मुझको दो । द्वितीय–अपनी अपनी लड़कीका डोला दो । तृतीय–मुझे पेट भर भोजन करा दो ।

यह बात सुनकर राजाने उत्तर दिया कि, महाराज ! हम अपना समस्त राज्य और अपनी सब लड़कियोंका डोला आपको देवेंगे परन्तु आपको पेट भर खिलानेकी प्रतिज्ञा हम नहीं कर सकते । फिर उनको विना शिष्य किये ही वहाँसे अन्तर्धान होकर सहारनपुर नगरमें प्रगट हुये । पैंतीस वर्षतक सहारनपुरमें

रहे। भूमड़ भक्त इत्यादिने आपसे बड़ा लाभ उठाया। गरीबदासजीने वहाँ अपने हाथसे एक बगीचा लगाया एवं अनेक लोगोंको कौतुक दिखाया। इसके पीछे जब उनकी मृत्यु हुई तब वहाँ उनकी समाधि तथा छतरी बन गई। उनकी बाटिका उनके सेवक भूमड़ भक्तके आधीन रही। कुछ दिनोंके पीछे गोसाईंजीकी बाटिकाके दोनों बैल मर गये, तब भूमड़ भक्तने संकल्प किया कि अब बाटिकाको मैं बेच डालूंगा। जब भूमड़ भक्तने ऐसी इच्छा की तब उसी रात गोसाईं गरीबदासजी स्वप्नमें मिले। भूमड़ भक्तसे कहा कि तुम बाटिका न बेचो। तुमको आजसे आठवें दिवस अमुक सरायमें एक जोडे बैल मिलेंगे। तुमको दोनों बैल मिल जावें तो तुम दोनों बैलोंको आरती करके लेआना।

ऐसा हुआ कि नियत दिवस पर भूमड़ भक्त उस सरायमें गये। अपने स्वप्नका वृत्तान्त अपने साथियोंसे पहलेही कह रक्खा था, इस कारण तीस चालीस मनुष्य यह कौतुक देखने उनके साथ सराय गये। जब सब आदमी सरायमें पहुँचे तब देखा तो लुङ्गी पहने हुए एक मुसलमान एक जोड़ी नागौरी बैल लिये हुए खड़ा है। भूमड़ भक्तने उसके समीप जाकर कहा कि, यह जोड़ी बैल मुझे दो, वह मुसलमान बोला कि यह जोडी तुम कैसे लोगे? कोई चिन्ह बताओ, तब उक्त भक्तने उत्तर दिया कि, मैं आरती करके लूंगा। वह मुसलमान बैलोंकी जोडी सौंपकर चला गया। लोगोंके मनमें यह ध्यान नहीं हुआ कि, पूछें कि, वह मुसलमान कौन था कहाँसे आया, कहाँ चला गया, किसने यह बैल भेजा, कहाँसे ले आया, वह कौन है? पीछे लोगों को यह बात स्मरण हुई कि, हम लोग बहुत भूले, यह न पूछा कि वह मुसलमान कौन था! अस्तु भूमड भक्त तो बैल लेकर चले आये, उनकी बगीची को सींचने लगे।

सहारनपूरका रहनेवाला शेख बली नामक कलाल, हज्ज करने मक्का गया था जब वह पीछे आकर बम्बईमें उतरा तो वहाँ उसने गरीबदासजीको फिरते देख सलाम करके पूछा कि, महाराज! आप सहारनपूर से चले आये? गरीबदासजीने कहा कि, हाँ। उस शेख बलीको यह मालूम नहीं था कि, गोसाईंजी मर चुके हैं। जब शेख सहारनपूरमें आया तब लोगोंसे पूछा कि, गोसाईं गरीबदासजीका क्या हाल है? तब लोगोंने उत्तर दिया कि, उनको स्वर्गवास हुये तीन बरस बीत गये। उनकी समाधि तथा छतरी बाटिकामें बनी हुई है। यह सुन शेख बली कलालने कहा कि, मैंने तो अभी उनको बम्बईमें फिरते देखा है मुझसे साक्षात् हुआ था। गोसाईंजी उसी स्वरूप, उसी अवस्था और उसी नामसे मुझको मिले, मुझसे भली प्रकार वार्तालाप हुआ। तीन वर्ष हो

चुके थे कि, सहारनपूरमें तो मर गये और बम्बईसे उसी समयमें जीवित होकर फिरने लगे। न जानें और कहाँ कहाँ सैर किया हो वेही जानते होंगे या उनके भक्त जानें दूसरेको क्या पत्ता हो सकता है ?

हंस कबीर जैसे आदिमें थे वैसेही (अजर और अमर) लोकमें अब भी हैं कुछ भी विभिन्नता नहीं है। न उन्हें मृत्यु है, एवं न कभी आवागमन ही होता है न कभी विषय वासनाकी मृगतृष्णाही उनको फँसा सकती है।

गरीब दासजीके * ग्रन्थमें कबीर साहबके चेलोंका अंग।

साखी — गरीब-नानक तो निर्भय किया, वाह गुरु सतजान।
अदली पुरुष पहचानिये, निर्गुण पद निर्वान ॥
गरीब—दादूके सिरपर, सदा, अदली अदल कबीर।
टक मारेमें जदि मिले, फिर सामरके तीर ॥
गरीब—नौलख नानकनावमें, दस लख गोरख तीर ॥
लाख दत्त सङ्गत सदा, पड़े चरण कबीर ॥ ३६ ॥

पारख अङ्गकी साखी।

गरीब—नौलख नानक नावमें, दसलख गोरख पास।
अनन्त सन्त पदमें मिले, कोटि तरे रविदास ॥ ३७ ॥
गरीब—रामानन्दसे लख गुरु, तारे चेले भाई ॥
चेलोंकी गिनती नहीं, पदमें रहे समाई ॥ ३२ ॥
गरीब-मीराबाई पद मिली, सद्गुरु पीर कबीर।
सहित देह लौलीन हो, पाया नहीं शरीर ॥
गरीब-उत्पत्ति परलय जात है, अनन्त कोटि ब्रह्मण्ड।
जोग जीत समझाय जब, उधरे काग भुसुण्ड ॥ ४८ ॥
गरीब—वसिष्ठ विश्वामित्रसे, आवैं जाँय अनेक।
काग भुसुण्डके पलकमें, जो चाहे सो देख ॥ ४९ ॥
गरीब-ऐसे काग भुसुण्ड से, योगजीतके दास।
चकवैं ज्ञान सुनायसे, दीन्हा पदमें बास ॥
गरीब शिबलीको सद्गुरु मिले, सँग भाई मन्शूर ॥
प्याला उतरा अर्श से, काढ़े कौन कुसूर ॥

अचल अङ्गकी साखी ३६२॥

गरीब—मुहम्मदके मुरशिद सही, कलमः रोजा दीन ॥
मुसलमान मानै नहीं, मुहम्मद केर यकीन ॥

---

* गरीबदासजी कृत हिरम्बर बाध देखो।

सर्वाङ्ग अङ्गकी साखी ॥ १० ॥

सा० – गरीब-सुलतानाके तीर लगा, बलख बुखारा त्याग ।
जिन्दाका चोला दिया, सद्गुरु सत्य बैराग ॥ ९९ ॥
गरीब-बहुरङ्गी बिरियामहै, मिला नीरमें नीर ॥
गोरखके मस्तक गहे, अदली अदल कबीर ॥
गरीब-ऋषभ देवके आये, करुणामय करतार ।
नौ योगेश्वर पद रमें, जनक विदेह उरधार ॥

भागवतके ग्यारहवें स्कन्धके दूसरे अध्यायमें लिखा है कि, मनुकी संतानमें ऋषभदेव नामक एक राजा हुआ । उसके एकसौ पुत्र थे । उनमेंसे एकका नाम भरत था, जिसके भी नामसे यह भरतखण्ड प्रसिद्ध हुआ है । उन्हीं-मेंसे नौ परम योगीश्वर तथा ज्ञानी हो गये हैं । उन्होंने राजा जनकको ज्ञानो-पदेश किया था । उन्हीं नौ योगेश्वरोंका वृत्तान्त गरीबदासजी लिखते हैं कि, ये नौ योगीश्वर राजा जनक सहित करुणामय कबीर साहबके कृपापात्र शिष्य होकर परमधामको सिधार गये । जिनकी कि, लोग आज कथाएँ गाते हैं ।

अचल अङ्गकी साखी २७॥

सा० – गरीब-नारद सनकादिक सही, बज्र दण्ड वैराग ॥
जोगजीत सद्गुरु मिले, उपजा अति अनुराग ॥ ५१ ॥
गरीब–दुर्वासा और गरुड़को, दीन्हा ज्ञान अपार ।
दृष्टि खुली निज ध्यानसे, फिर नहिं लगे लगार ॥ ९० ॥
मुहम्मदकी जो चली है, रूह, दरगह देखे दूबर दूह ।
पीर कबीरा जिन्दा ख्याल, मारग मंतर तारंग बाल ॥

ये कबीर साहिबके बारह पन्थोंमेंसे अन्तिम पन्थके आचार्य्य थे, ये सत्य-गुरुके हुक्मके मुताबिक जगह जगह उपदेश देते हुए वृन्दावन पहुंचकर लोगोंको सत्यपुरुषकी भक्तिका उपदेश सुनाने लगे । वहाँके लोगोंने आपसे कहाकि, वैष्णवोंकी तरह भगवान्‌की पूजा करके फिर हमें उपदेश दोगे तो मानेंगे नहीं तो हमारे दिलोंमें आपके उपदेशके लिये स्थान नहीं है । गरीबदासजीने कहा कि, अब मैं हृदयमें ही ध्यान किया करता हूँ वही मेरी मूर्तिपूजा है । मैं, मूर्तिपूजाको बुरा नहीं । कह रहा हूँ मेरी श्रद्धा पूजामें है पर मैं इसे ज्ञानपूर्वक चाहता हूँ, पर भक्तिके दीवाने व्रजवासियोंने उनकी बातको स्वीकार नहीं किया आप भी व्रजवासियोंकी अचल भक्ति देखकर प्रसन्न हो स्थानान्तरित होगये । उनकी पारस अंगकी कुछ साखियोंको यहाँ उद्धृत करते हैं ।

साखी – काशीपुरको कस्द किया, उतरे अधर अधार ।
मोमिनका मुजुरा हुआ, जङ्गलमें दीदार ।।
गरीब-कोटि किरन शशि भानु सुधि, आसन अधर विमान ।
परसत पूरण ब्रह्मको, शीतल पिण्ड औ प्रान ।।
गरीब-गोदलिया मुख चूमके, हेम रूप झलकन्त ।
जगर मगर काया करे, दमके पद्म अनन्त ।।
गरीब-काशी उमड़ी गुल भया, मोमिनका घर घेर ।
कोई कह ब्रह्मा विष्णु है, कोई कहे इन्द्र कुबेर ।।
गरीब–कोई कह वरुण धरमराय है, कोइ कोइ कहता ईश ।
सोलह कला सुभान गति, कोई कहे जगदीश ।।
गरीब-भगति मुक्ति ले ऊतरे, मेटन तीनों ताप ।
मोमिन घर डेरा लिया, कहे कबीरा बाप ।।
गरीब–दूध न पीवे न अन्न भखे, नहि पलने झूलन्त ।
अधर आसन है ध्यानमें, कमल खिला फूलन्त ।।
गरीब–कोई कह छल ईश्वर नहीं, कोई किन्नर कहलाय ।
कोई कहे गुण ईशका ज्यों ज्यों मारिये साय ।।
गरीब–काशीमें अचरज भया, गयी जगतकी निन्द ।
ऐसे दूल्हा ऊतरें, ज्यों कन्या बरबिन्द ।।
गरीब–खल्क मुल्क देखन गया, राजा परजा रीति ।
जम्बूद्वीप जहानमें, उतरे शब्द अतीति ।।
गरीब–दुखी कहे यह देह है, देव कहे यह ईश ।
ईश कहे परब्रह्म है, पूरन विश्वे बीस ।।
गरीब–काजी गये कुरान ले, धर लड़केका नाँउ ।।
अच्छर अच्छरमें फुरे, धन्य कबीर बल जाउँ ।।
गरीब–सकल कुरान कबीर है, हरफ लिखे जो लेख ।
काशीके काजी कहें गयी दीनकी टेक ।।
गरीब–शिव उतरे शिवपुरीसे, अविगत वदन विनोद ।
महके कमल खुशी भया, लिया ईशको गोद ।।
गरीब–नज़र नज़रसे मिल गयी, किया दर्श परणाम ।।
धन्य मोमिन धन्य पूरना, धन्य काशी निष्काम ।।
गरीब–सात बार चर्चा करे बोले बालक बैन ।

शिव सो कर मस्तक धऱ्यो, ला मोमिन यक धेनु ॥
गरीब--अनब्यावरको दुहतही, दूध दिया ततकाल ।
पीयो बालक ब्रह्म गति, वहाँ शिव भये दयाल ॥
गरीब--कष्ट मानुषके जब भई, नित दुनिया वर देहि ।
चरण चले तत पुरीमें, यहि शिक्षा निति लेहि ॥

रामानन्द स्वामी और कबीर, साहब की वार्तालाप की साखी ।

गरीब--भक्ति द्रावड देशथी, यहाँ नहीं एक विरञ्च ।
ऊत भूतको घ्यावना, पाखण्ड और परपञ्च ॥
गरीब--रामानन्द अनन्द भये, काशी नगर मँझार ।
देश द्राविड़ छाड़िके, आये पुरी विचार ॥
गरीव--योग युक्ति प्राणायाम करि, जीता, सकल शरीर ।
तिरबेणीके घाटमें अटक रहे बलबीर ॥
गरीब--तीरथ बरत एकादशी, गंगोदक अस्नान ।
पूजा विधि विधानसो, सर्वकलासों गान ॥
गरीब--करे मानसी सेवनित, आत्म तत्वको ध्यान ।
षट पूजा आदि भेद गति, धूप औ दीप विधान ॥
गरीब--चौदह सौ चेले किये, काशीनगर मँझार ।
चार सम्प्रदा चलत हैं, और है बावन द्वार ॥
गरीब--पांच बरसके जब भये, काशी माहिं कबीर ।
दास गरीब अजीब कला, ज्ञान ध्यान गुण थीर ॥
गुल भया काशीपुरी, में अटपट वैन विहंग ।
दास गरीब गुणी थके, सुनि जुलहा परसंग ॥
रामानन्द अधिकार है, सुनि जोलहा जगदीश ।
दास गरीब विलम्ब ना, ताहि नवावत शीश ॥
रामानन्दको गुरु कहै, तनसे नहीं मिलाय ।
दास गरीब दरस भये, पैयन लगी जो लाय ॥
पन्थ चलत ठोकर लगी, राम नाम कहि दीन ।
दास गरीब कसर नहीं, सीख लिये परवीन ॥
आड़ा परदा देइके, रामानन्द बुझन्त ।
दास गरीब उलङ्ग छबि, अधर डाक कूदन्त ॥
कौन जाति कुल पन्थ है, कौन तुम्हारा नाउँ ।

दास गरीब अधीन गति, बोलतही बलि जाऊँ ॥
जाति हमारी जगद्गुरु, परमेश्वर यह पन्थ ॥
दास गरीब लिखत परे, नाम निरञ्जन कन्त ॥
रे बालक दुर्बुद्धि सुन, घट मठ तन आकार ।
दास गरीब दर दर लगे, बोले सिरजनहार ॥
तू मोमिनके पालुवा, जुलहे के घर बास ।
दास गरीब अज्ञान गति, एता दृढ़ विश्वास ॥
मान बडाई छाडिके, बोलै बालक बैन ।
दास गरीब अधम मुखी, इतना तुम घर फैन ॥
कलियुग क्षेतरदपाल है, क्या भैरो कोई भूत ।
दास गरीब विडंबना, गया जगत सब ऊत ॥
मनी मग्ज माया तजो, तजिये मान गुमान ।
दास गरीब सो बात कहि, नहिं पावेगो जान ॥
हे बालक बुधि तोरि गति, कौडी साखन भाँड ।
दास गरीबहि हृदेस करि, नहीं लेवेंगे डाँड़ ॥
शाह सिकन्दर के बधे, पग ऊपर तर शीश ।
दास गरीब अगाधि गति, तोर कहा जगदीश ॥
कान काट बूचा करे, नली भरत रे नीच ।
दास गरीब जहान मैं, तुम सर जोरा मीच ॥
मरत मरत सब जग मुवा, लखै नऽ स्थिर ठौर ।
दास गरीब जहानमें, तुमसा नीच न और ॥
नादबिन्दकी देहमें, येता गर्व न कीन ।
दास गरीब पलक फना, जैसे बुद बुद लीन ॥
तिरन कत लों से बोलते, रामानन्द सुजान ।
दास गरीब कुजाति है, आखिर नीच निदान ॥
नीच मीच से ना डरे, काल कुल्हाड़ अशीश ।
दास गरीब अदत्त है, तैं जो कहा जगदीश ॥
जड़िहों हाथ हथकडी, गले तौक जञ्जीर ।
दास गरीब परख बिना, यह बाणी गुणगीर ॥
परख निरख नहिं तोहिको, नीच कुलीन कुजात ।
दास गरीब अकल बिना, तू जो कही क्या बात ॥

हे बालक नीची कला, तुमही बोलो ऊँच ।
दास गरीब पलक धरि, खबर नहीं हम कूच ॥
महँके बरन खलास करि, सुन स्वामी परवीन ।
दास गरीब मनी मरी, मैं अजिज आधीन ॥
मैं अविगत गतिसे परे, चारवेद से दूर ।
दास गरीब दशो दिशा, सकल सिन्धु भरपूर ॥
सकल सिन्धु भरपूर हूँ, खालिक हमरो नाउँ ।
दास गरीब अजात हूँ, तेजि कहा बलि जाउँ ॥
जात पाँत मेरे नहीं, नहीं स्त्री नहीं गाउँ ।
दास गरीब अनन्य गति, नहीं हमारे नाउँ ॥
नाद बिन्द मेरे नहीं, नहि गोद नहि गात ।
दास गरीब शब्द सजग, नहीं किसीका साथ ॥
सब सङ्गी बिछुरू नहीं, आदि अन्त बहु जाँहि ।
दास गरीब सकल वसों, वाहर भीतर माँहि ॥
हे स्वामी मैं सृष्टिमें, सृष्टि हमारे तीर ।
दास गरीब अधर बसूं, अविगत पुरुष कबीर ॥
अनन्त कोटिसलिता बडो, अनन्त कोटि घर ऊँच ।
दास गरीब सदा रहूँ, नहीं हमारे कूंच ॥
पुहमी धरनी अकाशमें, मैं व्यापक सब ठौर ।
दास गरीब न दूसरा, हम सम तुल नहिं और ॥
मैं माया मैं कालहूँ, मैं हंसा मैं बंस ।
दास गरीब दयाल हम, हमहीं करें विध्वंस ॥
ममता माया हम रची, काल जाल सब जीव ।
दास गरीब प्राण पद, हम दासा तन पीव ॥
हम दासनके दास हैं, कर्ता पुरुष करीम ।
दास गरीब अवधूत हम, हम ब्रह्मचारी सीम ॥
हम मौला सब मुल्कमें, मुल्क हमारे माहिं ।
दास करीब दलाल हम, हम दूसर कछु नाहिं ॥
हम मोती मुक्ताहल, हम दरिया दरवेश ।
दास गरीब हम नित रहें हम तजि जात हमेश ॥
हमहीं लाल गुलाल है, हम पारस पद सार ।

दस गरीब अदालतंग, हम राजा संसार ॥
हम पानी हम पवन हैं, हमहीं धरणि अकाश ।
दास गरीब तत्त्वपञ्चमें, हमहीं शब्द निवास ॥
सुनु स्वामी सत भाखहूँ, झूठ न हमरो रञ्च ।
दास गरीब हम रूप बिन, और सकल परपञ्च ॥
हम रोवत हैं सृष्टिको, वो रोवति है मोंहि ।
दास गरीब वियोगको, और न बूझै कोइ ॥
मैं बूझू मैंही कहूँ, मैंही किया वियोग ।
गरीब दास गलतान हम, शब्द हमारा योग ॥
चारो जुगनमें हम फिरें, नहि आवें न जाउँ ।
गरीब दास गुरु भेदसे, लखे हमारा ठाउँ ॥
रजगुण सतगुण तमगुण, रजबीरज हम कीन्ह ।
गरीबदास हम सकलमें, हम दुनियाँ हम दीन ॥
लगी महम गनीम पर, काल कटक कटकन्त ।
गरीबदास निर्भय करूँ, जो कोइ नाम जपन्त ॥
मैं बालक मैं वृद्ध हूँ, मैं ही जवाँ जमान ।
गरीबदास निज ब्रह्म हूँ, हमहीं चारों खान ॥
गगन सुन्य गुप्ता रहूँ, हम परगट परवाह ।
गरीबदास घट घट बसूं, विकट हमारी राह ॥
आवत जात न दीसहूँ, रहता सकल समीप ।
गरीबदास जलतरङ्ग ज्यों, हमहीं सायर सीप ॥
गोता लाऊँ स्वर्गमें, फिर पैठूं पाताल ।
गरीबदास ढूंढ़त फिरूँ, हीरे माणिक लाल ॥
इस दरिया कङ्कर बहुत, लाल कहीं कहिं ठाऊँ ।
गरीबदास माणिक चुगूं, हम मरजीवा नाउँ ॥
बोले रामानन्दजी, हम घर बड़ा सुकाल ।
गरीबदास पूजा करें, मुकुट फई जद माल ॥
सेवा करो सम्हालके, सुन स्वामी सुरज्ञान ।
गरीबदास सिरधर मुकुट, माला अटकी जान ॥
स्वामी घुण्डी खोलके, फिर माला गले डार ।
गरीबदास इस भजनको, जानत है करतार ॥

डयोढ़ी, परदा दूरकर, लीना कण्ठ लगाय ।
गरीबदास गुजरी बहुत, बदनन बदन मिलाय ॥
मनकी पूजा तुम लखी, मुकुट माल पर वेश ।
गरीबदास किनको लखे, कौन वरन क्या भेष ॥
यह तो तुम शिक्षा दयी मान लिये मत मोर ।
गरीबदास कोमल पुरुष, हमरो बदन कठोर ॥
हे स्वामी तुम स्वर्गकी, छाड़ो आशा रीत ।
गरीबदास तुम कारणे, उतरे शब्द अतीत ॥
सुन बच्चा मैं स्वर्गकी, कैसे छाड़ूं रीत ।
गरीबदास गुदड़ी लगी, जन्म जात है बीत ॥
चार मुक्ति वैकुण्ठमें, जिनकी मोरे चाह ।
गरीबदास घर अगमके, कैसे पाऊ बाह ॥
हेम रूप जहाँ धरणि है, रत्न जड़े बहु सोभ ।
गरीबदास वैकुण्ठको, तन मन हमरो लोभ ॥
शंख चक्र गदा पद्म है, मोहन मदन मुरारि ।
गरीबदास मुरली वजै, स्वर्ग लोक दरवार ॥
दूधोंकी नदियाँ बगें, श्वेत वृक्ष शोभान ।
गरीबदास मन्दिर मुकुट, स्वर्गपुरी अस्थान ॥
रतन जड़ाऊ मनुष सब, गण गँधर्व सब सेब ।
गरीबदास उस धामकी, कैसे छाडूं सेव ॥
चार वेद गावें उसे, सुर नर मुनी मिलाप ।
गरीबदास ध्रुव पुर यश, मिट गये तीनों ताप ॥
नारद, ब्रह्मा यश रटें, गावें शेष गणेश ।
गरीबदास वैकुण्ठसे, और परेको देश ॥
सुनुस्वामी निज मूल गति, कहि समझाऊँ तोहि ।
गरीबदास भगवानको, राखा जगत समोय ॥
तीन लोकके जीव सब, विषय बासना भाय ।
गरीबदास हमको जपें, तिसको धाम दिखाय ॥
कृष्ण विष्णु भगवान्के, जहाँ गये हैं जीव ।
गरीबदास त्रिलोकमें, काल कर्म्म सर शीव ॥
सुनु स्वामी तोसों कहूँ, अगम द्वीपकी सैल ।

गरीबदास डूबे परे, पुस्तक लादे बैल ।।
कहो स्वामी कहाँ रहोगे, चौदह भुवन बिहण्ड ।
गरीबदास बीजक कहो, चलत प्राण औ पिण्ड ।।
बोलत रामानन्दजी, सुन कबीर करतार ।
गरीब दास सब रूपमें, तुमहीं बोलनहार ।
तुम साहब तुम सन्त हो, तुम सद्गुरु हम हंस ।
गरीब दास तुम रूप बिनु, और न पूजो बंस ।।
मैं भक्ता मुक्ता भया, किया कर्म्म कुल नाश ।
गरीब दास अविगत मिले, मिटी मनकी प्यास ।।
दोनों ठौरमें एक तू, भया एकसे दोय ।
गरीबदास हमकारने, उतरे मग्गम जोय ।।
बोले रामानन्दजी, सुनु कबीर सुजान ।
गरीबदास मुक्ति भयी, उधरे पिण्ड ओ प्राण ।।
गुष्टि रामानन्दसे, काशीनगर मझार ।
गरीबदास जिन्द पीरकी, हम पाये दीदार ।।

पृ. २९६ में कबीर साहिबके १२ पन्थोंका सामान्य परिचय दिया जा चुका है अनुरागसागरकी भूमिकामें इनका विस्तारके साथ वर्णन किया है तथा उनकी परंपराभी दिखाई है उन्हींके विषयमें कथन है कि, बारहों पन्थोंके आचार्य्य हंस कबीर हैं। वे सब सद्गुरुके धामको पहुँचेंगे ।

रहन सहन

भारतवर्षमें कबीर साहबके अनुयायी बहुत हैं। वे लोग वेद धर्मियोंके साथ मिले मिलाये रहते हैं। वे भ्रम भूतकी पूजासे दूर भागते हैं। वे तीर्थोंमें श्रद्धाके साथ जाते हैं। दान पुण्य आदि करते हैं। जो ठीक कबीरपन्थी नहीं, नाममात्रको कबीरपन्थी बन बैठे हैं उनके विचार तथा ध्यान दूसरेही प्रकारके हैं। कबीर साहबका कथन है कि, हे धर्मदास ! जिसमें तुम ऐसे चिन्ह पाओ उसको उपदेश दो। जिसमें भक्ति, दीनता, साधुसेवा, गुरुसेवा न हो उसको अपने हंसोंमें भूलकर भी स्थान न देना। जिस समय मित्र आदि रविदासजीके जब सब सहायक हार मान गये तब रविदासजीने सत्यगुरुको पहचाना। कपटियोंका भरोसा छोडकर कबीर साहबके शिष्य हो परमानन्दमें बहने लगे ।

भारतवर्षमें बहुत लोग हैं, जो अपनेको कबीरपन्थी कहते हैं, परन्तु उन लोगोंको आज्ञा है कि तुमलोग जब धर्म्मदास साहबके बचन चूड़ामणिदासकी

शरणमें आओगे तब तुम्हारे सब अपराध क्षमा किये जायँगे, तब तुम मुक्ति पाओगे जबकि सब एक रङ्ग हो जावेंगे । जितने लोग कबीर साहबकी आज्ञापर चलते हैं उनकी धर्म्म पुस्तक स्वसंवेद है । यह स्वसंवेदही यथेष्ट है अन्यान्य सभी नकल है । जितने शास्त्र तथा विद्या हैं वो सब स्वसंवेदसे हैं । स्वसंवेद एक नदी है । जिससे एक बूंद निकल कर सर्व संसारमें फैल रहा है । उसीमें चिड़िया एक चोंच भरकर प्यास बुझा लेती है । इसी प्रकार सारे पृथ्वीसे परमेश्वर और संसारभरके आचार्य इस स्वसंवेदका कोई भाग अथवा कोई टुकड़ा निकालकर अपना शास्त्र बनाके बैठे हैं । स्वसंवेदहीसे सभीने श्रेष्ठता पाई है परन्तु अपने पिताकी प्रतिष्ठा तथा मर्य्यादाको किसीने न जाना । इसकी सूक्ष्मता तथा स्वच्छतासे कोई विज्ञ नहीं । सहस्रोंने पन्थ चलाया चलाते हैं वो सब कबीर साहबकी वाणीका आसरा लेकर अपने अपने पन्थको प्रचलित कर रहे हैं। कितने तो ऐसे हुये और होते हैं कि, कबीर साहबके ग्रन्थ तथा वाणी देखकर अपनी वाणी बनाते और अपनेको कबीर साहबके बराबर अथवा बढ़कर ठहराते हैं। ऐसे कृतघ्न स्वार्थियोंको कभी भलाईकी आशा न करनी चाहिये ।

जिस प्रकार भारतवर्षमें हैं इसी प्रकार अरब, फारस, काबुल, तुरकिस्तान, तातार इत्यादिमें कबीर साहबके अनेक धर्मावलम्बी हैं । शेख जुन्नेद बुगदादी और हसनबशरी इन बड़े बड़े शेखोंमें कितनेसे एक तो शेख कबीरका धर्म्म मानते हैं । कितने मुसलमानी धर्म्म मानते हैं । पर आपसमें मिले रहते हैं परन्तु इन दोनों प्रकारके शेखोंमें बड़ा भेद हैं । दोनोंकी रीति न्यारी न्यारी हैं । कबीर साहब प्रत्येक ध्यानपर एक समान भावसे उपस्थित रहते हैं । एक देशसे गुप्त होते हैं फिर दूसरे देशमें प्रगट रूपसे फिरा करते हैं । जैसे एशियाके रहनेवालोंपर दया होती है, उसी तरह अफ्रिका, अमेरिका और योरोप तथा अन्य द्वीपोंके निवासियोंपर भी कृपा हुआ करती है, परन्तु आपका भेद कोई नहीं जान सकता । कहीं से छिपते हैं तो कहीं प्रगट हो जाते हैं। सहस्रों स्थानोंपर कब्र तथा समाधियाँ हैं न कभी जन्म लेते हैं और न कभी मरते हैं । सर्व ब्रह्माण्डोंमें स्वच्छन्द लीला करते हुए अधिकारियोंको उपदेश किया करते हैं ।

सन् १८५२ ई. का वृन्तान्त है । मैं उस समय सेयालकोट था, उसी समय मुझको एक कबीरपन्थी साधु मिला जब मैंने उसको देखा तो उसके पैरकी उँगलियाँ झरी दिखाई दीं । मैंने उससे पूछा कि, तुम्हारे पाँवकी उँगलियाँ कैसे झर गयीं ! उसने उत्तर दिया कि, जब दोस्त मुहम्मदखाँ अमीर काबुल जीवित था । अंग्रेजी सैन्य युद्धके निमित्त काबुलपर चढ़ गयी थी, उस समय मैं भी काबु-

लमें गया था । उस सालमें बहुतही बरफ पड़ी, मारे ठण्ढके मैं अपना पाँव सेकने लगा, जब बरफकी सरदीके उपरान्त गरमी लगी तो मेरी उँगलियाँ झड़ गयीं । फिर वह साधु मुझसे कहने लगा कि, मैंने सुना है खैबरके ऊपर कबीर साहबकी कब्र है। उसके सैयद अहमद कबीरकी कब्र ऊपर नियत समय पर मेला लगा करता है । एवं बहुतसे दर्शक वहाँ आते जाते हैं । यह बात सुनकर मेरी कामना कब्रके दर्शन करनेकी हुई । तब मैं ढूंढ़ता हुआ वहाँ जा पहुँचा तो देखा कि चारों ओर बड़ा सन्नाटा छाया है । कहीं कोई मनुष्य नहीं है, वहाँ केवल एक कब्र बनी हुई थी । उस कब्रके ऊपर एक वृद्ध जिसकी बहुत लम्बी श्वेत दाढ़ी थी बैठा था । उस वृद्धको देखकर मैंने झुककर दण्डवत प्रणाम किया तब वह वृद्ध दयालु हुआ उसने मुझको एक सेबका फल प्रसादमें देकर कहा कि, तुम अब यहाँसे चले जाओ । मैं उस फलको लेकर अपने डेरे चला आया उस फलको एक ताकपर धर दिया कि, दूसरे समय खाऊँगा । थोड़ी देर बाद देखा तो उस फलको उस ताकपर न पाया, वह गायब हो गया था । मैंने बहुत खेद किया वह फल न मिला, इसे मैं अपना दुर्भाग्य समझकर चुप चाप कबीर साहिबका ध्यान करने लगा । पश्चिम देशोंमें कबीर साहिब स्थान स्थानपर सैयद अहमद कबीर और शेख कबीरके नामसे प्रसिद्ध हैं। शेख कबीरके जो अनुयायी आचार्य हैं उनकी भजनकी रीति भाँति मुसलमानी आचार्योंसे निराली ही है कबीर साहबके धर्म्मपर चलनेवाले प्रत्येक देशमें सभी स्थानोंपर मौजूद हैं । उनका भेद किसीको मालूम नहीं है न मनुष्य उनको यह पहचानही नहीं सकते हैं कि, ये ही कबीर साहब समस्त संसारमें छाये हुए हैं, या कोई दूसराही है । उसका पहचानना बड़ा कठिन है । वह स्वयं जिसपर दया करता है वह पहचान सकता है । दूसरेकी क्या सामर्थ्य है कि, उसको जान सके । इस ब्रह्माण्डके भीतर जितने लोक और बस्तियाँ हैं, जितने ब्रह्माण्ड तथा संसार अन्यान्य स्थानोंमें हैं सभीमें कबीर साहब उपस्थित रहते हैं सबके द्रष्टा हैं, प्रत्येक जीवधारीकी सुध लेते रहते हैं । वे सबको याद करते हैं उनको सभी याद करते हैं। समस्त ब्रह्माण्डोंका रचयिता जो प्रत्येकके साथ रहता है उसीका नाम सत्य कबीर बन्दीछोर है । उसीकी रक्षायें सब रट रहे हैं।

गुरुकी कृपा

जो वस्तु प्रयत्नसे किसी प्रकार भी प्राप्त नहीं हो सकती वह गुरुकी कृपासे प्राप्त होती है, बिना गुरुकी पूर्ण कृपाके वासनाएँ धूलमें मिला देती हैं । शेख फरीद जैसे सच्चे वेदान्ती गुरुके विमुख होते ही इतने विषयोंमें फँसे कि,

विवाह करके संसारी हो गये। विषय वासनाके सामने उनकी तपस्या किस काम आई ! हाँ सच्चे गुरुके पूरे भक्त बने रहते तो भवसागरके पार हो जाते। जो सच्चे गुरुको पहिचानकर उसकी शिक्षाके अनुसार सत्यलोकको पा सकता है। स्वसंवेदका यही सार है कि, गुरुके चरणोंको दृढतासे गहे रहे। क्योंकि, बिना उसकी पूजाके कुछ न प्राप्त होगा। सदा गुरुकी सीख माननी चाहिये उसकी कृपामें ही सर्वस्व है कबीर साहिबका तो वारंवार यही कथन है कि, गुरुकी मूर्तिमें मुझको पाजाओगे। जबतक दममें दम रहे गुरुको मानता रहे, गुरुकी मूर्तिमें मुझे समझकर उससे सब कुछ माने अणुमात्र भी अभिमान न करे, अपने कल्याणका उपाय सत्य गुरुकी भक्तिही समझे।

जो सत्यगुरुसे प्रेम तथा श्रद्धा करेगा उसको सत्य शब्द मिलेगा उसे सब कुछ प्राप्त होगा। जिसकी गुरुपर श्रद्धा नहीं है वह शून्य रहेगा। गुरुका प्रेम श्रद्धाही धर्म्मकी जड़ है। सत्यगुरुका मत निर्गुण तथा सगुणसे अलग है। दोनों कार्य्य सिद्ध हो नहीं सकते। गुरुमें भक्ति करोगे तो जगत् छोड़ना पड़ेगा। यदि लोगोंसे प्रेम करोगे तो भक्तिमें विघ्न होगा। मुरीद नाम मुरदेका है। इसका तात्पर्य यह है कि जैसा गुरु कहे वैसाही करे। अपनी बुद्धि न लगावे और जब तक यह अवस्था न हो तब तक आपको जीवित तथा संसारी समझे। नाम तो समस्त संसार जप रहा है पर जो नाम सत्यगुरु द्वारा मिलता है वही सच्चा है। सहस्रों ब्रह्मा तथा ऋषि, मुनि, पीर, पैगम्बर आदि हो गये हैं वे सब विषयकी अग्निमें जल रहे हैं परम अभिमानमें डूबे हुए हैं, इस कारण उनको सत्यगुरुके दर्शन नहीं होते जिसमें सत्यगुरुका प्रेम तथा विश्वास है वही मुक्तिका अधिकारी है। मनुष्योंमें वही भाग्यवान् है जो सत्यगुरुकी सेवा करता है दर्शनको जानेसे पग पवित्र होते हैं। दर्शनसे नेत्र पवित्र होते हैं, जल भरनेकी सेवासे शरीर पवित्र होता है, वचन सुननेसे अन्तःकरण पवित्र होता है। इसी प्रकार समस्त पवित्रता प्राप्त होती है। यदि नाममें बल होता तो सहस्रों मनुष्यों नाम जप रहे हैं। किसीको तो फल मिलता ? इससे जान पड़ा कि, यथार्थ बल सत्यगुरुमें ही है जो सत्यगुरुकी सेवा करता है। इस कारण उसीका दोनों लोकमें कल्याण है गुरुमुख उसीका नाम होता है जो सत्यगुरुको सबका मालिक समझता है। इसी विषय पर एक दृष्टान्त देते हैं कि, दक्षिण देशमें एक परम श्रेष्ठ महात्मा अपने शिष्यों सहित रहते थे। एक दिन सत्संग हो रहा था, उसी स्थानपर एक मुसलमान मोलवी आगया, वह मक्का जाने को प्रस्तुत था, उसने मक्केकी यात्राकी बहुत प्रशंसा करके कहा कि, "शाहसाहब ! मक्का अत्यंत श्रेष्ठ

स्थान है वहाँ आपके शिष्योंको भी जाना उचित है।" उस समय महात्माके शिष्य अत्यन्त रुष्ट हुए, बडे चेलेने मोलवीकी गरदन पकड कर उसका शिर महात्माके चरणोंपर धर कर कहा कि, देख ! करोडों मक्के इन चरणोंमें हैं। महात्मा नित्य क्रिया करने गये उस समय मोलवीका उस शिष्यसे बहुत वाद विवाद हुआ। जब महात्मा आये तब मोलवीने शिकायत की। उस समय महात्माने अपने शिष्यको समझाया कि, मक्काके विषयमें मोलवीका कहना बहुत ठीक है। वह पवित्र स्थान दर्शन योग्य है। तू भी मोलवीके साथ मक्काके दर्शनको चला जा। वह शिष्य गुरुमुख था, हाथ बाँध कर खड़ा होगया, उसी समय मोलवीके साथ जहाजपर सवार हो गया। थोडी दूर जहाज चला था कि, एक तूफान आया जिससे जहाज टूट गया, सब आदमी डूब गये, पर वह चेला एक तख्ते पर बैठा रह गया, वह भी डूबनेके समीप भी था ही उसी समय समुद्रसे एक हाथ निकलक साथ शब्द हुआ कि, यदि तू अपना हाथ मुझे पकडा दे तो मैं तुझको बचालूं। उस चेलेने पूछा कि, आप कौन हो ? फिर शब्द आया कि, मैं पैगम्बर साहब हूँ। उस चेलेने जवाब दिया, मैं नहीं जानता कि, पैगम्बर साहव कौन हैं ? मैं केवल अपने गुरु महाराजको जानता हूँ दूसरेसे कुछ सम्बन्ध नहीं रखता। तब वह हाथ छिप गया, वह गुरुमुख तखतपर बैठा हुआ डुबकी खाता जाता था। कुछ कालके पीछे एक हाथ और निकला, शब्द हुआ कि, मुझे अपना हाथ पकडादे तो मैं तुझको बचालूं। उस चेलेने पूछा कि, आप कौन हैं ? तब उत्तर आया, कि मैं स्वयम् परमेश्वर हूँ। गुरुमुखने उत्तर दिया कि, मैं अपने गुरुके सिवाय दूसरे किसीको भी नहीं मानता। मेरा परमेश्वर तो मेरा गुरु है, दूसरे परमेश्वरको मैं नहीं जानता। तब वह हाथ भी छिप गया। कुछ कालके पीछे तीसरा हाथ निकला उसने पुकार कर कहा कि, तू अपना हाथ मुझको पकडा मैं तेरा दादा गुरु हूँ। इसने उत्तर दिया कि, मैं अपना हाथ अपने गुरुको पकडाऊँगा दूसरेको हाथ कदापि न दूंगा। चाहे जीवित रहूँ या मर जाऊँ। तब वह हाथ भी विलुप्त हो गया। इसके पीछे स्वयम् सत्यगुरु आये। इस शिष्यको हृदयसे लगा लिया उसे तुरंतही अपने स्थान पर लेआये गुरुमुखकी पूरी परीक्षा हो चुकी। सर्व शब्द उन्हीं गुरु महाराजके ही थे। जो शिष्यकी पूर्ण परिक्षाके लिये प्रकट किये थे। इस कथनका परिणाम यह है कि, चाहें कोई किसी भी प्रकारके तीर्थ व्रत करे दान पुण्य यात्रा कर्म्म उपासना ज्ञानकी पूर्णता प्राप्त करे, कठिनसे कठिन तपस्या करे शुभकर्मोंको सीमा पर्य्यन्त पहुँचावे परन्तु मुक्ति केवल गुरुमुखकी ही होगी बाकी सारा संसार भवसागरमें डूब जावेगा।

गुरुमुख सांसारिक पदार्थोंपर ध्यान नहीं देता । जैसे हो वैसेही करलेता है, किसीसे राग द्वेष नहीं रखता, प्रत्येक बातमें सत्यता तथा स्वच्छता बर्त्तता है, अपने गुरुसे ऐसा प्रेम करता है जैसा कि, जलसे मछली करती है, वो प्राकृतिक मनुष्योंसे कम प्रेम रखता है । गुरुमुख जो कार्य्य करता है । वो केवल गुरुकी प्रसन्नताके लिये गुरुकी आज्ञाके अनुसार करता है । गुरुमुख अपना अहङ्कार छोड देता है सब कार्य सत्यगुरुकी ओरसे जानता है । वह काम सब सत्यगुरुके अर्पण करता है । गुरुमुख सदैव आलस्य तथा नींद आदिसे पृथक् रहता है । वह सदैव अपने सत्यगुरुकी प्रशंसा तथा कृतज्ञता स्वीकार किया करता है । गुरुमुख जो कार्य्य करता है वो परमार्थके लिये करता है वो धैर्यको कभी नहीं छोडता । मनमुखके जितने काम होते हैं वो सब गुरुमुखके विपरीत हैं । ग्रन्थ लोक सँदेसासे थोडा यहाँ लिखता हूँ—

धर्म्मदास वचन

चौ० – धर्म्मदास जी बिनती लावे । संशय एक मेरे दिल आवे ॥
काया मध्य बहुत अस्थाना । कौन वस्तुका धरिये ध्याना ॥
कौन ताल और कौन द्वारा । कहँ होई हंसा करे बिहारा ॥
कहिये सत्गुरु मोहिं अरथाई । देखूं तो मो मन पतियाई ॥

सत्यगुरु वचन

जैसे दूधमें घीव रहाई । ऐसे पुरुष है तनके माहीं ॥
सद्गुरु पहले भेद बतावे । शब्द बिदेह हंस घर आवे ॥
शब्द चढि सो हंसा आवे । तबही पुरुषको दर्शन पावे ॥
छाडो धरती छाड अकाशा । छांडो पाँच तत्वको बासा ॥
कह कबीर निरन्तर घर पावे । हंसा घर होई सुरति लगावे ॥
बिदेह नामको अङ्क जो पावे । यमसे जीव जान मुक्तावे ॥
सप्त स्वर्ग और सप्त पताला । चौदह भुवन तजि होइ निराला ॥
शब्दै धरती शब्द प्रकाशा । शब्द सँग हंसा देखि तमाशा ॥
शब्द ले हंसा करहू बाता । ताको आद्या करै न घाता ॥
ररीं शब्दको देव वहाई । अमी शब्द में बैठो आई ॥
अमी शब्दकी बोलें बानी । तहवाँ सुरति करो पहचानी ॥
जब हंसा देही गुण त्यागे । तब नहिं चोर धर्मरायको लागे ॥
हम धर्मरायसे बाचा हारा । सौंप दीन्ह सकलो संसारा ॥
नतगुण होई जीवको बासा । सो सब रहे तुम्हारे पासा ॥

जब लगि जीव गुण छूटे नाहीं । तबलगि रहे चौरासी माहीं ।।
जब लगि पाप पुण्यकी आशा । तब लगि लेई गर्भमें बासा ।।
कोटिन ज्ञान कथ दिखलावे । कोटिन ध्यान समाधि लगावे ।।
धर्म्मरायसे छूटे नाहीं । गुण तत जब लगि जीवके माहीं ।।

धर्म्मदास वचन

धर्म्मदास बिनती तब लाई । अचरज बात जो कहो गोसाईं ।।
देहीके गुण जो कैसे छाँडे । कैसे निगुण उलटे माँडे ।।
कैसे तन आपा बिसरावे । कैसे जीव परम पद पावे ।।
ततगुण बिनु काया नहिं चाले । कौन जुगुतसे उनको पाले ।।
कैसे मनुवा अस्थिर होही । कैसे हंसा होय विदेही ।।
आठ काठसे देह बनाई । उनको कैसे दे बिसरा ।।
निःअक्षरको कैसे पावे । कैसे गुणको मार ढहावे ।।
सब जिव तुम सौपे धरमराये । हंसको पन्थ दृढावन आये ।।
एको जीतन होय उबारा । मोसे चलै न पन्थ तुम्हारा ।।

साखी– तत्वगुण छुट न देहको, कैसे होय उबार ।
पन्थ तुम्हारा कठिन है, धर्मराय बरियार ।।

सत्यगुरु वचन

चौ० –धर्मदास तू परमहित मोरा । तुम्हरो पला न पकरै चौरा ।।
जिते जीव परवाना पावे । तब सो हंसा लोक सिधावे ।।
लोक जानमें भेद है भाई । कोई न पूछे चित्त लगाई ।।
सहज अठासी द्वीप सुधारा । जहां सब हंसा करे बिसारा ।।
जैसे चाल चलै संसारा । तैसे तैसे द्वीप मझारा ।।
सर्व मूल तोहिं देउँ बताई । तुमसे कछू न राखुँ छिपाई ।।
द्वीप अंशके हैं बड़े भारा । सकल हंस उन द्वीप मझारा ।।
निःतत्त्वी जाय पुरुष दरबारा । सकल द्वीपसे द्वीपसो न्यारा ।।
पुरुष हजूर जौ चाह रहाई । सो जिव आप दिये बिसराई ।।
एक छन माहिं अमर घर जाई । छनहा हंस देउँ पहुँचाई ।।
जब सद्‌गुरु मन्दिर पग देई । चरण धोइ चरणामृत लेई ।।
सेवाकरत सुरति चल आई । तबहि काल घर बजै बधाई ।।
धर्मदास मैं कहूँ पुकारा । विरला जाय पुरुष दरबारा ।।

साखी – शब्दको खोज करैं नहीं, चिन्ता देह शरीर ।।
बिना शब्द पहुँच नहीं, अस कथ कहैं कबीर ।।

बिना अहारी जीव है, बिना अग्नि बिन पान ।
बिना पिण्ड हंसा चलै, है छन कर पहचान ।।
चित्र हंस बिना पिण्डका, उदय सो देखो नाम ।
भेद जो दे गुरु समर्थ, तब देखो वह ठाम ।।

शब्द——धरमनि वहि देश हमारो बासा ।
अमर पुरुष जहाँ आप बिराजै हंसा करत बिलासा ।।
विष्णु विरञ्चि औ शिव सनकादिक थके ज्योतिके पासा ।
चौदह खण्ड बसै यम चौदह यह सब काल तमशा ।।
सात सुरतिके आगे समरथ श्वेत भूमि परकाशा ।
संशय लोक नहीं है बाकी खुले केवडा बारह मासा ।।
वहांके गये बहुरि नहिं आवे आवागमनको नाशा ।
सदा आनन्द होत है वा घर कबहू न होत उदासा ।।
चन्द्र न सूर दिवस नहिं रजनी नहिं धरणी आकाशा ।
अमृत भोजन हंसा पावे रहत पुरुष के पासा ।।
कहैं कबीर सुनो धरमदासा छाडो खलक की आशा ।

सत्यगुरु कबीर साहब कहते हैं कि, जो जीव पाँच तत्त्व और तीन गुणसे अलग हो वही सत्यपुरुषके दरबार पहुँचता है। परन्तु जितने जीव सत्यगुरुके शरणमें आते हैं उन सब पर साहबकी दया होती है। उनको रहनेको उत्तम स्थान दिये जाते हैं, जहाँ वे सुखपूर्वक निर्भयतासे रहते हैं, परन्तु पुरुषका दर्शन नहीं पाते। जो पाँच तत्त्व और तीन गुणसे अलग होते हैं, वही त्रिगुणातीत लोग सत्यपुरुषके दर्शनके अधिकारी होते हैं। इसी कारण सत्यगुरुने कहा है कि, सत्यलोकमें अट्ठासी सहस्र द्वीप हैं, उन सब द्वीपोंमें हंसोंका स्थान होता है, जहाँ वे आनन्द पूर्वक रहते हैं। जो कोई उसमें कर्म करता है, वह सत्यगुरुकी दयासे पाँच तत्त्व तथा तीन गुणसे छूट जाता है। बिना पाँच तत्त्व तीन गुणसे छूटना अत्यन्त असम्भव है। युगों युगोंमें सत्यगुरुके हंस अपने कर्तव्योंसे सत्य-पुरुषोंके लोकके मार्गका उपदेश देकर जीवोंको सत्यलोकके पथपर करते हैं। पीछे अपने कथनको चरितार्थ करते हुए अपनी चर्य्यासे सिद्ध करके दिखाते हैं कि, सत्यपुरुषके हंस ऐसे होते हैं, कलियुगके हंसोंने भी इस कराल युगमें [illegible] करके दिखा दिया है कि, इस कराल युगका भी सत्य पुरुषके हंसोंपर कोई [illegible] नहीं होता।

उनका शास्त्र

कबीर साहिबकी स्वसंवेद वाणी है क्योंकि, उसमें परमार्थका निरूपण है यही वाणी सभी हंसोंके लिये नियत है स्वच्छ तथा निर्मूल है अनेक स्थानोंपर स्वसंवेदकी भिन्न २ पुस्तकें मिलती हैं सन्त महन्त उनके बड़ी सावधानीसे रक्षा करते हैं कि, उनमें किसी प्रकारका उलटफेर न हो जायँ एवं जो मिथ्या पक्षपाती जनोंने अपनी ओरसे कुछ मिला दिया हो तो वो जाननेमें आजावे इस कारण पूरी चौकसी की जाती है। इतना करने पर भी छली लोग छलसे नहीं चूकते। इसी कारण कबीर साहब कुछ सताब्दियोंके पीछे अपनी पुस्तकोंको रद्दकर देते हैं। वर्तमान कालमें कबीर पन्थियोंके पास सत्ययुग, त्रेता, और द्वापर युगोंकी पुस्तकें नहीं हैं। उसका भी मुख्य कारण यही बात है गरीबदासजी अपने अर्जनाम में यही बहुत लिखते हैं कि—

है सतगुरु मेहर्वान अविनत[1] कबीर। छूटे इस्मके[2] नालजनम की जञ्जीर ॥
बावन लाख वाणी जो दीनी डुबोय। सुने रामानन्दा रहे मुख गोय[4] ॥
अगम धन्य ध्यानं अमानं अमाँ। स्वसम्वेद साखी सुरती कर बयाँ[5] ॥
स्वसम्वेद पढिये जो पूरन मुराद[6]। स्वसम् पर स्वसम्बाच लागी समाध ॥
है सत्यपुरुष साहब दयाके जो मूल[7]। गरीबदास झूले समाधान फूल ॥

किन्हीं २ छला कपटी, तथा विद्रोही गुरुविमुखियोंने स्वयं ग्रन्थबनाकर उसमें अपने मतलबकी सारी बातें रखदी हैं पर उनमें वक्ता कबीर साहब और श्रोता धर्म्मदासजीको ही लिखा है। सद्गुरुके हंस लोग तो उन छलियोंके छल को शीघ्रही पहचान लेते हैं, कितने एक सरल दृश्यके भोले भाले लोग उन ग्रन्थोंको पढ सुनकर भटक जाते हैं। इस प्रकार कालपुरुष तथा उसके पुत्रलोग बड़ा छल करके स्वच्छ अमृतको विषमय करनेका उद्योग करते हैं। परन्तु बुद्धिमान सचेत लोग तुरन्तही पहिचान लेते हैं स्पष्ट जान लेते हैं कि, जो कबीर साहबके प्राचीन ग्रन्थ तथा वाणी हैं उसके विरुद्ध यह बात कैसे हो सकती है। इस कारण स्वसंवेद पाठ करनेवालोंको सदा सावधान रहना चाहिये कि, जब सत्यगुरुके ग्रंथ तथा वाणीको पढे अथवा सुनें तो उसपर भली प्रकार शोच विचार किया करें। जहाँ कहीं कबीर साहबके बाणीके विरुद्ध पावें तो तुरन्त समझ लें कि, यहाँ तो काल के पुत्रोंमेंसे किसीकी कबीरके नामसे बनावट है कि, वो कितनेही कबीर पन्थी कबीर साहब तथा धर्म्मदासजीके नामसे धूर्तता करके कबीर पन्थियोंको भटकाया चाहते हैं वही यमके दूतोंकी धूर्तता है। कालके पुत्रोंने अनेक युक्तियाँ

१ जिसे न जान सके, २ घर, ३ साथ, ४ छिपा। ५ कथन, ६ इच्छा, ७ कारण।

की और कर रहे हैं कि, मनुष्योंको सत्यपन्थसे भटका दें इस कारण कबीर साहबने पहलेहीसे प्रबंध कर दिया है कि कुछ गाडिया पुस्तकोंकी दिल्ली नगरमें गड़वादी हैं जो नियत समय पर निकलेंगी वे शुद्ध तथा निर्दोष हैं । वही प्रचलित होगी जिनमें कुछभी दोष न होगा । उपरोक्त पुस्तकें सर्वथाही निर्दोष और अनुपम हैं । उन ग्रन्थोंके पढ़ने सुननेसे यमके कपट निरर्थक हो जावेंगे । केवल चारसौ वर्षोंनें कबीर साहबकी वाणीकी यह दशा होने लगी तो ऐसी अवस्थामें इतिहास तथा अन्यान्य पुस्तकोंकी क्या गणना है ! जो अत्यन्त प्राचीन पुस्तकें थीं सब दूषित होगईं, वे तनिक भी शुद्ध नहीं रहीं । सब ग्रन्थ कट कुट हो गये है पर स्वसंवेद अशुद्ध नहीं होता क्योंकि, सब औपधर्म्यके ग्रंथोंके श्रोता वक्ता मर गये । परन्तु स्वंवेदके श्रोता वक्ता कदापि नहीं मरते, सदैव जीवित रहते हैं । स्वसंवेद जब मृत्यु के समीप पहुँचता है तो फिर उसमें जी डाला जाता है जिससे हरा भरा हो जाता है । स्वसंवेदकी शिक्षा उत्पत्ति कालसे लेकर आजतक बराबर चली आती है । परन्तु उस पर चलनेवाले थोडे होते हैं । उसका कारण ये है कि, १–कालपुरुष मुंह २ से बोलता हुआ संसारको भटकाता है जीवोंकी बुद्धिको नष्ट करता हुआ अन्तःकरणको अशुद्ध कर देता है । २–यह जीव पशुवत् कर्मकी तृष्णाको नहीं छोडता है, माँस खाता है, निषेध कर्मोंको करता है । उसमें ऐसा लुब्ध हो जाता है कि, उनको छोडना उसे अत्यन्त कठिन प्रतीत होता है । ३–इस संसारकी मान बड़ाई तथा लज्जा आदि भी इस जीवको नहीं छोड़ते । ४–प्रत्येक पुरुषकी बुद्धिपर बैठकर काल पुरुष अपनी प्रभुताई कर रहा है । ५–कबीर साहबकी दयादृष्टि हो पर उसके गुरुकी दया न हो तो भी कार्य्य नहीं चलता दोनोंकी ही दयादृष्टि होनी चाहिये । जिस समय गुरु दया करते हैं तो कबीर साहिबकी उस पर पूरी दयादृष्टि हो जाती है फिर उसके उद्धार होनेमें कोई भी कसर नहीं रह जाती । सत्ययुग द्वापर त्रेता और कलियुगके हंसोंके लिये युगानुरूप सत्यपुरुषका शास्त्र रहा है, जिससे सहजही में जीव सत्यपुरुषके उपदेशोंको समझले । जिस किसीने इन चारों युगोंमें सत्यपुरुषका कहना न माना उसे दुखसागरमें मग्न होना पड़ा पर जिसने कथन माना उसका उद्धार हो गया कालका उनपर कुछ भी प्रभाव न चला । सत्यपुरुषका शास्त्र युगानुसारी भाषामें रहता है कलियुग के जीवोंको जैसा चाहिये उसी भाषामें सत्यपुरुषका शास्त्र मौजूद है इसीसे अगनित जीवोंका उद्धार हो गया है इबराहीम अद्धम आदिको इसी युगकी भाषामें उपदेश मिला था ।

भिन्न पन्थोंके संस्थापक शिष्य गण।

नानक शाह साहब

नानकशाह साहब कबीर साहबके खास चेलोंमें थे। उनको सत्य गुरुने पञ्जाब प्रान्तकी गुरुवाई प्रदान की थी, उसका जन्म मौजा तिलोंडी जिला लाहौर (पञ्जाबदेशमें) हुआ था। सम्वत् १५२६ विक्रमीमें कालू नामक खत्रीके गृहमें उनका जन्म हुआ। लड़कपनसेही श्रेष्ठताके चिन्ह परिलक्षित थे। जब उनका वयस सोलह वर्षका हुआ तब माताने एक दिवस बीस रुपये देकर कहा कि, इन रुपयोंसे उत्तम सौदा कर लाओ। नानक साहब उन रुपयोंको लेकर चले, आगे एक मण्डली साधुओंकी मिली इसको देखकर इनका हृदय स्वच्छ हुआ सोचा कि, साधुओंको खिलानेसे बहुत अच्छा सौदा हो सकता है वह बीस रुपया जो पासमें था उससे भण्डारा करके उस स्थानपर सब साधुओंको खिला घरको चले गये। फिर जब नानक साहबकी वयस (आयु) अट्ठाईस वर्षकी हुई तब सम्वत् १५५३ विक्रमीमें उन्होंने वेईनदीके भीतर गोता मारा। तब उस समय आपको जिन्दा बाबा मिले, दृढ उपदेश देकर अपना शब्द भली भाँति दृढ़ाया नदीके बाहर निकले तो पञ्जाब देशमें उनकी महिमा फैली। उनके शिष्योंकी लाम लग गई।

नानकशाह साहब तो अपने जीवन भर गुरुके आज्ञाकारी ही होकर सत्यपुरुषकी भक्तिका उपदेश किया करते थे। पर नानकशाहके पीछे इस पन्थके लोग कबीर गुरुसे फिर गये इस कारण सत्यपुरुषकी भक्ति और स्वसंवेदकी शिक्षा छूट गई। काल पुरुषकी भक्तिको और लोग झुक पड़े। गुरुके विरुद्ध होनेपर अनेक काल तक उनके पास कोई ग्रंथ नहीं रहा। गुरु अर्जुनजीने सन्तोंकी बाणी एकत्रित करके एक ग्रंथ प्रस्तुत किया जो अबतक उनके पास उपस्थित है। अब वे लोग कबीर साहबको तो अपना गुरु स्वीकार नहीं करते, वरन् अन्यान्य भक्तोंके समान एक भक्त जानते हैं। इस कारण अनेक प्रमाणोंको एकत्रित करता हूँ कि, नानक देवके कबीर साहिबही गुरु थे।

इतिहासिक प्रमाण १—एच. एम. एलफिन्स्टन साहब जो अंग्रेजी इतिहास लिखनेवालोंमें नामी और बहुत बड़े इतिहास लेखक हो गये हैं वह अपने भारतके इतिहासमें इस प्रकार लिखते हुए नानकशाहके विषयमें साक्षी देते हैं कि नानक शाह कबीर साहबके शिष्योंमेंसे एक शिष्य थे। परन्तु उन्होंने अपने लेखमें कोई पृथक् वृतान्त कबीर साहबके विषयमें नहीं लिखा है, इसका

कारण यह है कि, उसके अनुगामियोंमेंसे किसीने भारतके देशी इतिहासमें कोई भाग नहीं लिखा।

एलफिन्स्टन साहबके भारत इतिहासके १२ वें जिल्दके प्रथम भागके ६७८ पृष्ठमें देखो—वह सिक्खोंके विषयमें इस प्रकार लिखते हैं कि, इस धर्म्मके आचार्य्य नानक पन्द्रहवीं शताब्दीके अन्तमें प्रगट हुये थे। वे कबीर साहबके शिष्य थे। अतएव वह एक प्रकारके हिन्दू एक ईश्वरवादी थे। परन्तु उनके धर्म्मका मुख्य अभिप्राय सबको एक धर्म्ममें मिलाकर भेदभाव मिटानेका था।

द्वितीय प्रमाण २—भारतके इतिहासका संक्षेप, जिसको कैलास चन्द्र मघ्ना बी. ए. और देवेन्द्रनाथ राय बी. ए. आफ एल. एम. एस. कालेज भवानी-पूरने लिखा है। वह इस प्रकार है, देखो भारतके इतिहासके एकसौ पाँच पृष्ठ में।

रामानन्दके बारह शिष्योंमें कबीर साहब बड़ेही सुप्रख्यात हुये। उन्होंने बीजकका निर्माण किया। पण्डितोंके लिये शास्त्र तथा वेदके आशयको गूढ़ बताया। नानक साहबने सर्व धार्मिक युक्तियाँ कबीर साहबसे सीखी थीं।

फिर देखो उसी पुस्तकके एकसौ आठ पृष्ठमें नानकशाहने सिक्खधर्म, पन्द्रहवीं शताब्दीमें स्थापित किया। उन्होंने सर्व धार्मिक रीतियाँ कबीर साहब से प्राप्त कीं।

तृतीय प्रमाण ३—एच. एच. विलसन साहब अपनी दरसनामक किताबमें तीसरे प्रकरण पृष्ठ ६९ में हिन्दुओंके धर्म्मके विषयमें लिखते हुए कबीरपंथियोंके विषयमें लिखते हैं कि, कबीर साहबकी शिक्षाका प्रभाव उनके मुख्य २ शिष्योंपर बहुत पड़ा। वो उनकी अनुपस्थितिमें उससे भी बढ़कर सिद्ध हुआ। क्योंकि सर्व पन्थोंको इस पन्थकी शाखायें कह सकते हैं। गुरु नानक, साहब जो हिन्दुओं में एक विशेष धर्म्मके आचार्य्य हुये हैं, प्रायः अपने धार्मिक ध्यानोंमें कबीर साहबका ही प्रायः अनुकरण किया है।

चतुर्थ प्रमाण ४—ग्रन्थ लेखकके पहिले लिखेका व्याख्यान करनेके समय मालकाम साहबके लेखसे निम्नलिखित अनुवाद किया है। "प्रख्यात तथा सुप्रसिद्ध कबीरके विषयका नानकने अनुकरण किया है। कबीर पंथी कहते हैं, कि, नानकने कई सहस्र साखिया कबीर साहबके पुस्तकोंसे ली हैं।" मालकाम साहबकी पुस्तक भारतके इतिहासको देखो। वहां यह सब मिलेगा।

पंचम प्रमाण ५—मोनियर विलियम् साहब एक सुप्रसिद्ध अंग्रेज जिन्होंने स्वयम् भारतवर्षका भ्रमण किया है जो बलेयल कालेज आक्स फोर्डमें प्रोफेसर थे, अपनी पुस्तक भारतके धार्मिक ध्यान तथा आयुके छठें प्रकरणके १५८ पृष्ठमें लिखते हैं जो इस प्रकार आरम्भ होता है।

एकता धर्म्म जिसके रचयिता कबीर साहब हुए हैं—

इसमें कोई संदेह नहीं कि, पन्द्रहवीं तथा सोलहवीं शताब्दीके बीच उत्तर भारत में कबीर साहबके धर्म्मका बड़ा प्रचार हुआ। इसमें सन्देह नहीं कि, यही धर्म्म पञ्जाबी सिक्ख धर्मकी जड़ है, यह इस बातसे जाना जाता है कि, कबीर साहबकी बाणी नानकशाह तथा उनके स्थानापन्नोंने स्थान स्थानपर अपनी पुस्तकोंमें उद्धृत की है।

षष्ठप्रमाण ६—ये ही महाशय अपनी पुस्तकके १६२ पृष्ठमें सिक्खधर्म्मके ग्यारहवें प्रकरणमें नानक साहबका विवरण करते हैं तथा जो कुछ वह करते हैं, वह ट्रम्प साहबके ज्ञातव्यकी उस विज्ञताके अनुसार करते हैं, जिसे कि, उन्होंने स्वयम् लाहौरमें आकर प्राप्त किया था, उनका लेख यह है कि, नानक शाहने नये धर्म्मके बनानेकी बात नहीं कही यथार्थमें उस धर्म्मकी जड़ कबीर साहबकी बाणी ही है। क्योंकि, कबीरके धर्म्म पुस्तकको ही वह अपनी पुस्तकमें उद्धृत करते हैं।

सप्तम प्रमाण ७— राजा शिवप्रसाद साहब बनारसी कृत तारीख आइनानुभा प्रथम भाग जो नौनाब लेपिटनेण्ट गवर्नर बहादुर, अवध पश्चिमोत्तर प्रान्त सन् १८७२ ई. की आज्ञानुसार सरकारी मुद्रालयोंमें सातवीं वार पाँच सहस्र छपा था। उसके एकसौ पाँच पृष्ठकी पहली पंक्तिमें यह लिखा है कि, पन्द्रहवीं शताब्दीमें कबीर साहबके शिष्योंमें से नानकशाहने सिक्खोंका एक नवीन धर्म्म प्रचलित किया।

अष्टम प्रमाण ८— डबल्यू. डबल्यू. हण्टर सी. आई. ई. एल. एल. डी. साहबने अपनी इण्डियन इम्पायर इतिहास पुस्तकके एक सौ चौरानबे पृष्ठमें कबीर साहबके कौतुकोंके विषयमें लिखा है। फिर इसी पुस्तकके १०३ और १०४ पृष्ठमें कबीर साहब तथा नानक शाहके विषयमें लिखा है।

नवम प्रमाण ९—एक दिवस साधू हाँसूदासजी आकर गोस्वामी धर्म्म दासजीसे कहने लगे कि हे स्वामीजी ! आज दिनतक एक साधु पञ्जाब देशसे आया है, उसने नानकशाहका विचित्र वृत्तान्त और करामातकी बातें सुनाई है। धर्म्मदास साहबने कहा कि, वह बातें सुनाओ हाँसूदासने कितनी ही बातें सुनाई उन्हें सुनकर धर्म्मदास साहबने कहा कि, हे हाँसूदासजी ! गुरु नानकजी तो मेरे गुरु भाई ही हैं।

दशम प्रमाण १०—गोस्वामी गरीबदास स्पष्ट रूपसे कहते हैं कि, नानकशाह तथा दादूराम इत्यादि कबीरसाहबके अनन्य शिष्य हैं।

एकादशमा प्रमाण ११ कितनेक कबीर पन्थी विद्वान्, गुणी साधु कहते हैं कि नानकशाह, कबीर साहबके शिष्य हैं। इसमें कोई सन्देहही नहीं है।

द्वादशमा प्रमाण १२— जब यह फकीर (अर्थात् पुस्तकका रचयिता) सन् १८५२ ई. में अपने गुरु महाराजके साथ था वह भी यही कहा करते थे कि, नानकशाह कबीर साहबके शिष्य हैं अनेक बार उनका विवरण मेरे समक्ष करते थे जिससे मैंने जाना कि, वास्तवमें नानकदेव कबीर साहिबके अनन्य शिष्योंमें हैं। अनेक पुस्तकोंमें कबीर साहब तथा नानक साहबका वृत्तान्त लिखा हुआ है। अब मैं इस पुस्तकके अन्तमें (आठवें परिच्छेदके १२२ प्रश्नके उत्तरमें) समप्रमाण और भी लिखूंगा।

नानकशाह साहबके जन्म साखीकी विशेष बातें।

यहाँ अब मैं वह बातें लिखता हूँ जिनको स्वयम् नामक साहबकी जन्म साखीसे चुना है। सब जन्म साखियोंमें भाई बालेकी जन्म साखी सर्वोत्कृष्ट तथा बड़ी प्रामाणिक मानी जाती हैं, इसी जन्म साखीको सब मानते भी हैं। नानक साहबके परमधाम सिधार जानेपर भाई बाला गुरु अङ्गदजीके पास गया। अङ्गदजी नेत्रोंमें जलभर कर उससे कहने लगे कि, हे भाई बाला! आप तो गुरुजीके साथ फिरते रहे हो आपको सब वृत्तान्त अच्छी तरह मालूम है। मुझे सत्यगुरुके भ्रमण तथा घूमने फिरनेका सब हाल कहो। इस बातपर भाई बालाने गुरु अङ्गदजीसे जो कुछ कहा वही बात इस जन्म साखीमें लिखी हुई है। यह जन्म साखी सम्वत् १५८३ विक्रमीकी है जिससे ये बातें लिखी गई हैं। सवाल जवाब पंजाबीमें है उनका साथही साथ अर्थ कर दिया गया है। जन्म साखी २६६ पृष्ठ भाई मरदाना नानक साहबसे प्रश्न करता है कि—

प्रश्न—हे महाराज तू सानूं जो गुरु मिलिया सो कौन मिलिया, आहा ते नाम उसदाकी आहा।

अर्थ—हे महाराज! तुमे कौन गुरु मिला है, उसका नाम क्या है!

उत्तर—ता फिर नानकजीने कहिया, नाम उसदा बाबा जिन्दा हुआ है, जित्थै तोड़ी पवन और जल है सब उसदे बचन विच चलदे हैं।

अर्थ—उसका नाम बाबा जिन्दा है, जहाँतक पवन और जल हैं, सब प्राणी उसकी अज्ञाके बीच चलते हैं।

फिर देखो (पृष्ठ २२६) भ्रमणके समय एक साधुने नानक साहबसे पूछा कि, तुसाड़ा (अर्थात् तुम्हारा) गुरु कौन है? तब नानकजीने उत्तर दिया था कि, मेरा गुरु जिन्दा है।

फिर देखो ३४६ पृष्ठ । जब नानक साहब कन्धार देशको गये तब उनको यारअली नामक एक फकीर मिला । उसके नानकशाहसे बहुतेरे प्रश्नोत्तर हुये । उनमें एक प्रश्न यह भी था--

बारअलीने पूछा कि, आपका गुरु कौन है ! तब नानक साहबने उत्तर दिया कि, मेरा गुरु बाबा जिन्दा है ।

अब मैं यहाँ वही भाषा लिखता हूँ जिसमें यारअली और नानक साहबमें बातें चीतें हुई थीं--

बोलो भाई वाह गुरु ! नानक उभ्ये उडारी लेभो ता जाय कन्धार विच्च खड़े हुये । उत्थे एक मुगल फकीर आहा उस नाल भेंट गई तब उसने पूछ्या ।

अर्थ--नानकजी वहाँसे उडके कन्धारमें पहुँचे वहाँ एक मुगल फकीरसे भेंट हुई, तब उसने नानक साहिबसे पूछा ।

"शु[1]माचे नाम दारी? ता गुरु नानक बोल्या" मा[2], नाम नानक निरङ्कारी! फिर मुगल बोल्या "न[3] फहमीदम" ता गुरु नानक बोल्या मा[4] बन्द ए खुदायेम । फिर मुगल बोल्या, "शुमा[5] पीर कुदाम" ता गुरु नानक बोल्या, मा[6] पीर जिन्दा पीर" ता फिर मुगल बोल्या "शुमा[7] पीर जिन्दा पीर" ता गुरु नानक कह्या ? आरे[8] आरे। ता फिर मुगल कह्या ? 'मा[9] एतकादनेस्त" ता गुरु नानक कह्या । "चेगुफ्त[10]" ता "मुगल कह्या, पैदा[11]शुदी मुरीद शुदी ।

ता गुरु नानक कह्या, "यक[12] खुदाय पीर शुदी कुल आलम मुरीद शुदी फकीर खबरदार निगाह दीगर नदारी । ता मुलग[13] पीर उत्थ डगा।

ता गुरु नानक कहिया, "एक[14] खुदायदोरा दीगरे नेस्त । ता मुगल बोलिया "शुभा[15] पीर मामुरीद।"

ता गुरु नानक कहिया "शु[16]मानाकचेदारी" ता मुगल कहिया "ना[17]म मन यार अलीअस्त" ता गुरुनानक कहिया, "ना[18]म शुमाबाबुलकन्धारी ।"

पृष्ठ ३९६ जब नानक शाह बाबर बादशाहके साथ वार्तालाप कर रहे थे, तब बाबर शाहने पूछा कि, सुन नानक ! तू कबीरका चेला है ? तब गुरु-नानकने कहा, हां ।

---

१ प्र०--तुमारा नाम क्या है? २ उ०--मेरा नाम नानक निरंकारी है। ३ प्र०--मैंने नहीं समझा । ४ उ०--मैं ईश्वरका दास हूँ । ५ प्र०--तुमारा कौन गुरु है। ६ उ०--मेरा जिन्दा पीर गुरु है। ७ प्र०--तुमारा गुरु जिंदा पीर है ? । ८ उ०--हाँ हाँ । ९ मुझे विश्वास नहीं है । १० क्या कहा ? ११ पैदा होते ही शिष्य हुआ। १२ ईश्वर गुरु है संसार चेला है सन्तको उसके अतिरिक्त दूसरी दृष्टि नहीं होती। १३ मुगल चरणोंपर गिरा। १४ एक ईश्वरके बिना दूसरा कोई नहीं है। १५ आप मेरे गुरु, मैं आपका चेला हूँ । १६ तुमारा नाम क्या है? १७ मेरा नाम यारअली है। १८ तुमारा नाम बाबुल कन्धारी ।

सुन बावर कलन्दर कबीर ऐसा था जो परमेश्वरके समान था उससे परमेश्वरमें किसी प्रकारकी विभिन्नता नहीं थी। उसे परमेश्वरसे जो भिन्न देखता है वो परमेश्वरका सेवक नहीं है। वह (कबीर) बड़ाही पवित्र है।

फिर देखो ३१८ पृष्ठ, जब नानक शाह ध्रुव मण्डलमें पहुँचे तो वहाँ उनसे स्वयम् कबीरसाहबने आकर यों कहा—

चौ०—कहे कबीर सुन नानक भाई। हम तुमको उपदेश कराई ॥

फिर देखो १२७ पृष्ठ, जब, नानक शाह विरक्तकी अवस्थामें भाई लालूके घरमें गये उसने देखा तो उनके गलेमें जनेऊ था तब भाई लालू नानक शाहके लिये भोजन तयार करा बुलाने गया। नानकशाहने कहा कि, मेरा भोजन यहाँ ही ले आओ, भाई लालूने कहा कि, आपके गलेमें जनेऊ है बिना चौकाके आप कैसे खाओगे ?

इससे स्पष्ट मालूम होता है कि, नानक शाह वैष्णव थे फकीरी अवस्थामें केवल वैष्णवहीके गलेमें जनेऊ तथा कण्ठी इत्यादि होती है, दूसरे किसीके नहीं होती।

नानकशाह पञ्जाबसे भ्रमण करते हुए कुरुक्षेत्र गये। वहाँसे हरिद्वार पहुँचे वहाँसे पीलीभीत होते हुए अयोध्या जा विराजे, वहाँसे काशीजीमें जाकर कबीर साहबको मिले। अपने गुरुका दर्शन करके आनन्दको प्राप्त हुए।

यह बात यहाँतक जानी गई सो लिखी गई। भविष्यमें भली भाँति प्रमाणित किया जावेगा। अब यहाँपर कुछ बातें नानक बोधमेंसे लिखना भी उचित है। वह वार्तालाप जो नानक शाह और कबीर साहबकी हुई वह यह है—

चौ०—देश पंजाब पहुँच सो जाई। जिन्दा रूप धन्यो सोभाई ॥
अनहद वाणी किया पुकारा। सुनके नानक दरस निहारा ॥
सुनके अमरलोककी वाणी। जान परा तब समरथ ज्ञानी ॥

नानक वचन

अरज सुनो प्रभु जिन्दा स्वामी। कहां अमरलोक बसे निजधामी ॥
कोई न जाने तुम्हरा भेदा। खोज थके ब्रह्मा चहुँ वेदा ॥
कोई न कहे अमर बिज बानी। धन्य कबीर पुरुष तुम ज्ञानी ॥
आवागम ते कोई नहिं छूटा। तीनलोक मुनिवर सब लूटा ॥
हम धरि जन्म बहुत तप कीन्हा। अमर भेद हमहूँ नहिं चीन्हा ॥
कहु गुरु भेद सकल ब्रह्मण्डा। सात द्वीप पृथिवी नौ खंडा ॥

जिन्दा वचन

नानक अहो बहुत तप कीन्हा । निरङ्कार बहुतै दिन चीन्हा ॥
निरङ्कारते पुरुष निनारा । अजरदीप टाके टकसारा ॥
वहांते प्रकट निरञ्जन काला । ताको कठिन भयङ्कर ख्याला ॥
तीन लोक उन दियो भुलाई । उन सँग पुरुष न एकौ पाई ॥
पुरुष बिछोह भयो तुम जबते । काल कठिन मग रोक्यो तबते ॥
जबते हमसे बिछुर्‍यौ भाई । साठ हजार जन्म तुम पाई ॥
धरि धरि देह भक्ति भल कीन्हा । फिर काल चक्र निरञ्जन दीन्हा ॥
निर्गुण मांहि निरञ्जन थाना । जप जप जाहि भये जिव हीना ॥
घाट रोंकि सत्पुरुष छिपावा । चार वेद कथ जीव भर्मावा ॥
यह गति सुना निरञ्जन केरी । सत्य पुरुष कोई बिरला हेरी ॥
गहो मम शब्द तो उतरो पारा । बिन सत शब्द गये यम द्वारा ॥

नानक वचन

धन्य पुरुष तुम यह पद भाखी । यह पद अमर गुप्त कहँ राखी ॥
अरज हमार सुनो प्रभु स्वामी । तुमही कहि गुरु आदि निशानी ॥
तुम निज पुरुष गुप्त कहाँ रहिया । यह तुम हममें नाहीं कहिया ॥
जबते हम तुमको नहिं पावा । अगम अपार भरम फैलावा ॥
कहो गोसाइँ हमते ज्ञाना । पार पुरुष हम तुमको जाना ॥
काल दयाल तुम्ही निरवारा । सकल सृष्टिके तुम करतारा ॥
अमर लोक निज कहो निनारा । सकल सृष्टि तिरदेव पुकारा ॥
हम धरि देह बहुत दुख मानी । बहुत दिवसमें मिली निशानी ॥
पिण्ड ब्रहण्डको हमते कहिये । अगम गँभीर शब्दते लहिये ॥

इस स्थान पर कबीर साहबने नानक साहबको पिण्ड तथा ब्रह्माण्ड दोनोंका एक स्वरूप दिखाया है। कालपुरुषके धोखे तथा दगाका विवरण करके कहा है कि, हे नानक ! तू मेरे सार शब्दको स्वीकार करे तो भवसागरके पार उतर सकेगा। इतना सुनकर नानक साहबने कहा कि—

चौ०—धन्य पुरुष प्रभु निर्मल ज्ञानी । अजर सार निज तुम्हरी बानी ॥
धन्य कबीर परम गुरु ज्ञानी । भेद जो अमर सुनाई बानी ॥
वाह गुरु समरथ वाह गुरु जिन्दा । काट देव मम भव जल फन्दा ॥

जिन्दा वचन

सुन नानक निर्गुण व्यवहारा । करै भक्त सब काल पसारा ॥
मरे जिये यह संधि कहावै । जपतप करे तिरथ भरमावे ॥

काल सुमिरिके डुबकी मारें । खाली रहे अन्त में हारें ॥
वे नहिं पुरुष खोजको पावें । उलट पलट भवसागर आवें ॥

अब यहाँ कबीर साहब नानक साहबसे सब तीर्थ व्रत इत्यादिका विवरण करते हैं कि--विना यथार्थ ज्ञानके सबमें कालपुरुषकी धूर्तता तथा दगाबाजी ही होती है।

नानक वचन

आगे सुनी न काहू जानी । धन्य कबीर पुरुष तुम ज्ञानी ॥
कालको चक्र कठिन बल जोरा । इतने जीव बचाओ मोरा ॥
बली पुरुष तुम कालको नाथा । अमरलोक मोहिं लेचल साथा ॥
निरङ्कार अब सुमिरौं नाहीं । फेर न जन्मौं या जग माहीं ॥
तीनों लोक काल है देवा । ज्ञान परा अब हमको भेवा ॥
निर्गुण जपूं न सर्गुण ध्याऊँ । पारपुरुष तुम शरणा पाऊँ ॥
पुरुष पुरान मिले निजपीरा । खेवा मोर लगाओ तीरा ॥

अब यहाँ सत्यगुरुने नानक साहबको अपना शब्द देकर कालपुरुषसे अलग किया है। फिर प्रलयका समस्त वृत्तान्त सुनाके काल पुरुषका सब ढङ्ग प्रगट किया है एवं भली भाँति समझा दिया है कि, हे नानक! अब तुम पर कालका बल नहीं चलेगा, यदि मेरे पथपर अटल रहे तो।

नानक वचन

धन्य पुरुष ज्ञानी करतारा । जीवकाज प्रकट संसारा ॥
यहाँ ते गया न साबित कोई । अजर पुरुष तुम निश्चल होई ॥
नाम कबीर जपै जिन जोई । ताकी फेंट न पकरै कोई ॥
धन्य कर्ता प्रभु बन्दी छोरा । ज्ञान तुम्हार महाबल जोरा ॥
दिया दान मोहि किया उबारा । कबहूँ न छोडूं शरण तुम्हारा ॥

मैंने सुना है कि, तावरीख अकबरीमें कबीर साहब और नानक साहबके विषयमें बातें अनेक लिखी हैं। दूसरी पुस्तकोंमें भी उपरोक्त बातें लिखी हुई हैं यहां तक कि, कितनेही साधुभी इस बातको जानते हैं। नानक शाह साहबको सत्यगुरुने कालपुरुषके देशसे छुड़ा करके अमर कर दिया, नानकजी हंस कबीर हो मुक्ति रूप हो गये, एवं अधिकारी होकर अपनी इच्छानुसार लोककल्याण करते रहे।

कबीर साहब तो सम्बत् १५७५ विक्रमीमें अन्तर्धान हो गये पर नानक साहब पृथिवीपर अपना धर्म्म प्रचलित करते हुए सत्यपुरुषकी भक्तिका उप-

देश करते फिरे। जब सत्यलोकको गये तो वहाँसे कबीर साहबने उन्हें पृथिवी-पर भेज दिया कि, हे नानक ! अभी तुम पृथिवीपर जाओ आप नाम जपो तथा दूसरोंसे जपाओ। नानक साहब सत्यलोकसे पलटे, सत्य गुरुके वचनानुसार पृथिवीपर भ्रमण करते हुए लोगोंको उपदेश करते फिरते थे, उनके साथ भाई बाला और मरदानभी रहा करते थे, अपनी सिद्धिके बलसे दोनोंको अपनेही साथ उड़ाले जाते थे। नानकशाहसाहबका शरीर दिव्य तत्त्वका हो गया था, वे त्रिगुणातीत हो गये थे, उनको प्यासकी कुछभी चिन्ता नहीं थी। भाई बाला भी भूखका कष्ट सहन कर सकता था परन्तु मरदाना मीरासी (गानेवाला) भूख सहन करनेमें जरा कच्चा था। इस कारण जरासी भी भूख लगनेपर वह भूख भूख करके पुकारता था। एक दिवस वह नितान्तही विवश होकर कहने लगा कि, गुरुजी ! अब आप मुझको विदा कीजिये मैं अपने घरको जाऊँगा क्योंकि, मैं तुम्हारे साथ भूखा मरता हूँ।

यह देख नानक साहबने उसे समझाया कि, तू घर मत जा, यहाँसे आठ कोसके ऊपर एक कूडा राक्षस रहता है, यह प्रायः मनुष्योंको पकड़ पकड़ कर खाता है। तुझको भी खा जावेगा। मरदानेने कहना न मान कर कहा कि, गुरुजी अब मुझे अपने घरवालोंका मोह लगा है, मुझे जाने दीजिये। यद्यपि नानक साहबने कईवार मना किया पर उसने न माना, उनसे विदा होकर घरको चला। राहमें उसको कूड़ा राक्षस मिला और पकड़ लिया। कड़ाहमें तेल भरकर तपाने लगा जिसमें मरदानेको भूनकर उसमें खाजावे। जब कूड़ेने मरदानेको पकड़ लिया उसने देखा कि, यह तो अवश्यही मुझको भूनकर खालेगा, तब उसने नानक साहबका ध्यान करके कहा कि, गुरुजी ! अब मेरे प्राण बचाओ। मैंने जो आपका कहना न माना उसका फल मुझको मिल गया अब मैं आपकी शरणमें हूँ। अब आपकी आज्ञा कभी अस्वीकार न करूँगा। इस प्रकार उसने विनय की तब नानक साहबने सब कुछ मालूम कर लिया कि, कूड़ेने मरदानेको पकड़ लिया। अब भूनकर उसको खाया ही चाहता है। बालासे कहा कि, हे भाई बाला ! अब वह मुझको इस दुःखमें स्मरण करता है। तब बालेने कहा कि, गुरुजी ! आपने तो उसको बहुत समझाया था परन्तु उसने आपका कहना न माना। अब अच्छा है कि, कूडा राक्षस उसको खाजाय जो आज्ञा नहीं मानता उसकी ऐसीही दशा होनी चाहिये। नानक साहबने कहा कि, यह बात अच्छी नहीं, वह तो अब मेरे शरण में है। मैं कैसे उसकी सहायता न करूँ ? उस मर-दाना पर दया आई। बालेको अपने साथ लिये एक पलभरमें उसके पास पहुँचे।

कूड़ा राक्षसने मरदानेको बाँधकर गरम तेलमें डाल दिया । वह तेलका कड़ाह साहबकी दयासे ठण्डा हो गया, कूडे को बड़ा आश्चर्य हुआ कि, यह कौन पुरुष है । जिसके कारण मेरी उत्तम कड़ाही एकदम पानीके समान ठण्ढी हो गई ।

यह कूड़ा राक्षस पहले ब्राह्मण और बड़ा पण्डित था । एक दिवस वह बैठा था कि, उसके गुरु आये । उनको देखकर वह अपनी विद्याके घमण्डसे नहीं उठा, न गुरुको प्रणामही किया । गुरुने कहा कि, हे पापी ! तूने अपनी विद्याके घमण्डसे प्रणाम नहीं किया है इस कारण राक्षस हो जा; कूड़ाने अपने गुरुके चरणोंपर गिरकर कहा कि, अब मेरे अपराधोंको क्षमा करो । गुरुने उसको एक दर्पण देकर कहा कि, तू अवश्यही राक्षस होगा पर जिसको खानेको पकडे उसे इस दर्पणमें देख लेना । जो कोई मनुष्य दिखाई दे उसको मत खाना जो पशु दिखाई दे उसको खा जाना । जब तुमको कोई मनुष्य दिखाई देगा उसके द्वारा तेरी इस योनिसे मुक्ति हो जायगी ।

कूड़ेने मरदानेको कड़ाहीमें डाला, कड़ाही ठण्ढी हो गई, नानक साहबने कूड़ेसे कहा कि, तू इसको भूनकर क्यों नहीं खाता क्या विलम्ब है ? कूड़ेने उस दर्पण द्वारा नानक साहबको देखा तो स्पष्ट रूपसे मनुष्यकी भव्य मूर्ति दिखाई दी ।

तब वह कूड़ा राक्षस नानक साहबके चरणोंपर गिरा, विनय करने लगा कि, महाराज ! आज मेरे गुरुका वचन पूरा हुआ । आजदिनतक जो मैं मनुष्योंको मारकर खाता था, प्रत्यक्षमें तो वे सब मनुष्यरूपमें दिखाई देते थे । परन्तु यथार्थमें वे सब पशुही थे । आजके दिवस केवल आप एक मनुष्य मिले हो दूसरा मनुष्य कभी कोई नहीं मिला, जितने मिले सब पशुही मिले । उन्हींको मैं खाया करता था । आप मनुष्य मिले हो, मेरा छुटकारा कीजिये । कूड़े राक्षस पर नानक साहबकी दया हुई वह सुखी हो गया । यह उदाहरण मैंने इस कारण लिखा है, कि, केवल हंस कबीरही को मनुष्यत्वका पद प्राप्त होता है, दूसरोंको नहीं होता क्योंकि, जैसे मैंने पहले सुपच सुदर्शनका वृत्तान्त लिखा कि, पुष्करजीमें सवा लाख प्रदीप जलवाकर जब देखा तो केवल सुपच सुदर्शनजी मनुष्य दिखाई दिये । शेष सभी डङ्गर, ढोर, कीड़े, मकोड़े, पशु, पक्षी इत्यादि थे । तब श्रीकृष्णचन्द्रने पाण्डवोंसे कहा कि, हे राजा युधिष्ठिर ? यमने सुपच सुदर्शनकी श्रेष्ठता देखी कि, नहीं ! वही बात तथा गुण नानक साहब तथा दूसरे हंस कबीरोंमें देखलो । कुछ भी विभिन्नता नहीं जिनको हंस पद प्राप्त नहीं हुआ सो सब बकुले हैं केवल हंस कबीर ही मनुष्य हैं ।

साखी—काहे हिरनी दूबरी, यही हरियरे ताल ।
लक्ष शिकारी एक मृग, केतिक टारे भाल ॥

हंस कबीरोंमें ही ताकद है कि, अन्यान्य ब्रह्माण्डोंमें उड़कर चले जायँ वहाँकी सैर करें। अतः नानक साहब केवल इस पृथिवीपरही नहीं वरन् अन्यान्य देशों तथा द्वीपों और ब्रह्माण्डोंकी भी सैर करते रहे हैं, केवल संसारहीमें बंद न रहे तथा लोकोपकार भी अच्छा किया।

तीनलोकके जीव तो कूएके मेंडकके समान हैं, क्योंकि वे बाहर नहीं निकल सकते। परन्तु हंस कबीर शक्तिमान हैं जहाँ चाहें चले जावें एक पल भरमें करोड़ों योजन उड़ जावें। नानक साहबको जन्म साखियोंमें लिखा है तथा स्वयं नानकसाहबने कहा भी है कि, मैंने अनेक बार देह धारण की है, मैं सदैव ठाकुरपूजा करता था, इस कारण मुझको मुक्तिपद शीघ्र प्राप्त हुआ है, मुझको जिन्दा बाबा मिले, आवागमनका समस्त दुःख दूर हुआ।

एक अंग्रेजी पढ़े लिखेका मुझसे वार्तालाप हो रहा था, तब नानक साहबके सैरकी बात छिड़ी तो मैंने कहा कि, वे एक ऐसे देशमें गये जहाँ केवल स्त्रियाँही स्त्रियाँ थीं कोई मर्द ही नहीं था, वह स्त्रियोंका देश था। यह बात सुनकर उसने मेरी बातका खण्डन किया कि, भला जी ? योरोपवासियोंने समस्त पृथ्वीको छान डाला पर ऐसा देश पृथ्वीपर कोई नहीं जहाँ केवल स्त्रीयाँही हों कोई मर्द न हों! मैंने उत्तर दिया कि, विलायतवालोंने केवल पृथ्वीका ही भ्रमण किया है आकाशका नहीं। नानक साहब तो करोड़ों योजन एक पलभरमें उड़ जाते थे, न जाने यह वृत्तान्त किस ब्रह्माण्डका है जहाँ केवल स्त्रियाँ ही हैं? नानक साहब ब्रह्मज्ञानी थे। ब्रह्मज्ञानी स्वयम् पवित्र परमेश्वरके समान हैं, ब्रह्मज्ञानीकी बड़ी प्रतिष्ठा कही है यथा-"ब्रह्म जानाति ब्रह्मैव भवति" इति श्रुतिः। यदि नानक साहब ब्रह्मज्ञानी न होते तो आपही सत्यलोकको कैसे जा सकते थे? सारे सिद्धोंमें इनकी श्रेष्ठता कैसे होती ? यथार्थमें उन्हें ईश्वरी विद्या प्राप्त थी। इसीके बल वे बली थे।

दादूरामजी

दादूरामजी भी कबीर साहबके मुख्य शिष्योंमें थे, जबतक संसारमें रहे तब तक सत्यगुरुके अनुगृहीत होते हुए कृतज्ञ रहे। उनके सिधारनेके बाद उनके अनुयायियोंने वही काम किया जो नानक साहबके शिष्योंने किया है। उन लोगोंने कबीर साहबका नाम छोड़ दिया। सत्यगुरुका नाम छोड़तेही सत्य-पुरुषकी उपासना और स्वसंवेदकी शिक्षा उनसे पृथक् होगई। वे लोग स्वयम् सत्यगुरुका नाम छोड़कर अन्धकारमें चलते हुए भांति भाँतिकी उपासना करने लगे। जहाँ जहाँ कबीर साहबका नाम और श्रेष्ठता थी उसको छोड़कर अपने

आप अपने पैरपर कुल्हाड़ा मारते गये। सत्यगुरुके नामसे उनको घृणा होने लगी-जहाँ कबीर साहबका नाम देखते उसी ग्रंथको पसन्द न करते। कालपुरुषने उनकी बुद्धिपर ऐसा परदा डाला कि, उनको तनिक भी सुधि नहीं रही, सत्य-गुरुके नाम छिपानेमें ही प्रसन्न होने लगे। दादूराम स्वयम् सत्यगुरुसे बड़ा प्रेम रखते थे। सुतराँ गरीबदासजीकी बाणीमें लिखा है कि, दादूरामजी एक दिवस अपनी सभामें बैठे थे तब लोगोंसे पूछा कि, इस सभामें ऐसा भी कोई है जिसने कबीर साहबका दर्शन किया हो? उस समय एक बूढा मनुष्य बोला कि, महा-राज! मैंने कबीर साहबका दर्शन किया है। उस समय श्रीदादूरामने कहा कि, यदि तुमने दर्शन किया है तो मुझको सत्यगुरुका रङ्गरूप बतलाओ? वह बूढा विवरण करने लगा कि, जब मैं छोटा बालक था, तब मेरा दादा कबीर साहबके दर्शनोंको जाया करता था, मैं भी अपने दादाकी उँगली पकड़कर उसके साथ जाता, जब मुझे कबीर साहबका दर्शन होता था उस समय मैं कबीर साहबकी शरीरकी ओर देखा करता था। साहबकी देह ऐसी जान पड़ती थी जैसे स्वच्छ दर्पण हो, उसके आर पार दिखाई देता था, दृष्टि रुकती नहीं थी। स्वच्छ काँचमें तो दृष्टि रुकभी जावे पर कबीर साहबका शरीर दृष्टिको तनिक भी नहीं रोकता था। यह बात सुनकर दादूरामने जान लिया कि, इस बूढेने निश्चय कबीर साह-बका दर्शन किया है। तब दादूरामने एक जलसे भरा बर्तन मँगवाया और उस बूढेकी आँखें धोईं उस जलको आप पीकर सभी सभासदोंको पिलाकर कहा कि, धन्य वे आँखें हैं जिन्होंने सत्यगुरुका दर्शन किया। ऐसी देह इस पृथिवीमें न किसी दूसरेकी है न होनी है वे तो एक केवल कबीर साहबही थे उसी समयकी दादूरामजीकी यह साखी है कि-

"जिन आँखन गुरु देखिया, सो किन पीवे धोवे।" कबीर साहबका शरीर नहीं था। वह एक केवल कौतुक था जिससे कि, शरीर दिखाई देता था। समस्त स्वसंवेदका यही कथन है कि, कबीर साहब विदेह हैं। उनकी देह केवल देखने मात्र है वास्तवमें नहीं है।

गोपालदास दादूपन्थी कृत दादूरामजीकी जन्म साखीके पहले विश्रामके अनुसार दादूरामजी सम्वत् १६०१ विक्रमीमें उत्पन्न हुए जब ग्यारह वर्षके हुए तो उनको कबीर साहब बूढे के स्वरूपमें मिल गये। उस समय दादूराम लड़कोंके साथ खेल रहे थे। बूढे बाबाने उनसे एक पैसा माँगा, दादूरामने पैसा, लाकर उसी समय दे दिया। उस पैसेका बूढे बाबाने पान मँगवाकर खाया. पीछे दादूरामजीसे पूछा कि, इस पानकी पीक कहाँ डालूं। दादूरामने कहा कि, मेरे

मुंहमें डाल दीजिये। बूढ़े बाबाने पानकी पीक दादूरामके मुंहमें डाल दी। उस समय दादूरामका हृदय स्वच्छ तथा प्रकाशित हो गया; कबीर साहब अन्तर्धान हो गये। जब पहले कबीर साहब मिले तब दादूरामने पूछा कि, आपकी क्या जाति है? कहाँ रहते हो? क्या नाम है? कबीर साहबने उत्तर दिया कि, मेरी जात पाँत कुछ नहीं मैं सब स्थानोंमें रहता हूँ, बूढन मेरा नाम है। जो मुझसे प्रेम करता है वही मुझको पाता है, दूसरा नहीं।

सातवर्षोंके पीछे दादूरामको सत्यगुरु फिर दिखाई दिये, दादूरामका काम पूरा कर दिया, पीछे दादूरामका धर्म्म पृथिवीपर प्रचलित हुआ लोग उनके उपदेश ग्रहण करनेको आने लगे, उनकी बड़ी कीर्ति होगई; बूढ़ा बाबा दादूरामका प्रसिद्ध गुरु हुआ।

गुरुदेव अङ्गकी साखी दादूराम वचन

सामरमें सद्‌गुरु मिले, दिये पानकी पीक।
बूढा बाबा जस कहे, यह दादू की सीख॥
मेरे कन्त कबीर है, वर और नहिं वरिहौं।
दादू तीन तिलाक है, चित्त और न धरिहौं॥

गोपालदास दादूपन्थी कृत दूसरा विश्राम

दादूरामको जन्मसाखी

तीजे पहर निकट भई सांझा। खेलत हते सो लडकन मांझा॥
बीते जबहि एकादश बरसू। बूढा रूप दियो हरि दरसू॥
साखी–दादू पूछे देव तुम, कौन सो जात कहाव।
बूढा जाति न पाति है, प्रीतिसे कोई पाव॥
चौ०–परम पुरुष परमेश्वरगामी। देव भये पद अन्तरजामी॥
भव संसार तरन और तारू। ऋद्धि सिद्धि मुक्ती दरबारू॥
मांग्यो आनि जो पैसा एकू। सब काहूको लियो बिबेकू॥
बालक दीन्हो बार न लाई। रीझे बाबा सब सुखदाई॥
बिगसे बाबा निकट बुलाई। सकल शरीर हाथ तब लाई॥
सरस्वति बोल दियो मुखमाहीं। राम दियो भेटे कोइ नाहीं॥
सरबस देव माथ कर दीनो। बालक बुद्धि जानि नहिं लीनो॥
एक बुंद पग ऊपर आई। चरणों लागि मुक्ति होय जाई॥
रहे जो सात बरस घर माहीं। फिर दियो दरस निरञ्जन राई॥
कर उपदेश भय अन्तरधाना। तब स्वामी प्रगटे ज्यों भाना॥

जहाँ व्यवपार पिताकर भाई । स्वामी हरिको भक्ति चलाई ॥
छाड्यो देश तज्यो घरबारा । स्वास उसास भजैं करतारा ॥
पुनि सामरको कियो पयाना । बाढी प्रीत विरह अधिकाना ॥
पारब्रह्म ते तारी लागी । गुप्त ज्योति उर अन्तर जागी ॥
झिल मिल नूर तेज निज देखी । जीवन जन्म भो सुफल विशेखी ॥
उपजा अनुभव ज्ञान अपारा । आया कबीर तुरत तेहि बारा ॥
मिले कबीर समाधि जगाई । ब्रह्मानन्द प्रकाश उगाई ॥
पदसे पद साखीसे साखी । रहनि गहनि सबही सो भाखी ॥
निर्गुण ब्रह्मको कियो समाधू । तबही चले कबीर साधू ॥
तुर्ककी राह खोज सब छाडी । हिन्दूकी करनी ते न्यारी ॥
षट् दर्शन से नाहीं सङ्गा । निसिदिन रहे रामके रङ्गा ॥
स्वाँग भेष पछ पंथ न मानी । पूरण ब्रह्म सत्य कर जानी ॥
देवी देव न पूजा पाती । तीरथ व्रत न सेवा जाती ॥
हिन्दू तुर्कन झगडा कीन्हों । सब काहूको उत्तर दीन्हों ॥

दादूरामजीके ग्रंथों तथा जन्मसाखियोंको देखकर साराहाल मालूम हो जायगा ।

मुझको स्मरण होता है कि, लगभग आठ दस वर्ष बीते होंगे कि, एक मनुष्य मुझसे कहता था कि, अभी मैं दादूरामजीका दर्शन कश्मीरके पर्वतमें करके ही लौट रहा हूं। परन्तु दादूपंथियोंने भी यथाशक्ति कबीर साहबका नाम छिपानेमें कुछ भी उठानेमें बाकी नहीं छोड़ा है ।

शिवनारायणदासजी

शिवनारायणदासजी जातिके राजपूत कसबा चन्दबारा, (परगना जफर आबाद जिला गाजीपूर सूबा इलाहाबाद) के रहनेवाले थे। अंग्रेजी[1] अधिकारके आरम्भकालमें सत्यगुरुका प्रताप शिवनारायणदास पर प्रगट हुआ, उनके हृदयमें प्रकाश फैल गया, उनका पंथ ससार में प्रचलित हुआ, उन्होंने कई एक ग्रंथभी बनाये थे, जो उनके शिष्योंमें विद्यमान हैं ।

अगहन सुदी त्रयोदशी शुक्रवार सम्बत् १७९१ विक्रमी में शिवनारायणदासको सत्यगुरु मिले । उनसे पूछा कि, आपका क्या नाम है । तब सत्यगुरुने कहा कि, मेरा नाम दुःखहरण है। जो कोई दुःखहरणका दर्शन पावेगा उसका

१ अंग्रेज लोग उसी समयसे भारतवर्षमें अपनी कला, कौशल और व्यवहारादि जमाने लगे थे, पर उस समय इनका राज्य नहीं हुआ था।

दुःख दर्द सब अवश्यही मिट जावेगा वह, बड़ा भाग्यवान् होगा। उसी दिनसे दुःखहरणजी शिवनारायणदासजीके गुरु प्रसिद्ध हुए।

शिवनारायणी लोग इस बातको कि दुःखहरण कबीर साहबका ही नाम है, भलीप्रकार जाननेपर भी कबीर साहबको बिलकुल नहीं मानते। यहाँतक कि, यदि कोई उनसे कबीर साहबको शिवनारायणदासका गुरू कहदे तो उससे बहुत द्वेष करने लगते हैं। वे लोग सत्यगुरुके नामसे ऐसे भागते हैं जैसे कि, दोपहर दिनके प्रकाशसे छुछूंदर भागता है। जिस प्रकार चोर जिस धनीका माल चोरी करता है, उसको देखकर उसका नाम सुनकर भागता और अपना प्राण बचाता फिरता है, उसी प्रकार वे सत्यगुरुसे भागते हैं। यदि उनसे कोई पूछ दे कि, शिवनारायणदासका गुरु कौन है ? तो वे उत्तर देते हैं कि, वो स्वयं परमेश्वर हैं, कोई कहता है कि गुरुका नामही दुःखहरण है पर उनसे कोई पूछ दे कि, दुःखहरण कहाँ रहता है ? तो निरुत्तर हो जाते हैं। जैसे कि, नानक साहिबका जिन्दा तथा दादूरामजीका बूढा है उसी तरह शिव नारायण दासजीका भी गुरु दुःखहरण है। शिवनारायणी लोग परवाना बन्दगी आदि तो कबीर पन्थियों जैसे करते हैं पर कबीरको गुरु नहीं मानते। यही कारण है कि, यह पन्थ वाममार्गियों जैसा हो गया है, इसमें अच्छे पुरुषोंकी संख्या कम है। प्रायः नीच जातिके लोग बहुत हैं। इनके आचार व्यवहार विचारने योग्य है। जब कुष्टम ऋषि जैसे तेजस्वी पुरुषोंकी दशा, गुरु अवज्ञाके कारण भयंकर हो जाती है तो इन लोगोंकी न जाने कौनसी दशा होगी।

पाँप दास

जि. बिजनोर धामपुर नगीनामें पाँपदासजीका जन्म हुआ था, कबीर साहिबकी कृपासे इनका पन्थ प्रचलित हुआ। इस मतके लोग कबीर साहिब और पाँपदास दोनोंके ग्रन्थ रखते हैं। मेरठ दिल्ली सरधना आदिमें इनका पन्थ फैला हुआ है पर इस पन्थकी अधिक उन्नति नहीं हुई है, इस मतके लोग साखी पढते हैं तथा भजन आदि अपने पन्थके नियमके अनुसार करते हैं।

राधा स्वामी

इस मतके प्रवर्तक मुंशी शिवदयालु आगरेके डाक मुंशी थे इनका जन्म भाद्र. व. ८ सं. १८७५ सन् १८१८ में पन्नागली नामके मुहल्लेमें हुआ था। ये बालकपनसेही ज्ञानकी बातें किया करते थे। इन्होंने १५ वर्षतक अपने मकानके एक कोठेपर बैठकर सुरति शब्दका अभ्यास किया था। इन दिनोंमें ये घरसे न तो बाहिर निकलते थे एवं न नित्य क्रियाकी ओर ध्यान ही देते थे। १९१७

विक्रमी में इन्होंने उपदेश देना आरंभ किया। ये ही पीछे राधास्वामी नामसे प्रसिद्ध हुए।

मतका सार

इनके मतमें तीन चीज बहुत जरूरी हैं १ गुरु, २ नाम और तीसरे सत्संग उत्तम होना चाहिये। ये तीनों चीजें ही मुक्ति पथको देनेवाली हैं। गुरु सच्चा और पूरा होना चाहिये। दूसरे नाम भी ऊँचा और सच्चा होना चाहिये। सत्संग भी अच्छा और सच्चा होना चाहिये इनके यहाँ अन्तरंग और बहिरंग भेदसे सत्संग दो तरहका होता है। अन्तरंग सत्संगका यही स्वरूप है कि, अपने आत्माको सत्यपुरुषराधास्वामीके चरणोंमें लगा दे। बहिरंग सत्संग सच्चे साधुओंका संग करना है। इस मतमें शब्दकोही सृष्टिका रचयिता मानते हैं तथा शब्द और सुरतिकोही ये ईश्वर कहते हैं।

इक्कीसवाँ हिदायतनामा

सारवचन पृष्ठ ३८९ के इक्कीसवें राधास्वामी वचनमें समस्त स्थानोंको हाल लिखते हैं नासूत[1], मलकूत[2], जबरूत[3], और लाहूत[4] का विवरण करके हाहूतका उल्लेख करते हुये राधास्वामी कहते हैं कि, इस हाहूत[5] स्थानका विवरण सन्त जानते हैं अधिक खोलना उचित नहीं समझता। बहुत कालतक उसका भ्रमण मैंने किया। फिर गुरुओंकी आज्ञासे मेरी आत्मा आगे चली।

अब इस स्थानपर मेरा एक आक्षेप है। उसपर सब बुद्धिमान तथा दूर-दर्शी महाशय गौरके साथ ध्यान दें, कि, जो मनुष्य गुरुको अस्वीकार करता है वो फिर क्यों लिखता है कि, मेरी आत्मा गुरुके आदेशसे आगे चली ? भला जी ! जिसके गुरुही न हो उसको किसके गुरुकी आज्ञा मिलेगी, अपने तो गुरु है ही नहीं, दूसरेके गुरुको गुरु कहते बन नहीं पडता क्योंकि, दूसरेके गुरुको क्या गरज पड़ी है कि, वह सहायता करता हुआ मार्ग दिखावे ?

अतः इस स्थानपर उनका वचन मिथ्या हुआ उनका गुरु तो अवश्य है परन्तु उसको वे नहीं मानते। जान पड़ता है कि, या तो अपने गुरुका नाम लेनेमें उन्हें घृणा है या अपनी कुल मर्य्यादाका ध्यान आगया है या यह विचार होगा कि, मेरी श्रेष्ठता तथा बड़प्पनमें बाधा पड़ेगी, किंवा मेरा गुरु तुच्छ है। मैं बड़ाही प्रसिद्ध हूँ। मेरी मान भड़क और चमक दमकमें कुछ हानि होगी। उस गुरुका नाम होगा मेरा न होगा।

फिर देखो पृष्ठ ३९३ आतमा अर्थात् सुरति आगे चली। जब उस मैदानके पार पहुँचतेही सत्यलोकका नाका मिला। भलाजी ! बडी २ और २

१ जागत्, २ स्वप्न, ३ सुषुप्ति, ४ तुर्या, ५ तुर्यातीत या पूर्वोक्त लोक।

किताबोंकी तो वहाँतक पहुँचही नहीं, कबीर गुरु तथा स्वसंवेदके अतिरिक्त सत्यलोकका कोई हाल नहीं जानता, फिर आपको और किस गुरु तथा शास्त्रके अनुसार सत्यलोकका नाका प्राप्त हुआ ? उनका कथन है कि, सत्यपुरुषका दर्शन पाया, वह तेजपुञ्ज था उसके एक बालके तेजमें करोड़ों सूर्य्य और चन्द्र छिप जाते थे। सो इस सत्यपुरुषका दर्शन करानेवाले कौन गुरु हैं ?

फिर ३९४ पृष्ठमें लिखा है कि, एक पद्म पालङ्ग सत्यलोकका घेरा है। एक पालङ्गकी गिनती ऐसे करते हैं कि, यह तीन लोक एक पालङ्ग है। यह बनावट सरासर कबीर साहबके विरुद्ध है। कबीर साहबका कथन है कि, ये तीनों लोक छः पालंगके फैलावमें हैं, एक पालंगमें कदापि नहीं है। हजरतको पालंगकी भी हद्द मालूम नहीं। यदि कबीर साहबके ग्रन्थको देखकर पूरी नकल उतारते तो भी ठीक होता, अटकल पच्चू जो याद आया सो लिखते गये। कुछ शुद्धाशुद्धका भी ध्यान नहीं रखा। यदि पालंगका हिसाब अशुद्ध ठहरा तो सत्यलोकके फैलावका वर्णन झूठ है। जो कुछ उसने लिखा है तो सब कृत्रिम है जैसे गुरु हैं वैसेही शिष्य लोग हैं उनके विचारोंमें ये बात नहीं उपस्थित हुई कि, बिना गुरुके अगमका समाचार कौन कह सकेगा ? यह वही जाने।

पहलेही उन्होंने स्वीकार कर लिया है कि, मुक्तिके लिये १–गुरु, २–नाम ३–सत्सङ्ग; इन तीन वस्तुओंकी आवश्यकता है। भलाजी ? जो स्वयम् निगुरा होगा, उसके मतानुयायी किस तरह गुरुमुख हो सकेंगे ! हाँ यह तो ठीक है कि, आमके वृक्षसे आम, कटहलके वृक्षसे कटहल, अमृतके वृक्षसे अमृत, विष वृक्षसे विषही फल लगेगा। अतः जो स्वयम् निगुरा होगा उसके अनुयायी भी निगुरे ही होंगे। हाँ शिष्य तो अपनेको गुरुमुख मानेंगे परन्तु निगुरेके उपदेशसे कभी भी मुक्ति नहीं हो सकती।

इस पन्थमें बहुत थोड़े लोग हैं। इसकी विशेष उन्नति नहीं हुई है। राधास्वामीके मतानुयायी लोग कबीर साहबके ग्रंथ पढ़ते हैं। तथा उनकी लिखावट कबीर साहबके अनुसार है। जहां उन्होंने कबीर साहबके विरुद्ध अपनी बनावट की है वो स्पष्ट जान पड़ती है। उनके ग्रंथोंमें सब बातें स्वसंवेदकी हैं पर कबीर गुरुसे विमुख हैं। राधास्वामी अपनी उपदेश पुस्तकके दूसरे भागमें स्वयं लिखते हैं कि, ब्रह्माको जब कबीर साहबने समझाया तब उसको सत्यपुरुषके खोजनेका उत्साह हुआ पर काल पुरुषने भ्रमित कर दिया फिर जीवमें क्या सामर्थ्य है जो कि, सत्यगुरुकी दया बिना सत्यपुरुषके दर्शनको पा सके।

इसपर मुझको यह कहना पड़ता है कि, जिस अवस्थामें ब्रह्मा ऐसे ज्ञानी

जिन्हें साक्षात् बुद्धि स्वरूप कहते हैं जिनकी कि, सन्तान सब मनुष्य हैं। सब ज्ञान उन्हींसे प्रगट हुआ है जब उन्हींको काल पुरुषने बहकादिया कि, सत्यपुरुष का दर्शन न पावें, तो क्या कालको यह सामर्थ्य न थी कि, राधास्वामीको बहका दे कि, तू अपने गुरुसे विमुख हो जा, जिससे तेरे साथ तेरे शिष्यगण भी मेरे जाल में फँस फँसकर जन्म मरण पावें ।

यह राधास्वामी अपने ग्रंथमें अपनेको ही सत्यपुरुष मानते हैं । भलाजी ! यदि वे स्वयम् सत्यपुरुष थे तो पन्द्रह वर्षतक किसका भजन करते रहे, बिना गुरु के नाम किसने बतलाया ? किसने अभ्यास करना सिखाया ? उनके जितने लेख हैं, वे सब कबीर साहबके ग्रंथोंकी नकलें हैं, सिवाय इसको और कुछ नहीं; हां ! कहीं उनकी बनावट भी मिली हुई हैं। सत्यनाम तथा सार शब्दका उपदेश कबीर साहबके बिना और किसने दिया, अन्य कौन है कि, जो सत्यपुरुषकी भक्तिका समाचार देसके ? क्योंकि कबीर साहबको छोड़कर बाकी सब अनभिज्ञ हैं ।

सत्यपुरुषके पुत्रोंमें सबसे पहला पुत्र निरञ्जन है । जिसने अपने आपको सत्यपुरुष बना, सत्यपुरुषका नाम छिपाया । इसके पीछे और भी बहुत हो गये हैं । वर्तमान कालमें विमुखोंमें प्रसिद्ध गुरुविमुख राधास्वामी जी महाराज हैं ।

राय शालिग्राम[1] साहब राधास्वामीके शिष्य थे जो इस समय अपने स्वर्गवासी गुरुके स्थानापन्न हैं उन्होंने "सैर आलम् फिजा" नामक पुस्तकमें इस प्रकार लिखा है कि, मैं लाहूत स्थानपर पहुँचा, वहांकी सब शोभा देखी, अदली कबीर मेरी आत्माको उस स्थानपर लेगये फिर गुरुकी आज्ञासे आगे चलते चलते सत्य लोकका नाका मिला । यह "सैर आलम् फिजा" राय शालिग्राम कृत संसारकी सैरका वृत्तान्त मैंने हस्तलिखितपुस्तकके रूपमें देखा था । उसमें तो इतनाही पता मिला । अस्तु, इतना भी धन्य है कि गुरुसे सर्वथा विमुख होनेपर भी चेला कृतज्ञ होकर इतना तो स्वीकार करता है । इस प्रकार कालपुरुषने सबकी बुद्धिपर आवरण डाल दिया है जिससे सब मनुष्य सत्यगुरुसे विमुख होकर कालके जालमें फँस गये हैं ।

ये राधास्वामीजी सब गुरुविमुखोंसे बहुत बड़े हैं कारण कि, इन्होंने स्वयम् ही गुरुसे विमुखता की है । सबमें प्रथम श्रेणी निरञ्जनकी है कि, उसने सत्य पुरुषका नाम छिपाकर अपनेको स्वयम् ही सत्यपुरुष करके प्रगट किया, इसके अतिरिक्त जितने विमुख मनुष्य हैं । सभी निरञ्जनकी चालके और उसीके रूप

---

१ राय शालिग्राम साहब १८९६ सालमें मृत्युको प्राप्त हुए, बाद उनकी गद्दीपर उनके शिष्य ब्रह्मशंकर बैठे थे ।

के हैं । सब विमुखों तथा अकृतज्ञोंका एक ही ढङ्ग है । सब अपने नाम तथा प्रभुता के इच्छुक हैं । कबीर साहबने धर्म्मदाससे कहा है कि, हे धर्म्मदास ! यदि तू मुझ को चाहता है तो तू अपनी मान बड़ाईको त्याग दे, इस संसारसे कोई सम्बन्ध मत रख । धर्मदासने वैसाही किया, जिससे वो सत्यगुरुका स्थानापन्न हो गया । उनके वंशको सत्यगुरुने गुरुवाई प्रदान की ।

जितने गुरुविमुख तथा अकृतज्ञ हैं उनका छुटकारा होना जरा असम्भव है । आदिसे अन्ततक कभी भी गुरुकी अकृतज्ञता करेगा तो फिर कालके बंधनमें निश्चय ही पड़ेगा । उसकी कदापि मुक्ति न होगी, न कोई उसकी सहायता ही करेगा । यही बात इस साखीमें लिखी हुई है कि–

साखी–गुरु सीढीते ऊतरे, शब्द विहूना होय ।
ताको काल घसीटि है, राखि सकै नहिं कोय ।।

इस कारण गुरुका धन्यवाद और स्तुति सदैव करना चाहिये । क्योंकि, गुरुको छोडते ही सार रहित होजाता है, इसी बातको विस्तारके साथ इस नमन में कहते हैं–

हम[1]लके बीचमें झूला[2] । हुआ जब ताप[3]का शूल[4] ।।
जले ज्यों[5] घासका पूला[6] । गुरूका शुक्र[7] क्यों भूला ।।
हमल मादर[8]में जब सोया । पडा दुःख दर्दसे रोया ।।
वहाँकी अक[9]ल क्यों खोया । गुरूका शुक्र क्यों भूला ।।
वहां गुरूसे किया वादा[10] । सो भूला पापसे लादा ।।
यहाँ माँ बाप और दादा । गुरूका शुक्र क्यों भूला ।।
य[11]हाँ दर हाथियाँ डोलें । जवा[12]नों पर्बतां तौलें ।।
न उन[13]के नामको बोलें । गुरूका शुक्र क्यों भूला ।।
किया दावा खुदा[14]ई का । अमल हल्मो जुदाईका ।।
खबर बिन बे अदाईका । गुरूका शुक्र क्यों भूला ।।
रहे महरूम[15] सो सबसे । भुला एहसान गुरू जबसे ।।
त[16]नासुखमें पडा तबसे । गुरूका शुक्र क्यों भूला ।।
गुरूका आसरा करके । सरेआजिज गुरू चरणधरके ।।
गुन[17]ह बख[18]शो मेहर[19]करके । गुरूका शुक्र क्यों भूला ।।

---

१ पेट, २ घबडाकर हला, ३ जठराकी तापिस, ४ दर्द, ५ जैसे, ६ पूली, ७ मिहरबानी, ८ माता, ९ ज्ञान, १० इकरार, ११ इस लोकमें, १२ जीभसे, १३ भगवान्‌के, १४ ईश्वर होनेका, १५ जुदा, १६ आवागमन, १७ अपराध, १८ मुआफ करो, १९ दया ।

गुरुके कृतज्ञोंकी प्रशंसा जिस प्रकार स्वयम् कबीर साहब तथा सब ऋषि मुनि करते आये हैं उसी प्रकार गुरुके अकृतज्ञोंकी दुर्दशा का भी वर्णन किया है। इस विषयमें एक उदाहरण देता हूँ कि, किसी समय एक भङ्गिन गोमांसको मदिरा में पका, गन्दे बरतनमें रख शूकर के रक्तसे रँगे हुए वस्त्रसे ढँककर लिये जाती थी ? उससे किसीने पूछा कि, ऐ भङ्गिन ! तू क्या लिये जाती है ? उसने उत्तर दिया कि, गोमांस मदिरामें पका हुआ है, उसको शूकरके रक्तसे रंगे कपड़ेसे इस भयसे ढांके लिये जाती हूँ कि, कदाचित् किसी गुरुविमुखकी दृष्टि न पड़ जावे। इस पर उसकी दृष्टि पड़नेसे मांस अपवित्र होकर भस्म होजावेगा। अकृतज्ञ गुरुविमुख शास्त्रोंमें ऐसाही पतित समझा जाता है कि, ऐसी अपवित्र वस्तुको भी उसकी नजर लग जाय।

कबीर साहबने रामानन्दस्वामीसे कहा कि—"गुरु मेटे सो आहि चँडारा। भरमें योनि अनन्त अपारा" कितने लोग तो ऐसे हैं कि, पहले बड़ी आधीनताके साथ विनीतभावसे गुरूकी सेवा कर अपना काम निकाल लेते हैं पीछे गुरूकी बात भी नहीं पूछते। गुरुके नामपर धूल डालकर संसारमें अपनी श्रेष्ठता और यश प्रकाशित करते हैं। ऐसे शिष्योंके विषयमें सन्देह है कि, उनसे गुरु अर्पित अमूल्य पदार्थ कहीं छीन न लिया जाय जिससे वे खालीके खाली रह जाये। यह कथन कबीर साहबका है कि, गुरुका उपकार कभी भी न भूलना चाहिये। यदि गुरुकी कृतज्ञता स्वीकार न करेगा तो अन्तःकरण अशुद्ध हो जावेगा। गुरूकी अकृतज्ञता तथा गुरुविमुख होनेका फल अन्तर वा बाहर सब प्रकारसे प्रगट होगा। गुरु विमुखोंकी बड़ी दुर्दशाएं होती हैं।

घीसाजी

अभी कुछ दिनोंसे एक घीसा पन्थ भी चला है। कबीरपन्थसे निकला हुआ सुनते हैं। इनका विशेष विवरण अभीतक मेरे पास नहीं पहुँचा है। इस कारण नाममात्र लिख दिया है। यह पन्थ कहीं दिल्लीके समीप सुना जाता भी है। इसके बहुतसे साधु तथा गृहस्थ अनुयायी हैं। मुझ दीनकी जिह्वा तथा लेखनी में इतनी सामर्थ्य नहीं है कि, कबीर साहबके हंसोंको प्रशंसा व बड़ाई कह अथवा लिख सकें पर जो कुछ होसका है विशुद्ध श्रद्धासे किया है। कबीर साहबके अनन्त हंस हैं, उनके अनन्तही पन्थ हैं, करोड़ों असी ब्रह्माण्ड हैं, जिसमें हंस कबीर ईश्वरीय शासन कर रहे हैं, वे सब सत्यगुरुके आज्ञाकारी हैं. किसीकी सामर्थ्य नहीं कि, साहबसे विमुखता कर सके। जो कोई साहबकी आज्ञाके विरुद्ध कार्य्य करता है वो तत्कालही ऐसा दण्ड पाता है कि, फिर कभी उसे कुछ करनेका साहस नहीं हो।

अध्याय १६.

आद्या और निरञ्जनपर जीत

आद्या और कबीर

जितने अभिमानी और अहंकारी हैं उन सबमें बढ़कर आद्या तथा निरञ्जन हैं। आद्याका दूसरा नाम आदिभवानी है। इसे कोई कोई विज्ञजन प्रकृति कहकर भी याद करते हैं, जब ये बहुत अभिमानमें आयीं एवं सत्यपुरुषको भुलाकर निरञ्जनके साथ प्रसन्नता पूर्वक रहने लगीं, संसारमें विशेष अन्धेर होने लगा तो सत्यपुरुषकी आज्ञा हुई कि, हे ज्ञानीजी! तुम जाकर आद्याको समझाओ। क्योंकि, वह बहुत अभिमानी भी होगई है, एवं बहुत जीव हत्या करती हैं। इस बातपर ज्ञानीजी सत्य पुरुषको नमस्कार करके चल दिये और प्रकृतिको जीत कर दिखा दिया। यह प्रकरण अम्बुसागरके नवम तरंगमें लिखा है कि—कबीर साहिब धर्मदासजीको सुनाते है कि, मुझे सत्यपुरुषने आज्ञा दी कि, आद्या जीवोंकों सता रही है इस कारण तुम आद्याके पास जाकर आद्याको समझा दो। सत्यपुरुषकी आज्ञाके अनुसार कबीर साहब आद्याके धामपर गये। द्वार पर खड़े होकर द्वारपालोंसे कहा कि, आदिभवानी से मेरा आनेका समाचार कहो। द्वारपालोंने आद्याको समाचार दिया, उसने कबीर साहबको अपने दरबारमें बुलाया। जब साहब भीतर गये तब आद्याने पूछा कि, आप कौन हो कहांसे आये हो? तब कबीर साहब ने उत्तर दिया कि, मैं सत्यलोकसे आया हूँ और सत्यपुरुषने मुझे तुम्हारे पास भेजा है, क्योंकि, संसारमें तुमने बड़ा अत्याचार तथा अन्धेर मचा रखा है। जब (दुर्गापूजा) दशहरा आता है तब भैंसा बकरा आदि कटवाती हो भांति भांतिके फन्दे लगाकर मनुष्यको तुमने बन्धनमें डाल दिया है। तेरे फंदेमें फँसकर सब जीव मरते और दुःख पाते हैं। मूर्ख तथा बुद्धिहीन मनुष्य सत्यगुरुके शब्दको न मानकर तेरी फाँसीमें पड़ते हैं। तू सत्यगुरुकी चोर है। मैं तुझको बाँधकर एक पलमें रसातल भेज दूँगा, यह सुनकर देवी कहने लगी कि—

चौ०—कह देवी तू कैसे बोले। शक्ति हमारी घर घर डोले॥
पुरुष तुम्हार मैं नहिं डरऊँ। तीनों लोक पाँव तर धरऊँ॥
तुमको मारूँ चाँपू हेठा। तीन लोक पसरी मम डेठा॥
ब्रह्मा विष्णु हाथ सब मोरे। शिव सनकादिकके बल तोरे॥
चौसठ लाख कामिनी होई। मेरे सङ्ग विचर सब सोई॥
तुम्हरे हंस कहाँ चलि आवा। केहि कारन तोहि पुरुष पठावा॥

नाम गुमान करो शठहारा । हमरे चित डर नाहिं तुम्हारा ॥
हाथ खप्पर मम भुजा अनन्ता । अपने वश कीन्हें भगवन्ता ॥
हम पर धनी और नहिं आना । तीन लोक मम नाम बखाना ॥
तुम कह गर्व करो रे भाई । कहो तो लोक मैं देउँ खँसाई ॥
तुरतहिं रूप अनेकन धारूँ । लोक तुम्हार रसातल डारूँ ॥

शठिहार वचन

कह शठहार सुनो हो माया । कहा तोर मति गई भुलाया ॥
जादिन आदि अन्त नहिं जोती । ता दिन कहो कहाँ तुम होती ॥
पुरुष अकार कहो जिन जानी । शब्द डोर तोहिं बाँधो तानी ॥
कामिनि तोहिं करौं जर छारी । सकल हंसको लेउँ उबारी ॥
आदि पुरुषको तू कस मेटै । छोड़ै पुरुष काल उर भेटै ॥
अस जनि जानो सकल हमारा । देव आप होइहो जरि छारा ॥
हम तो सत्यलोक ते आवा । देवी तुम्हारो ज्ञान हिरावा ॥
पुरुष कीन्ह तोहि तब तुम भयऊ। तीनों लोक बख्श तोहि दयऊ ॥
तुम जानी मैं आपन कीन्हा । पुरुष नामते नहिं चित दीन्हा ॥
अलख निरञ्जन देवी राता । बिधि हरिहर कहँकरिहैं बाता ॥
महा प्रलय आवैं जेहि बारा । तब जरबर होई है सब छारा ॥
तीन लोक परलय तर जाई । तब तुम आद्या कहाँ रहाई ॥
उनसे तू कर कौन गुमाना । जाकर चलैं जगतमै पाना ॥
आदि पुरुष तुमरो है ताता । आद्या भयो निरञ्जन भ्राता ॥
ताहि तातको छोड़ेउ संगा । भ्राता जार कीन्ह अरधङ्गा ॥
ताहि रङ्गत गयी भुलाई । छोढ्यो पुरुष जार मन लाई ॥
निशिवासर कीन्ह्यो यह नेहा । कामरूप कामिनि मत येहा ॥
तुच्छ बद्धि नारी तुम बाना । यही चाल जगनारि समाना ॥

देवी वचन

यह सुनि माया बहुत लजाई । धरि सिंहासन तब बैठाई ॥
बचन हमार सुनो शठिहारा । नाम जपे सो हंस उबारा ॥
हमतो पुत्री पुरुष की आहू । शब्द डोरि हंसन ले जाहू ॥
जो कोई नाम तुम्हार सुनाई । शीश हमार पावँ दे जाई ॥
चौसठ युग हम सेवा कीन्हा । पृथिवी बख्श मोहि प्रभु दीन्हा ॥
तीन लोक मैं मर्यो माना । किमि हंसा कर लोक पयाना ॥

शठिहार वचन

कह शठिहार सुनो तुम बाता । सकल जीव तुम कीन्हो घाता ॥
जो कोई जीव हमारा होई । ताके निकट जाहु जिन कोई ॥
जा घट शब्द हमार समावे । ताघट काल निकट नहिं आवे ॥

देवी वचन

तात वचन लीन्हे शठिहारा । को मेटे यह वचन अपारा ॥
हट करि वचन मेटि मैं डारा । तो हम होब लोकसे न्यारा ॥
जीव जो पुरुष नाम ते राता । ताहि हंस नहिं बोलब बाता ॥
एक तुम्हार पान जो पाई । देवी देव देख शिर नाई ॥
भीतर करनी बहुत गुमाना । ताकर जीव करब हम हाना ॥
गुरुसे मन चित अन्तर राखा । साधु सन्तसे दुरमति भाखा ॥
सो जिव हमरे खपर पराई । बार बार चौरासी जाई ॥
नाम तुम्हार कोई नहिं जाना । सकल जीव हमही लपटाना ॥
मुक्ति युक्ति सब भाखत प्रानी । मुक्ति नाम परवाना जानी ॥
मो कहँ और न जानौ दूजा । निशिदिन हम चित तुम्हरो पूजा ॥
सार नाम जिन पाय तुम्हारा । सो तो पहुँच पुरुष दरबारा ॥
ताहि जीव हम रोकब सोई । द्रोही पुरुष केर जो होई ॥

शठिहार वचन

विश्वायुग यह चरचा कीन्हा । पान रतन जीवन को दीन्हा ॥
तुरी बराबर नरियर जाना । चार हाथ लम्बा रह पाना ॥
दुई हाथकी रही चकराई । ऐसे युग हम पान चलाई ॥
बीस लाख युग अयुरबल भाखा । वर्ष सहस्र मानुष तन राखा ॥
अरसठ हाथ ऊँचाई होई । ऐसे नर सकलो तब सोई ॥
सात सहस्र पाये जिव दाना । सत्य शब्द निश्चय कर माना ॥
पुरुष दरश ते जिवन कराई । देवी वचन कहा समुझाई ॥

छन्द– यह चरित्र कर शठिहार तत छिन, पुरुषको दर्शन लहे ।
कीन्ह माया वाद बहु विधि, चरण तुम निश्चय गहे ॥
विश्वयुगमें जाइके हम, हंस कीन्ह उबार हो ।
जीव सातसहस्र खाय बीडा, आय लोक मँझार हो ॥

इस ऊपरके कहे प्रकरणसे पाठक महोदयोंको यह बात सुतरां विदित **होगई होगी कि, कबीर साहिबने प्रकृतिपर किस प्रकार विजय** पाई थी ? अब

जगत्के अभिमानी यानी निरंजन पर किस प्रकार उन्होंने विजयडंका बजाया था यही बात अब यहां विस्तारके साथ लिखते हैं –

निरञ्जन गोष्ठाका संक्षेप

चौ०– अलख निरंजन निर्गुण राई । तीन लोक जिहि फिरी दुहाई ॥
सातद्वीप पृथिवी नौ खण्डा । सप्त पताल इकीस ब्रह्मण्डा ॥
सहज शून्यमें कीन्ह ठिकाना । कालनिरंजन सबने माना ॥
ब्रह्मा विष्णु और सब देवा । सब मिलि करें कालकी सेवा ॥
चित्र गुप्त धर्म वरियारा । लिखनी लिखे सकल संसारा ॥
लख चौरासी चारों खानी । लिखनी लिखैं सकल सब जानी ॥
पशु पंछी जल थल बिस्तारा । बन पर्वत जल जीव बिचारा ॥
काल निरञ्जन सब पर छाया । पुरुष नामको चिन्ह मिटाया ॥
सत्तर युग ऐसे चलि गयऊ । पुरुष सँदेश सूचित तेहि दियऊ ॥

पुरुष वचन

तबहीं पुरुष ज्ञानीसे कहेऊ । धर्म्मराय अति परबल भयऊ ॥
यह तो अंश भया बरियारा । तीन लोक जिव करे अहारा ॥
ताहि मारिके देहु ढहाई । जगजीवन कहँ लेहु छुडाई ॥

ज्ञानी वचन

साखी– करि प्रणाम ज्ञानी चले, करत हंसको काज ।
जो वह काल न मानि है, तुमहिं पुरुषको लाज ॥

चौ०– मानसरोवर जब ज्ञानी आये । काल निकट तब छेंके धाये ॥
काल कठिन गरजै बहुबारा । मस्तक साठ सुण्ड बरियारा ॥
सत्तर योजन गरजै दन्ता । परलय कीन्हें कोटि अनन्ता ॥
कान जो एक आँख चौरासी । और मुख आठ हाथ लिय फाँसी ॥
छत्तिस नाभि ताहि पुनि जाने । बोले वचन बहुत इतराने ॥
तीन दन्त पाछे कहँ फेरी । यहि विधि तीन लोक करजेरी ॥
एक दन्त पाताल चलावा । तहाँ जाय वासुकि कहँ खावा ॥
दूजो दन्त पृथ्वी चलि आई । देव ऋषी जग देत सुखाई ॥
तीजा दन्त गयो आकाशा । चाँद सूर्य्य खायो कैलाशा ॥
वेद पढत ब्रह्मा तेहि ठाँई । ध्यान करत शङ्कर तब खाई ॥
लीन्ह्यो खाय विष्णुको धाई । सकल खाय पुनि धूल उड़ाई ॥
गरजै दन्त अग्नि सम थाई । तीन लोक खाये दुनियाई ॥

ज्ञानी देखा दृष्टि पसारी । यहि ते नहीं बचे संसारी ॥
ज्ञानी बोले शब्द परचाई । तुही काल खाये दुनियाई ॥

निरञ्जन वचन

साखी—जाव ज्ञानी घर आपने, मानो वचन हमार ।
तीन लोक मोहि पुरुष दिये, स्वर्ग पताल संसार ॥

ज्ञानी वचन

चौ०—ज्ञानी बोले शब्द अपारा । मोकहँ पुरुष दीन टकसारा ॥
साखी—हम पठये हैं पुरुष को, करें हंसको काज ।
काल मारि संधार हूँ, दीन सकल मोहि राज ॥
चौ०—मारूँ काल शब्दके झारा । टूटै दन्त कबीर पसारा ॥

निरञ्जन वचन

तबै निरञ्जन बोले बानी । कैसे हंस छोडाये ज्ञानी ॥
जगके माँहि कीन हम बासा । पशु पछी सबमें मम आसा ॥
तीनसो साठ पेठ हम लाई । ताते सकल सृष्टि अरुझाई ॥
जेहि दिनते सो पेठ लगाई । दिनदिन अरुझे सरुझि नहिं जाई ॥
तापर काम क्रोध हम डारा । तृष्णा सकल जीव हम मारा ॥
इनमें जीव बँधे सब झारी । कैसे हँसने लेहु उबारी ॥
ता ऊपर कीन्हचों यक काजा । पुण्य पाप हम थापैं राजा ॥
शुभ अरु अशुभ दोइ दलसाजा । ऐसैं अलख निरञ्जन राजा ॥

ज्ञानी वचन

सत्य शब्द हम बोलैं बानी । वचन हमार छूटिहैं प्रानी ॥
गहे शब्द मम मन चित लाई । भजे काल जिव लेब बचाई ॥

काल वचन ।

तबै काल अस बोले बानी । सकल जीव बस हमरे ज्ञानी ॥
तीनसौ साठ क्षेत्र अरुझाई । कैसे जीव लेहो मुकताई ॥
गङ्गा यमुना सरस्वती जानी । पुष्कर गोदावरि छौछक्का मानी ॥
बद्दरी केदार द्वारिका ठयऊ । जहाँ तहाँ हम तीरथ लयऊ ॥
मथुरा नगर उत्तम जो जानी । जगरनाथ बैठे यमध्यानी ॥
सेतु बन्ध पुनि कीन्ह ठिकाना । पुष्कर क्षेत्र आहि यमथाना ॥
हिङ्गलाज जैसे जिव सोई । कालिका नगरकोटमें होई ॥
गढ गिरिनार दत्तको थाना । ताहि घेर यम बैठ निदाना ॥

कमरू मांहि कमक्षा जानी । नीमक्षार मिश्री यम खानी ॥
नगर अयोध्या राम हैं राजा । कहहि दैतँ बांधे सब साजा ॥
यही पैठ जग जीव भुलाई । केहि विधि जीव लेहु मुकताई ॥

ज्ञानी वचन

तब ज्ञानी बोले अस बानी । यमते जीव छोडैहौं आनी ॥
पुरुष नाम कहुँ समझाई । यम राजा तब छोडि पराई ॥
घाट बाट बैठे अरु झेरा । हमरे शब्दते होय निबेरा ॥
सुनुरे काल दुष्ट अन्याई । शब्द सन्धि हंसा घर जाई ॥

निरञ्जन वचन

केहि ज्ञानी देहु अधिकारा । हमसे नहिं छूटे यम जारा ॥
पाँच पचीस तीन गुण आई । पहले सकल शरीर बनाई ॥
तामें पाप पुण्यका बासा । मन बैठे ले हमरो फाँसा ॥
जहाँ तहाँ सब जग भरमावे । ज्ञान सन्धि कछु रहन न पावे ॥
एक शब्दके केतक आसा । हमरे हैं चौरासी फाँसा ॥

ज्ञानी वचन

बोले ज्ञानी वचन बिचारी । छूटे चौरासीकी धारी ॥
छूटे पाँच तीस गुण तीनी । ऐसो शब्द पुरुष मोहिं दीनी ॥

निरञ्जन वचन

हो ज्ञानी क्या करो बड़ाई । हमते नहीं छूटि जिव जाई ॥
इतने युग हम तुम नहिं पेखा । ज्ञानी हंस न एको देखा ॥
क्या तुम करो क्या शब्द तुम्हारा । तीनलोक परलय करि डारा ॥
साधु सन्त हम् देखा रीता । परलय परे सकल जग जीता ॥
करम रेख बांधे सब साधू । सुरनर मुनी सकल जग बाँधू ॥

ज्ञानी वचन

ज्ञानी कहैं काल अन्याई । शब्द बिना तैं खाइ चबाई ॥
अब कैसे कहिये बटमारा । पुरुष शब्द दीना टकसारा ॥
जग जीवनको लेउँ उबारी । करम रेख तोरौं धरि न्यारी ॥
तीन सौ पाँच और गुण तीनी । तेहिते हंसा लेइहौं छीनी ॥
पाँच जनैकी मेटूं आसा । पुरुष शब्द भापूं विश्वासा ॥
शुभ अरु अशुभको करूँ निबेरा । मेटूं काल सकल अरुझेरा ॥

निरञ्जन वचन

निर्गुन काल तो बोले बानी । अरुझे जीव सकल यमखानी ।।
कैसेके तुम शब्द पसारो । कौन विधि तुम जीव उबारो ।।
ऐसे जीव सकल है धरनी । कैसे पहुँचे पुरुषकी शरनी ।।
जगमें जीव क्रोध विकरारा । कैसे पहुँचे पुरुष दुवारा ।।
क्रोधी जीव प्रीति अभिमानी । धरे सो जन्म नरककी खानी ।।
लोभी होय सर्व विकरारा । माटी भखे जीव अधिकारा ।।
लोभी जन्म शूकर औतारा । कैसे पावे मुक्ती द्वारा ।।
विषया विष सब विषकी खानी । यह सब है जनमकी सहिदानी ।।

ज्ञानी वचन

ज्ञानी कहैं सुनो बरियारा । हमतो कीन सकल निर्धारा ।।
जो कोइ प्राणी होय हमारा । काम क्रोधते रहे निनारा ।।
तृष्णा लोभ सब देइ बहाई । विषय जन्म तब दूर पराई ।।
उनको ध्यान शब्द अधिकारा । काम क्रोध सब होत निनारा ।।
नाम ध्यान हंसा घर जाई । कहा दूत यम करे बडाई ।।
उनपर यमकी परे न छाहीं । ताते हंस लोकको जाहीं ।।

निरञ्जन वचन

कहैं निरञ्जन सुनोहो ज्ञानी । कथिहौं ज्ञान तुम्हारी बानी ।।
जगत महातम सबै बताई । नाम तुम्हारे पन्थ चलाई ।।
जगके जीव सभी भरमाऊँ । ज्ञानवन्तको करम दृढाऊँ ।।
मारि जीवको करूँ अहारा । कथूँ ज्ञान तुम्हरे टकसारा ।।
ज्ञान हमार रहे तन छाई । ते सब जीव काल धरि खाई ।।
कैसे जैहैं लोक तुम्हारे । ज्ञान सन्धिमें मूँदूँ द्वारे ।।

ज्ञानी वचन

ज्ञानी कहैं सुनौ बरियारा । हमरे हंस होई हैं न्यारा ।।
नाम जपै औ सुरति लगाई । मैल करम लागै नहिं भाई ।।

निरञ्जन वचन

ज्ञानी मोरा पिरियल ज्ञाना । वेद कितेब भरम हम साना ।।
यह विधि जगके जीव भुलाई । जरा मरण सब बन्ध बँधाई ।।
सूतक पातक वेद विचारा । पूछे वेद तब करैं सँभारा ।।
एकादशी मुक्तिकी माई । यो युक्ति करिबे अधिकाई ।।

ज्ञानी वचन

सुनुहो काल ज्ञानकी सन्धी । छोडे जीव सकलकी फन्दी ॥
जब निज हंसा बीरा पावै । योग युक्ति तब सबै नसावै ॥
वेद कितेबकी छोडो आशा । हंसा करैं शब्द विश्वासा ॥
योग यज्ञ तप होईहै छारा । अमृत नाम सदा रखवारा ॥
शब्द हमारे छूटे फन्दा । पहुँचे लोक मिटे यम द्वन्दा ॥
आवागमन बहुरि ना होई । काल फन्द तजि न्यारा सोई ॥

निरञ्जन वचन

ज्ञानी कहो मर्म सोई भाई । मेरो फन्द तोरको जाई ॥
कर्म्म जञ्जीर धांबि संसारा । योनी हम जञ्जाल पसारा ॥
तीन लोक योनी उतरि हैं । आवागमन फेरि फिरि परि हैं ॥
सिद्ध साधु और बड बड ज्ञानी । बाँधि बाँधि कीन्हा पिसमानी ॥
कर्म्म रेखते कोई न न्यारा । तीन देव सुर असुर पसारा ॥

ज्ञानी वचन

ज्ञानी कहें सुनु काल पसारा । करिहौं दूर जञ्जीर तुम्हारा ॥
हंसन लेइहौं तुरत उबारी । पुरुष शब्द दीना मोहिं मारी ॥
खण्ड खण्ड तोरूँ तोरवाना । मारूँ काल करूँ पिसमाना ॥
पुरुष अंश नौतम है अंशा । तेजमें प्रकट कहावै वंशा ॥
तिन्हके शरण हंस जो जाई । काटि कर्म्म सब देंहि बहाई ॥

निरञ्जन वचन

मान्यो ज्ञानी वचन तुम्हारा । हंस ले जाव पुरुष दरबारा ॥
चौदह काल काल यम मेरा । घाट वाट घेरैं सब घेरा ॥
सुरनर मुनि आवें वहि घाटा । दश औतार जाँय वहि वाटा ॥
दुष्ट जगाती बड सरदारा । विना जगात न होइ कोई पारा ॥
भव जल नदी घाट नहिं थाहू । उतरन काज किये सब काहू ॥

ज्ञानी वचन

वंश छाप जो पावें प्राणी । ताको नहिं रोके दृग दानी ॥
शब्द सार दे हंस बहोरी । तेहि चढि जाय काल मुख तोरी ॥

निरञ्जन वचन

हो ज्ञानी क्या करो बडाई । तमके काल निरञ्जन राई ॥
पाँव पताल शीश आकाशा । सोलह योजन अग्नि प्रकाशा ॥

गरजै काल महा बिकरारा । सत्रह लक्षलों पाँव पसारा ।।
लपक जीभ यम टूटे तारा । यह बिजली चमकै अधिकारा ।।
ओंठ भयावन दन्त अतिबाढा । मध्य घेर ज्ञानीको डाढा ।।
हमरो पौरुख हम बरियारा । तुम ज्ञानी क्या करो हमारा ।।

ज्ञानी वचन

ज्ञानी पुरुष शब्द कियो जोरा । पकडे दन्त मुण्ड घुमेरा ।।
मान्यो शब्द पाय कर पेले । तोन्यो सुण्ड समुन्दर मेले ।।
पुरुष स्वरूप तबहीं पुनि धारा । योनि स्वरूप काल औतारा ।।

निरञ्जन वचन

भया अधीन काल करचोरी । तुम सत्पुरुष हम अंश तुम्हारी ।।
तुमसे बाल बुद्धि हम धारा । तुम जीवनके तारन हारा ।।
तुम सत्पुरुष दीन्ह मोहि राजू । अरु मोहिं दीन्ह सकल सुख साजू ।।
अब लगि साहब हम नहिं चीन्हां । सत्यपुरुष तुम दर्शन दीन्हा ।।
दोउ कर जोरि चरणचित लावा । धन्य भाग्य हम दर्शन पावा ।।
अब मोहि साहब देव बताई । पाऊं चिह्न वंश मुकताई ।।

ज्ञानी वचन

साखी–जो निज मेरा पाइ है, आवे लोक हमार ।
ताको खूट तु मत गहो, सुनो काल वट मार ।।

निरञ्जन वचन

चौ०–हे साहब एक विनती मोरा । वेरा पायकरहु कछु औरा ।।
ज्ञान कथे अन्ते चित सासा । आवागमनको राख्यो आसा ।।

ज्ञानी वचन

सुनो निरञ्जन वचन हमारा । नहीं हंस वह जीव तुम्हारा ।।

काल वचन

कहे काल तुम भली निकारी । सन्धि देख हम क्रोध उतारी ।।
कीन्ह दण्डवत् और प्रणामा । सुन्न शिखर कीन्ह्यो विश्रामा ।।

ज्ञानी वचन

धर्मदास तब मनमें आई । गाहुर देशमें धारा पाई ।।
सतयुग सत्यनाम मम नाऊ । देही धरि मैं मनुष कहाऊँ ।।
प्रथमैं सतयुग लागा भाई । नृप हीचन्द दे तहांको राई ।।
तहंवा जाय शब्द गोहराई । जो चीन्हें तेहि लोक पठाई ।।

इससे पाठकोंको अच्छी तरह मालूम हो गया होगा कि, सत्य पुरुष ही कबीर हैं । सद्गुरुके मुखसे निकले हुए वाक्योंको अच्छी तरह समझो उसके बिना दूसरा कोई भी उसे परास्त नहीं कर सकता ।

यहांपर इस विषयके लिखनेसे मेरा यही अभिप्राय है कि, पाठकगणोंको विदित हो कि, यह वही कबीर साहब हैं जिनके सम्मुख निरञ्जन तथा आद्याका गर्व चूर्ण हो गया । फिर दूसरा कौन है एवं उसमें क्या सामर्थ्य तथा बल है जो इनकी समता कर सकता है, इस कबीरके सम्मुख किसका गर्व रह सकता है, ये दोनों बडे बलिष्ठ तथा प्रभावशाली थे परन्तु कबीर साहबके चरणोंपर गिरकर आधीन हुए । ऐसे कबीर साहबको जो "मनुष्य" जाने यह उसकी भूल है क्योंकि वे मनुष्य नहीं हैं । सत्यपुरुष हैं स्वयम् मालिक धनी हैं । यह अन्धा जीव उनको पहचानता नहीं, इसी कारण भवसागरमें पड़कर गोते खाया करता है । जो मनुष्य होगा वह अवश्यही विचार करेगा कि, आद्या तथा निरञ्जन जैसे सर्वशक्तिमान् संसारके सिर्जनहार जिसके चरणोंपर गिरकर नम्रता करें वह "मनुष्य" कैसे ठहर सकता है ? वह तो निस्संदेह स्वयम् सत्यपुरुषका प्यारा भक्त है जिसे सत्यपुरुषने अपनी समता दे रखी है; दूसरा कोई नहीं है ।

वेही कबीर साहब पृथिवीपर आकर मनुष्योंको उपदेश करते हैं । फिर जो कोई उससे विमुख हुआ उसका कहाँ ठिकाना रहा ? वह निश्चयही आद्या तथा निरञ्जनके आधीन होगा । जो स्वयम् विमुख होगा उसका तो यह दण्ड है । जो स्वयम् विमुख नहीं है पीछेसे उसके अनुयायीही विमुख हुए हैं तो वे आचार्य्य निपराध ठहरेंगे, केवल उनके अनुयायीही दण्ड पावेंगे । इस लिये उन्हें भी भिन्न पन्थमें रहकर भी सच्चे गुरुकी भक्तिसे विमुख न होना चाहिये । नाम मालामें भी यही विषय आया है उसको भी यहीं उद्धृत करते हैं –

नाममालाका संक्षेप

कबीर–कथा रसाल[1] कहों कछु बाणी । जो बूझे सोई ब्रह्मज्ञानी ॥
यह गुरु गम[2] सन्त कोई लेखे । प्रकट ज्ञान तब तत्त्व परेखे[3] ॥
अनुभवादि कछु कहूं वखानी[4] । सुनिये सद्गुरु गमकी[5] बाणी ॥
अनन्त कोटि युग एक चलि गयेऊ । अचल अमान[6] तत्त्वमें रहेऊ ॥
साठ कोटि युग और जो बीता । सृष्टि करन तब इच्छा कीता[7] ॥
वह तो पुरुष अचल वेअन्ता । बिन गुरु दया न भज भगवन्ता ॥
कोटि कथैं कछु कथन न पावै । जब लगि नाँहि गुरु गम बतलावै ॥

---

१ रसीली, २ गुरुसे मिलनेवाली, ३ परीक्षा करे, ४ कथन करके, ५ पहुँचे, ६ प्रमाणरहित, ७ की ।

साखी पद कोटिन बहु बाणी । पुरुष एकको सुमिरौ प्राणी ॥
ज्ञान सुरति औ शब्द अपारा । यह सब दिया तब किया पसारा ।
अचल पुरुष सुमिरे जो कोई । जीवितमुक्ति[1] तासुकी होई ॥
साखी पद बोले बहु बाणी । आदि[2]नाम कोई बिरला जानी ॥

साखी—कहैं कबीर निज नाम बिनु, मिथ्या जन्म गवाँय ।
निर्भय मुक्ति निःअक्षर[3], गुरु बिनु कबहुँ न पाय ॥

चौ०—अगम अगोचर अति व्यवहारा । कहन सुननसे होवै पारा ।
यह धन राखि जीवकी नाँई । करो बणिज टोटा कछु नाहीं ॥
यह पूँजी है अगम अपारा । खरचै खाय बडे बिस्तारा ॥
यह धन मिले जब भाग वडेरा । धन सञ्चित गाँहक भिलेरा ॥

साखी—पूँजी मेरा नाम है, जाते सदा निहाल ।
कहैं कबीर जो पुरुष बल, चोरी करै न काल ॥

चौ०—जो जो जिव निज नामहिं जाना । भये मुक्त सो पुरुष समाना ॥
सोई जीव हंसका लेखा । अक्षर में निःअक्षर देखा ॥

धर्मदास वचन

कह धर्मदास दास के दासा । सद्गुरु मेटो मेरी आसा ॥
नाम निःअक्षर केहि उतपाना[4] । अकथ कथा तब कैसै जाना ॥

सत्यगुरु वचन

कह कबीर सुन धर्म्मनि बानी । अकथ कथा तोहि कहूँ बखानी ॥
तब नहिं लोक वेद वस्तारा । तब नहिं कूरम नहिं संसारा ॥
नहि तब धरणी अमर सुमेरू । नहि तब हते जो इन्द्र कुबेरू ॥
तब नहि सृष्टी सकल पसारा । आप आप थे अकह निनारा ॥
सकल सृष्टि उत्पति कछु नाहीं । तब सब रहे अकहके माहीं ॥
होंते आप तब शब्द न सवाला । इच्छा भई तब कीन्ह उँजाला[5] ॥
इच्छाते अनहद[6] धुनि बानी । सुरति सम्हार सृष्टि उत्पानी ॥
इच्छा अनुभव शब्द उपाना । सुरति[7] निरति ता माहि समाना ॥
तबते अच्छर भेद बिचारा । साखी शब्द कीन संसारा ॥
अकह अचल पुरुष तेहि आपू । नहीं तहां दुःख सन्तापू ॥
सबका मूल वाहि सो लागा । उलटसमाय होई बड़ भागा ॥
निर्भय हो सो करे गुरवाई । गुप्त मता मैं कहूँ समझाई ॥

१ जीवनमुक्ति, २ रामनाम, ३ अक्षर रहित, ४ उत्पन्न किया, ५ प्रकाश, ६ पराध्वनि वा दशमध्वनि, ७ अजपा जापभी ।

साखी–सुरति निरति ले खेलई, रहि सूरति लवलीन ।
कहैं कबीर ते सुरतिसे, निश्चय पुरुषहि चीन्ह ॥
सुरति सँभारे काज है, राखो सुरति सँभार ।
सुरति सँभारे मुक्ति है, जाय पुरुष दरबार ॥
जाके दिल अनुराग[1] है, पावेगा जन सोय ॥
बिन अनुराग न पावई, कोटि करे जो कोय ॥
बल मेरे यक नामके, सात द्वीप नौखण्ड ॥
यम डरपै भय मानै, गाजि रहा ब्रह्मण्ड ॥

चौ०–सार शब्द जब आवे हाथा । सकल काल तब नावै माथा ॥
नाम अमर मलयागिरि भाई । पीयत विष अमृत होइ जाई ॥
निसि दिन रह मलयागिरि संगा । विष नहिं लागे तिनके अङ्गा ॥
साखी–काल फिरै सर साधिकै, करमें गहे कमान ॥
कहैं कबीर निज नाम गहि, छोड मान अपमान ॥

चौ०–कहैं कबीर सुनो धर्मदासा । शब्द बाण है हमरे पासा ॥
काहि डरो डर देहुँ छुडाई । काल डरे सुनि नाम दुहाई ॥
जब हम रहे अकहके माहीं । केहि बोधौं दूसर कोई नाहीं ॥
कहैं कबीर सुनो धर्मदासा । होहु निशङ्क मेटि यम आसा ॥
भयो परकाश गुरु भेद बतावा । जीव बोधिके लोक पठावा ॥
जबते अमर पुरुषको चीन्हा । तबते काल भयो आधीना ॥
साखी–राह पाय जनि ,छाडहू, काल रहा शर साधि ॥
सुरति सँभारे चेतहू, परे न यमका बाध ॥
आदि नाम निज पुरुषको, सुनत तजै अभिमान ॥
कहैं कबीर सुन सन्तहो, तजो नरककी खान ॥

चौ०–कासे कहूँ कहा नहिं जाहीं । मेरी गति[2] कोई चीन्हत नाहीं ॥
यहां वहां पावँ दोउ ठाऊँ । सत्य कबीर कलिमें मोर नाऊँ ॥
जो था तब कलिमें हम सोई । नाम धरैं भूलै नर लोई ॥

साखी–कोटि नाम संसार में, ताते मुक्ति न होय ।
आदि नाम जपि गुप्तही, बूझै बिरला कोय ॥

चौ०–मुक्ति न होवै नाचे गाये । मुक्ति न होवै मृदङ्ग बजाये ॥
मुक्ति न होवे साखि पद बोले । मुक्ति न होये तीरथ डोले ॥

---

१ अनुरागरूपापराभक्ति, २ भूमिका ।

गुप्त जाप जानैं जब कोई । कहैं कबीर मुक्ति भल होई ॥
कथा कीरतन गदगद बाणी । मुक्ति न होय बिना सहिदानी॥
केता कहूँ कहा नहिं जाई । नाम गहे सो पुरुष मिलाई ॥
सार शब्द परवाना दइहौं । जीव छोडाय कालते लइहौं ॥

साखी–जैसे फण[1]पति मंत्र लखि, फणको रहे सकोरि ।
तैसे नाम कवीर लखि, काल रहे मुख मोरि ॥
जो जन होइहैं जौहरी, सो धन लेई बिलगाय ॥
सोहं सोहं जपि मुये, मिथ्या जन्म गँवाय ॥
साखी पद संसारमें कहन सुननको दीन ।
जाको चीठी मूलकी, सोले साधन कीन ॥

चौ०–कोटि यतन कर जिव समझावे । भाग बिना सो नाम न पावे ॥
गुरुकी सन्धि सन्त तेहि पासा । सो नहिं परे कालके फाँसा ॥
आदि पुरुष अपना कर जाना । सोई भक्ति अन्तरगत ठाना ॥
तुमको दीनी भगति अपारा । नाम अजर तुम जपो हमारा ॥
जो नहिं बूझे कहा न करई । मुक्ति न होय नरकमें परई ॥
श्रवणनमें कह दीन्हा नाऊँ । ताहि बोलहू अपने ठाऊँ ॥
नाम सुनै औ मोंको जाने । यमराजा तेहि देखि डेराने ॥
मेरो नाम अमर है भारी । ताहि नामको राखु सँभारी ॥
तजि अभिमान मिलै जो आई । ताको दीजै नाम दृढाई ॥
सब तजि रहनि रहे ठहराई । और तजे सब लोक बडाई ॥
ताको दीजे वस्तु अपारा । कह कबीर सुनु शब्द हमारा ॥
गलित गरीबी रहन सम्हारे । तन धन मन सन्तनपर वारे ॥
लोक लाज कुल तेज बडाई। तब पग परस भरम मिटि जाई ॥
बिन विश्वास न भगति प्रकासा। प्रीति विना नहिं दुबिथा नासा॥
गुरुते शिष्य करे चतुराई । सेवाहीन नरकमें जाई ॥
वा[2]रै तन मन औ धन धाना । सोई सन्त मेरे मन माना ॥
कहँ लगि कहूँ वार नहिं पारा । नाम गहे सो सन्त हमारा ॥
आदि नाम है शरकी गाँसी । लागै बान पडा रह जासी ॥
जब लगि भक्ति अङ्ग नहिं आवै । सार शब्दसो कैसे पावै ॥
सत्यनाम श्रवन धुनि होखे । जो मतवाला ताको पोखे ॥

---

१ सर्प। २ निवारण करै।

साखी–सुरति समावे नाममें, जगतें रहे उदास ॥
कहैं कबीर गुरुचरण (में), दृढ राखै विश्वास ॥
चौ०–जगमें जेते हैं विश्वासी । माया आहि ताहिकी दासी ॥
जाके दिल विश्वास न आवे । भक्ति अङ्ग सो कैसे पावे ॥
जो जिव मायासे मन लावे । गहे काल मुख बात न आवे ॥
साखी–गुरुकी, शब्द साधुकी पूंजी, वनिज करे जो कोय ॥
कहैं कबीर सवाई बढे, हानि कबहुँ ना होय ॥
चौ०–जाको है गुरुको विश्वासा । निश्चय जाय पुरुषके पासा ॥
कहैं कबीर मिलै विश्वासी । बिन विश्वास है यमकी फांसी ॥
सोहं कोहं आये संदेसा । सो गुरु दीन्हो मोहिं उपदेशा ॥
ताको मर्म्म जान जो पावे । सो तो नहिं भवसागर आवे ॥
गुरुको शब्द जीव दृढ धरई । सोई सन्त भवसागर तरई ॥
होई न दास धरै अभिमाना । ताहि न दीजै अनुभव ज्ञान ॥
नाम मालमें परिचय आने । सकल सन्तमें सद्गुरु जाने ॥
साखी–पुरुष सवनते न्यार है, और सवनके माहिं ।
ज्ञान दृष्टि करि देखहू, साखी पदमें नाहि ॥
साखी पदमें सो पढें, पुरुष वसे तेहि पार ॥
पोथी वाणी भेष वहु, सो सबहिन ते न्यार ॥
गुरु पूरा सुख शूरा, बाग मोडि रण पैठ ।
सत्य सुकृतको चीन्हके, एक तख्त चढि बैठ ॥

सुकृतआदिभेदसे ग्रन्थ ।

चौ०–चले ज्ञानी समरथ शिर नाये । मकर तार होय तिरबेनी आये ॥
जहाँ काल बैठा अन्याई । ज्ञानी वेगि तहाँ चलि आई ॥
देखि काल वहुतै दुख पावा । उठि ज्ञानीके सन्मुख धावा ॥
कौन अंश तुमहो बटपारा । हमरे झाँझरिमें पग धारा ॥

ज्ञानी वचन

कहैं ज्ञानी जनि जाव भुलाई । सोहं पुरुष सन्धि हम लाई ॥
समरथ हुकुम मान तुम भाई । नहिं तो बांध तोहिं ले जाई ॥
अब जनि भूलो मूर्ख गँवारा । छिनमें करूँ तोर संहारा ॥
यह सुनि काल उठा रिसियाई । विकल रूप होइ सन्मुखधाई ॥
बारह बाण काल ले आई । ज्ञानी शब्दसे लीन्ह बचाई ॥

ज्ञानी विषहर बान सँभारा । तबहीं माँझ झाँझरी मारा ।।
झँझरी फूट चूर हो जाई । तबहि काल उठि चला पराई ।।

कबीर साहब झाँझरी द्वीपको गये और कालपुरुषको तीन लोककी सेवा प्रदान की। पर जब वह अभिमानी होकर आज्ञा न मानने लगा तो सत्यगुरुने उसको मारकर पातालको भगा दिया । इसके पीछे उसकी नम्रता विनयकी ओर देखा तो फिर उसको राज्य प्रदान कर दिया ।

अब यहां सोचने और समझनेकी बात है कि, जिसके आज्ञाकारी सेवक आज्ञा तथा निरंजन ठहरे वह कैसे "मनुष्य" हो सकता है ? वही कबीर सर्व शक्तिमान् सबका शासक है । अनन्त ब्रह्माण्ड उसके शासनमें हैं । यह स्वसंवेदका वचन है और स्वसंवेदके जाननेवाले सब ऋषीश्वर इस बातमें सहमत होते चले आये हैं । जिन पर सत्यगुरुकी पूरी कृपा हुई है उन सबका एकही कथन है जब तक यह विश्वास भलीभाँति मनमें स्थान न पाजाय तबतक मनुष्यकी मुक्तिमें सन्देह रहेगा, कबीर साहिब बराबर कहते चले आ रहे हैं कि, मैं प्रकृति तथा अखिल ब्रह्माण्डोंके अभिमानियोंका विजेता हूं, मेरा उपदेश मानकर अपना कल्याण करलो ।

शरण

यह शब्द संस्कृतका है । इसका हिन्दी और संस्कृत दोनोंमें समभावसे प्रयोग होता है । कहीं २ इसका 'सरन' अपभ्रंश करके भी प्रयोग करते हैं । संस्कृत के व्याकरणके अनुसार 'शृ' से ल्युट् प्रत्यय करनेसे उक्त शब्द बनता है जिसका रक्षक अर्थ होता है । वह भी ऐसा कि जिसकी रक्षाकी जानेवाली है वो सिवा उसके अपना दूसरा कुछ उपाय ही नहीं समझता । इसे सभी संप्रदायोंने स्वीकार किया है । श्रीसंप्रदायके पल्लव इस कबीरपन्थने भी इसे मुख्य माना है । सिवा शरणागतिके जीवके पास दूसरा कोई उपाय नहीं जिससे वो भवसागरसे त्राण पासके, इसी कारण कबीर साहिब सदासे यही कहते चले आरहे हैं कि, बिना शरण हुए कोई भी जीव, कालसे नहीं बच सकता पर कालने सबकी बुद्धि पर ताला लगा दिया है जिससे सत्यपुरुष की सच्ची सुरत नहीं लगा सकते, किसी कविने कहा है कि—

(नीम कीट जस नीमहि प्यारा । विषको अमृत कहे गमारा ।।

विशका कीडा विषमें ही राजी रहता है उसका वही जीवन है वो बिना विषके जिन्दा नहीं रहता । यही हिसाब जीवोंका भी है ।

साखी—कालको जीव माने नहीं, कोटि न कहू वुझाय ।
मैं खींची सत लोकको, वाँधा यमपुर जाय ।।

कबीर साहब हांक मार मार कर कहते हैं कि, ऐ मनुष्यो ! तुम मेरी शरण में आओ और कहीं विश्राम नहीं है । सत्य कबीर वचन शरण अंगकी साखियाँ :–

साखी–धरमराय दरबारमें, देई कबीर तिलाक़ ।
भूले चूके हंसकी, मत कोई रोको चाक ।।
कबीर शरणमें आयके, कहा मुक्तिको रोय ।
प्रेम पिछोरे ओढ़के, सुख मन्दिरमें सोय ।।
बोले पुरुष कबीरसे, धरमराय कर जोर ।
तुम्हरे हंस न चम्पिहौं, दोहाई लाख कड़ोर ।।
कबीर–जो जाकी शरणै गहे, ताको ताकी लाज ।।
उलट मीन जल चढ़त है, बह्यो जात गजराज ।।

इस प्रकार कबीर साहब बहुत कहते चले गये हैं और शरणागतका गुण बराबर प्रगट करते गये हैं धर्मरायसे प्रतिज्ञा हो चुकी है कि, जो मेरा नाम ले तुम उसको कदापि न रोकना । यदि रोकोगे तो दण्ड पाओगे । सुतरां ग्रन्थ अम्बु-सागरमें लिखा है कि, कबीर पन्थियोंमेंसे कितनेही मनुष्योंने भूलसे पाप किया । उन पापोंके कारण उन्हें यमराजने पकड़ लिया परन्तु कबीर साहबने दूतोंको दण्ड दिया अपने हंसोंको छुड़ा लिया ।

शरणागतके धर्म

शरणागतका यही धर्म्म है कि, जो कोई जिसकी शरणमें हो उसके शरणके नियमोंपर पूर्ण रीतिसे चले । शरणके नियमोंमें तो पूर्णतया प्रेम आवश्यक है । जैसे मछली पानीसे इतना प्रेम करती है कि, पानीसे न्यारी होतेही मर जाती है । अपने प्यारेके शरणको ऐसीही दृढ़तासे पकड़े कि, छूटने न पावे । केवल शरणका ही भरोसा रखे, दूसरी ओर तनिकभी ध्यान न दे । यदि कोई दूसरे प्रकार करे तो शरणागति छूट जायगी किसी देवी देवताकी ओर ध्यानही न दे, जबसे जीव सत्य गुरुकी शरणमें आवे तबसे कदापि दूसरी ओर न झुके । केवल सत्यगुरुकीही शरण द्वारा जीवकी मुक्ति होती है । धर्मदासजीने कबीर साहबसे पूछा कि, हे सत्य-गुरु ! मैं किसको जप कर पार उतरूं ? तब कबीर साहब ने जोरसे पुकार कर कहा कि –

शरण मोर गहि उतरो पारा । बार बार मैं यही पुकारा ।।
मुखसे कहो कबीर कबीरू । तबही मिटै कालकी पीरू ।।

जो कोई सत्यगुरुके शरणमें है । वह उस प्रकार बिनती करे जैसा कि,

---

१ शपथ ।

साखियोंमें लिखा है । यह धर्मदासजी और कबीर साहिबका संवाद भेद सारमें लिखा हुआ है जिसमें कि, अपने शरण होनेका उपदेश दिया है ।

शरणागतके नियम

१–प्रत्येक विधि और निषेध अपने गुरु और शास्त्रके अनुसार करे ।

२–तन मन धनसे ईश्वर गुरु तथा साधुओंकी सेवा करे ।

३–इस बातका पूर्ण निश्चय रखे कि, मेरा साहब मेरे पापों तथा अपराधोंको क्षमा करके मुझे मुक्तिप्रदान करेगा ।

४–सच्चे परमेश्वरके अतिरिक्त और किसीसे सहायता न मांगे । यहाँ तक कि, कैसीभी आपत्ति क्यों न आवे तो भी दूसरे किसीसे सहायता न मांगे ।

५–अपने सत्यगुरुकी मूर्त्तिका ध्यान करे ।

६–अपने आपको परमेश्वरके अर्पण कर दे । इस प्रकार सत्य हृदयसे कहे, "प्रभु ! जो तू चाहे कर, मेरा इसमें कुछ नहीं है ।"

मेरा मुझको कुछ नहीं, जो कुछ है सो तोर ।
तेरा तुझको सौंपता, क्या लागत है मोर ।

७–भजन न छोड़े, सर्वथाही साहबकी आज्ञाको निरखत रहे ।

अपनेको अंकिचन मानता हुआ भगवान्‌के दर्शनकी अभिलाषाओंको बढ़ाता जाय । गुरु और सत्यपुरुषमें कोई भेद न माने, सदा उसी प्रकार सन्मान करता रहे । अपना अधिक समय भगवान्‌की विनतीमेंही लगावे, यहां हम सत्यपुरुषके विनय करनेकी साखियोंको उद्धृत करते हैं –

विनती अंगकी साखी

कबीर–अव गुण मेरे बापजी, बख्शो गरीब निवाज ।
जों हौं पूत कपूत हौं, तऊ पिताको लाज ।।

कबीर–अवगुण किये तो बहु किये, करत न मानी हार ।
भावेबन्दा खशिये, भावे गरद्दन मार ।।

कबीर भूल बिगाड़िया, नाकर मैला चित्त ।
साहब गरुवा चाहिये, नफर बिगाडे नित्त ।।

कबीर भूल बिगाडिया, कर कर मैला चित्त ।
नफर भी ऐसा चाहिये, साहबसे राखे हित्त ।।

कबीर–सांई तेरे बहुत, गुड अवगुण कोई नाहि ।
जो दिल खोजौं आपना, सब अवगुण मोहि माहि ।।

कबीर–साहब तुम जनि बीसरो, लाख लोग मिलि जाहिं।
हमसे तुमरे बहुत हैं, तुम सम हमरे नाहिं ॥
कबीर–तेरे बिन जोर जुल्म है, मेरा होय अकाज।
बिरद तुम्हारे लाजसे, शरण पडेकी लाज ॥
कबीर–या मुखले बिनती करूँ, लाज आवत है मोहिं।
तुम देखत अवगुण, किये, कैसे भाऊँ तोहिं ॥
कबीर–बनजारी बिनती करै, नरियल लीने हाथ।
टांडा था सो लद गया, नायक नाहीं साथ ॥
कबीर तुम्हें बिसारिके, किसकी शरणे जाय।
शिव विरञ्चि मुनि नारदा, हिरदय नाहिं समाय ॥
कबीर–मुझमें गुण एकौ नहीं, जानु राय सिर मौर।
तेरे नाम प्रतापते,, पाऊँ आदर ठौर ॥
कबीर–मैं अपराधी जनमका, नख सिख भरा बिकार।
तुम दाता दुखभञ्जना, मेरी करो उबार ॥
कबीर–सुरत करो मेरे साइयाँ, हम हैं भव जल माहिं।
आपहि हम बह जायँगे, जो नहिं पकडो वाहिं ॥
कबीर–और पुरुष सव कूप हैं, तू है सिन्धु समान।
मोहिं टेक तव नामकी, सुनिये कृपानिधान ॥
कबीर–अवसर बीता अल्पतन, पीव रहा परदेश।
कलङ्क उतारो रामजी, भानो भरम संदेश ॥
कबीर–साईं मेरा सावधान है, मैं ही भया अचेत।
मनवच कर्म्म न हरि भजा, ताते निर्फल खेत ॥
कबीर–मन परतीत न प्रेम रस, ना कोई तन में ढङ्ग।
ना जानूँ उस पीवसे, क्योंकर रहसी रङ्ग ॥
कबीर तुमतो शैल हौ, हलकी अपनी चाल।
रङ्ग कुरङ्गी रङ्गया, और किया लगवार ॥
कबीर–जिनको साईं रंगदिया, कबहुँ न होय कुरङ्ग।
दिन दिन बाणी आगरी, चढै सवाया रङ्ग ॥
कबीर–मेरा मन जो तुझसे, तेरा मन कहिं और।
कहैं कबीर कैसे बनै, एक चित्त दुई ठौर ॥
कबीर–ज्यों मेरा मन तोहि से, या तेरा जो होय।
अहिरन ताती लोहि ज्यों, सन्धि लखे नहिं कोय ॥

कबीर–अबकी जो साईं मिले, सब दुख आंसू रोय।
चरणो ऊपर शिर धरूँ, कहूँ जो कहना होय।।
कबीर–साईं तो मिलेंगे, पूछेंगे कुशलात।
आदि अन्तकी सब कहूँ, उर अन्तरकी बात।।
कबीर–सिदूक सबूरी बाहरा, कहा हज्ज को जाय।
जिनका दिल साबित नहीं, तिनको कहाँ खुदाय।।
कबीर–अन्तरयामी एक तू, आतमको आधार।
जो तुम छोडो हाथको, कौन उतारे पार।।
कबीर–भवसागर भारा भया, गहरा अगम अगाह।
तुम दयाल दाया करो, तब पाऊँ कछु थाह।
कबीर–साहब तुमहि दयाल हो, तुम लग मेरी दौर।
जैसे काग जहाजको, सूझत और न ठौर।।
कबीर–स्वास सुरतके मध्यही, न्यारा कभी न होय।
ऐसा साक्षी रूप है, सुरति निरतिसे जोय।।
कबीर–सद्गुरु बडे दयालु हैं, सन्तनके आधार।
भवसागर आथाहमें, खेई उतारें पार।।
कबीर–लेनेको हरिनाम है, देनेको अनदान।
तरनेको आधीनता, बूडन को अभिमान।।
अङ्ग सर्व जो मैं कहूँ, परम पुरुष उपदेश।
कहै कबीर अब हरि मिलै, मानूँ साखि सँदेश।।

शरणका तो यही अर्थ है कि, दूसरी ओर ध्याननहीं न हो। जब दूसरी ओर ध्यान होगा तो शरणागति अवश्यही मिथ्या ठहर जावेगी। इस संसारमें जितनी शरणागति तथा भक्ति हैं वो सभी व्यर्थ हैं। सबके ऊपर केवल एक सत्यपुरुषकी शरणमें मनुष्यको सुख मिलता है। इसके अतिरिक्त समस्त शरणागतियाँ झूँठी हैं। उनमें अणुमात्रभी वास्तविकता नहीं है। इसी बातको कवितामें भी कहते हैं–

मुखम्मस तरजीअबन्द

अँधेरा छा गया वक्ते अशामें। हुआ खौफो खतर बस दश दिशामें।।
पनः ले जा पनःकी खास जामें। नहीं आराम है अरजो समामें।।
मुसाफिर जल्द चल सुल्तां सरासें
हैं फिरते चोर ठग रहजन लुटेरे। नहीं कोई बदरकः है सङ्ग तेरे।।
पडा जङ्गलमें सबदुःख द्वन्द घेरे। तु हो आनन्द सुन यह पन्थ मेरे।। मु०।।

शरण कब्बीरके आराम पावे नहीं । कोइ और जो तुझको बचावे ॥
वही सत पन्थ मारगको बतावे । वही सत्पुर्षके घर लेके जावे ॥ मु० ॥
हिरण यक घेरले सदाह् शिकारी । मुसीबत आपडी उस पर जो भारी ॥
बचावै कौन बिन खल्लाक बारी । हुई तदबीरसे जब जान आरी ॥ मु० ॥
पडीं सब गाय दर हस्ते कसाई । किसी जानिब नहीं रूये रहाई ॥
फिरी हर सिम्तमें यमकी दोहाई । जिधर जावे उधर धर भूनखाई ॥ मु० ॥
है तीनोंलोक में यमराज था । न पावे कोई सत्य नाम निशाना ॥
यह धोखेका बना कुल कारखाना । फँसे सब आनकर मुरगाँ व दाना॥ मु० ॥
नहीं कहीं धर्म्म सब धोखा बनाया । सो हरजानिबमें जाल अपना लगाया ॥
जो लोक और बेदकी तालिम पाया । सो सब धर्मरायके फन्देमें आया ॥ मु० ॥
लगे सब लोग धोखेके धन्धे । न सूझे आँख अन्दर बाहर अन्धे ॥
करम और भरमके हैं बीच बन्धे । रिहाई होवे सद्गुरु शब्द सन्धे ॥ मु० ॥
सदा भूखे व नङ्गेको जो देता । कहूँ एहसान उसका सबपै केता ॥
तू अबभी जल्द तरकर चेत चेता । इस आजिज़की खबर हरदम् जो लेगा ॥

मुसाफिर जल्दचल सुल्तां सरामें

जो सब साखियाँ मैंने लिखी हैं मनुष्योंके लिये सत्यपुरुषका उपदेश है । कबीर साहब उपदेश करते हैं कि, हे लोको ! जब तुम सत्यगुरुके शरणमें आओ तब यह ढङ्ग ग्रहण करो, इससे तुम सत्यगुरुके कृपापात्र बनकर सत्यलोक पहुँचो । सत्यलोकमें पहुँचनेके वृत्तान्तको निम्नके दो झूलने और एक शब्दमें निरूपण किया है ।

हंसोंका चलाना

कबीर साहबका झूलना दश मुकामी

चला जब लोकको शोक सब छाडिके हंसका रूप सद्गुरु बनाई ।
भृङ्ग ज्यो कीटको पलटि भृङ्गी किया आपसम रङ्ग दै ले उड़ाई ॥
छोड़ नासूत मलकूतको पहुचिया विष्णुकी ठाकुरी देख जाई ।
इन्द्र कुब्बेर जहाँ रम्भा निरत है देव तेतीस कोटिक रहाई ॥
छोडि वैकुण्ठको हंसा आगे चला शून्यमें ज्योति जहाँ जगमगाई ।
ज्योति परकाशमें निरख निःतत्वको आप निर्भय हो भय मिटाई ॥
अलख निर्गुण जेहि वेद स्तुति करें तीनहूँ देवको है पिताई ।
भगवान तिनके परे श्वेत मूरती धरे भगको आन तिवा रहाई ॥

चार मुक्काम पर खण्ड सोलह कहे अण्डको छोड़ि वहाँ ते रहाई ।
सहस्र और द्वादशे रूह है संगमें करत किलोल अनहद्द बजाई ।।
तासुके वदनकी कौन महिमा कहूँ भासती देह अति नूर छाई ।
महल कञ्चन बने माणिक तामें जडे बैठि तहां कलस अखण्ड छाजे ।।
अचिन्तके परे स्थान सोहंका हंस छत्तीस तहाँ विराजे ।
नूरका महल और नूरकी भूमि है तहाँ आनन्द सो द्वन्द भाजे ।।
करत किल्लोल बहु भांतिसे सङ्ग येक हंस सोहं की जो समाजे ।
हंस जब जात षटचक्रको भेदिके सात मुकाममें नजर फेरा ।।
सोहंके परे जो सूर्ति इच्छा कही सहस बावन जहां हंस हेरा ।
रूपके राशिते रूप उनको बना नहीं उपमा दूजे बनेरा ।।
सुरतिसे मेंटिके शब्दके टेक चढि देखि मुक्काम अंकूरकेरा ।
सुन्नके बीचमें विमल बैठक तहां सहज स्थान है गैबकेरा ।।
नवें मुक्काम यह हंस जब पहुँचि या पलक विलम्ब वहां किया डेरा ।
तहां से डोर मकरतार जो लागिया ताहि चढि हंस गो दे दरेरा ।।
भये आनन्दसे फन्द सब छोडिके पहुँचा जहां सत्यलोक मेरा ।

दूसरा झूलना

जुलमत नासूत, मलकूत में फिरिश्ते, नूर जल्लालजबरूतमें जी ।
लाहूतमें नूर जम्माल पहचानिये, हक्क मकान हाहूतमें जी ।।
बक़ा याहूत, साहूत, मुरशिद रहे, जोय अंकूरराहूतमें जी ।
कहत कबीर अविगत आहूतमें, खुद है खाविन्द जाहूतमें जी ।।

शब्द–सा[१]ई तेरा अर्शतख्त[२] है दूर ।
बिन मुरशिद[३] कोई भेद न पावे भटक [४]मुये सम क्रूर ।।
चौदह तबक[५] ख्वाबकी रचना आतिशकासा फूल ।
लाज छोडि जिन काज किया है भये चरणके धूल ।।
नासूतमें[६] माया खडी मलकूत गुण अस्थूल ।
जो कोई निजको समझि बूझे तामें नाहीं भूल ।।
जिबरूतमें जम जाल है लाहूत अच्छर मूर ।
हाहूतमें अचिन्त पुरुष है बजत अनहद तूर[७] ।।
वेद पुराण कुरान गीता यहां लग खबर जहूर ।
सोहं इच्छा यहांसे आये सब घट व्यापक नूर ।।

---

१ सत्यपुरुष, २ आसमानी गद्दी, ३ गुरु, ४ मरे, ५ लोक, ६ लोक, नासूतसे लेकर जाहूततकके दश लोकोंके हाल, २३५ से लेकर २३८ तक लिखा गया है, ७ तूर शब्द ।

सब जीवनको त्रास देखिके समरथ वचन क़बूल ।
कहे कबीर हम खुदके अहदी लाये हुक्म हुजूर ॥

निम्न लिखित शब्दमें योग और वेदान्तका रहस्य अत्यन्त गंभीरताके साथ भरा हुआ है बडी ही उच्च कोटिका है...

* यथा—यह जग पारख बिना भुलाना ।
निर्गुण सर्गुण दोकर थापै अजपा धरि धरि ध्याना ॥
निर्गुण वंश सरगुण गुण रहितम गुण बिन कहा समाना ।
द्वैत ब्रह्म सकल घट व्यापै त्रिगुणमें लपटाना ॥
आवै जाय उपजे फिर विनसै जरि मरि कहाँ समाना ।
सहस पाखुरी कमल बिराजै मन मधुकर लपटाना ॥
जलके सूखे कमल कुम्हलाना तब कहु कहां ठिकाना ।
छओ चक्रवर्ति चार चतुर्दश वेद मती अरु ज्ञाना ॥
बङ्क नालकी डोरी खीचें योगिन युगति बखाना ॥
घरमें कर्ता लोग बोलत हैं पांचो तत्त्व नशाना ॥
करे विचार सकल मिलि ऐसा भेष विविधि विधि बाना ।
कहै कबीर कोई गुरुगम पावे पहुँचे ठौर ठिकाना ॥

अब यहा मैं कुछ बातें कबीर साहब तथा निरंजनकी वार्तालापकी लिखता हूँ । जिसमें पाठकगणोंको कालपुरुष तथा सत्यगुरुका विवेक हो जाय. क्योंकि, जब

---

* यह संसार सच्चे गुरुके बिना भटकता फिरता है। अजपा गायत्रीका भजन ध्यान करने मात्रहीसे ब्रह्मवेत्ता बनकर निर्गुण सगुण दो भेद एकही ब्रह्मके कर डाले पर यह तो बता कि जब निर्गुणका पसारही सगुण है तो वो निर्गुण बिना गुणका होकर सगुण कैसे हो गया उसका निर्गुणपना कहाँ चला गया? त्रिगुण प्रधानसे लिपिट जानेके कारण ही ब्रह्म द्वैत हुवा है वोही जीव बन कर घट २ में रम रहा है वो शरीरके साथ जन्म मरण और आवागमन कर रहा है लिङ्गशरीरके भेद हो जाने पर तो कहाँ जाकर समावेगा यदि लय मानोगे तो। समाधिकालमें मनन करनेवाला जीव मूर्धाके सहस्रदल कमल पर भौंरेकी तरह लिपटता है अथवा अनेकों कर्णिकाओंवाले हृदय कमलमें ध्यान अवस्थामें मन स्थिर होकर भगवान्के स्वरूपका ध्यान करता है पर जब पानीके सूख जानेपर वो कमल कुम्हिला जायगा तब इस मनका कौनसा ठिकाना होगा। इतना पदार्थ काकूके अनुपममें कहकर अब स्पष्टरूपसे कहते हैं कि योगियोंने जो योगकी युक्ति बताई है उसके अनुसार बंकनाल (सुषुम्नाका सिरा) की डोरी (अपान) खींचकर छओं चक्रोंको भेदकर तथा चौदहवें स्थानमें पहुँच वहाँकी अलौकिक वेद मती और ज्ञान प्राप्त करके वहाँ पहुँच जाता है। यहाँ पांचों तत्त्व नष्ट हो जाते हैं जीव आत्मरूप हो अपनेको सब कुछ कहने लगता है तथा कर्ता भी अपनेको समझता है। इस लोकमें पहुँचनेकी तो सभी भेष तयारी करते हैं पर जिसे पारख गुरु मिलेंगे वही उस स्थानको पहुँचेगा दूसरा नहीं पहुँच सकता।

तक उसके स्वरूपका ज्ञान नहीं होता तबतक कालपुरुषसे छूटना कठिन है दूसरे 'संग्रह त्याग न विंनु पहिचाने, यानी त्याग और ग्रहण भी तो विना जाने नहीं होता।

स्वसंवेदके फुटकर उपदेश

साखी—तीरथ गयेते एक फल, सन्त मिलें फल चारि।
सद्गुरु मिले अनेक फल, कहें कबीर विचारि।।

तीर्थके जानेसे तो केवल एकही फल अर्थात् पापका नाश होता है। सन्तके मिलनेसे चारों फल अर्थात् अर्थ आदिक अनेक फल मिलते हैं। भलाजी ! यदि कोई कहे कि, मोक्षसे बढ़कर क्या है, जो सत्यगुरुके मिलनेसे मिलता है ? सो जानना चाहिये कि, चारों फल तो केवल चारों स्थानोंतक हैं और स्थानोंकी सुधि तो केवल सत्यगुरुही द्वारा होती है, वे वे बातें तथा पदार्थ मिलते हैं जो कहने सुननेमें भी नहीं आते। सब बातें सत्सङ्ग द्वारा प्राप्त होती हैं। सत्सङ्गहीसे सार शब्दका चिन्ह तथा पता लगता है।

सत्यकबीर वचन

सारं निरक्षरं शाब्दं कथ्यते सुजनैर्जनैः।
तद्ज्ञाता यदि लभ्येत शीघ्रं पुण्यफलानि च।।

निःअक्षर जो सारशब्द है जिसकी प्रशंसा श्रेष्ठगण करते आये हैं उसके ज्ञाताओंको सब शुभकर्मोंका फल मिलता है।।

गया गङ्गा प्रयागं च व्रतं दानं तथैव च।
सारशब्दसमा एते न भवन्ति कदाचन।।

गया, गङ्गा, प्रयाग आदि तीर्थ व्रत दान इत्यादि कोई भी सार शब्दकी तुल्यता नहीं कर सकते यानी सहस्रों प्रकारोंके तीर्थ, व्रत, दान, यज्ञ और तपस्या साधन किया करे पर सारशब्दकी समता नहीं कर सकता।।

कल्पकोटिसहस्राणि काशीवासे च यत्फलम्।
क्षणार्द्धं चिंतिते शब्दे भवेत्तस्य ततोऽधिकम्।।

करोड़ों कल्प काशीमें रहकर जो फल प्राप्त होता है वही फल यदि केवल आधे क्षणतक सारशब्दका ध्यान करनेवाला अनायास पाजाता है।।

अब विचारना चाहिये कि, सहस्र चौकड़ी युगका एक कल्प होता है। ऐसे करोड़ों कल्प काशीमें जो कोई रहे उससे भी बढ़कर फल सारशब्दके आधे क्षणके ध्यानमें है। जिस सार शब्द तथा जिसके आधेक्षणके ध्यानके सामने करोड़ों कल्प तुच्छ हैं, पर सारशब्द बिना सत्यगुरु सत्य कबीरकी दयाके किसीको नहीं मिल सकता। इसी कारण सत्सङ्गकी श्रेष्ठता वेद तथा सभी सन्त करते चले आये

हैं। जिससे सत्यपदार्थका विवेक हो उसीका नाम सत्सङ्ग है, वह सत्यपुरुष निर्गुण तथा सर्गुणसे परे है। जिसके द्वारा वह सत्यपुरुष सर्गुण निर्गुण सबसे परे जाना जावे उसे सत्सङ्ग कहते हैं। उसीसे मनुष्यकी मुक्ति होती है, अपना शुद्ध स्वरूप पहचान सकता है।

सत्य–अब जानना चाहिये कि, सत्य किसको कहते हैं ? जो तीनों कालोंमें समान स्वरूपमें रहे उसमें विभिन्नता कदापि न हो एवं निर्गुण सर्गुणसे अलग चारों वेदोंसे न्यारा हो उसे सत्य कहते हैं। इससे सभी बेसुध हैं, इसी सत्यको सत्यनाम कहते हैं यही सत्यनाम निःअक्षर पुरुष है। क्षर, अक्षर, निःअक्षर, क्षर मायाको कहते हैं। अक्षर आत्मा अर्थात् जीवको बोलते हैं जो कूटस्थ कहलाता है. जो इन दोनोंसे पृथक् है उसीको निःअक्षर या पुरुषोत्तम कहते हैं। जब यह जीव पांचोंको छोड़कर सत्यपदमें समाता है, उसमें भली प्रकार निमग्न हो जाता है तब उसका नाम हंस कबीर कहलाता है। वह सत्यपदार्थ जिस द्वारा सत्यपुरुष की प्राप्ति होती है वह सत्सङ्ग है। ऐसे सन्त प्रायः नहीं मिलते। जब तक ऐसे सन्तोंकी सङ्गत नहीं होती तब तक मनुष्य हंसका स्वरूप नहीं पा सकता। हंसको ब्रह्मा, विष्णु, शिव दण्डवत् प्रणाम करते हैं, यह बात नहीं बरन् स्वयम् निरञ्जन उनको नमस्कार करता है। जब हंस उस देशको चलते हैं तब उनका प्रभाव अनुपम होजाता है।

सत्यकबीर वचन

श्लोक– चन्द्रोभानुर्नभो वायुः पृथिव्यग्निर्जलं तथा।
नहि पञ्चभ्योस्ति तथा लोके रूपं विलक्षणम्॥

चन्द्र, सूर्य, आकाश, वायु, पृथिवी, अग्नि, जल यहां नहीं, वह लोक पांचो तत्वोंसे भिन्न है, उसका रङ्ग ढङ्ग न्यारा है, वह क्या कहा जावे जहां न पांचतत्व हैं, न तीन गुण हैं, न किसी प्रकारकी सांसारिक वासनाएंही हैं, वो न स्त्री पुरुष, न छोटा बड़ा और न राजा प्रजा ही है।

साखी–समझेकी गति और है, जिनसमझा सब ठौर।
कहैं कबीर इस बीचका, बलकहि औरै और॥
दौड धूप छोडो सखिया, छोडो कथा पुराण।
उलटि वेदको भेद गहो, सार शब्द गुरु ज्ञान॥
सुरति फँसी संसारमें, ताते परिगा दूर।
सुरति बांध स्थिर करो, आठो पहर हजूर॥
नाम सत्य गुरु सत्य है, आप सत्य जब होय।

तीन सत्य जब परगटैं, विषका अमृत होय ॥
कहँ कान्ति छबि बरणौं, बरणत बरणि न जाय ।
कबीर–चिकुरनके[1] उंजियारते[2] विधु[3] कोटिक[4] शरमाय[5] ॥
जहां पुरुष सतभाव है, तहां हंसनको बास ।
नहीं यमनको नाम है, नहिं तृष्णा नहिं आस ॥
हर्ष शोक वहि घर नहीं, नहीं लाभ नहिं हान ।
हंसा परमानन्दमें, धरैं पुरुष को ध्यान ॥
नहिं देवी नहिं देव है, नहीं वेद उच्चार ।
नहीं तीरथ नहिं वरत है, नहिं षट्कर्म[6] अचार ॥
उत्पति प्रलय वहां नहीं, नहीं पुण्य नहिं पाप ।
हंसा परमानन्दमें, सुमिरैं सद्गुरु आप ॥
नहिं सागर संसार है, नहीं पवन नहीं पानि ।
नहिं धरती आकाश है, नहीं ब्रह्मा नहीं निशानि ॥
चन्द सूर वा घर नहीं, नहीं करम नहिं काल ।
मगन होय नामहिं गह्यो, छुटि गयो जन्जाल ॥
सुरति सनेही होय तासु, यम निकट नहिं आवे ।
परम तत्व पहिचान, सत्य साहब मन भावे ॥
अजर अमर विलसे नहीं, परम पुरुष परकाश ।
केवल नाम कबीरका, गाय कहे धर्मदास ॥

गोरखजीका प्रश्न

कवित्त–कर्त्ताको स्वरूप कौन, अण्डका स्वरूप कौन, अण्डपार कौन नाद बिंद योग कौन है । जीव ईश्वर भोग कौन, भूमि औतार कौन, निराकार कौन पाप पुण्य करे कौन है ॥ वेद औ वेदान्त कौन, वाच और अवाच कौन, चन्द्र सूर्य भास कौन, ओहं सोहं कौन है । पञ्चमें प्रपञ्च कौन, स्वर्ग नर्क बसे कौन । पिण्ड ब्रह्माण्ड कौन जरा मृत्यु कौन है ? आत्म, परमात्म, काल, गुरु सिख बोध कौन, क्षर अबर अक्षर निरक्षर कौन है ? ॥

गोरखके प्रति कबीरजीका उत्तर

कवित–जाते भयो अण्ड स्वप्नरूप बसै अण्डमाहिं, कर्त्ताको स्वरूप नाहिं अण्डको स्वरूप हैं। नादबिन्द योग स्वप्नजीव ईश भोगस्वप्न, भूमिआव तार निराकार स्वप्नरूप है ॥ पाप पुण्य करैं स्वप्न वेद औ वेदान्त स्वप्न वाचा औ

---

१ जाल, २ चमक से, ३ चांद, ४ करोड़ों, लज्जित होते हैं, ६ नेती धोती आदि ।

अनाचा स्वप्नरूपतो अनूप हैं। चन्द्रसूर्यभातस्वप्न पञ्चमें प्रपंचस्वप्न स्वर्ग नर्क बीच बसै सोऊ स्वप्नरूप है ॥ १ ॥ ओहं और सोहं स्वप्न पिण्ड और ब्रह्माण्ड स्वप्न आत्मा परमात्मा स्वप्न रूपसो अरूप हैं। जरामृत्युकालस्वप्न गुरु शिष्य बोध स्वप्नअक्षर निअक्षरआत्मा स्वप्नरूप है ॥ कहत कबीर सुन गोरख बचन मम, स्वप्नते परे सत्य सत्यरूप भूप है। सोई सत्यनाम सत्यलोक बीचवास करै, नहीं कहूं आवे नहीं जावै सत्यरूप है ॥ २ ॥

इस कलियुगमें गोरखनाथ जैसा प्रतापी योगी कोई नहीं हुआ, उन्होंने कबीर साहबसे बहुत वादविवाद किया था पर अन्तको जब सद्गुरुने भली भांति समझाया और दिखलाया कि, तेरी सब योगशक्ति मिथ्या है, पिण्ड तथा ब्रह्माण्ड दोनों स्वप्नवत् मिथ्या है। जो कुछ कहा सुना जाता है वो स्वप्नके तुल्य संकल्पमात्र है। जब गोरखनाथजीने सद्गुरुकी बातें समझीं तब चरणोंपर गिरकर शिष्य होगये। ऐसेही दत्त दिगम्बर जो संन्यासियोंके गुरू पूर्ण विरक्त अवधूत और यती पुरुष थे, सत्यगुरुका ज्ञान सुनकर साहबके चरणोंपर गिरकर सांसारिक वासनाओंसे मुक्त हुए। इसी प्रकार बड़ेही प्रसिद्ध तपस्वी दुर्वासा ऋषि सत्यगुरु की कृपादृष्टिसे वांछित स्थानपर पहुँचे, अनगिनती ऋषि, मुनि उसी साहबकी दयासे उच्च श्रेणीको प्राप्त हुए हैं। जितने सत्यगुरुके सांसारिक शिष्य हुए वे सब भी उसी श्रेणीपर अधिकृत हुए हैं जहाँकि, ऋषि मुनि पहुँचते हैं। सब सांसारिक लोग जिन पर कि, सद्गुरुकी पूर्ण कृपा होगी अपने बालबच्चे सहित उसी लोकको पहुँचेंगे।

साखी—कबीर साहब सबका बाप[1] है, बेटा किसीका नाहिं।
बेटा होकर ऊतरा, सोतो साहब नाहिं ॥

कबीर—जन्म मरनसे रहित है, मेरा साहब सोय।
बलीहारी उस पीवकी[2], जिन सिरजा सब कोय ॥

कबीर—पिण्ड प्राण नहिं तासुके, दम देही नहिं सीन।
नादबिन्द आवे नहीं, पांच[3] पचीस[4] न तीन[5] ॥

कबीर—मुहँ माथा जाके नहीं, नाहीं रूप कुरूप।
पुष्प वासते पातला, ऐसा तत्व अनूप ॥

कबीर—देही माहिं विदेह[6] है, साहब सुरति स्वरूप।
अनन्त लोकमें रम रहा, जाको रङ्ग न रूप ॥

---

१ निर्माता, २ पिता, ३ पांचतत्त्व, ४ प्रकृति, महतत्व, अहंकार, रूप, रस, गंध, शब्द, स्पर्श, ग्यारह इन्द्रिय, पांचतत्व, ५ रज, तम, सत, ६ देहाध्यास रहित,

कबीर–चारभुजाके भजनमें, भूल रहे सब सन्त ।
कबीर सुमिरो तासुको, जाकी भुजा अनन्त ।।
कबीर–रूप रेख जाके नहीं, अधर धरे नहिं देह ।
गगन मंडलके मध्यमें, रहता पुरुष विदेह ।।
कबीर–बूझो कर्ता आपना, मानो बचन हमार ।
पांच तत्वके भीतरे, जिसका यह संसार ।।
कबीर–पानी हू ते पातला, धूवाँ हूँ तें छीन ।।
पवन वेग उतावला, दोस्त कबीरा कीन्ह ।।
पुष्प बासते पातला धूवे हूँ ते छीन ।
कबीर तासों मिल रहा, ज्यों पानी ते मीन ।।

प्रासंगिक

इस संसारमें कबीर साहब और हंस कबीरोंका तो यही वृत्तान्त है कि इधर मनुष्योंकी बुद्धिको कालपुरुषने ऐसी अन्धी कर दिया है कि, कोई भी सत्य पुरुषकी भक्तिमें नहीं लगता । जो कोई सत्यपुरुषकी भक्तिका उपदेश करता है उसके उत्तम वर्ताव होते हैं कि, मनुष्य कैसे मुक्ति पावे ? सबको अन्धकार मय पथ पसन्द है, उसी ओर आग्रह पूर्वक दौड़ते हैं, इन्द्रियनिग्रह तथा देदीप्यमान, ज्ञानके मार्गसे भागते हैं । जो कोई उनको अंधकारसे निकालना चाहता है उसके साथ प्रेम करनेके बनस्पति वैरी होजाते हैं ।

जो कुछ कबीर साहबने पांच वर्षकी अवस्थामें गुरु रामानन्दजीसे कहा था । वही बात अन्तिम समयतक सब लोगोंसे कहते चले आये हैं कि, मैं स्वयम् सत्य-पुरुष एवं सर्व शक्तिमान हूँ, मेरे ऊपर दूसरा कोई नहीं है । जिस किसीको कुछ सन्देह हुआ उसका सन्देह उसी समय मिटा दिया, उसके साथ साथ अनेकानेक कौतुक दिखाते आये वे मनुष्यके कार्य्य कभी नहीं होसकते. कबीर साहबका देह केवल उनकी शक्तिका प्रकाश था । वास्तवमें वह देह नहीं था । वह तो केवल देखने मात्रको शरीर था । वास्तवमें तो वह तेजका पुंजही था, उस शरीरकी कोई प्रशंसा नहीं कर सकता कि, वह क्या था । यदि तेजःपुंज कहूँ, तो मनुष्य तो उसको देख नहीं सकता, परन्तु वह देह देखी जा सकती थी, वह ऐसा प्रकृतिका कौतुक था जो कि मनुष्यके ध्यानमें किसी प्रकारसेभी न आसके, प्रत्यक्षमें देह दिखाई देती थी पर वास्तवमें वह देह नहीं थी । ये भगवान् रामके सच्चे भक्त थे, इन्हें रामको भरोसा था, ये रामके थे, राम इनका था । किसी भी समय राम इन्हें और ये रामको नहीं

भूले थे, ये बिलकुल रामरूपही हो चुके थे, रामने इन्हें इतना अपनाया था कि, रामकी अनन्तबातें इनमें आगई थीं । वे क्या थे किस भूमिका पर पहुंचे थे इसका भेद तो वे ही सन्त जान सकते हैं । जिन्हें कबीर साहिबकी तरह रामने अपना रखा हो अथवा रामके भक्तोंके भक्तोंने जिन्हें अपनी सच्ची दासकोटी दे रखी हो, संसारी झूठे पुरुषोंमें ऐसी बुद्धि कहाँहै जो उस सच्चेका पता पासकें। जो अन्धे हैं अविद्यामेंही रहेगा। यदि अविद्या न होती तो यह संसारही न होता, जब अविद्या दूर हुई तो फिर संसार कहाँ है। यह सच्ची भक्तिसेही दूर हो सकती है। कबीर सर्वज्ञ तथा सारे संसारकी मुक्तिका कारण है। वह गुप्त है उसका पता संतोंद्वाराही प्राप्त होता है, वह कबीर अद्वितीय तथा अमर है । वह कबीर सबसे परे है, वह कबीर समस्त वासनाओंसे न्यारा है, । वह कबीर किसीसे मैत्री अथवा द्रोह नहीं रखता वह पवित्र है, पालनकर्ता है । पाप तथा कुत्सिततासे पृथक् रहता है, वह कबीर वही है जिसने धर्मदासका गुरु बनकर संसारमें बयालीस वंश स्थापित किये उस कबीरको जो कोई पहचानेगा उसका बेड़ा पार होजायगा । जिसको उस कबीरका ज्ञान होगा वही दोनों लोकोंमें परमपद पाकर उच्च स्थितिपर आरूढ होजायगा ।

यह कबीर पहचाना नहीं जाता, कारण यह कि-स्वार्थियोंने उस सत्य कबीर को छिपा रखा है । जैसे पहले वैसेही अबके लोग भी कबीरके नामको छिपाते हैं, जहांतक होसके इस कबीरकी श्रेष्ठतापर और उसके नाम पर परदा डालते हैं । कितने तक तो ऐसे हैं जो साहबका नाम सुनकर जल मरते हैं । क्योंकि, वैसे सब मनुष्य झूठ तथा काम क्रोधादिकी वासनाको हृदयसे चाहते हैं । इसी कारण सत्यपुरुषकी भक्तिसे भागते हैं एवं कालपुरुषकी भक्तिको पसन्द करते हैं । असत्य पन्थ, भयानक, संकीर्ण, एवं सत्यपूर्ण प्रकाशमय तथा मुक्तिप्रद है ।

उल्लू, छुछुंदर और चमगीदड़ इत्यादि जितने इस प्रकारके जीव हैं उनको प्रकाशसे बड़ीहो घृणा है, वे अन्धकारको ही चाहते हैं । अन्धकारमेंही उनका समस्त कार्य्य होता है । जबतक प्रकाश रहता है तबतक वे किसी अन्धकारमय गड्ढेमें छिपे रहते हैं । जब अन्धकार होता है तब हर्ष सहित बाहर निकलते हुए अपना कार्य्य करते हैं । इसी प्रकार सब पामर पुरुष स्वसंवेदकी शिक्षासे भागते हैं । इन जीवोंकी आँखे प्रकाश देखना स्वीकार नहीं करती, उनके हृदयमें वह सत्य बल नहीं है । सांसारिक वासनाओंने उनको नितान्तही अयोग्य कर दिया है, इस कारण वे विवश हो रहे हैं ।

कबीर साहबने पहलेसे कहा है कि, मैं समस्त संसारका उद्धार कर सकता हूँ । मेरे ही द्वारा मनुष्य मुक्ति पाता है । कोई दूसरी युक्ति नहीं है । वही बात नीरू जुलाहे और नीमा जुलाहीसे कही । जब कि, कबीर साहब केवल एक

दिवसके बालकके समान थे। जब कबीर साहब पाँच वर्षके बालकके स्वरूपमें रामानन्द स्वामीके समीप थे वही बात कहते रहे, वही बात धर्म्मदास तथा राजा वीरसिंह इत्यादिसे भी कही। वही बात नब्बे वर्षकी अवस्थामें शाह सिकन्दर लोदीसे कही हैं। वही बात मुहम्मद साहबसे मोरआजके समय कहीं, उनको कोई सन्देह नहीं रह गया। मुहम्मद साहबसे प्रतिज्ञा हो गयी कि, जब आप मुझको फिर मिलोगे तब मैं आपके साथ लोकको चलूंगा। मुहम्मदसाहबको मुक्तिपानका बीड़ा दिया और कहा कि, अब तो तुम यह बीड़ा लो फिर तुम्हारे अनुयायियोंको मिलेगा और सब मुक्ति पावेंगे, तुम अब इसलाम धर्म्मको प्रचलित करो, तुम्हारे ऊपर जगदीश्वरी कृपा है, मैं अब भारतवर्षमें जा, रामानन्दको अपना गुरु बनाकर अपना धर्म्म प्रचलित करूँगा। यही बात सुलतान इबराहीम अद्धम इत्यादिसे कहते चले आये हैं कि, मैं समस्त संसारका मुक्तिदाता हूँ, इसी प्रकार अधिकारियोंको भी अपना तेज दिखाते आये हैं। यह बात सदैवसे होती चली आई है कि, जिन लोगोंने कबीर साहबका पूरा पता पाया वे तो समस्त काम क्रोधादिपर अधिकृत हुये पर जिन्हें पूरा चिन्ह न मिला योग्यता में कुछ न्यूनता रह गई उनको भी भविष्यके लिये आशा दिलायी गयी। इस सत्यगुरुका प्रताप तीनों कालमें समान रूपसे छा रहा है। यदि अन्धा सूर्य्यको न देखे तो इसमें सूर्य्यका क्या दोष है।

जिन्हें अपने पुण्यका घमण्ड हुआ है तथा सद्गुरुके शरणमें न आये वे सभी फँसे रहे एवं जो लोग अपनी योग युक्ति और समाधि आदिका गर्व रखते हैं वे ध्यानपूर्वक देखलें कि, गोरखनाथसे बढकर इस संसारमें कोई नहीं हुआ उन्होंने भी बाहर भीतरकी चारों आँखोंसे देखकर इस साहबकी शरण ली और पूर्वकालमें बढकर जो योगी हुये थे उन्होंने भी कबीर साहिबकी शरण लेकर मुक्ति पथ पाया है। दूसरी युक्तिसे किसीको राह नहीं मिली। संन्यासियोंमें दत्तदिगम्बरसे बढ़कर भी जो कोई संन्यासी हुआ वे भी सद्गुरुकी ही शरण ली। वैष्णवोंमें रामानन्द सबसे श्रेष्ठ हैं। उन्होंने भी साहबको शिष्यके रूपमें स्वीकार किया, जैनियोंमें ऋषभनाथसे बढ़कर कोई नहीं हुआ वे भी सत्यगुरुको पहचानकरही भ्रमसे अलग हुये। षट्दर्शन तथा छयानवे पाखंडमें जिन लोगोंने सद्गुरुको पहचानकर शरणली, उनको सुख मिल गया। इसी प्रकार विदेशीय मनुष्योंमेंसे भी जिनने उसे पहचाना वे आनन्दको प्राप्त हो गये मुहम्मदसे बढ़ कर कोई मुसलमान नहीं हुआ उनको भी उसीने श्रेष्ठ पद दिया। जितने पीर पैगम्बर इस पृथिवीपर प्रगट हुए, जिसको उसने उबारा तथा प्रतिष्ठा

प्रदान की वही प्रतिष्ठित हुआ। जिस किसीपर उस परमेश्वरकी दया होती है वह किसी समय किसी अवस्थामें भी हो किसी जगहमें हो निश्चय सौभाग्य और स्वतन्त्रता प्राप्त करता है। कोई किसी धर्म्ममें क्यों न हो जब उसका पुण्य पूर्ण होता है उसको तब सद्गुरुकी कृपासे सत्यपुरुष अपना दर्शन देकर समझाते हैं कि, मुझको पहचान मैं समस्त सुकर्मोंका फल देनेवाला हूँ। मैं सब ईश्वरोंका ईश्वर सर्व श्रेष्ठोंका श्रेष्ठ और सब खुदाओंका खुदा हूँ। मैं ही तुझे मुक्ति देनेवाला हूँ दूसरा कोई नहीं। यदि उस मनुष्यने कहना मान लिया तो उसका कार्य्य पूरा हो गया, जिसने कहना न माना वह गया बीता होकर कालका भोजन बना, चौरासी लाख योनिमें पड़ा गोता खाया। कितने महान् तपस्विओंने उस सत्य गुरुका उपदेश तो सुन लिया परन्तु उसके अनुसार न चले उस कारण उनका छुटकारा न हुआ। जो कोई अपने कार्य्योंपर भरोसा रखता है उस सत्य-गुरुकी शरणमें नहीं आता, वह न छूटा और न कभी छुटकारेकी राहही प्राप्त कर सकेगा।

मन तथा इन्द्रियोंके जितने जीव वशमें हैं वे अवश्यही फँसे रहेंगे। उनसे उनकी वासना कदापि पृथक् न होगी, वे सदैव कालपुरुषकी गुलामी करेंगे। जो लोग मन तथा इन्द्रीके बन्धनसे छूट गये हैं वे ही मुक्त हैं। मन तथा इन्द्रीका बन्धन कबीर साहबकी दया बिना कभी भी न छूटेगा। मायाके बन्धनमें पड़े हुये लोगोंका परमेश्वर कालपुरुष है, मायासे मुक्तोंका ईश्वर सत्यपुरुष है। यही दो धर्म्म इस संसारमें हैं तीसरा धर्म कोई नहीं है। कच्ची देह तो कभी भी वासनासे पृथक् न होगी पक्की देह बिना कबीरसाहबकी कृपाके न मिलेगी।

किसी मनुष्यको सुधि नहीं कि, वह कौन ज्ञान और किस ध्यानमें है जिससे मनुष्यकी मुक्ति हो। शरीअत (कर्मकांड) तरीकत (उपासना काण्ड) हकीकत (ज्ञानकाण्ड) और मारफत (विज्ञान काण्ड) तककी सबको सुधि है, आगे कोई क्या जाने कि, किस विद्यासे मनुष्यकी मुक्ति होती है? सो ये चारों विश्वास बन्धनही हैं। इन चारों श्रेणियोंके जीव कालपुरुषके बन्धनमें पड़े हैं। कबीर साहबने दश श्रेणियां बताई हैं जिसकी दशवीं तथा अन्तिमकी श्रेणीमें सारशब्द है। जब जिस किसीको इस सार शब्दका ज्ञान प्राप्त हो तो उसकी मुक्तिकी आशा हो सकती है। जब तक वह सारशब्द प्राप्त न हो तबतक लोक वेद तथा कालपुरुषके बन्धनमें ही पडा रहेगा। ऐसा कौनसा सिद्ध साधु पीर पैगम्बर इस पृथिवीपर है जो बिना कबीर साहबके सारशब्दका समाचार कह सके। वह सारशब्द तो केवल उसीके आधीन है दूसरा कोई नहीं जानता।

जिस किसीने पाया उसीसे पाया और दूसरा कोई गुरु इस पृथिवीपर नहीं कि, उस सारशब्दका पता देसके, संसारी मनुष्य तो जानतेही नहीं कि, सारशब्द क्या पदार्थ है ? कहाँ है, किस प्रकार किस गुरुके द्वारा प्राप्त हो सकता है ? शब्दको तो सब मानते हैं परन्तु सार शब्दको कोई नहीं जानता । शब्द तथा वाक्यादि तो मन इन्द्रीकी पकड़में आता है परन्तु सारशब्द तो मन इन्द्रीको पकड़के नितान्त बाहरकी बात है ।

मनुष्य बेचारा क्या करे मन इन्द्री आदि तो सब मिथ्या हैं उनके साथ यह भी बिलकुल मिथ्याका रूप बना हुआ है सत्यताको कैसे स्वीकार कर सकेगा क्योंकि, जब यह सत्यकी ओर झुकता है तो देह और जगत सब छोड़ना पड़ता है । मिथ्याकी ओर मनको फेरता है तो सचाईकी सूरत भी दिखाई नहीं देती, आखेट उसके हाथ नहीं आती । यह अपने शरीरके भयसे गहरे जलमें गोता नहीं मारता । जबतक गहरे जलमें गोता न मारे तबतक वह सफल मनोरथ न होगा । देखो कैसे कैसे बादशाह लोग और सिद्ध साधुगण कबीर साहबके शिष्य हुये उन सबोंने सांसारिक धन देह तथा संसारकी सर्व सामग्रियोंको तृणके समान तथा घृणित वस्तु समझकर त्याग दिया । जिन लोगोंने संसारसे प्रेम किया वे फँसे रहे यह संसार झूठा है उसके बनानेवालेकी जादूगरीका खेल है । जो कोई इस खेलमें फँसा हुआ है उसको कदापि सत्यता दिखाई न देगी । यदि मनुष्योंको प्रत्यक्षमें सत्यका स्वरूप दिखाई देता तो वे मिथ्याको भी स्वीकार न करते । सत्यताका यथार्थ स्वरूप छिपा रहनेके कारण लोग मिथ्याको सत्य करके मान रहे हैं झूठकोही सत्य जान रहे हैं यदि सत्य प्रत्यक्ष होता तो संसार न होता । जैसे सूर्य्यके सामने रात नहीं ठहरती इसी प्रकार सत्यके सामने मिथ्या नहीं ठहर सकती ।

इस पृथिवीपर जितने मनुष्य हैं सो सबके सब वुतपरस्त[1] हैं । कोई परमेश्वरकी पूजा नहीं जानता, जिसको कबीर साहबने परमेश्वरकी पूजा सिखाई है वही परमेश्वर पूजक हुआ है शेष सब बुतपर हैं । जितने लौकिक नाम हैं वे सब उसी मूर्तिके हैं कोई परमेश्वरका नाम नहीं जानता परमेश्वरका नाम वही जानेगा जिसको स्वयम् कबीर साहब बतावें । जितनी साँसारिक भजन तपस्यायें हैं वे सब विषय भोगके लिये की जाती हैं । जितने फल, दान,

---

१ सत्य पुरुष परमात्मासे अतिरिक्त जो कुछ है उसको वुत् कहते हैं उसके माननेवालेको वुतपरस्त कहते हैं । यद्यपि मुसलमान या दूसरे धर्मवाले हिन्दुओंको वुतपरस्त कहते हैं, परन्तु विचार करके देखा जाय तो सभी मतोंवाले वुतपरस्त ठहरेंगे जो विषय वासनाके वश हो स्त्री आदि व्यभिचारके साधनोंमें लगे रहते हैं वे एक राग मानके वशमें हैं ।

पुण्य, यज्ञ और प्रार्थना इत्यादि सांसारिक शुभ कर्म हैं । उन सबका लक्ष इसी ओर है । जो कोई परमेश्वर की पूजा किया चाहे वह कबीर साहबके चरण पकड़े क्योंकि, बिना उस सत्यगुरुकी दयाके किसीको परमेश्वरकी पूजा मालूम नहीं होती । सब मनुष्य गपाटामें लग रहे हैं, । किसीको सत्यकी सुधि नहीं कि, सत्य वस्तु क्या है ?

अनगिनती ब्रह्माण्डोंका रचयिता स्वामी जो जगद्गुरु जगदीश्वर है वो अपनेको एक साधारण मनुष्यके सदृश संसारमें छिपाये फिरता है । वह परमेश्वर अपनी सृष्टिमें ऐसा छिप रहा है कि, जैसे दूधमें घी छिपा हुआ है । वह प्रत्यक्षमें हाँक मार मार कर कहता और पुकारता फिरता है कि, ऐ मनुष्यों ! तुम मुझको पहचानो, मैं समस्त संसारका रचयिता तथा परमेश्वर हूं । मेरी शरणमें आओ, मैं तुमको यमकी फाँसीसे बचा दूंगा । दूसरे किसीमें ऐसा सामर्थ्य नहीं हैं कि, तुम्हारा छुटकारा कर सके । वह जो कुछ कहता है सो प्रत्यक्षमें अपने ऐश्वर्य का तेज प्रगट दिखलाभी देता है किसी दूसरेमें यह सामर्थ्य नहीं सहस्रों जन परमेश्वरीका दावा करते हैं पर दिखला नहीं सकते, इसी कारण उनका वह दावा झूंठा है, इस कारण वे कालके जालमें फँसेगें उसके अनुयायी नष्ट भ्रष्ट होंगे । उसीका दावा करना सच्चा है जो दावा करे व्हही प्रत्यक्षमें दिखला भी दे । जो दावा करके दिखला न सके वह दावा करनेवाला झूठा है । वह अवश्यही आपत्तियोंमें फँसेगा उसके पीछा करने वाले भी उसीके समान नष्ट होंगे । वही एक सच्चा साहब है जो कुछ कहता हैं वह कर दिखाता है, वही अद्वितीय है और वही समस्त हंसोंका पार उतारनेवाला है सिवा उसके दूसरा कोई नहीं हैं ।

समस्त संसारके रचयिताने तीन युग अर्थात् सत्ययुग, त्रेता, द्वापरमें इस प्रकार स्वयम् स्थान स्थान पर फिर कर लोगोंको मुक्ति प्रदान की, जब चौथा युग कलियुग आया निरञ्जनके साथ जो वचन हो चुका था वह पूरा हो गया तब साहबने अपना पन्थ पृथिवीपर प्रचलित करना चाहा अपने विशेष अंशोंको पृथिवीपर भेजकर धर्म्म प्रचारकी इच्छा की । तब सुकृतिजी (धर्म्मदास) को पहले आज्ञा दी कि, तुम चलकर संसारमें अब सत्यपन्थका प्रचार करो । तुम्हारे बयालीस वंश पृथिवीपर पन्थ चलावेंगे, जगत्की गुरुवाई करेंगे । उस सब स्वामियोंके स्वामीकी आज्ञानुसार धर्म्मदासजी पृथिवीपर आये, बाँधो गढ़में प्रगट हुये । साहबने देखा कि, हंसोंका बादशाह धर्म्मदास पृथिवीपर जा चुका है । तब सत्यगुरुने रामानन्दजीको भेजा कि, बनारसमें जा रहो, मैं तुम्हें अपना गुरु करके भक्तिका प्रचार करूँगा ।

इस संसार में दो सम्प्रदाय हैं--एक दैवी सम्प्रदाय और दूसरी आसुरी सम्प्रदाय। दैवी सम्प्रदायके आचार्य विष्णुजी हैं और आसुरी सम्प्रदायके आचार्य गुरु शिवजी हैं। विष्णु सम्प्रदायमें समस्त देवते और साधु इत्यादि संयुक्त हैं। शिव सम्प्रदायमें भूत, प्रेत, राक्षस और दैत्य इत्यादि हैं। दैवी सम्प्रदाय द्वारा भक्ति तथा मुक्ति की राह मिलती है, आसुरी सम्प्रदाय आवागमनके बन्धनमें फँसाती है। यही कारण है कि, आसुरी सम्प्रदाय को छोड़कर सद्गुरुने दैवी सम्प्रदायका महत्त्व दिखानेके लिये इसी संप्रदायकी दीक्षा ली। जम्बूद्वीपमें अपना पन्थ स्थिर किया, धर्मदासजीके वंशको समस्त संसारकी गुरुआई प्रदान की।

समस्त पृथिवीमें भारतवर्ष देश धर्म्म कर्म्म और ज्ञान ध्यानका स्थान है। उसके समान कोई देशही नहीं है, न कहीं ऐसा धर्म्म स्थान ही है। पहले समस्त संसारमें वुतपरस्ती प्रचलित थी, किसी को तनिक भी सुधि नहीं थी कि, परमेश्वर पूजा किसे कहते हैं वो क्या है? किस रीतिसे होती है? सब मनुष्य वुतपरस्त हो गये थे। परमेश्वरी पूजा संसारसे उठ गयी थी। परन्तु भारतवर्षमें उस समय भी कहीं कहीं दैवी सम्प्रदायके लोग विष्णु तथा राम-कृष्णकी भक्ति करते थे। शेषमें हनुमान, भैरव, चण्डी, भूत, प्रेत, देवी, देवता और अनगिनती प्रकारके भ्रमभूत पूजे जाते थे इसी प्रकार मिथ्या पूजाकर करके भी मनुष्य कालके ग्रास बनते जाते थे। समस्त भारतवर्षमें प्रायः भ्रम भूतकी पूजाका प्रभाव फैल रहा था केवल द्राविड़ देशमें रामकृष्णकी भक्ति हो रही थी। उस देशसे रामानन्दजी भक्ति लेकर आये तथा अन्यान्य देशोंमें प्रचार किया। इस भक्तिद्वारा मनुष्य सत्यपुरुषकी भक्तिपर अधिकृत होजाता है। यह सतोगुणी भक्ति सीधी मुक्ति मार्ग है। जब कोई मनुष्य इस सतोगुणी भक्तिकी पूर्णताको पहुँचता है तब वह विशुद्ध परमात्मा प्रसन्न होकर अपनी यथार्थ भक्ति प्रदानकर परमधामको लेजाता है। रामानन्द स्वामीने सतोगुणी भक्तिका पहले भारतवर्षमें प्रचार किया। इसी कारण कहा करते हैं कि--

साखी-- भक्ति द्राविण ऊपजी, लाये रामानन्द।
प्रगट कियो कबीरने, सातद्वीप नौखण्ड ॥

जब रामानन्दने भक्तिको उच्च श्रेणीपर पहुँचाया तब सत्यपुरुषकी दया हुई उनको उच्च पदवीपर आरूढ़ किया स्वयम् आप उनके शिष्य बन गये। उनका नाम समस्त संसारमें प्रकाशित कर दिया। रामानन्दकी श्रेष्ठता स्वर्ग पर्य्यन्त पहुँची। धर्म्मदासके बयालीस वंशको यह श्रेष्ठता प्रदान की जो कि,

सब हंसोंका सरदार बनाया जिससे वे समस्त भ्रम और बुतपरस्तीका बीज पृथिवीसे मिटा दें। जिससे कि, कोई भी मनुष्य भ्रम भूतकी पूजा करके कालपुरुषके बन्धनमें न पड़ने पावे।

इस संसारमें दो सम्प्रदाय ठहराये हैं प्रत्यक्षमें भी दोनों प्रकारके मनुष्य दिखाई देते हैं। दैवी सम्प्रदायमें कदाचित् कोई कुकर्म्म करता होगा पर आसुरी सम्प्रदायका व्यक्ति कदाचित्हो कोई सुकर्म्म करता होगा। इसी प्रकार कितने योगी तथा सन्यासी अच्छा करते हैं परन्तु उनके भीतरी रीति व्यवहारपर जब दृष्टि जावेगी तब चित्तको अत्यन्त घृणा होगी। संन्यासियोंमें दण्डी तथा दिगम्बर ये अच्छे सन्यासी हैं। परन्तु उनका अहं ब्रह्म मानलेना बन्धनका कारण है। इसी कारण आसुरी सम्प्रदाय सर्वथा त्याज्य है। जिन लोगोंने काम क्रोध आदि सब वासनाओंको त्याग दिया, अभिमान ईर्षा, मान, बड़ाई, सब छोड़कर धर्म्मदासजीके समान सत्यगुरुके चरणोंकी धूल हुये वे पवित्र हो गये, वेही हंस कबीर हैं। जिन लोगोंने अपनी श्रेष्ठता चाही सत्यगुरुके नामको छिपाया, सांसारिक कामनाओंसे मन लगाया, उनको वह पद कभी भी प्राप्त न होगा। हां! सत्यगुरुके शरणका फल उनको भक्तिके अनुसार उन्हें अवश्य मिल जावेगा।

धर्म्मदासजीने सब अभिमान त्याग दिया था, मान बड़ाईको छोड़ दिया था, सांसारिक वासनाओंको शेष न रखा था, वार पार सत्यगुरुके सिवाय दूसरे किसीको भी न जाना था इस कारण कबीर साहबने धर्म्मदासजी और उनके वंशको अपना स्थानापन्न किया, अपना अधिकार उनको प्रदान करके जीवोंके कल्याण करनेकी आज्ञा दे दी थी॥

अध्याय १७.

बन्धनके कारण।

हृदय

अपने मनको देखो इसपर विचार करो कि, यह किससे उत्पन्न हुआ क्या है, यदि पूरा विचार करोगे तो पता चलेगा कि, यह सर्व शक्तिमान् है। प्रत्येक मनपर इस मनकाही राज्य है। सब मन इसके वशमें हैं, इसी मनके बनाये हुये यही मन सबके हृदयोंमें है। जब अपना मन वशमें आ जाता है तब यह मन मृत कहलाता है। जब अपना मन मृत्य हो जाता है तो समस्त संसारके मन नष्ट हो जाते हैं। न फिर काल है न मैं हूँ न तू है। सब एक रङ्ग और ही

ढङ्ग है। आठ पत्तोंके कमलमें यह मन रहता है। जिस पत्तेके ऊपर यह मन बैठ जाता है इस जीवका वैसाही ध्यान हो जाता है सब जीव विवश होकर वही काम करने लगते हैं।

इस मनकी गतिसे मनुष्य अज्ञानी और अन्धा हो जाता है। यही मन कालपुरुष निरंजन है। तीनोंलोकोंमें गरजता फिरता है। यही सब जीव धारियों-को गतिका मान करता है। यह मन कुण्डलिनी शक्तिसे जीवित होता है। इस कुण्डलिनीकी फुँफकार ही वासनाएँ हैं। वह पूर्णतया विष है। उसी विषसे इस मनकी स्थिति है अर्थात् वासनानेही इसको स्थिर कर रक्खा है यदि वासना न हों तो वह अवश्यही नष्ट हो जाय। जब यह मृत हो तो बन्धन न रहे। यही सबके बन्धनका कारण है उसकी वासनाका विष चारों खानिके जीवोंमें व्याप रहा है। इस कारण कोई जीव वासना रहित नहीं हो सकता। इन तीनों लोगों में ऐसा कोई सामर्थ्यवान् नहीं कि, वासनासे बच सके, ये तीनोंलोक वासना-ओंसे पूर्ण हो रहे हैं। इस तीन लोकोंका वासी ऐसा कोई वैद्य नहीं कि, वास-नाके रोगको दूर कर सके। इस वासनाका विष सब जीवोंकी नस नसमें समा रहा है। इस विषको नसोंसे पृथक् करना अत्यंत कठिन है। साधुओंने तपस्या करके मनको मुरदा करनेका बहुत प्रयत्न किया तो भी यह न मरा। प्रत्यक्षमें तो वासना पृथक् हुई जान पड़ती है परन्तु समय पाकर पुनः उभर आती है एवं मनुष्यको पुनः पूर्वावस्थामें डाल देती है इस कारण वासनाओंका दूर होना असम्भव है। कोई युक्ति करो और किसी साधनसे मन मारो फिर भी आन दबावेगा आकर पराजित कर लेगा। केवल उसी सत्यगुरुकोही वासना पृथक करनेकी युक्ति मालूम है दूसरे किसीको कुछ सुधि नहीं। सब ऋषि, मुनि, सिद्ध, साधु तथा पीर पैगम्बर इत्यादि मनके दास बने रहे हैं। जबतक मनकी विजय न किया जावे तबतक बन्धन है, जीवका कल्याण होना असंभव है, माया पकड़-कर फिर भी बन्धनमें डाल देती है। इसी बातको लेकर कबीर साहिबने भी कहा है कि—

कोइ कोई पहुँचे ब्रह्मलोकको, धरि माया ले आई।
आनि बिके यम कालके फन्दे, फिर फिर गोता खाई॥

साधु लोग तो ऊपर दूर दूर तक जाते हैं। पर माया वहाँसे उनको फिर पृथिवीपर धर पटकती है फिर पड़े भवसागरहीमें गोता खाते हैं। जिधरको मन झुकता है उसी ओर विवश होकर जीव ध्यान देता है। जो कोई कहे कि, मनुष्य कर्म करनेमें स्वतंत्र हैं यह उसकी मूर्खतामात्र है। भलाजी! स्वतंत्र

कहाँ है ? जब मनके वशमें पड़कर विबश हो कार्य्य करना पड़ता है, सन्तत व्यवहार मनके अधीन रहा फिर स्वतंत्रता कहाँ रही । इस कारण स्वतंत्रताकी झूठी डींग मारनी मूर्खता नहीं तो और क्या है । मन पर विचार करनेसे सजीवका कार्य स्वतन्त्रताका, अभिमान तो मिथ्या हो चुका । अब तो केवल इतनी बातका उज्र रह गया कि, यदि में अपने कार्य्यमें स्वतन्त्र नहीं हूँ तो फिर मैं दोषी काहेको ठहराया जाता हूँ । इसका हेतु यह है कि, यह अपने आपको नहीं जानता इस कारण अपराधी होता है, जो अपने यथार्थ स्वरूपको जानले तब फिर कोई दोषी ठहराने वाला नहीं हो सकता । जबतक अपने यथार्थ स्वरूपको न जानले तबतक अवश्यही दोषी रहकर बन्धनमें पड़ा रहेगा । जब अपनेको पहचान लेगा तब फिर कहने सुननेका स्थान न रह जावेगा । अपने यथार्थस्वरूपके प्राप्त करनेकी यही युक्ति है कि, सच्चे साधु और सद्गुरुकी सेवा करे, बिना इसके कदापि छुटकारा न होगा । दिन दिन बन्धन अधिक होता जावेगा । सच्चे साधु गुरुकी सेवा समस्त कठिनाइयोंको सरलकर ज्ञानके कपाटको खोल देती है ।

जो मनकी गति और स्थितिसे अनभिज्ञ हैं वे अचेत कीडेमकोडेके बराबर हैं बड़े बड़े ऋषीश्वर करोडों वर्ष तप करके भी इस मनका दमन न कर सके किन्तु इस मनने सबके ऊपर अधिकार करके उनकी तपस्याको नष्ट कर दिया । तीनों लोकोंमें ऐसा कोई नहीं है जो इस मनपर विजय प्राप्त करसके, जब बड़े बड़े सिद्धोंकी भी वो चटनी कर गया तो दूसरे किसकी शक्ति है जो इसका सामना कर सके, मन मायाकी चक्की चल रही है सारे जीव इसीमें पीसे जाते हैं । सब देवता इसीके गुलाम हैं । यह सारे संसारका सर्व शक्तिमान् अधिकारी है, यह सारे संसारमें व्याप रहा है इसी कारण इसे कई सुयोग्य व्यक्ति महत्तत्त्व कहकर भी स्मरण करते हैं, इसके बलका कोई ठिकाना नहीं है ।।

हृदयकी व्याख्या

सीनेके भीतर कमलकोश जैसा नीचेकी ओर मुख करके लटका हुआ हृदय कमल है मन इसीमें विराजा करता है इस कारण मनको भी हृदय कहते हैं ।" "हृ धातुसे कयन् प्रत्यय तथा दुक्" का आगम होकर उक्त शब्द बनता है इन्द्रियाँ, विषयसंबन्ध इसीकी प्रेरणासे करती हैं, यह इन्द्रियोंसे विषय तक भी पहुँचता है, जीव इसीमें रहता है, परमात्माका भी निवास इसीमें है, जिसके लिये कबीर साहिबने भी कहा है, कि–"खोज दिल बीच जहाँ बसत हक्का" इन कारणोंसे यह हृदय कहलाता है, इसीने सबको भुला रखा है, संसारमें यह बड़ा दुर्दान्त बैरी है, जीव अपने त्राणका उपाय करता हुआ भी इसके वशमें

आजाता है। गुरुआ लोग मिलते हैं वे भी हृदयके आँधरे ही होते हैं उनसे भी यही दशा होती है कि–

साखी–जानंता पूछी नहीं, पूछि किया नहिं गौन।
अन्धेको अन्धा मिला, राह बतावे कौन ॥

ग़ज़ल–पुर जह्र सर तापाय है उस साँपनीका साँप है।
ख़ालिक है लोक और वेदका सब भेद मख़ज़न आप है ॥
बरतर यही शैतान है विष्णु यही भगवान है।
पीर और पैगम्बर औलिया सिद्ध साधुका यह जाप है ॥
ऋषि मुनि इसीकी बगलमें भूले सब उसकी दगलमें।
दोनों करम उसके धरम कहीं पुण्य और कहीं पाप है ॥
नेकी बदी यह कर जुदी जाँदार पर दोनों लदी।
दोजख़ बिहिश्त एराफ़में सब तौल और सब माप है ॥
इस साँपके दो दाँत हैं माया व ब्रह्म दो भाँत हैं।
काटा है सब मुरदा हुये घेरे जो तो तीनों ताप हैं ॥
आलमको यह अजदर लड़े आजिज कदम सतगुरु पड़े।
आदम बेचारा क्या करे चारा यही एक थाप है ॥

यह गजल भी मनकी कल्पनाओंका ही खाँका खीचता है कि, जो कुछ है सो यह है, यह भवसागर एक अगम्य समुद्र है वेग पूर्वक इसकी लहरें बह रही हैं। सब जीव उसीमें बहे जाते हैं। कोई भी जीव ठौर ठिकानेपर नहीं पहुँच सकता। सब इसीमें पड़े गोते खा रहे हैं। कोई सिद्ध, साधु, ऋषि, मुनि, पीर पैगम्बर, सत्यपुरुषकी सहायता बिना कदापि नहीं निकल सकता। यह मन इस समुद्रमें मस्त होकर मौज मारता फिरता है, किसीके रोकनेसे नहीं रुकता। यह मन भवसागर है और भवसागरही मन है, समस्त संसारमें इसीकी पूजा हो रही है। जिसको पूर्ण पारख प्राप्त हो वह इस मनके भेदको जाने। जितने औलिया, अम्बिया ऋषि, मुनि हो गये, तथा अब हैं और होते हैं सबमें थोडा बहुत ज्ञानका प्रकाश रहता है। परन्तु ऐसा प्रकाश किसीमें न हुआ कि, सब भेदको जाने। कितने ऐसे पैगम्बर हुए कि, जो केवल आकाश वाणीसे जानते और उसीके अनुसार चलते थे। इसका तो उनको तनिक भी ज्ञान नहीं था कि, यह आकाशवाणी स्वयम् जगदीश्वरकी ओरसे है अथवा भूत पिशाचकी ओरसे है। भाँति भाँतिकी कामनाओंमें फँसकर परमेश्वरसे प्रार्थना करते थे और उनकी इच्छानुसार आकाशवाणी होती थी। उस आकाशवाणीको वे परमेश्वर-

की ओरसे जानते थे। सुतरां मैंने एक पुस्तक "तिब्ब नबवी" में लिखा हुआ देखा था। वह उदाहरण मैं यहाँ लिखता हूँ कि–बलूचिस्तानका एक नबी था, वह नपुंसक हो गया था तब खुदासे प्रार्थना की कि, प्रभु मुझे पुरुषत्व प्रदान कर; जिससे मैं अपनी स्त्रीको प्रसन्न कर सकूं। तब आकाशवाणी हुई कि, बाजीकरणके लिये खूब माँस खाया करो, वह पैगम्बर उसको खुदाका कलाम समझकर उसीके अनुसार करने लगा। जैसी हृदयकी इच्छा होती है वैसीही आकाशवाणी बोलती है। जिसको परमेश्वरकी तनिक भी पहचान नहीं हुई उसके लिये परमेश्वरी वाणी नहीं हो सकती, वो किसी ऐसे ही प्राणीको हो सकती है इस प्रकार समस्त पीर पैगम्बरोंने धोखा खाया। सत्य और झूठको बिना बूझे योंही पापमें फँसे।

ऊपर कहे हुए तात्पर्य्यको एक गजलमें कहते हैं–

बनी आदमको क्या उसकी ख़बर है। खुदा है याकि शेर इनसान दर है ॥
फिकिर और सोच है दिलमें न उसको। गुनहमें दिन बदिन यह तरबतर है ॥
खुदासे है सदा यह आसमानी । मालिक जिन वो परी या कोई नर है ॥
है वे गुरुज्ञान जाहिल आदमी यह। वही दाना जिसे हक़की खबर है ॥
जिसे झूठ सचकी हो न पहचान। वही हैवान मुतलक़ सरबसर है ॥
मकद्दर कर दिया दिल आईन को। यह नफसानी हवस जुलमात घर है।
तअस्सुबमें फँसे इनसान सारे । न तालीम और तलकीन कारगर है ॥
हमारा पेशवा मजहब बड़ा है। कहे सब ख्वाब गफलतका खुमर है ॥
पसन्दीदा न हो राहरास्त इसके । यह बद अमलोंका अपने सब समर है ॥
ज़हरको जिन्दगी दारूय जाने। हयाते–आब कह कातिल ज़हर है ॥
सभीको नाग मलकुलमौत काटे। तअस्सुब तार उसकी सब लहर है ॥
हक़ीक़ी यार पहचाने जो आजिज़। वही सब आदमीमें बहरेवर है ॥

यह मन तीनलोकका परमेश्वर है। पिण्ड और ब्रह्माण्ड दोनोंपर यह अधिकृत और शासक है। यह मन काल पुरुष और विराट्‌रूप है। सब जीव-धारी इसके आधीन हैं। यह कदापि किसीके वशमें नहीं आता, न कोई इसको अपने आधीनही कर सकता है। जो कोई इसको आधीन किया चाहता है, पहले उसीको धोका देकर यह मार लेता है। बड़े बड़े ऋषि मुनि और तपस्वियोंको इसने मार लिया पर यह कभी किसीके वशमें नहीं आया। जब यह मरता है तब ही ज्ञानका प्रकाश होता है, बिना इसके मरे नहीं होता; इसी कारण कबीर साहिबने लिखा है कि–

कबीर साहबकी साखी मनको अङ्ग ।

कबीर–मनके मते न चालिये, छोडि जीवकी बान[१] ।
कत[२]वारीके तार ज्यों, उलट अपौठा[३] ठान ॥

कबीर–चिन्ता चित्त बिसारिये, फिर बुझिये नहिं कोय ।
इन्द्रा[४]पसर निवारिये, सहज मिलेगा सोय ॥

कबीर–हिरदे भीतर आरसी, मुंह देखा नहिं जाय ।
मुखतो तबही देखि है, जो दिलकी दुबिधा जाय ॥

कबीर–मन गोरख मन गोविन्दा, मनही औघड होय ।
जो मन राखे जतन करि, तो आपै करता सोय ॥

कबीर–जो मन गाफिल हुआ, तो सुमिरन लागे नाहिं ॥
धनी सहेगा शासना, यमके दरगह माहिं ॥

कबीर–कोट करम पल में कटे, यह मन विषया स्वाद ।
सद्गुरु शब्द माना नहीं, जन्म गँवायो बाद ॥

कबीर–कागज केरी नावरी, पानी केरी गङ्ग ।
कहैं कबीर कैसे तरे, पाँच कुसंङ्गी सङ्ग ॥

कबीर–यह मन पंछी हो उड़ा, बहुतक चढ़ा अकाश ॥
वहाँ ही से झट गिर पड़ा, मन मायाके पास ॥

कबीर–भक्ति द्वारा सांकारा, राई दशवें भाय ।
मन तो मैगल हो रहा, क्यों कर सके समाय ॥

कबीर–कर्ता था तो क्यों रहा, अब का क्यों पछताय ।
बोया पेड़ बबूलका, आम कहाँ से खाय ॥

कबीर–काया देवल मन ध्वजा, विषय लहर फहराय ।
मन चाले देवल चले, ताका सर्वस जाय ॥

कबीर–मनका मनोरथ छोड़ दे, तेरा किया नहिं होय ।
पानीमें घिव नीकसे, रूखा खाय न कोय ॥

कबीर–काया कसू कमान ज्यों, पाँच तत्व कर बान ।
मारूँ तो मन मृगाको, नहीं तो मिथ्या जान ॥

गजल ।

तु दिल है याकि तूही खुद खुदा है । बहर रुख तुम्ही तौ सूरतो सदा है ॥
तुम्ही साहब तुम्ही बन्दःहुआ है । तुम्ही साफी तुही गन्दःहुआ है ॥

---

१ मुताबिक, २ स्वभाव, ३ कतली, ४ भिन्न, ५ विषयस्पर्श ६ दण्ड, ७ पांच विषयोंके इच्छुक इन्द्रिय ।

तुम्ही मसजिद व बुत खानः में बैठा । तुही सब जीवके अन्दर है पैठा ॥
तु नफसानी हवा आलम में छोड़े । तुम्ही फिर आप अपनी बाग मोडे ॥
अमल के दामको तूने बनाया । नहीं और अमरमें सबको फँसाया ॥
फसे जिस हालमें सब रूहे मुरगा । न पहचाने कोई कौले बुजुरगाँ ॥
रजा और बीमकी दो मेख मारा । मुसल्लम दामको उस पर पसारा ॥
बहर किस्मे हवस लज्जात दाना । फँसे आ जिस ऊपर मुर्गा जमाना ॥
कहीं भगवा तिलक कण्ठी है माला । कहीं खुद भेष घर बैठे निराला ॥
कहीं यह दिल हुआ हिन्दू मुसलमां । कहीं जिन्नो परी और हूरोगिलमा ॥
कहीं औतार धर अल्ला कहावे । कहीं हरि भगत हो हरिगुणको गावे ॥
कहीं फासिक मुहब्बत यार खाली । कहीं आशक हुया रोडा जलाली ॥
बहरसू देखिये दिलका तमासा । जहां कौनेन पानीका बतासा ॥

इस गजलमें चित्तकी सर्वोत्कृष्ट महत्ता वर्णन की है कि, खुदा आदि सब कुछ तू है ।

इस चित्तके इतने नाम हैं—मन, चित्त, अहंकार, स्वान्त; जब मनुष्यका मन राग द्वेषमें फँसता है तब नसोंमें विभिन्नता आजाती है । जो नसें रक्त तथा वीर्य्य स्थान स्थानपर पहुँचाती हैं, उनमें दोष आजाता है । जैसे बादशाहके दुःख अथवा क्रोधसे समस्त सैन्य क्रोधान्वित होती हैं अथवा दुःखी होती है, उसी प्रकार मनमें विभिन्नता आनेसे समस्त नसोंमें विभिन्नता आजाती है । तब दोनों प्रकारके रोग होते हैं क्योंकि, नाडियोंमें विभिन्नता पड़नेसे अन्न नहीं पचता, कच्चा रह जाता है तब शारीरिक रोग और मानसिक चिन्ता घेरती है ।

जीव, मन, चित्त, बुद्धि, अहंकार यह सब अशुद्ध चित्तका नाम है । जितना दृश्य दिखाई देता है वो सब मनका रूप है । मन तथा कर्म दोनों समान स्वरूपके हैं । जब मन वशमें आता है तब समस्त कर्म्म भरम मिट जाते हैं । यह मन ब्रह्म शक्तिका बल है, इस कारण ब्रह्म और मनमें कुछ विभिन्नता नहीं । इस मनहीकी गतिसे देवता राक्षस हो जाते हैं और राक्षस देवता बन जाते हैं । मनुष्य नाग, नाग मनुष्य, पुरुष स्त्री, स्त्री पुरुष, पुत्र पिता और पिता पुत्र हो जाते हैं । जैसे तमाशा करनेवाला शीघ्रतापूर्वक भांति भांतिके रूप दिखाता है फिर पलट लेता है । कबूतर जिस प्रकार गिरह मारता जाता है, उसी तरह आवागमन भी होता जाता है । जब मन विषय वासनासे विरक्त होता है तब मनहीसे मन मुरदा हो जाता है जैसे ठण्ढा लोहा गरम लोहेको काट डालता है ।

यह मन कालपुरुष है, समस्त संसारको इसने भटकाकर खा लिया है। पर जब यह भक्तिकी ओर ध्यान देता है तब परमपदको पहुँचा देता है, अपने यथार्थसे संयुक्त कर देता है। सुतरां दत्त, दिगम्बर, दुर्वासा, नारद, गोरखनाथ, मीराबाई इत्यादिको सत्यगुरु मिल गये जिससे उनका कार्य्य सिद्ध हो गया। जब मनुष्यका सुकर्म्म पूर्णताको पहुँचता है तब सत्यगुरु प्राप्त हो मनुष्योंको यथेष्ट स्थानपर पहुँचा देता है। ग्रन्थ कबीर वाणी तथा अन्यान्य ग्रन्थोंमें लिखा है कि, जब कबीर साहब झाँझरी द्वीपको गये, तब उस समय कालपुरुषने कबीर साहबसे कहा कि, आप अपनी देह मुझको दे। कबीर साहबने कृपा करके अपनी देह उसको देदी। इस कारण कालपुरुषके पास दोनों देह हैं। जब चाहे तब अपनी देह दिखावे और जब चाहे तब सत्यगुरुकी देह धारण करे। बे शिरकी देह कालकी है और माथा सहित देह कबीर साहबकी है जो उसको प्रदानकी गयी है। परिणाम यह है कि, जो कोई भजन और तपस्याको उच्चश्रेणीपर पहुँचाता है और उसका प्रेम सच्चा होता है तो उसी कालकी मूर्तिमेंसे दयालु सत्यगुरु निकलकर जीवका कार्य्य सम्पूर्ण कर देते हैं। इस कलियुगमें मनुष्यसे सुकृति और भजन भक्ति पूर्ण नहीं हो सकते; इस कारण उसे सत्यगुरुकी शरण ग्रहण करना आवश्यक है। शरणका कर्तव्य पूर्ण करनाही शुभकर्मकी अवधि है। अपने शरीरकी आशा पूर्णतया छोड़ दे। दिनरात भजन तथा ध्यानमें निमग्न हो जावे, अपने शरीरको तुच्छ समझकर अपने प्यारे के मिलनेके अनुरागमें विह्वल होकर प्रार्थना करे। जब पूर्ण विरहमें निमग्न हो जावेगा तो एक न एक दिन उसे अवश्य दर्शन होगा।

शब्द– गलतान मता जब आवेगा तब जिवड़ा सुख पावेगा,।
आचार विचार छुटे या जिवका दुर्मति दूर नसावेगा।।
मायामोह भरमका बाद्दल परदा खोल बहावेगा।
पाँचपच्चीस करो सब अपने सद्गुरु शब्द लखावेगा।।
रहनि गहिनकी नाव सँवारो तब भव पार सिधावेगा।
हंस सुजन जन बहुरि मिलैंगे साहबके गुण गावेगा।।
अमरलोक अमृतकी काया तहाँ बड़ा सुख पावेगा।।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो यह तत्त ब्रिरला पावेगा।।

इस प्रकार प्रेममें मग्न होनेसे सत्यगुरुका दर्शन होता है यदि कोई कहे कि, जब इस प्रकारकी निमग्नता हुई तब आपसे आप काम हो जावेगा फिर सत्यगुरुका क्या काम है। उसे जानना चाहिये कि, कितनाही भजन क्यों न करे,

पर सत्यगुरुकी कृतज्ञता न हो तो छुटकारेका ढंग न होगा, क्योंकि, सहस्रोंने बहुत प्रेम किया, सत्यगुरु उनको मिले भी पर उनके मनमें घमण्ड रहा । वे सत्यगुरुके चरणके धूल न हुये इस कारण संसारमें ही फँसे रहे ।

शब्द– मनरे तू मनही उलट समाना ।
गुरु परताप अल्क भइ तोको नातो था अज्ञाना ।।
नियरेतें दूर दूरते नियरे जो जैसें अनुमाना ।
आलूते कोचढोमिलवेड़ा जिन रहे पियातन जाना ।।
उलटि कमल षटचक्रहि वेधै सहज शून्य अनुरागी ।।
आवे न जाय मरे नहिं जमने ताहीं को कहो जो वैरागी ।।
बंकनालकी सुधिकर वौरे मेरुदण्ड कर छाजा ।
गरजे गगन मन शून्य समाना बाजे अनहद वाजा ।।
या मनले केते अरुझाने शिव सनकादिक ब्रह्मा ।
खोजत खोजत पार न पायो अगम अपार याकी महिमा ।।
यह मन मस्त बसे वन कुञ्जर शून्य सकल बन खाया ।
जव वश पन्यो महावत केरे अङ्कुश दे मुरकाया ।।
जो मन कहो जो तू काहे को संशय जिन खोजा तिन पाया ।
रहे समाय अभय सागरमें बहुरि न भवजल आया ।।
अनुभव कथा कौनसे कहिये है कोई सन्त विवेकी ।।
कहैं कवीर गुरुदया है पलीता सूझल बिरले देखी ।।

यथा–मन तू थकत थकत थकि जाई ।
बिन थाके तेरो काज न सरि है फिर पीछे पछताई ।।
जबलग तू सजीव रहत है तब लग परदा भाई ।
टूट जाय ओट तिनकाकी जो मन शिखर ढहाई ।।
सकल तेज तज होय नपुंसक या मत सुन तू मेरी ।
जीयत मृतक दशा विचारे पावे वस्तु घनेरी ।।
याके परे और कछु नाहीं या मत सबसे पूरा ।
कहैं कवीर मार मन मैगल होय रहो जैसे धूरा ।।

जिस मनुष्यको अपनी कामनाओंको छोड़ना कठिन है वह वासनाओंका कीड़ा है । कामनाओंके पूर्ण करनेसे मन मोटा हो जाता है स्थूल होकर ऐसा बलवान् हो जाता है कि, फिर वशमें नहीं आता । जब मनुष्य कामनाओंको छोड़देता है जिस पदार्थ पर मन जाय उसको स्वीकार नहीं करता तब यह मन मुरदाके समान होजाता है ।

इस मनको यों मारना चाहिये कि, वाँछित पदार्थकी ओर गति न करने पावे। अन्तरही अन्तरगति करके रह जाय, बहिर्गत न होने पावे। जो इच्छा मनमें उठे उसको रोके तब मन शान्त हो जाता है, यह मन शून्य स्वरूप है। संकल्प विकल्पहीका नाम मन है और चिन्तन करनेसे यह चित्त कहलाता है। जब प्राण स्फुरता है तब मन प्रगट होते हैं उसीसे संसारकी उत्पत्ति होती है। इस चित्तके दो बीज हैं-एक तो प्राणोंकी गति और दूसरे वासनाका चलायमान होना। कुण्डलिनीके शब्दसे जो शब्द उत्पन्न होता है, वही मन है वो हृदय आकाशसे निकलता है और बाहर जाता है। बाहरसे भीतर आता है वही प्राण है जिसमें मन विराजमान है और कामनाओंके कारण देश देशमें फिरा करता है।

पाँच वृत्ति

इस मनकी पाँच वृत्ति अर्थात् अवस्थाएँ हैं-प्रमाण, विपर्यय, विकल्प, निद्रा, स्मृति इनका लक्षण योग शास्त्रमें किया है। अब उन पाँचोंका विवरण सुनो-

१ प्रमाण-प्रमाके साधनको प्रमाण कहते हैं। इसमें यथार्थ ज्ञानका नाम प्रमा है, इसके जो प्रत्यक्षादि साधन हैं वे सब प्रमाण कहलाते हैं।

२ विपर्यय-मिथ्या ज्ञानका नाम है यानी जो जिस रूपका हुआ हो वो वास्तवमें उस रूपमें प्रतिष्ठित न हो किन्तु भ्रमसे हो रहा हो।

३ विकल्प-जो पदार्थ शशशृंगकी तरह वास्तवमें न होकर भी शब्दकी शक्तिकी महिमासे प्रतीत हो रहा हो।

४ निद्रा-सब इन्द्रियोंके विषयोंके अनुभवके अभावके कारण तमका अवलंब करनेवाली वृत्तिका नाम नीन्द है क्योंकि, जब मनुष्य उठता है तो उसे सुषुप्तिकालके तमका अनुभव होता है।

५ स्मृति-अनुभव किये हुए विषयको उद्बोधकके व्यापारसे फिर हृदयमें उपस्थित हो जानेको कहते हैं।

ये पाँचों वृत्तियाँ क्लिष्ट और अक्लिष्ट भेदसे दो दो प्रकारकी हैं। जब ये परमात्माकी तरफ दौडने लगती हैं तो ये अक्लिष्ट कहलाने लगती हैं। निम्नलिखित शब्दमें कबीर साहिबने मनका सर्प तथा उनकी पाँचों वृत्तियोंको पाँच फन कहा है यह नीचेके दो टुकड़ोंसे झलकता है।

शब्द-विछुवा कैसे रहे वन ठनके

बिछुवा वीर विषय रस बोरी शुद्ध हरी हरिजनके ॥
द्विज कन्या गुरु कीन्ह अरव सुत लै चौबीस मत मनके ॥

काया नगर नाग एक रक्षित छापा है पाँचों फनके ॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो यहिते मोर पैया झनके ॥

यह मन व्याघ्र सदृश है। इन पाँचों हथियारोंसे सभी जीवोंका शिकार करता है, कोई इसको पकड़से छूट नहीं सकता, सबको पकड़ पकड़कर खा लेता है। कोई भी ऋषि, मुनि, सिद्ध, साधु इससे बच नहीं सकता। यही मन कालपुरुष है इसके भेदको किसीने नहीं जाना। मनुष्यका कुछ बल नहीं चलता। जिधरको चाहता है उधरही बुद्धिको फेर देता है। यह मनुष्य विचारा वैसेही कार्य्य करने लगता है। भलाई बुराईकी ओर झुका देना मनके आधीन है। यह समस्त इन्द्रियोंका राजा है। सभी इन्द्रियाँ मन राजाके सिपाही हैं। केवल एकही इन्द्रिय ज्ञान और कर्म्म नष्ट करनेको बहुत है। जिसके साथ इतनी इन्द्रियाँ लग रही हैं फिर यह जीव कैसे बच सकता है? जिधरको यह मन बादशाह झुकता है उधरही समस्त इन्द्रियाँ दौड़ पड़ती हैं। यह मन तथा सब इन्द्रियाँ शिकारी हैं कोई जीव इनसे बच नहीं सकता। यह भाव इस निम्नलिखित साखीसे स्पष्ट प्रतीत होता है—

कबीरसाहबकी साखी

काहे हिरनी दूबरी, यही हरियरे ताल ।
लाख शिकारी एक मृग केतक टारे भाल ॥

ब्रह्माण्ड तथा पिण्ड दोनों एक प्रकारके हैं, बाल बराबर भी विभिन्नता नहीं है। एक बहुत बड़ा अण्डाकार स्वरूप तो ब्रह्माण्ड है, दूसरा छोटा अण्डाकार स्वरूप मनुष्यका शरीर है। दोनोंकी एकही बात है। कुछ विभिन्नता नहीं है। इस बननेने ही आवागमनका पथ बनाया और आपही एकसे अनेक हुआ। चौरासी लाख योनिमें मारा मारा फिरता है। जिस पथसे निकलता है उसीमें बारम्बार घुसनेका उद्योग करता है। उसकी तृष्णा कभी कम नहीं होती। उस स्त्रीने पहले ब्रह्मा, विष्णु और शिवको मार लिया फिर समस्त संसारको मारने और खाने लगी। यह बड़ी बलिष्ठ डायन है। यह ज्ञानरूप बच्चोंका कलेजा खाया करती है। इस स्त्रीने अपने छः स्वरूप बनाये हैं। पद्मिनी, चित्रिनी, हस्तिनी, शंखिनी, नागिनी, डाकिनी उनके नाम हैं और इन छः प्रकारकी स्त्रियोंके छः पुरुष हैं। पद्मिनीका पुरुष खरगोश (शशा) है। चित्रिणीका पुरुष हिरन है। हस्तिनीका पुरुष बैल है। शंखिनीका पुरुष गदहा है। नागिनीका नर घोड़ा है। डाकिनीका जोड़ा भैंसा है।

इस प्रकार छः प्रकारकी स्त्रियाँ छः प्रकारके पुरुषोंको ढूंढ़ती हैं। जिस स्त्रीको अपनी इच्छानुसार पति मिले वह तो प्रसन्न रहती हैं और उसका कार्य्य

पूरा होता है। यदि विरुद्ध मिले तो उस स्त्रीका प्रेम अपने पतिसे नहीं होता। उसमें मन नहीं लगता। अपने उपपति को ढूंढ़ती फिरती है। वह जिसके साथ विवाही जाती है वह तो उसका पति नहीं। इस कारण कामाग्नि उसके हृदयको जलाती रहती है। तब मस्त फिरती है और धूर्त तथा व्यभिचारिणी हो जाती है। जब तक उसका पति नहीं मिलता तब तक उसके कामकी अग्नि शान्त नहीं होती।

मायाने अपने तीन स्वरूप बनाया है वे जड चैतन्य और वाणी हैं जड तो चाँदी सोना रत्न आदि है। चैतन्य स्त्री है वाणीमें समस्त वेद पुस्तकें और वाणी विद्या इत्यादि संयुक्त हैं। इन तीनों स्वरूपसे उसने समस्त संसारको अपने वशीभूत कर लिया है। बिना तात्पर्य समझे वेद और बाणी पढ़ पढ़ सभी मस्त होकर इस बाणीमें डुबकियां खा रहे हैं। इस वेद वाणी रूप समुद्रका भेद किसीने नहीं पाया। पढ़ा तो सही पर यथार्थ भेदको नहीं जान सका। इस कारण उनका पढ़ना निरर्थक हुआ। इससे कुछ मनकी स्वच्छता नहीं हुई। क्योंकि जो सत्य तात्पर्य्य है उसको नहीं सूझा न मनमें विचार आया।

(कबीर साहबकी) शब्द अङ्गकी साखी

कबीर—एक शब्द गुरु देवका, तामें अनंत विचार।
पण्डित थाके मुनि जना, वेद न पावें पार॥

कबीर—आसा बासा सन्तकी, ब्रह्मा लखे न वेद।
षट् दर्शन खटपट करें, बिरला पावै भेद॥

कबीर दीपक जोइया, देखा अपरं देव।
चार वेदकी गम नहीं, तहां कबीरा सेव॥

कबीर—ऐसी अद्भुत मत कथो, कथो तो धरो छिपाय।
वेद कुरानों ना लिखी, कथों तो को पतियाय॥

कबीर—मौं मूँड़ू ता गुरुकी, जाते भरम न जाय॥
आप बूडे चहुँ वेदमें, चेले दियो बहाय॥

कबीर—बाणी तो पानी भरे, चारों वेद हजूर।
करनी तो गारा करे, साहबका घर दूर॥

कबीर—बाणी तो पानी भरे, चारो वेद हजूर।
चूको सेवा वन्दगी, किया चाकरी दूर॥

उस बाणीने सर्व मनुष्योंके मनमें अभिमान और अहंकार भर दिया। जब मनुष्य कामनाके आधीन होता है तब वस्तुकी इतनी हानि होती है : तप, सत्य, शौच, लक्ष्मी, लज्जा, बुद्धि, सुकृति और आयु।

विषयियोंके निमित्त पूर्व लिखित येही तीनों पदार्थ हैं जबतक संसारमें रहते हैं तबतक तो विषयवासना और शरीरके पालन पोषणमें लगे रहते हैं। मृत्युके पीछे वैकुण्ठमें आनन्द लूटते तथा अप्सराओंसे सम्भोगकी आशा रखते हैं। विषयी पुरुषोंको विषय भोगसे कभी निवृत्ति नहीं होती। जैसे संसारमें वैसेही परलोकमें भी इसी वासनामें फँसे रहते हैं। वासनायें इनको उसी प्रकार नचाती फिरती हैं, जैसे कि, कलन्दर बन्दरको नचाता फिरता है उसी मनकी गतिसे सब मनुष्यों की हीन दशा हो रही है।

यह मन निरञ्जन है। नेत्रोंके श्वेत स्थानमें इसका निवास है। इसी स्थानपर बैठकर समस्त विषय वासनाका आनन्द लेता है। इस कारण प्रथम नेत्र गतिमान होते हैं। पहले नेत्रोंमें गति होती है पीछे देह चलती है, तब उसकी कामना पूरी होती है। निरञ्जन आखोंकी सफेदीमें बैठकर सब भोग भोगता है। यही कारण है कि, रुग्नावस्थामें मनुष्यका समस्त शरीर तो शुष्क हो जाता है पर उसकी आखोंकी डलियाँ ज्यों की त्यों रह जाती हैं। वह न कभी घटती हैं और न बढती हैं। यह निरञ्जनका स्थान सर्वदा समानरूपसे रहता है। सर्व शरीर सूख जाता है तथापि निरञ्जनकी ज्योति समान रूपसे रहती है। इसी कारण साधु लोग पहले अपनी दृष्टिको साधते हैं जिससे इधर उधर बहकने न पावे। आँखोंको एक स्थानपर स्थिर रखते हैं। जब आँखोंको अपने वशमें कर लेते हैं तब फिर मनको आधीन करते हैं। नेत्रोंके भटकनेसे मन सदैव अस्थिर तथा चञ्चल रहता है। जब यह मनही वशीभूत न हो तो अपने रूपका ज्ञान कैसे होगा?

अन्धी आँखोंमें निरञ्जन मिट जाता है। जब उसका स्थानही नहीं रहता तो वह भी नहीं रहता। इस कारण जो अन्धा होता है उसकी बुद्धि अधिक होती है। अन्धा बिना देखे सब कुछ जान लेता है। अन्धेकी बुद्धि बडी तीक्ष्ण होती है।

घोर निद्राको सुषुप्ति कहते हैं। वो दो प्रकारकी होती है। एक तो अज्ञान सुषुप्ति दूसरी ज्ञान सुषुप्ति। इन दोनों सुषुप्तियोंमें संसार नष्ट हुआ जान पड़ता है परन्तु संसारका बीज रहता है। यदि बीज न होता तो वही कदापि जाग्रत अवस्थामें न आता। इसी कारण जब ध्यानमें लीन होता है तब बड़ा प्रकाश उत्पन्न होता है। इस प्रकाशमें वासना तो दूर हुई जान पड़ती है पर वासनाका बीज नष्ट नहीं होता। ये मनके व्युत्थित होतेही फिर उसी रूपमें प्रगट हो जाती है। सदाकी तरह फिर संसारको उपस्थित करती है पर जब

उनकी बीज शक्तिका नाश कर दिया जाता है फिर वो जगज्जाल नहीं फैला सकती किन्तु जबतक इनकी बीज शक्ति नहीं नष्ट होती अवकाश पातेही मनकी एकाग्रताको मिटा देती हैं इस दशामें साधकको सच्चे गुरुकी आवश्यकता होती है।

योगी योगयुक्तिसे समाधिके समयमें मनको वश कर लेते हैं पर समाधिके हटतेही मनकी वृत्तिसरूपता हो जाती है। बिना सच्चे गुरुकी कृपासे वासनाओंको नहीं मार सकता ये बड़ी प्रबल है अब हम वासनाओंकाही निरूपण करते हैं।

मनके पाँच अहङ्कार

स्थूल, लिङ्ग, कारण, महाकारण और कैवल्य मनके ये पाँच अहंकार हैं इसीमें स्वामी सेवक देवता और पुजारी सभी बन्द हैं। इन पाँचों अहंकारोंसे बाहर निकलना कठिन है। जिसने इन अहंकारोंको बनाया है वह स्वयम् इन्हीं में ही फँसा है। सत्यगुरु बिना इसको कौन निकाले। बँधेको बँधा कैसे छुड़ावे। अन्धेको अन्धा क्या राह दिखा सकेगा। ये ही पाँचो अहंकार मनुष्यके बन्धनकी जड़ हैं सब जीव इन्हींमें आवागमन किया करते हैं।

१ स्थूल अहंकार—स्थूल अहंकारके अभिमानीमें यह कामना रहती है कि, पुत्र, गृह, धन, संसार, राग, रङ्ग, अच्छे अच्छे भोजन सौन्दर्य, सुगन्ध, सूंघ अच्छे वस्तु, सवारी, शिकार और सम्भोग इत्यादि मिलें ये तो मिल जाय प्रसन्न होता है। नहीं तो दुःखी रहता है।

२ लिंग अहंकार—लिङ्ग, कहो अथवा सूक्ष्म कहो। इस अहंकारवाले के मनमें यह रहता कि, स्वर्ग तथा वैकुण्ठके दूतोंसे मिलूं। यंत्र मंत्र तंत्रादिकी योग्यता प्राप्त करूं। राजा इन्द्र इत्यादिके राज्यको प्राप्त करूं, उसकी विद्या जानूं जो यह सब मिले तो प्रसन्न रहता है न मिले तो दुःखी होता है।

३ कारण अहंकार—कारण अहंकारवालेके मनमें यह ध्यान रहता है कि, योग समाधि वचन सिद्धि, प्राणायाम और प्रत्याहार, भूत, भविष्य, वर्तमानका हाल जाननेकी सिद्धि इत्यादि हों। दूसरोंकी देहमें समा जाना एकसे सहस्रों हो जाना, फिर सहस्रोंसे एक हो जाना, यह सब इसी अहंकारीके काम हैं। सुतरां जैसे शंकराचार्य्यजी संन्यासियोंके गुरु राजा अमरूकके शरीरमें समा गये और छः मास पर्य्यन्त रह आये वो इसीके बलसे रह आये थे।

४ महाकारण अहंकार—महाकारण देहके अभिमानीको यह इच्छा होती है कि, योग वैराग्य, समाधि क्रिया और उपरम, तितिक्षा, शम, दम, मुमुक्षताकी अवस्था और ज्ञान मिलें। मैं ज्ञानी और मैं मुक्त हूँ। दूसरे सब बन्धनमें हैं। केवल मैं छूटा हुआ हूँ। ऐसी अवस्था जब पूरी हो तो बड़ी प्रसन्नता हो और

न हो तो दुःख होगा। जब ज्ञान हुआ तो सर्व दुःख सुख भोगता है और समस्त सामर्थ्य रखता है।

५ कैवल्य अहंकार—कैवल्य अहंकारवालेके देहमें यह ध्यान होता है कि, मैं अद्वैत ब्रह्म हूँ—मैं आत्मा अधिष्ठान हूँ यह जगत् जड़ तथा चैतन्य सब मेराही स्वरूप है। घड़ा और मिट्टी जल तथा लहर सुवर्ण और आभूषण सभी मैं ही हूँ। जब ऐसा भास हो तो प्रसन्न और न हो तो दुःखी हृदयके ये पाँच अहंकारोंमें नर तथा नाथ दोनों फँसे हैं। जो कोई इन पाँचों अहंकारोंसे पृथक् हुआ वो ही भवजालसे छूटा, इन पाँचों अहंकारोंमें ज्ञानी तथा ध्यानी सभी फँसे हुए हैं। इनसे बाहर निकलना असम्भव है। किसीने उन पाँचों अहंकारोंका भेद नहीं पाया। इस भवसागरमें तो यह पाँचों देह श्रेष्ठ हैं बाकी सभी निकृष्ट हैं।

मनकी विषय वासना

अब मैं मनकी विषय वासनाके बारेमें लिखता हूँ जिसके कि, कारण सब मनुष्य कालपुरुषके जालमें फँसे है। इसकी पूजा कालपुरुषसे प्रगट हुई है। क्योंकि वह स्वयम् विषय वासनाको अच्छा समझता है। उसका निराकार शरीर पशुवत् वासना विशेष तृष्णासे मिला हुआ है। जितने विषयी हैं सब उसके दास हैं। जब चित्त वासनाओंकी ओर झुकता है तभी मन भी चञ्चल होता है उसी समय बाहरी भीतरी सब इंद्रियें चैतन्य हो जाती हैं, सूक्ष्मता दूर होके स्थूलता प्रगट हो जाती है। एकसे अनेक होता है। चौरासी लाख योनिके जीव उत्पन्न होते हैं। एक योनिसे दूसरीमें मारा मारा फिरता है। अन्धोंकी तरह टटोलता फिरता है परन्तु कुछ भी हाथ नहीं आता। जैसे जल मथनेसे मक्खन नहीं निकलता, उसी प्रकार यह जीव जप तप तपस्या करके भी बिना ज्ञानके खाली ही रह जाता है। उसकी कहीं भी स्थिति नहीं होती। पाँचों देवताओंका शरीर वासनामय है इन्हींकी सन्तान समस्त संसार है। इस कारण यह समस्त संसार वासनाओंसे पूर्ण है। जो कोई वासनासे पृथक् होगा वही मनुष्यत्वको प्राप्त करेगा, वही मुक्तिका अधिकारी होगा। कितनेही ऋषि मुनियोंने कठिन तपस्या की पर जब उनपर काम क्रोधादिका प्रभाव हुआ तब वे पशुसे भी अधिक नीच हो गये। यहाँ तक कि, पशुओंकी योनिमें जाकर भी अशान्तही फिरते रहे।

पारख गुरुके बिना समस्त धर्म्मोंके आचार्य काम क्रोधादिककी वासनामें फँस रहे हैं। जैसे कोई कुत्ता एक सूखा हाड़ अपने मुंहसे पकड़ लेता है। उसको

बड़े हर्षसे चबाता चाटता है वह हड्डी उसके मुंहमें घाव कर देती है उसके मुंहसे रक्त बहने लगता है। पर वह मूर्ख कुत्ता जानता है कि वह रक्त उस हड्डीसे निकल रहा है जिसे कि, वो बड़े स्वादसे चाट रहा है उसके मुंहमें हड्डी देखकर दूसरे कुत्ते दौड़ते लड़ते काटते तथा उसको छीन लेनेका उद्योग करते हुए मारते मरते हैं परन्तु उसको वह नहीं छोड़ता इसी प्रकार इस संसारके पदार्थ सूखी हड्डीके समान हैं। जो लोग इससे प्रेम करते हैं तो सब संसारी कुत्ते हैं वे भी अपने शरीरके सारको नष्ट करते हुए अपनी आत्माके सुखको विषयका सुख समझ रहे हैं जो अप्सरा तथा गन्धर्वों तथा अमृत और कल्पवृक्ष आदिक स्वर्गीय पदार्थोंकी अभिलाषायें हैं। ये सब अत्यन्त तुच्छ एवं मायिक पदार्थोंकी ही हैं। मनुष्यका मन जबतक वासनाओंसे कलुषित है तब तक वह कालपुरुषका चेरा है। किन्तु इससे पृथक् होते ही अपने कर्तव्यको पूरा कर-लेता है।

ग़ज़ल—आया जो तू बाजारमें फ़ैज़ आम कर फ़ैज़ आमकर।
सोदा करो मिल यारमें कुछ काम कर कुछ काम कर॥
पकडा गया बेगार है तेरे सिरके ऊपर भार है।
तुझको बहुतसा कार है अन्जाम कर अन्जाम कर॥
सरे आशकां बुरीदः है दिलबरको यह खुश ईदहै।
हरदीदनी नादीह है आराम कर आराम कर॥
यह नफ्त ऐन उरूीस है आहनको मेकनातीस है।
बखुदा नहीं तकदीस है सम्सामकर सम्सामकर॥
तेरे बरमें आजिज कोह रुवा सब खारो खस लिपटा गया।
अब छोडकर शर्मो हया सतनाम रर सतनाम रर॥

यह वासनाही समस्त संसारका मुख्य कारण है। इससे मन उत्पन्न होता है, हृदयसे तीन लोक तथा चारों वेद बहिर्गत होते हैं। अब कुण्डलिनी शक्तिका भिन्न २ वर्णन किया जायगा। जो कि, वासनाओंके बीज जालकी मुख्य पोषिका है।

वासनाओंकी जननी

जिसका संक्षेपसे वृत्तान्त मैं चक्र निरूपणमें कर चुका हूँ यही कुण्डलिनी वासनाओंकी जननी है, महामाया नाभी तले रहती है। यह समस्त संसारका कारण है इसीसे तीनों गुण हैं। उसके मुंहसे फुँफकारकी आवाज आया करती है। उसी साँपिनीकी फुँफकारसे सोहं शब्द बहिर्गत होता है। जिसके भीतर

प्रणव विराजा रहता है। इसी कुण्डलिनीकी फुँफकारसे यह मन चैतन्य होता है। मनके चैतन्य होतेही समस्त संसारकी उत्पत्ति होती है। कुण्डलिनी महामाया वासनाओंसे भरी हुई है भाँति भाँतिकी सांसारिक वासनाएँही उसका विष हैं। जब उस कुण्डलिनीमें फुर्ना होती है तब मन प्रगट होता है। जब निश्चय हुआ तब बुद्धि उत्पन्न हुई और जब अहम् भाव होता है तब उससे अहंकार उत्पन्न होता है और जब चिन्तन करता है तब चित्त उत्पन्न होता है। जब स्पर्शके सन्मुख होता है तब वायु प्रगट होती है, जब देखनेकी ओर होता है तब अग्नि प्रगट होती है, जब रस लेनेकी इच्छा होती है तब जल उत्पन्न होता है। जब सूंघनेकी ओर ध्यान गया तब पृथिवी उत्पन्न होती है। पाँचों तन्मात्राएँ और चारों अन्तःकरण चौदह इन्द्रियाँ और सब नाड़ियाँ इसी कुण्डलिनीसे उत्पन्न होती हैं।

तीन प्रकारकी इच्छाएं हैं। प्रथम–किसी वस्तुके मिल जाने और उसके पानेके निमित्त उद्योग करनेकी इच्छा। यह अज्ञानीकी इच्छा है।

दूसरी यह है कि दुःख और आपत्तिके पृथक् होनेकी इच्छा। यह बड़े अज्ञानीमें होती है।

तीसरी यह कि जो काम करना उसका फल चाहना। जब इच्छानुसार फल न हो तब उसके लिये चिन्ता तथा शोच होता है, यह एक साधारण है।

वासना चार प्रकारकी है। एक सुषुप्ति वासना है, दूसरी स्वप्न वासना है, तीसरी जागृत वासना है, चौथी क्षीण वासना है।

१–स्थावर अर्थात् वृक्ष पत्थर इत्यादिको सुषुप्ति वासना होती है।

२–पशुओंको स्वप्नवासना होती है। उनको वासनाका ध्यान भी नहीं होता।

३–मनुष्य तथा देवताओंको जागृत वासना होती है कि, वे वासनामें ही लगे रहते हैं। यह तो तीन वासनाएँ अज्ञानी जनोंकी हैं।

४–क्षीण वासना ज्ञानीकी है। जब वासना मर गयी किसी प्रकारकी इच्छा नहीं रही, तब संसार लय हो जाता है। संसार वृक्षका बीज वासना है। दसो दिशा संसारके पत्ते हैं। शुभ अशुभ कर्म उसके फूल हैं। मनुष्य पशु वृक्ष तथा पत्थर आदि उसके फल हैं। इस सृष्टिका बीज वासनाएँ हैं। इनके नष्ट करनेसे संसार भी नष्ट हो जाता है, वासनासे स्थिर रहता है। शारीरिक और मानसिक दो रोग हैं, दोनोंही वासनाओंसे उत्पन्न होते हैं। यही दो प्रकारके रोग हैं। शारीरिक रोगको व्याधि और मानसिक रोगको आधि कहते हैं।

शरीरकी व्याधि तो औषधी तथा पुण्य करनेसे दूर हो जाती है। जन्म मरणकी बीमारी, (आधि) मनकी स्वच्छतासे दूर होती है।

इस साँपिनीसे यह मन बड़ा बलिष्ठ तथा विषैला सर्प बना हुआ है। इसने समस्त संसारको ऐसा डंक मारा है कि, सबके सब मर गये। किसी को चेत नहीं होता। इस मन साँपके विषसे सब अचेत हो रहे हैं, इसी सर्पका विष तीनों लोकोंमें भरा हुआ है। इसी सर्पिणीके विषकी झारसे सर्व जीव ऐसे अचेत हो रहे हैं कि, जगानेसे भी नहीं जाग सकते। संसारमें जितने रोग शोक, दुःख, दरिद्र, कष्ट और आपत्ति हैं सब इस कुण्डलिनीसे हैं। प्राण अपान दोनों वायुको योगेश्वर लोग सुषुम्ना नाड़ीके मार्गसे ब्रह्माण्डमें पहुँचाते हैं। एक क्षणभर उस स्थानपर वायुके ठहरानेसे सिद्धोंका दर्शन हो जाता है।

नाभिके मूलमें सूर्य्य तथा तालुके मूलमें चन्द्रकी स्थिति है इस शरीरमें दो और कमल हैं एक नीचे और दूसरा ऊपर है। नीचेके कमलमें सूर्य रहता है। ऊपरके कमलमें चन्द्रका बास है चंद्रसे अमृत च्यूता है सूर्य शोष लेता है। स्वाधिष्ठान चक्रके आगे महामाया कुण्डलिनी रहती है। जैसे मोतियोंका भण्डार हो ऐसेही कुण्डलिनी लक्ष्मी बड़ी सुन्दरताके साथ रहती है। जैसे डण्डेके साथ हिलानेसे सर्पनी शब्द करती है ऐसेही इस कुण्डलिनीसे सोहम्का शब्द बहिर्गत होता है। यही आदि शक्ति समस्त संसारका कार्य्य करती है। उससे आपसे आप जो वायु निकलती है वह वायु बहुत मुलायम है। वह वायु जो छूटती है फिर दो सूरतोंमें स्थिर होती है। एकका नाम प्राण तथा दूसरेका नाम अपान है। ये दोनों वायु आपसमें टक्कर खाती हैं। इसीको (हरारत गरीजी) कहते हैं। उसीसे हृदय कमलमें सूर्य्य समान महान् प्रकाश होता है। इस हृदय कमलमें सुवर्ण रङ्गका एक भौंरा है। इस भौंराके दर्शन करनेसे योगीकी दृष्टि लाख योजनकी हो जाती है। पेटमें जो अग्नि रहती है उसको जठराग्नि कहते हैं। ऐसी ही बड़वाग्नि समुद्रमें रहती है। यह दोनों अग्नि जलको शोषण करती हैं। हृदय कमलसे जो शीतल वायु निकलती है उसको चन्द्रमा कहते है। प्राणवायु जो गर्म वायु है वह सूर्य्य है। इन दोनों अर्थात् सूर्य्य और चन्द्र करके यह समस्त सृष्टि स्थित हैं। कुण्डलिनीकी अचेतावस्थामें जीव वासना करके दुःखी सुखी होता रहता है। इसीसे भूख, प्यास, आलस्य, नींद, जरा, मरण आदि भीतरी और बाहरी दुःख हैं। इस कुण्डलिनीका विष समस्त संसार पर छाया हुआ है। जो इस कुण्डलिनीके भेदको जानता है वा इस सर्पके विषसे बचकर अमृत पीवे और युगयुग जीवे। इस नागिनका विष चारखानि चौरासी लाख

योनिके जीवोंमें सिरसे पाँव तक व्याप रहा है। इस साँप तथा साँपिनके वशमें सारा संसार है। इन्हींके विषसे सब जीव मृतक हैं। मृतकोंको जो चाहे सो करे वे क्या कर सकते हैं। यह नाग और नागिन पिण्ड तथा ब्रह्माण्ड दोनों पर अधिकार किये हुए ओर सर्व शक्तिमान् कहलाते है। इन दोनोंके जालसे निकलकर कोई जीव बाहर जा नहीं सकता। इस कुण्डलिनीके विषने सबको अन्धा कर रखा है।

गजल

कहाँ मैं कहाँ दिलवर रहा यह नागिनी जब डस गयी ।
नहिं मैं नहीं वह घर रहा यह नागिनी जब डस गयी ।।
जादू नहीं मंतर कोई अफसूँ नहीं यंतर कोई ।
उस डंक मारा मर रहा यह नागिनी जब डस गयी ।।
यह दम्बदम लहरा गया तनमें जहर जब छा गया ।
इस जिन्दगीका खतरः रहा यह नागिनी जब डस गयी ।।
घेरे अँधेरी रात है और सद बला आफात है ।
शामका न सेहर रहा यह नागिनी जब डस गयी ।।
अपना व बेगाना कहीं पहचानमें आवे नहीं ।
न बसर रहा न हज़र रहा यह नागिनी जब डस गयी ।।
इनसान सुम्–बकुम हुआ होशो हवासो गुम हुआ ।
दायम दिले मुजतर रहा यह नागिनी जब डस गयी ।।
नहिं इल्म असर पजीर है कुछ ऐसीही तक़दीर है ।
तदबीर कर बदतर रहा यह नागिनी जब डस गयी ।।
आवे नहीं कोई काम जब आजिज जपो सतनाम तब ।
जारी न जोरो जद रहा यह नागिनी जब डस गयी ।।

ये नाग नागिनी एक है समस्त संसारको इन्होंने काट खाया है। जो कोई सच्चा साधु होकर गुरुकी सेवा करेगा उसपर इस साँपका विष असर न न करेगा। साधु सेवा अवश्यही सत्यपथपर आरूढ़ कर देगी। कभी भटकने न देगी। जहाँ साधु और गुरुकी सहायता न होगी वहाँ कदापि जीवका छुटकारा न होगा।

जितने शब्द, नाद और वाक्य इत्यादि हुये और होते हैं सब इन्हीं दोनोंसे हैं। कोई वाक्य और शब्द इत्यादि बिना इन दोनोंके नहीं हैं। केवल इस एक साँपिनीने अपनीही मूर्तियाँ बनाई। इस मनको मनु अथवा स्वयम्भु मनु कहो

और माया इसकी स्त्री सतरूपा हुई जो मन है उसीको अंग्रेजी भाषामें मैन् (Man) कहा हैं। जिसको मनुष्य कहते हैं सोही मन या मैन् है। जबतक यह अकेला था तबतक कुछ कर न सकता था। फिर जब दूसरा स्वरूप उसके साथ हुआ तब उसका नाम स्त्री अथवा अंग्रेजी भाषामें वोमैन (Woe-man) अथवा (Woman) हुआ। इस (Man) के शब्दमें (Woe) बढ़ाया तब वोमैन हुआ। वो के अर्थ कष्ट तथा आपत्तिके हैं। जब मैनके (Man) साथ (Woe) वो मिला तब कष्ट तथा दुःखसे भर गया जब मैनके (Man) साथ वो (Woeman) मैन हो गई तब एकसे अनेक हो गया। तब संसारके जाल जञ्जालमें फँसकर बँधुआ होगया। वही नागिनी कष्ट तथा आपत्तिका घर हुई। फारसीमें इसका नाम जन हुआ। जनका अर्थ मार-वह समस्त संसारको मारने और खाने लगी। संस्कृतमें इस औरतको अस्त्री कहते हैं। अ शब्दको विलोपित करनेसे स्त्री हुआ। यथार्थमें यह शब्द अस्त्री है। स्त्री नहीं।

अस्त्र और शस्त्र ये दो प्रकारके हथियार हैं। बन्दूक कमान इत्यादि अस्त्र कहलाते हैं क्योंकि इनमें एकमेंसे दूसरा निकलकर घाव करता है। बन्दूक नहीं मारती पर गोली मारती है। कमान नहीं मारती पर तीर मारता है। इस प्रकारके समस्त हथियार अस्त्र कहलाते हैं। तलवार, कटार, छुरा आदि शस्त्र हैं जो कोई अस्त्र बाँधता है उसे अस्त्री कहते हैं और जो शस्त्र बाँधता है उसको शस्त्री कहते हैं। अतः इस स्त्रीने अस्त्रको बाँधकर समस्त संसारको मार डाला। उसके ये पाँच अस्त्र हैं-मोहन, मारन, बशीकरण, उन्मादन, उच्चाटन, मोहन, वशीकरना-मारन, मार डालना। वशीकरन--गुलाम बना लेना। उन्मादन--पागलोंके समान बकना झकना। उच्चाटन--कुछ अच्छा न लगना। इस स्त्रीके ये पाँचों तो हथियार हैं। बेटी बेटे जितने उत्पन्न होते हैं सबके सब मोहमें फँसाकर मार लेते हैं। समस्त जन्म फँसाकर यह मार लेती है। इसी मन तथा मायाका समस्त खेल फैल रहा है। मन आकाश और निर-ञ्जन है। माया शक्ति और पृथिवी है। इसीसे सबकी उत्पत्ति है। इसी ब्रह्म तथा मायाकी रचनासे समस्त संसार हैं। इन दोनों विषैलोंकी सन्तान तो सभी हैं और इन्हींका विष सबमें समा रहा है। विशेषतः यह स्त्री जो मोहिनीरूप है। इसने सबका मन मोह लिया है। जो इस मोहिनीसे बच जावेगा वह बड़ा बलिष्ठ तथा भाग्यवान है। जो स्त्रीको छातीसे लगावे वह भली भाँति याद रखे कि, उसने विषैली काली नागिनको हृदयसे लगाया है। जब यह नागिन हृदयसे

लगी तो निश्चयही काट खावेगी जिससे मनुष्य मर जावेगा । जीवित रहनेकी आशा न रह जावेगी । केवल उसके विषका औषध यही है कि, तन मन धनसे साधु सेवा करे तो बचेगा नहीं तो अवश्यही मर जावेगा। अतः यह हथियारबन्द अस्त्री समस्त संसारको मारने तथा खानेके लिये बनी है ।

मनने तनको बनाया और तनने धनको बनाया । इस कारण तन और धन दोनोंका रचयिता मन है । तन और धन जब दोनोंको छोड़दे और परमेश्वरमें लीन होजावे तब वस्तुतः मन पर विजय पानेकी आशा देख पड़ती है । जबतक मनके सत्वका इच्छुक रहेगा तबतक अवश्यही मनका गुलाम बना रहेगा । कुण्डलिनी शक्ति और मनका मुंह नीचेकी ओर है । यह स्पष्ट प्रगट करता है कि, मेरे साथ प्रेम करनेवाले मनुष्य नीचेके स्थानोंको जायेंगे अर्थात् नरकको पावेंगे और सदैवके लिये आवागमनके बखेड़ेमें फँसे रहेंगे मेरे विषकी औषध कदापि उनके हाथों न पड़ेगी । इस विषकी औषध तो केवल पारखगुरुकी दया है । पारखगुरु उसके विषको पृथक् कर सकता है दूसरा कोई नहीं कर सकता । पारखगुरु साधुसेवासे दयालु होता है। जब सुकृत अथवा सुकर्म्म पूर्णताको पहुँच जाते हैं तब उसकी कृपा प्राप्त होती है । इस नागिन तथा नागके भेदको केवल हंस कबीर जानते हैं दूसरा कोई जान नहीं सकता । इस नागिनीने सब जीवोंको डंक लगाया है सभी अचेत तथा बधिर हो रहे हैं । यह कुण्डलिनी महामाया वासनास्वरूप है । जिसका ध्यान उसकी ओर होता है वह कामनाओंसे भर जाता है ।

इसी इच्छा अथवा वासनारूप स्त्रीका समस्त कारखाना है । जो वासनाओंसे भरा हुआ है वो सब इसी महामायाका खेल और कौतुक है । इसी बाजीगर और बाजीगरनीने अपना कौतुक दिखाके सब जीवोंको अन्धा कर रक्खा है । जो इस बाजीगरको पहचान सकेगा उसके बन्धनमें न आवेगा वही मन मायाके पार जानेका पथ पावेगा । जो कोई योग युक्तिसे कुण्डलिनीको जगाकर सुषुम्नाके द्वारको निरापद बना लेगा वही उत्तम योगीराज वासनाओंको जीतकर निष्कंटक हो जायगा ।

कच्चे गुरुवोंने इसको वेद तथा शास्त्रके यथार्थ अभिप्रायको तो न समझाया दूसरी रीति पर समझाकर भ्रममें डाल दिया है ।

कर्म्म

जब कालपुरुषने सृष्टिकी उत्पत्ति की तब कर्म्मका जाल बनाया । वे कर्म्म दो प्रकारके हैं । एक शुभ दूसरा अशुभ । ये दोनों कर्म्म बड़ी बेड़ी हैं । इन दोनों

कर्म्मोंकी बेड़ीने समस्त सृष्टिको बाँध लिया है। जो कोई शुभ कर्म करता है वो सांसारिक धन स्वर्ग वैकुण्ठ इत्यादि सब सुखकी सामग्री पाता है उस पुण्यका अन्तिमफल अन्तःकरणकी बुद्धि है। इससे अधिक नहीं। ऋषीश्वरोंने कठिन तपस्या की और योग समाधि तथा पूजादिको उच्च श्रेणीपर पहुँचाया। दाससे स्वामी बन गये तो भी कर्मक्षय न होनेके कारण बन्धन न छूटा आवागमनमें फँसे रहे। कालपुरुषने सबको इन्हीं दोनों कर्म्मोंमें बाँध लिया है। इस कर्म्मके तीन भेद हुए हैं। कर्म्म, अकर्म्म, विकर्म्म। कर्म्म तो मनुष्यको करना उचित है। अकर्म्मसे दूर भागना और विकर्मसे मनुष्य अपनेको मुक्त और भाग्यवान् बनाता है। जो शास्त्रानुसार कर्म ईश्वर निमित्त किया जाता है वह विधि है। दूसरा अकर्म। जिससे लोक परकलोमें कहीं सुखकी प्राप्ति नहीं होती है, उसे शास्त्रसे निषेध कहते हैं, यह अकर्म्म ईश्वरके विरुद्ध है। विकर्म उसको कहते हैं जिसके करनेसे कर्म्मसे छुटे बंधनकी पाश टूटे और ज्ञान लाभ हो पहिले स्वर्ग आदिका लालच दिखाकर कर्म्म करवाते हैं। इसके उपरान्त स्वर्ग इत्यादिके सुखका त्याग है। जिस प्रकार पिता रोगी लड़केको लड्डू दिखाकर औषधि देता है उसी प्रकार स्वर्ग तथा वैकुण्ठादिका लालच मनुष्योंको दिखाया गया है। फिर भी एक कर्म्म तीन नामोंसे प्रख्यात हुआ है। सञ्चित प्रारब्ध और क्रियमान। सञ्चित उस कर्म्मको कहते हैं जो रक्षा पूर्वक रखा हुआ हो। यह सहस्रों जन्मसे बराबर उसके साथ लगा चला आता है ऋण अदा करनेका समय नहीं मिला और वह ऋण माथे चढ़ा रहा। दूसरा प्रारब्ध कर्म्म वह है जिसे भाग्य कहते हैं। इसी प्रारब्ध कर्म्मके अनुसार मानुषिक शरीर प्रस्तुत हुआ है अर्थात् अपने पूर्व कर्म्मानुसार शरीर बना है जब यह जीव अपने पूर्व शरीरको छोड़ता है तब अहम् बोलता है। अहम्‌के अर्थ मैं हूँ। अहम् बोलकर दूसरे शरीरमें प्रवेश करता है। चारों खानिके जीवोंकी यही रीति है। जैसे एक प्रकारका कीड़ा होता है जो वृक्षोंके पत्तों पर रहता है। जब यह एक पत्तेको छोड़कर दूसरे पत्ते पर जाया चाहता है तब पहले वह अपने अगले पैरोंको पत्ते पर जमा लेता है। जब उसके अगले पैर दूसरे पत्ते पर भली प्रकार जम जाते हैं तब वह अपने पिछले पैरोंको भी खींचकर दूसरे पत्ते पर जमा लेता है और अगले पत्ते पर भली प्रकार जमकर बैठ जाता है। पिछले पत्तेसे सम्बन्ध छोड़ देता है। इसी प्रकार उस जीवका भी आवागमन हुआ करता है। ब्रह्मासे लेकर सर्व जीवोंमें अहंकार भरा हुआ है। जिसमें अहंकार नहीं उसका आवागमन नहीं। अहम् बोलनेसे उसके आवागमनका सम्बन्ध बराबर जारी रहता है। वह ब्रह्मा जो पहले अहम् बोला वही ब्रह्मा अनन्त स्वरूप और स्वभावों

में चारोंखानमें समा रहा है । अहम् कर्म्मोंका आकर्षण है। जो एक योनिसे खींच कर दूसरीमें ढाल देता है जैसे कि, चुम्बक लोहेको खींच लेता है ।

तीसरा क्रियामाण कर्म्म वह है जो अब कर रहे हैं । यदि यह क्रियमाण कर्म्म बलवान् होकर शुभ वा अशुभको ओर झुका तो वह अपना रङ्ग ढङ्ग दिखला देता है । यदि वह शुकर्म्मकी ओर झुककर सुकर्म्मकी पूर्णता करले तो वह अपने स्वरूपको प्राप्त करा देता है । यदि अशुभकी ओर झुका तो जड़योनिमें जा समाता है, नरकके समस्त दुःखों तथा अत्यन्त कष्टोंमें अपनेको डालकर कंकड पत्थरकी तरह बेकाम कर देता है फिर उसको सुपथ नहीं मिलता । सुपुरुष महाकर्ता, महाभोगी और महात्यागी इन भेदोंसे तीन प्रकारके होते हैं । महाकर्ता उसको कहते हैं कि, जो कर्म्म करता है और अपनेको कर्ता नहीं मानता । महाभोगी उसको कहते हैं कि, जो सब भोग भोगता है और अपनेको भोगता नहीं मानता । महात्यागी उसको कहते हें जो अहंकारको त्याग दे । इस त्यागका गुण तब जाना जाता है जब उसको अन्तरदृष्टि होती है । जबतक इन बातोंका गुण भली प्रकार नहीं जाना जाय तबतक वेद और पुस्तक पाठसे कोई लाभ नहीं होगा । अन्तर दृष्टिसे जाना जाता है कि, ये तीनों क्या बात हें ।

महाकर्ता तो यह तब होता है कि जब यह अन्तर दृष्टिसे भली भांति देखता है कि, मैं कुछ करही नहीं सकता, मैं किसी कार्य्यका कर्ता नहीं हूँ, केवल मैं अपनी मूर्खतावश आपको अपने कार्य्यका कर्त्ता समझ रहा हूँ । यह समस्त संसार कलके सदृश चल रहा है । मेरा और किसीका कोई वशही नहीं कि, कोई काम करे । न मालूम वह कौन है जो मुझको तथा समस्त संसारको चला रहा है । जब मैं कुछ करताही नहीं और न मेरा किया कुछ हो ही सकता है । ऐसी अवस्थामें यह अपनेको कर्म्मोंका कर्त्ता नहीं मानता, जब यह अपनी अंतर दृष्टिसे भलीप्रकार देख लेता है तब फिर यह दूसरी ओर ध्यान नहीं देता,जानता है कि, जब मैं किसी कार्य्यका कर्ता ही नहीं तो मैं व्यर्थही अपनेको क्यों कर्ता ठहराऊँ। तब वह इस अज्ञानतासे पृथक होता है । संसारी इसी अज्ञानतामें फँसा रहकर आपको अपने कर्म्मका कर्ता समझ कर दुःख सुखमें धक्के खाता है । मैं क्यों अहम् बोलता हूं नहीं जाने मुझे कौन अहम् बुलाता है, कौन डोलाता है । अतः इससे जाना गया और प्रमाणित हुआ कि, मुझको मेरे कार्य्योंके बन्धन अहम् बोलाते हें और दूसरा कोई नहीं । जब मैं अपने कर्म्मोंके बन्धनसे छूट जाऊँगा तो मेरा अहम् बोलना भी छूट जायेगा । जबतक यह आपको कार्य्यका करनेवाला मानता है तब तक यह क्रियामें आपको स्वतन्त्र समझता है । जब यह

अन्तर दृष्टिसे भली भाँति निगाह कर लेता है कि मैं अपने कर्म्मोंका कर्त्ता नहीं तब अपने शुभ अशुभ कार्मोंको परमेश्वरको सौंप उसके शरणमें होकर उससे सहायता माँगता है, जान लेता है कि, मेरे कार्य्य मुझको बचाने योग्य नहीं, मैं सत्यगुरुकी शरण लूँ, इसके अतिरिक्त और छुटकारेका कोई उपाय नहीं है। अपनी अज्ञानताके कारण मैं अपने कार्य्योंका कर्ता आपको जानता था परन्तु आगे ऐसा कदापि न करूंगा। यदि यह स्वतन्त्र होता तो सब कुछ कर लेता। फिर अपनेको दीनता तथा दुर्दशामें कदापि नहीं फँसाता। एक दिनका वृत्तान्त है कि, एक पादरी साहब आकर मेरे पास बैठे और वाद विवादपर प्रस्तुत हुये। उसने कहा कि, मनुष्य अपने कार्य्योंमें स्वतन्त्र हैं। इसपर मैंने उत्तर दिया कि, यह बात कदापि नहीं कर्म स्वतन्त्रता किसीको प्राप्त नहीं। सब कलके समान गतिमान हैं। सुतरां तौरीतमें उत्पत्तिकी पुस्तक देखो जब आदम उत्पन्न हुआ खुदाने उसको मना किया कि, तू यह कार्य्य कदापि न करना और इस वृक्षके फलको न खाना। आदमने न माना और खाया। जिससे वह ऐसा दुर्दशा ग्रस्त हुआ कि, फिर न सँभला।

यदि आदम कर्म करनेमें स्वतन्त्र होता तो ऐसा कदापि न होता। फिर आदमके पुत्र काबील और हाबील हुए वे भी तो ऐसेही थे। क्योंकि दोनोंने एक दिवस परमेश्वरके समक्ष भेंट चढ़ाई। छोटे भाईकी भेंट तो स्वीकृत हुई पर बड़े काबीलकी अस्वीकृत हुई इस कारण काबील अत्यंत क्रुद्ध हुआ। परमेश्वरने कहा कि, ऐ काबील! तू क्यों क्रोध करता है? यदि तू अच्छे मनसे देता तो क्या तेरी भेंट स्वीकार न की जाती? परन्तु तू अपने भाईपर जय पावेगा। काबीलने अपने भाई पर जय पाई उसको मार डाला। परमेश्वरने उससे पूछा कि, तेरा भाई हाबील कहां है? तब उसने उत्तर दिया कि, मैं नहीं जानता क्या मैं अपने भाईका रखवाला हूँ। इसपर खुदाने उत्तर दिया कि, तेरे भाईका खून मुझे पुकारता है। अब तू हत्यारा तथा दोषी हुआ यह कहकर खुदाने उसको श्राप दिया। भलाजी! यह न्यायकी बात थी कि, खुदाने तो स्वयम् कहा कि तू अपने भाईपर जय पावेगा। उसने जय पाई और उसको मार डाला। फिर वह दोषी कैसे ठहरा? यदि अपने भाईको न मारता तो खुदा झूठा होता और मारा तो दोखी हुआ, हजूरसे दूर किया गया। वह तथा उसकी सन्तान पापिष्ठी ठहरी।

ऐसाही नूहके विषयमें जानना चाहिये कि, नूह सिखाते सिखाते विवश हो गया। किसीने उसका कहना न माना। अन्तको बाढ आई और समस्त मनुष्य डूब मरे। कोई जीव सिवा उनके कि, जो नूहकी नावपर था नहीं बचा। फिर

नूहकी शिक्षा तथा खुदाकी चौकसी किरा काम आयी । वह भी कार्यमें स्वतन्त्र न ठहरा । जब बाढने सबका सत्यानाशकर चुका तो नूहकी ओर खुदाने ध्यान दिया तब खेद करने और पछताने लगा कि, मैंने सबको बाढसे क्यों नष्ट किया । कारण यह कि मनुष्योंके ध्यान तो बचपनसेही बुरे हैं अब भविष्यमें मैं बाढसे लोगोंको न मिटाऊँगा । इससे प्रमाणित हुआ कि, इस खुदाको भी स्वतन्त्रकार्य्याधिकार प्राप्त नहीं । यदि ऐसा होता तो जब वह आदमका पुतला बनाने लगा तब फिरीश्तोंने मना किया कि, आदमका पुतला न बनाओ पाप करेंगे । फिर पृथिवी रोई और कहा कि, मुझसे मिट्टी मतलो मनुष्यका पुतला न बनाओ, मनुष्य बडा पाप करेंगे । पर खुदा साहबने किसीका कहना न माना । अपनी इच्छासे मनुष्यका पुतला बनाया । आगे मनुष्योंके पापोंसे रुष्ट होकर बाढ लाकर पछताया । फिर मैं कैसे कहूँ कि खुदा साहबको कार्य्य स्वतन्त्रता प्राप्त थी । हजरत नूहके उपरान्त हजरत इबराहीम अच्छे और पवित्र खुदाके पैगम्बर हुये, वे भी स्वतन्त्र नहीं थे । क्योंकि उनकी शिक्षासे नमरूद बादशाह इत्यादि सभी बिरुद्ध हो गये थे । इबराहीमके पीछे इसहाकको पैगम्बरी मिली । इसहाककी स्त्री रबका जब गर्भवती हुई, उसके पेटमें दो बालक थे, वे दोनों पेटके भीतर परस्पर लड़ते थे । तब रबकाने खुदाके निकट जाकर निवेदन किया कि, मेरे पेटके दोनों लड़के आपसमें क्यों फिसाद करते हैं ? तब खुदाने कहा कि, बड़ा छोटेकी सेवा करके बडाई पावेगा । फिर इसहाकने ज्येष्ठ पुत्र ईसूको बरकत देनी चाही पर उस बरकतको छोटा पुत्र याकूब ले गया । इसहाककी युक्तिने काम नहीं दिया । देखो मूसाकी पहली पुस्तक २५ बाबका २१–२२–२५ आयत । उसमें ये सब लिखा हुआ मिलेगा ।

इनके उपरान्त हजरत मूसा थे । वह भी अपने कार्य्यमें स्वतन्त्र नहीं थे क्योंकि, परमेश्वरने मूसाको मिस्रमें फिरूनके लोगोंको सिखलानेके लिये भेजकर यह कह दिया था कि, फिरूनके मनको मैं कड़ा करूँगा । वह तेरा कहना न मानेगा । इसके विषयमें मूसाकी शिक्षा किसी काम न आयी । मूसाके पीछे हजरत ईसाने खुदासे बहुत प्रार्थना की कि, मैं सलीबसे बच जाऊँ पर नहीं बचे । इसके पीछे मुहम्मद मुस्तफाने बहुत कुछ बल लगाया । बहुतसा रक्तपात किया तो भी सबको मुसलमान नहीं कर सके । यह सब बात कहकर और लिखी दिखाकर फिर मैंने पादरी साहबसे कहा कि, इन महाशयोंमें तो कोई स्वतन्त्र नहीं ठहरा । कदाचित् आपके नाम अब खुदाई परवाना कार्य स्वतन्त्रताका उतर पड़ा हो तो क्या आश्चर्य है ? मेरी बातें सुनकर पादरी महाशय चुप हो रहे और मुखतारीके फेलका दावा छोड़ दिया ।

स्वतन्त्रता केवल कबीर साहबकोही है दूसरेको नहीं है। क्योंकि, जब वे मनसे जिसको छुटकारा दिलाना चाहते हैं उसको अवश्य छुडा ही लेते हैं जो कुछ करना चाहते हैं करही लेते हैं। उनको रोकनेवाला दूसरा कोई नहीं है।

जाग्रत अवस्थामें यह मनुष्य जैसा कुछ कार्य्य करता है वैसाही स्वप्नावस्थामें किया करता है। परन्तु स्वप्नावस्थाके कर्म्मोंको कोई नहीं कहता कि मैंने किया। यद्यपि जाग्रत अवस्थाके कर्म्मोंका करता यह स्वयम् बनता है कि यह कर्म्म मेरे हैं ज्ञान दृष्टिसे जाग्रत तथा स्वप्नावस्था दोनोंही समान हैं। केवल इतनीही विभिन्नता है कि, जाग्रत देरतक उसके साथ रहती है एवं स्वप्न थोडीही देरमें बीत जाता है। यदि स्वप्नके कर्म्म उसके नहीं तो जाग्रतके कर्म्म भी उसके नहीं हैं। इस कारण आपको स्वकर्ममें स्वतन्त्र समझना अज्ञानता है क्योंकि यह स्वतन्त्र कदापि नहीं है। ज्ञानकी दृष्टिसे यह अहंकार जाता रहता है। इस जीवकी चारों दशा स्वप्नके समान हैं।

दूसरा महाभोगी वह है जो कि समस्त भोगोंको भोगता है और आपको भोगनेवाला नहीं मानता। यह भी बिना अन्तर प्रकाशके जाना नहीं जा सकता कि, भोगनेवाला कौन है और मैं कौन हूँ। यदि मैं भोगने वाला होता तो जो मैं चाहता सो भोग भोग लेता। भोगोंसे कभी न भागता कोई भोग ऐसा नहीं है कि जो भोग भोगते भाग न जाय और थक न जाय। जो अपनेको भोगोंसे अलग जानता है उसके सामने अच्छा और बुरा समान है क्योंकि रानी द्रौपदीने श्वपच सुदर्शनके सामने भांति भांतिके स्वादिष्ट भोजनोंके थाल धरे, उन्होंने सब खट्टा, मीठा और नमकीन एकमें मिलाकर खाना आरम्भ किया। क्योंकि उनको स्वादों की कामना नहीं थी। एक साधुको एक मनुष्यने कडुई तुम्बेकी तरकारी बनाकर खिला दी, वह साधु कडुई तरकारीको बिना कुछ कहे सुने खागया, जब पीछे गृहस्वामी खाने लगा। तब उसको वह तरकारी कडुई जहर मालूम हुई। वह अपनी स्त्रीको डांटने लगा कि, तूने यह विष समान तरकारी साधुको खिला दी, उसको कितना दुख हुआ होगा। उसके मनमें बड़ा भय समाया और वह साधुके पास जाकर उससे क्षमा प्रार्थना करने लगा। एक साधुको एक गृहस्थने खीर खिलाई और चीनीके बदले भूलसे नमक डाल दिया। कारण यह कि, वह नमक चीनीके समान पीसा हुआ था। वह साधु बिना कुछ कहे खा गया। उसके भीतर जब नमककी आग लगी तब उस गृहस्थके घरमें आग लगी। जब घर में देखने लगे तब जान पड़ा कि, साधुको चीनीके भ्रमसे नमक दे दिया गया। लोगोंने कहा

कि, उस साधुके हृदयमें ठण्ढक आवे तब घरकी आगभी बुझे । थलीमें कोई सरदार था उसके पास एक वैष्णव साधु आगया उसने नहा धोकर ठाकुर पूजा की । सरदारने साधुके लिये दूध और चीनी मँगवा दी । उस वैष्णवने ठाकुरको भोग लगाया । इसके पीछे जब वह आप दूध पीने लगा तब उस सरदारको याद आगयी कि, जहां चीनी थी वहां घोडेकी दवाईके लिये संखिया भी पीसा धरा था कहीं ऐसा न हुआ हो कि, साधुको संखिया दिया गया हो । दौड़के देखा तो संखिया दिया गया था । उस सरदारने पुकारकर कहा कि, महाराज ! यह दूध मत पीजिये इसमें संखिया पड़ गया है । उस वैष्णवने कहा कि, अब तो यह संखिया ठाकुरको *भोग लगाया जा चुका है । मेरे ठाकुर संखिया पीवें और मैं चीनी पीऊँ ? यह कभी

* मूर्तिके रूपमें विराजनेवाले भगवान्के अर्चावतारको ठाकुरजी कहते हैं । भक्तजन छोटे-छोटे भगवान् अपने साथ रखते हैं एवं परम भक्तिभावके साथ भजन पूजन करके नैवेद्य बना भगवान् ठाकुरजीके भोग धरकर पीले भोग लगी हुई वस्तुका आप भोजन करते हैं। वे बिना भगवान्के निवेदन किये किसी भी वस्तुको ग्रहण नहीं करते। यद्यपि वे ठाकुरजी अज्ञानियोंकी दृष्टिमें तो कंकर पत्थर ही हैं पर इन भक्तोंकी दृष्टिमें इनके प्यारे इष्ट देव ही हैं। उसमें और इस मूर्तिमें कोई भेद नहीं रहता। यदि विष्णुकी मूर्ति विष्णुके उपासकोंके लिये विष्णु नहीं तो संखियाका असर किसने आरोगतेही खींच लिया। वैष्णवके भोग धरतेही संखिया कहाँ चला गया? यदि उपासकके लिये वो पत्थरही होती तो वैष्णवके ठाकुरजीके भोग धरतेही विषका चला जाना नितान्त कठिन था क्योंकि, पत्थरमें यह शक्ति कदापि नहीं है कि, समीपस्थके विषको हर ले एवं उसके भक्तोंपर विष भी असर न करे। स्वामी परमानन्दजीके इन अक्षरोंकी ओर ध्यान डालतेही हमारी दृष्टि अनुरागसागरकी–समालोचनात्मक भूमिकापर जाती है। इसमें कवीराश्रमाचार्य्य भारतपथिक स्वामी श्रीयुगलानन्द विहारी लिखते हैं कि, "भगताई तो बीजककोही अपना सर्वस्व समझकर सबसे अलग उसीके पठन पाठनमें लगे रहते थे और वैष्णवोंमें खपते थे, किन्तु बीजककी वाणीके प्रतापसे उनके और जड मूर्तिपूजक वैष्णवोंमें फेर पडनेसे कबीरपन्थी कहलाने और कबीरपन्थियोंमें मिलने लगे।" इस लेखके हमें इस कथनपर विचार होता है कि, जिस मूर्तिके भोग लगानेसे उसके सच्चे भक्त वैष्णवपर विष भी असर न करे तो फिर वो मूर्ति जड हुई या चैतन्योंकी भी चैतन्य ? बिहारीजी ! स्वामी परमानन्दजीके अक्षरोंपर गहरी दृष्टिसे विचार करेंगे तो एक हृदयके आनन्दका देनेवाला रहस्य ध्यानमें आ जायगा कि, वो मूर्ति जड थी कि, चैतन्योंकी भी चेतना उसीके अन्तर्हित थी। भारतके दर्शन शास्त्रके धुरन्धर पाश्चात्य देशवासी स्वर्गीय मोक्षमूलरने भरतीवार कहा था कि, भारतीयोंकी विज्ञान विज्ञताको देखो। उन्होंने जड पत्थरसे भी सत्यपुरुषको प्रकट कर लिया। जो मूर्ति पूजाका महत्त्व नहीं जानते। उन्हें तो सिवा पत्थरके और कुछ नहीं है, पर जो सच्चे भक्त हैं उनके लिये वो साक्षात् भगवान् हैं। उनके लिये संखिया के विषकी क्या ? संसारके विषको भी हर लेगा। वोही उसे मोक्ष धाम सत्यपुरुषके लोकको पहुँचा देगा। इसी कबीर मन्शूरमें स्वामी परमान्दजीने कहा है कि, "सत्यपुरुषकी भी मूर्ति इसीमें है।" यह बात सत्य भी है। अपने भक्तोंके लिये यह सत्यपुरुष तथा भक्तोंके सतानेवालोंके लिये यही कालपुरुष है। अतः यह सुतराम् सिद्ध हो जाता है कि, विष्णुकी मूर्तिमें भी उपासकके लिये सत्यपुरुषही विराजमान है। फिर उसके पूजकोंके लिये जड मूर्तिपूजक शब्दका व्यवहार करना उचित नहीं मालूम होता। विज्ञ पाठक उस भूमिकाको इस टिप्पणीसे सुधार करके पढें।

नहीं हो सकता। वह वैष्णव वह दूध तथा संखिया सब कुछ पी गया और चङ्गा रहा। संखियाने उसको किसी प्रकारकी क्षति नहीं पहुँचाई। उसके भीतर भोगता विष्णु था विष्णु उसको देखता था और वह विष्णुको देखता था। आप उस भोगसे अलग रहा। मीराकी भी तो यही बात थी। यह है मूर्तिपूजाका महत्त्व। फिर जो मूर्तियोंको कंकड पत्थर कहते हैं यह उनकी भूल है।

तीसरे महात्यागी तब होता है जब देहके अभिमानको छोडे। जबतक देह का अभिमान न छूटे तबतक त्यागी नहीं। अभिमानही करके यह देह मिलता है और इसीसे स्थित हो रहा है। सहस्रों त्यागी हो गये परंतु देहका अभिमान न छोडनेसे बन्धनमें रहे। बाहरसे तो उन्होंने सब छोड़ दिया पर भीतरसे न छोड़ सके न देहका अभिमान छूटा, देहका अभिमान छूटा तो तब जाने कि, किसी प्रकारकी आपत्ति तथा सहसाकी घटना संघटित हो तब स्थिरता न छूटे न किसी प्रकारकी घबड़ाहट हो। सुतरां ऋषि मुनिगण उजाड़ वनमें बसते हैं वहां उनको प्रत्येक प्रकारकी आपत्तियाँ आ घेरती हैं। शेर, साँप, भेडिये, रीछ और कानखजूरे इत्यादि नानाप्रकारकी आपत्तियाँ दिखाई देती हैं। इस स्थानपर साधु अपने मनको बहुतही दृढ़ रखते हैं। कोई हिंसक जीव फाड़कर खाजावे तनिक भी नहीं समझते कि, यह मेरी देह है सब तपस्वियोंकी ऐसीही अवस्था होती है। जब भीतरी अथवा बाहरी अपने शरीरकी ओर ध्यान हुआ तब तो उनका कुछ भी त्याग नहीं। सुतरां सर्व त्यागियोंमें बडे त्यागी शुकदेवजी थे जो कि, मायाके भयसे बारह वर्षतक माताके गर्भमें रहे थे, जब बाहर निकले तो उनको त्याग और वैराग रहा। उनका हाल बहुत प्रसिद्ध है जब राजा जनकके समीप गये तब उन्होंने एक कौतुक दिखाया कि, उनके समस्त नगरमें आग लगी सब कुछ जलने लगा। राजा। जनक निर्भय बैठे रहे और शुकदेवजी अपनी तूँबी लँगोटी लेने दौड़े। राजाने कहा कि बैठ किधर जाता है तू तो आपको बडा त्यागी समझता है अब लँगोटी और तूँबी लेने दौड़ा? मेरे राज्यका समस्त सामान जल रहा है मैं तनिक भी अधीर नहीं हुआ। तू कैसा त्यागी है तुझे तो लँगोटी और तूँबीकी चिन्ता लगी हुई है। जिसकी तूँबी लँगोटीकी चिन्ता नहीं छूटी उसका देहका अभिमान कैसे छूट जायगा? अतः जबतक देहका अभिमान न छूटे, तबतक महात्यागी कैसे हुआ? यह सब प्रशंसा तथा गुण कबीर साहबहीके हैं दूसरेके नहीं हो सकते हैं। बनारस में कैसे कैसे कष्ट मिले परन्तु उनका तनिकभी ध्यान नहीं किया, न मनमें ही कुछ माना। महात्याग इसीका नाम है। सहस्रों साधु सन्तोंने अपनेको ईश्वरमें लीन कर दिया तो भी उनके मनमें देहका अभिमान और वासना रही ही, इस

कारण उनका भगवान्में लीन होना भी काममें न आया । जो लोग सत्यगुरुको पहचानकर भगवत्में लीन होते हैं वे धन्य हैं, उन्हींका भगवत्में लीन होना सफल है ।

वेद तीन भागोंमें विभक्त हुआ—कर्म्म, उपसाना, ज्ञान । कर्म्मोंमें दो भाग हुये—एक तो यज्ञ इत्यादि जो सांसारिक अर्थोंके लिये करते हैं, दूसरा योग जो अपनी मुक्तिके लिये करते हैं । इन कर्म्मोंद्वारा सांसारिक तथा पारलौकिक अभिप्राय सिद्ध होते हैं । जिसके जैसे पाप पुण्य होते हैं वैसीही अवस्थामें वे जाते हैं वैसाही उनका भोग मिलता है ।

दूसरी उपासना है । सांसारिक लोग उपासना करते हैं और उपासनाके निमित्त विष्णु, राम, कृष्ण, शिव, चण्डी, सूर्य्य और गणेश आदि देवता ठहराये गये हैं ।

तीसरा ज्ञान काण्ड है । उसमें जीव परमात्मा और सत्य पुरुषका विचार है, इसकी सात भूमिका हैं । ये समस्त कर्म्मकाण्डी उपासक और ज्ञानी अपनी अपनी सीमाको पहुँच जाते हैं ।

मीमांसक और जैन कर्म्महीसे मुक्ति समझते हैं परन्तु यह नहीं जानते कि, यह कर्म्म कहाँसे उत्पन्न हुआ कहाँतक पहुंच सकता है । यह विधि निषेध दोनों शाखा निरञ्जननिर्मित हैं । वहांही तक पहुँचानेकी सामर्थ रखते हैं । इन कर्म्मों द्वारा स्वर्ग तथा नरक सब कुछ प्राप्त होता है । जहाँतक कर्म्मोंकी पहुँच है वहींतक कालपुरुष हस्तक्षेप करता है । कर्म्मोंका सुविशाल बन है उसमें यह जीव भूलकर अपने घरसे बाहर हो गया है । यह बन हिंसक जन्तुओंसे भरा हुआ है, सूर्य्य चन्द्र सितारे इत्यादि तनिक भी दिखाई नहीं देते । न कोई सडक और न पगडण्डी है, जो पगडण्डी कहीं है सो पशुओंकी है मनुष्योंकी नहीं हो सकती । इस कारण इन कर्म्मोंके बनसे कोई बाहर हो नहीं सकता । कर्म्म करता है फिर २ कर्म्म करनेके लिये देह धारण करता है । इसको कुछ पता नहीं लगता कि, वह कौन कर्म्म है जिससे मेरे कर्म्मोंका बन्धन कटे । वह कर्म्म जिससे इसका बन्धन कटे केवल स्वसंवेदकी शिक्षा ही है । उससे तो यह जीव अज्ञान है । इन्हीं लौकिक कर्मोंसे सारी योनि ठहराई गई हैं ।

जैनी जिनका कि समस्त ध्यान कर्म्मोंपर है वे आठ प्रकारके कर्म्म कहते हैं वे कबीर सागर नं. ९ जैन धर्म्म बोधसे लिखे जाते हैं : १—ज्ञानावर्णी कर्म्म । २—दर्शनावर्णी कर्म्म । ३—वेदनी कर्म्म । ४—मोहिनी कर्म्म । ५—नाम कर्म्म । ६—आयु कर्म्म । ७—गोत कर्म्म । ८—अन्तराय कर्म्म । अब इन आठों कर्म्मों

का सुविस्तृत विवरण सुनो। आवरण नाम ढकनका है। १—ज्ञानावर्णी कर्म्म अर्थात्ज्ञानका ढाकनेवाला कर्म्म। इसके कारण ज्ञान नहीं होने पाता। यह ज्ञानके ऊपर परदा डाल देता है।

ज्ञान पाँच प्रकारका है। १—मतिज्ञान। २—श्रुति ज्ञान। ३—अवधि ज्ञान। ४—मनपरजय ज्ञान। ५—केवल ज्ञान। मति ज्ञान-बुद्धिका है। अर्थात् वह ज्ञान जो बुद्धि तथा सोचसे सम्बन्ध रखता है, इस मति ज्ञानमें समस्त संसारके हुनर तथा कारीगरियाँ आगई हैं। जिसको मतिज्ञान होता है वह कारीगरी और शिल्पकारीमें बड़ा चैतन्य रहता है। जिस किसीका मतिज्ञान आवर्णी कर्म्म उगता है, उसको गुणोंका पाण्डित्य प्राप्त नहीं होता। दूसरा श्रुति ज्ञान है, श्रुतिज्ञान समस्त शास्त्रोंके कण्ठस्थ करनेको कहते हैं। कुछ कागज तथा ग्रन्थ इत्यादि देखने की आवश्यकता न हो। सब बातें हृदयमें रहें। शास्त्रद्वारा तीनों कालोंकी बातों को जानता हो उसको श्रुति केवली अथवा श्रुतिज्ञानी कहते हैं। इस श्रुतिज्ञानको जो कर्म्म रोकले और न होने दे उसका श्रुतिज्ञान आवर्णी कर्मनाम होता है। तीसरा अवधिज्ञान है अवधिज्ञान उसको कहते हैं जिसके द्वारा लोग मनुष्योंके मनकी बातको जान लेते हैं। समस्त गुप्त बातोंको बतलात हैं और अन्तर्यामी कहलाते हैं। जो कर्म्म इस अवधिज्ञानपर परदा डाले और न होने दे उसको अवधि-ज्ञानावर्णी कहते हैं। चौथा मनप्रजय ज्ञान—मनप्रजय ज्ञान उसको कहते हैं कि, जो हृदयकी गतिको जाने। अर्थात् जहां हृदय दौड़े वह सब कुछ मालूम कर ले। हृदयकी समस्त चाल तथा स्थिरताको बूझले। जो कोई इस प्रकारकी विद्या रखता हो उसको मनप्रजय ज्ञानी जानते हैं। मनप्रजयज्ञानमें यह गुण है कि, जब जिसको यह ज्ञान उत्पन्न हो जाता है वो कभी नहीं जाता। मनप्रजय ज्ञानी अवश्य ही केवल ज्ञानका अधिकारी हो जाता है। पूर्वके तीन ज्ञानोंमें तो सन्देह रहता है क्योंकि वे होते हैं और जाते भी रहते हैं परन्तु मनप्रजयको स्थिरता तथा स्थिति है। मनप्रजयज्ञान अवधिज्ञानसे बहुत बढ़के है। जो कर्म इस मनप्रजय ज्ञानको छिपा लेता है और नहीं होन देता उसको मनप्रजय आवर्णी कर्म कहते हैं। पांचवाँ केवल ज्ञान है? यह सबसे बढ़कर है। यह समस्त ज्ञानोंका राजा है, जैनी ऐसा मानते हैं कि, इस केवल ज्ञानसे कोई बात छिपी नहीं रहती। सबसे उच्चश्रेणी यही है। जैनके चौबीस तीर्थंकर सब केवल ज्ञानी हुए हैं। उनके अतिरिक्त और कितने दूसरे साधू भी केवल ज्ञान रखते हैं। इस केवल ज्ञानको जो छिपाये रखे और न प्रकाशित होनेदे उसका नाम केवल-ज्ञानावर्णी कर्म है। दूसरा दर्शना-वर्णी कर्म्म है। जिसके कारण प्रत्यक्षमें दर्शन नहीं होता उसके परदेमें अलख

करतार रहता है । उसकी चार शाखायें हैं । तीसरा वेदनी कर्म्म है जिसके कारण जीवको दुःख सुख होता है । उसकी दो शाखायें हैं । चौथा मोहिनी कर्म्म है । उसकी दो शाखायें हैं । पांचवाँ आयुकर्म है इससे आपदाका अन्दाजा होता है, इसकी चार शाखायें हैं । छठवें नाम कर्म्म है इसकी तिरानवें शाखायें हैं । यह नामकर्म जीवधारियोंकी मूर्त्ति और स्वरूप बनाता है । सातवाँ गोतकर्म्म है इस गोतकर्म्म की दो शाखायें हैं । एकसे नीची जगह और दूसरीसे ऊँची जगह जीव देह धरकरके उत्पन्न होता है । आठवाँ अन्तराय कर्म्म है उसकी दो शाखायें हैं । इस अन्तराय कर्मका यह काम है कि, जो ज्ञान होनेवाला है उसको न होने दे उसमें विभिन्नता डाल दे । आठों कर्म्मोंका विवरण मैं ग्रन्थ कबीर भानुप्रकाशमें लिख आया हूं जो चाहे सो देखले । इन्हीं आठ कर्म्मोंसे समस्त जीव चार खानि चौरासी लाख योनिमें आवागमन किया करते हैं कर्म्मोपासना योग और ज्ञानभी सविस्तर रूपसे वहीं लिखा गया है । जिससे स्पष्ट प्रगट होता है कि, इस जीवका आवागमन कैसे सुकार्य्य तथा कुकर्म्मोंसे हुआ करता है । ये समस्त कर्म तो भरम रूप हैं । इनसे कदापि छुटकारा नहीं होता । जिसका वेद धर्म्मके लोग और जैनी केवल ज्ञान कहते हैं । इस जीवके कर्म्महीं उसका स्वरूप बनाते हैं । कर्म्मोंही करके इस जीवका आवागमन चारोंखानिमें बराबर बना रहता है । सत्यगुरु भेद बतलावें तो आवागनको सम्बन्ध टूटे नहीं तो दुख पाता रहता है ।

मुसद्दस—तू है करतार किब्रिया बारी । तेरा हुक्म सब जगह जारी ॥
तेरी तसबीर सुबुक और भारी । नकशहा सब शिगरफो जङ्गारी ॥
आलमोका है सारे काम तुम्हे । ऐ अमल हाय सद सलाम तुम्हें ॥
तूही इनसान हुआ तूही हैवान । तूही रहबर हुआ तूही शैतान ॥
जिस्म सदहा व एकही है जानू । होवे क्योंकर बयां तुम्हारी शानू ॥
लोक तीनों दिया इनाम तुम्हें । ऐ अमलहाय सद सलाम तुम्हें ॥
मालिक व आदम व जिन्नो परी । हबशी हिन्दी व खेबर और ततरी ॥
रङ्ग विरङ्ग ढङ्ग चार खान करे । अदलो इनसाफ साफ साफ करे ॥
दिया आलमका इन्तजाम तुम्हें । ऐ अमलहाय सद सलाय तुम्हें ॥
बन्दःसाहब कहीं किया है जुदा । कहीं बन बैठे आप आप खुदा ॥
सारे आलममें तेरी सूतो सदा । तुझसे सारे शरीर शाहो गदा ॥
सिजदा करते हैं खासो आम तुम्हें । ऐ अमलहाय सद सलाम तुम्हें ॥
तूही वाचून और तुही बेचून । सूरत सब तुझीसे गूनागून ॥
तूही मकबूल औ तूही मलऊन । तूही खुद रम रहा है सारे जून ॥

दे जमीनो जमात आम तुम्हें । ऐ अमलहाय सद सलाम तुम्हें ॥
तूही जेरीन् दरमयाँ बाला । मनका मनका तुही माला ॥
तूही पैदा किया तुही पाला । तूही सबजा हुआ तूही जाला ॥
कौन पहचान अक्ल खाम तुम्हें । अमलहाय सद सलाम तुम्हें ॥
इन्द्र ब्रह्मा व विष्णु भी भूले । अपने अमलोंके झोंकमें झूले ॥
कहीं पजमुरदा और कही फूले । हिर्स हैवाँ घर बघर डोले ॥
देरहीमो करीम नाम तुम्हें । ऐ अमल हाय सद सलाम तुम्हें ॥
आशकोंको दिखाया राहे सवाब । फासिकों के लिये शहीद अजाब ॥
सारा आलम बना खयालो ख्वाब । कोई न देरीना सारे नकश बरआव ॥
सारे जान्दार दे गुलाम तुम्हें । ऐ अमलहाय सद सलाम तुम्हें ॥
सारे जान्दारको फँसा मारा । नहीं इस जीवका रहा चारा ॥
करके तदबीर तुमसे सब हारा । जिन्दा कर करके फिर फिर मारा ॥
देमुकद्दर बदस्त दाम तुम्हें । ऐ अमलहाय सद सलाम तुम्हें ॥
तूही बख्शिदा है अम नोअमाँ । मातहत तेरे सब हैं जिसमो जाँ ॥
तुझसे पैदा है बाणी वेदो कुराँ । अबिदानो जाहिदाने जमाँ ॥
याद करते हैं सुबहो शाम तुम्हें । ऐ अमलहाय सद सलाम तुम्हें ॥
सारे मजहब जहांमें जारी हैं । पीर मुरशिदकी राह दारी हैं ॥
अर्श फर्शोंकी सब तयारी है । आजिज इसरारसे सब आरी है ॥
पेशवा भी किये इमाम तुम्हें । ऐ अमलहाय सद सलाम तुम्हे ॥

कर्मोंके चिन्ह

कालपुरुषने जीवधारियोंके शरीरमें कर्मोंके चिह्न हैं। इस जीवने पूर्वजन्ममें जैसे कर्म्म किये हैं उसको देहमें वैसेही चिह्न बने हैं। सब जीवोंके शरीरपर चिन्ह होते हैं परन्तु मनुष्यके शरीरपर भली भाँति स्पष्ट प्रगट होते हैं। इसी कारण मनुष्यकी देहहीसे इसके कर्म्मोंका भली प्रकार हिसाब किताब हो जाता है। मनुष्यके शरीरके चिन्ह देखनेसे भलाई बुराई जानी जासकती है। जिस समय स्त्री के गर्भमें वीर्य स्थिर होता है उसके भीतर जीव होता है उसजीवके साथ उसके पहलेके किये हुए कर्म बन रहते हैं उसके भाग्यके अनुसार उसका शरीर प्रस्तुत होता है, समस्त रंग डौल डौल पूर्वकर्मोंके अनुसारही होता है। जब यह माता गर्भसे निकलता हैं तो उसके पूर्वजन्मके कर्म्मोंके चिन्ह उसके शरीर पर होते हैं, पाँच वर्षके भीतर ये चिन्ह स्पष्ट प्रगट नहीं होते, जैसे जैसे यह बड़ा होता जाता है वैसेही वैसे इसके पूर्व कर्मके चिन्हभी दिखाई देते जाते हैं। तिल और मस्सा

इत्यादि भी पूर्वकर्मानुसार ही प्रगट होते हैं, बहुतेरे चिन्ह छिपे रहते हैं। शिरसे लेकर पैरतक सुकर्म्म तथा दुष्कर्म्मके चिन्ह भरे हुये हैं, कहीं दुर्भाग्यके तो कहीं सौभाग्यके चिन्ह होते हैं। यदि एक स्थानपर दुर्भाग्य और दूसरे स्थानपर सौभाग्य का एकही बातपर चिन्ह हो तो उसका मध्यम फल होता है। जो सामुद्रिक जानते हैं ये बातें उनको मालूम होती हैं। सामुद्रिक विद्या अत्यन्त कठिन है। जो सामुद्रिकमें प्रवीणहो वह मनुष्यका आकार देखकर सब कुछ कह सकता है।

कबीर साहबने इस सामुद्रिकके विषयमें बहुत कुछ कहा है कर्मोंके चिन्ह[1] देखकर सामुद्रिकका ज्ञाता सब कुछ कह सकता है। इसी विषयपर एक उदाहरण देता हूँ—मैंने किसी अंग्रेजी पुस्तकमें पढ़ा था कि, हकीम सुकरात एक पाठशालामें अपने शिष्योंको पढ़ा रहे थे। उसमें एक सामुद्रिक जाननेवाला आगया, जब सुकरातके शिष्योंने जान लिया कि, यह पुरुष इस प्रकारकी विद्या रखता है तो उसको वे अपने उस्तादके निकट लेगये और कहा कि, इस पुरुषके दोष और अवगुण कहो। वह सामुद्रिक जाननेवाला इस बातको नहीं जानता था कि, वही हकीम सुकरात है। उस समय उस सामुद्रिकीने सुकरातकी देहके समस्त चिन्ह देखे पहचानकर बोला कि, यह मनुष्य बडा पाजी, दुष्ट व्यभिचारी, झूठा, ठग, दगःबाज और दुष्कर्मी है। यह बातें सुनकर सुकरातके शिष्योंने उसके ठट्ठे उड़ाये हँसते हँसते बोले कि, यह मनुष्य झूठा है। तब सुकरात जो स्वयम् सामुद्रिक विद्या जानता था कहने लगा कि, तुम लोग इसको झूठा मत समझो। यह मनुष्य जो कहता है वह सत्य कहता है। उसमें कोई सन्देह नहीं क्योंकि, उसने जो कुछ कहा उन सब बुराइयोंके चिन्ह मेरे शरीरमें परिलक्षित हैं। मेरे शरीरमें वे सब चिन्ह ज्योंके त्यों बने हुये हैं मेरा स्वभाव वैसाही था परन्तु मैंने अपनी विद्या और योग्यतासे अपनी वासनाओंको भलीप्रकार दमन किया है। अपने हृदयको दुष्कर्मोंकी ओर हिलने नहीं दिया है भली प्रकार दृढ़ कर लिया है जिसमें तनिकभी हलचल न हो। ऐसा वासना दमन किया है कि, वे मुरदेकी तरह होगई हैं। परन्तु ये चिन्ह जली हुई रस्सीकी ऐंठनके समान शेष हैं। तब सुकरातके शिष्योंको निश्चय हुआ कि, हमारा उस्ताद सत्य कहता है, इस प्रकार पुरुषार्थ प्रारब्धपर जय पाता है। मनुष्य के अतिरिक्त कितनेही हाथी, घोड़ा बैल इत्यादि पशुओंमें भी ये चिन्ह देखे जाते हैं कि, जो लोग उनको मोल लेते हैं उनके भले बुरे चिन्होंको पहचान कर दुर्भाग्य तथा सौभाग्य जान लेते हैं। उनके कर्म्मोंके चिन्ह साधारणतः जड़ स्थावर पदार्थ पर प्रगट नहीं होते, गुप्त रहते हैं, परन्तु कभी कभी किसी चिन्हसे उनके पूर्व जन्मोंका चिन्ह प्रगट होजाता है। सर्व साधारण देखकर जान लेते हैं। सुतरां

---

१ कबीर सागर नं. १० स्वास गुंजार में विस्तारके साथ कहा है।

लगभग पैंतालीस वर्ष होते हैं जब मैं चुनारगढ़ जो कि, काशीके समीप है वहाँ गया। वहांके पर्वतपर जाके मैंने एक प्रकारका वृक्ष देखा। उस वृक्षके जड़से लेकर डालियोंतक नागरी अक्षरोंमें राम राम लिखा था। वहां इस प्रकारके अनेक वृक्ष थे। समस्त वृक्षोंकी यही दशा थी कि, सबमें राम राम लिखा हुआ था, जब सब वृक्षोंकी यही दशा देखी तब भली भाँति दृष्टि दौड़ाई जड़से ऊपरतक समानही देख पड़ा। अनुमान किया कि, इन वृक्षोंपर कोई आकर लिख गया होगा। इन वृक्षोंमेंसे एक वृक्षकी छाल हटाकर देखा तो छालके भीतर भी वही राम राम सुन्दरताके साथ लिखा हुआ था। तब निश्चय होगया कि, यह किसी मनुष्यके हाथोंका लिखा हुआ नहीं वरन् प्राकृतिक लिखावट है। उसके उत्पत्ति कालसेही यह गुण उसमें आगया है। उन वृक्षोंकी यह दशा देखकर मैं गांवमें गया, लोगोंसे पूछा इस वृक्षका क्या नाम है? तब लोगोंने कहा कि, इसे रामनामी वृक्ष बोलते हैं। उस वृक्षकी जड़में जो अक्षर थे उनकी स्याही बहुत काली थी और जैसे जैसे वे ऊपर जाते थे वैसेही वैसी स्याही फीकी पड़ती जाती थी। पतली डालोंकी स्याही बड़ी फीकी थी परन्तु पत्तोंके नाम तो अत्यन्त फीकी स्याहीमें होंगे कि, वे दिखाई भी न दे। उस वृक्षका वह रङ्ग ढङ्ग देखकर मैंने जाना कि, पूर्वकालका यह कोई भक्त है और किसी दोषवश वृक्ष हो गया है।

उस समय यमलार्जुन कुबेरके पुत्र याद आये जो नारद मुनिके शापसे वृक्ष हो गये थे। श्रीकृष्ण जीने उनका उद्धार किया था। उस वृक्ष की अवस्थासे उन्हें छुड़ाकर उनको यथार्थ स्वरूप प्रदान किया था। इसी प्रकार गौतम ऋषि की स्त्री (अहिल्या) गौतमके श्रापसे पत्थर हो गयी थी, श्रीरामचन्द्रजीकी कृपासे अपनी पूर्वावस्थामें, प्राप्त हुई। इसी प्रकार सब जीव कर्म्मके बन्धनमें पड़े हैं, जड़ और चैतन्य सब फँसे हुये हैं। कदापि किसी योग यत्नसे नहीं छूटते, उलटा दिन प्रतिदिन और अधिक फँसते जाते हैं। इसी विषयपर कबीर साहबने रमैनी कही हैं उन्हें यहीं लिखे देता हूं।

कर्मखण्डका सत्यकबीर वचन

रमैनी—कर्म्म कथा अब कहूँ बखानी। जौन फाँस अटके नर प्राणी॥
चारों खानि कर्म्म अधिकाई। चहूँ खानि मिलि कर्म दृढ़ाई॥
कर्म्महि धरती पवन अकासा। कर्महि चन्द सूर परकासा॥
कर्म्महि ब्रह्मा विष्णु महेशा। कर्म्महिते भये गौरि गणेशा॥
सातबार पन्द्रह तिथि साजा। नौग्रह ऊपर कर्म विराजा॥
कर्म्महि रामकृष्ण औतारा। कर्महि रावण कंस संहारा॥

कर्म्महि ले बसुदेव घर आवा । कर्म यशोदा गोद खिलावा ॥
कर्म्महि ते बन गऊ चराई । कर्म्म ते गोपी केलि कराई ॥
कौशल्या तप कर्म जो करिया । कारण कर्म्म राम औतरिया ॥
कर्महि दशरथ कीन्ह उदासा । कर्म्महि राम दीन्ह बनबासा ॥
कर्म्म जाय जब धनुष चढ़ावा । कर्म्महि जनक सुता सिरनावा ॥
कर्म्म रेखते कोई न मुक्ता । लछिमन राम करम फल भुगता ॥
कर्म्म हरी सीता कहँ आई । दुख सुख कर्म ताहि भुगताई ॥
कर्म्म सागर बाँधेउ बन्ध कहिया । कर्म्महि जल जीवन दुख सहिया ॥
रुद्र राम की कीन्ह लडाई । भल मिलाप हनू भेंट चढ़ाई ॥
कर्म्म रेख नहिं मिटे मिटाई । जिव पपील लंका होय आई ॥
कर्म्म रेख लंकापति गयो । लंकापति बिभीषण भयो ॥
कर्म्म रेख सबहिन पर छाजा । कहाँ राम कहाँ रावण राजा ॥
कर्म्म रेख सबहिन पर होई । देखो शब्द बिलोय बिलोई ॥
कर्म्म रेख सागर बँध हीना । बिरला कोई चीन्हें चीन्हा ॥

साखी—कर्म्म रेख सागर बँन्ध्यो, सौ योजन मर्याद ।
बिन अक्षर कोइ ना छुटे, अक्षर अगम अगाध ॥

रमैनी—सागर भव सागर की धारा । नहिं कुछ सूझे वार न पारा ॥
तहवां वावन अक्षर लेखा । कर्म्म रेख सबहिन पर देखा ॥
कर्म्म रेख बँधा सब कोई । खानी बानी देखि बिलोई ॥
वेद कितेव करम कहि गाया । कर्म्महि को निःकर्म्म बताया ॥
सद्गुरु मिले तो भेद बतावें । कर्म्म अकर्म्म मध्य दिखलावें ॥
कर्म अकर्म मध्य है सोई । सो निःकर्म अकर्म्म न होई ॥
अक्षर सागर निर्भय वाणी । अक्षर कर्म्म सबन पर जानी ॥
गोरख भरथरि गोपीचन्दा । कर्म्म फाँस सबही पुनि फन्दा ॥
नौ औ सात चौदह एक्कीसा । ब्रह्मा के चौरासी भेसा ॥
कर्म्म फाँस तहवाँ लग राखा । जहँ लग वेदव्यास कछु भाखा ॥
दस औ द्वादस कर्म्म बखाना । जिन जाना तिनहीं पहिचाना ॥
कर्म अकर्म भूल जो करई । गहे मूल सो कर्म्म न परई ॥
अक्षर सागर मूल भँडारा । अक्षर मूल भेद उँजियारा ॥
अक्षर मूल भेद जो जाने । कर्म्मी होय निःकर्म्म बखाने ॥

साखी—कबीर—कर्म्म डोर चारों युगनि, सुनो सन्त सब दास ॥
तत्वभेद निःतत्व लहि, जगते रहो उदास ॥ २ ॥

रमैनी—सतयुग तप कीन्हे रघुराजा । कारन कर्म्म नन्द घर गाजा ।।
एक नारि रघुवर दुख पावा । सोलह सहस गोपि निरमावा ।।
कारन कर्म्म केलि भव कीन्हा । कुञ्ज कुञ्ज गोपिन सुख दीन्हा ।।
जहँ तहँ गोरस जाय चुरावा । जहँ जहँ कर्म्म तहाँ ले खावा ।।
कर्म्म कंस ठीका आयो जबहीं । मारन कृष्ण विचार्यो तबहीं ।।
कर्म्म पूतना भेष बनायो । कर्म्म पयोधर कृष्ण लगायो ।।
कर्म्म कारण जो तहाँ सिधारा । कारन कर्म्म पीव विषधारा ।।
मारि तासु कीन्ही गति चारा । कर्म्म फाँस बोर्यो संसारा ।।
कर्म्म इन्द्र बरस्यो दिन साता । कर्म्म कृष्ण गिरि लीन्यो हाथा ।।
कर्म्महि मारि विध्वंस जो कीना । कर्म्म फाँस सबही आधीना ।।
कुबजा कछु कर्म जो कीन्हा । कारन कर्म्म कृष्ण गति दीन्हा ।।
कर्म्म पाताल कालेश्वरनाथा । साँवर अङ्ग भयो तेहि साथा ।।
अश्वमेध यज्ञ करत बलिराजा । कर्म्म ते जाय पाताल बिराजा ।।
कर्म्महि बावन रूप बनाया । बलि राजापै दान दिवाया ।।
कर्म्म अहूठ नापि पग लीन्हा । तीनैं पग तीनों पुर कीन्हा ।।
आधा पाँव कर्म अधिकारी । बाँधि नृपति पातालहिं डारी ।।
जहँ लगि जीव जन्तु उत्पानी । तहँ लगि कर्म्म राय परवानी ।।
कर्म्म फाँसते कोई न छूटे । कर्म फाँस सबहिन घर लूटे ।।

साखी—कर्म फाँस छूटे नहीं, केतौ करो उपाय ।
सद्गुरु मिले तो ऊबरै, नहिं तो परलय जाय ।। ३ ।।

रमैनी—जो कुछ कर्म्म जगतमें करई । करि करि कर्म्म बहुरि भव परई ।।
एक न होय यज्ञ व्रत ठाना । एक न पाप पुण्य पहचाना ।।
एक कर्म्म कुल लीन्ह उठाई । कर्म्म अकर्म्म न जानै भाई ।।
एक छापा और तिलक बनावै । पहिरि मेखला साधु कहावै ।।
वैष्णव होय करे षट् कर्म्मा । वेद विचार सदा शुचि धर्मा ।।
कथा पुराण सुनै चितलाई । कर्म्महिं सुमिरै बहुबिधि भाई ।।
विष्णु सुमिरि तब बहुबिधि कियो । सो निःकर्म्म विष्णु नहिं भयो ।।
कर्म्मकी डोरि बँधा संसारा । क्यों छूटे उतरे भवपारा ।।
एक अभङ्ग एकादशी करई । तन छूटे वैकुण्ठहिं तरई ।।
यह वैकुण्ठ न स्थिर होई । अन्त कर्म्मगति परलय सोई ।।
करे कर्म्म वैकुण्ठहि जाई । कर्म्म घटे भव जल फिरि आई ।।

योगी योग कर्म्मको साधे । किरिया कर्म्म पवन आराधे ॥
योगी कर्म पवनको किरिया । भुगतै कर्म देहु पुनि धरिया ॥
संन्यासी जो बन बन फिरही । होय निःकर्म कर्म फिर परही ॥
जीयत दग्ध देहको करई । जटा बढाय व्यसन परिहरई ॥
कोई नग्न कोई वस्त्र कछोटा । भरमत फिरै सहै पग ढोटा ॥
राजद्वार पावै औतारा । भुगतै कर्म अकर्म व्यवहारा ॥
पण्डित जन सब कर्म बखानी । नख शिख कर्म फाँस अरुझानी ॥
कर्म धर्मकी युक्ति बतावे । दान पुण्य बहुविधि अरथावे ॥
वस्त्र दानले जन्म गँवावे । होई ऊँट बहु भार लदावे ॥
एक जो करे बरत अवतारा । होइहै शूकर स्वान सियारा ॥
शूकर श्वान हो कर्म जो भुगता । विन निःकर्म न होईहैं मुकता ॥

साखी—कबीर—बहुबन्धनसे बांधिया, एक बिचारा जीव ।
जीव बेचारा क्या करे, जो न छुडावे पीव ॥

रमैनी—शव्द भेद निःशव्द बताओं । करि निःकर्म हंस मुकताओं ॥
निरालम्ब अवलम्ब न जाने । शव्द निरन्तर भेद बखाने ॥
पाप पुण्यकी छोडे आशा । कर्म धर्मते रहे उदासा ॥
रहे उदास नाम लौ लाई । तत्त्वभेद निःतत्त्व समाई ॥
तीरथ व्रतके निकट न जाई । भरम भूतको दई बडाई ॥
सुख सम्पति नहिं विपतिविचारे । काम क्रोध तृष्णा परचारे ॥
क्रिया कर्म आचार विसारे । होय निःकर्म्म कर्म्म निरवारे ॥
सो ग्रहै जो निग्रह काया । अभि अन्तरकी मेटै माया ॥
शील स्वभाव शरीर बसावे । अन्तर स्थिर ध्यान लगावे ॥
ब्रह्म अग्नि मनमें परजाले । ताको विष्णु चरन परछाले ॥
गहै तत्व निःतत्व विचारा । काम क्रोधको करै अहारा ॥
सहज योग सो योगी करई । कर्म्म योग कबहूँ नहिं परई ॥
धन योवनकी करै न आशा । कामिनि कनकसे रहे उदासा ॥
चहुँ दिशि मंसा पवन ककोले । ज्ञान लहर अभ्यन्तर डोले ॥
उन मुनि रहे भेद नहिं कहई । तत्वभेद निःतत्वहि लहई ॥
जो कोई आय अग्नि होय दहई । आप नीर होय नीचा बहई ॥
मन गयन्द गुरुमतसे मारा । गुरु गम लूटे ज्ञान भँडारा ॥
शूरा होय सो सन्मुख जूझै । भोंदू शव्द भेद नहिं बूझै ॥

दुखिया होय रैन दिन रोई । भोगी भोग करे सुख सोई ।।
दुर सुख भोग सोग सम जाने । भली बुली कछु मन नहिं आने ।।
भली बुरीका करे सो त्यागा । निश्चय पावै पर वैरागा ।।
सोंगी अक्षय रैन दिन बाजै । सिद्ध साधु तहँ आसन छाजै ।।

साखी—आसन साधे आपमें, आपा डारै खोय ।
कहैं कबीर सो योगी, सहजै निर्मल होय ।।

भावार्थ—इस प्रकार सब जीव बन्धनमें पड़े हैं । कर्म्मकी फाँसी सब जीवों को लगी हुई है । इससे छूटना असम्भव हुआ है । सहस्रों युक्तियाँ करता है परन्तु प्रतिदिन बँधा जाता है । ये तीनों लोक भवसागर (उत्पत्ति सागर) कर्मने बनाये हैं, इसी कर्म्मने यह भवसागर बनाया है । यही कर्म्म उस पर अधिकार कर रहा है । कर्म्मसे ब्रह्माण्ड और पिण्ड दोनोंकी स्थिति है । अनगिनती ब्रह्माण्ड हैं जिनकी कि, सीमाही नहीं है । यह ब्रह्माण्ड तथा पिण्ड दोनों अनगिनती नानाप्रकारके जीवोंसे परिपूर्ण हैं । जीवोंका अनगिनती स्वरूप तथा स्वभाव है । कि, जिनका कुछ विवरण हो ही नहीं सकता । किसीका वय लाखों वर्षका है । कोई ऐसे हैं कि, एक बार स्वाँसके आने जानेसे बहुत बार उत्पन्न होते और मर जाते हैं । कोई गरम हैं कोई अत्यन्त ठण्डे हैं ये सब जीव वासनासे भरे हुऐ हैं । इस भवसागरमें पडे गोता खाया करते हैं । कभी स्वर्ग कभी नरक और कभी मृत्युलोकमें रहते हैं । इस चौरासी लाख योनिके जीवोंको सुख नहीं मिलता सदैव दुखी सुखी हुआ करते हैं चारों खानिके जीवोंमें न कोई सुखी और न सन्तुष्ट हैं, कर्म्मोंके बन्धनसे इनका आवागमन हुआ करता है । यह भवसागर पशुओंसे बसा हुआ है, इसमें प्रायः सच्चे मनुष्यका अभाव है, जीवोंके ही कर्मोंसे प्रेरित होकर ईश्वरको अवतार धारण करना पडता है,जीवोंके सुख दुखोंकी व्यवस्था उनके कर्म्मोंके अनुसार ही होती है, गोपियोंको गोपियोंके कर्म्मोंके अनुसार तथा कंसको कंसके कर्म्मोंके अनुसार फल मिला है । साहिबका हंस वही है जो कर्म जालको कच्चे धागेकी तरह काट दे क्योंकि, जबतक अपनेको कर्म्मोंके बखेडेसे नहीं बचाता उस समयतक साहिबके हंसोंमें नहीं संभाला जा सकता इस कारण कर्मोंपर विजय पाना प्रत्येक मुमुक्षुका कार्य होना चाहिये ।

नौ कोष[1]

१ अन्नमयी कोष । २ शब्दमय कोष । ३ प्राणमय कोष । ४ आनन्दमय

---

१ दर्शनशास्त्रमें, अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय, और आनन्दमय ये पाँच कोष प्रसिद्ध हैं। कबीर सागर नं. ११ बोध सागर जीव धर्म बोधमें लिखा है कि—"पंचकोष यहि-

कोष । ५ मनोमय कोष । ६ प्रकाशमय कोष । ७ ज्ञानमय कोष । ८ आकाशमय कोष और ९ विज्ञानमय कोष । ये नौ कोषोंके नाम हैं ।

अब इनका संक्षेप विवरण सुनो :--

१. जो अन्नसे उत्पन्न हो और अन्नहीमें फँसा रहे वह अन्नमय कोष कहाता है ।

२--जो शब्दसे उत्पन्न हुआ और शब्दहीमें बन्द रहे वो शब्दमय कोष है ।

३--जो प्राणसे उत्पन्न होकर प्राणमें ही फँसा रहा वह प्राणमय कोष है ।

४--जो आनन्दसे उत्पन्न हो आनन्दमें ही फँसा रहा वह आनन्दमय कोष है ।

५--जो मनसे उत्पन्न हो मनमें ही बन्द रहे वह मनोमय कोष है ।

६--जो प्रकाशसे उत्पन्न होकर प्रकाशमेंही बन्द रहे वह प्रकाशमय कोष है ।

७--जो ज्ञानसे उत्पन्न हो एवं ज्ञानकेही बन्धनमें रहे वह ज्ञानमय कोष है ।

८--जो आकाशसे उत्पन्न हुआ होकर आकाशमेंही बन्द रहा हो वह आकाशमय कोष है ।

९--जो विज्ञानसे उत्पन्न हुआ विज्ञानमेंही बँधा,रहा वह विज्ञानमय कोष है ।

इन नौ कोषोंमें फँसा हुआ पारख पद नहीं पासकता, शरीर छूटतेही पुनः मातृगर्भमें प्रवेश करेगा । ये नौ कोष इस जीवके संकल्पसे हुए हैं । इन नौ कोषों को भली भाँति पहचानकर इन्हें छोड दे । पारखगुरुको पहचानकर उसकी ओर झुके, अपनेको पारखगुरुकी कृपाके योग्य बनावे तब पारखगुरु उसपर कृपा करके सब कोषोंके दोष गुण दिखा करके पारखपदपर स्थिर कर देंगे ।

अन्नमय तथा प्राणमयके बीच शब्दमय कोष है प्राणमय तथा मनोमयके बीचमें आनन्दमय कोष है । मनोमय और ज्ञानमयके बीचमें प्रकाशमय कोष है । ज्ञानमय और विज्ञानमय के बीचमें आकाशमय कोष है ।

मनुष्य जब समस्त उद्योग जप, तप, पूजा वन्दना योग समाधि, तीर्थ व्रत, आचार क्रिया इत्यादि जितनी युक्तियाँ हैं उनके और गुरुवोंके द्वारा ढूँढ़कर थक गया, छुटकारेका कोई पथ नहीं मिला तब इन नौ कोषोंमें उसने अपनी स्थिति की । इन घरोंके अतिरिक्त और किसी घरका पता नहीं लगा तब विवश होकर इन नौ कोषोंमें ही रहने लगा । इसकी कोई युक्ति काम न आई कि, जिससे कि आवागमनकी राह बन्द हो, इसमें किसका दोष है ।।

--विधि पहिचानी । प्रथम, अन्नमय, कोष बखानी ।।" इस तरह पाँचों कोषोंको पहिचान ले, सबसे पहिले अन्नमय कोषका वर्णन करते हैं। इस तरह कबीरपन्थके भी सांप्रदायिक ग्रन्थोंमें ५ ही कोष मिलते हैं। ये शब्दमय, प्रकाशमय, ज्ञानमय और आकाशमय चार और कहाँसे और कैसे बढ़ गये ? यह कबीरपन्थी और दार्शनिकजन अवश्य बिचार करेंगे ।

नौ कोषोंका विवरण

१—अन्नमय कोष देह स्थूल । २—शब्दमय कोष देह विराट् । ३—प्राणमय कोष देह लिङ्ग । ४—आनन्दमय कोष देह हिरण्यगर्भ । ५—मनोमयकोष देह कारण । ६—प्रकाशमय देह अव्याकृत् । ७—ज्ञानमय देह महाकारण ८—आकाशमय देह मूल प्रकृति । ९—विज्ञानमय देह कैवल्य ।

१ अन्नमय कोष—जाग्रित अवस्था । क्षिमाभूमिका । पपील मार्ग । पृथ्वी-तत्त्व । रजोगुण । मुद्रा खेचरी । त्रिकुटी स्थानके जठराग्नि । घट आकाश काम जल । प्रध्वंसाभाव । ये इस कोषको हैं ।

२ शब्दमय कोष—स्वयं सिद्धि अवस्था । विराट् देह । पृथ्वी तत्त्व । गुण ब्रह्मा । मुद्रा सन्मुखी । कण्ठस्थान । विविध भूमिका । निर्मार्ग । महद अन-घट । जलपर्व । बिम्बाकाश । सत्यलोक स्थान । महाप्रध्वंसाभाव । महाजल । ये इस कोशके हैं । अपना शरीर छोड़कर * योगी लोग दूसरे शरीरमें घर बना लेते हैं । सो शब्दमय कोष है ।

३ प्राणमय कोष—श्रीहठ स्थान । स्वप्नावस्था । सूक्ष्म जल तत्त्व । सतो-गुण । मुद्रा भूचरी । कामाग्नि । मठ आकाश । उद्यान वायु । विहङ्ग मार्ग । लिङ्ग देह ।

४ आनन्दमय कोष—आनन्दमय कोष—हिरण्य गर्भ देह । विशिष्टाद्वैत-भाव । गोलाहठस्थान । विष्णुलोक । मनभूमिका । तुरिया अवस्था (स्वप्न और सुषुप्तिके मध्य) योग अग्नि । रेचक वायु जल मार्ग । चाचरी मुद्रा । विष्णु-गुण । अभराकाश ।

५ मनोमय कोष—कारण देह । हृदय स्थान । सुषुप्ति अवस्था । स्वलिष्टा भूमिका । मन्दाग्नि । महदाकाश । अनन्य भाव कपिमार्ग । मुद्रा उन्मीलिनी । अग्नि तत्त्व । तमोगुण । प्राण वायु ।

६ प्रकाशमय कोश—हठ पीठस्थान । अव्याकृत देह । शिवलोक । शिवगुण । चित्त भूमिका । प्रातः सन्धि अवस्था । ज्ञान अग्नि । अहम्भाव । पोहर्ष वायु । सूर्य्य मार्ग । शाम्भवी मुद्रा । चिद् चिद् विशिष्ठाकाश । अनिमादिक आठ सिद्धि ।

७ ज्ञानमय कोष-नाभिस्थान । महाकारण देह । शुद्ध सतोगुण । तुरिया अवस्था । सुलिष्टता भूमिका । अत्यन्ताभाव । बड़वाग्नि । समान वायु । मन मार्ग । अगोचरी मुद्रा । चिदाकाश । सविकल्प समाधि ।

---

* योग शास्त्र विभूति पादके ३८ वें सूत्रमें तो यह लिखा हुआ है कि, चित्तके बन्धनके जो शरीरमें कारण हैं उनके ढीला करनेसे एवं चित्तके जाने आनेके मार्गके साक्षात्कारसे चित्त दूसरे शरीरमें प्रविष्ट हो जाता है इसके साथ सभी दूसरे शरीरमें घुस जाते हैं ।

८ आकाशमय कोष--मूल प्रकृति । देह पूर्णगिरी । स्थान निराश्रय लोक । ईश्वरगुण । अहम् भूमिका । मध्याह्न अवस्था । ब्रह्म अग्नि । कुम्भकवायु । आत्म भावनी मुद्रा । आनन्दाकाश । तुरियावस्था ये हैं ।

९ विज्ञानमय कोष--कैवल्य देह । भ्रमर गुफास्थान । तुरियातीत अवस्था । अन्तःकरण भूमिका । सर्वाधिष्ठान कलातीत कला । भावातीत भाव । पूर्ण बोधनी मुद्रा । निजाकाश । स्फुर्ती वायु । जैसाका तैसा । आत्मा आत्मा गुण । निर्गुण निर्गुण ब्रह्म । ये नौ कोष इस जीवके घर ठहरे । इन्हीमें यह भ्रमा करता है । जिस घरमें पहुँचता है वैसाही बन जाता है ।

आयु

इन पांचों अहंकार तथा नौओं कोषोंमें जितने परमेश्वर और सेवक फँसे हैं सबकी आयु धन बल और विद्या आदि सभीका अन्त होता है । अंत रहित इसमें कोई नहीं । इस पर मैं कबीर साहबका वचन लिखता हूँ --

छन्द -- जग चारो चलि जाय चौकड़ी एक कहावे ।
तेउ बहत्तर जाँय इन्द्र यकराज करावे ॥
जाँय अठाइस इन्द्र विरञ्ची कोर भजीजे ॥
ऐसे दिनन सौ बरस विधि की आयु सुनीजे ॥
ब्रह्मा सहस व्यतीत विष्णुको घण्ट बजीजे ।
विष्णू द्वादश जाँय रुद्रकी पलक पुरीजे ॥
रुद्र एकादश जाँय ईशकी निमिष कहीजे ॥
ईश सहस चलिजाँय शक्ति संहार करीजे ॥
शक्ति सहस चलिजाँय कल्पका भेद जो लीजे ॥
विधि पति सोई कहत हैं भयाकल्प परमान ॥
कहैं कबीर अनगणित हैं गणित न आवे ज्ञान ॥

इन आयु और श्रेणियोंके ऊपर जो बड़ी बड़ी श्रेणियोंके प्रतिष्ठित पुरुष हैं उनका क्या हिसाब कहा जाय ? वो मनुष्य की समझमें क्या आवे । यह सब सीमाके भीतर हैं । इन सभोंका अन्त है । अनन्तको कौन जाने ?

सत्त्व तीन लोककी परमेश्वरी कर रहे हैं । सत्त्वकी उच्चश्रेणीपर कितने सन्त अधिकृत हैं उसकी इनको कुछ खबर नहीं है इन ऋषियोंसे बढ़ कर और भी ऋषि हैं उनसे बढ़कर भी और हैं । उनसेभी बढ़कर और हैं । इस प्रकार कितने ऋषि मुनि एक दूसरेसे उच्च श्रेणीपर अधिकृत हैं । केवल शक्ति तथा प्रभावमें सीमाबद्ध हैं । इन ऋषीश्वरोंके सामने मनुष्य क्या वस्तु और क्या बल रखता है।

जैसे मनुष्योंके समीप कीड़े मकोडे ऐसेही उनके समक्ष मनुष्य क्या वस्तु हैं। वरन् इससे भी तुच्छ है इन सभोंका अन्त है, अनन्त कैसे जाना जावे ?

वेदके सिवा दूसरी पुस्तकोंकी सामर्थ्य नहीं कि, इन सूक्ष्म बातोंको प्रगट करें सूक्ष्म बातोंकी उनको तनिकभी सुध नहीं। साधुओंमेंभी कदाचितही कोई ऐसा होगा जो इन बातोंको समझे और सोचे, ये बातें बड़ी सूक्ष्म हैं। इन बातोंके समझनेवाले केवल हंस कबीर हैं, दूसरेकी ऐसी बुद्धि नहीं कि, भली प्रकार इसको जान सके। इन अहंकारी और नौ कोषोंमें सब कौतुक क्रीड़ा होरही है।

मनुष्यके सोचने समझने तथा कार्य्य करनेके लिये यह सब सूक्ष्म बातें दिखाई गई हैं। जो मनुष्य हो वो इन बातोंपर ध्यान देकर विचार करे। जिस किसीकी समझमें ये बातें ठीक मालूम होंगी अपनेको अन्धकारमें फँसा देखेगा वह अवश्यही प्रकाशमय पथको ढूंढ़ेगा। इन पांचों अहंकारों तथा नौ कोषोंसे बाहर निकालनेवालेका उपदेश जब पावेगा तब यह सब बातें जो लोक और वेदमें प्रचलित हैं सभी यथार्थ रूपसे जैसीकी तैसी दिखाई देंगी।

उनपर अत्यन्त खेद है जिनके कि, विचारमें इन पांचों अहंकारों और नौ कोषकी बातें नहीं आईं। फिरभी वो आपको पण्डित तथा ज्ञानी समझते हैं। अपने बन्धनपर तनिक भी ध्यान नहीं करते और दूसरोंके छुटकारेके लिये उद्योग किया करते हैं। जिसका गुरु स्वयम् राह भूला हो तो उसका शिष्य किधर जायगा ? ऐसा कौन भाग्यवान् है जो पारख गुरुको ढूंढ़कर उसके चरणकी धूल हो जावे ? संसारकी गन्दगियोंसे विशुद्ध हो जावे ? धन्य वह मनुष्य है जिसने पारख गुरुको शीघ्रातिशीघ्र पा लिया।

वासनाओंकी बाढ़से कोई विशुद्ध तथा स्वच्छ हो नहीं सकता। सब गुरु पुकारते हैं कि, विषय वासना नरककी राह है, इनसे दूर भागो। परन्तु तो भी गुरु तथा शिष्य विषय वासनाके बन्धनमेंही फँसे हुए हैं बिना पारखगुरुके किसीमें छुडानेका सामर्थ्य नहीं। वैद्य तो रोगीसे कहता है कि, तुम संयमसे रहो नहीं तो मर जाओगे। वैद्यका कहना सुनते तो हैं पर उसपर कोई स्थिर नहीं है। इसपर मैं एक दृष्टांत लिखता हूँ।

एक राजाने आम खाया वो उस आमके खानेसे बीमार हो गया तब वैद्यने बहुत औषधि की अत्यन्त कठिनाईसे आरोग्य हुआ वैद्यने राजासे कह दिया कि, अब आप भविष्यमें फिर कभी आम न खाना, यदि आम खाओगे तो मर जाओगे। आपका यह रोग ऐसाही है। राजाने यह जान ली। एक दिवस राजा अपने बागमें सैरके लिये गया बगीचेका माली अच्छे अच्छे मीठे आम राजाके सामने लाया।

मंत्रियों तथा निकटवर्तियोंने मना किया कि, महाराज ! आप इसको मत खाओ क्योंकि, वैद्यने मना किया है पर राजाने कहा कि, मैं खाता नहीं देखता हूँ जब देखा और बास लिया तब राजाके मनमें इच्छा हुई और आमको खागया अमीरों का कहना न माना । दो चार आम जो मनमें आया खालियाऔर बीमार हो गया । फिर बहुत कुछ औषध की गई पर आरोग्य न हुआ अन्तमें मर करही पीछा छूटा ।

इसी प्रकार सब गुरु मना करते हैं पर विषय वासनाओंसे कोई बच नहीं सकता, इसने सबको मार लिया है । हृदयसे लेकर ये सब बन्धनके कारण हैं, बिना इन सब पर बिजय पाये बन्धन नहीं कट सकता ।

अध्याय १८

पुनर्जन्म

भवसागरमें चारों खानके जीव चौरासी लाख योनिमें आवागमन किया करते हैं । इस कारण अब मैं पुनर्जन्मका वर्णन करता हूँ । यह सत्यगुरु कबीर साहब का कथन है कि, सब जीवोंको आवागमन हुआ करता है । समस्त भारतवासी इस बातको स्वीकार करते हैं । कदाचित्‌ही कोई इस बातको स्वीकार न करे पर मूसाई, ईसाई तथा मुसलमान इस बातको नहीं मानते । कोई कोई उनमेंसे भी मान लेते हैं । इस कारण मैं पुनर्जन्मको उनकी पुस्तकोंसे प्रमाणित किया चाहता हूँ जिसमें उनकी अज्ञानता नष्ट हो वे इस बातको मानें । विशेषतः जिस बातको स्वसंवेद स्पष्ट कहता है उस बातके ऊपर शंका करनेवाला सच्चा कैसे ठहर सकता है ?

नजम–तनासुख कहें सत्य साहब कबीर ।
मिहर जिसके इनसां हो रोशन जमीर ।।
मुक़द्दस स्वसंवेद उसका कलाम ।
बरॉ नस्त नामे अलेहुस्सलाम ।।

तीनों धर्म्मोंके महाशयगण और सिद्ध साधु तथा समस्त पृथिवीके विद्वानों और समस्त पुनर्जन्म न माननेवालों को विदित हो कि, बिना पुनर्जन्मके माने एवं आवागमनके अस्वीकार किये पापोंकी अधिकता और वासनाओं पर कभी भी विजय नहीं पासकते । जीवोंपर दया दृष्टि न होगी, विवेक विचार तथा सोचनेकी बुद्धि न होगी तो बन्ध और कष्टही रहेगा ।

ग़ज़ल–बकौले सतगुरु सच है तनासुख ।
कि चौरासी करे जीव तै तनासुख ।।

करे परवाज़ जब इस कालबुदसे ।
हो सदहा बार पै दरपै तनासुख ।।
कभी छूटे न इस खुमकी खुमारी ।
जो फिर फिर नोश करता मै तनासुख ।।
जो बदखसमी अमलकी हो रही है ।
तो करता बारहा यह कै तनासुख ।।
न सूझे और न यह रह रास्त बूझे ।
रही है घेर हर रुख दिये तनासुख ।।
जो खींच और धुवाँ दिलसे उठावे ।
कि पीता शौक़से यह नय तनासुख ।।
बहर सिमतो बहर सूरत बहर हाल ।
बहर जानिब नगर हर शय तनासुख ।।
कि बरक़त मिहबां मुरशि इसे आजिज ।
हुआ लारैब तू निर्भय तनासुख ।।

पिश्चमके देशवासी जिनका कि, कामही मांसाहार तथा निर्दयताका है, वे जीवके पुनर्जन्मको अस्वीकार करते हैं। इसका कारण यह है कि, उस देशके पैगम्बरोंमें से किसीको आवागमनका ज्ञान मालूम नहीं था । यद्यपि प्रकाशकी हलकी झलक कभी कभी उनके मनपर भी आजाती थी परंतु उस प्रकाशको स्थित नहीं होती थी । बिजलीके समान प्रकाशका प्रागटय हुआ और फिर अन्तर्धान होगया । सभी नबियोंमें हजरत आदम सबसे बड़े थे । अब पहले मैं उनके ज्ञानका वृत्तान्त लिखता हूं । इसके साथही पश्चिम देशके पैगम्बरोंके आवागमनका हाल न जाननेके कारण सभी बात सप्रमाण लिखूंगा ।

हजरत आदम—परमेश्वरके पुत्र थे । उनकी कान्ति तथा तेज सारे पैगम्बरोंसे बढ़ चढ़कर था कबीर साहबने कहा है कि, आदम ब्रह्माके औतार थे । इस खुदाके प्यारे पुत्रके साथ स्वयम् खुदा तथा फिरिश्ते वार्तालाप किया करते थे । हज़रतको अनेक बार खुदाका दर्शन हुआ था । आपको लदुनी विद्या नहीं थी, न आपको खुदाकी पहचान थी । खुदासे जो आज्ञा पाते उसको व्यवहारमें लाते थे आपको खुदाका दर्शन तो मिलताही था परन्तु खुदाकी पहचान नहीं थी, क्योंकि, अन्तर प्रकाश बिना खुदाकी पहचान असम्भव है । आपको केवल शारीरिक दर्शन प्राप्त था, मानसिक दर्शन नहीं था । क्योंकि जिसको मानसिक दर्शन होता है वह वार्तालापके अधीन नहीं होता ऐसे प्रकाशित हृदयवालेको कोई धोखा भी नहीं दे

सकता । यदि आपको खुदाकी पहचान होती तो आपको सांपकी सूरतमें शैतान कदापि न बहका सकता तौरीतमें उत्पत्तिके तीसरे बाबकी आठ आयत पर्य्यन्त लिखा है कि, सर्पके स्वरूपमें शैतान आया और आदम तथा हौवाको बहकाया । जिस फलके लिये खुदाने मना किया था, दोनोंने उसी फलको खाया इसी कारण दोषी होकर वैकुण्ठसे निकाला गया । यहांतक कि, इस सापने अपने विचित्र रङ्ग ढङ्ग दिखाये अनुमानसेभी मालूम नहीं किया कि, यहां तो दालमें काला है, खुदाकी आज्ञोल्लंघन करके फल खालिया ।

लिखा है कि, पहले शैतानने हौवाको बहकाया । भला यदि हजरतको आत्मिक प्रकाश तथा भीतरी विद्या होती तो इतना भी न जानते कि, शैतान मेरी पत्नीको बहकाने आता है मैं इसकी रक्षा करूँ उसके पाजीपनेसे विघ्न करूँ उसको आपत्तिसे सचेत करूँ । नबियोंके प्रतिष्ठित नबीको इतनी दूरदर्शिता एवं अन्तर-दृष्टि नहीं थी । फिर आपको आवागमनकी सुधि कैसे मिले, जान बूझकर भी कोई धोखा खाता है ? अपनेको तथा अपनी सन्तानको दीनता तथा दुरवस्थामें डालता है ? यदि आप सर्परूपी शैतानको नहीं पहचान सके तो मनुष्यरूपी खुदाको कैसे पहचान लिया कि, वह वास्तवमें खुदा था अथवा अन्य न जाने कौन था ।

कुरान शरीफके टीकाकारोंने लिखा है कि, जब प्रथम बार गर्भिणी हुई तब शैतान उसके समीप जाकर पूछने लगा कि तेरे पेटमें यह क्या है किस पथसे बहिर्गत होगा । यह बात सुनकर हौवाने उत्तर दिया कि, मैं नहीं जानती । तब शैतानने कहा कि, कदाचित तेरे पेटमें कोई पशु हो वो तेरा पेट फाडकर निकले । इतनी बात कहकर शैतान तो चला गया. हौवाने आदमसे सब हाल कहा । दोनों बहुत चिन्तित हुये । दोनों इसी चिन्तामें पड़े थे कि, कुछ दिवसोंके पीछे पुनः शैतान आया पूछा कि, तुम दोनों चिन्तित क्यों हो ? उन्होंने अपने दुःखका हाल कहा, तब शैतानने कहा कि भयभीत मत हो, मैं इस्मे आज़म जानता हूँ मेरी प्रार्थना स्वीकार हुआ करती है । मैं खुदासे प्रार्थना करूंगा कि हौवाके पेटसे तुम्हारे स्वरूपका पुत्र उत्पन्न हो, एवं सुखसे बाहर आवे । परन्तु बात इतनी है कि, तुम उस पुत्रका नाम अब्दुलहारिस रखना । आदम और हौवाने शैतानके धोखेको न जाना जब उनका प्रथम पुत्र उत्पन्न हुआ तब उसका नाम वही (अब्दुलहारिस) रखा और कुफ्रके भागी हुये ।

हुसनीकी तफसीरमें लिखा हुआ है कि, जिस समय शैतान वैकुण्ठमें था; उस समय उसका नाम अब्दुलहारिस था । जानना चाहिये कि, वही हजरत आदम हैं जिसके कि भीतर खुदाने अपनी रूह फूँककर अपने स्वरूपका बनाया और

समस्त फिरिश्तोंने दण्डवत किया, वे तनिकभी शैतानी धोखेको नहीं समझ सके उसके बहकानेसे धोखेमें आ गये ।

हजरत नूह--हजरत आदमके पीछे हजरतनूह (जो दूसरे आदम कहलाते हैं) बड़े प्रतिष्ठित नबी हुये । उनको भी खुदाका दर्शन हुआ करता था एवं खुदासे वार्तालाप भी हुआ करता था । खुदाके आज्ञानुसार बाढ़के समय (जल प्रलयके समय) आप नावपर सवार हुये ।

तौरीतमें उत्पत्तिके पुस्तकका (८) बाब (३ स १२) आयत पर्यन्त लिखा है कि, बाढ़के उपरान्त आपका नाव अरारात पर्वतपर ठहरी । नूहने खिड़की खोल देखकर जानना चाहा कि, पृथ्वीका जल शुष्क हुआ अथवा नहीं, इस अभिप्रायसे आपने नावपरसे एक कौवा उड़ाया और वह उड़कर गया । जबतक पृथ्वी का जल शुष्क न हुआ वह काग आया जाया करता था । फिर नूहने एक कबूतर उड़ाया जिसमें मालूम करें कि पृथ्वीका जल अभीतक सूखा है वा नहीं । कबूतर पृथ्वीपर अपने पञ्जे लगानेका स्थान न पाकर फिर नावमें आया । क्योंकि, समस्त पृथ्वीपर जल था, उस कबूतरके आनेपर नूहने उसको अपने हाथोंपर ले लिया उसने सात दिवसोंतक सन्तोष किया । आगे फिर कबूतरीको उड़ाया वह साँझके समय जैतून की पत्ती मुँहमें दबाकर फिर उसके पास पलट आयी । तब नूहने जान लिया कि, अब पृथ्वीपर जल कम हुआ है । इसके पीछे कबूतरीको उड़ाया । वह फिर कभी न आयी तब नूहने जान लिया कि, अब पृथ्वी सूख गयी, तब और भी सात दिन ठहरा । इसके पीछे उसने नावकी छत खोलकर देखा कि, भूमि शुष्क हो गई अथवा नहीं । खुदाकी आज्ञासे नूह समस्त मनुष्यों और जीवोंसहित पृथ्वीपर आ खेतीमें लग गया ।

समीक्षा--अब जानना चाहिये कि, जिस मनुष्यको परमेश्वरका दर्शन हो उससे वार्तालाप हुआ करे उसमें इतना सामर्थ्य भी न हो कि, बिना पशुओंके सहायताके वह पृथ्वीका सूखा और गीला होना जान सके, यदि तीक्ष्ण दृष्टिवाला मनुष्य पर्वतसे पृथ्वीकी ओर देखे तो पृथ्वीकी तरी और उसका सूखापन देख सकता है । यदि नङ्गी आंखोंसे नहीं देखे तो दूरबीनसे तो अवश्यही देख लेगा । जिसको पृथिवीके गीला और सूखा होनेका हाल न मालूम हो उसको आवागमन की विद्या कैसे ज्ञात हो सकती है ।

३ हजरत इबराहीम-नूहके पीछे खुदाके प्यारे और श्रेष्ठ नबी हुए । आप भी खुदाका दर्शन किया करते थे । आपसे खुदा वार्तालाप किया करता हुआ मिहमानी कबूल किया करता था । जब खुदा आपके घर मिहमान आया तब

आपने बड़ी मिहमानी दिखाई । देखो तौरीतमें उत्पत्तिके (३८) बाब (१) से (८) आयत पर्य्यन्त लिखा है कि, इबराहीमको मनुष्यके स्वरूपमें तीन फिरिश्ते मिले जब हजरतने उन फिरिश्तोंको देखा तब आपने पृथ्वी पर्य्यन्त झुककर दण्डवत् करके कहा कि, ऐ मेरे खुदा ! ऐ मरे खुदा !! और आपने तीनों खुदाओंकी बड़ी आवभगत की । एक बछरा मारकर तला मांस रोटो लिया । तीनों खुदाओं ने इबराहीमको आशीर्वाद दिया अपना भेद प्रगट किया कितने ईसाई समझते हैं कि इन तीनों फिरिश्तोंमें दो फिरिश्ते थे तीसरा स्वयम् यह वाह था जिसका कि नाम अत्यन्त प्रतिष्ठापूर्वक लिया जाता है ।

फिर कुरानके (१४) सिपारा सूरे कहफके सातवें रुकूअमें लिखा है कि, अब इब्राहीमके समीप तीन रिफिश्ते आये तब आपने मिहमान समझकर एक बछरेको मारकर तला इन तीनों मेहमानोंके सामने धर दिया । उन्होंने भोजनसे अपना हाथ खींच लिया न खाया तब इबराहीमने अनुमान किया कि, वे तीनों चोर हैं क्योंकि, उस देशकी यह परिपाटी थी कि, जो कोई किसीका धन अपहरण किया चाहता था वह उसका नमक न खाता था । यदि नमक खाये तो उसके घर चोरी न करे । इबराहीमके पास माल तथा पशु अधिक थे इससे जाना कि, ये तीनों निस्सन्देह चोर हैं । इस कारण मेरा नमक नहीं खाते हैं । जब इबराहीमके मनमें यह सन्देह हुआ तब उन तीनोंने जान लिया और बोले कि, ऐ इबराहीम ! हम तीनों फिरिश्ते हैं चोर नहीं । सदूम तथा अमूरा दोनों नगरोंका नाश करने आये हैं । इससे इबराहीमने विश्वास कर लिया कि, ये निश्चयही फिरिश्त हैं । जब तीनोंने अपना भेद कहा तब फिरिश्ता जाना, नहीं तो चोरही समझा था । यह बात उस समयकी है जब इबराहीम वय एक सौ बीस वर्षका था । आपके पहिले उम्रके वृत्तान्त कुरानमें इस प्रकार लिखा है कि, आप लड़कपनमें जब दिनको देखते थे तब आप कहते थे कि, यह मेरा खुदा है, जब दिन बीतकर रात आती थी तब कहते थे कि, वह तो मेरा खुदा नहीं था पर यह मेरा खुदा है । जब रातभी बीतजाती तब कहते कि, यह तो मेरा खुदा नहीं, जब सूर्य्य को देखते तब उसको अपना खुदा बताते । जब वह छिप जाता तब कहते कि, वह मेरा खुदा नहीं, कारण यह कि, वह तो अस्त होगया । जब चन्द्रमाको देखते तब कहते कि, यह मेरा खुदा है जब वह भी छिप जाता तब उससे भी निराश होते । फिर तारोंको खुदा कहते । फिर उनसे भी निराश होजाते ।

रोजतुस्सफामें हजरतकी अन्तिम वयका विवरण इस प्रकार लिखा है । इबराहीमने खुदासे प्रार्थनाकी थी कि, ऐ खुदा ! मेरी इच्छा बिना मेरे प्राण नाश

न हों मैं स्वेच्छा पूर्वक मरूँ। खुदाने आपकी प्रार्थना स्वीकार की। जब आपकी मृत्युका समय आया तब आपकी आत्मा निकालने, अत्यन्त वृद्ध मनुष्यका स्वरूप धारण करके इजराईल फिरिश्ता आया। आपने उस मनुष्यको देखा तो बड़ी प्रतिष्ठा और सम्मानसे बैठाया। बड़ी मर्य्यादा सहित उसके समक्ष भोजन रक्खे, खाना खानेको कहा। वह वृद्ध जब भोजन करने लगा तब उसका हाथ बहुत काँपता था। जब वह कोई ग्रास उठाता और मुँहकी ओर ले जाता तो कँपकँपीके कारण कभी वह ग्रास उसके कानमें जा पड़ता कभी आंखोंमें कभी नाकपर यदि कभी कोई ग्रास मुँहमें पड़ जाता तो उसी समय वह पायखाना फिर देता था। इस बूढ़े की यह अवस्था देखकर इबराहीमने उससे पूछा कि, आपका वय क्या है, तब वह बोला कि, तुमसे मेरा वय दो वर्ष अधिक है। यह बात सुनकर इबराहीमके मनमें बड़ी चिन्ता हुई कि, दो वर्षके उपरान्त मेरी भी यही दशा होगी। इस जीवनसे तो मरनाही उत्तम होगा। तब आपने भयभीत होकर खुदासे प्रार्थना की "हे खुदा! अब मेरी आत्मा मेरे शरीरसे निकाल"। उसी समय इजराईलने कपट करके इबराहीमकी जान निकाल ली। इबराहीम इजराईलके छलसे पूर्णतया अनभिज्ञ रहे अन्त तक उसको न पहचान सके?

४ हजरतइसहाक–इबराहीमके पीछे उनके पुत्र इसहाककी पैगम्बरकी पदवी मिली। देखो तौरीतमें उत्पत्ति के (२७) और (२८) बाबमें लिखा है कि, जब हजरत इसहाकके बुढ़ापेका समय था। आपको आंखोंसे दिखाई न देता था आपके दो पुत्र थे, बड़ेका नाम ईसू और छोटे का नाम याकूब था। एक दिन बड़े बेटे ईसूसे कहने लगे कि, ऐ बेटे! आज तू मेरे वास्ते भोजन लेआ जिसमें मैं भोजन करके तुझे बरकत दूँ। यह बात सुनकर ईसू शिकारके लिये चला. कारण यह कि, ईसूको शिकारका मास प्रिय था और वह बड़ा शिकारी भी था।

५ हजरत याकूब या इसराईल इसहाककी स्त्री रबका थी उसने जाना कि, आजके दिन इसहाक ईसूको बरकत देगा। रबका अपने छोटे पुत्र याकूबको ईसूसे अधिक चाहती थी। उसने याकूबसे कहा कि, ऐ पुत्र! आजके दिवस तुम्हारा पिता ईसूको बरकत देगा इस कारण तू जा और बकरीका एक बच्चा ले आ क्योंकि, याकूब एक चरवाहा था। याकूब तुरन्त ले आया, रबकाने तुरन्तही उस बकरीके के बच्चेको मार कर पका डाला। बड़ा स्वादिष्ट मांस बनाया अच्छे स्वादिष्ट भोजन बनाये। याकूबको ईसूका वस्त्र पहनाया, ईसूके शरीरमें बाल थे, याकूबका शरीर साफ था इस कारण याकूबकी देह जहां खुली थी हाथ और गरदन इत्यादि उस जगह पर रबकाने बकरीके बच्चेको खाल लपेट दी। जिसमें

ईसूकीसी देह मालूम हो । फिर याकूबके हाथमें खाना देकर कहा कि, अब तू अपने पिताके निकट जाकर कह दे कि, ऐ पिता ! मैं तेरा पुत्र ईसू हूं भोजन ले, खाकर मुझको बरकत दे । तब इसहाकने उसको अपने समीप बुलाया उसके समस्त शरीरको टटोला और कहा कि, बोली तो याकूबकीसी है पर शरीर ईसूकासा है । तब इसहाकने भोजन किया याकूबको बरकत दी । इधर तो याकूब अपने पिताको भोजन कराके और बरकत लेकर चला गया । इधर ईसूभी आखेट मारकर लाया बहुत स्वादिष्ट भोजन पकाकर अपने पिताके निकट लेकर गया कहा कि, ऐ पिता ! भोजन कर और मुझे बरकत दे । यह बात सुनकर इसहाक बोला कि, ऐ पुत्र ! अभी तो तू बरकत लेकर गया था । अब पुत्रः कैसे पलट कर आया. फिर अफसोससे कहने लगा कि, तेरा भाई याकूब धोखा देकर तेरे नामसे बरकत ले गया । यह बात सुनकर ईसू चिल्ला चिल्लाकर रोया और कहा ऐ पिताजी ! मुझको भी बरकत दो । उसका रोना तथा चिल्लाना किसी काम न आया दोनों भाइयोंमें बड़ा विरोध उत्पन्न हुआ ईसूने याकूबको मार डालनेका विचार किया । आगे रबकाकी सलाहसे याकूब घर छोड़कर भाग गया अपने मामू लाबनके घरमें रहने लगा ।

याकूबका व्याह—जब अपने मामू लाबनके घर गया तब लाबनने कहा कि, यदि तू सातवर्षतक मेरी सेवा करेगा तो मैं तुझको अपनी पुत्री दे दूंगा । याकूब अपने मामू लाबनकी सात वर्षतक भेड़ बकरियां चराता रहा । सातवर्ष बीतनेके बाद लाबनने अपनी बड़ी पुत्री, जो कि, आँखोंसे चौंधली थी, रातको धोखा देकर याकूबसे विवाहदी जबरातबीत गई और सबेरा हुआ तब याकूबने देखा तो मालूम किया कि, मेरे मामूने तो मेरे साथ धूर्तता की अपनी चौंधरी पुत्री मुझको दी । राहील जो सुन्दरी थी, जिसकी आशापर मैंने सेवा की थी वह नहीं दी । इस बातसे अत्यन्त दुःखी होकर लाबनसे शिकायत प्रगट की । तब लाबनने कहा कि, यदि तू सातवर्षतक मेरी सेवा और करे तो मैं तुझको अपनी दूसरी बेटीभी विवाह दूंगा । तब हजरत सातवर्षतक और अपने मामूकी सेवाकी भेड़ियां चराते रहे । तब उसने अपनी दूसरी पुत्री राहिलको भी याकूबके हवाले किया, इन दोनों पत्नियोंके लिये याकूबने अपने मामूकी चौदह वर्षतक भेड़ें चराई थी । याकूबका ग्यारहवां पुत्र बड़ा सुन्दर था । उसके भाइयोंने उसे ईर्षा वश मारकूटकर कुएँमें डाल दिया । उसका वस्त्र रक्तसे भिगोकर याकूबके समीप लेजाकर कहा कि, तेरे पुत्र यूसुफ को किसी हिंसक जन्तुने फाड़ खाया, यह रक्तसे भीगा हुआ उसका कुरता देखो । यह बात सुनकर याकू बधाड़ें मार मारकर रोने लगा हाय हाय करते और रोते

रोते अन्धा होगया। क्योंकि, वह यूसुफको बहुत ज्यादा प्यार करता था। उसे यह तनिक भी ज्ञात नहीं हुआ कि, उसका पुत्र माराकूटा निकटही कूएमें पड़ा है। बिलकुल नहीं जान सका कि, उसपर कैसी आपत्ति आयी। उनको भी खुदाका दर्शन होता था, खुदासे बातें भी हुआ करती थीं, आप खुदाके प्रियपात्र थे। आपका दूसरा नाम इसराईल था। आपके बारह पुत्रोंसे बारह सरदार, बनीइसराईलके नामसे प्रख्यात हुये। बारहोंकी बहुतेरी सन्तानें हुईं। तौरीतमें उत्पत्तिके (३२) बाब(२४) से (३१) आयत पर्य्यन्त लिखा है कि, याकूब अकेला रह गया था। वहां प्रातःकाल तक एक मनुष्य उससे कुश्ती लड़ता रहा जब इसने देखा कि वह मनुष्य उसपर विजय नहीं, हुआ, तब इसने उसकी जाँघको भीतरकी ओरसे छुआ और याकूबकी जाँघ उससे कुश्ती लड़नेमें चढ़ गयी। तब वह बोला कि, मुझको जाने दो सबेरा हो गया। तब वह बोला कि, जब तक तू मुझे वरकत नहीं देगा तबतक मैं तुझको न जाने दूंगा। उससे इसने पूछा कि, तेरा नाम क्या है, वह बोला याकूब वह बोला कि, भविष्यमें तेरा नाम याकूब न रहेगा बरन् इसराईल होगा कि, तूने खुदा और सृष्टिमें प्रतिष्ठा पाई। विजयी हुआ। याकूबने कहा कि, मैं तेरी प्रार्थना करता हूँ तू अपना नाम मुझे वता। वह बोला कि, तू मेरा नाम क्यों पूछता है? उसने उसको वहां बरकत दी। याकूबने उस जगहका नाम फनीआईल रखा कहा कि, मैंने परमेश्वरको स्पष्ट देखा मेरे प्राण बच रहे हैं। जब वह फनी-आईलसे जा रहा था तब सूर्य्य उसपर प्रकाशित हुये, वह लँगड़ा था। इसी कारण बनी इसराईल उस नसको जो जाँघमें भीतरकी ओर है आजतक नहीं खाते क्यों कि, उसने उसको छूआ था जो कि, याकूबके जाँघकी नसके भीतरवाली है।
नजम–नबी ऐसे और ऐसा परवरदिगार। तो फिर क्यों न हों पैरुवा रुस्तगार॥
भरो पेट अपना करो ऐशा जैश। कि, चूं और चिगूसे तुझे क्या है कार।

६ हजरत मूसा–हजरत याकूबके पीछे हजरत मूसाको पैगम्बरीकी पदवी मिली। यद्यपि इस बीचमें दूसरे दूसरे नबी भी हुये, पर हजरत मूसाको अन्यान्य नबियोंसे अधिक श्रेष्ठता है। खुदाने सीना पर्वतपर आपसे वार्तालाप की। जितना खुदा कहता था उतनाही मूसा जानता था। अपने भीतरी प्रकाशका बल कुछ भी नहीं रखता था।

अहादीससहीहा और सूर किसीमें लिखा है कि, दस वर्षतक मूसा, शईब पैगम्बरकी पुत्रीके साथ विवाह करनेके लिये उसकी भेड़ बकरियां चराता हुआ सेवा करता रहा। उसने अपनी पुत्री सफूराके साथ मूसाका विवाह कर दिया। तौरीतमें लिखा है कि, जब मूसा सीना पर्वतपर खुदासे बातें कर रहा था, उस

समय सब यहूदी सोनेका बछड़ा बनाकर पूज रहे थे। जब वह पर्वतसे नीचे उतरा कुछ पटिया लिखकर लाया। यहूदियोंको बछड़ा पूजता देखकर क्रुद्ध हुआ। और उन पटियोंको पटक दिया वे फूट गयीं अपने बड़े भाई हारूनकी दाढ़ी पकड़कर खींची ।

कुरानमें लिखा है कि, जब मूसाने झाड़ीमें आग लगी देखी तब उसने अपने घरवालोंसे कहा कि, मैं जाता हूँ इस झाडीसे आग लाता हूँ जब वह उसके समीप गया तब उसमेंसे आवाज आयी "ऐ मूसा! मैं तेरा तेरे बाप दादोंका खुदा हूँ"। मूसा अनभिज्ञ था कि, वह खुदा था या आग थी ।

हजरत मूसा और ख्याजा खिज्र–फिर कुरानके सूरे कहफके (१५) सिपारः (९) रुकूअकी (५९) आयतसे (८१) आयत तक मूसा और ख्वाजा खिज्रका किस्सा बराबर चला है, मूसाने खिज्रसे कहा है कि, मैं तेरे साथ चलूंगा। तब खिज्रने कहा कि, मेरे साथ न चल. क्योंकि, तू मेरे साथ चलने योग्य नहीं। कारण यह कि, तेरी बुद्धि शुद्ध नहीं है, तू मेरे कार्य्योंमें हस्तक्षेप करेगा। तब मूसाने उत्तर दिया कि, मैं तेरे कार्य्यमें कदापि हस्तक्षेप न करूँगा। तू मुझे अपने साथ चलने दे। खिज्रने मूसाको अपने साथ लिया कहा कि सावधान, तू मेरे कार्य्योंमें कभी हस्तक्षेप न करना जबतक मैं स्वयम् तुझसे कुछ न कहूँ। तब कुछ दूर चलकर दोनों एक नावपर सवार हुए। खिज्रने उस नावको फाड़ डाला। मूसाने कहा कि यह तूने क्या किया यह काम अच्छा नहीं किया। नाव फाड़कर तू लोगोंको डुबाया चाहता है तब खिज्रने कहा कि, क्या मैंने तुझसे पहले नहीं कहा था कि, तू मेरे, साथ चलने योग्य नहीं। क्योंकि, तू मेरे कार्य्योंमें हस्तक्षेप करेगा। तब मूसाने प्रार्थना की कि, अबकी बार तो तू मेरा अपराध क्षमाकर, फिर मैं हस्तक्षेप न करूँगा। अबका प्रथमही अपराध हुआ है क्षमा करने योग्य है।

फिर दोनों आगे चले। एक बस्तीमें एक लड़का मिला उसको खिज्रने मार डाला। फिर मूसा बोला कि, यह तूने क्या काम किया कि, एक निरपराध बालकको मारडाला। खिज्रने कहा कि, क्या मैंने तुझसे पहलेही नहीं कहा था कि, तू मेरे साथ चलने योग्य नहीं फिर मूसाने विनय की कि, अबकी बार तो मेरा दोष क्षमा करो, अब मैं तेरे कार्य्योंमें हस्तक्षेप न करूँगा।

फिर दोनों आगे चले। एक गांवमें पहुँचे। वहाँके मनुष्योंसे भोजन माँगा, किसीने न दिया। फिर खिज्रने उस गांवमें एक दीवार बनाई जो जीर्ण होकर गिरा चाहती थी। खिज्रने भली भांति परिश्रम करके उस दीवारको उठा सुदृढ़ कर दिया। मूसाने कहा कि, यदि तू चाहता तो अपनी मजदूरी लेता। खिज्रने कहा

कि, यह तीसरी बार है अब मेरी तेरी जुदाई है। अब जो जो काम मैंने किये हैं उसका तात्पर्य्य मुझसे सुन। जो नाव मैंने फाड़ डाली उसका तात्पर्य यह था कि, वह नाव मोहताजोंकी थी जो लोग परिश्रम करके अपना पेट पालते हैं। मैंने चाहा कि, मैं इसमें बाधा डालूँ, क्योंकि, उनसे परे एक बादशाह है जो नावोंको छीन लेता है। इस कारण मैंने उसकी नाव फाड़ डाली कि, फटी नाव देखकर उसको छोड़ देगा, उस नावसे उस गरीबको बड़ा लाभ हुआ क्योंकि, सब आनेवाले मनुष्य उसकी नावपर चढ़कर पार हो गये। मैंने जिस बालकको मार डाला था उसका कारण यह है कि, इसके माता पिता भले थे। लड़का दुष्ट होकर भविष्यमें उनको बदनाम करता इस ध्यानमें मैंने उसका वध किया, जिसमें उसके माता पिता जो धर्मिष्ठ हैं सुख पावें। वह दीवार जिसको परिश्रम पूर्वक मैंने उठाया वह अनाथ बालकोंकी थी। उस दीवारके नीचे खजाना गड़ा था और वह दीवार गिरा चाहती थी। इस दीवारको परिश्रम पूर्वक मैंने इसलिये उठाया जिसमें वे लड़के जब युवावस्थाको पहुँचे तब उस गड़े खजानेको खोदकर निकालकर सुख पावें। क्योंकि, उन लड़कोंके माता पिता सुकर्म्मी थे। इन लड़कोंपर ईश्वरी कृपा थी, यह समस्त कार्य्य मैंने खुदाकी आज्ञासे किये थे। अपनी इच्छासे नहीं किया। खिज्रको परमेश्वरी बुद्धि सागरका एक बूँद मिला था पर मूसाको कुछ नहीं मिला था। मूसा मिश्री भाषामें पुस्तकें पढ़ाया। सुन्दर सुदृढ़ तथा बलिष्ठ था।

मूसा और मौत—मैंने किसी मुहम्मदी पुस्तकमें पढ़ा था कि, मूसाकी मृत्युका संदेशा लेकर मलकुलमौत उनके पास आया। मूसासे कहा कि, मैं तुम्हारी जान निकालने आया हूँ। तब मूसाने एक तमाँचा खींचकर उस इजराईल फिरिस्ते को ऐसा मारा कि, एक आँख फूट गयी। वह खुदाके समीप दोहाई मचाता गया कि मूसाने मेरी एक आँख फोड़ दी।

मुहम्मदसाहिब और मुहम्मद गिजाली

मुहम्मद गिजालीको मुहम्मद साहब लाहूत स्थान ले चले। पहले मलकूत स्थानको गये। वहाँ मूसासे साक्षात् हुए मुहम्मद गिजालीने मूसासे कहा कि हजरत आपने जो खुदाको आकाशके रङ्गका बताया खुदा की वह मूर्ति कहाँ है, यह बात सुनकर मूसाने मुहम्मद गिजालीको भी एक तमाँचा खींचकर मारा कोई उत्तर नहीं दिया। अतः मूसा शूर वीर तो था सोटे की विद्या तो मूसाको अवश्यही थी। वह अन्तर्यामी नहीं था इसलिये आवागमनका भेद भी नहीं जानता था।

७ हजरत दाऊद नबी—मूसाके पीछे दाऊद नबी प्रख्यात हुये। देखो दूसरी समवाईलके (११) बाबसे दाऊदका सारा हाल लिखा है। एक दिवस आप

छतपर फिर रहे थे । उस समय एक सुन्दरीरमणी आपको दिखाई दी । वह उरयाह नामक मनुष्यकी स्त्री थी । उसको देखकर हजरतने आसक्त हो अपने नौकरको भेजकर उसे अपने पास बुलवाया । उसके साथ सम्भोग किया । निवृत्ति होनेके पीछे उस स्त्रीको विदा किया । वह स्त्री अपने घरको चली गयी । कुछ दिनोंके पीछे उस स्त्रीने आपसे कहला भेजा कि मुझे तेरा गर्भ रह गया है । यह बात सुन कर दाऊदने उस स्त्री के पति उरयाहको एक लड़ाईमें भेजकर मरवा डाला । जब वह मारा गया तो उसकी स्त्रीको आपने महलमें डाल दिया । जब दाऊदने ऐसा किया तब खुदा दाऊदपर अति क्रुद्ध हुआ । खुदाके क्रोधसे दाऊद बहुत घबराया वह रात दिन रोया करता था. खुदासे प्रार्थना किया करता था कि तू मेरे पापोंको क्षमा कर । जब वह बहुत रोया तब खुदात आला उसपर दयालु हुआ मुहम्मदी हदीसमें आया है और कुरानमें तूरत (स्वाद) की तफसीरमें लिखा है कि, जब दाऊदके ऊपर खुदा दयालु हुआ तब उससे कहा कि हे दाऊद ! मैंने तेरे समस्त पाप तो क्षमा कर दिये पर उरियाहके साथ जो तूने गुनह किया है मैं उसको क्षमा नहीं कर सकता क्योंकि वह पाप तो जो स्वयम् उरियाह क्षमा करे तो क्षमा किया जावे । तू उसीसे क्षमा प्रार्थना कर । तब दाऊदने कहा कि उरियाह तो मर गया अब मैं किससे क्षमा प्रार्थना करूँ ? तब खुदाने कहा कि मैं तेरे लिये उरियाहको फिर जीवित करूँगा । तू उसकी कब्र पर जा क्षमा प्रार्थना कर । दाऊद उरियाहकी कब्रपर जाके पुकारा उरियाह उरियाह, वह बोला कौन है जिसने मुझे सोते हुयेको जगाया, मैं सुखपूर्वक सो रहा था । वह बोला कि मैं दाऊद हूँ । उसने कहा कि, हजरत आपने कैसे कष्ट उठाया और यहाँतक पधारे । वह बोला कि ऐ उरियाह । मैंने तुझे लड़ाई पर भेजा वहां तू मारा गया । तू मेरा यह अपराध क्षमा कर । तब उरियाहने उत्तर दिया कि हजरत इसमें आपका कोई दोष नहीं नौकरका तो यही कार्य्य है कि अपने स्वामीके लिये प्राण दे, मैंने आपको क्षमा कर दिया । तब दाऊद प्रसन्न होकर पलट आया । फिर खुदाकी ओरसे दाऊदको यह आवाज आई कि ऐ दाऊद ? अपराध क्षमा करानेमें धूर्तता और कपट नहीं चाहिये । वरन् अपने पापोंको उरियाहसे स्पष्ट रूपसे कहो कि, मैं दयावान तथा न्यायी हूँ । दाऊद पुनः उरियाहकी कब्र पर गया कहा कि, ऐ उरियाह ! तू मेरा अपराध क्षमा कर । तब उरियाहने उत्तर दिया कि, मैंने तो पहलेही क्षमा कर दिया था आपने फिर यहां आनेका क्यों कष्ट उठाया । दाऊदने कहा कि, मैंने तेरी स्त्रीके साथ कुकर्म्म किया, उसको प्राप्त करनेके लिये तुझको लड़ाई पर भेजकर मरवा डाला तेरी स्त्रीको अपने महलमें डाल लिया । तू मेरा यह अपराध क्षमाकर ।

तब उरियाहने सुना कि, मेरी स्त्रीसे सम्भोग करनेके लिये उसने मुझे मरवा डाला था। तब वह निस्तब्ध होरहा कुछ न बोला। यद्यपि दाऊदने बहुत पुकारा रोया गाया पर वह फिर न बोला। तब दाऊद उसकी कब्र पर चिल्लाने रोने अपनेको धिक्कार देने लगा कि, खेद है तुझ दाऊद पर कि, अब तुझको पापिष्टियोंके साथ नरकको ले चलेंगे।

एक दूसरी कहावत है कि दाऊदके पास मनुष्य स्वरूप धारण कर दो फिरिश्ते आये। दाऊदसे पूछा कि, ऐ दाऊद बादशाह! हम दोनों भाई हैं, मेरे पास केवल एक भेड़ थी, मेरे इस भाईके पास निन्नानवे भेड़ें थीं सो इसने बलपूर्वक मुझसे वह एक भेड़ भी छीनली। तू बादशाह है मेरा न्याय कर तब दाऊदने कहा कि, वस्तुतः तेरा भाई अत्याचारी है और निस्संदेह इसने अत्याचार किया। जब दाऊदने इतनी बात कही तब वे दोनों फिरिश्ते अन्तर्धान होगये। दोनों फिरिश्तोंके विलोपित होने पर दाऊद जान गया कि, वे दोनों फिरिश्ते थे। मनुष्य नहीं थे। खुदाने मेरी परिक्षा ली, मुझे अत्याचारी ठहराया। क्यों कि, दाऊदकी निन्नानवे स्त्रियां थीं उरियाह जिसकी एकही स्त्री थी उसको भी उसने छीन लिया था। बादशाहतके बलसे दाऊद तथा मूसाने बड़ाही रक्तपात किया।

समीक्षा--यह दाऊद आवागमनको प्रगट करता है अपने पूर्वजन्मको स्वीकार करता है। देखो जम्बूरका (५१) बाब (५) (६) आयत देख मैंने बुराइम सूरत पकड़ी और पापके साथ मेरी माताने मुझको अपने पेटमें लिया। अर्थात् दाऊद कहता है कि,--मैंने पाप किया था इस कारण मेरी माता ने मुझे गर्भमें लिया पापोंके कारण मैं मातृगर्भमें आया अर्थात् मैं अपनी उत्पत्तिके पूर्वसे पापिष्ठी था ऐसा दाऊदके कथनसे प्रगट होता है कबीरजीने भी पिछले पापोंका इस निम्न साखीसे वर्णन किया है कि--

कबीर साहबकी साखी

उर्द्धसीस उर्द्धहि चरण, यह पिछली तकसीर।
कुम्भी नरक पठाइयां, जड़ियां भरम जँजीर ॥

८ सुलेमान--दाऊदके पीछे अपने पिता दाऊद बादशाहका सत्वाधिकारी हुआ। उसकी सातसौ स्त्रियाँ तथा तीनसौ रखैलें थीं। सहस्रों स्त्रियोंके साथ भोग विलास किया करता था। यह सुलेमान बादशाह अपने पिताके स्थानपर नबी भी था। आपका हाल पुराने अहदनामें तथा इतिहासोंमें लिखा हुआ है। वह स्त्रियोंके बहकानेसे मूसाका नियम तोड़कर मूर्तिपूजामें संलग्न हुआ उसका ईमान फिर गया। इस कारण उसपर खुदाई क्रोध उपस्थित हुआ। उसको दण्ड

देकर कहा कि, तेरे वंशसे बादशाही विलुप्त हो जायगी क्योंकि, तू यहवाहको छोड़कर अन्यान्य परमेश्वरोंकी पूजा किया करता है।

सलातीनकी किताबमें देखो । यद्यपि सुलेमान बादशाहको खुदाने दो बार दीदार दिया बरकत देकर कहा कि, ऐ सुलेमान ! मैंने तुझको विद्या, राज्य तथा पैगम्बरी तीनों प्रदान की तुझसा बुद्धिमान् न कभी हुआ न भविष्यमें होगा, न इस समय है। इस सुलेमान को काम क्रोधादिकने ऐसा दबाया कि कितनेही कार्य्य उसने बुद्धिके विरुद्ध किये।

किताब तोहफतुल इस्लाममें लिखा है कि, एक दिवस सुलेमानके पास बहुमूल्य घोड़े आये उनके विषयमें आपको वार्तालाप करते २ साँझ हो गयी, सूर्य्यास्त होनेके कारण साँझके समयके निमाजका समय भी जाता रहा । इस बातसे सुलेमानको अत्यन्त क्रोध आगया घोड़ोंकी गर्दन उनके तनसे जुदा की। व्यर्थही उन निर्दोषोंका रक्तपात करके अपने हाथोंको निर्दोषोंके रक्तसे रंगा।

कुरानके सूर : (स्वाद) और हदीसोंमें लिखा है कि, जैदून नामक एक बादशाह समुद्रके टापुओंमें रहता था । उसको मारकर उसकी पुत्री जरावाको सुलेमानने अपनी स्त्री बनाई, वह अपने पिताके शोकमें रोया करती थी, सुलेमानने मूर्ति बनानेके लिये कहा । उस स्त्रीके घरमें वह मूर्ति रक्खी गई, चालीस दिवस तक बराबर मूर्तिपूजा होती रही सुलेमान तौहीदको छोड़कर बुतपरिस्त होगया।

यह भी लिखा है कि, सुलेमान बादशाह एक दिन पायखाने गया (जिसकी बदौलत जिनपरी आदि उसके अधीन थे उस अंगूठी) को अपने गुलामको दे गया, क्योंकि पायखानेके समय उस पवित्र अंगूठीको वह पहनना नहीं चाहता था। इसी अवसरमें एक देव सुलेमानके स्वरूपमें आया उस गुलामसे अंगूठीको लेगया, सुलेमानके सिंहासनपर बैठकर आज्ञा दी कि, मेरे पीछे एकबेब मेरे स्वरूप का आता है वह तुम लोगोंसे कहेगा कि, मैं सुलेमान हूँ, तुम कदापि उसका विश्वास न करना, उसको भलीप्रकार मारपीटकर निकाल देना । इसके पीछे ऐसाही हुआ. सुलेमान जब शौचसे निवृत्त होकर आया तब तो गुलामको उसकी जगह न पाया न वह अंगूठी मिली । अपने मकानमें जाकर अपने को सुलेमान बादशाह कहा, पर उसके सेवकोंने उसको मारकूटकर निकाल दिया । सुलेमान बादशाह मारा मारा फिरने लगा ढाढ़ें मार मारकर रोता था । भूखा फिरा करता था एक स्थानपर गया जहाँ एक मल्लाह मछली मार रहा था। उसने पूछा तू कौन है ? यदि तू मेरी नौकरी करे तो मैं तुझको एक मछली नित्य प्रति खानेको दे दिया करूँगा। सुलेमान मछुवेका नौकर होगया। एक मछली प्रतिदिवस पाया करता था, उसकी

सेवा किया करता था। एक दिवसकी बात है कि, सुलेमान सो गया था एक सॉपने आकर सुलेमानके सिरपर अपना फण पसार दिया था। यह हाल उस मल्लाहकी बेटीने देख लिया। तब उसने जान लिया कि, यह हमारा नौकर कोई प्रतिष्ठित तथा बड़ी मर्य्यादाका मनुष्य है। तब उसने अपने पितासे कहा कि, पिता! मेरा विवाह इसके साथ कर दो. मल्लाहने कहा कि, हे बेटी! यह तो हमारा सेवक है इसके साथ तू क्यों विवाह किया चाहती है? अनेक मल्लाह हैं किसी अच्छे मल्लाहके पुत्रके साथ कर दूँगा। उस लड़कीने यह बात अस्वीकार की उसका विवाह सुलेमानके साथ हुआ, विवाह हो गया। तब उसदिनसे वह मल्लाह दो मछलियाँ दिया करता। एक सुलेमान और दूसरी अपनी पुत्रीको, वह मल्लाह भड़ भूँजेका कामभी करता था। उसकी लड़की भाड़ झोंकती थी। सुलेमान भी झोंका करता था। एक दिवस ऐसी घटना हुई कि, उसने अपनी पुत्री तथा दामादको दो मछलियाँ दीं। जब उन्होंने मछलियोंको चीरा तो जो उस लड़कीके भागकी मछली थी उसके पेटसे सुलेमानकी वही अंगूठी निकल पड़ी सुलेमानने उस अँगूठीको पह-चानकर अपनी उँगलीमें पहनली।

अब इधरका हाल सुनो कि, जब वह देव सुलेमानका स्वरूप धारण करके बादशाहत करने लगा, तो कुछ दिवसोंतक तो उसने राज्य किया। इसके पीछे शाही चाकरों तथा बेगमोंने उसकी आदतें सुलेमान बादशाहकी आदतों विरुद्ध पाई, तो जान लिया कि, यह हमारा बादशाह नहीं है वरन जिसको हमने मारकूटकर निकाल दिया था वही सुलेमान बादशाह था, यह कोई देव वा धूर्त है जो सुलेमानका स्वरूप धारण कर सिंहासनारूढ़ हुआ है। सब कारबारी सुलेमान को ढूँढ़ने लगे। जब उस दुष्ट देवने देखा कि, यह सब सुलेमानको ढूँढ़ रहे हैं मेरी धूर्ततांको सब जान गये हैं, तो सिंहासन छोड़कर भाग गया। अंगूठीको नदीमें डाल दी। नदीमें पडते उसी समय उस अंगूठीको एक मछली निगल गयी। सब कर्म्मचारी तो सुलेमानको ढूँढ़ते रहे वह देव कहीं छिप रहा। उधर जब सुलेमानने वह अंगूठी पा उसे अपने हाथमें पहना तो उसी समय जिन्न तथा परियाँ उसकी चाकरी में आ उपस्थित हुईं। शाही सिंहासन आया, सुलेमान को बैठाया। सुलेमानने उस मल्लाहकी छोकड़ीको अपने साथ सिंहासनपर बैठाया, वह आकाशको उड़ा, उसकी राजधानीमें जा पहुँचा। जब सुलेमान अपनी राज-धानीमें पहुँचा तो पहिलेकी तरह राज्य करने लगा।

घृणाकी दृष्टिसे देखनेका फल सुलेमान बादशाहका सिंहासन एक समय आकाशमें उड़ा जाता था, उस समय उसने मल्लाहकी लड़कीको कुरूपा

देखकर अपने मनमें ख्याल किया कि, हे खुदा ! ऐसी कुरूपा के साथ कौन विवाह करना पसन्द करेगा । अतः वह लड़की सुलेमानकेही गले पड़ी उस लड़कीकेही हिस्सेकी मछलीके पेटसे वह अंगूठी निकली, जिससे सुलेमान पुनः अपने राजा सनपर आसीन हुआ था । सुलेमानने उस लड़कीके साथ विवाहभी किया, उसके साथ भाड़भी झोंका, इन बातोंको सुलेमानोंकी हदीसोंमें ढूंढ़ना चाहिये । इस जगह मुझको एक उदाहरण याद आया है कि--

जब रामचन्द्र बनमें फिरते हुए दण्डकारण्यमें आये तो शिवरी भीलनीके हाथके बैर खाकर लक्ष्मणजीसे भी कहा कि, तुम भी इनको खाओ । लक्ष्मणने कहा कि, महाराज ! मैं तो भीलनीके हाथ का न खाऊँगा, रामचन्द्र चुप होरहे । जब मेघनादने बाण मारा और लक्ष्मणजी अचेत होगये उनके जीवनकी कोई आशा नहीं रही । तब हनुमानजी सञ्जीवनी बूटी लाये वह लक्ष्मणके मुंहमें दी उसी बूटीसे लक्ष्मणके प्राण बचे । तब रामचन्द्रने कहा कि, हे लक्ष्मण ! जिससे तुम घृणा करते थे उसी बेरके बीजसे यह सञ्जीवनी बूटी हुई है जिससे तुम्हारे प्राण बचे हैं । इस कारण किसीको घृणाकी दृष्टिसे देखना और अपनेको अच्छा जानना परमेश्वरका कोप अपने ऊपर उपस्थित करना है । ईश्वरोंके लिये भक्तों का आदर ही उचित है ।

सुलेमान बादशाहकी प्रशंसा मुसलमानी पुस्तकोंमें बहुत लिखी हुई है । पुराने अहदनामेसे भी प्रमाणित है कि, खुदाने सुलेमानको विज्ञान, पैगम्बरी और बादशाहत तीनों प्रदान करके कहा कि, तुम्हारे समान दूसरा न होगा । इस सुलेमानका हाल पढ़कर संसारकी बादशाही पैगम्बरी और हिकमत सभी तुच्छ और जान निकृष्ट पड़ती हैं ।

९--योहन्नानबी--सुलेमान नबीके पीछे योहन्ना नबी जिकरियाका पुत्र बड़ा प्रेमी हुआ है जब वह अपनी माताके गर्भमें आया तो (इञ्जीलके अनुसार) गर्भमेंही नूरेइलाहीसे भरपूर होगया था । यह मनुष्य ईश्वरी भयसे सदैव रोया करता था । हजरत ईसाने निज मुखसे प्रशंसा की कि, जितने नबी पूर्वसे अब-तक पृथ्वीपर आये-योहन्नासे बढ़कर कोई नहीं है । मतीके (११) बाबकी (११) आयतको देखो कि, योहन्ना जब कैदमें था तब मसीहके पास उसने अपने दो शिष्योंको भेजा । जिसमें जाने कि, आप वही मसीह है जिसकी कि हम आशा करते थे, या हम किसी अन्य मसीहकी प्रतीक्षा करें । तब ईसाने उन शिष्योंके द्वारा कहला भेजा कि, जो कुछ तुम देखते हो उससे जानो मेरी लीलाओंसे मुझको पहचानो । यह स्पष्ट रूपसे नहीं कहा कि, मैं वही मसीह हूं और न

योहन्नाको जान पड़ा कि यह वही मसीह है। योहन्ना उजाड़में रहा करता था। उसका भोजन मधु और टिड्डी था। वह ऊँटोंके रोंएकी पोशाक पहनता था, खालकी कमरबन्द कमरमें बाँधता था।

१०-हजरत ईसा-फिर इस पश्चिम देशमें हजरत ईसा सबसे श्रेष्ठ पैगम्बर उत्पन्न हुए। आपके विषयमें योहन्नाने कहा है कि, मैं ईसूके जूतेका तस्मा खोलने योग्य भी नहीं, सब पैगम्बरोंसे इतना मसीह श्रेष्ठ है।

मरकतका (१) बाब (७) आयत देखो। उन हजरतको भी कभी कभी कुछ प्रकाश होकर अन्तर्धान हो जाता था, सुतरां मतीके (२१) बाबके (१८) आयतसे (२०) आयततक और मरकसके (११) बाबके (१२) से (१४) आयत तक लिखा है कि, प्रातःकाल जब वह बैत-अैना से बाहर आया तब मसीहको भूक लगी उसने दूरसे इञ्जीरका एक वृक्ष देखा जो पत्तोंसे लदा था। उसके नीचे मसीह दौड़कर गया कि, कदाचित् उसमें कुछ फल पावें, परन्तु वहाँ पत्तोंके सिवा और कुछ नहीं पाया। क्योंकि, वह इञ्जीरके फलनेका समय नहीं था, निराश होकर उसने इञ्जीरके वृक्षको शाप दिया कि तेरा फल महाप्रलय तक कोई न खावेगा उसके शापसे वह वृक्ष वहीं सूख गया।

समीक्षा—इससे तीन बातें प्रमाणित हुईं, पहले तो उन हजरत को फला और बिन फला वृक्ष मालूम नहीं था। दूसरे आपको इंजीरके फलनेका समय मालूम नहीं था। तीसरे उस वृक्षको व्यर्थही शाप दिया। क्योंकि उसका कुछ भी दोष नहीं था। हजरत मसीहमें वह प्रकाश था कि, जिससे आप अपने आवा-गमनको जानते थे सुतरां योहन्नाको इंजीलका (९) बाब (५६-५८) आयत देखो आप आज्ञा करते हैं कि "तुम्हारा पिता इब्राहीम उत्सुक था कि, मेरा दिन देखे सुतरां उसने देखा और प्रसन्न हुआ" तब यहूदियोंने कहा कि, तेरी उम्र तो पचास बरस की भी नहीं? क्या तूने इबराहीमको देखा है। तब ईसाने कहा कि, मैं तुमसे सत्य सत्य कहता हूँ कि, इबराहीमके होनेके पहले मैं हूँ।

११ मुहम्मद मुस्तफा—जो अन्तिम पैगम्बर कहलाते हैं। मशकातके बाब किस्से अबिन सैयादके दूसरे फसिलमें आपका हाल इस प्रकार लिखा है, कि मुहम्मदसाहबने सुना कि, मदीनामें किसी यहूदिनके एक लड़का उत्पन्न हुआ है। उसकी एक आँख नहीं है, वह मादरजाद काना है। यह बात सुनकर आपको यह भय हुआ कि, कदाच यह लड़का मसीहुद्दज्जाल होगा। तात्पर्य्य यह कि, हजरत उमर सहित मुहम्मद साहब इस लड़केका वृत्तान्त जानने गये। उसको

घर।

भली प्रकार देखा उसका हाल पूछा । हजरत उमरने मुहम्मद साहबसे निवेदन किया कि, यदि आप आज्ञा दें तो मैं इस बालकको मारडालूं । आपने फरमाया कि, यदि यह लड़का मसीहुद्दज्जाल है तो इसका मारनेवाला मसीह है । बिना मरियमके पुत्र ईसाके इसका मारनेवाला और कोई नहीं । जबतक मुहम्मद जीवित रहेगा तबतक उससे डरा करते थे कि, कदाचित् यही मसीहुद्दज्जाल हो एवं बगावत कर बैठे । आपको जन्मभर उसका भय रहा मनकी धड़क कभी भी न गयी ।

सफरूस्सआदतमें लिखा है कि, एक दिन एक यहूदी स्त्रीने आपका (मुहम्मद साहबका) निमन्त्रण किया और कबाबमें विषमिलाकर लाई, जब वह कबाब आपके सामने रखा तो आपने उसमेंसे आपके समीप बैठे हुए एक अमीरको कुछ दिया । उसने खाया, उसने जान लिया कि, कबाबमें विष है । उसने पुकारकर कहा कि, हजरत आप इस कबाबको न खाइये इसमें विष है । यह बात सुनकर मुहम्मद साहबने अपना हाथ भोजनसे खींच लिया । वह अमीर जिसने कबाव खालिया उसी समय मर गया, परन्तु मुहम्मद साहबने जो तीन ग्रास खाये थे उसका प्रभाव हजरतके शरीरपर थोड़ाही हुआ, जिससे प्राण बच गये । आपने उस स्त्रीको बुलाकर पूछा कि, तूने ऐसा कार्य्य क्यों किया । उसने कहा कि, मैंने आपकी परीक्षाके लिये यह कार्य किया था कि, आप सच्चे पैगम्बर हैं या नहीं । अब मुझे जान पड़ा कि, आप सच्चे नबी हैं । इसमें कोई सन्देह नहीं । मुहम्मद साहबने उस स्त्रीका वध कराया । वह तीन ग्रास जो आपने खाये थे उसका उद्वेग उस समयसे प्रतिवर्ष हुआ करता था जिस समयसे आपने उस कबाबको खाया था । उस समय आपको बड़ा कष्ट हुआ करता था, जब वह कबाब खानेका समय आता था तब आप बीमार हो जाया करते थे । तीन वर्षके पीछे उसी विषसे आपकी मृत्यु होगई ।

हजरत अपने भीतरी प्रकाशसे कुछ नहीं जान सकते थे । कभी कोई कोई बात जान भी लेते थे । जैसे बिजलीका चमक पड़ना, अधिक तो जिबराईल द्वारा कर्माकर्मसे बिज्ञ होकर उसीके अनुसार कार्य्य किया करते थे ।

बैजावी तथा मदारक इत्यादिमें लिखा है कि, जिबराईल हजरतके निकट खुदाका हुकुम लेकर आया करते थे उस समय, वही (खुदाके हुक्म) की रक्षाके लिये सत्तर सहस्र फिरिश्ते जिबराईलके साथ आया करते थे । उन्हें डर था कि, कहीं शैतान अपनी बात उसमें न मिला दे अथवा स्वयम् जिबराईल उस वहीमें कुछ अधिक और न्यून न करदे या बदल न दे । तात्पर्य यह कि, स्वच्छ तथा

निर्दोष वही खुदाके पैगम्बर के पास स्वच्छ पहुँचे, इसीलिये खुदाकी ओरसे बड़ी चौकसी हुआ करती थी। हजरत इब्नअब्बासका कथन है कि, जिबराईल कभी खुदाके पैगम्बरके पास वही न लाया। उसके साथ साठ सत्तर सहस्र चौकीदार फिरिश्ते वहीकी रक्षार्थ साथ नहीं थे।

कुरानमें मूर्तिपूजा—मौलवी अमादुद्दीन कृत तवारीख, मुहम्मदीमें लिखा है कि, मुहम्मद साहबके नबी होनेके पाँचवें वर्षका हाल है कि, जब मक्कावालोंसे मुसलमानोंका वैर हो गया तब मुहम्मद साहबने मुसलमानों तथा काफिरोंके सामने यह बात सुनाई। बुतोंकी प्रशंसामें सूरत नजममें यह बात उतरी (जैसा कि, स्वर्गवासी मास्टर रामचन्द्र सितारे हिन्द दिहलवीने आजाज कुरानमें लिखा है)

أَفَرَأَيْتُمُ اللَّاتَ وَالْعُزَّىٰ وَمَنَاةَ الثَّالِثَةَ الْأُخْرَىٰ

कि, "तुम देखते हो लात अज्ज़ी और मनात बुतोंको" उसके उपरान्त फर मुहम्मद साहबने इसी आयतके साथ यह भी पढ़ा है।

تِلْكَ الْغَرَانِيقُ الْعُلَىٰ وَإِنَّ شَفَاعَتَهُنَّ لَتُرْتَجَىٰ

कि, "तीनों मूर्तियाँ परम श्रेष्ठ हैं। इनसे मुक्तिकी अभिलाषा की जाती है।" यह बात सुनकर सब मूर्तिपूजक मुसलमानोंके मित्र बन गये फिर जब मुहम्मद साहबने देखा कि, मुसलमानों तथा मूर्तिपूजकोंमें कुछ विभिन्नता नहीं रही तब खेद करने और सोचने लगे।

दूसरा कथन—तब आपने यह आयत सुनाई जो सुरे हजमें है:—

وَمَا أَرْسَلْنَا مِن قَبْلِكَ مِن رَّسُولٍ وَلَا نَبِيٍّ إِلَّا إِذَا تَمَنَّىٰ أَلْقَى الشَّيْطَانُ

فِي أُمْنِيَّتِهِ فَيَنسَخُ اللَّهُ مَا يُلْقِي الشَّيْطَانُ ثُمَّ يُحْكِمُ اللَّهُ آيَاتِهِ

अर्थात् ऐ! मुहम्मद तुझसे आगे जो रसूल तथा अम्बिया संसारमें आये उनकी यह दशा हुई कि, जब उन्होंने कुछ पढ़ना चाहा तो शैतानने उनके पढनेमें कुछ अपनी बात मिलादी अतः खुदा शैतानकी मिलाई हुई बातोंको काटता है अपनी बातको दृढ़ कर देता है।

तात्पर्य–यह कि, मैंने जो बुतोंकी प्रशंसामें वह बात कही मूर्तियोंकी

प्रशंसा की वह वाक्य खुदाकी ओरसे नहीं था वरन् शैताननें वह बात मेरी जिह्वा-पर डालदी थी। उस वाक्यको कटा हुआ जानो क्योंकि, वह शैतानका वाक्य था। इस प्रकार शैतानी मिलावटके कारण कुरानकी बहुतसी आयतें कट गयी हैं। जिनका वृत्तान्त तफसीर मुआलि मुत्तनजीलमें लिखा है।

समीक्षा—अब यहाँ प्रमाणित हुआ कि खुदा तथा खुदाके रसूल दोनों शैतानसे भयभीत रहा करते थे। खुदा सत्तर सहस्र चौकीदार आयतके साथ भेजा करता था। जिबराईलका भी कुछ विश्वास न था कि, वह अपनी ओरसे वहीमें कुछ मिला न दे इस चौकसी तथा सावधानीके होते रहने पर भी शैता-नकी विजय होती है। वह वही तथा पैगम्बरोंकी जिह्वापर अपनी बात डाल देता है। उसकी मिलावटसे खुदा और रसूल दोनों डरा करते थे। तब बताइये कि, उनकी शक्ति तथा मुक्ति किस काम आई।

विशेष—यहाँतक तो मैंने बहुतही संक्षेपमें सब नबियोंका हाल लिखा है एवं उनकी विद्याका वृत्तान्त प्रगट किया है। जो कोई उनकी जीवनी देखेगा वह अनेक बातोंसे विज्ञ हो जायगा कि, इन नबियोंको कैसा ज्ञान था किस प्रका-रकी विद्यासे संसारवालोंको उपदेश दिया करते थे। जितने बड़े बड़े नबी बीते हैं वे येही हैं, उनके अतिरिक्त जितने नबी और बीचमें हुये हैं उनका विवरण व्यर्थ है। इन सब नबियोंको खुदाकी ओरसे बल तथा प्रकाश प्रदान किया जाता था। इसके द्वारा वे लोग मनुष्योंको उपदेश दिया करते थे। मृत्युके समय उनका सर्व प्रकाश विलुप्त हो जाता। वह दूसरी योनिमें चले जाते थे। परन्तु दूसरी देहमें पूर्वजन्मका परिश्रम कुछ सहायक होता शीघ्रही प्रकाशके अधिकारी हो जाते। किसीको मृत्युके समय प्रकाश पृथक् होता और किसीका प्रकाश उसी जीवनमें दूर हो जाता। सुतरां सावल नबी अपने जीवनमेंही बिना प्रकाशका हो गया था। एक स्त्री जिसका यार एक देव था उससे समाचार पूछता फिरा। उसमें तनिक भी ज्ञानकी ज्योति नहीं रही। देखो प्राचीन अहदनामा (१) समवाईलका (२८) बाब साविलका वृत्तान्त लिखा है। ऐसेही सब नबियोंको खुदाकी ओरसे उपदेश होता है तब विद्याका प्रदीप प्रकाशित होता है। फिर समय आनेपर बिना विद्या केभी हो जाते हैं योनि योनिमें आवागमन करते फिरते हैं जैसे घड़ीको फूक दी अथवा कलको हिला दिया जबतक उसका बल रहा तबतक चलती रही, ऐसे ही नबियोंका मन कभी प्रकाशित और कभी अन्धकारसे भर जाया करता है इसीका सार निम्न लिखित ग़ज़लमें लिखते हैं।

गज़ल—नहीं एतबार[1] आदम[2] और फिरिश्तोंकी[3] जबानी का ।
कहो दावा करे क्या कोई हककी[4] राजदानीका[5] ॥
शरीअत[6] और हकीकत[7] और तरीकत[8] मारफत[9] चारो ।
बपासे अहल दुनियाके है डण्डा निर्दबानीका ॥
रखी जो हाथ पर शय—हो, न पहचाने अगर कोई ।
तो क्योंकर नुकतःढाँ होवे तनासुख चारखानीका ॥
न जाने भेद अपने घर न अपने जिस्मका आदम ।
तो फिर क्योंकर वह मुखबिर हो कवायफ आसमानीका ॥
यहूदा और निसारा मुस्लमाँ हिन्दू झगडते हैं ।
न जाने अस्लको अपने सबब यह खीच तानीका ॥
लिखा सब हाल निबियोंका बगोशोहोश सुन लीजे ।
यही सूरत यही मूरत यही ढब गैबदानीका ॥
वह है नजदीकतर शह रंग (से) पहचाने कहो क्योंकर ।
कभी कोई न देखा जिलवः उस जल्ल शानीका ॥
थके सिध साधु सदहा, पीरो कुतुब ओ काजी ।
न मुखबिर कोई खबरदारां से उसराजनेहानीका ।
भजन सुमिरन नमाजोजाप और पूजा नहीं कोई ।
नहीं कोई काम उस घरमें है कुरआँ वेद खानीका ॥
पड़ा खाता था गोता सद तलातम वह्र कुदरतमें ।
हुआ इसरार तब इजहार मुरशिद मेह्र ज्ञानीका ॥
नबी आदम और हौवा हिर्समें फसकर मरे सारे ।
यह मुहलिक साजो सामां सब है इस दुनियाय फानीका ॥
न जान और न ढूँढ़े सब भटकते दर बदर फिरते ॥
सभी कहते कहानी किस्सा मुल्क जावेदानीका ॥
हिकायत आसमांकी कर शिकायत अपनी जोरोंकी ।
नहीं मोहरिम हुआ जिनहारा घरके चोर जानीका ॥
बजुज़ मल्लाह किश्ती दुनयवी दरिया न तर आजिज ।
तु क्योंकर पार पावे कुदरते दरिया सुभानीका ॥

---

१ विश्वास, २ बाब आदम, ३ ईश्वरीय संवाद वाहकके साथी, ४ परमात्मा, ५ गुप्तहाल, ६ कर्मकाण्ड, ७ ज्ञानकाण्ड, ८ उपासनाकाण्ड, ९ विज्ञानकाण्ड ।

नबियों और उनके खुदापर एक दृष्टि

१२—इन नबियोंको तो क्या लद्दुन्नी विद्या होनी थी वरन् उनके खुदा-केभी लद्दुन्नी (सार्वज्ञ्य) विद्यामें सन्देह जान पड़ता है । क्योंकि खुदाने मूसाको आज्ञा दी मूसाने बनी इसराईलसे कहा । देखो तौरीतमें खुरूजका (१२)बाब (२१ से २३) आयत पर्य्यन्त लिखा है कि, मूसाने सब बनी इसराईलके प्रतिष्ठितोंको बुलाया, उनसे कहा कि, तुम अपने प्रत्येक घरोंसे एक बर्रा बकरा निकाल लाओ और उसे हलाल करो, जूफीअनाजको एक एक मुष्ठी लाओ और उस रक्तमें जो बासनमें है, गोता देकर ऊपरके चौखट और दोनों बाजू द्वारके उससे छापो । तुममेंसे कोई प्रातः कालतक द्वारके बाहर न जावे । क्योंकि, इधर खुदा जावेगा । जिसमें मिश्रियोंको मारेगा । जब वह चौखट तथा दोनों बाजू देखेगा खुदा द्वार परसे जावेगा मारनेवालेको न छोड़ेगा ऐसा न कि, तुम्हारे घरोंमें आकर तुम्हें मारें ।

फिर देखो उसी बाबके (१४ से १२) आयत पर्यन्त लिखा है कि, खुदा आज्ञा करता है कि आजकी रात मैं मिश्रदेशमें होकर जाऊँगा मनुष्य तथा पशुके जितने पहलौठे मिश्र देशमें हैं सबको मारूँगा । मिश्रके सब देवताओंको दण्ड दूंगा । साबित करूँगा कि मैं खुदा हूँ ।

उस रक्तका तुम्हारे घरों पर जहाँ जहाँ चिन्ह होगा मैं वह रक्त देखकर तुमको छोड़ दूंगा । जब मैं मिश्र देशस्थ मनुष्योंको मारूँगा तो तुम्हारे मारनेको तुम पर मरी न आवेगी ।

फिर देखो तौरीतमें उत्पत्तिका (६) बाब (५ से ८) आयत तक लिखा है कि, पृथिवी पर मनुष्योंका पाप बढ गया खुदाने देखा कि, मनुष्योंके विचार दिन दिन भ्रष्ट हो जाते हैं खुदा मनुष्यको पृथिवी पर भेज कर पछताया बडा ही दुःखी हुआ । खुदाने कहा मनुष्यको जैसे मैंने उत्पन्न किया है वैसेही मनुष्यको, पशुको कीड़े मकोडे तथा आकाशके पक्षियों तकको पृथिवी परसे मिटा डालूंगा । क्योंकि मैं उनको बनाकर पछताता हूँ ।

मुसलमानोंकी हदीसोंमें जो लिखा है उसे मैं कबीर भानुप्रकाशमें लिख आया हूँ कि, जिस समय खुदाने आदमका पुतला बनाना चाहा कहा कि, मैं एक खलीफा बनाऊँगा मिट्टीसे आदमकी मूर्ति बनानेकी आज्ञा दी । उस समय फरिश्तोंने मना किया कि, ऐ खुदा ? तू मनुष्योंको न बना, वे उत्पन्न होकर पाप करेंगे । तू मनुष्यको कदापि न बना परंतु खुदा साहबने एकका विचार नहीं किया । अपने खुदाई घमण्डमें उनको झिड़क दिया । तब फरिश्ते चुप रहे, अन्तमें

खुदाने जिबराईलको आज्ञा दी कि, तू पृथिवीसे मिट्टी ले आ। मैं मनुष्यका पुतला बनाऊँगा जिबराईल खुदाकी आज्ञानुसार पृथिवी पर आ मिट्टी लेने लगा। पृथिवी फूट फूटकर रोई पुकारकर कहा कि, ऐ जिबराईल ! तू मिट्टी न ले क्योंकि, खुदा इस मिट्टीसे आदमका पुतला बनावेगा। मनुष्य उत्पन्न होकर मुझपर पाप करेंगे। इन पापियोंके कारण मुझको बहुतही कष्ट होगा। पृथ्वीके गिड़गिड़ानेपर हजरत जिबराईलको दया आगयी वे पलट गये मिट्टीकी मुठी नहीं ली। इसके पीछे खुदाने मेकाईलको मिट्टी लाने भेजा, मेकाईलसे भी पृथ्वी बहुत गिड़गिड़ाई। तब उसके मनमें भी दया आ गई वह भी बिना मिट्टी लिये ही पलट गया। फिर अन्तमें इजराईलको भेजा। इजराईल पृथ्वी-पर आकर मिट्टी लेने लगा तो पृथ्वी रोई। मिट्टी न लेनेके लिये गिड़गिड़ाई। इजराईलने कहा कि, मैं मिट्टी लेकर तेरी दोहाई तिहाई सुनूंगा। अन्तको इजराईलने बलपूर्वक मिट्टी ली, पृथिवी रोती चिल्लाती रह गयी। कुछ न ध्यान दिया। वह मिट्टी लाकर खुदाके सामने रखी। इजराईलसे कहा कि, ऐ इजराईल ! तेरे मनमें बहुत थोड़ी दया है। तू पाषाण हृदय है क्योंकि तूने पृथिवीकी पुकार नहीं सुनी। जब पृथिवीपर मनुष्य उत्पन्न होंगे तब उनकी आत्मा निकालनेके लिये तू पृथ्वीपर जाया करेगा। अतः यह इजराईल फिरिश्ता मनुष्यके उत्पन्न होने तथा मरनेका कारण हुआ। खुदाने उस मिट्टीको गूंधकर मनुष्यका पुतला बनाया। मनुष्य पृथिवीपर बहुतायतसे होकर पाप करने लगे। उनके पापोंसे खुदा बड़ाही रुष्ट हुआ। अपने कियेपर पछताया। बाढ़ लाकर उनको नष्ट करना पड़ा। जैसा खुदा साहबने स्वेच्छा पूर्वक कार्य किया। फरिश्तों तथा पृथिवीका कहना न माना और रोना चिल्लाना नहीं सुना वैसेही अपने कियेका फल भी पाया।

अब यहाँ पर विचारना चाहिये कि, कोई नबीतो खुदासे बातें करता था कोई स्वप्नमें वार्तालाप किया करता था। भाँति भाँतिके स्वरूपमें खुदा उनको दिखाई देता था। यहाँतक कि, स्त्रियाँ और लड़के लड़कियाँ पैगम्बरी किया करते। जब चाहते तब खुदासे वार्तालाप कर लेते थे। जो चाहते सो पूछ लेते, सुतरां इसहाककी स्त्री रबकाको जब गर्भ हुआ जब उसके पेटमें दो पुत्र आपसमें झगड़ते थे तब वह खुदासे पूछने गयी कि, ऐसा क्यों है ? तब खुदाने कहा कि, तेरे पेटमें जो दो पुत्र हैं उनमेंसे बड़ेकी अपेक्षा छोटा बडाई तथा श्रेष्ठता पावेगा।

स्त्रियों तथा पुरुषोंसे खुदा इस प्रकार वार्तालाप किया करता था। परन्तु

किसीने इस खुदाको कभी न पहचाना और न कभी किसीको खुदाके पहचानकी विधा प्राप्त हुई खुदाकी खुदाईको तो सब मानते हैं पर उसका पता ठिकाना किसीको नहीं मालूम हुआ कि, सच्चा खुदा कौन है ?

मूसाकी दूसरी पुस्तक खुरूजमें लिखा है देखो (२४) बाबके (९) और (१०) आयतमें मूसा, हारूँ और नदब इत्यादि बनी इसराईलके प्रतिष्ठित लोग पर्वतपर गये । इसराईल ने खुदाको देखा । उसके पांवके तलेकी नीलम पत्थर जैसी गचकरी थी । उसका स्वच्छ शरीर आकाशके रङ्गका था । बनी इसराईलके अमीरोंपर उसने अपना हाथ न रक्खा । उन्होंने खुदाको देखा और खाया पीया यह खुदा कौन है ? इसकी तो उन्हें पहिचान भी नहीं है । मनुष्योंमें दो शक्तियां हैं । एकका नाम विक्षेप तथा दूसरीको आवरण शक्ति कहते हैं । इन्हीं दोनोंमें खुदा और बन्दे फँसे हुये हैं । विक्षेपशक्ति तो वह है जो कभी होती और फिर अन्तर्धान हो जाती है । जब विक्षेपशक्तिवाला तुरियातीतकी श्रेणीको प्राप्त कर लेता है तब समस्त संसारका रचयिता होजाता है । आवरण शक्तिवाले समस्त निर्बोध जीव हैं । मनुष्य तथा पशु सभी इस आवरण शक्तिसे घिरे हुये हैं. जो कोई विक्षेप और आवरण दोनोंको पार करके पद पाता है सो परमधामको जाता है । ब्रह्मा, विष्णु, शिव इत्यादि सब उसके सेवक बन जाते हैं । जबतक आवरण तथा विक्षेप दोनों श्रेणियोंको न जाने तबतक मनुष्यताकी श्रेणी प्राप्त नहीं कर सकता विक्षेप शक्ति तथा आवरण शक्तिके भीतर सब फँस रहे हैं । क्या ? अन्तर्यामी खुदा और समस्त संसारकी शरण देनेवाला इस प्रकार आज्ञा देगा ? कि, मेमनोंके रक्तका छापा अपने द्वारोंपर लगाओ । क्या अन्यान्य रङ्गके छापे नहीं लगाये जासकते थे ? क्या वह बिना छापेके चिन्हके मिस्रियोंको मार नहीं सकता था ? इतने जीवोंका रक्तपात करने करानेकी क्या आवश्यकता थी ? जिस खुदाने फिरऊनके मनको कड़ा किया था वह नरम करनेका सामर्थ्य भी रखता था । मनुष्योंसे पाप करने करानेका क्या मतलब ? क्या यही मतलब कि, मनुष्य पाप करते जावें और बन्धनमें फँसे रहें । मैं यदि मनुष्य हूँ तो निर्दोष मेमनोंका रक्तपात क्यों करूँ, अपने हाथोंको पापोंसे कलुषित क्यों करूँ, जिसने फिरऊनका मन पत्थर की तरह किया था वही नरम करे या न करे । (झूठ और सच कहनेवाली की गरदन पर (परन्तु मनुष्यका क्या करे विवश होकर गति करता है और कालपुरुषके फन्देमें पड़ा है । यदि रक्तके ही चिन्हसे खुदाको यहूदी तथा मिस्रीकी पहचान होती थी तो यदि मिस्रियोंका समाचार मिलता तो वे भी अपनी चौखटों पर रक्त का छापा लगाकर खुदाको धोखा देते । मेरी बातें कोई ज्ञानी साधू विचारवान समझेगा सबकी समझमें नहीं आ सकतीं ।

× जीवयोनि

२ स्वसंवेदका यह कथन है कि, सर्वजीव चौरासी लाख योनिमें मारे मारे फिरते हैं. जैसे जिसके कर्म्म होते हैं उसीके अनुसार उसको सुख दुख मिलता है। सब जीवोंको स्वरूप तथा स्वभाव उनके पूर्वजन्मके कर्मानुसार होता है जबतक मुक्ति नहीं होती तबतक सब जीवोंका आवागमन ही हुआ करता है। कोई जीव चौरासी योनिमें फिरनेसे बिना पारख गुरूके छूट नहीं सकता।

चौरासी लाख योनिका वृत्तान्त—जैसा कि, कबीर साहबने अनुराग सागर ग्रन्थमें कहा वैसाही लिखता हूँ। जलके जीवोंकी योनि नौलाख हैं पक्षियोंकी चौदह लाख योनि हैं, सत्ताईसलाख अनेक प्रकारके जीव कीड़े मकोड़े इत्यादि हैं। तीस लाख स्थावर हैं। मनुष्योंकी चारलाख प्रकारकी योनि हैं। यह चौरासी लाख योनि हुई। इन सबमें—केवल मनुष्य देहसे मुक्ति होती है, किसी दूसरी योनिसे कदापि छुटकारा नहीं पा सकता क्योंकि, दूसरी देहके तत्त्वोंमें विभिन्नता और कमी होती है. इस कारण उनकी अल्प विद्या होती है। उनका हाल यों है कि, एक तत्त्व जलसे सब स्थावर हैं और दो तत्त्वोंसे उखमज अर्थात मक्खी और मच्छड़ इत्यादि हैं, तीन तत्वोंसे अण्डज अर्थात् अण्डा देनेवाले सब जीव हैं, चार तत्त्वसे पिण्डज अर्थात् बच्चा देनेवाले जीव हैं। इस कारण मनुष्योंको सबसे अधिक ज्ञान होता है इसी देहसे भक्ति और मुक्ति हो सकती है। जल तत्त्वसे स्थावर अर्थात् पेड इत्यादि हैं। अण्डजखानके समस्त जीव, वायु अग्नि जल इन तीन तत्त्वोंसे हैं। और उखमजमें वायु और अग्नि ये दो तत्त्व हैं, पिण्डजमें वायु अग्नि जल मिट्टी ये चार तत्व हैं, जो मनुष्यकी देह है वह पूर्णतया पांच तत्त्वसे है. स्त्री पुरुषमें तत्व समान है पर बुद्धिकी बिभिन्नता है। यह जीव चारों खानिमें फिरते फिरते मनुष्यकी देह पाता है। पूरे पाँच तत्व और तीन गुणोंसे मनुष्यकी देह है। पूर्वजन्मके चिन्ह उसके साथ होते हैं, उसके वेही रङ्ग ढङ्ग परिलक्षित होते हैं।

१ अण्डजसे मनुष्य होनेके चिह्न—जो जीव अण्डजखानिसे मनुष्यदेह पाता है

× अनुराग सागर पृ० ४८ में लिखा है कि कहैं कबीर सुनो धर्मनि वानी, तुमसे अब योनी भाव बखानी॥ भिन्न २ के कहूं समुझाई। तुमसे संत न कछु दुराई॥ नौ लख जलके जीव बखाना। चतुर्दश पंछी परवाना॥ कृम कीट सत्ताइस लाखा। तीस लाख जग स्थावर भाषा॥ चतुर्लक्ष मानुष परमाना॥ मानुष देह; परमपद जाना॥ और योनि नहिं परमपद पावे। तत्वहीन वह भटका खावे॥ १ अनुराग सागर ४९ पृ० में कहा है कि—चारि खानि जीवनके आहीं॥ तत्त्वभेद आहि पुनि ताहीं॥ सो, अब तुमसो कहों, बखानी। एक तत्व अस्थावर जानी॥ उखमजें दोय तत्व परमाना। अण्डज तीन तत्व गुण जाना॥ पिण्डज चार तत्वतेहि कहिये। पांच तत्व मानुष तन लहिये॥ ताते हो ज्ञान अधिकारा। नरकी देह भक्ति अति प्यारा॥

उसके चिन्ह ये हैं। उस मनुष्यमें आलस्य, नींद, चोरी, चुगली, निन्दा इत्यादिके दोष रहते हैं। घर घरमें आग लगाता है, उसमें विषय वासनाकी कामना अधिकता से पाई जाती है। देवी देवता भूतप्रेतादिकी पूजा किया करता है। कभी रोता है कभी मङ्गल गाता है दूसरेको दान पुण्य करता देखकर दुःखी होता है। सत्यगुरु को नहीं पहचानता। वेदशास्त्रोंको नहीं जानता। दूसरोंको तुच्छ तथा अपनेको बुद्धिमान समझता है। कभी नहाता नहीं कपड़े मैले रखता है। उसकी आँखोंमें कीचड़ भरा रहता है मुंहसे लार टपका करती है। जूवा चौसर आदि खेलोंमें संलग्न रहता है इसका सिर कुबड़ा तथा पैर लम्बे होते हैं।

२–ऊश्मजसे मनुष्य होनेके चिह्न – जो कोई उष्मजखानिसे मानुषिक शरीरमें आता है उसके यह चिह्न हैं कि, वह खूब आखेट करता है। आखेट करने तथा जीववधसे बहुत हर्षित होता है। माँसको पका पकापर भक्षण किया करता है। वह गुरुको कुछ नहीं मानता। अपने गुरुसे अपनेको अच्छा जानता है। गुरु तथा नामकी निन्दा करता है, सभामें मिथ्या भाषण करता है बहुत बातें करता। है। टेढ़ी पगड़ी बाँधता है उस पगड़ीका किनारा दामन तक लटकता रखता है उसके मनमें तनिक भी दया धर्म्म नहीं होता जिस किसीको दान पुण्य करते देखता है उसकी हँसी करता है। बड़ी चटक मटकके साथ गली कूचोंमें फिरा करता है। गुप्तमें तो पाषाण हृदय और निर्दयी है परन्तु प्रगटमें वह बहुत आवभगत किया करता है। प्रत्यक्षमें वह दयालु जान पड़ता है परन्तु यथार्थमें वह भयानक शैतान है। उसके दाँत लम्बे होते हैं उसका चेहरा भयानक होता है उसकी आँखे उभरी हुई होती हैं।

३–उद्भिजसे मनुष्य होनेके चिह्न–जो अचलखानिमेंसे मनुष्य देहमें आता है उसके चिन्ह ये हैं कि, उसकी बुद्धि पारे की तरह चञ्चल रहती है। एक काम करनेको प्रस्तुत हो जाता है आगे शीघ्रही उससे फिर जाता है, खूब सज धजके पगड़ी बाँधता है, बादशाही दरबारमें नौकरी करता है। घोड़े पर खूब सवार होता है तलवार तथा कटार आदि कमरसे लगाता है, समय पाकर इशारेसे पराई स्त्रीको बुलाता है। व्यभिचारके लिये छिपकर पराये मकानमें जाता है। उसको तनिक भी लज्जा नहीं आती। एकक्षणमें तो प्रार्थना करता है दूसरे क्षण अपने परमेश्वरोंको भूल जाता है। एक क्षणमें तो वीर हो जाता है दूसरे क्षण नामर्द तथा डरपोक होकर भाग जाता है। एक क्षणमें सुकर्म्म तथा दूसरे क्षणमें कुकर्म्म करने लगता है भोजन करनेके समय अपना शिर खुजलाता जाता है। अपनी भुजा तथा जाँघ मलता जाता है भोजन करके सो जाता है। सोते हुये जो कोई उसको जगाने आवे तो उसको मारने दौड़ता है उसकी आँखें लाल होती हैं।

पिंडसे मनुष्य होनेके चिन्ह--जो कोई पिण्डज खानिसे मनुष्य तन पाता है उसके चिन्ह ये हैं, वह वैरागी वासनाओंसे पृथक् होता है। वेदके अनुसार दान पुण्य करता है। योग समाधि लगाता है अपने गुरुसे अत्यन्त प्रेम तथा आधीनता करता है। उसके चरणोंसे लगा रहता है। वेद पुराण पढ़ता है बहुत धर्मचर्चा करता है। समाजमें उसकी बातें बुद्धि सहित होती हैं। राजभोग तथा स्त्रीसे प्रसन्न रहता है। बड़ा वीर तथा सामर्थी होता है। उसका स्वरूप और आकार कान्तिमय होता है। उसके हाथमें सदैव तलवार रहती है। जहां कहीं मूर्ति देखता है नमस्कार करता है।

यहांतक मैंने चारिखानिका विवरण किया फिर कबीर साहब कहते हैं कि, जो मनुष्य देह पाकर अल्पकालमें मर जाता है अपनी पूरी आयु पर्य्यन्त नहीं पहुँचता उसकी दशा दूसरी देहमें ऐसी होती है कि, वह मनुष्यकी देह छोड़कर पुनः मनुष्यकी देह पाता है। वह पुरुष बड़ा वीर तथा प्रतिष्ठित होता है। जैसे शेरके सामनेसे भेड़ोंकी भीड़ भाग जाती है उसी प्रकार वैरियोंकी सैन्य उसके सामनेसे भागती और तितर बितर होती है, वह विषयवासना तथा शारीरिक कामनाओं को पसन्द नहीं करता। उसके समीप दुर्बुद्धिता तथा मूर्खता नहीं जाती। उसको सत्य शब्दका विश्वास होता है। वह किसीकी निन्दा नहीं करता। नम्रता तथा बिनीततासे गुरुकी सेवा करता रहता है।

अन्य योनियोंमें पूर्वकी मनुष्य योनिके चिन्ह--इसी प्रकार चारखानि और चौरासी लाख योनिके जीव बनते हैं। जैसे चारों खानिके जीव मनुष्यका शरीर पाते हैं उसी प्रकार स्वकर्मानुसार मनुष्यका शरीर छोड़कर जब चौरासी योनीमें जाते हैं तब उनके पूर्वजन्मके चिन्ह उनके साथ होते हैं। उसका वृत्तान्त बहुत बड़ा है। चारों खानिके जीव सब बराबर हैं केवल तत्त्वोंके भेदसे बुद्धि स्वरूप और स्वभावमें भिन्नता होरही है, इसी प्रकार चारों खानि बनाकर चारों खानिमें स्वयम् निरञ्जन समा रहा है। कर्म्मोंके जालमें सब जीवोंको फँसा लिया है। उन सुकर्म्मों तथा दुष्कर्म्मोंके सब चिन्ह सब जीवोंके शरीरपर स्वयम् निरञ्जनने बनाये हैं। जिसने जैसा कार्य्य किया है उसके शरीरमें वैसेही चिन्ह प्रगट होते हैं। चारों खानिके सर्व जीव समान हैं। चारों खानिमें फिरते फिरते जब मनुष्यके शरीरमें आते हैं तब उनके कर्म्मोंके चिन्ह भली भांति प्रगट और स्पष्ट हो जाते हैं। इस मनुष्यहीके शरीरमें उनका पूरा हिसाब किताब होता है। यह आत्मा जिस शरीरमें होती है तब वहां वैसेही कार्य्यको स्वीकार करती है। वही कार्य्य करने लगती है गिरह बाज कबूतरके बच्चे आपही गिरहबाज होते हैं। लोटन कबूतरके

बच्चे लोटन होते हैं । परन्तु मनुष्यका बच्चा सर्वव शिक्षा तथा गुरुके पथ दिखाने के आधीन रहता है । गुरु बिना इसका कोई ठीक नहीं होता । न कोई बुद्धि आती है इसी कारण किसीको पूर्णता नहीं है । परन्तु जो श्रेष्ठता तथा निपुणता मनुष्यको होती है वह और किसीको नहीं होती । यही मनुष्य देवताओंसे श्रेष्ठ तथा सर्व जीवोंसे अधमभी है । यदि मनुष्य गुरुद्वारा अच्छा काम न करे तो यह तुच्छसे तुच्छ और नीचसेभी नीच होजाता है ।

३–वैदिकी धर्म्म स्वसंवेदसेही बने हैं । चारों स्वसंवेदकी भीतरी बातें हैं । इस कारण वेद आवागमनके विषयमें स्वसंवेदसे समानता रखते हैं । सर्व ज्ञानी साधु आवागमनकी साक्षी देते हैं ।

कलञ्जनके पर्वतपरके सात शिकारी, दस हिरन मानसरोवर तालाबका एक हंस और सिंहलद्वीपका एक चकवीने गुरुक्षेत्रमें ब्राह्मणका जन्म पा वेद पढ़कर ज्ञान प्राप्त किया था ।

वशिष्ठ पुराणमें लिखा है कि, एक मनुष्यने चाहा कि, मैं बड़ी तपस्या करके अपना इतना बड़ा शरीर करूँ कि, मायासे पार जाकर ब्रह्मसे मिल जाऊँ । वह कठिन तपस्या करके अपना शरीर बढ़ाने लगा । उसकी देह बहुत बड़ी हो गयी पृथ्वीसे लेकर ऊपर इन्द्र लोक इत्यादिसे उस पार ऊँची चली गयी । उसका शरीर जब बहुत बड़ा हुआ । उसने देखा कि, मैं तो अब बहुत बड़ा हुआ तो उसने सत्यब्रह्मका ध्यान किया तब उसकी देह छूट गयी, वह मर गया । वह मरकर मच्छड़ हो गया क्योंकि, मरते समय उसका ध्यान मच्छड़की ओर था । वह मच्छड़ घासोंमें रहने लगा पश्चात् उसको एक हिरनकी लात लगी । मरनेके समय उस मच्छड़का ध्यान उस हिरनकी ओर होनेसे वह मच्छर मरकर हिरन होगया । उस हिरनको एक शिकारीने मारा । मरनेके समय उस हिरनका ध्यान शिकारीकी ओर हुआ । तब वह हिरन मरकर शिकारी होगया । वह शिकारी शिकार खेलने के लिये जङ्गलमें फिरने लगा । फिरते फिरते एक ऋषीश्वरसे मुलाकात होगई, तब उस ऋषिने उस शिकारीको शिक्षा दी जिस उपदेशसे वह पुनः तपस्या करके जीवन्मुक्त होगया ।

एक मकोड़ेकी आधी पिछली देह कट गयी थी आधी अगली साबित थी । वह अपनी आधी देहको घसीटे लिये जाता था । उसको देखकर एक मनुष्यने अपने गुरुसे पूछा कि, हे महाराज ! इस चींटाने भी कभी मनुष्य शरीर पाया होगा । गुरुने कहा कि, मनुष्य होनेका तो क्या हिसाब, यह चिउँटा चौदह बार इन्द्र हो चुका है ।

उस गुरुको तीनों कालोंका ज्ञान था । इसी प्रकार अपने कर्मानुसार यह जीव सहस्रों बार ब्रह्मा और शिव हो जाता है, करोड़ों बार वरुण कुबेर और इन्द्र आदिका पद प्राप्त करता है । यह अपने उच्च पदसे गिरकर मध्य और कनिष्ठ पदमें आता है । कनिष्ठसे मध्य और मध्यसे ऊँचे पदमें जा पहुँचता है । इसी प्रकार उसका आवागमन बराबर चला जाता है ।

अब यहां पर विचारना उचित है कि, यदि जप तप तथा योगादिकसे मनुष्य छूट सकते तो सब जीवन्मुक्त होजाते । गर्भमें काहेको आते ? जन्म मरण का दुःख क्यों भरते ! यह मनुष्य दुर्बुद्धिता तथा अज्ञानता सहित तपस्या करता है इस कारण इसका कार्य पूरा नहीं होता । जैसा कि उस मनुष्यने इच्छा की कि, मैं अपना शरीर इतना बड़ा करूँ कि, मायासे पार होकर ब्रह्मसे संयुक्त हो जाऊँ । उस मनुष्यमें तनिक भी ज्ञान नहीं था कि, काया अर्थात् देह तो आपही माया है । जब ब्रह्मसे मिलना चाहता है तब देह कहां ? जब देह तब ब्रह्म कहां ? जब मैं हूँ तब तू नहीं, जब तू है तो मैं कहां ? जहां शुद्ध ब्रह्म है वहां माया कहां ? जब माया प्रगट होगी तो ब्रह्म पर अवश्यही परदा डालेगी । इसी प्रकार सब तपस्वी और ऋषि मुनिगण वे सोचे समझे तपस्या करते आये आवागमनका सम्बन्ध नहीं टूटा । उनके मनमें तनिक भी चिन्ता नहीं कि, जो कुछ कहने सुननेमें आता है वो सब माया है । सब कर्म्मोंके धागेमें बँधे पड़े हैं । इसी विषय पर भर्तृहरि जीका श्लोक लिखता हूं –

श्लोक–ब्रह्मा येन कुलालवन्नियमितो ब्रह्माण्डभाण्डोदरे
विष्णुर्येन दशावतारगहने क्षिप्ता महासंकटे ।
रुद्रो येन कपालपाणिपुटके भिक्षाटनं कारितः
सूर्य्यो भ्राम्यति नित्यमेव गगने तस्मै नमः कर्मणे ।।

अर्थ–जिस कर्म्ममें ब्रह्माको ब्रह्माण्डभाण्डके उत्पन्न करनेके लिये कुम्हारके समान नियुक्त कर दिया, विष्णुको दश औतार लेनेको बड़े उसके साथ संयुक्त किया, रुद्रको मनुष्यकी खोपड़ीमें भीख मँगवाई जिसकी आज्ञासे सूर्य सदैव आकाश में फिरा करता है उसी कर्म्मको मैं साष्टाङ्ग नमस्कार करता हूँ ।

इसी प्रकार सर्व ईश्वर तथा ईश्वरभक्त कर्म्महीको पुजाते आये हैं, वेद सब किताब कर्म्महीको बताते आये हैं, कर्म्मसे ही मुक्ति समझली गई है, जहां तक कर्म्म है वहां तक कर्ता है भक्तोंकी आराधना तथा दुष्टोंके उत्पातके वश हो अवतार धारण करते हैं अपने कर्मको भोगने तथा दूसरेके कर्म्मोंको भुगानेके परवस

सब जीव तथा ईश्वर है पर भक्त कर्म्मोंके वश नहीं भक्तोंकी तो बात निराली है, कबीर साहबने कहा है कि —

विरह भुयङ्गम तन डस्यो, मंतर लगे न कोय ।
राम बियोगी ना जिये, जिये तो बौरा होय ।।

सो वह मनुष्य जिसने कुछ बात जानली उसको इस संसारके लोग पागल कहा करते हैं । भर्तृहरी योगी जो ब्रह्मा विष्णु और शिव इत्यादिको कर्म्मोंके बन्धनमें बताता है वह स्वयम् कर्मोंके बन्धनसे छूटनेकी युक्ति नहीं जानता । सब योगी कर्म्मोंके बन्धनमें ही फँसे हुए हैं ।

पुनर्जन्म पर भारतीय दर्शन

४—न्याय शास्त्रका यही न्याय है कि, आवागमन ठीक है वैशेषिक भी इसीके पक्षमें ।

५—मीमांसा और पातञ्जलि सांख्यसे भी उससे सहमत हैं ।

६—सांख्य तथा बुद्ध धर्म भी यही कहता है कि, जीवोंका आवागमन है ।

७—जैन धर्म समानता रखता है और सर्व भारतके ज्ञानियों और विद्वानों की पुनर्जन्मके विषयमें एकता है । सभी पुनर्जन्मको मानते हैं जितने भी पूर्वके दार्शनिक हैं सभी पुनर्जन्मके पक्षपाती हैं ।

८ आवागमनपर तौरीत—मूसाकी पहली पुस्तकसे आदमकी उत्पत्ति तथा आवागमनका स्वरूप दिखाता हूँ । यदि आदम पैगम्बर पूर्वजन्मके कर्म्मोंसे दुखी न होता तो उसकी वैसी अवस्था भी कभी न होती जैसी कि, अवस्थामें वह अदन की वाटिकामें फँसाथा । उसके पूर्वजन्मों कर्म्मोंकी गन्दगीने उसको इस अवस्थामें डाल दिया। यदि आदम कर्म्मोंसे पृथक् होता तो उसमें किसी प्रकारकी इच्छा न होती । वह तो अवश्य ही अपने पूर्वजन्मोंके कर्म्मोंसे घिरा हुआ था । वह अपने यथार्थसे पूर्ण तथा अनभिज्ञ था वह कुछ नहीं जानता था कि, मैं क्या था अब क्या हूँ? उसका पुनर्जन्म मैं स्पष्ट सिद्ध करता हूँ । उसके पुनर्जन्मसे सर्व मनुष्योंका पुनर्जन्म प्रगट होगा, यह खुदाका बेटा आदम जब उत्पन्न हुआ तब उसकी अवस्था मनुष्यों के बच्चेकीसी थी। उसका मन वासनाओंसे भरा हुआ था, मुझे खूब खाना पीना तथा सैर कौतुककी वस्तुएँ प्राप्त हों । उसकी इच्छानुसार खुदाने अदनके बगीचेको बनाया. आदममें मनुष्योंके बच्चोंके सब चिन्ह दिखाई देते थे तनिक भी विभिन्नता नहीं थी । जैसे अनजाने दूध पीते बच्चे होते हैं वैसाही वह भी था । तौरीत कुरान और हदीसोंमें उसका समस्त वृत्तान्त देखलो। उसके पिता खुदाने उसके भोगके सब सामान एकत्रित कर दिये, उसके लिये विश्रामके सब आयोजन तो

थे पर वह स्त्रीके लिये चिन्तित था। तब उसके पितानें उसे एक जोरू भी ला दी, वे दोनों प्रसन्नतापूर्वक रहने लगे। वे दोनों मूर्खताके तिमिरमें फँसे हुये थे, वे दोनों अज्ञानतावश निर्दोष तथा भोले भाले कहलाते थे। पिताको चिन्ता हुई की, मेरी सन्तान मूर्ख न रह जावे, इनको विद्या सिखाना आवश्यक है जिसमें वे जाने कि, वे किस लिये उत्पन्न किये गये हैं ? ऐसा न हो कि, वे सदैव मूर्खावस्थामें ही पड़े रहें इस कारण उसने एक विवेकका वृक्ष लगाया कि, उसके खानेसे कर्तव्याकर्तव्यका ज्ञान हो जावेगा और भला बुरा जाना जावेगा, इसके पीछे उसके पिताने शैतान गुरुको शिक्षार्थ भेजा, जिस फलके खानेको खुदाने मना किया था उसे उसने उभाड़ कर फलको उन दोनोंको खिला दिया। जैसे प्रत्येक मनुष्यको इसीकी चिन्ता होती है कि, किसी प्रकार मैं उभार कर अपने शिष्योंको विद्या तथा सभ्यता सीखने पर प्रस्तुत करूं, इसी प्रकार शैतानने फुसलाकर उन्हें फल खिलाया, जिससे आदमको विद्या हुई, वे वैकुण्ठसे निकाले गये। क्यों कि, वे सर्व पदार्थ मूर्खोंके लिये हैं जबतक मनुष्यमें मूर्खता है तब तक नरक तथा वैकुण्ठमें ही फँसा रहता है, जब जीवको विद्या होती है तब नरक तथा वैकुण्ठके दुःख सुखको मिथ्या तथा क्षणभंगुर जानता है। जब नरक तथा वैकुण्ठको तुच्छ समझकर भजनमें लगता है तब उसके मनसे सभी वासनाएँ पृथक् हो जाती हैं, उनके पृथक होनेसे सर्वज्ञताके योग्य होजाता है। महाप्रलयमें सब जीव निरञ्जनमें समा जाते हैं, ब्रह्मा तथा कीड़े मकोड़े आदि सभी अपने कर्म्मोंके साथ निर्जीवके समान निरञ्जनमें रहते हैं। उत्पत्तिके समय पूर्वके कर्म्मोंके अनुसार फिरसे शरीर धारण करते हैं. संसारमें प्रत्येक अपनी भलाई बुराईके अनुसार स्वरूप पाते हुए उसीके अनुसार दुःख सुख भोगते हैं। मनुष्यके बच्चोंके सब रङ्ग ढङ्ग आदममें प्रगट थे। इससे यही परिणाम निकला कि, आदम अनगिनती बार पहले भी जन्म लेचुका था, वही अब आदम हुआ, भविष्यमें भी अनेक बार जन्म धरेगा. यद्यपि आदम खुदाके सामर्थ्यसे उत्पन्न हुआ था तो भी अपने पूर्वजन्मोंके कार्य्यको प्रगट करता था। यह सम्भव नहीं कि, पवित्र आत्मा जब सशरीर हो तब दुःख सुखके बन्धनमें फँसे.यदि वह आत्मा अपने पूर्वजन्मोंके कर्म्मोंसे अशुद्ध न होती तो यह अवस्था कदापि न होती, इस कारण जानना चाहिये कि, अनगिनती जन्मोंसे यह जीव बराबर आवागमन करता चला आता है और भविष्यमें भी करता जावेगा। जब तक उसको शुभ और अशुभका सम्बन्ध न टूटे तबतक पिता तथा पुत्रका कर्तव्य है, तहां तक तो खुदाने आदमको सिखलाया परन्तु गुरु बिना ज्ञान नहीं होता, इस कारण अबलीस (शैतान) को भेजा, जिसमें उसके द्वारा ज्ञान पावे। यदि हजरत अबलीसकी दया न होती तो

हजरत आदम पाशविक अवस्थासे कभी पृथक न होते । केवल शैतान गुरुकी दयासे आदमको पैगम्बरी मिली, आजतक सब विद्याओंके सीखनेका उद्योग करते हैं । यदि अबलीस गुरु न होता तो सब आदम और सारे आदमजाद निकम्मे होते । अतः उस गुरुको हमें धन्यवाद देना उचित है । जिसने हमको सभी आनन्दोंको दिया और अचेतनासे पृथक् करके परिश्रम और भजनमें लगा दिया हम विद्या प्राप्त करके कथन करने लगे कि—

बर सरे दारम कुलाहे चरा तर्क ।
तर्क दुनियाँ तर्क उकबा तर्क मौला तर्क तर्क ।।

तात्पर्य—मनुष्य कहता है मैं अपने शिर पर चार तर्क (त्यागोंकी) टोपी धारण करता हूँ । मुझको संसारमें ही खुदाने वैकुण्ठका आनन्द दिया था । जबसे मुझको कर्तव्याकर्तव्यका ज्ञान न हुआ तबसे जिनको छोड़ना यद्यपि कठिन था, ऐसे संसारिक आनन्द परित्याग कर दिये । जब संसारको छोड़ा तब दूसरे लोकको ढूंढ़ने लगा, परलोकके सर्व आनन्द प्राप्त हो चुके तब बुद्धि तथा सोचसे परलोक के भी सर्व पदार्थ अस्थाई तथा तुच्छ प्रतीत होने लगे, उनको भी देख भाल कर छोड़ दिया । दो तर्क हो चुकी । फिर मौलाको ढूंढ़ने लगा । मौलाकी खोजमें जब अपना प्राण अर्पण कर चुका खुदामें लीन हो गया तब खुदासे मिला । अब तो बूंद तथा नदीमें कोई विभिन्नताही नहीं रह गई दोनोंही एक हो गये । फिर तो आपही आप रह गया फिर कौन मैं हूँ, जो कुछ संसारमें होता है सो सब कुछ मैं करता हूँ और मैं भोगता हूँ, किसीका तर्क करूँ ? तर्कहीका तर्क हो गया अथवा दूसरा इसका यह भी अर्थ है कि, हे मनुष्य! तू संसार, स्वर्ग और विज्ञताके अभिमानको छोड दे एवं इस अभिमानको भी छोड दे कि मैंने सब छोड दिया ।

९ तौरीतमें उत्पत्तिका—(२५) बाब (२१ से २६) आयत तक देखो । इसहाकने अपनी स्त्री रबकाके लिये प्रार्थना की कि, उसके पुत्र उत्पन्न हो क्योंकि, वह बाँझ थी । खुदाने उसकी प्रार्थना स्वीकार की, उसकी स्त्री गर्भिणी हुई उसके पेटमेंके दो पुत्र आपसमें लड़ने लगे । तब वह खुदासे पूछने गई कि, यदि यों है तो ऐसा क्यों है ! खुदाने उससे कहा कि, तेरे पेटसे दो बहुत बडी जातियां उत्पन्न होंगी बड़ा पुत्र छोटेकी सेवा करेगा ।

समीक्षा—वे दोनों लड़के माताके गर्भसेही लड़ते झगड़ते चले आये । वही वैर दोनोंमें प्रगट हुआ. यदि उनके पूर्व जन्मका वैर उनको डॉवाडोल न करता तो वे आपसमें क्यों लड़ते ? केवल प्रारब्धिने उनको उसी तराजू पर धरकर तौला. जैसा कि, उनके पूर्वजन्मोंके कर्म्मोंने इनको गति दी थी पूर्वजन्मके कर्म्मानुसार इस अवस्थाका स्वरूप प्रगट हुआ इससे आवागमन स्पष्टरूपसे प्रमाणित हो गया ।

१०–देखो ! (१०४) जंबूर (२९ से ३०) आयत पर्यन्त लिखा है कि तू अपना मुँह छिपाता है वे हैरान होते हैं। तू उनका दम फेर लेता है तब वे मर जाते हैं, अपनी मिट्टीमें मिल जाते हैं । तू अपना दम भेजता है तब वे फिर उत्पन्न होते हैं तू पृथिवीको फिरसे सुसज्जित करता है ।

तात्पर्य–तू अपना मुँह छिपाता है–आत्मा जो प्रकाशरूप है जब उस पर परदा पड़जाता है तब अन्धकारमें पड़कर वे हैरान होते हैं, सब जीव दुःखित होते हैं कहीं राह नहीं मिलती। तू उनका, दम फेर लेता है उससे वे मर भी जाते हैं तब तू उनके आत्माको शरीरसे अलग करता है तो वे सब शरीर मर जाते हैं, अपनी मिट्टीमेंसे उत्पन्न होकर फिर मिट्टीमें ही मिल जाते हैं, तू अपना स्वास भेजता है प्रकाशरूप आत्माही अपने स्वासरूप जीवको भेजता है क्योंकि, सब कुछ आत्मासेही हुआ है । पांच तत्व तीन गुण तथा चौदह इन्द्री इसीसे हैं, आत्मा जब स्वाँस भेजता है तब वे जीव पुनः उत्पन्न होते हैं यही आवागमन सदा प्रचलित रहता है ।

११–(१२१) जंबूरमें (७ से १८) आयत तक देखो। खुदा प्रत्येक कुकर्म से तुझको बचावेगा । खुदा तेरे आनेजानेमें उस समयसे लेकर सर्वदा तेरा रक्षक रहेगा ।

तात्पर्य–आने जानेसे तना सुखका तात्पर्य है चिरकालतक आने जानेका तात्पर्य आवागमनके अतिरिक्त दूसरी बात नहीं ठहर सकती । जबकि, मनुष्यके आयुकी सीमा है तो सर्वदा इसका आना जाना तनासुख के अतिरिक्त और कुछ ठहरही नहीं सकता । जिस खुदाकी वन्दना जो कोई करता है वह देवता पूर्वके प्रेमके कारण सर्वदा यथाशक्ति अपने पूजनेवालेकी सहायता किया करता है । जिस योनिमें वह जाता है वहाँही रक्षक होता है ।

राजा विपश्चितका उदाहरण–वसिष्ठपुराणमें इस प्रकार एक कहानी लिखी है कि, विपश्चित नामक एक बड़ा राजा था । वह राजा अग्नि देवताकी पूजा किया करता था । एकबार ऐसा हुआ कि, चारों ओरसे उसके वैरी चढ़ आये उनकी सैन्य चारों ओर से उन्हें देखकर घबरायी । आगका एक कुण्ड बनाया और भली भाँति अग्नि प्रज्वलित करके उसमें अपना शिर तथा शरीर पृथक् पृथक् करके डाल दिया। जब उसने अपना शिर और शरीर अग्निदेवताको हवन दिया तो वो दयालु हुआ, उस एक विपश्चितके चार विपश्चित होकर उस अग्निकुण्डमें से बाहर निकल पड़े, वे चारों बड़े बलिष्ठ साहसी तथा प्रतापशाली थे । उनके तेज के सामने किसी वैरीको ठहरनेका साहस नहीं हुआ. जैसे कि, शेरके सामनेसे भेड़ोंका गोल भागता है उसी प्रकार उसके सामने कोई वैरी न ठहरा । वे चारों

विपश्चित चारों ओर प्रबल सैन्य लेकर चढ़ गये समुद्र तक बराबर मारते चले गये । चारों ओर समस्त पृथिवीको आसमुद्र विजय कर लिया कहीं कोई बैरी न छोड़ा । पृथिवी पर तो कोई राजा उनका सामना करने योग्य नहीं रहा । तब चारों के मनमें घमण्ड उत्पन्न हुआ । उन्होंने चाहा कि, हम मायाकी सीमाको तोड़ दें । देखें मायाके पार क्या है ? इच्छा की कि, समुद्रमें गोता मारें। तब राजाके कर्म्मचारियोंने मना किया, रोने लगे कि, आप समुद्रमें गोता न मारें. क्योंकि, मायाकी सीमाको कभी कोई पा नहीं सकता । परन्तु उन चारोंने किसीका कहना न मान समुद्रमें गोता लगाया । चारों समुद्रमें गोता मारकर चले तो समुद्री जीवोंने उनको खा लिया । सहस्रों योनिमें वे जन्म लेने लगे, परन्तु जिस योनिमें वे शरीर धरते वहांही अग्नि देवता इन चारोंका सहायक होता । कितने जन्म धरते धरते अन्त उन चारों विपश्चितमेंसे एक विपश्चित हिरण हो गया. वह हिरण महाराजा रामचन्द्रजीके अजायब घरमें आया। रामचन्द्रके अधीन राजाओंमेंसे एकने उसको पकड़ा सुन्दर देखकर महाराजाको भेंट किया । उस समय वशिष्ठजी, राजा दशरथ रामचन्द्र, भरत और शत्रुहण आदि सब लोग उपस्थित थे । वशिष्ठजी अपनी कथा, सुना रहे थे । उस समय उदाहरणकी भांति राजा विपश्चितका वृत्तान्त आया । वशिष्ठजीने कहा कि, हे रामचन्द्र ! इन चारों विपश्चितमेंसे एक हिरण हो गया है वह इस समय आपके अजायबघरमें बँधा हुआ है । तब रामचन्द्र इत्यादि सब लोगों को इसके देखनेकी उत्सुकता हुई । वशिष्ठजीके चिन्ह देने के अनुसार वह हिरण महल में मँगाया गया । वशिष्ठजीके अपनी बातकी सत्यता प्रगट करनेको अग्नि देवताका ध्यान किया, अग्निदेव आकर अग्निस्तम्भमें सभाके बीच खडे हो गये । जब वह अग्नि देवता सामने आ खड़ा हुआ तब पूर्व प्रेमने उस हरिणके मनमें ऐसी उत्तेजना प्रगट की कि, वह उछाल मारकर उस आगमें जा पड़ा । जब वह हिरण आगमें जा पडा तब उसकी देह पलट गयी और वह असली राजा विपश्चित हो गया अग्निदेवताकी दयासे अपने शिरपर राजसी मुकुट धरे बड़े प्रतापके साथ अग्निसे निकल आया, वशिष्ठ तथा राजा रामचन्द्रको प्रणाम करके सभामें बैठ गया । वशिष्ठजीने उसको उपदेश दिया वह जीवनन्मुक्त होगया। इसी प्रकार जो कोई जिस परमेश्वरको पूजता है वही उसका परमेश्वर है और चिरकालतक वही उसका सहायक रहता है इसमें कोई सन्देह नहीं है।

अब जानना चाहिये कि, समस्त परमेश्वरोंके पूजन से इतना तो होता है कि, मानुषिक शरीर मिल जाता है। पर जीव आवागमनसे रहित नहीं होता । मनुष्यके शरीरमें आवे सत्यपुरुषकी भक्ति करे तो वास्तवमें आवागमनका सिलसिला टूटे, नहीं तो पूर्ववत् चला जायगा, दूसरी कोई युक्ति नहीं होगी ।

१२– (१२९) जबूरकी (१५) और (१६) आयतमें लिखा है कि, जब मैं परदेमें बनाया जाता था तब मेरा स्वरूप तुझसे छिपा नहीं था. तेरी आंखों ने मेरे कुढङ्गे साँचेको देखा तेरेही दफ्तरमें सब बातें लिखी गईं। उनके हृदयोंका हाल है कि, कब सुनेंगे उनमेंसे कोई न था। इससे प्रारब्ध और प्रारब्धसे आवागमन प्रमाणित होता है।

१३–वायजकी किताब (६) बाब और (६) आयतमें लिखा है कि यद्यपि वह दूना एक सहस्र वर्ष जीवित रहा तो भी उसने कुछ विशेषता न देखी। क्या सबके सब एकही स्थानमें नहीं जाते ?

तात्पर्य–सबके सब एकही स्थानमें जाते हैं। वह एक स्थान मातृगर्भ है सर्व जीव मातृगर्भमें प्रवेशकर चौरासी लाख योनिमें आवागमन किया करते हैं। क्योंकि, जब कोई जीव मर जाता है तब अपनी देह छोड़कर दूसरा चोला धारण करता है, सब जीव एकस्थानमें कदापि नहीं जाते वरन् भिन्न भिन्न स्थानोंको जाते हैं। कोई नरक, कोई वैकुण्ठ तथा कोई मध्यमें ही रह जाता है पर एक स्थान पर सबका जाना सम्भव नहीं है। इससे स्पष्टरूपसे प्रमाणित होता है कि, सबके सब मातृगर्भमें आवागमन किया करते हैं। वही एक स्थान सबके लिये नियत है। यदि कोई कहे कि, वह एक स्थान पृथ्वी है तो यह बात भी कदापि नहीं है। क्योंकि, मिट्टीमें तो मिट्टी मिल जाती है। आत्मा तथा शेषतत्त्व मिट्टीमें नहीं मिल सकते। अतः एक स्थान गर्भमें जानेके अतिरिक्त और कोई नहीं है कि, जहां कर्म्म कल्मष युक्त जीव जाया करता हो।

सुलेमानके बाबमें ईश्वरी प्रेमकी झलक

१४–सुलेमानके गजलुलगजलातके (३) बाब (४) आयतमें लिखा है कि, अपने पलँगपर मैंने उसको ढूँढ़ा जिसको कि, मेरा जी चाहता है मैंने उसको ढूँढ़ा पर वह नहीं मिला। अब मैं उठूँगी और नगरकी गलियों तथा सड़कोंपर फिरूँगी उसको ढूँढूँगी जिसको मेरा जी चाहता है मैंने उसको ढूँढ़ा पर वह न पाया। जो नाकेबन्दी नगरमें फिरते हैं मुझको मिले। क्या तुमने उसको देखा जिसको मेरा जी चाहता है। जब मैं दुःखी होकर उससे बढ़ गयी थी वह जिसको मेरा मन चाहता है मिला। मैंने उसको पकड़ रखा है उसे न छोड़ूँगी जब तक कि, मैं अपने माताके घर न लेजाऊँ।

तात्पर्य–उसको अपने पलँगपर मैंने ढूँढ़ा जिसको मेरा जी चाहता है। अन्धकारमय रजनी अज्ञानकी निशामें अपने मनके पलँगपर ढूँढ़ा पर वह नहीं पाया. क्योंकि, प्रकाश नहीं था। अब मैं नगरकी गलियोंमें फिरूँगी यह देह नगर

है, उसके भीतर बहुतेरी गलियाँ (हृदय आदि) हैं उन गलियोंमें फिरूंगी । सब गलियोंमें फिरी परन्तु मेरा प्यारा प्रेमी नहीं मिला । बावन जो नाकाबन्दी शब्द आया है उसका तात्पर्य इन्द्रियोंके देवतोंसे है शरीरके भीतर बहुतेरी मूर्तियां दिखाई देती हैं वे स्थान स्थानपर शरीरमें स्थित हैं । वे मुझको मिलीं । क्या तुमने उसको देखा जिसे मेरा जी चाहता है वे सब मेरे प्रेमीसे अनभिज्ञ थे । जब मैं उनसे दुःखी होके आगे बढ़ी; अर्थात् इन्द्रियोंके देवताओंसे आगेको चली क्योंकि, सब देवता वासनासे भरे हुये हैं--जब तक वासनाका बन्धन है तब तक प्रेमी नहीं मिलता न उससे प्रेम होता है । यही बात कबीर साहिबने भी कहा है कि--

कबीर--जब लगि आशा देहकी, तब लग भगति न होय ।
आशा त्यागी हरि भजे, भगत कहावे सोय ।।

जब वो वासनाओंको छोड़कर आगे चली तब मेरा प्यार मिला, मैंने उसको पकड़ रखा है । उसको न छोडूँगी । जब तक कि मैं उसको अपनी माताके महलमें न लेजाऊँ ।

माताका गृह अपना महल गर्भ है अर्थात् जब तक यह मनुष्य माताके गर्भमें नहीं आता तबहीं तक प्यारीका सम्बन्ध रहता है अपने प्रेमीको कदापि नहीं छोड़ता, पकड़ रखता है । परन्तु जिस समय वह वीर्यमें प्रवेश कर माताके गर्भमें जाता है उस समय उसको अपने प्रेमीका तनिक भी ध्यान नहीं रहता । अचेतावस्थामें निर्जीव पदार्थके समान लटकता रहता है जब जब यह आवागमन करता है तब तब अपने प्यारेको भूल जाता है जब ज्ञान होता है तो बुरी तरह छटपटाता है ।

१५ बादशाह बनूकदनजरका पशु होना--दानियाल नबीकी पुस्तकके चौथे बाबमें लिखा है कि, एक दिवस बनूकदनजर बादशाह बाबलने अपने मनमें ऐसा घमण्ड किया कि, मैंने इस राज्यको अपने बाहुबल द्वारा लिया है. इस बातसे उसपर खुदाका कोप भड़का, वह मनुष्यसे पशु हो बैलोंके समान घास चरता फिरता था । उसके नख पक्षियोंकी तरह बढ़ गये, उसकी सारी आदतें पशुओंकी उसके वह जीतेजीही पशु होगया । परन्तु उसपर खुदाई दया हुई कि. वह फिर अपने मनुष्यके स्वरूपमें आगया, अपने राजासन पर बैठकर राज्य करने लगा । यह जीवनमें आवागमन देखो, इस बनूकदनजर बादशाह बाबलका वृत्तान्त पढ़कर मनुष्यको आवागमनसे इनकार करना न चाहिये । जो केवल थोडासा घमण्ड करनेसे बैल होगया जो लोग भाँतिभाँतिकी बुराइयाँ करते हैं उनकी क्या दशा होगी ।

सच्चे झूठेका न्याय

१६—वायजकी किताब (२) बाब (१७) से २१ आयत तक यह लिखा हुआ है कि खुदा सच्चों तथा धूर्तोंका न्याय करेगा । क्योंकि, प्रत्येक अभिप्राय तथा प्रत्येक कार्य्यके लिये एक समय है । मैंने अपने मनमें कहा बनीआदमकी अवस्थाकी बात खुदा उनपर प्रगट करदे वे आपको पशुके सदृश जानने लगे, जो मनुष्य पर बीतता है वही पशुपर भी बीतता है, दोनों पर समान घटना संघटित होती है । जिस प्रकार यह मरता है वैसेही वह भी मरता है सबमें एकही श्वांस है । मनुष्यमें पशुसे अधिकता नहीं है, क्योंकि, सब अनित्य हैं, सबके सब एकही स्थान पर जाते हैं सबके सब मिट्टीसे हैं, सबके सब मिट्टीमें मिलजाते हैं । मनुष्योंकी आत्माका ऊपर चढ़ना तथा पशुओंकी आत्माओंका नीचे उतरना कौन जानता है ।

इसका तात्पर्य—खुदा सच्चोंका सुख तथा धूर्तोंका नियत समय पर दण्ड देगा । मनुष्यको जानना चाहिये कि, वे पशुके समान हैं । दोनोंमें एकही आत्मा और स्वांस है । मनुष्यको पशुपर बड़ाई नहीं है । सब मरकर एकही जगह जाते हैं । इस कारण मिट्टी ही न समझना चाहिये । क्योंकि, मिट्टी ही केवल मिट्टीमें जाती है । आत्मा तथा स्वांसादिक मिट्टीमें नहीं जाते । यहां मिट्टीसे तात्पर्य चौरासी लाख योनिसे है । क्योंकि, सर्वयोनि तथा सर्व शरीर मिट्टीसे बने हैं मिट्टी हैं, यहां मिट्टी नाम सर्व शरीरोंका है । अतः जीवके लिये एक शरीरसे दूसरेमें जाना आवश्यक है सब जीवोंके लिये यही नियुक्त गृह है कि, एक घर छोड़कर दूसरेमें जाया करे । सुकर्मी मनुष्य है, दुष्कर्मी पशु हैं। अच्छोंकी आत्मा स्वर्ग तथा बुरोंकी नरक में जाया करती है ।

१७—दाऊदका पुनर्जन्म—पहले सलातनिके दूसरे बाब की पहली और दूसरे आयतमें लिखा है कि, दाऊद बादशाहके जब मृत्युके दिन निकट आये तब उसने अपने पुत्र सुलेमानको शिक्षा देकर कहा कि, मैं समस्त संसारका पथ जानता हूं इस कारण तू दृढ़ हो अपने को मर्द दिखला ।

फिर देखो इञ्जीलमें आमालके दूसरे बाबकी २४ आयतमें लिखा है कि, दाऊद आकाशपर न गया और मौलवी अमादुद्दीन तालीम मुहम्मदी लिखितके (१३९) पृष्ठमें लिखा है कि, दाऊद पैगम्बरकी कब्रको अप्रतिष्ठापूर्वक खुदवा डाला ।

हिरोदेश बादशाहने सुना था कि, पैगम्बरोंकी लाश सड़ती नहीं । इसी परीक्षाके निमित्त उसने दाऊदकी लाश को ठीक नहीं पाया । उसने उसे सड़ती

हुई देखा था । इससे प्रमाणित हुआ कि, दाऊद न आकाश पर गया न पृथ्वीपर जीवित रहा और न कब्रमें रहा वह अवश्यही समस्त संसारके पथमें गया, उसका आवागमन हुआ ।

१८–मतीकी इञ्जीलमें आवागमन–मतीकी इञ्जीलका (१२) बाब (४६) से (४५) आयत तक उसमें लिखा है कि, जब अपवित्र आत्मा मनुष्यके शरीर से निकल जाती है । तब सूखे स्थानोंमें विश्राम ढूँढती हैं, जब जगह नहीं पाती तब कहती है कि, मैं अपने घरमें जहां से निकली हूँ पुनः जाती हूँ । जाती है जब उसको देखती है कि, वह खाली और साफ है। तब वह सात आत्माओंको जो उससे अधम हैं अपने साथ ले आती है वे भीतर जाकर स्थिर हो जाती हैं । इस समय मनुष्यकी पिछली दशा अगली दशासे बुरी हो जाती है ।

अब इन आयतोंका तात्पर्य मैं अक्षर अक्षर लिखता हूँ । जब अपवित्र आत्मा मनुष्यके शरीरसे निकल जाती है तथा सूखे स्थानोंमें विश्राम ढूँढ़ती है । इसका तात्पर्य यह है कि, मृत्युके मूर्च्छाके पीछे इसलिये कि, आत्मा पवित्र होनेके कारण है । उसका स्थान तथा श्रेणी ऊँची है इस कारण यह ऊपरको चलती है, सूखे स्थानसे यह तात्पर्य है कि, जहां तरी तथा गीलापन कुछ न हो । आकाश इत्यादि की उँचाईमें जाकर अपने लिये विश्रामका स्थान ढूँढ़ती है। परन्तु वह तो विश्राम का स्थान नहीं । वह तो शून्य है । आत्माके निमित्त तो कोई अवश्यही शरीर चाहिये । शरीरके लिये कोई भूमि और भूमिके लिये बस्ती होनी चाहिये । बस्तीके लिये कुछ जल जिसमें जीवोंका भरणपोषण हो । बिना भोजनके किसी जीवकी स्थिति नहीं । ये एक दूसरेका भोजन होते हैं । समस्त स्वर्गों तथा वैकुण्ठोंमें बस्ती हैं । इस अपवित्र आत्माको तो वहां स्थान नहीं मिलता । न यह वहां जाही सकती है । इस कारण यह अपवित्र आत्मा सूखी जगहोंमें अपनी स्थिति ढूँढ़ती है। क्योंकि, अपवित्र आत्मा तो वैकुण्ठमें जा न सकेगी, सूखी जगहोंमें आनन्द नहीं मिलता; जब शून्यमें स्थान नहीं मिलता तब कहती है कि, जहांसे मैं निकली हूँ फिर वहीं जाऊँगी. जब आती और उसको देखती है तब उस स्थानको स्वच्छ तथा साफ पाती है इससे यह तात्पर्य है कि, वह आत्मा जब अपने मृतदेहके निकट आती है तब देखती है कि, मेरा शरीर अब मेरे रहने योग्य नहीं, वह स्वच्छ तथा झाड़ा और खाली है, क्योंकि शरीरकी सहायक चौदह इन्द्रियाँ और उनके चौदह देवतें पाँच तत्व और तीन गुण कुछ न रहे, इन साथियों बिना इस शरीरमें मेरी स्थिति कैसे हो सकती है ? वह जो कल बनी थी वो बिगड़ गयी । वह घर उजड़ गया । केवल मिट्टीका एक स्थूल भाग रह गया है । उसको कोई गाड़ दे अथवा जलादे उसके

अधीन है। पाँच तत्व और तीन गुणके मेलसे यह शरीर प्रस्तुत होजाता है। विरुद्धता से मिट जाता है, मृत्युके पीछे अपवित्र आत्मा कई बार अपने शरीरके समीप आती है, उसमें बसनेकी इच्छा करती है, पर इस शरीरमें वासका कोई उपाय न देखकर निराश हो जाती है, पलटकर सात आत्मायें जो उससे भी बुरी होती हैं अपने साथ लाती है वे भीतर जाकर रहती हैं। तब मनुष्यकी पिछली अवस्था अगली अवस्थासे बुरी हो जाती है। वह सात आत्मायें जो इससे बुरी हैं वे ये हैं १—वायु। २—अग्नि। ३—जल। ४—पृथ्वी। ५—गुण। ६—सतोगुण। ७—तमोगुण। यह सात आत्मायें अपवित्र आत्माओं से भी बुरी हैं। क्योंकि, सातों आत्मायें वासनाकी कामनासे सिरसे पाँवतक भरी हैं। ये वासनाओंसे ऐसी भरी होती हैं, कि कभी कम नहीं होतीं। दिन प्रति दिन भरती ही रहती हैं। इन्हीं सातोंकी संगति और संयोगसे इस आत्माकी बुरी दशा है। ये ही सातों इस जीवको घेर घारकर आवा-गमनमें डालती हैं। इन्हीं सात निकृष्ट आत्माओंके सम्बन्धने सारे जीवोंको आवा-गमनके बन्धनमें डाल रखा है। जैसे कि, चोरके साथ साधु भी फँस जाता है इन्हीं सातके सम्बन्धसे आत्माकी निकृष्ट अवस्था हो रही है। इनकी कभी मुक्ति नहीं होती। इन्हीं सातों द्वारा समस्त रचनाएँ खड़ी हैं। जब तक इनका सङ्ग है तबतक जीवका यही ढङ्ग रहेगा। उनका उससे इसका कदापि छुटकारा नहीं हो सकता।

यह आतमा अपने पूर्वकर्मोंके अनुसार इन्हीं सातोंको साथ लाती है। इन्हींके साथ मातृगर्भमें स्थिर होती है। वीर्यके साथ यह जीव अपनी प्रारब्ध सहित स्थिर होकर फिर गर्भका नियत समय सम्पूर्ण कर शरीरके साथ बहिर्गत होता है। तब जीवकी पिछली अवस्थासे अगली अवस्था बुरी होती है। क्योंकि, आत्मा जो पहिले कुत्सित तथा अपवित्र थी इस कारण उसकी पिछली अवस्था अगली अवस्थासे बुरी होती है। पहले वह मनुष्यके शरीरमें थी। मनुष्यका शरीर पाकर उसने जो कुकर्म किया तो अवश्य ही उसकी पिछली अवस्था अगली अवस्थासे बुरी होगी मानुषिक शरीरसे पृथक् गई और पशु आदिके शरीरमें उसका गमन हुआ। यह अपवित्र आत्मायें पशु तथा जड़ पदार्थ अथवा नरकमें जाती हैं। सहस्रों बार उनके आवागमनका सिलसिला चला जाता है। जिसने मनुष्यदेह पाकर अपनी मुक्तिका उपाय न किया वह बड़ा अभागा है।

१९—मती की इञ्जीलका २५ बाब १४ से ३० आयत पर्य्यन्त लिखा है और वहाँ कयामतका वृत्तान्त और तोड़ेका उदाहरण दिया है उसे यहाँ लिखते हैं—एक मालिकने यात्रा करनेके समय अपने एक भृत्यको पाँच तोड़े दिये, दूसरे को दो तोडे तथा तीसरेको एक तोड़ा देकर चला गया। कुछ कालके पीछे उन नौक-

रोंका मालिक आया, उनसे हिसाब लेने लगा। जिसने पांच तोड़े पाये थे वह उन तोड़ों सहित उपस्थित हुआ कहा कि, ऐ स्वामिन्! मुझे आपने पांच तोड़े दिये थे उससे मैंने पांच और कमाये हैं। मालिकने कहा भले सेवक! चिरजीवी हो, तू थोड़ेमें भला निकला, मैं तुझे बहुत बड़ा अधिकार दूंगा। वैसाही वह दो तोड़ेवाला भी चार तोड़े लेकर उपस्थित हुआ, मालिकने वही बात उससे भी कही तीसरा जिसको स्वामीने केवल एक तोडा दिया था वह वही एक तोडा लेकर उपस्थित हुआ कहा कि, हे स्वामिन्! मैं आपको कठिन स्वभावका जानता था इस कारण यह तोडा पृथ्वीमें दबाकर रक्खा था। मालिकने उस नौकरसे कहा कि, अये अयोग्य आलसी नौकर! तूने कुछ नहीं कमाया। यदि तू मेरा तोड़ा सर्राफोंके पास भी रखता तो मुझको उसका सूद मिलता, फिर उसका तोड़ा छीनकर जिसके पास दश तोड़े थे उसी को दे दिया, क्योंकि, जिसके पास कुछ है उसको और भी दिया जायगा उसकी बढ़ती होगी। जिसके पास कुछ नहीं उसके पास जो कुछ है वह भी ले लिया जायगा। उस निकम्मे नौकरको बाहर अँधेरेमें डाल दिया। वहाँ वह रोता और दाँत पीसता रहा।

तात्पर्य—परमेश्वरका मनुष्यसे गुप्त रहना मानों यात्रा करना है। जिस समय मनुष्य गर्भमें उलटा लटका रहता है उससे प्रतिज्ञा करता है कि, हे परमेश्वर! इस नरक यंत्रणासे मुझको बाहर निकाल, मैं तेरी भक्ति करूंगा। परमेश्वर दयालु होता है वह गर्भसे बाहर आता है। उस समय परमेश्वर उसकी दृष्टिसे अन्तर्धान हो जाता है। प्रत्येक मनुष्यको उसने पृथक् पृथक् बुद्धिका तोड़ा बाँट दिया है, किसीको पाँच भाग और किसीको एक भाग। इस प्रकार बुद्धिका तोड़ा अपने प्रत्येक भृत्योंको देकर यात्रा करने गया अर्थात् अन्तर्धान होगया। जब यह मनुष्य गर्भसे बाहर निकल ज्ञानमान होकर भक्ति बन्दनामें संलग्न होता है, वह पाँच तोड़ेवाला अपने सुकार्य तथा भक्तिद्वारा परमेश्वरको प्रसन्न करता है। दो तोड़ेवाला भी अपने मालिकको राजी करता है पर एक तोड़ेवाला मूर्ख उसे रुष्ट करता है।

जब मनुष्य मर जाता है पिण्ड प्रलय होता है तब सब मनुष्य परमेश्वरके सामने अपनी भलाई बुराईका हिसाब करानेको उपस्थित होते हैं, सबकी भलाई बुराईका हिसाब होता है। तब परमेश्वर सबका हिसाब लेकर सबको दण्ड पारितोषिकादि देता है। वह तोड़ा मानुसिक चोलाकी बुद्धि है। जिसने शुभ काम किया अपना कर्तव्य पालन किया वह भला भृत्य है, उसकी वृद्धि होगी, जिस किसीने मानुषिक शरीर पाकर मनुष्यत्वके धर्मका प्रतिपालन न किया

उससे मनुष्यका शरीर छुड़ा लिया जावेगा। उस एक तोड़ेवालेका फल उस दश तोड़ेवालेको दिया जायगा और उसको बढ़ती होगी। भले भृत्यको वह कमाईका बल अधिक दिया जायगा, जो सीमाबद्ध मानुषिक बलके बाहर है। सर्राफाको तोड़ा देनेका तात्पर्य यह है कि, सर्राफा साधु तथा गुरु हैं। यदि वह गुरुओंके शरण जाता तो भी कुकर्म्मोंसे बचता। क्योंकि, शरणागति भी बहुत उच्चपद है व यथार्थ शरणागति होनेपर उससे अधिक परिश्रम न कराया जाता। वह निकम्मा नौकर जिसके पास कुछ नहीं है जो कुछ उसके पास होगा वह भी ले लिया जावेगा। इसका यह तात्पर्य है कि, उससे मनुष्यका शरीर ले लिया जावेगा। क्योंकि, उसके पास मानुषिक शरीर ही है जो विद्या तथा गुणका भण्डार है वह है वह भी छीन ली जावेगी।

जागृत अवस्था स्वप्नावस्था और सुषुप्ति यह तीनों अवस्था जीवके लिये हैं, तुरिया ईश्वरके निमित्त है, जो ये चारों अवस्था नियत हुई हैं, उनमेंसे प्रथम जागृतावस्था तो मनुष्यके लिये है। क्योंकि, यह मनुष्य जाग्रितावस्थामें स्थित है। यह जाग्रितावस्था बुद्धिकी अवस्था है, इसीमें भलाई तथा बुराईका हिसाब है। जाग्रितकी अवस्थासेही मनुष्य तुरियावस्थाको प्राप्त करके ईश्वर पदको प्राप्त कर सकता है स्वप्नकी अवस्था पशुओंके लिये है। क्योंकि, सब पशु अन-जान तथा निर्बुद्धिताकी अवस्थामें हैं यदि कोई दोष करें तो उनके पापकी कोई गणनाही नहीं की जासकती। इसी प्रकार सभी पशु अचेत निद्राकी अवस्थामें हैं, उनके पापोंका कोई हिसाब नहीं किया जाता। जड़ पदार्थ तो सुषुप्तिकी ही अवस्थामें हैं। जो कोई जाग्रत्वस्थामें आकर सुकार्य्य न करे तो वह निश्चय स्वप्न तथा सुषुप्ति अवस्थामें डाल दिया जावेगा। जो कोई नङ्गा हो मनुष्य शरीरके अतिरिक्त और कुछ न रखता हो उससे क्या लिया जावेगा। निस्संदेह उससे मनुष्यका चोला ही छीन लिया जावेगा। क्योंकि, उसके पास केवल मनु-ष्यकी देह मात्रही रह गई है, दूसरा कुछ नहीं। इसके अतिरिक्त उससे कुछ लिया नहीं जासकता न कोई अन्य वस्तु उसके पासही है।

वह बाहर अन्धकारमें डाला जायगा। बाहरके अन्धकारसे यह तात्पर्य है कि, जो देह बुद्धि तथा ज्ञानके बाहर है, वो देह अज्ञानी पशु तथा जड़ पदार्थोंकी है, जब जीव मनुष्यकी देहसे अलग होता है तब अन्धकारमें पड़ता है। जप, तप, ज्ञान, करने अथवा सीखने योग्य नहीं रहता। क्योंकि इस निकम्मे नौकरने मनुष्यका चोला पाकर कुछ कमाई न की न तोड़ा सर्राफों (गुरु) को दिया।

इससे मानुषिक शरीरको छोड़कर पशुओंमें परिभ्रमण किया करता है। वहाँ रोना तथा दाँत पीसना होता है। क्योंकि, पशुकी देहसे किसीकी मुक्ति नहीं हो सकती। अन्तमें नरकमें प्रवेश करता है जहाँ रोना तथा दाँत पीसनेके अतिरिक्त और कोई उपाय नहीं रह जाता।

२०—योहन्नाकी इंजीलमें आवागमन—योहन्ना की इन्जीलका (१०) बाब (८) आयत देखो। सब जितने मुझसे आगे आये वे सब चोर और बटमार हैं। पर भेड़ोंने उनकी नहीं सुनी। द्वार मैं हूँ यदि कोई मनुष्य मुझसे प्रवेश करे तो मुक्ति पावेगा। भीतर बाहर आवे जावेगा और चरनेकी जगह पावेगा। अर्थात् हजरत मसीह फरमाते हैं कि, जितने मुझसे आगे आये हैं वे सब चोर तथा बटमार थे, मनुष्योंको भटकानेवाले थे। मैं द्वार हूँ यदि कोई मुझसे प्रवेश करेगा तो वह मुक्ति पावेगा भीतर बाहर आवे जावेगा। द्वार मैं हूँ इससे यह तात्पर्य है कि, मुझे बिना किसीको मार्ग न मिलेगा। क्योंकि, समस्त कार्योंका उत्तर दाता मैं ही हूँ। इसी कारण मसीह सारे नबियोंमें श्रेष्ठ माने जाते हैं। यहाँ मुक्तिके अर्थ एक शरीरके कर्मोंसे छूट जानेका है, एक देहके कर्मोंसे छूटा और दूसर देहके कर्मोंमें लवक रहा। भीतर वाहर जानेसे तात्पर्य तना सुखसे है। अर्थ यह कि, जीव पिता होकर भीतर जाता है और पुत्र होकर वाहर निकलता है। जब एक शरीरको छोड़ता है तब दूसरा शरीर अपने लिये बनाता है और सदैव आवागमन किया करता है। चरनेकी जगह पानेसे यह तात्पर्य है कि, चरनेका स्थान चौपायोंके निमित्त है। मनुष्यके निमित्त नहीं। जिसके आवागमनका सम्बन्ध टूट गया वही मनुष्य है। शेषके समस्त पूर्ण पशु हैं, यद्यपि मनुष्यके स्वरूपमें दिखाई देते हैं। जितने लोग मुक्तिके निमित्त उद्योग नहीं करते न मुक्तिकी सुधि रखते हैं वो सब पूरे पशु हैं।

२१—कयामतसे भी पहिले आवागमन—लूकाकी इन्जीलका (१६) बाब (१९ से ३१) आयत पर्यन्त यह है कि, लाजर नामक एक दरिद्री था। उसके समस्त शरीरमें घाव थे वह बिचारा विवश होकर एक धनाढ्यके द्वारपर पड़ा रहता था, कुत्ते उसके घावोंको चाटा करते थे। अमीरके नौकर उस अमीरके रसोंईसे जो जूठा चूर चार गिरता था उन सबको इकठ्ठा करके उस लाजरके सामने रखते। लाजर वही जूठा तथा चूरचार खाकर जीता था, अन्तमें लाजर मर गया, जब वयस समाप्त हुआ तब वह अमीर भी मर गया। लाजर तो मरकर वैकुण्ठको एवं वह अमीर नरकको गया। उसने जो नरकमेंसे दृष्टि उठाकर देखा तो लाजरको वैकुण्ठमें इबराहीमके गोदमें बैठा पाया। उसको देखकर

ईर्षा हो आई नरकसे उस अमीरने पुकारकर कहा कि, ऐ मेरे पिता! ऐ मेरेपिता !! ऐ इबराहीम !!! तू कृपा करके लाजरको मेरे समीप भेज दे। क्योंकि, मैं नरककी अग्निसे जल रहा हूँ, यदि लाजर मेरे समीप आवे मेरे मुंहमें उंगली दे तो मेरे शरीरकी जलन कम हो जाय। यह बात सुनकर इबराहीमने उत्तर दिया कि, ऐ पुत्र ! तूने संसारमें बड़े बड़े सुख भोगे हैं, लाजरने केवल दुःखही दुःख उठाया है। अब इसकी पारी सुखभोगने तथा तेरी दुःख उठाने की है उस नरकके अमीरने कहा कि, ऐ पिता ! लाजरको संसारमें भेज दे कि, वह जाकर मेरे भाइयोंको समाचार दे कि मैं तो नरकमें आ पड़ा, अब वे लोग किसी तरहका पाप न करें, पुण्यमें चित्त लगावें, ऐसा न हो कि, उनको भी नरकमें आना पड़े। वह बात सुनकर इबराहीमने उत्तर दिया कि, मूसा वहाँ उपस्थित है, यदि लोग उसकी बातें मानेंगे तो वे नरकमें न पड़ेंगे। उस नरकमेंके रईसने कहा कि, यदि मुरदोंमें से कोई जीवित होकर जावे संसारमें समाचार दे तो वे लोग कदापि दुष्कर्म न करेंगे, पर मूसाकी बातका उनको विश्वास न होगा। इस कारण लाजरको भेजना आवश्यक है। तब इबराहीमने उत्तर दिया कि, यदि उनको मूसाकी बातोंका विश्वास न होगा तो वे लाजरकी बातें भी नहीं मानेंगे।

अब इस लाजरकी कहानीसे नरक तथा वैकुण्ठका जाना कयामतके पहिलेसे प्रचलित होना प्रमाणित हो चुका। फिर महाप्रलयमें भलों और बुरोंके हिसाबकी क्या आवश्यकता। केवल भ्रम तथा धोखा है। जिस समय कोई मरता है उसके लिये वैकुण्ठ, नरक तथा अन्यलोक उसी समय मिलते हैं, दूसरी कयामत और हशरगाहके समयकी कोई आवश्यकता नहीं जब भलाई बुराईका हिसाब हुआ तब आवागमन स्वतः ही सिद्ध होगया।

२२–आवागमनपर कुरान–कुरानमें सुरतआराफ (८) सिपारा (४) रकूअ (२९) आयतमें लिखा है कि, तू कह मेरे रबने फरमाई दीनदारी और सीधे करो अपना मुंह हर एक नामजके समय केवल उसीके आज्ञाकारी होकर उसको पुकारो। जैसा तुमको पहली बेर बनाया फेर बनोगे।—

२३–कुरान सूरत नखल (१४) सिपारा (८) रकूअ (६५) आयतमें लिखा है कि, और अल्लाःने उतारा आकाशसे जल, फिर उससे जिलाया पृथ्वीको इससे मरने पीछे उसमें देते हैं उन लोगोंका जो सुनते हैं।

अब इस आयतसे पृथ्वीका दूसरी बार पुनः जलसे प्रगट होना स्पष्ट होता है। उसमें पते हैं उनको जो सुनते हैं इससे तात्पर्य उन मनुष्योंसे है जिनका हृदय प्रकाशित है कि, पृथ्वीके पूर्व तथा वर्तमान अवस्थाओंसे विज्ञ हैं।

२४—कुरानमें सूरे रूम (२१) सिपारा (२) रकूअ (११) आयतमें लिखा है कि, अलबत्तः बनता है प्रथम बार फिर उसको दोहरावेगा फिर उसके ओर फिर जाओगे।

२५—कुरानमें देखो सुरे रूप (२१) सिपारा (२) रकूअ (११) आयत में लिखा हुआ है कि, निकलता है जीता मुरदेसे, निकलता है मुरदा जीतेसे, जिलाता है पृथ्वीको उसके मरे पीछे। इसी प्रकार तुम निकाले जाओगे।

२६—कुरान सूरे रूम (२१) सिपारा (३) रकूअ (२७) आयतमें लिखा है कि, वही है जो प्रथम बार बनाता है। फिर उसको दोहरावेगा, आसान है उस पर उसको कहावत, सबसे ऊपर आकाशमें और पृथ्वीमें वही है जबर-दस्त हिकमत वाला।

२७—रोजतुलअहबाबमें लिखा है कि—

اول ما خلق الله نوری

प्रथम खुदाने नूरमुहम्मदको पैदा किया दूसरी हदीसमें है कि—

اول ما خلق الله القلم

अर्थात् पहले खुदाने कलमको बनाया जिसमें लोगोंके भाग्यको लिखा तीसरे हदीसमें है कि—

اول ما خلق الله العقل

अर्थात् सबसे पहले खुदाने बुद्धिको उत्पन्न किया जिसमें सोच समझ भाग्यको ठहरावें।

इन तीनों हदीसोंसे तीन बातें प्रमाणित हुई हैं। इनमें से यदि एक सत्य मानोगे तो दूसरी मिथ्या ठहर जाती है। यदि तीनोंको सत्य मानोगे तो तीन बार उत्पत्तिका होना प्रमाणित होता है। जिससे अनगिनती बेर भी कहा जा सकता है क्योंकि, किसी सृष्टिमें मुहम्मदी तेज पहले उत्पन्न हुआ, किसीमें बुद्धि और किसीमें लेखनी पहिले उत्पन्न हुई।

२८—आत्माका मोर और फल होनेके बाद बीबी एमनाके गर्भमें जाना—मुहम्मद साहबके नूरनामः में लिखा है कि, खुदाने मुहम्मद साहबकी आत्माको मयूरके स्वरूपमें बनाकर विश्वासके वृक्षपर बैठा दिया। पहले तो मुहम्मदके

तेजने मोरके देहमें प्रवेश किया, फिर उस आत्माने एक फलमें गमन किया, वह फल जिबराईल द्वारा अब्दुल्लाके समीप पहुँचा। वह फल अबदुल्लाके वीर्यके मार्गसे बीबी एमनाके गर्भमें पहुँचा बीबी एमनाके गर्भसे आँहजरत (मुहम्मद) पैदा हुये।

गुलजार मुहम्मद तथा हदीसोंमें यह कहानी लिखी है कि, एकबार खुदाने जिबराईलसे कहा कि, एक फल ला, तब जिबराईलने पूछा कि, ऐ खुदा! कौनसा फल लाऊँ। कुछ उत्तर नहीं मिला। फिर तीसरी बार आवाज आई कि, ऐ जिबराईल! एक फलला, फिर जिबराईलने कहा कौन फल लाऊँ। इतनेमें एक ऐसी आँधी आई कि, जिबराईल उड़ गया। न जाने वह किस देशमें जा पहुँचा। एक बगीचेके द्वार पर जा खड़ा हुआ। जब जिबराईलने अपनेको इस बगीचेके द्वारपर खड़ा पाया तब बगीचेके द्वारपालसे प्रार्थना की कि, मुझे बगीचेके भीतर जाने दे। बगीचेके द्वारपालने पूछा कि, तू कौन है? उसने उत्तर दिया मैं जिबराईल हूँ। द्वारपालने कहा कि, सहस्रों जिबराईल हैं उनमें तू कौन है। जिबरईलने अपना पता बताया कि, मैं वह जिबराईल हूँ जो खुदाके समीप खड़ा रहता है। उस द्वारपालने बगीचेके भीतर जाने दिया। जब जिबराईल बगीचेके भीतर गया तब क्या देखता है कि, सहस्रों प्रकारके फल लटक रहे हैं वह बगीचा भली-भाँति हरा भरा हो रहा है। सब फल तथा मेवे जो वहाँ हैं सो सब खुदाकी वन्दनामें संलग्न हैं, खुदाका नाम ले रहे हैं। सब फलोंमें एक फल सबका सरदार तथा गुरु जान पड़ता था। उसी श्रेष्ठ फलके आदेशसे सब फल खुदाका नाम लेते हुए वन्दनामें संलग्न थे। जब जिबराईलने यह कौतुक देखा तब अपने मनमें ऐसा विचार किया कि, यह फल जो सब फलोंमें बड़ा है उसीको तोड़कर ले चलूं। उस फलको तोड़कर ले आकाशपर उड गया उड़ते हुये राहमें वह फल उसके हाथसे गिर गया अरबके मक्का नामक नगरमें जा पड़ा बड़े तड़के अब्दुल्ला नामक एक मनुष्य सड़क परसे चला जाता था, उसने उस फलको देखा, उठाकर अपनी जेबमें रख लिया जेबमेंसे वह फल अब्दुल्लाके शरीरमें समा गया अथवा उसने खा लिया। उस समय उसका शरीर तथा चेहरा कान्तिसे दमकने लगा अब्दुल्लाके वीर्य द्वारा बीबी एमनाके गर्भमें मुहम्मदी तेज आया, बीबी एमनाका शरीर तेजमय होगया, कान्तिसे जगमगाने लगा। नियत समयपर मुहम्मद साहिबने जन्म लेलिया।

अब उधरका वृत्तान्त सुनो कि, जिस समय वह फल जिबराईलके हाथसे छूटकर गिरा खाली हाथ जिबराईल खुदाके निकट गया निवेदन करने लगा कि,

ऐ खुदा ! मैं अमुक स्वरूपका एक फल लाता था । वो फल मेरे हाथसे छूटकर गिर पड़ा। तब खुदाकी ओरसे आवाज आई कि, ऐ जिबराईल ! मत घबरा, क्योंकि, वह फल जहाँ पहुँचने को था पहुँच गया, तेरा काम हो चुका । वे सब फल जो उस बागमें थे वे तो मुहम्मदके पीछा करनेवाले हैं सबसे श्रेष्ठ फल स्वयम् मुहम्मद साहब रसूल अल्लाह हैं ।

पहलेमुहम्मदसाहबकी आत्मा मयूर पक्षीके शरीरमें गयी, फिर उस फलमें, इसके उपरान्त बीबी एमनाके गर्भमें । यह तीनों बेरका आवागमन प्रत्यक्ष हदीसोंमें लिखा है इनके अतिरिक्त जो अनगिनती बेर उनकी आत्माने किन किनके बीचके समय समयपर आवागमन किया है उसका हाल परमात्मा जाने ।

२९—शैतानका आवागमन—तफसीर अजीजी इत्यादिसे प्रगट है कि, जिस समय खुदाने आदमको अदनकी वाटिकामें रखा था उस समय जिबराईलको ऐसी आज्ञा दी थी कि, आदमका पेट फाड़ डाले आधा रक्त तथा शैतानी हृदय पृथक करे । जिबराईलने ऐसाही किया । आधा शैतानी रक्त और आधा हृदय आदमके पेटसे पृथक किया, आधा उसके भीतर रहने दिया । जब वह आधा रक्त तथा कलेजा आदमके पेटसे निकालकर अदनकी वाटिकाके एक कोनेमें गाड़ दिया । उसी शैतानी रक्त तथा हृदयसे गेहूँका वृक्ष उत्पन्न हुआ । उसीके फल खानेके लिये खुदाने वर्जा था । वह आधा शैतानी रक्त तथा हृदय आदमके भीतर रह गया था । जिससे शैतानी धूर्त और अत्याचारिणी सृष्टि उत्पन्न हुई । वह दूसरा आधा जो स्वच्छ हुआ था उससे अच्छे लोग उत्पन्न हुये। इससे प्रमाणित हुआ कि पहले शैतान आदमके भीतर था, इसके उपरान्त रक्त तथा हृदयके साथ गेहूँमें प्रवेश कर गया । जब आदमने उस गेहूँके दानेको खाया–तब शैतानने आदमकी बुद्धि विलुप्त कर दी, विजयी हुआ आज्ञोल्लंघनके पहले शैतान बाहरी स्वरूप धरकर धोका देता था फिर भीतर तथा बाहर से आदम तथा आदमजादको धोका देने लगा वे सब शैतानके वशीभूत हुये ।

३०—समीक्षा—पूर्व लिखित प्रमाणकेअनुसार खुदाने सबसे पहले मुहम्मदके तेजको उत्पन्न किया, एक विश्वासका वृक्ष भी उत्पन्न किया । उसके ऊपर मुहम्मदकी आत्माको मयूरके स्वरूपका बनाकर बैठा दिया, वह उस वृक्षपर बैठकर सत्तर सहस्र वर्ष पर्य्यन्त तपस्या करता रहा, पहले तो यही असम्भव है कि, पवित्रात्मा खुदाकी वन्दना करे क्योंकि, उसे प्रार्थना की आवश्यकताही नहीं होती, खुदावन्दा तथा आशिक और माशूक, केवल अपवित्र आत्माओंमें हैं । जब आत्मा अपने पूर्वकर्म्मोंसे अपवित्र होती है तब उसे प्रार्थनाकी

आवश्यकता होती है। जब कर्म्मका पाश होती है तब देहके साथ सब काम और बन्दना किया करती है। बिना देहके आत्मा कुछ कर नहीं सकती। दूसरे यह लिखा हुआ है कि, मुहम्मदकी आत्माको फानूसमें रक्खा। यह बात भी असम्भव है कि, पवित्रात्मा फानूसमें कैद रहे, आत्मा कदापि कैद नहीं हो सकती। यह कदापि सम्भव नहीं कि, पवित्रात्मा एक नियमित समय तक अधीन और बन्धनमें पड़ी रहकर बन्दना किया करे। आत्मा सदैव स्वतंत्र और स्वाधीन है इसको केवल इसके कर्म्मोंकी अपवित्रताही बन्धनमें डालती है। तीसरे यह लिखा है कि, मुहम्मदके चारों ओर सब आत्मायें फेरा दिया करती थीं। तीसरी यह कि, सब रूहें रसूल खुदाकीरूहके चारों ओर सत्तर सहस्र वर्ष पर्य्यन्त फिरा करती थीं। कोई आवश्यक नहीं कि, अन्यान्य आत्मायें मुहम्मदकी आत्माके चारों ओर घूमें। क्योंकि, उत्पत्तिके आरम्भमें किसी आत्मामें उँचाई निचाई नहीं होती। सब समान रूपकी पवित्र तथा स्वच्छ होती हैं। चौथे यह लिखा है कि, उत्पत्तिके पहले समस्त आत्माओंने मुहम्मदकी ओर देखा। मुहम्मदकी आत्माके अङ्गकी ओर सभोंने जब देखा तब जिसकी दृष्टि जिस अङ्गपर पड़ी उसका स्वरूप तथा स्वभाव वैसा ही हो गया। देखो ग्रन्थ कबीर भानुप्रकाशमें मैं पहले लिख चुका हूँ।

यह बातभी बेजड़ जान पड़ती है। क्योंकि, आत्माके तो कोई अङ्ग नहीं। फिर आत्मायें देखेंगे क्या? पाँचवें लिखा है कि, उत्पत्तिसे पचास सहस्र वर्ष पूर्व सब आत्माओंका भाग्य स्थिर हुआ। मुहम्मद साहबकी आत्माकी ओर देखनेसे वे कैसे भले बुरे हो सकते हैं? उनका भाग्य तो पहले ही स्थिर हो चुका है, मुहम्मदकी आत्माकी ओर देखनेसे कोई लाभ तथा हानि नहीं है। छठवेंमें लिखा है कि, मुहम्मदकी आत्मा दश भागोंपर विभक्त हुई। जिससे पृथ्वी तथा आकाशादि सब कुछ बनाया गया। यह बात भी बुद्धिमें नहीं बैठती कि, पवित्र आत्माके भाग हो सके। पवित्रात्मा बाँटी नहीं जाती, उसको कोई विभक्त नहीं कर सकता। खुदा अथवा बन्दा किसीमें सामर्थ्य नहीं कि, उसको बांटे। इस आत्मामें लम्बाई चौड़ाई गहाराई इत्यादि कुछ नहीं यह भेदी भी नहीं जा सकती। इस कारण इन प्रमाणों द्वारा यह बात भलीप्रकार सिद्ध हो चुकी कि जिसे मुसलमान मुहम्मदी तेज कहते हैं वह कर्म्मोंसे शुद्ध नहीं था। पूर्वजन्मके कर्म्म तथा भलाई बुराईसे भरा हुआ था। वह मुहम्मदी तेज सूक्ष्म शरीर था। क्योंकि, दो प्रकारके शरीर हैं। एक स्थूलशरीर तथा दूसरा सूक्ष्म शरीर है। इसीको आधिभौतिक और अन्तर्वाहक देह भी कहते हैं। यह स्थूल और लिंगदेह

दोनों कर्म्मोंके बन्धन हैं, उनका सदैव आवागमन हुआ करता है। आधिभौतिकसे अन्तर्वाहक और अन्तर्वाहकसे अधिभौतिक हुआ करता है। इसी प्रकर इसका सदैव आवागमन हुआ करता है। इससे अब स्पष्ट प्रमाणित हो चुका कि जिसको मुहम्मदी पवित्रात्मा समझते हैं वह अपने पूर्वजन्मोंके कर्म्मोंसे अशुद्ध लिंग देही थी, अनगिनती जन्मोंके कर्म्मोंमें बराबर बँधी चली आती थी। कर्म्मका बन्धन देहके बिना नहीं हो सकता। कितने जन्म पूर्वसे मुहम्मदकी आत्मा आवागमन करती चली आती है एवं भविष्यको भी करेगी इसको भ्रम तथा भूलसे मनुष्य पवित्रात्मा समझते हैं।

३१—भाग्यानुसारी वस्तु—मुहम्मद साहबने अपनी उम्मतको यह सिखलाया कि, खुदाने सबके भाग्यको पृथ्वी और आकाशकी उत्पत्तिसे पचास सहस्र वर्ष पूर्वसे ही स्थापित किया है। यह वृत्तान्त मशकात बाबुलतकदीर अबदुल्लाह, इब्न मुसल्लमकी हदीस और उनके विश्वासमें यों लिखा है:—

والقدر خيره وشره من الله تعالى

अर्थात भलाई तथा बुराई भाग्यमें खुदाकी ओरसे होती है। इसी बातमें मुसल्लमसे यह हदीस है।

قال كتب على ابن آدم نصيبه من الزنا مدرك لا محالة

अर्थात् लिखा गया है खुदाकी ओरसे मनुष्यका भाग। व्यभिचारमें सो वह अवश्यही करेगा। फिर इसी बाबमें अबीदरबाका कथन है:—

ان الله عز وجل فرغ الى كل عبد من خلقه من خمسة من اجله وعمله ومضجعه واثره ورزقه

अर्थात् बन्दाके विषयमें पाँच बातोंमें खुदा निश्चिन्त हो चुका है। मृत्यु, कर्म्म, स्थिति, फिरनेका स्थान, रोजी। इस विश्वासको हृदयस्थ करनेके निमित्त इतना आग्रह है कि, तकदीरसे विमुखता करनेवालोंसे मुसलमानका व्यवहार रखना भी अनुचित है। इसी विषयमें इब्नउमरका कथन है। फरमाया हजरतने कि, तकदीरको न माननेवाले लोग मेरी उमतके मजूसी (एक फिरका) लोग हैं यदि वे रोगी हों तो उनका हाल भी न पूछो यदि वे मर जाँय तो उनके शवके साथ भी मत जाओ।

तफसीर काबानीमें आया है कि, खुदा प्रतिदिवस तीन सौ साठ बार लौह महफूज पर दृष्टि करता है। जो चाहता है वह मिटा डालता है जो चाहता है बना देता है।

तफसीर हुसेनीमें लिखा है कि, जिस समय कुछ रात शेष रह जाती है तब खुदा लौह महफूज पर दृष्टि डालकर जो चाहता है वही बना देता है।

अबदुल्ला बिन अब्बास भी कहता है कि, खुदाने जो मुकद्दर किया है उसमें कदापि अदल बदल नहीं हो सकती। परन्तु रिजक, औनस, सआदत और शकावतमें।

फखरुद्दीनने तफसीर कबीरमें लिखा है कि, आयत महो और असबातमें दो कौल है। प्रथम तो यह कि, महो और असबात दो वस्तुवोंमें संयुक्त है। जैसे खुदाताला महो करता है रोजी और ज्यादा करता है। रोजी अजल, सआदत, शकावत, कुफ्र और ईमानकी भी यही दशा है। दूसरी यह कि, खुदा बन्दोंका हिसाब लिखता है। अतः जिस समय बन्दाने तोवा की तो वह तुरन्त ही उसका दोष मिटा देता है। जब वह दान देता है तुरंत ही उसका कष्ट निवारण कर देता है।

समीक्षा—अब यहाँ विचार करना चाहिये कि, ऊपर लिखी पाँच बातोंपर समस्त व्यवहार परमार्थका आधार है। इन पाँच बातोंसे खुदाका कोई सम्बन्ध नहीं है। फिर किन बातोंसे उसका सम्बन्ध रखना समझा जावे, पाँचों बातें हमारे मायानुसार हैं फिर खुदा कौन है और हमसे क्या सम्बन्ध रखता है। किस बातमें हमारी सहायता कर सकता है? यह नहीं मालूम कि, मुहम्मदी भाग्यको क्या समझते हैं। आपहीतो खुदाको हमारे कार्योंसे अलग और बेतअलुक बताते हैं आपही कहते हैं कि, खुदाने उत्पत्तिसे पचास सहस्र वर्ष पूर्व सबका भाग्य ठहरा दिया है। यह कैसे भ्रम तथा भूलकी बात है। फिर ऐसे अन्यायी खुदाकी बन्दना कौन करे। जब खुदाने पूर्वसे मनुष्यका भाग्य लिख रक्खा तो फिर अलग अलग कैसे ठहरा। किसीको भला तथा किसीको बुरा किस कारण बनाया यह अन्याय, क्यों किया। मुसलमान बेसमझीके धोखेमें पड़े हैं। यदि वे पूर्व देहसे उस देहमें आवागमन भी स्वीकार करें तो वस्तुतः उनकी बातें ठीक ठहरतीं।

३२—कयामतके दिनकी तीनबातें—कयामतके दिनके विषयके बाबमें तीन बातें लिखी हैं। प्रथम कहा है कि, कयामत (महाप्रलय) का एक दिन

पचास सहस्र वर्षके समान होगा । दूसरे स्थानमें लिखा है कि, एक सहस्र वर्षका होगा । फिर तीसरे स्थानमें लिखा है कि, पल झपकते कयामत (महाप्रलय) बीत जावेगी । यह तीनों बातें स्वीकार की नहीं जा सकतीं । जबतक तीन बार उत्पत्तिका होना स्वीकार किया न जावे । इसका तात्पर्य तो यह है कि, कयामत (महाप्रलय) का दिवस तो अवश्य ही पलके पलमें बीत जावेगा । कभी तो कयामत (महाप्रलय) के पीछे पचास सहस्र वर्षके उपरान्त संसारकी उत्पत्ति होती है और कभी सहस्र वर्ष पीछे । कभी कयामत (महाप्रलय) के उपरान्त उसी समय तनिक भी विलम्ब नहीं लगता । नवीन सृष्टि प्रगट होती है । अनेक कालतक शून्य रह जाता है । यही बात स्वीकार किये जाने योग्य है । इसी प्रकार बारम्बार उत्पत्ति स्थिति तथा विनाश हुआ करता है । सब जीवोंका आवागमन लगातार चलता रहता है ।

३३–सालिग्राम पूजनेकी प्रतिज्ञा––तफसील मदारकमें लिखा है कि, मीसाकका अर्थ प्रतिज्ञा है । खुदाने आदमको उत्पन्न करके बैकुण्ठमें प्रविष्ट होनेको पहिले वैकुण्ठके द्वारके सामने यह प्रतिज्ञा कराई थी । पर मुवाल्जुलनबौवतमें लिखा है कि, भिहिश्तसे निकालनेके समय यह प्रतिज्ञा कराई गई थी । मदारकके अनुसार कदाचित् यह प्रतिज्ञा नाअमानमें ली गयी थी जो उरफातके निकट मक्कामें है, अथवा स्थान नेहारमें लीगई थी जो भारतवर्षमें कोई स्थान है । मआलमबकौलकलबी मक्का और तायफमें यह प्रतिज्ञा ली गई थी । उस प्रतिज्ञाका स्वरूप यह है कि, जब आदम मक्कामें हज्ज करने गया तब उरफान पर्वतके पीछे मानमें सो गया । खुदाने अपनी कुदरतका हाथ उसकी पीठपर लगाया । आदमके समयसे महाप्रलय तक जो मनुष्य उत्पन्न हुये होते और होंगे चिउँटीके स्वरूपमें सृष्टि कर्मानुसार सब तुरंत बाहर निकल पड़े । उसी समय वे सब युवक बुद्धिमान हो गये । जब वे सब तरुणावस्थाको पहुँचे उस समय खुदाने पूछा कि, क्या मैं तुम्हारा पालक नहीं हूं ? वे बोले, कि, तू हमारा पालक है । अतः प्रतिज्ञा यही थी कि, तू हमारा खुदा और हम तेरे सेवक हैं । सभोंने यह बात स्वीकार करली । खुदाने यह प्रतिज्ञा आदमजादसे ली । उस काले पत्थरको जो काबा घरमें है उनके हाथमें दिया । उस पत्थरको उनके हाथमें सौंपके फिर सभोंसे कहा कि, अब तुम मुझको दण्डवत् करो । काले पत्थरको हाथ लगाओ । पर बहुतोंने दण्डवत् किया, बहुतोंने नहीं किया, यह पहली दण्डवत् हुई । दूसरी दण्डवत्में कितनोंने जो नहीं किया था पछताकर दूसरी दण्डवत् की, उनमेंसे कितनोंने : ो पहले किया दूसरोंने नहीं किया । इस कारण चार

प्रकारके लोग हो गये। जिन्होंने पहले दोनों दण्डवतें की थीं, वे इमानदार होकर जीते एवं ईमानसेही मरते हैं। दूसरे वे जिन्होंने न पहली दण्डवत की और न दूसरी वे काफ़िर होकर जीते और काफिर होकरही मरते हैं। तीसरे वे लोग हैं जिन्होंने पहली दण्डवत कीनी दूसरी नहीं की वे ईमानदार होकर जीते तथा काफिर होकर मरते हैं। चौथे वे लोग हैं कि, जिन्होंने पहली दण्डवत न की दूसरीकी, वे काफ़िर होकर जीते और ईमानदार होकर मरते हैं। इसके पीछे संसारके सब उद्यम दिखलाये गये। जिसने जो चुन लिया वही उसका उद्यम होगया। फिर सब आत्मायें गुप्त परदेमें विलुप्त होगईं। एक बार उत्पन्न हो चुकीं दूसरी बार उसीके अनुसार उत्पन्न होकर मरती जाती हैं।

समीक्षा—अब यहाँ विचारना उचित है कि, पूर्व जन्मके कर्म्मही खुदा तथा बन्दः को पृथक २ करते हैं। सब मनुष्योंने इस कारण न्यारी न्यारी रीतियोंपर दण्डवतें कीं। क्यों कि, उनकी आत्मा पूर्व्वकर्मोंसे दूषित थीं। पूर्वकर्म्मके बिना भिन्न भिन्न प्रकारके विचार नहीं हो सकते कर्म्म बिना देह भी नहीं हो सकती। अतः वे सब आत्मा पूर्वकर्म्मोंसे निर्दोष कही नहीं जा सकतीं। यदि उनमें पूर्वजन्मका दोष न होता तो वे निश्चय एकही रूपसे दण्डवत करते।

सभी जीवोंकी यही दशा है कि, महाप्रलयके समय सब ब्रह्मसे जा मिलते हैं। इसी प्रकार फिर उत्पत्तिके समय ब्रह्म सत्तासे सबकी उत्पत्ति होती है। आदमकी पीठ ही गुप्त संसार है। इसी प्रकार उत्पत्ति स्थिति तथा विनाश हो जाया करता है। सदैव आवागमनका सिलसिला चला जाता है, अब यह बात प्रमाणित हुई कि, खुदाने उनको पत्थर पूजना बताया वह काला पत्थर उनके हाथमें दिया कि वह महाप्रलयके दिवस उनकी भलाई बुराईके हिसाबकी साक्षी देगा। इसी पत्थरकी पूजा आजतक हिन्दू तथा मुसल्मानोंमें प्रचलित है, सब पूजते चले आते हैं। मुसलमान उसे सङ्ग आसूदके नामसे पूजते हैं। यद्यपि पूजनेकी रीति न्यारी है। पर दोनोंकी एकही बात है। जो आत्मायें उत्पत्तिके आरम्भसेही मूर्तिपूजक हुईं वे कर्मोंसे पृथक् कैसे मानी जा सकती हैं? सङ्ग आसूदको ही सालिग्राम कहते हैं।

३—४यथार्थ तात्पर्य—पहले लिखा है कि, उत्पत्तिसे पचास सहस्र वर्ष पूर्व सर्व आत्माओंका भाग्य ठहराया गया। फिर कहा है कि, महाप्रलयका दिवस पचास सहस्र वर्षका होगा। इन दोनोंका एकही तात्पर्य है कि, महाप्रलयसे पचास सहस्र वर्ष पीछे फिर उत्पत्ति होती है सर्व आत्मायें निजकर्म्मानुसार जुदी २ योनियोंमें आवागमन किया करती हैं भिन्न भिन्न स्वरूपोंमें वेही सब अत्मायें पुनः दिखाई देती हैं। उसका यथार्थ तात्पर्य यही है।

३५ वैकुण्ठका पक्षी होना—बीबी आयशा सहीकासे कहावत है। आयशा कहती हैं कि, एकबार किसी मित्रकी ताबूतके साथ हजरत रसूलल्लाहको नमाज पढ़नेके लिये बुलाया। उस समय आयशाने कहा कि, ऐ रसूलल्लाह! हर्षित हो कि, वह बालक वैकुण्ठके पक्षियोंमें से एक है। इस कारण कि, उसने कुछ बुरा काम न किया था तब नबीने उत्तर दिया कदाच ऐसा न हो। क्योंकि, खुदाने उनको पिताके वीर्य्यके साथ ठहराया है। नरकी तथा वैकुण्ठी वीर्य्यके साथही ठहरे हैं और उसी भाग्यके अनुसार नरक तथा वैकुण्ठको जावेंगे।

अब इन कथनोंसे प्रगट हुआ कि, मुहम्मद साहबको मालूम नहीं था कि, वह लडका वैकुण्ठका पक्षी होगा अथवा नहीं। वह बालक जो अनजान था उसके विषयमें मुहम्मद साहबने अपनेको अनभिज्ञ बताया। फिर कहा है, भोले बच्चे वैकुण्ठको जाते हैं। यह बात भी कुछ ठीक मालूम नहीं होती। दूसरी यह बात भी प्रगट हुई कि, अच्छे मुहम्मदी मर मरकर पक्षी तथा पशु होते हैं। चाहे वे वैकुण्ठके ही क्यों न हों। भलाजी, जब कोई मनुष्यसे पक्षी हो जावेगा तब उसकी दशा अच्छी कैसे समझी जावेगी? क्योंकि, मनुष्यकी देहमें तो ज्ञान होता है पशु पक्षीकी देह तो पूर्णतया अन्धकारमें रहती है। जो वैकुण्ठका पक्षी हुआ तो क्या लाभ हुआ।

३६ पूर्वके प्रेम आदि—मुहम्मद साहबने प्रेमके विषयमें इस प्रकारसे कहा है। सुतरां मशकातुल, बाबुलहब्ब फीअल्लाह, आवशासे मुसल्लसका कहना है कि, संसारमें आने उत्पन्न होनेसे पूर्व सब मनुष्योंके रूहकी एक एकत्रित सैन्य थी। जिन आत्माओंमें वहाँ सम्बन्ध और मैत्री थी। अब यहाँ भी उनमें प्रेम है जिनमें वहाँ वैमनस्यता थी उनमें यहाँ भी मिलाप नहीं होता है।

यह सोचनेकी बात है कि, रूहमें मैत्री विरोध तथा प्रेमादिका होना सम्भव नहीं हो सकता। क्योंकि, ये सर्व शरीरके धर्म्म हैं, रूहके नहीं हो सकते, सब कामनायें शरीरमें ही होती हैं, रूहमें नहीं होतीं। पवित्रात्माको कौन वशीभूत कर सकता है? इससे प्रमाणित होता है कि, मुसलमान लोग सूक्ष्म शरीरको ही रूह कहते हैं—जो कि अपने पूर्वकर्म्मोंसे सदा परिपूर्ण रहता है।

३७ भाग्य—मुसल्लम बिनयसारका कथन है कि, हजरत रसूलल्लाहने फरमाया कि, वास्तवमें खुदाने आदमको उत्पन्न किया, अपने हाथसे उसकी पीठको छुवा, उससे एक कौम (जाति) निकली। आदमसे कहा कि, मैंने यह जाति वैकुण्ठके लिये निकाली है। उनके सर्व कार्य्य वैकुण्ठके जानेवालोंकेसे होंगे, फिर खुदाने आदमकी पीठको दूसरी बेर बाँये हाथसे छुआ, उससे दूसरी

जाति निकली, तब खुदाने आदमसे कहा कि, इस जातिको मैंने नरकमें रहनेके लिये निकाली है। इनके सर्व कार्य्य नरकमें जानेवालोंके समान होंगे। फिर अबदुल्लाऽइब्न उम्रका कथन है कि, एकबार रसूलल्लाह दो पुस्तकें दोनों हाथोंमें लेकर निकले मुझसे पूछा तुम जानते हो कि, यह कैसी पुस्तकें हैं? मैंने कहा, नहीं आप मुझको बताइये। आपने कहा कि, जो मेरे दहिने हाथमें किताब है उसमें वैकुण्ठमें रहनेवालोंके नाम हैं। यह खुदाकी ओरसे है, इसमें वैकुण्ठके जानेवाले सर्व मनुष्योंके नाम, उनके बाप दादोंके नाम और उनकी जातिके लोगोंके नाम इसमें लिखे हैं, साथही संख्या भी लिख दी है, इसमें न्यून तथा अधिक न होंगे। दूसरी पुस्तक जो मेरे बांये हाथमें है इसमें उनके बाप दादों तथा जातिके नाम सहित नरकमें जानेवालोंके नाम लिखे हैं। नीचे संख्या भी दी है कि, इससे अधिक अथवा न्यून न होंगे, यह पुस्तक भी खुदाकी ओरसे है।

इससे यह तो प्रमाणित हो चुका कि, भाग्य निश्चित है। इसमें बाल बराबर भी विभिन्नता न हो सकेगी। सब मनुष्य स्वस्वभाग्यानुसार बुरे-भले हैं अब किसीको कुछ करना कराना रह नहीं गया। दूसरा सन्देह यह उत्पन्न हुआ कि, जब वैकुण्ठवासी रूहोंके सम्बन्धी और मित्र उनकी सिफारशसे वैकुण्ठ पावें, तो हजरत रसूल अल्लाहके स्वजन बाप दादे माता इत्यादि नरकके योग्य कैसे होवें? उनको भी रसूल अल्लाहसे लाभ उठाना उचित है।

वस्तुतः हमारे पूर्व्वकर्म्मोंने हमारा भाग्य ठहराया है कर्म्म करनेके लिये हम पूर्वकालमें शरीर धारण किये हुये थे, पूर्वकर्म्मानुसारही अब देह हुई है। यदि हमने अपने भाग्यके अनुसार सब कार्य्य अपने देहके पूरे कर लिये तबतो हमारे ऊपर कोई दोष रह नहीं गया, न हमको महाप्रलयके दिवस किसी प्रकार हिसाब किताब देनेकी आवश्यकता है न हम भले बुरे हैं वरन् हमारे बदले हमारा खुदा भला बुरा ठहरेगा दोष उसी पर थोपे जावेंगे हम बाल बाल बच जावेंगे यदि हम निर्दोषोंको खुदा दोषी ठहरावेगा तो आपही दोषी होगा। न्यायी नहीं कहला सकता। इस कारण यह सब बातें भ्रम और धोखेकी हैं। खुदा कदापि पापी नहीं है। हमारे कर्म्महो हमें भला बुरा बनाते हैं, खुदाका क्या दोष है? हम आवागमन करते आये हैं और सदा करते जावेंगे जब तक कि, मोक्ष न होगा।

३८–हजरत शेख सादीका कौल

सगे असहाबे कहफ रोजे चन्द।
पयेनेकां गिरफ्त मरदुम शुद।

रोजतुस्सफाके प्रथम भागमें लिखा है कि, जो पहले अलियास था वही फिर अदरीस होगया।

३९–शेख फरीदुद्दीन अत्तार

हज़ार बार खमों कूज: करद: अन्द मरा ।
हनोज़ तल्ख निज़ाजम मर्ग शीरो जे कार ।।

अर्थात् सहस्र बार मुझको सुराही तथा प्याला बनाया है तो भी अभी तक मेरा स्वभाव कड़वा है मृत्युके मीठे कार्य्यसे तात्पर्य आवागमन है।

४०–मीसाक अर्थात् प्रतिमाके विषयमें जो पहले मैं लिख आया हूँ कि, खुदाने जब हजरत आदमको उत्पन्न किया उस समय जादमाकी सब सन्तानोंको उसकी पीठसे निकालकर प्रतिज्ञा ली उनके हाथमें एक काला पत्थर दिया। इससे प्रमाणित हो चुका है कि, हजरत आदमको उत्पत्तिके समय वह काला पत्थर था।

इब्न अब्बास––कहता था कि, फरमाया रसूलल्लाहने कि, जब उतरा हजतुल–आसूद भिहिश्तसे, तब उस समय वह दूधसे भी अधिक श्वेत था। पर मनुष्योंके पापने उसको काला बना दिया।

संग आसूदका काला होना––रसूलल्लाहने फरमाया कि, वह पत्थर श्वेत था दूधसे भी अधिक। यह बात नहीं जान पड़ती कि, वह पत्थर कब श्वेत था। क्योंकि वह तो हजरत आदमके उत्पत्ति कालसे काला था, कालाही पत्थर खुदाने मनुष्योंको दिया। इससे प्रमाणित हुआ कि, वह पत्थर किसी काल और किसी दूसरी सृष्टिमें जिससे रसूलल्लाह अनभिज्ञ थे दूधसे अधिक श्वेत रहा होगा। परन्तु इस सृष्टि इसके पिता आदमके समयसे तो वह पत्थर कालाही चला आता है। उसके श्वेत होनेका कोई कारण नहीं है। हजरतके इस कथनसे उत्पत्तिके अनेक ढङ्ग और आवागमन प्रमाणित हैं।

सिद्धिका नाश–बलअम बाऊर जिसका हदीसमें विवरण है वरन तौरीतमें भी निम्नलिखित रूपसे वृत्तान्त लिखा है कि, मूसाके पीछे आपका स्थानापन्न ईशू हुआ। वह बनीइसराईलका आचार्य्य था, खुदाने उसको बरकत देकर कहा था कि, मैं तुझको कनआँ देशका राज्य दूंगा। ईशू खुदाके सहायतासे अपने सर्व वैरियोंपर विजय पाता चला आता था। जब बालक शाहसे उसका सामना हुआ तब पूर्वोक्त बालकने बलआम जिसको बलअमबाऊर भी कहते हैं उससे कहा कि, तू मेरे लिये प्रार्थना कर, जिसमें ईशूकी पराजय हो। यद्यपि बलआमने बालकशाहको समझाया कि, इस जातिको खुदाने वरदान दिया है, मैं कैसे उसे

शाप दूं ? तब बालकशाहने बलआमको बहुतसा द्रव्य तथा उत्तमोत्तम भेंट भेजे। बलआमके मनको अपने वशमें कर लिया । बलआमने ईशूको शाप दिया तीन बार ईशू परास्त हुआ। उसने खुदासे निवेदन किया कि, ऐ खुदा ! तूने इस जातिको वरदान दिया । अब परास्त क्यों किया ? तब आवाज आई कि, ऐ ईशू तेरे लिये बलआम शाप देता है इस कारण तू पराजित हुआ है। ईशूने प्रार्थना की, कि ऐ खुदा ! बलआमकी तपस्याका सब बल नष्ट करदे। तब बलआमकी सब सिद्धाई जाती रही।

पूर्वजन्मका कुत्ता—यह बलआम पूर्वजन्ममें असहाक कहफका कुत्ता था। अपने पूर्वकालके शुभकर्मोंसे बलआमकी देहमें आतेही इसने बड़ी भक्ति की पर्वतोंकी गुफाओंमें जाकर बन्दना करता था तीनसौ बरसका सिद्ध था। ईशूके विरुद्ध होनेसे उसकी सिद्धाई तो विलुप्त होगई पर खुदाने उसपर दया की वह वैकुण्ठको गया। मुसलमानी पुस्तकोंमें मैंने पढ़ा था कि, यह मनुष्य बड़ा विद्वान था। इसी प्रकार मनुष्यके शरीरमें पशु आवागमन करते हैं। मनुष्यके शरीरमें आकर सुकर्म्म करते हैं तो वैकुण्ठको जाते हैं, कुकर्म्मोंसे चौरासी लाख योनिमें आवागमन किया करते हैं नरकको भी चले जाते हैं। आवागमनके सम्बन्ध कभी भी नहीं टूटता, तुदफये असनाय अशरामें लिखा है यही हदीदमें भी आया है कि, असहाक कहफके कुत्तेकी रूह बल अमबाऊर (जिसमें मूसाके विरुद्ध बनी इसराईलको शाप दिया था) के चोलामें प्रवेश करके विहिश्त गये।

४१ इस्लामी फिरके—करावत, कामला, मनसूरिया, सुर्फस्सिला आदि सब फिरके तनासुखको मानते हैं उसको सभी स्वीकार किये बैठे हैं मुसलमानोंका मुतना सिखिया फिर्का कहता है कि, आत्माका बराबर आवागमन होता है।

४२—मुहम्मदियोंका ग्यारहवां फिरक़ा जो राजियाके नामसे प्रसिद्ध है। इस राजीअ जातिके लोग कहते हैं कि, हजरतअली पुनः संसारमें आवेंगे अभी वे बादलमें हैं।

४३—मुसलमानोंके अठत्तरवें फिर्क़ाका नाम तयारिया है। उनका विश्वास यह है कि, हजरत आदममें खुदाकी आत्मा थी। जब मनुष्यकी आत्मा देहसे निकल जाती है फिर दूसरे शरीरमें होकर संसारमें आया जाया करती है।

४४—मुहम्मदियोंका छियासीवाँ फिर्का इसमाईलियाके नामसे प्रख्यात है। तारीखनिगारिस्तान और तारीख गिरिन्दा और विशेषतः जीन तुलता-रीखमें लिखा है कि, इस जातिका विश्वास है कि, कुरान मनुष्यकी बनावट है किसी एकके जालसाजद्वारा बनी है। क्योंकि, इसमें मिथ्याको सत्यके साथ

ऐसा मिलाया है कि, बिना भली प्रकार ध्यान दिये प्रत्येक मनुष्य उसको समझ नहीं सकता, मनुष्यहीकी आत्मा जब एक शरीर छोड़ती है तब दूसरी और तीसरी ओर अनगिनती देह धर धरके पुनः संसारमें आया जाया करती है।

४५ मुहम्मद बोध—कबीर साहबके ग्रन्थ मोहम्मद बोधमें लिखा है कि, मोहम्मद साहब पुनः उत्पन्न होंगे, उनको सत्यगुरुका उपदेश मिलेगा वे मुक्ति पावेंगे। इस बातपर नानक साहबकी साखी है। देखो नानकशाहकी जन्मसाखीमें लिखा है। जब नानकशाह मक्का गये थे उस समय मरदाना मीरासीसे कहा कि, मुहम्मद साहब पन्द्रह सौ वर्ष तक वैकुण्ठ में रहकर फिर पृथ्वीपर आकर एक शूद्रके गृहमें जन्म लेंगे। उनको परलोकी सत्यगुरु मिलेगा। उस गुरुकी दयासे वे परमधाम सिधारेंगे। यहाँ दोनों प्रतिष्ठित महापुरुषोंके कथनानुसार मुहम्मद साहबका आवागमन प्रमाणित होता है।

४६ प्रकृति नहीं बदलती—मनका विचार बदलनेके विषयमें मशकात किताब बाबुल ईमान अजाबुलक़ब्र अहमदसे रवायत अबीदरवासे इस प्रकार लिखा है कि, यदि तुम सुनो कि, एक पर्वत अपने स्थानसे टल गया तब तुम उसका विश्वास कर लेना। यदि सुनो कि, एक मनुष्यकी प्रकृति बदल गई तो कदापि विश्वास न करना। क्योंकि, मनुष्य अपनी प्रकृतिकी ओर झुका करता है। यह बात ठीक है कि, भाग्यने जो बनाया सो बन गया। मनुष्योंकी शिक्षा भी पशुओंको मनुष्योंके ढङ्गका बनाती है। कुरानमेंभी आया है कि, खुदा जिसको चाहे ईमान प्रदान करे, जिसको चाहे भटका दे। पूर्वजन्मके कर्म्मोंने स्वरूप बनाया। वर्तमान कृत्य उनको बदल सकते हैं। तीनों कालके कर्म आवागमनके बन्धनमें फँसे हुए हैं।

४७ अपनी आत्माका डालना—तौरीत तथा कुरान दोनोंसे यह बात प्रमाणित होती है कि, खुदाने आदमको अपने स्वरूपका बनाया। उसमें अपनी आत्मा डालदी। अतः खुदाने मनुष्यमें गमन किया। आदम सब मनुष्योंके भीतर गमन करते गये इस कारण एकसे अनगिनती हो गये। सर्व मनुष्यों का शरीर और आत्मा आदमका शरीर और आत्मा है आदमका शरीर और आत्मा खुदाका शरीर और आत्मा है। इस कारण सब मनुष्योंमें आदम आवागमन कर रहा है। आदममें खुदाने गमन किया। आदम खुदाकी आत्मा तथा शरीर है। देखो कुरानका (१४) सिपारा सूरत हजर (२) रकूअ (२९) आयतमें लिखा है :—

فاذا سويته ونفخت فيه من روحي فقعوا له سجدين

अर्थात्—जब ठीक करूँ उसको और फूंकदूं उसमें अपनी जान तो गिर पड़ियो उसके दण्डवत् में।

अर्थात् खुदा परिश्तोंसे आज्ञा करता है कि, जब मैं अपनी आत्मा फूंक दूं तब तुम सब फिरिश्ते उसके दण्डवत्को झुक पड़ना। खुदाने आदममें गमन किया। आदम सब मनुष्योंमें इस कारण सर्व मनुष्यों तथा खुदाओंमें अविद्या तथा विद्याकी विभिन्नता है। यदि मनुष्यको विद्या हो तो खुदा तथा मनुष्यमें किसी प्रकारकी विभिन्नताही नहीं रह सकती।

४८ मनुष्यसे बन्दर—कुरानमें (९) सिपारा सूरए आराफ (२०) रुकूअ (१६२ से १६७) आयत पर्यन्त लिखा है। बदल लिया अन्यायियोंने उनमेंसे और नुकता सिवाय उसके जो कह दिया था। फिर भेजा हमने उनपर अज़ाब आसमानसे बदला उनको दुष्टताका। फिर बढ़ने लगी जिस कामसे मना हुआ था तब हमने हुक्म किया कि, हो जाओ फटकारे हुये बन्दर।

दाऊदके समय शुक्रवारके दिन यहूदको प्रार्थना करना उचित था पर उन्होंने स्वीकार नहीं किया। शनिवारके दिन बन्दना करने लगे। आज्ञा थी कि, उस दिन मछलीका आखेट न करें, पर कुछ लोग करते रहे। खुदाने उन्हें बन्दर बना दिया। तीन दिन तक वे बन्दर रहे इसके पीछे मर गये। बन्दरोंकी सन्तान इन्हीसे अबतक प्रचलित है।

अब यह बात प्रमाणित हुई कि, पहली देहमें मनुष्य थे फिर बन्दर हुए उनसे बन्दरोंका वंश अबतक प्रचलित है।

नरक स्वर्गका जाना—इसी तरह हदीसोंके अनुसार महाप्रलयके मैदानमें चार प्रकारके मनुष्य प्रगट होंगे। वैकुण्ठके लोग, नरकके लोग, पशु तथा कीड़े मकोड़े। यह सर्व स्वरूप जो दिखाई देंगे अपने अपने कर्म्मानुसार स्थान पावेंगे। वैकुण्ठके वैकुण्ठ, नरकके नरक और इर्द गिर्द कीड़े मकोड़े और पशुओंमें गमन करेंगे।

४९ खिलाके अम्बियामें लिखा है:—

ان الذين سبقت لهم منا الحسنى اولئك عنها مبعدون

अर्थात्—जिनके निमित्त हमारी ओरसे भलाई हो चुकी वे लोग नरकसे बचे रहेंगे।

फिर कुरानमें देखो :—

وَاِنْ مِّنْكُمْ اِلَّا وَارِدُهَا

अर्थात्—कोई मनुष्य नहीं अर्थात् सब मनुष्य भले तथा बुरे एक वार अवश्यही नरकमें जावेंगे । अतः पहली वात पिछली बात सत्य हो । यह दोनों बातें एक दूसरेके विरुद्ध हैं । यदि एकको सत्य माना तो दूसरी झूठ होती है परन्तु यह दोनों आयतें सत्य हो सकती हैं कि, जिनके कर्म्म भले हैं वे इस शरीरसे नरकको न जायेंगे, पर किसी दूसरे शरीरमें जावेंगे । उनसे किसी प्रकारका पाप हो तो वास्तवमेंही संसार चक्रमें पड़कर नरकमें चले जायेंगे ।

५० तारीख मुहम्मदी—तालीम मुहम्मदी नामक पुस्तकके अनुसार इस प्रकार लिखा है कि, तजकिरतुलमौलामें काजी सनाउल्लाने इस विषयकी जाँचमें कि, मृत्युके पीछे मनुष्यकी आत्मा कहाँ जाती है कुरान तथा हदीससे बड़े विचारके साथ बहुतसा वृत्तान्त लिखा है । जिसका संक्षेप यह है । दो मकान हैं । एकका नाम सज्जैन है । अरबीमें सज्जैन बन्दीगृहको कहते हैं । अतः सज्जैन अत्युक्तिसे बड़ा जेलखाना है काफिरोंकी आत्मायें उसमें बन्द रहती हैं । दूसरा मकान अल्लैन है अल्लैन अल्लैयाका बहुवचन है । अर्थात् ऊँची खिड़कियाँ । अर्थात् वैकुण्ठ जहाँ मुसलमानोंकी आत्मायें जाती हैं ।

अबुदाऊदअबुहरीरा—का कथन है कि, हजरतने फ़रमाया है कि, वैकुण्ठमें एक पर्वत है वहाँ पर मुसलमानोंके बच्चोंकी आत्मायें जाती हैं । इवराहीम तथा सायरा उनका पालन करते हैं । जब महाप्रलय आवेगी तब उन बच्चोंकी आत्मायें उनके माता पिताको सौंप देंगे ।

मकदूलसे खायत है कि, मुसलमानोंके बच्चे पक्षियोंके सूरतमें वैकुण्ठ में उड़ते फिरते हैं, फिरऊनके घरानेके बच्चे एक काले रङ्गके पक्षीके समान हैं । जो प्रातःकाल तथा संध्याको नरकके सामने लाये जाते हैं । कुछ हदीसोंमें हैं कि, मुसलमानोंकी आत्मायें पक्षियोंके समान वैकुण्ठके वृक्षों पर उड़ती फिरती हैं । महाप्रलयके दिन शरीरोंमें आयेंगी पर शहीदोंकी आत्मायें एक हरे जानवरके पेटमें प्रविष्ट होती हैं रातके समय यानी बसेरेके समय उन कन्दीलोंके बीच जो कि खुदाके सिंहासनके नीचे लटकती हैं आकर बसेरा लेती हैं ।

समीक्षा—यहाँ यह बात समझना चाहिये कि, आत्माका कैद रहना सम्भव नहीं है शरीरके साथ वह सचमुचही कैद रह सकती है । यह भी ठीक नहीं कि, आत्मा किसीके प्रतिपालनका मुहताज हो । इबराहीम तथा सायरा

किसका पालन करेंगे क्या सौंपेंगे ? किसको सौंपेंगे ? वैकुण्ठके पर्वतपर मुसलमानोंके बच्चोंकी सब आत्मायें रहेंगी, नहरोंपर पक्षियोंके स्वरूपमें चरा करेंगी, इसको आवागमनके अतिरिक्त और क्या कहा चाहिये ? यदि कोई दूसरी जाति अथवा दूसरे धर्मका मनुष्य कहे कि, मुसलमानकी आत्मा मृत्युके पीछे पशु और पक्षी होता है तो वे असंतुष्ट हों। पर जब वे स्वयम् इस बातको स्वीकार करते हैं तो किससे कहा जावे ? इस बातको मुहम्मदी नहीं समझते कि, जब मानुषिक शरीर छोड़कर पशु पक्षी हो गया तो उससे क्या हीनावस्था होगी। वे लोग स्वजिह्वासे स्वीकार करते हैं मेरे कहनेकी आवश्यकता नहीं, न मैं यह कहना उचित ही समझता हूँ। जिसको वे वैकुण्ठ कहते हैं वह भी एक पृथ्वी है वहाँके वे पशु पक्षी हैं, मुसलमानोंके बच्चे और फिरऊनके बच्चे दोनों पशुओंके योनिमें प्रवेश कर गये। फिर काफिर और मुसलमानोंमें क्या विभिन्नता है। शहीदोंकी आत्मायें सब हरे पक्षी होती हैं। हरा-लालश्वेत इत्यादि रङ्गके पशु समान हैं जहाँ उनका भाग्य है चरा करें जहाँ उनका भाग्य राह दिखावे वहाँ बसेरा करें। उनको क्या मालूम कि, खुदा कौन है, कहाँ चरने तथा बसेरा करनेसे क्या लाभ और क्या हानि है। सब प्रकारके पशुओं और पक्षियोंका नियम है कि, दिनभर चरते और साँझको बसेरा लेते हैं। खुदाई सिंहासन हो अथवा मानुषिक सिंहासन हो रातको तो कहीं बसेरा लेनाही पड़ेगा इन ध्यानों तथा विचारोंमें सभी मुसलमान धोखेमें पड़े हुए हैं।

५१–तारीख मुहम्मदीके अनुसार–हदीसरोजतुलअहबावके पहले फ़स्लके अन्तमें मुहम्मद साहब कहते हैं––

اصلاب طيبة الى ارحام طاهرة

अर्थात् पवित्र पुरुषोंकी पीठोंसे पवित्र माताओंकी पेटोंमें मैं बहुत दिवसोंसे पड़ता चला आता हूँ।

मुहम्मद साहबका आवागमन––इस प्रकार बराबर होता चला आया है। मुहम्मदी इस प्रकार समझते हैं कि, आदमसे लेकर अबदुल्ला तक सब पिता प्रपितामह आपके पवित्र हों यह बात भी प्रमाणित नहीं होती। क्योंकि, आपके माता पिता पर महाकष्ट उपस्थित हुआ। यदि कोई विचार करे कि, आदमका वीर्य्य और मुहम्मदकी आत्मातक इसलाबतअबःसे अरहाम ताहिरामें नुक़ल करता चला आया है तो फिर यह हदीस ठीक न होगी :––

أَوَّلُ مَا خَلَقَ اللّٰهُ نُورِي

अर्थात् खुदाने सबसे पहले मुहम्मदके तेजको उत्पन्न किया ।

समीक्षा—यदि खुदाने सबसे पहलेही मुहम्मदके तेजको उत्पन्न किया होता तो आदमके वीर्य्यसे अबदुल्लाके वीर्यतक मुहम्मदकी आत्मा न आती। वरन् मुहम्मदहीका बीर्य तथा मुहम्मदकाही तेज समस्त संसारमें होता । क्योंकि, एकही शरीर तथा एकही प्राण समस्त संसारमें है। एकको छोड़कर दूसरेमें आत्माका प्रवेश करनेहीका नाम आवागमन है। लिखा गया है कि, खुदाने अपनी आत्माको आदममें फूंका । अतः खुदाकी आत्माने आदममें गमन किया । फिर मुहम्मदकी आत्मा खुदाकी आत्मासे पहले क्योंकर हो सकती है ।

५२ नरकमें देखा—मुहम्मद साहबके अनागतवक्ता होनेके तेरह वर्ष पीछे जब हजरतका मआराज (आकाशपर जाना) हुआ समस्त आकाशोंकी सैर करके जब आप फिर मक्केमें आये तब अबु-लहब हजरतजीके चचाने (तारीख मुहम्मदीके अनुसार) पूछा कि, तुमने अपने दादा अबदुल मतलबको कहाँ देखा, आपने उत्तर दिया कि, नरकमें देखा। यह बात सुनकर अबु-लहब जलमरा कि, मेरे पिताको यह नरकमें बताता है उसी दिनसे मुहम्मदका वैरी हो गया ।

समीक्षा—अब यहाँ पर विचारना तथा समझना चाहिये कि, जब मुहम्मद साहबने जाकर सब वैकुण्ठ तथा सब नरकोंको देखा तो सबको भरा पाया । वैकुण्ठके लोग वैकुण्ठमें और नरकके नरकमें थे। यदि कयामत (महाप्रलय) के पीछे लोग वैकुण्ठ तथा नरकको जाते तो वे सब स्थान भरे न होते । जब कि, कयामत (महाप्रलय) के पूर्वही नरक तथा वैकुण्ठको भरे तब कयामत (महाप्रलय) के दिनका हिसाब आज्ञानतासे करें। आवागमन अविश्रान्त प्रवाहित रहता है वैकुण्ठ नरक प्रत्येक समय तैयार रहता है ।

५३—मुहम्मदियोंकी कयामत (महाप्रलय) के स्थानोंमें अनेक प्रकारकी मूर्तियाँ दिखाई देंगी, जैसा जिसका स्वरूप है वैसीही योनि उनके लिये ठहराई गई है। इसी प्रकार उनका आवागमन होगा ।

५४—हदीसोंमें आया है कि, जब कयामत (महाप्रलय) में सब कुछ मिट जावेगा तब उसके पीछे अमृतस्रोत आकाशसे आवेगा। सब जीव पुनः जीवित हो जायेंगे। जितने जीव होंगे उतनेही छिद्र सब पृथ्वीपर होंगे समस्त छिद्रोंसे निकल निकलकर सब बाहर खड़े होंगे। कयामत (महाप्रलय) के

स्थानमें न्यायके लिये जावेंगे। हशर (महाप्रलय) गाह सदैवसे प्रचलित हो रहा है। पृथ्वीमें अनगिनती छिद्रसे तात्पर्य्य चौरासी लाख योनिसे है, अनगिनती योनि है सो सब भग है और आवहयात वीर्य है कि, यह आकाश अर्थात् ब्रह्माण्डसे उतरता है गर्भोमें प्रवेश करके स्वरूप बनाता है। पुरुष आकाश है तथा स्त्री पृथ्वी है जब आरम्भमें पुरुष आकाश तथा पृथ्वी स्त्रीका स्वरूप हुआ तब वीर्य गर्भमें जाकर एकसे अनेक स्वरूप हो गया प्रत्येक छिद्रसे समस्त जीव निकल पड़े। न्याय यही है कि, अपने भाग्यानुसार सबको दण्ड तथा सुख है।

५५—देखो कुरानका चौबीस सिपारा सूरय मोमन (४) रकूअ (४५-४६) आयत पर्यन्त लिखा है कि, फिर बचा लिया खुदाने मूसाको बुरे दावसे जो करते थे और उलट परी फिरऊनवालोंपर बुरी तरहकी विपत्ति। आग है कि, दिखा देती है उनको संध्यातक प्रातःकाल और जिस दिवस उठेगा कयामत (महाप्रलय) को प्रवेश करावेगा। फिरऊनवालोंको कठिनसे कठिन विपत्तिमें।

समीक्षा—कयामत (महाप्रलय) के पूर्व सहस्रों नरक तथा वैकुण्ठको जा चुके। सो बात पहले प्रमाणित हो गई। कयामत (महाप्रलय) की किसीको आवश्यकता नहीं रही। सकता की मृत्युको कब्रका कष्ट समझा गया। सुकर्म्मियोंको वैकुण्ठ तथा कुकर्म्मियोंको उस समय नरक दिखाई देता है। सब पुण्य फल तथा पापफल स्वप्नवत् बीत जाता है यह जीव अपने कर्म्मोंके अनुसार दुःख तथा सुखमें डाला जाता है। यहाँपर मैं मुसलमानोंकी प्रत्यक्ष गलती दिखाता हूँ। जो कोई सोचेगा समझेगा वो सुख पावेगा।

एक ब्रह्माण्ड है तथा दूसरा पिण्ड है। ब्रह्माण्ड तथा पिण्ड दोनोंका एक स्वरूप तथा एक अवस्था है, उसमें तनिक भी विभिन्नता नहीं, दोनोंके स्वरूपमें स्वरूप तथा एक अवस्था है, उसमें तनिकभी विभिन्नता नहीं, दोनोंके स्वरूपमें ब्रह्माण्ड पिण्डकी एकता है। सब पृथ्वीके तत्त्ववेत्तागण मानते हैं कि, पिण्ड तथा ब्रह्माण्ड दोनोंका एकही स्वरूप तथा अवस्था है। जब पिण्ड दोनोंका और ब्रह्माण्ड एकही स्वरूप तथा अवस्था है तो ब्रह्माण्ड तथा पिण्ड दोनोंको महाप्रलय भी एकही स्वरूपका होना चाहिये। अपने समयपर पिण्डका विनाश होता है अपने समयपर ब्रह्माण्ड नष्ट होता है। एकही स्वरूप नष्ट तथा स्थितिका है। पिण्डकी स्थिति थोड़ी है ब्रह्माण्डका वय अधिक है। दोनों अपने अपने आयुका दौरा पूरा करके नष्ट हो जाते हैं।

इस बातमें यहूदी ईसाई तथा मुसलमान सभी बहुत भूल करते हैं कि, पिण्डके विनाशको ब्रह्माण्डके विनाशके समयका हिसाब लगाते हैं। क्योंकि,

पिण्ड तो अब नष्ट हुआ उसके सुकर्म्म तथा कुकर्म्मका हिसाब ब्रह्मांडके विनाश-कालमें होगा । जब पिंडका प्रलय हुआ तब उसी समय उसका हिसाब किताब हो गया । जब ब्रह्मांडका प्रलय होगा तब भी सबका भलीप्रकार हिसाब होगा। सब जीव अपने कर्म्मोंके साथ परलोकमें दूसरी उत्पत्ति तक रखे जावेंगे, जिसको मृत्युका सकता कहते हैं मुसलमान लोग उसीको कब्रका दुःख कहते हैं । वह जो यथार्थ बात है उसको भूलकर महम्मदी हदीसोंके लिखनेवाले भाँति भाँतिकी बातें बनाते हैं । कहते हैं कि, जब मनुष्य मर जाता है तब फरिश्ते उसको खुदाके समीप ले जाते हैं वहाँसे भले बुरेका चिन्ह लेकर फिर उसको कब्रमें ला रखते हैं । यह सब भूल है वे यथार्थ तात्पर्यको न समझकर बातको दूसरे ढङ्गसे कहते हैं । यदि ज्ञानकी स्वच्छता होती तो ऐसी त्रुटी भी न होती । यह क्या बात है कि, रोगी तो मर गया पर उसका कफन दफन सहस्र अथवा लाख बरसके उपरान्त किया जावे । अवश्य ही उसका हिसाब उसी समय होगा ।

५६––कुरान तथा हदीसोंसे प्रगट है कि, जब महाप्रलय हो चुकेगा तो इसके पीछे सबकी भलाई बुराईको तराजूपर धरकर तौलेंगे, प्रत्येक मनुष्य अपनी अपनी भलाई बुराईके अनुसार फल पावेगा । जिसका पुण्य अधिक होगा वह वैकुण्ठको एवं जिसकी बुराई अधिक होगी वह नरकको जावेगा, जिसकी भलाई-बुराई समान होगी वह मध्यमें जावेगा । मुसलमान लोग नरक तथा वैकुण्ठका वृत्तान्त जैसा उनको कहना आता है वह कहते हैं । वैकुण्ठ तथा नरकके मध्य स्थानको स्पष्ट नहीं कहते । क्योंकि, इस स्थानको पृथिवी कहते हैं । जहाँ पर जीव देह धरता है भाँति भाँति की योनिमें आवागमन किया करता है । पृथिवी आकाश और नरकवासी सब आवागमनमें संलग्न हैं कोई भी इससे बरी नहीं है ।

५७ बच्चेकी उत्पत्ति––प्रदारजुलनबीअत और तफसीर जलाली इत्यादिमें लिखा है कि, जब बच्चा गर्भमें आता है तब फरिश्ते आत्माको लाकर बच्चेकी मूर्तिमें डाल देते हैं जब यह बालक मातृगर्भसे बहिर्गत होता है तब हँसता है रोता है । जबतक यह बालक अनजान रहता है तबतक उसको वैकुण्ठके सुख दिखाई दिया करते हैं उनको देख देखकर वह हर्षित होता हुआ हँसता है । उसकी दृष्टिसे विलुप्त होनेके पीछे रोता है यह अपनी माताके गर्भसे बहिर्गत होता है उसको संसारकी बुराई तथा पाप घेर लेते हैं वैकुण्ठके पदार्थोंसे परदा हो जाता है । अन्त पूर्णतया अन्धकार घेर लेता है । फिर यह योग्य अवस्थाको प्राप्त कर जप तप करता है जैसी इसकी भक्ति होती है वैसाही प्रकाश प्राप्त कर लेता है ।

समीक्षा—यहाँ विचारना उचित है कि, वही भोला बालक आदम था जबतक वह अनजान था यानी अत्यंत मूर्खताकी अवस्थाको अनजान जानना उचित है तब उसके लिये वैकुण्ठके सुख प्राप्त थे। वस्तुतः वैकुण्ठ, नरक, भय, चिन्ता, सुख, दुःख सब मूर्खोंके लिये हैं, बुद्धिमानोंके लिये नहीं हैं। बुद्धिमान तो वैकुण्ठ, नरक, दुःख, सुख सबको तुच्छ समझते हैं। वैकुण्ठ तथा नरकके दुःख सुखको यह आत्मा पूर्वसे ही जाननेवाली है। यदि यह पूर्वकर्म्मोंसे पवित्र होता तो ऐसा न होता यह बच्चा जितने कार्य्य करता है वे उसके पूर्वकर्म्मोंसे सम्बन्ध रखते हैं इसने पूर्व जन्ममें देह धरकर अवश्यही कर्म्म किये हैं। सब कर्म्मोंका जाननेवाला और कर्ता है। कोई जीव पशुओंमें हँसना नहीं जानता है। पर जब आत्मा मनुष्यका जामा (शरीर) पहनती है, तब उसको हँसने तथा रोनेका ज्ञान होता है। क्योंकि, उसको जब वैकुण्ठके सुख दिखाई देते हैं तब यह हँसता है, जब अन्तर्धान होते हैं तब यह रोता है। अन्यान्य पशु इस कार्यसे वञ्चित हैं। कहीं कहीं पुस्तकोंमें लिखा है कि, आदम अज्ञानावस्थामें हँसना नहीं जानता था पर जबसे उसने आज्ञा भङ्गकी तबसे उसको हँसना आया। इसका कारण यह है कि, आदम पहला आदमी था अनेक समयतक निर्जीव पदार्थ पत्थर इत्यादिके समान परलोकमें रह आया। हँसना रोना सब भूल गया था। इस कारण आदममें और आदमके बच्चोंमें इतना ही अन्तर है। क्योंकि आदम अनेक कालतक गतिविहीन पड़ा रहा। जब संसारमें आया तब अन्यान्य आदमजादोंके समान दुःख भी न पाया था। क्योंकि, हँसना और रोना भूल गया था। पर जब इसको शैतान गुरु मिला तब तुरन्त ही उसको सब विद्याओंकी सुधि हो गई। उसके पूर्वजन्मके सब कर्म्म प्रगट हो गये। यद्यपि बच्चा मूर्खता तथा आज्ञानावस्थासे अनजान कहलाता है पर उसके पूर्व्वकर्म्मके सब चिह्न उसमें प्रगट हो जाते हैं।

जो कहते हैं कि, फरिश्ते वैकुण्ठसे आत्मा लाकर मातृगर्भके पुतलेमें डाल देते हैं इसमें इतनी विभिन्नता है कि, मृत्युके पीछे आत्मा ऊपरको चढती है ऊपरसे फिर किसी भोजन द्वारा जीवके वीर्य्य पथसे गर्भमें प्रवेश करती है। इस पर केवल इतना कहता है कि, क्या मनुष्य तथा पशुके वीर्य्यका एकही ढङ्ग है? सबकी उत्पत्ति एकही स्वरूपसे हुआ करती है? तनिक भी विभिन्नता नहीं? क्या केवल मनुष्यकी ही आत्मा वैकुण्ठसे लाई जाती है कि, सब जीवोंकी? क्या वीर्य्यको केवल शरीर बनानेकी सामर्थ्य है, रूह डालने का नहीं है? वीर्य्य आत्मासे रहित नहीं। क्योंकि कबीर साहबका कथन है: चाममें माँस है

मांसमें हाड़ है, हाडमें गूद है, गूदमें बिन्द है, बिन्दमें पौन है, पौनमें प्राण है, पौन और प्राण क्या भिन्न गाइ ।

अतः वीर्य्यके साथ आत्मा है, आत्माके साथ उसके कर्म्म हैं । यदि वीर्य्यमें प्राण न होता तो उससे किसी वस्तुकी उत्पत्ति न होती । यदि आत्मा किसी और स्थानसे लाकर मातृगर्भमें डाला जाता तो शरीर भी किसा और स्थानसे लाकर स्त्रीके पेटमें रखा जाता । यह नहीं कि, आत्मा तो बैकुण्ठसे लाई जावे शरीर आपसे आप पेटमें बन जावे ।

५८ जिन्नका सर्प होना—मदारजुलनबोवतमें कहा है कि, जिन्न जब होता है तब अपना यथार्थ स्वरूप छोडकर सर्प बन जाता है। जब उसके आयुका दौरा पूरा होजाता है तब सर्पकी देहमें गमन करता है । उसका चिह्न यह है कि, जब सापको मारते हैं उस समय ध्यान करना चाहिये कि, जिस सर्पके शरीरसे रक्त निकल उसकी जिन्न समझना चाहिये । जिसमें जलके स्वरूप कुछ पीला पीला या जल निकल उसको यथार्थ सर्प जानना उचित है । जिन्न तो आवागमन करे पर मनुष्य बिना आवागमनकेही रहे इस बातमें कोई विशेष प्रमाण दिखाई नहीं देता ।

५९ लौहमहफूजपर भाग्य—मुसलमानोंका विश्वास है कि, सब मनुष्योंका भाग्य पहलेसेही लौहमहफूजपर लिखा है। वह लौहमहफूज आकाशपर है दूसरी रवायतमें है कि, प्रत्येक मनुष्यके लिये पृथक् पृथक् लौहमहफूज है । फिर कहते हैं कि, सबके लिये एकही पुलसरात है। दूसरी रवायतम है कि, प्रत्येक मनुष्यके लिये पृथक् पृथक् पुलसरात है । ऐसेही कहा है कि, सबके लिये एकही तराजू है जिस पर सबकी भलाई बुराई तौली जायगी; फिर दूसरी रवायतमें लिखा है कि, प्रत्येकके लिये पृथक् २ तराजू हैं । ये सब बातें अविद्याके कारण हैं कि कहने तथा समझनेमें लोगोंकी स्पष्टता नहीं । यह मैं पूर्वमें ही लिख आया हूँ कि, पिण्ड तथा ब्रह्माण्ड दोनोंमें एकही बात है, कुछ विभिन्नता नहीं । यह कुछ कहा नहीं जाता कि, ब्रह्माण्ड पिण्ड हो गया कि, पिण्ड ब्रह्माण्ड होगया । आकाश तथा पृथ्वी दोनों स्त्री और पुरुष होगये हैं इनसे समस्त संसारकी रचना हुई है यह दोनों दो हैं अथवा एक ? यह कौन कह सके वह लौहमहफूज कहनेको दो है वही दुबिधा तथा धोखा है जो मायाका खेल है उसे कौन पहचान सकेगा, पूर्वजन्मके सब चिन्ह मनुष्योंके शरीरसे दिखाई देते हैं यही लौहमहफूज है । जैसा कि मै प्रथम लिख आया हूँ यह हृदय बुद्धिके समीप है बुद्धि आत्माके समीप है । आत्मलाभसे सब लाभ है । मनुष्य देह पाकर यदि अपनी मुक्तिका उपाय

न करे तो वह बड़ा अभागा है। ऐसा समय फिर कभी हाथ न लगेगा। इस मनुष्य देहके समान और कौन पदार्थ है? यदि इस शरीरमें चूका तो फिर लगातार आवागमन करताही रहेगा बहुत समयतक छुटकारा न होगा।

६० जीवोंका आनंत्य—आत्माके विषयमें मुहम्मदी इस प्रकार कहते हैं कि, खुदाने अनगिनती रूहें बनाई हैं यह बात कुछ कही नहीं जाती कि, एक है अथवा अनगिनती। इसका मकान तथा लामकान कहना उचित नहीं। वह एक है और अनेक भी है। उसके विवरणमें जिह्वा गूँगी है। मनुष्य हो अथवा देवता किसीमें कुछ कहनेकी सामर्थ्य नहीं है। यह बात समझना चाहिये कि, पहले केवल एक आदम था। इससे अनगिनती आदम हो गये। वह आदम न विभक्त हुआ न कुछ कम हुआ एक बीजसे वृक्ष उत्पन्न हुआ अनगिनती बीज तथा वृक्ष उत्पन्न हो गये। इस कारण मैं एक उदाहरण लिखता हूँ।

संन्यासीका उदाहरण—एक संन्यासी अपने योगबलसे अपनी आत्माको शरीरसे बाहर निकाल दूसरे शरीरमें प्रवेश करके अपनानाम जलदत्त रखा। एक समय वह जलदत्त सोया पड़ा था,। उसने उस समय स्वप्नमें देखा कि, एक नगरमें गया वहाँ मैं मदिरा पीकर मदमस्त हुआ। फिर उस स्वप्नावस्थामें गया फिर उसी स्वप्नावस्थामेंही दूसरा स्वप्न देखा कि, मैं एक परगनेका रईस हूँ उस शरीरके स्वप्नमें और स्वप्न देखा कि, मैं एक देशका राजा होगया हूँ फिर उस स्वप्नमें और एक स्वप्न देखा कि, अब मैं स्त्री होगया हूँ एक देवताकी पत्नी हूँ। फिर उस शरीरके स्वप्नकी अवस्थामें स्वप्न देखा कि, मैं हिरणीकी देहमें हूँ। उस हिरणकी देहमें और स्वप्न देखा कि, अब मैं लता हो गया हूँ और लता होकर एक वृक्षकी डालसे लपट रहा हूँ। फिर मैंने उस लताके शरीरमें और स्वप्न देखा कि, अब मैं जम्बूर (चिऊटी) हो एक कमलके पुष्पसे लपट रहा हूँ। उस देहमें स्वप्न देखा कि, अब मैं हाथी होकर ब्रह्माजीकी सवारीमें हूँ। ब्रह्मा मुझपर सवार होकर महादेवके भेंटके लिये गये हैं। जब मैं महादेवकी सभामें गया तब महादेवके दर्शनके प्रभावसे मुझको ज्ञान हो गया और फिर मैंने उस हाथीकी देहमें जो स्वप्न देखा तो मैं क्या देखता हूँ कि, मैं महादेव हो गया। फिर मैंने अपनेको बहुत बड़ा ज्ञानी पाया जब मैं ज्ञानी हो गया तब मुझको अपने सब आवागमन याद आये तब मैं अपनी पहली देहके पास जो संन्यासीकी थी गया। उस संन्यासीको सोतेसे जगाया, वह संन्यासी उठ खड़ा हुआ और अपने जाग्रत अवस्थाका सब कार्य्य करने लगा। फिर जलदत्तको जगाया। वह भी जागकर अपना सब कार्य्य करने लगा। रईसकी देहको सोतेसे जगाया

वह भी उठ खड़ा हुआ । फिर राजाकी देहको जीवित कर दिया और वह भी उठकर निजकार्य्यमें संलग्न हुआ । इसी प्रकार इस संन्यासीने अपनी सब देहोंको जगाया । उसने ज्ञानी होकर अपनी सारी देहोंको जीवित किया और अपना सारा समाचार कह सुनाया । प्रथम वह एक संन्यासी था । फिर कितनी जुदी २ मूर्तियाँ भाँति भाँतिके स्वरूप बन गये । एकही शरीर और एक आत्मासे कितनी अनगिनती और भांति भांतिके बहुतर शरीर तथा आत्मायें बन गईं । उसी समय उसी घड़ीसे अनेक हो गये । न बहुतेरे शरीर परमेश्वरने उत्पन्न किये थे न बहुतसी आत्मायेंही की थी, इस कारण एक और अनेक कुछ कहाही नहीं जाता । एक भी है और अनेक भी है । ब्रह्मज्ञानीको अधिकार है कि जैसा स्वरूप चाहे स्वीकार करले । अब जानना चाहिये कि, जिसने यह संसार उत्पन्न किया, वह भी एक बड़ा ज्ञानी है ।

उस संन्यासीका गुरु शिव था और उसका ध्यान शिवमें था । अंतको परिणाम यह हुआ कि, वह स्वयम् शिव हो गया । यही परमेश्वर है यही सेवक है । ज्ञानकी अवस्था परमेश्वरी की है अज्ञानी होकर दास हो रहा है । जैसे मैंने पहले राजा विपश्चित्का उदाहरण लिखा था, वैसेही यह उदाहरण संन्यासी और महादेवका है । वैसाही अग्नि देवता और पूर्वोक्त राजाकी अवस्थाको जानना चाहिये । जो कोई जिस देवताकी भक्ति करता है, अन्तको वही हो जाता है । स्वप्नवत् यह आवागमन करता जाता है । सिद्ध साधु तथा सामान्य आदि सभी आवागमनमें फँसे हुये हैं, किसीको कभी छुटकारा नहीं मिलता है ।

स्वप्नकी देह--सन् १८४२ ई० में जब मैं काशी नगरीमें था वहाँके मनुष्योंमें एक ऐसा रोग हुआ कि, कोई कोई रातको खा पीकर अपने पलंगपर लेटे जब सबेरा हुआ तब मुरदा पाये गये । ग्रंथोंमें यह बात विशेष विवरणके साथ लिखी गयी है कि, जो रातको सोता है यदि देरतक उसको स्वप्न आता है बहुत देरतक उसी स्वप्नको देखता रहता है तब उसका वह शरीर छूट जाता है । स्वप्नवाली देह ठीक हो जाती है । उसके स्वप्नमें साथ जो देह थी वही सूक्ष्म शरीर स्थूल होकर जाग पड़ती है । उसका प्रथम शरीर मृतक तथा निर्जीव हो जाती है । इस प्रकार सूक्ष्मसे स्थूल तथा स्थूलसे सूक्ष्म हो जाता है । जिसको वेद पुराणोंमें आधिभौतिक अन्तर्वाहक देह कहा है ।

६१ मनशूरका सम्स तबरेज और बल्लेशाह होना--- मुसलमानोंके फकीर स्पष्ट कहते हैं कि, जो मनशूर था वही शम्स तबरेज हुआ जो शम्सतबरेज़ था वही सरमद हुआ जो सरमद था वही बुल्लेशाह हुआ ।

६२ भूल—— मुहम्मदियोंका ऐसा विश्वास है कि, एक बार उत्पन्न होकर करोगे, मरकर फिर जीवित होगे, फिर कभी न मरोगे। इससे वे महाप्रलयके जीवनको समझते हैं। वो बात नहीं बरन् यह परमेश्वरमें लीन हो जानेकी बात है।

६३——बहुतेरे महम्मदी अज्ञानतावश समझते हैं कि, मुझे निर्दोषकी परमेश्वरने नरको बनाया। अथवा कष्टोंमें फँसाया।

अमीर खुसरू

न्याव न कीन कीन ठकुराई। विन कीने लिखि दीन वुराई।

मौलवी रूम

हफ्तसद हफ्ताद कालिब दीदः अम्।
बारहा चूँ सबजये रुईदः अम्॥
मग्ज कुरआँ अज जहाँ बरदाश्तम्।
उस्तख्वाँ पेशे सगां अन्दा खतम्॥

अर्थात् सात सौ सत्तर देह मैंने धरी, अनेक बार घास पातके सदृश जमा। कुरानका सार मैंने लिया, उसकी हड्डी (निःसार) कुत्तोंके सामने डालदी

६४——सयद भषशाहका वचन——

लख चौरासी बेलि लगाई। बेलि भरम भूलो मत भाई॥

६५——इमाम जाफर साहिब——हयातुलकलूबमें लिखा है हजरत इमाम जाफर साहबने फरमाया है कि, जब खुदाने जिबरईल इत्यादिको पृथ्वी पर मिट्टी लेनेको भेजा जिसमें कि, वह आदमकी प्रतिमा बनावे, उस समय पृथ्वी रोई चिल्लाई, क्योंकि, पृथ्वी अत्यन्त प्राचीन है इससे मनुष्योंके कुकर्म्मोंको सदैवसे जानती है। नहीं तो यह पृथ्वी कदापि रोती चिल्लाती नहीं। मनुष्यों-के कुकर्म्मोंको यह जानती है।

६६ आदम और बैलकी बात—— हदीसोंमें आया है कि, जब हजरत आदमको खुदाने वैकुण्ठसे निकाल दिया। इसके पीछे जिबराईलको भेजा कि, आदमको हल जोतना सिखलावे वैसाही हुआ। आदमने बैलको एक डण्डा मारा। बैलने कहा कि तू मुझको निर्दोषको क्यों मारता है? तू स्वयम् दोषी है। इससे प्रगट हुआ कि, मनुष्यमें पशु तथा पशुमें मनुष्य गमन कर रहा है। दोनोंमें एक, आत्मा है।

मसी हुद्दज्जाल।

६७——लिखा है कि, महाप्रलयके पूर्व मसीहुद्दज्जाल प्रगट होगा।

उसका स्वरूप ऐसा होगा कि, उसका मूंह मनुष्यकासा और शिरपर गायकी सीगें होंगी, उसकी गायकी पूछ, घोड़ेकी गरदन, चीतेकी पीठ, हरिणकापेट, बन्दरके हाथ, ऊँटके पाँव होंगे और उसके एक हाथमें सुलमानकी अगूठी तथा दूसरे हाथमें मूसाका डण्डा होगा। जिसको वह मूसाका सोटा छुलावेगा उसी समय उसका स्वरूप वैकुण्ठवासियोंकासा हो जायगा, जिसके माथेपर सुलेमानकी अँगूठीका चिन्ह कर देगा उसी समय वह नरकका हो जावेगा। इस स्वरूपको मसीहुद्दज्जाल और दाबतुलअरज भी कहते हैं। प्रगट हुआ कि इस दाबतुलअरजमें खुदा गमन कर रहा है। नहीं तो उसको ऐसी शक्ति न हो तो यदि खुदा उसमें पैठा न होता तो यह बल तथा सामर्थ्य कहां हो सकता था?

६८—महाप्रलयका समाचार जड़ तथा चैतन्य सब कहेंगे। इसी कारण जड़में चैतन्य और चैतन्यमें जड़ गमन किया करता है।

६९- शैतानका नरक जाना—मुसलमान कहते हैं कि, शैतान धिक्कारके योग्य है। भला पहले तो खुदाने कहा था कि, मेरे अतिरिक्त किसीको दण्डवत न करना, फिर खुदाने मिट्टीके पुतलेको दण्डवत करनेको कहा। यह तो खुदाहीकी ओरसे अधिकता थी। यह भी मान लिया कि, खुदाई आज्ञाको मानना उचित था। पर यह भी लिखा है कि, लौहमहफूज पर जब शैतान गया तब वहां लिखा हुआ था कि, एक मनुष्य सत्तर सहस्र वर्षतक तपस्या करेगा, अन्तमें वह नरकमें जायगा। शैतान सहस्र वर्ष तक रोता रहा तो भी नरकमें गया। उसकी कोई युक्ति काम न आई।

मुसद्दस—छः लाख बरस बन्दगी में दिल जो दिया था।
उस्ताद बदोनेक हयाते आब पिया था॥
सालह वही इबलीसलकब दोनों लिया था।
लाहासिल रोना सदहा तोबा किया था॥
यह देखिले अब अगले करम जीवके जागे।
तदबीर नहीं चलती है तकदीर के आगे॥
आदमसे कहे आदि पुरुष मानलै फरमान।
हो जाबिता बाहोश व रख साबित ईमान॥
एकरार खबरदार अदो तेरा है शैतान।
बेसूद हुआ पन्द जो दुख द्वन्द घेरे आन॥
दिन आधे ही आदम सो अदन छोड़के भागे।
तद्बीर नहीं चलती है तकदीरके आगे॥

शद्दाद व नमरूद खुदा खुदको बताई ।
दशकंधर दुर्योधन को सीख सिखाई ॥
इबराहीमने सिखलाने में औकात गँवाई ।
मूसा की नसीहत फिरऊन फहम न आई ॥
टूटे न किसी हाल करम कालके धागे ।
तदबीर नहीं चलती है तकदीर के आगे ॥
दरगह से हुआ चोर करम डोर का बंधा ।
यम बन्द पड़ा है विषयानन्द यह अन्धा ॥
जाने नहिं करता आज़िज जीव जो बंधा ॥
हो पार निराधार शब्द सारके संधा ॥
पस होगये तापस मूँड्या मौन व नागे ।
तदबीर नहीं चलती है तकदीर के आगे ॥

आवागमननेही तक़दीर ठहराया है और दूसरे किसीने नहीं ।

७०—जैसा कि, मैं पहले समाचारोंके अनुसार लिख आया हूँ कि, सब रूहें मुहम्मदकी आत्माके गिर्द घूमा करती थीं । कारण यह कि, कबीर साहबके कथनानुसार मुहम्मद महादेवका औतार है । महादेव तमोगुण है, तमोगुणसे समस्त संसारकी उत्पत्ति है । सब तमोगुणसे बँधे हुये हैं सब तमोगुणको अपना राजा मानते हैं । इस कारण उसके चारों ओर फेरी करते हैं । वे अनगिनती जन्मोंसे बराबर आवागमन करते चले आते हैं । तमोगुण अर्थात् अन्धकार संसारका गुरु है ।

७१—वंचित रहनेका कारण— जब मुहम्मद साहबको पैगम्बरी मिली, तब आपके लिये खुदाकी ओरसे वही उतरा करती थी । उसके द्वारा आप कर्तव्याकर्तव्यकी बात बताते थे । इससे आवागमनका अंतर प्रकाश न रखते थे । सब पश्चिमी देशके पैगम्बर चार कारणसे आवागमनकी विद्याके जाननेके योग्य नहीं हो सके । उनके किसी पूर्व नबीको आवागमनका समाचार नहीं मिला और न कहा । इस कारण उनको इस बातका ध्यान भी नहीं हुआ । आवागमनके ज्ञान न होनेका कारण उनका मांस भोजन तथा मदिराका पीना था जो उनके मनमें प्रकाश नहीं होने देता था । मांसाहारियोंसे कठिन तपस्या तथा वासनादमन नहीं हो सकती । इस कारण वे आवागमनकी विद्या जाननेसे वञ्चित रहे ।

७२---चारवेद और किताबोंके सब विद्वान शरीयत, तरीकत, हकीकत, मारफतमें फँसे रहे। अल्प विद्या रखते थे इस कारण उनकी स्वच्छता नहीं हुई। आवागमनका ज्ञान हंसकी अवस्था बिना प्रगट नहीं होता। मनुष्यकी चारों अवस्थाएँ बन्धन हैं।

अचेतावस्था---सुतरां डाक्टर गोल्डस्मिथके एनिमेटेड नेचरमें लिखा है कि, एक विद्यार्थीको उसके शिक्षकने कठिन लेख लिखनेको दिया कि, उसको उसका लिखना कठिन हो गया। जब रातके समय अपने घर आया तब प्रदीप जलाकर लिखना चाहा। परन्तु वह इतना कठिन था कि, उसकी समझमें न आया तब विवश होकर सो गया। कुछ कालतक सोकर वह फिर उठा, लैम्प समीप रखकर उचितरूपसे लेख लिखकर फिर सोगया। जब सबेरे उठा तब अपना लेख भली प्रकार ठीक और अपने हस्ताक्षरमें लिखा देख बड़ा आश्चर्यान्वित हुआ। जब पाठशालामें गया तब उसने अपने शिक्षकसे कहा कि, मुझे बड़ा आश्चर्य है कि, मैंने तो इस लेखको लिखा नहीं था वरन् मैं अचेत होकर सो गया था, न जाने कौन मेरा यह लेख मेरे हस्ताक्षरमें लिख गया? क्या जाने कौन जिन्न या भूत लिख गया? यह बात सुनकर उसके शिक्षकको भी बड़ा आश्चर्य हुआ। चाहा कि, इस बातका यथार्थ जानें। उसने उस दिन और कठिन लेख लिखनेको दिया इसी प्रकार जब वह रातको अपने घर आया, बहुत सोच तथा चिन्ता करके विवश सोगया क्योंकि, उसको लिखना न आया इसी कारण सोगया अपने पलँगसे उठा। पूर्वानुसार उस लेखको अत्यन्त सावधानीसे लिखकर फिर सो गया। जब प्रातःकाल उठा तब वह लेख अपने हस्ताक्षर द्वारा लिखा हुआ पाकर अत्यन्त आश्चर्यान्वित हुआ। जब पाठशालामें गया तब अपने गुरुसे कहा कि, उसी प्रकार मेरा लेख रातको कोई मेरे हस्ताक्षरमें लिखकर चला गया है। उसका शिक्षक रातके समय उसके घरमें आकर छिप रहा। वह विद्यार्थी लैम्प आगे रखकर भलीप्रकार सोचने लगा, परन्तु उसके ध्यानमें कुछ नहीं आया कि, उस लेखको लिखें। अपने पलँगपर अचेत होकर सोगया। कुछ कालके पीछे पुनः अपने पलँगसे उठा। पूर्वानुसार लेख लिखके भली प्रकार प्रस्तुत करके फिर अपने पलँगपर सो गया। फिर सबेरे जब वह अपने पलँगसे उठा, उसके पहले उसका शिक्षक उस कमरेके बाहर निकल गया। वह विद्यार्थी अपना लेख उसी प्रकार लिखकर पाठशालामें गया। शिक्षकसे कहा कि, मेरी दशा तो पूर्वानुसारही हुई। न जाने मेरा लेख मेरे हस्ताक्षरमें कौन लिख जाता है। यह बात सुनकर उसके शिक्षकने कहा कि, ऐ लड़के! यह सब तेराही कार्य

है। अपने कार्य्योंसे आप अनभिज्ञ है इस कारण इसको तू दूसरेका लेख बताता है। तथा अज्ञानसे दूसरेका किया और लिखा हुआ जानता है।

यथा---उसी अंग्रेजी पुस्तकमें एक पादरीकी कहानी लिखी है। यह बात प्रसिद्ध थी ।क, वह पादरी सोते सोते बड़े बड़े आश्चर्य कौतुक किया करता था। एक दिवस गिरजाघरमें एक मुरदा स्त्री आई। उसके लिये यह पादरी प्रार्थना करने गया। वह पादरी प्लेटफार्म पर खड़ा होकर प्रार्थना करने लगा। प्रार्थना कर चुकनेके बाद उस स्त्रीको कब्रमें गाड़ने ले चले। उसने देखा कि उस स्त्रीके हाथमें एक अंगूठी थी। यह अंगूठी उस मुरदेके किस काम आवेगी, यदि निकाली जावे तो धर्म्मशालाके कामोंमें लगे। अपने मनमें यह सोचता हुआ पादरी तो धर्म्मशालामें गया, लोग उस स्त्रीको गाडकर चले गये। फिर वह पादरी जब सोगया तब थोड़ी देर पीछे उठ खड़ा हुआ। उठकर कबिरस्तानकी ओर चला, मुरदा स्त्रीकी कब्रपर पहुचा चाहा कि, कब्र खोदकर उस स्त्रीके हाथसे अंगूठी निकाल लूँ। लोगोंने उसको यह काम करते देखा तो पकड़ लिया कहा कि, ऐसा काम क्यों करते हो ? उसकी नींद टूटी वह जाग गया। अपनेको कब्र खोदता पाकर लज्जित हुआ कहा कि, मैं तो स्वप्नावस्थामें यह काम करता था। लोगोंको मालूम भी था कि, उसका स्वप्न वैसाही था।

एक दिवस उस मनुष्यने एक ऐसा घृणित कार्य्य किया जिससे उसे बड़ी लज्जा आई। उसने एक क्वारी लड़कीके साथ सम्भोग किया। लोगोंने उसको पकड़कर जज साहबके सामने खड़ा किया। उससे प्रश्नोत्तर होने लगा, उस समय उसकी निद्रा भङ्ग हुई। अपनेको जजके सामने खड़ा पाकर पूछने लगा कि, मुझको यहाँ कैदकर क्यों लाये हो ? मुझको तनिक भी सुधि नहीं। लोगोंने कहा कि, तू एक महाकुकर्म्मके दोषमें फँसा है। उसने कहा कि, मुझको सुधि नहीं। स्वप्नावस्थामें मुझसे यह कार्य्य हुआ है। मैंने इच्छापूर्वक नहीं किया है। जजने उसको स्वप्न स्थिति जाना। विदित होगया कि, इस पादरीके स्वप्न विचित्र हैं। उस पादरीने स्वप्नावस्थामेंही अनेकों पुस्तकें लिखी थी। उसके स्वप्नका हाल जानकर छोड़ दिया उसको किसी प्रकारका दण्ड नहीं दिया।

इसी प्रकार यह जीव चारों अवस्थाएँ जागृत, स्वप्न, सुषुप्ति और तुरियामें बँधा हुआ सब कार्य्य करता है। भूलकर अपने कार्य्योंको नहीं जानता। दास, स्वामी दोनों इन्हीं चारों अवस्थाओंमें फँसकर सब कार्य्य करते हैं भूल जाते हैं, यहीं कर्ता तथा कर्म्म होकर सब कौतुक कर रहा है, भ्रमसे दूसरा कर्ता मानता है। अपना कर्तव्य भूल गया है। जागृत अवस्थामें जो कुछ यह करता

है तब कुकर्म्म सुकर्म्मका हिसाब देता है पर स्वप्नावस्थाका हिसाब किताब नहीं होता। क्योंकि, मनुष्य जागृतवस्थामें अधिकृत है। इसीसे उसका लेखा होगा, पशु स्वप्नावस्थामें है इससे उनका हिसाब न होगा। ये चारों अवस्था जीवके भ्रम तथा अज्ञानको हैं। इन्हींमें बँधा हुआ यह आवागमन किया करता है। ईश्वर तथा जीव इन चारों अवस्थासे पृथक नहीं। पूर्वोक्त संन्यासी जब संन्यासी था तब भी चारों अवस्थामें फँसा था। जब वह बहुत बड़ा तपस्वी साधु तथा महादेवजी हो गया तब भी चारों अवस्थामें फँसाही रहा। इन चारों अवस्थासे जीव छूटा न शिव छूटा। पर वही छूटा जिसको स्वयम् सत्यगुरुने छुड़ाया। शेष सब आवागमनमें रहे। इन चारों अवस्थाकी विद्या अर्थात् सत्यज्ञान भूमिका और इन चारोंके सब कार्य्य, भ्रम तथा अज्ञानरूप उस विद्यार्थी तथा पादरीके समान हैं। यह कुछ करता नहीं और सब कुछ करता है। ज्ञानी वही है कि, जिसने भली भांति देख लिया और अन्तर दृष्टिसे जान लिया ।क, मैं कैसे करता हूँ और कैसे नहीं करता ? उसने अहंकार छोड़ दिया और जब अहंकारको छोड़ दिया तब सब कुछ छूट गया।

७३—आत्मा बादशाह है और चौरासी लाख यो।न उसका राज्य है। यह मणिमाणिक जड़े महलोंमें रहता है और कभी कभी उजाड़ जंगल तथा बयाबानमें जा बैठता है। स्थान परिवर्तनके निमित्त यह दूसरा कुछ कदापि नहीं बनता। जो हो यह वही, राज्य राज्येश्वर तेजोमय शाहंशाह है। जो मनुष्य, पशु, स्थावर, जंगल सबमें एकही आत्मारूप है। पशु मनुष्यसे किसी बातमें कम नहीं। केवल आकारोंकी विभिन्नता है। सब बात एकही हैं कुछ विभिन्नता नहीं।

७४ स्वाभाविक चेतना—प्राकृतिक नियम सब जीवोंमें समान रूपसे उपस्थित है, उसके लिये पिता तथा शिक्षकका कोई प्रयोजन नहीं है। जब बालक उत्पन्न होता है तो आपसे आप अपनी माताके स्तनोंको पकड़कर चूसने लग जाता है। आपही अपना करता है। सिखलाने तथा पढ़ानेकी कोई आवश्यकता नहीं होती। जिस योनिमें जाता है आपसे आप उस योनिका कार्य्य करने लग जाता है क्योंकि, यह सब योनियोंके स्वभाव तथा कर्म्मसे भली प्रकार अवगत है। सबका अनुभवी तथा अभ्यासी है। क्योंकि, सब योनियोंमें यह फिर चुका है। सबका जाननेवाला है। कुछ सिखाने पढ़ानेकी आवश्यकता नहीं रखता। सब जीव आपही आप वही गुण रखते हैं। पर चारों अवस्थाओंने उसको भुला दिया। स्त्रियोंको देखो कि, वह ऐसी मक्कारी (कपट) करती हैं। कि, पुरुषों-

को उल्लू बना देती हैं। कैसाही बुद्धिमान् और चतुर मनुष्य क्यों न हो पर त्रिया-चरित्र तथा इनकी धूर्ततताके आगे वह मूर्ख तथा अज्ञानके बराबर हैं। यह त्रिया-चरित्र संसारमें प्रख्यात है, इस कलाको सीखनेके लिये कौन पाठशाला कौन शास्त्र और कौन गुरु है? स्वयम्ही आपसे आप यह सब गुण उत्पन्न होते हैं। यह सबका जानने तथा देखनेवाला है। भाग्य प्रत्येकको अपने आप सिखा देता है। किसी शिक्षककी आवश्यकता नहीं रहती। सब जीव अपनी जातिकी बोली तथा इङ्गित चिन्होंको समझते हैं। पशु ऐसे ऐसे विचित्र कार्य्य करते हैं जिन्हें कि, देखकर मनुष्यकी बुद्धि चकराती है जैसे चीनके लोगोंकी बोली लेपलेण्डर और फारसीसियोंकी बोली हबशी नहीं समझते एक कूएँके मेढ़ककी बोली दूसरे कुएँका मेढ़क नहीं समझता इसी प्रकार सभी अपनी योनिके अनुरागी होते हैं उसी भाषाको समझते हैं दूसरीको नहीं जानते।

पुण्यपापके फलका संक्षेप।

७५—इस संसारमें जितने मनुष्य हैं, किसीका आकार किसीसे मेल नहीं रखता क्योंकि, सबसे पूर्वकर्म्म पृथक् पृथक् ढङ्गके बने हुये हैं। जैसा कि, कृष्णचन्द्र और कबीरसाहबने कहा है मनुसंहिता इत्यादिमें लिखा है जो कपड़ा चुरावे वो कोढ़ी होगा। घोड़ा चुरावे सो लंगड़ा हो। प्रदीप चुरावे वो अन्धा हो। जो अप्रतिष्ठा सहित प्रदीप बुझावे सो काना हो। जो जल चुरावे वो पन-डुब्बी हो। जो तेल चुरावे वो पतंग हो। जो हिरण चुरावे वो भेड़िया हो, जो फल चुरावे सो बन्दर हो। जो पंडितका धन चुरावे सो घड़ियाल हो, अपवाद लगानेसे मुँहमें दुर्गन्धि हो, रक्त चुरानेसे वनस्पती हो, दुराचारी मतका कीड़ा होता है। क्रोधित तथा बदला लेनेवाला मनुष्य शेर हो। बहुत भोजन करने-वाला मनुष्य सूअर हो। जो परस्त्रीके साथ गमन करे वह अन्धा हो। जो वेश्या गमन करे वह गदहा हो। जो दूसरेका धन लूटे वह भिखारी हो। जो मनुष्यका वध करे वह कोढ़ी हो। जो सुवर्णदान करे वह सुवर्ण पावे। जो पृथिवी दान करे वो हाथी घोड़ा पावे। जो अन्न दान करे तो मनुष्य देह पावे। जो किसीका ऋण लेकर चुकता न करे तो उसकी स्त्री मर जावे। जो मिष्टान्न दान करे वह स्वरूप-मान हो। जो गुरुकी सेवा करे वो पवित्र तथा स्वच्छ हो। जो कोई अपने आत्मीय स्वजनकी हत्या करे वह नशा खानेवाला हो। जो अपना उच्छिष्ट भोजन दूसरेको करावे वो कुत्ता बिल्ली हो। जो कोई अपनी विद्या दूसरे को न सिखावे वो बहरा हो। जो कोई गुप्त दान करे वह अपनी मनोकामना पावे। जो गायका दान करे वो पवित्र हो। तीर्थ स्थानसे उच्च घरानेमें जन्म ले।

ब्रह्मद्वेषी निःसन्तान हो । जो देवतोंकी निंदा करे वो रोगी हो । जो काशीमें मरे वो राजा हो । जो दूसरोंको विद्या पढ़ावे वो विद्वान हो । व्यभिचारिणी स्त्री निपूती हो । जो गर्भिणीके साथ सम्भोग करे वो नरकमें जावे । जो मदिरा पीवे सो मेंढ़क हो । जो तीर्थकी निंदा करे सो पिङ्गला हो । जो मास खावे वो राक्षस हो ।

इसी प्रकार सब जीव अपने पूर्वकर्मोंके अनुसार इस संसारमें वारंवार देह धर करके प्रगट होते हैं, उनका वैसाही आकार हो रहा है । इनके कर्म ही ने इनका स्वरूप बनाया है । अनगिनती जन्मोंके कर्म्म उनके साथ लगे हुए हैं वे ही उनका आकार बनाते हैं और वे ही उनके ईश्वर हैं ।

विचित्र आकार ।

७६—अब यहाँ मैं चौरासी लाख योनिके विचित्र विचित्र आकारोंको दिखाता हूँ । उनको देखकर जाना जायगा कि, मनुष्य क्या है ? पशु किसको कहते हैं ? यह सब मूर्तियाँ मनुष्य और पशु दोनोंही नहीं कही जा सकती । इनमें दोनों रङ्ग ढङ्ग पाये जाते हैं । अतः मानुषिक तथा पाशविक आत्मा कोई नहीं है, आत्मा तो एकही है पर कर्म्म चित्रकारने भाँति भाँतिके स्वरूप खींचे हैं । उनमेंसे कुछ जीवधारियोंका हाल यहाँ लिखा जाता है–

गजूवा—एक पक्षी है, उसका शरीर तो पक्षीकासा है और मुखड़ा मनुष्यका जैसा है । उसमें नर मादाकी पहचान नहीं होती । यह जानवर पवित्र समझा जाता है ॥ १ ॥

मनुष्यके शिरका सर्प—पर्वत अलियामें एक प्रकारका सर्प उत्पन्न होता है, उसका शिर मनुष्यका, सब शरीर सर्पकासा होता है ॥ २ ॥

संगपुस्त—सीतान् देशमें एक पक्षी उत्पन्न होता है उसको सङ्गपुश्त कहते हैं—उसका चेहरा आँख, नाक, मुँह, दाडी, मूंछ सब मनुष्यकासा होता है तथा बाकी सारा शरीर पक्षीकासा एवं पीठ पत्थरके समान कड़ी होती है ॥३॥

जल मनुष्य—एक टापूमें पानीके मनुष्य देखे गये । वे मेढ़कके समान तैरते फिरते थे, उनकी पूंछ गजभर लम्बी थी, उनकी दुमकी नोक, गुच्छेदार थी । इस प्रकार कहा जाता है कि, सौदागरोंका जहाज तूफानी चपेटमें कहींका कहीं चला गया, एक ऐसे टापूमें जा पहुँचा जहाँ उसे ऐसे मनुष्य मिले थे ॥ ४ ॥

मनकता—एक प्रकारकी मछली होती है, उसके देहके ऊपरका भाग अर्थात् कटिके ऊपर तो सुन्दरी स्त्रीकासा होता है, कटिके नीचे मछली कीसी होती है इसके सब शरीर पर बूंद होती हैं, उसके दो पर भी होते हैं ॥ ५ ॥

शेख यहूदी—एक पशुका नाम है, उसका चेहरा मनुष्योंकासा है, दाढी मूंछ आदि सब कुछ है, दो पर भी हैं उसके आकारसे ऐसा प्रतीत होता है कि, यह कोई श्रेष्ठ है ॥ ६ ॥

अजीबुलखिलकत्—पर्वत बुकीस पर एक पशु उत्पन्न होता है, यह बड़ा बलिष्ठ होता है। इसका चेहरा सुन्दर युवककासा होता है। इसके मूंछ दाढी कुछ नहीं है, इसके शिरपर गायकेसे दो सींगें हैं, बाकी शरीर शेरकासा है, कमर मोटी है, बाघकीसी पूंछ और दुमका सिरा गुच्छेदार है। उसकी पूंछमें तीन या चार जगहोंमें गिरह हैं वे काले हैं। उसके पिछले दोनों पाँव आदमीके, अगले दोनों पाँव बैलकेसे हैं, नीचेकी टाँगे ऊँटकीसी हैं, दो पर पक्षियोंके समान हैं ॥ ७ ॥

जिस समय नौशेरआँ बादशाहके राज्यका समय आया तब उसने ईरानी टापुओं तथा भूमिकी सनद बनाई। जब वह बना चुका तब उस नदीमेंसे एक विचित्र पशु उत्पन्न हुआ। उसने आवाज दी कहा कि, ऐ बादशाह! तू मेरे रूपका है इस कारण तेरी यह सनद बन गई। उस पशूकी गरदन चेहरा और सिर, सुन्दर नौयुबककासा था। दाढी मूंछ कुछ नहीं थीं। उसकी लटोंके घूंघरवाले सुन्दर बाल कंधेतक लटक रहे थे। उसकी पीठपर पक्षीके समान दो पर थे। उसका सारा शरीर शेर बबरके समान था, उसके चमड़े पर शेरकी तरह दाग थे, शेरकीसी उसकी पूंछपर पूंछका सिरा गुच्छेदार केवड़ेके फूलके समान था ॥ ८ ॥

उनका—कोहकाफमें जो जमुरदके रङ्गका पहाड़ है। वह समस्त संसारको घेरे है। उसपर एक पक्षी रहता है उसको उनका कहते हैं। यह पक्षी बड़ा बलिष्ठ है। इसकी ग्रीवा शिर और मुंह एक सुन्दरी स्त्रीकासा है। उसके शिरपर ऐसे पर रहते हैं मानों बादशाही मुकुट धरा है। शेष शरीरका भाग समस्त पक्षीके समान है। यह बृहत् पक्षी है। इसके शरीरमें अन्यान्य पक्षी अपना घोसला बनाया करते हैं ॥ ९ ॥

दो शिरके मनुष्य—एक पर्वतमें दो शिरके मनुष्य होते हैं ॥ १० ॥

छातीमें शिर—एक स्थानमें ऐसे मनुष्य हैं, जिनका शिर छातीमें होता है उस जगह नारियलके वृक्ष बहुत होते हैं ॥ ११ ॥

घुटनेके नीचे कान—एक स्थानमें ऐसे मनुष्य होते हैं, जिनका कान घुटनोंके नीचेतक पहुँचता है ॥ १२ ॥

श्वान मुख मनुष्य—सिकन्दर बादशाहने एक टापूमें इस प्रकारके मनुष्य

देखे थे, जिनका मुँह ताजी कुत्तेकासा था बाकी शरीर मनुष्योंकासा है ॥१३॥

अश्वमुख—एक प्रकारके मनुष्य हैं जिनका मुँह घोड़ेकासा और देह आदमीकी होती है ॥ १४ ॥

पचास गजका मनुष्य—सिकन्दर बादशाहने एक मनुष्य देखा जो पचास गज ऊँचा था। उसके शिरमें गायके समान दो सींगें थीं, वह मनुष्योंको पकड़ पकड़ कर खाता था। सिकन्दरशाहने उसको तीरोंसे मार डाला ॥ १५ ॥

एक टांगके मनुष्य—एक प्रकारके मनुष्य हैं कि, उनके एकही पाँव एकही हाथ एकही कान और एकही आँख है। मानों वे एक मनुष्यके आधे हैं। अनगिनती प्रकारके बिचित्र आकारवाले जीवधारी हैं। जिनके देखने सुनने से मानुषिक बुद्धि चकराती है। चौरासी योनिके जीवोंमें अनगिनती रङ्ग ढङ्ग हैं। सबका स्वरूप तथा स्वभाव न्यारा न्यारा है। इस सृष्टिकी सीमा नहीं। इसका वर्णन असम्भव है। परमेश्वरकी सृष्टि और उसके कौतुकका भेद कौन पा सकता है ? सारे जीव अपने पूर्व कर्म्मोंके अनुसार यहाँ वहाँ आवागमन कर रहे हैं। नाचते फिरते हैं बड़ा बाजीगर सबको नचाता फिरता है।

तात्पर्य—इन बातोंके लिखनेसे मेरा यह है कि बुद्धिमान लोग समझे बूझेंगे कि, मनुष्य किसको कहते हैं पशु कौन है। मनुष्यका केवल वही स्वरूप तथा स्वभाव है। जिसके द्वारा अपने यथार्थको जान ले, शेषके सारे पशु हैं। एकही आत्मा सबमें आवागमन करती है। केवल अपने कर्म्मों ने स्वरूप तथा स्वभाव बदल डाला है। मन वचन और कर्म्म करके जैसे कर्म्म जिस जीवसे होते हैं वैसेही स्वरूप और अवस्थामें पुनः देह धरकर प्रगट होते हैं। सहस्रों प्रकारके बन्दर मनुष्योंके रूपके हैं। जिनमें विवेक नहीं हो सकता कि, यह सब मनुष्य हैं अथवा बन्दर हैं। कितने मनुष्य जो जङ्गलोंमें रहते हैं वे बन्दर समझे जाते हैं परन्तु वास्तवमें वे मनुष्य हैं पर वे मनुष्यतासे पृथक् हैं। सहस्रों प्रकारकी मूर्तियाँ आधे मनुष्य तथा आधे पशु रूपमें हैं पृथिवी तथा आकाशोंमें भरी हुई हैं इस सृष्टिका अन्त नहीं है। देहोंका निर्माण भी कर्म्मोंनेही किया है इन सबके चित्र प्रथममें दिये हैं। पूर्वके उपदेशको निम्न लिखित नजममें कहते हैं—

जो देखे स्वसम्वेद सद्गुरु की साख। कहे आदमी योनि हैं चार लाख ॥
यह पहचान इनसानकी सारी जात। वही आदमी है जो हो बासिफात ॥
दरोग और बातिलका जिसमें तमीज़। वही आदमी हैं सो हरदिल अजीज़॥
वह सरताज हरजुमरेः खिलकत तमाम। इसीके लिये सारे दारुस्सलाम ॥
जो झूठ और सच जाने इनसाँ वही। हैं बाकी सो हैवान या अबलही ॥

जो ठगको बताये रहीमो करीम। नहीं आदमी सो अकीलो फहीम ॥
जो कस्साब घर भेड़ जावे अमान। तो गरदन पे छूरी चले वे गुमान ॥
वही सारे हैवान हैं सर बसर। न सद्गुरुके रुख होवे जिनकी नजर॥
किया जिन्दा जो आदमों और नूहको। दिया सारे जाँदारमें रूह को ॥
नहीं फर्क हैं दोनों की रूह में। जो पश्शा सोई आदमो नूहमें ॥
हुआ इंस पश्शाः पश्शा इनसाँ हुआ। हो सदबार पैदा व फिर फिर मुआ॥
यह हर योनिमें जा तना सुख करे। व अज करदये खेस पासख करे ॥
सभीमें वही गोश्त और खून है। वमै गोश होश आदमी योनि है ॥
कभी आदमी योनि फेरी करे। जो सद्गुरुकी पहचान देरी करे ॥
वह बद बख्त हैवाँसे बदशूम है। जो पहचानसे उसके महरूम है ॥
परख पावें उसको जो साहब दिमाग। तो बेशक हो रोशन दारूनी चिराग़।
यह तसवीर इनसान हैवानकी। परख लीजिये राह निरबानकी ॥

७७—निर्गमसे निर्धारण—यह पिण्ड तथा ब्रह्माण्ड दोनों अपने अपने कर्म्मों करकेही स्थिर हैं। समस्त संसार कर्म्म करकेही चक्कर खा रहा है अपने कर्म्मोंसेही एक योनि छोड़कर दूसरी योनिमें जाता आता है। कबीर साहबका वचन है कि, यदि नेत्रके मार्गसे प्राण निकले तो पक्षी हो। नाककी राहसे निकले तो मक्खी मच्छर इत्यादिमेंसे हो। कानके पथसे बाहर हो तो प्रेत भूत इत्यादि हो। मुँहके राहसे बाहर हो तो अनाज खानेवाला कोई जीव हो। यदि मूत्रमार्गसे प्राण निकले तो पानीका कोई जीव हो। मलमार्गसे निकले तो विष्ठा आदिका कीड़ा हो। यदि दसवें द्वारसे बाहर निकले तो बादशाह हो। यदि ग्यारहवें द्वारसे बाहर आवे तो परमधामको सिधारे फिर आवागमन न हो। दश द्वारोंकी सुधि सबको है, पर ग्यारहवें द्वारकी सुधि हंस कबीरके बिना और किसी दूसरेको नहीं है। इस प्रकार समस्त जीव कर्म्मोंके बन्धनसे खिंचे आवागमनमें रहा करते हैं।

७८—पशुसे मनुष्य और मनुष्यसे पशु—देवीभागवतके पाँचवें स्कंधके दूसरे अध्यायसे उन्नीसवें तक बराबर कथा लिखी है कि, रम्भ दैत्यने कामान्ध होकर एक भैंसके साथ सम्भोग किया उससे महिषासुर नामक दैत्य उत्पन्न हुआ। शृंगी ऋषि हरिणीसे उत्पन्न हुये। गोकर्ण गऊसे उत्पन्न हुये। इससे प्रमाणित है कि, अपने अपने पूर्वकर्मानुसारही आकार बनता है।

७९—भेदका कारण—भाग्यनेही इनको बुरा भला बनाया है, कोई धनाढ्य तो कोई दरिद्र है। कोई भला मोटा ताजा, कोई निर्बल तथा दुबला

पतला है। कोई सुखी और कोई दुःखी है। कोई अच्छी दशामें है, कोई दुर्दशाग्रस्त अवस्थामें पड़ा है। कोई तपस्वी तथा साधु है। कोई उचक्का लुच्चा पाजी बदमाश है। कोई कोमल कोई कठोर कोई भाग्यवान कोई महा अभागा कोई शान्त कोई क्रोधी कोई विशुद्ध और कोई कलुषित है। यदि पूर्व्वका कर्म्म न होता तो सबका एकही ढङ्ग होता।

८०—पाठशालामें एकही पिताके दो पुत्र एक साथ पढ़ने बैठे। एक तो पढ़कर शीघ्रही विद्वान हो गया। दूसरा कठिन परिश्रम करनेपर भी मूर्ख रह गया। उसका परिश्रम किसी काम न आया।

८१—यदि इस जीवने पहले कर्म्म नहीं किये थे तो उसके शरीर पर कर्म्मोंके चिन्ह किसने बनाये? भूखेको डकार नहीं आती। बिना कर्म्मके देहपर कर्म्मोंके चिन्ह नहीं बन सकते, बिना तेलके कभी दीपक भी जलता है? बिना तेलवाले पदार्थके तेल नहीं निकलता।

८२—ज्योतिषी वर्ष फल बनाकर भलाई बुराई सब कुछ पहलेसेही कह देते हैं। वैसाही सामुद्रिको शारीरिक चिन्हसे कहते हैं।

८३—यदि हमारे पूर्वके कार्य्य हमको न रोकते तो हम अपनी समस्त कामनायें पूर्ण कर लेते। हमको रोकनेवाला कोई नहीं था।

८४—यदि पहले कर्म न करते तो कर्म्मके बन्धनमें न फँसते।

८५—हम अपने भाग्यके दास हैं फिर परमेश्वर हमारी क्या भलाई बुराई कर सकता है। निर्गुण तथा सगुण कर्म्म बन्धनोंमें फँसकर दुःख सुख भोगा करते हैं। जो दुःख सुखसे पृथक् है वे ही कर्म्मोंके बन्धनमें नहीं आते।

८६—निरञ्जनने कर्म्मोंका जाल बनाया, आपही उसमें फँस गया जो कोई कर्म्मोंसे मुक्तको पहचाने वही मुक्त है। शेषके सब आवागमनमें हैं यही साधारण नियम है। निम्नलिखित कवितामें विस्तारके साथ यह निरूपण करते हैं कि, सबकाही आवागमन होता है उससे कोई बचा हुआ नहीं है।

मुखम्मस तर्जीअबन्द

बनी आदम व हैवां मोरो मलख। हैं करते योनि योनिमें तनासुख॥
सदा करते हैं कर्म अपने पासख। न इसमें शक है ऐ ईमान रासख॥

तनासुख देखता हूँ मैं तनासुख

वही ब्रह्मा वही चिउँटी हुआ है। हो सदहा बार पैदा फिर मुआ है॥
जिधर जावे तनासुखका कुआ है। वही माई वही खाला बुआ है॥ तना०॥

आवागमन।

हुआ इन्दर मुनिन्दर को न पाया । वजह है यह सो फिर योनि में आया ।।
कभी यह स्वर्गमें डेरा बनाया । रसातलमें कभी खेड़ा बसाया ।।तना०।।
कभी आदम कभी हो यह फरिस्ता । न हरगिज टूटता कर्मोंका रिश्ता ।।
अमर भी मर गये पाया न रस्ता । हुये गुरु ज्ञान बिन सब ख्वार खिस्ता ।।त०।।
कभी ईश्वर कभी कीड़े मकोड़े । भजन सुमिरनसे दिल अपना न जोड़े ।।
हुये सब नास्ति जो रह रास्त छोड़े । जो गोड़े ज्ञान यह मनुवा निगोड़े ।।तना०।।
जो करते सब जहाँ की बादशाही । हजारों लौंडिया लाखों सिपाही ।।
हुये जिस दम अदम आलमके राही । हुये सो बिलके चूहे जलके माँही ।।तना०।।
किया नेकी बदी ताना व बाना । पसारे कारगह पुर तीन अपना ।।
बुने कपडे लगा उनपर निशाना । पहन सब जीव पड़े यम कैदखाना ।।तना०।।
फरिश्ता आदमी हैवान हशरात । सभी जीव जो नबातातो जमादात ।।
गजब शहवत सभीमें सद खराफात । रहे आवागमनके फन्द दिन रात ।।तना०।।
सुना आदम फरिश्ता और न कोई भूत । गजब शहवतसे जिसका टूटा न हो सूत ।।
कुवें बाबिल लटक हारूतो मारूत । कि जोहरा इश्कसे जिनको लगी छूत।।त०।।
यह काम क्रोध लोभ और मोह जञ्जाल । पडे इस फन्दमें सबही बुरे हाल ।।
बना सारा इन्होंसे कर्म्मका जाल । न जाने रव हुये सब बे परो बाल।।त०।।
जलन्धर घर गये विष्णु विश्वंभर । हुये कर्मोंसे वह भी अपने पत्थर ।।
गणेशो शेष शारद गौरीशङ्कर । करमके फन्दमें फिरते हैं दर दर ।। त०।।
अवस्था चार जीवकी भरमना है । बुढ़ापा ज्वानी और बालकपना है ।।
फकीरी और गरीबी और फवा है । यह मुखिया सब दशा दुखिया बना है ।।त०।।
तनासुख जानिये ज्यों रैन सपना । भरमना भूलकर जीव रूप अपना ।।
हराई होवे जब सतनाम जपना । परस्तिश और में नाहक न खपना ।।त०।।
किया जप तप रहे सब ज्ञान खाली । चढी उनपर नहीं लालाकी लाली ।।
ऐ आजिज अपनी कर अब गोशमाली । वह छुटकारेकी बातें हैं निराली ।।त०।।

८७—यह तनासुख बिना पूर्ण प्रकाशके नहीं जाना जा सकता। जब तक भली प्रकार न विचारे तब तक इस प्रकाशके योग्य नहीं होता। शरीराभिमानमें सुधि नहीं हो सकती।

८८—पशुओंकी बुद्धि और चाल चातुरी, आवागमनको भली भांति प्रमाणित करती है। तनिक भी सन्देह नहीं रहता।

८९—हदीसोंमें है कि, अकाशोंमें फरिश्ते हैं जिनका स्वरूप भिन्न भिन्न प्रकारका है। कोई आधा बैल आधा मनुष्य, इसी प्रकार उनके अनगिनती

प्रकारके स्वरूप स्वभाव तथा रङ्ग ढङ्ग हैं जिनका वर्णन करना नितान्त कठिन है। वे सब अपने पूर्वकर्म्मोंसे ऐसे हैं। वो सब आवागमनका कारण है।

९०—खुदाने आदमीको अपने स्वरूपका बनाया है। यदि यह लद्दुनी विद्या पावे आप अपना स्वरूप पहचाननेका उद्योग करके विद्या उत्पन्न करे तो इसमें तथा परमेश्वरमें किसी प्रकारकी विभिन्नता नहीं रह जाती नहीं तो पशुवोंकी तरह यह भी आवागमनमें रहेगा।

९१—किदम तथा हदूस दो शब्द हैं। किदम परमेश्वरके लिये और हदूस संसारके लोगोंके लिये है। परमेश्वरकी स्थिति तथा संसारका विनाश है। इन दोनोंमें आत्मा क्या है। यदि हदीस है तो शरीरके साथ उसका विनाश है यदि शेष है तो परमेश्वर है दोनोंके बीचमें आवागमन है अथवा इन दोनोंके मध्यमें अज्ञान है उसीको आवागमन होता है।

९२—पुरुषार्थ और प्रारब्धका बड़ा झगड़ा चला आता है। वोही सब अज्ञानकाही कारण है। जब अन्तःकरण प्रकाशित हो भीतरी गुप्त भेदको देखले तो फिर आवागमन नहीं होता।

९३—महाबीर—जैन धर्म्ममें पुरुषार्थ और भाग्यका इसप्रकार उदाहरण सुना था कि, लोगोंने ऋषभनाथजी तीर्थकरसे पूछा कि, महाराज! आपके घरानेमें आपसा और भी कोई होगा? तब उन्होंने अपने पौत्र महाबीरनाथकी ओर सैन की कि, यह अन्तका तीर्थङ्कर होगा। यह बात सुनकर वह घमण्डी होकर कुचाली हो गया। इस कारण उसने कितनेही जन्म कीड़े मकोड़ेमें लिये बहुत दुःख पाया। कितने ही योनियोंमें मारे मारे फिरनेके पीछे अन्तमें तीर्थङ्कर हो गया। यदि पुण्य करता तो ऐसा न होता। इस कारण जो कोई अपनेको भाग्यवान् सुनकर पापका काम करेगा वह हीनावस्थामें पड़ेगा। यदि उत्तम भाग्यवाला शुभ पुरुषार्थ न करे तो नष्ट हो जावेगा।

९४—वैज्ञानिक—कमिस्टरी (रसायन) विद्याके ज्ञाता मिस्टर लाईपेक और मिस्टर बोसङ्गाल कहते हैं कि, जो पशुओंका मांस खाता है। वस्तुतः वही साग, पात, बेल, बूटा, आदि होता है। वह स्वरूप बदलकर दूसरी बेर खानेमें आता है। जिसके द्वारा इस जीवका शरीर पलता है। इस प्रमाणको मैंने मांसाहारके प्रकरणमें लिखा है। परन्तु यहाँ भी इसका लिखना आवश्यक हुआ। इन दोनों विद्वानोंका कथन भारतके ऋषीश्वरोंके ही कथनके अनुसार है। भारतके ऋषीश्वरोंने लिखा है कि, पापिष्ठी मनुष्य सुषुप्ति अवस्थामें जाते हैं, वह जड़ पदार्थोंकी है। जिनका मांस उन्होंने पूर्वजन्मोंमें खाया, वे साग पात होकर अपना बदला देते हैं। यही ठीक आवागमनका स्वरूप विद्वान् लोग प्रगट करते हैं।

९५—हाथी गोपालदास—भक्तमालमें लिखा है कि, रामानुजस्वामीके ऊपर एक राजाने रुष्ट होकर हाथी छोडा कि, आपको मार दे। जब वह स्वामी जीके समीप आया तो आपने उसका कान पकड़ कर कहा राम कृष्ण। वह हाथी स्वामीजीका शिष्य हो गया स्वामीजीके चरणों पर शिर झुकाके बैठ गया। राजा जब उसको अपने पीलखानेमें ले गया उस समय उसने दाना चारा छोड दिया पर रामानुज स्वामीके पास आनेपर दाना चारा खालिया। राजाने विवश होकर आज्ञा दी कि, इसको गरमी हो गई है इस कारण नदीमें गोता लगवाओ। उस हाथीका नाम स्वामीजीने गोपालदास रखा था। जब गोपालदासको राजाने नदीमें गोता दिया तो वह समझ गया कि, राजा मुझको बहुत दुःख देता है। उसने पानीमें गोता मारकर देह त्याग दी। जाना गया कि, गोपाल दास शरीरत्याग कर असहाब कहफके कुत्तोंकी तरह उत्तम अवस्थामें प्राप्त हुआ। असहाब कहफके कुत्तेसे गोपालदासकी मर्य्यादा कदापि कम नहीं वरन् अच्छी जानी जाती है। क्योंकि, उसने वैष्णव धर्म्म में आकर शरीर त्याग किया था यह भी बात है कि, जलके भीतर समाधि लगाकर देह छोड़ा, इस कारण उसका परिणाम अच्छा होगा।

९६—ग्यारहवां द्वार—कबीर साहब कहते हैं कि, दश द्वारका पता सबको है पर ग्यारहवां द्वार पारखगुरुकी दयासे मिलता है। दशद्वारेसे जब तक प्राण जाया करते हैं तब तक इसका आवागमन बन्द नहीं होता।

९७—मोक्षका अधिकारी स्वसंवेदमें कबीर साहबका कथन देखो उन्होंने कहा है कि, दो प्रकारके ज्ञान हैं एकको ज्ञान तथा दूसरेको जान कहते हैं। ज्ञान निर्विकार है और जान विकारी है। ज्ञानको स्थिति तथा जान का विनाश है। इन्हीं दोनों प्रकारके ज्ञानोंमें समस्त जीव हैं। जिसको ज्ञान हुआ वह तो निर्वाणको प्राप्त हुआ पर जिसमें जान है वह आवागमनमें है। इन दोनों ज्ञानोंका भेद पारख गुरु बिना दूसरा नहीं बता सकता, जितना कुछ कहा सुना जाता है वो सब मायाके घेरेके भीतर है वह सब जानके आधीन है। जब ज्ञानपर अँधेरा आ जाता है वह जान कहलाता है। जब स्वच्छ तथा निर्दोष है तब ज्ञान है। कोई सहस्रों युक्तियां क्यों न करे बिना स्वसंवेदकी शिक्षाके ज्ञान प्राप्ति की युक्ति हाथ न लगेगी।

लिखनेका कारण—यह थोडीसी बात जो मन लिखा वह आवागमनसे विमुखवालोंके लिये हैं। क्योंकि, आवागमनके न माननेसे अन्तःकरण अशुद्ध

हो जाता है जिससे वह ज्ञान नहीं होता कि, आत्मा किधरसे आती है कहां जाती है कहां रहती है । मैंने यहां थोडे ही प्रमाण इसके लिये लिखे हैं । जो ध्यानपूर्वक यहूदी, ईसाई और मुसलमानोंकी पुस्तकें देखेगा वो सहस्रों प्रमाण दे सकेगा । इस देशमें मुसलमानोंकी हदीस मिल सकती है । उनकी पुस्तकोंसे भली प्रकार आवागमन ऐसा प्रमाणित होगा जिससे तनिक भी सन्देह न रहेगा । जितना हम लिख चुके हैं वही उनके धर्म्मग्रन्थोंसे आवागमन सिद्ध करनेके लिये पर्य्याप्त है । किन्तु जागते हुये सोनेवालोंको कोई जगाने वाला भी नहीं है ।

अध्याय १९.

जानवर ।

अब विचारना चाहिये कि, आत्माका स्वरूप कैसा है जो चौरासी लाख योनिमें आवागमन करती हुई समस्त स्थानोंपर वर्तमान है । उसका स्वरूप बतानेमें भी असमर्थ है । वह कहने सुनने और देखनेमें नहीं जाती । मनुष्य तथा पशुके पास जितने यन्त्र हैं उनसे वह कभी पकड़ी भी नहीं जा सकती । वही सबमें है तनिक विभिन्नता भी नहीं है । सबको एकसा दुःख सुख हो रहा है । पर जिसमें बुद्धि है जो सत्य मिथ्याको पहचान, झूठसे अलग होकर सत्य धारण करता है वही मनुष्य है वाकी सब मनुष्य हों या पशु, पशुसमान ही हैं । पशु मनुष्योंसे किसी विषयमें भी कम नहीं है इसी कारण मैं यहाँ पशुवोंकी बुद्धिके विषयमें कुछ लिखता हूँ ।

बन्दर

अब मैं पशुवोंमें पहले बन्दरका हाल लिखता हूं । बन्दर मनुष्यके स्वरूपके होते हैं । उनका सब ढङ्ग मानुषिक होता है, इसी कारण उसे वानर यानी विकल्पसे मनुष्य कहते हैं पर उनके पाँवके अँगूठे उँगलियोंके सदृश होते हैं उनकी एढ़ी बहुत छोटी होती है उनका सब आकार मनुष्योंकासा होता है । वे मनुष्योंकी सब नकल कर सकते हैं । वे नाना प्रकारके होते हैं । यहाँ बन्दरोंकी बुद्धि की कुछ कहानियाँ लिखता हूँ ।

चोर पकड़नेवाला बन्दर—पञ्जाब फीरोजपुर धर्मकोट गाँव के समीप मैंने सुना था कि, एक कलन्दर चला जाता था । उसके पास तीन चार बन्दर थे । कुछ जमा जथा भी था । उसी लालचसे उजाड़में उसको तीन चार चोरोंने घेर लिया, मारकर सब असबाब छीन उसके बन्दरोंको भी मार डाला पर उनमेंसे एक बन्दर बच निकला । वह भागकर एक वृक्षपर चढ़ गया । चोरोंने

कलन्दर और बन्दरोंको मिट्टीमें दबा सब माल असबाब लेकर अपनी राह ली। उनके हाथसे बचा हुआ वह बन्दर चोरोंके चले जानेपर वृक्षसे उतरा। चुपचाप दूर दूर तीनों चोरोंके पीछे २ चला गया। वे तीनों अपने गाँवमें पहुँच घर दाखिल हुये। तब उसने उस गाँवको भलीप्रकार पहचान लिया। उसकी राहपर अपने हाथसे चिह्न करता हुआ लट आया। वह बन्दर तहसीलदारके पास पहुँचा। तहसीलदारसे अपने हाथ और सिरसे इशारा करने लगा। तहसीलदारने बन्दरके इशारेसे बन्दरको दुःखी समझ चपरासियोंको आज्ञा दी कि, तुम बन्दरके साथ जाके देखो कि, वह क्या चाहता है। तहसीलदारने चपरासियोंको आज्ञा दी उस बन्दरने अपना शिर हिला दिया कि, चपरासियोंको मत भेजो। तहसीलदारने जमादारको आज्ञा दी। इसपर भी बन्दर प्रसन्न न हुआ। फिर तहसीलदार घोड़े पर सवार होकर जमादार चपरासियोंको साथ लेकर बन्दरके साथ चला। वह बन्दर तहसीलदारके आगे आगे चला। उस स्थानपर पहुँचा जहाँ वह कलन्दर दबाया हुआ था, वहाँ पहुँचा तो बन्दर उस भूमिपर हाथ मारने लगा। तहसीलदारने उस स्थानको खुदवाया। उससे कलन्दर तथा बन्दरोंकी लाशें निकल पड़ीं। फिर बन्दर इशारा करता हुआ तहसीलदारके आगे आगे चला सबको उस गाँवमें ले गया जहाँ कि, वे खूनी रहते थे। तहसील-दारने आज्ञा दी कि, गाँवके सब मनुष्य उपस्थित हों सब मनुष्योंको खड़ा कराके उस बन्दरसे कहा कि, तुम पहचानो इनमें तुम्हारा कौन चोर है। बन्दरने सबको देखकर शिर हिलाया कि, इनमें कोई नहीं है। तब तहसीलदारने पूछा कि, इस गाँवका कोई मनुष्य बाहर गया है? लोगोंने कहा कि, हाँ अमुक अमुक मनुष्य उपस्थित नहीं हैं। तब तहसीलदारने कहा कि, उन्हें शीघ्रही उपस्थित करो। वे भी सब मनुष्य उपस्थित किये गये। उस समय चोरोंने अपने मुँहपर राख इत्यादि मलकर अपना चेहरा बदल लिया कपड़े बाँध लिये जिसमें चेहरा न पहचाना जाय। जब वे तीनों चोर बन्दरके सामने आये तो उसने तुरन्त पहचान लिया। इशारा किया कि, चोर तथा हत्यारे येही हैं। बन्दरने अपनी उँगलियोंसे इशारा किया। तहसीलदारने तुरन्त ही उनको पकड़ लिया। उनका इजहार लिया गया, उनपर हत्या तथा चोरी प्रमाणित हो गयी। उस बन्दरके साथ न्याय हुआ। हत्यारोंको फांसी दी गई।

जमींनदारका बन्दर—एक जमींदारके पास एक बन्दर था। वह एक दिन सो गया तो उसकी अपानवायु खुली। उसने जमींदारकी चादर फाड़कर उसके मलमार्गके निकट चिल्लाना आरम्भ किया। जमींदार जाग पडा। बन्दरकी

यह अवस्था देखकर रुष्ट हुआ । उस बन्दरको तीन जूते मारे। जूतोंकी मार खाकर वह बन्दर अलग जा खड़ा हुआ एवं सलाम करके चला गया । जमींनदार बन्दरको बुलाता एवं खुशामद करता ही रह गया । पर वह उसके पास नहीं आया चला ही गया ।

बच्चेको निकाला—तिलोकरामजी उदासीने अपनी आँखसे देखा था कि, गङ्गाके किनारे पर एक पीपलका वृक्ष था । उसपर एक बँदरी बैठी थी । उसका बच्चा दैवात् कुएँमें गिर पड़ा । वह उस वृक्षकी जड़से लग रहा था । वह बच्चा कुएँसे गिरा तब उसने चीख मारी, उससे अनेक बन्दर एकत्रित हो गये । उनमें एक बन्दर बड़ा ही दृढ़ तथा मोटा और भयानक था। उसने उस वृक्षकी जड़को दृढ़ताके साथ दोनों हाथोंसे पकड़कर अपने दोनों पांव कुएँमें लटका दिये । दूसरा बन्दर उसकी टाँग पकड़कर लटक गया । फिर तीसरा बन्दर उस दूसरे बन्दरकी टाँग पकड़कर लटक गया । इसी प्रकार फिर चौथा, पाँचवाँ, छठवाँ, सातवाँ सभी क्रमशः एक दूसरेकी टाँग पकड़कर लटकते गये । जब जलतक पहुँच गये, ऊपरसे नीचेतक बराबर सीढ़ी लग गई । गिरा हुआ बच्चा उसी सीढ़ीपर चढकर बाहर निकल आया । इसके पीछे सबसे नीचेवाला बन्दर ऊपर चढ़ आया । फिर उस नीचेवालेके बाद जो था वह निकला इसी प्रकार सब बन्दर जैसे लटके थे वैसेही ऊपर चढ़ आये । उन्होंने अपनी बुद्धिमानीसे अपने सजातीय बच्चेकी प्राण रक्षा की ।

गाडी हाँकनेवाला—सन् १८५६ ई. में पञ्जाब देशके फिरोजपूर नामक स्थानमें मनोहरदास वैरागी फिरा करता था उसके साथ गाडी रहती थी । वह प्रत्येक गांवमें जाया करता था उसके पास कितनेही जानवर थे उसने बन्दरको गाडी हाँकना सिखाया था । उसके साथ एक छोटी तोप थी वह बन्दर तोप भी चलाया करता था । कितनेही आश्चर्यमय कार्य किया करता था । उसके पास गायें थीं वे दूकान दूकानपर जाकर भीख मांग लाया करती थीं । उसने तोता मैंना और कुत्ते आदिको भली प्रकार काम करना सिखाया था । वे सब उसकी शिक्षानुसार काम किया करते थे ।

बुद्धिमती वानरी—मैंने सुना था कि, अमृतसरके समीपकी बस्ती रविदासपुरमें एक वैरागी था, चमार जातिवाले उसके बहुतसे शिष्य थे । उसके पास एक बँदरी थी । उसका सेवक एक वृद्ध था जो अफीम खाया करता था । उस स्थानपर दर्शनार्थ जो कोई जाता वह बँदरी उसका कपड़ा अथवा पाँव पकड़ लेती । जब वह उससे पूछता कि, तू क्या पैसा कौड़ी चाहती है ? तो वह

सिर हिलाती कि, हाँ। जब कोई पैसा कौड़ी देता तो वह उसका पाँव छोड़ देती, सारे पैसे कौड़ियाँ लेकर अपने सेवा करनेवालेको सौंप देती थी। यदि वह मनुष्य कह दे कि, इसकी मुझे कोई आवश्यकता नहीं है तो वह उन्हें जिनसे लेती उन्हींको वापस कर देती उस साधुसे मिलकर जितने दर्शनाभिलाषी पलटते थे उन सबको वह पहचानकर उनकी कौड़ी वापस कर दिया करती थी। किसीके पैसा कौड़ीमें तनिक भी हेरफेर न पड़ता था। वह बँदरी बुद्धिके बहुतेरे आश्चर्य्यजनक कार्य्य किया करती थी।

सेवक बन्दर—एम. आर. एस. ली महाशयकी अंग्रेजी पुस्तकसे पशुओंकी बुद्धिके विषयकी कुछ कहानियाँ लिखता हूँ। फ्रांस देशकी राजधानी पेरिसमें एक मनुष्यने एक बन्दरको शिक्षा दी। वह बन्दर अनेक आश्चर्य्य और बुद्धिके कार्य्य किया करता था। लिखनेवाला लिखता है कि, जब मेरा उस बन्दरसे साक्षात हुआ तब वह मेरी राह छोडकर अलग हो गया। मैंने उससे कहा सलाम-तब उस बन्दरने अपनी टोपी उतार झुककर मुझे सलाम किया। मैंने उससे पूछा कि, तुम कहाँ जाते हो? तुम्हारे पास कोई पथ चलनेका आज्ञापत्र है? तो उसने अपनी टोपीमेंसे एक चौकोर कागज निकाला मुझे खोलकर दिखाया। उसके स्वामीने कहा कि, इन महाशयका कपड़ा मैला है। उस बन्दरने अपने मालिककी जेबसे तुरन्तही एक छोटा ब्रश निकाला। मेरे कपड़ेके किनारेको पकडकर झाड़ दिया फिर मेरे जूतेको साफकर दिया। वह बड़ा ही शिक्षित तथा कृतज्ञ था। जब उसको भोजन दिया जाता था तो वह अन्यान्य बन्दरोंकी तरह तरह खानेको गालोंमें नहीं भरता था। किन्तु मनुष्यकी तरह उसी समय खा जाया करता था जब हम लोग उसको रुपये पैसे देते थे तो वह लेकर उन्हें अपने मालिकके हाथ पर धर दिया करता था।

चेंपेन—एक प्रकारका बन्दर है जिसका मुख गम्भीर होता है, वह सब बन्दरोंकी अपेक्षा मनुष्यकी अच्छी तरह नकल कर सकता है। सारे कार्य्य गम्भीरता सहित करता है। कभी कभी उसको बहुतही थोडा क्रोध आया करता है। अंग्रेजी भाषामें इस बन्दरको चेम्पनजी कहते हैं। इसमें एक छोटी जाति और एक बड़ी जाति होती है। इसकी छोटी जातिका एक बन्दर प्यारिस नगरमें रहता था। उसकी बुद्धिके विषयमें अनेक कहानियाँ प्रचलित हैं। वह कुरसी पर बैठता था। ताला खोलता था फिर बन्द कर देता था। छोटा चमचा लेकर चाय पीता था। छुरी काटेसे भोजन किया करता था। अपना भोजन अलग रख देता था। जब अकेला होता था तब चिल्लाता था अपने को

अपने मालिकके लड़केवालोंके समान माने जानेसे अत्यन्त हर्षित होता था।

हब्शका बन्दर---हब्शदेशका एक प्रकारका बड़ा बन्दर होता है जो चार फीटसे लेकर पाँच फीट तक ऊँचा होता है। वह मनुष्योंकी तरह दोनों पाँवसे चलता फिरता है, प्रायः सारे कार्य्य मनुष्योंके ही समान करता है। जहां कहीं हाथी दांतोंको पाता है उठा लेता है उसको सुरक्षित जगह रखनेकी युक्ति न जाननेसे हाथमें ही लिये फिरता है। यदि वह आपसे गिर पड़े तो गिर पड़े। अथवा उसको लिये बोझसे थक जाय तो छोड़े। यह मनुष्यकी तरह झोपड़ी बनाता है। बच्चा मरने पर माँ मुरदा बच्चा लिये फिरती है। यहाँ तक कि, वह सड़ गलकर टुकड़े २ होकर उसकी गोदसे गिर जाता है। यह बन्दर बड़ा क्रोधी और बलिष्ट होता है। मनुष्य उसके एक थप्पड़से मर जाता है।

रँग कायम---एक प्रकारका बन्दर है, वह स्याही चूसता है तथा लेखिनी चुरा लेता है जहाँ कहीं मदिरा इत्यादि पावे तो पी जाता है शीघ्रही अपने नामको जान लेता है, जो उसका नाम लेकर पुकारे तो उसके पास चला जाता है। वह बच्चोंके साथ खेला करता है, जैसे लड़के लड़कियाँ करती हैं इसी प्रकार वह अपनी लम्बी भुजा लड़कों की गरदनके चारों ओर डालकर खेलता है। लड़कोंकी रोटीसे भाग लेता है, इसके पीछे उनके साथ खेलना आरम्भ करता है भांति भांतिकी नकलें तथा कौतुक किया करता है। छोटे छोटे लड़कोंकी तरह क्रीड़ा कौतुक किया करता है। लड़के इसके साथ खेला चाहें वह न चाहता हो तो उनकी उँगली अपने दांतोंसे दबाकर खेलनेमें अपनी अरुचि प्रगट किया करता है। दूसरे छोटे छोटे बन्दर उससे धृष्ठता करते हैं तो वह उनकी दुम पकड़ खींचता हुआ उन्हें दण्ड देदेता है, जब वे चिल्लाते हैं, तो उनको छोड देता है। वह गम्भीरतासे रहता है। पथिकोंके खानेके समय टेबुलके समीप जा बैठता है। उसके भोजनके समय कोई हँसे तो उसपर फूंकता गाल फुलाता हुआ ठठ्ठा करनेवालेकी ओर क्रोधकी दृष्टिसे देखता है। जबतक भोजन न कर चुके तबतक एकान्तमें रहनेको अच्छा नहीं समझता। यदि चाहे वस्तु न मिले तो हाथ पसार कर लोटता फिरता है। जो वस्तु उसके सामने आवे उसको तोड ताड़कर बिगाड डालता है और (रा--रा--रा--के शब्दसे) चिल्लाया करता है।

शव लेनेवाला---फारबस साहबका वर्णन है कि, मेरे मित्रोंमें से एकने एक बंदरीको बन्दूकसे मार दिया उसके लाशको वह अपने खेमेंमें घसीट ले गया। चालीस पचास बन्दर घुडकते और धमकाते उसके खेमेकी ओर आये। पर जब उस साहबने अपनी बन्दूकको उनके सामने किया तो वे दूर खडे हो गये तो

भी एक बंदर जो उनका सरदार मालूम होता था, आगे बढ़कर धमकाता हुआ खुर खुर करने लगा। वह बहुत रुष्ट जान पडता था। उसको बन्दूकका तनिक भी भय नहीं जान पडता था। अन्तको खेमाके द्वारपर पहुँचा। तब उसके आकारसे कायरता, नम्रता आदिके चिह्न प्रगट होते थे ऐसा जान पड़ता था कि, वह उस शवके लिये निवेदन करता है वह शव उसको दे दिया गया। वह उस लाशको अपना गोदमें ले बड़े प्रेमके साथ अपने साथियोंमें गया। पीछे सारे बन्दर न जाने कहाँ चले गये।

रोटी बनानी—दक्षिण पश्चिम एफ्रिका तथा कितने ही देशोंमें बन्दरोंकी अनेक जातियाँ हैं उनकी बहुत कहानियाँ हैं। उन देशोंके मनुष्य इस प्रकार विश्वास करते हैं कि, बन्दर मनुष्योंके समान वार्तालाप कर सकते हैं। परन्तु इस भयसे वे नहीं बोलते कि, मनुष्य उनको पकड़कर काम करावेंगे। जब वे चाहते हैं तब बोल लेते हैं पर भय उनको इतना ही है। बन्दरोंकी अनेक जातियाँ हैं, मनुष्य तथा बन्दरमें कुछ विभिन्नता नहीं है। मैंने सुना था कि दक्षिण एफ्रिकामें लोग बन्दरोंसे रोटी पकवाते हैं। वहाँके बन्दरोंके कार्य बडे विचित्र तथा आश्चर्य-वर्द्धक हैं।

मनुष्यकी सन्तान—पूर्वोक्त पुस्तकमें लिखा है कि, एक बाबरची बड़ा ही दृढ़ तथा हृष्ट पुष्ट था उसने एक स्त्रीसे अपना विवाह किया, वह पतिसे अपनेको श्रेष्ठ समझती थी, इस प्रतिज्ञा पर उसने विवाह किया था कि, बाबरची उसको बाबरची खानामें कभी न रक्खेगा उसके रहनेके निमित्त पृथक् मकान बनावेगा उसमें उसको रखेगा इसी प्रतिज्ञापर दोनोंका विवाह हुआ था पर बाबरचीके पास बाबरची खानेके सिवा दूसरा मकानही नहीं था। इस कारण वह अपनी स्त्रीको उसीमें लाया। प्रथम तो वह स्त्री न बोली कि, कहीं उसका पति रुष्ट न हो जावे। अन्तमें ऐसी विवश हुई कि, अपने पतिको द्वेषी ठहराने लगी। पहले तो कोमलतासे बात करती थी आगे झिडकियाँ देने लगी। जब वह बार-म्बार उलटी सीधी सुनाने लगी तो उस मर्दने स्त्रीको चुप करनेका बहाना किया कि, मैं वनमें जाकर लकड़ियाँ लाता हूँ तेरे लिये नवीन मकान बना देता हूँ। वह गया कई घण्टोंके पीछे लकडियाँ ले आया। दूसरे दिन गया। समस्त दिन वहाँ रहकर थोडीसी लकडियाँ ले आया। स्त्री यह देख बडी असन्तुष्ट हुई, एक बडी लकडी उठाकर अपने पतिको भली प्रकार मारा। तब वह पुरुष तीसरी बार वनमें गया रातभर वहाँ रहकर भी कुछ लकडियाँ न लाया, आकर अपनी स्त्रीसे कहने लगा कि, जो वृक्ष मैंने काटा था वह बहुत भारी था मैं इसी कारण उसको

अकेला न ला सका। फिर वह वनमें गया दो रात दिन वहाँ रहा इस बातपर उसकी स्त्री अत्यंत रुष्ट हुई। फिर जब वह आया उसकी स्त्री बहुत रोई। उससे नम्रता पूर्वक कहने लगी कि, मैं अब हर्ष पूर्वक इस बाबरची खानेमें ही रहूँगी तू मुझको मत छोड। उसने उत्तर दिया कि, तूने मुझको वारंवार वनमें भेजा, अब मैं वनको हृदयसे चाहता हूँ। मैं जाउँगा सदैव बनमें रहूँगा। इतना कहकर वह पुरुष बावरचीखानेसे चला गया हब्शदेशके वनमें घुसकर वहाँही रहने लगा वह बन्दर हो गया वहाँ उसीसे सब बन्दर उत्पन्न हुए।

एटलेश---एमेरिका देशके चतुष्पाद पशुवोंमेंसे यह एक प्रकारका बन्दर है। उसकी विचित्र चाल है। वह अनेक रीतियोंसे चलता है। कभी तो पशुवोंकी तरह चारों पैरोंसे चलता है, कभी दोनों पावोंसे मनुष्यके समान चलता है, दोनों चालें उसके वशमें है। वह अन्यान्य बन्दरोंको भाँति नहीं है। गम्भीर स्वभाव तथा रजीदः चेहरा रखता है। न वह चिलबिल्ला है, न कुछ क्षतिही पहुँचाता है। उसकी कहानियाँ बड़ीही विचित्र तथा आश्चर्यप्रद हैं। वह अपने मालिकसे नम्रता पूर्वक बहुत प्रेम करता है।

शराब लानेवाला---अकालटा साहब अपनी पश्चिमीय इतिहास पुस्तकमें इस प्रकार लिखते है कि, लोगोंने इस प्रकारके एक बन्दरको कलवरियामें मदिरा लाने भेजा। उसके एक हाथमें मदिराकी बोतल तथा दूसरेमें पैसे दे दिये। वह कलवरियामें गया, किसीकी सामर्थ्य नहीं थी कि, बिना मदिरा दिये उसके हाथसे पैसे ले ले, पहिले मदिरा दे दे तो मूल्य पावे। कलवारने पहिले मदिरासे बोतल भर दी, उसने मूल्य दे दिया। यदि पथमें कोई पाजी लड़का उसपर पत्थर मारता तो बन्दर भी अपने हाथसे बोतल अलग धरकर उस लड़केपर ऐसे पत्थर मारता कि, उसे भागना पड़ता। कोई भी लड़का उसका सामना करने न ठहरता सब भाग जाते एकदम मैदान साफ हो जाता, मदिराकी बोतल लेकल कुशल मङ्गलसे अपने स्वामीके पास पहुँचता। यद्यपि वह बन्दर बहुत मदिरा पीता था तो भी अपने स्वामीकी आज्ञा बिना उसका एक बूंद भी न छूता था। इस बन्दरकी आठ जातियाँ हैं, वे सब अत्यन्त बुद्धिमानीसे कार्य किया करती हैं।

चेम्पेनका आकार---यह बन्दर हब्शदेशके बहुत तपनेवाली भूमिका रहनेवाला है। यह मनुष्यके समान होता है मानों मनुष्य ही है। उसके सारे शरीर पर बड़े २ बाल होते हैं उसके सिर तथा पीठ पर अधिक बड़े बाल होते हैं। उसके कान पतले होते हैं, उसपर बाल नहीं होते। मनुष्यके कानके

समान कान होते हैं, उसके नाकके चर्म्ममें केवल शूलमात्र जान पड़ती है। उसके हाथके अंगूठे छोटे तथा निर्बल जान पड़ते हैं। पाँव के अंगूठे बड़े २ तथा सुदृढ़ जान पडते हैं। चार फीटसे अधिक ऊँचा नहीं होता उसकी बुद्धिमानी तथा चातुरीकी अनेक कहानियाँ लिखी हुई हैं।

औरंग औरटंग—एक जातका बन्दर (मलायाका जङ्गली मनुष्य है)। उसको औरङ्ग औरटङ्ग कहते हैं। औरङ्ग नाम एक प्रकारके बन्दरका है, वह एफ्रिका देशका रहनेवाला है। उसको काला औरङ्ग कहते हैं। औटङ्ग बड़ी जातिका बन्दर है यह पांचफीट ऊँचा होता है। यह लाल और भूरे रङ्गका होता है। औरङ्ग सुमात्रा तथा बोरनियो टापूका रहनेवाला है। इसका यथार्थ नाम बोरनियो है इन टापुओंके वनोंमें रहता है। इसी वनमें उसकी अधिकता है, यह पशू कभी कूदता उछलता नहीं है। पर लम्बे लम्बे पग बढ़ाकर एक वृक्षसे दूसरे वृक्षपर चला अवश्य जाता है। यह पशु घोसलेके समान लकड़ियोंका घेरा बनाता है। एक डालसे लेकर दूसरी डालपर लकड़ियोंको पुष्टतापूर्वक जमाकर बडी दृढ़ता और सुन्दरताके साथ अपना मकान वनाता है, इसमें नर-मादा अपने बच्चों सहित स्वतंत्रतापूर्वक रह सकते हैं। यह वृक्षोंके फल और घासोंके दाने खाकर रहता है। कोई कोई अति कटु फल हैं जिनको कि, ये सब खाते हैं, इस देशके रहनेवाले ऐसा कहते हैं कि, औरङ्ग औटङ्ग न किसीपर विजयी होता है और न किसीसे पराजित, पर जब वह जलके किनारे जाता है तो घड़ियाल सचमुचही उसको खाने दौडता है। इन बन्दरोंके पूँछ नहीं होती जिससे ये स्पष्ट मनुष्य जान पडते हैं कि, ये हूबहू मनुष्य हैं।

गोरला, एनजिना या एगिना—पश्चिमी हब्शमें एक प्रकारका बन्दर होता है। उसको अंग्रेजी भाषामें गोरेला कहते हैं। यह उच्च जातिका बन्दर होता है यह स्पष्ट मनुष्य स्वरूप है। पर चेम्पेनजीके स्वरूपसे इसका स्वरूप पृथक् है, इसकी जाति पृथक् है। युवावस्थापर पहुँचकर यह पाँचफीट तकका लम्बा हो जाता है। एफ्रिका देशके भ्रमण करनेवाले महाशयगण इसकी विचित्र कहानी कहा करते हैं, गुरेला चेम्पेनजीसे अधिक लम्बा होता है, युवावस्थातक पहुँचकर पांच फीट और छःइञ्चका लम्बा होता है तथा युवावस्थापूर्ण होनेपर पाँचफीट आठ इञ्चका भी हो जाता है जो इनमें सबसे बड़े हैं वो छः फीटसे भी अधिक बडे होते हैं। बडा बलिष्ठ तथा सुदृढ़ होता है। उसका अङ्ग प्रत्यङ्ग तथा दाँत बडे ही दृढ़ होते हैं। उसके आँख परकी हड्डियां ऊँची होती हैं। नरके

मस्तकको हड्डियां ऊँची खोपड़ी बड़ी तथा उसमें थोड़ा भेजा भी अधिक होता है। उसकी नाक चेम्पेनजीसे ऊँची होती है। उसका आकार भयानक मनुष्य कासा होता है। उसके दोनों मोढ़े चौड़े होते हैं उसकी पसलियोंमें तेरह जोड़ हैं। उसका आकार अन्यान्य बन्दरोंकी अपेक्षा मनुष्यसे अधिक मिलता जुलता है। उसके पाँव तथा जाँघ मनुष्योंसे छोटे पर चेम्पेन जीसे बड़े होते हैं। जब सीधा खड़ा होता है तो उसका हाथ जाँघ तक पहुँच जाता है। उसके पैर पृथिवी पर चलने योग्य बने हैं। पांवके अँगूठे मनुष्योंके अँगूठोंके समान हैं। उसके हाथ बड़े बड़े तथा बहुत सुदृढ़ हैं। ऊँगलियाँ छोटी छोटी पर बहुत मोटी हैं। इसका चमड़ा काला और बाल कुछ भूरे भूरे होते हैं।

उनमें काले रङ्गकी कुछ मिलावट होती है। उसकी भुजा पर लम्बे-लम्बे बाल होते हैं। उसके मुँहपर भी बाल होते हैं। छातीपर किसी प्रकारके बाल नहीं होते। उसका मोढ़ा बड़ा तथा यहां तक चौड़ा होता है कि, ग्रीवा कठिनतासे दिखाई देती है। उसकी आंखें भीतर घुसी हुई मालूम होती हैं। उसका आकार इतना भयानक होता है कि, जब वह किसीकी ओर देखता है तो भय जान पड़ता है। बहुत खानेवाला है। विशेषतः उसका भोजन साग पात इत्यादि है। उसका पेट बड़ा तथा उभरा हुआ जान पड़ता है। यह प्रायः पृथिवी पर रहता है पर विशेषतः वृक्षोंपर भोजन ढूँढता फिरता है अपने महाबाहुबलसे बचता है। अपने वैरियों तथा हिंसकों को मार हटाता है। इस प्रकारके बन्दर बहुत बडे घने वनमें रहते हैं बनवासियोंसे बहुत डरते हैं। सरतान तथा जदा नामक स्वतोपर इसकी अधिकता है। उसके दुम नहीं होती। अब तक गुरेला कहीं पाला नहीं गया न घरैला हुआ। उसकी युवावस्थामें उसका पालना अथवा परचा लेना कठिन कार्य है। इसकी बुद्धिमानी तथा चातुरीकी अनेक कहानियाँ हैं। पश्चिमी गुरेलाको पकड़ पकड़ कर लोग काम कराते हैं। वहाँके मनुष्य गुरेलाको एनजिना और एगिना कहते हैं, उन बन्दरोंमें संयोगसेही किसी विषयकी विभिन्नता होती है। उनका समस्त शरीर ठीक मनुष्योंकासा जान पडता है।

कौरोनकिया और पोस्ती गाम्बी—पश्चिमी हब्शमें कहीं कहीं, यह बात सुनी जाती है कि डीवडो लेकस साहबकी पुस्तकमें लिखा है कि, उनने देशमें दो प्रकारके बन्दर देखे हैं। जो गुरेलासे कुछ छोटे होते हैं। एकका नाम कोरोनकियाँ दूसरेका नाम पोस्ती गाम्बी। यह दोनों प्रकारके बन्दर अपने निवासार्थ अच्छा स्थान बना लेते हैं। छतरीके स्वरूपका उनका घर होता है।

बराबरी एप—एक जातिका बन्दर बरबर देशमें होता है, वह अनेक

प्रकारकी लीलायें करता है। उसको पकड़कर लोग प्रायः योरोपको ले जाते हैं वहां उसको बुद्धि तथा गुणकी अनेक बातें सिखाते हैं। यह बन्दर जिबरालटरके पर्वतोंपर भी अधिक होता है। बुद्धिके बड़े बड़े कार्य करता है।

रुपये लेनेवाला— पञ्जाब प्रदेशस्थ फीरोजपुर प्रान्तके अन्तर्गत दो बनजारा आरा चला रहे थे। वह जब रोटी खाने गये तो वृक्षसे एक बन्दर उतर कर उसी प्रकार आरा चलाने लगा। दोनों लकड़ियोंके बीचकी किल्लीको खींचा करने पर उसका अण्डकोष दोनों लकड़ियोंके बीच दब गया, जिससे वह चिल्लाने तथा तडपने लगा। एकने आकर उसको छुडाया वह बन्दर कूदकर वृक्षपर चढ गया। वहांसे लाकर एक रुपया बढईके सामने रखा। जब वह बन्दर कहीं इधर उधर चलागया तब वो बढई सोचने लगा कि, इस बन्दरने रुपया कहांसे पाया। समय पाकर वह वृक्षपर चढ गया उसने उस वृक्षपर और भी कई रुपये पाये। वह उन सबोंको उठा लाया। कुछ कालके पीछे जब वह बन्दर घूमता घामता आया वृक्षपर चढा तो देखा कि, वहां उसका रुपया नहीं है। तब वह उस बढईके निकट आया चिल्लाता २ काँप कर गिर पड़ा तब उस स्थानके सब बन्दर उसका शब्द सुनकर एकत्रित हो गये। उस बढई की ओर देखकर खुर खुर करने लगे। जब उसने देखा कि, यह सब तो मुझको काटेंगे तो सब रुपये बन्दरके सामने फेंक दिये। उसने अपने सब रुपये गिनकर देख लिये कि ठीक हैं जाना कि, वह एक रुपया जिसको उस बन्दरने अपनी प्रसन्नतासे दिया था, रुपयोंके साथ लौटा दिया तो उस बन्दरने एक रुपया निकालकर अपने चूतडसे पोंछकर लकडी चीरनेवालेकी ओर फेंक दिया, बाकीके सब रुपयों को लेकर वहांसे चला गया। समस्त बन्दर वहाँसे चले गये।

प्रत्युपकारी—एक और बन्दर इसी प्रकार आरा चीरनेकी नकल करने लगा तो उसका भी अण्डकोष लकड़ीके छिद्रमें दब गया वह चिल्लाने लगा। जो दोनों लकड़ी चीरनेवाले देख रहे थे। उनमेंसे एकने बन्दरको छुड़ाना चाहा दूसरा मना करने लगा कि, उस बन्दरको फँसकर मरने दे क्योंकि, यह हमारा अनुकरण करता है। दूसरेने उसका कहना न माना आकर छुड़ा दिया। जब बन्दर छूटा तो वनसे दो फल लाया और दोनों लकडी चीरनेवालोंकी चादर पर धर गया। जिसने उस बन्दरकी जान बचाई थी वह उन फलोंको खाकर बड़ा हर्षित हुआ। क्योंकि, वह बड़ाही स्वादिष्ठ फल था। दूसरा लकडी चीरनेवाला जो उसको छुडानेसे मना करता था उसने जब अपना फल खाया तो मर गया।

क्योंकि, वह बड़ा ही विषैला फल था । इस प्रकार बन्दरने बुरेको बुरा और अच्छेको अच्छा फल दे दिया ।

शराबी बन्दर—पञ्जाब देशके कोटकाँगडेमें एक मनुष्य मदिरा पी रहा था । उसके निकट एक बन्दर भी आकर बैठ गया । उसने उसको भी मदिरा पिला दी । बन्दर उसको पी प्रसन्न हो एक रुपया लेकर उस मनुष्यके सामने रख दिया । दूसरे दिन जब वह मनुष्य मदिरा पीने लगा तो वह बन्दर आ बैठा, उसने फिर मदिरा पिलाई । उस बन्दरने फिर एक रुपया लाकर शराबीको दे दिया । इसी प्रकार कुछ दिन होता रहा । उस मनुष्यने विचार कि, यह बन्दर रोज रोज कहाँसे रुपया लाता है यह जानना चाहिये यह शोच एक दिन उस बन्दरको भली प्रकार मदिरा पिलाकर मस्त कर दिया जब वह बन्दर चला तब वह भी उसके पीछे छिपकर चला । वह बन्दर पर्वतकी एक खोहमें घुस गया वह शराबी गुप्त रीतिसे उसका गृह देखकर चला आया। दूसरे दिन एक मनुष्य को बैठा रखा उसको सिखा दिया कि, तू इस बन्दरको मदिरा पिलाता रह, जब वह बन्दर अपने समय पर आया तो दूसरा मनुष्य उसको मदिरा पिलाने लगा । वह बन्दर तो मदिरा पीनेके ध्यानमें रहा । वह,शराबी बन्दरकी आँख बचाकर उसके मकानपर गया देखा कि, एक लोटा रुपयोंसे भरा धरा है उस बर्तनको लेकर अपने घर चला आया । बन्दर अपने घरको गया तो देखा कि, रुपयोंका बरतन नहीं है । फिर जब दूसरे दिवस वह बन्दर नियमित समयपर मदिरा पीने न आया तो शराबी उस बन्दरके घर गया तो देखा कि, वह मरा पड़ा है ।

पूर्वजन्मवेत्ता—एडिसन नामक एक अंग्रेजी पुस्तक है । उसमें यह कहानी लिखी हुई है कि, एक मनुष्यके यहाँ एक बन्दर था । एक दिन उस घरके सभी आदमी कहीं चले गये थे, उस बन्दरको वह घर खाली तथा सुनसान रह गया कोई मनुष्य नहीं रहा । उस समय उसने जब मकान खाली देखा तो कूदकर कुरसी पर बैठ गया कागज लेखनी तथा मसि आदि लेकर अपने पूर्व्व-जन्मका सारा हाल लिखने लगा कि, अमुक बादशाहका मैं मंत्री था, अपने बादशाहकी बड़ी शुभचिन्तकता किया करता था, बादशाहका भण्डार भरनेका विचार दिन रात रखता था, इसी कारण प्रजाके साथ अत्याचार किया करता था, उनपर अन्याय करता था समस्त प्रजा अत्याचारसे पीड़ित होकर बादशाहके सामने जा न्यायके लिये प्रार्थना करने लगी । बादशाहने मेरा प्रत्यक्षमें दोष देखा तो उसने तीर कमान लेकर मुझको मार डाला, मैं मरकर मंत्रीका शरीर छोड़ अब बन्दरकी देहमें होगया हूँ । इस प्रकार वह बन्दर अपना सारा

हाल लिख रहा था कि, घरके लोग आये उस बन्दरको कुरसीपर बैठकर लिखता हुआ देखकर आश्चर्यान्वित हुये कि, बिना पढ़ाये तथा बिना सिखाये इस बन्दरने कैसे लिखना जाना ? क्या मनुष्य क्या पशु सभी वासनाओंके फन्दमें फँसे हुए हैं। इसी बातको निम्नलिखित गजलमें भी दिखाया है—

नहीं कोइ आदमी कोई बन्दर। नचाता रूहको करमे कलन्दर ॥
करमके जालमें यह जीव फन्दा। परीशां हाल यह फिरता है घर घर ॥
हुवा मुफलिस शहंशह आलमोंका। कि फिरता माँगते यह भीख दरदर ॥
सिफत तीनों वहम अरबा अनासर। किये घरखास इस अखलास अन्दर ॥
हवस नफसानिये आजिज दबाया। कि शहवतमें फँसा योगी मछिन्दर ॥

आदमी और मनुष्य सबको करम नचा रहा है कभी आदमी बना देता है तो कभी बन्दर बनाकर नचाता है। इससे मत्स्योदर जैसे योगियोंको भी नहीं छोड़ा।

मृगेन्द्र।

क्रोधी तथा बदला लेनेवाले मनुष्य शेरकी योनिमें जाते हैं, मृत्युके पीछे शेर तथा चीते आदिकी देह पाते हैं उनकी पहली आदतें उनके साथ होती हैं। शेर बड़ा वीर तथा साहसी होता है। यदि कोई शेरको धमकावे तथा गदहा आदि कहे तो वह बिना विलम्बके तुरन्तही उस पर टूट पडता है। या तो उसको मार लेता या उसके मारनेके उद्योगमें आपही मर जाता है। जो शेरको ललकारेगा वो कदापि जिन्दा न बचेगा। मैंने अपनी आखोंसे देखा है कि, गिडगिडाने तथा प्रशंसा करनेसे शेर वशमें हो जाता है, उसका क्रोध ठण्डा पड जाता है। शेर बडे उच्च स्वभावका होता है सुतरां बादशाहों तथा अमीरोंके शेरखानोंमें जो रक्षक रहते हैं वे शेर तथा चीतोंकी खुशामद किया करते हैं कि, आप अत्यन्त श्रेष्ठ हैं, आप उच्च घरानेके हैं, आपके बापदादे बहुत वीर तथा श्रेष्ठ थे वैसे ही आप भी हैं। आप बडे पिताके पुत्र हैं। ये बस बातें सुनकर शेरका मन प्रसन्न तथा ठण्डा रहता है, यह अपने साथ किये हुए वर्तावको अच्छी तरह जानता है।

कुमरसिंहजीका सिंह—पूर्वीय भारतके डुमरांव रियासतके पास जगदीशपुर रियासत है। वहाँके राजाका नाम कुँवरसिंह था। एक समय उनका पालतू शेर छूटकर नगरके चौकमें जा बैठा। उस समय नगरके समस्त द्वार बन्द होगये थे, भयके मारे कोई घरके बाहर न निकलता था। राजाको समाचार मिला कि, आपका मोतीलाल शेर छूट पड़ा है, नगरका द्वार बन्द हो रहा है। राजा कुँवरसिंह स्वयम् ढाल तलवार लेकर जा पहुँचे उसका नाम लेकर कहा कि, ऐ

मोतीलाल ! तुमने बहुत दिनोंसे हमारा अन्न पानी खाया है, तुम आपसे आप चलकर अपने पिंजरेमें घुस जाओ नहीं तो मेरा सामना करो । वह कृतज्ञ व्याघ्र चुपके २ राजाके आगे होकर अपने पिंजरेमें घुस गया। उस दिनसे राजाने उसकी सेवा शुश्रूषाका खर्च बढा दिया ।

कांटानिकालनेवाला—कोट काँगडेके पास एक शेरके पाँवमें लोहेकी ऐसी कील गड़ गयी थी कि, जिसके कारण वह बड़ाही दुःखी हुआ, क्योंकि, उसका पाँव बहुत ही सूज तथा पक गया था । वह एक मनुष्यके सामने बैठ गया अपना पिछला पाँव दिखाया । उसने देखा कि, उस शेरके पाँवमें एक मेख चुभी हुई है जिसके कि, कारण वह चल फिर नहीं सकता है । उस मनुष्यने उसके काँटेको पकड़कर खींच लिया, वह सुखी हो कृतज्ञता दिखाता हुआ चला गया ।

एक अहीरके पास बहुततेरी भैंसें थीं । वह शेर बड़ा बलिष्ठ था । जब भैंसको पकड़कर फेंकता था तो वह दूर जा पड़ती थी । गूजर देखा करता था कि, यह शेर तो हमारी भैंसोंकी बड़ी क्षति करता है । एक दिन उसने देखा कि, शेर भैंसोंके झुण्डमें घुस एक अच्छी भैंसका कान पकड़ उस मनुष्यके घर पर लेगया जिसने कि, उसके पैरसे मेख निकाली थी । उसके मकानमें उस भैंसको छोडकर चला आया । वह गूजर यह कौतुक देखता रहा । जान लिया कि, इस शेरने इस भैंसको इस मनुष्यको दे दिया है । उसने इस बातपर कोई हिचकिचाहट न दिखाई । जिसके घर भैंस गई उसने सानन्द रख लिया । पीछे उस शेरने अहीरकी दूसरी किसी भैंसको कोई भी कष्ट नहीं पहुँचाया ।

इस्पारमनसाहबका मत—अपनी हब्शदेशकी यात्राके बृत्तान्तमें लिखते हैं कि, यह विचित्र बात है कि, यदि कोई शेरको क्रुद्ध करे तो भी वह सहसा मनुष्यकी हत्या किया नहीं चाहता केवल घायल करके जीवित छोड़ देता है अथवा अत्यन्तही उत्तेजित हो तो भी कुछ विलम्ब करके मारता है ।

होप साहब—का यह कथन है कि, हेमिलटन नगरके रहनेवाले एक धनाढ्य पुरुषकी बेगमके पास एक शेर था, कितने ही लोग उसको देखने आगये । द्वारपालने बेगमको समाचार दिया कि, एक जमादार अन्यान्य मनुष्योंके साथ शेर देखनेके लिये खड़ा है । बेगमकी आज्ञासे जमादार भीतर गया । उस समय शेर शिकारके लिये गुर्रा रहा था । जमादार शेरसे विज्ञ था, उसने पिंजरेके निकट जाकर उसका नाम लेकर कहा कि, नीरू! नीरू ! तुम मुझको जानते हो ? उस समय तुरन्त ही वह अपना शिर उठाकर खड़ा हुआ, अपना भोजन छोड़कर पिंजरेके किनारे खड़ा हो दुम हिलाने लगा । उस जमादारने उसपर

थाप दी, अपने हाथसे सुहलाकर कहा कि, तीन वर्ष पीछे इस शेरको देखा है। जिबराल्टरसे मैं इस शेरकी रक्षा करता आया हूँ। अब मैं बहुत प्रसन्न हुआ हूँ कि, इस पशुने अकृतज्ञता नहीं की। एहसान नहीं भूला। वास्तवमें वह शेर उस जमादारको देखकर बहुत प्रसन्न जान पड़ता था। अपने प्राचीन मित्रको देखके इधर उधर फिरता था। उसकी उंगलियाँ चाटता हुआ प्रेम प्रगट करता था।

कच्चे मांस खिलानेका दोष—एक शेरको पक्का मांस तथा अन्यान्य वस्तु खिलाकर पाला था। वह शेर कुत्तोंके समान नम्र था। घरमें फिरा करता था। एक दिन कहीं उसने रक्त लगे मांसका भक्षण कर लिया। उसको खातेही बहुत घातक हो गया। अत्यन्त शीघ्रताके साथ उसने उस मनुष्यको जो समीप खड़ा था फाड़ डाला। भयानक रवसे गरजता हुआ वह वनकी ओर चला गया। फिर उसे किसीके आधीन क्यों रहना था?

शेरका प्रेम—एक शेर बड़ा सुन्दर था, उसकी सुन्दरताके कारण वह सङ्गा-लसे पेरिस नगरको पहुँचाया गया था। जहाजपर चढनेके समय बहुत बीमार होगया था इस कारण उसे मरनेके लिये लोग पृथ्वी पर छोड गये। एक पथिक जो आखेटसे आता था उसने उस शेरको अत्यन्त विवश देख उसपर बड़ी करुणा दिखलाई, कुछ दूध उसके मुँहमें डाला। उससे उसको सन्तोष हुआ। उसको आराम मिला। उस समयसे वह शेर ऐसा हिल गया,। एवं अपने ऊपर कृपा दिखानेवालेसे इतना प्रेम करने लगा कि, उसके गलेमें रस्सी डालकर कुत्तोंके समान जिधर चाहता उधर ले जाता था। वह खाना भी उसीके हाथसे खाया करता था। शेरनी शेरका रखवाला तथा सेवा करनेवाला एम. फीलकस नामक एक मनुष्य था, उसे बहुत बीमार हो जानेपर शेरकी सेवासे रहित कर दिया गया। कई दिन बीत गये पर सेवा करने न गया। उनकी सेवाके लिये दूसरा मनुष्य नियुक्त किया गया। पर उनका प्रथम सेवक जो उनको पेरिस नगरमें लाया था बीमार पडनेसे न आया तो शेर भी खाना पीना सब छोड पिंजरेके एक कोनेमें उदास पड़ा रहने लगा। कोई भी अपरिचित मनुष्य उसके समीप जाता तो वो उसपर गुर्राता हुआ कोलाहल मचाके अरुचि प्रकट करता था। यहां तककी अपनी शेरनीके साथ रहनेसे भी घृणा करता हुआ उससे भी पृथक् रहने लगा। वह पशु रोगी जान पडता तो भी भयभीत होकर कोई उसके पास नहीं जाता था। अन्तमें उसका सेवक अरोग्यता प्राप्त करके उसके पास आया। उसने पिंजडेकी छडोंके समीप जाकर उसको अपना मुँह दिखलाया जिसमें उसको आश्चर्यान्वित

करें। जब शेरने उसका मुँह देखा तो कूदा उछला और उस छडके समीप आकर अपने पञ्जेसे उसको प्यार करने लगा तथा मुँह चाटने लगा। मारे प्रसन्नताके काँपने लगा, शेरकी मादा भी उसको प्यार करने दौडी। उस शेरने उसको भगा दिया। जिसमें वह भी उसकी आरोग्यतापर प्रसन्नता प्रगट करनेमें भाग न ले। तब वह रखवाला उस पिंजरेके भीतर घुस गया बारी बारी दोनोंको प्यार किया। इसके, पीछे प्रायः उन दोनोंके पास जाया करता था। उनपर उसका पूरा अधिकार था जो चाहे सो करावें वे दोनों उसको बहुत प्यार किया करते थे।

रीछ और शेरकी मैत्री—निउआरलेंस नामक नगरमें एक बड़ी ही विचित्र घटना हुई। कौतुकी निर्दयी मनुष्योंने सन १८३२ ई० में एक पुराने हब्श देशके शेर बबरके पिंजरेमें एक रीछ डाल दिया। वह जिससे यह रीछके टुकडे टुकडे कर दे। इस निर्दयताका तमाशा देखनेके लिये अनेक मनुष्य एकत्रित थे। रीछ लडनेके विचारसे उस शेरके सामने दौड़ा। पर जैसा लोगोंने अनुमान किया था वैसा नहीं हुआ। रीछने शेरके शिरपर अपना पञ्जा धर दिया मानों उसने अपनी दया प्रगट करके उसके साथ मैत्री करना चाहता हो। शेर इस ध्यानसे कि, यह रीछ मेरी शरण आया है, प्यार करता हुआ अत्यन्त रक्षा करता था। किसीको अपने पिंजडेके निकट नहीं आने देता था। अपने नवीन मित्रका बहुत ध्यान रखता था। यहां तक कि, आप भूखा रहकर भी उस रीछको भली प्रकार भोजन देता था।

तेंदुआ—की शेरहीके समान ही आदत होती है। एक मनुष्यसे मालूम पडा कि, जब वह पथसे चला जाता था तो देखा कि, एक तेंदुआ उसकी राहके बीच खडा है। वह मनुष्य उसको देखते ही घबरा गया। उसको उस समय कोई युक्ति न सूझी पर अपनी टोपी उतारकर सलाम करके कहा कि, ऐ साहब! सलाम। यह बात सुनते ही वह तेंदुवा उस मुसाफिरसे कुछ न कहकर चला गया।

शेरका बच्चा—कुछ जहाजी लोग छः सप्ताहके एक शेरके बच्चेको जहाज पर उठा लाये। वह उनके साथ रहने तथा प्रेम करने लगा। यहां तक कि, वह उनके पलँगपर लेटा रहता था, जहाजी तकियाके स्थानपर उसको अपने शिरके नीचे रखकर लेटा करते थे। उसके बदले वह शेर जहाजियोंके खानेका मांस चुराकर खा जाया करता था। एक दिन उस शेरने बढ़ईके खानेका मांस भी चुराया पर उसके मुँहमेंसे वह बढ़ई फिर छीन ले गया। चोरीके बदले, उस शेरको खूब मारा। उस शेरने कुत्तोंकी तरह दण्डको सहन कर लिया। वह वृक्षकी डालियोंपर बिल्लियोंकी तरह चढ़ जाया करता था, भांति भांतिके

विचित्र खेल किया करता था। उस जहाजपर एक कुत्ता था। उसके साथ वह खूब खेला करता था। एक बरसका पूरा होनेके पहले इङ्गलेण्डमें पहुँचा दिया।

चीता—बिल्लियोंकी तरह अपने बच्चोंको आपही खा जाया करता है कोई कोई प्रेम भी किया करते हैं। कप्तान विलियमसन साहबका कथन है कि, जब वह बाहर शिकार करने गये तो उन्होंने चीतेके चार बच्चे देखे, उनमें से दो को उठा लाये। उनकी माता शेरनी उस समय वहाँ नहीं थी। रातके समय वे दोनों चिल्लाया करते थे। कुछ दिवसोंके पीछे वह बच्चोंको ढूँढ़ती हुई उसी अस्तबलके समीप आ ऐसे जोरसे चिल्लाई कि, उसके सारे रखवाले डर गये बच्चोंको द्वारके बाहर निकाल दिया कि कहीं ऐसा न हो कि, वह शेरनी तखता तोड़कर भीतर चली आवे। वह शेरनी रातको ही अपने दोनों बच्चोंको लेकर जङ्गलमें चली गई।

हाथी

हाथी बहुत बुद्धिमान पशु है। उसकी अधिक बुद्धिका प्रमाण यह है कि, वह प्रत्येक वस्तुको आजमाकर तब उसपर पाँव रखता है यदि निर्बल हो तो, उसपर पांव नहीं धरता, बड़ा कौतुक तो यह है कि, हाथी रस्सियोंपर नाचता है।

सिलोनका हाथी—सिलोन टापू जिसको लङ्का भी कहते हैं, वहां जब उसी देशके मनुष्य राज्य करते थे तो उनका भी यही नियम था कि, जो बँधुवा मारे जाने योग्य होता था उसको हाथीके पाँव तले दबाते थे। जब वहाँका हाकीम हाथीको आज्ञा देता था कि, इस कैदीको भली प्रकार लिथाड़ जिसमें इसको अधिक कष्ट हो, तब वह हाथी उसको भली प्रकार लिथाड़ा करता था। जब-तक दूसरी आज्ञा न हो तबतक कदापि नहीं मारता था। जब हाकिम आज्ञा देता था कि, अब इसको मार दे तो वह उसको मार देता था। उसके शिरपर एक पाँव और दूसरा पाँव पेटे पर धरकर उसके जीवनका अन्त कर देता था।

उम्र—हाथीको बुद्धि तीक्ष्ण तथा वयस सौ वर्षके लगभग है।

कृतज्ञता—एकबार सुना गया था कि, एक हाथीके पैरमें एक लोहेकी कील गड़ गई थी वह विवश होकर एक स्थानपर पड़ा रहता था। उसकी सुधि लेनेवाला कोई न था उसके जिस पाँवमें कील गड़ी थी उसको ऊपर किये पड़ा रहता था। जो मनुष्य उधरसे जाता तो उससे इशारा करके बताता कि, मेरे पाँवमें कील गड़ी है परंतु जङ्गली हाथी जानकर लोग डरके मारे भाग जाते थे। अन्तमें एक मनुष्य उसका अभिप्राय समझ गया, साहस करके हाथीके निकट गया। हाथीके पांवको देखा तो उसमें एक लोहेकी कील गड़ी थी। उसने

उसके निकालनेकी अनेक युक्तियां की पर वह नहीं निकली । वह दौड़कर बस्तीमें से एक संड़ासी ले आया उसके पांवको खूब जोरसे दबाकर उस संड़ासी द्वारा उस गुलमेखको पकड़ बाहर निकाल दी । उस हाथीको सुख मिला उस मनुष्यको धन्यवाद देनेके बदले उसने उस मनुष्यको अपने सूँड़से पकड़ अपने शिरपर बैठाकर उसका अभिवादन किया ।

पुत्रसे प्रेम—बनारसके राजाके पास एक बहुत मस्त हाथी था, उसने किसी अपराधके कारण महावत मार डाला । फीलबानके मरनेपर उसकी स्त्री अत्यन्त क्रुद्ध तथा दुःखी होकर हाथीके निकट अपने छोटे बच्चेको भी उसके सामने डाल कर बोली कि, ले इसको भी मार डाल । क्योंकि, अब इसका पालन कौन करेगा ? उस हाथीने धीरेसे उस बच्चेको उठाकर अपनी गरदन पर बैठाकर इशारा किया कि, अपने पिताके स्थान अब यह फीलबानी करेगा ।

बनेलेकी बुद्धिमत्ता——सम्वत् १८६० बिक्रमीमें पञ्जाबदेशके आनन्दपुरके चारों ओर बडा भारी वन था । वहाँ एक गाँवके समीप मक्काके खेत थे । एक खेतमें मँचान पर एक मनुष्य बैठा रखवाली कर रहा था । रातके समय उसके निकट एक हाथी आया, उसको मँचानसे उतारके पृथ्वी पर रख दिया । उसके सामने उसने अपना एक पांव दिखलाया उस समय चाँदनी रात थी । उसने देखा तो हाथीके पांवमें लकडीकी एक मेख गड़ी हुई दिखाई दी । उस मनुष्यने लकड़ीको पकडकर खींच लिया, जब हाथीको परम सुख मिला तो उसने उसको अपने शिरके ऊपर रखकर उसी मँचान पर रख दिया, उस दिनसे हाथीका यह नियम हुआ कि, प्रति दिन दूसरोंके खेतसे मक्कियाँ उखाड़ उसके मँचानके समीप रखकर चले जाना । अन्यान्य मनुष्य उस मनुष्य पर चोरीका दोष लगा दोहाई मचाने लगे कि, यह मक्काकी चोरी करता है । उस मनुष्यने शपथ की कि, मेरा यह कार्य्य नहीं है, अन्तमें मनुष्य रातको छिपकर देखने लगे तो देखा कि, एक बनैला हाथी मक्का उखाड़कर उसके मँचानके निकट ढेर कर जाता है लोगोंने आग जला तथा दूसरे २ भय दिखाकर उस हाथीको इस कार्यसे रोका ।

मक्कारीका बदला——एक चित्रकार हाथीको बुला उसके मुँहमें फल तथा चारा देने लगा । वह हाथी अपनी सूँड ऊपर किये खड़ा होता वह उसके मुँहमें डालता जाता । कुछ दिनके पीछे बहुत चारा डालनेके भयसे उसने बन्द कर दिया केवल चारा डालनेका बहाना मात्र करने लगा । हाथीने जाना कि, यह मेरे साथ हँसी करता है । इस बातसे असन्तुष्ट होकर अपनी सूँडमें जल भर उसके चित्रोंपर डालकर नष्ट कर दिये ।

बोरडरका कथन है कि, इङ्गलिस्तानमें एक हाथी था। उसके साथ एक मनुष्यने दिल्लगी करके डेढ सेरकी रोटीके साथ अदरकके टुकडे मिला पकाकर खिला दिये। वह हाथी अज्ञान वश खा गया। कुछ क्षणोंके पीछे उसको बडी गर्मी जान पड़ी। उसने अपने महावतसे जल मांगा, उसने छः डोल पानी दिया। वही डोल पकड़कर उस हाथीने जिसने रोटीके साथ अदरक दिया था उस मनुष्यको ऐसा मारा कि, वह मर जावे वरन् वह नहीं मरा। एक वर्ष पीछे वही मनुष्य पुनः उसी हाथीके समीप आया, पुनः दो प्रकारकी रोटियाँ लाया। अच्छी रोटी तो हाथीने खाली जब गरम रोटी देखी तो क्रोधसे उस मनुष्यकी कुरती पकड ऊपरको उठाया। कुरती की आस्तीन निकल गई। वह अधमुआ होकर पृथिवीपर गिर पड़ा जो हाथीकी सूँड़में उसके कुरतेकी आस्तीन रह गई थी उसके टुकड़े टुकड़े करके उस मसखरेके सिर पर मारे।

शिकारीको दण्ड—बहुतेरे अंग्रेजी अफसर हब्शके देशके हाथियोंका आखेट करने गये। उनमें एक अफसर बड़ा निडर शिकारी था, वो ठीक निशाना मारता था। उसने एक हाथीको घायल किया। उसने हाथी पर गोली मारी तो गोलीने इस पर भली प्रकार फल न दिखाया, हाथीके शरीर में ठण्ढी हो गई। वह क्रुद्ध हाथी भयानक हो उन अफसरोंकी ओर झपटा। अन्यान्य सब अफ़सरों-को छोड़कर उसीको पकड लिया जिसने कि, उसको गोली मारी थी। उसको पकड़कर ऐसे जोरसे पृथिवी पर पटका कि, उसका प्राण निकल गया। उसके शवको चूर चूकर धूलमें मिला दिया। यह भयानक काण्ड देखकर समस्त अफ़सर भाग गये। पर दूसरे दिन पुनः उसी स्थानपर आ उसकी हड्डियोंका चूर्ण एकत्रित करके वहीं गाड दिया।

आसक्ति—जार्डनड सप्लाटसमें एक घरेला हाथी रहता था। वह एक छोटी बालिका पर आसक्त था। नित्य प्रातःकाल वह उस स्थानपर उस लड़की-को देखकर प्रसन्न होता था, वह लड़की भी हाथीको देखकर प्रसन्न रहा करती थी। जब वह हाथी आता तो धीरेसे अपनी सूँड लड़की की बगलके भीतर चला इशारा करके चला जाता था।

बच्चेका माँ पर प्रेम—शिकारियोंने एक हथिनीको मारा तो वह मर गई। उसका एक छोटा बच्चा था। वह माताके दुःखके कारण चारों ओर घूम कर चिल्लाने लगा। उस हथिनीके साथी अन्यान्य हाथी तो भाग गये पर उस बच्चेने माताका शव नहीं छोड़ा। शिकारियोंको वह रात वनमें बीती प्रातः काल वे सब उस बच्चेके निकट आये उसको बहुत कुछ धीरज धराने लगे पर

वह बच्चा सन्तुष्ट न हुआ, अपनी माताके दुःखमें दौडता फिरा वह अपनी माता-परसे गिद्धोंको हटाता फिरता था। अत्यन्त उद्योग तथा परिश्रमसे अपनी माँको उठाया चाहता था पर वह मृत देह कैसे उठे? यद्यपि उस बच्चाको परिश्रमका फल नहीं मिला तो भी उसके प्रेमकी यह प्रशंसा अवश्य है।

शिक्षण---एम् फ्रेडरिक क्वेर साहब पशुपालन बिधिके वर्णनमें लिखते हैं कि, जार्डन डिसप्लाटसमें एक हाथी था, वह केवल तीन चार वर्षका था तो उसकी सेवा एक युवकको सौंपी गयी। उस हाथीको ऐसे ऐसे कौतुक सिखाये, जिन्हें कि, देखकर मनुष्यका मन मोहित होता था, वह अपनी सेवा करनेवालेको बहुत चाहता था उसकी आज्ञाको कदापि नहीं टालता था। उसकी अनुपस्थितिमें तथा उसको न देखनेसे बहुत अप्रसन्न रहता था। कोई दूसरा उसकी कितनी ही सेवा क्यों न करे पर तो भी वह उससे प्रसन्न न होत था दूसरोंके हाथसे कठिन-नताके साथ खाता पीता था।

दरजीको दण्ड---डाक्टर गोल्डस्मिथ साहबकी नेचरल हिस्ट्रीमें लिखा है कि, दिल्ली नगरीमें एक हाथी चला जाता था। वह एक दरजीकी दूकानके पास होकर गुजरा। उसने दरजीकी दूकानमें अपनी सूँड डाली। दरजीने उसकी सँड़में सूई चुभो दी। उस समय तो वह हाथी चुपचाप चला गया, उस पथसे पलटा तो सूँडमें कीचड़ भर लिया, उस दर्जीकी दूकानपर पहुँच उसके कपड़ोंपर डाल दी, जिससे जो जो अच्छे कपड़े उसकी दूकानपर फैल रहे थे कीचड़से भर गये। उसने इस प्रकार अपने सुई चुभानेका बदला उस दरजीसे ले लिया।

लिपी---इसी किताब में लिखा है कि, एक हाथी सूंड़की नोकसे लेखनी पकडकर बहुत उत्तमतासे लाटिनके अक्षर लिखा करता था। हाथी बहुत बुद्धिमान और सचेत पशु है। जब यह बनमें रहता है तो बड़ा हाथी झुण्डके आगे आगे चलता है। हाथीमें यह बड़ा गुण है कि, वह बस्तीमें रहता है तो सम्भोग नहीं करता, हाथीकी बुद्धिमानीकी अनेकों बातें लिखी हुई हैं।

गेंडा

गेंडा भी एक बड़ी जातिका जानवर है, उसके सूंघने सुननेकी बड़ी तीक्ष्ण शक्ति होती है पर उसकी आँखे छोटी हैं इस कारण वह थोड़ी दूरतक देख सकता है, गेंडा हबस देश तथा भारतवर्षमें होता है। उसमें भी हाथीके ही समान बुद्धि होती है उसका आखेट भी लोग करते हैं।

बेफीगाकी सहायता---गेंडा बनमें चरता फिरता है उसके साथ एक

छोटी चिड़िया होती है। उस चिड़ियाको अंग्रेजी भाषामें बेफीगा बोलते हैं। यह गेंडेकी बड़ी सहायता करती है। यह सदैव गेंडेके ऊपर बैठी रहती है उसके शरीरकी जुवोंको खाया करती है, गेंडेके शरीरको स्वच्छ रखती है। गेंडा थोडी ही दूर देख सकता है, इस कारण जगदीश्वरने इस बेफीगाको उसका अङ्गरक्षक बनाया है। क्योंकि, शिकारी लोग इसको मारनेके लिये आते हैं तो यह पक्षी दूरसे देख लिया करता है। शिकारियोंको देखकर उसी मसय ऊपर उड़कर बड़ा कोलाहल मचाता है और गेंडा उसके चिल्लानेके तात्पर्यको खूब समझता है कि, अब शिकारी मुझको मारने आते हैं, तुरंत भाग जाता है शिकारी उसको नहीं पाते। यदि वह अचेत सोया हो आखेट करनेवाले आकर उसे मारना चाहें तो चिडिया बहुत कोलाहल करके गेंडेको जगा देती है। उसके चिल्लानेसे न जागे तो वह उसके कानके परदेमें चोंच मार मार कर ऐसी चिल्लाती है कि, अन्तमें वह जाग ही जाता है, गेंडा अपने मित्रकी सूचनाका ज्ञान होते ही तुरन्त भागकर घोर वनकी राह ले लेता है।

ऊँट

रेगिस्तानकी एक सवारीका नाम है। इसकी सवारी रेतीमें अच्छा काम देती है, अरब और राजपुतानेके मैदानमें इसका अच्छा प्रचार है। संस्कृतमें इसे उष्ट्र कहते हैं, साहित्यिकोंने इसे करहुला कहा है।

ऊँटकी प्रतिहिंसा—पञ्जाब प्रान्त सिरसा तहसील दब्भावली थानाके चोराला गांवमें एक जमींदारने अपने ऊँटको मारा। वह ऊँट क्रुद्ध होकर बदला लेनेको उतारू होगया। एक रात वह जमींदार अपने खेतमें लेटा था ऊँटको घरके बाड़ेके भीतर जञ्जीरसे बांध गया था। जमींदारका दूसरा भाई उस द्वारके ऊपर चारपाई पर लेटा था। जब सब मनुष्य निद्राके वशीभूत हुये, चारों ओर सन्नाटा छा गया तब ऊँट इतना धीरे २ चला कि, खड़का भी नहीं जान पड़ा। बाड़ेके द्वारपर पहुँचा धीरेसे उस जमींदारके भाईको फांद गया उसको तनिक भी खड़का न जान पड़ा। धीरे धीरे खेतकी ओर चला जहां कि, वह जमींदार लेटा पड़ा था। ऊँटके घुंघरूका शब्द हुआ उस समय जमींदार जाग पड़ा जान गया कि, अब ऊँट अपना प्रतिशोध करने आता है मुझपर अवश्यही चोट करेगा। ऊँट पहुँचा वह जमींदार अपनी चारपाई छोड़कर भाग गया जहां कि, मूंगका ढेर लगा था उसके भीतर छिप गया। ऊँट जमींदारकी खाटके निकट पहुँचा। उसको खाली पाया इधर उधर ढूंढ़ने लगा। ऊँटके सूंघनेकी शक्ति अधिक होती है। इस कारण वह सूंघता हुआ उस घासके ढेरके निकट पहुँचा

जहां कि वह जमींदार छिपा हुआ था । मूंगके खलिहानको तितर बितर करके उसको पकड लिया पीछे घसीट घसीटकर मारडाला । अपने मुँहसे उसके अङ्ग प्रत्यङ्ग उखाड़ दिये मांस तथा हड्डियोंको बिखेर दिया । अपने वाडेको पलट आया जमींदारके भाईकी चारपाई कूद गया आँगनमें जाकर चुपचाप खड़ा होगया, जब सबेरा हुआ तो जमींदारके भाईने देखा कि, ऊँटका मुँह तथा पाँव रक्तसे भरे हुये हैं जान लिया कि, इस ऊँटने मेरे भाईको मार डाला है । खेतमें जाकर देखा तो उसके भाईके सब अङ्ग एक स्थानपर नहीं । वहाँसे पलटकर ऊँटका शिर धडसे अलग कर दिया ।

ऊंटनीका मोह —फीरोजपुरके मौजे दूधमें एक ऊँटनीका बच्चा मर गया था तीन रात दिन तक उसके नेत्रोंसे अश्रुपात होता रहा । उसने तीन दिवसतक कुछ नहीं खाया, केवल बच्चेकी यादमें रोती ही रही ।

चूरचूरकर दिया—ऐसे ही एक जमींदारको भी कहानी है, उसने अपने ऊँट को मारा, वह उससे अपना प्रतिशोध लेनेको तैयार हुआ । जमींदार सचेत था कि, ऊँटसे मेरा वैर होरहा है । वह घुंघरू बाँधकर ऊंटको अपने वाडेके आंगनमें छोडकर खेतमें जाकर चारपाई पर लेट रहा । आधी रातके समय लोग सो गये सब ओर सूनसान होगया धीरेसे वह ऊंट फलांग मारकर बाड़ेसे वहिर्गत हो वहां जा पहुँचा जहां कि, जमींदार सोया हुआ था । ऊँटके घूँघरूकी आवाज जमींदारके कानोंमें पहुँची उसने जान लिया कि, ऊँट मुझको मारने आता है । उसने एक लकड़ीको अपनी जगह पर लिटा दिया अपनी चादर उसपर डालकर आप कहीं दूर छिप गया ऊँट उस खाटके समीप पहुँचा तो वह उस खाट पर बैठ गया उस चारपाईको चूर चूर कर दिया उस लक्कड़को तोड तथा चादर को फाड़ कर टुकडे २ करके पलट आया पीछे बाडेको आ चुपचाप खड़ा हो गया । जमींदारने ऊँटके वैरका हाल जानकर उसका उचित प्रबन्ध कर दिया ।

घ्राण शक्ति—हब्शदेशमें बड़ा लम्बा चौडा बन है, वहाँ दूर २ तक बालू है वहाँ दूर दूर तक जल नहीं मिलता मुसाफिर प्यासा मर जाता है । इस कारण वहाँके मनुष्य ऊँटपर सवार होकर उसी बियाबानको पार किया करते हैं, क्योंकि, ऊँट शीघ्रही प्यासा नहीं होता । प्यासकी तीक्ष्णताको बहुत सहन कर सकता है । वहाँके लोग ऊँटपर खाना पीना रखते हैं । वहाँके ऊँटके नाकमें ऐसा बल है कि, वह दूरसे जान लेता है कि, अमुक स्थानपर जल है । जहां कहीं जल होता है चार पांच कोसके अन्तरसे ऊँटकी नाकमें गन्ध पहुँच जाती है ऊँट भी उसी ओर चला करता है । जब पथ छोडकर ऊँट उसी ओर चलने लगता है तो सवार

जान लेता है कि, उस ओर कहीं जल है, इस कारण सवार उसको नहीं रोकता ऊँटको इच्छानुसार चला जाने देता है। अन्तमें वह जलके किनारे जा पहुँचता है। उस स्थानपर पहुंचकर ऊंटके सवार तथा ऊँट दोनोंही सन्तुष्ट हो जाते हैं।

हवसियोंकी घ्राणशक्ति—उस देशके हवसियोंको भी सूँघनेका अधिक बल है, यदि वे सड़क पर पगका चिह्न पड़ा देखें, तो घासको सूँघकर बता देते हैं, कि, हवशीके पाँवका चिन्ह है अथवा फारसीके चरणोंका ही चिन्ह होता है मैंने यह हाल गोल्ड स्मिथ साहबके नेचरल हिस्टरीसे लिखा है।

घोड़ा

घोड़े अत्यन्त ही शिक्षाग्राही होते हैं सिखानेसे सब कुछ सीख जाते हैं ये बुद्धिमानीके बडे काम किया करते हैं, तीन कोससे वैरीको सूँघकर केवल गन्धसे जान जाते हैं, जब घोडे बनमें रहते हैं तो उनके नाकका बल बढ़ जाता है। वैरीको दूरसे पहचानकर दूसरे घोडोंको सूचित कर देते हैं। जब बनैले घोड चलते हैं तो उनका सरदार आगे आगे चलता है।

गोरखर—भी घोड़ाहीकी जाति है। वह वड़ा सुन्दर होता है गोरखरोंके झुंडके झुंड वनमें चरा करते हैं, उनमेंसे एक चौकीदार खडा होकर पहरा दिया करता है। जब दूरसे आपत्ति आती दिखाई देती है तो वह सब चरनेवालोंको सूचित कर देता है।आपत्तिसे सूचित होकर सभी भाग जाते हैं।

घोडोंके दो झुंड—एक स्थानमें नहीं चर सकते। दोनों झुण्डोंमें बड़ी लड़ाई होती है। घोड़े घोड़ोंके साथ लड़ते हैं। बछेड़े बछेड़ोंसे तथा घोड़ियाँ घोड़ियोंसे लड़ जाती हैं। घोड़े अपनी अपनी दुमोंको लहराते हुए घोड़ियोंको खड़ा करते हैं। अपने अपने दुमोंको आपसमें खड़खड़ाते हैं। एक दूसरेको अपने दांतोंसे पकड लेते हैं जो झुण्ड लड़ाईमें विजय पाता है वह अनेक घोड़ियोंको ले जाता है।

जंगली घोड़े और भेड़िये—वसन्त ऋतुमें भेड़िये आते हैं, वे बछेड़ा खानेके उत्सुक होते हैं। यदि घोडोंका झुण्ड बडा हो तो रातको छिपकर आते हैं दिनको नहीं आते। यदि बछेड़ोंको घोड़ोंके झुण्डसे इधर उधर पावें तो तुरन्त मार लेते हैं। जब भेड़िये बछेड़ोंको मारते हैं। तो घोड़े भेड़ियोंके ऊपर बदला लेनेके लिये आक्रमण करते हैं। जिनके सामने से वे भाग जाते हैं। बछेड़ोंको तड़पता देखकर उनकी माता बचानेको दौडती है इससे वो स्वयम् मारी जाती है। घोडे देखते हैं कि, भेड़िये आते हैं तो वे प्रतिशोध लेनेको दौडते हैं। घोड़े बहुत सचेत होते हैं। उनकी भेडियोंसे लड़ाई होती है उस समय घोड़े अपने

बछेड़ोंको बीचमें कर लेते हैं । चारों ओरसे घेरा बाँधकर लड़नेको तयार होते हैं । भेड़ियोंको मारते तथा अपने दांतोंसे फाड़ डालते हैं । अपने अगले पाँवसे उनको लथाड़ते हैं । नर घोडे दौड़कर एकही चोटमें भेडियोंको मार डालते हैं । जब भेडिया मर जाता है तो उसकी लाशको अपने दांतसे उठा लाते हैं । घोड़ियोंके सामने डाल देते हैं । घोडियां उसकी लाशको ऐसी लथाड़ती हैं कि, उसका प्राकृतिक स्वरूपही बदल जाता है तबही वे उसको छोडती हैं । यदि आठ अथवा दश भेडिये मिलकर एक घोडेको पछाड लें तो घोडोंके समस्त झुण्ड भेड़ियोंसे बदला लेनेको दौड़ते हैं । उन्हें नष्ट कर देते हैं । वे प्रायः उस कठिन युद्धसे बचते हैं । यदि वे घोड़े तथा बछेड़ेको अकेला पाँवे तो आखेट कर लेते हैं तथा धोखेसे कुत्तोंकी तरह पूँछ हिलाते हुये उनके निकट जाते हैं । एक बारगी झपटकर घोडेकी गरदन पकड़ लेते हैं उस समय वे भागते हैं । प्रायः वे इससे अकृतकार्य होते हैं । क्योंकि, जब वह घोड़ा चिल्लाता है तो उसी समय घोड़ोंका सब झुण्ड दौड़ पड़ता है वे सब तुरन्तही भेड़ियोंको खदेड़कर मार लेते हैं भागकर नहीं जाने देते ।

अरबी सरदारका घोडा—एम. डी. लेमरटर साहब, एक अरबी सरदार तथा उसके घोड़ेकी बड़ी मनोहर कहानी बर्णन करते हैं । अरबी लोगोंने अपने सरदारके साथ सौदागरोंके एक झुण्ड पर छापा डाला लूटका माल लेकर चलते हुए । राहमें सवारोंने आकर उनको सहसा घेर लिया । कितनोंको तो जानसे मार डाला, शेषको जंजीरोंसे जकडकर अपने खेमोंके सामने बाँधके रख दिया । सरदारका शरीर आहत होनेके कारण सारी रात जागता रहा उसने अपने घोडेको हिनहिनाते सुना । क्योंकि, वह उस सरदारसे थोडे फासलेपर बँधा था । उसने चाहा कि, मैं अपने घोडेको अन्तिम समयमें प्यार कर लूँ, इस कारण वह अपने को घोडेके समीप खींचकर ले गया कहा कि, ऐ मेरे गरीब मित्र ! अब तुम तुर्कोंमें क्या करोगे ? तुम एक पठान पेशा अथवा आगाके मकानमें कैद रहोगे, तुम्हारे लिये स्त्रियां तथा बालक ऊंटका दूध भी न ले आवेंगे, तुम स्वतंत्र होकर वायुकी तरह मैदानोंकी सैर करते न फिरोगे । यदि मैं गुलाम होऊँगा तो भी तुम अभी स्वतंत्र हो । तुम जाकर मेरी स्त्रीसे कहो कि, अब अलमारक न आवेगा । अपने शिरको खेमामें रखना मेरे बच्चोंके हाथोंको चाटना । यह कह कर यद्यपि उस सरदारके हाथ पाँव बँधे थे तथापि दाँतोंसे उसने उस घोडेका बन्धन खोल उसको स्वतंत्र कर दिया पर ज्यों ही छुटकारा पाते ही उस घोड़ेने अपने शिरको अपने मालिक पर झुकाया, उसको जंजीरसे बँधा देखकर उसके कपडेको धीरेसे

अपने दांतोंसे पकड लिया और अपने स्वामीको अपने ऊपर रख घरको ले भागा बीचमें कहीं न ठहरा, पर्वत पर अपने खेमेमें जा पहुँचा। अपने मालिकको उसकी स्त्री तथा लडकोंके पाँव पर धर दिया। अपने मालिकको कुशल मङ्गलके साथ उसके घर पर पहुंचा दिया। पथकी थकावटसे स्वयम् आप उसी समय गिर-कर मर गया। उस घोडेके लिये उस जातिके सब मनुष्य दुःख करने लगे। अरबी सायरोंने उस कृतज्ञ वीर घोडेकी प्रशंसामें अनेक कविता बनाई है। अरबमें उस घोड़ेकी भलाईकी चर्चा अब तक चली आती है।

बाजीगरोंके घोड़े—फरीदकोट राज्यमें बजीरसिंहजीके पास फ्रांस देशके ऐसे बाजीगर आये थे, जिनके कि, पास ऐसे घोडे सिखाये हुये थे जो कि, उन घोडोंके कौतुकके सामने मनुष्योंके कौतुककी क्या बात है ? उन्होंने अपने घोडोंको अनेक गुण सिखाये थे जिससे देखनेवाले सदा दंग रहा करते थे।

बैल, सांड, बछडा और गऊ

बैलसे आदमीकी बातें—गुलजार आदममें मुसलमानोंकी हदीसके अनु-सार लिखा है कि, आदम जब वैकुण्ठसे निकाला गया तो जिबराईलने आदमको खेती करना तथा हल जोतना सिखला दिया। आदमने बैलको हल जोतनेमें लगाया, उसने बैलको डण्डा मारा, उस समय बैलने आदमसे कहा कि तूने मुझ निर्दोषको क्यों मारा ? आदमने उत्तर दिया कि, तू आज्ञा नहीं मानता जो आज्ञा नहीं मानता वह मारा जायेगा। बैलने कहा कि, ऐ आदम ! तू स्वयम् आज्ञा नहीं मानता, खुदाकी आज्ञा न माननेके कारण ही वैकुण्ठसे बाहर निकाला गया है, निर्दोष मुझको क्यों मारता है ? यह बात सुनकर आदम दुःखी हुआ। खुदासे दोहाई मचाकर कहने लगा कि, ऐ खुदा ! तू देख, मुझे बैल भी ताने देता है। खुदाकी आज्ञा हुई कि, ऐ जिबराईल ! तू पृथिवी पर जा सब पशुओंकी जिह्वा बन्द करदे, उसी समय जिबराईल पृथिवीपर आये सब पशुओंकी जिह्वा बन्द करदी। सब गूंगे हुये, फिर किसीमें वार्तालापकी सामर्थ्य न रही। इससे पहले सभी पशु मनुष्योंके समान बातें चीतें किया करते थे।

पूर्वके साधु—पञ्जाब प्रदेशस्थ फीरोजपुरान्तर्गत मौजे कोयरीवाला जिसको भाईका कोयरीवालाभी भी कहते हैं, यह मोगह तहसीलमें है। सन् १८८६ ई० में यहां एक घटना संघटित हुई ऐसा हुआ कि, इस गामके नामके मुसलमान जुलाहेके घरमें एक गाय रहती थी। उस गायने एक साथ दो बच्चे जने थे। दोनों अत्यन्त सुन्दर और काले रङ्गके थे उनका शरीर चमकता था। लोगोंने समझा कि, जो जोड़ा बच्छा उत्पन्न हो उसको पुण्यार्थ देना उचित है।

बछेड़ोंको बीचमें कर लेते हैं। चारों ओरसे घेरा बाँधकर लड़नेको तयार होते हैं। भेड़ियोंको मारते तथा अपने दांतोंसे फाड़ डालते हैं। अपने अगले पाँवसे उनको लथाड़ते हैं। नर घोडे दौड़कर एकही चोटमें भेडियोंको मार डालते हैं। जब भेडिया मर जाता है तो उसकी लाशको अपने दांतसे उठा लाते हैं। घोड़ियोंके सामने डाल देते हैं। घोडियां उसकी लाशको ऐसी लथाड़ती हैं कि, उसका प्राकृतिक स्वरूपही बदल जाता है तबही वे उसको छोडती हैं। यदि आठ अथवा दश भेडिये मिलकर एक घोडेको पछाड लें तो घोडोंके समस्त झुण्ड भेड़ियोंसे बदला लेनेको दौड़ते हैं। उन्हें नष्ट कर देते हैं। वे प्रायः उस कठिन युद्धसे बचते हैं। यदि वे घोड़े तथा बछेड़ेको अकेला पाँवे तो आखेट कर लेते हैं तथा धोखेसे कुत्तोंकी तरह पूँछ हिलाते हुये उनके निकट जाते हैं। एक बारगी झपटकर घोडेकी गरदन पकड़ लेते हैं उस समय वे भागते हैं। प्रायः वे इससे अकृतकार्य होते हैं। क्योंकि, जब वह घोड़ा चिल्लाता है तो उसी समय घोड़ोंका सब झुण्ड दौड़ पड़ता है वे सब तुरन्तही भेड़ियोंको खदेड़कर मार लेते हैं भागकर नहीं जाने देते।

अरबी सरदारका घोडा—एम. डी. लेमरटर साहब, एक अरबी सरदार तथा उसके घोड़ेकी बड़ी मनोहर कहानी वर्णन करते हैं। अरबी लोगोंने अपने सरदारके साथ सौदागरोंके एक झुण्ड पर छापा डाला लूटका माल लेकर चलते हुए। राहमें सवारोंने आकर उनको सहसा घेर लिया। कितनोंको तो जानसे मार डाला, शेषको जंजीरोंसे जकडकर अपने खेमोंके सामने बाँधके रख दिया। सरदारका शरीर आहत होनेके कारण सारी रात जागता रहा उसने अपने घोडेको हिनहिनाते सुना। क्योंकि, वह उस सरदारसे थोडे फासलेपर बँधा था। उसने चाहा कि, मैं अपने घोडेको अन्तिम समयमें प्यार कर लूँ, इस कारण वह अपने को घोडेके समीप खींचकर ले गया कहा कि, ऐ मेरे गरीब मित्र ! अब तुम तुर्कोंमें क्या करोगे ? तुम एक पठान पेशा अथवा आगाके मकानमें कैद रहोगे, तुम्हारे लिये स्त्रियां तथा बालक ऊंटका दूध भी न ले आवेंगे, तुम स्वतंत्र होकर वायुकी तरह मैदानोंकी सैर करते न फिरोगे। यदि मैं गुलाम होऊँगा तो भी तुम अभी स्वतंत्र हो। तुम जाकर मेरी स्त्रीसे कहो कि, अब अलमारक न आवेगा। अपने शिरको खेमामें रखना मेरे बच्चोंके हाथोंको चाटना। यह कह कर यद्यपि उस सरदारके हाथ पाँव बँधे थे तथापि दाँतोंसे उसने उस घोडेका बन्धन खोल उसको स्वतंत्र कर दिया पर ज्यों ही छुटकारा पाते ही उस घोड़ेने अपने शिरको अपने मालिक पर झुकाया, उसको जंजीरसे बँधा देखकर उसके कपडेको धीरेसे

अपने दांतोंसे पकड लिया और अपने स्वामीको अपने ऊपर रख घरको ले भागा बीचमें कहीं न ठहरा, पर्वत पर अपने खेमेमें जा पहुँचा। अपने मालिकको उसकी स्त्री तथा लडकोंके पाँव पर धर दिया। अपने मालिकको कुशल मङ्गलके साथ उसके घर पर पहुंचा दिया। पथकी थकावटसे स्वयम् आप उसी समय गिर-कर मर गया। उस घोडेके लिये उस जातिके सब मनुष्य दुःख करने लगे। अरबी सायरोंने उस कृतज्ञ वीर घोडेकी प्रशंसामें अनेक कविता बनाई है। अरबमें उस घोड़ेकी भलाईकी चर्चा अब तक चली आती है।

बाजीगरोंके घोड़े—फरीदकोट राज्यमें बजीरसिंहजीके पास फ्रांस देशके ऐसे बाजीगर आये थे, जिनके कि, पास ऐसे घोडे सिखाये हुये थे जो कि, उन घोडोंके कौतुकके सामने मनुष्योंके कौतुककी क्या बात है ? उन्होंने अपने घोडोंको अनेक गुण सिखाये थे जिससे देखनेवाले सदा दंग रहा करते थे।

बैल, सांड, बछडा और गऊ

बैलसे आदमीकी बातें—गुलजार आदममें मुसलमानोंकी हदीसके अनु-सार लिखा है कि, आदम जब वैकुण्ठसे निकाला गया तो जिबराईलने आदमको खेती करना तथा हल जोतना सिखला दिया। आदमने बैलको हल जोतनेमें लगाया, उसने बैलको डण्डा मारा, उस समय बैलने आदमसे कहा कि तूने मुझ निर्दोषको क्यों मारा ? आदमने उत्तर दिया कि, तू आज्ञा नहीं मानता जो आज्ञा नहीं मानता वह मारा जायेगा। बैलने कहा कि, ऐ आदम ! तू स्वयम् आज्ञा नहीं मानता, खुदाकी आज्ञा न माननेके कारण ही वैकुण्ठसे बाहर निकाला गया है, निर्दोष मुझको क्यों मारता है ? यह बात सुनकर आदम दुःखी हुआ। खुदासे दोहाई मचाकर कहने लगा कि, ऐ खुदा ! तू देख, मुझे बैल भी ताने देता है। खुदाकी आज्ञा हुई कि, ऐ जिबराईल ! तू पृथिवी पर जा सब पशुओंकी जिह्वा बन्द करदे, उसी समय जिबराईल पृथिवीपर आये सब पशुओंकी जिह्वा बन्द करदी। सब गूँगे हुये, फिर किसीमें वार्तालापकी सामर्थ्य न रही। इससे पहले सभी पशु मनुष्योंके समान बातें चीतें किया करते थे।

पूर्वके साधु—पञ्जाब प्रदेशस्थ फीरोजपुरान्तर्गत मौजे कोयरीवाला जिसको भाईका कोयरीवालात्री भी कहते हैं, यह मोगह तहसीलमें है। सन् १८८६ ई० में यहां एक घटना संघटित हुई ऐसा हुआ कि, इस गामके नामके मुसलमान जुलाहेके घरमें एक गाय रहती थी। उस गायने एक साथ दो बच्चे जने थे। दोनों अत्यन्त सुन्दर और काले रङ्गके थे उनका शरीर चमकता था। लोगोंने समझा कि, जो जोड़ा बच्छा उत्पन्न हो उसको पुण्यार्थ देना उचित है।

उस जुलाहेने न माना । लोगोंने समझाया कि, हम हिंदू लोग तुझको इन बछेड़ोंका मूल्य दे देते हैं, तू इनको हमें दे दे, जुलाहे ने न माना । वे लोग प्रत्येक बछेड़ोंका मूल्य पचास पचास रुपया देने लगे । उन बछेड़ोंकी सुन्दरता देख मनुष्य दङ्ग हो रहे । दोनों चमकते हुये श्याम रङ्गके थे उनके सींगे हिरणोंके समान पीछेको मुडी हुई थीं, उनके माथेपर ऐसे तिलक थे जैसे कि, रामानन्दकी सम्प्रदायके वैरागी बनाते हैं । वैसे ही उनकी छाती तथा दोनों मोढ़ोंपर और पीठपर सब चिन्ह थे । उनको लोग वैरागी अथवा ब्राह्मण कहा करते थे । वे दोनों जब युवावस्थापर पहुंचे तो जुलाहेने चाहा कि, उनको हलमें लगावें । लोगोंने बहुत रोका कि, तू ऐसा मत कर, उनका मूल्य हमसे ले ले उनको तू सांड छोड़ दे । सोडी प्रतापसिंह ढाई सौ रुपया तथा एक हलकी भूमि दे रहे थे, पर जुलाहेने न माना हठमें आकर कहने लगा कि, इन ब्राह्मणोंको मैं अवश्यही हलमें जोतूंगा । लोग बहुत समझा चुके कि, ये बैल नहीं ये तो सन्त हैं, किसी दोष वश बैल बन गये हैं, तू उनके साथ ऐसा कुकर्म्म मत कर । जुलाहेने कहा कि, मैं इन ब्राह्मणोंको अवश्यही हलमें जोतूंगा । वे दोनों बैल साधुओंके समान अत्यन्त नम्र तथा शान्त स्वभावके थे । छोटे २ लड़के उनसे खेला करते थे उनको जब लड़के पकड़ लेते तो वे अपना सिर झुका देते थे बड़े ही निर्दोष थे, कभी कसीको कोई हानि न करते थे । प्रत्येक मनुष्य उनको प्यार करता था । जब बैल स्वरूप उन साधुओंको जुलाहे हलमें जोता तो एकबारगीही उसकी देह ढीली होकर ऐसी हो गई कि, जैसी झोला मार जाती है । उसी अवस्थामें जोलाहा मर गया । फिर उसके बेटेने बैलोंको हलमें जोतना चाहा तो लोगोंने मना किया उसने भी कहना न मानकर एक दिन उनको हलमें जोत दिया । उसी दिन उसके पांव में एक ऐसी मेख लगी कि, तलवेको छेदकर पार निकल गई । उस घावपर सैकड़ों छाले पड़ गये, वह पांव बहुत सूज गया । इसी अवस्थामें तीसरे दिन मर गया । इसी प्रकार उस जुलाहेके घरके सब मनुष्य मर गये । केवल एक आदमी रह गया । तब लोगोंने उसको भी समझाया कि, देख, इन बैलोंको दुःख पहुंचानेसे तेरा घर नष्ट होगया, अब तू इनके साथ अपकार न कर । तब वह जुलाहा उन दोनों बैलोंको दीपमालामें अमृतसरकी मण्डीमें ले गया । सरकारने इन बैलके सौन्दर्यको देखकर सौ रुपये पारितोषिक दिये । एक महाजनने दो सौ रुपया देकर उन बैलोंको खरीद लिया अपने घर ले गया फिर न जाने उन साधुअवतारी बैलोंका क्या हुआ ।

ज्ञानी बैल—एक दूसरा बैल भी उसी गाँवमें एक जमींदारके घर उत्पन्न हो उसीके घर रहता था । उसकी ऐसी अच्छी आदत थी कि, जहां उसका स्वामी

खड़ा करदे वहीं खड़ा रहता था। बड़ा सुन्दर पीले रङ्गका सुदृढ़ था। कभी किसी की कोई क्षति न करता था, खेतमें जाता परन्तु जो उसके चारों ओर हरियाली खडी होती उसमें कदापि मुँह न लगाता, मालिक जो घास दाना उसके सामने रख दिया करता वही खाता दूसरेको हराम जानता था। उसको जमींदार मण्डी में पांच बार लेगया प्रत्येक बार सौ सौ रुपया इनाम पाता रहा। इस बैलको जब हलमें लगाते तो कोई बैल उसकी समता नहीं कर सकता था। सबसे आगे जाता था यह बैल जब किसी गायके पीछे छोड़ा जावे तो वह उसी गायको अपनी स्त्री समझता था। उसके वीर्य्यसे जो दूसरी गाय उत्पन्न हो उनको अपनी पुत्रीके तुल्य समझता था। कोई कैसी ही युक्ति क्यों न करे पर अपनी पुत्रियोंके निकट न जाता था।

साध्वी राम गऊ—पंजाब देशस्थ फीरोजपुरके डरौली मौजेमें कहींसे फिरती हुई बडी सुन्दर एक गाय आ गई थी, उसका रङ्ग श्याम श्वेत मिला हुआ था। बड़े डील डौलकी थी, उसके अङ्ग प्रत्यङ्ग ढङ्गाले थे। परन्तु उसका मूत्रस्थान अतिलघु तथा नाम मात्रका था। वह केवल मूत्र त्यागनेकेही निमित्त बना था बच्चा जननेके लिये नहीं था। उसका ऐसा अच्छा स्वभाव था कि, रात दिन एक पीपलके तले बैठी रहा करती। एक तो सवेरे आठ बजेके समय, दूसरे सांझको लगभग चार बजे भोजनके लिये ही बस्तीमें जा अपने निश्चित समय पर गांवमें जाकर गृहस्थोंके द्वारपर खड़ी हो जाया करती। अनाज ही खाती भूसा इत्यादि कुछ नहीं खाती। जो कोई कभी उसके सामने कुछ दाना रख दे तो केवल एक बार मुँह डालती, दूसरी बार कदापि मुँह न लगाती थी फिर आगे चली जाती थी दोनों समय अपना काम करके पीपलके वृक्षके नीचे जा बैठती पुघराया करती। वह भी उस गौका नियम था कि, जिस द्वार पर प्रातःकाल जाती वहां फिर सांझ को न जाती। लोग इस गायकी आदत साधुओंकीसी देखकर उसकी सेवा करने लगे। जहां वह गाय बैठती उस स्थानको भलीप्रकार स्वच्छ कर देते तथा बालू इत्यादि बिछा देते थे। पर वह गाय उस गाँवमें केवल एक मास तक ही रही फिर दूसरे फिर तीसरे फिर चौथे गाँवमें गई। इसी प्रकार फिरती फिरती न जाने कहां चली गई। जिस मनुष्यने उस गायको देखा एवं उसकी सेवा की थी उसीने मुझसे यह कहानी कही थी जैसे यह गाय द्वार द्वार भोजनके लिये जाती थी उसी प्रकार मशकवालेके सामने पानीके लिये खडी होती अपना मुँह लगाती पानीवाला पानी पिला देता। लोग उसको राम गऊ कहा करते थे।

जंगमोंका बैल—जङ्गम एक प्रकारके फकीर होते हैं। वे लोग अपने बैल

को ऐसा सिखाते हैं कि, जो कुछ वे आज्ञा करते हैं, वह वही करता है । बैल उनकी सब बातें समझता है । यदि वे लोग कहें कि, आशीर्वाद दे तो वह शिर उठाकर आशीर्वाद दे देता है । यदि कहें कि, दाहिना पांव उठा तो दाहिना पांव उठाता है । बांयां पांव उठा तो बांयां पांव उठाता है । अमुक चिह्न पर अपने पांव रखता चला आ तो वह वैसा ही करता है । बैल चतुराईके अनेक कार्य्योंको किया करता है ।

ग्वालेकी रखवाली–काठियावार तथा नागौर देशमें गायोंके झुण्ड वनमें चरते फिरते हैं । उनका रक्षक उनके साथ रहता है । जब कभी शेर रक्षक पर आ पड़ता है तो सब गायें इकट्ठी हो जाती हैं । चारों ओरसे चक्र बांधकर अपने रक्षक को मध्यमें कर लेती हैं । जिसमें कि, शेर उसको क्षति न पहुंचा सके, उस समय गायोंका मुँह चारों ओर होता है । जिसमें शेर जिधरसे आवे उधरसे रक्षा कर सकें । अपने सींगोंको लड़ाईके लिये तैयार रखती हैं । सब एक बारगीही शेरपर आक्रमण करके शेरको भगा देती हैं । कभी कभी आप भी आखेट बन जाती हैं ।

योग्य गऊ–एक गाय एक स्थानपर चरती फिरती थी, उसके ऊपर एक दुष्ट बालक पत्थर मारा करता था । गाय बहुत सहन करनेके पीछे उस बालक की ओर दौडी । उसके वस्त्रोंको सींगोंसे फाड डाला पर उसको कुछ कष्ट न पहुंचाया । उस लडकेको पकड़कर दूर धर आई फिर आकर चरने लगी । यह गऊकी पूरी योग्यता थी ।

चीता मारनेवाला साँड–एक साँड था जिसने अपने सींगोंसे कितनेही चौपायोंको मार डाला था । यहां तक कि, उसके सींगोंकी नोक जाती रही थी । एक दिन एक चीते एक गायको मारा उस गायकी सहायताके लिये यह सांड दौड़ा, चीता तथा सांडकी लडाई होने लगी । गाय तो मर गई पर सांड लडता रहा । जब दिन बीतकर रात हुई, वह चीता अपना भोजन लेने आया । वह सांड फिर लडने लगा चीतेको मारकर उसी गायके पास गिरा दिया आप भी बहुत घायल हुआ पर लोगोंने उसके घाव सिये । वो पूर्ण स्वस्थ होगया ।

राक्षसकी गाय–सन् १८५५ ई० में जम्बू काश्मीरके पर्वतोंके बीच मुझको एक साधु मिला । वह मुझसे कहने लगा कि, आठ साधु भ्रमण करते करते पर्वत के भीतर घुस गये । कुछ दूर जानेपर उनको राह नहीं मिली वे भूलकर इधर उधर फिरने लगे, कुछ पता न लगे कि, किधर जावें जब वे भटकते फिरते थे तो उनको एक बडी जातिकी गाय मिली उन साधुओंको देखा तो घेर लिया, जिधर साधू जावें वह उधर ही घेर लेती थी । अन्तमें वो उनको घेर घारकर वहां ले चली जहां कि, आप रहती थी । साधु लोग उस गायके स्थानपर पहुँचे तो उन सबको

एक बार फिर घरके भीतर ले गईं आप उस बाडेके द्वारपर बैठ गईं, जिसमें वे सब भाग न जायें। साँझ होतेही भेड बकरियोंका झुण्ड लेकर मनुष्य रूपी राक्षस आया साधारण नहीं, किन्तु हृष्ट पुष्ट लम्बा चौडा राक्षस था। उसने मनुष्योंको देखकर एक विशेष स्थानमें बन्द कर दिया। सब बकरियोंका दूध दुहकर एक कड़ाह चढ़ा दिया उसमें दूध गर्म होनेके लिये डाल दिया। दूधके औट जानेपर उनमेंसे दो मनुष्योंको पकड शिर टकराकर मार डाला। उसी दूधकी कडाहीमें उनको पकाकर खा गया सब दूध पीकर अचेत होकरसो गया। शेषके सब साधुओं ने विचार किया कि, अब तो यह राक्षस हम सबको एक एक करके खा जायगा कदापि न छोडेगा। उन लोगोंने यह हिम्मत की कि, बडे २ चिमटे जो उनके पास थे उनको आगमें लाल किया एक वारगीही उस दैत्यको दोनों आँखोंमें चलाकर उसको अन्धा कर दिया। वो दोनों आँखोंके फूट जानेपर घबरा कर उठा और चिल्लाकर इधर उधरपकडने दौडा। साधु जब उसके हाथ न आये तो वह भेडों को पकड पकडकर बाहर फेंकता था। साधु उससे तथा उसकी गायसे किसी प्रकार बच कर निकल भागे।

भिस्तीका बैल—पंजाब देश फिरोजपुर जिलेके भाईकोट कसबामें एक भिस्तीने अपने बैलको ऐसा सिखलाया था कि, आपसे आप वह सब कार्य्य किया करता था। जल खींचनेके समय आपसे आप ठहर जाता था, जो कोई उसका बैल माँगकर कार्य्यके लिये ले जाता और कह जाता कि, मेरा इतना कार्य्य है तो वह भिस्ती अपने बैलसे कह देता कि, इतने समय तक इसका कार्य्य करके चले आना। तो वह बैल उनके साथ उतने कालतक ही कार्य करके आ जाता अधिक न करता था, यदि वह मनुष्य अपनी प्रसन्नतासे बैलको भेज दे तो अच्छी बात है, नहीं तो वह आपही भागकर अपने घर चला आता था। वह बैल अपने काम तथा समयको भली भांति पहचानता था। साधारण समय पर अपना कार्य्य करता था। सरकारी कारबारियोंकी तरह अपने मनकी घडीमें अपना समय देख लिया करता था।

न्यायकी प्रार्थना—शाहजहांके रहनेके मकानके पास एक घन्टा बँधा रहता था इसका यह नियम था कि, जो कोई उस घन्टेको बजा देता था उसका उसी समय न्याय किया जाता था। एक बार एक भिस्तीके बैलने आकर घन्टा बजा दिया उसी समय बादशाहने उस बैलको अपने सामने बुलाया उसकी पखाल ढुलाई गई तो वह अधिक वजनदार निकली यह देखकर बादशाहने वजन मुकर्रिर कर दिया कि, इससे अधिकको जो कोई बैलपर पखाल रखेगा उसे दण्ड दिया जायगा।

विशेष बात—पूर्वीय भारतमें छोटी जातियोंमें यह नियम है। कहीं २ उच्च जातिके लोगोंमें भी सुना जाता है कि, जब उनका बैल निर्बल तथा दुबला हो जाता है तो उसको सूअरका तेल पिलाते हैं। पिलानेसे वह पुनः मोटा हो जाता है। पर इसके साथ यह भी नियम है कि, जब वे सूअरका तेल पिलाना चाहते हैं तो उस बैलसे पहले पूछते हैं कि, कल तुमको सूअरका तेल पिलावेंगे । सांझको तो बैलसे कह देते हैं सबेरे उठकर बैलका मुँह देखते हैं। यदि वह बैल रोता हो आंसू आये हों तो उसको तेल नहीं पिलाते, यदि वह न रोया हो न उसका आकार बिगड़ा हो तो उसको तेल पिला देते हैं । यदि रोया अथवा दुःखी जान पड़ने पर भी तेल पिलावें तो वह बैल दुःखके मारे आपही मर जाता है, यह बैलके विषयमें विशेष बात है ।

भैंसा, भैंस

धर्मात्मा भैंसा—एक भैंसा एक जमींदारके घर रहता था। उस घरमें भैंसे तो बहुत थीं पर भैंसा एक ही था। वह अन्यान्य भैंसियोंसे तो जोड खाता पर अपनी माके निकट न जाता। उस जमींदारने अनेक युक्तियां कीं किन्तु उस भैंसाने अपनी मातासे जोड़ नहीं खाया । उस जमींदारने यह युक्ति की कि, उस भैंसके शरीरमें कीचड लगा दी कि, पहचानी न जावे उस भैंसेके पास ले गया उसने उसका संग किया। संग करनेके पीछे वह भैंस उसी समय पानीमें जा पडी उसकी देहका कीचड छूट गया। भैंसेने भैंसको भली प्रकार पहचान लिया कि, यह तो मेरी माता है और जान लिया कि, इस जमींदारने मेरे साथ धूर्तता करके मुझसे पाप करवाया है तो वह अत्यन्त क्रुद्ध होकर जमींदारकी ओर दौडा उसको मार डाला तथा उसका पेट सींगोंसे फाड डाला । वहांसे भागकर न जाने कहां चला गया ।

भैंसकी कामात्मता—फिरोजपुर जिलाके माटीकोट नामक गांवमें एक बनियेके पास एक भैंस थी, वहां कोई भैंसा न था, जब उस भैंसके मनमें काम कामना हुई तो वह भागकर चली। वह मनुष्य बहुत रोकता रहा यह भैंसने कुछ न मानी, वहांसे पांच कोसपर एक भैंसा था उसके पास जा पहुंची । सब दिन तथारात वह भैंसेके पास रही। दूसरे दिन बनिया अपनी भैंसको ढूँढ़कर घर ले आया ।

भैंसका प्रेम—पंजाब देशस्थ फिरोजपुरके समीप एक जमींदार रहता था। उसके पास सौ रुपयेकी एक भैंस थी, वह बहुत दूध देती थी । एक दिन उस भैंसको चोर लेगये इसका कहीं पता न लगा तब वह उस दुःखमें उसको चारों ओर ढूंढ़ता फिरा। उसका नाम भागमिलानी था। उस भैंसको रोता हुआ ढूँढ़ता और फिरता और कहता जाता था कि—

रोहीमें घास छप्परमें पानी । मोड़ाकर मेरी भाँग मिलानी ।।

उस भैंसके प्रेममें इसी प्रकारका शब्द करता फिरता था । उसका शब्द सुनकर एक पथिकने उससे पूछा कि, तेरी यह दशा क्यों है ? उसने अपनी भैंसका सब हाल कह सुनाया । पचास साठ कोसके ऊपर एक वैसीही भैंस दिखाई दी। पथिकने उस जमींदारका सब हाल लोगोंको कह सुनाया । जब वह पथिक कह रहा था—उसी समय उस भैंसने भी अपने स्वामी जमींदारका सब वृत्तान्त सुना, तब उसका मन अपने स्वामीकी ओर खिच आया । जबसे वह भैंस इस जमींदार से पृथक् हुई थी तबसे उस समय तक तीन वर्षका समय बीत चुका था । उसने दो बच्चे दिये थे। अब उसने जान लिया कि, मेरा स्वामी मेरे लिये रोता फिरता है । तो उस भैंसके मनमें प्रेम आया अर्ध निशाके समय, अपनी रस्सीको खोल लिया दोनों बच्चों सहित कुशल पूर्वक मालिकके गाँव पहुँच गई । घास चरकर जल पीकर तृप्त होकर बैठी ही थी कि, जमींदारने आवाज दी कि—

रोहीमें घास छप्परमें पानी । मोटाकर मेरी भाँग मिलानी ।

जब जमींदारने ऐसा कहा तो वह भैंस उठकर बोली उसको पहचानकर वह जमींदार उसके निकट गया देखा तो उसकी भाँग मिलानी दोनों बच्चों सहित आ पहुँची है । जमींदार उसको अपने घर लाकर अत्यन्त प्रसन्न हुआ ।

महात्मा भैंसा — जिला फिरोजपुर तहसील भोगा डरौली गाँवके समीप एक गाँव छोटे फेरीवालाके नामसे है, इसमें एक भैंसा है । इसका यह हाल है कि, वह जब अपनी माताके गर्भमें था तो नियमित आकारसे अधिक बढ़ गया। इस कारण जब वह उत्पन्न हुआ तो उसकी माताका मूत्रमार्ग फट गया तब वह बाहर निकला । उसकी माता मर गई । वह बिना माताका बच्चा जीवित रह गया भैंसोंके स्वामी ने दो बकरियाँ मोल लीं उस बच्चेको बकरियोंका दूध पिलाकर पालने लगा । यह वचन कहा कि, यदि यह बच्चा जीवित रहेगा तो मैं उसको छोड़ दूंगा और इससे कोई काम न लूँगा अन्तमें बच्चा पलकर बड़ा हुआ बहुत बलिष्ठ स्वरूपवान और अच्छा भैंसा हुआ । उसके ऊपर छोटे छोटे बच्चे चढ़कर खेला करते थे । वह क्रुद्ध न होता था । कभी किसीको कुछ कष्ट न देता था । प्रायः लोग दूर दूरसे अपनी अपनी भैंसियोंको लाते और उससे गर्भिणी कराके लौटाले जाते । यह भैंसा अन्तर्यामी था । क्योंकि, वह अपनी पुत्रीसे कदापि सम्भोग न करता था । कोई मनुष्य जो अपनी भैंस उससे गर्भिणी कराकर दूर लेकर जाता था उसके वीर्य्यसे जो भैंस उत्पन्न हुई हो चाहे उसको उस भैंसेने कभी देखा भी न हो । यदि वह भैंस उसके सामने आजाय तो भी उसके साथ कदापि सम्भोग न करे । जमींदार कितना

ही बल लगावे तथा कितनी ही युक्ति क्यों न करे पर वह भैंसा अपनी पुत्रीको पहचान अपना मुँह उसके मुँहसे मिलाकर पृथक् हो जाता कदापि सम्भोग न करता था । उस पशुको भविष्यके हाल जाननेकी विद्याके विना अपनी बेटीको पहचान कैसे होती थी ? इससे पता चलता है उसे भविष्य जाननेकी विद्या थी वो पूर्वजन्मका कोई महात्मा था ।

एक बस्तीमें एक भैंसा रहता था उसको एक मुसलमानने बेबात बरछी मारी । वह जख्मी होकर भाग गया । वह अपना बदला लेनेपर उद्यत हुआ । मुसलमानने भी जान लिया कि, वह भैंसा मुझसे अपना बदला लेना चाहता है। वह सदैव चौकस रहता था । एक दिनकी घटना है कि, मुसलमान बाहर किसी अन्य-स्थानसे लौटता हुआ बस्तीसे दूर एक मैदानमें पहुँचा, भैंसेने उसको उस स्थानपर देखा तो मारनेको टूटा । वहांसे वह मुसलमान भाग न सका । भैंसेने शीघ्रतापूर्वक पहुँचकर उस मुसलमानको दबा लिया अपने सींगोंसे उसका पेट फाड डाला । उसके सभी अङ्गोंको पृथक् २ कर दिया । वह इतना क्रुद्ध हुआ कि, उसके किसी अङ्गको एक स्थानपर न रहने दिया । उसके अङ्ग प्रत्यङ्ग तितर बितर करके इधर उधर रख दिये ।

गदहा

गानासुननेका शौकीन—गदहे अच्छे २ कार्य्य करनेके लिये उत्सुक रहते हैं । एक गदहा था वह प्रायः रागबाजा सुनने जाया करता था । एक स्त्री थी जो बहुत अच्छे सुरोंमें गाया करती थी, जब वह गाने लगती थी तो वह गदहा उसकी खिड़की के निकट आ जाया करता था । बड़े ध्यानसे राग सुना करता था । उस स्त्रीने एक दिन एक ऐसा राग निकाला जिसको कि, उसने पहले कभी नहीं सुना था । उस रागपर वह गदहा मोहित हो गया । उसके मकानके भीतर घुस आया बड़े जोरकी आवाज निकालकर चिल्लाता हुआ अपना राग प्रेम प्रगट करने लगा ।

कुछ कुम्हार अपने २ गदहों को लेकर फरीदकोटकी ओरसे फिरोजपुर को जाते थे । फरीदकोटके निकट एक बच्चा मर गया, जिस गदहीका वह बच्चा था, वह अपने मृत बच्चेके निकट खडी हो गई। कुम्हार मारकूट कर अपने साथ ले चले मुर्दा बच्चे को उसी जगह पर छोड गये। जब बारह कोशके अन्तपर पहुँचे उस गदहीके मनमें, बच्चेके प्रेमका ऐसा जोश आया कि, वह वहांसे भागकर अपने मृत बच्चेके निकट खड़ी हो गयी ।

न्यायकी प्रार्थना—मैंने किसी पुस्तकमें पढ़ा था, नौशेरवाँ बादशाहने महल के बाहर एक घण्टा बाँध दिया था, जो कोई फिरियादी घण्टा बजादे तो उसी समय

उसको बुलाकर उसका न्याय कर दिया जावेगा । एक दिन ऐसी घटना हुई कि, एक गदहेने आकर वह घण्टा बजा दिया । उसी समय बादशाहने उसको अपने पास बुलाया बादशाहने जाँचकी तो गदहेके स्वामीकी ओरसे गदहे पर अत्याचार साबित हुआ । गदहेवालेको सचेत किया गया कि, भविष्यमें ऐसा कार्य्य न करना नहीं तो दण्ड पाओगे ।

सूअर

सूअरोंको अक्षर सिखाते हैं वे अक्षरोंको बताते हैं वे अक्षरोंका शुद्धोच्चारण करते हैं । वे सब सूअरोंके उपदेशक कहलाते हैं । फ्रांस देशके दक्षिणी कोनेमें सूअरों को हल जोतना सिखाते हैं । जितनी वस्तुयें पृथिवीमें छिपी हुई हैं उनको विद्या सूअरोंको ही होती है । पृथिवीके भीतरसे वे छिपी वस्तुवोंको निकाल लेते हैं वे ताश इत्यादिके खेल भी खेलते हैं। आपसमें हारते जीतते हैं जब वे हारते हैं तो वे अपने कान तथा पूँछको लटका देते हैं जिससे लज्जित जान पड़ें ।

रीछ

मारटन—फ्रांस देशकी राजधानी प्येरिसनगर है उसमें मारटन नामक रीछ रहता था । वह बड़े बड़े खेल कौतुक किया करता था । भीख मांगता था, लडके उसके साथ खेला करते थे । प्रायः नवयुवक भी उसके साथ खेलने लग जाते थे । लोग उसका कौतुक किया देखते हुए दोनों पाँवोंसे चलाते थे । एक दिन वह चला जाता था तो चौकीदार कुत्तोंने भूँकते हुये उसे घेर लिया । रातका समय था लोग कोलाहल सुनकर जाग पड़े देखा तो मारटन कुत्तोंसे घिरा हुआ है । मुँहसे जीभ निकालकर विचित्र कौतुक कर रहा है ।

रीछकी मैत्री—एक काला रीछ बचपनमें बारह सिंगेके साथ लाया गया था । जबसे वे वनसे आये तबसे दोनों एकही साथ रहते थे, रीछ तथा बारहसिंगेमें घनिष्ठ मैत्री हो गई थी । यहां तक कि, दोनों एक रकाबीमें एक साथ भोजन किया करते थे । एक दिन एक कुत्ता उस बारहसिंगे को काटने फाड़ने दौडा । उसकी सहायताके लिये उसके मित्र रीछने उस कुत्ते पर ऐसी चोट लगाई कि, कुत्ता चिल्लाता हुआ भाग गया ।

बोरनियोका रीछ—बडा कौतुकी होता है वैसा और कोई नहीं होता बडे दुःख तथा नम्रता सहित भीख मांगता है । जब कोई अधिक पदार्थ उसको मिले यहांतक कि मुँह तथा पञ्जोंमें रखनेसे अधिक हो जाय तो शेषका अपने पिछले पाँवपर इस प्रकार रखता है कि, मैला नहीं होने देता । यदि कोई उसको क्रोध

करावे तो फिर शीघ्रही प्रसन्न नहीं होता जबतक कि उसका वैरी उसके सामने रहे तब तक हर्षित नहीं होता है न मनानेसे मानता ही है।

शाही शौक–पहले रीछका कौतुक विलायतमें हुआ करता था । जो कोई वाटिकामें कौतुक देखनेके लिये जाते थे उनसे आधा पैसा लिया जाता था। लोग रीछोंकी लड़ाई तथा उसके भाँति भाँतिके कौतुक देखनेको वहां जाया करते थे। इङ्गलिस्तानके बादशाह प्रथम जेम्स और एडवर्ड डालेनके समय इस कौतुकके बडे २ चतुर बाजीगर थे पर सन् १६४२ में इसके रोकनेकी आज्ञा दी गई। रीछों की अनेक जातियाँ होती हैं । उसके हाथ पांव मनुष्योंके समान होते हैं ।

ग्रीसनका रीछ–बहुत बलिष्ठ होता है, उसमें ऐसा बल होता है कि, पक्के पांच सौ सेरका बोझ उठा ले जाता है। यह यदि किसी शवको विना भूखके समयमें पावे तो भूमि खोदके गाड देता है। पडे हुये शवको गाड देना तो उसकी स्वाभाविक क्रिया है। यदि किसी शिकारीको यह ग्रीसन रीछ आकर दबा ले वह मनुष्य अपने हाथ पैर फैलाकर मुर्दोंके समान लेट जावे, तो रीछ उसे मुर्दा समझ उसी समय एक गढ़हा खोद उसको उसमें डाल ऊपरसे मिट्टी भर देता है। कहते हैं कि, भेडिया चाहे कैसाही भूखा क्यों न हो पर ग्रीसन रीछके ढाँके हुए शवको कभी नहीं छूता । इस पशुमें यह आदत और भी है कि, वह आखेटको बगलमें नहीं लेता उसके पञ्जे रुखानी जैसे तीक्ष्ण होते हैं अपने आखेटको देख खडा हो सहसा उस पर टूट अपने अगले पञ्चोंसे उसे मारता है ।

रीछकी प्रतिष्ठा– किसी किसी देशमें रीछ बडा प्रतिष्ठित जीव माना जाता है। वहां जब कोई रीछ दिखाई दे तो लोग अत्यन्त नम्रतापूर्वक गीत गाते हैं कि, ऐ रीछ! हमारे अपराधको जो कि, हम बरछी लेकर आये आपपर आक्रमण किया आपसे लडाई की इसे क्षमा कीजिये हमारे अपराधसे रुष्ट न हूजिये। आप श्रेष्ठ हो । आप मुझपर आक्रमण न कीजिये, न हमको घायल कीजिये । उसकी प्रशंसाके गीत ये हैं कि, आप श्रेष्ठ तथा बूढ़े हो आप बालोंकी कुर्ती पहने हुये हो तो भी श्रेष्ठ हो तथा पूजने योग्य हो ।

स्तुतिसे खुशी–सर जान रिचर्डसन साहबका कथन है कि, एक वृद्ध तथा स्त्री नहरके किनारे पर बैठे थे। उन्होंने देखा कि, एक बलिष्ठ भयानक रीछ नहरके दूसरे किनारेसे उनकी ओर चला आता है। उस मनुष्यके पास किसी प्रकारका हथियार नहीं था। उसने बचनेकी कोई युक्ति न देखी तो उस रीछकी प्रशंसा करने लगा। उसके स्वच्छ स्वभाव तथा बडप्पनकी बडाई करने लगा । नम्रता पूर्वक कहने लगा कि, मैंने आपकी तथा आपके घरानेवालोंकी

कभी कोई क्षति नहीं की है वरन् आपका तथा आपके समस्त सम्बन्धियोंकी प्रशंसा ही करता रहा हूं। आपको बहुत श्रेष्ठ जानता था। ऐ महाशय! आप चले जाइये। हमको किसी प्रकारका कष्ट न दीजिये। इतनी बात सुनते ही वह रीछ परम दयालु प्रतीत होने लगा। चुपके चुपके पीछे फिर गया।

यांत्रिक उपाय—सिङ्गली लोग अपने गलेमें एक यन्त्र बाँध लेते हैं अथवा अपने बालोंमें रख लेते हैं जिससे रीछके सताये जानेसे बच जाते हैं।

मानुषी भोगी—एक मनुष्य द्वारा जाना गया कि, कुछ मनुष्य एक पर्वतके निकट रातको गये। वे अचेत होकर सो गये तो उससे एक रीछ आया। एक स्त्रीको उठा ले गया। कई दिनों तक वह रीछ उस स्त्रीको एक छिपी जगहमें छिपाये रहा। उसके साथ सम्भोग भी करता रहा। पर्व्वतसे लाकर भाँति भाँतिके फल खिलाता रहा। एक दिन उस स्त्रीका पति अपनी पत्नीको ढूंढ़ता हुआ उस स्थानपर पहुँचा। देखा कि, वह स्त्री बैठी है तथा उसकी जांघपर शिर धरकर वह रीछ सोया पड़ा है। उस मर्दने स्त्रीसे कहा कि, तू चली आ। स्त्रीने इशारा किया कि, मैं कैसे आऊँ? स्त्रीने जब अपनी देह हिलायी तो उस रीछने जागकर पुरुषपर हमला किया। उस मर्दने बन्दूकसे ऐसी गोली मारी कि, वह रीछ वहीं मर गया। वह अपनी स्त्रीको लेकर अपने घर चला आया।

भेड़िया।

भेड़िया भारतवर्षमें एक विख्यात हिंसक जन्तु है। वह बड़ी युक्तिसे आखेट किया करता है। बहुतेरे भेड़िये आपसमें मेल करके इकट्ठे हो बडे बडे शीघ्रगामी तथा तीक्ष्ण बुद्धिके पशुवोंको मार लिया करते हैं। वे अर्द्ध चन्द्राकार व्यूह बाँधकर छिपके बैठते हैं। पर्व्वतके ऊपरसे आखेटको ढालकी ओर रगेदकर गिरा देते हैं जिससे वह किसी ओर भाग जानेका पथ न पा नीचेकी ओर गिरने लगता है। उस समय अर्द्धचन्द्राकारमें बैठे हुए भेड़िये झटपट निकलकर उसे खा जाते हैं। इसी प्रकार भेड़ियोंकी अनेक धूर्त्ततायें प्रसिद्ध हैं।

शाह एम्यूल्स तथा एम्स—रूमके इतिहासमें लिखा है कि, इतालिया देशके बादशाहके मरनेपर राजधानीमें दूसरा बादशाह सिंहासनारूढ़ हुआ। उसने पहिले बादशाहकी एकलौती पुत्री वर्जिनाको फकीरनी बनाकर अपोलो देवताके मन्दिर में सेवाके लिये नियुक्त कर दिया। वर्जिना उस मूर्तिकी सेवा पूजा करने लगी। उसको देवताकी पूजाहीमें लगा दिया, विवाह न किया। बादशाहको भय था कि, लड़कीकी सन्तान राज्य लाभका उद्योग न कर बैठे पर कुछ दिवसोंके पीछे वर्जिनाने दो पुत्र जने। तब बादशाहने पूछा कि, यह किसका गर्भ था।

उसने उत्तर दिया कि, अपोलो देवताका है। यह बात सुनकर बादशाह बहुत क्रुद्ध हुआ । वर्जिनाको जीवितही पृथ्वीतलमें गड़वा दोनों पुत्रोंको नदीमें फेंकवा दिया । दोनों बच्चे टेवर नदीमें पड़े हुए भी आँधी लहरोंसे किनारे जा लगे । उनके रोनेका शब्द सुनकर एक मादा भेड़िया दौड़ आई । दोनोंको निज माँदमें उठा ले गई । अपने बच्चोंके समान उनको पाला । अपना दूध पिलाया । वे दोनों अपनी धर्म्मकी माता द्वारा पलकर बहुत बड़े हुये । उनकी धर्म्मकी माता पालनपोषनमें बहुत ध्यान देती थी। वे दोनों महावीर तथा बलिष्ठ हुये। उनमेंसे एकका नाम एस्यूल्स और दूसरेका नाम एम्स था। वे दोनों वहांके बादशाहको मार उस देशके प्रसिद्ध राजा हुये ।

नरकन्या—ऐसी सुनी है कि, अवध पश्चिमोत्तर प्रान्त अथवा वर्तमान युक्तप्रदेशके किसी गांवमेंसे किसी मुसलमानकी लड़कीको एक भेड़िया उठा ले गया । उसने अपनी मांदमें रख दिया और नहीं खाया । उस लड़कीको भेड़ियेका दूध पिलाकर पाला । जब वह लड़की बड़ी हुई तो भेड़ियाके ही समान उसकी आदत हो गई। चौपायोंके समान चलने लगी । भेड़ियोंकी तरह भयानक होकर क्रमशः युवावस्थाके समीप पहुँची । एक दिन उसके घरके लोग उसको देखकर पकड़ लाये । एक वृक्षके नीचे बाँध दिया । वह घरके भीतर रहनेसे बहुत घबराने तथा भेड़ियोंके समान चिल्लाने लगी । वह कच्चा मांस खाती दूसरी कोई चीज न चाहती थी यदि उसको कपड़ा पहनाया जाता तो कपड़ेको चीर फाड़कर अलग कर देती । कितने दिनोंतक तो उसकी यही अवस्था रही । जिसने उस लड़कीको पाला और दूध पिलाया था वह मादा भेड़िया उसके चारों ओर फिर फिर कर चिल्लाती थी । वह लड़की भी अपनी दूध पिलाई माताको देखकर बहुत छटपटाती थी पर लोग बहुत सचेत रहते उस भेड़ियाको मारकर भगा देते थे । अन्तमें वह उसको छोड़ गई उस लड़कीको लोग शिक्षा देने लगे । पहले कच्चा मांस फिर पक्का फिर रोटी खानेकी आदत डलवाई । मनुष्यकी बोली बोलना सिखाया। कपड़ा पहनना सिखाया। मनुष्यके सब नियम सिखाये। पर वह मनुष्यके समान थोड़ा ही बोल सकती थी । मनुष्यके समान स्वच्छ बोली न हुई तथा चाल ढाल भी न्यारीही रही ।

भेड़ियेका पाला मनुष्य—सुना था कि, एक मनुष्य लखनऊमें पकड़ आया था वह भेड़ियाकी माँदमें मिला था भेड़ियोंकीसोही उसमें आदत भी थी । वह बड़ा भयानक था यह मनुष्य जन्मकालसे ही भेड़ियोंमें रह गया था ।

चरक

चरक एक पशु भेड़ियेके समान होता है। उसके विषयमें कितनीही विचित्र

कहानियाँ कही गई हैं। यह बहुत बलिष्ठ होता है बड़े बड़े पशुवोंकी हड्डियाँ चबा जाता है। यह सड़ा गला माँस खाया करता है। लोग कहते हैं कि, यह वास्तवमें हिजडा होता है। प्रत्येक वर्ष यह अपना ढङ्ग बदलता है। एक वर्षमें यह स्त्री तथा दूसरे वर्ष में पुरुष हो जाता है इसी प्रकार यह सदैव स्त्री पुरुष हुआ करता है। यदि उसकी छाया कुत्ते पर पड जाय तो गूँगा हो जाता है। पर जब वह कुत्ता बोलता है तो मनुष्योंके समान बोलता है वैसीही बातें करने लगता है। यह कुत्ता प्रत्येक मनुष्यका नाम लेकर बुलाता है। यह पुराने लोगोंका ख्याल है। अंग्रेजी पुस्तकोंमें इसके विषयमें बहुत कुछ लिखा है। चरक पर डाइन स्त्रियाँ सवार हुआ करती हैं।

स्यार

स्यार गीदडको कहते हैं। गीवडकी बुद्धिमानीकी अनेक कहानियाँ विख्यात हैं। सियारको शेरका मन्त्री कहते हैं। क्योंकि, जब कहीं आखेट नहीं दिखाई देती तब स्यार एक ऐसा शब्द करता है कि, जिससे शेर जान जाता है कि, आखेट कहीं समीपही है। तैयार होके उसको मार लेता है। गीदड उसके खानेके पीछे बचा मांस खाकर अपनी उदर पूर्ति करता है। शेरकी सहायतासे सदैव कृतकार्य होता रहता है। इसकी बुद्धिमानीकी अनेक कहानियां हैं। स्यारसे बहुतेरे मनुष्य शुभा-शुभका विचार किया करते हैं भले बुरे भाग्यको जाना करते हैं। इस कारण पूर्वीय भारतके मनुष्य इसको स्यार पांडे कहा करते हैं इसे पशुओंमें धूर्त जाति मानते हैं। इस विषय पर कबीर साहबका वचन है कि, जो मनुष्य पुराण पढ़ते पढ़ाते तथा सुनाते हैं पर सारको ग्रहण नहीं करते वे मरकर स्यार होते हैं पूर्वजन्म की बुद्धि तथा चैतन्यता इस जन्ममें भी काम देती है। यह बात भी प्रसिद्ध है कि, स्यार रविवारका व्रत रखा करते हैं जिस दिन रविवारका व्रत करते हैं उस दिन कुछ खाते पीते नहीं हैं। लोग कहा करते हैं कि —

पशु तनसे हुं बरत एतवारा। राखें शूकर श्वान सियारा।

पूर्वजन्मके रंगे स्यार कथा पुराण सुनाके, लोगोंको पूजा पाठकी युक्ति बताते हुए भी स्वयम् कुछ न करते थे, इसी कारण स्यार हुये हैं। इसके शरीरसे बड़ी दुर्गन्धि आती रहती है इस कारण लोगोंको इससे बड़ी घृणा होती है। इस पशुको कोई भी पालना पसन्द नहीं करता। भूखमें सडा मांस तथा विष्ठा आदि खाया करता है। स्यार पांडेके पास यद्यपि अब कुछ भी ढोंगका सामान नहीं तथापि ज्योतिष विद्या अब भी कुछ उनके पास है। तिथि तथा दिन इत्यादि जान लिया

करते हैं। एतवारके दिनको भली प्रकार पहचानकर व्रत रखा करते हैं। पंजाब तथा हिन्दुस्थानके लोग यों कहा करते हैं।--

एतवारकी रात कराड़ी। गीदड दाँत न लावे बाड़ी ॥

कुत्ता

कुत्ता बड़ा कृतज्ञ, नमक हलाल, चौकस तथा स्वामीपर प्राण देनेवाला पशु है इसी कारण लोग उसको पालते हैं, पुस्तकों तथा मनुष्योंमें कुत्तोंके बडे २ गुण प्रगट हैं। कुत्ता मनुष्योंके घरोंकी बहुत चौकसी करता है। कृतज्ञताके साथ अपने स्वामीकी अधीनतामें रहता है। संसारमें कुत्तों के अनेक गुण और बुद्धिकी बातें प्रसिद्ध हैं।

राम कालका श्वान--पुराणोंमें लिखा है कि, महाराज रामचन्द्रजीके समयमें एक संन्यासी अपना पेट भरकर बची रोटी सिरहाने रखकर सोगया, उसने सोच-लिया था कि, बची रोटियोंको साँझको खावेंगे। जब वह अचेत होके सोगया तो उसी वृक्षके नीचे एक कुत्ता बैठा था, उसने संन्यासीके सिरहानेसे वो रोटी खींच एक स्थानपर भूमिमें दबा दिया, आप चुपचाप उसी जगह बैठ रहा। वह संन्यासी सोकर उठा, अपनी रोटी न पाकर इधर उधर देखने लगा कि, मेरी रोटी कौन ले गया ? जान लिया कि, और तो कोई नहीं, मेरे समीप केवल यह कुत्ता है, इसीने मेरी रोटी खा ली। क्रुद्ध होकर कुत्तेको एक डण्डा मारा, जिससे कुत्तेकी एक टाँग टूट गयी। कुत्ता श्रीरामचन्द्रजीके निकट जाकर चिल्लाने लगा। महाराजाने उस संन्यासीको बुलाया पूछा कि, तुमने उस कुत्ते को क्यों मारा ? संन्यासीने उत्तर दिया कि, यह कुत्ता मार खानेके ही योग्य था, पहले तो इस कुत्तेमें यह दोष है कि जब किसी साधुको देखता है तो भूँकता है--जब वे रोटी मांगने जाते हैं तो यह उनको काटने दौड़ता है, दूसरा इसमें यह दोष है कि, रातको चिल्लाता है सोने नहीं देता। तीसरा प्रातःकाल भजनके समय सो जाता है। चौथे यह मार्गके बीचों बीच बैठता है। पाँचवें जब कोई कहीं चलता है तो यह कान फटफटाता है, उसके कान फटफटानेसे काम नहीं होता छठें मैंने साँझके लिये रोटी रखी थी यह निकाल कर खागया। इसी प्रकार इसमें अनेक अवगुण हैं, इस कारण मारनेके ही योग्य है। महाराजाने कुत्तेसे पूछा कि, तू अब इसका उत्तर दे। कुत्तेने कहा कि, मैं साधुओं को देखकर इस कारण भूँकता हूँ कि, तुम तो संसारसे विरक्त होकर साधु हो गये, अब द्वार द्वार पर भिक्षा क्यों मांगते हो। परमेश्वर पर क्यों नहीं निर्भर रहते, क्या वह तुम्हें तुम्हारा भोजन नहीं पहुँचावेगा ? जो अभी तक सांसारिक मनुष्यों के अधीन बने फिरते हो, यही साधूपना है अथवा धूर्तता है ? रातभर मैं इस कारण

चिल्लाता रहता हूँ कि, जिसका टुकड़ा मैं खाऊँ, हलाल करके खाऊँ चोरीसे बचाऊँ किसी भी वैरीको निकट न आने दूँ। प्रातःकाल सोता नहीं वरन् जागता रहता हूँ पर लोगोंके देखनेमें सोता दिखाई देता हूँ, पथमें मैं इस कारण बैठता हूँ कि, मैं अपने पापोंके कारण कुत्ता हो गया हूँ. यदि अब किसी साधु सन्त के चरणकी रज मुझपर पड़ जावे तो मैं मेरी कुत्तेकी देह छोड़ मनुष्यकी देह पाऊँ मैं भविष्यका वृत्तान्त जानता हूँ. जिसके द्वारा मैं जान जाता हूँ कि, यह कार्य्य होगा अथवा नहीं, जो कार्य्य नहीं होनेवाला होता है उसी समय मैं कान फट-फटा देता हूँ कि, तू मत जा, तेरा कार्य्य सिद्ध न होगा। तेरा परिश्रम व्यर्थ जायगा। मैंने इस संन्यासीकी रोटी नहीं खाई, केवल उसके सिरहानेसे रोटी खींचकर एक स्थान पर गाड़ दी। क्योंकि, उस दिन मुझे एतवारका व्रत था, रोटी खाना स्वीकार नहीं था, केवल इसकी भलाईके लियेही मैंने रोटी ले ली, क्योंकि, यह बासी रोटी खाता तो बीमार हो जाता। रोटी तो यह माँगकर खाता है औषध कहांसे पाता?, जिस परमेश्वरने इसको इस समय रोटी दी है क्या साँझको न देगा ? साँझके समय यह ताजी रोटी माँगकर खा ले। जब श्रीरामचन्द्रने इस प्रकार समस्त बातें सुनीं तो राज्य कर्म्मचारियोंको आज्ञा दी कि, जाके देखो इस कुत्तेने कहां रोटी दबाई है ? वह कुत्ता उनके साथ गया, जहां रोटी दबाई थी वो जगह बतला दी। उन लोगोंने रोटी खोदकर निकाल महाराजसे जाकर सारी बातें कह सुनाई। महाराजने कहा कि, अब तो यह कुत्ता निर्दोष सिद्ध हो गया संन्यासीका ही दोष है। महाराजा ने कुत्तेसे पूछा कि, तू क्या चाहता है, मैं इस संन्यासीको क्या दण्ड दूँ। उसने कहा कि, इसको शिवजीके मन्दिरका महन्त बना दीजिये। महाराजाने कहा कि, यह शिवजीके मन्दिरका महन्त हो जावेगा तो बड़े सुख चैनसे अपने जीवनके दिन बितावेगा। यह तो इसको कोई दण्ड न हुआ. कुत्तेने उत्तर दिया कि, हे महाराज ! मुझको अपने पूर्व जन्मकी सुधि है, मैं शिव पूजा किया करता था, एक दिन मैंने मन्दिरमें घृतका दीप जलाया था जिससे शिवजीके चढानेका घृत मेरे नखोंमें समा गया। मैं रातको भोजन करने लगा तो गरम दालमें मेरे नाखूनका घी छुट पड़ा, मैं अचेतावस्थामें उसको खा गया। केवल उतने ही घी खानेके दोषपर मैं मनुष्यसे कुत्ता हो गया हूँ. मैं केवल उतना घी खानेके पापसे कुत्ता होगया ऐसी अवस्थामें जब यह महन्त होकर शिवजीका प्रसाद खाया करेगा तो न जाने कितने जन्मतक कुत्ता होगा, किस कष्टमें फसेंगा। इस कारण इससे बढ़कर इसको और क्या दण्ड है। कुत्ते के कथनके अनुसार वह संन्यासी शिवमन्दिरका महन्त बना दिया गया।

मनुष्यकीसी बातें—लेटेम्बर नामके एक मनुष्यने फ्रांसककी विद्याशालामें इस प्रकार कहा है कि, एक कुत्तेको मनुष्यकीसी बोली सिखाई गई थी। वह स्पष्टरूपसे बोल सकता था आवश्यकताके अनुसार चाहता था कहवा मँगा लेता था।

एक कुत्ता स्पष्टरूपसे एलिजिबेथका नाम लेता था। वह दूसरी बोली भी बोलता था पर साफ नहीं बोल सकता था।

NATURAL-HISTORY.

डाक्टर गोल्ड स्मिथ साहिबकी नेचरल हिस्ट्रीमें लिखा हुआ है कि, एक बालकने एक कुत्तेको बिना सिखाये हुए मनुष्यकी बोली बोलते हुए देखा था।

नानीकुतिया—पंजाब देशस्थ फीरोजपुर जिलेके भाई कोटकसबेमें एक कुतियाने चार बच्चे दिये। उसको एक जमींदारने ऐसा सोटा मारा कि वह मर गई। उसके बच्चे अनाथ होगये, भूखसे मरने लगे, मृत कुतियाकी माता अपने नातियोंसे स्नेह करने लगी। उनकी नानीको भी दो बच्चे हुए थे उसके दोनों बच्चे जीवित थे। अब उसने अपने दोनों बच्चोंको लाकर अपने नातियोंके साथ रखा उन छः बच्चोंका लालन पालन एक साथ उस नानी कुतियाने किया।

डब्बू—फीरोजपुर जिलेके डरौली गाँवके पास कोपरीवाला नामक एक गाँव है। उसमें एक बहुत कृतज्ञ आज्ञाकारी कुत्ता था। उसका स्वामी जो कुछ कहता वह वैसाही काम किया करता। जहाँ बिठा देता वहीं बैठा रहता। जब कहता कि, उठ अमुक स्थानको जा तो वह तुरन्तही चला जाता वह कार्य्य कर आता। भोजन बनता, घरके मनुष्य कहीं चले जाते तो वह चौकस बैठकर भोजनकी रखवाली किया करता। किसी मनुष्य तथा पशुकी सामर्थ्य नहीं थी कि, भोजनके निकट आ सके। उसका स्वामी आवे अथवा स्वामीकी स्त्री आवे तो आ सकती थी घरके लोग भोजन करती बार उसको भी दे दिया करते थे। स्वामीकी बिना आज्ञा भोजनमें मुंह न लगाता था, उसके कितनेही गुण थे। एक दिन ऐसी घटना हुई कि, वह कार्तिक मासमें जब कि, कुत्तोंको काम सताता है कुत्ते कुतियोंके पीछे दौडते फिरते हैं, उस समय यह भी एक कुतियाके पीछे लगा। लोगोंने देखकर उस जमींदारसे कहा कि, तुम्हारा डब्बू कुत्ता कुतियोंके पीछे फिरता है। जब वह कुत्ता घर आया तो उसका स्वामी उस पर झिड़का। कहा कि, ऐ डब्बू! तू भ्रष्ट हो गया, बूढ़ा होने पर भी तू कुतियोंके पीछे फिरा करता है? क्या तुझे लज्जा नहीं आती। अब तू मेरे सामनेसे चला

जा, फिर मत आइयो । इतनी बात सुनतेही वह कुत्ता पलटकर गाँवके बाहर आया, एक तालावके समीप जलके किनारे वृक्षकी जड़पर अपना शिर रखकर लम्बा पड़ गया । जब भोजनका समय आया तो जमींदारकी स्त्रीने कहा कि, आज डब्बू नहीं आया, न जाने कहाँ है लोगोंने समाचार दिया कि, डब्बू तो गाँव के बाहर जलके किनारे पड़ा हुआ है । जमींदारने जान लिया कि, डब्बू मेरी झिडकियोंसे असन्तुष्ट हो गया, रोटी तथा लस्सी लेजाकर उसके मुंहके निकट रख दी । उसने मुंहसे भी न लगाया । यद्यपि जमींदार तथा अन्यान्य मनुष्योंने उसको बहुत कुछ बढावे दिये पर उसने रोटी नहीं खाई । जमींदारने कहा डब्बू ! तू घर चल, पर वह न आया । जमींदार फिर झिडका । कहा कि, तू घर चल, तब घर आया । उस जमींदारकी स्त्री ने कहा कि, ऐ डब्बू ! क्या तुझे लज्जा नहीं आई कि, तू घर आया । इतनी बात सुनतेही फिर वह भाग कर उसी स्थान पर जा पडा । जमींदार लाख लाख बार उठाता, पर वह कुत्ता अपनी जगहसे हिलता नहीं था । उसी जहग पडा रहा, उसकी आंखोंसे आँसू निकलते थे । वह बिना खाये पीये उसी जगह पडा रोता रहा । अन्त चौथे दिवस उसी जलके किनारे मर गया । जमींदारने नवीन वस्त्रका कफन देकर पृथिवीमें उसे अपने हाथसे गाड दिया । ऋषि मुनि और सिद्ध साधु जो अपने कर्म्मोंके फलसे किसी पशुकी योनिमें जन्म लेते हैं तो भी उनके पूर्व्व जन्मके कार्य वैसेही उस जन्ममें भी रहते हैं ।

दूसरा डब्बू—फीरोजपुर नगरके सोतियोंके महलामें एक डब्बू माकन कुत्ता था । वह एतवारका व्रत रक्खा करता था, जो कोई उसके स्वामीसे लड़ता झगडता तो वह अवश्य ही काटता । बनाया हुआ भोजन रखकर घरके मनुष्य चले जाते वह उसकी रखवाली किया करता । किसी पशु अथवा मनुष्यको पास न आने देता, बहुत चौकसी रखता था । जो कार्य्य उससे कहा जाता वे वो सब ठीक ठीक किया करता था । जो मिहमान आते तथा बिदा होने लगते वो उनके वस्त्रका खूंट पकड लेता था । उस कुत्तेका यह तात्पर्य होता कि, वह रोटी खाकर जावे जब घरके मनुष्य कहते कि, डब्बू ! यह मिहमान भोजन कर चुका है इसको जाने दे तो वह उसको छोड देता घोडेकी बाग पकड़कर ले जाता उसको पानी पिलाया करता । वह कुत्ता मिट्टीके बरतनका हो अथवा गँदला जल हो कभी नहीं पीता था । मल त्यागके लिये बाहर दूर चला जाता था । स्वच्छ तथा पवित्र रहता था । चारपाई पर सोया करता था । चौकी पर बैठता था । मुसलमानका रोटी पानी व्यवहारमें कदापि नहीं लाता था । जब तक उसका स्वामी आज्ञा न देता तब तक कुछ नहीं खाता था ।

अन्तर्यामिनी कुतिया—जौनपुर जिलेके बदलापुर मौजेमें एक कुतिया थी वह बच्चोंको जनते ही खा जाती एक भी जीवित न छोडती थी एक बार एक ब्राह्मणने उससे एक बच्चा छीन लिया उसको खाने न दिया। उसको पालता रहा। जब वह बच्चा बड़ा हुआ तो ऐसा विषैला हुआ कि, जिसको काटता वह भूंक भूंककर मर जाता। उसका काटा हुआ कहता कि, मेरी माता कुतिया अन्तर्यामिनी थी इस कारण वह अपने सारे बच्चोंको खा जाया करती थी। इसका कारण यह था कि जितने बच्चे उसके पेटसे उत्पन्न होते थे सबके सब विषैले होते थे। यह दशा देखकर ब्राह्मणने उस कुत्तेके पालनेका बहुत खेद प्रगट किया। लोगोंने उस कुत्तेको मारकर फिकवा दिया।

मोतीराम—अवध पश्चिमोत्तर प्रान्तके कोटवानामके कसबेमें जगजीवनदास नामके एक श्रेष्ठ पुरुष, सत्य नामियोंके पंथके आचार्य हुये हैं। वे कबीर साहबके शिष्य थे। उनके पास एक मोतीराम कुत्ता था। वह उनका बड़ा आज्ञाकारी था। जगजीवनदासने उसके कृतज्ञतादि गुणको भली भांति देखकर उस पर बड़ी दया की, महन्तों की तरह सेली टोपी पहना दी। वह कुत्ता भी सारे साधुओंके साथ भजन कीर्तन सुना करता था जैसे साधु सुनते हैं।

एक दिन ऐसी घटना हुई कि, मोतीराम अन्यान्य कुत्तोंके साथ मिलकर चमारोंकी वस्तीमें गया। वहां पशुवोंकी हड्डियोंका ढेर लगा हुआ था। सारे कुत्तोंने एक एक हड्डी लेली। मोतीरामने भी सजातियोंके साथ हड्डी उठा ली। लोगोंने जगजीवनदासजीको समाचार दिया। देखो मोतीरामने मुंहसे हड्डी पकडी है। उन्होंने जाकर देखा तो पुकार कर कहा कि, ऐ बेईमान मोतिया! अब तू मुझको अपना मुंह मत दिखा। यह बात सुनते ही मोतीराम नितान्त ही लज्जित होकर बैठ गया। उसने उसी समय प्राण त्याग दिये।

जगजीवनदासजीने उसकी समाधि बनवा दी। सुना है कि, उसकी समाधि वहाँ अभीतक बनी हुई है। जिस किसीको पागल कुत्ता काटता है वह मोतीरामके नामसे यह कहता कि, मैं तुम्हारी समाधिपर कुछ चढ़ाऊंगा, मुझे कुत्तेका विष न चढ़े। जब वह चङ्गा हो जाता है तो वह मोतीरामकी समाधिपर जाकर अपनी मनौती पूरी करता है।

पठानका कुत्ता—अवध पश्चिमोत्तर प्रान्तकी एक बात है कि, एक पठानने आवश्यकतावश एक महाजनसे दो सौ रुपया लिया, अपना कुत्ता उन रुपयोंके बदले उसको दे दिया प्रण किया कि, अमुक समयके पीछे मैं तुम्हारा [illegible] अपना कुत्ता ले जाऊँगा। एक रातकी बात है कि, महा[illegible]के

मकानसे चोर बहुतसा धन दौलत लूट ले गये। सवेरा होते ही चोरको ढूंढ़ा पर पता न लगा। लोग एकत्रित हुये हुल्लड मचा। उस समय वह कुत्ता महाजनका वस्त्र पकड कर खींचता था पर लोग कुछ ध्यान न देते थे, अन्तमें लोगोंने मालूम करना चाहा कि, कुत्तेके कपडा खींचनेका क्या कारण है कि, यह कुत्ता बारम्बार कपड़ा पकड़के खींचता है आगेको दौडता जाता है। कुछ लोग कुत्तेके साथ चले वह उनके आगे आगे चला। नगरके बाहरके एक तालाब पर जा पहुँचा, वहाँ वह तालाबके भीतर घुस गया, गोता मारकर फिर बाहर निकल आया। लोगोंको इशारा किया कि, इसमें सब माल असबाब है। क्योंकि, जब चोरोंने वहाँ माल रक्खा था तब यह कुत्ता देख रहा था। लोगोंने कुत्तेका अभिप्राय जान लिया। तालाबके भीतर घुसकर माल ढूंढ़ने लगे। चोरीका सारा माल तालाबसे निकल पडा, महाजन अपना माल पाकर अत्यन्त हर्षित हुआ। एक पत्र उस कुत्तेके गलेमें बाँध कर उससे कहा कि, अब तुम जाओ अपने स्वाभीको मेरा यह पत्र दिखाओ। तब वह कुत्ता चला। उसी समय वह पठान महाजनका रुपया लेकर आता था। राहमें वह कुत्ता मिला उसको देखकर पठान अत्यन्त क्रुद्ध हुआ। कहा कि, ऐ कुत्ते! तूने मुझको महाजनसे झूठा बनाया, मेरी आज्ञाके बिना चला आया। तलवार खींचकर मारी कुत्तेका शिर कट गया। वह पत्र गिर पडा जब उसको लेकर पढ़ा तो उसमें लिखा पाया कि, मैंने आपसे दो सौ रुपये भर पाये चोरीका सारा हाल तथा कुत्तेकी निमक हलालीकी सब बातें लिखी हुई थीं उसको पढ़कर पठान नितान्त ही दुःखी हुआ उस उजाड़में कुत्तेकी पक्की छतरी बनवादी। सुतरां अभीतक वह क़ब्र वहां बनी हुई है।

कुत्ताकी योनिमें कर्जा—मैंने सुना था कि, महाजन अपने मृत पिताके लिये तीर्थमें पिण्ड देने गया, सांझके समय एक अपने मित्र महाजनके घर उतरा। घरवालेने उस महाजनसे कह दिया कि, रातको सचेत रहना, हमारे घर एक ऐसा बलिष्ठ कुत्ता है जो कि, रातके समय किसी पराये मनुष्यको घरके समीप देखता है तो फाड़ खाता है। उसके कहनेसे मेहमान चौकस रहा। रातके समय उसको पायखाने जाना हुआ। उसने इधर उधर कुत्तेको देखा पर वह कहीं दिखाई नहीं दिया। वह लोटेमें जल भर कर पायखानेके लिये चला। यह देख चारपाईके नीचे बैठा हुआ कुत्ता बाहर निकलकर महाजनके पीछे लग गया। महाजनने पीछे फिरके देखा तो कुत्ता दिखाई दिया। यह देखकर वह बहुत डरा और ठहर गया। उसको भयभीत होते देखा तो कुत्ता बोला कि, भयभीत न हो, पायखाने जा यह बात सुनकर वह और भी चकित हुआ

कि, यह कुत्ता तो बातें करता है उसने पूछा कि, तुम कौन हो ? अपना हाल कहो, कुत्ता बोला कि पायखाने हो आ, तब मैं तुमसे कहूँगा । वह महाजन पायखानेसे शीघ्रही पलटकर हाथ पैर धोकर आ बैठा । उस कुत्तेसे पूछा कि, तुम कौन हो ? कुत्तेने कहा तुम कहाँ जाते हो ? महाजनने उत्तर दिया कि, अपने पिताकी गति कराने जाता हूँ । यह बात सुनकर कुत्ता बोला कि, तुम्हारी गया सुफल न होगी । क्योंकि, तुम्हारा पिता तो मैं हूँ । मैंने इस महाजनसे पचास रुपये उधार लिये थे पर ये भूलसे बहीपर न चढ़ा सके, न मैं उनको इसे लौटा सका । उन्हींके बदले मैं इस महाजनके घर कुत्ता हुआ हूँ । यदि तू उसको वे पचास रुपये दे देवे तो मैं इस कुत्तेकी योनिसे छूटूं, तेरा गया करना सुफल हो। यह बात सुनकर वह मेहमान चुप हो रहा । सबेरा होतेही उसने घरवाले महाजनसे कहा कि, ऐ भाई ! हमारा तुम्हारा लेन देन सदैवसे चला आता है, हमारे पिताने तुमसे पचास रुपये लिये थे, वो अबतक नहीं दिये जासके, उन्हें ले लो । क्योंकि, हिन्दुओंका यह नियम है कि, जो गया करने जाता है वह प्रथम अपना सारा ऋण शोध लेता है तब ही गया सफल होती है, नहीं तो उसका गया करना सुफल नहीं होता । यह बात सुनकर घरवाले महाजनने अपनी बही निकाली । देखी तो कहीं लिखा न पाया । उसने कहा कि, मैं रुपया न लूंगा । उसने बहुत समझाया । कहा कि, यद्यपि तुम्हारी बही पर नहीं चढ़ा पर मुझे भली प्रकार विदित है कि, मेरा पिता तुम्हारे पचास रुपयोंका ऋणी था । पीछे बहुत कहनेसे उसने रुपया ले लिया । उसने अपने मित्रसे विदा होकर गयाकी राह ली । अभी वह दो तीन कोस भी न गया होगा कि, कुत्ता मर गया जिससे वह महाजन बड़ा दुःखी हुआ कि, हमने न जाने कैसा रुपया लिये, जिससे हमारा प्यारा कुत्ता अचानक मर गया ।

कुत्ता और संन्यासी—पञ्जाब देशकी कपूरथला नगरकी एक कहानी है । वहां एक राजा था । वहीं एक तपस्वी संन्यासी भी रहता था । राजा उसकी सेवा किया करता था । उस संन्यासीके पास एक कुत्ता रहता था । एक दिन वह संन्यासी जीवित समाधि लेने लगा । समाधि लेनेका समस्त प्रबन्ध कर चुकनेके बाद राजाने निवेदन किया कि, ऐ महाराज ? आप तो अब समाधि ले चले, मैंने अनेक कालतक आपकी सेवा की है, आपसे बहुत कुछ आशा रखता था । क्योंकि, मैं निपूत हूँ यदि आपकी दया हो तो मेरे कोई सन्तान हो जाय, मैं राज्य धन लेकर क्या करूँ, किसको दूं ? संन्यासीने उत्तर दिया कि, ऐ राजन् ! तेरे सन्तान नहीं तो मैं स्वयम् तेरा पुत्र होकर उत्पन्न होऊँगा । तेरा पुत्र कहला-

ऊँगा। मैं उत्पन्न होऊँ तब तू मेरी शरीरके अमुक अमुक चिन्ह देखकर जान लेना कि, यह वही संन्यासी है। यह कहकर संन्यासी गड़हेके भीतर समाधि लेनेको बैठ गया, लोगोंने गड़हा बन्द करना चाहा तो संन्यासीका कुत्ता भी गड़हेमें कूद पड़ा, जिसमें वह भी संन्यासीके साथ समाधि ले। संन्यासीने कुत्तेको बहुत रोका पर उसने न माना। उस संन्यासीने कुत्तेसे कहा कि, ये कुत्ता! यदि तू ऐसा करता है तो तू निश्चय मेरा छोटा भाई होगा। मेरे तेरे राज्य विषयके, झगड़े होंगे। मैं तुझको मारूँगा। संन्यासीने आज्ञा दी कि, अब मिट्टी डालो लोगोंने मिट्टी डालकर उस गड़हेको बन्द कर दिया। समय पाकर उस राजाके घर पुत्र उत्पन्न हुआ जो चिह्न संन्यासीने कहे थे राजाने देख लिये जिससे जान लिया कि, ठीक यह वही संन्यासी है। आगे कुछ दिनोंके पीछे दूसरा पुत्र हुआ, वे दोनों तरुणावस्थाको प्राप्त हुये। छोटे पुत्रने बड़े पुत्र से विद्रोह किया। उस छोटेकी धृष्टतासे रुष्ट होकर बड़ा छोटेको मार आप राज्य करने लगा।

विदुषी कुत्ती—पञ्जाबदेशके फरोजपूर जिलामें बङ्गला नगर है। वहीं एक मनुष्यके घरमें एक कुतियाने कई बच्चे दिये थे। उसने चूहडीको आज्ञा दी की, उनको कहीं दूर रख आ। भङ्गिनने ऐसा ही किया, वह कुतिया कहीं गई हुई थी वह बच्चोंको उठाकर कहीं रख आई। जब कुत्ती आई तो अपने बच्चोंको न पाकर जान गई कि, भङ्गिनने मेरे साथ यह दुर्व्यवहार किया है। अब तो जब कभी कहीं वह कुतिया भङ्गिनको देखती तो उसके कपड़ोंको फाडती और भूंकती काटती। यद्यपि उसने उस भङ्गिनको बच्चे उठाते न देखा था तो भी भविष्यकी बातें बतानेवाली विद्याके कारण उसने जान लिया कि, यही मेरा बैरी है वह मनुष्य जिसने यह कार्य्य कराया था उसका पुत्र मर गया। रोजगार छूट गया। उसपर बडी बडी तंगियां आईं।

बुलहाउण्ड—एक जातिका कुत्ता होता है। इसको लोग बडे चावसे अपने घरमें रखते हैं। इसकी घ्राण शक्ति ऐसी है कि, गंधही से चोर पकड लेता है। इसका यह नियम है कि, जब उसके स्वामीके घर चोरी होती है, चोर माल लेकर चले जाते हैं तब प्रातःकाल इसको छोडा जाता है, यह वायुको सूंघता चला जाता है। जिस ओर वह चोर गया हो उसी ओर बराबर चला जाता है, जहाँ कहीं चोर पाता है वहाँही भूंकने लगता है उसको काटता है उसके कपडे फाडता है। उसकी चिल्लाहट सुनकर लोग दौड कर चोरको पकड थानेमें लेजाते हैं। क्योंकि, लोगोंको भलीप्रकार विदित है कि, यह बुलहाउण्ड चोरके अतिरिक्त और किसी पर ऐसा आक्रमण नहीं करता। चोर पकड़कर स्वामीका माल थानेसे बरामद कर लिया जाता है।

किसरोट जानका कथन है—कि, मछली पकडनेवाला पनिहा कुत्ता बहुत प्रेम करनेवाला पशु होता है। जब उनकी माता मर जाती है तो बच्चे, बहुत सुस्त होकर माताको ढूंढ़ते फिरते हैं। यदि बच्चाको कोई कष्ट पडता है तो माता उनके चारों ओर फिरा करती है। जबतक कि, वह स्वयम् मारी न जावे या मर न जावे। यदि उनमेंसे एक मर जावे अथवा मारा जावे तो दूसरा उसका साथी छुडानेके लिये बहुत उद्योग करता है। स्काटलैण्डके लोग समझते हैं कि, पानीके कुत्तोंका एक बादशाह होता है, वह दूसरोंसे बडा होता है, उसके ऊपर काले श्वेत दाग होते हैं। जब वह उनमेंसे मारा जाता है, तो उसी समय कोई न कोई मनुष्य भी मर जाता है। ऐसा अनुमान किया जाता है कि, उनमें जहर मुहरा होता है, वह सियाहियोंको मरी तथा रोगोंसे बचाता है, मल्लाहोंके आपत्तिसे बचाता है।

स्क्वेमेक्सका कुत्ता—दक्षिणीय अमेरिकाकी रहनेवाली एक जाती स्क्वेमेक्सका कुत्ता एडनबर्गनामक नगरमें बँधा रहता था, वह छूट कर अपने स्वामीके घर गया। पलंगके निकट खड़ा होकर अत्यन्त प्रेम प्रगट करने लगा। एक समय उसका स्वामी गिर पडा तब वह कुत्ता उसकी कुर्त्ती पकडकर उठाने लगा। यह कुत्ता बड़ा धोखेबाज था जब वह भोजन करता था तब अपने भोजनको इधर उधर फैला देता था जिसमें चिडियों और चूहोंको धोखा दे आप नेत्र मूंद दम साधकर सो जाता था। जिस समय कोई पक्षी अथवा चूहा भोजन लेने आता था उसी समय झपटा मारकर उसको पकड लेता था। ये कुत्ते गाडियोंमें जोते जाते हैं। पक्का पचास सेरका बोझा छः मिनिटके समयमें एक मील तक ले जाना साधारण बात है।

अनुचितकी लज्जा—उक्त पुस्तकका लेखक लिखता है कि, उसके घरमें एक कुत्ता था—वह घरकी रखवाली किया करता। दैवात् उससे एक दिन टट्टीका शीशा टूट गया। स्वामीने उसको शिक्षादी बहुत लज्जित हुआ। फिर जब कोई नौकर उस टट्टीकी ओर इशारा करके उससे कह देता कि, तूने शीशा तोड डाला तो वह अत्यन्त लज्जित हो पूंछ लटकाकर शिरको झुका देता था।

बेडका लानेवाला—एक महाशय अपने मित्र सहित कनवाल नदीके किनारे पर चले जाते थे। वहाँ उन्होंने एक वस्तु पाई जिसको कि, अङ्गरेजीमें वेड कहते हैं यानी वो समुद्री पत्थरका टुकडा होता है। इसमें अनेकों जीव रहते हैं। जब उस साहबने उसको पाया तो अपने मित्रको दिखाकर कहने लगा कि, यदि इसका समूचा वृक्ष मिलता तो बड़ा बहुमूल्य होता। मुझे बड़ी उत्कण्ठा है कि, यदि ऐसा एक मुझको मिले तो अत्यन्त लाभ हो।

उक्त साहबके साथका कुत्ता सारी बातें सुन रहा था। साहब आगे चले जाता था उसी समय पीछेसे उसके जलमें कूदनेकी आवाज सुन पड़ी। फिर-कर देखा तो जल बडे वेगसे हिल रहा था। तब वे दोनों महाशय देखने लगे कि, यह कुत्ता क्या कर रहा है। पुनः उन्होंने एक क्षणके पीछे देखा तो उस कुत्तेकी पूंछ दिखाई दी, कुत्तेने दमलेनेके लिये अपना शिर प्रगट किया जल हिला। अन्तमें वह कुत्ता परिश्रमसे थका हुआ हाँफता २ किनारे आया। वैसाही वृक्ष खींचकर लाया जैसा कि, उसका स्वामी चाहता था उसको घसीटकर अपने स्वामीके पांव पर धर दिया। एक समय जब वह बाहर आखेटमें था अपने घरसे बहुत दूर था उससे कहा गया कि, अब तुम जाओ तुम्हारे स्वामीकी स्त्री रोगसे अत्यन्त पीड़ित है उसकी हिफाजत करो। वह उसी समय आ पहुँचा स्वामिनीके पलँगके नीचे लेट रहा।

डूबनेसे बचानेवाला—एक बड़ी मनोहर कहानी है कि, एक मनुष्य हाइलैण्ड भ्रमण कर रहा था। उसके पास निउफाउण्डलेण्डका कुत्ता था। वह नहरके ऊँचे किनारे परसे चला जाता था। वह पैर फिसलनेसे नहरमें गिर पड़ा। उसमें पैरनेका बल नहीं रहा। इस कारण शीघ्रही अचेत हो गया। जब उसे कुछ चैतन्य हुआ तो देखा कि, उसको बहुतेरे गँवार घेरे हुए हैं वह नदीके दूसरे किनारे पर एक झोपड़ीमें पड़ा हुआ है, गांववाले घेर कर उसकी औषध कर रहे हैं कि, जिसमें उसके प्राण फिर पलट आवें। बात यों है कि, उन देहातियोंमेंसे एक मनुष्य काम करके अपने घरको जा रहा था उसने दूरसे देखा कि, एक बड़ा कुत्ता जलपर तैरता हुआ किसी वस्तुको खींच रहा है। वह कभी २ डूब भी जाता है जान पड़ता है कि, वह कुत्ता बडी कठिनाईमें है।क्योंकि, वह कार्य्य बलके बाहर था उससे खींचा नहीं जाता था। अन्तमें वह बहुत कठिनाईसे खींच-कर एक खाड़ीमें लाया, जहां तक बन पडा जलमेंसे खींच लाया मनुष्योंने देखा कि, वह आदमीकी लाश है कुत्ता अपनी देह झड़ झडाकर अपने स्वामीका मुंह और हाथ चाटने लगा। यह बात देखकर देहातियोंने सहायता दी, वे उस शवको उठा लाये। अनेक युक्तियाँ करने लगे कि, फिर उसमें प्राण आवे, अन्तमें उस मनुष्यमें प्राण आगये। उसके मोढ़े तथा दूसरा गर्दन पर कुत्तेके दांतके दो चिह्न दिखाई देते थे। इससे यह विचार होता था कि, कुत्तेने पहिले मोढ़ेको पकडा था फिर उसकी बुद्धिने बतला दिया कि, उसकी ग्रीवाका पिछला भाग पकडा जिसमें शिर जलके ऊपर रहे पाव मीलतक वह कुत्ता यह कार्य्य करता

रहा। इस प्रेम तथा युक्तिसे उसने अपने स्वामीके प्राणोंकी रक्षा करली।
मइजऊँ प्रेम तथा युक्तिसे उसने अपने स्वामीके प्राणोंकी रक्षा करली।

रोटी खरीदनेवाला—अन्यान्य कुत्तोंके सदृश निउफाउण्डलैण्डके कुत्ते भी अपने समयको पहचानते हैं। इस विषय पर औंबिल साहबका एक उदाहरण है कि, निउफाउण्डलैण्डका एक अच्छा कुत्ता डोर्स नगरकी सरायमें रहा करता था। उसका यह नियम था कि, प्रातःकाल आठ बजते ही कुछ पैसों सहित एक टोकरी ले रोटी बेचनेवालेके पास जाता। रोटी बेचनेवाला पैसा ले लेता था। उसके बदले टोकरीमें रोटी रख देता था। वह रोटी लाकर पाकशालामें रक्षा-पूर्वक रख देता था। बडे आश्चर्यकी बात तो यह है कि, वह रविवारके दिन उस टोकरीके पास न जाता न उसको छूता वह अइतवारको व्रत रखा करता था। एक दिनकी घटना है कि, जब वह कुत्ता रोटीकी टोकरी लिये चला जाता था तो एक दूसरे कुत्तेने रोटीकी टोकरी छीन लेनेके लिये उसपर आक्रमण किया, पर उस बुद्धिमान् कुत्तेने टोकरी पृथिवी पर धर दी आक्रमण करके उस कुत्तेको भगा दिया। पीछे रोटियोंकी टोकरी लेकर अपने स्वामीके घर सानन्द चला आया।

बुद्धिमान् डण्डी—एडिनवर्ग नगरमें निउफाण्डलेण्डका कुत्ता रहता था। उसमें ऐसी बुद्धि थी कि, सहस्रों टोपियोंमेंसे स्वामीकी टोपी पहचानकर निकाल लाता था। सहस्रों ताशोंमेंसे स्वामीकी तास भी पहचानकर निकाल लाता सहस्रों छूरियोंके ढेरोंमेंसे स्वामीकी छूरी पहचानकर निकाल लाता। जिस किसी विशेष वस्तु तथा कार्यके लिये कहा जाता वही करता, चाहे वह चीज सहस्रोंके ढेरमें क्यों न हो उसीको पहचानकर निकाल लाता। इससे यह प्रमाणित होता है कि, वह गन्धसे नहीं वरन् बुद्धिकी तीक्ष्णतासे जान लेता था। एक दिन सांझ को अनेक मनुष्य एकत्रित थे। उसके साहबने एक अठन्नी खो दी, जेबमेंसे निकालते समय वह कहीं गिर पडी। लोग ढूंढ़ते रहे नहीं मिली। साहबने कुत्तेका नाम लेकर कहा कि, ऐ डण्डी ! मैं तुझ को बिस्कुट दूंगा, तू मेरी अठन्नी ढूंढला। कुत्तेने कूदकर अठन्नी मेजपर धरदी, शायद वह अठन्नी गिरनेके समय किसीने नहीं देखी उस कुत्तेने उठा लिया होगा। एक रातको सब लोग तो सोने चले गये उसके स्वामीने अपना बूट ढूंढा पर न पाया। उसने कहा कि, ए डण्डी। मेरा बूट नहीं मिलता तू ढूंढला। तब वह द्वारपर पञ्जामारने लगा साहबने द्वार खोल दिया उस घरमें प्रवेश कर डण्डी अपने मुंहमें बूट पकड कर उठा लाया। साहबको याद आया कि, वह अपना बूट तख्तके नीचे भूलकर चला

आया था। कितने साहबलोग डण्डीको रोजएकपैसा दिया करते थे उस पैसोंको एकत्रित करके डण्डी रोटीवालेकी दूकानपर जाकर रोटी मोल लाया करता था। उन साहबोंमेंसे, एक दिन एकके पास पैसा नहीं था डण्डीने अपना पैसा मांगा। उसने कहा कि, मेरे पास तो पैसा नहीं है मेरे घरमें बहुत पैसा है। जब वह साहब घर गया तो द्वारपर कोलाहल सुना। किवाड खुलतेही डण्डी कूदकर अपने पैसेके लिये घरके भीतर पहुँच गया। उस साहबने कौतुकके लिये डण्डीको खोटा पैसा दे दिया वही लेकर नानाबाईकी दूकान गया। नानाबाईने उसका खोटा पैसा देखकर रोटी नहीं दी। वह पैसा लेकर डण्डी उस साहबके पास आया द्वार खटखटाया नौकरोंने द्वार खोल दिया। डण्डी खोटा पैसा साहबके पांव पर धरकर उसको घृणाकी दृष्टिसे देखता हुआ वहाँसे चला गया। डण्डी जितने पैसे पाता था सब खर्च नहीं करता था। एक रवीवारके दिन जब उसको कहींसे पैसा नहीं मिला था तो भी उसको नानाबाईकीदूकानसे रोटी लाते देखकर उसके स्वामीने नौकरसे कहा कि, मकान ढूंढो यह कहाँसे पैसा लेकर रोटी लाता है। ढूंढ़ने लगे तो वहकुत्ता गुर्राने तथा तडपने लगा। तलाश हुई तो सात पैसा एक कपडेके नीचे दबे पाये, तबसे डण्डी अपने पैसे बाहर किसी जगह धूलमें दबा रखता था। फिर कभी कोनेमें न रखता था। अपने स्वामीकी आज्ञानुसार वह कुत्ता दूरतक अपने स्वामीके मित्रोंके साथ जाया करता पहुंचाकर अपने मकानको लौट आता।

गडेरियेका कुत्ता—बडी सावधानीसे भेडें चराया करता था। बहुत बुद्धिमान तथा तीक्ष्ण विचारका था। सारी भेडोंको भली भांति जानता था। जिसको उसका स्वामी कहे उसी भेडको झुण्डसे जाकर उसके पास ला दिया करता था भेडोंकी रक्षा किया करता था। यदि कभी उनमेंसे कोई भटक कर इधर उधर हो जावे तो तुरन्तही उसको खींच खाँचकर झुण्डके भीतर कर देता था। सांझ के समय उन भेडोंके झुण्डको लाकर बाडेके भीतर बन्द कर देता था। यदि कोई वैरी भेड़ोंको नष्ट करने आवे तो उसके ऊपरसे होकर जावे इस विचारसे उसके द्वारपर आप लेट जाता था। यदि कोई भेड़ी पीछे रह जाती कोई दूसरा कुत्ता आकर उसको काटता तो वह उसका कान पकड़कर ऐसा झड़ झड़ाता कि. वह चिल्लाता हुआ भाग जाता। इसके पीछे वह पुनः आकर अपनी भेड़ोंके साथ हो जाया करता।

एक दिन गँडेरियेने अपने कुत्तेकी बुद्धिमानी जाननेके लिये यह युक्ति की कि, जब वह कुत्ता आगके पास बैठा और लोग बात चीत कर रहे थे उसने

कहा कि, मैं समझता हूं कि, गाय आलूके खेतमें है । केवल यह बात छेडीही गई थी उसपर विशेष चर्चा नहीं हुई थी, उस समय वह कुत्ता अचेत सोता हुआ जान पड़ता था पर उसने यह बात सुनली खिडकी द्वारा बाहर कूदा छत पर चढकर आंगनको देखा तो वहां गौ नहीं थी देखा कि, सब कुछ ठीक है, फिर अपने घरको पलट आया । कुछ कालके पीछे चरवाहेने फिर वही बात कही फिर वह कुत्ता उसी प्रकार गया उस मैदानको देखकर फिर आ बैठा, तीसरी बार फिर उसने उसी प्रकार कहा तब कुत्ता उठकर पूंछ हिलाने लगा । अपने स्वामीको ओर इस दृष्टिसे देखने लगा कि, तू मुझसे ठट्ठा करता है इस बात पर समस्त मनुष्य जोर जोरसे हँसने लगे । वह कुत्ता फिर अपनी जगह पर आ बैठा उस समय उन लोगोंके हँसी ठट्ठा करनेपर अत्यन्त क्रोधित जान पडता था ।

इसी पर हाग साहबका—कथन है कि, एक गड़रियेका कुत्ता बहुत बुद्धिमान था—वह ऐसा अद्वितीय कुत्ता था कि, किसीकी शुश्रूषा तथा प्यारको न मानता था अपने कार्य्यसे बहुत चौकस रहता था । ऐसा कृतज्ञ था कि, कुत्तोंकी जातिमें वैसा कोई न होगा । वह न किसीपर भूंकता, न कभी कोई भूलही करता जब वह एक वर्ष का था तभीसे भेडोंकी रक्षा करना सीख लिया था । जो कुछ उससे एक बार कहा जाता उसको वह कभी नहीं भूलता था । उसमें अत्यन्त बुद्धिमानी तथा विवेक प्रगट होता था । एक दिनका हाल है कि, उसके अधीन सात सौ बकरीके बच्चे तीन भागोंमें विभक्त होकर आधी रातको अपने बेड़ेसे भागकर पहाड पर चले गये । स्वामी तथा सहायकके बशसे बाहर हो गये । उस समय वह सरानामका कुत्ता भी दिखाई नहीं दिया । अंधेरी रात थी । उस कुत्तेने अपने स्वामीको खेद करते सुना, चुपकेसे उन बच्चोंकी खोजके लिये निकला । उसका स्वामी सारीरात उन बच्चोंकी तलाश करता रहा पर कहीं भी बच्चों और कुत्तेका कुछ पता न लगा । प्रातः काल उन्होंने देखा कि, समस्त बच्चे पहाडकी एक नीची जगहमें फिर रहे हैं । वह विश्वस्त कुत्ता उनकी रक्षा कर रहा है बड़े आश्चर्यका विषय तो यह है कि, उस कुत्तेने समस्त बकरीके बच्चोंको ऐसी युक्तिके साथ रखा था कि गिनतीमें सब ठीक ठहरे एक भी कम नहीं हुआ, न जाने ऐसी अंधेरी रातमें किस प्रकार उसने उन समस्त बच्चोंको एक स्थानपर एकत्रित कर रखा था यह बात बुद्धिमें नहीं समाती । क्योंकि, उस अँधेरी रातमें समस्तर चरवाहे बच्चोंका सब प्रकारसे रक्षा करते तो भी वे छिटक जाते ।

मारटन साहबने—कुत्तोंके संबंधकी पुस्तकमें लिखा है कि, एक स्त्री

अपने बूटको लैस करके उस बूटके ऊपर रेशमी फीता बांध रही थी उसमेंसे एक लैस टूट गई उस समय उसके पास खड़ी हुई कुतियाका नाम लेकर उसने जो मजाकियाने तौरपर कहा कि, मैं चाहता हूँ कि, तू मेरे लिये कोई और दूसरा लैस ले आती, इसके पीछे उस स्त्रीने लैस ठीक किया इस विषयका कुछ ध्यान नहीं किया । दूसरे दिन वह स्त्री पुनः अपने बूटको लैस करनेमें लगी तो कुतियाने दौडकर नवीन रेशमी लैस उसके सामने धर दिया । इस बात पर लोगोंने अत्यन्त आश्चर्य प्रकट किया कि, कुतियाने उसको कहाँ पाया कदाचित कहींसे चुरा कर लाई होगी ।

स्पायल डाग—एक मनुष्यके पास था, वो ऐसा जान पडता था, वह समस्त बातोंको समझता हो । यदि उसका स्वामी उसके कानमें कहता कि, मेरे लिये अमुक वस्तु ले आ तो वह जाता । यदि वह वस्तु खुली होती तो लाकर अपने स्वामीके चरणोंके पास रख देता, गृहकी स्त्रियां समस्त वस्तुओंको सन्दूकमें बन्द करके ताला लगा देती थीं । क्योंकि वह सारी वस्तुओंको खींच ले जाता था । यही एक दस्ताना खो जावे दूसरा उस कुत्तेको दिखाया जावे तो जबतक वह उसको ढूढ़ कर उपस्थित करदे तबतक स्थिर नहीं होता था । एक दिन देखा तो बाजेकी किताबोंके ढेरको हटा उसमेंसे खोये हुए दस्तानेको निकाल लिया । जिसका कि निकालना कठिन था । यदि कोई अपरिचित उसके स्वामीके मकानमें आता तो वह उसपर गुर्राता । यदि वह मनुष्य न माने और भीतर चला आवे तो कुत्ता एक घण्टा बजा देता जिससे नौकर दौड़कर भीतर आ जाते कुत्तेके घण्टा बजानेके कारणको जान लेते ।

रुपयोंकी सँभाल—बिल साहबका कथन है कि, एक बार वह सफर कर रहे थे, उनका विश्वासी कुत्ता उनके साथ था । एक दिन प्रातःकाल अपने घरसे कहीं बाहर जाते थे । उस समय उन्होंने रुपयोंकी थैली अपने साथ इस ध्यानसे ली कि सांझ तक घर लौटकर न आसकूंगा । उस समय थैलीमेंसे कुछ रुपये गिर पडे, जब साहब कहवा खानामें गये वहाँ थैली खोलकर देखी तो कुछ रुपये कम पाये । सांझके समय घर लौटकर आये । नौकरोंने कहा कि, कुतिया कुछ खाती पीती नहीं बीमार है । साहब उस कोठरीमें गये कुतिया दौडकर उन गिरे रुपयोंको साहबके चरणोंपर धर अत्यन्त हर्षपूर्वक खाने पीने लगी । यहां यह स्पष्ट है कि, जिस समय वह साहब कमरेसे बाहर जाने लगे उस समय ही उनसे रुपये गिर पड़े । उनको उठाकर कुतियाने अपने मुंहमें रख लिया । यदि खाती तो वे रुपये उसके मुंहसे बाहर गिर जाते ।

स्पानियल रोवर कुत्ता—सेण्टजान साहबके पास था । वह सारी बातें समझता था आज्ञानुसार सारे काम किया करता था, अपने स्वामीका बडाही आज्ञाकारी था । उस कुत्तेका नाम रोवर था । उसका स्वामी कहे कि, रोवर ! आज तुम घरमें रहो, मैं तुमको अपने साथ बाहर नहीं लेजा सकता, तो रोवर बाहर जानेकी कभी भी इच्छा न करता, यदि वह कहदे कि, मैं आज रोवरको साथ ले जाऊँगा तो रोवर पहिलेसेही तयार होकर चलनेकी प्रतीक्षा करता रहता । एक रातको सलाह होरही थी कि, कल सबेरे आखेटको जावेंगे । कुत्ता भी समस्त बातें सुनता था । समय पर आपसे आप वह वहाँ जा पहुँचा जहाँ कि, सारे मनुष्य इकट्ठे थे, वह भयभीत हो मुंह बनाता हुआ उस स्थानपर पहुँचा कि, ऐसा न हो कि, मेरे ऊपर रुष्ट हो क्योंकि, मैं बिना आज्ञा चला आया हूँ । किसी प्रकारका क्रोध न दिखाने पर वह कूद २ कर प्रसन्न होने लगा ।

सामनामका कुत्ता ।

साम—एक साहबके पास था उसका स्वामी कहता था कि, ऐ साम तु अन्यान्य कुत्तोंके साथ खेल कौतुक दिखा तो वह तुरन्त कौतुक दिखानेमें संलग्न होता, भांति भांतिके कौतुक दिखाता । एक दिन वह अपने स्वामीके साथ एक स्त्रीके घर गया । उसने जान लिया कि, यही प्रसिद्ध साम है । उसने कहा कि, आजके दिन सामको मेरे यहाँ रहने दीजिये सामने अपने स्वामीसे क्षमा मांगी, उसके स्वामीने आज्ञा दी कि, वह उस स्त्रीके साथ रहे उसका पहरा दे । कुछ काल तक उसके घरमें रहने पर उसका स्वामी उसको लेने आया । स्त्रीने कहा कि, कलके दिन सांझको मेरे घरमें रहने दीजिये । उसके स्वामीने उस कुत्तेको बहुत प्यार किया कहा कि, कल भोजनके समय तक इनके घर रहो, भोजन करके चले आना । उस कुत्तेने बात मानली । दूसरे दिन भोजनके समय तक उपस्थित रहा, भोजन करके स्त्रीकी ओर देखा पूंछ हिलाई और उसके घरसे निकल कर अपने घर भाग आया । वह कुत्ता अपने स्वामीको वस्त्र लाता था । उसके पहननेके सारे वस्त्रोंका नाम जानता था । भोजन करनेके समय कुरसी पर बैठता था, किसी प्रकारका शब्द न करता था रोटी माँस अथवा दूध इत्यादि खाता कोई कहे साम ! एक टुकड़ा मुझे भी दे तो वह तुरन्त मान लेता था । जब सब चले जाते, तब वह सारी वस्तुओंको साफ किया करता । अस्तबल जाकर अपने स्वामीके लिये घोडा तैयार करा लाया करता । साईसको आज्ञा देता घोडेकी जीनके पीछे सवार हुआ करता । तात्पर्य यह कि उससे कही हुई सारी बातें समझ लेता वो बडाही कृतज्ञ तथा नेक कुत्ता था ।

पूडलडाग—एक प्रकारके कुत्तोंको फीड और ब्यॉको कहते हैं । उसकी बुद्धि बडेही आश्चर्यमें डालनेवाली होती है इस जातिके कुत्तेको जल स्थल एकसे हैं। इस प्रकारके दो कुत्तोंने एक नगरमें शिक्षा पाई थी, पेरिस नगरीमें उनकी परीक्षा ली गई थी। एक कुत्तेका नाम फीड तथा दूसरेका नाम ब्यॉको था फीड गम्भीर था, ब्यॉको छिछोरा था। वह सदैव चुलबुलाता रहता था इधर उधर दौड़ता हुआ चलता था। यूनानी लेटिन इटालिक फरांसीसी तथा अंग्रेजी आदिसे कोई शब्द उनको दे दो तो उसे ढूंढ लाता था। यहाँ तक कि, जहाँ पचास २ अक्षर प्रत्येक भाषाके लिखे हुये पडे हों उन सबमेंसे भी। उनके शब्दको ढूढ़ लाया अपने स्वामीके पावोंपर रख दिया। जैसे अङ्गरेजी भाषामें एक शब्द हेवन है। हेवनका अर्थ वैकुण्ठ है। सुतरां समस्त अक्षर पृथक् पृथक् करे हुए रक्खे होते हैं। उस कुत्तेसे कहा गया कि शब्द हेवन (HEAVEN) बनाओ। तब वह कुत्ता गया और कटे अक्षर ढूंढ़ ढूंढ़कर लाता गया बराबर ला लाकर क्रमानुसार रखता गया और (HEAVEN) शब्द बनाकर दिखा दिया इन छः अक्षरोंमें दूसरा और पाँचवाँ ये दो अक्षर एकही प्रकारके हैं। यह अक्षर (E) ई है। यदि दो हो तो हेवन् शब्द ठीक हो जब उस कुत्तेने कटे अक्षरोंमें ढूढ़ा दूसरा अक्षर न पाया—केवल एकही देखा तब उनसे ऐसी बुद्धिमानीकी कि, दूसरे अक्षर (E) को उठाकर पाँचवें स्थानमें धर दिया (HEAVEN) शब्दको पूरा करके दिखा दिया। इसी प्रकार गणित विद्यामें दोनोंकी परीक्षा ली गई वे दोनों गणितमें भी सुविज्ञ थे। समस्त अददोंको पृथक् पृथक् दिखा देते थे, तनिक बिभिन्नता न पडती थी। यदि एक कुत्तेसे भूल होती थी तो दूसरा बुलाया जाता था। वह आकर उस त्रुटिको ठीक किया करता था वे दोनों कुत्ते फेड तथा ब्यॉको ताश खेलनेको बैठ जाते, अपने ताशको कभी नहीं भूलते थे उनमें एक हारता या जीतता था। उनका कौतुक देखनेके लिये अनेक मनुष्य एकत्रित होते वे दोनों कुत्ते खेलके सारे शब्दोंको जानते थे। वे भूलते नहीं थे, एककी त्रुटिको दूसरा शुद्ध करता था यह समस्त घटना उनके और उनके स्वामीके बीच होती थी। कुत्तोंमें ये दोनों बडे पण्डित थे।

विचित्र पनिहा कुत्ता कुतिया—हेस्टिङ्ग नगर में एक मल्लाहके पास ऐसा पनिहा कुत्ता था कि, वह रोटी बेचनेवालेकी दूकानसे रोटी खरीद लाता। अपने स्वामीकी आज्ञा भली प्रकार पालन किया करता था। इस प्रकारकी एक कुत्ती भी थी, अपने स्वामीकी आज्ञानुसार पुस्तक उठा लाती। जो कार्य्य उसके योग्य होता उसको किया करती। किसी मनुष्यको बताकर उसको जो

चीज दी जावे तो उसे वह उसके पास ले जाया करती थी। वह वस्तु उसको देकर चली आती थी। यहांतक कि, भारी बोझ उठाते उठाते उसके दांत टूट गये थे। आज्ञा मिलती कि, अमुक मनुष्यके पास तुम जाओ तो वह तुरन्त चली जाती थी। यदि वह न मिलता तो सामने आकर चुपचाप खडी हो जाती।

प्राणदेनेवाला---एक विधवा स्त्रीके पास डंडी नामक एक कुत्ता रहता था। एक समय विधवाका दूसरा विवाह होनेवाला था। विवाह होनेके पहिले डण्डीने सारा हाल जान लिया। इस बातसे कुत्ता बहुत रुष्ट हुआ! उस स्त्रीसे प्रेम करना छोड़ दिया। वह विवश होकर कुत्तेको घर छोड़ गई क्योंकि, उसका विवाह लण्डन नगरमें होनेवाला था। जब तक विवाहका आयोजन होता रहा उतने समयतक वह उस स्त्रीके टेबुलके नीचे बड़े ही दुःखसे पड़ा रहा। उसको किसी तरह सन्तोष न होता था। प्रथम जिसको वह प्यार किया करता था उसके साथ भी न जाता, जिस प्रातःकालको उसकी मालिका उसको जहां छोड़ गई थी वह उसी स्थान पर पड़ा रहा तथा अपना शिर भी नहीं उठाता था। एक पञ्जा उठाकर आत्मिक दुःखको व्यक्त कर रहा था। उसकी मालिका चली गई। डण्डी गायब हो गया ढूंढनेसे भी न मिला। अन्तमें एक दिन उसकी लाश मिली। लोगोंने पशुवोंके हकीमसे पूछा कि, डण्डी किस बिमारीसे मरा। अभी तो उसकी उम्र थोडीसीही थी। हकीमने कहा कि, यह कुत्ता बिरहके दुःखसे मर गया है।

भविष्य दृष्टि---टेरियर एक जातिके कुत्तेका नाम है। एक स्त्रीके पास स्काच टेरियर रहता था। वो स्त्री बलगेरिया नगरमें रहती थी। स्त्रीके मरनेके जब दो दिन रह गये तो उस कुत्तेने पहलेसे ही जान लिया कि, ऐसी घटना होने-वाली है। यह अत्यन्त आश्चर्यकी बात है कि, वह अपने घरके पीछे गया दो बडे बडे गढ़हे खोदे, जब उसकी मालिका मर गई तो उसने भी एक गड़हेमें घुसकर प्राण त्याग दिये। यह बात एकही कुत्तेके साथ नहीं अनेकों कुत्तोंके साथ हुई।

वर्तमानका ज्ञाता---हेंष्टिग नगरमें एक बीबीके पास एक कुत्ता रहता था। उसकी स्वामिनी तो ब्रिटेनको गई थी। वह नौकरोंके, साथ घरमें था। एक दिन सांझको वह कुत्ता अपनी मालकिनकी कोठरी में गया उसके कपड़े पर लोटने लगा। लोगोंने समझा कि, कदाचित् वह कुत्ता पागल हो गया है। दूसरे दिन चिट्ठी मिली कि, उसकी स्वामिनी उसी समय मर गई। जब कि, वह कुत्ता गये काल उसके कपड़ों पर लोट रहा था।

मास्तिक जातिका कुत्ता---एक अङ्गरेजको लिये हुये बागमें गया। वह

कुत्ता बगीचेके भीतर जाने न पाया। चौकीदारोंने रोका साहब उस कुत्तेको जमादारके हवाले करके बाड़ेके भीतर चला गया। कुछ कालके पीछे साहब बाहर आया जमादारसे कहा कि, मेरी छडी खो गई, यदि आप मेरे कुत्तेको भीतर जाने दो तो वह तुरन्तही चोर पकड लेगा। साहबकी प्रार्थना स्वीकार की गई। साहबने कुत्तेको ईशारा किया कि, मेरी छड़ी जाती रही है। ढूंढ ला। कुत्ता वाटिकाके भीतर गया और चारों ओर फिरा, अन्तमें उसने एक आदमीको पकड़ लिया। साहबने कहा कि, इस मनुष्यने मेरी छड़ी चुरा ली है। इस पर उस मनुष्यकी तलाशी ली गई, उसकी जेबसे वह छड़ी निकली। उसके अतिरिक्त उसकी जेबसे और भी छः छड़ियां निकलीं। बड़े आश्चर्यकी बात है, कि कुत्ता केवल अपने स्वामीकी छडीको पहचानकर मुंहमें ले चला आया। दूसरी छडि-योंको नहीं छूआ।

मास्टिककी वफादारी—एक धनाढ्यके घरमें जिसे अङ्गरेजीमें बैरोनेट कहते हैं। एक माष्टिक कुत्ता था। उसकी वफ़ादारीकी अनेक बातें अङ्गरेजी पुस्तकोंमें लिखी हुई हैं। बैरोनेट अमीरने उस कुत्तेकी ओर पहले ध्यान नहीं दिया न उसपर कुछ दया की। एक दिन वह अमीर अपने मकानमें सोनेके लिये चला, उसके साथ इटली देशका रहनेवाला उसका नौकर था पीछे पीछे चला वह कुत्ता भी चुप चाप उनके साथ हो लिया अटारीपर चला गया चाहा कि, अमीरके शयनागारमें प्रवेश कर—पहले तो उसको जाने न दिया पर जब वह द्वार पर बहुत चिल्लाने लगा तब बैरोनेटने द्वार खोल दिया उसको भीतर आने दिया। अब वह कुत्ता उसकी कोठरीके भीतर जाकर एक कोनेमें बैठ गया। जब आधी रातका समय हुआ तो उस अमीरकी कोठरीका द्वार खुला, कुत्ता जोरसे गुर्राने तथा भूंकने लगा। अमीरने उठकर बत्ती जलाकर देखा कि, वही उसका इटलीवासी नौकर था। उससे बैरोनेट पूछा कि, तूने किस अभिप्रायसे आधी रातको मेरी कोठरीका द्वार खोला। अन्तमें उसने स्वीकार कर लिया कि, आपको मारकर सब धन लूट लेजानेकी मेरी इच्छा थी। वास्तवमें यह बडे आश्चर्यकी बात है कि, इस बातकी सूचना इस कुत्तेको पहलसेही क्यों होगई। उसने पहलेसेही जान लिया कि, मेरे स्वामीके साथ वह मनुष्य उस प्रकारका व्यवहार करनेवाला है। निश्चय वह कुत्ता पहलेकी बातोंको जानता था, इस कारण सचेत होकर स्वामीके कमरेमें चौकस होकर पहलेसेही बैठ गया था।

माउण्ट सेंट बर्नर्ड डाग—एक जातिका कुत्ता होता है। यह कुत्ता माष्टिफ और निउफाइण्डलेण्डके वरणसंकर कुत्तोंकी जाति है। ऐल्पके पर्वतों पर जहां

कि, अत्यन्त बरफ पड़ती है वहीं रहता है। वहाँ धर्म्मशाला बनी हैं, वहाँ पर बरमंक नामके एक प्रकारके फकीर रहते हैं, जो धर्म्मशालोंका प्रबन्ध रक्खा करते हैं। वे लोग इस प्रकारके कुत्तोंको पालते हैं। इन कुत्तोंको सिखलाते हैं। पथिक जब उन बरफोंमें जा पड़कर मरने लगते हैं तो वे फकीर पथिकोंके बचानेके लिये कुत्तेको छोडते हैं। उन कुत्तोंकी सभी जातियोंकी अपेक्षा इन कुत्तोंमें अधिक बुद्धि होती है। ये कुत्ते बहुत शिक्षित होते हैं अत्यन्त बुद्धिमानीके साथ काम किया करते हैं। धर्म्मशालाओंके लोग इस कुत्तेके गलेमें, गरम शराबकी बोतल बाँध दिया करते हैं। स्वीट जर लेण्डके बरफीले पर्वतोंमें यह कुत्ता गिरे पडे मुसाफिरोंको बरफोंमें ढूंढ़ा करता है। परमेश्वरने इन कुत्तोंको ऐसी बुद्धि प्रदान की, यदि मसाफिर पन्द्रह या बीस फीट बरफके नीचे दबाहो तो उसी समय बरफको खरोंच खरोंचकर टालना आरम्भ करता है। बहुत ऊँची आवाजसे भूंकता है। जिससे एक मीलसे भी अधिक उसकी आवाज चली जाती है। कुत्तेकी आवाज सुनकर धर्म्मशालाओंके महन्त आपहुँचते हैं। उसकी सहायता करते हैं। उपरोक्त कुत्तेकी कहानी एक अङ्गरेजी पुस्तक लाइबरेरी, आफ, इण्टर-टेनिङ्ग, एलफारफीसमें लिखी है कि, इस कुत्तेने बाईस मनुष्योंकी जान बचाई थी। इस कारण कुत्तेके गलेमें उसकी सुकीर्तिका तगमा पहनाया था।

एक बार यह कुत्ता एक पथिककी जान बचाने और उसकी धर्म्मशालामें लानेका उद्योग कर रहा था। वह सन् १८१६ ई० में मर गया और उसके स्मारक चिह्नके लिये उसकी एक सुविशाल समाधि बनाई गई। वे पहाड़ी लोग अबतक भी उस कुत्तेकी भलाईको नहीं भुला सके हैं।

इस कुत्तेको धर्म्मशालाओंके बरमंक लोग पर्वतोंमें भेजते हैं वह वर्फोंमें जाकर मुसाफिरोंको ढूंढ़ता फिरता है। जहां कहीं बरफका मारा अचेत पथिक दिखाई देता है तो उसके ऊपर बैठ जाता है अपने बालोंसे उसको भली प्रकार गरमाता है। उस कुत्तेके शरीर पर बहुत बाल होते हैं। उन बालोंकी गरमीसे पथिक कुछ चैतन्यता लाभ करता है वह उसको गलेकी बोतल दिखाता है। वह मुसाफिर बोतलको उसके गलेसे खोलकर पीता है जिससे सचेत हो जाता है। कुत्ता पथिकको अपनी पीठपर लादकर धर्मशालेमें ले आता है। धर्म्मशालाओंके साधुगण उसकी भली प्रकार सेवा करते हैं वह आरोग्यता लाभ कर अपने घरको चला जाता है।

निउफौण्ड लेण्ड डाग—नामके कुत्तेको एक साहब अपने मित्र सहित अपने साथ लिये चले जाते थे। कुत्तेके स्वामीने कुत्तेकी बहुत प्रशंसा करके कहा

कि, कितनीही दूरसे इस कुत्तेको कोई वस्तु लेनेको भेजा जाय तो वहांसे वह वस्तु लाकर उपस्थित कर देता है। इस बातकी सत्यता प्रगट करनेको उस साहबने एक चौकोर पत्थरके बीचमें अठन्नी धरकर उस कुत्तेको दिखाकर अपनी राहली। वह पत्थर सड़कके किनारे पर पड़ा था। वह साहब घोड़ेपर सवार होकर तीन मीलके अन्तर पर गया। उसने उस कुत्तेको इशारा किया कि, अठन्नी ले आ। कुत्ता उसी समय अठन्नी लेने चट्टानके पास गया। साहब अपने घरको चला गया। साहबने घर पहुंचतेही कुत्तेकी प्रतीक्षामें सारा दिन बिता दिया पर कुत्ता न आया।

पीछे यह बात जान पड़ी कि, कुत्ता स्वामीकी आज्ञा पाते ही उसी समय उस स्थान पर आ पहुँचा। जहां कि, वह अठन्नी दबाई गई थी। उस चट्टानका हटाना अपने सामर्थ्यके बाहरका कार्य्य समझकर वहीं खड़ा होकर भूंकने लगा। इसी अवसरमें उस पथसे दो सवार निकले उस कुत्तेको कष्टमें जानकर उनमें से एकने अपने घोडेसे उतरकर उस चट्टानको हटा दिया। वह अठन्नी देख उसको हटाकर अपनी जेबमें रख लिया कुत्तेके तात्पर्यको न समझ अपने घरकी राह ली। कुत्ता उनके घोडेके साथ बराबर बीस मील तक चला गया। सांझको दोनों सरायमें ठहरे रातके समय दोनों आनन्दपूर्वक एक कोठरीमें सो रहे वहांकी भटियारी उनकी सेवा करती रही। वह कुत्ता भी उनकी चारपाईके नीचे छिप-कर बैठा रहा। जिसने वह अठन्नी ली थी उसने उसको लेकर अपनी पतलूनकी जेबमें रख दिया था रातके समय पायजामा उतारकर खूंटीके ऊपर रख दिया। जब वे दोनों सो गये तो उस कुत्तेने पतलूनको अपने मुंहसे पकड़ लिया खिड़की द्वारा बाहर कूदकर निकल भागा। उसी खिड़कीसे वह निकल गया जो गर्मीके मौसममें वायुके आवागमनके निमित्त खुली रहा करती थी। इस कारण ही उस कुत्तेका दाव घात लगा रातके चार बजे अपने घर पहुँचा। साहबने पतलूनकी जेब खोल कर देखा तो चिह्नवाली अपनी अठन्नीको उसी प्रकार पाया उस जेब-में से घडी तथा एक रुपया भी निकला। साहबने ढंढोरा पिटवाया कि, एक पतलूनमें एक घडी तथा रुपये इस प्रकार आये हैं। इससे उस घडी तथा पतलून-वाले मनुष्यको पता चल गया कुत्तेकी समस्त कीर्ति खुल गई। इस जातिका कुत्ता बडा हिम्मती तथा दयालु होता है। अपनेसे निर्बल कुत्तोंपर कभी भी बल प्रयोग नहीं करता।

हिरण।

हिरण बहुत ही सचेत तथा चैतन्य पशु है। उसको हिंसक पशु तथा मनुष्य

आखेट करके मार लेते हैं। यह बहुत चैतन्य रहने पर भी मारा जाता है। रात दिन सचेत रहता है। जब आखेट करनेवाले आते हैं तो हिरनी बच्चेके समीप रहती है। बच्चोंके प्रेमके मारे भाग नहीं सकती। इसीमें प्रायः शिकार हो जाया करती है। अनेक जातिके हरिण होते हैं।

कस्तूरी मृग—भी इन्ही हरिणोंमें होता है। उसके प्राणके इच्छुक अनेक मनुष्य होते हैं यह प्रायः चीन देशमें होता है चीनी तवारीखमें लिखा है कि, यह बडा सावधान तथा चैतन्य होता है पर्व्वतोंकी चोटियों पर रहता है, जहां कि, मनुष्य तथा पशु कठिनता पूर्व्वक पहुँच सकते हों। मनुष्य भेड़िया तथा शेरोंसे बहुत सचेत रहता है यहां तक कि, वह अपने मूत्रको भी पी जाता है अपनी मेंगनीको धूल मिट्टीमें ऐसा दबा देता है कि, कहीं चिन्ह भी न मिले कोई यह देखकर जानले कि, यहां मृग रहता है उसकी नाभीमें मुश्क भरा रहता है। जब कभी भेडिया अथवा शेर उसका आखेट करनेको उसके समीप पहुँच जाता है कहीं भागनेकी युक्ति नहीं देखता तो ऐसा कार्य्य करता है कि, अपनी नाभीकी मुश्कको उस शेरकी ओर ऐसे वेगसे चलाता है कि, उस सुगंधसे शेर अथवा भेडियेका माथा फट जाता है जिससे वह मर जाता है। उस कस्तूरीकी सुगंध उसके मस्तकको फाड डालती है जिससे लहू आने लगता है, वह उसी समय मर जाता है। मनुष्य इस प्रकार उसका आखेट करते हैं कि, दो मनुष्य पर्वतपर चढ़ जाते हैं एक तो बन्दूक भरकर छिपके बैठ जाता और दूसरा स्वर तालके साथ गाने लगता है। वह जब राग गाने लगता है तो उसके सुननेके लिये मृग शिकारीके समीप आजाता है, राग सुननेमें आत्म विस्मृत कर जाता है। उसी समय बन्दूकधारी छिपा हुआ मनुष्य फैर करता है। गोली लगतेही वह गिरकर तड़पने लगता है। आखेट करनेवाला दौडकर उसकी कस्तूरीकी थैली काट लेता है। यदि उस थैलीको शीघ्रही न काटे वह मुश्क जो बिलकुल रक्त है समस्त शरीरमें फैल जावे हरिणका माँस कडवा हो जाये खानेके योग्य न रहे। तथा कस्तूरी भी हाथ न लगे। दूसरी युक्ति यह है कि, जब वह मृग पर्वतके नीचे जल पीने उतरता है तो छिपकर बन्दूकसे मार लेते हैं।

पंचकमें घासका त्याग—भारतवर्षमें लोग इस प्रकार कहते हैं कि, यह मृग प्रायः चींटे और चीटियोंके बिलपर बैठता है। चाहता है कि, चीटियां मुझको काटा करें जिसमें मुझे नींद न आवे मेरी अचेतावस्थामें आखेटकर्ता मुझको मार न ले। यह भी सुना है कि, भद्रा (पंचक) के पांच दिन होते हैं। उन दिनों भारतवासी घास फूसका कुछ काम नहीं करत। पण्डित लोग तो इन दिनोंको

पत्रा देखकर जाना करते हैं पर यह मृग आपसे आप जाना करता है । जब पंचक लगते हैं उसी दिनसे मृग घास नहीं चरता वह मृग पंचकके दोष तथा गुणोंको भली प्रकार जानता है पांच घडी घास फूसका बिलकुल काम नहीं करता।

बकरी ।

कितनेही मनुष्य बकरियोंको सिखलाते हैं, जिससे वे बडेही विचित्र कौतुक दिखाती हैं। इसकी बुद्धि अच्छी होती है। विषैली घासों तथा पौदोंको भली प्रकार पहचानती है, उनको कदापि नहीं खातीं । सुना जाता है कि, बकरियोंमें भविष्यका हाल जाननेकी शक्ति भी होती है । क्योंकि, जहाँ कहीं अनेक दिवसोंसे बन्द पड़ा भी कुआँ हो छिप गया हो, यदि उस स्थानको लोग जानने कुवेंका पता लगाना चाहें तो बकरियोंके झुण्डको उस स्थानपर लेजाके बैठा देते हैं जब सब बकरियाँ जाती हैं तो छिपे कुवेंके चारों ओर घेरा बाँधकर बैठ जाती हैं । जहाँ पर वह कुवाँ होता है उस भूमिपर एक भी नहीं बैठती छिपे हुये कूएं के चौगिर्द बैठती हैं ।

कथा सुननेवाली—फीरोजपुर जिलेके लखौके मौजेमें वेदी साहब कथा कहते थे। उसको सुनने अनेक मनुष्य एकत्रित होते थे। एक बकरी भी कथा सुननेको आया करती थी । कथा आरम्भ होनेके पूर्व बकरी आया करती थी। जबतक वह कथा होती तबतक खड़ी होके सुना करती थी। कथा होजानेपर सब लोग चले जाते सबसे पीछे वह बकरी जाया करती थी ।

सदनाको उपदेश—सदना नामक एक कसाई था । एक दिन उसके घर एक अतिथि आया । उसने बिचारा कि, यदि बकरा मारूं तो ठीक नहीं उसका अण्डकोष काटलूं तो अतिथिके लिये यथेष्ट होगा । जब वो काटनेको तैयार हुआ तो बकरा बोला कि, ए सदना ! यह बात अच्छी नहीं । कितनी बार तुमने मेरा शिर काटा है मैंने तुम्हारा काटा है । तुम मेरा शिर काट लो अण्डकोष मत काटो । यह बात सुनकर सदना को ज्ञान आगया क़साईका काम छोड़कर परम भक्त हो गया ।

भेड़ ।

भेड़ बकरीकीही एक जाति है । उसकी बुद्धिकी अनेक कहानियां कही जाती हैं । कप्तान ब्राउन साहबका कथन है कि, भेड़ोंको स्वदेशसे बहुत प्रेम होता है ।

स्वदेश प्रेम—एक मनुष्यने अपनी भेड़को दूसरेके हाथ बेच दिया। खरीददार भेड़को अपने घर ले गया । वहां भेड़को स्वदेश याद आया वह जहां

गई जहां रहती थी वहांसे उसका देश नौ दिनकी यात्राका मार्ग था। भेड़ वहांसे चली उसका बच्चा उसके साथ था। बच्चा थक कर पीछे रह जाता तो प्रेमके साथ फिर उसको साथ लेकर फिर आगे चलती जिस समय वह अष्टर्लिग नगरमें पहुँची थी वहाँ वार्षिक मेलेका दिन था। भेड़ मेलेमें नहीं घुसी नगरके किनारे बैठी रही, बड़े तड़के उसने अपनी राहली। केवल एक कुत्तोंने उसको एक स्थान पर चारों ओरसे घेरा पर उसने उनका सामना करके फिर अपनी राहली। एक मनुष्यने उसको भटकी हुई समझकर पकड़ रक्खा पर किसी प्रकार उसके हाथसे भी निकल कर वह फिर आगे चली जहां उसके जानेकी इच्छा थी वहीं जा पहुँची।

एक साहब सड़क पर भ्रमण करता हुआ चला जाता था। उसके पास एक भेड़ मिमियाती चिल्लाती हुई आई उसका मुहँ ताकने लगी उसने जान लिया कि, यह भेड़ मेरी सहायता चाहती है। वह साहब घोड़े से उतरकर उसके साथ हो लिया। भेड़ आगे आगे चली उसको एक स्थानमें ले गयी। वहां जाकर देखा कि, भेड़का बच्चा दो पत्थरोंके बीचमें फँसा है। उसका पांव ऊपरको है और वह तड़प रहा है साहबने उस बच्चेको निकाल कर उसकी माताको सौंप दिया। उसकी माता अपनी भाषामें धन्यवाद देनेके साथ साहबको कृतज्ञता भरी दृष्टिसे देखती हुई अपना बच्चा लिये चली गई। यह बात ब्राउन साहबकी नेचरल हिस्ट्रीमें लिखी हुई है।

लोमड़ी

लोमड़ी बहुत ही चैतन्य होती है। किताबोंमें इसकी अनेक बातें लिखी हैं। लोमड़ियोंको भविष्यका बहुत ध्यान रहा करता है क्योंकि, वे जो कुछ खाती हैं उससे बचे भोजनको स्थान स्थान पर गाड़ देती हैं। उस पर चिन्ह भी कर देती हैं, जिसमें वह स्थान भूल न जाय अपनी गड़ी हुई जमाको भली भाँति पहचान ले। जब उनका मन चाहता है निकाल कर खा लेती हैं—बड़ी बुद्धि-मानीसे सचेत होकर आखेट करती हैं।

बिल्ली और डायन

बहुत दिवसोंसे लोगोंका ऐसा ध्यान है कि, बिल्लियां जादूगार स्त्रियोंके साथ रहा करती हैं। वे ऐसा भी समझते हैं कि, स्वयम् डाइन बिल्लियोंके रूपमें होती हैं। डायन दुराचारिणी, भ्रष्ट तथा भांति भाँतिके छलकपटोंसे भरी हुई रहती हैं। वे किसी छिपे हुये कार्य्य अथवा यात्राके लिये जाती हैं तो बिल्लीके स्वरूपमें होकर भ्रमण करती हैं।

लार्डकी डाइनबिल्ली—एक बार लार्ड कोचरेन साहब उत्तरसागरके यात्रा कर रहे थे। उनके साथ एक काली बिल्ली भी थी। वह ऋतु बहुतही खराब था सदैव तुफान आया करता था वायु ठीक नहीं बहती थी। जहाजवाले इस प्रकार कहने लगे कि, सारी आपत्तियां उसी काली बिल्लीके कारण है जो कि, लार्ड साहबके साथ है। यह बात लार्ड साहबसे कही गई कि, आपके साथ जो काली बिल्ली है यह डायन है। साहबने कहा कि, यह तो भ्रम है पर जो तुम्हारी ऐसीही इच्छा है तो इसको पानीमें डाल दो। यह बात सुनकर सब मनुष्य भयभीत हो निवेदन करने लगे कि, साहब।! ऐसा कार्य्य न कीजि-येगा। जब आप इसको समुद्रमें फिकवाओगे तो वह और उपद्रव करेगी जिससे हम लोगोंके प्राणोंपर आपत्ति आवेगी। इससे यही उचित है कि, आप इस बिल्लीको दुःख न दीजिये, सुखसे रहने दीजिये। उन्होंने कहा कि, यदि आप इस बिल्लीको न छेडेंगे तो हमको आशा है कि, हम लोग कुशलपूर्वक अपने देश इङ्गलिस्थानको पहुँच सकेंगे। काली बिल्लीको लोग प्रायःडायन समझते हैं।

रक्तदानसे आपत्ति—उपरोक्त पुस्तकका लेखक यह भी लिखता है कि, एक बार एक गँवारिन हाथमें एक प्याला लिये मुझसे कहने लगी कि, मुझको आप अपने काली बिल्लीके बच्चेकी पूंछमेंसे रक्तकी कुछ बूंदे दीजिये जिसमें मेरे घरके चूल्हेमें बरकत आ जाय बला दूर हो। दूसरी स्त्रीने आकर मुझसे कहा कि, सावधान! भूलना नहीं काली बिल्ली कदापि अपने पाससे पृथक् न करना न रक्त देना। यदि उसको बाहर करोगे तो उसीके साथ सौभाग्य और बरकत भी विदा हो जायगी।

डायनकी सवारीकी शंका—कप्तान ब्राउन साहब कहते हैं कि, स्काटलेण्डके लोगोंका यह नियम था कि ,वहांके दालानोंमें लोग अपनी बिल्लियां बांध बांध कर रखते थे। वे अनुमान करते थे कि, आज की रात डायन बिल्लियोंपर सवार होगी इसी कारण उनसे अपनी २ बिल्लीको बचानेके लिये युक्तियां करते थे। जो लोग यह सावधानी करना भूल जाते थे, वे आपत्तिमें पड़ते देखते कि, उनकी बिल्लियाँ घरसे निकल कर बनमें भागी जाती हैं। प्रत्येकके ऊपर डायने सवार हैं नारवेंकी बडी सडक पर चली जाती हैं। काली बिल्लीका अङ्गरेजीमें बहुत कुछ विवरण है, इगलैण्ड, स्काटलैण्ड और आयरलैण्डके मनुष्य इसके विषयमें अनुमान करते हैं कि, इसके कारण कितनीही आपत्तियां आती हैं कितनीही दूर हो जाती हैं। यह भी अनुमान करते हैं कि, बिल्लियाँ, मनुष्योंकी तरह बातें किया करती हैं। लेखक लिखता है कि, मैंने लण्डन अपने घरके पिछवाडे अनेक बिल्लि-

योंको एकत्रित देखकर निश्चय कर लिया कि, ये सब किसी गूढ परामर्शके लिये यहा इकट्ठी हुई हैं। आपसमें वार्तालाप करके कुछ निश्चय कर रही हैं।

बिल्लियोंका प्रेम—मेरे भाईके पास एक बिल्ली थी। वह उनसे बहुत प्रेम रखती थी। एकबार यात्रा करने गये उसको घर पर अपने मित्रोंके पास छोड गये। दो वर्षके पीछे जिस दिन उनके आनेकी आशा थी, लोग उसी दिन उस बिल्लीको बहुत बेचैन देखके चकित हुये। सब लोगोंके पहले वह गाड़ीकी खड़खड़ाहट सुनकर चाहती थी कि, पहलेही से जाकर अपने स्वामीसे मिले, उस दिन उसको बहुत हर्ष था। दूसरे दिन जाकर अपने स्वामीके मोंढेपर बैठी जैसे कि, वह पहले जाके बैठा करती थी जिस दिन बिल्लियोंका स्वामी मरा, उस दिन उसकी सारी बिल्लियोंने उसकी कब्र पर जाके अपने प्राण त्याग दिये।

चीलके रूपमें डायन—ये डायने बिल्लियांही नहीं बरन अन्यान्य जीवधारियोंके स्वरूपमें भी होती हैं, सुतरां फीरोजपुरके जिला दूध मौजेमें मैं था। वहांके लोग कहने लगे कि, कार्कूसिंह नामक साहूकार गांवके बाहर कहीं जाता था। एक दिन गांवसे बाहर उजाडमें उसको कड़ी प्यास लगी। वहाँ कहीं भी पानी नहीं मिला इस कारण तृषासे गिरकर अचेत हो गया। डायनके नामसे विख्यात एक तरखानी स्त्री, कार्कूसिंह के घर पर जाकर समाचार दिया कि, अमुक उजाड़ में कार्कूसिंह प्यासका मारा अचेत होकर पड़ा हुआ है। उसके घरके लोगसवारी तथा पानी लेकर शीघ्रही उसके पास पहुँच गये, उसके मुँहपर पानी छिड़का और पिलाया वह शीघ्रही चैतन्य हुआ। उसको सवार कराके घर लाये। वहां आने पर कार्कूसिंहने लोगोंसे पूछा कि, जहाँ मैं अचेत होकर गिरा था वहाँ तो कोई मनुष्य नहीं था तुम लोगोंको मेरी बेहोशीका समाचार किस प्रकार मिला? लोगोंने कहा कि, अमुक तरखानीने कहा है। कार्कूसिंहने कहा कि, वहां कोई मनुष्य नहीं था केवल एक चील एक जुण्डके वृक्षपर बैठी थी। अतः जान पड़ा कि, डाइन चीलका रूप धरे है।

उल्लूके रूपमें डाइन—कलावंतोंने उल्लुओंकी आवाज को अपने रागके साथ संयुक्त किया है, पुस्तकोंमें उल्लुओंकी बोलीको बरबादीका चिन्ह लिखा है। तथा अपवित्र पक्षी कहा है। डायन स्त्रियाँ उल्लुओंके स्वरूपमें भी फिरा करती हैं। अलेमान देशकी स्त्रियां भांति भांतिकी जादूटोने करती हैं। स्त्रियोंकी जादूगर उल्लू समझा करते हैं। उल्लू जादूगर स्त्रियाँ समझी जाती हैं। ऐसेही बङ्गाल देशकी स्त्रियां और उत्तरीय पर्वतोंकी स्त्रियां जादूके काममें अत्यन्त चतुर होती हैं।

बिल्लीके रूपमें घात–बिल्लियां छोटे छोटे लड़की लड़कोंको मार लेती हैं। कभी कभी युवक स्त्री अथवा पुरुषको भी मार लेती हैं पर किसीको यह सुधि नहीं रहती कि, यह डायन है अथवा बिल्ली है कौन?

स्त्रीकी हत्या – इसी किताबमें लिखा है कि, एक स्त्री सहसा चिल्ला कर पृथिवीपर गिरकर तड़पने लगी। लोग बाहरसे दौड़े आये देखा कि गला काटा हुआ है, रक्त बह रहा है। लोगोंने इधर उधर देखा तो कोई कारण न दिखाई दिया। न जान पड़ा कि, किस प्रकार उसका गला कटा। पर छतके ऊपर एक भयानक बिल्ली बैठी थी उस स्त्रीकी ओर क्रोधित होकर देख रही थी. इससे जान पड़ा कि, उसी बिल्लीने उसका गला काटा था। भारतवर्षमें डायन स्त्रियाँ लडके तथा लड़कियोंके कलेजे बडी विधिसे खाया करती हैं।

चीलके रूपमें बूढी डाईन – सेण्ट जान साहब डायनकी एक विचित्र कहानी लिखते हैं। वह इस प्रकार है कि, एक बूढी स्त्री एक वनमें रहा करती थी। जहां वह रहती थी वहां एक झील थी डायन मनुष्य तथा पशु दोनों को बड़ी हानि पहुँचाया करती थी। उस परगनाके लोगोंने उस डायनको बहुत रोकना हटाना चाहा अनेक बार आत्मिक युक्तियोंद्वारा उसे परास्त करना चाहा उसपर आक्रमण, किया। अन्तमें वह कहीं छिप गई किसीको कुछ न जान पड़ा कि, कहां चली गई कहीं आस पासमें है वा नहीं दूरपर है। उसीके कारण मनुष्य तथा पशुवोंमें सैकडों ही रोग होते थे। अन्तमें एक मनुष्यने देख लिया कि, वह झीलके किनारे पत्थरों के समीप उड़ उड़ कर फिरती है। लोग भली प्रकार ताडने लगे वह प्रायः जाती आती और फडफडाती जान पडती थी। अनेक बार लोगोंने उसको गोली मारी पर नहीं लगी।

बगुलेके रूपमें मारा–आखिर एक वीर पुरुषने यह स्थिर किया कि, मैं इसको मार कर देशको आपत्तिसे बचाऊंगा। लोगोंसे कहा कि, मैं निश्चय विजय प्राप्त करूँगा। इसी कारण वह बन्दूक भर कर जहां वह रहती थी उसी पर्वत पर छिप कर बैठ गया। प्रतीक्षा करने लगा कि, डायन आवे तो मैं उसे गोली मार दूं। सारी रात बीत गई मदिराके नशेसे वह वहां बड़ी चौकसीसे बैठा रहता था। अन्तमें बड़े घोर वायुमें एक विचित्र शब्द सुना देखा कि, डायन बगुलाका स्वरूप धारण किये उसी सिपाहीकी ओर चली आती है। सिपाही विचारने लगा कि, यदि मैं अपने घरमें होता तो अच्छा था क्योंकि, उसके हाथ सर्दीसे इतने अकड़ गये थे कि, वह कठिनतासे बन्दूकका घोड़ा दबा सकता था। अन्तमें वह डायन उसके शिरपर पहुँची उसने बन्दूक चलाई। प्रातःकाल लोग आये तो देखा

कि, वह अचेत पड़ा है उसकी बन्दूक फट गई है गर्दनकी हड्डी टूट गई है । एक बहुत बड़ा बगुला मरा पड़ा है उसकी देहमें गोली इस पारसे उस पार निकल गई है । उसके समीप ही मृत बगुले को पडा देख कर लोगोंको निश्चय होगया कि, यह बगुला जादूगरनी स्त्री ही है ।

निष्कर्ष – इसी प्रकार सहस्रों सिद्ध साधु ऋषि मुनि तथा राक्षस जादूगर इत्यादि पशु पक्षी और हिंसक पशुवोंके स्वरूपमें फिरते रहते हैं । इसमें उनको कोई नहीं पहचान सकता । जो जाने सो ही पहचाने, दूसरेका कुछ वश नहीं चल सकता । यह बात विद्या तथा मन्त्रोंके द्वारा प्राप्त हो सकती है यह केवल एक सिद्धि है दूसरा कुछ नहीं है । सिद्ध पशुके स्वरूपमें होकर अपना काम बनाकर पृथक हो जाते हैं । जैसे शेर बन गये अपने वैरीको मार लिया । लोगोंने जाना शेरने मारा है आप अलगके अलग बने रहे ।

अन्तर्धान होना – एक साधुने मुझसे कहा था कि, एक कोढ़ी मनुष्यकी चारपाईके सिरानेके दाहने पायेको पकडकर एक बिल्ली खडी थी । उसने उसको बहुत हटाया पर नहीं हटी । वह पत्थर लेकर मारने दौड़ा । वहाँसे थोड़ी दूर पर एक बांसोंकी कोठी थी वह बिल्ली उधरको ही भाग गई । कोढी उसके पीछे दौड़ा । बिल्ली बांसोंकी कोठीसे तीन चार हाथके अन्तर पर ही अन्तर्धान हो गई । चाँदनी रात थी गर्मियोंका दिन था । उसको बहुत ढूँढ़ा पर पता न चला । यह डुमराव इलाकेके नाट नामक गांवकी बात है ।

बिज्जू ।

एक प्रकारका जीव होता है । यह भारत वर्षमें कबरिस्तानोंके पास अधिकता से पाया जाता है यह गड़े मुर्देको निकाल कर खाया करता है इसका कद बिल्लीके कदसे कुछ ही बड़ा होता है यह पेडपर चढकर चील्होंके बच्चोंको भी खाजाता है ।

बिज्जूओंका परस्पर प्रेम – फ्रांस देशमें दो मनुष्य यात्रा कर रहे थे उनके साथ एक कुत्ता भी था, उस कुत्तेने बिज्जूको उठा दिया उन मनुष्योंमेंसे एकने उसे बन्दूकसे मार दिया । वे उसको घसीटकर गांवले चले । थोड़ी दूर चले थे कि, पीछेसे एक दुखी बिज्जूका करुण शब्द सुनाई दिया । वो निडर होकर मृत बिज्जू के ऊपर चढ गया लोग उसे हटानेकी चेष्टा करने लगे पर प्रेमके दीवाने बिज्जूने अपने जीवनका मोह छोड़ रखा था उसे सिवा अपने प्यारे बीजूके दूसरा कुछ भी नहीं दीखता था जब अनेक प्रकारकी कोशिशें करनेपर भी उसने मृत बिज्जूको न छोडा तो पाषाण हृदय शिकारियोंने अपनी भयंकर बीभत्सना परिचय देकर उसे भी मार डाला । सहृदय संसारने मानवी वर्बरताका दृश्य देख दुखीके प्रेमपर दो आंसू बहा दिये । बीज्जू प्रेमपर विशुद्ध बलि करके सदाके लिये अमर हो गया ।

उपसम।

उपसम एक छोटा पांच इञ्चका लम्बा जानवर होता है। यह अमेरिका देशमें उत्पन्न होता है, उसके ऊपर बडे बडे बाल होते हैं वे बहुत सुन्दर तथा मुलायम होते हैं। उसको शिकारी पकडते हैं वह उनके वशमें आजाता है वह ऐसा कपट करके पड जाता है कि, मानों मर गया। शिकारी उसको छोड़ देते हैं। छुटकारा पातेही वह उठकर तुरंत भाग जाता है।

चूहा।

उपरोक्त पुस्तकमें एक मनुष्यका हाल लिखा है कि, मैं लंका टापूकी सैर कर रहा था। एक दिन मैंने अपने कुत्तेको चूहे पर छोडा। कुत्तेने चूहेको पकड़ लिया। उस समय चूहेको देखा तो मरा हुआ दिखाई दिया। उसके अङ्ग प्रत्यङ्ग ढीले तथा अशक्य जान पडते थे उसमें प्राणका तनिक भी चिह्न नहीं था। उसको छोड दिया। वह चूहा समय पाकर इतनी जोरसे भागा कि, उसकी गतिको कोई पहुँच न सकता था।

श्वेत चूहा – जेसी साहब श्वेत चूहोंके विषय पर लिखते हैं कि, पादरी ग्रीमन साहब सांझको घूमनेके लिये बाहर चले जाते थे। उसने ऐसा कौतुक देखा कि, अनेक चूहे एक स्थानसे दूसरे स्थानको चले जाते हैं। वे खडे होकर कौतुक देखने लगे। चूहोंकी भीड उनके समीप होकर चली गई अन्तमें उन्होंने देखा कि, पीछेसे एक बूढ़ा और अन्धा चूहा चला आता है। वह अन्धा अपने मुँहमें लकडी पकड़े है। लकडीका दूसरा सिरेको आंखवाला चूहा अपने मुँहसे पकड़े लिये जाता है। अन्धा चूहा सब चूहोंके साथ बराबर चला जाता है वह लकड़ी पकडने वाला चूहा अन्धेका पथदर्शक तथा मजबूत रक्षक था।

एक अङ्गरेजी पुस्तकमें लिखा है कि, नोबिन नामक एक लड़का था। उसको किसी मित्रने बहुमूल्य तेलकी कुछ शीशियां दीं। उसने वे लेकर अपनी कोठरीके एक कोनेमें रख दीं। दूसरे दिवस जाकर देखा तो दो शीशियां खाली थीं। उस समय उसे बडा आश्चर्य हुआ कि, यहां तो किसी दूसरेकी पहुँच नहीं थी, मेरी शीशियां कौन खाली कर गया? वह चुपचाप एक कोनेमें बैठ गया। एक घण्टेके बाद देखता है कि, तीन चूहे एक बिलमेंसे निकल शीशियोंकी ओर गये। उनमेंसे एकने अपने पिछले दोनों पैरोंको भूमिसे लगा अगले दोनों पैरोंसे शीशीको दृढ़ता पूर्वक पकड़ लिया, दूसरा चूहा उसके शिरपर चढ़ गया। अपने दांतोंसे शीशीका ढक्कन खोल दिया। उसने अपनी पूँछको शीशीके भीतर डुबोया

पृथिवी पर तीसरे चूहेको चुसाया । इस प्रकार बारम्बार अपनी पूँछ डुबाकर उसको चुसाता गया । जब उस चूहेका पेट भर गया, उसने शीशीको पकड़ लिया । शीशी पकड़नेवाला पृथिवीपर बैठ गया ऊपरवाला उसको तेल पिलाता गया । फिर नीचेवालेका पेट भरतेही ऊपरवाला नीचे आया । नीचेवाला ऊपर गया । इसी प्रकार उस ऊपरवालेने नीचेवालेका पेट भर दिया । इसी प्रकार तीनों पेट भरकर दोनों शीशियोंको खाली करके अपने बिलमें चले गये ।

सन् १८२९ ई० में बहुत बडी बाढ़ आयी. लोग बाढ़को टइन नदीके किनारे पर खड़े देख रहे थे । देखा कि, एक हंस पानीपर पैरता चला आता है उसकी पीठपर एक काला दागभी दिखाई दे रहा है । वह हंस समीप आया । लोगों को उसकी पीठपर एक चूहा दिखाई दिया । जब वह हंस पृथिवीके समीप पहुँचा चूहा हंसकी पीठसे उतरकर भाग गया । हंसकी दयासे बाढ़से बचकर चूहा अपने प्राण बचा सका ।

अमेरिकाके एक मासिकपत्रमें यह हाल लिखा था कि, कुछ अङ्गरेज अफसर पोर्टस्मिथके पास आगके निकट बैठे थे, उनमेंसे एकने गाना-बजाना आरम्भ किया दश मिनिट भी न बीते होंगे कि, एक छोटीसी चूहिया निकल आई । लोग देख रहे थे कि, जिस जिस ढङ्गसे राग और ताल टूटता था उसी ढङ्गसे वह कूदती उछलती हुई प्रसन्न होती थी । इसके पीछे चुहिया अचेत होकर गिर पडी और मर गई । उसके दुःख दर्दका चिह्न भी जाता रहा कुछ कारण भी न जाना गया कि, क्यों मर गई ।

डाक्टर कारपेण्टर साहबका कथन है कि, एक स्त्रीने अपनी आँखों देखा कि, चूहोंका एक झुण्ड बच्चोंको आगले पञ्जोंमें दबाये एक घरसे दूसरे घर चला जा रहा है । जब वे प्रत्येक सीढ़ीपर पहुँचते थे तो एक दूसरेको बच्चा पकडा देते थे । इस प्रकार अगला अपने अगलेको दूसरा अगला अपने अगलेको पकडाता, इसी प्रकार सब सीढीके ऊपर चढते और उठाये चले गये । जिस बरतनमें उनका मुँह तथा पञ्चा पहुँच नहीं सकता था, उसमें वे अपनी पूँछ डुबा देते दूसरे साथी चूहोंको चखाते जिसमें स्वाद द्वारा मालूम हो जावे कि, इस बर्तनमें किस प्रकारकी वस्तु है उसका मित्र गन्ध तथा स्वादसे तुरन्तही जान लेता कि, अमुक वस्तु इसमें बन्द है, लेने योग्य होनेपर उसके लेनेकी चिन्ता करते ।

लाहौर जिलेके सुरसिंह नामक गांवमें एक जमींदारकी स्त्रीकी नथ जाती रही । उसने जान लिया कि, कोई चूहा लेगया होगा । उसके जमींदारने मदिराका प्याला भरकर चूहेके बिलपर रख दिया । चूहे मदिरा पीकर प्रसन्न हुए नथ बिलके बाहर रख गये ।

भारतवर्षमें विख्यात है कि, चूहोंको भविष्यका ज्ञान होता है क्योंकि, जिस मकानमें आग लगनेवाली होती है, उससे चूहे पहलेसेही निकल जाते हैं, वह मकान चूहोंसे खाली हो जाता है चूहे कुछ हानि करते हैं उनको गाली देनेसे वे घातक हो जाते हैं अधिक हानि किया करते हैं जो उनकी खुशामद करे तेल आदिका हलवा खिलावे तो कम हानि होती है ।

मैंने सुना था कि, एक गड़ेरिया भेड बकरियां चराता था । उसने एक झाड़ीमें ऐसा कौतुक देखा कि, एक चूहेने बिलसे निकालकर एक काला पैसा बाहर रख दिया । इस प्रकार कई बार बिलके भीतर गया एक एक पैसा बाहर लाकर रखता गया । जिससे बहुतसे पैसोंका ढ़ेर लगा दिया । उसे देखकर चूहा बहुत प्रसन्न हुआ । ढेरके इर्द गिर्द घूमने लगा । फिर उन पैसोंको बिलके भीतर ले गया, गड़ेरिया यह कौतुक देख रहा था । उसने जान लिया कि, चूहा उनको बिलके भीतर ले जाना चाहता है वह ललकार कर दौडा । चूहा भयके मारे सूराखके भीतर घुस गया । गडेरियेने काले सिक्कोंको उठा लिया उन पैसोंको भली प्रकार मलकर देखा तो चांदीके रुपये निकले । गडेरिया सांझको भेंडोंको लेकर अपने घर आया, सारे मनुष्योंसे चूहेका हाल कहा । गांवके लोग दौडे आये अधिक द्रव्य प्राप्त करनेके लालचसे बिलको खोदा तो वही एक रुपया मिला जो भीतर लेगया था अधिक कुछ नहीं मिला चूहा भी अपने धनके शोकसे आखिरकार मरही गया ।

सर्प ।

भारतके इतिहासमें सर्पोंकी भी अनेक बातें मिलेंगी रामायण महाभारत भागवत और वेदोंमें सर्पोंकी अनेकों घटनाएं मिलती हैं । पृथ्वीके धारण करने वाले शेषनागसे लेकर भूमिपर फिर फिरकर मूषे खानेवाले तक इस जातिमें आजाते हैं । हिन्दू संस्कृतिमें नाग एक देवयोनि विशेष मानते हैं, इनके लोकको नागलोक कहते हैं इनकी अनेकों जातियां हैं, यहां उन्हींका कुछ वर्णन करते हैं ।

सर्पोंके राजा – यह समाज भी मानव समाजकी तरह ही है जैसे मनुष्योंमें नरपति होते हैं उसी तरह अहियोंमें भी अहिपति हुआ करते हैं उनके राजाके व्यवहार भी वैसेही हैं वासुकि आदि सर्प जातिके राजेही तो हैं. पर ये तो बड़े राजे हैं, इनके सिवा और भी अनेक छोटे छोटे राजे होते हैं जो भूमण्डलपर भी रहा करते हैं ।

सर्पसभा – सन् १८३५ ई० की एक बात इस प्रकार सुनी गई थी कि, एक ब्राह्मण राजपूताना शङ्खावारीका रहनेवाला था । अकालमें देश छोड़कर दक्षिण हैदराबादको गया, क्योंकि वहाँ उसके यजमान रहते थे । यजमानोंने

ब्राह्मणकी भली प्रकार सेवा नहीं की, न कुछ दियाही, तब वह निराश होकर वहाँ से लौटा आ रहा था उजाड़में पहुँचा वहां घोर बन था दूर दूर तक बस्ती नहीं थी. उसमें बटका वृहत वृक्ष दिखाई दिया ब्राह्मण बट वृक्षके नीचे पहुँचा देखा कि, आठ दश मनुष्य झाडू दे देकर भली प्रकार सफाई कर रहे हैं। ब्राह्मणने उनसे पूछा कि, तुम कौन हो, क्यों सफाई करते हो ? उन लोगोंने उत्तर दिया कि, हम सांपोंके ब्राह्मण हैं, सब सर्प हमारे यजमान हैं । यहां हमारे अनेक यजमान रहते हैं । हम उनके लिये यह स्थान साफ कर रहे हैं, रातके समय हमारे सब यजमान यहाँ आवेंगे। यदि तुम गाना बजाना सुनना चाहते हो तो इसी स्थान पर रहो पर भयभीत न होना, मेरे यजमान आवें तो निडर होकर बैठे रहना वह ब्राह्मण इनके कहनेसे उस स्थानपर बैठा रहा । रातको राग, बाजा और बीन इत्यादि बजना आरम्भ हुआ । रातके दश बजेसे सांप आने लगे फर्श पर अपने अपने स्थान पर बैठने लगे । सभा जमी । बहुत सांप एकत्रित होगये । सांपोंके पुरोहितने बीचमें एक गद्दी लगाई । मानों वह राजसिंहासन था जो बहुत टीप टापके साथ रक्खा गया था दूधसे एक कड़ाह भरकर रखा गया उसमें बहुतसी चीनी मिलाई गई । सब सांप आचुके तब एक बहुत बडा और महा प्रबल काला सांप आया, बीचके राज सिंहासनके पास आकर सिंहासनके समीप नीचे अल्पकाल तक बैठकर फिर चला गया इसके पीछे वही सांप फिर आया । पृथिवीसे हाथ भर ऊँचा शिर उठा ऊपर छत्री फैलाये हुए चला आता था उसके शिरपर एक बित्तेभरका अत्यन्त सुन्दर श्वेत सर्प बैठा था । वही सबका राजा था सब सांपोंने उठकर उसकी बहुत प्रतिष्ठा की । काले सांपने अपना शिर सिंहासनसे लगा दिया बादशाह काले साँप के शिरसे उतर कर सिंहासन पर बैठ गया । राग तथा गीत इत्यादि सुनने लगा । दूसरे सर्प राजाके इर्द गिर्द बैठे हुए नम्रता पूर्वक गाना सुन रहे थे । थोडीसी रात रह जाने पर सांपोंका राजा दूध पीकर चल दिया । उसके पीछे दूसरे सर्पभी अपनी पदवीके अनुसार दूध पी २ कर चले गये । सवेरा होगया उस दिन भी उन आदमियोंने उसी स्थानपर डेरा किया । दूसरी सांझ हुई उसी प्रकार राग रंग आरम्भ हु आ । उसी प्रकार सब सर्प आने लगे, गये दिनके समानही सर्पोंकी सभा जम गई । जो सर्प आता था वे अपने मुँहसे अशर्फियां उगलता जाता था । वहां फर्श पर अशर्फियोंका ढेर लग गया सांपोंका पुरोहित ब्राह्मण प्रत्येक नागके घरानेका नाम ले लेकर उनकी प्रशंसा करता जाता था । उन सर्पोंके घरानेके नाम और चिन्ह उनके पास लिखे थे । सर्पोंका बादशाह आया तो उसने भी मुँहसे एक अमूल्य मोती उगल दिया । एक सांपने दो अशर्फिया ब्राह्मणके सामने धरदीं ब्राह्मणने दोनों

अशर्फियोंको उठाकर अलग रख दिया कहा कि, मैं तेरी दक्षिणा स्वीकार नहीं करूँगा वह सर्प लौट गया। फिर दश अशर्फियां लाकर पुरोहितके सामने रक्खीं पर वह प्रसन्न नहीं हुआ कहने लगा कि, मेरा यजमान बहुत धनाढ्य है उसने मुझको कभी कुछ नहीं दिया मैं इतनेमें मैं उससे प्रसन्न नहीं। अनेक सर्प उस पुरोहित की खुशामद करने लगे अन्तमें यह बात बादशाहके सामने उपस्थित हुई बादशाह की आज्ञा पाकर पुरोहितने उनकी बारह अशर्फियां स्वीकार करली सभी सर्पोंके दक्षिणा देचुकनेके बाद सबेरा होते ही बादशाह दूध पीके चला गया इसके पीछे सभी सर्पोंने दूध पी २ कर अपनी अपनी राह ली। सबेरे सर्पोंके ब्राह्मणने राज-पुतानेके ब्राह्मणको कुछ रुपये साथ अशर्फियां देकर बिदा किया कहा कि, तुम्हारे देशमें भी हमारा एक यजमान राजा रहता है। हम आज तक उसके पास कभी नहीं गये। वह नारनोल नगरके ढोसी पर्व्वतमें रहता है।

ढोसीपर्वतका नागराज – योगियोंने जान लिया कि एक अत्यन्त बलिष्ठ सर्पराज ढोसीके पर्वतमें रहता है। एक योगीने चाहाकि, मैं किसी प्रकार उस सर्पको पकडूं। उस पर्वत पर जाकर मंत्र पढकर बीना बजाने लगा। उस सर्पने एक ऐसी फुंफकार मारी कि, योगी राखका ढेर हो गया इसके पीछे उस योगीकी स्त्रीने विख्यात किया कि, जो कोई इस सांपको पकड़े तो मैं उसको अपनी दो पुत्रियां और बहुतसा धन दूँगी। इसी लालचसे अनेक योगी एकत्रित हुये। कच्चे बरतन पर्वत पर चुन दिये। मंत्र पढ़ना आरम्भ किया। उस सांपने फिर एक फुँफकार मारी सारे कच्चे बरतन लाल होगये। इस प्रकार योगियोंने अनेकों युक्तियां की पर वह साँप न पकड़ा गया।

ग्रन्थकारकामत – मैंने अपने पितासे बचपनमें इस प्रकारके सांपोंके राजा की बातें सुनी थी पर उस समय मुझमें कुछ भी समझ नहीं थी, इस कारण वे बातें कहानी समझलीं पर अब सत्य जान पड़ती हैं क्योंकि, वस्तुतः सांपोंमें राजे तथा धनाढ्य लोग हैं उनके पुरोहित भी होते हैं जिनको कोई दूसरा धन्धा नहीं होता। केवल सांपोंसे धन लेकर अपना गुजारा किया करते हैं। सर्पोंकी अनेक जातियाँ हैं। उनकी आयु बड़ी होती है। उनमें सिद्ध होते हैं, मैंने सुना है कि, जब सर्प सहस्र वर्षका हो जाता है तो उड़कर मलयागिरि पर्वतपर चन्दनके वृक्षमें लिपट जाता है। कुछ कालतक उसमें लिपटा रहता है, उसके पीछे उसमें सिद्धि हो जाती है वह नाना प्रकारका स्वरूप बना सकता है। अपनी देह पलटकर मनुष्य आदिका स्वरूप धारण कर सकता है।

बालरूपीका वीनप्रेम – मैंने एक कहानी सुनी थी कि, एक पाठशालामें

अनेक बालक पढ़ रहे थे वहाँ पर योगी बीन बजाने लगा । अनेकों लड़के उसकी बीन सुननेको बाहर निकल पड़े बीन सुन योगीको कुछ दे अपनी राह लगे । एक लड़का खड़ा २ बहुत देरतक बीन सुन सुनकर प्रसन्न होता रहा फिर चुपकेसे अपनी जेबमेंसे पांच रुपये निकाल योगीको दे उसने भी अपनी राह ली । जब वह योगी अपने घर गया और अपने पितासे उसने यह बात कही. तब उसके पिता ने कहा कि, ऐ पुत्र ! वह नागवंशी होगा नहीं तो बीनका स्वर सुनकर तुमको पांच रुपया कौन देनेवाला है ? यह केवल सांपकाही कार्य्य है कि, वह बीनकी आवाज सुनकर बहुत हर्षित होता है । अच्छा, अब मैं जाकर उसको पहचान लेता हूं । उसके पिताने पाठशालाके निकट जाकर बीन बजाना आरम्भ किया । लड़के बीन सुनने आये योगीको कुछ दे देकर अपनी राहली । वही बालक देरतक प्रसन्न हो होकर वीन सुनता रहा फिर योगीको उसी प्रकार पारितोषिक देकर चला गया योगी उसके पीछे पीछे दूर मैदानमें गया लडकेने कहा कि, ऐ योगी ! तू किस अभि-प्रायसे मेरे पीछे आता है तू जो मांगे सो दूं, मेरा पीछा मतकर । बालक तथा उस योगीकी कहानी बहुत लम्बी है । लडकेने योगीको अनेक कौतुक दिखाये । अपनी बहुत सिद्धि प्रगट की योगीको प्रसन्न करके घर लौटा दिया ।

सांड बननेवाला सांप — इसी प्रकारकी एक बात और सुनी गई है कि, पंजाब फीरोजपुर जिलेके कब्बरबच्छागाममें सबेरेके समय गांवके सब पशु जङ्गलमें घास चरने जाया करते । चितकबरा सांड़ बनमेंसे आकर उस झुण्डमें और आ मिलता था । समस्त दिन ढोरोंके साथ चरता फिरता था । सांझके समय सारे पशु गांवको लौट आते, वह भी गांवके निकट तक आता, सारे पशु तो गांवके भीतर चले आते, वह बाहरसेही पुनः बनकी राह ले लेता । चरवाहे रोज यह कौतुक देखा करते । उससे अनेकों गायें गर्भिणी हुई थीं. उनसे उसी स्वरूपकी बछिया तथा बैल उत्पन्न होने लगे । सभोंका चितकबरा रङ्ग और आँखें गोल थीं । कुछ कालके पीछे एक योगी उस गांवमें आया । उसने उसका हाल सुना तो जान लिया कि, यह साँप है सांड नहीं है । योगी उसके पीछे पडा । एक दो दिनतक उसका कौतुक देखता रहा । निश्चय कर लिया कि, यह सांप है । एक दिन सांड गाँवके समीपसे वनकी ओर चला, वह योगी दूरतक उसके पीछे चला गया । घने वनमें एक बिलके सामने पहुंचकर बैल पृथिवी पर लोट पोटके सर्प बनकर उसमें घुस गया । योगीने भली प्रकार अपनी आँखोंसे देख लिया बिलको पहचान लिया उसने जाकर दूसरे योगियोंको समाचार दिया। कई एक मन्त्र प्रवीण योगी वहां आ पहुंचे. उस सांपको पकड़ लिया । जब सांप अपने बिलमें गया उस समय योगियों

ने कच्चे बरतने लाकर उसकी बाम्बीके मुँह पर रख कर मन्त्र पढ़ना आरम्भ किया सर्प्प पर मन्त्रका प्रभाव होतेही उसने फुँफकार मारी बरतन लाल हो गये। योगियोंने उन बरतनोंको हटाकर दूसरे बरतन बांबीके मुँह पर रख कर मन्त्र पढ़ना आरम्भ किया, सर्प्पने फिर फुफकार मारी, बरतन अधकच्चे रह गये। योगियोंने बरतन हटाकर कच्चे बरतन वहां रखे मन्त्र पढ़ना आरम्भ किया। फिर उसने फुफकार मारी तो बरतन ज्योंके त्यों कच्चे रह गये एक भी नहीं पका. उन लोगोंने जान लिया कि, अब उस सर्पका विष दूर हो गया। इसके पीछे वे लोग सांपको पकड़ पिटारीमें रख कर मकान ले गये।

स्त्री बननेवाली नागिन – एक दिन ऐसी घटना हुई कि, उस बिलके समीप एक जमींदार चला जाता था. उसने देखा कि, एक स्त्री बिलपर बैठी रो रही है, उस जमींदारने पूछा कि, तुम क्यों रोती हो, स्त्रीने उत्तर दिया कि, मैं नागन हूं, मेरे भाईको योगी पकड़ लेगये हैं मैं उसकी जुदाईसे रोती हूँ। यदि तू मेरे भाईको छुडाकर मेरे पास ला दे तो मैं तुझको बहुतसा धन दूँ। नागन जमींदारको एक स्थानपर ले गई। उजाड़की जगह दिखाकर कहा कि, कमर भर नीचे खोदकर खजाना निकालो. जमींदारने कमरके बराबर खोदा बहुत धन पाया वह बहुत प्रसन्न हुआ. नागनने कहा कि, मेरे भाईकी यह पहचान है कि वह बहुत मोटा सांप है, योगीके पास जितने सर्प हैं किसीके माथे पर तिलक नहीं पर मेरे भाईके माथे पर तिलक है। यही उसकी पहचान है। अन्तमें जमींदार योगियोंकी खोजमें लगा, जहां वह सांप था उस योगीके पास गया। उस सांपको पहचान कर वह उसी योगी की सेवा करने लगा, जब कुछ दिन सेवा कर चुका तो एक दिन अवसर पा साँप की पेटारी ले भागा, उसी बिल पर आ पहुँचा। नागनको पुकारा, वह स्त्री बिलसे बाहर निकल पड़ी जमींदारने उस साँपको छोड दिया। नागन अपने भाईको देखकर अत्यन्त हर्षित हुई आप भी सांपन होगई, पीछे अपने भाईके साथ बिलमें समा गई। वह साँप योगियोंके पञ्जेसे छुटकर कहींका कहीं चला गया। जिस गांवमें यह घटना हुई थी उसी समयसे उसका नाम कबरबच्छा रक्खा गया. क्योंकि, उस साँपके जन्में हुए सारे बछड़े चितकबरे थे उनकी आंखें साँपोंकी तरह गोल थीं।

यमदूत – कुछ वर्ष बीते एक हलकारा बीकानेरराज्यसे अलवरराज्यको जाता था, उस प्रान्तकी भूमि बहुत उजाड तथा बीहड है. दूर दूर पर गाँव है। बरसातका मौसम था, घास अधिक उत्पन्न हुई थी, इतनी बडी बड़ी घास हो गई थी कि, जिसमें मनुष्य छिप जावे। घासोंके कारण राह भी छिप गई थी। हलकारा विवश हुआ, कहीं राह न मिलती न कोई मनुष्यही दिखाई देता कि, उससे पता

पूछे। साँझ होगई अन्धकार हो चला, भटकते २ उसको एक ऊसर स्थान मिला जहाँ घास नहीं जमी थी, स्वच्छ स्थानको देखकर वहीं बैठ गया, भूख प्यास तथा भयके कारण नींद न आई। रातको क्या देखता है कि, उस श्वेतभूमिके बिलसे एक सांप निकल पड़ा--वह समूचा तो बिलके भीतर था पर हाथ भर बाहर निकल आया अपने बिलके बाहर लकड़ीके समान खड़ा रहा। यह कौतुक देख वह मनुष्य आश्चर्यान्वित होके सोचने लगा कि, यहां तो कोई वृक्ष अथवा पौधा नहीं था, यह ठूंठ कैसा खड़ा जान पड़ता है. अपने मनमें यही सोच रहा था कि, इतनेमें कुछ दूरसे ऐसी आवाज आने लगी कि, मानों दो मनुष्य परस्पर बातें कर रहे हैं। उन दोनोंमेंसे एकने पुकार कर कहा कि, अमुक सर्प अपने घरमें है कि, नहीं ? दूसरे साँपने मनुष्यके स्वरमें उत्तर दिया कि, मैं अपने घरमें ही हूँ. उसने कहा कि, तू जा और यहांसे तीन कोसके अन्तर पर अमुक गांवमें अमुक महाजन रहता है उसको तू काट, यही परमेश्वरकी आज्ञा है। उसने उत्तर दिया कि, मैं कैसे जाऊं ? मेरे घर एक मेहिमान आया है मैं उसीकी चौकसी कर रहा हूं। जिसमें कोई हिंसक पशु उसको मार न डाले, नहीं तो मुझे बड़ा पाप होगा। उसने कहा कि, तू जा उसको काट हम दोनों तेरे अतिथिकी रक्षा करेंगे। सर्पने कहा कि, मैं उस महाजनको कैसे काटूं ? उन्होंने कहा कि, महाजनके घरमें चूल्हेके पीछे एक तम्बाकूका डब्बा धरा है, तू जा उस डब्बेके पास बैठ रह जब वह तम्बाकू लेनेको आवे तो तू काट खाना, वे दोनों मनुष्यवाग्भाषी सर्प यमके दूत थे, वहीं खड़े होकर उस मनुष्यकी चौकीदारी करने लगे वह साँप जाकर महाजनके घरमें घुस तम्बाकूके डब्बेके पीछे बैठा। जब वह महाजन तम्बाकू लेनेको गया तो साँपने काटखाया वह मर गया पीछे वह साँप अपने बिलको पलट आया, वे दोनों यमदूत उस महाजनके जीवको ले गये।

वह बहुत विषैला सर्प था, उसके विषके कारण उस भूमिपर वृक्ष न उगते थे। प्रातःकाल होते ही सर्प अपनी बाँबीमें घुस गया. हलकारा उपरोक्त बातकी सत्यता जाननेके लिये गाँवमें गया. उसने बनियाके घर जाकर देखा तो रोना पीटना पड़ रहा है। मनुष्य पशु है, पशु मनुष्य है दोनोंमें कुछ भेद नहीं, जिसने सत्य ज्ञान पाया है वही मनुष्य है शेषके सभी पशु हैं।

मानुषीके गर्भसे बाबा धारीराम सांप -- पचास वर्षसे पहिलेकी बात है जौनपुरसे लगभग बारह कोसके अन्तर पर ताखा नामक एक गाँव है, उसमें एक कायस्थजातिकी स्त्री गर्भिणी हुई। प्रसवके समय बच्चोंके बदले उसके पेटसे एक थैली निकली। स्त्रियोंने उस थैलीको तोडा तो उसके भीतरसे साँपके अनेक

बच्चे निकल पडे, लोगोंने देखा तो उन सबको मार डाला पर उनमेंसे एक बचचा कोठीके बीच छिप रहा, वहांके लोगोंको इस बातका कुछ भी पता न चला. परमेश्वर उसकी रक्षा करने लगा। कायस्थ अपनी आयु सम्पूर्ण करके मर गया. उसके पाँच अथवा चार बेटे थे, उनमें आपसमें फूट हुई, वे जुदे २ होने लगे । अपने पिता का धन भी आपसमें बाँटने लगे । वह कायस्थ बहुत धनाढ्य था, बहुत धन छोड़ कर मरा था । वे भाई तराजूसे तौलतौलकर रुपये बांटने लगे उन्होंने अपने भागके अनुसार ढेर लगाया वे तो पांच ढेर लगाते थे, पर छः हो जाते थे. उन लोगोंने कई बार ढेर लगाये पर प्रत्येक बार रुपयोंका एक ढेर बढ़ जाया करता था । उन लोगों को अत्यन्त आश्चर्य्य हुआ. विचारने लगे कि, अवश्यही इस एक ढेरका स्वामी कोई है । तब उन लोगोंने पुकारके कहा कि, इस ढेरका जो स्वामी हो वह यहां आकर उपस्थित हो जाय. सर्प कोठलीके नीचे से आकर एक ढेरके ऊपर बैठ गया। उन लोगोंने जान लिया कि, यह हमारा भाई इस ढेरका स्वामी है, लोगोंने उस दिनसे उस साँपका नाम धारीराम रक्खा । यह धारीराम बहुत अच्छा साँप था उनके घरमें रहा करता था। उनके घरका काम काज किया करता था। वे कायस्थ खेती बारीका काम कराते थे । जहां कहीं कुछ प्रयोजन होता था तो धारीरामको भेजा करते थे । इस गाँवके समस्त मनष्य धारीरामको जानते थे, उससे कोई भी भयभीत न होता था, मजदूरोंकी अवश्यकता होती थी तो घरके लोग कह देते थे कि, जाओ मजदूरोंको बुला लाओ । धारीराम मजदूरोंके घर जाकर द्वार खटखटाता मजदूर जान लेते कि, बाबा धारीराम आए, शीघ्र चलो । समस्त मजदूरों को एकत्रित करके काममें लगा देता सब कुछ देख रेख किया करता था. गाँवके सारे मनुष्य उसको बाबा धारीराम कहा करते थे । सभी नौकरों तथा मजदूरोंसे बाबा धारीराम काम लिया करता था कभी किसीको भी कष्ट न पहुंचाता था बडा ही भला था ।

एक दिवसका हाल है कि, बाबा धारीराम किसी कार्य्यवश बाहर चला जाता था । उधरसे परदेशी बनजारे बैल लादे चले जाते थे । वे सब इस सांपके स्वभावसे अनभिज्ञ थे, इस कारण उसको मार एक झाड़ीपर रखकर चले गये । धारीरामने अपने भाइयोंको स्वप्न दिया कि, मुझको बनजारे मारकर अमुक झाड़ीपर रखकर चले गये हैं, घरके लोग वहां गये । झाड़ीपर सांपका शव मिला । उसको वहांसे उठा लाये हिंदुओंकी रीतिके अनुसार उसकी अंतिम क्रिया की । उस समय मैं बालक था मेरी जन्मभूमिसे पांच कोसके अन्तरपर ताखा गाँव है जहांकी कि, यह घटना है । प्रायः जब लोग सांप देखते सांपके आक्रमणके भीतर आते तो

पुकारते दोहाई देते कि "दोहाई बाबा धारीरामकी" जिससे धारीराम का नाम सुनतेही सांप भाग जाते। वैर छोड देते। सांप काटनेके समय मैं सदैव सुना करता था कि, लोग बाबा धारीरामकी दोहाई दिया करते थे और सांपके विषसे बच जाते थे । उसके भाईयोंने उसके मरनेपर बहुत शोक किया । उसकी श्राद्धादि सब क्रियाएं मनुष्योंकी तरह ही की ।

सांप और बालक--पञ्जाब देश ज़िला लुधियाना जिगरावें गाँवके विषयमें सुना गया था कि, एक छोटा लड़का रोटी खाते २ एक सर्पको पकड़ उसका शिर रोटीके साथ लगाकर कहता कि, ओ तू रोटी खा। सब लोग खड़े देख रहे थे उसके माता पिता खड़े पुकारते कि, तू सांपको छोड़ दे पर वह लड़का न छोड़ता था। सांपका शिर पकड़कर रोटीको लगा लगाकर कहता कि, तू रोटी खाले, लोग देख कर चकित हो रहे थे । अन्तमें लड़केने साँपका शिर छोड़ा, सांप भाग गया लड़के को कुछ भी कष्ट न पहुँचाया ।

मानुषी भाषापर तौरीत -- तौरीतमें उत्पत्तिकी पुस्तकका (३) बाब देखो। सर्प हौवासे मनुष्यके समान बातें करता था, इससे प्रमाणित होता है कि, उस समय पशु मनुष्योंके समान वार्तालाप किया करते थे। मनुष्योंके समान ही एक दूसरेका कहा भी मान लेते थे। यह बात आश्चर्यकी नहीं है, यदि यह बात आश्चर्य्य की होती तो आदम धोखा न खाता ।

हदीस मुहम्मदीमें -- इस प्रकार लिखा है कि, पहले शैतान कूदकर बिहिश्तकी दीवार पर बैठ गया पर वैकुण्ठके भीतर न जाता। सोचने लगा कि, अब मैं बिहिश्तके भीतर कैसे बैठूं। उस समय उसने मयूरको देखा उससे प्रार्थना की कि, मुझको वैकुण्ठकी सैर करवा दो । मयूरने कहा कि, मुझमें सामर्थ्य नहीं पर मेरा मित्र एक साँप है तेरे पास उसको बुलाता हूं, वह तेरा काम अवश्य करेगा। मयूर अपने मित्रके समीप गया । उससे सलाह की सर्पको लेकर शैतानके पास गया। वह सर्प शैतानके समीप गया वह शैतान अपना अतिलघुस्वरूप करके उस सर्पके मुँहमें बैठ गया। सर्प बिहिस्तके भीतर गया। उसके साथ शैतान भी बिहिस्त के भीतर गया साँपके मुंहसे बाहर निकल आया हौवाको बहकाया। आदम तथा हौवा दोनों कलुषित हुये ।

खुदाका शाप -- खुदाने उन पाँचोंको शाप दिया । शैतानको तुच्छ ठहराया । उस समय सर्पके ऊँटके समान चार पाँव थे उसके याकूतके होठ तथा कस्तुरी की जीभ थी। वह बड़ा सुन्दर था आगे परमेश्वरने उसके समस्त गुण पृथक् कर दिये। वह विषसे भर गया पेटके बल चलने लगा। मयूरके भी बहुत प्रकाशित छः पंख छीन लिये गये । उसका सौन्दर्य्य जाता रहा ।

आदमका दश दण्ड—काशितने आदमपर दश दण्ड किये थे, वे ये हैं कि, १ अमृत फल न खाओगे। २ अब बिहिस्त वस्त्र न मिलेगा। ३ स्त्रीके पास नङ्गे जाओगे। ४ बिहिश्तके बाहर जाओ। ५ काम कामना प्रबल होगी। ६ तुझपर शैतान अधिकृत होगा। ७ शैतानके भयसे तू भयभीत रहेगा। ८ अब तू पापिष्ठी हो गया। ९ तुमको बहुत दुःख होगा। १० ललचाया करेगा।

हौवाको पंदरह दण्ड—आदमको शाप देनेके बाद हौवाको शाप दिया कि, १ रजस्वला होओ। २ नौ मासमें बच्चा जनो। ३ दुःख दर्दसे बालक जनो। ४ अपने पतिके अधीन रहो। ५ अपने पतिकी आज्ञाकारिणी रहो। ६ तुझे थोड़ा भाग मिलेगा। ७ स्त्रियोंके नामसे तलाक (त्यागपत्र) न होगा। ८ अपने पतिकी सेवा किया करो। ९ स्त्रीकी साक्षी न मानी जायगी। १० स्त्रीको सलाम न की जायगी। ११ स्त्रियोंका कुछ विश्वास न होगा। १२ पुरुषके बुद्धिके दशवें भागकी बुद्धि होगी। १३ जहाद न कर सकोगी। १४ जुमाकी नमाज न पढ़ सकोगी। १५ नबी न हो सकोगी ये पन्द्रह दण्ड हौवाको दिये गये थे।

निष्कर्ष—इससे यह सिद्ध हुआ कि, सारे पशु मनुष्योंके समान हैं। दूसरी बात नहीं है।

विरोध—जबसे यह समस्त घटना हुई है तबसे उनमें बैर हो गया। सर्पको मनुष्य मारने लगे सर्प्प मनुष्योंको काटने लगे मयूर जहाँ सर्प्पको पाता है पकड कर खा जाता है यही इनके विरोधका कारण है।

हीरा पुत्र होनेका आशीर्वाद—पञ्जाब गुरदासपुरके कानूंवाल थाना नामक गाँवमें एक सरदारकी स्त्री रामकुँवरि अपने द्वारपर बैठी, दासीसे पांव धुलवा रही थी। इसी समय सहसा एक सांप दौड़ता आया उसकी कोठरीके भीतर घुस गया। मनुष्यके स्वरमें बोला कि, माई! मुझको योगीके हाथ से बचा। मैं तेरी शरण आया हूँ। स्त्रीने कहा कि, ऐ भाई! सांप कब किसीके साथ भलाई करते हैं? साँपने कहा कि, मैं तेरे साथ भलाई करूँगा जो कुछ तू मागेगी वही दूंगा। उसने कहा कि, मेरे पुत्र नहीं है। उसने कहा कि, तेरे पुत्र होगा उसका नाम हीरा रखना तेरी सन्तानपर सर्पके विषका कभी असर न होगा। वे जिसपर हाथ रक्खेंगे उसपर भी सर्पका विष असर न करेगा।

इतनेमें योगी सांपके पीछे दौडा आया, स्त्रीने कोठरीका द्वार बंदकर लिया। साँपको उसके हाथसे बचाया। यद्यपि उस योगीने सांप पकडनेका बहुत उद्योग किया पर स्त्रीने पकड़ने नहीं दिया उसे पांच रुपया देकर विदा कर दिया। साँपने स्त्रीसे जो कुछ प्रण किया था वह पूरा किया। उसी स्त्रीकी सन्तानोंमेंसे एक मनुष्यने मुझसे यह कहानी कही थी।

विषैला साँप—फिरोजपुर जिला मोगह थाना कोपरीवाले मौजेकी यह बात है कि, पुरानी घास फूस और कूरे कुरकुटसे एक ढेर लगा हुआ था। उसको बारह वर्ष बीत चुके। उसमें एक मनुष्य आग लगाने लगा। लोगोंने बहुत निषेध किया कि, यह पुराना ढेर है इसमें अनेक जीव हैं, तू आग न लगा। पर उसने न माना आग लगाही दी। आग लगी करोडों जीव जलने लगे। उस ढेरमें साँपोंका भी घर था वे सब जलने लगे। कोई जल मरे कोई अधजला होकर तडपने लगा। उन साँपोंमें बड़ा साँप भविष्यका हाल जानता था वह आगसे बचकर पहलेही निकल गया। उसने आकर उस मनुष्यके बेटेको ऐसा काटा कि, वह उसी समय मर गया। उसका विष ऐसा तीक्ष्ण था कि, जब उसने उसके पुत्रको काटा तो उसका रङ्ग कोयलेके समान काला हो गया। अन्तमें लोगोंने उस साँपको बन्दूकसे मारा क्योंकि, वह बहुत विषैला था। लाठी मारनेसे विषकी तीक्ष्णतासे लाठी फट जाया करती थी। जो लाठी मारता वही उसके विषसे मर जाया करता कभी भी जीवित नहीं रह सकता था।

बिच्छू मरानेवाला अजगर—मैंने सुना था कि, साँझके समय कुछ कुम्हार अपने गदहोंके साथ एक पर्व्वतके पास ठहरे। रातको सो गये एक बड़ा सर्प्प आया चारों ओरसे घेरा मारकर उनको घेर लिया। सबेरेके समय कुम्हार उठे देखा तो अपनेको साँपसे घिरा पाया। वे सब विवश हुए अजगरने उनको एक ओरसे राह दी। जिससे कुम्हार तथा गदहे निकल गये। एक मनुष्य रह गया साँपने उसको फिर उसी तरह घेर लिया। उसने कुम्हारके दोनों पैरोंके बीचमें अपना शिर चला उसे अपनी पीठपर चढ़ाकर एक स्थानपर ले गया। वहाँ उस मनुष्यने देखा कि, बकरीके बच्चेके बराबर एक बहुत विषैला बिच्छू है उस बिच्छूसे अजगर बहुत भयभीत रहता था। उस मनुष्यने उस बिच्छूको देखा तो जान लिया कि, यह अजगर इसीके भयसे मुझको यहाँ ले आया है। उसने बड़ा पत्थर उठाकर उस बिच्छूपर ऐसे जोरसे मारा कि, वह उसी समय मर गया। जब वह बिच्छू मरा तब उसकी देहसे छींटें उछलकर उस मनुष्यके ऊपर पड़े तो अजगरने उसी समय वे विषैली छींटें इस भयसे चाटलीं कि, वह उस मनुष्यके लिये घातक थीं।

छीटोंके विषसे कुम्हार अचेत हो गया। साँपने कुम्हारके मुंहपर मणि लगादी। विषका प्रभाव तुरंत दूर हो गया मनुष्य भला चङ्गा हो गया। (साँपकी मणिमें मृतकको जीवित करनेकी भी सामर्थ्य होती है।)

उस बिच्छूके मरनेपर अजगर मनुष्यको किसी दूसरी जगह पर लेगया.

एक धनभण्डार दिखा दिया। उसने देखा कि भण्डार धनसे परिपूर्ण है, कुम्हारसे जितना धन उठाया गया उठा लिया फिर अजगरने कुम्हारको उसी स्थान पर पहुंचा दिया, कुम्हार कुशल पूर्वक अपने घर पहुंच गया।

मैंसके थनको पीनेवाला—फिरोजपुर जिलाके भागसर मौजेके समीप तालाबके किनारेके बिलमें एक साँप रहा करता था। वह भैंसके बच्चे कीसी आवाज किया करता था। जब कोई भैंस उस तालावमें गिरे तो वह जाकर भैंसकी पिछली टांगोंमें लपटकर उसके दूधको भली प्रकार चूस परितृप्त होकर ही पृथक् होता था।

मोटा छोटेमें—इसी पुस्तकमें लिखा है कि, एक स्त्री बहुत बड़ा सर्प देखकर चिल्लाने लगी। लोग दौड़े साँपको मारनेके लिये पत्थर उठाया। साँप भागकर एक कोनेमें छिप गया, लोगोंने बहुत ढूंढ़ा पर उसका पता न मिला। एक स्थानपर एक छोटा बिल दिखाई दिया। लोग आश्चर्य करने लगे कि, इतने छोटे बिलमें इतना बड़ा तथा मोटा साँप कैसे समा गया? साँप मनुष्योंको काटा नहीं चाहते, बड़े उदार प्रकृतिके होते हैं पर जब मनुष्य उसे मारनेको घेरते हैं तो भूमि उसको जगह देती है अत्यन्त छोटे बिलमें भी बड़ा साँप समा जाता है।

रागसे प्रेम—साँपोंको राग तथा बाजेसे बहुत प्रेम होता है। जहाँ कहीं अच्छा राग अच्छा बाजा हो वहाँ जाकर सुनते हुए प्रसन्न होते हैं मस्तीमें अपनी दुमपर खड़े होकर नाचते हैं।

एक मनुष्यने सर्पका शिर सावधानीसे पकड़ लिया उसको कोई उपाय न दिखाई दिया। साँपने बहुत जोरसे हाथको कसा। जब नसोंपर जोर पड़ा तो वे दब गई, उस मनुष्यकी मुट्ठी आपसे आप खुल गई साँपका शिर छूट गया। उसने उस मनुष्यको काट खाया। मनुष्य मर गया साँप चला गया उस मनुष्यकी कोई भी युक्ति काम न आई।

शत्रुको मरानेवाला—एक मनुष्य कहीं चला जाता था। राहमें उसको साँपने घेर लिया। वह मनुष्य जिधर जाता था उधरही फुंफकार मारकर खड़ा हो जाता था पर चोट न करता था। मनुष्यने देखा कि, साँप मुझे कष्ट पहुँचाना नहीं चाहता वरन् पथ रोकता है। उसने साँपसे कहा कि, तू क्या चाहता है? इतना कहतेही साँप एक ओर चला वह मनुष्य उसके ईशारेको समझकर उसके पीछे हो लिया। थोडी दूर पर वे दोनों एक मैदानमें गये, वहाँ पहुँचतेही साँप एक प्रकारका शब्द करने लगा जिसके सुननेसे दूसरा साँप बाँबीमेंसे निकल उसके साथ लड़ने लगा। वह मनुष्य समझ गया कि, यह साँप इसका वैरी है

इसीको मारनेके लिये यह मुझको यहाँ लाया है। उसने उसके वैरी सर्पको मार डाला। इसके बाद सर्प जिस मनुष्यको अपने साथ लाया था उसके आगे आगे चला, एक दूसरी बाँबीपर ले गया। जहाँ कि, उसका घर था। अपने बिलके भीतर जाकर एक रुपया निकाल लाया उस मनुष्यके आगे धर दिया। फिर भीतर गया फिर एक रुपया निकाल लाया, वह साँप इसी प्रकार सौबेर बाँबीके भीतर जा सौ रुपया लाकर उसके आगे धर दिये। फिर वह साँप मनुष्यके आगे आगे चला, उसी पथपर उसको ले आया, जिस पथसे वह पथिक जाता था। साँप उससे बिदा हो एक टीलेपर चढ गया। अपना शिर उठाकर पथिककी ओर देखने लगा पीछे पथिकने अपनी तथा साँपने अपनी राह ली।

बच्चोंके लिये क्रोध—एक सांपिन बच्चोंको छोडकर किसी दूसरी जगह चली गई थी। एक जमींदार हल जोते २ उस जगह आया, हलकी राहसे बच्चोंको उठाकर दूसरी जगह रख हल निकाल ले गया। सांपिन उस जगह आई, अपने बच्चोंको नहीं पाया। जान लिया कि, इसी जमींदारने मेरे बच्चोंको क्षति पहुँचाई है। उस जगह जमींदारके पानीका घडा धरा था, उसने उसमें विष मिला दिया आप कहीं चली गई। कुछ कालके पीछे जमींदार अपने हलका फेरा कर चुका तो उस जगह आया। सांपिनके बच्चोंको लाकर उसी जगह रख दिया। कुछ कालके पीछे वह सांपिन भी यह देखने आई कि, जमींदार विषैला जल पीकर मर गया वा जीवित है। जब वह उस जगह आई तो बच्चोंको अपने स्थानपर पाया जान लिया कि, यह जमींदार निर्दोष है। उसने विषजलसे भरे घड़ेको शरीरको लपेट कर घड़ा औंधा कर दिया, सारा जल गिर गया घड़ेमें कुछ भी पानी न रहा।

रेटलिंग स्नेक—एक पुस्तकमें लिखा है कि, अमेरिका देशमें एक बहुत बलिष्ठ सर्प होता है। उसको अङ्गरेजी भाषामें रेटलिंग स्नेक कहते हैं। इसके चलतेवार खर खराहटका शब्द होता है। यह पशुवोंके शरीरमें लिपट कर उनको ऐसा कसता है कि, उनकी हड्डियां चकनाचूर हो जाती हैं और तोड कर उनको निगल जाता है। कप्तान स्टण्डमन साहब कहते हैं कि, मैंने उस साँपको देखा वह घूरकर तीक्ष्णदृष्टिसे मुझको देखने लगा। उस साँपकी आँखोंमेंसे इस प्रकारकी आग थी, उसके ताकनेसे मेरा सारा शरीर ठण्ढे पसीनेसे भर गया। न आगे चला जाता था, न पीछे हटा जाता था। मैंने वीरता की उसके निकट जाके उसे सोटोंसे मार डाला।

साँपसे खेल—एक मनुष्यने उसी प्रकारके साँपको पाला था। उसके लड़के साँपके साथ खेला करते थे। उसको कभी गलेमें डाल लेते तो कभी कमर-

बन्द बना लेते वह साँप न तो कभी काटता एवं न किसी प्रकारकी पीड़ा ही पहुँचाता।

चेमरलेन—एक प्रकारका साँप होता है। उसकी यह दशा होती है कि, वह केवल वायु खाकर ही रहता है और अनेक दिवसों तक कुछ नहीं खाता। एकही स्थानपर पड़ा रहता है। दूसरा गुण उसमें यह है कि, पलके पलमें अपना रङ्ग बदल लेता है। पहले एक रङ्ग फिर दूसरा रङ्ग बदला करता है।

चेमरलेनके रङ्गपर मत—विद्वानोंने उसकी ऐसी बात जाँच की है कि, उसकी जिह्वा बहुत लम्बी होती है, वह अपनी जिह्वाको दूर तक बढ़ा सकता है। उसके द्वारा कुछ खाता पीता रहता है। पर इस विचारमें कुछ पुष्टता नहीं है रंग बदलनेका भी कारण यह बताते हैं कि, जहाँ चेमरलेन रहता है उस स्थान-पर रङ्ग बिरङ्गके दाने तथा कङ्कड़ आदि पड़े रहते हैं उसकी चमकसे उसका रङ्ग भाँति भाँतिका दिखाई देता है। वास्तवमें उसके अनेक रंग नहीं हैं।

बिच्छू।

सापोंकी तरह बिच्छूओंमें भी अनेक जातियाँ होती हैं इनके भी विषके उतार चढाव साँपके विषोंकी तरह ही होता है, गोबरसे पैदा होनेवाले क्षुद्र बिच्छुओंसे लेकर इतने बड़े जहरी होते हैं कि, जिनका डंक लगनेसे पहाड़की बड़ी चट्टान भी संखिया विषके रूपमें परिणत हो जाती है। यह दो अंगुलसे लेकर बकरिये बच्चेके बराबर बड़ा होता है इन सबमें पहाड़ी बिच्छू अत्यन्त ही विषैला होता है।

बादशाहका जहर—मैंने अपने पितासे सुना था कि, एक बार एक बड़ा साँप भागा जाता था। मानो वह सर्प अत्यन्त भयसे भागा जाता हो। समीपही एक बागमें किसी नौव्वाबका लश्कर पड़ा था। पड़ाव पर बहुतेरे देग आदि रक्खे थे। साँप भागता हुआ गया एक देगमें छिप गया। वह सर्प कुण्डल मारकर बैठ गया। नौव्वाबके नौकरोंने देग उलट दी, साँप उसीके भीतर पड़ा रहा। कुछ कालके बाद वहाँ बिच्छुओंकी सैन्य आपहुँची। सहस्रों बिच्छुओंने आकर उस देगको चारों ओरसे घेर लिया। जितने बिच्छू आते जाते थे सबके सब उसी देगको घेरते जाते थे। अन्तमें सबसे पीछे काले बिच्छूपर सवार श्वेत वर्णका एक छोटा बिच्छू आया। बिच्छूओंके बादशाहके आपहुँचनेपर सारे बिच्छू अत्यन्त प्रतिष्ठा पूर्वक पीछे हट गये उसको पथ दे दिया। वह देगके निकट गया। देगके चारों ओर फिरा उसको भीतर जानेका कोई मार्ग नहीं मिला। वह देगके ऊपर चढ़ गया तीन बार अपना डङ्क देग पर मार कर उतर आया, अपनी सवारी

पर सवार होकर चला गया । उसके पीछे बिच्छुओंकी सारी फौज उसके पीछे चली, सब अपने २ मकानको गये, एक बिच्छू भी उस जगह नहीं रहा । उनके जाने पर नौव्वाबके सेवकोंने उस देगको उलट कर देखा वह साँपसहित राखका ढेर हो गया था ।

रेशमका कीड़ा ।

बीटन साहबकी नेचरल डिक्शनरीमें एक प्रकारके रेशमी कीड़ेका वृत्तान्त लिखा है कि, रेशमी कीड़ा पहले चीन देशसे आया, यह मलाईकी तरह श्वेत वर्णका होता है इसका रंग शीघ्रही बदल जाता है । उसका भोजन वृक्षोंकी पत्तियाँ हैं यह छः सप्ताहमें पूरी अवस्थाको पहुँच जाता है, बीच बीचमें चार पाँच बार अपना रङ्ग बदलता है फिर सुस्त हो जाता है कुछ खाता नहीं फिर इसका रङ्ग भूरा होता है; चार पाँच बार रङ्ग बदल चुकनेके बाद डेढ़ इञ्चसे लेकर दो इञ्चतक लम्बा हो जाता है । दस दिनतक बहुत खाता जाता है, जिससे मोटा तथा बड़ा होता जाता है । समय बीत जानेपर ढाई इञ्चसे लेकर तीन इञ्च तक हो जाता है उस समय भोजनकी कामना घट जाती है, पत्तियों- को कुतर २ कर पृथिवी पर डाल देता है भोजनादि छोडकर बेचैन हो जाता है, जिस समयसे अपना भोजन छोड देता है उस समयसे पतला रेशमी कपडासा बनाता है । उसकी देह पतली और नरम होनेके साथ स्वच्छ तथा उज्ज्वल होती जाती है, प्रायः तीन चार दिनोंमें बहुत सुन्दर रेशमी परदे तयार होते हैं वे गोल गोलीके समान होते हैं । रेशमी गोलियाँ कोई सूतके रङ्गकी, कोई सुनहरी, कोई फूलके रङ्गकी और कोई श्वेत होती है । इस कठिनपरिश्रमसे निवृत्त होते ही यह अपना चर्म एकवार छोड़ता है उसका पहला स्वरूप बदल कर गोल हो जाता है । उस अवस्थामें दो अथवा तीन सप्ताह रहता है इसके पीछे परदा फट जाता है उसका स्वरूप और ही ढङ्गका हो जाता है, उस समय कीड़ा अपने मुखसे एक प्रकारका गोंदके समान पतला पदार्थ निकालता है—उसमें केवल तार ही तार होते हैं, वे छः सौ फीटसे सहस्र फीट तक लम्बे होते हैं । रेशमी कीडा सारे कीडोंका राजा होता है, राजों तथा रईसोंकी तरह बार बार कपड़े बदलता रहता है ।

गिरगिट ।

इस प्रकारका एक गिरगिट भी मैंने देखा कि, वह अपना रङ्ग बदलता

था एवं शिर हिलाते हुये बड़ी आन बानसे चलता था, चेमलेन साँपकी तरह वह भी कपड़ा बदलता रहता है।

मकड़ी।

मकड़ी एक प्रकारका कीड़ा है। प्रत्यक्षमें उसका शिर बाहर नहीं जान पड़ता। उसके अङ्ग उसके शरीरमें इस प्रकार लगे हुये होते हैं कि, तनिक छूनेसेही गिर पड़ते हैं। नरके पाँव अनेक लटकन होते हैं। मकड़ीके पाँव बहुत छोटे २ होते हैं इसी कारण वह गिर पड़ती है। उसके पाँव कुण्ठयाके समान होते हैं सामने पाँवमें टेढी कठिया होती है जो हिलती है। नीचेकी ओर टेढी हैं उसके नीचेकी ओरका एक टेढा छिद्र होता है जिस पथसे कि, वह बिष निकालती है विष अपने पास रखती है उसके ऊपर एक पाँतर है उसमें वही प्रभाव है जो कि, शिरके स्थान प्रगट करती है। इसमें एक और टुकडा मिला होता है वह हिला करता है वह उसका नरम पेट है। इस देहके टुकड़ेमें चार अथवा छः गोली निकली हुई होती है। वह मांससे गठीली होती है सभी गोल तथा एक दूसरेसे मिली हुई होती हैं उनके सिरपर अनेक छोटे छोटे छेद होते हैं इनही स्थानोंसे रेशमी तार निकालती हैं। एक प्रकारका मसाला है—जो कि, उसके पेटके भीतर की झोलीमें रहता है। रेशम ऊँचे नीचे बर्तनोंमें रहता है वे बर्तन बहुत मोटे और बहुत छोटे कदके होते हैं। उनकी जड़ एक दूसरेसे जमी हुई होती हैं वे बाहरी समानके साथ मिली हुई होती हैं। जो मसाला भीतरी बर्तनोंमें प्रगट होता है वह स्वच्छ गोंद और लेईके समान होता है। तीक्ष्ण मदिरा अथवा जलसे नहीं गल सकता जब झुकाया जाय तो टूट जाता है। वह दुमदार तथा लचीला तभी होता है वह पतला पतला तार बनाया जावे यह गुण उससे निकलता है। बराबरसे अनेक छोटे २ बाल होते हैं, उनकी राहसे वह मसाला निकलता है, वे शून्य सूत कातनेवालेके स्थानपर लगे हुये होते हैं, एक कातनेके स्थानपर सहस्र २ बाल अथवा बूंदें रहती हैं। इनहीसे गाढा तार बूंद २ करके निकलता है, जिस समय वह बाहर निकलता है तो वायु लगतेही सुन्दर तथा महीन बन जाता है। प्रत्येक कातनेवालेके तार पहले मिले रहते हैं। जब वह किसी वस्तुसे लटकाती है उसमें बहुतेरे पदार्थ संयुक्त रहते हैं। पहले मकड़ीका तात्पर्य यह रहता है कि, वह अपने तारको किसी स्थानमें लगादे। इसके बाद अपना जाल बना किसीसे लगा देती है। इससे लगाकर अपने प्रत्येक चरखोंसे निकालती है। मकड़ी अपने पिछले पाँवको तकमेकी तरह काममें लाती है। उसके द्वारा वह अपने शरीरसे बराबर तार निकालती जाती है, इस मकड़ीकी तारकी बनावटमें भेद होता है।

एक प्रकारका तार तो चपचपा होता है दूसरा स्वच्छ तथा बारीक होता है। जो चपचपा होता है उसको तो वह वृक्ष अथवा दीवार इत्यादिसे लगा देती है वे दूर दूर तक तने रहते है। दूसरे तार जालके लिये हैं। इन्ही तारों द्वारा मकड़ी अपना जाल बनाती है, इन्हीं जालोंसे आखेटको पकड़ती है। चिपचिपे तार तो घेरा करते हैं स्वच्छ तार केन्द्रके समान मध्यमें होते हैं। मकड़ियोंकी अनेक जातियाँ हैं।

आठ आंखोवाली—कारसिका भूमिमें आठ आँखोवाली काली मकड़ी होती है। यह बहुत बलिष्ठ होती है, यह जानवरों तथा टिड्डियोंको पकड पकडकर खाया करती है। मकडियोंके तारकी बनावट तथा सजावटके बारेमें अंग्रेजी पुस्तकोंमें बहुत कुछ लिखा हुआ है।

चींटी

चींटी बड़ी परिश्रमी होती हैं। पूर्वकालसे विख्यात है कि, लड़ने तथा घरौआ काम काज करनेमें यह बहुत निपुण होती हैं। यद्यपि ये छोटी हैं पर बहुत बलिष्ठ तथा दृढ़ हैं, जितना उसका शरीर अधिक है उससे दशगुणा बोझा उठाती है बहुत चुस्त चालाक होती हैं। शिर छोटा होता है, जाड बहुत दृढ होती है। उनका नीचेका होंठ छोटा और गोल चमचेके समान होता है। उसका पेट अण्डाकार होता है उसमें एक अथवा दो गाँठें होती हैं। नरके चार पर होते हैं। नरकी अपेक्षा मादा डील डौलमें बडी होती है व सम्भोग कालमें परदार होते हैं उनमें कितनीही मजदूरी तथा परिश्रम करनेवाली चीटियाँ होती हैं उनके जन्मभर पर नहीं निकलता। चींटियोंके घर बहुत अच्छे ढङ्गसे बने हुए होते हैं, उनकी बनावट बहुत विचित्र है। यदि बहारके आधे मौसमसे लेकर पतझडके मौसम तक चींटियोंका घर देखा जावे तो पर तथा परहारसे भरा होगा। जो नर तथा मादा चींटियां हैं उनके पर चमकते होते हैं मिहनती चींटियोंके पर नहीं होते। परिश्रमी चींटियोंमें राजा तथा रानी कोई नहीं, केवल वे दास हैं।

परवाली चींटियोंमें बादशाह बेगम तथा अमीर—भी होते हैं। राजा तथा अन्यान्य श्रेष्ठ चींटियाँ घरोंमें रहा करती हैं। जब वे बाहर निकलती हैं तो उनकी अरदलीमें सैन्य हुआ करती है। बाहर अकेले कदापि नहीं फिरती समस्त सैन्य उनको प्रवन्ध तथा सेवामें रहा करती है, जिसमें वे अकेले बाहर न जावें यदि अमीरोंमें कोई अकेला बाहर निकल भी पड़े तो चौकीदार चींटियाँ उनको खींचकर भीतर कर देती हैं। ऐसी अवस्थामें तीन या चार चींटियाँ

उस भगोड़े अमीरको खींचकर भीतर करती हैं पहरेदार चींटियोंमें एक तरहका भाग जानेका स्वभाव होता है कि वे अपनी जन्मभूमिको छोड़कर भाग जाती हैं।

सहवास—जोड खानेके पीछे फिर कदापि पलट कर नहीं आतीं। उनका घर मादा विहीन होनेके कारण शीघ्रही उजाड़ हो जाता है। उनका जोड खाना विशेषतः घरके भीतर नहीं होता देखा गया है कि, चारो ओर जासूस फिरा करते हैं कि, जहाँ कहीं वे बच्चा जननेवाली मादा पावें पकड लावें। जासूस विशेषतः इसी विषयके लिये नियत किये गये हैं। यह बात जाँचसे जानी गई है कि, झुण्डके झुण्ड इधर उधर तितर बितर हो जाते हैं। जिसमें अच्छी मादा ढूंढकर ले आवें। उनके मकानके समीप न मिले तो दूर दूरकी यात्रा करती हैं। बहुत दूर दूर चली जाती हैं फिर लौटकर नहीं आतीं। समय पाकर नवीन बस्ती बसाने लगती हैं।

सहवासके बाद मौत—जोड खानेपर निश्चयही मर जाती हैं। दूसरे भी अन्यान्य कितने कीडे मकोड़ोंके नर जोड़ा खानेके पीछेही मर जाते हैं। ऐसाही नियम चींटियों का भी है। क्योंकि सेवक चींटियाँ उनको पुनः अपने घर नहीं लातीं न उनकी ओर ध्यानही देती हैं। एक बार चींटियाँ घरको छोड़ जाती हैं तो वे अवश्यही मर जाती हैं। क्योंकि, उनके पास न पर होता है न भोजन प्राप्तिका यंत्रही होता है।

चींटियोंके पर—प्राचीन कालके मनुष्य ऐसा अनुमान करते थे कि चींटियोंको नियत समयपर, पर निकलते हैं। वर्तमान कालके जानवरोंकी विद्याके प्रख्यात विद्वान परह्वेरके विचारसे जान पड़ा कि, मादाके नियत समय-पर निकलते हैं, उगकर फिर गिर जाते हैं।

बच्चे—चींटियोंके अण्डे ऐसे छोटे होते हैं कि, उनका नङ्गी आँखोंसे देखना कठिन हो जाता है। दूसरे कीड़ोंके विपरीत चींटियाँ अण्डे देती हैं उसी समय स्वेच्छापूर्वक अपने पर गिरा देती हैं। जो मजदूर चींटियाँ हैं वे समस्त अण्डोंको एक स्थानपर इकट्ठा करती हैं। जिस समय वे अंडे देतीं हैं उस समय बहुतेरी चाकर चींटियाँ उनके चारों ओर एकत्रित रहती हैं। वे अण्डोंको एक-त्रित करके पृथक् पृथक् मकानकी कोठड़ियोंमें पकनेके लिये सावधानीसे धर-देती हैं और पालती हैं। उनके पकनेके लिये वायुकी आवश्यकता होनेसे दिनके समय चींटियाँ घरके टीलेके मुंहके समीप रखती जाती हैं। पर ऐसे स्थानोंमें धरती हैं जिसमें कि, सूर्य्यकी तपन आवश्यकतासे अधिक न होने पावे जितनी गर्मीकी आवश्यकता है उससे अधिक न लगने पावे, जब रात होती है उस समय

अनुभवी चिटियां अण्डोंको उठाकर गरम करके चारों ओर रख देती हैं। जिसमें ऐसा न हो कि, उनकी प्राकृतिक उष्णता उनमेंसे निकल जावे। समस्त दाइयां अण्डोंकी रक्षामें बहुतही सचेत रहती हैं। जबतक सारे अण्डोंसे बच्चे नहीं निकल आते तबतक वे सब बराबर सेवामेंही लगी रहती हैं। रातके समय अपने घरके द्वारोंको चारों ओरसे बन्द कर लेती हैं। जिसमें कि किसी ओरसे वायुका प्रवेश न हो, सबेरा होतेही घरके बाहर धूपमें अण्डोंको धर देतीहैं, जिसमें उनको न बहुत धूप लगे न बहुत ठण्ढकही सतावे, वे किसी समय कड़ी धूपमें भी धर देती हैं।

बच्चोंका भोजन—जबतक छोटे छोटे बच्चे बाल्यावस्थामें रहते हैं तबतक उनकी दाई अथवा माता अपने पेटसे एक प्रकारका पतला पतला भोजन निकालकर खिलाया करती हैं। जब वे बच्चे बडे हो जाते हैं तो वे सब एक प्रकारका झिल्लीदार श्वेतरङ्गका जौके समान सूत कातते हैं जिसको लोग भ्रमवश समझते हैं कि, यह वस्तु चींटियोंका भोजन है। जो गरमीके समय ठण्डे दिनोंके निमित्त एकत्रित करती हैं

चींटियोंका भोजन—यह बात भी जानी गई है कि, यूरोपकी चींटियां मांसाहारी हैं। पादरी जेजी उड साहबका कथन है कि, चींटियाँ शरदीके लिये संग्रह नहीं करतीं बरन जाडेके दिनोंमें वे अचेत होकर सुस्त पडी रहा करती हैं। उनके वास्ते भोजनकी आवश्यकता नहीं। इसके अतिरिक्त उस सैन समयमें भोजन पचाना इतना कठिन है कि, जैसे मनुष्यको सूखी घासका पचाना। चींटियोंका विशेष भोजन चीनी है। जहाँ, कहीं चीनी होती है वहाँ वे अपने सूंघनेके बलकी सहायतासे पहुँच जाती हैं। मिठास वृक्षोंकी जड अथवा पुष्प इत्यादिसे मिठास प्राप्त करती हैं। चींटियाँ इस मिठासको स्वयम् अपनी वस्तु समझती हैं

भोजनपर युद्ध—यदि कोई चींटी बाधा दे तो उससे बहुत युद्ध होता है। यहांतक कि, कितनीही चींटियां इस लड़ाईमें मारी जाती हैं।

चींटियोंके घर—चींटियोंकी बुद्धिकी कहानियां बयानके बाहर है। चींटियोंके काम अत्यन्त आश्चर्य्यमें डालनेवाले हैं। मनुष्यकी बुद्धि कुछ काम नहीं करती। चींटियोंके मकान बडीही कारीगरीके साथ बने हुए होते हैं नदीके समीप वे अपने घरोंको बनाती है। लाल श्वेत काले भूरे रङ्गकी चींटियां होती हैं। श्वेत चींटियोंको दीमक कहते हैं वे नदी किनारे अपने मकान बनाती हैं जिसमें उनको मकान बनानेके लिये पानी शीघ्रही मिल जावे। वह मकान गाव-

दुम और ऊँचा होता है लकडी मिट्टी और पत्तियों आदिसे बना होता है। सहस्रों परिश्रमी मकान बनानेका सामान ढूंढते हुये, इधर उधर घूमा करते हैं। लकड़ियाँ पत्तियाँ लाकर अत्यन्त स्वच्छता पूर्वक मकान बनाते हैं, प्रत्यक्ष देखनेमें तो उनके घरोंमें किसी प्रकारकी कारीगरी नहीं देख पडती पर सूक्ष्म दृष्टि के साथ जाँचकर देखनेसे जान पडता है कि, बहुत हिकमत तथा गुणके साथ बने हुये हैं। उनपर वैरीका आक्रमण नहीं हो सकता, प्रचण्ड वायु क्षति नहीं पहुँचा सकती, धूपकी तपन नहीं तपा सकती। जब कभी वर्षाकी अधिकतासे उनके घरमें कोई छेद भेद हो जाता है तो, वे अत्यन्त परिश्रम पूर्वक तुरन्तही उसको बन्द कर लेती हैं। मकान इस स्वच्छता तथा निर्मलतासे बनाते हैं कि, मानो बहुत सावधानी तथा परिश्रम किया गया हो। कहीं कोई छेद इत्यादि रहने नहीं देते। वर्षा जल तथा मिट्टी इत्यादि लेकर भली प्रकार गूंधते हैं गूंध गूंधकर बराबर लगाते जाते हैं, सुन्दर मेहराब तथा पील पाये खम्भे बनाते हैं, जिनकी प्रशंसा नहीं कही जाती।

जंगी लड़ाई—चीटियाँ बहुत क्रोधयुक्त होती हैं, उनमें बहुत भयानक युद्ध हुआ करता है, लड़ते लड़ते इस प्रकार मरती और कटती हैं कि, उनका शिर तथा धड़ पृथक् पृथक् हो जाता है। फिर भी अपने वैरीके साथ जुटी रहा करती हैं। शिर शिरके साथ और धड धडके साथ चिमटे हुयेही मर जाती हैं। इनमें एक अनूठी बात यह है कि, एक जातिकी चींटी दूसरी जातिकी चींटियोंके अण्डे बच्चे पकड लाती हैं। उनको पकडने जाती हैं तो आक्रमण करके उनको पकडकर कैदी बना लाती हैं उनको दास बनाती हैं, वे दास सैन्यके पीछे पीछे चलते हैं अनेकों प्रकारकी सेवा किया करते हैं

चुराने और चुरानेवालोंका रंग—एक विचित्र बात यह है कि, जो डाकू चीटियोंके अण्डे बच्चे पकड़ने जाते हैं उनको पकड़कर अपना दास बनाते हैं वे सब पीतवर्णके होते हैं जिनको लूटकर वे सब चुरा लाते हैं वे सब काले रङ्गकी होती हैं, पीले रङ्गवाले अत्याचारी डाकू जब चलते हैं तब उनके साथ उनकी अरदलीमें बहुतेरी चींटियाँ भी चलती हैं। डाका मारने अथवा धावा करने पर उद्यत होते हैं दोनों जातियों में घोर युद्ध होता है। हबशी अर्थात् काली चीटियोंपर बहुत कठिनाई उपस्थित होती है। विजयी सैन्य उनके दुर्गोंको ढाह देती हैं उनकी शहर पनाहको गिराकर उनके बच्चोंको पकड़ लेती हैं, विजय-डङ्का बजाते हुये लौट आती हैं। विजयी सैन्यके लोग दासोंके साथ कुव्यवहार नहीं करते जैसे मनुष्य अपने गुलामोंसे करते हैं, उनके साथ भी ठीक वही सलूक

होती हैं उनके रहनेको वैसाही घर मिलता है जैसा कि, उनका स्वामी उनके लिये पसन्द करे। कितनीही अंग्रेजी पुस्तकोंमें चींटियोंकी बुद्धिमानीकी अनेक कहानियाँ लिखीं हैं। हब्श तथा आमेजनकी चींटियोंकी बहुतसी विचित्र बातें लिखीं हैं। लिटरेली और कबरली साहबों की रची पुस्तकोंके देखनेसे चींटियोंके विचित्र कौतुक तथा न्यारी २ लीलाएँ मालूम हो सकती हैं।

हब्शकी चींटियाँ—जैसा डाक्टर गोल्ड स्मिथ साहबने अपनी नेचर हिष्ट्रीमें लिखा है। हब्श देशमें चींटियोंके ऐसे बड़े बड़े घर होते हैं कि, जिसको पहले न देखनेवाला कभी अनुमानही नहीं कर सकता है कि, वे ऐसी छोटी चींटियोंकी बनाई होंगी। एक एक टीले पन्द्रह पन्द्रह फीट ऊँचे होते हैं। उन टीलोंके भीतर घर तथा ऊपरी घर आदिक अनेक सुघर घर बने होते हैं। बादशाही महल, तथा रईसोंके अलग और सेवकों तथा दासोंके निमित्त न्यारे न्यारे घर तैयार करती हैं। बादशाह तथा बेगम अपने अपने महलोंमें रहती हैं, चौकीदार तथा द्वारपाल द्वारपर खड़े होकर पहरा चौकी देते हैं। पहरेमें सचेत रहते हैं वैरीसे सामना करनेको सब हथियार बाँधकर प्रस्तुत रहते हैं। चीटियाँ बहुत बच्चा जननी हैं जब उनको गर्भ रहता है। तो उनके हिजडे गुलामों पर सेवाका समस्त बोझ रहता है। वे गर्भिणी होती हैं तो उनका पेट इतना फुलता है कि, जितना उनका शरीर होता है उससे दो सहस्र गुनेसे अधिक बढ़ जाता है, जब अण्डे देती हैं तो दास रक्षामें तत्पर होते हैं। चौबीस घण्टोंके बीचमें एक चीटी आठ लाख अण्डा देती है। यदि पशु पक्षी और मक्खी इत्यादि उनको चुन चुनकर न खाजाँये तो उनकी संख्यासे समस्त पृथिवी भर जावे। वे बड़ी २ चीटियाँ होती हैं वहांके लोग उन्हें भून भूनकर खाते हैं उनका कबाब बनाते हैं। डाक्टर लाङ्गस्टन् साहब इत्यादि उनकी युक्तियों और गुणोंकी बहुत प्रशंसा किया करते हैं। उनके देखनेसे मनुष्योंकी सारी युक्तियाँ निष्फल जान पडती हैं।

चींटियोंका बादशाह और सुलेमान—मुसलमानी पुस्तकोंमें लिखा है चींटियोंके बादशाहने सुलेमान बादशाहको ससैन्य निमंत्रण दिया। चींटियोंके बादशाहका न्याय सुविचार सुलेमान बादशाहके न्यायकी अपेक्षा उत्कृष्ट रहा। चीटियोंका बादशाह सुलेमान शाहके सिहासन पर चढ़ गया। सुलेमानको यह प्रमाणित करके दिखा दिया कि, मेरा न्याय तुमसे बढकर है। सुलेमानने मान लिया कि ऐ चीटियोंके बादशाह! वस्तुतः आपका न्याय मुझसे बढ़कर है।

दीमक—चीटियोंकी अनेक जातियाँ होती हैं। भारतवर्षकी श्वेत चीटियाँ लकड़ियोंको खा जाती हैं। उन्हें दीमक कहते हैं।

राजा भोज और चेंटी, काशीके बकरियाकुंडका इतिहास ।

मैंने सुना था कि, सुलेमान शाहके समान राजा भोजभी पशुओंकी बातें समझ सकता था, एक दिन ऐसी घटना हुई कि, राजा भोज भोजन कर रहा था। एक चूरा पृथ्वीपर गिर पड़ा, जिसको एक चींटी उठाले चली । आगे एक दूसरी चींटी मिली । उसने उससे कहा कि यह दाना मुझको दे, तू जाकर दूसरा उठा ला । चीटीने कहा कि, मैं तुझको क्यों दूं ? तू आपही जाकर ले आ । उसने कहा कि, मैं तो जातिकी चमारी हूँ, मैं राजाके थालके पास कैसे जा सकती हूँ ? तू ब्राह्मणी है तू जाकर लेआ यह बात जानकर राजा भोज हँसा । रानीने हँसीका कारण पूछा राजाने दोनों चीटियोंका हाल कहा । रानीने कहा कि, मुझको भी यह विद्या सिखा दो । राजाने कहा कि, यह मुझको आज्ञा नहीं, यदि कहूँगा तो मर जाऊँगा । यद्यपि बहुत कुछ मना किया पर रानीने न माना, राजा विवश हुआ कहा कि, अब मुझको मरनाही पड़ेगा, अच्छा है कि, काशी चलकर बताऊँ क्योंकि, वहाँ मरनेसे मुक्ति प्राप्त होगी । बनारसमें पहुँचा तो देखा कि, एक, बकरी वकरा चरते फिरते हैं । एकस्थान पर एक फूटा कुवाँ था, उसके चहुँओर हरी २ घास उगी थी । बकरीने कहा, कि, मुझको यह हरी घास लादे तो मैं इसे खाऊँ । वकरेने कहा कि, मैं यह कार्य्य नहीं करूँगा । मैं राजा भोजके समान मूर्ख नहीं हूँ कि, एक स्त्रीके कहनेसे अपना प्राण गवाँ दूं । बकरा बकरीकी यह बात सुनकर राजा चैतन्य हुआ, अपनी रानीको भली प्रकार डाँटा मारा, यह भी कह दिया कि, यदि तू फिर मुझसे पूछेगी तो मैं तुझको मार डालूंगा रानी चुप हो रही कोई बात नहीं कही । जहां पर राजाने बकरा बकरीकी बातें सुनी थीं उसका नाम बकरियाकुण्ड है । मैंने उस स्थानको अपनी आँखोंसे देखा है, मैं उस बकरियाकुण्डके समीप छः माससे भी अधिक रहा था प्रत्येक वर्ष बकरियाकुण्डका मेला लगता है । अनेक मसखरे और कामीपुरुष तथा स्त्रियाँ वहाँ एकत्रित होती हैं । यह काशीका प्रसिद्ध मेला है ।

पक्षी ।

अब यहां पर एम्. आर एसली साहब और अन्यान्य अंग्रेजी पुस्तकों तथा अपनी बुद्धिके अनुसार पक्षियों की बातें भी लिखता हूँ ।

गिद्धकी—सुदृढ़ तीक्ष्णदृष्टि होती है, यह बहुत ऊँचा उड़ सकता है । इसमें तीन गुण हैं । प्रथम तो इसको देखनेकी शक्ति अत्यन्त तीक्ष्ण होती है । दूसरे इसको सूँघलेनेकी बड़ी शक्ति होती है । तीसरे सुननेके बलसे अपने आखेट पर टूटता है । इसके इन तीनों बलोंको स्वभाव वादियोंनेभी भली प्रकार जाँच कर देख लिया है । गिद्ध तीनों गुणोंसे विभूषित है । इन्हीं तीनों गुणोंद्वारा जान

लेता है कि, इसका आखेट कहाँ है ? जहाँ कहीं प्रगट हो वहाँ तो आँखसे देख लेता है । जहाँ कहीं शिकार छिपी हो वहाँ गँधसे पहचान लेता है । उसके कानका बलभी इतना तीक्ष्ण है कि, मरनेके समीप पहुँचे हुये चिल्लाते पशुवोंकी आवाज तुरन्तही सुन लेता है, तुरन्तही वहाँ पहुँच जाता है ।

मिश्रीकयरू—गिद्धकी जातियोंमें एक प्रकारका मिश्र देशी कयरू होता है । यह बहुत सुन्दर होता है । यह सारे देशमें पाया जाता है । अङ्गरेजी पुस्तकोंमें पूर्णरूपसे इसका हाल लिखा है, उसे मैं यहाँ संक्षेपसे लिखता हूँ । इसको फिर उनकी सन्तान कहते हैं । मिश्रके प्राचीन निवासी उसको पवित्र जानकर प्रतिष्ठा किया करते थे, अपने कबरोंपर स्मारक चिह्न के भाँति उसकी तसवीर खोदते थे । यह शांतिके साथ शीघ्र गतिसे चलता है । हवशी लोग उसकी पूजा करते हैं । अनेक प्रकारके दूसरे रङ्गके गिद्ध भी हैं, पर सबको बादशाह फिरऊनकी संतानही हैं, यह बहुत सुन्दर होती है । उसका शिर तथा उसकी ग्रीवा बहुत चमकदार होती है । नारंगीके रंगके पर शरीर होते हैं ।

गिद्धोंका बादशाह—एक अथवा अधिक आखेटपर बड़ी आन-बानसे आपहुँचता है । उस समय समस्त गिद्ध नम्रता तथा प्रतिष्ठा सहित वहाँसे पृथक हो जाते हैं उसके चारों ओर घेरा बाँधकर खड़े रहते हैं । बादशाह भलीप्रकार खाकर सन्तुष्ट हो जाता है, दूर जाकर वृक्ष अथवा पर्वतपर बैठता है तो दूसरे गिद्ध आखेटके पास जाते हैं नहीं तो सब बादशाहके सन्मुख दूर खड़े रहते हैं । जबतक बादशाह भलीप्रकार खाकर परितृप्त न हो जावे तबतक किसी गिद्धकी शक्ति नहीं है कि, आखेटके निकट जायें । सब भी प्रतिष्ठापूर्वक दूर खड़े रहते हैं । यहाँ तक कि, जबतक राजाके घरानेका कोई भी खाता रहेगा समस्त गिद्ध नम्रता पूर्वक दूर खड़े रहेंगे । बादशाहसे कोई असभ्यता नहीं कर सकता । अङ्गरेजी पुस्तकोंमें इनकी बुद्धि तथा समझकी अनेक बातें लिखी हैं । पर मैं विस्तारके भयसे लिखना नहीं चाहता ।

जटायु तथा सम्पाती—दो भाई बड़ी जातिके गिद्ध थे । ये मनुष्यों तथा पशुओंको पकड़के खा जाते थे । उनकी कहानी रामायणमें लिखी है कि, वे दोनों युवा वस्थाके घमण्डमें आये । उनकी इच्छा हुई कि, अब हम चलकर सूर्य्यको देखें । आकाशको उड़े, सूर्य्यकी गरमी बढ़ी । जटायु तो पृथिवीपर लौट आया पर सम्पाती अपने घमण्डवश ऊपर चढ़ता गया, सूर्य्यके अत्यन्त निकट पहुँचा तो उसके पर भस्म हो गये जिससे भूमिपर गिर पड़ा । पीछे एक पर्वतकी कन्दरामें पड़ा रहा, विश्वम्भर उसको वहाँ ही भोजन पहुँचाने लगा ।

राजा रावण सीताजीको चुराये लिये जाता था, सीताजी ढाड़ें मार मारके रोती हुई राम राम करती जाती थी। जटायुने पहचाना कि, महाराजा रामचन्द्रजीकी स्त्री सीताजीको रावण लिये जाता है, वह दौड़ कर पहुँचा ललकारा कहा कि, दुष्ट रावण! तू सीता माताको कहाँ लिये जाता है। सावधान खड़ा हो, दोनोंमें महायुद्ध होने लगा। जटायुने रावणको अचेत कर दिया, उसके रथको तोड़ डाला, सीताजीको छीन लिया। रावणने देखा कि, यह बहुत बलिष्ठ वैरी है किसी प्रकार नहीं मरता तो अग्निबाणसे मारा। जटायुके समस्त पर भस्म हो गये, राम २ कहकर वह पृथिवीपर गिर पड़ा तो रावण सीताको रथपर चढ़ा लङ्काको ले गया। रामचन्द्र तथा लक्ष्मणजी सीताको ढूंढते हुये उसी जगह पहुँचे जहाँ कि, जटायु पड़ा हुआ था। रामचन्द्रने पूछा कि तुम्हारी यह क्या दशा है? जटायुने सारा हाल कहा कि, रावण मेरी ऐसी दशा करके सीताजीको लेगया। रामचन्द्रसे यह बात कहकर जटायु मर गया, रामचन्द्रजी महाराजने जटायुकी क्रिया कर्म्म अपने हाथोंसे उसी प्रकार किये जैसे अपने प्यारे मित्र अथवा निकटस्थ सम्बन्धीकी क्रिया करते हैं, भगवान् रामकी कृपासे जटायु दिव्यधामको चला गया।

उक़ाब।

यह बहुत सुन्दर तथा अत्यन्त बलिष्ठ होता है। यह दक्षिणी अमेरिकामें होता है जिस प्रकार मैंने फिरऊनकी सन्तानकी बात लिखी है वैसीही उसकी भी है। यह जब आखेटके ऊपर आता है उस समय सारे मांसभक्षी पक्षी घेरा बांधकर दूर खड़े रहते हैं। जब तक वह राजा मांस खाकर पृथक न हो जाय तब तक कोई भी नीच जातिका मांसाहारी पक्षी आखेटके समीप नहीं जाता, यह भी सुदृढ़ तथा सुन्दर होता है।

लगलग।

व्यर्थका द्वेष—जीनबर्ग कालेजके घेरावके भीतर एक घरेला लगलग रहता था उसके निकटके घरके ऊपर एक घोंसला था। उसमें प्रत्येक वर्ष लगलग आया करते थे, अण्डे देकर पालते थे। एक दिन कालेजके लड़केने उस घोंसलेके पास आकर बन्दूक मारी, घोंसलेमें बैठा हुआ लगलग आहत हुआ। क्योंकि इसके बाद वह लगलग कई सप्ताहतक बाहर उड़ता दिखाई न दिया। अपने नियत समयपर दूसरे साथियोंके साथ चल दिया। इसके पीछे वसन्त ऋतुके आरम्भमें एक लगलग कालेजकी छत पर दिखाई दिया, वह परोंको खड़खड़ाता था शायद वह परोंके शब्दसे घरौवे लगलगको बुलाता था। पर घरौवे लगलगने

अपने परोंके कतरे जानेके कारण उसकी बुलाहट स्वीकार नहीं की । कुछ, दिनोंके पीछे वह जङ्गली लगलग कालेजके आँगनमें आगया, घरेलूको देखनेके लिये अपने पर खड़खड़ाये । घरैला लगलग उसकी अगवानीके लिये चला पर जंगली लगलग अत्यन्त रुष्ट होकर घरैलेके ऊपर दौड़ा । घरके लोगोंने बचाया । पर वह जङ्गली सारी गरमीको ऋतुभर उस घरैलेको कष्ट पहुँचाता तथा आक्रमण करता रहा दूसरे गरमीके मौसममें चार लगलग उसी कालेजके आँगनमें आये, चारोंने एक बारगी ही घरैले लगलग पर आक्रमण किया । घरैला लगलग इस योग्य नहीं था कि, अकेला अपने वैरियोंका सामना करे, उस घरके रहनेवाले समस्त मुर्गे मुर्गियाँ और बत्तख इत्यादि घरैले लगलगकी सहायता करने आये, उसको उसके वैरियोंके हाथसे बचा लिया । सब लोग उस घरैले लगलगको विशेष सतर्कतासे रखने लगे कि, इस वर्ष वह फिर किसी प्रकारका कष्ट न पावे । पर तीसरे वसन्त ऋतुके आरम्भमें बीससे अधिक लगलग आये, कालेजके आँगनमें पहुँचके किसी मनुष्य अथवा पक्षीकी सहायता पहुँचनेके पूर्व्व ही उसको मारकर चले गये ।

देखो निर्बलको सब मारते हैं बलिष्ठको कोई नहीं मारता । लड़केने बन्दूक मारी थी उससे तो बदला ले नहीं सके पर घरैले लगलगको व्यर्थ ही मार गये ।

घरैले और बनैलेकी ईर्षा—हम्बर्ग नगरके निकट एक किसान रहता था। उसके पास एक घरैला लगलग था । एक दिन वह जङ्गलसे एक लगलग लाया अपने घरमें रक्खा । तब वह घरैला उस जङ्गलीसे बहुत विरोध करने लगा । घरैलेने बनैलेसे ऐसी ईर्षा की कि, उसको मार भगाया । चार मासके पीछे बनैला लगलग चार लगलगों सहित आया घरैले लगलगको मारकर चला गया ।

लगलगोंका न्याय—फ्रांस देशका एक जर्राह था । उसने चाहा कि, कहींसे एक लगलग मिल जावे तो अच्छा है । तुर्क लोगोंके लगलगकी प्रतिष्ठा करनेके कारण यह बात असंभव प्रतीत हुई । उसने एक लगलगके घोंसलेके सारे अण्डोंको चुरा लिया । उसके बदले मुर्गीके अण्डे रख दिये। अण्डे फूटे उनसे बच्चे निकले । लगलग स्त्री पुरुष दोनोंको बहुत आश्चर्य हुआ क्योंकि, बच्चे मुर्गीके थे । कुछ दिवसोंके पीछे नर लगलग चला गया, तीन दिनोंके पीछे लगलगोंकी बृहत् मण्डली लेकर आया उसके सारे साथी लगलग घेरा बाँधकर बैठ गये । वहाँ लगलगोंका बड़ा झुण्ड बैठा, सहस्रों मनुष्य यह कौतुक देखनेको एकत्रित हुये । लगलगी उस सभाके बीचमें बुलाई गई उसकी जाँच होनेके पीछे सब लगलग उस मादापर टूट पडे, उसको मारकर चले गये ।

लगलगके राजाका न्याय—ऐसीही एक और कहानी है, बर्लीन नगरके निकट एक मनुष्यके धुवाँकशमें एक लगलगने अपना खोता लगाया। वहाँ पर एक मनुष्य चढ़ गया उस घोंसलेमें एक अण्डा पाकर उठा लाया, उसकी जगह एक राजहंसका अण्डा रख आया। वह लगलग उस दगाबाजीसे अनभिज्ञ था। वह अण्डा जब पका उसमें से बच्चा निकला। नर लगलगने बच्चेके रङ्ग ढङ्गमें विभिन्नता देखी, अपने घोंसलेके चारों ओर चिल्लाता फिरा, अपने खोतेके चारों ओर कई बेर फिरकर अन्तर्धान हो गया, मादा लगलग तीन दिनोंतक उस अजनबी सन्तानकी रक्षा करती रही। चौथे दिन लोगोंने बहुत चिल्लाहट सुनी, देखा कि, उस मकानके समीप खेतमें पाँच सौ लगलग एकत्रित हैं। उनमेंसे एक बीस गजके अन्तर पर खड़ा ऐसा जान पड़ता था, मानो वह अन्यान्य लगलगोंसे बातें कर रहा है। सारे लगलग उसकी बातको ध्यान पूर्वक सुन रहे थे। जब वह बात सुनाकर अलग हुआ फिर दूसरा निकला उसी प्रकार वह भी बातेंकरने लगा—सब उसकी बातोंको सुनते रहे। फिर उसके हटनेपर तीसरा आया, उसी प्रकार अपनी बात कह अलग होकर खड़ा हुआ, इसी प्रकार और कई आते रहे और अपनी २ बात कहकर हट जाया करते थे। इसी प्रकार ग्यारह बजेतक मुकद्दमा होता रहा, बराबर रूपकारी जाँच होती रही। वह मादा लगलग अपने घोंसलेमें बैठी सारी बातें सुन रही थी। इसके पीछे समस्त लगलग भयानक शब्द करते हुए उठे समस्त लगलगोंका अगुवा और मुद्दई लगलग जो जाना जाता था उसने बड़े जोरसे तीन चार वार उस मादा लगलगको मारके घोंसलेके नीचे गिरा दिया। इसके पीछे सारे लगलग उस मादापर टूटे उसको उसकी अजनबी सन्तान सहित मारके नष्ट कर दिया। उस मादा लगलगने न कुछ कहा न अपवाद किया न वह वहाँसे भागी। समस्त लगलगोंने उस जगह घोंसलेका नाम निशान न रहने दिया पीछे सब वहाँसे चले गये। इसके पीछे कोई भी लगलग वहाँ दिखाई न दिया।

अनुमान—अलीमानके लोग ऐसा अनुमान करते हैं कि, लगलग बुरे मनुष्योंके घरके समीप अपना घोंसला नहीं बनाता। यदि किसी घरवालेके निकट घोंसला बनावे वह गृहस्वामी उसको मार डाले तो लोग उसको म्याजिष्ट्रेटके सामने लेजाकर उसके खूनका दावा करते हैं। एक बड़ा अस्पताल सारस तथा लगलगोंके लिये बना हुआ है। इस औषधालयमें रोगी सारस तथा लगलगको रखते हैं, जब वे मर जाते हैं तो उनको गाड़ देते हैं। लोग ऐसा अनुमान करते हैं कि, वे सब मनुष्य हैं। दूरके टापुओंमें रहते हैं। बरबर देश देखनेको

लगलगका स्वरूप धारण करके आते हैं वे अपने देशको पलट जाते हैं फिर वे मनुष्यके स्वरूपमें हो जाते हैं मिश्री मनुष्य उनको पवित्र पक्षी मानते हैं।

राजहंस।

पूर्वोक्त पुस्तकमें राजहंसका हाल लिखा है कि, यह पक्षी अत्यन्त सुन्दर होता है, एक श्वेत तथा दूसरी काली ये उनमें दो जातियाँ हैं। राजहंस ऐसे शीघ्रगामी होते हैं, एक घण्टेमें एकसौ मीलतक उड़ जाते हैं। उथले जलमें तैरते फिरते हैं अथवा बहुतसे इकट्ठे उड़ते फिरते हैं, उनके पङ्खोंकी लेखनी बनाई जाती हैं। जहाँ वे चरते हैं वहाँ एक चौकीदार खड़ा रहता है जो बड़ी चौकशीसे इधर उधर देखता रहता है। जब कहीं कुछ आपत्ति दीखती है तो तुरंतही अङ्गरेजी बिगुलकी तरह शब्द करता है उसी समय सब सचेत हो वैरीसे बच जाते हैं।

राजहंसिनीकी सावधानी—स्टारफोर्ड नगरकी बात है कि, एक राजहंसिनी अठारह वर्षसे रहती थी, उसने अनेक अण्डे बच्चे दिये थे। उसके पड़ोसी लोग उसे अच्छा मानते थे। वह एक बार अपने चार पाँच अण्डोंपर बैठी थी। बहुत घास फूस जमा करनेमें लगीसी जान पड़ती थी। अपने घोंसलेको ढाई फीट ऊँचा कर लिया उसमें अपने अण्डोंको सुरक्षित रूपसे रक्खा। उसी रात ऐसी वर्षा हुई और इतना जल बढ़ा कि, सब कुछ डूब गया। इस विषयसे समस्त मनुष्य अनभिज्ञ थे, वर्षाका चिह्नभी कहीं नहीं था कि, वे लोग उससे बचनेका प्रबन्ध करते। एक बारही महावेगसे वर्षा हुई, सब कुछ डूब गया। पक्षीने पूर्वसेही सब प्रबन्ध कर रक्खा था। उसके अण्डे जलसे ऊपर रहकर बच गये। देखो इस पक्षीका भी भविष्यद्ज्ञान और सावधानी मनुष्यसे कितनी बढ़कर है।

मयूर।

एक स्थानपर जहाँ मैं रहता था वो बस्तीसे दूर एक उजाड़ था। मेरी झोपड़ीके इर्दगिर्द लोग जानवरोंके लिये दाने बिखेर जाते थे वहाँपर छोटे छोटे पशु पक्षी आह्लाद पूर्वक चरा करते थे। एक दिन एक मयूर अपने आनन्दमें मग्न हो दुम पसारे नाच रहा था। उस समय एक मनुष्य छिपकर धीरे धीरे आया। मोरको पकड़ लिया। आगे कहनेसे फिर उसको छोड़ दिया। छोड़तेही वह उड़कर दूर भागा। उसने अपने सजातियोंको यह समाचार पहुँचाया, उस दिनसे कोई भी मोर वहाँ नहीं आया। बहुतेरे मोर प्रत्येक दिन दाना चुनने आते इस दिनसे समस्त मोरोंने एक एक करके वहाँका आना छोड़ दिया। इस मोरने अपने सजातियोंको सूचित किया कि, उधर न जाओ प्राणघातका जाल बिछा हुआहै।

पेरू ।

सौतेली मांसे कष्ट—एक मादह पेरू जिसको कि, अङ्गरेजी भाषामें टर्की कहते हैं मारी गई। उसके बच्चे पल गये थे पर उड़ने योग्य नहीं हुए थे। कुछ दिनों तक उनका पिता उनको पालता रहा। जो कोई मनुष्य उसके घोंसलेके निकट आता तो वह चिल्लाता हुआ शब्द करता था। अन्तमें वह वहाँसे चला गया, दो तीन दिनतक अन्तर्धान रहा। फिर वह दूसरी मादा लेकर आया। इस अवसरमें वे बिचारे बच्चे भूखसे अधमुवे हो गये थे। उनको सौतेली माँ आई तो उन बच्चोंको अत्यन्त आहत करके वृक्षके नीचे डाल दिया, उनमें दो बच्चे वृक्षकी जड़से लगे पड़े थे। उनमें थोड़ी जान थी। उनको लोगोंने ले जाकर एक स्थानमें पाला। उनके पर और बाल आये उनको स्वतंत्र कर दिया। वे कदापि दूर न जाते वहाँही रहा करते थे। पर दुष्ट सौतेली माता तथा पिताने उन्हें शीघ्रही पहचान लिया। वे उनपर आक्रमण किया करते थे। सौतेली माताके मेलसे उनका पिता भी वैरी हो गया था। वे दोनों तीन दिनतक उनपर बराबर आक्रमण करते रहे। बड़े सबेरे आकर बहुत बल तथा कड़ाईसे उनपर टूटते थे।

गिनी फाउल ।

अङ्गरेजीमें गिनी फाउल नामका एक बड़ी जातिका मुर्ग है। उसकी एक मादा थी उसका नर मर गया। क्योंकि, उसको किसीने मार दिया था। कारण यह कि, वह छोटे-छोटे पक्षियोंकी बहुत हानि किया करता था। एक एक मादा बतख थी उसके कितनेही बच्चे थे। उस बतखको बाजने मार डाला उसके बच्चे अनाथ हो गये। उन अनाथ बच्चोंपर मादा गिनी फाउलने दया करके उनको पालना आरम्भ किया। यहाँतक कि, उनके मृत माता पितासे भी अधिक सावधान रहा करती थी। अत्यन्त आश्चर्यका विषय तो यह है कि, मादा गिनी फाउलने अपने स्वभावको छोड़कर बतखका स्वभाव धारण कर लिया था। बतखके छोटे छोटे बच्चे उसके पीछे पीछे फिरा करते। वह उन्हें एक क्षणके लिये भी पृथक न किया करती। वे बच्चे अपने घोंसलेमें विश्राम करते तो वह पृथक् होती जब कभी कुत्ते समीप आते अथवा बालक उनको कष्ट देते तो समस्त बतखें चिल्लाने लगतीं, उस समय उनकी धर्म्ममाता जहाँ कहीं दूर होती वहाँसे दौड़कर शीघ्रही उनके निकट आ पहुँचती। इसी प्रकार उन बच्चोंकी अत्यन्त रक्षा तथा रखवाली किया करती। यद्यपि वह जङ्गली चिड़िया थी तो भी यदि कोई लड़का उन बच्चोंके समीप जावे तो उसके पांवपर चोंच मारती थी, जिससे लड़कोंको बहुत भय रहता था। वह अपने धर्म्मके बच्चोंकी बहुत

रक्षा किया करती थी । बतखोंकी आदत है कि, साँझके समय कीड़ोंके आखेटके लिये फिरा करते हैं यह बात गिनी फाउलके विरुद्ध है पर इन बच्चोंके लिये उनको धर्म्मकी माता उनके साथ फिरा करती थी । बच्चोंके साथ फिरते फिरते थक जाती तो कुछ कालके लिये किसी वृक्षपर बैठ जाती । अपनी दृष्टि प्रत्येक समय बच्चोंपर रखती थी । तनिकसी आपत्तिकी आशङ्का होनेपर चिल्लाती हुई उनके पास आ पहुँचती थी । रात अथवा दिन हो उन बच्चोंसे कदापि अचेत न रहती । ऐसे कितनेही पशु होते हैं जो दूसरेकी सन्तानको अपनी जानकर प्रेम पूर्वक पालते हैं ।

बत्तख ।

नमरूद बादशाहकी बत्तख—मैंने इबराहीम गुलजार अथवा किसी दूसरी मुसलमानी पुस्तकमें पढ़ा था, नमरूद बादशाहके पास एक बत्तख थी । वह उसके सारे नगरमें फिरा करती थी, उसको भविष्यका हाल मालूम था । नगरमें जहाँ कहीं चोर देखती पहचानकर तुरन्त ही चिल्लाने लगती । लोग दौड़कर तुरन्त उसको पकड़ लेते । उसकी चोरी अवश्यही प्रमाणित हो जाती । यदि वह चोर, चोर होनेकी बातको अस्वीकार करता तो उसको एक हौजमें डाल देते । उसमें यह गुण था कि, जो चोर उसमें डाला जाता वह शीघ्र ही अपनी चोरी स्वीकार कर लेता ।

कौंज ।

दोनोंकी प्रेमाधिक्यसे मृत्यु—पञ्जाब देशके फुल्लोर गाँवके पासके एक गाँवमें कौंजोंका झुण्ड उड़ा जाता था । आखेट करनेवालेने बन्दूक दागी, एक कौंजके परमें छर्रा लगा वह चक्कर खाकर पृथिवीपर गिरपड़ी पर वह चिड़िया शिकारीके बहुत ढूँढ़नेपर भी नहीं मिली । वह साधुकी झोपड़ीपर उसके सामने आ गिरी । साधुने चिड़ियाको उठा लिया, अपनी छातीसे लगाकर बहुत रोया और दया की । वह फकीर उसके जख्मी परको औषध करने लगा, उसकी बहुत सेवा की पर ठीक हो गया अन्तमें वह पक्षी आरोग्य हो गया । आगे वह चिड़िया साधुसे ऐसी हिल गई और प्रेम करने लगी कि, निशिदिन उस साधुके साथ ही फिरा करती थी, दूसरे वर्ष कौंजोंका झुण्ड उसी ऋतुमें उस स्थानसे होकर चला । समस्त कौंजोंने शब्द किया । उनका शब्द सुनकर यह भी नीचेसे बोली । ऊपरसे एक कौंज उतरा उसके निकट आकर उसके गलेसे अपना गला मिलाकर बहुत चिल्लाने लगा । दोनोंके प्रेमकी अधिकताके कारण दोनोंके प्राण निकल गये । इनके मरने पर साधु बहुत रोया दुःखी हुआ फिर उनको गाड़ दिया ।

ये कौंज जा दूर २ देशकी सफर किया करती हैं। जब वे विश्राममें होती हैं तो एक दो चौकीदारकी तरह खड़े पहरे दिया करती हैं, आपत्तिके समय शब्द करते ही अपने वैरियोंसे सचेत हो जाती हैं। ये कौंजें अपना अण्डा पर्वत पर छोड़कर चली आती हैं। उनके संकल्पसे उनका अण्डा पककर बच्चा हो जाता है।

कौवा तथा कुलाग।

कागोंका न्याय—कौवा बहुत चालाक जानवर है, स्काटलेण्ड किम्वा फिरोंमें कागोंकी बहुत बड़ी सभा एकत्रित होती है। उस समय ऐसी भीड़ होती है जिससे प्रमाणित होता है कि, वे किसी विशेष अभिप्रायसे वहाँ बुलाये हुए इकट्ठे हुये हैं। उनमें कुछ उच्च श्रेणीके कौवे बहुत गम्भीर और न्यायी दिखाई देते हैं शेषके सारे सावधान तथा चिल्लाते दिखाई देते हैं। एक घण्टेके बाद सब उड़ जाते हैं। जब सब इधर उधर चले जाते हैं तो उस स्थानपर दो एक कौवे मरे पड़े हुये होते हैं।

डाक्टर एडमेन्स मेन साहबका कथन है कि, कौवोंका बड़ा जमाव दो एक दिनोंतक बराबर रहता है। जब तक उनके अभियोगका न्याय न हो जावे तबतक उन लोगोंकी सम बराबर उसी प्रकार रहा करती है। काग चारों ओरसे आकर नियत स्थानपर इकट्ठे हो जाते हैं। जब सब एकत्रित हो जाते हैं तो बहुत चिल्लाहट होती है। कुछ कालके पीछे सारे कौवे एक अथवा दोनों पर आक्रमण करके जानसे मार डालते हैं। जब न्याय हो चुकता है तो समस्त इधर उधर हो अपनी राह लेते हैं।

खरगोशकी शिकार—एक सरायवालेके पास बनैला कौवा था वह जङ्गली कौवे तथा कुत्तेको लेकर आखेट करने जाया करता था, कुत्ता तो झाड़ीमें घुसकर खरगोशको उठाता था, काग बाहर सावधानी किया करता था। खरगोशके झाड़ीके बाहर निकलते ही काग तुरन्त उसको पकड़ लेता था। कुत्ता पीछेसे शीघ्रही आकर कागका सहायक होता था। दोनों मिलकर खरगोशको पकड़ लेते थे। उनसे बचकर कोई भी खरगोश न जाने पाता था।

कुत्तेसे मित्रता—एक कुत्ते तथा कौवेकी मैत्री हो गयी। एक दिन कुत्ता गाड़ीके नीचे दबके आहत हो गया। कौवा कुत्तेकी सेवा किया करता, हड्डियां ले जाकर कुत्तेके सामने धरा करता। काग उसके साथ पला था, दोनोंमें अत्यन्त प्रेम था। जब तक वह अच्छा नहीं हुआ, तब तक बराबर उसकी सेवा करता रहा। एक रात कुत्ता अस्तबलमें बँधा था उस रातको कागने अपने मित्रसे

मिलनेके लिये चोंच द्वारा द्वारमें सूराख कर दिया । उसके इस प्रेमके कारण सारे मनुष्य उससे प्रीति करने लगे ।

मानुषी वाक्—एक दिन एक पथिक विनचेष्टरके वनमें चला जाता था । उसमें उसने एक बहुत अचम्भेका शब्द तथा दुःखभरी आवाज सुनी । जैसे कोई कहता हो कि, ऐ महाशय ! न्याय कीजिये न्याय कीजिये, अन्याय न करिये । पथिक इधर उधर देखने लगा कि, कौन सताया हुआ इस वनमें रो रहा है, यह शब्द कहांसे आता है । यह सुनकर वह अत्यन्त आश्चर्यान्वित हुआ कि, यहां तो किसी मनुष्यका चिन्ह मात्र नहीं है । यहां मनुष्यका कष्ट स्वर कैसे सुनाई देता है ? वह शब्द सुनकर पथिक उसी ओर चला जहांसे कि, वह आवाज आती थी । आगे जाकर देखा तो दो कौवे एक कौवेपर आक्रमण कर रहे थे । दोनों वेगपूर्वक उसको मार रहे थे । एक कौवा अपने कष्टके कारण कह रहा था कि, ऐ महाशय न्याय कीजिये अन्याय न कीजिये । जिसपर अत्याचार किया जाता था वह काग कहीं आसपासका था, एक मनुष्यका पलुवा था । ठीक मनुष्यके स्वरसें कह रहा था । पथिकने वहां पहुँचकर सताये हुये कौवेको अत्याचारियोंके हाथसे बचा लिया, कौवे भी सिखानेसे अच्छी तरह बातचीत कर सकते हैं ।

चोर—डाक्टर स्टानली साहबने कहा है कि, एक महाशयके अनेक चांदीके चमचे तथा सामान खो गये थे । खानसामाको कुछ पता लगता नहीं था कि, चोर कौन है । न किसीपर कुछ सन्देह ही था । अन्तमें उसने देखा कि, एक पलुवा कौवा मुंहमें चमचा लिये हुए है । खानसामा दूरसे विचारता रहा । जहां वह जङ्गली कौवा चमचोंको छिपाकर रखता था, वहीं छिपकर गया । वह स्थान उसने देख लिया, वहां बारह चमचे मिले ।

बगुला ।

बगुला अत्यन्त सावधानीके साथ मछलियोंको पकड़ता है । उसमें बहुत बल होता है । फरोटापूके रहनेवाले तथा कोई २ इङ्गलिस्थानवासी भी ऐसा अनुमान करते हैं कि, यदि कोई बगुलेके पांवको अपनी जेबमें रखकर आखेट करने जावे तो कृत्यकार्य्य हो जायगा, बगुलेके पांवमें ए[illegible] प्रकारका तेल है । जिसके कारण मछलियोंको अपनी ओर खींच लेता है विशेषतः बाम नामक मछली विशेषकरके उसकी ओर आकर्षित होती है । बगुलेमें एक विचित्र गुण है कि, वो अपनी छातीमेंसे एक प्रकारका प्रकाश निकालता है यह बहुत तीक्ष्ण होता है । उनके शरीरके अनेक स्थानोंपर पंख नहीं होती उस स्थानमें वह वस्तु भरी होती है जो मछलियोंको खींचकर अपनी ओर लाती है । बगुलोंके

परोंमें भी एक प्रकारका बारूद भरा रहता है। उनका हाल अभी तक अवगत नहीं हुआ कि, किस अभिप्रायमें भरा गया। बगुले दूर दूरका भ्रमण किया करते हैं अपना सफर बहुत ही ठीक करते हैं। उनके चलने फिरनेसे उनकी बुद्धिकी तीक्ष्णता एवं विचारकी पवित्रता चमकती है।

मुर्ग़ ।

मुर्ग़ोंकी अनेक मुर्गियां होती हैं। सबकी रक्षा और उनके बच्चोंका पालन मुर्ग़ करता है। यदि उनमें कुचाल दिखाई दे तो उसको दण्ड देता है। इसी पुस्तकका लेखक कहता है कि, एक दिन मैंने देखा कि, एक मुर्ग़ मुर्ग़ीको रगेदता फिरता था। उसके मुंहमें एक कीड़ा था। मुर्ग़ने मुर्ग़ीके शिर पर चोंच तथा ठोकरें मारी जिस कारण उसके मुंहसे कीड़ा गिर पड़ा। उसको उसने छीन लिया एक अन्य दूर खड़ीको जाकर दे दिया। वास्तवमें वह कीड़ा उसी मुर्ग़ीका था, जिससे उस दूसरी मुर्ग़ीने छीन लिया था। इस कारण उस मुर्ग़ने जिसपर अत्याचार किया गया था, उसी मुर्ग़ीका पक्ष करके हक़दारका हक़ दिला दिया। समस्त जीवधारियोंकी अपेक्षा मुर्ग़ अपने बच्चोंसे अधिक प्रेम करते हैं।

मुरग़ाबी।

सलबी साहब कहते हैं कि, सन् १८३५ में एक मुरगाबीने गर्मियोंमें तालाबके किनारे अपना घोंसला बनाया, वह बहुत विशाल तालाब था ऊपरके सोतों द्वारा तालाबको जलकी सहायता मिलती थी। एक बार ऐसी घटना हुई कि, मुरग़ाबी अपने अण्डोंपर बैठी थी पहले जितना जल था उससे कई इञ्च ऊपर चढ़ आया। जान पड़ा कि, जल अधिक होकर अण्डोंको नष्ट कर देगा। पक्षीको आपत्तिकी सूचना पहलेसेही मिल गई। उससे सचेत होकर तुरन्तही बचनेकी युक्तियोंमें लगी बाटिकाके रक्षकने देखा कि, दोनों पक्षी अत्यन्त संलग्न हैं दूर दूरसे घास फूस लाकर घोंसलेको ऊँचा करते जाते हैं। शीघ्रही उन्होंने अपने खोतेको इतना ऊँचा कर दिया कि, तालाबके किनारेसे अत्यन्त ऊँचा हो गया। उन्होंने उस स्थानसे अपने अण्डोंको उठाकर एक फीट ऊँचे तालाबके किनारे घासमें रख दिया, आधे घण्टेसे भी कममें वह मुरग़ाबी अपने अण्डोंको ऊपर ले जाकर सुखपूर्वक बैठ गई। पीछे बहुत वर्षा हुई।

उल्लू।

एमेरिका देशमें एक उल्लू होता है यह बकरियों तथा चौपायोंमें जाकर उनके चिचडोंको खाया करता है बकरियोंकी छातीको चूसता है। उसके विषयमें

वहांके मनुष्य अनेकों प्रकारकी कहानियां कहा करते हैं। वे इस प्रकार विवरण करते हैं कि, उनके मृतक भाइयों तथा सम्बन्धियोंकी आत्मायें उनमें रहा करती हैं उनमें यह भी कहावत है कि, जब श्वेत मनुष्योंके घरके पास शब्द करें तो दुःख तथा शोक हो, यदि वे देशी मनुष्योंके घरके सामने चिल्लावें तो अनेक प्रकारकी आपत्तियां आती हैं।

मछली मार उल्लू—भी होता है वह मछलियोंका आखेट किया करता है। उसका यह नियम है कि, तालाबके किनारेपर जा बैठता है । उसकी आँख बहुत चमकीली तथा भड़कदार होती हैं। मछलियां उसकी आँखोंका प्रकाश देखनेको जलसे बाहर शिर निकालती हैं। उस समय वह उन मछलियोंको झपट्टा मारकर पकड़ लेता है, कदापि जाने नहीं देता। वह इस धोखेसे मछलियोंको पकड़ता है कि, तालाबके किनारे मछलियोंकी ताकमें चुपचाप बैठा रहता है मौका पाकर पकड़ लेता है।

कारभोरेण्ट।

कारभोरेण्ट एक पक्षी है। चीन देशके मनुष्य इसके द्वारा आखेट किया करते हैं। एक २ मनुष्य दश बारह कारभोरेण्टको लेकर चला जाता है। समुद्रमें नाव जाती है। नावके बाहर उन समस्त पक्षियोंको छोड़ दिया जाता है। वे पानीपर इधर उधर फैल जाते हैं। मछलियां ढूंढ़ते फिरते हैं। उनकी तीक्ष्ण दृष्टियोंसे तुरंत जान पड़ता है कि, कहां गोता मारे। वे किसी मछलीको तीक्ष्ण चोंच द्वारा पकड़ लेते हैं तो फिर नहीं छोड़ते यदि मछली भारी हो एकके वशमें न आवे तो उसकी सहायता दूसरे सजातीय किया करते हैं उस आखेटको खींचकर अपने स्वामीके पास ले जाते हैं। उस मछलीको नावमें रखकर पुनः आखेटार्थ फिरने लगते हैं। उनमें से कोई भी आखेटमें सुस्ती करे तो उनका स्वामी एक लम्बे बाँसकी लाठी लेकर पानीपर मारता है रुष्ट होकर बोलता है। फिर वे सब अपने २ कार्य्यमें संलग्न हो जाते हैं। इन पक्षियोंकी ग्रीवाके चारों ओर एक फीता लगा होता है जिसके कारण वे अपने आखेटको निगल नहीं सकते अत्यन्त ध्यान पूर्वक आखेट करते हैं गर्मीमें आखेट नहीं करते पर अक्टूबरसे मई मास तक करते हैं। यह पक्षी बत्तखके बराबर होता है यह बहुत खानेवाला है।

चमगीदड़।

रक्त पीनेवाली—दक्षिणी एमेरिकामें एक प्रकारकी चमगीदड़ होती है। जो बड़ी जातिका चमगीदड़ है उसके लगभग ढाई या तीन फीट लम्बे पर होते हैं। उसका यह नियम है कि, जब वह उड़ती और चलती है तो तनिकभी सूचना नहीं मिलती न शब्दही होता है। वह पशु पक्षियोंके शरीरमें इस प्रकार

चपट जाती है कि उनको जान नहीं पड़ता समस्त रक्त चूस लेती है वे निर्जीव हो जाते हैं। जब वह उनका रक्त चूसती है तो अपने परोंमें पङ्खा करती जाती है, जिसमें कि वह जीव नितान्तही अचेत हो जाये। उसके दातोंकी तनिक भी घाव नहीं जान पड़ता। प्रायः घोड़ेकी ग्रीवाका रक्त इस प्रकार पी जाती है कि, उसको तनिक भी सुधि नहीं होने पाती। सबेरे देखो तो उनकी गर्दन रक्तसे भरी जान पड़ती है।

गायनाकी चमगिदड़ी—बड़ीही विचित्र होती है। इसका नियम है कि, वह जहां कहीं मनुष्यको सोते पाती है अत्यन्त धीरेसे उसके पांवके निकट उतरती है। सोनेवालेको तनिक भी सुध नहीं होती अँगूठेमें ऐसा छेद कर देती है कि, सूईकी नोंकसे भी बहुत बारीक होता है। उसी छिद्र द्वारा रक्त पीती है अपने परोंसे पङ्खा करती जाती है जिसमें वह मनुष्य नितान्तही अचेत हो जाये। उसका रक्त पीना अपने परोंसे पङ्खा करनाही मानो उसका मंत्र और जादू है। रक्त पीकर उसका पेट मशकके समान फूल जाता है वह दूर जाकर कै कर देती है फिर आकर पीने लगती है फिर पेट भर जाता है तो दूर जाकर कै कर देती है। इसी प्रकार प्रत्येक क्षण वह मनुष्य अचेत होता जाता है। अन्तमें शरीरका समस्त रक्त पी लेती है जिससे वह मनुष्य वहीं मर जाता है। मनुष्यके अँगूठे तथा पशुवोंके कानमें जो बहुत रक्त चलनेका स्थान है वहांही वह लगती है उसमें ऐसी बुद्धि तथा युक्ति है कि, किसीका कुछ वश नहीं चलता। वेदके उपनिषदोंमें लिखा है कि, पहले प्राण मनुष्यके अँगूठेके मार्गसे घुसा था। शायद इस चमगी-दड़ीको वह स्थान मालूम है। उसी मार्ग द्वारा रक्त खींचती है। रक्तके साथ ही प्राण है। रक्त जल है, वायु प्राण है। जब वायु और जल दोनों गये तो जीवित कैसे रह सकता है।

फाखता या पण्डुक।

फीरोजपुर जिलाके मुक्तसर गांवमें साहबू नामका एक मनुष्य रहता था जो जातिका रोड़ा था। एक दिवस वह मेरे पास आया मैंने उसको शिक्षा दी कि, तुम माँस न खाना और मदिरा पीना छोड़ दो, ये बहुत पापकी बात है। उसने कहा कि, मैं खाता पीता तो हूँ पर प्राणवध नहीं करता। क्योंकि, मैंने एक दिन बन्दूकसे दो फाख्ता मारा, उनको पकाकर खा लिया। उस दिन मुझको स्वप्न हुआ तो मेरे कानोंमें ऐसा शब्द सुनाई देने लगा कि, हम दोनों साधु फाखताके स्वरूपमें इस देशका भ्रमण करने आये यह निर्दयी कसाई हमको मारकर खा गया। जब साहबूरोड़ाने ऐसा स्वप्न देखा तो प्रतिज्ञा की कि,

भविष्यमें कभी किसी जानवरको न मारूँगा उसी समयसे बन्दूक फेंक दी, शिकार न करनेकी शपथ ले ली। फाखता बहुत ही निर्दोष पक्षी है।

नूहको समाचार—इसीने नूह पैगम्बरको पृथिवीके गीले और शुष्क होनेकी बात बताई थी। यों कहते हैं कि इस फाखताका यह नियम है कि, जब इसका नर मर जाये तो वह दूसरा नर नहीं करती। यदि मादा मर जाये तो नर अपने लिये दूसरी मादा नहीं ढूँढ़ता। जोड मरनेके पीछे कभी सम्भोग नहीं करता। अपनी सारी उम्र अत्यन्त पवित्रताके साथ बिताता है।

कबूतर।

कबूतर पवित्र पक्षी है। ये उत्तरीय अमेरिका तथा अन्यान्य देशोंमें अधिकतासे हुआ करते हैं। उनकी अनेक जातियां हैं। जब वे उड़ते हैं तो उनकी इतनी अधिकता होती है कि, वे दो सौ मील तक बराबर आकाशको घेर लेते हैं। गिनतीमें दो अरबके निकट होते हैं। ये कबूतर पूर्व कालसे समाचार पहुँचानेवाले पक्षी समझे जाते हैं।

आना करिऊन एक यूनानी शायर कहता है कि, कबूतर पत्र पहुँचाया करते थे।

प्लेनी—नामक एक मनुष्य जो रूमियोंका बहुत बड़ा नेंचुरलिष्ट था, लिखता है कि, मिटीनिया अर्थात् मोदीना नगरके दुर्गका घेर हुआ था उस समय हेरिटीस डिसमिस प्राविटस्के बीच बराबर पत्रादि पहुँचाया करते थे। यह भी लिखा है कि, सेण्ट टोनीसकी लड़ाईमें कबूतर पत्र तथा समाचार ले आया करते थे।

हुद् हुद्पर कुरान—कुरानमें लिखा है कि, हुद् हुद् सुलेमान बादशाहका पैगाम पहुँचाया करता था उत्तर भी लाया करता था।

कप्तान ब्राउन साहबका कथन है कि, चलटरहमके सरायवालेके पास एक कबूतर था उसका बारह वर्षका वय था। उसकी कबूतरी उसको छोड़कर चली गई। उसकी जुदाईसे उसको अत्यन्त दुःख था। उसने नवीन सम्बन्ध नहीं किया। दो वर्ष तक बिना स्त्रीके रहा अन्तमें उसकी अविश्वासिनी स्त्री फिर आई। चाहा कि, मैं अपने नरके साथ रहूँ उसने अनेकों युक्तियां कीं कि, मेरा नर मुझसे पहिलेकी तरह प्रेमसे मिले। उसने बहुत हठ किया तो उसने उसको चोंचोंसे मारकर निकाल दिया। एक रातको उसने अपने लिये एक स्थान निश्चित किया तब कबूतर कुछ प्रसन्न हुआ। कबूतरीको अपने साथ रहने दिया वह शीघ्रही मर गई। उसके छोड जानेसे उसने ऐसी स्वतंत्रता प्राप्त नहीं की थी

जैसी कि, उसके मर जानेसे हुई। उसके मरनेके पीछे उड़ गया। कुछ घण्टोंके पीछे एक नवीन कबूतरी ले आया।

जर्मनी और फ्रांसके कबूतर।

मैंने सुना है कि, शाहंशाह जर्म्मनी और फ्रांस देशके अधिकारियोंके पत्रवाहक कबूतर भी हैं, वे कबूतरोंके गलेमें पत्र बाँध देते हैं वे उन्हें पहुँचाया करते हैं। डाकके हरकारे कबूतर हैं उनकी उड़ानमें ऐसा बल है कि, एक दिनमें डेढ़ सौ अथवा दो सौ कोस तक उड़ जाते हैं नियत स्थानपर पत्र पहुँचाते हैं। उनके लिये स्थान बने हुये हैं, जहाँ वे ठहरते हैं उन स्थानोंपर उनके लिये चारा दाना देनेवाले उपस्थित रहते हैं सारी चौकसी हुआ करती है।

मैना।

मैनाको अङ्गरेजीमें मेगपई कहते हैं। यह पक्षी इङ्गलिस्तान देशका रहनेवाला है। ग्यारह इंचके लगभग लम्बा होता है लाल काले रङ्ग होते हैं। यह माँस तथा अन्न आदि सभी कुछ खाता है। चार पायोंकी बहुत सेवा करता है उनकी समस्त जुएँ इत्यादिको खा जाता है। बहुत अत्याचारी तथा स्वार्थी पक्षी है, बहुत सावधान तथा किसानोंका शत्रु है। इसको चोरीकी बड़ी लत है। बहुत धूर्त तथा चालाक है। यदि किसी भी प्रकारकी आपत्ति निकट हो तो वह बहुत चीखती चिल्लाती है। अपने समस्त सजातियोंको सचेत कर देती है। उसकी चिल्लाहट सुनकर सारे बनके पशु सचेत हो जाते हैं। सारे पशु पक्षी तथा हिंसक जीव उसके चिल्लानेके तात्पर्य्यको अच्छी तरह समझते हैं। सब चौकस हो जाते हैं। जिससे आखेट करनेवाला निराश हो जाता है। कवि ऐसा अनुमान करते हैं कि, पूर्वकालमें मेगपई स्त्रियां थीं। यह कागका एक रूप है। ये बहुत चिल्लाती तथा हुल्लड़ मचाती हैं। उनके पर सुन्दर होते हैं। ऐसा समझा जाता है कि, वे पहलेसे समाचार दिया करती हैं यदि एक प्रगट हो तो उसे बुरा शकुन समझना चाहिये यदि चार देखनेमें आवें तो उससे मृत्युकी आशङ्का होती है, यदि पांच दिखाई दें तो अत्यन्त विपत्ति आती है।

चोर मैना—एक कहानी है कि, फ्लारेन्स नगरीमें बेसिनो नामक एक बेगम रहती थी। उसका एक बहुमूल्य हार खो गया। उस चोरीमें एक छोटी बालिकाके शिर दोषारोपण किया गया, जिसके कारण उस लड़कीको कष्ट पहुंचाया जाने लगा। जब वह न सह सकी तो उसने दोष स्वीकार कर लिया पर माल उसके पास नहीं निकला। उसको फांसीपर लटका दिया। उस अनजान लड़कीको फांसीपर लटका चुकनेके बाद उसके कुछ कालके पीछे प्रचण्ड आँधी

आई महान् विपत्ति उपस्थित हुई । फ्लारेन्स नगरपर कड़कड़ाके बिजलियां गिरीं अन्यायीके घरको गिरा दिया । उसपर मेगपयीका एक घोंसला था वह भी पृथ्वीपर गिर पड़ा । चिड़ियाके खोतेमेंसे मोतियोंकी माला निकल पड़ी । यह पक्षी बहुत चोर है । मनुष्य तथा समस्त जन्तुओंकी बोलीकी नकल करता है । वस्तुओंको चुराकर दूसरे स्थानमें धर देता है । तनिक भी पता नहीं चलता कि, किसने चोरी की ।

रोमसेन साहब---कहते हैं कि, एक मनुष्यके घर एक मेगपयी रहा करती थी । नकल करनेमें यह परम प्रसिद्ध थी । सीटी बजाती, राग और गीत गाती, मुर्गी तथा बतखकी बोली बोलती । मनुष्यके समान साफ २ बातें किया करती । द्वारपर बैठकर आहा आहा करती । मनुष्यके समान ऐसा शब्द करती कि, रखवाले दौड़ आते । वह चिड़िया जोरसे हँसती तथा ठठ्ठा करती । जब नौकरकी स्त्री सम्बोंसा बनाती तो वह चिड़िया भी वही काम करती । यदि स्त्री उस चिड़ियाके ठठ्ठेसे अनभिज्ञ होती तो दौडी आती, यदि मनुष्यके ध्यानसे कोई द्वार खोल दे तो चिड़िया भीतर घुस आती, अपनी चोंचमें भोजन लेकर चली जाती । इसके बाद बैठके हर्ष पूर्व्वक शब्द करती । कुर्सियोंके पीछे बैठके बोलती । अपने मुखसे प्रकट कहती कि, मैं भूखी हूँ । घरके छोटे लड़कोंको याद दिलाती कि अब मदरसा जानेका समय हो गया । तैयार हो । इधर उधर फिरती थी । कभी भी बिना हानि किये न रहती थी, चोरी करनेकी तो उसकी आदत ही थी । छोटी छोटी वस्तुएँ चुराकर दूसरी जगह धर देती थी ।

मैना चिड़िया ठीक मनुष्योंके समान बोलती है, सारी भाषाओंको ठीक ठीक बोल सकती है । एक मैना एक अस्पतालके पिंजरेमें थी वह ठीक रोगियोंके समान खाँसती थी । उसी प्रकार हाय हाय करती, रोती और बन्दूकके गर्जके समान झनझनाया करती थी । कोई ऐसी भाषा नहीं थी जिसे वह बोल न सकती हो ।

[illegible] तोता ।

तोता शिक्षा ग्रहण करनेवाला अत्यन्त तीक्ष्ण बुद्धिका पक्षी है । यह मनुष्योंके समान अनेक बातें सीख सकता है ।

निशानेबाज और लिपिके जानकार---पञ्जाब देशस्थ जालन्धर प्रान्तमें एक फगवाडा बस्ती है । वहांके तहसीलदारके पास एक ब्राह्मण तोते लाया था उनमें यह गुण था कि, छोटीसी तोप चलाया करता, दूसरा तोता खरे खोटे रुपयोंकी पहचान किया करता, तीसरा किसीका नाम किसी भाषामें लिख दो पहिचान लेता । ब्राह्मणने तोप भरकर तोतेके सामने धर दी । तोतेसे कहा देखो

गङ्गाराम ! यह तोप ठीक निशानेपर है वा नहीं ? गङ्गाराम तोपपर बैठ गया। एक आँख दबाकर इधर उधरसे देखा। ठीक निशाना ताककर गङ्गाराम तोपसे उतरकर अगल बैठ गया। ब्राह्मणने पुनः निशाना ठीक लगा दिया, गङ्गाराम तोप पर बैठ गया। अपना शिर टेढ़ा कर तथा एक आँख दबाके देखा तो ठीक निशाना न पाया तोपसे उतरकर अलग जा बैठा। ब्राह्मणने निशानेको ठीक सामने लगा-कर कहा, गङ्गाराम ! अब देखो. गङ्गारामने जाकर देखा निशानेको भली प्रकार मसेके साथ मिला हुआ जान लिया कि, अब तो निशाना ठीक हो चुका है। बत्तीको आगसे लगाया, आग नहीं लगी फिर लगाया तो खूब लग गई। तोपके प्यालेसे बत्तीको लगाकर आप तोपसे उड़कर दूर जा बैठा तोप छूट गई। वह तोता इसी प्रकार तोप चलाया करता था।

फिर बहुतेरे नामकोंको भिन्न भिन्न कागज पर लिखकर सबको मिलाकर एकट्ठा करके रख दिया करता, चाहे वह किसी भाषामें क्यों न लिखा गया हो। गङ्गारामसे कहा गया कि, अमुक मनुष्यके नामकी चिट्ठी निकाल दो, तो वह तोता समस्त कागजोंको उलट पलटकर उसीके नामकी चिट्ठी निकाल दिया करता सौ रुपया मँगवाया गया उसमें एक खोटा रुपया मिला दिया गया, उस पर चिह्न किया गया सबको मिलाके एक जगह रख दिया गया। तोतेसे कहा, खोटा रुपया बाहर निकाल देना। तोतेने समस्त रुपयोंको उलट पुलटकर देखा जो खोटा रुपया था उसको निकालकर बाहर धर दिया। तहसीलदार तोतेके लिये ब्राह्मणको सौ रुपया देने लगा पर उसने स्वीकार नहीं किया।

उज्जैनके अध्यक्ष राजा शालिवाहनके पुत्र राजा रसालुके पास एक तोता था उसकी बहुत प्रशंसा सुनते हैं। वह राजा रसालुका मंत्री था। उसकी अंतर दृष्टि थी, राजा उसकी सम्मति विना कोई कार्य्य नहीं करता था। गुरु गोविंदसिंहजीके त्रिया चरित्रमें लिखा है कि—

राजा रसालुके तोता मैना—ये दोनों बड़े बुद्धिमान थे मनुष्यके समान बातें किया करते थे। एक बार ऐसी घटना हुई कि, राजा यात्राके लिये गया, तोता मैना दोनोंको घर छोड़ गया। उस समय रानी एक पराये पुरुषको बुलाकर उसके साथ बातें करने लगी, तोता मैना दोनोंने उसको शिक्षा दी कि, तू अधर्म्म न कर। व्यभिचार अनर्थका मूल है, मैनाने कुछ कठोर वचन भी कहे। कहा कि, तू पापिष्ठा स्त्री है। मैं तेरा सारा हाल राजासे कह दूँगी। तोता तथा मैनाकी बातें सुनकर रानी जली मरी, लौंडीको आज्ञा दी कि, दोनोंका पिंजरा उठा ला. वह उठा लाई कहा कि, मैनाकी गरदन मरोड़कर मार डाल। मैनाका काम तो उसी समय समाप्त कर दिया गया तोताके लिये आज्ञा मिली कि, इसे

घरके बाहर लेजाके मार डाल । लौंडी तोता लेकर घरके बाहर निकली, तोतेने लौंडीकी खुशामद की कि, तू मुझे मत मार, मेरे बदले किसी दूसरे तोतेके शव दिखा दे. लौंडीके मनमें दया आ गई, तोतेको छोड़ दिया, वह उड़कर राजा रसालुके पास जा पहुँचा, रानीका सारा हाल तथा मैनाके मरने और अपने प्राण बचाकर निकल आनेकी सब बातें कह दी । राजा अपने महलमें तुरन्त पहुँचा चोरको पकडकर मार डाला । रानी अटारीसे गिरकर मर गई ।

रसालुका अन्तर्दृष्टि तोता—एक और राजा था उसका नाम सरेकप था । इसका यह नाम इस कारण पड़ा कि, उसकी अत्यन्त सुंदरी एक लड़की थी । राजाने उसके निमित्त यह विज्ञापन दिया था कि, जो कोई मेरे साथ चौसर खेलकर बाजी जीत जावेगा उसको मैं अपनी पुत्री दे दूँगा, हार जाएगा तो मैं उसका शिर काट लूँगा, इसी प्रकार उसने कितनेही राजोंके शिर काट लिया । चौसरकी बाजीमें उसपर कोई विजयी नहीं हुआ ।

जब यह बात राजा रसालुने सुनी तो वह घोड़ेपर सवार होकर तोतेको अपने साथ लेकर अकेला सरेकपकी ओर चला । राहमें जाते हुये एक झाहा मिला । तोतेने कहा कि, राजा ! इस झाहेको पकड़ ले, यह तेरे काम आवेगा. राजाने झाहेको अपने साथ लिया । आगे जाते हुये बिल्लीके बच्चे मिले । तोतेने कहा, राजा ! इन बच्चोंमेंसे एक लेले, यह भी काम देगा । कुछ दूर जाकर राजाने घोड़ेको वृक्षसे बांध दिया आप सो गया । उस स्थानपर बहुत विषैला सर्प रहता था । उसने बांबीसे निकलकर राजाके स्वाँसको खीच लिया, राजा मर गया । उस सांपका मित्र कौवा था. सर्पने उससे कहा कि, इसके मांसको आनन्द पूर्वक खा। उस समय तोतेने झाहेसे कहा कि, अब तू देख ! हमारा राजा तो मर गया, कौआ हमारे राजाका मांस खाने जाता है, तू उसकी टांग पकड़ लेना जबतक इसराल सांप राजाके दमको फिर न छोड़े राजाको जीवित न करे तबतक कौवेकी टांग न छोड़ना । झाहा तोतेके कथनानुसार राजाकी दाढ़ीके नीचे छिपकर बैठा । क्योंकि, राजाकी दाढ़ी बहुत बड़ी थी । कौवा राजाकी छातीपर आकर बैठा चाहा कि, राजाकी आँख निकालकर खावें, उसी समय झाहाने राजाकी दाढ़ीके नीचेसे निकलकर कौवेकी टांग पकड़ली तथा अपने कांटोंको फैलाकर बैठ गया कौवेने बहुत बल किया पर उसकी टांग नहीं छूटी, बहुत फिरा, चिल्लाया पर कोई युक्ति काम न आई । कौवेके मित्र इसरालका कुछ बल नहीं था कि, झाहेसे उसकी टांग छुड़ाये । यदि इसराल झाहेपर अपना मुंह चलाये तो वह आप मर जाये । कौवा बहुत पुकारता पर झाहा न छोड़ता । तोता बोला कि, इसराल!

तू राजाका दम छोड़ दे राजा जीवित होजाए तब तेर मित्र कौवेका यह झाहा छोड देगा। इसरालने राजाके दमको नाक द्वारा उसमें पैठाया। राजा जीवित होकर कहने लगा कि, मैं बहुत सोया। तोतेने राजाको कौवा तथा इसराल इत्यादिकी सारी बातें कह सुनाई। झाहेने कौवेको छोड़ दिया। सब अपनी अपनी जगह जा बैठे। राजा घोड़ेपर सवार होकर सरेकपके घर पहुँचा चौसर खेलनेकी अभिलाषा प्रगट की। तोतेने राजा रसालुको सिखा दिया कि, हे राजा! सरेकप अपनी बाँहमें छोटे छोटे चूहे रखता है उनको दाव घातें सिखलादी हैं। राजा पांसा फेंकता है तो चूहे राजाकी बाजीका पांसा उलटकर फिर आस्तीनमें घुस जाते हैं। इस कारण तू युक्तिकर कि, बिल्लीके बच्चेको यहां छोड़ दे जिसके भयसे चूहेके बच्चे सरेकपकी आस्तीनके बाहर न निकलेंगे। तू बाजी जीत जायगा। रसालूने यही कार्य्य किया बाजी जीतली। राजा सरेकपकी बेटीको विवाहकर अपने घर ले आया।

तोतेकी बुद्धिमानी तथा भविष्यका हाल जाननेके विषयमें लोग अनेक प्रकारकी कहानियां कहते हैं. समस्त पञ्जाब देश इस तोतेकाही गीत गा रहा है।

लँगड़े तोतेकी बातें—एक लंगडा तोता था। कोई मनुष्य उसके पास जाकर पूछता कि, पाँव कैसे टूटा तो वह उत्तर देता कि, मैंने एक सौदागरकी सेवामें अपना पाँव खोया है। महाशय! लंगड़ेको न भूलना। यह तोता बिचित्र प्रकारकी बोलियाँ बोलता था, आवाज बदलकर बोलके घोड़ोंको ठहरा लेता और चला देता। हँसता तथा प्रसन्नतापूर्वक खिलखिलाता यह बात पूर्वोक्त पुस्तकमें लिखी है।

एक चालाक तोता—था जो कुछ वह खाता उसका छिलका नीचे डाल देता इसके पीछे बिल्लीको बुलाता। पुश आ—पुश आ – जब बिल्ली जाकर तोतेकी ओर ताक लगाती तो तोता उसकी खुशामद करता हुआ कहता कि प्यारी बिल्ली! पीछे प्यारकी ऐसी बाते सुनाता वो मोहजाती पर अपनी दृष्टि सदैव अपने वैरी पर रखता।

हब्श देशका तोता—एक मनुष्यके पास था। वह बहुत धूर्त था। उसका नाम जेको था। वह ऊपर पांव करके मुरदेकी तरह पड़ जाता था. कहता कि जेको मर गया। जबतक उसकी स्वामिन न जाती तबतक मुर्देकी तरह पड़ा रहता. वह गाती तो जेको पुनः जीवित होजाता। यह अधिक हानि करता था इसी कारण इसका पिंजरा अकेलेमें नहीं छोडा जाता।

झिडकोकी नकल— एक दिन वह तोता पिंजरेके बाहर आगया, अपनी

स्वामिनकी अनुपस्थितिमें अनेक सुनहली बहुमूल्य वस्तुओंको कुतर डाला। स्वामिनने आकर हानि देखी तो तोतेको अनेक झिड़कियां दीं। मारा फिर पिंजरेमें बंदकर दिया। सारे दिन उसने न कुछ खाया न पिया, सांझ हुई तो तोतेने पुकारकर कहा कि जेको अब विश्रामके लिये विश्रामालयमें जाया चाहता है। नियमानुसार उसके पिंजरे पर पर्दा डाल दिया गया। उस समय सोनेके लिये पर्दाके भीतर कुड़कुड़ाने लगा। जिस प्रकार उसको झिड़की तथा दण्ड मिला था वेही सब बातें आपसे आप करने लगा कि, दुष्ट जेको नीच पक्षी तूने कैसे इतनी हानि की। आह मैं तुझको दण्ड दूंगी इत्यादि वे समस्त बातें जो उसकी मालकिनीने कही थीं ज्योंकी त्यों कहा करता था। दूसरी सांझको भी उसी स्त्रीकी उसी प्रकार नकल किया करता था ठीक ठीक धीरे धीरे अपनी स्वामिनीकी तरह बोलता था।

तोतेकी ईर्ष्या—समस्त पक्षी एक दूसरेसे ईर्षा करते हैं। पर तोता सबसे अधिक ईर्षा करता है। ली साहबका कथन है कि, मेरे मित्रके पास एक तोता था। उसकी मलकिन ने गानेवाली चिड़िया पर हाथ फेरकर प्यार किया उसपर हाथ फेरा उसका प्यार देखकर तोतेने ईर्षा की अप्रसन्न होकर बोलना छोड़ दिया। खाना भी त्याग दिया स्वामिनकी ओरसे मुँह फेर लेता। काटने दौड़ता। एक दिन धूप खानेके लिये गानेवाली चिड़ियाको बाहर रख दिया। इस चिड़ियाको अङ्गरेजीमें केनेरी बर्ड कहते हैं यह अपने हर्षमें आकर गीत गाने लगी तोता ध्यान पूर्वक कान लगा शिर टेढ़ा करके चिड़ियाका गीत सुनने लगा। वह गाके चुप हुई तो तोता प्रशंसा करनेकी तरह उच्च स्वरसे बोला, बहुत अच्छा बहुत अच्छा॥ फिर बोला, हा—हा—हा—हा।

ईर्ष्यासे हत्या — इसी स्त्रीके भाईके पास भी एक तोता था। वह अपनी जातिकी छोटी चिड़ियोंसे बहुत ईर्षा करता था। इसके स्वामीके पास एक छोटी चिड़िया थी। जिसको वह बहुत प्यार करता था। उसका पिंजरा शयनागारके समीप लटकाया हुआ था। एक रात ऐसी घटना हुई कि, छोटी चिड़िया बहुत चिल्लाई। उसकी चिल्लाहटसे सरायका स्वामी जागा, दीआ लेकर पिंजरेके निकट गया तो देखा कि तोतेने किसी प्रकार पिंजरेसे बाहर निकलके छोटी चिड़िया के पिंजरेमें पञ्जा डालकर उसको अपनी ओर खींच टुकड़े २ कर दिया है।

स्वाद — एक तोता था उसके पिंजरेमें भूलकर कुछ खराब रोटी रक्खी गई तोता रोटीकी ओर कुछ कालतक देखता रहा एक दो बार उसको चक्खा। अच्छा न जानकर रोटी नहीं खाई। चोंचसे इधर उधर बिखेर दिया कहने लगा कि, भ्रष्ट भोजन है भ्रष्ट भोजन है भ्रष्ट नष्ट भोजन है।

तोडेकी चोरीपर आश्चर्य — इसने एक स्त्रीको कहते सुना कि, मेरा रुपयों का तोड़ा अथवा न्योली जाती रही । यह बात सुनकर तोता उच्च स्वरसे बोला कि कैसे आश्चर्य्यकी बात है ।

सरायका तोता — एक प्रसिद्ध तोता नारफोर्ककी सरायमें रहता था यह अपने स्वामी तथा उसकी स्त्रीसे विशेष अनुराग रखता था । वह उसके समस्त मित्रों तथा भृत्योंको पहचानता था । उनका नाम लेकर उनको पुकारता था उनको भीतर बुलाता कितनोंको कह देता कि दूर हो अपनी जगहपर जा ।

एक दिन एक मनुष्य उसके स्वामीकी स्त्रीसे पैसे कौड़ीकी बातें कर रहा था । मनुष्य बातचीत करनेमें कुछ गर्म हुआ । तोता उच्च स्वरसे बोला कि, ऐ महाशय ! आप इसको रख दीजिये आप इस विषयसे पूर्ण अनभिज्ञ हैं ।

अभ्यागतोंसे बात — इसी स्त्रीने हरे रङ्गका एक तोता पाला । वह अभ्यागतोंसे बातें किया करता था पूछता था कि, आप प्रसन्न तो हैं ? खाना पीना कीजिये । सीटी बजाइये नाचिये यह तोता बीस वर्षतक जीवित रहकर मृत्युको प्राप्त हो गया ।

द्वारपर बातें — व्यापारीके पास दो तोते थे एक हरा और दूसरा श्वेत रङ्गका था. श्वेतरङ्गके तोतेको सिखाया था कि, जब कोई घण्टा बजाये तो वह यह कहता कि द्वार पर कौन है ? एक मनुष्यने आकर द्वार खटखटाया । हरे रङ्गके तोतेने कहा कि, कौन है ? मनुष्यने उत्तर दिया कि, मैं वह मनुष्य हूँ जो चर्म्म लेकर आया हूँ । तोता वाह वाह करके चुप हो रहा । जब द्वार नहीं खुला तो उसने फिर द्वार खटखटाया । फिर हरे तोतेने कहा कि, कौन है ? वह रुष्ट होकर कहने लगा कि, तुम यहाँ क्यों नहीं आते । तोता फिर वाह वाह कहकर चुप हो रहा । उस मनुष्यने झुँझलाकर घण्टा बजाया. श्वेत तोतेने कहा कि, द्वारपर जाओ । जब श्वेत तोतेने उच्चस्वरसे कहा द्वार पर जाओ तो मनुष्य द्वारपर गया द्वार खुला न पाया तो उसने कहा कि, तुम मुझसे क्यों दुष्टता करते हो ? अत्यन्त क्रोधित हुआ । उसने मकानमें पीछे जाकर देखा तो जान लिया कि, जो उत्तर देते थे वो दोनों तोते हैं ।

विलियमका तोता — हिउम साहबके इङ्गलैण्डके इतिहासमें मैंने पढ़ा था कि, इङ्गलिस्तानी बादशाह चौथे विलियमका तोता किसी कारण टेम्स नदीमें गिरकर डूबने लगा । उस समय उसने पुकार कर कहा कि, नाव ! नाव !! एक नाव जल्दी लाओ, जो कोई शीघ्र नाव लायेगा सो दो सौ रुपया पारितोषिक पायेगा । एक मनुष्य दौड़कर गया, तोतेको पकड़के बाहर निकाल लाया ।

नियमानुसार दो सौ रुपये माँगने लगा । बादशाहने कहा कि, यदि तोता कहे तो विश्वास करूं। बादशाहने पूछा कि, ऐ तोता ! इस मनुष्यको क्या दिया जाय? तोता बोला कि, इस ठगको एक कूट दे दो । (कूट एक प्रकारका सिक्का है, जो एक अधेलेके बराबर होता है (यह बात सुनकर सारे दर्बारी अचम्भेमें हुये।बादशाहने हँसकर कहा कि, बहुत अच्छा, यही दिया जायगा ।

तोता नामा — एक बहुत प्रसिद्ध पुस्तक है जिसको कि, तोता नामा कहते हैं। तोता नामा फारसी तथा अङ्गरेजीमें भी मैंने देखा था। इसमें बहत्तर कहानियाँ हैं । इस पुस्तकको शुकबहत्तरी भी कहते हैं । यह पुस्तक पहले संस्कृतमें थी । इसके पीछे फारसी तथा अंगरेजीमें हुई है । एक मनुष्य परदेशमें भ्रमणके लिये गया था। घरपर उसकी युवती स्त्री थी. एक मैना एक तोता रह गया था । तोता तथा मैना दोनों मनुष्योंकी तरह बातें किया करते थे । पुरुषके चले जानेके कुछ दिवसोंके पीछे स्त्रीको काम कामनाने पीड़ित किया । वह एक पुरुषके पास जानेको तैयार हुई । पहले उसने मैनासे पूछा कि, मैं अमुक मनुष्यके पास जाया चाहती हूँ, तू क्या कहती है। इस बात पर मैना ने उसको शिक्षा दी । कड़ी २ बातें कहीं, उस स्त्रीने उसको मार डाला । मैना मर गई, तोता देखता रहा इससे वह इस आपत्तिसे सचेत हो गया । उस दिन तो वह स्त्री ठहर गई, आगे दूसरे दिन अच्छे वस्त्राभूषण पहर कर चलनेको तैयार हुई । तोतेसे पूछा कि, मैं अमुक पुरुषके निकट जाया चाहती हूँ तू मुझको आज्ञा दे, तोता उस विपत्तिसे सूचित था । उसने कहानी आरम्भ की, ऐसी बुद्धिमानी तथा चातुरीसे समझाने लगा । जिसे कि सुनकर स्त्री हर्षित हुई । अपने घर बैठ रही । दूसरे दिन प्रस्तुत होकर स्त्रीने आज्ञा माँगी तोतेने दूसरी कहानी आरम्भ की जिसको सुनकर वह स्त्री दूसरे दिन भी ठहर गई । इसी प्रकार उस तोतेने बहत्तर दिनों तक बहत्तर कहानियाँ सुनाई बहत्तरवें दिन उसका पति पलट आया । स्त्री व्यभिचारके महापापसे बच रही । वह पुस्तक शुक बहत्तरी है।

तोतेनामेके नामसे भी प्रसिद्ध पुस्तक है । पुस्तकोंमें तोता मैनाओंकी ऐसी बातें लिखी हैं ।

बुलबुल ।

उर्दू साहित्यमें प्रेमके अकंटक पुजारियोंकी रसमयी गोष्ठीमें जो स्थान बुलबुलोंको मिला है वह दूसरे किसीको नहीं मिला. जहां कहीं प्रेमकी उत्कट प्रशंसाकी जाती है वहाँ बुलबुलको सबसे अगाड़ी रखा जाता है । शृंगारके कवियोंने तो इसके गुण गाये सो गाये ही हैं, पर स्वामी रामतीर्थजी जैसे त्यागी विरक्तों ने

भी इसकी प्रेम कहानी कह ही डाली है कि, "बुलबुलोंकी कबर बागहीमें बनती हैं" उर्दूका साहित्य तो इससे भरा ही पड़ा है।

बुलबुलोंकी मानुषी वाचा – डाक्टर गोल्डस्मिथ साहबकी नेचरल हिस्ट्री में लिखा है कि, एक पथिक पथमें चला जाता था। सांझ होते ही सरायमें उतर पड़ा। वहाँ बुलबुलके तीन पिंजरे लटकते थे। पथिकको बीमारीके कारण रातको नींद नहीं आई. बेचैनीकी अवस्थामें पड़ा करवटें लेता रहा चुपचाप था। आधी रात बीत गई चारों ओर सन्नाटा छा गया. मनुष्य अचेत होकर सोगये। समान अन्तर पर लटकाई हुई तीनों बुलबुलें आपसमें मनुष्योंकी भाषामें बातें करने लगीं. तीनोंने मनुष्योंकी भाषामें तीन कहानियां कहीं पहिली बढईकी कहानी थी दो और दूसरी कहानियां थीं उन बुलबुलोंकी कहानियां पथिक सुनता रहा। वे चुप होगईं। सबेरा हुआ सरायका स्वामी उठा। पथिकने पूछा कि, तुमने इन बुलबुलोंको बातें करना सिखाया है? उसने उत्तर दिया कि, नहीं। मुसाफिरने कहा कि, ये तीनों बुलबुलें ठीक मनुष्योंके समान बातें करती हैं। इन्होंने आपसमें बहुत हँसी मसखरीकी तीन कहानियां कही हैं। मैं चुपचाप पड़ा सुनता रहा। क्योंकि, रोगकी वेदनासे मुझको रात भर नींद नहीं आई।

यह बात सुनकर सरायवाला अचंभा करने लगा कि, ये तो मेरे सामने कभी नहीं बोलीं न मैंने इनको बोलनाही सिखाया है। वे आपही बोलती होंगी, मैंने इनको कभी बातचीत करते नहीं देखा।

चण्डूल।

चण्डूल बहुत चालाक पक्षी है बहुत सतर्कतासे अपना घोंसला बनाता है। बहुत युक्ति सहित घास फूसका घोंसला ऊंचे खजूरके वृक्षपर बनाता है वह बहुत बारीकीसे कोठड़ियां तैयार करता है नीचेकी ओर घोंसलोंका मुँह रखता है कैसी ही वृष्टि क्यों न हो उसके घोंसलेमें एक भी बूँद नहीं जाती उसके भीतर ओस इत्यादि भी नहीं घुस सकते। धूपकी गरमी जाड़ेकी सरदीका प्रवेश भी नही हो सकता।

चण्डूल और सांप – चण्डूलने वृक्ष पर अपना घोंसला बनाया। उसमें सांप घुस गया। चण्डूलके बच्चोंको खाकर उसीमें बैठ रहा। चण्डूल आया विपत्ति से सूचित हुआ। सांपको बैठे देख जान लिया कि, उसने मेरे बच्चोंको खा लिया है। दोनों चण्डूलोंने यह युक्ति की कि, जल्दी जल्दी घास फूस लाकर घोंसलेके द्वारको बन्द कर दिया उसमेंसे सर्प्प बाहर न निकल सका घोंसलेका मुँह बन्द हो चुका तब उन्होंने घोंसलेकी जड़ काट कर पृथिवीपर डाल दिया। उसको हिलते डोलते

देख कर लोगोंने जाना कि, इस खोतेके भीतर कुछ है जिसके कारण यह हिलता है। फड़ाके देखा तो सांप निकल पड़ा लोगोंने उसको मार डाला । इस युक्तिसे चण्डूलने सांपको अपने बच्चोंके बदलेमें मार लिया ।

विचित्र कर्तव्य – फिरोजपुरमें एक मनुष्यने चण्डूलको विचित्र कर्तव्य सिखाया था। उसके पास सोने चाँदीकी दो अँगूठियाँ थीं, वह दोनों अँगूठियोंको दूर रख कर कहता कि, चाँदीकी अँगूठी ला वह चाँदीकी अंगूठी लाता । जब वह कहता कि, सोनेकी अंगूठी ला तो सोनेकी लाता कुछ भी फर्क न पड़ता था ।

समझदार चिड़िया – फिरोजपुरके दूधगांवमें साहूकारके चौबारे पर एक साधू रहता था एक छोटी चिड़िया उसके समीप आकर अत्यन्त मधुर स्वरमें बोला और गाया करती थी. एक दिन वहाँ मुसलमान आ बैठा उस समय भी वहाँ चिड़िया आकर बोलने लगी । मुसलमानने कहा कि, मैं इसको फँसाऊंगा । चिडियाने यह बात सुनली । वह उस दिनसे उस जगह आना छोड दिया । दूर दूर बोलती पर उस जगह कभी न आती थी ।

थर्सकी बोली – एक प्रकारकी चिडिया होती है उसका प्राकृतिक गुण यह है कि, बहुत मधुर भाषी होती है। भांति भांतिके मीठे राग गाया करती है नाना प्रकारकी बोलियाँ बोलती है । वह कुत्तोंकी तरह भूकती और बिल्लीकी तरह म्याँव २ भी करती है. मनुष्यके स्वरमें स्वच्छ बोलती है । बोरड़रप साहबने स्वयम् अपने मित्रों सहित सुना था कि, वह बोलती थी । 'मेरी प्यारी । मेरी सुन्दरी प्यारी । मेरी छोटी सुन्दरी प्यारी ।'

सुर्खसीना ।

एक पक्षी होता है इसका खोता पुष्पके बरतनोंके पास था उसी जगह एक सांपने आकर उसका घोंसला घेर लिया । चिड़िया बागवानके मोंढे पर बैठ कर उच्च स्वरसे बोलने लगी । अपने खोतेकी ओर दौड़ती । पहले तो मालीने उस चिड़ियाके इशारेको न समझा । चिड़िया उसके मोंढे पर आबैठी उसी प्रकार बोलने लगी । मालीने बिचारा कि, यह निडर चिड़िया मेरे मोंढ़े पर आकर शब्द करके फिर अपने घोंसलेकी ओर दौड़ जाती है इसका कोई अवश्य कारण है, यह कुछ कहती है । उसने जाकर देखा तो उसका खोता सर्प्प द्वारा घिरा हुआ था । तब तक उसके बच्चोंको किसी प्रकारका कष्ट नही पहुंचा था । मालीने सर्प्पको मार डाला धन्यवाद देनेके बदले चिड़िया मधुर गाना गाने लगी ।

बड़ीआबाबील ।

कप्तान ब्राउन साहब कहते हैं कि, बड़ी जातिकी एक आबाबील थी उसके

नरको शिकारीने बन्दूकसे मार डाला । वह सदाही अत्यन्त क्रुद्ध होकर अपने नरका परिशोध शिकारीसे लेती, उसपर अत्यन्त क्रुद्ध हो उसके माथेपर चोंचे मारा करती उसके चारों ओर चिल्लाती फिरती जहां कहीं उस शिकारीको देखती वहीं वह उसपर आक्रमण करती । रविवारके दिन आखेट करनेवाला अपना वस्त्र बदल के दूसरे प्रकारका वस्त्र पहनता उस समय वह पहचान न सकती थी इसी प्रकार उसपर आक्रमण करती थी ।

एक बहुतही मिष्टभाषी चिड़िया बहुत मीठा आवाजसे गाया करती थी । उसको प्रायः खिड़कीके बाहर रख देते थे । वह उच्च स्वरसे भली प्रकार गाया करती थी । एकदिन ऐसी घटना हुई कि, उसका पिंजरा मकानके बाहर वृक्षोंके पास धरा हुआ था उसके निकट एक अबाबील आकर पिंजरेके चौगिर्द फिरने लगी उस पिंजरेके ऊपर बैठके अपनी बोलीमें पिंजरेके भीतरवाली चिड़ियासे बोलने लगी कुछ काल तक दोनों आपसमें बातें करती रहीं कुछ कालके पीछे चिड़िया उड़ गई । क्षणोंमें एक कीड़ा मुँहमें दबाकर लौट आई कीड़ेको गानेवाली चिड़ियाके पिंजरेमें डालकर चली गई । उस दिनसे वह नित्य अपने मित्र अबाबील के लिये एक कीड़ा लाया करती भेंट करके चली जाया करती । दोनों अबाबीलोंमें बहुत मैत्री होगई । आसपासके लोग इनका कौतुक देखनेके लिये उस चिड़ियाका पिंजरा रोज बाहर धर दिया करते । वह अबाबील पूर्वानुसार अपने मित्रकी सुधि लिया करती । जब कोई मनुष्य समीप आता तो दूर भाग जाती अकेलेमें आकर अपने मित्रसे मिला करती । सरदी का मौसम आया तो उड़ गई फिर कभी दिखाई नहीं दी ।

सांप निकाल लेनेवाली — सींगके समान चोंचवाली एक चिड़िया होती है । जिसे अङ्गरेजी भाषामें हार्न बिल कहते हैं वह कुरूपा होती है । उसका यह नियम है कि, पृथिवीमें जहां कहीं सांप छिपा हो खोदकर निकाल लेती है ।

रेल ।

रेल एक प्रकारकी चिड़ियाको कहते हैं । वह हरी घास तथा अनाजके खेतोंमें रहती है । बहुत दुष्टा तथा धोखेबाज होती है जब कोई उसको पकड़ लेता है उसको भागनेकी कोई राह नहीं मिलती तो मरनेका बहाना करती है इतना स्वांस बन्द करती है कि, मानों उसमें तनिक भी प्राण नहीं रहा है ।

एक बार एक कुत्ता इसी जातिकी चिड़िया पकड़के एक मनुष्यके पास ले गया । उस समय जान पड़ा कि, वह निर्जीव है तब उस मनुष्यने उसको अलग धर दिया स्वयम् उसके पास खड़ा रहा । चिड़ियाने जान लिया कि, अब यहां कोई नहीं

तो कुछ कालके पीछे अपनी एक आँख खोली । मनुष्यने चिड़ियाकी धूर्तता जानके उसको उठा लिया । उसी समय उसका शिर तथा पांव लटक पड़ा, मानो वह मर गई हो मनुष्यने अपनी जेबमें रख लिया । कुछ कालके बाद भागने तड़फने लगी । उसने बाहर निकाला फिर उसी प्रकार मुर्दा होने लगी । उसने उसको फिर एक जगह रख दिया आप अलग खड़ा हुआ । पांच मिनटोंके पीछे अपना शिर उठाया इधर उधर देखकर भाग गई ।

पफन ।

एक प्रकारकी चिड़िया होती है । अङ्गरेजी भाषाका इसका नाम पफन है आइलेंण्डकी भूमिमें होती है । लोग उसको बंसी लगाके फँसाते हैं जब एक चिड़िया फँस जाती है तो उसके साथी तीन चार मिल कर उसे अपनी ओर खींचते हैं । इस तरह कितनेही बच जाते हैं ।

क्रासबीक ।

बोर्डरिप साहबका कथन है कि, यह एक प्रकारका पक्षी होता है जिसको अङ्गरेजीमें क्रासबीक् कहते हैं क्रासबीकका अर्थ टेढी चोंचवाली चिड़िया है यह पक्षी थोरङ्गिया देशमें होता है वहाँके पहाड़ी लोग इसके विषयमें ऐसा ध्यान करते हैं कि. जिसके घर यह पक्षी होता है वह अपने स्वामी की बीमारीको अपने ऊपर ले लेता है उसका स्वामी आरोग्य लाभ करता है । लोग इसी कारण इस चिड़ियाको अपने घरमें रखते हैं लोगोंका ऐसा भी विश्वास है कि यदि इस पक्षी का टेढा चोंच दाहिनी ओर झुका हो तो मर्दकी देहसे सर्दी तथा गठिया आदिकका रोगभी दूर होता है । यदि बाये ओरको झुके तो स्त्रियोंके शरीरकी बीमारियोंको दूर कर दे यह प्रायः मिरगीकी बीमारी दूर हो जाती है । वहांके लोग इसका जूठा पानी पीते हैं उनका ऐसा ध्यान है उसका जूठा जल रोगोंके लिये अच्छा है ।

भुजंगा ।

कप्तान ब्राउन साहब लिखते हैं कि, एक दिन एक बहुत ठट्ठेकी बात हुई विलियमसेनरेट नाम का एक मनुष्य एडनबर्गके पास कमर्टन नामके स्थानमें रहता था उसने भजैटा पाला था । अङ्गरेजीमें इसको डा कहते हैं । हिन्दीमें भोजैटा अथवा भुजङ्गा कहते हैं । एक दिनकी बात है कि, टेबुलपर ह्विस्की मदिराका आधा गिलास भरा रक्खा था । भुजङ्गा उस जगह बैठ गया उसे पीलिया शराबीको तरह मस्त हो गया । उसने पर तथा पांव लटका दिये । अपने मुँहके बल पृथिवी पर गिर पड़ा । उसके पांव ऊपरको उठ गये । ऐसा जान पडा कि, मानों वह मर गया । पानी उसके मुँहमें डाला गया पर पी न सका । वह फ्लानेलके कपड़ेमें लपेट

कर धर दिया गया । लोगोंको निश्चय होगया कि, मरगया दूसरे दिन छः बजे द्वार खुला तो लोगोंने उसको रफानेके कपड़ेसे बाहर निकाला; तब वह उड़कर बाहर चला गया जिसमें चिड़िया पानी पीया करती हैं उसमें खूब पानी पीकर अपनी प्यास बुझाई । पीछे तो इतना चेता कि, मदिराके समीप कभी भी नहीं जाता इस विचारसे सदैव भयभीत होता रहा कि, इसके पीनेसे मेरी बुरी गति हुई थी ।

गोडस्किउ ।

एक प्रकारका पक्षी है यह अङ्गरेजी भाषाका नाम है इसका हिन्दीमें अर्थ दूध चूसनेवाला होता है । यों कहते हैं, कि वह रातको बकरियों और हरिणियोंके स्तनमें लगकर दूध चूस लिया करता है । पतङ्ग मार मार कर भी खा जाता है उसकी आँखें बडी २ और पर मुलायम सुन्दर एवं रङ्गबरङ्ग होते हैं उसका चोंच बहुत खुला हुआ होता है ये पृथिवीके सभी देशोंमें पाये जाते हैं ।

कुञ्ज ।

कुञ्ज एक प्रकारका पक्षी होता है । अङ्गरेजीमें उसको बोअरबड कहते हैं इसकी अनेक जातियां हैं आष्ट्रेलियाके टापूमें रहते हैं । कुञ्ज इस कारण कहते हैं कि, वे सब वृक्षोंकी टहनियां लेकर कुञ्ज बनाते हैं उनमें खेलते और कौतुक करते हैं । कुञ्ज वृक्षोंकी टहनियोंसे चौडा रकाबीदारगुनके बनाते हैं । उनके बीच सिलसिलावार दोहरी महराबकी श्रेणी बनाते हैं वह कई फीटका लम्बा चौड़ा होता है । उसके भीतरसे सब चिड़ियां प्रसन्नतापूर्वक इधर उधर उडती फिरती हैं । महराबकी शोभा बढ़ानेको कौड़ियां चीथड़े टूटे बर्तन और पर इत्यादि लगाती हैं । यदि उनमेंसे कोई वस्तु खोजाय तो जिस चिड़िया अथवा जिसके कारणसे खोजाय वही ढूँढ़कर फिर उसी जगह उपस्थित करदे, दूसरा नहीं ला सकता । जैसे मनुष्य चौसर तथा शतरञ्ज इत्यादि खेलते हैं वैसेही इन चिड़ियोंके मनोरंजनका एक मजेदार खेल है ।

इनी ।

एक प्रकारका पक्षी कोकिलके समान होता है । अङ्गरेजीमें उसको इनी कहते हैं । जहां कहीं वे मधुका छत्ता देखते हैं चिल्लाकर पथिकको सचेत कर देते हैं कि, इस जगह शहदका छत्ता है । पथिक उस बातको समझ जाता है । मधुके छत्तेसे मधु निकाल लाता है । थोड़ा मधु उसको भी दे देता है । इसी कारण उसे इनी गाइड अर्थात् मधुतक लेजाने वाला कहते हैं ।

हार्नबिल ।

एक प्रकारका पक्षी है, अङ्गरेजीमें जिसको हार्नबिल कहते हैं । यह एक

प्रकारका काग है । इसको प्रायः कीड़े मकोड़े खानेसे अधिक प्रेम है । इस कारण लोग उसको पालते हैं जिसमें उनका घर कीड़े मकोड़ेसे स्वच्छ रहा करे । उसको अत्यन्त पवित्र तथा स्वच्छ पक्षी समझकर इसका पूजन किया करते हैं । उसकी रक्षा किया करते हैं जिससे उसे कोई न मार सके । वे समझते हैं कि, यदि एक हार्न बिलभी मारा जायगा तो देशमें आपत्तियां तथा अशान्ति आदि उपद्रव उत्पन्न हो जायेंगे ।

कोकिला ।

कोकिला एक होशियार चिड़िया है । वह अपने रङ्ग ढङ्गकी चिड़ियोंके साथ यह सलूक करती है कि, जब अण्डे देती है तो अपने स्वरूपको चिड़ियोंके घोंसलेको ढूढ़ती है । उनके अण्डेको कहीं इधर उधर फेंककर उसी स्थानमें अपना अण्डा धरकर चली आती है । पक्षी उसके अण्डोंको पालते हैं । बच्चेका पोषण करते हैं, उसकी सेवा करके बड़ा करते हैं । वे बच्चे बड़े होते ही कोकिलके बच्चे हो जाते हैं ।

हजार दास्तान बुलबुल ।

एक पक्षी होता है जिसको हजार दास्तान बुलबुल कहते हैं । उसकी चोंचमें सहस्र छेद होते हैं । वह ऐसे सुरसे गाता है कि, उसके सामने किसी भी गवैये मनुष्य की गीत गानेकी सामर्थ्य नहीं है । इसको उमर बहुत होती है । इसको भविष्यका हाल मालूम रहता है, जिससे जान लेता है कि, मैं अमुक समयमें मरूँगा । इस पक्षीकी आयु सहस्र वर्षकी होती है । जब यह राग छोड़ता है तो अत्यन्त मनोहरता से गाता है । प्रत्येक छिद्रसे ऐसे ऐसे बाजोंकी आवाज निकालती है कि, गानेवाला उसके सामने क्या वस्तु है, यदि सुनता तो बीजू बावरा भी उसके आगे लज्जित होता । जब उसकी मृत्यु निकट होती है तो जान लेता है कि, अब मेरे कूच के दिन निकट आगये हैं । वह बहुतसी लकड़ियां एकत्रित करता है । उसपर बैठकर दीपक राग गाना आरम्भ करता है । दीपकराग गानेसे आपसे आप आग लग जाती है । उसी आगसे लकड़ियां जलने लगती हैं और उनके साथ आप भी जलकर ढेर हो जाता है । आग ठण्ढी हो जाती है तो उसके ढेरसे वैसाही एक दूसरा पक्षी उत्पन्न हो जाता है । जैसा पहला पक्षी होता है ठीक वैसेही गुण उस दूसरे पक्षीमें भी होते हैं ।

जेकड़ा ।

जेकड़ा एक अङ्गजी पक्षी है यह कागकी जातिमेंसे है । लोग उसे पालते हैं वह मनुष्यकी बोलीका अनुकरण करने लगता है । मेंडकोंके ऊपर बोला करता

है। अपने घोंसलेके लिये पशम (रोंआ) इकट्ठा करता है यह सुविख्यात पक्षी है। चोर होता है। रुपया इत्यादि जिस किसी चमकती वस्तुको देखता है चुरा लेता है। खाने पीनेकी वस्तु चुराता है। कभी नढनेवालोंका ऐनक लेकर भाग जाता है। लोग उसकी चोरीसे अनभिज्ञ रहते हैं। व्यर्थही आपसके मनुष्योंपर चोरीके दोषका आरोप करते हैं।

जे।

एक प्रकारकी चिड़िया जिसका फीका लाल रङ्ग होता है। तेरह इंच लम्बी होती है। इसे अङ्गरेजीमें जे कहते हैं, यह अन्यान्य चिड़ियोंकी नकल किया करती है। घोड़ेकी तरह आवाज करती है। तिसके सुननेसे जान पड़ता है कि, बछेड़ा हिन हिनाता है। यदि कोई इस चिड़ियाको न देखे तो उसको बछेड़ेका हिन-हिनानाही निश्चय हो यह अत्यन्त मीठे सुरोंमें गाने गाया करती है।

हुडेबर्ड ।

पूरबी हब्शमें एक अत्यन्त सुन्दर चिड़िया होती है। उसको अङ्गरेजीमें हूडे बर्ड कहते हैं। लोग उसको पिंजरेमें रखकर पालते हैं। वह बहुत समझदार होती है। क्योंकि, जब उसके बाल दुम और पर ठीक ठीक रहते हैं तो फुरतीला जान पड़ती है। पर जिस ऋतुमें उसकी दुम और पर झर जाते हैं तो अत्यन्त लज्जित और सुस्त हो जाती है। जैसे कि एक धनी निर्धन होकर लज्जित हुआ करता है।

अनल पंख ।

यह एक पक्षी है आकाशमें उड़ताही रहता है, एक क्षण भी नहीं ठहरता, नर मादियोंका पारस्परिक दृष्टि संभोगही होता है इसीसे गर्भ रह जाता है नियत समय पर अंडा देनेसे वह भी पृथ्वीकी ओर गिरता है। मार्गसे ही पक जाता है बच्चे पैदा होजाते हैं एवं पृथिवीमें आनेसे पहिले वेही ऊपरको उड़ जाते हैं। कबीर साहिबने अपने हंसोंके विषयमें इसका दृष्टान्त दिया है कि सत्यगुरुके हंस कर्मोसे नीचे गिराये जाकर भी फिर ऊपरकोही आते हैं उनका नितान्त पतन नहीं होता।

किंगाफिसर ।

सेण्ट जान साहिब कहते हैं. यह एक पक्षी होता है. इस शब्दका अर्थ मछ-लियोंका बादशाह है. यह बड़ी बुद्धिमानीके साथ मछलियोंको पकड़ता है. यह समुद्रके ऊपर अनलपक्षीके समान उड़ा करता है। जब किनारेपर तुन्द अँधेरी वायु चलती है उसी समय नर मादेका संग होनेसे गर्भ रहता है वह अँधेरेमें अण्डे डाल देती है। १५ दिनतक वायु वन्द रहती है सात दिनमें अण्डा पकता तथा

उतनेही समयमें बच्चा पूरे उड़ने योग्य हो जाता था। यूरोपके लोग इस पक्षीके इस दिनको हिलसेन डेस कहते हैं। बच्चेके उड़नेपर वायु फिर पूर्वके समान उड़ता है।

मृत्युकी सूचना देनेवाली ।

उत्तरी एफ्रिकामें बकरीका दूध पीनेवाली चिड़ियोंमें एक ऐसी चिड़िया है जो कि, शुद्ध अंग्रेजी भाषामें कहती है कि, (WHIP POOR WILL) चाबुक मारो, बिचारेको मारेगा। यह बात मनुष्यकी बोलीमें बोलती है। प्रत्येक मनुष्य इन तीनों शब्दोंको अलग अलग समझता है ? जो कोई इस बातसे अनभिज्ञ हो वह अवश्यही जान सकेगा कि, आदमी बोल रहा है। वहांके रहनेवाले कहते हैं कि, ये शहीदोंकी आत्माएं हैं जो पक्षियोंके स्वरूपमें प्रगट होती हैं। यदि पक्षी किसीके घरपर बैठकर आवाज करें तो जाना जाता है कि, अवश्यही इस घरका कोई मनुष्य मर जायगा।

विशेष वक्तव्य – सहस्त्रों प्रकारके पक्षी हैं जिनकी बुद्धिमानीका विवरण असम्भव है। बड़े बड़े तथा छोटे छोटे अनगिनित हैं। चार खान चौरासी लाख योनिके सारे जीव बुद्धिमानीमें मनुष्योंके समान हैं कितनेही उनसे भी अधिक हैं। उनका हिसाब कौन लगा सकता है।

पक्षियोंके बाद सहस्त्रों प्रकारके पतङ्ग और भँवरे इत्यादि भी बुद्धि साव-धानीसे भरे हुये हैं। कहांतक कौन लिख सकता है। इङ्गलैण्डवासियोंमें से कितनों हीने इसकी जाँचमें अपनी सारी आयु बितादी है। फिर भी ठीक ठीक पता नहीं लगा। वेभी परमेश्वरी कौतुकोंका यथार्थ भेद नहीं पासके। हां, उन लोगोंने अपने परिश्रमानुसार बहुत कुछ जान लिया है अङ्गरेजी भाषामें ऐसी अनेक पुस्तकें हैं जिनसे मनुष्य पशुओं तथा कीड़े मकोड़ोंकी बाबतमें बहुत कुछ जानकारी हासिल कर सकता है।

मक्खियां ।

इन मक्खियोंकी दो सौ पचास जातियां निश्चित की गई हैं। इनके दो विभाग हैं। एक प्रकारकी मक्खियां हैं जो भूमिमें छिद्र बनाके रहती हैं, दूसरी वे हैं जो मधु एकत्रित किया करती हैं। वे छत्ते बनाकर इधर उधर मधु ढूँढ़ा करती हैं। फूलोंके रसको अपने पाँवोंमें लाती हैं उनके पिछले पाँवोंपर बड़े बड़े बाल होते हैं। वे जिन कोठरियोंको बनाती हैं उनमें फूलोंका रस भरती हैं। उनके समीप और स्थान होता है दूसरी कोठरियोंमें वे अण्डे देती हैं। उन्हीं रसोंको खाती पीती हैं।

मक्खियों पर विज्ञ ।

ष्टामेक्स नामक एक बहुत बड़ा विद्वान् हुआ है जो कि, बराबर छप्पन बर्षतक मक्खियोंकी चाल ढालको देखकर भली भांति निश्चय करता रहा । किलिक्स नामक एक बहुत बड़ा तत्ववेत्ता हुआ है जिसकी सारी उमर यही सब जाननेमें बीती । पोरो देशके कितनेही वैज्ञानिक इनका स्वभाव देखकर उनकी जांच करते हुए इनकी बातें लिखते रहे थे ।

डाक्टर वाटथार्वी तथा फ्रानसिस हिउबर — प्राचीन कालके वैज्ञानिक जैसे डाक्टर वाट थार्वी–फ्रानसिस हिउबर इत्यादि सन् १२५२ ई० तक जांचते देखते रहे ।

मधुमक्खियोंकी तीन जातियां — उन्होंने जान लिया कि मधुमक्खियोंके छत्तेमें तीन जातिकी मक्खियां बसती हैं । प्रथम तो परिश्रमी मक्खियां हैं । दूसरी सुस्त तथा निकम्मी मक्खियां हैं । तीसरी राजकुमारी तथा बेगमें हैं । जो बेगम मक्खियां हैं वे अण्डे देती हैं जो बेकाम तथा सुस्त नर मक्खियां हैं उनके सम्भोगसे अण्डे उत्पन्न होते हैं । परिश्रमी मक्खियां प्रत्येक दौड़ धूपके कार्य्य किया करती हैं, मधु इकट्ठा करना उन्हींका कार्य है ।

इनके अग्रमें एक विचित्र प्रकारका सूँड़ होता है । जिसमें मधु भर लाती हैं । सूँड़में चालीस पेच होते हैं, उनके चारों ओर बहुत सुन्दर बाल उगे होते हैं। सूँड़ोंके पांच भाग होते हैं. वे भाग इस प्रकार होते हैं कि, दो भाग तो उनके दोनों ओर और एक भाग उनके बीचमें होता है। बीचके भागमें मधु इकट्ठा होता है। सूँड़के चारों ओरके बाल जिह्वाके समान हैं जिससे मधु चाटा जाता है। सूँड़ जो कुछ अपनी ओर खींचे उसको सुरक्षित रीतिसे लाकर मधुके खजानेमें एकत्रित कर देती हैं । इसके सुन्दर मुँह अनेक कार्यके लिये बने हुये हैं । इसकी छः टांगें होती हैं । दो बिचली टांगें छोटी होती हैं, शेषकी चार टांगें बहुत लम्बी होती हैं अगली टांगोंमें प्यालेके समान कुछ गड़हे मधु एकत्रित करनेके लिये बने होते हैं । इसके एक पांवमें कँटियांसी लगी होती है । जिससे मधुके छत्तेपर सरलतापूर्व्वक घूम फिर सकती हैं । इसके पेटमें तीन भाग होते हैं–एक तो मधु एकत्रित करनेकी थैली, एक मोमकी थैली और तीसरी विषकी थैली होती है, जो थैली मधु एकत्रित करनेके लिये है सूँडसे मधु लेकर उसमें रख छोड़ती है । यह उसके आगे और नीचे बनी रहती है । उसके आगे एक थैली बनी है । उसकी राहसे उसमें मधु पड़ता है, वह मधुमक्खीका भोजन है, वह पेटमें जाकर हजम हो जाता है उसीसे उसका जीवन है जो भोजन करती है, उसको जब वह बाहर निकालती है तो मोम हो जाता है ।

उसी पेटके पास एक हथियार है जिसको डंक कहते हैं वह भी बहुत विचित्र गुणके साथ बना है । दूरबीनसे देखा गया है कि, उसकी बनावट बहुत विचित्र है । उस हथियारमें दो डंक बने हुए हैं । दोनों डंकोंके लिये एक नेयाम बनी हुई है । वह डंक मारा चाहती है तो डंकको नेयामसे बाहर निकालती है डंक मार चुकनेके बाद नेयामसे विष खींचकर डंकमें भर देती है । डंककी जड़में दश बाल होते हैं, जिनके बलसे डंक बहुत पुष्ट है शीघ्र निकल नहीं सकता. हलाहल विष उनमेंसे निकलनेका मार्ग रखता है जिसके जोरसे दूसरे जीवको मृतक कर देती हैं । इस मक्खीकी पांच आंखें होती हैं, तीन आंखें तो उसके शिर पर होती हैं दो आंखें दोनों ओर होती हैं । दोनों आंखोंके बीचसे दो नलियां निकलती हैं वे दोनों ओर टेढ़ी होती हैं वे छूनेकी तीक्ष्ण इन्द्रिय हैं । वस्तुतः ये दोनों यन्त्र मक्खीके अत्यन्त उपयोगी हैं इन्हींसे अपनी कोठरियां बनाती हैं, अपने बच्चोंको खिलाती हैं, अपने खजानेको इकट्ठा करती है इसीसे वह अपने सजातीयको पहचानती है इस मकखेके छत्तेकी कोठरियां छः पहले होती हैं उनमें मधु रक्खा जाता है, उससे बच्चोंका लालन पालन होता है, छत्तेमें दो दो मधु घर एक दूसरेकी ओर पीठ किये हुये होते हैं बहुत सिलसिलेवार बराबर होते हैं । इन दोनों कोठरियोंके बीच जो स्थान होता है उसमें दो मक्खियां स्वतंत्रतापूर्व्वक रह सकती हैं । चाहे एक दूसरेके निकट अथवा पृथक पृथक् रहें । प्रत्येक कोठरी बहुत सुन्दर बनी हुई होती हैं, एक दूसरेसे तनिक भी बडी अथवा छोटी नहीं होती हैं । इस कारण थोडेही व्ययमें कोठरी बनानेका काम हो जाता है इसी प्रकार गृहकी बनावट बराबर बनती चली जाती है जैसेही एक मधुगृह युक्तिपूर्वक निर्मित किया जा चुका कुछ कोठरियां बन चुकीं उसी समय दूसरा और तीसरा बनना आरम्भ होता है । इसी प्रकार सब युक्तिपूर्वक बनता चला जाता है । जब तक छत्तेका कार्य सम्पूर्ण न हो ले मक्खियोंमेंसे केवल एक मक्खी मधुगृहकी नींव डालती है । नींव डालनेवाली मक्खी मोटे मोमको कुछ अपने कुछ दूसरेसे लेकर मिलाती है । उस मोमको अपने पिछले पावोंसे खींचकर अगले पांवसे पकड़ ले आती है अपने मुँहकी तरीसे नरम तथा तर करती है जो मोम अन्यान्य मक्खियां उस गृह बनानेवाली मक्खीको देती हैं, उसको लेकर मकान बनानेवाली मक्खी अपने मधुगृहको बनाती जाती है । इस प्रकार एक दूसरीकी सहायक हुआ करती हैं जो कोठरियां सुस्त तथा निकम्मी मक्खियोंके लिये बनती हैं वे कुछ बड़ी होती हैं अन्यान्य कोठरियोंकी अपेक्षा सुदृढ़ और मधु-गृहके नीचे होती हैं । सबसे पीछे शाही महल होते हैं इनमें रानी रहती हैं । ये रानीके रहनेकी कोठरियाँ शहदखानेके बीचोबीच होती हैं । गिनतीमें तीनसे

बारह कोठरियां प्रस्तुत हो चुकनेके बाद बेगम अण्डा देने लगती है । बेगमोंके बच्चा देनेकी विचित्र युक्ति है । वे सब घरोंमें सुस्त नर मक्खियोंसे कुछ सम्बन्ध नहीं रखतीं । पर जब बाहर फिरती हैं तो नर मक्खीसे मिलती हैं ।

हिउबर – बहुत बड़ा विद्वान् था उसने इस विषयको बहुत जांचकर लिखा है. वह कहता है कि, वे छत्तेके बाहर संयुक्त होते हैं एक बारके सम्भोगसे मक्खियाँ दो मौसम तक बच्चा देती रहती हैं । एकही मौसममें लाख बच्चे देती हैं जिन अण्डोंसे परिश्रमी मक्खियाँ उत्पन्न होती हैं उनकी बहुत रक्षा की जाती है उन बच्चोंका लालन पालन फूलोंके रस तथा मधुसे होता है, दाई मक्खी उनको पालती है । दाई मक्खीका यही काम है कि, सदैव बच्चोंकी रक्षा तथा सेवा किया करे, बराबर ग्यारह मास भी परिश्रमी मक्खियोंके अण्डे देते नहीं बीतते कि, रानी मक्खियां फिर राजकुमारियोंका अण्डा देने लगती हैं इसी सेवामें संलग्न रहती हैं । शाहजादी मक्खियाँ फूलके रस अथवा खराब मधुको अच्छा नहीं समझतीं उनके लिये अवश्यही उत्तम मधुका प्रयोजन होता है । मधुमक्खियां बहुत नमक-हलाल होती हैं । अण्डेकी अवस्थासे लेकर जबतक रानी मक्खीका पूरा स्वरूप होता है उसमें कुल सोलह दिन लगते हैं । सोलह दिनोंके बाद मक्खीका पूरा स्वरूप बन जाता है । इनको एक समयमें एक रानीका प्रयोजन होता है । वस्तुतः बादशाह होनेमें एकसे अधिक अधिकारी होनेसे बहुत कष्ट होता है । इस कारण जब तक सिंहासन खाली न हो तबतक रानी मक्खी एक घरमें बन्द रहती है । इसमें बहुत बड़ा कारण यह है कि, जिसके लिये एकसे अधिक रानी निकाली नहीं जाती क्योंकि, एकही समयमें दो रानी बाहर निकाली जाने पर एककी मृत्यु निश्चित है । मक्खियोंकी सैन्य चलती है तो अगवानीके लिये केवल एक मलका होती है । मक्खियोंकी मुखिया वह आगे होती है । प्रायः अनेक रानी मक्खी होती हैं जब दो रानी मक्खियोंमें साक्षात् होता है तो भयंकर युद्ध उपस्थित होता है । उनकी गिनती पहचानी जाती है । मक्खियोंके नियत होनेमें एक विचित्र कौतुक होता है। यदि कभी उनका बादशाह खो जाय कोई दूसरा वारिस न बचे तो बहुत आयोजन होता है । इस कारण एक मजदूरको चुनकर शाही महलमें प्रवेश कर देते हैं इसको राजसी भोजन कराते हैं । अन्तमें वही उनकी मलका होती है. इस प्रकार लिखा है कि, अच्छे भोजनके कारण वह मक्खी मोटी ताजी और तेजस्वी हो जाती है । केवल इस भोजनमेंही यह गुण है उसीकी यह प्रशंसा है कि, मजदूरको रानीके स्वरूपका बना देती है । अगस्तके आरम्भमें यह अधिक अण्डे देती है, जब अण्डोंका आधिक्य हो जाता है तो निकम्मी मक्खि-

योंकी कोई आवश्यकता नहीं रह जाती । परिश्रमी मक्खियोंके लिये जाड़ेका कड़ाका असाध्य है । वे सब मिलकर सुस्त मक्खियोंसे यह सलूक करती हैं कि, वह मेहनती मक्खियां निकम्मी मक्खियोंको मार डालती हैं । मधु गृह भन-भनाहटके शब्दसे भर जाता है । सुस्त भरी मक्खियां और चालाक मक्खियां आपसमें लड़ाई करती हैं । परिश्रमी मक्खियां सुस्त मक्खियोंको मार डालती हैं, सुस्त मक्खियोंका उद्योग व्यर्थ होता है । परिश्रमी मक्खियोंके डंक उनके शरीरसे छिदकर पार हो जाते हैं मरे हुओंके पृथिवीपर ढ़ेर हो जाते हैं । बेल्कटन साहबके कथनानुसार यह कीड़ा स्वभावतः बनैला है ।

यह सारा हाल बोटन साहबकी नेचरल डिक्शनरी और दूसरी अङ्गरेजी पुस्तकोंमें पूर्ण रूपसे लिखा हुआ है, यहाँ तो संक्षेपसे लिखा गया है ।

जलचर ।

मैं जलके जीवोंकी बुद्धिका वर्णन क्या करू, इनकी बुद्धिमानीकी बहुतेरी बातें लिखी हैं परमेश्वरने इनका खाना पीना पानीही बनाया है यद्यपि वे आखेट भी करते हैं तो भी पानीके भोजनसे पानीही होकर रहते हैं । इनकी बुद्धि स्थलके जीवोंसे कम नहीं है ।

घड़ियाल बिल्ली और लोमड़ी—ली साहबने लिखा है कि, एक मनुष्यने अमेरिका देशका भ्रमण करते हुये घड़ियालके बच्चेको पकड़ लिया उसने उसको भली प्रकार पाला । यहाँतक कि, घड़ियाल कुत्तेकी तरह उसके पीछे २ फिरा करता था । एक बिल्लीके बच्चेसे उसकी दोस्ती हो गई । न्यूयार्क नगरमें बिल्ली आगके सामने तापनेको बैठती तो घड़ियाल भी उसके समीप जाता उसपर अपना शिर धर कर सो जाता । इस बिल्लीकी जुदाईसे घड़ियाल बहुत बेचैन हो जाता आपसमें साथ रहनेसे प्रसन्न रहते । एक लोमड़ी थी उससे घड़ियाल अप्रसन्न रहा करता था । क्योंकि , लोमड़ी कुछ ऐसे खेल किया करती थी जो घड़ियालको नापसन्द थे इसी कारण उससे रुष्ट रहता था रुष्ट होकर लोम-ड़ीको दण्ड दिया करता था । पर दण्डदेनेमें अपने मुंहको काममें नहीं लाता था केवल अपनी पूंछद्वारा उसको थोड़ा सा दण्ड दे देता था क्योंकि, यदि जोरसे लगाता तो लोमड़ी उसी समय मर जाती ।

घरेला घड़ियाल—आक्सफोर्डकी सड़कके पास एक स्त्री रहती थी । उसने एक घड़ियाल पाला था मुँह खोलकर उसको खिलाया करती थी । उस घड़ियालको वह बहुत प्यार किया करती थी उसको वह आगके सामने ठोंकती वह भी घरैला होकर उसके साथ उसके घरमें रहा करता था ।

मानुषी भोगी—मैंने सुना था कि, किसी स्त्रीको एक घड़ियाल नहानेके समय पकड़ ले गया। उसका बस्त्र खुलकर जलमें बह गया वह नङ्गी रह गई। उस घड़ियालने लेजाकर एक जगह किनारे रख दिया। वह स्थान परदे में था वहां नदीका किनारा ऊँचा था। दिखाई नहीं दे सकता था घड़ियालने उस स्त्रीके साथ सम्भोग किया। उसको खाया नहीं, वह ऐसा ही किया करता। ऐसा करनेके पीछे वह नदीमें सैर करनेको जाया करता मछली लाकर उसको दिया करता, स्त्री बहुत विवश थी एक सप्ताहके पीछे कई मनुष्योंका शब्द नदी किनारे आने लगा स्त्रीने चिल्लाकर कहा कि, मैं इस दुरावस्थामें फँसी हूँ, यहाँ आकर मुझको निकालो। उन मनुष्योंने ऊपरसे नीचेको रस्सीके छोरसे इसको कपड़ा दिया वह अपनी जान लेकर अपने घर पहुँची। जिस समय स्त्रीको निकाला गया उस समय मगर नदीकी सैर कर रहा था वहां नहीं था।

अगस्तका मछलियोंसे शकुन—प्राचीन कालमें मछलियोंसे शकुन जाना जाता था और यह अनुमान किया जाता था कि, मछलियाँ त्रिकालज्ञ होती हैं। जिस समय सिसली टापूके लोगोंसे लड़ाई होरही थी, उस समय अगस्तस बादशाह समुद्रके किनारे टहल रहा था। उसी समय समुद्रसे एक मछली निकलकर उसके पैर पर गिर पड़ी। उस समय सेकेस प्राम्पीस बादशाह समुद्री विजयोंसे बहुत घमण्डी हो रहा था अपनेको पेचिओन देवताका पुत्र मानता था। अगस्तसने ज्योतिषियोंसे पूछा कि, पैरपर मछली गिरनेका क्या मतलब हो सकता है। तो उन्होंने उत्तर दिया कि, समुद्रोंका राजा आपके चरणोंपर गिर पडेगा ठीक वैसाही हुआ इस राजाने सेकेस प्राम्पीस पर विजय पाई।

भूचर मछली—कितने प्रकारकी मछलियाँ घोसले बनाती और वृक्षपर चढ़ जाती हैं नदीसे निलककर इतनी दूर २ तक यात्रा करती हैं कि, लोग समझते हैं कि वह आकाशसे गिर पड़ी हैं। इतना हिल मिल जाती हैं कि, लोग अपने हाथसे चारा देते हैं वह भी मनुष्यके हाथमें आजाती हैं। अपने रहनेके लिये अच्छी जगह ढूंढ़ती हैं। उनमें कितनीही बातें बुद्धिमानीकी पाई जाती हैं।

तूरा—एक प्रकारकी मछली है, लोग जिसको अन्तर्यामिनी समझते हैं। क्योंकि आंधी आती है। जहाज डूबता है तो वह जहाजके पास होती है। डूबते हुये मनुष्यको अपनी पीठपर लादकर स्थलमें बैठाकर चली आती है। यह बहुत भली मछली है। मनुष्योंका प्राण बचाती है। मछलियाँ रातको दूर २ की यात्रा करती हैं कभी २ कष्टके समय दिनमेंभी सफर किया करती हैं।

कटल फिश या ईङ्कफिश—डीवर्डसके टापूमें एक प्रकारकी मछली

होती है। जिसको कटलफिश तथा ईङ्कफिश (स्याही मछली) भी कहते हैं। ईङ्कफिश अथवा स्याही मछली इस कारण कहते हैं कि, उसके गलेके नीचे स्याहीकी एक थैली होती है। उसमें एक मसाला स्याह स्याहीसे भी बहुत काला भरा रहता है। जब मछुये इस मछलीको मारनेके लिये पीछा करते हैं, वह जान लेती है कि, अब मेरा बचना किसी भी प्रकार नहीं हो सकता तो थैलीसे स्याही निकालकर पानीमें फेंक देती है, जिससे सारा जल काला हो जाता है। पानीके काले होनेके कारण मछुओंको नहीं सूझता कि, मछली किधर गई। इस युक्तिसे मछली मछुओंके हाथसे बचकर अपने घर पहुँच जाती है। इसमें चेमेलियन साँपकी तरह एक और भी गुण है कि, अपना स्वरूप बदल लेती है। क्योंकि, उस स्याहीमें यह छिप जाती है। स्थिर हो जाती है। कुछ कालके बाद जैसे चूहेके पीछे बिल्ली दौड़ती है। इसी प्रकार शिर निकालकर अपनी राह लेती है। वह अपने पीछे स्याही छोड़ती जाती है जिसमें पानी काला होनेसे उसको कोई देख नहीं सकता। उनमें कोई २ तो इतनी बलिष्ठ होती हैं कि, मनुष्यकी बाँह तोड़ देती हैं।

परवाली शैलानी—एक प्रकारकी परवाली मछली है। वह साँझको नदीसे निकलकर सारी रात स्थलकी सैर किया करती है। सबेरा होनेके पहलेही नदीमें घुस जाती है।

एक और मछली है जिसकी उड़ान इतनी नहीं है। वह थोड़ी देरतकही स्थलकी सैर कर सकती है।

ऐङ्गलरफिश या सीड बिल—एक प्रकारकी मछली है ऐङ्गलर नाम मछुवा और फिश नाम मछली। यह इङ्गलिस्तान और योरोपके समुद्रोंमें होती है। तीन फीटसे भी अधिक लम्बी होती है उसका शिर बहुत बड़ा होता है। उसके मुंहपर दो शाखें होती हैं जिसको वह इच्छानुसार हिलाती है। यह खाती अधिक है पर परिश्रम नहीं कर सकती सुस्त है, खाना तो बहुत है पर परिश्रम किया नहीं चाहती, फिर पेट कैसे भरे। इस कारण कपटको काममें लाती है। ऐसी युक्ति करती है कि, जहाँ वह रहती है वहाँसे कुछ मिट्टी निकालकर पानीमें घोल देती है, जो मिट्टी पानीको गँदला कर देती है। इस गँदले तथा अन्धकारमय पानीके भीतर वह छिपकर बैठती है कि, किसी मछलीको दिखाई नहीं देती। उसको कोई देख नहीं सकता, पानीके ऊपर उसके पाखोंका नोक थोड़ा थोड़ा २ दिखाई देता है जलपर ऐसा जान पड़ता है कि, मानों छोटी २ मछलियां फिरती हों। धूर्तताके इस जालको फैलाकर बैठती है प्रतीक्षा किया करती है कि,

कोई मछली उसकी चालमें आवे। कोई दूसरी मछली आई। देखा कि, पानी-पर छोटे २ कीड़े फिरते हैं, वह उनको खाने दौड़ती है बस। उसी समय यह ऐङ्गलर मछली पानीके नीचेसे निकलकर उस मछलीको चट कर जाती है। इस छलसे अनेक मछलियोंको फँसाया करती है। इस युक्तिसे उसका पेट नहीं भरता तो वीरताको काममें लाती है। मछलियोंको बलपूर्वक पकड़ती है। उसकी पकड़का छूटना कठिन हो जाता है। इसको शरीरका आधा शिर होता है।

धोखेसे बचानेवाली—हनुमानजी सञ्जीवन बूटी लेने गये थे कालनेमि राक्षस रावणकी ओरसे हनुमानजीको धोखा देने मुनि वन मार्गमें बैठ गया हनु-मानजीने कालनेमिसे पानी मांगा उसने तालाब बता दिया वहाँ उनका पैर एक मछलीसे छू गया वो अप्सरा होकर स्वर्ग चली गई। उसने हनुमानजीसे कहा कि, महाराज! मुझे ऋषिने मछली होनेका शाप दिया था, मेरी नम्रता देखकर निवृत्ति भी बतला दी थी कि, राम दूतका चरण स्पर्श होतेही मुक्त हो जायगी। आपके चरण लगजानेसे मेरा शाप चला गया। जिसे आप मुनि मान रहे हैं। यह कालनेमि है आपको धोखा दिया चाहता है। आप इससे साव-धान हो जाइये। इतना कहकर अप्सरा चली गई, हनुमान्‌जीने कालनेमिको मार डाला।

पशु पक्षीके रूपमें ऋषि गण।

अनेकों सन्त महात्मा ऋषि मुनि पशु पक्षीका रूप धरकर भूमण्डल पर विचरा करते हैं। उनका पशु पक्षीका शरीर इच्छाकृत होता है वो किसीका किया हुआ नहीं होता न ऐसाही है कि, पूर्वके देहको त्यागकर उक्त देह ग्रहण किया हो किन्तु वही देह पशु पक्षीके देहके रूपमें परिणत हो जाता है जब इच्छा नहीं रहती। बहुतसे उच्च कोटिके व्यक्ति भी कर्म वश पशु पक्षियोंकी योनिमें गमन करते रहते हैं पर पूर्वके अभ्यासके बलसे उन्हें स्मरण बना रहता है हृदय प्रकाशित रहता है पर बाहिर नहीं दीखता। इन बातोंके देखनेसे यही विदित होता है कि, "साईंके सब जीव हैं कीरी कुंजर होय" सभी भगवानके हैं उसके लिये सब एक समान प्यारे हैं। राजर्षि भरतजीके आवागमनको लेकर कबीर साहिबने भी कहा है कि,

एक मोहके कारने, भरत धरे दो देह।
सो नर कैसे छूटि हैं, जिनके बहुत सनेह॥

यानी एक मोहके कारण भरत दो देह धारण करता है तो वे मनुष्य कैसे छूटेंगे जिनके अनेकों मोह मौजूद हैं अर्थात् अनेकों मोहेंवाले मनुष्य अवश्यही

अनेकों देह धरेंगे। ऋषिही क्यों ? देवगण भी पशुपक्षी तथा जलचर आदिके रूपमें मृत्युलोकमें विचरते हैं तथा कर्म वश आवागमन करते रहते हैं जो जाने सो। दूसरे अज्ञानियोंको क्या पता हो सकता है। ऋषिमुनि ही क्यों, अनेकों मनुष्य देहधारी प्राणियोंके स्वभाव पशुओं जैसे हैं। गोल्डस्मिथ साहिबने लिखा है कि, एक कुटुम्बके सब मनुष्य उगाल किया करते थे। विना इसके खाना भी हजम न होता था।

पशु पक्षी आदि जीव धारियोंका भजन।

सहस्रों ऐसे जीव हैं कि, पशुका रूप पाया है उनकी श्रेष्ठताका वर्णन करना अत्यन्त कठिन है। सहीह बुखारी व मुसल्लभमें रवायत अबूरीरासे है कि—

चींटियोंका भजन—एक बार हजरत मूसाने खुदासे अर्ज की कि—"ऐ परव रदिगार ! तू गुनहगारोंके गाँवको नष्ट करता है पर उसके साथ कितने अच्छे भी होते हैं, वह भी बिना अपराध उसके साथ नष्ट हो जाते हैं।" उस समय खुदाके पाससे कुछ उत्तर नहीं आया। एक दिन मूसाको गर्मी मालूम हुई जिसको सहन न कर सके, एक हवादार वृक्षके नीचे जाकर बैठ गये। वहाँ एक चींटीने काट लिया मूसाने क्रोधमें आकर सब चींटियोंको आग लगाकर जला दिया उस समय खुदाने कहा कि हे मूसा ! तू अपनी ओर नहीं देखता कि, एक चींटीके अपराधके कारण सब चींटियोंको जला दिया। यद्यपि ये सब चींटियाँ भजनमें निमग्न हो रही थीं।

मूसा और पक्षी—किसी दूसरी किताबमें देखा था कि, मूसाको अपने भजनका बड़ा अहंकार था, एक साँसमें चारसौ नाम जपता था। एक दिन जंगलमें वृक्षके नीचे बैठा था झरना बह रहा था। मूसाकी दृष्टि वृक्ष पर गई। देखा कि, एक पक्षी बैठा है, वह एक श्वासमें चार हजार नाम लेता है, उसको देखतेही मूसाका अभिमान जाता रहा उस पक्षीसे कहा कि, कुछ सेवा बतलाओ ? पक्षीने कहा कि पानी पिलाओ मूसाने नीचे चशमेंमें पानी दिखा दिया। पक्षीने पानीके ऊपर दृष्टि डाली पर भजनसे निवृत्त हुए बिना पानी पीनेको न उतरा। सामवेद सम्बन्धी किसी पुस्तकमें पशुओंके भजनके विषयमें जो सुना था। वो यहाँ लिखे देता हूँ—

बकरी—भजन करती है कि, हे प्रभु ! मुझको मेरे शत्रुओंसे बचा, मेरा कल्याण कर। वारम्बार उसका यही भजन और आशीर्वाद है।

तोता—वह भजन करता हुआ कहता है कि, हे प्रभु ! मैं तेरा कृतज्ञ

हूँ, क्योंकि तूने मेरा रंग हरा और चोंचे लाल बनायी है, माधव २ कहके मैं तेरा भजन करता हूँ।

भेड़—वीर २ कहकर पुकारती हैं कि, हे परमेश्वर ! मैंने क्या अपराध किया है कि, मैं विष्ठा खाती हूँ, हे प्रभु ! मुझको बचा ।

बैल—भजन करता है कि, ऐ मेरे उत्पन्न करनेवाले ! ऐ मेरे उत्पन्न करनेवाले परमेश्वर !! मुझको इस योनिसे मुक्त कर ।

चील्ह—भजन करती है कि, परमेश्वर ! न तेरा जन्म है न मरण, न तू कभी जाता है न आता है, तू सबका कल्याण कर्त्ता है । यह निरङ्कार निरङ्कार करके भजन करता है ।

पशुओंके भजनका वर्णन कौनकर सकता है ? सब गुप्तमें ईश्वरके भजनमें लगे रहते हैं, प्रगट भी उन लोगोंकी बोलीसे जान पड़ता है कि, सब भजन कर रहे हैं । जैसे तोता बोलता है तूही तुही तुही । पण्डुक बोलती है तू तू तू । मोर बोलता है या कयूम । सारस बोलती है या अजीज ।

कलगीदार छोटी चिड़या —जो गौरैयेसे भी छोटी होती है, उसके शिरपर कलगी होती है और जहाँ आदमी कम आते जाते हैं, उजाड होती हैं वहाँ रहा करती है । उसका मुख्य भोजन सूखी और नरम मिट्टी है । कभी कभी खरबूजा आदिकका बीज मिलजाय तो उसे भी खाती है । यह पक्षी ऐसी निर्भय होती है कि, मनुष्य उसके निकट फिरा करे तो भी नहीं डरती, यह रातभर भजन किया करती है । उसका शब्द है—तुही तुही निरङ्कार-तुही तुही निरङ्कार, पहर रात शेष रह जाती है ब्रह्म मुहूर्त्तका समय होता है । तो पृथ्वी और वृक्षको छोड़कर आकाशमें उड़ा करती है और "तुही निरङ्कार तुही निरङ्कार" ऐसा शब्द सूर्य निकलने तक किया करती है । दिन निकल आता है, थककर पृथ्वीपर गिर पडती है बहुत देर तक अचेत पडी रहती है, मुर्दोंके समान शरीरका कुछ भी चेत नहीं रहता, यहाँ तक कि, यदि किसी मनुष्य अथवा पशुके पगके तरे दब जाय अथवा कोई हिंसक पशु खा जाय तो भी कुछ चेत नहीं करती । कहते हैं कि, यदि कुत्ता उसको खाजाय तो पागल हो जाता है । वह अचेतसे सचेत होती है तब फिर अपने नित्यके भजनमें लग जाती है । ऐसे भजनानन्दीके समक्ष मनुष्योंका तपस्या कुछ नहीं है । यह पक्षी उजाड़में छोटे २ जलके डबरोंके किनारे रहती है उसका जल सूख जाता है तो उसकी नरम २ मिट्टी खाती है ऐसे समयमें भजन करती है कि, जिस समय तपस्वी और साधु लोग नींदके वशमें पड़के अचेत सोये होते हैं । यह सत्य पुरुषकी ओरसे भजना-

नन्दियोंके भजनके अभिमानका नष्ट करनेके लियेही उत्पन्न की गई है । कबीर साहिबने नींदको यमकी दासी बताया है कि—

साखी— निन्द कहे मैं यमकी दासी ।
एक हाथ मुँगरा एक हाथ फाँसी ।।

भजनानन्दी बछडा—मैंने सुना था कि, पञ्जाब जिला रोहतक बाँगर देशमें संवत् १९३६ में गायका बच्चा पैदा हुआ वह । उगाल भी करता था । राम राम भी कहता था, उसके राम रामके कहनेको सुनकर लोग बहुत भेंट चढाते थे ।

समय—जब एक पहर रात रह जाती है, तब सब जीवधारी परमात्माके भजनमें लग जाते हैं । कोई आधी रात कोई कोई सारी रात भजनमें लगे रहते हैं, परमेश्वरके अनन्त नाम हैं, उनमेंसे कोई न कोई नाम जपते रहते हैं ।

साँप—कभी २ देखा गया है कि, साँप सूर्य निकलने पर छतरीको फैलाकर हिलाता है ।

शिवका जपी—एक पक्षी गौरेयाके बराबर होता है वह दिनरात उच्च शब्दसे शिव २ कहा करता है ।

चिनगीबटेर—एक दूसरा पक्षी बटेरसेभी छोटा होता है वह भी शिव २ कहता अनुमान किया गया है इसको चिन्गीबटेर कहते हैं, यह उत्तर पहाड़में हुआ करती है । एक समय पहाड़से उसको कोई फिरोजपूरमें लाया पिंजड़ेमें रक्खा, उसकी बोलीपर बहुत लोग मोहित हो गये, उसको सब लोग प्यार करने लगे, जिसके पास वह पक्षी था उसको बड़े विनयके साथ अपने घरको ले जाया करते पक्षीकी मीठी २ बोली सुना करते । यह भजन करनेवाला पक्षी सबको प्यारा लगता था । मैं सर्वदा इस पक्षीकी बोली सुना करता था । दिनमें तो उसकी बोली सुनाई नहीं देती । शर्दीके दिनोंमें भी यह विशेष नहीं बोलती, शेष दिनोंमें जोर २ से शिवजी शिवजी पुकारा करती थी । यह पक्षी मेरे निवास स्थानसे पचास कदम की दूरी पर रहती है उसका नाम जपनेका सुनकर मुझे बड़ा आनन्द प्राप्त होता था । इस पक्षीको परमात्माने जैसा अनुराग भजनका प्रदान किया है वैसे बहुत कम भजनीक मिलेंगे ।

ऐसी एक दूसरी पक्षीको सुना कि, वह शिव शब्दको बड़े लम्बे और ऊँचे शब्दसे कहा करती थी ।

बोलियोंके अर्थ—एक पक्षी बोलती है—या बट्टह ! या बट्टह! एक बोलती है, पिता पिता । एक पक्षी कहती है अजीज ! अजीज ! बाढ़ बुला

बोलता है बाप बाप। पपीहा पुकारता है पी कहां। पी कहाँ !!!! काक बोलता है क–क क अर्थात् क–ब्रह्म क अर्थात् विष्णु। एक पक्षी बोलता है मौजूद अल्लाह। एक कहती है या हबीब तू अर्थात् एक तुही है दूसरा नहीं। सतलज नदीके किनारे एक पक्षी कहा करता है "हक्क सुर्रहु ! हक्क सुर्रहु" अर्थात् हे ईश्वर ! तुम्हारा भेद किसीने नहीं पाया। एक पक्षी सत्य ! सत्य बोलता है। कागके समान चील भी सुर्रह २ बोलता है। इन पक्षियोंकी नाना प्रकारकी बोलीसे उनमें भी मजहब पाया जाता है पुण्यात्मा पापी सब मालूम पड़ते हैं। त्रिखान पक्षी बोलती है या पाकजात, मुर्ग बोलता है सतगुरु तू एक। चिड़ियाको मैंने साफ बोलते सुना है वह काश्मीरके पहाड़में बोलती है, "हे साचे सतगुरु"। पंडुक बोलती हैं हक्क है। कबूतर साँस २ में हक्क २ कहता है॥

पशु इसी प्रकार भजनमें लीन रहते हैं। पशु और मनुष्यमें कुछ भेद नहीं जिसने पारखके साथ भजन किया वही मनुष्य पदको प्राप्त हुआ। नहीं तो मनुष्यका स्वांग बन जानेसे मनुष्य नहीं हो सकता, मनुष्यता सत्य ज्ञान और पारखका ही नाम मनुष्यता है, जिसमें ये नहीं हों वह कदापि मनुष्य नहीं हो सकता।

पशु और मनुष्योंमें बराबर ही गुण हैं, केवल तत्त्वोंकी तारतम्यतासे मनुष्य उन्नतिशील बनाया गया है, पशु किसी प्रकारसे उन्नति नहीं कर सकता। महात्माओंने विशेषकर कबीरसाहबने कहा है कि, केवल मनुष्य शरीरमेंही सत्पुरुषकी भक्ति द्वारा मुक्ति पारख प्राप्त हो सकती है। जब तक मनुष्य सत्य पदको प्राप्त कर सत्पुरुषकी भक्ति द्वारा पारख गुरुको पायकर अपने स्वरूपको नहीं पाता, तबतक कीड़े मकोड़े पशु पक्षी और मनुष्यमें कुछ भी भेद नहीं हैं एक आकृति मात्र का भेद है।

स्थावर और जङ्गमोंकी एकता—सब जड़ स्थावर जंगम अपने २ परमेश्वरके भजनमें लगे हुये हैं। यद्यपि स्थावरोंमें भजनका प्रमाण बहुत कम मिलता है। परन्तु सर्वथा ही नहीं मिलता यह नहीं कभी २ पता मिल भी जाता है। जैसा कि, कर्मोके चिह्नका वर्णन लिखते हुये मैंने चुनार गढ़के रामनामी वृक्षका हाल लिखा है।

प्रगट हो कि, सर्व स्थावर जंगम जीवधारी अपने ईश्वरका भजन करते हैं सबकी ओर परमात्माकी दृष्टि है। यदि कोई किसी पर अत्याचार करेगा, जिस पर अत्याचार हो वह चाहे वृक्ष हो चाहे मनुष्य, चाहे पशु हो, चाहे पक्षी, चाहे कीडा, मकोड़ा हो यहाँ तक कि, यदि जड़ पदार्थोंको भी व्यर्थ नष्ट करेगा

आवश्यकतासे अधिक उनको बरबाद करेगा तो उस पर परमात्माका कोप होगा उसका बदला देना पड़ेगा ।

जब सब जीवधारियोंकी आत्मा समान ही है इस कारण सब एकही सिद्ध हुये । केवल तत्त्व और गुणोंकी तारतम्यता एवं उलट फेरसे विभिन्नता दिखाई पड़ती है । अपने २ कर्मोंने भिन्न २ रूप रङ्ग कर दिये हैं इससे किसीका क्या अपराध है ? यह सब कर्मोंका दोष है ।

जो भजन करेगा वह बच जायगा नहीं तो काल बली न जाने क्या कौतुक दिखायेगा इस कारण सबको भजन करना चाहिये यही बात इस मुसद्दममें भी कहते हैं ।

अरे तोता भजन बिन खाया गोता । फँसे कंपेमें नाहक प्राण खोता ।।
अरे मैना पकड जो बाज डैना । न आवे काम तेरी मीठी बैना ।।
अरे तूती पड़ेगी शिरपै जूती । तू सारी रात गाफिल होके सूती ।।
फिरे यम दूत तेरे शर पै लुरका । भजनकरले सजनकबीर गुरुका ।।१।।
अरे बकरा तू क्या अकरा फिरे रे । कभी तलवार गरदन पर फिरेरे ।।
अरे मुर्ग़ा तू क्या बाँगको उठावे । तेरे गल पर छुरी काजी चलावे ।।
अरे मच्छी रसातल घर बनाये । वहाँ भी जालमें धीवर फँसाये ।।
जहां जाल तहांले संगका टरका । भजन करले सजन कबीर गुरुका ।।२।।
अरे चण्डूल कीन्हा घर खजूरी । वहां भी सांप जाके पङ्ग तूरी ।।
अरे बन मोर क्या भूला तू सोभा । गड़े एक दिन तेरे दिलका खोबा ।।
अरे बुलबुल तू क्या भूला संगयारी । रहेगा चार दिन मौसम बहारी ।।
न जाना भेद तु उस धाम धुरका । भजन करले सजनकबीरगुरुका ।।३।।
फँसेगा फन्दमें फन्दक फसावे । तुझे पिंजरेमें कैदी सो बनावे ।।
न तू रहेगा न यह पिंजरा रहेगा । कहो तू लालसे जा क्या कहेगा ।।
हुये सुमिरन बिना तेलीके बैला । फिरा दिन रात घरही बीच सैला ।।
महाराजा लखो नर नाग सुरका ।भजन करले सजनकबीरगुरका ।।४।।
अरे मूसा तू क्या बिलमें है घूसा । न पावे ठौर जो हैं राम रूसा ।।
पकड़ एक दिन तुझे नोचेगी बिल्ली । करेगी सो तेरी रग सारी ढिल्ली ।।
अरे गदहा हुआ बदहा जगतमें । दीन्हा चितको हरिके भगतिमें ।।
परम पुरुष बसैया सन्त उरका ।भजन करले सजनकबीरगुरुका ।।५।।
तू हाथी मांस लादे बेस पाथी । पड़े कुवेंमें भागे सङ्ग साथी ।।
अरे घोडा पडेगा लाख कोडा । जिधर चाहे उधर धर बाग मोडा ।।

अरे ऊँटा लदे और नाक नाथा । न छोडेगा अब धुनो अपना माथा ।।
शरणले हैं जो साहब तीन पुरका । भजन करले सजनकबीरगुरुका ।।६।।
न विद्या वेद वाणी काम आवे । जवां शिरीं जियादातर फँसावे ।।
हुए बदमस्त विद्या रूप धनके । फिरे हंकारमें मगरूर मनके ।।
नहीं दिलपर जो धीरज रहेगा । तो हजरत बारगहमें क्या कहेगा ।।
हुई पहचान हरसे कालमुरका । भजन करले सजनकबीर गुरुका ।।७।।
तुही गुरु जगतका बन्धन कटैया । तुही सब द्वन्द फन्दाको हरैया ।।
नहीं तुझसा कोई दाया करैया । तु है वैरीको पीरी पै डरैया ।।
जो आजिज अपने पियाको भावकीजै । सो सारे अङ्गमें सो घाव कीजै ।।
उपरसे पीस करदे लोन बुरका । भजन करले सजनकबीरगुरुका ।।८।।

सप्राण स्थावरादि ।

जङ्गमोंकी तरह स्थावर और जडोंमें भी जीव है वे भी जीव बिनाके नहीं है, यदि विचारके साथ देखा जाय तो संसारके सभी पदार्थोंमें जीव सत्ता मौजूद है । यदि यह कह दिया जाय की, सारी सृष्टिही जैव है तो कोई अत्युक्ति न होगी । पौर्वात्य, पाश्चात्य, प्राचीन और अधुनिक सभी वैज्ञानिकोंने इस बातको मुक्तकण्ठसे स्वीकार किया है एकही जीव संसारसे स्थावर जङ्गम जड और चैतन्य सब कुछ बन जाता है । यद्यपि यह बात विशेषज्ञोंसे छिपी हुई नहीं है परन्तु आज भी उन व्यक्तियोंकी संख्या अधिक है जिन्हें कि, इन बातोंमें घोर सन्देह है, इसी कारण हम यहाँ यह सिद्ध करना चाहते हैं कि, कोई भी निर्जीव नहीं है । जड चेतन ये सभी जीवोंके ही भेद हैं कर्म विपाकोंके अनुसार जीवही सब कुछ बनता चलता है । अब हम कुछ उनको दिखाते हैं जिनमें जीवसत्ता प्रत्यक्ष दीखती हैं ।

तारा और पालपी ।

पालपी मछलीमें प्रत्यक्षरूपसे किसी प्रकारकी जीवित शक्ति जान नहीं पड़ती, न उसके शिर तथा आँखे हैं, न श्वास लेतीही जान पडती है, न उसमें रक्त संचालन जान पडता है । केवल एक स्वच्छ डला जान पड़ता है, जिसमें थोड़ा प्राण धीरे धीरे चलता जाना जाता है, इसकी अनोखी कहानी है । यदि उसमेंसे एक टुकडा तोड़ा अथवा टूट जाय वह उसी जगह पानीमें पड़ा रहे तो वह भी उसी पालपीके स्वरूपका हो जाता है। इस मछलीके शरीरमें अनेक चिन्ह

होते हैं । यदि कोई उसको काटे अथवा टुकडा २ करे तो जितने दाग उसकी देहमें होते हैं सब पालपीके स्वरूपकेही हो जाते हैं । इस जानवरमें यह विचित्र गुण है । उसको पेड़ पल्लवसे पृथक करना कठिन है, पालपीके अण्डेसे वृक्षकी शाखायें निकलती हैं जैसे बीजसे वृक्ष उगता है उसकी जड़ भी प्रतीत होती है ।

विद्वानोंका मत—इसमें नलके समान शाखायें होती हैं जिसके द्वारा उसको भोजन पहुँचता है, लोग इसे बहुत कालसे जीवधारी वृक्ष समझते थे । पर सन् १६९९ ई० और १७१७ ई० तक बहुत बडे विज्ञानिकोंने निश्चय कर लिया कि, इसमें जीवनशक्ति है । प्लेटेनी और अर्सता तालीस नामक विद्वानोंने भी इसे जीवधारी ही कहा है । वह जो जीवधारी वृक्ष कर कहलाता था अब पालपी मछलीके नामसे प्रसिद्ध है । तारा नामक मछली भी इसी प्रकारकी होती है ।

एनीमोन ।

एक प्रकारका जीवधारी है, प्रायः समुद्रके किनारे पहाड़ोंके चट्टानोंके नीचे जहाँ कि, ज्वार भाटा आया करता है वहीं पाया जाता है । यह पश्चिमी समुद्रोंके किनारे सुनहरी फूलोंके खिले हुये गुच्छोंके समान दीख पड़ता है, वहाँ वाले उसको जीवधारी फूल बोलते हैं । वह भी खिला हुआ दीख पड़ता है मानो मुरब्बाका डला जमा हुआ हो । उनमेंसे गायके दुमके समान चढाव उतराव बने हुये होते हैं जो उनके मुखके समान मालूम होता है प्रत्यक्षमें तो वह जडके समान शक्तिहीन जान पडता है पर ऐसा खाऊ होता है कि, नदीके लहरके हटतेही मुंहको पसारकर सन्मुख आये हुये सभी कीड़े मकोड़ोंको खाकर, ज्योंका त्यों स्थिर हो जाता है । दूरबीन यन्त्रसे देखा गया है कि, उनके मुंहके निकट किसी प्रकारकी खटखटाहट होवे तो, उनके मुखसे एक प्रकारका शब्द होने लगता है मुंहके तार हिलते देख पड़ते हैं यद्यपि इस जीवधारीमें देखनेकी कोई इन्द्री नहीं जान पड़ती तो भी प्रकाशकी अधिक्यतासे बहुत घबराता है । इसमें अपनी जातिकी उन्नति करनेकी एक आश्चर्यमय शक्ति जान पडती है । यदि उसके शरीरको ऊपर नीचे आड़े ठाडे किसी प्रकारसे काटा जावे तो उसके सब अंश वैसेही जानवर हो जावेंगे । उसके मुखसे जीवित बच्चे भी उत्पन्न होते हैं मुखसे निकल पासके चट्टानपर जाकर जम जाते हैं उनसे फूलकी कलियोंके समान अनगिन्ती बच्चे उत्पन्न होते हैं इसी प्रकार इस प्राणीकी उन्नति होती रहती है । इसका रङ्ग फीका, लाल तथा हरा होता है, इसका मुख किनारे पर

जान पडता है। जब पूर्ण वृद्धिको प्राप्त हो जाती है तो गुलाबके फूलके समान खिला देख पडने लगता है।

प्राणधारी फूल।

इसी प्रकारके होते हैं इन्हींका यह भी एक प्रकार है उनमें सींग निकला होता है। इस प्रकारके फूल प्रायः पश्चिमी समुद्रोंके तटपर होते हैं।

एनथो जुआ—एक फूलका वृक्ष है, उसे भी प्राणधारी फूल कहते हैं। वह एनथो जुआ फूल भी है, जीवित स्वभाव भी रखता है। उसमें स्पर्श शक्ति जान पड़ती है। चलनशक्ति भी थोडी होती है, भोजन भी करता है। जो चूसता अथवा निगल जाता है उसको पचा भी लेता है। इस प्रकारसे यह फूल प्राणधारियोंकासा स्वभाव रखता है।

एनटेनिया—एक फूल होता है, प्रायः समुद्रोंके किनारे पत्थरोंके चट्टान पर पड़ा रहता है, उसकी उत्पत्ति भी चट्टानोंपर ही होती है। उसका रूप गावदुमाकार नलके समान होता है, जड़ गोल होती है, नलके नीचे जो पीला दीख पड़ता है वही उसका पेट है। यह प्राणधारी फूल उत्पन्न होकर अलग होता है, यह चिकना लचकदार शुद्ध साफ और प्रकाशित रहता है।

जो फिस्टस—एक जान दार फूल है यह जलमें होता है इसे प्राणिधारी और फूल दोनों माना गया है, ये अनेक प्रकारके होते हैं, यह अंधेरी रातमें अपने मुखसे गंधका पदार्थ और प्रकाश प्रकट करता है जिसका प्रकाश चारों ओर फैल जाता है, उससे मल्लाहोंकी डोंगे रत्न जटित दीख पड़ती हैं। यह प्रकाश इन्हीं जानवरोंका है इनमें कितने ही छोटे तथा कितनेक बहुत बड़े होते हैं। ये पानीपर तैरते फिरते हैं कोई २ तो ऐसा जान पड़ता है कि, मानों अग्निका गोला जीवितहोकर पानीपर तैर रहा हो ये झुंडके झुंड एकही साथ तैरते फिरते हैं।

बेलिमेन्स।

एक प्रकारकी धातु अथवा पत्थरके टुकड़े होते हैं। ये प्रायः समुद्रके किनारे पड़े रहते हैं, उनके देखनेसे बडा आश्चर्य होता है उनकी उत्पत्ति के विषयमें कुछ भी अनुमान नहीं हो सकता। विज्ञानिकोंकी बुद्धि भी चक्करमें पड़ी हुई है कि, उसको पत्थर धातु अथवा जानवर क्या कहा जावे। इसके विषयमें अनेक मतवाद हो रहा है, कोई पत्थर कहता है, कोई पथरीली चुम्बक बोलता है, कोई बिल्लोर सुनाता है, कोई धातु ठहराता है, कोई हड्डी बतलाता है। प्रत्यक्षमें तो एक हड्डीका टुकड़ा देख पड़ता है पर प्राणधारिये इसमें बहुत गुण जान पड़ते हैं यह जीवधारी पत्थर पानीपर तैरता है, इधरसे उधर जाकर अपना

आखेट खोजता है, डूबता है निकलता है अनेक प्रकारसे अपना कार्य्य सिद्ध करता है। सब रूप रङ्ग उसमें देख पड़ते हैं जीवित शक्ति भी जान पड़ती है।

ऐनकेरेनेट।

एक धातुका टुकड़ा है देखनेमें नीलक नलकासा होता है। शाखायें फूटती हैं, उँगलियोंके समान गिरह होती है। सब शाखायें जीवित होती हैं, तारा मछली तथा मूंगा आदिकी तरह यह भी प्राण रखता है।

मुंगिया या कोरल।

मुंगिया पत्थर जिसे कि, अंगरेजीमें कोरल भी कहते हैं, समुद्रके तट पर टुकडा मिलता है समुद्रमें जीवित होता है, पानीसे मिला हुआ कठिन चट्टानोंकी तरह होता है। हिन्द महासागरको छोड़कर दूसरे गहरे समुद्रोंमें पाया जाता है। कोसोंतक लम्बी २ चट्टानके ऊपर कहीं पानी पर तैरता हुआ और कहीं पानीके अन्दर एवं कितने जीवित और कितने एक मुर्दे पाये जाते हैं, पानीके अन्दरके मूंगे जीवित होते हैं, उनका रंग सफेद होता है पर जब वह बाहर निकाले जाते हैं तो लाल हो जाते हैं। टगरू जावाके मूंगे बड़ेही गुणवान् होते।

स्पंज।

दरियाई पदार्थ है। बहुत दिनोंसे इस बातपर वाद विवाद हो रहा है कि, यह स्थावर जंगमोंसे कौन है? सन् १८४८ ई० में यह सिद्ध किया गया था कि, यह स्थावर है पर कितनोंने यह निश्चय किया है कि, यह प्राणधारी है। बहुत छिद्रोंवाला लचकदार होता है। बहुतसा पानी सोखकर फिर छोड़ देता है। इसलिये वह बहुत कार्योंमें काम आता है।

स्पंजकी पहचान—यह है कि, जितनाही हलका हो उतनाही अच्छा होता है। जिन टापुओंमें जिवकिया लोग इसको निकालते हैं वहाँ उसका रूप कुछ और ही होता है। उसके पंजे दृढ़ होते हैं वे क्रमशः बढ़ते हैं। जो यहाँ काममें लाया जाता है ये सब उसकी हड्डियां होती हैं।

लाजवन्ती।

लाजवन्ती एक पौधा है, यह भारतवर्षमें अधिकता के साथ पाया जाता है, इसमें भी प्राणधारियोंकेसे गुण पाये जाते हैं। पर स्पर्शसे यह जीवधारियोंके समान लजा जाती है इसी कारण यह लाजवन्ती कहलाता है।

सूर्य्यमुखी।

जिसको सभी भारतवासी जानते हैं। यह सूर्य्यके साथही साथ घूमा करता है जिधर सूर्य्य जाता है उधरही उसका भी मुख हो जाता है। इसी तरह

कमल और कुमोदिनी भी क्रमशः सूर्य्य चन्द्रमाके ऐसे प्रेमी हैं कि, उनके प्रकाशसे विकसित होते और किरण रूपी किरन मिलनेसे सिकुच जाते हैं। जैसे कोई प्रेमी अपने प्रियको देखकर आनन्द मानता है न देखने से खिन्न होता है उसी प्रकार इन दोनोंकी भी दशा है।

वृक्षके बतक।

बिटन साहिबने नेचरल डिक्शनरीमें लिखा है कि, एक प्रकारके बतख होते हैं, जिन्हें अंग्रेजीमें बिङ्कलकूस कहा जाता है ये घास आदि चरा करते हैं ये बतकें मेरे मुल्कमें सरदीके दिनोंमें आती हैं और गरमीके दिनोंमें उत्तर दिशाको चली जाती हैं ये एक वृक्षके फल हैं। मलका एलिजेबेथके शासन कालमें जराडं साहिब थे वे कहते हैं कि, लंकासायरमें फिल आफफोल्डर्स नामका एक छोटा सा द्वापू है उस जगह पुराने जहाजोंके टुकड़े एवं वृक्षके गले चूर पाये जाते हैं। वहाँ समुद्रका फेन कड़ा होकर सीपीके समान जम जाता है। रेशमी फीते जैसी कोई वस्तु एक ओरसे सीपीसे लगकर बाकी पानीमें बहती रहती है उसी फीतेसे एक पक्षी उत्पन्न होता है सीपी अपना मुह खोल देती है पहिले रेशमी तार बाहिर निकलता है पीछे पक्षी निकल आता है। पहिले पक्षीके पैर बाहिर निकलते हैं ज्यों २ पक्षी बढ़ता जाता है सीपीका मुंह चौड़ा होता जाता है क्रमशः सारे शरीरके बाहिर आजाने पर भी उसकी चोंच सीपीके भीतर रह जाती है। युवा होनेपर चोंच भी छूट जाती है यह पानीमें गिर पड़ता है पर भी निकल आते हैं इसको लंका सायरके लोग हूंकल वृक्षका राजहंस कहते हैं। यह उस दरियामें बहुतायतसे होता है ऐसा सस्ता बिकता है कि, तीन २ पैसे मोल बिका करता है।

कोहड़ा।

कोहड़ाकी छोटी २ बतियाको जो कोई उंगली दिखाता है तो वह सूख जाता है। रामायण बालकाण्डमें धनुषयज्ञके समय लक्ष्मण जीने परशुरामजीसे दृष्टान्तमें कहा था कि:—"यहाँ कोहड़ बतिया कोउ नाहीं। जो तर्जनी देखत गलि जाहीं।"

पहाडोंकी लड़ाई।

डाक्टर गोल्ड स्मिथ साहबकी नेचरल हिस्ट्रीमें लिखा है कि, दो पहाड़ दूर २ अपने स्थानपर खड़े थे, ईर्षाके कारण दोनों कुपित हुए। भयंकर गर्जके साथ अपने २ स्थान छोड़कर दौड़े, महान् वेगके साथ लड़ाई करने लगे, अन्तमें जय विजय कर अपने २ स्थानको गये। जितने जीवधारी उस पहाड पर रहते थे सभी नष्ट हो गये।

उपरोक्त वर्णन गोल्ड स्मिथ साहबकी किताब, एनीमेटेड नेचरके जिल्द (वोलूम) ६० में मैंने देखा है, जिसका जी चाहे देखले ।

सुमेरु और विन्ध्याचलकी लड़ाई ।

देवीभागवतके दशवें स्कन्धके तृतीय अध्यायसे सुमेरु विंध्याचल पर्वतकी कथा लिखी है । उसको देवीभागवतसे उद्धृत करके यहाँ लिखता हूँ । देवीभागवत स्कन्ध १०, अध्याय ३ में लिखा है ऋषि बोले कि, हे सूतजी ! यह विन्ध्याचल क्या है ? किस प्रकार आकाश स्पर्श करने लगा था क्यों सूर्य्यका मार्ग रोका था । किस प्रकार अगस्त्यजीने इसे जैसेका तैसा किया, यह बिस्तारके साथ कहो । सूतजी बोले कि, सब पर्वतोंमें श्रेष्ठ विन्ध्याचल पर्वत है यह अत्यन्त शोभायमान है ।

एक समय नारदजी सुमेरु पर्वतसे विचरते हुये विन्ध्याचलके निकट आये । विन्ध्याचलने बड़े सत्कारके साथ उठकर अर्घ्य दे आसन पर बैठाकर पूछा कि, हे ऋषिराज ! इस समय आप कहाँसे आये हो । आपके आनेसे मेरा मन्दिर पवित्र हो गया, आपकी जो मनोवृत्ति हो सो कहिये । इतना सुनकर नारदजीने कहा कि, मैं सुमेरुसे आता हूँ इस सर्वभोगोंके देनेवाले इन्द्र, अग्नि, वरुण यम आदि लोकपालोंके भवन हैं । इतना कहकर नारदजीने निःश्वास लिया । इसको देख विन्ध्यने पूछा कि, महाराज ! आपके निःश्वास लेनेका क्या कारण है ? नारदजीने उत्तरमें सुमेरुकी सब शिखरोंके सहित अन्य पर्वतोंका वर्णन करते हुये अन्तमें कहा कि, जिसकी विश्वात्मा सहस्र किरण ग्रह नक्षत्रोंके साथ परिक्रमा करते हैं, यह वह सुमेरु पर्वत है । अपनेको पृथ्वीके सर्व पर्वतोंमें श्रेष्ठ गिनता है । उसके मनमें अभिमान है कि, मैं सबमें अग्रणी हूँ, मेरे समान कोई भी नहीं है । हे विन्ध्याचल ! अभिमानियोंके ऐसे अभिमानको देखकर निःश्वास हूँ । महान् तपोबलवालों का भी ऐसा कृत्य नहीं होता जैसा कि, इसका है इतना कहकर नारदजी ब्रह्मलोक चले गये ।

नारदजीके मुखसे सुमेरुकी प्रशंसा सुनकर विन्ध्याचलके मनमें ईर्षाकी अग्नि भड़क उठी । उसको दिनरात इस बातकी चिंता रहने लगी कि, क्या करूँ किस प्रकार मेरुको जयकरूँ, जबतक मेरुको जय न करूँ, तबतक मेरी कृति बल, पौरुष, कुल सबको धिक्कार है । इसी चितामें रहकर अन्तमें यह विचार निश्चय किया कि, सूर्य्य नित्य मेरुकी प्रदक्षिणा करते हुये उदय होते हैं, ग्रह नक्षत्र सहित सूर्य्यकी परिक्रमा करनेसेही मेरुको अभिमान होता है । मैं अपने शृंगोंसे सूर्य्यका मार्ग रोक दूंगा, सूर्य्य रुककर मेरुकी परिक्रमा बन्द कर देंगे

जिससे मेरुका गर्व टूट जावेगा। यह विचार कर अपने शृंगोंको यहांतक बढ़ाया कि, सबेरा होते होते सूर्य्यके मार्गतक पहुँच गया।

सूर्य्य निकले तो मार्गको रुका हुआ देखा। रथ ठहर गया, जगतके सब व्यवहार, यज्ञ, हव्य, कव्य आदि बन्द हो गये। नर, दानव, देवता सबके सब अत्यन्त व्याकुल हो सोचने लगे कि, क्या हुआ ? क्या करना चाहिये। अन्तमें सब देवता लोग ब्रह्माजीको आगेकर शिवजीके शरणमें जा अत्यन्त नम्रतापूर्वक स्तुतिकर; महेश्वरके प्रसन्न होनेपर बोले कि, विन्ध्याचल मेरुसे द्वेषकर ऊँचा हो गया है, जिससे सूर्य्यका मार्ग रुक गया है, सब देवता दानव मनुष्य आदि प्राणी महान दुःखी हो रहे हैं। सब प्रकारके यज्ञ आदि बन्द हैं, कालज्ञानके रुक-जानेसे सृष्टि कैसे चल सकेगी, महादेवजी देवताओंकी बात सुनकर भयभीत हो काँपते हुये, इन्द्रको आगेकर शीघ्रतासे विष्णु भगवान्के पास वैकुण्ठ पहुँचे।

वैकुण्ठमें शिव ब्रह्मा सहित सब देवते विष्णु भगवान्की स्तुति करने लगे। नाना प्रकारकी स्तुति करनेपर भगवान् प्रसन्न होकर बोले हे देवताओ ! आपकी अभिलाषा पूरी होगी।

देवता बोले कि, हे देव देव ! हे विष्णु महाराज ! विन्ध्यपर्वत सूर्य्यका मार्ग रोकता है। सूर्य्यके प्रकाश बिना जगत्का सब कार्य्यबन्द है, हम लोगोंको भाग नहीं मिलता क्या करें कहाँ जायँ ? विष्णुने कहा कि, हे देवताओ ! मुनि-श्रेष्ठ अगस्त्यजी वाराणसी में हैं, आप लोग उन्हींके निकट जावें, वे ही विन्ध्याचलकी उद्धतताको शांत करेंगे। उन्हींसे नम्रतापूर्वक विनयकर आप अभयदान माँगो। विष्णुके इस प्रकार कहने पर सब देवता काशीजीमें अगस्त्यमुनिके आश्रम आये। सबके सब दण्डवत् प्रणाम करके स्तुति करने लगे महान् कातर हो विनय करने लगे कि, हे स्वामी ! आप प्रसन्न हूजिये, हम आपकी शरण हुये हैं क्योंकि कान्तिमान दुस्तर विन्ध्यसे हम बहुत दुःखित हुये हैं। देवताओंकी नाना प्रकारकी स्तुति विनयको सुनकर, अगस्त्यजी हँसते हुये बोले कि, हे देवताओ ! आप लोग सब लोकपाल महात्मा, त्रिभुवनमें सबसे श्रेष्ठ एवं निग्रह अनुग्रह करनेमें सर्व प्रकार से समर्थ हो, आप लोगोंको कोई भी कार्य कठिन नहीं है तो भी आप को जिस कार्यकी इच्छा हो वह कह डालिये।

मुनिकी ऐसी वाणी सुनकर देवता कहने लगे कि, हे मुनिराज ! विन्ध्या-चलने सूर्य्यका मार्ग रोक लिया है, जिससे त्रिलोकी नष्ट होनेको आई है। हे मुनि ! अपने तपके बलसे उसकी इस उद्दंडताको शांतकर त्रिलोकीको अभय-दान दीजिये, यही हमारा कार्य है।

अगस्त्यऋषिने देवताओंकी प्रार्थनाको स्वीकार किया। देवता बड़े प्रसन्न हुये। अपने २ स्थानको गये। पीछे मुनि अपनी स्त्रीसे कहने लगे कि, प्रिये! यह महान् अनर्थकारक विघ्न उपस्थित हुआ है, पुरातन मुनियोंने कहा है कि, मुमुक्षुओंको काशीवासमें विघ्न भी बहुत होते हैं। काशीमें निवास करते वही विघ्न मुझे भी उपस्थित हुआ है। इस प्रकार अपनी पत्नीसे कह गंगामें स्नान कर, सब देवताओंका दर्शन कर, स्त्रीसहित काशीसे बिदा हुये। काशीके विरहसे सन्तप्त हो बारंबार काशीका स्मरण करते, तपके बलसे अल्प कालमेंही भृंगोंको उठाये हुये विध्या पर्वतके पास पहुँच गये। अपने पास खड़े हुये मुनिको देख पर्वत कंपायमान होगया सूक्ष्म हो दण्डवत करने नीचे झुकर पृथ्वीका स्पर्श करने लगा। अगस्त्यजी भक्तिभावसे पृथ्वीमें दण्डवत करते हुए विन्ध्य पर्वतको देखकर, अति प्रसन्न हो कहने लगे कि, हे वत्स! मैं तुम्हारे उच्च शिखरों को नहीं उलंघ सकता, इस कारण जबतक मैं न आऊँ तबतक तुम योंही स्थित रहो। पीछे उसके शिखरोंको लांघते हुवे दक्षिण दिशाको चले गये। विन्ध्याचल उसी प्रकार पड़ाही रह गया।

गंगाजीकी कथा।

इसी प्रकार देवीभागवतके ९ स्कन्धमें नदियोंकी बहुतसी कथा हैं। प्रथम गंगाजी गोलोकमें कृष्ण भगवान्के पास थी, एक समय राधाजी भगवान् कृष्णको गंगाजीसे बात करते देखकर क्रोधित हुई उसीके भयसे गंगाजी कृष्ण-जीके चरणोंमें लुप्त हो गई।

गंगाजीके लुप्त होते ही जल सूख गया, सर्व प्राणी जलके अभावसे दुःखी होने लगे, देवताओंसहित त्रिदेवतोंने कृष्णजीके निकट जाय बहुत विनय करके कृष्णजीके चरणोंसे गंगाको प्रगट कराया, पीछे विष्णु भगवानसे विवाह हुआ। किसी कालमें ब्रह्मलोकमें किसी राजापर मोहित होनेके कारण ब्रह्माजीके शापसे पृथ्वीपर स्त्रीरूपसे जन्मले शन्तनु महाराजकी भार्या बनी।

शन्तनु महाराजसे विवाह होनेके समय गंगाजीने वचन लिया था कि, मेरे गर्भसे जो संतान उत्पन्न होगी उसे मैं लेलूंगी। राजा भी वाचाबन्ध हो गये। पीछे सात पुत्रोंको जन्म लेतेही गंगाने गंगामें डाल दिया पर जब आठवाँ पुत्र उत्पन्न हुआ तो महाराजने पुत्रके लोभसे मोहमें आकर कहा कि, यह पुत्र मैं तुम्हें न दूंगा। गंगाजी पूर्व वचनके अनुसार गंगामें प्रवेश कर गई। वेही गंगाजीके आठवें पुत्र महान् प्रतापी भौमविजयी भीष्मपितामहके नामसे प्रसिद्ध हुये, जिनकी कथासे महाभारतादि इतिहास पुराण भरे पड़े हैं।

इस प्रकारसे गंगाजी नदीरूपसे देवी करके जगत् प्रसिद्ध हैं। गंगाजीके दर्शनोंकी कथा भी प्राय: प्रख्यात है।

इसी प्रकारसे देवीभागवतके उसी अध्यायमें गंडकी, सरस्वती, लक्ष्मी यमुना आदि नदियोंकी भी कथाएँ विस्तारपूर्वक लिखी हैं। जिसको देखना हो देखले।

तात्पर्य—ऐसे २ सहस्रों उदाहरण हैं जो कि, जड़ चैतन्यके आत्माकी एकता सिद्ध करते हैं। चैतन्य जड़स्वरूपमें जाता है और जड़ चैतन्य हो जाता है।

इसलामी पुस्तकें और हदीसें।

मुसलमानी पुस्तकोंमेंभी इस प्रकारका बहुत वर्णन आता है। जिनसे यह बात सुतरां सिद्ध हो जाती है।

जमीनोंकी आपसकी बातें—सफर सआदत नामक किताबमें लिखा है कि, रसूल खुदाने फरमाया कि, जमीने आपसमें बात करती हैं कि, आज मुझपर कोई मुसल्ला बिछा किसीने निमाज पढ़ा कि, नहीं।

प्यालेका आशीर्वाद—हदीस तरमजी और अविनमाजःमें लिखा है कि, मुहम्मद साहब कहते हैं कि, कोई प्यालेमें खावे उसको चाट कर साफ करे तो प्याला उसके हकमें इस्तगफार करता है। मसकात शरीफमें लिखा है कि, प्याला उसके लिये कहता है कि, अल्लाह तुझे दोजखकी आँचसे मुक्त करे जैसे कि, तूने मुझको आजाद किया है।

इन्द्रियोंकी गवाँइयाँ—लिखा है कि, कयामतके दिन सब आदमियोंको उनके फेल नामे दिये जावेंगे। पढ़े अन पढ़े सब अपने २ आमाल नामे पढ़ लेवेंगे जब गुनहगार अपना अमाल नामा पढ़ेगा तो पुकारेगा कि, यह झूठ लिखा है, मैंने इनमेंसे एक भी गुनाह नहीं किया है। खुदा उनको समझावे कि, तुमने अवश्य किया है। रोज मुनिकिर नकीर तुम्हारे गुनाहोंके लिखते थे। इस पर भी जब न मानेगा उनके शरीरके सब अंग गवाही देंगे, सब इन्द्रियाँ बोलेंगी अपने कर्मोंको प्रगट कहेंगी। गुणहगार लाचारीसे मान लेवेगा, उनके गुनाहोंके अनुसार उनके माथेपर चिन्ह किया जावेगा।

सजीवमूर्तियाँ।

लात १ मनात २ गुर्रो नामक तीन देवियाँ बड़ी प्रतिष्ठित थीं, जिन्होंको रेश जातिवाले –अरबदेशमें (पूजते थे। मुहम्मद साहबने उनके मन्दिर और मूर्तियोंको तोड़ा तो मन्दिरमेंसे कालीर मूर्तियाँ स्त्रियोंका रूप धारण कर जीवित

१—देवीभागवत में देखनेसे ऐसे २ बहुत से उदाहरण मिल सकेंगे।

होकर रोती हुई बाहर निकलीं जिनको २ मुहम्मद साहबने कत्ल कर डाला, मौलवी अमाउद्दीन कृत किताब तालीम मुहम्मदी देखो।

जमीनकी जिबराईलसे बातें—अजाय बुलकिस में लिखा है कि, जब खुदाने जिबराईलको हुकुम दिया कि, जमीन परसे मिट्टी ले आओ, जिससे आदमका पुतला बनाया जावे। खुदाकी आज्ञानुसार जब जिबराईल पृथ्वीपर आकर मिट्टी लेने लगे उस समय पृथ्वी रोई कहा कि, मुझसे मिट्टी मत लो।

बड़ी मूर्तिकी बातें—तारीख मुहम्मदी और दूसरे हदीसोंमें लिखा है कि, मुहम्मद साहबका जन्म हुआ तो पृथ्वीकी सभी मूर्तियाँ गिर पड़ीं। कुरैश जातिकी सबसे बड़ी मूर्ति तीन बार मुँहके बल गिरी लोगोंने प्रत्येक बार खड़ा किया वह बोली कि, मुहम्मदसे मैं खड़ी नहीं रह सकती।

जिस समय मुहम्मदसाहबका जन्म हुआ उस समय केसरा बादशाहका महल काँपा उसके चौदह कँगूरे गिर गये।

वृक्षोंकी सलाम—मुसलमानी किताबोंमें लिखा है कि, वृक्ष दीवार स्थावर आदि सब मुहम्मद साहब को सलाम करते थे पर उसको मुहम्मद साहबके अतिरिक्त दूसरा कोई नहीं जानता था।

पशुबल—नशकातमें कब्रकी कठिनताके बारेमें लिखा कि, जब कब्र गुनहगारोंको दबाती है तो पशु उनकी चिल्लाहटको सुनते हैं। खुदाने पशुओंमें मनुष्यसे भी बढ़कर ताकत दी है वेही सुन सकते हैं दूसरे नहीं सुन सकते।

गदहाको फिरस्ते—तौरेतमें लिखा है कि, जब बलःआम गदहेपर सवार हो बनी इसराईलको शाप देने चला तो पहले गदहेनेही तलवार लिये फिरिस्तोंको देखा पीछे वे बल आमकी दृष्टिमें आये।

पत्थर और दाऊदकी बातें—तारीख मुहम्मदी और हदीसोंमें लिखा है कि, साहिल नाम बादशाहने शर्त की थी कि, जो कोई जालूतको मारेगा उसको अपनी बेटी और आधा राज्य दूंगा।

बनी इसराईलको खुदाने आज्ञा दी कि, दाऊदके हाथसे जालूत मारा जावेगा। दाऊद जालूतको मारने जा रहा था, रास्तेमें तीन पत्थर मिले, तीनोंने मनुष्यकी भाषामें दाऊदसे कहा कि, हे दाऊद! हमसे जालूतको मार, तब जालूत मरेगा, दाऊदने वैसाही किया बादशाहकी बेटी तथा आधा राज्य पागया।

कूआंका रोना—बहरुलअभवाजने लिखा है कि, यूसुफके भाइयोंने उन्हें कूएमें डाल दिया, अरबके सौदागरने उन्हें निकाला तो कुआं यूसुफकी जुदाईमें बहुत रोया।

रागसे कार्य्यं विशेष---रागके गानेसे बुझा हुआ दीपक आपसे आप प्रज्वलित हो जाता है। वर्षा होने लगती है, पत्थर मोम हो जाता है। चुंबक लोहा खींच लेता है।

सबकी बातें---एहवालुल आखरतमें लिखा है कि, क्यामतके निकट आनेपर वृक्ष दीवार आदि भी जड पदार्थ आपसमें बातें करके भविष्य कहेंगे।

इसी प्रकारकी हजारों बातें हैं कि, जड़ स्थावरके बात करनेके विषयमें लिखी हैं। जिससे सिद्ध होता है कि, जड़ चैतन्य है चैतन्य जड़ हैं; स्थावर जंगम हो जाता है जंगम स्थावर हो जाता है।

बिच्छूके बदले चांदी ---मैंने लडकपनमें अपने पितासे सुना था कि, एक दिन एक मनुष्य उजाड़ मैदानमें शौच फिर रहा था उस समय क्या देखता है कि, सफेद बिच्छुओंकी सेना तार लगाये चली आ रही है। सफेद बिच्छू उसने पहले कभी नहीं देखा था, इस कारण लकड़ीसे थोड़ेसे बिच्छुओंको पकड़के, गामके लोगोंको दिखानेके हेतु ले गया। घर पहुँचकर बिच्छूकी फौजका हाल सबसे कहकर, लाये हुये बिच्छुओंको लोटेसे दिखलाने लगा कि, जिससे लोगोंको विश्वास हो जावे। लोटेको उलटतेही बिच्छूके बदले सफेद २ चांदीके रुपये निकल पड़े। लोगोंको बड़ा आश्चर्य हुआ। लोभके मारे कितने लोग उस बिच्छूकी फौजको देखने गये पर पीछे पता न मिला कि, कहाँ चली गई।

ऐसा कहते हैं कि, जब धन लवारिस हो जाता है सौ वर्षतक उसका कोई स्वामी नहीं होता, तो वह पृथ्वीमें गड़े २ एकही जगह रहनेसे घबराता है वहांसे दूसरी जगह चला जाता है। या तो बिच्छूके रूपमें बाहरसे नाना प्रकारके स्वरूपसे पृथ्वीके भीतरसे एक जगहसे दूसरी जगह चला जाता है। जिस समय अपने स्थानको छोड़ता है उस समय बड़ा भारी शब्द होता है पृथ्वी काँपती है। जिस मनुष्यने जो दश बीस पा लिया था, उसमें उसका उतनाही भाग था, शेषके जिसका भाग होगा वह पावेगा।

जगदीशका समभाव।

सब जीवधारियोंपर परमात्माकी समान दयादृष्टि है वह सबको एक दृष्टीसे देखता है जो जीव जिस अवस्थामें होता है वह उसी अवस्थामें उसकी रक्षा करता है वह न्यायी दयालु और भक्त वत्सल है उसकी ऊँचे नीचे सभी लोकोंपर एकही दृष्टि है। जिस लोकमें जैसा देह चाहिये वो उन्हें वैसाही देह देता है। यदि स्वर्गस्थ जीवोंको पृथिवी पर लाया जाय तो उनके देह यहाँके

प्राकृतिक उपचारोंको न सह सकेंगे । अपने अपने चोलामें सुखी—सब जीवधारियोंको अपना २ चोला प्यारा लगता है । कोई नहीं चाहता कि, मेरा शरीर नष्ट हो जाय यहाँतक कि, विष्ठाके कीड़ेको भी अपना शरीर प्यारा लगता है वह भी मरना नहीं चाहता । उदाहरण—एकबार नारद महाराजने विष्णु भगवान्से पूछा कि, आपने जीवोंमें उत्तम मध्यम और अधम भेद क्यों किया है ? आप तो दयालु हैं, आपको सबको सम भावसे सुख देना चाहिये । यह सुन भगवान्ने उत्तर दिया कि, मैं स्वतः किसीको सुख दुःख नहीं देता किन्तु जीवोंकी इच्छाके अनुसार वैसीही व्यवस्था कर देता हूँ यदि कोई भी दुःखमें हो तो पूछ लो नारदजी उसी जीवोंको देखते हुए भूमिपर आये कीचके गढ़ढेमें सूकरको पड़ा देखकर उससे कहने लगे कि, तू क्यों कष्ट पा रहा है ? स्वर्ग चल, नारदजीने उसके सामने स्वर्गके सुखोंका वर्णन किया । उसने पूछा कि, वहाँ कीचड़ है वा नहीं ? क्योंकि मुझे यह कीचड़ अत्यन्त प्यारी है यह पूछकर फिर भी सूकरने कहा कि, स्वर्गमें बिष्ठा है कि नहीं ? (क्योंकि, शूकर विष्ठा खाता है) नारदजीने कहा ये सब पदार्थ वहाँ कहाँ ? यह बात सुनकर शूकरने कहा कि, मैं तुम्हारे स्वर्गमें नहीं जाना चाहता, मैं यहाँही रहूँगा तुम्हारा स्वर्ग तुम्हारे लिये सदा रहो । इस विषयपर महात्माओंका एक दोहा भी है कि—

कलयुगी संत चले वैकुण्ठको, चढ़े पालकी माहिं ।
बीच राहसे फिर आये, वहां भंग तमाखू नाहिं ।।

जो जीवधारी जिस दशामें हैं, उसी हालतमें उसकी रक्षा करनेवाला भगवान् उसके साथ में है, वहीं उसकी कठिनताको दूर करता है तथा उसी अवस्थामें उसको सुख पहुँचाता है ।

बालककी रक्षा—हिन्दुस्थानका सिपाही रास्तेमें चला जाता था, उसकी स्त्री गर्भवती थी, उसने मार्गमेंही पुत्र प्रसव किया, आप मर गई । जीवित पुत्रको देखकर सिपाही चिन्ता करने लगा कि, इस पुत्रको मैं किस प्रकार पालूंगा ? जब उसे कोई उपाय न सूझा तो गड़हा खोदकर अपनी मृतक स्त्रीको लेटा दिया उसकी छातीपर बच्चेको रख इधर उधरसे वृक्षोंकी डालियाँ और काँटे वगैरः लेकर उस गड़हे पर इस प्रकारसे रख दिया कि, जिसमें लड़केको किसी प्रकारका कष्ट न पहुँचे । पीछे अपनी नौकरीको चला गया । कुछ दिनोंके बाद छुट्टी लेकर वह अपने घर जाने लगा, उसी रास्तेसे आया, वहाँ जाकर देखा तो बच्चा बाहर खेल रहा है । गड़हेके अन्दर देखा तो उसकी स्त्रीका सर्व अङ्ग तो गल गया था पर स्तन उसी प्रकार रहे वह बच्चा उन्हें ही चूसा करता था, बच्चेने मनुष्य-

को आते देखा, तो डरकर गड़हेमें भाग गया। इस मनुष्यने उस बच्चेको गोदमें उठा लिया। बच्चा रोने व चिल्लाने लगा। सिपाहीने मिठाई वगैरः खिलाकर उसको बहुत धीरज दिया उसे लेकर अपने घर आया। धन्य है सर्वशक्तिमान् सर्व रक्षक दयालु परमात्माको जो इस प्रकार रक्षा करता है।

बनी इसराईलकी रक्षा—इस बातमें कोई आश्चर्य न करे। बाइबुलमें लिखा है कि, बनी इसराईल चालीस वर्षतक जङ्गलोंमें फिरते रहे, उनके पांवके न जूते टूटे और न कपड़े फटे उनके बच्चे उत्पन्न होते थे पेटसे ही जामा पहरे निकलते थे ज्यों वे बड़े होते थे, त्यों त्यों उनका जामा भी बढ़ता जाता था। आकाशसे उनके लिये भोजन उतरता था, खुदा उनके साथ रहता था उनकी रक्षा किया करता एवं वही उनकी आवश्यकताको पूरा किया करता था।

कीड़ेकी रक्षा—तीन चार वर्ष हुए। एक सिक्ख पहाड़पर चला गया, वहां उसके पास रसोई बनानेको कोई बरतन न था। वह एक झरना पर गया, एक पत्थर पर आटा गूंधा, एक पत्थरका तावा बनाया, दो पत्थर जोड़कर चूल्हा बनाया रोटी पकाने लगा। पत्थर आगसे गरम हो गया पर दो अंगुल गरम नहीं हुआ, इसी प्रकार नित्य होने लगा। पत्थरका जो भाग गरम नहीं होता, उतने भागमें रोटी भी कच्ची रह जाती। सिक्ख आश्चर्यमें था कि, क्या कारण है कि, समस्त पत्थर गरम होता है पर इतना भाग गरम नहीं होता। संयोगसे एक दिन वह तावावाला पत्थर टूट गया उसमें जितनी जगह ठंडी रह जाती थी उसमें से एक कीड़ा निकल पड़ा। देखो परमात्माकी कृपालुता, किस प्रकारसे उस कीड़ेकी पालना करते हुए उसकी जान बचा दी।

मंजारीके बच्चे—हिरण्यकश्यप दैत्य अपने पुत्र प्रह्लादको मारनेके विचारमें था। प्रह्लादने कौतुक देखा था कि, एक कुम्हार अपने आवामेंसे बरतनोंको निकाल रहा है बरतन निकालते निकालते एक जगह देखा कि, बरतन ज्योंके त्यों कच्चे रह गये, उनमें तनिक भी आँच नहीं लगी उन बरतनोंको हटाने पर नीचे बिल्लीके कई बच्चे निकले। यह बात इस प्रकार हुई थी कि, जब कुम्हार बरतनोंका आवा लगा रहा था उसी समय बिल्ली आई बच्चा देकर कहीं बाहर चली गई, इतनेहीमें कुम्हारने अज्ञानतासे आवामें आग लगा दी।

यह घटना देखकर प्रह्लादको पूरा निश्चय हो गया कि, जिस प्रकार सर्वरक्षक प्रभुने बिल्लीके बच्चोंकी जान बचाई है वही मेरी भी रक्षा करेगा। परमात्माने मनुष्यको हाथ पाँव दिये हैं जिससे वह अपना काम करे, परिश्रमसे पेट भरे, वस्त्र पहने आवश्यकताओंको पूरा करे, किसी दूसरेका आसरा न करे।

जबतक यह माताके गर्भमें रहता है इसके हाथ पाँव बँधे रहते हैं अपनेसे खाना पीना नहीं जानता, ऐसी विवशताकी दशामें विश्वम्भर उसकी नाभीमें एक नल लगाकर, उसीके द्वारा इसको भोजन देकर उसकी रक्षा करता है । गर्भसे बाहर होनेके पहिले माताके स्तनोंमें दूध भर देता है, उसके लिये अत्यन्त प्रेमी और सच्चे सेवक उपस्थित कर देता है जो उसकी पूर्ण अवस्थामें पहुँचने तक इसके लिये अपना प्राण भी निछावर करनेको तैयार रहते हैं ।

मनुष्यको तो प्रभुने हाथ पैर दिये, पशुओंको स्वयं वस्त्र पहनाया तथा उनके भोजनका प्रबन्ध किया । मनुष्यका शरीर वस्त्रोंसे ढकता है तो अन्य जीवधारियोंके शरीर उनके बाल, पर और दुमोंमें ढक देता है कोई जङ्गली जीवधारी भोजन और वस्त्रके मोहताज नहीं होते, जो जीवधारी जिस अवस्थामें है, प्रभु उनका पालन उसी अवस्थामें करता है ।

तुलना—शारीरिक सुख और विषयवासना इन्द्रसे लेकर मनुष्य, पशु, पक्षी, कीड़े मकोड़े सबमें समान है । सब अपने भोजन छाजन और विषय भोगके ग्रहण करनेमें एकही प्रकारके हैं । सुख दुःखमें एकही समान हैं बल्कि अमीरसे गरीब अधिक सुखमें हैं, क्योंकि, संसारी वैभव जितनाही होता है उसको उतनाही चिन्ता, रोग, शोक बढ़ता है, गरीबोंको उतनाही कम होता है । निश्चिन्तता अथवा थोड़ी चिन्तामें विशेष सुख है । बहुत धनवान्, बहुत चिन्ता, शोच और भयमें पड़ा रहता है, गरीब दो रोटी खाकर बेफिक्र सो जाता है । इन्द्र जैसे इन्द्राणीसे प्रसन्न होता है, उसी प्रकार शूकर अपनी शूकरीके साथ सुखको प्राप्त होता है, इन्द्रको जैसे शूकरीसे घृणा है, वैसेही शूकरको इन्द्राणीसे भी भय है । पशुओंके राजा, मनुष्योंके राजासे किसी बातमें घटे नहीं होते ।

मनुष्यसे बन्दर—सब जीवधारी अपनी २ योनिमें उसी प्रकार सुखी हैं जैसे कि, मनुष्य अपने शरीरमें सुखी होता है । बन्दरोंके वर्णनमें लिखा जा चुका है कि, एक बाबर्ची बन्दरोंके साथ रहनेसे बन्दर बन गया । उसीके वशमें अफ्रीकाके सब बन्दर हैं । उसकी स्त्रीने बहुत कहा पर वह उसके साथ न रहा, बन्दरोंके साथही रहना अच्छा लगा ।

वस्त्रादि भोग—चिलमैन साँप, रेशमी कीड़ा और गिरगिट आदि विविधि प्रकारके रङ्ग बदला करते हैं । उनके सामने मनुष्यको क्या बात है चटकीले वस्त्र और उत्तम भोजन विशेष प्राप्तिसे भजनमें बाधा पड़ती है । भजनके लिये साधारण अन्न वस्त्रही उत्तम है । पक्षियोंके शरीर पर परमात्माने ऐसा वस्त्र पहनाया है कि, उसके आगे मनुष्यके उत्तम २ बहुमूल्य रेशमी वस्त्र भी तुच्छ

हैं। पक्षियोंके चमड़े नर्म हैं उनके लिये कर्तानि ऐसे वस्त्र बनाये हैं कि, जिससे उनको सर्दी और गर्मी कुछ न लगे। दो प्रकारके पक्ष बनाये हैं, एक नर्म जो नीचेके चमड़ेको बचाते हैं ऊपरके सर्दी गर्मी आदिकको रोकते हैं। पशुओंके चमड़े कठोर बनाये गये हैं उसके ऊपर केश भी बनाये हैं। सब जीवधारियोंको उसकी अवस्थाके योग्य सब कुछ प्रदान किया है। पानीके जीवधारियोंको वस्त्रकी विशेष आवश्यकता नहीं। क्योंकि, वे अपने शरीरको जलमें छिपा लेते हैं। उनमें ऐसी शक्ति दी है कि, वे जब चाहें पानीके तहमें चले जायें अथवा ऊपर आ जायें। जलके जीवधारियोंको नाज और फल आदिककी कुछ आवश्यकता नहीं, कोई २ मछली इतने बच्चे देती हैं कि, जिससे हजारों मछलियोंका पोषण होता है। काडनाम एक मछली है जो एकही बार इतने अण्डा देती है कि, जितने पृथ्वीपर मनुष्य हैं। जब वह अण्डा देती है तो सबको पानीपर फेंक देती है, वे पानी पर तैरते फिरते हैं। सूर्यकी गरमीसे पककर बच्चे निकलते हैं पानी पीकर बड़े होते हैं, फिर एक दूसरेका भक्षण बन जाते हैं, इसी प्रकार इन मछलियोंकी उत्पत्ति बहुतायसे होती है। जैसे बिहिश्तियोंके पास बहुत हरें हैं। उसी प्रकार मुर्गोंके पास बहुतसी मुर्गियाँ हैं, सेर आध सेर अनाजमें आदमीका पेट भरता है। सत्तर अथवा उससे भी अधिक दस्तरखाँन हो, वे सब बेफायदा हैं, जितनी विषयकी अधिकता है उतनीही अधिक खराबी है, बिहिश्तके सब सुख मूर्खोंके लिये हैं, बुद्धिमान् बिहिस्त (स्वर्ग) को कभी अच्छा न समझेगा।

परमात्माकी दृष्टि---जीवधारियोंपर समान है, जिसको वह रक्षा करना चाहता है उसको कोई हानि नहीं पहुँचा सकता। अतएव सन् १८७८ ई० में तहसील मुक्तेश्वर जिला फिरोजपुरके कानूनी नामक गाँवमें ईंटों का बड़ा भारी आवा लगा था, जब ईंट पककर ठण्ढी होगई तो उठाई जाने लगीं। उस समय उनमेंसे एक चूहा निकल कर भागा, जितनी दूरतक वह चूहा रहा था उसके चारों तरफ पाँच सात ईंट कच्ची रह गईं थी। इसी गाँवमें एक मरतबे लोग चूना पका रहे थे, चूना पककर ठण्डा हो गया बाहर निकालने लगे एक दो हाथकी लकड़ी ज्योंकी त्यों साबित निकली, उसमें आँचका एक भी चिन्ह न था, लोगोंने आश्चर्य्यके साथ सावधानी पूर्वक लकड़ीको चीरा। उनमेंसे डेढ हाथ लंबी एक गोर निकलकर भाग गई।

उसकी शक्ति।

वो सर्व शक्तिमान् है जो चाहे सो करे वो जंगमको स्थावर और स्थावरको

जंगम कर सकता है वो स्थावरोंको जंगमोंकेसे गुण देता है सब उसके हाथ है वो मनुष्यको पशु तथा पशुको मनुष्य बना सकता है ।

पहाड़से ऊंटिनी—कुरानमें लिखा है कि, किसी जातिके लोगोंने सालेदनबीकी सिद्धि देखनी चाही नवीने उनसे कहा कि, खुदा चाहे तो पहाड़से ऊंटिनी पैदा कर दे, उसी समय पहाड़से ऊंटिनी उत्पन्न हुई उसी समय उसने बच्चे दिये । होते ही वे बराबरके हो गये ये सब बावुलके पास बहुत दिनों तक चरते फिरे थे ।

यह अपनी शक्तिमात्रसे सबकी रक्षा कर सकता है, उसकी शक्तिका कोई ठिकाना नहीं है उसी शक्तिसे सबकी समभावसे रक्षा करता है ।

उपसंहार—अनन्त ब्रह्माण्ड हैं, उसमें अनन्त प्रकार की उत्पत्ति है, उत्पत्तिके अनन्त प्रकारके रूप और स्वभाव हैं उसका हाल किसीको मालूम नहीं। केवल ब्रह्मज्ञानी लोग जानते हैं, दूसरा कोई नहीं जान सकता । केवल ब्रह्मज्ञानी वहाँ पहुँच सकते हैं ब्रह्मज्ञानीही एक पलमें करोड़ों योजन उड़ जाते हैं, अपनी सामर्थ्यसे दूसरे को भी अपने साथ ले जा सकते हैं । ब्रह्मज्ञानी जिसकी सहायता करते हैं उसका काम पूरा कर देते हैं । ब्रह्मज्ञानी सब कौतुक देख दिखला सकते हैं जैसा कि, नानकसाहब भिन्न २ लोकों द्वीपों ब्रह्माण्डों और पृथिवीको सैर करते फिरते थे, उस समय एक ऐसे स्थानपर पहुँचे जहाँ केवल स्त्रियांही स्त्रियां थीं कोई पुरुष, न था। उनकी उत्पत्ति आश्चर्य रीतिसे है। यह बात नानकसाहबके सफरनामे में कहीं लिखी हुई हैं । ज्ञानीलोग बड़े उड़नेवाले हैं, जहां चाहें वहाँ उड़कर चले जावें पर कोई २ ऐसे सुकर्मी भी संसारमें हैं जिनमें उड़नेकी सामर्थ्य नहीं ईश्वरकी कृपा उनको आसमान पर ले जाती है, जैसे कबीर साहब मुहम्मद साहबको ले गये. बाइबुलमें लिखा है कि, एक अरेशा नामक पुरुष शरीर सहित आसमान पर उठाया गया हजरत ईसा भी देहसहित आसमान पर गये, ऐसे सहस्रों पुरुष, परमात्माकी कृपासे देहसमेत ही जहाँ चाहे वहाँ जा सकते हैं ।

राजा युधिष्ठिर भी देह सहित धर्मलोक गये । यह कथा महाभारत आदिमें प्रसिद्ध है, कबीरपन्थके उग्रगीता नामक ग्रन्थमेंभी लिखी है ।

यह तो पुरानी बातें हुई, अब आजकलकी बात सुनो, १८९७ ई० में फरीदकोटमें गेंदाराम नाम का एक अन्धा ब्राह्मण रहता था । तब मैं भी भ्रमण करता हुआ फरीदकोट आकर ठहरा, वह सत्संग का बड़ा अभिलाषी था, मेरे पास नित्य आया करता था ठाकुरजीकी पूजा बड़े प्रेमसे किया करता था । वो अन्धा होनेपर भी अच्छा पंडित था, उसके पास अनेकों विद्यार्थी पढ़ते थे । वो

जाति स्मर था. अपने अन्धे होनेके बारेमें कहा करता कि, मैं दक्षिण भारतमें एक अच्छी रियासतका दीवान था राजाको राजनीतिकी शिक्षा देता था, विना राजाज्ञाके कोई काम न करता था। एक दिन एक बलात्कारका अपराधी आया- राजाके पूछने पर मैंने कहा कि, उसे आंखोंसे अन्धा कर दो. वो पापी अन्धाकर दिया गया. उसी दिनसे मैं अन्धा हो गया हूं क्योंकि, ऐसा दण्ड अनुचित था।

एक बार वो तीन दिनतक गायब रहा चौथे दिन प्रकट होनेपर उसने कहा कि, मुझे विष्णुके पारषद विष्णुलोक को लिये जाते थे मैंने पूछा कि, कहां लिये जाते, हो तो उत्तर मिला कि, वैकुण्ठ लिये जाते हैं, मैंने अपने घरवालोंसे मिलनेकी इच्छा प्रगट की दूतोंने मुझे सवासन जानकर लौटा दिया।

इस घटनाके बाद वो ब्राह्मण तीन माह और जीवित रहा पीछे वैकुण्ठ चला गया।

इस प्रकरणके लिखनेका मेरा यही अभिप्राय है कि, जो लोग पशु पक्षी आदिको अकिंचित्कर मानते हुये अपने मनुष्य होनेपर इतराते हैं। वे जान लें कि. जो बातें उनमें हैं वो जानवरोंमें भी पाई जाती है। सबमें इश्वरीय बातें समान हैं जो काम मनुष्य देहसे करते हैं वेही काम पशु पशुतनसे कर लेते हैं आकृतियाँ जुदी २ हैं बस्तु एकही है सबमें आत्मा है तथा परमात्माकी दृष्टिमें सब समान हैं।

दूसरा मेरा यह भी प्रयोजन है कि, जो लोग आवागमनको न मानकर अनेकों पापोंमें लगे हुये हैं, वे जानलें कि, वे कर्मवश हैं जैसे कर्म्मोंने मानवीशरीर प्रस्तुत कर दिया है उसी तरह कीड़ा मकोड़ा भी बना देगा इसमें कयामत आदिकी आवश्यकता नहीं है केवल कर्म्मही कारण है. यदि लोगोंने मेरे लेखसे लाभ उठाया तो मैं मेरे श्रमको सफल होऊँगा जो अपनेको आवागमनके फन्देसे बचावेगा वही श्रेष्ठ है नहीं तो आवागमनके फन्देमें फसे रहनेवाले सभी समान हैं।

अध्याय २०.

अथ आदि मंगल।

दोहा— प्रथमै समरथ आप रहे, दूजा रहा न कोइ ॥
दूजा केहि विधि ऊपजा, पूछत हौं गुरु सोइ ॥ १ ॥

आदि मंगलका अर्थ।

धर्मदासजी कबीर साहिबसे पूछते हैं कि, प्रथमै-चैतन्याकाशमें पड़े हुये साहिबके लोकके प्रकाश स्वरूप जो समष्टि जीव हैं। उनके संसारी बननेके

पहिले, आप-सभोंके गुरु, समरथ-सर्वेश्वर सत्य पुरुष ही रहे-थे। सत्य पुरुष अथवा उसके पूर्वोक्त प्रकाशके सिवा, दूजा-दूसरा, कोइ-कोई, न-नहीं, रहा-था। दूजा पूर्वोक्त समष्टि जीव, केहि-किस, विधि-तरहसे, ऊपजा-संसारी हुआ। गुरु-हे गुरुजी महाराज! सोइ-वही, मैं पूछत हौं-पूछता हूँ।

यानी सत्यपुरुष भगवान् रामका लोक और वहांके पार्षद आदि निवासी भगवान् रामही हैं उनसे भिन्न नहीं हैं, उनके लोकका जो प्रकाश चैतन्याकाशमें है वही समष्टि जीव है। यह किसी तरह भिन्न तथा व किसी तरह एक है। धर्मदासजीका कबीर साहिबसे यही प्रश्न है कि, भगवान्‌का ऐसा प्रकाश यह जीव संसारी कैसे होगया यह मुझे बताइये। वेदान्तकी दृष्टिसे तात्पर्य-सृष्टि रचनाके पहिले एक अद्वितीय सत्यपुरुषही था ये सब जीव उपकरण रहित पड़े थे, नामरूपात्मक जगत् नहीं था यह संसार कैसे उत्पन्न हुआ मैं आपसे यही पूछता हूँ॥ १॥

तब सतगुरु मुख बोलिया, सुकृत सुनो सुजान॥
आदि अन्तकी परिचै, तोसों कहौं बखान॥ २॥

तब-शिष्यका प्रश्न सुनकर, सतगुरु-सच्चे गुरु कबीर साहिब मुख-मुँहसे, बोलिया-बोले कि, सुजान-ऐ परम बुद्धिमान्, सुकृत-संस्कारी-जीव धर्मदास, सुनो-सुन लो। मैं तोसों-तुमसे, आदि-संसारी नाना जीव होनेसे पहिलेकी और अन्तकी, सबसे पीछेकी, पारचै-परखी हुई बात, कहौं-कहता हूँ।

कबीर साहिबने धर्मदासजीका प्रश्न सुनकर बताना आरम्भ किया कि, आदिमें क्या था और कैसे संसारी हुआ किस तरह इसका उद्धार हो सकता है यह सब मैं तुम्हें सुनाये देता हूं तुम सावधानीके साथ सुन लो॥ १॥

प्रथम सुरति समरथ कियो, घटमें सहज उचार॥
ताते जामन दीनिया, सात करी विस्तार॥ ३॥

समरथ—भगवान् रामचन्द्रजीने, प्रथम-पहिले, समष्टि जीवको अचेत पड़ा देखकर उनके कल्याणके लिये, घटमें-जीवके भीतर, सुरति-चैतन्यताका, सहज-अपने आपही, उच्चार-संचार, कियो-कर दिया, ताते इस सुरतिके कारणही, जामन-जीवपना जमानेवाली वस्तु, दीनिया-दे दी, इसके बाद जीवने, सात-इच्छा आदिक सातका, विस्तार-फैलाव, करी-दिया।

अपने अंशरूप जीवोंकी दशा देखकर उनके उद्धारके लिये भगवान्‌ने उन्हें चैतन्यता दे दी साधन तो उद्धारका था पर इसने अपनेको संसारका पथिक

बना डाला, यही इसमें जामन लग गया तब इस समष्टि जीवने सातोंका विस्तार किया। वे सात वस्तु कौनसी हैं इन्हें अगिले बचनमें बताते हैं ॥ ३ ॥

दूजे घट इच्छा भई, चित्त मन सातों कीन्ह ॥
सात रूपनि रमाइया, अविगत काहु न चीन्ह ॥ ४ ॥

घट—जीव समष्टिमें, दूजे—सुरति होनेके बाद, इच्छा—मैं एक हूं, अनेक हो जाऊं यह इच्छा, भई—होगई। इसके बाद, चित—चित्त, मन-मन तथा बुद्धि-अहंकार, मैंही ब्रह्म हूं यह अनुभव और जीव ये, सातों—सात, कीन्ह—किये। सात रूपनि—इन्हीं सातों रूपोंमें, रमाइया—सब रम गये, काहु—किसीने भी, अविगत—नहीं जाननेवाला समर्थ, न—नहीं, चीन्ह—जाना।

जीव समष्टिको सुरति मिलनेके बाद अनेक होनेकी इच्छा हुई। इसके बाद उसे क्रमशः चित्त, मन बुद्धि, अहंकार और मैं ब्रह्म हूं यह अनुभव हुआ। तथा उसीसे जीव भी हो गया ॥ ४ ॥

तब समरथके श्रवणते, मूलसुरति भइ सार ॥
शब्द कला ताते भई, पाँच ब्रह्म अनुहार ॥ ५ ॥

तब—उसके बाद, समरथके—भगवान् राम के, श्रवणते—रामनाम सुननेके कारण, यही, मूल सुरति—राम नामकी सुरति, सार (मुख्य रूपा, भइ—हुई। ताते—इसी राम शब्दसे पांच—पांच, ब्रह्म—ब्रह्मोंके, अनुसार—अनुकूल, शब्दकला—शब्दके टुकडोंसे नाम, भई—हुए।

चैतन्यता देनेके बाद समष्टि जीवसे कहा कि, राम नामको जपिके मुझे पहिचान ले, मेरे हंसोंमें हो जानेके बाद मैं तुझे अपने लोकमें बुला लूंगा पर समष्टि जीवने इसका विपरीत अर्थ समझा उसके असली अर्थ छोड़कर र् का परा १ आद्या शक्ति, अ का ओम् २ अक्षर, आ का ३ नारायण, ४ म् का संकर्षण, आदि पुरुष, विराट्, हिरण्यगर्भ और अ का—५ महाविष्णु मतलब निकाल लिया एवम् इसका वास्तविक र्—जानकी, र—राम, आ—भरत, म्—लक्ष्मण और अ—शत्रुघ्न तथा रं का—हंस अर्थ होता है यह न समझ सका। तथा उसकी बुद्धिमें यही आया कि, मेरे किये अर्थ असली अर्थके अंश मात्र हैं अंशी नहीं हैं ॥ ५ ॥

पाँचौ पाँचै अंड धारे, एक एकमा कीन्ह ॥
दुइ इच्छा तहँ गुप्त हैं, सो सुकृत चित चीन्ह ॥ ६ ॥

पाँचै—पाँच, अण्ड—स्वरूप, धरि—बनाकर, एक एकमा—एक एकमें, एक एक करके, पांचै—पांचो ब्रह्म, कीन्ह—कर दिये। तहँ—तहां, दुइ—दो, इच्छा-

एक तो कारणरूपा इच्छा जो समष्टि जीवमें सुरत देनेसे पहिले थी जिसने कि, इसे जगत् मुख किया । दूसरी वह इच्छा जिससे कि, सुरति पाकर अनुभव ब्रह्म खड़ा किया यही माया परा शक्ति है इस प्रकार ये दो इच्छाएं हैं ये, गुप्त–छिपी हुई, हैं–हैं । कृत–हे धर्मदास । सो उन्हें, चित–दिलमें, चीन्ह–जान लो ।

पांचों ब्रह्मोंके लिये पांच स्वरूप तयार करके एक २ को एक २ में स्थापित कर दिया उसमें दो इच्छाएँ गुप्त हैं हे धर्मदास ! तुम उन्हें जानलो । संकर्षण, परा योगमाया, शब्द ब्रह्म, नारायण और महा विष्णु ये पांच ब्रह्म हैं इनमें उक्त दोनों इच्छाएं छिपी हुई हैं ॥ ६ ॥

योगमाया यकु [1]कारण, ऊजे अक्षर कीन्ह ॥
या अविगति समरथ करी, ताहि गुप्त करि दीन्ह ॥ ८७ ॥

योग माया–एक तो योग माया, और यकु–एक, कारणे–एक कारण जगत्मुख करनेवाली इच्छा ये दो इच्छाएं हैं । ऊजे–उन्होंनेही, अक्षर–ब्रह्म, कीन्ह–किया, अविगति–समझने न पानेवाले, समरथ–समर्थ श्री रामचन्द्रजीने, या–यह, करी–किया, ताहि–उस इच्छाको, गुप्त–तिरोहित, करि–कर, दीन्ह–दिया ।

एक तो परा आद्यायोगमाया तथा दूसरी कारणरूपा इच्छा है जिसके कारण समष्टिजीव संसारी बनता है इन्हींसे उक्त पांचों ब्रह्म बने हैं । भगवान् रामने इन इच्छाओंको गुप्त कर दिया है । इस कारण ये भी नहीं समझ पाये ॥७॥

श्वासा सोहं ऊपजे, कीन अमी बंधान ॥
आठ अंश निरमाइया, चीन्हौ सन्त सुजान ॥ ८ ॥

सोहम्–अनुभव गम्य ब्रह्म मैं हूं यह, श्वासा–समष्टिजीव आदि पुरुषके श्वाससेही, ऊपजे–उत्पन्न होता है इसीने, अमी–अमृत जैसे प्यारा लगनेवाली वस्तुका, बन्धन–बन्धान, कीन– किया । उसके आठ अंश–आठ भाग निरमाइया–बनाये, सुजान–हे परमबुद्धिमान्, सन्त–महापुरुषो, चीन्हो–पहिचानो ।

समष्टिजीव आदि पुरुष हिरण्य गर्भके श्वाससे सोहंकी उत्पत्ति होती है इसीने मीठी वस्तुका बन्धन कर दिया कि, इनके बन्धनमें लोग बन्धे रहें उसके अणिमा आदिक आठ भेद किये । ए सत्य सुजानो! यह जान लो इनके बखेड़ेमें मत पड़ो । ये आठों सिद्धियां योगशास्त्रमें प्रसिद्ध हैं. ये बड़ी सिद्धियां थोड़ेही समयमें नष्ट हो जाती हैं ॥ ८ ॥

---

१ कारणे ।

तेज अण्ड आचिंत्यका, दीन्हो सकल पसार ॥
अण्ड शिखा पर बैठिके अधर दीप निरधार ॥ ९ ॥

आचिन्त्यका–चिन्तनमें न आनेवाले रामका, तेज, अण्ड –अण्डेकी सूरतमें कल्पित किया गया जो तेज रेफ उसका माया मुख अर्थ जो पराशक्ति है उसने, सकल-सारा, पसार–फैलाव, दीन्हों–कर दिया, वही अण्ड-ब्रह्माण्डकी, शिखापर–चोटीपर, बैठिके–बैठकर, अधर– नीचेकी ओर, दीप–प्रकाशका, निरधार–निर्माण किया ।

रके जगत मुख अर्थ पराआद्या शक्तिने सारे संसारको बनाकर खड़ा कर दिया वही इस ब्रह्माण्डकी चोटीपर बैठकर नीचेके लोकोंको प्रकाशित कर रही है ॥ ९ ॥

ते अचिन्तके प्रेमते, उपजे अक्षर सार ॥
चारि अंश निरमाइया, चारि वेद विस्तार ॥ १० ॥

ते-उस, अचिन्तके–भगवान् रामके नाम, प्रेमते–प्रेमके कारण, सार–सबमें प्रधान, अक्षर-ओम्, उपज्यो-उत्पन्न हुआ, उसके, चारि-चार, अंश–भाग, निरमाइया–निरमाण–किये, उसीसे चारि-चार, वेद-वेदोंका, विस्तार–निर्माण हुआ ।

रामनामके जानने की चिन्तासे इसीसे ओम् शब्द प्रकट हुआ, यही सार अक्षर है इसके अ, उ, म् और बिन्दुसे चार वेद उत्पन्न हुए ॥ १० ॥

तब अक्षरका दीनिया, नींद मोह अलसान ॥
वे समरथ अविगति करी, मर्म कोई नहिं जान ॥ ११ ॥

तब—इसके बाद, योगमायाने, अक्षरका ओम् शब्दवाच्य ईश्वरको नींद–निद्रा, मोह-असावधानी, और अलसान–आलस्य, दीनिया-देदिये वे वेदोंने, अविगति–नहीं समझमें आनेवाले, समरथ–समर्थ भगवान् रामकी स्तुति, करी–की है, पर कइ–कोई, मर्म–इस तात्पर्यको, न-नहीं, जान–जानता ।

योगमायाने ईश्वरको नींद मोह और आलश्य देदिया, वेदोंने भगवान् रामकी बड़ी प्रशंसा की है पर इसे कोई समझ नहीं सकता सब माया मुख अर्थ करके भूल रहे हैं ॥ ११ ॥

जब अक्षरके नींद गै, देवी[1] सुरति निरबान ॥
श्यामवरण यक अंड है, सो जलमें उतरान ॥ १२ ॥

१ देवी ।

जब—जिस समय, अक्षरके–अक्षरपदवाच्य नारायणकी, नींद–निद्रा गै–चली गई, तब, निरबान्-निराकार, सुरति–चैतन्य, दबी–सबमें प्रविष्ट हुआ, श्याम बरण-श्याम रंगका चतुर्भुजी, यक–एक, अण्ड रूप, है– होकर–सो, वह, जलमें–पानीमें, उतरान–रहने लगा ।

अक्षरपदवाच्य नारायण भगवान्को योगमायाने जगा दिया वह श्यामल कोमलांग चतुर्भुजी होकर पानीमें निवास करने लगा ॥ १२ ॥

अक्षर घटमें ऊपजे, व्याकुल संशय शूल ॥
किन अंडा निरमाइया, कहा अंडका मूल ॥ १३ ॥

अक्षर—नारायणके, घटमें–नाभिमें, ऊपजे–कमल उत्पन्न होता है, उससे अण्डा–यह ब्रह्माण्ड, किन–किसने, निरमाइया–बनाया, अण्डका–इस, अण्डेका, मूल–जल, कहां कौनसी जगह है. इस, संशय–सन्देह रूपी, शूल कांटेसे व्याकुल–घबरा गया ।

नारायणकी नाभिके कमलसे ब्रह्मा उत्पन्न हुआ उसे सन्देह हुआ कि, इस ब्रह्माण्डको किसने बनाया, एवं इसकी जड़ कहां है ॥ १३ ॥

तेही अंडके मुक्खपर, लगी शब्दकी छाप ॥
अक्षर दृष्टिसे फूटिया, दश द्वारे कढ़ि बाप ॥ १४ ॥

तेही–उसी, अण्डके–ब्रह्मारूपी पिण्डके, मुखपर–मुंहपर, शब्दकी–वेदोंके सारका, छाप–चिह्न, लगी–लगा, अक्षर–समष्टि जीवकी, दृष्टिसे–जगत् मुख, दृष्टिसे, बाप–मायाशबलित ब्रह्म, दश–दश, द्वारे–इन्द्रियोंसे, कढ़ि–निकलकर, फूटिया–फैल गया ।

नारायणने ब्रह्माको ओम्का उपदेश दिया ब्रह्माने उसका जप किया उसीसे चारों वेदोंका प्राकट्य हुआ । वेदोंका भी जगत् मुख अर्थ देखा गया उस समय माया शबलित ब्रह्म दशों इन्द्रियोंका विषय और इन्द्रिय बनकर बाहिर निकल संसार बन गया ॥ ४ ॥

तेहिते[1] ज्योति निरञ्जनौ, प्रकटे रूपनिधान ॥
काल अपरबल बीर भा, तीनि लोक परधान ॥ १५ ॥

तेहिते–उसी, रामनामसे, रूपनिधान–रूपके खजाने, निरंजनौ–माया रहित ज्योति महाविष्णु, प्रकटे–उत्पन्न हुए येही, तीनि–तीनों, लोक–लोकोंमें, परधान–मुख्य, अपरबल–अमित बलवाले, बीर–बलवान्, काल–काल, भा–हुए ।

इसी नामसे विरजा पार निवासी श्री महाविष्णु भये ये मायासे परे हैं

१ तोहि ।

माया तो विरजाके इसी पार रह जाती है तीनों लोकोंमें येही मुख्य हैं इनके बलकी कोई तुलना नहीं है ये यमोंके भी यम हैं काल भी इनके भयसे काम करता रहता है ।। १५ ।।

तातें तीनों देवभय[1], ब्रह्मा विष्णु महेश ।।
चारि खानि तिन सिरजिया, मायाके उपदेश ।। १६ ।।

तातें–उससे, ब्रह्मा–ब्रह्माजी, विष्णु–विष्णुजी, महेश–महादेवजी, ये तीनों–तीन, देव–देवता, भे–हुए, तिन–इन्होंने, मायाके–मायाके, उपदेश–बलसे, चारि–चारों, खानि–स्वेदज आदि, सिरजिया–रचा दिये ।

काल पायकर ब्रह्मा विष्णु और महेश उत्पन्न हुए इन्होंने मायाके बलसे चारि खानि चौरासी लाख जीव बना दिये ।। १६ ।।

चारि वेद षट शास्त्रउ, औ दश अष्ट पुरान ।।
आशा दै जग बांधिया, तीनों लोक भुलान ।। १७ ।।

चारि–चारों वेद–वेद, औ–और, दश–दश, अष्ट–आठ, पुरान–पुराण, और षट्शास्त्र–छओ शास्त्रोंने, ऊ–भी, आशा–आश, दै–देकर, जग–संसारको, बाँधिया–बाँध दिया, उसमें, तीनों–तीनों, लोक–लोक, भुलान–भूल गये ।

चारि वेद, अठारह पुरान और छओ शास्त्रोंकी मायाने जीवोंको आशा देकर बांध दिया इसीमें तीनों लोकोंके प्राणी भूल रहे हैं ।। १७ ।।

लख चौरासी धारमाँ, तहाँ जीव दिय बास ।।
चौदह यम रखवारिया, चारि वेद विश्वास ।। १८ ।।

लख चौरासी–चौरासी लाखकी, धारमाँ–धारामें, तहां–उस जगह, जीव–जीवोंको, बास–निवास, दिया–दिया, जहां कि, चौदह–चौदह, यम–यमराज, रखवारिया–निगरानी करते हैं, और चारि वेद–चारों वेदोंका, विश्वास–विश्वास है ।

इस चौरासी लाख योनिकी धारावाले संसारमें इस जीवको उस जगह निवास दिया गया है कि, जहां चौदह यम इसकी निगरानी करते हैं एवम् यह चारों वेदोंका यथार्थ अर्थ न समझकर इतस्ततः विश्वास करते हैं ।। १८ ।।

आपु आपु सुख सब रमैं, एक अंडके माहिं ।।
उत्पति परलय दुःख सुख, फिरि आवहिं फिरि जाहिं ।। १९ ।।

एक एकही, अण्डके–ब्रह्माण्डके, माँहि–भीतर, आपु आपु–अपने अपने, सुख–आनन्दमें, सब–सारे जीव, रमे–रम रहे हैं, इस कारण इसीमें, उत्पत्ति–

---

[1] भे ।

सृष्टिकी रचना होती है, इसीसे, परलय–प्रलय होता है, सुख–आनन्द और दुःख–कष्ट, इसीमें हैं, फिर वारंवार, आवै–जन्म लेते हैं, फिर–वारंवार, जाहिं–मरते हैं ।

एकही ब्रह्माण्डके भीतर अनेक तरहके प्राणी अपने २ सुखके लिये आप प्रयत्न कर रहे हैं । उत्पत्ति, प्रलय, सुख, दुःख, जन्म और मरण सब इसीमें हैं ॥ १९ ॥

तेहि पाछे हम आइया, सत्य शब्दके हेत ॥
आदि अन्तकी उतपती, सो तुमसो कहिदेत ॥ २० ॥

तेहि–उसके, पीछे–पीछे, हम–मैं, सत्य–साचे, शब्दके–रामनामके, हेत–कारन, आइया–आये । आदि अन्तकी सर्व प्रथम रामनामके जगत् सुख अर्थसे संसारकी तथा रामनामके यथार्थ अर्थ जानकर साहिबके लोकमें गमन की । उत्पत्ति–प्राप्ति, जैसे हुए, सो–वही, तुमसों–तुमसे, कहि–कहे, देत–देत हैं ।

उद्धारके लिये दिये गये रामनामका उलटा अर्थ देखकर हमें भगवान्ने भेजा जिस तरह जगत् हुआ एवं जैसे हमारे बताये हुए अर्थका अनुसंधान करनेसे साहिबके लोकको चला जाना होता है यह सब बात हम तुमसे कहे देते हैं ॥२०॥

सात सुरति सब मूल है, प्रलयहु इनहीं माहिं ।
इनहीं मासे उपजे, इनहीं माहिं समाहिं ॥ २१ ॥

सब—सबका, मूल—मुख्य कारन, सात सुरति—पहिले बताई हुई सात सुरति हैं, प्रलयहु—प्रलय भी, इनहीं–इन्हींके, माहि–भीतर है, इनहीं–इन्हींके, मासे–भीतरसे, ऊपजे–उत्पन्न होता है, इनहीं–इन्हींके, माहि–भीतर, समाहि–लय हो जाते हैं ।

दोनों इच्छाएं तथा पांचही सबके मूल कारण हैं इन्हींसे उत्पत्ति होती है एवम् प्रलय भी इन्हींमें हो जाता है ॥ २१ ॥

सोई ख्याल समरत्थ कर, रहे सो अछप छपाई ॥
सोई संधि लै आइया, सोवत जगहि जगाई ॥ २२ ॥

सोई—वही यह समष्टि जीवने, समरत्थ–अपनेको समर्थका, ख्याल–ध्यान, कर–कर लिया । सो–वे, अछप–न छिपनेवाले, इसकी दृष्टिसे, छपाइ–छिप, रहे–गये । सोई–उसी, सन्धि–बीचके, समाधानको, लै–लेकर, आइया–आया, सोवत–सोते हुए, जगहि–संसारको, जगाइ–जगानेके लिये ।

समष्टि जीवने अपनेको सब कुछ मान लिया इस कारण व्यापक राम इसकी दृष्टिसे ओझल हो गये । जिस सन्देहमें जीव पड़ गया है मैं उसीका

समाधानको लेकर मैं आया हूं कि, संसारी प्राणियोंको असली अर्थ बता दूं जिससे सबका उद्धार हो जाय ॥ २२ ॥

सात सुरतिके बाहिरे, सोरह संखिके पार ॥
तहँ समरथको बैठका, हंसन केर अधार ॥ २३ ॥

सात–सातों, सुरतिके–सुरतियोंके, बाहिरे–बाहिर, और सोरह–सोलह, संखिके–संख्यक कलाओंके, पार–किनारेपर, तहँ–वहाँ, समरथको–समर्थ श्रीराम भगवान्‌का, बैठका–बैठनेकी जगह है, वही हंसनकेर–हंसोंका, अधार–आधार है।

जहां सातों सुरति नहीं पहुँच सकती, जहां सोलहों कलाओंकी कोई कहानी नहीं है वहां भगवान् राम विराजते हैं वही भगवान्‌के हंसोंका आधार है ॥२३॥

घर घर हम सबसों कही, शब्द न सुनै हमार ॥
ते भवसागर डूबहीं, लख चौरासी धार ॥ २४ ॥

हम–हमने, सबसों–सभोसे, घर घर–घर घर जाकर, कही–कह दी, पर, हमार–हमारा, शब्द–रामनामका अर्थ कोई, न–नहीं, सुनै–सुनता, ते–वे, लख चौरासी–चौरासी लाखकी, धार–धारावाले, भवसागर–संसार सागरमें, डूबहीं–डूबेंगे।

हमने घरघर जाकर रामनामका असली अर्थ बताया है पर हमारे कहेको कोई नहीं सुनता इस कारण न सुननेवाले अज्ञानी चौरासी लाख योनियोंकी धारवाले संसार सागरमें अवश्य डूबेंगे ॥ २४ ॥

मंगल उत्पति आदिका, सुनियो संत सुजान ॥
कह कबीर गुरु जाग्रत, समरथका फुरमान ॥ २५ ॥

इति आदि मंगल।

उत्पति आदिका–उत्पत्तिकी आदिके, मङ्गल–मङ्गलको, ऐ सुजान–ज्ञानवान, सन्त–महात्माओ, सुनियो–सुन लीजिये। कबीर–कबीर साहिब, कह–कहते हैं कि, गुरु–सबके गुरु, जाग्रत–निभ्रान्त, समरथ-समर्थ श्री रामचंद्रजीका, फुरमान–कहन है।

कबीरसाहिब कहते हैं कि, हे ज्ञानवान महात्माओ! मैं उत्पत्तिकी आदिके मंगलको कहता हूं यह कोई मेरी ओरसे बना हुआ नहीं है किन्तु मायारहित सबके गुरु श्रीरामचन्द्रजी महाराजका ही यह कथन है वही मैंने आपको सुना दिया है ॥ २५ ॥

सार–भगवान् रामने जीवोंके उद्धारके लिये समष्टि जीवको चैतन्यता दी पीछे उसे उपदेश दिया कि, तुम रामनामका अर्थ समझ लो इसीसे मेरे हंसोंमें हो जाओगे मैं तुम्हारा उद्धार कर दूंगा। राम शब्दके 'र' का जानको 'र'

का श्रीराम, 'आ' का भरत, 'म्' का लक्ष्मण, 'अ' का शत्रुघ्न, हंस यह असली अर्थ है पर समष्टि जीवमें जो कारणरूपा इच्छा थी, उससे इसने इन नामका कुछका कुछ अर्थ समझा। 'र' का परा आद्या योगमाया, 'अ' का अक्षर, 'आ' का नारायण 'म्' का संकर्षण और 'अ' का महाविष्णु अर्थ समझा। यही समस्तकर यह संसारी हो गया। वास्तवमें असली अर्थोंके श्रामिक अर्थ अंश हैं जो अंशीके रूपमें समझे जा रहे हैं। कारणरूपा अविद्याने इतनाही कार्य नहीं किया किन्तु चित्त मन बुद्धि तथा मैं ब्रह्म हूँ इस अहङ्कार को भी पैदा किया, इसी अहङ्कारने एकसे अनेक होनेकी इच्छा प्रकट की। इस तमाम बखेड़ेमें दो इच्छाएं काम कर रही हैं, पहिली तो कारणरूपा इच्छा जिसे कह चुके हैं, दूसरी योगमाया है इसीने संसारको रच दिया यही प्रकाशित कर रही है। मैं ब्रह्म हूँ उस अनुभवसे होने वाला ब्रह्म समष्टि जीवके श्वासके पैदा हुआ। उसीने अष्ट सिद्धियाँ तथा काली आदि आठ ईश्वरोंको उत्पन्न किया। सत्यपुरुषने उद्धारके पथका जगत् मुख अर्थ देखकर मुझे भेजा कि, रामनामका सच्चा अर्थ बताकर संसारका कल्याण करूं मैं रामनामका सच्चा अर्थ समझाकर लोगोंका कल्याण करने आया हूँ जो मेरा कहना मान लेगा उसका उद्धार हो जायगा जो न मनेगा वो संसारमें भटकता फिरेगा॥ ॥ इति आदि मङ्गल[1] ॥

जीव हत्या और मांस मदिराका निषेध।

निकृष्ट घृणित पदार्थोंसे मन लगानेवालेको कभी भी प्रकाशका मार्ग न मिलेगा। जिस प्रकार कालिससे जल काला हो जाता है उसी प्रकार घृणित पदार्थोंके ग्रहणसे अन्तःकरण अशुद्ध एवं शुद्ध पदार्थोंके खानेसे स्वच्छ और ज्ञानमय हो जाता है। जो लोग अपने अन्दर घृणित वस्तुओंको डालते हैं, उनके अन्तःकरणकी शुद्धि होनी असम्भव है, वे कभी भी सत्यगुरुके मार्गको नहीं पा

---

१ इस आदि मंगलमें कबीर साहिबके अवतार धारण करनेका प्रयोजन एवं कबीर दर्शन अत्यन्त सावधानीके साथ कहा गया है तथा इतना गूढ कि, कबीर साहिबके आज्ञाकारी हंस श्री विश्वनाथजी देव महाराज रीवांकी टीकाके बारम्बार पर्य्यालोचन करनेसे भी जलदी ध्यानमें नहीं आता इस कारण अनुवादकनें इसका अर्थ साथही साथ कर दिया है।

यद्यपि अनुवादक कबीर साहिब तथा साहिबके हंसोंकी वाणीको समझनेकी कोई शक्ति नहीं रखता पर यह इस तुच्छ हृदयमें उन्हींकी प्रेरणा हुई है जिससे उक्त अर्थ किया गया है। यदि कोई चूक हो तो भी भक्तजन केवल श्रद्धापर ध्यान देकर क्षमा कर देंगे। केवल इतनाही लक्ष्य है कि, कबीर साहिब के अक्षरों की ओर कबीर पन्थी तथा दूसरों भावुकों का पूरा ध्यान हो।

सकते, न उनका मनही कभी निश्चल हो सकता है। मनुष्यके खाने पीनेके लिये जो शुद्ध पदार्थ नियत किये गये हैं, उनको खाने पीनेसे अन्तःकरण शुद्ध होता है। यद्यपि जड़ और चैतन्यमें एकही आत्मा है तो भी अङ्कुरजका भक्षण शुद्ध है। पाशुविक भोजनसे मन शुद्ध नहीं हो सकता पशु और मनुष्य दोनों भाई हैं, इस कारण, अपने भाईका मांस मत खाओ, भाईको मत मारो, उसका रक्त पात न करो, उसको दुःख देनेसे नरककी राह खुलेगी, सुख शांतिका मार्ग एकदम बन्द हो जावेगा; सत्यगुरु कभी कृपा भी न करेंगे।

मांस खाना और शराब पीना, अपने भाइयोंके रक्तपात करनेके बराबर है इसका बदला अवश्य देना पड़ेगा। जिस प्रकार माँ, बहन, बेटी और स्त्री चारोंका रूप एकही है पर उनमें अपनी विवाहिता स्त्रीहीसे सम्भोग करनेकी आज्ञा है। दूसरीकी ओर दृष्टि उठाना भी महापाप है तब जो कोई अपनी विवाहिता स्त्रीके अतिरिक्त दूसरोंपर दृष्टि करेगा, वह अवश्य घोर नरकका वासी होगा। इसी तरह मनुष्यके खाने योग्य अंकुरज पदार्थ, भक्षण किये जांय तो अन्तःकरण अशुद्ध नहीं हो सकता. क्योंकि, वे मनुष्यके मुख्य भोजन हैं, भोजन किये बिना कोई जीवित नहीं रह सकता। इस कारण भोजनको कुछ चाहिये। अशुभ कर्मोंका फल अवश्य भोगना पड़ेगा, फल भोगे बिना छुटकारा नहीं हो सकता। कबीर साहिबने कहा है कि

साखी—कबीर कमाई आपनी, कभी न निषफल जाय।
सात समुन्दर आडा पड़े, मिले अगाऊ धाय॥

संस्कृतके अनेक योग्य पुरुषोंके वचन है कि—"अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्" किये कर्म अवश्य भोगने पड़ेंगे चाहे सात समुद्र बीचमें आजाय पर भोग नहीं टाल सकता।

बदलेपर दृष्टान्त—एक अङ्गरेजी समाचार पत्रके १८७९ के दिसम्बरके परचेमें लिखा था कि, अमेरिका देशका एक कसाई बहुत बीमार पड़ा, समस्त शरीरमें सूइयां चुभानेके समान कष्ट, होने लगा वह बहुत कुराने लगा। कष्टके मारे बहुत दुःखी हुआ, पर प्राण न निकले, उसी दशामें उसने जिनका वध किया, था, उन जीवधारियोंको बहुत भयानक स्वरूपसे अपना बदला लेने उपस्थित देखा। उनके भयानक दृश्यको देखकर बहुत भयभीत हुआ. अनुमानकर लिया कि जिन जीवधारियोंका मैंने वध किया है वह मुझसे बदला लेने आये हैं।

वह उनसे बचनेका उपाय शोचने लगा. पर कोई न सूझा, अन्तमें अपने कमाईके दो लाख रुपयोंके नोटोंको इस विचारसे जला दिया कि, यह मेरे

पापकी कमाई है. यदि इनको छोड़ जाऊंगा वा किसीको दे जाऊंगा तो भोगने-वाला भी मेरेही समान कष्टमें पड़ेगा, उस समय उसका प्राण निकल गया।

अभक्ष्यपर कबीर साहिब।

अभक्ष्य निषिद्ध एवं घृणित पदार्थोंके विषयमें कबीर साहबकी अनगिनित साखिया तथा अनन्त शब्द प्रचलित हैं उनमेंसे थोड़ासा यहां भी लिख देता हूं जिससे लोग जान जायं कि, कबीर जैसे निष्पक्षपातीभी इसको कितनी बुरी दृष्टिसे देखते थे।

कबीर— मांस अहारी मानवा, प्रत्यक्ष राक्षस जानि।
ताकी सङ्गति मति करो, होय भगतिमें हानि ॥ १ ॥

कबीर— मांस खायते ढेर सब, मद पिये ते नीच।
कुलकी दुरमति परिहरैं, राम भजेतें ऊँच ॥ २ ॥

कबीर— मांस मछरिया खात हैं, सुरापानसे हेत।
ते नर नरकहि जाँयगे, माता पिता समेत ॥ ३ ॥

कबीर— मांस मछरिया खात हैं, सुरापानसे हेत।
ते नर जड़से जायँगे, ज्यों मूलीका खेत ॥ ४ ॥

कबीर— मांस खाय अरु मद पिये, धन विपसा जो खाय।
जुआ खेल चोरी करे, अन्त समूला जाय ॥ ५ ॥

कबीर— मांस मांस सब एकही, मछली हिरनी गाय।
आँख देखि जो खात हैं, सो नर नरके जाय ॥ ६ ॥

कबीर— ब्राह्मण राजा चार वरणके, और क़ौम छत्तीस।
रोटी ऊपर माछली, सभी वरण गये खीस ॥ ७ ॥

कबीर— कलियुग केरे ब्रह्मणा, मांस मछरिया खाँय।
पाय लगे सुख मानही, राम कहे मर जाँय ॥ ८ ॥

कबीर— पाँव पुजावैं बैठिके, भखें मांस मद दोय।
तिनकी दीक्षा मुक्ति नहीं, कोट नरक फल होय ॥ ९ ॥

कबीर— सकल वर्ण एकत्र है, शक्ति पूजि मिलि खाहिं।
हरिदासनकी भ्रान्ति कर, केवल यमपुर जाहिं ॥ १० ॥

कबीर— विष्ठाकी चोका दिये, हांड़ी सीझे हाड़।
छूत बरावे चामकी, इनहूँका गुरु राँड़ ॥ ११ ॥

कबीर— जिव हिंसा किये, प्रगट पाप शिर होय।
निगम पुण्य स्थाप ते, देखि न आया कोय ॥ १२ ॥

कबीर— जीव नहीं हिंसा करे, प्रगट पाप शिर होय।
पाप सभी सो देखिया, पुण्य न देखा कोय ॥ १३ ॥
कबीर— तिलभर मछली खायके, कोटि गऊ दे दान।
काशी करवट ले मरे, तौ भी नरक निधान ॥ १४ ॥
कबीर— हँसा हो सोही हँसे, गावे जान खजान।
कर गहि चोटा तानसी, साहबके दीवान ॥ १५ ॥
कबीर— काटा कूटी जे करें, ते पखण्डको भेस।
निश्चय राम न जानि हैं, कहैं कबीर सँदेस ॥ १६ ॥
कबीर— बकरी पाती खात है, ताकी काढ़ी खाल।
जो बकरीको खात है, तिनको कौन हवाल ॥ १७ ॥
कबीर— आठ बाट बकरी गई, मांस मुल्ला गा खाय।
अजहूँ खाल खटिक घर, विहिश्त कहां को जाय ॥ १८ ॥
कबीर— अण्डा किन बिसमिल किया, घुन कीस किया हलाल।
मछली किन जव्बह किया, सब खाने क्या ख्याल ॥ १९ ॥
कबीर— काजी तुझे करीमका, कब आया परमान।
घट फोरा घर घर किया, साहब केर निशान ॥ २० ॥
कबीर— काजीका बेटा मुआ, उरमें साले पीर।
वह साहब सबका पिता, भला न माने वीर ॥ २१ ॥
कबीर— पीर सबनकी एकसी, काजी जाने नाहिं।
अपना गला कटायके, विहिश्त बसे क्यों नाहिं ? ॥ २२ ॥
कबीर— मुरगी मुल्लासे कहे, जबह करत हैं मोहिं।
साहब लेखा मांगसी, शङ्कट परेगा तोहिं ॥ २३ ॥
कबीर— काजी जीहू स्वाद वश, जीव हनत हैं, आय।
चढ़ि मसजिद एके कहें, क्यों दरगह सच होय ॥ २४ ॥
कबीर— काजी मुल्ला मरमियां, चले दुनीके साथ।
दिलसे दीन निवारिया, करद लयी जब हाथ ॥ २५ ॥
कबीर— काला मुंह कर करदका, दिलसे दुई निवार।
सब सूरत सुभानकी, अहमक मुल्ला मार ॥ २६ ॥
कबीर— जोर कर जो जबह करे, मुँहसे कहे हलाल।
साहब लेखा मांगसी, तब होई कौन हवाल ॥ २७ ॥
कबीर— जोर किया सो जुलुम है, माँगे जबाब खुदाय।

खालिक दर खूनी खड़ा, मार मुंहे मुंह खाय ॥ २८ ॥

कबीर— गला काटि कलमा पढे, किया है कहै हलाल ।
साहब लेखा मांगिहै, तब हो कौन हवाल ॥ २९ ॥

कबीर— गला गुस्सेका काटिये, मियां कहको मार ।
जो पांचोंको बस करे, तो पावे दीदार ॥ ३० ॥

कबीर— यह सब झूठी बन्दगी, बेरिया पांच निमाज ।
सांचे मारे मुंहपर, काजी करै अकाज ॥ ३१ ॥

कबीर— दिनको रोजा धरत हैं, रातको हनत है गाय ।
यह खून वह बन्दगी, क्योंकर खुशी खुदाय ॥ ३२ ॥

कबीर— चाला जाय था, आगे मिले खुदाय ।
मारो तुझसे किन कही, किन फरमाई गाय ॥ ३३ ॥

कबीर— शेख सबूरी बाहिरा, हाँका यमपुर जाय ।
जिनका दिल सावित नहीं, तिनको कहाँ खुदाय ॥ ३४ ॥

कबीर— तेई पीर हैं, जो जाने पर पीर ।
जो पर पीर न जानहीं, ते काफिर बेपीर ॥ ३५ ॥

कबीर— खूब खाना है खीचड़ी, जामें अमृत लोन ।
मांस पराई खायके, गला कटावे कौन ॥ ३६ ॥

कबीर— कहता हूँ कह जात हूँ, कहा जो मान हमार ।
जिसका गला तु काटि है, सो फिर काटि तुम्हार ॥ ३७ ॥

कबीर— हिन्दूके दाया नहीं, मेहर तुर्कको नाहिं ।
कह कबीर दोनों गये, लख चौरासी मांहि ॥ ३८ ॥

कबीर— मुसलमान मारे करदते, हिन्दू मारे तलवार ।
कहैं कबीर दोनों मिले, जैहैं यमके द्वार ॥ ३९ ॥

तात्पर्य—कबीर साहब चारों युगसे पुकारते आये हैं कि, हिंसा मत करो, मांस न खाओ, अभक्ष्य पदार्थोंको न खाओ, शराब न पिओ, मादक पदार्थोंका सेवन न करो, यह सब महान् पाप हैं, इनका बदला न छूटेगा । महान् कष्टमय अधम अवस्थाकी प्राप्ती ही इनका फल है । इनसे अलग रहनेसेही तुमसे योग्य कर्म हो सकेंगे ।

इस विषयमें कबीर साहबकी बहुत वाणी है, मनुष्य पशु इत्यादि किसी प्रकारके प्राणधारीको दुःख देना, मारना पापके महान् परिणामको प्राप्त कराने-

वाला है। भक्ति मुक्ति चाहते हो तो जीवहत्या और घृणित पदार्थोंका त्याग कर दो, जो मान लेगा वह सुखी होगा जो न मानेगा दुःख पायेगा।

नज़म—रहीमो खुदाबन्द रहमा वही। जुल्म जब्र न जिसके नफरमाँदही
सिफतसारी है उसकीही शानमें। जिसे देखिये इल्म उरफानमें ॥

मद्य मांसके निषेधमें कबीर साहिबकी आज्ञा लिखी है कि, वे इनके खानेवालोंको नर्कका पथिक बताते हैं।

वेद।

अब वेद शास्त्रको सुनो। वे भी स्वसंवेदके समानही मांस मदिरा आदि अभक्ष्यका ग्रहण तथा किसीके दुःख देनेको महापाप बतलाते हैं।

अथर्व—"अस्तिनु तस्माद् ओ जीयो यद् विहव्ये न ईजिरे।" जीवहत्याके कर्म गन्दे हैं उनका उत्तम फल नहीं. वोही भगवान्की उपासना सर्वश्रेष्ठ है जिसमें जीवहत्या नहीं होती। "मुग्धा देवा उत शुना यजन्त उत गो रङ्गैः पुरुधा यजन्त" वे एक तरहके पागल हैं जो कुत्ते जैसे निकृष्ट प्राणियोंतकके मांसको भी नहीं छोड़ते तथा गऊओंके अङ्गोंको काट काटकर खाने खिलानेसे परमात्माको प्रसन्न हुआ मानते हैं। वो मार्ग उनके कल्याणका नहीं है, किन्तु नरक देनेवाला है। कोई कोई यह कहते हैं कि, यज्ञ आदिमें की गई हिंसा हत्या नहीं है, बाकी सब हत्याएं हैं। यदि विचार करके देखा जाय तो इसमें भी कोई सार नहीं है. क्योंकि, अथर्व वेदमें लिखा हुआ है कि, 'इष्टापूर्तस्य व्यभजन्त यमस्य अभी षोडशं सभापदः' यदि यज्ञ आदिमें भी हत्या करोगे तो तुमें पुण्य यज्ञका मिलनेवाला था उसमें सोलहवें हिस्सेका पाप भी भोगना पड़ेगा। स्वर्गके अमृत कुण्डोंमें स्नान करनेवालोंको अपनी जीव हत्याके पापोंके कारण भयंकर आगकी तपिस भी सहनी पड़ेगी इससे यह बात सिद्ध होजाती है कि, वेद हत्यामें कभी भी पुण्य नहीं मानता, यज्ञके नामकी हत्यामें भी पाप होता है पुण्य नहीं होता।

ऋग्वेद—स्तोमास स्त्वा विचारिणि, प्रतिष्टोभन्त्यक्तुभिः।
प्रयावाजं न हेषन्तं पेरुमस्यस्यर्जुनि ॥

अर्थ—जो कोई मांस खाता है वह नरकी होता है सर्वदा दुःखमें पड़ा रहता है उसका देखना भी महा पाप है इस तरहके पापियोंके दर्शन करना ही महापाप है बहुत अच्छा हो कि, ऐसे पापी नारकी स्थानोंमें ही पड़ा रहें।

वेदमें एक स्थलमें लिखा है कि—घास चौपायोंके लिये बनाया गया है, और अनाज मनुष्योंके लिये है जैसे स्त्री पुरुषके लिये वैसेही पशु पशुके लिये हैं। मानुषी स्त्री पशुके लिये नहीं है, उसी प्रकार मांस मनुष्यके लिये नहीं है।

पुरुष सूक्त—यजुर्वेद पुरुष सूक्त उपनिषद पढ़ो, लिखा है सर्व जीवधारी उस विराट् पुरुषके हाड़ चाम और मांस हैं, इस कारण मांस खानेवाले विराट् पुरुषके शत्रु हैं. क्योंकि, वे जीवधारियोंके ही मांसोंको खाते हैं। जो विराट् पुरुषके केशोंको खाते हैं वे उसके शत्रु नहीं हैं, क्योंकि बालोंको तोड़ने काटनेसे किसीको दुःख नहीं होता, किन्तु किसी अंशमें सुखही होता है।

सूत्र—मद्यं न पिबेत् मांसं न भक्षयेत् असत्यं न वदेत् परदारान् न स्पृशेत् ॥

अर्थ—मदिरा मत पीओ मांस मत खाओ। झूठ मत बोलो। व्यभिचार न करो।

यज्जीवहिंसायामनुवर्तते तस्य जीवस्य नरकं क्रीडते ॥

अर्थ—जो कोई जीवहिंसाका विचार करता है, वह जरूर नर्कमें जाता है और नाना प्रकारके कष्टोंको प्राप्त होता है।

अहिंसाके विषयमें सर्व वैष्णव लोग और कबीर साहब सहमत हैं। जैन और बौद्धधर्म लोग तो अहिंसाको अपना परमधर्मही समझते हैं पातञ्जलिकी भी यही आज्ञा है। मीमांसा और न्याय भी यही कहता है।

ऊपर जो प्रमाण दिये थे वेद सूत्रादिकोंके थे उनमें परिस्फुट रूपसे जीव हिंसाका निषेध किया गया है, एवं इन कामोंके करनेवालोंको नरककी प्राप्ति बताई है तथा मनुष्यको क्या खाना चाहिये यह भी बता दिया है। अब स्मृतियों तथा ऋषीश्वरोंके वचन दिखाते हैं कि, स्मृतिकारोंने भी इसका निषेध किया है।

ऋषीश्वरोंके वचन।

ब्रह्मा—ये भक्षयन्ति मांसानि सत्त्वानां जीवितैषिणाम्।
तैर्द्येयो भक्षितैः सर्वैरिति ब्रह्माब्रवीद्द्विज ॥

अर्थ—जो जीव जीवनेकी इच्छावाले हैं उनके मांसको जो भक्षण करते हैं वे जीव भी परलोकमें अपने मांसके खानेवालोंके मांसको खाते हैं अर्थात् जो किसीका मांस खावेगा वह दूसरे जन्ममें अवश्य बदला देगा।

अहिंसा परमो धर्मः यतो धर्मस्ततो जयः।

परम धर्महां अहिंसा है जहां यह अहिंसारूप है वहां अवश्यही जय होती है।

नारद—स्वमांसं परमांसेन यो वर्द्धयितुमिच्छति।
नारदः प्राह धर्मात्मा नारकैः सह पच्यते ॥

अर्थ—जो कोई दूसरेके मांसको खाकर अपना मांस बढ़ाया चाहता है वह नरकमें अवश्य पड़ेगा।

व्यास—योऽहिंसकानि भूतानि हिनस्त्यात्मसुखेच्छया ।
कृष्णद्वैपायनः प्राह स्थावरत्वं स गच्छति ।।

अर्थ—जो अहिंसक पशु हिरन, शशा आदि इनको कोई अपने खानेके हेतु मारता है वह स्थावर योनिमें जावेगा ।

बृहस्पति—सन्तप्यते ततोऽजस्रं भजते च ददाति सः ।
मधुमांसनिवृत्तो यः प्रोवाचेदं बृहस्पतिः ।।

अर्थ—जो आदमी मांस नहीं खाता, वह सर्वदा तप करता है यज्ञ और दान भी करता रहता हैं ।

वसिष्ठ—यावज्जीवति यो मांसं विषवत्परिवर्ज्जयेत् ।
वसिष्ठो भगवानाह स्वर्गलोकं स गच्छति ।।

अर्थ—आदमी जबतक जीवे तबतक मांस न खावे, विष जान कर त्याग दे. उसको स्वर्गकी प्राप्ति अवश्य होगी ।

जमदग्नि—यो भक्षयित्वा मांसानि स्वतश्चापि निवर्तते ।
जमदग्निर्यमाहैनं सोऽपि स्वर्गमवाप्नुयात् ।।

अथ—जो कोई मांस खाता हुआ स्वयं विचार कर अथवा किसीके कहनेसे मांस भक्षण छोड़ दे मृत्यु पर्य्यन्त न खावे, वह अवश्य स्वर्गको जावेगा ।

शुक्र—रूपमारोग्यमैश्वर्यं कान्तिं स्वर्यानमेव च ।।
प्राप्नोत्यहिंस्रः पुरुषः प्राहैवमुशना मुनिः ।।

अर्थ—जो हिंसा नहीं करता वह संसारमें सुन्दरता, लक्ष्मी, आरोग्यता, विद्या आदि शुभ गुणोंसे सम्पन्न होता है, मृत्युके बाद स्वर्गको जाता है ।

पराशर—सुवर्णदानं गोदानं भूमिदानं तथैव च ।
नोत्तमं प्राणदानाच्च पराशरवचो यथा ।।

अर्थ—सोनादान, पृथिवीदान, गोदान ये सब श्रेष्ठ दान हैं, पर "जीवको न मारकर उसे प्राणदान देना" सबोंमें उत्कृष्ट है । यह पराशरजीका वचन है ।

इसी बातपर मार्कण्डेयजीकी भी साक्षी है—

स्वयंभू मनु—कर्मणा मनसा वाचा यो हंति न हि कश्चन ।
स मित्रं सर्वभूतानां मनुः स्वायम्भुवोऽब्रवीत् ।।

अर्थ—जो कर्मसे, मनसे और वाणीसे किसी प्रकार हिंसा नहीं करता, वह सब प्राणियोंका मित्र कहलाता है ।

हत्याके दोषी—हन्ता[१] चैवनुमन्ता[२] च विशस्ता[३] क्रयविक्रयी[४] ।

संस्कर्ता चोपहन्ता च खादकश्चाष्ट घातकाः ॥
धनेन क्रयिको हन्ति सुभोगेन च खादकः ।
घातको वधबन्धाभ्यामित्येवं भुवि धेनुघः ॥

अर्थ— ...नेवाला, मारनेका विचार करनेवाला, मारनेको सम्मती देनेवाला, मा... बेचनेवाला, मांसका मोल लेनेवाला, मांसको पकानेवाला पकेहुये मांस... परोसनेवाला, और मांसका खानेवाला ये आठ घातक हैं।

विशेष, करके हिंसा तीन प्रकारसे होती है। १—जो मांस मोल लेता है। वह तो दाम देकर जीवोंको मराता है क्योंकि, यदि मोल लेनेवाला न होता तो जीव न मारे जाय इससे मोल लेनेवाला पूरा पापी है। २—खानेवाला, खानेके स्वादके लिये मारता है, यदि वह न चाहे न मांसको खावे तो, जीव हत्या कौन करे? । ३—हत्यारे वह हैं जो स्वयं जीवधारीको बांधकर अथवा हथियारसे मारते हैं, सब भी एकही बात है, चोर और चोरके साथी न्यायमें तुल्यही है।

जैसे स्वयंभू मनु कइयोंको हत्याका दोषी बताया है उसी तरह कबीर साहिबने भी अपनी साखीमें कई दोषी बनाये हैं कि—

आठ बाट बकरी गई मांस मुल्ला गयो खाय।
अजहूँ खाल खटीकघर, विहिश्त कहो क्या जाय ॥

बकरी उपरोक्त आठ राहमें गई, उसका मांस मुल्ला खा गया अब तक उसकी खाल खटीकके घर है। वह खटीक निरञ्जन है उसीके हाथ उसकी खाल है, उसके कर्म तो उसके घरही है जिस मारनेवालेको बकरीकी योनिमें आवागमन अवश्य होगा तो बकरीके मारनेवाली विहिश्त क्योंकर जायगी, अपने कर्म के बीजसे फिर फिर देह धरेगा, जबतक उसकी खाल खटीकके घर रहेगी तबतक उनका विहिश्त प्राप्त न होगा। मारनेवालोंको वह खाल ओढ़नी पड़ेगी।

मांस त्यागका फल।

शाकमूलफलैर्मेध्यैः योवाऽदन्नैव भोजनम् ।
न तत्फलमवाप्नोति यन्मांसपरिवर्ज्जनात् ॥

अर्थ—उपवास तथा शाक, कन्द, मूल, फल आदि भक्षोंके खानेसे इतना फल नहीं मिलता, जितना कि, मांसको छोड़ देनेसे होता है।

मधु मांसं च ये नित्यं वर्ज्जयंन्तीह मानवाः ।
जन्म प्रभृति मद्यं च सर्वे ते मुनयः स्मृताः ॥

अर्थ—जो लोग मांस और मदिरासे आयु भर बचे रहते हैं; वे साधुओंके तुल्य हैं. अवश्यही सद्‌गतिको पावेंगे।

शतं समा यः पुरुषः तपस्तेपे सुदारुणम् ।
न भक्षयन्ति ये मांसं सममेतदुदाहृतम् ।

अर्थ—जो सौ वर्ष अथवा उससे भी अधिक तपस्या करे, दूसरा मांसका निरंतर त्यागी हो दोनोंका एक समान फल है।

यथा हस्तिपदे यानि पदानि पदगामिनः ।
सर्वे धर्मास्त्वहिंसायां प्रविशन्ति तथा ध्रुवम् ॥ १ ॥
सर्ववेदाधिगमनं सर्वतीर्थावगाहनम् ।
सर्वयज्ञफलं चैव नैव तुल्यमहिंसया ॥ २ ॥
अहिंसा परमो यज्ञो अहिंसा परमं तपः ।
अहिंसा परमाक्षय्यमहिंसो यजते सदा ॥ ३ ॥
अहिंसा सर्वलोकस्य यथा माता पिता तथा ।
स्वमांसात्परमांसानि परिपाल्य दिवं गतः ॥ ४ ॥
तमेव परमं धर्म्ममहिंसां संप्रचक्षते ।
एवं परो महात्मा यो विष्णुलोकं स गच्छति ॥ ५ ॥

अर्थ—जैसे सब जीवधारियोंके पग हाथीके पगमें आजाते हैं उसी प्रकार अहिंसामें सर्व धर्म समा जाते हैं ॥ १ ॥ अहिंसा अर्थात् किसी भी जीवधारीको दुःख न देना ही वेद पाठ है, तीर्थाटन है, सर्व यज्ञ, है, जीवधारियोंकी रक्षाके तुल्य कोई धर्म नहीं है ॥ २ ॥ अहिंसा परम यज्ञ है, जो हिंसा नहीं करता है वह यज्ञ और तप करता है ॥ ३ ॥ जो कोई जीव हिंसा नहीं करता, वह सबका ऐसा प्यारा होता है जैसे कि, माता पिता । जो अपने प्राणका लालच छोड़कर, अपना मांस देकर बच्चेकी जान बचाते हैं ऐसे परोपकारी लोग स्वर्ग जाते हैं ॥ ४ ॥ जिसमें जीव हिंसा न हो वही धर्म बड़ा है जो लोग इस धर्मको धारण करते हैं वे महात्मा लोग विष्णु लोकको चले जायंगे ।

जग जाओ ।

आकाश और विष्णु सतोगुण रूप हैं, पृथिवी, और ब्रह्मा रजोगुण रूप हैं, पाताल और शिव तमोगुण रूप हैं । फारसीमें इनको तमीज शहवत और गजब कहते हैं । जो कोई सतोगुणका आश्रय करता है वह देवता है, जिसमें सतोगुण और रजोगुण हो वह मनुष्य है, जिसमें रजोगुण और तमोगुण हो वह राक्षस तथा नारकी जीव है, सतोगुण ऊपरको रजोगुण पृथिवीमें और तमोगुण नरकमें डालेगा । मांस खाना तमोगुणी है, अवश्य नरक ले जावेगा जीवकी जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति ये तीन अवस्था हैं, जाग्रत अवस्था मनुष्यकी, स्वप्न पशुकी

और जड़ स्थावरकी सुषुप्ति है । सतोगुणी मनुष्य विवेकके लिये बनाया गया है, मनुष्योंका मुख्य लक्षण सारासार विवेक ही है । यदि विवेक न करे तो मनुष्य नहीं कहाया जा सकता, मांस खाना पूर्ण अविवेकका लक्षण है, मांस खानेवाला मनुष्य कैसे कहला सकता है ? जो पाप जानकर करता है वह विष खाता है वह अधिक दण्डका भागी होता है । स्वप्नमें सहस्रों प्रकारके पाप होते हैं पर उसका कुछ हिसाब नहीं होता, सुषुप्तिमें तो भले बुरेका ज्ञानही नहीं होता. वहां हिसाब किताब की बात ही क्या है. जो तुरियामें हैं वे ज्ञानी हैं वे तो विधि निषेधसे मुक्त शुभ कर्मके स्वरूपही हैं, पर मनुष्य जबतक जाग्रत अवस्थाको पूर्ण रीतिसे धारण न करे, तबतक तुरिया अवस्थाको नहीं प्राप्त कर सकता । इसी कारण जाग्रत अवस्था दीपक है । मनुष्य शरीर पाता है, सूर्य्यके समान प्रकाशमान होता है । आँखवालोंको प्रकाशमें भी अन्धोंके समान व्यवहार करना उचित नहीं, प्रकाशमें भलीप्राकर सब पदार्थ देखे जाते हैं, देख करके चलना सार्थक है, जाग्रत अवस्थाहीमें भजन हो सकता है । इसपर कबीर साहबका वचन है कि,

शब्द—जाग अब भौ भोर बन्द, जाग अब भव भोर ।। टेक ।।
है अल्लाल तो यार हमारा, सर्व जनका नाम अधारा ।
काया मसजिद खूब सँवारा, दुई खम्भ दश लगे किवारा ।।
उसमें पढ़ले वाङ्ग निमाजा, हर दम हर दम हर दम साजा ।
पांचों पीर बसें एक थाना, घटमें अनहद हने निशाना ।।
पांच पीरकी करले खोजा, तब तालीम तोर तीसो रोजा ।
लैलाऊँ पल नाहिं विसारूँ, घड़ि घड़ि चितवन दृष्टि पसारूँ ।।
ज्ञान छुरी महरम गढ़ पकड़े, तब वस करले पांचो वकरे ।
कहें कबीर मैं हरिगुण गाऊँ, हिन्दू तुर्क दोऊ समुझाऊँ ।।

यथा—जाग अब भव भोर बन्दे, जाग अब भव भोर ।। टेक ।।
बहुत सोवे जन्म खोवे, कोई न होगा तोर ।। जा० ।।
काम क्रोध लोभ तृष्णा, बांधली भर झोर ।
बहुत सोये जाग देखो, दशो द्वार शोर ।। जा० ।।
पकड़के यम कैद करिहैं, जाव कौन ओर ।
जठराग्निके जोरमें, जिन रक्षा कीन्ही तोर ।। जा० ।।
एक घडी हरनाम न लीन्हों, बड़ा हरामी खोर ।
कहें कबीर अब क्यों न जागो, जब घर २ मूसे चोर ।। जा० ।।

तात्पर्य—सत्यगुरु कहते हैं कि, ऐ मनुष्यों ! तुम बहुत सोये, अब जागो.

क्योंकि, यह मनुष्यका चोला चौरासी लाख योनिरूप रात्रिके प्रभातके समान है। अब क्यों सोते हो ? चौरासी लाख शरीरमें तो सोतेही थे, अब तो बहुत सो चुके हानी दुःख बहुत उठा चुके, अब दुःख और हानियोंके निवारणका समय आया है। पर इस मनुष्यत्वरूपी धनको चुरानेवाले ठग और चोर भी तो बहुत पीछे लगे हुये हैं। जाग्रत होकर अपने धनकी रक्षा न करोगे तो दिन धाडे चोर डॉकू डाँका मारकर ले जाँयगे। जीव दरिद्र होता है, पर इस शरीरमें तुम्हारे साथ अनन्त अमूल्य धन है, जिसके चुरानेके लिये चोरोंने पीछा किया है। यदि उनसे सचेत न रहोगे तो फिर कहीं ठिकाना न लगेगा, चौरासी लाख योनिरूप द्वारोंमें मँगतोंके समान भटकते फिरोगे, पर कुछ न पा सकोगे।

हिंसा पुण्य नहीं – वेद जीवदयाको बहुत प्रकारसे वर्णन करता है, सहस्रों श्रुतियाँ अहिंसाकी स्तुतिमें पाई जाती हैं. अहिंसाके तुल्य दूसरा कोई धर्म नहीं माना है। यद्यपि नरमेध, अश्वमेध, गोमेध, अजामेध इत्यादि यज्ञोंकी विधियां भी लिखी हुई मिलती हैं, उत्पत्ति कालसे इनका प्रचार चला आता है, यद्यपि इस समय बहुत कम हो गया है क्योंकि, उन यज्ञोंके माननेवालोंमें द्रव्यका पूर्ण अभाव हो रहा है इस कारण कोई भी वेदानुसार यज्ञ नहीं कर सकता पर वेदोंने हिंसाको निष्पाप कभी नहीं बताया जो हिंसामें पाप नहीं मानते यह उनकी भूल है। अब यज्ञादिक विधानके विरुद्ध नाना प्रकारकी हिंसा और बलिदानकी परिपाटी चल पड़ी है। सर्वहिंसा महाघोर नरकको ले जानेवाली है।

इस बातपर लोगोंका कुछ भी ध्यान नहीं कि, वेद अहिंसा बतलाता है तो फिर हिंसा बतलानेकी क्या आवश्यकता है ? हिंसा और अहिंसा दोनों एक साथ नहीं हो सकती। जीवहत्या करता है तो दया कहां ? जहां दया है वहां जीवोंको दुःख देना कहां ? यह कैसी धोखेबाजी है यह छल किसने किया, किस कारण ऐसा कपट किया गया। इसका कारण स्वसंवेद पढ़े बिना कोई नहीं जान सकता। सर्व ब्राह्मण, साधू, ऋषि-मुनि, जो उस हिंसाके पक्षमें हैं, वे सब छल और धोकेसे भरे पड़े हैं, आप नष्ट होते हैं दूसरोंको भी नष्ट कर रहे हैं। जबतक पारख गुरु न मिलें तबतक इस कपट जालसे छूट नहीं सकता।

जिस ठगने सर्व आचार्य ऋषि मुनि आदिको उत्पत्तिके दिन ठगा वह अब भी मौजूद है। जो कोई इसको पहचानेगा अलग हो जावेगा धोखेसे बचता रहेगा वही मनुष्य है उसीकी मुक्ति हो सकती है उसके बिना सबको बंधनमेंही रहना पड़ेगा।

पश्चिमकी पुस्तकें ।

मूसाकी पुस्तक – खून मत करो । तौरीतकी आज्ञा है कि, खून मत करो ।

समीक्षा – अब विचार करना चाहिये, जिसमें खून हो उसका खून न करना यदि ऐसी आज्ञा मिली तो इससे साबित हुआ कि खूनवालेके अतिरिक्त जिसमें कि, खून नहीं है उन्हें प्रयोगमें ला सकते हो जैसे साग, पात, फल फूल इत्यादि इससे उसके खानेकी आज्ञा साबित होती है रक्तवाले जितने जीवधारी हैं सब परस्परमें भाई हैं जो रक्तवाले नहीं हैं उनके बारेमें कोई ऐसा नहीं कहता कि, इनका खून मत करो क्योंकि, उनकी उत्पत्ति वीर्यसे नहीं, न उनमें लोहूही है, उनकी उत्पत्ति मिट्टी और पानीसे है । इसीलिये वे सब मनुष्यके भक्ष्य हैं पर जो रक्तवाले हैं वे चाहे कहींसे हुए हों मनुष्यको न तो मारने चाहिये न खानेही चाहिये ।

मूसाके धर्मका नियम तो यही हुआ था कि, "खून मत करो" फिर कुर्बानीका प्रचारक उसे नहीं माना जा सकता ।

कुर्बानीके प्रचारक ।

सोखतनी कुर्बानी, खताकी कुर्बानी और इन्सानकी कुर्बानी करनेको किसने कहा । नूहने सोखतनी कुर्बानीको पीछे दूसरोंने इब्राहीमको इन्सानकी कुर्बानी मनुष्यको बधकी आज्ञा हुई पर दया करके क्षमा कर दिया । इनका खुदा सर्वदास कुर्बानियोंका आदी है । पहिले कहता है कि खून मत करो, पीछे धोखा देकर कुर्बानी कराता है । इसके कपट जालसे हंस कबीरके सिवा दूसरा कोई नहीं बच सकता । प्रलयके पीछे नूह पृथिवीपर उतरा उसने पशुओंको जलाकर सोखतनी कुर्बानी की उसके सूँघनेके वास्ते खुदा आसमानसे उतरा जलते हुये पशुओंको सुगन्धी (दुर्गन्धि) को सूँघकर खुश हुआ नूहको बरकत दी ।

समीक्षा – विचारवान् न्यायी लोग विचार करें कि, जब हाड, चाम, मांस, लोहू जलता है तो सुगन्धी आती है अथवा दुर्गन्धी आती है । उसमें तो इतनी दुर्गन्धी आती है कि, उसको मनुष्य किसी प्रकार सहन नहीं कर सकता । ऐसी घृणित दुर्गन्धीको सुगन्धी जानकर सूँघता एवं उससे प्रसन्न होता है, उस खुदासे ईश्वर रक्षा करे यह तो राक्षसोंके भी बाबा निकले । जिस धोखेमें इक्के दुक्के भारतवासी पड़े हैं उसी धोखेमें पश्चिम देशवाले भी पड़े हुए हैं । इसपर किसीने विचार किया है कि, हमारे धर्मकी जड़ अहिंसा है । हिंसा कभी भी धर्म नहीं हो सकता ।

खुदाने आदमको अपने रूपमें बनाया । तौरीतमें पैदाइशकी किताबका

पहिला बाब (२७-२८) आयत तक देखो फिर कुरान मजीदकी गवाही देख लो कि, जानना चाहिये कि, खुदा जागृत है इसलिये मनुष्यके लिये भी जागृत (विवेकी) होना चाहिये। जो जागृत नहीं वह मनुष्य ही नहीं, जागृतके लिये बनाया गया यदि स्वप्नका काम करे तो वह कैसे मनुष्य कहा जा सकता है। अविवेकतासे उसको वह प्रकाश कदापि नहीं मिल सकता, जिसके द्वारा उत्कृष्ट पद प्राप्त हो सकता है।

दूसरी पुस्तक जबूर।

दाऊदका जबूर सरदार मुग़नीके लिये ४ बाबकी ६ आयतमें देखो। जबीहा और हदीयाको तू नहीं चाहता, तूने मेरी खोलें चढ़ा दी तू खतीबका तालिब नहीं।

आसिफका जबूर ५० बाब, १३-से १५ आयत तक देखो – खुदा कहता है कि, क्या मैं बैलोंका मांस खाता हूं ? या बकरीका लोहू पीता हूं ? तू धन्यवादका बलिदान कर उसीको परमात्माके आगे भेंट चढ़ा।

आशिफकी जम्बूरका ५० वां बाब २३ आयतमें लिखा है कि, जो कोई धन्यवादका बलिदान चढ़ता है, मेरा प्रकाश प्रकट करता है उसको जो अपनी बोल चाल दुरस्त रखता है उसे खुदाकी निजात दिखलाऊँगा।

दाऊदका जबूर सरदार मुगनीके लिये ५१ बाब-१५ से १६ आयत तक लिखा है कि, ऐ खुदाबन्द ! तू मेरी लबोंको खोल दे तो मेरा मुंह धन्यवाद करेगा. कहेगा कि, तू जीवहत्याके बलिदानसे खुश नहीं। नहीं तो मैं तेरी खुशनूदी देता नहीं ! खुदाका बलिदान टूटा हुआ मन है। टूटा हुआ मन; ऐ खुदा ! तू तुच्छ न जानेगा।

दाऊद गीत १०४ – तेरे कामका फल जो है उससे पृथ्वी आसूदः यानी (भरी हुई है)। चारपायोंके लिये घास और मनुष्योंके लिये शीक है।

दाऊद गीत मजमूर (५१) ऐ खुदा ! तू खूनसे मुझे बचा ले मेरी सलामतीके लिये मेरी जबान तेरे रहमकी धन्यवाद करेगी। कुर्बानीसे तू राजी नहीं, न तो वह चढ़ाऊँ। कुर्बानीसे मालिक जरा भी खुश नहीं है.

दाऊद गीत मजमूर-४० देख। जबह और कुर्बानीसे तू रजामन्द नहीं था, एक जिस्म (शरीर) पाकको तूहीने मेरे वास्ते रक्खा था, जब बशरसे कुर्बानी नहीं चाही बिलकुल.

जो कुछ मैंने पिछले प्रमाणमें लिखा, वही बात मूसाकी शरीअत और तौरेतकी हुई, पैमाइशके १ बाब २९ से ४० आयत तक खुदाने कहा कि, प्रत्येक

बीज और नवातात जो तमाम जमीनपर है हर एक दरख्तको जिसमें बीजदार फल है देता हूँ । यह तुम्हारे खानेके लिये होगा (६००) जमीनके सब चरनेवाले और आकाशके उड़नेवाले पक्षियोंको जो कि, पृथिवीपर रहते हैं जिनमें जिन्दगी का दम है, सब्जी उनके खानेके लिये सब तरहकी देता हूँ और ऐसाही होगा।

एसियाह नबीकी किताबका ६६ बाब १०५ आयत तक-खुदावन्द फरमाता है कि, आसमान मेरा तख्त है जमीन मेरे पांवकी चौकी है, वह घर कहां है जो मेरे वास्ते बनाते हो मेरा आरामगाह कहां हैं, ये सब चीजें तो मेरे हाथने बनाई यह सब मौजूद हैं ।

खुदावन्द कहता है लेकिन मैं उस मनुष्यपर निगाह करूँगा जो गरीब और टूटा दिल है, जो मेरे वचनसे काँप जाता है । वह जो एक बैल जबह करता है, उसके समान है जिसने एक आदमीको मार डाला वह जो बकरा कुरवानी करता है, उसके समान है, जिसने एक कुत्तेका शिर काटा । जो बलिदान चढ़ाता है वह उसके समान है जिसने शूकरका लोहू चढ़ाया हो । लोबानका जलानेवाला उसके समान है जिसने एक पत्थरकी मूर्तिको मुबारक कहा है । हां ! उन्होंने अपनी राहें पसन्द कीं ।

अमूस नबीका ६ बाब ३ आयतमें लिखा है । अफसोस है उन लोगोंपर अपनेसे जो बुरा दिन दूर किया चाहते हैं, अपने पास जुल्मकी चौकीको खींचते हैं । वे जो हाथीदांतके पलँगपर लेटते हैं, अपनी अपनी चारपाइयोंपर फैल २ के सोते हैं गल्लेके थानमेंसे बछरों और बकरोंको निकाल निकाल कर खाते हैं रब्बाब आवाजके साथ गाते हैं, दाऊदकी तरह अपने अपने बजानेके लिये नये नये बाजे ईजाद करते हैं, प्यालोंमेंसे शराब पीते हैं, अपने बदनपर खालिस अतर मलते हैं, लेकिन युसफके शिकस्ता हालीके लिये शोक नहीं करते ।

इंजीलका कथन-मतीकी इञ्जीलका २२ बाब ७ आयतमें लिखा है कि मैं कुरबानी नहीं चाहता, बल्कि रहम चाहता हूँ ।

पोलूसके पहले खत, रोमियोंके १४ बाब २१ आयतमें लिखा है, कि, खानेके सबबसे खुदाके कामको मत बिगाड़ । सब कुछ तो पाक है, पर उस आदमीके लिये जो ठोकरके साथ खाता है बुरा है । गोस्त न खाना और न शराब पीना, ऐसा कुछ न करना जिससे तेरा भाई धक्का खाय, यही तेरे लिये बेहतर है

कुरान और हदीस – कुरान सिपारे पहला सूरे फातेहा –(बिसमिल्लाही-रंहामानिर्रहीम) ।

यही सारे ईमान मोहमदीकी जड़ है । इसका अर्थ है कि—मैं शुरू करता हूँ अल्लाहके नामसे वह अल्लाह कैसा है कि, दयालू है (रहीम) और रहमान है ।

समीक्षा – कृपालू जो खुदा रहीम है रहमान है, उस खुदाका हुक्म जबह एवं कत्ल करनेका हरगिज नहीं हो सकता, नहीं तो रहीम और रहमान नह हो सकता. यह किसीको खबर नहीं कि, रहीम और रहमानके कौनसे गुण होते हैं वह खुदा कौन है। क़त्ल(रक्तपात) करानेवाला खुदा कौन है। किसी जीवधारीके गलेपर छूरी चलाना ईमान और बुद्धिके विरुद्ध है। यह मानुषिक बुद्धिसे तो एकदमही उलटा है। छुरी चलानेके समय, बिसमिल्लाह जब्बारूल जब्बारही कहारुल कहार, कहना उचित है। क्योंकि, बिसमिल्लाह हिरहेमानिर्रहीमको यह जगह नहीं है। जिस समय हाथमें छुरी ली उसी समय रहीमुर्रहीमाँकी सिफत जाती रही। जिसके ऊपर बिसमिल्लाह रहीमुर्रहीमाँके साथ कल्मा न पढ़ा जायगा तो वह बिलकुल हराम हो जायगा। जो कोई रहीमका नाम लेकर छुरी चलावेगा उसपर अलबत्त ईश्वरका कोप होगा, वह ईश्वरकी कृपाका पात्र कभी न होगा। जो कोई इस बिसमिल्लाहके अर्थके ऊपर विचार न करेगा, चाहे कुरान हदीस फिक्का आदि सब कुछ पढ़े पर सब निरर्थक है, अगर रहीमके नामसे जबह हुई तो भी हराम हुई। रहीमको छोड़कर दूसरा कुछ कहा तो भी हराम हुई, बस इससे साबित हुआ कि, जिसने मांस खाया हराम खाया वो मुसलमान नहीं है।

कतल पर गैरके यह बिसमिल्लाह। होवे हरगिज न तुझपर रहम अल्लाह।
बाशरअ और तिहारतो तकवा। सब अबस होवे अन्दरू स्याह॥

११४ सूरते कुरानमें हैं सब सूरतोंके माथेपर यही है दूसरा कुछ नहीं। जिस सूरतमें जबह और क़त्लका हुक्म उतरा वह हुक्म रहीम और रहमान अल्लाह के तरफसे कभी नहीं माना जा सकता. क्योंकि, रहीम यानी दयालू हत्यापर कभी भी प्रसन्न नहीं हो सकता, इससे यह सिद्ध हुआ कि, रहीम और रहमान अल्लाह दूसरा है जब्बार (अत्याचारी) खुदा दूसरा है, जिसके तरफसे अत्याचार है प्रत्येक सूरतके माथेके ऊपर यही है। ऊपर रहीम रहमान रखकर नीचे अत्याचार की आज्ञा देना धोखा नहीं तो और क्या हो सकता है।

कुरान सूरे हज–३७ सिपारा ४ रुकूअ ३७ आयतमें लिखा है अल्लाहको नहीं पहुचेगा, उसका गोस्त या लोहू, लेकिन उसको पहुचता है तुम्हारे दिलको अधीनता, इसी तरह उनको दिया मैं तुम्हें कि अल्लाहकी बड़ाई पढ़ो, इस पर कि. तुमको राह समुझावे और खुशी सुनानेवालेको।

कुरान सूरबकर २१ सिपारा रुकुअ ६९ आयत लोगो खाओ जमीनकी चीजों में से जो हलाल और सुथरी है न चलो कदमों शैतानके कि. वह तुम्हारा पक्का शत्रु है ।

जमीनकी चीजोंमेंसे यहां आशय है साग, पात, अनाज, फल, फूल आदि. क्योंकि, पृथिवीमेंसे यही उगते हैं, जीवधारी नहीं उगते, पृथिवीको ही सुथरी और हलाल चीजें हैं दूसरी कोई नहीं है, यही मनुष्यका यथार्थ भी क्षण है ।

गुलजार आदममें लिखा है कि, हजरत आदमने खुदाके हुक्मको न माना, अपने आपको नंगा देख लज्जावान् हुये । वृक्षोंसे पत्ता मांगने लगे कि, मैं अपना परदा करूँ, स्वयं किसी वृक्षका पत्ता न तोड़ा. जब स्वयं इंजीरके वृक्षके अपनी खुशीसे पत्ता दिया, तो उसके पत्तासे अपना परदा ढका । यह वही बात है कि, मुहम्मद साहबको वृक्ष दीवार और पत्थर आदि सब सलाम करते थे, उसको मुहम्मद साहबके सिवा दूसरा कोई भी मालूम न कर सका । जो कोई जैसा भला तथा किसी को दुख देनेकी इच्छा न रखता होगा, वही वृक्षोंकी बातचीत और आशयको समझ लेगा । दयालु ऐसे आदमकी सन्तान मुसलमान ऐसे अत्याचारी हो कि, जीवित जीवधारियोंको बलसे पकड़कर काटते हुए कहें कि, हजरत आदम मुसलमान थे तो क्या ? वे भी ऐसेही थे जैसे कि, अब हैं । वास्तविक बात तो यह है कि, ये लोग मुसलमानके अर्थ न समझते होंगे जिससे झूठा दावा करते होंगे ।

सिहाका न्याय – हदीसोंसे प्रगट है कि, कयामतके दिन खुदा सबका न्याय करेगा, मनुष्यके अतिरिक्त दूसरे जीवधारियोंका भी हिसाब होगा, जो हिंसक पशु सींग और नखोंसे दूसरोंको कष्ट पहुँचाते हैं, उनको दण्ड मिलेगा, वे भी अपने २ पापके फलोंको भोगेंगे । सब अत्याचारी जीवधारी नरकमें डाले जावेंगे, शुभकर्मी पापरहित जीव स्वर्गको जावेंगे । जड़ जीवोंका भी हिसाब होगा, जैसे फलदार वृक्ष भले और काँटेवाले दुख पहुँचानेवाले वृक्ष क्रमशः स्वर्ग और नर्कको जावेंगे । जो हिंसक जीवधारी पशु कहलाते हैं तथा स्वप्नकी दशामें हैं. वे भी रक्तपातके कारण दोजखमें जावेंगे तो फिर जाग्रत और विवेकके लिये ही बनाया गया, मनुष्य जो कि, अपने कर्म्मोंका हिसाब देनेवाला है, वह पाप और अत्याचार से किस प्रकार छूट सकता है । उसे अपने कर्म अवश्य ही भोगने पड़ेंगे ।

गोहत्याका निषेध – महम्हद साहबने कहा है कि, चारकी सद्गति कभी न होगी । १–जाबिहुल बकर यानी गोहत्या करनेवाला, २–दायमुल खुमर यानी शराबका पीनेवाला, ३–बायेउल बशर यानी मनुष्य बेचनेवाला, ४–कातिउल शजर यानी वृक्षका काटनेवाला गाय मारनेवाले क़स्साई वगैरः नशा खानेवाले आदमी बेंचनेवाले और वृक्षके काटनेवाले ये सब दोजकके जीव हैं ।

समीक्षा – मुसलमान कहते हैं कि, हमको कुरबानीका हुक्म है, यह उनको

किस प्रकारसे साबित हुआ कि, खुदा कुरबानीसे राजी है। कुरबानीके लिये कोई आयत उत्तरी ? आकाशवाणी हुई ? अथवा कोई फिरिश्ता प्रगट हुआ ? या स्वप्न देखा ? कि, यह उसी खुदाकी तरफसे है। या और ही कोई है कुरान ५० सूरत रुकूअमें लिखा है कि, हम बहुत नजदीक हैं तरफ उसके (इनसानके शहरगसे।

जो खुदा व्यापक और शहरगसे नजदीक हो फिर उसखुदाका बचन भी शहरगसे निकट होना चाहिये, न कि, खुदा तो मेरे पास हो उसका कलाम फिरिश्तों के द्वारा आकाशसे आवे। इन सब बातोंसे साबित होता है कि, खुदाको न पहचान करकेही नबियोंने जबह और क़तलकी आज्ञा दी है। ऐसी आज्ञाएं उसकी ओरसे नहीं हैं।

हजका यम – महम्मदी लोग हजको जाते हैं मक्काके निकट पहुंचते हैं, किसी वृक्षका पत्ता नहीं तोड़ते, घास नहीं उखाड़ते किसी जीवधारीको किसी प्रकारका भी दुःख नहीं देते, वरन् जूँ भी नहीं मारते। जो कोई इसके विरुद्ध कुछ करता है तो उसका हज पूरा हुआ नहीं समझते। इन बातोंसे जाना जाता है कि, मुसलमानोंका खुदा व्यापक और सर्व दृष्टा नहीं है, इसीलिये केवल मक्कामेंही उसके नियमोंका पालन होता है। यदि व्यापक है तो वही नियम सब जगह होने चाहिये, यदि खुदा केवल मक्कामें ही है तो सब जगह निमाज पढ़ना और रोजा रखना व्यर्थ है। इस कारण यह स्वीकार करना पड़ेगा कि, हजके नियमोंका सर्वत्र पालन होना चाहिये।

अनुचितका विधाता – इब्राहीम और मूसा आदिकका खुदा प्रगटही खाता पीता था, पर मुहम्मदका खुदा जो बेचून और बेचारा है, छिपाकर खाता था परदेसे बातचीत भी करता था। यह सर्वदासे सभी नबियोंको भिन्न २ कानून और बातें बतलाकर छल कपटसे लड़ाता आता है। किसीको शराब पीना सिखलाया, तो किसीको मांस खाना बतलाया, किसीको ज़ना (व्यभिचार) करनेकी आज्ञा दी, किसीको उत्तम खानेको भी मना कर दिया। किसीको जीवहत्या करने की आज्ञा देता है। खरकईल नबीको विष्ठाकी पकी रोटी खिलाता है। यह बात खरकईल नबीकी किताबका बाब –१२ आयत–ईसाके शिष्य पितरसको डाँगर ढोर. कीड़े, मकोड़े आदि खानेकी आज्ञा दी। देखो रसूलोंका अमाल–११ बाब ५१३ आयत–इसियाह नबीको जनाकार (व्यभिचारिणी) औरतसे मित्रता रखनेकी और व्यभिचारकी लड़कीसे विवाह करनेका आदेश दिया।

समीक्षा – इन नबियोंमेंसे किसीसे दरियाफ्त किया जावे कि, आप कभी

कुछ कभी कुछ कानून प्रचलित करते हो, इसका क्या कारण है ? यथार्थमें इन नबियोंमेंसे किसीने भी खुदाको न जाना क्या ? भला जो खुदाको पहचाने वो डाँगर, ढोर, कीड़े, मकोड़े इत्यादि तथा गृहकी पकी रोटी खावे ? पुंश्चली स्त्रीसे मित्रता रखे ? उनकी पुत्रीसे विवाह करे ? किसीको जबह करने और कत्ल करनेकी आज्ञा दे ? कदापि नहीं । ईश्वर शुद्ध है उसका जाननेवाला भी शुद्ध होता है उसके कर्म भी शुद्ध और उज्वल होते हैं।

समता – मनुष्य और पशुओंका मांस एक समान है, जिसने एकका खाया उसने सबका खा लिया, देखो तौरीतमें इस तसनाका १२–बाब २०–से–२३ आयत तक लिखा है कि, खानेमें पाक और नापाक जानवर बराबर हैं यही बात इन्जीलमें रसूलोंके आमालमें इसी बाबमें लिखी है कि, जो कोई खाता है उसके लिये सब जीवधारी मनुष्यके मांसके समान है।

कबीर साहब – जस मांस नर की, तस मांस पशुकी, मांस मांस एक सारा हो ।

सात्विक भोजन – जो ऋषीश्वर लोग जङ्गलमें रहते हैं वे साग, पात, कन्द, मूल, फल आदिक खाकर जीते हैं. उन्हींका अन्तःकरण शुद्ध तथा हृदय प्रकाशमय और कान्ति तेज युक्त होती है । उन्हींको सब प्रकारकी सामर्थ्य मिलती है, तपस्या, भजन और संयम सब प्रकारकी शक्तिको प्रदान करता है । दानियल नबीकी किताब २ बाब–८२१ आयत तक देखो–दानियल नबी केवल फलियां खाकर दिन बिताता था, उसने कभी भी बादशाही भोजन स्वीकार नहीं किया, तिसपर भी उसका चेहरा बादशाही खाना खानेवालोंसे अधिक प्रकाशमान रहता था । नियुकद नजर बादशाहके सन्मुख परीक्षाके समय उसीको अधिक प्रतिष्ठा मिली । नबीसे बहुतसे आश्चर्यमय कौतक प्रगट हुये ।

धारणा – मांसाहारियोंके मनमें यह बात समाई हुई है कि, मांस खानेसे बल कान्ती बढ़ती है दानियल नबीकी उपरोक्त बातोंका विचार करें जाने कि, उनका कहना सब झूठ है ।

श्रेणियाँ और भोजन –– प्रथम श्रेणीमें पुण्य स्वरूप देवते हैं, उनको परमात्माने अमृत और कल्पवृक्ष प्रदान किया है । दूसरी श्रेणीमें मनुष्य हैं जिनको ईश्वरने अनाज फल शाक पात आदिक प्रदान किया है । तीसरी श्रेणी राक्षसोंकी है, जो कि, मांस शराबको ग्रहण करते हैं बुरे कर्मोंकोही अपना कर्तव्य समझते हैं इनमेंसे पहले श्रेणीवालोंको स्वर्ग मिलता है दूसरे मध्यमें रहते हैं एवं तीसरी श्रेणीवाले नरकमें पड़ते हैं ।

स्वसंवेदमें—सृष्टिके स्थितिकी सात शाखायें लिखी हैं- १ अनाज, २ घास, ३ पानी, ४ मिट्टी, ५ पत्तियाँ, ६ फल, ७ फूल इन्ही सातों प्रकारके भोजनोंसे सर्व जीवधारियोंका जीवन है, अनाजसे मनुष्य, घाससे पशु, पानीसे जलचर पलते हैं कितने ऐसे भी जीवधारी हैं जो मिट्टी खाकर ही रहते हैं, कितनेही कीड़े पत्तियोंसेही जीवन व्यतीत करते हैं. बन्दर आदि पशु फल खाकर रहते हैं कितने अपने जीवनकी रक्षा फूलहीसे करते हैं।

मांसकी पेसाबसे तुलना—दो प्रकारकी सृष्टि है। एक जलसे दूसरी वीर्यसे होती है जलकी वह सृष्टि है जो जलसे उत्पन्न होती है। वीर्यकी सृष्टि वीर्य और लोहूसे उत्पन्न होती है। जलसे उत्पन्न होनेवाली सृष्टिको लोग अशुद्ध नहीं समझते। वीर्यसे उत्पन्न होनेवालीको अशुद्ध जानते हैं अनाज फल आदि सब जलकी सृष्टि है। पशु पखेरू आदिकी उत्पत्ति वीर्यसे है। प्रायः मुसलमानोंको देखा जाता है कि, पिशाब करनेके समय एक मिट्टीका डला हाथमें ले जाते हैं, जिससे पिशाब करके उपस्थ इन्द्रियको पोंछते रहते हैं, जिसमें पिशाबकी बूँद कपड़ेमें लगकर उसे अशुद्ध न कर दे आश्चर्यकी बात है कि, जिस पिशाबकी एक बूँदसे भजनमें हानि होनेके भयसे डला लेकर घण्टों खड़े रहते हैं उसी पिशाबसे उत्पन्न हुआ महा निकृष्ट पदार्थ मांससे आध सेर पेटमें रखकर निमाजके लिये खड़े होते हैं ऐसी बुद्धि और समझको धिक्कार है।

४० दिनके बाद काफिर—हदीसमें आया है कि, जो कोई चालीस दिनतक बराबर मांस खाता रहे दिन भी दिन न छूटने दें तो वह अवश्यही काफिर हो जायगा। मैं कहता हूँ कि, जो कोई एक बार मांस खानेकी इच्छा करेगा अथवा खायगा तो वह काफिरोंमें भी काफिर हो जायगा। आदमने एकही बार खाया था जिसके कारण बिहिश्तसे निकाले गये थे।

जीवके देखते जीवहत्याका निषेध—मुसलमान कहते हैं कि, रसूलिल्लाहने फरमाया है कि, तुम किसी जानदारको दूसरे जीवधारीके सामने जबह मत करो "ऐसा करनेसे उसके दिलमें भय उत्पन्न होगा कि, आज यह उसको कतल करता है कल मेरे साथ भी ऐसा व्यवहार करेगा" अफसोस है मुलसमानोंकी बुद्धि और समझ पर कि, पशुओंके डरनेसे तो डरना खुदा जो व्यापक सर्व द्रष्टा (हाजिर-नाजिर) खुदा है उससे तनिक भी भय न करना।

न मिलनेका कारण—इसहाकका बेटा ईशू बड़ा शिकारी था, इसी कारण अपना ज्येष्ठांश खो बैठा पितासे उसको बरकत नहीं मिली जो याकूब चरवाहा था उसे मिली। शिकारी कठोर हृदय—मांसाहारी कभी कल्याण न पायेंगे।

युक्ति प्रमाण।

भारत वर्षके इतिहाससे प्रगट होता है कि देवता और दैत्य सर्वदासे लड़ते आये हैं देवता सर्वदा जय पाते थे, जब संयोगन देवतोंकी हार होती थी तो उनको अन्तरिक्षसे सहायता मिलती थी, भलोंका सहायक परमेश्वर है. वह बुरोंको कभी भी सहायता नहीं देता।

लोहूके निषेधका तात्पर्य—हजरत नूह मूसा आदिकको खुदाने हुक्म दिया था कि, तुमको अनाज, फल, मांस आदिक खानेको दिया मांस खाना और लोहू फेंक देना क्योंकि, लोहूका बदला लिया जावेगा. लोहू पशुका जीवन है। न्यायका स्थान है, जब कि, किसी जीवधारीको मारा तो उसका लोहू खावो चाहे फेंक दो, उसकी जान तो गई। क्या प्राणसे लोहू अधिक है कि, फेंक देनेसे उसका बदला न लिया जायगा कैसी अन्यायकी बात है, प्राणके साथही तो उसका सब शरीर है, हाड़, चाम, मांस, लोहू, रग, आँत इत्यादि, जो चाहो सो खाओ अथवा फेंक दो। हत्या तो उसके मारतेही गरदनपर सवार हो गई, ऐसे कपटी और छली खुदाके छल कपटको हंस कबीरके बिना दूसरा कोई नहीं जान सकता, इस खुदाके भेष धारण करनेवाले अखुदाने सबकी बुद्धिपर परदा डाल दिया है ख्यमु बात तो यह है कि, रहीम हत्यारा नहीं हो सकता।

याकूबको गऊका शाप—दीन इसलामसे प्रगट है कि, एक दिन हजरत याकूबने एक गायके बछड़ेको मारकर खा लिया ये जिस समय बछड़ेको मार रहे थे वहांही उसकी मां खड़ी देख रही थी, गायने याकूबको शाप दिया, जिसका यह फल हुआ कि, याकूबका बेटा ईसुफ मार कूटकर कूवांमें डाला गया उसके शोकसे याकूब रोते रोते अन्धा हो गया। विचारनेकी बात है कि, जब एक बछड़ेके मारनेसे याकूबकी यह दशा होगई तो जो लोग हजारों जीवोंकी हिंसा करते हैं उनकी दशा क्या होगी ?

शिकारीकी हिंसक पशुओंसे तुल्यता—जितने हिंसक और शिकारी पशु हैं सब अशुद्ध हैं। मूसा और मुहम्मदकी शरियतसे भी प्रगट होता है कि, मांसाहारी सब प ु नापाक हैं, यह बात प्रगट भी है कि, शेर भेड़िया, कुत्ता, बिल्ली, बाघ और शाहीन आदिक मांसाहारी शिकारी और हिंसक पशु अशुद्ध ठहरे, तो मांस खानेवाला, शिकार करनेवाला और हिंसा करनेवाला, कैसे शुद्ध हो सकता है ? जिसको कि, अपने भले बुरे कर्मका ईश्वरके सन्मुख हिसाब देना है।

कब—जब मुहम्मद साहब जहाद और लड़ाईको जाया करते थे वहां अनाज नहीं मिलता था तो जानवरोंको जबह करके खानेकी आज्ञा दिया करते

थे उनके सैनिकोंको मांसको खानेसे, कामका वेग हुआ तो उन्होंने हुकुम दिया कि जब आदमीको तीन रोज भूखे मरते बीत जांय खानेको कुछ न मिले, भूखसे प्राणान्तकी दशा हो, तब चौथे दिन जो कुछ मिले खा लो, तो हलाल है मांस खाना ऐसेही समयके लिये हलाल हो सकता है ? दूसरे समयके लिये नहीं हो सकता। इसी प्रकार कितनी रीति रसम है जो किसी समय विशेषके लिये हैं दूसरे समयके लिये अनुचित हैं।

पाक नापाककी समता—तौरीत और इञ्जीलसे प्रगट है कि, खाने मे पाक और नापाक सब जीवधारी एक समान हैं। तौरीतमें तो कुछ विवरण भी है, पर इञ्जीलमें किसी प्रकारका बिलग विवरण नहीं है तो भी ईसाई लोग अपनी बुद्धिसे अपने भीतरी ईमानसे कुत्ता, बिल्ली, गदहा आदिक खाना नापसन्द करते हैं।

निष्कर्ष—शिकारी पशु अर्थात् हिंसक जानवर और कञ्जरियाँ (वेश्यायें), जिनका कि गोश्त खाना और वेश्यापन करनाही काम है, इनका अपराध तो शायद क्षमा हो भी, पर हिंसक और दुराचारी मनुष्य कभी क्षमा न किये जायँगे। उनको ईश्वर अवश्य महान् दण्ड देगा। हाँ इतना तो है कि, जिस स्थानपर, अनाज घास, पात, फल, फूल, न होगा। प्रयत्नसे मिलना भी दुस्तर होगा वहांके मनुष्य क्षमाके योग्य समझे जा सकते हैं।

दोष—मांस अहारी अशुद्ध अन्तःकरण वाले होते हैं। प्रथम तो उनका मनही भक्तिमें नहीं लगता, उनमें सांसारिक छल, कपट और विषयवासनाकी प्रबल इच्छा होती है। यदि वे भक्तिकी ओर भी लगते है तो वाममार्गमें सम्मिलित होते हैं। मांस मदिरामेंही निमग्न रहकर तमोगुणी बने रहते हैं, उनको सतोगुणी भक्ति नहीं मिलती इसी कारण लोक परलोकसे सुख और मोक्ष यह भी प्राप्ति कभी नहीं होती।

नानक०—जो पीते प्याले और खाते कबाब, सोदे खोरे लोगो यह होते खराब सो तोवा पुकारे कि, पावे निमाज, जो लेखा मंगोज तदा कीजे जवाब ॥

संस्कृतमें तम अज्ञानको कहते हैं इसीसे सारा संसार हुआ है। तमके न होतेही संसारका पसारा नष्ट हो जाता है। फिर ज्ञान होकर मोक्ष मिल जाता है यह निश्चित बात है कि, मांस आदि तमोगुणी भोजनोंसे कभी भी मुक्ति नहीं हो सकती।

मनुष्यसे भेड़िया—मांस खानेकी इच्छा रखनेवाले हिंसक पशुओंकी योनिमें जाते हैं। नानक साहबकी जन्म साखीमें लिखा है कि:—एक

समय नानक साहब यमन आबाद नामक बस्ती जो इस समय गुजराँ वालाके निकट है, वहां पर आपका मलिक भागू नाम करोरी खत्री मिला । उसने नानकजीसे कहा कि, आज मेरे पिताके श्राद्धका दिन है, आप मेरे घर भोजन कीजिये नानक साहबने कहा कि, यह भोजन तुम्हारे पिताको पहुँच गया, उस खत्रीने उत्तर दिया कि, महाराज ! ब्राह्मण वचनानुसार तो अवश्य पहुँच गया नानक साहबने कहा कि, असज्जनोंको कदापि नहीं पहुँचता तेरा पिता भेड़ियाकी योनिमें गया है, यहांसे पांचकोसपर अमुक स्थानमें तीन दिनका भूखा प्यासा झाड़ीमें बैठा हुआ है । खत्रीने कहा कि मैं इस बातका कैसे विश्वास करूं ? नानक साहबने कहा कि, तू भोजन लेकर उसके पास जा, वह भोजन करेगा तेरे साथ मानुषिक भाषामें बातचीत करेगा । नानक साहबकी आज्ञानुसार खत्री भोजन लेकर वहीं पहुँचा वहाँ भेड़िया मिला उसने खूब पेटभर भोजन किया । पेट भर खाने पर भेड़ियेने खत्रीके पूछनेसे कहा कि, मैं अमुक खत्री हूँ । एक वैष्णवके उपदेश मैंने मांस खाना त्याग दिया था. एक समय बीमार पड़ा उस समय मेरा पड़ोसी मांस पकाता था, मेरे नाकमें उसके मसालेकी गन्ध पहुँची, मेरा मन मांस पर चल गया, इतनेही में मेरे प्राण निकल गये । मांस खानेके सकल्पसे मैं भेड़िया हो गया । फिर वही खत्री नानकसाहबका उपदेश लेकर भक्त हो गया ।

कबसे—जम्बूद्वीपके भरतखण्डको भारतवर्ष भी कहते हैं । यह देश पृथिवीके सभी प्रदेशोंसे उत्तम है । भारत वर्षके चारों ओर मुसलमान म्लेच्छोंकी बस्ती है, किसीकी भी ऐसी श्रेष्ठता नहीं है । भारतमें दयाका पूर्ण प्रचार होनेके कारण, यह सर्वोत्कृष्ट एवं सर्व गुण सम्पन्न हुआ है । शोककी बात है कि, मुसल्मानोंके राज्य कालसे भारतमें भी मांस भक्षणका प्रचार और बढ़ गया जो दिन २ बढ़ता ही जाता है ।

हानिके कारण—दया कम हो गयी, लोगोंके अन्तःकर अशुद्ध हो गये । भक्ति लुप्त हो गई । साधु सेवा और सच्ची गुरु भक्तीका चिह्न भी नहीं मिलता, ऊपरसे गुरु भक्ति सेवाकी दिखावट और दम्भसे धर्मकी पुकार थोड़ी बहुत रह गई है । देखें आगे क्या होता है, शोक ! ज्ञान, भक्ति और मुक्ति आदि सत्य पदार्थकी खोजको भूलकर भारतवासियोंने मांस और शराब तथा नाना प्रकारके निषिद्ध मादक पदार्थोंको ग्रहण कर लिया है

उपदेश—परमात्माके सब गुणोंमें श्रेष्ठ गुण दयालुता और कृपालुता है सब मनष्य तथा अन्य जीवधारी उसी दया और कृपाका आसरा रखते है । यदि वह कृपा न करे तो ऋषि, मुनि, पीर, पैगम्बर, साधु, महात्मा कोई भी न छूटें

वरन् सब उसके कोपमें पड़ें, यही एक इसका दयालू होनेका प्रमाण है कि, पापियों पर भी उसकी दया होती है। मनुष्य होकर जो इस सर्वोत्कृष्ट गुणको न धारण करे, वह मनुष्य मण्डलसे बाहर है। जो उस दयालूका दर्शन करना चाहता है एवं उसकी कृपा प्राप्त करके जन्म सुधारना चाहता है, तो अवश्य दया धारण करे, निर्दयी उसकी कृपाके पात्र कदापि न होंगे उसके कोपमें पड़के नर्कमें सडेंगे। मांस खानेवालोंके हृदयमें दयाका संचार भी नहीं होता, अपने स्वादके लिये हत्या करते हैं। शाक, जानवरोंका गला मूलीके समान काटते हैं। शहरोंमें कसाई एक अधेलाही देता है मुल्ला लोग प्रत्येक गलेपर एक अधेला लेकर सहस्रों बकरी और भेड़ोंको जबह करा देते हैं। शायद यह मुल्ले और मुसलमान लोग भी, बिहिश्त मिलनेकी आशा रखते होंगे? धिक्कार! धिक्कार! इसी विषय पर कबीर साहिबने भी अपने सच्चे उपदेश दिये हैं कि, मनुष्य सच्ची बातको समझ कर अपना कल्याण कर सके।

झूलना—सन्तकी चाल संसारसे भिन्न है, सकल संसारमें चेहर बाजी।
हिंदू मुसलमान दोउ दीन सरहद बने. वेद कितेब परपञ्च साजी॥
हिंदूके नेम आचार पूजा घना, वरत रहत एकादशी राजी।
बकरा मार मुख मांस भक्षण करें, भक्ति ना होय यह दगाबाजी॥
सर्व ऊपर श्रीकृष्ण गीता कथी, कृष्णकी बातको मान पाजी।
क्या भई वेद गीता पढ़े दृष्टि उघरे नहीं, भैंसकी सींग क्या बेनू बाजी॥
मुसलसान कलमा पढ़े तीस रोजा रहे, वंग निमाज ध्वनि करत गाढ़ी।
बकरीको कूटी काटि जीव जबह कर, गाय पच्छाड़के कुही काढ़ी॥
इस जोर जुल्मसे बिहिस्त न मिलेगी, खून अपराध शिर व्याध बाढ़ी।
माँगेगा हिसाब तब जवाव क्या देवेंगे, चलेंगे फिरिश्ते जब पकड़ दाढ़ी॥
मोमदिल मेहरवान दिल उस दिलको, भिहिश्त रोजी भिहिश्त ठाढ़ी।
कहँ कबीर वन्दे साहबी सो करे, सत्य जो चीन्हके झूठ छाढ़ी॥

तम प्रिय होनेका कारण—प्रायः हिंसक जीवधारी प्रकाशको सहन नहीं कर सकते जैसे उल्लू, चमगीदड़ आदि बहुतसे मांस अहारी जीवधारी प्रकाशसे ऐसी घृणा रखते हैं कि सूर्य्यके निकलतेही बिलोंमें जा छिपते हैं शामको पूरी अँधेरी तक मुँह भी नहीं दिखाते। जब अँधेरी रात होती है तो आनन्द पूर्वक इधर उधर फिरते हैं, ऐसे करनेका कारण केवल मांस अहार है, जिससे उनका अन्तःकरण अन्धकारमय हो गया है इसी कारण, वे अन्धकारकोही स्वीकार करते है।

अभक्ष्यके कारण अपूर्णता—जिस मकानमें गन्दगी, कूड़ा, कर्कट, भरा हुआ हो, लीपा झारा न जाता हो, ऐसे मकानमें दीपका प्रकाश करने पर भी ज्योति बहुत नहीं फैलता पर जो मकान खूब साफ स्वच्छ हो दीवारोंमें उत्तम उत्तम काँच लगे हुये हों ऐसे मकानमें एक छोटोसी बत्ती भी जला दी जाय, तो भी सैकड़ों दीपकोंके समान प्रकाश हो जाता है समस्त मकान ज्योति से भर जाता है। इसी प्रकार मनुष्यका अन्तःकरण है, यही आत्माका मकान है, यदि पापोंसे अन्तःकरण अशुद्ध हो, मांस शराब आदि अभक्ष्य घृणित पदार्थोंसे स्वच्छ हो, भय और शुद्धताके साथ भजनरूपी दीपक प्रकाश किया जावे, तो शीघ्र ही पूर्ण प्रकाशमय हो जावे। यही कारण है कि, पश्चिम देशके महात्मा पीर पैगम्बर, औलिया, नबी आदिकोंने अभक्ष्यका त्याग किये बिनाही बड़ी बड़ी तपस्यायें कीं तिसपर भी भारतवर्षके मामूली ऋषियों महात्माओंके सहस्रांश प्रकाशको भी प्राप्त न कर सके क्योंकि, भारतीय महात्मागण इन्द्रिय स्वादकी वासनाओंको त्यागकर भजन करते थे।

जिसका जैसा कर्म होता है उसकी वैसेही बुद्धि होती है बुद्धिके अनुसारही विद्याका प्रकाश होता है इसीके अनुसार ज्ञान प्राप्त होता है। ज्ञान हुआ व्यक्ति आत्मज्ञानको प्राप्त करता है इसके किये बिना ईश्वरका ज्ञान कठिन ही नहीं बरन असम्भव है। जिसको आत्माका ज्ञान नहीं उसको सत्य ज्ञान नहीं जिसको आत्मा न होता है वह सब जीवोंको अपनी आत्मा समझता है। अखिल जीव धारियोंकी देहको अपना वह समझता है। जो सर्वत्र अपनीही आत्मा समझता है वह किसी जीवधारीको दुःख नहीं दे सकता वह न किसीको दुःख देना ही चाहता है, वो मांस खाना स्वीकार नहीं कर सकता जो कि जीव हिंसाके बिना प्राप्त नहीं हो सकता।

न्यायकी बात—है कि जितने जीवधारी हैं वे सब अपना बदला लेनेको तैयार होते हैं स्थावर बदला नहीं लेते, जीवधारी पशु और मनुष्य सब एक समान ही हैं आपसमें भाई हैं, जो भाईका रक्तपात करेगा वह अवश्य बदला देगा गला काटनेके बदले गया कटावेगा इसमें कुछ भी अंदेश नहीं है।

मछली खानेके दोष — जो कोई मांस खाता है वह सब जीवधारियोंका ही तो मांस खाता है उसके लिये शुद्ध अशुद्ध सब एक समान है, पशु और मनुष्यका-मांस एकही सरीखा है। जो मांस आहारी मछली अवश्य खाते हैं वो सब कुछ खाते हैं क्योंकि, मछली सब जीवधारियोंके मांसको खाती हैं विष्ठा आदिकका भी भक्षण करलेती हैं। प्रायः देखा गया है कि बड़ी बड़ी मछलियोंका पेट चीरने पर

उनके पेटसे मनुष्यके हाथ पग अथवा कभी कभी पूरा आदमी अथवा छोटा लड़का निकल पड़ा है इसी प्रकार छोटे बड़े पशु भी बहुत निकले हैं। इससे सिद्ध होता है कि, मछली सब कुछ खाती है। अब विचार करने योग्य है कि जिसने मछली खाई उसने हलाल खाया कि, हराम।

कुत्ता खाया – प्रायः ऐसा भी देखा गया है कि, शहरके कसाई लोग अशुद्ध पशुओंके मांस और कभी कभी मनुष्यके मांसको भी बकरेके मांसके साथ मिलाकर बेंच देते हैं लोग उनको मोल ले लेकर खा जाते हैं अस्तु, आठ बरसके लगभग हुए मैंने सुना था कि, लखनऊमें एक सर्कारी मुलाजिम चपरासी अथवा खलासी आदिमें से किसीने कसाईकी दूकानसे मांस ला पकाकर खालिया वह बहुत बीमार हो गया। डाक्टरके पास दवाई कराने गया, डाक्टरके पूछने पर उसने बतलाया कि, अमुक कसाईकी दूकानसे मैंने मांस लेकर खाया था। डाक्टर साहबने अपनी बुद्धिसे विचार किया कि, बकरेके गोश्त में तो यह बात नहीं होती जान पड़ता है कसाईने किसी दूसरे प्रकारका मांस दिया है। कसाईके घर जाकर तलाशी ली तो ठौंव २ पर कुत्तेकी खाल पाई, दरियाफ्त करनेसे मालूम हुआ कि, यह कुत्तों को ही मार २ कर चुपचाप बेचा करता है।

परमात्माने सब जीवधारियोंके ऊपर मनुष्यको राजा बनाया है न्यायी राजाके लिये स्वर्ग, अन्यायियोंके लिये घोर नरक होता है।

गलत यह भी – मुसलमान कहते हैं कि, यदि कलमा पढ़कर जबह करें तो हलाल होता है जीवधारी खुदाको पहुँचता है, अगर कलमा पढ़कर बिन व्याही स्त्रीके साथ व्यभिचार करे तो गुनाह नहीं है. मैं इस बातका कभी विश्वास नहीं कर सकता। अगर इस कलमेमें यह शक्ति होती तो कलमा पढ़कर चोरी करने वालेको पुलिस गिरफ्तार न करती। कलमा पढ़कर खून करनेवालेको फाँसी न मिलती, कलमा पढ़कर डाँका मारता, कोई न पकड़ता इस कारण ये सब बातें बिलकुल झूठ हैं, मूर्खोंमें ठगी पसारनेकी बातें हैं। इसमें कोई प्रमाण नहीं कि, कलमा पढ़कर बध करनेसे जीव स्वर्गको चला जाता है, कलमा पढ़कर व्यभिचार करनेसे निष्पाप रहता है। यदि कलमेमें यह सामर्थ्य है तो चोरी क्या और डाँका आदि पुलिससे अधिक बलवान हैं ? कलमामें यह सामर्थ्य बतलाना राक्षस, भूत यक्षोंके समान धोखा देना है। हां इतना है कि, मुहम्मद साहबके समयमें इस कलमामें बड़ी ताकत थी. क्योंकि, रक्तपात करने, निष्पाप जीवोंकी हत्या करने, चोरी और डाँका मारनेसे भी उनके समयमें अरबके लोग पकड़े नहीं जाते थे मुहम्मद साहबने रक्तपातकी आज्ञाही दी थी।

वाममार्गियोंसे तुलना — हिन्दुओंमें वाममार्गी लोग मदिरा, मांस, व्यभिचार सब कुछ कर लेते हैं. सुमिरण पढ़नेसे पाक होजाते हैं, उन नीचोंसे उनके सुमिरणका हाल पूछा जाय उसका अर्थ विचारा जाय, तो मालूम होगा कि, उस सुमिरण बनानेवाले महान् अत्याचारी, व्यभिचारी, जगत्की मर्यादा भ्रष्ट करनेवाले, महान् विषयी, मांसाहारी और मद्यप वाममार्गीही निकलेंगे ।

समभाव — आदमीकी चार लाख योनि है । अस्सीलाख दूसरे योनिके जीवधारी हैं, सबमें एकही आत्मा है । सबको एक समानही दुःख सुख हैं, जिन जीवधारियोंमें रक्त और श्वाँसका सम्बन्ध है वे सब एक समानही दुःख दर्दके लिये चिल्लाते हुए दुःखी होते हैं । सब जीवधारियोंकी बहुतसी बातों में समानता के कारण भाई २ के समान सम्बन्ध है । जो भाईपर दया न करेगा वह कदापि मनुष्य नहीं कहला सकता ।

ऊँचनीच — जङ्गम स्थावर जीवोंसे संसारको लाभ पहुँचता है, वे सब शुद्ध पुण्यआतमा हैं, जिनसे संसारको हानि पहुँचती है वे पापी हैं और अशुद्ध हैं । साधु विद्वान्, राजा, बादशाह, शूर, बीर, दानी, उदार आदि मनुष्य श्रेष्ठ गिने जाते हैं । पशुओंमें गाय, भैंस, घोड़ा, बकरी आदि—श्रेष्ठ हैं, रेशम तसरके कीड़े शहतकी मखखी आदि कीड़ोंमें श्रेष्ठ हैं । स्थावरोंमें फलवान् वृक्ष और जड़ी, बूटी आदि सब शुद्ध और पुण्यात्मा समझे जाते हैं । अत्याचार करनेवाले, व्यर्थही रक्तपात करनेवाले, निरपराधोंको दुःख देनेवाले सब पापी अशुद्ध और नारकी हैं ।

झूठा दावा — कितने मांसअहारी दावा करते हैं कि, हम विद्या और बुद्धिमें मांस त्यागियोंसे कम नहीं हैं, पर यह उनकी निरा मूर्खता है. इतनी बात अवश्य है कि, ऐसे लोग सांसारिक विद्याके किसी किसी अंशमें चतुर होते हैं, सो भी सब अंशोंमें नहीं, पारलौकिक विद्यामें तो उनको सुधही क्या होनी थी ।

शुद्धोंके लिये नहीं — जिन जो लोग मांस खाते हैं, उन्हीं लोगोंके लिये मांस खाने तथा रक्तपात करनेकी आज्ञा उतरी और उतरा करती है । मांस त्यागी शुद्ध पुरुषोंके पास ईश्वर खुदा अथवा किसी देवताकी मांस खानेकी आज्ञा कभी नहीं उतरी, न उतरती है और न उतरनेकी आशा ही है । प्रत्येक मनुष्य दूसरोंको अपने रङ्ग ढङ्गका बनाना चाहता है ।

हिन्दू शब्दका अर्थ — महाभारत, योगवासिष्ठ और भारतीय प्राचीन इतिहास देखने और पुराणोंके पढ़नेसे मालूम होता है कि, हिन्दू एक प्रबल प्रभावशाली और विजयी जाति थी । इसका कारण भी यही प्रतीत होता है कि, प्राचीन-

कालमें हिन्दू पूरे अहिंसक थे। हिन्दुओंको युद्ध विद्यामें ऐसी कुशलता थी कि, इनकी समता कोई जाति नहीं कर सकती थी, धनुर्विद्याकी योग्यता तो ऐसी थी कि, एक बाणमें सहस्रों बाण छोड़ते थे, विशेष क्या कहें ? इनके समक्ष देव, दानव, राक्षस, यक्ष आदि कोई भी नहीं ठहर सकते थे, महान् प्रभावशाली देवताओंकी भी इनसे सहायता लेनेकी आवश्यकता होती थी। हाय ! शोक ! जबसे भारत-वासियोंने मांस खाना और मदिरा आदि मादक पदार्थोंका सेवन करना तथा सज्जनोंके नियमोंको उलंघन करना आरम्भ कर दिया, तभीसे सारी शक्तियां ऐसी भाग गईं कि, अब उनका पता भी नहीं सुना जाता। प्राचीन मन्त्रोंमें भी असर न रहा. क्योंकि, अब हिन्दू–हिन्दू नहीं रहे, म्लेच्छोंके कर्म करके म्लेच्छोंके समान बन गये। हिन्दू उसे कहते हैं जो हिंसासे दूर रहे। हिन्दू शब्द दो शब्दोंके संयोगसे बना है–हिन् और –दू. ये दो शब्द हैं–हिन्–का अर्थ है. हिंसा, दू–का अर्थ है–अलग रहना, हिंसासे –सा को अलग किया, उसके साथ–दू–को मिला देने से – हिन्दू शब्द होता है। जो हिंसासे बिलकुल अलग रहे उसे हिन्दू कहते हैं। आर्यशब्दके भी ऐसेही श्रेष्ठ और उत्तम अर्थ हैं। मांस खानेसे हृदय और मस्तिष्क निर्बल और अशुद्ध हो जाते हैं येही विवेक और विचारके स्थान हैं। गोल्डस्मिथ साहबकी नेचरल् हिस्ट्री देखो वह भी मांसाहारियोंके विषयमें ऐसेही समर्थन करते हैं।

ब्राह्मणोंका नैर्बल्य तथा परशुराम – ब्राह्मण हिंसाहीके कारण ऐसे निर्बल और कि, उनमें शूरताका नाम भी नहीं रहा। उनके अतिपराभवको देखकर भगवान्‌ने परशुरामजीको भेजा, इन्होंने शूरवीरता और तप दोनोंका उदाहरण एकत्र उपस्थित कर दिया तथा लोगोंको त्यागको माहात्म्य भी दिखा दिया। ये बड़े प्रभावशाली और शूरबीर हुये, उनने बड़ी तपस्याकी जिसके बलसे बड़े ऐश्वर्यको प्राप्त हुये। ब्राह्मणोंने ऐसा प्रभावशाली देखकर धर्मावतार परशुरामसे कहा उनकी बड़ी स्तुति की, उनके सम्मुख रोये, गिड़गिड़ाये अपना दुःख प्रगट किया। महाबली परशुरामने क्षत्रियोंको मारकर राज्य छीन लिया ब्राह्मणोंको राजा बनाकर कहा कि, तुम सुखपूर्वक राज्य करो. स्वयं तपस्या करनेको चले गये। उनके चले जानेके बाद क्षत्रियोंने फिर मार कूटके राज्य छीन लिया। ब्राह्मणोंने फिर पशुरामकी शरण ली, परशुरामजीने क्षत्रियोंको मारकर ब्राह्मणों को राज्य दे दिया। इसी प्रकार क्षत्रियों और परशुराममें अनेक बार लड़ाई हुई, अन्तमें ब्राह्मणोंको राज्य स्थापितकर परशुरामजी तपस्या करने चलने लगे, ब्राह्मणोंने कहा कि, महाराज ! हम अनेक वार दुःख उठा चुके हैं आप हमें छोड़े

जाते हो, आपके परोक्षमें क्षत्री लोग हमको आकर मारें तो क्या किया जावेगा ? परशुरामजीने एक घण्टा बाँध दिया कि, जब क्षत्री चढ़ाई करें उस समय इस घण्टाको बजा देना, मैं शीघ्रही आ जाऊँगा, यह कहकर तपस्या करने चले गये। कुछ कालके पीछे ब्राह्मणोंने अपने मनमें विचार किया कि, क्षत्री लोग हमारे ऊपर चढ़ आवें, घण्टा बजानेसे परशुरामजी न आवें तो हम लोगोंकी बड़ी दुर्गति होगी, यह शोच परीक्षाके हेतु घण्टा बजाया, शब्द होतेही परशुरामजी आ उपस्थित हुये । पूछा कि, तुमने घण्टाको क्यों बजाया ? किस शत्रुने तुम्हारे ऊपर चढ़ाई की ? ब्राह्मणोंने कहा कि, हम लोगोंने क्षत्रियोंसे भयभीत होकर परीक्षाके लिये घण्टा बजाया है । इस बात पर परशुरामजीने क्रुद्ध होकर कहा कि, ओ डरपोको ! तुम लोगोंसे राज्य न होगा, तुम लोग राज्य करनेके योग्य नहीं हो, क्षत्री लोगही राज्य करेंगे तुम लोग उनके पुरोहित बनकर अपने दिन विताओगे। सत्य संकल्प परशुरामका संकल्प कौन टार सकता था, क्षत्रियोंने आकर फिर राज्य ले लिया, ब्राह्मण लोग यजमानी वृत्तीसे अपना कालक्षेप करने लगे। शनैः शनैः लोभ और तृष्णा वश हो निषिद्ध दान लेनेसे दरिद्रताको प्राप्त हो गये । ब्राह्मणोंको ऐसी हीनावस्थामें प्राप्त होनेका कारण केवल हिंसाही है । हिंसाके कारण इनके भाग्यमें भीख माँगना आना ही था । परशुरामजीके बल करनेसे क्या हो सकता था ? क्षत्रियोंका भाग्य चमका हुआ था, जिसका कारण केवल एक अहिंसा ही था ।

अधिकता—जीवधारियोंके पूर्वके कर्मानुसार शक्ति और बल प्राप्त होते हैं । हाथी व्याघ्रसे भागता है, वह शेरके बलसे भयभीत होकर नहीं भागता वरन् प्रकृतिने स्वभावसेही व्याघ्रको ऐसे हथियार दिये हैं कि, जिसके भयसे हाथी जैसा बलवान् भी उसके सन्मुख हार मानता है । व्याघ्र, बाज, शाहीन आदि हिंसक पशुओंमें जो शूरता देखी जाती है उसका कारण यही प्राकृतिक नियम है । जीवधारियोंको उसके कर्मानुसार शारीरिक बल तारतम्यतासे प्राप्त है । हिंसक मांस आहारी पशुओंकी अपेक्षा शाक, पात, नाज, फल खानेवालोंमें अधिक शूरता है । देखो बटेर और बुलबुल, मुर्गा मेंढा, शूकर और भैंसा आदिककी लड़ाई कैसी भयानक होती है । बनका शूकर व्याघ्रसे भी अधिक बलवान् होता है । मांस खाने से शारीरिक बल और काममें विशेषता नहीं होती, व्याघ्र और बिल्ली आदि मांस आहारी पशु विशेष कामातुर नहीं होते, वरन् मुर्गा और कबूतर आदिकोंमें विशेष काम होता है ।

अहिंसक सुखी है—मुसलमानोंकी अपेक्षा हिन्दू बहुत सुखी हैं यदि एकही

व्यवहारमें, हिन्दू और मुसल्मान, दोनों एकही देशमें, एकही समयमें, एकही स्थानपर एकही उद्यममें लगे हों तो हिंदू विशेष लाभको प्राप्तकर बहुत सुखी होगा, मुसल्मान निर्दयताके कारण दरिद्रता और दुःखमें ही फँसे रहेंगे. क्योंकि जीवधारियोंका रक्तपात करना महापाप है।

हेयताका कारण – जितने मांसाहारी हैं सबका स्वरूप भयानक है. क्योंकि उसकी बनावटमें तमोगुण (अग्नि) का भाग विशेष मिला हुआ होता है, जितने नाज, फल, घास आदिकके खानेवाले हैं उनका दिखाव महान् शान्तिमय एवं धैर्य्य संयुक्त होता है, क्योंकि, उनकी बनावटमें जलका विशेष अंश होता है। अग्नि – (तमोगुण) शिवका स्वरूप है जो संसारको नष्ट करनेवाली है। जल– विष्णुका स्वरूप है जो संसारका पालन करनेवाला है। सतोगुणको धारण करनेसे मुक्ति है, तमोगुणसे अधमता प्राप्त होती है। इसी कारण तमोगुण हेय समझा जाता है।

भ्रष्ट करनेवाला – तमोगुण शिव स्वरूप है। शिव कङ्गाल और भिखारी है तमोगुण रूपी शिवकी स्त्री दरिद्रता है शिव यानी तमोगुणके अनुयायी दरिद्री और भिखारी हैं। विष्णु सतो गुणरूप है–धनी है, लक्ष्मीका पति है, सुख सम्पत्ति सब उसके साथ हैं, इसी लिये सतोगुणी धर्म, लोक परलोकके कल्याणका कारण है, तमोगुण दोनों लोकसे भ्रष्ट करनेवाला है।

रक्तपातका काल – भारत वर्षमें मुसलमानोंके राज्यके पहले धन सम्पत्तिकी कुछ कमी न थी, सब प्रजा सुखसे रहती थी। जबसे मुसल्मानी राज्य आया भारत भूमिपर जीवहिंसा और रक्तपात होने लगा, तबीसे सब पदार्थोंमें घाटा आने लगा; पापसे पीड़ित पृथ्वी होकर फल फूल और नाज इत्यादि देनेसे रुक गई। जहाँ पहले पचास मन अनाज होता था वहाँ अब बड़ी कठिनतासे दशमनसे भी कम होने लगा, फल आदिककी भी यही दशा है कि, पर्य्याप्त नहीं होते।

हत्याका प्रायश्चित्त – हिन्दू जातिको धन्य है जो कि, यदि भूलसे संयोगन कोई पशु बँधा हुआ मर जावे अथवा ऐसी चोट लग जावेजिससे कि उसके कारण उसका प्राण निकाल ज वे, तो जिस मनुष्यसे ऐसा काम हुआ हो, उसको घरसे बाहर निकाल देते हैं, उसका छूना भी पाप समझते हैं। वह निकाला हुआ मनुष्य हाथमें एक लकड़ी लेकर भीख मांगता फिरता ये शब्द पुकार पुकारके कहता है "धौरीकी बछिया दिया बनवास" अर्थात् गायकी बछियाने मुझको घरसे निकाल दिया उसको लोग हत्यारा कहते उसको न कोई छूता है न घरके अन्दर घुसने हो देता है। उसको भीख मांगकर खाना वृक्षोंके नीचे सोना तीर्थों तीर्थोंमें स्नान

करते फिरना पड़ता है । शास्त्रानुसार नियमित तीर्थोंमें फिरनेके पीछे, ब्रह्म भोज, भण्डारा और जाति भोजके अतिरिक्त बहुत कुछ दान पुण्य करने पर उसको जातिमें मिलाते हैं । उसको ऐसा कठिन दण्ड होता है कि, बहुत दुःखी होता है । यह रीति न्यूनाधिक्य करके समस्त भारतवर्षमें है, इस बातका पूरबमें अधिक प्रचार है ।

हिंसकोंके मारनेका कारण – मनुष्य सृष्टिमें सबसे श्रेष्ठ है मनुष्यसे श्रेष्ठ परमात्मा है जो कोई अपने शासकको आज्ञा न माने उसके कार्य्यको पूरा न करे तो अवश्य दण्डका भागी होगा, जितने हिंसक पशु हैं वे मनुष्यके कोई काम नहीं आते, वरन् अवसर मिलनेपर घात करते हैं, इस कारण मनुष्य उनको मारते हैं । जिस प्रकार मनुष्यके हिंसक पशु शत्रु हैं, उसी प्रकार मांस आहारी और नशेबाज मनुष्य ईश्वरके शत्रु हैं । ईश्वर उनको अवश्य नरकमें डालेगा ।

सबसे हिंसक और अहिंसक – जितने हिंसक पशु हैं सबको प्रकृतिनेही उनके योग्य नख, दाँत दिये हैं, पर मनुष्यकी उत्पत्ति हिंसक नहीं है । इसी कारण प्रकृतिने उनको हिंसाकी सामग्रीसे वञ्चित रक्खा है, पर प्राकृतिक नियमको तोड़कर ये हथियारोंसे जीवहिंसाका काम करते हैं । इसी कारण ऐसी हिंसा और मांस अहार प्राकृतिक नियके विरुद्ध है इसके करनेसे अवश्य दण्ड पावेंगे ।

पापी और कृतकृत्य – शरीरके पोषण और जिह्वाके स्वादके लिये लोग मांस खाते हैं । यह शरीर जिसको वे सत्य जानकर पालते हैं पाप करके महान अधर्मके कर्ता बनते हैं, सो एकदम असत्य है । जो लोग असत्यसे प्रीति करेंगे वे कभी सत्यको प्राप्त न कर सकेंगे । जो लोग तन, मन, धन, ईश्वरार्पण करते हैं वेही कृतकृत्य होते हैं ।

इखलाकी असूल – भी मनुष्यको मांस आहारी होना नहीं चाहता. क्योंकि, जावनरोंके मारनेके समय उनकी जो दशा होती है, उनके हाथ पांवका फड़-फड़ाना, दुःखके साथ बलबलाना, हृदय वेधक शब्दके साथ चिल्लाना, प्राण निकलनेके समय महान् कष्टका होना, कठिनसे कठिन हृदय को भी द्रवीभूत कर देता है इससे प्रतीत होता है कि, मनुष्य मांसाहारके लिये नहीं बनाया गया ।

मुक्तिके अधिकारी – मुक्तिके दो किनारे हैं, दोनोंही उसके आधार हैं, पहला कर्म्म, उपासना, ज्ञान और विज्ञान, सच्चे साधु गुरुकी सेवा दूसरा सच्चे परमात्माका भजन है इन दोनोंमें ये चार २ डण्डे हैं, दोनों आधारोंसे ये चारों येस्थित रहते हैं ! आधार न हो तो डण्डे किस तरह स्थिर रह सकते हैं । जो साधू और गुरुकी सेवा हिन्दू जातिमें है वह किसी जातिमें नहीं है ।

मांस आहारी मद्यप और नशेबाजोंसे न कभी साधु गुरुकी सेवा हुई न, भजनही बना वरन् वह साधुओंसे वाद विवाद किया करता है, उनकी मसखरी उड़ाता है, उनमें दोष निकालता है। जो सच्चे साधुओंमें स्नेह रखनेवाल होगा, वही ईश्वरका प्यारा होगा। जो सच्चे साधुओंमें प्रेम नहीं रखता वह ईश्वरका शत्रु है। सच्चे सन्तकी शरण गहे विना कदापि परमात्मा न मिलेगा। मांस आहारियोंमें दोनोंही अवगुण होते हैं, इस कारण उनका अन्तःकरण अन्धकारमय हो जाता है, वे प्रकाशका मार्ग नहीं पाते उनसे दीनता दूर हो जाती है तथा मान बड़ाई अहंकारमें फँस जाते हैं।

यूरोपके विद्वानोंकी सम्मतियाँ

योरप देशके तत्त्ववेत्ताओं (PHILOSOPHERS) का विचार है कि, मनुष्य मांस खानेके लिये नहीं बनाया गया, इसका यथार्थ मांस भोजन नहीं है। मनुष्यको किसी प्रकारसे भी मांस न खाना चाहिये। मनुष्यके शरीरकी भीतरी और बाहरी बनावट बताती है कि, मांसाहारी जीवधारियोंमें नहीं है, वरन् अनाज साग, पात, फल आदिक खाकर अपना जीवन व्यतीत करनेके लिये बनाये गये हैं। बड़े २ नेचरलिष्ट विद्वान् और प्रसिद्ध तत्त्ववेत्ता लोगोंकी ऐसीही संमतियां हैं लीलीस्टन्, गिनी, सर एवर्ड होम्, वैरन् कोवेरी, प्रोफेसर लारेनेस, लार्ड मेनबोडो मिस्टर टाम्स वेल जैसे बड़े २ समीक्षकोंने पूरी जाँच करके प्रगट किया है कि, मनुष्यके दाँत पेट और अँतड़ियाँ तथा उसके शरीरकी बाहर भीतरी बनावटें प्रगट करती हैं कि, वह मांस आहारी उत्पन्न नहीं किया गया, प्रकृतिने इसके स्वभाव और बनावटसे इसे मांस त्यागी बनाया है।

मिस्टर लाईबक और मिस्टर गोसिङ्गल्ट — आदि रसायन विद्याके, प्रसिद्ध विद्वानोंमें थे, उनके वचनोंसे इस बातको प्रमाणित करता हूँ वे लिखते हैं कि, जो मनुष्य पशुओंका मांस खाता है, वही फिरसे घास पात बनता है, जो कि, रूप बदलकर मनुष्योंके खानेमें आता है जिसके द्वारा खानेवाले जीवधारीका पालन होता है। सब जीवोंमें जो एक किसमकी अण्डेके समान सफेदी होती है, वह जीवधारियोंकी समानही होती है इस सफेदीको अँग्रेजीमें एलू बियोमन कहते हैं। इसी प्रकारसे उनकी रगें और मनुष्योंकी रगें एकसी होती हैं, यहांतक कि, उनके स्वरूपमें भी किसी प्रकारका भेद नहीं होता। यह बात लाईबक् साहबकी फीमीली आर लेटर्ज आन केमिस्ट्री किताबमें लिखी हुई है।

समीक्षा — विचार करना चाहिये कि, यह वचन मिस्टर लाईबक् और बोसंगाल्ड आदिकोंका वचन भारतवर्षके ज्ञानी ऋषीश्वरोंके साथ मिलता है,

इन विद्वानोंने अपनी जाँचको एक पूरी सीमातक पहुँचाई है । भारतीय ज्ञानी साधु जनोंका बचन है कि, जो लोग बहुत पाप करते हैं वे मरकर सुषुप्ति अवस्थामें जाते हैं वृक्ष आदि बनते हैं । कबीर साहबका वचन है कि, कर्मका बदला नहीं छूटता, उसी तरह जीवधारियोंके भक्षण करनेमें इन तत्वज्ञोंका वचन मिलता है । उन्होंने अपने तजर्बासे लिखा हो अथवा ज्ञानी विद्वानोंके वचन लेकर लिखा हो दोनों बराबर हैं. तनिक भी भेद नहीं है । मांसमें भी सैकड़ेमें छत्तीस भाग वह तत्व है जिससे मनुष्यकी शारीरिक उन्नति होती है, शेष चौसठ भाग पानी है, जिससे कुछ भी लाभ नहीं है इसका उलटा अंकुरज और विशेष करके नाजमें अस्सीसे नव्वे भाग तक वह तत्व होता है जिससे मनुष्यके शरीरकी उन्नती और पोषण होता है । इसके सिवा मनुष्यको प्राण वायु (हरारत गरीजी) के लिये जिस तत्वकी आवश्यकता है जिसको कि, कारबोनी कहते हैं, वह मारे हुये पशुके मांसमें सब्जीकी अपेक्षा बहुत कम होता है । हड्डियोंके दृढ़ और स्थिर करनेवाले तत्व भी सब्जीमें विशेष पाये जाते हैं । मांसकी अपेक्षा साग पातका भोजन बहुतही श्रेष्ठ है । जब कि, हम उसके यथार्थ लाभको विचारें बाहरी मांसकी फुलावटकी ओर ध्यान न दें ।

प्रकृति वैपरीत्य – जो मांस आहारी पशु हैं प्रकृतीने उनको स्वाभाविक एक ऐसी शक्ति दी है जिससे वे रातको साधारणतः आखेट कर सकते हैं, पर उसके उलटा मनुष्यमें एक ऐसी शक्ति है जो इसे रातको सोजानेके लिये मजबूर करती है ।

जो पशु मनुष्यके पास बहुत दिनोंतक रहते हैं वे अपनी फुर्ती चालाकी और शारीरिक बलसे बहुत प्रकारसे अपनी सेवा पूर्ण करते हैं, उनका सब्जीही खाकर पोषण होता है । गाय, बैल, खच्चर, घोड़ा, ऊँट आदि सब्जीकाही भोजन करते हैं ।

वेजिटेरियन – अङ्गरेजी भाषामें उनको बोलते हैं, जो कि, साग, पात, फल, फूल आदि खाकर जीते हैं, कदापि मांस नहीं खाते, उन लोगोंका साधारण जीव इस बातकी साक्षी देता है कि, मांस आहारियोंकी अपेक्षा उनके शारीरिक रोग बहुत कम होते हैं उनमें प्रायः मनुष्य ऐसे भी पाये जाते हैं, जिनको वृद्धा अवस्था तक भी बड़ी कठिनाइयोंसे ढूँढ़ने पर एक आध बीमारी जान पड़ती है । इङ्गलेण्ड और अमेरिकाके वेजिटेरियनोंमेंसे एक भी ऐसा दृष्टान्त नहीं हुआ कि, जिससे यह मालूम हो कि, उनमें कोई एक सप्ताह तक भी रुग्ण रहा हो ।

रालिन्स साहिब—इस्पार्टन लोग संसारकी सर्व जातियोंके इतिहासमें अपना शारीरिक बल, शूरवीरता, शरीरके डौल डौल आदिकके कारण अनु-

पम गिने जाते हैं। वे लोग मांस न खाते थे, जिस समय ग्रीस और टर्कीके विजयका झण्डा फहरा रहा था उस समय उनके लड़ाके विजयी सैनिक लोग भी मांस नहीं खाते थे। जबसे उन्होंने पुरानी आदतको छोड़के मांस खाना आरम्भ कर दिया तभीसे उनके दुःखका आरम्भ हुआ। यद्यपि उनकी अवनतिके कारण दूसरे भी थे पर इसमें सन्देह नहीं कि, ग्रीसके व्यायाम शालाओंमें अभीतक शारीरिक बलकी बड़ी २ फुर्तियां और आश्चर्यजनक कर्तव्य दिखाये जाते थे तभी तक उनकी कार्यवाहीकी बड़ी प्रसिद्धी थी, जबतक कि, वे मांस नहीं खाते थे. जबसे उन्होंने मांस खाना आरम्भ कर दिया तबसे बडे बड़े बहादुर शूरवीर और फुर्तीले पहलवान लोग, शनैः २ आलसी निरुद्यमी और निकम्मे होने लगे। रालिन्स साहबकी पुराने इतिहासकी भूमिका देखो उसमें यही लिखा हुआ है।

प्रोफेसर फार्ब्ससाहिब — जो मांसाहारी नहीं हैं, उनका शरीर मांसाहारियोंकी अपेक्षा साधारणतः भारी होता है, उनके पुट्ठे दृढ़ और बलिष्ठ होते हैं, परिश्रमके कठिन कार्योंसे भी नहीं घबड़ाते। प्रोफेसर फार्ब्स साहबने इस विषयमें बहुत कुछ जांच की है. वे कहते हैं कि, मांस खानेवाले अंग्रेजोंकी अपेक्षा मांस न खानेवाले उनके भाई स्काटलेण्डके रहनेवाले अधिक ग्रांडील, बड़े भारी बलिष्ठ शरीरके होते हैं। स्काचोंकी अपेक्षा आइर्लेण्डवासी आइरिश लोग, रोटी आलू खाकर जीवन व्यतीत करते हैं, वे शारीरिक बल आदिकमें इनसे भी अधिक श्रेष्ठता रखते हैं।

डाक्टर लैम्ब— भी अपनी जाँचसे उसी परिणाम तक पहुँचते हैं। उनका विचार है कि, केवल मांसाहारी लापलेण्डके रहनेवाले वह बहुत नाटे होते हैं उन्हींके बराबरीके जोतिन्सके लोग ठीक वैसेही जलपानीमें रहते हैं, नाज सब्जी आदिकके विशेष खानेसे स्वीडन और नारवेवालोंके समानही अच्छे डील डौलवाले होते हैं।

कतिपय चिन्ह — साधारण प्राकृतिक चिह्नोंसे मनुष्यका मांस आहारी होना सिद्ध नहीं होता. क्योंकि, मनुष्यके शरीरसे उसी प्रकार पसीना निकलता है, जिस प्रकार कि, अन्य जीवधारियोंके शरीरसे निकलता है. मांस आहारी पशुओंके शरीरसे पसीना नहीं निकलता।

मांस आहारी पशु अपना भोजन चबाचबाकर नही करते पर मनुष्य अन्य घास आहारियों जीवधारियोंके समान चबा २ कर भोजन करता है। [illegible] दूसरे घासाहारी जीवधारियोंके समान घूँटसे पानी पीता है पर [illegible] जीवधारी जिह्वासे चाट २ कर खाता है। मनुष्य दूसरे घासाहारी जीव[illegible]

समान मुखमें बहुत लार होता है. पर मांसाहारी जीवधारियोंके मुखमें लार होता ही नहीं ।

मस्तिष्कके बलकी अपेक्षासे – भी यह प्रकट होती है कि, मनुष्यको मांस खाना ठीक नहीं, क्योंकि, संसारमें जितने विद्वान् लोग हुये हैं उनमेंसे जिसकिसीने अपनी स्मरणशक्ति और बुद्धिमानीके बलसे नया २ प्रकाशन किया है तत्वविद्या के सुधारमें बहुत उन्नति की है, उन लोगोंने या तो जीवनपर्य्यन्त अथवा अपने आयुका बड़ा हिस्सा मांस त्यागके संयममें ही रहकर बिताया है जैसे प्लेटों, प्ल्यूटार्क, डोयोजिनिज जेबू सेण्ट ग्राइसास्टम आदिने अपने जीवनका एक बड़ा हिस्सा इसी समयमें बिताया था, यह भी निश्चय किया गया है कि, सेण्टजेम्स भी रूमके तत्त्वज्ञानियोंमें शिरोमणि था और इसके अतिरिक्त और भी बहुतसे पार्जी, जान डिलेली, बेन्जमिनफ्रांगलिन, इमिन्पोल, सुबडनवर्ग जान हवर्ड, सर रिचार्ड फिलिप्स, शेली, वार्डस, वर्थ अलफन् जोडीटमर्टन आदिक ऐसे ही हुये हैं ।

स्वभावका परिवर्तन – जो जीवधारी मांसाहारी होते हैं वे स्वभावसे ही बड़े क्रोधी हत्यारे होते हैं, पर जो घास खानेवाले होते हैं वे गरीब शान्त एवं धीर स्वभावके होते हैं । तजुरबासे जाना गया है कि, मांसाहारी जङ्गली जीवधारियों का भी मांस आदिक छुड़ाकर रोटी और दूध आदि खिलाया जाय तो प्रथम की अपेक्षासे उनका क्रोध और निर्भयता आदि इतनी कम हो जाती है इसी तरह कुत्ता बिल्ली भेड़ आदि बहुत शान्त निःक्रोध पशु हैं उनको मांस खिलाया जाय तो थोड़ेही दिनोंमें क्रोधी और घातक बन जावेंगे इस तरह मांससे स्वभाव परिवर्तन हो जाता है ।

प्रकृतिका नियम – है इस कारण सभ्यताका भी यह जड़ है कि, किफायत शआर रहे इसके ध्यानसे भी मनुष्यको मांस खाना उचित नहीं. क्योंकि, मांसकी अपेक्षा सब्जी और नाज सस्ते मिलते हैं, अतः बुद्धि और सभ्यताके विरुद्ध है कि, एक सस्ते पदार्थको छोड़कर उससे खराब और मँहगे पदार्थ को ले ।

इधर उधरके प्रमाण ।

मुहम्मदीफकीर – जो शरअ मुहम्मदीके अनुसार भजन करते हैं, पर जब उनको कुछ प्रकाश हो जाता है तो मांसाहारको छोड़ देते हैं, कितनेक तो ऐसे हैं जो कि, उससे एकदम निवृत्त हो जाते हैं ।

मुहम्मदसाहिबका कथन – मैंने मुसलमानोंकी जबानी सुना था कि, मुहम्मद साहब अपनी जबानसे कहा करते थे कि, यद्यपि हिन्दूत्व मुझमें नहीं है पर मैं उनमें हूँ. क्योंकि, वे लोग दयालू और उदार हैं. जहां दया है, वहां मैं हूँ । जो मुझमें अरबके लोग हैं उनमें मैं नहीं हूँ, क्योंकि, वे लोग कठोर निर्दयी हैं ।

शेखफरीदका भोजन – मुसलमानोंमें बड़े प्रतिष्ठित महात्मा हुये । बहुत दिनोंतक वृक्षकी पत्तियां खाकर तपस्या करते रहे । एक दिन अपनी माताके निकट गये. माताने पूछा, बेटा ! तू किस प्रकार भजन करता है ? उन्होंने उत्तर दिया कि, वृक्षोंकी पत्तियां खाकर रहता हूं. माताने शेखजीके दो एकबाल पकड़के खींचे, तब वह सी ! सी !! करने लगे, माताने कहा, ऐ बेटा ! उनको इस प्रकार दुःख न होता होगा ? उस दिनसे शेखजीने वृक्षकी पतियां तोड़नी छोड़दी वे काठकी रोटियाँ बाँधे फिरा करते थे ।

शाह बू अलीकलन्दरके – पांवमें कीड़े पड़ गये, कोई कीड़ा बाहर गिरता तो उसको उठाकर फिर रख लेते, कहते कि, ऐ भाई ! तू किधर जाता है, भूखा मरेगा, तेरा भोजन तो खुदाने यहांही बनाया है ।

रघुकी दया – सुना था कि, महाराज ! रामचन्द्र रावणको मारकर अयोध्यामें आये. ऋषीश्वरोंसे पूछा कि, मैंने ऐसा कौनसा पुण्य किया था, जिसके बलसे बड़े बलवान शत्रुपर विजय प्राप्त की । ऋषीश्वरोंने उत्तर दिया कि, महाराज ! आपके प्रपितामह महाराज रघु कहीं चले जाते थे, मार्गमें कुत्तेको तड़पते देखा, उसके शिरमें एक बड़ा कीड़ा पड़ गया था, जो कुत्तेके भेजाको नोच २ कर खाता था, इससे कुत्ता विकल होता था । राजाने वह कीड़ा उसके शिरसे निकाल दिया । कुत्ता सुखी हुआ, पर कीड़ा तड़प २ के मरने लगा. राजाने कीड़ेपर दया करके उसको अपनी जाँघ चीरकर उसमें रख लिया, कीड़ा जाँघमें जाकर सुखी हुआ । उस कीड़ाकी रक्षा करनेके कारण राजाको महान् पुण्य हुआ । उसीके प्रतापसे आपने शत्रुको जय किया ।

सुबुकुतगीनके शाह होनेका कारण – इसीके अनुसार दूसरा दृष्टान्त लिखता हूँ । जो लेथबृज साहबके भारत इतिहासमें लिखा है कि अलपतगीनका गुलाम सुबुकुतगीन था । एक दिन घोड़ेपर सवार हो शिकार खेलने गया. जंगलमें एक हरिणीको बच्चासहित देखकर विचार किया कि, बच्चेको जीवित पकड़कर ले चलूँ । घोड़ा बढ़ाकर जालसे बच्चेको पकड़ लिया, उसको लेकर बहुत दूर न गया होगा कि, पीछे फिरकर देखा कि, हरिणी बच्चेके लिये रोती चिल्लाती चली आती है । हरिणीकी इस दशाको देखकर सुबुकुतगीनके मनमें दया आई, बच्चेको छोड़ दिया । हरिणी बच्चा लेकर चली, जैसे जैसे आगे जाती थी पीछे फिर फिरकर देखती जाती थी, उसकी दृष्टिसे ऐसा प्रगट होता था कि, उपकारके बदले हृदयसे धन्यवाद और आशीर्वाद देती चली जाती है । उसी रातको सुबुकुतगीनने ऐसा स्वप्न देखा कि, एक फिरिस्ता उसके सिराने खड़ा होकर कहता है कि, सुबुकुत-

गीन ! तूने जो हरिनीके बच्चेपर दया की उसके पलटेमें तुझको गजनीकी बादशाहत मिली । चाहिये कि, इसी प्रकार सब जीवधारियोंपर दया करता रहे इसके पश्चात् थोड़ेही दिनोंमें सुबुकुतगीन गजनीका बादशाह होगया ।

महापाप – मुसल्मान कहते हैं कि, हम अपना जबह किया हुआ हलाल समझते हैं, यह उनका कहना एकदम झूठ है । मुर्दा मछलीको किसने जबह किया । मुर्गी बतखके अण्डे आदिकके खानेके लिये कौनसा कलमा उतरा । अपने मारीको हलाल खुदाकी मारीको हराम कहना काफिरका काम है, जीवितको मार डालना महापाप है, जबहकी उसके जीवित करनेको शक्ति नहीं रखते ।

कुत्तेके बचानेका महापुण्य – किताब दोस्तोंके दूसरे बावमें यह कहानी लिखी है कि, एक भला आदमी जङ्गलमें चला जाता था. उसने एक कुत्तेको देखा कि, प्यासका मारा मर रहा है । उसने अपने शरसे टोपी लेकर पगड़ीमें बाँध पानी भरा कुत्तेको पिलाया, कुत्तेके प्राण बच गये इस पुण्यके प्रतापसे उस समयके पैगम्बरको आकाशवाणी हुई कि, उस पुरुषको इतना पुण्य हुआ है कि, उसका सब पाप नष्ट हो गया । ध्यान देने योग्य बात है, जब एक जीवके बचानेसे इतना पुण्य हुआ तो जान मारनेसे कितना भारी पाप होता होगा ।

यथा–भिहिश्ती दर्दमन्दा हैं बुजुर्गी । नहीं इन्साँ बा आदते गुर्गी ।।
वही आदम वही हैवान हशरात । वही है और नहीं कुछ दूसरी बात ।।

मुंसी मिश्रका सच्चा सिद्धान्त – मुंसी मिश्र नामका एक बड़ा पण्डित बनारसमें आया । उसने मछलीको अपनी ध्वजामें बाँधकर खड़ा कर दिया विज्ञापन दे दिया कि, यदि कोई पण्डित वेदशास्त्रके अनुसार मांस आहारको निषेध ठहरा दे तो मैं उसका सेवक बन जाऊँ । बनारसके सब पण्डितोंने बहुत युक्तियाँ की पर वह परास्त नहीं हुआ । एक दिन पण्डित लोग विचार करके ठीक उसी समय जब कि, गङ्गामें स्नान कर रहा था, उसके पास गये । जाकर कहा कि, महाराज ! इस समय आप गङ्गामें खड़े हैं सत्य कहिये मांस खाना उचित है कि, अनुचित ? मिश्रने कहा कि, जब आप लोग वेदशास्त्रके आधारसे परास्त न कर-सके तो धर्मबद्ध करके परास्त करने आये हैं, अब मैं सत्य कहता हूँ कि, मांस खाना बड़ा भारी पाप है, इतना कह उसी समय पण्डितने मांस त्याग दिया कण्ठी बांधकर वैष्णव हो गया ।

घृणित दुर्गन्धि – मांस आहारी मनुष्य और पशुके शरीरसे ऐसी दुर्गन्धि निकलती है जिससे महाघृणा होती है ।

महात्मा और राजा – एक राजा आखेटको गया, बहुतसी शिकार मारकर

कितनकों जीवित पकड़कर ले चला। रास्तेमें एक महात्मा बैठा, हुआ था. बादशाह उसके निकट जा दण्डवत् करके प्रतिष्ठासे बैठ गया। फिर पूछा की महाराज! कुछ सेवाकी आज्ञा हो. महात्मा उठा बादशाहकी मोछोंसे २—३ बालोंको पकड़-कर उखाड़ लिया. बादशाहको बहुत दुःख हुआ. आज्ञा दी कि, इस फकीरको मार डालो। तब महात्माने कहा, ऐ बादशाह सबकी जान एक समान है. तूने इतने जीवोंको मारा कैद किया है, क्या उनको दुःख नहीं होता होगा? उनका दुःख परमात्मा न सुनेगा? इसी प्रकार महात्माने बादशाहको समझाया तो समझ गया, कठोरताके ऐसे कामको छोड़ दिया। उस दिनसे किसी जीवको दुःख न देनेका प्रण करके महात्माका शिष्य होगया।

कबीर साहिब— भी अहिंसकोंके आशीर्वादमें सर्वशक्ति मानते हैं कि

सूखी अस्थिनको चुग, जीव न सतावे कोय।
ता पक्षीकी छाँहतर, क्यों न छत्रपति होय॥

मांसमें शूरता नहीं—जो लोग ऐसा ध्यान करते हैं कि, मांस खाने और मदिराके सेवन करनेसे मनुष्यमें बल बढ़ता है, शूरता आती है, वे बहुत भूलमें हैं। उनको उचित है कि मुर्गा, बटेर, बुलबुल आदिककी भयानक लड़ाई देखे मुर्गा और बटेर लड़ते २ मर जाते हैं पर रणको नहीं छोडते। इस प्रकरणमें अबतक जो कुछ निरूपण किया गया है उसीका सार निम्नके गजलमें दिये देते हैं—

ग़ज़ल—करेगा मिहर जो उसपर मिहर है। क़हरके एवज़में बेशक क़हर है॥
वहर जांदारमें रूहे इलाही। वही रहमान म्यानें जेरो जबर है॥
किसीके खूनका बदला न छूटे। सभीके साथ दावर दाद गर है॥
करम और फ़ज़ल सबपर हैं उसीका। सिताना गैर जांका पुरखतर है॥
मिहरबां बाप सारे खल्कका वह। मुसीबत और बला ज़ालिम उपर है॥
हिसाबोंमें पड़े अमलोंके सारे। न छूटे राम ब्रह्मा विष्णु हर है॥
न बे गुरज्ञान कोई राह पावे। भटकता फिरता यह जीव दर बदर है॥
है बे मुरशिदके जाहिल आदमी यह। न मर्दुम है वही बेदुमका खर है॥
हशरके रोज़ खुश मज़लूम सारे। वहर जानिबसे ज़ालिमको जरर है॥
जो खाया गोश्त औरोंका भरज़ोर। न खा क्यों गोश्त अपना पेटभर है॥
महासिब रूबरू मालूम होगा। तेरा आमाल नामा हाथ पर है॥
जिसकी तरफसे दुनियामें है जब। खुदात आत्माका वह भी एक नफ़र है॥
वह भी बन्दा तू बन्दा हो न गन्दा। अता तुझको हुई तेगे जफर है॥

दिया तुझको उसीने साज़ों सामाँ । तेरी खिदमतकीदी शमसो कमर है।।
जो करे न पसन्द यह ज़िक्र आजिज़ । सो जाहिलसे भी जाहिल ख्वारतर है।।

अपेयके पानका निषेध ।

अखाद्यके खानेके निषेधकी तरह अपेयके पानका भी निषेध है, अखाद्यके खानेका तरह अपेयके पानका निषेध किया गया है । अब मुख्य रूपसे इसी विषयका प्रतिपादन करते हैं—

स्वसंवेद—गौ जो विष्ठा भक्षणी, विप्र तमाखू भङ्ग ।
शस्त्र बँधे दर्शनी, यह कलयुगका रंग ।।
कलियुग काल पठाइया, भांग तमाखू फीम ।
ज्ञान ध्यानकी सुधि नहीं कहैं कबीरा तीम ।।
भाँग तमाखू छूतरा, अफीऊन और शराब ।
कबीर कौन करै बन्दगी, यह तो भये खराब ।।
भाँग तमाखू छूतरा, जन कबीर जो खाँहि ।
योग यज्ञ जपतप कियै, सबै रसातल जाँहि ।।
भाँग तमाखू छूतरा, सुरापान ले घूँट ।
कहैं कबीर ता जीवकी, धर्मराय शिर कूट ।।
भाँग तमाखू छूतरा, जो इनसे करे पियार ।
कहैं कबीरा जीवसो, बहुत सहे शिर मार ।।
भांग तमाखू छूतरा, परनिन्दा पर नारि ।
कहैं कबीर इनको तजै, तब पावै दीदार ।।
सुरापान अचवन करे, पिवै, तमाखू भंग ।
कहैं कबीरा रामजन, तामें ढंग कुढंग ।।
सुरापान अचवन करे, पिये तमाकू भंग ।
कहैं कबीरा रामजन, ताको करो न संग ।।
भाँग तमाखू फीमको, दौड़ि २ कर लेंहि ।
कहैं कबीर हरि नामको, पीछेही पग देंहि ।।
भांग तमाखूके गाँहक, राम नामके नाहिं ।
कहैं कबीर जनमें मरे, लख चौरासी माहिं ।।
राखें बरत एकादशी, करैं अन्नका त्याग ।
भंग तमाखू ना तजैं, कहैं कबीर अभाग ।।
हरिजनको सो है नहीं, हुक्का हाथके माहिं ।

कहैं कबीरा रामजन, हुक्का पीवैं नाहिं ॥
हुक्का तो सोहैं नहीं, हरिदासनके हाथ।
कहैं कबीरा हुक्का गहे, ताको छोड़ो साथ ॥
अमल अहारी आतमा, कबहुँ न पावे पार।
कहैं कबीर विचारिके, त्यागे तत्व विचार ॥
अमलीके बैठो मत, एक पलकहूं पास।
संग दोष तोहि लागि है, कहैं कबीरा दास ॥
अमली हो बहु पापसे, समुझत नाहीं अन्ध।
कहैं कबीर अमलीको, काल चढ़ावे कन्ध ॥
जहँ लग अमल हराम सब, दोऊ दीनके माहिं।
कहैं कबीरा रामजन, अमली हूजे नाहिं ॥
भोंड़ी आवे बास मुख, हृदया होय मलीन।
कहैं कबीरा राम जन, माँगि चिलम नहिं लीन ॥
मुखमें थूकन देइ नहिं, महर कोई जनि देहिं।
कहैं कबीर यह चिलमको, जूँठ जगत मुख लेहिं ॥
छाजन भोजन हक्क है, अमल जो नाहक लेहिं।
आप तो दोज़ख जात है, औरन दोज़ख देहिं ॥
आन अमल सब त्यागिके, राम अमल तब खाय।
जन कबीर भाजन, भ्रम, औरन कछू सुहाय ॥
राम अमलको छोड़िके, और अमल जो खाय।
कहैं कबीर तेहि परिहरो, गुरुके शब्द समाय ॥
कबीर प्याला प्रेमका, अन्तर लिया लगाय।
रोम रोममें रमि रहा, और अमल क्या खाय ॥

दूसरे दूसरे प्रमाण।

समस्त वैष्णव धर्मके लोग इसके सहमत हैं कि, मदिरा मत्तोंकी पीनेकी वस्तु है।

जैन धर्मवाले भी ऐसेही मानते हुए कहते हैं। बौद्ध धर्मवाले भी इसको वैसाही त्याज्य समझते हैं। इनके हिंदुओंके दूसरे संप्रदाय भी इसके छूने तक दोष मानते हैं।

महम्मदके धर्ममें भी सब प्रकारका नशा हराम है।

शराबीकी बुद्धि और अन्तःकरण अशुद्ध हो जाते हैं, उससे कदापि भजन नहीं हो सकता, यही कारण है कि, उसको ज्ञान नही मिलता।

पूरबके नीचोंकी सराब पीनेकी रीति—मद्यपोंकी, रीति है कि, मद्य पीनेवाले इकट्ठे होते हैं मंडली बाँधकर बैठ जाते हैं, शराबका प्याला हर एकके सामने रखा जाता है, सब लोग मदिराको अपनी उँगलीसे लगाकर माथेमें लगाते हैं, यह चन्दनका चिन्ह है पीछे राम राम कहके प्याला उठाते हैं, यह उस तोतेका चिन्ह हैं क्योंकि, तोता राम राम कहता है। तीसरे जब शराब पीकर उन्मत्त होते हैं, बक झक करते हैं भूतभूत लगे हुयेके समान चिन्ह प्रगट करते हैं। चौथे बेहोश होते हैं तो नालियों और गंदगियोंके जगह लेटते हैं, यह रीति पूरबदेशके नीच जातियोंमें मेरे सामने १८५९ में प्रचलित थी, इस समय कुछ खबर नहीं कि, है वा नहीं।

नरकका चिह्न—शराबके अर्थसे प्रगट होता है कि, शराब वह चीज है जिसके पीनेसे बदनाशी और बरबादी प्रगट हो देशी बोलीमें भी इसको मद्य कहते हैं, मद्य नरकका चिन्ह है।

राक्षस—जब समुद्र मथा गया और शराब निकली यह राक्षसोंको दी गई, इसलिये जो मदिरा ग्रहण करता है वह राक्षस है।

टीटोटेलर (टेम्प्रेन्स) सोसायटी—अँग्रेजोंमें मद्य त्यागियोंकी एक मण्डली है, जिसको टीटोटेलर सोसाइटी (Teetotalor Society) और टेम्प्रेन्स सोसाइटी भी कहते हैं। इस सुसायटीकी आज्ञा है कि, जो कोई इस सोसाइटीमें सम्मिलित हो, वह पहले सभी प्रकारके मादक पदार्थोंका त्यागकर इसी प्रकारका एकरारनामा दाखिल करे कि, मैं आजसे किसी प्रकारका मादक पदार्थ न खाऊँगा, न खिलाऊँगा न दूंगा न दिलाऊँगा न बेचूंगा न बेचवाऊँगा। जो कोई इस प्रकारका प्रतिज्ञा पत्र देता है उसको सोसाइटीमें सम्मिलित करके एक परवाना देते हैं जिसको वह पुरुष अपने पास रखता है जिससे यह प्रमाणित हो कि, यह पुरुष टीटोटेलर सोसाइटीका मेम्बर है।

आधे मरे—मुझको याद आती है कि, मैं किसी लण्डनके अखबारमें पढ़ा था कि, लण्डन शहर नगरमें मद्यपोंकी गिनती हुई दो तीन वर्ष के बाद फिर जाँचकी गई तो जान पड़ा कि आधेके लगभग, मद्यप मर गये।

नशेके दोष—(१) नशेबाजका कोई विश्वास नहीं करता और न उसकी कुछ प्रतिष्ठा होती है न वह इस योग्य होता है। (२) नशाके सेवनसे

अन्तःकरण सब प्रकारके पापोंकी तरफ झुकता है। (३) नशेबाजोंके शरीरसे घृणित दुर्गन्धि आती है, मानो साक्षात् नरक जीवित होकर पृथिवीपर फिरता है। (४) नशेबाज दाम देकर लोक परलोककी अप्रतिष्ठा मोल लेता है। (५) तौरेतमें गिनतीकी किताबमें लिखा है कि, जो कोई स्त्री अथवा पुरुष शुद्ध हुआ चाहता है, तो उसे चाहिये कि, वह मदिरा तथा अंगूर आदिकके रससे अलग रहे (६) हूसिआ नबीकी किताबका ४ बाबकी ११ आयतको देखो, हरामकारी और शराब पीना अन्तःकरणकी चतुराई और बुद्धिको नष्ट कर देता है।

प्रतिष्ठित—लूकाकी इन्जीलका १ पहला बाब १५ आयतमें, यहिया नबीका हाल लिखा है कि, वह खुदावन्दकी नजरमें प्रतिष्ठित होगा जो अंगूरका रस तथा मद्य न पियेगा।

धिक्कार तथा आफसोसके पात्र—एसिआ नबीकी किताबका ५ बाब २२ आयत देखो, उनपर धिक्कार और अफसोस है जो शराब पीने और मादक पदार्थोंके सेवन करने तथा दूसरोंको सेवन करानेमें वली होते हैं।

अपराधी एसिआह नबीकी २८ बाब और ८ आयतमें देखो—मनुष्य नशासे पाप करते हैं, पाप करके दुखी होते हैं, डगमगाते हैं न्यायके स्थानमें अपराधी ठहरते हैं।

बुद्धिका नाशक—इस बात पर सभी जातियें सहमत हैं कि, बुद्धिही द्वारा लौकिक पारलौकिक सर्व प्रकारकी विद्या प्राप्त होती है, बुद्धिसेही कला कौशल आदि सर्व प्रकारकी चतुराइयां मिलती हैं, सांसारिक सुखसे लेकर मोक्ष तक सब सुख प्राप्त करानेवाली वस्तु बुद्धिही है। विचारना चाहिये कि मादक पदार्थोंसे जब बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है तो उसके सेवन करनेवालोंके लोक परलोकका क्या ठिकाणा? मादक पदार्थके सेवनसे ऐसा अमूल्य पदार्थ बुद्धि नष्ट हो जाती है तो इससे बढ़कर दूसरा हराम क्या होगा? इन्द्रियोंसे परे मन है, मनसे परे बुद्धि तथा बुद्धिसे परे आत्मा है आत्माके समीप रहनेवाली तथा समाचार देनेवाली बुद्धि नष्ट हो गई तो वहां के समाचार कौन कहेगा? इस हेतु जब बुद्धि गई मृत्यु आई विपत्ति सिरपर पड़ी। क्योंकि भगवत्गीतामें लिखा है कि "बुद्धिभ्रंशात् पतिष्यति"।

मांसखोर मद्य नहीं पीते पर मद्य न मांस विना नहीं रह सकते—मादक पदार्थोंका सेवन मांस आहारसे भी अधिक बुरा है क्योंकि प्रायः कितनेक मांस आहारी मांसको खाते हैं पर मद्य नहीं पीते। ऐसा कोई मद्यप नहीं जो मांस न

खाता हो। इस प्रकार सर्वभक्षप मांस आहारी है, यही एक प्रमाण है कि मद्यपान पापों और घृणित कर्मोंका सरदार है। देखो, मुसलमान लोग मांस तो खाते हैं पर शराबियोंसे घृणा रखते हैं, उनकी मुहफिलमें कोई शराबी बैठने नहीं पाता, ऐसेही संयमी और साधुओंकी सङ्गतिमें भी मद्यप नहीं जा सकते

सुलेमान—सुलेमानके इन्सालका २३ बाब, २० आयत देखो उसमें लिखा है कि, तू उन लोगोंके साथ न हो जो मद्यप हैं ।

फिर इसी बाबके ३० आयतसे ३३ आयत तक लिखा है कि, जो देर तक मद्य पीते हैं जो मद्यकी खोजमें रहते हैं उनके ऊपर तथा जब लाल लाल छटा और रंगोंको दीखलाती हुई मदिरा दीख पड़े उसका आकर्षण तुम्हारे अन्तःकरणमें हो तो उसकी तरफ दृष्टि मत डाल, ध्यान मत दे। क्योंकि वह साँपके मानिन्द काटती है, बिच्छूके समान डङ्क मारती है ।

अनेकोंका मांस खाया—जिस समय शराब खींचनेके वास्ते पदार्थोंको सड़ानेके लिये भिगोते हैं तो उसमेंसे अगणित जीव उत्पन्न होते हैं फिर उसको भट्ठी में डालकर मद्य खींचते हैं तो उसके साथ उन कीड़ोंकाभी रस खिच जाता है। वे सब कीड़े भट्ठीमें मरकर गल जाते हैं। उन्ही जीवधारियोंके अंशसे मदिरा तैयार होती है। जिसने एक गिलास शराब पी लिया उसने करोड़ों जीवधारियोंका मांस खा लिया। मदिराके बनानेमें अनन्त जीवोंकी हिंसा होती है, इस कारण मदिरा बनानेवाले, बेचने वाले और पीनेवाले सभी समान पापी हैं उनसे अच्छे मनुष्य घृणा करते हैं।

मुहम्मद साहबके अक्षर तथा मद्यकी गन्धसे सभी तप नष्ट—मुहम्मद साहबके समयमें दैत्योंके रहनेकी जगह खैबर थी मुहम्मद साहबने अलीसे कहा कि, जिबराईल मेरे पास इस्मआजम लाये थे वह मुझसे सीख जाओ वहांके खजानेसे धन ले जाओ, यदि तुमसे कोई सामना करे तो उससे लड़ो डरो मत। क्योंकि, इस्मआजम जिसके पास होता है उसकी सर्वदा विजय होती है। अली इस्मआजमको सीखकर वहां गये पर विजय प्राप्ति नहीं हुई, क्योंकि, उस गढ़में एक महात्मा रहता था, जिसकी रक्षामें वहांके रहनेवाले थे। उसी महात्माकी कृपासे कोई किला ले नहीं सकता था। जब हजरत अली किलाको न जीत सके तो मुहम्मद साहबने उन्हें स्वप्नमें उपदेश दिया कि, ऐ अली! इस शहरमें एक फकीर रहता है उसे किसी न किसी उपायसे शराब खानेके निकट ले जा उसकी नाकमें शराबकी गन्ध आवेगी तो उसका माहात्म्य जाता रहेगा। जागने के बाद अलीने वैसाही किया, उस फकीरकी नाकमें मदकी गन्ध पहुँचतेही

उसका माहात्म्य जाता रहा, उसकी तपस्या और भजनका सब फल नष्ट हो गया । अलीने फिरसे गढ़पर चढ़ाई की, किलेको जीत लिया उस फकीरको भी कत्ल कर दिया । केवल शराबकी गन्धसे उसकी वर्षोंकी तपस्या और भजनका प्रभाव जाता रहा, जो नित्य मद्य पीते हैं उनकी क्या गति हो ? यह वेही शोच लें ।

फरिस्ते हारूत और मारूतकी शराबसे दुर्दशा—तफसीर अजीजीमें अबिन हरीरा व इब्न हातिम हाकिम, इब्न अब्बास व इब्न अबदुल्लाह और इब्न उम्र आदिकने कहा है कि, अदरीस पअम्बरके समय पापी लोग आसमान पर चढे फरिश्ते मनुष्योंसे घृणा करने लगे । खुदाने कहा कि, मनुष्योंमें काम और क्रोध भरा हुआ है, इस कारण उनका मन पापकी अ.र झुकता है, यहांतक कि, यदि तुम पृथिवीपर भेजेजाओ तुममें कामक्रोध दिया जावे तो पाप करनेसे तुमभी नहीं बच सकोगे । फिरिश्तोंने खुदाके वचनपर विश्वास न किया कहा कि, हम पृथिवीमें जाकर किसी प्रकारका पाप न करेंगे । खुदाने कहा, तुम अपनेमेंसे ऐसे दो फिरिश्ते भेजो जिसके कि, बिगड़नेकी तुम्हें किसी प्रकारकी शंका न हो, फिरिश्तोंने अपनेमेंसे तपस्या और भजनमें सबसे अधिक प्रतिष्ठित हारूत और मारूत नामक फिरिश्ते खुदाके समक्ष उपस्थित किया । खुदाने उनको पृथिवीपर भेजा कि, तुम जाकर मनुष्योंको उपदेश करो, सावधान कोई पाप न करना । दोनों पृथिवीपर आये, मनुष्योंको उपदेश करने लगे । कुछ दिनोंके बाद एक महासुन्दरी पुंश्चली जुहरा नामक स्त्री पर दोनों आशक्त हो गये उससे अपने कामवृत्तिको प्रगट किया । उसने कहा कि, यदि तुम मुझे चाहते हो तो मेरी चार बातोंमेंसे किसी एकको स्वीकार करो । तब तुम्हारी इच्छा पूरी होगी । वह चार बातें यह हैं—प्रथम मेरे पतिको बद्ध करो, दूसरी—मेरे बुतको दण्डवत् करो, तीसरी—शराब पीओ, चौथी—मुझे इस्मआजम बतलाओ । उन्होंने सब तो महापाप समझा पर मद्यका पीना सुगम समझकर पीलिया । जब मद्यका नशा चढ़ा तो उसकी प्रतिमाको भी दण्डवत किया, उसके पतिको मारा, जोहराको इस्मआजम भी सिखला दिया । जुहरा तो इस्मआजमके बलसे आशमानको उड़ गई, पर खुदाने हारूत मारूतके पैरोंमें जंजीर बाँधकर बाबुलके कुवेमें लटकवाय दिया । उनपर कयामतके दिन तक नित्य आगके कोड़े पड़ते रहेंगे, प्यासके मारे उनकी जिह्वा बाहर निकल आई है; जिह्वासे एक बिलस्तके फासलेपर मीठे पानीका झरना बहता है, उनको वह पानी भी पीनेके लिये नहीं मिलता । वे दोनों शैतानोंको जादू सिखलाया करते हैं शैतान मनुष्योंको बहकाकर पाप लगाता है । शाह अबदुलअजीजने लिखा

है कि, जो कोई इस कहावतको न मानेगा वह काफिर बनकर खुदाके गजबमें पड़ेगा ।

अंगूरका रस और भांग—कहा गया है कि, पहले अंगूरका रस, शुद्ध था पीछे जब शैताननें उसके जड़पर पिशाब कर दिया तबसे उसमें नशा हो गया । भाँगकी जड़ भी शैतानके पिशाबसे सींची गई है, इसी कारण उसमें शैतानीका, स्वभाव आ गया है, भले आदमियोंको भूल करके भी इसको न छूना चाहिये, छूनेवाला मनुष्य लोक परलोक दोनोंका अपराधी माना जाता है ।

अफीउन और पोस्त—भी वैसाहि निषेध और हराम है ।

तम्बाकू पीना—भी वैसाही पाप और अशुद्ध है ।

शरीअतसे तमाकू पीनेका दण्ड—मुसल्मानी शरीअतमें लिखा है कि, जब मौतेके बाद अजाबकब्र (पापका दण्ड) होगा उस समय हुक्का और तमाखू पीनेवालोंको यह दण्ड मिलेगा कि, उनका शिर नीचे और पैर ऊपरको होंगे । उनके गुदास्थानपर चिलम बनाये जायँगे, उपस्थ इन्द्रिय नलकी होगी । वह भी उनके मुंहमें ही लगी होगी, गुदाके ऊपर आग धर देंगे । कहेंगे कि, अब हुक्का पिओ ऊपरसे खूब मुग्दरोंसे मारेंगे, कहेंगे तम्बाकू हुक्का पीनेका फल लो । वे नारकी चिल्ला २ कर रोवेंगे, पर कोई उनकी नहीं सुनेगा, बरन् जितनेही अधिक रोवेंगे उतनीही अधिक मार पड़ेगी

तमाकू पीनेका दोष—स्कन्ध पुराण ६७ अध्यायमें ब्रह्माजी नारदजीसे कहते हैं कि, हे नारद ! कलियुगके मनुष्य नरकको जाँयगे क्योंकि, वे तम्बाकू पीयेंगे, तम्बाकू पीनेवालोंकी सब तपस्या, भजन, दान, पुण्य आदिक नष्ट हो जाते हैं । जैसे गोमांस भक्षण करना, अपनी माता, गुरुपत्नी और बहनके साथ भोग करना महापाप है वैसेही तम्बाकू पीना भी पाप है, तम्बाकू पीनेवाले के तीर्थ व्रत आदि सब सुकर्म नष्ट हो जाते हैं, उसको चाण्डाल समझो । जैसे, मद्य और मांसके भक्षण करनेवाले नरकमें पड़ेंगे वैसेही तम्बाकू पीनेवाले भी नरक जाँयगे । तम्बाकू पीनेवालेका ज्ञान वैराग्य आदि सब नष्ट होजाता है । म्लेच्छ धर्मका विषेश प्रचार होनेके कारण कलियुगमें तम्बाकूकी विशेषता हुई है । जो कोई तम्बाकू पीनेवाले साधु ब्राह्मणको दान देता है वह नरकको जाता है । तम्बाकू पीनेवाला साधु ब्राह्मण गांवका शूकर होता है, जैसे हाथी स्नानकर अपने ऊपर धूल डाल लेता है उसी प्रकार तम्बाकू पीनेवाले लोग सब सुकर्मोंको नष्ट कर लेते हैं । जो साधु और ब्राह्मण होकर दूसरोंको उपदेश करता है पर आप स्वयं तम्बाकू खाता पीता है, वह दूसरोंको नरकमें डालनेका प्रयत्न करता है ।

जैसे कि, अभागेको सुन्दर स्त्री त्यागकर जाती है वैसेही मादक पदार्थ (शराब, गाँजा, भंग, चरस, तम्बाकू, अफीम, धतूरा, माजूम आदि सर्व मादक पदार्थ) को सेवन करनेवालोंको बुद्धि भी त्यागकर चली जाती है।

मद्यपानके दोष—शराबकी मस्तीमें मा, बहिन, स्त्री, पुत्री आदि किसीका कुछ भी ध्यान नहीं होता, विधि, निषेध हराम हलालका कुछ भी विवेक नहीं होता, शराबके ही कारण लूत जैसा नबी महापापका भागी बना। मद्यप निर्लज्ज और महापातकी होता है उसमें शुभगुणकी गन्ध भी नहीं होती। वह सब शुभ-कर्मोंका वैरी है। अहङ्कार और अभिमानसे भरा होता है, अपनेको अपने गुरु और पिता आदिक प्रतिष्ठित पुरुषोंसे बुद्धिमान् तथा अच्छा समझता है। शराबीकी नशेकी हालतमें कुत्ता उसके मुंहपर मूतकर चला जाता है और वह अभागा समझता है कि, मेरे मित्रने गुलाब छिड़का। शराब पीनेवाला, भूत लगे पागलके समान नाचता फिरता है। मद्यपके सब अङ्ग और इन्द्रियाँ ऐसी निर्बल हो जाती हैं कि, कोई काम ठीक ठीक नहीं होता। मदिरा पीनेसे शुद्धि शौच नष्ट हो जाता है। मदिरासे इस प्रकार दया नष्ट हो जाती है जैसे कि, अग्निके लगानेसे घास फूस जल जाते हैं। इसी प्रकार सब मादक पदार्थ दया, क्षमा, सत्य, धैर्य्य, विचार, शील, सन्तोष, शम, दम आदि सब सद्गुणोंको नष्ट कर देते हैं। ऐसा अवगुण कौन और पाप है जिसको नशेबाज नहीं करता, मादक पदार्थके सेवीसे कभी किसीकी भलाई नहीं हो सकती। शराबी और मादक पदार्थोंका व्यसनी सर्वदाही झूंठा माना जाता है। उसको सच्चे भले मनुष्योंकी संगति कदापि नहीं प्राप्त होती।

मदके नशामें पड़ा हुआ मनुष्य पागलोंके समान गाता रोता, हंसता और क्रोध आदिक व्यवहार करता है। मद्य पीकरही कृष्ण भगवान्के पुत्रने दुर्वासा ऋषिकी हँसी की थी जिसके कारण यादवोंका वंश नष्ट हो गया। शराब और अन्य मादक पदार्थोंके सेवन करनेवालेको किसी शास्त्र और धर्मके बुद्धि-मानोंने अच्छा नहीं गिना है उसकी निन्दाही की है। यदि शराब पुठ्ठोंमें लग जाय तो आदमी फौरन् मर जायगा, यह सर्व रोगोंकी जड है मृत्युका चिह्न है लोक परलोकमें अप्रतिष्ठा और दुःख उपजानेवाली है। मदिरा पीनेसे ऐसे ऐसे पापकर्म होते हैं जो कभी नहीं भूलते।

उदाहरण—मैंने किसी किताबमें देखा था कि, फारस मुल्कका एक शहजादा था। युवा अवस्थामें उसका गवना हुआ। मकलावेके दिन भली प्रकार मद्य पीकर अपनी स्त्रीके मकान चला। जाते जाते नशेकी तरङ्गोंमें

मकानका रास्ता भूलकर एक कबरिस्तानमें चला गया। उसी दिन शामको एक पारसीकी बूढ़ी स्त्री मर गई थी, उसको कफनदेकर सुगन्धी अतर आदिक लगाकर, कबरिस्तानके मकानमें रख आये थे। शाहजादा भी भटकता भटकता कबरिस्तानके उसी मकानमें आगया, नशेकी तरङ्गमें मृतक बूढ़ीकोही अपनी स्त्री समझकर जगाना और गुद गुदाना आरम्भ किया पर वह मुरदा कब जागनेवाली थी? न जागनेपर शाहजादेके मनमें विचार आया कि, आज प्रथम रात्रि है इस हेतु लज्जासे नहीं बोलता। पीछे उसके साथ सम्भोग करने लगा जवानीके जोशमें सबेरेतक भ्रष्ट होता रहा। इधर तो दिनका प्रकाश होने लगा उधर उसका नशा भी उतरने लगा, चेत आनेपर अपनेको कबरिस्तानमें एक बूढ़ी मृतकके साथ लिपटा तथा जिह्वा को उसके मुंहमें डाले हुये देख उसकी लज्जा और पछतावेको क्या कहना था, वह वहाँसे बड़ी चिन्ता, लज्जा, शोक, ग्लानि और घृणाको लिये हुये वहां से चल दिया।

मदिराके दोषोंपर पाश्चात्य तत्वज्ञ—यूरोपियन तत्वज्ञोंकी सम्मति है कि, मदिराका नशा सार भागके आधारपर है, यह कारबन, हैड्रोजन और आक्सिजन इन तीन तत्त्वोंसे बनता है।

कीमियाइस्लाइमें लिखा है कि, दो भाग आक्सिजन, छः भाग हैड्रोजन और चार भाग कारबनसे अलकाहल बनता है। उसका यह गुण है कि, शारीरिक उष्णतापर रक्तकी सञ्चारण गतिको बहुत जोरसे बढ़ाता है, जिससे थोड़ीही देरमें चर्मपर पसीना आजाता है। शरीरकी बिजली घट जाती है, इसका यह नतीजा होता है कि यह आरोग्यताको एकदम नष्ट कर देता है।

इसका असर मस्तिष्कपर भी पड़ता है कि, यह मस्तिष्कके रगोंमें गरमी डालकर बड़े वेगसे रक्तका सञ्चालन करता है, जिसे मस्तिष्कके ऊपर बड़ा दबाव पड़ता है। थोड़े दिनोंके पीछे मस्तिष्कका तत्व ढीला होजाता है।

मस्तिष्ककी शाखायें पतली पतली नसें हैं जिनपर मनुष्य की प्रकृति और स्वभावका आधार है वे बिगड़ जाती हैं इसका यह परिणाम होता है कि, मद्यप मनुष्य लड़ाका, झगड़ालू, डरपोक और उत्साह हीन हो जाता है। शरीरके पुट्ठोंपर रसदार पदार्थोंको जमानेके कारण उनको बेकार कर देता है शराबियोंके पुट्ठे प्रायः ऐंठे हुये होते हैं। उनको थोड़ा परिश्रम भी बहुत कठिन जान पड़ता है, हाथ पग अपने वश नहीं रहते, अन्तमें थर थराहटकी बीमारी हो जाती है।

उसका हड्डियोंपर ऐसा असर होता है कि, उनमें फासफोरस उत्पन्न

नहीं होने देता, उनमें गोंद भी नहीं होने पाता, जिससे हड्डियाँ कठिन और निर्जीव हो जाती हैं जिसका परिणाम गठिया और ध्वजभङ्ग होता है।

चरबी (मज्जा) पर इसका ऐसा असर होता है कि, उनको सुखा देता है अलकाहल यानी मदिराके सारभागका स्वभाव है कि, चरबीको पतला करे यदि थोड़ी हो तो सुखा दे, इसलिये मद्य भी वैसाही करता है।

चमड़े पर इसका असर पड़नेसे उसपर नाना प्रकारके चर्मरोग उत्पन्न होते हैं, वैसेही इन्द्रियोंपर तथा अन्तरीय शक्तियोंपर भी इसका असर होता है थोड़े समयतक तो उनमें गरमी पैदा करके बड़ा जोश और बल पैदा कर देता है, फिर उसी प्रकारसे उसमें पूरी ठण्ढक और सुस्ती आ जाती है।

उपस्थ इन्द्रियोंके रोगोंको फैलानेसे प्रायः मसाना कमजोर हो जाता धातु पतली हो जाती है, विषयकी इच्छा बहुत बढ़ जाती है, पशु वृत्तिमें विशेषता हो जाती है, इस प्रकारसे थोड़े दिनमें मनुष्य नामर्द हो जाता है। मसाना कमजोर हो जाता है, शराबी कभी २ कपड़ेमें पिशाब भी कर देता है। कलेजेके अन्तरङ्ग तत्वको मिलाकर चरबी बना देता है, खालके अन्दर जा पाचन शक्तिमें मिलकर पाचनशक्तिको नष्ट कर देता है, इसलिये शराबी प्रायः वमन किया करता है, थोड़ेही दिनोंमें उसकी पाचनशक्ति जाती रहती है वह किसी कामकी नहीं रहती। पेटकी शाखायें तथा अँतरियोंके उलटे हो जानेसे कबजकी बीमारी हो जाती है।

कलेजेपर इसका परिणाम—हृदयका काम है कि, भोजनके साथ पित्त मिलावे और कारबोलिक आदिकको रगोंके द्वारा फेफड़े तक पहुँचावे, शराब उसको कमजोर कर देती है, इस कारण मद्यपोंमेंसे सैकड़े पीछे निन्नानवे हृदयके रोगसे मर जाते हैं।

इसका फेफड़ेपर असर—फेफड़ा अधिक परिश्रमके कारण निर्बल हो जाता है, जिससे तपेदिक (विषमज्वर) दमा तथा सिलकी बीमारी हो जाती है।

धड़कन—हृदय रक्तके उलटने पलटनेके कारण धड़कता रहता है, मद्यप प्रायः सोते २ चिल्ला उठता है, इस प्रकार मद्यपकी जिन्दगी दुःखमय हो जाती है।

आँखोंपर मद्यका परिणाम—यह होता है कि, आँखोंका बल घट जाता है उनमें लाली छा जाती है, उसी तरह कानोंकी शक्ति भी घट जाती है, जिह्वा फूल जाती है, होठोंमें सूजन आ जाती है, जिसके कारण शुद्ध शब्द नहीं निकलता पाँव चलनेसे रह जाते हैं, कामदेवकी शक्ति घट जाती है।

अंग्रेजी मद्यसे मृत्यु—एक प्रकारकी अँगरेजी मदिरा होती है, जिसमें भङ्ग मिलाते हैं, नशा तेज होनेके लिये कुचला भी मिला दिया करते हैं । हृदयमें उनका विष स्थान बना लेता है उसको कमजोर कर देता है, अन्तमें मनुष्य मर जाता है ।

कोढ़की बीमारी—मदिरा पीनेसे कोढ़ उत्पन्न होता है, यह संसारमें दुःख और परलोकमें नरक दिखलाती है । पर मूर्ख मद्यपोंके लिये अनुपम पदार्थ है ।

दृष्टान्त—एक मनुष्य टेम्प्रेंस सुसाइटीका पादरी था, उसके साथ उसके मद्यप मित्रोंने ठट्ठा किया यानी मद्यसे एक पीपा भरकर उसके पास भेंटके समान भेज दिया । जब वह पीपा पादरीके समक्ष आया तो उसने शराबको निकालकर एक चीनीके बरतनमें रक्खा । पहले एक शूकरको बुलाया उस बरतनको उसके सामने रख दिया कि, जिसमें शूकर कुछ पिये पर शूकर उसकी बू पातेही घबड़ाकर चिल्लाता हुआ भाग गया, उसने मदिरामें मुंह भी नहीं लगाया । पादरीने एक गदहेको बुलाया, उसके आगे भी वही शराब रखदिया, वह भी गन्ध सूंघतेही भाग गया, कुत्तेने भी वैसाही किया । फिर पादरीने उस मद्यको उसी पीपेमें भर और मित्रोंके पास भेजकर एक पत्र लिखा कि—

मेरे प्यारे मित्रों ! आपने मेरे पास जो भेंट भेजी उसको मैंने पहले शूकरके सामने रखी, पर उसके सूंघतेही वह विकल होकर भाग गया, पीछे क्रमशः गदहे और कुत्तेके पास भी रखी पर वे भी वैसेही घृणा करते हुए दुःखी होकर भाग गये, जिसको देखतेही कुत्ते, शूकर और गदहे भाग जाते हैं ऐसे घृणित और भयानक पदार्थ स्वीकार करनेवाला इनसे भी अधम होना चाहिये । मनुष्यके ग्रहण योग्य यह पदार्थ नहीं है । इसको तो वेही ग्रहण करे जो अपनेको उन कुत्ते आदिकोंसे भी नीच समझता होगा, इस कारण मैं इस भेंटको अपने यहां नहीं रखना चाहता, आपकोही मुबारक हो । यह शराब मनुष्यके लिये विष और विषोंका घर है । इन घृणित निषिद्ध मादक पदार्थोंने मनुष्यको ऐसा अन्धा कर दिया है कि, वे प्रकाशमें भी टटोलते फिरते हैं, उनको बिलकुल नहीं सूझता । सच और झूंठका विवेक लोप हो गया ।

ऐसेही व्यभिचार, चोरी, झूंठ, ईर्षा, कपट, छल, विद्रोह, अभिमान, जूआ, नृत्य, भीख माँगना, भाँड़पन आदि घृणित लज्जाहीन जितने कार्य हैं वे सब नर्ककी राह दिखलानेवाले हैं । मुक्तिमार्गके कट्टर शत्रु हैं, जो कोई मुक्ति चाहता है वो इनसे बचता रहे, नहीं तो अवश्य दुःख भोगेगा ।

नजम–दिल लगा जिसका है बेमकरू हात। है ऊपर उसकेही बला आफात्।
उसके दिलपर न रोशनीका चिराग। रास्त रहका उसे मिले न सुराग।।
दिनमें फिरता टटोलते अन्धा। मिस्ल शबके करीहका बन्धा।
साधु गुरुकी न उसमें इज्जत है। न खुदादानी उसमें लज्जत है।।
खोय शैतान् बसूरते इस्सान है। मुज़तरिब हाल औ परीशांन् है।
है यही शर्त अक्ल इन्सानी। कुर्ब उस्से किनारा गरदानी।।
बैठ हरगिज न साथ शैतानके। निज़द जामत स्याह् बखतानके।
सुहबत उनकीसे करसदा परहेज़। बैठमत् मुहफिल उनकेसे बरखेज।।
बल्कि तू हाथसे पकड़ले नाग। इन मुनश्शियोंसे जल्दतर भाग।।
यही शैतान् तेरा क़ातिल है। ख्वाहिस उनकी ख्याल बातिल है।।

विशेषवक्तव्य—इस भागमें वर्णन किये गये निषिद्ध घृणित दुःख उत्पादक मद्य, मांस तथा अन्य मादक पदार्थ और निषेध नीचकर्म्म ऐसे निकृष्ट हैं कि, मनुष्यके अन्तःकरणमें ज्ञानके प्रकाशको कदापि नहीं आने देते, जबतक इसका पूर्ण रीतिसे सङ्ग न छूट जावे तबतक सत्यगुरुका दर्शन नहीं होगा। इन निषेध दुष्टकर्म्मोंमेंसे एकमें भी मन लगा रहेगा तो कदापि ज्ञानका पथ न मिलेगा। ये घृणित पदार्थ तपेश्वरियोंके तपस्याको ऐसा नष्ट करते हैं जैसे आगकी चिनगारी रुईको जला देती है। तीनों कालके तपस्वियोंकी संयमियोंकी बाहरी और भीतर शुभकर्मोंको नष्ट करनेमें शूरबीर हैं। यदि प्रगटरूपसे इनसे बचता रहे, पर अन्तरमें इनका बीज और बासना रहे, तो भी ज्ञानका प्रकाश नहीं मिल सकता। अन्तरके शुद्ध न होनेसे कदापि बाहर शुद्ध नहीं हो सकता। किसी अंशमें बाहर शुद्धताकी आवश्यकता नहीं भी होती पर अन्तरङ्ग शुद्धताकी तो अत्यन्त ही आवश्यकता है। कितने ऐसे महात्मा पाये जाते हैं, जिनका कि, बाहर तो देखने में भड़कीला नहीं होता, एवं लोग भी उनकी तरफ विशेष नहीं झुकते पर उनका हृदय ऐसा शुद्ध होता है कि, ईश्वरी ज्ञान का स्थानही होता है।

इन घृणित पदार्थोंकी ओर सङ्कल्प भी न दौड़े तो मनुष्य मुक्तिका अधिकारी हो सकता है। बासनाओंको रोककर इन्द्रियोंको वशकर निषेध पदार्थ और कर्मोंसे अलग रहकर, पूर्ण प्रयत्न करनेपर ही कल्याण की आशा हो सकती है। इस प्रकारसे प्रयत्न करने पर अन्तरिक्षसे सहायता मिलती है। परमात्मा इसकी कोशिश देखकर दयालू होता है। सच्चे अन्तःकरणसे प्रयत्न

करने पर किसी प्रकारकी रुकावट न हो तभी कार्य्य सिद्ध होता है तभी भगवान् सिद्धि देते हैं ।

सर्व धर्म

धर्मका प्रयोजन ।

इस लोक और पर लोकमें सुख मिले तथा अन्तमें मोक्ष भी मिल जाय, इस कारण संसारके सभी मतोंके लोग धर्मका अनुष्ठान करते हैं चाहें उन्होंने कुछ भी धर्मका अर्थ मसझ रखा हो पर उनकी श्रद्धा केवल कथित प्रयोजनोंके लिये ही होती हैं, इस कारण सभी मजहबवालोंके यहां धर्माचरणके येही प्रयोजन हैं इन्हींके लिये धर्माचरण है ।

धर्मका स्वरूप

अपनी अपनी मतिके अनुसार सभी धर्मोंके आचार्य्योंने धर्मके स्वरूपोंकी नियमात्मक कल्पनाएं की उन्हीं नियमोंको धर्म तथा उनके विरुद्धाचरणको अधर्म बतलाया, किसीने उनको ईश्वरकी आज्ञा बतलाई तथा किसीने वही उतरी हुई कहीं एवं किसीने अपनी शून्य समाधिके अकलंक अनुभव बतलाये । उनके अनुयायियोंने उन्हींको धर्म तथा दूसरे कामोंका अधर्म समझा । यहाँतक कि, प्रत्येक मजहबका व्यक्ति अपने पूर्वज धर्मको छोड़ दूसरे धर्मोंको अधर्म समझता है अपने नियमोंको उक्त प्रयोजन सिद्ध करनेवाला तथा दूसरोंके नियमोंको नरकमें पहुँचानेवाला मानता है ।

नियमोंकी आवश्यकता और सत्ता ।

जब कि--शरीर यात्राके निर्वाहके लिये भी नियमोंकी आवश्यकता रहती है और तो क्या आहार, विहार भी विना नियमके सुखके स्थानमें दुःखका कारण बनते हैं एवं नियमानुसार किये हुए सुखोंके कारण होते हैं तो फिर दूसरों नियमोंका क्या कहना है ? प्रकृतिके पैमाने पर तुले हुए नियम निर्बाध चलते रहते हैं, जैसे दिनके करनेके कृत्य रातको कभी निर्बाध नहीं होते । क्योंकि प्रकृतिने रातको किसी दूसरे कामके लिये नियुक्त किया है । यही कारण है कि, काम करनेके जो प्रकाश आदि प्राकृतिक साधन दिनमें प्राप्त होते हैं वे रातमें प्राप्त नहीं होते, अतः प्रकृतिके अविरुद्ध नियमोंकी प्रत्येक प्राणधारीके लिये आवश्यकता है इसके विरुद्ध नियम, नियम नहीं कहे जा सकते ये नियमही धर्म कहलाते हैं इन्हींमें सारा संसार बँधा हुआ ।

नियमोंके भेद ।

इस प्रकार धर्मोंके दो भेद होगये । एक तो प्रकृतिके विरुद्ध जिनको कि,

प्रकृति सहन नहीं कर सकती दूसरे वे नियम हैं जो नियतिके नियंत्रणोंके ही परिस्फुट रूप हैं।

ईश्वरीय नियम।

ईश्वरकी आज्ञा उसकी प्रकृतिके नियमोंके विरुद्ध कभी नहीं हो सकती। क्योंकि, प्रकृति उसीकी है उसीके जिम्मे संसारका निर्माण है अर्थात् उसीसे सब कुछ बना है। इस बातमें किसी भी ईश्वरवादी या खुदावादी व्यक्तिको इनकार नहीं हो सकता कि, यह दुनिया जगदीशकी बताई हुई है फिर उसके मुखके कहे नियम उससे विरुद्ध कैसे हो सकते हैं? इससे हम इस निश्चय पर पहुँचे हैं कि, जो प्राकृतिक नियमोंका विरोध नहीं करते वे ईश्वरीय नियम हैं वेही परमात्माके कहे हुए हो सकते हैं किन्तु जो प्राकृतिक नियमोंका विरोध करते हैं वे नियम परमात्माके बताये हुए नहीं हो सकते चाहे वो किसी भी मजहबके लोगोंने खुदाके भेजे कहकर अपना रखे हों।

परीक्षा।

पहिली परीक्षा तो यही है कि, वे प्रकृतिके नियमोंके विरुद्ध न होने चाहिये। दूसरे उनमें अपनी आत्माकी सच्ची भावना भी ओतप्रोत होनी चाहिये। जो बात अपनी आत्माके सच्चे स्वरूपके प्रतिकूल हो वह कदापि धर्म नहीं हो सकता। तीसरी बात वह है कि, सबसे ईश्वर वादियोंका परमात्मा है। वह एक है अनेक नहीं हो सकता उसकी आज्ञा एक होगी जिसमें जन साधारणका हित निहित रहता है। यह काम परमात्माका नहीं हो सकता कि, एकको एक काम करनेमें पाप बता दे तथा दूसरेको पुण्य बतावे, उसकी आज्ञा सब मनुष्योंके लिये एक है जो सब धर्मोंमें अदुःखदायी एकसी बात है वही परमात्माकी आज्ञा है दूसरी परमात्माकी आज्ञाएँ नहीं हो सकती किन्तु वे केवल स्वार्थकी भावनासे सनी हुई बातें हैं।

धर्म क्या होता है? धर्म किसे कहते हैं? जब तक यह बात न जानता हो तब तक निकट रहने तथा अति उत्कट सम्बन्ध होनेपर भी उसको पहँचानना कठिन है।

धारण—संसारमें नानाप्रकारके धर्म प्रचलित हैं। सब कोई अपने अपने धर्मकोही धर्म कहता है उसीको पसन्द करता है। दूसरे धर्मोंको बुरा समझता है। बहुतेरे तो ऐसे हैं जो अपने बाप दादेकी रीति, रस्म और तरीक़ोंकोही धर्म माने बैठे हैं। इसी प्रकार सब अपने अपने राग गाते हैं पर जबतक अपना सच्चा धर्म न जाना जाय तब तक पशु और मनुष्यमें कुछ भी विभिन्नता नहीं है। यहां

में प्रगट करूँगा कि, अपना धर्म क्या है ? पर धर्म क्या है ? जो लोग अपने कुल रीतिको अथवा किसी विशेष नियमकोही धर्म माने बैठे हैं वे सब भूलमें फँसे हैं। जो नाना प्रकारके एकदेशीमें फँस धर्म द्वेषके लिये मरते मारते, निन्दा स्तुतिमें अपना दिन बिता रहे हैं, वे महान् अज्ञानतामें फँसकर अपने यथार्थ कर्तव्य और धर्मको कभी नहीं पा सकते।

मत मतान्तरके प्रचारक—कालपुरुषने अनन्त प्रकारके मजहबोंको प्रचलित करके जीवधारियोंको फँसा मारा। यही मुख्य कारण है कि, सब मनुष्य अपने यथार्थ धर्मको छोड़कर कालपुरुषके धोखेमें पड़े हैं उसको पहचान नहीं सकते।

ज्ञाता—कृष्णचन्द्रने अर्जुनसे महाभारत करवाकर पाण्डवोंको राज्यगद्दी पर बिठा दिया। अन्तमें, कृष्ण भगवान् पाण्डवोंसे अलग होगये और उन्हें उनका धर्म सँभालनेके लिये कहा। स्पष्ट तो उन्हें क्षत्रियोंका धर्म लड़ाई बतलाकर, लड़ाई कराई पर भीतरी औरही आशय रखा। इसका आशय कोई २ साधूही समझते हैं ज्ञानी ही यथार्थ धर्मको सुधि जानते है।

श्रेयान् स्वधर्मो विगुणः परधर्मात् स्वनुष्ठिधात्।
स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः॥

अर्थ–(सद्गुणोंसे युक्त पराये धर्मसे अपना धर्म गुणहीन भी हो तो भी श्रेष्ठ है, अपने धर्ममें मरना श्रेष्ठ है, पराया धर्म भयको प्राप्त करनेवाला है।

यहां तो श्रीकृष्णचन्द्रने क्षत्रियधर्म बतलाकर अर्जुनको युद्धके लिये प्रस्तुत किया अर्जुनने भी युद्ध और रक्तपातही अपना धर्म समझा, पर श्रीकृष्ण भगवान्ने अर्जुनको इस श्लोकमें योगज्ञान आदिक सिखलाया जिससे धर्म जाननेका मार्ग मिले। प्रगट तो क्षत्रियधर्म बतलाया पर कृष्णके जितने वाक्य होते थे उन सभोंके दो अर्थ, दो भाव और दो आशय हुआ करते थे, मैंने इसी पुस्तकमें श्वपच सुदर्शनजीका वर्णन किया है, कि वह मनुष्य थे उनमें मनुष्यता थी जिसको कृष्ण भगवान्ने प्रगटरूपसे सबको दिखला दिया यह सिद्ध कर दिया कि, उतने लोगोंमें सुदर्शनजीके अतिरिक्त कोई सच्चा भक्त मनुष्य न था। जो सच्चे मनुष्य हैं जिन्होंने यथार्थ मनुष्यत्वको पाया है वेही पर और अपर धर्मकी महिमा जान सकते हैं, वही अपना पराया समझ सकते हैं, दूसरा कोई नहीं जान सकता। इसीलिये विवेकवान् विचारवान्को, मनुष्य और अविवेकी मूर्खको पशु कहते हैं।

अधर्म—काम, क्रोध, लोभ, मोह, युद्ध आदिक मनुष्यके यथार्थ धर्म नहीं, अपना धर्म तो वह है जिससे केवल अपना स्वरूप जाना जावे अपने यथार्थको प्राप्त करे।

धर्मकी जड़ ।

गुरु धर्मका मूल है, समस्त स्वसंवेदका कथन है कि, गुरुकी सेवा, श्रद्धा प्रेम, विश्वास और कृतज्ञतासे भक्ति मुक्ति प्राप्त होती है। गुरुको गोविन्द करके जानने पूजनेसे अंतःकरण शुद्ध होकर सर्वज्ञता प्राप्त होती है केवल गुरुही धर्म और परमार्थकी जड़ है। जड़में पानी देनेसे फल फूल और पत्ते शाखा आदि सब पदार्थ पा सकेगा। जहां गुरुकी सेवा भक्ति नहीं वहां धर्मकी जड़ कट जाती है फिर तो 'मूलं नास्ति कुतः शाखा' की बात होती है गुरुकी सेवा पूजाके बराबर कोई तपस्या नहीं है। न भजनही है गुरुकी आज्ञा माननेसे पूरा होता है।

गुरुपूजा अंगकी साखी।

शिष्य पूजे गुरु आपना, गुरु पूजे सब साधु।
कहैं कबीर गुरु शिष्य को, मति है अगम अगाधु ॥
गुरु सौंजले शिष्यका, साधु संत को देत।
कहैं कबीरा सौंजसे, लागे हरिसे हेत ॥
गुरू पुजावे साधु को, साधु कहैं गुरु पूज।
अरस परस के खेलमें, भई अगमकी सूज ॥

गुरुभक्ति–जितने शुभकर्म संसारमें प्रचलित हैं सबसे बढ़कर गुरुपूजा है। जिस गुरुके द्वारा भक्ति मुक्ति प्राप्त होती है उसकी समता कौन कर सकता है? कबीर साहबने बारम्बार कहा है कि, जो पुरुष जितनी गुरुकी सेवा तथा आज्ञापालन करेगा वह उतनीही शुद्धता और ज्ञान प्राप्त करेगा। गुरुसेवा पूर्णताको पहुँचाती है गोविन्द उसी गुरुकी मूर्तिसे प्रकट होकर काम पूरा कर-देता है। हाँ ध्यानकी पूरी निमग्नतामें गुरुकी सेवा नहीं हो सकती पर गुरुका ध्यान हो सकता है। ऐसी दशामें गुरुकी बारम्बार स्तुति कृतज्ञता और प्रार्थना करना उचित है जो कुछ ज्ञान तथा प्रकाश प्राप्त हो सब गुरुकी कृपासे ही हुआ समझना चाहिये जन्मभर गुरुकी कृतज्ञता माने कभी कृतघ्न न बने। दान, पुण्य, योग, याग, पूजा पाठ और व्रतादि सब कार्य्य गुरुकी आज्ञानुसार करे। गुरुसे बढ़कर दूसरा दानपात्र कौन है संसारमें नानाप्रकारके दुःखी जीव तो सदाही मिलते हैं पर गुरु सदा कहाँ प्राप्त होते। गुरुकी सेवा किसी महाभाग्य-वानको प्राप्त होती है। जिसको गुरु प्राप्त हो उसका धन्य भाग्य है। क्योंकि गुरुकी सेवासे सब बन्धन छूट जाता है जो अपने गुरुके साथ कपट, छल, झूठ, अभिमान, मान बड़ाई हुशियारी चालाकी करता है, वह बड़ा अभागा है। गुरुको भी सब प्रकारसे शिष्यका बोध एवं सब शंका निवृत्त करना उचित है।

श्रद्धा विश्वास—शिष्यको गुरुके उचित वाक्य पर विश्वास श्रद्धा रखना मुनासिब है। क्योंकि, गुरुके वचनकी श्रद्धाही भक्ति मुक्तिको प्राप्त कराती है। विश्वास श्रद्धाहीके साथ गुरु है, श्रद्धा विश्वासके छूट जानेपर नहीं रहती, विश्वास श्रद्धाही पर गुरु बैठा है। मुहम्मद साहबके नूरनामेमें लिखा है कि, खुदाने यकीनका एक वृक्ष उत्पन्न किया उसके ऊपर मुहम्मदकी रूहको मोरके समान बैठाया।

आदि भक्ति शिवयोगी केरी। राखी गुप्त न जगमें फेरी।

आदि गुरु विश्वासके वृक्षपर बैठाया गया, इस लिये गुरुकी बैठक वहीं हुई। जहाँ विश्वास नहीं, वहाँ गुरु नहीं, इसी लिये सब गुरुमुख लोगोंको ताकीद की गई है कि, अपने २ गुरुपर श्रद्धा विश्वास रखो यदि विश्वास नहीं रहेगा तो गुरुभी नहीं रहेगा। समस्त स्वसंवेद पुकारता है कि, गुरुको छोड़कर गोविन्दको कदापि नहीं पावेगा।

गुरुदर्शन—चेलाको उचित है कि, गुरुका नित्य दर्शन करे। नित्य न हो सके तो दूसरे तीसरे दिवस तो अवश्यही करे, वह भी न हो सके तो सप्ताह अथवा पन्द्रह दिनमें जरूर करे। यदि पक्षपक्ष भी दर्शन न हो तो महीनामें एक बार, यदि यह भी न हो सके तो तीसरे महीने, यदि किसी कारण ऐसा भी न हो सके तो छठे महीने भेट पूजा सहित गुरुका दर्शन जरूरही करने जावे। यदि छठे महीने भी न हुआ तो वर्षमें दिन तो अवश्य सेवा बजावे। यदि वर्षमें दिवस भी गुरुकी सेवा पूजा न कर सके तो उसका कहीं भी ठिकाना नहीं। जैसे वृक्ष बिना जलके सूख जाता है उसी प्रकार चेला गुरुके दर्शन बिना अशुद्ध अंतः-करणका हो जाता है।

गुरुमुखका कृत्य—इस संसारमें दो प्रकार मनुष्य हैं। गुरुमुख और मन मुख। गुरुमुख वे लोग हैं जो कि, गुरुकी सेवामें किसी प्रकारकी भी त्रुटी नहीं करते सर्वदा गुरुकी आज्ञा पालनमें ही लगे रहते हैं गुरुकी आज्ञाको पूर्णरीतिसे समझने और उसपर चलनेवाले पुरुष, पारखपदको प्राप्त होकर, सत्यपदको पहचान लेते हैं, ऐसेही मनुष्य अपना तन मन धन सब सत्यके लिये अर्पण करते हैं।

मनमुख—वे लोग हैं जो गुरु और गुरुकी वाणीका कुछ आदर नहीं करते जो मनमें आता है वही करते हैं। ऐसे पुरुष अव्यवस्थित चित्तके होते हैं इसी कारण स्वेच्छाचारी तथा दूषित हृदयके भी होते हैं। मनमुख मान बड़ाई और वृथा अभिमानसे ग्रस्त होते हैं।

दोनोंके कृत्य—गुरुमुख ईश्वर पूजक है और मनमुख बुतपरस्त है गुरुमुख

तरेगा, मनमुख डूब मरेगा। सब प्रशंसा गुरुमुखके लिये है, सब धिक्कार और निन्दायें मनमुखके लिये हैं। गुरुमुखमें पूर्ण मनुष्यत्व वर्तता है मनमुख पशु धर्मोंमें रहनेके कारण बन्ध व वासनाओंमें फँस रहा है।

मनमुखके मुक्त न होनेका कारण—कितने लोग गुरुसे उपदेश तो ले लेते हैं पर सेवा करनेके समय भाग जाते हैं मनमुख होकर अपना जन्म गँवा देते हैं। वे मूर्ख यह नहीं सोचते विचारते कि, गुरुकी सेवा भक्ति बिना ईश्वर कैसे प्रसन्न होगा। पत्थरपर चक़मक़ लगता है तब अग्नि निकलती है यदि पत्थर और चक़मक़का संयोगही न हो तो चिनगारी कैसे निकले? इसी प्रकार यदि चेला गुरुका सच्चा प्रेम-सम्बन्ध न हो तो ज्ञानका प्रकाश कैसे हो। यदि लोहा और पारसका संयोगही न हो तो सोना कैसे बनेगा? लोहा पारसका सम्बन्ध भी हो पर जब तक उनमें तनिक भी भेद रहे, तो सोना होना असंभव है।

गुरुपूजाका महात्म्य—गोविन्दको कोई भी नहीं देख सकता गुरुको सब देख सकते हैं। गोविन्दके स्थानपर गुरुदेव पूजता है गुरुही की पूजा गोविन्दकी पूजा है। जो अपने गुरुको परमात्माका स्वरूप जानकर उसकी सेवा करता है वह तत्काल सत्यपुरुषको पा लेता है। गुरुकी उत्कृष्टता तीन लोकसे परे है। ये तीनोंलोक मनमुख हो रहे हैं इस कारण कोई भी मनुष्य गुरु की यथार्थ सेवा नहीं करता। गुरुके ऊपर संदेह करनेसे धर्म्मकी ध्वजा टूट जाती है। जिन्होंने गुरुको पूजा उनके दोनों लोक सुधरे जिन्होंने गुरुको न पूजा वे गुरुविमुख होकर उभय लोकसे भ्रष्ट हुये। सब मतवालोंमें कोई ही गुरुमुख होगा नहीं तो मनमुखोंकी संख्या अधिक है।

मजहिबीयोंकी ओर दृष्टि—प्रथम हिन्दुओंकी ओर ध्यान दो, इनमें प्रायः सभी गुरुविमुख देख पड़ते हैं सभोंने गुरुसे मुख फेर लिया जब कभी किसी बातके जाननेकी आवश्यकता होती है, तो किसी से पूछ कर दान पुण्य कर दिया नहीं तो कुछ चिंताही नहीं। लाखों करोड़ोंमें कोईही गुरुमुख होगा।

मुसलमानोंकी ओर ध्यान दो तो मालूम होगा कि न कोई किसीका गुरु है न कोई किसीका चेला है प्रचलित रीतिसे किसी मुल्ला, मौलवी आदिसे पूछकर रोजा निमाज सीख लेते हैं। न किसीका कोई गुरु न चेला है केवल बातोंही बातोंका मेला है।

फकीरोंमें कोई २ फ़िरका ऐसा है जहां गुरु चेलेका विचार है।

यही दशा ईसाई (खीरिष्टी) धर्मकी है। मूसाई (यहूदी) भी उन्हीं की पैरवी करते हैं। इन दोनों धर्मोंमें तो नाम मात्रको भी गुरु शिष्यकी रीति

नहीं जान पड़ती। केवल अपने २ आचार्य (नबी) का नाम ले लेकर धूम मचाते हैं। इसी प्रकार संसारभरके मतबादियों पक्षपातियों और विषयियोंकी दशा हो रही है।

मनुष्यको उचित है कि, गुरुसे अधीन रहे सर्वदा उसकी आज्ञाका पालन करे पूरी प्रतिष्ठासे गुरुके सन्मुख रहे कभी ऊँचे शब्दसे बेअदबोंके समान धृष्टता प्रकट न करे गुरुसे अभिमान करनेपर अन्तःरण मैला हो जायगा।

स्वसंवेदका सार—स्वसंवेदका संक्षेपमें सारांश केवल एक सार शब्द है। वह कहने सुननेमें नहीं आता, केवल सत्यगुरुकी कृपासे अपने विचार द्वाराही जाना जाता है। लोगोंको समझानेके लिये सारशब्द कहा जाता है। सार नाम है यथार्थ भेदका और शब्द नाम वाणीका है। शब्दका जो यथार्थ लक्ष्य हो उसे सार शब्द कहते हैं। उसको जो पहचाने वह हंस है वही मुक्त है। सारशब्दकी व्याख्यामें कबीर साहबने चौदह अरब ज्ञान कहे हैं। क्योंकि, सारशब्द बोली भाषामें नहीं आता, उपदेश सुनते २ विचार करते २ भाग्यवान्के समझमें आ जाता है। चारों युगोंसे कबीर साहब समझाते आये हैं अनन्त ग्रन्थ वर्णन किये हैं, जो कि स्वसंवेदके नामसे प्रसिद्ध हैं। वे सब केवल सारशब्दकी टीका हैं। जब सत्यपुरुषकी उत्पत्तिकी इच्छा हुई सूक्ष्मसे स्थूल हुआ। तब शून्यमें एक झाँई दृष्टि पड़ी, वही बिन्दीके आकारमें खड़ी हुई (०)॥

बिन्दी—जब सारशब्द सूक्ष्मसे स्थूल हुआ बिन्दीरूप झाँई प्रगट हुई, उसीसे सब सृष्टि उत्पन्न हो गई। समस्त संसारमें यह बिन्दी है केवल उसी एक बिन्दीसे सब संसार है। देखो गयासुल्लोग़ातमें यह लिखा है, कि, समस्त संसारमें यह नुक्ता फैल गया। इसको अनुस्वार कहते हैं, इसका दूसरा नाम मकार भी है, इसी मकारको[१] माया कहते हैं। इस मायाके मिथ्या, कपट, छल, शून्य, भ्रम, शक्ति और प्रकृति आदिके बहुत नाम हैं। मायाके अनन्त नाम हैं, वे सब केवल इस बिन्दीकी ही प्रशंसामें हैं सभी भ्रम हैं, इसी बिन्दीसे सब भ्रम हैं एक भी सत्य नहीं है।

जब लेखनी कागद पर रखकर कुछ लिखना चाहते हैं, तो पहले बिन्दी बनती है, फिर उसीके पेटसे सब अक्षर निकलते हैं। यह सम्भव नहीं कि, कागदपर लेखनी रखें बिन्दी न बने। अवश्य पहले विवश बिन्दी बनेगी फिर पीछे अक्षर, अक्षरसे शब्द शब्दसे लेख, फिर भाषा बनेगी। इस कारण लिखने

१ आदि मंगलके अर्थमें साकेतवासी श्रीविश्वनाथजीने सारा विस्तार बताया है किन्तु यहाँ म्का सारा पसार दिखाया है विज्ञजन दोनों बातोंका विचार करें एवं सुधार कर पढ़ लें।

बोलनेका मूल कारण बिन्दीही है। यही माया और मिथ्या है जिस दशामें कि सब लिखने और बोलनेकी जड़ मिथ्या है, तब लिखना और बोलना कैसे सत्य हो सकता है ? केवल यही बिन्दी सर्व लेख और वाणीमें प्रवेश कर रही है। इसका यथार्थ भेद सत्यगुरुके ज्ञान बिना कोई नहीं पा सकता। बड़े २ ऋषि मुनि, भक्त और तपस्वी, सिद्ध, साधु, इसी बिन्दीमें डबडब कर रहे हैं। यही, एक ऐसा महासागर है कि, किसी उपायसे इससे बाहर जानेकी युक्ति नहीं जान पड़ती। कैसीहू तपस्या और भजन न क्यों करे पर इससे पार होनेकी आशा दुराशा हो जाती है। बड़े आश्चर्यका खेल है ? इससे कौन बाहर निकाले ?

जब केवल एक बिन्दी अथवा अण्ड था, दूसरा कुछ भी न था, उस समय शब्द आदि भी कुछ नहीं थे। यह बिन्दी उत्पत्तिकी ओर झुकी तो वासनाओंसे पूर्ण हो गई। विषयके स्वादको चाहा, सांसारिक इच्छाओंकी राशि हो गई। अण्डरूप पिंजड़ेमें न रह सका इसीसे अण्डा फूट गया। शारीरिक सुखकी इच्छा उत्पन्न हुई, जिससे इसके दो स्वरूप हुये, एक माया, दूसरा ब्रह्म; यही माया और मन कहलाये। एकसे दो होनेपर उसीसे शब्द ओंकारकी उत्पत्ति हुई। यही ॐ तीनलोक और चारवेदका मूल कारण हुआ। इसीको प्रणव बोलते हैं। यही एकसे अनेक होकर समस्त संसारमें फैल गया। इसीसे चारवेद प्रगट हुये उस पर लोग चलने लगे। पहले यही ॐ शब्द हुआ पीछे वेद हुए। इसीको नाद और वेद कहा जाता है। उत्पत्ति के प्रथम यह ॐ हुआ, इसका अर्थ दीनता और आधीनता है। जिसके मनमें दीनता और गरीबी स्थान करेगी वह सब लोकोंका राजा बनेगा। जो आधीनतासे नहीं आये उनका छुटकारा न हुआ। अनगिनती ज्ञानी और कर्मकाण्डी हुये जिन्होंने भजनको पूर्णता पर पहुँचाया पर आधीनता न होनेके कारण उनका पूरा न पड़ा।

जिस दिशामें वेद सत्य परमात्माका ज्ञान बतलानेमें असमर्थ है, उस दशामें वेदपाठियोंको एक चैतन्य परमात्माकी उपासना क्योंकर मालूम हो सकती है ? जो सूक्ष्मविषयको अर्थात् माया और शुद्ध ब्रह्मकी उपासनाके भेदको नहीं समझता वो मनुष्यत्वसे शून्य है। जहांतक माया है वहां सब भ्रम है। जितने समाचार कहनेवाले हैं, सब मायाके ही देशका समाचार कहते हैं। सत्य लोकके समाचार कहनेवाले शब्दको युक्तिसेही बतलाते हैं। उनकी युक्ति उनके साथ होती है। दूसरा उनकी युक्ति जान नहीं सकता। मनुष्यको उचित है कि, एक शुद्ध चैतन्य परमात्माकी उपासना करे। जो सत्य परमात्माकी उपासनाकी ओर लगना चाहता है वह माया और मायिक दोनोंसे भिन्न हो जाता है। जब-

तक माया और मायिकोंमें फँसा रहता है, तब तक अद्वितीयसत्यपुरुषकी उपासनाके योग्य नहीं होता । क्योंकि, दोनोंमें ही भेद वाद है । दोनोंका उपदेश भेद ही है, भेदसे भिन्न उनका उपदेश कदापि नहीं हो सकता चारों वेदोंने स्वरूप प्रगट किया, तो प्रथम भारत वासियोंको प्राप्त हुये, लोगोंने उनकी आज्ञापर चलना आरम्भ किया । यद्यपि कतिपय धर्मोंके लोग आजकल उसके विरुद्ध भी चल रहे हैं ।

वेदके टीकाकारोंने, ॐकारके यथार्थ आशय और अर्थको न समझा, इसका कारण केवल उनके ज्ञानकी अपूर्णता है । वेद तो किसीसे स्वयं कुछ नहीं कहते न बोलतेही हैं, जिससे कि अपने उपदेशको प्रगट कर सकें लोगोंको शिक्षा दें तथा कहें कि, तुम अमुक वेद मन्त्रकी व्याख्या इस प्रकार करो इस प्रकार न करो । इसी कारण सब टीकाकारोंने अपनी २ बुद्धि और पहुँचके अनुसार जैसा चाहा टीका करदी उन्होंने यह कुछ भी न सोचा कि, मेरा विचार सत्य अथवा असत्य । इस कारण वेदके आशयको वही समझ सकते हैं, जिनका अन्तःकरण ज्ञानके यथार्थ प्रकाशसे पूर्ण है । दूसरे नहीं ।

इस ॐकार की यथार्थताको न जाननेके कारण ही वेदपाठी लोग आवागमनमें फँसे रहते हे । अद्वैतमें कुछ विकार नहीं, द्वैतमें है । अद्वैतमें वेद वाणी कुछ नहीं । जितने वेदपाठी हैं अपनी बुद्धिपर भरोसा रखते हैं, जिस बुद्धिपर भरोसा रखते हैं उस बुद्धि की पहुच अद्वैत तक है ही नहीं, फिर वेदपाठियोंको क्या सहारा रहा, वे असहाय हैं । जो अद्वैतके खोजा हैं वे द्वैतमें कदापि वृत्ती नहीं लगाते । जो अनेकमें मन लगाते हैं वे एककी प्राप्ति नही कर सकते । आशा तृष्णा द्वैतमें है, अद्वैतमें पग धरते ही सांसारिक विचार और सङ्कल्प छोड़ने पड़ेंगे । जब तक सांसारिक ध्यान है तब तक माया है, कोई उपाय क्यों न करे छुटकारा नहीं हो सकता ।

तौरेतकी आज्ञाएं ।

१–एक खुदाकी पूजा करो, २–बुतपरस्ती मत करो, ३– खुदाका नाम बे फ़ाइदा मत लो, ४–सबतका दिन पाक रखो, ५–माता पिताकी प्रतिष्ठा करो, ६–खून मत करो, ७–व्यभिचार मत करो, ८–चोरी मत करो, ९–अपने पड़ोसीको प्यार करो, १०–झूठ। गवाही मत दो । ये दश आज्ञायें तौरेतके सार हैं । प्रगट तो इनका अर्थ सब कोई समझ लेता है, परन्तु यथार्थमें इनका अर्थ इस प्रकार समझना चाहिये ।

१–एक खुदा (ईश्वर) की पूजा–करो—कहनेवालेका आशय तो यह

है कि, मेरी पूजा करो, सुननेवाला भी यही समझता है कि जो ईश्वर मुझसे बातकर रहा है उसीकी पूजा उचित है। वक्ता श्रोता दोनोंके आशय और संमति उनके अनुसारही है।

समीक्षा—पर मेरी सम्मति तो एक ईश्वरकी पूजाके विषयमें यह है कि जो कुछ आखोंसे देखा जाता है, कानोंसे सुना जाता है, स्पर्श किया जाता है, रस लिया जाता है, सूंघा जाता है अथवा किसी बाहरी वा भीतरी ज्ञानेन्द्रियसे कर्म अनुभव होता है यह सब द्वैतरूप माया है। वहां अद्वैतका पता नहीं वरन् अनेक हैं। अतः हजरत मूसाने खुदाकी बातको अपने कानसे सुना खुदाको अपने आंखोंसे देखा। जो देखा सुना जाता है वह द्वैत है, अद्वैतमें नहीं है। इससे मूसाने खुदाको अपनी आखोंसे देखा उससे जो कुछ सुना सब माया ही हुई। मूसाने मायाहीकी आज्ञाको माना। एक खुदाको न किसीने देखा और न किसीने उसका वचन सुना। क्योंकि, अन्तरदृष्टिसे जो कोई एक ईश्वरको देखता है तो उसको खुदाको देखने एवं उसके वचनको सुननेकी आवश्यकता नहीं होती। वह सबमें सब जगह एक समान वर्त्तमान है फिर किसका वचन सुनें, किसको देखें। उनके अपने ही मन और वचनसे खुदाके वचन खण्डित होते हैं। क्योंकि भीतर और बाहर तो सब वही है। परमात्मा सदा वर्त्तमान है फिर किस विशेष स्थानमें जाकर ईश्वरका वचन सुनें एवं सुननेका मुहताज बनें, श्रोताकी ऐसी क्या जरूरत है।

निराकार निरवयवका पता नहीं—यदि मूसा अपने अन्तरकी ज्ञान-दृष्टिसे ईश्वरको पहचानते उसके पदको जानते तो अवश्य वर्णन करते कि यह खुदा कौन है। किधरसे आया? किधरको गया? उसको रहनेकी जगह कहां है? क्या सामर्थ्य रखता है? विस्तारसे सारा हाल प्रगट हो जाता, कदापि न छिपा रहता। अरबदेशमें जितने विश्वासी पैगम्बर हुये किसीने इस खुदाका विस्तृत वृत्तान्त प्रगट नहीं किया केवल प्रकाश और थोडा सामर्थ देखकर उसकी आज्ञा मानते आये। किसीने उसको न पहचाना। सब एक दूसरे की बातपर विश्वास करते चले आये। केवल बाहरी भड़क देख ली, भीतरी भेदको किसीने नहीं जाना। ऐसा अन्तरप्रकाश उनमेंसे किसीको नहीं हुआ कि यथार्थ को मालूम कर सके जिस खुदाके शासनको मूसाने माना उसी खुदाकी भक्ति आदमसे लेकर आजतक सब करते आते हैं। उसी खुदाकी आज्ञायोंको मानना अपना धरम सम्मत है यही उनका विश्वास है। जो कुछ उन पीर पैगम्बरोंने देखा वह सब भ्रम है, वह बेचून बेचारा खुदा यानी निराकार निरवयव परमात्मा

शुद्ध है उसमें कोई मिलावट नहीं । जिसमें कुछ मेल है वह द्वैत है मायाका खेल है। बिना पारख गुरुके सत्य परमात्माकी भक्ति कोई नही बतला सकता । एक परमात्माकी भक्ति वही है कि, पहले उस परमात्माको पहचाने । जबतक ईश्वरका ज्ञान न हो, तबतक भक्ति कैसे हो सकती है ? पहले ज्ञान होगा, पीछे भक्ति होगी । नये पुराने पैगम्बरोंमेंसे किसीको भी सत्य अद्वितीय ईश्वरका ज्ञान होता तो वे अवश्य एक परमात्माकी भक्ति करते ।

खुदाने आदमको अपने रूपमें बनाया—आदम पांच तत्वके संयोगसे बना था । इससे प्रमाणित होता है कि, उसका खुदा भी पांचतत्वसे भिन्न नहीं था । आकाशके रंगका खुदा सांसारिक तत्वोंके संयोगसे पृथक नहीं है । यद्यपि उससे बहुत ऐश्वर्य और सामर्थ्य है तो भी वह अद्वितीय और एक नहीं ठहर सकता ।

मूसाकी उत्पत्ति नामक पहली किताबको ३ बाबकी२२ आयतसे स्पष्ट है कि, यह अपने साथी मण्डलीमें से एकके समान था । इस आयतसे स्पष्ट भेद प्रगट होता है, उसमें अद्वैतपना और एकता सिद्धि नहीं होती । खुदा अद्वितीय और भेद रहित, एक नहीं, वरन् अन्नत खुदा प्रमाणित होते हैं, जो भिन्न भिन्न ब्रह्माण्डोंमें खुदाई करते हैं । जब मूसाने स्वयं एक अद्वितीय परमात्माकी भक्तिका आनन्द न उठाया तो वे दूसरोंको क्या बतला सकते हैं ?

बुत परिस्तीको खुदा परस्ति—अद्वैत ज्ञानके विषयमें, स्व संस्वेदकी शिक्षा विना जो कुछ कहा जाता है वह मिथ्या है । हिन्दू जिन तीन ईश्वरोंकी भक्ति करते आते हैं उन्हीं तीन खुदाओंकी भक्ति इबराहीमने भी की । अगणित सिद्ध साधु और महात्मा इन तीनों ईश्वरोंके तुल्य पद पर स्थित हैं । अनन्त उनसे ही बढ़कर हैं कितने उनसे घटकर हैं । यदि एक अद्वितीय परमात्माकी भक्तिकी सुधि नहीं हुई तो वेद और किताबोंके पढ़नेसे क्या लाभ ? उसकी सुधि हुये विना मनुष्यत्व कहां है ? जहां एक अद्वितीय परमात्मा की भक्ति है वहां वेद और किताब सब गूंगे हैं । नाद और वेद पांच अहंकारके घेरेमें हैं, पांचों अहंकार मायासे हैं मायाके सब कौतुकोंमें सने हुये हैं । यह सारा संसार मायाकी पूजा करता है, उसकी भक्तिको ही ईश्वरकी भक्ति मानता है । जो कुछ इस जीवने मान लिया है उसको वही सत्य जान पड़ता है, उसी पर विश्वास जमा हुआ है । इसके ईश्वरकी शक्ति सीमाबद्ध है, असीम नहीं है । यह खुदा नाशमान है, अविनाशी नहीं । क्योंकि, महाप्रलयके समय इस खुदाईका झण्डा उठ जावेगा । यदि मूसाका खुदा अद्वैत और एक ठहरा तो हम लोग सब मनुष्य

अपनी २ जगहमें, अद्वैत और एक हैं क्योंकि, एकके समान दूसरा कदापि नहीं। फिर खुदाकी भक्तिकी कोई आवश्यकता नहीं। क्योंकि, ईश्वरोंके सामर्थ्य और ऐश्वर्यमें भेद है, कोई अधिक है कोई कम है। मूसाके अनुयायी प्रायः बुत्-परस्ती कर करके खुदाके कोपमें पड़े, यदि वे एक अद्वितीयकी भक्ति जानते तो बुतपरस्ती क्यों करते? सुलेमान जैसा बुद्धिमान् तत्वज्ञ और खुदाका प्यारा जिसको कि, खुदाने तीन बार दर्शन और बहुतसे बर्दान दिये थे वह खुदासे विमुख होकर बुतपरस्तीमें फँस जावे? यह सम्भव नहीं कि, जो कोई एक परमात्माकी भक्ति जाने, वह फिर बुतपरस्तीमें फँसे। इसी कारण समस्त इबरानी धोखेमें पड़े हुए बुतपरस्तीको खुदापरस्ती समझ रहे हैं।

तीनों तुच्छ हैं—सुलेमानने जब अपने बाप दादेका राज्य पाया, खुदाने उनको दर्शन देकर कहा कि, ऐ सुलेमान! तुझको पैगम्बरी, राज्य और तत्व-ज्ञानमें तीनों पदार्थ प्रदान करता हूँ, तेरे समान न कोई हुआ न होगा। जिस दशामें कि, खुदाने सुलेमानको ये तीनों पदार्थ, प्रदान किये उस दशामें भी सुलेमानको इतना विचार नहीं हुआ कि, अपनेको अयोग्य कर्मसे बचावे। इससे प्रमाणित होता है कि, ये तीनों पदार्थ तुच्छ हैं। ईश्वरीय ज्ञान (आत्मज्ञान) के तुल्य कोई दूसरा पदार्थ नहीं है।

हजरत आदम सब पैगम्बरोंमें श्रेष्ठ तथा खुदाके प्यारे पुत्र हैं, ये खुदा उनके साथ वही भलाई करता था जो कि, पिता पुत्रके साथ करता है। खुदाने मना किया कि, ऐ आदम! तू इस वृक्षका फल न खाना, सावधान रहना, शैतान तेरा शत्रु है। वाह! फल खाना तो मना किया शैतानको शत्रु भी बतलाया पर इतना ज्ञान नहीं दिया, जिससे आदम शैतान तथा उसके कपटको समझ सकता। इससे यह सिद्ध होता है कि, उस खुदाको ज्ञान देनेकी सामर्थ्यही नहीं थी, अथवा आदमको छलसे भिहिश्तसे बाहर करना चाहता था। खुदाका यह कर्तव्य दो बातोंसे पृथक् नहीं, एक तो कपट, दूसरी ज्ञान देनेकी असमर्थता। जब खुदाहीकी यह दशा हो, तो अपने भक्तोंको मुक्ति किस प्रकार दे दे किस प्रकार अँधेरेसे निकल सके।

२ बुतपरस्ती मत करो—अब जानना चाहिये कि, काम कामनासे शरीर-धारीकी भक्ति करनेका नाम बुतपरस्ती है, वे जड़ हों अथवा चैतन्य जीवित अथवा मृतक एकही समान है। मूसाका खुदा कहता है कि, "बुतपरस्ती मत करो" इसका यह आशय हुआ कि, जो तुमारे दृष्टिमें मेरी प्रतिमा है, उसकी पूजा करो दूसरेकी न करो क्योंकि, मैं बुतों (प्रतिमाओं) में श्रेष्ठ बुत हूँ। सब

बुतोंपर मुझे बड़ाई है, मेरी आज्ञामें सब बुत हैं । अतः खुदाने खूरूजमें मूसासे कहा कि, मैं मिसरकी सब बुतोंको दण्ड दूंगा, यदि वे पत्थरकोही होतीं तो दण्ड किसको देता गन्दी वासनासे शरीरधारीकी पूजा करना मनुष्योंका काम नहीं बरन् जो लोग आत्मज्ञानसे खाली हैं वे बुत परिस्ती करते हैं । बुतपरस्तोंमें आठ प्रकारकी बुतपरिस्ती है, १—मिट्टीकी, २—कागदकी, ३—धातुकी, —४ पत्थरकी और ५—ध्यानकी छबि अर्थात् जैसा मन चाहे वैसी, ६—प्रत्यक्ष अर्थात् देहवान् मनुष्यकी पूजा, ७—प्रत्यक्षका ध्यानमें पूजना, ८—उसको अपने दिलके भीतर पूजना । ये आठ प्रकारकी बुतपरिस्ती है । प्रत्यक्ष बुतकी पूजा सब बनी इसराईल करते आये हैं । सुलेमानने जीवित और मृतक दोनोंकी पूजा की थी । उपासनाके लिये भगवानकी मूर्ति पूजा बुतपरिस्ती नहीं है ।

३ खुदाका नाम बेफायदा मत लो—जो खुदाको जानतेही नहीं वे उसका नाम क्योंकर ले सकते हैं ? खुदाका नाम तो खुदाको पहचाननेवाले जानते हैं । बिना ईश्वरी उपदेशके ज्ञानवालोंके ईश्वरका नाम लेना निरर्थक है । ईश्वरने जिसको नाम बतलाया, वह अवश्य उसका नाम जानता होगा क्योंकि ईश्वरसे प्रथम दूसराही कोई नहीं था सबसे पहले वही एक अद्वितीय था । जब-तक पूरे सत्यगुरुकी शिक्षा न मिले, तबतक उस अद्वैत शुद्ध चैतन्यका नाम क्यों कर जान सकता है ?

सत्य कबीर वचन

जो निगुरा सुमिरण करे, दिनमें सौ सौ बार ।
नगर नायका सत्य करे, जरे कौनकी लार ॥

जो कोई गुरुमुख हो उसीका नाम लेना ठीक है, जिसके गुरुही नहीं वह नाम क्या ले ? इस संसारमें जितने नाम प्रसिद्ध हैं सब मायाके हैं, कोई भी ईश्वर का नहीं । ईश्वरका नाम सच्चे सन्तोंके अन्तःकरणमें है, वो योग्य और बुद्धिमान् अधिकारीको बतलाते हैं सच्चे सन्तको सच्चे मनसे सेवा करने पर सन्त और साहबकी कृपा दृष्टि होती है नाम मिलता है । वर्तमानकालमें कोई गुरुको खोजताही नहीं । किसीसे कोई नाम पूछ लिया, अथवा सुन लिया, वही नाम लेकर दिन रात माला फेरा करता है । उसका नाम लेना निरर्थक है, कोई गुरु है न चेला, कोई आज्ञाकारी है न सेवक । मूसा तो कलके समान गतिमान किया गया था कि, बनी इसराईलको उपदेश करे । जो विधि निषेध उसके खुदाकी ओरसे मिला वही दूसरोंको समझाता रहा । मूसा स्वतन्त्र नहीं था, दूसरोंकी आज्ञासे काम करता था । अपने खुदाकी आज्ञाकारितामें मूसाको किसी प्रकार

की अटक नहीं थी, न किसी प्रकारका सन्देह था। फिर मूसा क्या पूछे कि, "खुदाका नाम बे फायदा लेना किसको कहते हैं? बे फायदा लेना क्या है?" संसारमें जितने नाम हैं उनमें कौनसा नाम निष्फल और कौनसा सफल है? अथवा सबही नाम निष्फल हैं? किसीमें कुछ लाभ भी है? किस स्थान पर निष्फल है कहां पर सफल है? जबतक इसका स्पष्टीकरण न हो, तबतक तो जीव एकदम अँधेरेमें पड़ा रहेगा। यह मैंने कहीं लिखा न देखा कि, यहां खुदाका नाम लेना, यहां न लेना। ईश्वरकेही नाम लेनेसे आदमी पापोंसे शुद्ध होता है। जब ईश्वरका नामही लेना निष्फल हुआ तो क्या नाम लेकर भजन करेगा? मुक्तिका कौनसा मार्ग रहा? न खुदाहीने कुछ स्पष्टीकरण किया न मूसानेही स्पष्ट बतलाया। फिर तो सबको भटक भटककर मरना पड़ा। अब वे किस राह चलें? क्या करें? किस प्रकार खुदाका नाम लें? जो निष्फल न हो। कौन पथदर्शक गुरु खोजें? जो सत्य-मार्ग बतलावे, जिससे व्यर्थ ईश्वरका नाम न ले? यह तो पूर्ण गुरुके बिना कदापि नहीं जाना जा सकता क्योंकि, पापोंको नष्ट करनेके लिये केवल नामहीका सहारा है, जब वही व्यर्थ होगया तो छुटकारेका सहाराही न रहा। इसी भूलमें सब मूसवी और ईसाई पड़े हैं क्योंकि, हिन्दू और मूसलमान जब कोई काम आरम्भ करते हैं तो अपने अपने ईश्वरका नाम ले लेते हैं। चाहे कोई अपने गुरुका अथवा ईश्वरका, जिसको वह श्रेष्ठ समझता है उसका नाम लेकरही कार्य आरम्भ करता है। किसी न किसी प्रकार उसका ध्यान परमात्माकी ओर होता है, जिससे अन्तःकरणकी शुद्धता होती है। मैंने किसी ईसाई महाशयको किसी कामके आरम्भमें अथवा किसी पुस्तकके आदिमें नाम लेते और लिखते न देखा, न पढ़ने पढ़ानेके समयही ईश्वरका नाम लेते हैं। इसी तृतीय आज्ञाके अनुसार यह सब काम होते हैं। जिस नामको जपकर भवसागर तर जाते हैं उसी नामका यह रङ्ग ढङ्ग हुआ, तो अब क्या सहारा रहा? असहाय हो गये। मैंने किसी ईसाईकी किताबके आदिमें परमात्माका नाम न देखा। यह विचार उन लोगोंका ऐसा दृढ़ हुआ है कि, जितने अंग्रेजी पढ़नेवाले हैं, प्रायः ईश्वरका नाम नहीं लेते। इस कर्तव्यसे लोगोंके अन्तः-करणपर अन्धकार छा गया। भजन भक्तिकी ओर लोग तनिक भी ध्यान नहीं देते,
करणपर अन्धकार छा गया। भजन भक्तिकी ओर लोग तनिक भी ध्यान नहीं देते,
सब लोभ और तृष्णाकी ओर झुके हुये हैं। मनुष्यकी मुक्तिका सबसे बड़ा कारण जाता रहा। उदारता, शौर्य्य, न्याय और शील ये मुक्तिके चार साधन हैं। अब वह उदारता कहां है जो पहिले लोग अपनी आवश्यक और प्यारी वस्तुको भी परमात्माके लिये दे देते थे. अब वह शौर्य्य (वीरता) कहां गई कि, जिससे भजन

और भक्तिमें, परोपकारमें, सत्यमार्गके ग्रहण करनेमें कट जाते, मर जाते थे, तो भी न हटते थे । हां आजकल इतनी बात तो अवश्य है कि, सांसारिक बुरे काम और आसुरी व्यवहारमें बड़ी शूरता प्रगट करते हैं। वह न्याय भी अब नहीं है, क्योंकि, सबसे पहले न्याय यही है कि, परमात्माके ऋणको अदा करें । माता, पिता अपने पराये सबके साथ अपना कर्तव्य पूरा करें । शील (सदाचरण) में भी दोष आगया । लोग हजारों रुपया कमाते हैं, अपना पेट भरते हैं पर दूसरा दुखिया देखता हो तो उसकी सहायता नहीं करते । ईश्वरके नामसे कुछ देनेमें महा कठिनता बीतती है। अतः उदारताके बदले लोभ, लालच और कृपणता देख पड़ती है । शौर्यताके बदले डरपोकपना निज स्वार्थपना और बेइमानी प्रगट हो रही है । न्यायके बदले अन्याय और हठधर्मी प्रचलित हो रही है । शीलके बदले कठोरता, परनिन्दा, चुगली, चपारी आदि होगये इस प्रकारसे ईश्वरका नाम छोड़तेही लोगों के अन्तःकरणमें आसुरी सम्पत्तिका वास हो गया । जो नामके अभ्यासी पुरुषोंके साथ ये चारों गुण अवश्य होंगे ।

४ सबतका दिन पाक रखो – प्रगट तो यही अर्थ है कि, छः दिन मनुष्य काम करे सातवें दिन कोई काम न करके केवल भजन करे । पर यथार्थमें वह सबतका दिन है। जिस दिन मनुष्यको संसारसे घृणा और वैराग्य आ जावे। सांसारिक । व्यवहार छोड़कर प्रेममें ऐसा मग्न होवे कि, अपने शरीरकी भी सुधि न रहे, निश्चलतासे भजन करे, भजनमें तनिक भी दोषता हो जाने पर सबतका दिन अशुद्ध हो जायगा ।

५ मातापिताकी प्रतिष्ठा करो – प्रगट तो लोग जो अर्थ समझते हैं वही है, पर उसका यथार्थ अर्थ यह समझना चाहिये कि, हमें वह काम करना चाहिये, जिससे माता पिताकी प्रतिठा और सुकृती बढे । ऐसा कर्म केवल एक सत्य परमात्माकी भक्ति है । जिसका पुत्र ज्ञानी भक्त होगा उसके माता पिता प्रतिष्ठाको प्राप्त करेंगे; जैसे धर्मदासजीके पूर्वज, श्वपच सुदर्शन आदिके माता पिता । अपनी संतानकी भजनसे परंधामको पहुंच गये । जिस माताने सन्त उत्पन्न न किया उसने कुछ भी नहीं किया । क्या सब मनुष्य सन्तान पुत्र उत्पन्न नहीं करते ? पर जिसने सन्त पुत्र उत्पन्न किया उसनेही पुत्र उत्पन्न किया बाकी सब कुपुत्र हैं । माता पिताको यथार्थ सुख और प्रतिष्ठा देनेवाले केवल सन्तही हैं । इस कारण सबको उचित है कि, अपने माता पिताको प्रतिष्ठा दें । अब यहांपर मैं थोड़ासा इसका विवरण लिखता हूं. जो कबीर साहबने मातृगर्भके विषयमें कहा है । जब बालक मातृगर्भमें रहता है, तब उस दुःख और कष्टमेंसे व्याकुल होकर बहुत विनय

और अधीनता करता है कि, ऐ परमात्मा ! हे दीनदयाल ! मुझे इस नरकसे उद्धार कर । मैं सच्चे अन्तःकरणसे तेरी भक्ति करूंगा । तेरी भक्तिके तुल्य कुछ न जानूंगा । देखो पाटनके राजा जगजीवनकी कथामें लिखा है कि, राजाने कबीर साहबसे पूछा कि, इस संसारमें आपके आनेका क्या कारण है ? उसके उत्तरमें कबीर साहबने कहा कि--

भूलेहु कोल गर्भका बाँधी । अब चकचौंधी आई आँधी ।।
सबहि जीव क़ौल करि आये । बाहर निकसत सबहि भुलाये ।।
सतगुरु जोव चितावन आये । यहि कारण संसार सिधाये ।।

परमात्मा उस समय उसके समक्ष खड़ा दृष्टि आता है । ऐसे दुःख और विपत्तिमें परमेश्वरके अतिरिक्त उसका कोई भी सहायक नहीं होता । वही जठराग्निके सब दुःखोंसे रक्षा करता है उसके जीवनको अभय करता है । उसके पोषणके लिये नाभिमें एक छिद्र बनाता है उसमें एक नली लगाता है, जिससे उसके पेटमें अन्न पहुँचकर उसकी रक्षा होती है । उसके हाथ, पांव बँधे होते हैं, गन्दगीमें लपटा रहता है, कुछ भी करने योग्य नहीं होता । माता जो कुछ खाती पीती है, उसीके एक भागसे बालकका भी पोषण होता है । जब जन्म होनेका दिन निकट आता है तो माताके स्तनोंमें दूध पहिले भर जाता है । जिस समय बच्चा गर्भसे बाहर होता है उस समय उसकी नाभिका द्वार बन्द हो जाता है, उसके स्थानमें स्तनोंमें छिद्र हो जाता है, जिससे बच्चा दूध पीता है । परमात्मा उसकी सेवा के लिये दो सेवक उपस्थित करता है, जो इस संसारमें माता पिताके नामसे प्रसिद्ध होते हैं दोनों बच्चेसे ऐसा प्रेम करते हैं कि, सदा उसके लिये अपने प्राण निछावर कर देनेके लिये तैयार रहते हैं । जब तक बच्चा युवा नहीं हो जाता, जबतक अपनेको सँभालने योग्य नहीं हो जाता, तबतक उसकी रक्षा किया करते हैं । जिस साहबने नाभीमें नल लगाकर स्तनोंमें दूध देकर, दो प्यारे सेवक द्वारा रक्षा की । फिर संसारके सब सुखोंको प्रदान किया सब कठिनाइयोंको सहज कर दिया ऐसे सच्चे पिताको भूलकर उससे विरोधताको खड़ा हुआ प्राणी माता पिताकी क्या प्रतिष्ठा कर सकेगा ? जब मूलही नहीं तो शाखा, पत्र, फल, फूल की तो बात कहां है ।

६ खून मत करो -- इस आज्ञासे यहूदी और ईसाई लोग केवल "मनुष्यकाही रक्त न बहाना" यह आशय समझते हैं, पर कबीर साहबने कहा है कि, पशु, मनुष्य सबका रक्त बराबर है. दोनोंकाही बदला देना होगा । पशु और मनुष्य सब जीवधारी परस्पर भाई हैं । विशेषकर यह विषय इसी पुस्तकमें पशुओंके ज्ञान

और बुद्धिकी बातोंमें लिख दिया है, जिसके पढ़ने सुननेसे मनुष्य और पशुकी ममता जान पड़ती है । मनुष्यको खुदाने साग, पात, फल, फूल, आदिके भक्षण की आज्ञा दी, पर नूह और मूसाको धोखा देकर पशुओंकी हत्या कराई मनुष्योंको पापमें फँसाया ।

७ व्यभिचार मत करो – गृहस्तको पराई स्त्री एवं साधुको [1]आठों प्रकारके मैथुनका निषेध है ।

८ चोरी मत करो – जो चोरी करता है उसे हाथ आने पर दंड दिया जाता है जो गुप्तरीतिसे मानसिक चोरी करता है, बुरे संकल्प उठाता है, मिथ्या मनो-राज किया करता है. वह ईश्वरका चोर है अन्तर और बाहर सब प्रकारके बुरे संकल्पों और कर्म्मोंको छोड़नेसे ही मनुष्यता प्राप्त हो सकती है । जिसका कि, अन्तर और बाहर एकसा हो वही मनुष्य है ।

९ अपने पड़ोसीको प्यार करो – प्रगट तो इसका अर्थ यही है कि, अपने घरके निकट रहनेवालोंको प्यार करो, पर यहां पर समझने की बात है यदि अपना पड़ोसी बदमाश, चोर और डाकू हो. अथवा किसी प्रकारका और भी कोई अधम कर्म्म करता हो तो हमारा प्यार उसके साथ किस प्रकार हो सकता है ? यदि हम उसको मित्र बनायेंगे तो हम भी उसके साथ पापी ठहरेंगे. क्योंकि, चोर और चोरका सहायक न्यायमें बराबर है । यहां अपने पड़ोसीका यह आशय है कि अपना अर्थात् अपनी आत्मा इन्द्रियोंसे परे मन है, मनसे परे बुद्धि, बुद्धिसे परे आत्मा, अतः आत्माके निकट बुद्धि है इससे बुद्धि अपनी निकटवर्ती पड़ोसी है इस कारण बुद्धिको प्यार करना, उसको उचित कार्यमें लगाना, धर्म, द्वेष, पक्षपात और अन्याय आदि (बुद्धिके शत्रुओं) से बचाना ऐसा प्यार मुक्तका चिह्न है, जो बुद्धिको प्यार करेगा वह सब काम पूरा कर सकेगा । बुद्धिको बिना प्यार करे कोई भी काम ठीक नहीं हो सकता ।

१० झूठी गवाही मत दो – प्रगट तो झूठी गवाही वही समझी जाती है जो जगत्में प्रसिद्ध है । पर उसे भी झूठी गवाही कहते हैं जो कि, बिना जाने सत्य अद्वैत परमात्माके विषयमें गप्पे मारकर लोगोंको जालमें फँसाते हैं ।

इन दश आज्ञाओंके आशयको जो कोई भली प्रकार विचारेगा, उसके अनुसार चलनेका प्रयत्न करेगा वह अज्ञानसागरसे पार हो जायगा ।

जबूर और नबियोंकी किताबोंका भी यही संक्षेप है । इसी मूसाके धर्म को ही उनके पीछेके सब नबी (हजरत ईसा तक) आज्ञा मानते आये हैं ।

---

१ श्रवण, स्मरण, कीर्तन, ध्यान, बात एकान्त, दृढ संकल्प, प्रयत्न, तनु प्राप्ति ।

इंजीलके मुख्य धर्म

१—आदिमें शब्द था, वह ईश्वरके साथ था, वह शब्द ईश्वर था। २—यही आदिमें ईश्वरके साथ था। ३—सब पदार्थ इसीसे प्रगट हुये, पहले कोई ऐसा पदार्थ नहीं था जो इसके विना हुआ हो। ४—जीवन उसमें था वह जीवन मनुष्यका प्रकाश था। ५—प्रकाश अन्धकारमें चमकता है अन्धकारने उसे नहीं पहचाना।

आदिमें शब्द था और शब्द ईश्वर था।

कबीर वचन।

नाम कहूँ तो नाम न ताका। नाम राया काल है जाका ॥
है अनाम अक्षरके माहीं। नि: अक्षरको जानत नाहीं ॥
शब्द कहो तो शब्दौ नाहीं। शब्द भया मायाके माहीं ॥
दो बिन हो न अधर अवाजा। किये कहा सो काज अकाजा ॥

(भवतारण)

अवघातजन्य – कोई भी शब्द दोके विना नहीं हो सकता, यह बात पहले भी लिख आया हूँ। जितने वाणी आदि शब्द हैं वे द्वैत बिना प्रगट नहीं होते, जहां दो हैं वहां माया है। जो शुद्ध निरवयव निराकार चैतन्य ब्रह्म है, वह सर्व प्रकारकी अशुद्धतासे, रहित है। जो भेदसे रहित है वही शुद्ध है। वहां पूर्वोक्त शब्द वाणी कुछ भी नहीं, जहां किसी प्रकारका भेद न हो वहांसे वैसे शब्द कदापि प्रगट नहीं होते। कहना सुनना मायामें है, ब्रह्ममें नहीं, संसारकी उत्पत्ति नाश करनेवाली माया है। माया कोही सब ब्रह्म करके पूजते हैं, वह शुद्ध ब्रह्म कैसे हो सकता है? मायाही प्रगट हो रही है सब उसीमें लग रहे हैं।

खुदाको न देखा—देखो योहन्नाकी किताबका —१ बाब १८ आयत, स्पष्ट प्रगट करता है कि, किसीने खुदाको कभी न देखा। अतः नबियोंका खुदाका दर्शन पाना झूठा ठहरा। जो रूप पैगम्बरोंने देखा वह खुदा न था। यह आयत स्पष्ट प्रगट कहती है कि, किसी पैगम्बरने खुदाको नहीं देखा। १८ वे आयतका जो शेष है उसके ऊपर विचार करो, वह यह है (इकलौता बेटा जो पिताकी गोदमें है उसने बतला दिया) इकलौते बेटा हजरत ईसा ठहरे, इकलौते बेटेने क्या बतला दिया? इकलौते बेटेने केवल इतनाही कहाकि, जिसने मुझको देखा उसने मेरे बापको देखा, मुझमें मेरे पितामें कुछ भी भेद नहीं है। इकलौते बेटेने इसकी स्पष्ट व्याख्या कहां की है कि, खुदा किस रङ्ग ढङ्गका है। समस्त इञ्जील देख लो। ईसाइयोंमें ईसाकी आज्ञानुसार जिसने उनको देखा होगा, वे कौन २ महाशय

हैं, उनमें खुदाके देखनेके बाद प्रथमकी अपेक्षा क्या अधिकता हो गई ? मैंने तो कहीं कुछ देखा न सुना ।

गुणोंका भेद – यदि जो गुण बेटेमें थे वे बापमें होंगे तो निःसन्देह सभोंने खुदाको देखलिया, यद जो गुण हजरत ईसामें थे वेही खुदामें ठहरेंगे तो खुदाभी मनुष्योंके समान दीन और अपराधी ठहरेगा, इस कारण गुण भेद भी मानना ही पड़ेगा ।

प्रकाश – १ बाबको ४ आयत जीवन उसमें था वह मनुष्यका प्रकाश था, वह प्रकाश अन्धकारमें चमकता था उसे अन्धकारने न पहचाना । विद्या और अविद्या, ज्ञान और अज्ञान, प्रकाश और अन्धकार सब मायासे बनाये गये हैं । वह प्रकाश जो मनुष्यके जीवनका प्रकाश है । पांचतत्व और तीन गुणका प्रागट्य है । वह अँधेरेमें चमकता है उसको तत्वदर्शी लोग देखते हैं साधूलोग गुफाओं में बैठते हैं उस प्रकाशको अँधेरेमें देखते हैं । वह अंधेरेमें स्पष्टरूपसे दीख पड़ता है । जो जो स्वरोदय साधते हैं जो उसको पूर्णतातक पहुँचाते हैं उन्हें सब हाल प्रगट हो जाता है । जो जगतके जीव अज्ञानके अन्धकारोंमें फँसे हैं वो उस प्रकाशको नहीं पहचान सकते, वही शब्द समस्त संसारमें प्रकाशित है ।

विभाग–वही शब्द तीन भागोंमें विभक्त हुआ, जिसको "तसलीम बोलते हैं" एक अद्वैत जो है वो अविभाज्य है । जिसका भाग्य होता है वह माया है एक अद्वैत कदापि विभाज्य नहीं । अद्वैत परमात्मा न कभी विभाज्य हुआ न चर्म दृष्टिसे देखा ही जाता है । जिसने देखा उसने अन्तर्दृष्टिसे देखा अन्तरके श्रवणोंसे सुना । जो कुछ आँखोंसे देखा जाता है यह माया है मिथ्या है भ्रम मात्र है । यदि ईसाइयोंसे पूछा जाय कि, वह कौनसा शब्द है ? जो खुदासे उत्पन्न हुआ, तो कोई कहते हैं कि, वह शब्द ईसा है–भलाजी ! ईसा तो मरियमके गर्भसे उत्पन्न हुये थे. खुदाकी ज़बानसे कहां ? यदि ईश्वरके मुखसे निकल पड़े थे तो उस समय उनका रूप क्या था, फिर क्या हुये ? जो शब्द खुदाके मुखसे पहले प्रगट हुआ था उस शब्दको ईसाइयोंमें कौन जानता है कौन मण्डली उसका उपदेश करती है ? ईश्वरके ज्ञानमें बुद्धि अनुमान किसीकी भी पहुँच नहीं । फिर वहां शब्दकी किस प्रकार पहुँच हो सकती है ? मुसल्मानोंका ईश्वरी ज्ञान मूसाके ईश्वरी ज्ञानके ऊपर हो चुका है; वही ईसाका भी है ।

जितनी पोल देख पड़ती है वह सब वायुसे भरी हुई है जब गतिमान होता है तब नानाप्रकारके शब्द होते हैं, जिसको कान सुनता है. क्योंकि, शिथिल वायुमें चञ्चल वायुके प्रवेश करनेसे स्वाभाविकही शब्द निकलता है इसी प्रकार अवघात

जन्य सब शब्द दोके मिलनेसे ही प्रगट होते हैं, एकसे कोई शब्द नहीं होता।

कुरानके मुख्यधर्म।

बिसमिल्लाहर्रिरहेमानीर्रहीम

(मीम) (लाम) (अलिफ)

कुराणका स्पष्ट विवरण ये तीन अक्षर हैं जो कोई इन तीन अक्षरोंका अर्थ भली प्रकार समझे बूझे वही मुसल्मान है इस (मीम) (लाम) (अलिफ) के बहुत गूढ़ अर्थ हैं। इन तीन अक्षरोंके अतिरिक्त और भी बहुत से अक्षर (मुक़त आत और मुफर्रदात) हैं, पर यथार्थमें ये तीनही हैं--इस कारण ये तीनहीं सबके प्रथम रखे गये हैं। दूसरी सूरे बकरकी यह पहली आयत है। जितने इमाम और कुरानके टीकाकार हुये, किसीने इन तीनों अक्षरोंकी व्याख्या न की, किसीने इसका अर्थ समझा। हां यदि कुछ समझा हो तो मुहम्मद साहबने समझा हो, जो कुछ समझा होगा वह किसीसे न कहा, न यह भेद किसी पर प्रगट किया। फुकराओ (महात्माओं) में से भी जिसने इसका आशय समझा किसी पर प्रगट न किया, क्योंकि, इन तीन अक्षरोंकी ओटमें ईश्वरी सब भेद भरे हुये हैं, जो कोई प्रगट करेगा दण्ड पावेगा। सब धर्म (मजहब) उसीका है, सब कुछ आपही आप है। ये तीन अक्षर सबके पहिले रखे गये हैं, समस्त कुरानका सार है। इन तीनों अक्षरोंके भेद आशयको जान लेनेसे, फिर हिन्दू, मुसलमान, ईसाई आदि किसी धर्मसे धर्मद्वेष अथवा पक्षपातका झगड़ा नहीं रहता। इन तीनों अक्षरोंकी पहचान कोई सच्चा मुसलमानही करेगा।

सबका एक -- कुरानमें लिखा है कि, जो आदम नूह, इबराहीम, इसहाक, याकूब और मूसाका खुदा है, वही मुहम्मदका भी है। फिर उनके ईश्वरी ज्ञानके विषयमें विशेष लिखना और प्रमाणोंका लाना, कुछ आवश्यक नहीं दीखता। हजरत आदमसे लेकर मुहम्मद मुस्तफा तक इसी खुदाके माननेवाले हैं. इसी खुदाकी पूजा करते हैं. सब पश्चिमके पैगम्बरोंका निशाना उसी तरफ है दूसरी तरफ नहीं है। क्या पश्चिम, क्या पूरब, क्या उत्तर, क्या दक्षिण, समस्त संसारके ऋषि, मुनि, सिद्ध, साधु, योगी, यती, तपी, संन्यासी आदि उसी ईश्वरकी उपासना करते आये हैं।

सबका सार -- मूल एक शब्द ॐ है, ॐ कारकी माता केवल एक बिन्दी है। उससे इस बिन्दीका प्रकाश है, जो अगम, अगोचर, अनाम, निःअक्षर आदि है। वही सबका एक पिता है, वही अद्वैत है जब उसकी पहचान हो तभी

मनुष्यता प्राप्त हो, भ्रम छूट जाये। स्वसंवेदके पढ़नेवालोंकी सङ्गति हो, तब सत्य असत्यका ज्ञान होकर उसका ज्ञान हो।

विद्वानोंके भेद – दो प्रकारके विद्वान् हैं. एक लौकिक, दूसरे पारलौकिक. दोनों पुस्तकें पढ़ पढ़करही पूर्णताको पहुँचते हैं। हजारों पुस्तकें छान डालते हैं पर यथार्थको नहीं जान पाते। यदि वे लोग यथार्थको समझते तो संसारमें कभी द्वेष नहीं फैलता।

धार्मिक विद्वानोंमें दो प्रकारके लोग हैं। पहले वे हैं जो अपने गुरु और आचार्यकी आज्ञापर चलते हैं, गुरु शास्त्र पर पूर्ण श्रद्धा रखते हैं। सच्चे अन्तः-करणसे गुरूकी सेवामें लगे रहकर सुकर्म करते हैं दूसरोंको भी कुमार्गसे बचाकर सुमार्गमें प्रवृत्त करते हैं।

दूसरे पण्डित या (उलमा) – दुष्ट स्वभावके हैं जो स्वयं सत्यपथसे भूले हैं दूसरोंको भी भटकाते हैं। अपने गुरु और आचार्यके विरुद्ध मार्ग बतलाकर मनुष्योंको बहका २ नरकका मार्ग दिखलाते हैं। अपनी दुष्टतासे कभी नहीं चूकते। अच्छे और सरल हृदयके मनुष्योंको भी भटकाकर अश्रद्धालू अधर्मी बना देते हैं। ऐसे शैतानोंसे ईश्वर रक्षा करे।

अर्थ करनेवाले – वेदधर्मके सहस्त्रों पण्डित इतने अधिक हुये हैं कि, वेदके अर्थको मनमाना करके यथार्थ आशयसे मनुष्यको विमुख रखकर कुमार्गमें डालते हैं। वैदिक कोषमें एक एक शब्दके बहुत अर्थ कहे हैं। इस कारण जिसके मनमें जैसा आता है वैसाही अर्थ करके अपने अनुयायियोंको समझाता है उसीपर दृढ़ करा देता है। इसी प्रकार कुरानके टीकाकारोंने भी किया और करते जाते हैं। अगर इन लोगोंसे पूछा जावे कि, आप जो इस प्रकारसे समझते समझाते हो, इसका क्या कारण है? आपको ऐसे अर्थ करनेके लिये आकाशवाणी हुई है अथवा ईश्वरने स्वयं आकर ऐसा अर्थ करनेके लिये कहा है, आपके अर्थकी कैसे शुद्धि मालूम हो? उसके उत्तरमें सब अपने २ पक्षको सिद्ध करनेके लिये हजारों प्रकारकी बातें बनाते हैं। युक्ति और प्रमाण लाते हैं, पर कोई भी सन्तोषकारक नहीं होता। सब कोई अपने ईश्वरको व्यापक बतलाते हैं, जिसके गुरु और आचार्य को कभी ईश्वरका ज्ञान न हुआ उनके वचनोंसे अज्ञानता टपकती है वे बहुत लम्बी चौड़ी बातें बनाते है, अपने वाग्जालमें डालकर सरल हृदयोंको फँसाते हैं। भला ईश्वर व्यापक है तो तत्व और तीनों गुण यह भी तो व्यापक हैं? हां जिसके गुरु और आचार्यमें ज्ञानकी शुद्धता होगी सत्यताको बरतेगा तो वह अपने अनुयायि-योंको कुछ मार्ग बतला सकेगा। यदि आचार्य गुरु और उपदेशक स्वयंही अज्ञानी होंगे तो वे दूसरोंके क्या उपदेश करेंगे?

कर्तव्य – मनुष्यको उचित है कि, मनुष्यत्व (मनुष्यधर्म) की ओर ध्यान दे । उसको भली प्रकार विचारकर आचरण करे जो जान बूझ कर भी मनुष्य धर्ममें प्रवृत्त नहीं होता उसपर शोक और धिक्कार सब धर्मोंके आचार्योंको देखले कि, पहले पुण्यका मार्ग बतलाकर पीछे पाप और निषिद्ध मार्गमें लगा देते हैं ।

बन्ध मोक्षकी विद्या – स्वसम्वेदके पढ़े विचारे बिना किसीको न कभी सुख हुआ है न होगा । जो अपरा विद्यासे अपना कल्याण चाहता है वह महामूर्ख है । परसम्वेद (अपराविद्या) में कदापि मुक्तिकी प्राप्त नहीं, यह केवल संसार की मर्यादाको स्थिर करनेके लिये है । जिसका मन जिधर चाहे – परसम्वेद (अपराविद्या) पढ़कर बन्धनमें रहे अथवा स्वसम्वेद (पराविद्या– पढ़कर मुक्त हो जाये । बन्धनके लिये अपरा विद्या और मोक्षके लिये परा विद्या है ।

ज्ञानी और अज्ञानी ।

इस संसारमें दो प्रकारके लोग हैं, दोनों एक समान जीवधारी हैं । एकको पण्डित ज्ञानी तथा दूसरेको मूर्ख अनपढ़ कहते हैं । एक मनुष्य, दूसरा पशु बोला जाता है । यद्यपि भिन्न २ रूप बने हैं, पर दोनोंका एकही ढङ्ग है. पशु और मनुष्य दोनोंमें पढ़े पण्डित और अनपढ़ मूर्ख दोनों एक समान हैं । इन दोनोंमें मनुष्य श्रेष्ठ है । यही देह भक्ति और मुक्तिके लिये बना है । यही ज्ञान और मुक्तिका द्वार है । इन दोनोंमें ज्ञानी और अज्ञानी एकसे हैं, दोनोंमें भले बुरे एकही रीतिके हैं । जो मनुष्यकी रीति धारण करे, जिसमें मनुष्यत्व पायाजाय वही योग्य है । जिसमें मनुष्यत्व न हो वह त्याज्य है ।

पण्डित और मूर्ख ।

प्रथम मैं संस्कृत भाषाके पढ़े हुये लोगोंका वर्णन करता हूँ । इसमें प्राचीन कालमें बड़े २ विद्वान् ज्ञानी होगये हैं । वे लोग अपनी विद्या बलसे तीनों कालका समाचार कह सकते थे । किसी भी देशका पुरुष उनकी समानता नहीं कर सकता था। जबसे हिन्दुस्थानसे हिन्दुओंका राज्य जाता रहा वे संस्कृतके विद्वान् भी लुप्त हो गये, लोगोंकी स्मरण शक्तिमेंभी निर्बलता आगई । वर्तमान कालके कतिपय पण्डितों विद्वानोंमें कुछ थोड़ा २ ज्ञानका प्रकाश रहता है पर वे बात कहां पायें ? जो कोई संस्कृत पढ़ता है, वह पहले संस्कृतकी वर्णमाला सीखता है पीछे व्याकरण वेद, शास्त्र, मन्त्र आदि सीखता है, पर प्रायः देखा जाता है कि, कोई वर्णमालाके अक्षरोंका अर्थ न सीखता है, न सिखलाता है । केवल शब्दोंके ही अर्थ

सिखते सीखलाते हैं । अक्षरोंके अर्थको कोई नहीं जानता, प्रायः कोषादिकोंमें अक्षरोंके अर्थ समझे विना व्याकरण आदि पढ़ जाते हैं, उनमें वह शुद्धता नहीं होती, जिससे कि, बुद्धि शुद्ध होकर परमात्माको जान जांय ।

मुक्तिका हेतु – सन्त गुरुकी दया होनेपर कर्म उपासना और योग आदिसे अन्तःकरणको शुद्ध बनाते हैं विधि और निषेध ये दो बाते हैं। वेदों और किताबोंमें इन्हींका वर्णन है । भक्तिके विना सब पठन पाठन व्यर्थ है, सारी आयु पढ़नेमें बितादें, तो भी भजनके बिना व्यर्थही है । धार्मिक विद्वानोंमें ब्रह्मा, विष्णु, शिव आदि ऋषियोंने वेदको पढ़ा, पर ॐकारके भेदको न जाना, इस कारण उनकी मुक्ति नहीं हुई । सभोंने ज्ञानको सात भूमिका और चार अवस्था ठहराई, परिश्रम करके उससे पार भी हुये तो भी सुख प्राप्त न हुआ । जिस दशामें कि, स्वयंवेद ईश्वरको वर्णन करनेमें अशक्त है. वह कहता है कि–हे प्रभु ! तू अलख करतार है, मेरी पहचानमें नहीं आता । फिर बिना गुरुके वेदोंपर भरोसा करके बैठे रहना व्यर्थ है । सातों भूमिका, चारों अवस्था केवल ब्रह्मरूप हैं, संसारमें सबसे श्रेष्ठपद मनुष्यका है. क्योंकि वह जाग्रत अवस्थाका अधिकारी है। यदि जाग्रत अवस्थाके कार्यको पूरी विधिसे करे तो अवश्य ही मुक्ति पा जायगा ।

किसीका भी भ्रम न गया – दूसरे पशु, जो स्वप्नावस्थामें हैं उनकी कुछ गणना नहीं । तीसरे स्थावर औषधी आदि हैं, जो कि सुषुप्ति अवस्थामें हैं । चौथे हीरा, लाल आदि खनिज पदार्थ हैं जो कि घन जड़ सुषुप्तिमें हैं उनकी बातही क्या है ? वे तो अत्यन्त अचेत अवस्थामें हैं । उपरोक्त तीन अवस्थाओंमें सब जीव बन्द हैं । चौथी तुरियावस्था है, उसमें ज्ञानी बन्द हैं । इसके चार प्रकार हैं–१ बर, २ ब्रह्मदत्त, ३ बलिष्ठ, ४ वरियान । चारों प्रकारके ज्ञानी इन चारों श्रेणीमें बन्द हुये अपने ज्ञानसे परमानन्दको प्राप्त कर रहे हैं । तीनों श्रेणियोंके ऊपर तुरियातीतका पद है । इस अवस्थामें ईश्वरके पदको प्राप्त होता है, पर बन्ध नहीं छूटता । अपने कर्मोंसे उसको भी छुटकारा नहीं, यह सब मायासे है । जो जो नाम और ध्यान उनको मिला वे सब मायाकेही ध्यान नाम हैं । उनको जो प्रकाश होता है सब मायाकी ओरसे होता है । इसी कारण उनको यथार्थ स्वरूपका ज्ञान नहीं होता । उनमें जो ज्ञान है वो सब नाशमान हैं । जो कर्म, ज्ञान और उपासनासे प्राप्त होता है वो कुछ नहीं है । वे लोग यथार्थसे बहुत वंचित रहे, उनमेंसे किसीका भी भ्रम न छूटा ।

उन सांसारिक विद्वानोंका दूसरी श्रेणीमें वर्णन करता हूँ, जो केवल वेद किताब पढ़ते हैं पर ज्ञानका प्रकाश नहीं रखते, अपनेको ईश्वर ज्ञानी समझते हैं ।

इन पढ़े हुओंमें वेदपाठियोंकी प्रथम श्रेणी है। वे लोग वैदिक कोष आदिकोंसे अपने मनमाने अर्थ ठहराते हैं। यद्यपि उनका निश्चय झूंठ भी हो तो भी उसीको सिद्ध करनेके लिये बहुत प्रयत्न करते हैं। वे अपनी विद्वता दिखलाकर सैंकड़ोंको अपना अनुयायी बना लेते हैं। उनमेंसे किसीको भी सत्य असत्यका ज्ञान नहीं होता।

वर्णमालापर विचार।

पहले ऐसे लोगोंको चाहिये कि, वर्णमालाके अक्षरोंका अर्थ समझ लें। संस्कृतकी वर्णमालामें सोलह स्वर हैं इनके बाद व्यञ्जन हैं। सोलहों स्वरोंमें बारहसे सब काम चल जाता है. शेष चार व्याकरणके काममें आते हैं। इन सोलहोंमें भी तीन वर्ण मुख्य अ, इ, उ हैं। इन्हीं तीनों स्वरोंसे सब स्वर बने हैं। वे ये हैं— अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ, लृ, ॡ, ए, ऐ, ओ औ, अं, अः येही संस्कृतके सोलह स्वर हैं। इनमें पहला (अ) है—यही सबसे पहिले है इसका अर्थ क्या है?

यह अकार पहले अकेला था, उसके साथ एक दूसरा अ मिल गया, तब ऊँचे स्वरसे उच्चारण किया गया—आ कहलाया। प्रथम जब यह अकेला था तब इसका उच्चारण हलका था। उसके साथ दूसरा मिला तो भारी शब्द हो गया, जब अकेला था तब एक था कि, अनन्त था? यदि एक कहा जायगा तो अद्वैतमें कुछ लिखना कहना आदि नहीं हो सकता। यदि अनन्त कहा जायगा तो उसके साथ साथ क्या था? पहले यह क्या था? दूसरा इसके साथ कौन मिला है। इसके साथ दूसरा मिलानेपर गतिकी शक्ति हुई नानारूप बनने लगे। पहले यह—अ और दूसरा कहांसे आकर उसके साथ मिला, किस लिये उनके साथ मिला? अकारके पीछे —इ जब अकेला था तब कुछ नहीं कर सकता था। उसके साथ दूसरा आन मिला तो स्वयं गतिमान हुआ, एकसे अनंतकी ओर बढ़ा उसका रूप ई के समान हुआ, ये दोनों मिलकर क्या हुये? इनके पीछे तीसरा प्रगट हुआ — उ—यह क्या हुआ किस वास्ते हुआ? अकेला था तब कुछ न कर सकता था, जब दूसरा उसके साथ सम्मिलित हुआ तब उसका स्वरूप —ऊ—हुआ यह क्या हुआ किस वास्ते हुआ। इस प्रकारसे यह तीनों अक्षर गुप्तसे प्रगट हुये दो दो मिलकर अनेक हो गये, ये सारे संसारमें फैल गये। इसी वर्णमालासे सारे संसारभर की वर्णमाला हुयी।

स्वर क्या है और व्यञ्जन क्या है? वेद पाठियोंको उचित है कि, प्रथम इन तीनों अक्षरोंके आशयको भली प्रकार समझ लें कि ये तीनों क्या चीज हैं।

स्वर क्या है और व्यञ्जन क्या है? वेद पाठियोंको उचित है कि, प्रथम

इन तीनों अक्षरोंके आशयको भली प्रकार समझ लें कि ये तीनों क्या चीज हैं कहांसे हुये ? जब तक इन तीनों अक्षरोंके आशयकी सुधि न हो, तब तक वेद पाठ निष्फल है । यदि शुकने रामराम कहना सीख लिया तो क्या हुआ ? जो कोई पण्डित इन तीन अक्षरोंके अर्थको नहीं जानता उसके हृदययें विद्या प्रकाश उत्पन्न नहीं कर सकती, जब कि अक्षरोंके ही अर्थको न समझे तो शब्दोंके आशयको कैसे समझेगा ? जो शब्दोंके यथार्थ अर्थको न समझे वह वेदके मन्त्रोंके अर्थको नहीं समझ सकता । जो कोई वेद मन्त्रोंके बहुत अर्थ करता हो यथार्थ आशयको न जानता हो, वह मेरे विचारमें वेदपाठी नहीं हो सकता । अपनेको वेदपाठी कहता फिरा इससे क्या हुआ ? वह झूठा है । तीनों लोक और चारों वेद एक शब्द ॐ से उत्पन्न हुये हैं । सो ॐ ॐ तीन अक्षर–अ, ॐ, म, के संयोग से बना है । जो कोई इस ॐ कारके यथार्थ भेदको सम ता हो वही आत्म ज्ञानका अधिकारी हो सकता है, कहे हुये तीनों अक्षर पांच स्वरूपोंमें प्रगट होते हैं इस प्रकारसे लिखे जाते हैं अथवा ओम् यह इनका यथार्थ स्वरूप है । इस स्वरूपसे पांच स्वरूप बनते हैं–अ–उ–म–ँ– फिर यह पांचों रूप–ओम् में संयुक्त हैं, जो इन पांचोंकी यथार्थताको जाने उनके अर्थको भलीप्रकार समझ बूझकर व्याख्यान करे, समझे समझावे, वह अवश्य वेदका अर्थ करनेवाला कहा जा सकता है । जो इन पांचोंके यथार्थ भेदसे बेसुध हैं, वे कदापि वेदपाठी नहीं किन्तु मनुष्योंको धोखा देते फिरते हैं । पहले एक–अ–था फिर दूसरा, तीसरा, चौथा और पांचवाँ रूप हुआ । एकसे अनेक हो गया । असल क्या है ? नकल क्या है ? एक क्या है अनेक क्या है ? एक किसे कहते हैं ? अनन्त किसे कहते हैं ? चार वेदका शिर और सार केवल ॐ कार है चार वेद उसकी देह है । इस कारण जो ॐ कारके भेदको जानेगा वही ईश्वरी भेदसे विज्ञ होगा । वेदके शिर और भेदको बिना जाने, वेद पाठसे कुछ भी प्राप्त न होगा । साधू लोग केवल एक प्राणकाही अभ्यास करते हैं उसीसे चारों वेदोंका ज्ञान प्राप्त कर लेते हैं । पण्डितलोग चारों वेद रटतेही रहते हैं पर उसके भेदसे अनभिज्ञही रह जाते हैं । जो कोई वृक्षकी जड़में पानी देता है उसके हाथोंमें समस्त वृक्ष, फूल, फल आदि आजाता है–जो कोई पत्तों २ पर फिरता है उसको वृक्ष नहीं प्राप्त होता । केवल शिरमेंही यथार्थ भेद है, शिर बिना देहके तुच्छ है । शिर सहित देह सत्यपुरुषकी है, शिर रहित देह कालपुरुषकी है । जो वेदके सशिर देहसे ज्ञान प्राप्त करेगा, उसे सर्वोद्धारक मिलेगा । जो बिना शिरके वेदको पढ़ेगा उसको अत्याचारी मिलेगा वेदको विना – शिर (ॐकार) के पढ़नेवाले कालके भक्ष

हैं, प्राचीन कालसे ॐकार पर बड़ा शास्त्रार्थ होता आता है पर अबतक निबटेरा नहीं हुआ ।

अंकोंपर विचार ।

पहले मैंने अक्षरोंपर लिखा, अब अंकोंपर लिखता हूँ । सब अंकोंके पहले (१) एक है । यह क्या है ? यह अद्वैत है ? सो द्वैतमें किस प्रकार आता है । इसका माथा गोल और उसके नीचे खड़ी लकीरका स्वरूप क्यों है ? इस खड़ी लकीरके माथेपर गोली किस वास्ते बनाई जाती है । यह एक है, यदि एक है तो दो क्यों बनाया जाता है । एकमें दो रूप होनेका क्या कारण है । यदि दो हैं तो दोनोंके अलग २ क्या नाम हैं ? ये दोनों सच्चे हैं कि, झूठ । यदि ये दोनों सत्य हैं तो जो कुछ कहा सुना जाता है सब सत्य है, यदि झूठ है तो जो सर्व पदार्थ देखनेमें आते हैं झूठ हैं, यदि यह सबझूठ और ठौर ठिकाने हैं तो वेदके उपदेशसे कैसे मुक्ति प्राप्त हो सकती है । यदि ऐसाही है तो मुक्तिके लिये किसी ऐसे पदर्थ की आवश्यकता है जो इनसे भिन्न मार्ग बतलावे, तथा अनिश्चित और नाशमान पदार्थसे जिसका कुछ भी सम्बन्ध न हो ।

मुसलमान विद्वान् ।

अब मैं अरबी, फारसी विद्वानोंके बारेमें विचार करता हूँ, क्योंकि, ये लोग भी संस्कृतके विद्वानोंके समान अपनेको योग्य समझते हैं, थोड़े पढ़े लिखे सिद्ध माहात्माओंको तुच्छ दृष्टिसे देखते हैं । ये लोग अपनेको बड़े अक्लिमन्द, ज्ञानी समझते हैं । इनमें भी दो प्रकारके लोग होते हैं, एक तो वे हैं जो धार्मिक कार्य्यसे सम्बन्ध रखते हैं । दूसरे सांसारिक व्यवहारसे सबन्ध रखा करते हैं । सो पहले मैं धर्म सम्बन्धी विद्वानोंका वर्णन करता हूँ ।

खुदा और उसका कलाम – जिन्होंने कुरान, हदीस और फ़िक्का आदिक पढ़कर योग्यता प्राप्त की है वे अपनेको पूरा समझते हैं, कुरान और हदीसके वचन को खूब बूझते हैं । कलाम कुद्दसी खुदाके वचन (बनवी) नबीका कलाम दोनोंकी टीका करते हैं । हर किसीको पैगम्बरकी शरीअतका उपदेश करते हैं । इन महाशयोंसे केवल इतना पूछना है कि, जो खुदा शहरगसे भी निकट है फिर उसका कलाम जिबराईलके द्वारा क्यों आता था क्योंकि, जो निकट हो उसका वचन दूरसे आवे वह आश्चर्यकी बात है । सत्य तो यह है कि, जहां बचन कहनेवाला हो, वहांही वचन भी होगा । क्या खुदा जुदा उसका कलाम जुदा रहता था ?

शिरके अर्थका अभाव – दूसरी यह बात पूछनी (कुरानमें ११४ सूरते हैं सब सूरतोंपर अक्षर (मुक़तआत या मुफर्रदात) लिखे होते हैं । जिस सूरतके

शिरपर जो अक्षर (मुक़तआत और मुफरंदात) वही उसका शिर और सार है जो कुरानके सिरपर है वही खुदाका स्थान है । उन्हीं सिरोंमें महत्व भेद है । अतः सब शिरके अक्षर (मुक़तआत और मुफरंदात) ईश्वरके भेदके घर हैं । मैंने देख लिया कि, सब इमाम और मुहम्मदी उल्मा (विद्वान्) टीकाकारोंने ऊपरके अक्षरोंको छोड़कर केवल नीचेकेही सूरतोंकी टीकाएँ की हैं ।

सभोंने कुरानका शिर छोड़ दिया पर धड़की टीका करनेमें बड़ा प्रयत्न उठाया है, इसके लिये अपना असीम बुद्धिबल खर्च किया है । जो शिरको छोड़ देहकोही सबसे बड़ा जानकर लगा रहै, तो सुख क्यों कर पा सकता है । शिरका भेद जानना ईश्वरी ज्ञान है, धड़का सांसारिक प्रपञ्च और बन्धन है । मुसलमानी सब महात्मा और विद्वान् लोग कुरानके शिरसे बेसुध हैं । कुरानकी देहको पढ़ने पढ़ाने सुनने सुनानेमें खूब लगे रहते हैं । हां, कुरानकी देहके द्वारा नेकी सीखते सिखलाते हैं, यह भी अच्छा है ।

अलिफ लाम और मीम—कुरानकी सूरे बकरके शिरपर पहले जो ये तीन अक्षर अलिफ, लाम, मीम हैं उसकी टीका करनेमें कुरानके सब टीकाकार असमर्थ हैं । सब उल्माओंने बहुत प्रयत्न किया पर एक पहली आयतका भी आशय न मिला । सबी मुसलमान इसका अर्थ न जाननेसे लड़ाई झगड़ा और रक्तपात करते आये । सहस्रों निरपराधोंका खून बहाया, लाखोंके प्राण हनन किये । हां, कोई कोई विरक्त (दुर्वेश) इन अक्षरोंके आशयसे विज्ञ होंगे, संसारी क्या जाने ? यह कुरान अथर्वण वेदसे है । अथर्वण वेदमें ज्ञानकी बहुत बातें हैं । इन अक्षरोंके अर्थको समझनेवालाही विद्वान् हो सकता है ।

प्रश्न—तीसरा—कलमेंके विषयमें मेरा यह पूछना है ।

لا اله الا الله محمد رسول الله

लाइला अर्थात् है खुदा, इलाह—नहीं खुदा, अरबी और फारसीमें बोलनेका यो महाबिरा है । "नहीं खुदा मगर खुदा" इससे यों समझना चाहिये कि—

नहीं खुदा है खुदा, नहीं खुदा है खुदा । यह तो इसके यथार्थ अर्थ हैं । जिस दशामें कलमामेंही भ्रम पड़ा, जो कहता है कि, नहीं और है खुदा । कुछ भी मुतलक खबर न रही तो मुहम्मद रसूल किसका ठहरा ? यह चैतन्यताकी दशा है कि, अचेतताकी । जैसे मुहम्मदका कलमा भ्रम है वैसेही मुक्ति भ्रम है । भ्रम और धोखेके अतिरिक्त दूसरा कुछ नहीं है ।

मुसलमानी सांसारिक पंडितोंसे प्रश्न ।

अब मैं मुसल्मानी सांसारिक पण्डितोंकी ओर फिरता हूं, जिन लोगोंने अरबी, पारसी, मुन्तिक आदिकी हजारों किताबें छान डालीं । विद्या पूर्णताको पहुंचाई । संसारमें तत्वज्ञानी (फिलसोफी) दोनों (बुद्धिमान) और हकीम प्रसिद्ध हुये । बारीक बीनोमें मशहूर हुशियार हैं ।

प्रथम प्रश्न—इन लोगोंसे केवल इतना पूछना है कि, हुरूफ तेहज्जी-(अरबी वर्णमाला) का प्रथम अक्षर अलिफ् है, सो यह अलिफ़ कहांसे आया क्या है ? हुरूफ इल्तल(स्वर) तीन हैं (अलिफ, वाव, ये, ये तीनों क्या हैं कहांसे आये ? क्या काम करते हैं कि किस, कामके लिये विशेषता रखते हैं । अलिफमें क्या इल्लत है, वावमें क्या इल्लत है तथा ये में क्या है ?।

द्वितीय प्रश्न—दूसरा यह पूछना कि, जितने अक्षर हैं सब जेर जबर और पेशके संयोगसे काम देते हैं । बिना इनके सब अक्षर बेकार हैं ? सो यह क्या हैं जेर किस लिये जेर है । जबर किस लिये जबर हैं । पेश किस वास्ते पेश है । पेश मुफ़रिद है कि, मुरक्कब । इस पेशमें दो रूप मालूम होते हैं, एक बैजा (अण्डा) और दूसरी मद्द है, मद्द क्या है ? दोनों किस लिये मिले हैं ? वे दोनों अलग हैं तब क्या हैं ? जब मिले हैं तब क्या हैं ? किस लिये मिले हैं ! किस लिये अलग हैं ? जब अलग २ हैं तब क्या गुण नाम रखते हैं ? इनके अतिरिक्त एक जज्म भी है वह क्या है ? वह क्या गुण रखता है ? उसका मूल क्या है ? उसका नकल क्या है ? यह क्या है कहांसे आये ? सब हुरूफकी ये रूह हैं, इनके बिना सब मुरदा है ।

तृतीय प्रश्न—तीसरे यह कि, जब अरबी और फारसी लिखते हैं, तब कागजके सिर पर एक रूप बनाते हैं फिर लिखना आरम्भ करते हैं, इस रूपका क्या अर्थ है ? इसका कुछ अर्थ है कि, निरर्थक है ? कोई २ कहते हैं कि, खुदाका नाम है, सो तो मैं मान लेता हूँ पर इतनाही कहना अलम न होगा । जबतक शीशः और नुकताके भिन्न २ स्पष्ट अर्थ प्रगट न किये जांयगे तब तक सब निरर्थक हैं ।

मेरे प्रश्नोंके समझने सोचनेसे अन्तःकरणमें प्रकाश और शुद्धता होगी। मैंने सब बातें खोल दी हैं पर गुरुमुख बिना समझना कठिन होगा जिनकी बुद्धि शुद्धि और धीर हैं वे समझेंगे वही सत्य पदके अधिकारी होंगे ।

अङ्गरेजी विद्वानोंसे प्रश्न ।

अंग्रेजी विद्वानोंकी तरफ फिरता हूँ । उनमेंसे धार्मिक विद्वानोंसे इतनाही

पूछना है कि, आदिमें कौनसा शब्द था । किस प्रकार संसारमें आया । यदि वह शब्द मसीह था तो मसीहके साथ गया, अगर नहीं गया तो कहां है ? किसके पास है ? इञ्ज्जीलमें कुछ खबर है कि, नहीं ?। तसलीससे केवल बाप बेटा और पवित्र आत्माही आशय है कि, और कुछ ? इन तीनोंका जब एकता होती है तो उनका नाम क्या होता है ? वह क्या काम करते हैं ? सब गुण तो शब्दमें है पर मुक्तिके लिये कौनसा गुण आवश्यक है ? क्या इतनाही आवश्यक है कि, हम मसीह पर विश्वास करें ? सलीब उठावें, सलीब उठाने और ईसा पर विश्वास लानेसे क्या गुण और आधिक्यता आ गई ? कुछ प्रगट चिह्न भी है ? क्या इञ्जीलपर सच्चा ईमान लानेसे सत्यही पहाड़ अपनी जगहसे टल जाता है ? क्या ऐसा कोई कहीं है ?

इस धर्मके हजारों विद्वान् हैं जिन्होंने सहस्रों पुस्तकें छान डाली हैं। अपनेको बुद्धिमान् और भजन करनेवालोंको तुच्छ समझते हैं । अँग्रेजी फारसी संस्कृत, अरबी, तुरकी, लेटिन फ्रांसीसी और इबरानी आदिक भाषामें योग्यता रखते हैं। जो बात मैंने संस्कृत पण्डितोंसे पूछी हैं वही बात इनसे भी पूछना चाहता हूँ । अँग्रेजी भाषाकी वर्णमालामें भी दो प्रकारके अक्षर होते हैं प्रथम (VOWEL) व्हाविल दूसरेका नाम (CONSONANT) कोन्सोनेन्ट, जो व्हावेलकी सहायता बिना नहीं बोला जा सकता। व्हाविल पांच हैं. (AEIOU) ये पांचों व्हाविल क्या अर्थ रखते हैं ? इन पांचोंके बिना सब अक्षर और उच्चारण तुच्छ हैं। ये पांचों व्हाविल क्या हैं ? प्रत्येक अक्षरका भिन्न २ क्या अर्थ है ? यदि इनका कुछ अर्थ है तो प्रगट करना उचित है क्योंकि इनका अर्थ समझनेसे मनुष्यके अन्तःकरणमें बड़ा प्रकाश होगा । मैंने इन अक्षरोंके अर्थ किसी किताब डिक्सनरीमें नहीं देखे । न बालकपनमें मुझे इतनी सुधि थी कि, अपने शिक्षकसे इसका अर्थ पूछता । मैं भी अपने दूसरे सहपाठियोंके समान बे अर्थकाही पढ़ता रहा । जब युवावस्था पहुँचा कुछ समझ हुई अपनी भूलके ऊपर दृष्टि पड़ी । अंग्रेजी भाषाके बड़े बड़े प्रसिद्ध विद्वान् इस समय वर्त्तमान हैं वे सब मेरी ही तरह भूले तो नहीं हैं ?इन अक्षरोंके अर्थ उन्होंने कहीं पढे हैं इन पांचों अक्षरोंकी कहीं विस्तृत व्याख्या लिखी हुई है ? ।

मनुष्यत्वका अधिकार—मैंने बहुत लोगोंसे पूछा वे अपनी अज्ञानता ही प्रगट करते रहे तब निराश हो रहा । ये ही पांचों अक्षर सबके शिर, सार अथवा रूह हैं । इनके बिना सब मृत हैं ये पांचों सबकी आत्मा ठहरे इनके बिना सब निर्जीव हैं, तो इनके भेदको जानना ही बुद्धिमानी है । इनके आशय को

समझे बिना पुस्तकोंको पढ़ते जाना बुद्धिमानी नहीं है। यथार्थ भेदको न जाना तो सहस्रों पुस्तकोंके पढ़नेसे क्या लाभ हुआ। यदि कोई कहेकि, इन अक्षरों के कुछ अर्थ और आशय नहीं हैं, यह बात स्वीकार न करूँगा क्योंकि, ये पांचों निरर्थक होंगे तो सम्पूर्ण विद्या विज्ञान हिकमत निरर्थक हो जायगी। जिस किसीने इन पांचों व्हाविलके अर्थ पढ़ लिये उनके यथार्थ भेदको जान लिया, उसने भविष्यमें विद्वान् होनेकी नेव डाली जिन लोगोंने इन पांचोंके आशयको समझेबिना बहुतसी पुस्तकें पढ़ ली, वे सब तुच्छ और निरर्थक हुआ। इन्हीं पांचों अक्षरके अर्थको समझ लेना ही विद्या की पूर्णता है कुछ पढ़े अथवा न पढ़े। सांसारिक व्यवहारके लिये भले ही और कुछ पढ़े, परमार्थके हेतु तो केवल इन्हीं पांच अक्षरोंके अर्थ जानना उचित है। यदि इन पांचों में से कोई एक अक्षर का अर्थ भी सीख समझ ले तो उसके अन्तःकरणकी शुद्धता होगी। पांचों अक्षर में पहला अक्षर–ए (A) कहलाता है। यदि कोई इस एक अक्षरका अर्थ समझ ले तो मनुष्यत्व प्राप्त करनेका अधिकारी हो जायगा।

उपदेश—–लोगोंने इसी लिये सहस्रों पुस्तकें और अनेक भाषाओंमें दक्षता प्राप्त की है ? कि, संसारमें उच्चपद और धन माल ? प्राप्त करें बड़े ओहदे और दर्जोंपर स्थिर हों। यदि ऐसा नहीं तो जिसको ईश्वरी ज्ञान प्राप्त करने और मनुष्य पद पर स्थित होने का अनुराग होगा वह अवश्य विवेकी, ज्ञानवानों और सच्चे सन्त साधुओंसे प्रेम करेगा उनके सत्सङ्गसे आत्मिक सुख प्राप्त करेगा। ईश्वरी ज्ञान प्राप्त किया हुआ पूरा महात्मा मिल जावे तो इसी एक अक्षर –A– में समस्त विद्या सिखला देगा। फिर किसी किताबके पढ़ने की इच्छा न रह जायगी।

अंग्रेजी वर्णमाला।

मैं थोड़ासा इस–A– का आशय लिखता हूँ – जब आदिमें कुछ न था. तो वह अनाम निराकार, अचञ्चल, बुद्धिसे परे, वाणीसे परे, अद्वैत था। उसने जब द्वैतकी ओर दृष्टि फेरी तो एक रूप प्रगट हुआ जिसका आकार –O– (अण्डाकार) था, इसको अँग्रेजी जबानमें– ओ बोलते हैं, इसीको साइफ़र भी कहते हैं, जिसका अर्थ है, खाली, सुन्न अथवा कुछ नहीं।

इस अँग्रेजी हुरूफ; ओ–का अर्थ कोई नहीं पढ़ता पढ़ता पर इस ओ– का उच्चारण यथार्थमें (Woe) ओ होता है और (Woe) का अर्थ चिन्ता, शोक और विपत्ति आदिक हैं।

फिर वही–ओ–जब दूसरे ढङ्गसे लिखा जाता है तब उसका रूप (Owe) के समान होता है जिसका अर्थ है–ऋणी (कर्जदार)।

अब जानना चाहिये कि, यह (०) दो शब्दोंमें दो स्वरूप धारण करता है, दोनोंका अर्थ भी दो प्रकारका होता है। एक दुःख और आपत्ति आदिक और दूसरा अर्थ–ऋणी। यह ऋणी जबतक अपने ऋणदायकका ऋण न चुका दे तबतक उसका छुटकारा नहीं हो सकता। आपत्ति और दुःखसे उसकी मुक्ति न होगी। जब यह (०) प्रगट हुआ तब उसमें नाना प्रकारकी वासना भरी हुई थी, यह वासनासे भरा हुआ प्रगट हुआ उसकी छाया पड़ी एक रूपके दो दृष्टि आने लगे। एक असल, दूसरी नकल है जब दो रूप प्रगट हुए तो उसका स्वरूप (००) हुआ। एक साइफर से दो हुये अथवा दो–ओ कहो, जब दोनों साइफर एक रूपके हुये तो उनसे कुछ काम न हुआ तब प्रकृतिने उनके स्वरूपमें विभिन्नता करदी। तब दो रूप बन गये अर्थात् दोनोंमें केवल इतना भेद हुआ कि, एकका आधा शिर टूट गया, तब उनका रूप ऐसा (a) हुआ, यानी जो दो-ओ (oo) था सो एक ए (a) हो गया, यह अंग्रेजी वर्णमालाका प्रथम अक्षर हुआ। यथार्थमें इन दो–ओ (oo)– को प्रकृतिने–ए– (A) बना दिया। यथार्थमें दोनों साइफर हैं। एक असल, दूसरा नकल, एक स्त्री, दूसरा पुरुष। जब एकसे दो हुये तो इनमें दूसरोंको उत्पत्ति करनेकी सामर्थ्य हुई। जब दोनों का रूप बदल गया तो वे दोनों परस्पर मिलकर क्रमशः (EIOU) को उत्पन्न किया (A) के साथ मिलनेसे पांच अंग्रेजी भाषाके व्हाविल कहलाते हैं। इन्हींसे आगेकी उत्पत्ति हुईं, फिर तो क्रमशः (BCDFGHJKL MNPQRSTV-WXYZ) यह अंग्रेजी भाषाके इक्कीस कोन्सोनैन्ट (CONSONANT) हुये। -इन अक्षरोंको युक्तिपूर्वक संयुक्त करनेसे शब्द बना। उससे वाक्य, वाक्यसे श्लोक, मन्त्र, पदार्थ पुस्तकें इत्यादि सब बनाई गईं यथार्थ, और कृत्रिम, असली और नजरी सब विद्याएं प्रगट हुईं। समस्त संसार, वाणी और पुस्तकोंसे भर गया। सब केवल ओ (O) का प्राकट्य है सब ओ (O) हैं। अगणित पुस्तकों और वाणीसे संसार भर गया। नकल में असल छिप रहा है। यथार्थ और कृत्रिम एकरूप होकर संसारमें पूर्ण हो रहे हैं। पहचानने में नहीं आते कि, कौन यथार्थ कौन कृत्रिम है? यथार्थ और कृत्रिम दोनों क्या हैं? क्योंकर है? किस प्रकार इनका स्पष्टीकरण हो? सब एक दूसरेके पीछे चले जाते हैं। सब मनुष्य बन्धनमें पड़े हैं यथार्थ मूलको न कोई जानता है न कोई जाननेका प्रयत्नही करता है। इन्हीं पांचोंसे सारा संसार चैतन्य होता है, कोई नहीं जानता कि, ये पांचों कौन हैं। इसी प्रकार सृष्टि और उसका कर्ता, जगत् और ईश्वर, स्वामी सेवक सब प्रगट हो बन्धनमें पड़े। इन सब जगत्

कर्ताओं में सब का राजा ओ (O) है। समस्त साहित्य और सब कला कौशल और विद्याकी जड़ यही है। यहांतक तो बुद्धि और विचारकी पहुंच है इससे आगेकी किसीको सुधि नहीं कि क्या है?

जब यह गुप्तसे प्रगट हुआ तो दुःख और शोकसे पूर्ण था। उसी दुःख शोकसे अनन्त दुःख उत्पन्न करके संसार को बन्धनमें डाल दिया समस्त संसार में आपही आप बना आपहीमें समस्त संसार है। यथार्थमें यह ओ (O) है सो (WOE) है, इस पर शोक है यह दुःख और आपत्तिका घर है। यह ओ (O) तो स्वयं बन्धनमें है जबतक अपने छुड़ानेवाले को न पहचाने तबतक कदापि न छूटेंगे। यह ओ (O-Ow-e) ऋणी है जबतक अपने ऋणको न चुकावे तबतक छुटकारा न होगा। जब यह अपना ऋण ऋणदाताको चुकादे तो भाग्यवान् हो। यह जाने कि, मेरे ऊपर क्या ऋण है? किसको देना है? इसको पहचाने तो मालूम करे कि, तन, मन धन ये तीनों आपत्तियां इसको लग रही हैं. इन तीनों आपत्तियोंमेंसे यह फँस गया है। ये तीनों आपत्तियां ही इसके नष्ट और भ्रष्ट होनेके कारण हैं। इन्हीं तीनों में बँधा हुआ इसका आवागमन हुआ करता है। जबतक इनसे पृथक न हो तबतक मुक्ति की आशा नहीं। उनमें यह जीव ऐसा फँसा है कि. नाना दुःख कष्ट सहनेपर भी उनको छोड़ने नहीं चाहता।

ऐ ओ! (o) तेरा कहना लिखना सब साइफर, झूठ और निर्मूल है। जब तक इन तीनों (तन, मन, धन, को सद्गुरुके समर्पण न करदे। तब तक तेरा कुछ न होगा क्योंकि, तू वासनासे पूर्ण है। तू इनके मूलको विचार कर कि ये क्या है? ये तीनों अत्यन्त अशुद्ध है तू शुद्ध है। तू वह है जो मनवाणी और शब्दके परे है। इनसे जो तूने प्रेम किया है इसी कारण अशुद्ध होगया है तुम्हें इन्हीं तीनोंने कैद रखा है। इन तीनोंकी व्याख्या तू सुन।

पहले मनको पहचान कि, यह कौन है। ? यही मन कालपुरुष निरञ्जन है, यह स्वयं बड़ा विषयी है। सब विषय वासनासे पूर्ण है। विषय वासना और काम, भोग इसीसे उत्पन्न हुये हैं इसी मनने तुझे पशुधर्मकी तृष्णा की ओर खींचकर बन्दी बनाया है। जब तक तू इस मनको मारके मृतक न करे गुरुकी आज्ञाकारितामें पूर्ण उतरे तब तक यह मन तुझ पर प्रबल रहेगा, तू उसके शासन के नीचे दबा रहेगा। जब यह मृतक हो जावेगा। तब तेरा बल उसके ऊपर चलेगा उसको विजय कर सब सुखको प्राप्त करेगा।

दूसरा तन—इस शरीर पर ध्यानकर कि, यह कैसे अशुद्ध मूत्रकी बूंदसे बना है। इस शरीरको मनने बनाया है। जैसा मन है वैसीही तृष्णा और वासनाओंसे भरा हुआ है, ये दोनोंही महान अपवित्र और नीच है।

तीसरा धन—यह सब विपत्ति और वासनाओंका घर है। अभिमान और अहङ्कारका पिता है चिन्ता व भोग विलासका आधार है।

इस प्रकार ये तीनों (तन, मन, धन) दुःख और अप्रतिष्ठाके कारण हैं। जबतक इन तीनोंका तू सद्गुरुके अर्पण न करे, तब तक मुक्तिका अधिकारी न होगा। इन्हींमें सारा संसार फँसकर मरता है। तू सद्गुरुका ऋणी है। ये जब तू तीनोंको सद्गुरु के अर्पण करदे तो तेरे ऊपर उसकी दया होगी तेरा बन्धन छूटेगा। सब चर अचरमें अपने सद्गुरुको देख। सबको स्वामी तथा अपनेको सेवक जान। सब को सद्गुरुकी मूर्ति जान कर सबकी सेवा कर। जिस-प्रकार होसके उनको सुख पहुँचा, किसीको दुःख न दे। किसीपर अत्याचार मत कर, किसीको हानि मत पहुँचा क्योंकि, सब मूर्ति साहबकी हैं। पण्डित लोग सहस्रों पुस्तकोंको पढ़ गये, पर अभी तक वर्णमाला भी नहीं पढ़े। वे लोग अपनेको बहुत बड़ा बुद्धिमान और सच्चा समझते हैं पर अभीतक वर्णमालाके ज्ञानमें कच्चे हैं।

साधुओंके हंसनेवाले।

वे लोग सच्चे सन्त साधु और भक्तोंकी हंसी करते हैं उनका ठट्ठा उड़ाते हैं कि, हम बड़े बुद्धिमान् हैं यह अल्पविद्यावाले अथवा बे पढ़े हैं वह उनका हँसना कैसा है? दर्वेशोंपर ठट्ठा उड़ाना कैसा है? जैसा बगला हंसको हँसे तथा तुच्छ समझे, बगलेका गुण बगलोंमें है हंसोंकी पहचान हंसोंको होती है।

विद्याभिमानी पण्डित लोग अपनी समस्त आयु धनके प्राप्त करने, प्रतिष्ठा पाने, विषय भोग को भोगनेमें बिताकर मरे जो सच्चे सन्त साधु राज्य छोड़ छोड़कर निवृत्ति धारण करके संसारसे अलग हुये, मनको दमनकर अपने वश कर लिया, सेवकसे स्वामी बन गये, उदारता, शौर्य्य, न्याय और शील इन चारों गुणोंको पूरा पाला। यदि विद्याके अभिमानी उनका ठट्ठा करें तो उनको इसकी क्या परवाह है? हंसका भक्ष्य तो मोती ही होगा, बगला मेंढक, घोंघी और मछलियों को ही खाया करेगा। हंस और बगले बराबर नहीं हो सकते हैं, उन दोनोंकी चाल अवश्य भिन्न रहेगी। बगला कितनोही युक्ति क्यों न करे? पर हंसकी चाल ग्रहण न कर सकेगा।

झूंठ सांचकी एकता—दो सौ वर्षके लगभग हुये होंगे कि, जबसे छापा हुवा सहस्रों प्रकारकी पुस्तकें छपने लगीं पुस्तकावलोकनकी उन्नति हुई। पण्डितों सन्तोंकी निन्दा करना आरंभ कर दिया। ठट्ठा उड़ाने लगे। लोगोंने साधु सेवा छोड़ दी। तब साधुओंनेभी अपने भजनको छोड़कर अपने पेटका धन्धा करना

आरम्भ कर दिया । योरपसे भजन, तपस्या, ज्ञान, विचार तो एकदम जाता रहा । पण्डितोंके तर्कने योरपसे भजनको उठा दिया । सब लोग पुस्तकोंके पढ़नेमें लग गये । यह नहीं सोचा कि, यह सब जितनी पुस्तकोंका पढ़ना लिखना है सब साइफर है । यह (0) जिसकी व्याख्या मैंने पहले लिखी है वही अण्डा है जो पहले प्रगट हुआ । यह अण्डा टूटा दो भाग होकर सृष्टिके उत्पत्तिका कारण हुआ यह अण्डा विषय वासनासे भरा हुआ था । इसके क्रोध व अग्निसे उत्पत्ति हुई थी इस कारण यह आगका स्वरूप है । अग्निदेवता कहकर चारोंवेद इसकी स्तुति करते हैं । यही अग्नि देतवा समस्त संसारमें पूजा जाता है । जब यह अण्डा उत्पन्न हुआ तो इसके भीतरसे बड़े बेगसे शारीरिक सुख की कामना प्रगट हुई वह अण्डमें बन्द न रह सकी, तब अण्ड फूटा, जिससे तीन गुण पांच तत्व चौदह इन्द्रियां आदि सब प्रपञ्च हुये । फिर शरीर बना, सांसारिक विषय स्वाद लेने लगा । आपही एक है, आपही अनेक है । भूलसे अपने आपको पहचान नहीं सकता, सृष्टिकर्त्ताने मनुष्यको अपने रूपमें बनाया सब रूपोंमें स्वयं प्रवेश किया, सत्य और झूठ दोनों एक होगये ।

माया ही रामबनी—वर्त्तमानके तत्वज्ञानी वेदपाठी शास्त्रियों तथा पश्चिमी धर्म पुस्तकोंके जानकारोंसे मेरा यही विनय है कि, तनिक अपनी बुद्धि और समझसे विचार करो कि, जो ईश्वर अगोचर था वह अण्डमें किस प्रकार बन्द होगया । जो गोचर हुआ वह नाशवान् है, वह नाशी नहीं हो सकता । वेद और किताबोंका वर्णन यहां तक रहा । शब्द अथवा वाणी उस अण्डसे हुई, अण्ड माया है—माया पति नहीं । जब कि, वह माया है तो खेल सब उसीके हैं सो उससे किसी की मुक्ति किस प्रकार हो सकती है ? जिसकी भक्ति खेल सब कार्य पानीके बुल-बुलेके समान क्षणिक हों, उसको सर्व शक्ति मान परमात्माका अनुमान करने और माननेसे क्या प्राप्त होगा इसी मायाने शुद्ध चैतन्य ब्रह्मको ढक दिया आपही हर्त्ता कर्त्ता बन बैठी इसीको संसार पूजने लगा इस प्रकार रामकी माया रामसे बड़ी बन कर पूजाने लगी ।

कबीर परिचयका—

साखी—कबीर— माया रामकी, भई रामते शेष ।
व्यापक सब कहे रामको, राम राम में दे ॥
कबीर— माया श्री रघुनाथकी, चढ़ी राम पर कूद ।
हुकुम रामको मेटिके, भई रामते खूद ॥

कबीर-- माया बैठी ब्रह्म हो, होई अद्वैत आवरण।
जग मिथ्या दरशायके, बैठी अन्तःकरण ।।

यही माया समस्त संसारकी स्वामिनी है। इसीकी संसारमें भक्ति हो रही है, केवल एक बिन्दीसे सारा संसार प्रगट हुआ है फिर नाश होकर उसी बिन्दीमें समा जावेगा फिर, वह बिन्दी उसीमें लय हो जावेगी जहांसे कि उत्पन्न हुई थी। प्रथम कुछ नहीं था, पीछे कुछ नहीं रहेगा। जो कुछ प्रगट होता है सब मायासे प्रगट होता है यही माया संसारकी रचयित्री है जगत्में, इसीकी भक्ति सेवा हो रही, है जो अद्वैत एक ब्रह्म हैं उसको कोई नहीं जानता जितने कहने सुननेवाले हैं सब झूठे हैं। इस अद्वैत ब्रह्मका समाचार कहनेवाला पारखगुरुके अतिरिक्त दूसरा कोई नहीं है।

पहिले पुरुष।

पूर्वकालमें करणीवाले बहुत थे, केवल विद्याभिमानी कम थे। जो विद्या पढ़के उसके अनुसार करते थे, सत्यमार्गपर चलते थे, उनका अन्तःकरण प्रकाशित होता था। वे लोग सब प्रकारके पुण्य करते थे। आधीनता और दीनताके साथ गुरुकी सेवामें तत्पर रहते थे। उनके मस्तिष्कमें अहङ्कार और घमण्डकी गन्धभी नहीं होती थी। सच्चे साधु और सत्यगुरुसे नम्र भाव वर्तते थे अथवा नम्रता सहित उनकी आज्ञा मानते थे। उनसे प्रेम करते थे। साधु सेवा गुरु सेवासे कभी नहीं चूकते थे। उदारताका हाथ उठा हुआ रखते थे। इस प्रकार सत्य गुरुकी कृपासे परम प्रकाशको प्राप्त कर लेते थे। अपनी तपस्या और भजनका फल पा जाते थे वे सन्तोंके मित्र रहते थे, सर्वदा सन्तोंकी स्तुति प्रशंसामें रहा करते थे सन्तोंकी कृपा और आशीर्वादसे उनका सब मनोरथ सफल होता था।

अबके लोग---कहनेवाले बहुत हैं पर करनेवाले कम हैं। आज कलके विद्वान् भक्ति और विचारसे शून्य, विषयी निन्दक और सन्तोंके द्वेषी हैं यही कारण है कि, उनका अन्तःकरण अन्धकारमय हो रहा है। जिससे महान् अभिमान अहङ्कार और तर्कोंमें भरे हुये मूर्ख सच्चे साधु और सन्तोंकी भी अवज्ञा कर डालते हैं, उनको तुच्छ समझते हैं। ऐसे लोगों को भक्ति और मुक्तिका मार्ग मिलना असम्भव है। ऐसे लोग सत्यसे विमुख हो निरर्थक वाद विवाद करते फिरते हैं। धर्मकी जड़ही कट गई, सच्चे सन्त और सत्यगुरुकी सङ्गति न रही, तो वहां ईश्वर कहां? मुक्तिका मार्ग कहां? प्रेम भक्तिका निवास कहां? गुरु और सन्तही मुक्तिके कारण हैं, येही सत्यधामको पहुँचाते हैं।

जब ये नहीं हैं तो फिर मोक्ष कहां। वर्तमान कालके विद्वान् पण्डित कृपणतासे भरे हुये हैं, अभिमान और अहङ्कारके पुतले बन रहे हैं वे उदारता और भक्ति से शून्य होकर संसारमें भटका खाते फिरते हैं।

सदाचारी—वर्तमानके विद्वानोंमें कोईही ऐसा होगा, जो प्रेम और भक्तिके पथपर चलता होगा, स्वयं सदाचारी होकर दूसरोंको सदाचारमें लगाता होगा। नहीं तो सबके सब ऐसे हैं जिनकी कि, सङ्गति करने और वचन सुननेसे अनपढ़ मूर्ख लोगभी शैतानके भाई बन गये हैं, दान, पुण्य सब छोड़ दिया है। ऐसे पठित मूर्खोंने प्रायः मनुष्योंको बहकाकर ऐसे कुमार्गमें लगा दिया है कि, बहुत यत्न करनेपर भी सुमार्गको ओर नहीं आते सच्चे साधुओंकी सेवा तो पृथ्वीसे उठ ही गई, ढ़ोंगी, ठग और मिथ्या स्वांगधारियोंकी पूजा होने लगी, उनके अन्तःकरणसे शुद्ध ज्ञानका बीज नष्ट होगया। इस कालके विद्वान् प्रायः विषयी और दूसरोंको भटकानेवाले एवं अपने कहे हुये को भी न करनेवाले वे अब फलके वृक्षके समान बने हुये हैं, जो काटकर भट्ठोमें जलानेकेही योग्य होता है। विद्वान् दुराचारीका घर आग गन्धकमें है, नरकी जीव है। सदाचारी विद्वान् भाग्यवान् है।

दुराचारी—विद्वान्रूप शैतानकी बातोंको सुनसुनकर सारे संसारमें कृपणता फैल गई है। भजन, तपस्या, भक्ति, भाव और सत्य, ज्ञान विचार कहीं शेष न रहा। परमात्मा सच्चे सन्तोंके विद्वेषियोंको कभी सुख न देगा। सन्त भक्तोंको सर्वदा अपनी कृपाकी छायामें रखेगा। जो लोग सन्तोंकी निन्दा और ठट्ठा करते हैं वे कैसेही भजन पूजा और तपस्या करें पर पापीही ठहरेंगे। सन्तोंकी निन्दा करना महान् पाप है। सन्तोंकी सहायतासे सच्चे साहब मिल सकते हैं। अजर अमर पद प्राप्त हो सकता है।

सच्चे ईश्वरकी ओरसे रक्तपातकी आज्ञा नहीं—वह बिन्दी अथवा अण्ड जो पहले प्रगट हुआ, कामनाओंसे भरकर फूटा। समस्त संसारमें फैल गया। वह बन्धन है उसीसे संसार आवागमनमें पड़ा हुआ है। यह उसी विषमय वृक्षका फल है सब फलोंमें वही विष प्रवेश कर रहा है। जिस बिन्दी अथवा अण्डसे समस्त वाणी और लेख निकले वह महा असत्य है। जिसने उस अण्डको पहचाना, उसके भेदको जाना, वो सांसारिक वासनाओंसे निवृत्त हुआ। सुले-मानसे बढ़कर कोई बुद्धिमान् नहीं हुआ, सब बुद्धिमानोंमें वह शिरोमणि है, उसकी दशा देखो—पुराना अहदनामा दूसरी तवारीखका सातवां बाब—जब वह खुदाके घर गया, जितने आदमी उसके साथ थे सभोंने मिलकर २२०००

बैल और १२०००० भेडें कुर्बान की, खुदावन्दतालाने उसको दर्शन देकर वर्दान दिया । कहा कि, तेरे समान कोई बुद्धिमान् न हुआ न है और न होगा, वो सुलेमान ऐसा भोग विलासमें मग्न हुआ कि, उसका विश्वास ईश्वरसे भी फिर गया, अत्याचारमें लग गया ।

सब मायामें हैं—विचार करनेकी बात है, जिसने सुलेमानको वर्दान दिया था वह कौन था ? जो वरदान मिला वो क्या था ? यथार्थमें वर्दान देनेवाला और वर्दान, दोनोंही मिथ्या भ्रम और माया थे, इतने रक्तपातकी आज्ञा सच्चे ईश्वरकी ओरसे नहीं हो सकती क्योंकि, वह दयालू और करुणासागर हैं जिसने इतना भी विचार नहीं किया वो बुद्धिमान् नहीं हो सकता । यदि उन्होंने सहस्रों भाषायें की अनन्त पुस्तकोंको पढ़ लिया हो, तो क्या हुआ, सब मैनाके बराबर हैं । कबीर साहिबने कहा है कि—

कागा पढ़ाया पींजरे, पढ़ गया चारों वेद ।
जब सुधि आई गूहकी, अन्त ढेहका ढेह ।।

श्रीकृष्णको सम्मतिसे सबसे अन्तिम अश्वमेध यज्ञ महाराजा युधिष्ठिरने किया उस समय युधिष्ठिरका भाई सहदेव अपने समयका अद्वितीय विद्वान् था, वह श्रीकृष्णके सब भावोंको जानता था पर भाइयोंको युद्धसे न बचा सका ।

सब मायाका प्राकट्य है, उसीने सारे जगत्के मनको मोहित कर लिया है । सात करोड़ ७०००००० महा मन्त्र हैं वे सब उसी मायाके नाम हैं जो कुछ मायाके द्वारा प्राप्त होता है वो सब माया है ।

देखो देवीभागवतका ९ वां स्कन्ध सब सात करोड़ ७०००००० महामन्त्र और विराटरूप मायाकाही है ।

देखो देवीभागवतका ७ वां स्कन्ध ३२—३३—३४ अध्याय ।

जब देवीने अपना विराट् रूप दिखलाया तो उसे देखतेही सब देवगण अचेत होकर गिर पड़े । फिर भगवतीने अपना वह रूप और प्रकाश गुप्त करलिया । अपना मानवी रूप प्रगट किया सब देवते प्रसन्न होकर गद्गद कण्ठसे स्तुति करने लगे । देवीने कहा कि, हे देवताओ ! सर्व चराचर युक्त संसार मेरीही माया शक्ति द्वारा प्रगट होता है, वह माया मुझमें ही कल्पित है, वह सब नाशवान है । मैं अविनाशी हूँ ।

फिर इसी देवीभागवतके ९ वें स्कन्धके १३ वें अध्यायमें देखो । ब्रह्मा, विष्णु शिव, अनन्त, धर्म, इन्द्र, निशाकर, दिवाकर, मनु, मुनि, सिद्ध और तपस्वीगण, गङ्गाके लुप्त होनेसे निर्जलताके कारण प्याससे शुष्क कण्ठ तालूवाले

हो गोलोक धाममें आये तो वहाँ क्या देखते हैं कि, राधा कृष्ण दोनोंही विराजमान हैं, कभी राधा नहीं केवल कृष्ण सिंहासनारूढ़ हैं, कभी २ राधा कृष्णरूप धारण करती हैं, कभी दोनों एक रूप हो जाते हैं, कभी दो रूप हो जाते हैं। यह देख महान् आश्चर्यमें आ ब्रह्मा आदि देवता, स्त्रीरूप वा पुरुष रूपी कुछ भी स्थिर न कर सके, अन्तमें ध्यान द्वारा अपने हृदय स्थित कृष्णको चिन्ता करके भक्ति, भावसे उनकी स्तुति करने लगे।

इसके लिखनेसे मेरा यह आशय है कि, ब्रह्म माया दोनों एक हैं, मायाके अतिरिक्त कुछ नहीं है, सब महामायाहीके रूप हैं।

एक प्रमाण देता हूँ कि, पृथिवीपर जितने रामकृष्णके उपासक हैं, सब पहले राधाका नाम लेते हैं पीछे कृष्णको कहते हैं; जैसे—राधाकृष्ण, सीताराम, लक्ष्मी नारायण, गौरीशंकर। प्रथम स्त्रीका नाम है फिर पुरुषका है। इस मायाने जगत्की रचनाके लिये दोनों रूप बनाये हैं वे दोनोंही मायारूप हैं। इसी भागवतके, तीसरे स्कन्धके, तीसरे अध्यायमें उत्पत्तिके विषयमें कहा है कि, हे ब्रह्मन्! जो कुछ दृष्टिगोचर होता है वह सब मेरा कौतुक है, मैं विणु हूँ विष्णु मेरा शरीर है।

इसी प्रकार सब जीवधारी मायाके प्रेममें फँसे हुये उत्पत्ति सागरमें डुबकी लगा रहे हैं। तन, मन, धन ये तीनों मायाकी ही जागीर हैं। जबतक इनसे निवृत्त न होगा तबतक अद्वैत ब्रह्मकी सुधि न पावेगा। मायाके प्रेमी मायामेंही बँधे रहेंगे। ऐसा बुद्धिमान् पण्डित विद्वान् कौन है जो इन बातोंपर विचार करे, शुद्ध अद्वैत ब्रह्मकी उपासना करे। पहली श्रेणी तो यही है कि, तन, मन, धनसे आसक्ति रहित होवे, जबतक इन तीनोंमें आसक्त रहेगा, तबतक अद्वैत परमात्माकी भक्तिके सन्मुख न होगा।

विद्वानों पण्डितोंमें जब तक अहङ्कार और अभिमान रहेगा तब तक उनको सत्यमार्ग मिलना असम्भव है। इसीका सार निम्न लिखित गजलमें रखा हुआ है।

ग़ज़ल—सफा सूर मेक़राज दरबजे है। गुनह डूबनेमें कुछ ऐब है॥
यह बातिन हैं तक़वा तिहारत तेही। केदाना नेहा आलिमुल गैब है॥
बजाहिर बशीरीनी बुरहान है यही राह दोजखकी लारेब है।
न फुकराकी खिदमत न सुहबत कहीं। किहरयकको शैतानका आसेब है॥
है इन्सान जो ख़ाकी सिफत। ऐ आजिज तुझे आजिजी जेब है।

स्त्री और पुरुष माया और ब्रह्म दोनों मायाहीके रूप हैं यथार्थमें स्त्रीका

रूप है जो छल कपटसे भरी हुई है, समस्त संसारमें इसका छल, कपट प्रसिद्ध है। यह माया अपने हावभाव और कपटसे पुरुषको अपना दास बना लेती है, उसकी समस्त आयुको भ्रष्ट कर देती है। मायाके तीन रूप हैं— १ जड़, २ चैतन्य, ३ बाणी। इन्हीं तीनों रूपोंसे संसारको अपने वश कर रही है, सहस्रों कला कौशलें तथा १४ विद्याएँ मायाकी लीला हैं। इनसे जब तक विरक्त न होगा तब तक अपने मूलको न पावेगा इसी कारण सन्तको उचित है कि, इन तीनोंको त्याग दे। जो इनके त्यागे बिना दूसरोंको उपदेश करता है वह चोर और डाकूके समान है। ऐसे बिना करनीके कथनीवाले झूठेका विश्वास भूलकर भी न करना चाहिये। मायाने अपने पांच रूह बनाकर जगत्‌की रचना की उसीके सब रूप हैं जितने बुतपरिस्त हैं वे सब मनुष्यत्वसे रहित हैं जितने लोग तन, मन, धनसे बुरे विषयसे प्रीति करते हैं शरीरहीके पोषण पालनमें लगे रहते हैं, वे सब मायाके दास हैं।

यथा— जगतमें है जबतक यह तनपरवरी। यमस्सर कहां हो उसे सर्वरी ॥
यही तीन माया जहां जाल हैं। सो पांचों शिकारी वहां काल है ॥

सर्व ब्रह्मज्ञानी सर्वदासे इसी बातकी साक्षी देते हैं कि, जबतक जीवन मृतक न होवे तबतक भवसागर न तरेगा।

चक्रोंसे स्वर व्यञ्जनोंका प्राकटच——जितने लोग वेद और किताबोंके पाठसेही मुक्ति प्राप्त करना समझते हैं, वे भूलमें हैं। इसी कारण मैं एक दृष्टान्त लिखता हूं। ये स्वर और व्यञ्जनके अक्षर कहांसे निकले ?

पहले कण्ठमें विशुद्ध चक्र है, वह सोलह पंखुरियोंका कमल है, वहाँसे सोलह स्वर निकलते हैं।

फिर अनाद चक्र हृदयमें है वहांसे बारह अक्षर निकले। वे बारह अक्षर क–ख–ग–घ–ङ–च–छ–ज–झ–ञ–ट–ठ ये हैं, ये वर्ण हृदय स्थित कमलके बारहों दल हैं। इसके नीचे नाभिस्थानमें स्थित कमलके दश दल हैं। उसको मणिपूरक चक्र कहते हैं, उनपर क्रमसे–ड–ढ–ण–त–थ–द–ध–न–प–फ वर्ण हैं। इसके नीचे लिङ्ग मूल कमलके छः दल हैं, उसको स्वाधिष्ठान चक्र कहते हैं उसके पंखुरियोंपर छः अक्षर हैं—— ब–भ–म–य–र–ल–गुदामूलमें चार पत्तोंका कमल है, उसे आधार चक्र कहते हैं उसके पंखुरियोंपर व–श–ष–स– चार वर्ण हैं। येही संस्कृत वर्णमालाके अक्षर हैं।

वर्णोंकी मा——इन्हीं स्वर और व्यञ्जनोंसे सब माकूलात मनकूलात यथार्थ रोचक और भयानक वाणियां लिखी गई हैं, सभी अक्षरोंके अर्थ और

आशय अलग अलग हैं, इनका गुण और प्रभाव भिन्न भिन्न है, सब मन्त्र इन्हीं अक्षरोंसे हैं। इन्हीं अक्षरों और मन्त्रों द्वारा सब दुःख सुख होते हैं। इन सब अक्षरोंकी माता एक अकार है। अ–इ–उ–स–व–म–ह–इन्हीं सात अक्षरोंसे लौकिक पारलौकिक सब व्यवहार ठहराये गये हैं। उत्पत्ति, स्थिति, नाश, कर्म, उपासना, योग, ज्ञान हरएक अक्षरके अर्थ प्रभाव और फल आदिक सब अलग अलग हैं। लोग प्रायः वेद और किताबोंको पढ़ते हैं पर अक्षरोंके अर्थ और आशयसे अचेत हैं। जिनको अक्षरोंका अर्थ और आशय न मालूम हो वे वेदोंको क्या जानें? वह अचेत वेद भाष्य क्या करेगा? दूसरोंको क्या समझावेगा। वह तो स्वयं अन्धा है दूसरोंको अन्धा करता है। जो अपने अन्धे गुरुसे भी थोड़ी बुद्धि रखते हैं, वे अन्धे कहते हैं कि, हमारे स्वामीजी वेदका अर्थ करते हैं, ऐसा दूसरा कौन कर सकता है। इस अन्धेके उपदेशको मान मान कर गुरु और चेले सब अन्धे कुएमें पड़े हैं। जब उनको भलीप्रकार सुधि हो और अपनी बुद्धि और समझके साथ विचार करें पक्षपातको छोड़ दें तो उनको सत्य असत्यका विवेक हो भ्रमसे छूटें। यह समस्त वेद और किताब जब मायासे ठहरीं तो उनके द्वारा मायाके पार कौन जा सकता है, कौन गया? यह सब विद्वानोंको भली प्रकार जानना पहचानना चाहिये कि, बेद किताब कहांसे हुयीं? सारी वाणी और वेद किताबकी माता यही है।

ग़जल—

उलमाको किये महो जो यह हूर परी है। सूरते सदहा उसने ज़मीपर जो धरी है॥
कोई न सके सऊद कर कस्र ऊपरके। हर ख्वाँदाके पाय ब ज़न्जीर भरी है॥
कोई हासिल कमाले अँग्रेजी किया है। कोई तुरकी व ताजी अरबी और दरी है॥
सदहा हैं उलूम और फनून उनको फँसाये। लारैब गिरफतारीको उनके यह खड़ीहै॥
इसही में उलझ कर मरे उलमाय ज़माना। आजिज किये दरक़ैद खुश्की और तरी है॥

सबसेपहिलेकी वर्णमाला—पाठकगणको प्रगट हो कि, जितनी वर्णमाला हैं सबसे पहले संस्कृतकी वर्णमाला है। संस्कृतही सबका मूल है, शेष सब वर्णमाला उसीकी नक़ल हैं। संस्कृतकी वर्णमालाकी प्रणालीसे प्रगट है कि, किसी दूसरी भाषाकी वर्णमालाका ठीक प्रबन्ध नहीं है। महामाया कण्ठ स्थानमें रहती है, सब बोल और वाणीको ठीक करती है, सारे संसारकी पहुँच यहाँही तक है।

नलकीके तोतेका दृष्टान्त—विद्याभिमानी कहते और सुनते तो हैं पर उनकी समझ तोतेके समान हैं, उसीपर एक दृष्टान्त है कि:— एक साधुने

दया करके पांच सात तोतोंको उनकी रक्षाके लिये उनका पालन किया । उनको यह सिखलाया कि, तुम शिकारीको पहचान लिया करो । जो जालके ऊपर दाना बिखेरता है उसके नीचे जालको देख लेना । जो नलकी लगाता है, उसके नीचे पानी रख देता है, उसके ऊपर तुम न बैठना, सावधान रहना । यदि संयोगत नलकीके ऊपर बैठ भी जाओ तो जब नीचे लटक जाओ तब अपना पञ्जा नलकीसे छोड़ देना । वह नलकी तुमको नहीं पकड़ सकती । वह पानी जो तुम्हारे नीचे देख पड़ता है वह तुमको डुबा नहीं सकेगा, उनको देखकर कुछ भय न करना, नलकीको छोड़कर उड़ जाना, तब तुम शिकारीके हाथसे बच जाओगे । यह सब बातें सिखलाकर साधूने उन तोतोंको छोड़ दिया । वे वृक्षोंपर बैठ गये, जो कुछ साधूने सिखलाया था वही पुकार २ बोलने लगे । उनका शब्द सुनकर जङ्गली तोते सचेत थे सावधान होकर चिड़ी मारके जालसे बच गये वे न नलकी पर बैठे न जालहीमें फँसे, सावधान होकर सबके सब बच गये । जो तोते वे समझ और निर्बुद्धि थे, उन्होंने केवल पढ़ लिया था पर उनमें बुद्धिकी कुछ गन्ध नहीं थी नलकीमें[१] फँसे शिकारीने पकड़ लिया ।

समन्वय—इसी प्रकार सभी विद्याभिमानी तोतोंके समान कालपुरुषके फन्देमें फँसे वासनामें बन्द हुये । उनके बचनोंको सुनकर अनपढ़ लोग बच गये पर वे न बचे । ऐसे विद्याभिमानी सैकड़ों उपाय करें सन्तोंकी सहायता और कृपाके बिना कभी भी न छूटेंगे । वह अधिकसे अधिकमहामायाके स्थानतक पहुँच सकते हैं, आगे उनको कदापि मालूम न होगा । वे क्या जाने कि, ईश्वर कौन है ? उनको परमात्माने यह विवेकही नहीं प्रदान किया, उनको कुछ भी सुधि नहीं कि, एक क्या है और अनन्त क्या है ? ईश्वरकी भक्ति क्या है ? जगत्की भक्ति क्या है ? किस प्रकार होती है ?

इसी महामायाके सब नाम रूप हैं, सब मिथ्या और भ्रममात्र हैं, विद्याभिमानी केवल पुस्तकोंही द्वारा शुद्ध चैतन्य ब्रह्मको जानना चाहते हैं, यह बात नितान्त असम्भव है ।

विद्याभिमानी जनोंको पता नहीं—मायाका नाम जड़ है जब तक इन लोगोंने जड़को अपना गुरू मान रखा है तब तक उनकी बुद्धि भी जड़ रहेगी वे कभी ईश्वरीय ज्ञानके पात्र न होंगे । जब उनको सन्त और गुरु मिलेंगे अधीनताके साथ उनकी शिक्षा स्वीकार करेंगे, तब उन्हें मनुष्यता आवेगी । आत्मज्ञान तथा ईश्वरीय ज्ञानके अधिकारी होंगे । सब विद्याभिमानी अन्धोंके समान टटोलते फिरते हैं, कुछ पता नहीं पाते कि, सच्ची बात क्या है ?

---

१ इसीके लिये कबीर साहिब और सूरदासजीने कहा कि, "नलिनीको सुवटा कह कोने पकड्यो"

साधुसे वाक्फल ।

अमृतके श्रोतपर सन्त लोग पहरा चौकी देते हैं जो सन्त गुरुकी सेवा करेगा वही उस श्रोतसे सफल काम होगा दूसरा न होगा। समस्त ईश्वरीय मायिक ज्ञान इसी वर्णमालामें समा रहे हैं। गुरु मिलें तो सचेत कर दें, नहीं तो अचेत होकर भूल अज्ञानमेंही मरेंगे जो लोग साधुसेवा न करेंगे वे मायासे न छूटेंगे, साधुओंकी सेवासे बन्धन छूटेगा, सन्तोंकी सेवा मायाके सेवक क्या जाने ? ।

शब्द—कबीर साहबका

मायाके गुलाम गेदी क्या जानेंगे बन्दगी। साधुनसे धूम धाम चोरनसे करे काम ।।
ढोंगिन संग धूपधापगरीबनसे रिन्दगी ।।
कपटकी माला पहने पाखण्डकी तिलक दिये ।

पापनकी पोथी वांचे डारवे को फन्दगी ।।दाया नहीं धरम नहीं कैसे पावे चन्दगी ।
कहै कबीर धृग धृग तेरी जन्दिगी ।।

सत्सङ्ग हुआ, सन्तकी कृपा हुई नामका पता मिला, तो मोलवी रूम, शाह बूअली कलन्दर आदिकके समान किताबोंको दरयामें डालकर नाममें निमग्न होगये, पुस्तकावलोकनको तुच्छ समझा, मायामें अमूल्य आयुको नष्ट करना अच्छा न समझा। संस्कृतके स्वरोंको विचार कर देखो, वे ऊपरसे नीचेको आते हैं कण्ठसे गुदा स्थान तक समाप्त होते हैं। स्वरोंसे ऊपर कोई नहीं जाता, सब व्यंजन अक्षर नीचे हीको है इस कारण नीचेकी दशामें रखते हैं।

प्राचीन कालमें और आजके महाराजोंके मन्त्री—राजा महाराजाओंकी यह रीती थी कि, वे सर्वदा ऋषि, मुनि और तत्ववेत्ताओं विद्वानोंको अपना प्रधान मन्त्री बनाते थे। सर्वदा यही सिखलाते थे कि, शुभकर्म करो, धर्म और दयाको न भूलो, सन्तोंकी सेवा करो। पर वर्त्तमान कालके राजाओं महाराजाओंकी यह रीती होगई है कि, तत्ववेत्ता हो अथवा न हो, केवल पढ़ा हुआ और काम करनेवाला हो, उसको अपना प्रधान मन्त्री बनाते हैं। वे शैतान सन्तोंकी निन्दा करते हैं उनको तुच्छ समझते हैं। सन्तोंसे द्वेष करनेसे उनका अन्तःकरण मलीन हो जाता है, स्वयं कुमार्गी बन जाते हैं दूसरोंको भी कुमार्गमें भटकाते हैं। इन लोगोंने तोतेके समान विद्या तो पढली, सांसारिक व्यवहारमें चतुर हो गये पर धर्मकी बातोंकी उन्हें सुध न रही।

मूलके लजाने ठनठनानाही है—कबीर साहबकी साखी ।

चारि अठारह नौ पढ़ि, छौपढ़ि खोये मूल ।
कबीर मूल जाने बिना, ज्यों पंछी चण्डूल ।

चारों वेद अठारह पुराण नौ व्याकरण छः शास्त्र आदि तूने पढ़े पर अपने मूलके न जाननेसे इसे खो दिया । अब तू चण्डूल पक्षीके समान टेंटें चच करता फिरता है । इतना पढ़कर भी अपने मूलको न जाना तो तेरा सब कहना सुनना झाँझके समान झन् झनाने एवं पीतलके समान ठन् ठनानेका है ।

गजल— झाँझके तौर झंझनाते हैं । मिस्ल पीतलके ठन् ठनाते हैं ।
नुक्तःबारीकसे खबर न रही । जैसे चण्डूल चह चहाते हैं ।।
बात इनकी है बा नमक और नाज़ । जालमें मुर्ग़ फँसाते हैं ।
बेखबर दाममें फँसे मुर्ग़ा । मुफ्त जान अपनी सब गँवाते हैं ।।
ऐसे आलिमसे दे पनाह अल्लाः । आज़िज आलममें ख्वारीलाते हैं ।

हजरत ईशाको साधुका आशीर्वाद – जो रीति भारतवर्षमें कहीं कहीं किञ्चित् मात्र रह गई है । पूर्वकालमें योरपमें भी यही रीति प्रचलित थी कि, सांसारिक लोग (गृहस्थ) साधुओंकी सेवा करते थे, साधु वैराग्य विवेक संयुक्त भजन किया करते थे । उस समय संसारियोंको साधुओंपर किसी प्रकारका तर्क नहीं था । साधुओंकी सेवा बे अटक करते थे साधुलोग भली प्रकारसे विचारमें लगे रहते थे । जिससे उनका अन्तःकरण प्रकाशित होता था तब सत्य ज्ञान मिलता था । जिससे संसारियोंको उपदेश करके उनका कल्याण करते थे संसारकी मर्यादाको स्थित रखनेके लिये उत्तम २ नियम बनाते थे उस समय तप दान दोनों उचित था, दान और भजनसे दोनोंके अन्तःकरण शुद्ध होते थे, अतः जिस समय हजरत ईसा उत्पन्न हुए उस समय एक फकीरने उन्हें गोदमें लेकर कहा कि, यह लड़का बड़ा प्रतिष्ठित होगा ।

मुहम्मद साहिबको राहिबका आशिर्वाद–ऐसेही बालकपनमें मुहम्मद साहब चचाके साथ बसरा शहर गये । वहाँ राहिब नाम एक ईसाई साधू मिला, वो बड़ी प्रतिष्ठासे मुहम्मद साबसे मिला । उस समय मुहम्मद साहब लगभग बारह वर्षके थे । साधुने मुहम्मद साहबके मुखकी ओर देख करके कहा कि, यह अन्तिम पैगम्बर होगा, उसीने उनके पीठके ऊपर पैगम्बरी मोहर बतलाई सब भविष्य कहा, जिसके अनुसारही सब कुछ हुआ । मुहम्मदी साहिबका हाल

देखे तवारीखमें इस समय भी सहस्त्रों प्रकाशित हृदय, अन्तरयामी, सन्त महात्मा हैं, पर समयके प्रभावको देखकर अपनेको गुप्त रखते हैं, वे प्रगट करना नहीं चाहते।

योरोपमें साधुओंका दान—दुनियादार और विरक्त दोनों अपने अपने धरम पर स्थित थे। जबसे छापाखाना शुरू हुआ तबसे पुस्तकें बहुत सस्ती होगई स्थान स्थानपर पाठशालें हो गई, लोग पढ़ पढ़कर विद्याभिमानी होने लगे। साधुओंकी निन्दा करना आरम्भ कर दिया, प्राकृतिक जन सन्तोंकी सेवा छोड़ बैठे साधू लोगोंने भजन छोड़कर उद्यम करना आरम्भ कर दिया। योरोपमें हरमिट, फरायर। मङ्क और कोल नामके साधू लोग रहते थे। गृहस्थोंकी यह रीति थी कि, उनसे कोई अपराध हो जाता था तो उसके प्रायश्चितके लिये कुछ रुपया लेकर साधुओंके पास जाते थे। कहते थे कि, हमसे यह अपराध हुआ है, आप यह द्रव्य लीजिये परमात्मासे मेरे अपराधको क्षमा कराइये। वे लोग द्रव्य आदि ले लेते थे एक एक स्वीकृति पत्र दे देते थे। जिसे अंग्रेजीमें पारडन बिल (PARDON BILL) कहते हैं, यह क्षमा करानेके पत्रका नाम है इस पार्डन बिलको अपने पास रखो तुम्हारे अपराधकी क्षमाके लिये मैं ईश्वरसे आशीर्वाद करूँगा। इस प्रकार वे पादड़ी उन रुपयोंको अपने काममें लगाते थे एवं अपराधियोंके लिये ईश्वरसे प्रार्थना करते थे। भारतवर्षमें इस प्रकारके दान और प्रायश्चितकी रीती अब भी प्रचलित है। यहांके धर्मात्मा लोग दान पुण्यसे पाप कटना समझते हैं।

पादरीयोंकी हंसी—विद्वानोंने साधुओं और पादड़ियोंका ठट्ठा करना आरम्भ किया। तबसे यह सब रीतियाँ उठ गईं, अपने समयमें जान मिल्टन साहब अंग्रेजी भाषाके एक बड़े भारी कवि हुये हैं, अपनी किताब (PARADISE LOST) की तीसरी जिल्दमें पादड़ियोंका इस प्रकार ठट्ठा करते हैं, मैं भी उसे पद्यमें बनाकर लिखता हूँ।

जान मिल्टन साहबका वचन।

नज़म—हर्मिट व फरायर कौल। और मंक भी इस डौल॥
करते जो मकरोफरेग। मिक़राज़ धर दर जेब॥
जामः सफ़ेदो स्याह। सरपर अजीब कुलाह॥
गिल गिता पाक मकान। ईसू जहां कुर्बान॥
चल इश्क से अनसूब। ईसा जहां मसलूब॥
दिलमें भी है हौस। हम जावेंगे फिर दौस॥

नौरोज़ हमको ईद । पितरसके हाथ कलीद ॥
दर खोल जन्नत आय । दाखिल हुये मर्द खुदाय ॥
चलते हो दिलमें शाद । उठती मुख़ालिफ़ बाद ॥
उनको उड़ावे दूर । उस अंधकारमें चूर ॥
हो अक्ल उनकी गुल । उड़ जाय पारडन बिल ॥
और कौल करता टोप । इस अंधकारमें तोप ॥
बाला बिहिश्ती काख़ । पहले वसीअ व फराख़ ॥
वहां जान अब कोई भूल । दिल वहां रहे मलूल ॥
वह अहमकों के बिहिश्त । बाकी न अब कोई खिश्त ॥

साधु फकीरोंकी हंसी – इस प्रकार जान मिल्टनके समान प्रायः विद्वान् ठट्ठा मस्खरी उड़ाने लगे अब भी करते हैं । जिसने दस पुस्तक पढ़ली वह कहता है कि, मैं ही बुद्धिमान विद्वान् हूँ, दूसरा मेरे बराबर कौन है । इस कारण साधु फकीर भजन छोड़कर व्यवहारमें लग गये । सब भक्ति भाव नष्ट होगई, पार्डनबिल काफूर हो गया ।

गजल–कुतुहओ किस्से खाँ मचाये गुल । भागा योरोप को छोड़ पार्डनबिल ॥
फिर न योरपमें तू कभी जाना । बागदे अपनी मोड़ पार्डनबिल ॥
अब जो जावे जरूर खावे मार । कुछ न तेरी है लोड़ पार्डनबिल ॥
हरगिज़ वह सरजमों न देख कभी । उल्मा करते जो हाड़ पार्डनबिल ॥
अब तू सर खुद हो मस्त बहरिश्ता । अहल दुनियासे तोड़ पार्डनबिल ॥
दुनियवी रुख न अपना रुख करना । खेत अपना तू गोड पार्डनबिल ॥
आजिज औरों के गौहरों को फेका । कूट अपना ही रोड़ पार्डनबिल ॥

गजल–तू जरा सोच आदमी बच्चे । जिससे तू फिर न घर बघर नच्चे ॥
पहली रस्मों को तूने दूर किया । अब कौन रस्म तेरे हैं सच्चे ॥
पढ़ लिया सब जबाँ लाहासिल । अब तलक तुम हो वैसेही कच्चे ॥
पहले जो था है अब नहीं कुछ और । वही तो है भी वही जच्चे ॥
किस लिये हकने की तुझे पैदा ।क्या था करना वह काम किस पच्चे॥
किस लिये खल्क में तू अशरफ है । कौनसे कारको तुझे रच्चे ॥
तू अब अपने को जानता दाना । शोहरा तेरा जहानमें मच्चे ॥
नहीं मालूम बारगह बारी । फिर बैठालें तुझे बजा उच्चे ॥
बे समझ सारे ख्वाँदे ना ख्वादे । देख आज़िज सब एकसे खच्चे ॥

सच्चे साधुओंके लुप्त होनेका कारण—हिन्दुओंके राज्यके समय साधु

सन्तोंकी बहुत सेवा शुश्रूषा होती थी, पर वर्त्तमानमें राजा प्रजा कोई भी साधु सन्तोंकी ओर दृष्टि नहीं करता, इस कारण भक्ति और साधु दोनोंही लुप्त हो गये।

संग्रह—साधुओंके विषयमें जो भी कुछ कहा गया है उसीका संग्रह इन नीचेके पद्योंमें दिखाये देते हैं—

गज़ल—कसरतने कुतुब ख्वानी इबादतको हटाई।
योरपसे चली बाद अब इस हिन्दमें आई॥
गुम्म ज्ञान किया है न रहा इल्म इलाही।
दिल दिया हलाहल रहा सब दलमें समाई॥
मैं आकिल व मैं दाना बहर सिम्त सदा है।
मैं आलिमों आज़िल हमादाँ हेच गदाई॥
फ़िरते हैं बहर नामें कुतुब किस्से ख्वाना।
मुर्शरव सूअ सच जो किसीके दिलमें रहाई॥
मजहब न कोई साधु गुरु कौन हे आज़िज।
दिल भूत सभीको रहे जुल्मात दिखई॥

मुखम्मस तरजीअ बन्द।

अमबाजका बहरमें तला तम्। भक्तिका नहीं कहीं महातम्।
शैतान् नफस मतिअ नजातम्। क्यों कर हो किसीको लाभ आतम्॥

भक्तिके लिये है नोहे मातम्।

तालिम मरअक्स प्रेम व भक्ति। सिखलाते हैं लोग जीव जगती॥
दुनियावी को बात खूब लगती। क्यों कर कोई पावे राहमुक्त॥ भक्ति०॥
कसरत जो हुई है कुतुब ख्वानी। हर सिम्त हजार बैठे ज्ञानी॥
बतलाते हयाते जाबदानी। दिखलाते नजात की निशानी॥ भक्ति०॥
कोई करता है दावा खुदाई। कोई कहता है दायेमुल जुदाई॥
कोई कहता है कुछ न दर गदाई। पुर है बगुनः बअदाई॥ भक्ति०॥
सारे मुद्दमा बुज़रुग भूले। गहवारये मौतमें सो झूले॥
बे वजह यक़ीन करके भूले। कर चक्कर बर्ग ज्यो बगोले॥ भक्ति०॥
कोई मुद्दई वजङ्ग जौशन। कहता मेरा दिमाग़ रौशन्॥
है हाथ मरे तफङ्ग औ तौसन्। मैं आक़िल और ज़माना कोदन्॥ भक्ति०॥
पुरसिस नहीं साधु और गुरुकी न फिक्रे। हिसाब रूबरूकी॥
अन्देशा न खुद खराब खोकी। परवाह नहीं साथके अदो की॥ भक्ति०॥

धोका दिये सबको कुतुब किरमाँ । इन्सान हरीस हैं बहिरमाँ ।।
दिलमें न किसीके इश्क अरमाँ । नाहकमें फँसे न हकका फरमाँ ।। भक्ति०।।
मुन्तिक़ो दलीलका जो घर है । मामूर इस अहद बशर है ।।
हर सिम्त बहुतसा करोंफर है । इन्सानको मौतकी न डर है ।। भक्ति०।।
होवे जो मलिक मौतका फेरा । भूलेंगे सब ही फ़कीर फन्न तेरा।।
जब आनेके अज़राईल घेरा । दोज़खमें करेगा जाके डेरा ।। भक्ति०।।
मुन्किरो नकीर जिस्मथाना । आजा जो कहेंगे शाहिदाना ।।
लिखते जो हिसाब हर जमाना । बाकी न रहे कोई बहाना ।। भक्ति०।।
कोई न चलेगी होशियारी । चलनेकी हुई अब तैयारी ।।
अब छोड़ दे ख्वाबकी खुमारी । रह कोई रहे न रुस्तगारी ।। भक्ति०।।
खुद गुम्राह और को सिखाते । अन्धे अन्धे को राह बताते ।।
पीते हैं शराब गोश्त खाते । दोज़ख खोरिश आब जव चखाते ।। भक्ति०।।
लब फूल वह दुनियाँ को तोड़े । हाहाकर प्याला को न मोंडें ।।
एक शिद्दत पर फिर और जोड़े । क़ितयन कुल रहम को सो छोड़ें ।। भ० ।।
ले हाथ में आगकी कतरनी । कतरें लब व सर अज़ाब धरनी ।।
दस गुण दुख औरसे जो भरनी । छूटे न गुरुके शरनी ।। भ० ।।
जब तक न साधु गुरु मेहर है । तब तक हर सिम्तमें कहर है ।।
सब ग़ाफिल साँपकी लहर है । रोजो शबो शाम और सेहर है ।। भ० ।।
भक्ती और मुक्तिका निशाना । बतलाये कबीर हर ज़माना ।।
बिठलाया जमीपै अपना थाना । दी बख्श बखेश व यगाना ।। भ० ।।
जो सद्‌गुरुका निशान पावे । कर उसका अमल हमल न आवे ।।
फर्माबरी उसकी दिल लगावे । हो हंस मुकाम उसका पावे ।। भ० ।।
ऐ सद्‌गुरु सत्‌से मिलादे । मुर्दा हुई भक्तीको जिलादे ।।
बुतलान जमीसे हिलादे । पज़ामुर्दा अपना गुल खिलादे ।। भ० ।।
आजिजके तरफ जो मेल करते । यह बात बद्दिल जो कान धरते ।।
सद्‌गुरु की शरण तो आन परते । दरिया अगम अपरा तरते ।।

विश्वामित्र—विद्याभिमानियोंकी क्या सामर्थ्य है जो कि, सन्तोंकी तुल्यता कर सकें। भक्तिके प्रकाशसे भक्त भगवन्त बन जाता है, सन्तको वह पद मिलता है जो विद्याभिमानियोंको (स्वप्नमें भी) ध्यानमें नहीं आता। इसपर मैं एक उदाहरण लिखता हूँ। जो देवीभागवतके सातवें स्कन्धके बारहवें अध्यायमें लिखा है :—

एक समय अयोध्याजीके महाराजा हरिश्चन्द्रके पिता राजा त्रिशंकु वशिष्ठजीके शापसे राक्षस होगये, पीछे उनपर विश्वामित्रकी कृपा हुई, उनकी राक्षस अवस्था छूट गई मनुष्यत्व प्राप्त हुआ। विश्वामित्रजीने शरीर सहित स्वर्गको भेज दिया। राजाके स्वर्गमें पहुँचतेही स्वर्गवासियोंने राक्षस जान धक्का देकर गिरा दिया। महाराजा त्रिशंकु पृथिवीकी ओर गिरने लगे। विश्वामित्रजीने उनको नीचे गिरता जान कर अपने योगबलसे बीचमेंही खड़ा कर दिया। अपने तपोबलसे कहा कि, यहाँ ही स्थित रह नीचे न आना, विश्वामित्रकी आज्ञासे अधरमेंही रह गये। इधर विश्वामित्रजीने अपने तपके बलसे एक दूसरी इन्द्रपुरी बनाना आरम्भ किया, नवीन इन्द्रपुरीकी शोभा इन्द्रपुरीसे कहीं बढ़कर थी। इन्द्रने दूसरी इन्द्रपुरी बनते देखी तो बहुत लज्जित और भयभीत होकर महान् तपस्वी विश्वामित्रजीके निकट आ दण्डवत नमस्कार कर गिड़गिड़ाके कहने लगा कि, महाराज! ऐसा काम मत करो, एक इन्द्रपुरी तो वर्त्तमान है दूसरेकी क्या आवश्यकता है। इसमें बड़ा बखेड़ा होगा, एकही ब्रह्माण्डमें दो इन्द्रोंका रहना कठिन और दुखदाई है। विश्वामित्रने कहा, यदि तू राजा त्रिशंकुको लेजाकर अपनी इन्द्रपुरीमें रखे तो मैं इन्द्रपुरी बनाना बन्द करूँ, नहीं तो अवश्य बनाऊँगा। राजा इन्द्रने विवश होकर महाराजा त्रिशंकुको ले जाकर स्वर्गमें स्थान दिया विश्वामित्रने दूसरी पुरीकी रचना बन्द कर दी।

यह विश्वामित्र सृष्टिकर्त्ताके पद पर स्थित हो चुके थे, सृष्टि उत्पन्न करनेकी शक्ति प्राप्त कर चुके थे, जीव जब कर्मोंको भोगते हुये मनुष्य शरीरको पाते हैं तो फिर तपस्या करके उस पदको प्राप्त कर लेते हैं, आजतक उनका आवागमन नहीं छुटा। न उनकी मुक्तिकी आशा होती है। क्योंकि, उनमें क्रोध कामना बहुत है। तपस्या तो बहुत करते हैं पर वासना दूर नहीं होती जब विश्वामित्र राजा प्रियव्रतके हेतु स्वर्ग रचने लगे तो राजा इन्द्रको यह भय हुआ था कि, अब मेरा शत्रु उत्पन्न होगा क्योंकि, जब नई इन्द्रपुरी बनती है तो नया इन्द्र भी अवश्य होगा। देवते भी होंगे इन्द्रका सभी ठाठ बाट होगा, मुझमें और नये इन्द्रमें शत्रुता बढ़ेगी। यह विचार कर इन्द्रने विश्वामित्रसे बिन्ती करके नई इन्द्रपुरीकी रचना बन्द कराई। विश्वामित्र दूसरे ऋषीश्वरोंके समान भिन्न ब्रह्माण्ड बनाकर उसमें इन्द्रपुरी बना सृष्टि उत्पन्न करते तो विष्णु अथवा अन्य दूसरे देवतोंको किसी प्रकार कुछ कहनेका अवसर न मिलता।

साम्बर—जो कोई ब्रह्माण्डमें रचना करना चाहता है, अवश्य उससे देवता लोग शत्रुता करते हैं। अतः योगवाशिष्ठमें लिखा है कि, दैत्योंके राजा

पातालवासी साम्बरने नवीन सृष्टि उत्पन्न करना आरम्भ किया वो अपनी सृष्टिके जीवधारियोंको देहको मणि माणिकसे युक्त महासुन्दर शोभायमान बनाता था। देवता लोग उसको नष्ट कर जाते थे, इस कारण देवताओं और दैत्योंमें घोर युद्ध हुआ करता था। साम्बरने अन्तमें तीन पुरुष ऐसे उत्पन्न किये जिनमें वासनाका लेश भी न था। तीनों वासना रहित पुरुषोंने देवताओंको जीतकर भगा दिया, जिससे उनको ऐसा भय उत्पन्न हुआ कि, पहाड़की घाटियों गुफायें आदि गुप्त स्थानोंमें छिपने लगे। अन्तमें विचार कर उन तीनों साम्बर रचित निष्काम पुरुषोंमें वासना उत्पन्न कराई। इससे वे भय खाकर देहकी बचावट करने लगे। भय और चिन्ता हुई तो देवताओंने उनके ऊपर बड़ी प्रबलताके साथ आक्रमण किया वे लड़ाई छोड़कर पाताल भाग गये, जहाँ यमराजाका स्थान था वहाँ जाकर छिपे। पीछे दैत्यराजा साम्बरने ऐसे तीन पुरुष उत्पन्न किये जिनको कि, कभी वासना होवेही नहीं। तीनों आत्मज्ञानी थे उन्होंने देवताओंको मार भगाया। पीछे स्वयं विष्णु भगवान्‌ने जाकर उनसे महान् युद्ध करके उनका वध किया। यह देख दैत्यराज साम्बर स्वयं विष्णु भगवानसे युद्ध करनेके लिये रणभूमिमें उपस्थित हुआ, अन्तमें असुरारि विष्णु भगवान्‌ने उसे भी मार गिराया। इस प्रकार स्वयं भगवान् विष्णु इस ब्रह्माण्डके अधिपति हैं, इसमें दूसरा हस्ताक्षेप नहीं कर सकता। सहस्रों ऋषि मुनि ईश्वरपदको प्राप्त हो नया ब्रह्माण्ड रच ईश्वरी करते हैं, पर वे भी इसमें कुछ हस्ताक्षेप नहीं करते।

पठित मूर्ख—विश्वामित्र मध्य श्रेणीके ऋषि थे, हजारों उनसे बढ़कर उच्चपदपर स्थित हैं जिनके ऐश्वर्य और प्रतिष्ठाका वर्णन करना अत्यन्त कठिन है। विद्याभिमानियोंको उनकी श्रेष्ठता और प्रभावकी क्या सुधि है, ऐसे २ ऋषि मुनि हैं जिनकी अपेक्षा ब्रह्मा, विष्णु आदि तुच्छ हैं। उन ऋषियोंको विद्याके अहङ्कारी पठित मूर्ख क्या जान सकते हैं।

विद्याभिमानी कूवेंके मेंडकोंके समान हैं, कूवेंको मेंडकोको अपने कूवेंकी सुधि होती है, उसे असीम सागरकी क्या सुधि है? कबीर साहबने ऋषियोंकी बड़ाईमें कहा है कि, सच्चे सन्त और साहब, एक हो जाते हैं। जिन्होंने सत्यपदको प्राप्त किया है, जो गुरुपदकी सुधि रखते हैं, निर्माण होकर रहने पर भी साहबके तुल्य हैं, जो ऐसी महिमा युक्त सन्तोंकी ठट्ठा और निन्दा करते हैं, वे भक्ति मुक्तिके सत्यमार्गको नहीं प्राप्त होते, विषयवासनाके वश संसार सागरमेंही पड़े हुये बारम्बार आवागमन किया करते हैं।

कबीर साहबकी साखी ।

कोठी तो है काठकी, ढिग ढिग दीन्हीं आग ।
पढ़ पण्डित झोली भये, साकट उधरे भाग ।।

हजरत ईसाकी वाणी ।

मतीफी इञ्जील ८ बाब, २० आयत–ऐ बाप ! तूने विद्याभिमानियोंसे ओट रखा अपने बच्चोंपर परदा खोल दिया ।

एक फकीहा (कर्मकाण्डी विद्वान्) ने हजरतसे कहा कि, आप जहाँ जावें मैं भी आपके साथ जाऊँगा । इस बातपर हजरतने जवाब दिया कि, लोमड़ियोंके वास्ते माँद और पक्षियोंके लिये घोसले हैं, पर मनुष्योंके लिये शिर धरनेकी जगह नहीं, इतना कहकर उसको शिष्य नहीं बनाया ।

लोमड़ियोंसे आशय विद्याभिमानियोंसे है । क्योंकि, वह फकीहाँ विद्याभिमानी था, अतः विद्याभिमानियोंको लोमड़ी कहा क्योंकि, विद्याभिमानी लोमणियोंके समान चतुर और चालाक होते हैं, वे पृथिवीमें रहते हैं, पक्षीके घोसले वृक्षपर होते हैं, विद्याभिमानी जनोंका आवागमन नहीं छूटता । वे मातृगर्भरूपी माँदोंसे कभी छुट्टी नहीं पाते । जब ऐसेही विद्याभिमानी लोग संसारके उपदेशक बने तो किस प्रकार जीवोंका कल्याण हो सकता है ।

तपस्वी और भजनीक भक्त ज्ञानी लोग जो अपने भजनके बलसे स्वर्गमें जाते हैं, यह पक्षियोंके कहनेका आशय है समय पाकर वे भी पतित हो जाते हैं ।

मनुष्योंके कहनेका आशय उन लोगोंसे है, जो कि, विषय वासनासे मुक्त होकर तीन लोकसे बाहर होगये उनको तीन लोकमें शिर धरनेकी जगह नहीं है क्योंकि, यह तीन लोक वासनिकोंके लिये है । ये तीन लोक सच्चे मनुष्योंके लिये नहीं है । ज्ञान तिलकमें लिखा हुआ है ।

स्वामी रामानन्द वचन ।

पढ़ पढ़ राते गुण गुण माते हृदया शुद्ध न होई ।

नानक वचन

पढ़ पढ़ गड्डी लादिया, लिख लिख भरीं साख ।
नानक लेखे एक गुरु, हौं मैं झक्कड़ झाख ।।

प्रह्लाद वचन ।

पढ़ूँ न विद्या सो लिख पाटी । विषेक राम भगतकी टाटी।।
क्या पाँडे तूं लिखे जँजाला । लिख कीरतन राम नाम गुपाला ।।

इञ्जीलमें करीनतूनको पोलूस रसुलका पत्र कि—जो कोई पण्डित

विद्वान् और बुद्धिमान् बनना चाहता है उसको चाहिये कि, मूर्ख बन जावे। जो सांसारिक बुद्धिमत्ता और विद्वत्ता है वह परमात्माके निकट मूर्खता और निर्बुद्धिता है, परमात्मा अभिमानी पण्डितोंको विद्याकेही जालमें इरझा रखता है।

जबूरमें अयूबके विषयमें—परमात्मा बुद्धिमानोंकी बुद्धिमत्ता असत्य कर देगा, वे स्वयं अपनी इच्छा पूर्ण नहीं कर सकेंगे। विद्याभिमानियोंको विद्याके जालमें फँसाए रखता है, जो टेढ़े तिरछे लोग हैं उनकी बुद्धिमानीको शिरके बल उलटा देता है, वे लोग दिनके प्रकाशमें भी अँधेरेके समान अन्धे हो ढूंढ़ते फिरते हैं।

फिक्रियाका सिद्धान्त—मुहम्मद साहबके बहत्तर पंथोंमेंसे फिक्रिया नामक पन्थका वचन है कि पुस्तकावलोकन आदि विद्याकी विशेष वृद्धि होते ही भक्ति और भजन नष्ट हो जाता है।

शिष्टका वचन—किसीने कहा भी है कि,—

श्लोक—जातिर्विद्या महत्त्वं च रूपं यौवनमेव च।
यत्र नैव प्रजायन्ते पञ्चैत भक्तकण्टकाः॥

जाति, विद्या, रूप, मान, युवावस्था ये पांचों भक्तिके परम शत्रु हैं, जबतक इनसे निवृत्त न होगा तबतक भक्ति न कर सकेगा। इसी प्रकार पृथिवीके सारे विरक्त महात्मा कहते चले आते हैं। यदि मनुष्य भक्तिका कुछ भी अनुराग रखता हो तो विद्वान् होता हुआ भी विद्याका अभिमान छोड़ दे।

विद्याभिमानियोंका आधार—दो बातों पर है एक पुस्तक अर्थात् दृष्टि ज्ञान और दूसरा उनका ज्ञान। दोनोंही असत्य हैं। क्योंकि, दोनों परिवर्तनशील हैं। दोनोंका कुछ भी विश्वास नहीं। बालकपनसे मृत्यु तक इनमें परिवर्त्तन हुआ करता है, इनपर भरोसा करना गुरुको न ढूंढ़ना महामूर्खता है। मनुष्य धर्मद्वेष और पक्षपात छोड़कर देखे विचारकर उचित व्यवहार करे तो निस्सन्देह इष्टको प्राप्त कर सकता है। पहले गुरुकी पहचान अवश्य है, जबतक गुरुको न पहचानेगा तबतक कोई कार्य पूरा नहीं हो सकता। बुद्धिमानी वही है जो सद्गुरुको पहचानकर उसके चरणका रज हो जावे अपने विचारको गुरुकी आज्ञानुसार काममें लावे।

यह एक सीढ़ी है जो पृथिवीसे ऊपर आकाशमें लगाई है उसके चार दण्डे हैं, शरीयत (कर्म्म काण्ड) तरीकत (योग और उपासना) हकीकत (ज्ञान) और मारफत (विज्ञान) आदिक।

जितने विद्याभिमानी संसारमें हैं सब शरीयत (कर्म्मकाण्ड) के दण्ड

पर खड़े हैं, आगे पग नहीं बढ़ा सकते। जिसके दण्डे पर सब सांसारिक तथा विद्याभिमानी खड़े हैं, वह क्या है ? वह तो केवल अज्ञानी अन्धोंके लिये है।

कबीर साहबने कहा है—'अन्धेको दरपण वेद पुराण'।

वेद, पुराण, किताब कुरान आदि ऐसे हैं; जैसे अन्धोंके सामने दरपण। ऐसाही इन्जीलमें, पोलूस रसूलका पहला तमताऊसको खत देखो ८ और ९ आयत—हम जानते हैं कि, शरीयत (कर्म्मकाण्ड) अच्छा है, यदि उसकी रीति पर भली प्रकार वर्ताव किया जावे।

यह शरीयत (कर्म्मकाण्ड) सत्यवादियोंके लिये नहीं है वरन् शास्त्र विमुख, दुराचारी, अधर्मी पापी, माता पिताको बद्ध करनेवालों, अन्यथाचारियों, विषयी, मनुष्य विक्री करनेवालों झूठे, झूठी शपथ खानेवालों आदि काफिरोंके लिये है। इनके अतिरिक्त और भी जो सत्यपथसे विरुद्ध हों उनके लिये है। क्यों कि, दण्डव्यवस्था इसीमें है।

सभी विद्याभिमानी सन्तोंकी कृपा बिना शरीयत —कर्म्मकाण्ड— में बँधकर मनमुख हो गये। सन्त राजा हैं। पठित अपठित मनुष्य उनकी प्रजा हैं। राजाको कर देना तथा उसकी आज्ञाकारिता करना उचित है, जो न करेगा वह अवश्य कैद होगा। संसारके सन्त गुरु शिक्षक हैं। जो रीतिसे गुरुकी सेवा न करेगा वह पदसे भ्रष्ट हो जावेगा। गुरु और ईश्वरका धन्यवाद करना आवश्यक है। जिसका गुरु नहीं है उसका ईश्वर भी नहीं है। गुरु और सन्तसे ईश्वर की प्राप्ति होती है। जिसका गुरु न हो वह एक अथवा दो ईश्वरोंकी भक्तिका दावा करे तो झूठा है, उसको द्वैत अथवा अद्वैत किसी प्रकारसे ईश्वरकी प्राप्ति नहीं हो सकती। इस प्रकार विद्याभिमानी अपने ऊपर आपत्ति उठाते हैं। इसके ऊपर एक दृष्टान्त है कि—

बुल्लेशाह और शरई—साईं बुल्लेशाह साहब, विरक्त महात्मा, लाहोरके निकट कुसूर नामक कसबामें रहते थे। उनकी भजन भक्ति माहात्म्य समस्त पंजाबमें प्रसिद्ध है। उनके समयमें कुसूरमें एक बड़ा आलिम शरई रहता था। वह सर्वदा बुल्लेशाह साहबकी निन्दा किया करता था उनसे शत्रुता रखता था। उसने समस्त कुसूरके पठानोंको बहकाया कि, यह बुल्लेशाह बडा बेशरा है। उसकी बातोंको सुनकर सब पठान लोग शाह साहबके विरोधी हो गये। शाह साहब तो विरक्त थे, उनको मुसलमानी रोजा निमाजसे अथवा कर्म्मकाण्डसे क्या सरोकार था यह सब तो प्राकृतिक मनुष्योंके लिये हैं, विरक्त उसको क्यों मानने लगे ? इस भेदसे प्राकृतिक जन अज्ञात हैं। वह मोलवी

बुल्लेशाह साहबको मर्दूद और शैतान कहा करता था । हजरत शाह साहब उसकी बातोंको सुनकर धैर्य्यसे सन्तोष करके चुप रहते थे । एक दिन मौलवी कहने लगा कि, ऐ बुल्लेशाह ! तू जब मरेगा तब मैं तेरा मुंह काला करवा, टाँगोंमें रस्सी बँधवा, समस्त शहरमें घसीटवाऊंगा । मौलवी उसका बड़ा काजी था, मुसलमानी राज्यमें फतवा दिया करता था बहुत बल रखता था । उसकी बातें सुनकर बुल्लेशाह साहबने कहा कि, ऐ काजी ! जब मैं मरूँगा तब तू यहां न होगा, मेरे मरनेके पीछे तू मरेगा बहुत दुःख दर्दसे पड़ेगा, वहां तेरा प्राण न छूटेगा तब तू कुसूरमें आवेगा तो मेरे पगके नीचे गाड़ा जावेगा तभी तेरेको शान्ति होगी । अन्तमें मौलवी काबुल गया । बुल्लेशाहका देहान्त हो गया । कुसूरमें उनकी अन्तिम क्रिया हुई । वह काजी काबुलमें बीमार पडा, उसके शरीरमें बहुत जलन उत्पन्न हुई, बहुत दुःखी हुआ पर प्राण नहीं निकला, उसने कहा कि, मुझको शीघ्रही कुसूरमें बुल्लेशाहके चरणोंमें ले चलो । मौलवी बुल्लेशाहकी कब्र निकट पहुँचा तो उसका प्राणान्त हो गया बुल्लेशाहके पगकी ओर उसकी कब्र बनी है । उसकी सभी शरयतें और विद्याभिमान भूल गया, कोई काम न आया । सच्चे सन्तोंके विद्वेषियोंको कभी सुख नहीं मिल सकता ।

मृतकाचार्य्योंके शिष्य---विद्याभिमानियोंके कोई गुरु नहीं । केवल वे पुस्तकोंहीको गुरु माने बैठे हैं । किसी एक धर्म्मके आचार्य्यका नाम लेकर उसकी ओटमें नानाप्रकारके शुभ अशुभ व्यवहार करते रहते हैं, यद्यपि आचार्य्यकी सूरत भी नहीं देखी कि, वह कैसा है ? केवल किसीका नाम सुनकर उसके चेला बन जाते हैं कहते हैं । कि, हम अमुक आचार्य्यके अनुयायी हैं, ऐसाही है-जैसा कोई कहे कि, आकाशमें बाग लगा है मैंने उससे खूब फल तोड़कर खूब खाए जिससे पेट भर गया । ऐसे झूठ सत्य मार्गपर कभी नहीं आ सकते । जिसको मरे हुये बहुत काल बीत गया, उस आचार्यका नाम लेकर चेला बन जाना तो ऐसाही है---जैसा कोई स्त्री कहे कि, अमुक पुरुष जिसको मरे हुये अब बहुत दिन बीत गये हैं मैंने अपना पति आज बना लिया । इस प्रकारके पति बनानेसे सन्तानकी उत्पत्ति न होगी, यह सब मूर्खताका विचार है बिना गुरु चेलाके मिले कदापि ज्ञान नहीं होता । स्त्री पुरुषके संयोग बिना सन्तान उत्पन्न भी नहीं हो सकती ।

इस मण्डलीके लोगोंको आँख, कान और बुद्धि भी है पर प्रकाश और

शुद्धताके बिना अहंकृत बुद्धि, अज्ञान पथमें डाल देती है। जिसे वे ज्ञानके पथसे निराश रह जाते।

उपदेशके अयोग्य—ये विद्याभिमानी लोग सच्चे नहीं कहे जा सकते, बरन्‌पेटके लिये उद्यम करते हैं। सैकड़ों विद्याभिमानियोंपर एक अपढ़ सन्तका विचार जय पावेगा, इसमें कुछ सन्देह नहीं कि, जो तत्त्ववेत्ता विद्वान् नहीं अपने कहनेके अनुसार चलनेवाला नहीं उसके वचनपर विश्वास करना अपनेको कुमार्गमें डालना है। सन्त लोग विद्याभिमानियोंको उपदेश भी नहीं देते। क्योंकि उनका अन्तःकरण सांसारिक ज्ञानसे भरा रहता है। पुराने अहदनामेके २८ के बाबसालिब नबीके वृत्तान्तामें लिखा है कि, वह एक औरतसे जिसका कि मित्र एक राक्षस था कुछ समाचार पूछने गया इसी कारण उसका ज्ञान लुप्त होगया।

इसी प्रकार सब मनुष्योंकी दशा है। जिस अन्तःकरणमें अभिमानने स्थान किया, वह अन्धकारमय पत्थरके समान कठोर हो गया, वह कभी सुधरने योग्य नहीं होता। बड़े २ विद्वान् लुक्‌मान, अफसातून अर्स्तू सुकरात आदिकोंको सच्चे सन्तोंके उपदेशके बिना बहुत दुख भोगना पड़ा, हिक्मत तथा रसालत राज्य आदिक सबका अन्तिम परिणाम शोक एवं निराशाही है।

ग़ज़ल – जितने उलमाजमीं ऊपर न जाने क्या खुदाई।
शरीतकी सलाई उनकी आँखोंमें चलाई है ।।
यह हरदो ऐन अन्धे हैं सो यम जालिमके बन्दे है ।।
फकीरोंके कदमकी खाक आँखोंमें न पाई है ।।
हजो करके फक़ीरोंके हैं आशिक राहगीरोंके।
ठगोंकी दोस्ती करके गला अपना कटाई है ।।
दरूनी और बेरूनी आँख रौशन मिस्ल सद सूरज।
जो दर्वेशान खाक पायेका सुरमा बनाई है ।।
जो इस दुनियाके दाना सब हैं ओकबा महज़ नादानसो।
खबरदारान इश्क आलम खबर ऐसी सुनाई है।
पकड़ जब लेवे मल्कुलमौत भूले सारी दानाई है।
जो गन्धक आगके घर बीचमें डेरा बनाई है ।।
न जबतक वारते फुकरापर तनमन और धन आज़िज़।
करें तदबीर सो सदहा सो कहां राहे रहाई हैं ।।

परमात्मा के तुल्य—साधुओंकी सङ्गति साधुओंके दर्शन एवं साधुओंका भोजन वस्त्र देना साधुओंकी अवश्यकता पूरी करना आदि नाना प्रकारोंसे साधुओंकी सेवा करनेका अनन्त फल है, वह वर्णन नहीं किया जा सकता। सच्चे साधुओंकी सेवा करना सर्वोपरि है वह परमात्माकी सेवाके समान है।

साधुओंके दर्शनका फल।

साधुओंके दर्शनका फल इतना है कि, मुझसे वर्णन नहीं किया जा सकता। कबीर साहबने स्थान स्थान पर इस विषय पर बहुत कुछ कहा है। सन्तोंके दर्शनसे पशुसे मनुष्य और मनुष्यसे फिर जीवन मुक्त हो जाता है; जैसा कि, मैं पहले लिख आया हूँ कि, कबीर साहबके दर्शनसे कुत्तीका बच्चा मनुष्य हो गया। मनुष्यसे जीवन मुक्त होगया सो सन्तके नाम और दर्शनका फल नहीं कहा जा सकता। जैन धर्म्मके ग्रन्थोंमें एक दृष्टान्त लिखा है कि—

एक सिंहने एक सन्तको बनमें जाते हुये देखा। दर्शन करतेही मनमें यह विचार हुआ कि, मैं बड़ा पापी हूँ : एक तो जीवोंको खाता हूँ, दूसरे जीवित पशु सब मुझसे ऐसे भयभीत रहते हैं कि, मृतक तुल्य हो रहे हैं, अब ऐसा पाप न करूँगा। ऐसा सोच समझ कर व्याघ्र शान्त हो एक स्थान पर बैठ गया, तेरह दिन तक बराबर भूखा रहनेसे उसके प्राण निकल गये, इस पुण्यके प्रतापसे वह मरकर समस्त भारतवर्ष तथा अनेक देशोंका राजा हुआ। उसका नाम चक्रवर्ती भरत हुआ। बहुत समय तक राज्य करनेके बाद त्यागी होकर मुक्तिका अधिकारी हुआ। सहस्त्रों ऐसे दृष्टान्त हैं, कहां तक लिखूं ? पर इसके साथ ऐसा तर्क न करना चाहिये कि, सन्तके दर्शन सभी मनुष्य करते हैं ऐसेही क्यों नहीं हो जाते ? वरन् ऐसा समझना चाहिये कि, जिनका अन्तःकरण कठोर है उनके पूर्वजन्मके पाप बहुत हैं उनका अन्तःकरण पत्थरके समान हो गया है, जिस पर तीररूपी उपदेश अथवा दर्शनका प्रभाव कुछ असर नहीं करता ऐसे अशुद्ध अन्तः करणवालोंको साधुओंके दर्शन करने और बचन सुननेसे कुछ भी लाभ नहीं होता, कबीर साहब सन्ध्या स्मरणमें कहते हैं कि—

साखी – साधु साधु मुखसे कहे, पाप भसम होइ जाय ।
आप कबीर गुरु कहत हैं, साधू सदा सहाय ॥

साधूके नाम और दर्शनका फल है, जिन साधुओंकी यह महिमा है उनसे बढ़कर दूसरा कौनसा तीर्थ व्रत और दान, पुण्य है ? साधुओंके प्रसादका भी बड़ा माहात्म्य है। साधुओंके चरणामृतकी महिमा बहुत लिखी है, जिससे कि, मनुष्यका अन्तःकरण शुद्ध होता है।

साधुओंके भोजन देनेका पुण्य ।

जितने षट्दर्शनके सन्त हैं तथा दूसरे धर्मोंके साधु हैं उनको भोजन करानेसे महान् पुण्य होता है । कबीर साहब कहते हैं कि—

कहैं कबीर धर्मदाससे, भूला क्या डोलो हो ।
कोटि यज्ञ फल होता है, एक साधु जेंवायें हो ।।

कबीर साहब कहते हैं कि, एक साधूके भोजन देनेसे करोड़ों यज्ञोंका फल होता है । मैं प्रथमही लिख आया हूँ कि, पाण्डवोंकी यज्ञमें श्वपच सुदर्शनने जब भोजन किया तब यज्ञ पूरी हुई । दान पुण्य और यज्ञ आदिक किसी काम न आई । इस कारण सब साधुओंके भोजन देनेकी अपेक्षा हंस कबीरको भोजन देनेका सबसे अधिक[1] पुण्य है ।

तिमिर लिंगको रोटीका फल—एक समय जिन्दा भेषमें कबीर साहब समर कंदमें रोटी २ पुकार रहे थे । किसीने रोटी नहीं दी पर तिमिरलिङ्ग नामक एक लँगड़ेने बड़े प्रेमके साथ रोटी खिलाई, पानी पिला सेवा की । साहबने उसको बड़ा भारी राज्य दिया, उसकी दरिद्रता दूर हो गई । वह कङ्गाल बड़ा प्रभावशाली बादशाह बन गया । इसपर गरीबदासजीकी शाक्षी है ।

गरीब — देहली अकबरा बादमें, फिर लाहौरको जात ।
रोटी रोटी करत हैं, कोई न पूँछे बात ।।

गरीब — तिमिरलिङ्ग तालिब मिले, रोटीकी दी चाय ।
जिन्देकी उरमें धसी, तिमिरलिङ्ग सुन माय ।।

गरीब — रोटी पोई प्रीतिसे, जलका तोटा हाथ ।
जिन्देकी पूजा करे, मातु पुत्र दोउ साथ ।।

गरीब — तिमिरलिङ्ग ऊभी रहे, मनमें कछू न चाय ।
मौज मेहर मौला करी, दीन्हा तख्त बैठाय ।।

गरीब — हिन्द जिन्द सभी दई, सेतुवन्ध लग सीर ।
बड़ गजनी ताबा करी, जिन्दा इस्म कबीर ।।

पारख अङ्गकी साखी ११६४ से ११७३ तक देखो ।

शास्त्र—साधु फकीरोंकी सेवा करनी चाहिये, सन्त सेवा सहस्रों आपत्ति दु:खोंको नाश करती है । पक्षपात रहित हो सब प्रकारके सन्तोंको भोजन दे

---

१ वास्तवमें सच्चा साधु हो कोई भी हो परमात्माकाही रूप है ।

कदापि न चूके, इसी कारण शास्त्रोंमें आज्ञा' है कि, गृहस्थ भोजन तैयार होनेपर पहले साधु अभ्यागतोंको खिलाले, पीछे आप भोजन करे। कबीर साहबने कहा है कि, जिस घरमें साधु भोजन नहीं करते वह मरघट और मसान है, उसके रहनेवाले भूत प्रेत हैं। जिस घरसे साधु अभ्यागत भोजन किये बिना फिर जाते हैं उस घरमें भूत प्रेत रहते हैं; भोजन करते हैं। इस कारण प्रत्येक गृहस्थको उचित है कि, घरमें भोजन तैयार हो जावे उस समय अपने

गीता अध्याय ३ श्लोक १३ ।।

यज्ञशिष्टाशिनः सन्तो मुच्यन्ते सर्वकिल्विषैः ।
भुञ्जते ते त्वघं पापा ये पचन्त्यात्मकारणात् ।। १३ ।।

पदच्छेद–यज्ञ'शिष्टाशिनः सन्त': मुच्यन्ते सर्वकिल्बिषैः । भुञ्जते ते तु अघं पापाः ये पचन्ति आत्मकारणात् ।। १३ ।।

पदार्थ–जो पुरुष यज्ञके शेष अन्नको भोजन करता है वह शिष्टपुरुष सब पापोंसे छूट जाता है पापात्मा पुरुष केवल अपने वास्तेही अन्न पकाते हैं वे पापकाही भोजन करते हैं।

जो अधिकारी जन ऋषियज्ञ, देवयज्ञ पितृयज्ञ, मनुष्ययज्ञ और भूतयज्ञों को करके बचे हुए अमृतरूप अन्नको भोजन करते हैं, वेही श्रेष्ठ कहे जाते हैं। श्रद्धापूर्वक सज्जनों संतों और —शास्त्रोंके कहे कर्मोंको करनेवाले पुरुषोंकोही श्रेष्ठ कहा गया है। श्रेष्ठजन प्रमाद करके किये हुये तथा और भी अनेक प्रकारोंसे हुए पापोंसे रहित होते हैं।

पंच सूना रूप निमित्तसे उत्पन्न हुये पापोंको नष्ट करनेके लिये श्रेष्ठ जन अपने २ संप्रदायके अविरुद्ध पंच यज्ञका नित्य सेवन करते हैं।

पंच यज्ञोंको न करनेवाले पुरुषोंको पापकी प्राप्तिका वर्णन करते हैं। पंच महायज्ञोंको न करनेवाले पापात्मा केवल अपने उदरके लियेही अन्नको पकाते हैं, देवता, अतिथि आदिके लिये रसोई नहीं बनाते वे पुरुष केवल पापकाही भोजन करते हैं, अन्नका भोजन नहीं करते। यद्यपि पापात्माओंकी दृष्टिमें वह अन्नही है तो भी संत शास्त्र और देवताओंकी दृष्टि करके सो अन्न पापरूप ही है। एकतो उपरोक्त पाप अपना नित्य कर्तव्य छोड़नेसे दूसरा पाप लगता है। यथा— कण्डनी पेषणी चुल्ली उदकुंभी च मार्जनी ।
पंच सूना गृहस्थस्य ताभिः स्वर्गं न विंदति ।।

अर्थ–गृहस्थ पुरुषों के गृहमें हिंसा होनेके पांच स्थान होते हैं। १—ऊखलके कूटनेसे जीवोंकी हिंसा होती है, २—पाषाणकी चक्कीमें अन्नके

द्वारपर खड़े होकर इधर उधर देखे। जो कहीं भूखा साधु अथवा पथिक तथा किसी प्रकारका मनुष्य भूखा मिल जावे, तो प्रथम उसको सत्कार पूर्वक भोजन करावे, पीछे आप भोजन करे। जब कोई भोजन करने वाला न मिले तो अकेला भोजन करनेपर पश्चात्ताप करे। परमात्मासे उस दिन अभ्यागत न मिलनेके कारण, अपराध क्षमा करनेकी प्रार्थना करे। किसी प्रकार छल कपट और बनावट न करके साधु अभ्यागतोंको नित्य भोजन कराया करे। साधु अभ्यागतोंको भोजन कराते बार किसी प्रकारकी ग्लानि और घृणा न लावे, भोजन

पीसनेसे जीवोंकी हिंसा होती है; ३—तीसरा अन्नके पकानेके वास्ते चुल्लेमें अग्निके जलानेसे जीवोंकी हिंसा होती है; ४—पात्रोंमें जलके भरनेसे, बर्तनोंके मांजनेसे, जीवोंकी हिंसा होती है; ५— मृत्तिका जल आदिकों से घरके लीपने (मार्जने)से जीवोंकी हिंसा होती है। यह पंच प्रकारकी जो कि हिंसासे पापको प्राप्त हुआ गृहस्थ सद्गतिको नहीं प्राप्त होता।

"पंचसूनाकृतं पापं पंचयज्ञैर्व्यपोहति" ।।

अर्थ—पंच हिंसाओंसे उत्पन्न हुये पाप पांच यज्ञोंके करनेसे निवृत्त हो जाते हैं। वे पंच यज्ञ ये हैं —

ऋषियज्ञं देवयज्ञं भूतयज्ञं च सर्वदा।
नृयज्ञं पितृयज्ञं च यथाशक्ति न हापयेत् ।।

अर्थ—गृहस्थ रोज ऋषियज्ञ, देवयज्ञ, भूतयज्ञ नरयज्ञ और पितृयज्ञ शक्तिके अनुसार करता रहे इनका परित्याग न करे।

अपने २ धर्मग्रन्थोंके पठन पाठन, नित्य क्रिया पूजा पाठआदि करने तथा अपने गुरु और साधु विद्वानोंका भोजनादि करानेका नाम ऋषि यज्ञ है ।। १ ।।

अन्य धर्मके विद्वान् सज्जन बुद्धिमान तथा स्वधर्मके साधु सज्जन तथा सहधर्मी गृहस्थको भोजन कराना अथवा, अपने इष्ट देवके हेतु नित्यकर्म करनेका नाम, देवयज्ञ है ।। २ ।।

गौ, कुत्ता तथा अन्य सब प्रकारके जीवधारिओंकी भोजन आदिसे तृप्ति कराने, तथा स्थावर, शाक, पात, फल, फूल, वृक्ष, आदिके व्यर्थ छेदन न करनेको भूतयज्ञ कहते हैं। ३ ।।

गृह विषय प्राप्त हुये अतिथिको अन्नादिकोंसे संतोष करानेका नाम मनुष्य यज्ञ है ।। ४ ।।

अपने पिता, प्रपिता पितामह, चचा, भाई आदि सब श्रेष्ठ पुरुषोंको भोजन आदिसे नित्य प्रसन्न करने तथा अपने २ नियमानुसार श्राद्ध तर्पणादि करनेका नाम पितृयज्ञ है ।।

करनेवालेको तुच्छ न समझे । यदि मनमें किसी प्रकारकी घृणा अथवा ग्लानि आवेगी तो उसका यज्ञ भ्रष्ट होकर धर्म्म नष्ट हो जायेगा । मनमें कभी न समझे कि, मैं इस अभ्यागत अथवा साधुओंको भोजन कराता हूँ वरन् उसका कृतज्ञ हो कि, उसने कृपाकरके भोजन स्वीकार कर लिया । प्रत्येक धर्मोंके साधु और भूखोंको भोजन देना, सन्मान करना उचित है, उनको भोजन वस्त्रसे सन्तुष्ट करना महान् पुण्य है ।

जैन साहित्यका दृष्टान्त—जैनधर्मकी पुस्तकोंमें लिखा है कि, एक विधवा स्त्री थी, उसके केवल एकही पुत्र था । वह बहुत दरिद्र और दुखिया थी, परिश्रम करके अपना और बच्चेका पोषण करती थी उसका पुत्र सर्वदा उससे कहा करता कि ए माता ! "मुझे एक दिन खीर खिला " वह दुखिया विधवा खीर कहांसे खिलाती ? बहुत दिनोंतक पुत्रको सन्तोष देती रही पर अन्तमें

मित्रों अथवा अन्य संबंधियोंका भी सत्कार करे ।

पाराशर स्मृतिमें पूर्वोक्त यज्ञोंको न करनेवाले पुरुषोंको पापकी प्राप्ति कही है ।

श्लोक – वैश्वदेवविहीना ये आतिथ्येन विवर्जिताः ।
सर्वे ते नरकं यांति काकयोनिं व्रजंति ते ।।
काष्ठभारसहस्रेषु घृतकुंभशतेन च ।
अतिथिर्यस्य भग्नाशस्तस्य होमो निरर्थकः ।।

जो गृहस्थ वैश्वदेव न करते तथा अतिथिको भोजन नहीं देता वह मर करके अथवा जीवित रहनेपर ही अज्ञानता निर्दयता रूप मृत्युको प्राप्त हो करके नरकको प्राप्त होता है वा जीवित रहनेपर भी नाना दुःख कष्ट और लोकनिंदा आदि दुःखोंको प्राप्त होता है जो नरकसे भी अधिक दुखदाई हैं ।

जिन गृहस्थोंके गृहसे अतिथि पुरुष अन्नादिकोंकी प्राप्ति विना निराश होकर चलाजाता है । यदि सहस्रभार काष्ठों तथा घृतके सहस्र कुंडोंसेभी होम करे, पर किंचित मात्र फल नहीं पासकते कोई कितनाहू पुण्य क्यों करे, वेदपाठ, विद्याध्ययन, होम, यज्ञ करे पर यदि भूखा अतिथि द्वारसे फिर जावे तो सब निष्फल हो जाता है ।।

अतिथिका लक्षण पाराशर स्मृतिमें इस प्रकार किया हैं कि—

दूरादुपगतं श्रान्तं वैश्वदेव उपस्थितम् ।
अतिथिं तं विजावीयान्नातिथिः पूर्वमागतः ।।

एक दिन बहुत इच्छुक देखकर, कहींसे दूध, चावल, घी, खाँड़ आदिसामग्रियाँ इकट्ठा करके खीर पकायी। घी खाँड़ डालकर पुत्रके आगे रख दिया। आप किसी कार्य्य वश इधर उधर चली गईं। इतनेहीमें दश दिनका भूखा एक साधु उस लड़केके निकट आकर भोजन माँगने लगा। लड़केने समस्त खीर उस साधुके थालीमें देदी, वह साधु भोजनसे सन्तुष्ट हो अपने आसनपर चला गया वह बालक केवल थाली चाटकर रह गया।

उसी पुण्यके प्रतापसे बालकने एक सेठके घर जन्म पाया। समय पाकर ऐसे अतुल धनका मालिक हुआ कि, उसके बराबर कोई धनी न था। जिस नगरमें वह रहता था वह राजधानी थी, क्योंकि, राजा भी वहांही रहता था। एक समय एक सौदागर वहाँ आया। राजाके दरबारमें जाकर उसने बहुत तरहके जवाहिरात दिखलाये। उसके पास रत्न कमल था वो राजाको दिखलाया। राजाने उसका मूल्य पूछा, उसने लाख रुपया बतलाया। पश्चात् राजाने रानीके पास भेज दिया, रानीने उसको देखकर कहा कि, इसका मूल्य बहुत है। मैं न लूंगी फेर दिया। सौदागर वहाँसे चलकर उस सेठके घर गया। सेठ तो अपने आनन्द भवनमें था पर सौदागरने उसकी विधवा माताके निकट जाकर उपरोक्त रत्न कमल दिखलाया। माता उसको देखकर सौदागरसे बोली कि,

---

चौरो वो यदि चाण्डालः शत्रुर्वा पितृघातकः।
न पृच्छेग्दोत्रचरणे स्वाध्यायं च व्रतानि च।
हृदयं कल्पयेत्तस्मिन्सर्वदेवमयो हि सः॥

जो पुरुष दूर मार्गसे चलके आया हो, थका हो, वैश्वदेव करनेके समय प्राप्त होवे उसको अतिथि कहते हैं। जो अपने पुरोहितादिक पहले वहाँ हों तो वे अतिथि नहीं कहे जा सकते।

वैश्वदेव करनेके समय (भोजन तैयार होनेपर– ब्राह्मणादि सब गृहस्थोंके घरपर, जो कोई भूखा, चोर, चाण्डाल, शत्रु तथा पिताका हनन करनेवाला भी हो, आवे तो उसे अतिथि जानना वो सबका संगम है।

पुरुष अपने गृहमें प्राप्त हुये अतिथिका गोत्र न पूछे, शास्त्रकी वार्ता भी न करे वह पढा है कि मूर्ख है ऐसी बात भी न पूछे। वेदकी शाखा आदि भी न पूछे वरन् ब्रह्मचर्यादि व्रतको भी न पूछे अतिथिको सर्व देवमय अथवा अपना इष्ट देवमय जानकर अन्नादिसे यथायोग्य सत्कार करे॥

इस प्रकार जो गृहस्थ पूर्वोक्त पंचयज्ञोंको न करके केवल अपने उदर भरनेके लियेही अन्नको पकाता है वह पुरुष अन्नरूप पापको खाता है॥

तेरे पास केवल सोलह रत्न कमल हैं मेरी पतोहुआँ बत्तीस हैं, यदि मैं सबको न दूंगी तो जिनको न मिलेगा वह मुझसे दुःखी होंगी। सौदागरने कहा, कि ऐ माता ! यह रत्नकमल जोड़े हैं, एकके दो दो बन जावेंगे। अन्तमें विधवा माताने सब ले लिये एकके दो दो करके अपनी बहुओंको पृथक् पृथक् दे दिये। उन्होंने जब पहने तो उसमें जो जवाहिरात जड़े हुये थे, वे शरीरमें चुभने लगे जिससे कष्ट होने लगा तब उनको उतारकर फेंक दिया। जब बुहारनेवाली आई उसको बुहारनेके समय रत्नकमल मिला। वह उसे पहनकर किसी कामके लिये राजाके महल गई। रानीने पूछा कि, यह रत्नकमल कहांसे पाया ? उसने सेठके घरका सब हाल कहा। रानीने राजासे कहा। राजा सुनकर कहने लगा ऐसा धनवान् शेठ नगरमें रहता है, अब मैं उसकी भेंटको जरूर जाऊँगा। सेठके पास खबर भेजी कि, मैं आपसे मिला चाहता हूँ। मिलनेका समय नियत किया गया। सेठकी माताने राजाके भेंटके लिये सामग्री तैयार की उसका वर्णन बहुत विस्तारसे लिखा है, संक्षेपसे यह है कि, रत्न, मोती तथा सुवर्णके मुहरोंसे किश्तिआँ और नानाप्रकारके नाना देशोंके बनाये हुवे सूती, ऊनी और रेशमी वस्त्र और उत्तम उत्तम घोड़े, हाथी आदि राजाकी भेंटके लिये ठीक किये। राजाके भोजनके लिये नाना प्रकारके व्यञ्जन तैयार कराये। राजाके पधारनेपर सेठके नायब और गुमाश्तोंने राजाकी बड़ी प्रतिष्ठा और आवभगत करके रत्न जड़ित सिंहासनपर बैठाया। फिर सेठसे भेंट हुई, सेठने भली प्रकार आवभगत करके भोजन कराया। संयोगन राजाके हाथकी अँगूठी गिर गई उसकी खोज होने लगी, पर न मिली। यह बात सेठकी माताके कान पहुँची। उसने अँगूठीयोंके दो तीन कूवें खुलवा दिये कहा, कि आपकी जैसी अंगूठी थी वैसीही इसमेंसे खोजके निकाल लो। राजाने अँगूठियोंसे भरे कुवाको देखकर एक अँगूठी निकालकर पहन ली आनन्दपूर्वक राज महल को गया। राजाके चले जानेके बाद सेठने मातासे पूछा कि, यह कौन पुरुष था, माताने कहा कि, बेटा यह देशका राजा है, जिसकी हमलोग सब प्रजा हैं। उस युवकने कहा कि, मुझसे भी जब दूसरा बढ़कर है तो मैं दूसरेके आधीन होकर न रहूँगा। उसके मनमें उसी समय संसारसे बड़ी घृणा उत्पन्न हुई। संसार त्याग देनेका बिचार किया। रात हुई उसकी स्त्री अटारीपर उसके पास गई स्त्रीको देखतेही उसने कहा,—अब तू मेरे पास मत आ, तू मेरी माताके तुल्य है। दूसरे दिन दूसरी स्त्री गई उससे भी ऐसाही कहा। जब उसने इसी प्रकार कई दिनतक किया सब स्त्रियाँ डर गयीं। उसके निकट जाना बन्द कर दिया। यह समाचार सेठकी बहिनके पास पहुँचा

वह सुनकर बहुत शोकित हुई। यह समाचार जिस समय उसके पास पहुँचा वह उस समय अपने पतिके पीछे खड़ी उसे स्नान करवा रही थी। चित्त क्षोभित होनेके कारण आँखसे आँसू टपक कर पतिके पीठपर पड़े जिससे उसके पतिने पीछे फिकर देखा। स्त्रीको रोते देखकर पूछा तू क्यों रोती है। स्त्रीने उत्तर दिया कि, मेरे भाईको वैराग्य उत्पन्न हुआ है वह स्त्रियोंको माता कहकर पुकारता है। यह बात सुनकर उसने कहा तेरा भाई मूर्ख और नीच है, वह बारम्बार अपनी स्त्रियोंको माता क्यों कहता है? एकही बार सबको क्यों नहीं त्याग देता? यह बात सुनकर उसकी स्त्रीने व्यङ्गसे कहा कि, आप उससे भी अच्छे हो? यह बात सुनकर उसके मनमें बड़ी चोट लगी उसी समय वैराग्य उत्पन्न हुआ। हाथमें कमण्डलु ले लँगोटी बाँधकर चल दिया। उसकी अस्सी स्त्रियाँ थीं बड़ा भारी सेठ था, सब स्त्रियोंको एक बार ही माता कहकर सब धन दौलत छोड़ दिया। वहांसे चला २ अपने सालेके पास पहुँचा, उसे पुकारकर कहा कि, ऐ मूर्ख! तूने क्या ढोंग पसारा है? आ नीचे उतर अपनी सब स्त्रियोंको एक बारही माता कह कर त्यागदे मेरे साथ चल। अपने बहनोईके शब्द सुनकर वह नीचे उतरा सबको त्यागकर उसके साथ चल दिया। दोनों बिरक्त हो गये। घरके लोग नानाप्रकार रोते चिल्लाते रह गये। उन्होंने उनकी तरफ कुछ भी ध्यान न दिया सालेसे बहनोई अधिक धनवान् था। जैसा वह धनवान् था वैसाही पूरा संत हुआ, अपने परायोंकी ओर स्वप्नमें भी ध्यान न दिया ईश्वरमें अखण्ड ध्यान लगाकर उसीमें निमग्न हो गया।

इस कथामें जो कुछ हुआ केवल उस खीरकाही प्रताप था, जो उस लड़केने साधुको खिलाई थी। उसीके प्रतापसे पहले ऐसा सेठ हुआ, फिर साधु होकर समाधिष्ठ हुआ, जिससे मुक्तिका भागी बनकर मनुष्य देहको सफल कर लिया।

दूसरा दृष्टांत—एक संत चले जाते थे, उनको एक मनुष्यने नमस्कार करके कहा कि, महाराज! आज आप मेरे घर भोजन करें। साधूने उसका निमन्त्रण मान लिया उसके घर भोजन करने गया। आदमीने साधुका हाथ धुलाकर थोड़ासा अलोना शाक भोजनके लिये दिया। वह बिचारा ऐसा दरिद्र था कि, शाकमें डालनेके लिये निमक भी नहीं पा सका था। साधु अलोना शाक आनन्दपूर्वक खाकर चला। साधुके घरसे बाहर निकलतेही उस श्रद्धालु भक्तके घरमें आकाशसे रत्नोंकी ऐसी वर्षा हुई कि, घर भर गया वह ऐसा धनी होगया कि, नगरके राजाको उसपर ईर्षा आने लगी। राजाने अपने सेवकोंको आज्ञादी कि, साधुको खोज लाओ, हम भी उसको भोजन करावेंगे। राजाके सेवकोंने

साधुको ढूंढ़ना आरम्भ किया उधर राजाने साधुके लिये उत्तम २ भोजन बनानेकी आज्ञा दी। सेवक लोग साधुको बुलाकर ले आये भोजन करनेके लिये बैठाया। साधुको हाथही पर खानेका अभ्यास था, राजाके रसोइयोंने ऐसी गरम २ वस्तु उसके हाथपर रखदी कि, जिससे उनका हाथ जल गया। जिस समय वह साधु भोजन करके राजमहलसे बाहर निकला उसी समय आकाशसे आगकी वृष्टि हुई राजाका समस्त राजमहल जलकर भस्म हो गया। इसमें विचार करनेकी बात है कि, उस दरिद्र दुखियेने प्रेम, शुद्ध अन्तःकरण और सच्ची भाव भक्तिसे साधुको भोजन कराया था, उसको किसी प्रकारकी लौकिक कामना न थी। केवल अपना धर्म्म जानकर उसने भोजन कराया था। राजाने जो कुछ किया सो सच्चे भाव भक्तिके बिना सांसारिक लोभमें पड़कर किया इस कारण दोनोंको फल मिला, वो प्रत्यक्ष है। जो कोई भाव भक्ति सहित भी सांसारिक लोभसे साधु सेवा करता है उसको बहुत थोड़ा फल मिलता है। जो कोई भाव भक्ति बिना कुछ माहात्म्य देख सुनकर, किसी प्रकारकी कामनासे, सेवा करता है उसका फल ठीक उलटा होता है, जैसा कि, राजाको हुवा ॥

रोटी देनेसे हजरत ईसाका भी शाप चला गया—किसी मुसलमानी किताबमें मैंने पढ़ा था कि हजरत ईसा फिरते फिरते एक गाँवमें पहुँचे। उस गाँवके सब लोग उनके पास जमा हो कहने लगे कि, हजरत इस गाँवमें एक धोबी रहता है वह बड़ा दुष्ट है, गाँवभरके लोगोंको बहुत दुख देता है, किसीका कपड़ा फाड़ लेता है, किसीका चुराही लेता है, किसीका बदलाही लेता है, लोग उससे अत्यन्त दुःखी हैं गाँवके लोगोंकी यह बात सुनकर हजरतके मुखसे यह बात निकल गई कि, वह धोबी घाटसे जीवित न आवेगा, वहाँही मर जावेगा। उधर धोबीके भोजन करनेका समय हुआ, तब उसके तीन रोटी गईं। धोबीने हाथ, पैर धोकर रोटी खाना चाहा। इतनेहीमें एक फकीर आकर खड़ा हुआ, खानेको माँगने लगा। धोबीको दया आगई उसने एक रोटी उठाकर फकीरको दे दी। उस फकीरने रोटी खाकर आशीर्वाद दिया कि, तेरा अन्तःकरण शुद्ध होजा। धोबीने दूसरी रोटी भी फ़कीरको दे दी, उस फ़कीरने रोटी लेकर कहा कि, तुझे ईश्वर अचानककी आपत्तियोंसे बचावे फिर धोबीने तीसरी रोटी भी देदी, तो फकीरने आशीर्वाद दिया कि, खुदा तुझे स्वर्गमें एक कोठरी दे। ये तीनों बात कहकर वह फकीर तो चला गया। सन्ध्या होते ही धोबी अपने घर आया। उसे घर आया देख सब लोग हजरत ईसाके पास जाकर कहने लगे कि, या हजरत! यह धोबी तो सही सलामत जीता जागता घरको आया, आपके वचन

झूठे हुये। हजरत ईसाने अपनी अन्तरदृष्टिसे देखकर लोगोंसे कहा कि, उस धोबीकी गठरी खोलो। लोगोंने गठरी खोली तो उनमेंसे एक बड़ा विषैला साँप निकल पड़ा। हजरत ईसाने लोगोंसे कहा कि, यदि यह विषैला साँप धोबीको काट लेता तो यह धोबी शीघ्रही मर जाता। जिस समय मैंने लोगोंसे कहा था कि, धोबी घाट परसे जीवित नहीं आवेगा, उसी समय साँपको आज्ञा हुई थी कि इसको काटले, किन्तु धोबीने उस समय ऐसी उदारता और पुण्य किया कि, जिसके कारण इसके प्राण बच गये इसने अपने खानेकी रोटी एक कामिल फकीर पूर्ण महात्माको देदी। इसने पहली रोटी दी थी, तो फकीरने इसके अन्तःकरण शुद्ध होनेका आशीर्वाद दिया था। दूसरी रोटी फकीरने पाई थी तब कहा था कि, तुझे ईश्वर अचानक आपत्तियोंसे बचावे, फकीरने इतना कहा उसी समय साँपके मुंहपर मुहर लग गई। साँप काट नहीं सका। फकीरने तीसरी रोटी खाकर उसे स्वर्गमें स्थान मिलनेका आशिर्वाद दिया अब उस धोबीका अन्तःकरण शुद्ध हो गया, वह किसी प्रकारकी दुष्टता न करेगा। वह स्वर्गीय होगया है इस कारण, नरकियोंके समान दुष्ट व्यवहार न करेगा। उसी समय धोबी शुद्ध अन्तः-करण हो सदाचारी बन गया। फकीरको केवल तीन रोटी देनेसे धोबी मृत्युके मुखसे निकल कर स्वर्गका भागी हुआ।

लंगोटी देनेसे चीर बढ़ा—महाराणी द्रौपदीने दुर्वासा ऋषिको एक लंगोटीदी थी, जिसके कारण उनका वस्त्र इतना बढा कि, दुःशासन जैसा पहलवान भी खींचते २ थक गया, कपड़ोंका ढेर लग गया पर वह कम नहीं हुआ और महारानीकी प्रतिष्ठा रह गई।

सहन शीलता और धैर्य्य।

साधु लोग जो दुःख उठाते हैं, उनका वर्णन कौन कर सकता है? देखो ग्रीष्म ऋतुमें जब कठिन धूप पड़ती है, उस समय पाँच अथवा चौरासी धुनी लगाकर तापते हैं। ऊपरसे सूर्यकी गरमी, नीचेसे पृथिवीकी तपन, चारों ओरसे अग्नीकी लू लगती है पर वे दृढ़ होते हैं कि, उससे तब तक हटना नहीं जानते जब तक कि, अग्नी न बुझ जावे। इसी प्रकार शरद कालमें जब कि, शर्दीके मारे दाँतोंसे दाँत बजते हैं उस समय पानीमें घुस जाते हैं। माघ पौषके महीनेमें पानीमें नङ्गे बैठे रहते हैं। प्राण जायँ तो जायँ पर अपनी टेकको नहीं छोड़ते। कोई उलटा लटक कर अग्निझप लेता है, कङ्कडोंपर लेटा रहता है, कोई बाण शय्या बनाकर सोता है, कोई मौन धारण करता है, कोई ठाढ़ेश्वरी बनता है, कोई दिन रात एक पगसे खड़ा होकर भजन करता है, कोई प्राणायाम और

योगमें मग्न रहता है, कोई षट्कर्म करता है कोई षट्चक्र वेधकर त्रिकुटीमें ध्यान लगाता है, सहस्रदल कमलमें जा समाता है।

तप और भजनकी बहुतसी रीतियाँ हैं, उनका कौन बयान कर सकता है ? सब मतोंके साधु जो दुःख कष्ट भजनमें उठाते हैं, उससे उनका अन्तःकरण शुद्ध हो अनन्त सूर्य्यके समान प्रकाशमान हो जाता है, त्रिकालज्ञ हो जाते हैं, गुप्त सब भेद प्रगट हो जाते हैं। ऐसे पुण्यरूप महात्माओंको प्राकृतिक लोग दुःख कष्ट देते हैं। उनकी निन्दा करते हुए गालियाँ सुनाते हैं। वे महात्मा सब दुःखोंको धैर्य्यके साथ सह लेते हैं, कभी क्रोध नहीं करते, मूर्ख लोग दो चार पुस्तकें अथवा इधर उधरकी दो चार बातें, दो चार भजन साखी शब्द सीखकर उनसे बाद विवाद करके दुःख देनेका प्रयत्न करते हैं। इसपर एक दृष्टान्त लिखता हूँ।

सिद्ध महात्मा और विद्याभिमानी—एक नगरमें फिरते २ एक साधु आये। बहुतसे नगरवासी उनके दर्शन करनेको आने लगे, उन लोगोंके साथ एक युवक विद्याभिमानी ब्राह्मण भी आया। अपनी विद्याके अभिमानसे साधुके साथ, वाद विवाद करने लगा। उसने कहा मेरे साथ शास्त्रार्थ करो। तब उसने कहाकि, तुम कहाँसे आये हो ? ब्राह्मणने उत्तर दिया—मैं इसी नगरसे आया हूँ। साधूने कहा, इसके प्रथम कहाँसे आये ? उसने उत्तर दिया कि, मेरा जन्म तो इसी नगरका है। सन्तने कहा तुम्हें कुछ सुधि नहीं। तुम पहले जन्म गीदड़ थे अब ब्राह्मणके शरीरमें आये हो जब तुम गीदड़ थे उस समय वर्षा होनेके कारण किसी कुम्हारके घरमें जा छिपे, वह किसी नाजके खानेसे तुम्हारा पेट फूल गया तुम मर गये कुम्हारने तुम्हें अपना हानिकारक जानकर खाल खींच ली वह खाल अभी तक उसके घरमें लटक रही है वह कुम्हार भी जीवित है।

इतना सुनकर कितनेक लोगोंने कुम्हारके घर जाकर देखा तो साधुके वचनमें तनिक भी विभिन्नता न पाई। इस बातसे उस ब्राह्मण पुत्रको बड़ी लज्जा आई अपनी प्रतिष्ठा भङ्ग होते देख मनमें निश्चय कर लिया कि इस साधुका शिर अवश्य ही काट लूंगा। अर्द्धरात्रि होने पर एक तलवार ले नगरके बाहर उजाड़में पहुँचा जहां कि साधु ठहरा हुआ था। साधुके निकट पहुँजकर साधुको मारनेको ज्योंही तलवार उठाई त्योंही हाथ उठाये हुये पत्थरके समान रह गया। उसी प्रकार खड़े खड़े सबेरा हो गया। लोग साधुके दरशनको आने लगे लोगोंने देखा कि, वह ब्राह्मण पुत्र साधुके शिरपर नङ्गी तलवार लिये खड़ा है। यह देखकर बहुत आश्चर्यमें हुये ब्राह्मणपुत्रको बुलाने लगे पर वह न बोल सका।

फिर सबने साधुसे कहा कि महाराज! अपराध क्षमा करो। तब साधूने कहा कि, मैंने न तो इसपर क्रोध किया, न शाप दिया, न इसका कुछ बुरा चाहा। लोगोंने बहुत विन्ती की तो साधुने उच्चस्वरसे पुकार कर कहा कि, मैंने तो इस ब्राह्मण पुत्रको कुछ दुःख नहीं दिया, यदि किसी देवताने इसको कील दिया हो तो अब छोड़ दो इसका अपराध क्षमा करें। इसपर आकाशवाणी हुई कि। साधुके कहनेसे मैं इस ब्राह्मणपुत्रको छोड़ता हूँ। नहीं तो इसको यहाँही सुखाकर मार डालता। ये केवल साधुके रक्षक देवताने जब ऐसा कहा तो ब्राह्मण पुत्रका बन्धन छूट गया। सचेत होकर साधुके चरणोंपर पड़ा उसका शिष्य हो गया। लोग साधुको धन्य धन्य करने लगे।

मूर्खलोग सन्तोंकी बहुत निन्दा और ठट्ठा किया करते हैं पर सच्चे सन्त अपने भजन भक्तीको नहीं छोडते ईश्वरकी कृपा का भरोसा रख कर भजन करतेही रहते हैं। कुत्तोंके भूँकनेसे सन्तोंके भाग्यमें घटी नहीं होती, जिस विश्वम्भर ने मातृगर्भमें पालन किया, माताके स्तनोंमें दूध भर दिया, उस पर विश्वास करना ही योग्य है।

विश्वास अङ्गकी साखी।

कबीर – भू भूख तू क्या करे, कहा सुनावे लोग।
भांड़ा गढ़ जिन मुख दिया, सोई भरने योग॥

कबीर – रचनहारको चीन्हले, खाने को कहँ रोय।
दिल मंदिरमें बैठिके, तान पछौरा सोय॥

कबीर – सिर्जनहारा सिर्जिया, आटा पानी लौन।
देनेहारा देत है, मेटनहारा, कौन॥

कबीर – चिंता मतकर अचित रह, देनहार समरत्थ।
पशूपखेरू जीव सब, तिनके गांठ न ग्रत्थ॥

कबीर – अण्डा पाले काछुई, थन बिन राखे पोक।
यों करता सब्रको करे, पाले तीनों लोक॥

कबीर – जाके मन विश्वास है, सदा गुरु तेहिं सङ्ग।
कोटि काल झकझोरही, तऊ न होय चित भङ्ग॥

कबीर – घटमें ज्योति अनूप है, रिज्क मौत जिव साथ॥
कहा सार है मनुष्यकी, कलम् धनीके हाथ॥

कबीर – जाके दिलमें हरि बसे, सो जन कलपे काहि॥
एकै लहर समुद्रकी, दुख दरिद्र सब जाहि॥

कबीर – आगे पीछे हरि खड़ा, आप सहारे भार ।
जनको दुनिया क्यों करे ? समरथ सिर्जनहार ।।
कबीर – सबजन निर्धन जानिये, धनवन्ता नहिं कोय ।
धनवन्ता सोइ जानिये, राम नाम धन होय ।।
कबीर – देने हारा राम है, जाय जङ्गलमें बैठ ।
हरिको लेई ऊबरे, सात पताले पैठ ।।
कबीर – अर्द्ध शीश उद्ध्वं चरण, यह पिछली तकसीर ।
कुम्भी नरक पठाइया, जड़िया भरम जंजीर ।।
कबीर – नर नारायण रूप है, तू मत जाने देह ।
जो समझे तो समझ ले, खलक पलकमें खेह ।।

साधु महात्म्य अङ्गकी साखी ।

कबीर – साधू आवत देखिके, चरणन लागो धाय ।
क्या जाने किहि भेषमें, हरिही जो मिल जाय ।।
कबीर – साधू आवत देखिके, हँसी हमारी देह ।
माथेका ग्रह ऊतरा, नयनों बँधा सनेह ।।
कबीर – साधू आवत देखिके, मनमें करें मरोर ।
सो तो होंगे चूहड़े, बसें गाँवके छोर ।।
कबीर – आवत साधु न हरषिया, जात न दीया रोय ।
कहै कबीर ता दासकी, मुक्ति कहाँसे होय ।।
कबीर – छाजन भोजन प्रीतिसे, दीजे साधु बुलाय ।
जीवत यश हो जगतमें, मुये परम् पद पाय ।।
कबीर – हों साधुनके सङ्ग रहुँ, अन्त न कितहूँ जाउँ ।
जो मोहिं अरपे प्रीतिसे, साधुन मुख होय खाउँ ।।
कबीर – साधु नदी जल प्रेमरस, तेहि परछाले अङ्ग ।
कहै कबीर निरमल भया, साधू जनके सङ्ग ।।
कबीर – साधु मिले तो हरि मिले, अन्तर रही न रेख ।
मनसा वाचा कर्मना, साधू आप अलेख ।।
कबीर – निराकारकी आरसी, साधुनही की देह ।
लखा जो चाहे अलख को, इनहीमें लखि लेह ।।
कबीर – साधुनहीकी दयाते, उपजे बहुत अनन्द ।
कोटि विघ्न पलमें टरे, मिटे सकल दुख द्वन्द ।।

कबीर – हरि दरबारी साधु हैं, इनते सब कछु होय ।
लेइं मिलावें रामको, इन्हें मिले जो कोय ।।
कबीर – साधू खोजा रामके, धसें जो महलन माहिं ।
औरनको परदा लगे, इनको परदा नाहिं ।।
कबीर – गिरीही सेवें साधुको, साधू सेवें राम ।
यामें धोखा कछु नहीं, सरे दुनोंका काम ।।
कबीर – जो घर साधु न सेव है, पारब्रह्मपति नाहिं ।
सो घर मरघट सारखा, भूत बसे ता माहिं ।।
कबीर – हयवर गजवर शबन धन, छत्रपतीकी नारि ।
सोऊ पटन्तर नातुले, हरि जनकी पनिहारि ।।
कबीर – साधुनकी कुतिया भली, बुरी साकठकी माइ ।
वह बैठी हरियश सुने, वह निन्दा करने जाइ ।।
कबीर – सोई कुल जगमें भला, जा कुल उपजे दास ।
जा कुल दास न ऊपजे, सो कुल ढाक पलास ।।
कबीर – साधु वृक्ष हरिनाम फल, शीतल शब्द विचार ।
साधु न होते जगतमें, जल मरता संसार ।।
कबीर – साधु सिद्धकी एक मति, साधु महा परचण्ड ।
सिद्ध तारे तन आपना, साधु तारे नवखण्ड ।।
कबीर – हरि सेती हरिजन, बड़े, समझ देखु मनमाहिं ।
कहें कबीर जग हरिविषे, सो हरि हरि जन माहिं ।।
कबीर – सन्त बड़े संसारमें, हरिते अधिक हैं सोय ।
बिन इच्छा पूरण करें, साहब हरि नहिं दोय ।।
कबीर – दरशन होवे साधुका, साहब आवे याद ।
लेखे सो दिन धारिये, बाकीका सब वाद ।।

अथ गुरु दर्शन विधि ।

कबीर – दरशन कीजे गुरुका, दिनमें कई एक बार ।
आसूयाका मेह ज्यों, बहुत करे उपकार ।।
कबीर – कई बार न होइ सके, दोय वक्त कर लेइ ।
सद्गुरु दरशनके किये, काल दगा नहिं देइ ।।
कबीर – दोय वक्त ना हो सके, दिनमें करै इकबार ।
सद्गुरु दरशनके किये, उतरे भवजल पार ।।

कबीर – एक दिना नहिं करिसके, दूजे दिन करि लेहि ।
सद्गुरु दरशनके किये, पावे उत्तम देहि ।।
कबीर – दूजे दिन ना करि सके, चौथे दिन कर जाय ।
सद्गुरु दरशनके किये, मोक्ष मूक्ति फल पाय ।।
कबीर – बार बार ना करि सके, पक्षे पक्ष करे सोय ।
कहैं कबीर ता दासका, जन्म सुफलही होय ।।
कबीर – पक्षे पक्ष ना करि सके, मास मास कर धाय ।
यामें भेद न कीजिये, कहैं कबीर समझाय ।।
कबीर – मास मास ना करि सके, छठे मास अलबत्त ।
यामें ढील न कीजिये, कहैं कबीर अविगत्त ।।
कबीर – छठे मास ना करि सके, बरस दिना करि लेहि ।
कहैं कबीर सो सन्त जन, यमहिं चुनौती देहि ।।
कबीर – बरष बरष नाकरि सके, ताको लागे दोष ।
कहैं कबीर वा जीव सो, कबहुँ न पावे मोक्ष ।।
कबीर – माता पिता सुत स्त्री, बन्धु कुटुम्बको जान ।
गुरु दरशनको जब चले, ये अटकावें आन ।।
कबीर – उनका अटका ना रहे, गुरु दरशनको जाय ।
कहैं कबीर सो सन्त जन, मोक्ष मुक्ति फल पाय ।।
कबीर – खाली साधु न विदाकर, सुनि लीजे सब कोय ।
कहैं कबीरा भेंट धर, जो तेरे घर होय ।।
कबीर – मुहर रुपया पैसा, कपड़ा बासन देइ ।
कहैं कबीर सों जगतमें, जन्म सुफल करि लेइ ।।
कबीर – निराकार निज रूप है, प्रेम प्रीतिसे सेव ।
जो चाहे आकारको, साधू प्रत्यक्ष देव ।।
कबीर – जा सुखको मुनिवर रमे, सुर नर करें मिलाप ।
सो सुख सहजें पाइये, सन्तों सङ्गति आप ।।
कबीर – कोटि कोटि तीरथ करे, कोटि कोटि करे धाम ।
जब लगि सन्त न सेवई, तब लगि सरे न काम ।।
कबीर – आशा बासा सन्तका, ब्रह्मा लखे न वेद ।
षट् दर्शन खटपट करें, बिरला पावे भेद ।।

कबीर – गुरु भये है, केतकी, भँवर भये सब दास ।
जहँ जहँ भक्ति कबीरकी, तहँ तहँ मुक्ति निरास ।।

सार – कहांतक लिखूं, ? सन्तोंकी महिमासे समस्त स्वसम्वेद भरा हुआ है । कबीर साहब सर्वदासे पुकारते आते हैं कि, हे संसारियो ! साधुसेवाके विना तुम्हारा कल्याण न होगा । संसारमें ही फँसे रहकर आज्ञानमें पडे रहोगे । यह सारा संसार मृतक है, सन्त इसको जीवन प्रदान करते हैं, तब चैतन्य होता है । मुर्देके कान तो होते हैं पर सुनता नहीं, आँख होती हैं पर देखता नहीं, इसी प्रकार उसकी सब इन्द्रियाँ तुच्छ और बोझरूप हैं । विद्याऽभिमानियोंकी भक्ति और उदारता सन्तोंकी निन्दा करनेसे लोप हो गई । इस कलियुगमें लोग प्रायः सुकर्म्म से भागकर पापकी ओर जाते हैं ।

कबीर – यहि कलियुग आयो अबै, साधु न माने कोय ।
कामी क्रोधी मसखरा, तिनकी पूजा होय ।।

बुल्लेशाह – बुल्ला जिन्दा पढ़िया अल्लिफ बे । वे क्या जाने हथ्थो दे ।

संसारी सर्वदा व्यवहारके चक्रमें पड़ा रहता है, जैसे राजा, धनीसेठ, साहूकार, वैसेही मजदूर, परिश्रमी, दरिद्र, दुखिया आदि सब सांसारिक व्यवहारमें लगे रहते हैं । व्यवहारिक प्रवृत्तीमें यह विचार नहीं रहता कि, सत्सङ्ग करके अपना कल्याण करें ।

फकीर और शेखफरीदुद्दीन – एक दिन एक फकीर उक्त अत्तारसे मिलने को गया चाहा कि, कुछ बातें करें पर अत्तार साहब अपनी दूकानके कार्य्यमें ऐसे निमग्न थे और इतनी भीड़ लगी हुई थी कि, इतनाभी समय न मिला जो उससे बातचीत भी कर सकें सबेरेसे शाम होगयी पर अत्तार साहब उस फकीरसे वार्तालाप न कर सके । सन्ध्याको फकीरने अत्तार साहबसे कहा कि, तुमको क्षणमात्र भी अवकाश नहीं मिलता, व्यवहारमें ऐसे नमिग्न हो कि, कुछ लोक परलोककी भी सुधि नहीं, किस प्रकार तुम्हारा प्राण निकलेगा ? । इतना सुनकर फरीदुद्दीन अत्तार साहबको बहुत क्रोध आया झिडककर फकीरसे कहा कि, तेरी जान कैसे निकलेगी ? वह फकीर इतना सुनतेही दूकानके नीचे कम्मल और प्याला रखकर वहीं लेटकर मर गया । फरीदुद्दीन अत्तारने यह हाल देखा तो उनके मनमें संसारसे बहुत वैराग्य और घृणा उत्पन्न हुई । अत्तारीकी दूकान छोड़कर फकीर होगये, फकीरीमें पूर्णता प्राप्त की बड़े प्रसि हुये ये भी शेख मन्सूरके समान (११४ वर्षकी अवस्थामें) बसरामें कत्ल किये गये ।

मुहम्मदसाहिबके कार्य्य – योरोपके लोग नानाप्रकारकी युक्तियाँ करके

भारत वर्षसे द्रव्य ले गये और ले जाते हैं । इससे सांसारिक विषय वासना राग भोगमें पड़कर परलोकको एकदम भुला दिया है दिन दिन सांसारिक व्यवहारमें निमग्न होते जाते हैं । भजन भक्तिका अथवा पारलौकिक विचारका स्वप्नमें भी ध्यान नहीं करते । आशा, तृष्णा और सांसारिक कामनाओंमें ऐसे फँसे हुये हैं कि, दिनरात इन्ही चिन्ताओंमें चक्कर खाया करते हैं कि, किस प्रकारसे धन, दौलत और मान, बड़ाई, प्राप्त हो । योरपवालोंमेंसे कोई भी भजन तपस्या और ईश्वर स्मरणमें लगा हुवा नहीं देख पड़ता । उनका उद्धार होना बहुत कठिन है क्योंकि, मायाके चाहनेवाले जगतसे प्रेम करनेवाले संसारमेंही रहेंगे, उनका कभी बन्धन न छूटेगा । परमात्माकी दीन दुखियोंपर असीम कृपा होती है । हजरत ईसाने कहा है कि, ऊँटका सूईके छिद्रसे निकल जाना सहज है, पर एक धनाभिमानीका मोक्ष पाना कठिन है । महम्मद साहबके समयसें पहले जब पुस्तकावलोकनका बहुत प्रचार हुआ तो उनके समयमें बहुत किताब जलाई गई थी क्यों कि, वह समझते थे कितावोंके बहुत पढ़नेसे भजन भक्ति नष्ट हो जाती है । उसी समय बुत्तपरस्ती जादूगरी, रमल, ज्योतिष, यंत्र, मंत्र आदिका बहुत प्रचार बढ़ गया था, विज्ञानकी भी बहुत चर्चा थी, पर महम्मद साहबने अरबमें उन सब बातोंका खण्डन करके मनुष्योंको रोजा निमाज सिखलाया भजन बन्दगीमें लगाया ।

विना पढ़े ज्ञानी – अब मैं उन महात्माओंका वर्णन करता हूं, जिन्होंने एक अक्षर भी नहीं पढ़ा है केवल एक परमात्माके नामका स्मरण करके दिनरात उसीमें निमग्न हो अपने भजनको पूरा किया है । उनकी सच्ची भक्ति देखकर सद्गुरु कबीर बन्दीछोर मिलता है । जिनको साहब नहीं मिलता वे सिद्धियोंको प्राप्त कर लेते हैं। जिनपर सद्गुरुकी कृपादृष्टि हुई उनका कार्य पूरा हुआ, वे लोग पुस्तकोंके कीड़ोंको नहीं चाहते, न उनको उपदेशके योग्य ही समझते हैं । जिस प्रकार काग़जके कीड़े काग़ज कोही खाते और उसीमें रहते हैं उसी प्रकार विद्याऽभिमानी लोग पुस्तकोंको चाटते रहते हैं बात बात पर बाणी और पुस्तकोंकाही आधार लेते हैं ।

नामके स्मरण करनेवालोंको आवश्यक है कि, पढ़ने लिखनेसे निवृत्त हो जावें । काम पड़नेपर पुस्तक देखना जरूर चाहिये पर अपना सब समय उसीमें लगा देनेसे भजन नहीं हो सकता । केवल नामकोही दिन रात ध्यान करता रहै क्योंकि, नामके अतिरिक्त जो कुछ हैं वह सब मायिक और तुच्छ हैं, अन्धकारमें डालनेवाला है । यदि नीच घरका भी भोजन करके भजनमें लगा रहे, ईश्वरमें सच्चा प्रेम करे, गुरुमें सच्ची भक्ति रखे तो उसके समान राजा इन्द्र भी नहीं,

इन्द्र उसके आगे दरिद्र और तुच्छ है। यदि खानेको नाज न मिले, जौकी भूसी और साग पात खाकर भजन करे, तो भी सारे संसारके पदार्थोंसे वैराग्य और अनाशक्ति धारण करे। जो कोई भजनानन्दी बनना चाहता है भक्ति प्राप्त करनेकी अभिलाषा रखता है, वह अपने कामके बिना अन्य पुस्तकोंका देखना छोड़ दे। यदि पहले नाना विषयोंकी पुस्तकोंको पढ़ा हो तो उनको भी एकदम भुला दे। जबतक मनसे लौकिक पारलौकिक सब प्रकारकी वासनाओंको नष्ट करके भजनमें न लगेगा, तबतक भजनका यथार्थ आनन्द नहीं मिल सकता। एक ईश्वर भक्तिके बिना जो कुछ लिखना पढ़ना है वो सब शत्रु तुल्य हैं।

साखी कबीर साहबकी।

कबीर – मैं जानूँ पढिबो भलो, पढिवे ते भल योग।
भक्ति न छाड़ूं रामकी, भावे निन्दे लोग॥

कबीर – लिखना पढ़ना चातुरी, यह संसारी जेब।
जिस पढ़ने सो पाइये, वह पढ़ना किसे नसीब॥

कबीर – पढ़ते पढ़ते पढ़ गये, कर गये टट्टी चोर।
जिस पढ़ने से हरि मिलें, वह पढ़ना कछु और॥

कबीर – बहुत पढ़ना दूर कर, अति पढ़ता संसार।
पेड न उपजे प्रेमकी, क्यों पावे करतार॥

कबीर – पढ़ना दूर करि, पुस्तक देउ बहाय।
बावन अक्षर प्रेमके, राम नाम लौ लाय॥

कबीर – धरती अम्बर ना हता, कौनसा पण्डित पास।
कौन मुहूरत थापिया, चाँद सूर्य आकाश॥

कबीर – पण्डित बोरिया पत्रा, क़ाज़ी छाड़ि कुरान।
वह तारीख बताइये, थाना जमी असमान॥

सार – जो कोई भक्ति करना चाहता है वह व्यर्थका पढ़ना लिखना छोड़ कर भजनमें लग जाये। यदि कुछ पढ़नेकी इच्छा भी हो तो एक अल्लिफ अथवा–अ–पढ़ ले और कुछ न पढ़े। यदि इतनेमें भी सन्तोष न हो तो अपने धर्म्म गुरुके ग्रन्थोंको पढ़े, पेटके लिये कुछ भी चिन्ता न करे, साहब आपही पेटकी चिन्ता कर लेगा, मनुष्य अपने भजनमें चूक न करे।

शब्द – साधु भाई खेती करो, हरि नामकी॥
रुपया न लागे पैसा न लागे, कौड़ी न लागे छदामकी।
तन मन बैल सुरति हरवाहा, रई लागो गुरु ज्ञानकी॥

आस पास सन्तनको डेरा, मँडैया श्रीरामकी ।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, बलिहारी वहि नामकी ।।

बहुत भाषाओंका सीखना बोलना वैसाही है, जैसा कि, बहुतसे पशु पक्षी, एक दूसरे पशु पक्षी, अथवा मनुष्यकी बोली बोलना सीख लेते हैं । बहुत भाषा सीखनेसे मनुष्यकी कुछ बड़ाई नहीं, मैना, तोता आदि पक्षी बहुत प्रकारकी भाषा बोलते हैं, वैसेही आदमी अरबी, फारसी, अंग्रेजी, तुर्की, इब्रानी, संस्कृत आदि भाषाओंको सीख लेते हैं, इससे उनकी कुछ अधिकता नहीं हो जाती । जिसने भजन भक्तिका आनन्द पाया उसके सामने त्रिलोकीको सब बातें तुच्छ हैं ।

जैसे सन्तोंमें वैसेही गृहस्थोंमें भी ऐसे २ सुकृतिजन हुये हैं कि, जो अपने दान, पुण्य, योग, यज्ञ, विवेक, वैराग्य, तपस्या और भक्ति आदिसे इन्द्रको भी दास बना लिया है । उनके न्याय और उदारताकी कथा बहुत प्रसिद्ध है। मैंने एक किताबमें पढ़ा था कि, एक अपढ राजा एक पढ़े हुये शत्रु राजाके वश होगया । शत्रुने राजासे कहा कि, तू कानूनके अनुसार न्याय नहीं करता। उन अनपढ़ राजाने उत्तर दिया कि, मैं स्वयं कानूनका मूल हूं; मुझे आईन कानूकी कुछ आवश्यकता नहीं । इस प्रकार साधु विरक्त अथवा गृहस्थ दोनोंमेंसे जो अपनी सुकृतीको पूर्ण करेगा, अपना कर्तव्य न भूलेगा वह प्रतिष्ठित होगा । उसके लोक परलोक दोनों सुधरेंगे । पढ़नेसे क्या लाभ ? यदि पढ़ेके अनुसार कर्म्म नहीं किया तो सब पढ़ना लिखना व्यर्थ है । परमात्माने जिनको स्वाभाविक गुण प्रदान किये हैं उसको बनावटकी क्या आवश्यकता है ?

गो यह मत ना पसन्द खातिर हो । वनजर पेश सन्त शातिर हो ।।
मेरी गुफ़तार खूबसो समझें । या ब हजरत हुजूर फातिर हो ।।१।।

अध्याय २१.

जीवका वर्णन

जीवके पक्केतत्त्व – स्वसम्वेदका कथन है कि, पहले जीव अपने सत्य स्वरूपमें था, उसकी सत्य स्वरूपी देह थी, पिण्ड और ब्रह्माण्ड ये दोनों सत्यस्वरूप और पक्के थे, पांच पक्के तत्त्व और तीन गुण थे। धैर्य, दया, शील, विचार और सत्य, ये तो पक्के पांच तत्व कहलाते हैं विवेक, वैराग्य, गुरुभक्ति साधुभाव ये तीन गुण थे । इन्ही पांच तत्वोंके और तीन गुणोंकी हंसाकी देह थी । इस जीवका प्रकाश और स्वभाव अद्वितीय था ।

कच्चे होना।

जब इसने अपनी सुन्दरताका विचार किया तो इसको बड़ा आनन्द प्राप्त हुआ यह आनन्दमें निमग्न हो गया। अपने शरीरकी भी सुधि जाती रही। अपनी देहकी सुधि भूलनेसे असली देह पलट गई, पक्कीसे कच्ची हो गई। तत्व प्रकृति सब बदल गये, अर्थात् धैर्य्यसे आकाश उत्पन्न हो गया। शीलसे अग्नि, विचारसे जल, दयासे वायु और सत्यसे पृथिवी हो गई। इसी तरह पक्के गुणोंसे कच्चे गुण होगये, फिर तो पच्चीस प्रकृति आदि कच्चे आकारका प्रादुर्भाव हुआ। जीवको कच्ची देह मिलतेही भ्रममें पड़ गया। इसी भ्रमको धारण करके वेद शास्त्र आदि वर्णित सच्चिदानन्द कैवल्य भूमिपर अधिष्ठित होकर सारे संसारका अधिष्ठाता एवं हर्त्ता कर्त्ता और स्वामी हुआ।

मायासे संयोग – जिस समय देहकी ज्योति प्रभाव और प्रकाशको देखकर आनन्दमें बसुध होनेके बाद फिर सचेत होतेही इसने आँख उठाकर देखा। दृष्टिसे देखतेही इसे अपनी छाया शून्यमें देख पड़ी, वही स्त्री स्वरूप होकर इसके निकट आई दोनोंका संयोग हुआ इसीको माया और ब्रह्म का संयोग कहते हैं, इसीसे समस्त संसारकी रचना हुई, इसी सच्चिदानन्द ब्रह्मकी समस्त संसारमें पूजा और भक्ति होती है।

पतन – जीवसे अहंकार उत्पन्न हुआ यह जानने लगा कि, सब मैंही हूँ। फिर स्वाभाविक "एकोऽहं बहुस्याम्" की फुरना उठी, इसी ब्रह्म सच्चिदानंदकी बात सब वेद शास्त्र, किताब, कुरान आदि करते हैं पर इसके यथार्थ स्वरूपको स्वसम्वेदके अतिरिक्त दूसरा कोई भी नहीं जानता। यह सच्चिदानन्द ब्रह्म स्वयं बन्धनमें है। जबसे यह जीव अपने सत्य स्वरूपसे गिरा तबसे बहुत प्रकारके स्वरूप पाये और इसकी अवन्नति ही होती गई जबसे इसको अहं फुरता है तभीसे यह नीचेकी ओर गिरता जाता है। जबसे यह सूक्ष्मसे स्थूल देहमें आया, तबसे अनन्त भ्रममें पड़ गया उसी अवस्थामें वेद किताब ग्रन्थ आदि वाणी बनायी, जिनका कि, कुछ पारावारही नहीं। जब सर्वोत्कृष्ट मनुष्य शरीरको प्राप्त हुआ, तो नाना प्रकारके मत मतान्तरोंकी स्थापना की। ब्रह्म, जीव, माया, सब कुछ ठहराया। योग समाधि और नवधा भक्ति आदि नानाप्रकारके उपाय और युक्तियोंसे इसी ब्रह्मके पदको प्राप्त करता है, फिर नीचे गिर जाता है। जब कभी भाग्य उदय होता है. सद्गुरु पर पूर्ण श्रद्धा होती है तब सत्यगुरुकी दया होती है। तभी यह सत्य पन्थका अधिकारी होता है उसी समय यह ज्ञान प्राप्तकर इस ब्रह्म सच्चिदानन्दसे सम्बन्ध छोड़ सत्य पदको प्राप्त हो सर्वदाके लिये आवागमनका सम्बन्ध नाशकर, सच्चे आनन्दके पदपर स्थित होता है।

इसी सच्चिदानन्द ब्रह्मको समस्त संसार कथा करता है, सारा संसार इसीमें उत्पन्न होता, स्थित रहता और नाश हो जाता है। यह सच्चिदानन्द इस जीवका केवल भ्रम मात्र है, यह जीव भ्रमकोही ब्रह्म मानकर उसकी भक्ति और पूजा करता है। इसीके भ्रमने इसको अन्धा कर रखा है । सच्चे सन्त और गुरुकी सेवा विना इसका छुटकरा होना असम्भव है; जैसे कस्तूरी मृग, अपनी कस्तूरीके सुगन्धको दूसरे पदार्थोंमें जानकर इधर उधर घासोंको सूँघता फिरता है, महान कष्ट उठाता है, पर जबतक अपनी कस्तूरीको नहीं पहचानता तब तक वैसेही घूमा करता है ।

उन्नति और अवनतिके कारण – जब यह एकसे अनेक होता है तब अज्ञानी हो जाता है, जब अद्वैतकी ओर मुख फेरता है आत्मज्ञानके लिये प्रयत्न करता है, तो इसमें ज्ञानका प्रकाश आजाता है संसार लय हो जाता है. क्योंकि, जिसकी ओर ध्यान न होगा वह अवश्यही नाश हो जावेगा । सन्त लोग इसी कारण बाहर की वृत्तियोंका निरोधकर अन्तरमुखी वृत्ति करलेते हैं । जिस प्रकार कछुआ अपने हाथ पाँवको समेटकर एक जगह बैठ जाता है, उसी प्रकार सन्त लोग अपनी वासनाओंका निरोधकर ब्रह्मपदमें बैठ जाते हैं समय पाकर कछुआके समान हाथ पाँवोंको बाहर निकालते हैं संकल्प करके सृष्टि रचते हैं । इसी प्रकार अनन्त वार हुआ करता है । जबतक वासनाका बीज नष्ट नहीं होता जबतक जीव सूक्ष्मसे स्थूल स्थूलसे सूक्ष्म हुआ करता है । यह सर्वदा अपने कर्म्मोंके वश हो कभी ऊपर और कभी नीचे आता है, कभी मध्यमें लुढ़कता हुआ ठोकरें खाता फिरता है । जब यह अन्तिम देह स्थूल शरीर पाकर उत्तम कर्म्मोंसे ईश्वरकी भक्तिमें प्रवृत्त होता है, तो पुनः शनैः शनैः ऊपरको चढ़ जाता है । जब यह अशुभ कर्म्मोंकी ओर झुकता है तो चौरासी योनियोंमें भटकता हुआ विकल और दुःखित रहता है ।

तत्त्वमसिका अर्थ – जब यह प्रथम अपने सत्यस्वरूपसे गिरा, "तत्त्वमसि" में इसने अपना घर बनाया, यह "तत्त्वमसि सामवेदका महावाक्य है । तत्के अर्थ ईश्वर और–त्वं–जीवको कहते हैं–असि–दोनोंका एकता करने वाला ब्रह्मपद है । तत्–पद जैसे समुद्र–त्वं–पद जैसे कुवा और तालाब आदि और असि–पद जैसे दोनोंमें जल । तत्–पद–ब्रह्म अविनाशी ज्ञानी और पूर्ण है । त्वं पद जीव नाशमान और अल्पज्ञ है । असि–पद शुद्ध ज्ञान स्वरूप है

खण्डन – ये दोनों उपाधि छूटे तो आत्मा जैसेका तैसा हो । ये तीनों पद वेदने ठहराये हैं, इन्हीं तीनों पदोंमें सब जीव फँस रहे हैं । आगेकी सुधि किसीको भी न मिली, इसी तीनों पदोंतक संसारका ज्ञान है । अरब और फारस आदिकके

पैगम्बर आदि यहांही तक पहुँचे हैं। हक्कुल यक़ीन -- और मारफतका पद भी यही है। ज्ञानीके लिये किसी प्रकारका आवर्ण नहीं सब ब्रह्मका प्रकाश है। ज्ञानी को किसी प्रकारकी रुकावट नहीं जहां देखो वहां वही उपस्थित है। जीव बिचारा अज्ञानके कारण बंध रहा है, इसे अज्ञानके अँधेरेमें कोई राह नहीं सूझती। इस अवस्थामें यह एक द्वारसे बाहर हो सकता है, वह द्वार शास्त्र है, शास्त्रके बिना कोई मार्ग नहीं मिलता। शास्त्र माताके दूधके समान है; जिस समय बालक दूध पीता होता है वह केवल अपनी माँके स्तनोंसेही दूध पीना जानता है उसको दूसरी कोई युक्ति नहीं सूझती, जब वही बालक अपनी अवस्थाको पहुँचता है तो स्तनों का कुछ काम नहीं पड़ता, अपने आप अपनी शरीर यात्राका उपाय कर लेता है। इसी प्रकार यह जीव दूधपी वा बच्चेके समान है और ईश्वर युवकके समान। जीव और ईश्वर दोनों आवरण और विक्षेप शक्तिमें बंधे हैं। जीव अल्पज्ञ है, ईश्वर सर्वज्ञ है, विद्या और अविद्यामें दोनों बंधे हैं। यह जीव नाना प्रकारके प्रयत्न और युक्तियोंसे ईश्वर हो जाता है, ईश्वर अपनी भूलसे जीव हो जाता है। इसका कारण ब्रह्म और जीव दोनों एकही बात है, ब्रह्म बिना जीव नहीं, जीव बिना ब्रह्म नहीं। जब ब्रह्मके पदपर स्थित हो जाता है तो सृष्टिका कर्त्ता हर्त्ता कहलाता है, इसी पदतक इसकी पहुँच है, यही जीवन मोक्षका पद है। अपने उपायों और युक्तियोंसे ज्ञानाग्निको उठाता है ज्ञानाग्नि प्रगट होकर कर्म्मोंके वनको जला देती है। वह आग बहुत प्रबल होता है, जिस प्रकार लाल अंगारा अपनी चमक दमकमें एकही होता है पर अंगारेकी अग्नि शनैः शनैः ठण्ढी होती जाती है, अन्तमें पूर्ण ठण्ढी हो जाती है। इसी प्रकार यह जीव ब्रह्मपदको प्राप्त करके भी फिर जीव पदको प्राप्त हो जाता है। इसी प्रकार बारम्बार जीवसे ब्रह्म और ब्रह्मसे जीव हुआ करता है। कभी लाभ और कभी हानि उठाया करता है, इसको कभी सुख नहीं मिलता। ज्ञान प्राप्त होनेपर नाममात्रके लिये जीवन्मुक्त कहते हैं, सर्वदा बन्धनमें रहे उसको जीवन्मुक्त कहनेसे क्या फल ? वह तो सर्वदा जीव-नबन्ध है। इस हेतु "तत्त्वमसि" के उक्त तीनों पद भ्रम और धोखा है. क्योंकि उसे स्थिरता नहीं है। कभी होता है कभी जाता है।

जीवन्मुक्त तथा विदेहमुक्त -- इस प्रकार जीवन्मुक्त और विदेह मुक्त केवल इस जीवका भ्रम मात्र है। इस जीवन्मुक्तका दृष्टान्त ऐसा समझना चाहिये कि, जैसे एक बन्दरको जञ्जीरमें बाँससे बाँध देते हैं, कभी वह बाँसके ऊपर चढ़ता है, कभी नीचे उतर आता है, इसी प्रकार जीवन्मुक्त अपने कर्म्मोंके बन्धनमें बँधा हुआ कभी ब्रह्मपदको प्राप्त होता है, कभी नीचे गिर जाता है। जब यह नीचेसे

ऊपरको जाता है तो भली प्रकार दृष्टि करके अपनी छायाको देखता है अज्ञान वश उसको अपना स्वरूप समझता है. यद्यपि वह उसकी छाया नहीं होती तथापि अपने ज्ञानके जोरसे अपना स्वरूप जान तदाकार हो जाता है अपनेको परमानन्द समझने लगता है । उसके ज्ञानमें जो अभीतक अन्धकार शेष है उससे यह बेसुध है । वही अन्धकार अविद्या उसके आवागमनका बीज है । जबतक अविद्या नष्ट न होगी तबतक वह अपने भ्रमको ही अपना स्वरूप समझता रहेगा । उसी भ्रमको ब्रह्म बोलते हैं, उसी भ्रममें समस्त संसार बन्धा है, उसीसे जगतकी उत्पत्ति हुई है । यह संसार भ्रमरूप है, इसकी जीवके भ्रमसे ही उत्पत्ति है । जीवही भ्रमसे एकसे अनेक और अनेकसे एक होता है । आदिमें केवल एक जीव था दूसरा कोई नहीं था, उसीसे अनन्त सृष्टि हो गई । एक वीर्यमें अनन्त वीर्य हैं । एक ब्रह्मसे अनन्त ब्रह्म हो गये । पहले एक ब्रह्म प्रगट हुआ उसीसे समस्त भ्रमरूप संसारका प्रादुर्भाव हुआ । वही भ्रम समस्त संसारकी माता है, उसीसे उत्पत्ति और लय हैं । वही जगत्का ईश्वर और कर्त्ता कहलाता है, समस्त संसारमें उसीकी भक्ति होती है । भ्रमकी भक्ति करनेसे कुछ फल नहीं मिलता, नर्क स्वर्ग और मोक्ष सब कुछ भ्रम मात्र है, जिन्होंने तत्त्वमसिके तीनों पदोंको जान लिया उनको यह सब है । भ्रमकी भक्ति करनेसे कुछ फल नहीं मिलता, नर्क स्वर्ग और मोक्ष सब कुछ भ्रम मात्र है, जिन्होंने तत्त्वमसिके तीनों पदोंको जान लिया उनको यह सब तुच्छ जान पड़ता है । इस कारण वे उनके लिये प्रयत्न नहीं करते ।

भ्रम ब्रह्म — जब स्त्री गर्भवती होती है तो उससे बालक उत्पन्न होता है गर्भका रहना जोड़े बिना नहीं हो सकता । बीज ही शेष न रहा तो बालक किस-प्रकार उत्पन्न होगा । यदि जीवन्मुक्तको वह ज्ञान प्राप्त होता जिससे कि आवा-गमनका मूलही न रहे तो उनका आवागमन क्यों न छूटेगा ? । जबतक बीज है तबतक वृक्ष होगा, डाल, पात, फल, फूल आदिककी आशा रहेगी । भ्रमहीकी दशामें जीव 'तत्त्वमसि' के पदको सत्य मान रहा है । इसको उसके ऊपर विश्वास हो रहा है इसलिये उसको सत्य करके मानता है । यह साधारण नियम है कि, मनुष्यकी बुद्धि जिस बातको स्वीकार करलेती है उसीको वह सत्य मान बैठता है । झूठ हो अथवा सच्च जिसपर मनुष्य विश्वास कर लेता है वह झूठ भी सचही देख पड़ता है. यदि किसी बातको न माने तो उसकी दृष्टिमें झूठही है, जैसे किसी दरिद्रीका नाम राजा रखदिया तो वह कदापि राजा नहीं हो सकता, वह तो यथार्थ में दरिद्रीही है । इस जीवने भी भ्रमकी दशामें जो कुछ निश्चय किया है वह भ्रमरूप ही है, इसी कारण सब जीवन्मुक्त वासनामें बंधे आधीन रहते हैं । जो

लोग स्वयं बन्धनमें पड़े हैं उनकी उपदेशसे किस प्रकार मुक्ति हो सकती है ? कीचड़से कीचड़ नहीं धोया जा सकता, कीचड़ धोनेके लिये पानी चाहिये। ऐसेही बन्धनसे छूटनेके लिये पारखगुरुके उपदेशकी आवश्यकता है, जिससे कि आवागमनका बीज नष्ट हो जाता है। इस जीवने असत्यको सत्य मान लिया है इसी कारण झूठका सत्य देख पड़ता है।

दृष्टांन्त—एक गांवमें किसी स्त्रीका पति मर गया था। वह सती होने चली स्मशानमें पतिकी चितापर बैठ गई तब आग लगा दी गई। संयोग वश उसी समय प्रबल आँधी आई, मृतकके साथ आये हुये लोग भाग गये। आगकी गर्मी बढ़ी स्त्री चितासे उतरकर एक झाड़ीमें छिप गई थोड़ी देर बाद अंधेरीके बीत जानेपर झाड़ीसे निकलकर किसी दूसरे नगर चली गई। उसमें पहुंचकर किसी पुरुषके साथ रहने लगी, जिससे उसके कई लड़के लड़कियाँ उत्पन्न हुई।

अब उधरका हाल सुनो। जब अन्धडके बीत जानेपर घरके लोग आये लकड़ियोंको जला देखकर अनुमान करलिया कि, वह सती होगई। चिताकी राख जमाकरके उसपर मकान बना दिया। अब सतीचोराकी पूजा होने लगी, लोग मन्नत मनाने लगे, बहुतोंकी इच्छाएँ पूर्ण भी हुई, इसी प्रकारका सतीकी पूजा दिन दिन बढ़ने लगी। कई वर्ष बीतनेपर उस स्त्रीके मायकेका एक मनुष्य उस नगरमें गया उसको शिरपर पानीका घड़ा, गोदमें लड़का और दूसरे लड़केको उँगली पकड़ाये हुये जाते देखा। आदमीने उसको देखकर पहचान लिया उसका नाम लेकर पुकारा। वह खड़ी होगई, उस पुरुषने उसका नाम पूछकर पूरा निश्चय कर लेनेपर कहा कि, यदि तू तो सती होगई थी, यहां किस प्रकार आगई ? उसने लज्जित होकर कहा कि, यदि तू मेरा समाचार मेरे घरके लोगोंसे न कहे तो मैं अपना सारा हाल सुनाऊँ। उसने किसीसे न कहनेका वचन दिया. स्त्रीने अपना सारा हाल कह सुनाया. कहा कि, मैं इस नगरमें एक पुरुषके साथ रहती हूँ, उसीसे यह दो सन्तानें उत्पन्न हुई हैं, यह बात सुनकर वह गांवमें आकर सबसे कहने लगा। शनैः शनैः उस स्त्रीके मैके और ससुरारवालोंने भी यह समाचार जान पाया, वहांसे कुछ लोग आकर उसको देख गये। तबसे उस सतीकी पूजा छोड़ दी गई, लोगोंकी मन वाञ्छित पूरी होनी बन्द होगई। जबतक लोगोंका विश्वास सतीमें था तबतक सब कुछ था। जब विश्वास हट गया कुछ भी न हुआ।

इसी प्रकार यह तत्वमसि है इसके तीनों पदोंमें जीवोंने अपना विश्वास दृढ़ कर लिया है इनको इसीका विश्वास सत्य होकर भासता है दूसरी बात नहीं है।

ज्ञानके साधन ।

सम, सन्तोष, विचार और सत्संग ये चारों मुक्तिके पौरिये हैं । जो इनको धारण करेंगे उनको सब कुछ प्राप्त होगा । इनसे अन्तःकरण शुद्ध होता है अन्तः-करणके शुद्ध होनेसे सब कुछ शुद्ध हो जाता है, इन बिना किसीको भी मुक्ति मार्ग नहीं मिल सकता । इन्हींसे मनुष्य विचार करता है, मेरे गुरुकी कहांतक पहुँच है ? उसमें मुझे मुक्त करनेकी सामर्थ्य है वा नहीं ? वह किस देवताकी भक्ति बतलाता है ? उसकी सामर्थ्य कहांतक है ? जो लोग अपनेको ब्रह्म कहते हैं उनमें ब्रह्म का कुछ लक्षण है या नहीं ? यदि कोई किसी पदार्थ को कपूर बतलावे उसमें कपूरकीसी सुगन्धि न हो, उसके समान गुण भी न हों तो उसे किसी प्रकार भी कपूर नहीं कह सकते । यह जीव अपने बन्धनके लिये आपही जाल रचता है उसमें आपही फँसकर मर जाता है। जो मनुष्य मनुष्यत्वको न धारण करे उसमें मनुष्यके गुण न हों, वह कैसे मनुष्य ठहरेगा ? मनुष्य अपने मनुष्यत्वके गुणोंको जान लेता है तब धारण करता है । पक्षपात और धर्मद्वेषके निकट नहीं जाता, सत्य स्वीकार करता है असत्यसे दूर भागता है। लोग प्रायः मिथ्या बकबक झकझकमें लगे रहते हैं । वे अपने मनमें तनिक भी विचार नहीं करते. न समझते हैं कि, अविद्यासे तीनोंको उत्पत्ति है, इन्हींसे सारा व्यवहार चल रहा है फिर ज्ञान और मुक्तिका मार्ग बतलानेवाला कौन हो सकता है ? यदि तीनों देवताएं अज्ञानके घेरेसे बाहर होते तो उनसे मनुष्योंको मुक्ति प्राप्त होजाती । सब पक्षपातमें फँसे हुये हैं कौन सत्यका खोज करता है ? कौन गुरु है ? किसके उपदेशसे अज्ञान दूर होकर ज्ञान प्राप्त होता है? इसका विचार निरपक्षही कर सकता है। विद्या और अविद्या दोनोंका प्रगट करनेवाला ब्रह्मा है, सो दोनों ही मिथ्या हैं । विद्या अविद्याको नष्ट कर देती है, अविद्या विद्याको मिटा देती है जैसे कि, बाँसके रगड़नेसे आग निकलती है, वो सारे वनको जलाकर अन्तमें आप भी शान्त हो जाती है ।

वह आग कौन है, कहां है ? जो सबको जलाकर भी शान्त न हो सर्वदा एक समान प्रकाशित रहे । यदि सब कुछ मैंही होता तो बन्धनमें डालनेवाला दूसरा कौन था, सीखनेवाला कौन है ? सीखता कौन है ? अज्ञान किसको लगा ? एक ब्रह्म अज्ञानी और दूसरा ज्ञानी क्यों हुआ ? एकं ब्रह्म द्वितीयो नास्ति, यह क्योंकर कहना ठहरा ? अद्वैत न रहा तो अनन्त ब्रह्म हो सकते हैं । वेदान्ती कहते है कि, सब जगत्में है एकही ब्रह्म । जैनी कहते हैं कि, अनन्त ब्रह्म हैं अर्थात् जितने जीव हैं उतनेही ब्रह्म हैं । वेदान्तियोंके एक और जैनियोंके अनेकों का न्याय किस प्रकार हो ? क्या एक ब्रह्माका बाप आकर वेदान्तियोंसे कह गया है कि, एक

ब्रह्म है अथवा क्या अनेक ब्रह्मका पिता जैनियोंसे आकर कह गया है कि, अनेक आत्मा हैं। यह सब आनुमानिक बातें हैं किसीके पास न एकका और न अनेकका प्रमाण है। जिसको ब्रह्म अथवा आत्मा कहते हैं वह क्या पदार्थ है ? समस्त संसारमें द्वन्द्व फैला रहा है। आत्मा २ सब कोई कहते हैं पर उसका रूप रङ्ग कोई वर्णन नहीं करता। परमात्मा आत्मा आदिक सब कल्पित नाम हैं, जिसके मनमें जैसा निश्चय हुआ कहने लगा अथवा लिख दिया। उसका नाम ठिकाना रूप रङ्ग कोई नहीं जानता। यदि वह अकहं है तो उसका कहना व्यर्थ है। यदि वह एक होता तो एकके दुखी सुखी होनेसे सभी दुखी सुखी होते। यदि वह भिन्न २ अनेक होता तो ज्ञानदशामें भी एकके अन्तरकी बात दूसरा नहीं जान सकता। यदि एक होता तो सब कोई जो चाहता सो करलेता। यदि अनेक होता तो किसी पर किसी का बल नहीं चलता। इस विचारसे एक अनेक कहना सुनना सब मिथ्या है। जो मन इन्द्रियोंसे परे सबमें पूर्ण हो उसका समाचार कौन कह सके ? जो अलख है वह कैसे लखा जाये ? अलखके लखनेका कोई शास्त्र नहीं जो बात कहने सुननेसे बाहर है वह कैसे कही सुनी जाय ? गुँगोंने गुड़ खाया वे उसके स्वादको कैसे वर्णन कर सकें ? गूँगेने तो खाया, उसके स्वादको जाना पर स्वयं गुड़ नहीं होगया, स्वयं तो अलगही रहा। यदि गुड़ खानेसे गूँगा गुड़ हो जाता तो तत्वमसिके ज्ञानसे अपने स्वरूपका ज्ञान अवश्य होता। गुड़से और गूँगेसे विभिन्नता है, उसी प्रकार तत्व-मसिका जाननेवाला भी तत्वमसिसे भिन्न है, जीवन्मुक्तका ज्ञान भिन्न है, उसका स्वरूप भिन्न है। इसी कारण उसपर आधार रखनेसे विपत्तिमें फँसा।

ग़ज़ल – जो हद पहुँचा दिया हद्को अभी कुछ काज बाकी है।
न टूटा रिशतए दुनिया तेरा मुहताज बाक़ी है॥
हज़ारों पीर पैगम्बर हिदायत आदमी की कर।
अभी सब सर गरोहोंका तू एक सिरताज बाकी है॥
हुये सूराख तन बरतन जतन कर बन्द करले को।
न आई ज़रगरी कुछ काम पुखता पाज बाकी है॥
बनी आदम ब क़िस्मत खुद बसे जा फ़र्श अर्शोपर।
मगर हंसोंके उस अक़लीमका मआराज बाक़ी है॥
रहे दौरा तेरा दायम ब दौरे दैर फानीमें।
कि जबतक कौल अइयामे निरञ्जन राज बाकी है॥
अदाकर खुद खजानासे छुडाले अपने बन्दो को।
ब यवज़ जुर्म जुर्माना जो उनके बाज बाकी है॥

पढ़े इल्मों अमल सारे चढ़े जा लामकाँ ऊपर ।
बजुज़ तुझ रहनुमाई रह न सूझे दाज बाक़ी है ।।
न रह रौशन ब सदहा मशअल व महताब अख़्तरके ।
कि अबतक नूर सूरे सारशबद व हाज बाकी है ।।
हुई काफूर दिल आजिज़से ख्वाहिशे दीन दुनियांकी ।
मगर मतगुरु सना ख्वानी हवस यह आज बाकी है ।।

कबीर साहिब कृत षड देह वर्णन ।

कबीर साहिबने अपने शब्दोंमें छः प्रकारके देहोंका वर्णन किया है जिनमें आकर यह जीव पूर्ण पतित होगया था, । साथके साथही उनका अर्थ भी कर दिया है जिससे पाठक गण आनन्दसे समझ लें। "सन्तों ! षट् प्रकारकी देही, स्थूल, सूक्ष्म, कारण, महाकारण, कैवल्य हंसकी लेही।" कबीर साहिब कहते हैं कि, ए महात्माओ ! छः प्रकारकी देहें हैं। वे स्थूल, सूक्ष्म, कारण, महाकारण, ज्ञान और विज्ञान ये हैं ।

स्थूल शरीर या कच्चे तत्त्वकी देह ।

सन्तों षट् प्रकारकी देही ।

स्थूल सूक्ष्म कारण महाकारण कैवल्य हंसकी लेही ।।
साढ़े तीन हाथ प्रमाना देह स्थूल बखानी ।
राता वरण जाग्रित वस्था वैखरी बाचा जानी ।।
रजो गुणी ॐ कार मात्राका त्रिकुटी है अस्थाना ।
मुक्ति सालोक प्रथम पद गायत्री ब्रह्मा वेद बखाना ।।
पृथिवी तत्व खेचरी मुद्रा मग पपील घट कासा ।
क्षर निर्णय बड़वाग्नि दशेन्द्री देव चतुर्दश बासा ।।
और अहै ऋग्वेद बताऊँ अर्द्ध शून्य सञ्चारा ।
सत्यलोक विषया अभिमानी विषयानन्द हंकारा ।।
आदि अन्त ओ मध्य शब्द है लखै कोई बुद्धि बीरा ।
कहैं कबीर सुनों हो सन्तों इति स्थूल शरीरा ।। १ ।।

स्थूलदेह, साढे तीन हाथ, रक्तवर्ण, ब्राह्मी देवता, रजोगुण, ओंकार मात्रिका, जाग्रत अवस्था, वैखरी वाचा, त्रिकुटी स्थान, पृथिवीतत्त्व, खेचरी मुद्रा, कपिल मार्ग, मठाकाश, नेत्र स्थान, सत्यलोक, विश्वअभिमानो, गायत्री प्रथम पद, क्षर निर्णय, बड़वाग्नि, विषयानन्द आकार, आप तत्व, दश इन्द्री, रहस मात्रिका, अर्द्ध शून्य, ऋग्वेद, चौदह देवता, पचीस प्रकृति ।

लिङ्गदेह या सूक्ष्म शरीर।

सन्तों सूक्षम देह प्रमाना।

सूक्षम देह अंगुष्ठ बराबर स्वप्न अवस्था जाना ॥
श्वेत वर्ण ॐ कार मात्रका सतोगुण विष्णू देवा।
उर्द्ध और अर्द्ध यजुर्वेद है कण्ठ स्थान अहैवा ॥
मुक्ति सामीप लोक वैकुण्ठ है पालन किरिया राखी।
मारग बिहँग भूचरी मुद्रा अक्षर निर्णय भाखी ॥
आप तत्व कोहं हंकारा मदाग्नी कहिये।
पञ्च प्राण द्वितीया पद गायत्री मध्यम वाणी लहिये ॥
शब्द स्पर्श रूप रस गन्ध मन बुद्धि चित हंकारा।
कहें कबीर सुनो हो सन्तो, यह तन सूक्षम सारा ॥ २ ॥

लिङ्ग देह, अँगूठेके बराबर, ॐ कार मात्रिका, शुक्ल वर्ण, बिष्णु देवता, औहठ स्थान, मध्यमा, वाचा ऊर्ध्व, शून्य यजुर्वेद, वैकुण्ठ लोक, कण्ठस्थान, पालन क्रिया, आप तत्व, भूचरी मुद्रा, विहङ्ग मार्ग, द्वितीय पद गायत्री, क्षर निर्णय, मन्दाग्नि, कोव्हं अहंकार, सामीप्य मुक्ति, पञ्च भूत, सूक्ष्म प्राण, अपान, समान, उदान, व्यान, चारों अन्तःकरण मन बुद्धि, चित्त, अहंकार, शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध यह सूक्ष्म नौ तत्व हैं, पाँच ज्ञानेन्द्रिय और पञ्च कर्मेन्द्रिय यह सब जड़ अर्थात् अनात्म हैं जिसकी सत्तासे ये चैतन्य होते हैं उसको जीव कहते हैं।

कारण शरीर।

सन्तो कारण देह सरेखा ॥

आधा पर्व प्रमाण तमोगुण कारावर्ण परेखा ॥
मध्य शून्य है मकार मात्रका हृदया सो अस्थाना।
महदाकाश चाचरी मुद्रा इच्छा शक्ति जाना ॥
उददा अग्नि सुषुप्ति अवस्था निर्णय कण्ठ स्थानी।
कपि मारग तृतिया पद गायत्री अहै प्राज्ञ अभिमानी ॥
सामवेद पश्यन्ती वाचा मुक्ति स्वरूप बखानी।
तेज तत्व अद्वैतानन्द अहंकार निरबानी ॥
अहै बिशुद्ध महातम जामे तामे कछु न समाई।
कारण देह इति समपूरण कहैं कबीर बुझाई ॥ ३ ॥

कारण देह, आधा पर्व, श्याम वर्ण, मकार मात्रिका, गोलाहठ स्थान, पश्यन्ति वाचा, मध्य शून्य, तमोगुण, सामवेद चाचरी मुद्रा, कपिमार्ग, महदाकाश, हृदयस्थान, प्राज्ञ अधिमानी, कण्ठस्थान, निर्णय अविद्याऽग्नि, तृतीय पद गायत्री, अद्वैतानन्द, इच्छा शक्ति सुषुप्ति अवस्था, सारूप मुक्ति ।

महाकारण ।

सन्तो महाकारण तन जाना ।

नीलवरण और ईश्वर देवा है मसूर परमाना ।।
नाभिस्थान विकार मात्रिका चिदाकाश परमानी ।
मारग मीन अगोचरी मुद्रा वेद अथर्वण जानी ।।
ज्वाला कल चतुर्थ पद गायत्री आदि शक्ति तन वाई ।
आश्रय लोक विदेहानन्द मुक्ति सायुज्य बताई ।।
निरणय प्रकाश तुरीअवस्था प्रत्यक्ष आतम अभिमानी ।
शिवहंकार महाकारण तन इति कबीर बखानी ।। ४ ।।

महाकारण देह, मसूर प्रमाण, विकार मात्रिका, गोलाहठ स्थान, परा वाचा शून्य अर्द्ध मात्रिका, अथर्वण वेद, पवन तत्त्व, अगोचरी मुद्रा, ज्वाला काला, मीन मार्ग, चिदाकाश, आश्रय लोक नाभिस्थान, प्रत्यक्ष अभिमानी, चतुर्थ पद गायत्री, आदि शक्ति, विदेह आनन्द, सोहं ओहं अहंकार, तुरिया वस्था, प्रकाशक, सायुज्य मुक्ति ।

ज्ञान देह ।

सन्तों कैवल्य देह बखाना ।

कैवल्य सकल देहका साक्षी भँवर गुफा अस्थाना ।।
निराकाश औ लोक निराश्रय निरणय ज्ञान विशेखा ।
स्वसम्वेद है उन मुनि मुद्रा उनमुनि वाणी लेखा ।।
ब्रह्मानन्द कहिये हंकारा ब्रह्म ज्ञानको माना ।
पूरणबोध अवस्था कहिये ज्योति स्वरूपी जाना ।।
पूर्णगिरी अनूचरी मात्रिका निरञ्जन अभिमानी ।
परमारथ पञ्चम पद गायत्री परामुक्ति पहचानी ।।
सदाशिव औ मार्ग सिखा है कहैं कबीर मतिधीरा ।
कलातीत कला सम्पूरण कैवल्य कहैं कबीरा ।। ५ ।।

उपरोक्त चारों साक्षी ज्ञान देह, स्वसम्वेद, उनमुनि वाचा, भँवर गुफा स्थान, सदाशिव पूर्ण गिरी, अनुचर मात्रा, पूर्ण बोध अवस्था. कालातीत, सखमार्ग,

निराकाश, सिद्ध स्थान, निराश्रय लोक, निरञ्जन अभिमानी, पञ्चम परमार्थ पद गायत्री, ज्ञान निर्णय, ब्रह्मज्ञान, ब्रह्मानन्द अहंकार, इसी ज्ञान देहको ज्योति स्वरूपी कहते हैं । मुक्तिमय ब्रह्ममय सर्व साक्षी ।

षष्ठ विज्ञान देह — विज्ञान देह, आकाश स्वरूप है, न उसका रेख है वा रूप है, न उत्पन्न है न मरे, न आवे, न जावे न भीतर न बाहर, अहंकार रहित मान अपमान रहित रूप अरूप हैं तू, वाच्य अवाच्य, इच्छा अनिच्छा, सबसे रहित नहं नत्वं, न मैं कर्ता न मैं भोक्ता, जैसाका तैसा । न जीव न ब्रह्म न माया । क्योंकि, विज्ञान देहमें ऐसाही विचार होता है ।

इस पर कबीर साहिब — इसके आगे भेद हमारा । जानेगा कोई जानन हारा ।
कहैं कबीर जानेगा सोई । जापर दया गुरूकी होई ।।

सब ज्ञानी और ध्यानियोंकी दौड़ यहां तक होती है, किसीको इसके आगे की सुधि नहीं । विज्ञान देहके आगे केवल एक पद शेष रहता है, उसीके प्राप्त करनेसे यथार्थमें लीन हो जाता है । यह पारख गुरूकी सहायता बिना नहीं प्राप्त होता, यही सर्वोच्च मुक्तिपद है, शेष सब बन्धन हैं । जब जीव अपने सत्य स्वरूपसे पतित हुआ तो इसकी स्थिति इन छः शरीरोंमें हुई इसीमें भटकने लगा । जो कोई विचार पूर्वक स्वसम्वेदको पढ़ता है उसको सब बातोंका सार मालूम हो जाता है । किसी दूसरी किताब या वेदमें नहीं मिल सकता । जब स्थूल शरीरमें आया तो भ्रममें ऐसा अचेत हुआ कि, कुछ भी सुधि न रही कि, मैं कौन हूँ । कहांसे आया हूँ ? किस कारण उत्पन्न हुआ ? फिर इसको गुरुआ लोगोंने भटकाया कर्म उपासना और ज्ञानके नाना उपदेश दिये जब अत्यन्त परिश्रमसे अपने ईश्वरको ढूँढ़ने लगा कुछ प्राप्त न हुआ तो कहने लगा कि, मेरा ईश्वर निर्गुण निराकार वेचून और वेचारा है । कभी तो वेद निर्गुण निराकारकी वन्दना करते हैं । कभी सगुण ईश्वरकी स्तुति करते हैं, न उनको कभी निर्गुणकी सुधि है न कभी सगुणका ठिकाना है । यदि निर्गुण कहा जाय तो उससे सृष्टिका उत्पन्न होना असम्भव है. सगुण कहा जाय तो नाशमान है जो कुछ देखने सुननेमें आता है वो सब विनाशी है । ब्रह्मा, विष्णु, शिव, सनकादि सब धोखेमें पड़े हैं । इसीमें सब वेद और वाणी बनाई गई जो पर अपने स्वरूपकी सुधि नहीं पाई । पांच तत्व और तीन गुणका जाननेवाला अलग है । इसने पांचतत्व और तीन गुणोंकी कोठरीमें अपना घर बनाया । वेद पढ़ने लगा नानाप्रकारसे निर्गुण सगुणकी उपासना करने लगा । भिन्न २ मतावलम्बियोंने नानास्वरूपोंमें विविध प्रकारसे उपासना आरम्भ की । कोई तीर्थ व्रत, कोई यज्ञ योग, कोई जप तप आदिके भ्रममें पड़े । मुसल्मना

आदि अन्य धर्मवाले भी उसी सगुण निर्गुणका गुण गाते हैं । जब इस अचेततांकी अवस्थामें यह जीव पड़ा तो महादेव (मुहम्मद) इसके गुरु बने सब जीवोंको उपदेश करने लगे । भ्रमकी वाणी और कलमेका प्रचार किया इसका यही भ्रम पथ दर्शक तथा उपदेशक हुआ ।

हिन्दुओंकी तरह मुसलमान भी भ्रममें — देखो मुसलमानी हदीसोंमें लिखा है आदि उत्पत्तिमें कलमेने लौहपर यह लिखा (इल्लाह लाइला) इसका अर्थ है नहीं खुदा मगर खुदा । पहले शब्द-ला-का अर्थ नहीं, दूसरे शब्द अल्लाह का अर्थ खुदा, तीसरे शब्द--इल्ला--का अर्थ मगर, चौथ शब्द--अल्ला-का अर्थ खुदा । आशय यह कि, नहीं खुदा, मगर खुदा नहीं खुदा, है खुदा--नहीं खुदा, है खुदा--नहीं खुदा, है खुदा--नहीं खुदा, है खुदा । यही भ्रमका कलमा सब मुसलमान पढ़ने लगे तब उस भ्रमका कलमा पढ़ानेवाला हुआ फिर कलमेने लौहपर उसका नाम लिखा अर्थात् जब महम्मद रसूलिल्लाह प्रगट हुआ तो पूरामहम्मदी कलमा

لا الہ الا اللہ محمد الرسول اللہ

हुआ जैसे हिन्दू पड़े हुए हैं वैसेही मुसलमान भी भ्रममें पड़े ।

उन दोनोंमें ऐसा सोच और सम वाला कौन है ? जो इस बात पर विचार करे. दोनों भ्रमका कलमा पढ़ते हैं । इसके द्वारा तो कुछ प्राप्त होता है वह सब भ्रम है । नर्क, स्वर्ग और मुक्ति आदि सब भ्रमहीमें हैं सब पूजा सेवा भ्रमहीकी है भक्ति करके भ्रमही लाभ होता है । हानि लाभ सब भ्रम है । जिस कलमेसे लोगोंने अपनी २ मुक्तिका अनुमान किये हैं निर्गुण और सगुण कलमा भ्रम हैं तो मुक्ति किस प्रकार सत्य ठहर सकती है । इस प्रकार सब मनुष्य भ्रममें पडे, भ्रमही के ग्रन्थ वाणी और कलमा पढ़ने लगे भ्रमका कलमा पढ़ पढ़ कर भ्रमके घरोंमें पड़ नित्य बन्धे हुये ।

सब भ्रम मात्र — तीनों लोकोंमें भ्रमसे छुड़ानेवाला पारख गुरुके बिना दूसरा कोई नहीं है । जीव तीर्थ, व्रत, वेद पाठ, योग, युक्ति, हज्ज, रोजा निमाज सिजदा तथा कर्म उपासना, योग ज्ञान आदिक कर थक कर बैठ गया, कुछ हाथ न लगा तो उसने नौकोशोंमें अपना घर बनाया, जिनका वर्णन बिस्तार सहित लिख आया हूँ । यहां केवल नाम मात्र लिखे देता हूँ, १ अन्नमय कोश, २ शब्दमय कोश, ३ प्राणमय कोश, आनन्दमय कोश, ५ मनोमय कोश, ६ प्रकाशमय कोश, ७ ज्ञानमय कोश, ८ आकाशमय कोश, ९ विज्ञानमय कोश । अब इस जीवने इन्हीं

छः देहों और नौकोशोंमें अपना घर बनाया । येही छः देह और नौ कोशोंतक, जीवकी सीमा ठहरी, किसीमें इसके पार जानेकी सामर्थ्य नहीं, न इसके आगेका समाचार जाननेकी शक्तिही है । इनके ज्ञानका अन्त यहांही तक है । छः देहसे परे कोई नहीं जा सकता, बरन् इनका भेदभी जाननेवाला कोई कोईही होगा ।

१–स्थूल देह पच्चीस तत्वकी होती है. वे तत्त्व ये हैं–पृथिवी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, दश इन्द्रिय, पाँच प्राण, चारों अन्तःकरण और जीव जाग्रित अवस्था है ।

२—सूक्ष्म शरीर सत्तरह तत्वकी है. वे ये हैं—पञ्च प्राण, दश इन्द्रिय, मत बुद्धि और स्वप्न अवस्था है ।

३—कारण देह तीन तत्वकी है–चित्त अहङ्कार और जीवात्मा, सुषुप्ति-अवस्था ।

४—महाकारण देह दो तत्त्वकी है–अहङ्कार जीवात्मा, तुरियावस्था ।

५—कैवल्य देह एक तत्त्वकी है–चित्त जीवात्मा तुरियातीत अवस्था जिस प्रकाशमें यह जीव समष्टि रूप था उसीको इसने अपना स्वरूप माना इसका ऐसा मानना भ्रम मात्र है ।

हंस देह ।

इस शब्दमें कबीर साहिबने बताया है कि, ए महात्माओ ! साहिबके हंसोंका ऐसा रूप हुआ करता है—

सन्तो सुनो हंस तन ब्याना ।

अबरण बरण रूप नहिं रेखा ज्ञान रहित विज्ञाना ॥
नहिं उपजे नहिं विनशे कबहूँ नहि आवे नहिं जाहीं ।
इच्छ अनिच्छ न दृष्टि अदृष्टी नहि बाहर नहिं माहीं ॥
मैं तू रहित न करता भोगता नहिं मान अपमानी ।
नहीं ब्रह्म नहि जीव न माया ज्योंका त्यों वह जानी ॥
मन बुधि गुन इन्द्रिहु नहिं जाना अकह अलख निर्बाना ॥
अकह अनेह अनादि अभेदा निगम नेति फिरि जाना ॥
तत्वरहित रविचन्द्र न तारा नहिं देवी नहिं देवा ।
स्वयं सिद्धि प्रकाशक कह्यो है नहिं स्वामी नहिं सेवा ॥
हंस देह विज्ञान भाव यह सकल वासना त्यागे ।
नहिं आगे नहिं पीछे कोई निज प्रकाशमें पागे ॥
निज प्रकाशमें आप अपन पौ भूली भये विज्ञानी ।

उन्मत बाल पिशाच मूक जड दशा पञ्च यह लानी ॥
खोय आप अपन पौ सर्वश निज रूप नहिं जानी ।
फिरि कैवल्य कारण महकारण सूक्ष्म स्थूल समानी ॥
स्थूल सूक्ष्म कारण महकारण कैवल पुनि विज्ञाना ।
भये नष्ट यहि हेरफेरमें कतहूँ नहिं कल्याना ॥
कहैं कबीर सुनोहो सन्तों खोज करो गुरु ऐसा ।
जेहिते आप अपनपौ जानों मेटो खटका रैसा ॥

साहिबके हंस ऐसेही होते हैं उनकी देहके ये ही गुण क्यों ऐसेही अनेकों गुण होते हैं कोई छटे देहको ही हंसोंका देह मानते हैं यह उनकी भूल है तुमको हंस देह न प्राप्त होगी । जिसको तुमने हंस देह अनुमान कर रखा. वो तुम्हारी भूल और भ्रम है। सद्‌गुरुकी दया बिना हंसका स्वरूप नहीं प्राप्त हो सकता । हंस रूपके अकथ गुण हैं।

पाँचों भूमिकाओंके नाम—गता भूमिका, अगता भूमिका, प्राप्ति भूमिका, समता भूमिका, शुद्धि भूमिका ।

पांचदेहके नाम—स्थूल, सूक्ष्म कारण, महाकारण और ब्रह्मरन्ध्र ।

पांचों वाणियोंका नाम—परा, पश्यन्ति, मध्यमा, वैखरी, और अनूपम ।

सर्व मनुष्य अपने २ धर्म -मजहब- और गुरुकी प्रशंसा करते आते हैं, सब कहते हैं कि, हम बड़े, हम बड़े, हमारा गुरु बड़ा, हमारा मजहब बड़ा । यही चरचा चारों ओर फैल रही है अपने २ रङ्गमें सब मस्त हो रहे हैं ।

बीजकका शब्द ।

सबही मदमाते कोई न जाग । सङ्गहि चोर घर मूसनलाग ॥
योगी माते धरि धरि ध्यान । पण्डितमाते पढ़ी पुरान ॥
तपसी माते तपके भेव । सन्यासी माते करी हमेव ॥
मुल्ला माते पढ़ि मसहा । काजी माते करि इनसाफ़ ॥
संसार मति मायाके धार । राजामाते करि हंकार ॥
मातें शुक देव ऊधो अकरूर । हनुमत माते ले लंगूर ॥
शिवमाते हरि चरणन सेव । कलमा माते निमाजके भेव ॥
सत्य सत्य कह स्मृतीवेद । जस रावण मारे घरके भेद ॥
चञ्चल मनके येहि काम । कहे कबीर भजु सत्य नाम ॥

मद कहिये जिसमें यह जीव मत्त होजावे आगे कुछ न सूझे सब मत्त होकर अचेत होगये मन चोरने सबको लूटा । धैर्य्य, दया, शील, विचार और सत्य

आदि धनको चुरा लिया। चोरको कोई नहीं पहचानता। सबके साथ रहके लूटता रहता है। पर उसको कोई नहीं पकड़ता। किस किस मदमें कौन कौन मस्त हुये यह सुन लो पहले योगके मदमें शिव गोरख आदि मस्त हुये, उसीमें अचेत होगये, योग क्रिया करते और उन मुनी ध्यान धरते धरते सब अचेत हो गये पारख पदको न पहुँचे। जब पिण्ड और ब्रह्माण्डका नाश हुआ तो योग क्रिया भी नाश होगई। देह छूटी योगी गर्भको प्राप्त हुये। दूसरे, विद्यामें व्यास आदि सर्व पण्डित मस्त हुये। तीसरे, तपके मदमें तपस्वी लोग मस्त हुये। मरकर बनके पशु बनें। चौथे, लोग ब्रह्माण्डका ध्यान करते हैं वे ब्रह्माण्डके संकल्पसे मरकर पक्षी होजाते हैं। पाँचवें, पुराणके अभिमानी लोग गीदड़ हुये। छठें, संन्यासी जो ब्रह्मका दृढ़ संकल्प करते हैं वे भ्रमरूप हो आवागमनमें रहेंगे। कोई भक्तिके मद कोई रूप, कोई बल, कोई धन आदि अनेक भेदोंमें मस्त हो रहे हैं। अपने मनमें अभिमान रखते हैं कि, मैं पूर्णताको पहुँच गया हूं। इसी तरह सब मस्त हो रहे हैं एक दूसरेको कुछ नहीं समझते। सब कहते हैं कि, मेरे समान दूसरा कोई नहीं है। जिसने चार पुस्तकें पढ़ली वह जानता है कि, मेरे तुल्य दूसरा कोई नहीं, मैंही सबसे बड़ा बुद्धिमान हूँ, पुस्तकोंके न पढ़नेवाले मूर्ख हैं। जो जिसका उद्यम है जिसको जो हुनर आता है वह उसीमें मस्त हो रहा है, दूसरोंको तुच्छ समझता है। यही मस्तपना अज्ञानी होनेका कारण है। यदि जीव अपने रूप पर न इतराता उसके आनन्दमें अचेत न होता तो विषय वासनाका बगला न बनता। जब तक इसमें भक्ति न आवे और भली प्रकार अहंकार न छूट जावे तब तक प्रकाशका मार्ग न मिलेगा। सच्चे सन्तोंकी सेवा और सङ्गति तो सन्तोंकी दयासे साहबकी कृपा हो, नहीं तो सतसङ्ग बिना दरदर भटकता फिरता है।

गज़ल – भटकते कोह दामाँ कुछ नहीं बनता कुछ नहीं बनता।
कभी जंगल ब्याबाँ कुछ नहीं बनता कुछ नहीं बनता॥
जो ब्रह्मा विष्णु शिव सनकादि उसके बहर कुदरतमें।
है खाते गोता समान कुछ नहीं बनता कुछ नहीं बनता॥
चौरासी सिद्ध नौ नाथो अबस तदबीर जम द्वारे।
पड़े जँजीर दरमाँ कुछ नहीं बनता कुछ नहीं बनता॥
यती जङ्गम समाधी सिद्ध सन्यासी सती सूरे।
हैं फिरते सब परीशाँ कुछ नहीं बनता कुछ नहीं बनता॥
वली अल्लाह गौसो कुतुब क़ाज़ी पीर पैगम्बर।
है सबकी अक्ल हैराँ कुछ नहीं बनता कुछ नहीं बनता॥

चले यह चर्ख चक्की और दले जाते बनी आदम ।
तले गर्दूनगर्दां कुछ नहीं बनता कुछ नहीं बनता ।।
कोइ रोजा निमाज़ो तीर्थो हज्जो हजाज़ी है ।
हिर्म देराँ खरामाँ कुछ नहीं बनता कुछ नहीं बनता ।।
पढ़े कुरआन पोथी है सोसारी बात थोथी है ।
हर्फ एक नाम सुबहाँ कुछ नहीं बनता ।।
उठाते पाँव आगे को पड़े एक़दाम पीछेको ।
हुआ आदमको खफ़कान कुछ नहीं बनता कुछ नहीं बनता ।।
यहूदी और नसारा है कोई गुरु पीर प्यारा है ।
कोइ हिन्दू मुसलमानाँ कुछ नहीं बनता कुछ नहीं बनता ।।
पढ़े हैं वेद बानी सारै खाते गोता पानीमें ।
अमीके बहर पैमाँ कुछ नहीं बनता कुछ नहीं बनता ।।
हुआ इल्मों अमल सारा, मुआ तौ भी अजल मारा ।
हो अगर इल्म उर्फा कुछ नहीं बनता कुछ नहीं बनता ।।
यह मलकुल मौत घेरा है करे जिस जाय फेरा है ।
हरदो कून हिरमाँ कुछ नहीं बनता कुछ नहीं बनता ।।
जफाये चर्ख बर मन दर क़फ़ाय शख्त दुशमन है ।
वफाय यार फर्मा कुछ नहीं बनता कुछ नहीं बनता ।।
बचशमें जाहिरो बातिन लिया यह देख आजिजने ।
बुजुज़ मुर्शिद मिहरबाँ कुछ नहीं बनता कुछ नहीं बनता ।।

कबीर साहबकी साखी ।

बैठा रहे सो लानियाँ, खड़ा रहे सो ग्वाल ।
जागत रहे सो पाहरू, तेहि धरि खायो काल ।।

इसी प्रकारसे सब मनुष्योंमें अहङ्कारकी दुर्गन्धि भरगई । मनुष्यके बन्धन का कारण यही है, इसीके कारण सब मनुष्य आवागमनमें रहते हैं । इसी मन शत्रुका सब छल है । इसीने सब मनुष्योंमें अहङ्कारकी दुर्गन्धि भरी है । इसीके फन्देमें सब बँध रहे हैं ।

नज़म – वारब यह देह क्या बला है । है झूठ और बरमला है ।।
जो रिश्तः रहते शिकत है । सब रंजको गंज पंज तन है ।।
जो लेवे क़रार पंजके धार । दीदार तो यार हो पदीदार ।।
है क़र्जको फर्ज़ मर्दो ज़नमें । आदम न अदा हुआ अदनमें ।।

आफ़त है प्रसाफ़त यह नौ कोश । दोजख़ है किसी किसीको फिर दौस ॥
कोई बन्दः हुआ कोई मौला । मफलूक है कोई शुजाअ दौला ॥
राहत नहीं जीवकी जराहत । मुफ़्लिस हुआ छोड़ बादशाहत ॥
हिर्स हैवान रूख़ रवाँ हो । यह खुमस ख़वीस दिले दवाँ हो ॥
दिलदार हिला मिला न दिलदार । को गौहर जोहरी खरीदार ॥
क्या जाने कोई भेद अन्दर । बन्दर है बदस्त दिल क़लन्दर ॥
जेरीं व ज़बर खबर से मसरूर । महबूब से डूब के हुआ दूर ॥
गुफ़लत में गरक़ी ग़ोते ज़न है । खुश हो कि मेरा कमाल फ़न है ॥
यह उजुव अजब अमक़ि दरिया । सद औज के मौज मय लहरिया ॥
खुद करदः से खुद ऊपर सितम है । जाने के मेरा यह जाम जम है ॥
बातिल को रास्त कर कहे जब । यह इल्म के जेह्ल है मुरक्कब ॥
भर जाम पिलादे मेरे साक़ी । फिर कोई हवस रहे न बाकी ॥
जा बैठे जो तेरे अनजुन में । सदहा गुल वे लाला जिस चमनमें ॥
हर सिम्त बहार है गुलो मुल । दिल दौरे जहाँ न आब कुल कुल ॥
जह पहुँचे न शेख़ कुत्बो क़ाज़ी । दिल हलक़ा के बीच सब है राज़ी ॥
मक़बुल होय हवस है दिल में । फिर आन फँसे है आबो गिल में ॥
पर बाल न हाल मन ग़रीबी । क्यों कर करे मेरी तबीबी ॥
तू बन्दः निवाज़ बन्दः परवर । सब औलिया अम्बिआय सरनर ॥
जा पहुँचे जो अपनेही वतन में । फिर आवे कभी न सो बतनमें ॥
जब तक लगे न वह यारका रंग । क्रर जंग वजहाद नफ्सके संग ॥
जान करदे निसार माल क्या माल । हक्क तेरा यही कभी बहर हाल ॥
दिल देश भदेश भेष दे छोड़ । सब लागसे बाग अपनी को मोड़ ॥
तब देख तमाशा सब जो अपना । हर कूनो मकान मिस्ल सपना ॥

धर्मकी खोज ।

जब यह जीव अपने स्वरूपको भूलकर भ्रममें पड़ा योगी, जङ्गम सेवड़ा आदिकके निकट गया, उनको गुरु मानकर उनसे उपदेश लेने लगा, तो उन्होंने कपट करके नाना प्रकारके कर्म्मोंमें लगाया, उन नाना प्रकारके महात्म सुनाये; जिससे इसके मनमें लोभ उत्पन्न हुआ बुद्धिने उनके वचनपर विश्वास दिलाया । निश्चय हो जानेसे अहङ्कार दृढ़ हो गया । इसको यह पक्षपात उत्पन्न हुआ कहने लगा मेरे तुल्य कोई नहीं मेरा मत सबसे उत्तम है, मेरी मुक्ति सबसे पहले होगी । इसी प्रकार ज्ञानी और ध्यानी धोखेमें पड़े बार बार जनमते और मरते रहते हैं,

गुरुआ लोगोंने जो मिथ्या विचार बतलाया उसको इस प्रकार दृढ़ कर सत्य मान लिया, उसपर ऐसा दृढ़ विश्वास किया कि, पारख पदको समझाया जाय तो कोई नहीं मानता । जैसे किसीने एक काँचके टुकड़ेको हीरा समझा. बुद्धिने निश्चय करा दिया कि, यह अमूल्य रत्न है इसी मिथ्या विश्वासमें आनन्द मानता रहा । यदि कोई अपनी मूर्खतासे पत्थरको रोटी समझले तो भूखके समय वह काम न आवेगी । जिस समय गुरुआ लोगोंके निकट गया तो उन्होंने नाना प्रकारकी मुद्रा आदि बतलाईं, इसने उन्हें बड़े अनुरागसे धारणकर अभ्यास करने लगा । त्राटक करके दृष्टिको एक स्थानमें जमाकर देखने लगा. ऐसा परिश्रम किया कि, पलक न झपके । कुछ देर इस प्रकार देखनेसे पित्त ऊपरको चढ़ा नाना प्रकारके रङ्ग व चकचकाहट दीखने लगे, दृष्टिमें नाना प्रकारके रूप आने लगे । अब और भी अनुराग बढ़ा कि, रात बहुत परिश्रमसे अभ्यास करने लगा । पित्त भी शनैः शनैःबढ़ते बढ़ते यहां तक बढ़ा उसकी ऐसी गर्मी फैली कि, उस पर कचेतता प्रगट हुई । अपना आप भूलकर अचेत होकर गिर पड़ा। फिर जब चित्त शान्त हुआ चेत आया तो कहने लगा मैंने समाधि लगाई, गुरुजीकी बड़ी कृपा हुई कि, निर्गुण अलख ब्रह्मको लखा दिया, सहज समाधि उनमनीमें लगा दिया, जिससे सहजानन्दको पहुँचा आत्मा पर प्रमात्माकी एकता हुई यह यथार्थमें भ्रम है, केवल अपनीही कल्पना द्वारा पित्तमें विकार आनेसे अचेतता होगई थी । इसी प्रकारके धोखेमें बड़े बड़े योगी विद्वान् साधु आदिक फँसे हैं, पारख पदकी ओर ध्यान न देनेसे सत्य पदसे वञ्चित रहते हैं ।

जो स्त्री इस जीवकी झाईंसे प्रगट हुई थी उसीके साथ यह पागल बना, उसीके संयोगसे एकसे अनेक हुआ, यह न समझा कि मैं जिसको ब्रह्म ठहराता हूँ वह केवल मेरी छाया है, सत्य नहीं भ्रम मात्र है ।

जो लोग विराट पुरुषको साधते हैं वह दूसरा कुछ भी नहीं केवल उसीकी छाया है अपनी ही छाया अपना गुरु बनकर अपनेको सिखलाती है । अपनीही छायाका सिखलाया हुआ सिद्ध बनता है । इसी प्रकार सारा संसार अपनी छायाकी पूजा करता है । इसीकी छाया इसके ऊपर ईश्वरी करती है, उसीका दास बनकर उसीका भजन करता है, भ्रमकी ही सेवा भक्ति है, भ्रमकी ही मुक्ति प्राप्त होती है । जीव क्या है ? इसका भ्रम क्या है ? ब्रह्म जीव और ईश्वर क्या है ? यह अपने भ्रमसे सब कुछ होगया है यही एक है यही अनेक है इसीके भ्रमने इसको बन्धनमें डाला है । सब सिद्ध साधु भ्रममें पड़े हैं भ्रमसे छूटने की औषधी नहीं मिलती । केवल एक कल्पित नाम ठहरा लिया है ।

यदि ब्रह्मको निर्विकल्प कहा जाय तो अन्तःकरणका गम नहीं, यदि सविकल्प कहा जाय तो चित्तका विषय है। यदि ज्योंका त्यों माना जाय तो बुद्धिका विषय है। द्वैत मनका विषय है। देहाभिमान अहङ्कारका विषय है। यदि आनन्द आदि कहो तो वायुका विषय है, रूप प्रकाश ठहरावे तो अग्निका विषय है। रस, प्रेम आदि जलका विषय है। गन्ध सर्वदेशी माने तो पृथिवीका विषय है यदि इन सबको ब्रह्म बतलावे तो यह सब तुच्छ हैं, इस कारण जब देह छूटेगी तब अवश्य गर्भको प्राप्त होगा। जहां मन बुद्धि और किसी इन्द्रियकी पहुँच नहीं वहां ब्रह्मकी किस प्रकार खोज हो? न कहीं ब्रह्म है, न कहीं ईश्वर है, यह सब जीवके संकल्प हैं, जीव सत्य है सब झूठ है। जैसे २ यह आगेको संकल्प करता गया उसी प्रकार भ्रम भी बढ़ता गया, जिससे भिन्न भिन्न निश्चय होते गये, जहां पर यह थक कर बैठ गया, आगे खोज करना बाकी न रहा, वहां ब्रह्मका संकल्प करके बैठ गया। उसीको ब्रह्मका स्वरूप निश्चय करके अपने विचार विवेक और खोजको समाप्त कर दिया उसीको अन्त पद समझ बैठा, ऐसेही यह चौरासीमें पड़ा है।

तत्पदसे दो प्रकारका ज्ञान है और त्वं पद दो प्रकारका ज्ञान है असि पद दो प्रकारका विज्ञान है। तत्–त्वं–और–असि, यह तीनों पद भ्रम रूप हैं। इन तीनोंसे भिन्न चौथा पद पारख है। जिसके द्वारा इस जीवको अपना शुद्ध स्वरूप दृष्ट आता है वह उनसे अलग है सो पारख गुरू इसको उन तीनों पदोंके भ्रमको नष्ट कर देता है। जब तक यह जीव पारख गुरुको नहीं प्राप्त होता तब तक सात ज्ञान और सात अज्ञान भूमिकामें भटकता फिरता है।

अज्ञानकी सात भूमिका।

१ अशुचि जाग्रत, २ जाग्रत, ३ महा जाग्रत, ४ स्वप्न, ५ स्वप्न जाग्रत, ६ स्वप्न, ७ सुषुप्ति। ये सात अज्ञानकी भूमिकाके नाम हैं।

१ अशुचि जाग्रत भूमिका—उसे कहते हैं जिसमें जीव पूरा अज्ञानतामें फँसा होता है, जगतको सत्य समझता है शरीरके पोषण पालनको अपना कर्तव्य जानता है।

२ जाग्रत भूमिका—वह है जिसमें जीवको देहाभिमान, वर्णाभिमान, जात्याभिमान, विद्याभिमान तथा रूप और बलका विशेष अहंकार होता है।

३ महाजाग्रत भूमिका—में प्राप्त जीवको यह अहंकार होता है कि, लोक परलोकमें कुछ कर सकता हूँ, मुझमें अमुक प्रकारकी कला कौशल है गुण विद्यामें पूर्ण हूँ अमुकके ऊपर अधिकार धराता हूँ आदि।

४ जाग्रत स्वप्न भूमिका—वह है जिसमें जीव ऐसा समझता है कि, जो कुछ मैं जानता बूझता हूँ वह सब सत्य है। जो कुछ दूसरे करते हैं वह सब असत्य हैं। मनुष्यको ऐसे समझना चाहिये, जैसे ज्वरकी अधिकतासे मदिराको जल समझता हो।

५ स्वप्न जाग्रतवाला जीव—जो स्वप्न देखता है उसे ज्योंका त्यों याद रखता है।

६ स्वप्न भूमिका—वह है जिसमें प्राप्त हुआ जीव देखे हुये स्वप्नको भूल जाता है।

७ सुषुप्ति—गाढ़ निद्राके समान अचेताको कहते हैं।

अज्ञानकी इन सात भूमिकासे अपनेको बचाना, उनके फन्देसे बाहर होना इनके बदले सात ज्ञानकी सात भूमिकाओंकी इच्छा और उन्हींके लिये प्रयत्न करना उचित है।

ज्ञानकी सात भूमिकाएँ।

१—शुभइच्छा, २—स्वविचारना, ३—समानता, ४—शिशिरान्ति, ५— असंशक्ति, ६—पदार्था भाविनी, ७—तुरिया ये सात ज्ञानभूमिकाएं हैं।

१ शुभ इच्छा भूमिका—उसको कहते हैं जिसमें प्रवेश करनेसे शुभ कामना उत्पन्न होती हो अज्ञानताको दूर करनेकी इच्छा होती है, ज्ञान और मुक्ति प्राप्त करनेकी सच्ची अभिलाषा होती है, अपनी बीती हुई आयु और किये हुये अशुभ कामोंके ऊपर पश्चात्ताप होता है। कुसङ्गतिसे दूर भागता है शास्त्र विहित शुभ कर्म्मोंमें लग जाता है।

२ स्वविचारना भूमिका—में मनुष्य जब पहुँचता है उस समय यह सत्सङ्गति और शुभकर्म्मोंको खोजकर उनमें प्रविष्ट हो जाता है।

३ समानता अर्थात् तनुमानसा भूमिका—में पहुंचनेपर संसारसे वैराग्य हो जाता है, विषय वासनाको मिथ्या दुःखदाई समझकर उससे विरत्त हो जाता है। वैराग्य करके सब प्रकारके सुखोंको तुच्छ जान ईश्वरमें निमग्न हो जाता है।

५ असंशक्ति भूमिका —में पहुंचकर ईश्वरमें भी अधिक निमग्नता होती है।

६ पदार्थाभाविनी भूमिका—में पहुँचकर ऐसी दशा हो जाती है कि, बड़े परिश्रमसे दूसरे के जगानेसे जागता है नहीं तो ध्यानमें मग्न रहता है।

७ तुरिया भूमिका—इस भूमिका—में पहुंचनेपर दूसरोंके जगानेसे भी नहीं जागता, गुप्त प्रगट ब्रह्ममें लय हो जाता है।

इन सात ज्ञान और अज्ञान भूमिकाओंका बहुत विस्तृत वर्णन है, यहां नाम मात्रही लिखा गया है ।

माया दो प्रकारकी है, एकका नाम विद्या और दूसरीका नाम अविद्या है । इन्हीं दोनोंमें सारा ब्रह्माण्ड फँसा हुआ है । विद्याकी दशामें जीव परम ऐश्वर्यको प्राप्त हो, अनन्त ब्रह्माण्डोंकी उत्पत्ति पालन और नाश किया करता है । अविद्यामें सारे जीव बन्धे हुए हैं । यही जीव ईश्वर है और यही जीव है । ज्ञानकी न्यूनता और अधिकताके कारण भिन्न भिन्न नाम हैं । उपरोक्त ज्ञानकी सात भूमिओंमें प्रथमकी तीन भूमिकाएं साधकोंकी हैं शेष चार भूमिकाएँ जीवन्मुक्तकी हैं । प्रथम तीन भूमिकाओं को जीवकी भूमिका भी कहते हैं इन सबमें भिन्न भन्न अवस्था प्राप्त होती हैं ।

इन्हीं सात ज्ञान और अज्ञान की भूमिकाओंमें सब स्वामी सेवक बँधे हुये हैं । इनसे कोई बाहर नहीं है । यहीं तक अपरा विद्याकी पहुँच है ।

हंस देहका विशेष वर्णन ।

अद्यापि जीवके उन शरीरोंका वर्णन किया जो कि, सत्य स्वरूपसे पतित होनेपर प्राप्त होते हैं । सत्य स्वरूपसे पतित होनेपर उन्हीं छः देह नौकोश और पांच अहंकारोंमें जीवकी स्थिति होती है । ये सब देह और कोश आदि नाशमात्र भ्रममान हैं अब अविनाशी, स्थिर, सत्य सुखमय हंस देहका वर्णन सुनो । हंस देहमें पक्के पांच तत्व और तीन गुण होते हैं, कच्चे और पक्केकी समानता करके देखो उनके ऊपर ध्यान दो ।

हंसदेहके पक्के तत्व ।

१—धैर्य्य, २—दया, ३—शील, ४—विचार, ५—सत्य ये पांच पक्के तत्वोंकी पक्की देह थी, इन्हीसे हंस देह बनती है । अब इनका त्रिगुण सुनो । सत्य और विचारका गुण विवेक, शील और दयाका गुण गुरु भक्ति साधु भाव और धैर्य्यका गुण वैराग्य ।

इन्हीं पक्के पांचतत्व और तीन गुणोंमें जीवका वासा था, अब इनकी पचीस प्रकृति सुनो ।

धैर्य्यकी पांच प्रकृतियां—१—झूठका त्यागना, २—सत्यका ग्रहण करना, ३—संशय रहित होना, ४—अचल होना, ५—अहंकार नाश करना ये पांच हैं ।

दयाकी पांच प्रकृतियां—१—अद्रोह, २—समता, —मैत्री ४—निर्भयता, ५—समदर्शिता ये दयाकी पांच प्रकृतियां हैं ।

शीलकी पांच प्रकृतियां—१—क्षुधा निवारण, (तितिक्षा)—२ — प्रिय

वचन, ३—शान्त बुद्धि, ४— प्रत्यक्ष पारख ५—प्रत्यक्ष सुख ये शीलकी पांच प्रकृतियां हैं ।

विचारकी पांच प्रकृतियां—१ – अस्ति नास्तिपदका निर्णय करना, २—यथार्थ ग्रहण करना, ३—व्यवहार शुद्ध रखना, ४—शुद्धभावना रखना ५—सच्चित्तता (ज्ञान और विज्ञानकी प्राप्ति) करना ये हैं ।

सत्यकी पांच प्रकृतियां—१—निर्णय, २—निर्बन्ध, ३—प्रकाश, ४—स्थिरता, ५—क्षमा । इन्हीं पांचतत्व और तीन गुणों और पचीस प्रकृतियोंकी देह थी । इस शरीरमें यह बे परवाह और बन्ध रहित था । ने कोई इच्छा थी न विषयवासनाका बन्धन एव न पशु वृत्तिही थी, बरन इसका बड़ा प्रभाव और प्रकाश था । जब इसने अपने प्रकाशको देखा तो सोचने लगा कि, मेरे समान दूसरा कोई नहीं, मेरा रूप और गुण अनुपम हैं । ऐसा संकल्प होतेही इसको परम आनन्द प्राप्त हुआ, उस आनन्दमें यह अचेत हो गया, अपने आपकी कुछ भी सुधि नहीं रही । इसी अचेता अवस्थाका नाम ब्रह्म सच्चिदानन्द रख लिया । यह महान् सुषुप्तिकी अवस्था थी । जब यह ऐसी सुषुप्तिकी अवस्थामें आ अचेत हुआ तो इसके पक्के तत्व गुण और प्रकृति आदिक सब पलट गये. पक्कीसे कच्ची देह होगई ।

स्थूल देह ।

पाँच कच्चे तत्व तीन गुण और पचीस प्रकृति—धैर्य्यसे आकाश उत्पन्न हुआ, दयासे वायु निकल पड़ी, शीलसे अग्नि प्रगट हुई, विचारसे जलका प्रादुर्भाव हुआ, सत्यसे पृथिवी बन गई, पक्के तत्वसे बने हुये येही कच्चे तत्त्व हैं । इनके तीन गुण ये हैं—पृथिवी और जलसे सतो गुण हुआ, अग्नि और वायुसे रजोगुण हुआ, आकाशसे तमोगुण स्थित हुआ । उन्हीं पाँच तत्व और तीनों गुणोंका मेल होकर पचीस प्रकृतियाँ प्रगट हुई ।

कच्चे तत्वकी पचीस प्रकृतियाँ—१ आकाशकी पाँच प्रकृति १ काम, २ २ क्रोध, ३ लोभ ४ मोह, और ५ भय ।

२—वायुकी पाँच प्रकृति—१ चलना, २ बोलना, ३ बल करना, ४ सकोचना और पसरणा ।

३—अग्नि तत्वकी प्रकृति—१ आलस्य, निद्रा, ३ भूख ४ तृषा और ५ जम्हआई ।

४—जलकी पाँच प्रकृति—१ रक्त, २ मूत्र, ३ प्रसेब, ४ लार और ५ बिन्द (वीर्य) ।

५—पृथिवीकी पाँच प्रकृति--१ अस्थि, (हाड़) २ मांस, ३ नाड़ी, ४ चर्म, (त्वचा) ५ रोम ।

इन्हीं तत्व गुण और प्रकृतियोंकी कच्ची देह बनी है इस कारण इसका देह हुआ । हंस देहसे उलटी यह स्थूल देह उत्पन्न हुई, इसी को मनुष्य नामक स्थूल देह कहने लगे इसके प्राप्त होतेही अहंकार उत्पन्न हुआ, इसने अपनेको सबका स्वामी समझा । सुषुप्तिसे उत्थित होतेही दृष्टि उठाकर देखनेसे अपनी छाया दीख पड़ी, वह स्त्रीके स्वरूपमें स्थित हुई । उसीका नाम इच्छा हुआ । यह कामनाओंसे भरी हुई है । यह जीव एकसे दो हुआ इसी कारण नाम ब्रह्म और माया हुआ । दोनोंके संयोगसे स्त्रीको गर्भ रहा उससे तीन पुत्र उत्पन्न हुये, ब्रह्म अन्तर्धान हुआ ।

स्थूल सृष्टि ।

इस जीवसे मन उत्पन्न हुआ, ज्योति मनसे हुई, ज्योतिसे तीनों गुण प्रगट हुए. रजोगुण ब्रह्मा, सतोगुण, विष्णु, तमोगुण शिव हुआ. इस प्रकार यह जीव पक्केसे कच्चा हुआ । पीछे चौरासी लाख योनिकी कल्पना की । आपही आप सब योनियोंमें प्रवेश कर रहा है, आपही जगत है आपही ईश्वर है । अज्ञानताके कारण अपने आपको नहीं जान सकता । अविद्याके भवचक्रमें पड़कर अन्धकारमें बन्ध होगया । अज्ञान हुआ, अब व्याकुल होकर विचार करने लगा कि, मेरा कर्त्ता दूसरा कोई है । भिन्न कर्त्ताके निश्चय करतेही मिलनेकी इच्छा बढ़ी । अब तो जप, योग, तप आदिक नाना प्रकारकी युक्तियाँ करने लगा पर सफलता नहीं हुई । कुछ तेदेख नहीं पड़ा, तो कहने लगा मेरा ईश्वर निर्गुण निराकार है । वह बेचून बेचरा किसी प्रकार जाना नहीं जा सकता । उसी बेचून बेचराके वर्णनमें सर्व वेद, शास्त्र ग्रन्थ, किताब आदि बनाए । ब्रह्मा, विष्णु, शिव आदिको भी उसकी पहचान नहीं हुई । कभी कहता है निर्गुण, कभी कहता है सगुण ऐसे भ्रम और धोखेमें पड़ा । यह तो हिन्दुओंका सिद्धान्त हुआ ।

मुसलमानोंका सिद्धांत सुनो अर्थात् नहीं खुदा, है खुदा, सब धोखे और भ्रमका कलमा पढ़ने लगे ।

इस प्रकारसे जगतसे ईश्वर, ईश्वरसे जगत्, ऐसे नाना सिद्धांत बनने लगे । सब मनुष्य भ्रममें पड़कर अविद्याके अन्धकारमें भटक रहे हैं । किसीको कुछ भी नहीं सूझता न पता लगता है । इस जीवको कहीं शान्ति नहीं मिलती सब प्रकार दुःखही दुःख उठा रहा है ।

यदि किसी पर विश्वास करे तो उसका खण्डन हो जाता है, न विश्वास

करे तो नष्ट भ्रष्ट होता है, किसी प्रकार सुख नहीं मिलता । यह इस प्रकार आवागमनके रहटमें पड़ा कि, कभी ऊपर जाता तो कभी नीचेको पतित होता है, कभी तो ब्रह्म सच्चिदानन्द बन जाता है, कभी महान् दरिद्र नीच अवस्थाको प्राप्त होता है । किसी प्रकार शान्ति नहीं मिलती, न श्रेय पदको प्राप्त होता है । सदा बन्धनमें ही पड़ा रहता है ।

इसनें सहस्रों युक्तियाँ की तथा करता जाता है, इस कारण इसने नवधा भक्ति, योग युक्ति, षट् दर्शन, छयानबे पाखण्ड आदि नाना प्रकारके मार्ग प्रगट किये, सहस्रों प्रकारके धर्म और मजहब स्थित किये । अनन्त सिद्ध, साधु, पीर, पैगम्बर, औलिया, अम्बिया बील गये. किसीको अपने यथार्थ स्वरूपमें मिलनेकी राह न मिली । एक दूसरेसे कपट छल करके धोखेमें डाले देते हैं, स्वयं अन्धे बने हैं दूसरोंको मार्ग बतलाते हैं । अन्धे अन्धेको राह बतावें तो दोनों मुंहके बल गिरें । एक राह भूला हुआ पुरुष दूसरेका पथदर्शक बने तो उसकी जैसी गति होगी, वैसेही नाना प्रकारके मतवादियोंकी है । यथार्थमें किसीको मालूम नहीं होता कि, सत्य और असत्य क्या है ?

प्रपंचसे छूटनेके साधन ।

जो कोई सन्त गुरुकी सेवा करे, जिसपर सत्यगुरुकी दया हो उसी पर सत्य परमात्माकी भी कृपा होती है, जिससे पारख गुरुकी प्राप्ति होती है, पारख गुरुके प्राप्त होतेही सब भ्रम और धोखे नष्ट होकर सत्य पदकी प्राप्ति हो जाती है, अपने सत्य स्वरूपको पा लेता है और जहांसे पतित हुआ था उसी स्थान पर फिर पहुँच जाता है ।

पक्के तत्वकी प्राप्ति—जब यह जीव पारख पदपर स्थित हो जाता है तो इसके एक अनेकका भ्रम नष्ट हो जाता है. सब दौड़ धूप छूट जाती है, पारखसे ही मन और बुद्धि स्थिर और शुद्ध होते हैं । इसका आवागमन दूर होता है । पक्के तत्वकी प्राप्ति होती है। कच्चे तत्वका सम्बन्ध छूटता है, पारख गुरुसे मिल कर गुरु रूप हो जानेमें कुछ भी सन्देह नहीं रहता ।

हंस कबीर और दूसरेमें भेद—हंसदेह तथा पक्के और कच्चे तत्व पर ध्यान देकर विचार करनेसे प्रगट होगा कि, हंस कबीर और दूसरोंमें क्या भेद है ? हंस कबीर सब विषय वासनाओंसे मुक्त होते हैं. दूसरे विषयके बन्धनसे बाहर नहीं हो सकते, सहस्रों युक्तियाँ किया करते हैं पर बन्धनमेंही पड़े रहते हैं । चौरासीके जीवको सत्यमार्ग नहीं मिलता, अब अचेत हैं । लोगोंका सत्यमार्ग नहीं ऋषि मुनियोंको यह बात स्वप्नमें भी प्राप्त नहीं होती कि, यथार्थ क्या है ?

प्रामाणिकता—यह वचन सत्यगुरु सत्य कबीरका ज्यों का त्यों अनुवाद किया है. जिस किसीको परमात्माने दूरदर्शिता शुद्ध और सूक्ष्म विचार तथा तीव्र बुद्धि प्रदान की हो वही विचारे और समझेगा। जब खूब समझ जायगा तो उसे ज्ञान हो जायगा कि, स्वसम्वेदको और किताबों पर किस प्रकार श्रेष्ठता है? इसमें कैसी सूक्ष्म और अगम्य बातें लिखी हैं, जिससे सारा संसार अचेत है जिसके पथदर्शक था उपदेशक केवल हंस कबीरही हैं।

कथन—कबीर साहब कहते हैं कि, जीव अपने सत्य स्वरूपसे गिरा उसकी दशा बाल, मूक, जड़ और पिशाचके समान हुई। यह पतित होकर इन अवस्थाओंमें पड़ा अपने सत्य स्वरूपको एकदम भूल गया। इस बातकी तनिक भी सुधि न रही कि, मैं पहले क्या था और अब क्या होगया हूँ।

समस्त संसार और उसके कार्य्य—जब यह इस प्रकारसे उन्मत्त हुआ एकसे अनेक होगया, नाना प्रकारके सङ्कल्प विकल्प होने लगे, नानारूप दृश्य आने लगे, जिस प्रकार पागलोंको भ्रम करके नाना प्रकारके स्वरूप दिखाई देते हैं वह उनसे लड़ता झगड़ता और बकवाद किया करता है। एकको सत्य दूसरेको असत्य ठहराता है, एकको छोड़ता है दूसरेको ग्रहण करता है इस प्रकार अनेकोंको ग्रहण करता और छोड़ता है, स्थिर नहीं होता। अपने जाननेमें पागल होशमें अच्छाही करता है। पर सचेत और बुद्धिमान् पुरुषोंके जाननेमें वही पागल होता है। ज्ञान सुषुप्ति और अज्ञान सुषुप्ति दोनों उन्मत्त अवस्थाही हैं, इसी प्रकार तत्त्वमसिके तीनों पद झूठे हैं, जो कुछ यह कहता और सुनता है सब उसी प्रकार निर्मूल होते हैं कोई ठीक नहीं। यावत् मतमतान्तर हैं सब ऐसेही भ्रमके ऊपर खड़े हैं। जिस अवस्थामें यह संसारही अचेततामें रचा गया है तो उसके कर्म्म और वाणी वचन सब वैसेही भ्रम और अज्ञान संयुक्त होंगे, उनका माननेवाला बुद्धिमान् विद्वान् अथवा सचेत नहीं समझा जा सकता। इस कारण यह संसार अचेत और अज्ञान है, इसके सारे कार्य्य अचेतताके ही हैं।

निर्गुण सगुण भ्रम—यह जितना योग, युक्तियाँ, यज्ञ, जप, तप, भजन, भक्ति आदिक करता है सबका यही परिणाम है कि, ब्रह्म सच्चिदानन्दके पदको पहुँच जावे पर हंस देह नहीं पा सकता, इसकी समझमें यह बात नहीं आती इस संसारमें जितने सिद्ध, साधु, ऋषि, मुनि, पीर, पैगम्बर हुये हैं और होंगे किसीमें यह सामर्थ्य नहीं कि, वह यथार्थ पदको बतला सकें; सबके सब सगुण निर्गुणमें पडे हुये हैं, निर्गुण और सगुण सब भ्रम और धोखा है सब इसी निर्गुण और सगुणके बन्धनमें रहा करते हैं, इससे बाहर निकालनेवाला कोई सत्य पथ दर्शक नहीं दीखता।

छाया वासना—यह अपने जानते तो वासनाको त्याग देता है, मनको मार लेता है पर यथार्थमें न तो इसका मन मरता है न वासनाही नष्ट होती है, वासना सर्वदा इसके सङ्ग बनी रहती है। सब ओरसे ज्ञानका सूर्य मध्याह्नको पहुँचता है तो इसकी वासना जो यथार्थमें इसकी छाया है, इसके शरीरमें गुप्त हो जाती है, बाहर नहीं दिखाई देती पर सर्वतः इससे अलग नहीं होती। ज्ञानरूपी सूर्य नीचेको ढलने लगता है तो वासनारूपी छाया फिर प्रगट होने लगती है यह उस छायारूपी स्त्रीसे प्रेम करने लगता है सदैव उसको अपने हृदयमें लगा रखता है, इस कारण वह इससे दूर नहीं होती।

उसका साथ—यद्यपि यह अपनी तपस्या, भजन भक्ति, और ज्ञानसे पूर्णताको पहुँच जाता है, बहुत ऊँचे पदको प्राप्त करता है तो भी वासना इसको खींच लेती है पूर्वकी अवस्थामें डाल देती है, इसी कारण यह तत्त्वमसिके तीनों पदमें फँस गया है, बाहर निकलनेकी राह नहीं पाता। वासना ही माया है, यही उसकी छाया है यही इसकी प्यारी स्त्री है, यही इसको पकड़ कर नचाया करती है। उसका इससे छूटना कठिन है, इसको पक्के तत्वका घर नहीं मिलता, सदा कच्चे तत्वमें बंधा रहता है।

कबीरसाहबका शब्द।

कहु वैकुण्ठ कहां रे भाई।

कितना ऊँचा कितना नीचा केती है चौड़ाई।
अटकल पञ्चो भरमत डोलें कौन महलको जाही ॥
जिस साहबने किया पसारा ताको चेतत नाहीं।
करत फिरे सगरी बद फेली चारों गई भुलाई ॥
कोइ कोइ पहुँचे ब्रह्मलोकको धरि माया ले आई।
आन पड़े यम कालके फन्दे फिरि फिरि गोता खाई ॥

इस प्रकार यह जीव दुःखी और बिकल हुआ इसको कुछ सूझता नहीं कि क्या उपाय करें?

कर्म उपासना भ्रम है—यह अपनीही भूलसे अपने स्वरूपसे भ्रष्ट हुआ स्वयं चौरासी लाख योनिकी कल्पना की आपही प्रत्येक योनियोंमें मारा मारा फिरता है। समस्त संसारमें आपही व्यापक हो रहा है अपने भूलसे आपको नहीं पहचानता। इसको कितनाही सिखलाया जावे नहीं सीखता, अपने हठको नहीं छोड़ता मन इसको जिधर भटकाता है उधरही ठोकर खाता फिरता है, आपही सब कौतुक कर रहा है, अपनेही कौतुकको आप नहीं जानता। कर्म्म उपासना,

योग और ज्ञान असत्य हैं उसी प्रकार अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष निर्मूल और जल तरङ्गवत् हैं।

गज़ल ।

भूल मत यार यह शराब सुरआब । पिये हुयेमस्त दिल किया है कवाब ।।
झूठ को सच जान गलतीसे । यह खयालात सारे नकश बर आब ।।
पञ्च हंकार है तमाशए दिल । होते और जाते रहते मिस्ल हबाब ।।
वार सब रह खबर न पार कहै । कौन जानै सो बरतरीन जनाब ।।
लौलियां हविस जो जिस्मानी । कर दिया सारे शहरको खराब ।।
और इन्सान किस हक़ीक़त में । औलिया अम्बिया अल्लाह ए हबाब ।।
अस्ल इसरार जाने आजिज़ कौन । दिल जो चाहे सो राग रङ्गो रबाब ।।

बटमार—जितने जीवन्मुक्त कहलाये सात ज्ञानभूमिकाके अनुरागी हुये किसीका छुटकारा न हुआ । इस कारण यह है कि, उन लोगोंने मनुष्यके यथार्थ धर्म न जाने धर्मके स्वरूप न पहचाने सबके सब एक दूसरेकी चाल पर चले आते हैं, सत्य बातको कोई स्वीकार नहीं करता । यदि कोई सत्यकी ओर झुके तो दूसरे लोग उसको भटका कर फिर अँधेरेमें डाल देते हैं इसको सत्यकी चाल पर नहीं चलने देते । सचाई रूपी मार्गमें अनेक बटमार लुटेरे हैं इस कारण सबही डूब रहे हैं ।

चार प्रकारके आनन्द ।

१ अज्ञानानन्द—जो सांसारिक रागद्वेषमें प्रवृत्त हो परलोक तथा ईश्वरी भयसे अचेत रहे, मदिरापान करता हो, मांस खाता और व्यभिचार तथा विषय-भोगमें फस रहा हो देहको सच जानकर उसीके शृंगारमें लगा हुआ हो, सदा स्वाद और विषय लम्पटताका अभिलाषी रहे ।

२ ज्ञानानन्दका—स्वरूप है कि, स्थूल सूक्ष्म और कारण—जो तीनों देह हैं इनके स्वरूप और तीनों अवस्थाको जानै, पांच तत्वके पञ्चीकरण को जाने, चारों अन्तःकरणका स्वरूप जाने, मायाकी उपाधियोंको त्याग करे, समझे कि, सब मायासे हैं, चेतन ज्ञानके सत्यसारमें आनन्द रहे अपने स्वरूप आत्माको श्रेष्ठ मानता रहे उसीमें अहम्भाव (अर्थात् वह मैं ही हूँ) भावना रख बारम्बार अभ्यास करे ।

३ विज्ञानानन्द—अवस्थामें क्रिया कर्ता और कर्म कुछ शेष नहीं रहता आत्मा स्वयम् प्रकाश विज्ञानानन्दमें मग्न रहता है और यह विज्ञान हंस सबसे श्रेष्ठ माना गया है ।

४ परमानन्द—वह है कि, सुरतीको सत शब्दमें लीनकर देवै सत लोकमें प्रविष्ट हो। यह पदवी सबसे उत्कृष्ट है। स्वसम्वेद इसीकी प्रशंसा करता है। इससे बढ़कर कोई पदवी नहीं है इस आनन्दको पानेपर इसके आगे सब आनन्द तुच्छ हैं। उक्त तीन पदवीमें जीवमुक्ति कहलाती हैं असत्य हैं। यह परमानन्द पद सत्य है।

तत्त्वमसि इत्यादिका विशद वर्णन।

यह जीव अपने यथार्थ स्वरूपको भूलकर झाँई को साईं कहने लगा, अन्वेषण करते करते थक गया, भौ चक्करमें पड़ा, योगी, जङ्गम सेवड़ा आदिके पास गया, जीव ईश्वरका तत्व पूछने लगा. उन्होंने इसे कर्म उपासना ज्ञान और साधनोंमें लगाया, नानाप्रकारके माहात्म्य सुनाये। चित्त चला बुद्धिने निश्चय करलिया, अहङ्कार उठा इस अहङ्कारकी गांठ पड़ी तो इसमें ऐसा विचार हुआ कि, हम सबसे पहलेही तरंगे। इस प्रकार ज्ञानी और अज्ञानी सब धोखेमें पड़कर आवागमनमें प्रवृत्त हुये हैं।

गुरुओंने जो झूठे विचार बतलाये सब मनुष्योंने उन्हींको सच करके मान लिया। उन्हीपर ऐसा निश्चय किया कि, कोई पारख पदको भी समझावें तो भी कोई नहीं मानता। जहाँ मन बुद्धिकी पहुँच नहीं वहाँ ब्रह्मका खोज क्यों कर होगा? न कहीं, ब्रह्म न कहीं ईश्वर, न अल्लाह न खुदा न राम न रहीम, यह सब जीवके संकल्प मात्र हैं। एक यह जीव सत्य है, सब झूठ हैं, जहांतक यह दौड़ता गया वहांतक इसी प्रकार मानता गया। जहां पर यह थककर बैठ गया, वहां परब्रह्मका स्वरूप समझ लिया। जिसको इसने ब्रह्मका स्वरूप निश्चय कर लिया वोही इसका भ्रम है। इसका भ्रमही ब्रह्म ठहर गया। इस प्रकार यह भुलाकर चौरासीके बन्धनमें पड़ा तत्त्वमसिके तीन पदोंमें जकड़ा गया।

(१) त्वम् पदसे दो प्रकारके अज्ञानका कथन।

इस त्वं पदमें सबविषयी बंधे हुये हैं, इसको विशेष अपरोक्ष अज्ञान कहते पैं। जो खाना पीना स्त्री प्रसङ्ग करना, भोग विलास पसन्द करता है, अपने जात्याभिमानमें रहता है, वेद शास्त्र और गुरुको नहीं मानता, बुद्धिमानों और ज्ञानियोंकी निन्दा करता है, साधुओंका ठठ्ठा करता है. उनसे कहता कि, यह अभागे हैं उत्तम सांसारिक सुखोंको छोड़कर धक्के खाते और दुःख उठाते फिरते हैं। मृगनैनीके सुखका आनन्द उनके भाग्यमें नहीं है। मुक्ति कोई पदार्थ नहीं केवल मनकी भ्रममात्र कल्पना है। जब मृत्यु होती है तभी मोक्ष हो जाती है, जबतक शरीर है तभीतक सब कुछ है, पीछे कुछ भी नहीं रहता. जिस प्रकार वृक्षसे पत्ता गिर

जाता है वह फिर वृक्षमें नहीं लगता इसी प्रकार संसाररूप वृक्षमें शरीररूप सब पत्ते लगे हैं। शरीर गिरा तो फिर कुछ शेष नहीं रहता। इस कारण शरीरको दुख देना महान् मूर्खता है। इस अपरोक्ष अज्ञानके दो प्रकार हैं—एक अपनी इच्छासे और दूसरा पर इच्छासे। जो अपनी अज्ञानतासे हो उसे विशेष अपरोक्ष-अज्ञान कहते हैं. जो दूसरोंकी इच्छासे अथवा दूसरोंके वचन पुस्तक आदियोंके सुनने और पढ़नेसे दृढ़ हो उसे समान अपरोक्ष अज्ञान कहते हैं।

दूसरेका नाम परोक्ष अज्ञान है, इसको समानाधिकरण बोलते हैं। जो इस अज्ञानमें होता है वह ईश्वरको अपनेसे भिन्न जानकर नाना प्रकारके साधन और तप आदिक करता है, इसके भी दो प्रकार हैं, एक सांसारिक, दूसरा पारलौकिक पारलौकिक। प्रथममें—सांसारिक कामनाओंकी पूर्णताके लिये देवताओंकी पूजा और उपासना भक्ति करते हैं। मनमें यह आशा रखते हैं कि, स्त्री, पुत्र, लक्ष्मी मान बड़ाई आदि प्राप्त हो। दूसरा वह है कि, जो अपने उद्धारके लिये नानाप्रकारके यम नियम आदिको धारण करते हैं। मनमें आशा रखते हैं कि, मेरी मुक्ति हो जावे। यह दूसरे प्रकारका साधन करनेवाला पुरुष बड़ा भाग्य-वान् है इसीमें सब साधुलोग लगे हैं। नानाप्रकारके संयमों और तपस्याओंमें निमग्न हो रहे हैं। त्वंपदमें सब आज्ञानी लोग फँसे हैं इस अज्ञानका कुछ पारावार नहीं, अनन्त हो रहा है. कर्म्म उपासना, योग, ज्ञान आदिक जो कुछ तीन लोकमें तो रहा है वो सब लौकिक पारलौकिक विचार अज्ञानकी दशामें है। इसी अज्ञानमें सब पड़े हुए डुब डुब कर रहे है।

तत्पदसे दो प्रकारके ज्ञानका कथन।

तत्पदसे दो प्रकारका ज्ञान समान और विशेष है। जो उपाधि और ऋद्धि सिद्धि सहित हो। जिसको विशेष ज्ञान होता है, उसीको ईश्वर कहते हैं। जिसको समान ज्ञान होता है वह ज्ञानी कहलाता है, वह अपने सब गुण दोषोंको जानकर दूसरोंके भी सुख दुःखको जानता है, सब बातका विवेक रखता है। तीनों अवस्थाएँ और सब विषय वासनाके कर्तव्योंको मिथ्या समझता है, सारे संसारको स्वप्नके समान नाममात्रका जानता है, सारे संसारको स्वप्न और सङ्कल्पके समान निश्चित करता है, अपने आपको सत्य और शेष समझता है, इस ज्ञानका नाम परोक्ष ज्ञान है। यह भी दो प्रकारका है। एक तो यह कि, जिसमें। सब प्रकारकी शक्ति ऋद्धि सिद्धि आदि साथ हो; जिसमें ईश्वरके छः ऐश्वर्य हों दूसरे ज्ञानका नाम समान ज्ञान है, इस ज्ञानवाला सब प्रकारके ऐश्वर्यको तुच्छ मिथ्या और दुखदाई एवं उपाधिमात्र समझता है. उसका निश्चय होता है कि,

में त्रिगुणसे परे हूँ, मुझे कोई भी नहीं जान सकता, मैं सर्वका साक्षी द्रष्टा हूँ। यह परोक्ष ज्ञानका वर्णन हुआ।

अब अपरोक्षका वर्णन सुनो। अपने शरीरके अन्तर बाहरके दोषोंको भली प्रकार जानता है इसी प्रकार दूसरोंके शरीरकी उपाधिको भी जानता है, तीनों अवस्थायोंके दुख सुखसे भली प्रकार विज्ञ होकर जाग्रत स्वप्न-सुषुप्तिकी सब सुधि रखता है। इन्द्रियोंके कर्म्मोंसे भली प्रकार विज्ञ होता है सारे संसारको नाशमान् और अपनेको अविनाशी जानता है, अपने आपको सब शक्तिमान् समझता है, सब प्रकारकी सामर्थ्य रखता है, होनीको अनहोनी और अनहोनीको होनी कर देखलाता है। इस प्रकार षट् ऐश्वर्य जिसमें हो वह जगत्का ईश्वर कहलाता है, सब प्रकारकी ऋद्धि सिद्धि उसके आधीन होती है, सृष्टिकर्ता करके पूजा जाता है। यह प्रथम अपरोक्ष ज्ञान कहलाता है ।

अब दूसरे अपरोक्ष ज्ञानका वर्णन करता हूँ—जिसको तीनों कालका ज्ञान हो, जिसकी दृष्टिसे तीनों काल उठ गये हों, जसकी दृष्टिसे सर्व त्रिकुटी नष्ट होगई हो, जिसका कुछ भी शेष न हो, मैं सत्य हूँ मुझसे अतिरिक्त सब असत्य है, अर्थात् तीन कालमें आत्मभिन्न कुछ हुआही नहीं। ऐसे ज्ञानीको शिव कहते हैं।

असिपदसे दो प्रकारके विज्ञानका कथन।

जो कोई जान बूझकर जड़ अवस्थाको धारण करले और ऐसा बन जावे जैसे मद्यप मतवाला बनजाता है, एक अनेककी सुध नहीं रहती है, परम आनन्दमें निमग्न होजाता है। इसमेंभी दो प्रकार होता है—एक तो असत्यविज्ञानी जो बनावटसे ऐसी दशाको धारण कर लेता है अर्थात् मनमें द्वैतका लेश रहता है परंतु हठसे अथवा बनावटसे दम्भ करके ऊपरसे बाल मूक पिशाच जड़की अवस्था दिखलाता है। सत्य विज्ञान धार्मिक पुरुष वह है जिसकी दृष्टिमें द्वैतका लेश भी न हो आपहीको जगत्, आपहीको ब्रह्म, आपही को कर्ता, आपहीको कर्म्म, आप हीको द्रष्टा, आपहीको दर्शन, आपहीको दृश्य, जो कुछ बोलता और सुनता है सो आपही है, आपही डोलता है आपही डोलाता है अपनीही लीला सब प्रगट है। दूसरा कोई दृष्टि नहीं आता है जिसकी दृष्टिमें ऐसा हो उसे सत्य विज्ञानी कहते हैं। यही तत्वमसिके तीनों पदका संक्षेप विवरण है।

पारखपद।

अब स्वसम्वेदके अनुसार पारख पदका वर्णन करता हूँ – तत्वमसिके तीनों पद भ्रम और मिथ्या हैं। उनमें अन्धकार रहता है जिसके कारण अपने

स्वरूपकी सूक्ष्मताको नहीं जान सकते। तत्वमसिके तीनों पदोंके ऊपर पारखपद है. वही सत्यपद है, उसीसे जीवोंकी मुक्ति होती है। जो कोई पारख पदको प्राप्त कर लेता है वह पारखी कहलाता है। पारखी गुरु सब धर्म और धोखेको नष्ट कर देता है। एक, अनन्त, बाहर, भीतर, पिण्ड, ब्रह्माण्ड सबके भेद कसर खोटको भिन्न २ करके परखा देता है। पारख पदको प्राप्त हुआ पुरुष फिर कभी उससे पतित नहीं होता। तत्वमसिके तीनों पदको इस जीवने मानकर निश्चय कर रखा है इस कारण ये सत्य दीखते हैं, नहीं तो यथार्थमें तीनों पद निर्मूल और भ्रम मात्र हैं क्योंकि जो कुछ इसने अपने मनसे मान लिया निश्चय कर लिया वो सब भ्रम और धोखा है यह मन आशा तृष्णामें फँसाकर भव सागरमें डुबानेवाला है, इसके उपदेशसे किस प्रकार तर सकता है? इससे तरनेकी आशा रखना मृगतृष्णाके जलसे प्यास बुझानेके समान है। पारख गुरु हंसपद प्राप्त होता है। तत्वमसिके अभिमानी शुद्ध स्वरूपको नहीं पा सकते, सब प्रकारसे अहङ्कारको त्याग करही पारख गुरुसे सत्य स्वरूप प्राप्त होता है।

जन्म मरणकी सात शाखायें।

जीव अपने सत्यस्वरूपसे पतित होकर विरह और प्रेममें फँसकर अपने यथार्थ स्वरूपको विस्मरण कर देता है। फिर इधर उधर ढूंढने लगता है कुछ आधार नहीं पाता तो थककर कहने लगता है कि, मेरा ईश्वर निर्गुण निराकार है बेचून बेचरा है। इस प्रकार आदिमें जब जीवोंने नानाप्रकारकी कल्पना और निश्चय करके कुछ प्राप्त नहीं किया तो दुखीके दुखी रहे, शिव ब्रह्मा और सनकादिक ऋषियोंने नाना प्रकारकी वाणी बनाई सब जीवोंको विरह लगाया सब जीवोंको वाणीका विष चढ़ गया। जब उसमें अचेत हुए तब आशा और भय अर्थात् रोचक और भयानकमें नाना प्रकारकी आशा करके फँसे उसीको जन्म मृत्युका बीज कहते हैं। उसी बीजसे सात शाखायें उत्पन्न हुईं।

ॐ श्रीं रं सौं ऐं ह्रीं क्लीं।

अ इ उ ए व ह म

आशा तृष्णासे ये सातबीज उत्पन्न हुये, इन बीजोंमेंसे प्रत्येकको भिन्न २ सात शाखायें हुईं। १ कर्म्म, २ उपासना, ३ योग, ४ ज्ञान, ५ उत्पत्ति, ६ स्थिति और ७ नाश। इन सातोंमेंसे प्रत्येककी सात शाखायें हुईं, जिनका विस्तार बहुत है पर यहाँ संक्षेपसे लिखता हूँ।

१ कर्म्मकी सात शाखायें—अ—अर्थात् कर्म्मकी नाना प्रकारकी रीतियां हैं— १ यजन, २ याजन, ३ अध्ययन, ४ अध्यापन, ५ दान, ६ प्रतिग्रह, ७ मैथुन।

यजन—इसलोककी, याजन—पर लोककी, अध्ययन—विद्याभ्यास करना, अध्यापन—अभ्यास कराना, दान देना, प्रतिग्रह (संग्रह करना—अर्थात् दान लेना) और मैथुन कर्म्मोंकी यही सात शाखायें हैं।

२ उपासनाकी सात शाखायें—इ—अर्थात् श्रीं बीज—१ शिव, २ विष्णु, ३ गणपति, ४ सूर्य, ५ शक्ति ६ राम, ७ कृष्ण ये शाखायें हैं, इनके सात करोड़ महामंत्र हैं। जारण, मारण, वशीकरण, उच्चाटन, आकर्षण स्तम्भन मोहन येही फल हैं।

३ योगकी सात शाखायें—इसका बीज रं है, १ हठयोग, २ कुण्डलिनी योग, ३ लम्बिका योग, ४ तारक योग, ५ लय योग, ६ अमनस्क योग, ७ साङ्ख्य योगये शाखायें हैं। समाधि फूल और सिद्धि फल है।

४ ज्ञानकी सात शाखायें—सोहं बीजका ज्ञान अंकुर है उसकी सात शाखायें हैं—२ शुभइच्छा, २—स्वविचार, ३—तनुमानसा, ४ सत्वापत्ति, ५ असंशक्ति , ६—पदार्थाभाविनी, ७ तुरिया। परोक्ष ज्ञान फूल है। अपरोक्ष ज्ञान फल है।

५ उत्पत्तिकी सात शाखायें—ऐं बीज है, उत्पत्ति अङ्कुर है, उसकी सात शाखा हैं—१ शब्द, २ स्पर्श, ३ रूप, ४ रस, ५ गन्ध, ६ इच्छा और ७ वासना।

शब्द—बादलके गरजनेसे और नाना प्रकारके शब्दोंसे कोड़े, मकोड़े और मेंढक, जोंक आदि उत्पन्न होते हैं।

(२) स्पर्श—मैथुनसे जो जीव उत्पन्न होते हैं।

(३) रूप—अनल पक्षी आदिक बहुतसे जीवधारी केवल दृष्टिसे उत्पन्न होते हैं, वे सब रूप सृष्टि कहलाते हैं।

(४) रस—इससे समस्त जलके जीवोंकी उत्पत्ति है, वृक्षोंके फलके कीड़ोंकी उत्पत्ति भी इससे ही होती है।

(५) गन्ध—इससे उषमज योनिकी उत्पत्ति होती है।

(६) इच्छा सिद्धि योनि है—योगीश्वर लोग अपनी इच्छासे चाहें जैसा स्वरूप धारण करलें जहाँ चाहें चले जाँय, एकका अनेक स्वरूप बना लें, लघु दीर्घ आदिक हो जावें, इसीको सिद्धि योनि कहते हैं।

(७) वासना—वासनासे देवता भूत प्रेतादिककी देह बनती है, यही सात प्रकारकी उत्पत्ति है। स्त्री फूल है। पुरुष फल है।

६ स्थितिकी सात शाखायें—(ह्रीं) अथवा (म) स्थितिका बीज है। १ अन्न, २ पानी, ३ घास आदि, ४ मिट्ठी, ५ पत्ती, ६ फूल, फल आदि।

७ नाशकी सात शाखायें—क्लीं-अथवा हूँ—यह नाशका बीज है, इनसे सात शायायें निकली हैं। वह ये हैं—१ पृथिवी, २ जल, ३ वायु, ४ अग्नि, ५ पग, ६ हाथ, दाँत। इसके अतिरिक्त नाशके लिये सहस्रों प्रकारके हथियार बने हैं, सो सब इन्हींके अन्तर्गत हैं।

जीवका भ्रम।

जीवने अपने सत्यरूपसे गिरकर इन्हीं सात शाखाओंमें बासा लिया। इन्हींके वशमें पड़ा हुआ बारम्वार जन्म मृत्युको प्राप्त होता है, कहीं सुख नहीं मिलता। यद्यपि यह बहुत युक्तियाँ करता है पर इसके छूटनेकी आशा नहीं होती, जिस गुरु अथवा आचार्यके निकट जाता है, वेही अपने स्वार्थ और मान बड़ाईके वश होकर नाना प्रकारकी रीति रसम और पाखण्डोंमें फँसाकर अपने आधीन करनेकी इच्छा करते हैं पर अज्ञानियोंको कुछ भी सुधि नहीं होती कि, मुक्ति किसे कहते हैं? और बन्धन किसको है?

भवसागरमें जितने लोग अपनेको ज्ञानी और ध्यानी समझते हैं, जीवन्मुक्त मान रहे हैं, विदेह मुक्तिकी आशा रखते हैं वे सब मिथ्या भ्रममें पड़े हैं। वे लोग जिनको जीवन्मुक्त कहते हैं वे कर्मोंके पाशमें बँधे बारम्वार भगवसागरमें फेरा खाया करते हैं। यदि एक दरिद्रीका नाम राजा रख दिया जावे तो क्या वह इससे यह राजा हो सकता है? उसकी दरिद्रता नष्ट हो सकती है।? कदापि नहीं। वह नाममात्रको राजा कहलाता है, यथार्थमें नहीं कहला सकता। इसीप्रकार वेदने जिनको जीवन्मुक्त बतलाया है वे सब जीवन्बन्ध हैं, जीवन्मुक्त कोई नहीं। वे सब कर्म्मके रहटमें पड़े हुये हैं; जैसे रहटमें बरतन भरके नीचेसे ऊपरको आता है ऊपर आके फिर नीचेको जाता है, इसी प्रकार यह जीव भी कर्म्मोंसे ईश्वर पदको प्राप्त करता है, नीचे पड़के नाना प्रकारकी योनियोंमें भटकता है। इन सात शाखाओंमें पड़ा हुआ पुरुष छूटनेका मार्ग भी नहीं पाता।

संसारके जीवधारी इन्हीं सप्त शाखाओंमें पड़े हुये बारम्बार आवागमन करते हैं। यही कालपुरुषका पंजा है जिसमें पड़े हुये जीवका छूटना दुस्तर है।

सर्व मत मतान्तरको जो ऋषि मुनि जीवन मुक्ति और विदेह मुक्तिकी कथा किया करते हैं। उनकी जीवन मुक्ति हुमा पक्षीके समान है। जिसको न किसीने कभी देखा, न उनका निवास स्थान ही जानते हैं, जो कि, जाकर देख लें, केवल लोगोंकी बनावट और कल्पनाकी ही बातें हैं।

कबीर साहब सर्वदाससे कहते चले आते हैं कि; किताबोंके द्वारा न किसीकी मुक्ति हुई है न होगी, न इन नाना प्रकारके मतोंके गुरुवा लोकोंके उपदेशसे कोई बन्धनसे छूटा है, न छूटेगा ।

कितने पक्षपाती धर्मद्वेषी नानाप्रकारकी युक्ति और प्रमाणसे सिद्ध करना चाहते हैं कि, अधिकारी लोग विशेष कारणोंसे प्रगट होते हैं पर विचारनेकी बात है कि, जबतक सांसारिक कामना न हो तो आवागमनमें आनेकी क्या आवश्यकता है ? । कोई किसी प्रकारकी युक्ति, तप आदि क्यों न करे पर जबतक सत्य गुरुकी कृपा न होगी तबतक वासनासे निवृत्त नहीं हो सकता ।

गर्भमें आनेका कारण, मुख्य करके पूर्व जन्मका पाप है । क्योंकि, गर्भ पूर्ण नर्क है । जबतक गर्भमें जाना आना लगा है तबतक ज्ञानी अज्ञानीमें किसी प्रकारका भेद नहीं है । कोई थोडे दिनोंके लिये, राजा बन गया, कोई दरिद्री रहा तो इससे क्या हुआ ? कोई ज्ञानी हुआ कोई अज्ञानी, किसीको थोडी विद्या हुई, किसीको उससे अधिक पर जबतक आवागमनका भ्रम न छूटा तबतक उत्तम, मध्यम, कनिष्ठ सब बराबर हैं ।

कैवल्य शरीरसे लेकर स्थूल देह तक सभी नाशमान हैं निर्मूल हैं, किसी में अंधकार है, किसीमें प्रकाश, किसीमें थोड़ा ज्ञान है, किसीमें बहुत, किसीमें थोडी सामर्थी है, किसीमें बहुत, कोई थोड़े दिन जीता है कोई दीर्घायु होता है । क्या हुआ ? कैसे ही पदको प्राप्त हो पर जबतक इन पांच देहोंके अहंकारसे न छूटेगा तबतक सुखको न प्राप्त करेगा ।

ये पांचों अहंकार काल पुरुषके हैं । इन्हीं द्वारा बिधि निषेध दोनों कर्मके भेद बनाये हैं । इसके भेदको हंस कबीरके बिना दूसरा कोई नहीं जान सकता, जो जीव गर्भमें आते हैं वे सब काल पुरुषके कैदी हैं । निष्पाप कोई कभी कैद नहीं हो सकता, जो कैदी होता है उसका कुछ न कुछ अपराध होता है । निरपराध कभी भी बन्धनमें नहीं आ सकता ।

केवल अपराधियोंके लिये ही कारागार बनाया गया है । न्यायी प्रभु कभी किसीको बिना अपराध दण्ड नहीं दे सकता । उसके जितने कार्य्य हैं सब न्याय संयुक्त हैं । जो अपराधी होता है वह जेलखानेके दारोगाके आधीन किया जाता है यह उसको जंजीरोंमें बांधकर जेल खाने (कारागार) में कैद कर देता है । ये तीनलोक कारागृह हैं धर्म्मराय इस जेलखानेका अधिपति है । तो अपराधियोंको कर्मरूप जंजीरसे बांधकर मातृ गर्भमें डाल देता है । वहां पर जीव हाय २ करता है, पुकारता है कि, हे प्रभो ! मुझ दीनको इस दुःखसे छुड़ा, मैं

तेरी शरण हूँ । बाहर निकलकर तेरे भजनके सिवा कुछ न करूँगा । इस प्रकार प्रार्थना कर यह जीव गर्भसे बाहर होता है अपने बचनको भूल जाता है, विषय वासनामें पड़कर मोह मत्सरमें मस्त हो जाता है ।

साखी – कबीर-उर्ध्व कपाले लटकता, वह दिन करले याद ।।
जठरा सेतो राखिया, नाहि पुरुषकर बाद ।।

मुसद्दस – जिनके डरसे सारे मे हुआ रआशा ।।
एक थिर न रहे खिर गये मानिन्द बताशा ।।
ले मौत पकड उन्को बटेराको जो बाशा ।
कर बन्दणी बे आज़ की तब देख तमाशा ।।
अज़ सबके इबादत्से किया खुश्क जसदको ।
सुरपति भी डरे जिन्से करे दिलमें हसद्को ।।
वह भी न कोई पाया परम पुरुष पद्को ।
सब भूल गये अपने अमल नेक ओ बद्को ।।
सो सारे हक अन्देश किया मस्कने शाशा ।
कर बन्दगी बे आज़की तब देख तमाशा ।।
अलिभो आमिल् कामिल् बडे सरकार कहाये ।
बे पारख पद पर तत्व आनन्द न पाये ।।
माकूल और मन्कूलमें दिन रात गँवाये ।
बे बूझ न सूझे पढ़ गुरु ज्ञान भुलाये ।।
अरबी फारसी तुर्की संस्कृत औ भाषा ।
कर बन्दगी बे आज़की तब देख तमाशा ।।
केते करते दावा बख्शिदये अमाके ।
दादार जमादार ज़मीनो जमाँके ।।
शक्निन्दए बाज हों क़वी पीलदमाके ।
लूँ फेर छूटे तीर जो तक़दीर कमाँके ।।
गर बूझ हक़ीकत तो रत्ती और न माशा ।
कर बन्दगी बे आज़की तब देख तमाशा ।।
बे मुर्शिदे हक्कजूईके बद खोय दवाँ है ।
खुद बीन खुदीसे रहै तारीक रवाँ है ।।
पादोस्त बहर ओस्त इस आजिज़का मकाँ है ।

क्या जाने जाहिल वह साहिल सो कहाँ है ।।
क्या इल्मो अमल आमिल कामिल होवे लाशा ।
कर बन्दगी बे आज़की तब देख तमाशा ।।

जगत्को असत् प्रतिपादन

यह जगत् असत् है। यद्यपि यह सत् होकर भासता है तथापि मृगतृष्णाके जलके समान असत् है। असत्के ग्राहकोंको सत्य पदार्थ नहीं मिल सकता, सांसारिक पदार्थोंके अभिलाषी संसारमें ही रहेंगे। जिन लोगोंने संसार तुच्छ समझ लिया है उनका संसारसे प्रेम नहीं होता। यह संसार उसी मृगतृष्णाके जलके समान है, जो हिरणको दौड़ाकर मार डालता है। गर्मीके दिनोंमें जब हिरण प्यासा होता है, जलके लिये इधर उधर भटकने लगता है तो उस समय उजाड़ मैदानमें उसे दूरसे जल दीख पड़ता है। मृग, जल जानकर उसकी ओर दौड़ता है पर उसके निकट पहुँचते पहुँचते वह जल फिर उसको उतनीही दूर आगे दीख पड़ता है। इसी प्रकार अनेक बार दौड़ते दौड़ते हिरण थककर गिर पड़ता है, प्राण त्याग देता है। इस प्रकार इस संसारके भोग विलास त्रिविध तापोंसे तपे हुये, सुखके प्यासे जीवोंको, सुखदाई दीख पड़ते हैं पर इसकी प्रवृत्ति विषयोंमें होती है तो सुख मिलता नहीं---पर तृष्णा अधिकसे अधिक होती जाती है, अन्तमें निष्फलताके साथ मर कर आवागमनको प्राप्त होता है।

सांसारिक वासनाके बद्ध पुरुष बारम्बार संसारी पदार्थोंकी इच्छा करके उसीमें फँसे रहते हैं, उसीके लिये प्रयत्न करते हैं, उसीके प्राप्त होनेसे आनन्द समझते हैं। ऐसे पुरुषोंका अंतःकरण मलीन रहता है, वे ईश्वरको प्राप्त नहीं हो सकते। क्योंकि, ईश्वरको प्राप्त होनेके लिये उनको प्रयत्न करनेका समयही नहीं मिलता। ऐसे लोग अपनी आयुको सांसारिक व्यवहारोंमें व्यतीत कर देते हैं। जो लोग सत्संग करते हैं उनको संसार बाजीगरके खेलके समान जान पड़ता है। जिस प्रकार बाजीगर नाना प्रकारके कौतुक दिखलाता है, कभी वाटिका लगा देता है, कभी उसे अन्तर्धान कर देता है। कभी किसीको मृतक करके जीवित कर देता है, कभी कुछ कभी कुछ आश्चर्ययुक्त कार्य कर दिखाता है पर उसकी सब जादूगरी मिथ्या होती है, उसी प्रकार इस संसारके सारे कार्य आश्चर्यमय हैं। उस सर्व शक्तिमान् बाजीगर (जगत्कर्त्ता) ने इस संसारकी रचना की है। जिस प्रकार बाजीगर कौतुक करता करता तमाशेको समेट लेता है उसी प्रकार ईश्वर जगत्का प्रलय कालमें प्रलय कर देता है। अज्ञानी जन इस कौतुकको देखकर आश्चर्य मानते हैं, पर जो पुरुष बाजीगरके कौतुकका

भेद जानता है, कभी धोखेमें नहीं आता। यहां पर मैं कई एक दृष्टान्त लिखता हूँ, जिससे लोगोंको संसारकी असत्यता प्रमाणित हो।

प्रथम दृष्टान्त।

सन् १८५७ में जब कि, हिंदुस्तानमें राज विद्रोह हुआ था, दिहली शाह अपराधी ठहराये जाकर शहरसे निकाल दिये गये थे। शहर लूट लिया गया था। उसी समय, महाराजा कपूरथलाके दीवान, रामजसमल नामक खत्रीको एक पुस्तक, लूटमें मिली थी जो स्वयम् शाहजहाँ बादशाहके हाथकी लिखी हुई थी, उसमें एक बात इस प्रकार लिखी थी।

बादशाह लिखता है कि एक दिन एक बाजीगर नाना प्रकारके कौतुक दिखाने वह एक तलवार लेकर आकाशकी ओर उड़ गया। ऊपर जानेके समय वह कहता गया कि "मैं खुदाके साथ लड़ाई करने जाता हूँ"। थोडी देरमें देखतेही देखते, वह आखोंसे छिप गया। अधिक समय न लगा होगा कि, ऊपरसे उसका धड़ (जैसे, हाथ, पाँव, आदिसे लेकर समस्त शरीरके) एक एक टुकड़े होकर नीचे गिर गया। अब उसकी स्त्रीने कहा कि, मेरा पति मर गया है, मैं सती होउँगी। बादशाह तथा अनेक लोगोंने बहुत समझाया पर स्त्रीने एककी भी न मानी, लकड़ियोंका ढेर लगाकर अपने पतिके अंगोंको लेकर सती होगई। उसके जल जानेके पीछे थोड़ी देर बाद बाजीगर आनन्दमें मग्न नीचे उतरा। अपनी स्त्रीको न देखकर बादशाहसे अर्जकी कि, मेरी स्त्रीको बुलवा दिया जाय। बादशाहने कहा कि, तेरी स्त्री तो तेरी लाशके साथ जलकर राख होगई, पर उस बाजीगरने एकका भी कहना न माना। अन्तमें अपनी स्त्रीको ऊँचे शब्दसे पुकारने लगा, तो वह स्त्री बादशाही अटारीपरसे बोली कि, मैं महलमें हूँ। उसने पुकारा कि, चली आ। वह आनन्द पूर्वक हँसती हुई आगई।

बाजीगरका यह कौतुक देख बादशाह प्रसन्न हुआ। उसे बहुत कुछ पारितोषिक देकर बिदा किया।

द्वितीय दृष्टान्त।

सन् १८३० ई० में मैं अपनी जन्मभूमि आजमगढ़में थे। वह मेरे विद्योपार्जनका समय था। आजमगढ़में मच्छर नहीं थे। लोगोंसे पूछनेपर लोग कहते कि, यहाँके मच्छरोंको एक बाजीगरने बाँध दिया है। मैंने पूछा कि, किस प्रकार? लोग कहते कि, एक समय यहाँके राजाके पास एक बाजीगर आया। उस समय राजा अपने राजमहलमें था। राजाको खबर पहुँची तो राजाने कहा कि, इस समय बाहर निकलनेसे मच्छर बहुत दुख देंगे। क्योंकि, मेरे शहरमें मच्छर

बहुत हैं । बाजीगरने कहला भेजा कि, मैं शहर भरके मच्छरोंको बाँधे देता हूँ, राजा साहब आकर मेरा खेल देखें । बाजीगरने अपने मंत्रके बलसे शहर भरके मच्छरोंको क़ैद कर दिया । राजा बाहर आया । बाजीगरने बहुत प्रकारके कौतुक दिखाये पीछे वही कौतुक दिखलाया वैसाही कर्तव्य किया जैसा कि, शाहजहाँ बादशाहके वृत्तान्तमें लिखा गया है । अन्तमें राजाने उपरोक्त बाजी-गरको कतल करनेकी आज्ञा दी । अंतमें गिड गिडानेपर भी, अपने प्राणको बचाता हुआ न देखा तो बाजीगरने शाप दिया कि, "ऐ राजा ! तू कोढ़ी होकर बहुत दुःख पावेगा, तेरा राज्य नष्ट हो जावेगा, महान् कष्ट भोगकर प्राण त्यागेगा ।" पीछे बाजीगर तो मारा गया पर राजाको भी ठीक वैसेही विपत्ति, दुःख और कष्टोंका सामना कर प्राण त्यागना पडा; जैसा कि, बाजीगरने शाप दिया था ।

बाजीगरकी समाधि—उपरोक्त बाजीगरकी समाधिपर एक खजूरका वृक्ष उगा जो कि, सीधा शहतीरके समान खड़ा था । राजाके वंशवाले उसपर खारुयेको गिलाफ लगाते और उसको पूजा किया करते थे । यदि वे उसकी पूजा नहीं करते तो उनको नाना प्रकार के विघ्नोंद्वारा बहुत दुःख हुआ करता था । नियत समयपर समाधिपर मेला लगा करता था, जिसमें हजारों आदमी इकट्ठे होते थे । राजाका किला टूट फूट कर दरियामें गिरता जाता था । राजाकी संतान, किला खजूर का वृक्ष, मेला और समाधिकी पूजा, मैंने अपनी आखोंसे देखी थी ।

अनुमान होता है कि, उपरोक्त बाजीगर वही था, जिसने शाहजहाँ बादशाहको कौतुक दिखलाया था क्योंकि, बादशाह और राजा एकही समयमें हुए थे ।

राजाके परिवारका बालक—मूर्ख राजाने विचारा था कि, यदि इस बाजीगरको मार डालूंगा तो यहाँके मच्छर ऐसे ही बँधे रहेंगे । अज्ञानतासे यह न सोच सका कि, जिस शरीरके सुखके लिये मैं ऐसा अनर्थ करता हूँ वह कबतक रहनेवाला है । इसका सुखही क्या है । उस पापका जो फल उसको प्राप्त हुआ वो तो ऊपर लिखा गया पर उसकी संतान भी महान् दुःखमय जीवन व्यतीत-कर रही थी । उसी राजाके वंशका एक विद्यार्थी मेरे साथ पाठशालामें पढ़ने आया करता था जो महान् दुःखी था । उस समयके आजमगढ़ जिलाके मजिस्ट्रेट और कलेक्टरको धन्य है जिन्होंने, उसकी सब दशा देख उसके खानदानका हाल जान दया कर उसके पोषण पालनके लिये एक तहसीलदारीकी जगह दिलवा

दी, जिससे उसे जीवन यात्राका सहारा लगा। यह हाल मैंने अपने कानों सुना कितनोही बार अपनी आँखोंसे देखा।

समन्वय —— इस हालके लिखनेसे मेरा यह प्रयोजन है कि, उपरोक्त बाजीगरके खेलसे इस संसारकी दशा प्रगट करूँ कि, यह संसार निरञ्जन नटका खेल है, बड़े बड़े महात्मा सिद्ध, साधु गोते इसमें पड़े खा रहे हैं।

पथिकका दृष्टान्त।

एक पथिक कहीं चला जाता था। एक दिन सन्ध्या होनेतक ठहरनेका कोई स्थान न मिला, पथिक घबड़ाकर शीघ्र किसी गाँवमें पहुँचनेकी कोशिश करने लगा। बहुत प्रयत्न करके जल्दी जल्दी मार्ग समाप्त करनेपर भी रात हो जानेतक कोई ग्राम न मिलनेसे और भी अधिक घबराया। अन्तमें बहुत व्याकुल होनेपर दूरसे एक दीपकका प्रकाश दिखाई दिया। उसे देखकर कुछ धैर्य्य हुआ, मनमें अनुमान किया कि, अवश्य कोई ग्राम है। अब बहुत शीघ्रता-पूर्वक चलकर ग्राममें पहुँचा। वहाँ जाकर देखनेपर जान पड़ा यह तो ग्राम नहीं शहर है। ऊँचे ऊँचे मकान खडे हैं, दीपकोंका प्रकाश फैल रहा है, दोतरफी दूकान लगी हैं, लोग अपने अपने कारबारमें लगे हुए हैं। बाजारमें सब प्रकारके पदार्थ मौजूद हैं। अतः पथिकने अपनी आवश्यकतानुसार पदार्थ लेकर, आनन्दपूर्वक भोजन किया, पानी पीकर सो गया। दिन भरका थका था ही ऐसी गाढ़ निद्रामें सोया कि, दूसरे दिन सात बजे आँख खुली। तो देखा कि, न तो शहर है, न मकान। न दूकान है, न कोई आदमी ही है वरन् शून्य सान जंगल पडा है।

पथिक यह कौतुक देख अत्यन्त आश्चर्यमें आकर, सोचने लगा कि, या परमात्मा यह क्या बात है ? जिस शहरमें ८—१० घण्टा पहले मैंने पदार्थ खरीदे, इस समय उसका कुछ भी पता नहीं। इसी आश्चर्य सागरमें डूबा हुआ चलते चलते जब कुछ आगे गया तब क्रमशः दूसरे मुसाफिर मिलने लगे। पथिकने लोगोंसे पूछना आरम्भ किया कि, यहाँ पर एक शहर था, जिसके बाजारमेंसे खानेके पदार्थ लेकर रात मैंने भोजन किया उसी शहरमें सो गया पर इस समय उसका कुछ भी पताही नहीं। लोग उत्तर देते कि, क्या कहते हो ? यहां तो कभी भी न शहर बसा, न बाजार लगा, न यहाँ आदमीही रहते हैं ! हम लोग सर्वदासे इस जगहको ऐसाही देखते हैं। यह बात सुन सुनकर पथिक अचम्भेमें आता था।

पथिकने जो नगर देखा था उसे गँधर्व नगर कहते हैं। गन्धर्वोंमें यह सामर्थ्य है कि, वे जो चाहें करलें। वे शहर बना लेते हैं पुनः जब चाहते हैं अन्तर्धान कर देते हैं। किन्हीं किन्हीं साधुओंमें भी ऐसी ही सामर्थ्य होती है कि, अपने

संकल्प द्वारा जो, पदार्थ चाहते हैं उपस्थित कर देते हैं फिर संकल्पसेही गायब भी कर देते हैं। यदि चाहें तो नियत समयतक स्थित भी रख सकें।

कोलम्बसका अमेरिका प्रगट करनेका दृष्टान्त।

नई दुनियाँ (अमेरिका) का प्रकाश कोलम्बस नामक जहाजीने किया था, जिसको ४०० वर्षके लगभग होता है। उसने चाहा कि, अपना जहाज उत्तर महासागरसे होकर भारतवर्षको ले जाऊँ। क्योंकि, दक्षिणसे तो अँग्रेजोंको मार्ग मालूमही है, उत्तरसे चलकर नया रास्ता निकालना अच्छा होगा। उसने सोचा कि, जब पृथ्वी गोल है तब चाहे दहिनेसे चलो, चाहे बायेंसे, अन्तमें एकही स्थानपर पहुँचना होगा। यह सोच विचार कर कोलम्बसने अपना जहाज उत्तरसे चलाया। जहाज महासागरमें पड़कर ऐसे स्थानपर जाने लगा, जहाँ पृथ्वीका भाग देख पड़ना भी कठिन हुआ। जहाज परके खानेकी सामग्री घटने लगी, यहाँतक कि, लोगोंने घोड़ोंको भी मारकर खा लिया, अन्तमें मनुष्योंको खानेकी बारी आई वरन् दो चार मारे भी गये। दो चार आदमियोंको मारकर खा लेनेके पीछे सबने आपसमें विचार करके यह निश्चय किया कि, कोलम्बसको भी मारकर खालो, उसीके कारण हमलोग इस विपत्तिमें फँसे हैं। जब कोलम्बसके मारनेकी युक्ति करने लगे तो कोलम्बसने सभोंसे कहा कि, एक दो दिन मुझे और जीवित रहने दो, यदि भूमि मिल गई तो अच्छा नहीं, तो मारकर खालेना। कोलम्बस मनमें बहुत घबड़ाया उदास हो जहाजको आगे चलाया। ईश्वरकी कृपा और लीला विचार करने योग्य है कि, जहाज बहुत दूर भी न गया होगा कि, समुद्रमें घास फूस बहे जाते देख पड़े। कोलम्बसके मनमें कुछ धैर्य्य हुआ, मनमें विश्वास हुआ कि, अब यहाँसे पृथिवी निकट है जिधरसे घास बही आती है पृथिवी उसी ओर है, यह अनुमान करके जहाजको भी उसी ओर चलाया। थोड़ेही दूर चलने पर अमेरिका[1] देश मिला जिसे कि अब नई दुनियाँ कहते हैं मिला।

वहाँ पहुँचकर कोलम्बसने देखा कि, वहाँके लोग बड़े सरल सीधे और छल कपट रहित हैं, उनके पास धन बहुत है। कोलम्बसने दो चार तोप लगादी कई आवाजकी, जिसको सुनकर अमेरिकन लोग डर गये। उन लोगोंने आपसमें अनुमान किया कि, यह (कोलम्बस) सूर्य्यका पुत्र है उसकी पूजा करने लगे, उसकी आज्ञा दासके समान पूरी करने लगे। कोलम्बसने अमेरिकाका समाचार

---

१ इसी देशको नवीन शीक्षित लोग पाताल अथवा नागलोक कहते हैं वचनोंको सिद्ध करनेके लिये बहुतसी युक्तियाँ भी दिखलाते हैं।

योरोपमें भेजा, जिसको पाकर योरपके कई एक सम्राटोंने अपनी सेना भेजकर अमेरिका का बहुतसा भाग अपने आधीन कर लिया।

इस अमेरिकाको नई दुनियाँ बोलते हैं। वहाँके लोग बहुत सरल हृदय और छल कपटसे रहित थे। इससे प्रमाणित होता है कि, यह देश कोलम्बसके सङ्कल्पसे उत्पन्न हुआ था। उसका ऐसा सङ्कल्प हुआ कि, यह देश ऐसाका ऐसाही बना रहा, वही अबतक चला जाता है। इसको पहले कोई भी नहीं जानता था, इसकी रचना भी गन्धर्वनगरके समान है।

नारदजीकी कथा।

एक समय नारदजीने कठिन तपस्या की, जिसको देखकर इन्द्र भयभीत हुआ कि, नारद मेरा राज्य ले लेगा। इसी भयके कारण नारदजीकी तपस्याको नष्ट करनेके लिये कामदेवको भेजा। कामदेवने नारदजीके निकट जाकर शक्तिके अनुसार बहुतसी युक्तियां कीं पर मुनि कामातुर न हुये। पश्चात् इन्द्रके निकट गया कहा कि, नारदमुनि पर मेरा कुछ भी बल नहीं चलता, नारदजीने मुझे जयकर लिया। नारदजीको (कामके निष्फल होनेके कारण) अहङ्कार हुआ कि, मैं कामजीत हुआ, मेरे बराबर दूसरा कोई नहीं है। इसीमें नाना प्रकारके सङ्कल्प विकल्प करते हुये इन्द्रके पास पहुँचे। वहाँ इन्द्रसे अपनी अपनी बड़ाई आपही करने लगे कि, मैंने कामको जीता। इन्द्रने कहा—क्यों न हो? आप जैसे तपस्वी, महात्मा ज्ञानीका काम क्या कर सकता है। इन्द्रसे यह अपनी प्रशंसा सुन नारदमुनि वहांसे सीधे चलकर ब्रह्मलोकको पहुँचे। ब्रह्माजीने कुशल मङ्गल पूछनेके बाद पूछा कि, ऐ बेटा! कहांसे आ रहा है? नारदजीने कहा मैं अमुक बनमें तपस्या कर रहा था, वहां काम मुझे छलने गया, पर मैंने उसको जीत लिया, इतना कहकर अपने तप तथा कामदेवका सब हाल कह सुनाया। यह बात सुनकर नारदजीको अभिमान देख ब्रह्माने कहा कि ए बेटा! ऐसा अभिमान मत कर काम बड़ा बली है, उसके कारण बहुत लोग नष्ट भ्रष्ट हुये हैं। अबसे यह अभिमान मनसे निकाल दे, मेरे सामने कहा सो कहा, विष्णु भगवानके सामने भूलसे भी न कहना।

ब्रह्माजीकी यह बात सुनी अनसुनी कर नारद शिवजीके पास गये। शिवजी बड़े प्रेमसे मिले। नारदजीने वहाँ भी अपनी वही बात चलाई, जिसको सुनकर शिवजीने कहा कि, यहां जो कहा सो कहा विष्णुके पास यह कभी न कहना। पर नारदजी शिवजीके वचनको भी न मानकर सीधे विष्णुलोकको गये, भगवान्‌ने बड़े प्रेमके साथ नारदका सत्कार कर कुशल मङ्गल पूछा।

नारदका तो मन तरङ्गोंमें था वहां भी अपनेको कामजीत प्रगट किया । विष्णु भगवान्‌ने नारदकी बात सुनकर मुसकुरा कर प्रगट किया कि, आप सब तपस्वियोंके शिरोमणि हैं आपके सन्मुख कामका जीतना कौन बड़ा भारी काम है ? भगवानने मनमें विचार किया, इस समय नारदको अङ्कार हुआ है । यदि इसको न सम्हाल लिया जावेगा तो बहुत दुःख होगा । इतना विचार कर अपनी शक्तिको आज्ञा दी। मायाने वहांसे चलकर एक स्थान पर जो नारदजीके जानेका मार्गमें ही एक नगर बनाया, जिसमें राजा प्रजा सहित सब सांसारिक सामग्री । उपस्थित कर दीं ।

उधर तो यह कौतुक हुआ, इधर नारदजी भगवानके पाससे चलकर उस नगरमें पहुँचे, नगर देखनेकी लालसासे शहरमें प्रवेश किया । नारदजीके आनेका समाचार राजाके पास पहुँचा, वह दौड़ा हुआ आया नारदजीकी अगवानी करके अपने राजमहलमें ले गया, अर्घ्य पाद्य दे पूजन कर उच्च आसनपर बैठाया ।, पीछे अपनी एक पुत्रीको जिसका कि वह शीघ्रही स्वयम्बर करनेवाला था बुलाकर नारदजीके सन्मुख खड़ा किया । कहा कि, महाराज ! दया करके इसके भाग्य अभाग्यका विचार बतलाइये इसको कैसा पति मिलेगा ? यह भी कहिये नारदजीने देखकर कहा कि, यह बालिका बहुत भाग्यशालिनी है, इसका पति सब विद्या सम्पन्न कला कौशल संयुक्त महाऐश्वर्यवान् चक्रवर्ती राजा होगा । नारदजीने प्रगटमें तो यह कहा पर अन्तःकरणमें उसके प्रेमका तीर खाया । यह चिन्ता हुई कि, किसी प्रकार इस राजकुमारीको व्याहना चाहिये । इसी चिन्तामें विचार करते २ यह निश्चय किया कि, यदि मैं अत्यन्त सुन्दर बन जाऊँ तो यह मुझे अवश्यही स्वीकार कर लेगी । अन्तमें विचार करते २ यह निश्चय किया कि, विष्णुसे बढ़कर कोई सुन्दर नहीं है, अब चलकर विष्णुसे सुन्दरता माँगनी चाहिये । यह निश्चय करतेही उलटे फिरकर विष्णुलोक पहुँचे । विष्णु भगवान्‌ने देखकर कहा, बहुत शीघ्र लौटे । कहो क्या चाहिये नारदजीने कहा कि, आप अपनी सुन्दरता दीजिये, श्रीनगरके राजा की पुत्रीका स्वयम्बर है । विष्णु भगवानने कहा कि, बहुत अच्छी बात है जिसमें आपकी भलाई होगी वही करूंगा । इतना सुननेके बाद नारदजीने देखा कि, मेरा शरीर परम सुन्दर होगया, पर यह सुधि नहीं हुई कि, मेरा मुंह कैसा है ? भगवानने समस्त शरीर तो नारदका अपने समान बना दिया पर मुख बन्दरोंकासा बनाया । नारदजी वैकुण्ठसे चलकर फिरसे उसी नगरमें पहुँचे, वहां देखा कि, राजकुमारीके स्वयम्बरकी बड़ी तैयारी हो रही है, रङ्गभूमिमें देश देशके अनेक राजे

और राजकुमार बैठे हैं, राजकुमारी माला लिये फिर रही है। नारदजी भी रङ्गभूमिमें पहुँचे, जाकर एक आसन पर विराजमान हुये मनमें लगी थी कि, राजकुमारी मेरेही गलेमें जैमाल डाले, पर राजकुमारी फिरते २ जैसे नारदजीके सन्मुख आई वैसेही पिछले पाँव फिर कर दूसरी ओर चली गई। नारदजी अपने आसनसे उठकर राजकुमारीके सन्मुख जा बैठे। राजकुमारी उनको देखतेही उधरसे भी लौटी। अब तो नारदजीने ऐसा किया कि, राजकुमारी जिधर २ जाती उधरही उधर उसके सन्मुख जा बैठते राजकुमारी भी विचित्र बन्दर मुखवाले पुरुषको देखकर घृणासे दूसरी ओर फिर जाती। इतनेहीमें विष्णु भगवान भी राजाके स्वरूपमें आकर रङ्गभूमिमें उपस्थित हुये। राजकुमारीने जैसेही भगवानको देखा वैसेही माला पहनादी। नाना प्रकारके बाजन बजने लगे, बड़े उत्साह और आनन्द पूर्वक भगवानके साथ राजकुमारीका विवाह हो गया, भगवान् उसे साथ लेकर वैकुण्ठको गये। भगवानके चले जाने पर नारदने निराश होकर मनमें बहुत क्रोधित हो चलनेका विचार किया। नारदजीकी व्याकुलता और क्रोधसे क्षण क्षणमें मुखका रङ्गबदलते देखकर शिवके गणोंने, कहा कि, महाराज आपका मुंह तो देखिये! आरसी न मिले तो जलमें देखो। नारदजीने जाकर जलमें मुखको देखा। कुरूप बन्दरकासा रूप देखकर अत्यन्त क्रोधित हुये। क्रोधसे उन दोनों शिवके गणोंकी ओर देखा। कहा कि, हे मूर्खो! तुमलोगोंने जान बूझकर न कहा मेरा ठट्ठा किया जिससे मेरी अप्रतिष्ठा हुई तुम लोगोंने जानकर मेरी प्रतिष्ठा नष्ट की है, इस कारण तुम दोनों राक्षस होगे बन्दरोंसे तुम्हारी दुर्दशा होगी। फिर नारदजी क्रोधसे झुंझलाते हुये विष्णु-भगवानके पास चले। जाते जाते राहमेंही राजकुमारी सहित विष्णु भगवान् मिल गये देखतेही क्रोधके आवेश में आकर शाप दिया कि, हे विष्णु! जैसे तूने मेरे साथ छल किया है, मुझे स्त्रीका वियोग कराया उसी प्रकार तू भी मनुष्य का शरीर धारण करेगा, तेरी स्त्रीका हरण होगा, जिसके लिये बनबन रोता फिरेगा, बिरहसे व्याकुल होगा, मेरा मुख बन्दरोंकासा बनाया है इस कारण बन्दरोंकाही आसरा लेना पड़ेगा, उनके बिना तेरा कार्य्य सिद्ध न होगा। नारद-जीके इसी शापके अनुसार रामावतार हुआ, रावणने सीताका हरण किया, फिर बन्दरोंकी सहायतासे रावणको जय किया।

मायानगर—जिस नगर में यह हाल हुआ था वह श्रीनगरके नामसे प्रसिद्ध है। कोई २ कहते हैं कि, काश्मीरकी राजधानी श्रीनगर वही मायावी शहर है। कोई कहते हैं कि, बद्रीनारायणके मार्गमें जो श्रीनगर नामक नगर है

वही वह नगर है। अतः कुछ भी क्यों न हो, दोनोंमेंसे एक न एकही होगा। यदि इस नगरकी शोभा और बनावट अब वैसी नहीं रही है पर अब तक नगर वर्तमान है उसको मायाने एक पलमें बनाया था यह कथा भी पूर्वोक्त कथाओंके समान है।

सिकन्दर बादशाह और फकीर।

किसी समय एक फकीरने बड़े सिकन्दरकी दावत की। फकीरने अपने चेलेसे कहा कि, तू अमुक मैदानमें खड़ा होकर अपनी झोली हिलाया कर। गुरुकी आज्ञानुसार शिष्यने झोली हिलाना आरम्भ किया थोड़ेही समयमें उस मैदानमें एक नगर बस गया। राजाओंके योग्य सब सामग्री इकट्ठी होगई, सहस्रों दास दासियाँ उपस्थित हो गये, पाकशाला खड़ी होगई, नानाप्रकारके भोजन तैयार होने लगे। एक ओर नाच रङ्गका सामान इकट्ठा हुआ, आनन्द कुतूहल होने लगा इस प्रकार फकीरने बादशाहकी बड़ी आवभक्ति की। बादशाह जब भोजन करके शयनागारमें गया तो वहां एक परम सुन्दरी स्त्री भी उसके साथ सोई पर जब वे दोनों सो रहे थे सम्भोग करते २ अन्तका समय निकट आया तो उस फकीरने अपने चेलेसे कहा कि, अब तू झोलीका हिलाना बन्द कर दे, शिष्यने जैसेही झोलीका हिलाना बन्द कर दिया वैसेही सब रचना अन्तर्धान होगई, सूनसान उजाड दीखने लगा न कोई जीवधारी रहा न कोई मकान, न कोई पदार्थ ही वहाँ देखनेमें आया। बादशाहने देखा कि, मैं औंधे मुंह पृथिवी पर पड़ा हूँ, न वह स्त्री है, न वह पलँग। अपनेको नङ्गा पृथिवी पर पड़ा देखकर अनुमान किया कि, इस फकीरने मेरे साथ ठट्ठा किया है, क्रोधमें आकर फकीरको बहुत ढुंढ़वाया पर कहीं उसका पता न लगा न उसका चेलाही मिला। इस प्रकार उस फकीरने बादशाहको यह उपदेश किया कि, न तू कुछ है न तेरी बादशाहतही है।

इन्द्रकी कथा।

योगवाशिष्टमें लिखा है कि, किसी समय देवतों और दैत्योंमें युद्ध होने पर इन्द्र दैत्योंसे परास्त होकर भयसे भागा। अपने योगबलसे बहुत सूक्ष्मरूप बनाकर एक परमाणुमें घुस गया। अब उसमें से दैत्योंके भयके कारण वहाँसे निकलना नहीं चाहता था। पर उसे तो तीन लोकका राज्य भोगना था इस कारण उसी परमाणुमें ही तीन लोक दीख पड़े। सब सामग्री राजा, इन्द्रको उसी परमाणुमें मिली उसी परमाणुमें दश पीढ़ी तक इन्द्रका राज्य रहा।

तपस्वीकी कथा ।

इसी पुस्तकमें लिखा है कि, एक पुरुष उलटा लटक रहा था, उससे उसका आशय यह था कि, तीन लोकका राज्य मिले, पर उसकी स्त्री इस हेतु तपस्या कर रही थी कि, मेरा पति मेरे घरसे बाहर न जावे । दोनोंकी कामना पूर्ण हुई, उस पुरुषने तो सातों द्वीपका राज्य पाया उसकी स्त्रीके जानते उसका पति उसके घरसे बाहर न गया । घरके भीतरही उसे सात द्वीपका राज्य मिला ।

तपस्वी गाधको माया दर्शन ।

एक समय कर्मकाण्डी विद्वान् सरयू नदीमें खड़ा होकर तपस्या कर रहा था, अत्यन्त कष्टसे तपस्याके सिद्ध होनेपर विष्णु भगवान् प्रसन्न हुये दर्शन देकर बोले कि, वर माँगो । तपस्वीने कहा कि, आपकी मायाका कौतुक देखना चाहता हूँ । भगवानने कहा कि, ऐसाही होगा । इतना कहकर भगवान तो अन्तर्धान हो गये । तपस्वीने पानीमें स्नान करनेके लिये डुबकी लगाई तो क्या देखता है कि, वह सपरिवार है अपने घरपर बीमार होकर मर गया है, उसके घरके लोग रोते हुए शोक करते हैं । रीतिके अनुसार उसकी अन्तिम क्रिया हुई, श्राद्ध आदिक भली प्रकारसे किये गये । अब क्या देखता है कि, एक भङ्गीके घरमें जन्म लिया जहाँ इसका गज नाम रखा गया । सोलह वर्षकी अवस्था होने पर एक सुन्दरीके साथ विवाह हुआ, आनन्दपूर्वक उसके साथ जीवन व्यतीत करने लगा । इसके कुछ दिन बीत जानेपर तपस्या करनेकी इच्छा हुई, जङ्गलमें रहकर तपस्या करने लगा । कुछ दिनके बाद स्त्री आदिक सब मर गये, उसके शोकमें देश त्यागकर दूसरे देशको चला गया, जिस देशमें वह पहुँचा वहां का राजा सन्तानहीन मर गया था । वहांके लोगोंने रीत्यानुसार एक हाथीके सूंड़में मोतियोंका माला दे दी ऐसा निश्चय कर लिया कि, यह हाथी जिसको माला पहनावेगा उसीको राजा बनाऊँगा । उसी समय जब कि, गज उस देशमें पहुँचा कार्रवाई हो रही थी, उस हाथीने इस भङ्गी (गज) के गलेमें माला डाल दी । अब गजकी दयासे उस देशका राजा बन गया । अब वहां उसका नाम "कौल" रखा गया । बहुत दिनोंतक आनन्द पूर्वक राज्य करनेके बाद एक दिन राजा कौल नग्न शरीर फिर रहा था कि, उसीके वंशका कोई पुरुष भङ्गी वहां आ निकला । उसने राजा कौलको पहचान कर कहा, भाई गज ! इतने दिनों तक कहां रहे, किस प्रकार अपना जीवन व्यतीत किया, आजका दिन कैसा अच्छा है कि, बहुत दिनोंके विरेछु हुये मित्रसे भेंट होगई । वे दोनों खड़े वार्तालाप कर रहे थे, बहुतसे लोगोंने उनको

देखा यह बात प्रसिद्ध होगई कि, राजा जातका भङ्गी है। इस बातके प्रसिद्ध होनेपर राज्यके जितने अहलकार थे सब बहुत लज्जित हुये। विचारने लगे कि हाय ! हमने बड़ा अनर्थ किया कि, भङ्गीके साथ भोजन आदिक संसर्ग किया। प्रायश्चित्तके लिये ब्राह्मणोंके पास गये, ब्राह्मणोंने कहा कि, अपना सब धन सम्पत्ति ब्राह्मणोंको दान करदो अपने कुटुम्ब सहित अग्निमें जल जाओ इस पापसे छूटोगे, दूसरा कोई भी मार्ग नहीं है। अतः वे सब अपना धन सम्पत्ति ब्राह्मणोंको देकर अग्निमें जल मरे।

कौल राजाने जब सुना कि, मेरेही कारण सहस्रों मनुष्य सपरिवार अग्निमें जलकर मर गये, अब मेरा जीवन व्यर्थ है, मैं भी जलकर मर जाऊँगा यह विचार कर लकड़ियाँ जमा करके चिता बनाई उसपर बैठके अग्नि लगा दी। थोड़ी देरमें अग्निकी ताप उसे लगी चेत आया अपनेको देखा कि, मैं वही गाध नाम ब्राह्मण हूँ, जो सरयू नदीमें स्नान कर रहा था। उसके कपड़े जैसेके तैसे रखे हुये हैं, स्नान करनेके लिये चार घड़ीसे अधिक समय नहीं बीता पर उसको भङ्गीके घरमें रहते और उसको राज्य करते हुये सौ वर्ष (१००) हो गये थे। नदीमें डुबकी मारतेही उसको यह दशा हो गई थी।

यह कौतुक देखने पर भी सन्तोष नहीं हुआ, फिर तपस्या करना आरम्भ किया। दूसरी बार तपस्या आरम्भ करने पर एक ब्राह्मण उसके घर आया। वह नवागत बहुत कृश और निर्बल हो रहा था। गाधने उसको यह दशा देखकर पूछा, तुम ऐसे क्यों हो रहे हो ? अभ्यागतने कहा कि, मैं केशर देशका रहने-वाला हूँ, कालके प्रभावसे वहां एक चाण्डाल राजा हो गया था, जिसके साथ वहांके सब लोगोंने भोजनादिक किया, जिसके कारण वे सब अग्निमें जलकर मर गये। अग्निमें जल जानेके भयसे मैं वहाँसे भाग आया। क्योंकि, मेरा भी उन लोगोंके साथ भोजन आदिकका संसर्ग हुआ था। इस भयसे कि, कोई मुझे भी जल जानेको न कहे मैंने देश छोड़ दिया। अब अज्ञात देशोंमें फिरता हूँ जिससे मुझे कोई न पहचान ले। तभीसे बराबर चान्द्रायण व्रत करता हूँ, जिसके कारण शरीर कृश और निर्बल हो गया है।

यह कहानीको सुनकर गाध ब्राह्मणने अपने मनमें विचारा कि, यह तो मैंने स्वप्नके समान देखा था, यह प्रत्यक्ष कैसे वर्णन करता है ? इस ब्राह्मणकी जबानी तो मेरा स्वप्नके समयका देखा हुआ सब सत्य जान पड़ता है। कुछ विचार कर उस अभ्यागत ब्राह्मणसे पूरा पता ठिकाना पूछ लिया। वह ब्राह्मण तो बिदा हो गया और गाध उस विषयकी सत्यता जाननेके लिये चला।

प्रथम लौतदेशको गया वहां अपने भङ्गी परिवारोंको देखा, उनको भली प्रकार पहचाना, मकानोंको ठीक २ वैसेही देखा। वहांसे केशर देशको चला, केशर देशमें पहुँचकर राज्यका हाल जाना, जैसे पहले देखा था वैसेही पाया। लोगोंसे कहा यहाँके लोग तो बड़े भक्त और अभ्यागतसेवी जान पड़ते हैं। लोग कहने लगे कि, यहाँ तो बड़ी भक्ति और सेवा हुआ करती थी पर कुछ दिन हुए यहाँ एक भङ्गी राजा हो गया था, जिसके साथ लोगोंने भोजनादिक संसर्ग किया बहुतसे लोग उसी पापमें जल मरे। इसी कारण लोगोंके मनमें बड़ा सन्देह हुआ इसीसे अभ्यागतोंकी सेवा बन्द हो गई।

यह सब हाल देख सुनकर गाधको विश्वास हुआ कि, माया कुछ न होनेपर भी सब कुछ है। फिर तपस्यामें संलग्न हुआ। विष्णु भगवान् फिर प्रगट हुये कहा कि, सब कुछ पञ्चतत्वसे बना है पञ्चतत्व माया है, जो मायाको चाहेगा उसको मायाही मिलेगी। जो ज्ञान चाहता है अथवा जिसको ज्ञान हो जाता है, वह मायाको तुच्छ जानता है, उसकी अभिलाषा नहीं करता। मायाको चाहनेवालोंको मायाही मिलती है जैसे खेतमें धान बोनेवालोंको खलिहानमें गेहूँ नहीं मिलता। बबूरकी डालीसे कोई सेब नाशपाती अथवा अगूंरादि नहीं तोड़ सकता। तू मायाका अभिलाषी था, इसलिये मायाही मिली। भङ्गीके घरमें तुझको सुन्दर स्त्री मिली, राजा होकर सहस्त्रोंकी हत्याका अपराधी हुआ, यदि मोक्ष चाहता है तो मायाकी उपासना छोड़ दे।

फ़क़ीर और अघोरी।

पञ्जाब देशान्तगत पटियाला राज्यके बिटण्डा नामक नगरमें मेरे मित्रोंमें से हुजूरीशाह नामक एक विरक्त मित्र (१८७५ ई. में) रहते थे। हुजूरीशाह बडे महात्मा थे, वे कभी २ मुझसे भी मिलनेके लिये दूधनामक गाँवमें आया करते थे, जहाँ कि, मैं रहता था। एक दिन संयोगन मुझसे कहने लगे कि, उनके पास (शहर बिटण्डामें) धूलीशाह नामक एक फकीर आये। उन्होंने उनकी खूब आवभक्ति की, रातके समय धूलीशाह उनके पास रहे। सबेरे वहांसे जाने लगे तो हुजूरीशाहजीने कहा कि, अब फिर कब दर्शन होगा? धूलीशाहने कहा कि, मेरा डेरा सँगरूरा राज्यके अमुक ग्राममें है इतना कहकर वहाँसे चले गये। कई एक दिनोंके बाद धूलीशाहके बताये हुये पते ठिकानेपर हुजूरीशाह उसी ग्राममें पहुंचे। वहाँ लोगोंसे उन्होंने पूछा कि, धूलीशाह कहाँ रहते हैं, उनकी कुटिया कहाँ है? वहांके लोगोंने कहा कि, अब धूलीशाह यहां कहां, उनको मरे हुये पचास वर्षसे भी अधिक हो गया, अब तो यहाँ उनकी समाधि बनी

हुई है। हुजूरीशाहजीने धूलीशाहके कब्रको जाकर देखा सलाम करके चले आये। इसी प्रकार सहस्रों साधू फकीर प्रगटमें तो मर गये हैं पर दूसरी जगह फिर प्रगट होकर फिरा करते हैं। यह सारा संसार बाजीगरका कौतुक है। उदाहरण लिखता हूँ।

एक दिन ये ही हुजूरीशाह साहब कहने लगे कि, गरमीका समय था। कड़ाकेकी धूप पड़ रही थी, दोपहर होने आया था, उस समय एक अघोरी मेरे पास आया। अभ्यागतोंको सन्मान देना सबको उचित है पर उस समय पास खानेका पदार्थ कुछ नहीं था। मेरे हृदयकी बातको अघोरी समझ गया और कहींसे कुछ गुड़ लाया, वह गीला होनेके कारण उसमें बहुतसी मक्खियाँ चिपटकर मर गईं थीं, जिसको देखकर मुझे बहुत घृणा हुई पर मक्खियोंके साथही उसने गुड़ भी घोल कर पी लिया। मक्खियें साथ पी लेनेके बाद वह हुक्का पीने लगा। तम्बाकू पीते पीते धूवाँ निकालता तो दो चार मक्खियाँ मुखसे निकल कर हवामें उड़ने लग जातीं, इसी प्रकार सब मक्खियोंको उसने धूवाँकी राहसे बाहर निकाल दिया।

इसी प्रकार काल निरञ्जन समस्त संसारकी उत्पत्ति, स्थिति और नाश किया करता है। अघोरी लोग निरञ्जनके मुख्य सेवकोंमें हैं, जब इनका साधन पूर्णताको पहुँचता है तब ये काल निरञ्जनसे मिलकर उसीके रूप हो जाते हैं।

राजा लवण।

उत्तरीय भारतके प्रसिद्ध महाराजा हरिश्चन्द्रके वंशमें लवण नामक एक राजा हुआ था। वह सर्वाङ्ग सुन्दर, विद्या, कला कोशलमें पूर्ण, राजकीय कार्य्यमें निपुण, सदाचारी, न्यायी, शत्रुओंपर दया भी करने वाला, सेवकोंपर पुत्रके समान दृष्टि रखनेवाला, समानके राजाओंसे द्वेष रहित प्रीति करनेवाला और छोटे तथा पड़ोसके राजाओंकी रक्षा करनेवाला था, सब देशके वणिक लोग स्वतन्त्रता पूर्वक उसके राज्यमें वाणिज्य किया करते थे।

एक दिन राजा सिंहासनपर बैठा दरबार कर रहा था कि, एक बाजीगर आया, यथायोग्य नमस्कार करके कहने लगा कि, मैं कामरूपदेशसे आया हूँ, बंगालेकी जादूगरी सीखा हूँ, विचित्र खेल दिखला सकता हूँ, यदि आज्ञा है तो कुछ कौतुक दिखलाऊँ। राजाकी आज्ञा पाकर तमाशा दिखलाने लगा। हाथमें एक मुछंल लिया, उसको इधर उधर हिलाकर आकाशकी ओर फेंक दिया। वो आकाशमेंही लोप हो गया। बहुत देर न हुई थी कि, सिन्धदेशका एक दूत एक घोड़ा लिये हुये आया कहने लगा कि, यह घोड़ा समुद्रसे निकला

है, मेरे राजाने यह आपके लिये भेंट भेजी है। राजाने दूतको यथायोग्य प्रतिष्ठा दी। राजाने उसे आनन्द पूर्वक स्वीकार कर ली। बाजीगरने कहा कि, महाराज ! इस घोड़ेपर सवार हूजिये, इसका तमाशा देखिये। राजाने उस घोड़ेकी ओर दृष्टि की। दृष्टि करतेही राजाको टकटकी बँध गई ऐसा चुप बैठ गया मानों सक्तासी आ गई है। राजाकी यह दशा देखकर सब दरबारी लोग आश्चर्यमें थे, राजाके शरीरको निर्जीव अनुमान करने लगे थे। इस अवस्थामें दो घड़ी रहनेके बाद चैतन्य हुआ, सब लोगोंकी जानमें जान आई। राजाने कहा कि, जिस समय बाजीगरने अपना मुर्छल हिलाया था घोड़ा आजानेपर जैसेही बाजीगरने उसपर चढ़नेको कहा वैसेही मैंने अपनेको उस घोड़ेपर सवार हुए घोर वनमें शिकार खेलते हुये पाया था। वहांसे चलते चलते एक ऐसे वनमें पहुँचा जहां किसी भी जीवधारीका पता नहीं था। आगे चलकर एक ऐसे मैदानमें पहुँचा जहां कि, वृक्ष तो क्या ? घास भी नहीं देख पड़ती थी, दिनभर उसीमें फिरता रहा, रात हुई तो उससे बाहर हुआ। बाहर होना क्या था ? एक दूसरे जङ्गलमें पहुँचा। उस जङ्गलमें नानाप्रकारके जीवधारी इधरसे उधर फिर रहे थे, जगह जगह मीठे पानीके तालाब भरे हुये थे, नानाप्रकारके सुन्दर और फलदार वृक्ष स्थान स्थान पर खड़े थे। मैंने वृक्षकी डाली पकड़ ली वृक्षपर चढ़ गया। घोड़ा भी उसी जङ्गलमें चरता रहा। वह रात मुझे कल्प समान बीती। क्योंकि, दिनभरका थका हुआ भूखा, प्यासा, ऐसे अपरिचित बनमें पड़ा हुआ था। सबेरा होनेपर मार्गको ढूंढ़नेके लिये इधर उधर भटकते भटकते एक दूसरे जङ्गलमें पहुँचा, उसमें बड़े वृक्ष तथा जलका अभाव था, पर कुछ दूर आगे चलनेपर एक लड़की, हब्शियों काली, जैसी भैंसकीसी मोटी और शूकरकीसी मैली, अपने हाथमें भोजन लिये हुये जल्दी जल्दी कहींको जाती देख पड़ी। मैं कई दिनका भूखा था, धैर्य्य न रख सका, उसीसे कहा कि, पर उपकार करना सर्वोत्तम गुण है, किसी भूखेको तृप्त करादेनाही पुण्य है, मैं कई दिनोंका भूखा हूँ, तू अपने भोजनमेंसे थोड़ा मु भी देदे। बहुत प्रकारसे बिनती करनेपर कठोर हृदयाने मेरी कुछ भी न सुनी, वरन् भयानक होकर कहने लगी कि, मैं भङ्गिनकी लड़की हूँ, इस वनमें मेरा पिता खेतका काम कर रहा है, उसीके लिये भोजन लिये जाती हूँ, इसमेंसे मैं तुझको नहीं दे सकती। हाँ ! उस दशामें कि, तू मुझसे विवाह करना स्वीकार कर ले तो आधा तुझको दे दूं, क्योंकि, पति पितासे भी अधिक प्यारा होता है। राजाने कहा कि, आवश्यकतामें प्रतिष्ठा और पवित्रताका ध्यान नहीं रहता, आवश्यकता मनुष्यको किस घाटका पानी नहीं पिलाती

है ? मैंने भी आवश्यकताके वश होकर उस भङ्गन की लड़कीसे विवाह करना स्वीकार कर, उससे भोजन लेकर खाया । उसके पास स्वयं मृत पशुका मांस और जो की रोटी थी । वह मुखमें स्वर्गीय भोजनके समान स्वादिष्ठ जान पड़ा । पीछे लड़की मुझे पिताके पास ले गई उससे कहा कि, मैंने इस पुरुषको पति स्वीकार किया है तुम भी इसे अपना दामाद बनाओ । उसके बुड्ढे बापने कहा कि, जिसको तूने स्वीकार किया वह मुझेभी स्वीकार है । सन्ध्या होनेपर मैं उसके साथ उसके घर गया । वहां देखा तो चारों ओर शूकर फिर रहे हैं, घरमें स्थान २ पर मांस, हड्डियां लटकी औ पड़ी हैं । उस बुड्ढेने अपनी स्त्रीसे कहा कि, मेरी बेटीने इस पुरुषको पति बनाया है, मेरी सासने भी स्वीकार किया । उन लोगोंके स्वीकार करतेही गांवभरके मेहतर लोग जमा हुये उत्सव करनेका विचार किया । सात दिनतक बराबर मद्य, मांसका खाना पीना तथा नाच रङ्ग होता रहा; मेरा विवाह हो गया । एक सप्ताह भी पूरा न बीता होगा कि, भङ्गिन गर्भवती हुई । दो महीनेमें गर्भ रह गया, अब क्या कहना था ? साल २ बच्चे पैदा होने लगे, कई वर्षोंमें बच्चोंसे घर भर गया । एक साल अकाल पड़ा, गाँवके सब लोग तितिर बितिर हो गये, मैं भी अपनी स्त्री और बच्चोंको साथ लिये हुये बाहर निकला । चलते २ थकावट भूखसे एक वृक्षके नीचे बैठ गया । खानेको कुछ भी पासमें न था, भूखके मारे सबके प्राण घबड़ा गये । यह विचार हुआ कि सब आत्महत्या करदें, मैंने जब अपनेको आगमें दिया आगकी गर्मीने मुझने तपाया तो मेरी आँख खुल गई, होशमें आया अपनेको यहाँका यहाँही बैठा पाता हूँ । यह सब विपत्ति इस बाजीगरके कारणही भोगी है । इतनी बात सुनतेही बाजीगर अन्तर्धान हो गया । लोगोंने राजासे कहा यह कोई बाजीगर नहीं था, वरन् देवता था, जो आपको उपदेश करनेके लिये आया था कि, संसार ऐसेही भ्रम हैं । यदि कोई बाजीगर होता तो इनाम लिये बिना न जाता । कुछ दिनोंके बाद राजा आखेटके लिये वनकी दक्षिण दिशामें गया चलते २ एक पहाड़की तराईमें पहुँचने पर देखा कि, वहां भङ्गियोंकी बड़ी भीड़ है, उसमें अपने ससुरको भी देखा । उससे अपनी स्त्रीका हाल पूछा राजाका भङ्गी साला मिला । वह, पहचानकर अपने घर ले गया । वहाँ पहुँचनेपर राजाने देखा कि, बहुतसी स्त्रियाँ बैठी रो रही हैं राजाने पूछा तुम क्यों रोती हो ? उसकी सासने कहा, मेरा दामाद मेरी पुत्रीको लेकर अकालके दिनोंमें न मालूम कहां चला गया, इसीसे मैं रोती हूँ । यह बात सुनतेही राजाको भी रोना आया, फिर अपने मंत्रीकी ओर देखकर अपनी सासको कुछ इनाम दिलवाया, वहांसे दूसरी ओर चल दिया ।

माया क्या नहीं करती है, सत्यको असत्य और असत्यको सत्य बनाना असम्भवको सम्भव और सम्भवको असम्भव बना देना ही इसका काम है। मायाके कार्यमें बुद्धि कुछ भी निश्चय नहीं कर सकती मायाकी गतिको जान लेना कठिनही नहीं वरन् असम्भव है।

साखी – जाकी गति ब्रह्मै नहिं पायो, शिव सनकादिक हारे ।
ताकी गति नर कैसेके पइहो, कहैं कबीर बिचारे ।।

मुहम्मद साहबके मआराज।

मुहम्मद साहब मआराजको गये एक क्षणमेंही सारे आकाशका भ्रमण करके पीछे आगये। पीछे आने पर लोगोंसे अपना सबहाल कहा, किसी २ ने तो मान लिया पर बहुतोंने न माना। सुलतान रूमने तो इस बातके ऊपर तनिक भी विश्वासही नहीं किया। मुहम्मदसाहबकी बातको बिलकुल झूठ समझा बहुत दिनोंतक ऐसाही अविश्वासी बना रहा। एक दिन एक फकीर बादशाहके सामने आकर कहने लगा कि, ईश्वरमें सब शक्ति है वह जो चाहे दिखलावे, जो चाहे सो करदे। आप मुहम्मद साहबके मआराज पर क्यों नहीं विश्वास लाते? मुहम्मद साहबका मआराज बहुतही ठीक है। उस फकीरने बहुत प्रकार बादशाहको समझाया पर बादशाहने एक भी न मानी, उस फकीरने बादशाहसे कहा कि, पानीका एक बड़ा बरतन मँगवाओ। बरतन मँगवाया गया फकीरके कहनेसे उसमें पानी भरकर मैदानमें रखवा दिया गया। उसने बादशाहसे कहा कि इसमें अपना माथा डुबाकर निकाल लो। दरबारी लोग चारों तरफसे घेरकर खड़े थे, बादशाहने जलमें शिर डालके तुरतही निकाल लिया। शिर निकालतेही उस फकीरके ऊपर क्रोध करके बहुत झुंझलाया कहा कि, इस फकीरने मेरे ऊपर बहुत कष्ट डाला था। फकीरने कहा आपके सब आदमी यहां खड़े हैं, मैंने आपको कुछ भी नहीं किया, मैं अलग खड़ा था इन लोगोंसे पूछ देखिये। लोगोंने भी कहा, हां हुजूर! यह फकीर तो अलगही खड़ा है, इसने कुछ भी नहीं किया। अपने आदमियोंकी यह बात सुनकर बादशाहको बड़ा आश्चर्य हुआ कहने लगा कि, मैंने जबपानीमें शिर डुबोया उस समय देखा कि मैं स्त्री होगया हूँ एक मैदानमें इधर उधर फिर रहा हूँ, कोई आगे है न कोई पीछे। वहांसे थोड़ेही दूर पर खेतिहर लोग खेतीका काम कर रहे थे, उसी (स्त्रीके) रूपमें मैं उन लोगोंके पास गया। उन लोगोंने मुझे अकेला लावारिस जानकर अपने गाँवमें चलनेको कहा, वहां पहुँच कर एक युवकके साथ मेरा विवाह कर दिया, मैं उसके साथ रहने लगा। उसी अवस्थामें बहुतसे लड़के और लड़कियाँ

उत्पन्न हुईं, यहांतक कि, में बहुत वृद्ध हो गया उसी बुड्ढी स्त्रीके स्वरूपमें एक दिन तालावमें स्नान करने गया । जलमें शिर डुबाके बाहर निकलतेही अपनेको यहां खड़ा पाया जाना कि मैं शाहन्शाह रूम हूँ आप लोगोंको भी जैसेका तैसा खड़ा पाया । आश्चर्य है कि, इतनीही देरमें क्या क्या हो गया–स्त्री होकर बहुतसे बच्चे जने वृद्ध हो नदीमें स्नान करने गया डुबकी मारतेही पूर्वावस्थामें आगया । यह क्या कौतुक है ? जो एक क्षणमात्रमें ऐसा देखा । उस फकीरने कहा कि खुदाकी कुदरत है, वह जो चाहे सो कर सकता है । उस बादशाहको मुहम्मदके आराज पर विश्वास हुआ उसने समझ लिया कि, संसार ऐसाही है ।

ग़ज़ल – यह हरदो जहाँदर जहाँ शुवदः बाजी ।
नादानसे दर परदः तिहाँ शुब्दः बाज़ी ।।
है ख्वाब वह दर नज़र अह्ल बरासत ।
यह सारी जमीं और जमाँ शुब्दः बाज़ी। ।
है किस्सा जो सब दो ज़खो फिरदवस ।
यक सच नहीं यहाँ और वहां शुब्दः बाजी ।।
इस किस्साके दफ़्तरमें न गुन्जायश आजिज़ ।
कबतक लिखेगा यह ब्यान शुब्दः बाजी ।।

संसारसे भय और घृणा ।

जो लोग ज्ञानी हैं वे संसारको बहुत तुच्छ समझते हैं क्योंकि, यह यथार्थमें कुछ भी नहीं है जलके बुदबुदके समान है । इसलिये जो मोक्षमार्गके खोजी हैं वे लोग इससे घृणा रखते हैं, समस्त विषय और वासनाको त्यागकर अलग हो जाते हैं, उसकी तरफ दृष्टि भी नहीं करते । यह संसार मृतक है मृतकसे जो लिपटता है वह कुत्ता है, इस कारण संसारसे प्रेम करनेवाले मनुष्यत्वसे हीन कुत्तेके समान हैं । मनुष्य कभी मृतकसे प्रीति नहीं करता, सारी विषयवासना आशक्तिको अन्तःकरणसे उठा दिया उसीका नाम वैरागी, सन्यासी और उदासी है । वही तपस्वी साधु है । इसकी आशक्तिको अन्तःकरणसे निकाले बिना कोई भी साधु वैरागी आदि नामोंका अधिकारी नहीं हो सकता । तन, मन, धन, जिसमें सारे संसारकी आशक्ति है वे ही बन्धनके कारण हैं । पहले शरीरकोही विचारना चाहिये, जिसके कारण धनसे प्रीति करते हैं । यह देह झूठी है असत्यसे प्रेम करनेवाला सत्यको छोड़ता है । जिसने सत्यको छोड़ा वह भटककर अन्धकारमें पड़ेगा । जब असत्य (देह) से आशक्ति हुई तो उसके पोषण पालनके लिये नाना प्रकारकी युक्तियाँ करने लगा, झूठ बोलकर बेइमानी करके दूसरोंको

दुख देकर, चोरी और धूर्त्तता आदि नाना प्रकारके निषिद्ध पाप कर्मोंसे धनको कमावेगा, या परतन्त्र होकर नाना प्रकारकी झिड़कियोंको सहता हुआ दासपनसे कुछ प्राप्त करेगा। जो शरीरके ही पोषण पालनमें लगा रहेगा वह सत्यको नहीं प्राप्त कर सकता क्योंकि, सारे विकारोंका मूल आशक्ति है। शरीरकी आशक्ति छोड़े बिना अपने स्वरूपकी सुधि नहीं होती। शरीरकी आशक्तिमें पड़ा हुआ सारा संसार कोल्हूके बैलके समान दिनरात चक्कर खा रहा है, इसको कभी भी सुख नहीं होता। इस पर कबीर साहिबने एक शब्द कहा है—

शब्द – खसम बिन तेलीके बैल भये।
बैठत नाहीं साधुकी संगति नांधे जनम गये।।
बहि बहि मरे पचे निज स्वारथ यमको दण्ड सहे।
सुत दारा धन राज काज हित माथे भार गहे।।
खसमहिं छोड़ि विषय रंग राचे पापके बीज बोये।
झूठ मुक्ति नर आश जिवनकी प्रीतिको झूठ खोये।।
लख चौरासी जिया जन्तुमें सायर जात बहे।
कहें कबीर सुनो भाई साधो उन स्वानकी पूंछ गहे।।

जीव विषयवासनामें पड़ा हुआ चौरासी लाख योनियोंमें मारा मारा फिरता है, उसको ज्ञान विवेकका अवकाशही नहीं मिलता, सदा भय और आशामें फँसा हुआ सन्देह सागरमें गोते खाया करता है।

साखी--कबहूँ चित्त संसारमें, कबहुँ लोकको भीति।
क्षणहूँ सुख पावे नहीं, कहा हार कहँ जीति।।

यह अपने मनमें तनिक भी नहीं सोचता समझता कि, मातृगर्भमें पोषण करनेवाला कौन था? किसने वहाँ भोजन पहुँचाया? किसने रक्षा की? किसने सुखपूर्वक बाहर निकाला? जन्म लेनेके प्रथमही माताके स्तनोंमें दूध भर दिया। जब तक मातृगर्भमें उलटा लटकता था तबतक किसने किस युक्तसे पेटमें खानेको पहुँचाया? गर्भसे बाहर निकालने पर किसने दो सेवक प्राणापन्न सेवा करनेवाले उपस्थित कर दिये। वे प्राण जाय तो जाय पर बालककी रक्षामें किसी प्रकारसे उत्साह नहीं हारते थे जब तक युवावस्थाको न पहुँचे तब तक अपना जान माल सब उसके ऊपर निछावर करते रहे जिस विश्वम्भर सर्व रक्षक माताके गर्भमें पोषण और रक्षा की, सुखपूर्वक जन्म दिया वो सर्वदा रक्षा किया करता है। ऐसे दयालु सर्व रक्षक सर्व शक्तिवान पिताको भूल कर असत्य संसारसे प्रेम करना मनुष्यत्व नहीं है इस संसारमें कोई किसीका नहीं होता, सब अपने २ स्वार्थके चाहनेवाले हैं।

माता पिता पुत्रकी रक्षा सेवा स्वार्थ जानकर करते हैं, पुरुष स्त्रीको अपने सुखके लिये चाहता है, स्त्री पुरुषको स्वार्थवश हो प्यार करती है, सांसारिक प्रेम कोई न कोई स्वार्थसेही हुआ करता है। निःस्वार्थ हर समय रक्षा करता है वही सत्य परमात्मा अपना है, नहीं तो कोई किसीका नहीं है। माता पिताके अन्तःकरणमें बालककी सेवा करनेका अङ्कुर डालनेवाला भी वही है। यदि उसकी कृपा न हो तो माता पिता अथवा कोई भी प्रेम न करे। सारे जीवधारी अपने बच्चोंको प्रेम और प्रीतिके साथ पालते हैं। किसी प्रकारकी आशा नहीं रखते। ऐसा प्रत्यक्ष देखनेमें आता है कि, जबतक बच्चा स्वयं अपना व्यवहार चलाने योग्य नहीं होता तबतक (मनुष्यके अतिरिक्त सब जीवधारी उसका पोषण और पालन करते हैं, पीछे कोई सम्बन्ध नहीं रहता, पर मनुष्य अपने बच्चोंकी सेवा और पोषण पालन करके उससे बदलेकी इच्छा रखते हैं। जिसने उनके (माता पिता) अन्तःकरणमें बालकका प्रेम और प्रीति वही बदला भी दिला सकता है, परमात्माको धन्य है जो सर्व कुछ करनेपर भी किसीसे कुछ नहीं चाहता। पशु अपने बच्चोंसे इतनी प्रीति करते हैं कि, मनुष्य उनकी समता नहीं कर सकते, जैसा कि, इसी पुस्तकके देखनेसे प्रगट होगा कि,पशु अपने बच्चोंसे कितनी मुहब्बत करते हैं पर वे कुछ भी बदला नहीं चाहते। उससे उलटा मनुष्य नाना प्रकारकी आशाओंसे घिरा हुआ अपनी सन्तानसे बहुत कुछ चाहता है। प्रत्येक जीवधारी कामके वशमें होकर स्त्रीसे सम्भोग करता है, जिससे सन्तानकी उत्पत्ति होती है। जिस प्रकार अपना सुख विचार कर सम्भोग करता है उसी प्रकार प्रेमके वश होकर उसकी रक्षा और पोषण पालन करता है, यह ईश्वरी नियम है। माता इस कारण भोजन नहीं करती कि, वह बच्चेको पहुँचे, वरन् वह भूखको मिटानेके लिये भोजन करती है पर विश्वम्भर स्वयं बच्चेको गर्भमें भी भोजन पहुँचाता है, जिसको विश्वम्भर पर विश्वास है वह संसारकी आशाओंसे मुक्त होता है। जो सर्व रक्षक परमात्माको सत्य जानता है, वह सांसारिक प्रेम और प्रीतिसे निर्मूल होजाता है। सांसारिक स्नेहको मूर्खता। अज्ञानता समझकर त्याग देता है।

ग़ज़ल

मुहब्बत देह और दिलबर नहीं होता नहीं होता।
कि, दो मिहमानका एक घर नहीं होता नहीं होता ॥
चढ़े मन्सूर और ईसा हजारों दारके ऊपर।
कि रौशन रोजमें शबे पर नहीं होता नहीं होता ॥

नहीं मैं तुही तू है जब हूँ मैं तब तू नहीं हरगिज़ ।
भजन बिन वह सुजन दरबर नहीं होता नहीं होता ।।
सनमके ख़ालो ख़तको देख जिसने हज़ उठाया है ।
कि, इस दिल पर हज़े दीगर नहीं होता नहीं होता ।।
नहीं रूईदगी बाकी रहे कोई तुख़्म बिरियाँमें ।
कभी बरपा कोई अशजर नहीं होता नहीं होता ।।
जमुर्रद नीलमो मिर्जा और लाले बदुखाशाँनी ।
गोहर गंजों मेहर दरबर नहीं होता नहीं होता ।।
जो होवे खाने खंजीर और फिर तैर तारीकी ।
कि, वह मंजिल परी पैकर नहीं होता नहीं होता ।।
यह जान बाजी न हो हरग़िज बजुज़ कोई मर्द ग़ाजीके ।
कि, बुज़दिल फ़ौजका सरवर नहीं होता नहीं होता ।।
न करत ख़ीर तन मन धन तसद्दुक करनेमें आजिज़ ।
कि, आशिक धडके ऊपर सर नहीं होता नहीं होता ।।

मनको इच्छाओंको पूरा करनेसे यह मोटा और प्रबल हो जाता है । जब यह प्रबल हो गया तो फिर वशमें लाना बहुत कठिन हो जाता है । इसी कारण साधु लोग मनको इच्छाओंको पूरी नहीं होने देते, वरन् इसके उलट करके मृतक तुल्य बान लेते हैं । जब यह इच्छा पूर्वक पदार्थोंको नहीं पाता तो शनैः शनैः आपही मुर्देके समान हो जाता है । जो बुद्धिमान् हैं वह शरीरसे आसक्ति करके इसीमें नहीं लगे रहते वरन् जैसे होता है संसारकी मुख्य वासनाओंको ठिकाने लगाते हैं अर्थात् संसार मुखवृत्तिका निरोध करके सत्पुरुषमें जोड़ते हैं । इसी विषय वासनाकी इच्छाने सारे संसारको खा लिया है ।

शब्द — नर तेरी कबकी वैरिन जवानी ।
विषया लीन भयो मतवारो निर्गुन भक्ति न जानी ।
बीस बरसकी घरमें सुन्दरी रहे अलमस्त दिवानी ।।
निसिवासर वाहीसे लुवधे ज्यों माँखी मिष्ठानी ।।
उड़ते बार उड़ा नहिं जाई नारी नरककी खानी ।।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो यही विधि बहुत दिवानी ।।

शब्द — सन्तो बाघिनका खायो लोई ।
तीन लोकमें पड़ गई बाघिन खात न जाने कोई ।।
काजल नैन दशन चमकावे कसकस बाँधे गाढ़ी ।

लुकि २ अन्तरगत पैठी खाय करेजा काढी ।।
कान गह क़ाज़ी नाक गह मुल्ला औलिया भेष है प्यारी ।
राज कुमार रङ्गपति सुन्दर मोहि लिये नरनारी ।।
जेहि स्वाद षट्दर्शन मोहे पण्डित कियो खिहोड़ी ।
सुखदेव स्वामी कन फट्टा गुरु उनहूँकी नाड़ि मरोडी ।।
शिव सनकादिक औ ब्रह्मादिक बाघिन मुख सब आये ।
गिरि गोवर्द्धन नखपर लीन्ह्यो तेहि बाघिन धर खाये ।।
उतपति परलय दोउबिच बाघिन सतगुरु भली विचारे ।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो हरिजन बाघिन मारे ।।

बाघिनने सबको खा लिया, जिसको सतगुरुका पता मिला कायाके मार्गमेंही उनको प्रकाश मिला है ।

नज़म – जो तन मनो धनके हंकारसे । न टूटा न जूटा निरंकारसे ।।
सो तनोमन धनसे गिरफ्तार है । न कोई राहरास्त रफतार है ।।
सो यह तन सरासर त अफुन भर । फिक्र गौरसे उसको देखो ज़रा ।।
कोधानो सोई सातसो पूर हैं । यह नापाक है गन्दगी धूर है ।।
मिलेगी सो जा खाक़में अन्तको । तजो नेह देही भजो कंतको ।।
ग़लत इसको जाने है ज़ाहिद वही । सो पावे खुदापाक वाहिद वही ।।
बलैयात आफादका घर यही । महल आमदो रफ्दका दर यही ।।
निगह कीजिसे कृष्ण और रामको । करो ग़ौर आग़ाज न अनजाम को ।।
यह दुनियाँका दुख भोगकर चले । कैरो ज़ादव और पांडो अमर कले ।।
धरे तन कहाँ कोन जगमें सुखी । गृही और तपी सिद्ध योगी दुखी ।।
जमीन आसमानके जो बाशिंदगान।गिरफ्तार ग़म है सब बे गुमान ।।
धरे तन लगी सङ्ग तेरी बला । कनक कामिनी रङ्गमें जारुला ।।
परख दोनों तलवारकी धार है । मिले इनसे उनका गला पार है ।।
यह जड़ देह तो आत्माराम है । तू चैतन गुनों सारेका धाम है ।।
किया जड़की संगतत् चैतन्य हो । निराकार निराधार तू धन्य है ।।
त्रिगुण पाँच पच्चीसके कोटमें । पुराने दुराने इसी ओटमें ।।
जो तदबीर कर कर्म फन्दा कटे । कि जड संग देहीका गन्दा कटे ।।
तू मनके मते जो करे कामको । पड़े नर्कमें ना लखे रामको ।।
यही मन निरञ्जन निराकार है । यही खींच नफ़सानीमें डार है ।।
यही लोक तीनोंका भूपाल है । यही जगत कारन महाकाल है ।।

छले ज्ञानी ध्यानी हटा ध्यानको। छले सिद्ध मारे विषेवानको ॥
जो धनका तुझे ध्यान दिलमें बड़ा। गिरफ़तार लज्ज़ातमें जा पड़ा ॥
यही धन सभी पाको साज है। धरे सो धरे देख जमराज है ॥
इन्ही तानको फाँस तू जानले। हमलमें दर आना नरक मानले ॥
दिया गुरुको तीनो तू अपनी बला। तेरो पापका भार सर सेटला ॥
ज़हर देके तूने अमी लेलिया। बताओ भलाजी न बदला किया ॥
कहो कौन है जगमें ऐसा कोई। सुधा देके लेवे ज़हरको जोई ॥
सिवा एक गुरु देवके कौन है। अगम ज्ञान दाता दया भौन है ॥
दिया जिसने सत्त नामका जाप है। गई भ्रम पहचाने तब आप है ॥
सभी रिद्धि और सिद्धि इसके गुलाम। जो मुर्शिद मिहरबानीसे लेवेनाम ॥
कहो गुरुसे कहाले मिलेंगे वहीं। बदल नामकी पास मेरे नहीं ॥
न गुरु देवसा जगतमें मीत है। पचेगा जिन्हे गुरु चरण प्रीति है ॥
मेरी आज़िज़ी खाक सारी तमाम। हमः उम्रकर शुक्र उसका मदाम ॥
मेरी इन कसारीको कीजे क़बूल। मिहरबान मुर्शिद मुक़द्दस रसूल ॥
में आज़िज फिरोतन न तनमें है ज़ोर। तू क़ादिर खुदाको बन्द है बन्दी छोर।

संसारियोंको उपदेश।

उसकी बुद्धि और विवेकको धन्य है जिसने अपनेको अज्ञानतामें फँसा हुआ देखकर, शीघ्रही सत्सङ्ग खोज अपने आचारको ठीक कर सदाचारी बन गया। उस पर शोक है जो देख जानके भ्रममें फँसा उसीके पक्षपातमें पड़कर सत्य असत्यका विचार न करके झूठको सच्चा कर दिखलाता है उसको सिद्ध करनेके लिये नानाप्रकारके प्रमाणों और युक्तियोंको काममें लाता है। आप सत्य-पथ भूला है, दूसरोंको भी कुमार्गमें डालता है। उसका जीवन तुच्छ है जिसने सत्य भेदको न पाया, जिसने विवेक ज्ञानको प्राप्त न किया। जिसको ज्ञान प्राप्त नहीं हुआ, वह वेदपाठी हुआ तो क्या ? कुरान और हदीस पढ़ा तो क्या ? पूजा निमाज और व्रत रोजा रखा तो क्या ? सत्यको न पा पक्षपातमें पड़ा मूर्ख कहता है। मेराही धर्म सबसे बड़ा है, इसके बराबर दूसरा कोई नहीं, यह हमारे गुरुने बतलाया, हमारे पुरुषाओंने इसका आचरण किया, मैं इसको न छोडूंगा। इसी पक्षपातमें पड़ा हुआ मूर्ख कहता है, मैं जो कहता हूँ, जिस धर्मको मानता हूँ, जो कुछ मेरे गुरुने बतलाया है वही मोक्षमार्ग है, इसके बिनासब बन्धनमें हैं, अपने आचार्य्य गुरुके वचनमें किसी प्रकारका सन्देह करना अथवा विचार करना पाप है। ऐसे मूर्ख पक्षपातीको कभी ज्ञान प्राप्त नहीं हो सकता, ऐसा

अज्ञानी डरकर भटकता फिरता है पर कहीं भी सुख नहीं पाता, स्वप्नमें भी प्रतिष्ठाका दर्शन नहीं होता, ऐसा पक्षपाती किसी प्रकार भी किसीको सन्तोष नहीं दिला सकता । पक्षपाती धर्म द्वेषमें पड़ा हुआ एकही हदमें कोल्हूके बैलकी तरह फिरा करता है, वह कभी उस असीम अनन्त परमात्माका ज्ञान नहीं प्राप्त कर सकता, जहाँ वेदवाणी भी नहीं पहुँच सकती, जिसके भेदको बड़े २ ज्ञानी ऋषि मुनि नहीं पा सकते, ऐसा पक्षपाती मूर्ख उसको कैसे पा सकता है ? ऐसा पक्षपाती पुरुष अपनी बुद्धि और विवेकको कभी काममें नहीं लाता, इस कारण उसे सद्गुण और उत्तम पदकी प्राप्ति नहीं होती, वह अभागाही रहता है ।

गज़ल—यह अबस मर्द ज़िन्दगानी है । अस्ल इसरार गर न जानी है ॥
कुछ तफ़क्कुर नहीं न दिलमें तमीज़ । यह सब अज्ञानकी निशानी है ॥
कहीं रोजा निमाज़ और पूजा । कहीं कोरे आँ वेद ख्वानी है ॥
मैं बड़ा और मेरा धर्म है बड़ा । और न इसके कोइ सानी है ॥
कभी अगला धर्म न हम छोड़ें । यह हमारी रविश पुरानी है ॥
हम हैं हरदो जहाँमें तजावर । मेरे मुर्शिदकी मिहरवानी है ॥
ऐसे इनसानको न हो इल्म कभी । झूठको सच जिसने जानी है ॥
कोह जंगल अबस फिरे मारा । दश्त सेहराकी खाक़ छानी है ॥
आदमी ज़ाद कहे याके द्वाब । शाखे दम अब तलक न आनी है ॥
पढ़के माकूल मन मगन जो होवे । दिल लगन किस्सा और कहानी है ॥
सिर्र उसका न हो कभी मालूम । वहां पहुँचे न वेद बानी है ॥
गर करे फिक्र क़ौल आजिज़ पर । बदो दारैन हुक्म रानी है ॥

बुद्धिमान् मनुष्य वही है जो दोषोंको देखकर पक्षपात न करे । शीघ्रही अज्ञानताके मार्गको छोड़ दे ।

दृष्टान्त—एक आदमी व्यापारके लिये परदेश गया । वहां से कुछ उपार्जन करके जब लौटा तो उसने मार्गमें एक लोहेकी खान देखी । सभोंने लोहा उठा लिया, कुछ और आगे चलनेपर ताँबेकी खान मिली, लोहाको फेंककर ताँबा उठा लिया पर उनमेंसे एकने न लोहा फेंका न ताँबा लिया । यद्यपि उसके साथियोंने बहुत समझाया पर उसने किसीका कहना नहीं माना । कुछ और आगे चलनेपर एक चाँदीकी खान मिली, वहाँसे सभोंने ताँबा फेंककर चाँदी उठाली पर लोहेवालेने लोहाही रखा, चाँदी न ली । वहाँ भी उसके साथियोंने बहुत समझाया पर उसने किसीका कहना न माना । कुछ और आगे चलनेपर सोनेकी खान मिली सभोंने चाँदी फेंक दी सोना ले लिया, पर उस लोहेवालेने

अपना हठ न छोड़ा, उसी लोहेको लिये रहा। कुछ और आगे चलनेपर एक रत्नोंकी खान मिली, सबोंने सोना फेंककर रत्न बाँध लिया, पर उस दुराग्रही लोहेवालेने वहाँ भी रत्नोंका अनादर करके लोहाहीके बोझकोही अच्छा समझा। सब अपने अपने घर पहुँचे, जो लोग रत्न लाये थे वे एक एक रत्नको बेचकर अपना व्यवहार चलाने लगे। आनन्द पूर्वक दिन व्यतीत करने लगे, धनी होगये देश देशमें सबका वाणिज्य फैल गया, दिन दिन उन्नति होने लगी। पर वह अभागा लोहेवाला प्रथम तो कुछ दिनों लोहा बेंचकर सूखी रूखी खाकर दिन बिताता रहा। फिर दरिद्र हो भूखों मरने लगा। तब दूसरे साथियोंके पास माँगने गया। उन लोगोंने उत्तर दिया कि, हे मूर्ख! हम लोगोंने तुझे कितना समझाया तूने एकका भी कहना न माना, लोहेको फेंककर जवाहिरात तक नहीं ली अब हम क्या करें? यह तेरे कर्म्मोंका ही फल है, जो जैसा बोता है वैसाही फल मिलता है।

साखी – करै बुराई सुख चहै, कैसे पावे कोय।
रोपे पेड़ बबूलका, आम कहाँ ते होय॥

जो कोई सज्जनोंकी रीति द्वारा शुभकर्म्मोंमें अपना मन लगाता है उसका सब कष्ट दूर होता है। वही सद्गुरुका कृपापात्र बनता है। सज्जनोंकी रीति अनुसार शुभकर्म्मोंमें लगा रहनाही सुखका मार्ग है जो असज्जनोंवत् अशुभ कर्मोंमें प्रवृत्त होगा वह कभी भी सुख न पा सकेगा। जो सद्गुरुकी शरण हो शुभ कर्म्मोंमें लगेगा वह दोनों लोकोंमें भाग्यवान होगा। इस कारण शुभ कर्म्महो सज्जनोंकी रीतिके अनुसार करना उचित है, यही मनुष्यका कर्तव्य है। शुभकर्म्मोंसे सद्गुरु मिलते हैं, शुभ कर्म्मसेही पापोंसेभी छूट जाता है, शुभकर्म्मोंसेही जठराग्निकी अग्निसे बचता है, शुभकर्म्मोंमें प्रवृत्तिही अज्ञानताको दूर कर ज्ञानका प्रकाश प्रगट करती है, शुभकर्म्मही करना उचित है।

कर्म्महीके द्वारा सब जगतकी उत्पत्ति हुई है, कर्म्महीके आधारसे यह, नदी, पहाड़, [illegible] आदि खड़े हैं, कर्म्महीसे सूर्य, चन्द्र, भ्रमण करते हैं, कर्म्महीद्वारा ईश्वर और जगत प्रगट हुए हैं, कर्म्महीसे तीन लोक चौदह भुवन बने हैं, कर्म्महीसे द्वन्द्वको छोड़ निर्द्वन्द पदमें स्थित होता है।

सदाचरणही माता पिता है, बहन भाई है, यही पुत्र मित्र और सहायक है। सदाचरणसेही लोक परलोकका सुख प्राप्त होता है, सदाचारही [illegible] उच्चपदको प्राप्त कराता है, सदाचारही संसारमें माननीय और प्रतिष्ठित बनाता है, यही है, जिससे मनुष्य ऋषि, मुनि, सन्त, साधु, पीर, पैगम्बर

औलिया आदि पदको प्राप्त होता है, सदाचारसेही यज्ञ, योग, जप, तप, ज्ञान आदिको प्राप्ति होती है, सदाचारसेही गुरु मिलता है, जिससे मोक्ष प्राप्त होती है। सदाचारही कर्तव्य है, जिसमें सदाचार नहीं है वह मनुष्यही नहीं पशु है।

मुसद्दस

अमा१ल कर ऐ अमल वारा अमल तुझको छुड़ावेगा ।
अमलही फर्ज़ है तुझपर अमल सद्गुरु मिलावेगा ।।
अमलही दाग सब तेरे गुहनकी धो बहावेगा ।
अमलगर होश कर कोई हमल मसकन् छुड़ावेगा ।।
जगतमें भरमका फेरा अमल तेरा हटावेगा ।
अमल करले अमल करले अमलही काम आवेगा ।। १ ।।
अमसे यह जमीं और दीद मंजर सब समावी है ।
कवाकिब और सवाबित मेहरो महकी रोशनाई है ।।
जहाँ यह और जहाँदारो जो कुछ खुद अक्ल आई है ।
तबक़ चौदह बनाई है अमलकी सब कमाई है ।।
मकाँ सब पार जावे लामकाँ घरमें बसावेगा ।
अमल करले अमल करले अमलही काम आवेगा ।। २ ।।
यही मादर पिदर तेरा मिहरवाँ बहिन और भाई ।
यही फर्ज़न्द दिलवन्द यही दादा यही दाई ।।
यही रू अक़रबाखुद बतिल्फी ज़ोफो बरनाई ।
तेरे आमाल हसनः सब मिलावें मुल्क मोलाई ।।
अमलके वास्ते इनसाँ अमल कर चैन पावेगा ।
अमल करले अमल करले अलमही काम आवेगा ।। ३ ।।
अमलसे पीर पैगम्बर अमलसे वेद और बानी ।
अमलसे इब्तदा महशर अमलसे रहम रहमानी ।।
अमलसे योग और जुगती अमलसे ब्रह्म ब्रह्मज्ञानी ।
अमलसे नूर गूनागूं बर नक्स हयूलानी ।।
अमल कर नेक सद्गुरु टेक सोई रह बतावेगा ।
अमल करले अमल करले अमलही काम आवेगा ।।४।।
अमल मखलूक़ और खालिक़ अमल का सब पसारा है ।
अमल के वास्ते आदम बशक्ले खुद सँवारा है ।।
हुआ आदम अल्लाह सूरत अमलका हुक्म धारा है ।

१ अर्थ, कर्म इन दोनोंको करनेवालेको आमिल कहा करते हैं।

अमलसे आदमी है वरनः चौपाया विचारा है ।।
अमल कर नेक गर आज़िज अमल नस्क मिटावेगा ।
अमल करले अमल करले अमलही काम आवेगा ।। ५ ।।

ईश्वर विषयक सिद्धान्त

पुरुष सूक्तका सिद्धान्त

एक पुरुष है जिसके बहुतसे शिर, नाक, आँखें, कान, मुंह, जिह्वा, पद और अङ्ग है, गुप्त प्रकट असंख्य ही इन्द्रियाँ हैं, सारे संसारमें वही व्यापक है। सब जीवधारी उसीकी आँखोंसे देखते हैं, उसीके कानोंसे सुनते हैं, वही सबके अन्तःकरणमें है, वह तीनों कालमें समान है, सबका स्वामी है, अद्वैत और अनुपम है, अनाम है, अक्रिय है, उसका कोई स्थान नहीं सब स्थानोंमें वही है, यह संसार उसके प्रकाशका लघुसे लघु किरण है, ऋग्, यजु और साम ये तीनों वेद रज, सत, तम ये तीनों गुण उसीके प्रागटय का परमाणु है, उसीसे उत्पत्ति स्थिति और लय है। प्रणवके तीनों अक्षर उसीसे प्रगट होते हैं वह पुरुष जब स्वाँस नीचेको छोड़ता है तो सारा संसार जीवित हो जाता है ऊपर को खींचता है तो प्रलय हो जाता है, ये सब क्रियाएँ होती रहती हैं पर वह पुरुष आप निर्लेप रहता है।

जब वह सृष्टि उत्पन्न करनेकी इच्छा करता है तो प्रथम हिरण्यगर्भ[1]को प्रगट करता है इससे सब जड़ चैतन्य और विराट[2] पुरुष प्रगट होते हैं।

हिरण्यगर्भ अर्थात्–प्रजापति उससे मनु–अर्थात् आदम[3] और मनरूप–अथवा हौवा होते हैं जिससे सृष्टि होती है।

यज्ञ और जगतका एकही अर्थ है। पुरुष यज्ञ स्वरूप है, सब वस्तुयज्ञसे हुआ करते हैं उसीमें हवन होनेसे लय हो जाते हैं। वेदके ज्ञाता लोग इसी कारण अङ्गोंके समान है। ज्ञानी, पण्डित, वेद और शास्त्रके ज्ञाता, शास्त्रज्ञ, शास्त्रानुसार कर्म करनेवाले, सदाचरणमें बरतनेवाले, पापोंसे घृणा करनेवाले, दैवी सम्पत्तिसहित अपनी आयुको जगत्के उपकारमें बितानेवाले, ऋषि और मुनियोंके समान शरीरयात्रा करते हुये सर्वदा परोपकारमें रहनेवाले, विराट पुरुषके शिर हैं। राजा, तन्त्री, ज्योतिषी, वैद्य आदि जिनसे जगत्की रक्षा होती है जिसके द्वारा सब अपनी मर्यादापर चलते हैं, बाँह हैं। वाणिज्य करनेवाले,

---

१ समष्टि सूक्ष्म अभिमानी देवताको हिरण्यगर्भ कहा करते हैं। २ समष्टि स्थूलके अभिमानी देवताको विराट् कहते हैं। ३ मानवी सृष्टिके प्रवर्तकोंको पाश्चात्य साहित्यकबाबा आदम और भी हौवा कहते हैं।

खेती करनेवाले, कारीगरी प्रगट करने नानाप्रकारकी वस्तुओंद्वारा लाभ पहुँचानेवाले, पेटके समान हैं। सब प्रकारकी सेवा करनेवाले सेवक, जिनको कि न विद्या है न बुद्धि है वे बैलोंके समान कमाते हैं दूसरोंके आश्रय जीवन व्यतीत करते हैं, कुत्तोंके समान द्वार द्वार फिरते हैं वे उसके विराट रूपके पग हैं। पशू मांस, अस्थि और चर्मके समान हैं। वनस्पती उसके नख केश हैं, चन्द्रमा मन है, सूर्य आँख है, वायु प्राण है, अग्नि वाक्य है, पृथिवीनाभि है, वैकुण्ठशिर है, पाताल पगका तलवा है, दश दिशा कान हैं। इस प्रकार समष्टि स्थूलका नाम विराट है, समष्टि स्थूलही पुरुषका रूप है। इस यज्ञकी सामग्री यह है कि वसन्त ऋतु घीके समान है, ग्रीष्म लकड़ी है, शरद ऋतु शाकल्य है, सात समुद्र सात काष्ठ हैं, जिससे हवन कुण्डका घेरा बनाते हैं, वेदमन्त्र उसके समान है जिससे अग्निमें शाकल्य छोड़ते हैं।

प्राचीन कालमें देवता लोग इस यज्ञ को करके परम आनन्दको प्राप्त कर शोकसे छूट जाते थे। हिरण्यगर्भ समष्टि सूक्ष्मका नाम है, उसीसे तत्व प्रगट हुये, उसीमें लय हो जाते हैं, वैसे सूर्य्यको किरण सूर्य्यमें समा जाती हैं, उसी प्रकार सब उसी पूर्ण अनन्त प्रकाशमें लय होजाते हैं। इस भेदको जो समझे वह अज्ञान सागरसे पार हो जावे और सत्वज्ञान पावे। प्रजापति स्थूल समष्टिसे आशय है; हिरण्यगर्भ समष्टि सूक्ष्म है जो इनको परमात्मा समझते हैं वे भूलमें हैं। समस्त संसार प्रजापतिमें. प्रजापति हिरण्यगर्भमें और हिरण्यगर्भ उस पुरुषमें हैं। इसभेदको ब्रह्मज्ञानी समझते हैं जो समझते हैं वे भली प्रकार जानते हैं कि, हिरण्यगर्भ मैं ही हूँ समस्त संसार जिससे प्रगट हुआ है वो मैं ही हूँ।

जो कुछ कहा सुना और लिखा गया है उस अनन्त प्रकाशका वह एक किरण है, उसीको वारम्वार नमस्कार है। जो उस भेदको समझे वैसाही निश्चय करे उसको लोक परलोकका सब आनन्द प्राप्त होता है सब देवते उसकी आज्ञा मानते हैं।

सारे संसारमें सूर्य्य श्रेष्ठ है। सबको उचित है कि, अपनेमें और अपनेको सबमें समझे, जैसा विराट पुरुषका वर्णन लिखा गया है वैसाही अपनेमें ध्यान करे।

जैन धर्मका सिद्धान्त – निरञ्जन परमात्मा वैकुण्ठमें रहता है, वह न कुछ करता है न कराता है, उसको न किसीसे मित्रता है न शत्रुता, सर्व जीव अपने २ कर्म्मोंका फल पाते हैं, परमात्मा निर्लेप और अकर्त्ता है।

योगी और संन्यासियोंका सिद्धान्त– निरञ्जन[1] परमात्मा सहस्रदल कमलमें रहता है, प्रणवकी उपासनासे उसका दर्शन होता है।

---

१ कैवल्यसूत्रमें प्रतिपादित है ये आज केवलिनाथ और केवली करके भले ही कुछ मानते हों पर निरंजनका तो जिक्र भी नहीं हैं।

कबीर पन्थियोंका सिद्धांत ।

शब्द – साधू सद्गुरु अलख लखाया । जाते आप आप दरसाया ।।
बीज मध्य ज्यों तरवर दरशे, वृक्ष मध्य ज्यों छाया ।
आतममें परमातम दरशे, परमातममें माया ।।
ज्यों नाभीमें शून्य देखिये, शून्यमें अण्डाकारा ।
निःअक्षरसे अक्षर ऐसा, क्षर अक्षर विस्तारा ।।
ज्यों रवि मध्य किरण देखिये, किरण ज्योति परकाशा ।
पारब्रह्मसे जीव ब्रह्म है, जीव ब्रह्मसे स्वाँसा ।।
स्वाँसा मध्ये शब्द देखिये, शब्द अर्थके माहीं ।
पारब्रह्मसे जीव ब्रह्म है, न्यास हैं वह साँईं ।।
आपे बीज वृक्ष अंकुर, आपे पुष्प फल छाया ।
सूर्य्य किरण परकाश आपही, आप ब्रह्म जिव माया ।।
आतममें परमातम दरशे, परमातममें झाँईं ।
झाँईंमें एक झाँईं दरशे, लखे कबीरा साँईं ।।

साखी – हम वासी वहि देशके, जहां पारब्रह्मको खेल ।
दीवा बले अगम्यका, बिनु वाती बिनु तेल ।।
राम जपत हैं नामको, नाम जपत हैं थीर ।
ताहूते कछु अपर है, ताको जपे कबीर ।।

हजरत मूसाका सिद्धान्त ।

मूसाका खुदा आसमानी रङ्गका है, वह नबियोंको मनुष्यके रूपमें दिखाई देता है, धूवाँ बादल तथा आगकी लहरोंमें प्रगट होकर भले और बुरेका ज्ञान देता है ।

हजरत ईसाका सिद्धान्त ।

आदिमें एक शब्द था दूसरा कुछ न था, वही तीन भागोंमें विभक्त होकर पिता, पुत्र और पवित्रात्माके रूपमें हुआ, इसीको तसलीस खुदा कहते हैं ।

मुहम्मद शाहका सिद्धान्त ।

तौहीदकी चार श्रेणियां हैं । तौहीदका एक सार है, उसका भी एक सार है, उसका एक छिलका है उसका भी एक छिलका है । उसीको उपमा अखरोटसे

देते हैं; जैसे अखरोटके दो छिलके होते हैं एक (सार) गिरी होती है उसका तेल दूसरा सार है।

प्रथम वह श्रेणी है कि, आदमी मुखसे — (लाइला इलिइल्लाह) लाइला इलिइल्लाह कहे और हृदयमें विश्वास न रखे, यह संसारी लोगोंका सिद्धान्त है।

दूसरी श्रेणी यह है कि, उस कलमेके अर्थको जैसे दूसरे लोग मनाते हैं वैसेही मानें उसीको प्रमाणित करनेके लिये नाना प्रकारकी युक्ति और प्रमाण दे यह सिद्धान्त वाचक ज्ञानियोंका है।

तीसरी यह श्रेणी है कि, मनुष्य विचार करके निश्चय करे कि, सबका मूल एकही है; सब कर्म्मोंका एकही कर्त्ता है, दूसरा कोई कुछ करही नहीं सकता। यह विश्वास कहे दोनों विश्वासोंके समान नहीं है। इसीसे अज्ञानताकी गाँठ छूट जाती है, यह सब गाँठोंको खोलकर बन्धनोंको छुड़ा देता है।

कोई पुरुष किसी मकानके द्वारपर जाकर किसीसे सुनले पर यह निश्चय करे कि, अमुक पुरुष घरमें है, यह साधारण लोगोंका विश्वास है कि, उन्होंने अपने माता पितासे अथवा उपदेशकोंसे सुन रखा है। दूसरा पुरुष घोड़ा और नौकरोंको देखकर विश्वास करे कि, अमुक सरदार घरमें है, यह विद्वानोंका सिद्धांत है कि, उन्होंने युक्ति और अनुमानसे जाना तीसरेने सरदारको घरमें देख लिया। यह ब्रह्मज्ञानियोंका सिद्धान्त है, वे लोग प्रत्यक्ष देखते हैं। इन तीनोंमें बड़ा भेद है सबसे बड़ा पद ज्ञानियोंका है। पर इस श्रेणीपर भी पहुँचकर द्वैत होता है क्योंकि, इस अवस्थामें भी दो भासते हैं जानता कि, ईश्वरसे सृष्टि है, यहां तक एक अनन्त काही बखेड़ा है। जबतक ज्ञानी द्वैतको न नष्ट कर दे, तब तक भेद रहता है कि, उसको तौहीद (अद्वैत) नहीं कह सकते।

चतुर्थ श्रेणी यह है कि, आदमी एकके अतिरिक्त दूसरा न देखे। जो कुछ देखे एकही देखे एकही कहे, द्वैतका लेश भी न रहे। ऐसे पुरुषको सूफी कहते हैं, सूफी (फनाफी अल्लाह) (ईश्वरमें लय) कहलाता है।

प्रथम तौहीदको मनाफिक कहते हैं (सुनी सुनी बातोंको निश्चय करना) उसी प्रकार साधारणोंकी तौहीद, अनुमानिक है। चतुर्थ श्रेणीकी तौहीद का समझना कठिन । इस श्रेणीमें केवल ईश्वरही ईश्वर होता है, वरन् मनुष्य आपको भी भूल जाता है। तवक्कुल (विश्वास) को चौथी श्रेणीकी तौहीद नहीं चाहिये वरन् तीसरे श्रेणीकी तौहीद आवश्यक है, चतुर्थ श्रेणीकी तौहीदकी व्याख्या कोई करही नहीं सकता। इस दरजेमें पहुँचा हुआ, सब कुछ एकही देखता है, आपही प्रेमी और आपही प्रीतम होता है, स्वभावमें स्थित हो जाता है। वह कुछ कर्त्तव्य

नहीं करता सब प्रकृतिके ऊपर छोड़ देता है। तीन प्रकारके कर्म होते हैं। एक तो वह है जो अपने इच्छाके आधीन है, जैसे बोलना, चिल्लाना। दूसरा वह है जिसमें इच्छा भी होती है पर पूर्ण बल नहीं होता। तीसरा वह है जिसमें अपना अधिकार नहीं; जैसे पानी पर पैर रखनेसे अवश्य तहको चला जायगा। पानी पर रख कर कोई नीचे जाना चाहे अथवा न चाहे पर अवश्य पानीको चीरता हुआ नीचेको चला जायगा।

शरणागत तथा ईश्वर विश्वास।

तवक्कुल जिसका नाम है, वह ईश्वरके सच्चे निकटवर्तियोंके स्थानोंमें से एक स्थान तथा महान् उच्च पद है। तवक्कुलका ज्ञान यथार्थमें बहुत सूक्ष्म और कठिन है। तवक्कुल पर चलना बहुत दुस्तर है। जिसके मनमें ऐसा संदेह हो कि किसी कर्मका भी कर्त्ता ईश्वरके अतिरिक्त कोई दूसरा है तो वह ईश्वरका विश्वासी नहीं हो सकता. यदि सब सामग्री छोड़ दी जाय तो अशर (कर्मकाण्ड) के विरुद्ध होगा, यदि कोई कारण प्रत्यक्ष न पावेगा तो बुद्धिके विरुद्ध करेगा। यदि कारण पावेगा तो संदेह है कि प्रत्यक्ष सांसारिक किसी पदार्थपर विश्वास कर लेगा। इन अवस्थाओंमें उसके ईश्वरवादी (आस्तिक) होनेमें बाधा पड़ेगी। अतः बुद्धि, शास्त्र आदि जैसे तवक्कुलकी व्याख्या करते हों, उनको पूर्ण रीतिसे समझता हो वरन् उसका स्वरूप बन गया हो, वही तवक्कुलको धारण कर सकता है। नहीं तो तवक्कुल बहुत दुस्तर और अगम्य है। इसको विरलाही जान सकता है। खुदा (ईश्वर) तवक्कुलों (विश्वासीयों) को ही प्रीतम बनाता है। तवक्कुलके ऊपर ही ईमान है।

आदमको सब फिरिश्तोंने नमस्कार की, इस कारण आदम सब फिरिश्तों से श्रेष्ठ है। उसीकी संतान सब मनुष्य हैं। इस कारण मनुष्य भी फिरिश्तोंसे उच्चपद पर स्थित हैं। अतः जो कोई आदमकी संतान (मनुष्य) होकर फिरिश्तों अथवा किसी दूसरोंको खुदा (ईश्वर) के अतिरिक्त, माथा टेकेगा, उनसे कुछ कल्याण चाहेगा, अथवा किसी प्रकारकी आशा रखेगा तो वह मनुष्य नहीं वरन् पशुके पदको पावेगा. जो जिस प्रकार खुदा विश्वम्भर पर विश्वास करेगा, वह उसी प्रकार उसे भोजन देगा। जिस प्रकार पक्षी प्रातःकाल भूखे उठते हैं पर संध्याको अघाकर घर आते हैं। जो कोई ईश्वरकी शरणमें सच्चे दिलसे प्राप्त होता है, उसकी वही (ईश्वर) पूर्ण रीतिसे रक्षा करता है। इस प्रकार ऐसी जगह उसे भोजन पहुंचाता है कि उसकी समझमें भी नहीं आता जो संसारकी शरण लेता है उसको परमात्मा संसारके साथही छोड़ देता है।

जो मंत्र यंत्र तंत्र आदि पर विश्वास रखता है, वह ईश्वरका प्रेमी नहीं. उसने परमात्माकी शरण नहीं लिया जो परमात्माकी शरणमें प्राप्त होता है यदि सारा संसार भी उसका शत्रु बन जाये तो भी उसकी कुछ भी हानि नहीं होती । चाहै कैसा भी कष्ट क्यों न पड़े पर ईश्वरके बिना किसीसे किसी प्रकारकी आशा न रखे । यदि तनिक भी दूसरेका ध्यान आवेगा तो शरणागतके पदसे गिरा देगा । प्रह्लादको अनंत कष्ट पड़ा तो भी उसका मन न चलायमान हुआ, शरणागति न छोड़ी तो परमात्माने सब अवस्थाओंमें उसकी रक्षा की । प्रह्लादजीकी सात और ध्रुवकी केवल पांच वर्षकी आयु थी ये दोनों सब विश्वासियों (शरणागत परायणों) में श्रेष्ठ हैं । इसी प्रकार हज़रत इबराहीम भी शरणागत प्राप्तोंमें श्रेष्ठ हैं. क्योंकि, जब नमरूद बादशाहने उनको अग्निमें डाला तो यद्यपि अग्नि ऐसी तेज थी कि, फिरिस्ते भयखाते थे, पर इबराहीमको कुछ भी भय नहीं था । वे केवल खुदाकी ओर ध्यान लगाये बैठे थे, यहांतक कि, उसी अवस्थामें जिबराईलने खुदाकी आज्ञा लेकर इब्राहीमसे कहा कि, ऐ इब्राहीम ! मैं तुझको बचाता हूँ तब इब्राहीमने पूछा, खुदातआलाका हुक्म है ? कि, तुम मुझको बचाओ । जबराईलने कहा कि, खुदाका तो हुक्म नहीं वरन् मैं अपनी ओरसे बचाता हूँ । इब्राहीमने कहा कि, यदि खुदाका हुक्म नहीं है तो मैं बचना नहीं चाहता । जबराईल यह बात सुनकर पीछे चले गये । तब क्रमशः इसराफील इजराईल आदि फिरिश्ते आकर इब्राहीमको बचानेके लिये कहा पर इब्राहीमने वही उत्तर दिया । उसी समय खुदाकी कुदरतसे आग सुन्दर वाटिका बन गयी अग्निका कहीं पता न लगा । जो कोई ईश्वरकी शरणागत हो उसीको उभयलोकका आनन्द प्राप्त होगा ।

साखी – कबीर – सौ वर्ष सेवा करे, एक दिन सेवे आन ।
सो अपराधी आतमा, निश्चय नरक निधान ।। १ ।।

कबीर – सत्यनामको छोड़िके, करे आनकी आस ।
कह कबीर ता दासका, होय नर्कमें बास ।। २ ।।

कबीर–आन भजे सो आँधरा, हरिहिं भजे सो साधु ।।
सत्य भजे सो वैष्णव, ताको मता अगाधु ।। ३ ।।

कबीर–देवी देवता ढह पड़े, हमको ठौर बताव ।
जो कोई हरि सो विमुख है, तिनको तुम ले खाव ।। ४ ।।

कबीर–मढ़ी मसानी शीतला, भैरों औ हनुमन्त ।
साहेब सो न्यारा रहे, जो उनको पूजन्त ।। ५ ।।

ग़ज़ल — जिनको है जहानमें बखुदाबन्द तवक्कुल ।
उनको न खतर कर दफा दुःख द्वन्द तवक्कुल ।।
प्रह्लादको पर्वतसे दिया डाल जमीं पर है ।
और आगकी सोज़िशको किया बन्द तवक्कुल ।।
इब्राहीमके खातिर आतश हुई गुलज़ार ।
सब दुःख रफा कर किया आनन्द तवक्कुल ।।
इससे न कोई दूसरा है सरबते शीरीं ।
शीरीं है सो अजमिसरी अज़ कन्द तवक्कुल ।।
जुजहक्कु न किसीसे रख उमरीद ऐ लोन ।
कर दीन व ईमान पुन पायबन्द तवक्कुल ।।

तफक्कुर (मनन)

एक क्षणका तफक्कुर (मनन) वर्षभरकी तपस्याके समान है । यथार्थमें चिंतन और मननका पद सबधर्मोंके अनुसार बहुत ऊँचा है ? पवित्र पुस्तकोंको पढ़ना, उसके अर्थ और आशयपर विचार करना, चिंतन करनेके समय ऐसा हो जाना कि, दूसरा संकल्प भी मनमें न आने पावे । जो बेफिकरीके साथ काम करता है वह अन्तमें लज्जा और हानि उठाता है ।

प्रथम मनुष्यकी दशापर बिचार करना चाहिये कि, यह किस अवस्थासे पतित होकर किस अवस्थाको पहुँचा है ! अपनी सत्य स्वरूपी देहसे किस प्रकार विलग हो, किस प्रकार दुःखमें फँसा । इसने अपनेको अच्छा जाना, रूपका अभिमान किया, पतित हुआ अनन्त दुःखोंको भोगने लगा । यद्यपि वेदके अनुसार ऋषि मुनियोंने भजन करके ईश्वरके पदको भी प्राप्त किया तो भी सब उस पर कायम न रह सके । यदि स्वसंवेदकी शिक्षानुसार भजन करते तो पारख गुरुको प्राप्त हो अक्षय पदमें स्थित हो जाते । इसी प्रकार वो बड़े २ विद्वान् पण्डित विद्याके अभिमानमें किसीको कुछ न समझते थे, वे सब भी अभिमानके कारण पतित हुए. जो बड़े २ बादशाह, राजा, महाराजा आदि ईश्वर होने तकका दावा करते थे, वे कुत्तोंकी मौत मरे ।

इन बातोंके विचारसे सिद्ध होता है कि, हमारी तबाहीका कारण केवल अहंकारही है । अहंकारही बुरे होनेपर हमको दूसरोंसे अच्छा समझना सिखाता है । जिसने हमको सत्यस्वरूपी देहसे पतित किया, वह सर्वदा छः देहों और चौरासी लाख योनियोंमें भी लगा रहता है । जब तक यह न छूटेगा, कदापि स्थिति न होगी । जीव झूठे अहंकारमें फँसा हुआ छः देहोंमें अनेक दुःखोंको भोगता भटकता फिरता

है । ब्रह्म, जीव, माया, ईश्वर आदि सब अहंकारके ही भ्रममें हैं । सत्यगुरुकी दया विना अहंकारसे छूटकर निर्भ्रम पदमें स्थिति होना अत्यन्त कठिन है । जितने मुक्तिके देनेवाले और मुक्ति चाहनेवाले हैं सब धूरकी रस्सी बाँटकर आकाशकी कूआँसे जल पीना चाहते हैं । जब तक इनको सद्विचार न आवेगा तब तक इनका ठिकाना नहीं लगेगा । जो पशु धर्म (विषय विलास) में भूल जावे वे तो पशु हैं, उसको कभी सत्य पथ न मिलेगा, न वह मनुष्यत्वकी ओर जा सकता है । मनुष्य आपही अपना मित्र, आपही अपना शत्रु है । अपना कोई शत्रु नहीं, सब भला, अपने मनकी ओरसे ही बुरा प्रस्ताव होता है, किसको बुरा कहा जावे किसको भला ।

साखी – बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न देखा कोय ।
जो दिल खोजा आपना, मुझसा बुरा न होय ।।

शुद्ध विचार और चिंताके बिना जीव कुत्तोंके समान दर दर भटकता फिरता है । सब कुछ आपही है, पर ज्ञान और बुद्धि कहाँ कि, आपको पहचान सके । आपही आशिक (प्रेमी) है आपही माशूक (प्रीतम) सुखी है, आपही दुःखी । आपही बन्ध और आपही मोक्ष है ।

अहंकारसे ही इसकी दुर्गति हो रही है । इस शत्रुके दो हथियार हैं, एक स्त्री और दूसरा अहंकार है । इसने ही नाना प्रकारके धर्म रीति व्यवहार प्रगट कर जगत्को फँसा रहा है ।

जब तक मनुष्य "सर्वं खल्विदं ब्रह्म" नहीं देखता, तबतक उसके भजनका तार लगा रहता है, जबतक पूर्ण परमात्माका साक्षात्कार न हो तबतक प्राणापन्न सदाचारमें रहकर भजन भक्तिमें लगा रहना चाहिये । जब "सर्व वही है अर्थात् सब परमात्माही है" का ज्ञान हो जाता है, तब आपही आप अहंकार छूट जाता है । ऐसोंमें धैर्य आदि गुण स्वभावसे ही वर्तते हैं । कैसा भी कष्ट क्यों न पड़े, कभी अधीर नहीं होते तीन लोकका राज्य भी मिल जावे तो भी आनन्द नहीं मानते । कठिन तपस्या अथवा किसी नियमको हठसे धारण करनेसे मुक्ति नहीं होती वरन् विचार विवेक, द्वारा आत्मचिन्तन करनेसे मोक्ष होता है । सत्य और असत्यका निर्णय न करेगा, सार शब्दको न पावेगा । अज्ञानी लोग यह नहीं विचारते कि, "जिन देवी देवताओंकी हम पूजा करते हैं वे स्वयं बन्धनमें फँसे हैं, हमें क्या मोक्ष देंगे" वे स्वयं दूसरोंके आश्रयमें भटकते हैं मुझे क्या आश्रय देंगे ?

शब्द – भूली मालिन आयो सतगुरु, जागता है देव ।
ब्रह्म पाती विष्णु डाली, फूल शंकर देव ।।

तीन देव प्रत्यक्ष तोड़े, करे किसकी सेव ।।
पाथर गढ़के मूरति कीनी, धरिके छाती लात ।
जो वह मूरति साँची होती, गढ़नहारको खात ।।
भाँति बहुत और लापसी, करि करि पूजा सार ।
भोगन हारा भोगिया, मूरतिके मुख छार ।।
पाती तोड़े मालिनी, और पाती पाती जीव ।
जा पाहनको पाती तोडे, सो पाहन निर्जीव ।।
मालिन भूली जगत भुलाना, हम भुलावे नाहिं ।
कहें कबीर हम राम राखे, कृपा करि हरि राय ।।

जबतक जीव पांचों अहंकारोंको न छोड़ेगा तबतक कल्याण न होगा, अहंकारही सब कर्मोंका मूल एवं बन्धनका कारण है। जिसने अहंकार छोड़ा वह उभय लोकमें सुखी हुआ। निरहंकारी पुरुष कभी मूर्खोंकी संगति स्वीकार नहीं करता, क्योंकि, मूर्खलोग मिथ्या अहंकारमें पड़े पक्षापक्षमें फँसे होते हैं। पक्षपाती और अहंकारी तथा धर्मद्वेषियों की संगतिसे सत्यगुरु नहीं प्राप्त होते वरन् निर्पक्ष, सत्याचारी, सद्‌गुणसम्पन्न विद्वानोंकी संगतिसे सत्यगुरु प्राप्त होते हैं।

हे अधिकारी जनो! नम्रता धारणकर सबके साथ प्रेमहीका बरताव करो, दीन दुखियोंको तुच्छ न समझो. क्योंकि, सत्यगुरु इन्हीं लोगोंपर प्रसन्न होता है उन्हींके स्वरूपमें वन्दीछोर मिलता है। अहं त्वंमें पड़कर अपने यथार्थको हाथसे मत खोओ। शरीरके अभिमानमें न पड़ो।

सारा संसार अनित्य है, अनित्यका सब खेल है, देहाभिमानमें पड़ना अज्ञानता और मूर्खताके सिवा दूसरा क्या है? इसीको अविद्या सागर कहते हैं। देहाभिमानी कभी सुख नहीं पाता, सर्वदा दुख सागरमें गोता खाया करता है। यद्यपि यह मनुष्यशरीर सर्वोत्कृष्ट है, पर इसके अभिमानमें पड़कर इसीके पोषण पालनमें रहनेके लिये नहीं किन्तु आत्मविचार कर सत्यपदको प्राप्त करनेके लियेही श्रेष्ठता है। यदि मनुष्य शरीर पाकर आत्मविचार न हुआ तो इससे बढ़कर नीच और तुच्छ कोई भी नहीं. क्योंकि, दूसरे शरीरोंमें पड़ा हुआ जीव स्वप्न सुषुप्ति अवस्था के कारण स्वाभाविक ही अविद्याके वशमें पड़ा होता है। केवल मनुष्य शरीर पाकर जीव जाग्रत अवस्था पर अधिकृत होता है। इसमें भी जाग्रत नहीं हुआ यानी आत्मज्ञान प्राप्त नहीं किया तो पशुसे भी तुच्छ हुआ। देहाभिमानमें पड़ा हुआ जीव सदा काल फाँसमें पड़ा रहता है, जबतक देहाभिमान न छोड़ेगा तबतक सुखका दर्शन भी न होगा। यदि लोक परलोककी सर्व सामग्री और सुख प्राप्त हो

जावे तो भी देहाभिमानमें पड़ा, काल पुरुषकी आज्ञासे कभी बाहर नहीं हो सकता । यदि एक कैदीको उत्तम उत्तम पदार्थ देवें तो क्या वह अपनी स्वतंत्रताको भुलाकर कभी उनकी ओर दृष्टि डालेगा ? इसी प्रकार देहाभिमानमें कभी सुख नहीं प्राप्त हो सकता । बन्धनके समान दूसरा कौन दुख है ? देहाभिमान छोड़ देनाही मनुषत्व का चिह्न है । जो देहाभिमानमें फँसकर नाना प्रकारकी संसारिक विषयवासनाओं को ग्रहण करता है, उसे कभी सत्यगुरु नहीं मिल सकता ।

ये पिण्ड और ब्रह्माण्ड दोनों झूठे हैं । जो कुछ पिण्ड ब्रह्माण्डके सम्बन्धी हैं सब मिथ्या हैं । जीव संसारिक सब पदोंको प्राप्त करके भी बन्धनसे नहीं निकलता, फिर इसे पदार्थोंका प्राप्त होना कौनसे काम आया ।

ग़ज़ल—पहले मैं शाहंशाहा था, आलमका क़िबले गाह था ।
फिर भी गदा दर्गाह था, मैं कुछ नहीं मैं कुछ नहीं ।।
पहले मैं रमता राम था, नज्में दुनि दीन काम था ।
यह भी ख्याले खाम था, मैं कुछ नहीं मैं कुछ नहीं ।।
मैं साहेब तदबीर था, जगका गुरु और पीर था ।
ताहमपुर अज़ तक़सीर था मैं कुछ नहीं मैं कुछ नहीं ।।
मुझसेही नाद और बिन्द था, मैंही गुरु गोबिन्द था ।
सूफी कलन्दर रिन्द था, मैं कुछ नहीं मैं कुछ नहीं ।।
आकाश आतश पौन हूँ, कहूँ मैं कौन हूँ ? ।
इसही लिये मैं मौन हूँ, मैं कुछ नहीं मैं कुछ नहीं ।।
बाज़ार सौदा गर्म है, लेनेसे मुझको शर्म है ।
यह दिलका मेरे भर्म है, मैं कुछ नहीं मैं कुछ नहीं ।।
ऋषिरायने सब कुछ कहा, कुछ भेद दर पर्दे रहा ।
मैं खोलकर बतला दिया, मैं कुछ नहीं मैं कुछ नहीं ।।
मुझहीसे पाप और पुण्य है, सब ध्यान और सब धुन है ।
वेद और कुतुब सब सुन्न है, मैं कुछ नहीं मैं कुछ नहीं ।।
मैं भ्रमका पुतला बना, खुदको बन्दा गिना ।
मुझहीसे पैदाइश फना, मैं कुछ नहीं मैं कुछ नहीं ।।
नादान वखुद मग़रूर है , घेरे शवे दैजूर है ।
ज़ाहिर कहां वह नूर है, मैं कुछ नहीं मैं कुछ नहीं ।।
होवे भलाई यारसे, देखे अगर वह प्यारसे ।
रखले अजाबुननारसे, मैं कुछ नहीं मैं कुछ नहीं ।।

मैं जीव ब्रह्म माया बना, सब दीदनी काया बना ।
सब धर्म और दाया बना, मैं कुछ नहीं मैं कुछ नहीं ।।
मुर्शिद क़दमकी खाक हो, आवागमनसे पाक हो ।
उसकी मिहर बेबाक हो, मैं कुछ नहीं मैं कुछ नहीं ।।
वे बूझके इनसाँ मरे, आवागमनका दुख भरे ।
आजिज बिचारा क्या करे, मैं कुछ नहीं मैं कुछ नहीं ।।

जो बोलता है तो परमात्माकी बात, जो मौन होता है तो सोचता है परमात्माका ज्ञान, जो देखता है परमात्माका दर्शन, सच्चा साधु वही है । जिसने विचार नहीं किया वह साधु पद नहीं पा सकता । विवेकही जगका सार है, साधुके लक्षणोंमेंसे विवेकही मुख्य लक्षण है । विचार विवेक वह पदार्थ है कि, सब पापों और बुरे संकल्पोंको जड़से नाश कर देता है ।

अध्याय २२

मतोंका विशेष विचार

मनुष्य मात्रके धर्म ।

बुद्धिमान् विवेकी, विचारवानोंको विचार करना चाहिये कि, मनुष्यका क्या धर्म है ? किस कारण परमात्माने अपने स्वरूपमें प्रगट किया है ? जब सोचेगा तब ज्ञान हो जावेगा कि, पैतृक पदको प्राप्त करनेके लियेही यह उत्पन्न किया गया है । इसका धन वही है, जिससे आत्मस्वरूप जाना जाता है । इस कारण मनुष्यको उचित है कि, सांसारिक प्रपंचसे मन हटाकर अपने यथार्थ कर्तव्यमें लग जाय । ईश्वरने इसे अपना स्थानापन्न बनाया है. क्योंकि, सृष्टिमें कोई भी जीवधारी ऐसा नहीं है, जिसको कि, ईश्वरने अपने स्वरूपमें बनाया हो । मनुष्यका कर्तव्य भी सबसे भिन्नही नियत किया है; इसकी बनावटही ऐसी बनाई है कि, जिससे इसको विवश हो ईश्वरकी आज्ञा माननी पड़े । यथार्थमें परमात्माने भक्ति का भण्डार मनुष्यको दिया है, यदि इसकी पूर्ण रीतिसे रक्षा न करेगा तो दण्डका अधिकारी होगा ।

१ जंगम, २ स्थावर, ३ बनस्पति ये तीन प्रकारोंकी सृष्टि है; १ चलने, फिरने और संकल्पादि करनेवाला जंगम, २ केवल बढ़ने और पुष्ट आदि होनेकी शक्तिवाला वनस्पति और ३ जड़, स्थावर है । सदाचार देवताओंका गुण है । मनुष्य बुद्धि रखता है । इस कारण उचित है कि; पशुधर्मको छोड़ दे । देवधर्मो को धारण करे । दैवी वह धर्म है, जो कि, सर्वथाही शुद्ध हो अर्थात् दैवी सम्पत्तिसे

र्ण हो । आसुरी सम्पत्तिका त्याग करे । जहाँतक होसके निषिद्ध घृणित व्यवहार पूका संकल्प न भी करे । किसी जीवधारीको किसी प्रकार भी कष्ट न पहुँचावे ।

परमात्माने मनुष्यका पद देवतोंसे भी श्रेष्ठ बनाया है. क्योंकि, देवतालोग स्वर्गमें रहतेही हैं उनको स्वर्ग प्राप्तिके लिये कुछ भी यत्न नहीं करना आता । इसके बिना वे मोक्षको भी प्राप्त नहीं कर सकते, मनुष्य असंख्य रुकावटोंको पारकर स्वर्ग तथा मोक्षको प्राप्त कर लेता है । यही कारण है कि, खुदाने आदमका पुतला बनाकर सब फिरिस्तोंको आज्ञा दी थी कि, आदमको नमस्कार करो। शैतानने आदम से अपनेको अच्छा समझा इसी कारण लोकसे निकाला गया । मनुष्य पदके सन्मुख स्वर्गादि सब तुच्छ हैं पर जिस प्रकार शैतानने आदमसे आपको अच्छा समझा, वह पतित हुआ । उसी प्रकार जो अहं लावेगा अपनेको अच्छा और दूसरोंको तुच्छ समझेगा वह अवश्य नीचेकी ओर गिरेगा । अथवा जो पक्षपात करके अपनेको अथवा किसी दूसरोंको देहाभिमानमें फँसावेगा, वह शैतान और शैतानका भाई है । न जाने किस स्वरूपमें सत्यगुरु मिल जाय । इस कारण सबसे नम्र और अधीन होकर दास भावमेंही वर्ते, यही मनुष्यका श्रेष्ठ धर्म है ।

अहंकारहीके कारण जीव अपने सत्य और सुखमय स्वरूपसे पतित हुआ है । चौरासी लाख योनिमें भटकने और नाना प्रकारके दुःख सहनेका मूल कारण देहाभिमान ही है । मनुष्यका पद सब पदोंसे उच्च है. क्योंकि, जीव मुक्त होकर मिल जावे । सब देवते उसके आगे दण्डवत नमस्कार करते हैं । मनुष्यपद सब पदों में श्रेष्ठ पद है ।

इस कारण जो मनुष्य बनना चाहता है उसको मनुष्यका लक्षण धारण करना चाहिये । यदि राजाका कोई भी ओहदेदार, अपना कर्तव्य ठीक २ न करे तो दरबार से निकाल देने और पदसे गिरा देने लायक होता है वह पतित भी हो जाता है । इसी प्रकार मनुष्य अपने लक्षणको न धारण करेगा, तो किस प्रकार मनुष्य के पदका अधिकारी हो सकेगा ।

जो चाहता है कि, मनुष्य पदको यथार्थ प्राप्त करूँ तो उसे मनुष्यके लक्षणों को धारण करना चाहिये । मनुष्य लक्षणको धारण करकेही, परमात्माका कृपापात्र बननेसे सर्वोत्कृष्ट मनुष्यपद पा सकता है । उदारता १, वीरता २, न्याय ३, शील ४ और गुरुकी आज्ञाकारिता येही लक्षण अपने यथार्थस्वरूपको प्राप्त करनेके हैं । जिसने इन चार लक्षणोंको प्राप्त कर लिया उसे नाना शास्त्र पढ़नेकी

आवश्यकता नहीं है । शास्त्र पढ़ा हो अथवा नहीं पर उपरोक्त चारों गुणोंके आशय को भली प्रकार समझता एवं उसीके अनुसार चलता हो तो वही सब विद्वानोंमें वद्वान् और संतोंमें संत शिरोमणि है ।

जिसने अपने इन्द्रियोंको दमन कर लिया है, आसुरी सम्पत्ति क्रोध आदि को अन्तःकरणसे निकाल दिया है, दैवी सम्पत्ति शील, संतोष, धैर्य्य आदिको सम्यक् प्रकार धारण कर लिया है, वेही विद्वान् हैं, वेही सन्त हैं, चाहें शास्त्र पढ़े हों अथवा नहीं पढ़े हों । जिनको दैवी सम्पत्ति सम्यक् प्रकार प्राप्त है, उनको शास्त्रावलोकन के लिये समयविशेष नहीं लगाना पड़ता । हाँ ! जब आवश्यकता हो तो शास्त्र देख लेना अवश्य चाहिये पर उसीमें पचा रहकर अपने भजनको छोड़ बैठना उचित नहीं ।

सारी विद्या, कला, कौशल आदिके प्रगट कर्त्ता शिवजी हैं । शास्त्रोंमें लिखा है कि, जब शिवजीने अपना डमरू बजाया तो उसके शब्दसे नौ स्वर ९ (अ, इ, उ, ऋ, लृ, ए, ऐ, ओ, औ प्रकट हुये । प्रथम येही नौ प्रगट हुये पीछे इन्हींसे सोलह स्वर बने, जिनमें से १२ बारहका विशेष प्रयोग हुआ उसीसे वर्णमालाके सब अक्षर प्रगट हुये, जिससे अनन्त शब्द प्रवृत्त हुये । इनके विना सब अक्षर तुच्छ हैं सबके प्रकाशक येही हैं ।

बाणी वेदसे लेकर, दूसरी जो कुछ संसारमें है, चाहे गुप्त हो अथवा प्रगट, सब शिवजीसे प्रगट हुये हैं । इस कारण शब्द, पुस्तक पोथी कोही सर्वस्व समझने उन्हींके ऊपर भरोसा करनेवाले शिवजीके शिष्य हैं । शिव तमोगुणी देवता है, इसी कारण शब्दोंकेही भरोसे अपना कल्याण चाहनेवाले भी वैसेही हैं क्योंकि यह नियम है कि, जैसा गुरु होता है वैसा चेला भी होता है ।

साखी – जल प्रमाणे माछली, कुल प्रमाने वुद्धि ।
जाको जैसा गुरु मिला, ताको तैसी शुद्धि ।। १ ।।

ऐसे शब्दोंके आधारवालों वा पुस्तकोंके आश्रय करनेवालोंमेंसे विरलाही कोई इन्द्रिय दमन करनेवाला होता है । नहीं तो विषय वासनामें ही निमग्न रहते हैं, चाहे वह किसी रूपांतरमें क्यों न हों । ऐसे लोग सच्चे सन्तों, तथा इन्द्रियजित निषकामी पुरुषोंकी निन्दा करते हुए ठट्ठा उड़ाते हैं । यही कारण है कि, सच्चे वैराग्यवान् संत और विषयी मायामें बद्ध हैं, देहाभिमानियों विद्याभिमानियोंका कभी मेल नहीं मिला । समस्त संसार त्रिगुणात्मक है । १ सतोगुण २ रजोगुण ३ तमोगुण; येही तीन गुण हैं इन्हींके आधारपर सृष्टि खडी है ।

सतोगुणी स्वर्गी रजोगुणी मध्यम लोकवासी अर्थात् मृत्युलोकवासी

हैं और तमोगुणी नरकमें रहते हैं । संत सतोगुणी, सांसारिक मनुष्य रजोगुणी और विद्याभिमानी, देहाभिमानी पक्षपाती सभी तमोगुणी हैं ।

यद्यपि विद्याभिमानी तथा देहाभिमानीयोंमेंसे भी कितनेक शुभ कर्ममें प्रवृत्त होते हैं पर केवल राजभय अथवा लोकभयसे । जो सतोगुणी विद्वान् हैं, वे लोक परलोकके भय अथवा शारीरिक अपमानके कारण नहीं वरन् अपने अंतरीय प्रकाश और ज्ञानसे करते हैं । वे संसारको तुच्छ जानते हैं तो भी विद्वान् और सच्चे विचारवानोंके सामने उनका कार्य्य माननीय और प्रशंसनीय होता है ।

भारतीय मत ।

सबसे प्रथम धर्म (मजहबों) के स्थापित करनेवाले भारतवर्षकेही ऋषि मुनि और महात्मा हुये हैं । भजन, भक्ति, ज्ञान, तथा पारलौकिक मार्गके पथ-दर्शकोंमें सबसे बढ़कर श्रेष्ठ उच्चपद भारतवासियोंका ही है । इस कारण प्रथम हिन्दू धर्मके ऊपरही कुछ लिखता हूँ ।

सहस्रों, ऋषि, मुनि, सिद्ध, साधुओंने भारतवर्षमें नाना प्रकारके मत मतांतर प्रचलित किये । षट् दर्शन छयानवे पाखण्ड हुए । इसी देशसे नाना सिद्धांतों को लिये हुये सहस्रों धर्म (मजहब) दूसरे देशोंमें फैले, इन्हीं (भारतवासियों) केही धर्म्मों और रीतिओंकी अन्य देशके पैगम्बरों और आचार्य्योंने नक़ल करके अपना २ धर्म स्थापित किया ।

सृष्टिकी आदिमें मनुष्य शुद्ध, छल कपटसे रहित देवतोंके समान होते हैं पाप पुण्य उनकी दृष्टिमें कुछ होताही नहीं स्वभावमेंही स्थित होते हैं । क्रमशः राग द्वेष बढ़कर लोगोंका अंतःकरण अशुद्ध होने लगता है इसीलिये मजहबकी आवश्यकता होती है; भजन, भक्ति, तप आदिकी रीति स्थापित होती है । इसी ढंग पर संसार चलता रहता है । ब्रह्माण्डमें एकही वेद अनेक रूप होकर संसारमें फैलता है । संसारके मनुष्य वेदकी ही आज्ञापर चलते हैं । अपने २ विचार और धर्मके अनुसार वेदके प्रमाण लेकर उसको पुष्ट करते हैं ।

कबीर साहिबका सत्यशब्द टकसारका शब्द ।

संतो दुविधा कहांते आई ॥
नाना भांति विचार करत हो कौने मति बौराई ॥

तुरिया रूप ॥

ऋगु कहे निराकार निरलिप्ती अगम अगोचर साईं ॥
आवे न जाय मरे नहि जीवे रूप बरण कछु नाहीं ॥

सुषुप्ति रूप ॥

अथर्वण कहे प्रपंचे दीसे सत्य पदारथ नाहीं ॥
जो उठिजाये बहुरि नहिं आवे मरि मरि कहां समाहीं ॥

स्वप्न रूप ॥

यजुर कहे सगुण परमेश्वर दश अवतार धराया ॥
गोपिनके संग रहस रम्यो है बहु प्रकारसे गाया ॥

जाग्रत् रूप ॥

साम कहे यह ब्रह्म अखंडित दुतिया और न कोई ॥
आपे आप रमे परमेश्वर सत्य पदारथ सोई ॥

सत्यवेदके मसला ॥

यह प्रमाण सबन मिलि कीन्हा ज्यों अँधरेको हाथी ॥
आदि वापका मर्म न जाने पूत होत नहिं साखी ॥
अंधरेकी हाथी सांच है, सांचे है सगरे ॥
हाथनकी टोई कहें आंखिनके अंधरे ॥
अंधरनको हाथी भयो, कियो सबनही ध्यान ।
अपनी अपनी सब कहें, को काको कहे अज्ञान ॥
अंधरनको हाथी भ्यों, सांचो करके मान ।
हाथनकी टोई कहैं, शब्दन ते पहिचान ॥
आँखन केरी आँधरे, बूझे विरला कोय ।
कहै कबीर सतगुरुकी सैना, आप मरे तब ओय ॥

झूलनासे निर्णय ॥

मिमांसा कहे सब कर्मही है, वैशेषिक समयको ध्यावता है ॥
न्यायवादी कर्तार ठाने, पातञ्जलि योग बतावता है ॥
सांख्यवादी नित्यानित्य कहे, वेदांती ब्रह्म अनुमानता है ॥
ये द्वन्द्व चहुँ दिशि मची, सो द्वन्दहीको सब गावता है ॥ १७ ॥

साखी – भर्मजाल जो जगतके, ताके अंग अनेक ॥
यक यक अंग दृढ इष्टकरि, गावहिं निज निज टेक ॥ १८ ॥

वेद किताबकी जहांतक पहुँच है वहाँही तक कहते हैं, उनका क्या अपराध । अपराध उसका है जो उनका विचार नहीं करता ।

यथा–वेद स्मृति कहै किन झूठा, झूठा जो न विचारे ॥

वेदका आशय और होता है, शब्दसे औरही अभिप्राय टपकता है पर पक्ष-

पाती लोग अपना अभीष्ट सिद्ध करनेके लिये नाना प्रकारकी युक्ति और प्रमाणों के आग्रहसे अपनी सत्यता प्रगट करते हैं।

यह साधारण नियम है कि, जो जिसका पक्षपाती होता है वह अपनी आशक्तिके कारण उसके अवगुणोंको भी गुण करकेही जानता है । जैसे अपना मुंह आपसे नहीं देखा जाता वरन् दरपणसेही देखा जाता है । अथवा जैसे कोई ऊँचे स्थानपर चढ़े बिना नीचेके सब पदार्थोंको भली प्रकार नहीं देख सकता । उसी प्रकार जबतक निर्पक्ष होकर किसी मतको नहीं देखेगा, तबतक उसके गुण अवगुणोंको नहीं जान सकेगा ।

योगियोंका मत ।

वेदहीसे योग समाधि तथा षट् दर्शन निकले माने जाते हैं । योगियोंको योग पमाधिका बड़ा अभिमान है । योगसे वे अपनेको अमर समझते हैं ।

भोगी योगीकी समता ।

भ्रममें पड़कर वे अपनेको कृतार्थ समझते हैं पर यह नहीं समझते कि, जैसा भोग वैसाही योग भी है । दोनों निर्मूल और तुच्छ हैं। योगी नादके द्वारा ऊपरको चढ़ता है, भोगी बिन्दुके द्वारा नीचे आता है । अत :-

आधारचक्री भेद-योगी अपान वायुके द्वारा गणेश क्रिया करता है। आधार चक्रको साधता है अर्थात्-गुदा द्वारसे जल खींचकर ऊपर चढ़ाता है फिर गिरा देता है, फिर चढ़ाता और गिराता है । ऐसेही वारंवार करनेसे आधार चक्र टूट जाता है और उससे योगी ऊपरको चलता है तब आधार चक्र सिद्ध कहलाता है। छः चक्रोंमें यह प्रथम चक्र है ।

स्वाधिष्ठान चक्र भेद-आधार चक्रके ऊपर स्वाधिष्ठान चक्र है । जब आधार चक्र सिद्ध होजाता है तब स्वाधिष्ठान चक्र भेदनेकी चिंता बढ़ती है इसके लिये युक्ति करता है । बारह अंगुलकी सलाका बनाकर लिङ्ग द्वारमें उसे बार बार चलाता है, जिससे उपस्थेन्द्रियका छिद्र शुद्ध और साफ हो जाता है । फिर उपस्थ इन्द्रियसे जल खींचकर चढ़ाता है । जल अच्छी तरह चढ़ाने और उतारनेका अभ्यास पड़ जाता है । तब क्रमशः दूध और मधुको चढ़ाता है । जब मधुके चढ़ाने उतारनेका अभ्यास पूरा हो जाता है तो स्वाधिष्ठान चक्र सिद्ध होता है । फिर योगी आगेको बढ़ता है ।

यह क्रिया, प्रायः वाममार्गी और अघोरी तथा गुसाईं ब्रह्मचारी नामके भेषधारी अन्य विषयी लोग साधते हैं ।

मणिपूरक चक्र भेद-फिर योग अपान और समान वायुका सम्मिलन

करके धातु क्रिया करनेका समय आता है। नौ गज लम्बा (कहीं कहीं पन्द्रह हाथ लिखा है) चार अंगुल चौड़ा बारीक और नम्र वस्त्र लेता है। उसको मुखके राहसे निगलकर बाहर निकालता है। पानी पीकर भीतर आँतोंको साफ करता है। फिर कपड़ेमें लगे हुये कफ आदिको साफ करके फिर निगलता है। ऐसेही बार-म्बार करनेसे अभ्यास पड़ जाता है, तो गज २ भर चौड़ा और नौगज लम्बा भी निगलता और निकाल देता है। इस प्रकार जब यह क्रिया पूरी होती है तो योगी नाभीसे वायुको उठाकर मणिपूरक चक्रमें भरता है।

अनाहत चक्र – तब योगी अपान और प्राणको एक करता है। सवा हाथ की एक दातून बनाकर कण्ठके मार्गसे पेटमें चलाता है। पेटभर पानी पीकर बाहर निकालता है, जिससे अन्दर पेट, कलेजे और फेफडोंके, कफ आदि निकल जाते हैं इस क्रियाको कुंजर क्रिया कहते हैं। इस क्रियासे बड़ी आनन्दता और प्रकाश मिलता है। इसी क्रियासे योगी अनाहत शब्द सुनने लग जाता है। यद्यपि अनाहत शब्दमें बहुत प्रकारके शब्द सुनाई देते हैं पर सभोंमें दशप्रकारके शब्द प्रधान हैं।

१ घण्टका शब्द; २ शंखका शब्द; ३ छोटी २ घण्टियोंका शब्द; ४ भंवँरेकी गुंजारका शब्द; ५ पहाड़से पानी नीचे गिरनेके समय जैसा शब्द होता है वैसा शब्द; ६ बाँसुरीका शब्द; ७ शहनाईका शब्द; ८ छोटे २ पक्षियोंका शब्द; ९ वेणुका शब्द; १० चंग (सीटोका) शब्द; यही दश प्रकारके प्रधान अनाहत शब्द हैं। इनके अतिरिक्त नाना प्रकारके बाजे आदिके शब्द भी सुनाई देते हैं, जिससे मनको बड़ा आनन्द होता है। फिर इसको भी वेधके आगेको बढ़ता है।

विशुद्ध चक्र भेद – प्राण, अपान और समान तीनों वायुको कण्ठस्थानमें योगी एकत्रित (समान) करता है। इस साधनको लम्बिका योग कहते हैं। इसके साधनेके समय केवल दूधही पीकर रहना होता है, नाज नहीं खाना पड़ता। मक्खन और सेंधे नमकसे जिह्वा को नित्य रगड़के पतला करना और जिह्वाकी जड़की रगोंको शनैः शनैः काटके (जिह्वाको) इतना बढ़ाना पड़ता है कि, दशवें द्वार तक पहुँच सके। जिह्वाको उलट कर ब्रह्मरंध्रके मार्गको रोककर ऊपरसे टपकते हुये अमृतको पीता है। इसके पीनेमें शरीरकी कांति तेजोमय हो जाती है। इस प्रकार अमृत पीनेका आनन्द प्राप्त हो जाता है तो योगीको लम्बिकायोग का साधन पूरा हो जाता है।

अग्नि चक्र–इस विशुद्ध चक्रके आगे अग्नि चक्र है । इसे सिद्ध करनेके लिये योगीको नेति क्रिया करनेकी आवश्यकता होती है । सूतकी एक वित्तेभरकी बत्ती बनाकर नाकमें चला, ब्रह्माण्डको भली प्रकार साफ करके अपने कण्ठकी वायुको अग्नि चक्रमें स्थापित करना होता है । योगी अग्निचक्रमें वायुकोस्थापित करके बड़ा आनन्द प्राप्त करता है । वायुको ऊपर चढ़ा कर जिह्वासे मार्गको रोकके कुम्भक कर समाधिको प्राप्त करता है, शरीर शक्तिहीन मृतक समान हो जाता है । दशवें द्वारमें पहुँचकर योगी निर्विकल्प समाधिको प्राप्त हो जाता है इस स्थानपर पहुँचकर योगी अष्टसिद्धि और नव निधिको प्राप्त करता है ।

अष्टसिद्धि ।

१ अणिमा; २–महिमा; ३–गरिमा; ५–लघिमा; ५ – प्राप्ति; ६–प्रकाशिका । (काम); ७–ईशता; ८–वशीकरण ।

१ अणिमा – उसको कहते हैं कि, योगी जिस सिद्धिसे अपने शरीरको जितना छोटा चाहे बना लेता है । २ महिमाके द्वारा योगी अपनी देहको जितना चाहे बड़ा कर सकता हैं । ३ गरिमाके द्वारा जितना चाहे भारी हो जाता है । ४ लघिमाके बलसे अपने शरीरको हलकेसे हलका बना सकता है । ५ प्राप्तिसे हो योगी जहां चाहता है चला जाता है । ६ प्रकाशितासे मनवाञ्छित प्राप्त हो जाता है । ७ ईशतासे अपनेको सबसे श्रेष्ठ प्रमाणित करा सकता है । ८ वशीकरणके द्वारा विश्वको अपने वशमें कर सकता है ।

नवनिधि ।

१–महापद्म; २–पद्म; ३–कच्छप; ४–मकर; ५–मुकुन्द; ६–खर्व; ७–शंख; ८–नील; ९–कुन्द ।। इन ९ के भिन्न २ गुण हैं । प्रत्येक निधि पर देवताओंकी चौकी रहती है जब इन ९ निधियोंके अभिमानी देवते वशमें हो जाते हैं तो योगी इनको प्राप्त कर लेता है वह अपनी शक्तिसे जिसको चाहे राजा बना सकता है अथवा दरिद्र करदे उसमें सब ऐश्वर्य आजाते हैं। इसी स्थानको सहस्रदल कमल कहते हैं । यहाँ ही निरञ्जनका वास है । इस स्थानपर पहुँच कर योगी, निरञ्जनसे एकता कर परमानन्दका अनुभव करता है । इसी अवस्थामें आपको अजर, अमर, सर्व शक्तिमान् समझता है। इसकी सब सिद्धियाँ दासी हो जाती हैं।

---

१ नेती धोता वस्ती आदि क्रियाएं शरीरकी शुद्धि के लिये हैं, चक्र भेद तो प्राण वायुसे होता है, पाठक स्वामीजीके चक्र भेदनको इससे सुधार कर पढलें ।

श्लोक— महापद्मश्च, पद्मश्च, शंखो, मकर, कच्छपौ ।
मुकुन्द, कुन्द, नीलाश्च, खर्व्वश्च, निधयो नव ।।

अपनी विद्याके बलसे त्रिकालज्ञ हो जाता है। ईश्वरके समान ऐश्वर्यको प्राप्त हो जीवसे ईश्वर हो जाता है, संसारमें ईश्वरके समान पूज्य हो जाता है। पर जब तक ब्रह्माण्ड स्थित है; तबही तक योगी भी स्थित है। जब तक योगीका ज्ञान है तबही तक उसको सब कुछ प्राप्त है। उपरोक्त सब साधना गुरुके द्वारा प्राप्त होती हैं। गुरुकीही शरण प्राप्त कर सफल काम होता है।

उपरोक्त योग क्रिया बाजीगरका कौतुक है। योगियोंको अपनी योग क्रियाका बड़ा अभिमान होता है। सब भूलमें पड़कर बन्धनमें पड़े। जिस वायुके द्वारा योगी अपना सब कुछ प्राप्त करते हैं वह स्वयं नाशमान है, गोरखनाथने योगको भली प्रकार जाँच बूझकर देख लिया तब कबीर साहब की शरण गही। योग भोग दोनोंही भ्रम और अनित्य हैं। योग भोग दोनोंकी क्रिया समानही हैं जिस प्रकार योगी छः चक्र वेधता है उसी प्रकार भोगी भी छः चक्र तोड़कर ही आनन्दको प्राप्त करता है, केवल उतनाही भेद है कि, योगी नीचेसे ऊपरको चढ़ता है. भोगी ऊपरसे नीचेको आता है। पर दोनोंही परमानन्दको प्राप्त करते हैं।

भोगियोका चक्र भेद।

भोगका वर्णन लिखता हूँ, जिसके विचारनेसे जान पड़ेगा कि, योगी और भोगीमें कुछ भेद नहीं है जिस प्रकार योगी षट् चक्रको वेध कर योग सिद्ध हो अमर मानता है उसी प्रकार भोगी भी षट् चक्र वेधकर योग सिद्ध और अमर होता है। भोगी स्त्री पुरुष मिलकर सिद्धि प्राप्त करता है यानी भोग करनेके समय--जब मत्थासे मत्था मिलता है तो पहिला चक्र टूटता है।

जब आंखसे आँख मिलतेही द्वितीय चक्र विद्ध होता है। मुँहसे मुँह मिलते ही तृतीय चक्र टूटता है छातीसे छाती मिलाते ही चतुर्थ चक्र टूटता है। नाभीसे नाभी मिलते ही पञ्चम चक्र विद्ध होता है भग और लिंगका संयोग होनेसे छठा चक्र वेधा जाता है।

जब भोगी उपरोक्त रीतिसे छः चक्रोंको भेद चुकता है तब वायु और अग्निके बलसे नीचेको वीर्य्य उतरता है। वह छः चक्रोंको वेधता हुआ सातवें स्थान गर्भाशयमें जा स्थित होता है। भोगी आपको अमर जानता है क्योंकि, जबतक भोगीकी संतान पृथ्वीपर वर्त्तमान है तबतक वह अमरही है।

समन्वय---जैसे योगीको ज्ञान और सिद्धि उत्पन्न होती हैं, वैसेही भोगीको सन्तान मिलती है। जो माता पिता थे वेही पुत्री और पुत्रके रूपमें वर्त्तमान रहते हैं। दोनों (योगी और भोगी) सातवें चक्रमें आपको अमर अनुमान करते हैं। (योग भोग दोनोंही मिथ्या भ्रम हैं)।

न्याय, सांख्य, मीमांसा, वैशेषिक, योग और वेदान्त आदिके अभिमानी भ्रमके धोखेमें मारे गये किसीको भी स्थिति न मिली । इनमें पड़े हुये सब अंधोंके समान टटोलते फिरते हैं । कहीं कुछ स्थिति नहीं पाते वेदान्ती एक ब्रह्म अद्वैतका अभिमान करते हैं वो तो कहने सुननेमें नहीं आता सब वाणी वचन द्वैतमेंही होते हैं । संन्यासी दशनामी वेदान्ती होनेका अभिमान करते हैं । संन्यासी और योगी, दोनों शिवलिंग पूजते हैं । शिवलिङ्ग और जीवलिङ्ग समानही है, इन दोनोंमें कोई विशेषता नहीं । शिवलिङ्ग और जीवलिङ्ग दोनों बन्धनके कारण हैं । इस कारण इसके पूजनेवाले भ्रम और धोखेमें पड़े हैं, कोई अपनी भूलपर ध्यान नहीं देता दो अन्धोंके समान परस्पर विरोध करते हैं । एक दूसरे अपने अपनेको एक दूसरेसे श्रेष्ठ समझते हैं । सबके सब अपने भ्रामिक विचारमें मग्न हो जीवन नष्ट कर रहे हैं ।

कबीर पन्थका जैनमत निरूपण ।

पाठकगण ! जैनधर्मवाले लोग अब वेदको नहीं मानते । जैनी पंच परमेष्ठीकी पूजा करते हैं । त्रयशठ शलाका और अनेक देवी देवताओंकी भी पूजा करते और मानतेहैं ईश्वरको जगतका कर्त्ता नहीं मानते वरन् कर्मकोही सृष्टिका कर्त्ता मानते हैं । जीवोंपर दया करना परम धर्म मानते हैं ।

जैनियोंके कई फिरके दान पुण्य विशेष नहीं करते । हिन्दू लोग ऐसे फिरकोंको नास्तिक कहते हैं, इनके पांचों परमेष्ठियोंको बन्धनमें बतलाते हैं । जैनी नानाप्रकारकी पूजा पाठमें प्रवृत्ति करके यथार्थसे वंचित रहे सत्यमार्गको छोड़कर नानाप्रकारके पाखण्डकोही अपना धर्म समझ बैठे ।

कबीर परिचयका शब्द ।

सन्तो जैनीको भ्रम भारी ।
जैन नाम जाको जय नाहीं, क्षयकी राह पसारी ।।
जीव द्रव्य पुदगल कहि बरणै, धर्म अधर्म सो चारी ।
पँचये काल द्रव्य कह छठयें, पात्र अकाश बिचारी ।।
आपन आपन गुण कर्मणिको, यह षट् करता मानै ।
कियो न कहै अनादि निधान है, जिन्ह कियो ताहि न जानै ।।
जो पुदगलके त्याग निमित्ते, साधन अमित कमावै ।
सो पुदगल पाहन मूर्ति कारे, गुरु कहि शीश नवावै ।।
वीतराग सर्व पुदगल ते, लिखि सो बानी बाँचै ।।
पुदगल शिखर इष्ट कहि आगे, नारी पुरुष मिली नाचै ।।

जेहि चौबीसको मुक्त बतावै, जगते कहें निरासा ।
तेहि रथ चढ़ाई राग करि फेरै, ज्यौं नट करत तमाशा ।।
क्षुधा पिपासा आदि अष्टदश, दोष कहै यह त्यागे ।
जा कारण सों सने दोषमें, ताहिमें निशि दिन पागे ।।
दर्शन ज्ञान वीर्य सुख चारी, जीव गुण कहें विचारी ।
जीव पुदगल संबन्ध नहीं तव, कहु काको गुण चारी ।।
सती देह दुःख पलमें त्यागे, भूल लगा तेहि बूझे ।
जो साधन दुःख करि तन त्यागे, सो भुतवा नहि सूझे ।।
रिषभ आदि चौबिस तीर्थंकर, तिन्हें कहै मोक्षगामी ।
यह छौ कृतम क्षय कीयो सबके, अरुझे सेवक स्वामी ।।
जग उत्पत्ति कियो न काहू, पढ़ि गुणि कहे अनादी ।
कर्म करे कर्त्ता नहि मानै, भया अनीश्वर वादी ।।
आठ कर्ममें चारि बंध कहै, चारि कहे मोक्ष दीठा ।
जो जग कर्म किये ते नाहि, तो कृत करै करावे झूठा ।।
ये षट द्रव्य काहिको भासै, केहि उपदेशि फसावै ।
सो कर्त्ता कृत्रिम चिन्हे बिनु, फिरि फिरि योनिहिं आवै।।
मोक्षको धावत बंधन पावत, ठग सुखलेत चोराई ।
गले फांस डारि डोरिआवै, मोक्षमें चोर लुकाई ।।
जो ठग पूर्वाचार्य्यहिको दुःख, दियो न चीन्हें बैना ।
कहै कबीर सो ठग चीन्है बिनु, दुःखी भये सब जैना ।। १ ।।

साखी – षट द्रव्य जैनी मता, ताको यह निरधार ।
जीव पुदगल अधरम धर्म, काल अकाश बिचार ।। २ ।।
षट द्रव्य यह मानिके, जैनिहि चित्त हुलास ।
कहहिं कबीर उपदेश केहि, पूरव केहि भई भास ।। ३ ।।
जैनी साधन बहु किया, मुक्ति न आई हाथ ।
जेहि दुःख चाहै मुक्तिको, सो दुख उनके माथ ।। ४ ।।
जैनी साधन मोक्ष हित, करै कष्ट बहु भांति ।
जेहि सुख नित साधन करे, होइ सो आतम घात ।। ५ ।।
जैनी जैन कमाइया, करता ईस विसारि ।
चाहत है जय कृतमकी, करि करि कर्म फुसारि ।। ६ ।।
कबीर जैनी लोभिया, ठगके हाथ बिकाय ।
मुक्ति आकासके उपरे, सुनि सुनिके ललचाय ।। ७ ।।

कबीर तीर्थंकर जैनके, चौबीसो भये मोख ।
मुक्ति कहै पुदगल छुटे, ग्रंथ कियो किमि चोख ।। ८ ।।
मुक्ति भई तेहि जैनकी, चौबीस आदिक और ।
पुदगल उनकी छुट गई, बचन कहा केहि ठौर ।। ९ ।।
रिषभ आदि जेहि बन रहै, तेहि बन लागी आगि ।
घेरेमें जब जरि मुये, दोष अठारह त्यागि ।। १० ।।
जीभि कमान वचन शर, पनच श्रवण लगि तान ।
रिषभदेवसे धनुषधर, मान्यो यह षट बान ।। ११ ।।
याहे छौ बानके लागते, जैनी भया अचेत ।
लागी मूर्च्छा कर्मकी, दुःख भोगे सुख हेत ।। १२ ।।
काली कुत्ती रिषभकी, साधन जुत्ती खाय ।
दोप अठारह चोरपर, षट मुख भूकै धाय ।। १३ ।।
काली बिल्ली रिषभकी, खट पकवान बनाइ ।
आय यति होई जैनि घर, भोजन कछुवो न खाइ ।। १४ ।।
कबीर जैनीके हिये, बिल्लीकी इतवार ।
साधन व्यंजन मोक्षहित, सौंपेउ तेहि भण्डार ।। १५ ।।
काली कुत्ती रिषभकी, अनादि दन्त षट चोख ।
साधन बर्नहि खदेडिकै, मारै सावज मोख ।। १६ ।।
कबीर वाणी रिषभकी, राणी भइ सरदार ।
जैनिके शिर मारिया, साधन दुःख पैज़ार ।। १७ ।।
कबीर चोरवा जैनि घर, मान्यो साधन सेंधि ।
सुख धन मूस्यो तिनहिको, रहा सकल दुःख बेधि ।। १८ ।।
रिषभ आदि जेते जिन, अव्याकृत गुण मूल ।
जिन षट द्रव्य बुझाइया, है सोइ कारण मूल ।। १९ ।।
कबीर जो पै मुक्ति होई, छुधा पिपासा छोड़ि ।
तौ काहें अहार देइ, जैनिक मइया भोड़ि ।। २० ।।
कबीर जैनिक माइया, जैने धर्म कमाय ।
साधन गुण जानत रही, तो काहे दूध पिलाय ।। २१ ।।
वेश्या औ जैन यति, दो पंथ एके आहि ।
मोल खरीद वेश्या सती, यति सों मोल बिसाहि ।। २२ ।।
मोल खरीद मुड़िया करे, मुये मुक्ति मोकाम ।

कहें कबीर यहि जगतमें, जैनिक यति गुलाम ॥ २३ ॥
कबीर तिर्थंकर जैनके, कियो अमोक्षी बाच ।
मुक्ति कहें पुद्गल छुटै, ग्रंथ भये सब काँच ॥ २४ ॥
मोक्ष मुख चूंमन लगे, छौ घुनि घुनि बजाय ।
मारि तमाचा साधना, पटके जब खिसियाय ॥ २५ ॥
साधन सब लावा लखै, सिद्धि लखै सो बाज ।
शब्द विवेकी पारखी, सिद्धन्हके सिरताज ॥ २६ ॥

तात्पर्य—ऋषभनाथजीसे लेकर महावीर स्वामीतक चौवीस तीर्थंकर हुये, उनका वृत्तान्त जानने पढ़नेसे विशेष जाना जावेगा। जैसे वेदधर्मके सिद्ध साधुओंका वर्णन है, वैसेही जैनधर्मके सिद्ध साधुका भी हाल है। सब जैनी अरहंतका नाम जपते और उसीसे मुक्ति चाहते हैं।

बौद्ध—जैसे जैन धर्मी वैसेही बुद्ध धर्मके लोग भी वेद धर्मको नहीं मानते। वेद धर्म छोड़ ये लोग अलग तो हुये पर नानाप्रकारकी प्रतिमाओंकी पूजा अर्चा तो वैदिकोंकीसी करते ही रहे। विष्णुने इनको वेद धर्मसे तो छुड़ाया पर व्यर्थकी रीति व्यवहार तथा पाखण्डमें कैद कर दिया। यदि जैनियोंको यथार्थ प्रकाश मिलता तो सत्यको जानकर भी पाखण्डमें नहीं फँसते।

ग़ज़ल – टुक देखिये क्या ख़ूब है जैनीका तमाशा।
गाहे दिल मरगूब है जैनीका तमाशा ॥
बुत पेश जहाँ मर्द न ज़नाँ रक्स कुना हैं। कोई खासको मतलूब है जैनीका तमाशा ॥
जिस्को वह ख़ुदा कहते सो बाजार फिरावें। यह देखिये मायूब है जैनीका तमाशा ॥
कसरतसे मरौवज था यह अय्याम सलफ़में। इस असिरमें महजुब है जैनीका तमाशा ॥
जादू सेहर जन्तर मन्तरसे लगे हैं। मरहटसे मनसूब है जैनीका तमाशा ॥
अकसर मुतनाफ़िर है व लेकिन कोई कोई। अशखासको महबूब है जैनीका तमाशा ॥
सब दूत व भरम भूत जैनीको आजिज़। यह नाक़िस मक़लूब है जैनीका तमाशा ॥ १ ॥

मूसा धर्म।

हज़रत मूसाके द्वारा, इबरानियोंको खुदाने शरीअत (शास्त्र- प्रदान किया। उनकी किताबमें दश आज्ञाही सर्वोत्कृष्ट हैं। जिसका वर्णन पहले लिख चुका हूँ। प्राचीन कालमें चाहे जैसा रहा हो पर वर्तमान कालमें तो मूसाके लोग बलिप्रदान आदिक कुछ रीतियोंकोही धर्म समझते हैं। अपने मन्दिरोंमें जाकर निमाज़ और वजीफा पढ़ा करते हैं इसीसे अपनी मुक्ति मानते हैं। सच्चे मोक्षदाताको ये क्या पहचानेंगे, जिस खुदाने मूसाकी अहकाम शरपी बतलाई,

उसको भी नहीं जान सकते । उनके अन्तःकरण रूपी आँखोंमें अज्ञानताका पर्दा- पड़ गया जिससे सत्यका विवेक नहीं कर सके । भ्रम और अज्ञान तो तब जाता है जब ज्ञानका सच्चा प्रकाश हो । विवेकही नहीं तो सच्चा झूठा कौन जाने ? सब मनुष्य इसी प्रकार पक्षपात और अज्ञानरूपी अन्धकारमें पड़कर ठोकरे खाते हैं ।

नजम – भेड़िया भेड़का किया रखवाल । कौन दम मारे तेरी ऐसी चाल ।।
तेरी हिकमत्का तुही दाना है । आदम अन्धेरमें भुलाना है ।।
जिस तफक्कुरमें अल्ल हैरान है । बहर कुदरतमें तेरी तैरान है ।।
डूबती और उछलती है सद बार । गोता खाय है न पाये करार ।।
मौत मैदान मौत गोशह है । है सफर और कमर न तोशह है ।।
जङ्गल और दङ्गल दरिन्दः है । कौन जा पार ? जो परिन्द है ।।
दस्त गीरी करे तू रहमतसे । खुद बचावे जमाने ज़हमतसे ।।
है करम फ़ज़ल तेरा बे पायान हम्द बेहद है तेरेही शायान ।।

ईसाई धर्म ।

हजरत ईसा तो मूसाई धर्मवालोंमेंही उत्पन्न हुये थे पर पुरानी शरीअतसे अपना नयाही ढङ्ग निकाला । पुराने अहदनामेसे इनके अहदनामेमें भेद है । इस धर्मके लोगोंमें मांस आहारकी विशेषता होनेके कारण परमात्माकी भजन भक्तिकी ओर विशेष प्रवृत्ति नहीं होती । सांसारिक व्यवहारमें ही विशेष निमग्न रहते हैं । अन्य धर्मवालोंको बहुत उपदेश करते फिरते हैं पर अपने औगुणोंकी ओर बहुत कम दृष्टि देते हैं ।

क़िता–जरा अपने ऐबोंके ऊपर गौर कर । बअक्ल और दानिश नज़र कीजिये ।।
तू ग़ैरोंकी बदबीनीसे दर गुज़र । नफ़ा हो न उसमें नज़र कीजिये ।।

साखी – औरनको समझावते, मुखमें पड़ गइ रेत ।
राशि बिरानी राखते, खायो वरका खेत ।।

ग़ज़ल – खुद पन्थ चला खैर खरीदार मसीहा ।
है यक बड़ा विष्णुका औतार मसीहा ।।
मैं लाविदमें वालिद मुझ सूरतमें देख ।
यों सबसे कहा बरसरे बाजार मसीहा ।।
खतरमें दिया डाल सो खुद्द आपको वे खो ।
सर्दारी की खातिरसे चढ़े दार मसीहा ।।
मुसलिब जो होवे सो चले संग हमारे
यों साफ किया सबसेही इजहार मसीहा ।।

हैं एकही दोनों न र्क उनमें आज़िज । कोई विष्णुको पूजे कोई दिलदार मसीहा ।।

यह धर्म सारी पृथ्वीपर प्रचलित है। पादरी लोग सब देशों, शहरों, गावोंमें फिर २ कर उपदेश दिया करते हैं। इसमें किसी प्रकारका कोई ऐसा धार्मिक नियम नहीं है जिसके कि, करनेमें इस धर्मवालोंको कुछ कठिनता जान पड़े। रोज़ा नमाज़, पूजा, पाठ, कोई भी ऐसा नियम नहीं, जो अवश्य करना पड़ता हो। हाँ! पादरियोंको तो कुछ नियम मानने पड़ते हैं, क्योंकि, उनको वही काम है। पादरियोंके भी भजनका कोई विशेष नियम नहीं, वरन् रविवारको गिर्जाघरमें जाकर उपस्थित होना और आये हुये लोगोंको बाइबल आदि किसी-धार्मिक पुस्तकका कुछ भाग पढ़कर सुनानाही उनका नियम है।

पहले इस धर्मके फकीर (पादरी) लोग भजन और संयम किया करते थे, गुफाओंमें बैठकर ईश्वरके नामका अभ्यास किया करते थे, जिससे उनकाअन्त: करण शुद्ध और प्रकाशमय होता था। अब पादरियोंमें यह बात कहीं नहीं पाई जाती। ईश्वरके नाम स्मरण, बिना अन्तःकरणकी शुद्धि और ज्ञानका प्रकाश प्राप्त होना कठिनही नहीं वरन् असम्भव है।

इतिहासोंसे जाना जाता है कि, वे पादरी, जिनसे कि, ईश्वरके नामका स्मरण और ईश्वरकी भक्तिका प्रकाश ईसाई धर्म्म फैलता था वे अब नहीं हैं। न उनका उपदेश किया हुआ नामही इन धर्मवालोंमें शेष रहा। वह नाम जिससे ईसाई साधु लोग ईश्वरी ज्ञान प्राप्त करते थे अब उसका कहीं पता नहीं। वर्तमानके ईसाईलोग नाम तो क्या लेंगे, वरन् अन्य धर्मवालोंको ईश्वरका नाम लेते देखकर हँसी, ठट्ठा उड़ाते हैं। यहाँ तक कि, उनके खण्डनमें सैकडों पुस्तकें छापकर प्रकाशित भी कर चुके हैं।

जो भोजन भक्ति ईसाइयोंमें प्रथम भी थी अब उसका लेश भी नहीं रहा वरन् सबके सब सांसारिक विषय वासनाओंमें पड़कर ईश्वर भूल बैठे हैं, जो धर्मके उपदेशक पादरी लोग हैं, भारी २ वेतन पाते हैं, बग्गी और घोड़े दौड़ाते हैं, विषय वसानामें खूब मस्त रहते हैं; वे ईश्वरका नाम क्या जान सकते हैं।

यह वर्तमानके विद्याभिमानी, पक्षपाती, धर्मद्वेषी और ढोंगियोंका कर्तव्य है कि, अब संसारसे ईश्वरके नामका जप स्मरण सब उठ गया। कुत्ब मुकद्दस (पवित्र पुस्तक) बाइबिलमें अपनी सम्मति मिलाकर बहुत भेद डाल दिया। उसमें जो गुण पहले था वह अब नहीं रहा। धर्मद्वेषी और विद्याभिमानियोंकी समझमें सूक्ष्म भेदकी बातें नहीं आती, बाहरी साधारण बातोंको कुछ २ समझ कर अपने विचारोंके ढंगको बना लिया है। वास्तवमें उनका कुछ

अपराध नहीं, जैसी उनकी बुद्धि है वैसेही बनाते और करते हैं। विद्याभिमानियोंको अंतरीय प्रकाश कभी नहीं होती, फकीरोंको अंतर प्रकाश-मिलता है, उससे वे लोग जो कुछ जानते हैं उसे दूसरेसे नहीं प्रगट कर सकते।

अंतरीय प्रकाश, बिना सच्चे संत और सच्चे गुरुको कदापि नहीं मिल सकता। यही कारण है कि, सच्चे संत और विद्याभिमानी तथा संसारको चाहने-वाले ढोंगियोंमें सदासे भेद चला आता है। सच्चे संत और सच्चे साधु, ढोंगियों और मिथ्या विद्याभिमानीयोंको ढोंग पाखण्ड और मिथ्या अभिमान छोड़नेको कहते हैं. तब वे कहते हैं कि, मुझे प्रत्यक्ष कुछ लाभ दिखलाओ। वो बात होनेवाली नहीं क्योंकि, सत्य विचार और निर्णयके बिना अंतरीय प्रकाश. नहीं मिल सकता। जो सर्वदा सांसारिक व्यवहार और विषयवासनामें फँसा रहेगा उसको प्रकाश कहांसे मिले ? जो सच्चा ईसाई हो इनजीलके अनुसार कर्म करे तनिक भी विभिन्नता न होने दे तबही ज्ञानका प्रकाश प्राप्त कर सकता है।

ईसाइयोंने साधुओंकी निन्दा करनी आरम्भ करदी. संत लोग इनसे अलग हो गये। संतोंके अलग होनेसे गुरु कहां रह सकते हैं ? गुरुही नहीं रहे तो पथ कौन बतावे ? इस समयमें इस धर्मके लोग साधुओंके स्थानमें पादरियोंको मानते हैं। सर्व प्रकारके शुभ कर्म्म करते हैं पर वह बात नहीं कि, जो सन्तोंके उपदेशसे मिलता है. क्योंकि, जब संसारीका गुरु संसारी हुआ तो; जैसे कीचसे कीचके धोनेसे शुद्धता नहीं होती उसी तरह गृहस्थी गुरुसे किसी प्रकार कल्याण नहीं हो सकता जबतक अवधूत, विरक्त, गुरु और आचार्य्य न मिलेगा तब तक कल्याण होना असम्भव है, जब गुरु विरक्त होगा तब भी सत्यके प्रकाश का मार्ग बतावेगा। इस धर्ममें रोजा निमाजकी कुछ भी ताकीद नहीं है यही कारण है कि, इस धर्मके लोग इन्द्रिय दमन नहीं कर सकते। इसमें बड़े २ विद्वान्, बुद्धिमान और शूरवीर लोग हैं इनके पास द्रव्य उपार्जनकी जैसी युक्ति है वैसी संसारकी किसी भी जातिमें न होगी। पर धार्मिक विचारसे ऐसे कच्चे हैं कि, उनके बराबर धर्ममें, पीछे संसारकी छोटीसे छोटी जाति भी नहीं है।

सुना गया है कि, थोड़े दिनोंसे मेजर टकर साहब नामक किसी अँगरेजने मुक्ति फोज नामक एक मण्डली बनाई है, जिसमें सबके सब साधुओंके भेषमें रहते हैं, मन और इन्द्रिय दमन भी करते हैं। शायद वे लोग इनजील से उस वचनका कुछ आशय समझते होंगे कि:—

हजरत ईसाने किस लिये कहा कि, जो कोई अपना सलीब उठावे अपनेको भूल जावे, वह मेरे पीछे आवे प्रतिदिन सलीब उठावे। जिसने बाइबुलकी इस बात का आशय समझ लिया वही सच्चा ईसाई हुआ।

वर्त्तमानमें हमारे देशके राजा ईसाई हैं। अङ्गरेजी सरकारका न्याय प्रशंसनीय है। प्रजा बहुत कृतज्ञ है। इनके राज्यमें किसी प्रकारका अत्याचार नहीं है सब शुभचिंतक हैं, अङ्गरेजी सरकारके शासनका ऐसा प्रभाव है कि, इनके भयसे इनके दोषको भी कोई प्रगट कर नहीं सकता विरक्तोंको उचित नहीं है कि, राजाके औगुणों पर और अत्याचारोंको उनसे प्रगट न करें, वरन उनकी भूल और भावी भयसे उन्हें सूचित करनाही सन्तोंका धर्म है जिससे जैसे शारीरक अत्याचारसे जीवोंको छुड़ाते हैं वैसेही आत्मिक दुःखसे बचा सकें, सच्चे विरक्त सन्तोंका न होना आत्मिक अत्याचार है। जब सच्चे संतही न रहेंगे एवं विरक्त निष्काम उपदेशकही न रहेंगे तो आत्मिक उपदेश कौन करेगा ? सच्चा निष्कामी विरक्त, लोक एवं परलोककी कामनासे रहित परमार्थी सन्तोंके बिना सत्य उपदेश कौन दे सकता है ? सत्य उपदेश नहीं तो ईश्वर कहां ? ईश्वर नहीं तो मनुष्यत्व कहां ? इस कारण शासकोंको उचित है कि, सच्चे निष्कामी सन्तोंकी ओर ध्यान दें। राजा और शासकोंकी बेपरवाहीसे पठित मूर्खोंकी बन आई है वे साहसी बनकर सन्तोंकी निन्दा किया करते हैं।

विशेष कथन।

समस्त स्वसम्वदका यही सार है कि, संसारी मनुष्य सच्चे सन्तोंकी सेवा सच्चे मनसे करें जिससे सन्त अपनी शारीरिक चिन्ताओंसे निश्चित होकर भजनमें लगे रहें; जिससे दोनोंका परलोक सुधरे। सच्चे निष्कामी सन्तोंकी शरण गये बिना सांसारिक जीवोंका उद्धार होना कठिन है। संसारसे तरनेका एकमात्र उपाय सच्चे सन्तोंकी सङ्गतिही है।

सच्चे सन्तोंकी सेवा शुश्रूषा बिना देशका बड़ा अपकार हुआ है। लोग अँगरेजी फारसी पढ़कर अहंकारी हो गये हैं, सन्तोंकी सेवा छोड़ बैठे हैं, जिससे सत्य पथके दिखानेवाले सन्तोंका मिलना कठिन हो गया है। सत्योपदेशका मिलना कठिन हुआ तो लौकिक पारलौकिक मार्गोंको कौन बतावेगा, देश और धर्मकी रक्षा और उन्नति कैसे हो ?

जिनका विशेष धर्म, साधु सेवा था, वे अपने धर्मको छोड़ बैठे। धर्म छोड़ने से उदारता और भक्ति छूट गई, कृपणता अभक्ति फैल गई। विषय वासनामें प्रवृत्ति हुई, विरक्तों एवं सच्चे इन्द्रियजित, निष्काम उपदेशकोंसे घृणा हो गई, सत्य उपदेशका मार्ग बन्द हो गया, जिससे अन्तःकरण अशुद्ध अन्धकारमय हो गया, धर्म्माधर्म्मका विवेक जाता रहा, पर पूर्व संस्कारोंसे धर्मका नाम सुनकर धर्मकी खोज करने लगे। सच्चे सन्तों, विरक्तोंसे पहलेहीसे घृणा हो रही थी।

इससे इधर उधर पूछते फिरने लगे पर सत्य धर्मका पता न लगा. क्योंकि, सच्चे उपदेशक तो सच्चे निष्कामी, देहाभिमान गलित पुरुष ही हुआ करते हैं। इधर उधर भटकनेमें जब कुछ प्राप्त न हुआ तो कोई २(हिन्दू) ईसाई, मुसलमान, नास्तिक, नेचरियो, विधर्मी (ला महजब) आदि होने लगे।

यह सब परिणाम हिन्दू साधुओंके धर्मकी ओर ध्यान न देनेकाही है। ईसाई पादरी लोग वेतन पाते हैं, जिससे दिनरात अपने धर्मकी उन्नतिमें लगे रहते हैं। उनके उलटा हिन्दू साधुओंको रोटी कपड़ा तथा अन्य आवश्यक पदार्थ बड़ी कठिनतासे मिलते हैं। जिसमें कुछ प्राप्त न हो वरन् दुःखही दुःख हो तो, स्वभाविकही बात है कि, उसमें कठिनतासे प्रवृत्ति होती है। हिन्दू साधु अपने शरीरयात्राके ही चिन्तामें दिनरात लगे रहते हैं तो धर्म अथवा देशकी उन्नति कैसे कर सकेंगे ? ठीक इनके उलटा, पादरियोंको वेतन मिलता है जिससे वे अपनी आवश्यकतासे निश्चिन्त हो दिनरात धर्मकी उन्नतिमें ही अपना समय बिताते हैं।

धन्य है अंगरेजी सर्कारको कि, जिनकी कृपासे व्यतीत मुसलमानी शासनकी अपेक्षा वर्तमानमें लोगोंको लिखने और कहनेकी स्वतन्त्रता है जो कोई कुछ लिखना और कहना चाहता है, लिख और कह सकता है। किसी प्रकार की रुकावट अथवा अत्याचार नहीं है।

अन्य २ राज्योंमें सच्चे धर्मज्ञों और सच्चे सन्तों पर जो जो अत्याचार और अन्याय हुआ करते थे वे अब नहीं हैं। अन्य राजाओंके शासन कालमें उनके धर्म और मजहबके विरुद्ध कोई अपने धर्मकी बात प्रगट नहीं कर सकता था।

साखी – कबीर–सांच कहूँ तो मारि हैं, तुरकानी का ज़ोर।
बात कहूँ सत लोककी, कहिके पकड़े चोर ॥

जिस राज्यमें सन्तोंको गाजर मूलीके समान काट डालते थे उस समय संत सत्य भेद कैसे प्रगट कर सकते थे ? अथवा क्या लिख सकते थे ? उस समय कहते तो किससे ? और लिखते तो किसके लिये ? उस समय तो धर्मद्वेषकी अग्नि भड़क रही थी कि, कोई मुखसे खोल नहीं सकता था। कलमका तो कुछ बल ही नहीं था। बादशाह स्वयम् स्वतंत्र और धर्म द्वेषी थे, दूसरे पठित मूर्ख धर्मद्वेषियोंका भी इतना बल था कि, धर्मके नाम पर जिस प्रकार चाहते थे शासकोंके मनको फेर देते थे।

मुसलमानीधर्म।

कबीरपन्थीग्रन्थोंमें लिखा है कि, मुहम्मद महादेवका औतार है। महा-

देवने ही मुहम्मदका औतार धारण कर मुसलमानी धर्म चला कर वाममार्गका प्रचार किया है। तंत्र शास्त्र और अघोर धर्ममें संसार प्रचलित किया है। महादेव तमोगुणके रूप हैं तमोगुणी हैं। यही संसारका मूल है; तमोगुणसेही संसारका सब व्यवहार चल रहा है। इस मुसलमानी धर्मका आचार्य्य तमोगुण है।

मुसलमान कहते हैं कि,

لولاک لما خلقت الافلاک

अर्थात्—कहता है कि, यदि न होता ऐ मुहम्मद तू, तो न उत्पन्न करता मैं पृथ्वी और आकाशको। प्रायः मुसलमान इस आयतसेही मुहम्मद पर बहुत अभिमान करते हैं। पर सन्तोंकी दृष्टिमें यह कुछ सार नहीं रखता वरन् अति तुच्छ और नीच है. क्योंकि, यह संसार यथार्थमें कुछ भी नहीं, मिथ्या भ्रममात्र है अविद्यासे इसकी उत्पत्ति है, असत्यही सत्य होकर दीख पड़ता है। अज्ञान कहो अथवा तमोगुण अथवा अविद्या सब एकही बात है। अज्ञानसे ही सृष्टि हुई है, आज्ञानकी कुछ श्रेष्ठता नहीं वरन् ज्ञानकी ही श्रेष्ठता है। निर्दयता और अत्याचार अज्ञानका चिन्ह है, तमोगुण बिना निर्दयता अत्याचार आदि आसुरी संपत्ति कुछ भी नहीं। इस (मुसलमानी) धर्मके लोग निमाज रोजा भी पढ़ते करते हैं नियत समय पर निमाज पढ़ना अपना धर्म जानते हैं, पर सब ऐसे निर्दई और कठोर हृदयके होते हैं कि हिंसा करना अपना मुख्य कर्तव्य समझ रखा है. फकीरोंमें भी बहुधा ऐसेही हिंसक हैं पर कोई कोई ऐसे भी होते हैं जो हिंसाको अधर्म समझते हैं. काजी और—मुल्ला बहका बहका कर, इस धर्मवालोंसे सब अधर्म करवाते हैं। उन्हींके कहनेसे इस धर्मके लोग ऐसी निर्दयता धारण किये हुये हैं कि, दया लाना अथवा दयाका संकल्प[१] करना भी पाप समझते हैं।

जिस प्रकार हिंदुओंमें उसी प्रकार मुसलमानोंमें भी भजन, भक्ति, जप, तप आदि साधनोंकी बहुतसी युक्तियाँ हैं पर मुसलमान लोग सब धर्म कर्मको केवल जीवहिंसाके कारण मिट्टीमें मिला देते हैं, जीव हिंसा नहीं छोड़ते। यद्यपि इस धर्ममें भी बड़े २ प्रसिद्ध महात्मा तपस्वी, ईश्वर भक्त होगये हैं अब भी कोई कोई ऐसे हैं, जो दिनरात ईश्वरके भजनमेंही लगे रहते है, संसारसे कुछ भी सरो-

---

१ मैंने मुसलमानी पुस्तकोंमें देखा है और शरयी मुसलमान भी कहते हैं कि, जबह किये हुये पशुकी छटपटाहट और उसकी दुखमय अवस्था को देखकर यदि किसी मुसलमानके मनमें दया आजावे तो वह उसी समय धर्मसे पतित होकर खुदाका गुनहगार बन जाता है। धन्य है! ऐसे धर्म और खुदा तथा उसके प्रवर्तकों को।

कार नहीं रखते तो भी साधारणतः इस धर्मके लोग दया और नम्रतासे बहुत पृथक हैं। इन लोगोंमें क्रोध और निर्दयता सब जातियोंसे अधिक है। यही प्रत्यक्ष प्रमाण है कि, इनका मुख्य धर्म कुरबानी आदि है जो तमोगुण और अविवेक अज्ञानता, निर्दयता बिना हो ही नहीं सकता।

जबतक मुसलमान लोग तमोगुणका आसरा छोड़ सतोगुणका आसरा न लेंगे उसको अपना आधार न बनावेंगे, तबतक इनके अंतः---करण की शुद्धता न होगी, न इनको मोक्ष मार्गही मिलेगा वरन् ईश्वरके कोपमें पड़े रहकर नाना-प्रकारकी गर्भ आदिकी नर्क यन्त्रणा सहते हुये भौसारगर्में गोता खाते रहेंगे।

नज़म।

यह इनसान है दर्द दिलके लिये। कि बेरहम रज़वाँ न राज़ी किये॥
न पावे कोई वह बिहिश्ती दरखत। कि दिल जिसका होवे मखलूकसे सख्त॥
यहाँ और वहाँ हूर ग़िलमाँ वही। वही मर्दो जन और मुसलमाँ वही॥
वही नेमत और ख्वान अलवान है। वही नोंश वखुद शौकतो शान है॥
न पहचान पैगम्बरके पाक जो। यहाँ और वहाँ है गिफतार सो॥
तुर्ब और तरागः बहानः। किया हब्बमें जमीन और ज़माना किया॥
गिरफ़तार लज्ज़ात नफ़सानियाँ। यहाँ और वहाँ एक सेहो मियाँ॥
भला! यह भला है? गला काटना। मिहर या क़हर खूनका चाटना॥
किसी जिस्म ओर सूरतमें जानदार हो। जहाँ दार उसका अमाँदार हो॥
किसीकी वह ईज़ा से राज़ी नहीं। कि बेइलम मुल्ला व काज़ी नहीं॥
वह रहमान है सबका मिहरबाँ पिदर। वह हाजिरो नाज़िर है देखो जिधर॥
वह बेचून सब जहाँ का ले हिसाब। खड़े होवें जब रब्बके आली जनाब॥
न बदला छुटे कोई हो पीरो अमीर। कि है कौल यह सत्त साहब कबीर॥
खुदावन्दकी बारगाह बेरया। जो हरकसके इनसाफ़ में दिल दिया॥
रहीम जो रहमान् मशहूर है। हमेशः सो बेरहमीसे दूर है॥
गला घोटना उसको भाता नहीं। छूरी वह गलेपर चलाता नहीं॥
न छिड़कावता खून मुज़विह ऊपर। नहीं गोश्त खाता न खाता जिगर॥
न खूंखार ग़फ्फ़ार सित्तार है। क्या सो गुमाँ बेगुमाँ पार है॥
जले गोश्त और पोस्त बदबूई हो। जो खुशबूय कहे खिला फ़ेअक्ल सो॥
वह कैसा खुदा अक्ल से ऊँघता। जो बदबूको खुशबूय कर सूंघता॥
जला करके कुरबान हो जाने जो। जो सूंघे वो खावे खुदा कैसा हो?॥
यह मूसाके मजहबकी बातें लिखा। जो मूसा धरम ईसा सोई कहा॥

जो मूसा व ईसा के मतका खुदा। मुहम्मद के मजहब की सोई सदा ।।
बुजरुग व अफ़ज़ल हैं तीनां नबी। लिखा है कुरआँ जो कलामे रबी ।।
वही खुदा है किया तीन ढंग। जहां जैसा वाजिब लगाया सो रंग ।।
हो जैसा खुदा वैसा बन्दः हुआ। जो हमरंग होवे आनन्दा हुआ ।।
जबह कत्ल जो खूंरेजी करे। वह रहमान खुदाबन्द इस्से परे ।।
जरा फिक्र को दिलमें रह दीजिये। ख्यालए बातिलको तह कीजिये ।।
अज़ल और अबद बा करम व फ़ज़ल। मदाम उसकी आईन है बेखलल ।।

शक्ति धर्म।

आदि भवानी सब धर्मोंकी प्रवर्त्तक है; उसीकी इच्छासे सब धर्म प्रचलित होते हैं। ऐसा होनेपर भी विशेष धर्म मायाके नामसे "शक्ति धर्म" करके प्रसिद्ध है। शक्ति धर्मके सम्बन्धी जितने धर्म हैं सब ऐसे घृणित, नीच और अशुद्ध व्यवहारोंसे संयुक्त हैं कि, किसी मनुष्यकी कदापि प्रवृत्ति नहीं हो सकती। केवल राक्षस लोगही इसको धारण कर, उसके घृणित और नीच अशुद्ध नियमों को सम्हार सकते हैं। यद्यपि देखनेमें मनुष्यही इस धर्मके भी ग्रहण करनेवाले हैं पर उनको मनुष्य कहना भूलका काम है। क्योंकि, आसुरी गुणोंको धारण करनेवालोंकोही उपसुर कहते हैं असुरों और राक्षसोंके सींग नहीं हुआ करते।

इस धर्मवाले ऐसे २ नीच घृणित कार्य्यमें प्रवृत्त होते हैं कि, पिशाच भी उनकी क्रियासे घृणा करते हैं। उनके व्यवहारोंके स्मरण मात्रसे रोवें खड़े हो जातें हैं। उनके ऐसे घृणित और ग्लानि उपजानेवाले व्यवहार होते हैं कि, उनके लिखनेकी मेरी क़लम और वाणीमें सहन शक्ति नहीं कि, उनको लिख सकें। यह धर्म विशेष कर शिव और शक्तिका है। योगी, विषयी और मांसाहारी लोग इसके प्रवर्त्तक हैं। इस धर्मके द्वारा लाखों क्या अनन्त जीवोंकी नित्य हिंसा होती है, लाखों जीवधारियों के गलेपर छुरी चलती है। इसके अनुयायियोंके अन्तःकरणमें तनिक भी दयाका संचार नहीं होता, यदि राजभय न हो तो ये मनुष्योंको भी मारकर खाया करें। अबभी दाव घात पाते हैं मनुष्योंको मारे बिना नहीं रहते। ये मुर्दा जिन्दा सब खा जाते हैं। इस धर्ममें विशेष करके मूर्ख अपढ़ और नीच जातिके लोग बहुतसे होते हैं।जो लोग इस धर्मको स्वीकार करते हैं वे अपनेको छिपाये रहते हैं, क्योंकि , लोग उनके धर्मसे घृणाकी दृष्टिसे देखते हैं।

इस धर्ममें मुक्तिके मूल पंच मकार मानते हैं—मुद्रा, मीन, मांस, मद, मैथुन यही पाँच मकार हैं।

मंत्र जप करनेकी विशेष रीतिको मुद्रा कहते हैं। मीन मछली खाना, मांस, सबप्रकारका मांस खाना, सबप्रकारकी सराबपीकर मस्त होना, विवाहिता अविवाहिता सब प्रकारकी स्त्रियोंके साथ भोग करना। यदि सहस्र भग एक समय पूजन करनेको मिल जावे तो ये लोग साक्षात् मोक्ष मानते हैं। इस धर्मके बारह भेद हैं। सब एकसे एक बढ़े चढ़े हैं। इसके लोग बड़े आनन्द और उत्साह पूर्वक अपने घृणित और नीच कर्मोंको करते हुये मोक्ष मानते हैं। इस धर्ममें जाति पाँतिका बिलकुल विचार नहीं है। ब्राह्मण, क्षत्री, भंगी, चमार, मोची आदि नीच ऊँच जाति सब एक साथही खाते हैं। अनन्त जीवधारियोंकी हत्या करते हैं।

दैवी और आसुरी सांप्रदाय।

इस संसारमें दो देवताओंके धर्म प्रचलित हैं। संसारके सब धर्म इन्हींके अन्तर्गत हैं। एकका नाम दैवी धर्म है। इसके अधिष्ठाता विष्णु देव हैं। दूसरी सम्प्रदाय है जिसके प्रवर्त्तक शिव हैं। दैवी सम्प्रदायकोही श्रीसम्प्रदाय अथवा विष्णु सम्प्रदाय कहते हैं। आसुरी सम्प्रदायको शैवी वा शांकरी सम्प्रदाय बोलते हैं।

विष्णु सम्प्रदाय सतोगुणी धर्म और मुक्तिका मार्ग है। शिव सम्प्रदाय तमोगुणी धर्म और नरकका कारण है। येही दो देवते और इनके दोनों मार्ग, जीवोंके मुक्ति और बन्धनके कारण और द्वार हैं। विष्णुभक्त मुक्ति और स्वर्गके अधिकारी होते हैं; जैसे कि, ध्रुव और प्रह्लाद अपने परिवार सहित स्वर्गको गये। विष्णु सम्प्रदायमें एकसे कितनोंका भला होता है, पर शिव सम्प्रदायसे सिवाय अशुभ और दुःखके दूसरा कुछ नहीं।

मुहम्मदी कहते हैं कि, मुहम्मद साहबके कल्मा पढ़नेसे मुक्ति मिलती है, जो मुहम्मदी कल्मा नहीं पढ़ता उसकी मुक्ति नहीं होती। जैसा कि, मुहम्मद साहबके माता पिता नरकको गये। क्योंकि, कलमा नहीं पढ़ते थे। जो कोई कलमा पढ़े तो उसपर किसीका अहसान ही क्या हो सकता है? क्योंकि, जब कलमा स्वयम् मुक्तिदायक है, जिससे कि, कलमा उत्पन्न हुआ स्वयम् उसके माता पिताको कलमाकी क्या आवश्यकता है? इससे प्रमाणित है कि, जब मुम्मद साहब अपने माता पिताको मुक्ति नहीं दे सके, तो दूसरोंको किस तरह दे सकेंगे।

कलियुगमें शंकर और मुहम्मद दोनों शिवके औतार हैं। एकने भारतवर्षमें संन्यास धर्म चलाया, दूसरेने पश्चिमी देशोंमें इसलाम धर्म प्रकट किया।

महादेव आसुरी सम्प्रदायके आचार्य्य हैं, उनके द्वारा मुक्ति नहीं मिल सकती। हाँ यदि कोई शैव भी पाप कर्मोंसे रहित हो, पुण्यमें प्रवेश कर, दैवी सम्प्रदायको धारण करे तो समय पाकर अवश्य मुक्तिका अधिकारी हो सकता है। नहीं तो, जबतक शिवका आसरा करेगा आवागमनमें रहेगा, प्रकाशका मार्ग नहीं प्राप्त कर सकेगा।

सिंहावलोकन।

संसारमें जितने धर्म (मजहब) हैं सबके प्रवर्तक शिव और विष्णु हैं। ये दोनों देवते निरञ्जनकी ओरसे संसारमें वेद और किताबको प्रचलित करनेके लिये नियत किये गये हैं। येही दोनों ब्रह्माण्डोंका प्रबन्ध करते हैं, इनके साथ सहायतामें ब्रह्मा भी रहते हैं, पर ब्रह्माकी पूजा कहीं नहीं होती। क्योंकि, इनको आद्याका शाप हो चुका है। इन देवोंमें विष्णु महाराज श्रेष्ठ हैं, येही सब संसारके कर्ताके नामसे पूजे जाते हैं। यह बात मैं प्रथम सिद्धकर आया हूँ कि, भारतवासी प्रगटही विष्णुको पूजते हैं। अन्य योरप आदि देशवालेभी जिसका पूजन करते हैं जिसको ईश्वर मानते हैं वह भी विष्णुकाही रूपान्तर है। अरबके लोगोंके आँखोंपर पक्षपातका पर्दा पड़ा है पर मैंने पर्दा उघाड़कर कह दिया है जिसको मानना हो माने, न मानना हो तो उसकी इच्छा। इन्हीं विष्णु भगवान्‌की संसारमें पूजा हो रही है, दूसरा कोई नहीं है।

जो आदमका खुदा था वही इब्राहीम और मूसा आदिकका खुदा था। इब्राहीमकी संतानमें चालीस सहस्र पैगम्बर हुए, । सब उसी एक खुदाकी भक्ति करते आये। मुहम्मदतक जो अन्तिम पैगम्बर हुये सब उसीकी साक्षी भरते आये।

कुरानसूरे उमरान ८३ आ० ३ सि० ९ रु.

قُلْ آمَنَّا بِاللّٰهِ وَمَا أُنْزِلَ عَلَيْنَا وَمَا أُنْزِلَ عَلٰى إِبْرَاهِيْمَ

इसका अर्थ—तू कह–हम ईमान लाये अल्लाहपर जो कुछ उतरा हम पर इब्राहीम इस्माईल, इसहाक़, याकूब, तथा उसकी सन्तान पर जो कुछ मिला मूसा, ईसा और सब नबियोंको खुदाकी ओरसे, हम भिन्न नहीं करते उनमेंसे किसीको हम भी उसीकी आज्ञामें हैं।

इसी प्रकारसे सब मनुष्य उसी खुदाकी भक्ति करते हैं। कोई किसी प्रकारकी बुद्धि विद्या और युक्ति क्यों न खर्च करे पर इन तीनों देवतोंकी

अधीनतासे नहीं निकल सकता। इसमें कुछ भी संदेह नहीं कि, सारे संसारके लिये एकही ईश्वर है। ईश्वर और शास्त्र होनेपर भी भिन्न भिन्न मजहब व रीति क्यों हुई? इसका कारण यही है कि, मनुष्य अपने यथार्थ मनुष्यत्वसे रहित हो रहे हैं, देखनेकोही मनुष्य हैं पर यथार्थमें मनुष्य नहीं हैं। यदि इनको अपने धर्मकी सुधि होती तो एक धर्मको छोड़ दूसरे धर्मको ग्रहण न करते। जब कि, सब धर्मोंका प्रवर्त्तक एकही आचार्य है तो दूसरे धर्मको धारण करने एवं एकको छोड़नेसे क्या लाभ? लोगोंकी बुद्धिपर अन्धकार छा रहा है, जिससे अपने धर्मके आशयको न समझकर, एक दूसरेके साथ, लड़ते झगड़ते, वाद-विवाद करते और भला बुरा कहते हुए मरते मारते हैं।

विशेषतः वे हिन्दू लोग जो किसी कारणसे मुसलमान हो जाते हैं, यदि उनसे पूछो कि, तुम मुसलमान क्यों हुये? तो प्रगटमें तो वे बहुत बातें बताते और अपने अवगुणोंको छिपानेका यत्न करते हैं पर भीतर ही भीतर हृदयमें पछताते हैं। कोई कोई स्पष्टही कह देते हैं कि, अपने धर्मकी अनभिज्ञता के कारण हमने अपना धर्म छोड़ दिया, अब हिन्दू लोग मुझे अपने धर्ममें नहीं लेते।

भवतारण ग्रन्थमें लिखा है कि, कबीर साहबका वचन है कि, पूर्व जन्मके बड़े पुण्य और शुभ कर्मोंके प्रतापसे उच्चकुलमें जन्म होता है सांसारिक वैभव सम्पन्न होता है। पूर्वजन्मके ही पुण्य प्रतापसे रूप यौबन और उत्तम कुल मिलते हैं, जितने धनी और राजा महाराजा अथवा उच्चपद पर स्थित हैं, सब उत्तम और श्रेष्ठ कुलकेही होते हैं। अतः ब्राह्मण, क्षत्रियादि जो उत्तम श्रेष्ठ जातिके हैं वे कैसे प्रतिष्ठाके पात्र हैं? यहांतक कि, यदि इन जातियोंमें कोई विशेष गुण भी न हो तो भी अपनी उत्तम जातिके कारण प्रतिष्ठाको प्राप्त कर लेते हैं। यह उत्तम कुलकी विशेषता और गुण हैं। इसी प्रकार मुसलमानोंमें भी कुलवान् सैयदोंकी सब सेवा और भक्ति करते हैं वरन् ईश्वर भी श्रेष्ठ कुलवानोंपर विशेष दया करता है। देखो तौरेतमें—इब्रानी उत्तम कुलके थे उनपर ईश्वरकी विशेष दया थी। जो हिन्दू मुसलमान हो जाते हैं, अथवा ईसाई धर्मको स्वीकार कर लेते हैं वे क्या प्राप्त करते हैं? उच्चकुल और श्रेष्ठ स्थानसे भ्रष्ट हो नीचकुल और अधम स्थानको ग्रहण करते हैं, अन्तमें जब वे समझते हैं तब शोककर पश्चात्ताप करते हैं। जैसे कि, बादशाह दरिद्र हो जानेपर करता है वैसेही हिन्दू अपने धर्मको छोड़कर दूसरे धर्मरूपी दरिद्रताको स्वीकार करते हैं। कोई हिन्दू उच्च और श्रेष्ठ कुलका ईसाई अथवा मुसलमान नहीं होता वरन् आठ कारणोंसे कोई कोई अपने धर्मको छोड़ता है।

हिन्दुओंके मुसलमान होनेका कारण ।

१–अपने धर्मको न जानना । २–दरिद्रता अथवा लोभ । ३–विषयसे वासना की प्रबल कामना–उसमें खूब खुल खेलनेकी प्रबल इच्छा । ४–किसी स्त्रीकी आशक्ति । ५–उच्च पद अथवा मान बड़ाईकी इच्छा अथवा खुशामद । ६–विधर्मियोंकी विशेष संगति और उनका सहवास । ७–किसीके बहकाने और धोखा देनेसे जैसा कि, प्रायः ईसाई मिश्नरी करते हैं । ८–संयोगन किसी हिन्दूका भूलसे ईसाई अथवा मुसलमानका पानी पी लेना हिन्दुओंका फिर अपनी जातिमें न मिलाना ।

यही आठ कारण हैं कि, हिन्दू अपने धर्मको छोड़कर ईसाई अथवा मुसलमान हो जाते हैं नहीं तो हिंदू भी कभी अपने धर्मको नहीं छोड़ते ।

धर्म रक्षक ।

कबीर साहबने धर्मकी रक्षाके लिये तीन रक्षक नियत किये हैं । १ गुरु २ सन्त और ३ ग्रन्थ । जहां ये तीनों रक्षक वर्त्तमान होते हैं, वहां किसी प्रकारकी त्रुटि नहीं होती । जो इन तीनों रक्षकोंको छोड़ देगा, उनकी शरण न रहेगा, वह अवश्य धर्मसे पतित हो नीचगतिको प्राप्त होगा । उसको धर्म लाभ न होगा । इस कारण इन गुरु, सन्त और ग्रन्थ तीनोंकी प्रतिष्ठा करनी उचित है ।

प्रथम गुरुकी सेवा पूजासे अन्तःकरण शुद्ध हो जाता है दूसरे सन्त भी गुरुकोही मूर्ति हैं । तीसरे सबका मूल ग्रन्थ भ्रमकी टट्टी तोड़ने और सत्यपथको बतलानेवाला है । तीनों (गुरु, सन्त, ग्रन्थ) को एकरूप जानकर, तीनोंकी समभावसे सेवा और पूजा करना उचित है । क्योंकि, गुरु और संत बिना ग्रन्थका आशय मिलना कठिन है । ग्रंथ बिना संत और गुरुका उपदेश करनेका दूसरा द्वारही नहीं है । ग्रंथोंकेही अर्थको विचारकर संत गुरुके पदको पहुँचते हैं, फिर उन्हीं ग्रन्थोंका उपदेश दूसरोंको सुनाते हैं । जो इन तीनोंमेंसे किसी एककाभी अनादर करेगा वह धर्मसे पतित हो नरकका अधिकारी होगा । इस समय भारतवासी इन तीनों धर्म रक्षकोंसे श्रद्धाहीन हो रहे हैं, नहीं तो अन्य धर्म्मियोंके आखेट क्यों बनें ? हिन्दू लोग धर्म ग्रंथों और धर्मपुस्तकों तथा संत और गुरुजनोंको छोड़ अन्य धर्मियोंके धर्म ग्रंथ तथा अन्य भाषाको बड़ी श्रद्धा और भक्तिसे पढते हैं उन्हींके धर्म गुरुओंसे उपदेश लेते हैं तो हिंदू धर्म क्यों न अवनति हो ईश्वर और मृत्यु दोनोंके भयको भुलाकर लोग अधर्ममें फँस गये धर्म खो बैठे ।

हिंदू धर्मकी दुर्दशा ।

संसारी अर्थात् गृहस्थाश्रमी फलदार वृक्षके समान हैं; जैसे फलदार वृक्षमें जब फूल फल लगते हैं उस समय नाना प्रकारके पक्षी आकर उस पर वासा लेते हुए कलोलें करते हैं; नाना प्रकारके मनोहर शब्द सुनाते हैं, जिसके सुननेसे बड़ा आनन्द प्राप्त होता है । जब वृक्ष फलदार नहीं होता, उसमें फूल फल नहीं लगते तो, उसपर काक, उलूक आदि आकर वासा लेते हैं । वेही अपनी कान फाड़नेवाली वाणी बोलते हैं, जिससे सुननेवालोंको बहुत बुरा लगता है । उससे घृणा उत्पन्न होती है । फिर वह वृक्ष काटने और जलानेहीके योग्य हो जाता है । ऐसेही गृहस्थाश्रमी जब संत और गुरुकी सेवा करते हैं तबतक भक्ति मुक्तिकी आशा होती है, नाना प्रकारके गुण उदारता सत्सङ्ग, दया, क्षमा आदि सब उनमें आकर स्थित होते हैं पर जब कृपणता और संसारी विषय भोगमें पड़कर अपना धर्म छोड़ बैठते हैं साधु गुरुकी सेवा छोड़कर सच्चे संतों और विद्वानोंकी अप्रतिष्ठा करने लगते हैं, उस समय पामरताको प्राप्त हो, नाना प्रकारके पाखण्डोंको धारणकर, नर्कके अधिकारी होते हैं ।

मुसलमानोंने बहुत अत्याचार और अन्यायसे हिंदुओंको मुसलमान बना लिया । जिन्होंने मुसलमान होना अस्वीकार किया, वे मार डाले गये, जो अपने मृत्युसे डरा वह मुसलमान हो गया पर तो भी हृदयसे अपने धर्मकाही प्रेमी रहा । क्योंकि जो, लोग मुसलमान हो गये उनकी सन्तान अद्यापि इस बातका स्मरण रखती है कि, हमारे पूर्वज क्षत्रिय, ब्राह्मण अथवा अमुक हिन्दू जातिके थे; जैसे किसी राजा और बादशाही सन्तान याद रखती है कि, हमारे पूर्वज राजा अथवा बादशाह थे ।

समस्त पृथ्वीभरमें हिन्दू जाति सबसे श्रेष्ठ और प्रतिष्ठित जाति है । भारतवर्ष सब देशोंका शिरोमणि है । भारतवर्ष और हिन्दुओंसेही समस्त, संसारमें धर्मका नियम फैलता है । बड़े बड़े सिद्ध महात्मा, ऋषि मुनि, औतार तत्वज्ञ आदिका प्रागट्य यहांही होता है । यहांकेही ऋषि, मुनि, विद्वान् सब संसारके लोगोंको शिक्षा देते, लौकिक पारलौकिक मार्ग बतलाते हैं । इस देशका नाम हिन्दुस्थान है, अन्य देशोंको म्लेच्छ स्थान कहते हैं, क्योंकि, वर्णाश्रम, जाति आदिका सर्वोच्च विचार और विभाग इसी देशमें है, दूसरे देशमें नहीं है । वर्णाश्रमका विवेक और विभाग ऐसा उच्च और सर्वोत्कृष्ट सिद्धान्त है कि, जिसके द्वारा अपने वर्ण आश्रमका कर्तव्य शास्त्रानुसार करता हुआ मनुष्य शीघ्रही मुक्तिपथको पा लेता है । भारतवासी अपने धर्मके ऐसे प्रेमी हैं कि,

मर जाना तो इन्हें स्वीकार है पर अपना धर्म छोड़ना स्वीकार नहीं। इसका प्रमाण मुसलमानी राज्यके इतिहासोंसे मिल सकता है। क्या हुआ ? यदि कुछ डरपोक, भीरु अथवा लोभी और कामियोंने हिन्दूधर्मको छोड़ दूसरा धर्म स्वीकार कर लिया। जो हिन्दू धर्मको छोड़, सर्वोत्कृष्ट हिन्दू धर्मके नियमोंको त्याग कर देता है वह उच्च अथवा श्रेष्ठ नहीं वरन् नीच और अज्ञानी समझने योग्य है।

हिन्दू धर्मकी श्रेष्ठता।

सालहान[1]: सिफात हिंदू हैं। नेकि[2]योंकी बरात हिन्दू हैं॥
जितने अक़[3]वाम हैं जमींके ऊपर। सबमें यह खूब ज़ात हिन्दू हैं॥
सम[4]र साब[5]क़ा अमल[6] अपने। अस[7]लकी नक़लिया[8]त हिन्दू हैं॥
जब लताफत[9]से यह क[10]सीफ़ हुआ। आदिका शब्दोयात हिन्दू हैं॥
जितनी हैं धातु[11] इस जमींके ऊपर। उमदासे उम्दः धातु हिन्दू हैं॥
याद हों हस[12]नः फेल दर[13]स जिस[14]को। कर सकू[15]न जिन समात हिन्दू हैं॥
यह जमीनपर दया धरम मूरत। जुह[16]द व तक़[17]वा क़ना[18]त हिन्दू हैं॥
है हयात——अब[19]दी सम[20]र जिसका। उस शिबि[21]र डाल पात हिन्दू हैं॥
जाके जिस घरमें फिर नही खौ[22]। उसकेही मनजिला[23]त हिन्दू हैं॥
यही गुरु पीर सारे दु[24]नियाके। सोई बाप और मातु हिन्दू हैं॥
बन्द[25]गी और तिहा[26]रत व तक़वा। मुक्अितके मौजिबा[27]त हिन्दू हैं॥
हिन्द[28]का कह कबीर भक्ति मुका[29]म। शिक[30]न मुशकि[31]लात हिन्दू हैं॥
नुकतः वा[32]रीक अ[33]क्ल जिनकी रसा[34]। मा[35]दिने म[36]दरकात हिन्दू हैं॥
जिसके साबि[37]त हैं धर्म और ईमान। क़ाज़ी दीन मआमलात हिन्दू हैं॥
धरके तन जिसनेकी अमल अच्छे। वख्तखु[38]श रब्बदा[39]त हिन्दू हैं॥
है न वह व[40]स्फ़ और अबिन आद[41]म। हा[42]दी रा[43]हन जाता हिन्दू हैं॥
हा[44]ल मा[45]ज़ी ज़माना मुस्तक़ब[46]ल। ना[47]ज़रीन कु[48]ल नु[49]कात हिन्दू हैं॥
हिन्दू होकर न ऐब[50]के रुख[51]कर। मुसतहक़ हक़[52] सिला[53]त हिन्दू हैं।

---

१ सदाचारी, २ पुण्य, ३ जातियाँ, ४ फल, परिणाम, ५ पूर्वजन्मका, ६ कर्म, ७ जैसेका तैसा, ८ छाया, ९ सूक्ष्मता, १० स्थूल, ११ रत्न, १२ शुभकर्म्म सदाचार, १३ शिक्षा, १४ जिसका, १५ स्थिति, १६ तप, १७ संयम, १८ संतोष, १९ सदाकी जिन्दगी, अमरता, २० फल। २१ वृक्ष २२ भय, २३ विश्राम, २४ संसार, २५ भक्ति, २६ शौच, शुद्धि, २७ कारण २८ भारतवर्ष, २९ स्थान, ३० नष्ट करनेवाला, ३१ कठिनता, विपत्ति, ३२ सारभेद, ३३ बुद्धि, ३४ पहुँची हुई, ३५ खानि, ३६ भेदसार, ३७ स्थित, ३८ भाग्यमान, ३९ ईश्वरकी देन, ४० गुण, ४१ मनुष्य, ४२ पथदर्शक, ४३ मुक्ति मार्ग, ४४ वर्त्तमानकाल, ४५ भूतकाल, ४६ भविष्यत्काल, ४७ देखने वाले, ४८ सर्व, ४९ भेद, ५० दोष, ५१ सन्मुख, ५२ अधिकारी, ५३ स्वत्व,

बे खु[1]ब सारेको खब[2]र देते। कुन्न अ[3]कशफुल्लोग़ात हिन्दू हैं ॥
जाने न और अपने अ[4]स्ल से व[5]स्ल। पाते सो दाव घात हिन्दू हैं ॥
औरकी अक्ल है न ऐसी र[6]सा। दीन दुनी मवन्निसात हिन्दू हैं ॥
बे खबर सारे इस्म[7]आज़मसे। नाम मुअल्लिमें क[8]रात हिन्दू हैं ॥
[9]नफसको मारकर मिलावें जो गर्द। बरी[10] अज़ तोह[11]मात हिन्दू हैं ॥
जन्म साबिक़में की जो ऐसी अमल। ह[12]सनःके हासि[13]लात हिन्दू हैं ॥
साध गुरु सेवकर भजन सुमिरन। देते खुम[14]स और जु[15]कात हिन्दू हैं॥
वे ख़बर कौम सब जमींके ऊपर। वाकिफ़ अज़ वारदात हिन्दू हैं ॥
होता हिन्दू है खुश[16]नसीब आजिज़। धरते यम सर पैलात हिन्दू हैं ॥

प्राचीन समयमें भारतवर्ष, बड़ा प्रतापी और सर्व सम्पत्ति सम्पन्न देश था। इसके क्षत्रिय शूर बीरोंसे संसार भरके योद्धा भय खाते हुए इनका लोहा मानते थे। किसीकी समर्थ नहीं थी कि, भारतपर आक्रमण कर सके। श्री महाराजा रामचन्द्रजीके समयमें बरबर देशके म्लेच्छोंने एका एक करके भारत पर आक्रमण किया था पर महाराजाने मार भगाया। इसीप्रकार अनेकबार विदेशियोंने इस पवित्र भूमिपर आक्रमण किया पर कभी सफलताका मुंह नहीं देखा।

मुसलमानोंके अत्याचार।

अढाई सहस्र वर्षसे देशके भाग्यने पलटा खाया, सिकन्दरसे लेकर महमूद गजनबी तक अनेक म्लेच्छ राजाओंने आक्रमण किया, क्रमशः मुसलमानोंका राज्य हो गया, मुसलमान बादशाहोंने भारतबासियोंपर बहुत अत्याचार किया, आलमगीर, औरंगजेब(आदिकोंने लाखों हिन्दुओंका वध किया। इनके धर्म्मधर्मपुस्तकों धर्मस्थानों तथा मन्दिरोंपर ऐसा अत्याचार किया, जिसके वर्णनसे मनुष्यके रोम खड़े होते हैं। इसके अत्याचारसे लाखों हिन्दुओंने आत्महत्या की पर धर्म न छोड़ा।

हिन्दुओंकी दृढता—विचारनेकी बात है कि,इन लोगोंने हिंदुओंको इमानदार बनाया कि, बे इमान? वे स्वयम् कैसे थे? जो लोग हिन्दुओंको पुण्यात्मा और इमानदार बनाना चाहते थे अथवा चाहते हैं वे स्वयम् अपनी ओर

---

१ अचेत, २ चेत, ३ भेदोंका कोश अर्थात् सारभेद जाननेवाला, ४ असल जाननेवाला, ५ असल, ६ पहुँचा हुआ, ७ सार नाम, ८ ईश्वरी भेदके शिक्षक। ९ विषयासक्त मन, १० रहित, ११ दोष, अवगुण, १२ उत्तम प्रशंसनीय, १३ प्राप्त करनेवाले, १४ ईश्वरार्पण दान पुण्य, १५ अपने उपार्जित धनमेंसे ईश्वरार्थ गुरु आदिको देना, सार भेद, १६ भाग्यवान।

दृष्टि करके देखें कि, क्या कमाई कर गये तथा करते हैं। म्लेच्छ भला हिन्दुओंको क्या मुक्तिमार्ग बतलावेंगे? स्वयम् तो अन्धकारमें फँसे रहकर सांसारिक तापोंसे तप रहे हैं; दूसरोंको क्या मार्ग बतावेंगे? इन म्लेच्छोंकी क्या सामर्थ कि, हिन्दुओंको अपने धर्मसे विचलित कर सके (नीच जातियों, नीच बुद्धिओंकी बात नहीं है।)

हक़ीक़तराय।

अच्छे और सच्चे हिन्दुओंने जान तो दे दी पर कभी म्लेच्छोंके धर्मको शब्दोंसे भी स्वीकार नहीं किया। इस पर यह दृष्टांत हकीकतराय नामक क्षत्रिय बालकका लिखता हूँ। जिससे पाठकगणोंको हिन्दुओंकी धर्म श्रद्धा और दृढ़ता प्रगट हो जाय। हकीक़तराय जातिके क्षत्रिय थे, इनका जन्म १७९१ सम्वत् वि० में आगरा शहरमें हुआ था। इनके पिता धनवान् और साहसी पुरुष थे। किसी कारण इनके पिता इनको साथ लिये हुये पंजाब देशके स्याल कोट नगर जा रहे। हक़ीतरायकी ७ वर्षकी अवस्था हुई तो इनके पिताने एक मकतबमें विद्या अभ्यासके लिये बैठा दिया। हक़ीक़तराय दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति करते हुये अपनी आयुके बारहवें वर्षमें पहुँचे। नित्य मुसलमान तालिब इल्मों (विद्यार्थियोंके) साथ वाद विवाद हुआ करता था, कभी कभी धार्मिकविषय भी छिड़ जाते थे। एक दिन वाद विवादके बीचमें ही एक मुसलमान लड़केने ज्वालामाईको गाली दी। हक़ीक़तरायसे अपनी पूज्य देवीकी निन्दा सुनकर सहन नहीं होसका, उसने भी बीबी फातमाको गाली दी। उस मकतबका शिक्षक मुसलमान था। मुसलमान विद्यार्थियोंने जाकर उससे कहा कि, हक़ीक़तराय बीबी फ़ात्माको गाली दी है। वह विद्यार्थियोंको लेकर क़ाज़ीके निकट गया। हक़ीक़तरायकी बहुत शिकायत करके बीबी फ़ात्माको गाली देनेका समाचार कहा। काजीने बहुतसे मुल्लोंके साथ मिलकर यह निर्णय किया कि, हक़ी त रायने पैगम्बर साहबकी बेटी, बीबी फ़ात्माको गाली दी है, इस कारण यह प्राण दण्डके योग्य है। फिर यह मुकदमा नव्वाब खान बहादुर नामक लाहौरके शासकके पास पहुँचा। नव्वाबके सन्मुख हक़ीक़तरायने स्पष्ट कहा कि, पहले मुसलमान विद्यार्थियोंने ज्वालामाईको गाली दी तब मैंने पीछे कहा। नव्वाबने चाहा कि, बालक हक़ीक़तराय न मारा जाय, किसी प्रकार बच जावे पर दुष्ट काज़ी और मुल्लाओंने अपनी बड़ी भारी भीड़ एकट्ठी की, सबने मिलकर नव्वाबसे कहा कि, यदि तुम इस बालकका पक्ष करोगे तो हमलोग बादशाहसे नालिश करेंगे। काजियोंकी दुष्टता देख नव्वाब बहुत विवश और दुःखी हुआ।

नव्वाबने पूछा इसके बचनेका कोई उपाय है या नहीं ? क़ाजी मुल्लाओंने कहा कि, यदि यह बालक मुसलमान हो जाये तो बच सकता है । नव्वाबने हक़ीक़तरायको गोदमें बैठा लिया । कहा कि, अब तू मेरा बेटा है, यदि तू मुसलमान हो जायेगा तो तेरेको अपना राज्य दे दूंगा । हक़ीक़तरायने साफ़ २ उत्तर दिया कि, मैं सांसारिक धन दौलत नहीं चाहता, मैं अपना धर्म नहीं छोड़ूंगा । हक़ीक़तरायके माता पिताने भी समझाया कि, बेटा ! तू मुसलमान होना स्वीकार कर ले, तेरी जान बच जावेगी । हक़ीक़तरायने अपने माता पिताको बहुत समझाया कहा कि यह देह और संसार सभी नाशमान हैं, एक दिन सब नष्ट हो जावेंगे, किस दिन और किस सुखके लिये अपना धर्म छोड़ूं ? माता पिता पुत्रके ज्ञान विवेकको देखकर कुछ विशेष नहीं कह सके । नव्वाबसे कहा कि, उसके तुल्य सोना चाँदी मुझसे लेलो इसकी जान छोड़ दो पर दुष्ट काजियों और मुल्लाओंने न माना । नव्वाबने हुकुम दिया कि, पहले इस लड़केके कोड़े मारो, छुरा चुभाओ, तलवार दिखाओ । यदि भयसे मुसलमान हो जावे तो अच्छी बात है । बधिकने वैसाही किया । हक़ीक़तरायको बहुत कष्ट और दुःख हुआ । पर वाहरे बहादुर ! ! ! जरा भी कष्टकी परवाह नहीं की । शरीर और सब संसार तथा मृत्युको धर्मकी अपेक्षा तुच्छ जाना । अन्तमें जब बहुत कष्ट देनेपर भी हक़ीक़तरायने मुसलमान होना स्वीकार नहीं किया तो बधिकको बध करनेकी आज्ञा हुई । बधिक तलवार लेकर हक़ीक़तरायके निकट गया उनकी सुन्दरता और कांतिको देखकर आशक्त हो गया, चित्त मोहवश ऐसा निर्बल होगया कि, तलवार हाथसे गिर पड़ी, स्वयम् रोने लगा वरन् गिर पड़ा । हक़ी तरायने बधिकको खूब समझाया कि, तू मत रोओ उठ खड़े हो, मेरा शिर काट लो तू स्वर्गको जायगा और ये सब काजी मुल्ला नरकको जायेंगे । अब यहाँसे मुसलमानी राज्य नष्ट हो जावेगा, सिक्खोंका राज्य होगा; तू किसी बातकी चिंता मतकर, मोहको त्याग मेरा शिर काटले । उस समय हकीकतरायका अन्तःकरण प्रकाशित हो गया था । भविष्य कहने लगे । क्यों न हो ? जो अपने धर्मपर दृढ़ विश्वास रखता है, संसारसे धर्मको अच्छा समझता है, दैवी गुणोंको आसुरी गुणोंकी अपेक्षा प्रेमकी दृष्टिसे देखता है, ईश्वरपर सच्ची श्रद्धा रखता है, उसको क्या दुर्लभ है ? बधिकने तलवार मारी, हक़ीक़तरायका शिर धड़से अलग जा गिरा । जिस समय बधिकने तलवार चलाई, उस समय लाहौर में अँधेरा छा गया, भूकम्प आया, नगरभरमें शोक फैल गया, सबके सब बालकसे लेकर वृद्ध तक रोने और हाय मारने लगे । हक़ीक़तरायकी मृतक देहको नदी

किनारे ले जाकर उसकी अन्तिम क्रिया की गई, वहाँ उनकी समाधि बनी, साल साल मेला होने लग गया। अब भी मेला होता है, सहस्रों मनुष्य इकट्ठा होते हैं। हक़ीक़तरायके गीत पंजाबमें गाये जाते हैं।

जिसका धर्म वर्त्तमान है उसका सब कुछ है, उसीके लिये सब सुख है, वही लोक परलोकका राजा है। धर्मसे बढ़कर लोक परलोकमें दूसरा कोई पदार्थ नहीं। जिसने अपने धर्मको बचाया, उसके लिये जीवनकी आशा त्याग दी, वही सफल काम हुआ।

अनन्तर हक़ीक़तरायके माता पिता, उनके फूल[1] लेकर, गंगा प्रवाह कराने हरिद्वार गये। वहांसे लौटनेपर दिल्ली बादशाही दरबारमें पहुँचे। बादशाहसे अपने पुत्रके ऊपर अन्याय और उसके व्यर्थ बधका न्याय चाहा। बादशाहने रातको हक़ीक़तरायको यह कहते हुये स्वप्नमें देखा कि, यदि मेरा न्याय न करोगे तो तुम्हारा गला घोंटकर मार डालूंगा। बादशाह स्वप्न देखकर बहुत भयभीत हुआ। सवेरा होतेही हक़ीक़तरायके माता पिताको बुलाकर सब हाल पूछा। नव्वाब खान बहादुरसे कैफ़ियत माँगी, नव्वाबने स्पष्ट उत्तर दे दिया कि, मैं इस बातमें निरपराध हूँ, मेरा तनिक भी दोष नहीं। काज़ी और मुल्लाओंने बलपूर्वक यह काम करवाया है। क़ाज़ी और मुल्ला बुलाये गये, खूब जाँच हो जानेपर, जिन जिन काजी और मुल्लाओंने बधकी सम्मति दी थी, उनको एक एक नौकापर चढ़ाकर जमुनामें डुबवा दिया।

जैसे हकीकत रायने बधिकसे कहा था कि, तू स्वर्गको जायगा, उसी प्रकार ईसाके साथ दो चोर सलीनपर चढ़े थे, एक तो हजरतको गाली देता था, दूसरा कहता था ऐ ईसा! तू मेरे ऊपर दया करना, उस समय ईसाने कहा, था कि, तू स्वर्गको जावेगा।

गुरु गोविन्दसिंह गुरु तेगबहादुरके साथ भी ऐसाही हुआ था। गुरु गोविन्दसिंहके दो पुत्र तो युद्धमें मारे गये थे, शेष जो छोटे दो थे उनको लेकर उनकी दादी भागी, एक ब्राह्मणके घरमें शरण ली, जो बहुत दिनोंसे गुरु गोविन्दसिंहकेही नाजसे पलता हुआ सुख भोग रहा था। उस निमकहराम बेइमान ब्राह्मणने दोनों बच्चोंको मुसलमानोंसे पकड़वा दिया। उस बेइमान नीच ब्राह्मणने लोभवश हो ऐसी कृतघ्नता और पाप किया कि, जिसके तुल्य दूसरा कोई पाप नहीं हो सकता। मुसलमानोंने दोनों लड़कोंको पाया, जिनमेंसे एक तो सात वर्षका था दूसरा पांच वर्षका था। कहा कि, तुम मुसलमान हो जाओ

---

[1] शरीरके जल जानेपर राख हड्डी होती हैं उन्हें फूल कहते हैं।

नहीं तो तुम्हारी गर्दन काटी जावेगी। उसने स्पष्ट उत्तर दिया कि, हम अपना धर्म छोड़के मुसलमान न होंगे। मुसलमानोंने बहुत भय, आशा तथा लोभ दिखलाया पर दोनोंमेंसे किसीने भी स्वीकार नहीं किया। अपना वध होना स्वीकार किया पर किसी प्रकार अपना धर्म छोड़ना नहीं चाहा बरन् मुसलमान होनेसे महान् घृणा प्रगट की। जब किसी प्रकार उन बच्चोंने नहीं माना तो निर्दयी मुसलमानोंने बिचारे निष्पाप बालकोंको, सरहिन्दकी दीवारोंमें चुनकर मार डाला। यह समाचार सुनकर मालियर कोटलेके नब्बाबने बहुत शोक किया। नब्बाबके सिवा जिन २ लोगोंने शोक प्रगट किया, गुरु गोविन्दसिंहने उनको आशिर्वाद दिया कहा कि, तुम्हारी जड़ हरी रहेगी। यह सम्वत् १७६१ विक्रमीकी बात है।

मुरब्बा।

हक़ीक़त रायका सिर काट किस पर। न आये दर्द दिलमें ऐसी जिसपर॥
किया जल्लादने भी रहम जिसपर। कहो रोवे फ़लक क्यों कर न उसपर॥
पड़े कोड़े छुरा उसको चुभाया। किया तूने जो तेरे दिलको भाया॥
ज़रा उसने न दिल अपना डुलाया। कहो रोवे फलमा क्यों कर न उसपर॥
तमा कितने दिखा मासूम बच्चे। न मुतहर्रिक हुये ईमान सच्चे॥
हुये हरगिज़ न लोभ और डरसे कच्चे। कहो रोवे फ़लक क्यों कर न उसपर॥
जब आया हिन्दमें महमूद ग़ज़नी। किया उसने जो था उसको न करनी॥
दया और धर्मको दिलमें धरनी। कहो रावे लक क्यों कर न उसपर॥
हुआ जब सरबुलन्द औरंग औरंग। हुआ आलममें तब कुछ औरही ढंग॥
किया हिन्दूको तब उसने बहुत तंग। कहो रोवे फ़लक क्यों कर न उसपर॥
शहर दिल्लीमें नादिरशाह आया। तमासा अपना सो सादिर दिखाया॥
सर अम्बार हिन्दूका लगाया। कहो रोवे लक क्योंकर न उसपर॥
कहूँ क्योंकर गुनह शाहो गदाका। यही है धरम इस नई सम्प्रदाका॥
न आजिज खौफ रहम उसमें खुदाका। कहो रोवे फ़लक क्यों कर न उसपर॥

मुसलमानोंके अत्याचार और निर्दयताको पहलेसेही कबीर साहबने जान कर, मक्कामें प्रगट हो, मुहम्मदको मिथ्या धर्म द्वेष निरर्थक रक्तपातसे बहुत मना किया सत्य पुरुषका दर्शन कराया। मुहम्मद साहब तो, कबीर साहबका उपदेश मानकर, इस अन्यायसे रहित हुये पर उनके अनुयायियोंने नहीं छोड़ा।

सच्चे हिन्दू और मुसलमान

मुसलमानी हदीस, तारिख मुहम्मदी तथा मौलवी अमाउद्दीन कृत तालीम मुहम्मदीमें लिखा है कि, मुसलमान लोग पहले मदिरा पीते और शूकरका मांस खाते थे। मद्य पीकर निमाज पढ़ना विधि थी, पीछे हराम (निषेध) होगया। इसी प्रकार बलपूर्वक मुसलमान करना भी हराम हो गया। मुसलमानोंने दो बातोंका तो हराम मान लिया पर तीसरी बात नहीं मानी। कबीर साहबने कहा है कि—

बाँधे भक्ति न होयरे भाई। बाँधे करे सो करम कसाई।

जो लोग बलपूर्वक मुसलमान करते हैं वे स्वयम् मुसलमान नहीं हैं जो परवश मुसलमान हुये हैं वे भी मुसलमान नहीं। जो यथार्थमें मुसलमान हैं वे न तो बलपूर्वक मुसलमान करते हैं, न होते हैं।

जो गुण मैंने हिन्दुओंके ऊपर लिखा है, जिसमें वे गुण होंवे वे ही हिन्दू हैं। देखो हकीकतराय को मुसलमानोंने कितना दुःख दिया, प्राण तक हरंण कर लिया पर वीर क्षत्रिय बालकने अपनी धर्म दृढ़ता न छोड़ी। ऐसेही पुरुष हिन्दुओंमें परिगणित होनके योग्य हैं। जो लोग मुसलमान अथवा ईसाई होगये वे प्रथमही हिन्दू नहीं थे, न मुसलमान अथवा ईसाई, नाम धरानेपर मुसलमान अथवा ईसाई हुये। जैसे गदहेने व्याघ्रका चमड़ा ओढ़ लिया तो क्या? बैलका ओढ़ लिया तो क्या? असलमें वह गदहा ही है। वैसे ऐसे अव्यवस्थित चित्त और धर्मवाले लोगोंका कुछ भी धर्म नहीं होता। उनको धर्म बदलते, गंगादाससे यमुनादास, यमुनादाससे गोमती दास बनते कुछ भी विलम्ब नहीं है। कोई किसी धर्ममें क्यों न हो पर अपने सदाचार और पुण्यसे ही उसका कल्याण होगा क्योंकि ईश्वर एक और सम है, उसकी आज्ञा उलंघन करना पाप और नियमको न छोड़ना पुण्य है। यदि ईश्वरके नियमके विरुद्ध चलेगा तो पापी होकर दण्डका भागी होगा। सदाचरण (ईश्वरी नियम) को ही पूर्णता पर पहुँचाना सर्व धर्मोंका मूल है। जो लोग नीच घृणित मादक पदार्थ और मांस आदि हिंसा प्राप्त पदार्थोंको ग्रहण करते हैं वे भी हिन्दू नहीं हैं। केवल हिन्दुओं के ही लिये यह बात नहीं बरन् जो ईसाई अथवा मुसलमान हैं, इञ्जील तथा कुरानकी आज्ञाओं पर नहीं चलते वे ईसाई या मुसलमान नहीं हो सकते क्योंकि, मुखसे कहना और बात है, मानना और उसके ऊपर चलना और बात है। कोई क्यों न हो? जिनका जो धर्म है, वह धर्म ईश्वरी नियम (प्रकृति) के विरुद्ध न हो, उसको भली प्रकार वर्तनेसे कल्याण प्राप्त करेगा। प्रकाश और श्रेष्ठता सत्य-

पुरुषको प्रसन्न करनेका द्वार है, सदाचरणसे मिलता है सत्यपुरुषकी कृपासे मुक्ति होती है। परमात्माको सदाचार स्वीकार है दुराचारसे घृणा है।

जिसने इस संसारमें आग लगाई उसीमें बुझाने को भी सामर्थ्य है। जिसने कालपुरुषको प्रगटकर उसको राज्य दे दिया वही इससे बचा भी सकता है। जिसने सब प्रपंच प्रगट किया वही इसको शांत भी कर सकता है, दूसरेकी क्या शक्ति है कि, कुछ भी कर सके। मनुष्यको चाहिये कि, उसीकी दया और कृपाका ध्यान रखे, उसीके कृपापात्र बननेका प्रयत्न करे, दूसरा कोई उपाय नहीं है, सब युक्तियाँ निरर्थक हैं। केवल उसीकी कृपादृष्टि प्राप्त करनी चाहिये, दूसरा कुछ भी प्राप्त करना नहीं है।

हिन्दू, मुसलमान, ईसाई और यहूदी लोगोंसे प्रार्थना।

प्रथम हिन्दू महाशयोंसे यह विनय है कि, जिन जिन बातोंपर उनका विश्वास और भरोसा है, जिनमें उनकी स्थिति है, वे क्या हैं? उसमें कुछ स्थिरता है अथवा नहीं? निर्गुण और सगुण दोनों ही तुच्छ हैं। क्योंकि, निर्गुण (जिसमें कुछ गुण नहीं) कर्त्ता नहीं हो सकता सगुण नाशमान तथा निर्मूल है। जब ये दोनों निर्गुण और सगुण अव्यवस्थित नाशमान हैं तो इससे लाभ की क्या आशा हो सकती है? फिर लोग कहते हैं। ब्रह्म, जीव और माया तीनों एक ही हैं, तीनोंका एक ही मूल है। वे केवल जीवकी अज्ञानतासे तीन भासते हैं नहीं तो यथार्थमें एक ही हैं। ज्ञानकी दशामें अवाच्य पद है कुछ कहा सुना नहीं जाता। जो कुछ मन बुद्धिका गोचर है सो सब भ्रम माया है।

तत्वमसिके तीनों पद भ्रम और धोखा हैं। भ्रम और धोखा ही इन्द्रिय गोचर होता है। भ्रमको ग्रहण करनेसे भ्रम ही मिलता है, सत्यको धारण करनेसे सत्यपदकी प्राप्ति होती है। जो सत्यकी ओर झुकेगा वह अवश्य सत्यमें ही प्राप्त होगा।

मुसलमान महाशयोंसे कहना है कि, आप लोग कहते हैं कि, "जो मुहम्मदी कलमा पढ़नेसे मुक्ति हो जायगी, वह बिहिश्तको जावेगा, शेष सब नर्कको।" मुसलमान अपने भिन्न सब धर्मवालोंको काफ़िर कहते हैं। यदि मुसलमान होकर अपनेसे कुफ्रपर ध्यान देते तो कभी किसीको किसी प्रकार दुःख नहीं देते, अत्याचार और अन्यान्यको निकट न फटकने देते, पर पक्षपात, धर्म, द्वेष, ऐसी मूर्खता है कि, जिससे मनुष्य क्या २ पाप और बुराई नहीं कर सकता? जिस कलमापर उनका विश्वास है, जिसको अपने धर्म और ईमानका मूल समझते हैं वह क्या है? केवल भ्रम और धोखा है। मूर्खोंके ठगनेकी एक युक्ति है।

इसमें शुद्ध करने और मुक्ति देनेकी शक्ति तो क्या होनी थी, इससे एक अद्वैत परमात्माकी स्थितिही प्रकट नहीं होती बरन् अनेक अर्थात् माया ही का विवरण प्रगट होता है।

(हल्लाह लाइला) नहीं अल्लाह मगर अल्लाह इससे स्पष्ट प्रगट होता है कि, यह कलमाँ किसी विशेष ईश्वरको वर्णन करता है, जैसा मैं प्रथम ही लिख आया हूँ कि, मूसा और इब्राहीम आदिका एक ही खुदा था। वही अब भी है और मूसाके खुदाकी अनेकता मैं भलीप्रकारसे प्रथमही सिद्ध कर आया, जैसा यह कलमा भ्रमिक और कल्पित है वैसे ही इसका परिणाम भी होगा क्योंकि जैसा मूल होता है वैसी ही डाल, पात, फूल, फल होते हैं। बिहिश्त वगैरह की, जो आशा कुरान आदि दिलाते हैं वे मिथ्या कल्पित रोचकऔर भयानक वाक्योंमें वर्णित हैं। जो स्वयम् मिथ्या हो उसमें कोई कैसे जाकर रह सकता है।

जैसे हिन्दुओंका निर्गुण है वैसे ही मुसलमानोंका कलमा है। कलमा कहता है नहीं खुदा मगर है खुदा। प्रथम अस्वीकार फिर स्वीकार। विचार करनेकी बात है कि, ऐसा कलमा जिसका कि, कुछ ठिकाना ही नहीं किस प्रकार मुक्तिदाता बन सकता है? ऐसे भ्रमके कल्में पर विश्वास करके सब मुसलमान लोग धोखेमें बहे जाते हैं। ये जो कुछ रोजा निमाज तकवा तिहारत जप तप करते हैं सब उसी बिहिश्तके लिये करते हैं जिसका कुछ ठिकाना ही नहीं। यदि मान भी लिया जावे तो भी उनके बिहिश्तसे घृणा उत्पन्न होती है क्योंकि ऐसा बुद्धिहीन कौन है? जो प्रथम तो विषय वासना त्यागनेके लिये कठिनसे कठिन तपस्या करके मनको मारे, फिर परिणाममें उसी नीच और घृणित काममें फँसे।

तीसरे ईसाई महाशयोंसे कहना है कि, वे जो तसलीसको सत्यधर्मका मूल मानते हैं वो उनके भ्रम और कल्पनाके अतिरिक्त और क्या है? ईश्वर अविभाज्य है, उसमें विभाग कैसे हो सकता है? अखण्डको कौन खण्ड २ कर सकता है? जिसका खण्ड हो जाता है वह परमात्मा नहीं है, उसमें सब शक्ति नहीं। बाप, बेटा और पवित्रात्मा ये तीन हुये थे, ये कदापि सब शक्तिमान् नहीं हो सकते। जो सर्वशक्तिमान् है वह, अनन्त बापबेटा और पवित्रात्माओंको प्रगट कर सकता है। सर्व शक्तिमान सबसे निर्लेप है। ईसाईयोंकी तसलीस और हिन्दुओंकी तसलीस दोनों एकही बात हैं। हिन्दू ब्रह्म, जीव और माया कहते हैं। ईसाई बेटा, बाप और पवित्रात्मा मानते हैं। जब तक कोई अद्वैतको प्राप्त न करेगा तब तक मुक्ति नहीं प्राप्त कर सकता।

चौथे मूसाई (यहूदी) महाशयोंसे विनती है कि, वे जिन दश आज्ञाओं पर विश्वास करते हैं उसीसे अपनी मुक्ति समझते हैं वे क्या है ? किसने दी ? कहां से आई ? किसको मिली ? विचार करेंगे तो मालूम होगा कि, दश आज्ञा देनेवाला और लेनेवाला दोनों बन्धनमें है, मुक्त कोई नहीं, वरन् मुक्तिकी सुधि भी नहीं जानते। बन्धेने दिया बन्धेनेही लिया। इन दश आज्ञाओंका वर्णन इसी पुस्तकमें प्रथम लिख आया हूँ उसको देखें उसपर बिचार करें कि, इनका यथार्थ आशय क्या है ? जब उपदेशक उपदेष्टा दोनों बन्धनमें हों तो मुक्ति कैसे हो सकती है ? जो स्वयं मुक्त नहीं, वह दूसरोंकी क्या मुक्ति देगा ? परमत्माने जिनके अन्तःकरणमें प्रकाश दिया है, जिन्हें कुछ ज्ञान है, वे सोचें समझें कि, कैदीको कैदी, कैदसे कैसे मुक्त कर सकता है ? कदापि नहीं।

जिस प्रकार मैंने उपरोक्त धर्मोंका वर्णन लिखा है, उसी तरह सब धर्मोंका जानना चाहिये। पक्षपात और अँधाधुन्ध धर्मद्वेष तथा आग्रहमें विवेक और विचार कहाँ है ? जिससे कि, भ्रम और असत्यका त्याग और सत्यकी प्राप्ति, हो। समस्त संसारकी धर्मपुस्तक अन्धोंकी लकड़ीके समान हैं, जिनके विवेक विचार और निर्पक्षता रूप नेत्र नहीं हैं, वे ही उसके सहारा ढूंढ़ते फिरते हैं। वे शास्त्रके आशयको समझ नहीं सकते क्योंकि, उनके भीतर अन्धकार भरा है। यदि प्रकाश होता तो शास्त्रोंके सच्चे आशयको समझकर सीधे मार्गपर चलते उलटा मार्ग स्वीकार न करते।

उदारता और वीरता।

मैंने जो हकीकतरायका हाल लिखा इसके धर्मज्ञ होनेका कारण यह था कि, बालकपनसेही उदार था। यह नियम की बात है, जो उदार होता है वह शूरबीर भी होता है, जो शूरबीर होता है वही अपना धर्म रख सकता है। जितने प्रतिष्ठित नामी महात्मागण हुये सब उदार और वीर हुये। उदारता और दृढ़-ताके बिना कोई भी धार्मिक नहीं हो सकता। कृपण और हतोत्साहको कभी भी श्रेष्ठता नहीं मिल सकती वह सदा अभागाही रहता है।

एक दिन एक यहूदी स्त्री मूसाकी प्रशंसा (मुहम्मद साहबके समक्ष) बड़े उत्साहसे करने लगी कि, मूसा बड़ा उदार पुरुष था। उसके तुल्य कोई नहीं हुआ। यह बात सुनकर मुहम्मद साहबने कहा कि, मुझसे मांग तू क्या मांगना चाहती है ? उसने कहा कि, आप अपना जामा उतारकर मुझे दे दीजिये। मुहम्मद साहबने अपना जामा उतार कर दे दिया स्वयं नङ्गे हो गये गुफाके अन्दर

जा बैठे। अब बाहर निकलना कठिन हो गया क्योंकि, मुहम्मद साहबके पास एकही जामा था जो यहूदिनको दिया था।

उसी समयसे आकाशसे वही (आकाशवाणी) हुई कि, आवश्यक पदार्थ किसीको मत दिया करो मुहम्मद साहब ऐसे उदार थे कि, कभी २ स्वयं भूखे रहते थे, कभी बिना नमकके शाक खाकर रह जाते थे, कभी भूखसे व्याकुल हो जानेपर पेटपर पत्थर बाँधकर पडे रहते थे नमाज और अपना नित्य नियम भी किया करते थे कबीर साहबने भी मुहम्मद साहबके संतोष और उदारताकी प्रशंसा की है। ईसाभी वैसेही उदार और संतोषी थे। इञ्जीलमें दान आदि करनेकी आज्ञा है पर उसपर कौन चलता है? अपने २ आचार्य और गुरुकी आज्ञा उल्लंघन करनेके कारण सब धर्मवाले अधर्मी हो गये हैं, उनका अन्तः-करण अन्धकारमय हो गया है, ये प्रकाशको देख भी नहीं सकते। जो कोई सच्चे संत और सद्गुरुकी संगति सेवा भक्ति छोडेगा उसकी यही गति होगी क्योंकि सच्चे विद्वानों सदाचारियों संतों और सत्यगुरुओंकीही कृपासे ज्ञान प्राप्त होकर उभयलोकका आनन्द प्राप्त होता है, जहाँ सत्संग और विवेक विचार एवं संत और गुरुकी सेवा न होगी वहाँ अज्ञानता और भ्रम होगा।

साधुओंकी स्थिति।

यदि कोई गृहस्थ अथवा प्राकृतिक मनुष्य साधुओंका मान और शुश्रूषा न करे, उन्हें कुछ न दे तो भी साधुओंको अपना भजन नहीं छोड़ना चाहिये पेटके लिये अपने अमूल्य समयको नष्ट कर आत्मविचारसे रहित रहना महान् पापका काम है। पेटके लिये अपनी प्यारी आयुको नष्टकर ईश्वरसे विश्वास खो, गुरु विमुख न होना चाहिये।

प्रभु ऐसा विश्वम्भर है कि, सीमुर्ग जैसे पक्षीको भी बैठेही बैठे भोजन देता है। यह पक्षी काफ पर्वतपर हुआ करता है। उसका शरीर बहुत बड़ा होता है। वह इतना बड़ा होता है कि, यदि कभी अपने परोंको फड़ फड़ावे तो तूफान आजावे। इसी कारण सदा एकही स्थानपर पड़ा रहता है। परमात्मा उसके जीवन निर्वाहका प्रबन्ध इस प्रकार करता है कि, उसके चारों तरफ चार २ कोशतक घास तैयार रखता है जब सीमुर्ग भूखा होता है तो अपने चारों ओरकी चार कोशतककी घास चर जाता है सबेरे दूसरे दिन फिर ज्योंका त्यों घास पहिलीसीही तैयार हो जाती है। इस तरह परमात्मा उसकी रक्षा करता है। इसी तरह संसारमें कोई जीवधारी नहीं जिसको कि, विश्वम्भर भूखा रखता हो। प्रभु नित्य सबको समयपर भोजन पहुँचाता है। इसी कारण साधुओंका भी उसी

विश्वम्भरका विश्वास रखकर अपने धर्मपर स्थिर रहना चाहिये। कोई क्यों न हो जबतक अपने कर्तव्यपर दृढ़ और स्थिर रहेगा, सुखसे रहेगा, जब अपना धर्म (कर्तव्य) छोड़कर पराये, धर्ममें प्रवृत्त होगा अवश्य दुःख और कष्ट भोगेगा।

तीसा यन्त्रकी साखी।

अपने २ धर्ममें सबको सुख उपजे सब काल।
जिन निज धर्म दृढ़कै गह्यो तेई भये निहाल॥

अध्याय २३

गजलोंसे उपदेश

ग़ज़ल।

न पावे राह कोई साधु गुरु बिन। दिखावै चाह सूली साधु गुरु बिन॥
बज़ारी ज़ोर घर हरगिज़ न पावै। हो नालः आह सदहा साधु गुरु बिन॥
करे तदबीर सदहा गर शबो रोज। गदा और शाह नहिं कोई साधु गुरु बिन॥
कवाकिब ओर सवाबित सब खड़े हैं। मेहर और माहनहिं कोई साधु गुरु बि०
बहर जानिब तमाशा साधु गुरुका। न क़िबला गाह पावै साधु गुरु बिन॥
जिधर जावे उधर हैरांही आजिज़। न हो आगह आदम साधु गुरु बिन॥

ग़ज़ल—चल उतर पार साधु सेवासे। पावै खुद यार साधु सेवासे॥
होवे हरदो जहांमें बख्तावर। गुल होवे खार साधु सेवासे॥
जहां न पहुँचे कोई तू जाय वहां। पेश सरकार साधु सेवासे॥
अक्ले इन्सानकी है रसा न जहां। पहुँचे दरबार साधु सेवासे॥
पावे बहु न्यामत न जाने कोई। अस्ल इसरार साधु सेवासे॥
वस्ल बेशक हो अस्ल अपनेसे। कुलके करतार साधु सेवासे॥
आवे हरगिज़ न कालके पञ्जे। हो छुटकार साधु सेवासे॥
पागलोंका जो घर है भवसागर। छोड़ संसार साधु सेवासे॥
आगके घरमें आपड़ा आजिज। होवे गुलज़ार साधु सेवासे॥

अटका जो काली धार हो, सतगुरु न जिसका यार हो।
हरगिज़ न बेड़ा पार हो, खिदमत बिना गुरु साधुकी॥
सल्लाह नहिं मल्लाहसे, मुहरिभ नहीं उस राहसे।
इस बहर में न करार हो, खिदमत बिना गुरु साधु की॥
गुरु साधुको जो सेवता, पावे सो पूरण देवता।
रहबर न सो सत्तार हो, खिदमत बिना गुरु साधुकी॥

सदहा करे तदबीर जो, हरगिज़ न पहुँचे तीरसो।
गरदाबमें लाचार हो, खिदमत बिना गुरु साधुकी ॥
खेवट नहीं गुरु साधु जहां, किश्ती न होवे पार वहां।
बेशक अज़ाबुननार हो, खिदमत बिना गुरु साधुकी ॥
यह क़ौल सत्य कबीरका, हर दो जहाँ गुरु पीरका।
नहि पुरुषका दादार हो, खिदमत बिना गुरु साधुकी ॥
सदहा जो गोता खायेगा, आजिज़ बड़ा पछतायगा।
पावे नहीं गफ्फारको, खिदमत बिना गुरु साधुकी ॥

बिन साधु गुरुसारेही मुरदार हुये। इनकेही मेहरसे सुर मुनि सरदार हुये ॥
खाक पा सुरमै जिनसेहै मनौवर मह व मेहर। गुरुसन्तकदम चूमते भवपार हुये॥
सतसङ्गको पाये सोई सतपदको मिले। बिन साधुगुरु कोई न गमख्वार हुये ॥
सतसङ्गही हर सितम व हर कूचा गली। बदबख्त न देखते हैं लाचार हुये ॥
सत्सङ्गकी तारी जहांमें आजिज़। बिन सन्त गुरु दालिख़ दर नार हुये ॥

पावे आराम साधु गुरु सेवा। लाब सत नाम साधु गुरु सेवा ॥
काल जञ्जाल दूर हो लारेब। टूट जा दाम साधु गुरु सेवा ॥
जब मेहर इनकेसे हुआ पुरख्त। फिर न हो खाम साधु गुरु सेवा ॥
दर्द हासिल हो तुझको रोजो शब। सुबह और शाम साधु गुरु सेवा ॥
लात घर जा ऊपर मुअल्लै अर्श। पहुँचे बदबाम साधु गुरु सेवा ॥
आज़िजे अबदी हयातको पावै। जिन्दगी तआम साधु गुरु सेवा ॥

मुरब्बा।

वहां जाऊँ मेरा दिलबर जहां है। दिखा इसको जो दर परदा निहां है ॥
किधर ढूंढूं वह मुरशिद मिहरबाँ है। हुये सन्मुख हैं सब गुरु मुख कहां है ॥
कोई गुरुमुख होवै सो राह पावै। जो मन्मुख शौर दरियामें बहावै ॥
यह आलम भूल सदहा गोता खावै। हुये मन्मुख हैं सब गुरुमुख कहां है ॥
कोई गुरुमुख मुझे वह गुरु मिला दो। बला सद जन्मकी पलमें टला दो ॥
इस आजिज नातवां वह रह चला दो। हुये हैं मन्मुख सब गुरुमुख कहां है ॥

तन व मन धनसे हो गये गन्दे। जिससे तू पडगया है यम फन्दे ॥
है तू मेहमांसरामें दिन चन्दे। मौत अपनी तू याद कर बन्दे ॥

नहीं तन है नहीं धन तेरा । हुआ गाफिल है कालके घेरा ।।
जोनि सदहामें हो तेरा फेरा । मौत अपनी तू याद कर बन्दे ।।
रात दिन मौत हर घड़ी कर याद । कर दिया उम्र अपनी तू बरबाद ।।
पापका बोझ सर पै लीहै लाद । मौत अपनी तू याद कर बन्दे ।।
दोस्त अपनेसे तूने पीठ दिया । दुश्मनाने रुख प्यार डीठ दिया ।।
ज्ञान और ध्यान गहरा गीठ दिया । मौत अपनी तू याद कर बन्दे ।।
दोस्त दुनियाके तुझको मारैंगे । आग दोज़खमें खींच डारैंगे ।।
कौन आजिज़ तुझे उबारैंगे । मौत अपनी तू याद कर बन्दे ।।

ग़ज़ल ।

सङ्ग सोज़ांसे है न डर जिनको । रह बदोज़खके रुख है दर जिनको ।।
सालहों की सलाह इनसे कहां । साजे सुवहां सजैं घर जिनको ।।
जानै सो हेच खाकसारोंको । हक़ करे जेर और जबर जिनको ।।
डूब कर सारे मर गये भोंदू । अक्ल आला मदद न सर जिनको ।।
दीदना दीद इनकी है आजिज़ । आता है बहुत कर्रो फर जिनको ।।
यथा—बदोदारैन सुर्खरू गुरुमुख । होवे तहसीन चारसू गुरुमुख ।।
उनसे कोई न जगमें बख्तावर । खल्क खुश और नेकखू गुरुमुख ।।
दोस्त इनका है सब जमीनो ज़मा । कोई बाकी नहीं अदो गुरुमुख ।।
सारे कामोंसे हो गये फ़ारिग़ । रही कोई न जुस्तुजू गुरुमुख ।।
तर गये सो जहाज़ गुरु पर बैठ । देख हरगिज़ न कालको गुरुमुख ।।
अम्बरो ऊद इत्रियात बराह । पुर बहर सिम्त मुश्को बू गुरुमुख ।।
दस्तगीरी हैं जिनको सत गुरुकी । बेकार होवै एक मू गुरुमुख ।।
तन मन व धनजो अपना वार आज़िज । इससे बढ़कर न गुफ्तुगू गुरुमुख ।।

ग़ज़ल ।

प्रह्लाद पिता साधुकी तौहीन किया । रावनभी गया साधु की तौहीन किया ।।
निवंश हुआ कंस जो था उसका चिरागादी । उसको बुझा साधुकी तौहीन किया ।।
दुर्योधन मगरूर हुआ शौकतो शान । बाकी न रहा साधुकी तौहीन किया ।।
राजा सगर पूत जो थे साठ हजार । सब गर्द मिला साधुकी तौहीन किया ।।
कृष्ण औलाद जबरदस्तो मगरूर हुये । ग़ारतसो किया साधुकी तौहीन किया ।।
शद्दाद जो तामीर किया बागे बिहिश्त । पत्ताल चला साधुकी तौहीन किया ।।
नमरूदहो मरदूद भरा कुब्र जो मगज़ । मच्छरसे खिला साधुकी तौहीन किया ।।

फरऊन हुआ दूं न बमै सदर नशीं । दरियामें डूबा साधुकी तौहीन किया ॥
वेद और कुतुब रब्बानी मग़रूर डूबे । जो सब उलमा साधुकी तौहीन किया ॥
गुरु पीर बनदवीर पन: उनको जो छोड़ा। धर्मराज धरा साधुकी तौहीन किया॥
बद फेली खजना हुये पर कुफ्र हो दिल । तारिक मरा साधुकी तौहीन किया ॥
सबयमकी खोराक ऐसे आदम आजिज । न कोई बचा साधुकी तौहीन किया ॥

गजल

सर बसर मूनी नर बदारे हमल । मआसियतके लिये करारे हमल ॥
वे गुणाहोंको कैद कौन करे । आसियोंको हुआ मदारे हमल ॥
हमल दोजखमें जो हुआ महबूस । गन्धको गन्धकी नआर हमल ॥
केते है गन्दिगीके जो कीड़े । उनको ही बूदो काश प्यारे हमल ॥
होवे क्योंकर पसन्द आदमको । यह जहन्नुमकी आसो ग़ार हमल ॥
मुजरिमोंके लिये बना यह मकां । बन्द हैं दर अजाबो नार हमल ॥
जब पड़ा कैदमें पुकारे तू । दर्द दुख हन्ह बेशुमारे हमल ॥
तोबः २ कर बसत मिन्नत । कीजिये गुफ़ा र रुस्तगारे हमल ॥
अब न हरगिज भुलाऊं तेरा नाम । रख पनाह मुझको अज शरारेहमल ॥
सब गुनहगार वे गुनह न कोई । जिसको हैं सौन रोज़गारे हमल ॥
वे गनाहान हैं सूरत अस्ल बमूल । गुनह आलूद हैं शिकारे हमल ॥
जहां जावें वहां मुक़हर हो । पुर है सब गर्द और गुबारे हमल ॥
एकसे छूट दूसरे हो बन्द । नहिं पायान है पाब निहारे हमल ॥
जब मिहरबां हुये करीमे रहीम । कर दिया दूर भारी प्यारे हमल ॥
आया बाहर सो क़ौलको भूला । याद आवे न अपना गारे हमल ॥
फस मया पनियवी मोहब्बतबसं । कौन पूछे वह गमगुसारे हमल ॥
जन्म साबिकका यह क़सूर आजिज़ । पा उतर सर नल न चारे हमल ॥

ग़ज़ल—बैठे खुद जाय मैं जाकर दिल दीवाना मेरा ।
हुब्ब महबूब लगा कर दिल दिवाना मेरा ॥
काल चक्करसे बचैगा भी तदबीर है एक ।
मुरशिद पनः आकर दिल दीवाना मेरा ॥
सतगुरु कदमें खाक कोहल नूरसे देख ।
आंखोंमें सजा कर दिल दीवाना मेरा ॥
होवेगा अमर फेर मरेगा न कभी ।
उसकीही उलशको खाकर दिल दीवाना मेरा ॥

जान बख्श तेरा पानी पाशोबः पीर ।
पाक हो इससे नहाकर दिल दीवाना मेरा ॥
सुर्खरूहो बदो कौनैन कदम उसकी पकड़ ।
फ़रमान उसकाही बाज कर दिल दीवाना मेरा ॥
यही तदबीर नहीं और छूटे तब आजिज़ ।
इसकीही गीतको गाकर दिल दिवाना मेरा ॥

ग़ज़ल—साहब जो कुल जहान, है साधुओंके बीचमें ।
वह आप बे गुमान, है साधुओंके बीचमें ॥
जावै जिधरको संत, सो जाहिर वहांही है ।
इस घरकी निरदबान, है साधुओंके बीचमें ॥
कहने व सुननेमें कभी, जो आता ही नहीं ।
उस लाबयां बयान, है साधुओंके बीचमें ॥
हर तरफ़ जाके देख, जहां साधु मण्डली ।
इस लामकां मकान, है साधुओंके बीचमें। ॥
आजिज़ न जान फर्क, साहब व सन्तमें ।
जो कुल पै मिहरबान, है साधुओंके बीचमें ॥

ग़ज़ल—कलियुगका ऐसा ज़ोर है, वेद और कुतुब ख्वां शोर है ।
हर दिलमें पैटा चोर है, साधुकी पूजा उठ गई ॥
हुक्काम और शाहे जमां, पूछै नहीं आंबिद कहां ।
अन्धेर फैलै दर जहां, साधूकी पूजा उठ गई ॥
कोई कहता हम आलिम बड़े, मेरे हाथमें सब हत्थकड़े ।
सब दूर हकसे यों पड़े, साधूकी पूजा उठ गई ॥
दुनियामें सब अन्धेर है, यमराज सबको घेर है ।
फिर मौतमें क्या देर है, साधूकी पूजा उठ गई ॥
कोई दस कितावैं पढ़ गया, अर्शबरीं पर चढ़ गया ।
वह ज्ञान अपना गढ़ गया, साधूकी पूजा उठ गई ।
अरबी व तुरकी फ़ारसी, अंग्रेजी सो सब खारसी ॥
देखै कोई न आरसी, साधूकी पूजा उठ गई ।
जब हकसे अपने ऐंठना, किया फिक्र हुजरे बैठना ॥
राजे निहां न पैठना, साधूकी पूजा उठ गई ॥

सब खाम कोई न पका, कोई न मस्तपर चढ़ सका।
आजिज़ भी सबसे कहि थका, साधूकी पूजा उठ गई ॥

गज़ल।

दोनों हैं बला बिहिश्त दोज व। उनको है सिला बिहिश्तव दोज़ख़ ॥
जिनको न खबर है अपने घरकी। आदम न चला बिहिश्तव दोज़ख़ ॥
जो दिल है तमीज़ो फ़िक्र खाली। है सूये बला बिहिश्तव दोज़ख़ ॥
मख़सूस न यह बइन्न आदम। हैवांको भला बिहिश्तव दोज़ख़ ॥
इन्साको पसन्द वह न हरगिज़। पुरखौफ़ गला बिहिश्तव दोज़ख़ ॥
एरा में आन कर अमल कर। फिर दोनों कला बिहिश्तव दोज़ख़ ॥
आवेगी जब यक हवा खिज़ानी। तब आग जला बिहिश्तव दोज़ख़ ॥
आदम हुआ बाहर अज़ अदन बाग़। जब रोज़ ढ़ला बिहिश्तव दोज़ख़ ॥
ख़ाली हैं ज़मान ज़मीने आजिज़। खाक और डला बिहिश्तव दोज़ख़ ॥

गज़ल।

सोचकर दिलमें बे खबर आदम। छोड़ दे ख्वाब और खुमर आदम ॥
कौन मजहब तेरा है कौन खुदा। पूजता किसको बे बसर आदम ॥
देख और सोचकर बफ़िक्रो तमीज। यह न मशरब है यह तो शर आदम ॥
जिसको तू पूजता खुदा करके। सो खुदा है न अजदर आदम ॥
भेडिया या भेडका बचो पानी। तुझको है खौफ और खतर आदम ॥
जिससे आरामकी उम्मीद तुझे। बेशक उससेही हो जरर आदम ॥
जिस प्यालेकी शौकसे पीता। आब हैवां न वह जहर आदम ॥
जो कि मुहसिन यकीन बाबरकी। करे वह जेर और अबर आदम ॥
जिसको जाना है ख्वान मकां अपना। वह न हरगिज है तेरा घर आदम ॥
कर इबाबत तिहारतो तकवा। बेतफ़क्कुर है बे समर आदम ॥
लाख चौरासीमें फिरा मारा। अब असल अपना ध्यान धर आदम ॥
देह यह और वक्त यह तेरा। अब जरा दिलमें होश कर आदम ॥
आदमी है तो होश कर आजिज। गर बहायम से हैं तो मर आदम ॥

गज़ल।

वक्त गुज़रे पै अपने ग़म कीजे। याद खुद सानये सनम कीजे ॥
जाकर होश पास देख उसे। मुरदः दिल अपना फेर दम कीजे ॥
जिसको तू चाहता वह दूर नहीं। हुब्ब महबूब चश्म नम कीजे ॥
छोड़ दे सब जहानो बुतां पामाल। अपने मह आगे पुश्त खम कीजे ॥

नफ़स अम्मारा दुश्मनों कर गिर्द । सोई सामान अब वहम कीजे ॥
होके आदम न होवे चौपाया । रूह अपनेपै मतसम कीजे ॥
तू अगर वस्ले यारख्वाह आजिज । दूर शहबात बिलक़लम कीजे ॥

ग़ज़ल ।

कहां आदम कहां है यह बहायम । हैं सुबहत जिनकी तू मसहुरूर दायम ॥
न पावैं अक्ले इन्सानी सतूरां । तू कर दे जल्द तर्क यह लूम लायम ॥
गुरू चेले पड़े दर बहर काली । हैं खाते गोता सदहा दायम दायम ॥
जो दिल घोड़ा जगह अपनेको छोड़ा । करें फिर कौन वह बर जाय कायम ॥
करे तदबीर सदहा क्यौं न आजिज़ । यह दिल गरिन्द क्यौंकर हो मुलायम ॥

तरजीय बन्द ।

गुरू क्या चीज़ हम उसको न जाना । नहीं कोई साधु हम उसको न माना ॥
गुरू न आदमीका आदमी है । खुदा मुरशिद हम उसकोही पहिचाना ॥
हैं सब जुहला खबरक्या है खुदाकी । हैं आकिल हमवहम सबतें सयाना ॥
हुआ हैन हिन्दसामें कोई मारूफ । कोई कहलाव फिलसिफे जमाना ॥
कोई है डाक्टर आफ बार नामी । कोई है मास्टर आफ अर्स्ट दाना ॥
बहुत दुनियामें लक़ब मौसूफ । बसफ़े और कितने हैं निशाना ॥
हमारा ज्ञान सबके सर चढ़ा है । कि हमने इल्म अंगरेजी पढ़ा है ॥
मुअज्ज़िज उदहोंपर जब होके आवे । हुकम खुद खादियोंपर यों लगावे ॥
नहीं कोय मुसतन्द हो भड़कते । मेरे नज़दीक आने कोई न पावै ॥
हुआ जब मग़ज पुर किब्रो मनीसे । न सूझे हक़ नज़र क्या इसको आ ॥
नहीं रब्बो रसूलो साधु गुरु क्या । नहीं कुछ देख नबीना बनावे ॥
हुआ दोज़हर जब यकजाय दिलमें । कुलुब ख्वानी व दौलत जो कहावे ॥
तो फिर क्यौंकर न मुरदः होवे मर्दुम । निगह तब साधुगुरु हरगिज़ न आवै ॥
हमारा ज्ञान सबके सिर चढ़ा है । कि हमने इल्म अंगरेजी पढ़ा है ॥
कोई है नेचरी कोई दिहरीया । कोई मन मौज अपनेमें लहरीया ॥
हमारी रह न आवे कोई रहज़न । कि हम हैं अपने चोरोंके फेरीया ॥
कि हम हुसियार और खुद फेल मुख्तार । डुबावैं अपने दुश्मनको बदरिया ॥
मेरा दिल इल्म अंगरेज़ीसे रोशन । हमारी बहसमें न कोई ठहरिया ॥
कोई कूचा बकूचा लेकचरी है । कोई औरों नसायह पन्द करिया ॥
ज़बांदानी वमन्तिक़ सीख आजिज़ । हुआ हङ्कार केसिरमें जोभरिया ॥
हमारा ज्ञान सबके सिर चढ़ा है । कि हमने इल्म अंगरेज़ी पढ़ा है ॥

पढ़ लिया हिन्दू इल्म अंगरेज़ी। भर गया जबकि इल्म अंगरेजी ॥
औवल अल्लाह नामको भूला। आ बसा जब कि इल्म अंगरेज़ी ॥
जब न अल्लाह रहा कहां गुरु पीर। आ समा जब कि इल्म अंगरेजी ॥
नहीं गुरु पीर पेशवा नहिं रब्ब। घर किया जब कि इल्म अंगरेजी ॥
जब न रब्ब है तो साधु कहां आजिज़। हक़ भला जबकि इल्म अंगरेजी ॥

अंग्रेजी कुतुब क़िस्सा जो मेरे नज़र आया।
आग़ाज़ अल्लाह नामसे भी सो सब हज़र आया ॥
कोई न कहै राम नहीं गाड न यहवाह।
बेसमझीहीमें सारी उमरका गुज़र आया ॥
अल्लाह जो किया तर्क तो दिल साफ़ कहांहो।
तनपरवरीको फेर तनासुखका घर आया ॥
इन्सानी व हैवानी हालतसे गुज़र कर।
फिर जामः नबातात जमादात दर आवा ॥
गरदाब चौरासी यही दरियामें है आजिज़।
खागोता सद आदम तन यह फिर आया ॥

बैठ जा साधु सङ्गतमें। सरझुका जल्द साधु सङ्गतमें ॥
तनो मन धनको अपने कर कुरबान। धर बना जल्द साधु सङ्गन्तमें ॥
साधु रहबर हैं दीन दुनिया के। बख़श ला जल्द साधु सङ्गतमें ॥
जाके तू अपने अस्ल रूपको देख। इल्म पा जल्द साधु सङ्गतमें ॥
जगमें ऐसा न दोस्त कोई आजिज़। दरदरा जल्द साधु सङ्गतमें ॥

कर दिया खार तूने ऐ कलियुग। दूरकी यार तूने ऐ कलियुग ॥
न वफ़ाही नहीं है खुश बुलकी। घर दि या नार तूने ऐ कलियुग ॥
नेकहै कोई और सबको क्या। बद बिकिरदार तूने ऐ कलियुग ॥
नहीं गुल है कहीं नहीं बुलबुल। की है पतझाड़ तूने ऐ कलियुग ॥
अब कहां मौसिमे बहारी है। भर दिया खार तूने ऐ कलियुग ॥
गुल नहीं है तू उड़ गई बुलबुल। बूम बैठा ऐ ऋतूने ऐ कलियुग ॥
दी भर सारे जगमें ज़ागो ज़मन। सिम्तहर चार लूले ऐ कलियुग ॥
इक जहरदार जो हवा लाया। नाग फुंकार तूने ऐ कलियुग ॥
मुरदः सारे हुये कोई ज़िन्दा। दाब दर ग़ार तूने ऐ कलियुग ॥
है रम्क जान बाक़ी आजिजके। कर दिये मुरदार तूने ऐ कलियुग ॥

यथा ।

यह धन विद्या पसारा केते दिन को । यह नौबत और नक़ारा केते दिनको ।।
यह दौलत जाहो-शौकत शानो हशमत । हुआ तेरा अजारा केते दिनको ।।
सिकन्दर हाथ खाली हो सुधारा । वह कैसर और वारिद केते दिनको ।।
किधर वे जो किये दावै खुदाई । यह मोम और सङ्ग खारा केते दिनको ।।
बक़ैद तोहमात इन्ग्राँ बंधा । यह दुनिया दोस्त प्यारा केते दिनको ।।
गुज़र जावेगी आजिज दीदनी सब । खयालो ख्वाब सारा केते दिनको ।।

यथा– क्यों जिल्लन निकालता है नादाँ । दुनियामें बात है शादाँ ।।
ग़ाफिल न हो अस्ल अपनी याद । हर शामो सिहर व बइमदादाँ ।।
ख्वाब और ख़्याल कुल आलम । हैवानो नावत और जमादाँ ।।
आनन्द तो होवे सङ्ग सुलहा । कर तरक तू मेल बदनिहादाँ ।।
उम्मीद उससे रख तू आजिज़ । यकता है जो बखश दिल मुरादाँ।।

यथा– आया यहां अज्ञान है, दुनियामें रोना पीटना ।
नहीं अस्ल अपना ध्यान है दुनियामें रोना पीटना ।।
गम और अलमका बहार है, कोई न बरखुरदार है ।
हसता तू क्या नादान है, दुनियामें रोना पीटना ।।
नाच और न कीबकी बोल क्या, नौबत नकारा ढोल क्या ।
आफ़ातकी घमसान है, दुनियामें रोना पीटना ।।
सर पर जो काल कलोलता, मगरूर हो क्या बोलता ।।
जाको अपने व आमान है, दुनियामें रोना पीटना ।।
महरिम नहीं बन बी के, गुर्रा है दिलमें शेखके ।
पूर दरद चारो खान है, दुनियामें रोना पीटना ।।
काजी मशाय बोलते, इसरार अल्लाह तोलते ।
अन्धा यह बे पहिचान है, दुनियामें रोना पीटना ।।
बेचूं अलख अल्लाह है, जो कुलका क़िबले गाह है ।
इसको नहीं कोई जान है, दुनियाँमें रोना पीटना ।।
दायम गुनह आलूद है, आना यहां क्या सूद है ।
हर सिम्त खींचोतान है, दुनियाँमें रोना पीटना ।।
होली तमाशा राग है, सो हंस नहीं कोई काग है ।
आदमके नहीं शायान है, दुनियाँमें रोना पीटना ।।
शबरोज मरता बैल है, मेहनत मशक्कत मैल है ।।

खाना तुझे एक नान है, दुनियाँमें रोना पीटना ॥
साधुओंकी मुहब्बत नहिं किया, गादम न सो हैवाँ जिया ।
गुरु बात रख नहिं कान है, दुनियाँमें रोना पीटना ॥
हक्का कबीरा यार हो, सब मन्जिलोंके पार हो ।
तब पाओ अपना मकान है दुनियाँमें रोना पीटना ॥
जब तक यहां लोबास है, तबतक नहीं वह पास है ।
कर तर्क मल वह आन है, दुनियाँमें रोना पीटना ॥
सच्चेसे मिलने जाइये, तब आप सच हो जाइये ॥
दिनदोका तू मिहमान है, दुनियाँमें रोना पीटना ॥
मुरशिद हक़ीक़ी रहबरी, इसकी उम्मीद आजिज़ करी ।
सब साहबे सुलतान है, दुनियाँमें रोना पीटना ॥

मुखम्मस तर्जियाबन्द ।

है नहीं बिन्द और नहीं है नाद । सारे जिन्नो परी व आदमज़ाद ॥
आगये काबू कैल जो बेदाद । बोझने की बदी लिया शिर लाद ॥

ऐ फ़िरोतन तुम्हें मुबारकबाद ।

नहीं कैसरे सिकन्दरो बहराम । नहीं दारा रहा नहीं जिस्मजाम ॥
सब शहनशाह मर गये नाकाम । एगरीब आजिज़ और दिलनाशाद ॥ऐ०
कहां भैरव गया कहां हनूमान् । कहां अरजुन व भीमसे बलवान् ॥
कहां हुकमा व दानये दौरान् । दिल शिकस्तः जिन्हें खुदा दरयाद ॥ऐ०
कहां वे हैं जो परबतां तौलैं । और फसाहतसे बोलियां बोलै ॥
कहां वे हैं जो रम्जको खोलैं । कहा गढ़ लङ्क बाग़ है शद्दाद ॥ ऐ०
नहीं ज़ालिम रहा नहीं मज़लूम । नहीं खुशबख्त और नहीं बदशूम ॥
नहीं बुलबुल रहा न ज़ाग़ और बूम । कहां हरनाकश और कहा पहलाद ॥
ऐ मेरे हिज्र आ खबर लीजे । करम और फ़ज़ल अपना अब कीजे ॥
बखश मेरे गुनाहोंको दीजे । सुने आजिजका मेहरकर फरियाद ॥

ऐ फ़िरोतन तुम्हें मुबारकबाद ।

मुखम्मस तर्जियाबन्द ।

आ गया यह, अजब ज़माना है । दुनियवी कुल कारखाना है ॥
अल्हे दुनिया वाहिदाना है । एक सा सबको कर दिया तूने ॥

हाय कलियुग यह क्या किया तूने ॥

बापको मानता न बेटा है। माल मिल्क न मुल्क समेटा है ॥
सो न इन्सान् ेक घेटा है। दूरकी शरम और हया तूने ॥ हाय० ॥
गुरुको माने नहीं जो चेला है। साधु बिन फिरे अकेला है ॥
मतलब अपनेहीका ेभेला है। अपनी सूरतबना लियातूने ॥ हाय०॥
कीचसे कीचको जो धोवेगा। साफ़ कपड़ा कभी न होवैगा ॥
करके मिहनत भी काम खोवेगा। दूरकर गुरु दिया मिया तूने ॥ हाय०॥
गोश्त खाते शराब पीते हैं। रोज़ो शब एशहीमें बीते हैं ॥
एक लमहा न हक़को चेतै हैं। भरे आबिदमें भी रेया तूने ॥ हाय० ॥
साधु गुरु सेवेगा तो पावे राह। नहीं तो जाने ऐन है चाह ॥
देख आजिज़ तबही तू क़िबले गाह। बदीके बीजको बोया तूने ॥

गज़ल—कुल सलातीन बन्दा इरमाँका। सब सअदात है हक़के फरमाँका।
दिन बदिन भर गया इसीसे मग़ज़। खायाकिरमानहशाहकिर माँका ॥
दायमुल्मर्ज लाहक़ आलम है। क्या खबर अपने अस्लदरमाँका ॥
जाने जिसको ख़ुदा शफ़ी अपना। उसके पीछे खबर जोहरमाँका ॥
कौन आज़िज़ तेरा ख़ुदा व रसूल। किसको है भेद अस्ल उरफाँका ॥

मुखम्मस तर्जियाबन्द।

अहले दुनियाके, साधु घरजाये। भाव भक्तिकी बू नहीं पाये ॥
अक्लो ईमान कालने खाये। देख यक दो ज़बान कर आये ॥
धर्म मरदा मू कान कर आये ॥
साधु जब दुनियवीके घरपर जा। उसको लाजिम है कहता बैठो आ ॥
जब नहीं खान पान खातिर पा। आक़बत उस गुमानकर आये ॥ धर्म० ॥
जब कि, साधूको देखे संसारी। उनसे नहिं बोल बोलते प्यारी ॥
नहिं तवाजा न इज्ज़से यारी। गुनह इन सर अज्ञान कर आये ॥धर्म०॥
धर्मकी बू जहाँ नहीं पाना। हरगिज इस दुनियबी न घर जाना ॥
अन्न पानी न उनका फिर खाना। अमल ईमान चलान कर आये ॥धर्म०॥
यह हमेशा: से रस्म आया है। साधु सेवा सदा बताया है ॥
आज़िज वह ढङ्ग जहां न पाया है। देख वह दर ग्लान कर आये ॥
धर्म मुरदा मू कान कर आये।

गजल ।

हुआ मगरूर क्योंकर आन दिन चार । रहेगा तेरा शौकते शान दिन चार ।।
हुआ अन्धा व मस्ती ऐश बइशरत । कमालो फ़ज़ल और बुहरहान दिनचार।।
अकेला आया है जावै अकेला । मेरा और तेरा है घमसान दिनचार ।।
नहीं कोई रह फ़ना होवे गे लारेब । किसीका तो पकड़ दामान दिनचार ।।
पकड दामन तू साचे सद्‌गुरु आजिज़ । यह बे बीना न दस्तरख्वान दिनचार ।।

ग़ज़ल—जो कुछ कि, नजर आता है तेरे कुछ न रहेगा ।
महासूस व मरगूब सगर धार बहैगा ।।
ताजो तख्त व बख्त सो सब काल चक्करमें ।
फानी है व मुरदार सभी कुछ चुछैगा ।।
भक्ति व गरीबी है यही न्यामते दुनिया ।
सद्‌गुरुकी पनह आ नहिं तो काल आग डहैगा ।।
चौरासीकी योनिमें पडा बैठ ऊपर हो ।
यम जालिमकी इसमें बड़ी मार सहैगा ।।
आज़िज़ होवें जो आज़िज़ इस बहरके गरदाब ।।
बिन सद्‌गुरुके कौन तेरी बाँह गहैगा ।।

ग़ज़ल ।

न सद्‌गुरु भक्ति जाना तूने अ सोस । न उसकी बात माना तूने अफसोस ।।
बहर जानिब वह कहता है ब आवाज़ । न अपना कान तानातूने अफ़सोस ।।
वह हर जानिब वह हर रूखसे पुकारें । न जाना मिहर बानातूनें अ सोस ।।
भटक रह रास्तेसे फिरता किधरको । अमल बद मार खाना तूने अ सोस ।।
चला तू चाल है सद्‌गुरुके बर अक्स । किया सब कारखाना तूने अफ़सोस ।।
जो कहते २ ही आज़िज थका वह । किया इस घर न थाना तूने अफ़सोस।।

मुखम्मस तर्जीया बन्द ।

गुरुको भूलै खुदा तूझे भूले । जाके यमराज दर ऊपर झूलै ।।
गो कहर बान तू कहरबान वह । हा हो गये जाके आगमें पोखे ।।
गुरु मिहरबान तो मिहरबान वह । पाते न्यामत हैं लंगडे और लूले ।।
गुरुके वे मेहर दौलते ईमाँ गुरु । कत्ल करेको हाथियाँ होले ।।
गुरुकी पूजा बिना धर्म ईमान ।।
हो गया मुरदा इसमें शक मत जान ।।

गुरु लखावे अलख सो हो पुर नूर । इसके दायासे पाप होये धूर ॥
गुरुकी भक्तिसे साफ़ ईमान है । सो करे मुश्किलात सारे दूर ॥
सो झुकावे कर्म ज़ल अल्लाह । दीन दुनियांकी सख्तियां कर चूर ॥
देवे गुरु आँख होवे रोशन दिल । हेच मालूम होवे गिल्माँ हूर ॥

गुरुकी पूजा बिना धर्म ईमान ।
हो गया मुरदा इसमें शक मत जान ॥

शिष्य अपने गुरुकी पूजाकर । तनो मन धन सब उसके आगे धर ॥
और दरशन व उसकी कर ताज़ीम । गुरुकी पूजामें रखना अपना सर ॥
शिष्य पूजे हमेशः गुरु अपना । साधु सेवामें वह गुरु सर बर ॥
साधु सेवा करै दिलो जांसनें । आजिज़ वह गुरु शिष्य पार उतर ॥
गुरुकी पूजा बिना धर्म ईमान । होगया मुरदा इसमें शक मत जान ॥

मुखम्मसतरजीया बन्द ।

बहर जानिब है खींच व तान किसपर । मती व तूय और खाक़ान किसपर ॥
न बाक़ी कुछ है फिर इरमान किसपर । लूस और जलवये सामान किसपर ॥

हुआ मग़रूर ऐ नादान किसपर ॥१॥

यह जोरो शोर तेरा कब तलक है । जुल्म और जब्र घेरा कब तलक है ॥
कहो दुनियामें देरा कब तलक है । यह मन्तिक और तेरा बुरहानकि० हुआ ॥
तू आया किस लिये है इस जहां में । है सब सो झूठ जो आता बयाँ में ॥
वह सच्च तो छिप रहा परदः निहाँमें । नक़ारः और शौकत शानकिस० ॥हुआ० ॥
कमाल और फ़जल तेरा सब है फ़ानी । रहे बाक़ी न कुछ नामें निशानी ॥
जमालो हुस्न न और हुक्मरानी । कहां नाहक़ व हक़ पहिचान कि०हुआ०॥
जिसे तू सच्च करके दिलमें जाना । सरासर झूठ सौ बुतलान माना ॥
हुआ तू किस लिये उसपर दिवाना । न अस्लन कुछ मुड़क और मानकि० हु०॥
जिसे तू जानता है दोस्त अपना । सो दुशमन हैं तेरे नहक़ न खपना ॥
सो दिन दस पांचमें लेजाना सुपना । न कोई तेरा है तू ग़लतान कि० हुआ०॥
न तू रहेगा न यह पिंजरा रहैगा । मुहासिब रूबरू जा क्या कहैगा ॥
यह सब सामान दरियामें बहेगा । है रैय्यत कौन तू सुलतान कि० हुआ० ॥
नहीं राजा नहीं कोई रय्यत । यह आलम कुल है यहम काल बैय्यत ॥
न बरदार सब मुरदार मैय्यत । यह दुनिया दौलतो दीवान किसपर । हु० ॥
जिसे अपना तू जाने वह बेगानः । न तू पहिचानता अपना येगानः ॥
बयां करता है आजिज़ शाहदानः । हुआ नाहक़ तू सरगरदान किसपर ॥

हुआ मग़रूर ऐ नादान किसपर ॥

मुरब्बा ।

जिससे यह सब बदबू हुई तू होशकर तू होशकर ।
पहिचान सो बदखू हुई तू होशकर तू होशकर ।।
शहवत व लज्जत जो हुई तू होशकर तू होशकर ।
तेरी वासना जोरू हुई तू होशकर तू होशकर ।।
दुश्मनसे अपने प्यारके तू दूर अपना यारकी ।
पुर जहर जो क़ातिल तेरा महबूब खुद वहमारकी ।।
काटै तुझे मुरदा करे राह दिखावे नारकी ।
तेरी वासना जोरू हुई तू होशकर तू होशकर ।।
सीना लगाये वासना फिर ज़िन्दिगीकी आशना ।
ग़म अलम घर घेर है रोना सदा न हासना ।।
यह खालिया सांपिन तुझे मुरशिद मेहरबां पासना ।
तेरी वासना जोरू हुई तू होशकर तू होशकर ।।
लड़ता तू अपने अक्ससे बाहोश या मजनूं हुआ ।
खफ़क़ान तुझको होगया दिल सर बसर पुर खूं हुआ ।।
तू कौन था और क्या हुआ पहिले अलि फिर नूं हुआ ।
तेरी वासना जोरू हुई तू होशकर तू होशकर ।।
जोरूको अपने छोड़दे रिश्ते मुहब्बत तोड़दे ।
शहवात जिस्मानी चुने लज्जात दरिया रोड़दे ।।
आजिज़ न रुख माशूक हो सब भर्मभांडा फोंड़दे ।
तेरी वासना जोरू हुई तू होशकर तू होशकर ।।

मुसद्दस ।

बलखका शहनशाह था बे नजीर । थे जिस ताबे सदहा अमीर और वजीर।।
जिसे ऐशो इशरत हुई दिल पज़ीर । किया इब्राहीम तर्क ताजो सरीर ।।
खदम खाक सो हो गया ज़िन्दा पीर । उगा दिलमें जिस इल्मका आफ्ताब ।।
सो देखै मुल्क माल नकश बर आब । तूही अर्श मक्का तूही है किताब ।।

जुलूसे शहां साज़ो सामान था । जोयां दब दबः शौकतो शान था ।।
वह मारूफ दिल्लीका सुलतान था । धर्म मूरत साहब ईमान था ।।
मती सांचे सद्गुरुके फर्मान था । लिया जान दुनिया खयालो खवाब ।।
चरण धोये पिये सिकन्दर शिताब । तू ही अर्श मक्का तू ही है किताब ।।

खजाना जिसे लशकरो फील थे । शरीयत मुहम्मद बतामील थे ।।
खुदा तरसीमें जो यह ताबील थे । मुकम्मिल न इसके ब तकमील थे ।।
बईमाने इस लाम तहलील थे । मगह मुल्क था बिजलीखां वह नवाब।।
झुका सिजदे सत्‌गुरु ब आली जनाब। तूही अर्श मक्का तूही है किताब ।।
केते राजा महराजा शाहनशाह । हुये बे अदद क्या करूं मैं बयाँ ।।
बुजुरगी है जिनकी ब हरदो जहां । नमूना थे नेकी यहां और वहाँ ।।
जो मुर्शिद हकीक़ां हुआ मेहरबाँ । दिखारया उन्हें जल्द तर घर वहाब।।
न आजिज पडे फेर खिलकत खलाब । तूही अर्श मक्का तूही है किताब ।।
ग़जल—पढ़ गया सद किताब ऐ तोता । नहीं जानै जनाब ऐ तोता ।।
शीरीं गुफ्तार और बलाग़तसे । पड गया दर खलाब ऐ तोता ।।
दाम दाना बखेर है सैयाद । आपही दर हिजाब ऐ तोता ।।
अब तू आकर फँसा किससमें तू । खावे सदपेचो ताब ऐ तोता ।।
जाने इसरार यारसे आजिज । खोल वह जब नकाब ऐ तोता ।।

तर्जीय बन्द ।

कहीं भैरव पूजै कहीं हनुमान । कोई ठाकुरकी मूर्ति धर ध्यान ।।
कोई शिव लिङ्ग प्रेमसे पूजै । कहीं दफ्तर खुला है ब्रह्म ज्ञान ।।
कहीं रोजा निमाज बाँगजनी । कहीं कालीके दर पै है बलिदान ।।
हर तरफ कालकी खुली हडी । होश कर लुट गई तेरी घड़ी ।।
कोई गिरजा हरममें जाता है । पन्दो तालीमको बताता है ।।
बेखबर और की खबर देवै । धर्मकी धूलको उडाता है ।।
अन्धकने अन्धकर दिये आलम । वेद बाणी बहुत सुनाता है ।।
हर तरफ कालकी खुली हिस्ट्री । होश कर लुट गई तेरी घड़ी ।।
कोई पैरो हुआ कोई पीर । कोई नाजी हुआ कोई है असीर ।।
कोई दाना हुआ कोई नादा । कोई दिलबर हुआ कोई दिलगीर।।
कोई नेक और कोई बद किरदार । कोई आजिज है साधू कोई ।।
हर तरफ कालकी खुली हडी । होश कर लुट गई तेरी घड़ी ।।

ग़ज़ल ।

तुझे हक क्या खबर ऐ बैल तेली । फिरो दिन रात घर ऐ बैल तेली।।
मशक्कतो मिहनत कर खा खली भुस ।।
मशक्कतो मिहनत कर खा खली भुस। उसीसे पेट भर ऐ बैल तेली ।।
खलीभुस खाके जबहो मस्त बैठा । कहां दरगाह दर ऐ बैल तेली ।।

सरिफ तू पेटकी खातिर है जुता । हुआ जेरो जबर ऐ बैल तेली ॥
कि जिसीने पेटमें यह पेट पाला । जरा इस रुख निगर ऐ बैल तेली॥
कि जिसने शीर मादरको बनाया । कुछ उसका ध्यान धर ऐ बैल तेली॥
खली खाना व दायम कैद रहना । यह तुझको खूब तर ऐ बैल तेली ॥
लगा शैतान तेरे कान दिन रात । हुआ कर बैल व खर ऐ बैल तेली॥
नसा यह साधु गुरुको तू न माने । परे हो कर तू मर ऐ बैल तेली ॥
अगर जन्जाल दुनिया छोड़ भागे । चरागह घास चर ऐ बैल तेली ॥
जो फिरते फिरते आदम घरमें आया । हुआ शबसे सेहर ऐ बैल तेली ॥
इस आजिज बाज सुन उठ जाग गाफ़िल। चला ख्वाब व सफर ऐ बैल तेली॥

इस दुनियाके कोई काम सच्च नहीं हैं ।
मृत लोक नरक स्वर्ग धाम सच्च नहीं हैं ॥
यह तीन लोक झूठ बाजीगरका तमाशा ।
ब्रह्मा व ईश वाम सच्च नहीं हैं ॥
यह सारा संसार सब झूठ पसारा ।
यमकाल और जन्जाल दाम सच्च नहीं हैं ॥
नेकी बदी व स्वर्ग नर्क दोनों कहाते ।
और नाद बिन्द हाड चाम सच्च नहीं हैं ॥
सब ख्वांदे ना ख्वांदे हुकमा जमानःके ।
दुनियामें कोई पुख्ता खाम सच्च नहीं हैं ॥
यह गरदूं गरदाने और चन्द सितारे ॥
दिन रात वक्त सुबह शाम सच्च नहीं हैं ॥
पैदाइशो बक़ा फ़ना सो सारे मिस्ल ख्वाब ।
कोई आजिज माया पर नाम सच्च नहीं हैं ॥

केती जबानें सीखलीं तोता व मैना खूब है ।
लोगोंको मुतहैयर करैं बोलैं बोल अजूब है ॥
पिंजरेमें उसको बन्दकर गुफ्तारसे आनन्द कर ।
इस कैदको दह चन्दकर दुनियाका सो महबूब है॥
बोलै जो शीरीं बोल सो ले लोगका दिल मोलसो ।
सुननेको आवैं गोलसो हर एकके वह मरगूब है ॥
इल्मो फ़नू सब सीख लिया यमराजको खुद सिर दिया ।

नहिं रब्त सत्सङ्गत किबा दरियायमें सो डूब है ॥
आजिज यह सब तू छोड दे दुनियासे रिश्तः तोड दे ।
बाग अपनी इनसे मोड दे आशिक़को यह मायूब है ॥

उडकर न पार होगा तीतर बटेर भर्रे ।
आखिर शिकार होगा तीतर बटेर भर्रे ॥
कुछ सोच फिक्र करले तू देख पार परले ।
दिल कब क़रार होगा तीतर बटेर भर्रे ॥
आकाश उडके जावे वहां से पकड गिरावे ।
फ़िर सर ब दार होगा तीतर बटेर भर्रे ॥
बदबूय सारे आवे वह गुल कहां तु पावै ।
हर जामें खार होगा तीतर बटेर भर्रे ॥
जहां जाय सब बेगानः नहिं दोस्त और येगानः ।
नहिं दिल फ़िगार होगा तीतर बटेर भर्रे ॥
आजिज़की गुफ्तगू सुनकर सीख लेवे वह गुण ।
नहिं सङ्गसारोंका तीतर बटेर भर्रे ॥

जगतके जीव राम क्या जानैं । करना क्या है सो काम क्या जानैं ॥
घास चरना व बोल हैवानी । भेड बकरा सलाम क्या जानैं ॥
दबदबः दिलें दिमाग़ो दौलतो जाह । औज शाहां गुलाम क्या जानैं ॥
गंदें गुफ्तार सुन हुये गन्दे । पाक साहब कलाम क्या जानैं ॥
कैल फर्जन्द आम्बिया सिद्ध साधु । सत साहब पयाम क्या जानैं ॥
काल बखशिशमें सब हुये मदहोश । अकबर २ इनाम क्या जानैं ॥
जिन केसिरमें है अक्ल हैवानी । जिन्दगी इन्तिज़ाम क्या जानैं ॥
जो जमीनके हैं बुजदिलो गेंदी । कद्र दारुल्मुहाम क्या जानैं ॥
झूठमें जगत लग रहा सारा । वस्फ़ सो सत्य नाम क्या जानैं ॥
साधुका भेद कोई जानै साधु । विष्णु ब्रह्मा व बास क्या जानैं ॥
दुनियवी आदमी हैं सब अन्धे । काल जञ्जाल दाम क्या जानैं ॥
अक्ल और नकल पीरो कुल आलम । अस्लको अक्ल खाम क्या जानैं ॥
जोहरी कोई जान जौहर जो । बे बहा अजदहाम क्या जानैं ॥
ज़िन्दगी बखश गोश नोशिन्दः । कौन साक़ी व जाम क्या जानैं ॥
घर बघर देखिये खोरिश हैवाँ । कौन इन्साँ तआम क्या जानैं ॥

है करोडोंमें कोई रहबर एक । दुनिबवी खासोआम क्या जानैं ।।
कहां आये कहांको है जाना । अल्हे दुनिया मुक़ाम क्या जानैं ।।
कौनसी राह् चढ़ चलैं किसपर । अस्प सो तेज गाम क्या जानैं ।।
सन्त बतलावें जानै आजिज़ सो । हिन्दियां हाड़चाम क्या जानैं ।।

साखी कबीर साहबकी ।

सन्त जगतमें भगत हैं सन्त रामके पूत ।
सन्त न होते जगतमें तो राम जावता ऊत ।।

ग़ज़ल—तेरा शीरीं कलाम ऐ तूती । हुई सैद बदाम ऐ तूती ।।
पिंजरेसे तू छूट जाये किधर । कर जो तू सद सलाम ऐ तूती ।।
उड जिधर जावे तो पकड लावें । हो गई अब गुलाम ऐ तूती।।
मीठी बोलोंसे आ तुझे घेरैं । गर्द तुझ अजदहाम ऐ तूती ।।
अब तू सैयाद के हाथ पडे । होवै एक दिन तआम ऐ तूती ।।
कर दिया है तुझे हब्स दायम । यह तेरी अक्ल खाम ऐ तूती ।।
गर करे बात बावर आजिज़ की । जाप कर सत्य नाम ऐ तूती।।

तू बात को न माना खुद अकिल पर दिवानः ।
शैतान वरग़लाना कर काम मुर्ग़ बिस्मिल ।।
बे रहम क़ाजी मुल्ला तू आन इनमें भूला ।
तुझको चढावै चूलहा कर कान मुर्ग़ बिस्मिल ।।
हर तरफ़ हैं क़साई इनसे न कुछ बसाई ।
तुझे घर की न रसाई कर कान मुर्ग़ बिस्मिल ।।
आजिज़ को बात मानो उसी मेहरबानको जानो ।
मत बात अपनी ठानो कर कान मुर्ग़ बिस्मिल ।।

तू भार से लदा है खुद यारसे जुदा है ।
तेरा न हक़ अदा है क्या चीखता है गदहा ।।
कूडा कबाड़ खावैं तौ भी न होश आवै ।
वेदर्द हो लदावै क्या चीखता हैं गदहा ।।
दिनरात मार खाना उसही गलीमें जाना ।।
यह सब तेरे बिगानः क्या चीखता हैं गदहा ।।
धोबी कुम्हार लादा कहां तेरा बाप दादा ।
कहां मान और मर्यादा क्या चीखता है गदहा ।।

कर मीत से मिताई तदबीर यह बताई ॥
आजिज़ तुझे जताई क्या चीखता है गदहा ॥

पहिचान ले कसाई फिर नहीं गला कटाई ।
पञ्जे न उसके आई कर होश भेड़ बकरी ॥
गल कट्ट है जो तेरा इस घर किया है डेरा ।
सुन व आज़ पन्द मेरा कर होश भेड़ बकरी ॥
पहिले न कहना माना हङ्कार दिलमें आना ।
खुद अकिल पर दिवानः कर होश भेड़ बकरी ॥
अब तो गला कटैगा क़स्साब क्यों हठैगा ।
खुद ठाठ सो ठठैगा कर होश भेड बकरी ॥
आजिज़ खड़ा पुकारा तुम में जो हो कड़ारा ।
ले जो पुनह सहारा कर होश भेड़ बकरी ॥

अपनी जमाअत जोडै रिश्ता न जब तोडै ।
हरगिज न काल छोडै सुन बात ढक मकोडे ॥
लशकर हजारहा है न शुमार कुछ कहा है ।
हरगिज न कोई हटावै आफ़ात ढक मकोडे ॥
दौलत जखीरा सब है तेरी न रुख वह रब है ।
जा ऐश और तरब है सदमात ढक मकोडे ॥
क्यों ? जोडता जखीरा खूब यह वतीरा ।
आकर तुझे ले तौडैं धर लात ढक मकोडे ॥
पांवों तले तू पिस्ता तौ भी न तुझे दिस्ता ।
आकर तुझे ले तौडैं धर लात ढक मकोडे ॥
पांवों तले तू पिस्ता तौ भी न तुझे दिस्ता ।
आजिज की व आज सुन ले यह घात ढक मकोडे ॥

बकरीका ग़ज़ल ।

सौ बार सिर कटाया तौ भी न होश आया ।
इस बार चेत भाई तू राम बोल बकरी ॥
अब तेरी क्या खता है क्यों तेरा शिर कटा है ।
तू घास फूस खाये तो राम बोल बकरी ॥
तुझपर जो जुल्म कर है, हकसे न उसको डर है ।

सुनै वह तेरी दुहाई तू राम बोल बकरी ॥
क़ातिल तुझे जो काटै और मांस तेरी बाटैं ।
सब हो तेरी सुनाई तू राम बोल बकरी ॥
बदला कभी न छूटे घर २ के काल कूटै ।
वह दाद गर कहाये तू राम बोल बकरी ॥
सो सबसे है सयाना आजिज वह मिहरबाना ।
मुन्सिफ़ है बे अदद्दाई तू राम बोल बकरी ॥

हाथीका गजल ।

ऊँचा जो सिर उठाया, नीचे तुझे बैठाया ।
आंकुसकी मार खाया, सुन कान देके हाथी ॥
गुरुको न सिर झुकाया, ऊपरको सिर टिकाया ।
झुकना मुहाल आया, सुन कान देके हाथी ॥
गुरु संतको झुकता, ऊपर न सिर तो रुकता ॥
दुख द्वन्द होय मुक्ता, सुन कान देके हाथी ॥
सूंघे अतर लेला, दिन रात रंग मेला ।
हो बेकरार डोला, सुन कान देके हाथी ।
तेरी नाक सो बढ़ाया, इसके वसीले खाया ।
आजिज़ तुझे बनाया सुन कान देके हाथी ॥

गुरुमहात्म्यका गजल ।

तीरथ हज़ार जाओ पुष्कर गया नहाओ ।
तीरथ न ऐसी पाओ, सद गंग गुरु चरनमें ॥
तीरथ न और ऐसी, गुरु सेव जगमें जैसी ।
क्या क्या कहूँ मैं कैसी, सतसङ्ग गुरु चरनमें ॥
गुरु सेव हरिको पावे, सब युक्ति मुक्ति हाथ आवे ।
राह रास्तको दिखावे, गुण ढंग गुरु चरनमें ॥
गुरु बिन न हरिको मेला, सो पन्थ है दुहेला ।
फिर क्या करेगा चेला, सरहंग गुरु चरणमें ॥
गुरु पूजले तू अपना, जगत जात सबना ।
नाहकके मन खपना, सब रंग गुरु चरणनमें ॥

दौलत दुनियाका गजल ।

जीव अन्ध कर दिया है, जम बन्ध कर दिया ।
सब फन्द कर दिया है, यह दौलत और दुनिया ॥

दौलत जहाँ पर जावे, अन्धा उसे बनावे ।
दुख द्वन्दः कर दिया है, यह दौलत और दुनिया ॥
इसको जा छोड़ भागे, तब राम रंग लागे ।
दिल गन्द कर दिया है, मह दौलत और दुनिया ॥
दौलत करे जो घेरा, वहाँ होवे तेरा मेरा ।
जम बन्द कर दिया है, मह दौलत और दुनिया ॥
इससे है देहका सुख, जाय तो हो दिगर दुख ।
दह चन्द्र कर दिया है, यह दौलत और दुनिया ॥
यह भगतीको नसावे, फिर नरकमें बसावे ।
बुद्धि मन्द कर दिया है, यह दौलत और दुनिया ॥
दुनियासे कार दुनियाङ्क आज़िज़ और न गहना ॥
फ़र फन्द कर दिया है, यह दौलतो दुनिया ॥

तरजीअ बन्द ।

सब जाय खुद खुदाय, और नहीं है ।
नहीं ढूंढे उसे पाय, हर पूर नहीं है ॥
तदबीर करो लाख, वहाँ दौर नहीं है ।
वह दौरमें शीशः बिल्लौर नहीं है ॥
साधुके निन्दकको, कहीं ठौर नहीं है ॥ १ ॥
अन्धे बचार चश्म, साधु निंदक चेते ।
सो दोज़खमें जाय, खाँय ग़ोते केते ॥
ज़ब्बार धरमराय, पकड़ लेखा लेते ॥
हैबान बशक्ल नर, जो फ़िक्र ग़ौर नहीं कीते ॥
साधुके निन्दकको, कहीं ठौर नहीं है ॥ २ ॥
साहबको देख बेशक, है वह साधु जंगलमें ।
इस अस्लको ढूंढ़, देख जाय नक़लमें ॥
पहचानता तू नहिं, न आवे तेरी अक्लमें ।
न इल्म है इनसानकी, यह तौर नहीं है ॥
साधुके निन्दकको, कहीं ठौर नहीं है ॥ ३ ॥
साधु साहब हैं एक फ़र्क़ नहीं है ।
हर जा में वही गर्ब और शर्क़ नहीं है ॥
इस वृक्षमें फल फूल, कोई नूर नहीं है ।
बिन साधु गुरु ज्ञानी, ध्यान गर्क नहीं है ॥

साधुके निन्दकको कहीं ठौर नहीं है ॥ ४ ॥
साधुकी निन्दासे धरम करम नाश हो ।
साधुकी निन्दा से घोर नरक बास हो ॥
साधुकी निन्दा न मिहर रब्ब की आस हो ॥
साधुकी मिहर, आजिज़, जम जौर नहीं है ॥
साधुके निन्दक को कहीं ठौर नहीं है ॥ ५ ॥

मुरब्बा भौंरा ।

पिया परदेस क्या भौंरा भयोरी ।
तु ग़ाफ़िल होके सोई क्यों है बारी ॥
तु हरदम ताक बैठी अपनी पूरी ।
तु सतगुरुसे न क्यों करती चिरौरी ॥ १ ॥
कोई पायक पिया की खबर दे ।
विरहिनि जिसके बदले अपना सिरदे ॥
मेरी प्रीतमकी पाती आन धरदे ॥
तु सतगुरुसे क्यों न करती चिरौरी ॥ २ ॥
कोई मोहि प्राण प्यारेसे मिला दो ।
कि मुझ मुर्दा विरिहिनीको जिला दो ॥
जो गुल कुम्हालाया है सो फिर खिला दो ।
तु सतगुरुसे न करती क्यों चिरौरी ॥ ३ ॥
उसी सतगुरुकी सब कुदरत जहाँमें ।
वही हाज़िरों दरपरदः निहाँयें ॥
वही देखते जमीन् और आस्माँमें ।
तु सतगुरुसे न क्यों करती चिरौरी ॥ ४ ॥
मेरे साहब, मैं तेरे पायलागी ।
तेरी कृपासे मेरी भाग जागी ॥
तेरेही मिहर आज़िज हो सुभागी ।
तु सतगुरुसे क्यों न करती चिरौरी ॥ ५ ॥

तरजीयबन्द खम्सः कौआ ।

होके नाकारा तो पड़ते भुलौआ । दवें आराम हाड़ और चाम चौआ ॥
बनावे बात क्या वक़्ते चलौआ । अमरफल छोड़कर क्यों हो कोह कौआ ॥
तुझे हरिनामसे क्या काम कौआ ॥

पढ़ाकर वेद और काँकाँ किया कर । खोरिशे नापाक खा करके जिया कर ।।
कुतुब ख्वानीसे अपना दिलदिया कर । किधर आदम गया है और हौआ ।। तुझे
कि जिसने तुझको यह पोशिश दिया । न उस फर्मांबरी कोशिश किया है ।।
तेरी खोरिश और आदत सब छिया है । कहेगा क्या जब आवे बुलौआ ।। तुझे
सीखा तूने जो हुशियारी जहाँकी । खबर तुझको न इसरारे निहाँकी ।।
न परवाह तुझको आजिजके ब्याँकी । पडें सिरके ऊपर तेरे ो पौआ ।। तुझे०

तरजिअ बन्द खम्सा: (गुरुसेवा) ।

बना आदमका पुतला आवे वतींसे । खबर क्या इसको है नफ्ते आपसींसे ।।
यह घेरा चार सू शैताने लयोंसे । निगहकर अपनी इल्में दूरबींसे ।।
हैं सब नेअमत गुरु । खिदमत यकींसे ।।
पयम्बरपीर सदहा जो गुज़रते । ऋषि मुनि ओलिया सब कहते मरते ।।
न ग़लती अपनी पर जो ध्यान धरते । खबर जिनको न बिलकुल कालकीं से ।।
हैं सब नेअमत गुरु । खिदमत यक़ींसे ।।
हरीसे मफ्स हैं बे इल्म ानी । न इनको कुछ खबर घर जावेदानी ।।
हुई उनपर न मुर्शिद मिहरबानी । उठाले हाथ तू दुनिया वदींसे ।।
हैं सब ने अमत गुरु खिदमत यक़ींसे ।।
खबर नहीं जो खबर दारान आलिम । कहाँसे है नुमाँया नफ्त जालिम ।।
जो पैदा जग बचा कोई न सालिम । खबर तू पूछ अज़ गोशेः गुज़ींसे ।।
हैं सब नेअमत गुरु खिदमत यक़ींसे ।।
कोई दिलगीर दिलबरकी खबर दे । कि जिसके बदले आशिक़ अपना सिरदे ।।
हैं जिनसे बात होती है न परदे । खबरको पूछले खातिर हज़ींसे ।।
हैं सब नेअमत गुरु खिदमत यक़ींसे ।।
न जाने भेद जो बातें बनाते । न भूले साधु लुच्चोंके भुलाते ।।
न आशिक कान उनके रुख लगाते । तुझे क्या काम कोई नुकतः चींसे ।।
हैं सब नेअमत गुरु खिदमत यक़ींसे ।।
तू अपने रङ्गमें रंगा सदा रह । जगतसे पीठरू खुदबा खुदा रह ।।
फ़िराक़े यारके गमसे लदारह । तुझे क्या काम आजिजईं व आँसे ।।
हैं सब नेअमत गुरु खिदमत यक़ींसे ।।

ग़ज़ल (चींटी) ।

ज़खीरा क्या जमा करती है चिउँटी । तु किसके वासते धरती है चिउँटी ।।
नहीं जब तू ज़खीरा यह कहाँ है । बिला गाहक़में क्यों भरती है चिउँटी ।।

न यह घर है तेरा घरकी न तू है। तो फिर घर किसलिये भरती है चिउँटी ।।
जब यक दिन आनकर तुझको लताडें। न तू उस रोजको डरती है चिउँटी ।।
सिखाया तूने यक दिन शह सुलेमाँ। आजिज़ बात रुख रखती है चिउँटी ।।

गज़ल (साँप)

जर सीमसेकी जो प्यार ऐ साँप। है तेरा वह घर वह बार ऐ साँप ।।
आकरके खजाना पर तू बैठा। यह तेरा था दिल फ़िगार ऐ साँप ।।
जिस दिलवरसे दिल लगाये। उस जामें तेरा क़रार ऐ साँप ।।
ज़र सीम जहाविरात महबूब। उनसेही तेरा था प्यार ऐ साँप ।।
माशूक़के घर तुझे बैठाला। मिल शौक़से अपना यार ऐ साँप ।।
कर दूर दफ़ीनः से आज़िज़। पावेगा तू हक्क दीदार ऐ साँप ।।

ग़ज़ल——जगतके आदमी हैं डाँगर ढोर। धरम धरधरके मारे डाँगर ढोर ।।
शमअ परवानः आदमी न कोई। हिर्स हैवान प्यारे डाँगर ढोर ।।
काल काबूमें कोई नहीं इनसाँ। मरते खपते बिचारे डाँगर ढोर ।।
है बरी आदमी सब दुख द्वन्द। हाय तोबः पुकारे डाँगर ढोर ।।
पहन इनसान लवास आजिज़। जान घरको हमारे डाँगर ढोर ।।

तरजिय बन्द खमसः।

यह कुल मख़्लूक़ आतशमें जले हैं। जो मरहम हाथ हसरतसे मले हैं ।।
गुनः करनेमें हरगिज़ नहीं टले हैं। जो रोरौं संगपर उनको तले हैं ।।
क़लम वाहेसे हलवाहे भले हैं ।।

हरीसे दुनियवी हों ग़र्क़ दुनिया। गुरु और साधु जो बातें न सुनिया ।।
जो बोया तूने सोई तुझको लुभिया। न दुनिया आक़बत यमजीऊ छले हैं ।। क०
जो सीखे होशियारी कुछ जहाँकी। कहाँ जाना था सोली रह कहाँ की ।।
न जाना भेद इसरारे निहाँकी। सो हरारातें जमीं मआदिन रले हैं ।। क०
लगे इस बाग़ सदहा बेल व बूटे। दरखतों वे अदद हर जाय फूटे ।।
जो हो फलदार सो मालीसे टूटे। सो काटे जायँगे जो न फले हैं ।। क० ।।
सदाजो साधुगुरुको सर झुकाये। भजन सुमिरनसे अपना दिल लगाये ।।
दया दान और धरमकी राहबनाये। गुरु और संत फरमांसमें चले हैं। क०।
हुये जो खाके मोटे मस्त मग़रूर। हमेशः साधु गुरुसे सो रहे दूर ।।
ज़र्क़ और बर्क़ पोशिश ताजसुमबूर। सोहों बलिदान मोटे) पले हैं ।।क०।।
नहीं दिलमें जिनके रब्ब रहमान। न उनपर होवे हरगिज रहम सुवहान ।।
सोई आजिज़ पड़े चौरासीकी खान। न पावें राह सो मर मर गले हैं ।।
कलम बाहेसे हलबाहे भले हैं।

गजल ।

लगे सब स्वान इस मुर्दार दुनिया । न कोई इनसान मुर्दार दुनियाँ ।।
है कूकरो शूकरो खर सियार पियारी । सो सब हैंवान इस मुर्दार दुनिया ।।
जो मुर्दार लगे सो सब हैं मुर्दः । न उनमें जान न इस मुर्दार दुनिया ।।
न ईसमें कोई मजहब है न मिल्लत । सो चारो खानि इस मुर्दार दुनिया ।।
नहीं यह जिन्दगीकी जा है आजिज । यह सब समसान इस मुर्दार दुनिया ।।

कुत्ताका गजल ।

तू घर बघर भूंकता फिरता है कुत्ते । न तू हर्गिज सब्र करता है कुत्ते ।।
दिया था दान और किया था खैरात । जो नंग और भूख से मरता है कुत्ते ।।
जो दुर दुर सब करे और भूखा मारे । कहीं तेरा उदर भरता है न कुत्ते ।।
दिया नहीं फिर पावे तू कैसे । इसी से भूख दुख भरता है कुत्ते ।।
अगर आजिज बचन सुन सब्र करतू । तो फिर क्या यों भूखसे डरता है कुत्ते ।।

तो ग़ाओ गीत सबमिली कहो सुहागिन । जो पाया है अमरबराय सुहागिन ।।
तुम्हें हरिनामसे है काम वरनः । तू बैठ आरामसे घर ऐ सुहागिन ।।
तेरा मालिक निगह वान है । जबरदस्त तुझे कुछ अब नहीं डर ऐ सुहागिन ।।
तुझे हरदो जहांमें खुशनसीबी । तु पाया अपना घर ऐ सुहागिन ।।
तु है जुग जुग अटल तेरी सब औलादा । जमींमें और जमाँ भर ऐ सुहागिन ।।
अगर आजिज पिया का प्यार तुझको । तो यकमूदीदः दिलधर ऐ सुहागिन ।।

खसम जो मर गया है ऐ रांड । तुझे सब दुखने घेरा है ऐ रांड ।।
तू चक्की पीस खा दीवार परदे । जो अपने चर्खाको फेरा है ऐ रांड ।।
तू मिहनत व मजदूरी किया कर । तुझे दिन रात झक झरा है ऐ रांड ।।
तुझे कहाँ पलंग और कहाँ बिछौने । तुझे गमके कुए गेरा है ऐ रांड ।।
अब आजिज कहना सुन हरिनाम जपना । तू टूटी झोपडी धरा है ऐ रांड ।।
खसम तेरे बहुत हर्राफ कसबी । न हो हरगिज कभी तू साफ़ कसबी ।।
लदी तू सद गुनाहो से है दिन रात । पहेन दिन चार तू जर बाफ कसबी ।।

खोरिशों पोशिश हैं यह दो चार दिनको ।
हंसी और मसखरी और लाफ़ कसबी ।।
तेरा डेरा हो दोजख आग में जब ।
न फिर हो जुर्म तेरा मुआ कसबी ।।
न आजिज ब आज रुख तू कान करती ।
कहें गे तुझको लामो काफ कसबी ।।

किया करता है तू गट गू, समझा नहीं तू मजंमूं ।
दिन चारमें कहाँ तू, हरिध्यान कर कबूतर ॥
ऐसी गिरह जो मारी, ऊपरको ले उडारी ।
वह जा नहीं तुम्हारी कुछ कानकर कबूतर ॥
आकासमें चढ़ाया हम जिन्स में बढ़ाया ।
नहीं इल्म वह पढाया, गिरी आनकर कबूतर ॥
अपनी दिखाके बाजी लोगोंको करता राजी ।
यक दिन पकड़ ले क़ाज़ी क्या मान कर कबूतर ॥
आजिजकी बात सुनले और मनमें अपने गुणले ।
सत्तनाम सबमें चुनलें पहचान कर कबूतर ॥

सुन सतगुरुकी बैना और समझ उनकी सैना ।
दिन चारमें तु हैना, सतनाम बोल मैना ॥
सीखी जबाँ केती, थी अक्ल तुझमें जेती ।
अबतक पकी न खेती, सत नाम बोल मैना ॥
बोली अजब बोला, सर काल कर कलोला ।
तब जाब कौन टोला, सत नाम बोल मैना ॥
पढ़ पढ़ ज़बाँ खपना, माने बिगान: अपना ।
दिन दो तीन होवे सपना, सत नाम बोल मैना ॥
आजिज़ तू छोड़ पिंजर, और रिश्त: तोड़ पिंबर ।
फिर फिर न जोड़ पिंजर, सत नाम बोल मैना ॥

तू तन मन धन लगाकर अपना गुरुपूज । क़दमपर सिर झुकाकर अपना गुरु पूज़ ॥
न गुरु बिन हरिको पावे तु हरगिज़ । तू उस फर्मा बजाकर अपना गुरु पूज ॥
गुरुको मिहर पावेगा हरिको । सो सामाँ बनाकर अपना गुरु पूज ॥
गुरुको छोड हरिको ढूंढ अहमक़ । जहां पावे बुलाकर अपना गुरु पूज ॥
गुरु गोविन्दसे बढकर है बेशक । यही ईमान लाकर अपना गुरु पूज ॥
वचन कबीर साहबका यह आज़िज । जहां होवे तू जाकर अपना गुरु पूज ॥

तु ग़मसे अपने रोयाकर विरिहिनी । मुंह आँसूसे तु धोयाकर विरिहिनी ॥
उठें जब दर्द भारी तेरे अन्दर । कलेजा अपना टोयाकर विरिहिनी ॥
प्यारे बिन तेरा दुख कौन मेटे । तु अपनी जान खोयाकर विरिहिनी ॥
पपीहा ज्यों रटो अपना पिया पीय । मगुफ़लत ख्वाब सोयाकर विरिहिनी ॥

लिखाकर और किया कर वस्फ उसकी । जबाँ अपनोको गोया कर विरिहिनी ॥
तुही तुही तुही तू देख हर रुख । तु दिल दरिया बिलाया कर विरिहिनी ॥
तुयक रुख हो नजरकर अपने आजिज । भरम दरिया डुबोयाकर विरिहिनी ॥

रोतेही शामसे सेहर आया । यार अबतक न मेरे घर आया ॥
आह व नालोंमें सारी गुजरी रात । मेरी महरू न मन मिहर आया ॥
करूँ तदबीर कौन है चारा । किस लिये उसके दिल क़हर आया ॥
मेरी भिन्नत सुना मेरे क़ासिद । अब तलक नहीं प्यामबर आया ॥
नहीं आसूँके तार टूटेंगे । अबतो दिल दीद अपना भर आया ॥
तुही तू तूही तू नज़र आवे । हमः मौजब सर बसर आया ॥
नहीं तुझसे है खाली कोई जाय । हर जगह एकसा नज़र आया ॥
किस लिये वस्लसे किया महरूम । शोम बद मेरा काम कर आया ॥
हो गया सख्त क्यां तेरा दिल मोम । क्या करूँ अबतो उससे दर आया ॥
तेरा दामन न छोड़ेगा आजिज़ । जान लग तक मेरा अगल आया ॥
नहीं तेरा जो मुर्शिद मिहरबाँ है । तो एकही ढंग ज़ाहिलो वेद ख्वाँ है ॥
अगर तिशनःसे तू होवे जो बेताब । तो साक़ी हाथ प्याला हरजमाँ है ॥
अगर प्यासा नहीं तो क्या पिलावे । वह दायम दूर तुझसे बेगुमाँ है ॥
जहां चाहे तु पीय प्याले इश्क । तुझ क्या खौफ़ पीले दमाँ है ॥
तुझे मिलनेकी जब हो बेक़रारी । तू पीव उसकी जहाँ ढूंढे वहाँ है ॥
दरू भी वह बेरूसे तुझको देखे । वह जाहिर और परदः निहाँ है ॥
नहीं पहचानता उसको वह तक़सीर । अब उस पहचान आँख एसी कहां है ॥
नहीं दिलगीर माल और जानदे खुद । करशमये नाजका शेवः बुतां है ॥
कि, तेरा आह व नाला गिरियः ज़ारी । कशीदः दिल करे दिलबर जहां है ॥
कि, तू नाचीज़ व नालायक़ है आजिज़ । और वह बसकेऊपर शहनशाहँ है ॥

तेरा खुश्तर जमाल ऐ पाक दामन । तु खुश खुल्क और ख्याल ऐ पाक दामन ॥
सितारोंमें है जैसे बन्द रौशन । तु सब सखियोंमें लाल ऐ पाक दामन ॥
है तू जो अपने पीतमकी प्यारी । तेरा खुश वक्त हाल ऐ पाक दामन ॥
तेरे हुसनो नमक नाज़ो अदाके । मुक़ाबिल न जमाल ए पाक दामन ॥
फटे कपड़े व मैली गर तेरी भेस । तेरा बरतर जलाल ऐ पाक दामन ॥
इधर और उधर हरगिज़ तू न ताके । तेरा फज़लो कमाल ऐ पाक दामन ॥
[illegible] अपनेकी तू फ़र्माँ बर्दार । मिलेंगी लागज़ाल ऐ पाक दामन ॥
तेरा [illegible]विन्द हक़ तुझसे मिलादे । तू आजिज़ हो बहाल ऐ पाक दामन ॥

समझ कर ऐसा ढूंढो वर कुमारी। सदा सुखसे रह अपने घर कुमारी ।।
जो आसेबसे तुझको बचावे। रहे बाकी न कोई डर कुमारी ।।
हया और शरम तेरी रख रख जहाँमें। वही भर्तार अपना कर कुमारी ।।
यह तीनों लोक है भरपूर नारी। है सबमें एकता एक नर कुमारी ।।
उसी नरको तू पहचाने जो आजिज। वही है एक तेरा वर कुमारी ।।

तु क्या बैठ लगाकर ध्यान बगला। तू अन्दरसे कपटकी खान बगला ।।
तेरे नजदीक मच्छी कोई न आवे। जो उनमें अक्ल हो पहचान बगला ।।
दगाकी हाट यह तूने जो खोला। न आवे कोई तेरी दूकान बगला ।।
खबर जिसने न गुरुसे अपने पाया। फँसेंगे सो तेरे जाल आन बगला ।।
खबरदारोंको आजिज़ क्यों फँसावे। फँसेंगे आनकर वे ज्ञान बगला ।।

तरकीअ बन्द ।

हुई यह आग सत पुरुषसे पैदा। हुआ जिसपर है कुल आलम यह शैदा ।।
उसीसे तीन गुन और पांच तत्त्व है। उसीसे चौदहो एन्द्री हवैदा ।।
है उसका कारखाना कुल जहांमें। उसीसे खल्कको की पीस मैदा ।।
सभी सुरनर मुनीश्वर उसको पूजें। यही गुरु सिख है रोगी व बैदा ।।
जहां सत पुरुषकी भगती न पावे। वहां ऐ आग तू डेरा बनावे ।। १ ।।
उसी आतशसे पैदाइश बका है। उसीसे फेर कुल आलम फनाँ है ।।
उसी आतशकी पूजा कुल जमींमें। उसी आतशको देखो जा बजा है ।।
उसे पूजे फिरिश्ते आसमाँमें। उसीको देख कुल अर्जो समाँ है ।।
उसीका कारखाना सब नमूदार। वही ब्रह्माण्ड और पिण्डो बना है ।।
जहां गुरु साधुकी सेवा न होवे। वहाँ तू आग इल्मो अक्ल खोवे ।। २ ।।
जलाया उस आगने सारा ज़मानः। ठगे सबको किया सदहा बहानः ।।
ठगे ब्रह्मा व विष्णु शिव भवानी। ठगे सिद्ध साधु पैगम्बर जमानः ।।
ठगे सब औलिया पीराँ फ़क़ीराँ। ठगे सब अस्ल दुनिया मुजरिमानः ।।
ठगे चौरासी लाख जानदार सारे। पड़े सब जालमें मुर्गी व दानः ।।
जहां तू देख होवे साधु निन्दा। वहां ऐ आग हैं सब तेरे बन्दः ।। ३ ।।
जहां मयनोशी व शहवत परस्ती। जहां क़स्साब खाना और बस्ती ।।
जहांपर गोश्त ख्वारी, किब्र कीनः। जहां बेखबरी बेहोशी व मस्ती ।।
हैं जो कोई झूठ जुल्मो जब्र आदी। तेरी खातिर हैं उनकी जान सस्ती ।।
हैं जो तहक़ीर करते साधु गुरुकी। उन्हीको दीन दुनियामें पस्ती ।।
जहां गुरु साधुमें हो जाय खाली। वहां ऐ आग तूने आग डाली ।। ४ ।।

तुही ऐ आग खालिक है जहाँकी । तुही महरम है इसरारे निहाँकी ।।
तुही ऐ आग सब जाँदार मामूर । तुही मालिक ज़मीन और आस्माँकी ।।
तुही देती है सबको खौफ अल्लाह । तु देवे फेर अक्ल राजदाँकी ।।
जहां आजिज़ न पण्डित स्वसंवेदी । तु बैठी अक्ल पर हर वेद ख्वाँकी ।।
जहां सत गुरु न कोई हंस उसके । वहां ऐ आग तू रह बैठ घुसके ।।५।।

यथा ।

नहीं दर्वेश सा कोई जहांमें । कि जिनको फिक्र हक्क दिल और देहाँ हैं ।।
जितने दुनिया सलातीन और गनी हैं । न कोई हक्क शनास इन जेरकाँमें ।।
न जिनको अपने अपने हक्कसे खबर है । सो हैवान सूरत आदम वहाँ में ।।
ज़िन्हें हक्कसे खबर सूर्य शहदो आलम । उनहीसे हक्क इनसानी अदा है ।।
गदा है बादशह मनअम गदा है ।। १ ।।
जिन्हे शबो रोज अशरतमें गुजरते । न जो गुरु साधुओंका संग करते ।।
पचे निसिदिन ब आफातेन जमाना । तमअ हिर्सो हवस शहवतसे मरते ।।
हसद कीनः व बुग़ज़ो पुर अदावत । कभी ज़िकरो फि़क्र हक्क दिल न धरते ।।
कुछ नहीं होश जिसको आखरतकी । सरापा सद्द गुनाहोंसे लदा है ।।
गदा है बादशह मनअम गदा है ।। २ ।।
हैं फुकरा बावशाहाँ आलिमोंके । सोई रहबर है मुफनसि जालिमोंके ।।
वहीं हैं जाबना बरते खुदाई । वहां बर्खशिन्दः हैं सबप तालिबोंके ।।
वही हैवानको इनसान करते है । कायम उनसे ईमाँ सालिमोंके ।।
यही सुलतान यही सुलतान यही हैं । जमीं और आप्तमाँमें यह सदा है ।।
गदा है बादशह मनअम गदा है ।। ३ ।।
तु दिलमें देखले अपने दिवाने । अदमके मुल्क जब आदम समाने ।।
न तू तब है न मैं और है न दुनिया । न हशमत जाहका कोई कोई कारखाने ।।
फँना सब हों रहे कोई न बाक़ी । पलट जावेंगे जब कुछ जिस ज़माने ।।
रहेंगे बाक़ी आशिक अल्लाह आज़िज़ । वही बदबखत जो हकसे जुदा है ।।
गदा है बादशह मनअम गदा है ।। ४ ।।

नज़म ।

तू कैसी खूब अरबी बोलता ऊँट । पकड़ लैवेगा तौभी जब तेरा घूंट ।।
जो झींगर हैं यह पण्डित सामवेदी । सो दाऊदी लहनका खूब भेदी ।।
बतक बोले अलेमानी व युनानी । रहे बाकी व तेरी भी कहानी ।।
कबूतर तीतरो बोल अरबी तुरकी । तुम्ही कह क्या खबर उस धाम धुरकी ।।

जो बोले संस्कृत मीठी तु मोरा। तेरा गर्दन भी धरकर काल तोरा ।।
तु अंगरेज़ी ो बोले बोल मैना। तेरा भी टूटेगा यकरोज़ डैना ।।
जो शिरीं बोल तूती फारसी है। पकड़ पिंजरेमें तुझको ड़रासी है ।।
ऐ मेंढक तू सिलंगी बोल बोला। तेरे सरके ऊपर जमकर कलोला ।।
फरासीसी लातीनी सिख बैरा। तेरी गर्दन ऊपर भी छुरी फेरा ।।
जो मेगपयी बोलयी सदहा जबानाँ। तुझे मारेंगे धर कहरवानाँ ।।
ज़ीलतसे रजीलत घरमें जावे। अगर सदहा ज़बानें सीख आवे ।।
हुआ हैवान तू इनसान मूरत। न पहचाना जो अपनी अस्ल सूरत ।।
किया था किसलिये आदमको पैदा। हुआ तू किसके ऊपर आनके शैदा ।।
तू खालिक़ याद कर अपना ऐ नादाँ। शबोरोजो शाम बाम दादाँ ।।

ग़ ल–यह मान मड़क तेरा सो दो दिनमें गुज़रजा।
यह भीड भडक डेरा सो दो दिनमें गुजरजा।
यह शान और शौकत इधर उधरका सैर।
हर चार सिम्त फेरा सो दो दिनमें गुजरजा ।।
यह माल मुल्क जाह और हशमत व कुलाह।
यह दुनअवी उरझेरा सो दो दिनमें गुजरजा ।।
इससे न बडी नेमत है यह देह बशरकी।
कागज़का दुनी बेरा सो दिनमें गुज़रजा ।।
सत नाम यक साहब सच पकडले आजिज़।
यह तेरा और मेरा दो दो दिनमें गुज़रजा ।।

छिपाया यारको ऐ शोर बखते। लखाया ग़ारको ऐ शोर बखते ।।
किया दिलने मेरे दिलबरसे परदः। जताया नाज़को ऐ शोर बखते ।।
रहे रहमां तू कर दिया बन्द। बताया मारको ऐ शोर बखते ।।
जहर धरदी हयाते आबकर दूर। कियाबन्द कारको ऐ शोर बखते ।।
नहीं नेमत सरासर गन्दगाकी। लगा अम्बारको ये शोर बखते ।।
गया जब भूल आजिज़ ठग भूलाया। दि ाया दारको ऐ शोर बखते ।।

साधुसेवा जो त्याग दुनियादार। हर तरफ देख आगदुनियादार ।।
देख आतश जिधरको जावेगा। फिर किधर जावे भाग दुनियादार ।।
साधु गुरु बिन कहां ठिकाना और। है पडा पीछे नाग दुनियादार ।।
कुछ कर सोच दिलमें ऐ नादां। अब तू उठ और जागदुनियादार ।।

तेरे दिलदील: भी मुकद्दर है । मोडले अपनी बाग दुनियादार ॥
संत सेवा बिना न पावे राह । उनकी खिदमतमें लाग दुनियादार ॥
संतके जा पकड कदम आजिज । देख तब राग रँग दुनियादार ॥

साधु सेवा करो भला होवे । इससे तन मन जो निर्मला होवे ॥
साधु सेवा जो करे मुबारक सो । इससे दूर अपनी बला होवे ॥
संत गुरु बिन फ़तह न पावेगा । गर तेरे हाथ रह कला होवे ॥
संतकी, रोशनीसे तब कुछ देख । होवे जों रातदिन जो ढला होवे ॥
संत बिन हो न तू रहा आजिज । कैसाही गर तू दिलचला होवे ॥

मुरब्बा ।

दुनिया पडे बनाम खुदा जो कमायेगा । गर पेटभरने अपनेमे ज्यादा तू पायेगा ॥
देनावहक जरूर तेरे हकमें आयगा । खुमस जकात भूल धनी मार खायगा ॥
हरगिजन भूल दुनिअबी खुमसजकातको । जिसने तुझको दिया उसलाय मौतको ॥
तकसीम करता है सोईहरयकके कूवतको । खुमसजकात भूलधनीमार आयगा ॥
देना तुझे जो कुछ है सो दहीके छूटेगा । गरदेनेको न देवेतो घर काल कूदेगा ॥
दौलत मताअ माल सबयकरी रोज लूटेगा । खुमस जकात भूलधनी मार [illegible]यगा ॥
यह तुही शाही शहनशाह आलमीं । छूटे नहीं बहुनिपान छुटेगा सो वहीं ॥
जाहिरकी आँखदेख बातिनकी भी बबीं । खुसम जकात भूल घना मार खायगा ॥
खुमसबजकातदी नहीं कारूँ होहलाक । जिनको नहीं है बौफखुदाबर तरी पाक ॥
करतेबसर रहे जिन्दगी अपनी वाक । खुमसजकात भूल घनीमार खायगा ॥
खुमः जकातजितने हैं जमींपरमुनकराँ । बेशक तू उनको जानलेकारूँ बिरादरां ॥
भड़केगायका जगजबरब्बेकहरमां । न खुमसजकातभूघनीमार खायगा ॥
सनताँसिपाहसाहबफिरते जहाँ तहाँ । उनके हवालेकर जो देना वहक्कसुवहाँ ॥
पीछेखजाना खासनआजिजहैशकवहाँ । खुमसजकातभूलघनीमार खायगा ॥

तर्जियाबन्दखम्सः ।

सूझता तुमको है नहीं अन्धा । इसलिये काल कैदमें बन्धा ॥
पावेगा भेद शब्दके सन्धा । कौन कह भेद तुझ उस रब्बकी ॥
संत सूरत हैं सांच साहबकी ॥
होवे साहब वहाँ हों संत । संत बिन तु कभी न पावे कंत ॥
सुनता लीलाअपार और बेअन्त । उनकी बातें हैं कुछ जुदेढबका ॥
संत सूरत हैं साँचे साहबकी ।

सन्त महिमा अकथ सो जाने कौन । सन्त जावें जहाँ न पानी पौन ॥
नि:अंगमनि:निगम हैं साधुके भौन । आजिज़ वह बात्त और कहों तबकी॥
संत सूरत हैं सब साँचे साहबकी ॥
यथा–ज़रो ज़न व वेद बानी । है । यह गिर तारकी निशानी है ॥
इनसे हो जा अलग सो ज्ञानी । है मौतके तीरकी सोई गांसी ॥
हैं यही तीन कालकी फांसी ॥
गुल खिल हैं यह तीन मायारूप । डालदे आदमी अंधेरे कूप ॥
सूझे उसको न कोई साया धूप । है यह माया मायाके तीनहू हाँसी ॥
हैं यही तीन कालकी फांसी ।
इनको जब छोडदे सो होवे फ़क़ीर । ज़हर आलूद इनकी है तासीर॥
आजिज़ इनसेही मिल है पुर तक़सीर । है सोई धर्मरायकी हँसी ॥
हैं यही तीन कालकी फांसी ॥

गजल ।

करदिया आके अन्ध धन विद्या । कोई न मुक्ता हो पाके धन विद्या ॥
इल्मो अमलसे खबर न रही । बेखबर दिल लगाके धन विद्या ॥
जहां जाकर क्या भये दोनों । मूक उसको बनावे धन विद्या ॥
जगहमें सो नेकबख्त कहलावे । हक्कको बातिल बातवे धनन विद्या ॥
फंस मरे कार दुनियवी दिनरात । याद हक्कको भुलावे धन विद्या ॥
तब कहाँ गुरु है और कहां है साधु । रहे दोज़ख ढिखावे धन विद्या ॥
हकको चाहे तो दोनों छोड़ आजिज़ । हवस दिलमें न आवे धन विद्या ॥

कारमें दुनियवी हुआ अन्धा । है तेरे वास्ते हुआ अन्धा ॥
डालदेवें अज़ाबमें तुझको । तब कहां खाला बुआ अन्धा ॥
कौन तब काम तेरे आवेगा । आके जम नाग जब छुआ अन्धा ॥
याद हकबिन जो होगया तू बैल । मोढेपर अपने धर जुआ अन्धा ॥
वेद पढ़ पढ़के क्यों हुआ नादां । मैनाही काका और तब अन्धा ॥
रहन पावें बगैर सतगुरुके । राम क्या बोले तर सुआ अन्धा ॥
तूने उमीदकी जो समरसे । आखिर उससे उड़ा छुआ अन्धा ॥
आजिज़ आखिरको उस सेहो नाउमीद। देख उसमें तू था रवा अन्धा ॥

रख न उमीद बेवफ़ा दुनिया । है यह बेसिदक़ और सफ़ा दुनिया ॥
तनको यह पालती व रूह ऊपर । करती है जौर और जफ़ा दुनिया ॥

पहले तरगीब देकेलेवे फँसा । पीछेसे होवे फिर ख ा दुनिया ॥
तेरा इनसानी बामाकर बरबाद । फेर देवेंगे यह दग़ा दुनिया ॥
इससे किसको है बरखोरी आजिज़ । पावे हरगिज़ न रह बका दुनिया ॥

दुनिया जो कुछ सो तेरा तन है । हेच जान इसको सोई साधन है ॥
हेच इसको जो कर तो सब कुछ हेच । फिर न दुनियाके बीच पागन है ॥
प्यार इस तनसे प्यार दुनिया है । देह दुनियाको छोड भागन है ॥
देह दुनिया नहीं तो सतगुरु देख । आखडा होवे तेरे आँगन है ॥
जबतलक देह दुनियासे है प्यार । तबतलक वह लगन न लागन है ॥
भारसे तुझको व्यार हो आजिज़ । तो मुहब्बत ये दोनों त्यागन है ॥
जो गुलामां इश्क शह आया । कुल आलमका क़िबले गह आया ॥
अर्श और फर्श सब हुये रौशन । अब मेरे घरमें मेरा मेह आया ॥
भटका फिरता था जो व्यावांमें । खाके ठोकरको अपने रह आया ॥
इश्क हजरत जहां नहीं रहबर । रहमें उसके ग़ार वह छह आया ॥
इश्कसे भागजा किधर आजिज़ । यह अमानत जो रखने कह आया ॥

क्या हमलमें करार कर आया । उससे अब तू फिरार कर आया ॥
उसका अव तुझको नहीं कुछ होश । घेर अब अन्धकार कर आया ॥
नहीं सुनता न सूझता है कुछ । धुन्ध गर्द व गुब्बार कर आया ॥
याद अब तुझको है नहीं अपना क़ौल । सत्यसाहब पुकारकर आया ॥
होश करता नहीं तू ऐ बेहोश । ख्याब गुफलत खुमार कर आया ॥
होगये जीव अन्धे और बहरे । बाज़ वह हर दयार कर आया ॥
अपने बन्धनके वासते आजिज़ । काम तू बेशुमार कर आया ॥

जहां जाओ वहां यह नागिन है । कहरबान मिहरबान यह नागिन है ॥
सीम व ज़र वेद बानी औरत जो । भरी सारी जहां यह नागिन है ॥
जितेदुतिवाके तालिब और मतलूब । जहर पुर दई यहां यह नागिन है ॥
काट खावें सब अहल दुनियोंको । रह बरो हमरहाँ यह नागिन है ॥
यही आशिक हुई वही माशूक । सब पै शहनशाह यह नागिन है ॥
लोग और वेद आजिज़ इसका है । साथ हरदो ज़बान यह नागिन है ॥

जगतको अन्धकार दिया उलमा । अपना घर अज्ञान भर दिया उलमा ॥
न इबादत न ज़ोहर है तक़वा । खोल राह सक़र दिया उलमा ॥
कहां रहमान रब्ब न साध गुरु । हिर्स हैवान समर दिया उलमा ॥

अहल दुनिया दब मरे सारे । सरपर भारी हिजर दिया उलमा ॥
पेटके वासते नचे दिनरात । ख्वाब गुफ़लत खुमर दिया उलमा ॥
कोई न वेडार सब हुये ग़ाफिल । राह दिखला देहर दिया उलमा ॥
आब हैवाँ प्याला को कर दूर । हवस हैवाँ चर दिया उलमा ॥
रास्ती सूझी और न बूझ कोई । तलक़ीन शैतां सर दिया उलमा ॥

खुलक इनसानसे सब हुये महरूम । राह बतला दिये हरदिया उलमा ॥
अपने खालिकको छोडकर बतला । उन्स जोरु व जर दिया उलमा ॥
होके आदम न पावे सीधी राह । शर सद हरबशर दिया । उलमा ॥
दी छिया रास्ती और खोल दरोग । राह उमीद व डर दिया उलमा ॥
कुत्ब और किस्सा और शरआ शीरी । सबक कर्र व फर दिया उलमा ॥
हर बरारको सो मांगना सिखलाये । भीख रह दर बदर दिया उलमा ॥
सारे टिडी हुये उड़े आस्मां । सबको परवाज़ पर दिया उलमा ॥
वहां जाकर करार पावे । कौन । जाने चौरासी धर दिया उलमा ॥
कीच कसरत खबर न वहदतकी । मौज मेल मकर दिया उलमा ॥
गोता खावे हज़ार निकले किधर । वहरमें सद चक्र दिया उलमा ॥
पेटके काममें पचे परपंच । फिक्र व फाका फुक्र दिया उलमा ॥
ऐश व अशरतमें फँस गये आदम । ख्याबखोरिस व जहर दिया उलमा ॥
आजिज़ अब क्या तू आह व नाल:करे । डाल खौफ़ व खतर दिया उलमा ॥

पार जावेंगे आलिम आमिल । राह दिखावेंगे आलिम आमिल ॥
सुर्खरु सोई हैं दरदो जहां । दुख न पावेंगे आलिम आमिल ॥
आफ़रीं सद है उनको और शाबास । रह लगावेंगे आलिम आमिल ॥
आप किसती चढें चढावें और । फिर न आवेंगे आलिम आमिल ॥
आलिम आमिलकी खूबी यह आजिज़ । मत सिखावेंगे आलिम आमिल ॥

लिया मायाने खा चतुर व चिकनिया । गये दोज़ख समा चतुर व चिकनिया ॥
मिली उनको सतगुरु दस्तगीरी । रहे तारीकया चतुर व चिकनिया ॥
न उनपर साधु गुरुकी मिहरबानी । अँधेर दिल छुटा चतुर चिकनिया ॥
वह घर आजिज़ फिरातन साद: लौहाँ । वहां कोई न जा चतुर चिकनिया ॥
भजन भगवान कर मीत प्यारे । लगा शैतान है ऐ मीत प्यारे ॥

है दिनमें काम सब जौर व सोच । कहां रहमान है ऐ मीत प्यारे ॥
तो जल्दी सोच जप हरी नामसे लग । यह तन इनसान है ऐ मीत प्यारे ॥

कहां फिर पावे तू यह आदमी देह । हुआ हैवान जब ऐ मीत प्यारे ।।
किधर दौलत किधर दुनिया यह जावे। कहां इरकान है ऐ मीत प्यारे ।।
नहीं मैं तू नहीं संसार आजिज़ । हुआ जब ज्ञान हे ऐ मीत प्यारे ।।

जग डुबाते हैं पण्डितो मुल्ला । मत सिखाते हैं पण्डितो मुल्ला ।।
चण्डी हनुमान भैरो पूजा कबर । रह भुलाते हैं पण्डितो मुल्ला ।।
जबह व खून कत्ल व कुरबानी । गल काटे हैं पण्डितो मुल्ला ।।
अबिन आदम पड़े व बहरे अमीक । धर दबाते हैं पण्डितो मुल्ला ।।
अपने लोभ और अपने मतलबको । दिल डोलाते हैं पण्डितो जो मुल्ला ।।
आदमी सो नहीं जो डंगर ढ़ोर । पशु चराते हैं पण्डितो मुल्ला ।।
जुल्म और जब और नाहक खून । सो कराते हैं पण्डितो मुल्ला ।।
रास्तीदुशमनी और दोस्त दरोग़ । हक छिपाते हैं पण्डितो मुल्ला ।।
दोस्त हक क्यों हों दुशमने दर्वेश । लोग भाते हैं पण्डितो मुल्ला ।।
मच्छियां मारनेको दरियामें । जाल पाते हैं पण्डितो मुल्ला ।।
मच्छियां फँसती हें नहीं आदम । धर फँसाते हैं पण्डितो मुल्ला ।।
ढोल मृदङ्ग झांझ व मजीरा । टमटमाते हैं पण्डितो मुल्ला ।।
आजिज़ यह जगमें ज़ाहिरा डग दूत। मार खाते हैं पण्डितो मुल्ला ।।

यथा

खबर उस यारकी कहिये फकीहो । अक्लके पारकी कहिये फ़क़ीहो ।।
जहां पहुंच न विद्या बेद वाणी । वह न गुफातारकी कहिये फ़क़ीहो ।।
कहां है जिन्दगी दारू कहां मौत । वह मुहरा मारकी कहिये फ़क़ीहो ।।
हुआ हँकारसे आलम हवैदा । वहना हँकारकी कहिये फ़क़ीहो ।।
वह साहब सारेका जो बरतरीं है । बड़े सर्कारकी कहिये फ़क़ीहो ।।
जहांपर अक्ल कुलकी अक्ल गुम है । रह उस दर्बारकी कहिये फ़क़ीहो ।।
अलख जिसको कहे सब सिद्धि साधू । कुनह इसरारकी कहिये फ़क़ीहो ।।
जहां नाकारा हैं सब कारबारी । वहांके कारके कहिये फ़क़ीहो ।।
शरीअत न वहां न मारफत है । वह शब्द सारकी कहिये फ़क़ीहो ।।
यह सब संसार जो दर गुफ्तगू है । वह बे संसारकी कहिये फ़क़ीहो ।।
हैं सदहा खालिको मखलूक जिससे । कुछ उस कर्तार की कहिये फ़क़ीहो ।।
जहांसे आत्मोंमें गुल खिले सब । ढब उस गुलजारकी कहिये फ़क़ीहो ।।
बना जो बागबाँ और बाग़ सदहा । वह कुल मुख़तारकी कहिये फ़क़ीहो ।।

कौनसीराह व रहबर क्या सबारी । सिफत रहवारकी कहिये फ़क़ीहो ।।
किधर यूसफ मेरा हैं कहाँ जलीखा । वह नौ तिफसारकी कहिये फ़क़ीहो ।।
हुआ जिस सोचमें आजिज यह आजिज । अब उस निकारकी कहिये क़ीहो ।।

मुरब्बा ।

खुद ज़लो कमाल पर हैं नाजा । दिलपर है मुनतिक एतराज़ाँ ।।
पढ़ कुत्ब जो फरहान और शादाँ । दाना दुनी हक हुजूर नादाँ ।।
कहते हैं जो फिलसिफे जमानः । जाने नहीं नामका निशानः ।।
जाहिद न बशक्ल जाहिदानः । दानादुनी हक़ जूहुर नादाँ ।।
बिन सतगुरु सारे बेखबर हैं । सब खाम ख्याल उनके सिर हैं ।।
वेद वकुत्व उनके रहापर हैं । दानादुनी हक्क हुजूर नादाँ ।।
जो रूह नहीं हैं बद बानी । क्या कहसकें राहे जावेदानी ।।
बनाते जो कुछ सो सब है फानी । दाना दुनी हक्क हुजूर नादाँ ।।
पुर होगया दिल जे वह्म बातिल । मन मस्त हो याद हक़से गाफ़िल ।।
हरगिज न सूझे राह साहिल । दाना दुनी हक हुजूर नादाँ ।।
मामूर ब मक्र न फितनः रोबाह । भूले हैं पढ़ अस्ल अपनीकी राह ।।
क्या खूब है अक्ल कहिये वाह वाह । दाना दुनी हक्क हुजूर नादाँ ।।
करते है दावा जो हक़ शतासी । दुनियासे हैं खुशदिल उदासी ।।
अनग़ैब है जो काल फांसी । दाना दुनी हक हुजू नादाँ ।।
इन बेखरों मत खबर कह । जो चढते न साधु संतकी रह ।।
जावें वह जिधर सो देखें सो छः । दाना दुनी हक हुजूर नादाँ ।।
गर पूछो कहाँ वह हक पियाँजी । बतलाते यहाँ है और वहाँजी ।।
क्यों करसके आज़िज वह ब्याँजी । दाना दुनी हक हुजूर नादाँ ।।

गजल ।

मरेगा भूख दुखमारा तू ऐ सूम । न पावे अपना जब चारा तू रे सूम ।।
फिर दर दर भूखा मुँह पसारे । जो धन अपना जुये हारा तू ऐ सूम ।।
दिया कुछ न व सेवा साधु गुरुकी । उठा इफ़लासका भारा तू ऐ सूम ।।
बिहिश्ती हों न हरगिज बखीलाँ । किया बर्बाद धन सारा तू ऐ सूम ।।
जुहद तकवा न आब काम आज़िज हो जब इमसाक व धन प्यारा तू ऐ सूम ।।

होवे बेशक तू सरफ़राज सखी । गिरह दिल की होवे बाज सखी ।।
हक़का महबूब और तू फ़रजन्दा । उसके आगे है तेरा नाज सखी ।।

भूत पूजें जहाँ न गुरु पूजा । हक हैं पूजे जहाँ न गुरु पूजा ॥
चारों आँखोंसे अँधसो सरे । क्या सो बूझे जहाँ न गुरु पूजा ॥
उनमें हैं कुछ न अक्ल और न तमीज़ । क्या सो बूझे जहाँ न गुरु पूजा ॥
उनमें भक्ति गरीबीकी कहाँ बू । कुब्र सूझे जहाँ न गुरु पूजा ॥
सो तो हैवान सर बसर आज़िजाकाम अरुझे जहाँ न गुरु पूजा ॥

देख दुनियामें यार आग लगा । मैं जाना कि मेरा भाग लगा ॥
जलते ब्रह्मा विष्णु व शिव शंकर । सारे सिद्ध साधु नाग लगा ॥
लाख चौराशी छूट पिचकारी । तीन और पाँच खेल फाग लगा ॥
होवे मक्खन बने दही मही कैसे । जबतलक गुरु न अपनी जाग लगा ॥
रोना वाजिब है और नाल:आह । अहमक़ आदम जो रंग राग लगा ॥
कौन पावे उसे किधर आज़िज । जो न दिलजानसे अपने लाग लगा ॥

बैल पर पोथियाँ लदी देखा । राहमें उसके एक नदी देखा ॥
बोझसे मरता है वह बिचारा । सर बसर मग़ज़ पुर खुदी देखा ॥
खा खली भुस समझ न सोच उसमें । चाल इनसानसे जुदी देखा ॥
दे डुबा बहरमें किताबोंको । करता रूह अपनेसे बदी देखा ॥
बैलसे खेत चर लिया आज़िज । साधु संगतिमें सरमदी देखा ॥

आगया जब ज़मान: तारीकी । खोलदी जब धाना तारीकी ॥
हर बशर खाली रोशनीके चिराग़ । भर गई सारे खान:तारीकी ॥
देखहर सिम्त है न नूर कहीं । कर दिया सद महान:तारीकी ॥
फँस गये कार दुनियबी आदम । रोक रह जाहिदान: तारीकी ॥
उन्सकी तू बेगान: से आजिज़ । परद:में करेगा न तारीकी ॥

जिसे मैं चाह बे नामो निशाँ है । कि मेरा माँह बे नामो निशाँ है ॥
किधर जाऊँ किधर ढूँढ कहाँ है । यहांकी राह बे नामो निशाँ है ॥
हैं कुलफानी जोहैं दरअक्ल और वहम् । वह क़िबले गाह बे नामो निशाँ है ॥
बहर जानिब गुलामाँ हुक्मराँ है । वह शाहनशाह बे नामो निशाँ है ॥
तअम दुनियामें सारे लगरहे हैं । वह बेपरवाह बे नामो निशाँ है ॥
हैं सबदरबन्द जो नाम और नामी । मेरा अल्लाह बे नामो निशाँ है ॥
हुआ आज़िज अब आजिज़ यह किधर लाये ।
मेरा दिल ख्वाह बे नामो निशाँ है ॥

मुरब्बा ।

कहने सुननेमें जो कुछ आया है । वेद और कुत्ब खाँने जो बतलाया है ।।
सिद्ध साधु पैगम्बराँ जो गाया है । दुनियाका गुरु व पीर खुदा माया है ।।
ज्ञान ध्यान इलहाम वही और सलाम । मुतकलिम मुखातिब शब्द कलाम ।।
सामान हैं दुनियामें जितने नामी नाम । दुनियाका गुरु पीर खुदा माया है ।।
अक्ल और ख्याल ब्रह्मसे जोहै पार । हरगिज़ न महसूस न सोदर गुफ़तार ।।
क्या जाने खबर बेखबराँ शब्द सार । दुनियाका गुरुपीर खुदा माया है ।।
दुनियाकी जो कुछ चाहसो दुनिया की कहिये । जानदार दुनि दरिया २ में है।।
दरियाय जाँदार सगर धार है । दुनियाका गुरु पीर खुदा माया है ।।
आकिलाँ हलके अकल पेच कहार हैं कहाँ । जो बाहर अक्ल उसकामाहिर है ।।
अक्लके पार जो आजिज़ कहो सो जाहिर है कहाँ। दुनियाका गुरुपीरखुदा माया है।।

मुरब्बा फकीहोंपर ।

फखर दौलत दुनी देहों पर । चश्म बर खुद न किज्वजेहोंपर ।।
नजर ख्वाब व खुर मलीहोंपर । हाय अफसोस इन फकीहोंपर ।।
पढ़ गये वेद न भागवत गीता । कुत्ब ख्वानीमें उमरों बीता ।।
नफ्त अम्मार:ने इन्हे जीता । हाय अफसोस इन फ़क़ीहोंपर ।।
वाअज और पन्द बात बकते हैं । माल बीयोंकी तरह तकते हैं ।।
गली कूचा न फिरते थकते हैं । हाय अफ़सोस इन फ़क़ीहोंपर ।।
जिसनेकी आदमीका दिलकाला । जोहद व तक़वाको दूरकर डाला ।।
टुक दम भी न याद हकतआला । हाय अफ़सोस इन फ़क़ीहोंपर ।।
रात दिन कारमें जो मरते हैं । हज्जो फुकरा खुशीसे करते हैं ।।
बैल हैं घास पर चरते हैं । हाय अ सोस इन क़ीहोंपर ।।
गुज़रा दिन कारबारमें सारा । रात आई हुआ जो अँधियारा ।।
बाद: गुलरु हैं महफिल आरा । हाय अफसोस इन क़ीहोंपर ।।
शरआकी टट्टी जो धरते हैं । कुत्ब ख्वानीमें दिन गुज़रते हैं ।।
टट्टी धोखे शिकार करते हैं । हाय अफ़सोस इन फ़क़ीहोंपर ।।
आप भटकते हैं औरको भटका । आबिन आदम अदमकी रह अटका ।।
होश न, पाँव गारमें लटका । हाय अफ़सोस इन फ़कीहोंपर ।।
जानते लोग यह तो आलिम है । दर हकीकत सोरूस जालिम है ।।
सदहा गुमराह करते फिरते हैं । रोजोशव फिक्र मआश मरते है ।।
हक़के खौफसे न डरते हैं । हाय अफ़सोस इस फ़क़ीहोंपर ।।

खुद फफीहत्त नजीहत औरोंको । बैल रह बर हुआ सतूरों को ।।
क्या तू आजिज़ सिखावे बूरोंको । हाय अ सोस इन क़ीहोंपर ।।

तरजीआ बन्द ।

जबाँ मेरी तु जबतक है दिहनमें । न हो गाफिल मदह मुर्शिदे कोहनमें ।।
गुरुका शुक्र और अहसान कर याद । रह उसबरमां बरी खिदमत चहनमें ।।
कभी अहसांन शुक्र उसका तू मत भूल । कि, पहुँचे तू अमरपुरके सिहनमें ।।
गुरु सा और तेरा है न मददगार । बचाया शोर दरियाके बहनमें ।।
मिला तू अपने असली मुद्दोआसे । फकत मिहर और गुरुजीकी दोआसे ।।
खुदाने खुदाको दर परद: छिपाया । गुरुने खोलकर उसको दिखाया ।।
खुदाने कर दिया आलम अँधेरा । गुरुने इल्मका सूरज उगाया ।।
खुदाने हर तरफ झगड़ा पसारा । गुरुने सुलहकुलकी रह बताया ।।
खुदाने आग आलममें भड़काई । गुरु बारान रहमतकाले आया ।।
मिला तू अपने असली मुद्दोआसे । फकत मिहर और गुरुजीकी दुआसे ।।
गुरु खिदमतसे ईमानकी करारी । उसीकी मिहर करमों फ़ज़्ल बारी ।।
समझ और सोच किसने उतारा । गुनहका बोझ तेरे सिरसे आरी ।।
गुरु गोविन्दसे बढ़कर है साहेब । गुरु बिन कुल जहाँमें ग्रिय: जारी ।।
अँधेरे जंगलिस्तानमें पड़ा था । बचाया होगया जब आजिज़ आरी ।।
मिला तू अपने असली मुद्दोआसे । बकत मिहर और गुरुजीकी दुआसे ।।

ग़ज़ल ।

दुनियवी गंदगी भरा निगुरा । प्यास और भूखसे मरा निगुरा ।।
रह न पावे जरूर हो गुमराह । कालके फन्दमें पड़ा निगुरा ।।
जहाँ जावे उसे वहाँ ठोकर । खोरिश जमराजका खर निगुरा ।।
पशु पंछीसे ख्वार बत्तर है । सूरत इनसान गरधरा निगुरा ।।
पानी पीना रवा न हाथ उसके । जोनि चौरासीमें फिरा निगुरा ।।
बन्दगीकर न होवेसो मक़बूल । आग दोज़खमें जा गिरा निगुरा ।।
सीख सदहा ज़बान फनून उलूम । होवे हासिल न मुद्दोआ निगुरा ।।
है पशु गर बसूरत आदम । न दुम सींग चारपा निगुरा ।।
होता हैवान तो यह भला होता । सूरत आदम तू क्यों हो निगुरा ।।
हैं भले तुझसे अरज़के हशरात । तू किधर जायगा बता निगुरा ।।
जंगल जग अँधेरेमें तू पडा । कौन मशअल तुझे दिखा निगुरा ।।
फड़ा खावें दरिन्द: जाओ जिधर । कौन तुझ दस्तगीरी आ निगुरा ।।

होता हैवान कौन लेता हिसाब। हुआ नरलेख अब चुका निगुरा ।।
खावे ठोकरं इधर उधर फिरते। नहीं कोई तुझे जता निगुरा ।।
हुआ बेहोश होश कुछ न तुझे। कोई हरगिज़ नहीं जता निगुरा ।।
कुचः दिलदारकी दिखावे कौन। यार अपनेसे रह चला निगुरा ।।
बेटा ब्रह्मा जो आलिम आमिल था। नाद नापाक होगया निगुरा ।।
ऐसा ज्ञानी ऋषी जो था शुकदेव। फेर वैकुण्ठसे दिया निगुरा ।।
बारहा यह पुकार सत्त कबीर। नहीं ठिकाना नहीं ठौर जा निगुरा।।
कँजरीके हैं यार गार घने। सत पर हरगिज नहीं चढा निगुरा।।
बाप है कौन पूत वैस्याका। पकड़े वह किसका कहपला निगुरा।।
जिसका न पीर वह दस्तगीर आजिज़। पावे क्या ठौर और थरा निगुरा।।
साखी – निगुरा ब्राह्मण नहिं भला, गुरुमुख भला चमार।
देवतनसे कुत्ता भला, जो नित उठ भुँके द्वार ।।

तरजीअ बन्द।

क्या फसीह व वलीग जिनकी जबाँ। चलती तेजी तब आब वस्फ सुबहाँ।।
मन मती खुद पसन्द व खुदबी। कुत्व और फिका वेद बानी ख्वाँ ।।
गली कचःमें करते हैं वाज़ और पन्द। आप अन्धा है मुदई उरफाँ ।।
वे खबर खुद खबर सुनाते हैं। करते गुमराह सादए लोहाँ ।।
आप निगुरा बनावे गुरुमुख और। इस जमानःके तौरपर कर गौर ।।
हुये केती जबाँसे माहिर। इल्म दुनियामें होगया जाहिर ।।
मैं हूँ ज्ञानी व दानया दौराँ। नुत्क कर गैर गर्द दिल साहिर ।।
महरबा हर चहार सूसे हो। दिल दिमाग आपसे हुआ बाहिर ।।
होश जब यह गरूरमें भूला। फौज सरपर है मौतकी काहिर ।।
आप निगुरा बनावें गुरुमुख और। इस जमानेकी तौर पर कर गौर ।।
कहते क्या खूब है हमारी राय। हमने पहचाना अक्लसे खुदाय।।
मेरे वहम व ख्यालको शाबास। जान अक्ल व गुमानसे अस्ल जाय।।
मैं हूँ दानाये सबकते सबपर। जिसने असली वसूलका घर पाय।।
इन ख्यालोंसे दिलपर जो आजिज। रास्ती राह सो न हर्गिज आये ।।
आप निगुरा बनावे गुरुमुख और। इस जमानःकी तौरपर कर गौर ।।

मुसद्दस।

निरञ्जन द़िल हिर्स हैवाँसे पूरा। है जिससे खल्क़का यह सब जहूरा।।
हुआ इल्मों अमल उसका जो दौरा। चलाया उसको दूर अज़क़िबले गाही।।

जो होना है अदमके मुल्क राही । गदाई है भली अज़ बादशाही ॥
ऋषेश्वर तारकुद्दुनिया दिगम्बर । हुये जो बे अदद पीरो पैगम्बर ॥
खुदा आगे जलाया ऊद व अम्बर । दिया बुतलान पर जिसने गवाही ॥
हुये सदहा जो दुनियामें सलातीं । पड़े दर कैद शहवत शयातीं ॥
हज़ारों सानअ और मसनूआ जहाँमें । रहे खाली जो अपने दिलहलाही ॥
जो होना है अदमके मुल्कराही । गदाई है भली अज़ बादशाही ॥
हजारों क़ैसरो दारा सिकन्दर । किया क़बज: जमीं दरियावबन्दर ॥
किते सिद्ध साधुऔर सूफ़ी क़लन्दर । गई उनकी न अन्दरकी स्याही ॥
जो होना है अदमके मुल्कराही । गदाई है भली अज़ बादशाही ॥
जो मूठी बांधकर दुनियामें आवे । क़रारो क़ौल अपना सब भुलावे ॥
पसारे हाथ खाली फेर जावे । गदा और शाहपर आवे तबाही ॥
जो होना है अदमके मुल्क राहो । गदाई है भली अज़ बादशाही ॥
हिर्स हैवाँ जब आदमको बरा । तो दिन दोपहरको देखे वह अंधेरा ॥
कहे आजिज यह तेरा है वह मेरा । बिछाया दामसब जा मिहर व माही ॥
जो होना है अदमके मुल्क राही । गदाई है भली अज़ बादशाही ॥

ग़ज़ल ।

बानबाने अजब लगाया बाग़ । किस्म सदहा परिन्द: बुलबुलोज़ाग़ ॥
केतेरँग ढ़ंगके भरे जानदार । पर न देखा कभी कोई बेदाग़ ॥
बे अदद गुज़रे हैं अक़लो फहीम । कोई न दरवेश साहै आलीविभाग़ ॥
दुनियवी कीच फँस रहे सारे । नरहाई हुई न बाल फ़िराग़ ॥
कुल आलम अदमके मुल्क सभा । जिसका कोई कहीं नहीं है सुराग़ ॥
न हुकमा व शह निशां आजिज़ । कब्र दर्वेश पर जलाते चिराग़ ॥

तरजीआ बन्द

दुनियाभर भूल भुलैयाँ है । सब भूले अपना सपैयाँ है ॥
त्रिलोक न ढूंढे पाया है । क्योंकर पढ़े इस पटियाँ है ॥
निःसंग सभास्यानक साथी है । गये दूर हैं अपने जो गोइयाँ हैं ॥
पहचान नहीं सब भूल पडे । निजरूप नहीं सब छैयाँ है ॥
सब मिट्टी पानी गारा है । यह निन्दबडी बट मारा है ॥

जो पूरब पश्चिम जाओगे । दश दिशा न ढूंढे पाओगे ॥
सब तीरथ तीरथ भरमो । सौ बार जो गंग नहाओगे ॥

सब पोथी थोथी सार नहीं । पण्डितसे वेद खोलाओगे ।।
कर योग जतन नहिं जाय रतन । सब खाली देख चिलाओगे ।।
क्योंकर मिल अपना प्यारा है । यह निन्द बडी बट मारा है ।।

अब आन पढ़े इस जंगल हैं । आदम नहीं सब पशु दङ्गल है ।।
मन हाथी जंगल नास करे । यह मस्त महा मन मङ्गल है ।।
माने न पोथी तेरीको । क्या वेद व्याकरन पिङ्गल है ।।
वह जान कहाँ बलवान् कहाँ । बन्धे जो ज्ञानके सङ्गल है ।।
कोई संत जो मिले कढ़ारा है । यह निन्द बड़ी बट मारा है ।।

कहाँ सतगुरु संत सिपाही है । निज नेत्र उसपर बाही है ।।
पकड़े चोर और गठ कटोंको । कर्म्मों का जङ्गल दाही है ।।
जो अगम निगमके पारा है । सो संत वहाँका राही है ।।
धरती पर धरम धराया है । धुर धाम की नोत निवाही है ।।
आजजि खुदतर और तुम्हारा है । यह निन्द बडी बट मारा है ।।

इति ।

विविध उपदेश संग्रह

विद्याभिमानियोंको उपदेश ।

विद्याभिमानियों की बुद्धि ठिकाने न रही, उनके अन्तःकरण तर्क वितर्क और संकल्प करते रहते हैं । जबतक उनके ऐसे विचार रहेंगे तब तक वे सन्तोंके उपदेश योग्य नहीं हो सकते । वे मनुष्यकी चार अवस्थाओंपर भी विचार नहीं करते । जाग्रत्, स्वप्न, सुषुप्ति और तुरिया; येही चार अवस्था, इनके व्यवहार रङ्ग ढङ्ग भिन्न भिन्न हैं, चारोंही भ्रम हैं ।

जाग्रतकी सामग्री स्वप्नावस्थामें किसी काम नहीं आती, उसी प्रकार शरीअत (कर्मकाण्ड) हकीकत (ज्ञान) तरीकत (योग) और मारफत (विज्ञान) ये सब भी वैसेही हैं । जितने पुस्तकालय हैं सब शरीअत (कर्मकाण्ड) काही वर्णन करते हैं, जितना लिखना कहना आदिक है सब जाग्रत अवस्थाके लिये हैं । स्वप्नावस्थामें कुछ काम नहीं आते । स्वप्नावस्थामें मूर्ख और पण्डित सब एक समान होजाते हैं । जाग्रत अवस्थाका ज्ञान स्वप्नावस्थामें काम आता तो विद्वानोंमेंसे कोई भी किसी प्रकारका अपराध नहीं करता । जब कि स्वप्नावस्थामें विद्वान् और मूर्ख सब एक समानही होगये तो विद्वान् और मूर्खोंमें

कुछ बिशेषता नहीं हुई । विद्वानभी मूर्खोंके समान वेही कर्म्म करते हैं उनके पुस्तकालय कोई काम नहीं आते । यह मनुष्यकी दूसरी अवस्था है, जब कि, दूसरीही अवस्था में विद्या और कला कौशल तुच्छ हो गये जब उनकी कुल विद्या कला कौशल केवल जाग्रतके लियेही हो तो जाग्रत्की अतिरिक्त अवस्थाओंके लिये कौनसी विद्या और बुद्धिमानी आवश्यक है, उनमें तो जाग्रतकी कोई सामग्री नहीं होती । सुषुप्तिसे आगे तुरीयातीत अवस्थाओंमें कौन पुस्तक वेद किताब और मार्ग बतलाती है । इन बातोंका भेद विद्याभिमानी बिचारे क्या जाने, उनको इस बातकी सुधिभी नहीं हो सकती । स्वयं सत्य विचार और अभ्यास भक्ति तो हो ही नहीं सकती, वे सन्त सेवा जानतेही नहीं वरन् सन्तोंसे ईर्षा करते हैं कि, देखो हम लोग इतना परिश्रम करके दिनरात उसीमें लगे रहनेपर अपनी रोटी प्राप्त करते हैं पर फकीर बिना परिश्रम केही हृष्ट पुष्ट बने रहते हैं, ऐसे विचार करनेवाले बिलकुल अन्धे और बुद्धिहीन हैं । उनमें तनिक भी विचार नहीं कि, जीवधारियोंको कौन भोजन देता है ? उन्हें कौन वस्त्र पहनाता है ? कितने जीवधारी पशु पक्षी ऐसे वस्त्र पहनते हैं कि, मनुष्योंको स्वप्नमेंभी नहीं प्राप्त हो सकते । भलाजी, जो पापियोंका पोषण करता है वह अपने मुख्य शिष्योंको किस प्रकार भूल सकता है ? विद्याभिमानी लोगोंका इन बातोंके ऊपर ध्यान न देनेसे उनकी बुद्धि अन्धकारमय होगयी ।

ज्ञानकी सात भूमिका हैं, उनमें केवल तीन भूमिकातक वेद और किताब हैं, शेषकी भूमिकाओंमें वेद और किताबोंकी आवश्यकता नहीं इसी कारण सन्तोंके अतिरिक्त शेष भूमिकाकी बातें विद्याभिमानी नहीं जान सकते । उन अवस्थाओंका भेद सत्यगुरुकी भक्ति और सेवाकर कृपापात्र बननेसे प्राप्त हो सकता है । यदि पुस्तकोंसेही ये बातें प्राप्त होतीं तो संसारके बड़े २ विद्वान, राजे, महाराजे फकीर क्यों बन जाते ? विद्याभिमानियोंकी बुद्धि और विवेक सीमाबद्ध है । सच्चे सन्त ज्ञान और विवेकके भण्डार हैं उनकी बुद्धि अपार है यदि पुस्तकोंकेही पढ़नेसे ईश्वरीय भेदकी बातें जानी जाती तो सन्तोंके उपदेशकी आवश्यकताही न होती । इस कारण मनुष्यको उचित है कि, पारलौकिक ज्ञान की प्राप्तिके लिये सच्चे सन्तोंकी शरणकोही ग्रहण करें, सांसारिक विषयमें विद्वानोंकी आवश्यकता है ।

नवकोश और पांच अहङ्कारोंका भी वर्णन कर आया हूँ कि, इस जीवने नवकोशोंमें अपना घर बनाया, पुस्तकादि कला, कौशल सब प्रथम कोशके सम्बन्धी हैं । सब अवस्थाओं और कोशोंकी सुधि, सच्चे विचारवान् ज्ञानी

सन्तोंकोही है । विद्याभिमानी लोग बिलकुल बेसुध हैं । ये सब बातें भजन और विचारके साथ सम्बन्ध रखते हैं । पांच अहङ्कार और छः प्रकारके देहके गुप्त भेदोंकी सुधि अभिमानियों और नास्तिकोंको नहीं मिल सकतीं, कौन ऐसा सांसारिक है ? जो अद्वैतकी बात जानता है, क्योंकि, सांसारिक सब लोग तो भेदकी बातेंही करते हैं ।

सच्चे सन्त ज्ञानी निष्काम लोग जब भेदकी बातें समझते हैं तो विद्याभिमानी लोग उनसे कहते हैं कि, कुछ आँखसे दिखलाओ तभी इन बातोंपर विश्वास हो । वे बातें इस प्रकार हैं जैसे कि, कोई जन्मका अन्धा कहे कि, सूर्य और चन्द्रमा नहीं है, यद्यपि सूर्य और चन्द्रका देखना आँखका काम है आँख ही उसके नहीं है तो किस प्रकार देख सकेगा ? इसी प्रकार जो विद्याभिमानी लोग शुद्ध विचार और विवेकसे शून्य हैं वे ईश्वरी गुप्त भेदोंको किस प्रकार जान सकेंगे ? यह तो विचारवान् विवेकी शुद्ध और सरल हृदयके सन्तोंकाही भाग है । यही कारण है कि, सच्चे सन्तों और विद्याभिमानियोंमें, सर्वदासे विरोध चला आता है, विद्याभिमानियोंकी सङ्गति, भजन छुड़ा देती है । सब सन्तोंका इस बातपर एक मत है कि, प्राकृतिक विद्याभिमानी मनुष्योंसे अलग रहो । अतएव हजरत मसीह फरमाते हैं कि, मरकसकी इञ्जील १२ बाब २८ आयत—फकी हों (कर्म्मकाण्डके उपदेश करनेवालों) से हुशियार रहो, जो कि, लम्बे जामें पहनकर बाजारोंमें सलामोंकोइबादत् खानोंमें उच्च आसन और ज्याफतोंमें सबसे ऊँची जगहोंको चाहते हैं ।

जीवधारी अपने मुंहसे खाते हैं उनके सब अङ्गोंमें रस पहुँचता है, यदि वे नाक, कान आदि किसी दूसरी इन्द्रियोंसे खावें तो नहीं खा सकते, बरन् अस्वस्थ हो जायँगे इसी प्रकार सच्चे सन्त और सत्यगुरुकी सेवा आज्ञाकारितासे भुक्ति मुक्ति और ज्ञान आदिककी प्राप्ति होती है । यह गुण विद्याभिमानियोंमें नहीं है । क्योंकि, वे तो अपनी बुद्धिके अहङ्कारमें ऐसे डूबे होते हैं कि, उन्हे तो सत्य असत्यका यथार्थ ज्ञान नहीं हो सकता, यही विचार कर सन्तोंने, उनको उपदेश देना छोड़दिया है इसी विषयपर कबीर साहिबने कहा है कि—

इल्म पढ़ाकर अमल न कीता । सीखा बहुतक हिल्ला ॥
उमरांवाके मजलिस बैठें । लुकमें खाँय सकिल्ला ॥
चिकनी बातें बहुत बनावें । आन हदीस दलिल्ला ॥
बगला हंसके रूप बनाये । कुल ईमान बिल्लिल्ला ॥

अक्ल असर सब शगल किया है । शिकम किया है मिल्ला ॥
कहैं कबीर यह मसलें पढ़कर । मान बिगाने लिल्ला ॥

दुष्ट स्वभावको विद्याभिमानियोंने वर्त्तमान कालके लोगोंको ऐसा कठिन हृदय और कुमार्गी बना दिया है कि, संसारसे भक्ति और भजन उठ गया। विद्याभिमानियोंसे सद्गुरुकी सेवा बहुत कठिन है । वे दुष्ट सन्तोंके शत्रु हैं। उन्होंने समस्त संसारको भ्रष्ट कर दिया है । समस्त संसारमें अज्ञानता फैल गई है। सबके अन्तःकरण अशुद्ध हो गये हैं । न्यायी राजा और शासक लोग सर्वदा इस बातका ध्यान रखते हैं कि, सन्तों साधुओं और भक्तोंकी सेवा शुश्रूषा होती रहे कि, जिससे संसारमें ईश्वरका भय और भक्ति स्थिर रहे सन्तोंकी कृपादृष्टिसे लोक परलोक सुधरता है। सांसारिक शास्त्रोंके जाननेवाले अथवा सांसारिक विद्याओंके ज्ञाता तो सांसारिक व्यवहारकी बातोंमें सहायक हो सकते हैं, पारलौकिक उपदेशमें उनका कहना और सुनना तुच्छ है, बरन् उनकी धर्मव्याख्या सुनकर भी मनुष्य अज्ञानी होकर धर्मविरुद्ध काम करता है।

मनुष्य वही है जो इस बातपर सोच विचार करेकि जिसको सांसारिक मनुष्य पूजते और अपना ईश्वर समझते हैं वह तो छल और कपटसे भरा हुआ है, वह सदा मनुष्योंसे कपट और धोखा करता चला आता है, ऐसे छली कपटीको अपना मुक्तिदाता मित्र समझते हैं । जिसको लोग पूजते हैं वह संसारमेंही बन्धन करनेवाली माया है।

देखो योहन्नाकी इञ्जील ८ बाब १ आयत—हजरत ईसा स्पष्ट कहते हैं कि, चोर नहीं आता चुराने और कतल करनेको, मैं आया हूँ। हजरत तो हाँक मारकर कहते हैं कि, मैं चुराने और क़त्ल कराने आया हूँ। फिर मतीकी इञ्जील १० बाब ३२ आयत—यह मत समझो कि, मैं पृथ्वीपर सुलह करवाने आया हूँ, बरन् तलवार चलवाने आया हूँ। इसमें हजरतका क्या अपराध है, उन्होंने तो स्पष्ट कह दिया, यदि यह बात ईसाइयोंके समझमें न आवे तो किसका अपराध ?

मूसाके खुदाने उससे साफ कह दिया था कि, मैंने कनआके बत्तीस बादशाहोंको मार लिया। मूसासे उन सभोंको नष्ट करवा दिया। मुसलमानोंको किसने लड़ाई और जेहाद सिखलाया ? जिस खुदाने समस्त संसारको बाँध लिया उसी खुदाकी पूजा सब करते। जो उपरोक्त बातोंपर सोचे और विचार करे वही मनुष्य भक्तिका अधिकारी है।

सब मनुष्य एकही अच्युत परमात्माकी भक्तिका दावा रखते हैं। चाहे वह भूतही पूजते हों वा ईश्वरकी भक्ति करते हों। यदि किसीसे कहो कि, तू बुत्तपरस्त है, सच्चे अच्युत परमात्माकी भक्ति नहीं जानता, तो इस बातपर अवश्यही क्रोधित होगा। हठसे कहेगा कि, मैं एकही परमात्माकी पूजा करता हूं। इस बातके लिये प्रथम हिन्दूजातिकी ओर ध्यान देना चाहिये, जिसको प्रथम ईश्वरने वेद प्रदान किया उसके अनुसार ये चलने लगे। यद्यपि वेदके आशयको समझना बहुत कठिन है पर सब मतावलम्बियोंने अपने विचारानुसार मन्त्रोंके अर्थ किये, उसीपर सन्तोष करके बैठ रहे। अपनेको कृतार्थ समझ लिया। यह किसीको सुधि नहीं रही कि, वेदके अमुक मन्त्रका क्या अर्थ है? उसका यथार्थ आशय क्या है? जैसा जिस धर्मके आचार्य्यने अर्थ किया, उनके अनुयायी उसीके अनुसार अनुकरण करते आये। अपने आचार्य्योंसे बढ़कर न किसीकी बुद्धि होती है, न प्रयत्न करके वह अपनी बुद्धिको फैलानाही चाहता है, क्योंकि, पक्षपातमें पड़कर हठ और दुराग्रहसे अपने आचार्य्यकोही सर्व शिरोमणि, सर्व गुणविद्या और ज्ञाननिधान जानता है, यदि उसको सारासार विचारणीय बुद्धि हो तो भ्रमकी ओर ध्यान न दे जो ऐसे पक्षपाती हैं उनको सत्यमार्ग भी बतलाओ, वह सत्य जान भी ले तो भी दुराग्रहसे उसे स्वीकार न करेंगे, बरन् उसी असत्यको पुष्ट और सिद्ध करनेके लिये नाना प्रकारकी युक्ती और प्रमाण लाते हैं। ऐसे मनुष्य नरपशु कहाते हैं।

सबसे प्रतिष्ठित और बड़े ब्रह्मा हैं उनको भी अद्वैत परमात्माकी बिलकुल सुधि नहीं है, यदि वो जानते तो दुःख सुखमें क्यों पडे रहते? दूसरे सिद्ध हैं यदि वह अद्वैत परमात्माको जानते तो ऐसे छल कपट क्यों करते? दूसरोंको भी नष्ट करके आप क्यों नष्ट होते? तीसरे बड़े वेदपाठी शिव हैं, यदि उनको भी एक परमात्माका ज्ञान होता तो इतनी योग युक्ति करनेपर भी क्यों कामके वश होते? जितने ऋषि, मुनि, सिद्ध, साधु, सन्त, महन्त, इन्द्रियोंके वशमें विषय वासनाके बन्धनमें सांसारिक अभिलाषाओंके घेरेमें पड़े हुये हैं, वे सब मायाके पुजारी हैं। अद्वैत परमात्माकी पूजा करके फिर कोई शारिरक कामनाओंमें बन्द नहीं होता, जितने लोग वेद अथवा किसी दूसरे आचार्यके पक्षपात में पड़े हुये हैं, सारासारका विचार नहीं करते, वे बन्धनमेंही रहेंगे, कभी मोक्षको प्राप्त नहीं होंगे; जैसे यारतके अनेक धर्मावलम्बीपक्षपातमें पड़कर सत्य परमात्माको भूल बैठे हैं वैसेही पश्चिम देशके सब अम्बिया, औलिया पीर और पैगम्बर परमात्माकी पूजासे अज्ञात हैं।

इस पिण्ड और ब्रह्माण्डमें जो कुछ दृष्टि आता है सब माया है, माया पुरुष केवल कबीर है, उसको जो पहचाने अपना पति बनावे वही सोहागिन हो। जिस स्त्रीने उस पुरुषको न पहचाना, उसको अपना पति न बनाया वह सफल काम न होगी। स्त्रीके साथ जो स्त्रीका विवाह हो तो उसकी आशा पूरी कैसे हो सकती है ?

उपरोक्त चार पशु मेरी बातोंको नहीं समझ सकते। न इसके ऊपर विचारकर सकते हैं क्योंकि, उनको यथार्थ विचार और विवेक नहीं पशुबुद्धि है। वे देखनेही के मनुष्य हैं नहीं तो यथार्थमें पशु हैं, जिसको परमात्माने विवेक और मानुषिक बुद्धि दी है वे अज्ञानताके कामसे अवश्य अलग रहेंगे, पाशुविक वासनाओंसे अवश्य वञ्चित रहेंगे। पशुओं, कञ्जरों और पामरोंके लिये लिये मेरा उपदेश दोधारा तलवार है। मुमुक्षुओंके लिये अमृत है।

कितनेही लोग कहते हैं कि, कबीर साहबका नाम वेद और पुराणोंमें नहीं है, यदि वेद और पुराणमें होता तो हम कबीर साहबको मानते। इसी वास्ते कई एक मन्त्र वेदोंको कबीर साहबके विषयमें लिखा है, नहीं तो उसके लिखनेको कोई आवश्यकता नहीं थी। सहस्रों ऋषि मुनि, जो सर्वदा एक समानही रहते हैं, जिनका कभी नाश नहीं होता, उनके ज्ञान और विद्याके प्रकाशमें सब तुच्छ हैं। वे सब ऋषि, मुनि, कागभुसुण्ड, कुम्टम ऋषि और लोमश ऋषिके समान कबीर साहबको स्तुतिमें लगे रहते हैं। फिर उनकी विद्याके सन्मुख दुसरोंकी विद्या कैसे ठहर सकती है। सूर्य्यके सामने जिस प्रकार दीपकका प्रकाश कुछ नहीं कर सकता उसी प्रकार ऋषि मुनियोंके ज्ञानके सामने किताबोंका ज्ञान तुच्छ है।

जिस देश, जिस धर्म्म, जिस जाति, जिस मण्डलीमें सच्चे साधु और सच्चे गुरुकी सेवा, प्रतिष्ठा और आज्ञाकारिता नहीं हैं उसमें ज्ञान, भक्ति और सत्यजीवन भी नहीं है। वहांके लोग मृतक हैं, जहां सन्त नहीं रहते जिस घरमें सन्त और अभ्यागतोंका सन्मान नहीं होता, उस घरमें भूत, प्रेत रहते हैं। जिस धन धान्यमें साधु गुरुका भाग नहीं वह अशुद्ध है, वह नष्ट हो जावेगा। जो देह साधु और गुरुकी सेवा नहीं करती वह नरकमें जावेगी। जो सुन्दरी सच्चे साधु और गुरुओंके उपदेशको नहीं सुनती बरन् उनसे परदा करती हैं, वह शूकरी और कूकरी होकर नङ्गी फिरा करेगी। जिस विद्या और बडाईको सन्त और गुरुका स्वत्व न दिया जावे वह नीचदशाको प्राप्त करावेगी। सब प्रकारकी

भलाई साधु गुरुकी सेवाके आधारपर है, जहां साधु और गुरु नहीं वहां कुछ भी नहीं ।

जो कोई कबीर धर्म्मकी शुद्धता और सत्यताका ज्ञाता बनना चाहता है, वो धर्मदास साहबके पुत्र चूडामणिदास साहबके स्थानापन्न महन्त और संत, जो विद्वान् सब भेदोंके जाननेवाले और स्वयम् उसके ऊपर चलनेवाले हों उनसे पूछलें । जो कोई धर्मदास साहबके धर्मको जाननेवाले, माननेवाले और उसके ऊपर चलनेवाले उसी गद्दीके सन्त महन्त होंगे उन्हींसे पूंछनेका अधिकार होगा । नाममात्रके मूर्ख कबीर पन्थियोंसे पूछनेसे भेद न मिलेगा । क्योंकि, बहुत लोग अपनेको कबीर पन्थी बतलाते हैं पर यथार्थमें वे कबीरपन्थी नहीं हैं गुरु मुखता उनमें नहीं, मुखसे अपनेको कबीर पन्थी कहते हैं, पर कबीरसाहबकी आज्ञा और वाणीका आदर नहीं करते जो कोई केवल नामसेही अपनेको कबीरपन्थी कहने वालेके वचनों पर विश्वास करेगा, वह अवश्य धोखेमें पड़ेगा । इस कारण सोच विचार कर विवेकद्वारा सत्सङ्ग करना उत्तम बात है । एवं दूसरे जो निष्पक्ष विद्वान् हों वे भी बता सकेंगे ।

ईश्वर प्रेमियोंके उपदेश

जो लोग परमात्मासे प्रेम करते हैं, वे सब सामग्री और सुखोंको तुच्छ जानते हैं, उनकी समस्त सांसारिक वासनाएँ निवृत्त हो जाती हैं, किसी प्रकारकी कामना शेष नहीं रह जाती । संसारमें सबसे उत्तम राज्यसुख और राज्य माना जाता है, पर ईश्वरके सच्चे प्रेमी विरक्त पुरुष तीनलोकके राज्यको तुच्छ जानते हैं ।

दृष्टान्त एक विरक्त किसी वनमें रहता था वह ईश्वरके प्रेममें मग्न संसारसे उदास, भक्तिमें रत था । एक दिन एक बादशाह उसी बनके मार्गसे कहीं जा रहा था । उसने महात्माको बैठा हुआ देखा । उनकी दरिद्रता और बाहरी हीनावस्था देखकर बादशाहने कहा—महाराज ! आप शहरमें चलो, वहाँ आपकी सेवा और भक्ति भली प्रकार होगी । विरक्तने कहा कि, संसार और संसारके सब सुख अति तुच्छ और मिथ्या हैं । बादशाहने कहा कि, संसारके सुखके तुल्य कोई भी सुख नहीं, आपने उसका आनन्द नहीं भोगा है इसी कारण उसका प्रतिवाद करते हो । संतने बहुत प्रकार समझाया पर बादशाहने एक बातभी न मानी, अपनी ही कहता रहा । संत चुप हो गये बादशाह अपने राज-महलको गया ।

एक समय बादशाहका पेट फूल गया, अपानवायु बन्द हो गई, अत्यन्त दुःखी हुआ बल्कि मृत्युके पास पहुँच गया । वैद्योंने बहुत औषधि की पर कुछ भी लाभ न हुआ । उसी समय उपरोक्त वनवासी विरक्त महात्मा भी आ पहुँचे। बादशाहने देखतेही दुःख भरी दृष्टिसे संतको नमस्कार किया । संतने कहा कि, ऐ बादशाह ! यदि तू इस समय अच्छा हो जावे तो उसके बदले मुझे क्या दे ? बादशाहने कहा कि, मैं करोड़ों रुपये देसक्ता हूँ । सन्त ने कहा कि, तेरी जानके सन्मुख ये करोड़ों रुपये कोई बात नहीं । बादशाहने कहा कि, मैं आधा राज्य दे दूंगा । संतने कहा कि, यदि तू अपनी समस्त बादशाहत देदे उसका दानपत्र लिखदे तो मैं तुम्हारा जान बचा दूंगा । बादशाहने विचार किया कि, क्या हुआ, यदि राज्य नहीं रहा तो क्या ? जीवन तो रहेगा । यह निश्चयकर कारबारियोंको आज्ञा दी कि, कागज लाकर दस्तावेज लिखो । दस्तावेज लिखा गया, बादशाहने हस्ताक्षर करके संतको दे दिया । संतने बादशाहके पेटपर हाथ फेरा, उसी समय अपान वायु निकली, बादशाह अच्छा हो गया । पश्चात् संतने कहा कि, यद्यपि अब तुझे बादशाहतसे कुछ सम्बन्ध नहीं रहा, क्योंकि, वो अब मेरी हो गई है। तो भी मैं इस तुच्छ राज्यको लेकर क्या करूँगा । इसपर तो अज्ञानी लोगही अभिमान किया करते हैं । इतना कहकर सन्त चले गये ।

ऐसे सहस्रों ही दृष्टान्त है कि, संन्तोंने तीनों लोकके राज्योंको तुच्छ समझकर त्याग दिये हैं क्योंकि, सांसारिक वैभव जितना बढ़ता है उतनाही भजनमें विघ्न होता है ।

भारत वर्षकी धार्मिकावस्था ।

पूर्वमें भारतवर्षमें रीति थी कि, प्रथम अपनी सन्तानको धर्मके साधारण नियमोंको सिखलाते थे, पीछे व्यवहारकी रीति बतलाते थे, जिसके कारण सबके अन्तःकरणमें धर्मकी आस्था बनी रहती थी । सब कोई धर्मकी अपेक्षा त्रिलोकीको तुच्छ जानते थे । वर्तमान कालमें प्रथमही अंग्रेजी फ़ारसी आदि व्यावहारिक भाषा तथा व्यावहारिक विद्या सिखाते हैं । पहलेसे अन्तःकरणमें धर्मका बीज तथा धर्मका ज्ञान न होनेसे लोग धर्मविमुख हो जाते हैं । जिनके अन्तःकरणमें धर्मकी आस्थाही नहीं वे गुरु संतोंकी सेवा भक्ति क्या करेंगे ? ऐसे धर्मकी आस्थासे हीन पुरुषोंकी आयु परिश्रमी पशुके समान व्यतीत होती है । वे आपको बुद्धिमान् ज्ञानी समझते हैं पर बुद्धिकी तो उनके पास गंधतक नहीं आती, मिथ्या धृष्टता और निर्लज्जतामें अपनी आयु व्यतीत करते हैं ।

परधर्म और विद्यामें श्रद्धा रखनेसें हानि।

फारसीके पढ़नेमें यह भी रीति है कि, प्रथम बिसमिल्लाह पढाते हैं पर अंगरेजी पढनेमें तो बसमिल्लाही नदारद है।

जिस विद्या अथवा व्यवहारमें प्रथम ईश्वरका नाम न लिया जावे उस विद्या और व्यवहारसे अंतःकरणमें अन्धकार फैलता है। आजकल अंग्रेजी राज्यमें कोई भी ऐसा नहीं वर्तमानके विद्या जाननेवालोंमें जो ईश्वरका नाम लेकर कोई पुस्तक अथवा काम आरम्भ करता हो। आजकल किसी पुस्तकके माथा (हेडिंग) पर कभी भी ईश्वरका नाम नहीं लिखा जाता यही कारण है कि, ईश्वर नाम विहीन पुस्तकोंसे किसीको ज्ञान नहीं प्राप्त होता। म्लेच्छ विद्या पढनेसे सबकी बुद्धि भ्रष्ट होगई। प्रथमसेही आजकलकी अवस्थाको जानकर सन्तोंने पहिलेहीसे भविष्यत् कथन कर दिया है कि, कलियुगमें लोगोंकी सत्य बुद्धि नष्ट हो जावेगी।

नानक शाह वचन।

"क्षत्रियोंने धरम छोडे म्लेच्छ भाषा गही सृष्टि सब एक बरन हुई।"

उचित कर्तव्य।

इस लिये उचित है कि, प्रथम धर्मकी शिक्षा देकर तब दूसरा कुछ सिखावें, प्रथम परमेश्वरका नाम लें पीछे, किसी कामको आरम्भ करें।

कितने लोग ऐसे कहा करते हैं कि, जिन सन्तोंका वर्णन शास्त्रों और ग्रन्थोंमें लिखा है, वैसे संत अब कहाँ हैं? पर यह नहीं समझते कि, संत और ईश्वरका कभी अभाव नहीं होता। जब कोई विशेष कारण उपस्थित होता है तो सन्त प्रगट होते हैं अपना काम करके गुप्त हो जाते हैं।

कथा—एक राजा बडा अभिमानी था, अपनेसे सबको तुच्छ समझता था। एक दिन आखेटको चला। अच्छे २ घोडे और उत्तम २ वस्त्र मँगवाकर पहने कुछ सेना साथ लेकर रवाना हुआ। चलते २ एक मैदानमें पहुँचा। वहाँ मैले कपडे पहने हुये एक दरिद्री मनुष्य मिला प्रणाम करके दुःखीरूप मनुष्यने कहा कि, यदि आज्ञा दो तो कुछ विनय किया चाहता हूँ राजाने आज्ञा दी। उसने कहा कि, मैं केवल तुम्हारेही कानमें कहूँगा। राजाने इस बातको भी स्वीकार किया। जब उपरोक्त मनुष्यने राजाके कानमें आकर कहा कि, मैं यमदूत हूँ तुम्हारा प्राण निकालने आया हूँ। इतना सुनते ही तो राजाका चेहरा पीला पड़ गया। यमदूतसे कहा कि, मुझे अपने परिवारोंसे तो मिललेने दो।

(उस यमदूत) ने कहा कि, अब यह बात नहीं हो सकती। राजाने कहा कि, घोड़ेसे उतरने दो। उसने यह भी स्वीकार नहीं किया राजा घोड़े परही मर गया। सब अहंकार धूलमें मिल गया। यह संसारी वैभव मनुष्यको अन्धा बना देता है।

यही दशा शद्दाह बादशाह की हुई थी। उसने बारह वर्षमें स्वर्ग बनवाया पर जब उसे देखने चला तबही यमदूत मिला उसके साथियोंके साथ उसे पाताल भेज दिया।

जो लोग नमरूद और फिरऊनके समान ईश्वर विमुख हैं उनको कभी चेत नहीं होता। लाखों प्रकारकी युक्ति की जावें। नानाप्रकारकी सिद्धियाँ और भय उपजानेवाली लीला दिखाई जावें पर वे नहीं समझते, जहाँ सांसारिक वैभव होता है उसकी अधिकता पाकर मनुष्य अवश्य ही अन्धा हो जाता है।

कैसा धर्म स्वीकार करना चाहिये।

जो कोई किसी (मजहब) को स्वीकार करना चाहे उसे उचित है कि, प्रथम छः बातोंको विचार करले, भली प्रकार परीक्षा कर पीछे स्वीकार करे। वे छः बातें ये हैं।

१ गुरु, २ आचार्य, ३ शास्त्र, ४ देव, ५ नाम और ६ धाम ?

जैसे १ गुरु पारख, २ आचार्य कबीर साहब, ३ शास्त्र स्वसंवेद, ४ देव सत्त पुरुष, ५ नाम शब्दसार अथवा मुक्तिकाद्वार शब्दसार, ६ धाम सत्यलोक। जो कोई उपरोक्त विषयोंके बिना विचारे किसी धर्मको स्वीकार करेगा वह अवश्य बन्धनमें पड़ेगा।

यह सारा संसार माया है, स्वामी सेवक सब माया है। अक़ली और नकली सब माया है जो कुछ कहा और सुना जाता है। सब माया है, मायाकी ही आटमें ब्रह्म है। जैसे माताकी ओटमें पिता छिपा है, माताको सब देखते हैं पर पिताको कोई नहीं देखता, माताने आपको प्रगट किया, पिताको गुप्त रक्खा. यह देह छः धातुओं से बनता है जिसमेंसे तीन धातु चर्म, मांस, लोहू, माताका अंश हैं शेष तीन अस्थि (हाड) गूद (मज्जा) बिन्द (वीर्य) पिताका अंश है। जो कोई पिता से मिलना चाहता है उसको चाहिये कि, अन्तःकरणसे माताका स्नेह निकाले। तात्पर्य्य यह कि, जब-चर्म, मांस, रक्त परसे दृष्टि उठावेगा तब हाड और गूद बिन्दको देखेगा। दोनोंसे जो कोई भिन्न हो सो अद्वैत अनुपमका दर्शन पावे। सब मनुष्य माया और ब्रह्मके ध्यानमें लगे हैं, इसी प्रकार मायाके बन्धनसे बाहर नहीं जा सकते। वेद, किताब, शरअ, शास्त्र सब मायामें ही है, इनके पार होना कठिन है।

पांच तत्व और तीनों गुणोंसे यह शरीर बना है। चौदह इद्रियाँ भी पांच तीनकेही विचार हैं। जितने कहनेवाले हैं, सब इन्हींके भीतर बात कर सकते हैं। जब पूछा जाता है कि, जिसके आश्रय ये सब खडे हैं, जो सबकी आधार है उसका क्या रूप है ? क्यों जितने नाम रूप हैं वो सब माया है। तीनलोक भव-सागर माया सृष्टि है। जो मायासे पार होना चाहता हो संसार अर्थात् मायाके किसी पदार्थमें भी आसक्त हो तो उसे सत्यकी कुछ भी सुधि नहीं, ऐसा जानना चाहिये केवल गुरुही उस अद्वैतकी सुधि बता सक्ता है दूसरा कोई नहीं बता सकता।

संसारके सभी लोग उन्मत्तोंके समान कर्म करते हैं स्वप्न और जाग्रत्में विशेष भेद नहीं। संसारमें फँसा हुआ मनुष्य अचेत होता है उसके जितने कर्म होते हैं सभी अचेतताके होते हैं। यदि इनकी बुद्धि ठीक होती तो उन्मत्तोंकेसे कर्म क्यों करै ? जहाँ बुद्धिको भ्रमही नहीं हो सक्ता उसको अनुमानकर निश्चय करना मूर्खता नहीं तो दूसरा क्या है ? सब ऋषि, मुनि, महात्मा, तत्वज्ञ, विद्वान, ज्ञानी आदि सर्वदासे कहते आये हैं कि ईश्वरीय भेदमें बुद्धि कुछ काम नहीं कर सकती। जो बुद्धि और इन्द्रियोंकी पहुँच वहांतक बतलावे वह विक्षिप्त है। समस्त इन्द्रियोंमें बुद्धि सबसे श्रेष्ठ है। यदि बुद्धिही वहाँ नहीं पहुँच सकती तो दूसरीइन्द्रियाँ कैसे पहुँच सकती हैं ? जब बुद्धि सत्यतक नहीं पहुँच सकती फिर उसका निश्चय असत्यही हुआ। जिसने असत्यको स्वीकार कर सत्पुरुषकी भक्तिको छोड दिया वह मनुष्य नहीं, यही क्या मनुष्यत्वका उसमें लेश भी नहीं है।

साखी—कबीर तिनका जन्म अकार जो, बिन भक्ति मरि जाँय।
मुरगीकेसे बचा ज्यों, फिरसी जगके माँहि ।।

जितने लोग और किताबोंके ऊपर भरोसा रखते हैं, उनको प्रकाशका मार्ग मिलना कठिन है. क्योंकि, किताबादि उन्हीं लोगोंके लिये हैं जिनको ज्ञानका का कुछ भी प्रकाश नहीं।

बीजककी रमैनी।

अंधको दर्पण वेद पुराना। दर्वी कहाँ महारस जाना ।।
जस खर चन्दन लादे भारा। परिमल वास न जान गँवारा ।।
कहै कबीर खोजा असमाना। सो न मिला जेहि जाय अभिमाना।।

वेदके टीकाकारोंमें कित्ता झगडा पडा है। कोई कुछ कोई कुछ कहता है। किसीको यथार्थकी सुधि नहीं है जिससे शुद्ध और सत्य टीका करे। इसी कारण कबीरसाहब कहते हैं—

अंधको दर्पण वेद पुराणा

संसारके लोग जो वेद पुराण पढ़ते हैं उनका पढना अन्धोंकी आरसीके समान है। जैसे अन्धोंको आरसी दिखलानेसे कोई लाभ नहीं होता, वह अपना न तो मुँह देख सक्ता है, न उससे कुछ आनन्द प्राप्तकर सक्ता है । यदि अंधा दर्पण हाथमें लेकर उसका अभिमान करे कि, मेरे पास दर्पण है, तो उसका ऐसा अभिमान देखकर आँखवाले लोग हँसते हुए मूर्ख जानते हैं। ऐसेही अशुद्ध अन्तः-करणवाले अज्ञानी पुरुषोंका वेद पढ़ना है । ऐसे लोग वेदपाठसे कुछ भी लाभ नहीं उठा सक्ते, मिथ्या अभिमान करते हैं । जैसे अन्धा हाथोंसे टटोलकर पदार्थको छू सकता है पर उसके स्वरूपके आनन्दको नहीं प्राप्त कर सक्ता । उसी प्रकार अशुद्धान्तःकरणवाला यदि वेदको पाठकर जावे तो भी उससे कुछ पा नहीं लेता न वेदके यथार्थ आशय और गुणको ही जान सकता है।

दर्बी कहाँ महारस जाना।

इसी प्रकार दर्वी अर्थात् कड़छी जो कि दाल, चावल, हलुआ, शाक आदि सर्व व्यञ्जनोंमें फिरती पर उसको उनके स्वादका कुछ भी ज्ञान नहीं

जस खर गंवारा।

ऐसेही यदि गदहेके ऊपर चन्दनका भार लाद दिया जावे तो उस चन्दनकी सुगन्धि और गुणसे उसको कुछ लाभ नहीं होता ऐसाही अशुद्धान्तःकरण, मनुष्यत्व, गुणशून्य, पुरुष कड़छीके समान सब वेदोंका दिन रात अभ्यास करता रहे अथवा गदहेके समान वेद पाठके अभिमानका बोझ उठाये फिरे तो उसको कुछ लाभ नहीं हो सकता.

कहै कबीरअभिमाना

कबी साहब कहते हैं कि, आकाशको खोजता फिरता है पर वह मिलता जिसका कि अभिमान नष्ट हुआ हो ।

परमात्मा जिसको स्वयम् मार्ग दिखावे वही उससे मिले उसको पहचाने जिससे अभिमान दूर हो । यह गुण तो केवल सत्यगुरुमेंही है, जिसके कि मिलनेसे शाह सिकन्दर लोदी जैसे अभिमानी धर्म द्वेषीका सब अहंकार नष्ट होगया, सत्य-गुरुके चरणोंका रज बन गया । कबीर प्रसङ्गमें गरीब दासजीकी वाणी देखो—

"चरण धोइ पिये सिकन्दर सिताब । तुम्ही अर्शमक्का तुही है किताब ।।"

ब्राह्मणका कत्ल — सिकन्दर लोदी इतना बड़ा धर्मद्वेषी धर्माभिमानी पुरुष था कि, एलफिन्स्टन नामक इतिहास लेखक अङ्गरेज अपने इन्डियन् हिस्ट्रीमें एक हाल इस प्रकार लिखता कि एक समय मुसलमान लोग किसी स्थानपर

मुहम्मदी धर्मकी प्रशंसा कर रहे थे, उस समय एक ब्राह्मण कह उठा कि, हिन्दू धर्म (आर्य धर्म) इसलाम धर्मसे कम नहीं बरन् तुल्य है. उसकी इतनीही बातपर काज़ी और मुल्लाओंने शाह सिकन्दरके निकट जाकर नालिश की। सिकन्दरने तत्कालही ब्राह्मणके वधकी आज्ञा दी। जिस समय ब्राह्मणका बध होने लगा दयालू मुसलमान फकीरने कहा कि, निरपराध प्रजापर अत्याचार न करना चाहिये। इस बातपर फकीरके ऊपर बादशाह बहुत क्रोधित हुआ, ब्राह्मणको कतल करवा दिया. फकीरसे कहा कि, बुतपरस्तकी सिफारिश मत किया कर।

गुरुपदके योग्य – धन्य है उस सच्चे सद्‌गुरु जिसके मिलनेसे ऐसा धर्म-द्वेषी मनुष्य नम्र हो गया, उसकी कठोरता नष्ट होगई। सब श्रेष्ठता और प्रशंसा उसी सद्‌गुरुसे है मनुष्यके अभिमानको नष्ट करके अधीनता और नम्रता प्राप्त करानेवाला दूसरा कोई नहीं। उसीकी शिक्षासे सब गुरुपदके योग्य होते हैं।

ईश्वरार्पण दान – संसारी पुरुषोंको उचित है कि, अपनी कमाईमेंसे कुछ अंश दानपुण्यमें खर्च करे तथा संत और गुरुकी सेवामें अर्पण करे जो ऐसा नहीं करता है वह कारून[१]के समान नर्कका भागी होता है।

जिस प्रकार प्रजा राज्यका कर न चुकावे तो वह अवश्य राजाके क्रोधानल का ईंधन बनेगी कारागारका कष्ट सहेगी इसी प्रकार जो ईश्वरार्पण दान पुण्य नहीं करता वह अवश्य ईश्वरका अपराधी हो नर्कका भागी बनता है। जिस प्रकार राज्यके सिपाही कर वसूल करनेके लिये प्रजाके पास जाते हैं उसी प्रकार साधु, संत, दुःखी, लाचार; ईश्वरके सेवक मनुष्योंसे ईश्वरी कर लेने आते हैं। राज्यके सेवकोंको प्रजाप्रतिष्ठाके साथ अधीनतासे कर दे देती है तो सुखपूर्वक अपना व्यवहार चला सकती है नहीं तो अड़चन होगी। उसी प्रकार ईश्वरी सेवक संत और साधु जब गृहस्थोंके निकट जावें तो उन्हें उचित है कि, उनको सत्कार पूर्वक अपनी शक्ति अनुसार जो कुछ ईश्वरार्पण देना हो सो दे, यदि ऐसा न करेगा तो ईश्वरी कोपका अधिकारी होगा।

---

१ कारूनका हाल–मुसलमानी किताबोंमें लिखा है कि, उसके पास इतना धन था कि चालीस गज लम्बी, चालीस गज चौड़ी एवं इतनीही ऊंची, चालीस कोठनिरयाँ उसके खजानेकी कुञ्जियोंसे भरी हुई थीं, पर वह ऐसा कृपण था कि, कभी भी एक पैसा किसीको नहीं देता था। मूसा पैगम्बरने उसे बहुत उपदेश किया पर उसने कुछ भी न सुना। अन्तमें वह अपने द्रव्योंको शिरपर लिये हुये पातालमें धँसने लगा। ऐसा कहते हैं कि, वह वैसाही अब तक पृथ्वीमें धसता चला जाता है। कयामतके रोज पातालमें गिरेगा उसके द्रव्योंके शब्दसे संसारभरमें लोग चकित होंगे। चाहे जैसी असम्भव और दंतकथा हो पर उसका सार यही है कि, कृपण पुरुषको आदि अन्त और मध्यमें सर्वदा दुःखही रहता है उसका जीवन कभी सुखसे नहीं बीतता, चिंता भय और शोक तो उसके सदाकेही साथी हैं।

कबीर साहब कहते हैं कि, संसार ठगोंको अपना ईश्वर जानकर पूजता है। उसके परिणाममें जन्म जन्म दुःख पाते हैं, जिस प्रकार बकरा कसाईसे प्रीति कर उसके निकट जाता है, उसका शिर काटा जाता है। यदि उसे इस बातका ज्ञान होता कि, यह तो मेरा वधिक है तो क्यों पास जाता? उससे क्यों प्रीति करता, बरन् उससे वो पृथक् होकर भाग जाता गला कटानेसे वञ्चित रहता।

कबीर साहब और हंस कबीर चारों युगोंसे समझाते चले आते हैं। पर प्राकृतिक संसारी जीव ऐसे अज्ञानान्ध हो रहे हैं कि, उसपर ध्यान नहीं देते। वारम्वार उसीसे प्रीति करते हैं जो कि, अपने जालमें फँसाकर मार लेता है।

मनुष्य और पशुका विवेक।

मनुष्यको विचार करना चाहिये कि, मनुष्य और पशुमें किस बातका भेद है। शारीरिक व्यवहारमें सब समान हैं। लौकिक पारलौकिक सब सामग्री दोनों को एकसी प्राप्त हैं। यदि भेद है तो इतनाही कि, मनुष्यको वह ज्ञान प्राप्त हो सक्ता है. जिससे मुक्ति हो सक्ती है. क्योंकि मुक्तिका कारण ज्ञान मनुष्य शरीर में ही प्राप्त हो सक्ता है, प्रकृतिने केवल मनुष्य शरीरकोही वो श्रेष्ठता दी है जिससे कि, सारशब्दको प्राप्तकर सत्यपदको प्राप्त हो।

सांसारिक धन वैभवके लिये लड़ना, झगड़ना, मरना, मारना, जीत हार पाना सब पशु धर्म हैं। विषय वासनाकी अपेक्षा करके एक चक्रवर्ती राजा व महान् दुःखी दरिद्री पुरुष दोनों तुल्य हैं। एक राजा अथवा जाति दूसरेसे लड़ते, भला बुरा कहते और द्वेष करते हैं वो सब पशु बुद्धिसेही करते हैं. क्योंकि, ये गुण पशुओं मे देखे जाते हैं।

जंगली घोड़ोंका झुण्ड और उनके चरनेके खेत अलग अलग होते हैं यदि एक झुण्डका कोई घोडा दूसरे झुण्डमें आजाय तो परस्पर घोर युद्ध करते हैं। इसी प्रकार बन्दरोंमें भी है कि, जब एक झुण्डके बन्दरको अथवा उनके किसी पदार्थको दूसरे झुण्डके बन्दर कुछ दुःख देते अथवा कुछ लेलेते हैं तो दोनों मण्डलियोंमें तुमुल युद्ध होता है।

बटेरोंके पकड़नेवाले अपने पालक बटेरको लेजाकर ऐसे खेतोंमें बांध देता है जहां बहुतसे बटेर हों, उसके चारों ओर दूरतक जाल फैला देता है। जब वह पालक बटेर शब्द करता है तो उसके शब्दको सुनकर उस खेतके रहनेवाले जंगली बटेर दौड़कर उसे मारने आते हैं क्योंकि, उनको इस बातपर क्रोध आता है कि, हमारी जागीरमें यह दूसरा बटेर क्यों आया। उसके निकट जाते २ सबके सब जालमें फँस जाते हैं। इसी प्रकार जो मनुष्य परस्पर राग द्वेष करके

नाशमान पदार्थों के लिये लड़ा करते हैं वे पशु पक्षीसे न्यून नहीं, उनमें मनुष्यता की गंध भी नहीं होती।

मनुष्य वही है जो पशुधर्मसे रहित शुद्ध मनुष्यधर्मको धारण करने वाला हो। जिस प्रकार चिड़ीमार पक्षियोंको पकड़ २ कर मारता खाता है, उसी प्रकार काल पुरुष सर्व जीवोंको विषयबासनामें फँसाकर मारडालता है।

मनुष्यको परमत्माने सब जीवधारियोंमें श्रेष्ठ इस कारण बनाया है कि, ये सब जीवधारियोंकी यथार्थ अवस्थाको जानकर यथाशक्ति उनकी रक्षा करे उनसे उनकी शक्ति अनुसार काम ले। इस कारण श्रेष्ठ नहीं बनाया कि, उनको मार मार कर खावे। पिछले अध्यायोंमें भली प्रकार युक्ति और प्रमाणोंद्वारा सिद्ध कर आया हूँ कि, एकही आत्मा सब जीवधारियोंमें व्यापक है, केवल उनके कर्मोंने उनको भिन्न २ रूपोंमें प्रकट किया है। मनुष्यका मुख्य भोजन अंकुरज पदार्थ है वरन् उसमें भी विचार करके अपने लाभदायक पदार्थोंकोही ग्रहण करनेकी आज्ञा है।

कुरान्में तो ईमान (धर्म) का सार दया बतलाया फिर अन्याय और अत्याचार बतलाना पिशाचोंकी धोखेबाजी है।

यजुर्वेदमें विराट् पुरुषकी व्याख्यामें स्पष्ट लिखा है कि, सब जीवधारी विराट् पुरुषके अस्थि, मांस और चर्म हैं, अंकुरज केश और नख हैं। देखो केश और नखके काटनेसे किसी प्रकारका कष्ट नहीं होता बरन् मांस और हड्डीको काटो तो कष्ट होता है। जो मांस चर्म और अस्थि निकालेगा वह विराट् पुरुषका शत्रु है। सारे मांसाहारी और हिंसक ईश्वरके शत्रु और सदाचारविनाशक हैं वे अवश्य नरकको जायंगे।

धर्मोंके इष्टदेव—संसारमें जितने धर्म प्रचलित हैं सबके नियामक ब्रह्मा विष्णु और महेश येही तीन देव हैं। कोई किसी धर्मको क्यों न ग्रहण करे इन तीन देवोंके शासनसे बहिर्गत नहीं होसकता। ईसाईयोंने बडे परिश्रम और व्ययसे इन तीनों देवोंके औगुणोंको लिखा है उनकी निन्दा करके हिन्दुओंके खिझानेकी किसी युक्तिको भी शेष नहीं रखा है पर उनको यह नहीं मालूम कि उनने कभी इस बातका विचार नहीं किया है कि, आदमका खुदा इन तीनों देवोंसे श्रेष्ठ नहीं था। इबराहीमको जो तीन फिरिश्तः मिले थे वे कौन? कैसे थे? वे तीन फिरिश्ते जिन्होंने मुहम्मद साहबका पेट चाक करके शैतानी रक्त निकाला था वे कौन थे? यदि वे बिचार करें तो जान पडेगा कि, ब्रह्मादि तीन देवताओंसे भी छोटे थे जितने धर्मवाले हैं सब परस्पर राग द्वेष करके एक दूसरेके इष्टोंकी निन्दा

करते हुये अज्ञानता वश, अपनेही इष्टकी निन्दा करते हैं। इसी कारण उनके विश्वासमें न्यूनता होती है ।

मूर्खोंकी मूर्खता – ये तीनों देव परस्पर ऐसे मिले हुये हैं कि, पर मनुष्य धोखेमें पड़कर अज्ञानतामें पड़ा हुआ अत्याचारोंमें फँसा हुआ भी अपने २ धर्मको सर्व श्रेष्ठ समझता है । वैष्णव शिवकी और शैव विष्णुकी सदा निन्दा किया करते हैं । ग्रन्थोंमें भी यही विरोध लिख रखा है जिनको पढ २ कर मिथ्या पक्षपातमें पड़ा हुआ मूर्ख यथार्थसे वंचित हो सर्वनाश करता है । ब्रह्माकी पूजा तो कहीं होती ही नहीं बरन् शिव विष्णु आदिकोंके पूजकोंमें परस्परका इतना विरोध है कि, इसका अबतक ठीक २ स्पष्टीकरण हुआही नहीं कि, दोनोंमें कौन श्रेष्ठ है ।

भागवत––भवव्रतधरा ये च ये च तान्सममनुव्रताः ।
पाखण्डिनस्ते भवन्तु सच्छास्त्रपरिपंथिनः ।।
मुमुक्षवो घोररूपान् हित्वा भूतपतीनथ ।
नारायणकलां शान्तां भजन्ति ह्यनसूयवः ।।

जो सच्चे शास्त्रोंके दुश्मन शिवजीको तरह भस्म रमाते हैं वे पाखण्डी होते हैं ।। मुमुक्षु जन घोररूप भूतपतिओंको छोड़कर निन्दा न करते हुए भगवान् नारायणकी शान्तकलाको भजते हैं । इसी प्रकार दक्षिण देशके रामानुजसम्प्रदायी वैष्णवलोग भूलसे भी शिवका दर्शन नहीं करते । ऐसाही पद्मपुराणमें शिवजीके विषयमें यह श्लोक है ।

विष्णुदर्शनमात्रेण शिवद्रोहः प्रजायते ।
शिवद्रोही न संदेहो नरकं याति दारुणम् ।।

अर्थ–विष्णुके दर्शनमात्रसे शिवद्रोह उत्पन्न होता है और इसमें कुछ सन्देह नहीं कि, शिवका द्रोही अवश्य नरकमें पड़ता है ।

इसी प्रकार मूर्खोंके बिना तात्पर्य्य समझे परस्पर विरोध मान रखा है. तीनों देव परस्पर मित्र रहते हैं पर मूर्खलोग परस्पर राग द्वेष करके लड़ते झगड़ते हैं ।

तुलसीदासजी–तुलसीकृतरामायणमें लिखा है कि, रामचन्द्रने सेतुबांधपर शिवका रामेश्वर नामक लिंग स्थापन कर पूजन किया और कहा–

चौ०––शिव द्रोही मम दास कहावे । सो नर मोहि सपनेहु नहि भावे ।।

दो०––शिव द्रोही दास मम, मम द्रोही शिवदास ।
सो नर करें कल्प भर, घोर नरकमें बास ।।

इसी प्रकार मूर्तिपूजाकी कहीं कहीं स्थापना है और कहीं कहीं तो बड़ी मोक्ष देनेवाली बतलाई है।

कालपुरुष सबकी बुद्धियोंपर अधिकृत हो उसपर इस प्रकार शासन करता है कि, सर्व धर्मवाले परस्पर विरोधमें पड़ राग द्वेषमें ही अपना जीवन व्यतीत करते हैं किसी उपायसे भी सत्पुरुषकी भक्तिकी ओर नहीं लगते। जब कोई सत्य भक्तिकी ओर लगता है तब नानाप्रकारकी युक्ति उपायों द्वारा उसमें विघ्न डालता है. क्योंकि, काल पुरुष भयमें रहता है कि, कोई मेरे शासनसे बाहर न जावे। इसी धोखे और छलसे सब मनुष्योंको अपने पाशमें फँसा रक्खा है। पूर्वीय अज्ञान और विचार और पश्चिमीय चार किताब मनुष्यके फँसानेके हेतु महाजाल हैं। इन महाजालोंसे बाहर निकलना बहुत कठिन है। सबके सब इसीमें भटक भटककर मर जाते हैं।

भवतारणका उपाय – सब मनुष्योंको जानना चाहिये कि, जिसको वे निराकार निर्लिप्त परमात्मा कहते हैं वह केवल एक ठीकादार है बाकी सब परमेश्वर उसकी ओरसे कारबारी हैं।ठीकादार तो अपने ठीकेका दिन पूराकरके लुप्तहोजावेगा उसके कारबारी तो उससे भी प्रथम अपने कर्मानुसार प्रस्थान कर जावेंगे। सर्वश्रेष्ठ प्रभु, अजर, अमर, एक रस आदि गुणोंवाला परमात्मा इन सबोंसे भिन्न है, वो केवल सत्गुरुकी कृपा द्वाराही जाना जाता है। एक लाख अस्सी सहस्र पैगम्बर हो गये वो सब उसी ठीकेदारके पुत्र हैं, सबके सब उसी एककी साक्षी देते आये हैं। किसीने ठीकेदारकी सुधि बतलाई, किसीने दूसरे खुदाओं का पता बतलाया। इस प्रकार सब झूठे भ्रमकोही बतलाते आये, यदि उनको सच्चे परमात्माकी खबर होती तो ऐसी झूठी साक्षी न भरते॥

सत्य पुरुषके जितने पुत्र हैं सबमें कालपुरुष महान् बलिष्ठ है। उसने अपने तप और भक्तिके बलसे तीनों लोकोंकी ठीकेदारी प्राप्त की है सत्तर असंख्य युगतक ठीकेदारी करके फिर चला जावेगा, दूसरे ईश्वरभी लय हो जावेंगे, शेष शुद्धपरमात्मा जिसकी सत्तामें सब हैं उसीकी भक्ति करनेसे मुक्ति प्राप्त होगी। सबका हर्ता कर्ता वही है। ब्रह्म, जीव, ईश्वर, माया उसीके शासनमें हैं। वह कहने, सुनने, बुद्धि, अनुमान सबसे परे हैं। सत्गुरुकी दया बिना उसका मिलना असम्भव है जो कहने सुनने, जानने, विचारने और निश्चय करनेमें आता है वो सब माया है मिथ्या भ्रम है। धन्य है वह पुरुष जो सच्चे परमात्माको ढूंढ़ता है, उसकी भक्ति का अनुरागी तथा प्रेमी होकर अपना सर्वस्व उसके ऊपर निछावर करता है। उसीकी कृपासे भवसागर तरा जा सकता है, दूसरा कोई भी उपाय नहीं है।

कालकी फाँसीसे त्राण।

जो कोई कालकी फांसीसे बचा चाहता है वो साधुकी सेवा और संगति

करे अपनेको सत्गुरुकी कृपा योग्य बनावे। सेवा और भक्ति बिना सत्गुरुकी दया नहीं हो सकती। इस कारण सतगुरुके दर्शनको, साधुके मिलनेको, सतसंगको जब जाना हो तब कुछ न कुछ भेंट ले जाना चाहिये द्रव्य नाज वस्त्र अथवा कोई दूसरा पदार्थ अवश्य कुछ न कुछ लेकरही साधुके दर्शनको जाना चाहिये। रीते हाथ जाना उचित नहीं। यदि दरिद्र है तो चार दातन अथवा फलही लेकर जावे। सन्त सेवाका सदा ध्यान रखे। संतोंमें किसी प्रकारकी भेददृष्टि न करे, तबही संत और गुरुकी दयाका पात्र हो सकता है। खाली जाकर हाथ केवल संतगुरुसे बकबक करके व्यर्थ समय नष्ट करता है सेवा नहीं करता वह नारकी है।

इतिहासोंसे प्रमाणित होता है कि, पूर्वकालमें इसाइयोंमें भी भजन और तपादि ईश्वर संबन्धी कार्योंकी उत्तम उत्तम रीतियाँ थीं। हिन्दू और मुसलमान सन्तोंके समान उनको भी ज्ञान प्रकाश प्राप्त होता था, जबसे ईसाई लोगोंने सन्तों की निन्दा करनी आरम्भ कर दी, तबसे ईश्वरका नाम स्मरण जप ध्यान आदि सब प्रकारका भजन छूट गया भजन भक्तिका तो नाम भी न रहा। यही कारण है कि, इसाइयोकी बुद्धि संसार विमुख होगई, ईश्वरसे इतनी विरोधता करने लगी कि, उसका नाम लेना भी निरर्थक समझने लगे।

जबसे सन्तोंका अभाव हुआ तबसे गृहस्थोंसे दान पुण्य और उदारता नष्ट होगई। वर्तमानमें ईसाइयोंके धर्म गुरु लोग जो पादरी नामसे पहचाने जाते हैं भजनसे रहित विषय वासनामें लुब्ध हो रहे हैं। वर्तमान कालके लोगोंकी बुद्धि ऐसी स्थूल हो रही है कि, यदि समझाने पर भी नहीं समझते। सब अपने हानि लाभसे अज्ञात हैं, जो मन कहता है उसीके ऊपर चलकर अपना सर्व नाश करते हैं। ईश्वरका भय और धर्मानुरागका तो नाम भी बाकी नहीं रहा है।

वर्तमानके लोग (भारतवासी) अङ्गरेजी शिक्षा पाकर भक्ति और धर्म श्रद्धासे ऐसे हीन होगये कि, साधु सन्तों तथा धर्मज्ञ सज्जनोंको देखकर नमस्कार तक नहीं करते। कोट, बूट, सूटके अभिमानमें ऐसे घमण्डसे चलते हैं मानों आजही बिलायतसे आये हैं। जो लोग धर्मादामें विद्या पढ़ते हैं सर्कार शिक्षकों को वेतन देती है मुफ्तमें विद्या प्रदान करती है, ऐसी गुरुभक्ति और सेवाहीन विद्या प्राप्त करनेवाले गुरुकी प्रतिष्ठा और सेवा भक्ति कब कर सकते हैं?

यदि भारतवासी अपनी गई हुई सुखमय अवस्थाको प्राप्त करना चाहते हैं तो उचित है कि, प्रत्येक पिता अपने २ वंशोंको प्रथम धर्मशिक्षा दें। गुरु, साधु, सन्त और श्रेष्ठोंकी सेवा भक्ति सिखलावें। पीछे दूसरी लौकिक और पारलौकिक विद्या सिखलावें।

अध्याय २४.

प्रश्नोत्तर ।

ब्रह्म और माया ।

१ प्रश्न--ईश्वर क्या है ?

उत्तर – ईश्वर, खुदा, गाड, एवाह, रहीम, राम, करीम, अल्लाह, आदि ईश्वरके जितने नाम जगमें प्रसिद्ध हैं वे सब मायाके नाम हैं क्योंकि, नाम रूप माया है। सृष्टिको उत्पन्न करनेवाली भी माया है। ईश्वर भी मायासे है। वही माया सृष्टिमें शासन करती है। सब खेल उसीका है।

२ प्रश्न--माया क्या है ?

उत्तर – माया ब्रह्मकी अर्द्धांगिनी है। ब्रह्म शुद्ध और चैतन्य है। माया अचेत और जड़ है। माया सर्वदा ब्रह्मके सङ्ग रहती है जैसे कि, वृ के साथ छाया रहती है। जिस प्रकार नदीमें वृक्षका प्रतिबिम्ब पड़ता है उसी प्रकार ब्रह्म जीव में रहता है इसी कारण ब्रह्म जीवसे लिप्त और अलिप्त है अर्थात् भिन्न और अभिन्न है। मायासे पार ब्रह्मही ब्रह्म है दूसरा कुछ नहीं है। सर्वव्यापक ब्रह्म है, उसीके सङ्ग माया रहती है। जिस प्रकार वायुसे जलमें तरङ्ग उठते हैं जबतक वायु नहीं डोलती तबतक तरङ्ग नहीं उठते उसी प्रकार ब्रह्ममें माया अर्थात् फुरना उठती है तब सब कुछ होता है। जब शान्त हो जाती है तब रचनाभी शान्त हो जाती है।

३ प्रश्न – ब्रह्मका नाम क्या और मायाका नाम कौनसा है ?

उत्तर – ब्रह्मके पाँच नाम हैं। ब्रह्म, काल, कर्म्म, जीव, स्वभाव। जो अखण्ड है, अविभाज्य और अविनाशी है उसको ब्रह्म कहते हैं। स्वयम् होनेवाले को काल कहते हैं। समस्त कर्म्मोंको कर्म्म कहते हैं। जो अपनेको न जाने उसे जीव कहते हैं। स्वभाव उसको कहते हैं जिससे शुभ अशुभ दुःख सुखका ज्ञान हो।

ऐसेही मायाके पाँच नाम हैं। शून्य, शक्ति, माया, आकाश और प्रकृति। माया इस कारन कहते हैं कि, ब्रह्मके सङ्ग रहती है। आकाश इससे कहते हैं कि, शरीरकी आदि सृष्टि उसने की है। इस लिये शून्य बोलते हैं कि, जड़ है। शक्ति इस वास्ते कहते हैं कि, सब सृष्टिपर प्रबल है। सबपर अधिकारिणी है। प्रकृति इस कारण कहते हैं कि, यह ब्रह्मकी अर्द्धाङ्गिनी है।

४ प्रश्न – प्रथम आपने कहा था कि, जो कुछ जाननेमें आता है सो सब नाम रूप माया है। अब ब्रह्मकी और मायाकी भिन्न भिन्न व्याख्या बतलाते हो इसका क्या कारण है ?

उत्तर – उसका यही कारण है कि, मायाके दो रूप हैं । एकको ब्रह्म एवं दूसरेको माया कहते हैं । जैसे पुरुष और स्त्री दोनों माया हैं । संसारका व्यवहार जोड़के बिना नहीं चलता । द्वैतही संसारका मूल कारण है । मायानेही अपने दो स्वरूप बनाकर संसारको खड़ा किया है । माया और ब्रह्मके संयोगसे संसारकी उत्पत्ति, स्थिति और नाश है । प्रथम पुरुषसे प्रकृति, प्रकृतिसे महातत्त्व, महातत्त्व से अहंकार, अहंकारसे तीनों गुण, तीनों गुणोंसे आकाश, आकाशसे वायु, वायुसे अग्नि, अग्निसे जल और जलसे पृथिवी होती है । मायाही शरीरका कारण है । ब्रह्म चैतन्य है । जो आपको जानता है (ज्ञानस्वरूप) चैतन्य है । जो आपको जाने, अन्तःकरणको जाने, ज्ञान इन्द्रियको जाने, पाँचतत्त्व और तीनों गुणोंको जाने, सर्वको जाने वो चैतन्य ब्रह्म है । जड़ माया है दोनोंका सदाका सम्बन्ध है ।

दर्शन हुआ या नहीं ।

५ प्रश्न – लोग कहते हैं कि, आदम, नूह, इब्राहीम, मूसा तथा भारतवर्षके भक्तलोगोंने ईश्वरका दर्शन पाया । यह उनका दर्शन पाना सत्य है अथवा असत्य ?

उत्तर – समस्त संसार पठित अपठित मृतकके समान है । जिसको ज्ञान है वही जीवित है । मृतक दर्शन नहीं करते जीवितही दर्शन करपाते हैं । हाँ, सदाचारियोंने जो कुछ अपनी आंखोंसे देखा है वो उनका शुद्ध अन्तःकरण होनेके कारण उन्हींका संकल्प उनके ईश्वरके रूपमें देख पड़ा । वह संकल्प मात्रही हुआ । इस कारण जो उनने देखा सब मायाही देखी । ब्रह्म जो आवाङ्मनसगोचर है उसको आत्मज्ञानके बिना जानना दुर्लभ है । जो कुछ बहिर्दृष्टिसे देखनेमें आता है वो असत्य जड़ माया मात्र है । मूसा और दूसरे नबियोंका ईश्वर आत्म ज्ञानसे रहित था । उसको अन्तर्दृष्टि नहीं थी । हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, यहूदी, पारसी, आदि सभी धर्म्मवाले ईश्वरके यथार्थ स्वरूपको जाने बिना परस्पर रागद्वेष करके एक दूसरेसे लड़ते झगड़ते हुए सुखी दुखी होते हैं । सारे संसारमें जो ईश्वरको व्यापक नहीं जानता वह पशु है । पशुमें और उसमें कुछ विभिन्नता नहीं है । जैसे पशु अज्ञानतासे मृतकके समान हैं उसी प्रकार आत्मज्ञान रहित सभी मनुष्य अविद्याके अन्धकारमें पड़े मृतक हो रहे हैं ।

दृष्टान्त – जब मुसलमानोंका राज्य हुआ तो धर्म्म द्वेषमें पड़कर उन्होंने हिन्दुओंके ऊपर बहुत अत्याचार करना आरम्भ कर दिया । हिन्दुओंके यज्ञोपवीत तोड़ लिये जाते थे, माथेके तिलक चाटलिये अथवा मिटा दिये जाते थे, इसी प्रकार अनेक उपद्रव और अत्याचारोंसे हिन्दुओंके धर्म्म और वैभवको नाशकर अनन्त दुःख पहुँचाये जाते थे । यह बात प्रसिद्ध है कि, उसी समय सुथरेशाह नामक एक

हिन्दू साधू दिल्लीमें गया । उसने छोटे बालकके माथामें विष्ठेकी तो तिलक लगाई और चमड़ेका यज्ञोपवीत गलेमें पहिन लिया । इसी रूपसे फिरता फिरता काजीके सन्मुख गया । काजीने उसे देखतेही उसकी तिलक चाटी पर तिलकके स्वादसे जान गया कि, यह तो मिट्टीकी नहीं वरन् विष्ठेकी तिलक है । फिर यज्ञोपवीत तोड़ा, यज्ञोपवीत तोड़ते समय भी जान लिया कि, यज्ञोपवीत चमड़ेका है । तब तोबा ! तोबा ! करता हुआ अलग होगया । सुथरेशाहने कहा कि, अलग क्यों जाता है? तिलकको खूब चाट, यज्ञोपवीतको भी दाँतसे काट, अब क्यों भागता है ? जैसे पहले हलाल समझकर यज्ञोपवीत तोड़ना और तिलक चाटना स्वीकार किया था आज भी क्यों नहीं करता !

फिर सुथरेशाहने एक जोड़ा जूता रत्न जटित बहुमूल्य बनवाया । वह जूता सवा हाथ लम्बा था एक कटोरा भी लिया । समय पाकर कटोरेमें पिशाब करके और एक जूता लेकर बड़ी मसजिदमें गुपचुप रख दिया कि, किसीने रखते न देखा । सबेरे सब लोग निमाज पढ़नेको आये मसजिदमें ऐसा बड़ा बहुमूल्य जूता देखकर सबोंने बहुत आश्चर्य्य माना । तमाम शहरमें धूम मचगई । क़ाजी और मुल्लाओंने परस्पर विचार करके निश्चय किया कि, आजरातको खुदा मसजिदमें उतरा था । उसीका यह जूता और प्याला है । ऐसा लम्बा पैर किसी दूसरेका तो होही नहीं सकता । जरूर खुदाहीका है । फिर क्या था शीघ्रही यह समाचार शहर भरमें फैल गया कि, मसजिदमें खुदा उतरा था । उस जूतेको सब मुसल्मानोंने छातीसे लगाया और उस प्यालेमें जो पानी था उसको वजूका बचा हुआ पानी समझकर आखों और माथोंमें लगाया तथा आचमन किया । पिशाब तो यों काममें आगया और जूता तथा कटोरा पवित्र समझकर बादशाही तोशः खानेमें बड़ी प्रतिष्ठासे रखा गया । मुसल्मान लोगोंको इस बनावसे बड़ा आनन्द प्राप्त हुआ । सबके सब ऐसे फूले कि, सब प्रकारकी चिन्ता और फिकिरोंको भूलकर उत्सव मनाने लगे । कई एक दिनोंके पश्चात् सुथरेशाहने दूसरा जूता हाथमें लेकर शहरमें फिरना आरम्भ किया प्रत्येक मनुष्यसे कहने लगा कि, मेरे जूतेका जोड़ा दूसरा जूता और पिशाब करनेका प्याला कोई चुराकर लेगया है । जिस किसीने लिया हो मुझे दे दो । क्रमशः यह समाचार बादशाहको पहुँचा बादशाहने सुथरे शाहको बुलाकर पूछा कि, तुम्हारा जूता और प्याला कैसा था ? सुथरे शाहने अपना जूता दिखलाकर कहा कि, इसीका जोड़ा था प्यालेका सब रङ्ग ढङ्ग बतला-कर कहा कि, वह मेरा पिशाब करनेका प्याला था बादशाहने जूता और प्याला मँगाकर सुथरेशाहके सामने रखकर कहा कि, इसको पहनकर दिखलावो तो

विश्वास हो । सुथरे शाहने उसे पहन लिया, वह पैरमें बराबर आगया । यह कौतुक देखकर सब आश्चर्य्यमें आये कि, यह सवा हाथका लम्बा जूता इस साधुके पगमें कैसे अट गया ? बादशाहको विश्वास होगया कि, यह जूता और प्याला सुथरेशाह काही है, उन्हींको दे दिया । पहले वह जूता खुदाका था तब सबने उसको महान् पवित्र और ईश्वरका प्रसाद समझा । पीछे जब सुथरे शाहका होगया तब सब लोगोंको घृणा हुई, सब तोबः तोबः और बहुत पश्चात्ताप करने लगे क्योंकि, उन्होंने सुथरेशाहके पिशाबको आंख और माथोंमें लगाया तथा आचमन किया था।

समीक्षा – सोचना चाहिये कि, मुसल्मानोंका बेचून बेचरा खुदा मस-जिदमें आवे एवं लोगोंके भयसे जूता छोड़कर भाग जावे । शोक है ऐसी समझ बूझपर । यही सांसारिक तथा प्राकृतिक जनोंकी बुद्धि और समझ है ऐसाही उनका खुदा है । कितने पीर, पैगम्बर, ऋषि, मुनि, सिद्ध ईश्वर करके जगतमें पूजित हैं उनमेंसे कितने पशुओंकी योनिमें मारे मारे फिरते हैं । मनुष्योंसे भी बहुत दुःखी और हीनावस्थामें हैं।

किसका भजन करे ।

६ प्रश्न – जब ईश्वरोंकी यह दशा है तो किसका नाम जपना चाहिये, अंतरङ्ग और बहिरङ्ग भजन किस प्रकार और किसका करना चाहिये ? ईश्वरका नाम क्या है ?

उत्तर – जितने नाम हैं वे सब उन्हींके हैं, जिनका रूप संसारमें प्रगट है । जितने रूप हैं सब नाशमान हैं जो नाशमान हैं वह ईश्वर नहीं । भजनके चार स्थान हैं । नाभि, हृदय, जिह्वा और मस्तिष्क । यह सब मिथ्या है पर जैसे दूध पीता बच्चेको छोड़कर उसकी माता कहीं बाहर जाती है वह बच्चा भूखा होजाता है वह चार प्रकारका कर्म्म करता है यानी रोता है चिल्लाता है, मुँह पसारता है और हाथ पाँव मारता है यद्यपि भूखका नामभी नहीं जानता, न दूधको अपना भोजन समझता है, न कोई उपाय कर सकता है, पर उसके रोने चिल्लाने और मुंह पसारनेसे उसका कार्य्य सिद्ध होता है । उसकी ऐसी क्रियाको देखकर माता दौड़के आती है दूध पिलाकर उसको सन्तुष्ट करती है बालक सुखको प्राप्त होता है, इसी प्रकार भजनके चारों स्थान असत्य हैं पर उन्हींके द्वारा अभ्यास करनेसे ईश्वरका कृपापात्र बनता है । इस कारण ईश्वरके चाहनेवालोंको भजन करना चाहिये । उसीसे इष्टकी प्राप्ति होती है । जैसे माता पिता देखते हैं कि, बच्चा रोटी खाने योग्य हुआ तो उसको नानाप्रकारसे स्वादिष्ट भोजन देते हैं । फिर कुछ समय बीतने पर उसको पढ़ाते हैं लौकिक पारलौकिक विद्याकी शिक्षा देते हैं ।

जब अपनी युवास्थाको पहुँचता है सर्व प्रकारसे योग्य होता है तब अपना सर्व अधिकार देकर स्वयं अलग हो जाते हैं। जबतक वह किसी बातका अधिकारी नहीं होता तबतक उसकी सब प्रकार रक्षा करते हैं. क्योंकि, यदि दूध पीते बच्चे को कठिन पदार्थ खानेको देदिया जावे तो वह बीमार हो जावेगा यही नहीं वरन् मर जावेगा इसीप्रकार सब जीवधारी भजनमें एक समान हैं पर मुक्तिका पथ केवल मनुष्य शरीरमें है वह सत्यपुरुषकी भक्तिही है। यदि मनुष्य शरीर पाकर भी सत्यपुरुषकी भक्तिके मार्गको न जाना, उसका अस्तित्व और श्रेष्ठताको न पहिचाना, यथार्थ रीतिको छोड़ अन्यथा रीतिसे भजन करे तो पशु और मनुष्यमें क्या भेद हो? केवल सत्यपुरुषकी भक्तिही मनुष्यत्व है। जितने कर्म्मकाण्डी लोग हैं वे दूध पीते हुए बच्चोंके समान हैं वे ईश्वरीय भेदकी यथार्थताको क्या जानें? अल्पबुद्धिके कारण दूसरोंसे मिथ्याही लड़ते झगड़ते और वाद विवाद करते फिरते हैं।

विचारोंका तत्त्व निर्णय।

७ प्रश्न—सब तत्वज्ञानी विद्वान् तथा माकूलात[1] व मनकूलात[2] सत्य हैं कि असत्य?

उत्तर – समस्त मनकूलात तो सत्य हैं पर उनका यथार्थ आशय विरलाही समझता है। जिनको दिनहीमें न सूझे, अन्धे हों उनको रात को क्या सूझेगा? अनेक (चश्मा) और दूरबीन अन्धोंको क्या लाभ दायक होंगे? पठित अपठित जो देहाभिमानमें पड़कर शरीरकेही पोषण पालनको अपना सर्वस्व समझे बैठे हैं उनको पुस्तकावलोकनसे माकूलात और मनकूलातकेजाननेसे क्या लाभ हो सकता है?

तीन प्रकारके आनंद।

आनन्द तीन प्रकारका है। विषयानन्द, भजनानन्द, और ब्रह्मानन्द। जो विषयानन्द यानी सांसारिक विषयवासनाकी कामनाको छोड़ दे, वह भजनानन्दके पदको पासकता है। जब तक विषयके स्वादकी तनिक भी हृदयमें चाहना हो तब तक भजनानन्दके पदको पाना कठिनही नहीं बरन् दुर्लभ कार्य्य है। विषया-

---

१ जो बुद्धि विचार और प्राकृतिक नियम तथा अनुभव सबसे ठीक हो उसमें कोई ऐसी बात न हो जो कि, बुद्धि और विवेक के प्रतिकूल और प्राकृतिक नियमके विरुद्ध हो, उसे माकूलात कहते हैं।

२ जिसमें बहुतसी ऐसी बातें होती हैं जो बुद्धिसे बाहर प्राकृतिक नियमके विरुद्ध और असम्भव जान पड़ती हैं, जैसे नानाप्रकारके मत मतान्तरकी पुस्तकोंमें अनेक ऐसी कथायें और बातें लिखी हैं जो असम्भव प्रतीत होती हैं। वे सब मनकूलात कहाती हैं।

नन्दके अभिलाषी चाहे पठित अथवा अपठित कैसे भी क्यों न हों सब समानही हैं। जबतक मनुष्य विषयवासनाकी कामना देहाभिमान और जगतकी आपत्तिको उठा न दे तब तक भजनानन्द प्राप्त नहीं कर सकता। ईश्वरकी भक्ति और भजनमें ब्रह्मज्ञान नहीं मिल सकता जिसको ब्रह्मज्ञान न प्राप्त हो उसकी ब्रह्मज्ञानविषयक बातें करनी मिथ्या और मूर्खता है।

कर्मकाण्ड, योग, उपासना, ज्ञान ये चारों ब्रह्मज्ञानरूपी अटारी पर चढ़ने की सीढ़ीके डण्डे हैं। विद्याभिमानी पहलेही (कर्मकाण्ड) डण्डेपर खड़े हैं उनको चौथे ज्ञानके डण्डेकी क्या सुधि है? सन्त तो चारों डण्डोंके पार पहुँचे हैं। वे माकूलातके आशयको भली प्रकार समझते हैं। दूसरोंकी क्या शक्ति है कि उसके यथार्थको समझ सकें? वे अपनी क्षुद्र बुद्धिके अनुसार अर्थ लगाते हैं। जैसी बुद्धिसे अर्थ लगाते हैं वैसेही उसका फल पाते हैं। अपनी बुद्धि और समझसे बढ़ कर कहांसे लावें? और क्या लिखें?

८ प्रश्न—यथार्थ क्या है? उसको प्रगट क्यों नहीं करते? क्योंकि, सभी सत्यके चाहनेवाले हैं। सत्यको पुकार २ कर कहना चाहिए, जिससे सब लोग उसको जानकर सत्यपथ पर चले हुए मुक्ति पावें।

उत्तर—जो सत्य है वह असत्यके ओटमें इस प्रकार छिपा हुआ है कि, उसको देखते हुये भी नहीं देखते। जो सत्यकी इच्छा करेगा, उसके प्राप्त करनेका अधिकारी होगा उसको सत्य दिया जायेगा। सत्यका मार्ग कठिन जानकर उससे भागते हैं असत्यको स्वीकार करते हैं। मनुष्य पक्षपातमें पड़जाता है तो नीचसे नीच, निषेधसे निषेध कार्य्यको अज्ञानता वश नहीं छोड़ना चाहता। सत्य तो प्रत्यक्ष प्रगट सब स्थानमें सर्वदा पुकार रहा है पर असत्यके प्रेमी उसके परम तेजको नहीं सह सकते। सत्य प्रत्यक्ष, और प्रगट होने पर भी ऐसा गुप्त है, जैसे जवहरियोंकी दूकान पर रत्न पेटियोंमें बन्द रहता है पर उसके ग्राहक जभी आते हैं तभी पेटी खोलकर उसको देखाते हैं। जो पारखी है उनके लिये रत्न सर्वदाही प्रत्यक्ष होता है। यद्यपि रक्षाके लिये पेटीमें रखा हो तो क्या? जो पारखसे रहित हैं उनके लिये यदि रत्नको बाहरही रखा जावे तब भी उनको कुछ लाभ नहीं हो सकता। इस कारण उचित है कि, जब कोई रत्नपारखी मिले तभी उसका सन्दूक खोलना चाहिये। हर एकके सामने खोलना ठीक नहीं, क्योंकि, सबके सामने खोलनेसे भय है कि, चोर डाकू नष्ट कर दें।

शब्द— जो कोई रतन पारखी पैये, हीरा जाय भँजैयें।
पलरा मूल तत्वकी डाँड़ी, प्रेमको बांट बनैये॥

वस्तु हमारी अगम अगोचर, लेके सराफ़ी जैये।
लगी हाट यम जाल पसारा, तब वह वस्तु भजैये ॥
तौल तालकी जमा सुलाखी, तब वाको घर पैये।
केतिक चोर फिरैं गलियनमें, तिनते मत लुटवैये ॥
वस्तु अगोचर शब्द अनाहत, यहि विधि ध्यान लगैये।
कहैं कबीर भावे सौदा, सद्गुरु होय लखैये ॥

साखी– हीरा रतनकी कोठड़ी, बार बार मत खोल।
जो कोई आवे रतन पारखी, तब हीराका मोल ॥

९ प्रश्न---प्रत्येकमतमें मुक्तिका विचार---किसी धर्म्ममें (मजहब) कोई क्यों न हो यदि वह पुण्य करे, सर्वदा सदाचरणसे वरते तो मुक्त हो कि, नहीं ?

उत्तर–सुकृत पुरषोंको उनके पुण्यका फल अवश्य मिलेगा पर पाप और पुण्य दोनोंही बन्धनके कारण हैं एकसे स्वर्ग दूसरेसे नर्ककी प्राप्ति होती है किन्तु मुक्ति नहीं होती. क्योंकि वो सद्गुरुके बिना कदापि नहीं मिलती जिस प्रकार एन्जिनके बिना रेल नहीं चलती उसी तरह गुरुज्ञानके बिना सत्यपद मिलना कठिन है। हाँ, इतना तो अवश्य है कि, जो अपने पुण्यको पूर्ण करते हैं उनपर सत्यगुरुकी कृपादृष्टि होती है, क्योंकि इस जीवको सदा सत्यगुरुकी अपेक्षा है।

कोई मनुष्य पूर्णपुण्य स्वरूप नहीं हो सकता. क्योंकि, पूर्वके अनेक जन्मोंसे इनके पाप पुण्यका सम्बन्ध होरहा है वरन् तौरेतके अनुसार मनुष्य जिसकी सन्तान है वह सबका पिता आदमही ईश्वरकी अवज्ञासे पापी हुआ। यही बात नहीं, वह ईश्वरकी अवज्ञासे प्रथम भी पापी था। उसके पापोंका सम्बन्ध अनेक जन्मोंसे चला आता था, जिसके कारण वह पीछे न भी अवज्ञाकारी और पापी हुआ। यद्यपि आदमकी उत्पत्तिमातृगर्भसे नहीं तो भी उसमें पाप थे. क्योंकि उसका अन्तःकरण विषय वासना और शारीरिककामनाओंसे भरा हुआ था। यही कारण है कि, उसका मन सांसारिक भोग विलासकी ओर आकर्षित हुआ। उसे स्त्री मिलने की बड़ी अभिलाषा थी जो उसके पतित होनेका कारण हुआ यदि उसमें पाप न होता तो वासना भी न होती वह निरपराधी दुःखमें न पडता इससे यह सिद्ध होता है कि, पहलेही पापसे दूषित था पूरा पुण्यस्वरूप नहीं था। मनुष्यको उचित है कि, पुण्यको पूर्णतापर पहुँचानेके लिये पूर्ण उपाय करे सत्यगुरुसे उसके फलकी आशा रखे। सर्व्वदा दृढ़ताके साथ यही विश्वास हृदयमें धारण करै कि, सत्यगुरुही बेडा पार करनेवाला है ?

१०—प्रश्न प्यारेकी मिलनेकी क्या युक्ति कौनसी—करनी चाहिये ?

उत्तर—प्रथम सच्चे धर्म्म (महजब) की खोज करनी चाहिये, फिर उसके सन्तोंकी सेवा और सङ्ग करना चाहिये जब साधुओंमें कोई ऐसा दृष्टि आवे कि, जो धर्म्मके मार्गको भलीप्रकार बतला सकता हो, संशयको दूर कर सकता हो, पारखपदको दिखला सकता हो आत्मज्ञानका मार्ग सुझा सकता हो तो, ऐसे सन्तको पाकर अपनेको धन्य जाने उसीको गुरु बनावे। श्रद्धा और प्रेमके साथ गुरुकी सेवा भक्ति करे उससे कभी न फिरे। गुरु करनेके पीछे उससे श्रद्धाहीन हो जानेकी अपेक्षा पहलेही गुरुको भली प्रकार पहचान कर उसके गुणदोषकी परीक्षा कर लेना चाहिये। गुरु करलेनेके बाद पीछे दोषदृष्टी उचित नहीं। अपने गुरुके चरणकी धूल हो जाना उचित है। इस बातको श्रद्धा और विश्वास पूर्व्वक भली प्रकार निश्चय रखे कि, गुरुकी कृपासे गोविन्द मिलेगा गुरुकीही मूर्तिमेंसे गोविंद प्रगट होगा।

शब्द—साईं तेरा अर्श तख है दूर।
बिन मुरसिद कोई भेद न पावे, भटकि मुये सब कूर ॥
चौदह तबक़ ख्वाबकी रचना, आतशकासा फूल।
राज छोड़ि जिन काज किया है, भये चरणकी धूल ॥
नासूतमें माया खड़ी, मलकूत गुण अस्थूल।
जो कोई निजको समझे बूझ, तामें नाहिं शऊर ॥
जबरूतमें सब यम जाल है, लाहूत अक्षर फूल।
हाहूतमें अचिन्त पुरुष, बजत अनहद तूर[१] ॥
वेद पुराण कुराण किताबा, यहां लगि खबर जहूर।
सोहं इच्छा वहांसे आई, सब घट व्यापक नूर ॥
सब जीवनको त्रास देखिये, समरथ वचन कुबूल।
कहै कबीर हम खुदके अहदी, लाये हुकुम हजूर ॥

११ प्रश्न—गुरु और चेलेकी पहचान, क्या चिन्ह और है ?

उत्तर—गुरुके चार लक्षण हैं। चेलेके भी चार चिन्ह हैं। गुरुके चार चिन्ह ये हैं कि, १--पूर्ण भक्तिसे सम्पन्न हो, २--अपने धर्म ग्रन्थ तथा शास्त्र और वेदोंके आशयको समझनेवाला हो, ३—समदृष्टि अर्थात् ईश्वरको सबमें

---

१ पीछे ध्वनि अर्थ किया था जो तात्पर्य्यार्थ है क्योंकि जब अनहद बाजे बजेंगे तबही अनहदकी ध्वनि सुन पड़ेगी।

व्यापक देखनेवाला हो, ४—चेलेको ईश्वरसे मिलाने, भक्तिमें लगा देने और उसकी शङ्काओंके दूर करनेकी शक्ति रखता हो।

जिसके अन्तःकरणमें विषय वासनासे उपरामता आगई हो, अपने मनको वश कर लिया हो, सब जीवोंके कल्याणकी चिन्ता हो, परोपकारी हो, वेद शास्त्रके आशयको खूब समझता हो, दूसरोंको समझा सकता हो वही गुरुपदका अधिकारी है। ऐसे विद्वान्, सत्य असत्यको भलीप्रकार समझते हैं, अपने स्वरूपके ज्ञानको संशय रहित धारण करते हैं। वे जानते हैं कि, समस्त संसार मेराही रूप है, दूसरा कोई नहीं है। आत्मा को छोड़ कभी उनके द्वैत दृष्टि नहीं होती, सब मनुष्योंको सत्य पुरुषकी भक्ति और प्रेममें दृढ़ कराते है। श्रद्धा, भक्ति प्रेम, शौर्य्य, आदि दैवी गुणोंके स्वरूपही होते हैं धन्य हैं वे पुरुष जिनको ऐसे गुरु मिलते हैं।

गुरु शब्दका अर्थ।

दोहा——गु आँधियारे जानिये, रु कहिये परकाश।
मिटि अज्ञानहि ज्ञानदे, गुरु नाम है तासु॥

अर्थ——गु-शब्दका अर्थ है अन्धकार—अर्थात् अज्ञान। रु—का अर्थ है प्रकाश अर्थात् ज्ञान. तात्पर्य्य यह कि, अन्धकार रूप अज्ञानको नष्ट करके हृदयमें ज्ञानरूप प्रकाशको प्रगट करे वो गुरु कहलाता है गुरुके सब गुणोंमें श्रेष्ठ गुण शिष्यको ईश्वरपरायण कर देता है।

चेलेके लक्षण—इसी प्रकार हैं। १ अहङ्कारका त्याग कर देना, २ विषय वासनासे रहित होना, ३——तन मन धनसे गुरुकी सेवा करना, ४——गुरुके वचन पर पूर्ण श्रद्धा विश्वास रखना इन चारों गुणोंमें दो गुण गुरुकी सेवा और गुरुपर विश्वास अत्यावश्यक है। जिसमें यह दो गुण हों उसमें शेषके दो गुण और भी आजावेंगे। गुरुकी सेवा और गुरुका विश्वास येही दो गुण भक्ति और मुक्तिके चिह्न हैं। यदि ये दो गुण न हों तो शिष्य अवश्य कालके गालमें जावे एवं उनका आवागमनसे छूटना दुर्लभ होवे।

सर्व कालमें गुरुकी स्तुति करना उचित है। गुरुसे विमुखता नरकका मार्ग है। जो कोई गुरुके विमुख हुआ, उसका ज्ञान विचार सब नष्ट हो जाता है यह कालका आखेट हुआ है इसके ऊपर एक दृष्टान्त है।

बाजीगर और चरवाहा——किसी समय एक बाजीगर कहीं कौतुक दिखला रहा था। उसके मध्य उसने यह कौतुक दिखलाया कि, तीन छुरे परस्पर एकही समयमे ऊपरसे फेंकता उसे हाथोंसे पकड़ता था। यह देखकर एक चरवाहेने

कहा कि तू, तो हाथोंसे पकड़ता है, मैं इन छुरियोंको दाँतोंसे पकड़ सकता हूँ। बाजीगरने कहा तू अपनी कला प्रगट दिखला. उस चरवाहेने एक छुरीको लेकर इस प्रकारसे फेंकना और दांतोंसे पकड़ना आरम्भ किया कि, जब वह छुरी फेंकता तब नीचे आते आते उसकी मूठही दांतपर आके गिरती. चरबाहेकी यह लीला देख लोगोंको बहुत आश्चर्य हुआ। बाजीगरने चरबाहेसे पूछा कि, तूने यह विद्या कहांसे सीखी ? उसने कहा मैंने किसीसे सीखी नहीं वरन् स्वयं मुझे आगई है। बाजीगरने बहुत प्रकारसे पूछा पर उसने गुरु स्वीकार नहीं किया, तब बाजीगरने कहा जब तू गुरु स्वीकार नहीं करता तो अच्छा फिर तू यही कौतुक दिखला उस चरवाहेने फिर कौतुक दिखलाना चाहा पर अबकी बार मूठके बलसे गिरनेके बदले छुरी नोकके बल गिरी जो गिरतेही कण्ठके अन्दर घुस गई। वह मरने लगा उस बाजीगरने उससे फिर पूछा कि, अब भी तू कहदे तूने यह विद्या कहांसे सीखी ?। चरवाहेने उस अवस्थामें स्वीकार किया कि, मैंने बगुलेको देखा था कि मछलियोंको ऊपर फेंकता उनके नीचे आते आते मुँहमें निगल जाता. मैंनेभी वैसेही अभ्यास करना आरंभ कर दिया बाजीगरने कहा तेरा गुरु तो अवश्य था, तूने इनकार क्यों किया ? गुरुसे विमुख होनेका यही फल है अब तेरी मृत्यु आगई। थोड़ी देरमें वह चरवाहा मर गया।

निष्कर्ष---भली प्रकार स्मरण रखना चाहिये कि, गुरु विमुखजन कभी सफलता नहीं पावेंगे और गुरुमुख गुरुकी सेवा और भक्ति करके अपनी मनो कामना सिद्ध कर लेते हैं, उनका प्रभाव बढ़ता है, सब प्रकारकी कला कौशल और विद्या प्राप्त होती है। इसीपर एक कथा है।

द्रोणाचार्य और भील---एक समय पांडव और कौरवोंके बाण विद्याके गुरुद्रोणाचार्यके पास एक भीलने आकर कहा कि, मुझे बाण विद्या सिखलावो। द्रोणाचार्यने उत्तर दिया मैं तुझे बाण विद्या नहीं सिखलाऊँगा, तू भील है, इस विद्याको सीखकर बहुत अत्याचार और हिंसा करेगा। वह निराश होकर चला गया, बनमें पहुँचकर उसने द्रोणाचार्य्यकी एक मूर्ति स्थापित करके बड़े प्रतिष्ठा श्रद्धाके साथ उसीके सन्मुख अभ्यास करना आरम्भ किया। बड़ी प्रेम भक्तिसे नित्य प्रति मूर्तिको नमस्कार करता पूजन करके अभ्यास आरम्भ करता। थोड़ेही दिनोंमें उसने अपने अभीष्ट को सिद्ध कर लिया बाण विद्यामें ऐसा प्रवीण हुआ कि अर्जुनने भी उसकी प्रशंसा की। गुरुकी मिट्टीकी ही मूर्तिमें पूर्ण विश्वास होना, चाहिये। जबतक गुरुमें पूरा विश्वास न हो तबतक कदापि सफलता नहीं होती। गुरु कैसाही क्यों न हो शिष्य अपनी दृढ़ताके कारण उच्च पदको प्राप्त करेगा।

१२ प्रश्न—मायासे पार होनेका कारण—समस्त संसार विष्णुका नाम जपता है, तो विष्णु स्थान स्थानपर धोखे कपट और छलके कार्य किया करते हैं। ईश्वर विरुद्ध उनके काम देखनेमें आते हैं, तो भी लोग उनको ईश्वर मानते हैं इसका क्या कारण है ?

उत्तर—हाँ, निस्सन्देह समस्त संसार विष्णुकाही नाम जपता है, विष्णुकोही भक्ति करता है। इसका कारण यही है कि, यह संसार माया है, जगत्का कारण मायाही है। विष्णु मायापति है, स्वयं माया है. किसीकी सामर्थ्य नहीं कि, विष्णुकी मायाको पारकर सके, वह बड़ा शक्तिमान है, उसीकी मायामें पड़े हुये बड़े २ सिद्ध साधु महात्मा गोते खाते हैं संसारको जिस शक्तिने बनाया है वही अनादि प्रकृति है, वही समस्त संसारपर ईश्वरता करती है, कोई एसा प्रबल नहीं कि, इसे जय करे इसके बन्धनोंको तोड़कर पार जासके। यह सब छल कपट लील मरना मारना सुख दुख राज वैभव, देना लेना, सब मायाहीके काम हैं। अतः विष्णुने जो कुछ किया वह मायाके अविरुद्ध, किया। तीनों देव माया ही रूप हैं इन तीनोंमें श्रेष्ठ विष्णु हैं। यदि वे ऐसी लीला न करें तो मायाके गुण नष्ट हो जावें। विष्णु भगवानपर दोषारोपण करे वह अज्ञानी और पापी है। सर्व मनुष्य मायाहीकी भक्ति और भजन करते हैं, मायाही उनको फल देती है, मायाहीमें तीनों लोकका पसारा है। मायाही कर्त्ता धर्त्ता है। मायाहीने सबको मोहमें फँसा लिया, सर्व जगत् और ईश्वर मायाही है। जो विषयवासनाके अधीन हैं वे सब मायाके तुच्छ सेवकोंमें है।

१३ प्रश्न—मायाके पार जानेके लिये क्या उपाय करना चाहिये ?

उत्तर—मायाके पार जानेके वास्ते कबीर साहबकी शरण और आदेश है दूसरी कोई युक्ति नहीं है. जब कि, शिव और गोरख ऐसे योगी मायामें पड़े चक्कर खा रहे हैं तो दूसरेकी क्या कहनी है।

१४—प्रश्न—पन्थ प्रचलित होनेका कारण—बड़े २ विद्वान ज्ञानी और पण्डित संसारमें हुये पर किसीका धर्म (महजब) पृथिवीमें प्रचलित नहीं हुआ. बरन् जो लोग विशेष विद्या नहीं पढ़े थे उन्हींका धर्म्म संसारमें प्रगट प्रचलित हुआ, इसका क्या कारण है ?

उत्तर—इसका कारण यही है कि, जो लोग अपनी बुद्धिमानीका फल पा चुके उनको दूसरी सिद्धि और चमत्कार आदि प्राप्त नहीं होते क्यों कि, वे लोग अपनी पूर्णताके ऊपर अभिमान रखते हैं। ईश्वरी ज्ञानके लिये दीनता और नम्रताकी आवश्यकता है। यह गुण विद्याभिमानियोंमें कम होता है।

वे लोग अपनीही बुद्धिमानी और युक्तिको यथार्थ जानते हैं उनको गुरुपर विश्वास नहीं आता, उनसे गुरुकी सेवा और आज्ञाकारिता नहीं हो सकती। वे किसीको अपना उपदेष्टा नहीं समझते, वरन् पुस्तकोंकोही अपना ज्ञानदाता मानते हैं। जो जड़ को अपना गुरु और पथदर्शक समझे वह ईश्वरीय ज्ञानका अधिकारी नहीं हो सकता, जिसका जो मन चाहे वैसा किताबोंका आशय समझकर अपने मनमें आनन्दित हुआ करे। कोई पुस्तक यह कहने नहीं आती कि, मेरा यह आशय है यह नहीं है। मुसल्मानी किताबोंके अनुसार खुदाने लुकमानसे पूछा कि, राज्य पैगम्बरी और तत्वज्ञान ये पदार्थ है इनमेंसे जो तू एक पसन्द करे वह तेरेको मिले। लुकमानने कहा कि, मुझे तत्वज्ञान दीजिये। लुकमानको तत्वज्ञानही मिला संसारमें लुकमान हकीम प्रसिद्ध हुआ इसी प्रकार सुलेमान बादशाहने तत्त्वज्ञानही माँगा, वह दोनों संसारमें बड़े प्रसिद्ध तत्वज्ञानियोंमें हैं। संसारमें बहुतसे ऐसे नबी सिद्ध और महात्मा हुये हैं जो एक अक्षर भी नहीं जानते थे। जिस प्रकार बालक निरपराध दीन और निष्कपट होता है तो उसको सब कोई प्यार करते हैं, गोदमें लेते हैं, लोग जानते हैं कि, यह कुछ चालाकी नहीं जानता। बुद्धिमानोंके लिये उनकी बुद्धिमानी ही वश है।

तर्जुमा।

जो बिल्लीको वह दे परवाज़का ज़ोर। तो ख़िलकतमें परिन्दोंके पड़े शोर॥
न हीरालालसे खुश हाल है कोह। न है फरहत न है उसको ग़म अन्दोह॥
न गजमुक्तासे गजको शादमानी। गोहरसे बहरको क्या कामरानी॥
गई ख्वाहिश गुज़र सब दिलसे उनके। हैसीनः में दफीनः इल्म उनके॥
नाम आदिन सीम और जर घरबादशाही। न हुकमा मुस्तहक इल्मे इलाही॥
दिया हर एकको एक एक इल्म ओला। वहरफन् इल्म कामिल आप मौला॥
दिया बख्श उसने सामान अजिजोंको। कि, ज़ाहिर देख उनसे मअज़िज़ोंको॥
न मुहिरिम और न पाये ख़ास वस्तु। जो सुकरातीस अफला तूं अरस्तु॥
वह उम्मी बन्दःको पोशिश पन्हावे। कि, ख्वाँदा होवे दरमाँदा न पावै॥

१५ प्रश्न—भ्रमको मुक्तिमार्ग जाननेका कारण—यह कैसा बड़ा आश्चर्य्य है कि, सब मनुष्य अन्धे हो रहे हैं, किसीकी बुद्धि काम नहीं करती ऐसा आवरण पड़ गया है कि, कोई भी नहीं सँभल सकता, जो अनित्य और भ्रम है उसेही मुक्तिमार्ग समझते हैं, सत्यसे सब भागते हैं, इसका क्या कारण है?

उत्तर—क्या तुम नहीं जानते कि, जिस समय चिड़ीमार मोहिनी मन्त्र पढ़ता है, गीत गाता है तब जङ्गल भरके पशु पक्षि आदि सब मोहित हो जाते

हैं स्वयं उसके जालमें आकर फँस जाते हैं वह सबको भून कर खा जाता है। इसी प्रकार दीपक पर पतङ्गे आकर गिरते हैं जल भुनकर नष्ट हो जाते हैं, उनको क्या सुख मिलता है? इसी प्रकार मनुष्यकी बुद्धि काल पुरुषने अपनी मायासे भ्रष्ट कर दी. सब अन्धे हो गये हैं, सत्य पदको छोड़ मायाकी पूजामें लगे हैं। सत्यपदसे भागते हुए द्वेष करते हैं। सबकी परीक्षा कर देखो, जिसके धर्म्मका अवगुण दिखलावोगे वही लड़ाई करनेको तैयार होगा, कोई ऐसा न कहेगा कि, "तुम मुझको सत्यमार्ग बतलाते हो, भ्रमसे हटाते हो, आवरण दूर करते हो मिथ्या भ्रमको छुड़ाते हो।" मायाका आवरण सबके ज्ञानपर पड़ा हुआ है, उसने ब्रह्मा, विष्णु, शिव और नारद आदि बड़े २ समर्थोंको भी नहीं छोड़ा, सबको मोहितकर अचेतकर दिया, फिर दूसरोंकी क्या सामर्थ्य है कि, उससे जीत सकें। सब जीवधारियोंको मायाने अपने हाथमें कर रखा है, कोई भी कुछ कहे वो कर नहीं सकता। मेरी क्या सामर्थ्य थी कि, मायाका हाल लिखनेको लेखनी उठाता। कलम कहीं, कागद और स्याही कहीं कहीं चले जाते, केवल सर्वशक्तिमान् सद्-गुरु कबीर बन्दीछोरकी कृपा है कि, लिख रहा हूँ, नहीं तो यह भेद खोल डालनेकी कसीकी भी शक्ति नहीं है। साधु लोग समझकर मौन धारण करते हैं।

१६ प्रश्न—जीवका ईश्वरसे मिलना, ब्रह्म, क्यों कर पहचानाजा सकता है? मायाका आवरण किस प्रकार छूटे? जीव ईश्वरसे कैसे मिले?

उत्तर—जब भक्ति और भजन करते २ अन्तःकरण शुद्ध हो जाता है तब क्रमशः ज्ञानका प्रकाश होने लगता है. क्योंकि, अन्तःकरण अशुद्ध होनेके कारण ज्ञान नहीं होता जबतक शुद्ध ज्ञान नहीं होता तबतक सत्य नहीं जाना जाता। परमात्मा सर्व व्यापी है कोई स्थान कोई पदार्थ उससे भिन्न नहीं, जब तक असम्यक् दृष्टि है तब तक सम्यक् परमात्माका दर्शन (ज्ञान) असम्भव है। जिसने सम्यक् ज्ञान प्राप्त कर लिया वह सब कुछ परमात्मामें देखता है एवं परमात्माको सबमें देखता है.

१७ प्रश्न—सच्चाधर्म, समस्त मनुष्योंका सामान्य और एक यथार्थ धर्म्म क्या है?

उत्तर—समस्त मनुष्योंका यथार्थ और सामान्यधर्म्म वही है जिससे आवागमन छूट जावे। जिससे अपना यथार्थ स्वरूप प्राप्त हो जावे जिससे अपने मूलको पाजावे। इस धर्म्मके गुरु कबीर साहब हैं। शास्त्र स्वसम्वेद है ज्ञान शारशब्द है।

१८ प्रश्न---मनुष्योंको ईश्वरने क्यों बनाया ।

उत्तर---जिस प्रकार कसौटीसे सोना परखा जाता है, कसौटोके द्वाराही खरा खोटा जाना जाता है, उसी प्रकार चौरासी लाख योनिमें मनुष्य योनि कसौटीके समान हैं इसमें आकर भले बुरेकी पारख हो जाती है। कसौटी ठीक हो तो सोनेके गुण अवगुणको ठीक बता सकती है। कसौटीमें दोष हो तो गुण दोषको ठीक नहीं बता सकती। इसी प्रकार मनुष्यको ईश्वरने इस कारण बनाया है कि, गम्भीर सारग्राहणी बुद्धिसे नित्य अनित्यका विचार करके अनित्य और भ्रमसे अलग हो जावे। इसी कारण मनुष्य सारी सृष्टिमें सर्व जीवधारियोंमें श्रेष्ठ है क्योंकि, मनुष्य शरीरको बिना पाये कोई मुक्तिका अधिकारी नहीं हो सकता। मनुष्य शरीरके अतिरिक्त जितने शरीर हैं वे इतने मुक्तिके अधिकारी नहीं जितना कि, मनुष्य शरीर है।

१९ प्रश्न – मनुष्यका मरमरकर कहाँ जाते हैं ?

उत्तर---सब मनुष्य मरकर भ्रमपुरीको जाते हैं। भ्रमपुरीसे आते हैं, हमेशाही भ्रमपुरीमें रहते हैं। माता, पिता अपना पराया सारा संसार भ्रमही है।

२० प्रश्न---मनुष्य नियत आयुके पहले क्यों मर जाता है ?

उत्तर – पापसे आयुक्षीण होती है। पुण्यसे बढ़ती है। किसीके भी पुण्य पाप क्यों न हों वे अवश्य अपना फल दिखाते हैं।

२१ प्रश्न–भिन्न भिन्न उत्पत्तिका निर्णय, प्रत्येक धर्ममें उत्पत्तिका वर्णन भिन्न २ क्यों है।

उत्तर – यह सृष्टि वारंवार उत्पन्न होती और नष्ट होती है। इसकी उत्पत्तिके अनेक ढङ्ग हैं जिसको जैसा सूझा उसने वैसाही वर्णन कर दिया। अबतक किसीने भी स्पष्ट रीतिसे यह नहीं लिखा है कि, आदि उत्पत्ति कब और किस प्रकार हुई जो लिखते हैं वो अपनी कल्पनासेही लिख डालते हैं।

२२ प्रश्न – सृष्टिका हेतु, जब केवल एकही अद्वैत ईश्वर था, दूसरा कुछ न था तो सृष्टि कैसे हुई ?

उत्तर---सृष्टिका कारण भ्रम और अज्ञानके सिवा दूसरा कुछ नहीं है। जब आदमीको उन्माद होता है तो मस्तिष्क बिगड़ जाता है, जिससे उसकी दृष्टिमें नाना प्रकारके रूप भासते हैं उसको देखके कभी वह हर्ष मानता है तो कभी शोक करता है, कभी देखकर डरता है, कभी रोता है, कभी हँसता है, कभी आश्चर्य करता है, यानी उन्माद ग्रस्त मनुष्यके मुखके नाना प्रकारके भाव प्रगट होते रहते हैं, उनके भावोंके प्रगट होनेका कारण केवल उन्मादही होता

है। सारा संसार शून्यसे हुआ है, यह पूर्णतया शून्य है। शून्य अथवा माया मिथ्या निर्मल है।

२३--प्रश्न--मुक्तपदका निर्णय, आदिमें कुछ नहीं था, अन्तमें भी कुछ न रहेगा, फिर मुक्ति किसको होती है ?

उत्तर--प्रथम कुछ न था इसका अर्थ यह है कि, प्रथम भ्रम (अज्ञान) न था। जब भ्रम उत्पन्न हुआ तो समस्त सृष्टि उत्पन्न हो गई, जब भ्रम न रहेगा तब सब नष्ट होजावेगा भ्रमके नष्ट हो जानेपर जो शेष रह जाता है वही मुक्त पद है।

२४ प्रश्न--जीवका ईश्वरांश होनेका निर्णय, जीव ईश्वरका अंश है तो चाहिये कि, एकके सुख दुःखसे सबको सुख दुःख हो ?

उत्तर--सर्व जीवधारियोंके अन्तःकरणमें ज्ञानका आवरण होगया है इस हेतु सबको सुख दुःख भिन्न २ प्रतीत होता है। जिसका भ्रम नष्ट हो गया उसको सर्व अन्तःकरणोंपर अधिकार होजाता है। जीव ईश्वरका अंश नहीं कहा जा सकता. क्योंकि, ईश्वर अविभाज्य और अखण्ड है वह निकट भी नहीं और दूर भी नहीं। जिस प्रकार एकही सूर्य्य है पर अनेक घड़ोंमें भिन्न भिन्न तरल पदार्थोंके रखनेसे भिन्न भिन्नही आकारोंमें उसका प्रतिबिम्ब पड़ता है परंतु वे सब सूर्य्य नहीं और सब सूर्य्यही हैं। अज्ञानीको आवरणके कारण भेद दृष्टि है ज्ञानीको नहीं

प्रश्न--एकसे अनेक एवं अनेकका एक, एकसे अनेक और अनेकसे एक किस प्रकार दृष्टि आता है।

उत्तर--एकसे अनेक इस प्रकार हुआ; जैसे एक शीशमहल हो उसमें सहस्रों काँचके झाड़ फानूस और ग्लास लटक रहे हों, उसमेंसे एक बत्ती जलाई जाय तो सहस्रों बत्तियाँ जलती हुई देख पड़ेंगी अनेकसे एक इस प्रकार हुआ कि, एक बत्तीको बुझा दो सब बत्तियाँ बुझ जायँगी, केवल उस बत्तीका गुप्त अलख स्वरूप रह जायगा शेष कुछ न रहेगा।

२६ प्रश्न--ज्ञानीके लक्षण क्या हैं ?

उत्तर--ज्ञानीका परख ज्ञानीही कर सकता है। दूसरेको नहीं मालूम हो सकती, जो स्वयं ज्ञानी है वह ज्ञानीके भेदको जानता है। बाहिरकी सामग्रीसे ज्ञानीकी पहँचान होना कठिन है।

२७ प्रश्न--परमाणुमें राज्य----आदमने कहा था कि, राजा जनकने एक

परमाणुमें अपनी दश पीढ़ी तक तीनों लोकका राज्य किया यह असंभव कैसे सम्भव हो सकता है।

उत्तर—यह सारा संसार निर्मूल झूठ है इसमें कुछ भी सत्य नहीं है यह जीव जैसा सङ्कल्प करता है वैसाही इसके सन्मुख देख पड़ता है, दृढ़ सङ्कल्प, होनेसेही इसकी कामना पूर्ण होती है। यह सारा ब्रह्माण्ड एक परमाणुमें है, समस्त ब्रह्माण्डमें एक परमाणु है. जैसे समुद्र एक बुन्दमें है और एक बुन्दमें समुद्र है। जैसे ब्रह्माण्ड और परमाणु कुछ नहीं वैसेही समुद्र और बुन्द कुछ नहीं हैं। यह सब मायाके कौतुक हैं। माया सर्वशक्तिमतीप है जो चाहे तो एक परमाणुमें अनन्त ब्रह्माण्ड दिखादे और अनन्त ब्रह्माण्डोंको एक परमाणुमें लिखलावे। सहस्रों वर्षको एक क्षण और एक क्षणको सहस्रों वर्ष प्रतीत करावे। मायाका भेद किसीने नहीं पाया, सारे सिद्ध, साधु, पीर, पैगम्बर इसीमें पड़े गोते खाते हैं किसीको पता नहीं लगता।

जाकी गति ब्रह्मै नहिं पायो शिव सनकादिक हारे।
ताकी गति नर कैसे पइहौ कहैं कबीर विचारे॥

२८ प्रश्न–ईश्वरका प्रमाण–जो सारे संसारका ईश्वर है उसका प्रमाण किस प्रकारका हो सकता है?

उत्तर–ईश्वर सबसे श्रेष्ठ है, उसको सिद्ध कर तो लिया सांसारिक बुद्धिज्ञान, अनुमान आदि सब निष्फल हैं। उसके लिये युक्ति प्रमाण सब तुच्छ हैं। यह प्रश्न तुम्हारा ऐसा है जैसे किसी एक नपुंसकको कोई एक तलवार देकर कहे कि, सारे। संसारको विजयकर आ, जैसे मच्छर बाज और शाहीनको मारे उसी तरह अगम अगोचर परमात्माकी सिद्धि में प्रमाण और बुद्धि लगाना है। समस्त सिद्ध साधु और विद्वान् मण्डली आदिसे अन्ततक सर्वदा ईश्वरके यथार्थ स्वरूपको प्रगट करनेमें असमर्थताही प्रगट करते रहे हैं।

इसीपर अगस्तीन—नामका एक पादरी इस्त्री सनके ४०० में वर्तमान था वह बड़ा बुद्धिवान्, विद्वान् और धीर था। एकवार उसके मनमें ऐसी कल्पना उठी कि, ईश्वरने संसारमें पापको क्यों उत्पन्न किया? वह सर्वशक्तिमान है, शैतानको उसने क्यों न बरजा? यदि चाहता तो शैतानका नाश भी कर देता तथापि शैतानको न रोका, इसका क्या कारण है! इसी प्रकार नानाप्रकारका संकल्प विकल्प करता, सोचता, विचारता, फिरता समुद्रके तटपर पहुंचा। वहां उसने [illegible] एक बालक किसी पक्षीके अण्डेका छिलका लिये हुये, उसीमें पानी भर-भर [illegible] समुद्रसे बाहर एक छेदमें भरता है। बारंबार उस बालकको ऐसा करता

देखकर अगस्तीनने पूछा कि, तू क्या करता है ? बालकने उत्तर दिया मेरी इच्छा है मैं समुद्रको सुखा दूं। अगस्तीनने कहा कि इस छोटेसें छिद्रमें तू समुद्रको कैसे भर सक्ता है ? यह बात सुनकर बालकने उत्तर दिया कि, यदि मैं समुद्रको इस छिद्रमें नहीं भर सक्ता हूँ तो तू ईश्वरके भेदको अपने छोटेसे मस्तिष्कमें किस प्रकार भर सक्ता है ? जिस प्रकार तू शैतान विषयक तर्क वितर्क अपने मनमें कर रहा है उसी प्रकार मैं समुद्र सुखा रहा हूँ। तू अपनी सीमाबद्ध बुद्धिसे असीम परमात्माके भेदको किस प्रकार जान सक्ता है ? यह कहकर वह बालक अंतर्धान होगया। यह देख अगस्तीन मनही मन बहुत लज्जित होकर सत्यका विश्वासी हुआ।

२९ प्रश्न—अवस्था साम्य, उस ब्राह्मणको जो सरयूके तटपर मायाको देखनेके लिये तपस्या करता था उसके तथा शाहरूपके दृष्टान्तसे जाना जाता है कि, जाग्रत और स्वप्न एक बराबर ही है ?

उत्तर—जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति तुरिया और तुरियातीत ये सब अवस्था और उनके मध्यमकी दशा सब जीवकी अविद्यासे उपन्न होती हैं, इनको प्राप्त हुआ जीव नानाप्रकारके कौतुक देखा करता है। जो कुछ देखता है वो बाजीगरके खेलके समान मिथ्या लीलाकोही देखता है। पर शुद्ध ज्ञान न होनेके कारण उसी असत्यमेंसे जिसपर विश्वास जम जाता है सत्य मान बैठता है। माया बड़ी प्रबल है। उसमें यह शक्ति है कि, क्षणमात्रमें ब्रह्माण्डको बनावे और बिगाड़े। यह मायाकाही आवरण है कि, सब लोगोंका यह संकल्प दृढ़ है कि, मैं अमुक नगर और स्थानका वासी हूँ, अनेक पीढ़ियोंका इस भूमिपर मेरा अधिकार है, यद्यपि कोई नहीं जानता कि, कौन नगर कब बसा और यह देश कबसे है तथापि अपने को उसका मालिक माने बैठा है। जो छोटे गामोंकी उत्पत्ति स्थितिको नहीं जान सकता वह संसारकी उत्पत्ति स्थितिको क्या जाने ? अपने २ अनुमानसे सब जाति और धर्मके लोगोंने जैसा २ निश्चय किया है वैसा २ अपने ग्रन्थ और पोथियोंमें लिख दिया है, उनके अनुयायियोंके लिये वही सत्य और स्थिर सिद्धान्त हो गया है। राजा विदूरथको क्षणमात्रमें सहस्रों वर्ष व्यतीत होगये थे। समस्त संसार गन्धर्वनगरके समान है। वस्तीका उजाड़ और उजाड़का वस्ती करना मायाकी लीला मात्र है। मायामें क्या नहीं हो सकता ? मायाकी इसी विचित्र शक्तिमें पड़े सर्वजीवधारी वारंवार गोते खा रहे हैं। जबतक मायाके पार नहीं होते तबतकही बंधन है।

३० प्रश्न—जीवकी ईश्वर प्राप्ति, मनुष्य ईश्वरको प्राप्त होता है क्या ?

उत्तर—यह ईश्वरको पहचानता है अपने आपमें ईश्वरको देखता है ईश्वर आत्मासे भिन्न नहीं है, जबतक ईश्वर और जीवका भेद है तबहीतक बन्धन है। ईश्वर जीवका भेद मिटे बिना मुक्ति नहीं हो सकती। ईश्वरको अपनी आत्मामेंही जाननेसे मुक्त होगा।

३१ प्रश्न—पुरुषार्थ और प्रारब्ध, मनुष्य पुरुषार्थसे जो चाहे वोकर सकता है प्रारब्धके माननेकी आवश्यकता ही क्या है ?

उत्तर—यदि प्रारब्ध न होता तो मनुष्य अपने पुरुषार्थसे जो चाहता कर लेता, कभी अपनी इच्छा नष्ट न होने देता पर इसके विरुद्ध यह देखनेमें आता है कि, कभी २ नाना प्रकारके पुरुषार्थ करने परभी मनुष्यको निराशही होना पड़ता है। अपनी कामनाकी अग्निमें जलते हुये अनन्त मनुष्योंने पुरुषार्थ करते २ अपना जीवन बिता दिया पर सफलताका दर्शन नहीं प्राप्त हुआ। इससे यह कहना कि, पुरुषार्थ ही सब कुछ है प्रारब्ध नहीं, यह केवल हठ और दुराग्रह है। पर इसके साथ ऐसा भी न समझना कि, सब कुछ प्रारब्धही है, बरन् पुरुषार्थ और प्रारब्ध दोनोंके संयोगसे कार्य्य सिद्ध होता है। जिस प्रकार पक्षीके एकही पर हो तो वो कदापि नहीं उड़ सकेगा, उड़ना दो पक्षोंसे ही होता है। इसके साथ २ एक बात और भी है कि, यदि दोनों पक्ष भी हों शारीरिकबल न हो तो उड़ना महान् कठिन ही नहीं बरन् असम्भव हो जाता है। उसी प्रकार प्रारब्ध और पुरुषार्थभी हो पर कार्य्य करनेका सम्यक् ज्ञान न हो तो कार्य्य सिद्ध नहीं हो सकता। इस कारण पुरुषार्थ, प्रारब्ध और गुरुकी दया इन तीनोंसे व्यवहार सिद्ध होता है। यदि मनुष्य स्वतंत्र होता तो संसारके सब दरिद्र मनुष्य भी राजा बन जाते, सभी वेषधारी सिद्ध बन जाते, सब कायर शूरवीर हो जाते, सब बन्दर हनुमान् हो जाते। इससे यह सिद्ध हुआ कि, प्रारब्धके बिना पुरुषार्थ तुच्छ और पुरुषार्थके बिना प्रारब्ध तुच्छ है।

३२ प्रश्न—सिद्धान्तोंकी भिन्नता, ईश्वर विषयक सिद्धान्त लोगोंके नाना प्रकारके हैं, कोई कुछ बतलाता है, और कोई कुछ कहता है इनमें यथार्थ क्या है?

उत्तर—यथार्थका ज्ञान किसीको नहीं है। जिसको जैसा विचार है जिसको जैसा संकल्प दृढ़ होगया है उसको वैसाही ईश्वर भान होता है। जैसा मैं पहले लिख आया हूँ कि, एक ब्राह्मणको भैंसाके रूपमें ही ईश्वरका दर्शन हुआ था। परमियाह नबीकी नोहमें लिखा है कि, रीछके रूपका परमात्मा था।

"जैसी रूह वैसे फिरिश्तः" के अनुसार जैसा अपना कर्म होता है वैसाही फल मिलता है।

३३ प्रश्न—कियेका बदला, संसारमें किये हुये कर्म्मोका बदला मिलेगा अथवा नहीं ?

उत्तर—किये हुये कर्म्मोका फल अवश्य भोगना पड़ेगा। जो कोई किसी जीवधारीको किसी प्रकार दुःख पहुँचावेगा उसे भी दुख पहुँचेगा।

३४ प्रश्न—अगम्यकी गति, जो किसी युक्ति और तर्कसे न जान पड़े उसे किस प्रकार जानना चाहिये ?

उत्तर—गुरुकी सैन और मौनसे।

३५ प्रश्न—कबीर पन्थकी विशेषता, मौन तो प्रत्येक धर्मवाले बतलाते हैं फिर आपमें क्या विशेषता हुई ?

उत्तर—हममें और अन्य धर्म्मियोंमें यह भेद है कि, उनके गुरु त्रय देव हैं जो मुक्त नहीं हैं हमारा गुरु नित्यमुक्त कबीर है। वही नित्य मुक्त कबीर समस्त जीवोंको क्षण मात्रमें मुक्त कर सकता है। वही सब शक्तिमान है।

३६ प्रश्न—पूजाका निर्णय, किसकी पूजा, किसके अनुसार करना उचित है।

उत्तर—सत्यपुरुषकी पूजा, स्वसंवेदके अनुसार करे।

३७ प्रश्न—पापके कारण, संसारमें पापकी वृद्धि क्यों हुई ?

उत्तर—मनुष्यका हृदय विषयवासनासे पूर्ण है, पापकी अधिकताका यही कारण है। जब मनुष्यके हृदयसे विषयवासनाकी इच्छा नाश हो तब पाप भी नष्ट हो जावेंगे।

३८ प्रश्न—मोक्ष मार्ग, ज्ञान और शरणागति इनमेसे किससे मुक्ति होती है।

उत्तर—भक्ति और ज्ञानसे भी मुक्ति होती है परन्तु शरणागतिका यह तो सर्वोच्च पद है यदि शरणागतिके नियमकी पूर्णता होसके।

३९ प्रश्न—कर्मकी स्थिति, जब शरीर न रहेगा तो कर्म्म कहाँ रहेगा ?

उत्तर—जब स्थूल शरीर नहीं रहेगा तो कर्म सूक्ष्म शरीरके संग रहेगा।

४० प्रश्न—नियामक, शुभ अशुभ, पाप पुण्य किसने बनाये ?

उत्तर—पाप पुण्यका नियामक काल पुरुष है।

४१ प्रश्न—सृष्टि स्वाभाविक है, ईश्वरको सृष्टि उत्पन्न करनेकी क्या आवश्यकता थी ?

उत्तर—मनुष्यको भूख प्यास लगनेकी क्या आवश्यकता है ? जब भूख प्यास लगती है तो भोजन और जलके ग्रहणमें परवश प्रवृत्ति होती ही है। उसी प्रकार ब्रह्ममें माया फुरती है तो सृष्टि स्वाभाविकही प्रगट होती है।

४२ प्रश्न—कार्य सिद्ध न होने का कारण, नानाप्रकार परिश्रम करने पर भी कार्य्य सिद्ध नहीं होता. इसका क्या कारण है ?

उत्तर—ईश्वरेच्छा विरुद्ध अथवा प्रारब्धिही इसका कारण है।

४३ प्रश्न—शुद्धधर्म, वह कौन धर्म है जो सब प्रकार शुद्ध है ?

उत्तर—वह धर्म कबीर साहबका है।

४४ प्रश्न—भक्तिका निर्वचन, भक्ति किसको कहते हैं ?

उत्तर—भगसे पार होजाने का नाम भक्ति है। जबतक यह भगमें आया जाया करता है तबतक भक्ति पद नहीं मिलता। तबतक कोई भक्त नहीं हो सकता जबतक भगसे छुटकारा नहीं पा जावे। यह सारासंसार और तीनों लोक भगमेंही वर्त्तमान है। जो तीनों लोकसे पार होजावे उसका नाम भक्त है, भक्त न भगका साथ करता है न भगमें आता है कितनी स्त्रियोंके साथ जो कोई सम्भोग करेगा अवश्य उसको उसके गर्भमें आकर जन्म लेना पड़ेगा।

४५–प्रश्न–सत्य परमात्माका धर्म, यदि ईश्वर एक है तो सब मनुष्योंका धर्म भी एकही होना चाहिये ?

उत्तर—ईश्वर तो एक है पर मनुष्योंकी कामना भिन्न भिन्न है। जैसी जिसकी कामना होती है वैसेही धर्मोंमें उसकी प्रवृत्ति होती है उसीमें उसको प्रसन्नता होती है। जिसको जो धर्म्म अच्छा लगता है, वह उसके अतिरिक्त दूसरेको स्वीकार नहीं करता. क्यों कि, अपनी इच्छानुसार उसको वह धर्म मिला है। जो धर्म सब दूषणोंसे शुद्ध हो वह सत्य परमात्माका धर्म है।

४६ प्रश्न—भक्ति विना मुक्तिका दाता, ऐसा भी कोई गुरु है जो विना भक्तिके मुक्ति देसके ?

उत्तर—यह सामर्थ्य केवल कबीर साहबमें है कि, बिना भक्तिकेभी अनन्त जीवोंको परम धामको पहुचा दिया और अनेक भक्तोंको सपरिवार सत्य लोकको पहुंचा दिया।

४७–प्रश्न–कबीर पंथसे मुक्ति, हिन्दू मुसलमान आदि सर्व धर्मवालोंको क्या एकही प्रकारकी मुक्ति मिलेगी ?

उत्तर–अपने २ कर्मानुसार सदा योग्य स्थान सब कोई पावेंगे पर मुक्ति तो तब्र होगी जब कबीरपंथमें सम्मिलित होंगे।

४८ प्रश्न—वेदान्ती और कबीर पन्थियोंमें भेद, आपने वेदांतियोंको असत्यवादी कहा है पर आप भी तो उन्हीके समान वचन कहते हैं भेद क्या हुआ?

उत्तर—वेदान्तियोंका वचन तत्त्वमसिके अन्तर्गत है इसी कारण मिथ्या है, हमारा कहना तत्त्वमसिसे बाहर है जिसका ज्ञान उनको नहीं है।

४९ प्रश्न—चर्मचक्षुसे देख, लाभ न पाया, आपने कहा था कि, ईश्वर शारीरिक आँखोंसे देखा नहीं जाता, जो बाहरको आँखोंसे देखा जाता है वह मिथ्या होता है, तो कबीर साहबको भी तो लोग आँखों से ही देखते थे?

उत्तर – हाँ, जिन लोगोंने कबीर साहबको बहिर दृष्टिसे देखा, अन्तर दृष्टि रखते नहीं थे उनको कुछ लाभ नहीं हुआ।

५०–प्रश्न–शत्रु, मित्र, सबका कर्ता ईश्वरही है, मनुष्यको भी कुछ अधिकार है?

उत्तर—आपमें ईश्वर है, ईश्वरमें आप हैं। जिसने सबमें ईश्वरको देखा उसने कर्तापनेका अहंकार छोड़ दिया। मूर्ख लोग कहते हैं–ईश्वरने मेरे ऊपर आपत्ति डाली। यदि ऐसे मूर्खोंसे पूछो कि, ईश्वरको तेरे साथ क्यों शत्रुता हुई तो कहेंगे कि, "मैंने अमुक पाप कर्म किया था" इससे प्रमाणित होता है कि, कर्महो मित्र और शत्रु है।

५१ प्रश्न–नाम रूपसे छूटनेका मार्ग, नाम रूप सब मिथ्या और भ्रम है फिर किसका भजन ध्यान करना चाहिये?

उत्तर—नाम और रूप दोनों निःसन्देह अनित्य हैं। इसके आगे गुरुकी कृपासे जाना जाता है। जब नाम रूप दोनोंही मिथ्या हैं तो फिर हम तुम कैसे सत्य हो सक्ते हैं? इस कारण असत्यको असत्यके साथ मैत्री होनी ठीकही है। इससे यह प्रमाणित होता है कि, नाम और रूपका भजन करना चाहिये। जब नाम रूपके परेका विचार होगा तब ये आपही छूट जावेंगे।

५२ प्रश्न–ब्रह्माण्ड दर्शन, कबीर साहबने केवल महम्मद साहेबकोही ब्रह्माण्डोंका भ्रमण कराया कि, किसी औरको भी?

उत्तर–करोड़ों अगिनित मनुष्योंको लोक दिखलाया जिसका कि, हाल कबीरपंथकी पुस्तकोंको पढ़नेसे जान पड़ेगा।

५३ प्रश्न–न्याय और दया एक साथ, ईश्वरको न्यायी और दयालुभी कहते हैं, दोनों गुण एक साथ कैसे रह सक्ते हैं?

उत्तर–दो बात एक साथ इस प्रकार रह सक्ते हैं कि, जैसे न्यायने जो अबल पक्षादि पक्षियोंको दुखमें डाल दिया, प्रभुकी दयाने उस दशामें भी उसके

पोषण पालन करके रक्षा की । यह उसकी दयाही है कि, सहस्रशः जीवधारी वर्षों भूखे प्यासे रहनेपर भी जीवित रहते हैं ।

५४—प्रश्न—कोई पार न होगा, मेरे जाननेमें सब आचार्य्य ठीक मार्ग बतलाते हैं । सब अपने २ अनुयायियोंको भवसागर पार करावेंगे ?

उत्तर—मूर्खमल्लाह और टूटी नाव पर चढ़कर कोई पार नहीं जा सकेगा.

५५ प्रश्न—कबीर साहबकी भविष्यत वाणी, किन २ ग्रन्थोंमें है ?

उत्तर—कबीर साहबके ग्रन्थ और भविष्यत वाणीकी कुछ सीमा नहीं है अगनित और अपार है ।

५६ प्रश्न—भेष बनानेसे लाभ क्या ? यदि कोई भेषके बिना भजन करे तो नहीं हो सक्ता ?

उत्तर—यद्यपि सच्चे भावसे किया हुआ भक्ति और भजन बिना भेषके भी ईश्वर स्वीकार करता है पर भेष बनानेमें बहुत बड़ा लाभ है जैसे हंस और काग भेषसेही जाने जाते हैं; वैसेही गुरु और धर्मका पता भेषसेही जाना जाता है, भेषके देखतेही जाना जाता है कि, यह अमुक भेष का साधु है । उनका ऐसा कर्त्तव्य है । जैसे भगवाँ वस्त्रवालेको देख करही अनुमान होता है कि, यह शैव है. क्योंकि, शिवके सेवकों तथा योगियोंकोही यह भेष, दिया गया है. भगवां-वस्त्र भवसागरका चिन्ह है । जो कोई यह भेष बनावेगा उसका आवागमन न छुटेगा क्योंकि, जो जैसा वेष बनाता है उसका स्वभावभी वैसाही हो जाता है । अतः जो भगवाँ वस्त्र पहनता उसका मन वेदांत शास्त्र पढ़नेको चाहता है । वेदांतका आशय समझे अथवा न समझे, साधन सम्पन्न हुआ हो अथवा न हो पर "अहं ब्रह्म" बोलना सीख जाता है । फिर क्या है । अहं ब्रह्म बननेके साथही पूर्ण अभिमानी बनता है । जब अपनेको सबसे बड़ा समझा तो किसीको नमस्कार क्यों, करेगा, उसमें दीनता क्यों होगी ? दीनता तथा सरलता बिना सत्संग होना असम्भव है, सत्संग न होनेसे मन आदिका विकार निकलना कठिन है, इसके नष्ट हुये बिना सत्य पदका पाना दुर्लभ है, सत्यपद पाये बिना मुक्ति पाना असम्भव है जैसे कोई सिपाही शस्त्रास्त्रसे सज्ज हो तो उस समय उसका मन अवश्य युद्ध करना चाहेगा । आशय यह है जो जैसा वेष बनावेगा वह वैसाही कर्म करेगा ।

भगवाँ (गेरुआ) वस्त्रके बिना नीला आदि नाना रंगोंके वस्त्रसे भेष बनानेवालेका प्रचार होगया । पर सब भेषोंमें वैष्णव भेष सर्वोत्कृष्ट सर्व श्रेष्ठ है । इसकी प्रशंसा कबीर साहब तथा स्वयम्, विष्णु महाराजने की है ।

यह वैष्णव भेष भक्ति मुक्तिका चिन्ह है। कंठी तिलक और माला तथा उज्वल वस्त्रादि जो कि, वैष्णव रखते हैं यह मुक्तिका चिह्न है। जलका रंग श्वेत है, सब रंगोंका मूल यही रंग है। यही सतोगुणका चिह्न एवं दयाका रूप है। जहां यह भेष होता है वहां दया तो आगे पताका लेकर चलती है। यह वैष्णव भेष दयाका भण्डार इसी भेषमें दयाका निवास है।

इस भेषके विषयक एक कथा।

एक मछुआ मछली मारनेके लिये नदीमें जाल डाले हुये बैठा था इतनेमें एक राजाकी सवारी सह सैन्य उधर आ निकली। सैन्यको देख मछुआ डर गया कि, राजा मुझे अवश्य दण्ड देगा। क्योंकि वह वैष्णव था। मछुयेका नाम कालू था, उसने अपने जालमें लगे हुये मुद्रियोंका तो मनिका बनाया और जालसे धागा ले एक माला बनायी, मिट्टीका तिलक लगाकर जालको पानीमें छिपा माला फेरने लगा। इतनेमें राजाकी सवारी आगई। राजाने देखा कि, कोई साधु बैठा भगवन्नाम जप रहा है। भक्ति पूर्वक उसके निकट जाकर राजा नमस्कार कर कुछ भेंट रखकर चल दिया, राजाकी देखादेखी सब सेना भरके लोगोंने पूजा भेंट चढ़ाई। नदी पार उतर चले जानेपर कालूने आँख खोलकर देखा। अपने आगे नाना प्रकारके वस्त्र और द्रव्यादि पदार्थोंका ढेर देख मनमें विचार करने लगा कि, जब मैंने केवल ढोंग करके भयसे वैष्णवका स्वाँग बनाया था तो मेरी इतनी प्रतिष्ठा हुई। यदि मैं सच्चा वैष्णव बन जाऊँ तो न मालूम मुझे क्या फल मिलेगा? ऐसा विचार कर कालू उसी समय हृदयसे मछुएका काम छोड़ दिया वैष्णव हो यह दोहा कहा——

दोहा——बाना बडा दयालका, छाप तिलक उर माल।
यम डरपे कालू कहे, भय माने भूपाल॥

उसी दिनसे कालू सब औगुणोंको त्यागकर सच्ची वैष्णवताको प्राप्त कर, परमानन्दमें मग्न होगया।

इसी पर कबीर साहबकी——पुस्तकोंमें भेषकी महिमा बहुत लिखी है,

चौ०——माला तिलक मनोहर बाना। जाकी महिमा सकल बखाना॥
राजस यज्ञ करे जब राजा। माला तिलक बिनु घण्ट न बाजा॥
माला तिलक जब आन बिराजा। शंख पञ्चायन तबही बाजा॥
तब यह महिमा प्रगटहि जानी। अपने मुख कहि शारंग पानी॥
जाकी महिमा अगम अभेवा। निगुरा कहँ जाने गुरु सेवा॥
निगुरा निज मुख निन्दा करई। ढोल बजाय नरकमें परई॥

बाकी निन्दा सुने जो कोई । जाको रुचे सो जाय विगोई ।।
माला तिलक साहबको बाना । जाहि देखि यम काल डराना ।।

साखी– माला तिलक निन्दा करें, ते प्रगट यमदूत ।
कहैं कबीर विचारिके, तेई राक्षस भूत ।।
द्वादश तिलक बनावई, अगँ अगँ अस्थान ।
कहै कबीर विराजही, उज्वल हंस अमान ।।

५७ प्रश्न—पारख गुरु प्राप्त होनेकी युक्ति बताइये ।

उत्तर—गुरुकी सेवा तन मन धनसे करना, उसकी आज्ञासे कभी बाहर न जाना । गुरुके समान साधुकी सेवा भक्ति करनी और साधुमें किसी प्रकार भेद दृष्टि न करनाही पारख गुरुके मिलनेका सहज मार्ग है । इसी प्रकार साधु गुरुके सेवा करते २ गुरुमेंसे ही पारख गुरु प्रगट हो जावेगा । जैसे फूलमेंसे सुगन्धि निकल पड़ती है ।

५८ प्रश्न—स्वसंवेदसे वेदका प्राकटच, आपने कहा कि, उत्पत्तिसे प्रथम चार वेद प्रगट हुये, स्वसंवेद कबीर साहबने पीछेसे कहा, फिर स्वसंवेदसे वेदका प्रागटच कैसे माना जाय ?

उत्तर—माया सृष्टिसे प्रथमही स्वसंवेद[1] था उसीसे निकालकर चार वेद व्यक्त हुए मायासृष्टिके पहले जीवसृष्टि और ब्रह्मसृष्टि दो सृष्टि थीं उसमें स्वसंवेद था स्वसंवेद स्वयम् सत्पुरुषका वचन है । उसके प्रथम कोई नहीं है । वेदके आदिमें स्वसंवेद था, अंतमें भी वही रहेगा, वही सर्वदा रहता है ।

५९ प्रश्न—भजनकी विधि, भजन किस प्रकार किया जाता है ? उसकी कितनी रीतियाँ हैं ?

उत्तर—साधारण नियम यह है कि, अपने गुरुकी आज्ञानुसार भजन कर–गुरु भक्ति, साधु सेवा तथा तपस्यामें स्वयम् मग्न हो जाना ।।

---

१ सत्य पुरुषके लोकमें पहुँचानेवाली विद्याको परा विद्या या स्वसंवेद कहते हैं वो भी वेदोंमेंही है ज्ञान चिन्तामें वही प्रधान है इस कारण प्रधान पहिला एवं अप्रधान पीछे कहा जा सकता है । क्योंकि, जो जिसके कार्य्यमें न आवे वो उसके जाने पीछाही है इसी प्रकार जो कबीर दर्शनमें परा विद्या विषयक साहित्य है वो तो उसी समयका कहा जा सकता है उसका वर्ण विन्यास भी उसी समयका होगा यह शब्द आदिमें उर्दू आदि आज कालकी भाषाओंके शब्दोंको देखनेसे जाना जाता है पर उसका जो परा विद्या विषयक तात्पर्य्य है वो ही स्वसंवेद कहला सकता है उसेही ज्ञान चिन्तावाले मुख्य कह सकते हैं एवं तात्पर्य्य मुख्य है वही स्वसंवेद है अन्य नहीं ।

६० प्रश्न—एकदेशी और सर्वदेशीका निर्णय, ब्रह्मको सर्वदेशी सम कहते हैं इस कारण सब धर्मोंमें समान है ही। कबीर साहब और पारख गुरुके बिना दूसरे स्थानमें न मिलेगा तो सर्वव्यापी और सम नहीं हुआ ?

उत्तर—निःसंन्देह वह सब धर्मों, सब स्थानों और सभी पदार्थोंमें समान भावसे व्यापक है। आत्मा चारों खानिमें एक समानही व्यापक है उसमें न्यूनता अधिकता नहीं पर जहाँ जिस रंगमें होता है वही उसका रूप हो जाता है जैसे सब जीवधारियोंमें एकही आत्मा है तो भी मनुष्य शरीरबिना पूर्णता किसीको प्राप्त नहीं होती; इसी प्रकार सर्वव्यापक होनेपर भी पारखगुरु बिना ब्रह्मका जानना असम्भव है। जैसे स्फटिकमणिके निकट जैसा फल पड़ा हो जैसाही प्रतिबिम्ब उसमें पड़ेगा, जैसा रङ्ग उसके सन्मुख होगा वह उसी रङ्गका बन जावेगा। इसी प्रकार शुद्ध आत्मामें नाना कर्मोंका नाना रङ्ग चढ़ रहा है। एक रङ्ग हटा दूसरा आ उपस्थित हुआ जब तक सद्गुरु इन कर्मोंका धोका न अलग करे तब तक शुद्ध नहीं हो सकता।

६१ प्रश्न—भक्ति करनेयोग्य और बन्धमुक्त—किसकी भक्ति करनी चाहिये।

उत्तर—जो कर्मोंके जालसे निकला हो जिसके ऊपर कर्मका बल न हो उसकी भक्ति करनी चाहिये।

६२—प्रश्न—आप समझाकर कहिये कि, कौन बद्ध और कौन मुक्त है ?

उत्तर—वेद जिसकी प्रशंसा करता है जिसको किताव वर्णन करते हैं वही बद्ध है। स्वसंवेद जिसको कहते हैं वही मुक्त है उसीकी भक्ति करनी चाहिये।

६३ प्रश्न—किस प्रकार सत्पुरुषकी भक्ति करनी चाहिये ?

उत्तर- सत्पुरुषकी भक्ति कामना रहित होकर करनेसे फलदायक होती है।

इसीपर एक कथा—एक गाँवमें एक साधु रहा करता था। उसके पास एक वृक्ष था जिसके नीचे मूर्तिपूजा हुआ करती थी देखते देखते उस साधुको बहुत क्रोध चढ़ा, कुल्हाड़ी लेकर वृक्षको काटने चला। मार्गमें एक मनुष्य मिला, उसने पूछा कि, कहाँ जाते हो महाराज ? साधुने कहा कि, मैं उस वृक्षको काटने जाता हूं। उसने मना किया पर साधुने नहीं माना। दोनों में मल्ल युद्ध होने लगा; साधुकी जय हुई। साधुने मनुष्यको पछाड़ा। फिर उस आदमीने कहा कि, यदि तू उस वृक्षको न काटे तो तुझे मैं नित्य पांच सुवर्ण मुद्रा (अशरफी) दिया करूँगा। वह साधु इस बात पर सहमत हुआ, वृक्षको काटना छोड़के अपने घर

को चला । दो चार दिनतक अशरफी देकर उस आदमीने अशरफी देना बन्दकर दिया, साधु फिर वृक्ष काटने चला । मार्गमें वही मनुष्यमिला । पूछा कहाँ जाता है ? साधुने कहा वृक्ष काटने । इस पर उसने कहा सावधान ! यदि अब वृक्ष काटनेका विचार रखेगा तो तुझे मार डालूंगा । साधुने उसका कहना न माना तब फिर दोनोंमें मल्लयुद्ध आरम्भ हुआ अबकी साधु हारा, उक्त मनुष्य उसे पछाड़ कर छाती पर बैठकर कहने लगा कि, अब मैं तेरा शिर काटता हूँ । पश्चात् साधूके बहुत गिडगिडाने पर उसे छोड़ दिया । छूटनेपर साधूने पूछा कि कृपा कर यह बतलाओ कि तुम कौन हो ? इसका क्या कारण है कि प्रथम मैंने तुमको पछाड़ा था पर अब मैं हार गया । उसने उत्तर दिया मैं शैतान हूँ; तुमने प्रथम मेरे ऊपर जय प्राप्त की वह तुम्हारी निष्कामताका फल था; उस समय तुम्हारी दृष्टि परमार्थपर थी इसी कारण तुममें ईश्वरी बलका आवेश हुआ था पर अब तुमने अशरफ़ी न मिलनेके कारण क्रोधित हो स्वार्थवश वृक्ष काटने का संकल्प किया इसी कारण मैंने तुमको जीत लिया ।

इससे यह प्रसिद्ध हुआ कि, जो निष्काम होकर सच्चे मनसे ईश्वरकी भक्ति करता है वह ईश्वरको प्यारा होजाता है पर जो कामना सहित भजन करता है उसका फल भी वैसा ही पाता है ।

६४ प्रश्न--- धर्मके चार चरण, कौन कौनसे हैं ?

उत्तर---सत्य, शौच दान और दया, यही धर्मके चार चरण हैं । तिनमें प्रथम सत्य उसे कहते हैं जो कि, बाहिर और अंतर किसी प्रकारसे असत्यका लेश न हो । महाराजा युधिष्ठिरको कृष्ण भगवान्ने अश्वत्थामाके मरनेकी संदिग्ध द्व्यर्थक बात कहलाकर सत्यके रूपमें झूठ बोलवा दिया । जिससे अश्वत्थामाके जीवित रहनेपर भी द्रोणाचार्यने उसे मरा जान प्राण त्याग कर दिया । इस प्रकार संशय युक्त दो अर्थसूचक वाक्यको कहना भी असत्य ही होता है, उसे सत्य नहीं कह सक्ते । जैसे देखा, सुना, पढा, अनुभव किया हो वैसाही कहना सत्य है; सन्देह भरी बात कहना असत्यमें परिगणित होता है । सत्यके छः स्थान हैं जो इन छः स्थानोंको प्राप्त होगा वह अवश्य सत्यताको प्राप्त कर लेगा ॥

प्रथम---ईमानकी सच्चाई अर्थात् कभी किसीसे झूठ न बोले ।

दूसरी---ईश्वर से सत्य और निष्कपट हृदयसे प्रार्थना करे । यदि मन कहीं दूसरे स्थानमें हो तो कहे कि, हे प्रभु ! मैं तेरी प्रार्थना करता हूँ तब उस समय ईश्वरसे झूठ बोला । यदि मन संसारके पदार्थोंमें मोहित हो अपनेको

ईश्वरका भक्त अथवा सेवक कहे तो उसने झूठा संसारको ठगनेका मार्ग निकाला जब तक समस्त संसारकी वासनासे रहित न हो तब तक परमात्माका भक्त नहीं हो सक्ता तबही संसारसे रहित हो सकता है जब अपना आपा न रहे। ईश्वरके अतिरिक्त अन्य कुछ उसकी दृष्टिमें शेष न रहे। ईश्वरेच्छामें ही संतुष्ट रहे। भक्तिमें पूर्ण सत्यता यही है जिसको वह पद प्राप्त नहीं है, वह सत्यधारी भी नहीं है।

तीसरी—सत्यता भावनामें है जिसकी भावना शुद्ध है वह ईश्वरको प्राप्त कर सकता जिसको ईश्वर प्राप्त करनेकी दृढ़ इच्छा हो उसकी भावना शुद्ध होनी चाहिये। यदि भावना शुद्ध न हो तो सब भाव भक्ति व्यर्थ हो जावेगी।

चौथी सत्यता—प्रतिज्ञामें होती है; जैसे कोई पुरुष ऐसी प्रतिज्ञा करे कि, जब मैं राज्य पाऊँगा न्यायसे वर्तूंगा। ऐसी प्रतिज्ञा कभी तो दृढ़ और कभी निर्बल होती है। दृढ़ प्रतिज्ञाको ही सत्य कहते हैं।

पाँचवीं—प्रतिज्ञा पालनमें सत्यता होती है। जैसे कोई पुरुष युद्धके समय प्रतिज्ञा करे कि, मैं रणभूमिमें जाकर सच्ची शूरता दिखलाऊँगा। जिन्दे २ लड़ाई करूँगा, यदि वह समय पर अपने वचनका पालन करे तो सच्चा नहीं तो झूठाही है।

छठी—सत्यता यह है कि, जैसा-अपने अंतरमें हो वैसाही बाहर भी जाहिर करे। यह बात अंतःकरणकी शुद्धता और सरलतासे होती है। जिसका भीतर बाहर समान है वही सत्यधारी है। जो अपने हृदयगत भावको छिपा कर दूसरा प्रगट करता है; वह कपटी झूठा; दाम्भिक होता है ऐसे नर पशुओंको सत्यका मार्ग नहीं प्राप्त होता। ऐसे दाम्भिक मूर्खोंने जगत्को भ्रष्ट कर रक्खा है। दान और दयाकी दुर्दशा ऐसे ही धूर्तोंने की है।

सातवीं सत्यता—वहाँ होती है जहाँ कि धार्म्मिक नियमों आत्मिक विचारोंमें केवल दूसरोंके वचन अथवा शास्त्रोंके वाक्यों परही भरोसा न रख-कर अपने अन्तःकरणमें भी विचार और तर्कद्वारा उसकी सत्यताको जाँन बूझ-कर उसे स्वीकार करे। अपने आत्माके विरुद्ध किसीभी कर्ममें प्रवृत्त न हो। जिसमें संयम, संतोष, आशा, भय अनुराग, प्रीति, भक्ति आदि गुण शुद्धता और अंतरीय भावपूर्वक हो उसे सत्यधारी कहते हैं। जिसका विश्वास निर्बलता रहित दृढ़ धर्म परायण हो उसेही सत्यधारीकी पदवी शोभती है। जैसे यदि किसीको किसी प्रकारका भय हो तो उसका मुख सूख जाता है, मुखका रंग पीला हो जाता है, खान पान अच्छा नहीं लगता, चित्तमें व्यग्रता रहती है। यदि इसी

प्रकार कोई परमात्मासे भय करे तो उसका भय सच्चा कहा जा सक्ता है। यदि कोई कहे कि, मैं पापसे डरता हूँ और पाप भी करता जावे तो वह झूठा है।

ऊपर कही हुई रीतियोंसे सत्यताकी अवस्थाओंमें भेद है। इन सातों अवस्थाओंमें जो दृढ़ताको धारण कर सत्य परायण हो वही पूरा सत्यधारी हो सक्ता है। अन्य सत्यताके सब भेद इन्हीं सातोंके अन्तर्गत हैं। जितनी जिसमें सत्यता बढ़ती जायगी उतनीही उसकी उच्चता बढ़ेगी।

सब सांसारिक, तपस्वी, विद्याभिमानी आदि नष्ट और दुःखी हैं यदि उनमें शुद्धता और निष्कामता न हो। सत्यता और शुद्धता कांक्षा (नियत) में होती है। जो कोई ऋण लेकर पीछे देनेकी कांक्षा न रक्खे तो वह चोर है। यदि शुभकर्म करनेका बल न हो तो शुभ कांक्षा रक्खे। शुभ इच्छाका फल बहुत है जब कांक्षामें ही भेद आया तो सब नष्ट हुआ।

शौच या शुद्धि।

शौच नाम शुद्धिका है; वो दो प्रकारकी होती है। एक बहिरङ्ग तथा दूसरी अन्तरंग है। बहिरङ्गशुद्धि जल मिट्टी आदिसे होती है। अन्तरंग विवेक और विचारसे। ईर्षा, कपट, छल शत्रुता आदि आसुरी गुणोंको विवेक विचारके बलसे त्याग कर अन्तरंग शुद्धता प्राप्त करनाही सब धर्मोंवाले सामान्य भावसे मानते हैं। शुद्धतासे रहना ईश्वर सेवा और अर्थ धर्म है ईश्वर शुद्ध और स्वच्छ लोगोंको स्वीकार करता है इससे यह न समझना चाहिये कि, शरीरकी शुद्धि और स्वच्छतासे आशय है वरण शुद्धताकी चार श्रेणी हैं।

प्रथम—ईश्वरके अतिरिक्त हृदयमें दूसरेको स्थान न दे यानी परमात्माके सिवा सब लौकिक और पारलौकिक पदार्थोंसे आसक्ति उठा दे.

द्वीतीय श्रेणी—यह है कि, अन्तःकरणको ईर्षा, कपट, अभिमान, दम्भ आदिसे शुद्ध रक्खे नम्रता, धैर्य्य, सन्तोष, पश्चात्ताप, ईश्वरी भय, प्रेम आदि शुभ गुणोंको धारण करे। दैवी सम्पत्तिसे पूर्णता प्राप्त करे। यही संयमियोंका कर्त्तव्य है।

तृतीय—चुगली करना, अधर्मका खाना, विश्वासघात करना, पराई स्त्रीको कुदृष्टिसे देखना आदि घृणित पापोंसे अपनी इन्द्रियोंको शुद्ध रक्खे। यह तपस्वियोंका पद है। भोजनादि शुभ और स्वच्छ रखना अत्यन्त आवश्यक है। भूलसे भी अखाद्य अथवा निषिद्ध वस्तुको ग्रहण न करे। क्योंकि, जैसा भोजन होता है वैसेही बुद्धि होती है।

चतुर्थ श्रेणी—शौचकी वस्त्र और स्थानादिकी स्वच्छता है यद्यपि वहि-ंग शौच अन्तरङ्गकी अपेक्षा तुच्छ कहा जाता है तो भी इसकी बहुत श्रेष्ठता है, पर वहिर शौचमें नीचे लिखी बातोंका अवश्य ध्यान रखना चाहिये।

प्रथम[1] बहिरंग शौच स्नानादिमें इतनी अधिकता न करे कि, उससे किसी आवश्यक काममें हानि हो। प्रायः पाखण्डी लोग वारंबार स्नान करके भी अपनेको अशुद्धही मानते हैं, दिनभर विक्षिप्त चित्तोंके समान सन्देहमेंही पड़े रहते हैं। ऐसे लोगोंसे लोक परलोकका कुछभी उत्तम साधन नहीं होसक्ता। जैसे विद्यार्थी अथवा परिश्रमी जिनको [स्वयम परिश्रम करके रोटी उपार्जन करनी पड़ती है] "पुरुषों" को शौच स्थानमें अधिकता करना हानिकारक है।

द्वितीय—दम्भ और पाखण्डसे बचता रहे, स्नादिकी अधिकतासे दम्भी मनुष्य अपनेको संसारमें बड़ा माहात्मा एवं शुद्ध प्रगट करते हैं अज्ञानी लोग उनकी प्रशंसा और बड़ाई करते हैं जिससे वे वारंवार उसीमें अधिक प्रवृत्त होते हैं। जैसा कि कुछ लोग करते हैं।

तृतीय—अवकाश और सामर्थ्य रहते हुये आलसादि कारणोंसे स्नानादि शौचकी क्रियाका कभी त्याग न करे।

चतुर्थ[2]—जिस शौचादि क्रियासे किसी जीवधारीको दुःख होता हो उसे त्याग देना चाहिये क्योंकि, वह शुचि हिंसाजनक होनेसे अधर्म है। कोई पुरुष

१—कोई कोई पुरुष संशय युक्त चित्तवाले होते हैं उनके मनमें सन्देहही बना रहता है कि, न जाने यथार्थ शुद्धि हुई कि, नहीं? ऐसे सन्देह में पड़ा हुआ मनुष्य शुचिके यथार्थ साधनों को छोड़कर पाखंडमें फँस जाता है। जैसा कि, प्रथम तो भोग और कामको अशुचि — जान उसके संयममें लगता है फिर उसमेंभी सन्देह उठाकर भोग और कामकी प्रवृत्तिकोही शुचिका हेतु समझकर उसकी प्रवृत्तिमें लग जाता है। फिर क्या था धृष्टताके साथ खुल खेलता है अपने उत्तम पदसे पतित हो जाता है। ऐसे पुरुषोंको कोई योग्य महात्मा पुरुष यथार्थ शुचिताका उपदेश करें तो उसमें संशययुक्त हो वारम्वार संकल्प विकल्प करता हुआ मनही मन विचार करता है कि, न जानें यह यथार्थ स्नान है कि, नहीं? इस स्नानसे मैं शुद्ध होऊँगा कि नहीं? जो मुझे उपदेश करता है वह स्वयम् पवित्र महात्मा है कि नहीं? ऐसे २ संशय करके उसके उपदेशको छोड़ दूसरेकी शिक्षा सुननेमें लग जाता है। इसी प्रकार होते होते किसीकी वाहिरी चटक मटक और गपोड़ेमें फँसकर उसके दोषोंको न विचारता हुआ अनाचारमें प्रवृत्त हो पापका भागी बनता है। दुःख पड़नेपर उससे विरक्त हो अन्यके पास जाता है वहाँसे भी दूसरेकी शरण लेता है। ऐसे संशयात्मक पुरुषोंको कभी भी पवित्रता नहीं दीखती कभी न सुखकीही प्राप्ति होती है वरन् सर्वदा शोकित रहता है।

२ आजकल प्रायः दाम्भिक लोग ऐसा करते हैं कि, उनकी मण्डलीमें कोई किसी रोगके कारण नहा न सके तो उसे छूनेमेंभी पाप समझते हैं। जबतक वह स्नान न करले तबतक चाहे वह प्यासरो मर भी जाय पर जल देना नहीं चाहते वरन् उसे भ्रष्ट, अशुद्ध आदि कठोर शब्दोंसे दुखी करते हैं।

किसीसे मिलना चाहता हो पर वह अपने शुद्धिके अभिमानमें उससे घृणा करे तो यह कुकर्म हैं इसे त्यागना उचित है।

पंचम—भोजनमें संयम आवश्यक है। शुद्ध भोजन ग्रहण करे अशुद्ध न करे।

षष्ठम—संयममें इतनी अधिकता न करे जिससे दूसरोंको हानि पहुँचे। कोई तो किसीके आवश्यक कामको छोड़ करभी खड़ा रहे पर यह स्नान करनेमेंही दो चार घण्टा लगा दे।

स्नानके भेद—स्नान दो प्रकारका है १ अन्तरङ्ग, २ बहिरङ्ग। अन्तरङ्ग। स्नान तीन प्रकारसे होता॥ १–अन्तरङ्ग स्नान यह कि, सब अंगोंको पापसे शुद्ध रखे।

दूसरा—बुरी आदतोंसे अन्तःकरणको शुद्ध रखे।

३—ईश्वरके सिवा दूसरेको न देखें।

बहिरंग शुद्धि—भी तीन प्रकारकी है?

१—देह गेहको मृत्तिका जलादिसे शुद्ध रखे।

२—बिना माँगे किसीके पदार्थमें स्वत्व न रखे।

३—शरीरके बाल, नख आदि पदार्थोंसे शुद्ध रखे, आँख, कान, नाक आदिको शुद्ध करता रहे। बहिरङ्ग शुद्धि जल और मिट्टीसे होती है। अतरङ्ग शुद्धि विचार और विवेकसे होती है।

सूर्य्य, चन्द्र तथा देवस्थान अथवा किसी प्रतिष्ठित स्थानकी ओर पीठ करके मुत्र पुरीष करने न बैठे। अग्नि, जल, राख, पृथ्वीका छिद्र, कठिन और तपी हुई पृथ्वी, गीली पृथ्वी आदिमें भूलसे भी मल मूत्र न त्यागे।

धर्मका तीसरा चरण—दान है। दान बहुत तरहके हैं। यदि दान सुपात्रको

१—कायामें तीन दोष प्रधान हैं वे चोरी, व्यभिचार और हिंसा ये हैं।
वाणीमें तीन दोष हैं—निन्दा, गाली और मिथ्या लाप।
मनके—क्रोध, ईर्षा, मान, छल ये चार दोष हैं।

२ दीन पुरुषोंपर दया करके अन्न, वस्त्र, धन आदिसे सहाय करनेको "दान" कहते हैं यद्यपि इसमें देशकाल पात्रका भी विचार आवश्यक है तो भी यथार्थ दाता इस विलम्बको योग्य नहीं समझता क्योंकि, मनका स्वभाव है कि, क्षणमात्रमेंही अनेक संकल्प विकल्प कर लेता है, क्या जाने कुछ क्षण पीछे देनेका संकल्पही जाता रहे। इसी कारण उदार पुरुषको जिस समय दानकी बुद्धि होती है उसी समय दान करता है विलम्ब नहीं करता।

दो प्रकारका दान है।

एक उत्तम और दूसरा अनुत्तम। वह उत्तम दान है जो कि, दीनको देखकर द्रवित–

दिया जाये तो अति उत्तम हो, बहुत पदार्थोंका दान दिया जाता है, वे चीजें—हाथी, घोड़ा, गाय, बैल, सोना, चांदी, वस्त्र, अनाज और कन्या पुस्तक आदि हैं। यदि दान गुप्त दिया जाये तो अति उत्तम हो। अपनी शक्ति और योग्यके अनुसार दान देना चाहिये। दानका पद बड़ा पुण्यमय है। दान पात्रको दान दिया हुआ उत्तम फल दायक है। जैसे सुपच सुदर्शनजीके पाँच कौल खानेहीसे महाराजा युधिष्ठिरका यज्ञ पूरा हो गया। यदि कोई ऐसा विचार करता रहे कि, सुपच सुदर्शनजी जैसा कोई साधु मिलेगा, तो दान देंगे, यह उसकी भूल है। इस प्रकार उदारता न करके तर्क वितर्क उठानेसे मनुष्य कृपण होकर दान जैसे उत्तम कर्मसे वंचित रहकर पापका भागी होता है। जो कृपणताके वश हुआ वह महानीच पापी होता है।

उससे उचित है कि, शूरवीर, धर्मबन्धु, सुकृत, विरक्त, दीन दास, दासी, विद्यार्थी, ऋणी आदि सब प्रकारके मनुष्य अथवा कोई भी जिसको जिस पदार्थकी आवश्यकता हो उसे दान दे। क्योंकि वही दानका अधिकारी है। मनुष्यको उचित हैं कि—

जो काहूके होय उपकारी। मन वच कर्म करि लेई विचारी॥
पशुआ होयसो आँख छिपावे। मानुष बुद्धि सपने नहिं पावे॥

दरिद्रतामें पड़े हुये किसी प्रतिष्ठित आदमीको, अपने धर्ममें आने वालेको चाहिये कि, अपने बालबच्चों, परिवार और सम्बधी, पड़ोसी और अतिथि आदि सब प्रकारके पुरुषोंकी सहायता कामना बिना करे। दुःखी पथिक अर्थात् अपने देशसे दूर देशमें किसी प्रकारसे दुःखी पड़े हुये मनुष्योंकी सहायता सब प्रकारसे करे। इसी प्रकार आवश्यकतानुसार बहुत प्रकारके दान हैं देशकालको विचारकर अवश्य इस अमूल्य पुण्यका संचय करे।

दान देनेकी रीति।

१ दान देनेमें जहाँतक हो शीघ्रता करना चाहिये।

२ किसी पुण्य तिथिपर अथवा जब दान देना हो गुप्तदान दे। क्योंकिक गुप्तदानका फल अनन्त है।

–होकर दिया जाता है। अनुत्तम दान वह है जो कि, मान अथवा ख्यातिके लिये अथवा किसी दूसरे दाताको जीतनेको बदलेकी आशा रखकर दिया जाय। दान केवल धन मात्रसे ही नहीं होता वरन् विद्या दान, निर्भयता दान, मान दान आदि अनेक प्रकारके दान हैं जिन्हें निर्धन भी कर सकते हैं। यदि दानके विशेष विवरण देखने हों तो स्मृति ग्रन्थोंको देखो तथा उच्च कोटिके साहित्य देखो।

३ दान देनेमें दम्भ और पाखण्ड न करे ।

४ किसीको दान देतीवार अपनी कृतज्ञता प्रकट न करे ।

५ दान लेनेवालेको तुच्छ न समझे बरन् श्रेष्ठ समझकर निरभिमान हो अपना हाथ नीचे रखकर दे ।

६ अपनेको दाता जान अभिमान न करे बरन् ऐसा समझे कि, "लेने-वालेकी अत्यन्त कृपा है कि, जो मेरे दानको स्वीकार कर रहा है ।"

७ अपने धनमें जो उत्तम पदार्थ हो वही दानमें दे ।

जिसके घरसे भिक्षुक निराश फिरकर जाता है वो अपना सब पाप वहाँही छोड़कर जाता उस घरमें देवता सात दिनतक दृष्टि नहीं देते घरवालेका सब पुण्य फिरे हुये भिक्षुकको प्राप्त होता है ।

दान लेनेवालेका कर्तव्य ।

दान लेनेवालेको दान लेनेके प्रथमही विचार करलेना चाहिये कि, दान किस प्रकारका है। दाता किस लिये दान देता है जहाँतक हो सके सकाम दानको न ले । जो श्रद्धाहीन पुरुष केवल अपनी बड़ाई और ख्यातीके लिये अथवा लोक निन्दाके भयसे दान देता हो उसको न ले । जो कठोर वचन कहकर दान दे अथवा भोजन करावे उसका भी न ग्रहण करे । ऐसी ही बहुतसी बातोंका विचार करना चाहिये ।

गुरुकी आज्ञानुसार दान पुण्य करना चाहिये सब कर्तव्योंसे यदि गुरुकी सेवा और आज्ञाकारिता हो । उदार पुरुषोंका पद अत्यन्त श्रेष्ठ है । जो लोग अपनी आवश्यक वस्तुको भी देकर दूसरोंकी आवश्यकता पूर्ण करते है वे श्रेष्ठ उदार पुरुष ईश्वरके पूरे कृपापात्र होते हैं । उदार दानी पुरुष ईश्वरके मित्र हैं ऐसे पुरुषके सब अपराध क्षमा किये जाते हैं । दानीको जब किसी प्रकारका कष्ट उपस्थित होता है तो उसकी सहायता स्वयम् परमात्मा करता है । जिस पदार्थको देनेकी सामर्थ्य रखनेपर भी जो न दे उसे कृपण कहते हैं, जो संग्रह करनेके पदार्थको अवसर विना व्यय करे उसे फजूल खर्ची कहते हैं ।

ईश्वरके मार्गमें अपने तन मन धनका मोह न करनाही सर्वोच्च उदारता है । जो निष्काम होकर उदारताका अवलम्बन करता है वह धन्य है । धन्य है वह पुरुष जो मृत्युको नहीं भूलता क्योंकि, ऐसा पुरुष कृपण नहीं हो सकता ।

दया ।

सब धर्मोंमें दया सबसे शिरोमणि है । किसी भी प्रकारकी तपस्या एवं भजन क्यों न करे यदि दयामें कुछ भी न्यूनता हुई, तो सब निष्फल हो जावेंगे ।

जो संसारके जीवोंके साथ दया न करेगा उसपर ईश्वरकी भी दया न होगी। सृष्टिमें ईश्वर है, सृष्टि ईश्वरमें हैं। जो संसारमें किसीको दुख देता है वह ईश्वरको दुख देता है। दयाहीन कभी भी ईश्वरका पात्र नहीं हो सकता। पशु मनुष्य सब दुख दर्दमें एक बराबरही हैं। भेद इतनाही है कि, एक प्रबल एवं दूसरा निबल है। जो प्रबल निबलको दुख पहुँचावेगा वह यमराजके कोपानलका इंधन बनेगा। जो किसीको सुख पहुँचावेगा वह दया सिन्धुकी कृपाका अवश्यही अधिकारी होगा।

तूने जो कुछ बोया है सो दरौ। गेहूँसे गेहूँ उगे जौ से जौ ॥
शब्द ॥ १० ॥ संतो राह दुनो हम दीठा ॥
हिन्दू तुरुक हटा नहि माने स्वाद सबनको मीठा ॥
हिन्दू बरत एकादशी साधें दूध सिंघारा सेती ॥
अन्नको त्यागें मन नहि हटके पारन करें सगौती ॥
तुरक रोजा निमाज गुजारें बिस्मिल बाँग पुकारे।
उनकी विहिस्त कहाँसे होइहें सांझे मुर्गी मारे ॥
हिन्दूकी दया मिहर तुरुकनकी दोनों घटसे त्यागी।
वे हलाल वे झटका मारें आग दुनो घर लागी ॥
हिन्दू तुरुककी एक राह है सतगुरु यही बताई।
कहै कबीर सुनो हो संतो राम न कहूँ खुदाई ॥ १० ॥

बहुत प्रकार दया होती है। जिसके हृदयमें दया आई उसका बेड़ा पार हुआ।

जैन साहित्यका मेघ कुमार।

एक समय हाथियोंने ऐसा विचार किया कि, बनमें आग लगनेपर बहुत जीव मरते हैं, यदि कोई मैदान घास फूस और वृक्ष रहित हो तो आग लगनेके समय वहाँ जाकर सब बचसकें, निश्चय करके बहुतसे हाथियोंने मिलकर जङ्गलके एक भागसे वृक्ष आदि उखाड कर फेंक दिये जिससे एक स्वच्छ मैदान बन गया।

एक समय अग्नि लगनेपर हाथियोंसहित सब वनके जीवधारी उसी मैदानमें जा ठहरे। समस्त मैदान पशुओंसे भर गया कि, पाँव रखनेकी भी जगह नहीं रही।

हाथियोंका राजा विशालदन्त विशाल शरीरवाला भी सबके मध्यमें खड़ा था बहुत देर खड़े रहनेके कारन पैर सीधा करनेके लिये गजराजने अपना पग ऊपरको उठाया इतनेहीमें एक शसा खाली स्थान पाकर उसी स्थानपर आ

बैठा। गजराजने दयासे द्रवित हो शसाके दब जानेके विचारसे पग नीचे नहीं रखा। तीन पगपर खड़ा रहा। तीन दिनके पीछे जब अग्नि शांत हुई तो सब जीवोंके साथ शसाके चले जानेपर गजराजने पग सीधा करना चाहा पर अत्यन्त कष्ट सहित तीन पग परही खडा रहनेके कारण शारीरिक परिश्रम व रगोंके चढ़ जानेसे सीधा पग नहीं हो सका बरण मुंहके बल गिरकर मर गया। उस दयाके प्रतापसे गजराज मरकर मगध देशका चक्रवर्ती राजा हुआ। जिसदिन महाराजा श्रेणकके घर उसका जन्म हुआ उसी दिन इतनी वर्षा हुई कि, वर्षोंसे अवर्षणके कष्टको सहती हुई प्रजाको महान् सुख प्राप्त हुआ इसी कारण कुमार का नाम मेघकुमार[१] रखा गया।

पश्चात् बहुत कालतक सुख भोगकर संसार विरक्त हो मोक्षका भागी हुआ इसी प्रकार दयाके बहुत दृष्टान्त हैं। धन्य हैं, वे जीव, जो दयाको अपना धर्म जानते हैं। उनके ऊपर धिक्कार है जो शक्ति रहते हुये भी दया नहीं करते; परोपकारसे भागते हैं। धिक्कार उनकी अवस्थापर शोक और बारम्बार है जो कि, सहस्रों प्रकारकी हिंसा करते हुये भी स्वर्गकी आशा रखते हैं।

मनुष्यको चाहिये कि, किसी प्रकारका दुःखी रोगी और दुर्बल, बुद्धि आदि जीवकी रक्षा करे अपनी शक्तिके अनुसार कभी पीछे पग न टारे।

धर्मके चार वैरी।

जिस प्रकार धर्मके चार मूल बतलाये हैं, उसी तरह धर्मके चार शत्रु भी हैं। उनका नाम—१ काम, २ क्रोध, ३ लोभ और ४ मोह है।

काम—ऐसा प्रबल शत्रु है कि, मनुष्यको अंधा बना देनेमें इससे बढ़कर दूसरा कोई भी नहीं है। आठ प्रकारके मैथुनसे बचना अत्यन्त कठिन काम है। बड़े २ सिद्ध साधु तपस्वी महात्मा किसी न किसी प्रकार कामके वश हो जाते हैं। सहस्रों ऋषि मुनि और तपस्वियोंको इसने वारंवार नीचा दिखलाया है।

मुसद्दस।

मलिक व जिन्न व इन्स और इशरात। सारा आलम है तेरेही बरकात॥
तुझसे क़ायम तनासुल आलात। रूह सारे फँसे ब मज ख़र फ़ात॥

---

१ यह कथा जैन धर्मग्रन्थोंमें आई है मेघकुमारके श्रान्त होनेपर महावीर स्वामीने उसे इसके पूर्वजन्मकी कथा सुनाई थी वह थकनका मारा महावीर, स्वामीसे कह उठा था कि, महाराज! अब मुझसे इस घाममें नहीं चला जाता, अब निर्ग्रन्थियोंकी तपस्याके कष्ट नहीं उठाये जा सकते। उस समय चौबीसवें तीर्थंकरने उसके पूर्व जन्मकी कथा तथा उसी पुण्यसे राजकुमार होनेका वर्णन किया था। जैन साहित्य ऐसीही दिव्य कथाओंसे भरा पड़ा है। सच पूछिये तो वास्तविक जैन मत तो दया है।

छोड़ हरगिज़ नता दम सुकराद । तुफ्फ तुझ पर ऐ शहवात बद्द जात ॥
मायाने मार सबको काम छुरा । करदिया पहले काम हाल बुरा ॥
रही ब्रह्माको भी न शर्म्म ज़रा । विष्णु तन, घरके बघरको फिरा ॥
शिव ऊपर लाई मोहिनी आक़ात । तुफ्फ तुझ पर ऐ शहवात बद जात ॥
शृंगी ऋषिसे बुज़रुगें शाहिदथे । जो उवादतमें अहद वाहिद थे ॥
हवस नफ़सानीके न शाहिदथे । ग़ैबके मूजिदव मनाहिद थे ॥
उनके सर परभी धर दिया तू लात । तुफ्फ तुझ पै ऐ शहवते बद जात ॥
भडकी शहवतकी आग जब अन्दर । इन्दर बिल्ली हुये नारद बन्दर ॥
सग बनाया तुही विश्वामितर । चन्द्रमाँ मूर्ग कोई हरिण तीतर ॥
आरिफोंको दिया तू यह दरजात । तुफ्फ तुझ पै ऐ शहवते बदज़ात ॥
जाहिदोआविदो धर्म मूरत । दिल मनौवर हो देख जो सूरत ॥
कौड़ीका कर दिया है यह औरत । अन्ध ग़लताँ हो ग़लवये शहवत ॥
रह वदकारीकी बताया घात । तुफ्फ तुझ पै ऐ शहवते बदज़ात ॥
रहते जो खुश्क बर्गक़ो खाकर । निकली उस-तनसे शहवत अखगर ॥
रोज रोशनको कर दिया था रात । तुफ्फ तुझ पै ऐ शहवते बदज़ात ॥
लंक रावणका कर दिया बरबाद । महाभारत भी द्रौपदी फिरियाद ॥
जंग तिरोचन भये उसे कीजे याद । मर गये बेशुमार हो नाशाद ॥
जिनकी कोई कभी न पूछे बात । तुफ्फ तुझ पै ऐ शहवते वदज़ात ॥
बाद शाहतको तू मिला दे गर्द । गाज़ी और पहलवान करे दिल सर्द ॥
आज़िज इस सा न कोई बेदर्द । ओलिया अम्बिया करे बेपर्द ॥
यह बडा एक खवीस है हैहात । तुफ्फ तुझ पै ऐ शहवते बदज़ात ॥

प्रारब्ध और पुरुषार्थ ।

६५ प्रश्न—शूर वीरतासे प्रारब्ध मिट जाता है ?

उत्तर—उदारता, दीनता, न्याय और शील ये चारों पुण्यके मूल हैं। जो कोई इनको भलीप्रकार धारण करेगा, जिसमें ये चारों गुण अखण्ड रहेंगे, वह प्रारब्धको भी मिटा सकता है। ये गुण जिसमें होते हैं उसको ईश्वरी सहायता मिलती है। पर कोई २ प्रारब्धही ऐसी होती है जिसको भोगे बिना छुटकारा नहीं होता।

योग वासिष्ठकी कथा—एक समय भृगमुनि अखण्ड ध्यानमें निमग्न हो तपस्या कर रहे थे। उनके पुत्र शुक्रजी सेवा करते हुए योग्यतानुसार भजन भी किया करते थे। एक समय एक अप्सरा उधरसे आ निकली। शुक्रको देख-

कर मोहित होगई । शुक्र बड़े सुन्दर और कान्तिमान् थे । शुक्रकी दृष्टि भी उस अप्सरापर पड़ी । यह भी उसपर मोहित होगये । वह स्वर्गको चली गई । इधर उसीकी चिन्तामें शुक्रजीका शरीर छूट गया । अब दिव्य शरीर पाकर शुक्र स्वर्ग लोक पहुँचे राजा इन्द्रने शुक्रको आते देखकर सिंहासनसे उठ बहुत आदर मानसे बैठाकर कहा कि, आपने बड़ा अनुग्रह किया, आप कुछ काल तक यहीं निवास कीजिये । शुक्र वहीं रहने लगे । एक दिन नन्दनबनमें भ्रमण करते २ वही अप्सरा दृष्टि पड़ी अप्सराने भी उन्हें देखा । अब क्या था दोनों ओरसे प्रेमसे ऐसी उमङ्ग मारी कि, दोनों एक क्षणभी अलग न रह सके । लज्जावश हो शुक्रजीने तपोबलसे कुहेरा उत्पन्न किया चारों दिशामें अंधेरा छागया शुक्र और अप्सरा दोनोंने कामविलास करना आरम्भ किया, स्वर्गीय आयु क्षीण होनेपर दोनोंने स्वर्गसे गिरकर पृथ्वीपर जन्म धारण किया । शुक्रने तो एक ब्राह्मणके घर और अप्सराने एक राजाके घर जन्म लिया । समय पाकर राजकन्याने पूर्वके पतिके लिये शिवका आराधन आरम्भ किया । कुछ काल बीते पीछे राजकुमारीका स्वयंवर रचा गया. अनेक देशोंके राजकुमार आये उसके साथ २ ब्राह्मण भी अपने पुत्रसहित वहाँ आया । राजकुमारीने ब्राह्मण कुमारको माला पहिनायी । वो राजमहलमेंही रहने लगा । राजाको इस पुत्रीके सिवा दूसरी संतान न होनेके कारण वही ब्राह्मणकुमार राज्याधिकारी हो, बहुत कालतक राज्यकर मृत्युको प्राप्त हो, क्रमशः मछुआ और हिरण हो अंतमें फिर एक ब्राह्मणके घरमें जन्मा । अबकी वार पहिले पुण्यके प्रतापसे उसे संसारसे वैराग्य हुआ सबसे विरक्त हो गंगातटपर बैठे ध्यानमें निमग्न हुआ । इधर समय पाकर जब भृगुमुनिका ध्यान खुला तबतक शुक्रके पाँच जन्म हो चुके थे,

आंख खोलकर पुत्रका चारों ओर अन्वेषण करनेपर पुत्रको नहीं पाया वरन् उसकी सूखी हुयी मृतक देह मिली । यह देखतेही कालपुरुष पर अत्यन्त क्रोधित हो भृगुजीने कालपुरुषको शाप देना चाहा तो वो उनके सन्मुख आकर कहने लगा ।

उस समय कालपुरुषकी मूर्ति महाभयानक दीख पड़ती थी उसकी तीनों आखें तीन सूर्योंके समान प्रकाशित और प्रदीप्त हो रहीं थीं । हाथमें त्रिशूल लिये हुये था । त्रिशूलमेंसे आगकी ज्वालाएँ निकलती थीं कालपुरुषने कहा कि तुम्हारे भस्म करनेसे मैं भस्मभी नहीं हो सकता । जो जैसा कर्म करता है मैं उसको वैसाही फल देता हूँ । तुम्हारे पुत्रने स्वयम् अपने कर्म्मानुसार फल पाया है । इतना कहकर कालपुरुषने शुक्रका सब हाल कह सुनाया ।

भृगुमुनिने कहा कि, मुझे उस ब्राह्मणके पास गंगातटपर ले चलो। फिर दोनों योग्यबलसे शीघ्रही तपस्वी ब्राह्मणके पास पहुँच गये। वहाँसे उसको साथ लेकर भृगुजीके आश्रम पर पहुँचे। कालपुरुषने शुक्रका पूर्व शरीर, दिखलाकर अनुरोध किया कि, अब तुम इसमें प्रवेश करो। पर उसने स्वीकार नहीं किया, कालपुरुषने बहुत समझाया कि, इसी शरीरसे तुम्हे दैत्योंकी गुरुआई करनी है। उधर भृगुजीने जल डालकर तपोबलसे मृतक शरीरको हृष्ट पुष्ट बनाया ब्राह्मणने उसमें प्रवेश किया उसी शरीरसे शुक्र दैत्योंके गुरु बने।

इस कथाके लिखनेका आशय यह है कि, प्रारब्ध कितना प्रबल है देखो! कितने जन्म धारण करने पर भी भावीको भोगनेके लिये उसी पूर्वशरीरमें आना पड़ा।

६६ प्रश्न—गुरु और अधिकारी, आजकल अच्छे गुरु तो मिलतेही नहीं जिससे मोक्षमार्गकी प्राप्ति हो?

उत्तर—ऐसा, कहना ठीक नहीं, क्योंकि, गुरुका अभाव नहीं है। सब प्रकारके मार्ग बतानेवालेगुरु सदा वर्तमान हैं। अधिकारीके अभावसे गुरुका अभाव जान पड़ता है।

कालपुरुष और सत्य पुरुष।

प्रश्न—आपने कहा था कि, काल पुरुषने सबकी बुद्धिपर आवरण डाल दिया है जिससे कोई पुरुषकी भक्तिमें नहीं लगता इससे प्रमाणित होता है कि, काल पुरुषसे भी प्रबल है।

उत्तर—कालपुरुष सत्यपुरुषसे प्रबल नहीं है पर सत्यपुरुषने काल-पुरुषको तीन लोकका राज्य दिया है दी हुई वस्तुका ले लेना उचित नहीं है। वह समय आवेगा जब कि, कालपुरुष अपना नियत समय व्यतीतकर स्वयम् अलग हो जावेगा।

कबीर साहिब और सत्य पुरुषकी एकता।

६८ प्रश्न—आपने कहा था कि, कबीर साहब सत्पुरुषकी आज्ञा लेकर पृथ्वीपर आये। इससे स्पष्ट है कि, कबीर साहब और सत्पुरुष दो हैं। कबीर साहब केवल अहदी हैं।

उत्तर—कबीरसाहब और सत्यपुरुष दो नहीं, केवल जीवोंके अज्ञानसे दो दीखते हैं। जिनको ज्ञान है उनकी द्वैतदृष्टि नहीं होती। संसारका व्यवहार द्वैत बिना नहीं चलता इस कारण कबीरसाहब और सत्पुरुष दो कहे जाते हैं

नहीं तो यथार्थमें एकही हैं, क्योंकि, सत्पुरुषके बिना दूसरा कौन है जो काल-पुरुषके ऊपर जय पासके ।

तुलना ।

६९ प्रश्न--कितने साधु सन्त ऐसे होगये हैं जो कि, मारने काटनेसे भी न कटे न मरे तो क्या उन्हें भी कबीरसाहबके समान समझना चाहिये ।

उत्तर--इसमें कुछ सन्देह नहीं कि, प्रह्लाद आदिक जैसे भक्त जन अपनी भक्ति और प्रेमके प्रताप तथा विष्णुभगवान्‌की सहायतासे किसी २ बातमें पूरे देखे जाते हैं पर कबीरसाहबकी तुल्यता नहीं हो सकती वह अपने समान आपही हैं उसकी समानता दूसरा कोई नहीं कर सकता ।

निर्वासन मुक्त है ।

७० प्रश्न--जिसको वासना नहीं है वह पुरुष मुक्त है कि, नहीं ?

उत्तर--जो सत्यही वासना रहित हो जावे वह पुरुष मुक्त हो जाता है पर वासना ऐसी सूक्ष्म है कि पूर्ण विवृत्त हुई मालूम होने परभी समय पाकर प्रकट हो जाती है ।

७१ प्रश्न---जिनको कबीर साहबका पूरा पता मिल गया वे कैसे होते हैं ?

उत्तर--जैसे लोमश ऋषि, आदि क्रोड़ों हंस संसारमें प्रगट रहते हैं उनको कभी जन्ममरणका दुःख नहीं भोगना पड़ता, ज्ञान सदा एक समान रहता है वे सदा वासना विहीन रहते हैं ।

७२ प्रश्न--हंस कबीरके अतिरिक्त दूसरा कोई निर्वासना है कि, नहीं ?

उत्तर---कबीर साहबके बिना वासना निवृत्त होना कठिन है ।

७३ प्रश्न--यथार्थ ज्ञानका मूल, स्वसम्वेद कैसे है, इसका प्रमाण क्या है ?

उत्तर--कोई शास्त्र और वेद किताब उस प्रकार सत्य और स्पष्ट वर्णन नहीं करते, जिस प्रकार कि, स्वसम्वेद कहता है ।

यथार्थसे मुक्ति ।

७४ प्रश्न---चारों युगमें सब ऋषि, मुनि तथा सर्व वर्णाश्रमी गायत्रीके जापसे मुक्ति मानते आये हैं । वो क्या बात है ?

उत्तर--यदि गायत्रीसे मुक्ति होती तो ब्रह्मा विष्णु आदि पहले ही मुक्त हो जाते । पर वो हुआ नहीं ।

"गायत्री युग चारि पढाई । पूछहु जाय मुक्ति किन पाई ॥"

पर वे यदि गायत्रीका भी सत्य पुरुषपरक अर्थ समझें तो मुक्त हो जायेंगे ।

७५ प्रश्न---अज्ञान किसको लगा ?

उत्तर---अज्ञान, अहंकार और देहाभिमानको लगा है।

रक्षकका अवतार।

७६ प्रश्न---जब संसारमें पापकी वृद्धि होती है भक्तों तथा पुण्यात्माओं पर कष्ट पड़ता है तब विष्णुका अवतार होता है कबीरसाहबका अवतार क्यों नहीं होता ?

उत्तर---जब संसारमें अत्याचार और अन्याय होता है, उस समय संसारके रक्षकको आनेकी आवश्यकता है। ऋषि, मुनि, पीर पैगम्बरोंकी आवश्यकता नहीं।

जीवन मुक्ति और विदेह मुक्ति।

७७ प्रश्न---वशिष्ठ ऋषिने वेदानुसार जीवन्मुक्ति और विदेह मुक्ति रामचन्द्रजीको कही है उसका आशय क्या है ?

उत्तर---जितने ऋषि, मुनि, सिद्ध साधु, पीर पैगम्बर और नानामतोंके आचार्य्य हुए हैं वे सब बालकके समान खेलमें लगे हुए हैं, जिनको जो अच्छा लगा उसीको उसने ग्रहण कर लिया। दूसरोंको भी वही बतलाया। जिसकी जिसने मानिन्दी करली वह उसीमें आनन्द मान रहा है। जब सब खेलने खेलानेवालेको ज्ञान प्राप्त होगा तब वे कबीर साहबके शरण जाकर सत्य पदको पावेंगे।

७८ प्रश्न---वशिष्ठजी तो रघुवंशकी गुरुआईके लिये शरीर धारण करते हैं, क्योंकि, अधिकारी लोगोंको बारम्बार शरीर धारण करना आवश्यक हैं।

उत्तर---वे प्रारब्धके अनुसार रघुवंशकी गुरुआईके लिये देह धर कर रहे हैं, शिष्योंके लिये पक्षी भी बनना है, पड़ा प्रारब्धको भोग कर फिर फिर अमर पदपर स्थिर हो जायँगे यही अन्योंकी भी बातें हैं।

७९ प्रश्न---ऐसे २ माहात्मा पुरुषोंको पशु पक्षियोंकी योनि क्यों धरनी पड़ती है ?

उत्तर---उस समय यही प्रारब्धमें होगा उसको भोगकरही नष्ट होना था पर ज्ञान उनका उस देहमें भी पूरा था।

शब्द--- बहुरि नहीं आवना यह देश ॥

जो जो गये बहुरि नहि आये, को घर कहे संदेश ॥

सुर न मुनि और पीर औलिया, देवी गौरि गणेश ॥

धरि अवतार सबी मुनि प्रगटे, ब्रह्मा विष्णु महेश ॥

पण्डित चण्डित मुण्डित मोहे, राजा रंक नरेश ।।
षट् दर्शन पाखण्ड छयानवे, सबी बनाये भेश ।।
कहें कबीर सो तीर न लागे, विनु सत गुरु उपदेश ।।

८० प्रश्न--देहवानसे विदेह किस प्रकार मिल सकता है?

उत्तर---जिस शरीरधारीने अपनी देह मिथ्या जान अपनी वासना उठाली वह अवश्य विदेहको प्राप्त होगा।

८१ प्रश्न---आश्चर्य है कि, विश्वामित्र जैसे ऐश्वर्यमान् महात्मा नवीन सृष्टिके कर्ता हुये वे मुक्त न हों?

उत्तर---विश्वामित्र आदिकी कथा पढ़नेसे ज्ञात होगा कि, वे अपने २ कर्मोंका फल पाकर और उसे भोगकर फिर अधिकारारूढ हो गये, न तो किसीको वह प्रकाशही मिला न किसीको स्थितिही हुई जिससे कि, मुक्ति होती है पर वो जो चाहते थे वो उन्हें अवश्य मिला।

हस्त क्षेप।

८२ प्रश्न---जब सतपुरुषने निरंजनको तीन लोकका राज्य दे दिया तो फिर कबीर साहबका उसके (निरञ्ज) राज्यमें हस्तक्षेप करनेका क्या स्वत्व है?

उत्तर--वह सर्व शक्तिमान् है जो चाहे सो करे। निरञ्जन को इसलिये राज्य नहीं दिया है कि, जीवोंपर अत्याचार करे। निरञ्जनने सत पुरुषका नाम छिपाकर अपना प्रगट किया तपके बलसे बड़ा प्रबल हो महा अहंकारी बन गया आद्याको निगल गया। कूर्मजीके तीन शिर काट लिये। अक्षरके साथ युद्धकर उसे भगा दिया। योग जीतके साथ युद्ध करने उन्हें मारनेको सन्मुख आया। तीन लोकमें अन्यायद्वारा सब जीवोंको छल और कपटसे बन्धनमें डाल लिया। सत् लोक जानेका मार्ग रोक लिया। ऐसी युक्ति बनाई कि कोई मनुष्य भी किसी प्रकार सत् लोकका मार्ग नहीं पासका। किताबोंके फन्दोंमें सबको फँसाकर सबका सत्य ज्ञान हर लिया। जब सत्य पुरुषने निरंजनका ऐसा अत्याचार देखा तो स्वयम् सत्यलोकसे चलकर ज्ञानी, सतसुकृत सत्त कबीर आदि नामोंसे प्रगट हो काल पुरुषसे कहा कि, यदि तू अब अवज्ञा करेगा तो तुझे नाश कर दूंगा। कालपुरुष अधीन होकर सतगुरुके चरणोंमें पड़ा अपने अपराधकी क्षमा माँगी।

साधुका द्रव्यग्रहण ।

८३ प्रश्न—साधुको द्रव्य ग्रहण करना चाहिये वा नहीं ?

उत्तर—विरक्तको द्रव्यका संग्रह उचित नहीं पर किसी शुभ पुण्यमय आवश्य कार्य्यवश ग्रहण करनेमें कुछ दोष भी नहीं जैसे जो मठ धारी साधु है अथवा महंत सच्चे हृदयसे अभ्यागतोंकी सेवा करते हों उन्हें द्रव्यादि ग्रहण करलेना चाहिये ।

त्यागी—सच्चे भावसे अन्तःकरणमें वासना रहित होनेका नाम त्यागी है । जो ऊपरसे विरक्तोंका स्वाँग बनाके फिरता है भीतर नाना प्रकारकी वासना रखता है, नानाप्रकारकी झूठी और रोचक बातोंसे अथवा किसी युक्तिसे सेवक सती अथवा अन्य संसारियोंसे द्रव्य लेनेकी इच्छा रखता है वा लेता है, वह चोर और ठगसे भी नीच अधम पापी है । ऐसे धुतारे कपटीके लोक परलोक दोनोंही भ्रष्ट हैं ।

जिसने सच्चे भावसे अहंकारको तर्क किया वही सच्चा वैरागी है । रुपिया पैसा अथवा द्रव्य न छूनेका डौल बनानेवाला सच्चा वैरागी नहीं हो सकता ।

तर्क हंकार तर्क दुनिया है । और दूसरा कोई न सुनिया है ।

ग्रहण न करनेका कारण ।

८४ प्रश्न—क्यों स्वसंवेदके मार्गको सब लोग ग्रहण नहीं करते ?

उत्तर—मिथ्या स्थूलविद्याके अभिमानियोंने मनुष्योंको ऐसा बहकाया है कि, जिस कारणसे भ्रममें पड़े हुये मनुष्य सत्य मार्गपर नहीं आते । विद्वान् दो प्रकारके हैं ।

एक वे हैं जो जीवोंको मुक्तिमार्ग बतलाते हैं । दूसरे वे हैं जो जीवों को भटकाकर कुमार्गमें डालते हैं । वे ऐसे दुराचारी होते हैं कि, इनको कभी सचाई अथवा सदाचारकी बातही पसन्द नहीं होती । वे निरे अभिमानी और देहात्मवादी होते हैं । ऐसेही शठ दुराचारियोंने सब धर्मोंमें दुराचारका प्रचार किया है इन्हींके कारण मनुष्य सदाचारमें प्रवृत्त नहीं हो सक्ते बुद्धिहीन मूर्ख ऐसोंहीके अनुशासनमें ही रहकर अपना सर्वस्व नाश करते हैं ।

हिकायत मनजूम ।

कोहसे एक आरिफ सेहरामें आ । देखा अजाज़ील वहाँ था खड़ा ।।
दिल अलम वसूसःसे था दुरुस्त । दीदः नैरंग ज़मानः से सुस्त ।।

उससे किया आरिफ़ने बाज पुर्स । छोड़ा है क्यों कार गहे खुद मदर्स ॥
तबअ थी तेरी क्यों बसबाससे । मोम हुआ जो सख्त इलमाससे ॥
कार तू दर मसजिदो खानकाह । बन्दःको बतलाओ जो तारीक राह ॥
बाज रह खुद बद तीनतसे क्यों । फ़ारिग खोय शैतनियतसे क्यों ॥
रखनः गरे सिल्क जमाअत न क्यों । तफ़रक़ाबखश सफे ताअतन क्यों ॥
जादू तेरा उरबदःजोय कहाँ । मक्र व फरेब बद खोय कहाँ ॥
रहजनें दौराँ दिया यों जवाब । बरकते उलमाने छुड़ाये अजाब ॥
कार मेरा करते फ़क़ीहाने अहद । मुझको रही बाकी न जद्दो जेहद ॥
एक तन उसे तायफ़ासे बुलहवस । वासते गुमरीहीके हैं बस ॥

ऐसे दुराचारियोंने अनन्त जीवोंको कुमार्ग में लगा दिया और लगाते जाते हैं। किसी पुस्तकमें देखा था कि, एक बादशाह ऐसा हो गया जो ऐसे दुराचारियोंकी खबर जहाँ सुनता था वहाँसे पकड़वा कर उसके शरीरकी खाल खिंचवालेता था। वह स्पष्ट कहता था उसे पूर्ण विश्वास भी था कि, ऐसेही स्वार्थी, दुराचारी, मूर्खोंने सब धर्मोंमें भ्रष्टता डाल दी है।

शून्यके हथियार।

८५ प्रश्न—आपने कहा कि, इस संसारके सर्व व्यवहार शून्य हैं तो मुक्ति आदिक भी शून्यही होवेगा ?

उत्तर—निस्सन्देह इस संसारका सर्व व्यवहार शून्य है पर परमात्माने प्रत्येक मनुष्यको दो ऐसे शस्त्र प्रदान किये हैं जिनसे कि असत्यको काटकर शून्यके पार पहुँच जावे। उन दोनों हथियारोंका नाम विचार और विवेक है जो कोई इन दोनोंसे उचित कार्य्य करेगा वह अवश्य अपना अभीष्ट सि कर सकेगा।

अन्य धर्मोंकी आवश्यकता।

८६ प्रश्न—यदि केवल कबीर पंथसेही मुक्ति मिल सक्ती है, तो अन्य धर्मोंकी क्या आवश्यकता है क्योंकि, धर्मका मुख्य प्रयोजन मोक्ष है ?

उत्तर—भिन्न धर्मोंका होनाभी अत्यन्त आवश्यक है। क्योंकि, वर्णमाला पढ़े बिना कोई पुस्तकोंको नहीं पढ़ सक्ता। शास्त्र पढ़े बिना कोई विद्वान् नहीं हो सक्ता, विद्वान् हुये बिना उच्चपद नहीं पासक्ता। जैसे पाठशालेमें भिन्न २ श्रेणी होती हैं उनमें भिन्न २ ज्ञानके विद्यार्थी शिक्षापाते हैं पर योग्य तभी समझे जाते हैं, प्रशंसा पत्र तभी पासक्ते हैं जब कि, सर्वोच्च श्रेणीमें परीक्षोत्तीर्ण हो जाते हैं, इसी प्रकार अन्य अन्य धर्मोंके विषयमें जान लेना और कबीर पन्थको सर्वोच्च श्रेणी धर्मका समझना चाहिये। जबतक पूर्ण ज्ञान और सत्य धर्मकी

प्राप्ति नहीं होती तबतक मनुष्य अन्य २ धर्मोंमें प्रवृत्त रहता है। कबीर पन्थका अधिकारी नहीं होता। जब मनुष्यके अंतःकरणसे भली प्रकार मल विक्षेप आदि दोष दूर हो निर्वासना पदको प्राप्त करे तबही कबीर पन्थका अधिकारी होता है।

८७ प्रश्न—पश्चिमीयोंके घृणितोंके ग्रहणका कारण, पश्चिमीय नबी और पैगम्बर आदि धर्माचारियोंने मद्यमांसादि घृणित पदार्थोंका निषेध क्यों नहीं किया ?

उत्तर—पश्चिमीय धर्मोपदेशक लोग स्वयम् मद्य मांसके ग्रहण करनेवाले थे। इसमाईल और इब्राहीम आदि नबी प्रसिद्ध शिकारी थे। जिक्रियाका पुत्र योहन टिड्डियोंको मार मार कर खाता था।

८८ प्रश्न—कबीर साहबके विषयमें तो किसी नबीने भविष्यत् नहीं कहा ?

उत्तर—एक लाख अस्सी सहस्र पैगम्बर भविष्यत वादी हुये वे सब निरञ्जनके पुत्र उसीके लोककी सुधि जानते थे। उन्हें सत्य लोककी क्या खबर थी? उसके बिना उसका समाचार। कौन कहसक्ता है? जो हंस कबीर उसकी सुधि जानते हैं वे सर्वदा उसकी स्तुति और प्रार्थना करते रहते हैं।

पृथ्वीका निरूपण।

८९ प्रश्न—पश्चिमीय विद्वानोंका मत है कि, पृथ्वी चलती है और गोल है सो सत्य है कि, नहीं ?

उत्तर—निस्सन्देह पश्चिमीय विद्वानोंका मत है यही बरन कितनेही भारतवासी, जो नवीन शिक्षाके पक्षपाती हैं, वैसाही विचार रखते हैं। जिस प्रकार भारतके विद्वानोंके इस विषयमें भिन्न भिन्न मत हैं वैसेही योरोपिय विद्वानोंके भी मत हैं। क्योंकि, कितने विद्वान् लोग पृथ्वीको स्थिर मानते हैं। योरोपियन लोगोका यह कहना है कि, हम सच्चे और भारतवासी झूठे हैं, महान तुच्छ और असत्य हैं।

तौरेत और इञ्जील आदिकमें तो इस विषयमें कुछ तो लिखा ही नहीं है पर पश्चिमीय विद्वानोंने केवल अपने अनुमान और कल्पनासे कुछ कुछ लिखा है।

(१) वे (योरोपियन्स) कहते हैं कि, पृथ्वी गोल है। इसमें कोई विवाद नहीं क्योंकि, भारतीय विद्वान्, भी पृथ्वीको गोलही कह गये हैं।

(२) योरोपियन्स कहते हैं कि, पृथ्वी चलती है। पृथ्वीकी गतिको प्रमाणित करनेके लिये कुछ क्षुद्र युक्तियाँ भी प्रकाशित करते हैं। जैसे—नदीमें

चलती हुई नावपर बैठे हुये मनुष्योंको किनारेके वृक्ष आदि चलते हुये देख पड़ते हैं पर वे चलते नहीं यथार्थमें नौकाही चलती है ।

वे लोग यह भी कहते हैं कि, चन्द्रमा स्वयम् प्रकाशित नहीं है पर सूर्य्य के प्रकाशसे प्रकाशित है ।

पश्चिमी लोगोंका उपरोक्त कथन मुझे ठीक नहीं जान पड़ता वे लोग भारतीय विद्वानोंकी बातोंको प्रमाण न करनेमें पुराणके कुछ वचनोंकी विरोधताका प्रमाण देते हैं जैसा पृथ्वीके विषयमें भिन्न भिन्न पुराणोंमें लिखा है ?

(१) पृथ्वी अण्डाकार है ।

(२) पृथ्वी कमलाकार है।

(३) पृथ्वी कमल पत्रके आकारकी है ।

(४) पृथ्वी चौकोर है ।

(५) पृथ्वी चिपटी है ।

इसी प्रकारके परस्पर विरोधी वचनोंको देखकर योरोपियन्स भारतीय विद्वानोंकी सम्पतिको सत्य नहीं मानते । इस कारण भारतीय विद्वानोंके मतको पुष्ट करनेवाली युक्ति और अनेक प्रमाण लिखता हूँ ।

(१) पृथ्वीके गोल होनेमें तो सब एक मत हैं ।

(२) पृथ्वी कमलाकार है यह बात भी सत्य है क्योंकि, कमल बहुत तरहका होता है कोई गोल, कोई लम्बा ।

पृथ्वीको गोल कहनेमें जो बुद्धिकी सूक्ष्मता है उसको योरोपीय विद्वानोंने नहीं समझा वास्तविक बात यह है कि, जल गोल है पृथ्वी नहीं है क्योंकि, पृथ्वीसे पूर्व जल था, जलका आकार गोल है, इसका प्रत्यक्ष प्रमाण यह है कि, समुद्रका पानी भंवरमें ऊंचा उठा हुआ जान पड़ता है, उसका कारण केवल यही है कि, जलका आकार गोल है । जैसा समुद्रवैसाही बुन्द, दोनोंका रूप एक समानही गोल होगा । कोई बड़ा कोई छोटा भलेही हो पर आकारमें कुछ भेद नहीं होगा जैसे पिण्ड और ब्रह्माण्डदोनोंका रूप एकही है ग्रन्थोंमें कबीर साहबने कहा है कि, पृथ्वीसे पहिले जल था, जिस प्रकार दूध पर मलाई जमती है उसी प्रकार जलपर पृथ्वीकी सृष्टि हुई । यही बात सबमें है कि, पहले पानी था, उस गोल पानीके ऊपर पृथ्वी जमाई गई इसी कारण पृथ्वी गोल दिखाई देती है । पानीकी गोलाईके कारण पृथ्वी गोल जान पड़ती है । जैसे घड़ेके ऊपर कुछ गाढ़ा तरल पदार्थ जमादेनेसे घड़ेकी गुलाईके कारण वह भी गोल दीख पड़ता है पर यथार्थमें गोल नहीं होगा । इसी प्रकार पृथ्वी जलके फेनके समान जमकर

कठिन बन गई है, गोल पानीपर जमकर गोल दीख पड़ती है। यदि पृथ्वीको पानीसे अलग किया जावे तो गोल न दीखेगी हाँ पानीके साथ तो गोल होनेमें कुछ सन्देहही नहीं ।

(३) हिन्दू कहते हैं कि, पृथ्वी कमलके पत्तेके आकार है वो बात भी ठीक है क्योंकि, पृथ्वी जलके ऊपर जमाई गई तो गोल जमाई गई जो कुछ गोल पदार्थ पानीपर जमाया जाता है उसके नीचे गावदुमी स्थान शून्य रहता है इसी कारणसे पृथ्वीको कमलके पत्तेके आकारका कहा है।

(४) पृथ्वी चौकोर है यह भी कहना ठीक है क्योंकि, स्वरोदय आदिमें पृथ्वीतत्त्वको चतुर्कोणही बताया है, जो तत्त्वदर्शी होते हैं, स्वरोंको साधकर तत्त्वोंके आकारोंको देखते हैं चारों तत्त्वोंके रङ्ग, ढङ्ग, चाल और उसके सबगुण दोषोंको जानते हैं वे पृथ्वीको चतुर्कोणही देखते हैं । स्वाँसके साथ चारों तत्त्व का रूप प्रत्यक्ष देख पड़ता है। आकाश तत्त्व स्वरके अन्तरमें रहता है बाहर दिखाई नहीं देता । इससे भी पृथ्वीको चौकोर कहा गया है।

पृथ्वी चौकोर, जल गोल, अग्नि त्रिकोन, वायु और आकाश भी गोल है।

(५) पृथ्वीको चिपटी कहनेकाभी वही पानीपर जमाया जाना कारण है क्योंकि, कोई गाढ़ा तरल पदार्थ गोल पदार्थपर जमाया जाय तो वह चिपटे आकारमेंही जमेगा । भारतीय विद्वानों तथा पुराणोंका कथन बहुत ठीक और सत्य है पर उसके समझनेके लिये बुद्धिकी आवश्यकता है। भारतीय विद्वानों और महात्माओंके कथनमें असत्यका गन्ध भी नहीं हो सकता क्योंकि, वे प्रकाशित हृदय और पूर्ण ज्ञानवान तथा त्रिकालदर्शी अंतर्यामी हुये हैं ।

हिन्दू लोग कहते हैं कि, पृथ्वी अचल है चल नहीं इसका कारण यह है कि, पृथ्वीको कोशोंमें, धरा, स्थिरा, अचला और धरणी आदि नामसे लिखा है, जिनसे स्पष्ट सिद्ध होता है कि, पृथ्वी अचल है । यदि पृथ्वी गतिवाली होती तो उसे धरणी आदि नामसे क्यों कहते ? वरन् अचलाके स्थानमें चला कहते ।

इसीपर मुसलमानी धर्मके विद्वान्— ी पृथ्वीको स्थितही बतलाते हैं जैसा हजरत शेख़ सादी सिराज़ी लिखते हैं कि—

जमीं अज़ तप लरज: आमद सतोह ।
फरोकोफ्त बर दामनश मेख कोह ॥

इसका भावार्थ यह है कि, सृष्टिके आदिमें परमात्माने पृथ्वीको बनाया उस समय यह कांपती हुई डगमगाती थी, पीछे पहाड़ोंका खूंटा ठोककर स्थिर कर दिया गया है।

जो योरोपियन्स पृथ्वीको चलती बतलाते हैं उसके लिये प्रमाण और युक्ति लाते हैं वे ऐसे तुच्छ और तर्कखण्डित हैं कि, उनसे किसीके भी मनका समाधान नहीं हो सकता ।

यदि पृथ्वी चलती होती तो नावपर चढ़ेहु ेके समान किनारेके सब पदार्थ दृष्टिसे छिपते हुयेके मान अन्तर्धान होते जाते पर ऐसा नहीं होता ध्रुव आदि तारागण नित्य एकही स्थानपर जैसेके तैसे जान पड़ते हैं यह कदापि सम्भव नहीं हो सकता कि, पृथ्वी तो चले और सदा सब समय ध्रुव आदि एक समान नही दिखाई दें ।

सर आइज़क न्यूटनने पृथ्वीको दो गति बतल ई है । १ वार्षिक २ दैनिक ।

वार्षिक गतिसे ऋतुओंका हेर फेर होता है और दैनिकसे दिन रात होता है । सो यदि ये दोनों चाल सत्य होती तो दोनों चालोंसे तारे और ग्रह दृष्टिसे अंतर हो जाते अथवा छोटे बड़े दीख पड़ते पर ऐसा न होकर उलटा ग्रह और तारे गण ज्योंके त्यों एक समान दीख पड़ते हैं पृथ्वी इससे भी अचलही सिद्ध होती है ।

ध्रुव तारेकी ओर दृष्टि डालनेसे भी पृथ्वी स्थिरही प्रमाणित होती है । क्योंकि, जब दक्षिणायन अथवा उत्तरायण होता है उस समय पृथ्वी बहुत दूरी पर चली जाती । ध्रुव बहुत छोटा दिखाई देता पर यह किसीने नहीं देखा वरन् सबको ध्रुव सदा एक समानही देख पडता है । इससे पृथ्वीकी दोनों गति अप्रमाणित नहीं होती ।

फिर न्यूटन साहबने चन्द्रमाको प्रकाश रहित बतलाया है । इसका कोई भी प्रबल प्रमाण उनके पास नहीं है । उन लोगोंका कथन है कि, सब ग्रहोंके-साथ २ अनेक २ चन्द्रमा हैं वे सब प्रकाशित हैं पर यह हम लोगोंका चांद प्रकाशित नहीं, वाह इस हमारे चांदने क्या अपराध किया कि, ईश्वरने और चन्द्रमाओंको तो प्रकाशित बनाया इसको अन्धकार मय ।

देखो तौरीतमें पैदायशके प्रथम बाबके १३ से १९ आयत तक लिखा है कि ईश्वरने दो प्रकाश बनाये एक छोटा दूसरा बड़ा । बड़ेको सूर्य कहा, छोटा रात शासन करनेके लिये बनाया गया । जब कि, उनके ईश्वर कृत पुस्तकमें ऐसा लिखा है तो उनको चन्द्रमाको अन्धकारमय कहना ठीक नहीं है ।

कबीर साहब कहते हैं कि, चन्द्र और तारे दोनों विराट् पुरुषकी आंख हैं खूब प्रकाशमान है । दक्षिण नेत्र सूर्य्य और वामनेत्र चन्द्रमा हैं । जब सूर्य्य चन्द्रमा विराटके नेत्र हैं तो दोनोंके प्रकाशित होनेमें कोई सन्देहही नहीं है ।

वेद प्रमाण भी ऐसाही है जैसा कि, कबीर साहब कहते हैं।

सर्व ब्रह्म ज्ञानियोंके गुरू कबीर साहब कहते हैं वेद तौरीत उसके ऊपर साक्षी भरते हैं फिर कौन है कि, चन्द्रमाको अंधकारमय बतलाये ? केवल लोगोंको भ्रम हो गया है इस कारण सत्यको छोड़ असत्यको लिये बैठे हैं। उसी पर विश्वास किये बैठे हैं। सत्य झूठका निर्णय नहीं करते।

जब चन्द्रमा बेप्रकाश होगा तो विराट पुरुष भी काना ही होगा इसमें सन्देह नहीं कि, "जो ब्रह्मण्डे सोई पिण्डे" तब तो विराटके काने होनेके कारण सब जीवधारीको काना होना चाहिये।

पर इसके उलटा मनुष्य दो आँखवाले देख पड़ते हैं।

इस संसारमें जितने निश्चय हैं सब बुद्धके ठहराये हुये है पर स्वयम् सअत्य एवं अनित्य हैं उसके निश्चय नित्य और सत्य कैसे हो सकते हैं।

भिन्न २ भाषाओं और देशोंमें अनेक मतवाले अनेकही विद्वान् हो गये हैं सबके विचारमें कुछ न कुछ भेद है पर भारतीय विद्वानों और महात्माओंका जो कुछ कथन है यह उनके अंतरीय प्रकाशके बलसे है उसमें किसी प्रकार भी असत्यता नहीं हो सकती।

टाम्की, टकोड, वराह, कोप निक्स और सर आजक नियुटन ये चार भूगोल विद्याके जाननेवाले बिदेशमें हुए हैं। उन लोगोंके कथनोंमें परस्पर बहुत विरोध है, कोई पृथ्वीको गति वाली तो कोई अचल बतलाता है। जबतक नया कोई वक्ता न उठ खड़ा हुआ तबतक योरोपियन्स पुरानोंकीही बातोंको ईश्वरी लेख समझते हैं पर जब कोई नया युक्ति प्रौढ वादसे अथवा और किसी रीतिसे अपना कथन पुष्ट करे तो पिछलेको तृणवत् त्याग देते हैं दो सौ वर्षोंसे पश्चिमी लोगोंने सबके कथनको असार समझकर सर आइजक नियुटनके कथन पर अवलम्ब किया है देखें यह अवलम्ब उनका कबतक ठहरता है। सर आइजकका भी सार माना गया सिद्धान्त कबतक सार रहता है ? कबतक लोग विवेक और विचारके विरुद्ध इस प्रकारके विश्वास करते रहते हैं।

यद्यपि चतुर लोगोंने अपनी चतुराईसे कितने सिद्धान्त बनाये और बनाते जाते हैं पर किसीकी स्थिति नहीं हुई न होगी। प्राकृतिक जन उनकी अनुसरता कर करके पछताये और पछतावेंगे। सन्तोंने अंतरीय प्रकाश और ज्ञानके बलसे जो कुछ कहा है वही सत्य है। उन्हींका वचन माननेसे भाग्यमान् हो सक्ता है।

परमात्मा सर्व शक्तिमान् है, जिसको चाहे क्षणमें विद्वान् करदे, जिसको चाहे क्षण में मूर्ख । मूसा और खरकईल आदिको क्षणभरमेंही ज्ञान प्रदान किया सावल आदिका ज्ञान क्षणमें हरण कर लिया । राजाको रंक और रंकको राजा करना उसका कौतुक मात्र है । उसकी ऐसी प्रबल माया है कि, उसे जाननेको कोई समर्थ नहीं । कोई कैसा भी ज्ञानी और विद्वान् क्यों न हो उसके कार्य्यमें स्वास भी नहीं हो सकता ।

एक रूप ।

९० प्रश्न---साधु और साहेब मिलकर किस प्रकार एकरूप हो जाते हैं ?

उत्तर---जो साधू लोग परमात्माके सच्चे प्रेमी हैं, वे लोक परलोक सबको तुच्छ समझते हैं । जानमाल आदि सब संसारको अनित्य समझकर उसकी ओर कभी दृष्टि नहीं देते केवल प्यारेके स्मरणमें लगे रहते हैं । ऐसे ईश्वर प्रेमियोंको वासना किञ्चित मात्रभी शेष नहीं रह जाती । अपने देहकी भी सुधि भूलकर प्यारेके चिन्तनमें विदेह हो ध्यान करते २ उसीके रूपमें मिल जाते हैं अथवा वही हो जाते हैं । उनमें मैं तूका लेशमात्र भी बखेड़ा नहीं रहता ।

दृष्टांत---लुधियाने नगरमें एक महात्मा साधु जो कि, सिद्ध भी सुने जाते थे एक अति सुन्दर यौवन और रूप पूर्ण गोकली नामकी स्त्री पर मोहित हो गये । क्रमशः वह इतने आशिक हुए कि, मान मर्यादा त्यागकर गोकलीके पीछे पीछे फिरने लगे । लोगोंने उनकी बहुत निन्दा की उनको बहुत धिक्कारा पर उसको किसी बातकी परवाह न हुई ।

एक दिन गोकली कई एक स्त्रियोंके साथ नदीमें स्नान करने गई, साधु भी उसके पीछे पीछे पहुँचा गोकलीने जैसे जलमें डुबकी मारी उसी प्रकार साधूने भी डुबकी मारी । गोता लगाकर बाहर निकलने पर संत भी गोकली हो गया । यह कौतुक देखकर लोगोंको बड़ा आश्चर्य हुआ ।

वर्त्तमानकालमें कितने लोग इंगरेजी शिक्षा प्राप्त करते हैं । उच्च २ परीक्षा देकर कोई बी. ए. कोई एम्. ए. कोई एल्. एल्. बी. कोई २ डी. डी. कोई डी. एल्.एल्. आदि नाना प्रकारकी उपाधि प्राप्त कर उच्च पदको प्राप्त करते हैं । उसी प्रकार सत ईश्वरी परीक्षा पासकरके ईश्वर बन जात हैं । इस प्रकार साहब साधु दोनों एक हो जाते हैं ।

साखी---तू तू करते तू हुआ, मुझमें रही न हूँ ।
आपा परका मिट गया, जित देखूं तित तूं ।।

जबतक ईश्वरमें लीन हो ईश्वररूप नहीं हो जाते तबतक संत लोग भिन्न भिन्न श्रेणी और पदोंको भोगते रहते हैं।

इसी प्रकार ईश्वरके प्रेमी ईश्वरसे मिल जाते हैं, भेद नष्ट हो जाता है। सांसारिक प्रेम ईश्वरी प्रेमकी नकल है। यह संसार एक नदी है जिसमें प्रेमी लोग गोता लगाते हैं। जो सत्य अन्तःकरणसे जिसपर आशिक होगा वह उसीका रूप हो जावेगा। प्यारेके मिलनेके लिये सच्चे प्रेमके सिवा दूसरा कुछ नहीं चाहिये। जिसने सच्चे अद्वैत परमात्मासे मन लगाया वह उसीका रूप हो गया। वह अद्वैत अनूपम कबीर साहब है जिसकी स्तुति और प्रार्थना सब ऋषि मुनि करते आ रहे हैं।

तरकीब बन्द।

तीन लोक पूरण है नारी। माया ब्रह्म जीव सब झारी॥
सबही नारी नहीं नर कोई। ब्रह्माविष्णु आदिक त्रिपुरारी॥
मृत्यु लोक और सर्ग पताला। तीन भुवन जम जाल पसारी॥
कहे सुने वेद जो और बानी। सब नारी माया हंकारी॥
सत कबीर पुरुष इक आया। मैं क्या कहूं कहें ऋषि राया॥

जा कबीरकी अकथ कहानी। वाका भेद वेद नहिं जानी॥
सुर मुनि जश निशिदिन गावे। नेति नेति कही उचरी बानी॥
ऋषि मुनि परमहंसको बाना। तीन काल सो विरद बखानी॥
अविचल अकथ अखंड अपारा। सत्य कबीर पुरुष सोई ज्ञानी॥
तामें सबही धरम और दाया। मैं क्या कहूं कहें ऋषि राया॥

सत्य पुरुषके जो फरजन्दा। सदा काल सो ब्रह्मानन्दा॥
[illegible] समरथके बेटे। जिनकी कृपा कटे जम फन्दा॥
सो सत्य पुरुष गुण गावे। उनके निकट नहीं दुख द्वन्दा॥
सो सत पुरुष है आप कबीरा। परमानन्द सो आनँद कन्दा॥
सो कबीर हैं अगम अमाया। मैं क्या कहूँ कहें ऋषि राया॥

वार पार है पुरुष कबीरा। यहां वहां सो दोनों तीरा॥
देह बिदेह कहा नहीं जावे। वाको ज्ञान है अगम गँभीरा॥
गो खुर सम उतरें भौसागर। गुन गावें मुनि वा गुरु पीरा॥
अलख पुरुष निरबान है सोई। वाहीको सेवक धर्म्म धीरा॥
सुयश जो वेद पुराणन गाया। मैं क्या कहूं कहें ऋषिराया॥

कुशटम गरुड भुशंड रुक महिया । दत्त दिगंबर और दुरवासा ॥
धनुक जनक नारद सनकादिक । कोटिन ऋषि मुनि जिनकी आसा ॥
धरे जो देह बिदेह कहाये । गावें गुण मुनि मगन हुलासा ॥
अधम जीव उतरें भौपारा । सो देखे साहब निजपासा ॥
खुद कबीर सत पुरुष कहाया । मैं क्या कहूं कहें ऋषिराया ॥

गोरख ऋषभ कनक नृप जाना । योगधीर योगेश्वर नाना ॥
बंग देश पति मोहन राजा । इबराहीम अधम सुलताना ॥
अमर भूपाल और सुपच सुदर्शन । दास मलूक करें गुणगाना ॥
धरमदास है शिर ताजा । नानक दादू हंसन बाना ॥
सबकी बानीमें निर ताया । मैं क्या कहूं कहें ऋषि राया ॥

शाह सिकन्दर दिल्ली शाहा । देश मगध बिजली खां नाहा ॥
रामानन्द जासुगुन गावें । दास गरीब कहते गुन गाहा ॥
नाम देव रविदास गोस्वामी । भौसागरको पायो थाहा ॥
इन्द्रमती मन्दोदरी रानी । मुइ कमाली प्रिती निबाहा ॥
जो पहचान अमर बर पाया । मैं क्या कहूं कहें ऋषि राया ॥

सिद्ध साध सब पीर पयम्बर । धर्म्मके यकता जो धरनी पर ॥
स्वर्ग और कोटिन ब्रह्माण्डा । तन धारी जो जीव चराचर ॥
वाणी अगणित पारको पावे । सुयश कबीर कथैं सब तनधर ॥
परमानन्द दास बलिहारी । साहब सत्य कबीर एक नर ॥
करता पुरुष धरे नर काया । मैं क्या कहूँ कहें ऋषिराया ॥

शब्द—काशीपुरीके वासी, सतगुरु काशीपुरीके वासी हो ॥
नाम कबीरा मतिके धीरा, जगसे रहित उदासी हो ॥
पांच पचीस कियो बस अपने, पकड़े मन मवासी हो ॥
माया मान बड़ाई छोड़ी, मिले राम अविनाशी हो ॥
सुर नर मुनिजन और योगीश्वर, वांच्छत मन सन्यासी हो ॥
मुक्ति क्षेत्र तजि गये मगह कर, ऐसी दृढ़ विश्वासी हो ॥
अग्नि न जरे धरनी न गड़े, पड़े न जमकी फांसी हो ॥
सहदेही पद माहि समाये, देखा लोग विलासी हो ॥
हिन्दू तुर्क दोनोंसे बनाया, कर्म्म भर्म कियो नाशी हो ॥
दास गरीब वहाँ कोई यक पहुँचे, बातें बहुत बनासी हो ॥

शब्द— कीना मगह प्याना सतगुर कीनारे ।
दोनों दीन चले संग जाके हिन्दू मुस्लमानारे ॥
मुक्ति क्षेत्रको छाड़ि चले हैं तजि काशी अस्थानारे ॥
शाह सिकन्दर कदम लेत है बादशाहा सुल्तानारे ॥
चारों वेद कितेब संग है खोजी बड़े बयानारे ॥
सालिगराम सुरतिसे सेवैं ज्ञान समुन्दर दानारे ॥
षट् दर्शन जा संग चलत हैं गावत बानी बानारे ॥
अपना अपना इष्ट सम्हालें बांचे पोथी पानारे ॥
चादर फूल बिछाई सतगुरु देखि सकल जहानारे ॥
चारों दाग रहित है सतगुरु बिगत अलख अमानारे ॥
राय बीरसिंघ करें बिनती बिजली खान पठानारे ॥
दो चादर बख्शी दोनोंको दीन पान परवानारे ॥
नूर नूर निर्गुण पद मेला दर्शहिं वही हैरानारे ॥
पद लौलीन भये अबिनाशी पाये पिंड परानारे ॥
क्षब्द सरूप साहब सारंगे शब्दी शब्द समानारे ॥
दास गरीब कबीर अर्शमें फरके ताहि धुजानारे ॥

साखी— गरीब —काशीपुरी कसूरिया, मुक्ति होत सब जात ॥
काशी तजि मगहर गये, लगी मुक्ति सर लात ॥
गरीब—पन्द्रह सौ पचहत्तरा, किया मगहको गौन ॥
मगसर सुदी एकादशी, मिली पवनमें पवन ॥

रमैनी— चले कबीर मगहके ताईं । तहवां फूलन सेज बिछाई ॥
दोनों दीन अधिक पर भाव । दुखी दुश्मन और सब साव ॥
तहाँ चले बिजली खा पैठाना । बीर सिंह बघेल रवाना ॥
काशी उमडी चली मगहरको । कोई न पावे तासु डगरको ॥
वैरागी सन्यासी योगी । चले मगहको क्षब्द वियोगी ॥
तीन रोजमें पहुँचे जाईं । तहवाँ सुमिरण राम खुदाई ॥
दोनों दीनहिं बाहन जोरी । शस्त्र बांध लियो भर कोई ॥
वे गाड़न वे जारन कहई । दोनों दीन अधिक उरझहई ।.
तहाँ कबीर कहें एक भाखा । शस्त्र करे सो ताहि तलाका ॥
शस्त्र करे सो हमरो द्रोही । ताके बीच पिछोड़ी होई ॥
सुधि बिजली खां जात हमारी । हम हैं शब्द रूप निरंकारी ॥

बीरसिंह पुनि विनती करे । है सतगुर तो कैसो मरे ॥
तहवाँ चादर फूल बिछाई । सोजा झाहि पदे समाई ॥
दो चादर दो दीन उठावे । ताकी मध्य कबीर न पावे ॥
तहवाँ अविगत फूल सो वासी । मगह गोर और चौरा काशी ॥
अविगत रूप अलख निरवानी । तहवाँ नीर छीर दियो छानी ॥

मुरब्बा

तु इन्सान है पकड़ इन्सान आदत । न इस्से और बढ़कर है सआदत ॥
न तू क्यों कर कबूल अपनी शहादत । इबादत कर इबादत कर इबादत ॥
जो पहिना तू है आदमको जामा । पढ़ो दिनरात सच्चा इश्कनामा ॥
बवस्फे यार दे तहरीक खामा । इबादत कर इबादत कर इबादत ॥
तू जाहिर बातिनी आखोंसे पहचान । वह साहब खुद धरी है देह इन्सान ॥
तू उसके रुख निगह कर अज़ दिलोजां । इबादत कर इबादत कर इबादत ॥
इबादत जुहद तक़्वासे जो खाली । शरीअत मत्य सुकृतकी न चाली ॥
क्योंकर पावे राहे लायजाली । इबादत कर इबादत कर इबादत ॥
पड़ा है किस लिये इस गंदिगीमें । लगाता दिल न क्यों इस बन्दगीमें ॥
तू देख आजिज़ उसी खुद जिन्दिगीमें । इबादतकर इबादतकर इबादत ॥

तीन लोक धर्म्म रायके कन्धे । आये जिव सुन जम कालके बन्धे ॥
लगा भूल तू धोके धन्धे । हाय जीव अन्धे हाय जीव अन्धे ॥
सांचा सतगुर नहि पहिचाना । भूल कैलके गैल फन्दाना ॥
जाना नहीं क्या पद निर्वाना । हाय जीव अन्धे हाय जीव अन्धे ॥
सतगुरने तुझको समझाया । तेरे चित्त एक नहि आया ॥
यम जालिम तेरे मन भाया । हाय जीव अन्धे हाय जीव अन्धे ॥
बन्दी छोर जो सन्त पुकारें । भूत प्रेत पशु पक्षी तारे ॥
वाकी राह न तू पग धारे । हाय जीव अन्धे हाय जीव अन्धे ॥
सारे गुरु एकसा कहिया । बिन जाने भौसागर बहिया ॥
तीरथ पारख पदमें रहता । हाय जीव अन्धे हाय जीव अन्धे ॥
जो है तेरा तारनहारो । ताके ओर न तनिक निहारो ॥
इत उत अपनी आँख पसारो । हाय जीव अन्धे हाय जीव अन्धे ॥
झांका झूंकी चहुंदिशि लावा । मन भटका ये कौन फल पावा ॥
खोमी संगति फिर फिर आवा । हाय जीव अन्धे हाय जीव अन्धे ॥

तन मन धन तू काको दीना । अपने चित्र विचार न कीना ।।
भवसागरमें वासा लीना । हाय जीव अन्धे हाय जीव अन्धे ।।
तन मन धन सत गुरुको दीजे । आवागमन फेर नहिं कीजे ।।
यमके फन्द न पांव धरीजे । हाय जीव अन्धे हाय जीव अन्धे ।।
सत्य कबीर पुरुष परमातम । सुर नर मुनि जो कहत महातम ।।
बाके बिन लाभ न आयम । हाय जीव अन्धे हाय जीव अन्धे ।।
परमानन्द चरण रज ढूंढ़ा । जाकी कृपा पाव पद गूढ़ा ।।
ताको नहिं पहिचाने मूढ़ा । हाय जीव अन्धे हाय जीव अन्धे ।।

९१ प्रश्न—जो लोग सतगुरुको पाकरभी विमुख होगये वे क्यों विमुख हुए ? उनकी क्या गति होगी ?

उत्तर—जो कोई कबीर साहबकी शरणमें आकर सच्चे हृदयसे सत्गुरुका भक्त बना उसीकी स्तुति प्रार्थनामें अपना सौभाग्य समझा उसके ऊपर असत्य आत्माका आक्रमण नहीं हो सकता। परन्तु जो अपनी प्रतिष्ठा, बड़ाई और सांसारिक झूठी मर्यादाके लोभमें पड़कर सद्गुरुका नाम छिपाकर, अपना प्रकाशित करना चाहा उसके ऊपर काल पुरुषकी ओरसे झूठी आत्मा भेजी जाती है, जो उसको भटकाकर सुख और सत्यके मार्गसे भ्रष्ट कर असत्य पथमें डालकर नष्ट कर देती है सदा उसपर प्रबल बनी रहती है।

राम वनवास—अतः रामायणमें वृत्तांत है कि, जिस समय महाराजा भयभीत हो विचारने लगे कि, यदि रामचन्द्र गद्दीपर बैठ गये तो रावणका माराजाना दुर्लभ हो जावेगा। अंतमें सब देवताओंने विचार कर दुष्टात्मा भेजा जिसने आकर मंथराको भरमाया। मंथराने रानी कैकयीको बहकाया जिससे रानीने राजासे रामचन्द्रके बनवासका वरदान मांगा। राजाने वचन बन्ध होनेके कारण विवश हो रामचन्द्रजीको बनयात्रा देकर आपभी असार संसारको त्याग गया। यह सब काम देवताओंके भेजे हुये उसी अशुद्ध आत्मासे पूरे हुए। रामचन्द्रकी कथा अत्यन्त प्रसिद्ध है इस कारण संक्षेप मात्र लिखी है। दुष्ट आत्माने जिसके हृदयमें वास किया वह सदाके लिये नष्ट और भ्रष्ट हो गया।

हिरण्याक्ष—इसी प्रकार दुष्टात्माने हिरण्याक्षके हृदयमें वास किया वह विष्णुसे शत्रुता कर वैकुण्ठमें भगवान्को मारने गया। यद्यपि समय सूचकताके कारण भगवान विष्णु बैकुण्ठ छोड़कर बाहर चले गये पर समय पाकर प्रह्लादकी सहायताका निमित्तले नरसिंह रूप धरकर उसका सर्वनाश कर दिया।

रावण—इसी प्रकार रावणकोभी दुष्टात्माने बहकाया । सब ऋषि, मुनि, संत साधुने बहुत समझाया । अंतमें कबीर साहबने भी उसकी भलाई उसको दर्शाई पर मूर्खने न माना वरन सत्तरवार सतगुरुपर तलवारका घात किया । उसका जो परिणाम हुआ सो कौन नहीं जानता ? इसी प्रकार कंस आदि अनेक राजाओंको दुष्ट आत्माने बहकाकर उभयलोकसे भ्रष्ट कराया ।

शिद्दाद बादशाह—पश्चिमीय बादशाहोंमेंसे शिद्दादको दुष्ट आत्माने बहकाया उस समयके नबीको जिनका नाम हूद पैगम्बर था खुदाने उस (शिद्दादको) समझानेका हुकुम दिया । हूदने बहुत समझाया पर शिद्दादने एक भी नहीं मानी । तब हूद नबीने उसको विहिश्तका वर्णन करके कहा कि, मेरा खुदा तुझको विहिश्त देगा । शिद्दादने कहा कि, मैं तेरे खुदाके समान स्वयम् बिहिश्त बनवाता हूँ ।

पश्चात् बारह वर्षमें बिहिश्त बनकर तैयार हुई शिद्दाद अपने साथियों और दर्बारियोंको साथ लेकर बिहिश्त देखने चला । पृथ्वीसे ऊपर तक जब सब सीढ़ियोंको चढ़कर अन्तिम सीढीपर पहुँचे तो शिद्दादने एक दरिद्र मनुष्यको फटे कपड़े पहने हुये बिहिश्तके द्वारपर खड़ा देखा । शिद्दादने उससे पूछा तू कौन है ? यहाँ क्यों खड़ा है ? उसने उत्तर दिया काल हूँ तेरा प्राण निकालने आया हूँ । शिद्दादने बहुत विनती की कि, मुझे बिहिश्त देख लेने दे । कालने एक भी न मान एक ऐसा भयानक शब्द किया कि, शिद्दाद अपने साथियोंसहित पातालमें धँस गया ।

नमरूद—नमरूद भी दुष्टात्माका बहकाया हुआ अपनेको खुदा कहता था । उसकी रैयत और परिजन लोग उसे ईश्वरके समान दंडवत् करते थे । उस समयके नबी इब्राहीमको, खुदाकी आज्ञा हुई कि, नमरूदको समझाओ पर उसने. इब्राहीमके बहुतसे आश्चर्य देखनेपर भी न समझा वरन कहा कि हम तेरे खुदाको मारेंगे ।

फिर एक उड़न खटोला बनवाकर नमरूद आकाशको उड़ा; जब कुछ दूर गया तब आकाश पर एक बाण चलाया । खुदाने जिबराईलको हुकुम दिया कि, इसका तीर अमुक मछलीकी पीठमें लगा दो । फिर तो रक्त भरा हुआ तीर नमरूदके पास पहुँचा उसने निश्चय करलिया कि, मैंने इब्राहीमके खुदाको मारलिया खटोला पृथ्वीपर लाया । इब्राहीम को बुलाकर कहा कि, देख, तेरे खुदाको मैं मार आया हूँ, अब बतला तेरे खुदाकी फौज कहाँ है उसको भी मारूँ?

इतनी बात सुनकर इब्राहीमने कहा कि, मेरा खुदा सर्व शक्तिमान है उसको कौन मार सकता है? इतना कहकर पहाड़पर गये। ईश्वरसे प्रार्थना की कि, या खुदा नमरूद बड़ा अभिमानी हो गया है कि, कुछभी कहना नहीं मानता। तू अपनी फौज दिखला दे। तब खुदाने हुकुम दिया कि, जाकर नमरूद से कहदे अपनी फौज तैयार करे मेरी भी फौज आती है। इब्राहीमने आकर नमरूदसे कहा मेरे खुदाकी फौज आयाही चाहती है। इतना सुनकर नमरूदने अपनी फौजको हुकुम दिया, वे सब युद्धके लिये तैयार होकर मैदानमें उपस्थित हुये। उधर एक ऐसी जहरीले डंकवाले मच्छरोंकी फौज ऐसी आई कि, एक मच्छर भी किसी मनुष्य अथवा घोड़े हाथीपर बैठ जाता तो वह तत्कालही मृत्युको प्राप्त होता। इसी प्रकार नमरूदकी सेनाको नष्ट करडाला। एक मच्छरने नमरूदके भी मस्तिष्कमें घुसकर उसका भेजा खाना आरम्भ किया। आराम न होनेपर नित्य प्रति जूतासे उसका मस्तिष्क ठोका जाने लगा। इब्राहीम ने बहुत प्रकारके आश्चर्य कौतुक दिखाकर उसे समझना चाहा लेकिन उसने एक को भी न माना।

फिरऊन—यही दशा फिरऊनकी हुई थी उसको मूसाने बहुत समझाया पर न माना, अन्तमें सेनासहित नदीमें डूबकर मर गया।

अख्याब बादशाह—पुराने अहदनामे के दूसरी तवारीखका १८ बाब–१६ से ३४ आयतक लिखा है कि, जब अख्याब बादशाहको खुदाने नष्ट करना चाहा उस समय खुदाका ऐसा प्रकाश भयानक रूप देखा कि, फिरिस्तोंकी सेनाके बीचोबीचमें ज्योति खड़ी है। एक असत्य आत्माने आकर कहा या खुदा मैं झूठी रूह हूं यदि आप आज्ञा दो तो नबियोंके भीतर जाकर नबियोंसे झूठी साक्षी दिलवाऊँ जिससे अख्याब मारा जावे।

यह बात सुनकर खुदाने हुकुम दिया कि, अच्छा जा, नबियोंसे साक्षी भरा। वह असत्य रूह वहाँसे चली, नबियोंको बहकाया। जब अख्याबने सब नबियोंको बुलाकर पूछा कि, तुम लोग बतलाओ कि, मैं युद्धमें जाऊँ तो मुझे जय प्राप्त होगी? नबियोंने झूठी साक्षी भरी कि, हां जा तेरीही जय होगी। वह लड़ाईमें गया सेनासहित मारा गया।

ऐसेही कालपुरुषने सब आदमियोंके साथ एक झूठी आत्मा लगा दी है जिससे सुमार्ग छोड़ कुमार्गमें लगे रहे भक्ति मुक्तिकी ओर न झुके। पर जो लोग सतगुरुसे सत्य प्रीति करते हैं उनपर झूठी आत्माका बल नहीं चलता क्योंकि,

सद्गुरु उनकी रक्षा करता है । जो लोग झूंठे गुरु पर विश्वास करते हैं, उनका उपदेश मानते हैं वे सब नष्ट हो जाते हैं ।

मुखम्मिसतरजीअ बन्द ।

वह लोग कहाँ मेरे शहरके । दरवेश हजार गैर दरके ।
मुखबिर नसो हमारे घरके । सब वन्दे जमीन जमान जरके ।।
झूठे नबीपर यकीन करके ।

झूठे गुरु झूठे अम्बिया है । झूठे पै गवाही सब दिया है ।
दे झूठेके अहदको लिया है । सब सैद हूये हरी व हरके ।। झूठे० ।।
हो झूठे गुरुकी दस्त गीरी । हरगिज नहिं छूंठे तव असीरी ।।
सब इलमो अमलसे हो तगीरी । फन्दमें पड़े सो काल डरके ।। झूठे० ।।
उनको नहिं मुक्तिकी है उम्मेद । जो जाने नहीं झूठ सचका भेद ।।
हरगिज न करे सुकर्मका छेद । पिया है जहर प्याला भरके ।। झूठे० ।।
दरिमाय अमीक़ दो जहां है । वह किश्ती व नाखुदा कहां है ।।
यह खान: आबी अवलहां है । जा कौन सके यह पार तरके ।।झूठे०।।
जहां मस्त तंग डूबे केते । मामूर मनी हैं मग्ज जेते ।।
आजिज न व इजज दिल जो देते । महरम न कूच और सफरके ।।
झूठे नबीपर यकीन करके ।

यह तो थोड़ासा जो कुछ हाल लिखा वह व्यावहारिक विमुखोंका लिखा है ।

धार्मिक विमुखोंका हाल ।

जो लोग ईश्वर अथवा गुरुसे विमुख हुये, उनको न तो ईश्वरही मिला न गुरुही मिला उन्होंने शुभ अथवा अशुभ जो कुछ किया उसका फल भोगते हुए आवागमनमें पड़े रहेंगे उनको मुक्तिका मार्ग नहीं मिलेगा ।

जो लोग गुरुविमुख होते हैं वेही ईश्वरसे विमुख होते हैं. क्योंकि, गुरुपद गोविन्द पदसे बहुत बढ़कर है । कितने आचार्य्यसे अपने गुरुसे विमुख हुए उनके पीछे कितने अपने आचार्य्य विमुख हुये ऐसे विमुखोंके ऊपर धिक्कार और शोक है ।

वर्तमान कालमें कबीरपंथान्तर्गत नानक पंथके नानकशाह स्वयम् विमुख नहीं थे । वे सदा अपने गुरुकी स्तुति किया करते थे ।

शब्द--- ऊँचे अपार बे अन्त स्वामी, कौन जाने गुण तेरा ।
गावत उधरे सुनत इधरे, बिनशे पाप घनेरा ।।

पशु और प्रेत मगधको तारे, बाहन पार उतारे ।।
नानकदास तेरी शरनाई, सदा सदा बलिहारे ।।

इस शब्दके ऊपर ध्यान दो विचार करो कि, यह किसके विषयमें है। इसी पुस्तकमें लिखा है कि कबीर साहबने कुत्तेके बच्चेको प्रथम बादशाह बना दिया फिर मोक्ष दी । इसी प्रकार अनन्त भूत, प्रेत, मूर्ख, पापी अत्याचारी हत्यारे आदिकको ज्ञान देकर उसका बुरा कर्म छोड़ा मोक्ष पद दिया । राजा कनक जो हाथी बन गया था उसको भी मुक्त कर दिया । उसीमें पशुओंको भी मोक्ष देनेकी सामर्थ्य है । उसीने रामचन्द्रके लिये पानीपर पत्थर चलाया था ।

जिनको कालपुरुषने अन्धा कर दिया, जिनके माथेपर असत्य आत्माने बासा लिया, वे गुरुसे विमुख होगये ।

नानक साहबने अपने गुरुकी आज्ञानुसार सत पुरुषकी भक्ति प्रचलित की थी, उनको नयाग्रन्थ और नयी बानी बनानेकी कुछ आवश्यकता न थी. क्योंकि, केवल स्वसंवेदही सब हंस कबीरोंके लिये यथेष्ट है । यदि नानक साहबने कोई ग्रन्थ बनाया भी हो तो अब उसका ठीक २ पता नहीं है ।

नानकसाहबने अपने जीवनमें कबीरसाहबकी ही आज्ञाको प्रचलित रखा पर उनके पीछे उनके स्थानापन्नोंकी समझमें भ्रम और भेद होने लगा. पाँचवें गुरु अर्जुनजीका समय आया तो उनने गुरु ग्रन्थ बनाया कबीर गुरुको एकदम छोड़ दिया । नानकसाहबको तो गुरुके स्थानापन्न माना, कबीर साहबका नाम भक्तोंमें मिलाकर लिखा । चार पीढ़ी तक तो बात सन्देहमें रही पर पांचवीं पीढ़ीने प्रगट करके स्पष्ट कह दिया ।

इन लोगोंने कबीर गुरुसे विमुखता स्वीकार की तब सांसारिक वासनाओं ने अन्तःकरणमें लहर मारी । छठे गुरु हरगोविन्दने युद्धकी सामग्री इकट्ठी कर लड़ाई भिड़ाई प्रारम्भ करदी । फिर तो क्रमशः होते होते गुरु गोविन्दसिंह के समय समयमें जो रंग हुआसो सबपर प्रगट है ।

जब इस प्रकार सतोगुणी धर्म जाता रहा, भाई रामसिंह कोकाने फिरसे सतो गुणी चालको प्रचलित किया । यद्यपि प्रगटतो उनका व्यवहार कबीर साहब के अनुसार रहा पर उपासनामें भेद पड़गया. क्योंकि, उन्होंने कबीर साहबको नहीं बरन् गुरु गोविन्दसिंहको अपना आचार्य माना । इसी कारण सत पुरुषकी भक्ति और स्वसंवेदकी यथार्थ शिक्षा प्राप्त नहीं हुई इसी कारण उनमें भेद रह गया । यद्यपि बाहिरी क्रियामें वैसेही संयम करते हैं जैसे कबीर पन्थी, पर उपासना भेदके कारण अंतर भेद रह गया है ।

नानकसाहबकी सब वाणीका ठिकाना कहीं भी नहीं लगता । यद्यपि इन लोगोंने कबीर साहबकी बड़ाई और महिमा अपने ग्रन्थोंसे निकाल दी है किसी २ साखीको पलट दिया है, तिस परभी कबीरपंथकी सबचाल और वाणीकी रीतिको अबतक नहीं पलट सके हैं । कारण यही है कि, यथार्थको कोई कहां तक झूंठ बना सकेगा ।

दादूरामके ग्रन्थकी पिण्ड पहचानकी साखी देखो—

दादूपंथी वचन ।

जो था कंत कबीरका, सोई बर बरिहों ।
मनसा वाचा कर्मना, चित और न धरिहों ।।

कबीरपंथी वचन ।

मेरा कंत कबीर हैं, वर और न वरिहों ।
दादू तीन तिलाक है, चित और न धरिहों ।।

दादूपंथी वचन ।

साध अंगकी १६९ साखी ।

कबीर विचारा कह गया, बहुत भांति समझाय ।
दादू दुनिया बावरी, ताके संग न जाय ।।

कबीरपंथी वचन ।

कबीर साहब कहगये, बहुत भांति समझाय ।
दादू दुनिया बावरी, ताके संग न जाय ।।

सूरातन अंगकी ३५ साखी ।

काया कब्ज कमान करि, सार शब्द करि तीर ।
दादू यह शर साधिके, मार्यो मोटे मीर ।।

जानना चाहिये कि, जो सार शब्दका भेद दादू साहने बतलाया है वो कहाँसे ? यह बात तो किसी धर्म ग्रन्थमें है ही नहीं केवल कबीर पंथमें एवं कबीर पंथके ग्रन्थोंमें है । कबीर साहब एवं कबीरपंथी सदासे इसी सारशब्दका वर्णन करते हैं यही सारशब्द मुक्तिका कारण है ।

नानक शाह दादूराम आदि हंस कबीर सतपुरुषकी भक्ति सिखाते और उपदेश करते फिरे सदा अपने गुरुकी प्रशंसा प्रगट करते रहे ।

एक समय किसीने नानक साहबसे कहा कि बाबाजी दण्डवत । तब नानक साहबने कहा कि, तू मुझे बाबा मत कह बाबाकी पदवी केवल जिन्द:बाबाको है । दूसरेको यह पदवी शोभती नहीं । इसी जिन्दा बाबाकी प्रशंसा धर्मदासजी तथा

गरीबदासजी व ऋषि मुनि सदासे करते आते हैं। वही जिन्दा बाबा सब संसारका गुरु आचार्य है।

मुखम्मस तरजीया बन्द ।

तुही था इब्तदा आइन्दा बाबा । तेरा सत नाम जम अरजिन्दा बाबा ।।
तुही हर हाल है खुरसन्द बाबा । गुनह गारों का तू बख्शिन्दः बाबा ।।

तुही बन्दा खुदामें जिन्दा बाबा ।

जो पैदायश के पहिले नाम ज्ञानी । निरंजन पर तू किया हुक्मरानी ।।
तू खुद खुदरम रिहाई चार खानी । तुही है नावमें अरविन्दः बाबा ।। तु० ।।
जो सतयुग सत सुकृत साहबको टेरा । है त्रेता में मुनिन्दर नाम हेरा ।।
कहा पहचान सबमें जलवः मेरा । हमा मौजूद हूं पायन्दः बाबा ।। तु०।।
सों द्वापर जुगमें करुणामय गुरु है । नबी पीरो फकीरों रूबरू है ।।
जहां देखो वहां ही तूही तू है । जो ढूंढेंगें तुझे याविन्दः बाबा ।। तु० ।।
जो कलयुग पापने आदम डुबाया । तुही कब्बीर साहब तब कहाया ।।
तुही सत नाम इन्सांसे जपाया । तुझे पहिचान सो फर्खुदः बाबा ।। तु० ।।
जो चारों युगमें और तीनों जमानः । बता इन्सानको नामे निशानः ।।
बनी आदम पड़े जम कैद खाना । तुही काट कानकर जमफन्द बाबा ।। तु०।।
ज़ो ब्रह्मा विष्णु शिव यह तीनों भाई । तेरी तालीम इनमें नहीं समाई ।।
न रमताराम सो पहिचान पाये । सो पावें प्रेमसे जोइन्दः बाबा ।। तु० ।।
सिखाया योग तू रघुनाथजीको । मिले जिस ढंग से सो अपने पीको ।।
तुझे देखे जो छोड़े खुदखुदीको । तुही सत्त पुरुष जम गरिन्दः बाबा ।। तु०।।
बता रह कृष्ण और दत्ते दिगम्बर । सिखाया तूने सब पीरो पगम्बर ।।
मुहम्मदको दिखाया अपना घर । तुझे देखे शिवा शर्मिन्दः बाबा ।। तु०।।
तुही मुर्शिद हकीकी सबका सब जा । न तू नुतफा रेहमसे होवे पैदा ।।
जमानेके आशिकाँ सब तुझपैशेद । तू दूत और भूतका तरसिन्दः बाबा ।। ।तु०
जो था आदम फरिश्तोंमें गिरामी । वह आया देखकर बे इन्तजामी ।।
वना गुरू अपना रामानन्द स्वामी । बहर शै नूर तुझ ताविन्दः बाबा ।।तु० ।।
दिया वैराग मारगको बुजुर्गी । दिखाया काल पुरुषकी सतर्गी ।।
जो खावे जीवको अजराह सर्गी । तुही जम दूत सरबरिन्दः बाबा । तु० ।।
तुही सारे जमानेमें और जिमीमें । तुही सबकार दुनिया और दीमें ।।
तुही तातार तुर्की अर्ब चीमें । फरंगिस्तां हवशो हिन्दबाबा ।। तु० ।।
जिसे तूने बताया अपनी तदबीर । सो वेपरवाह गया दरियाके तीर ।।

तुही साधु और पीरानका पार । तुही सिद्ध सूफीकलन्दरजिन्दः बाबा ।। तु० ।।
दिया धर्म दासको तूही ने बाचा । तूही नानक शाहका गुरु है साँचा ।।
दिया जो छोड़ तुझके सोई काचाँ । तुही सत पुरुष गुरुगोविंद बाबा ।। तु० ।।
तुझे जो छोड़ दरिया सङ्ग पूजे । सुनो सन्तो इन्हें घर कौन सूझे ।।
मिला गुरु कौन और क्या ज्ञान बूझे । यह दुनिया दीनमें है निन्दः बाबा ।।तु०।।
जो तूने सब तमाशाको मचाया । तुही खिलकतकी रचनाको रचाया ।।
पकड़कर हाथ आज़िजको बचाया । तुही कर दूर सब दुःख दुन्द बाबा ।।
तुही बन्दा खुदामें जिन्दः बाबा ।

कुछ और प्रमाण ।

येही जिन्दा बाबा धर्मदास साहबको मिले येही नानक शाहके गुरु हैं । इसी बाबाकी स्तुति गरीबदासजी करते हैं । पर नानकपंथी लोग इसको एकदम भूलगये । इस कारण मैं चौदह प्रमाण पहले लिख आया हूँ अब अँगरेजी इतिहासोंसे यहाँ और भी प्रमाण लिखता हूँ ।

(1) Honorable Mountustuart Elphinstone, one of the greatest and most trustworthy British writers of Indian History, ingiving his account of Nanak shah, testifies that he (Nanak) was a desciple of Kabir, but he does not give any separate account of Kabir as none of his followers played any part in the political drama of Indian History. If he may have, there is a little trace of it at present period.

Elphinstone's History of India Book XII. Chapt. I page 678 writing of Sikhs says thus —

Their (the sikh's) founder Nanak flourished about the end of the fifteenth century. He was a desciple of Kabir and consequently a sort of Hindu deist but his peculiar tenet was universal toleration &c. &c. &c.

१--एच एम० एल्फिन्स्टन साहब जो कि अंग्रेजी इतिहास लिखनेवालों में नामी और बहुत बड़े इतिहास लेखक होगये हैं वह अपने भारतके इतिहासमें इस प्रकार लिखते हैं और नानकशाहके विषयमें साक्षी देते हैं कि, नानकशाह कबीर साहबके शिष्योंमें से एक शिष्य थे। पर उन्होंने अपने लेखमें कबीर साहबके विषयमें कोई पृथक् हाल नहीं लिखा। कारण यह है कि उसके अनुगामियोंमेंसे किसीने भारतके देशी इतिहासमें कोई भाग नहीं लिया ।

एलफिन्स्टन साहबके भारत इतिहासके १२ वें जिल्दके प्रथम भागके ६७८ पृष्ठमें देखो वह सिक्खोंके विषयमें इस प्रकार लिखते हैं कि, इस धर्म्मके

आचार्य्य नानक पन्द्रहवीं शताब्दीके अन्तमें प्रगट हुये। वे कबीर साहबके शिष्य थे। इस कारण वह एक प्रकारके हिन्दू एक ईश्वरवादी थे पर उनके धर्म्मका मुख्य अभिप्राय सबको एक धर्म्ममें मिलानेका था।

(2) H. H. Willson, in his Essays on the religions of Hindus in section III Page 69 treating of Kabir Panthis says :—

The effect of his (Kabir's) lessons as confined to his own immediate followers, will be shown to have been considerable, but their indirect effect has been still greater; several of the popular sects: being little more than ramifications from his stock, while Nanak the only Hindu Reformer who has established a national faith, appears to have been chiefly indebted for his religious notions his predecessor Kabir.

२—एच० एच० विलसन साहब अपनी दरसनामक किताब (हिन्दुओंके धर्म्मके विषयमें ६९ पृष्ठ तीसरे प्रकरण) में कबीरपंथियोंके विषयमें लिखते हैं कि, कबीरसाहबकी शिक्षाका प्रभाव उनके मुख्य २ शिष्योंपर बहुत पड़ा था। उनकी शिक्षाका प्रभाव उनकी अनुपस्थितिमें उससे बढ़कर हुआ. क्योंक, सब पंथोंको इस पन्थकी शाखायें कह सकते हैं। नानक साहबने जो हिन्दुओंमें एक विशेष धर्म्मके आचार्य्य हुये। प्रायः अपने धार्मिक ध्यानोंमें कबीर साहबका अनुकरण किया है।

(3) In giving a note on the above mentioned he (Willson) quote following from Malcalm, "that Nanak constantly referred to the writing of celebrated Kabirs and the Kabir Panthis assert that he has incorporated several thousand passages from Kabir's writings.

३—ग्रन्थ रचयिताके पूर्व लिखितका व्याख्यान करनेके समय मालकाम साहबके लेखसे निम्नलिखित अनुवाद किया है कि,

"नानकने प्रख्यात तथा सुप्रसिद्ध कबीरके विषयका अनुकरण किया है। कबीरपंथी कहते हैं कि, नानकने कई सहस्र साखियाँ कबीर साहबकी पुस्तकोंसे ली हैं।" यह बात मालकम साहबकी पुस्तक भारतके इतिहासमें देखो।

(4) Monier Williams a noted man, who personally visited India and who was the Professor of Sanskrit in Balial College, Oxford, in his book named "Religious Thoughts and Life in India" in Chapter VI under the heading of Theistic sect founded by Kabir in page 158, writes :—

There can be no doubt that the teaching of Kabir exercised a

most important influence through out upper India in the fitteenth and sixteenth centuries. That it formed the basis of Sikh movement in Punjab, is clear from the fact Kabir's sayings are constantly quoted by Nanak and his successors, the authors of the Sacred writing which constitute the bible (Granth) of the Sikh religion.

४–मोनियर विलियम् साहब एक सुप्रसिद्ध अंग्रेज हैं जिन्होंने स्वयम् भारत वर्षका भ्रमण किया है ये ब्लेयल कालेज आक्सफोर्डमें संस्कृतके प्रोफेसर थे, भारतके धार्मिक ध्यान तथा आयुके छठें प्रकरणके १५८ पृष्ठमें लिखते हैं कि, इसमें कोई सन्देह नहीं कि, पन्द्रहवीं तथा सोलहवीं शताब्दीके बीच उत्तरीय भारतमें कबीर साहबके धर्म्मका बड़ा प्रचार हुआ। इसमें सन्देह नहीं कि, यही धर्म्म पञ्जाबी सिक्ख धर्मकी जड़ है। इस बातसे जाना जाता है कि, कबीर साहबकी वाणी, नानक तथा उनके स्थानापन्नोंके स्थान २ पर अपनी पुस्तकोंमें लिखी हैं।

(5) On page 162 under the headi ıg of the Sikh thiestic sect founded by Nanak, the same author gives the following account of Nanak in the light of Professor Trump's investigations (as he himself admits) and in the light of his own enquiries which he made at Lahore when he visited it.

Nanak However made no claim to be the originator of a new religion. His teaching was mainly founded on that of his predecessors, especially on that of Kabir whom he constantly quoted.

५–येही महाशय अपनी पुस्तकके १६२ पृष्ठमें सिक्ख धर्मके ग्यारहवें प्रकरणमें नानक साहबका विवरण करते हैं कि, जो कुछ वह करते हैं वह ट्रम्प साहबके ज्ञातव्यकी उस विज्ञताके अनुसार कहते हैं जैसे कि, उन्होंने स्वयम् लाहोरमें आकर प्राप्त किया, नानक शाहने नये धर्म्मके बनानेकी बात नहीं कही। यथार्थमें उस धर्म्मकी जड़ कबीर साहबकी वाणी पर है। क्योंकि, कबीरके धर्म्म पुस्तकका अनुवाद वह अपनी पुस्तकमें करते हैं।

(6) Following extracts are given by Kailas Chandra Manna B. A. and Devendra Nath Roy B. A. of L. M. S. College, Bhawanipur, in a brief sketch of the History of India page 105.

"Kabir was the most celebrated of the twelve desciples of Ramanand..............He lived in the fifteenth century. Nanak appears to have been chiefly indebted for his religious notions to Kabir.

Nanak founded the Sikh brotherhood in the fifteenth century. He is said to have derived his religious notions from Kabir. (Page 108.)

६–जिसको कैलाशचन्द्र मन्ना बी० ए० और देवेन्द्रनाथ राय बी० ए० आफ एल० एम० एस० कालेज भवानीपूरन भारतके इतिहासका संक्षेप लिखा है। उसके एकसौ पाँच पृष्ठमें लिखा है कि, रामानन्दके बारह शिष्योंमें कबीर बड़ेही सुप्रख्यात हुए। नानकने सर्व धार्मिक युक्तियाँ कबीर साहबसे ही सीखा है।

उसी पुस्तकके एकसौ आठ पृष्ठमें लिखा है कि, नानकने सिक्ख धर्म पन्द्रहवीं शताब्दीमें स्थापित किया, उन्होंने सब धार्मिक रीतियाँ कबीर साहबसे सीखीं। पृष्ठ १०८

(7) "The Indian Empire" by W. Hunter C. I. E. L. L.D. page 194 writes of the miracles of Kabir.

Further one he (Hunter) gives an account of Kabir and his doctrines and about Nanak & c. Page 203 & 204.

७–डबल्यू० हण्टर सी० आइ० ई० एल० एल० डी० ने अपनी इण्डियन इम्पायर पुस्तकके एक सौ चौरानवे पृष्ठमें कबीर साहबके कौतुकोंके विषयमें लिखा है। फिर इसी पुस्तकके २०३ और २०४ पृष्ठमें कबीर साहब तथा नानक शाहके विषयमें लिखा है।

(8) "A History of the Sikhs" from the origin of the nation to the battles of Satluj, by Joseph Cunningham, Lieutenant Engineer and Captain in the army of India in page 41 from 13th line writes thus—

"Nor it is improbable that the homilies of Kabir and Gorakh had fallen upon his (Nanak's) susceptible mind with a powerful and enduring effect. (Note) Extractions from the writings of Kabir appear in "Adi Granth" and Kabir is often and Gorakh somemtimes noted or refered to."

८ "सिक्खोंका इतिहास" इस जातिके आरम्भसे लेकर सतलजकी लड़ाई तकका इतिहास जोसेफ् डेवी किंधम साहब लेफटेन्ट इनजीनियर और कप्तान फौज हिंदुस्थानने लिखा है। स्वामी रामानन्द, गोरख नाथ और कबीर साहबकी धार्मिक कर्त्तव्योंका मुफस्सिल हाल ४१ पृष्ठ १३ पंक्तिसे लिखते हैं–सम्भव है कि कबीर और गोरखकी शिक्षाने नानकके अन्तःकरण पर बड़ाभारी और स्थिर प्रभाव डाला है।

(नोट) कबीर साहबकी वाणी आदि ग्रन्थमें बहुत स्थानपर मौजूद है। कबीर साहबका और प्रायः गोरखनाथका प्रमाण स्थान स्थानपर दिया है।

नानक साहबके कृत्योंमेंसे अपजी सबसे अधिक प्रसिद्ध है जिसकी टीका बहुत लोगोंने अपनी बुद्धि अनुसार की है पर उनका कहना यह है–

जपजी ।

एक ओंकार सत्तनाम कर्त्ता पुरुष निर्भौ निर्वैर अकाल मूर्ति अयूनी सई भंगुर प्रसाद जप आदि सच युगादि सच है भी सच नानक होसीभी सच ।

टीका[1] ।

एक ओंकार -- नानक साहब कहते हैं कि, पहले एक ओंकार कर्ता पुरुष उत्पन्न हुआ जिसने समस्त ब्रह्माण्डको उत्पन्न किया । तीन लोक, चार वेद, और ग्यारह इन्द्रियें तथा संसारमें जितने धर्म कर्म हैं वे सब उसीसे प्रगट हुये, तीन लोक उसीकी उपासना करता है । निगुण और सगुण उसीके सब रूप हैं । ब्रह्मा, विष्णु महेश और आदि भवानी तथा सारे ऋषि मुनि सिद्ध साधु पैगम्बर आदि सब उसीकी आज्ञा में रहते हैं । उसीने चार खानि, चौरासी लाख योनि नरक, स्वर्ग, शुभ अशुभ, पाप, पुण्य आदि बनाकर संसारके जीवोंको बन्धनमें डाल दिया है । उसीने सबको आवागमनमें फसाया है । सतपुरुषकी भक्ति छिपाकर मुक्तिका मार्ग बन्द कर दिया है । संसारके मनुष्योंकी बुद्धि भ्रष्ट कर किताबोंमें फँसा मारा । मनुष्य आंधोंके समान टटोलते फिरते हैं पर किसीको शु मार्ग नहीं मिलता । सब किसीकी आत्मापर झूठी आत्माकी चौंकी बिठादी है कि, कोई भी सत्यकी ओर न जाने पावे ।

नानक साहब कहते हैं कि, एक ओंकार अर्थात् ओंकार एकही है उससे समस्त संसार पूर्ण हो गया । दुःखियोंकी दुःखको दूर करनेकी दयाकर सत्त नाम कर्ता पुरुष प्रगट हुआ । जो जीवधारी उसकी शरणमें आये उसने उन सबका बन्धन काट दिया इसीसे वो बन्दीछोर कहलाता है ।

सत्त नामकर्ता पुरुष--जब एक कर्ता पुरुषने इस प्रकार संसारमें अन्धेर मचाया तो सत नाम कर्ता पुरुष प्रगट हुआ । वह सत नाम कर्ता पुरुष सब अव-गुणों से शुद्ध पवित्र है उसके विषयमें नानक साहब यों कहते हैं ।

एक अर्ज गुफ़तम पेश तू दरगोश कुन करतार ।
हक्का कबीर करीम तू बे ऐब परवर दिगार ।।

जो है वो बा ऐब (अवगुण सहित) परवरदिगार है । और हक्का कबीर बे ऐब परवर दिगार है । जब वह सत नाम कर्ता पुरुष पृथ्वीपर आया तब असत नाम कर्त्ता पुरुषका सब धोखा छल कपट, नष्ट होगया । जितनी प्रशंसा और उत्तम गुण हैं वे सब सत नाम कर्त्ता पुरुषके हेतु हैं । फिर वह कैसा है ।

---

१ जो टीकाकी गई है यह शिक्खोंके मतसे नहीं किन्तु ग्रन्थ कर्ताके स्वयंके मतसे है सिख ऐसा अर्थ नहीं करते ।

निर्भव–भव नाम भव सागरका है। उनचासकोटि योजन विराट पुरुष-का शरीर है। उसीमें ये तीन लोक बसे हैं उसीका नाम भवसागर है यही उत्पत्ति सागर है। इसीके मध्य सब जीवधारियोंका आवागमन होता है। निरञ्जन भवरूपही है और भवादि उद्भवका अर्थ उत्पन्न होना है जन्म मरन सदा इस ओंकारके देहके अन्तर होता है। यह तो असत नामकर्त्ता पुरुषका हाल है जिसके प्रेममें पड़ा हुआ बारम्बार बन्धनकोही पाता है। सत नामकर्त्ता पुरुष निर्भव है कोई उससे मिलता है वह भी निर्भव हो जाता है, उसका आवागमन कभी नही होता। वह परमानन्द पदको प्राप्त होजाता है।

निर्बैर – वह सत नामकर्त्ता पुरुष निर्वैर है वह किसीसे शत्रुता नहीं रखता। वह सब जीवधारियोंका समान मित्र है। उससे बढ़कर जीवधारियोंका दूसरा हित चिन्तक नहीं है। जब दैत्यों और राक्षसोंकी अधिकता होती है तो वो शरीर धरकर उनसे युद्ध करता है। यह असत नाम कर्त्ता पुरुष छल कपट और बैर विरोधसे पूर्ण है। सत नाम कर्त्ता पुरुष अपनेसे विरोध माननेवालोंका भी मित्र है।

अकालमूर्ति – अकालमूर्ति इस लिये कहा, कि वह पूर्ण दयाकी मूर्ति है। उस मूर्तिके भयसे काल दूर भागता है। वह अकालमूर्ति सबका सुख देनेवाला है। कालमूर्ति दुःख देनेवाला है।

अयोनी – अयोनी उसको कहते हैं जो कभी मातृगर्भमें कैद न होवे। सो सत नामकर्ता पुरुष अयोनी है। असत नामकर्ता पुरुष सयोनी है। चार खानि चौरासी लाखयोनि असत नामकर्ता पुरुषसे उत्पन्न हुए हैं, वही योनिकी इच्छा रखता है, उसको आवागमन होता है सत्तनाम कर्ता पुरुष न कभी कामातुर होता है, न कभी मातृगर्भमेंही आता है।

सइभं – पञ्जाबी भाषामें सई और सेवकका अर्थ सखी और सहेली है। पूर्वी भाषामें सईका अर्थ अधिकता और विशेषता है। भ्रमका अर्थ यहाँ अर्थात् प्रगट होना। यह सत्तानाम कर्ता पुरुषकी प्रशंसा है अर्थात् तू पहले एक था अब अनेक हो गया। मन और इन्द्रिय आदि सब तुमसेही प्रगट हुये हैं। तू इन सबसे मिला भी है अलग भी है। सत्तनाम कर्ता पुरुषमें दोनों गुण हैं, सबमें मिला एवं सबसे अलग योग और भोग दोनोंमें एक सम रहता है। वह आग जिससे सृष्टि उत्पन्न हुई है यदि वह उसमें भी न हो तो उसका कुछ ठिकाना न हो। सतनाम कर्तापुरुष अविनाशी है असत् नाम कर्ता पुरुष विनाशी है।

गुरु प्रसाद – नानक साहब कहते हैं कि, जो सतनाम कर्ता पुरुष है वो गुरुकी दयासे जाना जाता है, जिसपर गुरुकी कृपादृष्टि होती है वह उसका

दर्शन पाता है। गुरुकी शिक्षासे उसके नामको जप। वह पुरुष कैसा है "आदि सच्च युगादि सच्च, है भी सच्च और होगा भी सच्च"।

नानक साहबका सब कथन कबीर साहबसे मिलता हुआ है कुछ भी भेद नहीं है देखो ग्रन्थ साहब श्लोक महला पहला नानक शाह वचन —

पढ पुस्तक संध्या वादंग। शिल पूजस बकुल समाधंग॥
मुख झूठ भयो खन सारंग। तरे पाल ते हाल विचारंग॥
गल माला तिलक लिला टंग। दोय धोती वस्तर कपाटंग॥
जो जानन ब्रह्मग कर मंग। सब निश्चे फोकट धरमंग॥
कह नानक निश्चयं ध्यावे। विन सतगुरु बाट न पावे॥

आस महल्ला पहला आदिकी साखी।

बलिहारी गुरु आपने, घड़ी घड़ी सौ सौ बार।
मानुषसे देवता किया, करत न लागी बार॥
जो सौ चन्द्रा उंगवै, सूरज कोटि हजार।
ऐसे चादन होत हो, गुरु विन घोर अँधार॥

नानक साहबने ग्रन्थमें पहले अपने गुरुको साखी रखकर फिर अपनी वाणी रखी है। आजकल नानक पंथके लोग कबीर गुरुको केवल एक भक्त मानते हैं। इसी कारण यथार्थ आशयको न समझकर बहुत बातें बनाते हैं।

सब लोग वाहगुरु बोलते हैं पर कोई नहीं समझता कि, वाहगुरु कौन है? कबसे है? किस वास्ते है? सिक्ख लोग इस वाहगुरुके विषयमें अपनी बुद्धिसे इस प्रकार अर्थ लगाते हैं कि, व से वासुदेव। ह से हरि। ग से गोविन्द। र से राम। इन्हीं चारों अक्षरोंसे वाहगुरु बना है। सो यह परमेश्वरका नाम है।

वे यथार्थसे एकदम अनभिज्ञ हैं यथार्थ तो यों है कि, जब नानक साहबको सत गुरु मिले तो उन्होंने सत गुरुकी स्तुति की।

नानक साहब।

शब्द— वाह वाह कबीरके गुरु पूरा है, वाह वाह कबीर गुरु पूरा है।
पूरे गुरुके मैं बलि जैहों, जाका सकल जहूरा है॥
अधर दुलीचा परे हैं गुरुनके, शिव ब्रह्मा जहाँ झूला है॥
स्वेत ध्वजा फहरात गुरनके, बाजत अनहद तूरा है॥
पूरन कबीर सकल घट दरसे, हरदम हाल हजूरा है।
नाम कबीर जपें बड़ भागी, नानक चरणके धूरा है॥

सतकबीर वचन शब्द।

वाह वाह लड़के जीता रह, वाह वाह लड़के जीता रह।
मँडुवीकी रोटी बथुईकी भाजी, ठंढा पानी पीता रह ॥
प्रेमकी सुई सुरतिका धागा, ज्ञान गुदड़िया सीता रह ॥
इस लड़केकी बड़ी २ अँखिया, निशिदिन दर्शन करता रह।
कहैं कबीर सुनो हो नानक, राम रसिक रस पीता रह ॥

सर्व हंस सदा इस सत गुरुको प्रशंसा किया करते हैं। उसकी प्रार्थनासे बढ़कर दूसरी कोई बातही नहीं समझते। जैसा कि, गरीबदासजी कहते हैं कि—

ऐसो ख्याल विशाल सतगुरु अटल दिगम्बर थीर है।
भक्ति हेतु काया धराये अविगत सत्य कबीर है ॥
नानक दादू अगम अगादू तेरे जहाजके खेवट सही।
सुख सागरके हंस आये भक्ति हिरम्बर उर गही ॥
कोटि भानुप्रकाश पूरन रूप रोम रोमकी लार है।
अचल अभंगी है सतसंगी अविगतिका दीदार है ॥
धन्य सत्यगुरु उपदेश देवा चौरासी भ्रम जो मेट है।
तेज पञ्चतन देह धारिके इस विधि हमको भेंट है ॥
शब्द निवास आकाश वानी यह सतगुरुका रूप है।
चन्द सूरज पवन पानी जहाँ नहीं छाया धूप है ॥
रहता रमिता राम साहब अविगत अल्लह अलेख है।
भूले पन्थ विडम्ब वादी कुलका खाविन्द एक है ॥
रोम रोमसे जाप जपले अष्ट कमल दल मेल है।
सुरति निरतिको कमल बैठो जहाँ न दीपक मेल है ॥
हरहम खोज हनोज हाजिर त्रिवेनीके तीर है।
दास गरीब तबीब सतगुरु वन्दी छोर कबीर है ॥

नानक शाह साहबको कबीर साहब नदी पर मिले, इसी कारण सिक्ख नदीको पूजते हैं उसको गुरु दरिया बोलते हैं। यथार्थ गुरुको भूल गये दरियाको पूजने लगे। नानक शाहने कबीर साहबको वाहगुरु कहा सो तो सिक्ख लोग उस वाहगुरुको भूल गये अपना मन माना अर्थ कहना आरम्भ किया।

वा (वासुदेव) ह (हरि) ग (गोविन्द) र (राम) ये चार नाम ईश्वरके माने। सत गुरु कबीरके बिना कोई भी बन्धन नहीं काट सकता, चाहे कोई सहस्रों प्रकारकी बुद्धिमानी क्यों न करे।

कबीर साहबके चेलोंमेंसे नानक साहब और धर्मदास साहब इन दो चेलोंका बड़ा प्रभाव फैला । धर्मदास साहब सम्वत् १५१९ वि० में उत्पन्न हुए । नानक साहब १५२६ में हुए थे ।

कबीर साहब १५५० में जिन्दा भेषमें धर्मदास साहबको मथुरामें मिले उनका काम पूरा कर दिया नानक साहबको १५५३ में पंजाबमें मिले । उनका हृदय प्रकाशित कर दिया । पूरब उत्तरकी ओर धर्मदासजीको तथा पश्चिम भारतकी गुरुआई नानक शाहको प्रदान की ।

जिस प्रकार धर्मदास साहब, महम्मद साहब, नानक साहब, राजा वीरसिंह, राजा भूपाल, राजा अमरसिंह, दादूराम, गरीबदास साहब आदि महान् पुरुषोंको कबीर साहबने अपना देश दिखलाया उसी तरह दूसरे भी अनन्त जीवोंके हृदयको ज्ञानसे प्रकाशित करके मुक्त कर दिया जिसका कि वर्णन करना असम्भव है ।

अनन्त हंस तो लोक सिधार गये पर कोई २ हंस जिनसे कि दूसरे शरीरमें ले जानेका वचन हो चुका था वे ठोका पूरनेपर मुक्त होंगे ।

९२ प्रश्न – शरण हो भी गुरु विमुख होनेका कारण – जो लोग सतगुरुकी शरणमें आते हैं उनमेंसेभी कोई विमुख हो जाते हैं । उनका ऐसा होना बड़े आश्चर्य्यकी बात है ।

उत्तर – यह आश्चर्य्य बात नहीं कि, क्यों विमुख हो जाते हैं, बरन् यह आश्चर्य्यकी बात है कि, वे कालपुरुषकी भक्ति छोड़कर सत पुरुषकी भक्ति करने लग जाते हैं क्योंकि, कालपुरुषने सबकी बुद्धिको ऐसा बद्ध कर दिया है कि, उसमें कभी भी सत्य मार्गका विचार न होने पावे । कालपुरुषका ऐसा प्रताप है कि, जीव उसके जालसे निकलकर कभी सत्य पुरुषकी भक्तिकी ओर झुकही नहीं सकता । सतगुरुदयालुको धन्य है जिसकी कि कृपासे जीवोंका उद्धार होता है ।

कालपुरुष रूप मालीने संसार रूप बगीचा लगाया है, उसीका अखतियार है, जब चाहे रखे जब चाहे नाश करदे । केवल सगुतरु कबीर साहबमेंही यह शक्ति है कि, जीवोंको कालके पाशसे छुड़ाकर भवसागरके पार ले जाय । कबीर साहब कहते हैं कि, कालपुरुषने सबकी बुद्धिको भ्रष्ट कर दिया है इसी कारण सत्य पदको नहीं पहचान सक्ते । सतगुरु सदा मार्ग बताता है पर जीव अंधा अज्ञानी समझता नहीं है । जब सत गुरुने सत्य युगमें पृथ्वीपर पदार्पण किया तब सबको उपदेश करने लगे । सुकृत ध्यानमें सत्य कबीरजीने कहा है –

रमैनी – ररंकार माया ठहरावा । सब जग आन कर्ता बतलावा ॥
मृत्युलोकमें प्रगटचो जाई । बालक रूप दियो दिखाई ॥
घर घर सबसे भाष्यो ज्ञाना । चीनोरे नर पुरुष पुराना ॥
जो देखे सो लेई उठाई । गोद उठायके मोहि खेलाई ॥
काको सुत यह परचो भुलाई । मातु पिता केहि देश हैं भाई ॥
दियो ढील यह काको बारा । होय दुखिया नगर मँझारा ॥
यदि विधि सबहिढील मोहिदीना । कोइ यक जीव जो हमको चीना ॥

बालक रूप त्याग हम दीना । तब तरुन भेष धरि लीना ॥
घर घर सबसे कियो पुकारा । चीन्होरे नर सिर्जनहारा ॥
नाना विधि मैं कहूँ बुझाई । तऊ न अंध मोहि पतियाई ॥
सब मिलि कहें तरुन यह आही । ग्रह माहि नहीं या कोई चाही ॥
सुन्दर वदन जो वहुत बिराजा । बिन चिन्हे वाको नहीं काजा ॥

तरुण त्यागा हम तबहीं । कीन स्वरूप वृद्धको जबहीं ॥
आदि ब्रह्म निर्गुण कह भाई । ताको सब मिलि गहो बनाई ॥
तिन पुनि माया ज्योति बनाई । काहि नरक सब परयो भुलाई ॥
शिव शक्ति त्रिगुण उतपानी । ब्रह्मा विष्णु महेश्वर जानी ॥
इतना भेद कहा हम जबही । क्रोध भयो जीवनको तबही ॥
सब मिलि कहै बुढ़ापा आई । आन की आना कहे लछु भाई ॥
ब्रह्मा विष्णु कर्त्ता हैं भाई । ताहि छोड केहि सेवा लाई ॥
यहि विधि सब मिली कीन पुकारा । तब हम घटमें कीन बिचारा ॥
होय गुप्त आकाशहि गयऊ । रह्यो छपाय दरश नहि दयऊ ॥
होय अधर मैं बोल्यो बानी । जाते जीव करे पहिचानी ॥
नाम निःअक्षर गहो निज डोरी । त्रिगुण फन्द ते लैहौं छोरी ॥
जबहि गुप्त होय बोल्यो बानी । तबहि सब मिली अचरज मानी ॥
देव दैत्य भयो यह बानी । ना जानू कुछ होइहि हानी ॥
कोई कहै यह भलो न बाता । कोई कहे यह जान विधाता ॥
कोई यक जीव अंकुरी होई । तव निज हमको चीन्हे सोई ॥
यहि विधि देखा सकल जहाना । तब पुनि कीना लोक पयाना ॥

भावार्थ – आदि सृष्टिमें जब सत्य युग आरम्भ हुआ तब कबीर साहब पृथ्वीपर प्रगट हो बालकका स्वरूप धारण कर सत् पुरुषको भक्तिका उपदेश

करने लगे । आपके वचनको सुनकर लोग आश्चर्य मान गोदमें उठाकर प्यार करते हुए कहते कि, यह किसका बालक है? यह यहाँ भूलकर आगया है । इसको बाहर छोड़ आओ ।

जब लोग सतगुरुको बाहर छोड़ आये, तो सुन्दर युवकका स्वरूप धारण कर उपदेश करने लगे । लोग कहने लगे कि, यह अपरिचित पुरुष है इसको घरमें मत आने दो. इसका कुछ विश्वास नहीं । जब इस प्रकार लोगोंने उस अवस्थाका भी विश्वास नहीं किया तो वृद्ध पुरुषका स्वरूप धारण कर उपदेश किया तब लोग क्रोध करके कहने लगे कि, यह बूढा हो गया इस कारण इसकी बुद्धि भ्रष्ट होगई है कुछका कुछ बकता है ।

जब प्रगटमें लोगोंका यह रङ्ग ढङ्ग देखा तो अन्तर्धान होकर आकाश वाणी द्वारा उपदेश करने लगे । लोगोंको महान् आश्चर्य हुआ कि, यह अंतरिक्षसे कौन बात करता है ? इसी सोच और विचारमें सन्देहही करते रह गये । किसी किसी अंकुरी जीवोंने मान भी लिया । फिर सतगुरु सत लोकको पधार गये ।

९३ प्रश्न–भारतमें भाव भक्तिकी अद्वैतता, भारतवर्षमें जैसी भक्ति और सेवा है ऐसी और कहीं है कि, नहीं ?

उत्तर –आज कल पृथ्वीका जो जो एशिया, अफ्रिका, अमेरिका और योरप आदि द्वीप जाने गये हैं उन सभोंमें भारतके तुल्य भाव भक्ति और आत्म उन्नति नहीं है ।

भारतमें भी उत्तम मध्यम और कनिष्ठ भेदसे तीन प्रकारके साधु रहते हैं । कबीर पंथियोंकी उत्तम श्रेणी है, मध्यम श्रेणीमें सब तपस्वी और योगीआदि हैं । निकृष्ट श्रेणीमें वे हैं जिनके कि, ऊपर आकाशी पुस्तकें उतरी हैं जैसे पैगम्बर और सिद्ध लोग, ये लोग केवल उसी अंतरिक्षकी वाणी आज्ञाका भरोसा रखते हैं । जिनका उन्हें कुछ ज्ञान नहीं कि, कहाँसे आता है ? कौन भेजता ?

स्वपच सुदर्शन केवल पाँच ग्रास खाते थे; महाराजा युधिष्ठिर के यज्ञमें स्वपच सुदर्शनके भोजन किये बिना घण्ट नहीं बजा । महारानी द्रौपदीने दुर्वासा को केवल एक लंगोटीका दान दिया था जिसके पुण्यसे द्रौपदीकी प्रतिष्ठा रही यानी दुःशासन जैसा पहलवान द्रौपदीको नंगी करनेके लिये उनका कपड़ा खोलने लगा तो उस समय कपड़ा इतना बढ़ा कि, बड़ा ढेर लग गया पर द्रौपदीजो नंगी नहीं हुई इसपर गोस्वामी गरीबदासजी कहते हैं कि –

गरीब, इन्द्र भयै है धरम ते, यज्ञ है आदि युगादि ।
शंख पंचायन जब बजै, पंच ग्रासी साधु ॥

गरीब, द्रौपदी दिल जाना, स्वपच चरण पिय धोय ।
बाजे शंख सरब कला, रही आवाज न गोय ।।
गरीब, द्रौपदी चरण जल, व्रत लिय सुपच संग नहिं कीन ।
बाजे शंख असंख धुन, गण गंधर्व भये लीन ।।
गरीब, पीताम्बरको फाड़िके, द्रौपदी कीनी लीर ।
अंधेको कौपीन कस, घनी बधायो चीर ।।

९४–प्रश्न–संसारीकी मुक्ति, जो संसारी बहुत जंजालमें फँसा है इसकी मुक्ति किस तरह होगी ?

उत्तर – साधु सेवाके बिना संसारीको भक्ति और मुक्तिकी राह नहीं मिल सकती । सतगुरु साधु सेवासेही प्रसन्न होता है, जहाँ साधुसेवा नहीं होती है वहाँ स्वयं सतगुरु जाता है साधु सेवाही है जो सतगुरुका कृपापात्र बना देती है ।

श्रीनगरके राजाकी कथा ।

श्रीनगरका राजा राममोहनराय महान् विद्वान् वेद पाठी और वेद विधिपूर्वक सब कर्म करनेवाला एवं साधु सेवी था । काश्मीरसे लेकर पहाड़के किनारे के प्रदेश सबही उसके अधिकारमें थे । जिस समय वह राज करता था वह सतयुग का समय था, सतगुरु सतसुकृतके नामसे प्रसिद्ध थे । गुरु महातममें लिखा है, धर्मदासजी प्रश्न करते हैं और सतगुरु उत्तर देते हैं ।

सत्त कबीर वचन ।

चौ०—पुरुष आवाज़ आये भौसागर । सत सुकृत हम नाम उजागर ।।
उत्तर दिशा गयो निज ठामा । पहुँच्यो श्रीनगर तहाँ ग्रामा ।।
मोहन राव तहाँको राजा । भक्ति करे मेटि कुल लाजा ।।
सुन्दर बदन रूप अधिकाई । प्रजा सुखी राज सुख पाई ।।
सुचि सज्जन अतिज्ञान उजागर । दीन लीन सन्तनसे आगर ।।
करत खोज साधनसे प्रीती । अति आनन्द रूप सुख रीती ।।
भांति भांतिके मण्डप छावे । साधु संत आदर करि लावे ।।
करे महोत्सव साधु बुलाई । परम पुरुष निशिदिन मन भाई ।।
निशि दिन वेद कथासे प्रीती । कौन भाँति जीव यमसे जीती ।।

दोहा—खोज करत चित व्याकुल, ढूंढा सकलो भेख ।
सिरजन हार बतावहू, सबहीं कहत अलेख ।।

चौ०— चले राव जहाँ बद्रीनाथा । सुत कलत्र रानी ले साथा ॥
साधुरूप हमहूँ करि लीना । राव संग तत्छन पग दीना ॥
गये नृपति जहाँ प्रतिमा साजा । भाँति भाँति कर बाजत बाजा ॥
कछुक द्रव्यले आगे राखा । विनय दण्डवत बहुविधि भाखा ॥
होत कोलाहल मङ्गल चारी । भाँति भाँति गावैं नरनारी ॥
बद्री परसि राव करि आसन । नृपति बैठो जाइ सिंहासन ॥
हम जीवनसे शब्द पुकारा । घर घर फिर्‌यो सबनके द्वारा ॥
चेतो प्राणी शब्द संदेसा । चलो तहाँ जहाँ हंस नरेसा ॥
जहँवाँ जाव बहुरि नहिं आओ । यकचित होय नाम लौलाओ ॥
सकल जीवसे कह्यो चिताई । एको जीव न हम पतियाई ॥
सात दिवस ऐसे करि बीता । कौतुक एक तहाँ हम कीता ॥

छन्द— गयो मन्दिर पास ततक्षन जहाँ बद्रीनाथ हो ।
रूप पाहन कीन पारस दीन मस्तक हाथ हो ॥
प्रीति निशि भिनुसार भव तब आय पण्डा पूजहीं ।
करत आरति भयो चकित देख द्विज चित बूझहीं ॥

सोरठा— आरति आय कुधातु, प्रतिमा यह कंचन भयो ॥
कहें सकल सो बात, राव जाय सिर नायऊ ॥

चौ०— राजा सुनत हरषि चित दीना । प्रभु दया कोइ जान न लीना ॥
भयो अचम्भो लोगन सबही । लीला आप कीन जो अबही ॥
स्तुति करैं बहुत हरषाई । सत्य भेद कोई जानत नाहीं ॥
राजा दल फेरा सब साधू । चले संत सब युत्थप बांधू ॥
राजा झारी लीने हाथा । सकल भेषको नायो माथा ॥
रानी साधुन चरन पखारे । राजा अपने कर जलढारे ॥
सकल भेष बैठे जेवनारा । जय जय मंगल होत अपारा ॥
तब हम तहँवाँ बैठे जाई । पूरन शसि सम रूप दिखाई ॥
स्वेत अंग कीन्हो अति पावन । अधर बैठि सुकृत मन भावन ॥
देखि लोग सब भये अचम्भा । हर्षित राय चरन गहि थम्भा ॥
बहुतक साधु मम गृह आवा । ऐसा साधु हम नहिं पावा ॥
को तुम काहु कहाँते आये । अपनो परचो कहो बुझाये ॥

सुकृत वचन ।

जो तुम पूछे राय सुजाना । अपनो कथा कहूँ सहिदाना ॥
अमर लोक ते पुरुष पठाये । जीव उबारन हम जग आये ॥

आये उत्तर दिशि चित भाये । श्री नगर तुम कारण आये ।।
बद्री नाथ आये तुम जहिया । हमहूँ संग आये नृप तहिया ।।
छन्द—जीव सबसे कह्यो घर घर शब्द काहू ना गह्यो ।
गयो बद्रीनाथ मन्दिर चित्त मम हर्षित भयो ।।
दीन मस्तक हाथ तब जड़ रूप पारस कर लियो ।
प्रीति तुम यह देखि दृढ़ होय दरस अब तोहिको दियो ।।
सोरठा—भक्ति हेतु तुव अंग, साधु प्रीति तुव अंग अहै ।।
निशि दिन साधू संग, ताते चित तोहि राचेयो ।।

राजा वचन ।

चौ०—एतिक वचन राव सुन जबहीं । बिहँसि पदपंकज गहि तबहीं ।।
निशि गति रवि जिमि उगे अकासा । कोक शोक मिटि होत हुलासा ।।
यहि मर्याद दरस आनन्दा । जिमि चकोर पाये निशि चन्दा।।
रानी राय चरन उर धारी । कृपा कीन मम बिथा बिसारी ।।
मोहि सनाथ कीन प्रभु पावन । हम अधकर्मी यम मन भावन ।।
अपना करि कीजे मोहि दाया । हम चीन्हा यह तुम्हरी माया ।।
सकल जीव चकित मन भयऊ । नगर लोग सब देखन धयऊ ।।
तरुण वृद्ध बालक सब धाये । सबहीं देखि प्रदक्षिणा लाये ।।
संत वृद्ध बहु जुरे अपारा । स्तुति करहि सकल बहु बारा ।।
छन्द—पाणि जोरिके राव ठाढे देहु पद मोहि पावनो ।
चरण कमल अधार तुम मोहि उभय और न भावनो ।।
छोड़ी नारि पुत्र पुत्री तुरी गज धन सम्पदा ।
राज काज कान छरड्यो देखि पद तुम मनरता ।।
सोरठा—अब प्रभु तुम ते काज, यहि विधि मन मानिया ।
तज्यो लोक कुल लाज, सत पद चित अनुराग मोहि ।।

तात्पर्य – जब सतयुगमें कबीर साहब श्रीनगरमें प्रगट हुये वहांके राजा राममोहन रायको (जो बड़ा विद्वान् वेदपाठी, वेदविधिपूर्वक कर्म करनेवाला और संत सेवी था) उपदेश देने लगे। पर राजाने विशेष ध्यान नहीं दिया। फिर राजा सब परिवार सहित बद्रीयात्राको चला तब कबीर साहब भी साधुके भेषमें उसके साथ हो लिये।

जब राजा बद्रीनाथमें पहुँचकर दर्शन आदि कर अपने आवासपर आ निश्चिन्त हो बैठा तब कबीरसाहबने मंदिरमें जाकर मूर्तिके माथेपर हाथ रखा

जिसके प्रभावसे मूर्ति तो पारसकी और मूर्तिके नीचेकी चौकी सोनेकी दीख पड़ी। सबेरा होनेपर पण्डालोग मंदिरमें गये । आश्चर्यमय कौतुक देख अचम्भित हो राजा आदि सबको दिखलाया पर किसीको यह ज्ञात नहीं हुआ कि, यह कौतुक किसका कर्तव्य है। अबभी राजाने सतगुरुको नहीं पहचाना ।

पश्चात् राजाने देश देशमें पत्र भेजकर साधुओंको निमंत्रित किया बड़ा भारी भण्डारा आरम्भ किया । साधुओंकी पंक्ति बैठी तो उनके मध्य कबीर साहब भी पूर्णचन्द्रके समान प्रकाशित पृथ्वीसे अधर बैठे हुये देख पड़े। ऐसी लीलाकी देख सब लोग चकित हो बारम्बार स्तुति करने लगे । राजाको पूर्ण विश्वास हुआ कि, इसी साधुसे मेरा उद्धार होगा। राजा रानी दोनों हाथ जोड़कर खड़े हो स्तुति करने लगे । राजाने विनय पूर्वक प्रार्थना करके पूछा कि, महाराज ! आप कौन हो ? कहाँसे एवं किसलिये पधारे हो ?

कबीर साहबने उत्तर दिया कि, हे राजन् ! हम अमर लोकसे आये हैं, जो हमारा उपदेश ग्रहण करेगा वह भी अमर हो जायेगा। यदि तुम्हें अमरलोक जाना है तो मेरे साथ चलो । राजाने सब संसारी राजवैभव त्यागकर अपने साथ रानी और अनेक पुत्र तथा (१७०००) सत्रह हजार परिवार और प्रजाको साथ लेकर परम धामको यात्रा की ।

९५ प्रश्न—संगका फल—सत्संग और कुसंगका फल कहिये ?

उत्तर – सत्संगके प्रतापसे बड़े पापी अधर्मी परम धामको गये । कुसंगसे बड़े २ तपस्वी महात्मा ज्ञानी नरकको अथवा नीच योनियोंको प्राप्त होगये ।

सतसंग अंगकी साखी ।

कबीर– संगति साधुकी, नित प्रति कीजे जाय ।
दुर्मति दूर बहावसी, देसी सुमति बताय ।। १ ।।

कबीर– संगतिसे सुख ऊपजे, संगतिसे दुख होय ।
कहैं कबीर जहाँ जाइये, साधू संगति होय ।। २ ।।

कबीर– संगति साधुकी, कभी न निष्फल जाय ।
ज्यों पै बोवै भूमिके, फूले फले अघाय ।। ३ ।।

कबीर– संगति, साधुकी, हरे औरकी व्याध ।
संगति बुरी कुसाधुकी, आठों पहर उपाधि ।। ४ ।।

कबीर– संगति कीजै साधुकी, जौकी भूसी खाय ।
खाँड भोजन मिले, साकर संग न जाय ।। ५ ।।

कबीर– संगति, साधुकी, ज्यों गंधीको पास ।
जो गंधी कछु देवे नहीं, तौ हू बास सुबास ।। ६ ।।
कबीर– एक घड़ी आधी घड़ी, आधी हूमें आधि ।
संगति कीजै साधुकी, कटे कोटि अपराध ।। ७ ।।
कबीर– मथुरा जा भावै द्वारिका, भावे बदरी नाथ ।
साधु संग हरि भजन बिन, कछू न आवै हाथ ।। ८ ।।
कबीर– मेरा संगी दोय जनाँ, एक वैष्णव एक राम ।
वे दाता हैं मुक्तिके, वे सुमरावें नाम ।। ९ ।।
कबीर– संगति साधुकी, जो करि जाने कोय ।
चन्दनवन चन्दन भया, बांस न चन्दन होय ।। १० ।।
कबीर– मलया गिरिके पेड़में, सरप रहे लपटाय ।
रोम २ विष भीनिया, अमृत कहाँ समाय ।। ११ ।।
कबीर– चन्दन जैसा संत है, सर्प यथा संसार ।
वाके अंग लपटा रहै, भागे नहीं विकार ।। १२ ।।
कबीर– जाघर हरिकी भक्ति नहीं, सन्त नहीं मिहमान ।
ताघर यम डेरा किया, जीवत भया मसान ।। १३ ।।
कबीर– राम तलावा भेजिया, दिया कबीरा रोय ।
जो सुख साधू संगमें, सो सुख वैकुण्ठ न होय ।। १४ ।।
कबीर– खाई कोटका, पानी पिये न कोय ।
जाइ परे जब गंगमें, तब गंगोदक होय ।। १५ ।।
कबीर– मन पंछी भया, मन माने तहाँ जाय ।
जो जैसी संगति करे, सो तैसो फल पाय ।। १६ ।।

कुसंगका अंग ।

कबीर– उज्वल देखिये, बक ज्यों माँड़े ध्यान ।
धोरे बैठि चपेटिहै, यों लें बूड़े ज्ञान ।। १ ।।
कबीर– भेष अतीतका, करतूत अपराध ।
बाहर दीसे साधु गति, माहि बड़ा असाध ।। २ ।।
कबीर– वामी कुटे बावरा, सरप न मारा जाय ।
मूरख वामी ना डसे, सरप जगतको खाय ।। ३ ।।
कबीर– बेटी ब्राह्मणकी, मांस शराब न खाय ।
संगति भई कलालकी, मद बिन रहा न जाय ।। ४ ।।

दीक्षाकालके कर्त्तव्य ।

९६ प्रश्न—गुरु करने और दीक्षा लेनेके समय क्या क्या करना आवश्यक है ?

उत्तर — जो रीति और व्यवहार गुरु बतलावे वह करे । गुरुको प्रतिष्ठाके साथ वस्त्र आदि पहनावे । उच्च आसनपर बैठाकर, रुपया आदि सब यथाशक्ति भेट धरे । साधुओंको भण्डार दे जहाँतक अपनेसे होसके साधुओंको भेंटादि देकर प्रसन्न करे । जिसने अपना सर्वस्व तन मन धन गुरुके अर्पण किया उसकासर्व कार्य्य सिद्धि हुआ । अपने गुरुका आज्ञाकारी रहना गुरुको गोविन्दसे बढ़कर मानना शिष्य का मुख्य कर्तव्य है ।

गुरु अंगको साखी ।

कबीर— गुरुको कीजे दण्डवत, कोटि कोटि परणाम ।
कीट न जानें भृङ्गीको, गुरु करले आप समान ॥ १ ॥
कबीर— गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काको लागों पाय ।
बलिहारी गुरु आपने, गोविंद दिया बताय ॥ २ ॥
कबीर— बलिहारी गुरु आपने, घड़ि घड़ि सौ सौ बार ।
मानुषसे देवता किया, करत न लागी बार ॥ ३ ॥
कबीर— ते नर अंध हैं, गुरुको कहते और ।
हरि रूठेते ठौर है, गुरु रूठे नहिं ठौर ॥ ४ ॥
कबीर— गुरु हैं बडे गोविंदते, मनमें देखु विचार ।
हरि सुमिरे सो वार है, गुरु सुमिरे सो पार ॥ ५ ॥
कबीर— गुरुसे ज्ञान जो लीजिये, शीस दीजिये दान ।
केतिक भोंदू पचि मुये, राखि जीव अभिमान ॥ ६ ॥
कबीर— गुरु मुख गुरु आज्ञा सुने, छोड़ि देइ सब काम ।
कहैं कबीर गुरु देवको, तुरत करे परनाम ॥ ७ ॥
कबीर— उलटे सुलटे वचनको, शिष्य न मानै दुख ।
कहैं कबीर संसारमें, सो कहिये गुरु मुख ॥ ८ ॥
कबीर— गुरु और पारसमें, बडो अंतरो जान ।
वह लोहा कंचन करे, वह करे आप समान ॥ ९ ॥
कबीर— राम नामके पटतरे, देवेको कछु नाहिं ।
क्या ले गुरु संतोषिये, हवस रही मन माहिं ॥ १० ॥
कबीर— निज मन तो नीचा किया, चरण कमलके ठौर ।
कहैं कबीर गुरु देव बिन, नजर न आवै और ॥ ११ ॥

कबीर– तनमन दिया तो भल किया, शिरका जासी भार ।
जो कबूं कहैं कि मैं दिया, धणी सहेगा मार ।। १२ ।।
कबीर– जो दीसे सो बिनसे, नाम धरे सो जाय ।
कबीर सोई सत्य है, सत गुरु दियो बताय ।। १३ ।।
कबीर– चित चोखा मन मसकला, बुद्धि उत्तम मति धीर ।
सो धीवान सोसंचरे, जो सत गुरु मिले कबीर ।। १४ ।।
कबीर– सत गुरु बडे जहाज हैं, जो कोई बैठे आय ।
पार उतारे औरको, अपनो पारसलाय ।। १५ ।।
कबीर– विनु सत गुरु बांचे नहीं, फिर लोडे भव मांहि ।
भव सागरके बीचमें, सतगुरु पकडे बाँहि ।। १६ ।।
कबीर– गुरु मुख गुरु चितवत रहे, जैसे मणिहि भुवंग ।
कहैं कबीर विसरे नहीं, यह गुरुमुखको अंग ।। १७ ।।
कबीर– गुरु मुख गुरु चितवत रहे, जैसे शाह दिवान ।
और कबीर न देखई, वाहीक ओर ध्यान ।। १८ ।।
कबीर– चौसठ दीवा जोयके, चौदह चन्दा मांहि ।
तिस घर किसका चांदना, जाघर सतगुरु नांहि ।। १९ ।।
कबीर– कोटिक चन्दा ऊगवे, सूरज कोटि हजार ।
सतगुरु मिलिया बाहिरे, दीसे घोर अंधार ।। २० ।।
कबीर– गुरु विचारा क्या करे, शिष्यहिमें है चूक ।
भावे ज्यों परमोधई, बाँस बजावे फूंक ।। २१ ।।
कबीर– सेवक मुखहि कहावे, सेवामें दृढ़ नांहि ।
कहैं कबीर सो सेवका, लख चौरासी मांहि ।। २२ ।।
कबीर– फल कारण सेवा करे, निशि दिन चाहे राम ।
कहैं कबीर सेवक नहीं, चहे चौगुना दाम ।। २३ ।।
कबीर– सेवक स्वामी एक मत, जो मतसे मत मिलि जाय ।
चतुराई रीझे नहीं, रीझे मनके भाय ।। २४ ।।
कबीर– सतगुरु शब्द उलंघिके, जो कोइ शिष्य जाय ।
जहाँ जाय तहाँ काल है, कहैं कबीर समझाय ।। २५ ।।
कबीर– गुरु बरजा शिष्य नाकरे, क्यों कर बाँचे काल ।
शु कहा बलि ना कियो, ताते गये पताल ।। २६ ।।
कबीर– द्वार धनीके पड़ा रहे, धका धनीका खाय ।
कवहूं धनी निवाजि हैं, जो दर छोड़ि न जाय ।। २७ ।।

कबीर– साहबके दर्बारमें, कमी काहुकी नाहिं ।
बन्दा मौज न पावई, चूक चाकरी माँहि ।। २८ ।।
कबीर– पूरा सतगुरु ना मिला, रहा अधूरा सिक्ख ।
स्वाँग यतीका पहन कर, घर घर माँगे भीक्ख ।। २९ ।।
कबीर– गुरु किया है देहका, सतगुरु चीन्हा नाहिं ।
भवसागरके बीचमें, फिर फिर गोता खाहिं ।।

९७ प्रश्न – निर्गुणकी उपासना – यदि आप ब्रह्मा विष्णु शिवादिको अवतार मानते हुए देवताओंको बन्धनमें फँसे हुये मानते हो तो मैं बद्ध तथा अविभूत और भक्तोंका कार्य्य करके फिर तिरोहित होजानेवाले अवतारोंको स्थायी न जान निर्गुण निराकार परमात्माको मानता हूँ ।

उत्तर – एक ब्रह्म निर्गुण निराकार तुमसे किसने आकर कहा था ? यदि कहो कि, वेदने बतलाया तो वेदके समझाने वाले कौन ऋषि हैं जो वेद के यथार्थ भेदको समझा सके ? वेदके उपदेशक ब्रह्मादिक स्वयम् बद्ध हैं वे ब्रह्मको क्या जानें ? अतः उसका जानलेना एवं उपासना करना सहज नहीं है ।

जो कोई कहे कि, हम वेदको मानते हैं अवतारोंको नहीं मानते तो वह झूठा है क्योंकि, संसारमें दोही धर्म (मजहब) है एक तो सत्पुरुषका दूसरा काल पुरुष का । सो सत्पुरुषकी ओरसे सत्यपथ कालपुरुषकी ओरसे असत्यपथ है ।

इन दो धर्म्मोंसे कोई भी व्यक्ति किस प्रकार बाहिर हो सक्ता है मुक्तिकांक्षी सत्पथ तथा नारकी कुमार्गमें लगे रहते हैं ।

९८ प्रश्न – अखाद्य एवं अपेयसे रत रहनेका कारण । मांस अहार और मद्यपीनेसे लोक परलोककी हानि है । लोग तो भी उसका सेवन नहीं छोड़ते, इसका क्या कारण है ?

उत्तर – जिसमें जो बुरी आदत पड़ जाती है वो उसका स्वभाव हो जाता है उसका छूटना अति कठिन हो जाता है। किसीको मांस खाने, किसीको मद्य पीने, किसीको जुआ खेलने, किसीको ठगी करने एवं किसीको तो चोरी करने आदि नाना प्रकारकी बुरी आदतोंका अभ्यास होते २ वह स्वभाव हो जाता है । उसके छोड़नेमें असमर्थ हो वारंवार उसीमें लगा रहता है। ऐसे मनुष्योंको भुक्ति मुक्तिका मार्ग नहीं मिल सक्ता क्योंकि, अशुभ कार्य्योंके छोड़े बिना कोई भी भक्ति मुक्तिका अधिकारी नहीं हो सक्ता । जैसे निम्बके कीड़ेको मिश्री और कन्द आदि अच्छे नहीं लगते वे निम्बसेही परितृप्त रहते हैं ।

दृष्टान्त—उत्तर अमेरिकामें एक जातिके मनुष्य रहते हैं जिन्हें स्क्वे मक्स बोलते हैं। वे नाटे होते हैं, उनका मुख्य भोजन मछली और पशुओंका माँस होता है। वहाँ अधिकतासे बर्फ पड़नेके कारण नाज फल नहीं होता। वे बर्फके मकानमें रहते हैं, जिसको वे साल साल बनाते हैं वह गिर पड़ता है वहाँ छः मास का दिन व छः मासकी रात्रि होती है। वे एक प्रकारकी गाड़ी बनाते हैं जिसमें कुत्ते जोते जाते हैं। बर्फपर वे कुत्ते उस बेपहियेकी गाडीको खींचकर ले जाते हैं। वेकुत्ते अपने स्वामीके बड़े आज्ञाकारी होते हैं।

पहले पहल जब अङ्गरेज लोग उस देशमें गये तो उनके लिये उत्तम २ पदार्थ लेगये। खानेके पदार्थ चीनी मिश्री आदिभी लेजाकर उनको दिये उन्होंने उसे मुखमें रखतेही थूक दिया फिर नमकीन पदार्थ दिया गया उसेभी घृणासे मुखमें रखके थूक दिया। फिर मोमबत्ती और तेल दिये उन्होंने उसे बड़े प्रेमसे खाया, उसके बदले वहाँके पदार्थ हड्डी और चमड़ा आदि अँगरेजोंको दिया। इसका आशय यह है कि, उन लोगोंने मिश्री न खाकर तेल आदिको स्वीकार किया। यह सब बातें अभ्यासके ऊपर आधार रखती हैं। देखो मद्यप मिठाई आदि उत्तम पदार्थोंको छोड़कर माँस मछली और मद्यादि घृणित पदार्थोंको खाते हैं एवं उसीमें वे खुश रहते हैं।

९९ प्रश्न—इब्राहीमके देव, आपने कहा था कि, इब्राहीमका ईश्वर तीन रूपोंमें देख पड़ा वे फिरिश्ते थे ईश्वर नहीं थे।

उत्तर—यह बात कैसे मानली जावे कि, वे इब्राहीमके खुदा नहीं थे क्योंकि, इब्राहीमने उन्हें पृथ्वीतक झुककर नमस्कार किया था कहा था ऐ मेरे खुदावन्द! ऐ मेरे खुदा!! देखो तौरेतमें पैदाइशका १८ बाब १ से ३ आयत।

इसाई लोग ऐसा अनुमान करते हैं कि, उन तीनोंमेंसे दो फिरिश्ते थे और १ स्वयम् यवाह था। वे उनका नाम बड़ी प्रतिष्ठासे लेते हैं। सच तो यह है कि, समस्त संसार त्रिदेवकी पूजा करते हैं। तीनों देवोंमें विष्णु सर्वश्रेष्ठ देव है। सबका बादशाह वही विष्णु है ब्रह्मा और शिव उसके मन्त्री हैं।

१०० प्रश्न—कलियुगमें भक्तिसे मुक्ति, आपने कहा था कि, बिना पुण्यकी पूर्णताके किसीकी मुक्ति नहीं होती यदि ऐसाही है तो कलियुगके लोगोंकी मुक्ति होना कठिन हैं क्योंकि, कलियुगी मनुष्योंकी वृत्ति पापकी ओर झुकती है।

उत्तर—इसमें संदेह नहीं कि, भक्तिके विना मुक्ति नहीं होती। इसी कारण निरञ्जनने कबीर साहबसे बरदान मांग लिया है कि तीनों युगोंमें थोड़े जीवोंकी मुक्ति होगी पर कलियुगमें बहुत जीव लोक जावेंगे यह बात सुनकर

कबीर साहबने कहा कि, हे काल पुरुष! तू मुझको ठगा चाहता है। अच्छा जो तूने माँगा वह मैंने तुझको दिया पर कलियुगमें असंख्य जीव तेरे फन्देसे निकलेंगे।

बावन वीर कबीर कहाऊँ। कलियुग केर जीव मुक्ताऊँ।

इस प्रकार साहबसे वचन लेनेका काल पुरुषका यही आशय था कि, कलियुगमें पापकी विशेष प्रवृत्ति होगी, जिससे मनुष्य अनाचारी हो मेरे पाससे कभी बाहर नहीं जासकेंगे। पर सर्वशक्तिमान् कबीर समरत्थने यह वचन भी इसीलिये मानलिया कि, कलियुगमें जो जीव सत्तगुरुकी शरण हो जावेगा वह अवश्य कालके जालसे निकलकर मुक्त हो जावेगा।

१०१ प्रश्न – अप्रकाशका कारण, विद्याभिमानियोंके अंतःकरणमें ज्ञानका प्रकाश क्यों नहीं होता?

उत्तर – मिथ्याभिमानियोंका अंतःकरण छल कपट और सांसारिक प्रवृत्तिसे पूर्ण होता है वे अपनेको सर्वोपरि बुद्धिमान् समझते हैं। नम्रता और गरीबीसे उनका अंतःकरण शून्य रहता है इनके हृदयमें ज्ञानको अवकाशही नहीं मिलता।

१०२ प्रश्न – मनुष्यको ईश्वरके रूपमें बनाना, सब का कथन है कि, ईश्वरने मनुष्योंको अपने रूपमें रचा है यदि यह बात सत्य है तो ईश्वर भी मनुष्यके समान नाशवान् होगा?

उत्तर – नाम रूप सब माया है, ईश्वर मायासे परे, कहने सुननेसे पार है। मनुष्यकेही रूपसे सृष्टिकी उत्पत्ति होती है इस कारण कहा जाता है कि, ईश्वरने मनुष्यको अपने रूपका बनाया है।

१०३ प्रश्न – पूर्व जैसी विद्या, प्रथमकी अपेक्षा विद्याका प्रकाश अब अधिक है?

उत्तर – नहीं पूर्वके समान न अब स्मरण शक्ति है, न ज्ञान ही है। पुस्तकावलोकनको ज्ञान नहीं कह सकते क्योंकि, केवल पुस्तकावलोकनसे ही अनुभवका प्रकाश नहीं हो सकता अन्तर ज्ञान तो भजन और विचारसे सम्बन्ध रखता है। वर्तमान कालमें प्रकाश नहीं वरन् अंधकार है यही कारन है कि, मनुष्यका अन्तःकरण विषय वासनामें लग रहा है।

१०४ प्रश्न – सदा एकसा वही, जो कुछ प्रथम था वही अब भी है सदासे इसी तरह चला आता है।

उत्तर–यह बात ठीक नहीं है. पहले मनुष्य बालक होता है फिर क्रमशः

किशोर, युवा, प्रौढ़ और वृद्धावस्थाको प्राप्त करता है। इसी तरह जन्मके दिनसे मृत्युतक अनेक प्रकारका अदल बदल हुआ करता है एवं होता रहेगा।

सेव्य धर्म एवं गुरुपूजन।

१०५ प्रश्न—स्वामी सेवक सब बँधे हैं भक्ति किसकी करनी चाहिये?

उत्तर—उसका भजन करना चाहिये जिसे सतगुरु बतावे।

१०६ प्रश्न—कितने एक कहते हैं कि, सदाचार रखना चाहिये, पुण्य करना चाहिये, धर्म (मजहब) से क्या काम है?

उत्तर—सतगुरु और धर्मके बिना पुण्यका मार्ग नहीं पा सकता। विधि, निषेध, शुभ, अशुभ, पाप, पुण्य, सब गुरु और मजहबसेही जाने जाते हैं।

१०७ प्रश्न—गुरुमुख तथा मनमुखका क्या अर्थ है?

उत्तर—गुरुमुख वह है जो गुरुकी आज्ञाकारितामें बना रहे। धर्मदासजीके समान तन, मन, धन गुरुके अर्पण करे। सदा गुरुका ध्यान किया करे चाहे गुरुका शरीर निकट हो अथवा दूर हो गुरुमुखकी प्रशंसा वचनसे बाहर है। सब प्रकारकी रिद्धि, सिद्धि, ज्ञान और मुक्ति गुरुमुखके लिये है। इसके विरुद्ध काम करनेवाला मनमुख है।

१०८—प्रश्न—आपने कहा कि, गुरुकी मूर्तिका ध्यान करे तो क्या यह प्रतिमापूजन नहीं है?

उत्तर—निःसंदेह यह भी प्रतिमापूजन है पर अन्य सब प्रतिमापूजनसे यह उत्तम और श्रेष्ठ है क्योंकि, गुरुकी मूर्तिका ध्यान पारख गुरुको प्राप्त करा कर मुक्त करादेता है। संसारमें सब मनुष्य मायाके पूजक हैं। माया जड़ है। जड़के पूजनेवाले सब जड़कोही प्राप्त होंगे। मायाके पूजक शुद्ध चैतन्य ब्रह्मको कदापि नहीं प्राप्त हो सक्ते।

१०९—प्रश्न—"गुरु एक और सेवा अनेक" इसका क्या आशय है?

उत्तर—इसका आशय यह है कि, मनुष्य जितना और जिसको चाहे गुरु करे पर गुरुओं और साधुओंकी सेवा करते २ पारख गुरुके पानेका अधिकारी होना है तब उसको पारख गुरुकी कृपा से अपना अभीष्ट प्राप्त होता है। अनेक गुरुओं तथा संतोंकी सेवा करनेपर पारख गुरु प्राप्त होता है वही अनेक सेवा व एक गुरुका आशय है।

११०—प्रश्न—कालपुरुषकी पूजा—समस्त संसारमें अग्निकी पूजा हो रही है। इसका क्या कारण है?

उत्तर—सतपुरुषने अपने क्रोध और बीभत्ससे कालपुरुषको उत्पन्न

किया है उसको तीन लोकका मालिक बनाया है। इस कारण उसी अग्निरूप कालपुरुषकी पूजा हो रही है।

१११ प्रश्न—मनके प्राबल्यका कारण—क्या कारण है कि, मन सब पर प्रबल सभी मनके परवश पड़े हैं ?

उत्तर—मृत्युको भूलकर विषयवासनामें लुब्ध होनेसेही मनकेवशमें पड़ा हुआ जीव नाना प्रकारके कष्ट उठाता है। जो कोई मृत्युका स्मरण रखता है, ईश्वरके भयमें रहता है, ईश्वरके भयसे रोया करता है। पश्चात्ताप करके ईश्वरकी दयाकी आशा रखता है उसपर परमात्माकी कृपा दृष्टि होती है। वह मन पर विजयी होकर सुखी हो जाता है।

११२ प्रश्न—गुरुकी पहिचान–साधु गुरु किस प्रकार पहचाने जाते हैं ?

उत्तर—सत्संगसे।

११३–प्रश्न—सत्संग कैसे प्राप्त होता है ?

उत्तर—उदारता, सेवा और मनकी शुद्धतासे।

११४ प्रश्न—बन्ध कबतक—अहंकारमें समस्त संसार बँध रहा है यह कबतक रहता है ? इसके बंधसे कब और कहाँपर छूटता है इसका सम्बन्ध कबतक रहता है ? सो स्पष्ट समझा दीजिये।

उत्तर—जो जीवकी पाँच अवस्था हैं वेही इसके बंधनके कारण हैं जब तक उनमें अहंता ममता रखता है तबतक इसकी मुक्ति होना असम्भव है। इसकी पाँचों अवस्था तथा अभिमानका विशेष विवरण सुनो।

जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति, तुरीया तुरीयातीत ये पाँच अवस्था हैं इनकी स्थूल, सूक्ष्म, कारण, महाकारण और कैवल्य ये पाँच देह हैं। इन्हींके अभिमानी संसार सागरमें बारम्बार गोता खाते रहते हैं। जब तक इनमें वासना है तबतक अहंकारसे मुक्त होना असम्भव है।

स्थूलदेहके अभिमानमें फँसा हुआ जीव अपनेको सबसे बड़ा बुद्धिमान समझता है सब कला कौशलका प्रकाशक सबका ज्ञाता जानता है, इसकी दशा उस पादरीके समान होती है जो कि, स्वप्नकी दशामें पुस्तकें बनाता था। जब किसी समय किसी अपराधमें पकड़कर जजके सामने उपस्थित किया गया तो उसकी स्वप्नावस्था नष्ट होगई।

जब जीव जाग्रत अवस्थाको छोड़ स्वप्नावस्थामें प्रवेश करता है उस समय अफलातून जैसा बुद्धिमान भी मूर्खों और अज्ञानियों जैसा नीच काम करता है जिससे अल्प बुद्धिवाला पुरुषभी घृणा करता है। इसी कारण स्थूल देह उसकी अवस्था तथा उसके कर्तव्य सब मिथ्या हैं।

विद्या तथा धनके अभिमानियोंको विचार करना चाहिये, कि, जब उनके अभिमानके मूल विद्या तथा धनादि दूसरीही अवस्थामें नष्ट होजाते हैं तो तीसरी और चतुर्थ अवस्थामें क्या गति होगी।

जैसे जाग्रत् अवस्थाका अहंकार असत्य है वैसेही स्वप्नावस्थाकी भी सब सामग्री मिथ्या हैं। इसी प्रकार सब अवस्थाओंके पदार्थ व अभिमान मिथ्या और मृगतृष्णाके जलके समान दुःखदायी हैं। इन्हीं पाँचोंके अभिमान में सारे अभिमानी बद्ध हैं। इनसे बाहर जानेका मार्ग किसीको प्राप्त नहीं होता।

इन पांचों शरीरोंके परे छठा शरीर हंस देह है जिसमें प्राप्त होकर अहं-कार नष्ट हो जाता है, जीव अपने यथार्थ स्वरूपकोप्राप्त हो जाता है। जिनको उपरोक्त पांचों शरीर और उनकी अवस्थाकी यथार्थ सुधि नहीं वे कैसे ईश्वरको पासकेंगे। संतलोग इनको भली प्रकार जानते हैं। उसको अपने वशमें करके उनके ऊपर शासन करते हैं। जो इनकी विशेष सुधि नहीं रखता वह उनके बन्धनमें पड़ा हुआ दुःखी होता है।

हंस देहकी प्राप्तिके उपाय।

११५ प्रश्न—क्या उपाय करें कि, हंस देह शीघ्र प्राप्त हो ?

उत्तर—हंस देहकी प्राप्तिके लिये सच्चे सत्यगुरुसे सच्चा प्रेम होना चाहिये। चुम्बक जिस प्रकार लोहेको अपनी ओर आकर्षण कर लेता है उसी प्रकार प्रेम शीघ्रही प्रियासे मिला देता है। सत्य प्रेमके विना प्रियाका मिलना असम्भव है।

सत्य प्रेमीके दश चिह्न—१ नेत्रका आँसूसे डबडबाये रहना – २ नींदका न आना। ३ ठण्ढी ठण्ढी स्वाँस लेना। ४ पीतरङ्ग। ५ देहकी कृशता। ६ धीमी बोली! ७ अल्प आहार। ८ ओठोंका सूखा रहना। ९ ध्यानावस्थित। १० प्रियकी प्रशंसा करना और लिखना।

उपरोक्त दश चिन्होंसे प्रेमी पहँचाना जाता है। कबीर साहबके प्रेममें राजा अमरसिंह रोते २ मृत्युके निकट पहुँच गये थे। पीछे सत्गुरुने दर्शन देकर कहा कि, हे राजन्! अभी तुम्हारी शतवर्ष आयु शेष है इसको भोगलो तब लोक चलना। राजाने न माना कहा कि, मुझे कुछ न चाहिये मैं आपके संगही जाऊँगा तब कबीरसाहबने उसे लोकको पहुँचा दिया।

ऐसेही धर्मदास साहबको सतगुरुके प्रेममें छः महीना रोते बीत गये। तब सतगुरु मिले कृतार्थ करके अंतर्धान होगये। इस विरहमें अन्न पानी सब छोड़कर बाईस दिनतक रोते २ मृतकतुल्य हो गये। फिर सतगुरु प्रगट हुये और दर्शन दिया।

सेवरीकी कथा ।

शिवरी भीलनी ईश्वरकी भक्तिको ऐसी रंगी, प्रेमको इस पूर्णता तक पहुँचाया कि, भगवान् रामचन्द्रने उसके हाथके बेर खाये, उसकी कथा इस प्रकार है कि—

एक सूर्य्य वंशके परम प्रतापी महाराज अपनी राजकुमारी तथा राजमहिषी आदिके साथ तीर्थ राज प्रयागके स्नानके लिये गया । वहां अन्तःपुरचरीने महाराजसे प्रार्थना की कि, मैं पवित्र उपदेशोंसे विश्वको पवित्र करनेवाले पवित्रात्मा ऋषि गणोंके पुनीत दर्शनोंसे अपनेको पवित्र करना चाहती हूं । इस पर उत्तर मिला कि, राज महलोंमें रहनेवाली इस तरह नहीं फिरा करतीं। इस तरह फिरनेवाली तो भीलनी होती है । यह सुन तीर्थराजमें स्नान करती वार अभिलाषा प्रगट की कि, मेरा अब जन्म हो तो मुझे नीच कुलोंकी महिला बनाना जो स्वतंत्रता के साथ परम पावन ऋषिमुनियोंकी सेवा कर सकती हैं । भक्त वत्सल भगवान् अपने भक्तोंकी मनो कामना सदा पूरी करते हैं । उसी पवित्रात्माका शवर राजके कुलमें जन्म होगया उक्त भीलोंके राजाके यह एकही कन्या थी । हाथों २ में ही क्रमशः युवावस्थाको प्राप्त हुई । पिताने विवाहकी तयारी की बड़े २ वन्य पशु विवाहोत्सव में मारनेके लिये इकट्ठे किये गये थे । एक दिन राजकुमारी प्यारी सहेलियोंके साथ राज प्रासादके ऊपर चंद्रकिरण ले रही थी कि, कटहरोंमें बंधे हुए बनैले पशुओंकी करुण मूर्ति आँखोंके सामने आगई, यही समय शिवरीके हृदय पर्वितनका था । दर्दभरे शब्दोंमें सखियोंसे बूझा किये पशु मुझे क्यों दुखभरी आखोंसे देख रहे हैं ? उत्तर मिला कि, ए भोली राजकुमारी ! ये तेरे विवाहमें काम आयेंगे । यह सुनतेही शिवरीका मुख तेजसे तमतमा उठा, झट बोल उठी कि, ऐसा विवाह मुझे नहीं करना है जिसमें अनन्त जीव दुःख पावें । भगवान्से लौ लगाई कि, तू ऐसी नींद भेज दे कि सब सोजायं तो मैं महलके बाहिर निकल जाऊं । जगदीशने अपनी परम भक्ताकी मनोकामना पूरी की। शिवरी उसी समय राज महलका परित्याग करके वनको चली गई ।

यह एक बनमें रहा करती थी । वहांही पासमें मतंगऋषि भी रहा करते थे। शिवरी रातको छिपकर ऋषिके आश्रममें लकड़ी धर जाती। ऋषियोंके स्नान करने जानेके मार्गको बुहार जाती । यह सब काम रातको इस भयसे करती कि, यदि ऋषि अथवा ऋषिके शिष्य देखलेंगे तो नीच जाति जान क्रोधित होंगे ऋषि नित्य लकड़ी और मार्ग बुहारा हुआ देखकर आश्चर्य करते । बहुत दिनों तक विचार करनेपर भी सेवा करने वालेका पता न लगा कि एक दिन ऋषिके

जिन्होंने छिपकर जागनेपर सेवरीको लकड़ी लाकर झाडू देते हुये पकड़ा । जब उसे ऋषिपुत्रोंने पहचाना तो उन्हें उससे बहुत घृणा हुई प्रायश्चित्तका स्नान करने पंपासरमें गये । वे तालावमें नहाने लगे तो तालावका जल बिगड़ गया और उसमें कीड़े पड़ गये, वो एकदम खराब हो गया ।

मतंग ऋषिने सेवरीका हाल सुनकर उसे बुलाया बहुत प्रेमपूर्वक आश्वासन किया । उसको अपनी चेली बना लिया अपने शिष्योंको डांटा कि, तुम लोग सेवरीसे इतनी घृणा क्यों करते हो ? इसपर तो हजारों ब्राह्मण निछावर हैं । मतंग ऋषिने सेवरीसे कहा कि, तुझको रामचन्द्रजी दर्शन देंगे ।

सेवरीने अपने गुरुसे सुना कि, महाराज रामचन्द्रजीका दर्शन होगा । रामचन्द्रजीके दर्शनकी चिन्तासे प्रेममें मग्न होगई । सदा महाराजके मिलनेका स्मरण रखती । महाराजसे मिलनेके लिये दौड़कर उसी मार्गपर जाती जिधरसे कि, महाराजके आनेका समाचार पाचुकी थी, दौड़ते २ उसके मनमें आता कि, हाय मैं भीलनी हूँ ! महाराज मुझसे कैसे मिलेंगे ? मुझको नीच जाति जान घृणा करेंगे । ऐसा विचार होतेही किसी झाड़ीमें छिप जाती, रोने लगती । विचार करती, महाराज पतित पावन हैं, तब फिर झाडीसे निकलकर दौडती । कभी दूर २ तक मार्ग बुहारती हुई कहती कि, महाराजके आनेका मार्ग शुद्ध करती हूं कभी २ महाराजको इधर उधर झाड़ियोंमें ढूढती फिरती, नित्य वनमें जाकर फल तोडती. क्योंकि, आपभी फलही फूल खाकर रहा करती । जिस पेडके फल मीठे देखती उसीको रखलेती पर जो खट्टा होता उसे तो आप खाती जो मीठा होता उसे भगवान्को खिलानेके लिये रख छोडती ।

महाराजने कृपाकर उसके आश्रम पर पदार्पण किया, उस समय बेर और फल लाकर सेवरीने भगवान्के सामने रखे । महाराजने उन फलोंको ऐसे सराह सराहके खाया कि, तीनों लोकके अधिपतियोंको भी ईर्षा हो । उस वनके कितने ऋषियोंके मनमें अहंकार था कि, हम ब्रह्म ऋषि अथवा राजऋषि हैं, सबके मनमें बडी ईर्षा और अभिमान हुआ कि, महाराज प्रथम हमारे आश्रमपर न पधारकर भिलनीके आश्रम पर गये । अन्तर्यामी रामचन्द्रजीने ऋषियोंको मनकी जानकर कहा कि, है कोई ऐसा तप और धर्म करके पूर्ण जो पम्पासरमें स्नान करे और उसके स्नान करनेसे इसका जल शुद्ध हो जावे । तब ऋषियोंने क्रमशः उसमें गोता लगाया पर जलका शुद्ध होना तो क्या और भी गन्दा तथा भ्रष्ट हो गया । भगवान् रामचन्द्रने सेवरीसे कहा कि, तू इसमें नहा जैसेही सेव-

रीने तालावमें पग दिया जल वैसाही शुद्ध और स्वच्छ होगया। यहदेख सब ऋषियोंका अभिमान जाता रहा, सेवरीका माहात्म्य अधिकसे अधिक प्रगट हुआ।

महाराजा सेवरीको कृतार्थ कर वहाँसे चलनेका विचार करके सेवरीसे चलनेकी बात कहने लग उसी समय विरह और वियोगको न सहनेवाली सेवरीने अपना प्राण त्यागकर इस असार संसारको छोड़ दिया । महाराजने स्वयम् अपने हाथसे उसका दाह किया, सेवरी परमधामको पहुँच गई ।

प्रेमका पद सबसे श्रेष्ठ है । जिसके मनमें प्रेमने स्थान किया वह प्यारेके अतिरिक्त सर्व संसारसे मुक्त हो जाता है । समस्त ब्रह्माण्डको तुच्छ समझता हुआ आशिक अपने प्यारेके अतिरिक्त दूसरा कुछ भी नहीं देखता । प्यारेको सर्व ठौर देखता है क्षण मात्र भी उसे बिना उसके चैन नहीं पडता । जिस हृदयमें प्रेम नहीं वह मनुष्य नहीं । कबीर साहबने इस प्रेमके विषयमें बहुत वचन कहे हैं ।

प्रेम अंगकी साखी ।

कबीर– ऐसा कोई ना मिला, शब्द गुरुका मीत ।
तन मन अरपे मृग ज्यों, सुने वधिककी गीत ।।

कबीर– प्रेम प्याला सो पिवे, शीश दक्षिणा देय ।
लोभी शीस न देइ सके, नाम प्रेमका लेय ।।

कबीर– आया प्रेम कहाँ गया, देखा था सब कोय ।
छिन रोवे छिनमें हँसे, यह तो प्रेम न होय ।।

कबीर– प्रेम प्रेम सब कोई कहै, प्रेम न चीन्हे कोय ।
आठ पहर भीना रहे, प्रेम कहावे सोय ।।

कबीर– बढे घटे छिन एकमें, सो तो प्रेम न होय ।
अघट प्रेम पिंजर बसे, प्रेम कहावे सोय ।।

कबीर– प्रेम प्यारे लालसे, मन दे कीजे भाव ।
सतगुरुके प्रतापसे, भला बना है दाव ।।

कबीर– प्रेमी ढूंढत मैं फिरूँ, प्रेमी मिला न कोय ।
प्रेमीसे प्रेमी मिले, तो भगती दृढ होय ।।

कबीर– जा घट प्रेम न संचरे, सो घट जान मसान ।
जैसे खाल लुहारकी, सांस लेत विन प्रान ।।

कबीर– प्रेम वणिज न करि सके, चढे न प्रेमके गैल ।
मानुष केरी खोलरी, ओढे देखा बैल ।।

कबीर– प्रेम बिना धीरज नहीं, विरह बिना वैराग ।
सतगुरु बिना मिटै नहीं, मन मनसाका दाग ।।
कबीर– जहाँ प्रेम तहाँ नेम नहीं, तहाँ न बुद्धि व्यवहार ।
प्रेम मगन जब मन भया, कौन गिने तिथि वार ।।
कबीर– प्रेम छिपाया ना छिपे, जा घट परगट होय ।
जौ पै मुख बोले नहीं, नयन देत हैं रोय ।।
कबीर– प्रेम भाव एक चाहिये, भेष अनेक बनाय ।
भावे घरमें वासकर, भावे वनमें जाय ।।
कबीर– योगी जंगम सेवडा, संन्यासी दरवेश ।
बिना प्रेम पहुँचे नहीं, दुर्लभ सतगुरु देश ।।
कबीर– पीया चाहे प्रेमरस, राखा चाहे मान ।
एक म्यानमें दो खड्ग, देखा सुना न कान ।।
कबीर– पियारस पिया सो जो जाने, उतरे नहीं खुमार ।
राम अमल माता रहे, पिये अमी रस सार ।।
कबीर– प्याला है प्रेमका, अन्तर लिया लगाय ।
रोम रोममें रमि रहा, और अमल क्या खाय ।।
कबीर– ऐसी भट्टी प्रेमकी, वहुतक बैठे आय ।
शिर सौंपे सो पीवसी, नातर पिया न जाय ।।
कबीर– जब मैं था तब गुरु नहीं, अब गुरु हैं मैं नाहिं ।
प्रेम गली अति साँकरी, तामें दो न समाहिं ।।
कबीर– जबलग जो मरनेमें डरे, तबलग प्रेमी नाहिं ।
बड़ी दूर है प्रेमघर, समझ लेउ मन माहिं ।।
कबीर– जैसा लौ पहले लगे, तैसे निबहे ओर ।
अपनी देहको को गिने, तारे पुरुष करोर ।।
कबीर– लागी लागी क्या करे, लागी नाहीं एक ।
लागी सोई जानिये, करे कलेजे छेक ।।
कबीर– लागी लागी क्या करे, लागी सोइ सराह ।
लागी सोई जानिये, जो उठि कराहि कराहि ।।
कबीर– लगन लगी छूटे नहीं जीभ चोंच जरि जाय ।
मीठो कहां अंगार है, गहे चकोर चबाय ।।
कबीर– जा खोजत मुनिवर थके, सुरनर मुनिवर देव ।
कहैं कबीर सुन साधुआ, कर सत गुरुको सेव ।।

नजम ।

सुनो यारो मुहब्बतकी कहानी । भरे नेमत दो आलम जिसका पानी ॥
किया शहे इश्कने जिस दिलमें डेरा । वहाँ बाकी रहा तेरा न मेरा ॥
जो दिलवर आनकर जादूको डारा । हुआ तब इश्कसे दिल पार: पारा ॥
जो आकिल या फलाँतू जमाना । हुआ सब अक्ल खो करके दीवाना ॥
शहनशह था सब जमीं और ज ाँका । बना कमतर सो खादिम खादमाँका ॥
हुई जब यारसे अपने जुदाई । गई तब बन्दगी भूली खुदाई ॥
कहां तब जुहद है तकवा तिहारत । मुहब्बत यारकी निशि दिन महारत ॥
निछावर कर दिया तन मन धन अपना । सो सब संसारको देखे जो सपना ॥
विरहका तीर दिल छिदकर हुआ पार । बेगाने खेश आँखोंमें लगें खार ॥
जुदाई यारनेकी जब दिवाना । ब्याबाँ दश्त सेहरा खाक छाना ॥
हैं निसदिन करते फिरत प्रियजारी । सद आह बनाल: और अश्कबारी ॥
किया दिलबरके कूचा जबसे फेरा । हुआ आँखोंमें कुल आलम अँधेरा ॥
मुहब्बत यारकी दिलमें जो जागी । अक्ल उस वक्तसे रुखसतको मांगी ॥
अक्ल कुत्तीको दुरदुर कर दिया है । नहीं तू है जहाँ मेरा पिया है ॥
उठाते गीत गाते अर्गनूसे । मुहब्बत यारमें फिरते जनूंसे ॥
अरे हुदहुद मेरे पीतमकी पाती । तू ला पढ़कर जुड़ाऊँ अपनी छाती ॥
कि निसदिन यादमें है जाँन उबाली । हुआ सारे हवससे दिल जो खाली ॥
किया खाली जो खान:दिल सहलमें । बैठा दिलदारको तब उस महलमें ॥
नहीं कुछ काम है दुनियाँ व दींसे । तो दम मारना क्या आँ व ईंसे ॥
कि जिस घरमें मेरा माशूक आवे । वहां कोई दूसरा रहने न पावे ॥
नहीं दुनियाकी कोई मुश्क व बू है । तू देखे दिलके अन्दर तुही तू है ॥
जो सारी मक्खियाँ दिलसे निकाला । तो उस घर बीचमें दिलबर बिठाला ॥
तु हो आनन्द कर दर बन्द नयना । दिल अन्दर दिलरोबासे बोल बैना ॥

सतगुरुकी प्रशंसा ।

मुसद्दस ।

मालूम हुआ वेद व कुरआँकी रकमसे ।
जाहिर है तेरी हमद व सना अहले कलमसे ॥
क्या किल्क लिखे हीम: गो वाग़े अरमसे ।
दुनियामें न कोई वाक़िफ है वस्ले सनमसे ॥
जो कुछ नजर आता है सो तेरेही करमसे ।
सब इल्मो अमल बरकत सतगुरुके कदमसे ॥

जुजसायः कदम तेरे न इनसाँका गुजारा ।
तदबीर नहीं तेरी शरणका है सहारा ।।
लिखते तेरी औसाफ़ लगे बहर किनारा ।
दिल विदः रौशन करे मजमूं हमारा ।।
पैदा कलम हरकत तुझ दीदः दमसे ।
सब इल्म व अमल बर्कत सतगुरुकी कदमसे ।।
है कौनसा बाजार तेरा इश्क जहां है ।
है कौन फिरोशिन्दः खरिदार कहाँ है ।।
हमराज कोई आशिक जान वाज़ वहाँ है ।
जिस रम्जकी फहमीदको सर सिदकः शहाँ है ।।
सो हाथ लगे काइ न दीनार दिरम से ।।
सब इल्मों अमल बर्कत सतगुरुकी कदमसे ।।
आई है जहाँ जेह्ल सो खुरशेद झलक है ।।
सब तारफना जरः पानूर झलक है ।।
उमीद न कुछ आदम और जिन्ने मलिक है ।।
है जान अमान बख्श तुही फितनः फलक है ।।
जुज़ तेरे न महरम कोई इनसानके धरमसे ।।
सब इलमों अमल बरकत सतगुरुकी कदमसे ।।
तू रहबर हो जिसकी करें रहनुमाई ।
फिलफौर सोई खुदमें लिया देख खुदाई ।।
हरजा तू है तुही है तुही अर्ज स्वामी ।
सदहा खाते गोता न इसरार सों पाई ।।
है फज्ल तेरा आजिजकी दीदः नमससे ।
सब इल्म व अमल बर्कत सतगुरुकी कदमसे ।।

सत्यकबीर धर्मका मूल ।

ईश्वर ... ... सत्यपुरुष ।
आचार्य ... ... कबीरसाहब ।
गुरु ... ... पारख ।
शास्त्र ... ... स्वसंवेद ।
मार्ग ... ... निर्वाण ।
चाल ... ... सतोगुणी ।

मुक्तिद्वार	...	...	सारशब्द ।
लोक	...	...	सत्यलोक ।

कबीर मन्शूरका स्पष्ट सार ।

यह समस्त संसार कालका दास है, जो कोई कबीरसाहबका शरण गहकर कभी न छोडेगा वो अवश्य भवसागरके पार पहुँचेगा। नहीं तो दुःख सागरमें ही पड़ा गोता खावेगा ।

कबीर साहिबकी प्रार्थना ।

ऐ मेरे स्वामी ! बन्दी छोर ! तू गरीब निवाज है, मैं अधम अयोग्य और पापी हूँ । तू मेरे पापोंपर दृष्टि मत कर। तू संसारका उद्धारक है, मेरा भी उद्धार कर । मेरी ओरसे दृष्टि मत फेर। अचेत बच्चोंको माता पिताके बिना दूसरा आश्रय ही नहीं है ।

हे गुरु ! तूने बारम्बार कहा है कि, "मैं कलियुगमें जीवोंका उद्धार करूंगा" तू अपना वचन देख मैं तेरी शरण हूँ तू अपनी शरणकी लाज रखकर मेरा विनय श्रवण कर । जो इस पुस्तकके लिखनेके समय मेरा सहायक पुरुषोत्तमदास साधु था उसको उत्तम फल दे । जो इस पुस्तकको पढ़े सुने और मेरी शिक्षा स्वीकार करे उनको अज्ञान अंधेरेसे निकालकर आत्मज्ञानके प्रकाशसे पूर्ण करदे। सत्य कबीरो जयति ।।

शांतिः शांतिः शांतिः ।

अथ समाप्तिके ग़ज़ल ।

बुल बुलाँ मुज़दए बहार आया । इसके साथ ही पयाम यार आया ।।
आह वे नालेके दिन गये हैं गुजर । दिल परा गन्दा बरकरार आया ।।
खुल्द और जन्नते जिनाँ क्या जान । दिन बशाशतका बेशुमार आया ।।
शोर बख्तीके दिन गये हैं गुजर । नेक बख्तीका रोजगार आया ।।
मिहर मुरशद कबीर जिसपर हो । उसको है भेद वार पार आया ।।
फिर न कोई दवा दविस आजिज । हाथमें अपने जब शिकार आया ।।

नखले मुहब्बतका समर मुझको दिखा ऐ बाग़वाँ ।।
तेरे बागमें उल्फते शिजर मुझको दिखा ऐ बाग़वाँ ।।
शफकत किया जो निहालपर ताजा किया तो पालकर ।।
भूला करम क्यों टालकर मुझको बता ऐ बाग़वाँ ।।

सब खारो खस को खींचकर पाला है तूने सींचकर ॥
बैठा क्यों आँखें मींचकर मुझको बता ऐ बाग़वाँ ॥
खुद बागमें शामिल किया और पालकर कामिल किया ॥
फिर काटना क्यों दिल दिया मुझको बता ऐ बाग़वाँ ॥
आजिज़ पड़ा आजिज़ पड़ा ऊँधा हुआ पानी घड़ा ॥
तुझ बिन भरे फिर कौन आ मुझको बता ऐ बाग़वाँ ॥

बागवाँ बाग कुहनसें तेरे अशजार किते ॥
कोई है समर बख्श हैं पुर खार किते ॥
तुही खालिक तुही मालिक सबी तहरीक तेरी ॥
तू शहन्शाह जहाँ फौजके सरदार किते ॥
सभी महकूम तेरे हाकिमे आला है तूही ॥
तुही सरकार बड़ा छोटे हैं सरकार किते ॥
है हयात अबदी उनको जिसे तू बख्श अमान ॥
जिन्दा है कोई कोई और हैं मुरदार किते ॥
आलमोंका तू खुदावन्द फिकर सबकी तुझे ॥
सबका दिलवर है तुही और दिलदार किते ॥
नाम लेते हैं बहुत लोग तेरी दुनियामें ॥
हंस है कोई कोई और वह तीमार किते ॥
आसमाँ और जमीं कापते कब्बीर कहे ॥
आशिकको खबर गो कि खबरदार किते ॥
पेशकश हाथ सर अपनाले गली यारमें आ ॥
बे कीमतके वस्ल खरीदार किते ॥
जिस्को तू अमल बख्श है अल्मस्त ॥
बे नश: के छूटे हैं सरशार किते ॥
सबका है खुदा तुही खुदावन्दा नेक ॥
बे बहा तू है समर बख्श समर बार किते ॥
आजिजको चखा लज्जते उल्फत ऐ गुल ॥
गोबुलबुलो सद जानिबे हरचार किते ॥

बुलबुलो खिजां गया अब आया है दिनबहार ॥
गागीत चहचहे सदा कर खेल दिन बहार ॥
गुल्शनमें जाके मग्ज मुअत्तर कर अपनेको ॥

क्या क्या है हुस्न खूब खिले गुल है पुर कतार ।।
कह ज़ाग़ बूम शूमसे अब दूर भाग जा ।।
खूबोंकी खूबियां तेरी आँखोंमें लगते खार ।।
वह बखत क्या मुबारक व साअत सईद है ।।
खुश वक्त बख्श आशिको माशूक दर किनार ।।
साहब कबीर होवे मिहरबां जिस ऊपर ।।
बे मिहनत सो आजिज़ हो दरिया पार ।।

तुम साहबरहमान हो अगली मिहर मत छोडिये ।।
दया धरमके खानहो अगली मिहर मत छोडिये ।।
हम तो हैं दायमपुर अता अलमो अमलकीजे अता ।।
दुनियां व दीन सुल्तान हो अगली मिहर मत छोड़िये ।।
हम इलमो अक्लमें हेच हैं हम कालके दर पेच हैं ।
तुम जल्ले अलीशानहो अगली मिहर मत छोड़िये ।।
जान बख्शा मुर्दा लाशका पर्दः ढके कल्लाशका ।
तुम आलमें खाकान हो अगली मिहर मत छोड़िये ।।
ना चार आज़िज जिऊ हम सामां नहीं कोई बहम ।
तुम साहेब सामान हो अगली मिहर मतं छोडिये ।।
दुशमन दिले शहज़ोर है छलबल भरा सो चोर है ।
निशि दिन भरोसा तोर है सद शुक्र बन्दी छोरका ।।
जब गिरियः और जारी हुई जम जातना भारी हुई ।
तब आपकी यारी हुई सद शुक्र बन्दी छोरका ।।
दारा सिकन्दर कुट गये सूफी कलन्दर लुट गये ।
कोई हंस तुझसे जुटगये सद शुक्र बन्दी छोरका ।।
दरियाय दिलकी लहरमें सब बह गये इस बहरमें ।
पहुँचे कोई तेरे शहरमें सद शुक्र बन्दी छोरका ।।
जिस्का यह तीनों भुवन है उस्से बचे कह कवन है ।
तू ही सकल दवन है सद शुक्र बन्दी छोरका ।।
जग जीवको मारा झुला जाहिद व आबिद सब भुला ।
अब मुक्तिका द्वारा खुला सद शुक्र बन्दी छोरका ।।
अगला न रिश्तः तोड़िये अपने कदमसे जोड़िये ।
आजिजका हाथ न छोड़िये सद शुक्र बन्दी छोरका ।।

सामा न सरे देखिये इस अहद हमारे ॥
सब फितन भरे देखिये इस अहद हमारे ॥
कोई न सुने पन्द न पहचान न देखे ॥
अन्धे भरे देखिये इस अहद हमारे ॥
इल्म व अमल सब है अबस बाद फरोशी ।
गोया घरे देखिये इस अहद हमारे ॥
है कौन गुरु और कहां धर्म खुदा है ।
कोई न डरे देखिये इस अहद हमारे ॥
नेकीसे भगे सारे है बेपार बदीका ।
जब सबको घेरे देखिये इस अहद हमारे ॥
इस अहदके आदमके अमल पर जो नजर कर ।
कोई न तरे देखिये इस अहद हमारे ॥
आई जो खिजा बाद गुलिस्तां में सब गुल ।
पजमुर्दा पडे देखिये इस अहद हमारे ॥
जब आकर अब्र तेरी बारिशे बारा ।
सूखे लहर देखिये इस अहद हमारे ॥
आजिजको वशारत है यह सतगुरु शब्दसाख ।
सब खुश्क हरे देखिये इस अहद हमारे ॥

मुखम्मस ।

जुज मिहर तुम्हारी कहीं आराम न होवे ।
इस दार फना नेक सरन्जाम न होवे ॥
तदबीर न तकदीरसे कुछ काम न होवे ।
निस जायमें इकता वह गुलन्दाम न होवे ॥
दोज़ख है सरापा जहाँ सत्तनाम न होवे ।

जब किशवरे हस्तीसे चलें हन्स अदमको ।
किस शान व शौकतसे लिये शब्द अमलको ॥
तब ब्रह्म विचारा फिर जा चूम कदमको ।
बाजारमें आकरके जो पहचान सनमको ॥
फिर आशिके सौदा यह कभी खाम न होवे ।

बहदत है तुझे और नहीं कोई है सानी ।
सब ओर भ्रम लाबूत इस देर दुखानी ।।
गह खुश्म गहें सब्ज गहे सुबक गिरानी ।
बे बर्ग सपर बाम चले बाद खिजानी ।।
पुर खार वह गुलशन जहाँ गुलफाम न होवे ।

गल्तान सदहा बिसमिले नखचीरमें देखे ।
मुरगां बकफस जेरके जंजीरमें देखे ।।
जबं जखम व कारी इसतीरमें देखे ।
तासीर अजब ज़ालिमें रहगारमें देखे ।।
वह राह था मुझको जहाँ दाम न होवे ।

ऐ मेरे खिजर हाथ पकड आन हमारा ।
जुज़ तेरे करम फ़ज़ल नहीं हमको सहारा ।।
है तेरी पनह आजिजे मिसकीं विचारा ।
दिन गुजर गया यों है न कुछ काम सिधारा ।।
रुख अपना दिखा जल्दतर शाम न होवे ।

अब्र नसियां करम तेरे असर है कि नहीं ।।
सदफे बहर तेरे कोई गोहर है कि नहीं ।।
बागबां बागमें ऊल्फत का शजर है कि नहीं ।।
कोई नखले मुहब्बतमें समर है कि नहीं ।।
मन भिसकीं की तरफ तेरी नजर है कि नहीं ।।

ढूढे मुल्क आदम और जिन्नो परी ।।
तुझ बिन नहीं चैन सद आफात भरी ।।
शबे फुरकत न कटी हाय कटी उम्र मेरी ।।
वस्लकी रातकी हैहात न तू बात करी ।।
इस सबे हिज्रका आखिरको तो सेहर है कि नहीं ।।

गौवास जो सद गोतः लगातेही मुआ ।
मुहरा हाथ लगा और न कुछ काम हुआ ।।
जब बहर करम लुत्फ तेरा मौजमें आया ।
बैठेही साहिल पर न सो न अम इनआम दिया ।।
दिल रियामें तेरे कोई लहर है कि नहीं ।

ऐबख्त बख्वाब होवे बेदार कभी ।।
मुझ गुनहगारको हो यार की दीदार कभी ।।
ऐ परदः नशी राज़ कर अफशार कभी ।।
निगह नेक होवे सोई गिरफ्तार कभी ।।
इस बन्देपर अगलीसी मिहर है कि नहीं ।।

दर पेस सफर मुझको वफाकेश जता ।।
शाफी मेरे हामी मेरे कर इल्म अता ।।
मुजरिम हूँ तेरा गरक गुनहगार खता ।।
ऐ चश्मये फैज व रहमत मुझको बता ।।
आजिज़का तेरी राहमें गुजर है कि नहीं ।।

तरजीव वन्द ।

जबान मेरी बयान नुत्क़ असर दे । बदीद जाहिर व वातिन बसर दे ।।
न भूलूं एक पल तुझे रहे तेरी याद । शबो रोज हर शामो सहर दे ।।
जो नेमत दो जहां सो सब खदफ़ है । खदफ़ कर दिल सदफ़ नाम घरदे ।।
नसर्दी दिन बदिन गर्मी तरक्की । मुहबत मुर्शद अब्दुल देहरदे ।।
खुदीको भूलकर बाखुद हूँ सरमस्त । शराबे इश्कका अपने खुमरदे ।।
न जाहिर जिवलः दिखलाता परीरू । उठाता इश्क आतश बात परदे ।।
रुख खुर छिप रहा है अब अन्दर । खुश आँ वकतेके बुक़रा दौरे दिहरदे ।।
न मुझसा और नालायक व नादार । तू सब लायक है खाली पूर करदे ।।
हमारे बद अमल पर मत नजर कर । सरन और नाम अपनेका अजरदे ।।
बहुत दिनका सगेदर हूँ मैं तेरा । न दुर दुर कर न दूर कर पेट भरदे ।।
न जाऊँ दर बदर इक दर उम्मीद । बचाले जान और जिवदान वरदे ।।
मिहरकी बहर तू बेहद न पाय न । मिहर कीजे मिहर कीजे अपनी लहरदे ।।
सगेदरको फिरा हरगिज न दर दर । मिहर कीजे मिहर कीजे मिहर कर ।।
तुही कुनसे किया कोनों मकांको । तुही बरपा किया सब जिस्म व जांको ।।
तुही सत पुर्ष ज्ञानी नाम तेरा । तुही बतला दिया नामे निशांको ।।
किया तूहीने मल्कुल मौत पैदा । तुही भेजा है मुरशिद मिहरबांको ।।
कहरके वास्ते कर काल जब्बार । मिहरकर फिर किया अमनो अमांको ।।
बनज्मे इस जहां निरगुण बनाना । किया पैदा हरी हर वेदख्वांको ।।
किया मकबूल और मकरुह व मरदूद । तुही खूबी दिया जन्नत जनांको ।।
तेरे सब नाम है आराम बख्शे । चले सब वस्फ सतनाम सुबहांको ।।

तेरे औसाफ लायक न मलायक । है क्या इमकान इन्सांकी जबांको ॥
न जानां भेद कुछ हम्दे सरायां । बयां किस तौर कीजे लाबयांको ॥
तुही बेमिस्ल साहब सबका सरदार । तुही बख्शे अदू और दोस्तांको ॥
अलख तूही है कोई लख न पाया । न जाने भेद तुझे राजे निहांको ॥
तुही सब कुछ किया है सबमें मौजूद । तुही देता है हरकस हर ज़मांको ॥
बहर खान व बहर शान व बहर शै । तुही था और तुही होगा तुही है ॥

हज़ारो पीर पैग़म्बर बनाये । जुदा सब मजहबो मिल्लत चलाये ॥
नहीं वह नूर सद मामूर तारे । मिहर तुझ रुख मिहर दैजूर जाये ॥
नहीं लमअ सोसद शमाअ शबिस्तां । कि बरकत तेरीदिन मशअल जलाये ॥
शरीअत शाखकर सारी मुखालिक । न जाते राह इन्साँको बताये ॥
नबी पीरां फकीरां कैल फरजन्द । सभी औतार धर अल्लह बताये ॥
सभोंमें बरतरीं हैं राम और कृष्ण । निरंजन राय खुद धर देह आये ॥
जिते मजहब हैं इस आलममें जारी । नराहे रुस्तगारी कोई दिखाये ॥
नहीं मजहबसो सारे कालके जाल । किया मंसूख इक दूना चलाये ॥
किया मुरग़ाने ज़ेरक दर कफस बन्द । जो दानांकी तरह दिलको झुकाये ॥
फँसे उसदाममें आराम जानाँ । जपे सब राम नहिं सत नाम पाये ॥
पड़ीं सब गाय दरकाबू कसाई । जिधर जावें उधर छूरी उठाये ॥
किया तब रहम तू मुर्शिद हकीकी । जो साहब था सत सुकृत कहाये ॥
करे सब जीवके दुख द्वन्द तू दूर । तेरा है नाम बन्दी छोर मशहूर ॥

तेरी मस्तोंकी महतीको न जाना । हुआ मदहोश बे खुद और दिवाना ॥
अनलहक़ भी न पहुँचे अपने हकको । हुआ था यह अनलहक का बहाना ॥
कोई नागा कोई भागा बियाबाँ । कोई अन्दर ज़मींके जा छिपाना ॥
कोई गावे बजावे तान तोडे । नकल भाँडोंकी सबने अक्ल ठाना ॥
हुए बेगानः सब अपने अमलसे । न पहचाने कोई अपना यगाना ॥
तेरे प्यालेसे इक क़तरा जो पिया । लिया सौ जान मुर्दोंका जिलाना ॥
नहीं भगवाँ तिलक कण्ठी न माला । निराला भेष धर तुझमें समाना ॥
हुआ जब अस्लसे वह वस्ल अपने । हुआ तब क़तरये दरिया ज़माना ॥
तेरी बेमिस्ल सागर मुश्कबूसे । रहे क्या अक्ल आदमकी ठिकाना ॥
मुअत्तर मगज उसबूसे हुआ जब । तो दानाई को खो बैठे हैं दाना ॥
हुए बेखुद खुदीको खोये बैठे । न अब तक तीर पहुँचा वर निशाना ॥
किते पर पा किये परवाज बाला । जमींपर फिर फिर उनको है आना ॥

पिला पुर प्याला कर ऐ मेरे साक़ी । रहेगा नाम बन्दी छोर बाकी ।।
यह चक्की चल रही गरदूंन गरदां । जो खायो पीसकर सब नेक मर्दा ।।
बले जाते हैं पीरो पीर दामाँ । हक़ीकत क्या वहां फरऊन धामाँ ।।
चरख चक्की है और सब जीव दाना । मियांने मेख मुर्शिद मिहरबाना ।।
मियाने मेख मुर्शिदके कदम लग । अलग बच जायगा मतहो हिरासां ।।
जिधर जावे उधर धर पीस डाले । जमीन और आसमाँ घर बन बियाबां ।।
पिसे ब्रह्मा हरी हर कृष्ण राधो । पिसे नौनाथ और जाहिद बुजर्गां ।।
बचे कोई न कर सदहा जो तदबीर । बचो पानी बनाया मेश गुरगां ।।
किया कब्जमें सबके जिस्म व जाँको । पडा पीछे कवी यह नफ्स शैतां ।।
यहंसंव खिलकतखुरिशजमकीरोजीन । मला एक क्यापरी और जिन्नो इन्सां ।।
यह बैठा अक्लपर सबके दिले भूत । जिधर चाहे उधर करदे परीशां ।।
जिधर यह भाग जावे आदमीजाद । चमकती सैफ हर जानिब नुमायां ।।
बले दन्दानं जेरी कालके सब । यह मुशिकल तुझ सिवा होवे न आसां ।।
वहां कैल मकां आजिज मुकीमा । तुमही ग़फ्फूर और तुही रहीमां ।।

तरजीआ बन्द ।

ऐ के दर परश्ये शुक्र गुफ्तार । जल्द वह जलवः कीजिये इजहार ।।
मुझे वह जाम भर पिला साक़ी । मस्त हूँ तेरे इश्कमें सरशार ।।
हर तरफ औ लियान लल्लामा । इख्त लात इनका है अजाबुन् नार ।।
जाहिदोंके जहदमें मिलादें खाक । आबिदोंके न दिलमें सब करार ।।
ओट तेरी बचाव चोट उनके । मैं हूँ इन्तहा व दुश्मनाने बक़तर ।।
मंजिले दूर तोशए राह नहीं । मैं पियादा व हमरहान सवार ।।
दस्तगीरी कर ऐ खुजिस्तः हकीर । दूईका परदः अज़मियाँ बरदार ।।
मैं फकीर और मेरा ग़नीम ग़नी । न मुक़ाबिल हो मुफलिसो ज़रदार ।।
कोई बाकी रहे न रसमें शोर । कहो सतगुरु कबीर बन्दी छोर ।।

जिस्की जुल्फोंको देखकर लाला । दाग हसरतसे दिल हुआ काला ।।
सद गुलिस्तां निसार खाक कदम । बुल बुलें जिस लिये करें नाला ।।
दीद बर दी है न दीद बदीद । माह पर आन कर पड़ा हाला ।।
तुही खालीक हुआ तुही मखलूक । तुही पैदा किया तूही पाला ।।
जब उठा पांच तीनका झंडा । सारे नामो निशाँ मिटा डाला ।।
तुही जाहिर है और तुही बातिन । तुही जेरीन और तुही चाला ।।
कदम खाक तेरेकी बरकात । दुश्मने सद ब जेर पामाल ।।

सिर्फ तेरी भिहरसे यहज जीव । बे गुमाँ लामकाँ ऊपर चाला ॥
कोई बाकी रहे न सरमें शोर । कहो सतगुरु कबीर बन्दी छोर ॥

वे अदद आलमीन् परवर है । औलिया अम्बियाय सरवर है ॥
बन्दः मुजरिमका जुर्म करदे मुआफ । तू रहीमो करीम बरतर है ॥
जंग मैदानमें हूँ पड़ा घायल । न सनान सैफ ढोल बकतर है ॥
मने मजरुह सा तु है जर्राह । दिले दिलगीरका तु दिलबर गीर है ॥
मने मिसकीन से अपना रुख मत फेर । मुझ ले जाय तेरेहि दर है ॥
अब किधर जाऊं छोड दामन को । तेरे साये कदम मेरा घर है ॥
कर जफ़ा या वफ़ा तुझे सब ज़ेब । मुझे मनजूर जो तेरी सर है ॥
हैं हुमायूं नसीब सो जिनके । मूनिसे मह मुदाम दरबर है ॥
कोई बाकी रहे न सरमे शोर । कहो सतगुरु कबीर वन्दी छोर ॥

देख उस रंग रूप रोगनको । तब लिया जान बाजीगर फनको ॥
शार अफशाने दीदः हों ताजः । देख जब अपने रश्क गुल्शन को ॥
ग़ममें गिरियां बर न उरियानी । प्यार तिनको न रहे इस तनको ॥
दिल चपल चुलबुला हुआ साफिन । मार कर मुर्दा कर दिया मनको ॥
खसो खाशाकसे जब हुआ पाक । पार आवैठे मार आसनको ॥
तुझसाकादर व मुझसा वे मकदूर । संग पारस मिला जो आहनको ॥
यह ग़लत मसलः आह और कहो । जिनको पहनाव खास जोशनको ॥
ज़ख्म सब भर बइक नज़र न हज़र । पारचा पाट टाट सोज़न को ॥
कोई बाकी रहे न सरमें शोर । कहो सतगुरु कबीर बन्दी छोर ॥

दे बसा आन ग़ेबका घेरा । जल्द कर मेरे कूचेमें फेरा ॥
जोड खंजर न छोड बिस्मिलको । ऐ दिलाराम काम कर मेरा ॥
कारपरदाज तू गरीब निवाज । खानये दिल मेरे करो देरा ॥
रूय खुरशैद की झलक झिलमिल । नूर हों पूर दूर अंधेरा ॥
भागजा जहाँ पडें ब पा जंजीर । सब जवानिब है कलका घेरा ॥
ख्वाब गफलत्से कर दिया बेदार । बेहद्द अहसान बन्देपर तेरा ॥
बिन तेरे कौन कब जग जीव । तूही साहब है और सब चितेरा ॥
हाथ धर कर जिसे उठाया तू । बेगुमाँ उसका पारहो बेरा ॥
कोइ बाकी रहेन सरमें शोर । कहो सत गुरु कबीर बन्दी छोर ॥
बख्स तू दया व ‌‌ झको किब्लेगाह । रोजो शब तूही तू है शाम पगाह ॥

कीजे मुहरम वदीजे अकल हिलाल । रख मेरा जामः पाक ज़ेर निगाह ॥
होत गाफिल न तुझसे लमह कोई । वख्शदे मुझको मेरे शाहन्शाह ॥
यह दग़ाबाज़ दिलये मुरदार । रख पिनह खुद ज़े हीलये रोबाह ॥
ऐ मेरे जान ऐ मेरे जानाँ । मुन्तजिर जलवः तेरे दीदः बराह ॥
रूबरू तेरे हूँ मैं किस ढबसे । हूँ पिशेमान फेलनामा स्याह ॥
कोई बाकी रहा नहीं चारा । लेके दम सर्द तोबः नालः व आह ॥
रू रहाई रही न राह गुरेज । बन्दः नाचारा को है तेरी पनाह ॥
कोइ बाकी रहें न सरमें शोर । कहो सत्गुरु कबीर बन्दी छोर ॥

इस जहांका न काम बाकी है । एक तेरा सत्य नाम बाकी है ॥
कुल फानी जो दीदः मनजरमें । सार शब्दे पयाम बाकी है ॥
हक तेरेसे अदा न कोई ऐ हक । हक तेरा लाकलाम बाकी है ॥
सब चले जायँगे रहे न कोई । इक तेराही क़याम बाकी है ॥
देता है तू जो खास खासोंको । शरबते नोश जाम बाकी है ॥
परदेसे पैरवान का रहबर है । जल्सए खासो आम बाकी है ॥
तेरी हमदो सना रहै कायम । जब तलक सुवह व शाम बाकी है ॥
हो चुका जोर दौराका आजिज । अब तेरा ऐहतमाम बाकी है ॥
कोई बाकी रहे न सरमें शोर । कहो सतगुरु कबीर बन्दी छोर ॥

तरजिआ बन्द ।

न तुझ बिन कोई सीधी राह पाया । भटकते मरगया घरको न आया ॥
जो कुफरस्तानमें खुद खुद फँसाया । रहे पुरखार दौराँने दिखाया ॥
पकड़ जमराजने उसको भुलाया । पड़े मुरगाँ सब सय्यादके फंद ॥
छुड़ाले बन्देको अज हिस्तये बन्द । खुदावन्द खुदावन्दां खुदावन्द ॥
कभी तुझ बिन न जीवका कुफ्र टूटे । यह फिर फिर जायकर उसांहीसे जूटे ॥
यह दानाई की दौलत सारी लूटे । तमीज और अक्ल दानिश उसे छूटे ॥
हुआ सरमस्त इसमें फिर न फूटे । मिलाया बागबाँने उससे पैबन्द ॥
छुड़ाले बन्देको अज हस्तिये बन्द । खुदावन्दा खुदावन्दां खुदावन्द ॥
पकड कर हाथ अपनी रह दिखादे । सफीना सीनःपर नामा लिखादे ॥
न भूलूं फिर सबक़ मुझको सिखादे । किताबें अक्ल की ताकों रखादे ॥
रहे बाकी न कोई सब उठादे । खयाले खाम अज दिल चन्द दर चन्द ॥
छुड़ाले बन्देको अज हस्तिये बन्द । खुदावन्दा खुदावन्दां खुदावन्द ॥
व बज़्में खुद परिस्तां कौन जावे । वहां की ला खबर हमको सुनावे ॥

गया जो फिर कभी कोइ न आवे। जो आवे सो खबर पिछली भुलावे ॥
न भूले तौ कभी इकता कहावे। मिहर तेरी से पावें जीव आनन्द ॥
छुड़ाले बन्देको अज हस्तिये बन्द। खुदावन्दा खुदावन्दा खुदावन्द ॥
इस आसी बन्द: को अपने करमसे। बचाले पाँच और तीनों भरमसे ॥
गिरह दिल खोलकर महरम मरमसे। कि रख लीजे पिनह अपनी शरमसे ॥
अरज करता है आजिज दीद:नमसे। कदम बरकत तेरी हो फाल फरखुन्द ॥
छुड़ाले बन्दे को अज हस्तिये बन्द। खुदावन्दा खुदावन्दा खुदावन्द ॥

गुरु की प्रशंसा

खोलं अब खुद जबाँ ब हम्दो सिपास। मुर्शिदे मिहरबान भिच्छुक दास ॥
अहल इसरार जिसने बतलाया। जो न इन्सान के क़रीन क़यास ॥
सोई सतगुरु कबीर की मूरत। अमलो इल्म ज्ञान ध्यान की रास ॥
आतमा दास मिहर आतम लाभ। जिसने पहनाये मुझको हंस लिबास ॥
खाक पा जिस्से दीद: मन रोशन। उनकी शफकत है सारी इल्म असास ॥
हूँ गुनाहों से सरनगूं नादिम। तौ भी अपनी शरण का उनको पास ॥
शुक्र गुरुदेव का कर ऐ आजिज। जब तलक तेरे तनमें होश हवास ॥

छन्द—अब सन्त सुरति सम्हाल देखो कन्त निज पहचानिये।
अगम अविचल अलख लखि निहअन्त वाको जानिये ॥
लखि वार पार है सोई साहब ज्ञान आँख जो तानिये।
देखो दो नेत्र कबीर जहाँ तहाँ दूसरो नहीं मानिये ॥
अविगत अलेख भौ लेख नहि सो एक बन्दी छोरहै।
नर देह बाते नेह काजे भयो अब निसि भोर है ॥
जो नाम ररत काल डरत है हरत सो जम जोर है।
बड भाग अटल सुहाग उनको जिहि भरोसा तोर है ॥
लोमस भुशुंड के झुंड ऋषिमुनि जासु गुण वर्णन करें।
सनकादि नारद धनक गुप्त सेवत चित्त चरणन धरे ॥
ऋषभ आदि योगेश्वर जनक नृप सत पद चरनन परे।
बहु सिद्ध सो गरुड़ गोरख आय तुम शरणन तरे ॥
कोटिन पैगम्बर पीर गये भव तीर नाम कबीरते।
केहि कहत बनत अगनित ऋषि भये अमर सत शरीरते ॥
धरमदासको प्रभु खास निजकर बिलग नारो छीरते।
सत्तनाम मिल निज धाम दीनो काम एक पदथीरते ॥
विष बेलि फल संसार है यह क्षार विष जेहि तेहि भरा।

विष अण्ड पिंड समस्त है विष बारिमय भव सागरा ॥
बिलगाय विषतें कौन ऐसो भवन तीनमें नागरा ।
करि कोटि यतन न ज्ञान रतन है मिटे किमि यह झागरा ॥
जहाँ कामक्रोध और लोभ मोहते सकल पूरण पावई ।
सब रोम रोममें विष भरा है अमृत नाहिं समावई ॥
जग विषम आग है लागि तुम बिनु ताहि कौन बुझावई ।
जीव कठिन काल कराल बशतें बन्दी छोर छुड़ावई ॥
स्तुति करें और आरति सब हंस मिलि सत लोकमें ।
सतपुरुष आय बचाय खुद जीव जरत यमकी झोकमें ॥
न पाय कोइ उपाय साहब धाय धर जीव शोकमें ।
अरुझा सबहिं सरुझा न कोई जीव लोक वेद अथोकमें ॥
सत्तलोक हंस विलोक आनन्द बजत अनहद तूर है ।
प्रभु आरति अरु स्तुति करत सब सहज और अंकूर है ॥
इच्छा सोहं अचिन्त अक्षर शिरधरे पद धूर है ।
एक रोम जासु प्रकाश ऐसो कोटि चन्दा सूर है ॥
यह तीन लोक सशोक देखिये आय आनन्द कन्द है ।
दशदिशि पसर यम जाल है सब जीव फन्द तेहि फन्द है ॥
गुरु वैद्य साँचा वेदवांचा हर लियो दुख द्वन्द है ।
भव भीर हरण कबीर दासन दास परमानन्द है ॥

कवित्त—पावन पतित जीव दीननके हितु प्रभु तू है गुरु पुरुष कहाओ धूं और है । कहत कबीर धर्म धरत न धीर करे अचल शरीर न लगत हीम जोर है । पशु पंछी तारत है निगम पुकारत है आरतको देखिके निहार रिम कोर है । पीरो पयम्बर हैं धीर जो दिगम्बर हैं वदे वदे बानीहू विरद बन्दी छोर है ॥ तजत न बानी सुर मुनिन बखानी प्रभु शरणमें आनी जो करत निहोर है । तीन लोक ढूंढ़ जाये दूसरे कहूँ न पाये लगसो चरण दुख हरण जो शोर है ॥ नहीं शुभ करनी है बहु दुख भरनी है उस गुरु शरणी है कलि काल घोर है । अधम उधारनको जगत सुधारनको भक्ति मुक्ति धारण कबीर बंदी छोर है ॥ बूड़े बड़ ज्ञानी सिद्ध साधक जो ध्यानी बिन नाम सहिदानी जिन्हें आशा न तोर है । बलबीज चूसत है सिद्ध साधू दूषत है निशि दिन मूसत है अन चीन्ह चोर है ॥ जीवको है ठौर नहीं सुरमुनि दौर नहीं परमानन्द पौर नहीं पाव न जो दौड़ है । बन्दी छोर बन्दी छोर बन्दी छोर एक भजु साहब कबीर टेक सोई बन्दी छोर है ॥

ग्रन्थकर्त्ताका अन्तिम निवेदन ।

पाठक गणोंसे निवेदन है कि, दासने यह पुस्तक स्वसम्वेदके अनुसार लिखी है, जिस किसीका मन चाहे कबीरपंथके विद्वानोंसे विचार करके निश्चय करले। यदि कहीं प्रमाणादिकोंमें कुछ सन्देह अथवा भेद जान पड़े तो कृपा दृष्टिसे मुझे क्षमा करें क्योंकि, मनुष्य जीवनही भूलसे पूर्ण है ।

पुस्तक समाप्तिकी तिथि ।

शुक्र बेहद परम गुरु गोविंद । की सरनजाम नुसखये दिल बन्द ॥
करमो फज़ल उसपै सतगुरुका । जो समझकर पढ़े सुने यह पन्द ॥
इससे शीरीं न कोई शर्बत और । आब हैवाँ न शुर्ब मिस्री कन्द ॥
पाव पहचान जो कोई मुर्शदको । हो दफा सब जहाँका दुख द्वन्द ॥
कर अमल गर निगर न चश्म अपने । राज महरम न हो तो बर मन खन्द ॥
ईस्वी सन अठारह सौ अस्वन । उनीस सौ सैंतीस बिक्रमाँ सनः हिन्द ॥
मिहर सितम्बर व हिन्दवी अस्वन । खतम तारीख नुसखये चारम चन्द ॥
मैं उसीका हूँ खादमाँ खादिम । जिसके दरगह न पहुँचे कोई परन्द ॥
आजिज़ बा तखलुस आज़िज । नाम जिसका है दास परमानन्द ॥

है कबीर मन्सूरका, यह अविकल अनुवाद ।
विषम विषय निरधारिके, "माधव" रच्यो अवाद ॥
साहब ग्रन्थन सिन्धुमें, मो मन डुबकी लीन ।
सारशब्द हीरा अजब, तहँते लायो बीन ॥
बुद्धि अनीते भेदि तेहि, ज्ञान सूत्रमें पोह ।
सन्त पारखिनके गरे, ग्रन्थमाल यह सोह ॥
यदि यह माला धारिके, सन्त भजहिगे राम ।
तो सब सिद्धी शान्ति सुख, पैहैं माधवनाम ॥

श्री कबीर पन्थी स्वामी परमानन्दजी साधु विरचित उर्दू कबीर मन्सूरका संशोधन तथा परिष्कार पूर्वक, सर्व तन्त्र स्वतंत्र भक्तों के चरण रज रिसर्च स्कॉलर पं० माधवाचार्य्य परिष्कृत हिन्दी अनुवाद समाप्त हुआ ।

पुस्तकें मिलने के स्थान :—

१. खेमराज श्रीकृष्णदास,
श्रीवेंकटेश्वर स्टीम् प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
सातवीं खेतवाड़ी खम्बाटा लेन
बम्बई—४०० ००४

२. गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मीवेंकटेश्वर स्टीम् प्रेस,
व बुक डिपो,
अहिल्या बाई चौक, कल्याण,
(जि० ठाणे—महाराष्ट्र)

३. खेमराज श्रीकृष्णदास, चौक—वाराणसी (उ. प्र.)